ग्लोबल ग्रे ईबुक्स
कम दुखी
विक्टर ह्यूगो

LES MISERABLES

VICTOR HUGO

विक्टर ह्यूगो द्वारा रचित लेस मिजरेबल्स

इसाबेल एफ . हैपगुड द्वारा किया गया यह अनुवाद पहली बार **1887** में
प्रकाशित हुआ था।

आप इस पुस्तक को इस वेबसाइट पर पा सकते हैं :
globalgreyebooks.com/les-miserables-ebook.html

©ग्लोबलग्रे **2023**

globalgreyebooks.com

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना
खंड 1. फैंटाइन
भाग I. एक न्यायप्रिय व्यक्ति
आई. एम. मायरील
II. एम. मायरील, एम. वेलकम बन जाती हैं
III. एक अच्छे बिशप के लिए एक कठिन बिशप पद
IV. शब्दों के अनुरूप रचनाएँ
वी. मोनसिग्नूर बिएनवेनु ने अपने कैसॉक्स को बहुत लंबे समय तक बनाए रखा
VI. जिसने उसके घर की रक्षा की
VII. संबंध
VIII. शराब पीने के बाद का दर्शन
9. बहन द्वारा दर्शाया गया भाई
X. एक अज्ञात प्रकाश की उपस्थिति में बिशप XI. एक प्रतिबंध
बारहवीं. मॉनसाइनॉर का एकांत स्वागत है XIII. उनका क्या विश्वास था
XIV. उसने क्या सोचा
भाग II. पतन
I. पैदल यात्रा के एक दिन की शाम
II. विवेक से बुद्धिमत्ता की सलाह

III. [illegible]

IV. [illegible]

[illegible]

VI. [illegible]

VII. [illegible]

VIII. [illegible]

IX. [illegible]

X. [illegible]

XI. [illegible]

XII. [illegible]

XIII. [illegible]

[illegible] III. [illegible] 1817 [illegible]

I. [illegible] 1817

II. [illegible]

III. [illegible]

IV. [illegible]

[illegible]

VI. [illegible]

VII. [illegible]

VIII. [illegible]

IX. [illegible]

[illegible] IV. [illegible]

II. दो अनाकर्षक आकृतियों का पहला रेखाचित्र III. लार्क
भाग V. अवरोहण
I. काले कांच के आभूषणों के विकास का इतिहास II. मेडेलीन
III. लाफिट के पास जमा की गई राशियाँ
IV. शोक में डूबी एम. मेडेलिन
V. क्षितिज पर धुंधली झलकियाँ
VI. फादर फाउचेलेवेंट
VII. फॉशेलवेंट पेरिस में माली बन जाता है
VIII. मैडम विक्टर्नियन नैतिकता पर तीस फ्रैंक खर्च करती हैं IX. मैडम विक्टर्नियन की सफलता
X. सफलता का परिणाम
XI. मसीह ने हमें मुक्त किया है
XII. एम. बामाताबोइस की निष्क्रियता
XIII. नगर पुलिस से संबंधित कुछ प्रश्नों का समाधान
पुस्तक VI. जावर्ट
I. विश्राम की शुरुआत
II. जीन चैंपियन कैसे बन सकती है
पुस्तक VII. चैम्पमैथ्यू कांड
I. सिस्टर सिंपलिस
II. मास्टर स्काउफ्लेयर की दूरदर्शिता
III. खोपड़ी में बवाल
IV. नींद के दौरान पीड़ा द्वारा धारण किए गए रूप

वी. बाधाएँ
VI. सिस्टर सिंपलिस की परीक्षा
VII. यात्री आगमन पर प्रस्थान के लिए सावधानियां बरतता है VIII. कृपा से प्रवेश
IX. एक ऐसा स्थान जहाँ दृढ़ विश्वासों का निर्माण हो रहा है X. अस्वीकरण की प्रणाली
XI. चैम्पमैथ्यू और भी अधिक आश्चर्यचकित
पुस्तक VIII. एक प्रतिवाद
I. किस दर्पण में एम. मेडेलिन अपने बालों का चिंतन करती है?
II. फैंटाइन हैप्पी
III. जावर्ट संतुष्ट
IV. प्राधिकरण अपने अधिकारों की पुनः पुष्टि करता है
V. एक उपयुक्त मकबरा
खंड II. कोसेट
पुस्तक I. वाटरलू
I. निवेल्स से रास्ते में क्या-क्या मिलता है
II. हौगोमोंट
III. अठारह जून, 1815
IV. ए
V. युद्धों का अंधकारमय पक्ष
VI. दोपहर के चार बजे
VII. नेपोलियन अच्छे मूड में
VIII. सम्राट ने गाइड लाकोस्ट से एक प्रश्न पूछा IX. अप्रत्याशित

X. [illegible]

XI. [illegible]; [illegible]

XII. [illegible]

XIII. [illegible]

XIV. [illegible]

XV. [illegible]

XVI. Quot Libras in Duce?

[illegible]. [illegible]

XVIII. [illegible]

XIX. [illegible]

[illegible] II. [illegible]

I. [illegible] 24,601 [illegible] 9,430 [illegible]

II. [illegible]

III. [illegible]

[illegible] III. [illegible]

I. [illegible]

II. [illegible]

III. [illegible]

IV. [illegible]

V. [illegible]

VI. [illegible]

VII. [illegible]

VIII. किसी ऐसे गरीब व्यक्ति को अपने घर में शरण देने की अप्रियता जो वास्तव में एक अमीर व्यक्ति हो सकता है
9. थेनार्डियर और उनके दांव-पेच
X. जो व्यक्ति स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयास करता है, वह संभवतः अपनी स्थिति को और खराब कर लेता है।
XI. लॉटरी में 9,430 नंबर फिर से दिखाई दिया और कोसेट ने इसे जीत लिया। पुस्तक IV. गोरब्यू झोपड़ी
I. मास्टर गोरब्यू
II. उल्लू और वार्बलर के लिए घोंसला
III. दो विपत्तियाँ मिलकर एक सौभाग्य का स्रोत बनती हैं
IV. मुख्य किरायेदार की टिप्पणियाँ
V. पाँच फ़्रैंक का सिक्का ज़मीन पर गिरता है और हंगामा मच जाता है पुस्तक V. एक काले शिकार के लिए, एक मूक झुंड
I. रणनीति के उतार-चढ़ाव
II. यह सौभाग्य की बात है कि पोंट डी'ऑस्टरलिट्ज़ पर गाड़ियाँ चलती हैं। III. अर्थात्, 1727 में पेरिस की योजना
IV. उड़ान के प्रयास
V. जो गैस लालटेन से असंभव होगा
VI. एक रहस्य की शुरुआत
VII. पहेली का सिलसिला जारी है
VIII. पहेली और भी रहस्यमय हो जाती है
IX. घंटी वाला आदमी
X. जिससे यह स्पष्ट होता है कि जावर्ट को गंध का पता कैसे चला। पुस्तक VI. लिटिल पिकपस

I. क्रमांक 62 रुए पेटिट -पिकपस

II. मार्टिन वेर्गा की आज्ञाकारिता

III. तपस्या

IV. समलैंगिकता

V. ध्यान भटकाने वाली चीजें

VI. छोटा मठ

VII. इस अंधकार की कुछ परछाइयाँ

VIII. पत्थरों के दिलों के बाद

IX. एक सदी गिम्पे के अधीन

X. शाश्वत आराधना की उत्पत्ति

XI. पेटिट -पिकपस का अंत

पुस्तक VII. कोष्ठक

I. एक अमूर्त विचार के रूप में कॉन्वेंट

II. एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में कॉन्वेंट

III. किन परिस्थितियों में अतीत का सम्मान किया जा सकता है ?

IV. सिद्धांतों के दृष्टिकोण से कॉन्वेंट

V. प्रार्थना

VI. प्रार्थना की परम अच्छाई

VII. दोषारोपण में बरती जाने वाली सावधानियां

VIII. आस्था , कानून

पुस्तक VIII. कब्रिस्तान उन चीजों को अपने पास रख लेते हैं जो उन्हें सौंपी जाती हैं

अध्याय I. जिसमें मठ में प्रवेश करने की विधि का वर्णन है

II. किसी कठिनाई की उपस्थिति में फाउचेलेवेंट

III. [illegible]

IV. [illegible]

V. [illegible]

VI. [illegible]

VII. [illegible]

VIII. [illegible]

IX. [illegible]

[illegible] III. [illegible]

[illegible] I. [illegible]

[illegible]. [illegible]

II. [illegible]

III. [illegible]

IV. [illegible]

[illegible]. [illegible]

VI. [illegible]

VII. [illegible]

VIII. [illegible]

IX. [illegible]

X. [illegible]

XI. [illegible]

XII. [illegible]

XIII. [illegible]

[illegible] II. [illegible]

1. नब्बे वर्ष और बत्तीस दांत
II. जैसा मालिक, वैसा घर
III. ल्यूक-एस्पिरिट
IV. शताब्दी की आकांक्षा
वी. बास्क और निकोलेट
VI. जिसमें मैग्नन और उसके दो बच्चे दिखाई देते हैं VII. नियम: शाम के समय के अलावा किसी से भी न मिलें VIII. दो मिलकर एक जोड़ी नहीं बनाते
भाग III. दादा और पोता
I. एक प्राचीन सैलून
II. उस युग के लाल प्रेतों में से एक
III. उन्हें आराम करने दें।
IV. डाकू का अंत
V. क्रांतिकारी बनने के लिए सामूहिक प्रार्थना में भाग लेने की उपयोगिता
VI. वार्डन से मिलने के परिणाम
VII. कुछ पेटीकोट
VIII. ग्रेनाइट के मुकाबले संगमरमर
पुस्तक IV. ए.बी.सी. के मित्र
I. एक ऐसा समूह जो ऐतिहासिक बनने से बाल-बाल चूक गया
II. बॉसुएट द्वारा रचित ब्लोंडो का अंतिम संस्कार भाषण III. मारियस के आश्चर्य
IV. कैफे मुसैन का पिछला कमरा
V. क्षितिज का विस्तार

VI. रेस अंगुस्टा
भाग V. दुर्भाग्य की उत्कृष्टता आई. मारियस निर्धन
II. मारियस पूर
III. मारियस बड़ा हो गया
IV. एम. माबेउफ
V. गरीबी दुख की अच्छी पड़ोसी है
VI. प्रतिस्थापन
पुस्तक VI. दो तारों का संयोजन
I. उपनाम: पारिवारिक नामों के निर्माण की विधि
II. प्रकाश बनाया गया था
III. वसंत ऋतु का प्रभाव
IV. एक बड़ी बीमारी की शुरुआत
वी. मैडम बोगन पर गरज के कई झटके लगे
VI. बंदी बनाया गया
VII. अक्षर U के रोमांच, अनुमानों के हवाले कर दिए गए VIII. पूर्व सैनिक स्वयं भी खुश रह सकते हैं
IX. ग्रहण
पुस्तक VII. संरक्षक मिनेट
I. खानें और खनिक
II. सबसे निचली गहराई
तृतीय. बेबेट, ग्यूलेमर, क्लैक्वेसियस और मोंटपर्नासे IV. मंडली की संरचना
पुस्तक VIII. दुष्ट गरीब आदमी

आई. मारियस, एक बोनट पहने लड़की की तलाश करते हुए, टोपी पहने एक आदमी से मिलता है।
II. खजाना
III. क्वाड्रिफ्रॉन्स
IV. दुख में एक गुलाब
V. एक ईश्वरीय ताक-झांक
VI. अपनी मांद में जंगली आदमी
VII. रणनीति और कार्यनीति
VIII. झोपड़ी में प्रकाश की किरण
IX. जोंड्रेट रोने के करीब आ जाती है
X. लाइसेंस प्राप्त कैब का किराया: दो फ्रैंक प्रति घंटा
XI. दुख से लेकर दयनीयता तक सेवा के प्रस्ताव
XII. एम. लेब्लांक के पांच-फ्रैंक के सिक्के का उपयोग
XIII. अकेले में, एकांत स्थान पर, वे प्रार्थना करने के बारे में नहीं सोचेंगे।
XIV. जिसमें एक पुलिस एजेंट एक वकील पर मुट्ठी भर वार करता है
XV. जोन्ड्रेट अपनी खरीदारी करता है
16. जिसमें 1832 में प्रचलित एक अंग्रेजी धुन के बोल मिलेंगे। सत्रहवाँ. मारियस के पाँच-फ़्रैंक के सिक्के का उपयोग
XVIII. मारियस की दो कुर्सियाँ एक सादृश्य बनाती हैं
XIX. गूढ़ गहराइयों में स्वयं को लीन रखना
XX. जाल
21. सबसे पहले पीड़ितों को गिरफ्तार करना चाहिए।
XXII. खंड दो में रोता हुआ छोटा बच्चा

खंड IV. रू प्लूमेट में रमणीय गीत और रू सेंट-डेनिस में महाकाव्य
भाग I. इतिहास के कुछ पन्ने
I. अच्छी तरह से काटा गया
II. खराब सिलाई
III. लुई फिलिप
IV. नींव के नीचे दरारें
V. वे तथ्य जिनसे इतिहास का जन्म होता है और जिन्हें इतिहास अनदेखा करता है
VI. एनजोलरास और उसके लेफ्टिनेंट
पुस्तक II. एपोनिन
I. लार्क का मैदान
II. जेलों के गर्भकाल में अपराधों का प्रारंभिक निर्माण
III. फादर माबेउफ को दर्शन
IV. मारियस को एक दर्शन
भाग III. रू प्लूमेट में स्थित घर
I. रहस्य से भरा घर
II. जीन वालजेन एक राष्ट्रीय रक्षक के रूप में
III. पत्तियाँ और पत्तियाँ
IV. द्वार परिवर्तन
V. गुलाब को एहसास होता है कि वह युद्ध का एक साधन है VI. युद्ध की शुरुआत
VII. एक दुख के विपरीत डेढ़ दुख रखो
VIII. जंजीर-कक्ष

पुस्तक IV. नीचे से मिलने वाली सहायता ऊपर से मिलने वाली सहायता साबित हो सकती है
I. बाहरी घाव, भीतर से उपचार
II. मदर प्लूटार्क को एक घटना की व्याख्या करने में कोई कठिनाई नहीं होती है
भाग V. जिसका अंत आरंभ से भिन्न है
I. एकांत और बैरक का संयोजन
II. कोसेट की आशंकाएँ
III. टूसेंट की टीकाओं से समृद्ध
IV. एक पत्थर के नीचे एक दिल
पत्र के बाद वी. कोसेट
VI. बुजुर्गों को उपयुक्त समय पर बाहर जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
पुस्तक VI. लिटिल गैवरोचे
I. हवा की शरारती चंचलता
II. जिसमें लिटिल गैवरोश नेपोलियन द ग्रेट से लाभ निकालता है
III. उड़ान के उतार-चढ़ाव
पुस्तक VII. बोलचाल की भाषा
I. उत्पत्ति
II. जड़ें
III. रोने वाली बोलचाल की भाषा और हंसने वाली बोलचाल की भाषा IV. दो कर्तव्य: निगरानी रखना और आशा रखना
पुस्तक VIII. जादू और विनाश
I. पूर्ण प्रकाश
II. पूर्ण सुख की उलझन

III. छाया का आरंभ
IV. एक टैक्सी अंग्रेज़ी में चलती है और बोलचाल की भाषा में भौंकती है। V. रात की चीज़ें
VI. मारियस एक बार फिर व्यावहारिक हो जाता है और कोसेट को अपना पता दे देता है।
VII. एक दूसरे की उपस्थिति में वृद्ध हृदय और युवा हृदय
भाग 9. वे किधर जा रहे हैं?
I. जीन वालजेन
II. मारियस
III. एम. माबेउफ
पुस्तक X. 5 जून, 1832
I. प्रश्न की सतह
II. मामले की जड़
III. एक अंत्येष्टि; पुनर्जन्म का एक अवसर
IV. पूर्व के दिनों की उथल-पुथल
V. पेरिस की मौलिकता
पुस्तक XI. परमाणु तूफान से दोस्ती करता है
I. गैवरोचे की कविता की उत्पत्ति के संबंध में कुछ स्पष्टीकरण II. गैवरोश का मार्च
III. एक हेयरड्रेसर का उचित आक्रोश
IV. बच्चा बूढ़े आदमी को देखकर चकित हो जाता है
V. बूढ़ा आदमी
VI. रंगरूट
पुस्तक XII. कोरिंथ

I. कोरिंथे का इतिहास (इसकी स्थापना से)

II. प्रारंभिक उत्सव

III. ग्रांटेयर पर रात छाने लगती है

IV. विधवा हुचेलूप को सांत्वना देने का एक प्रयास

V. तैयारियाँ

VI. प्रतीक्षा

VII. रुए डेस बिल्लेट्स में भर्ती किया गया व्यक्ति

VIII. ले कैबुक नामक एक व्यक्ति के संबंध में अनेक प्रश्न

पुस्तक XIII. मारियस छाया में प्रवेश करता है

I. रुए प्लूमेट से क्वार्टियर सेंट -डेनिस तक

II. पेरिस का उल्लू का नज़रिया

III. चरम सीमा

पुस्तक 14. निराशा की भव्यता

I. ध्वज : पहले कार्य करें

II. ध्वज : दूसरा भाग

III. गैवरोश के लिए एनजोलरास की कार्बाइन स्वीकार करना बेहतर होता।

IV. बारूद का बैरल

वी . जीन प्राउवायर के छंदों का अंत

VI. जीवन की पीड़ा के बाद मृत्यु की पीड़ा

VII. गैवरोश एक गहन दूरी गणनाकर्ता के रूप में

पुस्तक XV. सशस्त्र व्यक्ति की गली

I. शराबी बकबक करता है

II. गली का बच्चा प्रकाश का शत्रु

III. जब कोसेट और टूसेंट सो रहे हों

IV. [illegible]

[illegible] V. [illegible]

[illegible] I. [illegible]

I. [illegible]

II. [illegible]?

III. [illegible]

IV. [illegible]

V. [illegible]

VI. [illegible]

VII. [illegible]

VIII. [illegible]

IX. [illegible] 1796 [illegible]

[illegible].

XI. [illegible]

XII. [illegible]

XIII. [illegible]

XIV. [illegible]

XV. [illegible]

16. [illegible]

[illegible].

XVIII. [illegible]

XIX. [illegible]

XX. [illegible]

XXI. नायक
XXII. आमने-सामने
तेईसवें. ऑरेस्टेस उपवास और पाइलैड्स नशे में XXIV. कैदी
भाग II. लेविथान की आंत
I. समुद्र द्वारा निर्धन हुई भूमि
II. सीवर का प्राचीन इतिहास
III. ब्रुनेसेउ
चतुर्थ
V. वर्तमान प्रगति
VI. भविष्य की प्रगति
तीसरा भाग। कीचड़, लेकिन आत्मा
I. सीवर और उसके आश्चर्य
II. व्याख्या
III. "स्पिन" मैन
IV. वह अपना क्रूस भी उठाता है
V. रेत के मामले में, स्त्री के मामले की तरह, एक ऐसी सूक्ष्मता होती है जो कपटी होती है।
VI. फॉन्टिस
VII. कभी-कभी व्यक्ति तब फंस जाता है जब उसे लगता है कि वह उतर रहा है। VIII. फटी हुई कोट की पूंछ
IX. मारियस मामले के न्यायाधीश पर मृत्यु का प्रभाव उत्पन्न करता है। X. उस पुत्र की वापसी जिसने अपना जीवन व्यर्थ ही व्यतीत किया
XI. पूर्ण रूप से मस्तिष्क आघात

XII. दादाजी
पुस्तक IV. जावर्ट पटरी से उतरा
आई. जावर्ट धीरे-धीरे रुए डे ल'होमे आर्मे से नीचे की ओर बढ़े।
भाग V. पोता और दादा
I. जिसमें जस्ता प्लास्टर वाला पेड़ फिर से दिखाई देता है
II. गृहयुद्ध से उबरकर मारियस घरेलू युद्ध की तैयारी करता है।
III. मारियस ने हमला किया
IV. अंत में, मैडमोजेल गिलनोर्मंड को यह बात बुरी नहीं लगती कि एम. फॉशेलवेंट अपनी बांह के नीचे कुछ लेकर अंदर आए थे।
V. अपना पैसा नोटरी के पास जमा करने के बजाय जंगल में जमा करें।
VI. दोनों बूढ़े आदमी कोसेट को खुश करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, हर कोई अपने-अपने तरीके से।
VII. सुख के साथ मिश्रित सपनों के प्रभाव
VIII. दो ऐसे व्यक्ति जिन्हें ढूंढना असंभव है
पुस्तक VI. नींदहीन रात
I. 16 फरवरी, 1833
II. जीन वालजेन अब भी अपनी बांह में पट्टी बांधे हुए हैं। III. अविभाज्य
IV. अमर जिगर
पुस्तक VII. प्याले से अंतिम घूंट
I. सातवाँ वृत्त और आठवाँ स्वर्ग
II. रहस्योद्घाटन में निहित अस्पष्टताएँ
पुस्तक VIII. गोधूलि का लुप्त होना
I. निचला कक्ष

II. एक और कदम पीछे
III. वे रू प्लूमेट के बगीचे की याद दिलाते हैं
IV. आकर्षण और विलुप्ति
पुस्तक 9. सर्वोच्च छाया, सर्वोच्च भोर
1. दुखी लोगों पर दया, लेकिन सुखी लोगों को उदारता प्रदान करना। II. बिना तेल के दीपक की अंतिम टिमटिमाहट
III. फाउचेलेवेंट की गाड़ी उठाने वाले व्यक्ति के लिए कलम भारी है IV. स्याही की एक बोतल जो केवल सफेदी लाने में सफल रही।
V. एक रात जिसके पीछे दिन है
VI. घास का आवरण और बारिश का मिट जाना

प्रस्तावना

जब तक कानून और रीति-रिवाजों के बल पर समाज द्वारा शाप के फरमान जारी किए जाते रहेंगे, जो पृथ्वी की सभ्यता के बीच कृत्रिम रूप से नरक का निर्माण करते हैं और दैवीय नियति में मानवीय नियति का तत्व जोड़ते हैं; जब तक इस सदी की तीन बड़ी समस्याएं - दरिद्रता के कारण मनुष्य का पतन, भूख के कारण स्त्री का भ्रष्ट होना, और प्रकाश की कमी के कारण बच्चों का अपंग होना - अनसुलझी रहेंगी; जब तक दुनिया के किसी भी हिस्से में सामाजिक घुटन संभव रहेगी; दूसरे शब्दों में, और इससे भी व्यापक अर्थ में, जब तक पृथ्वी पर अज्ञानता और गरीबी मौजूद रहेगी, लेस मिज़रेबल्स जैसी पुस्तकें उपयोगी बनी रहेंगी।

हाउटेविले हाउस, 1862।

खंड 1. फैंटाइन

भाग I. एक न्यायप्रिय व्यक्ति

आई. एम. मायरील

1815 में, एम. चार्ल्स-फ्रांकोइस-बिएनवेनु मायरील डी⸺ के बिशप थे। वे लगभग पचहत्तर वर्ष के एक बुजुर्ग व्यक्ति थे; वे 1806 से डी⸺ के पद पर आसीन थे।

हालांकि इस विवरण का हमारे आगे बताए जाने वाले विषय से कोई सीधा संबंध नहीं है, फिर भी सटीकता के लिए, उनके बारे में फैली विभिन्न अफवाहों और टिप्पणियों का उल्लेख करना अनावश्यक नहीं होगा, जो उनके सूबे में आने के क्षण से ही उनके बारे में प्रचलित थीं। सच हो या झूठ, किसी व्यक्ति के बारे में कही गई बातें अक्सर उनके जीवन में, और विशेष रूप से उनके भाग्य में, उतना ही महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं जितना कि उनके द्वारा किए गए कार्य। एम. मिरियल ऐक्स की संसद के एक पार्षद के पुत्र थे; इसलिए वे वकीलों के कुलीन वर्ग से संबंधित थे। कहा जाता था कि उनके पिता ने उन्हें अपने पद का उत्तराधिकारी बनाने के लिए, अठारह या बीस वर्ष की बहुत कम उम्र में ही उनका विवाह कर दिया था, जो संसदीय परिवारों में प्रचलित एक प्रथा थी। इस विवाह के बावजूद, कहा जाता था कि चार्ल्स मिरियल बहुत चर्चा का विषय थे। वे सुगठित थे, हालांकि कद में कुछ छोटे थे, फिर भी सुरुचिपूर्ण, आकर्षक और बुद्धिमान थे; उनके जीवन का पूरा पहला भाग संसार और वीरता को समर्पित था।

क्रांति आई; घटनाएँ एक के बाद एक तेज़ी से घटीं; संसदीय परिवार तबाह हो गए, उनका पीछा किया गया, उन्हें पकड़ लिया गया और वे तितर-बितर हो गए। क्रांति की शुरुआत में ही एम. चार्ल्स मिरियल इटली चले गए। वहाँ उनकी पत्नी की छाती की बीमारी से मृत्यु हो गई, जिससे वे लंबे समय से पीड़ित थीं। उनके कोई संतान नहीं थी। एम. मिरियल के भाग्य में आगे क्या घटा? पुराने फ्रांसीसी समाज का पतन, उनके अपने परिवार का बिखराव, 1993 की दुखद घटनाएँ, जो शायद दूर से देखने वाले प्रवासियों के लिए आतंक की चरम सीमा पर और भी भयावह थीं — क्या इन घटनाओं ने उनके मन में त्याग और एकांत के विचार को जन्म दिया? क्या इन उथल-पुथल और उनके जीवन को अपने वश में करने वाले इन भावों के बीच, अचानक उन रहस्यमय और भयानक आघातों में से एक ने उन्हें क्षुद्र कर दिया, जो कभी-कभी किसी ऐसे व्यक्ति के दिल पर प्रहार करके उसे भी तोड़ देते हैं जिसे

सार्वजनिक आपदाएँ भी नहीं हिला पातीं? किसी को पता नहीं चल सकता था: बस इतना ही पता था कि जब वह इटली से लौटा तो वह एक पादरी था।

1804 में, एम. मायरेल ब्रिग्नॉल्स के पादरी थे। वे काफी उम्रदराज थे और एकांत जीवन जीते थे।

राज्याभिषेक के समय के आसपास, उनके पादरी पद से संबंधित किसी मामूली मामले — ठीक-ठीक पता नहीं कि क्या मामला था—के चलते वे पेरिस गए। अपने पैरिशवासियों के लिए सहायता मांगने के लिए वे जिन अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों के पास गए, उनमें एम. ले कार्डिनल फेश भी थे। एक दिन, जब सम्राट अपने चाचा से मिलने आए थे, तो प्रतीक्षा कक्ष में बैठे सम्मानित पादरी ने देखा कि महामहिम वहां से गुजरे। नेपोलियन ने जब देखा कि वह बूढ़ा व्यक्ति उन्हें कुछ जिज्ञासा से देख रहा है, तो वे मुड़े और अचानक बोले:—

"ये भले आदमी कौन हैं जो मुझे घूर रहे हैं?"

“महाराज,” एम. मायरेल ने कहा, “आप एक अच्छे व्यक्ति को देख रहे हैं, और मैं एक महान व्यक्ति को। हम दोनों इससे लाभ उठा सकते हैं।”

उसी शाम सम्राट ने कार्डिनल से क्यूरे का नाम पूछा, और कुछ समय बाद एम. मिरियल यह जानकर अत्यंत आश्चर्यचकित हुए कि उन्हें डी का बिशप नियुक्त किया गया है।

एम. मायरेल के जीवन के प्रारंभिक भाग के बारे में गढ़ी गई कहानियों में आखिर कितनी सच्चाई थी? कोई नहीं जानता था। क्रांति से पहले बहुत कम परिवार ही मायरेल परिवार से परिचित थे।

एम. मिरियल को भी उस छोटे से कस्बे में आने वाले हर नवागंतुक की तरह ही भाग्य का सामना करना पड़ा, जहाँ बोलने वाले तो बहुत होते हैं, लेकिन सोचने वाले दिमाग बहुत कम। उन्हें यह सब सहना पड़ा, भले ही वे बिशप थे, और बिशप होने के कारण ही। लेकिन अंततः, उनके नाम से जुड़ी अफवाहें महज़ अफवाहें ही थीं—शोर, बातें, शब्द; शब्दों से भी कम—दक्षिण की जोशीली भाषा में कहें तो, खोखली बातें।

लेकिन नौ वर्षों तक बिशप के रूप में सत्ता संभालने और डी⸺ में निवास करने के बाद, वे सभी कहानियां और चर्चा के विषय जो शुरुआत में छोटे कस्बों और आम

लोगों को आकर्षित करते थे, पूरी तरह से भुला दिए गए थे। कोई भी उनका जिक्र करने की हिम्मत नहीं करता था; कोई भी उन्हें याद करने की हिम्मत नहीं करता था।

एम. मायरेल डी में एक बुजुर्ग अविवाहित महिला, मैडमोजेल बैपटिस्टिन के साथ पहुंचे थे, जो उनकी बहन थीं और उनसे दस साल छोटी थीं।

उनकी इकलौती घरेलू नौकरानी मैडमोजेल बैपटिस्टीन की ही उम्र की एक महिला नौकरानी थी, जिसका नाम मैडम मैग्लॉयर था। एम. ले क्यूरे की नौकरानी रहने के बाद, उसने मैडमोजेल की नौकरानी और मोनसिग्नोर की गृहस्वामी होने का दोहरा पदभार ग्रहण कर लिया था।

मैडमोजेल बैपटिस्टिन लंबी, पीली, पतली और कोमल स्वभाव की थीं; उन्होंने "सम्मानजनक" शब्द के आदर्श को साकार किया; क्योंकि ऐसा लगता है कि एक स्त्री को आदरणीय होने के लिए माँ होना आवश्यक है। वह कभी सुंदर नहीं थीं; उनका पूरा जीवन, जो केवल धार्मिक कर्मों की श्रृंखला थी, अंततः उन्हें एक प्रकार की पीलापन और पारदर्शिता प्रदान कर गया था; और जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती गई, उन्होंने वह सौंदर्य प्राप्त कर लिया जिसे अच्छाई का सौंदर्य कहा जा सकता है। जवानी में जो दुबलापन था, परिपक्वता में वह पारदर्शिता में बदल गया था; और इस पारदर्शिता ने उनके भीतर के देवदूत को प्रकट होने दिया। वह एक कुंवारी नहीं बल्कि एक आत्मा थीं। उनका शरीर मानो एक परछाई से बना था; यौन संबंध के लिए शायद ही पर्याप्त शरीर था; एक छोटा सा पदार्थ प्रकाश को समाहित किए हुए; बड़ी-बड़ी आँखें जो हमेशा झुकी रहती थीं; पृथ्वी पर एक आत्मा के अस्तित्व का मात्र एक बहाना।

मैडम मैग्लॉयर एक छोटी, मोटी, गोरी, बूढ़ी महिला थीं, जो तंदुरुस्त और फुर्तीली थीं; हमेशा हांफती रहती थीं—पहले तो अपनी सक्रियता के कारण, और दूसरे अपने अस्थमा के कारण।

उनके आगमन पर, एम. मायरेल को बिशप के महल में शाही फरमानों के अनुसार उचित सम्मान के साथ नियुक्त किया गया, जिसके अनुसार बिशप का पद मेजर-जनरल के ठीक बाद आता है। मेयर और अध्यक्ष ने उनसे सबसे पहले मुलाकात की, और उन्होंने बदले में जनरल और प्रीफेक्ट से सबसे पहले मुलाकात की।

पदस्थापन पूरा होने के बाद, शहर अपने बिशप को काम करते देखने के लिए इंतजार कर रहा था।

II. एम. मायरील, एम. वेलकम बन जाती हैं

डी का बिशप महल अस्पताल से सटा हुआ है।

बिशप का महल एक विशाल और सुंदर भवन था, जिसका निर्माण पिछली शताब्दी की शुरुआत में पेरिस संकाय के धर्मशास्त्र के डॉक्टर, सिमोर के एब्बे, एम. हेनरी पुगेट द्वारा पत्थर से किया गया था, जो 1712 में डी के बिशप थे। यह महल एक वास्तविक सामंती निवास था। इसकी हर चीज़ भव्य थी—बिशप के अपार्टमेंट, ड्राइंग रूम, कक्ष, मुख्य आंगन, जो बहुत बड़ा था, जिसके चारों ओर पुराने फ्लोरेंटाइन शैली में मेहराबदार रास्ते बने थे, और शानदार पेड़ों से भरे बगीचे थे। भोजन कक्ष में, जो भूतल पर स्थित एक लंबी और शानदार गैलरी थी और बगीचों की ओर खुलती थी, एम. हेनरी पुगेट ने 29 जुलाई, 1714 को लॉर्ड्स चार्ल्स ब्रूलार्ट डी जेनलिस, आर्कबिशप; प्रिंस डी'एम्ब्रुन; एंटोइन डी मेसग्रिग्नी, कैपुचिन, ग्रास के बिशप; फिलिप डी वेंडोम, फ्रांस के ग्रैंड प्रायर, सेंट होनोरे डी लेरिन्स के एब्बे; फ्रांस्वा डी बर्टन डी क्रिलन, बिशप, बैरन डी वेंस; सेसर डी सब्रान डी फोरकाल्कियर, बिशप, ग्लैंडेव के सेग्नोर; और जीन सोआनेन, ऑरेटरी के पुजारी, राजा के विशेष उपदेशक, बिशप, सेनेज़ के सेग्नोर। इन सात पूजनीय व्यक्तियों के चित्र इस कक्ष की शोभा बढ़ाते थे; और यह यादगार तिथि, 29 जुलाई, 1714, सफेद संगमरमर की मेज पर सुनहरे अक्षरों में उकेरी गई थी।

अस्पताल एक मंजिला, नीची और संकरी इमारत थी, जिसमें एक छोटा सा बगीचा था।

अपने आगमन के तीन दिन बाद, बिशप ने अस्पताल का दौरा किया। दौरा समाप्त होने पर, उन्होंने निदेशक से अपने घर आने की कृपा करने का अनुरोध किया।

“अस्पताल के निदेशक महोदय,” उसने उससे कहा, “इस समय आपके पास कितने बीमार लोग हैं?”

"छब्बीस, मोनसिग्नूर।"

"मैंने यही संख्या गिनी थी," बिशप ने कहा।

निर्देशक ने आगे कहा, "बिस्तर एक दूसरे से बहुत सटे हुए हैं।"

मैंने यही देखा।
"ये गलियारे मात्र कमरे हैं, और इनमें हवा को बदलना बड़ी मुश्किल से संभव है।"
मुझे तो ऐसा ही लगता है।
और फिर, जब सूरज की एक किरण निकलती है, तो स्वस्थ हो रहे मरीजों के लिए बगीचा बहुत छोटा पड़ जाता है।
मैंने खुद से यही कहा था।
"महामारी की स्थिति में—इस साल हमें टाइफस बुखार हुआ था; दो साल पहले हमें पसीना आने वाली बीमारी हुई थी, और कई बार सौ मरीज भी थे—हमें नहीं पता होता कि क्या करना है।"
"यही विचार मेरे मन में आया।"
“महामहिम, आप क्या चाहते हैं?” निर्देशक ने कहा। “हमें स्वयं को त्याग देना चाहिए।”
यह बातचीत भूतल पर स्थित गैलरी के भोजन कक्ष में हुई।
बिशप कुछ क्षण के लिए चुप रहे; फिर वे अचानक अस्पताल के निदेशक की ओर मुड़े।
“महाशय,” उसने कहा, “आपको क्या लगता है कि इस हॉल में अकेले कितने बिस्तर आ सकते हैं?”
"महामहिम का भोजन कक्ष?" अचंभित निर्देशक ने हैरानी से कहा।
बिशप ने अपार्टमेंट के चारों ओर एक नजर डाली और ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी आंखों से ही आकलन और गणना कर रहे हों।
“इसमें पूरे बीस बिस्तर आ सकते हैं,” उसने मानो खुद से बात करते हुए कहा। फिर ऊँची आवाज़ में बोला:—
“रुको, अस्पताल के निदेशक महोदय, मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ। यहाँ स्पष्ट रूप से कोई गलती हुई है। आप छत्तीस लोग पाँच-छह छोटे कमरों में हैं।
हम यहाँ तीन हैं, और हमारे पास साठ लोगों के लिए जगह है। मैं आपको बता दूँ,

कोई न कोई गलती ज़रूर हुई है; आपका घर आपके पास है, और आपका घर मेरे पास। मुझे मेरा घर वापस दे दीजिए; आप यहाँ घर पर ही रह सकते हैं।”
अगले दिन छत्तीस मरीजों को बिशप के महल में ठहराया गया और बिशप को अस्पताल में ठहराया गया।
एम. मायरील के पास कोई संपत्ति नहीं थी, क्रांति के कारण उनका परिवार बर्बाद हो गया था। उनकी बहन को प्रतिवर्ष पाँच सौ फ़्रैंक की आमदनी होती थी, जो उनके निजी खर्चों के लिए पर्याप्त थी। एम. मायरील को बिशप के रूप में राज्य से पंद्रह हज़ार फ़्रैंक का वेतन मिलता था। जिस दिन उन्होंने अस्पताल में अपना निवास स्थान बनाया, उसी दिन एम. मायरील ने इस राशि के निपटान का अंतिम निर्णय निम्नलिखित तरीके से किया। हम यहाँ उनके द्वारा स्वयं लिखे गए एक नोट को लिख रहे हैं:
मेरे घरेलू खर्चों के नियमन पर टिप्पणी
छोटे सेमिनरी के लिए
1,500 लिवर
मिशन का समाज
100 लिवर
मोंटडिडियर के लाज़ारिस्टों के लिए 100 लिवर
पेरिस में विदेशी मिशनों के लिए सेमिनरी 200 लिवर
पवित्र आत्मा की मंडली
150 लिवर
पवित्र भूमि के धार्मिक संस्थान
100 लिवर
धर्मार्थ मातृत्व समितियाँ 300 लिवर

आर्ल्स के लिए अतिरिक्त।
50 लिवर
जेलों की स्थिति में सुधार के लिए काम करें
400 लिवर
कैदियों की राहत और रिहाई के लिए काम करें
500 लिवर
कर्ज के कारण जेल में बंद परिवारों के पिताओं को मुक्त कराने के लिए 1,000 लिवर
धर्मप्रांत के गरीब शिक्षकों के वेतन में वृद्धि
2,000 लिवर
हाउट्स-आल्प्स का सार्वजनिक अन्न भंडार
100 लिवर
डी, मानोस्क और सिस्टेरॉन की महिलाओं की मंडली, गरीब लड़कियों को निशुल्क शिक्षा प्रदान करने के लिए।
1,500 लिवर
गरीबों के लिए
6,000 लिवर
मेरे निजी खर्च
1,000 लिवर
कुल
15,000 लिवर
एम. मिरियल ने डी⸺ के पद पर रहने के पूरे समय के दौरान इस व्यवस्था में कोई बदलाव नहीं किया। जैसा कि देखा गया है, उन्होंने इसे "अपने घरेलू खर्चों का नियमन" कहा था।

मैडमोजेल बैपटिस्टीन ने इस व्यवस्था को पूर्ण समर्पण के साथ स्वीकार कर लिया। यह पवित्र महिला डी के महाशय को अपना भाई और बिशप, शारीरिक मित्र और चर्च के अनुसार अपना श्रेष्ठ मानती थीं। वह उनसे प्रेम करती थीं और उनका आदर करती थीं। जब वे बोलते, तो वह झुकतीं; जब वे कार्य करते, तो वह उनके प्रति निष्ठा दिखातीं। उनकी इकलौती नौकरानी, मैडम मैग्लॉयर, थोड़ी नाराज़ थीं। यह ध्यान देने योग्य है कि महाशय बिशप ने अपने लिए केवल एक हजार लिवर आरक्षित रखे थे, जो मैडमोजेल बैपटिस्टीन की पेंशन में मिलाकर प्रति वर्ष पंद्रह सौ फ्रैंक हो जाते थे। इन्हीं पंद्रह सौ फ्रैंक से ये दोनों बूढ़ी औरतें और बूढ़ा व्यक्ति अपना जीवन यापन करते थे।

और जब एक ग्राम पादरी डी⸺ आया, तो बिशप ने मैडम मैग्लॉयर की कठोर मितव्ययिता और मैडमोजेल बैपटिस्टिन के बुद्धिमान प्रशासन की बदौलत उसका मनोरंजन करने के साधन ढूंढ लिए।

एक दिन, डी में लगभग तीन महीने बिताने के बाद, बिशप ने कहा:

और फिर भी मैं इन सब चीजों से काफी तंग महसूस कर रहा हूँ!

“मुझे तो ऐसा ही लगता है!” मैडम मैग्लॉयर ने हैरानी से कहा। “महामहिम ने तो शहर में अपनी गाड़ी के किराए और अपने क्षेत्र की यात्राओं के लिए विभाग द्वारा देय भत्ते का दावा भी नहीं किया है। पुराने समय में बिशपों के लिए यह प्रथा थी।”

“रुको!” बिशप चिल्लाया, “आप बिल्कुल सही कह रही हैं, मैडम मैग्लॉयर।”

और उसने अपनी मांग रखी।

कुछ समय बाद आम परिषद ने इस मांग पर विचार किया और उन्हें इस शीर्षक के तहत तीन हजार फ़्रैंक की वार्षिक राशि देने का प्रस्ताव पारित किया: "महामहिम को परिवहन व्यय, डाक व्यय और पादरी यात्राओं के व्यय के लिए भत्ता।"

इससे स्थानीय नगरवासियों में भारी आक्रोश फैल गया; और साम्राज्य के एक सीनेटर, जो 18 ब्रुमेयर का समर्थन करने वाली पांच सौ सदस्यों की परिषद के पूर्व सदस्य थे, और जिन्हें डी⸺ शहर के पास एक शानदार सीनेटर का पद दिया गया था, ने सार्वजनिक पूजा मंत्री एम. बिगोट डी प्रीमेन्यू को इस विषय पर

एक बहुत ही क्रोधित और गोपनीय पत्र लिखा, जिसमें से हमने ये प्रामाणिक पंक्तियाँ उद्धृत की हैं:—

“गाड़ी का खर्च? चार हज़ार से भी कम आबादी वाले कस्बे में इसका क्या काम? यात्राओं का खर्च? इन यात्राओं का आखिर उपयोग ही क्या है? फिर, इन पहाड़ी इलाकों में डाक कैसे भेजी जा सकती है? यहाँ सड़कें ही नहीं हैं। घोड़े के सिवा कोई और सवारी नहीं करता। ड्यूरेंस और शैतो-अर्नोक्स के बीच का पुल भी बैलगाड़ियों का भार मुश्किल से ही संभाल पाता है। ये सारे पादरी ऐसे ही लालची और लोभी हैं। जब यह आदमी पहली बार आया था तो उसने अच्छे पादरी होने का नाटक किया था। अब वह भी बाकियों की तरह ही है; उसे भी एक गाड़ी और डाक-गाड़ी चाहिए, उसे भी पुराने ज़माने के बिशपों की तरह विलासिता चाहिए। ओह, ये सारी पादरी व्यवस्था! जब तक सम्राट हमें इन काले टोपी वाले बदमाशों से मुक्त नहीं करा देते, तब तक हालात ठीक नहीं होंगे, श्रीमान कॉम्टे। पोप का नाश हो! जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं तो सिर्फ सीज़र के साथ हूँ।” इत्यादि, इत्यादि।

दूसरी ओर, इस घटना से मैडम मैग्लॉयर को बहुत खुशी हुई। उन्होंने मैडमोजेल बैपटिस्टिन से कहा, "अच्छा हुआ! महाशय ने दूसरों से शुरुआत की थी, लेकिन आखिरकार उन्हें खुद के साथ ही इसे समाप्त करना पड़ा। उन्होंने अपने सभी दान-पुण्य का हिसाब-किताब कर लिया है। अब हमारे लिए तीन हजार फ्रैंक आ गए! आखिरकार!"

उसी शाम बिशप ने अपनी बहन को निम्नलिखित शब्दों में एक ज्ञापन लिखकर सौंपा:—

परिवहन और यात्रा के व्यय

अस्पताल में मरीजों को मांस का सूप उपलब्ध कराने के लिए

1,500 लिवर

ऐक्स की मातृत्व धर्मार्थ संस्था के लिए

250 लिवर

ड्रैगुइग्नन की मातृत्व धर्मार्थ संस्था के लिए

250 लिवर

अनाथ बच्चों के लिए

500 लिवर

अनाथों के लिए

500 लिवर

कुल

3,000 लिवर

एम. मायरेल का बजट कुछ इस प्रकार था।

जहां तक आकस्मिक बिशपीय विशेषाधिकारों की बात है, जैसे विवाह निषेध, छूट, निजी बपतिस्मा, उपदेश, आशीर्वाद, चर्चों या चैपलों के शुल्क, विवाह आदि, बिशप इन्हें जरूरतमंदों को देने की तुलना में धनी लोगों से कहीं अधिक कठोरता से वसूलता था।

कुछ समय बाद, दान की आवक बढ़ने लगी। जिनके पास धन था और जिनके पास नहीं था, वे सभी एम. मिरियल के दरवाजे पर दस्तक देने लगे—धनवान लोग दान लेने के लिए आते थे, जो धनवान लोग जमा करने आते थे। एक वर्ष से भी कम समय में बिशप सभी परोपकार के कोषाध्यक्ष और संकट में पड़े सभी लोगों के सहायक बन गए। उनके हाथों से बड़ी मात्रा में धन गुजरा, लेकिन कोई भी बात उन्हें अपने जीवन शैली में कोई बदलाव करने या अपनी मूलभूत आवश्यकताओं से अधिक कुछ भी जोड़ने के लिए प्रेरित नहीं कर सकी।

ऐसा बिलकुल नहीं था। क्योंकि नीचे की गरीबी ऊपर की भाईचारे से कहीं अधिक होती है, इसलिए सब कुछ, मानो, मिलने से पहले ही दे दिया गया। यह सूखी मिट्टी पर पानी की तरह था; चाहे उसे कितना भी पैसा मिले, उसके पास कभी कुछ नहीं बचता था। फिर उसने खुद को निर्धन कर लिया।

यह प्रथा थी कि बिशप अपने उपदेशों और अपने पादरी पत्रों के आरंभ में अपने बपतिस्मा के नाम की घोषणा करते थे, इसलिए ग्रामीण इलाकों के गरीब लोगों ने एक प्रकार के स्नेहपूर्ण भाव से अपने बिशप के नामों और उपनामों में से वह नाम चुना जो उनके लिए विशेष अर्थ रखता था; और वे उन्हें हमेशा Monseigneur Bienvenu ही कहते थे। हम भी उनके उदाहरण का अनुसरण करेंगे और जब भी हमें

उनका नाम लेने का अवसर मिलेगा, हम उन्हें इसी नाम से पुकारेंगे। इसके अलावा, यह नाम उन्हें पसंद भी था।

उन्होंने कहा, "मुझे यह नाम पसंद है। बिएनवेनु नाम मोनसिग्नूर की कमी को पूरा करता है।"

हम यह दावा नहीं करते कि यहाँ प्रस्तुत चित्र सटीक है; हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि यह मूल चित्र से मिलता-जुलता है।

III. एक अच्छे बिशप के लिए एक कठिन बिशप पद

बिशप ने अपने रथ को दान-पुण्य में परिवर्तित कर दिया था, इसलिए उन्होंने अपने धार्मिक दौरों को नहीं छोड़ा। डी⸺ का धर्मप्रांत बहुत थकाऊ है। यहाँ मैदान बहुत कम और पहाड़ बहुत अधिक हैं; जैसा कि हमने अभी देखा, सड़कें लगभग न के बराबर हैं; बत्तीस क्यूरेसी, इकतालीस विकरशिप और दो सौ पचासी सहायक चैपल हैं। इन सभी का दौरा करना एक बड़ा काम है।

बिशप ने किसी तरह यह कर दिखाया। जब रास्ता आस-पास होता था तो वे पैदल चलते थे, जब मैदानी इलाका होता था तो झुकी हुई बत्तख पर सवार होकर जाते थे और पहाड़ों में गधे पर सवार होकर जाते थे। दो बूढ़ी औरतें उनके साथ जाती थीं। जब उनके लिए यात्रा बहुत कठिन हो जाती थी, तो वे अकेले ही चले जाते थे।

एक दिन वह सेनेज़ पहुंचे, जो एक प्राचीन बिशप नगर है। वह गधे पर सवार थे। उस समय उनके पास पैसे नहीं थे, इसलिए वे किसी और सवारी का इंतजाम नहीं कर सकते थे। नगर के महापौर उन्हें नगर के द्वार पर लेने आए और उन्हें गधे से उतरते देखकर अचंभित रह गए। कुछ नागरिक उनके आसपास हंस रहे थे। बिशप ने कहा, “महामहिम महापौर और माननीय नागरिकों, मुझे लगता है कि आप लोग मुझसे हैरान हैं। आप सोचते हैं कि एक गरीब पादरी का यीशु मसीह द्वारा इस्तेमाल किए गए जानवर पर सवारी करना बहुत घमंड की बात है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैंने ऐसा मजबूरी में किया है, घमंड से नहीं।”

इन यात्राओं के दौरान वे दयालु और उदार थे, और उपदेश देने के बजाय बातें करते थे। वे अपने तर्कों और उदाहरणों की खोज में कभी दूर नहीं जाते थे। वे एक जिले के निवासियों को पड़ोसी जिले का उदाहरण देते थे। जिन क्षेत्रों में गरीबों के साथ कठोर व्यवहार किया जाता था, वहाँ वे कहते थे: “ब्रायनकॉन के लोगों को देखो! उन्होंने गरीबों, विधवाओं और अनाथों को यह अधिकार दिया है कि उनके खेतों की कटाई बाकी सभी से तीन दिन पहले हो। जब उनके घर बर्बाद हो जाते हैं, तो वे बिना किसी शुल्क के उनका पुनर्निर्माण करते हैं। इसलिए यह ईश्वर द्वारा धन्य देश है। पूरे एक सदी से वहाँ एक भी हत्यारा नहीं हुआ है।”

होती हैं। लेकिन अज्ञानी होना कितना शर्मनाक है ! क्वेरास के लोगों की तरह बनो !”

इस प्रकार उन्होंने गंभीरता और पितृवत भाव से प्रवचन दिया ; उदाहरणों के अभाव में , उन्होंने दृष्टांतों का सहारा लिया , सीधे मुद्दे पर आते हुए , कम शब्दों और अनेक बिम्बों का प्रयोग किया , जो यीशु मसीह की वास्तविक वाक्पटुता की विशेषता थी। और स्वयं आश्वस्त होने के कारण , वे अत्यंत प्रभावशाली थे।

IV. शब्दों के अनुरूप रचनाएँ

उनकी बातचीत हंसमुख और सौहार्दपूर्ण थी। उन्होंने खुद को उन दो बुजुर्ग महिलाओं के बराबर समझा, जिन्होंने अपना जीवन उनके साथ बिताया था। जब वे हंसते थे, तो उनकी हंसी किसी स्कूली बच्चे जैसी होती थी। मैडम मैग्लॉयर उन्हें 'योर ग्रेस' कहकर पुकारना पसंद करती थीं। एक दिन वे अपनी कुर्सी से उठे और एक किताब की तलाश में अपनी लाइब्रेरी में गए। वह किताब ऊपरी अलमारियों में से एक पर थी। चूंकि बिशप कद में छोटे थे, इसलिए वे उस तक नहीं पहुंच सके। उन्होंने कहा, "मैडम मैग्लॉयर, मेरे लिए एक कुर्सी लाइए। मेरी महानता उस शेल्फ तक नहीं पहुंचती।"

उनकी एक दूर की रिश्तेदार, मैडम ला कॉम्टेस डी लो, उनके सामने अपने तीन बेटों की "उम्मीदों" का ब्योरा देने का शायद ही कोई मौका छोड़ती थीं। उनके कई रिश्तेदार थे, जो बहुत बूढ़े और मृत्यु के करीब थे, और जिनके उनके बेटे स्वाभाविक वारिस थे। तीनों बेटों में सबसे छोटे को अपनी एक बड़ी चाची से एक लाख लिवर की आमदनी मिलने वाली थी; दूसरा अपने चाचा ड्यूक की उपाधि का वारिस था; और सबसे बड़ा अपने दादा की कुलीन उपाधि का उत्तराधिकारी बनने वाला था। बिशप इन मासूम और क्षमा करने योग्य मातृ-प्रशंसाओं को चुपचाप सुनने के आदी थे। लेकिन एक बार, जब मैडम डी लो इन सभी विरासतों और "उम्मीदों" का विवरण फिर से बता रही थीं, तो वे सामान्य से अधिक विचारशील दिखाई दिए। उन्होंने अधीरता से अपनी बात रोकते हुए कहा, "हे भगवान, चचेरे भाई! आप क्या सोच रहे हैं?" बिशप ने उत्तर दिया, “मैं एक विलक्षण टिप्पणी के बारे में सोच रहा हूँ, जो मुझे लगता है कि सेंट ऑगस्टीन में पाई जाती है — ‘अपनी आशा उस व्यक्ति में रखो जिससे तुम्हें कोई उत्तराधिकार नहीं मिलता।’”

एक बार जब उन्हें ग्रामीण इलाके के एक सज्जन की मृत्यु की सूचना मिली, जिसमें न केवल मृतक की प्रतिष्ठा, बल्कि उनके सभी रिश्तेदारों की सामंती और कुलीन योग्यताओं का भी पूरे पृष्ठ पर वर्णन था, तो उन्होंने कहा: “मृत्यु की पीठ कितनी मजबूत है!” “उस पर उपाधियों का कितना अजीब बोझ खुशी-

खुशी थोपा गया है, और मनुष्य में कितनी बुद्धि होनी चाहिए कि वह इस तरह कब्र को भी अपनी शान-शौकत के लिए इस्तेमाल करे!”

उन्हें कभी-कभी हल्के-फुल्के व्यंग्य का हुनर प्राप्त था, जिसमें लगभग हमेशा एक गंभीर अर्थ छिपा होता था। एक बार उपवास के दौरान, एक युवा पादरी डो⸺ आए और गिरजाघर में उपदेश दिया। वे काफी वाक्पटु थे। उनके उपदेश का विषय दान था। उन्होंने धनी लोगों से गरीबों को दान देने का आग्रह किया, ताकि वे नरक से बच सकें, जिसका उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार सबसे भयावह तरीके से वर्णन किया, और स्वर्ग प्राप्त कर सकें, जिसे उन्होंने आकर्षक और वांछनीय बताया। श्रोताओं में एक धनी सेवानिवृत्त व्यापारी भी थे, जो कुछ हद तक सूदखोर थे, जिनका नाम एम. गेबोरैंड था, जिन्होंने मोटे कपड़े, सर्ज और ऊनी गल्लून के निर्माण में दो मिलियन की संपत्ति अर्जित की थी। एम. गेबोरैंड ने अपने पूरे जीवन में कभी किसी गरीब को दान नहीं दिया था। उस उपदेश के बाद, यह देखा गया कि वे हर रविवार को गिरजाघर के द्वार पर बैठी गरीब बूढ़ी भिखारी महिलाओं को एक सूक देते थे। इसे आपस में बाँटने के लिए छह लोग थे। एक दिन बिशप ने उन्हें दान देते हुए देख लिया और मुस्कुराते हुए अपनी बहन से कहा, "देखो, श्री गेबोरांड एक सूई में स्वर्ग खरीद रहे हैं।"

जब दान-पुण्य की बात आती थी, तो वे इनकार से भी विचलित नहीं होते थे, और ऐसे अवसरों पर वे ऐसी बातें कहते थे जो चिंतनशील होती थीं। एक बार वे शहर के एक ड्राइंग रूम में गरीबों के लिए भीख मांग रहे थे; वहाँ मार्क्विस डी चैम्पटरसियर भी मौजूद थे, जो एक धनी और लालची बूढ़े व्यक्ति थे, जो एक ही समय में कट्टर राजशाही समर्थक और कट्टर वोल्टेयरवादी होने का दिखावा करते थे। इस तरह के व्यक्ति वास्तव में मौजूद थे। जब बिशप उनके पास आए, तो उन्होंने उनका हाथ छूते हुए कहा, "आपको मुझे कुछ देना होगा, श्रीमान मार्क्विस।" मार्क्विस मुड़े और रूखेपन से उत्तर दिया, "मेरे अपने भी गरीब लोग हैं, महाशय।" "उन्हें मुझे दे दीजिए," बिशप ने उत्तर दिया।

एक दिन उन्होंने गिरजाघर में निम्नलिखित उपदेश दिया:

मेरे प्रिय भाइयों, मेरे प्रिय मित्रों, फ्रांस में तेरह लाख बीस हजार किसानों के घर ऐसे हैं जिनमें केवल तीन ही द्वार हैं; अठारह लाख सत्रह हजार झोपड़ियाँ ऐसी हैं जिनमें केवल दो ही द्वार हैं, एक दरवाजा और एक खिड़की; और इसके अलावा तीन लाख छियालीस हजार झोपड़ियाँ ऐसी हैं जिनमें केवल एक ही

द्वार है, एक दरवाजा। और यह सब दरवाजों और खिड़कियों पर लगने वाले कर के कारण है। ज़रा इन इमारतों में गरीब परिवारों, बूढ़ी महिलाओं और छोटे बच्चों को रख दीजिए, और देखिए कैसे बुखार और बीमारियाँ फैलती हैं! हाय! ईश्वर मनुष्य को हवा देता है; कानून उसे बेचता है। मैं कानून को दोष नहीं देता, बल्कि ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ। इस्सेर प्रांत में, वार में, आल्प्स के दो विभागों, हाउतेस और बेसेस में, किसानों के पास ठेले तक नहीं हैं; वे अपना गोबर आदमियों की पीठ पर लादकर ले जाते हैं; उनके पास मोमबत्तियाँ नहीं हैं, और वे राल लगी लकड़ियाँ और तारकोल में डूबी रस्सी के टुकड़े जलाते हैं। यही स्थिति पूरे पहाड़ी क्षेत्र में है। डौफिने। वे एक बार में छह महीने की रोटी बनाते हैं; वे इसे सूखे गोबर से पकाते हैं। सर्दियों में वे इस रोटी को कुल्हाड़ी से तोड़ते हैं और खाने योग्य बनाने के लिए चौबीस घंटे तक भिगोते हैं। हे मेरे भाइयों, दया करो! अपने चारों ओर फैले दुख को देखो!

प्रोवेंस में जन्मे होने के कारण, उन्होंने दक्षिण की बोली को आसानी से सीख लिया। वे कहते थे, “En bé! moussu, sés sagé?” (जैसा कि निचले लैंगडॉक में बोली जाती है); “Onté anaras passa?” (जैसा कि बेसेस-आल्प्स में बोली जाती है); “Puerte un bouen moutu embe un bouen fromage grase,” (जैसा कि ऊपरी डौफिने में बोली जाती है)। इससे लोग बेहद प्रसन्न हुए और उन्हें सभी का दिल जीतने में काफी मदद मिली। वे फूस की झोपड़ी और पहाड़ों में पूरी तरह सहज थे। वे सबसे सरल भाषा में भी बड़ी से बड़ी बातें कहना जानते थे। चूंकि वे सभी भाषाएँ बोलते थे, इसलिए वे सभी के दिलों में बस गए।

इसके अलावा, उनका रवैया आम लोगों और निम्न वर्गों के प्रति एक जैसा था। वे बिना सोचे-समझे और परिस्थितियों पर विचार किए बिना किसी बात की निंदा नहीं करते थे। उन्होंने कहा, "जिस रास्ते से गलती गुजरी है, उसकी जांच करो।"

जैसा कि उन्होंने मुस्कुराते हुए खुद को बताया, एक पूर्व पापी होने के नाते, उनमें तपस्या की कोई कठोरता नहीं थी, और उन्होंने बड़ी स्पष्टता से, और उग्र रूप से गुणी व्यक्ति के गुस्से के बिना, एक सिद्धांत का प्रतिपादन किया जिसे संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है:

मनुष्य पर उसका शरीर है, जो एक ही समय में उसका बोझ और प्रलोभन है। वह इसे अपने साथ ढोता है और इसके आगे झुक जाता है। उसे इस पर नज़र रखनी चाहिए, इसे

नियंत्रित करना चाहिए, इसे दबाना चाहिए और केवल अंतिम समय में ही इसका पालन करना चाहिए। इस आज्ञापालन में भी कुछ त्रुटि हो सकती है; लेकिन इस प्रकार की गई त्रुटि मामूली होती है; यह एक पतन है, लेकिन घुटनों के बल गिरने जैसा पतन जो प्रार्थना में समाप्त हो सकता है।

“संत होना अपवाद है; ईमानदार होना नियम है। गलती करो, गिरो, पाप करो, लेकिन ईमानदार रहो।”

“कम से कम पाप करना ही मनुष्य का नियम है। पाप न करना तो देवदूत का सपना है। जो कुछ भी सांसारिक है, वह पाप के अधीन है। पाप एक गुरुत्वाकर्षण है।”

जब उसने देखा कि सब लोग बहुत जोर से चिल्ला रहे हैं और जल्दी से क्रोधित हो रहे हैं, तो उसने मुस्कुराते हुए कहा, “ओह! ओह!” “देखने में तो ऐसा लगता है कि यह एक बड़ा अपराध है जो पूरी दुनिया कर रही है। ये पाखंडी लोग डर गए हैं और विरोध करने और शरण लेने के लिए जल्दबाजी कर रहे हैं।”

वह महिलाओं और गरीबों के प्रति उदार थे, जिन पर मानव समाज का भार है। उन्होंने कहा, "स्त्रियों, बच्चों, कमजोरों, निर्धनों और अज्ञानियों के दोष पतियों, पिताओं, स्वामियों, बलवानों, धनी और बुद्धिमानों के दोष हैं।"

उन्होंने आगे कहा, “अज्ञानियों को यथासंभव अधिक से अधिक ज्ञान दो; समाज दोषी है, क्योंकि वह निःशुल्क शिक्षा प्रदान नहीं करता; वह अंधकार के लिए उत्तरदायी है। यह आत्मा अंधकार से भरी है; इसमें पाप निहित है। दोषी वह व्यक्ति नहीं है जिसने पाप किया है, बल्कि वह व्यक्ति है जिसने अंधकार का सृजन किया है।”

यह बात समझ में आएगी कि चीजों को परखने का उनका अपना एक अनूठा तरीका था: मुझे संदेह है कि उन्होंने इसे सुसमाचार से प्राप्त किया था।

एक दिन ड्राइंग रूम में एक आपराधिक मामले पर चर्चा चल रही थी, जो सुनवाई के लिए तैयार हो रहा था। एक व्यथित व्यक्ति, जो आर्थिक तंगी से जूझ रहा था, ने एक स्त्री और उससे हुए अपने बच्चे के प्रेम में नकली नोट बनाए थे। उस समय नकली नोट बनाना मृत्युदंड के योग्य अपराध था। स्त्री को उस व्यक्ति द्वारा बनाए गए पहले नकली नोट को चलाते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया था। उसे हिरासत में रखा गया, लेकिन उसके खिलाफ सबूतों के अलावा कोई और सबूत नहीं था। केवल वही अपने प्रेमी पर आरोप लगा सकती थी और अपने कबूलनामे से

उसे बर्बाद कर सकती थी। उसने इनकार किया; वकीलों ने उस पर दबाव डाला। वह अपने इनकार पर अड़ी रही। तभी राज वकील के मन में एक विचार आया। उसने प्रेमी की बेवफाई का झूठा आरोप लगाया और चालाकी से पेश किए गए पत्रों के टुकड़ों के माध्यम से उस दुर्भाग्यशाली स्त्री को यह विश्वास दिलाने में सफल रहा कि उसका कोई प्रतिद्वंद्वी है और वह व्यक्ति उसे धोखा दे रहा है। तब ईर्ष्या से क्रोधित होकर उसने अपने प्रेमी की निंदा की, सब कुछ कबूल किया और सब कुछ साबित कर दिया।

वह आदमी बर्बाद हो चुका था। जल्द ही उस पर और उसके साथी पर ऐक्स में मुकदमा चलाया जाना था। वे आपस में मामला बता रहे थे और हर कोई मजिस्ट्रेट की चतुराई पर उत्साह व्यक्त कर रहा था। ईर्ष्या का सहारा लेकर उसने सच्चाई को क्रोध में प्रकट करवाया था, उसने प्रतिशोध का न्याय दिलाया था। बिशप चुपचाप यह सब सुन रहे थे। जब वे सब कुछ समाप्त कर चुके, तो उन्होंने पूछा—

“इस पुरुष और महिला पर मुकदमा कहाँ चलाया जाएगा?”

“अदालत में सुनवाई के दौरान।”

उन्होंने आगे कहा, "और राजशाही के वकील पर मुकदमा कहाँ चलाया जाएगा?"

डी⸺ में एक दुखद घटना घटी। एक व्यक्ति को हत्या के आरोप में मौत की सजा सुनाई गई। वह एक नीच व्यक्ति था, न तो बहुत पढ़ा-लिखा था और न ही पूरी तरह अनपढ़। वह मेलों में बाजीगर का काम करता था और जनता के लिए लिखता भी था। शहर के लोगों ने मुकदमे में बड़ी दिलचस्पी दिखाई। फांसी की सजा पाने वाले व्यक्ति के फांसी के दिन से एक दिन पहले, जेल का पादरी बीमार पड़ गया। अपराधी के अंतिम क्षणों में उसकी देखभाल के लिए एक पादरी की आवश्यकता थी। उन्होंने क्यूरे को बुलवाया। ऐसा लगता है कि उसने आने से इनकार कर दिया और कहा, “यह मेरा काम नहीं है। मुझे इस अप्रिय काम से और उस बाजीगर से कोई लेना-देना नहीं है; मैं भी बीमार हूँ; और वैसे भी, यह मेरा काम नहीं है।” यह जवाब बिशप को बताया गया, जिन्होंने कहा, “महाशय क्यूरे सही कह रहे हैं: यह उनका काम नहीं है; यह मेरा काम है।”

वह तुरंत जेल गए, उस पापी की कोठरी में उतरे, उसे नाम से पुकारा, उसका हाथ पकड़ा और उससे बातें कीं। उन्होंने पूरा दिन उसके साथ बिताया, भोजन और नींद को भूलकर, उस दोषी की आत्मा के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और उस दोषी

के लिए अपनी आत्मा की प्रार्थना की। उन्होंने उसे सबसे सरल और सर्वोत्तम सत्य बताए। वह उसके लिए पिता, भाई, मित्र थे; वे केवल आशीर्वाद देने के लिए बिशप थे। उन्होंने उसे सब कुछ सिखाया, प्रोत्साहित किया और सांत्वना दी। वह व्यक्ति निराशा में मरने की कगार पर था। मृत्यु उसके लिए एक अथाह खाई थी। जब वह उसके दुखद किनारे पर कांपते हुए खड़ा था, तो वह भय से पीछे हट गया। वह इतना अज्ञानी नहीं था कि पूरी तरह उदासीन हो जाए। उसकी निंदा, जो एक गहरा आघात थी, ने एक तरह से उस दीवार को तोड़ दिया था जो हमें चीजों के रहस्य से अलग करती है, जिसे हम जीवन कहते हैं। वह इन घातक दरारों से इस दुनिया से परे लगातार देखता रहा, और उसे केवल अंधकार ही दिखाई दिया। बिशप ने उसे प्रकाश दिखाया।

अगले दिन जब वे उस अभागे को लेने आए, तो बिशप अभी भी वहीं थे। वे उसके पीछे- पीछे गए और बैंगनी रंग के कैमल वस्त्र और गले में बिशप का क्रॉस पहने हुए, रस्सियों से बंधे अपराधी के साथ भीड़ के सामने आ गए।

वह उसके साथ गाड़ी में सवार हुए, उसके साथ फांसी के तख्ते पर चढ़े। पीड़ित, जो पिछले दिन इतना उदास और निराश था, आज प्रकाशमान था। उसने महसूस किया कि उसकी आत्मा को शांति मिल गई है, और उसने ईश्वर में आशा रखी। बिशप ने उसे गले लगाया, और जिस क्षण चाकू गिरने ही वाला था, उन्होंने उससे कहा: “ईश्वर उसे मृत्यु से जीवित करता है जिसे मनुष्य मार डालता है; जिसे उसके भाइयों ने ठुकरा दिया है, वह अपने पिता को फिर से पा लेता है। प्रार्थना करो, विश्वास करो, जीवन में प्रवेश करो: पिता वहीं है।” जब वह फांसी के तख्ते से नीचे उतरे, तो उनकी नज़र में कुछ ऐसा था कि लोग उन्हें रास्ता देने के लिए एक तरफ हट गए। वे नहीं जानते थे कि प्रशंसा के योग्य क्या था, उनका पीलापन या उनकी शांति। अपने साधारण से घर में लौटने पर, जिसे उन्होंने मुस्कुराते हुए अपना महल कहा, उन्होंने अपनी बहन से कहा, “मैंने अभी-अभी एक धार्मिक अनुष्ठान संपन्न किया है।”

चूंकि सबसे उत्कृष्ट चीजें अक्सर वे होती हैं जिन्हें सबसे कम समझा जाता है, इसलिए शहर में कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने बिशप के इस आचरण पर टिप्पणी करते हुए कहा, "यह दिखावा है।"

हालांकि, यह टिप्पणी केवल बैठक कक्षों तक ही सीमित रही। आम जनता, जो धार्मिक कार्यों में कोई उपहास नहीं देखती, उससे प्रभावित हुई और उसकी प्रशंसा की।

बिशप के लिए गिलोटिन को देखना एक गहरा सदमा था, और इससे उबरने में उन्हें काफी समय लगा।

दरअसल, जब फांसी का तख्ता पूरी तरह से खड़ा और तैयार होता है, तो उसमें कुछ ऐसा होता है जो भ्रम पैदा करता है। जब तक किसी ने अपनी आँखों से गिलोटिन नहीं देखा होता, तब तक वह मृत्युदंड के प्रति उदासीनता महसूस कर सकता है, इस पर कोई राय देने से बच सकता है, हाँ या ना कहने से बच सकता है: लेकिन अगर कोई इसे देख ले, तो सदमा बहुत गहरा होता है; उसे फैसला करने और पक्ष या विपक्ष में खड़े होने के लिए मजबूर होना पड़ता है। कुछ लोग इसकी प्रशंसा करते हैं, जैसे डी मैस्ट्रे; अन्य लोग इसकी निंदा करते हैं, जैसे बेकरिया। गिलोटिन कानून का मूर्त रूप है; इसे प्रतिशोध कहा जाता है; यह तटस्थ नहीं है, और यह आपको तटस्थ रहने की अनुमति नहीं देता है। जो इसे देखता है वह एक रहस्यमय सिहरन से कांप उठता है। सभी सामाजिक समस्याएं इस काटने वाले चाकू के चारों ओर अपना प्रश्नबिंदु स्थापित करती हैं। फांसी का तख्ता एक कल्पना है। फांसी का तख्ता कोई लकड़ी का काम नहीं है; फांसी का तख्ता कोई मशीन नहीं है; मचान लकड़ी, लोहे और रस्सियों से निर्मित कोई निष्क्रिय यंत्र नहीं है।

ऐसा लगता है मानो यह कोई प्राणी हो, जिसमें न जाने कौन सी भयावह पहल शक्ति समाहित हो; ऐसा लगता है मानो बढ़ई की इस कृति ने देखा हो, इस मशीन ने सुना हो, इस यंत्र ने समझा हो, इस लकड़ी, इस लोहे और इन रस्सियों में इच्छाशक्ति हो। इसकी उपस्थिति से आत्मा जिस भयावह चिंतन में लीन हो जाती है, उसमें फांसी का तख़्ता एक भयानक रूप में प्रकट होता है, मानो वह चल रही घटना में भागीदार हो। फांसी का तख़्ता जल्लाद का साथी है; यह भक्षण करता है, मांस खाता है, खून पीता है; फांसी का तख़्ता न्यायाधीश और बढ़ई द्वारा गढ़ा गया एक प्रकार का राक्षस है, एक प्रेत जो अपने द्वारा किए गए सभी मृत्यु के तत्वों से बनी एक भयानक जीवंतता के साथ जीवित प्रतीत होता है।

इसलिए, इसका प्रभाव भयावह और गहरा था; फांसी के अगले दिन और उसके बाद कई दिनों तक बिशप पूरी तरह टूट चुके थे। अंतिम संस्कार के क्षण की लगभग हिंसक

शांति गायब हो गई थी; सामाजिक न्याय का भ्रम उन्हें सता रहा था। जो आम तौर पर अपने सभी कार्यों से एक उज्ज्वल संतुष्टि के साथ लौटते थे, वे मानो खुद को कोस रहे थे। कभी-कभी वे खुद से बातें करते थे और धीमी आवाज में उदास स्वर में बड़बड़ाते थे। उनकी बहन ने एक शाम ये शब्द सुने और सहेज लिए: “मैंने नहीं सोचा था कि यह इतना भयानक होगा। ईश्वरीय कानून में इतना लीन हो जाना कि मानवीय कानून को न समझ पाना गलत है। मृत्यु केवल ईश्वर की है। मनुष्य को उस अज्ञात वस्तु को छूने का क्या अधिकार है?”

समय बीतने के साथ ये धारणाएँ कमजोर पड़ गईं और संभवतः लुप्त हो गईं। फिर भी, यह देखा गया कि बिशप ने उसके बाद से फांसी के स्थान के पास से गुजरना बंद कर दिया।

श्री मिरियल को किसी भी समय बीमार और मरणासन्न लोगों के पास बुलाया जा सकता था। वे इस तथ्य को नहीं भूले कि यही उनका सबसे बड़ा कर्तव्य और सबसे बड़ा परिश्रम था। विधवा और अनाथ परिवारों को उन्हें बुलाने की आवश्यकता नहीं थी; वे स्वयं ही आ जाते थे। वे जानते थे कि अपने प्रिय की पत्नी को खोने वाले व्यक्ति के पास, अपने बच्चे को खोने वाली माँ के पास, घंटों तक चुपचाप कैसे बैठना है। जिस प्रकार वे मौन के क्षण को जानते थे, उसी प्रकार वे बोलने के क्षण को भी जानते थे। हे अद्भुत सांत्वनादाता! उन्होंने शोक को विस्मृति से मिटाने का प्रयास नहीं किया, बल्कि आशा से उसे बढ़ाने और गरिमा प्रदान करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा:—

“मृतकों की ओर देखने के अपने तरीके पर ध्यान दें। जो नाशवान है, उसके बारे में न सोचें। एकाग्र दृष्टि रखें। आप स्वर्ग की गहराइयों में अपने प्रिय दिवंगत आत्माओं का जीवंत प्रकाश देखेंगे।” वे जानते थे कि आस्था लाभकारी होती है। उन्होंने निराश व्यक्ति को शांत करने और सांत्वना देने का प्रयास किया, उसे शांत व्यक्ति का उदाहरण देकर, और एक तारे पर टकटकी लगाए शोक को दिखाकर, कब्र पर टकटकी लगाए शोक को रूपांतरित करने का प्रयास किया।

XX. XXXXXXXXXX XXXXXXXX XX XXXX XXXXXXX XX XXXX XXXX XXX XX XXXX XXX

XX. XXXXXX XX XXXX XXXX XX XXXXXX XXXXXXX XX XXX XXX XX XX XXXX XXXXXXXXX XXXX XXX XXX XXX XX XXXX XXXXXX XXXXXXXX XX XXXXX XX XXXXX, XXXX XX XXX XXXXXXX XX XXX XX XXXXX XX XXXXXX XXXXX XXX XXXX XXXXX XXX XXXX XX XXXX XXX

XXX XXXXX XXXXXXX XX XXXXXXX XXXXXXXX XX XXX, XX XX XXXX XXX XXXX XX XXXXXXXXX XXXX XX XXX XXXXXX XXXXX XXX XXXX XX XX XXXX XXXXX XXXX, XXX XXXXXXX XX XXXX XX XXX XXXXXXXXX XXXXX XXXXXXXXX XX XXX, XX XXXX XXXXX XX XXX XXX XXXX XXX XX XXXX XX XXXX XXXXX XXXXXXX XXX XX XXX XX XX XXXXX

XX XXXX XXXX XXXXXX XXXXXXX XXXX XX: XXX XXXXXXXX XXXXXX XX XXXX XX XXXXX XXXX XX, XX XXXXX XX XX XXXX XXXX XX, XX XXXX XX XXX XXXX XXXX-XXXXXX XX XX XXXXX XXXX XXX XXX XXXXXXXX XX XXXXX XXXXX XXXX XX, XXXXXXXXXXX XXXXXX XXXX XXXX XXX, XXXXXXXXX-XXXXXXXX, XXXXXXXX XX XXXXXXXXXX, XXXXXX XXXXX XXX XX XXXX XXXX XXXXXXXXX XX XXXXXX XXXX XXXX XX, XXXX XXXXX XXXX XXX, XXXXXXX XX XXXXXX XXXX XXXX XX, XXXXXX XX XXXXXX XX XXX XXXXXXXX XXXXXXX XXXX XXXX XX, XXXXXXXX XX XXX XXXXXXXX XXXX XXXX XX, XXXXXXXXX XXXXXXXX XXXX XXXX XX; XX XXX XXXXX XXXX XX, XXXXX XXX XXXX XX; XX XXXXXX XXXX XXXXXXXXXX XXXXX XXXX XXXX

XXXXXX, XXXXXXXX XX XXXXXXX XXXXXXXX XX XXXXX XX XXX XX XX XXX XXXX XX, XX XXXX XXXX XXXXXXXXXX, XXXXXXX XX XXXXXXXX XX XXXX XXX XXXXX XX; XX XX XXX XX XXXXX XX XXX XXXX XX, XXX XXX XXX XXXXX XXX XXX XX XXXX XXXXX XXX XXXXX XXXX XX; XXX XXXXX XX XXXXX XXX XX XXXXX XXX XX XXXXXXX XX XXX XXXX XXX XX XX XXXX XX; XX XXXXXX "XXXXXXX" XXXX XXX XXXXXXXX XXX, "XX XX XXXXX XXX"

दोपहर के समय, जब मौसम सुहावना होता था, वह बाहर निकलकर गाँव या शहर में टहलने जाता था, अक्सर छोटे-छोटे घरों में भी जाता था। उसे अक्सर अकेले चलते देखा जाता था, अपने विचारों में डूबा हुआ, नज़रें झुकी हुई, अपनी लंबी छड़ी के सहारे, रेशम के अपने गर्म, गद्देदार बैंगनी वस्त्र में, मोटे जूतों के अंदर बैंगनी मोज़े पहने हुए, और सिर पर एक चपटी टोपी लगाए हुए, जिसके तीन कोनों से सोने के तीन बड़े लटकन लटक रहे होते थे।

जहां भी वे प्रकट होते, वहां उत्सव जैसा माहौल बन जाता था। ऐसा लगता था मानो उनकी उपस्थिति में एक अलग ही गर्माहट और प्रकाश का संचार हो रहा हो। बच्चे और बुजुर्ग लोग बिशप के लिए वैसे ही दरवाजे पर आ जाते थे जैसे सूर्य के लिए। वे अपना आशीर्वाद देते थे और वे उन्हें आशीर्वाद देते थे।
जरूरतमंदों को वे उनका घर दिखाते थे।

वह जगह-जगह रुकता, छोटे बच्चों से बात करता और उनकी माताओं को देखकर मुस्कुराता। जब तक उसके पास पैसे थे, वह गरीबों की सेवा करता रहा; जब उसके पास पैसे खत्म हो गए, तो वह अमीरों की सेवा करने लगा।

क्योंकि वह अपने वस्त्रों को लंबे समय तक इस्तेमाल करता था और नहीं चाहता था कि किसी को इस बात का पता चले, इसलिए वह कभी भी अपने गद्देदार बैंगनी लबादे के बिना शहर में बाहर नहीं निकलता था। गर्मियों में इससे उसे थोड़ी असुविधा होती थी।

वापस लौटने पर उन्होंने भोजन किया। भोजन उनके नाश्ते जैसा ही था।

शाम साढ़े आठ बजे उन्होंने अपनी बहन के साथ भोजन किया, मैडम मैग्लॉयर उनके पीछे खड़ी होकर उन्हें खाना परोस रही थीं। यह भोजन अत्यंत सादा था। हालांकि, यदि बिशप अपने किसी पादरी को भोजन पर बुलाते, तो मैडम मैग्लॉयर इस अवसर का लाभ उठाकर महाशय को झील से पकड़ी गई कुछ बेहतरीन मछली या पहाड़ों से लाया गया कुछ बढ़िया शिकार परोसतीं। हर पादरी एक अच्छे भोजन का बहाना बन जाता था: बिशप इसमें हस्तक्षेप नहीं करते थे। इस अपवाद के अलावा, उनका सामान्य आहार केवल पानी में उबली हुई सब्जियां और तेल का सूप होता था। इसलिए शहर में कहा जाता था, "जब बिशप किसी पादरी के साथ भोजन नहीं करते, तो वे किसी घुमंतू व्यापारी के साथ भोजन करते हैं।"

रात के भोजन के बाद उन्होंने मैडमोजेल बैपटिस्टीन और मैडम मैग्लॉयर से आधे घंटे तक बातचीत की; फिर वे अपने कमरे में चले गए और लिखने में जुट गए, कभी-कभी अलग-अलग पन्नों पर, और कभी-कभी किसी पन्ने के हाशिये पर। वे एक विद्वान और काफी ज्ञानी व्यक्ति थे। वे अपने पीछे पाँच या छह अत्यंत रोचक पांडुलिपियाँ छोड़ गए; जिनमें से एक उत्पत्ति की इस आयत पर एक शोध प्रबंध है, “आदि में, परमेश्वर की आत्मा जल पर मंडरा रही थी।” इस आयत की तुलना वे तीन ग्रंथों से करते हैं: अरबी आयत जिसमें लिखा है, “परमेश्वर की हवाएँ चलीं;” फ्लेवियस जोसेफस जो कहते हैं, “ऊपर से एक हवा पृथ्वी पर गिरी;” और अंत में, ओन्केलोस की चाल्डाइक व्याख्या, जो इसे इस प्रकार प्रस्तुत करती है, “परमेश्वर से आने वाली एक हवा जल की सतह पर चली।” एक अन्य शोध प्रबंध में, वह टॉलेमाइस के बिशप ह्यूगो के धार्मिक कार्यों की जांच करते हैं, जो इस पुस्तक के लेखक के परदादा थे, और इस तथ्य को स्थापित करते हैं कि बार्लीकोर्ट के छद्म नाम से पिछली शताब्दी के दौरान प्रकाशित विभिन्न लघु कृतियों का श्रेय इसी बिशप को दिया जाना चाहिए।

कभी-कभी, पढ़ते-पढ़ते, चाहे उनके हाथ में कोई भी किताब हो, वे अचानक गहरी सोच में डूब जाते थे, और फिर उससे बाहर आकर किताब के पन्नों पर कुछ पंक्तियाँ लिख देते थे। इन पंक्तियों का अक्सर उस किताब से कोई संबंध नहीं होता था। अब हमारे सामने एक ऐसी टिप्पणी है जो उन्होंने एक क्वार्टो आकार की किताब के हाशिये पर लिखी है, जिसका शीर्षक है "लॉर्ड जर्मेन का जनरल क्लिंटन, कॉर्नवालिस और अमेरिकी स्टेशन पर तैनात एडमिरलों के साथ पत्राचार। वर्साय, पोइनकोट, पुस्तक विक्रेता; और पेरिस, पिसोट, पुस्तक विक्रेता, क्वाई डेस ऑगस्टिन्स।"

यह रहा नोट:—

ओह, आप कौन हैं!

उपदेशक आपको सर्वशक्तिमान कहता है; मक्काबी आपको सृष्टिकर्ता कहते हैं; इफिसियों को लिखे पत्र में आपको स्वतंत्रता कहा गया है; बारूक आपको विशालता कहता है; भजन संहिता आपको ज्ञान और सत्य कहती है; यूहन्ना आपको प्रकाश कहता है; राजाओं की पुस्तकें आपको प्रभु कहती हैं; निर्गमन आपको ईश्वरीय कृपा कहता है; लैव्यव्यवस्था आपको पवित्रता कहती है; एज्रा आपको

न्याय कहता है; सृष्टि आपको ईश्वर कहती है; मनुष्य आपको पिता कहता है; लेकिन सुलैमान आपको करुणा कहता है, और यही आपका सबसे सुंदर नाम है।
शाम को लगभग नौ बजे दोनों महिलाएं सोने चली गईं और पहली मंजिल पर स्थित अपने कमरों में चली गईं, उन्हें सुबह तक भूतल पर अकेला छोड़ दिया।
यह आवश्यक है कि हम इस स्थान पर डी के बिशप के निवास का सटीक विवरण दें।

VI. जिसने उसके घर की रक्षा की

जैसा कि हमने बताया है, जिस घर में वे रहते थे, उसमें एक भूतल और एक ऊपरी मंजिल थी; भूतल पर तीन कमरे, पहली मंजिल पर तीन कक्ष और ऊपर एक अटारी थी। घर के पीछे एक चौथाई एकड़ का बगीचा था। दोनों महिलाएं पहली मंजिल पर रहती थीं; बिशप नीचे रहते थे। सड़क की ओर खुलने वाला पहला कमरा उनके भोजन कक्ष के रूप में इस्तेमाल होता था, दूसरा उनका शयनकक्ष था और तीसरा उनका प्रार्थना कक्ष। इस प्रार्थना कक्ष से बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता शयनकक्ष से होकर गुजरना था, और शयनकक्ष से बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता भोजन कक्ष से होकर गुजरना था। प्रार्थना कक्ष के अंत में, एक अलग से बना हुआ कमरा था जिसमें एक पलंग था, जिसका उपयोग अतिथियों के आने पर किया जाता था। बिशप यह पलंग उन ग्रामीण पादरियों को देते थे जिन्हें काम या अपने चर्च की आवश्यकताओं के कारण यहाँ आना पड़ता था।

अस्पताल की दवाखाना, जो घर से सटी हुई एक छोटी इमारत थी और बगीचे से मिलती- जुलती थी, को रसोई और तहखाने में बदल दिया गया था। इसके अलावा, बगीचे में एक अस्तबल था, जो पहले अस्पताल की रसोई हुआ करता था और जिसमें बिशप दो गायें रखते थे। वे चाहे जितना भी दूध दें, वे हर सुबह उसका आधा हिस्सा अस्पताल में बीमार लोगों को भेज देते थे।

उन्होंने कहा, "मैं अपना दशमांश अदा कर रहा हूं।"

उनका शयनकक्ष काफ़ी बड़ा था, लेकिन खराब मौसम में उसे गर्म रखना थोड़ा मुश्किल था। चूंकि डी⸺ में लकड़ी बहुत महंगी थी, इसलिए उन्हें गौशाला में तख्तों का एक कमरा बनवाने का विचार आया। कड़ाके की ठंड के मौसम में वे अपनी शामें यहीं बिताते थे: वे इसे अपना "शीतकालीन सभागार" कहते थे।

इस शीतकालीन कक्ष में, भोजन कक्ष की तरह, सफेद लकड़ी की एक चौकोर मेज और चार पुआल की कुर्सियों के अलावा कोई अन्य फर्नीचर नहीं था। इसके अतिरिक्त, भोजन कक्ष को गुलाबी रंग से रंगे एक प्राचीन साइडबोर्ड से सजाया गया था। इसी तरह के एक साइडबोर्ड से, जिसे सफेद नैपकिन और नकली लेस से खूबसूरती से

सजाया गया था, बिशप ने वह वेदी बनाई थी जो उनके प्रार्थना कक्ष की शोभा बढ़ाती थी।

उनके धनी तपस्वियों और डी की संत महिलाओं ने कई बार महाशय के प्रार्थना कक्ष के लिए एक नई वेदी बनाने हेतु धन जुटाने के लिए स्वयं को दान के रूप में प्रस्तुत किया था; हर बार उन्होंने वह धन लेकर गरीबों को दे दिया था। उन्होंने कहा, "सबसे सुंदर वेदी वह है जब किसी दुखी प्राणी की आत्मा को सांत्वना मिलती है और वह ईश्वर का धन्यवाद करती है।"

उनके प्रार्थना कक्ष में पुआल से बनी दो प्रार्थना कुर्सियाँ थीं, और उनके शयनकक्ष में भी पुआल की एक आरामकुर्सी थी। जब कभी संयोगवश उनके यहाँ एक साथ सात या आठ लोग आते थे, जैसे कि प्रीफेक्ट, जनरल, गैरीसन में तैनात रेजिमेंट के कर्मचारी, या छोटे से सेमिनरी के कई छात्र, तो कुर्सियाँ अस्तबल में बने शीतकालीन कक्ष से, प्रार्थना कुर्सियाँ प्रार्थना कक्ष से और आरामकुर्सी शयनकक्ष से लानी पड़ती थीं। इस तरह आगंतुकों के लिए ग्यारह कुर्सियाँ तक जुटाई जा सकती थीं। प्रत्येक नए अतिथि के लिए एक कमरा खाली करना पड़ता था।

कभी-कभी ऐसा होता था कि समूह में बारह लोग होते थे; तब बिशप सर्दियों में चिमनी के सामने खड़े होकर या गर्मियों में बगीचे में टहलकर स्थिति की असुविधा को दूर करते थे।

अलग बने आले में एक और कुर्सी थी, लेकिन उस पर से भूसा आधा हट चुका था और उसके केवल तीन ही पैर थे, इसलिए दीवार के सहारे रखने पर ही वह काम आती थी। मैडमोजेल बैपटिस्टीन के अपने कमरे में लकड़ी की एक बहुत बड़ी आरामकुर्सी भी थी, जिस पर पहले सोने की परत चढ़ी हुई थी और जो फूलों वाले पेकिन के कपड़े से ढकी हुई थी; लेकिन सीढ़ी बहुत संकरी होने के कारण उन्हें इस आरामकुर्सी को खिड़की के रास्ते पहली मंजिल तक उठाना पड़ा था; इसलिए इसे फर्नीचर के विकल्पों में नहीं गिना जा सकता।

मैडमोजेल बैपटिस्टीन की ख्वाहिश थी कि वह पीले उट्रेक्ट मखमल से बना, गुलाब के पैटर्न वाला, महोगनी की लकड़ी का, हंस की गर्दन जैसी शैली का सोफा सहित ड्राइंग रूम का फर्नीचर सेट खरीद सकें। लेकिन इसकी कीमत कम से कम पांच सौ फ्रैंक होती, और चूंकि वह पांच साल में इस उद्देश्य के लिए केवल

बयालीस फ्रैंक और दस सू ही जमा कर पाई थीं, इसलिए उन्होंने अंततः यह विचार छोड़ दिया। लेकिन भला ऐसा कौन है जिसने अपने सपने को साकार किया हो?

बिशप के शयनकक्ष की कल्पना करना सबसे आसान है। एक कांच का दरवाजा बगीचे की ओर खुलता था; इसके सामने पलंग था—एक अस्पताल का लोहे का पलंग, हरे रंग के सर्ज के चंदवा से ढका हुआ; पलंग की छाया में, एक पर्दे के पीछे, शौचालय के सामान रखे थे, जो अब भी उस दुनियादार व्यक्ति की सुरुचिपूर्ण आदतों को दर्शाते थे: दो दरवाजे थे, एक चिमनी के पास, जो प्रार्थना कक्ष में खुलता था; दूसरा किताबों की अलमारी के पास, जो भोजन कक्ष में खुलता था। किताबों की अलमारी कांच के दरवाजों वाली एक बड़ी अलमारी थी जो किताबों से भरी हुई थी; चिमनी लकड़ी की बनी थी जिस पर संगमरमर जैसा दिखने वाला रंग किया गया था, और आमतौर पर उसमें आग नहीं जलती थी। चिमनी में लोहे के दो अग्निरोधक लगे थे, जिनके ऊपर दो मालाओं से सजे फूलदान और खांचे थे जिन पर पहले चांदी की पत्ती चढ़ाई गई थी, जो एक प्रकार की बिशप की विलासिता थी; चिमनी के ऊपर तांबे का एक क्रूस लटका हुआ था, जिसकी चांदी घिस चुकी थी, जो एक लकड़ी के फ्रेम में घिसे हुए मखमल की पृष्ठभूमि पर लगा हुआ था, जिस पर से सोने की परत उतर चुकी थी; कांच के दरवाजे के पास एक बड़ी मेज है जिस पर स्याही रखने वाला स्टैंड रखा है, और वह कागजों के ढेर और बड़ी-बड़ी किताबों से लदी हुई है; मेज के सामने पुआल की एक कुर्सी है; बिस्तर के सामने प्रार्थना कक्ष से उधार ली गई एक प्रार्थना-पुजारी की कुर्सी है।

बिस्तर के दोनों ओर दीवार पर अंडाकार फ्रेम में दो चित्र लगे हुए थे। इन चित्रों के बगल में कपड़े की सादी सतह पर छोटे सुनहरे अक्षरों में खुदे हुए शिलालेखों से पता चलता था कि एक चित्र सेंट क्लाउड के बिशप, चालियट के एब्बे का है; दूसरा, चार्ट्रेस धर्मप्रांत के सिटो संप्रदाय के ग्रैंड-चैंप के एब्बे, एग्डे के विकर-जनरल, एब्बे टोर्टो का है। जब बिशप ने अस्पताल के रोगियों के बाद इस कक्ष का कार्यभार संभाला, तो उन्हें ये चित्र वहीं मिले और उन्होंने इन्हें वहीं छोड़ दिया। ये चित्र पुरोहितों के थे, और संभवतः दानदाता भी थे—इन चित्रों का सम्मान करने के दो कारण थे। इन दोनों व्यक्तियों के बारे में उन्हें बस इतना ही पता था कि राजा ने उन्हें एक ही दिन, 27 अप्रैल, 1785 को, नियुक्त किया था, एक को उनके बिशप पद पर और दूसरे को उनके लाभ के पद पर। मैडम मैग्लॉयर द्वारा चित्रों को धूल

झाड़ने के लिए नीचे उतारने पर, बिशप को ग्रैंड-चैंप के एब्बे के चित्र के पीछे चार पतली पट्टियों से चिपके हुए, समय के साथ पीले पड़ चुके कागज के एक छोटे से चौकोर टुकड़े पर सफेद स्याही से लिखे ये विवरण मिले।

उनकी खिड़की पर मोटे ऊन का एक पुराना पर्दा लगा हुआ था, जो अंततः इतना पुराना हो गया कि नया पर्दा खरीदने के खर्च से बचने के लिए मैडम मैग्लॉयर को उसके ठीक बीच में एक बड़ी सिलाई करनी पड़ी। यह सिलाई क्रॉस के आकार की थी। बिशप अक्सर इस पर ध्यान दिलाते हुए कहते थे, "यह कितना सुंदर है!"

घर के सभी कमरे, बिना किसी अपवाद के, चाहे वे भूतल पर हों या पहली मंजिल पर, सफेदी से पुते हुए थे, जो कि बैरकों और अस्पतालों में एक चलन है।

हालांकि, अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, मैडम मैग्लॉयर ने धोए गए कागज़ के नीचे, मैडमोजेल बैपटिस्टाइन के अपार्टमेंट को सजाने वाली पेंटिंग्स पाईं, जैसा कि हम आगे देखेंगे। अस्पताल बनने से पहले, यह घर बुर्जुआ वर्ग का प्राचीन संसद भवन था। इसीलिए यह सजावट थी। कमरों में लाल ईंटें लगी थीं, जिन्हें हर हफ्ते धोया जाता था, और सभी बिस्तरों के सामने पुआल की चटाइयाँ बिछी थीं। कुल मिलाकर, यह घर, जिसकी देखभाल ये दोनों महिलाएं करती थीं, ऊपर से नीचे तक बेहद साफ-सुथरा था। यह एकमात्र विलासिता थी जिसकी अनुमति बिशप ने दी थी। उन्होंने कहा, "इससे गरीबों का कुछ नहीं बिगड़ता।"

यह स्वीकार करना होगा कि उनके पास अभी भी अपनी पुरानी संपत्ति से छह चांदी के चाकू-कांटे और एक सूप का चम्मच बचा हुआ था, जिन्हें मैडम मैग्लॉयर प्रतिदिन बड़े चाव से देखती थीं, क्योंकि वे मोटे लिनेन के कपड़े पर शानदार ढंग से चमकते थे। और चूंकि अब हम डी के बिशप का चित्रण उनके वास्तविक स्वरूप में कर रहे हैं, इसलिए यह भी बताना आवश्यक है कि उन्होंने एक से अधिक बार कहा था, "मुझे चांदी के बर्तनों में खाना छोड़ना मुश्किल लगता है।"

इन चांदी के बर्तनों के साथ-साथ चांदी के दो बड़े मोमबत्ती स्टैंड भी शामिल हैं, जो उन्हें अपनी एक परदादी से विरासत में मिले थे। इन मोमबत्ती स्टैंडों में दो मोमबत्तियां रखी जाती थीं और ये आमतौर पर बिशप के चिमनी के ऊपर रखे रहते थे। जब भी बिशप के घर कोई मेहमान आता, मैडम मैग्लॉयर दोनों मोमबत्तियां जलाकर मोमबत्ती स्टैंडों को मेज पर रख देती थीं।

बिशप के निजी कक्ष में, उनके पलंग के सिरहाने एक छोटी सी अलमारी थी, जिसमें मैडम मैग्लॉयर हर रात चांदी के छह चाकू, कांटे और बड़ा चम्मच बंद कर देती थीं। लेकिन यह बताना आवश्यक है कि चाबी कभी नहीं निकाली जाती थी।

जिन बदसूरत इमारतों का हमने ज़िक्र किया है, उनके कारण बगीचा कुछ हद तक बदहाल हो चुका था। यह बगीचा एक तालाब से निकलती हुई चार संकरी गलियों से बना था, जो एक-दूसरे को काटती थीं। एक और रास्ता बगीचे का चक्कर लगाता था और उसे घेरने वाली सफ़ेद दीवार के किनारे-किनारे चलता था। इन गलियों के पीछे चार वर्गाकार भूखंड थे, जिनके चारों ओर बॉक्सवुड के पौधे लगे थे। इनमें से तीन में मैडम मैग्लॉयर सब्ज़ियाँ उगाती थीं; चौथे में बिशप ने कुछ फूल लगाए थे; और इधर-उधर कुछ फलों के पेड़ भी थे। मैडम मैग्लॉयर ने एक बार हल्के व्यंग्य के साथ कहा था: “महामहिम, आप जो हर चीज़ का सदुपयोग करते हैं, फिर भी आपके पास एक बेकार भूखंड है। वहाँ गुलदस्तों की बजाय सलाद उगाना बेहतर होगा।” “मैडम मैग्लॉयर,” बिशप ने जवाब दिया, “आप गलत हैं। सुंदर वस्तु उतनी ही उपयोगी होती है जितनी उपयोगी वस्तु।” उन्होंने थोड़ी देर रुककर कहा, “शायद उससे भी ज़्यादा।”

तीन-चार क्यारियों वाला यह भूखंड बिशप को लगभग उतना ही व्यस्त रखता था जितना कि उनकी किताबें। उन्हें वहाँ एक-दो घंटे बिताना अच्छा लगता था, वे छंटाई करते, निराई करते और जगह-जगह मिट्टी में गड्ढे खोदते, जिनमें वे बीज बोते थे। वे कीड़ों के प्रति उतने शत्रुतापूर्ण नहीं थे जितना कि एक माली उन्हें देखना चाहता। इसके अलावा, उन्होंने वनस्पति विज्ञान का कोई दावा नहीं किया; उन्होंने वर्गीकरण और संगति को नज़रअंदाज़ किया; उन्होंने टूरनेफोर्ट और प्राकृतिक विधि के बीच कोई अंतर करने का प्रयास नहीं किया; उन्होंने न तो कलियों और बीजपत्रों के बीच बहस की, न ही जुसियू और लिनियस के बीच। उन्होंने पौधों का अध्ययन नहीं किया; उन्हें फूलों से प्रेम था। वे विद्वानों का बहुत सम्मान करते थे; वे अज्ञानियों का और भी अधिक सम्मान करते थे; और इन दोनों मामलों में कभी भी चूक न करते हुए, वे हर ग्रीष्म ऋतु की शाम को हरे रंग से रंगे टिन के पानी के बर्तन से अपनी फूलों की क्यारियों में पानी डालते थे।

घर में एक भी ऐसा दरवाजा नहीं था जिसे ताला लगाया जा सके। जैसा कि हमने बताया, भोजन कक्ष का दरवाजा सीधे गिरजाघर के चौक पर खुलता था, और पहले उस

पर जेल के दरवाजे की तरह ताले और कुंडी लगी हुई थीं। बिशप ने वह सारा लोहे का काम हटवा दिया था, और तब से यह दरवाजा रात-दिन कभी भी कुंडी के अलावा किसी और चीज से बंद नहीं होता था। किसी भी राहगीर को बस इसे धक्का देना होता था। पहले तो दोनों महिलाएं इस दरवाजे से बहुत परेशान थीं, जो कभी बंद नहीं होता था, लेकिन महाशय डी डी ने उनसे कहा, "अगर आपको अच्छा लगे तो अपने कमरों में कुंडी लगवा लीजिए।" अंत में वे उनकी बात मान गईं, या कम से कम ऐसा दिखावा करने लगीं जैसे वे उनकी बात मान रही हों। केवल मैडम मैग्लॉयर को ही कभी-कभार डर लगता था। बिशप के विचार को बाइबिल के हाशिये पर लिखी गई उनकी तीन पंक्तियों में समझाया जा सकता है, या कम से कम संकेत दिया जा सकता है, "यही अंतर की छाया है: चिकित्सक का द्वार कभी बंद नहीं होना चाहिए, पुजारी का द्वार हमेशा खुला रहना चाहिए।"

चिकित्सा विज्ञान के दर्शन नामक एक अन्य पुस्तक पर उन्होंने यह टिप्पणी लिखी थी: "क्या मैं भी उन्हीं की तरह एक चिकित्सक नहीं हूँ? मेरे भी मरीज़ हैं, और कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें मैं अपने दुर्भाग्यशाली कहता हूँ।"

फिर उन्होंने लिखा: “जो आपसे आश्रय मांगे, उसका नाम मत पूछो। असल में, जिस व्यक्ति को अपने नाम से शर्म आती है, उसे ही आश्रय की आवश्यकता है।”

संयोगवश, एक सम्मानित पादरी (मुझे नहीं पता कि वह कौलूब्रूक्स के पादरी थे या पोम्पिएरी के) ने एक दिन उनसे पूछने का मन बनाया, शायद मैडम मैग्लॉयर के कहने पर, कि क्या महोदय को यकीन है कि वे अपने दरवाजे को दिन-रात खुला छोड़कर, किसी भी आने-जाने वाले के भरोसे छोड़कर, कुछ हद तक कोई गलती तो नहीं कर रहे हैं, और संक्षेप में, क्या उन्हें इस बात का डर नहीं है कि इतने कम सुरक्षा वाले घर में कोई दुर्घटना हो सकती है। बिशप ने सौम्य भाव से उनके कंधे पर हाथ रखा और उनसे कहा, “Nisi Dominus custodierit domum, in vanum vigilant qui custodiunt eam.” (यदि प्रभु घर की रक्षा न करे, तो उसकी रखवाली करने वालों का पहरा व्यर्थ है)।

फिर उन्होंने किसी और बात के बारे में बात की।

वह अक्सर कहते थे, "पुजारी की बहादुरी भी उतनी ही होती है जितनी कि ड्रैगून सेना के कर्नल की बहादुरी—बस," उन्होंने आगे कहा, "हमारी बहादुरी शांत होनी चाहिए।"

VII. संबंध

यहीं पर एक तथ्य स्वाभाविक रूप से सामने आता है, जिसे हमें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह उन तथ्यों में से एक है जो हमें सबसे अच्छी तरह से दिखाता है कि डी के बिशप किस प्रकार के व्यक्ति थे।

ओलियूल्स की घाटियों में आतंक मचाने वाले गैस्पर्ड बेस के गिरोह के खात्मा के बाद, उसके एक लेफ्टिनेंट, क्रावेट ने पहाड़ों में शरण ली। वह कुछ समय तक अपने डाकुओं, गैस्पर्ड बेस की टुकड़ी के बचे हुए सैनिकों के साथ नीस काउंटी में छिपा रहा; फिर वह पीडमोंट की ओर बढ़ा और अचानक फ्रांस में बार्सिलोनेट के पास प्रकट हुआ। उसे सबसे पहले जौज़ियर्स में देखा गया, फिर तुइल्स में। वह जौग-डे-ल'एगल की गुफाओं में छिपा रहा और वहाँ से उबाये और उबायेट की खाइयों से होते हुए छोटे-छोटे गाँवों की ओर उतरा।

वह एम्ब्रुन तक भी पहुँच गया, एक रात गिरजाघर में घुस गया और प्रार्थना कक्ष को लूट लिया। उसकी लूटपाट से पूरा इलाका तबाह हो गया था। पुलिसकर्मियों ने उसका पीछा किया, लेकिन व्यर्थ। वह हमेशा बच निकलता था; कभी-कभी तो वह बलपूर्वक प्रतिरोध भी करता था। वह एक दुस्साहसी बदमाश था। इस सब आतंक के बीच बिशप आ गए। वे चेस्टेलर की यात्रा पर थे। महापौर उनसे मिलने आए और उन्हें वापस लौटने के लिए कहा। क्रावेट आर्चे तक और उससे आगे के पहाड़ों पर कब्ज़ा कर चुका था; सुरक्षा दल के साथ भी खतरा था; इससे केवल तीन-चार बदकिस्मत पुलिसकर्मियों का बेवजह पीछा करना पड़ा।

“इसलिए,” बिशप ने कहा, “मैं बिना किसी सुरक्षाकर्मी के जाने का इरादा रखता हूँ।”

“महामहिम, आपका मतलब सचमुच ऐसा नहीं है!” महापौर ने हैरानी से कहा।

"मैं सचमुच में इस बात को पूरी तरह से मानता हूँ कि मैं किसी भी पुलिस वाले को बिल्कुल स्वीकार नहीं करता और एक घंटे में रवाना हो जाऊँगा।"

"प्रस्थान करना?"

"प्रस्थान करना।"

"अकेला?"
"अकेला।"
“महामहिम, आप ऐसा नहीं करेंगे!”
“पहाड़ों में दूर एक छोटा सा समुदाय रहता है, जो इससे बड़ा नहीं है, जिसे मैंने तीन साल से नहीं देखा है। वे मेरे अच्छे दोस्त हैं, वे सज्जन और ईमानदार चरवाहे हैं। वे अपनी तीस बकरियों में से एक बकरी के मालिक हैं। वे कई रंगों की बहुत सुंदर ऊनी डोरियाँ बनाते हैं और छह छेदों वाली छोटी बांसुरियों पर पहाड़ी धुनें बजाते हैं। उन्हें समय-समय पर अच्छे ईश्वर के बारे में बताने की ज़रूरत होती है। वे एक डरे हुए बिशप से क्या कहेंगे? अगर मैं न जाऊँ तो वे क्या कहेंगे?”
"लेकिन डाकू, मोनसिग्नूर?"
“रुको,” बिशप ने कहा, “मुझे इस बारे में सोचना होगा। तुम सही कह रहे हो। मैं उनसे मिल सकता हूँ। उन्हें भी अच्छे ईश्वर के बारे में बताने की ज़रूरत है।”
लेकिन, महामहिम, उनका एक पूरा झुंड है! भेड़ियों का एक पूरा समूह! “महामहिम महापौर, हो सकता है कि भेड़ियों के इसी झुंड का चरवाहा यीशु ने मुझे बनाया हो। ईश्वर की योजना को कौन जानता है?”
"वे आपको लूट लेंगे, महाशय।"
"मेरे पास कुछ नहीं है।"
वे तुम्हें मार डालेंगे।
“एक बूढ़ा, नेक पुजारी, जो प्रार्थनाएँ बुदबुदाते हुए गुजरता है? छी! इसका क्या मतलब है?”
हे भगवान! अगर आप उनसे मिल जाएं तो क्या होगा!
मुझे अपने गरीबों के लिए उनसे भिक्षा मांगनी चाहिए।
“महामहिम, मत जाइए। भगवान के नाम पर! आप अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं!”

“महामहिम मेयर,” बिशप ने कहा, “क्या बस इतना ही है? मैं इस दुनिया में अपनी जान बचाने के लिए नहीं, बल्कि आत्माओं की रक्षा करने के लिए आया हूँ।”

उन्हें उसे अपनी मनमर्जी करने की छूट देनी पड़ी। वह निकल पड़ा, उसके साथ केवल एक बच्चा था जिसने मार्गदर्शक बनने की पेशकश की थी। उसकी हठधर्मिता की चर्चा पूरे इलाके में फैल गई और इससे काफी खलबली मच गई।

वह न तो अपनी बहन को साथ ले गए और न ही मैडम मैग्लॉयर को। उन्होंने खच्चर पर सवार होकर पहाड़ पार किया, रास्ते में किसी से मुलाकात नहीं हुई, और अपने "अच्छे दोस्तों", यानी चरवाहों के घर सुरक्षित पहुँच गए। वे वहाँ दो सप्ताह तक रहे, उपदेश देते रहे, धार्मिक अनुष्ठान करते रहे, शिक्षा देते रहे और लोगों को प्रेरित करते रहे। जब उनके जाने का समय निकट आया, तो उन्होंने पूरी श्रद्धा के साथ ते देउम का पाठ करने का निश्चय किया। उन्होंने यह बात पादरी को बताई। लेकिन क्या किया जाए? वहाँ कोई बिशप के योग्य साज-सज्जा नहीं थी। वे उन्हें केवल एक जर्जर गाँव का प्रार्थना कक्ष ही दे सके, जिसमें कुछ पुराने, घिसे-पिटे दमिश्क के वस्त्र थे जिन पर नकली फीते लगे थे।

“वाह!” बिशप ने कहा। “फिर भी, महाशय पादरी जी, आइए हम अपने प्रार्थना गीत को मंच से ही सुनाएँ। सब कुछ अपने आप सुलझ जाएगा।”

उन्होंने आस-पास के गिरजाघरों में खोजबीन शुरू की। इन साधारण गिरजाघरों की सारी भव्यता भी किसी गिरजाघर के गायक को ठीक से वस्त्र पहनाने के लिए पर्याप्त नहीं होती।

जब वे इस प्रकार शर्मिंदा थे, तभी दो अज्ञात घुड़सवार एक बड़ा संदूक लेकर बिशप के निवास स्थान पर रखवाकर तुरंत चले गए। संदूक खोला गया; उसमें सोने के कपड़े का एक चोगा, हीरों से जड़ा एक मुकुट, एक आर्कबिशप का क्रॉस, एक शानदार क्रॉसियर—ये सभी पोप के वस्त्र थे जो एक महीने पहले नोट्रे डेम डी'एम्ब्रुन के खजाने से चोरी हो गए थे। संदूक में एक कागज था, जिस पर ये शब्द लिखे थे, "क्रैवेट की ओर से महाशय स्वागत है।"

“क्या मैंने नहीं कहा था कि सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा?” बिशप ने कहा। फिर मुस्कुराते हुए उन्होंने आगे कहा, “जो व्यक्ति एक साधारण पादरी के चोगे से संतुष्ट रहता है, उसे ईश्वर एक महाधर्माध्यक्ष का चोगा भेजता है।”

“महामहिम,” पादरी ने मुस्कुराते हुए सिर पीछे की ओर झुकाते हुए धीरे से कहा। “भगवान—या शैतान।”

बिशप ने पादरी की ओर स्थिर दृष्टि डाली और अधिकारपूर्वक दोहराया, "ईश्वर!"

जब वह चेस्टेलर लौटा, तो रास्ते भर लोग उसे उत्सुकता से देखने के लिए उमड़ पड़े। चेस्टेलर में पुजारी के घर पर, वह मैडमोजेल बैपटिस्टिन और मैडम मैग्लॉयर से मिला, जो उसका इंतज़ार कर रही थीं, और उसने अपनी बहन से कहा: “वाह! क्या मैं सही था? बेचारा पुजारी अपने गरीब पर्वतीयों के पास खाली हाथ गया था, और उनके पास से भरे हाथों से लौटा है। मैं तो केवल ईश्वर में अपनी आस्था लेकर निकला था; और मैं एक गिरजाघर का खजाना लेकर लौटा हूँ।”

उस शाम, सोने से पहले, उन्होंने फिर कहा: “हमें कभी लुटेरों या हत्यारों से नहीं डरना चाहिए। ये बाहरी खतरे हैं, छोटे-मोटे खतरे। हमें खुद से डरना चाहिए। पूर्वाग्रह ही असली लुटेरे हैं; बुराइयाँ ही असली हत्यारे हैं। असली खतरे तो हमारे भीतर ही हैं। इससे क्या फर्क पड़ता है कि हमारे सिर या हमारे बटुए को क्या खतरा है! हमें सिर्फ उसी के बारे में सोचना चाहिए जो हमारी आत्मा को खतरा पहुँचाता है।”

फिर अपनी बहन की ओर मुड़कर उसने कहा, “बहन, पुजारी को अपने साथी मनुष्य के प्रति कभी सावधानी नहीं बरतनी चाहिए। जो कुछ उसका साथी करता है, ईश्वर उसे स्वीकार करता है। जब हमें लगे कि कोई खतरा मंडरा रहा है, तो हमें प्रार्थना में ही लीन रहना चाहिए। हमें अपने लिए नहीं, बल्कि इसलिए प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारा भाई हमारी वजह से पाप में न पड़ जाए।”

हालांकि, उनके जीवन में ऐसी घटनाएं दुर्लभ थीं। हम उन्हीं घटनाओं का वर्णन कर रहे हैं जिनके बारे में हमें जानकारी है; लेकिन सामान्यतः वे अपना जीवन एक ही समय में एक ही काम करते हुए बिताते थे। उनके वर्ष का एक महीना उनके दिन के एक घंटे के समान था।

एम्ब्रुन गिरजाघर के "खजाने" का क्या हुआ, इस बारे में पूछताछ करना हमारे लिए शर्मिंदगी की बात होगी। उसमें बहुत सुंदर, बहुत लुभावनी और ऐसी वस्तुएँ थीं जिन्हें चुराकर ज़रूरतमंदों की मदद की जा सकती थी। ये वस्तुएँ पहले ही कहीं और से चुराई जा चुकी थीं। आधा काम तो हो चुका था; बस चोरी को एक नई दिशा देना और उसे गरीबों की मदद के लिए ले जाना बाकी था।

हालांकि, हम इस बारे में कोई दावा नहीं करते। बस, बिशप के कागज़ात में एक अस्पष्ट सा नोट मिला है, जिसका इस मामले से कुछ संबंध हो सकता है, और जिसमें लिखा है, "सवाल यह है कि इसे गिरजाघर को सौंपा जाए या अस्पताल को।"

VIII. शराब पीने के बाद का दर्शन

ऊपर वर्णित सीनेटर एक चतुर व्यक्ति थे, जिन्होंने अपना रास्ता खुद बनाया था, उन बाधाओं की परवाह किए बिना जो अंतरात्मा, निष्ठा, न्याय और कर्तव्य कहलाती हैं: वे अपने लक्ष्य की ओर सीधे बढ़ते रहे, अपने उत्थान और हितों के मार्ग में एक बार भी विचलित नहीं हुए। वे एक अनुभवी वकील थे, सफलता से परिपक्व हो चुके; किसी भी तरह से बुरे व्यक्ति नहीं थे, जिन्होंने अपने बेटों, दामादों, रिश्तेदारों और यहां तक कि अपने दोस्तों की भी हर संभव सेवा की, जीवन में अच्छे अवसरों, अच्छे लाभों और अप्रत्याशित लाभों को बुद्धिमानी से भुनाया था। बाकी सब कुछ उन्हें मूर्खतापूर्ण लगता था। वे बुद्धिमान थे और इतनी शिक्षा प्राप्त कर चुके थे कि खुद को एपिकुरस का शिष्य समझते थे; जबकि वास्तव में वे पिगाल्ट-लेब्रून की ही उपज थे। वे अनंत और शाश्वत चीजों पर और "उस भले बूढ़े बिशप की सनक" पर भी खुशी-खुशी हंसते थे। यहां तक कि कभी-कभी वे स्वयं एम. मिरियल की उपस्थिति में भी, जो उन्हें सुन रहे थे, सौहार्दपूर्ण अधिकार के साथ उन पर हंसते थे।

मुझे याद नहीं कि किस अर्ध-सरकारी अवसर पर, काउंट [यह सीनेटर] और एम. मायरील ने प्रीफेक्ट के साथ भोजन किया। मिठाई के समय, सीनेटर, जो थोड़ा उत्साहित थे, हालांकि अभी भी पूरी तरह से गरिमापूर्ण थे, ने कहा:—

“हे भगवान, बिशप जी, चलिए चर्चा करते हैं। एक सीनेटर और एक बिशप के लिए एक-दूसरे को बिना आँख मारे देखना मुश्किल है। हम दोनों भविष्यवक्ता हैं। मैं आपसे एक बात स्वीकार करने जा रहा हूँ। मेरा अपना एक दर्शन है।”

“और आप सही कह रहे हैं,” बिशप ने उत्तर दिया। “जैसा दर्शन कोई बनाता है, वैसा ही उस पर टिका होता है। आप बैंगनी रंग के बिस्तर पर हैं, सीनेटर।”

सीनेटर को प्रोत्साहन मिला और उन्होंने आगे कहा:—

आइए हम अच्छे साथी बनें।

बिशप ने कहा, "वे अच्छे शैतान भी हैं।"

सीनेटर ने आगे कहा, “मैं आपसे यह घोषणा करता हूँ कि मार्क्विस डी'आर्गेन्स, पिरहॉन, हॉब्स और एम. नाइजन कोई बदमाश नहीं हैं। मेरे पुस्तकालय में सभी दार्शनिकों की पुस्तकों पर सोने की परत चढ़ी हुई है।”

"आपकी ही तरह, काउंट," बिशप ने बीच में कहा।

सीनेटर ने अपना भाषण फिर से शुरू किया:—

“मैं डिडेरोट से नफरत करता हूँ; वह एक विचारधारावादी, उपदेशक और क्रांतिकारी है, मूलतः ईश्वर में विश्वास रखने वाला और वोल्टेयर से भी अधिक कट्टर है। वोल्टेयर ने नीडहम का मज़ाक उड़ाया था, और वह गलत था, क्योंकि नीडहम की ईलें साबित करती हैं कि ईश्वर बेकार है। एक चम्मच आटे के पेस्ट में सिरके की एक बूंद से ही सुख-सुविधाएँ मिल जाती हैं। मान लीजिए बूंद बड़ी हो और चम्मच भी बड़ा हो; तो संसार ही है। मनुष्य ईल है। तो फिर शाश्वत पिता का क्या भला? यहोवा की परिकल्पना मुझे थका देती है, बिशप। यह खोखले तर्क वाले लोगों को पैदा करने के अलावा किसी काम की नहीं है। उस महान सर्वस्व का नाश हो, जो मुझे सताता है! शून्य की जय हो, जो मुझे शांति देता है! आपके और मेरे बीच, और अपनी आत्मा को हल्का करने और अपने पादरी के सामने स्वीकारोक्ति करने के लिए, जैसा कि मेरा कर्तव्य है, मैं आपसे स्वीकार करता हूँ कि मुझमें अच्छी समझ है। मैं आपके उस यीशु के प्रति उत्साहित नहीं हूँ, जो अंतिम सीमा तक त्याग और बलिदान का उपदेश देता है। यह एक लालची व्यक्ति की सलाह है। मनुष्य से भिखारियों तक। त्याग; क्यों? बलिदान; किसलिए? मुझे नहीं लगता कि कोई भेड़िया दूसरे भेड़िये की खुशी के लिए खुद को कुर्बान करेगा। तो चलो प्रकृति के मार्ग पर चलें। हम शिखर पर हैं; तो चलो एक श्रेष्ठ दर्शन अपनाएँ। शिखर पर होने का क्या लाभ, यदि कोई दूसरों की नाक के आगे कुछ नहीं देख पाता? चलो आनंद से जीवन व्यतीत करें। जीवन ही सब कुछ है। मनुष्य का कहीं और, ऊपर, नीचे, कहीं भी कोई और भविष्य है, मुझे इस पर विश्वास नहीं है; एक शब्द भी नहीं। आह! मुझे बलिदान और त्याग की सलाह दी जाती है; मुझे अपने हर काम पर ध्यान देना चाहिए; मुझे अच्छे और बुरे, न्याय और अन्याय, सही और गलत के बीच अपने दिमाग का इस्तेमाल करना चाहिए। क्यों? क्योंकि मुझे अपने कर्मों का हिसाब देना होगा। कब? मृत्यु के बाद। कितना सुंदर सपना! मेरी मृत्यु के बाद मुझे पकड़ने वाला कोई बहुत ही चतुर व्यक्ति होगा। अगर हो सके तो एक मुट्ठी धूल को किसी छाया-हाथ से पकड़ लो।

चलो सच बोलें, हम जो हैं दीक्षित, और जिन्होंने आइसिस का पर्दा उठाया है: अच्छा या बुरा जैसी कोई चीज नहीं है; केवल वनस्पति है। आइए हम वास्तविकता की खोज करें। आइए हम इसकी तह तक जाएं। आइए हम इसमें पूरी तरह से उतरें। अरे! आइए हम इसकी तह तक जाएं! हमें सत्य को सूंघना होगा; इसके लिए धरती खोदनी होगी, और इसे पकड़ लेना होगा। तब यह आपको असीम आनंद देगा। तब आप मजबूत होंगे, और आप हंसेंगे। मैं बिल्कुल तह पर हूँ, मैं हूँ। बिशप, अमरता एक मौका है, मरे हुए लोगों के जूतों का इंतजार है। आह! कितना आकर्षक वादा! अगर आप चाहें तो इस पर भरोसा करें! आदम का कितना अच्छा भाग्य है! हम आत्माएं हैं, और हम देवदूत होंगे, हमारे कंधों पर नीले पंख होंगे। मेरी सहायता के लिए आओ: क्या यह टर्टुलियन नहीं है जो कहता है कि धन्य लोग एक तारे से दूसरे तारे की यात्रा करेंगे? बहुत अच्छा। हम तारों के टिड्डे होंगे। और फिर, इसके अलावा, हम ईश्वर को देखेंगे। टा, टा, टा! ये सभी स्वर्ग क्या बकवास हैं! ईश्वर एक बेतुका राक्षस। मैं यह बात मॉनिटर में नहीं कहूँगा, हे भगवान! लेकिन दोस्तों के बीच फुसफुसा सकता हूँ। इंटर पोकुला। दुनिया को स्वर्ग के लिए बलिदान करना, शिकार को परछाई के लिए छोड़ देना है। अनंत के धोखे में आ जाओ! मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ। मैं शून्य हूँ। मैं खुद को 'महाशय ले कॉम्टे शून्य' कहता हूँ, सीनेटर। क्या मेरा जन्म से पहले अस्तित्व था? नहीं। क्या मेरा मृत्यु के बाद अस्तित्व रहेगा? नहीं। मैं क्या हूँ? एक जीव में जमा हुई थोड़ी सी धूल। इस धरती पर मुझे क्या करना है? चुनाव मेरे हाथ में है: दुख सहना या आनंद लेना। दुख मुझे कहाँ ले जाएगा? शून्यता की ओर; लेकिन मैंने दुख सहा होगा। आनंद मुझे कहाँ ले जाएगा? शून्यता की ओर; लेकिन मैंने आनंद लिया होगा। मेरा चुनाव हो चुका है। या तो खाना है या खाया जाना है। मैं खाऊँगा। घास बनने से बेहतर है दाँत बनना। यही मेरी बुद्धिमत्ता है। इसके बाद, जहाँ मैं तुम्हें धकेलूँ, वहाँ कब्र खोदने वाला है; हममें से कुछ के लिए पैंथियन: सब कुछ बड़े गड्ढे में गिर जाता है। अंत। समापन। पूर्ण विनाश। यही अंतिम बिंदु है। मृत्यु, मृत्यु ही है, मेरा विश्वास करो। मुझे इस बात पर हंसी आती है कि कोई भी मुझे इस विषय पर कुछ बता सकता है। नर्सों की कहानियां; बच्चों के लिए डरावनी कहानियां; पुरुषों के लिए यहोवा। नहीं; हमारा आने वाला कल रात है। कब्र के पार केवल शून्यता है। तुम सरदानापालस रहे हो, तुम विंसेंट डी पॉल रहे हो—कोई फर्क नहीं पड़ता। यही सत्य है। तो सबसे बढ़कर, अपना जीवन जियो। जब तक तुम्हारे पास

है, अपने 'मैं' का सदुपयोग करो। सच में, बिशप, मैं तुमसे कहता हूं कि मेरा अपना एक दर्शन है, और मेरे अपने दार्शनिक हैं। मैं उस बकवास में नहीं फंसता। बेशक, जो लोग नीचे गिरे हुए हैं—नंगे पैर भीख मांगने वालों, चाकू तेज करने वालों और दुखी लोगों के लिए कुछ न कुछ तो होना ही चाहिए। किंवदंतियां, कल्पनाएं, आत्मा, अमरता, स्वर्ग, तारे, उनके लिए उपलब्ध कराए जाते हैं। वे उन्हें निगल जाते हैं। वे उन्हें अपनी सूखी रोटी पर फैलाते हैं। जिसके पास और कुछ नहीं है, उसके पास केवल ईश्वर है। यही न्यूनतम है जो उसे मिल सकता है। मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है; लेकिन श्री नाइजन को मैं अपने लिए आरक्षित रखता हूँ। ईश्वर जनमानस के लिए अच्छा है।

बिशप ने ताली बजाई।

“यह तो बोलने की कला है!” उसने हैरानी से कहा। “यह भौतिकवाद कितना उत्कृष्ट और वास्तव में अद्भुत है! हर कोई जो इसे चाहता है, उसे यह नहीं मिल सकता। आह! जब किसी को यह मिल जाता है, तो वह मूर्ख नहीं रहता, वह कैटो की तरह निर्वासन में जाने की मूर्खता नहीं करता, न ही स्टीफन की तरह पत्थर मारे जाने देता है, न ही जोन ऑफ आर्क की तरह जिंदा जलाए जाने देता है। जो लोग इस प्रशंसनीय भौतिकवाद को प्राप्त करने में सफल होते हैं, उन्हें स्वयं को गैर-जिम्मेदार महसूस करने और यह सोचने का आनंद मिलता है कि वे बिना किसी चिंता के सब कुछ खा सकते हैं—पद, आराम के पद, प्रतिष्ठा, शक्ति, चाहे वह अच्छे से अर्जित की गई हो या बुरे से, लाभप्रद पश्चाताप, उपयोगी विश्वासघात, अंतरात्मा के सुखद समर्पण—और वे अपने पाचन को पूर्ण करके कब्र में प्रवेश करेंगे। यह कितना सुखद है! मैं यह बात आपके संदर्भ में नहीं कह रहा हूँ, सीनेटर। फिर भी, मैं आपको बधाई देने से खुद को रोक नहीं सकता। आप महान स्वामियों के पास, जैसा कि आप कहते हैं, अपना एक दर्शन है, और वह भी अपने लिए, जो उत्कृष्ट, परिष्कृत और सुलभ है। यह दर्शन केवल धनियों के लिए है, सभी प्रकार की चटनी के साथ अच्छा लगता है, और जीवन की विलासिता को बड़ी खूबसूरती से निखारता है। यह दर्शन गहराई से निकाला गया है, और विशेष खोजकर्ताओं द्वारा खोजा गया है। लेकिन आप दयालु राजकुमार हैं, और आप इसे बुरा नहीं मानते कि अच्छे ईश्वर में विश्वास आम लोगों का दर्शन हो, ठीक वैसे ही जैसे शाहबलूत से भरा हंस गरीबों के लिए ट्रफल से भरा टर्की होता है।

9. बहन द्वारा दर्शाया गया भाई

डी⸺ के बिशप के निजी जीवन और उन दो संत महिलाओं के व्यवहार को समझने के लिए, जिन्होंने अपने कार्यों, विचारों और यहाँ तक कि आसानी से विचलित होने वाली अपनी स्त्री-सुलभ भावनाओं को भी बिशप की आदतों और उद्देश्यों के अधीन कर लिया, जबकि बिशप ने उन्हें समझाने के लिए बोलने की भी जहमत नहीं उठाई, इससे बेहतर कोई तरीका नहीं है कि हम मैडमोजेल बैपटिस्टीन द्वारा अपनी बचपन की सहेली मैडम विस्काउंटेस डी बोइशेवरॉन को लिखे पत्र को यहाँ प्रस्तुत करें। यह पत्र हमारे पास उपलब्ध है।

डी⸺,
दिसंबर 16, 18—.

मेरी प्रिय महोदया,

ऐसा कोई दिन नहीं गुजरता जब हम आपके बारे में बात न करें। यह हमारी स्थापित परंपरा है; लेकिन इसके अलावा एक और कारण भी है। ज़रा सोचिए, छतों और दीवारों की सफाई और झाड़-पोंछ करते समय मैडम मैग्लॉयर को कुछ चीज़ें मिलीं; अब हमारे दो कमरे, जिन पर पुराने ज़माने के कागज़ लगे हैं और जिन पर सफेदी की गई है, आपके महल की शैली के किसी महल से कम नहीं हैं। मैडम मैग्लॉयर ने सारा कागज़ हटा दिया। उसके नीचे कुछ चीज़ें थीं। मेरा ड्राइंग रूम, जिसमें कोई फर्नीचर नहीं है और जिसे हम कपड़े धोने के बाद सुखाने के लिए इस्तेमाल करते हैं, पंद्रह फीट ऊंचा और अठारह फीट चौकोर है, जिसकी छत पहले रंगी और सोने से मढ़ी हुई थी, और उसमें आपके कमरे की तरह ही बीम लगे हैं। जब यह अस्पताल था, तब इसे कपड़े से ढका गया था। और लकड़ी का काम हमारी दादी-नानी के ज़माने का है। लेकिन मेरा कमरा वह है जिसे आपको देखना चाहिए। मैडम मैग्लॉयर ने ऊपर चिपकाए गए कम से कम दस परतों वाले कागज़ के नीचे कुछ चित्र खोजे हैं, जो अच्छे तो नहीं हैं, लेकिन फिर भी देखने लायक हैं। विषय है टेलीमाकस को मिनर्वा द्वारा किसी उद्यान में शूरवीर की उपाधि दिए जाने का, जिसका नाम मुझे याद नहीं आ रहा है। संक्षेप में, वह स्थान जहाँ रोमन महिलाएं एक रात के लिए इकट्ठा होती थीं। मैं आपको

क्या बताऊँ? मेरे पास रोमन लोग हैं, रोमन महिलाएं हैं [यहाँ एक अस्पष्ट शब्द है], और उनका पूरा समूह है। मैडम मैग्लॉयर ने सब कुछ साफ कर दिया है; इस गर्मी में वह कुछ छोटी-मोटी टूट-फूट की मरम्मत करवाएंगी, और पूरे कमरे पर दोबारा वार्निश करवाएंगी, और मेरा कमरा एक संग्रहालय जैसा लगेगा। उन्हें अटारी के एक कोने में प्राचीन शैली की दो लकड़ी की मेजें भी मिली हैं। उन्होंने हमसे उन्हें दोबारा सोने से सुलाने के लिए छह-छह फ्रैंक के दो क्राउन मांगे, लेकिन गरीबों को पैसे देना कहीं बेहतर है; और वे बहुत बदसूरत भी हैं, और मुझे महोगनी की गोल मेज ज्यादा पसंद आएगी।

मैं हमेशा बहुत खुश रहती हूँ। मेरा भाई बहुत अच्छा है। वह अपना सब कुछ गरीबों और बीमारों को दे देता है। हम बहुत तंग जगह में रहते हैं। सर्दियों में देश में बहुत मुश्किल होती है, और हमें ज़रूरतमंदों के लिए कुछ करना ही चाहिए। हमारे यहाँ लगभग पर्याप्त रोशनी और गर्मी है। आप देख सकते हैं कि ये हमारे लिए बहुत बड़ी राहत हैं।

मेरे भाई का अपना ही अंदाज़ है। जब वो बात करता है, तो कहता है कि एक बिशप को ऐसा ही होना चाहिए। ज़रा सोचिए! हमारे घर का दरवाज़ा कभी बंद नहीं होता। जो भी अंदर आने की कोशिश करता है, सीधे मेरे भाई के कमरे में पहुँच जाता है। उसे किसी बात का डर नहीं, यहाँ तक कि रात में भी नहीं। वो कहता है कि यही उसकी बहादुरी है।

वह नहीं चाहता कि मुझे या मैडम मैग्लॉयर को उसके लिए किसी प्रकार का भय हो। वह स्वयं को हर प्रकार के खतरों में डालता है, और वह नहीं चाहता कि हमें इसका जरा सा भी एहसास हो। उसे समझने के लिए विशेष ज्ञान होना आवश्यक है।

वह बारिश में बाहर निकलता है, पानी में चलता है, सर्दियों में यात्रा करता है। उसे न तो संदिग्ध सड़कों का डर है, न ही खतरनाक मुठभेड़ों का, और न ही रात का।

पिछले साल वह बिल्कुल अकेले ही लुटेरों के देश में चला गया। वह हमें अपने साथ नहीं ले गया। वह दो सप्ताह तक अनुपस्थित रहा। लौटने पर उसे कुछ भी नहीं हुआ था; उसे मृत मान लिया गया था, लेकिन वह पूरी तरह स्वस्थ था और बोला, "इसी तरह मुझे लूटा गया है!" और फिर उसने गहनों से भरा एक संदूक खोला, जिसमें एम्ब्रुन के गिरजाघर के सारे गहने थे, जो चोरों ने उसे दिए थे।

जब वह उस अवसर पर लौटा, तो मैं उसे थोड़ा डांटने से खुद को रोक नहीं पाई, हालांकि मैंने इस बात का ध्यान रखा कि मैं तभी बोलूं जब गाड़ी शोर कर रही हो, ताकि कोई मुझे सुन न सके।

पहले तो मैं मन ही मन सोचती थी, “ऐसा कोई खतरा नहीं जो उसे रोक सके; वह बहुत भयानक है।” अब मुझे इसकी आदत हो गई है। मैं मैडम मैग्लॉयर को इशारा करती हूँ कि वह उसका विरोध न करें। वह अपनी मर्ज़ी से जोखिम उठाता है। मैं मैडम मैग्लॉयर को ले जाती हूँ, अपने कमरे में जाती हूँ, उसके लिए प्रार्थना करती हूँ और सो जाती हूँ। मुझे सुकून मिलता है, क्योंकि मैं जानती हूँ कि अगर उसे कुछ हो गया, तो मेरा भी अंत हो जाएगा। मैं अपने भाई और बिशप के साथ ईश्वर के पास चली जाऊँगी। मैडम मैग्लॉयर को उसकी उन हरकतों की आदत डालने में मुझसे ज़्यादा तकलीफ हुई है, जिन्हें वह उसकी नासमझी कहती हैं। लेकिन अब यह आदत बन चुकी है। हम साथ में प्रार्थना करते हैं, साथ में काँपते हैं और सो जाते हैं। अगर शैतान इस घर में घुस जाए, तो उसे घुसने दिया जाएगा। आख़िर इस घर में हमें किस बात का डर है? हमेशा कोई न कोई हमारे साथ होता है जो हमसे ज़्यादा शक्तिशाली होता है। शैतान यहाँ से गुज़र सकता है, लेकिन ईश्वर यहाँ निवास करते हैं।

मेरे लिए इतना ही काफी है। मेरे भाई को अब मुझसे एक शब्द भी कहने की जरूरत नहीं है। मैं बिना बोले ही उसे समझ जाता हूँ, और हम सब ईश्वर की कृपा पर निर्भर हैं। एक महान आत्मा वाले व्यक्ति के साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए।

मैंने फॉक्स परिवार के विषय में आपके द्वारा मांगी गई जानकारी के संबंध में अपने भाई से पूछताछ की है। आप जानते हैं कि वह सब कुछ जानता है और उसकी याददाश्त बहुत अच्छी है, क्योंकि वह अभी भी एक कट्टर राजभक्त है। वे वास्तव में कान के सेनापति पद से जुड़ा एक बहुत ही प्राचीन नॉर्मन परिवार है। पांच सौ साल पहले राउल डी फॉक्स, जीन डी फॉक्स और थॉमस डी फॉक्स नाम के तीन सज्जन व्यक्ति थे, जिनमें से एक रोशेफोर्ट का जागीरदार था। थॉमस डी फॉक्स का नाम गाइ-एटियेन-अलेक्जेंडर था, जो एक रेजिमेंट का कमांडर और ब्रिटनी की घुड़सवार सेना में एक पद पर था। उनकी बेटी, मैरी-लुईस ने ड्यूक लुई डी ग्रामोंट के पुत्र एड्रियन-चार्ल्स डी ग्रामोंट से विवाह किया, जो

फ्रांस के कुलीन, फ्रांसीसी गार्ड के कर्नल और सेना के लेफ्टिनेंट-जनरल थे। फॉक्स, फाउक और फाउक भी लिखा जाता है।

महोदया, कृपया हमें अपने परम पूज्य सपूत, कार्डिनल महोदय से प्रार्थना करने का निवेदन करें। आपकी प्रिय सिल्वेनी ने आपके साथ बिताए कुछ पलों को व्यर्थ न जाने देते हुए मुझे पत्र लिखकर बहुत अच्छा किया है। वह स्वस्थ है, आपकी इच्छा अनुसार काम करती है और मुझसे प्रेम करती है। बस यही मेरी इच्छा है। आपके माध्यम से भेजा गया उसका स्मृति चिन्ह मुझ तक सुरक्षित पहुँच गया है और इससे मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। मेरा स्वास्थ्य उतना बुरा नहीं है, फिर भी मैं प्रतिदिन दुबला होता जा रहा हूँ। अलविदा; मेरा कार्य समाप्त हो गया है और इसी कारण मुझे आपसे विदा लेनी पड़ रही है। ढेर सारी शुभकामनाएँ।

बैपटिस्टिन

पुनश्च: आपका पोता बहुत प्यारा है। क्या आपको पता है कि वह जल्द ही पाँच साल का होने वाला है? कल उसने किसी को घोड़े पर सवार होकर जाते देखा जिसके घुटनों पर टोपी थी, और उसने कहा, "उसने अपने घुटनों पर क्या पहना है?" वह बहुत ही प्यारा बच्चा है! उसका छोटा भाई कमरे में एक पुरानी झाड़ू को गाड़ी की तरह घसीट रहा है और "हू!" कह रहा है।

जैसा कि इस पत्र से स्पष्ट होगा, इन दोनों महिलाओं ने उस विशेष नारीत्व की प्रतिभा से बिशप के तौर-तरीकों को अपनाना सीख लिया था, जो उन्हें खुद से भी बेहतर समझती है। डी के बिशप, अपने सौम्य और स्पष्टवादी स्वभाव के बावजूद, कभी-कभी भव्य, साहसी और शानदार काम करते थे, मानो उन्हें इसका ज़रा भी आभास न हो। वे डरती थीं, लेकिन उन्हें अकेला छोड़ देती थीं। कभी-कभी मैडम मैग्लॉयर पहले से ही आपत्ति जताने की कोशिश करती थीं, लेकिन न तो उस समय और न ही बाद में। एक बार कोई काम शुरू हो जाने पर वे कभी भी एक शब्द या इशारे से भी उसमें दखल नहीं देती थीं। कुछ क्षणों में, बिना उनके ज़िक्र किए, और शायद खुद भी इस बात से अनजान रहते हुए, क्योंकि उनकी सादगी इतनी परिपूर्ण थी, उन्हें अस्पष्ट रूप से महसूस होता था कि वे एक बिशप की तरह व्यवहार कर रहे हैं; तब वे घर में दो परछाइयों से ज़्यादा कुछ नहीं थीं। वे निष्क्रिय रूप से उनकी सेवा करती थीं; और यदि आज्ञाकारिता का अर्थ गायब हो जाना था, तो वे गायब हो जाती थीं। उन्होंने सहज ज्ञान की अद्भुत संवेदनशीलता से यह

समझा कि कुछ चिंताओं को नियंत्रित किया जा सकता है। इसलिए, जब उन्हें लगा कि वह खतरे में है, तब भी उन्होंने, मैं यह नहीं कहूंगा कि उनके विचार, बल्कि उनके स्वभाव को, इतनी गहराई से समझा कि उन्होंने अब उनकी निगरानी करना छोड़ दिया। उन्होंने उन्हें ईश्वर के हवाले कर दिया।

इसके अलावा, जैसा कि हमने अभी पढ़ा है, बैपटिस्टीन ने कहा था कि उसके भाई का अंत ही उसका अपना अंत साबित होगा। मैडम मैग्लॉयर ने यह बात सीधे तौर पर नहीं कही, लेकिन वह यह जानती थी।

X. एक अज्ञात प्रकाश की उपस्थिति में बिशप

पिछले पृष्ठों में उल्लिखित पत्र की तिथि के कुछ समय बाद, उसने एक ऐसा काम किया, जो अगर पूरे शहर की बात मानी जाए तो डाकुओं से भरे पहाड़ों को पार करने की उसकी यात्रा से भी अधिक खतरनाक था।

डी⸺ के निकट देश में एक व्यक्ति बिलकुल अकेला रहता था। हम यह बात तुरंत स्पष्ट कर दें कि यह व्यक्ति सम्मेलन का पूर्व सदस्य था। उसका नाम जी⸺ था।

कन्वेंशन के सदस्य जी का ज़िक्र डी की छोटी सी दुनिया में एक तरह के खौफ के साथ किया गया। कन्वेंशन का सदस्य—क्या आप ऐसी बात की कल्पना कर सकते हैं? यह उस ज़माने से चला आ रहा था जब लोग एक-दूसरे को “तू” और “नागरिक” कहकर पुकारते थे। यह आदमी लगभग एक राक्षस था। उसने राजा की मृत्यु के पक्ष में मतदान नहीं किया था, लेकिन लगभग कर ही दिया था। वह एक तरह से राजा का हत्यारा था। वह एक भयानक आदमी था। वैध राजकुमारों की वापसी पर ऐसे आदमी को प्रोवोस्ट की अदालत में क्यों नहीं लाया गया? अगर आप चाहें तो उसका सिर काटने की ज़रूरत नहीं थी; दया बरतनी चाहिए, ठीक है; लेकिन आजीवन निर्वासन तो ठीक था। संक्षेप में, एक उदाहरण, इत्यादि। इसके अलावा, वह उन सभी लोगों की तरह नास्तिक था। गिद्ध के बारे में हंसों की गपशप।

क्या जी⸺ वास्तव में एक गिद्ध था? हाँ; यदि उसके एकांत में उसकी क्रूरता के आधार पर उसका मूल्यांकन किया जाए तो। चूंकि उसने राजा की मृत्यु के पक्ष में मतदान नहीं किया था, इसलिए उसे निर्वासन के फरमानों में शामिल नहीं किया गया था और वह फ्रांस में ही रह सका था।

वह शहर से पौने घंटे की दूरी पर, किसी भी गाँव या सड़क से बहुत दूर, एक बेहद जंगली घाटी के किसी छिपे हुए मोड़ पर रहता था, जिसका सही-सही पता किसी को नहीं था। कहा जाता था कि वहाँ उसका एक खेत जैसा, एक गड्ढा, एक मांद जैसा ठिकाना था। वहाँ कोई पड़ोसी नहीं था, राहगीर भी नहीं। जब से वह उस घाटी में रहने लगा था, वहाँ जाने वाला रास्ता घास के घने जंगल में छिप गया था। उस जगह के बारे में ऐसे बात की जाती थी मानो वह किसी जल्लाद का ठिकाना हो।

फिर भी, बिशप इस विषय पर चिंतन करते रहे, और समय-समय पर वे क्षितिज पर उस बिंदु की ओर देखते रहे जहाँ पेड़ों का एक समूह सम्मेलन के पूर्व सदस्य की घाटी को चिह्नित करता था, और उन्होंने कहा, "वहाँ कोई आत्मा है जो अकेली है।"

और उसने मन ही मन सोचा, "मुझे उससे मिलने जाना चाहिए।"

लेकिन, यह स्वीकार करना होगा कि यह विचार, जो पहली नज़र में स्वाभाविक लग रहा था, कुछ क्षण सोचने के बाद उसे विचित्र, असंभव और लगभग घृणित लगा। दरअसल, वह आम धारणा से सहमत था, और सम्मेलन के उस बुजुर्ग सदस्य ने, अनजाने में ही सही, उसके मन में घृणा की भावना उत्पन्न कर दी थी, जिसे अलगाव शब्द से बखूबी व्यक्त किया जा सकता है।

फिर भी, क्या भेड़ के घाव को देखकर चरवाहे को पीछे हट जाना चाहिए? नहीं। लेकिन क्या ही भेड़ है!

माननीय बिशप असमंजस में थे। कभी वे उस दिशा में निकल पड़ते, तो कभी लौट आते।

अंततः, एक दिन पूरे शहर में यह अफवाह फैल गई कि एक युवा चरवाहा, जो सम्मेलन के सदस्य की झोपड़ी में उनकी सेवा करता था, एक डॉक्टर की तलाश में आया था; कि वह बूढ़ा बेचारा मर रहा है, उसे लकवा सता रहा है, और वह रातोंरात जीवित नहीं रहेगा।—“भगवान का शुक्र है!” कुछ लोगों ने कहा।

बिशप ने अपनी छड़ी उठाई, अपना लबादा ओढ़ा, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, क्योंकि उनका चोगा बहुत ही घिसा-पिटा था, और शाम की ठंडी हवा चलने वाली थी, और वे चल पड़े।

सूर्य अस्त हो रहा था और क्षितिज को लगभग छू चुका था जब बिशप उस बहिष्कृत स्थान पर पहुँचे। दिल की धड़कन तेज़ होते ही उन्हें एहसास हुआ कि वे गुफा के पास ही हैं। वे एक खाई पार करके, एक बाड़ को फांदकर, सूखी टहनियों की बाड़ से होते हुए एक उपेक्षित बाड़े में दाखिल हुए, कुछ कदम हिम्मत से बढ़ाए और अचानक, बंजर भूमि के छोर पर, ऊँची झाड़ियों के पीछे, उन्हें गुफा दिखाई दी।

यह एक बहुत ही नीची, गरीब, छोटी और साफ-सुथरी झोपड़ी थी, जिसके बाहरी हिस्से पर एक बेल कील से ठोंकी हुई थी।
दरवाजे के पास, एक पुरानी व्हीलचेयर में, जो किसानों की आरामकुर्सी जैसी होती है, एक सफेद बालों वाला आदमी सूरज की ओर मुस्कुरा रहा था।
बैठे हुए व्यक्ति के पास एक छोटा लड़का खड़ा था, जो चरवाहा था। वह बूढ़े व्यक्ति को दूध का एक घड़ा भेंट कर रहा था।
जब बिशप उसे देख रहे थे, तभी बूढ़े व्यक्ति ने कहा: “धन्यवाद, मुझे कुछ नहीं चाहिए।” और उनकी मुस्कान सूरज से हटकर बच्चे पर टिक गई।
बिशप आगे बढ़े। उनके चलने की आवाज़ सुनकर बूढ़े व्यक्ति ने अपना सिर घुमाया और उनके चेहरे पर वह आश्चर्य स्पष्ट रूप से दिखाई दिया जो एक व्यक्ति लंबे जीवन के बाद भी महसूस कर सकता है।
“जब से मैं यहाँ आया हूँ, यह पहली बार है कि कोई यहाँ आया है। आप कौन हैं, महोदय?” उसने कहा।
बिशप ने उत्तर दिया:—
"मेरा नाम बिएनवेनु मायरियल है।"
“बिएनवेनु मायरील? मैंने यह नाम सुना है। क्या आप वही व्यक्ति हैं जिन्हें लोग मोनसिग्नोर वेलकम कहते हैं?”
"मैं हूँ।"
बूढ़े व्यक्ति ने हल्की मुस्कान के साथ अपनी बात फिर से शुरू की।
“तो फिर, आप मेरे बिशप हैं?”
कुछ इसी तरह का।
"प्रवेश करें, महोदय।"
सम्मेलन के सदस्य ने बिशप की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन बिशप ने उसे स्वीकार नहीं किया। बिशप ने केवल इतना ही कहा:
मुझे यह जानकर खुशी हुई कि मुझे गलत जानकारी दी गई थी। आप मुझे बिल्कुल भी बीमार नहीं लग रहे हैं।

“महाशय,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, “मैं ठीक हो जाऊंगा।”

वह रुका, और फिर बोला:—

मैं तीन घंटे बाद मर जाऊंगा।

फिर उन्होंने आगे कहा:—

“मैं थोड़ा-बहुत डॉक्टर हूँ; मुझे पता है कि अंतिम क्षण किस ओर बढ़ रहा है। कल तक तो सिर्फ मेरे पैर ठंडे थे; आज ठंड मेरे घुटनों तक पहुँच गई है; अब मुझे लग रहा है कि यह मेरी कमर तक पहुँच रही है; जब यह दिल तक पहुँचेगी, तो मैं मर जाऊँगा। सूरज कितना सुंदर है, है ना? मैं खुद को यहाँ आखिरी बार देखने के लिए लाया हूँ। आप मुझसे बात कर सकते हैं; इससे मुझे थकान नहीं होती। आपने अच्छा किया कि आप एक ऐसे व्यक्ति को देखने आए हैं जो मृत्यु के कगार पर है। यह अच्छा है कि उस समय वहाँ गवाह मौजूद हों। हर किसी की अपनी इच्छाएँ होती हैं; मैं भोर तक जीवित रहना चाहता था, लेकिन मुझे पता है कि मैं मुश्किल से तीन घंटे ही जी पाऊँगा। तब तक रात हो जाएगी। आख़िरकार इससे क्या फ़र्क पड़ता है? मरना एक सरल प्रक्रिया है। इसके लिए प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती। ठीक है। मैं तारों की रोशनी में मरूँगा।”

बूढ़े व्यक्ति ने चरवाहे लड़के की ओर मुड़कर कहा:

"जाओ अपने बिस्तर पर; तुम कल रात भर जागते रहे; तुम थके हुए हो।"

बच्चा झोपड़ी में दाखिल हुआ।

बूढ़े व्यक्ति ने अपनी आँखों से उसका पीछा किया और मानो स्वयं से बात करते हुए कहा:

“जब वह सो रहा होगा, मैं मर जाऊँगा। ये दोनों नींदें अच्छे पड़ोसी हो सकती हैं।”

बिशप को भले ही आहत होना चाहिए था, लेकिन वे उतने आहत नहीं हुए। उन्हें नहीं लगा कि इस तरह की मृत्यु में उन्हें ईश्वर का दर्शन हुआ; चलिए, पूरी बात ही कह देते हैं, क्योंकि महान हृदयों के ये छोटे-मोटे विरोधाभास भी बाकी बातों की तरह ही दर्शाने योग्य हैं: जो कभी-कभी "महामहिम" कहकर हँसने के शौकीन थे, उन्हें "महामहिम" कहकर संबोधित न किए जाने पर काफी हैरानी हुई और वे लगभग "नागरिक" कहकर जवाब देने ही वाले थे। उनमें चिड़चिड़ी आत्मीयता

की प्रवृत्ति हावी हो गई थी, जो डॉक्टरों और पुजारियों में आम है, लेकिन जो उनके स्वभाव में नहीं थी। आखिरकार, यह व्यक्ति, सम्मेलन का यह सदस्य, जनता का यह प्रतिनिधि, पृथ्वी के शक्तिशाली लोगों में से एक था; शायद अपने जीवन में पहली बार बिशप कठोर होने के मूड में थे।

इस बीच, सम्मेलन का सदस्य विनम्रतापूर्वक उनका अवलोकन कर रहा था, जिसमें संभवतः वह नम्रता झलक रही थी जो मिट्टी में विलीन होने की कगार पर होने पर अत्यंत उपयुक्त होती है।

बिशप, हालांकि आम तौर पर अपनी जिज्ञासा को नियंत्रित रखते थे, जो उनके विचार में एक दोष की सीमा तक पहुँच जाती थी, फिर भी वे सम्मेलन के सदस्य की जाँच-पड़ताल करने से खुद को नहीं रोक सके। उनकी यह जाँच-पड़ताल सहानुभूतिपूर्ण नहीं थी, इसलिए किसी अन्य व्यक्ति के मामले में यह उनके अंतरात्मा को कचोट पहुँचाती। सम्मेलन के सदस्य को देखकर उन्हें ऐसा प्रतीत होता था मानो वे कानून की सीमा से बाहर हों, यहाँ तक कि दान के कानून से भी बाहर। शांत, लगभग सीधे खड़े, काँपती हुई आवाज़ वाले बिशप उन अस्सी वर्षीय व्यक्तियों में से एक थे जो शरीर विज्ञानियों के लिए आश्चर्य का विषय होते हैं। क्रांति के दौरान ऐसे कई व्यक्ति हुए, जो उस युग के अनुरूप थे। इस वृद्ध व्यक्ति में एक ऐसे व्यक्ति की झलक थी जिसने कठिन परीक्षाएँ झेली थीं। अपने अंत के इतने करीब होने के बावजूद, उन्होंने स्वास्थ्य के सभी लक्षण बरकरार रखे थे। उनकी स्पष्ट दृष्टि में, उनके दृढ़ स्वर में, उनके कंधों की सुदृढ़ गति में, कुछ ऐसा था जो मृत्यु को विचलित कर सकता था। कब्र के मोहम्मदियाई फ़रिश्ते अज़राएल ने शायद पीछे मुड़कर देखा होगा और सोचा होगा कि उसने दरवाज़ा गलत समझ लिया है। ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी इच्छा से मर रहा हो। उसकी पीड़ा में भी एक तरह की आज़ादी थी। केवल उसके पैर ही गतिहीन थे। वहीं पर परछाइयों ने उसे जकड़ रखा था। उसके पैर ठंडे और बेजान थे, लेकिन उसका सिर जीवन की पूरी शक्ति से भरा हुआ था और प्रकाश से परिपूर्ण प्रतीत हो रहा था। इस गंभीर क्षण में, जी उस पूर्वी कथा के राजा की तरह लग रहा था जो ऊपर से मांस और नीचे से संगमरमर का बना होता था।

वहाँ एक पत्थर था। बिशप बैठ गए। प्रस्तावना अचानक समाप्त हुई।

“मैं आपको बधाई देता हूँ,” उसने फटकार लगाने वाले लहजे में कहा। “आखिरकार आपने राजा की मृत्यु के लिए मतदान नहीं किया।”

सम्मेलन के उस बुजुर्ग सदस्य को "आखिरकार" शब्दों में छिपे कड़वे अर्थ का एहसास नहीं हुआ। उन्होंने जवाब दिया। उनके चेहरे से मुस्कान पूरी तरह गायब हो चुकी थी।

"मुझे बहुत ज्यादा बधाई मत दीजिए, महोदय। मैंने तानाशाह की मौत के लिए ही वोट दिया था।"

यह कठोरता के स्वर का जवाब देने वाला मितव्ययी स्वर था।

“आप क्या कहना चाहते हैं?” बिशप ने प्रश्नोत्तर किया।

मेरा तात्पर्य यह है कि मनुष्य का एक अत्याचारी है—अज्ञानता। मैंने उस अत्याचारी के खात्मा के लिए मतदान किया था। उस अत्याचारी ने राजशाही को जन्म दिया, जो सत्ता का गलत अर्थ है, जबकि विज्ञान सत्ता का सही अर्थ है।
मनुष्य का शासन केवल विज्ञान द्वारा ही होना चाहिए।

"और अंतरात्मा," बिशप ने आगे कहा।

“यह एक ही बात है। अंतरात्मा वह सहज विज्ञान है जो हमारे भीतर मौजूद होता है।”

मोनसिग्नोर बिएनवेनु ने कुछ आश्चर्य के साथ इस भाषा को सुना, जो उनके लिए बिल्कुल नई थी।

सम्मेलन के सदस्य ने आगे कहा:—

“जहां तक लुई सोलहवें का सवाल था, मैंने ‘ना’ कहा। मुझे नहीं लगता था कि मुझे किसी व्यक्ति को मारने का अधिकार है; लेकिन मैंने बुराई को मिटाना अपना कर्तव्य समझा। मैंने अत्याचारी शासन के अंत के लिए मतदान किया, यानी महिलाओं के लिए वेश्यावृत्ति का अंत, पुरुषों के लिए गुलामी का अंत, बच्चों के लिए अंधकार का अंत। गणतंत्र के लिए मतदान करके, मैंने इसके लिए मतदान किया। मैंने भाईचारे, सद्भाव और उज्ज्वल भविष्य के लिए मतदान किया। मैंने पूर्वाग्रहों और गलतियों के पतन में योगदान दिया है। पूर्वाग्रहों और गलतियों के टूटने से प्रकाश उत्पन्न होता है। हमने पुरानी दुनिया का

पतन किया है, और दुखों का वह पात्र, मानव जाति पर अपने प्रभाव के कारण, आनंद का पात्र बन गया है।”

बिशप ने कहा, "मिली-जुली खुशी।"

“आप इसे विक्षिप्त आनंद कह सकते हैं, और आज, अतीत की उस घातक वापसी के बाद, जिसे 1814 कहा जाता है, वह आनंद गायब हो गया है! अफसोस! मैं मानता हूँ कि काम अधूरा रह गया: हमने कर्मों से प्राचीन व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया; हम विचारों से इसे पूरी तरह से समाप्त नहीं कर सके। केवल बुराइयों को नष्ट करना पर्याप्त नहीं है; रीति-रिवाजों में बदलाव लाना आवश्यक है। चक्की अब नहीं रही; हवा अभी भी चल रही है।”

"तुमने विध्वंस कर दिया है। विध्वंस करना उपयोगी हो सकता है, लेकिन क्रोध से प्रेरित विध्वंस पर मुझे भरोसा नहीं है।"

“हे बिशप, सत्य का अपना क्रोध होता है; और सत्य का क्रोध प्रगति का एक तत्व है। किसी भी स्थिति में, और चाहे कुछ भी कहा जाए, फ्रांसीसी क्रांति ईसा मसीह के आगमन के बाद से मानव जाति का सबसे महत्वपूर्ण कदम है। भले ही यह अपूर्ण हो, लेकिन उदात्त है। इसने सभी अज्ञात सामाजिक तत्वों को मुक्त किया; इसने मन को शांत किया, संतुष्ट किया, ज्ञान प्रदान किया; इसने सभ्यता की लहरों को पृथ्वी पर प्रवाहित किया। यह एक अच्छी बात थी। फ्रांसीसी क्रांति मानवता का पवित्रीकरण है।”

बिशप अपने मन ही मन बुदबुदाने से खुद को रोक नहीं पाए:—

“जी हाँ? ’93!”

सम्मेलन के सदस्य ने लगभग उदास गंभीरता के साथ अपनी कुर्सी पर सीधे होकर, मरणासन्न व्यक्ति की क्षमता के अनुसार, विस्मय व्यक्त किया:

“अरे वाह, ये रहा; 93! मुझे इसी शब्द की उम्मीद थी। पंद्रह सौ वर्षों से एक बादल बन रहा था; पंद्रह सौ वर्षों के अंत में वह फट गया। आप उस पर बिजली गिरा रहे हैं।”

बिशप को शायद बिना स्वीकार किए ही यह महसूस हुआ कि उनके भीतर कुछ नष्ट हो गया है। फिर भी, उन्होंने स्थिति को सकारात्मक रूप से संभाला। उन्होंने उत्तर दिया:—

“न्यायाधीश न्याय के नाम पर बोलता है; पुजारी दया के नाम पर बोलता है, जो कि न्याय का ही एक उच्चतर रूप है। बिजली को भी कोई गलती नहीं करनी चाहिए।” और उन्होंने कन्वेंशन के सदस्य को स्थिर दृष्टि से देखते हुए कहा, “लुई सत्रहवाँ?”

सम्मेलन में उपस्थित व्यक्ति ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और बिशप की बांह पकड़ ली।

“लुई सत्रह! ज़रा सोचिए। आप किसके लिए शोक मना रहे हैं? क्या यह उस निर्दोष बच्चे के लिए है? बहुत अच्छा; अगर ऐसा है तो मैं आपके साथ शोक मनाता हूँ। क्या यह उस शाही बच्चे के लिए है? मुझे चिंतन के लिए समय चाहिए। मेरे लिए, कार्टूश का भाई, एक निर्दोष बच्चा जिसे प्लेस डे ग्रेव में बगल से लटकाकर तब तक रखा गया जब तक उसकी मृत्यु नहीं हो गई, केवल कार्टूश का भाई होने के अपराध के लिए, लुई पंचम के पोते से कम दर्दनाक नहीं है, एक निर्दोष बच्चा, जिसे टेम्पल के टॉवर में शहीद कर दिया गया, केवल लुई पंचम का पोता होने के अपराध के लिए।”

बिशप ने कहा, "महाशय, मुझे नामों का यह संयोजन पसंद नहीं है।"

“कार्टूश? लुई XV? इन दोनों में से आपको किस पर आपत्ति है?”

कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया। बिशप को लगभग आने का अफसोस हुआ, फिर भी वह अस्पष्ट रूप से और अजीब तरह से विचलित महसूस कर रहे थे।

सम्मेलन पुनः शुरू हुआ:—

“आह, महामहिम पुजारी, आपको सत्य की कठोरता पसंद नहीं है। ईसा मसीह को वह पसंद थी। उन्होंने एक छड़ी उठाई और मंदिर को शुद्ध किया। उनकी बिजली से भरी हुई कोड़ा सत्य का कठोर वक्ता था। जब उन्होंने ‘सिनिटे पारवुलस’ (कठोरता) का आह्वान किया, तो उन्होंने छोटे बच्चों में कोई भेद नहीं किया। बरब्बास के राजकुमार और हेरोदेस के राजकुमार को एक साथ लाने में उन्हें कोई शर्म नहीं आती। हे महामहिम, निर्दोषता ही अपना मुकुट है। निर्दोषता को उच्चता की आवश्यकता नहीं है। यह फटे-पुराने वस्त्रों में भी उतनी ही भव्य है जितनी कि लिली के फूलों में।”

“यह सच है,” बिशप ने धीमी आवाज में कहा।

“मैं अपनी बात पर अड़ा हूँ,” सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधि ने आगे कहा – “आपने लुई 17 वीं का ज़िक्र किया है। आइए, हम एक समझौता करें। क्या हम सभी निर्दोषों, सभी शहीदों, सभी बच्चों, निम्न और उच्च वर्ग के लोगों के लिए शोक मनाएँगे? मैं इससे सहमत हूँ। लेकिन उस स्थिति में, जैसा कि मैंने आपको बताया है, हमें 1993 से भी पहले जाना होगा, और हमारे आँसू लुई 17 वीं से पहले शुरू होने चाहिए। मैं राजाओं के बच्चों के लिए आपके साथ रोऊँगा, बशर्ते आप भी आम लोगों के बच्चों के लिए मेरे साथ रोएँ।”

बिशप ने कहा, "मैं सभी के लिए रोता हूं।"

“बिल्कुल!” सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधि जी ने कहा; “और अगर पलड़ा झुकना ही है, तो जनता के पक्ष में झुकने दो। वे लंबे समय से कष्ट झेल रहे हैं।”

फिर सन्नाटा छा गया। सम्मेलन में उपस्थित व्यक्ति ने सबसे पहले सन्नाटा तोड़ा। वह एक कोहनी के बल उठा, अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच अपने गाल का एक हिस्सा दबाया, जैसा कि कोई पूछताछ और निर्णय करते समय स्वाभाविक रूप से करता है, और बिशप से मृत्यु की पीड़ा से भरी निगाहों से अपील की। यह लगभग एक विस्फोट जैसा था।

जी हाँ, जनमानस, जनता लंबे समय से कष्ट भोग रही है। और रुकिए! बात यहीं खत्म नहीं होती; आपने अभी-अभी मुझसे लुई 17 वें के बारे में क्यों पूछा और बात की? मैं आपको नहीं जानता। जब से मैं यहाँ आया हूँ, मैं इस बाड़े में अकेला ही रहा हूँ, कभी बाहर कदम नहीं रखा, और उस बच्चे के अलावा किसी को नहीं देखा जो मेरी मदद करता है। आपका नाम मुझ तक गलत तरीके से पहुँचा है, यह सच है, और उच्चारण भी बहुत गलत था, यह मुझे मानना पड़ेगा; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता: चालाक लोगों के पास उस ईमानदार भले आदमी, जनता को धोखा देने के कई तरीके होते हैं। वैसे, मैंने आपकी गाड़ी की आवाज नहीं सुनी; आपने उसे वहीं, सड़क के चौराहे पर झाड़ियों के पीछे छोड़ दिया होगा, इसमें कोई शक नहीं। मैं आपको नहीं जानता, मैं आपको बता रहा हूँ। आपने मुझे बताया है कि आप बिशप हैं; लेकिन इससे मुझे आपके नैतिक व्यक्तित्व के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। संक्षेप में, मैं अपना प्रश्न दोहराता हूँ। आप कौन हैं? आप एक बिशप हैं; यानी, चर्च के एक राजकुमार, उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक जिनके पास राजचिह्न और आय होती है, जिनके पास विशाल प्राधिकृत संपत्ति—डी का बिशप पद—पंद्रह हजार फ्रैंक की निर्धारित आय, दस हजार फ्रैंक के भत्ते;

कुल पच्चीस हजार फ्रैंक—जिनके पास रसोईघर हैं, जिनके पास वर्दी है, जो अच्छा माहौल बनाते हैं, जो शुक्रवार को मूरहेन खाते हैं, जो एक शानदार रथ में आगे-पीछे एक नौकर के साथ इतराते हैं, जिनके पास महल हैं, और जो नंगे पैर चलने वाले यीशु मसीह के नाम पर अपनी गाड़ियों में लोटते हैं! आप एक धर्माधिकारी हैं—आय, महल, घोड़े, नौकर, बढ़िया भोजन, जीवन के सभी सुख-सुविधाएं; आपके पास ये सब बाकी लोगों की तरह है, और बाकी लोगों की तरह आप भी इसका आनंद लेते हैं; यह ठीक है; लेकिन यह या तो बहुत अधिक कहता है या बहुत कम; यह मुझे उस व्यक्ति के आंतरिक और आवश्यक मूल्य के बारे में नहीं बताता जो संभवतः मुझे ज्ञान देने के इरादे से आया है। मैं किससे बात कर रहा हूँ? आप कौन हैं?

बिशप ने अपना सिर झुकाया और उत्तर दिया, "वर्मीस सम—मैं एक कीड़ा हूँ।"

“एक गाड़ी में धरती का कीड़ा?” सम्मेलन के आयोजक ने गुर्राते हुए कहा।

अब सम्मेलन में भाग लेने वालों की बारी थी अहंकार दिखाने की, और बिशप की बारी थी विनम्रता दिखाने की।

बिशप ने विनम्रतापूर्वक बोलना जारी रखा:—

"ठीक है, महोदय। लेकिन मुझे समझाइए कि मेरी गाड़ी, जो सामने पेड़ों के पीछे कुछ ही कदम दूर खड़ी है, मेरा बढ़िया भोजन और शुक्रवार को खाई जाने वाली मुर्गियाँ, मेरी पच्चीस हजार फ्रैंक की आमदनी, मेरा महल और मेरे नौकर-चाकर कैसे साबित करते हैं कि दया दिखाना कोई कर्तव्य नहीं है, और यह कि 1993 का वर्ष अटल नहीं था।"

सम्मेलन में उपस्थित व्यक्ति ने मानो माथे से बादल हटाने के लिए अपने माथे पर हाथ फेरा।

“आपको उत्तर देने से पहले,” उन्होंने कहा, “मैं आपसे क्षमा मांगता हूँ। मैंने अभी-अभी एक गलती की है, महोदय। आप मेरे घर पर हैं, आप मेरे अतिथि हैं, मेरा कर्तव्य है कि मैं आपका सम्मान करूँ। आप मेरे विचारों पर चर्चा कर रहे हैं, और मेरा यह कर्तव्य है कि मैं केवल आपके तर्कों का उत्तर दूँ। आपकी दौलत और सुख-सुविधाएँ बहस में मेरे लिए एक लाभ हैं; लेकिन विवेक मुझे इनका उपयोग न करने का निर्देश देता है। मैं आपसे वादा करता हूँ कि भविष्य में भी मैं इनका उपयोग नहीं करूँगा।”

“मैं आपका धन्यवाद करता हूँ,” बिशप ने कहा।

जी⸺ ने पुनः आरंभ किया।

“चलिए उस स्पष्टीकरण पर लौटते हैं जो आपने मुझसे पूछा है। हम कहाँ थे? आप मुझसे क्या कह रहे थे? क्या आप कह रहे थे कि 1993 अटल था?”

“अटल; हाँ,” बिशप ने कहा। “आप मराट के गिलोटिन पर ताली बजाने के बारे में क्या सोचते हैं?”

“बॉसुएट द्वारा ड्रैगननेड्स पर टे डेउम का जाप करने के बारे में आपका क्या विचार है?”

जवाब तीखा था, लेकिन लोहे की नोक की तरह सीधा और सटीक था। बिशप इससे कांप उठा; उसके मन में कोई जवाब नहीं आया; लेकिन बॉसुएट का इस तरह जिक्र करने से उसे ठेस पहुंची। बड़े से बड़े बुद्धिमान लोगों की भी अपनी-अपनी मान्यताएं होती हैं, और कभी-कभी तर्क की अवहेलना से उन्हें हल्का-सा दुख होता है।

सम्मेलन में उपस्थित वक्ता हांफने लगे; अंतिम सांसों के साथ आने वाली पीड़ा के कारण उनकी आवाज लड़खड़ा गई; फिर भी, उनकी आंखों में आत्मा की पूर्ण स्पष्टता थी। उन्होंने आगे कहा:—

“मुझे इस और उस दिशा में कुछ और शब्द कहने दीजिए; मैं तैयार हूँ। क्रांति को छोड़ दें, जो समग्र रूप से एक विशाल मानवीय पुष्टि है, तो '93, अफसोस! एक प्रतिवाद है। आप इसे अटल मानते हैं, महोदय; लेकिन पूरे राजतंत्र के बारे में क्या, महोदय? कैरियर एक डाकू है; लेकिन आप मॉन्ट्रेवेल को क्या नाम देते हैं? फौक्वियर-टैनविले एक बदमाश है; लेकिन लैमोइग्नन-बाविल के बारे में आपकी क्या राय है? मैलार्ड भयानक है; लेकिन अगर आप चाहें तो सॉल्क्स-टावनेस के बारे में क्या कहेंगे? डचेन सीनियर क्रूर है; लेकिन आप मुझे बड़े लेटेलियर के लिए कौन सा विशेषण इस्तेमाल करने देंगे? जॉर्डन-कूप-टेटे एक राक्षस है; लेकिन एम. मार्क्विस डी लूवोइस जितना बड़ा नहीं। महोदय, महोदय, मुझे आर्चडचेस और रानी मैरी एंटोनेट के लिए खेद है; लेकिन मुझे उस बेचारी ह्यूगनॉट महिला के लिए भी खेद है, जिसने 1685 में लुई के शासनकाल में...” महान महोदय, एक शिशु को दूध पिलाते हुए, उसे कमर तक नग्न अवस्था में एक खंभे से बांध दिया गया, और शिशु को दूर रखा गया; उसका स्तन दूध से भरा था और हृदय पीड़ा से; भूखा और पीला पड़ा हुआ नन्हा शिशु उस स्तन को देखता और

रोता और व्याकुल होता रहा; जल्लाद ने उस स्त्री, एक माँ और एक नर्स से कहा, 'त्याग करो!' उसे अपने शिशु की मृत्यु और अपनी अंतरात्मा की मृत्यु के बीच चुनाव करने का विकल्प दिया गया। एक माँ पर इस तरह की यातना के बारे में आपका क्या कहना है? महोदय, इस बात को अच्छी तरह से याद रखें: फ्रांसीसी क्रांति के अस्तित्व के अपने कारण थे; भविष्य में इसका क्रोध क्षमा हो जाएगा; इसका परिणाम यह है कि दुनिया बेहतर बनी है। इसके सबसे भयानक प्रहारों से मानव जाति के लिए एक स्नेह उत्पन्न होता है। मैं संक्षेप में कह रहा हूँ, मैं रुक रहा हूँ, मुझे बहुत अधिक लाभ है; इसके अलावा, मैं मर रहा हूँ।

बिशप की ओर देखना बंद करते हुए, सम्मेलन के प्रतिनिधि ने अपने विचारों को इन शांत शब्दों में समाप्त किया:—

“हाँ, प्रगति की क्रूरताओं को क्रांति कहा जाता है। जब ये क्रांतियाँ समाप्त हो जाती हैं, तो इस तथ्य को स्वीकार किया जाता है कि मानव जाति के साथ कठोर व्यवहार किया गया है, लेकिन फिर भी उसने प्रगति की है।”

सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधि को इस बात में कोई संदेह नहीं था कि उसने बिशप के सभी आंतरिक गढ़ों पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त कर ली थी। हालाँकि, एक गढ़ शेष रह गया था, और इस गढ़ से, जो महामहिम बिशप के प्रतिरोध का अंतिम सहारा था, यह उत्तर आया, जिसमें शुरुआत की लगभग सारी कठोरता झलकती थी:—

“प्रगति को ईश्वर में विश्वास रखना चाहिए। अच्छाई का कोई अधर्मी सेवक नहीं हो सकता। जो नास्तिक है, वह मानव जाति के लिए एक बुरा नेता है।”

जनता के पूर्व प्रतिनिधि ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे कांपने लगे। उन्होंने आकाश की ओर देखा, और उनकी नज़र में धीरे-धीरे एक आंसू जमा हो गया। जब पलक पूरी तरह भर गई, तो आंसू उनके पीले पड़े गालों पर बहने लगा, और उन्होंने लगभग हकलाते हुए, बहुत धीमी आवाज़ में, स्वयं से कहा, जबकि उनकी आँखें गहरी उदासी में डूबी हुई थीं:

“हे तुम! हे आदर्श! केवल तुम ही विद्यमान हो!”

बिशप को असहनीय आघात लगा।

कुछ देर रुकने के बाद, बूढ़े व्यक्ति ने आकाश की ओर उंगली उठाई और कहा:—

“अनंत विद्यमान है। वह विद्यमान है। यदि अनंत का कोई व्यक्ति न होता, तो व्यक्ति असीमित होता; वह अनंत न होता; दूसरे शब्दों में, उसका अस्तित्व ही न होता। इसलिए, एक 'मैं' है। अनंत का वह 'मैं' ही ईश्वर है।”

मरणासन्न व्यक्ति ने ये अंतिम शब्द ऊँची आवाज़ में और परमानंद की सिहरन के साथ कहे, मानो वह किसी को देख रहा हो। बोलते ही उसकी आँखें बंद हो गईं। प्रयास ने उसे थका दिया था। यह स्पष्ट था कि उसने पल भर में अपने बचे हुए कुछ घंटे जी लिए थे। उसके कहे शब्दों ने उसे मृत्यु के निकट ला दिया था। परम क्षण निकट आ रहा था।

बिशप यह बात समझ गए थे; समय कम था; वे एक पुजारी के रूप में आए थे: अत्यधिक शीतलता से धीरे-धीरे वे अत्यधिक भावुकता की ओर बढ़े थे; उन्होंने उन बंद आँखों को देखा, उन्होंने उस झुर्रीदार, वृद्ध और बर्फीले ठंडे हाथ को अपने हाथ में लिया और मरते हुए व्यक्ति पर झुक गए।

“यह घड़ी ईश्वर की घड़ी है। क्या आपको नहीं लगता कि अगर हमारी मुलाकात व्यर्थ हुई होती तो यह खेदजनक होता?”

सम्मेलन में उपस्थित व्यक्ति ने अपनी आँखें फिर से खोलीं। उनके चेहरे पर उदासी के साथ-साथ गंभीरता भी झलक रही थी।

“बिशप,” उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, जो शायद उनकी आत्मा की गरिमा से अधिक थी न कि उनकी शक्ति की कमी से, “मैंने अपना जीवन ध्यान, अध्ययन और चिंतन में व्यतीत किया है। जब मैं साठ वर्ष का था, तब मेरे देश ने मुझे पुकारा और मुझे उसके मामलों में शामिल होने का आदेश दिया। मैंने आज्ञा का पालन किया। अत्याचार मौजूद थे, मैंने उनका मुकाबला किया; तानाशाही मौजूद थी, मैंने उन्हें नष्ट किया; अधिकार और सिद्धांत मौजूद थे, मैंने उनका प्रचार और समर्थन किया। हमारे क्षेत्र पर आक्रमण हुआ, मैंने उसकी रक्षा की; फ्रांस पर खतरा मंडराया, मैंने अपनी जान कुर्बान कर दी। मैं अमीर नहीं था; मैं गरीब हूँ। मैं राज्य के प्रमुख शासकों में से एक रहा हूँ; खजाने में इतना अधिक सोना भर गया था कि हमें दीवारों को सहारा देना पड़ा, जो सोने और चांदी के भार से टूटने की कगार पर थीं; मैंने डेड ट्री स्ट्रीट में बाईस सू में भोजन किया। मैंने पीड़ितों की सहायता की है, मैंने दुखियों को सांत्वना दी है। यह सच है कि मैंने वेदी से कपड़ा फाड़ा; लेकिन मेरा उद्देश्य अपने देश

के घावों पर मरहम लगाना था। मैंने हमेशा मानव जाति की प्रगति का, प्रकाश की ओर प्रगति का समर्थन किया है, और कभी-कभी मैंने निर्दयता से प्रगति का विरोध भी किया है। जब भी अवसर मिला, मैंने अपने विरोधियों, यानी आप जैसे लोगों की रक्षा की है। और फ़्लैंडर्स के पेटेघम में, ठीक उसी स्थान पर जहाँ मेरोविंगियन राजाओं का ग्रीष्मकालीन महल था, शहरी योजनाकारों का एक मठ है, सेंट क्लेयर एन बोलियू का एबे, जिसे मैंने 1793 में बचाया था। मैंने अपनी क्षमता के अनुसार अपना कर्तव्य निभाया है, और वह सब अच्छा किया है जो मैं कर सकता था। इसके बाद, मेरा शिकार किया गया, मेरा पीछा किया गया, मुझे सताया गया, मेरी बदनामी की गई, मेरा उपहास किया गया, मुझे तिरस्कृत किया गया, मुझे शाप दिया गया, मुझे बहिष्कृत किया गया। कई वर्षों से, अपने सफेद बालों के साथ, मैं इस बात से अवगत हूँ कि बहुत से लोग सोचते हैं कि उन्हें मुझे तुच्छ समझने का अधिकार है; निर्धन अज्ञानी जनता के सामने मैं एक शापित व्यक्ति का चेहरा प्रस्तुत करता हूँ। और मैं इस घृणा के अलगाव को स्वीकार करता हूँ, बिना स्वयं किसी से घृणा किए। अब मैं छियासी वर्ष का हूँ; मैं मृत्यु के कगार पर हूँ। आप मुझसे क्या पूछने आए हैं?

“आपका आशीर्वाद,” बिशप ने कहा।

और वह घुटनों के बल बैठ गया।

जब बिशप ने दोबारा अपना सिर उठाया, तो सम्मेलन में उपस्थित व्यक्ति का चेहरा गंभीर हो गया था। उनका अभी-अभी निधन हुआ था।

बिशप गहन चिंतन में डूबे हुए घर लौटे, जिनके बारे में हम नहीं जान सकते।
उन्होंने पूरी रात प्रार्थना में बिताई। अगली सुबह कुछ साहसी और जिज्ञासु व्यक्तियों ने उनसे कन्वेंशन जी के सदस्य के बारे में बात करने का प्रयास किया; लेकिन उन्होंने आकाश की ओर इशारा करके ही संतोष कर लिया।

उस क्षण से उन्होंने सभी बच्चों और पीड़ितों के प्रति अपनी कोमलता और भाईचारे की भावना को और भी बढ़ा दिया।

“उस दुष्ट बूढ़े ईश्वर” का ज़िक्र होते ही वह एक विलक्षण चिंतन में डूब जाता था। कोई यह नहीं कह सकता था कि उससे पहले उस आत्मा का गुज़रना और उस महान अंतरात्मा का उस पर पड़ने वाला प्रभाव, पूर्णता की ओर उसके अग्रसर होने में कोई मायने नहीं रखता था।

इस "पारंपरिक यात्रा" ने स्वाभाविक रूप से सभी छोटे स्थानीय समूहों में कानाफूसी और टिप्पणी का अवसर प्रदान किया।

“क्या उस मरणासन्न व्यक्ति के बिस्तर के पास किसी बिशप का होना उचित था? जाहिर तौर पर वहाँ किसी धर्म परिवर्तन की उम्मीद नहीं थी। वे सभी क्रांतिकारी पथभ्रष्ट हैं। तो फिर वहाँ क्यों गए? वहाँ देखने लायक क्या था? शैतान द्वारा ले जाई जा रही आत्मा को देखना उनके लिए वाकई बहुत उत्सुकता का विषय रहा होगा।”

एक दिन एक उद्दंड विधवा, जो खुद को आध्यात्मिक समझती थी, ने उनसे यह प्रश्न पूछा, “महामहिम, लोग पूछ रहे हैं कि आप लाल टोपी कब पहनेंगे!” — “अरे! अरे! यह तो भद्दा रंग है,” बिशप ने उत्तर दिया। “यह सौभाग्य की बात है कि जो लोग टोपी में इसे तुच्छ समझते हैं, वे टोपी में इसका आदर करते हैं।”

XI. एक प्रतिबंध

यदि हम इससे यह निष्कर्ष निकालें कि महाशय वेलकम "एक दार्शनिक बिशप" या "एक देशभक्त पादरी" थे, तो हम अपने आप को धोखा देने का बड़ा जोखिम उठाएंगे। उनकी मुलाकात, जिसे लगभग उनका मिलन कहा जा सकता है, परंपरावादी जी⸺ के साथ उनके मन में एक प्रकार का आश्चर्य छोड़ गई, जिसने उन्हें और भी विनम्र बना दिया। बस इतना ही।

हालांकि मोनसिग्नोर बिएनवेनु एक राजनीतिज्ञ से बहुत दूर थे, फिर भी शायद यह बताने का उचित स्थान है कि उस युग की घटनाओं के प्रति उनका दृष्टिकोण क्या था, यह मानते हुए कि मोनसिग्नोर बिएनवेनु ने कभी कोई दृष्टिकोण रखने का सपना देखा होगा।

तो चलिए, कुछ साल पीछे चलते हैं।

एम. मिरियल को बिशप पद पर पदोन्नत किए जाने के कुछ समय बाद, सम्राट ने उन्हें कई अन्य बिशपों के साथ साम्राज्य का बैरन बना दिया। जैसा कि सर्वविदित है, पोप की गिरफ्तारी 5 से 6 जुलाई, 1809 की रात को हुई थी; इस अवसर पर, नेपोलियन ने एम. मिरियल को पेरिस में आयोजित फ्रांस और इटली के बिशपों की सभा में बुलाया। यह सभा नोट्रे-डेम में आयोजित की गई थी और कार्डिनल फेश की अध्यक्षता में पहली बार 15 जून, 1811 को एकत्रित हुई थी। एम. मिरियल उन पचानवे बिशपों में से एक थे जिन्होंने इसमें भाग लिया था। लेकिन वे केवल एक बैठक और तीन या चार निजी सम्मेलनों में ही उपस्थित रहे। एक पर्वतीय धर्मप्रांत के बिशप होने के नाते, प्रकृति के इतने करीब, सादगी और अभाव में जीवन व्यतीत करते हुए, ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बीच ऐसे विचार प्रस्तुत किए जिन्होंने सभा का वातावरण बदल दिया। वे बहुत जल्द ही वापस लौट गए। उनसे इतनी जल्दी लौटने के बारे में पूछताछ की गई, तो उन्होंने जवाब दिया: "मैंने उन्हें शर्मिंदा किया। बाहर की हवा मेरे माध्यम से उन तक पहुंची। मैंने उन पर एक खुले दरवाजे का प्रभाव पैदा किया।"

एक अन्य अवसर पर उन्होंने कहा, “आप क्या चाहते हैं? वे सज्जन तो राजकुमार हैं। मैं तो केवल एक गरीब किसान बिशप हूँ।”

असल बात तो यह है कि उन्होंने उन्हें नाराज़ कर दिया था। अन्य अजीब बातों के अलावा, ऐसा कहा जाता है कि एक शाम जब वे अपने सबसे प्रतिष्ठित सहयोगियों में से एक के घर पर थे, तो उन्होंने अचानक टिप्पणी की: “कितनी सुंदर घड़ियाँ हैं! कितने सुंदर कालीन हैं! कितने सुंदर वस्त्र हैं! ये सब तो बड़ी परेशानी का कारण होंगे। मुझे ये सारी फिजूलखर्ची नहीं चाहिए, जो लगातार मेरे कानों में चिल्लाती रहे: ‘ऐसे लोग हैं जो भूखे हैं! ऐसे लोग हैं जो ठंड से कांप रहे हैं! ऐसे लोग हैं जो गरीब हैं! ऐसे लोग हैं जो गरीब हैं!’”

वैसे, यह ध्यान देने योग्य है कि विलासिता से घृणा करना कोई विवेकपूर्ण घृणा नहीं है। इस घृणा में कलाओं से घृणा भी शामिल होगी। फिर भी, पादरियों के लिए विलासिता अनुचित है, सिवाय प्रदर्शनों और अनुष्ठानों के संदर्भ में। ऐसा प्रतीत होता है कि यह उन आदतों को प्रकट करती है जिनमें परोपकार का अंश बहुत कम होता है। एक धनी पादरी विरोधाभास है। पादरी को गरीबों के निकट रहना चाहिए। अब, क्या कोई व्यक्ति दिन-रात लगातार इस सारी पीड़ा, इस सारी विपत्ति और इस गरीबी के संपर्क में रह सकता है, बिना स्वयं उस दुख का थोड़ा सा अंश, जैसे श्रम की धूल, धारण किए? क्या किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना करना संभव है जो अंगीठी के पास हो और उसे गर्मी न लग रही हो? क्या कोई ऐसे मजदूर की कल्पना कर सकता है जो भट्टी के पास काम कर रहा हो और जिसके बाल न जले हों, नाखून न काले हों, पसीने की एक बूंद भी न हो, और चेहरे पर राख का एक कण भी न हो? पादरी में, विशेषकर बिशप में, परोपकार का पहला प्रमाण गरीबी है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि डी के बिशप ने भी यही सोचा होगा।

हालांकि, यह मान लेना उचित नहीं होगा कि कुछ संवेदनशील मुद्दों पर वे तथाकथित "सदी के विचारों" से सहमत थे। उन्होंने उस समय के धार्मिक विवादों में बहुत कम भाग लिया और चर्च और राज्य से जुड़े मुद्दों पर चुप्पी साधे रखी; लेकिन अगर उन पर दबाव डाला जाता, तो ऐसा लगता है कि वे गैलिकन की बजाय अल्ट्रामोंटेन साबित होते। चूंकि हम उनका चित्रण कर रहे हैं और कुछ भी छिपाना नहीं चाहते, इसलिए हमें यह बताना आवश्यक है कि नेपोलियन के पतन के

दौरान उनका रवैया बर्फीला था। 1813 से शुरू करके, उन्होंने सभी शत्रुतापूर्ण अभिव्यक्तियों का समर्थन किया या उनकी सराहना की। एल्बा द्वीप से लौटते समय जब नेपोलियन वहां से गुजरे, तो उन्होंने उनसे मिलने से इनकार कर दिया और सौ दिनों के दौरान अपने धर्मक्षेत्र में सम्राट के लिए सार्वजनिक प्रार्थनाओं का आदेश देने से भी परहेज किया।

अपनी बहन मैडमोजेल बैपटिस्टीन के अलावा, उनके दो भाई थे, एक सेनापति और दूसरा प्रीफेक्ट। वे दोनों को नियमित रूप से पत्र लिखते थे। कुछ समय के लिए वे अपने भाई के प्रति कठोर थे, क्योंकि कान में सम्राट के उतरने के समय प्रोवेंस में कमान संभालते हुए, सेनापति ने बारह सौ सैनिकों की टुकड़ी का नेतृत्व किया था और सम्राट का इस प्रकार पीछा किया था मानो सम्राट कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे भागने देना उचित हो। दूसरे भाई, पूर्व प्रीफेक्ट, जो एक नेक और सम्मानित व्यक्ति थे और पेरिस के रू कैसेट में एकांतवास में रहते थे, के साथ उनका पत्राचार अधिक स्नेहपूर्ण रहा।

इस प्रकार महाशय बिएनवेनु के जीवन में भी दलगत भावना का क्षण आया, कड़वाहट का क्षण आया, उदासी का दौर आया। क्षणिक आवेशों की छाया इस महान और सौम्य आत्मा पर छा गई, जो शाश्वत विचारों में लीन थी। निश्चित रूप से, ऐसे व्यक्ति के लिए किसी भी राजनीतिक मत को न अपनाना ही उचित होता। हमारे कहने का तात्पर्य स्पष्ट होना चाहिए: हम तथाकथित "राजनीतिक मतों" को प्रगति की महान आकांक्षा, उस उदात्त देशभक्तिपूर्ण, लोकतांत्रिक और मानवीय आस्था के साथ भ्रमित नहीं कर रहे हैं, जो आज के समय में प्रत्येक उदार बुद्धि का आधार होनी चाहिए। इस पुस्तक के विषय से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े प्रश्नों में गहराई से न जाते हुए, हम बस इतना कहेंगे: यह अच्छा होता यदि महाशय बिएनवेनु राजशाही समर्थक न होते, और यदि उनकी दृष्टि एक क्षण के लिए भी उस शांत चिंतन से न हटती जिसमें इस संसार के मिथकों और घृणाओं से परे, मानवीय उतार-चढ़ावों से परे, सत्य, न्याय और परोपकार की तीन शुद्ध ज्योतियों की चमक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

यह मानते हुए कि ईश्वर ने महाशय वेलकम को किसी राजनीतिक पद के लिए नहीं बनाया था, हमें न्याय और स्वतंत्रता के नाम पर उनके विरोध, उनके गौरवपूर्ण विरोध, सर्वशक्तिमान नेपोलियन के प्रति उनके न्यायसंगत लेकिन जोखिम भरे प्रतिरोध को समझना और उसकी सराहना करना चाहिए था। लेकिन जो बात हमें

उत्थान करने वाले लोगों में प्रसन्न करती है, वही पतन करने वाले लोगों में कम प्रसन्न करती है। हम संघर्ष को तभी तक पसंद करते हैं जब तक खतरा बना रहता है, और वैसे भी, पहले दौर के योद्धाओं को ही अंतिम दौर के योद्धाओं को नष्ट करने का अधिकार है। जो समृद्धि में दृढ़ निश्चयी अभियोक्ता नहीं रहा, उसे विनाश के समय चुप रहना चाहिए। सफलता का निंदा करने वाला ही पतन का एकमात्र वैध निष्पादक है। जहाँ तक हमारी बात है, जब ईश्वर हस्तक्षेप करता है और प्रहार करता है, तो हम उसे अपना काम करने देते हैं। 1812 ने हमें निहत्था करना शुरू कर दिया। 1813 में उस मौन विधायी निकाय द्वारा, आपदा से उत्साहित होकर, कायरतापूर्ण ढंग से चुप्पी तोड़ने में केवल आक्रोश पैदा करने वाले लक्षण थे। और 1814 में, उन मार्शलों की उपस्थिति में ताली बजाना एक अपराध था जिन्होंने विश्वासघात किया था; उस सीनेट की उपस्थिति में जो एक गंदगी के ढेर से दूसरे गंदगी के ढेर तक जाती रही, पहले देवता का दर्जा देकर अपमान करती रही; उस मूर्तिपूजा की उपस्थिति में जो अपना संतुलन खो रही थी और अपनी मूर्ति पर थूक रही थी—सिर फेर लेना ही कर्तव्य था। 1815 में, जब भयंकर आपदाओं का साया मंडरा रहा था, जब फ्रांस उनके भयावह आगमन से कांप रहा था, जब नेपोलियन के सामने वाटरलू की लड़ाई धुंधली सी दिखाई दे रही थी, तब सेना और जनता द्वारा भाग्य के मारे गए व्यक्ति के लिए की गई शोकपूर्ण जयजयकार में कुछ भी हास्यास्पद नहीं था, और उस निरंकुश शासक के प्रति सभी रियायतें देने के बाद, डी के बिशप जैसे हृदय को शायद खाई के कगार पर खड़े एक महान राष्ट्र और एक महान व्यक्ति के आलिंगन द्वारा प्रस्तुत भव्य और मार्मिक पहलुओं को पहचानने में असफल नहीं होना चाहिए था।

इस अपवाद को छोड़कर, वे हर बात में न्यायप्रिय, सच्चे, निष्पक्ष, बुद्धिमान, विनम्र और गरिमामय, परोपकारी और दयालु थे, जो परोपकार का ही एक दूसरा रूप है। वे एक पुजारी, एक ऋषि और एक सच्चे इंसान थे। यह स्वीकार करना होगा कि जिन राजनीतिक विचारों के लिए हमने अभी-अभी उनकी आलोचना की है और जिन्हें हम लगभग कठोरता से आंकने को तैयार हैं, उनमें भी वे सहिष्णु और सहज थे, शायद हमसे भी अधिक, जो यहाँ बोल रहे हैं। नगर भवन के द्वारपाल को सम्राट ने वहाँ नियुक्त किया था। वे पुराने गार्ड के एक पुराने गैर-कमीशन अधिकारी थे, ऑस्टरलिट्ज़ में लीजन ऑफ ऑनर के सदस्य थे, और उतने ही कट्टर बोनापार्टिस्ट थे जितना कि चील। यह बेचारा कभी-कभी बिना सोचे-समझे ऐसी

बातें कह देता था, जिन्हें उस समय कानून "राजद्रोहपूर्ण भाषण" कहता था। लीजन ऑफ ऑनर से शाही प्रतिष्ठा हटने के बाद, उन्होंने कभी भी अपनी रेजिमेंटल वर्दी नहीं पहनी, जैसा कि उन्होंने कहा, ताकि उन्हें अपना क्रॉस न पहनना पड़े। नेपोलियन द्वारा दिए गए क्रूस से उन्होंने स्वयं श्रद्धापूर्वक शाही प्रतिमा को हटा दिया था; इससे एक छेद हो गया था, और उन्होंने उसकी जगह कुछ भी नहीं रखा। उन्होंने कहा, "मैं मरना पसंद करूँगा, लेकिन अपने दिल पर उन तीन मेंढकों का बोझ नहीं उठाऊँगा!" उन्हें लुई XVIII का ज़ोर-ज़ोर से मज़ाक उड़ाना अच्छा लगता था। उन्होंने कहा, "अंग्रेज़ी पोशाक पहने वह गाउट का मरीज़ बुज़ुर्ग! वह अपनी उस चोटी के साथ प्रशिया चला जाए।" उन्हें एक ही शाप में उन दो चीज़ों को जोड़ना अच्छा लगता था जिनसे उन्हें सबसे ज़्यादा नफ़रत थी, प्रशिया और इंग्लैंड। उन्होंने ऐसा इतनी बार किया कि उनकी नौकरी चली गई। उन्हें अपनी पत्नी और बच्चों के साथ घर से निकाल दिया गया, और उनके पास खाने को भी नहीं था। बिशप ने उन्हें बुलवाया, उन्हें हल्के से फटकारा, और उन्हें गिरजाघर में उपशासक नियुक्त कर दिया।

नौ वर्षों के दौरान, महाशय बिएनवेनु ने अपने पवित्र कार्यों और सौम्य व्यवहार के बल पर डी नगर को एक प्रकार की कोमल और पुत्रवत श्रद्धा से भर दिया था। नेपोलियन के प्रति उनके आचरण को भी जनता ने, मानो मौन रूप से क्षमा कर दिया था, उन भले और संवेदनशील लोगों ने जो अपने सम्राट की पूजा करते थे, लेकिन अपने बिशप से प्रेम करते थे।

बारहवीं. मॉनसाइनॉर का एकांत स्वागत है

एक बिशप लगभग हमेशा ही युवा भिक्षुओं के पूरे दल से घिरा रहता है, ठीक वैसे ही जैसे एक सेनापति युवा अधिकारियों के दल से घिरा रहता है। इसी को संत फ़्रांस्वा डी सेल्स ने कहीं "लेस प्रीट्रेस ब्लैंक्स-बेक्स" यानी अनुभवहीन पुजारी कहा है। हर पेशे में उसके आकांक्षी होते हैं, जो उसमें उच्च पद प्राप्त कर चुके लोगों के लिए एक मार्गदर्शक बनते हैं। ऐसी कोई शक्ति नहीं है जिसके आश्रित न हों। ऐसा कोई धन नहीं है जिसका दरबार न हो। भविष्य के चाहने वाले शानदार वर्तमान के चारों ओर मंडराते रहते हैं। हर महानगर में अधिकारियों का अपना दल होता है। हर उस बिशप के पास, जिसका थोड़ा सा भी प्रभाव होता है, सेमिनरी से आए चेरुबों का अपना गश्ती दल होता है, जो चक्कर लगाता है, बिशप के महल में व्यवस्था बनाए रखता है और महाशय की मुस्कान की रक्षा करता है। एक बिशप को प्रसन्न करना उप-डायकोनेट के लिए रकाब में पैर रखने के बराबर है। अपने मार्ग पर सावधानीपूर्वक चलना आवश्यक है; प्रेरितों का समूह कैननशिप का तिरस्कार नहीं करता।

जैसे दुनिया के अन्य हिस्सों में बड़े-बड़े प्रभावशाली लोग होते हैं, वैसे ही चर्च में भी बड़े-बड़े पद होते हैं। ये वे बिशप होते हैं जिनकी दरबार में अच्छी प्रतिष्ठा होती है, जो धनी, संपन्न, कुशल और दुनिया द्वारा स्वीकृत होते हैं, जो निस्संदेह प्रार्थना करना जानते हैं, लेकिन भीख मांगना भी बखूबी जानते हैं, जो पूरे धर्मप्रांत को अपने इशारों पर नचाने में जरा भी संकोच नहीं करते, जो पूजा-पाठ और कूटनीति के बीच कड़ी का काम करते हैं, जो पुजारी नहीं बल्कि मठाधीश और बिशप नहीं बल्कि धर्माधिकारी होते हैं। जो उनके पास जाते हैं, वे धन्य हैं! प्रभावशाली होने के कारण, वे अपने आस-पास मेहनती और पसंदीदा लोगों पर, और प्रसन्नता की कला जानने वाले सभी युवाओं पर, बड़े-बड़े पल्ली, उप-क्षेत्र, आर्चडायकोनेट, चैपल और गिरजाघर के पदों की वर्षा करते हैं, जबकि वे बिशप पद की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। जैसे-जैसे वे स्वयं आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे उनके अनुयायी भी आगे बढ़ते हैं; यह एक पूरे सौर मंडल की तरह प्रगति है। उनकी चमक उनके दल पर बैंगनी रंग की आभा बिखेरती है। उनकी समृद्धि पर्दे के पीछे, छोटी-छोटी

पदोन्नतियों में सिमट जाती है। संरक्षक का सूबा जितना बड़ा होता है, पसंदीदा पादरी का पद उतना ही बड़ा होता है। और फिर रोम है। एक बिशप जो आर्कबिशप बनना जानता है, एक आर्कबिशप जो कार्डिनल बनना जानता है, आपको अपने साथ कॉन्क्लेव में ले जाता है; आप पोप के अधिकार क्षेत्र के न्यायालय में प्रवेश करते हैं, आपको पैलियम मिलता है, और देखिए! आप एक ऑडिटर बनते हैं, फिर पोप के चैंबरलेन, फिर मॉन्सिग्नोर, और एक अनुग्रह से एक महामहिम तक का सफर बस एक कदम का होता है, और महामहिम और पवित्रता के बीच बस एक मतपत्र का धुआं होता है। हर पादरी मुकुट का सपना देख सकता है। आजकल पादरी ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो नियमित रूप से राजा बन सकता है; और कैसा राजा! सर्वोच्च राजा। फिर एक सेमिनरी आकांक्षाओं की कैसी नर्सरी है! कितने शर्मीले गायक, कितने युवा मठाधीश अपने सिर पर पेरेटे का दूध का पात्र लिए फिरते हैं! कौन जानता है कि महत्वाकांक्षा के लिए खुद को पेशा कहना कितना आसान है? शायद सद्भावना से, और खुद को धोखा देते हुए, वह एक भक्त है।

गरीब, विनम्र और एकांतप्रिय मोनसिग्नोर बिएनवेनु को बड़े पादरियों में नहीं गिना जाता था। उनके आसपास युवा पादरियों की अनुपस्थिति से यह स्पष्ट था। हमने देखा है कि पेरिस में उनका प्रभाव नहीं था। किसी भी भावी पादरी ने इस एकाकी बूढ़े व्यक्ति पर अपना प्रभाव जमाने का सपना नहीं देखा। किसी भी उभरती महत्वाकांक्षा ने उनकी छाया में अपनी शाखाएँ फैलाने की मूर्खता नहीं की। उनके कैनन और ग्रैंड-विकार अच्छे-खासे बूढ़े लोग थे, उन्हीं की तरह साधारण, उन्हीं की तरह इस धर्मक्षेत्र में सिमटे हुए, कार्डिनल बनने का कोई रास्ता नहीं था, और अपने बिशप से मिलते-जुलते थे, बस इतना अंतर था कि वे पूर्ण थे और वह परिपूर्ण। मोनसिग्नोर बिएनवेनु के नेतृत्व में महान बनने की असंभवता इतनी अच्छी तरह समझी जाती थी कि उनके द्वारा नियुक्त युवा पादरी सेमिनरी छोड़ते ही ऐक्स या औच के आर्कबिशपों से सिफारिश करवाकर बड़ी जल्दी में निकल जाते थे। संक्षेप में, हम फिर कहते हैं, लोग धक्के खाना पसंद करते हैं। जो संत घोर त्याग में लीन रहता है, वह एक खतरनाक पड़ोसी होता है; वह अपने संक्रामक प्रभाव से आपको लाइलाज गरीबी, उन्नति में बाधक जोड़ों का अकड़न और संक्षेप में, आपकी इच्छा से अधिक त्याग का संचार कर सकता है; और इस संक्रामक गुण से बचना ही बेहतर है। इसीलिए महाशय

स्वागत है, और इसी कारण हम एकांतवास में रहते हैं। हम एक अंधकारमय समाज में जी रहे हैं। सफलता; यही वह सबक है जो भ्रष्टाचार की ढलान से बूंद-बूंद करके मिलता है।

यह कहना उचित होगा कि सफलता एक अत्यंत भयावह वस्तु है। योग्यता से इसकी झूठी समानता लोगों को धोखा देती है। आम जनता के लिए, सफलता लगभग सर्वोच्चता के समान है। सफलता, प्रतिभा की वह मेनाएचमस, केवल एक ही शिकार है—इतिहास। केवल जुवेनल और टैसिटस ही इसकी आलोचना करते हैं। हमारे समय में, एक ऐसा दर्शन जो लगभग आधिकारिक हो चुका है, इसकी सेवा में लग गया है, सफलता का आवरण ओढ़े हुए है और इसके सहायक कक्ष की सेवा कर रहा है। सफल होना: सिद्धांत। समृद्धि क्षमता का प्रमाण है। लॉटरी जीतो, और देखो! तुम एक चतुर व्यक्ति हो। जो विजयी होता है, उसका सम्मान होता है। मुंह में चांदी का चम्मच लेकर पैदा हो! सब कुछ उसी में निहित है। भाग्यशाली बनो, और तुम्हारे पास बाकी सब कुछ होगा; खुश रहो, और लोग तुम्हें महान समझेंगे। एक सदी की भव्यता का निर्माण करने वाले पाँच या छह असाधारण अपवादों को छोड़कर, समकालीन प्रशंसा केवल अदूरदर्शीता है। सोने पर सोने की परत चढ़ाना ही सोना है। विशुद्ध संयोग से पहले पहुंचने में कोई बुराई नहीं है, बशर्ते आप पहुंच जाएं। आम जनता एक बूढ़े आत्ममुग्ध व्यक्ति की तरह है जो स्वयं की पूजा करता है और आम जनता की प्रशंसा करता है। वह असाधारण क्षमता जिसके बल पर कोई मूसा, एशिलस, दांते, माइकलएंजेलो या नेपोलियन बन जाता है, जनता उसे तुरंत और तालियों के साथ पुरस्कृत करती है, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में अपना लक्ष्य प्राप्त कर ले। मान लीजिए एक नोटरी स्वयं को एक प्रतिनिधि में रूपांतरित कर लेता है; मान लीजिए एक झूठा कॉर्नेल तिरिदाते की रचना करता है; मान लीजिए एक हिजड़ा हरम का स्वामी बन जाता है; मान लीजिए एक सैन्य प्रुधोम गलती से एक युग का निर्णायक युद्ध जीत लेता है; मान लीजिए एक औषध विक्रेता सांब्रे-एंड-म्यूज़ की सेना के लिए गत्ते के जूतों के तलवे बना लेता है और इस गत्ते को चमड़े के रूप में बेचकर अपने लिए चार लाख फ़्रैंक की आय अर्जित कर लेता है; मान लीजिए एक सुअर का मांस बेचने वाला सूदखोरी का धंधा अपना लेता है और उससे सात या आठ मिलियन कमा लेता है, जिसका वह स्वयं पिता है और जिसकी वह माता है; मान लीजिए एक उपदेशक अपनी नाक से निकलने वाली धीमी आवाज के बल पर बिशप बन जाता है; किसी प्रतिष्ठित परिवार

का प्रबंधक सेवामुक्त होने पर इतना धनी हो जाए कि उसे वित्त मंत्री बना दिया जाए—और लोग इसे प्रतिभा कहते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे मौस्केटोन के चेहरे को "सुंदरता" और क्लाउड के हावभाव को "शानदार" कहते हैं। अंतरिक्ष के नक्षत्रों के साथ वे उस अथाह गहराई के तारों को भी मात देते हैं जो पोखर की नरम कीचड़ में बत्तखों के पैरों से बनते हैं।

XIII. उनका क्या विश्वास था

हम डी के बिशप को रूढ़िवादिता के मुद्दे पर फटकार लगाने के लिए बाध्य नहीं हैं। ऐसे व्यक्ति के समक्ष हम केवल सम्मान का भाव रखते हैं। धर्मी व्यक्ति की अंतरात्मा को उसके वचन पर स्वीकार किया जाना चाहिए। इसके अलावा, कुछ विशेष स्वभावों को देखते हुए, हम यह मानते हैं कि मानवीय सद्गुणों की सभी सुंदरताओं का विकास उस विश्वास में भी संभव है जो हमारे अपने विश्वास से भिन्न है।

इस सिद्धांत या उस रहस्य के बारे में उनका क्या विचार था? अंतरात्मा के आंतरिक न्यायालय के ये रहस्य केवल कब्र में ही ज्ञात हैं, जहाँ आत्माएँ नग्न अवस्था में प्रवेश करती हैं। जिस बात पर हम निश्चित हैं, वह यह है कि उनके मामले में आस्था की कठिनाइयाँ कभी पाखंड में परिवर्तित नहीं हुईं। हीरे का क्षय संभव नहीं है। उन्होंने अपनी सामर्थ्य के अनुसार विश्वास किया। वे अक्सर कहते थे, "धर्म में आस्था है।" इसके अलावा, उन्होंने अच्छे कर्मों से वह संतोष प्राप्त किया जो अंतरात्मा को तृप्त करता है और जो मनुष्य से कहता है, "तुम ईश्वर के साथ हो!"

जिस बात को हम अपना कर्तव्य समझते हैं, वह यह है कि अपने धर्म से परे, मानो, बिशप के भीतर प्रेम की प्रचुरता थी। इसी कारण, क्योंकि वे बहुत प्रेम करते थे, उन्हें "गंभीर व्यक्तियों", "संवेदी लोगों" और "समझदार लोगों" द्वारा संवेदनशील माना जाता था; ये हमारे इस दुखद संसार के प्रचलित शब्द हैं जहाँ अहंकार पांडित्य से अपना आदेश लेता है। प्रेम की यह प्रचुरता क्या थी? यह एक शांत परोपकारिता थी जो मनुष्यों में व्याप्त थी, जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, और जो कभी-कभी वस्तुओं तक भी पहुँच जाती थी। वे बिना किसी द्वेष के जीते थे। वे ईश्वर की सृष्टि के प्रति उदार थे। प्रत्येक मनुष्य, यहाँ तक कि सर्वश्रेष्ठ मनुष्य भी, अपने भीतर एक संवेदनहीन कठोरता रखता है जो वह जानवरों के लिए रखता है। फिर भी, डी के बिशप में वह कठोरता नहीं थी, जो कई पुजारियों में पाई जाती है। वह ब्राह्मण की तरह इतनी गहराई तक तो नहीं गया, लेकिन ऐसा लगता था कि उसने उपदेशक की इस बात पर विचार किया था: “जानने वाले की आत्मा कहाँ जाती है?” कुरूपता, सहज प्रवृत्ति की विकृति ने उसे

परेशान नहीं किया और न ही उसके क्रोध को जगाया। वह उनसे प्रभावित हुआ, मानो उनका दिल पिघल गया हो। ऐसा लगता था मानो वह जीवन की प्रत्यक्ष सीमाओं से परे जाकर, इन विकृतियों का कारण, स्पष्टीकरण या बहाना खोज रहा हो। कभी-कभी ऐसा लगता था मानो वह ईश्वर से इन दंडों को क्षमा करने की प्रार्थना कर रहा हो। उसने बिना क्रोध के, और एक भाषाविद् की दृष्टि से, जो किसी पुराने लिपि को समझने की कोशिश कर रहा हो, प्रकृति में अभी भी मौजूद अव्यवस्था के उस हिस्से का अध्ययन किया। इस चिंतन के कारण कभी-कभी वह अजीब बातें कह देता था। एक सुबह वह अपने बगीचे में था और खुद को अकेला समझ रहा था, लेकिन उसकी बहन उसके पीछे चल रही थी, जिसे उसने देखा नहीं था: अचानक वह रुका और ज़मीन पर किसी चीज़ को देखा; वह एक बड़ी, काली, बालों वाली, भयानक मकड़ी थी। उसकी बहन ने उसे कहते सुना:—

“बेचारा जानवर! इसमें उसकी कोई गलती नहीं है!”

दयालुता के इन लगभग दिव्य और बचकाने कथनों का उल्लेख क्यों न किया जाए? भले ही ये बचकाने लगें; लेकिन ये उदात्त बचकानेपन संत फ्रांसिस डी'असीसी और मार्कस ऑरेलियस की विशेषता थे। एक दिन चींटी पर पैर रखने से बचने की कोशिश में उनका टखना मुड़ गया। इस प्रकार इस धर्मात्मा व्यक्ति का जीवन बीता। कभी-कभी वे अपने बगीचे में सो जाते थे, और उस समय इससे अधिक श्रद्धापूर्ण कुछ भी संभव नहीं था।

यदि उनके बचपन और यहाँ तक कि उनके वयस्क जीवन के बारे में प्रचलित कहानियों पर विश्वास किया जाए, तो महाशय बिएनवेनु पहले एक भावुक और संभवतः हिंसक व्यक्ति थे। उनकी सर्वव्यापी सौम्यता प्रकृति की सहज प्रवृत्ति से कहीं अधिक एक दृढ़ विश्वास का परिणाम थी, जो जीवन के अनुभवों से उनके हृदय में समाहित हो गया था और धीरे-धीरे, विचार दर विचार, वहाँ रिसता रहा था; क्योंकि किसी व्यक्ति के चरित्र में, चट्टान की तरह, पानी की बूंदों से बने छिद्र हो सकते हैं। ये छिद्र अमिट होते हैं; ये संरचनाएँ अविनाशी होती हैं।

जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं, 1815 में वे 75 वर्ष के हो गए थे, लेकिन वे साठ वर्ष से अधिक के नहीं लगते थे। वे लंबे नहीं थे; बल्कि थोड़े मोटे थे; और इस प्रवृत्ति से निपटने के लिए, उन्हें पैदल लंबी सैर करना पसंद था; उनके कदम दृढ़ थे, और उनका शरीर थोड़ा झुका हुआ था, एक ऐसा विवरण जिससे हम

कोई निष्कर्ष निकालने का दावा नहीं करते। ग्रेगरी XVI, अस्सी वर्ष की आयु में, सीधे खड़े रहते थे और मुस्कुराते रहते थे, लेकिन इससे वे एक बुरे बिशप होने से नहीं रुके। मोनसिग्नोर वेलकम का सिर लोगों की नज़रों में "सुंदर" था, लेकिन वे इतने मिलनसार थे कि लोग भूल जाते थे कि उनका सिर सुंदर है।

जब वे उस बचकानी खुशी के साथ बातचीत करते थे, जो उनके आकर्षणों में से एक थी (जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं), तो लोग उनके साथ सहज महसूस करते थे और ऐसा लगता था मानो उनके पूरे व्यक्तित्व से आनंद की किरण निकल रही हो। उनका ताजा और लालिमा लिए हुए चेहरा, उनके बेहद सफेद दांत, जो उन्होंने हमेशा बनाए रखे थे और जो उनकी मुस्कान में झलकते थे, उन्हें वह खुला और सहज रूप देते थे जिसके कारण लोग किसी व्यक्ति के बारे में कहते थे, "वह एक अच्छा आदमी है;" और किसी बूढ़े व्यक्ति के बारे में कहते थे, "वह एक शानदार आदमी है।" याद होगा, नेपोलियन पर उनका यही प्रभाव था। पहली मुलाकात में, और जो उन्हें पहली बार देखता था, उसके लिए वे वास्तव में एक शानदार आदमी से कम नहीं थे। लेकिन अगर कोई उनके पास कुछ घंटों तक रहता और उन्हें जरा भी चिंतनशील देखता, तो वह शानदार आदमी धीरे-धीरे बदल जाता और एक प्रभावशाली गुण धारण कर लेता, मुझे नहीं पता क्या; उनके चौड़े और गंभीर माथे, जो उनके सफेद बालों से भव्य लगते थे, ध्यान के कारण और भी भव्य हो जाते थे; उनकी अच्छाई से एक गरिमा झलकती थी, हालाँकि उनकी अच्छाई कभी मंद नहीं पड़ती थी; ऐसा लगता था मानो कोई मुस्कुराता हुआ देवदूत धीरे-धीरे अपने पंख फैला रहा हो और मुस्कुराना बंद न कर रहा हो। असीम सम्मान धीरे- धीरे हृदय में समा जाता था और ऐसा लगता था मानो कोई ऐसे मजबूत, परखे-परखे और उदार आत्मा के सामने बैठा हो, जिसके विचार इतने महान होते हैं कि वे कोमल होने के अलावा कुछ और हो ही नहीं सकते।

जैसा कि हमने देखा है, प्रार्थना, धार्मिक अनुष्ठान, दान-पुण्य, दुखियों को सांत्वना देना, थोड़ी सी ज़मीन की खेती, भाईचारा, सादगी, आतिथ्य सत्कार, त्याग, विश्वास, अध्ययन और कर्म, इन सबने उनके जीवन के प्रत्येक दिन को परिपूर्ण कर दिया था। परिपूर्ण शब्द बिल्कुल सही है; निःसंदेह बिशप का दिन अच्छे शब्दों और अच्छे कर्मों से पूरी तरह भरा रहता था। फिर भी, यदि ठंड या बरसात के मौसम के कारण वे सोने से पहले और दोनों महिलाओं के सोने के बाद अपने बगीचे में एक-दो घंटे नहीं बिता पाते थे, तो उनका दिन अधूरा रह जाता

था। ऐसा लगता था मानो यह उनके लिए एक तरह का अनुष्ठान था, रात्रि आकाश के भव्य दृश्यों के बीच ध्यान लगाकर सोने की तैयारी करना। कभी-कभी, यदि दोनों वृद्ध स्त्रियाँ सोई नहीं होती थीं, तो वे उन्हें रात के बहुत देर के समय में धीरे-धीरे पगडंडियों पर टहलते हुए सुनती थीं। वह वहाँ अकेले थे, आत्मचिंतन में डूबे हुए, शांत, श्रद्धामग्न, अपने हृदय की शांति की तुलना आकाश की शांति से कर रहे थे, अंधकार के बीच नक्षत्रों की दृश्य भव्यता और ईश्वर की अदृश्य भव्यता से अभिभूत थे, अज्ञात से आने वाले विचारों के लिए अपना हृदय खोल रहे थे। ऐसे क्षणों में, जब वे रात्रि के फूलों की सुगंध के समय अपना हृदय अर्पित कर रहे थे, तारों भरी रात में दीपक की तरह प्रकाशित, सृष्टि के सार्वभौमिक प्रकाश के बीच परमानंद में डूबे हुए, शायद वे स्वयं को यह नहीं बता सकते थे कि उनकी आत्मा में क्या चल रहा था; उन्होंने महसूस किया कि कुछ उनसे दूर जा रहा है और कुछ उनमें समा रहा है। आत्मा की गहराइयों का ब्रह्मांड की गहराइयों से रहस्यमय आदान-प्रदान!

उन्होंने ईश्वर की महिमा और उपस्थिति के बारे में सोचा; भविष्य के उस अनंतकाल के बारे में, उस विचित्र रहस्य के बारे में; बीते हुए अनंतकाल के बारे में, जो उससे भी अधिक विचित्र रहस्य था; उन सभी अनंतताओं के बारे में, जो उनकी सभी इंद्रियों में, उनकी आँखों के सामने समाई हुई थीं; और, उस अगम्य को समझने की कोशिश किए बिना, उन्होंने उस पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने ईश्वर का अध्ययन नहीं किया; वे उनसे चकित थे। उन्होंने परमाणुओं के उन शानदार संयोजनों पर विचार किया, जो पदार्थ को विभिन्न रूप प्रदान करते हैं, उन्हें प्रमाणित करके शक्तियों को प्रकट करते हैं, एकता में व्यक्तित्व, विस्तार में अनुपात, अनंत में असंख्य का सृजन करते हैं, और प्रकाश के माध्यम से सौंदर्य उत्पन्न करते हैं। ये संयोजन निरंतर बनते और विलीन होते रहते हैं; इसीलिए जीवन और मृत्यु का रहस्य है।

वह एक जर्जर बेल से पीठ टिकाकर लकड़ी की बेंच पर बैठ गया; वह अपने फलदार पेड़ों की छोटी-छोटी और बौनी आकृतियों को देखते हुए तारों को निहारने लगा। यह एक चौथाई एकड़ ज़मीन, जो इतनी कम खेती वाली और साधारण इमारतों और झोपड़ियों से घिरी हुई थी, उसे प्रिय थी और उसकी ज़रूरतों को पूरा करती थी।

इस बूढ़े व्यक्ति को और क्या चाहिए था, जो अपने सीमित खाली समय को दिन में बागवानी और रात में चिंतन में बाँटता था? क्या आकाश को छत मानकर बसा यह

छोटा सा स्थान, ईश्वर की दिव्य रचनाओं में उनकी आराधना करने के लिए पर्याप्त नहीं था? क्या वास्तव में यही सब कुछ नहीं है? और इसके आगे और क्या चाह रह जाती है? टहलने के लिए एक छोटा सा बगीचा, और स्वप्न देखने के लिए विशालता। पैरों के नीचे वह सब कुछ जिसे उगाया और तोड़ा जा सकता है; सिर के ऊपर वह सब कुछ जिसका अध्ययन और ध्यान किया जा सकता है: धरती पर कुछ फूल, और आकाश में सारे तारे।

XIV. उसने क्या सोचा

एक आखिरी बात।

चूंकि इस प्रकार के विवरण, विशेष रूप से वर्तमान समय में, और आजकल प्रचलित एक मुहावरे का प्रयोग करें तो, डी के बिशप को एक प्रकार का "सर्वेश्वरवादी" रूप दे सकते हैं, और यह धारणा उत्पन्न कर सकते हैं, चाहे उनके पक्ष में हो या विपक्ष में, कि वे उन व्यक्तिगत दर्शनों में से एक को मानते थे जो हमारी सदी की विशेषता हैं, जो कभी-कभी एकाकी आत्माओं में उत्पन्न होते हैं, और वहां एक रूप धारण करके तब तक बढ़ते हैं जब तक कि वे धर्म का स्थान नहीं ले लेते, इसलिए हम इस बात पर जोर देते हैं कि मोनसिग्नोर वेलकम को जानने वाले किसी भी व्यक्ति ने स्वयं को इस प्रकार की कोई भी बात सोचने का अधिकार नहीं समझा होगा। इस व्यक्ति को उनके हृदय ने ही ज्ञान दिया था। उनकी बुद्धि वहीं से आने वाले प्रकाश से निर्मित थी।

कोई प्रणाली नहीं; अनेक रचनाएँ। जटिल अटकलें चक्कर पैदा करती हैं; नहीं, ऐसा कुछ भी संकेत नहीं मिलता कि उन्होंने रहस्योद्घाटन में अपना दिमाग खपाया हो। प्रेरित साहसी हो सकता है, लेकिन बिशप को डरपोक होना चाहिए। शायद उन्हें कुछ ऐसी समस्याओं के बारे में पहले से ही बात करने में संकोच हुआ होगा जो एक तरह से महान विद्वानों के लिए ही आरक्षित हैं। रहस्य के द्वार के नीचे एक पवित्र भय छिपा है; वे अंधकारमय द्वार वहाँ खुले खड़े हैं, लेकिन कुछ तुम्हें, जीवन में राहगीर को, बताता है कि तुम्हें अंदर नहीं जाना चाहिए। जो वहाँ प्रवेश करेगा, उसका बुरा होगा!

अमूर्तता और विशुद्ध चिंतन की अभेद्य गहराइयों में विख्यात प्रतिभाएं, जो एक प्रकार से सभी सिद्धांतों से ऊपर स्थित हैं, अपने विचारों को ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। उनकी प्रार्थना निडरतापूर्वक चर्चा का अवसर प्रदान करती है। उनकी आराधना प्रश्नोत्तर करती है। यही प्रत्यक्ष धर्म है, जो इसके कठिन पथों पर चलने का प्रयास करने वाले व्यक्ति के लिए चिंता और उत्तरदायित्व से भरा है।

मानव ध्यान की कोई सीमा नहीं है। अपने जोखिम और खतरे पर, यह अपने ही विस्मय का विश्लेषण करता है और उसकी गहराई में उतरता है। लगभग यह कहा जा सकता है कि एक प्रकार की शानदार प्रतिक्रिया से, यह प्रकृति को भी चकाचौंध कर देता है; हमारे चारों ओर का रहस्यमय संसार जो प्राप्त करता है उसे लौटा देता है; यह संभव है कि ध्यान करने वाले स्वयं भी ध्यान में लीन हो जाते हैं। चाहे जो भी हो, पृथ्वी पर ऐसे मनुष्य हैं—क्या वे मनुष्य हैं?—जो कल्पना की सीमाओं पर स्पष्ट रूप से परम सत्य की ऊँचाइयों को देखते हैं, और अनंत पर्वत का भयानक दर्शन प्राप्त करते हैं। महाशय वेलकम इन्हीं मनुष्यों में से एक थे; महाशय वेलकम कोई विलक्षण प्रतिभा के धनी नहीं थे। वे उन उदात्तताओं से भयभीत होते, जिनसे स्वीडनबर्ग और पास्कल जैसे कुछ महानतम व्यक्ति भी विक्षिप्त हो गए। निश्चित रूप से, इन शक्तिशाली कल्पनाओं का अपना नैतिक महत्व है, और इन कठिन मार्गों से होकर ही व्यक्ति आदर्श पूर्णता के निकट पहुँचता है। जहाँ तक उनकी बात है, उन्होंने वह मार्ग चुना जो समय को कम करता है—सुसमाचार का मार्ग।

उन्होंने अपने वस्त्र को एलियाह के लबादे की तहों से सजाने का प्रयास नहीं किया; उन्होंने घटनाओं के अंधकारमय भंवर पर भविष्य की कोई किरण नहीं डाली; उन्होंने चीजों के प्रकाश को ज्वाला में संघनित करने की कोशिश नहीं की; उनमें न तो पैगंबर का कोई गुण था और न ही जादूगर का। इस विनम्र आत्मा ने प्रेम किया, बस इतना ही।

यह संभव है कि उन्होंने प्रार्थना को एक अलौकिक आकांक्षा के स्तर तक पहुँचाया हो: लेकिन कोई अत्यधिक प्रार्थना नहीं कर सकता, ठीक वैसे ही जैसे कोई अत्यधिक प्रेम नहीं कर सकता; और यदि ग्रंथों से परे प्रार्थना करना विधर्म है, तो संत थेरेसा और संत जेरोम विधर्मी होंगे।

उनका झुकाव पीड़ा और प्रायश्चित करने वाली हर चीज़ की ओर था। उन्हें ब्रह्मांड एक विशाल बीमारी की तरह प्रतीत होता था; हर जगह उन्हें बुखार महसूस होता था, हर जगह पीड़ा की आवाज़ सुनाई देती थी, और इस रहस्य को सुलझाने की कोशिश किए बिना, वे घाव भरने का प्रयास करते थे। सृष्टि के भयावह दृश्य ने उनके मन में कोमलता जगा दी; वे केवल स्वयं के लिए और दूसरों को करुणा और राहत देने का सर्वोत्तम मार्ग खोजने और प्रेरित करने में लगे

रहे। इस नेक और विलक्षण पुजारी के लिए, जो कुछ भी विद्यमान था, वह एक स्थायी दुख का विषय था, जो सांत्वना की तलाश में रहता था।

कुछ लोग सोना निकालने के लिए मेहनत करते हैं; वह दया बटोरने के लिए मेहनत करता था। सर्वव्यापी दुख ही उसकी खान थी। हर जगह व्याप्त उदासी उसके लिए अटूट दयालुता का बहाना मात्र थी। "एक-दूसरे से प्रेम करो;" उसने इसे पूर्ण बताया, इससे आगे कुछ नहीं चाहा, और यही उसका संपूर्ण सिद्धांत था। एक दिन, वह व्यक्ति जो स्वयं को "दार्शनिक" मानता था, वही सीनेटर जिसका पहले उल्लेख किया जा चुका है, बिशप से बोला: "जरा संसार का दृश्य देखो: सब एक-दूसरे से युद्ध कर रहे हैं; सबसे बलवान के पास सबसे अधिक बुद्धि है। तुम्हारा "एक-दूसरे से प्रेम करो" कहना निरर्थक है।" - "अच्छा," महाशय वेलकम ने बिना किसी विरोध के उत्तर दिया, "यदि यह निरर्थक है, तो आत्मा को इसमें वैसे ही समाहित हो जाना चाहिए जैसे मोती सीप में।" इस प्रकार उसने स्वयं को एकांत में बंद कर लिया, वह वहीं रहने लगा, वह इससे पूर्णतः संतुष्ट था, उन विकराल प्रश्नों को एक तरफ रखते हुए जो आकर्षित और भयभीत करते हैं, अमूर्तता के अथाह परिप्रेक्ष्य, तत्वमीमांसा की खाई—वे सभी गहनताएँ जो प्रेरित के लिए ईश्वर में, नास्तिक के लिए शून्यता में अभिसरित होती हैं; नियति, अच्छाई और बुराई, अस्तित्व के विरुद्ध अस्तित्व का मार्ग, मनुष्य का विवेक, पशु का विचारशील स्वप्नदया, मृत्यु में रूपांतरण, कब्र में समाहित अस्तित्वों का पुनरावलोकन, निरंतर 'मैं', सार, पदार्थ, नील नदी और आत्मा, प्रकृति, स्वतंत्रता, आवश्यकता पर क्रमिक प्रेमों का समझ से परे जुड़ाव; लंबवत समस्याएँ, भयावह अस्पष्टताएँ, जहाँ मानव मन के विशाल महादूत झुके होते हैं; भयानक अथाह गहराई, जिसका ल्यूक्रेटियस, मानू, सेंट पॉल, दांते, बिजली की तरह चमकती आंखों से चिंतन करते हैं, जो अनंत पर अपनी स्थिर दृष्टि से वहां तारों को प्रज्वलित करती प्रतीत होती है।

मोनसिग्नोर बिएनवेनु एक ऐसे व्यक्ति थे जो रहस्यमय प्रश्नों के बाहरी स्वरूप पर ध्यान देते थे, बिना उनकी गहन जांच किए और बिना अपने मन को उनसे परेशान किए, और जो अपनी आत्मा में अंधकार के प्रति गहरा सम्मान रखते थे।

□□□ II. □□□

I. पैदल यात्रा के एक दिन की शाम

अक्टूबर 1815 के महीने की शुरुआत में, सूर्यास्त से लगभग एक घंटा पहले, पैदल यात्रा कर रहा एक व्यक्ति छोटे से कस्बे डी⸺ में दाखिल हुआ। उस समय जो कुछ निवासी अपनी खिड़कियों या दहलीज पर खड़े थे, उन्होंने इस यात्री को कुछ बेचैनी से देखा। इससे अधिक दयनीय दिखने वाला राहगीर मिलना मुश्किल था। वह मध्यम कद का, गठीला और तगड़ा आदमी था, जो अपनी जवानी के चरम पर था। उसकी उम्र छियालीस या अड़तालीस वर्ष रही होगी। ढीली चमड़े की टोपी ने उसके चेहरे को आंशिक रूप से ढक रखा था, जो धूप और हवा से झुलसकर काला पड़ गया था और पसीने से तरबतर था। उसकी खुरदरी पीली लिनेन की कमीज, जो गले में एक छोटे से चांदी के लंगर से बंधी थी, से उसकी बालों वाली छाती दिखाई दे रही थी: उसने एक डोरी की तरह मुड़ी हुई टाई पहन रखी थी; नीले रंग की ड्रिलिंग पैंट, घिसी-पिटी और फटी हुई थी, एक घुटने पर सफेद और दूसरे पर फटी हुई थी; एक पुरानी, धूसर, फटी हुई कमीज, जिसकी एक कोहनी पर हरे कपड़े का एक टुकड़ा रस्सी से सिला हुआ था; उसकी पीठ पर एक कसकर पैक किया हुआ सैनिक का थैला, अच्छी तरह से बंधा हुआ और बिल्कुल नया; उसके हाथ में एक विशाल, गांठदार छड़ी; बिना मोजे वाले पैरों में लोहे के जूते; मुंडा हुआ सिर और लंबी दाढ़ी।

पसीना, गर्मी, पैदल सफर, धूल - इन सबने मिलकर इस जर्जर हालत को और भी घिनौना बना दिया था। उसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे, फिर भी थोड़े बिखरे हुए थे, क्योंकि वे थोड़े बढ़ गए थे और ऐसा लगता था कि उन्हें काफी समय से काटा नहीं गया था।

उसे कोई नहीं जानता था। ज़ाहिर है, वह महज़ एक राहगीर था। वह कहाँ से आया था? दक्षिण से; शायद समुद्र तट से, क्योंकि उसने उसी गली से डी में प्रवेश किया था, जहाँ से सात महीने पहले सम्राट नेपोलियन कान से पेरिस जाते हुए गुज़रे थे। यह आदमी ज़रूर दिन भर पैदल चला होगा। वह बहुत थका हुआ लग रहा था। शहर के नीचे स्थित प्राचीन बाज़ार कस्बे की कुछ महिलाओं ने उसे बुलेवार्ड गस्सेंडी के पेड़ों के नीचे रुककर सैरगाह के अंत में बने फव्वारे से पानी पीते देखा था। वह बहुत प्यासा रहा होगा: क्योंकि उसके

पीछे चल रहे बच्चों ने उसे दो सौ कदम आगे बाज़ार में बने फव्वारे पर पानी पीते हुए फिर देखा था।

पोइचेवर्ट गली के कोने पर पहुँचकर वह बाईं ओर मुड़ा और टाउन हॉल की ओर चल पड़ा। वह अंदर गया और पंद्रह मिनट बाद बाहर आया। दरवाजे के पास एक पुलिसकर्मी बैठा था, उसी पत्थर की बेंच पर जिस पर जनरल ड्रौट 4 मार्च को डी के भयभीत निवासियों की भीड़ को खाड़ी जुआन की घोषणा पढ़कर सुनाने के लिए बैठे थे। उस व्यक्ति ने अपनी टोपी उतारी और विनम्रतापूर्वक पुलिसकर्मी को प्रणाम किया।

जेंडरम ने उसके अभिवादन का जवाब दिए बिना, उसे ध्यान से देखा, कुछ देर तक अपनी आंखों से उसका पीछा किया और फिर टाउन हॉल में प्रवेश कर गया।

उस समय डी में कोलबस क्रॉस के चिन्ह वाला एक शानदार सराय हुआ करता था। इस सराय का मालिक जैक्विन लाबारे था, जो शहर में काफी सम्मानित व्यक्ति था। उसका संबंध एक अन्य लाबारे से था, जो ग्रेनोबल में थ्री डॉफिन्स सराय चलाता था और गाइड्स में सेवा कर चुका था। सम्राट के आगमन के समय, थ्री डॉफिन्स सराय के बारे में पूरे देश में कई अफवाहें फैली हुई थीं। कहा जाता था कि जनरल बर्ट्रेंड, एक गाड़ीवान के वेश में, जनवरी के महीने में अक्सर वहाँ आते थे और सैनिकों को सम्मान के क्रॉस और नागरिकों को मुट्ठी भर सोना बाँटते थे। सच्चाई यह है कि जब सम्राट ग्रेनोबल में दाखिल हुए, तो उन्होंने प्रीफेक्चर के होटल में ठहरने से इनकार कर दिया; उन्होंने मेयर को धन्यवाद देते हुए कहा, "मैं अपने एक परिचित बहादुर व्यक्ति के घर जा रहा हूँ;" और वे सीधे थ्री डॉफिन्स सराय में चले गए। तीन राजकुमारों के लाबार्रे की यह महिमा, पच्चीस मील की दूरी पर स्थित कोल्बास के क्रॉस के लाबार्रे पर भी प्रतिबिंबित होती थी। शहर में उनके बारे में कहा जाता था, "वह ग्रेनोबल के आदमी का चचेरा भाई है।"

वह आदमी इस सराय की ओर बढ़ा, जो ग्रामीण इलाके की सबसे अच्छी सराय थी। वह रसोई में दाखिल हुआ, जो सड़क के बराबर ही खुली थी। सभी चूल्हे जल रहे थे; अंगीठी में एक बड़ी सी आग धधक रही थी। सराय का मुखिया, जो मुख्य रसोइया भी था, एक बर्तन से दूसरे बर्तन में भागता हुआ, बड़ी व्यस्तता से उन गाड़ीवानों के लिए तैयार किए गए शानदार भोजन की देखरेख कर रहा था, जिनकी तेज़ बातें, बातचीत और हँसी बगल के कमरे से सुनाई दे रही थी। यात्रा करने

वाला हर कोई जानता है कि गाड़ीवानों से ज़्यादा मौज-मस्ती करने वाला कोई नहीं होता। एक मोटा सा मार्मोट, जिसके चारों ओर सफेद तीतर और हीथर-कॉक थे, आग के सामने एक लंबी सीख पर घूम रहा था; चूल्हे पर, लाउज़ेट झील से पकड़ी गई दो बड़ी कार्प मछलियाँ और एलोज़ झील से पकड़ी गई एक ट्राउट मछली पक रही थीं।

दरवाजे के खुलने की आवाज सुनकर और एक नए व्यक्ति को अंदर आते देख मेजबान ने अपनी निगाहें चूल्हे से उठाए बिना कहा:—

“आप क्या चाहते हैं, महोदय?”

“खाना और रहने की व्यवस्था,” उस आदमी ने कहा।

“इससे आसान कुछ नहीं,” मेज़बान ने जवाब दिया। उसी क्षण उसने अपना सिर घुमाया, यात्री के चेहरे को एक नज़र में देखा और कहा, “इसके लिए भुगतान करके।”

उस आदमी ने अपनी ब्लाउज की जेब से एक बड़ा चमड़े का पर्स निकाला और जवाब दिया, "मेरे पास पैसे हैं।"

“ऐसी स्थिति में, हम आपकी सेवा में तत्पर हैं,” मेजबान ने कहा।

उस आदमी ने अपना पर्स वापस जेब में रखा, अपना थैला पीठ से उतारा और दरवाजे के पास ज़मीन पर रख दिया, अपनी छड़ी हाथ में ही रखी और आग के पास एक छोटी सी चौकी पर बैठ गया। डी पहाड़ों में है। अक्टूबर में वहाँ शामें ठंडी होती हैं।

लेकिन मेजबान के बार-बार इधर-उधर जाने के दौरान, उसने यात्री को ध्यान से देखा।

“क्या खाना जल्दी तैयार हो जाएगा?” उस आदमी ने कहा।

“तुरंत,” मकान मालिक ने जवाब दिया।

जब नया मेहमान आग के सामने पीठ फेरकर धूप सेंक रहा था, तभी मेजबान जैक्विन लाबेरे ने अपनी जेब से पेंसिल निकाली और खिड़की के पास एक छोटी मेज पर पड़े एक पुराने अखबार का कोना फाड़ दिया। सफेद हाशिये पर उन्होंने एक-दो पंक्तियाँ लिखीं, उसे बिना सील किए मोड़ दिया और फिर कागज के उस टुकड़े को एक बच्चे को सौंप दिया जो नौकर और नौकर दोनों की भूमिका निभाता प्रतीत

होता था। मकान मालिक ने नौकर के कान में कुछ फुसफुसाया और बच्चा टाउन हॉल की ओर दौड़ पड़ा।
यात्री ने इनमें से कुछ भी नहीं देखा।
उन्होंने एक बार फिर पूछा, "क्या खाना जल्दी तैयार हो जाएगा?"
मेजबान ने जवाब दिया, "तुरंत।"
बच्चा लौट आया। वह कागज़ लेकर आया। मेज़बान ने उसे उत्सुकता से खोला, मानो वह किसी जवाब की प्रतीक्षा कर रहा हो। उसने उसे ध्यान से पढ़ा, फिर अपना सिर हिलाया और कुछ पल सोच में डूबा रहा। फिर वह यात्री की ओर बढ़ा, जो कुछ अशांत विचारों में डूबा हुआ प्रतीत हो रहा था।
“मैं आपसे मिल नहीं सकता, महोदय,” उसने कहा।
वह आदमी आधा उठा।
“क्या! क्या तुम्हें डर है कि मैं तुम्हें पैसे नहीं दूंगा? क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें अग्रिम भुगतान कर दूं? मेरे पास पैसे हैं, मैं तुम्हें बता रहा हूँ।”
"यह नहीं है की।"
"तो क्या?"
“तुम्हारे पास पैसा है—”
“हां,” उस आदमी ने कहा।
मेजबान ने कहा, "और मेरे पास कोई जगह नहीं है।"
उस आदमी ने शांत भाव से कहा, "मुझे अस्तबल में डाल दो।"
"मुझसे नहीं हो सकता।"
"क्यों?"
घोड़े सारी जगह घेर लेते हैं।
“बहुत खूब!” उस आदमी ने जवाब दिया; “तो अटारी के एक कोने में, भूसे का एक गट्ठा लगा देते हैं। खाने के बाद इस बारे में देखेंगे।”
मैं आपको रात का खाना नहीं दे सकता।

संयमित लेकिन दृढ़ स्वर में की गई इस घोषणा ने अजनबी को गंभीर रूप से प्रभावित किया। वह उठ खड़ा हुआ।
आह! उफ़! मैं भूख से मर रहा हूँ। मैं सूर्योदय से चल रहा हूँ। मैंने बारह मील का सफर तय किया है। मैं भुगतान करता हूँ। मैं खाना चाहता हूँ।
“मेरे पास कुछ नहीं है,” मकान मालिक ने कहा।
वह आदमी जोर से हंस पड़ा और चूल्हे और चिमनी की ओर मुड़ा: "कुछ नहीं! और वो सब?"
"जो कुछ भी इसमें शामिल है।"
"किसके द्वारा?"
"वैगनर्स के संदेशवाहकों द्वारा।"
“उनकी संख्या कितनी है?”
"बारह।"
वहाँ बीस लोगों के लिए पर्याप्त भोजन है।
उन्होंने पूरी परियोजना को बुक कर लिया है और इसके लिए अग्रिम भुगतान भी कर दिया है।
वह आदमी फिर से बैठ गया और बिना आवाज उठाए बोला, "मैं एक सराय में हूँ; मुझे भूख लगी है, और मैं यहीं रहूँगा।"
फिर मेजबान उसके कान के पास झुक गया और ऐसी आवाज़ में बोला जिससे वह चौंक गया, "चले जाओ!"
उसी क्षण यात्री आगे झुककर अपनी लाठी के लोहे के सिरे से कुछ जलती हुई लकड़ियों को आग में डाल रहा था; वह झट से मुड़ा और जैसे ही उसने जवाब देने के लिए मुंह खोला, मेज़बान ने उसे टकटकी लगाकर देखा और धीमी आवाज़ में कहा, “रुको! इस तरह की बातें बहुत हो गईं। क्या मैं तुम्हारा नाम बताऊँ? तुम्हारा नाम जीन वालजेन है। अब क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि तुम कौन हो? जब मैंने तुम्हें अंदर आते देखा तो मुझे कुछ शक हुआ; मैंने नगर पालिका को संदेश भेजा, और मुझे यही जवाब मिला। क्या तुम पढ़ सकते हो?”

इतना कहकर उसने अजनबी को वह कागज़ पूरी तरह खोलकर दे दिया, जो अभी-अभी सराय से टाउन हॉल और फिर टाउन हॉल से सराय तक आया था। उस आदमी ने उस पर एक नज़र डाली। थोड़ी देर रुकने के बाद मकान मालिक ने अपनी बात जारी रखी।

मुझे सबके साथ विनम्रता से पेश आने की आदत है। चले जाओ!

उस आदमी ने अपना सिर झुकाया, जमीन पर रखा हुआ थैला उठाया और वहां से चला गया।

उसने मुख्य सड़क चुनी। वह एक दुखी और अपमानित व्यक्ति की तरह घरों के करीब चलते हुए, बिना सोचे-समझे सीधे आगे बढ़ता गया। उसने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। अगर वह ऐसा करता, तो उसे कोलबस क्रॉस का मालिक अपने दरवाजे पर खड़ा दिखाई देता, जो उसके सराय के सभी मेहमानों और सड़क पर चल रहे सभी राहगीरों से घिरा हुआ था, जो उत्साह से बातें कर रहे थे और उंगली से उसकी ओर इशारा कर रहे थे; और समूह की भय और अविश्वास भरी निगाहों से वह समझ जाता कि उसका आगमन जल्द ही पूरे शहर के लिए एक घटना बन जाएगा।

उसने यह सब कुछ नहीं देखा। कुचले गए लोग पीछे मुड़कर नहीं देखते। वे अपने पीछे आने वाले बुरे भाग्य को भली-भांति जानते हैं।

इस प्रकार वह कुछ देर तक बिना रुके चलता रहा, अनजान गलियों में भटकता रहा, अपनी थकान को भूलकर, जैसा कि अक्सर उदास व्यक्ति के साथ होता है। अचानक उसे तीव्र भूख लगने लगी। रात होने वाली थी। उसने चारों ओर नज़र घुमाई, यह देखने के लिए कि क्या उसे कोई आश्रय मिल सकता है।

वह शानदार सराय उसके लिए बंद थी; वह किसी बहुत ही साधारण से पब, किसी झोपड़ीनुमा जगह की तलाश में था, चाहे वह कितनी भी नीची क्यों न हो।

तभी गली के अंत में एक रोशनी चमकी; लोहे के एक खंभे से लटकी हुई चीड़ की शाखा गोधूलि बेला के सफेद आकाश में स्पष्ट रूप से दिखाई दी। वह उस ओर चल पड़ा।

दरअसल, यह एक पब निकला। वही पब जो रू डे शैफौट में स्थित है।

राहगीर एक पल के लिए रुका और खिड़की से अंदर झाँका, जहाँ एक छोटी सी छत वाले पब का कमरा मेज पर रखे एक छोटे से दीपक और चूल्हे पर जलती बड़ी आग से

रोशन था। कुछ लोग वहाँ शराब पी रहे थे। पब का मालिक खुद को गर्म कर रहा था। एक लोहे का बर्तन, जो एक तंबू से लटका हुआ था, आग पर उबल रहा था।

इस पब (जो एक तरह का सराय भी है) का प्रवेश द्वार दो दरवाजों से होकर जाता है। एक दरवाजा सड़क की ओर खुलता है, दूसरा गोबर से भरे एक छोटे से आंगन की ओर। यात्री सड़क वाले दरवाजे से अंदर जाने की हिम्मत नहीं कर पाया। वह आंगन में घुस गया, फिर रुका, और धीरे से कुंडी उठाकर दरवाजा खोला।

“वहाँ कौन जाता है?” गुरुजी ने कहा।

"कोई ऐसा व्यक्ति जो रात का खाना और सोना चाहता हो।"

“अच्छा। हम यहाँ रात का खाना और बिस्तर उपलब्ध करा देंगे।”

वह अंदर आया। शराब पी रहे सभी लोग मुड़कर देखने लगे। एक तरफ से दीपक की रोशनी पड़ रही थी, दूसरी तरफ से आग की। जब वह अपना थैला उतार रहा था, तब तक वे उसे कुछ देर तक देखते रहे।

मेज़बान ने उससे कहा, “आग जल रही है। खाना बर्तन में पक रहा है। आओ और खुद को गर्म कर लो, साथी।”

वह पास आया और चूल्हे के पास बैठ गया। उसने अपने थके हुए पैरों को आग पर फैलाया; बर्तन से एक अच्छी खुशबू आ रही थी। उसकी टोपी, जो अच्छी तरह से नीचे खींची हुई थी, के नीचे उसके चेहरे का जो थोड़ा-बहुत हिस्सा दिखाई दे रहा था, उस पर आराम का एक धुंधला सा भाव था, जो निरंतर पीड़ा के कारण उत्पन्न होने वाले उस दूसरे मार्मिक भाव से मिला हुआ था।

इसके अलावा, उसका चेहरा दृढ़, ऊर्जावान और उदास था। यह शारीरिक बनावट विचित्र रूप से संतुलित थी; शुरुआत में विनम्रता झलकती थी और अंत में गंभीरता। पलकों के नीचे उसकी आंखें झाड़ियों के नीचे जलती आग की तरह चमक रही थीं।

मेज पर बैठे लोगों में से एक मछली बेचने वाला था, जो रू डे शैफौट के पब में प्रवेश करने से पहले लाबारे के यहाँ अपने घोड़े को बांधने गया था। संयोग से उसी सुबह उसकी मुलाकात ब्रास डी'एस्से और—मुझे नाम याद नहीं आ रहा है। शायद एस्कौब्लॉन के बीच सड़क पर इस अजनबी से हुई थी। जब वह उससे मिला, तो वह आदमी, जो उस समय बहुत थका हुआ लग रहा था, ने उससे उसे अपनी गाड़ी में

बिठाने का अनुरोध किया; जिस पर मछली बेचने वाले ने अपनी चाल तेज करने के अलावा कोई जवाब नहीं दिया। यह मछली बेचने वाला आधे घंटे पहले जैक्विन लाबारे को घेरे हुए समूह का सदस्य था, और उसने खुद कोल्बास चौराहे पर लोगों को सुबह की अपनी अप्रिय मुलाकात के बारे में बताया था। जहाँ वह बैठा था, वहीं से उसने सराय मालिक को एक हल्का सा इशारा किया। सराय मालिक उसके पास गया। उन्होंने धीमी आवाज़ में कुछ शब्द कहे। वह आदमी फिर से अपने विचारों में मग्न हो गया था।
सराय का मालिक चूल्हे के पास लौटा, अचानक उस आदमी के कंधे पर हाथ रखा और उससे कहा:—
तुम यहाँ से निकल जाओगे।
अजनबी ने मुड़कर धीरे से उत्तर दिया, “अरे! आप जानते हैं?—”
"हाँ।"
मुझे दूसरे सराय से निकाल दिया गया था।
और तुम्हें इस जगह से बाहर निकाल दिया जाएगा।
आप मुझे कहाँ भेजना चाहते हैं?
“अन्यत्र।”
वह आदमी अपनी छड़ी और अपना थैला लेकर चला गया।
जैसे ही वह बाहर निकला, कोलबस के क्रॉस से उसका पीछा करते हुए आए कुछ बच्चों ने, जो उसका इंतजार कर रहे थे, उस पर पत्थर फेंके। वह क्रोधित होकर पीछे हट गया और अपनी लाठी से उन्हें धमकाया: बच्चे पक्षियों के झुंड की तरह तितर-बितर हो गए।
वह जेल के सामने से गुजरा। दरवाजे पर एक घंटी से बंधी लोहे की जंजीर लटकी हुई थी। उसने घंटी बजाई।
विकेट खुल गया।
“टर्नकी,” उसने विनम्रतापूर्वक अपनी टोपी उतारते हुए कहा, “क्या आप कृपा करके मुझे अंदर आने देंगे और रात भर के लिए मुझे रहने की जगह देंगे?”
एक आवाज ने जवाब दिया:—

"जेल कोई सराय नहीं है। गिरफ्तार हो जाओ, और तुम्हें प्रवेश मिल जाएगा।"

विकेट फिर से बंद हो गया।

वह एक छोटी सी गली में दाखिल हुआ जहाँ कई बगीचे थे। उनमें से कुछ केवल झाड़ियों से घिरे हुए थे, जिससे गली का नज़ारा खुशनुमा लग रहा था। इन बगीचों और झाड़ियों के बीच उसकी नज़र एक मंज़िला छोटे से मकान पर पड़ी, जिसकी खिड़की रोशन थी। उसने खिड़की के शीशे से झाँका, ठीक वैसे ही जैसे उसने पब में किया था। अंदर एक बड़ा सफ़ेद रंग का कमरा था, जिसमें प्रिंटेड सूती कपड़े से ढका पलंग, एक कोने में पालना, कुछ लकड़ी की कुर्सियाँ और दीवार पर टंगी दो बैरल वाली तोप थी। कमरे के बीचोंबीच एक मेज़ बिछी थी। तांबे के दीपक की रोशनी में मोटे सफ़ेद लिनेन का मेज़पोश, चाँदी की तरह चमकता हुआ पीतल का जग, शराब से भरा हुआ और धुआँ छोड़ता हुआ भूरा सूप का बर्तन रखा था। इस मेज़ पर लगभग चालीस साल का एक आदमी बैठा था, जिसका चेहरा हंसमुख और खुला हुआ था, जो अपनी गोद में एक छोटे बच्चे को झुला रहा था। पास ही एक बहुत ही जवान औरत दूसरे बच्चे को दूध पिला रही थी। पिता हँस रहा था, बच्चा हँस रहा था और माँ मुस्कुरा रही थी।

इस कोमल और मनमोहक दृश्य को देखकर अजनबी कुछ पल के लिए चिंतन में लीन हो गया। उसके भीतर क्या चल रहा था? यह तो केवल वही बता सकता था। संभवतः उसने सोचा होगा कि यह आनंदमय घर आतिथ्य सत्कारपूर्ण होगा, और जहाँ उसे इतनी खुशी दिखाई दे रही है, वहाँ शायद उसे थोड़ी दया भी मिलेगी।

उसने बहुत धीमी और कमजोर आवाज में खिड़की के शीशे पर दस्तक दी।

उन्होंने उसकी बात नहीं सुनी।

उसने दोबारा टैप किया।

उसने महिला को यह कहते हुए सुना, "मुझे ऐसा लग रहा है, पतिदेव, कि कोई दरवाजा खटखटा रहा है।"

“नहीं,” पति ने उत्तर दिया।

उसने तीसरी बार टैप किया।

पति उठा, दीपक उठाया और दरवाजे की ओर गया, जिसे उसने खोला।

वह ऊंचे कद का आदमी था, आधा किसान, आधा कारीगर। उसने एक बड़ा सा चमड़े का एप्रन पहन रखा था, जो उसके बाएं कंधे तक पहुंचता था, और जिसमें एक हथौड़ा, एक लाल रुमाल, एक बारूद की पेटी और तरह-तरह की वस्तुएं, जो कमरबंद में जेब की तरह रखी थीं, रखी थीं, उसे फुला रही थीं। उसने अपना सिर पीछे की ओर झुका रखा था; उसकी कमीज चौड़ी खुली हुई थी और पीछे की ओर मुड़ी हुई थी, जिससे उसकी गठीली, सफेद और नंगी गर्दन दिखाई दे रही थी। उसकी पलकें घनी थीं, बड़ी-बड़ी काली मूंछें थीं, आंखें उभरी हुई थीं, उसके चेहरे का निचला हिस्सा थूथन जैसा था; और इन सबके अलावा, उसमें एक ऐसा सहज भाव था, जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

“माफ़ कीजिए, महोदय,” राहगीर ने कहा, “क्या आप भुगतान के बदले मुझे एक थाली सूप और बगीचे में उस झोपड़ी का एक कोना सोने के लिए दे सकते हैं? बताइए; क्या आप ऐसा कर सकते हैं? पैसों के बदले?”

“तुम कौन हो?” घर के मालिक ने पूछा।

उस आदमी ने जवाब दिया: “मैं अभी-अभी पुय-मोइसन से आया हूँ। मैं पूरे दिन पैदल चला हूँ। मैंने बारह लीग की दूरी तय की है। क्या आप मुझे ले जा सकते हैं?—अगर मैं भुगतान करूँ तो?”

किसान ने कहा, “मैं किसी भी सम्मानित व्यक्ति को अपने यहाँ ठहराने से इनकार नहीं करूँगा, बशर्ते वह मुझे पैसे दे। लेकिन आप सराय क्यों नहीं जाते?”

"जगह नहीं है।"

“अरे! नामुमकिन। यह न तो मेला है और न ही बाजार का दिन। क्या आप लाबार्रे गए हैं?”

"हाँ।"

"कुंआ?"

यात्री ने शर्मिंदा होकर उत्तर दिया: "मुझे नहीं पता। उन्होंने मुझसे मुलाकात नहीं की।"

"क्या आप रू शैफौट में स्थित उस आदमी के यहाँ गए हैं?"

अजनबी की शर्मिंदगी और बढ़ गई; वह हकलाते हुए बोला, "उसने मुझे भी स्वीकार नहीं किया।"

किसान के चेहरे पर अविश्वास का भाव आ गया; उसने नए आने वाले को सिर से पैर तक देखा और अचानक कांपते हुए बोला:

“क्या तुम वो आदमी हो?—”

उसने अजनबी पर एक नजर डाली, तीन कदम पीछे हटा, लैंप को मेज पर रखा और दीवार से अपनी बंदूक उतार ली।

इसी बीच, "क्या तुम वही आदमी हो?" ये शब्द सुनते ही वह महिला उठ खड़ी हुई, अपने दोनों बच्चों को बाहों में भर लिया और अपने पति के पीछे छिप गई। वह अजनबी को भयभीत निगाहों से घूर रही थी, उसका सीना खुला हुआ था और डरी हुई आँखों से वह धीमी आवाज़ में बुदबुदाई, "त्सो-माराउडे।"

यह सब कुछ इतनी जल्दी घटित हो गया कि इसकी कल्पना करने में भी समय नहीं लगता। कुछ क्षणों तक उस आदमी को ध्यान से देखने के बाद, जैसे कोई विषैले साँप को देखता है, घर का मालिक दरवाजे पर लौटा और बोला:—

"मिटा दें!"

“भगवान के लिए, एक गिलास पानी दे दो,” उस आदमी ने कहा।

“मेरी बंदूक से एक गोली!” किसान ने कहा।

फिर उसने दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया, और उस आदमी ने दो बड़े बोल्ट ठोकने की आवाज़ सुनी। एक पल बाद, खिड़की का शटर बंद हो गया, और बाहर लोहे की छड़ के टकराने की आवाज़ सुनाई दी।

रात का अंधेरा छा रहा था। आल्प्स पर्वतों से ठंडी हवा चल रही थी। ढलते सूरज की रोशनी में अजनबी ने सड़क के किनारे बने एक बगीचे में एक झोपड़ी जैसी आकृति देखी, जो उसे घास-फूस से बनी हुई लग रही थी। उसने दृढ़ता से लकड़ी की बाड़ फांद ली और बगीचे में पहुँच गया। वह झोपड़ी के पास पहुँचा; उसका दरवाजा बहुत छोटा और संकरा था, और वह उन इमारतों जैसी थी जो सड़क पर काम करने वाले मजदूर सड़कों के किनारे बनाते हैं। उसे पूरा यकीन था कि यह किसी सड़क मजदूर का घर है; वह ठंड और भूख से बेहाल था, लेकिन कम से कम ठंड से बचने के लिए यह एक आश्रय तो था। इस तरह के घर आमतौर पर रात में खाली रहते हैं।

उसने अपना चेहरा ज़मीन पर पटका और झोपड़ी में घुस गया। वहाँ गर्मी थी और उसे पुआल का एक ठीक-ठाक बिस्तर मिला। वह कुछ देर तक उस बिस्तर पर लेटा रहा, इतना थका हुआ था कि हिलने-डुलने की भी ताकत नहीं थी। फिर, चूंकि उसकी पीठ पर लटका हुआ थैला उसके रास्ते में आ रहा था और उसमें तकिया भी था, इसलिए उसने उसकी एक पट्टी खोलने की कोशिश की। उसी क्षण, एक भयंकर गुर्राहट सुनाई दी। उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं। झोपड़ी के प्रवेश द्वार पर अँधेरे में एक विशाल कुत्ते का सिर दिखाई दिया।

यह कुत्तों का पिंजरा था।

वह स्वयं भी बलवान और दुर्जेय था; उसने अपनी लाठी से खुद को सुसज्जित किया, अपने थैले को ढाल बनाया और अपने फटे-पुराने कपड़ों में छेद बढ़ाते हुए, जितना हो सके उतने अच्छे तरीके से कुत्ते के बाड़े से बाहर निकल गया।

वह उसी तरह बगीचे से बाहर निकला, लेकिन पीछे की ओर, क्योंकि कुत्ते को शांत रखने के लिए उसे अपनी छड़ी से उस पैंतरेबाजी का सहारा लेना पड़ा जिसे उस तरह की तलवारबाजी के उस्ताद ला रोज कूवर्टे कहते हैं।

जब वह बड़ी मुश्किल से बाड़ पार करके वापस आया और खुद को एक बार फिर सड़क पर अकेला पाया, बिना किसी शरण, बिना किसी आश्रय, बिना छत के, यहाँ तक कि उस भूसे के बिस्तर और उस दयनीय कुत्तेघर से भी भगा दिया गया था, तो वह एक पत्थर पर बैठने के बजाय गिर पड़ा, और ऐसा लगता है कि किसी राहगीर ने उसे यह कहते हुए सुना, "मैं तो कुत्ता भी नहीं हूँ!"

वह जल्द ही उठ खड़ा हुआ और अपनी यात्रा फिर से शुरू कर दी। वह शहर से बाहर निकल गया, इस उम्मीद में कि खेतों में उसे कोई पेड़ या घास का ढेर मिल जाएगा जहाँ वह आश्रय ले सके।

वह कुछ देर तक सिर झुकाए इसी तरह चलता रहा। जब उसे लगा कि वह मानव बस्ती से बहुत दूर आ गया है, तो उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और चारों ओर ध्यान से देखा। वह एक खेत में था। उसके सामने एक छोटी पहाड़ी थी जो कटी हुई फसल के ठूंठों से ढकी हुई थी, जो फसल कटाई के बाद मुंडे हुए सिर जैसी दिखती हैं।

क्षितिज पूरी तरह से काला था। यह केवल रात के अंधेरे का ही कारण नहीं था; यह बेहद नीचे लटके बादलों के कारण था जो मानो पहाड़ी पर ही टिके हुए थे और ऊपर उठते हुए पूरे आकाश को ढक रहे थे। इसी बीच, जैसे ही चंद्रमा उदय होने

वाला था और आकाश के शीर्ष पर अभी भी गोधूलि की हल्की सी चमक बाकी थी, इन बादलों ने आकाश के शिखर पर एक प्रकार का सफेद मेहराब बना लिया, जहाँ से प्रकाश की एक किरण पृथ्वी पर पड़ रही थी।

इस प्रकार पृथ्वी आकाश की तुलना में अधिक प्रकाशित थी, जिससे एक विशेष रूप से भयावह प्रभाव उत्पन्न होता था, और पहाड़ी, जिसकी आकृति भद्दी और छोटी थी, अंधकारमय क्षितिज के सामने धुंधली और फीकी दिखाई दे रही थी। कुल मिलाकर दृश्य भयंकर, तुच्छ, उदास और संकीर्ण था।

खेत में या पहाड़ी पर एक विकृत पेड़ के अलावा कुछ भी नहीं था, जो राहगीर से कुछ कदम की दूरी पर मरोड़ रहा था और कांप रहा था।

यह व्यक्ति स्पष्ट रूप से बुद्धि और आध्यात्मिकता की उन सूक्ष्म आदतों से बहुत दूर था जो किसी को चीजों के रहस्यमय पहलुओं के प्रति संवेदनशील बनाती हैं; फिर भी, उस आकाश में, उस पहाड़ी में, उस मैदान में, उस वृक्ष में कुछ ऐसा था जो इतना गहरा वीरान था कि क्षण भर की स्थिरता और चिंतन के बाद वह अचानक वापस मुड़ गया। ऐसे क्षण भी होते हैं जब प्रकृति शत्रुतापूर्ण प्रतीत होती है।

वह वापस लौट आया; डी⸺ के द्वार बंद थे। डी⸺, जिसने धार्मिक युद्धों के दौरान घेराबंदी झेली थी, 1815 में भी प्राचीन दीवारों से घिरा हुआ था, जिनके किनारों पर चौकोर मीनारें थीं, जिन्हें बाद में ध्वस्त कर दिया गया था। वह एक दरार से होकर शहर में फिर से प्रवेश कर गया।

शाम के लगभग आठ बज रहे होंगे। चूंकि वह सड़कों से परिचित नहीं था, इसलिए उसने बेतरतीब ढंग से अपनी सैर फिर से शुरू कर दी।

इस तरह वह प्रादेशिक क्षेत्र में पहुंचा, फिर शिक्षा संस्थान में।
कैथेड्रल स्क्वायर से गुजरते समय उसने चर्च की ओर मुट्ठी लहराई।

इस चौक के कोने पर एक मुद्रण कारखाना है। यहीं पर सम्राट और शाही रक्षकों द्वारा सेना को जारी की गई घोषणाएँ, जो एल्बा द्वीप से लाई गई थीं और स्वयं नेपोलियन द्वारा लिखवाई गई थीं, पहली बार छापी गई थीं।

थकान से चूर और अब कोई उम्मीद न रखते हुए, वह उस पत्थर की बेंच पर लेट गया जो इस प्रिंटिंग ऑफिस के दरवाजे पर खड़ी है।

उसी क्षण एक बूढ़ी औरत गिरजाघर से बाहर आई। उसने देखा कि वह आदमी छाया में पड़ा हुआ है। उसने कहा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो, मेरे दोस्त?"
उन्होंने कठोर और क्रोधित स्वर में उत्तर दिया: “जैसा कि आप देख रही हैं, मेरी प्रिय महिला, मैं सो रहा हूँ।” वह प्रिय महिला, जो वास्तव में इस नाम के योग्य थीं, मार्क्विज़ डी आर थीं।
“इस बेंच पर?” उसने आगे पूछा।
“उन्नीस साल से मेरे पास लकड़ी का गद्दा था; आज मेरे पास पत्थर का गद्दा है।”
“क्या आप सैनिक रहे हैं?”
"जी हां, मेरी प्यारी महिला, एक सैनिक।"
“तुम सराय में क्यों नहीं जाते?”
क्योंकि मेरे पास पैसे नहीं हैं।
“हाय!” मैडम डी आर ने कहा, “मेरे पर्स में केवल चार सू ही हैं।”
"फिर भी मुझे दे दो।"
उस आदमी ने चार सू ले लिए। मैडम डी आर⸺ ने आगे कहा: “इतनी कम रकम में आपको किसी सराय में कमरा नहीं मिल सकता। लेकिन क्या आपने कोशिश की है? इस तरह रात गुजारना आपके लिए नामुमकिन है। आप ठंड और भूख से बेहाल होंगे, इसमें कोई शक नहीं। शायद किसी ने दया करके आपको अपने यहाँ ठहरा दिया हो।” मैंने हर दरवाजे पर दस्तक दे दी है।
"कुंआ?"
मुझे हर जगह से भगा दिया गया है।
उस "भली महिला" ने उस आदमी की बांह को छुआ और सड़क के दूसरी ओर एक छोटे, नीचे घर की ओर इशारा किया, जो बिशप के महल के बगल में स्थित था।
“क्या आपने सभी दरवाजे खटखटा दिए हैं?”
"हाँ।"
"क्या तुमने उस घर का दरवाजा खटखटाया है?"

"नहीं।   "

"वहाँ दस्तक दो।   "

II. विवेक से बुद्धिमत्ता की सलाह

उस शाम, डी⸺ के बिशप, शहर में टहलने के बाद, अपने कमरे में काफी देर तक बंद रहे। वे कर्तव्यों पर एक महान कार्य में व्यस्त थे, जो दुर्भाग्यवश कभी पूरा नहीं हो सका। वे इस महत्वपूर्ण विषय पर धर्मगुरुओं और विद्वानों द्वारा कही गई हर बात को सावधानीपूर्वक संकलित कर रहे थे। उनकी पुस्तक दो भागों में विभाजित थी: पहला, सभी के कर्तव्य; दूसरा, प्रत्येक व्यक्ति के कर्तव्य, उसके वर्ग के अनुसार। सभी के कर्तव्य महान कर्तव्य हैं। ये चार हैं। संत मैथ्यू ने इन्हें बताया है: ईश्वर के प्रति कर्तव्य (मैथ्यू 6); स्वयं के प्रति कर्तव्य (मैथ्यू 5:29, 30); पड़ोसी के प्रति कर्तव्य (मैथ्यू 7:12); पशुओं के प्रति कर्तव्य (मैथ्यू 6:20, 25)। अन्य कर्तव्यों के लिए बिशप ने उन्हें अन्यत्र इंगित और निर्धारित पाया: रोमियों को लिखे पत्र में शासकों और प्रजा के प्रति; संत पीटर द्वारा मजिस्ट्रेटों, पत्नियों, माताओं और युवकों के प्रति। इफिसियों को लिखे पत्र में पतियों, पिताओं, बच्चों और सेवकों के लिए; इब्रानियों को लिखे पत्र में विश्वासियों के लिए; और कुरिन्थियों को लिखे पत्र में कुंवारी कन्याओं के लिए उपदेश दिए गए हैं। इन्हीं उपदेशों से वह एक सामंजस्यपूर्ण संपूर्ण रचना कर रहे थे, जिसे वे लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहते थे।

आठ बजे भी वह काम में लगे हुए थे, घुटनों पर एक बड़ी किताब खोलकर छोटे-छोटे कागज़ों पर बड़ी असुविधा से लिख रहे थे, तभी मैडम मैग्लॉयर अपनी आदत के अनुसार उनके बिस्तर के पास वाली अलमारी से चांदी के बर्तन लेने के लिए अंदर आईं। कुछ ही देर बाद, बिशप को पता चल गया कि मेज सज चुकी है और उनकी बहन शायद उनका इंतज़ार कर रही हैं, इसलिए उन्होंने अपनी किताब बंद की, मेज से उठे और भोजन कक्ष में चले गए।

भोजन कक्ष एक आयताकार कमरा था, जिसमें एक चिमनी थी, जिसका एक दरवाजा सड़क की ओर खुलता था (जैसा कि हमने बताया है), और एक खिड़की बगीचे की ओर खुलती थी।

दरअसल, मैडम मैग्लॉयर मेज को अंतिम रूप देने में लगी हुई थीं।

जब वह यह धार्मिक अनुष्ठान कर रही थी, तब वह मैडमोजेल बैपटिस्टिन से बातचीत कर रही थी।

मेज पर एक दीपक रखा था; मेज चिमनी के पास थी। वहाँ लकड़ी की आग जल रही थी।

इन दोनों महिलाओं की छवि को आसानी से कल्पना में देखा जा सकता है, जिनकी उम्र साठ वर्ष से अधिक थी। मैडम मैग्लॉयर छोटी, गोल-मटोल और जीवंत थीं; मैडमोजेल बैपटिस्टाइन सौम्य, पतली, नाजुक और अपनी बहन से थोड़ी लंबी थीं, उन्होंने 1806 के फैशन के अनुसार बैंगनी रंग के रेशमी गाउन पहना हुआ था, जिसे उन्होंने उसी समय पेरिस में खरीदा था और जो तब से उनके पास था। आम बोलचाल की भाषा में कहें तो, जो एक शब्द में उस विचार को व्यक्त करने का गुण रखती है जिसे पूरा पृष्ठ भी शायद ही व्यक्त कर पाए, मैडम मैग्लॉयर में एक किसान की झलक थी, और मैडमोजेल बैपटिस्टाइन में एक सभ्य महिला की। मैडम मैग्लॉयर ने सफेद रजाईदार टोपी पहनी थी, गले में मखमली रिबन पर सोने का जेनेट क्रॉस था, जो घर में मौजूद एकमात्र स्त्री आभूषण था। उन्होंने मोटे काले ऊनी कपड़े से बने गाउन से एक बेहद सफेद फिचू (बालों का गुच्छा) निकाला हुआ था, जिसकी बड़ी, छोटी आस्तीनें थीं। उन्होंने लाल और हरे चेक वाले सूती कपड़े का एप्रन पहना था, जिसे कमर पर हरे रिबन से बांधा गया था, और उसी रंग का एक स्टॉमैकर ऊपरी कोनों पर दो पिनों से लगा हुआ था। उन्होंने पैरों में मोटे जूते और पीले मोजे पहने थे, जैसे मार्सिले की महिलाएं पहनती थीं। मैडमोजेल बैपटिस्टाइन का गाउन 1806 के पैटर्न पर सिला गया था, जिसमें छोटी कमर, संकरा, आवरण जैसा स्कर्ट, फूली हुई आस्तीनें, फ्लैप और बटन थे। उन्होंने अपने भूरे बालों को "बेबी विग" के नाम से जानी जाने वाली घुंघराली विग के नीचे छिपा रखा था। मैडम मैग्लॉयर बुद्धिमान, जीवंत और दयालु स्वभाव की थीं। उसके होंठों के दोनों कोने असमान रूप से उठे हुए थे, और उसका ऊपरी होंठ, जो निचले होंठ से बड़ा था, उसे कुछ हद तक कठोर और अभिमानी रूप देता था। जब तक महाशय चुप रहे, वह उनसे आदर और स्वतंत्रता के मिश्रण के साथ दृढ़ता से बात करती रही; लेकिन जैसे ही महाशय बोलने लगे, जैसा कि हमने देखा है, वह अपनी मालकिन की तरह निष्क्रिय रूप से आज्ञा मानने लगी। मैडमोजेल बैपटिस्टीन ने तो कुछ कहा ही नहीं। वह केवल उनकी आज्ञा मानने और उन्हें प्रसन्न करने तक ही सीमित रही। वह कभी सुंदर नहीं थी, यहाँ तक कि जब वह जवान थी तब भी नहीं; उसकी बड़ी, नीली, उभरी हुई आँखें और एक लंबी

धनुषाकार नाक थी; लेकिन उसका पूरा चेहरा, उसका पूरा व्यक्तित्व, एक अकथनीय अच्छाई से भरा हुआ था, जैसा कि हमने शुरुआत में बताया था। वह हमेशा से ही कोमलता के लिए नियत थी; लेकिन विश्वास, दान, आशा, वे तीन गुण जो आत्मा को धीरे से गर्म करते हैं, ने धीरे-धीरे उस कोमलता को पवित्रता तक पहुँचा दिया था। प्रकृति ने उसे मेमना बनाया था, धर्म ने उसे देवदूत बना दिया था। बेचारी संत कुंवारी! मीठी स्मृति जो लुप्त हो गई!

मैडमोजेल बैपटिस्टिन ने उस शाम बिशप के निवास पर जो कुछ हुआ, उसका इतनी बार वर्णन किया है कि आज भी कई जीवित लोग हैं जिन्हें छोटी से छोटी बातें भी याद हैं।

जिस क्षण बिशप ने प्रवेश किया, मैडम मैग्लॉयर बड़े उत्साह से बातें कर रही थीं। वह मैडमोजेल बैपटिस्टिन से एक ऐसे विषय पर बहस कर रही थीं जो उनके लिए जाना-पहचाना था और जिससे बिशप भी परिचित थे। यह प्रश्न प्रवेश द्वार के ताले से संबंधित था।

ऐसा प्रतीत होता है कि रात के खाने के लिए कुछ सामान खरीदते समय मैडम मैग्लॉयर ने कई जगहों से कुछ बातें सुनी थीं। लोगों ने एक संदिग्ध आवारा के बारे में बताया था; एक संदिग्ध बदमाश आया था जो शहर में कहीं न कहीं मौजूद होगा, और जो लोग उस रात देर से घर लौटेंगे उन्हें अप्रिय मुठभेड़ों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, पुलिस व्यवस्था बहुत खराब थी, क्योंकि प्रीफेक्ट और मेयर के बीच कोई मेल-मिलाप नहीं था, और वे एक-दूसरे को परेशान करने के लिए तरह-तरह की घटनाएं करवाते रहते थे। समझदार लोगों का यही कर्तव्य था कि वे स्वयं पुलिस की भूमिका निभाएं, अपनी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखें, और अपने घरों को ठीक से बंद करें, ताला लगाएं और दरवाजों को अच्छी तरह से बंद करें।

मैडम मैग्लॉयर ने इन आखिरी शब्दों पर ज़ोर दिया; लेकिन बिशप अभी-अभी अपने कमरे से आए थे, जहाँ काफ़ी ठंड थी। वे आग के सामने बैठ गए, खुद को गर्म किया और फिर दूसरी बातों में मशगूल हो गए। उन्होंने मैडम मैग्लॉयर द्वारा जानबूझकर कही गई बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने उसे दोहराया। तब मैडमोजेल बैपटिस्टीन, अपने भाई को नाराज़ किए बिना मैडम मैग्लॉयर को संतुष्ट करने की इच्छा से, दबे स्वर में कहने का साहस किया:—

"भाई, क्या तुमने सुना कि मैडम मैग्लॉयर क्या कह रही हैं?"

“मैंने इसके बारे में कुछ अस्पष्ट रूप से सुना है,” बिशप ने उत्तर दिया। फिर अपनी कुर्सी पर आधा घूमते हुए, अपने हाथों को घुटनों पर रखते हुए, और उस बूढ़ी नौकरानी की ओर अपना सौम्य चेहरा उठाते हुए, जो आसानी से प्रसन्न हो जाता था और जो नीचे से आग की रोशनी से जगमगा रहा था—“आओ, क्या बात है? क्या बात है? क्या हम किसी बड़े खतरे में हैं?”

फिर मैडम मैग्लॉयर ने अनजाने में ही कहानी को थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर सुनाना शुरू कर दिया। ऐसा प्रतीत हुआ कि एक बोहेमियन, नंगे पैर घूमने वाला आवारा, एक तरह का खतरनाक भिखारी, उस समय शहर में था। वह जैक्विन लाबारे के यहाँ रहने के लिए आया था, लेकिन लाबारे ने उसे अपने यहाँ नहीं रखा। उसे बुलेवार्ड गस्सेंडी से आते हुए और शाम के धुंधलके में गलियों में घूमते हुए देखा गया था। एक भयानक चेहरे वाला फांसी का फंदा।

“सचमुच!” बिशप ने कहा।

पूछताछ करने की इस तत्परता ने मैडम मैग्लॉयर को प्रोत्साहित किया; उन्हें लगा कि इससे संकेत मिलता है कि बिशप घबराने ही वाले हैं; उन्होंने विजयी भाव से आगे पूछताछ जारी रखी:

जी हां, महामहिम। बात यही है। आज रात इस कस्बे में कोई न कोई तबाही मचने वाली है। सब यही कह रहे हैं। और ऊपर से, पुलिस व्यवस्था भी इतनी खराब है” (एक उपयोगी दोहराव)। “पहाड़ी इलाके में रहने का ख्याल ही अजीब है, और रात में सड़कों पर बत्तियां तक न हों! अंधेरा छा जाता है। बिल्कुल भट्टी जैसा अंधेरा! और मैं कहती हूं, महामहिम, और वहां बैठी मैडम भी मेरे साथ कहती हैं

— ”

“मैं कुछ नहीं कहती। मेरा भाई जो करता है, वह अच्छा करता है।” उसकी बहन ने बीच में ही टोकते हुए कहा।

मैडम मैग्लॉयर ने ऐसे बोलना जारी रखा मानो कोई विरोध हुआ ही न हो:—

“हम कहते हैं कि यह घर बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं है; यदि महामहिम अनुमति दें, तो मैं जाकर ताला बनाने वाले पॉलिन मुसेबोइस को बुलाकर दरवाजों पर लगे पुराने तालों को बदलवा दूँगा; हमारे पास ताले हैं, और यह पल भर का काम

है; क्योंकि मैं कहता हूँ कि उस दरवाजे से ज्यादा भयानक कुछ नहीं है जिसे बाहर से कोई भी राहगीर कुंडी से खोल सकता है; और मैं कहता हूँ, महामहिम, हमें कुंडी चाहिए, कम से कम आज रात के लिए ही सही; इसके अलावा, महामहिम की हमेशा ‘अंदर आ जाओ’ कहने की आदत है; और वैसे भी, हे भगवान! आधी रात में भी अनुमति मांगने की कोई जरूरत नहीं है।”

उसी क्षण दरवाजे पर काफी जोर से दस्तक हुई।

“अंदर आइए,” बिशप ने कहा।

III. निष्क्रिय आज्ञाकारिता की वीरता

दरवाजा खुल गया।

यह तेजी से खुल गया, मानो किसी ने इसे जोरदार और दृढ़ धक्का दिया हो।

एक आदमी अंदर आया।

हम उस आदमी को पहले से जानते हैं। वह वही राहगीर है जिसे हमने आश्रय की तलाश में भटकते हुए देखा था।

वह अंदर आया, एक कदम आगे बढ़ा और रुक गया, पीछे से दरवाजा खुला छोड़ दिया।
उसके कंधों पर उसका थैला था, हाथ में लाठी थी, उसकी आँखों में एक कठोर, निर्भीक, थका हुआ और हिंसक भाव था। चूल्हे की आग उसे रोशन कर रही थी। वह भयानक था। वह एक डरावना सा रूप था।

मैडम मैग्लॉयर में चीखने की भी ताकत नहीं थी। वह कांप रही थीं और मुंह खुला रखकर खड़ी थीं।

मैडमोजेल बैपटिस्टिन ने पीछे मुड़कर देखा, उस आदमी को अंदर आते हुए देखा और डर के मारे लगभग चौंक गईं; फिर, धीरे-धीरे अपना सिर फिर से चिमनी की ओर घुमाते हुए, उन्होंने अपने भाई को देखना शुरू किया और उनका चेहरा एक बार फिर से अत्यंत शांत और सौम्य हो गया।

बिशप ने उस व्यक्ति पर शांत भाव से निगाहें गड़ा दीं।

जैसे ही उसने अपना मुँह खोला, निस्संदेह नवागंतुक से उसकी इच्छा पूछने के लिए, उस व्यक्ति ने अपने दोनों हाथ अपनी छड़ी पर रखे, अपनी निगाहें बूढ़े आदमी और दोनों महिलाओं पर टिकाईं, और बिशप के बोलने का इंतजार किए बिना, उसने ऊँची आवाज़ में कहा:—

“देखो यहाँ। मेरा नाम जीन वालजेन है। मैं गैली का कैदी हूँ। मैंने गैली में उन्नीस साल बिताए हैं। मुझे चार दिन पहले रिहा किया गया था, और मैं पोंटार्लियर जा रहा हूँ, जो मेरा गंतव्य है। टूलॉन छोड़ने के बाद से मैं चार दिनों से पैदल चल रहा हूँ। आज मैं पैदल ही बारह मील की दूरी तय कर चुका हूँ। आज शाम, जब मैं यहाँ पहुँचा, तो मैं एक सराय में गया, और उन्होंने मुझे

बाहर निकाल दिया, क्योंकि मेरा पीला पासपोर्ट था, जो मैंने टाउन हॉल में दिखाया था। मुझे ऐसा करना पड़ा। मैं एक सराय में गया। दोनों जगहों पर उन्होंने मुझसे कहा, 'यहाँ से चले जाओ।' कोई मुझे लेने को तैयार नहीं था। मैं जेल गया; जेलर ने मुझे अंदर नहीं आने दिया। मैं एक कुत्ते के पिंजरे में गया; कुत्ते ने मुझे काट लिया और मेरा पीछा किया, मानो वह कोई इंसान हो। ऐसा लगता था मानो वह जानता हो कि मैं कौन हूँ। मैं खुले आसमान के नीचे, तारों के नीचे सोने के इरादे से खेतों में गया। वहाँ तारे नहीं थे। मुझे लगा कि बारिश होने वाली है, और मैं मैं कस्बे में वापस आया, किसी दरवाजे की आड़ में आराम करने के लिए। उधर, चौक में, मैं एक पत्थर की बेंच पर सोने का इरादा कर रहा था। एक भली महिला ने मुझे आपका घर दिखाया और कहा, 'वहाँ दस्तक दो!' मैंने दस्तक दी। यह क्या जगह है? क्या आप कोई सराय चलाते हैं? मेरे पास पैसे हैं—बचत। एक सौ नौ फ्रैंक पंद्रह सू, जो मैंने उन्नीस साल तक जहाजों में काम करके कमाए हैं। मैं भुगतान कर दूंगा। इससे मुझे क्या लेना-देना? मेरे पास पैसे हैं। मैं बहुत थका हुआ हूँ; बारह मील पैदल चला हूँ; मुझे बहुत भूख लगी है। क्या आप चाहते हैं कि मैं यहाँ रहूँ?

बिशप ने कहा, "मैडम मैग्लॉयर, आपको एक और जगह तय करनी होगी।"

वह आदमी तीन कदम आगे बढ़ा और मेज पर रखे दीपक के पास पहुँचा। “रुको,” उसने फिर से कहा, मानो उसे पूरी बात समझ नहीं आई हो; “बात ये नहीं है। क्या तुमने सुना? मैं एक दास हूँ; एक कैदी। मैं जहाजों से आया हूँ।” उसने अपनी जेब से पीले रंग का एक बड़ा कागज़ निकाला और उसे खोला। “ये रहा मेरा पासपोर्ट। जैसा कि आप देख रहे हैं, पीला है। यह मुझे हर जगह से निकाल देता है। क्या आप इसे पढ़ेंगे? मुझे पढ़ना आता है। मैंने जेल में पढ़ा है। वहाँ सीखने वालों के लिए एक स्कूल है। रुकिए, इस पासपोर्ट पर ये लिखा है: ‘जीन वालजेन, रिहा कैदी, मूल निवासी’—यह आपके लिए कुछ भी नहीं है—‘उन्नीस साल जेल में रहा है: पाँच साल सेंधमारी और चोरी के लिए; चौदह साल चार बार भागने की कोशिश करने के लिए। वह बहुत खतरनाक आदमी है।’ लीजिए! सबने मुझे निकाल दिया है। क्या आप मुझे शरण देंगे? क्या यह कोई सराय है? क्या आप मुझे कुछ खाने और सोने के लिए जगह देंगे? क्या आपके पास कोई अस्तबल है?”

बिशप ने कहा, "मैडम मैग्लॉयर, आप आले में बने पलंग पर सफेद चादरें बिछा देंगी।" हम पहले ही दोनों महिलाओं की आज्ञाकारिता के चरित्र के बारे में बता चुके हैं।

मैडम मैग्लॉयर इन आदेशों का पालन करने के लिए एकांतवास में चली गईं।

बिशप उस व्यक्ति की ओर मुड़ा।

"माननीय, बैठ जाइए और खुद को गर्म कर लीजिए। हम कुछ ही क्षणों में भोजन करने वाले हैं, और जब आप भोजन कर रहे होंगे तब तक आपका बिस्तर तैयार कर दिया जाएगा।"

इस क्षण अचानक उस व्यक्ति को सब समझ आ गया। उसके चेहरे का भाव, जो उस समय तक गंभीर और कठोर था, विस्मय, संदेह और आनंद के भावों से भर गया और असाधारण हो गया। वह पागलों की तरह हकलाने लगा:

“सच में? क्या! आप मुझे रखेंगे? मुझे बाहर नहीं निकालेंगे? एक अपराधी! आप मुझे सर कहते हैं! आप मुझे 'तू' कहकर संबोधित नहीं करते? लोग हमेशा मुझसे कहते हैं, 'यहाँ से निकल जा, कुत्ते!' मुझे पूरा यकीन था कि आप मुझे निकाल देंगे, इसलिए मैंने आपको तुरंत अपना परिचय दे दिया। ओह, वह महिला कितनी अच्छी थी जिसने मुझे यहाँ भेजा! मैं खाना खाने जा रहा हूँ! गद्दे और चादर वाला बिस्तर, बाकी दुनिया की तरह! एक बिस्तर! उन्नीस साल हो गए जब से मैं बिस्तर पर सोया हूँ! आप सच में मुझे जाने नहीं देना चाहते! आप अच्छे लोग हैं। इसके अलावा, मेरे पास पैसे हैं। मैं अच्छी तरह भुगतान करूँगा। क्षमा करें, सराय मालिक महोदय, लेकिन आपका नाम क्या है? आप जो भी मांगेंगे, मैं दे दूँगा। आप एक अच्छे आदमी हैं। आप एक सराय मालिक हैं, है ना?”

बिशप ने उत्तर दिया, "मैं एक पुजारी हूँ जो यहाँ रहता है।"

“एक पादरी!” उस आदमी ने कहा। “वाह, क्या शानदार पादरी हैं! तो आप मुझसे कोई पैसा नहीं मांगेंगे? आप ही तो पादरी हैं, है ना? इस बड़े चर्च के पादरी? वाह! मैं सचमुच मूर्ख था! मैंने आपकी टोपी पर ध्यान ही नहीं दिया था।”

बोलते-बोलते उसने अपना थैला और लाठी एक कोने में रख दी, अपना पासपोर्ट जेब में वापस रख लिया और बैठ गया। मैडमोजेल बैपटिस्टिन ने उसे हल्के से देखा। उसने आगे कहा:

“आप दयालु हैं, महाशय पादरी; आपने मेरा अपमान नहीं किया। एक अच्छा पादरी होना बहुत अच्छी बात है। तो क्या आप मुझसे कोई शुल्क नहीं मांग रहे हैं?”

“नहीं,” बिशप ने कहा; “अपना पैसा अपने पास रखो। तुम्हारे पास कितना है? क्या तुमने मुझे एक सौ नौ फ्रैंक नहीं बताए थे?”

“और पंद्रह सू,” उस आदमी ने आगे कहा।

“एक सौ नौ फ्रैंक पंद्रह सू। और इसे कमाने में आपको कितना समय लगा?”

“उन्नीस साल।”

“उन्नीस साल!”

बिशप ने गहरी आह भरी।

उस आदमी ने आगे कहा: “मेरे पास अभी भी मेरा सारा पैसा है। चार दिनों में मैंने केवल पच्चीस सू खर्च किए हैं, जो मैंने ग्रास में कुछ वैगनों से माल उतारने में मदद करके कमाए थे। चूंकि आप एक एब्बे हैं, तो मैं आपको बता दूं कि हमारे गैलीज़ में एक चैपलिन थे। और एक दिन मैंने वहाँ एक बिशप को देखा। उन्हें मॉन्सिग्नोर कहते हैं। वे मार्सिले में मेजोर के बिशप थे। वे क्यूरे हैं जो अन्य क्यूरे पर शासन करते हैं, आप समझ रहे हैं ना? मुझे माफ़ करना, मैं इसे ठीक से नहीं कह पा रहा हूँ; लेकिन यह मेरे लिए बहुत दूर की बात है! आप समझते हैं कि हम क्या हैं! उन्होंने गैलीज़ के बीच में, एक वेदी पर, प्रार्थना की। उनके सिर पर सोने की बनी एक नुकीली चीज़ थी; वह दोपहर की तेज़ रोशनी में चमक रही थी। हम सभी तीन तरफ पंक्तियों में खड़े थे, हमारे सामने जलती हुई माचिस वाली तोपें थीं। हम ठीक से देख नहीं पा रहे थे। उन्होंने बात की; लेकिन वे बहुत दूर थे, और हम सुन नहीं पाए। एक बिशप ऐसा ही होता है।”

जब वह बोल रहे थे, तब बिशप जाकर दरवाजा बंद कर गए, जो पूरी तरह खुला हुआ था।

मैडम मैग्लॉयर वापस लौटीं। वह चांदी का एक कांटा और चम्मच लेकर आईं, जिसे उन्होंने मेज पर रख दिया।

“मैडम मैग्लॉयर,” बिशप ने कहा, “इन चीजों को आग के जितना हो सके पास रख दीजिए।” और फिर अपने मेहमान की ओर मुड़कर बोले, “आल्प्स पर्वतों पर रात की हवा बहुत तेज़ चलती है। आपको ठंड लग रही होगी, महोदय।”

जब भी वह अपनी कोमल, गंभीर और परिष्कृत आवाज़ में 'सर' कहता, उस व्यक्ति का चेहरा चमक उठता। किसी कैदी के लिए 'मोंसिअर' कहना, मेडुसा के जहाज़ दुर्घटना में फंसे व्यक्ति के लिए पानी के गिलास के समान है। अपमान को सम्मान की प्यास होती है।

बिशप ने कहा, "यह दीपक बहुत खराब रोशनी देता है।"

मैडम मैग्लॉयर उनकी बात समझ गईं और महाशय के शयनकक्ष में चिमनी के ऊपर से चांदी के दो मोमबत्ती स्टैंड लेने गईं और उन्हें जलाकर मेज पर रख दिया।

“महाशय पादरी जी,” उस व्यक्ति ने कहा, “आप भले हैं; आप मेरा तिरस्कार नहीं करते। आप मुझे अपने घर में जगह देते हैं। आप मेरे लिए मोमबत्तियाँ जलाते हैं। फिर भी मैंने आपसे यह नहीं छिपाया है कि मैं कहाँ से आया हूँ और मैं एक दुर्भाग्यशाली व्यक्ति हूँ।”

बिशप, जो उनके पास ही बैठे थे, ने धीरे से उनका हाथ छुआ। “तुमने मुझे अपने बारे में बताने से खुद को नहीं रोका। यह मेरा घर नहीं है; यह यीशु मसीह का घर है। यह द्वार अंदर आने वाले से उसका नाम नहीं पूछता, बल्कि यह पूछता है कि क्या उसे कोई दुःख है। तुम दुखी हो, तुम भूखे-प्यासे हो; तुम्हारा स्वागत है। और मुझे धन्यवाद मत दो; यह मत कहो कि मैं तुम्हें अपने घर में शरण दे रहा हूँ। यहाँ घर जैसा कोई नहीं है, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे शरण की आवश्यकता है। मैं तुमसे, जो यहाँ से गुजर रहे हो, कहता हूँ कि तुम यहाँ मुझसे कहीं अधिक घर जैसा महसूस करते हो। यहाँ सब कुछ तुम्हारा है। मुझे तुम्हारा नाम जानने की क्या आवश्यकता है? वैसे भी, तुमने मुझे अपना नाम बताने से पहले ही जान लिया था।”

उस व्यक्ति ने अचरज से अपनी आंखें खोल दीं।

“सच में? आपको पता था मेरा नाम क्या था?”

“जी हां,” बिशप ने उत्तर दिया, “तुम्हें मेरा भाई कहा जाता है।”

“रुको, महाशय पादरी,” उस व्यक्ति ने कहा। “जब मैं यहाँ आया था तो मुझे बहुत भूख लगी थी; लेकिन आप इतने अच्छे हैं कि मुझे पता ही नहीं चल रहा कि मेरे साथ क्या हुआ है।”

बिशप ने उसकी ओर देखा और कहा—

“क्या आपने बहुत कष्ट सहा है?”

“ओह, लाल कोट, टखने पर गेंद, सोने के लिए तख्ता, गर्मी, सर्दी, मेहनत, कैदी, पिटाई, मामूली बात पर दोहरी जंजीर, एक शब्द के लिए कोठरी; बीमार और बिस्तर पर पड़े होने पर भी जंजीर! कुत्ते, कुत्ते ज़्यादा खुश रहते हैं! उन्नीस साल! मैं छियालीस साल का हूँ। अब ये पीला पासपोर्ट है। यही तो ज़िंदगी है।”

“जी हां,” बिशप ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, “आप एक बहुत ही दुखद स्थान से आए हैं। सुनिए। स्वर्ग में पश्चाताप करने वाले पापी के आंसुओं से भीगे चेहरे को देखकर सौ धर्मी पुरुषों के सफेद वस्त्रों से कहीं अधिक प्रसन्नता होगी। यदि आप उस दुखद स्थान से मानवता के प्रति घृणा और क्रोध के विचारों के साथ निकलते हैं, तो आप दया के पात्र हैं; यदि आप सद्भावना और शांति के विचारों के साथ निकलते हैं, तो आप हममें से किसी से भी अधिक योग्य हैं।”

इसी बीच, मैडम मैग्लॉयर ने रात का खाना परोसा: पानी, तेल, रोटी और नमक से बना सूप; थोड़ा सा बेकन, थोड़ा सा मटन, अंजीर, ताज़ा पनीर और राई की एक बड़ी रोटी। उन्होंने अपनी मर्ज़ी से बिशप के साधारण भोजन में उनकी पुरानी मॉव्स वाइन की एक बोतल भी मिला दी थी।

बिशप के चेहरे पर तुरंत ही वह प्रसन्नता का भाव आ गया जो आतिथ्य सत्कार की विशेषता होती है। “चलो भोजन करें!” उन्होंने उत्साहपूर्वक कहा। जैसा कि उनकी प्रथा थी जब कोई अजनबी उनके साथ भोजन करता था, उन्होंने उस व्यक्ति को अपने दाहिनी ओर बैठाया। मैडमोजेल बैपटिस्टिन, जो अत्यंत शांत और सहज थीं, उनके बाईं ओर बैठ गईं।

बिशप ने आशीर्वाद मांगा; फिर अपनी प्रथा के अनुसार स्वयं सूप परोसा। वह व्यक्ति बड़े चाव से खाने लगा।

अचानक बिशप ने कहा: "मुझे लगता है कि इस मेज पर कुछ कमी है।"

दरअसल, मैडम मैग्लॉयर ने केवल तीन सेट कांटे और चम्मच ही रखे थे जो बिल्कुल आवश्यक थे। अब, जब बिशप के घर में कोई मेहमान आता था, तो घर में यह रिवाज था कि मेज़पोश पर चांदी के छहों सेट सजाए जाते थे—यह एक भोला-भाला दिखावा था। विलासिता का यह सुंदर आभास एक तरह का बच्चों का खेल था, जो उस सौम्य और गंभीर परिवार में बेहद आकर्षक था, जिसने गरीबी को गरिमा में बदल दिया था।

[illegible]

IV. पोंटार्लियर की पनीर-डेयरियों से संबंधित विवरण

अब, उस मेज पर क्या हुआ, इसका अंदाजा देने के लिए, मैडमोजेल बैपटिस्टीन द्वारा मैडम बोइशेवरॉन को लिखे गए पत्रों में से एक अंश को यहाँ लिखना सबसे अच्छा तरीका होगा, जिसमें कैदी और बिशप के बीच हुई बातचीत का चतुराई से सूक्ष्म वर्णन किया गया है।
… इस आदमी ने किसी पर ध्यान नहीं दिया। वह भूखे आदमी की तरह हड़बड़ी में खाना खा रहा था। हालाँकि, रात के खाने के बाद उसने कहा:
"परमेश्वर के धर्माध्यक्ष महोदय, यह सब मेरे लिए कुछ ज़्यादा ही अच्छा है; लेकिन मुझे कहना होगा कि जिन गाड़ीवालों ने मुझे अपने साथ खाने की अनुमति नहीं दी, वे आपसे कहीं बेहतर भोजन परोसते हैं।"
हम दोनों के बीच हुई बातचीत में, मुझे वह टिप्पणी काफी चौंकाने वाली लगी। मेरे भाई ने जवाब दिया:—
वे मुझसे ज्यादा थके हुए हैं।
“नहीं,” उस आदमी ने जवाब दिया, “उनके पास ज़्यादा पैसा है। तुम गरीब हो; यह मुझे साफ़ दिख रहा है। तुम तो पादरी भी नहीं बन सकते। क्या तुम सचमुच पादरी हो? आह, अगर ईश्वर न्यायप्रिय होता, तो तुम ज़रूर पादरी होते!”
“परमेश्वर न्याय से कहीं बढ़कर है,” मेरे भाई ने कहा।
कुछ देर बाद उन्होंने आगे कहा:—
“महाशय जीन वालजीन, क्या आप पोंटार्लियर जा रहे हैं?”
"मेरे लिए रास्ता पहले से ही तय है।"
मुझे लगता है उस आदमी ने यही कहा था। फिर उसने आगे कहा:—
मुझे कल सुबह तड़के निकलना होगा। यात्रा करना कठिन है। अगर रातें ठंडी हों तो दिन गर्म होते हैं।

“तुम एक अच्छे देश में जा रहे हो,” मेरे भाई ने कहा। “क्रांति के दौरान मेरा परिवार तबाह हो गया था। मैंने पहले फ्रांश-कॉम्ते में शरण ली और वहाँ कुछ समय तक मेहनत करके गुज़ारा किया। मेरा इरादा नेक था। मुझे वहाँ काम करने के लिए बहुत कुछ मिल गया। बस चुनाव करना होता है। वहाँ कागज़ मिलें, चमड़ा कारखाने, शराब बनाने की भट्ठियाँ, तेल कारखाने, बड़े पैमाने पर घड़ी बनाने के कारखाने, इस्पात मिलें, तांबे के कारखाने, कम से कम बीस लोहे की भट्ठियाँ हैं, जिनमें से चार, जो लॉड्स, चैटिलॉन, ऑडिनकोर्ट और ब्यूरे में स्थित हैं, काफ़ी बड़ी हैं।”

मुझे लगता है कि मैं गलत नहीं हूँ यह कहने में कि ये वही नाम हैं जिनका जिक्र मेरे भाई ने किया था। फिर उन्होंने अपनी बात बीच में ही रोक दी और मुझसे कहा:—

"क्या उस इलाके में हमारे कुछ रिश्तेदार नहीं हैं, मेरी प्यारी बहन?"

मैंने उत्तर दिया—

"हमारे पास कुछ लोग थे; उनमें से एक एम. डी. लुसेनेट थे, जो पुरानी व्यवस्था के तहत पोंटार्लियर में द्वारपाल थे।"

“हाँ,” मेरे भाई ने बात जारी रखते हुए कहा; “लेकिन 1993 में, किसी के कोई रिश्तेदार नहीं बचते थे, बस अपने हाथ ही होते थे। मैं काम करता था। पोंटार्लियर गाँव में, जहाँ आप जा रही हैं, श्रीमान वाल्जीन, एक सचमुच पितृसत्तात्मक और बेहद आकर्षक उद्योग है, मेरी बहन। ये उनके पनीर के कारखाने हैं, जिन्हें वे फ्रूटियर्स कहते हैं।”

फिर मेरे भाई ने उस आदमी को खाने के लिए प्रेरित करते हुए, उसे बड़ी बारीकी से समझाया कि पोंटार्लियर के ये पनीर उत्पादक केंद्र क्या थे; कि वे दो वर्गों में विभाजित थे: "बड़े खलिहान" जो अमीरों के थे, जहाँ चालीस-पचास गायें होती थीं और हर गर्मियों में सात से आठ हजार पनीर बनाती थीं, और सहायक पनीर उत्पादक केंद्र, जो गरीबों के थे; ये मध्य पर्वतीय क्षेत्र के किसान थे, जो अपनी गायों को साझा रूप से रखते थे और उससे होने वाली आय को आपस में बाँटते थे। 'वे एक पनीर निर्माता की सेवाएँ लेते हैं, जिसे वे ग्रुरिन कहते हैं; ग्रुरिन दिन में तीन बार सहायकों से दूध लेता है और उसकी मात्रा को दो बार में नापता है। पनीर बनाने वाली डेयरियों का काम अप्रैल

के अंत में शुरू होता है; और पनीर निर्माता अपनी गायों को पहाड़ों पर ले जाते हैं।'

खाना खाते ही उस आदमी में फिर से जोश आ गया। मेरे भाई ने उसे वह बढ़िया मौवेस वाइन पिलाई, जिसे वह खुद नहीं पीता, क्योंकि उसका कहना है कि वाइन महंगी है। मेरे भाई ने ये सारी बातें उसी सहज और हंसमुख अंदाज़ में बताईं, जिससे आप परिचित हैं, और बीच-बीच में मेरी ओर बड़े प्यार से ध्यान देते रहे। उन्होंने बार-बार ग्रुरिन के उस आरामदायक व्यापार का ज़िक्र किया, मानो वह उस आदमी को बिना सीधे और कठोर तरीके से सलाह दिए यह समझाना चाहते हों कि इससे उन्हें सहारा मिलेगा। एक बात मुझे खटक गई। यह आदमी वही था जिसके बारे में मैंने आपको बताया है। खैर, न तो रात के खाने के दौरान, न ही पूरी शाम, मेरे भाई ने एक शब्द भी नहीं बोला, सिवाय यीशु के बारे में कुछ शब्दों के, जो उन्होंने प्रवेश करते समय कहे थे, जिससे उस आदमी को याद आ सके कि वह क्या है, न ही मेरा भाई क्या है। देखने में तो ऐसा लग रहा था कि यह उसे एक छोटा सा उपदेश देने और उस कैदी पर बिशप की छाप छोड़ने का मौका था, ताकि उस घटना की एक छाप रह जाए। किसी और को शायद यह लगता कि इस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति को अपने हाथों में लेने से उसे अपनी आत्मा और शरीर दोनों को पोषित करने का मौका मिलेगा, और उसे कुछ फटकार लगाने का, नैतिकता और सलाह से भरपूर, या थोड़ी सहानुभूति जताते हुए, भविष्य में बेहतर आचरण करने का प्रोत्साहन देने का। मेरे भाई ने उससे यह तक नहीं पूछा कि वह किस देश से आया है, न ही उसका अतीत। क्योंकि उसके अतीत में एक दोष था, और मेरा भाई हर उस चीज़ से बचना चाहता था जो उसे उसकी याद दिला सके। उसने इसे इस हद तक बढ़ा दिया कि एक बार, जब मेरा भाई पोंटार्लियर के पर्वतीयों के बारे में बात कर रहा था, "जो स्वर्ग के निकट कोमल श्रम करते हैं, और जो," उसने आगे कहा, "खुश हैं क्योंकि वे निर्दोष हैं," तो वह अचानक रुक गया, इस डर से कि कहीं इस टिप्पणी में कुछ ऐसा न निकल जाए जो उस व्यक्ति को आहत कर दे। चिंतन के बल पर, मुझे लगता है कि मैं समझ गया हूँ कि मेरे भाई के दिल में क्या चल रहा था। वह निस्संदेह सोच रहा था कि इस व्यक्ति, जिसका नाम जीन वालजेन है, के मन में उसका दुर्भाग्य बहुत स्पष्ट रूप से ताजा था; सबसे अच्छा यही था कि उसका ध्यान इससे हटा दिया जाए, और उसे क्षण भर के लिए ही सही, यह विश्वास दिलाया जाए कि वह भी आम लोगों की तरह ही एक इंसान है, उसके साथ सामान्य

व्यवहार करके। क्या यही वास्तव में करुणा को सही मायने में समझना नहीं है? प्रिय महोदया, क्या इस कोमलता में कोई सच्ची धार्मिकता नहीं है जो उपदेश, नैतिकता और संकेतों से दूर रहती है? और क्या किसी व्यक्ति के दुखते पहलू को छूना भी नहीं, यही सच्ची करुणा नहीं है? मुझे ऐसा लगता है कि शायद यही मेरे भाई का निजी विचार रहा होगा। खैर, मैं इतना तो कह ही सकती हूँ कि अगर उसके मन में ये सारे विचार थे भी, तो उसने इनका कोई संकेत नहीं दिया; शुरू से अंत तक, मेरे लिए भी वह हर शाम की तरह ही था, और उसने जीन वालजेन के साथ उसी भाव और तरीके से भोजन किया जैसे वह एम. गेदोन ले प्रीवोस्ट या पैरिश के पादरी के साथ करता।

अंत में, जब वह अंजीर के पास पहुँचा, तो दरवाजे पर दस्तक हुई। यह माँ गेरबौद थीं, अपनी छोटी बच्ची को गोद में लिए हुए। मेरे भाई ने बच्चे के माथे पर चुंबन किया और मेरे पास मौजूद पंद्रह सू उधार लेकर माँ गेरबौद को दे दिए। वह आदमी उस समय किसी बात पर ध्यान नहीं दे रहा था। वह चुप था और बहुत थका हुआ लग रहा था। बूढ़ी गेरबौद के जाने के बाद, मेरे भाई ने प्रार्थना की; फिर वह उस आदमी की ओर मुड़ा और उससे कहा, 'तुम्हें अपने बिस्तर की बहुत ज़रूरत होगी।' मैडम मैग्लॉयर ने तुरंत मेज साफ कर दी। मैं समझ गया कि हमें सोना चाहिए, ताकि यह यात्री सो सके, और हम दोनों ऊपर चले गए। फिर भी, मैंने मैडम मैग्लॉयर को थोड़ी देर बाद नीचे भेजा, ताकि वह मेरे कमरे में रखी ब्लैक फॉरेस्ट की एक बकरी की खाल उस आदमी के बिस्तर पर रख दें। रातें बहुत ठंडी होती हैं, और यह खाल गर्म रखती है। अफसोस की बात है कि यह खाल पुरानी है; इसके सारे बाल झड़ रहे हैं। मेरे भाई ने इसे जर्मनी में रहते हुए खरीदा था, डेन्यूब नदी के उद्गम स्थल के पास टोटलिंगेन में, साथ ही वह छोटा हाथीदांत के हैंडल वाला चाकू भी खरीदा था जिसका उपयोग मैं खाने की मेज पर करता हूं।

मैडम मैग्लॉयर तुरंत लौट आईं। हमने ड्राइंग रूम में, जहाँ हम लिनेन टांगते हैं, प्रार्थना की और फिर हम एक-दूसरे से एक शब्द भी कहे बिना अपने-अपने कमरों में चले गए।

वी. शांति

अपनी बहन को शुभ रात्रि कहने के बाद, महाशय बिएनवेनु ने मेज से चांदी के दो मोमबत्ती स्टैंड में से एक उठाया, दूसरा अपने मेहमान को दिया और उससे कहा

—

"महाशय, मैं आपको आपके कमरे तक ले चलता हूँ।"

वह आदमी उसके पीछे-पीछे गया।

जैसा कि ऊपर कही गई बातों से स्पष्ट हो गया होगा, घर की व्यवस्था इस प्रकार की गई थी कि उस प्रार्थना कक्ष में जाने के लिए, जहाँ एक आले स्थित थे, या उससे बाहर निकलने के लिए, बिशप के शयनकक्ष से होकर गुजरना आवश्यक था।

जिस समय वह इस अपार्टमेंट से गुज़र रहा था, मैडम मैग्लॉयर पलंग के सिरहाने के पास वाली अलमारी में चांदी के बर्तन रख रही थीं। सोने से पहले हर शाम वह यही आखिरी काम करती थीं।

बिशप ने अपने अतिथि को आले में ठहराया। वहाँ एक नया सफेद बिस्तर तैयार किया गया था। उस व्यक्ति ने मोमबत्ती को एक छोटी मेज पर रख दिया।

“अच्छा,” बिशप ने कहा, “आपकी रात अच्छी बीते। कल सुबह निकलने से पहले, आप हमारी गायों का एक प्याला गर्म दूध पी लें।”

“धन्यवाद, महाशय अब्बे,” उस व्यक्ति ने कहा।

शांति से भरे इन शब्दों को बोलते ही, अचानक और बिना रुके, उन्होंने एक अजीब हरकत की, जिसे देखकर दोनों पूजनीय महिलाएं भयभीत हो जातीं। आज भी हमारे लिए यह समझाना मुश्किल है कि उस क्षण उन्हें किस बात ने प्रेरित किया। क्या उनका इरादा चेतावनी देना था या धमकी देना? क्या वे बस किसी सहज आवेग का पालन कर रहे थे, जो उन्हें खुद भी स्पष्ट नहीं था? वे अचानक बूढ़े व्यक्ति की ओर मुड़े, अपनी बाहें मोड़ीं और अपने मेज़बान पर क्रूर निगाहें डालते हुए कर्कश स्वर में बोले:

“अरे! सच में! आप मुझे अपने घर में, अपने इतने करीब ठहराते हैं?”

वह रुक गया, और एक ऐसी हंसी के साथ बोला जिसमें कुछ भयावह छिपा हुआ था:—

“क्या आपने वाकई अच्छी तरह से विचार किया है? आपको कैसे पता कि मैं हत्यारा नहीं रहा हूँ?”

बिशप ने उत्तर दिया:—

“यह तो सर्वशक्तिमान ईश्वर की चिंता है।”

फिर गंभीरता से, और प्रार्थना करने वाले या स्वयं से बात करने वाले व्यक्ति की तरह अपने होंठ हिलाते हुए, उन्होंने अपने दाहिने हाथ की दो उंगलियां उठाईं और उस व्यक्ति को अपना आशीर्वाद दिया, जिसने सिर नहीं झुकाया, और बिना सिर घुमाए या पीछे देखे, वह अपने शयनकक्ष में लौट गया।

जब वेदी उपयोग में होती थी, तो दीवार से दीवार तक फैला एक बड़ा सा सर्ज का पर्दा वेदी को छुपा देता था। बिशप वहाँ से गुजरते समय इस पर्दे के सामने घुटने टेककर एक संक्षिप्त प्रार्थना करते थे। कुछ ही क्षण बाद वे अपने बगीचे में टहलते, ध्यान लगाते, चिंतन करते हुए, अपने हृदय और आत्मा को उन भव्य और रहस्यमय चीजों में लीन पाते थे जो ईश्वर रात में खुली आँखों को दिखाता है।

वह आदमी इतना थका हुआ था कि उसे सफेद चादरों से भी कोई फायदा नहीं हुआ।
कैदियों की तरह उसने अपनी मोमबत्ती नाक से बुझाई और कपड़े पहने ही बिस्तर पर लेट गया, जहाँ वह तुरंत गहरी नींद में सो गया।

जब बिशप अपने बगीचे से अपने अपार्टमेंट में लौटे तो आधी रात हो चुकी थी।

कुछ मिनट बाद उस छोटे से घर में सभी सो गए थे।

VI. जीन वालजेन

आधी रात के करीब जीन वाल्जेन की नींद खुली।

जीन वालजेन का जन्म ब्री के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने बचपन में पढ़ना-लिखना नहीं सीखा था। जब वे वयस्क हुए, तो वे फेवरोल्स में वृक्ष-छंटाई का काम करने लगे। उनकी माता का नाम जीन मैथ्यू था; उनके पिता का नाम जीन वालजेन या व्लाजेन था, जो शायद एक उपनाम था और वोइला जीन का संक्षिप्त रूप था, जिसका अर्थ है "यहाँ जीन है"।

जीन वालजेन का स्वभाव विचारशील तो था, लेकिन उदास नहीं, जो स्नेही स्वभाव की विशेषता होती है। हालांकि, कुल मिलाकर, जीन वालजेन दिखने में कुछ हद तक सुस्त और महत्वहीन लगता था। उसने बहुत कम उम्र में ही अपने माता-पिता को खो दिया था। उसकी माँ की मृत्यु दूध बुखार से हुई थी, जिसका ठीक से इलाज नहीं हुआ था। उसके पिता, जो उसी की तरह पेड़ काटने का काम करते थे, पेड़ से गिरने के कारण मारे गए थे। जीन वालजेन के पास केवल एक बहन बची थी, जो उससे बड़ी थी — सात बच्चों (लड़के और लड़कियाँ) की विधवा। इस बहन ने जीन वालजेन का पालन-पोषण किया था, और जब तक उसका पति जीवित था, वह अपने छोटे भाई को अपने घर में रखती और खाना खिलाती थी।

पति की मृत्यु हो गई। सात बच्चों में सबसे बड़ा आठ साल का था। सबसे छोटा एक साल का।

जीन वालजेन अभी-अभी पच्चीस वर्ष के हुए थे। उन्होंने पिता का स्थान ग्रहण किया और बदले में, अपनी बहन का सहारा बने, जिसने उन्हें पाला-पोसा था। यह सब उन्होंने केवल कर्तव्य समझकर किया, और जीन वालजेन की ओर से इसमें थोड़ी रूखापन भी झलक रहा था। इस प्रकार उनका यौवन कठिन और कम वेतन वाली मेहनत में बीता था। अपने जन्मस्थान पर उन्हें कभी कोई "दयालु महिला मित्र" नहीं मिली थी। उन्हें प्रेम करने का समय ही नहीं मिला था।

वह रात को थका-हारा लौटा और बिना कुछ बोले अपना सूप पी गया। उसकी बहन, माँ जीन, अक्सर उसके खाने के कटोरे में से उसका सबसे अच्छा हिस्सा—थोड़ा सा मांस, बेकन का एक टुकड़ा, पत्तागोभी का बीच का हिस्सा—अपने बच्चों में से

किसी एक को दे देती थी। जैसे-जैसे वह खाता रहा, उसका सिर मेज पर झुका हुआ था और लगभग सूप में डूबा हुआ था, उसके लंबे बाल कटोरे के चारों ओर फैले हुए थे और उसकी आँखों को छुपा रहे थे, मानो वह कुछ भी महसूस नहीं कर रहा हो और उसे स्वीकार कर रहा हो। फेवरोल्स में, वाल्जेन की फूस की झोपड़ी से कुछ ही दूरी पर, गली के दूसरी ओर, मैरी-क्लाउड नाम की एक किसान की पत्नी रहती थी; वाल्जेन के बच्चे, जो अक्सर भूखे रहते थे, कभी-कभी अपनी माँ के नाम पर मैरी- क्लाउड से एक पाइंट दूध उधार लेने जाते थे, जिसे वे किसी झाड़ी के पीछे या किसी गली के कोने में पीते थे, एक-दूसरे से इतनी जल्दी-जल्दी जग छीनते थे कि छोटी लड़कियाँ उसे अपने एप्रन और गर्दन पर गिरा देती थीं। अगर उनकी माँ को इस लूटपाट के बारे में पता होता, तो वह अपराधियों को कड़ी सजा देती। जीन वाल्जेन ने रूखेपन और बड़बड़ाहट के साथ माँ की पीठ पीछे मैरी-क्लाउड को एक पाइंट दूध के पैसे दे दिए, और बच्चों को कोई सजा नहीं मिली।

छंटाई के मौसम में वह अठारह सू प्रतिदिन कमाता था; फिर वह घास काटने वाले, मजदूर, खेत में पशुपालक, और हर तरह के काम में हाथ बंटाता था। वह जो भी कर सकता था, करता था। उसकी बहन भी काम करती थी, लेकिन सात छोटे बच्चों के साथ वह क्या कर सकती थी? यह दुख में डूबा एक दयनीय परिवार था, जो धीरे-धीरे खत्म हो रहा था। एक बहुत ही कठोर सर्दी आई। जीन के पास कोई काम नहीं था। परिवार के पास रोटी नहीं थी। सचमुच रोटी नहीं थी। सात बच्चे!

एक रविवार शाम, फ़ेवरोल्स के चर्च स्क्वायर पर स्थित बेकर मौबर्ट इसाबेउ सोने की तैयारी कर रहे थे, तभी उन्होंने अपनी दुकान के जालीदार सामने के हिस्से पर ज़ोरदार प्रहार की आवाज़ सुनी। वे समय पर पहुँचे और देखा कि किसी मुक्के के प्रहार से बने छेद से एक हाथ जाली और शीशे को तोड़ते हुए अंदर घुसा। उस हाथ ने रोटी का एक टुकड़ा उठाया और उसे लेकर भाग गया। इसाबेउ जल्दी से बाहर भागे; चोर अपनी पूरी गति से भागा। इसाबेउ उसके पीछे दौड़े और उसे रोक लिया। चोर ने रोटी फेंक दी थी, लेकिन उसके हाथ से अभी भी खून बह रहा था। वह जीन वालजेन था।

यह घटना 1795 में घटी। जीन वालजेन को चोरी और रात में किसी रिहायशी घर में जबरन घुसने के आरोप में तत्कालीन न्यायालयों के समक्ष पेश किया गया। उसके पास एक बंदूक थी जिसे वह दुनिया में किसी और से बेहतर चलाता था, वह थोड़ा- बहुत शिकारी भी था, और इस बात ने उसके मामले को कमजोर कर दिया। शिकारियों

के प्रति एक जायज़ पूर्वाग्रह मौजूद है। शिकारी, तस्कर की तरह, डाकू की छवि से बहुत मिलता-जुलता है। फिर भी, संक्षेप में कहें तो, इन दोनों प्रकार के मनुष्यों और शहरों के खूंखार हत्यारे के बीच अभी भी एक खाई है। शिकारी जंगल में रहता है, तस्कर पहाड़ों या समुद्र में। शहर क्रूर मनुष्य पैदा करते हैं क्योंकि वे भ्रष्ट मनुष्य पैदा करते हैं। पहाड़, समुद्र, जंगल, जंगली मनुष्य पैदा करते हैं; वे क्रूरता को बढ़ावा देते हैं, लेकिन अक्सर मानवीय पक्ष को नष्ट किए बिना।

जीन वालजेन को दोषी ठहराया गया। संहिता की शर्तें स्पष्ट थीं। हमारी सभ्यता में कभी-कभी भयावह क्षण आते हैं; ऐसे क्षण आते हैं जब दंडात्मक कानून विनाश का फरमान सुनाते हैं। वह कितना भयावह क्षण होता है जब समाज पीछे हटता है और एक सजीव प्राणी को अपूरणीय रूप से त्याग देता है! जीन वालजेन को पांच साल के लिए नौसैनिक कारावास की सजा सुनाई गई।

22 अप्रैल, 1796 को पेरिस में मोंटेनोट की जीत की घोषणा की गई, जो इटली की सेना के सेनापति द्वारा जीती गई थी, जिसे चौथे वर्ष के चौथे वर्ष के पाँच सौ सैनिकों को भेजे गए निर्देशिका के संदेश में बुओना-पार्टे कहा गया है। उसी दिन, बिसेत्रे में बड़ी संख्या में दासों को जंजीरों में जकड़ दिया गया। जीन वालजेन उस गिरोह का हिस्सा था। जेल का एक बूढ़ा चौकीदार, जो अब लगभग अस्सी वर्ष का है, आज भी उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति को पूरी तरह से याद करता है जिसे आंगन के उत्तरी कोने में चौथी पंक्ति के अंत में जंजीरों से बांधा गया था। वह दूसरों की तरह जमीन पर बैठा था। उसे अपनी स्थिति का कुछ भी समझ नहीं आ रहा था, सिवाय इसके कि यह भयानक थी। संभवतः वह भी एक अनपढ़, बेचारे व्यक्ति के धुंधले विचारों के बीच से कुछ अतिशयता को सुलझाने की कोशिश कर रहा था। जब हथौड़े की भारी चोटों से उसके गले में लोहे का पट्टा ठोंका जा रहा था, तब वह रो रहा था; उसके आँसू उसका गला घोंट रहे थे, उसकी वाणी अवरुद्ध हो रही थी; वह बस कभी-कभार इतना ही कह पाता था, "मैं फेवरोल्स में वृक्ष-शासक था।" फिर भी सिसकते हुए उसने अपना दाहिना हाथ उठाया और धीरे-धीरे सात बार नीचे किया, मानो वह एक के बाद एक असमान ऊँचाई वाले सात सिरों को छू रहा हो, और इस हावभाव से यह अनुमान लगाया गया कि उसने जो भी किया था, वह सात छोटे बच्चों को वस्त्र और पोषण प्रदान करने के लिए किया था।

वह टूलॉन के लिए रवाना हुआ। सत्ताईस दिनों की यात्रा के बाद, वह एक बैलगाड़ी में सवार होकर, गले में जंजीर लिए वहाँ पहुँचा। टूलॉन में उसे लाल चोगा पहनाया गया। उसका जीवन, यहाँ तक कि उसका नाम भी, मिट गया; वह अब जीन वालजेन भी नहीं रहा; वह 24,601 वाँ नंबर था। उसकी बहन का क्या हुआ? उसके सात बच्चों का क्या हुआ? किसने उनकी परवाह की? उस नन्हे पेड़ की मुट्ठी भर पत्तियों का क्या होता है जिसे जड़ से काट दिया जाता है?

कहानी हमेशा एक जैसी ही रहती है। ये बेचारे जीव, ईश्वर की ये रचनाएँ, अब बिना सहारे, बिना मार्गदर्शक, बिना शरण के, बेतरतीब ढंग से भटकते चले गए— कौन जाने?—शायद हर कोई अपनी-अपनी दिशा में, और धीरे-धीरे उस ठंडी धुंध में समा गए जो अकेले भाग्य को घेर लेती है; उस अंधकारमय छाया में, जिसमें मानव जाति के उदास सफर में अनगिनत बदनसीब सिर एक के बाद एक गायब हो जाते हैं। उन्होंने देश छोड़ दिया। उनके गाँव की मीनार उन्हें भूल गई; उनके खेत की सीमा रेखा उन्हें भूल गई; कुछ वर्षों तक जलयान में रहने के बाद, जीन वालजेन खुद उन्हें भूल गया। उस हृदय में, जहाँ घाव था, वहाँ एक निशान रह गया। बस इतना ही। टूलॉन में बिताए पूरे समय में, उसने अपनी बहन का ज़िक्र केवल एक बार सुना। मुझे लगता है कि यह उसकी कैद के चौथे वर्ष के अंत में हुआ था। मुझे नहीं पता कि किस माध्यम से यह खबर उस तक पहुँची। किसी ऐसे व्यक्ति ने, जो उन्हें उनके अपने देश में जानता था, उसकी बहन को देखा था। वह पेरिस में थी। सेंट-सल्पिस के पास, रू डू गिंड्रे की एक गरीब गली में रहती थी। उसके साथ उसका इकलौता बच्चा था, एक छोटा लड़का, जो सबसे छोटा था। बाकी छह बच्चे कहाँ थे? शायद उसे खुद भी नहीं पता था। हर सुबह वह नंबर 3 रू डू सबोट स्थित एक प्रिंटिंग प्रेस जाती थी, जहाँ वह फोल्डिंग और सिलाई का काम करती थी। उसे सुबह छह बजे वहाँ पहुँचना पड़ता था—सर्दियों में सूरज निकलने से बहुत पहले। प्रिंटिंग प्रेस वाली ही इमारत में एक स्कूल भी था, और वह अपने सात साल के छोटे बेटे को उसी स्कूल में ले जाती थी। लेकिन चूंकि वह छह बजे प्रिंटिंग प्रेस में प्रवेश करती थी और स्कूल सात बजे खुलता था, इसलिए बच्चे को स्कूल खुलने का इंतज़ार करते हुए एक घंटा आँगन में बिताना पड़ता था—सर्दियों की रात में एक घंटा खुले में! वे बच्चे को प्रिंटिंग प्रेस के अंदर नहीं आने देते थे, क्योंकि वे कहते थे कि वह रास्ते में रुकावट है। जब मजदूर सुबह वहां से गुजरते थे, तो वे इस बेचारे छोटे बच्चे को फुटपाथ पर

बैठा देखते थे, जो नींद से बेहाल था और अक्सर छाया में, टोकरी पर दुबककर, गहरी नींद में सो जाता था। जब बारिश होती थी, तो एक बूढ़ी औरत, जो चौकीदार थी, को उस पर दया आ जाती थी; वह उसे अपने कमरे में ले जाती थी, जहां एक चटाई, एक चरखा और दो लकड़ी की कुर्सियां थीं, और वह छोटा बच्चा एक कोने में बिल्ली से चिपक कर सो जाता था ताकि उसे ठंड कम लगे। सात बजे स्कूल खुलता था और वह अंदर जाता था। यही सब जीन वालजेन को बताया गया था।

उन्होंने उससे एक दिन के लिए इस बारे में बात की; वह एक क्षण था, एक पल भर का एहसास, मानो अचानक उन लोगों के भाग्य की एक खिड़की खुल गई हो जिनसे वह प्यार करता था; फिर सब कुछ बंद हो गया। उसने फिर कभी कुछ नहीं सुना। उनसे कोई संदेश उस तक नहीं पहुँचा; उसने उन्हें फिर कभी नहीं देखा; वह उनसे फिर कभी नहीं मिला; और इस दुखद इतिहास के क्रम में, उनसे फिर कभी मुलाकात नहीं होगी।

चौथे वर्ष के अंत में जीन वालजेन के भागने का समय आ गया। उस दुखद स्थान की प्रथा के अनुसार, उसके साथियों ने उसकी सहायता की। वह भाग निकला। वह दो दिन तक खेतों में आज़ादी से भटकता रहा, मानो आज़ादी का मतलब ही हो कि हर पल सिर घुमाकर देखना, ज़रा सी भी आवाज़ पर कांपना, हर चीज़ से डरना—धुएँ से भरी छत से, गुज़रते आदमी से, भौंकते कुत्ते से, सरपट दौड़ते घोड़े से, बजती घड़ी से, दिन से (क्योंकि दिखाई देता है), रात से (क्योंकि दिखाई नहीं देता), राजमार्ग से, रास्ते से, झाड़ी से, नींद से। दूसरे दिन शाम को उसे पकड़ लिया गया। उसने छत्तीस घंटे तक न कुछ खाया था और न सोया था। समुद्री न्यायाधिकरण ने इस अपराध के लिए उसकी सज़ा तीन साल बढ़ा दी, जिससे कुल सज़ा आठ साल हो गई। छठे वर्ष में उसके भागने का समय फिर आया; उसने इसका फ़ायदा उठाया, लेकिन पूरी तरह से भाग नहीं पाया। हाज़िरी में वह अनुपस्थित था। तोपों से गोले दागे गए, और रात में गश्ती दल ने उसे निर्माणाधीन पोत के कील के नीचे छिपा हुआ पाया; उसने पोत के रक्षकों का विरोध किया जिन्होंने उसे पकड़ लिया। भागने और विद्रोह करने का मामला। इस मामले में, एक विशेष संहिता के तहत, पाँच वर्ष की अतिरिक्त सजा सुनाई गई, जिसमें से दो वर्ष दोहरी जंजीरों में थे। तेरह वर्ष। दसवें वर्ष में उसकी बारी फिर आई; उसने फिर से इसका फायदा उठाया; लेकिन इस बार भी उसे कोई सफलता नहीं मिली। इस नए प्रयास के लिए तीन वर्ष। सोलह वर्ष। अंत में, मुझे लगता है कि अपने तेरहवें

वर्ष के दौरान, उसने एक आखिरी प्रयास किया, और केवल चार घंटे की अनुपस्थिति के बाद ही उसे दोबारा पकड़ा गया। उन चार घंटों के लिए तीन वर्ष। उन्नीस वर्ष। अक्टूबर 1815 में, उसे रिहा कर दिया गया; उसे 1796 में कांच का एक टुकड़ा तोड़ने और रोटी का एक टुकड़ा चुराने के आरोप में जेल में डाला गया था।

एक संक्षिप्त टिप्पणी के लिए जगह है। दंडात्मक प्रश्न और विधि द्वारा निंदा के विषय पर अपने अध्ययन के दौरान, इस पुस्तक के लेखक को दूसरी बार रोटी की चोरी को किसी व्यक्ति के दुर्भाग्यपूर्ण भाग्य की शुरुआत के रूप में देखने का अवसर मिला है। क्लाउड गॉक्स ने रोटी चुराई थी; जीन वालजेन ने रोटी चुराई थी। अंग्रेजी आंकड़े इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि लंदन में होने वाली पांच में से चार चोरियों का तात्कालिक कारण भूख होता है।

जीन वाल्जेन सिसकते और कांपते हुए जहाज के जहाजों में दाखिल हुए थे; लेकिन बाहर निकलते समय वे भावहीन थे। वे हताशा में दाखिल हुए थे; और बाहर निकलते समय वे उदास थे।

उस आत्मा में क्या घटित हुआ था?

VII. निराशा का आंतरिक भाग

आइए इसे कहने का प्रयास करें।

समाज के लिए इन चीजों पर ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि समाज स्वयं ही इन्हें उत्पन्न करता है।

जैसा कि हमने कहा है, वह एक अज्ञानी व्यक्ति था, लेकिन मूर्ख नहीं था। उसके भीतर प्रकृति का प्रकाश प्रज्वलित था। दुःख, जिसमें स्वयं की एक स्पष्टता होती है, ने उसके मन में विद्यमान थोड़े से प्रकाश को और बढ़ा दिया। लाठी के नीचे, जंजीरों के नीचे, कोठरी में, कठिनाइयों में, जलती धूप में, कैदी के तख्ते वाले बिस्तर पर, वह अपनी चेतना में लीन होकर ध्यान करता था।

उन्होंने स्वयं को न्यायाधिकरण नियुक्त कर लिया।

उन्होंने सबसे पहले खुद को ही मुकदमे के दायरे में खड़ा कर दिया।

उसने इस तथ्य को स्वीकार किया कि वह एक निर्दोष व्यक्ति नहीं था जिसे अन्यायपूर्वक दंडित किया गया था। उसने माना कि उसने एक घोर और निंदनीय कृत्य किया था; कि यदि उसने रोटी माँगी होती तो शायद उसे मना नहीं किया जाता; कि किसी भी हालत में, दया या काम के माध्यम से रोटी मिलने तक प्रतीक्षा करना बेहतर होता; कि यह कहना गलत नहीं होगा, "क्या कोई भूखा होने पर प्रतीक्षा कर सकता है?" पहली बात तो यह है कि सचमुच भूख से मरना बहुत दुर्लभ है; और दूसरी बात, सौभाग्य से या दुर्भाग्य से, मनुष्य की संरचना ऐसी है कि वह बिना मरे लंबे समय तक, नैतिक और शारीरिक रूप से, कष्ट सह सकता है; इसलिए धैर्य रखना आवश्यक है; और यह उन बेचारे छोटे बच्चों के लिए भी बेहतर होता; कि एक दुखी, दुर्भाग्यशाली व्यक्ति के लिए समाज को घोर चुनौती देना और यह सोचना कि चोरी के माध्यम से दुख से मुक्ति पाई जा सकती है, एक पागलपन भरा कार्य था; और यह किसी भी हालत में दुख से मुक्ति पाने का एक घटिया रास्ता है जिससे बदनामी प्रवेश करती है। संक्षेप में कहें तो, वह गलत था।

फिर उसने खुद से पूछा:—

xxxx xxxxx xx xxxx xxxxxx xxx xxxx xxx xxxx xx? xxxx xx xxxxxx xxx xxxx xx xx xx xxxxxx, xxxxxxxxx, xx xxxxxxx xxxxxxxx, xxxx xx xxx xxx xxx xx? xx xxxx, xx xxx xxxx xx xxxx xx xxxxxxxx xxx xxxx xx xxx, xxx xxxxxx xx xxxxxxxxxx xxxx xx? xxxx xxx xx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxxxx xxxxxxx xx xxxx xx xxxxxxxx xxxx xxxxxxx xxxx xxx xx? xxxx xxxxxxxxxxx xx xxxxxx xxx xx xxxxxx xxx xxxx xxx xxxx xx? xxxx xxx xx xxxx xxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xxxx xx, xx xxxx xxxx xxxxxxx xxx xxxx xx, xxxxxxx xx xxxx xx xxx xx xxxx xx xxx xxxx xxx, xxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxx xxx xxxx xxx, xx xxxxxx xx xxxxxxxx xxx xx xxxxxxxx xxxx xxxx xx xxxx xxx xx xxxx xxxx

xxxx xx xxx, xxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxx xx xxx xxxxxxx xxxxxx xxx xxxxxxx xx xxxxxx xx, xxxxxx xxxxxxxxxx xxxxxxx xxxxxx xx xxx xx xxxxxxxxx, xxxx xxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxxxxx xxx xx xxxxxx, xx xxx xxxxxx xx xx xxx xx xxxx xx xxxx xx xxx xx, xx xxx xxxxxx xx xxxxxxx xxxxxxx xx xxx, xxx xxxxxx xxxx xx xx xx?

xxxx xxxxxx xx xxxx xx xxxx xxxx xxxx xx xx xxxxxxx xx xxxx xx xx xx xxxx xxxxxxxx xx xx xxxxxx xxx xxxx xxxxxxx xxxxxxxxxxx xx xxx xx xxx xx xxxxxx xxxxxx xxx xxxx xxxxxxx xxxxxxxxxxx xx xxx xxxx xxx xx xxxxxxx xxxx xx xxx xxxxxx xxx; xx xx xxxx xxxx xx xxxxxx xx xxx xx xxx xx xx xxxxxxx, xxx xx xxx xx xxx xx xxxxxxx xx xxx xxxxxx xxxx

xxxx xx xxxx xx xxx xxxxxxxxx xxxx xx xx xx xxxx xx xxxxxxxx xx xxx xx xxxxxxx xx xxxxxxxx xxx xx xxxxxxxx xxx xx xx xxxxxxxx xxx xxxx xx xxxxxxx xx, xx xxxxxxxxxxxxxx xxxxxx-xxxxxxx xx xxxx xxxx xxxxx xxx

xx xxxxxxx xx xxxxxx xx xxxx xxxx xxxx, xxxxxxxxx xxxx xx xxxxxxxxxx xxxx xx xxxx xxxxxx xxx

xxxx xxx xxxx xxxx xx xxxxx xxx xxxxx

xxxx xxxx xxxxxxx xx xxx xxx xx xxxxxxxxxx xxxxxxx xx xx xx xx xxx xx xxxx xx xxx xx xxxx xxxxxx xxxx xxx xxxxxx x xxxx xxxx xxxx xx xxx xxx xx xxxx xx xxxx xxxxxxxx xx xx xxx xx xxxx xxxxxxxx xx xxx xx, xxxxx xxx xxxxxxx xxxx xx; xxxxxx xx xx xxxxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxx xxx xxxxxxx xxx xxxxxxxxxxxx xxxx xx, xxxxxx xxxxxxxx xxx xx xxxxxxxxxxxx xxx

क्रोध मूर्खतापूर्ण और बेतुका दोनों हो सकता है; कोई व्यक्ति बेवजह चिढ़ सकता है; व्यक्ति तभी क्रोधित होता है जब अंततः उसके पक्ष में कुछ हद तक सच्चाई दिखाई देती है। जीन वाल्जेन स्वयं क्रोधित महसूस कर रहा था।

और इसके अलावा, मानव समाज ने उसे केवल हानि ही पहुँचाई थी; उसने समाज का केवल वही क्रोधित चेहरा देखा था जिसे वह न्याय कहता है और जिसे वह उन लोगों को दिखाता है जिन पर वह प्रहार करता है। मनुष्यों ने उसे केवल चोट पहुँचाने के लिए छुआ था। उनसे हर संपर्क एक आघात था। अपने बचपन से, अपनी माँ और बहन के दिनों से, उसने कभी भी किसी मित्रतापूर्ण शब्द या दयालु दृष्टि का सामना नहीं किया था। एक के बाद एक कष्ट सहते हुए, वह धीरे-धीरे इस विश्वास तक पहुँच गया था कि जीवन एक युद्ध है; और इस युद्ध में वह पराजित है। उसके पास अपनी घृणा के अलावा कोई हथियार नहीं था। उसने संकल्प लिया कि वह इसे नौकाओं में और तीव्र करेगा और अपने साथ मृत्यु के समय ले जाएगा।

टूलॉन में कैदियों के लिए एक विद्यालय था, जिसे अज्ञानी भिक्षुओं द्वारा चलाया जाता था, जहाँ उन दुर्भाग्यशाली लोगों को आवश्यक शिक्षा दी जाती थी, जिनका मन उसमें रुचि रखता था। वह भी उन्हीं में से एक था। उसने चालीस वर्ष की आयु में विद्यालय में दाखिला लिया और पढ़ना-लिखना तथा अंकगणित सीखा। उसका मानना था कि अपनी बुद्धि को मजबूत करना उसकी घृणा को मजबूत करना है। कुछ मामलों में, शिक्षा और ज्ञान बुराई को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं।

यह कहना दुखद है; समाज को दोषी ठहराने के बाद, जिसने उसे दुखी किया था, उसने ईश्वर की भी निंदा की, जिसने समाज का निर्माण किया था।

इस प्रकार उन्नीस वर्षों की यातना और गुलामी के दौरान, यह आत्मा उत्थान और पतन दोनों का अनुभव करती रही। एक ओर से प्रकाश ने इसमें प्रवेश किया, तो दूसरी ओर से अंधकार ने।

जैसा कि हमने देखा है, जीन वाल्जेन का स्वभाव दुष्ट नहीं था। जब वह जहाज़ों के बेड़े में पहुँचा, तब भी वह अच्छा ही था। वहाँ उसने समाज की निंदा की और महसूस किया कि वह दुष्ट बनता जा रहा है; वहाँ उसने ईश्वर की निंदा की और इस बात से अवगत हुआ कि वह अधर्मी होता जा रहा है।

इस समय ध्यान में लीन न होना मुश्किल है।

क्या इस प्रकार मानव स्वभाव पूरी तरह से और ऊपर से नीचे तक बदल जाता है? क्या ईश्वर द्वारा सृजित अच्छे मनुष्य को मनुष्य दुष्ट बना सकता है? क्या भाग्य आत्मा को पूरी तरह से बदल सकता है और उसे बुराई में तब्दील कर सकता है, जबकि भाग्य स्वयं बुराई है? क्या अत्यधिक दुख के बोझ तले हृदय विकृत हो सकता है और असाध्य विकृतियों और दुर्बलताओं से ग्रसित हो सकता है, जैसे कि बहुत नीची छत के नीचे रीढ़ की हड्डी? क्या प्रत्येक मनुष्य की आत्मा में, और विशेष रूप से जीन वालजेन की आत्मा में, एक प्रथम चिंगारी, एक दिव्य तत्व नहीं होता, जो इस संसार में अविनाशी और परलोक में अमर होता है, जिसे अच्छाई विकसित कर सकती है, प्रज्वलित कर सकती है, प्रज्वलित कर सकती है और वैभव से चमका सकती है, और जिसे बुराई कभी पूरी तरह से बुझा नहीं सकती?

गंभीर और अस्पष्ट प्रश्न, जिनमें से अंतिम का उत्तर शायद हर शरीर क्रियाविज्ञानी बिना किसी झिझक के 'नहीं' देता, यदि उसने टूलॉन में विश्राम के घंटों के दौरान, जो जीन वाल्जेन के लिए चिंतन के घंटे थे, इस उदास दास को किसी लोहे के तख्ते पर भुजाएँ मोड़े बैठा देखा होता, अपनी जंजीर का सिरा जेब में डाले हुए ताकि वह घिसट न जाए, गंभीर, मौन और विचारशील, उन कानूनों का बहिष्कृत जो मनुष्य को क्रोध से देखते थे, सभ्यता द्वारा निंदित, और स्वर्ग को कठोरता से देखने वाला।

निःसंदेह—और हम इस तथ्य को छुपाने का कोई प्रयास नहीं करते—पर्यवेक्षक शरीर विज्ञानी ने एक असाध्य पीड़ा देखी होगी; संभवतः उसने कानून द्वारा निर्मित इस बीमार व्यक्ति पर दया की होगी; लेकिन उसने किसी भी प्रकार के उपचार का प्रयास भी नहीं किया होगा; उसने इस आत्मा के भीतर की उन गुफाओं से अपनी दृष्टि फेर ली होगी जिनकी एक झलक उसे मिली होगी, और नरक के द्वार पर दांते की तरह, उसने इस अस्तित्व से उस शब्द को मिटा दिया होगा जिसे ईश्वर की उंगली ने फिर भी प्रत्येक मनुष्य के माथे पर अंकित किया है—आशा।

क्या जीन वालजेन की आत्मा की यह अवस्था, जिसका हमने विश्लेषण करने का प्रयास किया है, उतनी ही स्पष्ट थी जितनी हमने इसे पाठकों के लिए प्रस्तुत करने का प्रयास किया है? क्या जीन वालजेन ने अपनी नैतिक पीड़ा के सभी तत्वों को, उनके निर्माण के बाद, स्पष्ट रूप से समझा था, और क्या उन्होंने उनके निर्माण की प्रक्रिया के दौरान भी स्पष्ट रूप से देखा था? क्या इस

असभ्य और अनपढ़ व्यक्ति ने विचारों के उस क्रम को पूरी तरह से स्पष्ट रूप से समझा था, जिसके माध्यम से वह धीरे-धीरे उन उदासी भरे पहलुओं तक पहुंचा और उतरा था, जिन्होंने इतने वर्षों तक उसकी आत्मा के आंतरिक क्षितिज का निर्माण किया था? क्या वह अपने भीतर घटित होने वाली हर बात और वहां चल रही हर क्रिया के प्रति सचेत था? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसे हम कहने का साहस नहीं करते; यह एक ऐसी बात है जिस पर हमें विश्वास भी नहीं है। जीन वालजेन में, अपनी विपत्ति के बाद भी, इतनी अज्ञानता थी कि बहुत सी अस्पष्टता अभी भी बनी हुई थी। कई बार वह स्वयं भी ठीक से नहीं जानता था कि वह क्या महसूस कर रहा है। जीन वालजेन अंधकार में था; वह अंधकार में पीड़ित था; वह अंधकार में घृणा करता था; ऐसा कहा जा सकता है कि वह अपने आप से पहले ही घृणा करता था। वह आदतन इसी अंधकार में रहता था, एक अंधे और स्वप्नद्रष्टा की तरह रास्ता टटोलता हुआ। बस, कभी-कभी अचानक, बाहर और भीतर से, क्रोध का सैलाब उमड़ पड़ता था, पीड़ा का बोझ बढ़ जाता था, एक प्रचंड और तीव्र चमक उसकी पूरी आत्मा को रोशन कर देती थी, और उसके चारों ओर, आगे, पीछे, एक भयानक प्रकाश की चमक के बीच, उसके भाग्य की भयावह खाई और अंधकारमय तस्वीर अचानक प्रकट हो जाती थी।

वह पल बीत गया, रात फिर से छा गई; और वह कहाँ था? उसे अब पता नहीं था। इस प्रकार के कष्टों की विशेषता, जिनमें निर्मम—अर्थात् क्रूरतापूर्ण—भाव प्रबल होते हैं, मनुष्य को धीरे-धीरे, एक प्रकार के मूर्खतापूर्ण रूपांतरण द्वारा, एक जंगली जानवर में बदल देते हैं; कभी-कभी एक क्रूर जानवर में।

जीन वालजेन के लगातार और हठपूर्वक भागने के प्रयास ही मानव आत्मा पर कानून के इस विचित्र प्रभाव को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं। जीन वालजेन इन प्रयासों को, चाहे वे कितने ही व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण क्यों न हों, बार-बार दोहराते, जब भी उन्हें मौका मिलता, बिना परिणाम या अपने पहले के अनुभवों पर एक पल भी विचार किए। वह उस भेड़िये की तरह उग्रता से भागा जिसे अपना पिंजरा खुला मिल गया हो। उसकी सहज प्रवृत्ति ने उससे कहा, "भाग जाओ!" तर्क ने कहा होता, "रुको!" लेकिन इतने तीव्र प्रलोभन के सामने तर्क गायब हो गया; केवल सहज प्रवृत्ति ही शेष रही। केवल जानवर ने ही कार्य किया। जब उसे दोबारा पकड़ा गया, तो उस पर किए गए नए अत्याचारों ने उसे और भी उग्र बना दिया।

दृष्टि की सीमा से परे, चीजों का एक भयानक समूह देखता, जो इकट्ठा होकर ऊपर चढ़ रहा था—कानून, पूर्वाग्रह, मनुष्य और कर्म—जिनकी रूपरेखा उसकी समझ से परे थी, जिनका विशाल आकार उसे भयभीत कर रहा था, और जो उस विशाल पिरामिड के अलावा कुछ नहीं था जिसे हम सभ्यता कहते हैं। उसने उस भीड़ भरे और आकारहीन समूह में, कभी अपने पास, कभी दूर और दुर्गम पठारों पर, कहीं-कहीं कुछ समूह, कुछ विवरण स्पष्ट रूप से दिखाई दिए; कहीं गैली-सार्जेंट और उसका डंडा; कहीं जेंडरम और उसकी तलवार; वहाँ मुकुटधारी आर्कबिशप; सबसे ऊपर, मानो सूर्य के समान, सम्राट मुकुटधारी और चकाचौंध से जगमगा रहा था। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ये दूर की भव्यताएँ उसकी रात को दूर करने के बजाय और भी अधिक शोकपूर्ण और काली बना रही हैं। ये सब—कानून, पूर्वाग्रह, कर्म, मनुष्य, वस्तुएँ—उसके ऊपर, उसके सिर के ऊपर से आते-जाते रहते हैं, उस जटिल और रहस्यमय गति के अनुसार जो ईश्वर सभ्यता को प्रदान करता है, उसके ऊपर से गुजरते हुए और उसे न जाने किस शांति से अपनी क्रूरता और निर्दयता से कुचलते हुए। वे आत्माएँ जो हर संभव दुर्भाग्य की गहराई में गिर चुकी हैं, अभागे लोग जो उन सबसे निचले स्तरों में खो गए हैं जहाँ अब कोई नहीं देखता, कानून के निंदित लोग, इस मानव समाज का पूरा भार अपने सिर पर महसूस करते हैं, जो बाहर वालों के लिए इतना भयावह और नीचे वालों के लिए इतना डरावना है।

इस परिस्थिति में जीन वाल्जेन ध्यान में लीन हो गए; और उनके ध्यान का स्वरूप क्या हो सकता है?

यदि चक्की के नीचे पड़े बाजरे के दाने में सोचने की शक्ति होती, तो निःसंदेह वह भी वही सोचता जो जीन वालजेन सोचता था।

ये सभी चीजें, प्रेतों से भरी वास्तविकताएं, वास्तविकताओं से भरी कल्पनाएं, अंततः उनके लिए एक प्रकार की आंतरिक स्थिति का निर्माण कर चुकी थीं, जिसका वर्णन करना लगभग असंभव है।

कभी-कभी, कैदियों के रूप में अपने कठिन परिश्रम के बीच, वह रुक जाता। वह सोचने लगता। उसकी बुद्धि, जो पहले से कहीं अधिक परिपक्व और साथ ही साथ अधिक परेशान थी, विद्रोह करने लगी। उसके साथ जो कुछ भी हुआ था, वह उसे बेतुका लग रहा था; उसके चारों ओर जो कुछ भी था, वह उसे असंभव लग रहा था। उसने स्वयं से कहा, "यह एक सपना है।" उसने अपने से कुछ कदम दूर खड़े गैली-सार्जेंट को

देखा; गैली-सार्जेंट उसे एक प्रेत जैसा लग रहा था। अचानक उस प्रेत ने उसे अपने डंडे से एक प्रहार किया।

उनके लिए प्रत्यक्ष प्रकृति का कोई अस्तित्व ही नहीं था। यह कहना लगभग सत्य होगा कि जीन वालजेन के लिए न तो सूर्य था, न सुहावने ग्रीष्म ऋतु के दिन, न चमकीला आकाश, न ही अप्रैल की ताजी सुबह। मुझे नहीं पता कि किस प्रकार की सूक्ष्म धूप उनकी आत्मा को नियमित रूप से प्रकाशित करती थी।

निष्कर्षतः, हमने अभी जिन बातों का उल्लेख किया है, उनमें से जो कुछ भी सकारात्मक परिणामों में परिणत हो सकता है, उसे संक्षेप में कहें तो, उन्नीस वर्षों के दौरान, फ़ेवरोल्स के सीधे-सादे वृक्ष-शासक जीन वालजेन, जो टूलॉन के खूंखार अपराधी बन गए थे, अपने जीवन में जहाजों के अनुभवों के फलस्वरूप दो प्रकार के बुरे कर्म करने में सक्षम हो गए थे: पहला, तीव्र, अनियोजित, आवेगपूर्ण और पूरी तरह से सहज कर्म, जो उनके साथ हुए अन्याय के प्रतिशोध के रूप में थे; दूसरा, गंभीर, सोच-समझकर और पूर्व नियोजित बुरे कर्म, जो ऐसी विपत्ति से उत्पन्न होने वाले झूठे विचारों से प्रेरित थे। उनके जानबूझकर किए गए कर्म तीन क्रमिक चरणों से गुजरे, जिन्हें केवल एक विशेष प्रकार के स्वभाव वाले लोग ही पार कर सकते हैं—तर्क, इच्छाशक्ति और दृढ़ता। उसके मन में व्याप्त क्रोध, आत्मा की कड़वाहट, सहे गए अपमानों का गहरा बोध और यहाँ तक कि भले, निर्दोष और न्यायप्रिय लोगों के प्रति भी घृणा की भावना प्रबल थी। उसके सभी विचारों का मूल और अंत, मानवीय कानून के प्रति घृणा थी; वह घृणा जो किसी दैवीय घटना से न रुक जाए तो कुछ ही समय में समाज के प्रति घृणा, फिर मानव जाति के प्रति घृणा, फिर सृष्टि के प्रति घृणा में परिवर्तित हो जाती है और किसी भी जीवित प्राणी को, चाहे वह कोई भी हो, हानि पहुँचाने की एक अस्पष्ट, निरंतर और क्रूर इच्छा के रूप में प्रकट होती है। यह स्पष्ट है कि जीन वालजेन के पासपोर्ट में उसे "एक अत्यंत खतरनाक व्यक्ति" के रूप में वर्णित करना व्यर्थ नहीं था।

साल दर साल यह आत्मा धीरे-धीरे सूखती जा रही थी, लेकिन घातक निश्चितता के साथ। जब दिल सूख जाता है, तो आंखें भी सूख जाती हैं। जब वह जहाज़ से विदा हुआ, तब तक उसे आंसू बहाए उन्नीस साल हो चुके थे।

VIII. लहरें और छायाएँ

एक आदमी पानी में गिर गया!

इससे क्या फर्क पड़ता है? जहाज रुकता नहीं। हवा चलती रहती है। उस उदास जहाज का एक निश्चित रास्ता है जिस पर उसे चलना ही है। वह आगे बढ़ता रहता है।

वह आदमी गायब हो जाता है, फिर प्रकट होता है; वह डूबता है, फिर सतह पर आता है; वह पुकारता है, अपनी बाहें फैलाता है; उसकी आवाज़ सुनाई नहीं देती। तूफ़ान में कांपता हुआ जहाज़ अपने ही कामों में मग्न है; यात्री और नाविक डूबते हुए आदमी को देख तक नहीं पाते; उसका बेचारा सिर लहरों की विशालता में एक छोटे से बिंदु जैसा दिखता है। वह गहराई से बेबस चीखें निकालता है। वह पीछे हटता हुआ पाल कैसा भयानक है! वह उसे बेतहाशा देखता रहता है। वह पीछे हटता है, धुंधला होता जाता है, आकार में छोटा होता जाता है। अभी कुछ देर पहले वह यहीं था, वह दल का सदस्य था, वह बाकी लोगों के साथ डेक पर आता-जाता था, उसे सांस लेने और धूप का आनंद लेने का मौका मिला था, वह एक जीवित इंसान था। अब, क्या हो गया? वह फिसल गया, वह गिर गया; सब कुछ खत्म हो गया।

वह विशाल सागर में है। उसके पैरों के नीचे केवल वही है जो भागता और चूर-चूर हो जाता है। हवा से चीरती और टकराती लहरें उसे भयानक रूप से घेर लेती हैं; अथाह गहराई की उथल-पुथल उसे बहा ले जाती है; पानी की सभी लपटें उसके सिर पर से गुजरती हैं; लहरों का एक समूह उस पर थूकता है; अस्पष्ट छिद्र उसे आधा निगल जाते हैं; हर बार जब वह डूबता है, तो उसे रात से भरी खड़ी चट्टानों की झलक मिलती है; भयानक और अज्ञात वनस्पतियां उसे जकड़ लेती हैं, उसके पैरों से लिपट जाती हैं, उसे अपनी ओर खींचती हैं; वह सचेत है कि वह एक अथाह गहराई बन रहा है, कि वह झाग का हिस्सा बन रहा है; लहरें उसे एक से दूसरे पर उछालती हैं; वह कड़वाहट पीता है; कायर सागर उसे डुबोने के लिए उग्रता से उस पर हमला करता है; विशालता उसकी पीड़ा के साथ खेलती है। ऐसा लगता है मानो वह सारा पानी घृणा हो।

फिर भी, उसे संघर्ष करना पड़ता है।

वह अपना बचाव करने की कोशिश करता है; वह खुद को बचाए रखने की कोशिश करता है; वह प्रयास करता है; वह तैरता है। उसकी तुच्छ शक्ति पल भर में समाप्त हो जाती है, फिर भी वह असीम शक्ति से लड़ता है।

तो फिर जहाज कहाँ है? दूर क्षितिज की धुंधली छाया में मुश्किल से दिखाई दे रहा है।

हवा के झोंके ज़ोरों से बह रहे हैं; झाग उसे पूरी तरह से घेर लेता है। वह आँखें उठाता है और केवल बादलों की धुंधली छाया देखता है। अपनी मृत्यु की पीड़ा के बीच, वह समुद्र के विशाल प्रचंड प्रलाप का साक्षी बनता है। वह इस प्रलाप से व्याकुल है; उसे मनुष्य के लिए अपरिचित ध्वनियाँ सुनाई देती हैं, जो पृथ्वी की सीमाओं से परे से आती हुई प्रतीत होती हैं, और पता नहीं किस भयानक क्षेत्र से आ रही हैं।

बादलों में पक्षी हैं, जैसे मनुष्य के कष्टों के ऊपर देवदूत हैं; लेकिन वे उसके लिए क्या कर सकते हैं? वे गाते हैं, उड़ते हैं और तैरते हैं, और वह, वह मृत्यु की पीड़ा में तड़पता है।

वह स्वयं को एक ही समय में उन दो अनंतताओं, सागर और आकाश में समाहित महसूस करता है: एक कब्र है; दूसरा कफन है।

रात छा जाती है; वह घंटों से तैर रहा है; उसकी सारी ताकत खत्म हो चुकी है; वह जहाज, वह दूर की वस्तु जिसमें मनुष्य थे, गायब हो गया है; वह भयानक गोधूलि की खाई में अकेला है; वह डूबता है, वह खुद को समेटता है, वह खुद को मरोड़ता है; वह अपने नीचे अदृश्य की विशाल लहरों को महसूस करता है; वह चिल्लाता है।

अब कोई पुरुष नहीं बचा। ईश्वर कहाँ है?

वह चिल्लाता है। मदद करो! मदद करो! वह लगातार चिल्लाता रहता है।

क्षितिज पर कुछ भी नहीं; आसमान में कुछ भी नहीं।

वह विशाल आकाश, लहरों, समुद्री शैवाल और चट्टान से विनती करता है; वे बहरे हैं। वह आंधी से गुहार लगाता है; अविचलित आंधी केवल अनंत की आज्ञा मानती है।

उसके चारों ओर अंधकार, कोहरा, सन्नाटा, तूफ़ानी और निर्जीव हलचल, उन उग्र जलधाराओं का अनिश्चित घुमाव। उसके भीतर भय और थकान। उसके नीचे अथाह

गहराई। सहारा का कोई स्रोत नहीं। वह असीम छाया में लाश के अंधकारमय कारनामों के बारे में सोचता है। अथाह ठंड उसे लकवाग्रस्त कर देती है। उसके हाथ ऐंठन से सिकुड़ जाते हैं; वे बंद हो जाते हैं, और शून्यता को पकड़ लेते हैं। हवाएँ, बादल, बवंडर, झोंके, व्यर्थ तारे! क्या किया जाए? हताश व्यक्ति हार मान लेता है; वह थक चुका है, वह मृत्यु का विकल्प चुनता है; वह विरोध नहीं करता; वह खुद को जाने देता है; वह अपनी पकड़ छोड़ देता है; और फिर वह हमेशा के लिए उस उदास, नीरस गहराई में डूब जाता है।

ओह, मानव समाजों का निर्दयी सफर! ओह, रास्ते में मनुष्यों और आत्माओं का कितना नुकसान! वह सागर जिसमें कानून की अनदेखी सब कुछ समा जाता है! मदद का भयानक अभाव! ओह, नैतिक मृत्यु!

समुद्र वह निर्दयी सामाजिक अंधकार है जिसमें दंडात्मक कानून अपने दोषियों को धकेल देते हैं। समुद्र दुख की विशालता है।

इस खाई में बहती हुई आत्मा एक शव बन सकती है। इसे पुनर्जीवित कौन करेगा?

IX. नई मुसीबतें

जब उनके लिए जहाज़ों से विदा होने का समय आया, जब जीन वालजेन ने अपने कानों में ये अजीब शब्द सुने, "तुम आज़ाद हो!" वह क्षण अकल्पनीय और अभूतपूर्व लगा; एक चमकीली रोशनी की किरण, जीवन के सच्चे प्रकाश की एक किरण, अचानक उनके भीतर समा गई। लेकिन यह किरण जल्द ही फीकी पड़ गई। जीन वालजेन आज़ादी के विचार से चकाचौंध हो गए थे। उन्होंने एक नए जीवन में विश्वास किया था। उन्हें बहुत जल्दी समझ आ गया कि पीले पासपोर्ट से मिलने वाली आज़ादी किस प्रकार की होती है।

और यह बात उनके मन में बहुत कड़वाहट भर गई थी। उन्होंने अनुमान लगाया था कि जहाजों में रहने के दौरान उनकी कमाई एक सौ इकहत्तर फ़्रैंक होनी चाहिए थी। यह बताना उचित होगा कि वे अपनी गणना में उन्नीस वर्षों के दौरान रविवार और त्योहारों के अनिवार्य अवकाश को शामिल करना भूल गए थे, जिसके कारण लगभग अस्सी फ़्रैंक की कमी हो गई थी। किसी भी हालत में, विभिन्न स्थानीय करों के कारण उनकी जमा पूंजी घटकर एक सौ नौ फ़्रैंक पंद्रह सू रह गई थी, जो उन्हें विदाई के समय गिनकर दी गई थी। उन्हें इस बात का कुछ भी एहसास नहीं हुआ था और उन्होंने खुद को अन्याय का शिकार समझा था। सीधे शब्दों में कहें तो— लूटा हुआ।

अपनी रिहाई के अगले दिन, ग्रास में, एक संतरे के फूल की भट्टी के सामने, उसने कुछ लोगों को गठ्ठे उतारते देखा। उसने अपनी सेवाएँ देने की पेशकश की। काम बहुत ज़्यादा था, इसलिए उसकी पेशकश स्वीकार कर ली गई। वह काम पर लग गया। वह बुद्धिमान, हट्टा-कट्टा और कुशल था; उसने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया; मालिक उससे प्रसन्न प्रतीत हुआ। जब वह काम कर रहा था, एक पुलिसकर्मी वहाँ से गुज़रा, उसने उसे देखा और उसके कागज़ात माँगे। उसे अपना पीला पासपोर्ट दिखाना पड़ा। यह दिखाने के बाद, जीन वालजेन ने अपना काम फिर से शुरू कर दिया। कुछ समय पहले उसने एक मज़दूर से पूछा था कि इस काम में उनकी रोज़ाना की कमाई कितनी होती है; उसे बताया गया था "तीस सू"। शाम होते-होते, क्योंकि उसे अगले दिन फिर से काम पर जाना था, वह भट्टी के मालिक के पास गया और भुगतान की माँग की। मालिक ने एक शब्द भी नहीं कहा, बस

उसे पंद्रह सू दे दिए। उसने आपत्ति जताई। उसे कहा गया, "तुम्हारे लिए इतना ही काफ़ी है।" वह अड़ा रहा। मालिक ने उसकी आँखों में सीधे देखते हुए कहा, "जेल से सावधान रहो।"

वहां भी उसे फिर यही लगा कि उसे लूट लिया गया है।

समाज और राज्य ने उसकी संपत्ति को कम करके उसे पूरी तरह से लूट लिया था। अब व्यक्ति स्वयं उसे थोड़ा-थोड़ा करके लूट रहा था।

मुक्ति का अर्थ उद्धार नहीं है। व्यक्ति को जलयान से तो आजादी मिल जाती है, लेकिन सजा से नहीं।

ग्रास में उनके साथ यही हुआ था। हमने देखा है कि डी में उनका स्वागत किस तरह हुआ था।

X. वह आदमी उत्तेजित हो गया

जैसे ही गिरजाघर की घड़ी में सुबह के दो बजे, जीन वाल्जेन जाग गए।

जिस चीज़ ने उसे जगाया, वह यह थी कि उसका बिस्तर बहुत आरामदायक था। लगभग बीस साल हो गए थे जब वह बिस्तर पर सोया था, और यद्यपि उसने कपड़े नहीं उतारे थे, फिर भी यह अनुभूति इतनी नई थी कि उसकी नींद में खलल डाले बिना नहीं रह सकी।

वह चार घंटे से अधिक सो चुका था। उसकी थकान दूर हो गई थी। उसे आराम करने में ज्यादा समय बिताने की आदत नहीं थी।

उसने अपनी आंखें खोलीं और अपने चारों ओर छाए अंधकार को घूरकर देखा; फिर उसने दोबारा सोने के इरादे से अपनी आंखें बंद कर लीं।

जब दिनभर की अनेक संवेदनाओं ने मन को झकझोर कर रख दिया हो, जब कई बातें दिमाग में घूमती हों, तो एक बार तो नींद आ जाती है, लेकिन दूसरी बार नहीं।
नींद आना तो आसान है, लेकिन लौटना मुश्किल। जीन वालजेन के साथ भी यही हुआ।
उन्हें दोबारा नींद नहीं आई और वे सोचने में मग्न हो गए।

वह उन पलों में से एक था जब मन में उठने वाले विचार अशांत हो जाते हैं। उसके मस्तिष्क में एक प्रकार का गहरा भ्रम छाया हुआ था। बीते समय की और वर्तमान की यादें अव्यवस्थित रूप से आपस में मिल रही थीं, अपना सही स्वरूप खो रही थीं, अत्यधिक बड़ी होती जा रही थीं, और फिर अचानक गायब हो रही थीं, मानो किसी मैले और अशांत तालाब में। उसके मन में अनेक विचार आ रहे थे; लेकिन एक विचार बार-बार उभर रहा था, और बाकी सभी विचारों को दूर भगा रहा था। हम इस विचार का तुरंत उल्लेख करेंगे: उसने चांदी के छह सेट कांटे- चम्मच और एक करछुल देखा था जिसे मैडम मैग्लॉयर ने मेज पर रखा था।

चांदी के वे छह सेट उसे सता रहे थे। वे वहीं थे। कुछ ही कदम की दूरी पर। जैसे ही वह बगल वाले कमरे से होते हुए उस कमरे में पहुँचा जिसमें वह उस समय था, बूढ़ी नौकरानी उन्हें पलंग के सिरहाने के पास एक छोटी सी अलमारी में रख रही थी। उसने उस अलमारी पर ध्यान दिया था। भोजन कक्ष से अंदर आते ही दाहिनी

ओर। वे ठोस थे। और पुरानी चांदी के थे। करछुल से कम से कम दो सौ फ्रैंक निकाले जा सकते थे। उन्नीस वर्षों में उसने जो कमाया था, उसका दुगुना। यह सच है कि अगर प्रशासन ने उसे लूटा न होता तो वह और भी अधिक कमा सकता था।

एक घंटे तक उसका मन लगातार उतार-चढ़ाव से घिरा रहा, जिसमें निश्चित रूप से कुछ संघर्ष भी शामिल था। तीन बज गए। उसने फिर से अपनी आँखें खोलीं, अचानक उठकर बैठ गया, अपना हाथ फैलाया और अपने थैले को टटोला, जिसे उसने आले के एक कोने में फेंक दिया था; फिर उसने अपने पैर बिस्तर के किनारे से नीचे लटका दिए और अपने पैर ज़मीन पर रख दिए, और इस तरह लगभग अनजाने में ही वह अपने बिस्तर पर बैठ गया।

वह कुछ देर तक सोच-विचार करते हुए इसी मुद्रा में रहा, जो किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए किसी अशुभ संकेत का संकेत होती जिसने उसे अंधेरे में इस हालत में देखा होता, उस घर में जहां सभी सो रहे थे, वह अकेला जाग रहा था। अचानक वह नीचे झुका, अपने जूते उतारे और उन्हें पलंग के बगल में चटाई पर धीरे से रख दिया; फिर वह अपनी सोच-विचार वाली मुद्रा में लौट आया और एक बार फिर स्थिर हो गया।

इस भयावह चिंतन के दौरान, ऊपर बताए गए विचार लगातार उसके दिमाग में घूमते रहे; आते, जाते, फिर आते और एक तरह से उसे परेशान करते रहे; और फिर, बिना किसी कारण के, और कल्पना की यांत्रिक निरंतरता के साथ, उसे ब्रेवेट नाम के एक कैदी की याद आई, जिसे वह जेल में जानता था, और जिसकी पतलून बुने हुए सूती कपड़े के एक ही सस्पेंडर से टिकी हुई थी। उस सस्पेंडर का चेकर पैटर्न बार-बार उसके दिमाग में आता रहा।

वह इसी स्थिति में बना रहा, और अनिश्चित काल तक, यहाँ तक कि भोर होने तक, इसी स्थिति में बना रहता, यदि घड़ी में एक न बजता—आधा या पंद्रह मिनट। उसे ऐसा लगा मानो उस बजने की आवाज़ उससे कह रही हो, "चलो आगे बढ़ो!"

वह उठा, एक पल रुका और ध्यान से सुना; घर में सब शांत था; फिर वह छोटे-छोटे कदमों से सीधे उस खिड़की की ओर बढ़ा, जिसकी एक झलक उसे दिखाई दी थी। रात बहुत अंधेरी नहीं थी; पूरा चाँद निकला हुआ था, जिसके ऊपर हवा से उड़ते बड़े-बड़े बादल छाए हुए थे। इससे बाहर, बारी-बारी से छाया और प्रकाश की किरणें, ग्रहण, फिर बादलों के बीच से चमकती रोशनी दिखाई दे रही थी; और घर के

अंदर एक तरह का धुंधलापन था। यह धुंधलापन, जो किसी व्यक्ति को रास्ता देखने के लिए पर्याप्त था, बादलों के कारण रुक-रुक कर आ रहा था, और तहखाने में हवा के लिए बने छेद से आने वाली धुंधली रोशनी जैसा था, जिसके सामने से राहगीर आते-जाते रहते हैं। खिड़की पर पहुँचकर, जीन वालजेन ने उसे देखा। उसमें कोई जाली नहीं थी; वह बगीचे की ओर खुलती थी और देहाती रिवाज के अनुसार, केवल एक छोटी सी पिन से बंद थी। उसने उसे खोला; लेकिन जैसे ही ठंडी और चुभने वाली हवा का एक झोंका अचानक कमरे में घुसा, उसने उसे तुरंत बंद कर दिया। उसने बगीचे को उस गहन दृष्टि से देखा जो देखने से ज़्यादा अध्ययन करने जैसी थी। बगीचा एक अपेक्षाकृत नीची सफेद दीवार से घिरा हुआ था, जिस पर चढ़ना आसान था। दूर, छोर पर, उसे नियमित अंतराल पर पेड़ों की चोटियाँ दिखाई दीं, जिनसे संकेत मिलता था कि दीवार बगीचे को पेड़ों से भरी एक सड़क या रास्ते से अलग करती है।

यह सब देखने के बाद, उसने एक ऐसे व्यक्ति की तरह हरकत की जिसने अपना मन बना लिया हो, अपने कमरे की ओर बढ़ा, अपना थैला उठाया, उसे खोला, उसमें टटोला, उसमें से कुछ निकाला जिसे उसने बिस्तर पर रख दिया, अपने जूते अपनी एक जेब में डाले, थैला फिर से बंद किया, थैला अपने कंधों पर डाला, टोपी पहनी, विज़र को अपनी आँखों पर खींचा, अपनी लाठी ढूँढी, जाकर उसे खिड़की के कोने में रख दिया; फिर बिस्तर पर लौटा, और दृढ़ता से उस वस्तु को उठाया जिसे उसने वहाँ रखा था। वह लोहे की एक छोटी छड़ जैसी थी, जिसका एक सिरा भाले की तरह नुकीला था। उस अँधेरे में यह पहचानना मुश्किल था कि लोहे के उस टुकड़े का क्या उपयोग रहा होगा। शायद वह एक लीवर था; संभवतः वह एक लाठी थी।

दिन के उजाले में इसे देखकर ऐसा लगता था मानो यह किसी खनिक का मोमबत्ती स्टैंड हो। उस समय कैदियों को कभी-कभी टूलॉन के आसपास की ऊँची पहाड़ियों से पत्थर निकालने के काम पर लगाया जाता था, और उनके पास खनिकों के औजार होना आम बात थी। ये खनिकों के मोमबत्ती स्टैंड ठोस लोहे के बने होते हैं, जिनका निचला सिरा नुकीला होता है, जिसकी मदद से इन्हें चट्टान में गाड़ा जाता है।

उसने अपने दाहिने हाथ में मोमबत्ती स्टैंड लिया; अपनी सांस रोककर और अपने कदमों की आवाज को दबाने की कोशिश करते हुए, उसने अपने कदम बगल वाले कमरे के

दरवाजे की ओर बढ़ाए, जिसमें बिशप रहते थे, जैसा कि हम पहले से ही जानते हैं।

जब वह इस दरवाजे पर पहुंचा तो उसने पाया कि वह थोड़ा खुला हुआ था। बिशप ने उसे बंद नहीं किया था।

XI. वह क्या करता है

जीन वाल्जेन ने सुना। एक भी आवाज़ नहीं।

उसने दरवाजे को धक्का दिया।

उसने अपनी उंगली के सिरे से उसे धीरे से, हल्के से, उस बिल्ली की तरह चुपके से और बेचैनी से धक्का दिया जो अंदर जाने की इच्छुक हो।

इस दबाव के आगे दरवाजा थोड़ा झुक गया और एक सूक्ष्म और शांत हलचल हुई, जिससे खुलने की जगह थोड़ी सी बढ़ गई।

उसने एक पल इंतजार किया; फिर दरवाजे को दूसरी बार और अधिक जोर से धक्का दिया।

वह चुपचाप रास्ता खोलता रहा। अब रास्ता इतना बड़ा हो गया था कि वह अंदर जा सके। लेकिन दरवाजे के पास एक छोटी सी मेज खड़ी थी, जो दरवाजे के साथ एक अजीब सा कोण बना रही थी और प्रवेश को रोक रही थी।

जीन वाल्जेन ने इस कठिनाई को पहचान लिया था। किसी भी कीमत पर, छिद्र को और भी बड़ा करना आवश्यक था।

उसने अपनी कार्ययोजना तय कर ली और दरवाजे को तीसरी बार धक्का दिया, जो पहले दो बार से अधिक ज़ोरदार था। इस बार, खामोशी के बीच अचानक एक खराब तरीके से तेल लगे कब्ज़े से कर्कश और लंबी आवाज़ निकली।

जीन वाल्जेन सिहर उठा। उसके कानों में कब्ज़े की आवाज़ कयामत के दिन के तुरही की तीखी और भयावह ध्वनि की तरह गूंज उठी।

पहले क्षण के अकल्पनीय अतिशयोक्ति में, उसने लगभग कल्पना की कि वह कब्ज़ा सजीव हो गया है, और अचानक उसमें एक भयानक जान आ गई है, और वह कुत्ते की तरह भौंक रहा है ताकि सबको जगा सके, चेतावनी दे सके और सोए हुए लोगों को जगा सके। वह कांपते हुए, स्तब्ध होकर रुक गया और अपने पंजों के बल से एड़ियों पर गिर पड़ा। उसने अपनी कनपटी की धमनियों को दो हथौड़ों की तरह धड़कते हुए सुना, और उसे लगा कि उसकी सांसें उसकी छाती से किसी गुफा से निकलती हवा की गर्जना के साथ निकल रही हैं। उसे यह असंभव लग रहा था कि उस चिढ़े हुए

कब्ज़े के भयानक शोर ने पूरे घर को भूकंप के झटके की तरह विचलित न किया हो; उसके द्वारा धकेले गए दरवाजे ने खतरे को भांप लिया था और चिल्ला उठा था; बूढ़ा आदमी तुरंत उठ जाएगा; दोनों बूढ़ी औरतें चीखेंगी; लोग उनकी मदद के लिए आएंगे; पंद्रह मिनट से भी कम समय में शहर में हंगामा मच जाएगा और पुलिस मौके पर पहुंच जाएगी। एक पल के लिए उसने खुद को खोया हुआ समझा।

वह नमक की मूर्ति की तरह स्थिर खड़ा रहा, हिलने-डुलने की हिम्मत भी नहीं कर रहा था। कई मिनट बीत गए। दरवाजा पूरी तरह खुल गया था। उसने हिम्मत करके बगल वाले कमरे में झाँका। वहाँ कुछ भी हलचल नहीं थी। उसने कान लगाकर सुना। घर में कोई हलचल नहीं थी। जंग लगे कब्ज़े की आवाज़ से भी कोई नहीं जागा था।

पहला खतरा टल गया था; लेकिन उसके भीतर अभी भी एक भयानक उथल-पुथल मची हुई थी। फिर भी, वह पीछे नहीं हटा। यहाँ तक कि जब उसने खुद को हारा हुआ महसूस किया, तब भी वह पीछे नहीं हटा। अब उसका एकमात्र विचार था कि काम को जल्द से जल्द खत्म किया जाए। उसने एक कदम बढ़ाया और कमरे में प्रवेश किया।

यह कमरा एकदम शांत था। इधर-उधर कुछ धुंधली और अस्पष्ट आकृतियाँ दिखाई दे रही थीं, जो दिन के उजाले में मेज पर बिखरे कागज़, खुली हुई पुस्तकें, स्टूल पर रखी किताबें, कपड़ों से लदी एक कुर्सी, एक प्रार्थना-पाठ की वस्तु थीं, लेकिन उस समय वे केवल धुंधले कोने और सफ़ेद धब्बे ही दिख रही थीं। जीन वालजेन सावधानी से आगे बढ़ा, ध्यान रखते हुए कि फर्नीचर से न टकराए। कमरे के एक कोने में उसे सो रहे बिशप की धीमी और शांत साँसें सुनाई दे रही थीं।

वह अचानक रुक गया। वह बिस्तर के पास था। वह जितनी उम्मीद कर रहा था उससे कहीं जल्दी वहाँ पहुँच गया था।

प्रकृति कभी-कभी अपने प्रभाव और दृश्यों को हमारे कार्यों के साथ गंभीर और बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से इस प्रकार मिलाती है, मानो वह हमें चिंतन करने के लिए प्रेरित करना चाहती हो। पिछले आधे घंटे से आसमान में एक घना बादल छाया हुआ था। जिस क्षण जीन वालजेन पलंग के सामने रुके, वह बादल मानो जानबूझकर छंट गया, और खिड़की से आती एक किरण ने अचानक बिशप के पीले चेहरे को रोशन कर दिया। वे शांति से सो रहे थे। बासेस-आल्प्स की ठंड के कारण वे लगभग पूरी तरह से कपड़े पहने हुए थे, भूरे ऊन के वस्त्र में, जो उनकी कलाइयों तक उनकी बाहों को ढके हुए था। उनका सिर तकिये पर आराम की लापरवाह मुद्रा में पीछे

की ओर झुका हुआ था; उनका हाथ, जो चरवाहे की अंगूठी से सुशोभित था, जिससे कई अच्छे कर्म और पवित्र कार्य हुए थे, पलंग के किनारे से लटका हुआ था। उनका पूरा चेहरा संतोष, आशा और प्रसन्नता की एक अस्पष्ट अभिव्यक्ति से जगमगा रहा था। यह एक मुस्कान से कहीं अधिक, लगभग एक तेज था। उनके माथे पर एक अदृश्य प्रकाश का अवर्णनीय प्रतिबिंब था। धर्मात्मा स्वप्न में एक रहस्यमय स्वर्ग का चिंतन करती है।

उस स्वर्ग का प्रतिबिंब बिशप पर प्रतिबिंबित होता था।

साथ ही साथ, यह एक प्रकाशमान पारदर्शिता भी थी, क्योंकि स्वर्ग उसके भीतर ही समाया हुआ था। स्वर्ग ही उसकी अंतरात्मा थी।

जिस क्षण चंद्रमा की किरणें उस आंतरिक प्रकाश पर पड़ीं, मानो मानो सोए हुए बिशप किसी दिव्य महिमा में डूबे हुए थे। फिर भी, वह सौम्य और एक अवर्णनीय धुंधलेपन में लिपटा हुआ सा प्रतीत हुआ। आकाश में वह चंद्रमा, वह सोई हुई प्रकृति, वह शांत बगीचा, वह घर जो इतना शांत था, वह घंटा, वह क्षण, वह मौन, इस आदरणीय विश्राम में एक गंभीर और अवर्णनीय गुण जोड़ रहे थे, और उस सफेद बालों, उन बंद आँखों, उस चेहरे को जिसमें आशा और विश्वास झलक रहा था, उस बूढ़े व्यक्ति के सिर और उस शिशु की नींद को एक शांत और राजसी आभा में लपेट रहे थे।

इस व्यक्ति में कुछ दैवीय सा तत्व था, जो स्वयं इस बात से अवगत हुए बिना ही इतना महान था।

जीन वाल्जेन छाया में खड़ा था, अपने लोहे के मोमबत्ती स्टैंड को हाथ में लिए हुए, उस तेजस्वी बूढ़े व्यक्ति से भयभीत होकर, वह अविचलित खड़ा था।
उसने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था। यह आत्मविश्वास उसे भयभीत कर रहा था। नैतिक जगत में इससे भव्य दृश्य और कोई नहीं: एक व्याकुल और बेचैन अंतरात्मा, जो एक बुरे कार्य के कगार पर पहुँच चुकी है, एक धर्मी की नींद को निहार रही है।

उस एकांत में, और अपने जैसे पड़ोसी के साथ, वह नींद अपने आप में कुछ उदात्त थी, जिसके बारे में वह अस्पष्ट रूप से लेकिन दृढ़ता से सचेत था।

उसके भीतर क्या चल रहा था, यह कोई नहीं बता सकता था, यहाँ तक कि वह स्वयं भी नहीं। इसका कुछ अंदाज़ा लगाने के लिए, यह सोचना ज़रूरी है कि सबसे शांत

व्यक्ति के सामने सबसे हिंसक व्यक्ति की स्थिति हो। उसके चेहरे पर भी कुछ स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था। यह एक प्रकार का थका हुआ आश्चर्य था। उसने उसे देखा, बस इतना ही। लेकिन उसके मन में क्या विचार था? इसका अनुमान लगाना असंभव था। जो बात स्पष्ट थी, वह यह थी कि वह भावुक और अचंभित था। लेकिन इस भावना का स्वरूप क्या था?

उसकी निगाहें उस बूढ़े आदमी पर टिकी हुई थीं। उसके हावभाव और चेहरे से जो बात साफ झलक रही थी, वह थी एक अजीब सी दुविधा। ऐसा लग रहा था मानो वह दो खाईयों के बीच फंसा हो—एक वो जिसमें इंसान खुद को खो देता है और दूसरी वो जिसमें इंसान खुद को बचा लेता है। ऐसा लग रहा था मानो वह उस खोपड़ी को कुचलने या उस हाथ को चूमने के लिए तैयार हो।

कुछ मिनटों के बीतने पर उसका बायां हाथ धीरे-धीरे उसके माथे की ओर उठा और उसने अपनी टोपी उतार दी; फिर उसका हाथ उसी संयम से वापस नीचे आ गया और जीन वाल्जेन एक बार फिर ध्यानमग्न हो गया, उसके बाएं हाथ में टोपी और दाहिने हाथ में गदा थी, उसके जंगली सिर पर बाल खड़े हो गए थे।

उस भयावह निगाह के बावजूद बिशप गहरी शांति में सोता रहा।

चांद की रोशनी में चिमनी के ऊपर बना क्रूस धुंधला सा दिखाई दे रहा था, मानो वह दोनों की ओर अपनी भुजाएं फैला रहा हो, एक को आशीर्वाद दे रहा हो और दूसरे को क्षमा मांग रहा हो।

अचानक जीन वालजेन ने अपनी टोपी माथे पर फिर से लगाई; फिर बिशप की ओर देखे बिना तेज़ी से बिस्तर के पास से गुज़रते हुए सीधे अलमारी की ओर बढ़ा, जो उसे सिरहाने के पास दिखाई दी; उसने ताला तोड़ने के इरादे से अपना लोहे का मोमबत्ती स्टैंड उठाया; चाबी वहीं थी; उसने उसे खोला; सबसे पहले जो चीज़ उसकी नज़र में आई वह चांदी के बर्तनों की टोकरी थी; उसने उसे उठाया, बिना किसी सावधानी के और शोर की परवाह किए बिना लंबे-लंबे कदमों से कमरे को पार किया, दरवाजे तक पहुँचा, प्रार्थना कक्ष में फिर से प्रवेश किया, खिड़की खोली, अपना डंडा उठाया, भूतल की खिड़की की चौखट पर चढ़ गया, चांदी के बर्तन अपने थैले में डाले, टोकरी फेंक दी, बगीचे को पार किया, बाघ की तरह दीवार फांदकर भाग गया।

XII. बिशप के कार्य

अगली सुबह सूर्योदय के समय, महाशय बिएनवेनु अपने बगीचे में टहल रहे थे।
मैडम मैग्लॉयर अत्यंत व्याकुलता में उनके पास दौड़कर आईं।
“महामहिम, महामहिम!” वह चिल्लाई, “क्या आपको पता है कि चांदी की टोकरी कहाँ है?”
“जी हां,” बिशप ने उत्तर दिया।
“प्रभु यीशु की कृपा हो!” उसने फिर कहा; “मुझे नहीं पता था कि उसका क्या हुआ।”
बिशप ने अभी-अभी फूलों की क्यारी से टोकरी उठाई थी। उन्होंने इसे मैडम मैग्लॉयर को भेंट किया।
"यह रहा।"
“अच्छा!” उसने कहा। “इसमें कुछ नहीं है! और चांदी?”
“अरे,” बिशप ने जवाब दिया, “तो चांदी ही आपको परेशान कर रही है? मुझे नहीं पता कि वह कहां है।”
“हे भगवान! यह चोरी हो गया! कल रात यहाँ आए उस आदमी ने इसे चुराया है।”
पलक झपकते ही, एक सजग बुढ़िया की तरह फुर्ती से भरी मैडम मैग्लॉयर प्रार्थना कक्ष में दौड़ीं, आले में दाखिल हुईं और बिशप के पास लौट आईं। बिशप अभी झुके ही थे कि कोक्लेरिया डेस गिलॉन्स के पौधे को देखते हुए आह भर रहे थे, जो टोकरी में गिरने से बिस्तर पर टूट गया था। मैडम मैग्लॉयर की आवाज सुनकर वे उठ खड़े हुए।
“महामहिम, वह आदमी गायब हो गया है! चांदी चोरी हो गई है!”
जैसे ही उसने यह विस्मयबोधक शब्द कहा, उसकी नज़र बगीचे के एक कोने पर पड़ी, जहाँ दीवार फांदने के निशान दिखाई दे रहे थे। दीवार की ऊपरी पट्टी उखड़ी हुई थी।

“रुको! वो उधर गया। वो कोशेफिलेट लेन में कूद गया। ओह, कितना घिनौना! उसने हमारा चांदी चुरा लिया!”
बिशप एक क्षण के लिए चुप रहे; फिर उन्होंने अपनी गंभीर निगाहें ऊपर उठाईं और मैडम मैग्लॉयर से धीरे से कहा:—
और सबसे पहले, क्या वह चांदी हमारी थी?
मैडम मैग्लॉयर अवाक रह गईं। फिर सन्नाटा छा गया; उसके बाद बिशप ने बोलना शुरू किया:—
“मैडम मैग्लॉयर, मैंने लंबे समय से उस चांदी को अवैध रूप से अपने पास रखा हुआ है। वह गरीबों की थी। वह आदमी कौन था? जाहिर है, एक गरीब आदमी था।” “हाय! हे भगवान!” मैडम मैग्लॉयर ने जवाब दिया। “यह मेरे लिए नहीं है, न ही मैडमोजेल के लिए। इससे हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन यह महाशय के लिए है। अब महाशय क्या खाएंगे?”
बिशप ने विस्मय भरे भाव से उसकी ओर देखा।
“अरे, ऐसा मत कहो! क्या पीतल के कांटे और चम्मच जैसी कोई चीज नहीं होती?” मैडम मैग्लॉयर ने अपने कंधे उचका दिए।
पीतल में गंध होती है।
"तो फिर लोहे के कांटे और चम्मच।"
मैडम मैग्लॉयर ने भावपूर्ण ढंग से मुंह बनाया।
लोहे का अपना स्वाद होता है।
“बहुत अच्छा,” बिशप ने कहा; “तो फिर लकड़ी वाले।”
कुछ ही क्षणों बाद वह उसी मेज पर नाश्ता कर रहे थे जिस पर पिछली शाम जीन वालजेन बैठे थे। नाश्ता करते हुए, महाशय वेलकम ने अपनी बहन से, जिसने कुछ नहीं कहा, और मैडम मैग्लॉयर से, जो मन ही मन बड़बड़ा रही थीं, हँसते हुए कहा कि रोटी के टुकड़े को दूध के प्याले में डुबोने के लिए लकड़ी के कांटे या चम्मच की भी ज़रूरत नहीं होती।

“सचमुच, यह एक अच्छा विचार है,” मैडम मैग्लॉयर ने आते-जाते मन ही मन कहा, “ऐसे आदमी को अपने घर में पनाह देना! और उसे अपने करीब रखना! और कितनी अच्छी बात है कि उसने चोरी के अलावा कुछ नहीं किया! हे भगवान! यह सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं!”

भाई-बहन जैसे ही मेज से उठने वाले थे, दरवाजे पर दस्तक हुई।

“अंदर आइए,” बिशप ने कहा।

दरवाजा खुला। दहलीज पर एक उग्र और हिंसक समूह प्रकट हुआ। तीन आदमी एक चौथे आदमी को कॉलर से पकड़े हुए थे। तीनों आदमी पुलिस बल के जवान थे; तीसरा आदमी जीन वालजेन था।

एक ब्रिगेडियर ऑफ जेंडरमेस, जो समूह का नेतृत्व कर रहा प्रतीत हो रहा था, दरवाजे के पास खड़ा था। वह अंदर आया और बिशप की ओर बढ़ते हुए सैन्य सलामी दी।

“महामहिम—” उन्होंने कहा।

यह सुनकर, निराश और स्तब्ध प्रतीत हो रहे जीन वाल्जेन ने अचंभित भाव से अपना सिर उठाया।

“महामहिम!” उसने धीरे से कहा। “तो वह पादरी नहीं है?”

“चुप रहो!” पुलिसकर्मी ने कहा। “ये बिशप महोदय हैं।”

इस बीच, महाशय बिएनवेनु ने अपनी वृद्धावस्था के अनुसार जितनी तेजी से प्रगति की, उतनी ही तेजी से प्रगति की।

“अरे! आप यहाँ हैं!” उसने जीन वालजेन को देखते हुए कहा। “आपको देखकर खुशी हुई। अच्छा, लेकिन ये क्या है? मैंने आपको मोमबत्ती स्टैंड भी दिए थे, जो बाकी सब की तरह चांदी के हैं और जिनके लिए आपको दो सौ फ्रैंक मिल सकते हैं। आपने उन्हें अपने कांटे और चम्मच के साथ क्यों नहीं ले गए?”

जीन वाल्जेन ने अपनी आँखें चौड़ी कर लीं और आदरणीय बिशप को ऐसे भाव से घूरने लगा जिसे किसी भी मानवीय भाषा में बयान नहीं किया जा सकता।

“महामहिम,” जेंडरमेस के ब्रिगेडियर ने कहा, “तो इस आदमी की बात सच है? हम उससे मिले। वह भागते हुए आदमी की तरह चल रहा था। हमने मामले की जांच करने के लिए उसे रोका। उसके पास यह चांदी थी—”
“और उसने आपको बताया,” बिशप ने मुस्कुराते हुए बीच में कहा, “कि यह उसे एक दयालु बूढ़े पादरी ने दिया था जिसके साथ उसने रात बिताई थी? अब मुझे मामला समझ आ गया है। और आप उसे वापस यहाँ ले आए हैं? यह एक गलती है।”
“तो फिर,” ब्रिगेडियर ने जवाब दिया, “क्या हम उसे जाने दे सकते हैं?” “बिल्कुल,” बिशप ने उत्तर दिया।
पुलिस ने जीन वाल्जेन को रिहा कर दिया, जो पीछे हट गया।
"क्या यह सच है कि मुझे रिहा किया जाना है?" उसने लगभग अस्पष्ट आवाज में कहा, मानो वह नींद में बोल रहा हो।
“हाँ, तुम्हें रिहा कर दिया गया है; क्या तुम समझते नहीं हो?” एक पुलिसकर्मी ने कहा।
“मेरे मित्र,” बिशप ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, “जाने से पहले, ये रहे आपके मोमबत्ती स्टैंड। इन्हें ले लीजिए।”
वह चिमनी के पास गया, चांदी के दो मोमबत्ती स्टैंड उठाए और उन्हें जीन वालजेन के पास ले आया। दोनों महिलाएं बिना कुछ बोले, बिना कोई इशारा किए, बिना किसी ऐसी नज़र के देखती रहीं जिससे बिशप विचलित हो सके।
जीन वाल्जेन का शरीर कांप रहा था। उसने दोनों मोमबत्तियों को यंत्रवत और स्तब्धता भरे भाव से उठाया।
“अब,” बिशप ने कहा, “शांति से जाओ। वैसे, मेरे मित्र, जब तुम लौटोगे तो बगीचे से होकर जाना आवश्यक नहीं है। तुम हमेशा गली के दरवाजे से आ-जा सकते हो। दिन हो या रात, वह दरवाजा हमेशा कुंडी के अलावा किसी और चीज से बंद नहीं रहता।”
फिर, पुलिसकर्मियों की ओर मुड़ते हुए:—
आप लोग सेवानिवृत्त हो सकते हैं, सज्जनों।
पुलिस बल पीछे हट गया।

जीन वाल्जेन बेहोश होने की कगार पर खड़े व्यक्ति की तरह लग रहे थे।

बिशप उसके पास आया और धीमी आवाज़ में बोला:—

"यह मत भूलो, कभी मत भूलो, कि तुमने इस पैसे का उपयोग एक ईमानदार आदमी बनने में करने का वादा किया है।"

जीन वाल्जेन, जिसे याद ही नहीं था कि उसने कभी कोई वादा किया था, अवाक रह गया। बिशप ने शब्दों पर जोर देते हुए उन्हें बोला था। उसने गंभीरता से बोलना जारी रखा:—

“मेरे भाई जीन वाल्जेन, अब तुम बुराई के नहीं, बल्कि अच्छाई के हो। मैं तुम्हारी आत्मा तुमसे खरीदता हूँ; मैं इसे काले विचारों और विनाश की भावना से मुक्त करता हूँ और इसे ईश्वर को सौंपता हूँ।”

XIII. लिटिल गेरवाइस

जीन वालजेन शहर से ऐसे निकला मानो भाग रहा हो। वह खेतों से होते हुए बहुत तेज़ी से चल पड़ा, जो भी रास्ते और पगडंडियाँ उसे दिखाई देतीं, वह उन्हीं पर चल पड़ा, इस बात का उसे एहसास भी नहीं था कि वह बार-बार उन्हीं रास्तों पर लौट रहा है। वह पूरी सुबह इसी तरह भटकता रहा, बिना कुछ खाए-पिए और बिना भूख महसूस किए। वह अनेक नई भावनाओं से घिरा हुआ था। उसे एक तरह का क्रोध सता रहा था; उसे नहीं पता था कि यह क्रोध किसके विरुद्ध है। वह यह भी नहीं बता सकता था कि वह आहत था या अपमानित। कभी-कभी उस पर एक अजीब सी भावना हावी हो जाती, जिसका वह विरोध करता और जिसके आगे उसने अपने जीवन के पिछले बीस वर्षों में अर्जित कठोरता को भी भेद दिया। मन की इस अवस्था ने उसे थका दिया। उसने हताशा के साथ महसूस किया कि उसके दुर्भाग्य के अन्याय ने उसे जो भयानक शांति प्रदान की थी, वह उसके भीतर से टूट रही थी। उसने स्वयं से पूछा कि इसकी जगह क्या लेगा। कभी-कभी तो वह वास्तव में पुलिसकर्मियों के साथ जेल में रहना पसंद करता, और चाहता कि ऐसा न होता; इससे वह इतना विचलित नहीं होता। हालांकि मौसम काफी आगे बढ़ चुका था, फिर भी जगह-जगह झाड़ियों में कुछ देर से खिले फूल अभी भी मौजूद थे, जिनकी खुशबू से गुजरते हुए उसे अपने बचपन की यादें ताजा हो गईं। ये यादें उसके लिए लगभग असहनीय थीं, क्योंकि इतने लंबे समय से ये यादें उसके मन में नहीं आई थीं।

इस प्रकार दिन भर उसके भीतर अनकहे विचार एकत्रित होते रहे।

जैसे-जैसे सूरज ढल रहा था और हर कंकड़ से ज़मीन पर लंबी-लंबी छायाएँ बन रही थीं, जीन वालजेन एक विशाल, सुनसान मैदान में एक झाड़ी के पीछे बैठ गया। क्षितिज पर आल्प्स पर्वतमाला के सिवा कुछ भी नहीं था। दूर किसी गाँव की मीनार भी नज़र नहीं आ रही थी। जीन वालजेन शायद डी से तीन मील दूर था। मैदान को पार करती हुई एक पगडंडी झाड़ी से कुछ ही कदम दूर से गुज़र रही थी।

इस ध्यानमग्नता के बीचोंबीच, जिसने उसके फटे-पुराने कपड़ों को उससे मिलने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए भयावह बनाने में काफी योगदान दिया होगा, एक आनंदमय ध्वनि सुनाई दी।

उसने अपना सिर घुमाया और देखा कि लगभग दस साल का एक छोटा सा सैवोयार्ड कुत्ता रास्ते से ऊपर आ रहा था और गा रहा था, उसकी कमर पर उसका हर्डि-गर्डी और उसकी पीठ पर उसका मार्मोट-बॉक्स था।

उन हंसमुख और सौम्य बच्चों में से एक, जो एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं और अपनी पतलून में बने छेदों से अपने घुटनों को दिखाते रहते हैं।

अपना गीत गाते हुए, वह लड़का समय-समय पर अपने चलने में रुकता और अपने हाथ में मौजूद कुछ सिक्कों से हड्डियों का खेल खेलता—संभवतः वही सिक्के उसकी पूरी संपत्ति थे।

इस पैसे में एक चालीस सू का सिक्का भी था।

बच्चा जीन वालजेन को देखे बिना झाड़ी के किनारे रुक गया और अपने हाथ में पकड़े हुए सूस को उछाल दिया, जिसे वह उस समय तक बड़ी कुशलता से अपने हाथ के पिछले हिस्से पर पकड़ रहा था।

इस बार चालीस सू का सिक्का उसके हाथ से छूट गया और झाड़ियों की ओर लुढ़कता हुआ जीन वालजेन तक पहुँच गया।

जीन वाल्जेन ने उस पर अपना पैर रख दिया।

इसी बीच, बच्चे ने अपने सिक्के का ध्यान रखा और उसकी नजर उस पर पड़ गई।

उसने जरा भी हैरानी नहीं दिखाई, बल्कि सीधे उस आदमी के पास चला गया।

वह स्थान बिल्कुल सुनसान था। जहाँ तक नज़र जाती, मैदान या रास्ते पर कोई भी व्यक्ति नहीं दिखाई देता था। एकमात्र आवाज़ प्रवासी पक्षियों के झुंड की धीमी, हल्की-सी चीख थी, जो आकाश में बहुत ऊँचाई पर उड़ रहा था। बच्चा सूर्य की ओर पीठ करके खड़ा था, जिसकी सुनहरी किरणें उसके बालों में चमक रही थीं और उसकी रक्त-लाल चमक से जीन वालजेन का क्रूर चेहरा बैंगनी रंग का दिख रहा था।

“महोदय,” छोटे सेवॉयर्ड ने अज्ञानता और मासूमियत से भरी उस बचकानी आत्मविश्वास के साथ कहा, “मेरा पैसा।”

“तुम्हारा नाम क्या है?” जीन वाल्जेन ने पूछा।

"छोटे गेर्विस, महोदय।"

“चले जाओ,” जीन वालजेन ने कहा।
“सर,” बच्चे ने फिर कहा, “मुझे मेरे पैसे वापस दे दीजिए।”
जीन वाल्जेन ने अपना सिर झुका लिया और कोई जवाब नहीं दिया।
बच्चे ने फिर से कहना शुरू किया, "मेरे पैसे, महोदय।"
जीन वाल्जेन की निगाहें धरती पर टिकी रहीं।
“मेरा सिक्का! मेरा सफेद सिक्का! मेरा चांदी का सिक्का!” बच्चे ने चिल्लाकर कहा, “
ऐसा लगा मानो जीन वालजेन ने उसकी बात सुनी ही न हो। बच्चे ने उसकी कमीज़ का कॉलर पकड़कर उसे झकझोर दिया। साथ ही उसने उसके सिर पर रखे लोहे के बड़े जूते को हटाने की कोशिश भी की।
मुझे मेरा हिस्सा चाहिए! मेरे चालीस सू का हिस्सा चाहिए!
बच्चा रोने लगा। जीन वाल्जेन ने अपना सिर उठाया। वह अभी भी बैठा हुआ था। उसकी आँखों में परेशानी थी। उसने बच्चे को एक तरह के विस्मय से देखा, फिर उसने अपना हाथ अपने डंडे की ओर बढ़ाया और भयानक आवाज में चिल्लाया, "वहाँ कौन है?"
“मैं, महोदय,” बच्चे ने उत्तर दिया। “छोटे गेर्विस! मैं! कृपया मुझे मेरे चालीस सू वापस दे दीजिए! कृपया अपना पैर हटा लीजिए, महोदय!”
फिर वह इतना छोटा होते हुए भी चिढ़ गया और लगभग धमकी भरा लगने लगा:—
“अब तुम अपना पैर हटाओगे क्या? अपना पैर हटाओ, वरना हम देखेंगे!”
“अरे! अभी भी तुम ही हो!” जीन वाल्जेन ने कहा, और अचानक उठते हुए, उसका पैर अभी भी चांदी के सिक्के पर टिका हुआ था, उसने आगे कहा:—
"क्या तुम खुद को यहाँ से हटा लोगे!"
भयभीत बच्चा उसकी ओर देखने लगा, फिर सिर से पैर तक कांपने लगा, और कुछ क्षणों के अचेतन मन के बाद वह अपनी पूरी गति से दौड़ने लगा, बिना गर्दन घुमाए या चीखने की हिम्मत किए।

फिर भी, सांस फूलने के कारण वह कुछ दूरी के बाद रुकने पर मजबूर हो गया, और जीन वाल्जेन ने अपनी ही तल्लीनता के बीच उसे सिसकते हुए सुना।

कुछ क्षणों के बाद बच्चा गायब हो गया।

सूरज डूब गया।

जीन वालजेन के चारों ओर अंधेरा छा रहा था। उसने दिन भर कुछ नहीं खाया था; संभवतः उसे बुखार था।

बच्चे के भाग जाने के बाद भी वह खड़ा रहा और उसके हावभाव में कोई बदलाव नहीं आया। उसकी साँसें लंबी और अनियमित अंतराल पर चल रही थीं। उसकी निगाहें दस-बारह कदम आगे टिकी हुई थीं और मानो घास में गिरे नीले मिट्टी के बर्तन के एक प्राचीन टुकड़े को गहन ध्यान से निहार रही हों। अचानक ही वह काँप उठा; उसे शाम की ठंडक महसूस होने लगी थी।

उसने अपनी टोपी को माथे पर और मजबूती से टिकाया, यंत्रवत रूप से अपनी कमीज को क्रॉस करके बटन लगाने की कोशिश की, एक कदम आगे बढ़ा और अपनी लाठी उठाने के लिए रुक गया।

उसी क्षण उसकी नज़र चालीस सू के सिक्के पर पड़ी, जो उसके पैर से आधा ज़मीन में धंस गया था और कंकड़ों के बीच चमक रहा था। मानो उसे बिजली का झटका लगा हो। "यह क्या है?" उसने दांत पीसते हुए बुदबुदाया। वह तीन कदम पीछे हटा, फिर रुक गया, उसकी नज़र उस जगह से हट ही नहीं रही थी जहाँ उसका पैर कुछ पल पहले पड़ा था, मानो अँधेरे में चमकती हुई वह चीज़ उस पर टकटकी लगाए किसी खुली आँख की तरह हो।

कुछ क्षणों के बीतने के बाद वह कांपते हुए चांदी के सिक्के की ओर दौड़ा, उसे पकड़ लिया और फिर सीधा खड़ा होकर दूर मैदान की ओर देखने लगा, साथ ही क्षितिज के सभी बिंदुओं पर अपनी निगाहें गड़ाए हुए था, जैसे कोई भयभीत जंगली जानवर शरण मांग रहा हो।

उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। रात ढल रही थी, मैदान ठंडा और धुंधला था, गोधूलि की हल्की रोशनी में बैंगनी धुंध के बड़े-बड़े बादल उठ रहे थे।

उसने “आह!” कहा और तेज़ी से उस दिशा में चल पड़ा जिधर बच्चा गायब हुआ था। लगभग तीस कदम चलने के बाद वह रुका, चारों ओर देखा और उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया।
फिर उसने पूरी ताकत से चिल्लाकर कहा:—
“नन्हा गेर्विस! नन्हा गेर्विस!”
वह रुका और इंतजार करने लगा।
कोई जवाब नहीं था।
परिदृश्य उदास और सुनसान था। वह अंतरिक्ष से घिरा हुआ था। उसके चारों ओर कुछ भी नहीं था सिवाय एक धुंधलेपन के जिसमें उसकी निगाहें खो गईं, और एक सन्नाटा जिसने उसकी आवाज़ को निगल लिया।
उत्तर दिशा से बर्फीली हवा चल रही थी, और आसपास की चीजों में एक तरह की उदासी छाई हुई थी। झाड़ियाँ अपनी पतली-पतली शाखाओं को अविश्वसनीय क्रोध से हिला रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो वे किसी को धमका रही हों और उसका पीछा कर रही हों।
वह फिर से अपनी यात्रा पर निकल पड़ा, फिर दौड़ने लगा; और समय-समय पर रुककर उस एकांत में सबसे भयावह और सबसे निराशाजनक आवाज में चिल्लाता, "नन्हा गेर्विस! नन्हा गेर्विस!"
अगर बच्चे ने उसकी आवाज़ सुनी होती, तो वह ज़रूर घबरा जाता और अपनी मौजूदगी छिपाने का पूरा ध्यान रखता। लेकिन बच्चा निस्संदेह बहुत दूर जा चुका था। उसकी मुलाकात घोड़े पर सवार एक पुजारी से हुई। वह उसके पास गया और बोला:— “महाशय पादरी जी, क्या आपने किसी बच्चे को गुजरते देखा है?”
“नहीं,” पुजारी ने कहा।
“लिटिल गेर्विस नाम का एक व्यक्ति?”
मैंने किसी को नहीं देखा है।
उसने अपने पर्स से पांच-पांच फ्रैंक के दो सिक्के निकाले और पुजारी को दे दिए।

“महाशय क्यूरे, यह आपके गरीब लोगों के लिए है। महाशय क्यूरे, वह एक छोटा लड़का था, लगभग दस साल का, जिसके पास एक मार्मोट (एक प्रकार का चूहा) और एक हर्डि-गर्डि (एक प्रकार का वाद्य यंत्र) था। आप जानते हैं, वह उन सैवॉयर्ड लोगों में से एक था?”

"मैने उसको नहीं देखा है।"

“लिटिल गेर्विस? यहाँ कोई गाँव नहीं हैं? क्या आप मुझे बता सकते हैं?”

“अगर वो वैसा ही है जैसा तुम कह रहे हो, मेरे दोस्त, तो वो थोड़ा अजनबी है। ऐसे लोग यहाँ से गुज़रते रहते हैं। हम उनके बारे में कुछ नहीं जानते।”

जीन वालजेन ने जबरदस्ती पांच-पांच फ्रैंक के दो और सिक्के छीन लिए और उन्हें पुजारी को दे दिया।

उन्होंने कहा, "तुम्हारे गरीबों के लिए।"

फिर उसने बेतहाशा कहा:—

“महाशय अब्बे, मुझे गिरफ्तार करवा दीजिए। मैं चोर हूँ।”

पुजारी ने अपने घोड़े को एड़ी मारी और घबराकर जल्दी से भाग गया।

जीन वाल्जेन उसी दिशा में दौड़ने लगा, जिस दिशा में वह पहले गया था।

इस तरह वह काफी दूर तक देखता, पुकारता, चिल्लाता रहा, लेकिन उसे कोई नहीं मिला। दो-तीन बार वह मैदान में किसी ऐसी चीज़ की ओर दौड़ा जो उसे किसी मनुष्य के लेटे या बैठे होने का आभास दे रही थी; लेकिन वह केवल झाड़ियाँ या लगभग ज़मीन के बराबर चट्टानें निकलीं। अंत में, एक ऐसी जगह पर जहाँ तीन रास्ते आपस में मिलते थे, वह रुक गया। चाँद निकल आया था। उसने दूर तक देखा और आखिरी बार चिल्लाया, “छोटा गेर्विस! छोटा गेर्विस! छोटा गेर्विस!” उसकी आवाज़ धुंध में गुम हो गई, बिना कोई गूँज पैदा किए। उसने एक बार फिर बुदबुदाया, “छोटा गेर्विस!” लेकिन कमजोर और लगभग अस्पष्ट आवाज़ में। यह उसका आखिरी प्रयास था; उसके पैर अचानक लड़खड़ा गए, मानो किसी अदृश्य शक्ति ने अचानक उसके बुरे अंतरात्मा के बोझ से उसे दबा दिया हो; वह थककर एक बड़े पत्थर पर गिर पड़ा, उसकी मुट्ठियाँ उसके बालों में जकड़ी हुई थीं और उसका चेहरा उसके घुटनों पर था, और वह चिल्लाया, "मैं एक अभागा हूँ!"

फिर उसका दिल फूट पड़ा और वह रोने लगा। उन्नीस साल में यह पहली बार था जब वह रोया था।

जब जीन वाल्जेन बिशप के घर से निकले, तो जैसा कि हमने देखा है, वे अब तक जो भी सोचते आए थे, उससे पूरी तरह से विचलित हो चुके थे। वे अपने भीतर चल रहे बदलावों को स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। उन्होंने उस बूढ़े व्यक्ति के नेक इरादों और कोमल शब्दों के बावजूद खुद को कठोर बना लिया। “तुमने मुझसे एक ईमानदार व्यक्ति बनने का वादा किया था। मैं तुम्हारी आत्मा खरीदता हूँ। मैं इसे कुटिलता की भावना से मुक्त करता हूँ; मैं इसे अच्छे ईश्वर को सौंपता हूँ।”

यह विचार उनके मन में बार-बार आता रहा। इस दिव्य दया के विरुद्ध उन्होंने अहंकार का विरोध किया, जो हमारे भीतर बुराई का गढ़ है। उन्हें अस्पष्ट रूप से यह अहसास था कि इस पुजारी की क्षमा उनके लिए अब तक का सबसे बड़ा और सबसे कठिन प्रहार था; कि यदि उन्होंने इस दया का विरोध किया तो उनकी हठधर्मिता अंततः दृढ़ हो जाएगी; कि यदि वे झुक गए, तो उन्हें उस घृणा को त्यागना पड़ेगा जिससे अन्य लोगों के कार्यों ने इतने वर्षों तक उनकी आत्मा को भर दिया था और जो उन्हें प्रसन्न करती थी; कि इस बार या तो जीतना था या हारना था; और उनके दुष्ट स्वभाव और उस व्यक्ति की अच्छाई के बीच एक संघर्ष, एक विशाल और अंतिम संघर्ष, शुरू हो चुका था।

इन प्रकाशों की उपस्थिति में, वह एक नशे में धुत व्यक्ति की तरह आगे बढ़ रहा था। क्या थकी हुई आँखों से इस प्रकार चलते हुए उसे इस बात का स्पष्ट आभास था कि डी⸺ में उसके इस साहसिक कार्य का क्या परिणाम होगा? क्या वह उन सभी रहस्यमयी फुसफुसाहटों को समझ पा रहा था जो जीवन के कुछ क्षणों में आत्मा को चेतावनी देती हैं या उसे प्रेरित करती हैं? क्या किसी आवाज़ ने उसके कान में फुसफुसाया कि उसने अभी-अभी अपने भाग्य का गंभीर क्षण पार किया है; कि अब उसके लिए कोई मध्य मार्ग नहीं बचा है; कि यदि वह अब से सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति नहीं बना, तो वह सबसे बुरा होगा; कि अब उसके लिए, एक तरह से, बिशप से भी ऊँचा उठना या कैदी से भी नीचे गिरना आवश्यक है; कि यदि वह अच्छा बनना चाहता है तो उसे देवदूत बनना होगा; कि यदि वह बुरा बने रहना चाहता है तो उसे राक्षस बनना होगा?

यहां फिर से कुछ सवाल उठने चाहिए, जो हमने पहले भी कहीं और पूछे हैं: क्या उसने अपने विचारों में इन सब बातों की कोई झलक देखी, वह भी उलझन भरे अंदाज़ में? जैसा कि हमने कहा है, दुर्भाग्य निश्चित रूप से बुद्धि को शिक्षित करता है; फिर भी, यह संदेहजनक है कि जीन वालजेन उन सभी बातों को सुलझाने की स्थिति में था जिनका हमने यहां उल्लेख किया है। यदि ये विचार उसके मन में आए भी, तो उसने उन्हें देखा नहीं, बल्कि उनकी झलक मात्र देखी, और वे केवल उसे एक अवर्णनीय और लगभग पीड़ादायक भावनात्मक स्थिति में डाल पाए। उस काले और विकृत ढांचे से बाहर निकलते ही, जिसे गैली कहा जाता है, बिशप की आत्मा को ऐसा आघात पहुंचा था, जैसे अंधेरे से बाहर निकलने पर तेज रोशनी उसकी आंखों को चुभती है। भविष्य का जीवन, वह संभावित जीवन जो अब उसके सामने प्रकट होने वाला था, पूर्णतः शुद्ध और उज्ज्वल, उसे कंपकंपी और चिंता से भर रहा था। उसे अब पता नहीं था कि वह वास्तव में कहां है। जैसे कोई उल्लू अचानक सूर्योदय देख ले, वैसे ही वह कैदी मानो सद्गुण से चकाचौंध और अंधा हो गया था।

जो बात निश्चित थी, जिस पर उसे कोई संदेह नहीं था, वह यह थी कि वह अब पहले जैसा व्यक्ति नहीं रहा, उसके बारे में सब कुछ बदल गया था, और अब उसके बस में यह नहीं था कि वह ऐसा दिखा सके जैसे बिशप ने उससे बात नहीं की थी और उसे छुआ भी नहीं था।

इसी मनोस्थिति में उसका सामना छोटे गेर्विस से हुआ और उसने उससे चालीस सू चुरा लिए। क्यों? वह निश्चित रूप से इसका कारण नहीं बता सकता था; क्या यह उन बुरे विचारों का अंतिम प्रभाव और सर्वोच्च प्रयास था जो वह जहाजों से अपने साथ लाया था—एक आवेग का अवशेष, जिसे स्थैतिकी में "अर्जित बल" कहा जाता है? यह वही था, और शायद इससे भी कम। सीधे शब्दों में कहें तो, चोरी उसने नहीं की थी; यह वह व्यक्ति नहीं था; यह वह जानवर था, जिसने आदत और सहज प्रवृत्ति से, बस अपना पैर उस पैसे पर रख दिया था, जबकि उसकी बुद्धि अनगिनत नए और अनसुने विचारों से जूझ रही थी।

जब बुद्धि जागृत हुई और उसने उस क्रूर व्यक्ति की उस हरकत को देखा, तो जीन वालजेन पीड़ा से पीछे हट गया और भय से चीख उठा।

ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि—एक विचित्र घटना, और जो केवल उसी स्थिति में संभव थी जिसमें वह खुद को पाया—उस बच्चे से पैसे चुराने में, उसने एक ऐसा काम किया था जिसके लिए वह अब सक्षम नहीं था।

चाहे जो भी हो, इस अंतिम बुरे कृत्य का उस पर निर्णायक प्रभाव पड़ा; इसने उसके मन में व्याप्त उस अराजकता को अचानक पार कर दिया और उसे बिखेर दिया, एक तरफ घोर अंधकार को और दूसरी तरफ प्रकाश को ला खड़ा किया, और उसकी आत्मा पर, उस समय की उसकी स्थिति में, उसी प्रकार प्रभाव डाला जैसे कुछ रासायनिक अभिकर्मक एक अशांत मिश्रण पर एक तत्व को अवक्षेपित करके दूसरे को स्पष्ट करते हैं।

सबसे पहले, आत्मनिरीक्षण और चिंतन करने से पहले ही, वह पूरी तरह से भ्रमित होकर, मानो स्वयं को बचाने की कोशिश कर रहा हो, बच्चे को ढूंढने और उसे उसका पैसा लौटाने का प्रयास करने लगा; फिर, जब उसे यह एहसास हुआ कि यह असंभव है, तो वह निराशा में डूब गया। जिस क्षण उसने "मैं एक अभागा हूँ!" कहा, उसी क्षण उसे अपनी वास्तविकता का अहसास हुआ, और वह स्वयं से इस हद तक अलग हो चुका था कि वह स्वयं को एक प्रेत मात्र प्रतीत होने लगा, और मानो उसके सामने साक्षात, रक्त और मांस में, वह भयानक कैदी, जीन वालजेन, हाथ में लाठी लिए, कमर पर कमीज, पीठ पर चोरी की वस्तुओं से भरा थैला, दृढ़ और उदास चेहरे के साथ, घृणित योजनाओं से भरे विचारों के साथ खड़ा था।

जैसा कि हमने पहले भी उल्लेख किया है, अत्यधिक दुख ने उन्हें एक प्रकार का स्वप्नद्रष्टा बना दिया था। यह एक प्रकार का स्वप्न था। उन्होंने वास्तव में जीन वालजेन को, उस भयावह चेहरे को, अपने सामने देखा। वे लगभग यह पूछने ही वाले थे कि वह व्यक्ति कौन है, और वे उसे देखकर भयभीत हो गए।

उसका दिमाग एक ऐसे तीव्र और फिर भी पूर्णतः शांत क्षण से गुजर रहा था, जिसमें कल्पना इतनी गहरी होती है कि वह वास्तविकता को भी आत्मसात कर लेती है। व्यक्ति अपने सामने मौजूद वस्तु को नहीं देख पाता, बल्कि मानो स्वयं से अलग होकर अपने मन में बनी आकृतियों को देखता है।

इस प्रकार उसने मानो स्वयं को आमने-सामने देखा, और उसी समय, इस भ्रम के आर-पार, उसने एक रहस्यमय गहराई में एक प्रकार का प्रकाश देखा जिसे उसने पहले मशाल समझा। अपने अंतरात्मा को दिखाई देने वाले इस प्रकाश का अधिक

ध्यानपूर्वक अवलोकन करने पर, उसने यह तथ्य पहचाना कि इसका एक मानवीय रूप था और यह मशाल बिशप थी।

उसके अंतरात्मा ने बारी-बारी से अपने सामने रखे इन दो व्यक्तियों—बिशप और जीन वालजेन—का मूल्यांकन किया। पहले के बिना दूसरे का भाव शांत नहीं हो सकता था। इस प्रकार की समाधि की अवस्था में होने वाले उन विलक्षण प्रभावों में से एक के कारण, जैसे-जैसे उसकी तन्मयता बढ़ती गई, बिशप उसकी आँखों में विशाल और तेजस्वी होता गया, वैसे-वैसे जीन वालजेन छोटा होता गया और लुप्त होता चला गया। कुछ समय बाद वह मात्र एक परछाई बनकर रह गया। अचानक वह गायब हो गया। केवल बिशप ही शेष रह गया; उसने इस दुखी व्यक्ति की आत्मा को एक अद्भुत प्रकाश से भर दिया।

जीन वाल्जेन बहुत देर तक रोता रहा। वह जलते हुए आंसू बहाता रहा, वह एक औरत से भी ज्यादा कमजोरी से, एक बच्चे से भी ज्यादा डर से सिसकता रहा।

जैसे-जैसे वह रोता गया, उसके मन में दिन का प्रकाश और भी स्पष्ट रूप से प्रवेश करता गया; एक असाधारण प्रकाश; एक ऐसा प्रकाश जो एक साथ मोहक और भयानक था। उसका पिछला जीवन, उसका पहला दोष, उसका लंबा प्रायश्चित, उसकी बाहरी क्रूरता, उसकी आंतरिक कठोरता, उसकी मुक्ति, प्रतिशोध की अनेक योजनाओं में आनंदित होना, बिशप के यहाँ उसके साथ जो हुआ था, उसका आखिरी काम, एक बच्चे से चालीस सूस की चोरी, एक ऐसा अपराध जो बिशप की क्षमा के बाद हुआ था और भी कायरतापूर्ण और भयावह था—यह सब उसके मन में फिर से आ गया और उसे स्पष्ट रूप से दिखाई दिया, लेकिन ऐसी स्पष्टता के साथ जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसने अपने जीवन का विश्लेषण किया, और वह उसे भयावह लगा; अपनी आत्मा का, और वह उसे डरावनी लगी। इसी बीच एक कोमल प्रकाश उसके जीवन और उसकी आत्मा पर छा गया। उसे ऐसा लगा मानो वह स्वर्ग के प्रकाश में शैतान को देख रहा हो।

वह कितने घंटे तक इस तरह रोता रहा? रोने के बाद उसने क्या किया? वह कहाँ गया! यह बात कोई नहीं जान पाया। एकमात्र प्रामाणिक तथ्य यह प्रतीत होता है कि उसी रात, उस समय ग्रेनोबल में सेवा देने वाला वह संदेशवाहक, जो सुबह लगभग तीन बजे डी⸺ पहुँचा, जब वह उस गली से गुज़र रहा था जहाँ बिशप का निवास स्थान स्थित था, तो उसने एक व्यक्ति को प्रार्थना की मुद्रा में,

प्रार्थना स्थल पर, छाया में, महाशय वेलकम के दरवाजे के सामने घुटने टेकते हुए देखा।

भाग **III.** वर्ष **1817** में

I. वर्ष 1817

सन् 1817 वह वर्ष है जिसे लुई XVIII ने, अपने गौरव से भरपूर शाही आत्मविश्वास के साथ, अपने शासनकाल का बाईसवाँ वर्ष घोषित किया। यह वही वर्ष है जिसमें एम. ब्रुगुइरे डी सोर्सम का उत्सव मनाया गया। शाही पक्षी की वापसी की आशा में, सभी हेयरड्रेसर की दुकानें नीले रंग से रंगी हुई थीं और लिली के फूलों से सजी हुई थीं। यह वह स्पष्ट समय था जब काउंट लिंच प्रत्येक रविवार को सेंट-जर्मेन-डेस-प्रेज़ के चर्चवार्डन के पद पर, फ्रांस के एक कुलीन व्यक्ति की वेशभूषा में, लाल रिबन, लंबी नाक और एक ऐसे व्यक्ति के विशिष्ट व्यक्तित्व के साथ बैठते थे जिसने कोई असाधारण कार्य किया हो। एम. लिंच द्वारा किया गया असाधारण कार्य यह था: 12 मार्च, 1814 को बोर्डो के मेयर रहते हुए, उन्होंने शहर को ड्यूक डी'एंगौलेम को कुछ जल्दबाजी में ही सौंप दिया था। इसी कारण उन्हें कुलीन उपाधि प्राप्त हुई। 1817 में फैशन ने चार से छह साल के छोटे लड़कों को मोरक्को चमड़े की विशाल टोपियों में समेट लिया, जिनमें एस्किमो मिट्रे जैसी कान की पट्टियाँ लगी होती थीं। फ्रांसीसी सेना ऑस्ट्रियाई सेना की तरह सफेद वर्दी में थी; रेजिमेंटों को लीजन कहा जाता था; संख्याओं के बजाय विभागों के नाम लिखे होते थे; नेपोलियन सेंट हेलेना में था; और चूंकि इंग्लैंड ने उसे हरा कपड़ा देने से इनकार कर दिया था, इसलिए वह अपने पुराने कोटों को फिर से बनवा रहा था। 1817 में पेलिग्रिनी ने गीत गाए; मैडमोजेल बिगोटिनी ने नृत्य किया; पोटियर का शासन था; ओड्री का अस्तित्व अभी नहीं था। मैडम साकी ने फोरियोसो का स्थान लिया था। फ्रांस में अभी भी प्रशियाई लोग मौजूद थे। एम. डेलालोट एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। वैधता ने अभी-अभी प्लेग्नियर, कार्बोन्यू और टोलरॉन के हाथ और फिर सिर काटकर अपनी पहचान स्थापित की थी। प्रिंस डी टैलीरैंड, ग्रैंड चैंबरलेन, और नियुक्त वित्त मंत्री, अब्बे लुई, एक-दूसरे को देखकर हँसे, मानो दो भविष्यवक्ता हँस रहे हों; दोनों ने 14 जुलाई, 1790 को चैंप डी मार्स में संघ की प्रार्थना सभा में भाग लिया था; टैलीरैंड ने बिशप के रूप में प्रार्थना की थी, जबकि लुई ने डीकन के रूप में सेवा की थी। 1817 में, इसी चैंप डी मार्स की गलियों में, बारिश में

भीगते हुए, घास के बीच सड़ते हुए लकड़ी के दो बड़े सिलेंडर दिखाई देते थे, जो नीले रंग से रंगे हुए थे, जिन पर चील और मधुमक्खियों के निशान थे, और जिनकी सुनहरी परत उतर रही थी। ये वही स्तंभ थे जिन्होंने दो साल पहले चैंप डी माई में सम्राट के चबूतरे को सहारा दिया था। ग्रोस-कैलो के पास डेरा डाले ऑस्ट्रियाई लोगों के शिविर के कारण वे जगह-जगह से काले पड़ गए थे। इन शिविरों की आग में इनमें से दो या तीन स्तंभ गायब हो गए थे और उन्होंने शाही सैनिकों के बड़े-बड़े हाथों को गर्म किया था। मई के मैदान की एक खास बात यह थी कि यह जून और मार्च (मार्च) के मैदान में आयोजित किया गया था। इस वर्ष, 1817 में, दो चीजें लोकप्रिय थीं: वोल्टेयर-टौकेट और चार्टर शैली की स्नफ़बॉक्स। पेरिस में हाल ही में सनसनी मचाने वाली घटना दाउतुन का अपराध था, जिसने अपने भाई का सिर फूल बाजार के फव्वारे में फेंक दिया था।

नौसेना विभाग में चिंता बढ़ने लगी थी, क्योंकि उस घातक फ्रिगेट, मेडुसा, से कोई खबर नहीं मिल रही थी, जिसके कारण चौमारेक्स बदनाम हुए और गेरिकॉल्ट गौरव प्राप्त करने वाले थे। कर्नल सेल्व्स मिस्र जा रहे थे, जहाँ उन्हें सुलेमान-पाशा बनना था। रू डे ला हार्प में स्थित थर्मेस का महल एक बढ़ई की दुकान के रूप में इस्तेमाल हो रहा था। होटल डे क्लुनी के अष्टकोणीय टावर के चबूतरे पर, तख्तों से बनी वह छोटी सी झोपड़ी, जो लुई सोलहवें के अधीन नौसेना के खगोलशास्त्री मेसियर की वेधशाला हुआ करती थी, अब भी दिखाई दे रही थी। ड्यूशेस डे ड्यूरास अपने तीन-चार मित्रों को अपनी अप्रकाशित रचना 'ओरिका' पढ़कर सुना रही थीं, जो उनके नीले साटन के कमरे में X द्वारा सजाई गई थी। लूव्र संग्रहालय से 'N' अक्षर मिटा दिए गए थे। ऑस्टरलिट्ज़ पुल का नाम बदलकर राजा के उद्यान का पुल रख दिया गया था, एक दोहरा रहस्य, जिसने एक ही झटके में ऑस्टरलिट्ज़ पुल और जार्डिन डेस प्लांट्स को छिपा दिया था। लुई 18 वीं, होरेस की रचनाओं पर अपने नाखून के कोने से टिप्पणी करते हुए, सम्राट बने नायकों और राजकुमार बने लकड़ी के जूतों के निर्माताओं के बारे में सोचते हुए, दो चिंताओं से ग्रस्त थे—नेपोलियन और मैथुरिन ब्रूनो। फ्रांसीसी अकादमी ने अपने पुरस्कार के लिए विषय चुना था, "अध्ययन के माध्यम से प्राप्त सुख।" एम. बेलार्ट आधिकारिक तौर पर वाक्पटु थे। उनकी छाया में भविष्य के ब्रोए के एडवोकेट-जनरल की प्रतिभा पनपती देखी जा सकती थी, जो पॉल-लुई कूरियर के व्यंग्यों के प्रति समर्पित थे। इस बीच,

मार्चेंगी नाम का एक नकली चेटोब्रियांड था, जब तक कि डी'आर्लिनकोर्ट नाम का एक नकली मार्चेंगी नहीं आ गया। क्लेयर डी'अल्बे और मालेक-एडेल उत्कृष्ट रचनाएँ थीं; मैडम कॉटिन को युग की प्रमुख लेखिका घोषित किया गया। संस्थान ने शिक्षाविद नेपोलियन बोनापार्ट का नाम अपने सदस्यों की सूची से हटा दिया। एक शाही अध्यादेश द्वारा अंगौलेम को नौसेना विद्यालय घोषित किया गया; ड्यूक डी'अंगौलेम, जो लॉर्ड हाई एडमिरल थे, के लिए यह स्पष्ट था कि अंगौलेम शहर में एक बंदरगाह के सभी गुण मौजूद थे; अन्यथा राजशाही सिद्धांत को ठेस पहुँचती। मंत्रिपरिषद में इस बात पर बहस हुई कि क्या फ़्रैंकोनी के विज्ञापन पोस्टरों पर छपे, ढीली रस्सी के करतबों को दर्शाने वाले चित्र, जो गली के बच्चों की भीड़ को आकर्षित करते थे, को बर्दाश्त किया जाना चाहिए। एम. पेयर, जिन्होंने एग्नेस नामक उपन्यास लिखा था, एक अच्छे स्वभाव के व्यक्ति थे, जिनका चेहरा चौकोर था और गाल पर एक मस्सा था। वे रुए विले ल'एवेक में मार्क्विज़ डी सासेनाये के छोटे निजी संगीत कार्यक्रमों का निर्देशन करते थे। सभी युवतियाँ एडमंड गेराउड के शब्दों में रचित "संत-एवेले का साधु" गा रही थीं। "पीला बौना" मिरर में रूपांतरित हो गया था। कैफ़े लेम्बलिन सम्राट के पक्ष में खड़ा था, जबकि कैफ़े वालोइस बॉर्बोन वंश का समर्थन कर रहा था। ड्यूक डी बेरी, जिस पर लूवेल पहले से ही छाया डाल रहा था, ने अभी-अभी सिसिली की एक राजकुमारी से शादी की थी। मैडम डी स्टेल की एक साल पहले मृत्यु हो गई थी। अंगरक्षक ने मैडमोजेल मार्स कहकर ताना मारा। सभी बड़े समाचार पत्र बहुत छोटे थे। उनका स्वरूप सीमित था, लेकिन उनकी स्वतंत्रता असीमित थी। कॉन्स्टिट्यूशनल संवैधानिक था। ला मिनर्व ने शैतोब्रियां को "शैतोब्रियांट" कहा। इस बात पर मध्यम वर्ग के लोग महान लेखक का मज़ाक उड़ाते हुए दिल खोलकर हँसे। खुद को बेचने वाली पत्रिकाओं में, पत्रकारों का शोषण किया गया, और 1815 के निर्वासितों का अपमान किया गया। डेविड में अब कोई प्रतिभा नहीं बची थी, अर्नोल्ट में अब कोई बुद्धि नहीं बची थी, कार्नोट अब ईमानदार नहीं था, और सोल्ट ने कोई लड़ाई नहीं जीती थी। यह सच है कि नेपोलियन में अब कोई प्रतिभा नहीं बची थी। यह बात सर्वविदित है कि डाक द्वारा निर्वासित व्यक्ति को भेजे गए पत्र बहुत कम ही पहुँच पाते थे, क्योंकि पुलिस उन्हें रोकना अपना कर्तव्य समझती थी। यह कोई नई बात नहीं है; डेसकार्टेस ने भी अपने निर्वासन में इसकी शिकायत की थी। अब डेविड ने एक बेल्जियम प्रकाशन में अपने नाम लिखे पत्र न मिलने पर कुछ

नाराजगी व्यक्त की, जिसे राजशाही समर्थक पत्रिकाओं ने हास्यास्पद पाया; और उन्होंने इस अवसर पर उस व्यक्ति का खूब उपहास किया। दो व्यक्तियों को एक खाई से भी अधिक अलग करने वाला अंतर था, राजा की हत्या करने वाले और मतदाता; शत्रु और सहयोगी; नेपोलियन और बोनापार्ट। सभी समझदार लोग इस बात पर सहमत थे कि क्रांति का युग राजा लुई XVIII, जिन्हें "चार्टर के अमर लेखक" के नाम से जाना जाता था, द्वारा हमेशा के लिए समाप्त कर दिया गया था। पोंट-नेउफ के चबूतरे पर, हेनरी IV की प्रतिमा के लिए बने आधार पर "रेडिविवस" शब्द उकेरा गया था। श्री पीट, रुए थेरेसे, नंबर 4 में, राजशाही को सुदृढ़ करने के लिए अपनी निजी सभा का मसौदा तैयार कर रहे थे। दक्षिणपंथी नेता गंभीर परिस्थितियों में कहते थे, "हमें बैकोट को पत्र लिखना चाहिए।" श्रीमान कैनुएल, ओ'माहोनी और डी चैपडेलेन, कुछ हद तक महाशय की स्वीकृति से, उस योजना का खाका तैयार कर रहे थे जो बाद में "बोर्ड डे ल'ओ का षड्यंत्र" (जलतटीय षड्यंत्र) के नाम से प्रसिद्ध हुई। ल'एपिंगल नोइरे पहले से ही अपने क्षेत्र में साजिश रच रहे थे। डेलावेरडेरी, ट्रोगोफ के साथ परामर्श कर रहे थे। उदारवादी श्री डेकाज़ का शासन था। शैटोब्रिएंड हर सुबह 27 सेंट-डोमिनिक स्ट्रीट स्थित अपनी खिड़की पर, पैरों वाली पतलून और चप्पल पहने, अपने सफ़ेद बालों पर मद्रास का रुमाल बाँधे, एक दर्पण में अपनी निगाहें गड़ाए खड़े रहते थे। उनके सामने दंत चिकित्सक के सभी उपकरण फैले होते थे, जिनसे वे अपने आकर्षक दाँत साफ़ करते थे, और साथ ही अपने सचिव एम. पिलॉर्ज को 'द मोनार्की अकॉर्डिंग टू द चार्टर' लिखवाते थे। आलोचकों ने आधिकारिक लहजे में लाफ़ोन को तलमा से बेहतर माना। एम. डी फ़ेलेटेज़ ने अपने नाम से 'ए' लिखा; एम. हॉफ़मैन ने अपने नाम से 'जेड' लिखा। चार्ल्स नोडियर ने थेरेसे ऑबर्ट की रचना की। तलाक़ प्रथा समाप्त कर दी गई। लाइसेम ने खुद को कॉलेज कहना शुरू कर दिया। कॉलेज के छात्र, जिनके कॉलर पर सोने का लिली का फूल लगा होता था, रोम के राजा के विषय पर आपस में बहस करते थे। महल की पुलिस ने महारानी महोदया को हर जगह प्रदर्शित ड्यूक डी'ऑरलियन्स के चित्र की शिकायत की थी, जिसमें वे हसारों के कर्नल-जनरल की वर्दी में ड्यूक डी बेरी की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक लग रहे थे, जबकि ड्यूक डी बेरी ड्रैगूनों के कर्नल-जनरल की वर्दी में थे—यह एक गंभीर असुविधा थी। पेरिस शहर अपने खर्च पर इनवैलिड्स के गुंबद का पुनर्स्वर्णीकरण करवा रहा था। गंभीर लोग आपस में सवाल कर रहे थे कि मे. डी ट्रिनक्वेलाग्यू अमुक अवसर पर

क्या करेंगे; मे. क्लॉज़ल डी मोंटाल कई मामलों में मे. क्लॉज़ल डी कौसेर्ग्यूज़ से असहमत थे; मे. डी सलाबेरी संतुष्ट नहीं थे। हास्य कलाकार पिकार्ड, जो अकादमी के सदस्य थे (जहां हास्य कलाकार मोलियर नहीं पहुंच पाए थे), ने ओडियन में 'द टू फिलिबर्ट्स' का मंचन करवाया, जिसके अग्रभाग पर अक्षरों को हटाने के बाद भी "महारानी का रंगमंच" स्पष्ट रूप से पढ़ा जा सकता था। लोग कुगनेट डी मोंटार्लोट के पक्ष और विपक्ष में अपनी-अपनी राय दे रहे थे। फैबवियर गुटबाज़ी में लिप्त थे; बावौक्स क्रांतिकारी थे। उदारवादी पेलिसियर ने वोल्टेयर की रचनाओं का एक संस्करण प्रकाशित किया, जिसका शीर्षक था: फ्रांसीसी अकादमी द्वारा वोल्टेयर की रचनाएँ। चतुर संपादक ने कहा, "इससे खरीदार आकर्षित होंगे।" आम राय यह थी कि एम. चार्ल्स लॉयसन सदी के महान प्रतिभावान व्यक्ति होंगे; उनके प्रति ईर्ष्या पनपने लगी थी—यह गौरव का संकेत था; और उन्हीं पर यह कविता रची गई:—

जब लॉयसन चोरी करता है, तब भी ऐसा लगता है मानो उसके पंजे हों।

कार्डिनल फेश के इस्तीफ़ा देने से इनकार करने पर, अमासी के आर्कबिशप एम. डी पिन्स ने ल्योंस के धर्मप्रांत का प्रशासन संभाला। डैप्स घाटी को लेकर स्विट्ज़रलैंड और फ्रांस के बीच विवाद कैप्टन, जो बाद में जनरल डफौर बने, के एक संस्मरण से शुरू हुआ। उपेक्षित सेंट-साइमन अपने भव्य सपने को साकार करने में लगे थे। विज्ञान अकादमी में एक प्रसिद्ध फोरियर थे, जिन्हें आने वाली पीढ़ियाँ भूल चुकी हैं; और किसी तहखाने में एक गुमनाम फोरियर थे, जिन्हें भविष्य याद रखेगा। लॉर्ड बायरन अपनी पहचान बनाने लगे थे; मिलेवोये की एक कविता पर लिखे एक नोट में उन्हें फ्रांस में इन शब्दों से परिचित कराया गया: "एक निश्चित लॉर्ड बैरन।" डेविड डी'एंगर्स संगमरमर में काम करने की कोशिश कर रहे थे। एब्बे कैरन, फ्यूइलेंटाइन्स की संकरी गली में सेमिनारियों की एक निजी सभा में, फेलिसिटे-रॉबर्ट नामक एक अज्ञात पादरी की प्रशंसा कर रहे थे, जो बाद में लैमेनैस बन गए। सीन नदी पर तैरते कुत्ते की तरह धुआँ छोड़ती और खड़खड़ाती एक चीज़ ट्यूलरीज़ की खिड़कियों के नीचे, पोंट रॉयल से पोंट लुई XV तक आती-जाती रही; यह एक मशीनी चीज़ थी जो किसी काम की नहीं थी; एक तरह का खिलौना, किसी सपने में डूबे आविष्कारक का बेकार सपना; एक कल्पना—एक स्टीमबोट। पेरिसवासी इस बेकार चीज़ को उदासीनता से देखते रहे। एम. डी वाउब्लैंक, जिन्होंने तख्तापलट करके

संस्थान का सुधार किया, कई शिक्षाविदों, अध्यादेशों और सदस्यों के समूहों के प्रतिष्ठित लेखक, इन्हें बनाने के बाद स्वयं एक सदस्य बनने में सफल नहीं हो सके। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन और पैवेलियन डी मार्सन, एम. डेलावेउ को उनकी धार्मिकता के कारण पुलिस प्रमुख बनाना चाहते थे। डुप्यूट्रेन और रेकामियर ने चिकित्सा विद्यालय के एम्फीथिएटर में यीशु मसीह की दिव्यता के विषय पर झगड़ा किया और एक-दूसरे को मुक्कों से धमकाया। क्यूवियर ने एक ओर उत्पत्ति की पुस्तक और दूसरी ओर प्रकृति पर ध्यान केंद्रित करते हुए, जीवाश्मों को ग्रंथों के साथ सामंजस्य बिठाकर और मैस्टोडॉन को मूसा की चापलूसी करते हुए दिखाकर कट्टरपंथी प्रतिक्रियाओं को प्रसन्न करने का प्रयास किया।

एम. फ़्रांस्वा डी न्यूफ़चेटो, पारमेंटियर की स्मृति के प्रशंसनीय संरक्षक, ने पोम्मे डे टेरे (एक प्रकार का आलू) को पारमेंटियर उच्चारित करवाने के लिए हज़ार प्रयास किए, लेकिन वे इसमें बिल्कुल भी सफल नहीं हुए। पूर्व बिशप, पूर्व सम्मेलन सदस्य और पूर्व सीनेटर, अब्बे ग्रेगोइरे, राजशाही विवादों में "बदनाम ग्रेगोइरे" के नाम से जाने जाते थे। जिस मुहावरे का हमने प्रयोग किया है—"के नाम से जाना जाने लगा"—को एम. रॉयर कोलार्ड ने नवशब्द कहकर निंदा की है। पोंट डे जेना के तीसरे मेहराब के नीचे, वह नया पत्थर जिससे दो साल पहले ब्लुचर द्वारा पुल को उड़ाने के लिए बनाए गए खनन छेद को बंद किया गया था, अपनी सफेदी के कारण अभी भी पहचाना जा सकता था। न्याय ने एक ऐसे व्यक्ति को कटघरे में बुलाया, जिसने कॉम्टे डी'आर्टोइस को नोट्रे डेम में प्रवेश करते देख ज़ोर से कहा था: "सप्रिस्टी! मुझे वह समय याद आता है जब मैंने बोनापार्ट और तलमा को बेल सौवेज में हाथ में हाथ डाले प्रवेश करते देखा था।" राजद्रोहपूर्ण कथन। छह महीने की जेल। देशद्रोहियों ने अपने निर्धन का प्रदर्शन किया; युद्ध की पूर्व संध्या पर शत्रु के पाले में चले गए लोगों ने अपने प्रतिफल को छिपाया नहीं और धन-दौलत और मान-सम्मान के नशे में दिन दहाड़े बेशर्मी से इतराते रहे; लिग्नी और क्वात्रे-ब्रास से भागे हुए सैनिकों ने अपने धन-दौलत से कमाए गए दुराचार की निर्लज्जता से राजशाही के प्रति अपनी निष्ठा को सबसे बेशर्मी से प्रदर्शित किया।

सन् 1817 के लिए यही सब अव्यवस्थित और बेतरतीब ढंग से उभरता है, और अब भुला दिया गया है। इतिहास लगभग इन सभी विवरणों की उपेक्षा करता है, और ऐसा करना उसके लिए अपरिहार्य है; अनंतता उसे अभिभूत कर देगी। फिर भी, ये विवरण, जिन्हें गलत तरीके से तुच्छ कहा जाता है—मानवता में कोई भी तथ्य तुच्छ नहीं होता, न ही वनस्पति में कोई छोटी पत्ती—उपयोगी हैं। वर्षों की संरचना से ही शताब्दियों की संरचना बनती है। सन् 1817 में चार युवा पेरिसवासियों ने "एक शानदार प्रहसन" का आयोजन किया।

II. एक डबल क्वार्टेट

ये पेरिसवासी आए थे, एक टूलूज़ से, दूसरा लिमोज से, तीसरा काहोर्स से और चौथा मोंटौबन से; लेकिन वे छात्र थे; और जब कोई छात्र कहता है, तो वह पेरिसवासी कहता है: पेरिस में अध्ययन करना पेरिस में जन्म लेने के समान है।

ये युवक मामूली थे; ऐसे चेहरे तो सबने देखे ही होंगे; मानवता के चार नमूने, जिन्हें बेतरतीब ढंग से चुना गया था; न अच्छे, न बुरे, न बुद्धिमान, न अज्ञानी, न प्रतिभाशाली, न मूर्ख; सुंदर, उस मनमोहक जवानी के साथ जिसे बीस साल कहा जाता है। वे चार ऑस्कर थे; क्योंकि उस युग में आर्थर का अस्तित्व ही नहीं था। "उसके लिए अरब की सुगंध जलाओ!" रोमांस ने पुकारा। "ऑस्कर आ रहा है। ऑस्कर, मैं उसे देखूंगी!" लोग अभी-अभी ओसियन से निकले थे; शालीनता स्कैंडिनेवियाई और कैलेडोनियन थी; शुद्ध अंग्रेजी शैली तो बाद में ही प्रचलित हुई, और आर्थर में से पहले, वेलिंगटन ने अभी-अभी वाटरलू की लड़ाई जीती थी।

इन ऑस्कर पुरस्कारों पर नाम अंकित थे: पहला फेलिक्स थोलोमीज़, टूलूज़ का; दूसरा लिस्टोलियर, काहोर्स का; तीसरा फेम्यूइल, लिमोज का; और तीसरा ब्लाचेवेल, मोंटौबन का। स्वाभाविक रूप से, उनमें से प्रत्येक की अपनी प्रेमिका थी। ब्लाचेवेल को फेवरेट से प्रेम था, जिसका नाम इंग्लैंड में रहने के कारण रखा गया था; लिस्टोलियर को डाहलिया से प्रेम था, जिसने एक फूल का नाम अपना उपनाम बना लिया था; फेम्यूइल को ज़ेफ़िन बहुत पसंद थी, जो जोसेफ़ीन का संक्षिप्त रूप था; थोलोमीज़ की प्रेमिका फैंटाइन थी, जिसे उसके सुंदर, सुनहरे बालों के कारण गोरी कहा जाता था।

फेवरेट, डाहलिया, ज़ेफ़िन और फैंटाइन चार बेहद खूबसूरत युवतियाँ थीं, इत्र से सजी और दमकती हुई, अभी भी कुछ हद तक कामकाजी महिलाओं जैसी, और अभी भी अपने काम से पूरी तरह अलग नहीं हुई थीं; कुछ हद तक षड्यंत्रों से परेशान, लेकिन फिर भी उनके चेहरों पर परिश्रम की शांति का कुछ अंश बाकी था, और उनकी आत्मा में ईमानदारी का वह फूल अभी भी बसा हुआ था जो स्त्रीत्व के पहले पतन

के बाद भी जीवित रहता है। चारों में से एक को 'युवा' कहा जाता था, क्योंकि वह उनमें सबसे छोटी थी, और एक को 'वृद्ध' कहा जाता था; वृद्ध तेईस वर्ष की थी।
कुछ भी छुपाने की जरूरत नहीं है, पहली तीन युवतियाँ फैंटाइन द ब्लॉन्ड की तुलना में अधिक अनुभवी, अधिक बेफिक्र और जीवन के कोलाहल में अधिक मुक्त थीं, जो अभी भी अपने शुरुआती भ्रमों में थी।

डाहलिया, ज़ेफ़िन और विशेष रूप से फ़ेवरेट, इतना कुछ नहीं कह सकती थीं। उनके प्रेम प्रसंग में, हालांकि अभी शुरुआत ही हुई थी, एक से अधिक घटनाएँ घट चुकी थीं; और पहले अध्याय में एडॉल्फ़ नाम से जाना जाने वाला प्रेमी दूसरे अध्याय में अल्फ़ोंस और तीसरे में गुस्ताव निकला। गरीबी और नखरे दो घातक सलाहकार हैं; एक डांटता है और दूसरा चापलूसी करता है, और जनता की सुंदर पुत्रियाँ इन दोनों की बातों को अपने-अपने पक्ष में सुनती हैं। ये भोली आत्माएँ इन बातों को सुनती हैं। इसीलिए वे गिरती हैं और उन पर पत्थर फेंके जाते हैं। वे हर उस चीज़ की भव्यता से अभिभूत हो जाती हैं जो निष्कलंक और दुर्गम है। हाय! अगर जुंगफ्राऊ भूखी होती तो क्या होता?

इंग्लैंड में रहने के कारण फेवरेट की डाहलिया और ज़ेफ़िन दोनों ही प्रशंसा करती थीं। उसने बहुत कम उम्र में ही अपना खुद का घर-बार बना लिया था। उसके पिता गणित के एक वृद्ध अविवाहित प्रोफेसर थे, जो एक क्रूर और शेखीबाज़ व्यक्ति थे और उम्र के बावजूद पढ़ाने जाते थे। जब वे युवा थे, एक दिन उन्होंने एक नौकरानी का गाउन कार के फेंडर में फंसते देखा; इसी घटना के कारण उन्हें उससे प्रेम हो गया। फेवरेट का जन्म हुआ। वह समय-समय पर अपने पिता से मिलती थी और वे उसे प्रणाम करते थे। एक सुबह एक भक्त जैसी दिखने वाली एक बूढ़ी औरत उसके कमरे में आई और उससे बोली, "क्या आप मुझे नहीं जानतीं, मैमेमोइसेल?" "नहीं।" "मैं तुम्हारी माँ हूँ।" फिर उस बूढ़ी औरत ने अलमारी खोली, खाना-पीना किया, अपना गद्दा मंगवाया और उस पर लेट गई। यह गुस्सैल और धर्मपरायण बूढ़ी माँ फेवरेट से कभी बात नहीं करती थी, घंटों तक एक शब्द भी नहीं बोलती थी, चार लोगों के लिए नाश्ता, दोपहर का भोजन और रात का खाना खाती थी, और कंपनी के लिए पोर्टर के क्वार्टर में जाती थी, जहाँ वह अपनी बेटी के बारे में बुरा-भला कहती थी।

अपने बेहद खूबसूरत गुलाबी नाखूनों की वजह से ही डाहलिया लिस्टोलियर की ओर आकर्षित हुई थी, शायद दूसरों की ओर भी, और आलस्य की ओर भी। भला ऐसे नाखूनों

का क्या काम? जो सदाचारी रहना चाहती है, उसे अपने हाथों पर दया नहीं करनी चाहिए। ज़ेफ़िन ने तो अपने चंचल और प्यार भरे अंदाज़ में "जी महोदय" कहकर फ़ेम्यूइल को जीत लिया था।

वे युवक साथी थे; वे युवतियाँ सहेलियाँ थीं। ऐसे प्रेम संबंधों में हमेशा ऐसी मित्रताएँ भी होती हैं।

अच्छाई और दर्शन दो अलग-अलग चीजें हैं; इसका प्रमाण यह है कि इन छोटे अनियमित परिवारों के लिए सभी उचित छूट देने के बाद, फेवरेट, ज़ेफ़िन और डाहलिया दार्शनिक युवतियाँ थीं, जबकि फैंटाइन एक अच्छी लड़की थी।

वाह! कोई कहेगा; और थोलॉमीज़? सुलेमान जवाब देगा कि प्रेम ज्ञान का एक हिस्सा है। हम बस इतना ही कहेंगे कि फैंटाइन का प्रेम पहला प्रेम था, एकमात्र प्रेम था, सच्चा प्रेम था।

उन चारों में से केवल वही एक ऐसी थी जिसे उनमें से किसी ने भी "तू" कहकर संबोधित नहीं किया।

फैंटाइन उन शख्सियतों में से एक थी जो समाज के सबसे निचले तबके से उभरकर सामने आती हैं। हालाँकि वह सामाजिक अंधकार की सबसे गहरी खाई से निकली थी, फिर भी उसके माथे पर गुमनामी और अज्ञात होने का निशान था। उसका जन्म म⸺ सुर म⸺ में हुआ था। उसके माता-पिता कौन थे? कौन कह सकता है? उसने कभी अपने पिता या माता को नहीं जाना था। उसका नाम फैंटाइन रखा गया। फैंटाइन ही क्यों? उसका कोई दूसरा नाम नहीं था। उसके जन्म के समय डायरेक्टरी अभी भी मौजूद थी। उसका कोई पारिवारिक नाम नहीं था; उसका कोई परिवार नहीं था; कोई बपतिस्मा का नाम नहीं था; चर्च का अस्तित्व ही समाप्त हो चुका था। उसे वह नाम मिला जो सड़क पर नंगे पैर दौड़ती हुई एक छोटी बच्ची के रूप में उससे मिलने वाले पहले राहगीर को अच्छा लगा। उसे यह नाम ऐसे मिला जैसे बारिश होने पर बादलों से पानी उसके माथे पर गिरता है। उसे छोटी फैंटाइन कहा जाता था। इससे ज्यादा कोई नहीं जानता था। इस इंसान ने जीवन में बस इसी तरह प्रवेश किया था। दस साल की उम्र में फैंटाइन ने शहर छोड़ दिया और पास के कुछ किसानों के यहाँ काम करने लगी। पंद्रह साल की उम्र में वह "अपनी किस्मत आज़माने" पेरिस आई। फैंटाइन खूबसूरत थी और यथासंभव पवित्र बनी रही। वह सुनहरे बालों वाली, सुंदर दाँतों वाली लड़की थी। उसे दहेज में

सोना और मोती मिले थे; लेकिन उसका सोना उसके सिर पर था और मोती उसके मुँह में।

वह अपनी जीविका चलाने के लिए काम करती थी; फिर भी, अपनी जीविका के लिए ही— क्योंकि हृदय की भी अपनी भूख होती है—उसने प्रेम किया।

वह थोलोमीज़ से प्यार करती थी।

उसके लिए प्रेम; उसके लिए जुनून। छात्रों और युवतियों की भीड़ से भरी लैटिन क्वार्टर की गलियों में उनके सपने की शुरुआत हुई। फैंटाइन लंबे समय से पैंथियन की पहाड़ी की भूलभुलैया में थोलोमीज़ से बचती रही थी, जहाँ कई साहसी लोग आते-जाते रहते हैं, लेकिन इस तरह से कि उससे फिर से सामना हो ही जाता है। बचने का एक तरीका होता है जो खोज जैसा लगता है। संक्षेप में, यह एकालाप घटित हुआ।

ब्लाचेवेल, लिस्टोलियर और फेम्यूइल ने मिलकर एक समूह बनाया था, जिसके मुखिया थोलॉमीज़ थे। वही अपनी बुद्धिमत्ता के धनी थे।

थोलॉमीज़ एक पुराने ज़माने का विद्वान था; वह धनी था; उसकी आमदनी चार हज़ार फ़्रैंक थी; चार हज़ार फ़्रैंक! माउंट सैंट-जेनेवीव पर एक बड़ा हंगामा! थोलॉमीज़ तीस साल का तेज़-तर्रार आदमी था, लेकिन उसकी हालत ठीक नहीं थी। उसके चेहरे पर झुर्रियाँ थीं, दाँत नहीं थे, और उसके सिर पर गंजापन शुरू हो गया था, जिसके बारे में उसने खुद दुख से कहा था, "तीस साल की उम्र में खोपड़ी, चालीस साल की उम्र में घुटना।" उसका पाचन तंत्र ठीक नहीं था, और उसकी एक आँख से पानी बहता था। लेकिन जैसे-जैसे उसकी जवानी ढलती गई, वैसे-वैसे उसकी खुशी बढ़ती गई; उसने अपने दाँतों की जगह मसखरेपन को, अपने बालों की जगह हँसी को, अपनी सेहत की जगह व्यंग्य को अपना लिया, उसकी आँसू भरी आँख लगातार हँसती रही। वह जर्जर था, लेकिन फिर भी जवान था। उसकी जवानी, जो समय से बहुत पहले ही जाने वाली थी, हँसी से लबालब, शान से विदा हुई, और किसी को भी आग के सिवा कुछ नहीं दिखाई दिया। वाउडेविले में उसका एक नाटक अस्वीकार कर दिया गया था। वह कभी-कभार कुछ कविताएँ लिखता था। इसके अलावा, वह हर बात पर हद से ज़्यादा शक करता था, जो कमज़ोरों की नज़र में एक बड़ी ताकत होती है। इसी तरह व्यंग्यपूर्ण और स्पष्टवादी होने के कारण वह नेता

था। "आयरन" एक अंग्रेज़ी शब्द है। क्या यह संभव है कि व्यंग्य इसी से लिया गया हो?

एक दिन थोलोमीज़ ने भविष्यवाणी के संकेत के साथ उन तीनों को एक तरफ ले जाकर उनसे कहा:

“फैंटाइन, डाहलिया, ज़ेफ़िन और फ़ेवरेट लगभग एक साल से हमें सरप्राइज़ देने के लिए चिढ़ा रही हैं। हमने उनसे वादा किया है कि हम ऐसा करेंगे। वे हमेशा हमसे, खासकर मुझसे, इस बारे में बात करती रहती हैं, जैसे नेपल्स की बूढ़ी औरतें संत जनुआरियस से प्रार्थना करती हैं, ‘फ़ेसिया जियालुटा, फ़ा ओ मिराकोलो, पीले चेहरे, अपना चमत्कार दिखाओ,’ वैसे ही हमारी सुंदरियाँ मुझसे लगातार कहती रहती हैं, ‘थोलोमीज़, तुम अपना सरप्राइज़ कब दोगे?’ साथ ही हमारे माता-पिता भी हमें पत्र लिखते रहते हैं। दोनों तरफ से दबाव है। मुझे लगता है कि अब समय आ गया है; चलो इस सवाल पर चर्चा करते हैं।”

इसके बाद, थोलोमीज़ ने अपनी आवाज़ धीमी की और कुछ ऐसा आनंददायक कहा कि चारों के चेहरे पर एक साथ एक बड़ी और उत्साहपूर्ण मुस्कान फैल गई, और ब्लाचेवेल ने कहा, "यह एक विचार है।"

एक धुएँ से भरा हुआ बार सामने आया; वे अंदर गए, और उनकी गोपनीय बातचीत का शेष भाग अँधेरे में खो गया।

इन विवादों का नतीजा यह हुआ कि अगले रविवार को एक शानदार आनंदमय पार्टी का आयोजन हुआ, जिसमें चारों युवकों ने चारों युवतियों को आमंत्रित किया।

III. चार और चार

आज के समय में यह कल्पना करना मुश्किल है कि पैंतालीस साल पहले छात्रों और युवतियों का ग्रामीण इलाकों में घूमने जाना कैसा होता था। पेरिस के बाहरी इलाके अब पहले जैसे नहीं रहे; पिछले पचास वर्षों में पेरिस के आसपास के जीवन का स्वरूप पूरी तरह बदल गया है; जहाँ पहले कोयल हुआ करती थी, वहाँ अब रेलगाड़ी है; जहाँ पहले छोटी नाव हुआ करती थी, वहाँ अब स्टीमर है; लोग आज फ़ेकैम्प के बारे में वैसे ही बात करते हैं जैसे उन दिनों सेंट-क्लाउड के बारे में करते थे। 1862 का पेरिस एक ऐसा शहर है जिसके बाहरी इलाके फ्रांस से सटे हुए हैं।

चारों जोड़ों ने उस समय संभव सभी ग्रामीण मौज-मस्ती का भरपूर आनंद उठाया। छुट्टियाँ शुरू हो रही थीं और वह एक गर्म, चमकदार, गर्मी का दिन था। पिछले दिन, फेवरेट, जो एकमात्र व्यक्ति था जिसे लिखना आता था, ने चारों की ओर से थोलोमीज़ को निम्नलिखित लिखा था: "खुशी से बाहर निकलने का यह अच्छा समय है।" इसीलिए वे सुबह पाँच बजे उठे। फिर वे कोच से सेंट-क्लाउड गए, सूखे झरने को देखा और कहा, "पानी होने पर यह कितना सुंदर होगा!" उन्होंने टेटे- नोइर में नाश्ता किया, जहाँ कास्टिंग अभी तक नहीं गया था; उन्होंने भव्य फव्वारे के पेड़ों के समूह के नीचे रिंग-थ्रोइंग का खेल खेला; वे डायोजेन्स के लालटेन पर चढ़े, उन्होंने पोंट डे सेवरेस के रूलेट प्रतिष्ठान में मैकरून के लिए जुआ खेला, पाटो में गुलदस्ते चुने, न्यूइली में बांसुरी खरीदी, हर जगह सेब के टार्ट खाए, और पूरी तरह से खुश थे।

युवा लड़कियाँ पिंजरे से निकली चिड़ियों की तरह चहचहा रही थीं। यह एक पूर्ण उन्माद था। वे बीच-बीच में नौजवानों को हल्के से थपथपा रही थीं। जीवन का सुबह का नशा! प्यारे साल! ड्रैगनफ्लाई के पंख काँप रहे हैं। ओह, तुम जो भी हो, क्या तुम्हें याद नहीं? क्या तुम झाड़ियों में इधर-उधर भटकते रहे हो, डालियों को हटाते हुए, उस आकर्षक सिर के कारण जो तुम्हारे पीछे आ रहा है? क्या तुम हँसते हुए बारिश से भीगी ढलान पर फिसल गए हो, किसी प्रिय महिला का हाथ थामे हुए, और रोते हुए, “आह, मेरे नए जूते! उनकी क्या हालत है!”

आइए हम तुरंत यह कह दें कि इस हंसमुख दल के मामले में बारिश जैसी सुखद बाधा नहीं थी, हालांकि फेवरेट ने प्रस्थान करते समय एक अधिकारपूर्ण और मातृत्वपूर्ण स्वर में कहा था, "रास्तों में घोंघे रेंग रहे हैं - बारिश का संकेत है, बच्चों।"

वे चारों बेहद खूबसूरत थीं। एक पुराने ज़माने के प्रसिद्ध कवि, एक नेक इंसान, जिनकी एक प्रेमिका थी, एम. ले शेवेलियर डी लाबुइस, उस दिन सेंट-क्लाउड के शाहबलूत के पेड़ों के नीचे टहलते हुए, उन्हें सुबह लगभग दस बजे गुजरते हुए देखा और ग्रेस के बारे में सोचते हुए बोले, "ये तो एक ज़्यादा ही हैं।" ब्लाचेवेल की दोस्त, फेवरेट, जो तेईस साल की थी, सबसे बूढ़ी, हरे- भरे पेड़ों की बड़ी शाखाओं के नीचे आगे दौड़ती रही, नालियों को फांदती रही, झाड़ियों पर बेसुध होकर इधर-उधर घूमती रही और एक युवा मादा फौन की तरह इस आनंदमय माहौल की अध्यक्षता करती रही। ज़ेफ़िन और डाहलिया, जिन्हें संयोग से इतनी खूबसूरती मिली थी कि जब वे साथ होतीं तो एक-दूसरे की खूबसूरती को और बढ़ा देतीं और एक-दूसरे को पूरा करतीं, कभी एक-दूसरे से अलग नहीं हुईं, दोस्ती से ज़्यादा नखरे की भावना से, और एक-दूसरे से चिपकी हुई, वे अंग्रेज़ी पोज़ बनाती रहीं; पहली यादगार वस्तुएँ अभी-अभी सामने आई थीं, महिलाओं में उदासी छाने लगी थी, जैसे बाद में पुरुषों में बायरनवाद का उदय हुआ; और कोमल स्त्रियों के बाल उदास होकर झुकने लगे थे। ज़ेफ़िन और डाहलिया ने अपने बालों को लटों में बाँधा हुआ था। लिस्टोलियर और फ़ेम्यूइल, जो अपने प्रोफेसरों के बारे में चर्चा कर रहे थे, ने फैंटाइन को एम. डेल्विनकोर्ट और एम. ब्लोन्डेउ के बीच का अंतर समझाया।

ऐसा प्रतीत होता था मानो ब्लाचेवेल को विशेष रूप से रविवार को फेवरेट की सिंगल बॉर्डर वाली, टेर्नॉक्स द्वारा निर्मित नकली भारतीय शॉल को अपनी बांह पर ढोने के लिए बनाया गया हो।

थोलॉमीज़ उनके पीछे-पीछे चल रहा था और समूह पर हावी था। वह बेहद हंसमुख था, लेकिन उसमें एक तरह का प्रभुत्व झलकता था; उसकी हंसमुखता में एक तरह का हुक्म था; उसका मुख्य आभूषण हाथी के पैरों के पैटर्न वाली नानकीन की पतलून थी, जिसमें बुने हुए तांबे के तार की पट्टियाँ लगी थीं; वह हाथ में दो सौ फ्रैंक कीमत का एक मजबूत बेंत लिए रहता था, और जैसा कि वह हर चीज का आनंद

लेता था, उसके मुंह में सिगार नाम की एक अजीब सी चीज रहती थी। उसके लिए कुछ भी पवित्र नहीं था; वह धूम्रपान करता था।

“वह थोलोमीज़ तो अद्भुत है!” बाकी सबने श्रद्धापूर्वक कहा। “क्या पैंट है! क्या ऊर्जा है!”

फैंटाइन को देखना एक सुखद अनुभव था। उसके चमकीले दांत मानो ईश्वर की देन थे—हंसी। वह अपनी छोटी सी पुआल की टोपी, जिसमें लंबे सफेद धागे लगे थे, सिर पर रखने की बजाय हाथ में रखना पसंद करती थी। उसके घने सुनहरे बाल, जो लहराते थे, आसानी से खुल जाते थे और जिन्हें बार-बार बांधना पड़ता था, मानो विलो वृक्षों के नीचे गैलाटिया की उड़ान के लिए ही बने हों। उसके गुलाबी होंठ मोहक ढंग से तुतलाते थे। उसके होंठों के कोने, एरिगोन के प्राचीन मुखौटों की तरह, कामुकता से ऊपर उठे हुए थे, मानो किसी साहसी को प्रोत्साहित कर रहे हों; लेकिन उसकी लंबी, घनी पलकें चेहरे के निचले हिस्से की खुशी को संयम से ढके हुए थीं, मानो किसी को रोक रही हों। उसकी पूरी पोशाक में कुछ अवर्णनीय सामंजस्य और आकर्षण था। उसने बैंगनी रंग का गाउन, छोटे लाल-भूरे रंग के बूट्स पहने थे, जिनके रिबन उसकी महीन, सफेद, जालीदार स्टॉकिंग्स पर X का आकार बना रहे थे, और उस तरह का मलमल का स्पेंसर, जो मार्सिले का आविष्कार था, जिसका नाम कैनेज़ौ है, जो क्विंज़ औट शब्दों का बिगड़ा हुआ रूप है, जिसका उच्चारण कैनबियर के तरीके से किया जाता है, जिसका अर्थ है सुहावना मौसम, गर्मी और दोपहर। जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, बाकी तीन, जो कम संकोची थीं, उन्होंने बिना किसी ढँक-ढँक के कम गले वाली पोशाकें पहनी थीं, जो गर्मियों में, फूलों से सजी टोपियों के नीचे, बहुत ही सुंदर और आकर्षक लगती हैं; लेकिन इन साहसी पोशाकों के बीच, सुनहरे बालों वाली फैंटाइन की पारदर्शी, बेबाक और संयमी पोशाक, जो एक ही समय में छिपाती और दिखाती थी, शालीनता की एक मोहक देन प्रतीत होती थी। और समुद्री हरे रंग की आंखों वाली विस्काउंटेस डी सेट की अध्यक्षता में प्रसिद्ध प्रेम दरबार शायद शालीनता के पुरस्कार की प्रतियोगिता में इस पोशाक को नज़ाकत का पुरस्कार दे देता। कभी-कभी सबसे चतुर ही सबसे बुद्धिमान होता है। ऐसा होता है।

चमकीला चेहरा, कोमल आकृति, गहरी नीली आँखें, भारी पलकें, धनुषाकार और छोटे पैर, कलाई और टखने सुगठित, सफेद त्वचा जिसमें कहीं-कहीं नीली नसें दिखाई

देती थीं, प्रसन्नता, युवा और ताजगी से भरपूर गाल, एजीना की जूनो के समान सुगठित गला, मजबूत और लचीला गर्दन का पिछला भाग, मानो कौस्टू द्वारा गढ़े गए कंधे, बीच में एक मोहक डिंपल जो मलमल के कपड़े से दिखाई देता था; स्वप्निलता से शांत हुई प्रसन्नता; मूर्तिकला जैसी और उत्कृष्ट—यही थी फैंटाइन; और इन स्त्रीत्वपूर्ण अलंकरणों और रिबनों के नीचे एक मूर्ति और उस मूर्ति में एक आत्मा को देखा जा सकता था।

फैंटाइन खूबसूरत थी, लेकिन उसे इस बात का ज्यादा एहसास नहीं था। वे दुर्लभ स्वप्नद्रष्टा, सुंदरता के रहस्यमय पुजारी जो हर चीज का पूर्णता से सामना करते हैं, उन्होंने इस छोटी सी मेहनती महिला में, उसकी पेरिसियन शालीनता की पारदर्शिता के माध्यम से, प्राचीन पवित्र मधुरता की झलक देखी होगी।
परछाइयों की यह बेटी शुद्धतम थी। वह दो तरह से खूबसूरत थी—शैली और लय। शैली आदर्श का रूप है; लय उसकी गति है।

हमने कहा है कि फैंटीन आनंद थी; वह विनम्रता भी थी।

जो भी उसे ध्यान से देखता, उसे उसकी उम्र, मौसम और प्रेम प्रसंग के नशे के बावजूद, उससे निकलने वाली एक अटूट संयम और विनम्रता की अभिव्यक्ति दिखाई देती। वह थोड़ी हैरान रह गई। यह पवित्र हैरानी ही साइकी और वीनस को अलग करने वाला सूक्ष्म अंतर है। फैंटाइन की उंगलियां लंबी, सफेद और सुंदर थीं, जैसे कोई पवित्र अग्नि की राख को सुनहरी सुई से हिलाती है। हालांकि वह थोलोमीज़ को किसी भी बात के लिए मना नहीं करती, जैसा कि हमें आगे देखने का भरपूर अवसर मिलेगा, फिर भी शांत अवस्था में उसका चेहरा अत्यंत पवित्र था; कभी-कभी अचानक उस पर एक प्रकार की गंभीर और लगभग संयमी गरिमा छा जाती थी, और यह देखना बहुत ही विचित्र और विचलित करने वाला था कि उसकी खुशी अचानक गायब हो जाती है और बिना किसी बदलाव के ध्यान प्रसन्नता में बदल जाता है। यह अचानक और कभी-कभी बहुत अधिक गंभीर गंभीरता किसी देवी के तिरस्कार जैसी लगती थी। उसकी भौंहें, उसकी नाक, उसकी ठोड़ी, रूपरेखा का वह संतुलन प्रस्तुत करती थीं जो अनुपात के संतुलन से बिल्कुल अलग होता है, और जिससे चेहरे की सुंदरता उत्पन्न होती है; नाक के आधार और ऊपरी होंठ को अलग करने वाले विशिष्ट अंतराल में, उसके पास वह सूक्ष्म और आकर्षक तह थी, पवित्रता का एक रहस्यमय संकेत, जिसने बारबरूस को आइकोनिया के खजाने में मिली डायना से प्यार करने पर मजबूर कर दिया।

प्रेम एक दोष है ; तो ऐसा ही सही। फैंटाइन दोष के ऊपर तैरती हुई मासूमियत थी।

IV. थोलोमीज़ इतना प्रसन्न है कि वह एक स्पेनिश गीत गाता है।

वह दिन सुबह से शाम तक सुहावना था। ऐसा लग रहा था मानो सारी प्रकृति छुट्टी मना रही हो और हंस रही हो। सेंट-क्लाउड के फूलों की क्यारियों से हवा में खुशबू फैली हुई थी; सीन नदी की हवा से पत्तियां हल्की-हल्की सरसरा रही थीं; डालियाँ हवा में लहरा रही थीं, मधुमक्खियाँ चमेली के फूलों को चूम रही थीं; तितलियों का एक पूरा झुंड यारो, क्लोवर और बंजर जई पर झपटा हुआ था; फ्रांस के राजा के भव्य उद्यान में आवारा पक्षियों का एक झुंड मंडरा रहा था।

सूर्य, खेतों, फूलों और पेड़ों के बीच घुलमिलकर चार आनंदित जोड़े बेहद खूबसूरत लग रहे थे।

और स्वर्ग के इस समुदाय में, बातें करते, गाते, दौड़ते, नाचते, तितलियों का पीछा करते, कनवोल्वुलस के फूल तोड़ते, अपनी गुलाबी, जालीदार मोजों को लंबी घास में भिगोते हुए, ताज़गी से भरपूर, बेफिक्र, सभी को किसी न किसी हद तक सभी के चुंबन मिले, सिवाय फैंटाइन के, जो अपने स्वप्निल और जंगलीपन से बने अस्पष्ट प्रतिरोध से घिरी हुई थी और जो प्रेम में थी। "तुम्हारे चेहरे पर हमेशा एक अजीब सी चमक रहती है," फेवरेट ने उससे कहा।

ऐसी बातें ही आनंद देती हैं। सुखी जोड़ों के ये दृश्य जीवन और प्रकृति के प्रति एक गहरा आकर्षण हैं, और हर चीज़ से एक कोमल स्पर्श और प्रकाश का संचार करते हैं। एक समय एक परी थी जिसने प्रेम में डूबे लोगों के लिए विशेष रूप से खेत और जंगल बनाए थे—प्रेमियों के उस शाश्वत विद्यालय में, जो सदा नए सिरे से शुरू होता है, और जब तक खेत और विद्वान रहेंगे, तब तक कायम रहेगा। इसीलिए वसंत ऋतु विचारकों के बीच इतनी लोकप्रिय है। कुलीन और छुरी- साज, ड्यूक और रईस, कानून का अंग, दरबारी और नगरवासी, जैसा कि पुराने समय में कहा जाता था, सभी इस परी के विषय हैं। वे हंसते हैं और शिकार करते हैं, और हवा में देवत्व की चमक होती है—प्रेम द्वारा किया गया कैसा अद्भुत रूपांतरण! नोटरी के क्लर्क भी उनके लिए देवता समान हैं। और वे छोटी-छोटी चीखें, घास में पीछा करना, भागते हुए आलिंगन करना, वे मधुर शब्द जो धुन बन

जाते हैं, वे स्तुतियाँ जो किसी शब्दांश के उच्चारण की तरह फूट पड़ती हैं, एक मुँह से दूसरे मुँह द्वारा तोड़े गए चेरी—ये सब प्रज्वलित होकर दिव्य महिमाओं में अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। सुंदर स्त्रियाँ मधुरता से स्वयं को विलीन कर देती हैं। वे सोचती हैं कि यह कभी समाप्त नहीं होगा। दार्शनिक, कवि, चित्रकार, इन परमानंदों को देखते हैं और समझ नहीं पाते कि इसका क्या अर्थ निकालें, वे इससे इतने चकित हो जाते हैं। "साइथेरा के लिए प्रस्थान!" वाटो कहते हैं; आम लोगों के चित्रकार लैंक्रेट अपने बुर्जुआ लोगों पर विचार करते हैं, जो नीले आकाश में विलीन हो गए हैं; डिडेरोट इन सभी प्रेम दृश्यों के लिए अपनी बाहें फैलाते हैं, और डी'उर्फे उनमें ड्र्यूडों को मिला देते हैं।

नाश्ते के बाद चारों जोड़े उस जगह गए जिसे उस समय किंग्स स्क्वायर कहा जाता था, ताकि भारत से आए एक नए पौधे को देख सकें, जिसका नाम हमें इस समय याद नहीं आ रहा है, और जो उस दौर में पूरे पेरिसवासियों को सेंट-क्लाउड की ओर आकर्षित कर रहा था। यह एक अनोखा और आकर्षक झाड़ीनुमा पौधा था, जिसका तना लंबा था, और जिसकी असंख्य शाखाएँ, काँटेदार और पत्तीहीन, धागे की तरह पतली थीं, लाखों छोटे-छोटे सफेद फूलों से ढकी हुई थीं; इससे झाड़ीनुमा पौधा फूलों से सजे बालों के गुच्छे जैसा दिखता था। इसे देखने के लिए हमेशा लोगों की भीड़ लगी रहती थी।

झाड़ी देखने के बाद, थोलोमीज़ ने कहा, "मैं तुम्हें गधे भेंट करता हूँ!" और गधों के मालिक से कीमत तय करने के बाद, वे वानव्रेस और इस्सी होते हुए लौट आए। इस्सी में एक घटना घटी। उस समय ठेकेदार बोर्गुइन के स्वामित्व वाला वह राष्ट्रीय उद्यान खुला हुआ था। वे द्वार से अंदर गए, गुफा में बैठे साधु के पुतले से मिले, और प्रसिद्ध दर्पणों के संग्रह के रहस्यमय छोटे-छोटे करतबों को आजमाया, जो किसी करोड़पति बन चुके कामुक व्यक्ति या किसी कामुक व्यक्ति में परिवर्तित तुर्करेट के लिए उपयुक्त थे। उन्होंने एब्बे डी बर्नीस द्वारा प्रसिद्ध किए गए दो शाहबलूत के पेड़ों से बंधे झूले को भी खूब हिलाया। जैसे ही वह इन सुंदरियों को एक के बाद एक झुलाता रहा, लहराते हुए स्कर्टों में सिलवटें पैदा करता रहा, जो ग्रेउज़ को भी पसंद आतीं, हंसी की गूंज के बीच, टूलूज़ के थोलोमीज़, जो कुछ हद तक स्पेनिश थे (टूलूज़, टोलोसा का चचेरा भाई था), ने एक उदास धुन में पुराना लोकगीत "गैलेगा" गाया,

जो शायद दो पेड़ों के बीच रस्सी पर पूरी रफ्तार से दौड़ती किसी सुंदर युवती से प्रेरित था :—

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

केवल फैंटाइन ने झूला झूलने से इनकार कर दिया।

"मुझे लोगों का इस तरह का दिखावा करना पसंद नहीं है," फेवरेट ने काफी कटुता के साथ बुदबुदाया।

गधों को छोड़ने के बाद उन्हें एक नई खुशी मिली; उन्होंने नाव से सीन नदी पार की और पासी से पैदल चलते हुए ल'एटॉइल की सीमा तक पहुँचे। जैसा कि पाठक को याद होगा, वे उस सुबह पाँच बजे से जागे हुए थे; लेकिन "अरे ! रविवार को थकान जैसी कोई बात नहीं होती," फेवरेट ने कहा; "रविवार को थकान काम नहीं आती।"

लगभग तीन बजे, चारों जोड़े अपनी खुशी से भयभीत होकर, रूसी पहाड़ों से नीचे फिसल रहे थे, जो उस समय ब्यूजॉन की ऊंचाइयों पर स्थित एक विलक्षण संरचना थी, और जिसकी लहरदार रेखा चैंप्स-एलिसी के पेड़ों के ऊपर दिखाई दे रही थी।

समय-समय पर फेवरेट ने कहा :—

और आश्चर्य की बात? आश्चर्य का श्रेय मैं लेता हूँ।

“धैर्य रखो,” थोलोमीज़ ने उत्तर दिया।

वी. बॉम्बार्डा के यहाँ

रूसी पहाड़ों की सैर से थककर, वे रात के खाने के बारे में सोचने लगे; और आठ लोगों का वह जोशीला समूह, जो अंततः कुछ थका हुआ था, बॉम्बार्डा के पब में फंस गया, जो चैंप्स-एलिसी में उस प्रसिद्ध रेस्तरां मालिक बॉम्बार्डा द्वारा स्थापित एक शाखा थी, जिसका चिन्ह तब डेलोरमे गली के पास, रू डे रिवोली में देखा जा सकता था।

एक बड़ा लेकिन बदसूरत कमरा, जिसके एक कोने में एक छोटा सा कोना और एक पलंग था (रविवार की भीड़ को देखते हुए उन्हें इसी व्यवस्था में रहना पड़ा था); दो खिड़कियाँ जहाँ से वे एल्म के पेड़ों, घाट और नदी के पार का नज़ारा देख सकते थे; अगस्त की शानदार धूप खिड़कियों के शीशों को हल्के से छू रही थी; दो मेजें; उनमें से एक पर गुलदस्तों का एक शानदार ढेर लगा था, जिसमें पुरुषों और महिलाओं की टोपियाँ मिली हुई थीं; दूसरी मेज पर चार जोड़े थालियों, प्लेटों, गिलासों और बोतलों के एक अव्यवस्थित ढेर के चारों ओर बैठे थे; बीयर के जग शराब की बोतलों के साथ मिले हुए थे; मेज पर बहुत कम व्यवस्था थी, उसके नीचे कुछ अव्यवस्था थी;

“उन्होंने मेज के नीचे एक शोर मचाया, पैरों की एक ऐसी खड़खड़ाहट जो घृणित थी।”

मोलियर कहते हैं।

सुबह पांच बजे शुरू हुआ चरवाहों का यह सुखद प्रसंग दोपहर साढ़े चार बजे तक इसी स्थिति में पहुँच गया था। सूरज डूब रहा था; उनकी भूख तृप्त हो चुकी थी।

धूप और लोगों से भरा चैंप्स-एलिसी, मानो प्रकाश और धूल से जगमगा रहा था, ये दो ही चीज़ें मिलकर वैभव का निर्माण करती हैं। मार्ली के घोड़े, मानो हिनहिनाते संगमरमर के पुतले, सुनहरे रंग के बादल में इतरा रहे थे। रथ आ-जा रहे थे। अपने तुरही लिए भव्य अंगरक्षकों का एक दस्ता एवेन्यू डी न्यूइली से नीचे उतर रहा था; ढलते सूरज में हल्का गुलाबी रंग बिखेरता सफेद झंडा ट्यूलरीज़ के गुंबद पर लहरा रहा था। प्लेस डे ला कॉनकॉर्ड, जो एक बार फिर प्लेस लुई XV बन चुका था, खुशमिजाज सैर करने वालों से खचाखच भरा हुआ था। कई

लोगों ने सफेद रिबन से लटकता हुआ चांदी का लिली का फूल पहना हुआ था, जो 1817 में बटनहोल से पूरी तरह गायब नहीं हुआ था। इधर-उधर छोटी लड़कियों के समूह राहगीरों के बीच, जो गोल घेरे बनाकर तालियाँ बजा रहे थे, उस समय के प्रसिद्ध बॉर्बन गीत को गा रहे थे, जो सौ दिनों के इतिहास में धूम मचाने वाला था, और जिसका मुखड़ा था:—

हमें हमारे पिता को घेंट से वापस लौटा दो,
हमें हमारे पिता को वापस लौटा दो।

11

उपनगरों में रहने वाले लोगों के समूह, रविवार के परिधानों में, कभी-कभी बुर्जुआ वर्ग की तरह लिली के फूल से सजे हुए, बड़े चौक और मारिग्नी चौक पर बिखरे हुए थे, छल्ले खेल रहे थे और लकड़ी के घोड़ों पर झूल रहे थे; कुछ लोग शराब पी रहे थे; कुछ प्रिंटरों ने कागज़ की टोपियाँ पहन रखी थीं; उनकी हँसी सुनाई दे रही थी। सब कुछ जगमगा रहा था। यह निर्विवाद शांति और गहन राजशाही सुरक्षा का समय था; यह वह युग था जब पेरिस के उपनगरों के विषय पर पुलिस प्रमुख एंग्लस की राजा को भेजी गई एक विशेष और निजी रिपोर्ट इन पंक्तियों के साथ समाप्त हुई:—

“महाराज, सभी बातों पर गौर करें तो इन लोगों से डरने की कोई बात नहीं है। ये बिल्लियों की तरह लापरवाह और आलसी हैं। प्रांतों में जनता अशांत है; पेरिस में नहीं। महाराज, ये बहुत ही आकर्षक पुरुष हैं। इनमें से केवल दो ही आपके एक ग्रेनेडियर को बनाने के लिए काफी होंगे। राजधानी पेरिस की जनता से डरने की कोई बात नहीं है। यह आश्चर्यजनक है कि पिछले पचास वर्षों में इस आबादी का कद घट गया है; और उपनगरों की आबादी तो क्रांति के समय से भी कहीं अधिक कम है। यह खतरनाक नहीं है। संक्षेप में, यह एक मिलनसार भीड़ है।”

पुलिस के अधिकारी यह असंभव मानते हैं कि एक बिल्ली शेर में बदल सकती है; हालाँकि, ऐसा होता है, और इसी में पेरिस की जनता का चमत्कार निहित है। इसके अलावा, काउंट एंगल्स द्वारा तिरस्कृत बिल्ली को प्राचीन गणराज्यों में बहुत सम्मान प्राप्त था। उनकी दृष्टि में वह स्वतंत्रता का साक्षात रूप थी; और मानो पिरियस की मिनर्वा अप्टेरा की प्रतिमा के पूरक के रूप में, कोरिंथ के सार्वजनिक चौक पर एक विशाल कांस्य बिल्ली की मूर्ति खड़ी थी। पुनर्स्थापना काल की भोली पुलिस ने पेरिस की जनता को बहुत ही आशावादी नज़रिए से देखा; यह उतनी "मिलनसार भीड़" नहीं है जितना समझा जाता है।

पेरिसवासी फ्रांसीसी के लिए वही है जो एथेंसवासी यूनानी के लिए था: उससे अधिक गहरी नींद कोई नहीं सोता, उससे अधिक स्पष्ट रूप से लापरवाह और आलसी कोई नहीं, भूलने का दिखावा करने में उससे बेहतर कोई नहीं; फिर भी उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता; वह किसी भी प्रकार के ठंडे दिमाग से किए गए कृत्य के लिए तैयार रहता है; लेकिन जब अंत में गौरव मिलता है, तो वह हर प्रकार के क्रोध में प्रशंसा के योग्य होता है। उसे भाला दो, वह 10 अगस्त को युद्ध का दृश्य दिखा देगा; उसे बंदूक दो, वह ऑस्टरलिट्ज़ की घटना को अंजाम देगा। वह नेपोलियन का सहारा और डेंटन का संसाधन है। देश का प्रश्न हो, वह सेना में भर्ती हो जाता है; स्वतंत्रता का प्रश्न हो, वह सड़कों को तहस-नहस कर देता है। सावधान! क्रोध से भरे उसके बाल महाकाव्य जैसे लगते हैं; उसकी कमीज़ किसी चिकन के पंखों की तरह लहराती है। ध्यान रखो! वह ग्रेनेटैट गली के पहले मोड़ को ही कौडाइन फोर्क्स बना देगा। जब समय आएगा, तो उपनगरों का यह आदमी कद में बड़ा हो जाएगा; यह छोटा आदमी उठेगा, उसकी निगाहें भयानक होंगी, उसकी साँसें तूफ़ान की तरह तेज़ होंगी, और उसकी पतली छाती से इतनी हवा निकलेगी कि आल्प्स पर्वतमाला की तहें भी हिल जाएँगी। पेरिस के उपनगरीय निवासी की बदौलत ही क्रांति, हथियारों के साथ मिलकर, यूरोप पर विजय प्राप्त करती है। वह गाता है; यही उसका आनंद है। उसके गीत को उसके स्वभाव के अनुरूप ढालें, और आप स्वयं देखेंगे! जब तक वह केवल "ला कार्माग्नोल" गाता है, तब तक वह केवल लुई सोलहवें को ही पराजित कर सकता है; उसे "मार्सेलेज़" गाने को कहिए, और वह दुनिया को मुक्त कर देगा।

एंगल्स की रिपोर्ट के हाशिये पर लिखे इस नोट के बाद, हम अपने चार जोड़ों पर लौटेंगे। जैसा कि हमने कहा है, रात्रिभोज समाप्त होने वाला था।

VI. एक अध्याय जिसमें वे एक दूसरे से प्रेम करते हैं

मेज पर की गई बातचीत, प्रेम की बातचीत; दोनों को दोहराना उतना ही असंभव है जितना कि एक को; प्रेम की बातचीत एक बादल की तरह है; मेज पर की गई बातचीत धुएं की तरह है।
फेम्यूइल और डाहलिया गुनगुना रहे थे। थोलोमीज़ शराब पी रहा था। ज़ेफ़िन हंस रही थी, फैंटाइन मुस्कुरा रही थी, और लिस्टोलियर सेंट-क्लाउड से खरीदी गई लकड़ी की तुरही बजा रहा था।
फेवरेट ने ब्लाचेवेल को स्नेह भरी निगाहों से देखते हुए कहा:— "ब्लाचेवेल, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।"
इस पर ब्लाचेवेल ने एक सवाल पूछा:—
"प्रिय, अगर मैं तुमसे प्यार करना बंद कर दूं तो तुम क्या करोगी?"
“मैं!” फेवरेट चिल्लाई। “अरे! ऐसा मज़ाक में भी मत कहो! अगर तुमने मुझसे प्यार करना छोड़ दिया, तो मैं तुम्हारे पीछे दौड़ूँगी, तुम्हें खरोंचूँगी, तुम्हें नोंच डालूँगी, तुम्हें पानी में फेंक दूँगी, तुम्हें गिरफ्तार करवा दूँगी।”
ब्लाचेवेल ने उस कामुक आत्म-अभिमान के साथ मुस्कुराया, मानो वह अपने आत्म-प्रेम में डूबा हुआ हो। पसंदीदा ने आगे कहा:—
“हाँ, मैं पुलिस को चिल्ला कर बुलाऊँगी! आह! मुझे खुद को रोकना नहीं चाहिए, बिलकुल भी नहीं! उपद्रवी!”
ब्लाचेवेल परमानंद में अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया और गर्व से अपनी दोनों आंखें बंद कर लीं।
शोरगुल के बीच, डाहलिया खाना खाते हुए धीमी आवाज़ में फेवरेट से बोली: "तो आप सचमुच उस ब्लाचेवेल को बहुत मानते हैं?"

“मैं? मुझे उससे नफरत है,” फेवरेट ने उसी लहजे में जवाब दिया और अपना कांटा फिर से उठा लिया। “वह लालची है। मुझे अपने घर में सामने वाला छोटा लड़का बहुत प्यारा लगता है। वह बहुत अच्छा है, वह नौजवान; क्या आप उसे जानते हैं? देखकर ही पता चलता है कि वह पेशे से अभिनेता है। मुझे अभिनेता बहुत पसंद हैं। जैसे ही वह अंदर आता है, उसकी माँ उससे कहती है: ‘अरे! हे भगवान! मेरी मन की शांति भंग हो गई। वह फिर से चिल्लाने लगा। लेकिन, मेरे प्यारे, तुम मेरा सिर फोड़ रहे हो!’ तो वह चूहों से भरे तहखानों में, अंधेरी जगहों में, जहाँ तक वह चढ़ सकता है, चढ़ जाता है और वहाँ वह गाना गाने लगता है, भाषण देने लगता है, पता नहीं क्या? ताकि उसकी आवाज़ नीचे सुनाई दे! वह एक वकील के यहाँ रोज़ बीस सू कमाता है, छोटी-छोटी बातें लिखकर। वह सेंट-जैक्स-डु- हाउट-पास के एक पूर्व प्रीसेंटर का बेटा है। आह! वह बहुत अच्छा है। वह मुझे इतना मानता है कि एक दिन जब उसने मुझे पैनकेक के लिए घोल बनाते देखा, तो उसने मुझसे कहा: ‘मैमसेल, अपने दस्तानों से पकौड़े बना लो, मैं खा लूँगा।’ उन्हें।’ ऐसी बातें तो सिर्फ कलाकार ही कह सकते हैं। आह! वो बहुत अच्छे हैं। मैं तो उस छोटे से लड़के के लिए पागल होने ही वाली थी। कोई बात नहीं; मैं ब्लाचेवेल से कहती हूँ कि मैं उन्हें बहुत पसंद करती हूँ—कितना झूठ बोल रही हूँ! अरे! कितना झूठ बोल रही हूँ!

फेवरेट ने थोड़ी देर रुककर फिर बोलना शुरू किया:—

“देखो, डाहलिया, मैं बहुत उदास हूँ। पूरी गर्मी भर बारिश ही होती रही; हवा मुझे परेशान कर रही है; थमने का नाम ही नहीं ले रही। ब्लाचेवेल बहुत कंजूस है; बाज़ार में हरी मटर मुश्किल से ही मिल रही है; समझ नहीं आ रहा कि क्या खाएँ। मुझे तो जैसे अंग्रेज कहते हैं, मक्खन इतना महंगा है कि मैं तरस रही हूँ! और फिर देखो, ये कितना भयानक है, हम यहाँ एक ऐसे कमरे में खाना खा रहे हैं जिसमें बिस्तर भी है, और ये सब देखकर मुझे ज़िंदगी से नफरत हो गई है।”

VII. थोलोमीज़ का ज्ञान

इसी बीच, कुछ लोग गा रहे थे, बाकी सब एक साथ शोरगुल मचाते हुए बातें कर रहे थे; चारों ओर सिर्फ शोर ही शोर था। तभी थोलॉमीज़ ने हस्तक्षेप किया।

“हमें न तो बेतरतीब बोलना चाहिए और न ही जल्दबाजी करनी चाहिए,” उन्होंने कहा। “अगर हम प्रतिभाशाली बनना चाहते हैं, तो हमें सोच-विचार करना चाहिए। बहुत ज्यादा तात्कालिकता दिमाग को मूर्खतापूर्ण तरीके से खाली कर देती है। बहती हुई बीयर में झाग नहीं बनता। सज्जनों, जल्दबाजी न करें। आइए, भव्यता को दावत में शामिल करें। आइए, ध्यान से भोजन करें; आइए, धीरे-धीरे आगे बढ़ें। हमें जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। वसंत ऋतु पर विचार करें; अगर वह जल्दबाजी करती है, तो वह खत्म हो जाती है; यानी, वह जम जाती है। अति उत्साह आड़ू और खुबानी के पेड़ों को बर्बाद कर देता है। अति उत्साह अच्छे भोज की गरिमा और आनंद को खत्म कर देता है। सज्जनों, जल्दबाजी न करें! ग्रिमोड डे ला रेनियर टैलीरैंड से सहमत हैं।”

समूह के बीच विद्रोह की एक खोखली सी आवाज गूंज उठी।

"हमें शांति से रहने दो, थोलोमीज़," ब्लाचेवेल ने कहा।

“तानाशाह का नाश हो!” फेम्यूइल ने कहा।

"बोम्बार्डा, बॉम्बेंस और बम्बोचेल!" लिस्टोलियर चिल्लाया।

"रविवार का दिन होता है," फेम्यूइल ने बात जारी रखी।

लिस्टोलियर ने आगे कहा, "हम होश में हैं।"

“थोलोमीज़,” ब्लाचेवेल ने कहा, “मेरी शांति पर ध्यान दो।”

"तुम उसके मार्क्विस हो," थोलोमीज़ ने पलटवार किया।

शब्दों का यह साधारण सा खेल तालाब में पत्थर फेंकने जैसा प्रभाव पैदा कर गया। उस समय मार्क्विस डी मोंटकल्म एक प्रसिद्ध राजभक्त थे। सभी मेंढक चुप रहे।

“मित्रों,” थोलोमीज़ ने अपने साम्राज्य को पुनः प्राप्त कर चुके व्यक्ति के लहजे में कहा, “होश में आओ। आकाश से गिरे इस व्यंग्य को बहुत अधिक उदासीनता से मत लो। जो कुछ भी इस तरह गिरता है, वह उत्साह और सम्मान के योग्य नहीं होता। व्यंग्य उस मन का मल है जो उड़ता रहता है। मज़ाक कहीं भी गिरे, और मूर्खता का एक अंश उत्पन्न करने के बाद मन नीले आकाश में डूब जाता है। चट्टान पर चिपका हुआ एक सफ़ेद धब्बा गिद्ध को ऊँचाई पर उड़ने से नहीं रोकता। मैं व्यंग्य का अपमान करने से बहुत दूर हूँ! मैं इसके गुणों के अनुपात में इसका सम्मान करता हूँ; इससे अधिक नहीं। मानवता के सभी सबसे महान, सबसे उदात्त, सबसे आकर्षक लोगों ने, और शायद मानवता के बाहर भी, व्यंग्य किए हैं। यीशु मसीह ने संत पीटर पर, मूसा ने इसहाक पर, एस्किल्स ने पॉलीनीस पर, क्लियोपेट्रा ने ऑक्टेवियस पर व्यंग्य किया। और ध्यान दें कि क्लियोपेट्रा का व्यंग्य एक्टियम के युद्ध से पहले आया था, और अगर ऐसा न होता तो... अगर ऐसा होता, तो शायद ही किसी को टोरिन शहर याद रहता, जो एक यूनानी नाम है जिसका अर्थ है चम्मच। यह बात मान लेने के बाद, मैं अपनी सलाह पर लौटता हूँ। मैं दोहराता हूँ, भाइयों, मैं दोहराता हूँ, कोई उत्साह नहीं, कोई शोर-शराबा नहीं, कोई अति नहीं; चाहे वो चुटकुलों में हो, खुशी में हो, मौज-मस्ती में हो या शब्दों के खेल में। मेरी बात सुनो। मुझमें एम्फीआराउस जैसी समझदारी और सीज़र जैसी स्पष्टता है। पहेलियों की भी एक सीमा होनी चाहिए। Est modus in rebus.

“खाने-पीने की भी एक सीमा होनी चाहिए। आप महिलाओं को एप्पल टर्नओवर बहुत पसंद हैं; लेकिन इनका अत्यधिक सेवन न करें। टर्नओवर के मामले में भी, समझदारी और कला आवश्यक है। लालची को ही खामोशी का फल मिलता है, गुला पुनित गुलाक्स। अपच को ईश्वर ने पेट को नैतिकता का उपदेश देने का काम सौंपा है। और यह याद रखें: हमारी हर भावना, यहाँ तक कि प्रेम की भी एक सीमा होती है जिसे बहुत अधिक नहीं भरना चाहिए। हर काम में सही समय पर 'समाप्त' शब्द लिखना चाहिए; जब मामला अत्यावश्यक हो जाए तो आत्म-संयम बरतना चाहिए; भूख पर लगाम लगानी चाहिए; अपनी कल्पना को संगीत की धुन पर ढालकर खुद को काम पर लगाना चाहिए। ज्ञानी वह है जो किसी भी क्षण अपनी गिरफ्तारी का तरीका जानता है। मुझ पर थोड़ा भरोसा रखें, क्योंकि मैंने कानून के अध्ययन में कुछ हद तक सफलता प्राप्त की है, मेरी परीक्षाओं के परिणाम स्वरूप, क्योंकि मैं पूछे

गए प्रश्न और लंबित प्रश्न के बीच का अंतर जानता हूँ, क्योंकि मैंने यातना के तरीके पर लैटिन में एक शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है। यह रोम में उस समय प्रशासित था जब मुनाटियस डेमेन्स पितृहत्या के प्रभारी थे; चूंकि मैं डॉक्टर बनने जा रहा हूँ, इसका यह मतलब नहीं है कि मेरा मंदबुद्धि होना बिल्कुल आवश्यक है। मैं आपको अपनी इच्छाओं में संयम बरतने की सलाह देता हूँ। यह सच है कि मेरा नाम फेलिक्स थोलोमीज़ है; मैं अच्छी तरह बोलता हूँ। धन्य है वह जो समय आने पर वीरतापूर्ण संकल्प लेता है और सिला या ओरिजेनेस की तरह पद त्याग देता है।

मेरे प्रिय ने अत्यंत ध्यान से सुना।

“फेलिक्स,” उसने कहा, “कितना प्यारा नाम है! मुझे यह नाम बहुत पसंद है। यह लैटिन भाषा का नाम है; इसका अर्थ है समृद्ध होना।”

थोलोमीज़ ने आगे कहा:—

“शांतिप्रिय सज्जनों, सज्जनों, मेरे मित्रों। क्या आप कभी भी संभोग का अनुभव नहीं करना चाहते, वैवाहिक बिस्तर के बिना रहना चाहते हैं, और प्रेम का साहस करना चाहते हैं? इससे सरल कुछ नहीं। नुस्खा यह है: नींबू पानी, अत्यधिक व्यायाम, कड़ी मेहनत; खुद को काम में इतना लगाओ कि मर जाओ, पत्थर घसीटो, सोओ मत, जागते रहो, नाइट्रस युक्त पेय और निम्फिया के काढ़े पियो; अफीम और एग्नस कास्टस का मिश्रण पियो; इसमें सख्त आहार जोड़ो, खुद को भूखा रखो, और साथ ही ठंडे पानी से स्नान करो, जड़ी-बूटियों की कमरबंद बांधो, सीसे की प्लेट लगाओ, सीसे के सबएसीटेट से बने लोशन लगाओ, और ऑक्सीक्रेट की सिकाई करो।”

"मुझे महिला पसंद है," लिस्टोलियर ने कहा।

“औरत,” थोलोमीज़ ने बात जारी रखते हुए कहा; “उस पर भरोसा मत करो। जो कोई औरत के अस्थिर हृदय के वश में हो जाता है, उसका बुरा हाल होता है! औरत धोखेबाज़ और कपटी होती है। वह पेशेवर ईर्ष्या के कारण साँप से घृणा करती है। साँप तो सामने वाली दुकान है।”

“थोलोमीस!” ब्लाचेवेल चिल्लाई, “तुम नशे में हो!”

“पार्डियू,” थोलोमीज़ ने कहा।

"तो फिर समलैंगिक बन जाओ," ब्लाचेवेल ने बात जारी रखी।

“मैं इससे सहमत हूँ,” थोलोमीज़ ने उत्तर दिया।

और अपना गिलास फिर से भरकर वह उठ खड़ा हुआ।

“शराब की जय हो! नंक ते, बाचे, कैनम! क्षमा करें देवियों; यह स्पैनिश है। और इसका प्रमाण, सेनोरास, यह है: जैसे लोग, वैसे पीपा। कैस्टिले के एरोब में सोलह लीटर होते हैं; एलिकांटे के कैंटारो में बारह; कैनरी द्वीप समूह के अल्मूड में पच्चीस; बैलेरिक द्वीप समूह के क्वार्टिन में छब्बीस; ज़ार पीटर के बूट में तीस। उस महान ज़ार की जय हो, और उसके बूट की भी, जो उससे भी महान था! देवियों, एक मित्र की सलाह मानो; अगर उचित लगे तो अपने पड़ोसी में गलती कर दो। प्रेम का गुण है गलती करना। प्रेम संबंध किसी अंग्रेज़ नौकरानी की तरह घुटने टेककर खुद को क्रूर बनाने के लिए नहीं बना है, जिसके घुटनों पर रगड़-रगड़ कर खुरचने से छाले पड़ गए हों। यह उसके लिए नहीं बना है; यह खुशी-खुशी गलती करता है, हमारा कोमल प्रेम। कहा गया है, गलती करना इंसान का स्वभाव है; मैं कहता हूँ, गलती करना प्रेम है। देवियों, मैं आप सभी का आदर करता हूँ। ओ हे जोसेफिन, हे ज़ेफिन, तुम्हारा चेहरा कितना भी अनियमित क्यों न हो, अगर तुम टेढ़ी-मेढ़ी न होतीं तो और भी मनमोहक होतीं। तुम्हारा चेहरा ऐसा लगता है मानो कोई गलती से उस पर बैठ गया हो। हे अप्सराओं और देवियों, हे फेवरिट! एक दिन जब ब्लाचेवेल रू गुएरिन-बोइसो में नाले को पार कर रहे थे, तो उनकी नज़र एक सुंदर लड़की पर पड़ी जिसने सफेद मोज़े अच्छे से ऊपर तक खींचे हुए थे, जिससे उसके पैर दिख रहे थे। यह दृश्य उन्हें बहुत भाया और ब्लाचेवेल को उससे प्रेम हो गया। जिसे उन्होंने प्रेम किया, वह थी फेवरिट। हे फेवरिट, तुम्हारे होंठ आयोनियन हैं। यूफोरियन नाम का एक यूनानी चित्रकार था, जिसे होठों का चित्रकार कहा जाता था। केवल वही यूनानी तुम्हारे होंठों को चित्रित करने के योग्य होता। सुनो! तुमसे पहले कोई भी इस नाम के योग्य नहीं था। तुम्हें वीनस की तरह सेब ग्रहण करने या ईव की तरह उसे खाने के लिए बनाया गया था; सुंदरता तुमसे ही शुरू होती है। मैंने अभी ईव का जिक्र किया है; उसे तुमने ही बनाया है। तुम सुंदर स्त्री कहलाने की पात्र हो। हे प्रियतम, मैं अब तुम्हें ‘तुम’ कहकर संबोधित नहीं करूँगा, क्योंकि मैं कविता से गद्य की ओर बढ़ रहा हूँ। थोड़ी देर पहले तुम मेरे नाम की बात कर रही थीं। उससे मुझे बहुत दुख हुआ; लेकिन

हम चाहे जो भी हों, नामों पर भरोसा न करें। वे हमें भ्रमित कर सकते हैं। मेरा नाम फेलिक्स है, और मैं खुश नहीं हूँ। शब्द झूठे होते हैं। हमें उनके संकेतों को आँख बंद करके स्वीकार नहीं करना चाहिए। कॉर्क के लिए लीज और दस्तानों के लिए पौ को लिखना एक गलती होगी। मिस डाहलिया, अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं खुद को रोजा कहता। फूल की खुशबू मीठी होनी चाहिए, और स्त्री में बुद्धि होनी चाहिए। मैं फैंटाइन के बारे में कुछ नहीं कह रहा; वह एक स्वप्नद्रष्टा, चिंतनशील, विचारशील, उदास व्यक्ति है; वह एक अप्सरा के रूप और एक नन की लज्जा से युक्त एक प्रेत है, जो एक वेश्या के जीवन में भटक गई है, लेकिन जो भ्रमों में शरण लेती है, और जो गाती है, प्रार्थना करती है और नीले आकाश में निहारती है। वह ठीक से जानती भी नहीं कि वह क्या देख रही है या क्या कर रही है, और जिसकी निगाहें आसमान पर टिकी हैं, वह एक ऐसे बगीचे में भटकती है जहाँ असलियत से कहीं ज़्यादा पक्षी हैं। हे फैंटाइन, यह जान लो: मैं, थोलोमीज़, एक भ्रम हूँ; लेकिन वह मुझे सुनती तक नहीं, वह सुनहरे बालों वाली काइमेरा की दासी! बाकी सब कुछ उसके बारे में ताजगी, कोमलता, यौवन, मीठी सुबह की रोशनी है। हे फैंटाइन, मार्गुराइट या मोती कहलाने योग्य दासी, तुम खूबसूरत पूरब की स्त्री हो। देवियों, एक दूसरी सलाह: शादी मत करो; शादी एक जोड़ है; यह अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी; इस जोखिम से बचो। लेकिन छी! मैं क्या कह रहा हूँ? मैं अपने शब्द बर्बाद कर रहा हूँ। लड़कियाँ शादी के विषय पर अड़ियल होती हैं, और हम बुद्धिमान लोग जो कुछ भी कह लें, उससे जैकेट बनाने वालों और जूते सिलने वालों को हीरे जड़े पतियों के सपने देखने से नहीं रोका जा सकता। खैर, ऐसा ही सही; लेकिन, मेरी सुंदरियों, यह याद रखना, तुम बहुत ज़्यादा खाती हो चीनी। हे स्त्री, तुम्हारी एक ही गलती है, और वो है चीनी चबाना। हे कामुक स्त्री, तुम्हारे सुंदर छोटे सफेद दांत चीनी को बहुत पसंद करते हैं। अब, मेरी बात ध्यान से सुनो, चीनी एक नमक है। सभी नमक मुरझाने वाले होते हैं। चीनी सभी नमक में सबसे अधिक सुखाने वाली होती है; यह नसों के माध्यम से रक्त के तरल पदार्थों को सोख लेती है; इसलिए रक्त का थक्का जम जाता है, और फिर जम जाता है; इसलिए फेफड़ों में तपेदिक हो जाता है, इसलिए मृत्यु हो जाती है। यही कारण है कि मधुमेह क्षय रोग के करीब पहुंच जाता है। इसलिए, चीनी मत चबाओ, और तुम जीवित रहोगी। मैं पुरुषों की ओर मुड़ता हूँ: सज्जनों, विजय प्राप्त करो, एक-दूसरे की प्रियतमाओं को बिना किसी पछतावे के छीन लो। आगे बढ़ो। प्रेम में

कोई मित्र नहीं होता। जहाँ भी कोई सुंदर स्त्री होती है, वहाँ शत्रुता खुल जाती है। कोई दया नहीं, मृत्यु तक युद्ध! एक सुंदर स्त्री युद्ध का कारण है; एक सुंदर स्त्री घोर दुराचार है। इतिहास के सभी आक्रमण पेटीकोट द्वारा निर्धारित किए गए हैं। स्त्री पुरुष का अधिकार है। रोमुलस ने सबाइनों को ले लिया; विलियम ने ले लिया सैक्सन महिलाएं; सीज़र रोमन महिलाओं को अपने साथ ले गया। जिस पुरुष को प्रेम नहीं मिलता, वह दूसरे पुरुषों की रखैलें पर गिद्ध की तरह मंडराता है; और मैं स्वयं उन सभी दुर्भाग्यशाली विधवा पुरुषों को बोनापार्ट द्वारा इटली की सेना को दिया गया यह उदात्त संदेश देना चाहता हूँ: “सैनिकों, आपको हर चीज़ की आवश्यकता है; दुश्मन के पास वह सब कुछ है।”

थोलोमीज़ रुका।

"सांस लो, थोलोमीज़," ब्लाचेवेल ने कहा।

उसी क्षण, लिस्टोलियर और फेम्यूइल के समर्थन से, ब्लाचेवेल ने एक शोकपूर्ण धुन बजानी शुरू की, जो स्टूडियो में बनाए गए उन गीतों में से एक थी, जो मन में आने वाले पहले शब्दों से रचित थे, जिनमें तुकबंदी भरपूर थी और बिल्कुल भी नहीं, पेड़ के हावभाव और हवा की ध्वनि की तरह अर्थहीन, जो पाइपों की भाप में जन्म लेते हैं और उनके साथ ही विलीन होकर उड़ जाते हैं। यह वह दोहा है जिसके द्वारा समूह ने थोलोमीज़ के भाषण का उत्तर दिया:—

पिता टर्की-मुर्गे इतने गंभीर हैं कि उन्होंने एक एजेंट को कुछ पैसे दिए, ताकि अच्छे स्वामी क्लेरमोंट-टोनर्रे को सेंट जॉन्स दिवस मेले में पोप बनाया जा सके।

लेकिन इस भले क्लेरमोंट को पोप नहीं बनाया जा सकता था, क्योंकि वह कोई पुजारी नहीं था; और फिर उनका एजेंट, जिसका क्रोध भड़क उठा, उनके सारे पैसे वापस कर दिए गए।

इससे थोलोमीज़ की तात्कालिकता शांत नहीं हुई; उसने अपना गिलास खाली किया, भरा, फिर से भरा और दोबारा शुरू किया:—

ज्ञान का नाश हो! मैंने जो कुछ कहा है, सब भूल जाओ। न तो हम संकोची बनें, न ही समझदार, न ही रूढ़िवादी। मैं आनंद के लिए टोस्ट करता हूँ; खुश रहो। चलो हम मूर्खता और खाने-पीने से अपने विधि-पाठ को पूरा करें! अपच और पाचन।

जस्टिनियन पुरुष हो, और दावत, स्त्री! गहराई में आनंद! हे सृष्टि, जियो! संसार एक महान हीरा है। मैं खुश हूँ। पक्षी अद्भुत हैं। हर जगह कैसा उत्सव है! बुलबुल एक मुफ्त एलिवियो है। ग्रीष्म ऋतु, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ! हे लक्ज़मबर्ग! हे रू मैडम और एले डे ल'ऑब्जर्वेटोयर के जॉर्जिक्स! हे चिंतनशील पैदल सैनिक! हे वे सभी मनमोहक नर्सें जो बच्चों की रखवाली करते हुए अपना मनोरंजन करती हैं! अगर ओडियन के आर्केड न होते तो अमेरिका के पंपास मुझे प्रसन्न करते। मेरी आत्मा कुंवारी जंगलों और सवाना में उड़ जाती है। सब कुछ है खूबसूरत। धूप में मक्खियाँ भिनभिना रही हैं। सूरज ने हमिंगबर्ड को छींक से उड़ा दिया है। मुझे गले लगाओ, फैंटाइन!

उसने गलती की और फेवरेट को गले लगा लिया।

VIII. एक घोड़े की मृत्यु

"बोंबार्डा के मुकाबले एडन में डिनर बेहतर होता है," ज़ेफ़िन ने कहा।
“मुझे एडॉन की तुलना में बॉम्बार्डा ज़्यादा पसंद है,” ब्लाचेवेल ने कहा। “वहाँ ज़्यादा विलासिता है। यह ज़्यादा एशियाई है। नीचे वाले कमरे को देखिए; दीवारों पर दर्पण लगे हैं।”
“मुझे वे अपनी प्लेट में ज्यादा पसंद हैं,” फेवरेट ने कहा।
ब्लाचेवेल ने दृढ़ता बनाए रखी:—
“चाकू देखिए। बॉम्बार्डा के चाकूओं के हैंडल चांदी के हैं और एडन के चाकूओं के हैंडल हड्डी के। चांदी हड्डी से ज्यादा कीमती होती है।” "सिर्फ उनके लिए जिनके चेहरे पर चांदी के दाने हों," थोलोमीज़ ने टिप्पणी की।
वह इनवैलिड्स के गुंबद को देख रहा था, जो बॉम्बार्डा की खिड़कियों से दिखाई दे रहा था।
कुछ देर का विराम छा गया।
"थोलोमीज़," फेम्यूइल ने हैरानी से कहा, "लिस्टोलियर और मैं अभी-अभी चर्चा कर रहे थे।"
“चर्चा करना अच्छी बात है,” थोलोमीज़ ने उत्तर दिया; “झगड़ा करना बेहतर है।”
हम दर्शनशास्त्र पर बहस कर रहे थे।
"कुंआ?"
“आप किसे पसंद करते हैं, डेसकार्टेस या स्पिनोजा?”
“डेसाउगियर्स,” थोलोमीज़ ने कहा।
यह फरमान सुनाए जाने के बाद, उन्होंने एक घूंट पिया और आगे बोले:—

मैं जीने के लिए तैयार हूँ। धरती पर सब कुछ खत्म नहीं हुआ है, क्योंकि हम अब भी बेतुकी बातें कर सकते हैं। इसके लिए मैं अमर देवताओं का धन्यवाद करता हूँ। हम झूठ बोलते हैं। एक झूठ बोलता है, लेकिन दूसरा हँसता है। एक पुष्टि करता है, लेकिन दूसरा संदेह करता है। तर्क से अप्रत्याशित बातें फूट पड़ती हैं। यह ठीक है। यहाँ धरती पर अब भी ऐसे इंसान हैं जो विरोधाभास के रहस्य को खुशी-खुशी खोलना और बंद करना जानते हैं। देवियों, यह जो आप इतने शांत भाव से पी रही हैं, वह मदीरा वाइन है, आपको पता होना चाहिए, कौराल दास फ्रेइरास के अंगूर के बाग से, जो समुद्र तल से तीन सौ सत्रह फैदम ऊपर है। पीते समय ध्यान दें! तीन सौ सत्रह फैदम! और महाशय बॉम्बार्डा, शानदार भोजनालय के मालिक, आपको ये तीन सौ सत्रह फैदम चार फ्रैंक और पचास सेंटिम में दे रहे हैं।

फिर फेम्यूइल ने उसे बीच में ही रोक दिया:—

“थोलोमीज़, आपके विचार ही कानून तय करते हैं। आपका पसंदीदा लेखक कौन है?”

“बेर—”

“क्विन?”

“नहीं; चोक्स।”

और थोलॉमीज़ ने आगे कहा:—

“बोंबार्डा को सम्मान! अगर वो मुझे एक भारतीय नर्तकी दिला दे, तो वो एलिफेंटा के मुनोफिस के बराबर हो जाएगा, और अगर वो मुझे एक यूनानी वेश्या ला दे, तो वो चेरोनिया के थाइगेलियन के बराबर हो जाएगा; क्योंकि, हे देवियों! ग्रीस और मिस्र में भी बोंबार्डा थे। अपुलियस हमें उनके बारे में बताते हैं। अफसोस! हमेशा एक ही जैसा, और कुछ नया नहीं; सृष्टिकर्ता द्वारा सृष्टि में इससे अधिक अप्रकाशित कुछ नहीं! सोलोमन कहते हैं, निल सब सोल नोवम; वर्जिल कहते हैं, एमोर ओम्निबस इडेम; और कैराबाइन सेंट-क्लाउड में कैरबिन के साथ नाव पर सवार होती है, जैसे एस्पेशिया समोस में पेरिकल्स के साथ बेड़े पर सवार हुई थी। एक आखिरी बात। क्या आप जानती हैं कि एस्पेशिया कौन थी, देवियों? यद्यपि वह एक ऐसे युग में रहती थी जब महिलाओं के पास अभी तक आत्मा नहीं थी, फिर भी वह एक आत्मा थी; एक गुलाबी और बैंगनी रंग की आत्मा, आग से भी अधिक तीव्र, भोर से भी अधिक ताजा। एस्पेशिया एक ऐसी

प्राणी थी जिसमें नारीत्व के दो चरम रूप मिलते थे; वह वेश्या की देवी थी; सुकरात और मैनन लेस्काउट। एस्पेशिया को इसलिए बनाया गया था ताकि प्रोमेथियस के लिए एक रखैल की आवश्यकता पड़ने पर उसका इस्तेमाल किया जा सके।

थोलॉमीज़ ने बोलना शुरू किया तो उसे रोकना मुश्किल हो जाता, अगर उसी क्षण घाट पर एक घोड़ा न गिर गया होता। इस झटके से गाड़ी और वक्ता दोनों रुक गए। वह एक बूढ़ी और दुबली-पतली ब्यूसेरॉन घोड़ी थी, जो कसाईखाने में जाने लायक थी और एक भारी गाड़ी खींच रही थी। बॉम्बार्डा के सामने पहुँचकर, थकी-हारी घोड़ी ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। इस घटना को देखने के लिए भीड़ जमा हो गई। गुस्से से भरे गाड़ीवाले ने अभी पूरी ताकत से पवित्र शब्द, मतीन (जड़) बोला ही था कि चाबुक की एक निर्मम मार पड़ी और घोड़ा गिर गया, फिर कभी नहीं उठा। राहगीरों के शोर को सुनकर थोलॉमीज़ के खुश श्रोताओं ने अपना सिर घुमाया और थोलॉमीज़ ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपने भाषण का समापन इस उदास छंद के साथ किया:

□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□; □□, □□ □□□□□ □□ □□□, □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□, □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□!

“बेचारा घोड़ा!” फैंटाइन ने आह भरी।

और डाहलिया ने कहा:—

"फैंटाइन घोड़ों को देखकर रोने ही वाली है। भला कोई इतना दयनीय मूर्ख कैसे हो सकता है!"

उसी क्षण फेवरेट ने अपनी बाहें मोड़कर और सिर पीछे की ओर झुकाकर, दृढ़ता से थोलोमीज़ की ओर देखा और कहा:—

“अब बताओ! सरप्राइज?”

“बिल्कुल। वो पल आ गया है,” थोलोमीज़ ने जवाब दिया। “सज्जनों, इन महिलाओं को सरप्राइज देने का समय आ गया है। देवियों, कृपया एक पल रुकिए।”

"इसकी शुरुआत एक चुंबन से होती है," ब्लाचेवेल ने कहा।

"माथे पर," थोलोमीज़ ने आगे कहा।

प्रत्येक ने गंभीरता से अपनी प्रेमिका के माथे पर चुंबन दिया; फिर चारों अपने होठों पर उंगलियां रखे दरवाजे से बाहर निकल गए।

फेवरेट ने उनके जाने पर ताली बजाई।

उन्होंने कहा, "यह अभी से ही मनोरंजक लगने लगा है।"

“ज्यादा देर मत करना,” फैंटाइन ने धीरे से कहा; “हम तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।”

IX. आनंद का सुखद अंत

जब युवा लड़कियां अकेली रह जाती थीं, तो वे दो-दो करके खिड़कियों की चौखटों पर झुककर बातें करती थीं, अपनी गर्दनें बाहर निकालकर एक खिड़की से दूसरी खिड़की पर बातें करती थीं।

उन्होंने देखा कि दोनों युवक कैफे बॉम्बार्डा से हाथ में हाथ डाले बाहर निकले। वे मुड़े, उन्हें इशारे किए, मुस्कुराए और उस धूल भरी रविवार की भीड़ में गायब हो गए जो हर हफ्ते चैंप्स-एलिसी पर उमड़ पड़ती है।

“ज्यादा देर मत करो!” फैंटाइन चिल्लाई।

“वे हमारे लिए क्या लाएंगे?” ज़ेफ़िन ने कहा।

“यह निश्चित रूप से कुछ बहुत सुंदर होगा,” डाहलिया ने कहा।

फेवरेट ने कहा, "जहां तक मेरी बात है, मैं चाहता हूं कि यह सोने का हो।"

उनका ध्यान जल्द ही झील के किनारे हो रही हलचलों की ओर आकर्षित हो गया, जिन्हें वे बड़े पेड़ों की शाखाओं के बीच से देख सकते थे, और जिसने उनका ध्यान काफी हद तक भटका दिया।

डाक गाड़ियों और मालवाहक गाड़ियों के प्रस्थान का समय हो गया था। दक्षिण और पश्चिम की ओर जाने वाली लगभग सभी स्टेजकोचें चैंप्स-एलिसी से होकर गुज़रती थीं। अधिकांश गाड़ियाँ घाट के किनारे-किनारे चलती हुई पासी बैरियर से गुज़रती थीं। पल-पल, पीले और काले रंग से रंगी, भारी भरकम सामान से लदी, शोर मचाती हुई, ट्रंक, तिरपाल और सूटकेस से बेढंगी हो चुकी, तुरंत गायब हो जाने वाले सिरों से भरी कोई विशाल गाड़ी, भट्टी की चिंगारियों की तरह, धूल को धुएँ की तरह उड़ाती हुई और क्रोध से भरी हुई, भीड़ के बीच से तेज़ी से गुज़रती, फुटपाथों को पीसती हुई, सभी पत्थरों को स्टील में बदल देती। इस शोरगुल से युवतियाँ प्रसन्न हो रही थीं। फेवरेट ने कहा:—

“क्या ही हंगामा था! ऐसा लग रहा था मानो जंजीरों का ढेर उड़ रहा हो।”

संयोगवश, घने पेड़ों के बीच से मुश्किल से दिखाई दे रही इन गाड़ियों में से एक गाड़ी एक पल के लिए रुकी, फिर सरपट दौड़ने लगी। यह देखकर फैंटाइन हैरान रह गई।
“यह तो अजीब बात है!” उसने कहा। “मुझे लगा था कि लगन कभी रुकती ही नहीं।” फेवरेट ने अपने कंधे उचका दिए।
“ये फैंटाइन तो वाकई हैरान करने वाली है। मैं तो बस जिज्ञासावश उसे देखने आई हूँ। वो तो छोटी-छोटी बातों से भी चकित हो जाती है। एक उदाहरण लीजिए: मैं एक यात्री हूँ; मैं ट्रेन से कहती हूँ, ‘मैं आगे चल रही हूँ; आप मुझे घाट पर मिलते हुए देख लेना।’ ट्रेन आती है, मुझे देखती है, रुकती है और मुझे ले जाती है। ऐसा हर दिन होता है। मेरी प्यारी, तुम्हें तो ज़िंदगी का पता ही नहीं।”
इस तरह कुछ समय बीत गया। अचानक फेवरेट ने हरकत की, जैसे कोई व्यक्ति अभी- अभी नींद से जागा हो।
“अच्छा,” उसने कहा, “और वो सरप्राइज?”
“हाँ, वैसे,” डाहलिया ने बीच में कहा, “वह मशहूर सरप्राइज?”
"इसमें उन्हें बहुत लंबा समय लगता है!" फैंटाइन ने कहा।
जैसे ही फैंटाइन ने यह आह भरी, रात के खाने में उनकी सेवा करने वाला वेटर अंदर आया। उसके हाथ में कुछ ऐसा था जो एक पत्र जैसा लग रहा था।
“यह क्या है?” फेवरेट ने पूछा।
वेटर ने जवाब दिया:—
"यह वह कागज है जो उन सज्जनों ने इन महिलाओं के लिए छोड़ा था।"
“तुम इसे तुरंत क्यों नहीं लाए?”
वेटर ने कहा, "क्योंकि सज्जनों ने मुझे आदेश दिया है कि मैं इसे एक घंटे तक महिलाओं को न परोसूं।"
फेवरेट ने वेटर के हाथ से कागज छीन लिया। दरअसल, वह एक पत्र था।
“रुको!” उसने कहा; “इस पर कोई पता नहीं है; लेकिन इस पर यह लिखा है—”

यह आश्चर्य की बात है

उसने जल्दी से पत्र फाड़कर खोला और पढ़ा (उसे पढ़ना आता था):—

हमारे प्रियतम:—

आपको पता होना चाहिए कि हमारे माता-पिता हैं। माता-पिता—आप इन सब बातों के बारे में ज़्यादा नहीं जानते। इन्हें नागरिक संहिता में पिता और माता कहा गया है, जो बचकाना और ईमानदार है। अब, ये माता-पिता कराह रहे हैं, ये बूढ़े लोग हमसे विनती कर रहे हैं, ये भले पुरुष और ये भली महिलाएं हमें भटके हुए बेटे कह रहे हैं; वे हमारी वापसी चाहते हैं, और हमारे लिए बछड़े मारने की पेशकश करते हैं। गुणी होने के कारण, हम उनकी बात मानते हैं। जिस समय आप इसे पढ़ रहे हैं, पाँच तेज़ घोड़े हमें हमारे माता-पिता के पास ले जा रहे होंगे। हम अपना ठेला उखाड़ रहे हैं, जैसा कि बॉसुएट कहते हैं। हम जा रहे हैं; हम जा चुके हैं। हम लाफिट की बाहों में और कैलार्ड के पंखों पर सवार होकर भाग रहे हैं। टूलूज़ की लगन हमें खाई से खींच लाती है, और खाई तुम हो, हे हमारी प्यारी बच्चियों! हम समाज में, कर्तव्य में, सम्मान में, पूरी गति से, तीन मील प्रति घंटे की रफ्तार से लौट रहे हैं। देश के हित में यह आवश्यक है कि हम भी बाकी दुनिया की तरह मुखिया, परिवार के प्रमुख, ग्रामीण पुलिस और राज्य के पार्षद बनें। हमारा आदर कीजिए। हम अपना बलिदान दे रहे हैं। हमारे लिए शीघ्र शोक मनाइए और हमारी जगह शीघ्र ही नए लोगों को नियुक्त कीजिए। यदि यह पत्र आपको पीड़ा पहुँचाता है, तो आप भी इसे वही पीड़ा पहुँचाएँ। अलविदा।

लगभग दो वर्षों तक हमने आपको खुश रखा है। इसके लिए हमें आपसे कोई शिकायत नहीं है।

हस्ताक्षरित: ब्लैचेवेल,
परिवार,
लिस्टोलियर,
फ़ेलिक्स थोलोमीज़।

परिशिष्ट। खाने का बिल चुका दिया गया है।

चारों युवतियों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

फेवरेट ने सबसे पहले चुप्पी तोड़ी।
“वाह!” उसने कहा, “फिर भी यह एक बहुत ही सुंदर प्रहसन है।”
"यह बहुत ही हास्यास्पद है," ज़ेफ़िन ने कहा।
“यह ब्लाचेवेल का ही विचार रहा होगा,” फेवरेट ने बात जारी रखते हुए कहा। “इससे मुझे उससे प्यार हो गया है। उसके जाते ही लोग उससे प्यार करने लगते हैं। यह वाकई एक रोमांच है।”
“नहीं,” डाहलिया ने कहा; “यह थोलोमीज़ के विचारों में से एक था। यह स्पष्ट है।”
“तो फिर,” फेवरेट ने पलटवार करते हुए कहा, “ब्लाचेवेल का नाश हो, और थोलोमीज़ अमर रहे!”
“थोलोमीस अमर रहे!” डाहलिया और ज़ेफ़िन ने उत्साहपूर्वक कहा।
और वे जोर से हंस पड़े।
फैंटाइन भी बाकियों के साथ हंस पड़ी।
एक घंटे बाद जब वह अपने कमरे में लौटी तो रोने लगी। जैसा कि हमने बताया, यह उसका पहला प्रेम प्रसंग था; उसने खुद को इस थोलोमीज़ को पति की तरह सौंप दिया था, और बेचारी लड़की ने एक बच्चे को जन्म दिया था।

पुस्तक IV. किसी पर भरोसा करना कभी-कभी उसे किसी व्यक्ति की शक्ति के हवाले कर देना होता है।

I. एक माँ दूसरी माँ से मिलती है

इस शताब्दी के पहले चौथाई भाग में, पेरिस के पास मॉन्टफर्मेइल में एक छोटी सी रसोई हुआ करती थी, जो अब मौजूद नहीं है। यह रसोई थेनार्डियर नामक पति- पत्नी चलाते थे। यह बोलंगर लेन में स्थित थी। दरवाजे के ऊपर दीवार से सटाकर एक तख्ती ठोंकी गई थी। इस तख्ती पर एक चित्र बना था जिसमें एक आदमी दूसरे आदमी को अपनी पीठ पर उठाए हुए था, दूसरे आदमी ने जनरल के बड़े सुनहरे कंधे के बैज और बड़े चांदी के सितारे पहने हुए थे; लाल धब्बे खून को दर्शाते थे; बाकी चित्र में धुआं था, जो शायद किसी युद्ध को दर्शाता था। इसके नीचे यह शिलालेख था: वाटरलू के सार्जेंट के चिन्ह पर (Au Sargent de Waterloo)।

किसी भी सराय के दरवाजे पर बैलगाड़ी या ट्रक का दिखना आम बात है। फिर भी, 1818 की वसंत ऋतु में एक शाम, वाटरलू के सार्जेंट की रसोई के सामने सड़क पर पड़ा वह वाहन, या अधिक सटीक रूप से कहें तो वाहन का एक टुकड़ा, अपने भारी वजन के कारण उस रास्ते से गुजरने वाले किसी भी चित्रकार का ध्यान अवश्य आकर्षित करता।

यह उन ट्रकों में से एक का आगे का हिस्सा था जिनका उपयोग जंगली इलाकों में मोटी तख्तियों और पेड़ों के तनों को ढोने के लिए किया जाता है। इस आगे के हिस्से में एक भारी लोहे का धुरीदार ढांचा था, जिसमें एक भारी शाफ्ट लगा हुआ था, और जिसे दो बड़े पहियों द्वारा सहारा दिया गया था। पूरी चीज़ सघन, विशाल और बेडौल थी। यह किसी विशाल तोप के रथ जैसा लग रहा था। सड़क के गड्ढों ने पहियों, हैंडल, हब, धुरी और शाफ्ट पर कीचड़ की एक परत जमा दी थी, एक भयंकर पीले रंग की परत, जो कुछ हद तक उस रंग जैसी थी जिससे लोग गिरजाघरों को सजाना पसंद करते हैं। लकड़ी कीचड़ में और लोहा जंग में दब रहा था। धुरीदार ढांचे के नीचे, किसी विशालकाय कैदी की जंजीर की तरह, एक कपड़े की तरह लटक रही थी। यह जंजीर उन बीमों का नहीं, जिन्हें ढोना इसका काम था, बल्कि उन विशालकाय जानवरों का आभास करा रही थी जिन्हें यह शायद जोतने के काम आती थी; इसमें विशालकाय जहाजों की झलक थी, लेकिन एक आंख वाले और अलौकिक जहाजों की, और ऐसा लग रहा था मानो इसे किसी राक्षस से अलग किया

गया हो। होमर ने पॉलीफेमस को इससे बांध दिया होता, और शेक्सपियर ने कैलिबन को।

उस ट्रक का आगे का हिस्सा सड़क पर उस जगह क्यों खड़ा था? पहली बात तो सड़क पर रुकावट डालने के लिए; दूसरी बात, ताकि उसमें जंग लग जाए। पुरानी सामाजिक व्यवस्था में ऐसी कई संस्थाएँ हैं, जो बाहर घूमते-फिरते इसी तरह सामने आती हैं, और जिनके अस्तित्व का उपरोक्त कारण के अलावा कोई और कारण नहीं है।

चेन का केंद्र ज़मीन के बिल्कुल पास बीच में झूल रहा था, और झूले की रस्सी की तरह उसके लूप में, उस खास शाम को, दो छोटी बच्चियाँ बड़ी खूबसूरती से एक-दूसरे से गुंथी हुई बैठी थीं; एक लगभग ढाई साल की, दूसरी अठारह महीने की; छोटी बच्ची दूसरी की गोद में थी। उनके गले में चतुराई से बाँधा गया एक रूमाल उन्हें गिरने से बचा रहा था। एक माँ की नज़र उस भयानक चेन पर पड़ी और उसने कहा, “आओ! मेरे बच्चों के लिए एक खिलौना है।”

सुंदर और सुरुचिपूर्ण ढंग से सजे हुए दोनों बच्चे आनंद से दमक रहे थे; मानो वे पुराने लोहे के बीच दो गुलाब हों; उनकी आँखें विजय की चमक थीं; उनके ताज़े गाल हँसी से खिले हुए थे। एक के बाल भूरे थे; दूसरे के। उनके मासूम चेहरे दो आनंदित आश्चर्यों से भरे थे; पास में उगी एक खिली हुई झाड़ी से आती सुगंध राहगीरों को ऐसा लग रहा था मानो उनसे ही निकल रही हो; अठारह महीने की बच्ची ने अपने छोटे से नंगे पेट को बचपन की पवित्रता और मासूमियत से दिखाया। इन दो कोमल सिरों के ऊपर और चारों ओर, जो आनंद से भरे और प्रकाश में डूबे हुए थे, जंग से काला, लगभग भयानक, घुमावदार और बेतरतीब कोणों से उलझा हुआ विशाल अग्रभाग एक गुफा के प्रवेश द्वार की तरह गुंबदनुमा संरचना में खड़ा था। कुछ ही कदमों की दूरी पर, सराय की दहलीज पर झुकी हुई, माँ, जो देखने में बहुत आकर्षक नहीं थी, लेकिन उस क्षण भावुक लग रही थी, एक लंबी रस्सी से दोनों बच्चों को झुला रही थी, दुर्घटनाओं के डर से उन्हें ध्यान से देख रही थी, और उसके चेहरे पर मातृत्व की वह पशुवत और दिव्य भाव-भंगिमा थी। हर आगे-पीछे झूलने पर रस्सी की भयानक कड़ियाँ एक कर्कश ध्वनि उत्पन्न कर रही थीं, जो क्रोध की चीख जैसी लग रही थी; छोटी बच्चियाँ आनंद से झूम रही थीं; डूबता सूरज इस आनंद में घुलमिल गया था, और संयोग की इस अनोखी घटना से अधिक मनमोहक कुछ भी नहीं हो सकता था जिसने टाइटन्स की एक श्रृंखला को देवदूतों के झूले में बदल दिया था।

अपने नन्हे-मुन्नों को झुलाते हुए, माँ ने एक बेसुरी आवाज़ में एक प्रेम कहानी गुनगुनाई, जिसका उन्होंने तब जश्न मनाया:—

“ऐसा ही होना चाहिए,” एक योद्धा ने कहा।

उसका गाना और अपनी बेटियों के बारे में सोचना, उसे सड़क पर क्या हो रहा था, उसे सुनने और देखने से रोक रहा था।

इसी बीच, जब वह प्रेम कविता की पहली पंक्ति शुरू कर रही थी, तभी कोई उसके पास आया और अचानक उसे अपने कान के बहुत पास एक आवाज सुनाई दी:—

"आपके दो प्यारे बच्चे हैं, मैडम।"

“सुंदर और कोमल इमोजेन को—”

मां ने अपनी प्रेम कहानी जारी रखते हुए जवाब दिया; फिर उसने अपना सिर घुमा लिया।

कुछ कदम की दूरी पर एक महिला उसके सामने खड़ी थी। इस महिला के पास भी एक बच्चा था, जिसे उसने अपनी बाहों में उठा रखा था।

इसके अलावा, वह एक बड़ा कालीन का थैला भी ले जा रही थी, जो काफी भारी लग रहा था।

इस महिला की बच्ची देखने में बेहद खूबसूरत थी। वह दो या तीन साल की बच्ची थी। अपने पहनावे की खूबसूरती के मामले में वह बाकी दो बच्चियों से कम नहीं थी; उसने महीन लिनेन की टोपी, चोली पर रिबन और टोपी पर वैलेंसिएन्स लेस पहनी हुई थी। उसकी स्कर्ट की तहें इस तरह उठी हुई थीं कि उसकी सफेद, सुडौल और डिंपल वाली टांग दिखाई दे रही थी। वह बेहद गुलाबी और स्वस्थ थी। उस नन्ही सी सुंदरता को देखकर मन करता था कि उसके गालों को चूम लूँ। उसकी आँखों के बारे में बस इतना ही पता था कि वे बहुत बड़ी होंगी और उनकी पलकें बेहद खूबसूरत होंगी। वह सो रही थी।

वह अपनी उम्र के अनुरूप पूर्ण आत्मविश्वास भरी नींद में सोई। माँ की गोद कोमलता से भरी होती है; उनमें बच्चे गहरी नींद सोते हैं।

जहां तक मां की बात है, उनका चेहरा उदास और गरीबी से ग्रस्त लग रहा था। उन्होंने एक ऐसी कामकाजी महिला के कपड़े पहने थे जो फिर से किसान बनने की कगार पर थी। वह जवान थीं। क्या वह सुंदर थीं? शायद; लेकिन उस पोशाक में यह

स्पष्ट नहीं था। उनके बाल, जिनमें से एक सुनहरी लट बाहर निकली हुई थी, बहुत घने लग रहे थे, लेकिन ठुड्डी के नीचे बंधी एक भद्दी, तंग, नन जैसी टोपी के नीचे बुरी तरह से ढके हुए थे। मुस्कान में सुंदर दांत दिखते हैं जब किसी के दांत अच्छे हों; लेकिन वह मुस्कुरा नहीं रही थीं। उनकी आंखें बहुत लंबे समय से सूखी नहीं लग रही थीं। वह पीली पड़ गई थीं; उनका चेहरा बहुत थका हुआ और कुछ हद तक बीमार सा लग रहा था। वह अपनी गोद में सो रही बेटी को उस भाव से देख रही थीं जो किसी मां का होता है जिसने अपने बच्चे को पाला हो। एक बड़ा नीला रूमाल, जैसा कि इनवैलिड्स इस्तेमाल करते हैं, फिचू की तरह मोड़ा हुआ था, और उनके शरीर को भद्दे ढंग से छिपाए हुए था। उनके हाथ धूप से झुलसे हुए थे और उन पर जगह-जगह झाइयां थीं, उनकी तर्जनी उंगली सख्त हो गई थी और सुई से कटी हुई थी; उसने भूरे रंग के मोटे ऊनी कपड़े का एक लबादा, लिनेन का गाउन और मोटे जूते पहने हुए थे। वह फैंटाइन थी।

वह फैंटाइन ही थी, पर पहचानना मुश्किल था। फिर भी, ध्यान से देखने पर पता चला कि उसकी सुंदरता अभी भी बरकरार थी। उसके दाहिने गाल पर उदासी की एक लकीर थी, जो व्यंग्य की शुरुआत जैसी लग रही थी। जहाँ तक उसके श्रृंगार की बात है, मलमल और रिबन से बना वह हल्का-फुल्का श्रृंगार, जो आनंद, मूर्खता और संगीत से भरा हुआ प्रतीत होता था, घंटियों से सजा हुआ और बकाइन की खुशबू से महकता हुआ, उस खूबसूरत और चकाचौंध कर देने वाले पाले की तरह गायब हो गया था, जिसे सूरज की रोशनी में हीरे समझ लिया जाता है; वह पिघल जाता है और डाल को बिल्कुल काला छोड़ देता है।

उस "सुंदर तमाशे" के बाद दस महीने बीत चुके थे।

उन दस महीनों के दौरान क्या हुआ था? इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

परित्याग के बाद, परिस्थितियाँ और भी विकट हो गईं। फैंटाइन ने फेवरेट, ज़ेफ़िन और डाहलिया से तुरंत ही नाता तोड़ लिया; पुरुषों के बीच का बंधन टूट चुका था, अब महिलाओं के बीच का बंधन भी टूट चुका था; अगर कोई उन्हें दो हफ्ते बाद बताता कि वे दोस्त थीं, तो वे बहुत आश्चर्यचकित होतीं; अब ऐसी बात का कोई कारण ही नहीं रह गया था। फैंटाइन अकेली रह गई थी। उसके बच्चे का पिता चला गया—हाय! ऐसे अलगाव अपरिवर्तनीय होते हैं—उसने खुद को पूरी तरह से अलग-थलग पाया, काम करने की आदत से वंचित और सुख-सुविधाओं से रहित। थोलोमीज़ के साथ अपने संबंध के कारण उसने अपने जाने-पहचाने सुंदर व्यवसाय

को तिरस्कार किया और अपने व्यवसाय को खुला रखना छोड़ दिया; अब वह उसके लिए बंद हो चुका था। उसके पास कोई सहारा नहीं था। फैंटाइन को मुश्किल से पढ़ना आता था और लिखना नहीं आता था; बचपन में उसे केवल अपने नाम पर हस्ताक्षर करना सिखाया गया था; उसने एक सार्वजनिक पत्र लेखक से थोलोमीज़ को एक पत्र लिखवाया, फिर दूसरा, फिर तीसरा। थोलोमीज़ ने उनमें से किसी को भी जवाब नहीं दिया। फैंटाइन ने गपशप करने वालों को अपने बच्चे को देखते हुए कहते सुना: “इन बच्चों को कौन गंभीरता से लेता है! ऐसे बच्चों को देखकर तो बस कंधे उचका दिए जाते हैं!” फिर उसे थोलोमीज़ की याद आई, जिसने अपने बच्चे को देखकर कंधे उचका दिए थे और उस मासूम को गंभीरता से नहीं लिया था; और उसका दिल उस आदमी के प्रति उदास हो गया। लेकिन वह क्या करती? उसे समझ नहीं आ रहा था कि किससे मदद मांगे। उसने गलती की थी, लेकिन जैसा कि याद होगा, उसके स्वभाव की बुनियाद विनम्रता और सद्गुण थी। उसे हल्का-सा एहसास था कि वह संकट में पड़ने वाली है और बदतर स्थिति की ओर बढ़ रही है। साहस आवश्यक था; उसके पास वह था, और उसने खुद को दृढ़ रखा। उसे अपने पैतृक शहर मसुर म लौटने का ख्याल आया। वहाँ शायद कोई उसे पहचान ले और उसे काम दे दे; हाँ, लेकिन अपनी गलती छुपाना ज़रूरी होगा। उलझन में उसने उस अलगाव की आवश्यकता को महसूस किया जो पहले वाले से कहीं अधिक दर्दनाक होगा। उसका दिल सिकुड़ गया, लेकिन उसने अपना संकल्प लिया। जैसा कि हम आगे देखेंगे, फैंटाइन में जीवन का अटूट साहस था। उसने पहले ही बड़े साहस से शिष्टता का त्याग कर दिया था, लिनेन के वस्त्र पहने थे, और अपने सभी रेशमी वस्त्र, सभी गहने, सभी रिबन और सभी फीते अपनी बेटी को दे दिए थे, जो उसकी एकमात्र बची हुई विलासिता थी, और वह भी एक पवित्र विलासिता। उसने अपना सब कुछ बेच दिया, जिससे उसे दो सौ फ्रैंक मिले; अपने छोटे-मोटे कर्ज चुकाने के बाद, उसके पास लगभग अस्सी फ्रैंक ही बचे थे। बाईस वर्ष की आयु में, एक खूबसूरत बसंत की सुबह, वह अपने बच्चे को पीठ पर लिए पेरिस से विदा हुई। इन दोनों को जाते हुए देखकर हर कोई उन पर तरस खाता। इस स्त्री के पास दुनिया में अपने बच्चे के सिवा कुछ नहीं था, और बच्चे के पास दुनिया में इस स्त्री के सिवा कोई नहीं था। फैंटाइन ने अपने बच्चे को दूध पिलाया था, जिससे उसकी छाती थक गई थी और उसे हल्की खांसी हुई थी।

हमें एम. फेलिक्स थोलोमीज़ के बारे में और बात करने की आवश्यकता नहीं होगी। संक्षेप में, हम इतना ही कह सकते हैं कि बीस वर्ष बाद, राजा लुई फिलिप के शासनकाल में, वे एक महान प्रांतीय वकील, धनी और प्रभावशाली व्यक्ति, एक बुद्धिमान निर्वाचक और एक अत्यंत कठोर निर्णायक थे; वे अब भी मौज-मस्ती करने वाले व्यक्ति थे।

दिन के मध्य में, समय-समय पर आराम करने के लिए, तीन या चार सू प्रति लीग की दर से, जिसे उस समय पेटिट्स वोइटर्स डेस एनविरॉन्स डे पेरिस, यानी "छोटी उपनगरीय कोच सेवा" के रूप में जाना जाता था, में यात्रा करने के बाद, फैंटाइन ने खुद को मोंटफर्मेइल में, बोलेंजर गली में पाया।

जब वह थेनार्डियर सराय के पास से गुजरी, तो विशाल झूले में आनंदित दो छोटी बच्चियों ने उसे इस तरह से चकाचौंध कर दिया कि वह आनंद के उस दृश्य के सामने रुक गई।

जादू-टोना सच में होता है। ये दोनों नन्ही बच्चियां इस मां के लिए जादू की तरह थीं।

वह अत्यंत भावुक होकर उन्हें निहार रही थी। स्वर्गदूतों की उपस्थिति स्वर्ग की घोषणा होती है। उसने सोचा कि इस सराय के ऊपर, वह ईश्वर की रहस्यमयी योजना को देख रही है। ये दोनों नन्हे जीव स्पष्ट रूप से प्रसन्न थे। वह उन्हें निहारती रही, उनकी प्रशंसा करती रही, इतनी भावुकता से कि जब उनकी माँ अपने गीत के दो दोहे के बीच साँस ले रही थी, तब वह अपनी माँ से वही बात कहने से खुद को रोक नहीं पाई जो हमने अभी पढ़ी है:

"आपके दो प्यारे बच्चे हैं, मैडम।"

अपने बच्चों को प्यार से सहलाने पर सबसे क्रूर प्राणी भी शांत हो जाते हैं।

मां ने सिर उठाकर धन्यवाद दिया और राहगीर को दरवाजे के पास वाली बेंच पर बैठने को कहा, वह खुद दहलीज पर बैठ गई। दोनों महिलाएं बातें करने लगीं।

“मेरा नाम मैडम थेनार्डियर है,” दोनों छोटी बच्चियों की माँ ने कहा। “हम इस सराय को चलाते हैं।”

फिर, उसका मन अभी भी अपने प्रेम प्रसंग में डूबा हुआ था, उसने दांतों के बीच गुनगुनाना शुरू कर दिया:—

“ऐसा ही होना चाहिए; मैं एक शूरवीर हूँ, और मैं फिलिस्तीन जा रहा हूँ।”

यह मैडम थेनार्डियर सांवले रंग की, दुबली-पतली और दुबली-पतली महिला थीं— सैनिकों की पत्नियों की हर अप्रिय छवि में; और अजीब बात यह थी कि उनके चेहरे पर उदासी छाई रहती थी, जो शायद प्रेम कहानियों के अध्ययन के कारण थी। वह बनावटी, लेकिन मर्दाना स्वभाव की थीं। पुरानी प्रेम कहानियाँ जब किसी रसोई की महिला की कल्पना से टकराती हैं तो ऐसा ही प्रभाव डालती हैं। वह अभी भी युवा थीं; उनकी उम्र मुश्किल से तीस वर्ष थी। यदि यह झुकी हुई महिला सीधी खड़ी होती, तो उनका लंबा कद और मेले में चलने वाली किसी विशालकाय मूर्ति जैसी आकृति, शायद यात्री को शुरुआत में ही डरा देती, उसके आत्मविश्वास को भंग कर देती और उस घटना को अस्त-व्यस्त कर देती जिसके कारण हमें यह सब बताना है। जो व्यक्ति सीधा खड़ा होने के बजाय बैठा हो—किस्मत उसी पर टिकी होती है।

यात्री ने अपनी कहानी को थोड़े-बहुत बदलाव के साथ सुनाया।

वह एक कामकाजी महिला थी; उसके पति की मृत्यु हो चुकी थी; पेरिस में उसका काम असफल रहा था और वह अपने पैतृक क्षेत्र में कहीं और काम की तलाश में जा रही थी; वह उस सुबह पैदल ही पेरिस से निकली थी; क्योंकि वह अपने बच्चे को गोद में लिए हुए थी और थकी हुई महसूस कर रही थी, इसलिए जब उसे विलेमोम्बल की गाड़ी मिली तो वह उसमें बैठ गई; विलेमोम्बल से वह पैदल ही मोंटफर्मेइल आई थी; छोटी बच्ची थोड़ी-थोड़ी चली थी, लेकिन ज्यादा नहीं, क्योंकि वह बहुत छोटी थी, और उसे गोद में उठाना पड़ा था, और वह बच्ची सो गई थी।

यह शब्द सुनते ही उसने अपनी बेटी को प्यार से चूमा, जिससे वह जाग उठी। बच्ची ने अपनी आँखें खोलीं, उसकी बड़ी-बड़ी नीली आँखें बिल्कुल उसकी माँ जैसी थीं, और उसने देखा—किसे? कुछ नहीं; छोटे बच्चों के उस गंभीर और कभी- कभी कठोर भाव से, जो हमारे सद्गुणों की धुंधली सी दुनिया में उनकी चमकती मासूमियत का रहस्य है। ऐसा लगता है मानो वे खुद को देवदूत समझती हैं और हमें इंसान समझती हैं। फिर बच्ची हँसने लगी; और हालाँकि माँ ने उसे कसकर पकड़ रखा था, वह दौड़ने की बेताब इच्छा से ज़मीन पर गिर पड़ी। अचानक उसकी

नज़र झूले पर बैठे दो लोगों पर पड़ी, वह एकदम रुक गई और प्रशंसा जताते हुए अपनी जीभ बाहर निकाल दी।

मदर थेनार्डियर ने अपनी बेटियों को झूले से नीचे उतारा और कहा:—

अब तुम तीनों अपना मनोरंजन करो।

उस उम्र में बच्चे जल्दी ही एक-दूसरे से परिचित हो जाते हैं, और एक मिनट बीतने के बाद ही छोटे थेनार्डियर बच्चे नए आने वाले के साथ जमीन में गड्ढे खोदने का खेल खेलने लगे, जो उनके लिए बेहद आनंददायक था।

नवागंतुक बहुत हंसमुख थी; बच्चे की हंसमुखता में माँ की अच्छाई झलकती थी; उसने लकड़ी का एक टुकड़ा उठाया और उसे फावड़े की तरह इस्तेमाल करते हुए बड़ी ऊर्जा से एक मक्खी के लिए पर्याप्त जगह वाला गड्ढा खोदा। जब कोई बच्चा कब्र खोदने का काम करता है तो हंसी का पात्र बन जाता है।

दोनों महिलाएं अपनी बातचीत जारी रखती हैं।

आपके बच्चे का नाम क्या है?

कोसेट।

कोसेट के स्थान पर यूफ्रेसी पढ़ें। बच्ची का नाम यूफ्रेसी था। लेकिन यूफ्रेसी से माँ ने कोसेट नाम रखा, माताओं और आम लोगों की उस प्यारी और सहज प्रवृत्ति से जो जोसेफा को पेपिता और फ्रांस्वा को सिलेट में बदल देती है। यह एक प्रकार का व्युत्पन्न है जो व्युत्पत्ति विज्ञान के पूरे विज्ञान को अस्त-व्यस्त और विचलित कर देता है। हम एक ऐसी दादी को जानते हैं जिन्होंने थियोडोर को ग्नोन में बदलने में सफलता प्राप्त की थी।

"उसकी क्या उम्र है?"

वह तीन साल की होने वाली है।

"यह मेरे सबसे बड़े बेटे की उम्र है।"

इसी बीच, तीनों छोटी लड़कियां गहरी चिंता और आनंद की भावना में डूबी हुई थीं; एक घटना घटी थी; जमीन से एक बड़ा कीड़ा निकला था, और वे डरी हुई थीं; और वे उस पर परमानंद में डूबी हुई थीं।

उनकी चमकीली भौहें एक-दूसरे को छू रही थीं; ऐसा लग रहा था मानो एक ही प्रभामंडल में तीन सिर हों।
“बच्चे कितनी आसानी से एक-दूसरे से घुलमिल जाते हैं!” मदर थेनार्डियर ने कहा; “ऐसा लगता है मानो वे तीनों बहनें हों!”
यह टिप्पणी शायद वही चिंगारी थी जिसका दूसरी माँ इंतज़ार कर रही थी। उसने थेनार्डियर का हाथ पकड़ा, उसे टकटकी लगाकर देखा और कहा:—
"क्या तुम मेरे बच्चे को मेरे लिए संभाल कर रखोगे?"
थेनार्डियर ने आश्चर्य का ऐसा भाव दिखाया जो न तो सहमति दर्शाता है और न ही अस्वीकृति।
कोसेट की मां ने आगे कहा:—
“देखिए, मैं अपनी बेटी को गाँव नहीं ले जा सकती। मेरे काम की वजह से यह संभव नहीं है। बच्चे के साथ नौकरी मिलना मुश्किल है। गाँव के लोग बड़े ही अजीब होते हैं। ईश्वर की कृपा से ही मैं आपके सराय के पास से गुज़री। जब मैंने आपके नन्हे-मुन्ने बच्चों को देखा, जो इतने प्यारे, इतने साफ-सुथरे और इतने खुश थे, तो मेरा मन प्रसन्न हो गया। मैंने सोचा, ‘यह तो एक अच्छी माँ है। यही तो चाहिए था; इससे तीन बहनें हो जाएँगी।’ और फिर, मैं जल्द ही वापस आ जाऊँगी। क्या आप मेरे बच्चे को अपने पास रख लेंगी?”
“मुझे इस बारे में देखना होगा,” थेनार्डियर ने उत्तर दिया।
मैं तुम्हें हर महीने छह फ्रैंक दूंगा।
रसोई के अंदर से एक आदमी की आवाज आई:—
“सात फ्रैंक से कम में नहीं। और छह महीने का भुगतान अग्रिम में करना होगा।”
“छह गुना सात बयालीस होता है,” थेनार्डियर ने कहा।
“मैं इसे दे दूंगी,” मां ने कहा।
“और प्रारंभिक खर्चों के लिए पंद्रह फ्रैंक अतिरिक्त,” उस व्यक्ति की आवाज ने आगे कहा।

“कुल मिलाकर सत्तावन फ्रैंक,” मैडम थेनार्डियर ने कहा। और उन्होंने अस्पष्ट रूप से ये आंकड़े बताए:—
“ऐसा ही होना चाहिए,” एक योद्धा ने कहा।
“मैं भुगतान कर दूंगी,” माँ ने कहा। “मेरे पास अस्सी फ्रैंक हैं। पैदल चलकर गाँव पहुँचने के लिए मेरे पास पर्याप्त पैसे बच जाएँगे। मैं वहाँ कुछ पैसे कमाऊँगी और जैसे ही मेरे पास थोड़े पैसे जमा होंगे, मैं अपने प्यारे बच्चे को वापस ले आऊँगी।”
उस आदमी की आवाज फिर से सुनाई दी:—
“क्या उस छोटी बच्ची के पास कोई पोशाक है?”
“वह मेरे पति हैं,” थेनार्डियर ने कहा।
“बेशक उसके पास एक पोशाक होगी, बेचारी।—मैं अच्छी तरह समझ गई थी कि यह आपके पति की है।—और वह भी एक खूबसूरत पोशाक! एक बेतुकी पोशाक, हर चीज़ दर्जन भर, और रेशमी गाउन किसी महिला की तरह। यह मेरे बैग में है।” “तुम्हें इसे सौंपना होगा,” उस आदमी की आवाज में फिर से दृढ़ता झलक रही थी। “बेशक मैं तुम्हें दे दूंगी,” माँ ने कहा। “अगर मैं अपनी बेटी को बिलकुल नग्न छोड़ दूं तो यह बहुत अजीब होगा!”
गुरु का चेहरा प्रकट हुआ।
“यह अच्छी बात है,” उसने कहा।
सौदा तय हो गया। माँ ने रात सराय में बिताई, अपने पैसे दे दिए और बच्चे को वहीं छोड़ दिया। उसने अपने सामान को हटाकर, जो अब हल्का हो गया था, अपना थैला फिर से बांध लिया और अगली सुबह जल्दी लौटने के इरादे से निकल पड़ी। लोग ऐसे प्रस्थान शांति से कर लेते हैं; लेकिन ये तो निराशा ही होती है! थेनार्डियर परिवार के एक पड़ोसी ने इस माँ से तब मुलाकात की जब वह घर से निकल रही थी, और उसने यह टिप्पणी करते हुए वापस आया:—
मैंने अभी-अभी सड़क पर एक महिला को इतना रोते हुए देखा कि उसे देखकर दिल दहल जाता है।
कोसेट की मां के चले जाने के बाद, उस आदमी ने उस औरत से कहा:—

“इससे मेरा कल देय एक सौ दस फ़्रैंक का कर्ज़ चुक जाएगा; मुझे पचास फ़्रैंक कम पड़ रहे थे। क्या आपको पता है कि मेरे पीछे एक ज़मानतदार और एक विरोधकर्ता होना चाहिए था? आपने अपने बच्चों के साथ चूहेदानी का खेल बड़ी चतुराई से खेला।”

"मुझे इसका अंदाजा भी नहीं था," महिला ने कहा।

II. दो अनाकर्षक आकृतियों का पहला रेखाचित्र

पकड़ा गया चूहा एक दयनीय नमूना था; लेकिन बिल्ली तो दुबले-पतले चूहे को देखकर भी खुश हो जाती है।

ये थेनार्डियर कौन थे?

चलिए, अभी इनके बारे में एक-दो शब्द बोल लेते हैं। बाकी का विवरण हम बाद में पूरा करेंगे।

ये लोग उस नीच वर्ग से संबंधित थे जो सफल तो हो चुके असभ्य लोगों और उन बुद्धिमान लोगों से बना था जो निम्न स्तर पर आ गए थे। यह वर्ग "मध्यम" और "हीन" कहलाने वाले वर्ग के बीच आता है, और इसमें दूसरे वर्ग के कुछ दोष और पहले वर्ग के लगभग सभी दुर्गुण समाहित होते हैं, लेकिन इनमें न तो मजदूर की उदारता की भावना होती है और न ही बुर्जुआ वर्ग की ईमानदार व्यवस्था।

उनका स्वभाव इतना बौना था कि अगर उन्हें हल्की सी आग भी लग जाए तो वे आसानी से विकराल रूप धारण कर लेते थे। स्त्री में पशुता का अंश था और पुरुष में दुष्टता के गुण। दोनों ही बुराई की ओर बढ़ने वाले घिनौने स्वभाव के प्रबल शिकार थे। कुछ आत्माएँ केकड़े जैसी होती हैं जो निरंतर अंधकार की ओर पीछे हटती रहती हैं, जीवन में आगे बढ़ने के बजाय पीछे हटती रहती हैं, अनुभव से अपनी कुरूपता को और बढ़ाती जाती हैं, लगातार बदतर होती जाती हैं और अंधकार से भरती जाती हैं। इस पुरुष और स्त्री की आत्माएँ भी ऐसी ही थीं।

विशेष रूप से थेनार्डियर, चेहरे की विशेषताओं का अध्ययन करने वाले व्यक्ति के लिए एक पेचीदा मामला था। कुछ लोगों को देखकर ही अविश्वास होने लगता है; क्योंकि ऐसा लगता है मानो वे दोनों ही दिशाओं से अंधेरे में हैं। वे पीछे से बेचैन और आगे से धमकी भरे लगते हैं। उनके बारे में कुछ रहस्यमय सा होता है। उनके किए गए कार्यों के लिए हम न तो जवाबदेह होते हैं और न ही उनके भविष्य के कार्यों के लिए। उनकी निगाहों में बसी छाया ही उनकी पोल खोल देती है। उनके एक शब्द को सुनने या उनके हावभाव को देखने मात्र से ही उनके अतीत के गहरे रहस्यों और भविष्य के गहरे रहस्यों की झलक मिल जाती है।

अगर थेनार्डियर की बात पर यकीन किया जाए, तो वह एक सैनिक था—उसने कहा कि वह एक सार्जेंट था। संभवतः वह 1815 के युद्ध में शामिल रहा था और उसने काफी बहादुरी भी दिखाई थी। आगे हम देखेंगे कि इसमें कितनी सच्चाई थी। उसके सराय का चिन्ह उसकी किसी वीरतापूर्ण उपलब्धि का संकेत था। उसने इसे खुद ही चित्रित किया था; क्योंकि वह हर काम थोड़ा-थोड़ा जानता था, और वह भी बुरी तरह से।

यह वह दौर था जब प्राचीन शास्त्रीय प्रेम कथाएँ, जो क्लेली के बाद लोडोइस्का के अलावा कुछ नहीं रह गई थीं, अब भी गरिमामय थीं, लेकिन मैडमोजेल डी स्कुडेरी से मैडम बोर्नन-मलार्मे और मैडम डी लाफायेट से मैडम बार्थेलेमी-हैडॉट तक गिरते-गिरते और भी अश्लील होती जा रही थीं। ये प्रेम कथाएँ पेरिस की महिला दरबारियों के दिलों में प्रेम की आग जला रही थीं और कुछ हद तक उपनगरों को भी प्रभावित कर रही थीं। मैडम थेनार्डियर इतनी ही बुद्धिमान थीं कि इस तरह की किताबें पढ़ सकें। उनका जीवन इन्हीं किताबों में व्यतीत होता था। इनमें ही उन्होंने अपनी बुद्धि का सारा घालमेल मिटा दिया था। इससे, बहुत कम उम्र में और कुछ समय बाद भी, उसके मन में अपने पति के प्रति एक प्रकार का चिंतनशील भाव विकसित हो गया था। उसका पति एक शरारती, गहरे अर्थों वाला, व्याकरण का ज्ञाता, एक ही समय में अशिष्ट और सभ्य, लेकिन भावुकता के मामले में पिगॉल्ट-लेब्रून का प्रशंसक था, और जैसा कि वह अपनी भाषा में कहता था, "यौन मामलों में" वह एक पूर्णतः अशिष्ट और निर्मम मूर्ख था। उसकी पत्नी उससे बारह या पंद्रह वर्ष छोटी थी। बाद में, जब उसके रोमांटिक ढंग से सजे हुए बाल सफेद होने लगे, जब पामेला से मेगाएरा का विकास होने लगा, तब महिला थेनार्डियर एक अशिष्ट, दुष्ट स्त्री के अलावा कुछ नहीं थी, जिसने मूर्खतापूर्ण प्रेम कहानियों में रुचि ली थी। अब, कोई भी बिना दंड के बकवास नहीं पढ़ सकता। परिणामस्वरूप, उसकी सबसे बड़ी बेटी का नाम एपोनिन रखा गया; जहाँ तक छोटी बेटी की बात है, बेचारी का नाम गुलनारे रखने की नौबत आ गई थी; मुझे नहीं पता कि डुक्रे-डुमेनिल के एक प्रेम प्रसंग से प्रेरित होकर उसने किस बात से अपना ध्यान भटकाया कि उसका नाम केवल अज़ेलमा था।

हालांकि, हम यह भी कहना चाहेंगे कि जिस विचित्र युग की हम बात कर रहे हैं, जिसे नामकरण की अराजकता कहा जा सकता है, उसमें सब कुछ हास्यास्पद और सतही

नहीं था। जिस रोमांटिक पहलू का हमने अभी जिक्र किया है, उसके साथ-साथ एक सामाजिक लक्षण भी है। आजकल चरवाहे के लड़के का नाम आर्थर, अल्फ्रेड या अल्फोंस होना आम बात है, और अगर अब भी कोई विस्काउंट हैं, तो उनका नाम थॉमस, पियरे या जैक्स होना भी आम है। यह बदलाव, जो आम आदमी को सुरुचिपूर्ण नाम और कुलीन को देहाती नाम देता है, समानता का ही एक भंवर है। नई प्रेरणा का अदम्य प्रभाव हर जगह मौजूद है। इस स्पष्ट असंगति के पीछे एक महान और गहन बात छिपी है—फ्रांसीसी क्रांति।

III. लार्क

समृद्धि पाने के लिए केवल दुष्ट होना ही पर्याप्त नहीं है। रसोई की दुकान की हालत खराब थी।

यात्री द्वारा दिए गए सत्तावन फ्रैंक की बदौलत थेनार्डियर विरोध से बच सके और अपने हस्ताक्षर को बरकरार रख सके। अगले महीने उन्हें फिर पैसों की ज़रूरत पड़ी। महिला कोसेट के कपड़े पेरिस ले गई और उन्हें गिरवी रखने वाले के पास साठ फ्रैंक में गिरवी रख दिया। जैसे ही वह रकम खर्च हुई, थेनार्डियर परिवार उस छोटी बच्ची को केवल एक ऐसे बच्चे के रूप में देखने लगा जिसकी वे दया भाव से देखभाल कर रहे थे; और उन्होंने उसके साथ उसी प्रकार व्यवहार किया। चूंकि उसके पास पहनने के लिए कुछ नहीं बचा था, इसलिए उन्होंने उसे थेनार्डियर परिवार के बच्चों के पुराने पेटीकोट और कमीज़ पहना दिए; यानी चिथड़े-चिट्ठे। उन्होंने उसे वही खिलाया जो बाकी सबने छोड़ दिया था— कुत्ते से थोड़ा बेहतर, बिल्ली से थोड़ा बदतर। इसके अलावा, बिल्ली और कुत्ता उसके नियमित भोजन साथी बन गए थे; कोसेट उनके साथ मेज के नीचे, उन्हीं के जैसे लकड़ी के कटोरे में खाना खाती थी।

जैसा कि हम आगे देखेंगे, माँ ने एम• सुर एम• में अपना ठिकाना बना लिया था और वह हर महीने एक पत्र लिखती थी, या कहें तो लिखवाती थी, ताकि उसे अपने बच्चे के बारे में खबर मिल सके। थेनार्डियर परिवार हमेशा जवाब देता था, "कोसेट बहुत अच्छी है।"

पहले छह महीने बीतने पर माँ ने सातवें महीने के लिए सात फ़्रैंक भेजे और महीने दर महीने नियमित रूप से पैसे भेजती रही। साल पूरा होने से पहले ही थेनार्डियर ने कहा: “सचमुच, वह हम पर बड़ा एहसान कर रही है! वह हमसे अपने सात फ़्रैंक का क्या करने की उम्मीद करती है?” और उसने बारह फ़्रैंक की माँग करते हुए पत्र लिखा। माँ, जिसे उन्होंने यह विश्वास दिला दिया था कि उसका बच्चा खुश है और “ठीक से बढ़ रहा है,” मान गई और बारह फ़्रैंक भेज दिए।

कुछ स्वभाव ऐसे होते हैं जो एक तरफ प्यार किए बिना दूसरी तरफ नफरत नहीं कर सकते। मदर थेनार्डियर अपनी दोनों बेटियों से बेहद प्यार करती थीं, इसी वजह से उन्हें अजनबी से नफरत हो गई।

यह सोचकर दुख होता है कि एक माँ का प्यार भी दुष्टतापूर्ण रूप ले सकता है। कोसेट भले ही बहुत कम जगह घेरती थी, लेकिन उसे ऐसा लगता था मानो वह जगह उसकी अपनी ही हो, और उस नन्ही बच्ची ने उसकी बेटियों की साँसों में खलल डाला हो। इस औरत को, अपनी जैसी कई औरतों की तरह, हर दिन ढेर सारा प्यार और मार-पीट का बोझ उठाना पड़ता था। अगर कोसेट न होती, तो निश्चित रूप से उसकी बेटियाँ, जिन्हें वह बहुत प्यार करती थी, ये सब झेलतीं; लेकिन उस अजनबी ने मार-पीट को अपने ऊपर मोड़कर उनकी सेवा की। उसकी बेटियों को प्यार के सिवा कुछ नहीं मिलता था। कोसेट की हर हरकत पर मार-पीट और बेवजह की सजा बरसती थी। वह कोमल, नाज़ुक सी बच्ची, जिसे इस दुनिया या ईश्वर के बारे में कुछ भी नहीं समझना चाहिए था, लगातार सजा पाती, डांट खाती, दुर्व्यवहार झेलती, मार खाती, और अपने बगल में खुद जैसी दो नन्ही बच्चियों को देखती, जो मानो सूरज की एक किरण में जी रही थीं!

मैडम थेनार्डियर कोसेट के साथ बहुत बुरा बर्ताव करती थीं। एपोनिन और अज़ेलमा भी वैसी ही थीं। उस उम्र में बच्चे अपनी माँ की हूबहू नकल होते हैं। आकार छोटा होता है, बस इतना ही।

एक साल बीत गया; फिर दूसरा साल।

गांव के लोगों ने कहा:—

“वे थेनार्डियर अच्छे लोग हैं। वे अमीर नहीं हैं, फिर भी वे एक गरीब बच्चे का पालन-पोषण कर रहे हैं जिसे उनके हाथों में छोड़ दिया गया था!”

उन्हें लगा कि कोसेट की मां उसे भूल गई है।

इसी बीच, थेनार्डियर को पता चला (यह कहना मुश्किल है कि किस अस्पष्ट तरीके से), कि बच्चा शायद नाजायज था और माँ इसे स्वीकार नहीं कर पा रही थी। उसने पंद्रह फ्रैंक प्रति माह की वसूली करते हुए कहा कि "वह बच्ची" बढ़ रही है और "खा रही है", और उसे घर से निकाल देने की धमकी दी। उसने कहा, "उसे मुझे परेशान नहीं करना चाहिए, वरना मैं उसके बच्चे को उसके रहस्यों के बीचोंबीच फेंक दूँगा। मुझे आमदनी बढ़ानी ही होगी।" माँ ने पंद्रह फ्रैंक चुका दिए।

बच्ची साल दर साल बड़ी होती गई, और उसकी दयनीय स्थिति भी बढ़ती गई।

जब तक कोसेट छोटी थी, वह बाकी दो बच्चों की बलि का बकरा बनी रही; जैसे ही उसका थोड़ा-बहुत विकास शुरू हुआ, यानी पांच साल की होने से पहले ही, वह घर की नौकरानी बन गई।

पांच साल! पाठक कहेंगे; यह तो संभव नहीं है। अफसोस! यह सच है। सामाजिक पीड़ा किसी भी उम्र में शुरू हो सकती है। क्या हमने हाल ही में डुमोल्लार्ड नाम के एक व्यक्ति का मुकदमा नहीं देखा, जो अनाथ से डाकू बन गया था और आधिकारिक दस्तावेजों के अनुसार, पांच साल की उम्र से ही दुनिया में अकेला होने के कारण "अपनी जीविका के लिए काम करता था और चोरी करता था?"

कोसेट से छोटे-मोटे काम करवाए जाते थे, कमरे, आंगन, गली की सफाई, बर्तन धोने और यहाँ तक कि बोझ उठाने का काम भी। थेनार्डियर परिवार को लगता था कि इस तरह व्यवहार करना उनके लिए और भी जायज़ है, क्योंकि माँ, जो अभी भी एम सुर एम में थी, अपने भुगतान में अनियमित हो गई थी। कुछ महीनों तक वह किराया देने में असमर्थ रही थी।

अगर यह माँ इन तीन वर्षों के अंत में मॉन्टफर्मेइल लौटती, तो वह अपनी बच्ची को पहचान नहीं पाती। कोसेट, जो उस घर में आने पर इतनी सुंदर और खिलखिलाती थी, अब दुबली-पतली और पीली पड़ गई थी। उसके चेहरे पर एक अजीब सी बेचैनी झलक रही थी। "कितनी चालाक है!" थेनार्डियर परिवार ने कहा।

अन्याय ने उसे चिड़चिड़ा बना दिया था, और दुख ने उसे बदसूरत। उसके पास अपनी खूबसूरत आँखों के सिवा कुछ नहीं बचा था, जो पीड़ा का भाव जगाती थीं, क्योंकि विशाल होने के बावजूद, ऐसा लगता था मानो उनमें कहीं अधिक दुख समाया हुआ हो।

छह साल से भी कम उम्र की इस बेचारी बच्ची को सर्दियों में कांपते हुए, फटे- पुराने लिनेन के कपड़ों में, सूरज निकलने से पहले ही अपने छोटे-छोटे लाल हाथों में एक विशाल झाड़ू लिए सड़क साफ करते हुए और अपनी बड़ी-बड़ी आंखों में आंसू लिए देखना दिल दहला देने वाला दृश्य था।

मोहल्ले में उसे "लार्क" कहकर पुकारा जाता था। लोग, जिन्हें मुहावरों का शौक था, ने इस कांपती, डरी हुई और थरथराती हुई छोटी सी चिड़िया को यह नाम दे

[illegible] [illegible] [illegible] [

□□□ V. □□□□□□

I. काले कांच के आभूषणों के विकास का इतिहास

और इसी बीच, उस माँ का क्या हुआ, जिसके बारे में मॉन्टफर्मेइल के लोगों का मानना था कि उसने अपने बच्चे को छोड़ दिया था? वह कहाँ थी? वह क्या कर रही थी?

अपनी छोटी बेटी कोसेट को थेनार्डियर परिवार के पास छोड़ने के बाद, उसने अपनी यात्रा जारी रखी और मसुर मसुर पहुँच गई।

यह घटना 1818 में घटी थी, जैसा कि याद होगा।

फैंटाइन ने दस साल पहले अपना प्रांत छोड़ दिया था। एम⸺ सुर एम⸺ का स्वरूप बदल गया था। जहाँ एक ओर फैंटाइन धीरे-धीरे बदहाली में डूबती जा रही थी, वहीं दूसरी ओर उसका पैतृक शहर समृद्ध होता जा रहा था।

लगभग दो साल पहले एक ऐसी औद्योगिक घटना घटी थी जो छोटे जिलों के लिए बड़ी घटनाओं का प्रतीक मानी जाती है।

यह विवरण महत्वपूर्ण है, और हम इसे विस्तार से समझाना उपयोगी समझते हैं; बल्कि हम इसे रेखांकित करना चाहेंगे।

प्राचीन काल से ही, म• सुर म• का मुख्य उद्योग अंग्रेजी जेट की नकल और जर्मनी के काले कांच के गहने बनाना रहा था। कच्चे माल की ऊंची कीमतों के कारण, जिसका असर उत्पादन पर भी पड़ता था, यह उद्योग हमेशा से ही मंद गति से चलता रहा। जिस समय फैंटाइन म• सुर म• लौटीं, उस समय "काले कांच के सामान" के उत्पादन में एक अभूतपूर्व परिवर्तन हो चुका था। 1815 के अंत में एक अजनबी ने शहर में अपना ठिकाना बना लिया था और उसे यह विचार आया कि इस निर्माण में राल के स्थान पर गोंद-लाख का प्रयोग किया जाए, और विशेष रूप से कंगनों के लिए, सोल्डर किए हुए लोहे के टुकड़ों के स्थान पर, लोहे के टुकड़ों को साधारण रूप से जोड़कर बनाया जाए।

इस छोटे से बदलाव ने एक क्रांति ला दी।

वास्तव में, इस छोटे से बदलाव ने कच्चे माल की लागत को काफी कम कर दिया था, जिसके कारण सबसे पहले तो उत्पादन की कीमत बढ़ाना संभव हो पाया, जो देश के

लिए फायदेमंद था; दूसरे, कारीगरी में सुधार करना संभव हुआ, जो उपभोक्ता के लिए लाभदायक था; तीसरे, कम कीमत पर बेचते हुए लाभ को तीन गुना करना संभव हुआ, जो निर्माता के लिए फायदेमंद था।

इस प्रकार एक ही विचार से तीन परिणाम निकले।

तीन साल से भी कम समय में इस प्रक्रिया के आविष्कारक अमीर हो गए, जो अच्छी बात है, और उन्होंने अपने आसपास के सभी लोगों को भी अमीर बना दिया, जो और भी बेहतर है। वह विभाग में एक अजनबी थे। उनके मूल के बारे में कुछ भी पता नहीं था; उनके करियर की शुरुआत के बारे में भी बहुत कम जानकारी थी। अफवाह थी कि वह बहुत कम पैसे, ज़्यादा से ज़्यादा कुछ सौ फ्रैंक लेकर शहर आए थे।

एक विलक्षण विचार की सेवा में लगी इसी सीमित पूंजी से, जिसे पद्धति और चिंतन द्वारा विकसित किया गया था, उसने अपना और पूरे ग्रामीण क्षेत्र का भाग्य बनाया था।

जब वह एम⸺ सुर एम⸺ पहुंचा, तो उसके पास केवल एक मजदूर के वस्त्र, रूप-रंग और भाषा ही थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि जिस दिन वह दिसंबर की एक शाम को सूर्यास्त के समय, पीठ पर थैला और हाथ में काँटेदार लाठी लिए, छोटे से कस्बे मसुर मसुर में गुमनाम रूप से दाखिल हुआ, उसी दिन टाउन हॉल में भीषण आग लग गई। वह व्यक्ति आग की लपटों में कूद पड़ा और अपनी जान जोखिम में डालकर जेंडरमेरी के कप्तान के दो बच्चों की जान बचाई; इसीलिए वे उससे पासपोर्ट मांगना भूल गए थे। बाद में उन्हें उसका नाम पता चला। उसका नाम फादर मेडेलीन था।

II. मेडेलीन

वह लगभग पचास वर्ष का एक व्यक्ति था, जो कुछ-कुछ सोच-विचार में डूबा रहता था, और एक अच्छा इंसान था। उसके बारे में बस इतना ही कहा जा सकता था।

उन्होंने जिस उद्योग का शानदार पुनर्निर्माण किया था, उसकी तीव्र प्रगति के कारण, मसुर म एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र बन गया था। स्पेन, जो भारी मात्रा में काले जेट तेल का उपभोग करता है, हर साल वहाँ से भारी मात्रा में खरीददारी करता था। इस व्यापार में मसुर म लगभग लंदन और बर्लिन के बराबर पहुँच गया था। फादर मेडेलीन का मुनाफा इतना अधिक था कि दूसरे वर्ष के अंत तक वे एक विशाल कारखाना बनाने में सक्षम हो गए, जिसमें दो बड़े कार्यशालाएँ थीं, एक पुरुषों के लिए और दूसरी महिलाओं के लिए। कोई भी भूखा व्यक्ति वहाँ जा सकता था और उसे रोजगार और रोटी मिलने का पूरा भरोसा था। फादर मेडेलीन पुरुषों से सद्भाव, महिलाओं से शुद्ध नैतिकता और सभी से ईमानदारी की अपेक्षा करते थे। उन्होंने पुरुष और महिला को अलग रखने के लिए कार्यशालाओं को अलग-अलग कर दिया था, ताकि महिलाएं और लड़कियां गोपनीयता बनाए रख सकें। इस मामले में वे अटल थे। यही एकमात्र ऐसा मामला था जिसमें वे एक तरह से असहिष्णु थे। वह इस सख्ती पर और भी दृढ़ थे, क्योंकि मसुर मसुर एक सैन्य छावनी नगर होने के कारण भ्रष्टाचार के भरपूर अवसर प्रदान करता था। हालांकि, उनका आगमन वरदान साबित हुआ और उनकी उपस्थिति ईश्वर की कृपा के समान थी। फादर मेडेलीन के आने से पहले, देश में सब कुछ जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था; अब हर कोई परिश्रमपूर्ण जीवन जी रहा था। हर तरफ ऊर्जा का संचार हो रहा था और वह हर जगह व्याप्त थी। मंदी और बदहाली का कोई नामोनिशान नहीं था। कोई भी ऐसा छोटा-सा कोना नहीं था जिसमें थोड़ा-बहुत पैसा न हो; कोई भी ऐसा घर नहीं था जिसमें थोड़ी-बहुत खुशी न हो।

फादर मेडेलिन ने सभी को रोजगार दिया। उनकी बस एक ही शर्त थी: ईमानदार पुरुष बनो। ईमानदार महिला बनो।

जैसा कि हमने कहा है, इस गतिविधि के केंद्र में, जिसके वे कारण और आधार थे, फादर मेडेलीन ने अपनी संपत्ति अर्जित की; लेकिन एक साधारण व्यवसायी के लिए

यह एक विलक्षण बात थी, ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि यही उनकी मुख्य चिंता थी। वे दूसरों के बारे में अधिक और स्वयं के बारे में कम सोचते प्रतीत होते थे। 1820 में यह ज्ञात हुआ कि उनके नाम पर लाफिट में छह लाख तीस हजार फ़्रैंक जमा थे; लेकिन इन छह लाख तीस हजार फ़्रैंक को आरक्षित करने से पहले, उन्होंने शहर और उसके गरीबों के लिए दस लाख से अधिक खर्च कर दिए थे।

अस्पताल की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी; उन्होंने वहाँ छह बिस्तर बनवाए। म्यू-सुर म्यू को ऊपरी और निचले शहर में विभाजित किया गया है। निचले शहर में, जहाँ वे रहते थे, केवल एक ही विद्यालय था, एक जर्जर झोपड़ीनुमा इमारत, जो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थी: उन्होंने दो विद्यालय बनवाए, एक लड़कियों के लिए, दूसरा लड़कों के लिए। उन्होंने अपने निजी कोष से दोनों शिक्षकों को वेतन दिया, जो उनके मामूली सरकारी वेतन से दोगुना था, और एक दिन उन्होंने किसी के आश्चर्य व्यक्त करने पर कहा, "राज्य के दो प्रमुख पदाधिकारी नर्स और स्कूल मास्टर हैं।" उन्होंने अपने खर्च पर एक शिशु विद्यालय की स्थापना की, जो उस समय फ्रांस में लगभग अज्ञात था, और वृद्ध और बीमार कामगारों की सहायता के लिए एक कोष भी बनाया। चूंकि उनका कारखाना एक केंद्र था, इसलिए उनके चारों ओर एक नया इलाका तेजी से विकसित हुआ, जिसमें कई गरीब परिवार रहते थे; उन्होंने वहाँ एक निःशुल्क औषधालय स्थापित किया।

पहले तो, जब लोगों ने उसकी शुरुआत देखी, तो उन्होंने कहा, "यह एक खुशमिजाज आदमी है जो अमीर बनना चाहता है।" जब उन्होंने उसे खुद अमीर होने से पहले देश को समृद्ध करते देखा, तो उन्होंने कहा, "यह एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति है।" यह बात और भी अधिक संभावित लगने लगी क्योंकि वह व्यक्ति धार्मिक था, और कुछ हद तक अपने धर्म का पालन भी करता था, जिसे उस युग में बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। वह हर रविवार को नियमित रूप से प्रार्थना सभा में जाता था। स्थानीय प्रतिनिधि, जो हर जगह प्रतिद्वंद्विता को भांप लेता था, जल्द ही इस धर्म को लेकर बेचैन होने लगा। यह प्रतिनिधि साम्राज्य की विधायी संस्था का सदस्य रह चुका था, और ऑरेटोइर के एक जनक, फौशे, ड्यूक डी'ओट्रेंटे के नाम से जाने जाने वाले, के धार्मिक विचारों को साझा करता था, जिसका वह करीबी और मित्र था। वह बंद दरवाजों के पीछे ईश्वर का हल्के- फुल्के अंदाज में उपहास करता था। लेकिन जब उसने धनी निर्माता मेडेलीन को सुबह सात बजे प्रार्थना सभा में जाते देखा, तो उसे उसमें एक संभावित

उम्मीदवार दिखाई दिया, और उसने उसे मात देने का संकल्प लिया; उन्होंने एक जेसुइट पादरी से मार्गदर्शन लिया और वे प्रार्थना सभा और संध्या प्रार्थना में शामिल होने लगे। उस समय महत्वाकांक्षा, शब्द के प्रत्यक्ष अर्थ में, चर्च के शिखर तक पहुँचने की होड़ थी। गरीबों को भी इस आतंक से लाभ हुआ, साथ ही ईश्वर को भी, क्योंकि माननीय प्रतिनिधि ने अस्पताल में दो बिस्तर भी स्थापित करवाए, जिससे कुल बारह बिस्तर हो गए।

फिर भी, 1819 में एक सुबह शहर में यह अफवाह फैल गई कि प्रीफेक्ट के अनुरोध पर और देश के प्रति उनके द्वारा की गई सेवाओं को ध्यान में रखते हुए, फादर मेडेलीन को राजा द्वारा मसुर म का मेयर नियुक्त किया जाना है। जिन लोगों ने इस नवागंतुक को "महत्वाकांक्षी व्यक्ति" कहा था, उन्होंने इस अवसर का भरपूर लाभ उठाते हुए खुशी से कहा, "देखो! हमने क्या कहा था!" पूरे मसुर म में हलचल मच गई। अफवाह सही साबित हुई। कई दिनों बाद यह नियुक्ति मोनिटर में प्रकाशित हुई। अगले दिन फादर मेडेलीन ने इसे अस्वीकार कर दिया।

सन् 1819 में, मैडेलीन द्वारा आविष्कृत नई प्रक्रिया के उत्पाद औद्योगिक प्रदर्शनी में प्रदर्शित किए गए; जब निर्णायक मंडल ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, तो राजा ने आविष्कारक को लीजन ऑफ ऑनर का शेवेलियर नियुक्त किया। छोटे से कस्बे में एक नई हलचल मच गई। खैर, तो वह वही क्रॉस था जो वह चाहता था! फादर मैडेलीन ने क्रॉस लेने से इनकार कर दिया।

यह आदमी वाकई एक रहस्य था। भले लोगों ने यह कहकर अपनी दुविधा से छुटकारा पा लिया, "आखिरकार, वह किसी न किसी तरह का साहसी व्यक्ति तो है ही।"

हमने देखा है कि देश उनका ऋणी था; गरीब लोग उनके ऋणी थे; वे इतने उपयोगी और इतने विनम्र थे कि लोग उनका आदर और सम्मान करने के लिए बाध्य थे। विशेष रूप से उनके कारीगर उन्हें पूजते थे, और वे इस श्रद्धा को एक प्रकार की उदासी और गंभीरता के साथ सहन करते थे। जब उनकी समृद्धि का पता चला, तो समाज के लोग उनके सामने झुकने लगे और उन्हें शहर में निमंत्रण मिलने लगे; शहर में उन्हें महाशय मेडेलीन कहा जाता था; उनके कारीगर और बच्चे उन्हें फादर मेडेलीन कहकर पुकारते रहे, और यही बात उन्हें सबसे ज्यादा मुस्कुराने पर मजबूर करती थी। जैसे-जैसे उनकी समृद्धि बढ़ती गई, निमंत्रणों की बाढ़ आती गई। समाज ने उन्हें अपना मान लिया। एम सुर एम के छोटे-छोटे सजे-धजे

ड्राइंग रूम, जो पहले कारीगरों के लिए बंद थे, करोड़पति के लिए खुल गए। उन्होंने उनसे हजारों प्रस्ताव रखे। उन्होंने मना कर दिया।

इस बार गपशप करने वालों को कोई परेशानी नहीं हुई। “वह एक अनपढ़ आदमी है, अशिक्षित है। कोई नहीं जानता कि वह कहाँ से आया है। उसे समाज में व्यवहार करना नहीं आता। यह भी पूरी तरह से साबित नहीं हुआ है कि वह पढ़ना जानता है।”

जब उन्होंने उसे पैसा कमाते देखा, तो कहा, “वह एक सफल व्यापारी है।” जब उन्होंने उसे अपना पैसा लुटाते देखा, तो कहा, “वह एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति है।” जब उन्होंने उसे सम्मान ठुकराते देखा, तो कहा, “वह एक साहसी व्यक्ति है।” जब उन्होंने उसे समाज से विमुख होते देखा, तो कहा, “वह एक निर्दयी व्यक्ति है।”

1820 में, मसुर मसुर में उनके आगमन के पाँच वर्ष बाद, जिले के लिए उनके द्वारा किए गए कार्य इतने प्रशंसनीय थे कि आसपास के पूरे क्षेत्र की राय एकमत थी, और राजा ने उन्हें फिर से नगर का महापौर नियुक्त कर दिया। उन्होंने फिर से इनकार कर दिया; लेकिन प्रीफेक्ट ने उनके इनकार का विरोध किया, उस क्षेत्र के सभी प्रतिष्ठित लोग उनसे विनती करने आए, आम लोगों ने उनसे गुहार लगाई; आग्रह इतना ज़ोरदार था कि अंततः उन्होंने पद स्वीकार कर लिया। यह देखा गया कि जिस बात ने उन्हें निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया, वह एक बुजुर्ग महिला द्वारा लगभग चिढ़कर उन्हें संबोधित किया गया प्रश्न था, जिसने अपने घर की दहलीज से गुस्से में कहा: "एक अच्छा महापौर उपयोगी होता है। क्या वह अपने द्वारा किए जा सकने वाले अच्छे कार्यों से पीछे हट रहा है?"

यह उनके उत्थान का तीसरा चरण था। फादर मेडेलीन अब मॉन्सियर मेडेलीन बन गए थे। मॉन्सियर मेडेलीन अब मॉन्सियर ले मेयर बन गए थे।

III. लाफिट के पास जमा की गई राशियाँ

दूसरी ओर, वह पहले दिन की तरह ही सरल स्वभाव के थे। उनके बाल सफ़ेद थे, आँखें गंभीर थीं, चेहरा मज़दूरों की तरह धूप से झुलसा हुआ था, और चेहरे पर दार्शनिकों जैसी चिंतनशीलता थी। वे हमेशा चौड़ी किनारी वाली टोपी और ठुड्डी तक बटन वाला मोटा कोट पहनते थे। उन्होंने महापौर के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया; लेकिन इस अपवाद के अलावा, वे एकांत में रहते थे। वे बहुत कम लोगों से बात करते थे। वे शिष्टाचारवश व्यवहार से बचते थे; वे जल्दी से निकल जाते थे; वे बोलने की ज़रूरत से बचने के लिए मुस्कुरा देते थे; वे मुस्कुराने की ज़रूरत से बचने के लिए दान देते थे। स्त्रियाँ उनके बारे में कहती थीं, "कितने अच्छे स्वभाव वाले भालू हैं!" उनका आनंद खेतों में टहलने में था।

वह हमेशा अकेले भोजन करते थे, अपने सामने एक खुली किताब रखकर जिसे वह पढ़ते थे। उनके पास चुनिंदा किताबों का एक छोटा सा पुस्तकालय था। उन्हें किताबें बहुत पसंद थीं; किताबें ठंडे लेकिन भरोसेमंद दोस्त होती हैं। जैसे-जैसे उन्हें सौभाग्य से फुर्सत मिलती, वह उसका सदुपयोग अपने ज्ञान को बढ़ाने में करते थे। यह देखा गया था कि जब से वह मसुर मसुर आए थे, उनकी भाषा हर गुजरते साल के साथ और अधिक परिष्कृत, सुसंस्कृत और सौम्य होती जा रही थी। उन्हें सैर पर जाते समय अपने साथ बंदूक रखना पसंद था, लेकिन वह शायद ही कभी उसका इस्तेमाल करते थे। जब कभी वह उसका इस्तेमाल करते, तो उनका निशाना इतना सटीक होता कि लोगों में दहशत फैल जाती। उन्होंने कभी किसी निर्दोष जानवर को नहीं मारा। उन्होंने कभी किसी छोटी चिड़िया पर गोली नहीं चलाई।

हालांकि वह अब जवान नहीं थे, फिर भी माना जाता था कि उनमें असाधारण शक्ति थी। वे जरूरतमंदों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहते थे, घोड़े को उठाते, कीचड़ में फंसे पहिए को निकालते या भागते हुए बैल को सींगों से रोकते। जब वे बाहर जाते तो उनकी जेबें हमेशा पैसों से भरी होती थीं; लेकिन लौटने पर खाली होती थीं। जब वे किसी गांव से गुजरते तो फटेहाल बच्चे खुशी से उनके पीछे दौड़ते और मच्छरों के झुंड की तरह उन्हें घेर लेते।

ऐसा माना जाता था कि वह अतीत में ग्रामीण जीवन व्यतीत करता रहा होगा, क्योंकि उसे कई उपयोगी नुस्खे पता थे, जो वह किसानों को सिखाता था। उसने उन्हें गेहूं पर लगने वाली पपड़ी को नष्ट करने का तरीका सिखाया, जिसके लिए गेहूं और अनाज भंडार पर नमक छिड़कना और फर्श की दरारों को साधारण नमक के घोल से भरना आवश्यक था; और दीवारों और छतों पर, घास के बीच और घरों में हर जगह खिले हुए ऑरवियोट के फूल लटकाकर घुन को भगाना सिखाया।

उसके पास खेत से गेहूं को नष्ट करने वाले रोग, खरपतवार, लोमड़ी की पूंछ जैसे कीटों और सभी परजीवी कीटों को खत्म करने के "नुस्खे" थे। उसने एक खरगोश के बिल को चूहों से बचाने के लिए उसमें एक गिनी-पिग को रख दिया, जिसकी गंध से ही वह बिल सुरक्षित हो जाता था।

एक दिन उसने कुछ ग्रामीण लोगों को बिच्छू बूटी उखाड़ने में व्यस्त देखा; उसने उधेड़े हुए और सूखे पौधों का निरीक्षण किया और कहा: “ये तो मर चुके हैं। फिर भी, इनका उपयोग कैसे किया जाए, यह जानना अच्छा होगा। जब बिछुआ छोटा होता है, तो उसकी पत्तियाँ एक उत्तम सब्जी बनती हैं; जब यह बड़ा हो जाता है, तो इसमें भांग और अलसी की तरह रेशे और तंतु होते हैं। बिछुआ का कपड़ा लिनन के कपड़े जितना ही अच्छा होता है। बारीक कटा हुआ बिछुआ मुर्गियों के लिए अच्छा होता है; कूटा हुआ बिछुआ सींग वाले पशुओं के लिए अच्छा होता है। बिछुआ के बीज को चारे में मिलाकर पशुओं के बालों में चमक लाई जा सकती है; इसकी जड़ को नमक के साथ मिलाकर एक सुंदर पीला रंग देने वाला पदार्थ बनाया जा सकता है। इसके अलावा, यह एक उत्तम घास है, जिसे दो बार काटा जा सकता है। और बिछुआ के लिए क्या चाहिए? थोड़ी सी मिट्टी, कोई देखभाल नहीं, कोई खेती नहीं। बस पकने पर इसके बीज गिर जाते हैं, और उन्हें इकट्ठा करना मुश्किल होता है। बस इतना ही। थोड़ी सी देखभाल से बिछुआ उपयोगी बनाया जा सकता है; इसकी उपेक्षा की जाती है और यह हानिकारक हो जाता है। यह नष्ट हो जाता है। कितने मनुष्य बिछुआ जैसे ही हैं!” उन्होंने कुछ देर रुककर कहा, “मेरे दोस्तों, यह बात याद रखना: बुरे पौधे या बुरे इंसान जैसी कोई चीज नहीं होती। बुरे तो सिर्फ उन्हें उगाने वाले होते हैं।”

बच्चे उसे बहुत पसंद करते थे क्योंकि वह भूसे और नारियल से छोटी-छोटी मनमोहक मिठाइयाँ बनाना जानता था।

जब उसने काले कपड़े से ढके चर्च का दरवाज़ा देखा, तो वह अंदर चला गया: वह अंत्येष्टि समारोहों में उसी तरह पहुँचता था जैसे अन्य लोग बपतिस्मा समारोहों में। विधवापन और दूसरों के दुःख उसे अपनी ओर आकर्षित करते थे, क्योंकि वह अत्यंत कोमल स्वभाव का था; वह शोक में डूबे मित्रों, काले कपड़े पहने परिवारों और ताबूत के चारों ओर विलाप करते पुजारियों के बीच घुलमिल जाता था। ऐसा लगता था मानो उसे परलोक के दर्शन से भरे इन अंत्येष्टि भजनों को अपने विचारों का आधार बनाना अच्छा लगता था। अपनी निगाहें स्वर्ग पर टिकाए, वह अनंत के सभी रहस्यों की ओर एक आकांक्षा के साथ सुनता था, उन उदास आवाजों को जो मृत्यु की अथाह खाई के किनारे गाती हैं।

उन्होंने अनेक अच्छे कार्य किए, और उनमें अपनी भूमिका को इस प्रकार छिपाए रखा जैसे कोई व्यक्ति बुरे कार्यों से खुद को छिपाता है। वे रात में छुपकर घरों में घुसते थे; वे चुपके से सीढ़ियाँ चढ़ते थे। कोई बेचारा जब अपने अटारी में लौटता तो पाता कि उसकी अनुपस्थिति में उसका दरवाजा खुला हुआ था, कभी-कभी तो जबरदस्ती भी खोला गया था। बेचारा इस पर शोर मचाता: कोई बदमाश आया था! वह अंदर जाता और सबसे पहले उसे किसी फर्नीचर पर पड़ा सोने का एक टुकड़ा दिखाई देता। वह "बदमाश" फादर मेडेलीन थे।

वह मिलनसार और उदास स्वभाव का था। लोग कहते थे, “ऐसा धनी व्यक्ति भी होता है जिसमें घमंड नहीं होता। ऐसा सुखी व्यक्ति भी होता है जिसमें संतुष्टि का भाव नहीं होता।”

कुछ लोगों का मानना था कि वह एक रहस्यमय व्यक्ति थे, और उनके कमरे में कोई कभी नहीं जाता था। उनका कमरा एक साधारण तपस्वी की कोठरी जैसा था, जिसमें पंखों वाली रेतघड़ियाँ लगी थीं और हड्डियों व मृत पुरुषों की खोपड़ियों से सजा हुआ था! इस बात की बहुत चर्चा होती थी, इसलिए एक दिन एम• सुर एम• की एक सुंदर और शरारती युवती उनके पास आई और बोली: “महामहिम, कृपया हमें अपना कमरा दिखाएँ। कहते हैं कि यह एक गुफा है।” वह मुस्कुराए और तुरंत उन्हें उस “गुफा” में ले गए। उनकी जिज्ञासा का उन्हें अच्छा-खासा दंड मिला। कमरा महोगनी की लकड़ी से बहुत ही साधारण ढंग से सजा हुआ था, जो उस तरह के बाकी फर्नीचर की तरह ही भद्दा था, और उस पर बारह सू के कागज लगे हुए थे। उन्हें उसमें कुछ भी खास नहीं दिखा, सिवाय चिमनी पर रखे दो पुराने डिज़ाइन के

मोमबत्ती स्टैंड के, जो चांदी के प्रतीत होते थे, “क्योंकि उन पर हॉलमार्क लगा हुआ था,” यह टिप्पणी छोटे कस्बों की चतुराई से भरी थी।

फिर भी, लोग कहते रहे कि उस कमरे में कभी कोई नहीं गया, और वह एक साधु की गुफा थी, एक रहस्यमय एकांतवास, एक गड्ढा, एक मकबरा।

यह भी अफवाह फैली थी कि उन्होंने लाफिट के पास "भारी" रकम जमा करा रखी थी, जिसकी एक खास बात यह थी कि वह हमेशा उनकी पहुंच में रहती थी। इसलिए, यह भी कहा गया कि एम. मेडेलीन किसी भी सुबह लाफिट के पास जाकर रसीद पर हस्ताक्षर कर दस मिनट में अपने दो या तीन मिलियन ले जा सकते थे। असल में, जैसा कि हमने पहले बताया है, "ये दो या तीन मिलियन" घटकर छह लाख तीस या चालीस हजार फ्रैंक रह गए थे।

IV. शोक में डूबी एम. मेडेलिन

1820 की शुरुआत में अखबारों ने डी⸺ के बिशप एम. मिरियल, जिन्हें "मोनसिग्नोर बिएनवेनु" उपनाम से जाना जाता था, के निधन की घोषणा की, जिनकी 82 वर्ष की आयु में पवित्रता की आभा के साथ मृत्यु हो गई थी।

डी के बिशप—यहां एक विवरण जोड़ना जरूरी है जिसे दस्तावेजों में छोड़ दिया गया था—अपनी मृत्यु से कई साल पहले से अंधे थे, और अंधेपन से संतुष्ट थे, जैसे उनकी बहन उनके बगल में थीं।

आइए एक बात और स्पष्ट कर दें कि अंधा होकर भी प्रेम पाना, वास्तव में इस धरती पर, जहाँ कुछ भी पूर्ण नहीं है, सुख के सबसे विचित्र और अद्भुत रूपों में से एक है। किसी स्त्री, पुत्री, बहन, या मनमोहक व्यक्तित्व का निरंतर साथ होना, जो आपके साथ इसलिए है क्योंकि आपको उसकी आवश्यकता है और क्योंकि वह आपके बिना नहीं रह सकती; यह जानना कि हम उस व्यक्ति के लिए अपरिहार्य हैं जो हमारे लिए आवश्यक है; उसके द्वारा हमें दिए गए स्नेह की मात्रा से अपने स्नेह को निरंतर माप पाना, और स्वयं से कहना, "चूँकि वह अपना पूरा समय मुझे समर्पित करती है, इसलिए इसका अर्थ है कि मैंने उसका पूरा हृदय पा लिया है;" उसके चेहरे के बजाय उसके विचारों को देखना; संसार के अंधकार में भी किसी व्यक्ति की निष्ठा को परख पाना; गाउन की सरसराहट को पंखों की ध्वनि समझना; उसे आते-जाते, लौटते, बोलते, लौटते, गाते हुए सुनना, और यह सोचना कि आप इन कदमों, इन बातों के केंद्र हैं; हर पल अपने व्यक्तिगत आकर्षण को प्रकट करना; अपनी दुर्बलता के कारण स्वयं को और भी अधिक शक्तिशाली महसूस करना; अपने अंधकार में, और अपने अंधकार के माध्यम से, वह तारा बन जाना जिसके चारों ओर यह देवदूत आकर्षित होता है—इस सुख के समर्थ कुछ ही हैं। जीवन का परम सुख इस विश्वास में निहित है कि व्यक्ति को प्रेम किया जाता है; अपने आप के लिए प्रेम किया जाता है—बल्कि कहें तो, अपनी कमियों के बावजूद प्रेम किया जाता है; यह विश्वास उस अंधे व्यक्ति में है। संकट में सेवा पाना स्नेह पाने के समान है। क्या उसमें किसी चीज की कमी है? नहीं। प्रेम होने पर दृष्टि नहीं जाती। और कैसा प्रेम! एक ऐसा प्रेम जो पूर्णतः सद्गुण से परिपूर्ण है! जहाँ निश्चितता होती है, वहाँ अंधापन नहीं होता।

आत्मा आत्मा को खोजती है, टटोलती है, और उसे पा लेती है। और यह आत्मा, जो पाई और परखी गई है, एक स्त्री है। एक हाथ आपको सहारा देता है; वह उसका है: एक मुख आपके माथे को हल्के से छूता है; वह उसका मुख है: आप अपने बहुत पास एक साँस सुनते हैं; वह उसकी है। उसकी हर चीज़ को पाना, उसकी आराधना से लेकर उसकी करुणा तक, कभी न छूटना, उस मधुर कमजोरी का सहारा लेना, उस अटल सहारे पर झुकना, ईश्वर को अपने हाथों से छूना और उसे अपनी बाहों में भर लेना—ईश्वर का साकार रूप—क्या आनंद है! हृदय, वह रहस्यमय, दिव्य फूल, एक रहस्यमयी रूप से खिल उठता है। कोई उस अंधकार को सारी चमक के बदले भी नहीं बदलना चाहेगा! देवदूत आत्मा वहाँ विद्यमान है, निरंतर; यदि वह चली भी जाती है, तो फिर लौट आती है; वह एक सपने की तरह लुप्त हो जाती है और वास्तविकता की तरह फिर प्रकट होती है। गर्माहट का आभास होता है, और देखो! वह वहाँ है। मन शांति, उल्लास और परमानंद से भर उठता है; वह रात के अंधेरे में एक प्रकाशस्तंभ बन जाता है। और वहाँ हजारों छोटी-छोटी चिंताएँ हैं। कुछ भी नहीं, जो उस शून्य में विशाल हैं। स्त्री की वाणी के सबसे अवर्णनीय स्वर आपको शांत करते हैं, और लुप्त हो चुके ब्रह्मांड को आपके सामने प्रस्तुत करते हैं। आत्मा को सुकून मिलता है। कुछ दिखाई नहीं देता, पर ऐसा महसूस होता है जैसे कोई उसे प्यार कर रहा हो। यह परछाइयों का स्वर्ग है।

इसी स्वर्ग से महाशय वेलकम दूसरे स्वर्ग की ओर रवाना हुए थे।

उनकी मृत्यु की घोषणा स्थानीय पत्रिका 'एम सुर एम' में पुनः प्रकाशित हुई। अगले दिन, एम. मेडेलीन पूरी तरह से काले वस्त्र पहने और टोपी पर क्रेप लगाए हुए दिखाई दिए।

इस शोक का असर पूरे शहर में देखा गया और इस पर चर्चा भी हुई। ऐसा लगा जैसे इससे एम. मेडेलीन के वंश पर कुछ प्रकाश पड़ा हो। यह निष्कर्ष निकाला गया कि उनका आदरणीय बिशप से कोई संबंध था। बैठक-गृहों में कहा गया, "वह डी के बिशप के लिए शोक मना रहे हैं।" इससे एम. मेडेलीन की प्रतिष्ठा में बहुत वृद्धि हुई और उन्हें एम. सुर एम. के कुलीन वर्ग में तुरंत ही सम्मान प्राप्त हो गया। उस इलाके के सूक्ष्मदर्शी फाउबर्ग सेंट-जर्मेन ने बिशप के संभावित रिश्तेदार एम. मेडेलीन के खिलाफ क्वारंटाइन हटाने पर विचार किया। एम. मेडेलीन ने देखा कि बुजुर्ग महिलाओं के अधिक शिष्टाचार और युवाओं की भरपूर मुस्कान से उन्हें कितना लाभ हुआ है। एक शाम, उस छोटे से महान संसार

के एक शासक ने, जो वरिष्ठता के अधिकार से जिज्ञासु था, उनसे पूछने का साहस किया, "क्या श्रीमान ले मेयर निःसंदेह डी के दिवंगत बिशप के चचेरे भाई हैं?"

उन्होंने कहा, "नहीं, मैडम।"

लेकिन,” विधवा ने बात जारी रखते हुए कहा, “आप उनके लिए शोक के वस्त्र पहने हुए हैं।”

उसने जवाब दिया, "ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं अपनी जवानी में उसके परिवार में नौकर था।"

एक और बात जो देखने को मिली, वह यह थी कि जब भी मेयर को कस्बे में कोई युवा सैवोयार्ड मिलता, जो इधर-उधर घूमकर चिमनी साफ करने का काम ढूंढ रहा होता, तो वह उसे बुलवाता, उसका नाम पूछता और उसे पैसे देता। छोटे सैवोयार्ड आपस में इसके बारे में बात करते थे; उनमें से बहुत से लोग इसी रास्ते से गुजरते थे।

V. क्षितिज पर धुंधली झलकियाँ

धीरे-धीरे, और समय के साथ, यह सारा विरोध शांत हो गया। पहले तो एम. मैडेलीन के विरुद्ध, एक प्रकार के उस नियम के तहत, जिसका पालन सभी उत्थान चाहने वालों को करना पड़ता है, बदनामी और निंदा की गई; फिर यह मात्र दुर्भावना तक सीमित रह गई, फिर मात्र दुर्भावनापूर्ण टिप्पणियों तक, और फिर यह भी पूरी तरह से समाप्त हो गई; सम्मान पूर्ण, सर्वसम्मत, सौहार्दपूर्ण हो गया, और लगभग 1821 में वह क्षण आया जब "महाशय मेयर" शब्द का उच्चारण एम• सुर एम• में लगभग उसी उच्चारण के साथ किया जाने लगा, जैसे 1815 में डी• में "मोंसिग्नोर द बिशप" का उच्चारण किया जाता था। लोग दूर-दूर से एम. मैडेलीन से परामर्श करने आते थे। उन्होंने मतभेदों का अंत किया, मुकदमों को रोका, शत्रुओं का मेल कराया। हर कोई उन्हें न्यायाधीश मानता था, और इसका उचित कारण भी था। ऐसा लगता था मानो उनके भीतर प्राकृतिक कानून की पुस्तक समाहित हो। यह श्रद्धा की एक महामारी की तरह था, जिसने छह या सात वर्षों के दौरान धीरे-धीरे पूरे जिले को अपने कब्जे में ले लिया।

उस कस्बे के उस इलाके में एक अकेला आदमी इस संक्रमण से पूरी तरह बच गया, और फादर मेडेलिन चाहे जो भी करते, वह उनका विरोधी बना रहा, मानो कोई अटूट और अविचल प्रवृत्ति उसे हमेशा सतर्क और बेचैन रखती हो। दरअसल, ऐसा लगता है मानो कुछ लोगों में एक सच्ची पशुवत प्रवृत्ति मौजूद हो, हालांकि सभी प्रवृत्तियों की तरह शुद्ध और ईमानदार, जो घृणा और सहानुभूति पैदा करती है, जो एक स्वभाव को दूसरे स्वभाव से घातक रूप से अलग करती है, जो संकोच नहीं करती, जो बेचैन नहीं होती, जो चुप नहीं बैठती, और जो कभी भी अपने आप को झूठा साबित नहीं करती, अपने अस्पष्टता में स्पष्ट, अचूक, अभिमानी, अड़ियल, बुद्धि की सभी सलाहों और तर्क के सभी विघटनों के प्रति हठी, और जो भाग्य चाहे जैसे भी निर्धारित हों, गुप्त रूप से कुत्ते को बिल्ली की उपस्थिति और लोमड़ी को शेर की उपस्थिति के बारे में आगाह करती है।

अक्सर ऐसा होता था कि जब एम. मैडेलीन किसी सड़क से शांत, स्नेहपूर्ण और सबका आशीर्वाद पाते हुए गुजर रहे होते थे, तभी एक लंबा-चौड़ा आदमी, लोहे जैसे भूरे रंग का कोट पहने, भारी छड़ी लिए और फटी हुई टोपी लगाए, अचानक

उनके पीछे मुड़ता और तब तक उनका पीछा करता रहता जब तक कि वह गायब नहीं हो जाता। वह बाहें मोड़े, धीरे से सिर हिलाते और अपने ऊपरी होंठ को निचले होंठ के साथ नाक तक उठाकर एक ऐसा भावपूर्ण चेहरा बनाते थे, जिसका अर्थ शायद यह हो सकता था: “आखिर वह आदमी है कौन? मैंने उसे कहीं तो जरूर देखा है। खैर, मैं उसका शिकार तो नहीं हूँ।”

यह व्यक्ति, जिसकी गंभीरता लगभग भयावह थी, उन पुरुषों में से एक था जो केवल एक झलक में ही दिखाई देने पर भी दर्शक का ध्यान आकर्षित कर लेते हैं।

उसका नाम जावर्ट था और वह पुलिस में काम करता था।

एम-सुर-एम में उन्होंने निरीक्षक के अप्रिय लेकिन उपयोगी कर्तव्यों का निर्वाह किया। उन्होंने मेडेलीन के शुरुआती दिनों को नहीं देखा था। जावर्ट को यह पद राज्य मंत्री कॉम्टे एंगल्स के सचिव और उस समय पेरिस के पुलिस प्रमुख रहे एम. चाबौइलेट के संरक्षण के कारण मिला था। जब जावर्ट एम-सुर-एम पहुंचे, तब तक महान निर्माता की संपत्ति पहले ही बन चुकी थी और फादर मेडेलीन, मॉन्सियर मेडेलीन बन चुके थे।

कुछ पुलिस अधिकारियों की शारीरिक बनावट विचित्र होती है, जिसमें अधिकार की भावना के साथ-साथ नीचता का भाव भी मिश्रित होता है। जावर्ट में यह शारीरिक बनावट थी, बस उसमें नीचता का अभाव था।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि यदि आत्माएँ आँखों से दिखाई देतीं, तो हम इस विचित्र तथ्य को स्पष्ट रूप से देख पाते कि मानव जाति का प्रत्येक व्यक्ति पशु जगत की किसी न किसी प्रजाति से मेल खाता है; और हम इस सत्य को आसानी से पहचान लेते, जिसे विचारक शायद ही समझ पाते हैं, कि सीप से लेकर चील तक, सूअर से लेकर बाघ तक, सभी पशु मनुष्य में विद्यमान हैं, और उनमें से प्रत्येक मनुष्य में समाहित है। कभी-कभी तो एक ही समय में कई पशु समाहित होते हैं।

पशु हमारे गुणों और अवगुणों के प्रतीक मात्र हैं, जो हमारी आँखों के सामने भटकते रहते हैं, हमारी आत्मा के दृश्य प्रेत। ईश्वर हमें चिंतन के लिए प्रेरित करने हेतु इन्हें हमारे सामने प्रकट करता है। चूंकि पशु मात्र परछाईं हैं, इसलिए ईश्वर ने उन्हें पूर्ण अर्थों में शिक्षा के योग्य नहीं बनाया है; इसका क्या लाभ? इसके विपरीत, हमारी आत्माएं वास्तविक हैं और उनका एक उपयुक्त लक्ष्य है, इसलिए ईश्वर ने उन्हें बुद्धि प्रदान की है;

अर्थात्, शिक्षा की संभावना। अच्छी तरह से दी गई सामाजिक शिक्षा, किसी भी प्रकार की आत्मा से उसकी अंतर्निहित उपयोगिता को हमेशा उजागर कर सकती है।

यह बात स्पष्ट है कि यह केवल प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाले स्थलीय जीवन के सीमित दृष्टिकोण से कही गई है, और इसमें उन प्राणियों के पूर्ववर्ती या परवर्ती व्यक्तित्व के गहन प्रश्न पर कोई पूर्वाग्रह नहीं है जो मनुष्य नहीं हैं। प्रत्यक्ष 'मैं' किसी भी तरह से विचारक को अप्रत्यक्ष 'मैं' को नकारने का अधिकार नहीं देता। यह स्पष्ट करने के बाद, आइए आगे बढ़ते हैं।

अब, यदि पाठक एक क्षण के लिए हमारे साथ यह स्वीकार कर लें कि प्रत्येक मनुष्य में सृष्टि की पशु प्रजातियों में से एक मौजूद है, तो हमारे लिए यह कहना आसान हो जाएगा कि पुलिस अधिकारी जावर्ट में क्या था।

एस्टुरियास के किसान इस बात से आश्वस्त हैं कि भेड़ियों के हर झुंड में एक नर भेड़िये होता है, जिसे माँ मार देती है क्योंकि अन्यथा, बड़ा होने पर वह अन्य बच्चों को खा जाएगा।

भेड़िये के इस कुत्ते जैसे बेटे को इंसान का चेहरा दे दो, और नतीजा होगा जावर्ट।

जैवर का जन्म जेल में हुआ था, उनकी माँ एक ज्योतिषी थीं, जिनका पति सेना में था। बड़े होते-होते उन्हें लगने लगा कि वे समाज से अलग-थलग हैं और उन्हें कभी समाज में वापस आने की उम्मीद नहीं रही। उन्होंने देखा कि समाज दो वर्गों के लोगों को बेरहमी से बहिष्कृत करता है—एक वे जो समाज पर आक्रमण करते हैं और दूसरे वे जो समाज की रक्षा करते हैं; उनके पास इन दो वर्गों के अलावा कोई विकल्प नहीं था; साथ ही, उनके भीतर कठोरता, नियमितता और ईमानदारी की एक अवर्णनीय नींव थी, जो उस बोहेमियन जाति के प्रति अवर्णनीय घृणा से जटिल थी, जहाँ से उनका जन्म हुआ था। उन्होंने पुलिस में प्रवेश किया; और वहाँ उन्हें सफलता मिली। चालीस वर्ष की आयु में वे इंस्पेक्टर बन गए।

अपनी युवावस्था के दौरान उन्होंने दक्षिण के कैदी सुधारगृहों में काम किया था।

आगे बढ़ने से पहले, आइए "मानवीय चेहरा" शब्दों का अर्थ समझ लें, जिनका प्रयोग हमने अभी-अभी जेवर्ट के संदर्भ में किया है।

जैवरट का चेहरा देखने में बिल्कुल सामान्य था, उसकी नाक चपटी थी, उसके दो गहरे नथुने थे, और गालों पर उसकी बड़ी-बड़ी मूंछें उगी हुई थीं। इन दो जंगलों और इन दो गुफाओं को पहली बार देखकर किसी को भी असहज महसूस होता था। जब जैवरट हंसता था—और उसकी हंसी दुर्लभ और भयानक होती थी—तो उसके पतले होंठ खुल जाते थे और न केवल उसके दांत, बल्कि उसके मसूड़े भी दिखाई देते थे, और उसकी नाक के चारों ओर एक चपटी और क्रूर सिलवट बन जाती थी, जैसे किसी जंगली जानवर के थूथन पर होती है। गंभीर दिखने वाला जैवरट एक चौकीदार कुत्ते जैसा था; हंसते समय वह एक बाघ बन जाता था। बाकी की बात करें तो, उसकी खोपड़ी बहुत छोटी और जबड़ा बहुत बड़ा था; उसके बाल उसके माथे को ढके रहते थे और उसकी भौहों पर गिरते थे; उसकी आंखों के बीच एक स्थायी, केंद्रीय शिकन थी, मानो क्रोध की छाप हो; उसकी निगाहें धुंधली थीं; उसका मुंह सिकुड़ा हुआ और भयानक था; उसका हावभाव एक क्रूर आदेश देने वाले व्यक्ति जैसा था।

यह व्यक्ति तुलनात्मक रूप से दो बहुत ही सरल और दो बहुत ही अच्छे भावों से बना था; लेकिन उसने उन्हें अतिरंजित करके लगभग बुरा बना दिया—अधिकार के प्रति सम्मान, विद्रोह से घृणा; और उसकी दृष्टि में, हत्या, डकैती, सभी अपराध, केवल विद्रोह के ही रूप हैं। उसने प्रधानमंत्री से लेकर ग्रामीण पुलिसकर्मी तक, राज्य में किसी भी पद पर आसीन प्रत्येक व्यक्ति को अंध और गहन विश्वास में लपेट लिया। उसने हर उस व्यक्ति को तिरस्कार, घृणा और नफरत से ढक दिया जिसने कभी बुराई की कानूनी सीमा पार की थी। वह निरंकुश था और किसी भी अपवाद को स्वीकार नहीं करता था। एक ओर, उसने कहा, "अधिकारी कोई गलती नहीं कर सकता; मजिस्ट्रेट कभी गलत नहीं होता।" दूसरी ओर, उसने कहा, "ये लोग पूरी तरह से बर्बाद हो चुके हैं। इनसे कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता।" वह उन अतिवादी मानसिकता वाले लोगों की राय से पूरी तरह सहमत था जो मानव कानून को न जाने क्या-क्या शक्ति प्रदान करते हैं, या यदि पाठक इसे इस तरह समझें तो, उसे प्रामाणिक बनाने की शक्ति प्रदान करते हैं, और जो समाज की नींव में स्टिक्स नदी को रखते हैं। वह संयमी, गंभीर और कठोर था; एक उदास स्वप्नद्रष्टा, विनम्र और अभिमानी, कट्टरपंथियों की तरह। उसकी निगाहें छुरी जैसी ठंडी और भेदक थीं। उसका पूरा जीवन इन दो शब्दों पर टिका था:

सतर्कता और निगरानी। उसने दुनिया की सबसे टेढ़ी-मेढ़ी चीज़ में भी एक सीधी रेखा खींच दी थी; उसे अपनी उपयोगिता का बोध था, अपने कर्तव्यों का धर्मनिष्ठा थी, और वह एक जासूस था जैसे अन्य लोग पुजारी होते हैं। उस आदमी का बुरा हाल होता जो उसके हाथों में पड़ जाता! अगर उसका पिता भी जहाज़ों से भाग निकला होता, तो वह उसे भी गिरफ़्तार कर लेता, और अगर उसकी माँ ने अपना बंधन तोड़ा होता, तो वह उसे भी बेनकाब कर देता। और वह यह सब उस तरह की आंतरिक संतुष्टि के साथ करता जो सद्गुण से मिलती है। और साथ ही, अभाव, एकांत, त्याग, पवित्रता का जीवन, बिना किसी मनोरंजन के। यह एक अटल कर्तव्य था; पुलिस उसे उसी तरह समझती थी जैसे स्पार्टावासी स्पार्टा को समझते थे, निर्दयी घात लगाकर बैठना, क्रूर ईमानदारी, एक धूर्त मुखबिर, विडोक में ब्रूटस।

जैवर्ट का पूरा व्यक्तित्व एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता था जो जासूसी करता है और खुद को दूसरों की नज़रों से छिपाए रखता है। जोसेफ डी मैस्ट्रे का रहस्यवादी संप्रदाय, जो उस दौर में तथाकथित अतिवादी समाचार पत्रों को उच्च कोटि के ब्रह्मांडीय सिद्धांतों से सजाता था, यह कहने में संकोच नहीं करता कि जैवर्ट एक प्रतीक था। उसका माथा दिखाई नहीं देता था; वह उसकी टोपी के नीचे छिप जाता था; उसकी आँखें दिखाई नहीं देती थीं, क्योंकि वे उसकी भौहों के नीचे दबी रहती थीं; उसकी ठुड्डी दिखाई नहीं देती थी, क्योंकि वह उसकी टाई में छिपी रहती थी; उसके हाथ दिखाई नहीं देते थे; वे उसकी आस्तीनों में ऊपर की ओर मुड़े रहते थे; और उसकी छड़ी दिखाई नहीं देती थी; वह उसे अपने कोट के नीचे रखता था। लेकिन जब मौका मिलता, तो अचानक इस सारे अंधेरे से, जैसे किसी घात से, एक संकरा और नुकीला माथा, एक भयावह नज़र, एक धमकी भरी ठुड्डी, विशाल हाथ और एक विशालकाय गदा उभर कर दिखाई देते।

अपने खाली समय में, जो कि बहुत कम ही मिलता था, वह पढ़ता था, हालाँकि उसे किताबों से नफरत थी; इसी वजह से वह पूरी तरह निरक्षर नहीं था। उसकी बातों में कुछ लहजे से यह बात स्पष्ट हो जाती थी।

जैसा कि हमने कहा है, उनमें कोई दुर्गुण नहीं थे। जब वे स्वयं से प्रसन्न होते थे, तो वे थोड़ी सी तंबाकू का सेवन कर लेते थे। इसी में उनका मानवता से जुड़ाव निहित था।

पाठक को यह समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी कि जावर्ट उस पूरे वर्ग के लिए आतंक का पर्याय था जिसे न्याय मंत्रालय के वार्षिक आँकड़ों में 'आवारा' के रूप में दर्शाया गया है। जावर्ट का नाम सुनते ही वे दंग रह जाते थे; जावर्ट का चेहरा देखते ही वे भयभीत हो जाते थे।

यह व्यक्ति इतना प्रभावशाली था।

जैवरट की नज़रें मानो एम. मेडेलीन पर टिकी हुई थीं। शक और अटकलों से भरी एक नज़र। एम. मेडेलीन को आखिरकार यह बात समझ आ गई थी; लेकिन मानो उन्हें इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। उन्होंने जैवरट से कोई सवाल तक नहीं पूछा; न तो उन्होंने उससे मिलने की कोशिश की और न ही उससे बचने की; उन्होंने उस असहज और लगभग दमनकारी नज़र को बिना ध्यान दिए सहन किया। उन्होंने जैवरट के साथ सहजता और शिष्टाचार से व्यवहार किया, जैसा कि वे दुनिया के बाकी लोगों के साथ करते थे।

जैवरट के कुछ अधूरे शब्दों से यह अनुमान लगाया गया कि उसने गुप्त रूप से, उस जिज्ञासा के साथ जो उस जाति में स्वाभाविक होती है और जिसमें इच्छाशक्ति के साथ-साथ सहज प्रवृत्ति भी शामिल होती है, फादर मेडेलीन द्वारा छोड़े गए सभी पूर्व के सुरागों की छानबीन की थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह जानता था, और कभी-कभी दबे स्वर में कहता भी था, कि किसी ने एक विशेष जिले में एक लापता परिवार के बारे में कुछ जानकारी जुटाई है। एक बार स्वयं से बात करते हुए उसने कहा, "मुझे लगता है कि मैंने उसे पकड़ लिया है!" फिर वह तीन दिनों तक सन्नाटे में डूबा रहा और एक शब्द भी नहीं बोला। ऐसा लगा जैसे जिस सूत्र को वह अपने हाथ में समझ रहा था, वह टूट गया हो।

इसके अलावा, और यह कुछ शब्दों के अति-पूर्ण अर्थ को ठीक करने के लिए आवश्यक उपाय प्रदान करता है, मनुष्य में वास्तव में कुछ भी अचूक नहीं हो सकता, और सहज प्रवृत्ति की विशेषता यह है कि यह भ्रमित हो सकती है, मार्ग से भटक सकती है और पराजित हो सकती है। अन्यथा, यह बुद्धि से श्रेष्ठ होती, और पशु को मनुष्य से बेहतर बुद्धि प्राप्त होती।

जावर्ट जाहिर तौर पर एम. मेडेलीन की पूर्ण सहजता और शांति से कुछ हद तक विचलित थे।

लेकिन एक दिन , उनके अजीब व्यवहार ने एम . मेडेलीन पर प्रभाव डाला। यह घटना निम्नलिखित अवसर पर घटी।

VI. फादर फाउचेलेवेंट

एक सुबह एम. मेडेलीन एम⸺ सुर एम⸺ की एक कच्ची गली से गुजर रहे थे; तभी उन्हें एक आवाज सुनाई दी और कुछ दूरी पर एक समूह दिखाई दिया। वे पास गए। फादर फॉशेलवेंट नाम का एक बूढ़ा व्यक्ति अपनी गाड़ी के नीचे गिर गया था, उसका घोड़ा उससे गिर गया था।

यह फाउचेलेवेंट उन गिने-चुने दुश्मनों में से एक था जो उस समय एम. मेडेलीन के थे। जब मेडेलीन उस इलाके में आई, तो फाउचेलेवेंट, जो एक पूर्व नोटरी और लगभग शिक्षित किसान था, का एक व्यवसाय था जो बुरे दौर से गुजर रहा था। फाउचेलेवेंट ने इस साधारण मजदूर को अमीर होते देखा था, जबकि वह खुद, एक वकील, बर्बाद हो रहा था। इससे उसके मन में ईर्ष्या भर गई थी, और उसने हर मौके पर मेडेलीन को नुकसान पहुंचाने की पूरी कोशिश की। फिर दिवालियापन आ गया; और चूंकि बूढ़े आदमी के पास एक गाड़ी और एक घोड़ा के अलावा कुछ नहीं बचा था, न ही परिवार था और न ही बच्चे, इसलिए उसने गाड़ीवान का काम शुरू कर दिया।

घोड़े के दोनों पैर टूट गए थे और वह उठ नहीं पा रहा था। बूढ़ा आदमी पहियों में फंस गया था। दुर्घटना इतनी दुर्भाग्यपूर्ण थी कि गाड़ी का सारा भार उसके सीने पर आ पड़ा। गाड़ी काफी लदी हुई थी। फादर फॉशेलवेंट का गला बेहद दर्दनाक तरीके से कांप रहा था। उन्होंने उसे बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। एक बेतरतीब कोशिश, गलत तरीके से दी गई मदद, या गलत झटका, उसकी जान ले सकता था। उसे गाड़ी से अलग करने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था। जावर्ट, जो दुर्घटना के समय वहां पहुंचा था, ने जैकस्क्रू मंगवाया।

एम. मैडलीन आ गईं। लोग सम्मानपूर्वक एक तरफ हट गए।

“मदद करो!” बूढ़े फाउचेलेवेंट चिल्लाए। “कौन भला बनकर इस बूढ़े को बचाएगा?”

एम. मैडलीन ने उपस्थित लोगों की ओर मुड़कर कहा:—

क्या यहाँ जैकस्क्रू मिल सकता है?

“एक को बुलवाया गया है,” किसान ने उत्तर दिया।
इसे प्राप्त करने में कितना समय लगेगा?
"वे पास के ही फ्लैचोट के घर गए हैं, जहाँ एक लोहार है; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; इसमें कम से कम पंद्रह मिनट लगेंगे।"
“पंद्रह मिनट!” मैडलीन ने हैरानी से कहा।
पिछली रात बारिश हुई थी; मिट्टी पूरी तरह भीगी हुई थी।
गाड़ी हर पल धरती में और गहरी धंसती जा रही थी, और बूढ़े गाड़ीवान की छाती को और भी कुचलती जा रही थी। यह स्पष्ट था कि पांच मिनट में उसकी पसलियां टूट जाएंगी।
"एक चौथाई घंटे और इंतजार करना असंभव है," मेडेलीन ने उन किसानों से कहा, जो उसे घूर रहे थे।
"हमें!"
लेकिन तब तो बहुत देर हो जाएगी! क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि गाड़ी डूब रही है?
"कुंआ!"
“सुनो,” मैडेलीन ने फिर कहा; “गाड़ी के नीचे अभी भी इतनी जगह है कि एक आदमी उसके नीचे रेंगकर जा सके और उसे अपनी पीठ से उठा सके। बस आधा मिनट, और बेचारे आदमी को बाहर निकाला जा सकता है। क्या यहाँ कोई ऐसा है जिसके पास हिम्मत और हौसला हो? जीतने के लिए पाँच लुई डी'ओर हैं!”
समूह में मौजूद एक भी व्यक्ति हिला तक नहीं।
“दस लुई,” मैडलीन ने कहा।
वहाँ मौजूद लोगों ने अपनी निगाहें झुका लीं। उनमें से एक ने बुदबुदाते हुए कहा: “उस आदमी को शैतानी ताकतवर होना पड़ेगा। और फिर भी उसके कुचले जाने का खतरा बना रहेगा!”
“आइए,” मैडलीन ने फिर से कहना शुरू किया, “बीस लुई।”
वही सन्नाटा।

“इच्छाशक्ति की कमी नहीं है,” एक आवाज ने कहा।
एम. मेडेलीन ने पीछे मुड़कर देखा और जावर्ट को पहचान लिया। उसने उसके आने पर उसे नहीं देखा था।
जावर्ट ने आगे कहा:—
“यह ताकत है। कोई व्यक्ति इतना क्रूर ही होगा कि वह इतनी भारी गाड़ी को अपनी पीठ पर उठा सके।”
फिर, एम. मैडलीन को टकटकी लगाकर देखते हुए, उन्होंने अपने हर शब्द पर जोर देते हुए कहा:—
"महोदय मैडलीन, मैं केवल एक ही ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो आपकी इच्छानुसार कार्य करने में सक्षम है।"
मैडलीन सिहर उठी।
जैवर्ट ने उदासीनता के भाव से कहा, लेकिन अपनी निगाहें मैडलीन से हटाए बिना:
वह एक अपराधी था।
“आह!” मैडलीन ने कहा।
टूलॉन के गैली जहाजों में।
मैडलीन का चेहरा पीला पड़ गया।
इसी बीच, गाड़ी धीरे-धीरे डूबती चली गई। फादर फाउचेलेवेंट का गला कांपने लगा और वे चीख पड़े:—
“मेरा दम घुट रहा है! मेरी पसलियां टूट रही हैं! कोई पेंच! कुछ तो है! आह!” मैडलीन ने उसके चारों ओर नजर डाली।
"तो क्या ऐसा कोई नहीं है जो बीस लुई कमाना चाहे और इस बेचारे बूढ़े आदमी की जान बचाना चाहे?"
कोई हलचल नहीं हुई। जावर्ट ने बोलना फिर शुरू किया:—
"मैंने केवल एक ही ऐसे व्यक्ति को जाना है जो जेल की चौकीदार की जगह ले सकता था, और वह वही कैदी था।"

“आह! यह मुझे कुचल रहा है!” बूढ़े आदमी ने चिल्लाकर कहा।

मैडेलीन ने अपना सिर उठाया, जावर्ट की पैनी निगाहों से नज़रें मिलाईं जो अब भी उस पर टिकी हुई थीं, फिर उसने बेसुध पड़े किसानों को देखा और उदास होकर मुस्कुराया। फिर, बिना कुछ कहे, वह घुटनों के बल गिर पड़ा, और भीड़ के चीखने से पहले ही वह गाड़ी के नीचे था।

इसके बाद उम्मीद और सन्नाटे का एक भयानक क्षण छा गया।

उन्होंने देखा कि मेडेलीन उस भयानक भार के नीचे लगभग पेट के बल लेटा हुआ था और अपने घुटनों और कोहनियों को मिलाने के दो व्यर्थ प्रयास कर रहा था। वे चिल्लाए, “फादर मेडेलीन, बाहर आओ!” स्वयं बूढ़े फाउचेलेवेंट ने उससे कहा, “महाशय मेडेलीन, चले जाओ! तुम देख रहे हो कि मेरी मृत्यु निश्चित है! मुझे छोड़ दो! तुम भी कुचल जाओगे!” मेडेलीन ने कोई उत्तर नहीं दिया।

सभी दर्शक हांफ रहे थे। पहिए लगातार धंसते जा रहे थे, और मेडेलिन के लिए वाहन के नीचे से बाहर निकलना लगभग असंभव हो गया था।

अचानक विशालकाय वस्तु कांप उठी, गाड़ी धीरे-धीरे ऊपर उठी, पहिए गड्ढों से आधे बाहर निकल आए। उन्हें एक दबी हुई आवाज सुनाई दी, “जल्दी करो! मदद करो!” यह मेडेलीन थी, जिसने अभी-अभी आखिरी कोशिश की थी।

वे तेजी से आगे बढ़े। एक अकेले व्यक्ति के समर्पण ने सभी को शक्ति और साहस प्रदान किया। बीस हाथों ने मिलकर गाड़ी को उठाया। बूढ़े फाउचेलेवेंट की जान बच गई।

मैडेलीन उठी। वह पसीने से तरबतर था, लेकिन उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसके कपड़े फटे हुए थे और कीचड़ से सने हुए थे। सब रो रहे थे। बूढ़े ने उसके घुटनों को चूमा और उसे ईश्वर का नाम दिया। जहाँ तक उसकी बात है, उसके चेहरे पर आनंद और दिव्य पीड़ा का एक अवर्णनीय भाव था, और उसने अपनी शांत दृष्टि जावर्ट पर टिका दी, जो अब भी उसे घूर रहा था।

VII. फॉशेलवेंट पेरिस में माली बन जाता है

गिरने से फाउचेलवेंट के घुटने में चोट लग गई थी। फादर मेडेलीन ने उन्हें कारखाने की इमारत में ही अपने कामगारों के लिए स्थापित एक अस्पताल में भर्ती कराया, जहाँ दो धर्मोपदेशक सेवाएं देती थीं। अगली सुबह, उस बुजुर्ग व्यक्ति को अपने नाइटस्टैंड पर एक हजार फ्रैंक का नोट मिला, जिस पर फादर मेडेलीन की लिखावट में ये शब्द लिखे थे: "मैं तुम्हारा घोड़ा और गाड़ी खरीदता हूँ।" गाड़ी टूटी हुई थी और घोड़ा मर चुका था। फाउचेलवेंट ठीक हो गए, लेकिन उनका घुटना अकड़ा हुआ रह गया। धर्मोपदेशकों और अपने पादरी की सिफारिश पर, श्री मेडेलीन ने उस भले आदमी को पेरिस के रू सेंट-एंटोइन में स्थित एक महिला मठ में माली की नौकरी दिलवाई।

कुछ समय बाद, एम. मेडेलीन को महापौर नियुक्त किया गया। जब जैवर्ट ने पहली बार एम. मेडेलीन को उस दुपट्टे में देखा, जो उन्हें शहर पर अधिकार प्रदान करता था, तो उसे वैसी ही सिहरन महसूस हुई जैसी किसी रखवाले कुत्ते को अपने मालिक के कपड़ों में भेड़िये की गंध सूंघने पर होती है। उस समय से वह यथासंभव उनसे बचने लगा। जब सेवा की अनिवार्यता ने उनसे मिलने की मांग की और उनके पास महापौर से मिलने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, तो उन्होंने उनसे अत्यंत आदरपूर्वक बात की।

फादर मेडेलीन द्वारा एम• सुर एम• में लाई गई इस समृद्धि के, हमने जिन प्रत्यक्ष संकेतों का उल्लेख किया है, उनके अलावा एक और लक्षण था जो अदृश्य होते हुए भी महत्वपूर्ण था। यह कभी धोखा नहीं देता। जब जनसंख्या कष्ट में होती है, जब काम की कमी होती है, जब व्यापार नहीं होता, तो करदाता गरीबी के कारण करों का विरोध करता है, वह अपनी सीमा पार कर जाता है और सरकार कर वसूलने और उसे लागू करने में भारी धन खर्च करती है। जब काम प्रचुर मात्रा में होता है, जब देश समृद्ध और खुशहाल होता है, तो कर आसानी से चुकाए जाते हैं और सरकार को कोई खर्च नहीं करना पड़ता। यह कहा जा सकता है कि जनता की गरीबी और समृद्धि का एक अचूक मापक है - करों की वसूली की लागत। सात वर्षों के दौरान, एम⸺ सुर एम⸺ के क्षेत्र में करों की वसूली का खर्च तीन-चौथाई कम हो गया था, और इसी कारण तत्कालीन वित्त मंत्री एम. डी विलेल

द्वारा इस क्षेत्र का अक्सर अन्य सभी क्षेत्रों से अलग उल्लेख किया जाता था।

जब फैंटाइन वापस लौटी तो देश की यही हालत थी। कोई उसे याद नहीं करता था। सौभाग्य से, एम. मेडेलीन की फैक्ट्री का दरवाजा एक दोस्त के चेहरे जैसा लगा। उसने वहाँ अपना नाम बताया और उसे महिलाओं के वर्क रूम में काम पर रख लिया गया। यह काम फैंटाइन के लिए बिल्कुल नया था; वह इसमें बहुत कुशल नहीं थी, इसलिए दिनभर के काम से उसे बहुत कम कमाई होती थी; लेकिन यह पर्याप्त था; समस्या हल हो गई थी; वह अपनी जीविका कमा रही थी।

VIII. मैडम विक्टर्नियन नैतिकता पर तीस फ्रैंक खर्च करती हैं

जब फैंटीन ने देखा कि वह अपनी आजीविका कमा रही है, तो उसे पल भर के लिए खुशी हुई। अपनी मेहनत से ईमानदारी से जीना, ईश्वर की कृपा! काम करने की इच्छा सचमुच उसके मन में लौट आई थी। उसने एक दर्पण खरीदा, उसमें अपनी जवानी, अपने सुंदर बाल, अपने सुंदर दांत देखकर उसे आनंद आता था; वह बहुत कुछ भूल गई; वह केवल कोसेट और संभावित भविष्य के बारे में सोचती थी, और लगभग खुश थी। उसने एक छोटा सा कमरा किराए पर लिया और भविष्य में होने वाली कमाई के सहारे उधार पर उसे सजाया—यह उसकी फिजूलखर्ची की एक बची-खुची निशानी थी। चूंकि वह यह नहीं कह सकती थी कि उसकी शादी हो गई है, इसलिए उसने, जैसा कि हम देख चुके हैं, अपनी छोटी बच्ची का जिक्र न करने का पूरा ध्यान रखा।

जैसा कि पाठक देख चुके हैं, उसने शुरू में थेनार्डियरों को तुरंत भुगतान कर दिया था। चूंकि उसे केवल अपने नाम से हस्ताक्षर करना आता था, इसलिए उसे एक सार्वजनिक पत्र-लेखक के माध्यम से पत्र लिखना पड़ा।

वह अक्सर पत्र लिखती थी, और इस बात पर लोगों का ध्यान गया। महिलाओं के वर्क रूम में दबी आवाज़ में यह बात होने लगी कि फैंटाइन "पत्र लिखती थी" और "उसका अपना एक अलग अंदाज़ था।"

दूसरों के कार्यों पर नज़र रखने के लिए उन लोगों के अलावा कोई और नहीं होता जिनका उनसे कोई लेना-देना नहीं होता। वह सज्जन सूर्यास्त के अलावा कभी क्यों नहीं आते? श्रीमान फलां-फलां मंगलवार को अपनी चाबी कील पर क्यों नहीं टांगते? वे हमेशा संकरी गलियों से ही क्यों जाते हैं? मैडम हमेशा अपने घर पहुँचने से पहले ही अपनी गाड़ी से क्यों उतर जाती हैं? जब उनके पास नोटों के कागज़ से भरी पूरी दुकान है, तो वे छह पन्ने खरीदने के लिए क्यों भेजती हैं? इत्यादि। ऐसे लोग भी होते हैं जो इन रहस्यों का हल पाने के लिए, जिनका उनके लिए कोई महत्व नहीं है, दस अच्छे कार्यों से भी अधिक पैसा, समय और मेहनत खर्च करते हैं, और वह भी नि:शुल्क, केवल अपने आनंद के लिए, अपनी जिज्ञासा के बदले कोई और प्रतिफल प्राप्त किए बिना। वे किसी व्यक्ति का

दिन भर पीछा करते हैं; वे रात में, ठंड और बारिश में, गलियों के कोनों पर, दरवाज़ों के नीचे घंटों पहरा देते हैं; वे कुलियों को रिश्वत देंगे, तांगा चालकों और नौकरों को शराब पिलाकर नशे में धुत कर देंगे, नौकरानी को खरीद लेंगे, कुली को रिश्वत देंगे। क्यों? बिना किसी कारण के। चीजों को देखने, जानने और उनकी गहराई में उतरने की एक शुद्ध ललक। बात करने की एक शुद्ध खुजली। और अक्सर ये रहस्य, ये गूढ़ बातें जब सार्वजनिक हो जाती हैं, ये अनसुलझे रहस्य जब प्रकाश में आते हैं, तो तबाही, द्वंद्व, असफलता, परिवारों का विनाश और टूटे जीवन को जन्म देते हैं, उन लोगों की बड़ी खुशी के लिए जिन्होंने "सब कुछ पता लगा लिया" है, बिना किसी रुचि के, केवल अपनी सहज प्रवृत्ति से। एक दुखद बात।

कुछ लोग केवल बात करने की आवश्यकता के कारण ही द्वेषपूर्ण व्यवहार करते हैं। उनकी बातचीत, ड्राइंग रूम की गपशप, वेटिंग रूम की गपशप, उन चिमनियों की तरह होती है जो तेजी से लकड़ी का उपभोग करती हैं; उन्हें बड़ी मात्रा में ज्वलनशील पदार्थों की आवश्यकता होती है; और उनके ज्वलनशील पदार्थ उनके पड़ोसियों द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

इसलिए फैंटाइन पर नजर रखी जा रही थी।

इसके अलावा, कई लोग उसके सुनहरे बालों और सफेद दांतों से ईर्ष्या करते थे।

यह बात गौर करने लायक थी कि कार्यशाला में वह अक्सर बाकी लोगों के बीच में ही एक तरफ मुड़कर आंसू पोंछती थी। ये वे क्षण थे जब वह अपने बच्चे के बारे में सोच रही होती थी; शायद उस व्यक्ति के बारे में भी जिसे उसने प्यार किया था।

अतीत के अंधकारमय बंधनों को तोड़ना एक दुखद कार्य है।

यह देखा गया कि वह महीने में कम से कम दो बार पत्र लिखती थी और पत्र भेजने का किराया भी वही देती थी। उन्हें पता मिल गया: महाशय, श्री थेनार्डियर, मोंटफर्मेइल के सराय मालिक। वह प्रसिद्ध लेखक, एक नेक बूढ़ा आदमी, जो लाल शराब पिए बिना अपने राज़ खोल नहीं देता था, शराब की दुकान में उससे बात की गई। संक्षेप में, पता चला कि फैंटाइन का एक बच्चा था। "वह ज़रूर एक खूबसूरत औरत होगी।" एक पुरानी गपशप करने वाली महिला मिली, जो मोंटफर्मेइल गई,

थेनार्डियर परिवार से बात की और लौटकर बोली: "पैंतीस फ्रैंक में मेरा मन हल्का हो गया। मैंने बच्चे को देख लिया है।"

इस घटना को अंजाम देने वाली अफवाह फैलाने वाली महिला मैडम विक्टर्नियन थीं, जो सबकी पवित्रता की रक्षक और संरक्षक थीं। मैडम विक्टर्नियन छप्पन वर्ष की थीं और उन्होंने अपनी बदसूरती को बुढ़ापे के मुखौटे से और भी मजबूत कर लिया था। उनकी आवाज़ कांपती थी और उनका मन चंचल था। यह बूढ़ी औरत कभी जवान हुआ करती थी—यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है! अपनी जवानी में, 1993 में, उन्होंने एक भिक्षु से शादी की थी जो लाल टोपी पहनकर अपने मठ से भाग गया था और बर्नार्डिन संप्रदाय से जैकोबिन संप्रदाय में शामिल हो गया था। वह रूखी, कठोर, चिड़चिड़ी, तेज, नुक्ताचीनी करने वाली और लगभग विषैली थीं; यह सब उनके भिक्षु की याद में था, जिनकी वह विधवा थीं और जिन्होंने उन पर पूरी तरह से शासन किया था और उन्हें अपनी इच्छा के अधीन कर लिया था। वह एक बिच्छू बूटी की तरह थीं जिसमें भिक्षु के वस्त्र की सरसराहट दिखाई देती थी। पुनर्स्थापना काल में वह कट्टरपंथी बन गईं और इतनी ऊर्जा के साथ कि पुजारियों ने उनके भिक्षु को माफ कर दिया था। उनके पास एक छोटी सी संपत्ति थी, जिसे उन्होंने बड़े शान-शौकत से एक धार्मिक समुदाय को दान कर दिया था। वह अर्रास के बिशप महल में काफी सम्मानित थीं। इसलिए मैडम विक्टर्नियन मोंटफर्मेइल गईं और यह कहते हुए लौटीं, "मैंने बच्चे को देखा है।"

इन सबमें समय लगा। फैंटाइन कारखाने में एक साल से अधिक समय से काम कर रही थी, तभी एक सुबह, वर्कशॉप के अधीक्षक ने उसे मेयर की ओर से पचास फ्रैंक दिए, उससे कहा कि अब वह दुकान में कार्यरत नहीं है, और मेयर के नाम पर उससे मोहल्ले को छोड़कर चले जाने का अनुरोध किया।

यह वही महीना था जब थेनार्डियर्स ने छह फ्रैंक के बजाय बारह फ्रैंक की मांग करने के बाद, बारह फ्रैंक के बजाय पंद्रह फ्रैंक वसूल किए थे।

फैंटाइन पूरी तरह से टूट चुकी थी। वह मोहल्ले को छोड़कर नहीं जा सकती थी; उस पर किराए और फर्नीचर का कर्ज़ था। पचास फ्रैंक इस कर्ज़ को चुकाने के लिए काफ़ी नहीं थे। उसने लड़खड़ाते हुए कुछ गिड़गिड़ाते शब्द कहे। सुपरिंटेंडेंट ने उसे तुरंत दुकान छोड़ने का आदेश दिया। इसके अलावा, फैंटाइन एक औसत दर्जे की कुशल कारीगर थी। निराशा से भी ज़्यादा शर्म से

व्याकुल होकर, उसने दुकान छोड़ दी और अपने कमरे में लौट गई। इस तरह उसकी गलती सबके सामने आ गई।

अब उसमें एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं बची थी। उसे महापौर से मिलने की सलाह दी गई; लेकिन उसकी हिम्मत नहीं हुई। महापौर ने उसे पचास फ्रैंक दिए थे क्योंकि वह अच्छा था, और उसे इसलिए बर्खास्त कर दिया था क्योंकि वह न्यायप्रिय था। उसने इस फैसले को स्वीकार कर लिया।

IX. मैडम विक्टर्नियन की सफलता

तो भिक्षु की विधवा किसी काम की तो थी।

लेकिन एम. मेडेलीन को इन सब बातों की कोई जानकारी नहीं थी। जीवन ऐसी ही घटनाओं के संयोगों से भरा पड़ा है। एम. मेडेलीन की आदत थी कि वह लगभग कभी भी महिलाओं के कार्यशाला में नहीं जाती थीं।

इस कमरे के मुखिया के रूप में उन्होंने एक बुजुर्ग अविवाहित महिला को नियुक्त किया था, जिसे पुजारी ने उनके लिए उपलब्ध कराया था, और उन्हें इस अधीक्षक पर पूरा भरोसा था—एक सचमुच सम्मानित, दृढ़, न्यायप्रिय, ईमानदार, दान देने की भावना से परिपूर्ण, लेकिन समझने और क्षमा करने की भावना से रहित। एम. मेडेलीन पूरी तरह से उन पर निर्भर थीं। अच्छे लोग अक्सर अपना अधिकार सौंपने के लिए बाध्य होते हैं। इसी पूर्ण शक्ति और इस दृढ़ विश्वास के साथ कि वह सही कर रही हैं, अधीक्षक ने मुकदमा दायर किया, फैसला सुनाया, दोषी ठहराया और फैंटाइन को फांसी दे दी।

जहां तक पचास फ्रैंक की बात है, उन्होंने वह राशि उस निधि से दी थी जो एम. मैडेलीन ने उन्हें धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए और कामगार महिलाओं की सहायता करने के लिए सौंपी थी, और जिसका उन्होंने कोई हिसाब नहीं दिया था।

फैंटाइन ने पड़ोस में नौकरानी का काम पाने की कोशिश की; वह घर-घर गई। कोई उसे काम पर नहीं रखना चाहता था। वह शहर छोड़कर नहीं जा सकती थी। पुराने सामान बेचने वाले, जिससे उसने अपने फर्नीचर के लिए कर्ज लिया था—और कैसा फर्नीचर था!—ने उससे कहा, "अगर तुम चली गई, तो मैं तुम्हें चोर समझकर गिरफ्तार करवा दूंगा।" घर के मालिक, जिससे उसने किराया लिया था, ने उससे कहा, "तुम जवान और सुंदर हो; तुम चुका सकती हो।" उसने पचास फ्रैंक मकान मालिक और फर्नीचर बेचने वाले के बीच बाँट दिए, फर्नीचर बेचने वाले को उसके सामान का तीन-चौथाई हिस्सा लौटा दिया, केवल आवश्यक वस्तुएँ अपने पास रखीं, और खुद को बिना काम, बिना किसी हुनर के, अपने बिस्तर के अलावा कुछ भी नहीं और लगभग पचास फ्रैंक के कर्ज में डूबी हुई पाया।

उसने चौकी के सैनिकों के लिए मोटे कपड़े की कमीज़ें बनाना शुरू किया और प्रतिदिन बारह सू कमाती थी। उसकी बेटी पर दस सू खर्च होते थे। इसी समय से उसने थेनार्डियरों को अनियमित रूप से कर देना शुरू कर दिया।

लेकिन, रात को लौटने पर उसके लिए मोमबत्ती जलाने वाली उस बूढ़ी औरत ने उसे कष्टों में जीने की कला सिखाई। थोड़े से में जीने के बाद, कुछ भी न होने में जीने की स्थिति आती है। ये दो कक्ष हैं; पहला अंधकारमय है, दूसरा काला।

फैंटाइन ने सर्दियों में बिना आग के जीना सीख लिया था; उस पक्षी को त्यागना सीख लिया था जो हर दो दिन में आधा पैसा बाजरा खा जाता था; अपनी पेटीकोट से चादर बनाना और अपनी चादर से पेटीकोट बनाना सीख लिया था; सामने वाली खिड़की की रोशनी में खाना खाकर मोमबत्ती बचाना सीख लिया था। कोई नहीं जानता कि कुछ कमजोर प्राणी, जो अभाव और ईमानदारी में बूढ़े हो चुके हैं, एक पैसे से क्या-क्या हासिल कर सकते हैं। अंततः यह एक प्रतिभा बन जाती है। फैंटाइन ने यह उत्कृष्ट प्रतिभा प्राप्त की और थोड़ा साहस भी पा लिया।

उस समय उसने एक पड़ोसी से कहा, “वाह! मैं खुद से कहती हूँ, सिर्फ पाँच घंटे सोकर और बाकी सारा समय सिलाई करके, मैं लगभग अपनी रोजी-रोटी कमा लूँगी। और फिर, जब कोई दुखी होता है, तो वह कम खाता है। खैर, कष्ट, बेचैनी, एक तरफ थोड़ी सी रोटी, दूसरी तरफ मुसीबत—ये सब मुझे सहारा देंगे।”

इस संकट की घड़ी में अपनी छोटी बच्ची को अपने साथ पाकर उसे बहुत खुशी होती। उसने उसे बुलाने का सोचा। लेकिन फिर क्या! उसे भी अपनी गरीबी में शामिल करना पड़ेगा! और फिर, वह थेनार्डियरों की कर्जदार थी! वह उन्हें कैसे चुकाएगी? और यात्रा का खर्च! वह कैसे उठाएगी?

जिस वृद्ध महिला ने उसे अभावग्रस्त जीवन जीने का पाठ पढ़ाया था, वह मार्गुराइट नाम की एक संत अविवाहित महिला थी, जो सच्ची धर्मपरायणता से भरी हुई थी, गरीब थी और गरीबों के साथ-साथ अमीरों के प्रति भी दयालु थी, उसे केवल मार्गुराइट के नाम से हस्ताक्षर करने के लिए पर्याप्त रूप से लिखना आता था, और वह ईश्वर में विश्वास करती थी, जो कि विज्ञान है।

इस नश्वर संसार में ऐसे अनेक गुणी लोग हैं; एक दिन वे स्वर्ग में अवश्य होंगे। इस जीवन का भी एक कल है।

पहले तो फैंटाइन को इतनी शर्म आती थी कि वह बाहर जाने की हिम्मत ही नहीं कर पाती थी।

जब वह सड़क पर होती थी, तो उसे यह आभास होता था कि लोग उसके पीछे मुड़कर उसकी ओर इशारा करते हैं; हर कोई उसे घूरता है और कोई भी उसका अभिवादन नहीं करता; राहगीरों की ठंडी और कड़वी अवहेलना उत्तरी हवा की तरह उसके शरीर और आत्मा में समा जाती थी।

ऐसा लगता है मानो कोई अभागी महिला छोटे कस्बों में सबके व्यंग्य और जिज्ञासा के नीचे बिल्कुल अकेली पड़ गई हो। कम से कम पेरिस में तो कोई आपको जानता ही नहीं, और यह गुमनामी एक आवरण के समान है। ओह! काश वह पेरिस जा पाती! नामुमकिन!

उसे बदनामी की आदत डालनी पड़ी, जैसे उसने दरिद्रता की आदत डाल ली थी। धीरे- धीरे उसने अपना रास्ता तय कर लिया। दो-तीन महीने बीतने पर उसने अपनी शर्म को भुला दिया और ऐसे चलने लगी मानो कुछ हुआ ही न हो। उसने कहा, "मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।"

वह सिर ऊंचा करके, कड़वी मुस्कान के साथ आती-जाती रही और उसे इस बात का एहसास था कि उसका चेहरा निर्भीक होता जा रहा है।

मैडम विक्टर्नियन कभी-कभी अपनी खिड़की से उसे आते-जाते देखती थीं, उस प्राणी की पीड़ा को भांपती थीं, जिसे उनकी कृपा से उसकी औकात में वापस लाया गया था, और खुद को बधाई देती थीं। दुष्टों का सुख काला होता है।

अत्यधिक परिश्रम से फैंटीन थक गई थी, और उसकी हल्की-फुल्की खांसी बढ़ गई थी। वह कभी-कभी अपनी पड़ोसी मार्गरेट से कहती थी, "ज़रा देखो मेरे हाथ कितने गर्म हैं!"

फिर भी, जब वह सुबह अपने खूबसूरत बालों को एक पुरानी टूटी हुई कंघी से संवारती थी, और वे रेशम की तरह उसके चारों ओर लहराते थे, तो उसे एक पल के लिए खुशी और नखरे का अनुभव होता था।

X. सफलता का परिणाम

उसे सर्दियों के अंत में नौकरी से निकाल दिया गया था; गर्मियाँ बीत गईं, लेकिन सर्दियाँ फिर आ गईं। छोटे दिन, कम काम। सर्दियाँ: न गर्माहट, न रोशनी, न दोपहर, शाम सुबह में बदल जाती है, कोहरा, धुंध; खिड़की धूसर है; उससे साफ़ देखना नामुमकिन है। आकाश बस एक छेद जैसा है। पूरा दिन एक गुफा जैसा है। सूरज भिखारी जैसा लगता है। एक भयानक मौसम! सर्दियाँ आसमान के पानी और इंसान के दिल को पत्थर बना देती हैं। उसके लेनदार उसे परेशान करते रहे।

फैंटाइन की आमदनी बहुत कम थी। उसका कर्ज बढ़ता जा रहा था। थेनार्डियर परिवार, जिन्हें समय पर भुगतान नहीं किया जाता था, उसे लगातार पत्र लिखते रहते थे, जिनकी बातें उसे हताश कर देती थीं और उसका धैर्य उसे कंगाल कर देती थीं। एक दिन उन्होंने उसे लिखा कि उसकी छोटी कोसेट इस ठंड में पूरी तरह नग्न है, उसे ऊनी स्कर्ट की ज़रूरत है और उसकी माँ को इसके लिए कम से कम दस फ्रैंक भेजने होंगे। उसे पत्र मिला और वह उसे दिन भर अपने हाथों में मसलती रही। उस शाम वह गली के कोने पर स्थित एक नाई की दुकान में गई और अपना कंघा निकाला। उसके खूबसूरत सुनहरे बाल उसके घुटनों तक लटक रहे थे।

“वाह, कितने शानदार बाल हैं!” नाई ने कहा।

“इसके लिए तुम मुझे कितने पैसे दोगे?” उसने कहा।

“दस फ्रैंक।”

"इसे काट।"

उसने एक बुना हुआ पेटीकोट खरीदा और उसे थेनार्डियरों को भेज दिया। इस पेटीकोट ने थेनार्डियरों को क्रोधित कर दिया। उन्हें तो पैसा चाहिए था। उन्होंने पेटीकोट एपोनाइन को दे दिया। बेचारी लार्क कांपती रही।

फैंटाइन ने सोचा: “मेरी बच्ची को अब ठंड नहीं लग रही है। मैंने उसे अपने बालों से ढक दिया है।” उसने छोटी गोल टोपियाँ पहन लीं जिनसे उसका मुंडा हुआ सिर ढका हुआ था, और जिनमें वह अब भी सुंदर लग रही थी।

फैंटाइन के दिल में अंधकारमय विचार घर कर गए थे।

जब उसने देखा कि अब वह अपने बालों को संवार नहीं सकती, तो उसे अपने आस-पास के सभी लोगों से नफरत होने लगी। वह लंबे समय से फादर मेडेलीन के प्रति सर्वमान्य श्रद्धा रखती थी; फिर भी, बार-बार यह सोचते हुए कि उन्हीं ने उसे नौकरी से निकाला था, उन्हीं की वजह से वह उनसे भी नफरत करने लगी, और सबसे ज़्यादा नफरत करने लगी। जब वह काम के घंटों में कारखाने के पास से गुज़रती, जब कामगार दरवाज़े पर होते, तो वह बनावटी ढंग से हंसती और गाती।

एक बूढ़ी महिला मजदूर जिसने उसे एक बार इस तरह हंसते और गाते हुए देखा था, उसने कहा, "इस लड़की का अंत बुरा होगा।"

उसने साहस और हृदय में भरी क्रोध की भावना से प्रेरित होकर, पहले ही प्रेमी को अपना लिया, एक ऐसे व्यक्ति को जिससे वह प्रेम नहीं करती थी। वह एक नीच, निकम्मा, भिखारी संगीतकार जैसा, आलसी भीख मांगने वाला था, जो उसे पीटता था और जिसने उसे उसी तरह छोड़ दिया जैसे उसने उसे अपनाया था, घृणा से।

वह अपने बच्चे से बहुत प्यार करती थी।

जैसे-जैसे वह नीचे उतरती गई, उसके चारों ओर अंधेरा बढ़ता गया, और उसके दिल की गहराइयों में बसी उस नन्ही परी की चमक और भी तेज होती गई। उसने कहा, "जब मैं अमीर हो जाऊंगी, तो मैं अपनी कोसेट को अपने साथ रखूंगी;" और वह हंस पड़ी। उसकी खांसी ठीक नहीं हुई थी, और उसकी पीठ पसीने से भीगी हुई थी।

एक दिन कोसेट को थेनार्डियर परिवार से एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था: “कोसेट एक ऐसी बीमारी से बीमार है जो आस-पड़ोस में फैल रही है। इसे मिलियरी फीवर कहते हैं। इसके लिए महंगी दवाइयों की ज़रूरत है। इसने हमें बर्बाद कर दिया है और अब हम इनका खर्च नहीं उठा सकते। अगर आप एक हफ़्ते के अंदर हमें चालीस फ्रैंक नहीं भेजते हैं, तो बच्ची मर जाएगी।”

वह जोर से हंस पड़ी और अपनी बूढ़ी पड़ोसी से बोली, “अरे वाह! ये तो बहुत अच्छे हैं! चालीस फ्रैंक! वाह! इससे तो दो नेपोलियन बन जाते हैं! उन्हें क्या लगता है कि मैं इन्हें कहाँ से लाऊँगी? ये किसान सचमुच बेवकूफ हैं।”

फिर भी वह सीढ़ियों की एक छोटी खिड़की के पास गई और चिट्ठी को एक बार फिर पढ़ा। उसके बाद वह सीढ़ियों से नीचे उतरी और दौड़ती-कूदती, हंसती हुई बाहर निकली।

किसी ने उससे मुलाकात की और उससे कहा, "तुम्हें इतना समलैंगिक क्या बनाता है?"

उसने जवाब दिया: “कुछ देहाती लोगों ने मुझे जो पत्र लिखा है, वह मूर्खता का एक बड़ा नमूना है। वे मुझसे चालीस फ्रैंक मांग रहे हैं। बस, अब तुम जैसे गंवारों का यही हाल है!”

जैसे ही वह चौक पार कर रही थी, उसने देखा कि एक विचित्र आकार की गाड़ी के चारों ओर बहुत सारे लोग जमा थे, जिसके ऊपर लाल वस्त्र पहने एक व्यक्ति खड़ा था और कुछ बोल रहा था। वह एक नीम-हकीम दंत चिकित्सक था जो अपने दौरे पर था और जनता को पूरे दांतों के सेट, अफीम, पाउडर और औषधियाँ बेच रहा था।

फैंटाइन समूह में घुलमिल गई और भाषण सुनकर बाकियों के साथ हंसने लगी। भाषण में आम लोगों के लिए इस्तेमाल होने वाली बोलचाल की भाषा और संभ्रांत लोगों के लिए इस्तेमाल होने वाली विशेष शब्दावली का प्रयोग किया गया था। दांत निकालने वाले ने हंसती हुई उस प्यारी लड़की को देखा और अचानक बोला: "तुम्हारे दांत कितने सुंदर हैं, हंसती हुई लड़की! अगर तुम मुझे अपने दांत बेचना चाहो, तो मैं तुम्हें हर दांत के लिए एक नेपोलियन सोने का सिक्का दूंगा।"

“मेरे पैलेट क्या हैं?” फैंटाइन ने पूछा।

दंत चिकित्सा के प्रोफेसर ने उत्तर दिया, "तालू सामने के दांत होते हैं, ऊपर के दो दांत।"

“कितना भयानक!” फैंटाइन ने हैरानी से कहा।

“दो नेपोलियन!” वहाँ मौजूद एक बिना दांत वाली बूढ़ी औरत बड़बड़ाई। “वाह, कितनी भाग्यशाली लड़की है!”

फैंटाइन भाग गई और उसने अपने कान बंद कर लिए ताकि वह उस आदमी की कर्कश आवाज न सुन सके जो उसे पुकार रहा था: “सोचो, मेरी सुंदरी! दो नेपोलियन हैं; वे

काम आ सकते हैं। अगर तुम्हारा मन करे, तो आज शाम टिलैक डी'अर्जेंट के सराय में आ जाना; तुम मुझे वहीं पाओगी।”
फैंटाइन घर लौटी। वह बहुत गुस्से में थी और उसने सारी घटना अपनी पड़ोसी मार्गरेट को बताई: “क्या तुम ऐसी बात समझ सकती हो? क्या वह घिनौना आदमी नहीं है? ऐसे लोगों को देश में घूमने की इजाज़त कैसे दी जा सकती है! मेरे दोनों सामने के दांत निकाल दो! मैं कितनी भयानक हो जाऊंगी! मेरे बाल तो फिर उग आएंगे, लेकिन मेरे दांत! आह! कैसा राक्षस है वो! मैं तो पांचवीं मंजिल से सिर के बल फुटपाथ पर कूदना ज़्यादा पसंद करूंगी! उसने मुझसे कहा था कि वह आज शाम टिलैक डी'अर्जेंट में होगा।”
“और उसने क्या पेशकश की?” मार्गुराइट ने पूछा।
“दो नेपोलियन।”
"इससे चालीस फ्रैंक बनते हैं।"
“हां,” फैंटाइन ने कहा; “इससे चालीस फ्रैंक बनते हैं।”
वह सोच में डूबी रही और अपना काम शुरू कर दिया। पंद्रह मिनट बीतने पर उसने सिलाई का काम छोड़ दिया और सीढ़ियों पर जाकर थेनार्डियर का पत्र एक बार फिर पढ़ा।
वापस लौटने पर उसने अपने बगल में काम कर रही मार्गुराइट से कहा:— “मिलियरी बुखार क्या होता है? क्या आप जानते हैं?”
“हां,” उस बूढ़ी अविवाहित महिला ने उत्तर दिया; “यह एक बीमारी है।”
क्या इसके लिए कई दवाओं की आवश्यकता होती है?
“ओह! ये तो बहुत ही भयानक दवाएं हैं।”
“इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है?”
"यह एक ऐसी बीमारी है जो बिना जाने ही हो जाती है।"
“तो क्या यह बच्चों पर हमला करता है?”
"खासकर बच्चे।"
क्या इससे लोगों की मौत होती है?

“हो सकता है,” मार्गुराइट ने कहा।

फैंटाइन कमरे से बाहर निकली और सीढ़ियों पर जाकर अपना पत्र एक बार फिर पढ़ने लगी।

उस शाम वह बाहर निकली और उसे पेरिस स्ट्रीट की ओर कदम बढ़ाते हुए देखा गया, जहाँ सराय स्थित हैं।

अगली सुबह, जब मार्गुराइट सूर्योदय से पहले फैंटीन के कमरे में दाखिल हुई — क्योंकि वे हमेशा साथ काम करती थीं, और इस तरह दोनों के लिए केवल एक मोमबत्ती का इस्तेमाल करती थीं—तो उसने फैंटीन को अपने बिस्तर पर बैठी हुई पाया, उसका चेहरा पीला और सुन्न था। वह लेटी नहीं थी। उसकी टोपी उसके घुटनों पर गिरी हुई थी। उसकी मोमबत्ती पूरी रात जलती रही थी, और लगभग पूरी तरह बुझ चुकी थी। मार्गुराइट दहलीज पर ही रुक गई, इस भारी बर्बादी को देखकर वह स्तब्ध रह गई, और बोली:—

“हे भगवान! मोमबत्ती पूरी तरह बुझ गई! कुछ तो हुआ है।”

फिर उसने फैंटाइन की ओर देखा, जो उसकी ओर मुड़ी हुई थी और उसके सिर पर बाल नहीं थे।

पिछली रात की तुलना में फैंटाइन की उम्र दस साल बढ़ गई थी।

“हे भगवान!” मार्गुराइट ने कहा, “फैंटाइन, तुम्हें क्या हुआ है?”

“कुछ नहीं,” फैंटाइन ने उत्तर दिया। “बिल्कुल इसके विपरीत। मेरा बच्चा उस भयानक बीमारी से, सहायता न मिलने के कारण नहीं मरेगा। मैं संतुष्ट हूँ।”

ऐसा कहते हुए उसने अविवाहित महिला को मेज पर चमकते हुए दो नेपोलियन सिक्कों की ओर इशारा किया।

“अरे! हे भगवान!” मार्गुराइट चिल्लाई। “अरे वाह! ये तो बहुत बड़ी दौलत है! ये लुई डी'ओर कहाँ से मिले?”

“मुझे मिल गए,” फैंटाइन ने जवाब दिया।

उसी समय वह मुस्कुराई। मोमबत्ती की रोशनी से उसका चेहरा जगमगा उठा। यह एक खूनी मुस्कान थी। उसके होठों के कोनों पर लाल रंग की लार लगी हुई थी, और उसके मुंह में एक काला छेद सा दिख रहा था।

दोनों दांत निकाल दिए गए थे।

उसने चालीस फ्रैंक मोंटफर्मेइल को भेज दिए।

आखिरकार, यह थेनार्डियर परिवार द्वारा धन प्राप्त करने की एक चाल थी।
कोसेट बीमार नहीं थी।

फैंटाइन ने अपना दर्पण खिड़की से बाहर फेंक दिया। वह बहुत पहले ही दूसरी मंजिल पर स्थित अपनी कोठरी छोड़कर छत के पास एक अटारी में रहने लगी थी, जहाँ बंद करने के लिए केवल एक कुंडी थी; ऐसी अटारी जिसका सिरा फर्श से कोण बनाता है और हर पल सिर पर चोट पहुँचाता है। बेचारा वहाँ रहने वाला व्यक्ति अपने कमरे के अंत तक, जैसे वह अपने भाग्य के अंत तक पहुँच सकता है, केवल अधिक से अधिक झुकते हुए ही पहुँच सकता है।

उसके पास अब पलंग नहीं था; एक फटा हुआ कपड़ा जिसे वह अपना कंबल कहती थी, ज़मीन पर एक गद्दा और बिना सीट वाली कुर्सी ही बची थी। एक कोने में उसका छोटा सा गुलाब का पौधा सूख गया था, मानो भुला दिया गया हो। दूसरे कोने में पानी रखने के लिए एक बर्तन था, जो सर्दियों में जम जाता था, और जिसमें पानी के अलग-अलग स्तरों पर बर्फ के गोल घेरे बने रहते थे। उसने अपना लज्जा खो दिया था; उसने अपना नज़ाकत भी खो दी थी। एक आखिरी निशानी। वह गंदी टोपियाँ पहने बाहर चली गई। समय की कमी हो या उदासीनता, उसने अपने कपड़ों की मरम्मत करना छोड़ दिया था। जैसे-जैसे एड़ियाँ घिसती गईं, वह अपनी मोज़ों को जूतों में घसीटती गई। यह सीधी सिलवटों से स्पष्ट था। उसने अपनी पुरानी और फटी हुई चोली को कैलिको के टुकड़ों से सिला, जो ज़रा सी हरकत पर फट जाते थे। जिन लोगों की वह ऋणी थी, वे तमाशा करते थे और उसे चैन से नहीं रहने देते थे। वह उन्हें सड़क पर पाती, वह उन्हें अपनी सीढ़ियों पर भी पाती। उसने कई रातें रोते और सोचते हुए बिताईं। उसकी आँखें बेहद चमकदार थीं, और उसे अपने बाएं कंधे के ऊपरी हिस्से में लगातार दर्द महसूस हो रहा था। उसे बहुत खांसी आ रही थी। वह फादर मेडेलीन से बेहद नफरत करती थी, लेकिन उसने कोई शिकायत नहीं की। वह दिन में सत्रह घंटे सिलाई करती थी; लेकिन जेलों के काम के लिए एक ठेकेदार, जो कैदियों से कम दाम पर काम करवाता था, ने अचानक कीमतें कम कर दीं, जिससे काम करने वाली महिलाओं की दैनिक कमाई घटकर नौ सू रह गई। सत्रह घंटे की मेहनत, और दिन में नौ सू! उसके लेनदार पहले से कहीं अधिक निर्दयी हो गए थे। पुराने सामान बेचने वाला, जिसने अपना लगभग सारा

फर्नीचर वापस ले लिया था, उससे लगातार कहता था, "तू मुझे कब चुकाएगी, ओ कुतिया?" हे भगवान! उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसका पीछा किया जा रहा हो, और उसके अंदर एक जंगली जानवर जैसा स्वभाव पनपने लगा था। लगभग उसी समय, थेनार्डियर ने उसे लिखा कि उसने बहुत ही विनम्रता से इंतजार किया है और उसे तुरंत सौ फ्रैंक चाहिए; अन्यथा वह छोटी कोसेट को, जो अपनी गंभीर बीमारी से उबर रही थी, घर से बाहर ठंड और सड़कों पर छोड़ देगा, ताकि वह जो चाहे कर सके और चाहे मर भी जाए। "सौ फ्रैंक," फैंटाइन ने सोचा। "लेकिन किस धंधे में कोई एक दिन में सौ सू कमा सकता है?"

“आइए! जो कुछ बचा है उसे बेच देते हैं,” उसने कहा।

वह दुर्भाग्यशाली लड़की कस्बे की संभ्रांत महिला बन गई।

XI. मसीह ने हमें मुक्त किया है

फैंटाइन का यह इतिहास क्या है? यह समाज द्वारा एक गुलाम को खरीदने का इतिहास है।

किससे? दुख से।

भूख, ठंड, अलगाव, दरिद्रता से। एक दुखद सौदा। एक आत्मा के बदले रोटी का एक टुकड़ा। दुख पेशकश करता है; समाज स्वीकार करता है।

यीशु मसीह का पवित्र नियम हमारी सभ्यता को नियंत्रित करता है, लेकिन यह अभी तक उसमें पूरी तरह समाहित नहीं हुआ है; ऐसा कहा जाता है कि यूरोपीय सभ्यता से दासता का अंत हो गया है। यह एक भ्रम है। यह अभी भी मौजूद है; लेकिन इसका बोझ केवल स्त्री पर है, और इसे वेश्यावृत्ति कहा जाता है।

यह स्त्री पर, अर्थात् उसकी गरिमा, कमजोरी, सुंदरता और मातृत्व पर भारी पड़ता है। यह पुरुष के अपमानों में से एक है।

इस दुखद नाटक के जिस मोड़ पर हम अब पहुँच चुके हैं, वहाँ फैंटाइन में अब वह कुछ भी नहीं बचा है जो वह पहले हुआ करती थी।

कीचड़ में भीगते हुए वह संगमरमर जैसी हो गई है। जो भी उसे छूता है, उसे ठंडक महसूस होती है। वह गुज़रती है; वह तुम्हें सहन करती है; वह तुम्हें अनदेखा करती है; वह एक कठोर और अपमानित आकृति है। जीवन और सामाजिक व्यवस्था ने उसके लिए अपना अंतिम फैसला सुना दिया है। उसके साथ जो कुछ होना था, वह सब हो चुका है। उसने सब कुछ महसूस किया है, सब कुछ सहा है, सब कुछ अनुभव किया है, सब कुछ झेला है, सब कुछ खोया है, सब कुछ का शोक मनाया है। वह उस उदासीनता से परिपूर्ण है, जैसे मृत्यु नींद के समान होती है। अब वह किसी भी चीज़ से नहीं बचती। चाहे सारे बादल उस पर छा जाएं, चाहे सारा सागर उस पर बह जाए! उसे क्या फर्क पड़ता है? वह एक भीगा हुआ स्पंज है।

कम से कम वह तो यही मानती है; लेकिन यह सोचना गलत है कि भाग्य का कोई अंत हो सकता है, और किसी भी चीज की तह तक पहुंचा जा सकता है।

हाय! ये सब भाग्य क्या हैं, जो बेतरतीब ढंग से आगे बढ़ रहे हैं? वे कहाँ जा रहे हैं? वे इस हालत में क्यों हैं?
जो इसे जानता है, वह पूरी छाया देख सकता है।
वह अकेला है। उसका नाम ईश्वर है।

XII. एम. बामाताबोइस की निष्क्रियता

सभी छोटे कस्बों में, और विशेष रूप से एम⸺ सुर एम⸺ में, ऐसे युवाओं का एक वर्ग होता है जो पंद्रह सौ फ़्रैंक की आमदनी को उसी शान से उड़ा देते हैं जिस शान से उनके हमउम्र पेरिस में सालाना दो लाख फ़्रैंक उड़ाते हैं। ये नपुंसक प्रजाति के लोग हैं: शक्तिहीन, परजीवी, निकम्मे, जिनके पास थोड़ी सी ज़मीन, थोड़ी सी मूर्खता, थोड़ी सी बुद्धि होती है; जो ड्राइंग रूम में देहाती होने का दिखावा करते हैं, और शराबखाने में खुद को सज्जन समझते हैं; जो कहते हैं, "मेरे खेत, मेरे किसान, मेरे जंगल;" जो थिएटर में अभिनेत्रियों पर सीटी बजाकर यह साबित करते हैं कि वे अच्छे स्वाद वाले व्यक्ति हैं; और गैरीसन के अधिकारियों से झगड़ा करके यह साबित करते हैं कि वे युद्ध के योद्धा हैं। शिकार करना, धूम्रपान करना, जम्हाई लेना, शराब पीना, तंबाकू की गंध आना, बिलियर्ड्स खेलना, डिलीजेंस से उतरते यात्रियों को घूरना, कैफे में रहना, सराय में भोजन करना, एक कुत्ता पालना जो मेज के नीचे हड्डियाँ खाता है, और एक रखैल रखना जो मेज पर रखे व्यंजन खाती है; जो एक-एक पैसे की बचत करते हैं, फैशन को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं, त्रासदी की प्रशंसा करते हैं, महिलाओं से घृणा करते हैं, अपने पुराने जूते घिस देते हैं, पेरिस के माध्यम से लंदन की नकल करते हैं, और पोंट-ए-मूसन के माध्यम से पेरिस की नकल करते हैं, मंदबुद्धि होकर बूढ़े होते हैं, कभी काम नहीं करते, किसी काम के नहीं होते, और कोई बड़ा नुकसान नहीं करते।

यदि एम. फेलिक्स थोलोमीस अपने ही प्रांत में रहते और कभी पेरिस को न देखते, तो वे भी इन्हीं लोगों में से एक होते।

अगर वे अमीर होते, तो लोग कहते, "ये तो बड़े शौकीन हैं;" अगर वे गरीब होते, तो लोग कहते, "ये तो आलसी हैं।" ये बस बेरोजगार लोग हैं। इन बेरोजगारों में उबाऊ, ऊबे हुए, सपने देखने वाले और कुछ धूर्त भी हैं।

उस दौर में एक फैशनेबल व्यक्ति की पहचान ऊँची कॉलर वाली शर्ट, बड़ी टाई, गहनों से सजी घड़ी, एक के ऊपर एक पहनी जाने वाली तीन अलग-अलग रंगों की बनियान (लाल और नीली बनियान अंदर की ओर); कॉडफिश पूंछ वाला छोटी कमर का

जैतून रंग का कोट, कंधे तक जाती हुई चांदी के बटनों की दोहरी पंक्ति, जो एक दूसरे के करीब लगी होती थी; और हल्के जैतून रंग की पतलून, जिसकी दोनों सिलाई पर एक से ग्यारह तक की अनिश्चित, लेकिन हमेशा विषम संख्या में रेखाएँ बनी होती थीं—यह सीमा कभी पार नहीं की जाती थी। इसके अलावा, एड़ी पर छोटे लोहे के हुक वाले ऊँचे जूते, संकरे किनारे वाली ऊँची टोपी, बालों का गुच्छा, एक बड़ी छड़ी और पोटियर के चुटकुलों से भरी बातचीत। इन सबके ऊपर, स्पर्स और मूंछें। उस युग में मूंछें बुर्जुआ वर्ग की और स्पर्स आम आदमी की पहचान थीं।

उस प्रांतीय रईस ने सबसे लंबे स्पर्स और सबसे घनी मूंछें लगा रखी थीं।

यह दक्षिण अमेरिकी गणराज्यों और स्पेन के राजा बोलिवर के बीच मोरिलो के संघर्ष का दौर था। संकीर्ण किनारों वाली टोपियाँ राजशाही समर्थक थीं और उन्हें मोरिलो कहा जाता था; उदारवादी चौड़ी किनारों वाली टोपियाँ पहनते थे, जिन्हें बोलिवर कहा जाता था।

पूर्व के पृष्ठों में वर्णित घटना के लगभग आठ या दस महीने बाद, जनवरी 1823 की पहली तारीख के आसपास, एक बर्फीली शाम को, इन्हीं शौकीन लोगों में से एक, जो बेरोजगार था और जिसे "समझदार" कहा जाता था, क्योंकि उसने मोरिलो टोपी पहन रखी थी और ठंड के मौसम में पहने जाने वाले बड़े-बड़े लबादों में लिपटा हुआ था, अधिकारियों के कैफे के सामने एक महिला को परेशान करके अपना मनोरंजन कर रहा था। वह महिला गले में बिना कपड़ा लगाए, बालों में फूल लगाए, बॉल ड्रेस में घूम रही थी। यह शौकीन व्यक्ति सिगरेट पी रहा था, क्योंकि वह फैशन के मामले में काफी दिखावटी था।

जब भी वह महिला उसके सामने से गुज़रती, वह अपनी सिगार का कश लेते हुए उस पर कुछ व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ करता, जिन्हें वह हास्यपूर्ण और विनोदी समझता था, जैसे, “तुम कितनी बदसूरत हो!—क्या तुम मेरी नज़रों से ओझल हो जाओगी?—तुम्हारे दाँत नहीं हैं!” इत्यादि। इस सज्जन को एम. बामाताबोइस के नाम से जाना जाता था। वह महिला, एक उदास, सजी-धजी परछाई की तरह, जो बर्फ में आती-जाती रहती थी, उसे कोई जवाब नहीं देती थी, उसकी ओर देखती तक नहीं थी, और चुपचाप अपनी सैर जारी रखती थी, एक गंभीर नियमितता के साथ जो उसे हर पाँच मिनट में इस व्यंग्य की पहुँच में ले आती थी, जैसे कोई सज़ा पाया हुआ सैनिक कोड़े खाने लौटता है। उसके द्वारा उत्पन्न मामूली प्रभाव ने निस्संदेह उस

आवारा को चिढ़ा दिया। और जब उसने पीठ फेर ली, तो उसने मौके का फायदा उठाते हुए भेड़िये की तरह दहाड़ते हुए उसके पीछे से दस्तक दी, और अपनी हंसी दबाते हुए, झुककर फुटपाथ से मुट्ठी भर बर्फ उठाई और अचानक उसके नंगे कंधों के बीच उसकी पीठ पर मार दी। औरत दहाड़ उठी, घूम गई, पैंथर की तरह छलांग लगाई और उस आदमी पर टूट पड़ी, अपने नाखून उसके चेहरे में गड़ा दिए और ऐसे भयानक शब्द कहे जो पहरेदार कक्ष से नाली में गिर सकते थे। ब्रांडी से फटी हुई आवाज में निकले ये अपमान, सचमुच एक ऐसे मुंह से निकले थे जिसके दो सामने के दांत गायब थे। यह फैंटाइन थी।

इस शोर-शराबे को सुनकर अधिकारी बड़ी संख्या में कैफे से बाहर भागे, राहगीर इकट्ठा हो गए और दो लोगों के इस बवंडर के चारों ओर एक बड़ा और हंसमुख घेरा बन गया, जो हूटिंग और तालियां बजा रहा था। इन दोनों को पहचानना थोड़ा मुश्किल था कि वे पुरुष हैं या महिला: पुरुष संघर्ष कर रहा था, उसकी टोपी जमीन पर पड़ी थी; महिला नंगे बदन, पैरों और मुट्ठियों से वार कर रही थी, सिर पर कुछ नहीं था, चीख रही थी, उसके बाल और दांत गायब थे, वह क्रोध से लाल थी, भयानक लग रही थी।

अचानक भीड़ में से एक लंबा-चौड़ा आदमी जोश से निकला, उसने कीचड़ से सनी हुई महिला की रेशमी चोली को पकड़ लिया और उससे कहा, "मेरे पीछे आओ!"

महिला ने अपना सिर उठाया; उसकी क्रोधित आवाज़ अचानक शांत हो गई। उसकी आँखें बेजान थीं; वह क्रोधित होने के बजाय पीली पड़ गई, और भय से कांप उठी।
उसने जैवर्ट को पहचान लिया था।

उस अय्याश ने इस घटना का फायदा उठाकर भागने में कामयाबी हासिल की।

XIII. नगर पुलिस से संबंधित कुछ प्रश्नों का समाधान

जावर्ट ने दर्शकों को एक तरफ धकेल दिया, घेरा तोड़ दिया और चौक के बिल्कुल आखिरी छोर पर स्थित पुलिस स्टेशन की ओर लंबे-लंबे कदम बढ़ाते हुए उस बेचारी औरत को घसीटते हुए चल पड़ा। वह औरत बिना किसी भावना के उसके पीछे- पीछे चल पड़ी। न तो उसने और न ही उसने एक शब्द कहा। दर्शकों का समूह आनंद से झूमते हुए, मज़ाक उड़ाते हुए उसके पीछे-पीछे चल रहा था। घोर दुख भी अश्लीलता का कारण बन गया था।

पुलिस स्टेशन पहुँचने पर, जो एक छोटा सा कमरा था, चूल्हे से गर्म किया हुआ, सड़क की ओर खुलने वाला एक शीशे और जालीदार दरवाजा, और जिसकी सुरक्षा में एक दस्ता तैनात था, जावर्ट ने दरवाजा खोला, फैंटाइन के साथ अंदर गया और अपने पीछे दरवाजा बंद कर लिया। उत्सुक लोगों को बहुत निराशा हुई, जो देखने की कोशिश में अपने पैर की उंगलियों पर खड़े हो गए और स्टेशन भवन के मोटे शीशे के सामने गर्दनें गड़ा दीं। जिज्ञासा एक प्रकार का लालच है। देखना ही सब कुछ निगल जाना है।

अंदर आते ही फैंटाइन एक कोने में गिर पड़ी, बेसुध और चुपचाप, एक डरे हुए कुत्ते की तरह दुबकी हुई।

गार्ड के सार्जेंट ने मेज पर एक जलती हुई मोमबत्ती लाकर रखी। जावर्ट बैठ गया, अपनी जेब से मुहर लगी कागज की एक शीट निकाली और लिखना शुरू कर दिया।

हमारे कानूनों के अनुसार, इस वर्ग की महिलाओं को पूरी तरह से पुलिस के विवेकाधिकार पर छोड़ दिया गया है। पुलिस अपनी मर्जी से काम करती है, उन्हें अपनी इच्छानुसार दंडित करती है, और अपनी इच्छा से उनकी मेहनत और स्वतंत्रता जैसी दो दयनीय चीजों को छीन लेती है। जावर्ट भावहीन था; उसके गंभीर चेहरे पर कोई भाव नहीं झलक रहा था। फिर भी, वह गंभीर रूप से चिंतित था। यह उन क्षणों में से एक था जब वह बिना किसी नियंत्रण के, लेकिन एक कठोर अंतरात्मा की सभी सावधानियों के अधीन, अपनी असाधारण विवेकाधिकार शक्ति का

प्रयोग कर रहा था। उस क्षण उसे एहसास हुआ कि पुलिस अधिकारी का उसका पद एक न्यायाधिकरण है। वह न्याय कर रहा था। उसने फैसला सुनाया और दोषी ठहराया। उसने अपने मन में मौजूद सभी विचारों को उस महान कार्य के संदर्भ में इकट्ठा किया जो वह कर रहा था। जैसे-जैसे वह इस महिला के कृत्य की गहराई से जांच करता गया, वैसे-वैसे वह और अधिक स्तब्ध होता गया। यह स्पष्ट था कि उसने अभी-अभी एक अपराध होते देखा था। उसने अभी-अभी सड़क पर देखा था कि समाज के एक सदस्य, एक जमींदार और एक मतदाता, को एक ऐसे व्यक्ति ने अपमानित और हमला किया था जो सारी मर्यादाओं से परे था। एक वेश्या ने एक नागरिक की जान लेने की कोशिश की थी। उसने यह सब देखा था, जावर्ट ने। वह चुपचाप लिख रहा था।

जब उसने अपना काम पूरा कर लिया, तो उसने कागज पर हस्ताक्षर किए, उसे मोड़ा और गार्ड के सार्जेंट को सौंपते हुए कहा, "तीन आदमियों को साथ लेकर इस प्राणी को जेल ले जाओ।"

फिर फैंटीन की ओर मुड़ते हुए, "तुम्हें छह महीने तक इसे सहना होगा।" दुखी महिला सिहर उठी।

“छह महीने! छह महीने जेल!” वह चिल्लाई। “छह महीने जिनमें मुझे प्रतिदिन सात सू कमाने होंगे! लेकिन कोसेट का क्या होगा? मेरी बेटी! मेरी बेटी! लेकिन मुझे अभी भी थेनार्डियरों का सौ फ़्रैंक से अधिक का कर्ज़ चुकाना है; क्या आप जानते हैं, महाशय निरीक्षक?”

वह गीले फर्श पर, उन सभी पुरुषों के कीचड़ से सने जूतों के बीच, बिना उठे, हाथों को जोड़े और घुटनों के बल बड़े-बड़े कदम बढ़ाते हुए खुद को घसीटती रही।

“महाशय जावर्ट,” उसने कहा, “मैं आपकी दया की भीख मांगती हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मेरी कोई गलती नहीं थी। अगर आपने शुरुआत देखी होती, तो आपको पता चल जाता। मैं ईश्वर की कसम खाकर कहती हूँ कि मेरी कोई गलती नहीं थी! उस सज्जन, उस संभ्रांत व्यक्ति ने, जिसे मैं नहीं जानती, मेरी पीठ पर बर्फ डाल दी। क्या किसी को यह अधिकार है कि जब हम शांति से चल रहे हों और किसी को कोई नुकसान न पहुँचा रहे हों, तो हमारी पीठ पर बर्फ डाले? जैसा कि आप देख रहे हैं, मैं थोड़ी बीमार हूँ। और फिर, वह काफी देर से मुझसे

बदतमीजी भरी बातें कह रहा था: ‘तुम बदसूरत हो! तुम्हारे दांत नहीं हैं!’ मुझे अच्छी तरह पता है कि मेरे अब वो दांत नहीं हैं। मैंने कुछ नहीं किया; मैंने मन ही मन सोचा, ‘वह सज्जन बस अपना मनोरंजन कर रहे हैं।’ मैं उनके प्रति ईमानदार थी; मैंने उनसे बात नहीं की। उसी क्षण उन्होंने मेरी पीठ पर बर्फ डाल दी। महाशय जावर्ट, माननीय निरीक्षक महोदय! क्या यहाँ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसने यह देखा हो और आपको बता सके कि यह बिल्कुल सच है? शायद मुझे गुस्सा करने में गलती हुई। आप जानते हैं कि किसी को भी पहले ही पल में खुद पर काबू रखना। जोश में बह जाना; और फिर, जब कोई अचानक आपकी पीठ पर कुछ ठंडा रख दे, ठीक उसी समय जब आप इसकी उम्मीद नहीं कर रहे हों! मैंने उस सज्जन की टोपी खराब करके गलती की। वह क्यों चले गए? मैं उनसे क्षमा मांगूंगा। हे भगवान! मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं उनसे क्षमा मांगूं या न मांगूं। आज, सिर्फ एक बार के लिए, मेरी यह कृपा कीजिए, श्रीमान जावर्ट। रुकिए! आपको नहीं पता कि जेल में एक दिन में सिर्फ सात सू ही कमाए जा सकते हैं; यह सरकार की गलती नहीं है, लेकिन सात सू ही तो कमाई है; और जरा सोचिए, मुझे सौ फ्रैंक देने होंगे, वरना मेरी छोटी बच्ची को मेरे पास भेज दिया जाएगा। हे भगवान! मैं उसे अपने साथ नहीं रख सकता। मैं जो कर रहा हूं वह बहुत घिनौना है! ओह, मेरी कोसेट! ओह, पवित्र कुंवारी की मेरी छोटी परी! बेचारी का क्या होगा? मैं आपको बताता हूं: ये थेनार्डियर हैं, सराय मालिक, किसान; और ऐसे लोग अविवेकी होते हैं। उन्हें पैसा चाहिए। मुझे जेल में मत डालिए। जेल! देखिए, एक छोटी बच्ची को कड़ाके की ठंड में सड़क पर छोड़ दिया जाएगा, ताकि वह जैसे-तैसे अपना गुजारा कर सके; और आपको उस पर दया करनी चाहिए, मेरे भले श्रीमान जावर्ट। अगर वह बड़ी होती, तो शायद अपनी रोजी-रोटी कमा लेती; लेकिन इस उम्र में यह मुमकिन नहीं है। मैं दिल से बुरी औरत नहीं हूँ। कायरता और लालच ने मुझे ऐसा नहीं बनाया है। अगर मैंने ब्रांडी पी है, तो वह दुख के कारण थी। मुझे यह पसंद नहीं है; लेकिन यह इंद्रियों को सुन्न कर देती है। जब मैं खुश थी, तो बस अपनी अलमारियों में एक नज़र डालने से ही पता चल जाता था कि मैं नखरे वाली और गंदी औरत नहीं थी। मेरे पास लिनेन था, ढेर सारा लिनेन। मुझ पर दया कीजिए, श्रीमान जावर्ट!

वह दो टुकड़ों में बंटी हुई, सिसकियों से कांपती हुई, आंसुओं से अंधी, गर्दन खुली हुई, हाथों को मलती हुई और सूखी, छोटी खांसी के साथ, दर्द भरी

आवाज में धीरे-धीरे हकलाते हुए बोली। गहरा दुख एक दिव्य और भयानक किरण है, जो दुखी को बदल देती है। उस क्षण फैंटाइन एक बार फिर सुंदर हो उठी थी। वह बीच-बीच में रुकती और पुलिस एजेंट के कोट को प्यार से चूमती। वह पत्थर के दिल को भी पिघला सकती थी; लेकिन लकड़ी के दिल को पिघलाया नहीं जा सकता।

“आओ!” जैवर्ट ने कहा, “मैंने तुम्हारी बात सुन ली है। क्या तुमने पूरी तरह से बोल दिया है? तुम्हें छह महीने की सजा मिलेगी। अब चलो! स्वयं परमपिता परमेश्वर इससे अधिक कुछ नहीं कर सकते।”

इन गंभीर शब्दों को सुनकर, "स्वयं परमेश्वर इससे अधिक कुछ नहीं कर सकते थे," वह समझ गई कि उसका भाग्य तय हो चुका है। वह नीचे बैठ गई और बुदबुदाई, "दया करो!"

जैवर्ट ने अपनी पीठ फेर ली।

सैनिकों ने उसे बांहों से पकड़ लिया।

कुछ क्षण पहले एक आदमी अंदर आया था, लेकिन किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। उसने दरवाजा बंद कर दिया, अपनी पीठ उससे टिका ली और फैंटाइन की निराशा भरी प्रार्थनाओं को सुनने लगा।

जिस क्षण सैनिकों ने उस अभागी महिला को, जो उठने से इनकार कर रही थी, अपने हाथों में लिया, उसी क्षण वह छाया से बाहर निकला और बोला:—

"एक पल रुकिए, कृपया।"

जैवरट ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और एम. मैडेलीन को पहचान लिया। उसने अपनी टोपी उतारी और कुछ हद तक नाराज़गी और असहजता के साथ उन्हें प्रणाम किया:—

“क्षमा कीजिए, महापौर महोदय—”

“महामहिम महोदय” शब्द सुनकर फैंटाइन पर एक विचित्र प्रभाव पड़ा। वह एक पल में उठ खड़ी हुई, मानो धरती से कोई प्रेत प्रकट हुआ हो, दोनों हाथों से सैनिकों को एक तरफ धकेल दिया, और किसी के रोकने से पहले ही सीधे एम. मेडेलीन के पास पहुँच गई, और व्याकुल भाव से उन्हें घूरते हुए बोली:—

“अरे! तो आप ही हैं एम. ले मेयर!”

फिर वह जोर से हंस पड़ी और उसके चेहरे पर थूक दिया।

एम. मेडेलीन ने अपना चेहरा पोंछा और कहा:—

"इंस्पेक्टर जावर्ट, इस महिला को रिहा कर दो।"

जैवरट को लगा जैसे वह पागल होने की कगार पर है। उस क्षण, एक के बाद एक, लगभग एक साथ, उसने अपने जीवन में अब तक की सबसे तीव्र भावनाओं का अनुभव किया। शहर की एक महिला को महापौर के चेहरे पर थूकते देखना इतना भयावह था कि कल्पना की सबसे साहसी उड़ान में भी, वह इसे संभव मानना पाप समझता। दूसरी ओर, उसके मन की गहराई में, उसने उस महिला और उस महापौर की संभावित स्थिति की एक भयानक तुलना की; और फिर भयभीत होकर, उसे इस भयानक हमले का एक सरल स्पष्टीकरण सूझा। लेकिन जब उसने उस महापौर, उस मजिस्ट्रेट को शांति से अपना चेहरा पोंछते और यह कहते देखा, "इस महिला को रिहा कर दो," तो वह विस्मय के नशे में चूर हो गया; उसके विचार और शब्द दोनों ही थम गए; उसके मामले में विस्मय की कोई सीमा नहीं रह गई थी। वह चुप रहा।

उन शब्दों का फैंटाइन पर भी उतना ही अजीब असर हुआ था। उसने अपनी नंगी बांह उठाई और चूल्हे के ढक्कन को ऐसे पकड़ लिया जैसे कोई लड़खड़ा रहा हो। फिर भी, उसने अपने चारों ओर देखा और धीमी आवाज़ में बोलने लगी, मानो खुद से बात कर रही हो:

“आज़ाद! मुझे जाने दिया जाएगा! मुझे छह महीने जेल नहीं जाना पड़ेगा! किसने कहा? ऐसा कोई कह ही नहीं सकता। मैंने ठीक से नहीं सुना। वो उस राक्षस जैसे मेयर ने तो नहीं कहा होगा! क्या आपने, मेरे भले श्रीमान जावर्ट, कहा कि मुझे रिहा किया जाएगा? अरे, देखिए! मैं आपको इसके बारे में बताऊंगी, और आप मुझे जाने देंगे। वो राक्षस जैसा मेयर, वो बूढ़ा बदमाश मेयर, इन सब का कारण है। ज़रा सोचिए, श्रीमान जावर्ट, उसने मुझे निकाल दिया! सिर्फ़ उन कुछ बदमाश औरतों की वजह से, जो वर्क रूम में गपशप करती हैं। अगर ये भयानक नहीं है, तो क्या है? एक गरीब लड़की को, जो ईमानदारी से अपना काम कर रही है, नौकरी से निकाल देना! फिर मैं पर्याप्त कमा नहीं पाई, और ये सारी मुसीबतें शुरू हो गईं। सबसे पहले, इन पुलिस वालों को एक सुधार करना चाहिए, और वो ये है कि जेल ठेकेदारों को गरीब लोगों का शोषण करने से रोका जाए। मैं आपको समझाती हूँ, देखिए: आप कमीज़ सिलने का काम करके बारह सू कमा रहे हैं, कीमत नौ सू तक गिर गया; और उससे गुज़ारा नहीं हो पा रहा। तब जो भी बन सकते हो, बन जाना पड़ता है। मेरी बात करें तो, मेरी छोटी कोसेट थी, और मुझे सचमुच एक बुरी

औरत बनने पर मजबूर होना पड़ा। अब आप समझ गए होंगे कि उस बदमाश मेयर ने ही सारी गड़बड़ की थी। उसके बाद मैंने पुलिस वालों के कैफे के सामने उस सज्जन की टोपी पर पैर रख दिया; लेकिन उसने बर्फ से मेरी पूरी पोशाक खराब कर दी। हम औरतों के पास शाम को पहनने के लिए सिर्फ एक ही रेशमी पोशाक होती है। आप देख रहे हैं कि मैंने जानबूझकर कोई गलत काम नहीं किया—सच में, महाशय जावर्ट; और मैं हर जगह ऐसी औरतों को देखती हूँ जो मुझसे कहीं ज़्यादा दुष्ट हैं, और कहीं ज़्यादा खुश हैं। हे महाशय जावर्ट! क्या आपने ही मुझे रिहा करने का आदेश दिया था? पता लगाइए, मेरे मकान मालिक से बात कीजिए; मैं अभी किराया दे रही हूँ; वे आपको बताएँगे कि मैं पूरी तरह ईमानदार हूँ। हे भगवान! मुझे माफ़ कर दीजिए; मैंने अनजाने में चूल्हे के ढक्कन को छू लिया, और उससे धुआँ निकल रहा है।

एम. मैडेलीन ने बड़ी एकाग्रता से उसकी बात सुनी। जब वह बोल रही थी, तभी उसने अपनी जैकेट में हाथ डाला, अपना पर्स निकाला और उसे खोला। पर्स खाली था। उसने उसे वापस अपनी जेब में रख लिया। उसने फैंटाइन से पूछा, "तुमने कहा था कि तुम पर कितना कर्ज़ है?"

फैंटाइन, जो केवल जावर्ट को देख रही थी, उसकी ओर मुड़ी:

क्या मैं आपसे बात कर रहा था?

फिर, सैनिकों को संबोधित करते हुए:—

“सुनो, तुम लोगों ने देखा मैंने उसके चेहरे पर कैसे थूका? अरे! तुम बूढ़े नीच मेयर, मुझे डराने आए हो, लेकिन मैं तुमसे नहीं डरता। मैं महाशय जावर्ट से डरता हूँ। मैं अपने भले महाशय जावर्ट से डरता हूँ!”

इतना कहकर वह फिर निरीक्षक की ओर मुड़ी:—

“और फिर भी, देखिए, इंस्पेक्टर महोदय, न्याय करना आवश्यक है। मैं समझती हूँ कि आप न्यायप्रिय हैं, इंस्पेक्टर महोदय; वास्तव में, यह बिल्कुल सरल है: एक आदमी एक औरत की पीठ पर बर्फ डालकर अपना मनोरंजन करता है, और इससे अधिकारी हंसते हैं; किसी न किसी तरह से मनोरंजन करना तो जरूरी है; और हम— खैर, हम तो यहाँ उनके मनोरंजन के लिए ही हैं, बिल्कुल! और फिर, आप आते हैं; आपको व्यवस्था बनाए रखने का दायित्व तो अवश्य है, आप उस महिला को ले जाते हैं जिसने गलती की है; लेकिन सोचने पर, क्योंकि आप एक अच्छे इंसान हैं, आप

कहते हैं कि मुझे रिहा कर दिया जाए; यह उस छोटे बच्चे की खातिर है, क्योंकि छह महीने जेल में रहने से मैं अपने बच्चे का पालन-पोषण नहीं कर पाऊँगी। ‘बस, फिर से ऐसा मत करना, बदचलन औरत!’ ओह! मैं फिर से ऐसा नहीं करूँगी, महाशय जावर्ट! वे अब मेरे साथ जो चाहें कर सकते हैं; मैं हिलूँगी नहीं। लेकिन आज, देखिए, मैं इसलिए रोई क्योंकि मुझे दर्द हुआ। मुझे उस सज्जन से उस बर्फ की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी; और फिर जैसा कि मैंने आपको बताया, मैं नहीं हूँ मुझे खांसी है; पेट में जलन सी हो रही है, और डॉक्टर ने कहा, 'अपना ख्याल रखना।' यहाँ, महसूस करो, मुझे अपना हाथ दो; डरो मत—यह यहीं है।

अब वह रो नहीं रही थी, उसकी आवाज में स्नेह था; उसने जावर्ट का खुरदुरा हाथ अपने कोमल, सफेद गले पर रखा और मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा।

अचानक ही उसने अपने अस्त-व्यस्त कपड़ों को तेज़ी से समेटा, अपनी स्कर्ट की सिलवटों को नीचे गिराया, जो घिसटते हुए उसके घुटनों तक ऊपर उठ गई थीं, और दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए सैनिकों से धीमी आवाज़ में और दोस्ताना अंदाज़ में सिर हिलाते हुए कहा:—

“बच्चों, महाशय निरीक्षक ने कहा है कि मुझे रिहा किया जाना है, और मैं जा रहा हूँ।”

उसने दरवाजे की कुंडी पर हाथ रखा। एक कदम और आगे बढ़ती तो वह सड़क पर पहुँच जाती।

उस क्षण तक जावर्ट सीधा, गतिहीन खड़ा था, उसकी आँखें जमीन पर टिकी हुई थीं, मानो वह इस दृश्य में किसी विस्थापित मूर्ति की तरह पड़ा हो, जिसे कहीं रख दिए जाने की प्रतीक्षा हो रही हो।

कुंडी की आवाज से वह जाग उठा। उसने अपना सिर उठाया, उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव था मानो वह सर्वोच्च अधिकार रखता हो; यह भाव उस निम्न स्तर पर अधिकार रखने वाले व्यक्ति के लिए और भी भयावह था, जो जंगली जानवर में क्रूर और एक निर्धन व्यक्ति में घृणित था।

“सार्जेंट!” वह चिल्लाया, “क्या आपको नहीं दिख रहा कि वह लड़की जा रही है! किसने आपको उसे जाने देने का आदेश दिया?”

“मैं,” मैडलीन ने कहा।

जैवर्ट की आवाज़ सुनकर फैंटाइन कांप उठी और उसने कुंडी ऐसे छोड़ दी जैसे कोई चोर चुराई हुई चीज़ छोड़ देता है। मेडेलीन की आवाज़ सुनकर वह मुड़ी और उस पल से उसने एक शब्द भी नहीं बोला, यहाँ तक कि खुलकर सांस लेने की भी हिम्मत नहीं की, बल्कि उसकी नज़रें बारी-बारी से मेडेलीन से जैवर्ट और जैवर्ट से मेडेलीन पर जाती रहीं, जो भी बोल रहा होता था।

यह स्पष्ट था कि मेयर द्वारा फैंटाइन को रिहा करने के सुझाव के बाद, जावर्ट ने सार्जेंट को जिस तरह से फटकारा था, उससे पहले वह बेहद क्रोधित रहा होगा। क्या वह मेयर की उपस्थिति को भूलने की हद तक पहुँच गया था? क्या उसने अंततः स्वयं से यह कह दिया था कि किसी भी "अधिकारी" द्वारा ऐसा आदेश देना असंभव है, और मेयर ने निश्चित रूप से अनजाने में एक बात को दूसरी बात समझकर कह दी होगी? या, पिछले दो घंटों में उसने जिन भयावह घटनाओं को देखा था, उन्हें देखते हुए, क्या उसने स्वयं से कहा था कि सर्वोच्च संकल्प लेना आवश्यक है, कि छोटे को महान बनाना अनिवार्य है, कि पुलिस जासूस को मजिस्ट्रेट में परिवर्तित होना चाहिए, कि पुलिसकर्मी को न्याय का वितरक बनना चाहिए, और इस विकट परिस्थिति में, व्यवस्था, कानून, नैतिकता, सरकार, संपूर्ण समाज, सब कुछ जावर्ट में ही समाहित है?

लेकिन जो भी हो, जब एम. मेडेलीन ने वह शब्द कहा, तो जैसा कि हमने अभी सुना, पुलिस इंस्पेक्टर जावर्ट मेयर की ओर मुड़े, उनका चेहरा पीला, ठंडा, होंठ नीले और निराशा से भरा हुआ था, उनका पूरा शरीर एक अगोचर कंपन और एक अभूतपूर्व घटना से व्याकुल था, और उन्होंने झुकी हुई आँखों से लेकिन दृढ़ स्वर में उनसे कहा:—

"महामहिम महोदय, ऐसा नहीं हो सकता।"

“क्यों नहीं?” एम. मेडेलीन ने कहा।

"इस दुष्ट महिला ने एक नागरिक का अपमान किया है।"

“इंस्पेक्टर जावर्ट,” मेयर ने शांत और सुलह भरे स्वर में उत्तर दिया, “सुनिए। आप एक ईमानदार व्यक्ति हैं, और मुझे आपको मामले की व्याख्या करने में कोई संकोच नहीं है। असलियत यह है: मैं उस समय चौक से गुजर रहा था जब आप इस महिला को ले जा रहे थे; वहाँ अभी भी लोगों के समूह खड़े थे, और मैंने

पूछताछ की और सब कुछ पता लगाया; गलती उस कस्बेवासी की थी और उसे विधिवत पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया जाना चाहिए था।”

जावर्ट ने पलटवार किया:—

“इस नीच ने महाशय का अपमान किया है।”

“यह बात मुझे परेशान करती है,” एम. मेडेलीन ने कहा। “मुझे लगता है कि मेरा अपमान मेरा अपना है। मैं इसके बारे में जो चाहूँ कर सकती हूँ।”

मैं महाशय मेयर से क्षमा मांगता हूं। अपमान उनका नहीं बल्कि कानून का है।

एम. मेडेलीन ने उत्तर दिया, “इंस्पेक्टर जावर्ट, सर्वोच्च कानून अंतरात्मा है। मैंने इस महिला की बात सुनी है; मुझे पता है कि मैं क्या कर रही हूँ।”

और मैं, महापौर महोदय, नहीं जानता कि मैं क्या देख रहा हूँ।

"तो आज्ञापालन करके ही संतुष्ट हो जाओ।"

मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ। मेरा कर्तव्य है कि इस महिला को छह महीने जेल की सजा काटनी होगी।

एम. मैडलीन ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया:—

“इस बात को ध्यान से सुनो; वह एक दिन भी सेवा नहीं करेगी।”

इस निर्णायक शब्द पर, जैवर्ट ने मेयर पर एक गहन नज़र डालने का साहस किया और अत्यंत सम्मानजनक स्वर में कहा:—

“महामहिम महोदय का विरोध करने के लिए मुझे खेद है; यह मेरे जीवन में पहली बार है, लेकिन वे मुझे यह कहने की अनुमति देंगे कि मैं अपने अधिकार क्षेत्र में हूँ। चूंकि महामहिम महोदय चाहते हैं, इसलिए मैं केवल उस सज्जन के प्रश्न पर ही बात करूँगा। मैं वहाँ उपस्थित था। इस महिला ने महामहिम बामाताबोइस पर झपट पड़ी, जो एक निर्वाचक और उस खूबसूरत तीन मंजिला, तीन मंजिला, बालकनी वाले मकान के मालिक हैं, जो मैदान के कोने पर स्थित है। दुनिया में ऐसे ही दृश्य होते हैं! खैर, महामहिम महोदय, यह सड़कों पर पुलिस नियमों का मामला है, और यह मुझसे संबंधित है, और मैं इस महिला फैंटाइन को हिरासत में लूँगा।”

तब एम. मेडेलीन ने अपनी बाहें मोड़ लीं और एक कठोर स्वर में कहा, जो शहर में किसी ने पहले कभी नहीं सुना था:

“जिस मामले का आप जिक्र कर रहे हैं, वह नगर पुलिस से संबंधित है। आपराधिक जांच संहिता की धारा नौ, ग्यारह, पंद्रह और छियासठ के अनुसार, मैं न्यायाधीश हूं। मैं आदेश देता हूं कि इस महिला को रिहा किया जाए।”

जावर्ट ने अंतिम प्रयास करने का जोखिम उठाया।

लेकिन, मेयर साहब—”

"मैं आपको मनमानी हिरासत के संबंध में 13 दिसंबर, 1799 के कानून के अनुच्छेद 81 का हवाला देता हूं।"

“महामहिम महोदय, मुझे अनुमति दीजिए—”

एक शब्द भी नहीं।

लेकिन—”

“कमरे से बाहर जाओ,” एम. मेडेलिन ने कहा।

जावर्ट ने रूसी सैनिक की तरह सीधे खड़े होकर, चेहरे और सीने पर जोरदार प्रहार सहा। उसने महापौर के समक्ष धरती को प्रणाम किया और कमरे से बाहर चला गया।

फैंटाइन दरवाजे से थोड़ा हटकर खड़ी हो गई और उसके गुजरते समय उसे विस्मय से देखती रही।

फिर भी, वह एक अजीब उलझन में फंसी हुई थी। उसने खुद को दो विरोधी शक्तियों के बीच संघर्ष का विषय बनते देखा था। उसने अपनी आँखों के सामने दो ऐसे पुरुषों को लड़ते देखा था जिनके हाथों में उसकी आज़ादी, उसका जीवन, उसकी आत्मा, उसका बच्चा था; इनमें से एक उसे अंधेरे की ओर खींच रहा था, दूसरा उसे प्रकाश की ओर वापस ले जा रहा था। आतंक के चरम पर इस संघर्ष में, ये दोनों पुरुष उसे दो दानवों की तरह दिखाई दिए; एक उसके अंदर के राक्षस की तरह बोल रहा था, दूसरा उसके अच्छे फ़रिश्ते की तरह। फ़रिश्ते ने राक्षस को हरा दिया था, और हैरानी की बात यह है कि जिस बात ने उसे सिर से पैर तक कंपा दिया, वह यह थी कि यह फ़रिश्ता, यह मुक्तिदाता, वही व्यक्ति था जिससे वह घृणा करती थी, वही मेयर जिसे वह इतने लंबे समय से अपने सभी दुखों का कारण मानती

थी, वही मेडेलिन! और ठीक उसी क्षण जब उसने उसका इतने घिनौने तरीके से अपमान किया था, उसने उसे बचा लिया था! तो क्या वह गलत थी? क्या उसे अपनी पूरी आत्मा बदलनी होगी? वह नहीं जानती थी; वह कांप रही थी। वह अचंभे से सुनती रही, भयभीत होकर देखती रही, और एम. मेडेलीन द्वारा बोले गए हर शब्द पर उसने अपने भीतर घृणा के भयानक अंधकार को चूर-चूर होते और पिघलते हुए महसूस किया, और उसके हृदय में कुछ गर्म और अवर्णनीय, अकथनीय भावना जागृत हुई, जो आनंद, विश्वास और प्रेम का मिश्रण थी।

जब जैवर्ट चले गए, तो एम. मेडेलीन ने उनकी ओर मुड़कर गंभीर स्वर में उनसे कहा, मानो कोई गंभीर व्यक्ति रोना नहीं चाहता हो और बोलने में कुछ कठिनाई महसूस कर रहा हो:

“मैंने आपकी बात सुन ली है। आपने जो कुछ भी कहा है, उसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था। मुझे विश्वास है कि यह सच है, और मुझे ऐसा महसूस भी होता है। मुझे तो यह भी नहीं पता था कि आपने मेरी दुकान छोड़ दी थी। आपने मुझसे संपर्क क्यों नहीं किया? खैर, मैं आपके कर्ज चुका दूँगा, मैं आपके बच्चे को बुला लूँगा, या आप उसके पास जा सकती हैं। आप यहाँ, पेरिस में, या जहाँ चाहें, रह सकती हैं। मैं आपके और आपके बच्चे की देखभाल का जिम्मा लेता हूँ। अगर आप नहीं चाहतीं, तो आपको अब और काम करने की ज़रूरत नहीं है। मैं आपको ज़रूरत का सारा पैसा दे दूँगा। आप फिर से ईमानदार और खुशहाल हो जाएँगी। और सुनो! मैं आपसे कहता हूँ कि अगर सब कुछ वैसा ही है जैसा आप कहती हैं—और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है—तो आप ईश्वर की दृष्टि में हमेशा सदाचारी और पवित्र रही हैं। ओह! बेचारी स्त्री।”

यह फैंटाइन के लिए असहनीय था। कोसेट को पाना! इस बदनामी भरी जिंदगी को छोड़ना। कोसेट के साथ स्वतंत्र, समृद्ध, खुशहाल और सम्मानित जीवन जीना; अपनी पीड़ा के बीच अचानक स्वर्ग के इन सभी सुखों को खिलते देखना। वह अपने से बात कर रहे उस आदमी को मूर्खता से देखती रही और बस दो-तीन सिसकियाँ भरते हुए बोली, “ओह! ओह! ओह!”

उसके अंग लड़खड़ा गए, वह एम. मेडेलीन के सामने घुटने टेक बैठी, और इससे पहले कि वह उसे रोक पाता, उसने महसूस किया कि उसने उसका हाथ पकड़ लिया और अपने होंठ उस पर दबा दिए।

फिर वह बेहोश हो गई।

पुस्तक **VI.** जावर्ट

I. विश्राम की शुरुआत

एम. मेडेलीन ने फैंटाइन को अपने घर में स्थापित किए गए औषधालय में भर्ती कराया। उन्होंने उसे नर्सों के हवाले कर दिया, जिन्होंने उसे बिस्तर पर लिटा दिया। उसे तेज बुखार था। उसने रात का कुछ हिस्सा प्रलाप और बड़बड़ाहट में बिताया। अंततः वह सो गई।

अगले दिन, दोपहर के करीब, फैंटाइन की नींद खुली। उसने अपने बिस्तर के पास किसी के सांस लेने की आहट सुनी; उसने पर्दा हटाया और देखा कि एम. मेडेलीन वहाँ खड़े होकर उसके सिर के ऊपर किसी चीज़ को देख रहे थे। उनकी निगाहें दया, पीड़ा और विनती से भरी थीं। उसने उनकी निगाहों का पीछा किया और देखा कि उनकी निगाहें दीवार पर कीलों से ठोंके हुए एक क्रूस पर टिकी हुई थीं।

तब से फैंटीन की नज़रों में एम. मेडेलीन का रूप बदल गया। वह उसे प्रकाश से लिपटे हुए प्रतीत हुए। वह किसी प्रार्थना में लीन थे। फैंटीन ने उन्हें लंबे समय तक निहारती रही, लेकिन उन्हें टोकने की हिम्मत नहीं कर पाई। अंत में उसने दबी आवाज़ में कहा:—

"आप क्या कर रहे हो?"

एम. मेडेलीन वहाँ एक घंटे से थे। वे फैंटीन के जागने का इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा, उसकी नब्ज़ जाँची और जवाब दिया:—

"आपको कैसा लगता है?"

“हाँ, मैं सो चुकी हूँ,” उसने जवाब दिया; “मुझे लगता है कि मैं बेहतर महसूस कर रही हूँ। कुछ नहीं है।”

उसने उसके पहले प्रश्न का उत्तर ऐसे दिया मानो उसने उसे अभी-अभी सुना हो:

मैं ऊपर स्वर्ग में मौजूद शहीद से प्रार्थना कर रहा था।

और उसने मन ही मन सोचा, "नीचे धरती पर शहीद के लिए।"

एम. मेडेलिन ने रात और सुबह पूछताछ में बिता दी थी। अब उन्हें सब कुछ पता था। उन्हें फैंटाइन की कहानी, उसके सभी दिल दहला देने वाले विवरणों के साथ, पता थी। उन्होंने आगे कहा:—

“बेचारी माँ, तुमने बहुत कष्ट सहा है। ओह! शिकायत मत करो; अब तुम्हें चुने हुए लोगों का दहेज मिला है। इसी तरह मनुष्य स्वर्गदूतों में परिवर्तित होते हैं। यह उनकी गलती नहीं है कि उन्हें काम पर जाने का कोई और तरीका नहीं पता। देखो, जिस नरक से तुम अभी-अभी निकली हो, वह स्वर्ग का पहला रूप है। वहीं से शुरुआत करना आवश्यक था।”

उसने गहरी आह भरी। लेकिन उसने उस पर अपनी उस मनमोहक मुस्कान बिखेरी जिसमें दो दांत गायब थे।

उसी रात, जावर्ट ने एक पत्र लिखा। अगली सुबह उसने स्वयं उसे एम‸सुर एम‸ के कार्यालय में डाक से भेज दिया। यह पत्र पेरिस को संबोधित था, और उस पर लिखा था:

महाशय चाबौइलेट को,
पुलिस के महाशय ले प्रीफेट के सचिव।

थाने में हुए इस मामले की चर्चा होने के कारण, डाकवाली और कुछ अन्य लोगों ने, जिन्होंने पत्र भेजे जाने से पहले उसे देखा था और जिन्होंने लिफाफे पर जावर्ट की लिखावट को पहचान लिया था, सोचा कि वह अपना इस्तीफा भेज रहा है।

एम. मैडेलीन ने तुरंत थेनार्डियर परिवार को पत्र लिखा। फैंटाइन पर उनका एक सौ बीस फ़्रैंक का कर्ज़ था। उन्होंने उन्हें तीन सौ फ़्रैंक भेजे और कहा कि वे उस राशि में से अपना कर्ज़ चुका दें और बच्ची को तुरंत एम⸺ सुर एम⸺ ले आएं, जहां उसकी बीमार मां को उसकी उपस्थिति की आवश्यकता थी।

यह देखकर थेनार्डियर दंग रह गया। "अरे बाप रे!" उसने अपनी पत्नी से कहा; "बच्चे को जाने मत दो। यह नन्ही बच्ची बड़ी होकर दूध देने वाली गाय बन जाएगी। मुझे सब समझ आ गया है। किसी मूर्ख को इसकी माँ पसंद आ गई है।"

उन्होंने पांच सौ कुछ फ्रैंक का एक सुव्यवस्थित बिल भेजा। इस ज्ञापन में दो निर्विवाद मदों का योग तीन सौ फ्रैंक से अधिक था—एक डॉक्टर के लिए और दूसरा उस वैद्य के लिए जिसने एपोनिन और अज़ेलमा की दो लंबी बीमारियों के

दौरान देखभाल और उपचार किया था। जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, कोसेट बीमार नहीं थी। यह केवल नामों के मामूली प्रतिस्थापन का मामला था। ज्ञापन के अंत में थेनार्डियर ने लिखा, खाते में प्राप्त, तीन सौ फ्रैंक।

एम. मैडेलीन ने तुरंत तीन सौ फ्रैंक और भेजे और लिखा, "कोसेट को लाने में जल्दी करो।"

“क्रिस्टी!” थेनार्डियर ने कहा, “चलो बच्चे को न छोड़ें।”

इस बीच, फैंटीन की सेहत में सुधार नहीं हुआ। वह अभी भी अस्पताल में ही भर्ती थी।

शुरुआत में बहनों ने उस स्त्री को घृणा से ही अपनाया और उसकी देखभाल की। रीम्स की नक्काशी देखने वालों को बुद्धिमान कुंवारी कन्याओं के होंठों का उभरा हुआ भाव याद होगा, जब वे मूर्ख कुंवारी कन्याओं को देखती हैं। भोली कुंवारी कन्याओं के प्रति पुश्तैनी कन्याओं की प्राचीन घृणा नारी गरिमा की सबसे गहरी भावनाओं में से एक है; बहनों ने इसे धर्म से मिली अतिरिक्त शक्ति के साथ महसूस किया। लेकिन कुछ ही दिनों में फैंटाइन ने उनका मन बहला दिया। उसने हर तरह की विनम्र और कोमल बातें कहीं, और उसके भीतर की मातृत्व भावना ने करुणा जगा दी। एक दिन बुखार के बीच बहनों ने उसे यह कहते सुना: “मैं पापी रही हूँ; लेकिन जब मेरी बच्ची मेरे पास होगी, तो यह इस बात का संकेत होगा कि ईश्वर ने मुझे क्षमा कर दिया है। जब मैं बुरे जीवन जी रही थी, तब मैं अपनी कोसेट को अपने साथ नहीं रखना चाहती थी; मैं उसकी उदास, हैरान आँखों को सहन नहीं कर सकती थी। उसी के कारण मैंने बुराई की, और इसीलिए ईश्वर ने मुझे क्षमा किया है। कोसेट के यहाँ होने पर मैं ईश्वर का आशीर्वाद महसूस करूँगी। मैं उसे निहारूँगी; उस मासूम बच्ची को देखना मुझे सुकून देगा। उसे कुछ भी पता नहीं है। देखो, मेरी बहनों, वह एक परी है। इस उम्र में भी उसके पंख नहीं गिरे हैं।”

एम. मैडलीन दिन में दो बार उनसे मिलने जाती थीं, और हर बार उनसे पूछती थीं:—

क्या मैं जल्द ही अपनी कोसेट से मिल पाऊंगा?

उन्होंने उत्तर दिया:—

"शायद कल। वह किसी भी क्षण आ सकती है। मैं उसका इंतजार कर रहा हूँ।"
और मां का पीला पड़ा चेहरा चमक उठा।
“ओह!” उसने कहा, “मैं कितनी खुश होने वाली हूँ!”
हमने अभी-अभी कहा कि उसकी सेहत में सुधार नहीं हुआ। इसके विपरीत, उसकी हालत सप्ताह दर सप्ताह और भी गंभीर होती जा रही थी। उसके कंधों के बीच की नंगी त्वचा पर मुट्ठी भर बर्फ लगाने से अचानक पसीना आना बंद हो गया, जिसके परिणामस्वरूप कई वर्षों से उसके भीतर सुलग रही बीमारी अंततः उग्र रूप से उभर आई। उस समय लोग छाती की बीमारियों के अध्ययन और उपचार में लैनेक के उत्कृष्ट सुझावों का पालन करने लगे थे। डॉक्टर ने फैंटाइन की छाती की जांच की और अपना सिर हिलाया।
एम. मैडलीन ने डॉक्टर से कहा:—
"कुंआ?"
“क्या उसका कोई बच्चा नहीं है जिसे वह देखना चाहती है?” डॉक्टर ने कहा। "हाँ।"
“अच्छा! जल्दी करो और इसे यहाँ ले आओ!”
एम. मैडलीन सिहर उठीं।
फैंटाइन ने पूछा:—
डॉक्टर ने क्या कहा?
एम. मैडलीन ने खुद को मुस्कुराने के लिए मजबूर किया।
उन्होंने कहा कि आपके बच्चे को जल्द से जल्द लाया जाना चाहिए। इससे आपका स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा।
“ओह!” उसने जवाब दिया, “वह सही कह रहा है! लेकिन उन थेनार्डियरों का मेरी कोसेट को मुझसे दूर रखने का क्या मतलब है! ओह! वह आ रही है। आखिरकार मैं अपने पास खुशी देख पा रही हूँ!”
इस बीच थेनार्डियर ने बच्चे को जाने नहीं दिया और इसके लिए सौ-सौ अपर्याप्त कारण बताए। कोसेट की तबीयत इतनी ठीक नहीं थी कि वह सर्दियों में

यात्रा कर सके। और फिर, पड़ोस में कुछ छोटे-मोटे लेकिन जरूरी कर्ज भी बाकी थे, जिनकी वसूली चल रही थी, इत्यादि।
“मैं कोसेट को लाने के लिए किसी को भेजूंगा!” फादर मेडेलिन ने कहा। “यदि आवश्यक हुआ तो मैं स्वयं जाऊंगा।”
उन्होंने फैंटाइन के कहने पर निम्नलिखित पत्र लिखा और उस पर फैंटाइन से हस्ताक्षर करवाए:—
श्री थेनार्डियर:
आप कोसेट को इस व्यक्ति के पास पहुंचाएंगे।
आपको छोटी-छोटी चीजों के लिए भी भुगतान किया जाएगा।
मैं आपको आदरपूर्वक प्रणाम करने का सौभाग्य प्राप्त करता हूँ।
फैंटाइन।
इसी बीच एक गंभीर घटना घटित हुई। हम चाहे जिस रहस्यमय पिंड को तराशें जिससे हमारा जीवन बना है, नियति की काली नस उसमें लगातार प्रकट होती रहती है।

II. जीन चैंपियन कैसे बन सकती है

एक सुबह, श्री मेडेलीन अपने अध्ययन कक्ष में थे और महापौर कार्यालय से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण मामलों की अग्रिम व्यवस्था कर रहे थे, ताकि यदि वे मॉन्टफर्मेइल की यात्रा करने का निर्णय लें तो उन्हें कोई परेशानी न हो। तभी उन्हें सूचना मिली कि पुलिस इंस्पेक्टर जावर्ट उनसे बात करना चाहते हैं। यह नाम सुनते ही मेडेलीन के मन में अप्रिय भाव उत्पन्न हो गया। पुलिस थाने की घटना के बाद से जावर्ट उनसे पहले से भी अधिक बचने लगे थे और श्री मेडेलीन ने उन्हें नहीं देखा था।

उन्होंने कहा, "उसे भर्ती कर लो।"

जावर्ट ने प्रवेश किया।

एम. मेडेलीन आग के पास अपनी सीट पर बैठे रहे, हाथ में कलम लिए, उनकी नज़र उस दस्तावेज़ पर टिकी हुई थी जिसे वे पलट-पलट कर टिप्पणी कर रहे थे। उस दस्तावेज़ में राजमार्ग आयोग द्वारा पुलिस नियमों के उल्लंघन के मुकदमों का विवरण था। उन्होंने जैवर्ट के मामले पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। वे बेचारी फैंटाइन के बारे में सोचे बिना नहीं रह सके, और इसी वजह से उनका शांत और गंभीर रहना उन्हें शोभा देता था।

जैवर्ट ने महापौर को आदरपूर्वक सलामी दी, जिनकी पीठ उसकी ओर थी। महापौर ने उसकी ओर नहीं देखा, बल्कि इस दस्तावेज़ पर टिप्पणी करना जारी रखा।

जावर्ट अध्ययन कक्ष में दो-तीन कदम आगे बढ़ा और चुप्पी तोड़े बिना रुक गया।

अगर कोई चेहरा विशेषज्ञ, जो जावर्ट से परिचित रहा हो, और जिसने सभ्यता की सेवा में लगे इस बर्बर व्यक्ति का गहन अध्ययन किया हो, जो रोमन, स्पार्टन, भिक्षु और कॉर्पोरल का अनूठा मिश्रण था, वह जासूस जो झूठ नहीं बोल सकता था, वह बेदाग पुलिस एजेंट—अगर किसी चेहरा विशेषज्ञ को एम. मेडेलीन के प्रति उसकी गुप्त और लंबे समय से पोषित घृणा, फैंटाइन के विषय पर महापौर के साथ उसके संघर्ष के बारे में पता होता, और उस समय जावर्ट की जांच की होती, तो वह

स्वयं से कहता, "यह क्या हो गया है?" उस स्पष्ट, ईमानदार, सच्चे, गंभीर और उग्र अंतरात्मा से परिचित किसी भी व्यक्ति के लिए यह स्पष्ट था कि जावर्ट किसी बड़े आंतरिक संघर्ष से गुजरा था। जावर्ट की आत्मा में ऐसा कुछ भी नहीं था जो उसके चेहरे पर न दिखता हो। आम तौर पर हिंसक लोगों की तरह, वह अचानक अपने विचारों को बदल लेता था। उसका चेहरा पहले कभी इतना विचित्र और चौंकाने वाला नहीं था। अंदर आते ही उन्होंने एम. मेडेलीन को प्रणाम किया, उनकी नज़र में न तो कोई द्वेष था, न क्रोध और न ही अविश्वास; वे महापौर की कुर्सी के पीछे कुछ कदम रुक गए और वहीं सीधे खड़े हो गए, मानो अनुशासन में हों, उस ठंडे, सरल रूखेपन के साथ जो कभी कोमल नहीं रहा और हमेशा धैर्यवान रहा है; वे बिना कुछ बोले, बिना हिले-डुले, सच्ची विनम्रता और शांत समर्पण के साथ, शांत, गंभीर, टोपी हाथ में लिए, नज़रें नीचे झुकाए, और उनके चेहरे पर एक सैनिक के अपने अधिकारी के सामने और एक अपराधी के अपने न्यायाधीश के सामने के भाव का मिश्रण था, तब तक प्रतीक्षा करते रहे जब तक महापौर ने मुड़ने की अनुमति नहीं दी। उनके सभी भाव और यादें, जो उनसे जुड़ी हो सकती थीं, गायब हो चुकी थीं। उनका चेहरा, ग्रेनाइट की तरह अभेद्य और सरल, अब उदासी और निराशा के सिवा किसी और भाव से ओतप्रोत नहीं था। उनका पूरा व्यक्तित्व विनम्रता, दृढ़ता और एक अवर्णनीय साहसी निराशा से भरा हुआ था।

अंततः महापौर ने अपनी कलम नीचे रख दी और आधा घूम गए।

“अच्छा! क्या बात है? क्या हुआ, जावर्ट?”

जैवरट एक पल के लिए चुप रहे, मानो अपने विचारों को इकट्ठा कर रहे हों, फिर उन्होंने एक प्रकार की उदास गंभीरता के साथ अपनी आवाज उठाई, हालांकि इससे सादगी का कोई आभास नहीं हुआ।

"यही मामला है, महोदय महापौर; एक निंदनीय कृत्य किया गया है।"

“कौन सा कार्य?”

“अधिकारियों के एक अधीनस्थ प्रतिनिधि ने एक मजिस्ट्रेट के प्रति घोर लापरवाही बरती है। यह मेरा कर्तव्य है, इसलिए मैं यह तथ्य आपके संज्ञान में लाने आया हूँ।”

“एजेंट कौन है?” एम. मेडेलीन ने पूछा।

“मैं,” जावर्ट ने कहा।
"आप?"
"मैं।"
और वह कौन सा मजिस्ट्रेट है जिसके पास एजेंट के खिलाफ शिकायत करने का कारण है?
“आप, महापौर महोदय।”
एम. मैडेलीन अपनी कुर्सी पर सीधे बैठे थे। जावर्ट गंभीर भाव से बोलते रहे और उनकी नज़रें अभी भी झुकी हुई थीं।
"महोदय महोदय, मैं आपसे अनुरोध करने आया हूं कि आप अधिकारियों को मुझे बर्खास्त करने के लिए प्रेरित करें।"
एम. मेडेलिन आश्चर्य से मुंह खोल बैठे। जावर्ट ने उन्हें बीच में ही रोकते हुए कहा:—
“आप कहेंगे कि मैं इस्तीफा दे सकता था, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। इस्तीफा देना सम्मानजनक होता है। मैं अपने कर्तव्य में विफल रहा हूँ; मुझे दंडित किया जाना चाहिए; मुझे निकाल दिया जाना चाहिए।”
और कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने आगे कहा:—
“महामहिम महोदय, आपने उस दिन मेरे साथ बहुत सख्ती बरती थी, जो अनुचित थी। आज न्याय के साथ व्यवहार कीजिए।”
“अरे, ये क्या बकवास है? इसका क्या मतलब है? तुमने मेरे प्रति कौन सा अपराध किया है? तुमने मेरे साथ क्या बुरा किया है? मेरे प्रति तुम्हारी क्या गलतियाँ हैं? तुम खुद पर आरोप लगा रही हो; तुम चाहती हो कि तुम्हें हटा दिया जाए—”
“अच्छा हुआ,” जावर्ट ने कहा।
“ठीक है, ऐसा ही हुआ। अच्छी बात है। मुझे समझ नहीं आ रहा।”
“आपको समझ आ जाएगा, श्रीमान महापौर।”
जैवर ने गहरी साँस ली और फिर ठंडे और उदास स्वर में बोलना शुरू किया:

"मेयर साहब, छह हफ्ते पहले उस महिला को लेकर हुए हंगामे के कारण मैं बहुत गुस्से में था और मैंने आपके खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी।"
मेरे खिलाफ सूचना फैलाई गई!
"पेरिस में पुलिस प्रेफेक्चर में।"
एम. मेडेलीन, जो जावर्ट की तरह ही कम ही हंसती थीं, अचानक जोर से हंस पड़ीं:—
"क्या वह मेयर पुलिस के अधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण कर रहा था?"
"एक पूर्व अपराधी के रूप में।"
महापौर क्रोधित हो गए।
जावर्ट, जिसने अपनी आँखें ऊपर नहीं उठाई थीं, आगे बोला:—
“मुझे लगा कि ऐसा ही है। मुझे काफी समय से यह आभास था; एक समानता; फेवरोल्स में आपके द्वारा कराई गई पूछताछ; आपकी कमर की ताकत; बूढ़े फाउचेलेवेंट के साथ आपका रोमांच; निशानेबाजी में आपकी कुशलता; आपका वह पैर जिसे आप थोड़ा घसीटते हैं;—पता नहीं क्या-क्या—बेतुकी बातें! लेकिन, फिर भी, मैंने आपको जीन वालजेन ही समझ लिया।”
“एक खास—आपने उसका नाम क्या बताया था?”
“जीन वालजीन। वह एक कैदी था जिसे मैं बीस साल पहले अक्सर देखता था, जब मैं टूलॉन में कैदियों का सहायक गार्ड था। जेल से निकलते ही, जीन वालजीन ने, जैसा कि लगता है, एक बिशप को लूट लिया; फिर उसने एक सार्वजनिक राजमार्ग पर एक छोटे से सवॉयर्ड व्यक्ति से हिंसा के साथ एक और चोरी की। वह आठ साल पहले गायब हो गया, कोई नहीं जानता कैसे, और मुझे लगता है कि उसकी तलाश की जा रही है। संक्षेप में, मैंने यह किया! क्रोध ने मुझे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया; मैंने प्रीफेक्चर में आपकी शिकायत दर्ज कराई!”
एम. मेडेलीन, जिन्होंने कुछ क्षण पहले ही दोबारा फाइल उठाई थी, पूर्ण उदासीनता के भाव से फिर से बोलने लगीं:
और आपको क्या जवाब मिला?
मैं पागल हो गया था।

"कुंआ?"

"खैर, वे सही थे।"

"यह अच्छी बात है कि आप इस तथ्य को पहचानते हैं।"

"मुझे ऐसा करने के लिए विवश होना पड़ा है, क्योंकि असली जीन वालजेन मिल गया है।"

एम. मेडेलीन के हाथ में जो कागज़ था, वह उनके हाथ से गिर गया; उन्होंने अपना सिर उठाया, जैवर्ट को टकटकी लगाकर देखा और अपने अवर्णनीय लहजे में कहा:—

आह!”

जावर्ट ने आगे कहा:—

“यही बात है, महोदय महापौर। ऐसा लगता है कि ऐली-ले-हाउट-क्लोचर के पास के मोहल्ले में फादर चैम्पमैथ्यू नाम का एक बूढ़ा आदमी रहता था। वह बहुत ही दुष्ट प्राणी था। कोई उस पर ध्यान नहीं देता था। पता नहीं ऐसे लोग गुज़ारा कैसे करते होंगे। पिछले पतझड़ में, फादर चैम्पमैथ्यू को कुछ सेब चुराने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था—खैर, कोई बात नहीं, चोरी तो हुई थी, दीवार फांदी गई थी, पेड़ों की डालियाँ तोड़ी गई थीं। मेरे चैम्पमैथ्यू को गिरफ्तार कर लिया गया। उसके हाथ में अभी भी सेब की डाल थी। वह बदमाश जेल में बंद है। अभी तक तो यह मामूली अपराध का मामला था। लेकिन यहीं पर ईश्वर की कृपा हुई।”

जेल की खराब हालत को देखते हुए, जांच मजिस्ट्रेट ने चैम्पमैथ्यू को अरास स्थानांतरित करना उचित समझा, जहां विभागीय जेल स्थित है। अरास की इस जेल में ब्रेवेट नाम का एक पूर्व कैदी है, जिसे पता नहीं किस अपराध के लिए हिरासत में लिया गया है, और अच्छे व्यवहार के कारण उसे घर का रखवाला नियुक्त किया गया है। मेयर साहब, चैम्पमैथ्यू के पहुंचते ही ब्रेवेट चिल्ला उठा: ‘अरे! मैं इस आदमी को जानता हूँ! यह तो समलैंगिक है! ज़रा मुझे ध्यान से देखिए, मेरे भले आदमी! आप जीन वालजेन हैं!’ ‘जीन वालजेन! कौन है जीन वालजेन?’ चैम्पमैथ्यू ने हैरानी जताते हुए कहा। ‘मासूम बनने का नाटक मत करो,’ ब्रेवेट ने कहा। ‘आप जीन वालजेन हैं! आप टूलॉन की जेलों में थे; बीस साल पहले की बात है; हम वहां साथ थे।’ चैम्पमैथ्यू ने इससे इनकार किया।

पारब्लू! आप समझ गए। मामले की जांच की गई। मामला ठीक था। मेरे लिए सब कुछ साफ़ हो गया। उन्होंने यह पता लगाया: यह शैंपमैथ्यू तीस साल पहले विभिन्न स्थानों पर, विशेष रूप से फ़ेवरोल्स में, पेड़ों की छंटाई करता था। वहाँ उसका कोई सुराग नहीं मिला। बहुत समय बाद उसे फिर से औवेर्गने में देखा गया; फिर पेरिस में, जहाँ कहा जाता है कि वह एक पहिया बनाने वाला था, और उसकी एक बेटी थी जो धोबिन का काम करती थी; लेकिन यह साबित नहीं हुआ है। अब, चोरी के आरोप में जेल जाने से पहले, जीन वालजेन क्या था? पेड़ों की छंटाई करने वाला। कहाँ? फ़ेवरोल्स में। एक और तथ्य। इस वालजेन का ईसाई नाम जीन था, और उसकी माँ का उपनाम मैथ्यू था। इससे ज़्यादा स्वाभाविक क्या हो सकता है कि जेल से निकलने के बाद, उसने खुद को छिपाने के लिए अपनी माँ का नाम अपना लिया हो, और खुद को जीन मैथ्यू कहा हो? वह औवेर्गने जाता है। स्थानीय उच्चारण जीन को चान में बदल देता है—उसे चान मैथ्यू कहा जाता है। हमारा आदमी कोई विरोध नहीं करता, और देखो वह कैसे बदल जाता है चैम्पमैथ्यू। आप मेरी बात समझ रहे हैं, है ना? फ़ेवरोल्स में पूछताछ की गई। जीन वालजेन का परिवार अब वहाँ नहीं है। पता नहीं वे कहाँ चले गए। आप जानते हैं कि उन वर्गों में अक्सर परिवार गायब हो जाते हैं। खोजबीन की गई, लेकिन कुछ नहीं मिला। जब ऐसे लोग मिट्टी में नहीं होते, तो धूल में मिल जाते हैं। और फिर, जैसा कि कहानी की शुरुआत तीस साल पहले की है, फ़ेवरोल्स में अब कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो जीन वालजेन को जानता हो। टूलॉन में पूछताछ की गई। ब्रेवेट के अलावा, केवल दो ही कैदी हैं जिन्होंने जीन वालजेन को देखा है; वे कोशेपाइल और चेनिल्डियू हैं, और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। उन्हें जेल से उतारा गया और नकली चैम्पमैथ्यू के सामने पेश किया गया। वे ज़रा भी नहीं हिचकिचाए; वह उनके लिए और ब्रेवेट के लिए भी जीन वालजेन ही था। वही उम्र—वह चौवन वर्ष का है—वही कद, वही हावभाव, वही आदमी; संक्षेप में, वह वही है। ठीक इसी क्षण मैंने अपनी शिकायत आगे भेजी। पेरिस के प्रीफेक्चर में। मुझे बताया गया कि मैंने अपना मानसिक संतुलन खो दिया है, और जीन वालजेन अर्रास में अधिकारियों की हिरासत में है। आप कल्पना कर सकते हैं कि यह सुनकर मुझे कितना आश्चर्य हुआ होगा, जब मैंने सोचा कि वही जीन वालजेन यहीं मेरे सामने है। मैंने जांच न्यायाधीश को पत्र लिखा; उन्होंने मुझे बुलवाया; शैंपमैथ्यू को मेरे पास लाया गया—”

“तो?” एम. मैडलीन ने बीच में टोकते हुए पूछा।

जैवर ने अपने भावहीन चेहरे और हमेशा की तरह उदास भाव से उत्तर दिया:

“महामहिम महोदय, सच तो सच ही होता है। मुझे खेद है; लेकिन वह व्यक्ति जीन वालजेन है। मैंने भी उसे पहचान लिया है।”

एम. मैडलीन ने बहुत धीमी आवाज़ में बोलना जारी रखा:—

"आपको यकीन है?"

जैवरट हंसने लगा, उस शोकपूर्ण हंसी के साथ जो गहन दृढ़ विश्वास से आती है।

“ओह! ज़रूर!”

वह कुछ क्षण तक विचारमग्न खड़ा रहा, मेज पर रखे लकड़ी के कटोरे से स्याही सोखने के लिए लकड़ी के पाउडर की चुटकी भर निकालता रहा, और फिर बोला:—

“और अब जब मैंने असली जीन वालजेन को देख लिया है, तो मुझे समझ नहीं आता कि मैं इसके अलावा और क्या सोच सकता था। महोदय महापौर, क्षमा करें।”

जावर्ट ने गंभीर और विनती भरे शब्दों में उस व्यक्ति से कहा, जिसने छह सप्ताह पहले पूरे थाने के सामने उसका अपमान किया था और उसे "कमरा छोड़ देने" के लिए कहा था—वह अभिमानी व्यक्ति, अनजाने में ही सादगी और गरिमा से भरा हुआ था—एम. मेडेलीन ने उसकी प्रार्थना का उत्तर केवल इस सीधे प्रश्न से दिया:

और यह आदमी क्या कहता है?

“आह! सचमुच, मेयर साहब, यह एक बुरा मामला है। अगर वह जीन वालजेन है, तो उसके खिलाफ पहले से ही आपराधिक रिकॉर्ड है। दीवार पर चढ़ना, डाल तोड़ना, सेब चुराना, ये सब बच्चों की शरारतें होती हैं; एक आदमी के लिए ये मामूली अपराध है; एक अपराधी के लिए ये जघन्य अपराध है। चोरी और सेंधमारी—सब कुछ इसमें शामिल है। अब यह सुधार गृह पुलिस का मामला नहीं है; यह अदालत का मामला है। अब यह कुछ दिनों की जेल का मामला नहीं है; यह आजीवन कारावास है। और फिर, उस छोटे सवॉयर्ड का मामला है, जो उम्मीद है लौट आएगा। धिक्कार है! इस मामले में विवाद करने के लिए बहुत कुछ है, है ना? हाँ, जीन वालजेन को छोड़कर किसी और के लिए। लेकिन जीन वालजेन एक धूर्त व्यक्ति है। मैंने उसे इसी तरह पहचाना। कोई और होता तो समझ जाता कि उसके लिए हालात बिगड़ रहे हैं; वह

संघर्ष करता, चिल्लाता—जैसे आग के सामने केतली बजती है; वह वह जीन वालजेन वगैरह नहीं है। लेकिन उसमें समझदारी का कोई आभास नहीं है; वह कहता है, 'मैं शैंपमैथ्यू हूँ, और मैं इस पहचान से पीछे नहीं हटूँगा!' उसके चेहरे पर हैरानी का भाव है, वह मूर्ख होने का नाटक करता है; यह कहीं बेहतर है। ओह! वह बदमाश कितना चालाक है! लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। सबूत मौजूद हैं। उसे चार लोगों ने पहचान लिया है; वह बूढ़ा बदमाश दोषी ठहराया जाएगा। मामला अर्रास की अदालत में ले जाया गया है। मैं वहाँ गवाही देने जाऊँगा। मुझे बुलाया गया है।

एम. मेडेलीन फिर से अपनी डेस्क की ओर मुड़े, अपना दस्तावेज़ उठाया और व्यस्त व्यक्ति की तरह शांति से पन्ने पलटते हुए, बारी-बारी से पढ़ते और लिखते रहे। उन्होंने जावर्ट की ओर मुड़कर कहा:—

“बस इतना ही काफी है, जावर्ट। सच कहूँ तो, इन सब बातों में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। हम अपना समय बर्बाद कर रहे हैं, और हमारे पास बहुत ज़रूरी काम है। जावर्ट, तुम तुरंत सेंट-साउल्वे गली के कोने पर जड़ी- बूटियाँ बेचने वाली बुसेउपीद नाम की महिला के घर जाओ। उसे बताओ कि उसे गाड़ीवान पियरे चेसनेलॉन्ग के खिलाफ शिकायत दर्ज करानी चाहिए। वह आदमी एक ज़ालिम है, जिसने इस महिला और उसके बच्चे को लगभग कुचल ही दिया था। उसे सज़ा मिलनी चाहिए। फिर तुम मॉन्ट्रे-डी-शैम्पिग्नी गली में रहने वाले श्री चारसेले के पास जाओ। उन्होंने शिकायत की है कि बगल वाले घर में एक नाली है जो बारिश का पानी उनके परिसर में बहाती है और उनके घर की नींव को कमज़ोर कर रही है। इसके बाद, तुम गुइबर्ग गली में विधवा डोरिस के घर और डु गारौड-ब्लैंक गली में मैडम रेनी ले बॉसे के घर पर पुलिस नियमों के उल्लंघन की जाँच करो, जिनकी रिपोर्ट मुझे मिली है, और दस्तावेज़ तैयार करो। लेकिन मैं तुम्हें ये समय दे रहा हूँ। बहुत काम है। क्या आप अनुपस्थित नहीं रहेंगे? क्या आपने मुझे नहीं बताया था कि आप इस मामले में एक हफ्ते या दस दिन में अर्रास जा रहे हैं?

"इससे पहले ही, मेयर साहब।"

तो फिर किस दिन?

"अरे, मुझे तो लगा था कि मैंने महाशय को बताया था कि मामले की सुनवाई कल होनी है, और मुझे आज रात ही तुरंत रवाना होना है।"
एम. मैडलीन ने एक सूक्ष्म हलचल की जो किसी को दिखाई नहीं दी।
और यह मामला कितने समय तक चलेगा?
“ज्यादा से ज्यादा एक दिन। फैसला कल शाम तक सुनाया जाएगा। लेकिन मैं फैसले का इंतजार नहीं करूंगा, जो निश्चित है; मेरा बयान दर्ज होते ही मैं यहां लौट आऊंगा।”
“यह अच्छी बात है,” एम. मेडेलिन ने कहा।
और उसने हाथ के इशारे से जावर्ट को विदा कर दिया।
जावर्ट ने नाम वापस नहीं लिया।
“क्षमा कीजिए, महापौर महोदय,” उन्होंने कहा।
“अब क्या है?” एम. मेडेलीन ने पूछा।
"महामहिम महोदय, अभी भी कुछ ऐसा है जिसकी मुझे आपको याद दिलाना आवश्यक है।" "यह क्या है?"
मुझे बर्खास्त किया जाना चाहिए।
एम. मैडलीन रोज।
“जैवर्टी, आप एक सम्मानित व्यक्ति हैं और मैं आपका आदर करता हूँ। आप अपनी गलती को बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे हैं। इसके अलावा, यह एक ऐसा अपराध है जो मुझे चिंतित करता है। जैवर्टी, आप पदोन्नति के पात्र हैं, पदावनति के नहीं। मैं चाहता हूँ कि आप अपने पद पर बने रहें।”
जावर्ट ने अपनी स्पष्ट दृष्टि से एम. मेडेलीन को निहारते हुए, जिनकी गहराई में उनका बहुत प्रबुद्ध न होते हुए भी शुद्ध और दृढ़ अंतरात्मा झलकती प्रतीत हो रही थी, शांत स्वर में कहा:—
"महामहिम महोदय, मैं आपको वह अनुमति नहीं दे सकता।"
“मैं दोहराती हूँ,” एम. मेडेलीन ने उत्तर दिया, “कि यह मामला मुझसे संबंधित है।”

लेकिन जावर्ट ने केवल अपने ही विचार पर ध्यान देते हुए आगे कहा:—

“जहां तक अतिशयोक्ति की बात है, मैं अतिशयोक्ति नहीं कर रहा हूँ। मेरा तर्क यह है: मैंने आप पर अनुचित रूप से संदेह किया है। यह कुछ भी नहीं है। संदेह करना हमारा अधिकार है, हालांकि अपने से ऊपर के लोगों पर संदेह करना एक दुरुपयोग है। लेकिन बिना सबूत के, क्रोध में आकर, अपना बदला लेने के उद्देश्य से, मैंने आपको अपराधी घोषित कर दिया, आप जैसे एक सम्मानित व्यक्ति, एक महापौर, एक मजिस्ट्रेट! यह गंभीर है, बहुत गंभीर। मैंने आपके अधिकार का अपमान किया है, मैं, जो अधिकारियों का एक प्रतिनिधि हूँ! यदि मेरे किसी अधीनस्थ ने ऐसा किया होता, तो मैं उसे सेवा के अयोग्य घोषित कर देता और उसे निष्कासित कर देता। अच्छा? रुकिए, महापौर महोदय; एक शब्द और। मैंने अपने जीवन में अक्सर दूसरों के प्रति कठोर रवैया अपनाया है। यह उचित है। मैंने अच्छा किया है। अब, यदि मैं स्वयं के प्रति कठोर न होता, तो मेरे द्वारा किया गया सारा न्याय अन्याय बन जाता। क्या मुझे दूसरों से अधिक स्वयं को बख्शना चाहिए? नहीं! क्या! मैं केवल दूसरों को दंडित करने के अलावा किसी काम का नहीं रहूँगा, स्वयं को नहीं! क्यों?” मुझे बदमाश होना चाहिए! जो लोग कहते हैं, 'वह बदमाश जावर्ट!' वे सही हैं। मेयर साहब, मैं नहीं चाहता कि आप मेरे साथ नरमी बरतें; आपकी दयालुता ने दूसरों के प्रति मेरे मन में काफी द्वेष पैदा कर दिया था। मुझे अपने लिए ऐसी कोई दयालुता नहीं चाहिए। वह दयालुता जो शहर की किसी महिला को किसी नागरिक के विरुद्ध, पुलिस अधिकारी को मेयर के विरुद्ध, और दुनिया में गिरे हुए व्यक्ति को उठे हुए व्यक्ति के विरुद्ध खड़ा करती है, उसे मैं झूठी दयालुता कहता हूँ। यही वह दयालुता है जो समाज को अस्त-व्यस्त कर देती है। हे भगवान! दयालु होना बहुत आसान है; मुश्किल तो न्याय करने में है। अरे! अगर तुम वैसे होते जैसा मैंने सोचा था, तो मैं तुम्हारे प्रति दयालु नहीं होता, मैं नहीं! तुम देख लेते! मेयर साहब, मुझे अपने साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा मैं किसी और के साथ करता हूँ। जब मैंने अपराधियों को काबू किया है, जब मैंने बदमाशों के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई की है, तो मैंने अक्सर खुद से कहा है, 'अगर तुम पीछे हट गए, अगर मैंने तुम्हें कभी गलती करते हुए पकड़ा, तो तुम चैन से सो सकते हो!' मैं चौंक गया, मैंने गलती कर दी। अब तो और भी बुरा! आओ, बर्खास्त, नौकरी से निकाल दिया गया, निष्कासित! कोई बात नहीं। मेरे पास हथियार हैं।

मैं खेती करूँगा; मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेयर साहब, सेवा की भलाई के लिए एक उदाहरण आवश्यक है। मैं बस इंस्पेक्टर जावर्ट को बर्खास्त करने की मांग करता हूँ।
यह सब एक गर्वपूर्ण, विनम्र, निराशापूर्ण, फिर भी दृढ़ निश्चयपूर्ण स्वर में कहा गया था, जिसने इस विलक्षण, ईमानदार व्यक्ति को अवर्णनीय भव्यता प्रदान की।
“देखते हैं,” एम. मेडेलीन ने कहा।
और उसने उसे अपना हाथ बढ़ाया।
जावर्ट पीछे हट गया और उग्र स्वर में बोला:—
"क्षमा कीजिए, महापौर महोदय, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। एक महापौर पुलिस जासूस को अपना हाथ नहीं बढ़ाता।"
उसने दांतों के बीच से कहा:—
“मैं एक पुलिस जासूस हूँ, हाँ; जिस क्षण से मैंने पुलिस का दुरुपयोग किया है, उसी क्षण से मैं एक पुलिस जासूस से अधिक कुछ नहीं हूँ।”
फिर उन्होंने श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और दरवाजे की ओर कदम बढ़ाए। वहाँ वह मुड़ा और आँखें अभी भी झुकी हुई थीं:
उन्होंने कहा, "महोदय महोदय, मैं तब तक सेवा करता रहूंगा जब तक मुझे पद से हटा नहीं दिया जाता।"
वह चला गया। एम. मैडेलीन ध्यानपूर्वक उस दृढ़, निश्चित कदम की आवाज़ सुनती रहीं, जो गलियारे के फुटपाथ पर धीरे-धीरे क्षीण हो गई।

पुस्तक **VII.** चैम्पमैथ्यू कांड

I. सिस्टर सिंपलिस

जिन घटनाओं का वर्णन पाठक आगे पढ़ने जा रहे हैं, वे सभी M⸺ sur M⸺ में ज्ञात नहीं थीं। लेकिन उनमें से जो थोड़ी-बहुत घटनाएँ ज्ञात हुईं, उन्होंने उस कस्बे में ऐसी छाप छोड़ी कि यदि हम उनका विस्तृत वर्णन न करें तो इस पुस्तक में एक गंभीर कमी रह जाएगी। इन विवरणों के बीच पाठक को दो-तीन ऐसी परिस्थितियाँ मिलेंगी जो अविश्वसनीय प्रतीत होती हैं, लेकिन सत्य के प्रति सम्मान के कारण हमने उन्हें संरक्षित रखा है।

जैवरट की यात्रा के बाद वाली दोपहर को, एम. मेडेलीन अपनी आदत के अनुसार फैंटाइन से मिलने गए।

फैंटाइन के कमरे में प्रवेश करने से पहले, उसने सिस्टर सिंपलिस को बुलवाया।

अस्पताल में नर्स के रूप में सेवाएं देने वाली दो ननें, लाज़ारिस्ट महिलाएं, अन्य सभी धर्मार्थ बहनों की तरह, सिस्टर परपेट्यू और सिस्टर सिंपलिस के नाम धारण करती थीं।

सिस्टर परपेट्यू एक साधारण ग्रामीण महिला थीं, एक साधारण स्वभाव वाली धर्मपरायण बहन, जिन्होंने ईश्वर की सेवा में वैसे ही प्रवेश किया जैसे कोई अन्य सेवा में। वे एक नन थीं जैसे अन्य महिलाएं रसोइया होती हैं। इस प्रकार की महिलाएं दुर्लभ नहीं हैं। मठवासी समुदाय इस तरह की मेहनती और निर्मल स्वभाव वाली महिलाओं को सहर्ष स्वीकार करते हैं, जिन्हें आसानी से कैपुचिन या उर्सुलिन नन के रूप में ढाला जा सकता है। इन देहाती महिलाओं को भक्ति के कठिन कार्यों में लगाया जाता है। चरवाहे से कार्मलाइट बनने का परिवर्तन जरा भी कठिन नहीं होता; एक व्यक्ति बिना अधिक प्रयास के दूसरे में परिवर्तित हो जाता है; गांव और मठ में व्याप्त अज्ञानता एक तैयार तैयारी का काम करती है, और देहाती व्यक्ति को तुरंत भिक्षु के समान दर्जा दे देती है: फ्रॉक में थोड़ी और ढील देने पर वह फ्रॉक बन जाती है। सिस्टर परपेट्यू पोंटोइस के पास मरीन से एक हष्ट-पुष्ट नन थीं, जो अपनी स्थानीय बोली में बड़बड़ाती थीं, बुदबुदाती थीं, शिकायत करती थीं, बीमार व्यक्ति

के कट्टर या पाखंडी रवैये के अनुसार दवा में चीनी मिलाती थीं, अपने मरीजों के साथ अचानक और कठोर व्यवहार करती थीं, मरने वालों से चिढ़ जाती थीं, लगभग उनके चेहरे पर भगवान को घसीटती थीं, क्रोध में बुदबुदाती प्रार्थनाओं से उनकी मृत्यु की पीड़ा को पत्थर की तरह दबा देती थीं; वह साहसी, ईमानदार और लालिमा लिए हुए थीं।

सिस्टर सिंपलिस का रंग सफेद था, मोम जैसी पीली त्वचा लिए हुए। सिस्टर परपेट्यू के बगल में, वह मोमबत्ती के बगल में जलती मोमबत्ती जैसी थीं। विंसेंट डी पॉल ने इन प्रशंसनीय शब्दों में सिस्टर ऑफ चैरिटी के गुणों का दिव्य वर्णन किया है, जिनमें उन्होंने स्वतंत्रता और सेवाभाव दोनों को समान रूप से समाहित किया है: “उनका मठ केवल बीमारों का घर होगा; उनकी कोठरी केवल किराए का कमरा होगी; उनका गिरजाघर केवल उनका पैरिश चर्च होगा; उनका मठ केवल शहर की गलियाँ और अस्पतालों के वार्ड होंगे; उनका निवास केवल आज्ञाकारिता होगी; उनके वस्त्र केवल ईश्वर का भय होंगे; उनका पर्दा केवल लज्जापूर्ण होगा।” यह आदर्श सिस्टर सिंपलिस के जीवन में साकार हुआ: वह कभी युवा नहीं थीं, और ऐसा लगता था मानो वह कभी बूढ़ी नहीं होंगी। कोई भी सिस्टर सिंपलिस की उम्र का अंदाजा नहीं लगा सकता था। वह एक ऐसी शख्सियत थीं—हम उन्हें स्त्री कहने की हिम्मत नहीं कर सकते—जो कोमल, संयमी, सुसंस्कृत, निर्मल थीं और जिन्होंने कभी झूठ नहीं बोला था। वह इतनी कोमल थीं कि नाजुक प्रतीत होती थीं; लेकिन वह ग्रेनाइट से भी अधिक ठोस थीं। उन्होंने अपने कोमल और पवित्र हाथों से दुखी लोगों को स्पर्श किया। मानो उनकी वाणी में मौन था; वे केवल वही कहती थीं जो आवश्यक होता था, और उनकी आवाज़ का स्वर ऐसा था जो किसी पश्चात्ताप कक्ष को भी उतना ही सुकून देता जितना किसी ड्राइंग रूम को। यह कोमलता उनके सर्ज गाउन में समाहित हो जाती थी, और इस कठोर स्पर्श में स्वर्ग और ईश्वर की निरंतर याद दिलाती थी। आइए एक बात पर ज़ोर दें। कभी झूठ न बोलना, कभी किसी स्वार्थ के लिए, यहाँ तक कि उदासीनता में भी, कोई भी ऐसी बात न कहना जो सत्य न हो, पवित्र सत्य न हो, सिस्टर सिंपलिस का विशिष्ट गुण था; यही उनके सद्गुण का सार था। वे अपनी इस अविचल सत्यनिष्ठा के लिए मंडली में लगभग प्रसिद्ध थीं। अब्बे सिकाड ने बधिर-मूक मैसियू को लिखे एक पत्र में सिस्टर सिंपलिस के बारे में लिखा है: हम चाहे कितने भी पवित्र और ईमानदार क्यों न हों, हम सभी अपनी

स्पष्टवादिता पर एक छोटे, निर्दोष झूठ की दरार को लिए रहते हैं। उन्होंने ऐसा नहीं किया। छोटा झूठ, निर्दोष झूठ—क्या ऐसी कोई चीज़ होती है? झूठ बोलना बुराई का चरम रूप है। थोड़ा झूठ बोलना संभव नहीं: जो झूठ बोलता है, वह पूरा झूठ बोलता है। झूठ बोलना शैतान का साक्षात चेहरा है। शैतान के दो नाम हैं; उसे शैतान और झूठ कहा जाता है। यही उसने सोचा; और जैसा उसने सोचा, वैसा ही उसने किया। परिणाम वह सफेदी थी जिसका हमने उल्लेख किया है—एक सफेदी जिसने उसके होंठों और आँखों को भी चमक से ढक लिया था। उसकी मुस्कान सफेद थी, उसकी दृष्टि सफेद थी। उस अंतरात्मा की कांच की खिड़की पर मकड़ी का एक भी जाला नहीं था, धूल का एक कण भी नहीं था। सेंट विंसेंट डी पॉल के संप्रदाय में प्रवेश करते समय, उसने विशेष इच्छा से सिम्पलिस नाम अपनाया था। जैसा कि हम जानते हैं, सिसिली की सिम्पलिस वह संत हैं जिन्होंने सिरैक्यूज़ में जन्म लेने के बजाय अपने दोनों स्तनों को चीर-फाड़ करवाना बेहतर समझा—एक ऐसा झूठ जो उन्हें बचा सकता था। यह संरक्षक संत इस आत्मा के लिए उपयुक्त थीं।

सिस्टर सिंपलिस ने जब मठ में प्रवेश किया था, तब उनमें दो कमियाँ थीं जिन्हें उन्होंने धीरे-धीरे सुधार लिया था: उन्हें स्वादिष्ट व्यंजनों का शौक था और उन्हें पत्र प्राप्त करना अच्छा लगता था। वह केवल लैटिन में छपी एक प्रार्थना पुस्तक ही पढ़ती थीं, वो भी मोटे अक्षरों में। उन्हें लैटिन समझ नहीं आती थी, लेकिन वह पुस्तक समझ जाती थीं।

इस धर्मपरायण महिला को फैंटाइन से स्नेह हो गया था, शायद उसमें छिपी किसी अच्छाई को महसूस करते हुए, और उसने अपना पूरा जीवन लगभग उसी की देखभाल में समर्पित कर दिया था।

एम. मैडलीन ने सिस्टर सिंपलिस से गहन परामर्श लिया और एक विलक्षण लहजे में फैंटाइन की सिफारिश की, जिसे सिस्टर ने बाद में याद किया।

बहन से विदा लेने के बाद, वह फैंटाइन के पास गया।

फैंटाइन प्रतिदिन एम. मेडेलीन के आने का उसी प्रकार इंतजार करती थी जैसे कोई खुशी और सुकून की किरण का। उसने बहनों से कहा, "मैं तभी जीवित रहती हूँ जब महाशय यहाँ होते हैं।"

उस दिन उसे बहुत तेज बुखार था। एम. मैडलीन को देखते ही उसने उनसे पूछा:—

और कोसेट?

उन्होंने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया:—

"जल्द ही।"

एम. मेडेलिन हमेशा की तरह फैंटीन के साथ थे। बस फर्क इतना था कि वो आधे घंटे की जगह एक घंटा रुके, जिससे फैंटीन बहुत खुश हुई। उन्होंने सबको बार-बार यही गुजारिश की कि बीमार फैंटीन को किसी चीज की कमी न होने दें। एक पल के लिए उनका चेहरा बहुत गंभीर हो गया। लेकिन बाद में पता चला कि डॉक्टर ने उनके कान में झुककर कहा था, "फैंटीन की हालत तेजी से बिगड़ रही है।"

फिर वह टाउन हॉल लौट आया, और क्लर्क ने उसे अपने अध्ययन कक्ष में टंगे फ्रांस के सड़क मानचित्र का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हुए देखा। उसने पेंसिल से कागज के एक टुकड़े पर कुछ आंकड़े लिखे।

II. मास्टर स्काउफ्लेयर की दूरदर्शिता

टाउन हॉल से वह शहर के अंतिम छोर पर मास्टर स्कॉफ्लेयर नामक एक फ्लेमिश व्यक्ति के पास गया, जो फ्रेंच में स्कॉफ्लेयर कहलाता था और "इच्छानुसार घोड़े और कैब्रियोलेट किराए पर देता था।"

स्काउफ्लेयर तक पहुँचने का सबसे छोटा रास्ता उस सुनसान गली से होकर जाना था जहाँ उस पल्ली का पादरी निवास था जिसमें एम. मेडेलीन रहते थे। कहा जाता था कि पादरी एक नेक, सम्मानित और समझदार व्यक्ति थे। जिस समय एम. मेडेलीन पादरी निवास के सामने पहुँचे, गली में केवल एक राहगीर था, और उस व्यक्ति ने यह देखा: पादरी के घर से आगे निकलने के बाद, मेयर रुक गए, कुछ देर स्थिर खड़े रहे, फिर मुड़े और पादरी निवास के दरवाजे की ओर वापस चले गए, जिस पर लोहे का दरवाज़ा खटखटाने वाला हैंडल लगा था। उन्होंने जल्दी से हैंडल पर हाथ रखा और उसे उठाया; फिर वे कुछ देर रुके, मानो सोच में डूबे हों, और कुछ सेकंड बीतने के बाद, हैंडल को अचानक गिरने देने के बजाय, उन्होंने उसे धीरे से रखा और पहले जैसी जल्दबाजी न दिखाते हुए अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए।

एम. मैडलीन ने मास्टर स्कॉफ्लेयर को घर पर एक हार्नेस सिलते हुए पाया।

“मास्टर स्काउफ्लेयर,” उसने पूछा, “क्या आपके पास कोई अच्छा घोड़ा है?”

फ्लेमिंग ने कहा, "महामहिम महोदय, मेरे सभी घोड़े अच्छे हैं। अच्छे घोड़े से आपका क्या मतलब है?"

मेरा मतलब ऐसे घोड़े से है जो एक दिन में बीस मील की दूरी तय कर सके।

“दो!” फ्लेमिंग ने कहा। “बीस लीग!”

"हाँ।"

"कैब्रियोलेट से जुड़ा हुआ?"

"हाँ।"

और अपनी यात्रा के अंत में वह कितने समय तक विश्राम कर सकता है?

"जरूरत पड़ने पर उसे अगले दिन फिर से यात्रा शुरू करने में सक्षम होना चाहिए।"

“क्या उसी रास्ते पर चलना है?”

"हाँ।"

“दो! दो! और यह बीस लीग है?”

एम. मेडेलीन ने अपनी जेब से वह कागज़ निकाला जिस पर उन्होंने कुछ अंक पेंसिल से बनाए थे। उन्होंने वह कागज़ फ्लेमिंग को दिखाया। अंक थे 5, 6, 8½।

उन्होंने कहा, "देखिए, कुल मिलाकर साढ़े उन्नीस लीग; बीस लीग कहना भी उतना ही सही होगा।"

“महामहिम महोदय,” फ्लेमिंग ने जवाब दिया, “मेरे पास वही है जो आप चाहते हैं। मेरा छोटा सफेद घोड़ा—आपने शायद उसे कभी-कभार आते-जाते देखा होगा; वह लोअर बोलोनैस का एक छोटा सा जानवर है। वह बहुत जोशीला है। पहले तो वे उसे सवारी के लिए इस्तेमाल करना चाहते थे। धिक्कार है! वह उछलता, लात मारता, सबको ज़मीन पर गिरा देता। उसे दुष्ट समझा जाता था और किसी को समझ नहीं आता था कि उसके साथ क्या करें। मैंने उसे खरीद लिया। मैंने उसे एक गाड़ी में जोत दिया। यही तो वह चाहता था, महोदय; वह लड़की की तरह कोमल है; हवा की तरह दौड़ता है। आह! सच में, उस पर सवारी नहीं करनी चाहिए। सवारी का घोड़ा बनना उसके स्वभाव के अनुकूल नहीं है। हर किसी की अपनी महत्वाकांक्षा होती है। ‘खींचना? हाँ। ढोना? नहीं।’ हमें मानना पड़ेगा कि उसने मन ही मन यही कहा होगा।”

और क्या वह यात्रा पूरी कर पाएगा?

“आपको बीस लीग की दूरी पूरी रफ्तार से, आठ घंटे से भी कम समय में तय करनी है। लेकिन शर्तें ये हैं।”

“उनका उल्लेख करें।”

“सबसे पहले, आप उसे रास्ते के बीच में आधे घंटे का आराम देंगे; वह खाएगा; और जब वह खा रहा हो तो कोई न कोई उसके पास होना चाहिए ताकि सराय का नौकर उसका

जई न चुरा ले; क्योंकि मैंने देखा है कि सराय में जई घोड़ों द्वारा खाने की तुलना में अस्तबल के नौकरों द्वारा अधिक पी ली जाती है।”
कोई न कोई जरूर आएगा।
“दूसरे स्थान पर—क्या यह कैब्रियोलेट कार महाशय के लिए है?”
"हाँ।"
क्या महाशय को गाड़ी चलाना आता है?
"हाँ।"
"अच्छा, महाशय अकेले और बिना सामान के यात्रा करेंगे, ताकि घोड़े पर अधिक भार न पड़े?"
"मान गया।"
लेकिन चूंकि महाशय के साथ कोई नहीं होगा, इसलिए उन्हें स्वयं यह सुनिश्चित करने का कष्ट उठाना पड़ेगा कि जई की चोरी न हो।
“यह बात समझ में आ गई है।”
मुझे प्रतिदिन तीस फ्रैंक मिलेंगे। आराम के दिनों का भी भुगतान किया जाएगा—एक पैसा भी कम नहीं; और पशुओं का भोजन महाशय के खर्चे पर होगा।
एम. मेडेलीन ने अपने पर्स से तीन नेपोलियन सिक्के निकाले और उन्हें मेज पर रख दिया।
"ये दो दिन का वेतन अग्रिम रूप से है।"
"चौथा कारण यह है कि ऐसी यात्रा के लिए एक कैब्रियोलेट बहुत भारी होगी और घोड़े को थका देगी। महाशय को मेरी छोटी सी टिलबरी में यात्रा करने के लिए सहमत होना होगा।"
मैं इससे सहमत हूँ।
"यह हल्का है, लेकिन इस पर कोई आवरण नहीं है।"
इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।
"क्या महाशय ने इस बात पर विचार किया है कि हम सर्दियों के मध्य में हैं?" एम. मैडलीन ने कोई जवाब नहीं दिया। फ्लेमिंग ने फिर से बोलना शुरू किया:—

"क्या यहाँ बहुत ठंड है?"
एम. मैडलीन ने चुप्पी बनाए रखी।
मास्टर स्कॉफ्लेयर ने आगे कहा:—
"क्या बारिश हो सकती है?"
एम. मैडलीन ने अपना सिर उठाया और कहा:—
कल सुबह साढ़े चार बजे टिलबरी और घोड़ा मेरे दरवाजे के सामने होंगे। “बिल्कुल, महाशय मेयर,” स्काउफ्लेयर ने उत्तर दिया; फिर, अपने अंगूठे के नाखून से मेज की लकड़ी पर एक छोटा सा धब्बा खरोंचते हुए, उन्होंने उसी लापरवाह अंदाज में बोलना शुरू किया जिसे फ्लेमिश लोग अपनी चतुराई के साथ बड़ी कुशलता से मिलाना जानते हैं:—
“लेकिन अब मेरे मन में यही बात आ रही है: मेयर साहब ने मुझे यह नहीं बताया कि वे कहाँ जा रहे हैं। मेयर साहब कहाँ जा रहे हैं?”
बातचीत शुरू होने के बाद से वह इसके अलावा किसी और चीज के बारे में नहीं सोच रहा था, लेकिन उसे नहीं पता था कि उसने सवाल पूछने की हिम्मत क्यों नहीं की।
“क्या आपके घोड़े के अगले पैर ठीक हैं?” एम. मेडेलीन ने कहा।
जी हां, महाशय महोदय। ढलान से नीचे जाते समय आपको उसे थोड़ा संभाल कर रखना होगा। क्या यहां से आपके गंतव्य तक कई ढलानें हैं?
“कल सुबह ठीक साढ़े चार बजे मेरे दरवाजे पर आना मत भूलना,” एम. मेडेलीन ने उत्तर दिया; और वह वहां से चले गए।
फ्लेमिंग "पूरी तरह से मूर्ख" ही रहे, जैसा कि उन्होंने खुद कुछ समय बाद कहा था।
मेयर के जाने के दो-तीन मिनट बाद ही दरवाजा दोबारा खुला; एक बार फिर मेयर ही थे।
वह अब भी उसी भावहीन और चिंतित मुद्रा में थे।

“महाशय स्काउफ्लेयर,” उसने कहा, “आप उस घोड़े और जुताई की क्या कीमत आंकते हैं जिसे आप मुझे किराए पर देने वाले हैं—एक दूसरे को ढोने वाला?”

"एक दूसरे को घसीट रहा है, महाशय मेयर," फ्लेमिंग ने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा।

तो ठीक है।

"क्या महाशय इन्हें खरीदना चाहते हैं या मुझे?"

“नहीं; लेकिन मैं फिर भी आपको गारंटी देना चाहता हूँ। मेरे लौटने पर आप मुझे रकम लौटा देंगे। आप अपने घोड़े और कैब्रियोलेट की क्या कीमत आंकते हैं?”

“पांच सौ फ्रैंक, मेयर साहब।”

"यह रहा।"

एम. मेडेलीन ने मेज पर एक बैंक नोट रखा, फिर कमरे से बाहर चली गई; और इस बार वह वापस नहीं लौटी।

मास्टर स्काउफ्लेयर को इस बात का घोर खेद हुआ कि उन्होंने एक हजार फ्रैंक नहीं दिए। इसके अलावा, घोड़े और टिलबरी की कुल कीमत केवल सौ क्राउन थी।

फ्लेमिंग ने अपनी पत्नी को फोन किया और उसे सारी बात बताई। "महामहिम आखिर कहाँ जा रहे हैं?" दोनों ने आपस में सलाह मशवरा किया। पत्नी ने कहा, "वह पेरिस जा रहे हैं।" पति ने कहा, "मुझे विश्वास नहीं हो रहा।"

एम. मैडेलीन आंकड़ों वाला कागज़ भूल गई थीं, और वह चिमनी के ऊपर पड़ा था। फ्लेमिंग ने उसे उठाया और ध्यान से देखा। “पांच, छह, साढ़े आठ? ये तो पोस्टिंग रिले को दर्शाते होंगे।” उन्होंने अपनी पत्नी की ओर मुड़कर कहा:

—

मुझे पता चल गया है।

"क्या?"

"यहाँ से हेस्दिन तक पाँच लीग की दूरी है, हेस्दिन से सेंट-पोल तक छह लीग की दूरी है, और सेंट-पोल से अर्रास तक साढ़े आठ लीग की दूरी है। वह अर्रास जा रहा है।"

इसी बीच, एम. मैडेलीन घर लौट आए थे। उन्होंने मास्टर स्कॉफ्लेयर के घर से लौटने के लिए सबसे लंबा रास्ता चुना, मानो पादरी के घर का दरवाजा उनके लिए एक प्रलोभन रहा हो और वे उससे बचना चाहते हों। वे अपने कमरे में गए और खुद को अंदर बंद कर लिया, जो कि एक बहुत ही सरल कार्य था, क्योंकि उन्हें जल्दी सोना पसंद था। फिर भी, कारखाने की चौकीदार, जो साथ ही एम. मैडेलीन की इकलौती नौकरानी भी थी, ने देखा कि उनके कमरे की बत्ती साढ़े आठ बजे बुझ गई थी, और उसने घर लौटने पर कैशियर को इसके बारे में बताया और आगे कहा:—

“क्या महाशय बीमार हैं? मुझे लगा कि उनका व्यवहार कुछ अजीब सा था।”

यह कैशियर एम. मेडेलीन के कमरे के ठीक नीचे वाले कमरे में रहता था। उसने चौकीदार की बातों पर ध्यान नहीं दिया और सो गया। आधी रात के करीब वह अचानक जाग उठा; नींद में उसने अपने सिर के ऊपर कोई आवाज़ सुनी थी। उसने गौर से सुना; यह किसी के कदमों की आहट थी, मानो कोई उसके ऊपर वाले कमरे में चल रहा हो। उसने और ध्यान से सुना और एम. मेडेलीन के कदमों की आहट पहचान ली। यह उसे अजीब लगा; आमतौर पर एम. मेडेलीन के कमरे में सुबह उठने तक कोई आवाज़ नहीं होती थी। कुछ देर बाद कैशियर ने एक ऐसी आवाज़ सुनी जो किसी अलमारी के खुलने और फिर बंद होने जैसी थी; फिर किसी फर्नीचर के हिलने-डुलने की आवाज़ आई; फिर थोड़ी देर का विराम हुआ; फिर कदमों की आहट दोबारा सुनाई दी। कैशियर बिस्तर पर बैठ गया, अब पूरी तरह जाग चुका था और घूर रहा था; और खिड़की के शीशे से उसने सामने वाली दीवार पर एक रोशन खिड़की की लालिमा देखी; किरणों की दिशा से ऐसा लग रहा था कि वे केवल एम. मेडेलीन के कमरे की खिड़की से ही आ रही थीं। प्रतिबिंब हिल रहा था, मानो किसी जलती हुई आग से आ रहा हो, न कि मोमबत्ती से। खिड़की के फ्रेम की परछाई नहीं दिख रही थी, जिससे पता चलता था कि खिड़की पूरी तरह खुली हुई थी। इतनी ठंड में खिड़की का खुला होना आश्चर्यजनक था। कैशियर फिर से सो गया। एक-दो घंटे बाद वह फिर जागा। वही कदम अब भी धीरे-धीरे और नियमित रूप से ऊपर से आ-जा रहा था।

दीवार पर अब भी परछाई दिख रही थी, लेकिन अब वह धुंधली और शांत थी, जैसे किसी दीपक या मोमबत्ती की परछाई। खिड़की अब भी खुली थी।

एम. मेडेलीन के कमरे में यही सब हुआ था।

III. खोपड़ी में बवाल

पाठक को यह बात पहले ही समझ आ गई होगी कि एम. मेडेलीन कोई और नहीं बल्कि जीन वालजेन हैं।

हम इस अंतरात्मा की गहराइयों में पहले ही झाँक चुके हैं; अब वह क्षण आ गया है जब हमें इस पर एक बार फिर से विचार करना होगा। हम ऐसा भाव और भय से भरे हुए हैं। इस प्रकार के चिंतन से अधिक भयावह अस्तित्व में कुछ भी नहीं है। आत्मा की आँख मनुष्य के अलावा कहीं और इतनी चकाचौंध भरी चमक और इतनी छाया नहीं पा सकती; यह किसी और ऐसी चीज़ पर टिक नहीं सकती जो इतनी दुर्जेय, इतनी जटिल, इतनी रहस्यमय और इतनी अनंत हो। समुद्र से भी भव्य एक दृश्य है; वह स्वर्ग है; स्वर्ग से भी भव्य एक दृश्य है; वह आत्मा की अंतर्मन गहराई है।

यदि मानव अंतरात्मा की कविता केवल एक व्यक्ति के संदर्भ में, या केवल सबसे नीच व्यक्ति के संदर्भ में ही रची जाए, तो यह सभी महाकाव्यों को एक श्रेष्ठ और निर्णायक महाकाव्य में विलीन करने के समान होगा। अंतरात्मा भ्रमों, वासनाओं और प्रलोभनों का अराजक वातावरण है; सपनों की भट्टी है; उन विचारों का अड्डा है जिनसे हम लज्जा करते हैं; यह कुतर्कों का कोलाहल है; यह भावनाओं का युद्धक्षेत्र है। कभी-कभी, चिंतन में लीन मनुष्य के फीके चेहरे से परे जाकर, उस आत्मा में झाँकें, उस अंधकार में देखें। वहाँ, उस बाहरी मौन के नीचे, होमर द्वारा वर्णित दैत्यों के युद्ध चल रहे हैं; मिल्टन की रचनाओं की तरह ड्रैगन, हाइड्रा और प्रेतों के झुंडों की झड़पें; दांते की रचनाओं की तरह काल्पनिक चक्र। यह अनंतता कितनी गंभीर वस्तु है जिसे प्रत्येक मनुष्य अपने भीतर धारण करता है, और जिसे वह अपने मस्तिष्क की सनक और अपने जीवन के कर्मों के विरुद्ध निराशा से मापता है!

एक दिन अलीघिएरी का सामना एक भयावह दिखने वाले दरवाजे से हुआ, जिसके सामने वे हिचकिचाए। हमारे सामने भी ऐसा ही एक दरवाजा है, जिसकी दहलीज पर हम हिचकिचा रहे हैं। फिर भी, चलिए अंदर चलते हैं।

लिटिल गेर्विस के साथ उस घटना के बाद जीन वालजेन के साथ जो कुछ हुआ, उसके बारे में पाठक पहले से ही बहुत कुछ जानते हैं, और इसमें जोड़ने के लिए

हमारे पास बहुत कम है। जैसा कि हम देख चुके हैं, उस क्षण से वह पूरी तरह से एक अलग इंसान बन गया था। बिशप ने उसे जैसा बनाना चाहा था, उसने वैसा ही कर दिखाया। यह मात्र एक परिवर्तन नहीं था; यह एक पूर्ण रूपांतरण था।

वह गायब होने में सफल रहा, बिशप की चांदी बेच दी, केवल मोमबत्ती स्टैंड को स्मृति चिन्ह के रूप में रख लिया, एक शहर से दूसरे शहर छिपकर घूमता रहा, फ्रांस पार किया, म⸺ सुर म⸺ पहुंचा, उसने वह विचार किया जिसका हमने उल्लेख किया है, उसने वह सब किया जो हमने बताया है, खुद को गिरफ्तारी से सुरक्षित और पहुंच से बाहर रखने में सफल रहा, और तब से म⸺ सुर म⸺ में बस गया, अपने अतीत से दुखी अंतरात्मा और अपने जीवन के पहले आधे हिस्से को अंतिम आधे हिस्से द्वारा झुठलाए जाने से प्रसन्न होकर, वह शांति से, आश्वस्त और आशावान होकर रहने लगा, अब से उसके मन में केवल दो ही विचार थे—अपना नाम छुपाना और अपने जीवन को पवित्र करना; मनुष्यों से बचना और ईश्वर की ओर लौटना।

ये दोनों विचार उनके मन में इतने गहरे से जुड़े हुए थे कि मानो एक ही विचार बन गए हों; दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण और अनिवार्य थे और उनके हर छोटे से छोटे कार्य को नियंत्रित करते थे। सामान्यतः, वे उनके जीवन के आचरण को नियंत्रित करने में सहायक थे; वे उन्हें अंधकार की ओर ले जाते थे; वे उन्हें दयालु और सरल बनाते थे; वे उन्हें एक ही बात की सलाह देते थे। हालाँकि, कभी-कभी वे आपस में टकराते भी थे। उस स्थिति में, जैसा कि पाठक को याद होगा, जिस व्यक्ति को पूरे देश में एम. मेडेलीन के नाम से जाना जाता था, उसने पहले विचार को दूसरे के लिए बलिदान करने में संकोच नहीं किया—अपनी सुरक्षा को अपने सद्गुण के लिए। इस प्रकार, अपने सभी संयम और विवेक के बावजूद, उन्होंने बिशप के मोमबत्ती स्टैंड को सुरक्षित रखा, उनके लिए शोक वस्त्र पहने, उस रास्ते से गुजरने वाले सभी छोटे सवॉयर्ड्स को बुलाया और उनसे पूछताछ की, फेवरोल्स में परिवारों के बारे में जानकारी एकत्र की, और जावर्ट के उकसावे भरे संकेतों के बावजूद बूढ़े फाउचेलेवेंट की जान बचाई। जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, ऐसा प्रतीत होता था मानो वह उन सभी बुद्धिमान, पवित्र और न्यायप्रिय लोगों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए यह सोचता था कि उसका पहला कर्तव्य स्वयं के प्रति नहीं था।

साथ ही, यह भी स्वीकार करना होगा कि इस तरह की कोई घटना पहले कभी सामने नहीं आई थी।

जिस दुखी व्यक्ति के कष्टों का हम वर्णन कर रहे हैं, उसके मन में चल रहे दो विचारों के बीच इतना गंभीर संघर्ष पहले कभी नहीं हुआ था। जब जावर्ट उसके अध्ययन कक्ष में दाखिल हुआ और उसने उसके पहले ही शब्द कहे, तो उसे यह बात उलझन में ही सही, लेकिन गहराई से समझ आ गई। जिस क्षण वह नाम, जिसे उसने कई परतों के नीचे दबा रखा था, इतने विचित्र ढंग से बोला गया, वह स्तब्ध रह गया, मानो अपने भाग्य की भयावह विचित्रता से मदहोश हो गया हो; और इस स्तब्धता में उसने वह सिहरन महसूस की जो किसी बड़े झटके से पहले आती है। वह तूफान के आने पर बल्लक के पेड़ की तरह, हमले के आने पर सैनिक की तरह झुक गया। उसे लगा जैसे गरज और बिजली से भरी परछाइयाँ उसके सिर पर उतर रही हैं। जावर्ट की बातें सुनते हुए, उसके मन में पहला विचार आया कि वह जाए, भागे और खुद को दोषी ठहराए, उस शैंपमैथ्यू को जेल से निकालकर खुद वहाँ बिठा दे; यह उतना ही दर्दनाक और मार्मिक था जितना जीवित शरीर पर चीरा लगना। फिर यह विचार चला गया, और उसने मन ही मन कहा, "हम देखेंगे! हम देखेंगे!" उन्होंने अपनी इस पहली, उदार प्रवृत्ति को दबा दिया और वीरता से पीछे हट गए।

बिशप के पवित्र शब्दों के बाद, इतने वर्षों के पश्चाताप और त्याग के बाद, और एक प्रशंसनीय रूप से शुरू हुए पश्चाताप के बीच, यह निःसंदेह सुंदर होता यदि यह व्यक्ति इतने भयानक अनुमान के सामने भी एक पल के लिए भी विचलित न होता, बल्कि उसी गति से उस खाई की ओर बढ़ता रहता, जिसके तल में स्वर्ग स्थित था; यह सचमुच सुंदर होता; लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हमें इस आत्मा में घटी घटनाओं का वर्णन करना होगा, और हम केवल वही बता सकते हैं जो वहाँ था। वह पहले तो आत्मरक्षा की प्रवृत्ति से प्रेरित हुआ; उसने जल्दबाजी में अपने सभी विचारों को समेटा, अपनी भावनाओं को दबाया, जावर्ट की उपस्थिति, उस बड़े खतरे पर विचार किया, भय के बल पर सभी निर्णयों को स्थगित कर दिया, उसे क्या करना है इस बारे में सोचना बंद कर दिया, और एक योद्धा की तरह अपनी ढाल उठाते हुए शांत हो गया।

दिनभर वह इसी अवस्था में रहा, भीतर उथल-पुथल मची हुई थी, लेकिन बाहर गहरी शांति छाई हुई थी। उसने कोई भी "बचाव उपाय" नहीं अपनाया। उसके दिमाग में सब कुछ उलझा हुआ था और उथल-पुथल मची हुई थी। उसकी परेशानी इतनी गहरी थी कि वह

किसी भी विचार को स्पष्ट रूप से समझ नहीं पा रहा था, और अपने बारे में कुछ भी नहीं बता सकता था, सिवाय इसके कि उसे गहरा आघात लगा था।

वह हमेशा की तरह फैंटीन के कष्ट भरे बिस्तर पर गया और दयालुतावश अपना समय बढ़ा दिया। उसने मन ही मन सोचा कि उसे ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए और बहनों के सामने फैंटीन की अच्छी छवि पेश करनी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि उसे खुद अनुपस्थित रहना पड़े। उसे हल्का सा आभास था कि शायद उसे अर्रास जाना पड़े; और इस यात्रा के बारे में ज़रा भी मन न बनाते हुए, उसने मन ही मन कहा कि चूंकि उस पर किसी भी प्रकार का संदेह नहीं है, इसलिए जो कुछ भी होने वाला है उसका साक्षी बनने में कोई बुराई नहीं है। उसने किसी भी स्थिति में तैयार रहने के लिए स्कॉफ्लेयर से टिलबरी (एक प्रकार का कपड़ा) किराए पर ले लिया।

उन्होंने बड़ी भूख से भोजन किया।

अपने कमरे में लौटने पर, उसने स्वयं से विचार-विमर्श किया।

उसने स्थिति का जायजा लिया और पाया कि यह अभूतपूर्व है; इतनी अभूतपूर्व कि अपने चिंतन के बीच ही वह किसी अवर्णनीय चिंता से प्रेरित होकर अपनी कुर्सी से उठा और दरवाजा जोर से बंद कर लिया। उसे डर था कि कहीं कुछ और अंदर न आ जाए। वह संभावनाओं के खिलाफ खुद को एक तरह से बंद कर रहा था।

कुछ देर बाद उसने अपनी रोशनी बुझा दी; इससे उसे शर्मिंदगी हुई।

उसे ऐसा लगा मानो उसे देखा जा सकता है।

किसके द्वारा?

अफसोस! जिस पर वह दरवाजा बंद करना चाहता था, वह पहले ही प्रवेश कर चुका था; जिसे वह अनदेखा करना चाहता था, वह उसके सामने खड़ा था—उसका अंतरात्मा।

उसका अंतरात्मा; यानी ईश्वर।

फिर भी, पहले तो उसने खुद को ही धोखा दिया; उसे सुरक्षा और एकांत का अहसास हुआ; कुंडी लग जाने पर उसने खुद को अजेय समझा; मोमबत्ती बुझ जाने पर उसने खुद को अदृश्य महसूस किया। फिर उसने खुद पर काबू पाया: उसने अपनी कोहनियों को मेज पर टिकाया, अपना सिर हाथ पर रखा और अंधेरे में ध्यान करने लगा।

मैं कहाँ खड़ा हूँ? क्या मैं सपना तो नहीं देख रहा? मैंने क्या सुना? क्या यह सचमुच सच है कि मैंने जावर्ट को देखा और उसने मुझसे उस तरह बात की? वह शैंपमैथ्यू कौन हो सकता है? वह तो बिल्कुल मेरे जैसा दिखता है! क्या यह संभव है? जब मैं सोचता हूँ कि कल मैं कितना शांत था और मुझे ज़रा भी शक नहीं था! कल इस समय मैं क्या कर रहा था? इस घटना में क्या रहस्य छिपा है? इसका अंत क्या होगा? अब क्या करना चाहिए?

वह इसी पीड़ा में फंसा हुआ था। उसके मस्तिष्क की विचारों को धारण करने की शक्ति समाप्त हो गई थी; विचार लहरों की तरह गुजरते थे, और उन्हें रोकने के लिए वह अपने माथे को दोनों हाथों से पकड़ लेता था।

इस उथल-पुथल से, जिसने उसकी इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति को अभिभूत कर दिया था, और जिससे वह प्रमाण और समाधान प्राप्त करने की कोशिश कर रहा था, केवल पीड़ा ही उभर कर सामने आई।

उसका सिर जल रहा था। वह खिड़की के पास गया और उसे पूरी तरह खोल दिया। आसमान में तारे नहीं थे। वह वापस आया और मेज पर बैठ गया।

पहला घंटा इसी तरह बीत गया।

धीरे-धीरे, धुंधली रूपरेखाएँ आकार लेने लगीं और उनके ध्यान में स्थिर होने लगीं, और वे वास्तविकता की सटीक झलक पाने में सक्षम हो गए—पूरी स्थिति नहीं, बल्कि कुछ विवरण। उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार करते हुए शुरुआत की कि यह स्थिति कितनी भी गंभीर और असाधारण क्यों न हो, वे इस पर पूर्णतः नियंत्रण रखते हैं।

इससे उसकी बेहोशी और भी बढ़ गई।

अपने कार्यों के लिए उसने जो कठोर और धार्मिक उद्देश्य निर्धारित किया था, उससे परे, उस दिन तक उसने जो कुछ भी किया था, वह केवल अपने नाम को दफनाने का एक गड्ढा मात्र था। आत्मचिंतन के क्षणों में, अपनी रातों की नींद हराम करते हुए, उसे सबसे अधिक डर इस बात का था कि कहीं वह नाम कभी उच्चारित न हो जाए; उसने मन ही मन कहा था कि यह उसके लिए सब कुछ का अंत होगा; कि जिस दिन वह नाम फिर से प्रकट होगा, वह उसके नए जीवन को उससे छीन लेगा, और—कौन जानता है?—शायद उसके भीतर की नई आत्मा को भी। इस संभावना के मात्र विचार से ही वह कांप उठता था। निःसंदेह, यदि ऐसे क्षणों में किसी ने उससे कहा होता कि

वह घड़ी आएगी जब वह नाम उसके कानों में गूंजेगा, जब भयानक शब्द, जीन वालजेन, अचानक अंधेरे से निकलकर उसके सामने प्रकट होंगे, जब वह प्रचंड प्रकाश, जो उस रहस्य को दूर करने में सक्षम है जिसमें उसने खुद को लपेट रखा था, अचानक उसके सिर के ऊपर प्रज्वलित होगा, और वह नाम उसे डराएगा नहीं, बल्कि वह प्रकाश और भी घना अंधकार उत्पन्न करेगा, यह फटा हुआ पर्दा रहस्य को और बढ़ाएगा, यह भूकंप उसकी इमारत को और मजबूत करेगा, और इस असाधारण घटना का, जहाँ तक उसका संबंध है, यदि उसे ऐसा उचित लगे, तो उसके अस्तित्व को और अधिक स्पष्ट और अभेद्य बनाने के अलावा कोई अन्य परिणाम नहीं होगा, और जीन वालजेन के प्रेत से उसके टकराव से, भले और सम्मानित नागरिक श्री मेडेलीन पहले से कहीं अधिक सम्मानित, शांत और आदरणीय बनकर उभरेंगे—यदि किसी ने उससे यह कहा होता, तो वह अपना सिर हिलाकर उन शब्दों को व्यर्थ ही समझ लेता। एक पागल आदमी की। खैर, यह सब ठीक वही था जो अभी-अभी हुआ था; असंभवताओं का वह सारा संग्रह एक वास्तविकता बन गया था, और ईश्वर ने इन बेतुकी कल्पनाओं को वास्तविक रूप लेने की अनुमति दी थी!

उनकी सोच धीरे-धीरे स्पष्ट होती गई। उन्हें अपनी स्थिति की बेहतर समझ आने लगी।

उसे ऐसा लगा मानो वह किसी अवर्णनीय सपने से अभी-अभी जागा हो, और खुद को आधी रात में एक ढलान पर फिसलते हुए पा रहा हो, सीधा खड़ा, कांपता हुआ, व्यर्थ ही अपनी सारी शक्ति को रोके हुए, खाई के बिल्कुल किनारे पर। उसने अंधेरे में एक अजनबी को स्पष्ट रूप से देखा, एक ऐसा आदमी जिसे वह नहीं जानता था, जिसे भाग्य ने गलती से उसके स्थान पर खाई में धकेल दिया था; ताकि खाई फिर से भर जाए, यह आवश्यक था कि कोई, या तो वह खुद या वह दूसरा आदमी, उसमें गिर जाए: उसने तो बस घटनाओं को अपने आप होने दिया था।

उजाला पूरी तरह से खुल गया, और उसने मन ही मन यह स्वीकार किया: कि गैली में उसकी जगह खाली थी; कि चाहे वह कुछ भी कर ले, वह जगह अभी भी उसका इंतज़ार कर रही थी; कि छोटे गेर्विस से हुई चोरी ने उसे वापस उसी जगह पर ला खड़ा किया था; कि यह खाली जगह उसका इंतज़ार करेगी और उसे तब तक खींचती रहेगी जब तक वह इसे भर न दे; कि यह अपरिहार्य और घातक था; और फिर उसने मन ही मन कहा, "कि इस समय उसके पास एक विकल्प है; कि ऐसा प्रतीत होता है कि किसी शैंपमैथ्यू के साथ यह दुर्भाग्य हुआ है, और जहाँ तक स्वयं का सवाल है, उस शैंपमैथ्यू के

रूप में गैली में उपस्थित होने के कारण, जो समाज में एम. मेडेलीन के नाम से जाना जाता है, उसे अब और किसी बात का डर नहीं है, बशर्ते कि वह लोगों को उस शैंपमैथ्यू के सिर पर बदनामी का यह पत्थर लगाने से न रोके, जो कब्र के पत्थर की तरह एक बार गिरता है, फिर कभी नहीं उठता।"

यह सब इतना विचित्र और इतना हिंसक था कि अचानक उसके भीतर एक ऐसी अवर्णनीय हलचल उत्पन्न हुई, जिसे कोई भी व्यक्ति अपने जीवनकाल में दो या तीन बार से अधिक अनुभव नहीं करता, एक प्रकार की अंतरात्मा की उथल-पुथल जो हृदय में मौजूद सभी शंकाओं को जगा देती है, जो व्यंग्य, आनंद और निराशा से बनी होती है, और जिसे आंतरिक हंसी का विस्फोट कहा जा सकता है।

उसने जल्दी से अपनी मोमबत्ती फिर से जला ली।

“तो फिर क्या?” उसने मन ही मन कहा; मैं किस बात से डर रहा हूँ? इन सब में मेरे सोचने लायक क्या है? मैं सुरक्षित हूँ; सब कुछ खत्म हो गया है। मेरे पास बस एक ही खुला दरवाज़ा था जिससे मेरा अतीत मेरे जीवन में दखल दे सकता था, और देखो, वह दरवाज़ा हमेशा के लिए बंद हो गया है! वह जावर्ट, जो मुझे इतने लंबे समय से परेशान कर रहा था; वह भयानक अंतर्ज्ञान जिसने मुझे जान लिया था—हे भगवान! और जो हर जगह मेरा पीछा करता था; वह डरावना शिकारी कुत्ता, जो हमेशा मेरी ओर इशारा करता था, अब मेरी गंध से भटक गया है, कहीं और व्यस्त है, पूरी तरह से मेरे रास्ते से हट गया है: अब से वह संतुष्ट है; वह मुझे शांति से रहने देगा; उसे अपना जीन वालजेन मिल गया है। कौन जानता है? यह भी संभव है कि वह शहर छोड़ना चाहे! और यह सब मेरी किसी भी मदद के बिना हुआ है, और इसमें मेरी कोई भूमिका नहीं है! आह! लेकिन इसमें दुर्भाग्य क्या है? कसम से, लोग मुझे देखकर सोचेंगे कि मुझ पर कोई विपत्ति आ पड़ी है! आखिरकार, अगर इससे किसी को नुकसान होता है, तो इसमें मेरी कोई गलती नहीं है: यह ईश्वर की मर्ज़ी है। सब कुछ; जाहिर है, ऐसा इसलिए है क्योंकि ईश्वर ऐसा चाहता है। क्या मुझे उस व्यवस्था को बिगाड़ने का अधिकार है जो उसने बनाई है? अब मैं क्या पूछूँ? मुझे दखल क्यों देना चाहिए? इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है; क्या! मैं संतुष्ट नहीं हूँ: लेकिन मुझे और क्या चाहिए? जिस लक्ष्य के लिए मैंने इतने वर्षों तक प्रयास किया, जो मेरी रातों का सपना था, स्वर्ग से मेरी प्रार्थनाओं का उद्देश्य—सुरक्षा—अब मुझे मिल गई है; यह ईश्वर की इच्छा है; मैं ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं कर

सकता, और ईश्वर ऐसा क्यों चाहता है? ताकि मैं अपने आरंभ को जारी रख सकूँ, ताकि मैं भलाई कर सकूँ, ताकि मैं एक दिन एक महान और प्रेरणादायक उदाहरण बन सकूँ, ताकि अंत में यह कहा जा सके कि मेरे द्वारा किए गए तपस्या और उस सद्गुण से थोड़ी सी खुशी जुड़ी हुई है जिसकी ओर मैं लौटा हूँ। वास्तव में, मुझे समझ नहीं आता कि कुछ समय पहले मैं उस भले पादरी के घर में प्रवेश करने और उससे सलाह लेने से क्यों डर रहा था; जाहिर है, वह मुझसे यही कहता: यह तय हो चुका है; जो होना है होने दो। उनका रास्ता तय हो; ईश्वर को जो पसंद हो वही करने दो!

इस प्रकार उसने अपने अंतरात्मा की गहराइयों में उतरकर, अपने ही गहरे अंधकार में डूबते हुए, अपनी कुर्सी से उठकर कमरे में चहलकदमी करने लगा: “चलो,” उसने कहा, “अब इसके बारे में और न सोचें; मैंने अपना संकल्प ले लिया है!” लेकिन उसे कोई खुशी महसूस नहीं हुई।

बिलकुल इसके विपरीत।

जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी विचार को बार-बार आने से नहीं रोक सकता, उसी प्रकार वह समुद्र को किनारे पर लौटने से भी नहीं रोक सकता: नाविक इसे ज्वार कहता है; दोषी व्यक्ति इसे पश्चाताप कहता है; ईश्वर आत्मा को उसी प्रकार उथल-पुथल करता है जैसे वह सागर को करता है।

कुछ क्षणों के बीतने के बाद, चाहे जो भी हो, उसने उस निराशाजनक संवाद को फिर से शुरू कर दिया जिसमें वह बोलता भी था और सुनता भी था, वह ऐसी बातें कहता था जिन्हें वह अनदेखा करना चाहता था, और ऐसी बातें सुनता था जिन्हें वह सुनना नहीं चाहता था, उस रहस्यमय शक्ति के आगे झुकते हुए जिसने उससे कहा: "सोचो!" ठीक वैसे ही जैसे उसने दो हज़ार साल पहले एक और दोषी व्यक्ति से कहा था, "आगे बढ़ो!"

आगे बढ़ने से पहले, और अपनी बात को पूरी तरह से समझाने के लिए, आइए एक आवश्यक बात पर जोर दें।

यह निश्चित है कि लोग आपस में बातें करते हैं; ऐसा कोई प्राणी नहीं है जिसने ऐसा न किया हो। यहाँ तक कि यह भी कहा जा सकता है कि शब्द का रहस्य तब और भी अद्भुत हो जाता है जब वह मनुष्य के भीतर विचार से अंतरात्मा तक जाता है और फिर अंतरात्मा से विचार में लौटता है; इस अध्याय में बार-बार

प्रयुक्त शब्द, 'उसने कहा', 'उसने विस्मयबोध', को इसी अर्थ में समझा जाना चाहिए; व्यक्ति स्वयं से बातें करता है, स्वयं से चर्चा करता है, स्वयं से विस्मयबोध करता है, बाहरी मौन को भंग किए बिना; एक बड़ा कोलाहल होता है; हमारे चारों ओर सब कुछ बोलता है सिवाय मुख के। आत्मा की वास्तविकताएँ फिर भी वास्तविकताएँ हैं क्योंकि वे दृश्य और स्पर्शनीय नहीं हैं।

इसलिए उसने स्वयं से पूछा कि उसका रुख क्या है। उसने अपने उस "दृढ़ संकल्प" पर स्वयं से प्रश्न किए। उसने स्वयं से स्वीकार किया कि उसने अपने मन में जो कुछ भी तय किया था वह भयानक था, कि "चीजों को अपने आप होने देना, ईश्वर को अपनी मर्जी से करने देना" सरासर घृणित था; भाग्य और मनुष्यों की इस गलती को होने देना, इसे रोकना नहीं, अपनी चुप्पी से इसमें सहयोग करना, कुछ न करना, संक्षेप में, सब कुछ करना था! कि यह पाखंड की पराकाष्ठा थी! कि यह एक नीच, कायरतापूर्ण, छलपूर्ण, घृणित, भयानक अपराध था!

आठ वर्षों में पहली बार, उस अभागे व्यक्ति ने एक बुरे विचार और एक बुरे कर्म के कड़वे स्वाद का अनुभव किया था।

उसने घृणा से उसे थूक दिया।

वह खुद से सवाल करता रहा। उसने खुद से गंभीरता से पूछा कि "मेरा उद्देश्य पूरा हो गया!" कहकर उसका क्या मतलब था? उसने खुद से कहा कि उसकी ज़िंदगी का वाकई एक उद्देश्य था; लेकिन क्या उद्देश्य? अपना नाम छुपाना? पुलिस को धोखा देना? क्या उसने जो कुछ भी किया, वह इतनी छोटी सी बात के लिए था? क्या उसका कोई दूसरा और बड़ा उद्देश्य नहीं था, जो सच्चा उद्देश्य था—अपनी जान नहीं, बल्कि अपनी आत्मा को बचाना; फिर से ईमानदार और अच्छा बनना; एक न्यायप्रिय इंसान बनना? क्या यही सबसे बढ़कर, एकमात्र उद्देश्य नहीं था, जिसकी उसने हमेशा इच्छा की थी, जिसके लिए बिशप ने उसे आदेश दिया था—अपने अतीत के दरवाज़े बंद कर देना? लेकिन वह उसे बंद नहीं कर रहा था! हे भगवान! वह एक घिनौना काम करके उसे फिर से खोल रहा था! वह फिर से चोर बन रहा था, और सबसे घिनौना चोर! वह दूसरे से उसका अस्तित्व, उसका जीवन, उसकी शांति, उसकी खुशहाली छीन रहा था। वह हत्यारा बन रहा था। वह एक दुखी इंसान की हत्या कर रहा था, नैतिक रूप से हत्या कर रहा था। वह उसे उस भयानक जीवित मृत्यु, खुले आकाश के नीचे होने वाली उस मृत्यु को दे रहा था, जिसे गैली कहा जाता है। दूसरी ओर, उस व्यक्ति को बचाने के लिए स्वयं को समर्पित करना, जो इतनी दुखद

गलती से त्रस्त हो गया था, अपना नाम पुनः प्राप्त करना, कर्तव्यवश एक बार फिर कैदी जीन वालजेन बनना, वास्तव में उसका पुनरुत्थान था, और उस नरक को हमेशा के लिए बंद करना था जहाँ से वह अभी-अभी निकला था; दिखावे के लिए वहाँ वापस जाना वास्तव में उससे मुक्ति पाना था। यह करना ही होगा! यदि वह यह सब नहीं करता तो उसने कुछ नहीं किया होता; उसका पूरा जीवन व्यर्थ था; उसका सारा पश्चाताप व्यर्थ था। अब यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं थी, "क्या लाभ?" उसे महसूस हुआ कि बिशप वहाँ है, कि बिशप की उपस्थिति उसके मृत होने के कारण और भी अधिक थी, कि बिशप उसे टकटकी लगाए देख रहा था, कि अब से मेयर मेडेलीन, अपने सभी गुणों के साथ, उसके लिए घृणित होगा, और कैदी जीन वालजेन उसकी दृष्टि में पवित्र और प्रशंसनीय होगा; लोगों ने उसका मुखौटा देखा, लेकिन बिशप ने उसका चेहरा देखा; लोगों ने उसका जीवन देखा, लेकिन बिशप ने उसकी अंतरात्मा को देखा। इसलिए उसे अर्रास जाना पड़ा, झूठे जीन वालजेन को सौंपना पड़ा और असली को बेनकाब करना पड़ा। अफसोस! यह सबसे बड़ा बलिदान था, सबसे मार्मिक विजय थी, उठाया जाने वाला अंतिम कदम था; लेकिन यह करना ही था। दुखद नियति! वह ईश्वर की दृष्टि में तभी पवित्रता प्राप्त करेगा जब वह मनुष्यों की दृष्टि में फिर से बदनाम हो जाएगा।

“ठीक है,” उसने कहा, “चलिए इस पर फैसला करते हैं; चलिए अपना कर्तव्य निभाते हैं; चलिए इस आदमी को बचाते हैं।” उसने ये शब्द ज़ोर से कहे, बिना यह महसूस किए कि वह ज़ोर से बोल रहा है।

उसने अपनी किताबें निकालीं, उनकी जाँच की और उन्हें क्रम में लगाया। उसने छोटे-मोटे और परेशान व्यापारियों के बिलों का एक बंडल आग में फेंक दिया। उसने एक पत्र लिखा और उसे सील कर दिया, और लिफाफे पर वह पत्र पढ़ा जा सकता था, अगर उस समय उसके कमरे में कोई होता।

महाशय लाफिटे, बैंकर,
रुए डी'आर्टोइस, पेरिस।

उन्होंने अपने सचिव से एक पर्स निकाला जिसमें कई नोट और पासपोर्ट थे, जिनका उपयोग उन्होंने उसी वर्ष चुनाव में भाग लेने के दौरान किया था।

इन विभिन्न कार्यों को अंजाम देते समय, जिनमें वह इतने गंभीर चिंतन में डूबा रहता था, उसे देखने वाले किसी भी व्यक्ति को उसके भीतर चल रही बातों

का जरा भी अंदाजा नहीं होता। कभी-कभार ही उसके होंठ हिलते थे; कभी-कभी वह अपना सिर उठाकर दीवार के किसी बिंदु पर टकटकी लगा लेता था, मानो उस बिंदु पर कुछ ऐसा हो जिसे वह स्पष्ट करना या जिसके बारे में वह पूछताछ करना चाहता हो।

एम. लाफिट को पत्र लिखने के बाद, उन्होंने उसे अपने पर्स के साथ अपनी जेब में रख लिया और फिर से चलना शुरू कर दिया।

उनकी तल्लीनता अपने मार्ग से नहीं भटकी थी। उन्हें अपना कर्तव्य स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, चमकीले अक्षरों में लिखा हुआ, जो उनकी आँखों के सामने चमक रहा था और जैसे ही वे अपनी दृष्टि की दिशा बदलते, उसका स्थान भी बदल जाता था:

“जाओ! अपना नाम बताओ! खुद को दोषी ठहराओ!”

इसी प्रकार, मानो वे दृश्य रूप में उसके सामने प्रकट हुए हों, उन दो विचारों को, जो उस समय तक उसकी आत्मा के दोहरे नियम का निर्माण करते रहे थे — अपने नाम का छिपाव और अपने जीवन का पवित्रीकरण। पहली बार वे उसे पूर्णतः भिन्न दिखाई दिए, और उसने उनके बीच की दूरी को महसूस किया। उसने इस तथ्य को पहचाना कि इनमें से एक विचार अनिवार्य रूप से अच्छा था, जबकि दूसरा बुरा हो सकता था; कि पहला आत्म-समर्पण था, और दूसरा व्यक्तित्व; कि एक ने कहा, "मेरा पड़ोसी," और दूसरे ने कहा, "मैं स्वयं;" कि एक प्रकाश से उत्पन्न हुआ, और दूसरा अंधकार से।

वे परस्पर विरोधी थे। उसने उन्हें संघर्ष करते देखा। जैसे-जैसे वह ध्यान लगाता गया, वे उसकी आत्मा के समक्ष विशाल होते गए। अब वे विकराल रूप धारण कर चुके थे, और उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपने भीतर, उस अनंतता में, जिसके बारे में हम अभी बात कर रहे थे, अंधकार और प्रकाश के बीच, एक देवी और एक दानव को संघर्ष करते हुए देख रहा है।

वह भयभीत था; लेकिन उसे ऐसा लग रहा था कि अच्छा विचार उस पर हावी हो रहा है।

उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि वे अपने अंतरात्मा और भाग्य के दूसरे निर्णायक संकट के कगार पर हैं; कि बिशप ने उनके नए जीवन के पहले चरण को चिह्नित किया था, और शैंपमैथ्यू ने दूसरे चरण को। महान संकट के बाद, महान परीक्षा।

लेकिन बुखार, जो एक पल के लिए शांत हुआ था, धीरे-धीरे फिर से उस पर हावी हो गया। उसके मन में हजारों विचार उमड़ रहे थे, लेकिन वे उसके संकल्प को और मजबूत करते रहे।

एक पल के लिए उसने खुद से कहा कि शायद वह इस मामले को कुछ ज्यादा ही गंभीरता से ले रहा है; कि आखिरकार, यह शैंपमैथ्यू दिलचस्प नहीं था, और वास्तव में वह चोरी का दोषी था।

उसने खुद से कहा: “अगर इस आदमी ने सचमुच कुछ सेब चुराए हैं, तो इसका मतलब है एक महीने की जेल। जेल से लेकर जलप्रपात तक का सफर बहुत लंबा है। और कौन जानता है? क्या उसने चोरी की भी? क्या यह साबित हुआ है? जीन वालजेन का नाम उसे अभिभूत कर देता है, और ऐसा लगता है जैसे सबूतों की ज़रूरत ही नहीं है। क्या राजशाही के वकील हमेशा इसी तरह से काम नहीं करते? उसे चोर इसलिए माना जाता है क्योंकि वह एक अपराधी के रूप में जाना जाता है।”

अगले ही पल उसके मन में यह विचार आया कि जब वह खुद को पुलिस के हवाले कर देगा, तो शायद उसके इस कृत्य की वीरता, पिछले सात वर्षों का उसका ईमानदार जीवन और उसने जिले के लिए जो कुछ किया है, उन सब बातों को ध्यान में रखा जाएगा और लोग उस पर दया दिखाएंगे।

लेकिन यह धारणा बहुत जल्दी ही गायब हो गई, और वह कड़वी मुस्कान के साथ मुस्कुराया जब उसे याद आया कि छोटे गेर्विस से चालीस सू चुराने के कारण वह एक ऐसे व्यक्ति की स्थिति में आ गया था जो पहले ही दोषी ठहराया जा चुका था और जिसने दूसरी बार अपराध किया था, कि यह मामला निश्चित रूप से सामने आएगा, और कानून के सटीक प्रावधानों के अनुसार, उसे आजीवन कारावास की सजा हो सकती है।

उसने सभी भ्रमों से मुंह मोड़ लिया, पृथ्वी से और अधिक विमुख हो गया, और कहीं और शक्ति और सांत्वना की तलाश करने लगा। उसने स्वयं से कहा कि उसे अपना कर्तव्य निभाना ही चाहिए; कि शायद कर्तव्य निभाने के बाद वह उससे अधिक दुखी न हो जितना कि उससे बचने के बाद होता; कि यदि वह "चीजों को अपने हाल पर छोड़ दे", यदि वह म⸺ सुर म⸺ में ही रहे, तो उसकी प्रतिष्ठा, उसका नाम, उसके अच्छे कर्म, उसके प्रति आदर और श्रद्धा, उसका दान, उसका धन, उसकी लोकप्रियता, उसका सद्गुण, एक अपराध से ग्रसित हो जाएंगे। और इन सभी पवित्र

चीजों का स्वाद कैसा होगा जब वे इस घृणित चीज़ से जुड़ जाएंगी? जबकि, यदि वह अपना बलिदान पूरा कर ले, तो एक दिव्य विचार जहाजों, डाक, लोहे के हार, हरी टोपी, निरंतर परिश्रम और निर्मम अपमान के साथ मिल जाएगा।

अंततः उसने स्वयं से कहा कि ऐसा ही होना चाहिए, कि उसका भाग्य इसी प्रकार निर्धारित था, कि उसे ऊपर से किए गए प्रबंधों को बदलने का कोई अधिकार नहीं था, कि किसी भी स्थिति में उसे अपना चुनाव करना ही होगा: बाहरी सद्गुण और आंतरिक घृणा, या आंतरिक पवित्रता और बाहरी बदनामी।

इन निराशाजनक विचारों के उभरने से उसका साहस तो नहीं टूटा, लेकिन उसका दिमाग थक गया। वह अनजाने में ही दूसरी बातों, महत्वहीन विषयों के बारे में सोचने लगा।

उसकी कनपटी की नसें तेज़ी से फड़क रही थीं; वह अब भी इधर-उधर टहल रहा था; आधी रात की आहट पहले चर्च से, फिर टाउन हॉल से सुनाई दी; उसने दोनों घड़ियों की बारह घंटियों की गिनती की और उनकी आवाज़ों की तुलना की; इस संदर्भ में उसे याद आया कि कुछ दिन पहले उसने एक लोहे की दुकान में एक प्राचीन घड़ी देखी थी, जिस पर एंटोइन-अल्बिन डी रोमेनविले का नाम लिखा हुआ था।

उसे ठंड लग रही थी; उसने एक छोटी सी आग जलाई; उसे खिड़की बंद करने का ख्याल ही नहीं आया।

इसी बीच वह फिर से बेहोशी की हालत में चला गया; आधी रात होने से पहले उसके मन में जो विचार चल रहे थे, उन्हें याद करने के लिए उसे काफी जोर लगाना पड़ा; आखिरकार वह इसमें सफल हो गया।

“अरे हाँ,” उसने मन ही मन कहा, “मैंने खुद के खिलाफ मुखबिरी करने का फैसला कर लिया था।”

और फिर अचानक ही उसे फैंटाइन की याद आ गई।

“रुको!” उसने कहा, “और उस बेचारी औरत का क्या होगा?”

यहां एक नए संकट ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

फैंटाइन के अचानक उसकी तल्लीनता में प्रकट होने से ऐसा लगा मानो प्रकाश की एक अप्रत्याशित किरण आ गई हो; उसे ऐसा लगा मानो उसके चारों ओर सब कुछ बदल रहा हो: उसने कहा:—

आह! मैंने अब तक केवल अपने बारे में ही सोचा है; मेरे लिए चुप रहना या खुद को दोषी ठहराना, खुद को छुपाना या अपनी आत्मा को बचाना, एक नीच और सम्मानित मजिस्ट्रेट होना या एक कुख्यात और पूजनीय अपराधी होना उचित है; यह मैं ही हूँ, हमेशा मैं ही हूँ और मेरे सिवा कुछ नहीं: लेकिन, हे भगवान! यह सब अहंकार है; ये अहंकार के विभिन्न रूप हैं, लेकिन यह अहंकार ही है। अगर मैं दूसरों के बारे में थोड़ा सोचूँ तो क्या होगा? दूसरों के बारे में सोचना ही परम पवित्रता है; आइए, इस मामले की जाँच करें। 'मैं' को छोड़कर, 'मैं' को मिटाकर, 'मैं' को भुलाकर, इन सबका क्या परिणाम होगा? अगर मैं खुद को दोषी ठहरा दूँ तो क्या होगा? मुझे गिरफ्तार कर लिया जाता है; यह शैंपमैथ्यू रिहा हो जाता है; मुझे वापस जेल में डाल दिया जाता है; यह तो ठीक है—और फिर क्या? यहाँ क्या हो रहा है? आह! यहाँ एक देश है, एक शहर है, यहाँ कारखाने हैं, एक उद्योग है, मजदूर हैं, पुरुष और महिलाएँ, बूढ़े दादा, बच्चे, गरीब लोग! यह सब मैं मैंने ही सृष्टि की है; मैं ही इन सबको जीवनयापन का साधन देता हूँ; जहाँ कहीं भी धुआँ उगलती चिमनी है, वहाँ चूल्हे पर मैंने ही निशान लगाया है और बर्तन में मांस पकाया है; मैंने ही सुख, प्रवाह और साख का सृजन किया है; मुझसे पहले कुछ भी नहीं था; मैंने ही पूरे ग्रामीण क्षेत्र को उन्नत, जीवंत, जीवन से परिपूर्ण, उपजाऊ, प्रेरित और समृद्ध किया है; मेरे बिना आत्मा अधूरी है; मेरे चले जाने से सब कुछ मर जाता है: और यह स्त्री, जिसने इतना कष्ट सहा है, जो अपने पतन के बावजूद इतने गुणों से परिपूर्ण है; अनजाने में मैं ही उसके सारे दुखों का कारण बना हूँ! और वह बच्चा जिसकी खोज में मैं गया था, जिसे मैंने उसकी माँ को सौंपने का वादा किया था; क्या मैं इस स्त्री का भी कुछ ऋणी नहीं हूँ, उस बुराई के प्रायश्चित के रूप में जो मैंने उसके साथ की है? यदि मैं गायब हो जाऊँ, तो क्या होगा? माँ मर जाएगी; बच्चा जो बन सकता है, बन जाएगा; यही होगा, यदि मैं स्वयं को त्याग दूँ। यदि मैं स्वयं को त्याग न दूँ? तो आइए देखें कि क्या होगा यदि मैं स्वयं को त्याग न दूँ।

स्वयं से यह प्रश्न पूछने के बाद, वह कुछ देर रुका; ऐसा लगा जैसे उसे क्षण भर के लिए झिझक और घबराहट हुई हो; लेकिन यह क्षणिक था, और उसने शांत भाव से स्वयं को उत्तर दिया:

“खैर, यह आदमी तो जहाज़ पर चढ़ने वाला है; यह सच है, लेकिन ये क्या! इसने चोरी की है! मेरे ये कहने का कोई फ़ायदा नहीं कि इसने चोरी नहीं की है, क्योंकि इसने की है! मैं यहीं रहता हूँ; मैं आगे बढ़ता हूँ: दस साल में मैं दस मिलियन कमा लूँगा; मैं उन्हें पूरे देश में बाँट दूँगा; मेरे पास अपना कुछ नहीं है; इससे मुझे क्या फ़र्क पड़ता है? मैं ये सब अपने लिए नहीं कर रहा हूँ; सबकी समृद्धि बढ़ती जा रही है; उद्योग जागृत और सक्रिय हो रहे हैं; कारखाने और दुकानें बढ़ रही हैं; परिवार, सौ परिवार, हज़ार परिवार, खुशहाल हैं; ज़िला आबाद हो रहा है; जहाँ पहले सिर्फ़ खेत थे, वहाँ गाँव बस रहे हैं; जहाँ कुछ नहीं था, वहाँ खेत उग रहे हैं; गरीबी गायब हो रही है, और गरीबी के साथ-साथ व्यभिचार, वेश्यावृत्ति, चोरी, हत्या; सभी बुराइयाँ गायब हो रही हैं, सभी अपराध: और ये गरीब माँ अपने बच्चे का पालन-पोषण कर रही है; और देखो, पूरा देश समृद्ध और ईमानदार है! आह! मैं मूर्ख था! मैं बेवकूफ़ था! मैं खुद को दोषी ठहराने के बारे में क्या कह रहा था? मुझे सच में ध्यान देना चाहिए और ऐसा नहीं करना चाहिए किसी भी बात पर जल्दबाजी करना। क्या! क्योंकि मुझे उदार और उदार बनने में खुशी होती; आखिर यह एक मेलोड्रामा है; क्योंकि मैंने अपने अलावा किसी और के बारे में नहीं सोचा था, यह विचार! किसी को सजा से बचाने के लिए, शायद थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया है, लेकिन असल में, कोई नहीं जानता कि किसे, एक चोर को, एक निकम्मे को, जाहिर है, पूरे इलाके को नष्ट होना पड़ेगा! एक गरीब औरत को अस्पताल में मरना पड़ेगा! एक बेचारी छोटी बच्ची को सड़क पर मरना पड़ेगा! कुत्तों की तरह; आह, यह घिनौना है! और माँ को अपने बच्चे को एक बार फिर देखने का मौका भी नहीं मिला, लगभग बच्चे को अपनी माँ को जानने का मौका भी नहीं मिला; और यह सब एक बूढ़े सेब चोर के लिए, जो निश्चित रूप से किसी और अपराध के लिए जेल जाने का हकदार था, अगर इसके लिए नहीं तो; वाकई, ये बड़े ही अच्छे विवेक हैं जो एक दोषी को बचाते हैं और निर्दोष की बलि देते हैं, जो एक बूढ़े आवारा को बचाते हैं जिसके पास जीने के लिए बस कुछ ही साल बचे हैं, और जो जेल में अपने जीवन से ज्यादा दुखी नहीं होगा। झोपड़ी, और जिसने पूरी आबादी, माताओं, पत्नियों,

बच्चों की बलि चढ़ा दी। यह बेचारी छोटी कोसेट, जिसका दुनिया में मेरे सिवा कोई नहीं है, और जो निस्संदेह इस समय उन थेनार्डियरों के अड्डे में ठंड से बेहाल है; वे लोग बदमाश हैं; और मैं इन सभी बेसहारा प्राणियों के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा करने जा रहा था; और मैं खुद को दोषी ठहराने जा रहा था; और मैं वह अकल्पनीय मूर्खता करने वाला था! चलिए इसे सबसे बुरे रूप में देखें: मान लीजिए कि इसमें मेरी ओर से कोई गलत काम हुआ है, और मेरा अंतरात्मा मुझे किसी दिन इसके लिए धिक्कारेगा, दूसरों की भलाई के लिए उन निंदाओं को सहने के लिए जो केवल मुझ पर बोझ हैं; यह बुरा काम जो केवल मेरी आत्मा को चोट पहुँचाता है; इसमें आत्म-बलिदान निहित है; केवल इसी में सद्गुण है।

वह उठा और फिर से चलने लगा; इस बार वह संतुष्ट प्रतीत हो रहा था।

हीरे केवल पृथ्वी के अंधकारमय स्थानों में पाए जाते हैं; सत्य केवल विचारों की गहराइयों में मिलते हैं। उसे ऐसा लगा कि इन गहराइयों में उतरकर, इन घोर अंधकार में लंबे समय तक भटकने के बाद, अंततः उसे इन हीरों में से एक, इन सत्यों में से एक मिल गया है, और अब वह उसे अपने हाथ में थामे हुए था, और उसे निहारते हुए वह चकित था।

“हाँ,” उसने सोचा, “यह सही है; मैं सही रास्ते पर हूँ; मुझे समाधान मिल गया है; मुझे अंत में किसी चीज़ को दृढ़ता से पकड़ना होगा; मैंने अपना संकल्प पक्का कर लिया है; अब जो होना है होने दो; अब हमें हिचकिचाना नहीं चाहिए; अब हमें पीछे नहीं हटना चाहिए; यह सबके हित में है, मेरे अपने हित में नहीं; मैं मेडेलीन हूँ, और मेडेलीन ही रहूँगी। उस आदमी का बुरा हो जो जीन वालजेन है! मैं अब वह नहीं हूँ; मैं उस आदमी को नहीं जानती; मैं अब कुछ भी नहीं जानती; पता चला है कि इस समय कोई और जीन वालजेन है; उसे अपना ख्याल खुद रखना चाहिए; इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है; यह एक घातक नाम है जो रात के अंधेरे में मंडरा रहा था; अगर यह रुककर किसी के सिर पर आ गिरे, तो उस सिर के लिए और भी बुरा होगा।”

उसने अपनी चिमनी के ऊपर लटके छोटे से दर्पण में देखा और कहा:—

“रुको! निर्णय लेने से मुझे राहत मिली है; अब मैं बिल्कुल अलग इंसान हूं।”

वह कुछ कदम और आगे बढ़ा, फिर अचानक रुक गया।

“आओ!” उसने कहा, “मैंने जो संकल्प लिया है, उसके किसी भी परिणाम से मुझे पीछे नहीं हटना चाहिए; जीन वालजेन से जुड़े कुछ धागे अभी भी मौजूद हैं; उन्हें तोड़ना होगा; इसी कमरे में ऐसी वस्तुएं हैं जो मुझे धोखा दे सकती हैं, ऐसी मूक चीजें हैं जो मेरे खिलाफ गवाही देंगी; यह तय है; इन सभी चीजों को मिटाना होगा।”

उसने अपनी जेब में हाथ डाला, अपना पर्स निकाला, उसे खोला और एक छोटी सी चाबी निकाली; उसने चाबी को एक ताले में डाला जिसका छेद मुश्किल से दिखाई दे रहा था, क्योंकि वह वॉलपेपर पर बने गहरे रंगों के डिज़ाइन में इतना छिपा हुआ था; एक गुप्त डिब्बा खुल गया, दीवार और चिमनी के बीच के कोने में बनी एक तरह की नकली अलमारी; इस गुप्त स्थान में कुछ चिथड़े-चिथड़े थे—एक नीले रंग का लिनेन का ब्लाउज, एक पुरानी पतलून, एक पुराना थैला और दोनों सिरों पर लोहे से जड़ा एक बड़ा काँटेदार डंडा। जिन लोगों ने अक्टूबर 1815 में जीन वालजेन को उस समय देखा था जब वह डी से गुजरा था, वे इस दयनीय पोशाक के सभी टुकड़ों को आसानी से पहचान सकते थे।

उसने उन्हें उसी तरह संरक्षित रखा था जैसे उसने चांदी के मोमबत्ती स्टैंड को संरक्षित रखा था, ताकि वह खुद को लगातार अपने आरंभिक बिंदु की याद दिलाता रहे, लेकिन उसने गैली से आने वाली सभी चीजों को छिपा दिया था, और उसने बिशप से आने वाले मोमबत्ती स्टैंड को प्रदर्शित होने दिया था।

उसने चुपके से दरवाजे की ओर देखा, मानो उसे डर हो कि कुंडी लगी होने के बावजूद दरवाजा खुल जाएगा; फिर, एक झटके में, उसने उन सभी चीजों को एक ही बार में अपनी बाहों में उठा लिया, जिन्हें उसने इतने वर्षों तक इतनी श्रद्धा और जोखिम से सहेज कर रखा था, और उन सभी को, चिथड़ों, लाठी, थैले, आग में फेंक दिया।

उसने नकली अलमारी को फिर से बंद कर दिया, और अब अतिरिक्त सावधानी बरतते हुए, जिसकी अब कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वह अब खाली थी, उसने दरवाजे को फर्नीचर के एक भारी टुकड़े के पीछे छिपा दिया, जिसे उसने उसके सामने धकेल दिया।

कुछ ही सेकंडों के अंतराल में, कमरा और सामने की दीवार एक तीव्र, लाल, कांपती हुई रोशनी से जगमगा उठी। हर चीज़ में आग लग गई थी; कांटों से बनी लाठी चटक उठी और उससे चिंगारियां कमरे के बीचोंबीच जा गिरीं।

जैसे-जैसे थैला, उसमें रखे हुए भद्दे चिथड़ों समेत, राख में जलता गया, उसमें से कुछ चमकता हुआ दिखाई दिया। झुककर देखने पर एक सिक्का आसानी से पहचाना जा सकता था—निस्संदेह वही चालीस सू का सिक्का जो छोटे से सवॉयर्ड से चुराया गया था।

उसने आग की तरफ नहीं देखा, बल्कि एक ही गति से इधर-उधर चक्कर लगाता रहा।

अचानक उसकी नजर चिमनी के ऊपर से आती हुई दो चांदी की मोमबत्तियों पर पड़ी, जो हल्की रोशनी के बीच से धुंधली सी चमक रही थीं।

“रुको!” उसने सोचा; “जीन वालजेन का पूरा अस्तित्व अभी भी उनमें समाया हुआ है। उन्हें भी नष्ट करना होगा।”

उसने दोनों मोमबत्ती स्टैंड उठा लिए।

अभी भी इतनी आग मौजूद थी कि उन्हें विकृत किया जा सके और उन्हें एक प्रकार की पहचान से परे धातु की छड़ में परिवर्तित किया जा सके।

वह चूल्हे के पास झुक गया और कुछ देर तक खुद को गर्म किया। उसे सचमुच सुकून का एहसास हुआ। "गर्मी कितनी अच्छी लगती है!" उसने कहा।

उसने मोमबत्ती स्टैंड में से एक से जलते हुए कोयलों को हिलाया।

एक मिनट और बीतता, और वे दोनों आग की चपेट में आ जाते।

उस क्षण उसे ऐसा लगा मानो उसके भीतर से कोई आवाज़ चिल्ला रही हो: “जीन वालजीन! जीन वालजीन!”

उसके बाल सीधे खड़े हो गए: वह ऐसे व्यक्ति की तरह हो गया जो कोई भयानक बात सुन रहा हो।

“हाँ, बस यही! खत्म!” आवाज ने कहा। “अपना काम पूरा करो! इन मोमबत्तियों को नष्ट करो! इस स्मृति चिन्ह को मिटा दो! बिशप को भूल जाओ! सब कुछ भूल जाओ! इस शैंपमैथ्यू को नष्ट करो, करो! यही सही है! अपनी प्रशंसा करो! तो यह तय हो गया है, संकल्प लिया गया है, निश्चित हो गया है, सहमति बन गई है: यहाँ एक

बूढ़ा आदमी है जिसे पता नहीं कि उससे क्या अपेक्षा की जाती है, जिसने शायद कुछ नहीं किया है, एक निर्दोष आदमी, जिसका सारा दुर्भाग्य तुम्हारे नाम पर टिका है, जिस पर तुम्हारा नाम एक अपराध की तरह बोझ है, जिसे तुम्हारे बदले पकड़ा जाने वाला है, जिसे दोषी ठहराया जाएगा, जो अपने दिन दीनता और भय में व्यतीत करेगा। यह अच्छा है! स्वयं एक ईमानदार व्यक्ति बनो; महाशय बने रहो; सम्माननीय और आदरणीय बने रहो; शहर को समृद्ध करो; गरीबों का पोषण करो; अनाथों का पालन-पोषण करो; सुखी, गुणी और प्रशंसित जीवन जियो; और, इस दौरान, जब तुम यहाँ आनंद और प्रकाश के बीच हो, एक आदमी होगा जो तुम्हारा लाल ब्लाउज पहनेगा, जो तुम्हारे नाम को कलंकित करेगा, और जो तुम्हारी जंजीर को जलयानों में घसीटेगा। हाँ, यह अच्छी तरह से व्यवस्थित है इस प्रकार। आह, दुष्ट!

उसके माथे से पसीना बह रहा था। उसने थकी हुई निगाहों से मोमबत्तियों को देखा। लेकिन उसके भीतर जो आवाज़ उठी थी, वह अभी खत्म नहीं हुई थी। आवाज़ जारी रही:—

“जीन वाल्जेन, तुम्हारे चारों ओर बहुत सी आवाजें होंगी, जो बहुत शोर मचाएंगी, बहुत जोर से बोलेंगी और तुम्हें आशीर्वाद देंगी, और केवल एक आवाज होगी जिसे कोई नहीं सुनेगा, जो अंधेरे में तुम्हें श्राप देगी। सुनो, हे कुख्यात व्यक्ति! ये सभी आशीर्वाद स्वर्ग तक पहुँचने से पहले ही वापस लौट जाएंगे, और केवल श्राप ही ईश्वर तक पहुंचेगा।”

यह आवाज़, जो पहले तो धीमी थी और उसके अंतरात्मा की सबसे गहरी परतों से आ रही थी, धीरे-धीरे चौंकाने वाली और भयावह हो गई थी, और अब वह इसे अपने कानों में सुन रहा था। उसे ऐसा लगा जैसे यह आवाज़ उससे अलग हो गई हो, और अब उसके बाहर से बोल रही हो। उसे लगा कि उसने आखिरी शब्द इतनी स्पष्टता से सुने कि वह डर के मारे कमरे में इधर-उधर देखने लगा।

"क्या यहाँ कोई है?" उसने घोर हैरानी से ऊँची आवाज़ में पूछा।

फिर उसने एक मूर्ख जैसी हंसी के साथ बोलना शुरू किया:

मैं कितना मूर्ख हूँ! यहाँ कोई हो ही नहीं सकता!

वहाँ कोई था; लेकिन वह व्यक्ति उन लोगों में से था जिन्हें मनुष्य की आँखें नहीं देख सकतीं।

उसने मोमबत्ती स्टैंड को चिमनी के ऊपर रख दिया।

फिर उसने अपनी नीरस और उदास चाल से चलना शुरू कर दिया, जिससे उसके नीचे सो रहे व्यक्ति के सपने में खलल पड़ा और वह अचानक जाग गया।

इधर-उधर भटकने से उसे सुकून भी मिला और साथ ही मदहोशी भी। कभी-कभी, विशेष अवसरों पर, ऐसा लगता था मानो लोग जगह बदलने पर मिलने वाली हर चीज़ के बारे में सलाह लेने के उद्देश्य से ही इधर-उधर घूमते हों। कुछ मिनटों के बाद उसे अपनी स्थिति का पता ही नहीं रहा।

अब वह अपने द्वारा लिए गए दोनों निर्णयों के सामने समान रूप से भयभीत होकर पीछे हट गया। उसे सलाह देने वाले दोनों विचार उसे समान रूप से घातक प्रतीत हुए। कितनी बड़ी विपत्ति! यह कैसा संयोग था कि शैंपमैथ्यू को उसके स्थान पर चुना गया; ठीक उन्हीं साधनों से पराजित होना जिन्हें ईश्वर ने पहले उसकी स्थिति को मजबूत करने के लिए अपनाया था!

एक पल ऐसा आया जब उसने भविष्य के बारे में सोचा। हे ईश्वर, मैं स्वयं को त्याग दूँ! स्वयं को ईश्वर के हवाले कर दूँ! घोर निराशा के साथ उसने उन सभी चीजों का सामना किया जिन्हें उसे छोड़ना था, और जिन्हें उसे फिर से अपनाना था। उसे उस जीवन को अलविदा कहना था जो इतना अच्छा, इतना पवित्र, इतना उज्ज्वल था, सभी के सम्मान, गौरव और स्वतंत्रता से भरा था। वह अब कभी खेतों में नहीं टहल पाएगा; वह अब कभी मई के महीने में पक्षियों का गीत नहीं सुन पाएगा; वह अब कभी छोटे बच्चों को दान नहीं दे पाएगा; वह अब कभी कृतज्ञता और प्रेम भरी निगाहों का आनंद नहीं ले पाएगा; उसे वह घर छोड़ना होगा जिसे उसने बनाया था, वह छोटा सा कमरा! उस क्षण उसे सब कुछ आकर्षक लग रहा था। वह अब कभी उन किताबों को नहीं पढ़ पाएगा; वह अब कभी उस सफेद लकड़ी की छोटी मेज पर नहीं लिख पाएगा; उसकी बूढ़ी चौकीदार, एकमात्र नौकरानी जिसे उसने रखा था, अब कभी सुबह उसे कॉफी नहीं लाएगी। हे ईश्वर! इसके बजाय, कैदियों का गिरोह, लोहे का हार, लाल जैकेट, टखने में जंजीर, थकान, कोठरी, शिविर का बिस्तर - वे सभी भयानक चीजें जिन्हें वह अच्छी तरह जानता था! इस उम्र में, जो कुछ वह झेल चुका था! काश वह फिर से जवान हो पाता! लेकिन बुढ़ापे में भी उसे कोई भी "तू" कहकर पुकारे; कैदी गार्ड द्वारा उसकी तलाशी ली जाए; गैली सार्जेंट की लाठियों से मार खाई जाए; नंगे पैरों में लोहे के जूते पहने जाएं; रात-सुबह गिरोह में आने वाले राउंडमैन के हथौड़े के सामने पैर फैलाकर बैठना पड़े;

अजनबियों की जिज्ञासा का सामना करना पड़े, जिन्हें बताया जाता था: "वह आदमी प्रसिद्ध जीन वालजेन है, जो मसुर म का मेयर था;" और रात में, पसीने से तरबतर, थकान से चूर, अपनी हरी टोपियाँ आँखों पर डाले, सार्जेंट के कोड़े के नीचे गैली की सीढ़ी पर दो-दो करके चढ़ना पड़े। ओह, कितना दुख! क्या नियति किसी बुद्धिमान प्राणी की तरह द्वेषपूर्ण हो सकती है, और क्या वह मानव हृदय की तरह राक्षसी बन सकती है?

और चाहे वह कुछ भी करता, वह हमेशा उस हृदयविदारक दुविधा में डूब जाता जो उसके चिंतन की बुनियाद थी: "क्या उसे स्वर्ग में रहकर दानव बन जाना चाहिए? या उसे नरक में लौटकर देवदूत बन जाना चाहिए?"

अब क्या किया जाए? हे भगवान! अब क्या किया जाए?

जिस पीड़ा से वह बड़ी मुश्किल से बच निकला था, वह उसके भीतर फिर से बेड़ियों में जकड़ गई। उसके विचार एक बार फिर उलझने लगे; उनमें निराशा की एक स्तब्ध और यांत्रिक अवस्था आ गई। रोमेनविले का नाम उसके मन में बार-बार गूंज रहा था, साथ ही उस गीत की दो पंक्तियाँ भी जो उसने पहले सुनी थीं। उसे लगा कि रोमेनविले पेरिस के पास एक छोटा सा उपवन है, जहाँ अप्रैल के महीने में युवा प्रेमी लिली के फूल तोड़ने जाते हैं।

वह बाहरी और आंतरिक दोनों रूप से डगमगा रहा था। वह एक छोटे बच्चे की तरह चल रहा था जिसे अकेले घूमने की अनुमति दी गई हो।

बीच-बीच में, अपनी सुस्ती से जूझते हुए, उसने अपने मन पर फिर से नियंत्रण पाने का प्रयास किया। उसने अंतिम बार और निश्चित रूप से उस समस्या पर विचार करने की कोशिश की, जिस पर वह मानो थकान से चूर हो गया था: क्या उसे स्वयं को दोषी ठहराना चाहिए? क्या उसे चुप रहना चाहिए? वह कुछ भी स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रहा था। उसके चिंतन द्वारा खींचे गए तर्क के सभी अस्पष्ट पहलू एक-एक करके धुएं में गायब हो गए। उसे केवल इतना महसूस हुआ कि वह चाहे जो भी रास्ता चुने, उसके भीतर कुछ न कुछ मरना ही होगा, और यह अनिवार्य है, और वह इससे बच नहीं सकता; कि वह दाईं ओर से भी उतनी ही कब्र में प्रवेश कर रहा है जितनी बाईं ओर से; कि वह मृत्यु की पीड़ा से गुजर रहा है—अपने सुख की पीड़ा से, या अपने सद्गुण की पीड़ा से।

[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

IV. नींद के दौरान पीड़ा द्वारा धारण किए गए रूप

सुबह के तीन बज चुके थे, और वह लगभग बिना रुके पांच घंटे से इसी तरह चल रहा था, जब अंत में उसने खुद को अपनी कुर्सी पर बैठने की अनुमति दी।

वहां उसे नींद आ गई और उसने सपना देखा।

यह सपना, अधिकांश सपनों की तरह, स्थिति से बिल्कुल भी संबंधित नहीं था, सिवाय इसके दर्दनाक और हृदयविदारक स्वरूप के, लेकिन इसने उन पर गहरा प्रभाव डाला। इस भयावह सपने ने उन पर इतना गहरा असर डाला कि उन्होंने बाद में इसे लिख लिया। यह उन्हीं के हाथ से लिखे गए कागजों में से एक है जो उन्होंने हमें विरासत में दिए हैं। हमारा मानना है कि हमने इसे मूल पाठ के अनुसार ही प्रस्तुत किया है।

यह सपना चाहे जिस भी स्वरूप का हो, इस रात का इतिहास अधूरा रह जाएगा यदि हम इसे छोड़ दें: यह एक बीमार आत्मा का निराशाजनक साहसिक कार्य है।

ये रहा। लिफाफे पर यह पंक्ति अंकित है,

उस रात मैंने जो सपना देखा।

मैं एक मैदान में था; एक विशाल, अंधकारमय मैदान, जहाँ घास का नामोनिशान नहीं था। मुझे न तो दिन का उजाला लग रहा था और न ही रात का।

मैं अपने भाई के साथ चल रहा था, मेरे बचपन के दिनों का भाई, वह भाई जिसके बारे में, मुझे कहना चाहिए, मैं कभी नहीं सोचता, और जिसे अब मैं मुश्किल से ही याद करता हूँ।

हम बातें कर रहे थे और रास्ते में कुछ राहगीर मिले। हम अपने पुराने पड़ोसियों के बारे में बात कर रहे थे, जो गली में रहने आने के बाद से हमेशा अपनी खिड़की खुली रखकर काम करती थीं। बात करते-करते हमें उस खुली खिड़की की वजह से ठंड लगने लगी।

मैदान में कोई पेड़ नहीं थे। हमने एक आदमी को अपने पास से गुजरते देखा। वह पूरी तरह नग्न था, राख के रंग का था, और मिट्टी के रंग के घोड़े पर सवार था।
उस आदमी के सिर पर बाल नहीं थे; हम उसकी खोपड़ी और उस पर बनी नसें देख सकते थे। उसके हाथ में एक टहनी थी जो बेल की तरह लचीली और लोहे की तरह भारी थी। वह घुड़सवार बिना कुछ बोले हमारे पास से गुजर गया।

मेरे भाई ने मुझसे कहा, "चलो खोखले रास्ते पर चलते हैं।"

वहाँ एक खोखला रास्ता था जहाँ न तो कोई झाड़ी दिखाई देती थी और न ही काई का एक तिनका। सब कुछ मिट्टी के रंग का था, यहाँ तक कि आकाश भी। कुछ कदम आगे बढ़ने पर जब मैंने कुछ बोला तो कोई जवाब नहीं मिला: मुझे एहसास हुआ कि मेरा भाई अब मेरे साथ नहीं है।

मैंने एक गाँव में प्रवेश किया जो मुझे दिखाई दिया। मैंने सोचा कि यह रोमेनविले ही होगा… रोमेनविले ही क्यों?

जिस पहली गली में मैं दाखिल हुआ, वह सुनसान थी। मैं दूसरी गली में गया। दोनों गलियों के कोने के पीछे, एक आदमी दीवार के सहारे सीधा खड़ा था। मैंने उस आदमी से कहा:—

“यह कौन सा देश है? मैं कहाँ हूँ?” उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने एक घर का दरवाजा खुला देखा और मैं अंदर चला गया।

पहला कमरा खाली था। मैं दूसरे कमरे में दाखिल हुआ। इस कमरे के दरवाजे के पीछे एक आदमी दीवार के सहारे सीधा खड़ा था। मैंने उससे पूछा, “यह किसका घर है? मैं कहाँ हूँ?” उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया।

घर में एक बगीचा था। मैं घर से निकलकर बगीचे में गया। बगीचा सुनसान था। पहले पेड़ के पीछे मुझे एक आदमी सीधा खड़ा मिला। मैंने उस आदमी से पूछा, “यह कौन सा बगीचा है? मैं कहाँ हूँ?” उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया।

मैं गाँव में दाखिल हुआ और पाया कि यह एक कस्बा है। सभी गलियाँ सुनसान थीं, सभी दरवाजे खुले थे। गलियों में, कमरों में या बगीचों में कोई भी जीवित प्राणी नहीं दिख रहा था। लेकिन दीवारों के हर कोने के पीछे, हर दरवाजे के पीछे, हर पेड़ के पीछे एक खामोश आदमी खड़ा था। एक समय में केवल एक ही दिखाई देता था। ये लोग मुझे गुजरते हुए देख रहे थे।

मैंने शहर छोड़ दिया और खेतों में घूमने लगा।

कुछ समय बाद मैंने पीछे मुड़कर देखा तो मेरे पीछे एक बड़ी भीड़ आ रही थी।
मैंने उन सभी आदमियों को पहचान लिया जिन्हें मैंने उस कस्बे में देखा था।
उनके सिर अजीब से थे। वे जल्दी में नहीं लग रहे थे, फिर भी वे मुझसे तेज़ चल रहे थे। चलते समय वे कोई आवाज़ नहीं कर रहे थे। पल भर में ही वह भीड़ मेरे पास पहुँच गई और मुझे घेर लिया। उन आदमियों के चेहरे मिट्टी जैसे रंग के थे।

फिर जिस पहले व्यक्ति को मैंने नगर में प्रवेश करते समय देखा और उससे पूछताछ की, उसने मुझसे कहा:—

“तुम कहाँ जा रहे हो! क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम इतने लंबे समय से मृत हो चुके हो?”

मैंने जवाब देने के लिए अपना मुंह खोला, और मुझे एहसास हुआ कि मेरे आस-पास कोई नहीं था।

वह जागा। उसे कड़ाके की ठंड लग रही थी। भोर की ठंडी हवा खिड़की के पर्दों को हिला रही थी, जो अपने कब्ज़ों पर ही खुली रह गई थी। आग बुझ चुकी थी।
मोमबत्ती भी बुझने वाली थी। अभी भी घना अंधेरा था।

वह उठा, खिड़की के पास गया। आसमान में अभी तक तारे भी नहीं थे।

उसकी खिड़की से घर का आंगन और सड़क दिखाई दे रही थी। तभी धरती से एक तीखी, कर्कश आवाज गूंजी, जिससे उसकी निगाहें नीचे झुक गईं।

उसके नीचे उसे दो लाल तारे दिखाई दिए, जिनकी किरणें अंधेरे में एक अनोखे तरीके से लंबी और छोटी हो रही थीं।

जब उसके विचार अभी भी नींद के धुंध में डूबे हुए थे, तभी उसने कहा, "रुको! आकाश में तारे नहीं हैं। वे अब धरती पर हैं।"

लेकिन यह भ्रम दूर हो गया; पहली जैसी ही एक दूसरी आवाज़ ने उसे पूरी तरह जगा दिया; उसने देखा और पहचान लिया कि ये दो तारे एक रथ की लालटेनें थीं। उनकी रोशनी से वह उस वाहन का आकार पहचान सका। यह एक छोटा सफेद घोड़ा जुता हुआ एक घोड़ा था। जो आवाज़ उसने सुनी थी, वह सड़क पर घोड़े के खुरों की आवाज़ थी।

“यह कौन सा वाहन है?” उसने मन ही मन सोचा। “इतनी सुबह-सुबह यहाँ कौन आ रहा है?”
उसी क्षण उनके कमरे के दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई।
वह सिर से पैर तक कांप उठा और भयानक आवाज में चिल्लाया:
"वहाँ कौन है?"
किसी ने कहा:—
“मैं, महापौर महोदय।”
उसने अपनी द्वारपाल बूढ़ी औरत की आवाज पहचान ली। “तो!” उसने जवाब दिया, “क्या बात है?”
"महामहिम मेयर, अभी सुबह के ठीक पाँच बजे हैं।"
इससे मुझे क्या लेना-देना है?
"मेयर मेयर, कन्वर्टिबल कार यहाँ है।"
“कैब्रियोलेट कौन सी?”
"टिलबरी।"
"टिलबरी क्या है?"
"क्या महाशय ले मायेर ने टिलबरी का ऑर्डर नहीं दिया?"
“नहीं,” उसने कहा।
“कोचमैन का कहना है कि वह महाशय के लिए आया है।”
“कौन सा कोचमैन?”
“एम. स्काउफ्लेयर का कोचवान।”
“एम. स्काउफ्लेयर?”
उस नाम ने उसे इस कदर कंपकंपा दिया, मानो उसके चेहरे के सामने से बिजली की एक चमक गुजर गई हो।
“अहा! हाँ,” उन्होंने बात जारी रखते हुए कहा; “श्रीमान स्काउफ्लेयर!”

अगर उस समय वह बूढ़ी औरत उसे देख पाती, तो वह डर जाती।
काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। उसने मूर्खता भरे भाव से मोमबत्ती की लौ को देखा और बाती के चारों ओर से जलता हुआ मोम लेकर उसे अपनी उंगलियों के बीच घुमाया। बुढ़िया उसका इंतजार करती रही। उसने एक बार फिर अपनी आवाज बुलंद करने का साहस भी किया:
“मुझे क्या कहना चाहिए, महाशय महोदय?”
"कह दो कि सब ठीक है, और मैं नीचे आ रहा हूँ।"

वी. बाधाएँ

उस दौर में भी अर्रास से मसुर मसुर तक डाक सेवा साम्राज्य काल की छोटी डाक गाड़ियों द्वारा संचालित की जाती थी। ये डाक गाड़ियाँ दो पहियों वाली कैब्रियोलेट थीं, जिनके अंदरूनी हिस्से में स्प्रिंग लगे भूरे रंग के चमड़े की गद्दी होती थी और इनमें केवल दो सीटें होती थीं - एक डाकवाले के लिए और दूसरी यात्री के लिए। पहियों में वे लंबे, आक्रामक धुरे लगे होते थे जो अन्य वाहनों को दूर रखते थे और जिन्हें आज भी जर्मनी की सड़कों पर देखा जा सकता है। एक विशाल आयताकार डिब्बा, जिसे डिस्पैच बॉक्स कहा जाता था, वाहन के पीछे रखा जाता था और उसका एक हिस्सा होता था। यह डिब्बा काले रंग का होता था और कैब्रियोलेट पीले रंग की।

ये वाहन, जिनका आजकल कोई समकक्ष नहीं है, कुछ विकृत और कुबड़ापन लिए हुए थे; और जब कोई उन्हें दूर से गुजरते हुए, क्षितिज की ओर किसी सड़क पर चढ़ते हुए देखता, तो वे उन कीड़ों जैसे लगते थे जिन्हें शायद दीमक कहा जाता है, जो कम कवच के बावजूद अपने पीछे एक बड़ी पूंछ खींचते हैं। लेकिन वे बहुत तेज़ गति से यात्रा करते थे। पेरिस से डाक के गुजरने के बाद, अर्रास से हर रात एक बजे निकलने वाली डाक गाड़ी, सुबह पांच बजे से कुछ पहले मसुर म पहुँच जाती थी।

उस रात, हेस्डिन सड़क से होते हुए मसुर म की ओर जा रही गाड़ी, कस्बे में प्रवेश करते ही एक गली के मोड़ पर विपरीत दिशा से आ रही एक सफेद घोड़े से बंधी छोटी सी ठेलागाड़ी से टकरा गई। ठेलागाड़ी में केवल एक ही व्यक्ति था, एक आदमी जो चादर ओढ़े हुए था। ठेलागाड़ी के पहिए को ज़ोरदार झटका लगा। डाकिया ने उस आदमी को रुकने के लिए आवाज़ लगाई, लेकिन यात्री ने अनसुना कर पूरी रफ्तार से अपनी राह पर आगे बढ़ गया।

“वह आदमी तो हद से ज्यादा जल्दी में है!” डाकिया ने कहा।

इस प्रकार तेजी से आगे बढ़ रहा वह व्यक्ति वही था जिसे हमने अभी-अभी ऐंठन से जूझते हुए देखा है, जो निश्चित रूप से दया के पात्र हैं।

वह कहाँ जा रहा था? उसे पता नहीं था। वह इतनी जल्दी क्यों कर रहा था? उसे खुद भी नहीं पता था। वह बेतरतीब ढंग से, सीधे आगे बढ़ रहा था। कहाँ? निस्संदेह अर्रास की ओर; लेकिन हो सकता है वह कहीं और भी जा रहा हो। कभी- कभी उसे इसका एहसास होता था और वह कांप उठता था। वह रात के अंधेरे में ऐसे डूब रहा था जैसे किसी गहरी खाई में। कोई चीज़ उसे आगे धकेल रही थी; कोई चीज़ उसे खींच रही थी। कोई नहीं बता सकता था कि उसके भीतर क्या चल रहा था; लेकिन हर कोई इसे समझ जाएगा। ऐसा कौन सा इंसान है जिसने अपने जीवन में कम से कम एक बार उस अज्ञात की रहस्यमयी गुफा में कदम न रखा हो?

हालांकि, उसने कुछ भी तय नहीं किया था, कोई निर्णय नहीं लिया था, कोई योजना नहीं बनाई थी, कुछ भी नहीं किया था। उसकी अंतरात्मा की कोई भी क्रिया निर्णायक नहीं थी। वह पहले से कहीं अधिक वैसा ही था जैसा वह पहले क्षण में था।

वह अर्रास क्यों जा रहा था?

उसने वही बात दोहराई जो उसने स्काउफ्लेयर की कैब्रियोलेट किराए पर लेते समय खुद से कही थी: कि परिणाम चाहे जो भी हो, उसे अपनी आँखों से देखने और मामलों का स्वयं निर्णय लेने में कोई हर्ज नहीं था; कि यह तो समझदारी भरा कदम था; कि उसे जानना ही था कि क्या हुआ था; कि बिना देखे और जाँचे कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता था; कि दूर से देखने पर हर बात बड़ी लगती थी; कि कम से कम, जब वह शैंपमैथ्यू, उस नीच व्यक्ति को देख लेता, तो शायद उसका अंतरात्मा उसे अपनी जगह गैली में जाने देने से बहुत राहत महसूस करता; कि जावर्ट वहाँ अवश्य होता; और ब्रेवेट, चेनिल्डियू, कोचेपाइल, पुराने कैदी जो उसे जानते थे; लेकिन वे निश्चित रूप से उसे पहचान नहीं पाते;—अरे! क्या विचार है! कि जावर्ट सच्चाई पर शक करने से सौ मील दूर था; कि सभी अनुमान और अटकलें शैंपमैथ्यू पर टिकी थीं, और अटकलों और अनुमानों से ज्यादा जिद्दी कुछ नहीं होता। इसलिए कोई खतरा नहीं था।

यह निस्संदेह एक अंधकारमय क्षण था, लेकिन उसे इससे उबरना ही था; अंततः, उसका भाग्य, चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, उसके अपने हाथों में था; वह उसका स्वामी था। वह इसी विचार से जुड़ा रहा।

सच कहें तो, असल में वह अर्रास जाना पसंद नहीं करता।

फिर भी, वह वहाँ जा रहा था।

जब वह ध्यान कर रहा था, उसने अपने घोड़े को चाबुक मारा, जो उस उत्तम, नियमित और एकसमान चाल से आगे बढ़ रहा था जिससे एक घंटे में ढाई मील की दूरी तय हो जाती है।

जैसे-जैसे कैब्रियोलेट आगे बढ़ती गई, उसे अपने भीतर कुछ सिकुड़ता हुआ महसूस हुआ।

भोर होते ही वह खुले मैदान में था; मसुर मस कस्बा उससे बहुत दूर था। उसने क्षितिज को सफेद होते देखा; सर्दियों की सुबह की ठंडी आकृतियाँ उसकी आँखों के सामने से गुज़रती रहीं, लेकिन वह उन्हें देख नहीं पा रहा था। सुबह के भी अपने भूत होते हैं, जैसे शाम के। उसने उन्हें नहीं देखा; लेकिन अनजाने में ही, और एक तरह की शारीरिक अनुभूति से, पेड़ों और पहाड़ियों की ये काली आकृतियाँ उसकी आत्मा की अशांत अवस्था में एक उदास और भयावह भाव जोड़ रही थीं।

जब भी वह राजमार्ग के किनारे स्थित उन एकांत आवासों में से किसी एक के पास से गुजरता, तो वह मन ही मन कहता, "और फिर भी, उनके अंदर लोग सो रहे हैं!"

घोड़े की चाल, लगाम पर लगी घंटियाँ, सड़क पर पहियों की आवाज़, ये सब मिलकर एक मधुर, एकरस ध्वनि उत्पन्न करते थे। ये ध्वनियाँ प्रसन्नता के क्षण में मनमोहक लगती हैं, और दुःख के क्षण में उदासी भर देती हैं।

जब वह हेस्डिन पहुंचा तो दिन का उजाला हो चुका था। उसने सराय के सामने रुककर घोड़े को थोड़ी देर आराम करने दिया और उसे कुछ जई खिलाई।

जैसा कि स्कॉफ्लेयर ने कहा था, वह घोड़ा बोलॉनैस की उस छोटी नस्ल का था, जिसका सिर और पेट बहुत बड़ा होता है, गर्दन और कंधे छोटे होते हैं, लेकिन छाती चौड़ी, कूल्हे बड़े, टांगें पतली और सुंदर होती हैं, और खुर मजबूत होते हैं—एक साधारण, लेकिन मजबूत और तंदुरुस्त नस्ल। उस शानदार जानवर ने दो घंटे में पाँच मील की दूरी तय कर ली थी, और उसकी कमर पर पसीने की एक बूँद भी नहीं थी।

वह जई की टोकरी से बाहर नहीं निकला। जई लाने वाला अस्तबल का कर्मचारी अचानक नीचे झुका और बाएं पहिये की जांच करने लगा।

“क्या तुम इस हालत में ज्यादा दूर जा पाओगे?” उस आदमी ने कहा। उसने मानो अभी-अभी अपनी तन्मयता से जागा हो, उसी भाव से उत्तर दिया: "क्यों?"
“क्या आप बहुत दूर से आए हैं?” उस आदमी ने पूछा।
"पांच लीग।"
आह!”
आप ‘आह’ क्यों कहते हैं?
वह व्यक्ति एक बार फिर नीचे झुका, कुछ क्षण चुप रहा, उसकी निगाहें पहिये पर टिकी रहीं; फिर वह सीधा उठा और बोला:—
क्योंकि, भले ही यह पहिया पांच लीग की यात्रा कर चुका हो, लेकिन यह निश्चित रूप से एक चौथाई लीग की यात्रा और नहीं करेगा।
वह मिट्टी के ढेर से बाहर कूद गया।
"तुम क्या कह रहे हो, मेरे दोस्त?"
“मैं कहता हूँ कि यह एक चमत्कार है कि आप और आपका घोड़ा राजमार्ग पर किसी खाई में गिरे बिना पाँच मील की यात्रा कर पाए। ज़रा यहाँ देखिए!”
पहिए को वाकई गंभीर नुकसान पहुंचा था। डाक गाड़ी के झटके से दो तीलियां टूट गई थीं और हब पर इतना दबाव पड़ा था कि नट अब मजबूती से नहीं लग पा रहा था।
“मेरे दोस्त,” उसने अस्तबल के कर्मचारी से कहा, “क्या यहाँ कोई पहिया बनाने वाला कारीगर है?”
"जी हां, महोदय।"
"कृपया जाकर उसे बुला लाइए।"
“वह यहाँ से बस एक कदम दूर है। अरे! मास्टर बोर्गैलार्ड!”
पहिए बनाने वाले उस्ताद बोर्गैलार्ड अपने घर की दहलीज पर खड़े थे। वे अंदर आए, पहिए का निरीक्षण किया और एक सर्जन की तरह मुंह बनाया, जैसे कोई सर्जन किसी अंग के टूटने पर मुंह बनाता है।

"क्या आप इस पहिये की तुरंत मरम्मत कर सकते हैं ?"

"जी श्रीमान। "

मैं दोबारा कब यात्रा शुरू कर सकता हूँ ?

"कल।"

"कल!"

“इसमें पूरा दिन का काम लगेगा। क्या आपको जल्दी है , महोदय ?”

मुझे बहुत जल्दी है। मुझे ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटे में फिर से निकलना होगा।

"असंभव, महोदय। "

आप जो भी मांगेंगे , मैं दे दूंगा।

"असंभव। "

"अच्छा , तो दो घंटे में। "

“आज यह असंभव है। दो नए स्पोक और एक हब बनाने होंगे। महोदय कल सुबह से पहले काम शुरू नहीं कर पाएंगे। ”

“यह मामला कल तक नहीं टल सकता। मरम्मत करने के बजाय इस पहिये को बदल देने से क्या होगा ?”

“ऐसा कैसे ?”

“क्या आप पहिया बनाने वाले मिस्त्री हैं ?”

"जी हां , महोदय। "

“क्या आपके पास कोई पहिया नहीं है जो आप मुझे बेच सकें ? फिर मैं तुरंत दोबारा शुरू कर सकता हूँ। ”

“एक अतिरिक्त पहिया ?”

"हाँ। "

“मेरे पास फिलहाल ऐसा कोई पहिया नहीं है जो आपकी कैब्रियोलेट में फिट हो सके। दो पहिए मिलकर एक जोड़ी बनाते हैं। दो पहियों को यूं ही बेतरतीब ढंग से एक साथ नहीं जोड़ा जा सकता।”
"तो फिर, मुझे पहियों का एक जोड़ा बेच दो।"
"हर पहिए हर धुरी पर फिट नहीं होते, महोदय।"
फिर भी कोशिश करो।
“यह बेकार है, महोदय। मेरे पास बेचने के लिए बटुए के अलावा कुछ नहीं है। हम यहाँ एक गरीब देश हैं।”
"क्या आपके पास कोई कैब्रियोलेट कार है जो आप मुझे दे सकते हैं?"
पहिया बनाने वाले ने पहली नज़र में ही समझ लिया था कि टिलबरी एक किराए का वाहन है। उसने कंधे उचका दिए।
“आप लोगों द्वारा किराए पर दी गई कैब्रियोलेट कारों का बहुत अच्छे से ख्याल रखते हैं! अगर मेरे पास ऐसी कार होती, तो मैं आपको किराए पर नहीं देता!”
"अच्छा, तो फिर मुझे बेच दो।"
मेरे पास कोई नहीं है।
“क्या! एक स्प्रिंग-कार्ट भी नहीं? जैसा कि आप देख सकते हैं, मुझे खुश करना मुश्किल नहीं है।”
“हम एक गरीब देश में रहते हैं। सच तो यह है,” पहिया बनाने वाले ने आगे कहा, “उस शेड के नीचे एक पुरानी चक्की पड़ी है, जो शहर के एक अमीर आदमी की है। उसने मुझे उसकी देखभाल करने के लिए दी थी, और वह उसे महीने की छत्तीस तारीख को ही इस्तेमाल करता है—मतलब कभी नहीं। मैं उसे आपको किराए पर दे सकता हूँ, मुझे इससे क्या फर्क पड़ता है? लेकिन उस अमीर आदमी को उसे यूँ ही जाते हुए नहीं देखना चाहिए—और फिर भी, वह एक चक्की है; उसे चलाने के लिए दो घोड़ों की ज़रूरत होगी।”
मैं दो डाक घोड़े लूंगा।
“महाशय कहाँ जा रहे हैं?”

“अरास के लिए।”
“और महाशय आज ही वहाँ पहुँचना चाहते हैं?”
"हाँ बिल्कुल।"
"दो डाक घोड़ों को लेकर?"
"क्यों नहीं?"
"क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि महाशय कल सुबह चार बजे आते हैं या नहीं?" "हरगिज नहीं।"
“इस बारे में एक बात तो कही जा सकती है, देखिए, डाक के घोड़ों को ले जाने से — महाशय के पास उनका पासपोर्ट है?”
"हाँ।"
“खैर, डाक के घोड़ों से, महामहिम कल से पहले अर्रास नहीं पहुँच सकते। हम एक चौराहे पर खड़े हैं। रिले की व्यवस्था ठीक नहीं है, घोड़े खेतों में हैं। जुताई का मौसम अभी शुरू ही हुआ है; भारी टीमों की आवश्यकता है, और डाक स्टेशन से लेकर अन्य जगहों तक, हर जगह से घोड़े लिए जा रहे हैं। महामहिम को प्रत्येक रिले पर कम से कम तीन या चार घंटे इंतजार करना पड़ेगा। और फिर, वे पैदल ही आगे बढ़ते हैं। चढ़ाई के लिए कई पहाड़ियाँ हैं।”
“तो चलिए, मैं घोड़े पर सवार होकर चलता हूँ। कैब्रियोलेट को खोल दीजिए। आस-पास कहीं न कहीं मुझे काठी मिल ही जाएगी।”
“निस्संदेह। लेकिन क्या यह घोड़ा काठी का भार सह पाएगा?”
“यह सच है; तुमने मुझे इसकी याद दिला दी; वह इसे बर्दाश्त नहीं करेगा।” “तो फिर—”
"लेकिन क्या मैं गांव में घोड़ा किराए पर ले सकता हूँ?"
"क्या घोड़े से एक ही बार में अर्रास तक की यात्रा की जा सकती है?"
"हाँ।"
“उसके लिए एक ऐसे घोड़े की ज़रूरत होगी जो यहाँ मौजूद ही नहीं है। आपको उसे पहले खरीदना पड़ेगा, क्योंकि यहाँ आपको कोई नहीं जानता। लेकिन आपको पाँच

सौ फ्रैंक में भी, या एक हज़ार फ्रैंक में भी, न तो बिक्री के लिए और न ही किराए पर कोई घोड़ा मिलेगा।”
"मुझे क्या करना है?"
"सबसे अच्छा यही होगा कि आप मुझे एक ईमानदार आदमी की तरह पहिया ठीक करने दें, और आप कल अपनी यात्रा पर निकल पड़ें।"
कल तक बहुत देर हो जाएगी।
“द ड्यूस!”
“क्या अर्रास तक जाने वाली कोई डाक गाड़ी नहीं है? वह कब गुजरेगी?”
“आज रात। दोनों चौकियां रात में गुजरती हैं; जाने वाली भी और आने वाली भी।” “क्या! इस पहिये को ठीक करने में आपको पूरा दिन लग जाएगा?”
"एक दिन, और वह भी काफी लंबा दिन।"
"अगर आप दो आदमियों को काम पर लगा दें तो?"
अगर मैं दस आदमियों को काम पर लगा दूं।
"अगर पहियों की तीलियों को रस्सियों से एक साथ बांध दिया जाए तो क्या होगा?"
"यह काम हब से नहीं, बल्कि स्पोक्स से किया जा सकता है; और फेली की हालत भी खराब है।"
"क्या इस गांव में कोई ऐसा व्यक्ति है जो घोड़ों की टीमें किराए पर देता है?"
"नहीं।"
"क्या कोई और पहिया बनाने वाला कारीगर है?"
अस्तबल के कर्मचारी और पहिया बनाने वाले कारीगर ने एक साथ सिर हिलाकर जवाब दिया।
"नहीं।"
उन्हें अपार आनंद का अनुभव हुआ।

यह स्पष्ट था कि ईश्वर का हस्तक्षेप था। वही था जिसने उसके रास्ते में बाधा डाली थी और उसे रोक रखा था। उसने इस तरह के पहले आह्वान के आगे हार नहीं मानी थी; उसने यात्रा जारी रखने के लिए हर संभव प्रयास किया था; उसने निष्ठापूर्वक और सावधानीपूर्वक सभी साधनों का उपयोग किया था; वह न तो मौसम, न थकान, न ही खर्च से विचलित हुआ था; उसे खुद को दोष देने का कोई कारण नहीं था। यदि वह आगे नहीं जा सका, तो इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी। अब उसे इससे कोई लेना-देना नहीं था। यह अब उसकी गलती नहीं थी। यह उसकी अंतरात्मा का कार्य नहीं था, बल्कि ईश्वर की इच्छा थी।

उसने फिर से सांस ली। जैवर्ट के आने के बाद पहली बार उसने खुलकर और पूरी ताकत से सांस ली। उसे ऐसा लगा मानो लोहे की वह मुट्ठी, जिसने पिछले बीस घंटों से उसके दिल को जकड़ रखा था, अब उसे छोड़ चुकी हो।

उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि ईश्वर अब उसके साथ है और स्वयं को प्रकट कर रहा है।

उसने मन ही मन कहा कि उसने अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर ली है, और अब उसके पास चुपचाप अपने कदमों के निशान पर वापस लौटने के अलावा और कोई चारा नहीं है।

अगर उनकी और पहिए बनाने वाले की बातचीत सराय के किसी कमरे में हुई होती, तो कोई गवाह नहीं होता, कोई उन्हें सुन नहीं पाता, बात वहीं खत्म हो जाती, और शायद हमें उन घटनाओं का ज़िक्र भी नहीं करना पड़ता जिन्हें पाठक आगे पढ़ने वाले हैं; लेकिन यह बातचीत सड़क पर हुई थी। सड़क पर होने वाली कोई भी बातचीत स्वाभाविक रूप से भीड़ को आकर्षित करती है। हमेशा ऐसे लोग होते हैं जिन्हें दर्शक बनने से बेहतर कुछ नहीं लगता। जब वह पहिए बनाने वाले से सवाल कर रहे थे, तो इधर-उधर से गुजर रहे कुछ लोग उनके आसपास रुक गए। कुछ मिनट सुनने के बाद, एक युवक, जिस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया था, समूह से अलग होकर भाग गया।

जिस क्षण यात्री ने, जैसा कि हमने अभी वर्णन किया है, मन ही मन विचार करने के बाद वापस लौटने का निश्चय किया, उसी समय यह बच्चा लौट आया। उसके साथ एक बूढ़ी औरत भी थी।

“महाशय,” महिला ने कहा, “मेरे बेटे ने मुझे बताया है कि आप एक कैब्रियोलेट किराए पर लेना चाहते हैं।”

एक बच्चे के साथ चल रही एक बूढ़ी औरत के ये सरल शब्द सुनकर उसके शरीर से पसीना बहने लगा। उसे लगा मानो उसने अपने पीछे अंधेरे में उस हाथ को फिर से प्रकट होते देखा, जिसने अपनी पकड़ ढीली कर दी थी, मानो उसे एक बार फिर पकड़ने के लिए तैयार हो।

उन्होंने उत्तर दिया:—

"जी हां, मेरी प्रिय महिला; मैं एक कैब्रियोलेट कार की तलाश में हूं जिसे मैं किराए पर ले सकूं।"

और उन्होंने तुरंत आगे कहा:—

लेकिन उस जगह पर कोई नहीं है।

“बिल्कुल है,” बूढ़ी औरत ने कहा।

“कहाँ?” पहिया बनाने वाले कारीगर ने बीच में ही पूछा।

“मेरे घर पर,” बूढ़ी औरत ने जवाब दिया।

वह सिहर उठा। उस घातक हाथ ने उसे फिर से जकड़ लिया था।

उस बूढ़ी औरत के शेड में सचमुच एक टोकरीनुमा स्प्रिंग-गाड़ी थी। यात्री के उनके चंगुल से भाग निकलने की आशंका से हताश होकर पहिया बनाने वाले और अस्तबल के कर्मचारी ने हस्तक्षेप किया।

“यह एक भयानक पुरानी गाड़ी थी; यह धुरी पर सपाट टिकी हुई थी; यह एक वास्तविक तथ्य था कि इसमें सीटें चमड़े की पट्टियों से लटकी हुई थीं; इसमें बारिश का पानी घुसता था; पहिए जंग खा चुके थे और नमी से खराब हो चुके थे; यह कूड़े के ढेर से ज्यादा दूर नहीं जा सकती थी; एक बिल्कुल खस्ताहाल पुरानी स्टेज-वैगन; अगर सज्जन इस पर भरोसा करते हैं तो वे बहुत बड़ी गलती करेंगे,” इत्यादि।

यह सब सच था; लेकिन यह जाल, यह जर्जर पुराना वाहन, यह चीज, जो भी थी, अपने दो पहियों पर चलती थी और अर्रास तक जा सकती थी।

उसने मांगी गई राशि का भुगतान किया, मरम्मत के लिए टिलबरी को पहिया बनाने वाले के पास छोड़ दिया, यह सोचकर कि वह लौटने पर उसे वापस ले लेगा, सफेद

घोड़े को गाड़ी से जोड़ा, उसमें चढ़ गया और उस रास्ते पर फिर से चल पड़ा जिस पर वह सुबह से चल रहा था।
जैसे ही गाड़ी चलने लगी, उसने माना कि कुछ क्षण पहले उसे इस बात से एक अजीब सी खुशी हुई थी कि उसे उस रास्ते पर नहीं जाना चाहिए जहाँ वह अब जा रहा था।
उसने इस खुशी का गुस्से से जायज़ा लिया और उसे बेतुका पाया। वापस लौटने पर उसे खुशी क्यों होनी चाहिए? आखिर वह यह यात्रा अपनी मर्ज़ी से कर रहा था।
कोई उसे मजबूर नहीं कर रहा था।
और निश्चित रूप से वही होगा जो वह चाहेगा।
जैसे ही वह हेस्डिन से निकला, उसने एक आवाज सुनी जो उसे चिल्लाकर कह रही थी: "रुको! रुको!" उसने एक जोरदार हरकत से गाड़ी रोक दी जिसमें आशा से मिलती-जुलती एक बेचैन और आवेगी भावना थी।
वह उस बूढ़ी औरत का छोटा लड़का था।
“महाशय,” दूसरे व्यक्ति ने कहा, “यह गाड़ी मैंने ही आपके लिए मंगवाई थी।” "कुंआ?"
आपने मुझे कुछ नहीं दिया है।
जो व्यक्ति सभी को इतनी आसानी से दे देता था, उसे यह मांग अत्यधिक और लगभग घृणित लगी।
“अरे! तुम हो बदमाश?” उसने कहा; “तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।”
उसने अपने घोड़े को चाबुक मारा और पूरी रफ्तार से चल पड़ा।
हेस्डिन में उसका काफी समय बर्बाद हो गया था। वह इसकी भरपाई करना चाहता था। छोटा घोड़ा साहसी था और दो घोड़ों का भार खींच रहा था; लेकिन फरवरी का महीना था, बारिश हुई थी; सड़कें खराब थीं। और फिर, यह कोई साधारण रास्ता नहीं था। गाड़ी बहुत भारी थी, और इसके अलावा, कई चढ़ाइयाँ भी थीं। उन्हें हेस्डिन से सेंट-पोल जाने में लगभग चार घंटे लगे; पांच लीग की दूरी तय करने में चार घंटे।
सेंट-पोल में, वह जिस पहले सराय में पहुँचा, वहाँ उसने घोड़े को जुए से मुक्त कराया और उसे अस्तबल में ले गया; जैसा कि उसने स्कॉफ्लेयर से वादा

किया था, वह घोड़े के चरनी के पास खड़ा रहा जब घोड़ा खाना खा रहा था; वह दुखद और उलझन भरी बातों के बारे में सोच रहा था।
सराय मालिक की पत्नी अस्तबल में आई।
"क्या महोदय नाश्ता नहीं करना चाहते?"
"जी हां, यह सच है; मुझे अच्छी भूख भी लग रही है।"
वह उस महिला के पीछे-पीछे गया, जिसका चेहरा गुलाबी और हंसमुख था; वह उसे सार्वजनिक कमरे में ले गई जहाँ मोम के कपड़े से ढकी मेजें थीं।
“जल्दी करो!” उसने कहा; “मुझे फिर से शुरू करना होगा; मुझे जल्दी है।”
एक लंबी कद-काठी वाली फ्लेमिश नौकरानी ने जल्दबाजी में उसका चाकू और कांटा रखा; उसने लड़की को सुकून भरी नजरों से देखा।
“यही तो मेरी समस्या थी,” उसने सोचा; “मैंने नाश्ता नहीं किया था।”
उनका नाश्ता परोसा गया; उन्होंने रोटी उठाई, एक निवाला लिया, और फिर धीरे से उसे मेज पर वापस रख दिया, और फिर उसे दोबारा नहीं छुआ।
एक गाड़ीवान दूसरे टेबल पर खाना खा रहा था; उसने इस आदमी से कहा:—
“यहाँ की रोटी इतनी कड़वी क्यों है?”
गाड़ीवान जर्मन था और उसे उसकी बात समझ नहीं आती थी।
वह अस्तबल में लौट आया और घोड़े के पास ही रहा।
एक घंटे बाद वह सेंट-पोल से निकल चुका था और टिन्क्स की ओर अपना रास्ता बना रहा था, जो अर्रास से केवल पांच लीग दूर है।
इस यात्रा के दौरान उसने क्या किया? वह क्या सोच रहा था? सुबह की तरह, उसने पेड़ों, छप्पर की छतों, जोते हुए खेतों को गुजरते देखा, और उस परिदृश्य को देखा जो सड़क के हर मोड़ पर टूटकर गायब हो जाता था; यह एक प्रकार का चिंतन है जो कभी-कभी आत्मा को तृप्त कर देता है, और लगभग उसे विचारों से मुक्त कर देता है। हजारों वस्तुओं को पहली और आखिरी बार देखने से ज्यादा उदास और गहरा क्या हो सकता है? यात्रा करना हर पल जन्म लेना और मरना है; शायद, अपने मन के सबसे धुंधले हिस्से में, उसने बदलते क्षितिज और हमारे मानवीय अस्तित्व के बीच तुलना की होगी: जीवन की सभी चीजें हमारे सामने निरंतर

भागती रहती हैं; अंधेरे और उजाले के अंतराल आपस में मिल जाते हैं; एक चकाचौंध भरे क्षण के बाद, ग्रहण; हम देखते हैं, हम जल्दी करते हैं, हम गुजरते हुए को पकड़ने के लिए अपने हाथ बढ़ाते हैं; प्रत्येक घटना सड़क का एक मोड़ है, और अचानक, हम बूढ़े हो जाते हैं; हमें एक झटका लगता है; सब कुछ काला हो जाता है; हम एक अस्पष्ट दरवाजे को पहचानते हैं; जीवन का अंधकारमय घोड़ा, जो हमें रोक रहा है, और हम देखते हैं कि एक नकाबपोश और अज्ञात व्यक्ति अंधेरे में लगाम खोल रहा है।
जब संध्या ढल रही थी, तब स्कूल से बाहर आ रहे बच्चों ने इस यात्री को टिंक्स में प्रवेश करते देखा; यह सच है कि दिन अभी छोटे थे; वह टिंक्स में नहीं रुका; जैसे ही वह गाँव से बाहर निकला, पत्थरों से सड़क की मरम्मत कर रहे एक मजदूर ने अपना सिर उठाया और उससे कहा:—
वह घोड़ा बहुत थका हुआ है।
दरअसल, बेचारा जानवर टहलते हुए जा रहा था।
“क्या आप अर्रास जा रहे हैं?” सड़क की मरम्मत करने वाले ने पूछा।
"हाँ।"
"अगर आप इसी रफ्तार से चलते रहे तो आप बहुत जल्दी नहीं पहुंच पाएंगे।" उसने अपना घोड़ा रोका और मजदूर से पूछा:—
“यहाँ से अर्रास कितनी दूर है?”
"लगभग सात अच्छी लीग।"
“यह कैसे हो सकता है? पोस्टिंग गाइड में तो सिर्फ पांच लीग और एक चौथाई ही लिखा है।”
“अरे!” सड़क की मरम्मत करने वाले ने जवाब दिया, “तो आपको नहीं पता कि सड़क की मरम्मत चल रही है? पंद्रह मिनट आगे जाने पर यह बंद मिलेगी; आगे जाने का कोई रास्ता नहीं है।”
"वास्तव में?"

“आपको बाईं ओर वाली सड़क लेनी है, जो कैरेंसी की ओर जाती है; आप नदी पार करेंगे; जब आप कैम्बलिन पहुंचेंगे, तो आप दाईं ओर मुड़ेंगे; वह सड़क मोंट-सेंट-एलोय की ओर जाती है जो अर्रास की ओर जाती है।”
लेकिन रात हो चुकी है, और मैं रास्ता भटक जाऊंगा।
“क्या आप इस इलाके के निवासी नहीं हैं?”
"नहीं।"
“और वैसे भी, यह सब चौराहे हैं; रुकिए! महोदय,” सड़क बनाने वाले ने फिर कहा; “क्या मैं आपको एक सलाह दूं? आपका घोड़ा थक गया है; टिंक्स लौट जाइए; वहां एक अच्छा सराय है; वहीं सो जाइए; आप कल अर्रास पहुंच सकते हैं।”
मुझे आज शाम वहां अवश्य पहुंचना होगा।
“वह अलग बात है; लेकिन फिर भी सराय में जाओ और एक अतिरिक्त घोड़ा ले आओ; अस्तबल का लड़का तुम्हें चौराहे से पार करा देगा।”
उसने सड़क बनाने वाले की सलाह मानी, अपने कदमों के निशान पर वापस लौटा, और आधे घंटे बाद, वह फिर उसी जगह से गुजरा, लेकिन इस बार पूरी गति से, एक अच्छे घोड़े की मदद से; एक अस्तबल का लड़का, जो खुद को पोस्टिलियन कहता था, कैरिओल के शाफ्ट पर बैठा था।
फिर भी, उसे ऐसा लगा कि उसने समय गंवा दिया है।
रात पूरी तरह से हो चुकी थी।
वे चौराहे पर मुड़े; रास्ता बेहद खराब हो गया; गाड़ी एक गड्ढे से दूसरे गड्ढे में डगमगाती हुई आगे बढ़ी; उसने चौकीदार से कहा:—
"लगातार दौड़ते रहो, नहीं तो दुगुनी फीस देनी पड़ेगी।"
एक झटके में पेड़ की टहनी टूट गई।
“देखो, वह पेड़ टूट गया है, महोदय,” पोस्टिलियन ने कहा; “मुझे अब अपने घोड़े को जोतना नहीं आता; रात में यह सड़क बहुत खराब हो जाती है; यदि आप वापस लौटकर टिंक्स में सोना चाहें, तो हम कल सुबह जल्दी अर्रास पहुँच सकते हैं।”
उसने जवाब दिया, "क्या तुम्हारे पास रस्सी और चाकू है?"

"जी श्रीमान।"

उसने एक पेड़ से एक शाखा काटी और उससे एक व्हिफ़ल ट्री बनाया।

इससे बीस मिनट का और नुकसान हुआ; लेकिन वे फिर से पूरी रफ्तार से आगे बढ़े।

मैदान उदास था; पहाड़ियों पर घनी, काली, घनी धुंध छाई हुई थी और धुएं की तरह छंट रही थी: बादलों में हल्की सफेद चमक थी; समुद्र से आती तेज़ हवा क्षितिज के हर कोने में ऐसी आवाज़ पैदा कर रही थी मानो कोई फर्नीचर हिला रहा हो; जो कुछ भी दिखाई दे रहा था, सब खौफ से भर गया था। रात की इस विशाल धुंध के नीचे कितनी ही चीज़ें कांप रही होंगी!

वह ठंड से कांप रहा था; उसने पिछली रात से कुछ नहीं खाया था; उसे आठ साल पहले डी के आसपास के विशाल मैदान में अपनी दूसरी रात्रि यात्रा की धुंधली सी याद थी, और ऐसा लग रहा था जैसे वह कल की ही बात हो।

दूर स्थित एक मीनार से घड़ी की घंटी बजी; उसने लड़के से पूछा:—

"ये वक़्त क्या है?"

“सात बज गए हैं, महोदय; हम आठ बजे अर्रास पहुँच जाएँगे; हमें अभी केवल तीन लीग की दूरी तय करनी है।”

उस क्षण, उसने पहली बार इस विचार में लीन होकर सोचा कि यह बात उसे पहले क्यों नहीं सूझी: कि वह जो भी प्रयास कर रहा है, शायद वह व्यर्थ है; कि उसे मुकदमे का समय तक नहीं पता; कि उसे कम से कम इसकी जानकारी तो ले लेनी चाहिए थी; कि बिना यह जाने कि वह किसी काम आएगा या नहीं, सीधे आगे बढ़ना उसकी मूर्खता है; फिर उसने मन ही मन कुछ गणनाएँ कीं: कि आम तौर पर, अदालत की कार्यवाही सुबह नौ बजे शुरू होती है; कि यह कोई लंबा मामला नहीं होगा; कि सेबों की चोरी बहुत संक्षिप्त होगी; कि तब केवल पहचान का प्रश्न, चार या पाँच बयान शेष रहेंगे, और वकीलों को बहुत कम बोलना होगा; कि वह सब कुछ समाप्त होने के बाद ही पहुँचेगा।

पोस्टिलियन ने घोड़ों को चाबुक मारा; वे नदी पार कर चुके थे और मोंट-सेंट-एलॉय को पीछे छोड़ चुके थे।

रात और भी गहरी होती चली गई।

VI. सिस्टर सिंपलिस की परीक्षा

लेकिन उस समय फैंटाइन बेहद खुश थी।

उसकी रात बहुत खराब गुजरी थी; उसकी खांसी भयानक थी; उसका बुखार दुगना बढ़ गया था; उसे बुरे सपने आए थे: सुबह जब डॉक्टर उससे मिलने आया, तो वह बेहोश थी; डॉक्टर घबरा गया और उसने आदेश दिया कि मैडम मैडेलीन के आते ही उसे सूचित किया जाए।

पूरी सुबह वह उदास रही, कम बोलती रही और चादरों में चोटी बनाती रही, धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदाती रही, मानो दूरियों का हिसाब लगा रही हो। उसकी आँखें धँसी हुई और टकटकी लगाए देख रही थीं। बीच-बीच में ऐसा लगता था मानो बुझ गई हों, फिर अचानक चमक उठती थीं और तारों की तरह दमकती थीं। ऐसा लगता है मानो किसी अंधकारमय घड़ी के आते ही, स्वर्ग का प्रकाश उन लोगों को भर देता है जो धरती के प्रकाश को त्याग रहे होते हैं।

जब भी सिस्टर सिंपलिस उनसे पूछतीं कि उन्हें कैसा लग रहा है, तो वह हमेशा जवाब देतीं, "ठीक हूँ। मैं मैडम मेडेलिन से मिलना चाहूँगी।"

कुछ महीने पहले, जब फैंटाइन ने अपनी आखिरी शर्म, आखिरी लज्जा और आखिरी खुशी खो दी थी, तब वह अपनी ही परछाई मात्र थी; अब वह अपनी ही परछाई बन चुकी थी। शारीरिक पीड़ा ने नैतिक पीड़ा को पूरा कर दिया था। पच्चीस साल की इस युवती के माथे पर झुर्रियाँ थीं, गाल ढीले पड़ गए थे, नाक सिकुड़ गई थी, मसूड़े पीछे हट गए थे, चेहरा पीला पड़ गया था, गर्दन हड्डियों से भरी थी, कंधे उभरे हुए थे, हाथ-पैर कमजोर थे, त्वचा बेजान थी, और उसके सुनहरे बालों में सफ़ेद बाल उगने लगे थे। हाय! बीमारी बुढ़ापे को कैसे और भी भयानक बना देती है!

दोपहर होते ही चिकित्सक वापस लौटा, कुछ निर्देश दिए, पूछा कि क्या महापौर अस्पताल में आए थे, और अपना सिर हिला दिया।

एम. मैडेलीन आमतौर पर बीमार व्यक्ति को देखने तीन बजे आते थे। क्योंकि समय का पाबंद होना दयालुता का गुण है, इसलिए वे समय के पाबंद थे।

लगभग ढाई बजे फैंटाइन बेचैन होने लगी। बीस मिनट के भीतर उसने नन से दस से अधिक बार पूछा, "बहन, कितना समय हुआ है?"

तीन बज गए। तीसरी घंटी बजते ही फैंटाइन बिस्तर पर उठ बैठी; जो आम तौर पर मुश्किल से करवट बदल पाती थी, उसने अपने पीले, मांसहीन हाथों को एक अजीब सी जकड़न में जोड़ लिया, और नन ने उसकी एक गहरी आह सुनी जो मानो उदासी को दूर भगा रही हो। फिर फैंटाइन मुड़ी और दरवाजे की ओर देखा।

कोई अंदर नहीं आया; दरवाजा नहीं खुला।

वह पंद्रह मिनट तक इसी तरह दरवाजे पर टकटकी लगाए बैठी रही, हिलती-डुलती नहीं थी और मानो सांस रोके खड़ी हो। बहन उससे बात करने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी। घड़ी में सवा तीन बज गए। फैंटाइन तकिए पर वापस गिर पड़ी।

उसने कुछ नहीं कहा, बल्कि एक बार फिर चादरों की चोटी बनाना शुरू कर दिया।

आधा घंटा बीत गया, फिर एक घंटा, कोई नहीं आया; हर बार जब घड़ी बजती, फैंटाइन चौंककर उठती और दरवाजे की ओर देखती, फिर वापस गिर जाती।

उसके विचार स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहे थे, लेकिन उसने किसी का नाम नहीं लिया, कोई शिकायत नहीं की, किसी पर दोष नहीं लगाया। लेकिन वह उदास स्वर में खांस रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उस पर कोई अंधकार छा रहा हो। वह बेहद क्रोधित थी और उसके होंठ नीले पड़ गए थे। वह बीच-बीच में मुस्कुरा रही थी।

पांच बज गए। तभी बहन ने उसे बहुत धीमी और कोमल आवाज़ में कहते सुना, "आज उसका न आना गलत है, क्योंकि मैं कल जा रही हूँ।"

सिस्टर सिंपलिस स्वयं एम. मेडेलीन की देरी से आश्चर्यचकित थीं।

इसी बीच, फैंटाइन अपने बिस्तर के पर्दे को घूर रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह कुछ याद करने की कोशिश कर रही हो। अचानक ही वह इतनी धीमी आवाज़ में गाने लगी जैसे कोई साँस। नन ने सुना। फैंटाइन यही गा रही थी:—

हम कितनी प्यारी चीजें खरीदेंगे, जैसे ही हम फाउबर्ग्स में टहलेंगे। गुलाब गुलाबी हैं, कॉर्नफ्लावर नीले हैं। मुझे मेरा प्यार पसंद है, कॉर्नफ्लावर नीले हैं।

कल कुंवारी मरियम कढ़ाईदार चादर ओढ़े मेरे चूल्हे के पास आईं और मुझसे कहा, 'यहाँ, उस बच्चे को मेरे घूंघट के नीचे छुपा दो जिसे तुमने एक दिन मुझसे माँगा था। जल्दी शहर जाओ, लिनेन खरीदो, सुई खरीदो, धागा खरीदो।'

हम उपनगरों में घूमते हुए प्यारी-प्यारी चीजें खरीदेंगे।

हे पवित्र कुंवारी माता, मैंने अपने चूल्हे के पास रिबन से सजा हुआ पालना रखा है। ईश्वर मुझे अपना सबसे सुंदर तारा प्रदान करें; मैं उस बच्चे को ही प्रिय मानती हूँ जो आपने मुझे दिया है। ‘महोदया, मैं इस उत्तम लिनेन का क्या करूँ?’ – ‘इससे अपने नवजात शिशु के लिए कपड़े बना लो।’

गुलाब गुलाबी हैं और कॉर्नफ्लावर नीले हैं, मैं अपने प्यार से प्यार करता हूँ, और कॉर्नफ्लावर नीले हैं।

‘इस लिनेन को धो दो।’—‘कहाँ?’—‘नदी में। इसे गंदा या खराब किए बिना, एक सुंदर पेटीकोट बना लो, जिसके साथ एक बढ़िया चोली भी हो, जिस पर मैं कढ़ाई करूँगी और फूल लगाऊँगी।’—‘महोदया, बच्चा अब यहाँ नहीं है; अब क्या किया जाए?’—‘तो फिर इसे एक कफ़न बना लो जिसमें मुझे दफ़नाया जाए।’

हम कितनी प्यारी चीजें खरीदेंगे, जैसे ही हम फाउबर्ग्स में टहलेंगे, गुलाब गुलाबी हैं, कॉर्नफ्लावर नीले हैं, मुझे मेरा प्यार पसंद है, कॉर्नफ्लावर नीले हैं।

यह गीत एक पुराना प्रेम गीत था, जिसे गाकर वह पहले अपनी नन्ही कोसेट को सुलाया करती थी, और जो पिछले पाँच वर्षों में, जब से वह अपनी बच्ची से अलग थी, उसके मन में कभी नहीं आया था। उसने इसे इतने उदास स्वर में और इतनी मधुर धुन में गाया कि किसी को भी, यहाँ तक कि एक नन को भी, रुलाने के लिए काफी था। तपस्या की आदी नन की आँखों में भी आँसू आ गए।

घड़ी में छह बज गए। फैंटाइन ने मानो इसे सुना ही नहीं। अब वह अपने आसपास की किसी भी चीज़ पर ध्यान नहीं दे रही थी।

सिस्टर सिंपलिस ने कारखाने की चौकीदार से यह पूछने के लिए एक नौकरानी को भेजा कि क्या महापौर लौट आए हैं और क्या वे जल्द ही अस्पताल नहीं आएंगे।
लड़की कुछ ही मिनटों में लौट आई।

फैंटाइन अभी भी स्थिर थी और अपने ही विचारों में डूबी हुई प्रतीत हो रही थी।

नौकर ने बड़ी धीमी आवाज़ में सिस्टर सिंपलिस को बताया कि मेयर उस सुबह छह बजे से पहले ही निकल पड़े थे, एक छोटे से सफेद घोड़े पर जोते हुए, चाहे मौसम कितना भी ठंडा क्यों न हो; वे अकेले गए थे, उनके साथ कोई ड्राइवर भी नहीं था; किसी को नहीं पता था कि उन्होंने कौन सा रास्ता लिया; लोगों का कहना था कि उन्हें अर्रास जाने वाली सड़क पर मुड़ते हुए देखा गया था; और कुछ लोगों का दावा था कि वे उनसे पेरिस जाने वाली सड़क पर मिले थे। जब वे गए तो हमेशा की तरह बहुत विनम्र थे, और उन्होंने दरबान से बस इतना कहा था कि उस रात उनका इंतज़ार न करें।

जब दोनों स्त्रियाँ फैंटीन के बिस्तर की ओर पीठ करके आपस में फुसफुसा रही थीं, बहन पूछताछ कर रही थी, नौकरानी अनुमान लगा रही थी, तभी फैंटीन, कुछ शारीरिक रोगों की तीव्र जीवंतता के साथ, जो स्वास्थ्य की स्वतंत्र गतिविधियों को मृत्यु की भयानक दुर्बलता से जोड़ देती हैं, बिस्तर पर घुटनों के बल उठ खड़ी हुई, उसके मुरझाए हुए हाथ तकिए पर टिके थे, उसका सिर पर्दों के छेद से बाहर निकला हुआ था, और वह सुन रही थी। अचानक वह चिल्लाई:—

“आप एम. मैडलीन की बात कर रहे हैं! आप इतनी नीची बातें क्यों कर रहे हैं? वह क्या कर रहे हैं? वह क्यों नहीं आ रहे?”

उसकी आवाज इतनी कर्कश और फटी हुई थी कि दोनों महिलाओं को लगा कि उन्होंने किसी पुरुष की आवाज सुनी है; वे डर के मारे पीछे मुड़ गईं।

“मुझे जवाब दो!” फैंटाइन चिल्लाई।

नौकर हकलाते हुए बोला:—

"दरबान ने मुझे बताया कि वह आज नहीं आ सकता।"

“शांत रहो, मेरे बच्चे,” बहन ने कहा; “फिर से लेट जाओ।”

फैंटाइन ने अपना रवैया बदले बिना, ऊँची आवाज़ में और एक ऐसे लहजे में बोलना जारी रखा जो दबंग और दिल दहला देने वाला दोनों था:

“वह नहीं आ सकता? क्यों नहीं? आपको कारण पता है। आप लोग वहाँ आपस में फुसफुसा रहे हैं। मैं जानना चाहता हूँ।”

नौकरानी ने जल्दी से नन के कान में कहा, "कह दो कि वह नगर परिषद के काम में व्यस्त है।"

सिस्टर सिंपलिस के चेहरे पर हल्की सी शर्मिंदगी झलक रही थी, क्योंकि नौकरानी द्वारा उसे शादी का प्रस्ताव देने की बात झूठ थी।

दूसरी ओर, उसे ऐसा लगा कि बीमार महिला को सच्चाई बताने मात्र से ही उसे गहरा आघात पहुँचेगा, और फैंटाइन की वर्तमान स्थिति में यह एक गंभीर मामला था। उसकी लाली ज़्यादा देर तक नहीं टिकी; बहन ने अपनी शांत, उदास निगाहें फैंटाइन की ओर उठाईं और कहा, "महामहिम चले गए हैं।"

फैंटाइन उठी और बिस्तर पर अपनी एड़ियों के बल बैठ गई: उसकी आँखें चमक उठीं; उस उदास चेहरे से अवर्णनीय आनंद झलक रहा था।

“चला गया!” वह चिल्लाई; “वह कोसेट को लेने गया है।”

फिर उसने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए, और उसका सफेद चेहरा भावविभोर हो गया; उसके होंठ कांपने लगे; वह धीमी आवाज में प्रार्थना कर रही थी।

प्रार्थना समाप्त होने पर उसने कहा, “बहन, मैं फिर से लेटने को तैयार हूँ; मैं आपकी हर इच्छा पूरी करूँगी; अभी थोड़ी शरारत कर दी थी; इतनी ज़ोर से बोलने के लिए क्षमा चाहती हूँ; ज़ोर से बोलना बहुत गलत है; मैं यह अच्छी तरह जानती हूँ, मेरी प्यारी बहन, लेकिन देखो, मैं बहुत खुश हूँ: ईश्वर दयालु है; एम. मेडेलीन दयालु हैं; ज़रा सोचो! वह मेरी छोटी कोसेट को लेने मोंटफर्मेइल गए हैं।”

वह नन की सहायता से फिर से लेट गई, नन को अपना तकिया ठीक करने में मदद की, और उस छोटे चांदी के क्रॉस को चूमा जिसे नन ने अपने गले में पहना हुआ था और जो सिस्टर सिंपलिस ने उसे दिया था।

बहन ने कहा, "मेरे बच्चे, अब आराम करने की कोशिश करो, और अब और बात मत करो।"

फैंटाइन ने अपनी बहन का हाथ अपने नम हाथों में लिया, और बहन को उस पसीने को महसूस करके पीड़ा हुई।

“वह आज सुबह पेरिस के लिए रवाना हो गया; वास्तव में, उसे पेरिस से होकर जाने की भी ज़रूरत नहीं है; वहाँ से आते ही मोंटफर्मेइल थोड़ा बाईं ओर है। क्या आपको याद है कि कल जब मैंने उससे कोसेट के बारे में बात की थी, तो उसने

मुझसे क्या कहा था, 'जल्द ही, जल्द ही'? वह मुझे सरप्राइज देना चाहता है, आप जानती हैं! उसने मुझसे एक पत्र पर हस्ताक्षर करवाए ताकि उसे थेनार्डियर्स से लिया जा सके; वे कुछ नहीं कह सकते, है ना? वे कोसेट को वापस कर देंगे, क्योंकि उन्हें भुगतान मिल चुका है; अधिकारियों उन्हें बच्चे को रखने की अनुमति नहीं देंगे क्योंकि उन्हें उनका भुगतान मिल चुका है। मुझे इशारे मत करो कि मुझे बात नहीं करनी चाहिए, बहन! मैं बहुत खुश हूँ; मैं ठीक हूँ; मैं अब बिल्कुल भी बीमार नहीं हूँ; मैं कोसेट से फिर मिलने जा रही हूँ; मुझे बहुत भूख भी लगी है; उसे आखिरी बार देखे हुए लगभग पाँच साल हो गए हैं; आप कल्पना नहीं कर सकतीं कि बच्चों से कितना लगाव हो जाता है, और फिर, वह कितनी सुंदर होगी; आप देखेंगी! काश आपको पता होता कि उसकी छोटी-छोटी गुलाबी उंगलियाँ कितनी प्यारी थीं! सबसे पहले, उसके हाथ बहुत सुंदर होंगे; जब वह छोटी थी तब उसके हाथ बहुत सुंदर थे वह सिर्फ एक साल की थी; बिल्कुल ऐसे! अब वह बड़ी हो गई होगी; वह सात साल की है; वह काफी जवान लड़की है; मैं उसे कोसेट बुलाती हूँ, लेकिन उसका असली नाम यूफ्रेसी है। रुको! आज सुबह मैं चिमनी पर जमी धूल देख रही थी, और अचानक मेरे मन में एक ख्याल आया, कि मुझे कोसेट से जल्द ही फिर मिलना चाहिए। हे भगवान! सालों तक अपने बच्चों को न देखना कितना बुरा है! हमें सोचना चाहिए कि जीवन अनंत नहीं है। ओह, मेयर साहब का जाना कितना अच्छा है! बहुत ठंड है! यह सच है; कम से कम उन्होंने अपना लबादा तो पहना था? वह कल यहाँ होंगे, है ना? कल त्योहार का दिन है; कल सुबह, बहन, तुम्हें मुझे याद दिलाना कि मैं अपनी लेस वाली छोटी टोपी पहन लूँ। मॉन्टफर्मेइल कितनी खूबसूरत जगह है! मैंने एक बार पैदल यात्रा की थी; मेरे लिए बहुत लंबी थी, लेकिन समय बहुत जल्दी बीत जाता है! वह कल कोसेट के साथ यहाँ होंगे: यहाँ से कितनी दूर है? मोंटफर्मेइल?

दूरियों का अंदाजा न रखने वाली बहन ने जवाब दिया, "ओह, मुझे लगता है कि वह कल यहाँ होगा।"

“कल! कल!” फैंटाइन ने कहा, “मैं कल कोसेट से मिलूंगी! देखो, हे ईश्वर की कृपापात्र बहन, मैं अब बीमार नहीं हूँ; मैं पागल हूँ; अगर कोई चाहे तो मैं नाच सकती हूँ।”

जो व्यक्ति उसे पंद्रह मिनट पहले देखता, वह इस बदलाव को समझ ही नहीं पाता; वह अब एकदम खिली-खिली लग रही थी; उसकी आवाज़ जीवंत और स्वाभाविक थी; उसका

पूरा चेहरा मुस्कान से जगमगा रहा था; वह बीच-बीच में बातें करती, धीरे से हँसती; एक माँ की खुशी लगभग शिशु जैसी थी।

“अच्छा,” नन ने बात जारी रखते हुए कहा, “अब जब तुम खुश हो, तो मेरी बात मानो और कुछ मत बोलो।”

फैंटाइन ने अपना सिर तकिए पर रखा और धीमी आवाज़ में कहा: "हाँ, फिर से लेट जाओ; अच्छी रहो, क्योंकि तुम अपने बच्चे को जन्म देने वाली हो; सिस्टर सिंपलिस सही कह रही हैं; यहाँ सब सही कह रहे हैं।"

और फिर, बिना हिले-डुले, बिना अपना सिर हिलाए, वह चौड़ी खुली आँखों और आनंदमय भाव से अपने चारों ओर देखने लगी, और उसने कुछ नहीं कहा।

बहन ने फिर से पर्दे खींच दिए, इस उम्मीद में कि फैंटाइन को नींद आ जाएगी। सात-आठ बजे के बीच डॉक्टर आए; कोई आवाज़ न सुनकर उन्होंने सोचा कि फैंटाइन सो रही है, वे धीरे से अंदर गए और दबे पांव बिस्तर के पास पहुंचे; उन्होंने पर्दे थोड़े से खोले और मोमबत्ती की रोशनी में उन्होंने फैंटाइन की बड़ी- बड़ी आंखें उन्हें घूरती हुई देखीं।

उसने उससे कहा, "उसे मेरे बगल में एक छोटे से बिस्तर पर सोने की अनुमति दी जाएगी, है ना, महोदय?"

डॉक्टर को लगा कि वह बेहोश है। उन्होंने आगे कहा:—

“देखो! यहाँ बिल्कुल जगह है।”

डॉक्टर ने सिस्टर सिम्पलिस को एक तरफ बुलाया और उन्होंने उन्हें सारी बात समझाई; कि एम. मैडेलीन एक-दो दिन के लिए अनुपस्थित थीं, और संदेह के कारण उन्होंने बीमार महिला को यह भ्रम दूर करना उचित नहीं समझा, जो मानती थी कि मेयर मोंटफर्मेइल गए हैं; कि यह संभव है कि उनका अनुमान सही हो: डॉक्टर ने इस बात से सहमति जताई।

वह फैंटाइन के बिस्तर पर लौट आया, और फैंटाइन ने आगे कहा:—

"देखो, जब वह सुबह उठेगी, तो मैं उसे सुप्रभात कह सकूंगा, बेचारी बिल्ली के बच्चे, और जब मुझे रात में नींद नहीं आएगी, तो मैं उसकी सोई हुई आवाज सुन सकूंगा; उसकी कोमल सांसें मुझे सुकून देंगी।"

डॉक्टर ने कहा, "मुझे अपना हाथ दो।"

उसने अपना हाथ फैलाया और हंसते हुए कहा:—

“अरे रुको! सच तो यह है कि तुम्हें पता ही नहीं था; मैं ठीक हो गया हूँ; कोसेट कल आ जाएगी।”

डॉक्टर आश्चर्यचकित थे; वह बेहतर थी; उसकी छाती पर दबाव कम हो गया था; उसकी नाड़ी फिर से मजबूत हो गई थी; मानो अचानक उसमें जान आ गई हो और इस बेचारी, कमजोर सी दिखने वाली महिला में नई जान आ गई हो।

“डॉक्टर,” उसने आगे कहा, “क्या सिस्टर ने आपको बताया कि एम. ले मेयर उस नन्हे बच्चे को लेने गए हैं?”

डॉक्टर ने मौन रहने की सलाह दी और कहा कि सभी कष्टदायक भावनाओं से बचना चाहिए; उन्होंने शुद्ध चिंचोना का काढ़ा पीने की सलाह दी और यदि रात में बुखार फिर से बढ़ जाए तो शांत करने वाली दवा भी बताई। विदा होते समय उन्होंने बहन से कहा:—

“उसकी हालत में सुधार हो रहा है; अगर सौभाग्य से मेयर कल बच्चे के साथ आ जाएं, तो कौन जाने? ऐसे संकट भी आते हैं जो बेहद चौंकाने वाले होते हैं; कई बार तो अपार खुशी से बीमारियाँ भी शांत हो जाती हैं; मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यह एक शारीरिक बीमारी है और गंभीर अवस्था में है, लेकिन ये सब बातें रहस्यमयी हैं: शायद हम उसे बचा सकें।”

VII. यात्री आगमन पर प्रस्थान के लिए सावधानियां बरतता है

शाम के लगभग आठ बज रहे थे जब वह गाड़ी, जिसे हमने सड़क पर छोड़ा था, अर्रास के होटल डे ला पोस्टे के बरामदे में दाखिल हुई; जिस आदमी का हम अब तक पीछा कर रहे थे, वह गाड़ी से उतरा, सराय के लोगों के अभिवादन पर उदासीन भाव से प्रतिक्रिया दी, अतिरिक्त घोड़े को वापस भेज दिया, और अपने हाथों से उस छोटे सफेद घोड़े को अस्तबल में ले गया; फिर उसने भूतल पर स्थित बिलियर्ड रूम का दरवाजा खोला, वहाँ बैठ गया और अपनी कोहनियों को मेज पर टिका लिया; उसे वह यात्रा पूरी करने में चौदह घंटे लग गए थे जिसे उसने छह घंटे में पूरा करने का अनुमान लगाया था; उसने यह स्वीकार करके खुद को न्याय दिलाया कि यह उसकी गलती नहीं थी, लेकिन वास्तव में, उसे कोई अफसोस नहीं था। होटल की मालकिन अंदर आईं।
“क्या महोदय को बिस्तर चाहिए? क्या महोदय को रात का भोजन चाहिए?”
उसने सिर को नकारात्मक दिशा में हिलाया।
"घुड़सवारी करने वाले का कहना है कि महाशय का घोड़ा बहुत थका हुआ है।" यहां उन्होंने अपनी चुप्पी तोड़ी।
"क्या घोड़ा कल सुबह फिर से यात्रा शुरू करने की स्थिति में नहीं होगा?" "ओह, महाशय! उन्हें कम से कम दो दिन आराम करना चाहिए।"
उन्होंने पूछा:—
“क्या डाक स्टेशन यहीं स्थित नहीं है?”
"जी श्रीमान।"
मेजबान महिला उसे दफ्तर ले गई; उसने अपना पासपोर्ट दिखाया और पूछा कि क्या उसी रात डाक गाड़ी से मसुर म लौटने का कोई रास्ता है; संयोग से डाकवाले के

बगल वाली सीट खाली थी; उसने उसे ले लिया और किराया चुका दिया। क्लर्क ने कहा, "महाशय, कृपया सुबह ठीक एक बजे यहाँ आकर प्रस्थान के लिए तैयार रहें।"

यह सब करने के बाद, वह होटल से निकल गया और शहर में घूमने लगा।

वह अर्रास से अपरिचित था; सड़कें अंधेरी थीं, और वह बेतरतीब ढंग से चलता रहा; लेकिन राहगीरों से रास्ता न पूछने का उसका कोई इरादा नहीं था। उसने छोटी सी क्रिंचोन नदी पार की, और खुद को संकरी गलियों के एक भूलभुलैया में पाया जहाँ वह रास्ता भटक गया। एक नागरिक लालटेन लिए हुए गुजर रहा था। कुछ झिझक के बाद, उसने उस आदमी से पूछने का फैसला किया, लेकिन पहले उसने पीछे और आगे देखा, मानो उसे डर था कि कहीं कोई उसका सवाल न सुन ले।

“महाशय,” उसने कहा, “कृपया बताएं कि न्यायालय कहाँ स्थित है?”

“महोदय, आप शहर के निवासी नहीं हैं?” एक अधेड़ उम्र के बुर्जुआ ने उत्तर दिया; “अच्छा, मेरे पीछे आइए। मैं संयोगवश न्यायालय की ओर जा रहा हूँ, अर्थात् प्रादेशिक कार्यालय के होटल की ओर; क्योंकि न्यायालय में इस समय मरम्मत का कार्य चल रहा है, और न्यायालयों की कार्यवाही अस्थायी रूप से प्रादेशिक कार्यालय में हो रही है।”

“क्या वहीं पर अदालती कार्यवाही होती है?” उसने पूछा।

“जी हाँ, महोदय; देखिए, आज का यह प्राध्यापक क्रांति से पहले बिशप का महल हुआ करता था। एम. डी कॉनज़ी, जो 1982 में बिशप थे, ने वहाँ एक भव्य भवन बनवाया था। इसी भव्य भवन में न्यायालय लगता है।”

रास्ते में, बुर्जुआ ने उससे कहा:—

"यदि महोदय किसी मामले को देखना चाहते हैं, तो काफी देर हो चुकी है। आम तौर पर सुनवाई शाम छह बजे समाप्त हो जाती है।"

लेकिन जब वे भव्य चौक पर पहुंचे, तो उस व्यक्ति ने उन्हें एक विशाल और अंधकारमय इमारत के सामने चार लंबी खिड़कियां दिखाईं, जो सभी रोशन थीं।

"मान लीजिए, महोदय, आप भाग्यशाली हैं; आप सही समय पर आए हैं। क्या आप वे चार खिड़कियाँ देख रहे हैं? वह अदालत है। वहाँ रोशनी है, इसलिए खिड़कियाँ पार नहीं हुई हैं। मामला बहुत लंबा खिंच गया होगा, और वे शाम की सुनवाई कर रहे

हैं। क्या आपको इस मामले में दिलचस्पी है? क्या यह कोई आपराधिक मामला है? क्या आप गवाह हैं?"
उन्होंने उत्तर दिया:—
मैं किसी काम से नहीं आया हूँ; मैं केवल एक वकील से बात करना चाहता हूँ। “यह अलग है,” बुर्जुआ ने कहा। “रुको महोदय; यह वह दरवाजा है जहाँ संतरी खड़ा रहता है। आपको बस भव्य सीढ़ियों से ऊपर जाना है।”
उन्होंने बुर्जुआ वर्ग के निर्देशों का पालन किया, और कुछ ही मिनटों बाद वह एक ऐसे हॉल में थे जहाँ बहुत सारे लोग मौजूद थे, और जहाँ वकीलों के समूह, अपने गाउन पहने हुए, इधर-उधर फुसफुसा रहे थे।
न्याय के कक्षों की दहलीज पर काले वस्त्र पहने पुरुषों के इन समूहों को धीमी आवाज़ में आपस में फुसफुसाते देखना हमेशा ही हृदय विदारक होता है। दया या करुणा के भाव इन शब्दों में शायद ही कभी झलकते हैं। इसके बजाय, पहले से ही निंदा की घोषणाएँ होने की संभावना अधिक होती है। राहगीर और विचारशील पर्यवेक्षक को ये सभी समूह ऐसे अंधकारमय छत्ते प्रतीत होते हैं जहाँ भिनभिनाती आत्माएँ मिलकर तरह-तरह की अंधेरी इमारतें रचती हैं।
एक ही दीपक से रोशन यह विशाल हॉल, बिशप के महल का पुराना हॉल था और न्याय महल के विशाल हॉल के रूप में कार्य करता था। दो पल्लों वाला एक दरवाजा, जो उस समय बंद था, इसे उस बड़े कमरे से अलग करता था जहाँ अदालत की बैठक चल रही थी।
वह इतना गुमनाम था कि उसे अपने सामने आने वाले पहले वकील से बात करने में कोई डर नहीं था।
“वे किस स्तर पर पहुंच गए हैं, महोदय?” उन्होंने पूछा।
“काम पूरा हो गया है,” वकील ने कहा।
"खत्म!"
यह शब्द इतने लहजे में दोहराया गया कि वकील मुड़कर देखने लगा।
"क्षमा कीजिए महोदय; शायद आप रिश्तेदार हैं?"
“नहीं; मैं यहाँ किसी को नहीं जानता। क्या फैसला सुनाया जा चुका है?”

“बिल्कुल। इसके अलावा कोई और विकल्प नहीं था।”
“क्या उन्हें दंडात्मक कारावास की सजा दी जाएगी?”
"जीवन के लिए।"
उसने इतनी धीमी आवाज़ में बोलना जारी रखा कि वह मुश्किल से सुनाई दे रही थी:
“तो फिर उनकी पहचान स्थापित हो गई?”
“कैसी पहचान?” वकील ने जवाब दिया। “पहचान साबित करने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी। मामला बहुत सीधा था। महिला ने अपने बच्चे की हत्या की थी; शिशुहत्या सिद्ध हो गई; जूरी ने पूर्वचिंता के सवाल को खारिज कर दिया, और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।”
“तो वह एक महिला थी?” उसने कहा।
“जी हाँ, बिल्कुल। लिमोसिन की महिला। आप किस बारे में बात कर रहे हैं?” “कुछ नहीं। लेकिन जब सब कुछ खत्म हो चुका है, तो हॉल में अभी भी रोशनी क्यों है?”
"एक अन्य मामले के लिए, जिसकी शुरुआत लगभग दो घंटे पहले हुई थी।"
“और कौन सा मामला?”
“ओह! ये तो बिल्कुल साफ मामला है। ये एक बदमाश के बारे में है; एक आदमी जिसे दूसरी बार अपराध के लिए गिरफ्तार किया गया है; एक कैदी जो चोरी का दोषी रहा है। मुझे उसका नाम ठीक से नहीं पता। देखो, ये तो किसी डाकू का चेहरा है! मैं तो उसे सिर्फ उसके चेहरे के बल पर ही जेल भेज देता।”
“क्या अदालत कक्ष में प्रवेश करने का कोई तरीका है, महोदय?” उसने कहा। मुझे सच में लगता है कि ऐसा नहीं है। काफी भीड़ है। हालांकि, सुनवाई स्थगित कर दी गई है। कुछ लोग बाहर चले गए हैं, और जब सुनवाई फिर से शुरू होगी, तो आप शायद कुछ प्रयास करेंगे।
“प्रवेश द्वार कहाँ है?”
“उस बड़े दरवाजे से होकर।”

वकील उसे छोड़कर चला गया। कुछ ही पलों में उसने लगभग एक साथ, लगभग आपस में मिली-जुली, हर तरह की भावना का अनुभव किया। उस उदासीन दर्शक के शब्द उसके दिल में बर्फ की सुई और आग की लपटों की तरह चुभ गए थे। जब उसने देखा कि कुछ भी तय नहीं हुआ है, तो उसने फिर से चैन की सांस ली; लेकिन वह यह नहीं बता सका कि उसे दर्द हो रहा है या सुख।

वह कई समूहों के पास गए और उनकी बातें सुनने लगे। सत्र का एजेंडा बहुत भारी था; अध्यक्ष ने एक ही दिन के लिए दो छोटे और सरल मामले तय किए थे। उन्होंने शिशुहत्या के मामले से शुरुआत की थी और अब वे दोषी, पुराने अपराधी, "लौटते घोड़े" तक पहुँच गए थे। इस व्यक्ति ने सेब चुराए थे, लेकिन यह पूरी तरह से साबित नहीं हुआ था; जो साबित हुआ था वह यह था कि वह पहले टूलॉन में गैलीज़ में रह चुका था। इसी बात ने उसके मामले को और भी पेचीदा बना दिया था। हालांकि, उस व्यक्ति की पूछताछ और गवाहों के बयान पूरे हो चुके थे, लेकिन वकील की दलील और लोक अभियोजक का भाषण अभी बाकी था; यह आधी रात से पहले पूरा नहीं हो सकता था। उस व्यक्ति को शायद दोषी ठहराया जाएगा; अटॉर्नी-जनरल बहुत चतुर थे और अपने अपराधियों को कभी नहीं चूकते थे; वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे जो कविताएँ लिखते थे।

एक दरबारी दरवाजे पर खड़ा था और अदालती सभा के हॉल से संपर्क बनाए हुए था। उसने उस दरबारी से पूछा:—

"क्या दरवाजा जल्द ही खुलेगा, महोदय?"

"इसे बिल्कुल नहीं खोला जाएगा," द्वारपाल ने उत्तर दिया।

“क्या! सुनवाई दोबारा शुरू होने पर इसे नहीं खोला जाएगा? क्या सुनवाई स्थगित नहीं है?”

“सुनवाई अभी-अभी दोबारा शुरू हुई है,” चौकीदार ने जवाब दिया, “लेकिन दरवाजा दोबारा नहीं खोला जाएगा।”

"क्यों?"

क्योंकि हॉल पूरी तरह से भरा हुआ है।

“क्या! एक और के लिए जगह नहीं है?”

“एक और नहीं। दरवाजा बंद है। अब कोई अंदर नहीं आ सकता।”

कुछ देर रुकने के बाद कर्मचारी ने कहा, "सच कहूं तो, राष्ट्रपति महोदय के पीछे दो-तीन अतिरिक्त सीटें हैं, लेकिन राष्ट्रपति महोदय केवल सरकारी अधिकारियों को ही उनमें बैठने की अनुमति देते हैं।"

इतना कहकर कर्मचारी ने अपनी पीठ फेर ली।

वह सिर झुकाए पीछे हट गया, प्रतीक्षालय पार किया और धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरने लगा, मानो हर कदम पर हिचकिचा रहा हो। संभवतः वह अपने आप से विचार-विमर्श कर रहा था। पिछली शाम से उसके भीतर चल रहा भयंकर संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ था; और हर क्षण उसे इसका कोई नया रूप देखने को मिल रहा था। सीढ़ियों पर पहुँचकर उसने अपनी पीठ रेलिंग से टिकाई और बाहें मोड़ लीं। अचानक उसने अपना कोट खोला, अपना पर्स निकाला, उसमें से एक पेंसिल निकाली, एक पन्ना फाड़ा और उस पन्ने पर गली की लालटेन की रोशनी में तेज़ी से यह पंक्ति लिखी: एम. मेडेलीन, मेयर ऑफ एम⸺ सुर एम⸺; फिर वह बड़े-बड़े कदमों से एक बार फिर सीढ़ियाँ चढ़ा, भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए सीधे चौकीदार के पास गया, उसे कागज़ सौंपा और अधिकारिक लहजे में कहा:—

"इसे राष्ट्रपति महोदय के पास ले जाइए।"

कर्मचारी ने कागज लिया, उस पर एक नजर डाली और बात मान ली।

VIII. कृपा से प्रवेश

हालांकि उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं था, लेकिन म• सुर म• के मेयर को एक तरह की प्रसिद्धि प्राप्त थी। सात वर्षों तक उनकी सदाचारी प्रतिष्ठा पूरे बास बोलोनैस में छाई रही; अंततः यह एक छोटे से जिले की सीमाओं से परे जाकर दो-तीन पड़ोसी विभागों में भी फैल गई। काले जेट उद्योग को पुनर्जीवित करके उन्होंने मुख्य नगर की जो सेवा की थी, उसके अलावा म• सुर म• के 140 कम्यूनों में से शायद ही कोई ऐसा कम्यून था जो किसी न किसी लाभ के लिए उनका ऋणी न रहा हो। उन्होंने जरूरत पड़ने पर अन्य अरॉन्डिसमेंटों के उद्योगों को भी सहायता और बढ़ावा दिया था। इसी प्रकार, जब भी अवसर मिला, उन्होंने अपने साख और धन से बोलोन में लिनन कारखाने, फ्रेवेंट में सन कताई उद्योग और बौबर्स-सुर-कैंचे में हाइड्रोलिक कपड़ा निर्माण को समर्थन दिया था। हर जगह एम. मेडेलीन का नाम श्रद्धापूर्वक लिया जाता था। अर्रास और डुआई, एम⸺ सुर एम⸺ के खुशहाल छोटे शहर और उसके मेयर से ईर्ष्या करते थे।

अर्रास में न्यायालय के इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे दुआई के शाही दरबार के पार्षद, बाकी दुनिया की तरह, इस नाम से परिचित थे, जिसे सर्वत्र अत्यंत सम्मान प्राप्त था। जब दरबारी ने परिषद कक्ष को न्यायालय से जोड़ने वाला दरवाजा सावधानीपूर्वक खोला, अध्यक्ष की कुर्सी के पीछे झुककर उन्हें वह कागज दिया जिस पर अभी-अभी पढ़ी गई पंक्ति लिखी थी, और आगे लिखा था: "महोदय मुकदमे में उपस्थित होना चाहते हैं," तो अध्यक्ष ने तुरंत और विनम्रतापूर्वक कलम उठाई और कागज के नीचे कुछ शब्द लिखकर उसे दरबारी को लौटा दिया और कहा, "उन्हें अंदर आने दीजिए।"

जिस दुखी व्यक्ति की कहानी हम सुना रहे हैं, वह हॉल के दरवाजे के पास उसी जगह और उसी मुद्रा में खड़ा रहा, जिस मुद्रा में उसे द्वारपाल ने छोड़ा था। अपने विचारों में डूबे हुए उसने किसी को कहते सुना, "महाशय, क्या आप कृपया मेरे साथ आएंगे?" यह वही द्वारपाल था जिसने कुछ क्षण पहले उससे मुंह मोड़ लिया था और जो अब उसके सामने ज़मीन पर झुक रहा था। उसी समय द्वारपाल ने उसे कागज़ थमा दिया। उसने उसे खोला और संयोगवश रोशनी के पास होने के कारण वह उसे पढ़ सका।

“अदालत के अध्यक्ष एम. मेडेलीन को अपना सम्मान व्यक्त करते हैं।”

उसने कागज को अपने हाथ में मसल दिया, मानो उन शब्दों में उसके लिए एक अजीब और कड़वा स्वाद छिपा हो।

वह द्वारपाल के पीछे-पीछे चला गया।

कुछ मिनट बाद उसने खुद को एक गंभीर दिखने वाले, लकड़ी की लकड़ी से बने कमरे में अकेला पाया, जो हरे कपड़े से ढकी मेज पर रखी दो मोमबत्तियों की रोशनी से जगमगा रहा था। अभी-अभी उसे छोड़कर गए दरबारी के आखिरी शब्द अभी भी उसके कानों में गूंज रहे थे: "महाशय, आप अब परिषद कक्ष में हैं; आपको बस उस दरवाजे का तांबे का हैंडल घुमाना है, और आप अदालत कक्ष में राष्ट्रपति की कुर्सी के पीछे पहुंच जाएंगे।" ये शब्द उसके विचारों में उन संकरे गलियारों और अंधेरी सीढ़ियों की धुंधली यादों के साथ घुलमिल गए थे जिनसे वह हाल ही में गुजरा था।

द्वारपाल उसे अकेला छोड़कर चला गया था। वह निर्णायक क्षण आ चुका था। उसने अपने होश संभालने की कोशिश की, पर नहीं। जीवन की पीड़ादायक वास्तविकताओं से जुड़ने की सबसे अधिक आवश्यकता वाले क्षण में ही मस्तिष्क में विचारों की कड़ियाँ टूट जाती हैं। वह ठीक उसी स्थान पर था जहाँ न्यायाधीश विचार-विमर्श करते और फैसले सुनाते थे। मूर्खतापूर्ण शांति के साथ उसने इस शांत और भयावह कक्ष का अवलोकन किया, जहाँ अनगिनत जीवन चकनाचूर हो चुके थे, जो जल्द ही उसके नाम से गूंजने वाला था, और जहाँ उसका भाग्य उस क्षण चल रहा था। उसने दीवार को घूरा, फिर खुद को देखा, यह सोचकर आश्चर्यचकित हुआ कि यह वही कक्ष है और वह स्वयं है।

उसने चौबीस घंटे से कुछ नहीं खाया था; गाड़ी के झटकों से वह थक चुका था, लेकिन उसे इसका एहसास नहीं था। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसे कुछ महसूस ही नहीं हो रहा हो।

वह दीवार पर टंगे एक काले फ्रेम के पास पहुंचा, जिसमें कांच के नीचे पेरिस के मेयर और मंत्री जीन निकोलस पाशे का एक प्राचीन हस्तलिखित पत्र था। पत्र पर, संभवतः किसी गलती से, द्वितीय वर्ष की 9 जून की तारीख लिखी थी, और उसमें पाशे ने कम्यून को उनके द्वारा गिरफ्तार किए गए मंत्रियों और सांसदों की सूची भेजी थी। उस समय जो भी दर्शक उसे देख रहा होता, वह निःसंदेह समझ जाता

कि यह पत्र उसे बहुत दिलचस्प लगा, क्योंकि उसने अपनी निगाहें उससे हटाई नहीं और उसे दो-तीन बार पढ़ा। उसने बिना ध्यान दिए, अचेतन रूप से उसे पढ़ा। वह फैंटाइन और कोसेट के बारे में सोच रहा था।

सपने में ही वह मुड़ा और उसकी नज़र उस पीतल के मूठ पर पड़ी जो उसे अदालत से अलग करने वाले दरवाजे पर लगी थी। वह उस दरवाजे को लगभग भूल ही गया था। उसकी नज़र, जो पहले शांत थी, वहीं ठहर गई, उस पीतल के मूठ पर टिकी रही, फिर भयभीत हो गई और धीरे-धीरे डर से भर गई। उसके बालों में पसीने की बूँदें फूट पड़ीं और कनपटी पर बहने लगीं।

एक क्षण में उन्होंने एक ऐसा अवर्णनीय इशारा किया, जिसमें विद्रोह के साथ-साथ एक प्रकार का अधिकार भी झलक रहा था, जिसका अर्थ था, और जो बखूबी व्यक्त कर रहा था, “परड्यू! मुझे ऐसा करने के लिए कौन विवश कर रहा है?” फिर वे तेज़ी से घूमे, सामने उस दरवाज़े को देखा जिससे वे अंदर आए थे, उसके पास गए, उसे खोला और बाहर निकल गए। वे अब उस कमरे में नहीं थे; वे बाहर एक गलियारे में थे, एक लंबा, संकरा गलियारा, जो सीढ़ियों और जालीदार दरवाजों से बना था, तरह-तरह के कोण बनाता हुआ, और जगह-जगह लालटेन से जगमगा रहा था, ठीक वैसे ही जैसे बीमारों की रात की मोमबत्ती, जिस गलियारे से वे अंदर आए थे। उन्होंने साँस ली, उन्होंने सुना; न आगे कोई आवाज़, न पीछे कोई आवाज़, और वे ऐसे भागे जैसे कोई उनका पीछा कर रहा हो।

इस गलियारे में कई मोड़ लेने के बाद भी वह सुनता रहा। वही सन्नाटा छाया हुआ था, और उसके चारों ओर वही अंधेरा था। उसकी सांस फूल रही थी; वह लड़खड़ाया; वह दीवार से टिक गया। पत्थर ठंडा था; उसके माथे पर पसीना बर्फ की तरह ठंडा था; वह कांपते हुए सीधा खड़ा हुआ।

फिर, अंधेरे में अकेले, ठंड से कांपते हुए और शायद किसी और चीज से भी, वह ध्यान करने लगा।

उसने पूरी रात ध्यान किया; उसने पूरे दिन ध्यान किया: उसे अपने भीतर केवल एक ही आवाज सुनाई दी, जो कह रही थी, "हाय!"

इस प्रकार पंद्रह मिनट बीत गए। अंत में उसने अपना सिर झुकाया, पीड़ा से आह भरी, अपने हाथ नीचे गिराए और वापस लौटने लगा। वह धीरे-धीरे चल रहा था, मानो

कुचला हुआ हो। ऐसा लग रहा था मानो भागते समय किसी ने उसे पकड़ लिया हो और वापस ला रहा हो।

वह परिषद कक्ष में पुनः दाखिल हुआ। सबसे पहले उसकी नज़र दरवाजे के हैंडल पर पड़ी। यह गोल और पॉलिश किए हुए पीतल का हैंडल उसे किसी भयानक तारे की तरह चमक रहा था। वह उसे ऐसे निहार रहा था जैसे कोई मेमना बाघ की आँखों में देखता है।

वह उससे अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहा था। वह बीच-बीच में एक कदम आगे बढ़कर दरवाजे की ओर बढ़ता।

यदि उसने ध्यान से सुना होता, तो उसे बगल वाले हॉल से एक अस्पष्ट बड़बड़ाहट जैसी आवाज सुनाई देती; लेकिन उसने ध्यान से नहीं सुना, और उसे कुछ सुनाई नहीं दिया।

अचानक, खुद को पता चले बिना कि यह कैसे हुआ, उसने खुद को दरवाजे के पास पाया; उसने कांपते हुए दरवाजे की कुंडी पकड़ी; दरवाजा खुल गया।

वह अदालत कक्ष में मौजूद था।

IX. एक ऐसा स्थान जहाँ दृढ़ विश्वासों का निर्माण हो रहा है

वह एक कदम आगे बढ़ा, अपने पीछे यंत्रवत रूप से दरवाजा बंद कर लिया और खड़ा रहा, जो कुछ उसने देखा उसका चिंतन करता रहा।

यह एक विशाल और कम रोशनी वाला अपार्टमेंट था, जो कभी शोरगुल से भरा होता था, कभी सन्नाटे से, जहां एक आपराधिक मामले की सारी प्रक्रियाएं, भीड़ के बीच अपनी तुच्छ और दुखद गंभीरता के साथ, विकास की प्रक्रिया में थीं।

हॉल के एक छोर पर, जहाँ वह बैठा था, न्यायाधीश बैठे थे, भावहीन, फटे-पुराने वस्त्रों में, जो अपने नाखून कुतर रहे थे या अपनी पलकें बंद कर रहे थे; दूसरे छोर पर, फटेहाल लोगों की भीड़ थी; तरह-तरह के हाव-भाव वाले वकील; कठोर लेकिन ईमानदार चेहरों वाले सैनिक; प्राचीन, धब्बेदार लकड़ी का काम, एक गंदी छत, पीले रंग के कपड़े से ढकी मेजें; हाथों के निशानों से काले पड़े दरवाजे; छत की दीवारों में कीलों से लटके हुए शराबखाने के लैंप जो रोशनी से ज़्यादा धुआँ उगल रहे थे; मेजों पर पीतल के मोमबत्ती स्टैंड में मोमबत्तियाँ; अँधेरा, कुरूपता, उदासी; और इन सबसे एक गंभीर और भव्य प्रभाव उभर रहा था, क्योंकि वहाँ व्यक्ति उस महान मानवीय भावना को महसूस कर रहा था जिसे कानून कहते हैं, और उस महान दैवीय भावना को जिसे न्याय कहते हैं।

उस भीड़ में किसी ने भी उस पर ध्यान नहीं दिया; सभी निगाहें एक ही बिंदु पर टिकी थीं, राष्ट्रपति के बाईं ओर की दीवार में एक छोटे से दरवाजे के सामने रखी एक लकड़ी की बेंच पर; कई मोमबत्तियों की रोशनी से जगमगाती इस बेंच पर, दो पुलिसकर्मियों के बीच एक आदमी बैठा था।

यह आदमी वाकई कमाल का था।

उसने उसे खोजा नहीं; उसने उसे देखा; उसकी आँखें स्वाभाविक रूप से उस ओर गईं, मानो उन्हें पहले से ही पता हो कि वह आकृति कहाँ है।

उसे लगा कि वह खुद को बूढ़ा देख रहा है; बेशक, चेहरा बिल्कुल वैसा नहीं था, लेकिन हावभाव और रूप-रंग बिल्कुल वैसा ही था, उसके बिखरे हुए बाल, उसकी

जंगली और बेचैन आंखें, उसका ब्लाउज, ठीक वैसा ही जैसा उस दिन था जब वह नफरत से भरा हुआ जेल में दाखिल हुआ था, अपनी आत्मा को उन भयानक विचारों के घिनौने ढेर में छुपाए हुए, जिन्हें उसने उन्नीस साल जेल की फर्श पर बैठकर इकट्ठा किया था।

उसने सिहरते हुए मन ही मन कहा, "हे भगवान! क्या मैं फिर से वैसा ही बन जाऊंगा?"

यह प्राणी कम से कम साठ वर्ष का प्रतीत होता था; उसमें कुछ अवर्णनीय रूप से असभ्य, मूर्ख और भयभीत करने वाला भाव था।

दरवाजा खुलने की आवाज सुनते ही लोग उनके लिए रास्ता बनाने के लिए एक तरफ हट गए; राष्ट्रपति ने अपना सिर घुमाया और यह समझते हुए कि अभी-अभी प्रवेश करने वाला व्यक्ति एम• सुर एम• का महापौर है, उन्होंने उन्हें प्रणाम किया; अटॉर्नी-जनरल, जिन्होंने एम. मेडेलीन को एम• सुर एम• में देखा था, जहाँ उनके कार्यालय के कर्तव्यों ने उन्हें एक से अधिक बार बुलाया था, उन्होंने भी उन्हें पहचान लिया और उनका अभिवादन किया: उन्हें शायद ही इसका एहसास हुआ हो; वे एक प्रकार के भ्रम के शिकार थे; वे देख रहे थे।

न्यायाधीश, क्लर्क, पुलिसकर्मी, क्रूरता से जिज्ञासु चेहरों की भीड़, ये सब उसने पहले भी एक बार देखा था, बीते दिनों में, सत्ताईस साल पहले; उसका सामना एक बार फिर उन घातक चीजों से हुआ था; वे वहीं थे; वे चल रहे थे; वे अस्तित्व में थे; यह अब उसकी स्मृति का प्रयास नहीं था, उसके विचारों का भ्रम नहीं था; वे असली पुलिसकर्मी और असली न्यायाधीश थे, एक असली भीड़ थी, और हाड़-मांस के असली इंसान थे: सब कुछ खत्म हो गया था; उसने अपने अतीत के राक्षसी रूपों को फिर से प्रकट होते और अपने चारों ओर फिर से जीवित होते देखा, वास्तविकता में जो कुछ भी भयावह है, उसके साथ।

यह सब उसके सामने स्पष्ट रूप से फैला हुआ था।

वह इससे भयभीत हो गया; उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने मन की गहराइयों में चीखते हुए कहा, "कभी नहीं!"

और नियति के एक दुखद खेल से, जिसने उसके सभी विचारों को झकझोर दिया और उसे लगभग पागल कर दिया, वहाँ उसका ही एक दूसरा रूप मौजूद था! सभी उस व्यक्ति को, जिस पर मुकदमा चल रहा था, जीन वालजेन कहते थे।

उसकी आंखों के सामने, एक अभूतपूर्व दृष्टि से, उसके जीवन के सबसे भयानक क्षण का एक प्रकार का चित्रण उसके प्रेत द्वारा घटित किया गया था।

सब कुछ वैसा ही था; साजो-सामान वही था, रात का वही समय, न्यायाधीशों, सैनिकों और दर्शकों के चेहरे; सब कुछ वही था, बस राष्ट्रपति के सिर के ऊपर एक क्रूस लटका हुआ था, जो उनकी निंदा के समय अदालतों में मौजूद नहीं था: जब उनका न्याय किया जा रहा था तब ईश्वर अनुपस्थित थे।

उसके पीछे एक कुर्सी थी; वह डर के मारे उस पर बैठ गया, कहीं उसे कोई देख न ले; बैठते ही उसने जज की मेज पर रखे गत्ते के बक्सों के ढेर का सहारा लेकर अपना चेहरा कमरे में सबसे छिपा लिया; अब वह बिना देखे देख सकता था; उसे वास्तविकता का पूरा होश आ गया था; धीरे-धीरे वह संभल गया; वह उस अवस्था में पहुँच गया जहाँ सुनना संभव था।

एम. बामाताबोइस जूरी सदस्यों में से एक थे।

उसने जैवर्ट को ढूंढा, लेकिन वह उसे नहीं दिखा; गवाहों के बैठने की जगह क्लर्क की मेज से छिपी हुई थी, और फिर, जैसा कि हमने अभी कहा है, हॉल में रोशनी बहुत कम थी।

जिस समय यह प्रवेश हुआ, प्रतिवादी के वकील ने अभी-अभी अपनी दलीलें पूरी की थीं।

सभी का ध्यान चरम सीमा पर था; यह मामला तीन घंटे तक चला था: तीन घंटे तक वह भीड़ एक अजीब आदमी को देख रही थी, मानवता का एक दयनीय नमूना, या तो बेहद मूर्ख या बेहद चालाक, धीरे-धीरे एक भयानक समानता के बोझ तले दब रहा था। जैसा कि पाठक पहले से ही जानते हैं, यह आदमी एक आवारा था जो एक खेत में मिला था, जिसके पास पके सेबों से लदी एक शाखा थी, जो पड़ोसी के बगीचे में टूटी हुई थी, जिसका नाम पिएरॉन बगीचा था। यह आदमी कौन था? एक जांच की गई थी; गवाहों के बयान सुने गए थे, और वे एकमत थे; पूरी बहस में प्रकाश की भरमार थी; अभियोग में कहा गया: “हमारे हाथ में न केवल एक लुटेरा, फल चोर है; बल्कि हमारे हाथों में एक डाकू, एक पुराना अपराधी है जिसने अपना जुर्म कबूल किया है, एक पूर्व कैदी, सबसे खतरनाक किस्म का बदमाश, जीन वालजेन नाम का एक कुटिल अपराधी है, जिसकी न्याय व्यवस्था लंबे समय से तलाश कर रही थी, और जिसने आठ साल पहले, टूलॉन की जेल से निकलते ही, लिटिल गेरवाइस नाम के एक

सैवॉयर्ड बच्चे पर हिंसा के साथ एक राजमार्ग डकैती की थी; यह अपराध दंड संहिता के अनुच्छेद 383 के तहत आता है, जिसके लिए उस पर मुकदमा चलाने का अधिकार हम बाद में सुरक्षित रखते हैं, जब उसकी पहचान न्यायिक रूप से स्थापित हो जाएगी। उसने अभी-अभी एक नई चोरी की है; यह दूसरा अपराध है; उसे इस नए कृत्य के लिए दोषी ठहराया जाए; पुराने अपराध के लिए उस पर बाद में मुकदमा चलाया जाएगा।” इस अभियोग के सामने, गवाहों की सर्वसम्मति के सामने, आरोपी किसी भी चीज़ से ज़्यादा आश्चर्यचकित प्रतीत हुआ; वह इशारे और हाव-भाव करता था जिनका मतलब 'नहीं' होता था, या फिर वह छत को घूरता रहता था: वह मुश्किल से बोलता था, झिझकते हुए जवाब देता था, लेकिन उसका पूरा व्यक्तित्व, सिर से पैर तक, इनकार का प्रतीक था; अपने चारों ओर युद्ध की तैयारी में खड़े इन सभी बुद्धिमान लोगों के सामने वह एक मूर्ख की तरह था, और उस समाज के बीच एक अजनबी की तरह था जो उसे तेजी से जकड़ रहा था; फिर भी, यह उसके लिए सबसे भयावह भविष्य का सवाल था; हर पल उसकी स्थिति और खराब होती जा रही थी, और पूरी भीड़ उससे भी ज्यादा चिंता से उस विपत्ति से भरी सजा को देख रही थी जो उसके सिर पर मंडरा रही थी; एक संभावना की झलक भी दिखाई दे रही थी; यातनाओं के अलावा, अगर उसकी पहचान साबित हो जाती, और लिटिल गेर्विस का मामला निंदा में समाप्त हो जाता, तो उसे मौत की सजा भी हो सकती थी। यह आदमी कौन था? उसकी उदासीनता का स्वरूप क्या था? क्या यह मूर्खता थी या चालाकी? क्या वह बहुत अच्छी तरह समझता था, या बिल्कुल नहीं समझता था? ये ऐसे सवाल थे जिन्होंने भीड़ को बाँट दिया था, और ऐसा लग रहा था कि जूरी भी बँट गई है; इस मामले में कुछ ऐसा था जो भयानक और पेचीदा दोनों था: यह नाटक न केवल दुखद था, बल्कि अस्पष्ट भी था।

बचाव पक्ष के वकील ने उस प्रांतीय बोली में काफी अच्छी तरह से बात की, जो लंबे समय से बार की वाक्पटुता का प्रतीक रही है, और जिसका प्रयोग पहले पेरिस के साथ-साथ रोमोरांटिन या मोंटब्रिसन में सभी वकीलों द्वारा किया जाता था, और जो आज, शास्त्रीय भाषा बन जाने के कारण, केवल मजिस्ट्रेट के आधिकारिक वक्ताओं द्वारा ही बोली जाती है, जिनके लिए यह अपनी गंभीर ध्वनि और राजसी लय के कारण उपयुक्त है; एक ऐसी भाषा जिसमें पति को साथी और महिला को पत्नी कहा जाता है; पेरिस, कला और सभ्यता का केंद्र; राजा, सम्राट; बिशप महाशय, एक संत पोप; जिला अटॉर्नी, लोक अभियोजन का वाक्पटु व्याख्याकार;

तर्क, वे लहजे जिन्हें हमने अभी सुना; लुई XIV का युग, महान युग; एक रंगमंच, मेलपोमेन का मंदिर; शासक परिवार, हमारे राजाओं का गौरवशाली वंश; एक संगीत कार्यक्रम, एक संगीतमय समारोह; प्रांत के जनरल कमांडेंट, वह प्रख्यात योद्धा, आदि; सेमिनरी के विद्यार्थी, ये कोमल हल्के-फुल्के मज़ाक; समाचार पत्रों पर लगाए गए आरोप, वह पाखंड जो उन पत्रिकाओं के स्तंभों के माध्यम से अपना ज़हर उगलता है; आदि। वकील ने सेबों की चोरी के बारे में स्पष्टीकरण से शुरुआत की—एक अटपटा मामला जिसे बड़े ही सलीके से पेश किया गया था; लेकिन बेनिन बॉसुएट को खुद एक अंतिम संस्कार भाषण के बीच में मुर्गी का ज़िक्र करना पड़ा, और उन्होंने बड़ी गरिमा के साथ खुद को उस स्थिति से बाहर निकाला। वकील ने यह साबित किया कि सेबों की चोरी परिस्थितिजन्य रूप से सिद्ध नहीं हुई थी। उनके मुवक्किल, जिन्हें वे वकील होने के नाते शैंपमैथ्यू कहकर पुकारते रहे, को न तो किसी ने उस दीवार पर चढ़ते देखा था और न ही उस शाखा को तोड़ते। उन्हें उस शाखा (जिसे वकील टहनी कहना पसंद करते थे) के साथ पकड़ा गया था; लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें वह टूटी हुई और ज़मीन पर पड़ी मिली थी, और उन्होंने उसे उठा लिया था। इसके विपरीत कोई सबूत कहाँ था? इसमें कोई शक नहीं कि दीवार फांदने के बाद शाखा तोड़कर छिपा दी गई थी, और फिर घबराए हुए लुटेरे ने उसे फेंक दिया था; इसमें कोई संदेह नहीं था कि इस मामले में एक चोर शामिल था। लेकिन इस बात का क्या सबूत था कि वह चोर शैंपमैथ्यू ही था? केवल एक ही बात। उसका पूर्व अपराधी होना। वकील ने इस बात से इनकार नहीं किया कि उसका यह चरित्र, दुर्भाग्य से, अच्छी तरह से प्रमाणित प्रतीत होता था; आरोपी फेवरोल्स में रहता था; आरोपी वहाँ पेड़ काटने का काम करता था; शैंपमैथ्यू नाम की उत्पत्ति जीन मैथ्यू से हुई हो सकती है; यह सब सच था—संक्षेप में, चार गवाह शैंपमैथ्यू को बिना किसी हिचकिचाहट के उस अपराधी, जीन वालजेन के रूप में पहचानते हैं; इन सबूतों, इस गवाही के सामने वकील अपने मुवक्किल के इनकार, एक संबंधित पक्ष के इनकार के अलावा कुछ नहीं कर सकता था; लेकिन मान लीजिए कि वह अपराधी जीन वालजेन था, तो क्या इससे यह साबित होता है कि वह सेबों का चोर था? यह महज़ एक अनुमान था, सबूत नहीं। यह सच था कि कैदी और उसके वकील, दोनों को ही "नेक इरादे से" यह स्वीकार करना पड़ा कि उन्होंने "बचाव की एक कमज़ोर रणनीति" अपनाई थी। उन्होंने हठपूर्वक हर बात से इनकार किया, चोरी से लेकर अपने अपराधी होने तक। इस आखिरी बिंदु पर स्वीकारोक्ति निश्चित रूप से बेहतर होती और इससे

उन्हें न्यायाधीशों की दया मिल जाती; वकील ने उन्हें ऐसा करने की सलाह भी दी थी; लेकिन आरोपी ने हठपूर्वक इनकार कर दिया, शायद यह सोचकर कि कुछ भी स्वीकार न करके वह सब कुछ बचा लेगा। यह एक गलती थी; लेकिन क्या इस जानकारी की कमी पर विचार नहीं किया जाना चाहिए? यह आदमी स्पष्ट रूप से मूर्ख था। जेल में लंबे समय तक दयनीय स्थिति और जेल के बाहर लंबे समय तक कष्ट ने उसे क्रूर बना दिया था, आदि। उसने अपना बचाव बुरी तरह से किया; क्या यह उसे दोषी ठहराने का कारण था? जहाँ तक लिटिल गेर्विस के मामले की बात है, वकील को इस पर चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है; इसका मामले से कोई लेना-देना नहीं था। वकील ने अंत में जूरी और अदालत से विनती की कि यदि उन्हें जीन वालजेन की पहचान स्पष्ट प्रतीत होती है, तो उस पर उन पुलिस दंडों को लागू किया जाए जो प्रतिबंध तोड़ने वाले अपराधी के लिए निर्धारित हैं, न कि उस भयानक दंड को जो दूसरी बार अपराध करने वाले दोषी पर लागू होता है।

जिला अटॉर्नी ने बचाव पक्ष के वकील को जवाब दिया। उनका लहजा उग्र और भड़काऊ था, जैसा कि आमतौर पर जिला अटॉर्नी होते हैं।

उन्होंने बचाव पक्ष के वकील को उनकी "वफादारी" के लिए बधाई दी और इस वफादारी का चतुराई से फायदा उठाया। उन्होंने वकील द्वारा दी गई सभी रियायतों के माध्यम से आरोपी तक पहुँच बनाई। वकील ने मानो स्वीकार कर लिया था कि कैदी जीन वालजेन है। उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया। तो यह व्यक्ति जीन वालजेन ही था। यह बात आरोप के पक्ष में मान ली गई थी और अब इस पर विवाद नहीं किया जा सकता था। यहाँ, अपराध के स्रोतों और कारणों तक पहुँचने वाली एक चतुर स्वायत्तता का उपयोग करते हुए, जिला अटॉर्नी ने रोमांटिक शैली की अनैतिकता के खिलाफ गरजते हुए हमला किया, जो उस समय "शैतानी शैली" के नाम से उभर रही थी, जिसे क्वोटिडिएन और ओरिफ्लेम के आलोचकों ने यह नाम दिया था; उन्होंने कुछ हद तक संभावना के साथ, इस विकृत साहित्य के प्रभाव को शैंपमैथ्यू के अपराध का कारण बताया, या अधिक सटीक रूप से कहें तो, जीन वालजेन के अपराध का। इन सभी बातों को समाप्त करने के बाद, वे जीन वालजेन की ओर मुड़े। यह जीन वालजेन कौन था? जीन वालजेन का वर्णन: एक राक्षस का प्रज्वलित होना, इत्यादि। इस प्रकार के वर्णन का आदर्श थेरामेन की कहानी में निहित है, जो त्रासदी के लिए उपयोगी नहीं है, लेकिन न्यायिक वाक्पटुता में प्रतिदिन बड़ी सेवाएँ प्रदान करती है। श्रोता और जूरी "काँप उठे।"

वर्णन समाप्त होने पर, जिला अटॉर्नी ने अगले दिन प्रीफेक्चर के समाचार पत्र के उत्साह को चरम पर पहुँचाने के उद्देश्य से एक भाषण शैली में बोलना शुरू किया: और यह ऐसा आदमी है, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि, आवारा, भिखारी, निर्धन, इत्यादि, इत्यादि, अपने पिछले जीवन से निंदनीय कृत्यों का आदी, और जेल में रहने से बहुत कम सुधरा है, जैसा कि लिटिल गेर्विस के खिलाफ किए गए अपराध से सिद्ध हुआ, इत्यादि, इत्यादि; एक ऐसा आदमी, जो राजमार्ग पर चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया, दीवार फांदने के कुछ ही कदमों की दूरी पर, चोरी की वस्तु अभी भी उसके हाथ में थी, फिर भी उसने अपराध, चोरी, दीवार फांदने, सब कुछ नकार दिया; यहाँ तक कि अपनी पहचान से भी इनकार कर दिया! सौ अन्य सबूतों के अलावा, जिनका हम यहाँ उल्लेख नहीं करेंगे, चार गवाह उसे पहचानते हैं—जेवर्ट, ईमानदार पुलिस निरीक्षक; जेवर्ट, और उसके तीन कुख्यात साथी, कैदी ब्रेवेट, चेनिल्डियू और कोचेपाइल। इस सर्वसम्मत मत के विरुद्ध वह क्या प्रस्तुत करता है? उसका इनकार। कितनी हठधर्मिता! आप न्याय करेंगे, जूरी के सज्जनों, इत्यादि। जब जिला अटॉर्नी बोल रहा था, आरोपी उसे खुले मुँह से सुन रहा था, एक प्रकार के आश्चर्य के साथ जिसमें निश्चित रूप से कुछ प्रशंसा भी मिली हुई थी। वह स्पष्ट रूप से आश्चर्यचकित था कि कोई व्यक्ति इस तरह कैसे बात कर सकता है। अभियोजक के भाषण के उन "ऊर्जावान" क्षणों में, जब वाक्पटुता का अनियंत्रित प्रवाह कटु विशेषणों की बाढ़ बनकर आरोपी को तूफान की तरह घेर लेता था, तो वह अपना सिर धीरे-धीरे दाएं से बाएं और बाएं से दाएं हिलाता था, मानो वह मौन और उदास विरोध जता रहा हो, जैसा कि उसने बहस की शुरुआत से ही किया था। उसके सबसे करीब बैठे दर्शकों ने उसे दो-तीन बार धीमी आवाज में कहते सुना, "श्री बलूप से न पूछने का यही परिणाम होता है।" जिला अटॉर्नी ने जूरी का ध्यान इस मूर्खतापूर्ण रवैये की ओर दिलाया, जो स्पष्ट रूप से जानबूझकर किया गया था और जो मूर्खता नहीं, बल्कि धूर्तता, कौशल, न्याय को धोखा देने की आदत को दर्शाता था, और जो इस व्यक्ति की "गहरी विकृति" को पूरी तरह उजागर करता था। उन्होंने लिटिल गेर्विस के मामले पर अपनी आपत्ति जताते हुए और कड़ी सजा की मांग करते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

जैसा कि पाठक को याद होगा, उस समय यह आजीवन कारावास की सजा थी।

बचाव पक्ष के वकील उठे, महाशय एडवोकेट जनरल की "शानदार भाषण" के लिए उनकी प्रशंसा करते हुए अपनी बात शुरू की, फिर यथासंभव जवाब दिया; लेकिन वे कमजोर पड़ गए; ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनके पैरों तले से ज़मीन खिसक रही है।

X. अस्वीकरण की प्रणाली

बहस समाप्त करने का समय आ गया था। राष्ट्रपति ने आरोपी को खड़ा किया और उनसे प्रथागत प्रश्न पूछा, "क्या आप अपने बचाव में कुछ जोड़ना चाहेंगे?"

वह आदमी कुछ समझ नहीं पा रहा था, क्योंकि वह वहीं खड़ा अपने हाथों में पकड़ी हुई एक भयानक टोपी को मरोड़ रहा था।

राष्ट्रपति ने प्रश्न दोहराया।

इस बार उस आदमी ने सुन लिया। मानो वह समझ गया हो। उसने एक ऐसे व्यक्ति की तरह हरकत की जो अभी-अभी जागा हो, चारों ओर नज़र घुमाई, दर्शकों, पुलिसकर्मियों, अपने वकील, जूरी, अदालत को घूरा, अपनी विशाल मुट्ठी अपनी बेंच के सामने लकड़ी के किनारे पर रखी, एक और नज़र डाली, और अचानक, ज़िला- अटॉर्नी पर अपनी नज़र टिकाते हुए, वह बोलने लगा। यह एक विस्फोट जैसा था। जिस तरह से शब्द उसके मुँह से निकले—असंगत, उतावले, बेतरतीब, एक-दूसरे पर गिरते हुए—ऐसा लग रहा था मानो वे सब एक साथ बाहर निकलने के लिए दबाव डाल रहे हों। उसने कहा:—

“मुझे बस इतना ही कहना है। कि मैं पेरिस में एक पहिया बनाने वाला कारीगर था, और वह भी महाशय बलूप के साथ। यह एक कठिन काम है। पहिया बनाने के काम में हमेशा खुली हवा में, आंगनों में, कारीगरों के अच्छे होने पर शेड के नीचे काम करना पड़ता है, कभी भी बंद कार्यशालाओं में नहीं, क्योंकि जगह की आवश्यकता होती है, आप जानते हैं। सर्दियों में इतनी ठंड लगती है कि खुद को गर्म करने के लिए बाहों को आपस में पीटना पड़ता है; लेकिन कारीगरों को यह पसंद नहीं आता; वे कहते हैं कि इससे समय बर्बाद होता है। पक्की सड़कों के बीच बर्फ जमी होने पर लोहे को संभालना बहुत कठिन काम है। इससे इंसान जल्दी थक जाता है। इस काम में इंसान जवान रहते हुए ही बूढ़ा हो जाता है। चालीस साल की उम्र में तो काम खत्म हो जाता है। मैं तिरपन साल का था। मेरी हालत खराब थी। और फिर, कारीगर कितने मतलबी होते हैं! जब कोई आदमी जवान नहीं रहता, तो वे उसे बूढ़ा पक्षी, बूढ़ा जानवर कहकर पुकारते हैं! मैं तीस सू से ज्यादा दिन का नहीं कमाता था। वे मुझे जितना हो सके उतना कम भुगतान करते

थे। कारीगरों ने मेरी उम्र का फायदा उठाया—और फिर मेरी एक बेटी थी, जो नदी किनारे कपड़े धोने का काम करती थी। वह भी थोड़ी-बहुत कमाई कर लेती थी। हम दोनों के लिए इतना ही काफी था। उसे भी बहुत परेशानी होती थी; सारा दिन बारिश और बर्फ में कमर तक पानी में टब में डूबे रहना पड़ता था। चाहे हवा चेहरे को चीर दे, चाहे ठंड लगे, सब एक जैसा ही होता है; फिर भी नहाना ही पड़ता है। कुछ लोगों के पास ज्यादा कपड़े नहीं होते, इसलिए वे देर तक इंतजार करते हैं; अगर आप नहीं नहाएंगे, तो आपका ग्राहक खो जाएगा। तख्ते ठीक से जुड़े नहीं होते, और हर तरफ से पानी की बूंदें आप पर गिरती हैं; आपके पेटीकोट ऊपर-नीचे से पूरी तरह गीले हो जाते हैं। वह पानी अंदर तक घुस जाता है। उसने एनफैंट्स-रूज के लॉन्ड्री में भी काम किया है, जहाँ नलों से पानी आता है। वहाँ आप टब में नहीं होते; आप अपने सामने वाले नल से नहाते हैं, और अपने पीछे वाले बेसिन में कुल्ला करते हैं। क्योंकि वह बंद जगह होती है, इसलिए आपको ज्यादा ठंड नहीं लगती; लेकिन वहाँ गर्म भाप होती है, जो बहुत भयानक होती है, और आँखों को खराब कर देती है। वह शाम सात बजे घर आई, और इतनी थकी हुई थी कि तुरंत बिस्तर पर चली गई। उसके पति उसे पीटा। वह मर गई। हम बहुत खुश नहीं थे। वह एक अच्छी लड़की थी, जो पार्टी में नहीं जाती थी और बहुत शांत स्वभाव की थी। मुझे एक मंगलवार याद है जब वह रात आठ बजे सो गई थी। मैं सच कह रहा हूँ; आपको बस पूछना है। अरे हाँ! मैं कितना मूर्ख हूँ! पेरिस एक खाई है। वहाँ फादर शैम्पमैथ्यू को कौन जानता है? लेकिन मिस्टर बालूप जानते हैं, मैं आपको बता रहा हूँ। मिस्टर बालूप के यहाँ जाकर देखें; और वैसे भी, मुझे नहीं पता कि मुझसे क्या अपेक्षा की जाती है।

वह आदमी चुप हो गया और खड़ा रहा। उसने ये बातें ऊँची, तेज़ और कर्कश आवाज़ में कही थीं, जिनमें एक तरह की चिड़चिड़ी और क्रूर भोलापन झलक रहा था। एक बार वह भीड़ में किसी को सलाम करने के लिए रुका। उसके मुंह से निकलने वाली बातें हिचकी जैसी थीं, और हर बात के साथ वह लकड़ी काटने वाले की तरह इशारा कर रहा था। जब उसकी बात खत्म हुई, तो दर्शक ज़ोर से हंस पड़े। उसने लोगों को घूरा और उन्हें हंसते हुए देखकर, और यह न समझ पाने पर कि क्यों, वह खुद भी हंसने लगा।

यह अशुभ था।

राष्ट्रपति, जो एक चौकस और दयालु व्यक्ति थे, ने अपनी आवाज ऊंची की।

उन्होंने “न्यायालय के सदस्यों” को याद दिलाया कि “पूर्व में कुशल पहियाकार सिएर बलूप, जिनके साथ आरोपी ने काम करने का दावा किया था, को बुलाया गया था, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। वे दिवालिया हो गए थे और उनका कोई पता नहीं चल रहा था।” फिर आरोपी की ओर मुड़कर उन्होंने उसे अपनी बात ध्यान से सुनने के लिए कहा और आगे बोले: “आप ऐसी स्थिति में हैं जहाँ चिंतन करना आवश्यक है। आप पर गंभीर आरोप लगे हैं, और इनके घातक परिणाम हो सकते हैं। कैदी, आपके अपने हित में, मैं आपको अंतिम बार दो बिंदुओं पर स्पष्ट रूप से स्पष्टीकरण देने के लिए बुला रहा हूँ। पहला, क्या आपने पिएरॉन बाग की दीवार पर चढ़कर शाखा तोड़ी और सेब चुराए थे; यानी, क्या आपने सेंधमारी और चोरी का अपराध किया था? दूसरा, क्या आप वही रिहा कैदी, जीन वालजेन हैं—हाँ या ना?”

कैदी ने आत्मविश्वास से सिर हिलाया, मानो वह पूरी तरह समझ चुका हो और जानता हो कि उसे क्या जवाब देना है। उसने अपना मुंह खोला, राष्ट्रपति की ओर मुड़ा और बोला:—

“सबसे पहले—”

फिर उसने अपनी टोपी को देखा, छत को देखा और कुछ देर चुप रहा।

“कैदी,” जिला अटॉर्नी ने कठोर स्वर में कहा; “ध्यान दो। तुम पूछे गए किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे रहे हो। तुम्हारी शर्मिंदगी ही तुम्हें दोषी ठहरा रही है। यह स्पष्ट है कि तुम्हारा नाम शैंपमैथ्यू नहीं है; तुम वही दोषी जीन वालजेन हो, जिसने पहले अपनी माँ के नाम जीन मैथ्यू के नाम से अपना भेष बदला था; तुम औवेर्गने गए थे; तुम्हारा जन्म फेवरोल्स में हुआ था, जहाँ तुम वृक्षों की छंटाई करते थे। यह स्पष्ट है कि तुम पिएरॉन के बाग में घुसने और पके सेब चुराने के दोषी हो। जूरी के सदस्य अपना निर्णय स्वयं लेंगे।”

कैदी अंततः अपनी सीट पर वापस बैठ गया था; जिला अटॉर्नी के भाषण समाप्त होते ही वह अचानक उठ खड़ा हुआ और चिल्लाया:—

“तुम बहुत दुष्ट हो; सचमुच! यही मैं कहना चाहता था; पहले तो मुझे शब्द ही नहीं मिल रहे थे। मैंने कुछ नहीं चुराया है। मैं एक ऐसा आदमी हूँ जिसे हर दिन खाने को नहीं मिलता। मैं ऐली से आ रहा था; बारिश के बाद मैं गाँव से

गुज़र रहा था, जिसने पूरे गाँव को पीला कर दिया था: यहाँ तक कि तालाब भी उफान पर थे, और रेत से कुछ भी नहीं उग रहा था सिवाय रास्ते के किनारे उगी घास की छोटी-छोटी पत्तियों के। मुझे ज़मीन पर सेबों से लदी एक टूटी हुई डाल मिली; मैंने बिना सोचे-समझे उस डाल को उठा लिया कि इससे मैं मुसीबत में पड़ जाऊँगा। मैं जेल में हूँ, और वे पिछले तीन महीनों से मुझे इधर-उधर घसीट रहे हैं; इससे ज़्यादा मैं कुछ नहीं कह सकता; लोग मेरे खिलाफ़ बातें करते हैं, वे मुझसे कहते हैं, ‘जवाब दो!’ जेंडरम, जो एक अच्छा आदमी है, मेरी कोहनी को धक्का देता है, और धीमी आवाज़ में मुझसे कहता है, ‘आओ, जवाब दो!’ मुझे नहीं पता कि कैसे समझाऊँ; मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ; मैं एक गरीब आदमी हूँ; यहीं पर वे मेरे साथ अन्याय करते हैं, क्योंकि वे यह नहीं देखते। मैंने चोरी नहीं की है; मैं मैंने ज़मीन पर पड़ी चीज़ें उठाईं। आप कहते हैं, जीन वालजेन, जीन मैथ्यू! मैं इन लोगों को नहीं जानता; ये गाँव वाले हैं। मैंने एम. बालूप के यहाँ काम किया, बुलेवार्ड डी ल'हॉपिटल में; मेरा नाम शैंपमैथ्यू है। आपने मुझे मेरा जन्मस्थान बताकर बड़ी चतुराई दिखाई; मुझे खुद नहीं पता: हर किसी के पास जन्म लेने के लिए घर नहीं होता; यह तो बहुत सुविधाजनक होता। मुझे लगता है कि मेरे माता-पिता राजमार्गों पर घूमने वाले लोग थे; मुझे इसके अलावा कुछ और याद नहीं। जब मैं बच्चा था, तो वे मुझे 'युवा' कहते थे; अब वे मुझे 'बूढ़ा' कहते हैं; ये मेरे बपतिस्मा के नाम हैं; आप इसे जैसे चाहें समझें। मैं औवेर्गने में रहा हूँ; मैं फेवरोल्स में रहा हूँ। पर्डी। अच्छा! क्या कोई व्यक्ति औवेर्गने या फेवरोल्स में बिना युद्ध के नहीं रह सकता? मैं आपको बताता हूँ कि मैंने चोरी नहीं की है, और मैं फादर शैंपमैथ्यू हूँ; मैं एम. के साथ रहा हूँ। बलूप; मेरा एक स्थायी निवास है। तुम्हारी ये बकवास मुझे परेशान कर रही है! आखिर सब लोग मेरा इतना पीछा क्यों कर रहे हैं?

जिला अटॉर्नी खड़े ही रहे; उन्होंने राष्ट्रपति को संबोधित किया:—

“महामहिम अध्यक्ष महोदय, कैदी के भ्रमित लेकिन बेहद चालाक इनकारों को देखते हुए, जो खुद को मूर्ख साबित करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन इसमें सफल नहीं होगा—हम इस पर ध्यान देंगे—हम आपसे और अदालत से निवेदन करते हैं कि दोषियों ब्रेवेट, कोशेपाइल और चेनिल्डियू तथा पुलिस निरीक्षक

जावर्ट को एक बार फिर यहाँ बुलाया जाए और उनसे अंतिम बार इस बात की पूछताछ की जाए कि क्या यह कैदी जीन वालजेन के समान है।”

राष्ट्रपति ने कहा, "मैं जिला अटॉर्नी को याद दिलाना चाहूंगा कि पुलिस इंस्पेक्टर जावर्ट, जिन्हें पड़ोसी जिले की राजधानी में अपने कर्तव्यों के कारण वापस बुलाया गया था, अपना बयान देने के तुरंत बाद अदालत कक्ष और शहर छोड़कर चले गए थे; हमने जिला अटॉर्नी और कैदी के वकील की सहमति से उन्हें अनुमति दे दी है।"

“यह सच है, श्रीमान राष्ट्रपति,” जिला अटॉर्नी ने जवाब दिया। “सियूर जावर्ट की अनुपस्थिति में, मैं जूरी के सदस्यों को उनके द्वारा कुछ घंटे पहले यहाँ कही गई बातों की याद दिलाना अपना कर्तव्य समझता हूँ। जावर्ट एक आदरणीय व्यक्ति हैं, जो अपने कठोर और निष्ठापूर्ण व्यवहार से निम्न लेकिन महत्वपूर्ण पदों का सम्मान करते हैं। उनके बयान के शब्द इस प्रकार हैं: ‘कैदी के इनकार को झूठा साबित करने के लिए मुझे परिस्थितिजन्य प्रमाणों और नैतिक अनुमानों की भी आवश्यकता नहीं है। मैं उसे पूरी तरह से पहचानता हूँ। इस व्यक्ति का नाम शैंपमैथ्यू नहीं है; वह जीन वालजेन नाम का एक पूर्व कैदी है, और बहुत ही दुष्ट और खूंखार है। उसे उसकी सजा पूरी होने पर रिहा करना अत्यंत खेदजनक था। उसने चोरी के लिए उन्नीस साल की सजा काटी। उसने पाँच या छह बार भागने का प्रयास किया। लिटिल गेरवाइस और पिएरॉन बाग से चोरी के अलावा, मुझे उस पर स्वर्गीय बिशप ऑफ डी के घर में की गई चोरी का भी संदेह है। जब मैं सहायक था, तब मैंने उसे अक्सर देखा था। टूलॉन की जेल में तैनात गैली-गार्ड का। मैं दोहराता हूं कि मैं उसे पूरी तरह से पहचानता हूं।'

इस अत्यंत सटीक बयान ने जनता और जूरी पर गहरा प्रभाव डाला। जिला अटॉर्नी ने यह कहते हुए अपना बयान समाप्त किया कि जावर्ट की अनुपस्थिति में, तीनों गवाहों ब्रेवेट, चेनिल्डियू और कोचेपाइल को एक बार फिर सुना जाना चाहिए और उनसे गंभीरतापूर्वक पूछताछ की जानी चाहिए।

राष्ट्रपति ने एक दरबारी को आदेश दिया, और कुछ ही क्षणों में गवाहों के कमरे का दरवाजा खुल गया। दरबारी, जिसके साथ सशस्त्र सहायता के लिए तैयार एक पुलिसकर्मी भी था, ने कैदी ब्रेवेट को अंदर लाया। उपस्थित लोग उत्सुकता से भरे हुए थे; और सभी के सीने ऐसे धड़क रहे थे मानो उनमें एक ही आत्मा समाई हो।

पूर्व कैदी ब्रेवेट ने केंद्रीय कारागारों की काली और धूसर जैकेट पहनी हुई थी। ब्रेवेट साठ वर्ष का था, जिसका चेहरा किसी व्यापारी जैसा था और हावभाव में एक बदमाश की झलक थी। ये दोनों गुण कभी-कभी साथ-साथ दिखाई देते हैं। जेल में, जहाँ नए अपराधों के कारण वह पहुँचा था, वह एक तरह से जेलर बन गया था। उसके वरिष्ठ अधिकारी उसके बारे में कहते थे, "वह अपना काम निकालने की कोशिश करता है।" पादरियों ने उसकी धार्मिक आदतों के बारे में अच्छी गवाही दी। यह नहीं भूलना चाहिए कि यह सब पुनर्स्थापना काल के दौरान हुआ था।

राष्ट्रपति ने कहा, "ब्रेवेट, आपको एक अपमानजनक सजा भुगतनी पड़ी है, और आप शपथ नहीं ले सकते।"

ब्रेवेट ने अपनी निगाहें झुका लीं।

“फिर भी,” राष्ट्रपति ने आगे कहा, “कानून द्वारा अपमानित किए गए व्यक्ति में भी, ईश्वरीय कृपा से, सम्मान और न्याय की भावना शेष रह सकती है। इस निर्णायक क्षण में मैं इसी भावना से अपील करता हूँ। यदि यह भावना अभी भी आप में मौजूद है—और मुझे आशा है कि है—तो मुझे उत्तर देने से पहले विचार करें: एक ओर इस व्यक्ति के बारे में सोचें, जिसे आपके एक शब्द से बर्बाद किया जा सकता है; दूसरी ओर न्याय के बारे में सोचें, जिसे आपके एक शब्द से प्रकाश मिल सकता है। यह क्षण गंभीर है; यदि आपको लगता है कि आप गलत थे, तो अभी भी पीछे हटने का समय है। उठो, कैदी। ब्रिगेडियर, आरोपी को ध्यान से देखो, अपनी यादों को याद करो, और अपने दिल और अंतरात्मा की कसम खाकर बताओ, क्या तुम अब भी इस व्यक्ति को अपने पुराने साथी, जीन वालजेन के रूप में पहचानते हो?”

ब्रेवेट ने कैदी की ओर देखा, फिर अदालत की ओर मुड़ गया।

जी हां, राष्ट्रपति महोदय, मैंने ही सबसे पहले उन्हें पहचाना था, और मैं अपनी बात पर कायम हूं; वह व्यक्ति जीन वालजेन हैं, जो 1796 में टूलॉन में दाखिल हुए और 1815 में चले गए। मैं उनके एक साल बाद गया था। अब उनमें एक क्रूर व्यक्ति का आभास होता है; लेकिन यह उम्र के कारण ही होगा; वह जहाजों पर बहुत चालाक थे: मैं उन्हें पूरी तरह से पहचानता हूं।

राष्ट्रपति ने कहा, "अपनी जगह बैठ जाओ। कैदी, खड़े रहो।"

चेनिल्डियू को आजीवन कारावास की सजा के साथ लाया गया, जैसा कि उसके लाल चोगे और हरी टोपी से स्पष्ट था। वह टूलॉन के जहाजों में अपनी सजा काट रहा था, जहाँ से उसे इस मामले के लिए लाया गया था। वह लगभग पचास वर्ष का एक छोटा, फुर्तीला, झुर्रियों वाला, कमजोर, पीला पड़ा हुआ, निर्भीक चेहरे वाला, बुखार से ग्रस्त व्यक्ति था, जिसके सभी अंगों और पूरे शरीर में एक प्रकार की अस्वस्थता और कमजोरी थी, और उसकी निगाहों में अपार शक्ति थी। जहाजों में उसके साथियों ने उसे 'मैं ईश्वर का इनकार करता हूँ' (जे-नी डियू, चेनिल्डियू) उपनाम दिया था।

राष्ट्रपति ने लगभग उन्हीं शब्दों में उनसे बात की जो उन्होंने ब्रेवेट से कही थीं। जिस क्षण उन्होंने उन्हें उनके उस कलंक की याद दिलाई जिसके कारण उन्हें शपथ लेने का अधिकार नहीं था, चेनिल्डियू ने अपना सिर उठाया और भीड़ की ओर देखा। राष्ट्रपति ने उन्हें चिंतन करने के लिए कहा और उनसे वही प्रश्न पूछा जो उन्होंने ब्रेवेट से पूछा था, कि क्या वे अभी भी उस कैदी को मान्यता देने पर अडिग हैं।

चेनिल्डियू जोर से हंस पड़ा।

“पार्डियू, मानो मैं उसे पहचानता ही न हूँ! हम पाँच साल तक एक ही जंजीर से बंधे रहे। तो क्या तुम रूठ गए हो, बूढ़े दोस्त?”

राष्ट्रपति ने कहा, "जाओ और अपनी सीट पर बैठ जाओ।"

द्वारपाल कोशेपाइल को अंदर लाया। वह भी आजीवन कारावास का कैदी था, जो जेल की कोठरियों से आया था। चेनिल्डियू की तरह वह भी लाल वस्त्र पहने हुए था, लूर्डेस का किसान था और पाइरेनीज़ का आधा भालू जैसा दिखता था। वह पहाड़ों में भेड़ों की रखवाली करता था और चरवाहे से डाकू बन गया था। कोशेपाइल भी उतना ही क्रूर था और कैदी से भी ज़्यादा मूर्ख लगता था। वह उन अभागे लोगों में से एक था जिन्हें प्रकृति ने जंगली जानवरों की तरह चित्रित किया था और जिन्हें समाज कोठरियों में कैदियों के रूप में अंतिम रूप देता था।

राष्ट्रपति ने कुछ गंभीर और मार्मिक शब्दों से उसे प्रभावित करने की कोशिश की और उससे, जैसा कि उन्होंने अन्य दो लोगों से पूछा था, पूछा कि क्या वह बिना किसी झिझक या परेशानी के, अपने सामने खड़े व्यक्ति को पहचानने में दृढ़ है।

“यह जीन वाल्जेन है,” कोशेपाइल ने कहा। “उसे जीन-द-स्क्रू भी कहा जाता था, क्योंकि वह बहुत ताकतवर था।”

इन तीनों व्यक्तियों द्वारा दिए गए ये सभी कथन, जो स्पष्ट रूप से ईमानदार और नेक इरादे से किए गए थे, ने श्रोताओं के बीच कैदी के लिए अशुभ संकेत की फुसफुसाहट पैदा कर दी थी - एक ऐसी फुसफुसाहट जो हर बार कार्यवाही में एक नई घोषणा जोड़े जाने पर बढ़ती और अधिक समय तक बनी रहती थी।

कैदी ने उनकी बातें सुनीं, उस अचंभित चेहरे के साथ जो आरोप के अनुसार, उसका मुख्य बचाव का तरीका था; पहली बात पर, उसके पड़ोसी पुलिसकर्मियों ने उसे दांतों के बीच से बुदबुदाते हुए सुना: "अरे वाह, अच्छा है! वह तो बढ़िया है!" दूसरी बात के बाद, उसने थोड़ी ऊंची आवाज में, लगभग संतुष्टि भरे लहजे में कहा, "शानदार!" तीसरी बात पर, वह चिल्लाया, "मशहूर!"

राष्ट्रपति ने उन्हें संबोधित किया:—

“कैदी, क्या तुमने सुना है? तुम्हें क्या कहना है?”

उन्होंने उत्तर दिया:—

मैं कहता हूँ, ‘प्रसिद्ध!’

दर्शकों के बीच हंगामा मच गया और इसकी सूचना जूरी को दी गई; यह स्पष्ट था कि वह व्यक्ति लापता हो गया था।

राष्ट्रपति ने कहा, "प्रतिनिधिगण, शांति बनाए रखें! मैं तर्कों का सारांश प्रस्तुत करने जा रहा हूँ।"

उसी क्षण राष्ट्रपति के ठीक बगल में हलचल हुई; एक आवाज सुनाई दी:—

“ब्रेवेट! चेनिल्डियू! कोचेपाइल! इधर देखो!”

उस आवाज को सुनकर सभी स्तब्ध रह गए, वह इतनी दुखद और भयावह थी; सबकी निगाहें उस ओर मुड़ गईं जहाँ से वह आवाज आई थी। अदालत के पीछे बैठे विशेषाधिकार प्राप्त दर्शकों के बीच बैठा एक व्यक्ति अभी-अभी उठा था, उसने अदालत और दर्शकों को अलग करने वाले आधे दरवाजे को धक्का देकर खोला था और हॉल के बीच में खड़ा था; अध्यक्ष, जिला अटॉर्नी, एम. बामाताबोइस और बीस अन्य लोगों ने उसे पहचान लिया और एक साथ चिल्लाए:—

“श्री मैडलीन !”

XI. चैम्पमैथ्यू और भी अधिक आश्चर्यचकित

दरअसल, वह वही था। क्लर्क के लैंप की रोशनी से उसका चेहरा जगमगा रहा था। उसने अपनी टोपी हाथ में पकड़ रखी थी; उसके कपड़ों में कोई अव्यवस्था नहीं थी; उसका कोट करीने से बटन लगा हुआ था; वह बहुत पीला पड़ गया था और थोड़ा कांप रहा था; उसके बाल, जो अर्रास पहुंचने पर अभी भी भूरे थे, अब पूरी तरह सफेद हो गए थे: वहां एक घंटे बैठने के दौरान ही वे सफेद हो गए थे।

सभी ने सिर ऊपर उठा लिए: अनुभूति अवर्णनीय थी; श्रोताओं में क्षणिक झिझक छा गई, आवाज इतनी हृदयविदारक थी; वहाँ खड़ा व्यक्ति इतना शांत प्रतीत हो रहा था कि वे पहले तो समझ ही नहीं पाए। उन्होंने स्वयं से पूछा कि क्या उसने सचमुच वह चीख मारी थी; उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि वह शांत व्यक्ति ही वह भयानक चीख हो सकता है।

यह असमंजस कुछ ही सेकंड तक चला। राष्ट्रपति और जिला अटॉर्नी के एक शब्द भी बोलने से पहले, पुलिसकर्मियों और पुलिस के इशारे से पहले ही, वह व्यक्ति जिसे उस समय सभी लोग एम. मेडेलीन कहकर पुकार रहे थे, गवाहों कोचेपाइल, ब्रेवेट और चेनिल्डियू की ओर बढ़ गया।

“क्या तुम मुझे पहचान नहीं रहे?” उसने कहा।

तीनों अवाक रह गए और सिर हिलाकर यह संकेत दिया कि वे उसे नहीं जानते। कोशेपाइल, जो भयभीत था, ने सैन्य सलामी दी। एम. मेडेलीन जूरी और अदालत की ओर मुड़ी और कोमल स्वर में बोली:—

“न्यायपालिका के सज्जनों, कैदी को रिहा करने का आदेश दीजिए! राष्ट्रपति महोदय, मुझे गिरफ्तार कीजिए। आप जिसकी तलाश कर रहे हैं, वह यह व्यक्ति नहीं है; यह मैं हूँ: मैं जीन वालजेन हूँ।”

सन्नाटा पसरा हुआ था; आश्चर्य की पहली हलचल के बाद कब्र जैसी खामोशी छा गई थी; हॉल के भीतर मौजूद लोगों ने उस तरह के धार्मिक भय का अनुभव किया जो किसी महान घटना के घटित होने पर जनसमूह को जकड़ लेता है।

इसी बीच राष्ट्रपति के चेहरे पर सहानुभूति और उदासी के भाव स्पष्ट थे; उन्होंने जिला अटॉर्नी के साथ जल्दी से इशारों का आदान-प्रदान किया और सहायक न्यायाधीशों से कुछ धीमी आवाज़ में बात की; उन्होंने जनता को संबोधित किया और ऐसी भाषा में पूछा जिसे सभी समझ सकें:—

क्या यहां कोई चिकित्सक मौजूद है?

जिला अटॉर्नी ने यह बात सुनी:—

“न्यायालय के महोदय, यह अत्यंत विचित्र और अप्रत्याशित घटना जिसने दर्शकों को विचलित कर दिया है, हम सभी को, आपकी ही तरह, एक ऐसी भावना से भर देती है जिसे व्यक्त करना हमारे लिए अनावश्यक है। आप सभी कम से कम प्रतिष्ठा से, एम⸺ सुर एम⸺ के महापौर माननीय एम. मेडेलीन को जानते हैं; यदि दर्शकों में कोई चिकित्सक उपस्थित हैं, तो हम अध्यक्ष के साथ उनसे अनुरोध करते हैं कि वे एम. मेडेलीन की देखभाल करें और उन्हें उनके घर तक पहुँचाएँ।”

एम. मेडेलीन ने जिला अटॉर्नी को अपनी बात पूरी नहीं करने दी; उन्होंने बड़ी ही सहजता और अधिकारपूर्ण लहजे में उन्हें बीच में ही रोक दिया। उनके कहे शब्द ये हैं; इन्हें ठीक वैसे ही लिखा गया है, जैसे इस घटना के एक गवाह ने मुकदमे के तुरंत बाद लिखा था, और जैसे ये शब्द आज भी लगभग चालीस साल पहले इन्हें सुनने वालों के कानों में गूंज रहे हैं:

“धन्यवाद, जिला अटॉर्नी महोदय, लेकिन मैं पागल नहीं हूँ; आप देखेंगे; आप एक बड़ी गलती करने वाले थे; इस आदमी को रिहा कर दीजिए! मैं अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ; मैं ही वह कुटिल अपराधी हूँ। यहाँ केवल मैं ही हूँ जो इस मामले को स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ, और मैं आपको सच बता रहा हूँ। सर्वशक्तिमान ईश्वर इस समय मेरे कार्यों को देख रहे हैं, और यही पर्याप्त है। आप मुझे ले जा सकते हैं, क्योंकि मैं यहाँ हूँ: लेकिन मैंने अपनी पूरी कोशिश की है; मैंने अपना नाम छिपाया; मैं अमीर बन गया; मैं मेयर बन गया; मैंने ईमानदारों की श्रेणी में फिर से शामिल होने की कोशिश की। लगता है कि ऐसा नहीं हो सका। संक्षेप में, ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मैं नहीं बता सकता। मैं आपको अपने जीवन की कहानी नहीं सुनाऊँगा; आप इसे किसी दिन सुन लेंगे। मैंने बिशप महोदय को लूटा, यह सच है; यह सच है कि मैंने लिटिल गेर्विस को लूटा;

उन्होंने आपको यह बताकर सही किया था कि जीन वालजेन एक बहुत ही दुष्ट व्यक्ति था। शायद यह पूरी तरह से उसकी गलती नहीं थी। गलती। सुनिए, माननीय न्यायाधीशगण! मुझ जैसे व्यक्ति को, जिसे इतना अपमानित होना पड़ा है, न तो ईश्वर से कोई शिकायत करनी है, न ही समाज को कोई सलाह देनी है; लेकिन, आप देखिए, जिस बदनामी से मैंने बचने की कोशिश की है, वह एक हानिकारक चीज है; जेल ही कैदी को वह बनाती है जो वह है; कृपया इस पर विचार करें। जेल जाने से पहले, मैं एक गरीब किसान था, बहुत कम बुद्धि वाला, एक तरह का मूर्ख; जेल ने मुझमें बदलाव ला दिया। मैं मूर्ख था; मैं दुष्ट बन गया: मैं लकड़ी का एक गट्ठा था; मैं आग का गोला बन गया। बाद में, उदारता और दयालुता ने मुझे बचाया, क्योंकि कठोरता ने मुझे बर्बाद कर दिया था। लेकिन, मुझे क्षमा करें, आप मेरी बात नहीं समझ पा रहे हैं। आपको मेरे घर में, चिमनी की राख के बीच, वह चालीस सू का सिक्का मिलेगा जो मैंने सात साल पहले लिटिल गेर्विस से चुराया था। मुझे और कुछ नहीं कहना है; मुझे ले जाइए। हे भगवान! जिला अटॉर्नी अपना सिर हिलाता है; आप कहते हैं, 'श्रीमती मेडेलीन चली गई हैं।' पागल! तुम मेरी बात पर यकीन नहीं करते! यह तो बहुत दुखद है। कम से कम इस आदमी की निंदा तो मत करो! क्या! ये लोग मुझे पहचानते ही नहीं! काश जैवर्ट यहाँ होता; वो मुझे पहचान लेता।

इन शब्दों के साथ व्यक्त होने वाले गंभीर और सौम्य उदासी भरे स्वर को कोई भी चीज पुन: उत्पन्न नहीं कर सकती।

उसने तीनों कैदियों की ओर मुड़कर कहा:—

"अच्छा, मैं तुम्हें पहचानता हूँ; क्या तुम्हें याद है, ब्रेवेट?"

वह रुका, एक पल के लिए झिझका और बोला:—

"क्या आपको वो चेक पैटर्न वाली बुनी हुई सस्पेंडर्स याद हैं जो आप गैली में पहनते थे?"

ब्रेवेट चौंक उठा और भयभीत भाव से उसे सिर से पैर तक देखा। उसने आगे कहा:—

“चेनिलडियू, तुम जिसने स्वयं को ‘जेनी-डियू’ नाम दिया, तुम्हारा पूरा दाहिना कंधा गहरे जलने के निशान से भरा है, क्योंकि तुमने एक दिन कोयलों से भरे तवे पर अपना कंधा रख दिया था, ताकि तीन अक्षर टी.एफ.पी. को मिटा सको, जो फिर भी दिखाई दे रहे हैं; उत्तर दो, क्या यह सच है?”

चेनिल्डियू ने कहा, "यह सच है।"

उन्होंने कोशेपाइल को संबोधित करते हुए कहा:—

“कोशेपाइल, तुम्हारी बाईं बांह के मोड़ के पास, जले हुए पाउडर से नीले अक्षरों में एक तारीख अंकित है; यह तारीख सम्राट के कान में उतरने की है, 1 मार्च, 1815; अपनी आस्तीन ऊपर करो!”

कोशेपाइल ने अपनी आस्तीन ऊपर उठाई; सबकी निगाहें उस पर और उसकी नंगी बांह पर टिकी थीं।

एक पुलिसकर्मी ने उसके पास एक टॉर्च रखी; उस पर तारीख लिखी हुई थी।

दुखी व्यक्ति ने दर्शकों और निर्णायक मंडल की ओर मुस्कुराते हुए देखा, और उसकी मुस्कान आज भी उन सभी के दिलों को झकझोर देती है जिन्होंने उसे देखा था। वह मुस्कान विजय की थी; और साथ ही निराशा की भी।

उन्होंने कहा, "आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि मैं जीन वालजेन हूं।"

उस कक्ष में न तो न्यायाधीश थे, न अभियोक्ता, न ही पुलिसकर्मी; वहाँ केवल टकटकी लगाए निगाहें और सहानुभूति से भरे हृदय थे। किसी को भी अपनी भूमिका याद नहीं थी; जिला अटॉर्नी भूल गया था कि वह अभियोजन के लिए वहाँ था, अध्यक्ष यह भूल गया था कि वह अध्यक्षता करने के लिए वहाँ था, और बचाव पक्ष का वकील यह भूल गया था कि वह बचाव करने के लिए वहाँ था। यह एक आश्चर्यजनक बात थी कि कोई प्रश्न नहीं पूछा गया, किसी अधिकारी ने हस्तक्षेप नहीं किया। भव्य दृश्यों की विशेषता यह है कि वे सभी आत्माओं को मोहित कर लेते हैं और गवाहों को दर्शक बना देते हैं। शायद ही कोई यह समझा सकता था कि उसे कैसा महसूस हो रहा था; शायद ही किसी ने अपने मन में यह कहा हो कि वह एक भव्य प्रकाश के शानदार विस्फोट का साक्षी है: सभी ने स्वयं को आंतरिक रूप से चकाचौंध महसूस किया।

यह स्पष्ट था कि उनके सामने जीन वाल्जेन थे। यह बिल्कुल साफ था। इस व्यक्ति के प्रकट होने मात्र से ही वह मामला, जो कुछ क्षण पहले तक इतना अस्पष्ट था, बिना किसी और स्पष्टीकरण के प्रकाशमान हो गया: मानो किसी बिजली के झटके से, पूरी भीड़ ने एक ही नज़र में उस सरल और भव्य कहानी को समझ लिया, जिसमें एक व्यक्ति ने खुद को इसलिए सौंप दिया ताकि कोई दूसरा

व्यक्ति उसके स्थान पर दोषी न ठहराया जाए। सारी बारीकियाँ, झिझकें, और संभव मात्र विरोध, उस विशाल और प्रकाशमान तथ्य में समा गए।

यह एक ऐसा प्रभाव था जो पल भर में गायब हो गया, लेकिन उस समय यह अप्रतिरोध्य था।

“मैं अदालत में और अधिक व्यवधान नहीं डालना चाहता,” जीन वालजेन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। “चूंकि आप मुझे गिरफ्तार नहीं कर रहे हैं, इसलिए मैं चला जाऊंगा। मुझे बहुत काम करना है। जिला अटॉर्नी मुझे जानता है; वह जानता है कि मैं कहां जा रहा हूं; वह जब चाहे मुझे गिरफ्तार करवा सकता है।”

वह दरवाजे की ओर बढ़ा। किसी ने आवाज नहीं उठाई, किसी ने उसे रोकने के लिए हाथ नहीं बढ़ाया। सब एक तरफ हट गए। उस क्षण उसके भीतर एक दिव्य शक्ति थी जो भीड़ को एक आदमी के लिए रास्ता बनाने के लिए मजबूर करती है। वह धीरे-धीरे भीड़ को पार कर गया। यह कभी पता नहीं चला कि दरवाजा किसने खोला, लेकिन यह निश्चित है कि जब वह वहाँ पहुँचा तो दरवाजा खुला हुआ था। वहाँ पहुँचकर वह मुड़ा और बोला:—

"मैं आपके आदेश का पालन करने के लिए तैयार हूं, श्रीमान जिला अटॉर्नी।"

फिर उन्होंने श्रोताओं को संबोधित किया:—

“आप सभी, जो यहाँ उपस्थित हैं—क्या आप मुझ पर दया नहीं करते? हे भगवान! जब मैं उस काम के बारे में सोचता हूँ जो मैं करने वाला था, तो मुझे लगता है कि मैं ईर्ष्या का पात्र हूँ। फिर भी, मैं चाहता था कि ऐसा न होता।”

वह पीछे हट गया, और दरवाजा उसके पीछे वैसे ही बंद हो गया जैसे खुला था, क्योंकि जो लोग कुछ संप्रभु कार्य करते हैं, उन्हें भीड़ में से किसी न किसी द्वारा सेवा मिलने की हमेशा गारंटी होती है।

इसके एक घंटे से भी कम समय बाद, जूरी के फैसले ने चैम्पमैथ्यू को सभी आरोपों से बरी कर दिया; और चैम्पमैथ्यू, तुरंत रिहा होते ही, स्तब्धता की अवस्था में चला गया, यह सोचते हुए कि सभी मनुष्य मूर्ख हैं, और इस दृश्य को कुछ भी नहीं समझ पा रहा था।

पुस्तक **VIII.** एक प्रतिवाद

I. किस दर्पण में एम. मेडेलिन अपने बालों का चिंतन करती है?

दिन निकलने लगा था। फैंटाइन ने एक बेचैन और बुखार भरी रात सुखद सपनों में बिताई थी; भोर होते ही वह सो गई। सिस्टर सिंपलिस, जो उसके साथ जाग रही थीं, ने उसकी नींद का फायदा उठाकर चिंचोना की एक नई औषधि तैयार करने चली गईं। भोर की धुंधली रोशनी के कारण हर चीज़ का बहुत बारीकी से निरीक्षण करते हुए, वह नेक सिस्टर कुछ ही क्षणों के लिए अस्पताल की प्रयोगशाला में अपनी दवाओं और शीशियों पर झुकी हुई थीं। अचानक उसने अपना सिर उठाया और एक हल्की सी चीख निकाली। एम. मेडेलिन उसके सामने खड़े थे; वे अभी-अभी चुपचाप अंदर आए थे। “क्या आप ही हैं, मेयर साहब?” उसने हैरानी से कहा।
उसने धीमी आवाज़ में उत्तर दिया:—
“वह बेचारी औरत कैसी है?”
"अभी तो स्थिति इतनी खराब नहीं है; लेकिन हम काफी बेचैन रहे हैं।"
उसने उसे सारी बात समझाई: फैंटीन परसों बहुत बीमार थी, और अब वह बेहतर है, क्योंकि उसे लगा था कि मेयर अपने बच्चे को लेने मोंटफर्मेइल गए हैं। बहन ने मेयर से सवाल करने की हिम्मत नहीं की; लेकिन उसके हावभाव से उसे साफ समझ आ गया था कि वह वहाँ से नहीं आए थे।
“यह सब अच्छा है,” उसने कहा; “तुमने उसे धोखा न देकर सही किया।”
“जी हां,” बहन ने जवाब दिया; “लेकिन अब, मेयर साहब, वह आपसे तो मिलेंगी लेकिन अपने बच्चे से नहीं मिलेंगी। हम उनसे क्या कहेंगे?”
उसने एक पल के लिए सोचा।
उन्होंने कहा, "ईश्वर हमें प्रेरणा देगा।"
"लेकिन हम झूठ नहीं बोल सकते," बहन ने धीमी, अधमरी आवाज़ में कहा।

कमरे में दिन का उजाला था। रोशनी पूरी तरह से एम. मेडेलीन के चेहरे पर पड़ रही थी। संयोगवश बहन ने अपनी नज़रें उठाकर उस ओर देखीं।
“हे भगवान!” वह अचंभित होकर बोली; “आपको क्या हो गया है? आपके बाल तो बिलकुल सफेद हो गए हैं!”
“सफेद!” उसने कहा।
सिस्टर सिंपलिस के पास दर्पण नहीं था। उन्होंने दराज में तलाशी ली और वह छोटा सा दर्पण निकाला जिसका उपयोग अस्पताल का डॉक्टर यह देखने के लिए करता था कि कोई मरीज मर गया है या नहीं और क्या वह सांस ले रहा है या नहीं। एम. मेडेलीन ने दर्पण लिया, उसके बालों को देखा और कहा:—
"कुंआ!"
उसने यह शब्द उदासीनता से कहा, मानो उसका ध्यान किसी और बात पर केंद्रित हो।
बहन को इस सब के दौरान किसी अजीब चीज की झलक दिखाई दी, जिससे वह भयभीत हो गई।
उन्होंने पूछा:—
"क्या मैं उसे देख सकता हूं?"
"क्या महाशय अपने बच्चे को वापस नहीं लाएंगे?" बहन ने बड़ी मुश्किल से यह सवाल पूछते हुए कहा।
“बिल्कुल; लेकिन इसमें कम से कम दो या तीन दिन लगेंगे।”
“अगर वह तब तक महाशय को न देखे,” बहन ने दबी आवाज़ में कहा, “तो उसे पता ही नहीं चलेगा कि महाशय लौट आए हैं, और उसे धैर्य रखने के लिए मनाना आसान होगा; और जब बच्चा आएगा, तो वह स्वाभाविक रूप से सोचेगी कि महाशय बच्चे के साथ अभी-अभी आए हैं। हमें झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।”
एम. मेडेलिन कुछ क्षणों के लिए चिंतन करते हुए प्रतीत हुए; फिर उन्होंने अपने शांत और गंभीर स्वर में कहा:—
नहीं बहन, मुझे उससे मिलना ही होगा। शायद मुझे जल्दी हो।

नन ने "शायद" शब्द पर ध्यान नहीं दिया, जिसने महापौर के भाषण के शब्दों को एक अस्पष्ट और विशिष्ट अर्थ दिया। उन्होंने अपनी निगाहें और आवाज धीमी करते हुए सम्मानपूर्वक उत्तर दिया:

“उस स्थिति में, वह सो रही है; लेकिन महाशय अंदर आ सकते हैं।”

उसने एक ऐसे दरवाजे के बारे में कुछ कहा जो ठीक से बंद नहीं होता था और जिसकी आवाज़ से बीमार महिला जाग सकती थी; फिर वह फैंटाइन के कमरे में दाखिल हुआ, बिस्तर के पास गया और पर्दे हटाए। वह सो रही थी। उसकी साँसें उस दर्द भरी आवाज़ के साथ उसके सीने से निकल रही थीं जो ऐसी बीमारियों में आम होती है और जो उन माताओं का दिल तोड़ देती है जो रात भर अपने उस बच्चे के पास सोती रहती हैं जिसे मौत की सजा मिली है। लेकिन इस दर्द भरी साँस ने उसके चेहरे पर छाई उस अवर्णनीय शांति को ज़रा भी भंग नहीं किया, जिसने नींद में ही उसे बदल दिया था। उसका पीलापन सफ़ेद हो गया था; उसके गाल लाल हो गए थे; उसकी लंबी सुनहरी पलकें, जो उसकी जवानी और कौमार्य की एकमात्र बची हुई सुंदरता थीं, फड़क रही थीं, हालाँकि वे बंद और झुकी हुई थीं। उसका पूरा शरीर एक अवर्णनीय पंखों के खुलने से काँप रहा था, जो उसे उड़ा ले जाने के लिए तैयार थे, जिनकी सरसराहट को महसूस किया जा सकता था, हालाँकि उन्हें देखा नहीं जा सकता था। उसे इस हालत में देखकर कोई सपने में भी नहीं सोच सकता था कि वह एक ऐसी बीमार महिला है जिसकी जान लगभग खतरे में है। वह मरने की कगार पर खड़ी किसी चीज की बजाय उड़ने की कगार पर खड़ी किसी चीज की तरह लग रही थी।

जब कोई हाथ फूल तोड़ने के लिए शाखा के पास आता है, तो शाखा कांप उठती है और ऐसा लगता है मानो वह एक ही समय में पीछे हट रही हो और स्वयं को प्रस्तुत कर रही हो। मानव शरीर में भी कुछ इसी तरह की कंपकंपी होती है जब वह क्षण आता है जब मृत्यु की रहस्यमयी उंगलियां आत्मा को छीनने वाली होती हैं।

एम. मेडेलीन कुछ देर तक उस पलंग के पास स्थिर खड़े रहे, बारी-बारी से बीमार महिला और क्रूस को निहारते रहे, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने दो महीने पहले उस दिन किया था जब वे पहली बार उस पागलखाने में उनसे मिलने आए थे। दोनों अभी भी उसी मुद्रा में थे—वह सो रही थीं, वह प्रार्थना कर रहे थे; बस अब, दो महीने बीत जाने के बाद, उनके बाल भूरे हो गए थे और उनके बाल सफेद।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

II. फैंटाइन हैप्पी

उसने न तो आश्चर्य का भाव दिखाया और न ही खुशी का; वह स्वयं आनंद थी। "और कोसेट?" यह सरल प्रश्न उसने इतने गहरे विश्वास, इतनी निश्चितता और बिना किसी झिझक या संदेह के पूछा कि उसे जवाब में एक शब्द भी नहीं मिला। उसने आगे कहा:—

“मुझे पता था कि तुम वहाँ हो। मैं सो रहा था, लेकिन मैंने तुम्हें देखा। मैं तुम्हें बहुत लंबे समय से देख रहा हूँ। मैं पूरी रात अपनी आँखों से तुम्हारा पीछा करता रहा। तुम एक अलग ही महिमा में थे, और तुम्हारे चारों ओर तरह-तरह के दिव्य रूप थे।”

उसने अपनी नजर क्रूस की ओर उठाई।

“लेकिन,” उसने बात जारी रखते हुए कहा, “मुझे बताओ कोसेट कहाँ है। मेरे जागने के ठीक पहले तुमने उसे मेरे बिस्तर पर क्यों नहीं रखा?”

उन्होंने कुछ यांत्रिक उत्तर दिया जिसे वे बाद में कभी याद नहीं कर पाए।

सौभाग्यवश, डॉक्टर को पहले ही चेतावनी मिल चुकी थी, और अब वह प्रकट हुए। वे एम. मेडेलीन की सहायता के लिए आए।

डॉक्टर ने कहा, "शांत हो जाओ, मेरे बच्चे; तुम्हारा बच्चा यहीं है।"

फैंटाइन की आँखें चमक उठीं और उसका पूरा चेहरा प्रकाश से भर गया। उसने अपने हाथों को इस भाव से जोड़ा जिसमें प्रार्थना के सभी भाव एक साथ समाहित थे - हिंसा और कोमलता का मिश्रण।

“ओह!” वह चिल्लाई, “उसे मेरे पास लाओ!”

एक माँ का मार्मिक भ्रम! कोसेट उसके लिए अभी भी वही नन्ही बच्ची थी जिसे वह गोद में लिए घूमती है।

डॉक्टर ने कहा, "अभी नहीं, अभी नहीं। आपको अभी भी थोड़ा बुखार है। अपने बच्चे को देखने से आप बेचैन हो जाएंगी और आपको नुकसान हो सकता है। पहले आपका इलाज होना ज़रूरी है।"

उसने अचानक ही उसे बीच में रोक दिया:

लेकिन मैं ठीक हो गई हूँ! अरे, मैं आपको बता रही हूँ कि मैं ठीक हो गई हूँ! वह डॉक्टर कितना बेवकूफ था! क्या बात है! मैं अपने बच्चे को देखना चाहती हूँ!

डॉक्टर ने कहा, “देखिए, आप कितनी उत्तेजित हो जाती हैं। जब तक आप इस हालत में रहेंगी, मैं आपके बच्चे को जन्म देने का विरोध करूंगा। उसे देखना ही काफी नहीं है; आपके लिए उसके लिए जीना जरूरी है। जब आप समझदार हो जाएंगी, तो मैं उसे खुद आपके पास ले आऊंगा।”

उस बेचारी माँ ने अपना सिर झुका लिया।

“मुझे क्षमा करें, डॉक्टर साहब, सचमुच क्षमा करें। पहले मैं कभी भी इस तरह नहीं बोलती थी; मेरे साथ इतनी विपत्तियाँ घटी हैं कि कभी-कभी मुझे पता ही नहीं होता कि मैं क्या कह रही हूँ। मैं समझती हूँ; आप मेरी भावनाओं से आहत हैं। मैं तब तक इंतज़ार करूँगी जब तक आप चाहें, लेकिन मैं आपसे कसम खाती हूँ कि मेरी बेटी को देखने से मुझे कोई नुकसान नहीं होता। मैं उसे देख रही हूँ; कल शाम से मेरी नज़रें उससे हटी ही नहीं हैं। क्या आप जानते हैं? अगर उसे अभी मेरे पास लाया जाता, तो मैं उससे बहुत प्यार से बात करती। बस इतना ही। क्या यह स्वाभाविक नहीं है कि मैं अपनी बेटी को देखना चाहूँ, जिसे विशेष रूप से मोंटफर्मेइल से मेरे पास लाया गया है? मैं नाराज़ नहीं हूँ। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि मैं खुश होने वाली हूँ। पूरी रात मैंने सफेद चीज़ें देखीं और ऐसे लोगों को देखा जो मुझ पर मुस्कुरा रहे थे। जब डॉक्टर साहब चाहेंगे, तो वे कोसेट को मेरे पास लाएँगे। मुझे अब बुखार नहीं है; मैं ठीक हूँ। मुझे पूरी तरह से पता है कि अब मुझे कुछ भी नहीं हुआ है; लेकिन मैं ऐसा व्यवहार करने जा रही हूँ जैसे मैं बीमार हूँ। मैं बीमार हूँ, और यहाँ मौजूद महिलाओं को खुश करने के लिए हिलती-डुलती नहीं हूँ। जब वे देखती हैं कि मैं बहुत शांत हूँ, तो वे कहती हैं, 'उसे बच्चा होना ही चाहिए।'

एम. मेडेलीन बिस्तर के बगल में कुर्सी पर बैठी थीं। उन्होंने उनकी ओर रुख किया; वह शांत और "बहुत अच्छी" दिखने की कोशिश कर रही थीं, जैसा कि उन्होंने बचपन जैसी बीमारी की कमजोरी में कहा, ताकि उन्हें इतना शांत देखकर कोसेट को उनके पास लाने में कोई कठिनाई न हो। लेकिन खुद को

नियंत्रित करते हुए भी वह एम. मेडेलीन से सवाल करने से खुद को रोक नहीं पाईं।

“क्या आपकी यात्रा सुखद रही, महामहिम मेयर? ओह! मेरे लिए उसे लाने के लिए आप कितने दयालु थे! बस मुझे बता दीजिए कि वह कैसी है। क्या उसने यात्रा ठीक से सहन की? अफसोस! वह मुझे पहचान नहीं पाएगी। बेचारी, वह मुझे अब तक भूल चुकी होगी! बच्चों की याददाश्त कमजोर होती है। वे पक्षियों की तरह होते हैं। बच्चा आज कुछ देखता है और कल कुछ और, और फिर कुछ याद नहीं रखता। क्या उसके पास सफेद चादरें थीं? क्या उन थेनार्डियरों ने उसे साफ रखा? उन्होंने उसे कैसे खिलाया? ओह! काश आप जानते कि मैंने अपने दुख के दिनों में ऐसे सवाल खुद से पूछकर कितना कष्ट सहा है। अब, वह सब बीत चुका है। मैं खुश हूँ। ओह, मैं उसे देखना कितना चाहती हूँ! क्या आपको वह सुंदर लगती है, महामहिम मेयर? क्या मेरी बेटी सुंदर नहीं है? उस भागदौड़ में आप बहुत निर्दयी रहे होंगे! क्या उसे एक पल के लिए भी नहीं लाया जा सकता था? उसे तुरंत बाद ले जाया जा सकता था। बताइए; आप मालिक हैं; अगर आप चाहें तो ऐसा हो सकता है!”

उसने उसका हाथ पकड़ा। “कोसेट खूबसूरत है,” उसने कहा। “कोसेट ठीक है। तुम उससे जल्द ही मिलोगी; लेकिन शांत हो जाओ; तुम बहुत ज्यादा जोश से बात कर रही हो, और अपने हाथों को कपड़ों के नीचे से बाहर निकाल रही हो, जिससे तुम्हें खांसी आ रही है।”

दरअसल, फैंटाइन को लगभग हर शब्द पर खांसी के दौरे पड़ते थे जिससे उसकी बात बाधित हो जाती थी।

फैंटाइन ने कोई शिकायत नहीं की; उसे डर था कि उसने अपने अत्यधिक भावुक विलाप से उस विश्वास को ठेस पहुँचाई है जिसे वह जगाना चाहती थी, और उसने महत्वहीन बातों के बारे में बात करना शुरू कर दिया।

“मोंटफर्मेइल काफी खूबसूरत है, है ना? लोग गर्मियों में मौज-मस्ती के लिए वहां जाते हैं। क्या थेनार्डियर परिवार समृद्ध है? उनके इलाके में ज्यादा यात्री नहीं आते। उनका वह सराय एक तरह की रसोई है।”

एम. मेडेलिन अब भी उनका हाथ पकड़े हुए थे और चिंता भरी निगाहों से उन्हें देख रहे थे; यह स्पष्ट था कि वह उन्हें कुछ ऐसी बातें बताने आए थे जिनके

बारे में उनका मन अब संशय में था। डॉक्टर ने अपनी मुलाकात पूरी कर ली और चले गए। सिस्टर सिंपलिस उनके साथ अकेली रह गईं।

लेकिन इसी विराम के बीच फैंटाइन ने कहा:—

“मैं उसकी आवाज़ सुन रहा हूँ! हे भगवान, मैं उसकी आवाज़ सुन रहा हूँ!”

उसने अपने चारों ओर शांति बनाए रखने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया, अपनी सांस रोक ली और मंत्रमुग्ध होकर सुनने लगी।

आंगन में एक बच्ची खेल रही थी—शायद चौकीदार या किसी कामवाली की बच्ची। यह उन आकस्मिक घटनाओं में से एक थी जो हमेशा घटित होती रहती हैं और शोकपूर्ण दृश्यों के रहस्यमय मंचन का हिस्सा लगती हैं। बच्ची—एक छोटी सी लड़की— इधर-उधर भाग रही थी, खुद को गर्म करने के लिए दौड़ रही थी, हंस रही थी, जोर-जोर से गा रही थी। अफसोस! बच्चों के खेल तो हर जगह मौजूद होते हैं। फैंटाइन ने इसी छोटी बच्ची को गाते हुए सुना था।

“ओह!” उसने फिर कहा, “यह तो मेरी कोसेट है! मैं उसकी आवाज पहचानती हूँ।”

बच्चा जिस तरह आया था उसी तरह वापस चला गया; आवाज़ धीमी पड़ गई। फैंटाइन थोड़ी देर और सुनती रही, फिर उसका चेहरा उदास हो गया, और एम. मेडेलीन ने उसे धीमी आवाज़ में कहते सुना: “वह डॉक्टर कितना दुष्ट है जो मुझे मेरी बेटी से मिलने नहीं दे रहा! उस आदमी का चेहरा ही बुरा है।”

लेकिन उसके मन में बसी मुस्कुराती हुई यादें फिर से उभर आईं। तकिए पर सिर टिकाए वह खुद से बातें करती रही: “हम कितने खुश होंगे! सबसे पहले तो हमारे पास एक छोटा सा बगीचा होगा; मैडम मेडेलीन ने मुझसे वादा किया है। मेरी बेटी बगीचे में खेलेगी। तब तक उसे अक्षर तो पता होने ही चाहिए। मैं उसे स्पेलिंग सिखाऊंगी। वह तितलियों के पीछे घास पर दौड़ेगी। मैं उसे देखती रहूंगी। फिर वह अपना पहला कम्युनियन लेगी। आह! वह अपना पहला कम्युनियन कब लेगी?”

वह अपनी उंगलियों पर गिनने लगी।

“एक, दो, तीन, चार—वह सात साल की हो गई है। पाँच साल में उसके सिर पर सफेद घूंघट होगा, और जालीदार मोज़े होंगे; वह एक नन्ही सी औरत जैसी दिखेगी। हे

मेरी प्यारी बहन, तुम नहीं जानती कि मैं अपनी बेटी के पहले कम्युनियन के बारे में सोचकर कितनी मूर्ख हो जाती हूँ!”

वह हँसने लगी।

उसने फैंटाइन का हाथ छोड़ दिया था। वह उसकी बातें ऐसे सुन रहा था जैसे कोई हवा की सरसराहट सुनता है, उसकी नज़रें ज़मीन पर टिकी थीं, उसका मन अथाह चिंतन में डूबा हुआ था। अचानक वह चुप हो गई, और इससे उसने अपना सिर यंत्रवत ऊपर उठा लिया। फैंटाइन भयानक हो गई थी।

वह अब बोल नहीं रही थी, सांस नहीं ले रही थी; वह उठकर बैठ गई थी, उसका पतला कंधा उसकी कमीज से बाहर निकल आया था; उसका चेहरा, जो कुछ क्षण पहले तक दमक रहा था, अब भयानक लग रहा था, और ऐसा लग रहा था कि उसने अपनी आंखें, जो भय से बड़ी हो गई थीं, कमरे के दूसरे छोर पर किसी भयावह चीज पर टिका दी थीं।

“हे भगवान!” उसने हैरानी से कहा; “फैंटाइन, तुम्हें क्या तकलीफ है?”

उसने कोई जवाब नहीं दिया; उसने अपनी निगाहें उस वस्तु से नहीं हटाईं जिसे वह देख रही थी। उसने एक हाथ उसकी बांह से हटाया और दूसरे हाथ से उसे पीछे देखने का इशारा किया।

वह मुड़ा और उसने जावर्ट को देखा।

III. जावर्ट संतुष्ट

यही सब हुआ था।

आधी रात के ठीक आधे घंटे बाद, एम. मेडेलीन ने अर्रास स्थित हॉल ऑफ असाइज़ से प्रस्थान किया। वे समय पर अपने सराय में पहुँचे और डाक गाड़ी से दोबारा रवाना हो गए, जिसमें उन्होंने अपनी जगह बुक की थी। सुबह छह बजे से कुछ पहले वे एम. सुर एम. पहुँचे और सबसे पहले उन्होंने एम. लाफिट को एक पत्र भेजा, फिर अस्पताल में भर्ती होकर फैंटाइन से मुलाकात की।

हालांकि, अदालत के सभाघर से निकलते ही, जिला अटॉर्नी ने अपने पहले सदमे से उबरते हुए, एम• सुर एम• के माननीय मेयर के इस पागलपन भरे कृत्य की निंदा की, यह घोषणा की कि उस विचित्र घटना से उनके विश्वासों में जरा भी बदलाव नहीं आया है, जिसका स्पष्टीकरण बाद में दिया जाएगा, और इस बीच, उस शैंपमैथ्यू की निंदा की मांग की, जो स्पष्ट रूप से असली जीन वालजेन था। जिला अटॉर्नी का यह हठ स्पष्ट रूप से जनता, अदालत और जूरी के विचारों से भिन्न था। बचाव पक्ष के वकील को इस भाषण का खंडन करने और यह साबित करने में कठिनाई हुई कि एम. मेडेलीन, यानी असली जीन वालजेन के खुलासों के परिणामस्वरूप, मामले का स्वरूप पूरी तरह बदल गया था, और जूरी के सामने अब केवल एक निर्दोष व्यक्ति था। इसके बाद वकील ने न्यायिक त्रुटियों आदि पर कुछ पुराने और अप्रत्याप्त उपसंहार प्रस्तुत किए; अध्यक्ष ने अपने सारांश में बचाव पक्ष के वकील का समर्थन किया और कुछ ही मिनटों में जूरी ने चैम्पमैथ्यू को मामले से बाहर कर दिया।

फिर भी, जिला अटॉर्नी जीन वालजेन को नियुक्त करने पर अड़ा हुआ था; और चूंकि उसके पास अब शैंपमैथ्यू नहीं था, इसलिए उसने मेडेलीन को नियुक्त किया।

चैम्पमैथ्यू को रिहा किए जाने के तुरंत बाद, जिला अटॉर्नी राष्ट्रपति के साथ एक कमरे में बंद हो गए। उन्होंने "एम. ले मेयर ऑफ एम⸺ सुर एम⸺" को गिरफ्तार करने की आवश्यकता पर विचार-विमर्श किया। यह वाक्यांश, जिसमें बार-बार "ऑफ" का प्रयोग किया गया था, जिला अटॉर्नी का अपने हाथ से लिखा हुआ था, जो उन्होंने अटॉर्नी-जनरल को दी गई अपनी रिपोर्ट के विवरण में दर्ज

किया था। अपनी पहली भावना शांत होने के बाद, राष्ट्रपति ने अधिक आपत्ति नहीं जताई। आखिरकार, न्याय को अपना रास्ता खुद तय करना होता है। और फिर, जब सब कुछ कहा-सुनी हो गई, तो राष्ट्रपति भले ही दयालु और काफी बुद्धिमान व्यक्ति थे, लेकिन साथ ही वे एक समर्पित और लगभग कट्टर राजशाही समर्थक भी थे, और उन्हें यह सुनकर झटका लगा था कि एम⸺ सुर एम⸺ के मेयर ने कान्स में उतरने का जिक्र करते हुए सम्राट का नाम लिया था, बोनापार्ट का नहीं।

तदनुसार, उसकी गिरफ्तारी का आदेश भेज दिया गया। जिला अटॉर्नी ने इसे एक विशेष संदेशवाहक के माध्यम से शीघ्रता से एम⸺ सुर एम⸺ को भेज दिया और इसके क्रियान्वयन का जिम्मा पुलिस इंस्पेक्टर जावर्ट को सौंप दिया।

पाठक को पता है कि जावर्ट ने अपना बयान देने के तुरंत बाद एम⸺ सुर एम⸺ लौट आया था।

जावर्ट अभी बिस्तर से उठ ही रहा था कि दूत ने उसे गिरफ्तारी का आदेश और कैदी को पेश करने का निर्देश सौंप दिया।

संदेशवाहक स्वयं पुलिस का एक बहुत ही चतुर सदस्य था, जिसने दो शब्दों में ही जावर्ट को अर्रास में घटी घटना की जानकारी दे दी। जिला अटॉर्नी द्वारा हस्ताक्षरित गिरफ्तारी आदेश इन शब्दों में लिखा गया था: "इंस्पेक्टर जावर्ट, सिएर मेडेलीन, एम⸺ सुर एम⸺ के मेयर, को गिरफ्तार करेंगे, जिन्हें आज की अदालत की कार्यवाही में रिहा कैदी, जीन वालजेन के रूप में पहचाना गया है।"

जो कोई भी जैवर्ट को नहीं जानता था और जिसने संयोगवश उसे उस समय देखा होता जब वह अस्पताल के प्रवेश कक्ष में दाखिल हुआ था, वह यह नहीं समझ पाता कि क्या हुआ था और उसे उसका व्यवहार दुनिया का सबसे साधारण व्यक्ति ही लगता। वह शांत, गंभीर और संजीदा था, उसके भूरे बाल कनपटी पर बिल्कुल चिकने थे और वह अपनी आदत के अनुसार धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। जो कोई भी उसे अच्छी तरह जानता था और जिसने उस समय उसे ध्यान से देखा होता, वह कांप उठता। उसकी चमड़े की बेल्ट का बकल उसकी गर्दन के पिछले हिस्से की बजाय उसके बाएं कान के नीचे था। इससे उसकी असामान्य बेचैनी का पता चलता था।

जावर्ट एक संपूर्ण व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था, जो अपने कर्तव्य या अपनी वर्दी में कभी कोई कमी नहीं आने देता था; अपराधियों के प्रति वह व्यवस्थित और अपने कोट के बटनों के प्रति सख्त रहता था।

उसके घोड़े की लगाम का बकल टेढ़ा हो जाना अपरिहार्य था, इसके लिए उसके भीतर उन भावनाओं में से एक का उत्पन्न होना आवश्यक था जिन्हें आंतरिक भूकंप कहा जा सकता है।

वह साधारण तरीके से आया था, उसने पड़ोसी चौकी से एक कॉर्पोरल और चार सैनिकों की मांग की थी, सैनिकों को आंगन में छोड़ दिया था, और द्वारपाल ने उसे फैंटाइन का कमरा दिखाया था, जो बिल्कुल भी संदिग्ध नहीं थी, क्योंकि वह मेयर के बारे में पूछताछ करने वाले सशस्त्र पुरुषों को देखने की आदी थी।

फैंटाइन के कमरे में पहुँचकर, जेवर्ट ने हैंडल घुमाया, एक बीमार नर्स या पुलिस जासूस की कोमलता से दरवाजा खोला और अंदर प्रवेश किया।

सही मायने में कहें तो, वह अंदर नहीं आया। वह आधे खुले दरवाजे पर सीधा खड़ा था, सिर पर टोपी थी और बायां हाथ उसके कोट में था, जो ठुड्डी तक बटन से बंद था। उसकी कोहनी के मोड़ में उसकी विशाल छड़ी का सीसे का सिरा दिखाई दे रहा था, जो उसके पीछे छिपा हुआ था।

इस प्रकार वह लगभग एक मिनट तक बिना किसी को अपनी उपस्थिति का एहसास कराए वहीं खड़ा रहा। अचानक फैंटाइन ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं, उसे देखा और एम. मेडेलीन को पीछे मुड़ने का इशारा किया।

जैसे ही मेडेलीन की नज़र जावर्ट की नज़र से मिली, जावर्ट बिना हिले-डुले, अपनी जगह से बिना हटे, बिना उसके पास आए, एकदम भयानक हो गया। खुशी से भयानक कोई मानवीय भावना नहीं हो सकती।

यह उस दानव का चेहरा था जिसने अभी-अभी अपनी शापित आत्मा को पाया था।

अंततः जीन वाल्जेन को पकड़ लेने की संतुष्टि से उसके मन का सारा भाव उसके चेहरे पर प्रकट हो गया। उसके भीतर दबी हुई भावनाएँ सतह पर आ गईं। शैम्पमैथ्यू के बारे में थोड़ी सी चूक हो जाने और कुछ क्षणों के लिए गलती कर बैठने की शर्मिंदगी, पहली बार में ही सही और सटीक अनुमान लगाने और लंबे समय से सही अंतर्ज्ञान को संजोए रखने के गर्व से मिट गई। जावर्ट की

संतुष्टि उसके शाही अंदाज़ में झलक रही थी। विजय की विकृति उसके पतले माथे पर छा गई। एक संतुष्ट चेहरे पर दिखाई देने वाले भय के सभी भाव मौजूद थे।

उस क्षण जैवर्ट स्वर्ग में था। स्वयं को स्पष्ट रूप से समझाए बिना, अपनी उपस्थिति और सफलता की आवश्यकता के बारे में एक अस्पष्ट अंतर्ज्ञान के साथ, जैवर्ट ने बुराई को कुचलने के अपने दिव्य कार्य में न्याय, प्रकाश और सत्य का साक्षात रूप धारण किया। उसके पीछे और उसके चारों ओर, अनंत दूरी पर, उसके पास अधिकार, तर्क, न्याय किया गया मामला, कानूनी विवेक, लोक अभियोजन, सभी सितारे थे; वह व्यवस्था की रक्षा कर रहा था, वह कानून को अपनी गर्जना करने पर मजबूर कर रहा था, वह समाज का बदला ले रहा था, वह परम सत्ता को सहारा दे रहा था, वह महिमा के बीच सीधा खड़ा था। उसकी विजय में अवज्ञा और संघर्ष का अंश शेष था। सीधा, अभिमानी, तेजस्वी, उसने खुले दिन में एक क्रूर महादूत की अलौकिक क्रूरता का प्रदर्शन किया। उसके द्वारा किए जा रहे कार्य की भयानक छाया ने उसकी मुट्ठी में सामाजिक तलवार की धुंधली चमक को प्रकट किया; प्रसन्न और क्रोधित, उसने अपराध, दुराचार, विद्रोह, विनाश, नरक पर अपनी एड़ी रखी; वह तेजस्वी था, वह विनाश करता था, वह मुस्कुराता था, और इस विशालकाय संत माइकल में एक निर्विवाद भव्यता थी।

जावर्ट, हालांकि भयानक था, उसमें कोई नीचता नहीं थी।

सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, स्पष्टवादिता, दृढ़ विश्वास, कर्तव्यनिष्ठा - ये वो गुण हैं जो गलत दिशा में निर्देशित होने पर भयावह हो सकते हैं; परन्तु भयावह होने पर भी महान बने रहते हैं: इनका वैभव, मानवीय अंतरात्मा का विशिष्ट वैभव, भयावहता के बीच भी इनसे जुड़ा रहता है; ये ऐसे गुण हैं जिनमें एक ही दोष है - त्रुटि। अपने अत्याचार की चरम सीमा पर भी एक कट्टरपंथी का ईमानदार, निर्मम आनंद एक विशेष प्रकार की उदासी और श्रद्धा से भरी आभा को बनाए रखता है। स्वयं को इस तथ्य का आभास किए बिना, जावर्ट अपनी अपार खुशी में दया का पात्र था, जैसे हर उस अज्ञानी व्यक्ति पर दया आती है जो विजय प्राप्त करता है। इस चेहरे से अधिक मार्मिक और भयानक कुछ भी नहीं हो सकता था, जिसमें अच्छाई की बुराई का सार प्रदर्शित था।

IV. प्राधिकरण अपने अधिकारों की पुनः पुष्टि करता है

फैंटाइन ने उस दिन के बाद से जैवर्ट को नहीं देखा था, जिस दिन मेयर ने उसे उस आदमी से अलग किया था। उसका बीमार दिमाग कुछ भी समझ नहीं पा रहा था, लेकिन एक बात जिस पर उसे कोई संदेह नहीं था, वह यह थी कि वह उसे लेने आया था। वह उस भयानक चेहरे को सहन नहीं कर सकी; उसे लगा जैसे उसकी जान निकल रही हो; उसने अपना चेहरा दोनों हाथों में छिपा लिया और पीड़ा से चीख पड़ी:

“महामहिम मैडलीन, मुझे बचाओ!”

जीन वाल्जेन—अब हम उनके बारे में और कुछ नहीं कहेंगे—उठ उठे। उन्होंने फैंटाइन से अत्यंत कोमल और शांत स्वर में कहा:—

“चिंता मत करो; वह तुम्हारे लिए नहीं आया है।”

फिर उन्होंने जावर्ट को संबोधित करते हुए कहा:—

"मुझे मालुम है कि तुम क्या चाह्ते हो।"

जैवर ने उत्तर दिया:—

"जल्दी करो!"

इन शब्दों के साथ आवाज के लहजे में कुछ अवर्णनीय उग्रता और उन्माद छिपा था। जावर्ट ने "जल्दी करो!" नहीं कहा, उसने कहा, "जल्दी करो!"

कोई भी वर्तनी उस उच्चारण के साथ न्याय नहीं कर सकती जिसके साथ इसे बोला गया था: यह अब एक मानवीय शब्द नहीं था: यह एक दहाड़ थी।

उसने अपनी आदत के मुताबिक काम नहीं किया, उसने मामले में दखल नहीं दिया, उसने गिरफ्तारी वारंट भी नहीं दिखाया। उसकी नज़र में जीन वालजेन एक रहस्यमय योद्धा था, जिस पर हाथ नहीं डाला जा सकता था, एक ऐसा पहलवान जो अंधेरे में छिपा था और जिसे पिछले पाँच सालों से उसने जकड़ रखा था, लेकिन उसे गिरा नहीं पाया था। यह गिरफ्तारी शुरुआत नहीं, बल्कि अंत थी। उसने बस इतना कहा, "जल्दी करो!"

इस प्रकार बोलते हुए वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा; उसने जीन वाल्जेन पर एक ऐसी निगाह डाली जिसे वह एक हुक की तरह फेंकता था, और जिसका इस्तेमाल वह दुष्टों को हिंसक रूप से अपनी ओर आकर्षित करने के लिए करता था।
यह वही निगाह थी जिसे फैंटाइन ने दो महीने पहले अपनी हड्डियों के भीतर तक भेदते हुए महसूस किया था।
जैवरट की चीख सुनकर फैंटाइन ने एक बार फिर अपनी आँखें खोलीं। लेकिन मेयर तो वहाँ था; उसे किस बात का डर था?
जैवरट कमरे के बीचोंबीच पहुंचा और चिल्लाया:—
“देखो यहाँ! क्या तुम आ रहे हो?”
दुखी महिला ने चारों ओर नज़र घुमाई। नन और महापौर के अलावा वहाँ कोई नहीं था। भला “तू” शब्द का वह घृणित प्रयोग किसे संबोधित था? केवल उसे। वह सिहर उठी।
फिर उसने एक ऐसी अभूतपूर्व चीज देखी, एक ऐसी अभूतपूर्व चीज जो बुखार के सबसे भयानक प्रलाप में भी उसे कभी दिखाई नहीं दी थी।
उसने पुलिस जासूस जावर्ट को मेयर का कॉलर पकड़ते हुए देखा; उसने मेयर को अपना सिर झुकाते हुए देखा। उसे ऐसा लगा मानो दुनिया का अंत हो रहा हो।
दरअसल, जावर्ट ने जीन वालजेन को कॉलर से पकड़ लिया था।
“महामहिम!” फैंटाइन चीख पड़ी।
जावर्ट उस भयानक हंसी के साथ फूट पड़ा जिससे उसके सारे मसूड़े दिखाई देने लगे।
“यहाँ अब कोई महाशय नहीं है!”
जीन वाल्जेन ने अपने कोट के कॉलर को पकड़े हुए हाथ को छुड़ाने का कोई प्रयास नहीं किया। उन्होंने कहा:—
“जैवर्टी—”
जैवर्ट ने बीच में ही टोकते हुए कहा: "मुझे इंस्पेक्टर कहिए।"

“महाशय,” जीन वाल्जेन ने कहा, “मैं आपसे अकेले में कुछ बात करना चाहता हूँ।”
“ज़ोर से बोलो! ज़ोर से बोलो!” जैवर्ट ने जवाब दिया; “लोगों को मुझसे ज़ोर से बोलने की आदत है।”
जीन वालजेन ने धीमी आवाज़ में आगे कहा:—
मुझे आपसे एक निवेदन करना है—”
मैं तुमसे कहता हूँ कि जोर से बोलो।
लेकिन इसे सिर्फ आपको ही सुनना चाहिए—”
इससे मुझे क्या फर्क पड़ता है? मैं नहीं सुनूंगा।
जीन वाल्जेन उसकी ओर मुड़ा और बहुत तेज़ी से और बहुत धीमी आवाज़ में बोला:—
“मुझे तीन दिन की मोहलत दीजिए! तीन दिन जिनमें मैं जाकर इस अभागी स्त्री के बच्चे को ले आऊं। जो भी खर्चा होगा, मैं चुका दूंगा। अगर आप चाहें तो मेरे साथ आ सकते हैं।”
“तुम मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो!” जैवर्ट चिल्लाया। “अरे, मैंने तुम्हें इतना मूर्ख नहीं समझा था! तुम मुझसे तीन दिन में भागने के लिए समय मांग रहे हो! तुम कहते हो कि उस प्राणी के बच्चे को लाने के लिए! आह! आह! वाह! यह तो कमाल है!
फैंटाइन को अचानक कंपकंपी का दौरा पड़ गया।
“मेरी बच्ची!” वह चिल्लाई, “जाओ और मेरी बच्ची को ले आओ! वह यहाँ नहीं है! मुझे जवाब दो, बहन; कोसेट कहाँ है? मुझे मेरी बच्ची चाहिए! महाशय मेडेलीन! महाशय मेयर!”
जावर्ट ने अपना पैर पटका।
और अब ये दूसरा भी आ गया! चुप रहो, बदचलन औरत? ये तो बड़ी अजीब जगह है जहाँ कैदी मजिस्ट्रेट होते हैं, और जहाँ शहर की औरतों की देखभाल किसी काउंटेस की तरह की जाती है! आह! लेकिन हम ये सब बदलने वाले हैं; अब समय आ गया है!

उसने फैंटाइन को ध्यान से देखा और जीन वालजेन की टाई, कमीज और कॉलर को एक बार फिर अपने हाथों में लेते हुए कहा:

“मैं तुमसे कहता हूँ कि न तो कोई महाशय मेडेलीन है और न ही कोई महाशय मेयर। यहाँ एक चोर है, एक डाकू है, एक अपराधी है जिसका नाम जीन वालजेन है! और वह मेरी गिरफ्त में है! बस यही सच है!”

फैंटाइन बिस्तर पर उछलकर उठी, अपने अकड़े हुए हाथों और दोनों बाजुओं के सहारे खुद को संभालते हुए: उसने जीन वाल्जेन को देखा, उसने जावर्ट को देखा, उसने नन को देखा, उसने बोलने के लिए अपना मुंह खोला; उसके गले से घरघराहट की आवाज निकली, उसके दांत किटकिटाने लगे; वह अपनी पीड़ा में बाहें फैलाकर, अपने हाथों को ऐंठन से खोलते हुए, डूबते हुए व्यक्ति की तरह इधर-उधर टटोलने लगी; फिर अचानक अपने तकिए पर वापस गिर पड़ी।

उसका सिर बिस्तर के तख़्ते से टकराया और वह आगे की ओर छाती के बल गिर पड़ी, उसका मुंह खुला हुआ था और आंखें भावहीन और घूरती हुई थीं।

वह मर चुकी थी।

जीन वाल्जेन ने जैवर्ट के बंदी बनाए हुए हाथ पर अपना हाथ रखा और उसे इस तरह खोला जैसे किसी बच्चे का हाथ खोलते हैं; फिर उसने जैवर्ट से कहा:—

"तुमने उस महिला की हत्या की है।"

“इसे यहीं खत्म करो!” जैवर्ट गुस्से में चिल्लाया; “मैं यहाँ बहस सुनने नहीं आया हूँ। चलो सब कुछ बचा लेते हैं; पहरेदार नीचे हैं; तुरंत आगे बढ़ो, वरना तुम्हें अंगूठा कसना पड़ेगा!”

कमरे के कोने में एक पुराना लोहे का पलंग रखा था, जो बेहद जर्जर हालत में था और बीमारों की देखभाल करते समय बहनों के लिए शिविर-बिस्तर का काम करता था। जीन वाल्जेन इस पलंग के पास गया, पलक झपकते ही पहले से ही जर्जर हालत में पड़े हुए पलंग के ऊपरी हिस्से को हटा दिया, जो उसके जैसे मजबूत शरीर के लिए आसान काम था, मुख्य छड़ को एक लाठी की तरह पकड़ा और जावर्ट की ओर देखा। जावर्ट दरवाजे की ओर पीछे हट गया। लोहे की छड़ से लैस जीन वाल्जेन धीरे- धीरे फैंटाइन के पलंग की ओर बढ़ा। वहाँ पहुँचकर उसने मुड़कर जावर्ट से लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ में कहा:—

मैं आपको सलाह देता हूं कि इस समय मुझे परेशान न करें।

एक बात तो निश्चित है, और वह यह है कि जेवर्ट कांप रहा था।

उसके मन में गार्ड को बुलाने का ख्याल आया, लेकिन जीन वालजेन उस पल का फायदा उठाकर भाग सकता था; इसलिए वह वहीं रुका रहा, अपनी छड़ी को छोटे सिरे से पकड़ लिया और जीन वालजेन से अपनी निगाहें हटाए बिना दरवाजे के चौखट से टिक गया।

जीन वाल्जेन ने अपनी कोहनी पलंग के सिरहाने पर टिकाई और अपना माथा हाथ पर रखकर फैंटाइन के बेजान शरीर को निहारने लगे, जो वहाँ लेटा हुआ था। वे चुपचाप, तल्लीन होकर, वहीं बैठे रहे, मानो इस जीवन से जुड़ी किसी और बात के बारे में न सोच रहे हों। उनके चेहरे और हावभाव में अवर्णनीय करुणा के सिवा कुछ नहीं था। कुछ क्षणों के चिंतन के बाद वे फैंटाइन की ओर झुके और धीमी आवाज़ में उनसे बात की।

उसने उससे क्या कहा? निंदा झेल चुके इस व्यक्ति ने उस मृत स्त्री से क्या कहा होगा? वे शब्द क्या थे? धरती पर किसी ने उन्हें नहीं सुना। क्या उस मृत स्त्री ने उन्हें सुना? कुछ मार्मिक भ्रम ऐसे होते हैं जो शायद उदात्त वास्तविकताएँ हों। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सिस्टर सिम्पलिस, जो इस घटना की एकमात्र प्रत्यक्षदर्शी थीं, अक्सर कहती थीं कि जिस क्षण जीन वालजेन ने फैंटीन के कान में फुसफुसाया, उन्होंने स्पष्ट रूप से उन पीले होठों पर एक अवर्णनीय मुस्कान देखी, और उन धुंधली आँखों में, जो कब्र के विस्मय से भरी थीं।

जीन वाल्जेन ने फैंटीन का सिर अपने दोनों हाथों में लिया और उसे तकिए पर इस तरह रखा जैसे कोई माँ अपने बच्चे को रखती है; फिर उसने उसकी कमीज़ का फीता बाँधा और उसके बालों को टोपी के नीचे समेट दिया। इतना करने के बाद उसने उसकी आँखें बंद कर दीं।

उस क्षण फैंटाइन का चेहरा अजीब तरह से चमक रहा था।

मृत्यु, जो महान प्रकाश में प्रवेश का प्रतीक है।

फैंटाइन का हाथ बिस्तर के किनारे से नीचे लटका हुआ था। जीन वाल्जेन उस हाथ के सामने घुटनों के बल बैठ गया, उसे धीरे से उठाया और चूमा।

[illegible]

[illegible], "[illegible]"

V. एक उपयुक्त मकबरा

जावर्ट ने जीन वालजेन को शहर की जेल में डाल दिया।

एम. मेडेलीन की गिरफ्तारी ने एम• सुर एम• में सनसनी, या यूं कहें कि असाधारण हलचल मचा दी। हमें खेद है कि हम इस तथ्य को छिपा नहीं सकते कि "वह एक अपराधी है" यह शब्द सुनते ही लगभग सभी ने उसका साथ छोड़ दिया। दो घंटे से भी कम समय में उसके द्वारा किए गए सभी अच्छे काम भुला दिए गए, और वह "जहाजों से भागा हुआ एक अपराधी" मात्र रह गया। यह कहना उचित होगा कि अर्रास में जो कुछ हुआ था, उसका विवरण अभी तक ज्ञात नहीं था। पूरे दिन शहर के हर कोने में निम्नलिखित जैसी बातें सुनाई देती रहीं:†—

“आपको नहीं पता? वह एक रिहा कैदी था!” “कौन?” “मेयर।” “अरे! एम. मेडेलीन?” “जी हाँ।” “सच में?” “उसका नाम मेडेलीन बिल्कुल नहीं था; उसका एक भयानक नाम था, बेजीन, बोजीन, बूजीन।” “अरे! हे भगवान!” “उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।” “गिरफ्तार!” “जेल में, शहर की जेल में, तबादले का इंतज़ार करते हुए।” “जब तक उसका तबादला नहीं हो जाता!” “उसका तबादला होना है!” “उसे कहाँ ले जाया जाएगा?” “उस पर बहुत पहले किए गए एक राजमार्ग डकैती के मामले में अदालत में मुकदमा चलाया जाएगा।” “वाह! मुझे तो पहले से ही शक था। वह आदमी बहुत अच्छा, बहुत ही नेक और बहुत ही भावुक था। उसने सूली पर चढ़ने से इनकार कर दिया; वह अपने रास्ते में आने वाले हर बदमाश को पैसे देता था। मुझे हमेशा लगता था कि इसके पीछे कोई बुरी कहानी है।”

विशेषकर "ड्राइंग रूम" में इस प्रकार की टिप्पणियों की भरमार थी।

ड्रेपो ब्लैंक की एक ग्राहक, एक बुजुर्ग महिला ने निम्नलिखित टिप्पणी की, जिसकी गहराई को समझना असंभव है:

मुझे कोई अफसोस नहीं है। यह बोनापार्टवादियों के लिए एक सबक होगा!

इस प्रकार, एम. मेडेलीन के नाम से मशहूर वह शख्स एम⸺ सुर एम⸺ से गायब हो गया। पूरे कस्बे में केवल तीन या चार लोग ही उसकी यादों के प्रति वफादार रहे। उसकी सेवा करने वाली बूढ़ी चौकीदार भी उन्हीं में से एक थी।

उस दिन शाम को वह सम्मानित वृद्ध महिला अपनी कुटिया में बैठी हुई थी, अब भी पूरी तरह भयभीत थी और उदास विचारों में डूबी हुई थी। कारखाना पूरे दिन बंद था, गाड़ी का गेट कुंडी से बंद था, सड़क सुनसान थी। घर में सिस्टर परपेट्यू और सिस्टर सिंपलिस नाम की दो ननों के अलावा कोई नहीं था, जो फैंटाइन के शव के पास पहरा दे रही थीं।

जिस समय श्री मेडेलीन घर लौटने का नियमित समय होता था, उस समय दयालु द्वारपाल सहजता से उठी, दराज से श्री मेडेलीन के कमरे की चाबी और वह मोमबत्ती स्टैंड निकाला जिसका उपयोग वे हर शाम अपने कमरे में जाने के लिए करते थे; फिर उसने चाबी को उस कील पर टांग दिया जहाँ से वे उसे लेने का नियमित समय करते थे, और मोमबत्ती स्टैंड को एक तरफ रख दिया, मानो वह उनका इंतज़ार कर रही हो। फिर वह अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गई और एक बार फिर विचारों में मग्न हो गई। बेचारी, दयालु बूढ़ी औरत ने यह सब अनजाने में ही कर लिया था।

दो घंटे बीतने के बाद ही वह अपनी तल्लीनता से बाहर निकली और बोली, “अरे! मेरे प्यारे ईश्वर यीशु! मैंने तो उनकी चाबी कील पर टांग दी थी!”

उसी क्षण झोपड़ी की छोटी खिड़की खुली, एक हाथ अंदर आया, चाबी और मोमबत्ती स्टैंड को पकड़ा और वहां जल रही मोमबत्ती से मोमबत्ती जला दी।

द्वारपाल ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और मुँह खुला रखकर वहीं खड़ी रही, उसके गले से एक चीख निकल निकली जिसे उसने अपने गले तक ही सीमित रखा।

वह उस हाथ को, उस बांह को, उस कोट की आस्तीन को जानती थी।

वह एम. मैडलीन थीं।

उसे बोलने में कुछ सेकंड लग गए; जैसा कि उसने खुद बाद में उस घटना का वर्णन करते हुए बताया, उसे दौरा पड़ा था।

“हे भगवान, महाशय महोदय,” वह अंत में चिल्लाई, “मुझे लगा था कि आप…”

वह रुक गई; वाक्य का अंत शुरुआत के प्रति अनादरपूर्ण होता। जीन वालजेन अब भी उसके लिए महाशय ही थे।

उसने उसके विचार को पूरा किया।

“जेल में,” उसने कहा। “मैं वहीं था; मैंने एक खिड़की की सलाख तोड़ दी; मैंने छत से छलांग लगा दी, और अब मैं यहाँ हूँ। मैं अपने कमरे में जा रहा हूँ; जाओ और मेरे लिए सिस्टर सिंपलिस को ढूंढो। वह उस बेचारी औरत के साथ ही होगी, इसमें कोई शक नहीं।”

बुजुर्ग महिला ने तुरंत आज्ञा का पालन किया।

उसने उसे कोई आदेश नहीं दिया; उसे पूरा यकीन था कि वह उसकी रक्षा उससे कहीं बेहतर तरीके से करेगी जितनी वह खुद अपनी रक्षा कर सकता है।

किसी को भी यह पता नहीं चल पाया कि वह बड़े दरवाज़े खोले बिना आंगन में कैसे घुस गया था। उसके पास एक चाबी थी, जिसे वह हमेशा अपने साथ रखता था, जिससे एक छोटा सा दरवाज़ा खुलता था; लेकिन उसकी तलाशी ज़रूर ली गई होगी और उससे उसकी कुंडी ले ली गई होगी। इस बात का कभी कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया।

वह अपने कमरे की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ गया। ऊपर पहुँचकर उसने अपनी मोमबत्ती सीढ़ी के सबसे ऊपरी पायदान पर रख दी, बहुत धीमी आवाज़ में अपना दरवाज़ा खोला, जाकर खिड़की और शटर को छूकर बंद किया, फिर मोमबत्ती लेने लौटा और अपने कमरे में वापस चला गया।

यह एक उपयोगी सावधानी थी; यह बात शायद याद होगी कि उसकी खिड़की सड़क से दिखाई देती थी।

उसने चारों ओर नज़र डाली, अपनी मेज पर, अपनी कुर्सी पर, अपने बिस्तर पर, जो तीन दिनों से बिल्कुल शांत था। परसों रात की अव्यवस्था का कोई निशान नहीं बचा था। चौकीदार ने उसका कमरा साफ कर दिया था; बस उसने राख में से लाठी के लोहे के दोनों सिरे और आग से काले पड़ चुके चालीस सू के सिक्के को करीने से मेज पर रख दिया था।

उसने एक कागज़ लिया, जिस पर उसने लिखा: “ये मेरे लोहे की नोक वाले डंडे के दो सिरे और लिटिल गेर्विस से चुराया गया चालीस सू का सिक्का है, जिसका ज़िक्र मैंने अदालत में किया था।” उसने कागज़ के इस टुकड़े, लोहे के टुकड़ों और सिक्के को इस तरह सजाया कि कमरे में प्रवेश करते ही सबसे पहले यही चीज़ें नज़र आएं। उसने अलमारी से अपनी एक पुरानी कमीज़ निकाली और उसे फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। इस तरह तैयार किए गए लिनेन के टुकड़ों में

उसने चांदी के दो दीये लपेट दिए। उसमें न तो कोई जल्दबाज़ी थी और न ही कोई घबराहट; बिशप के दीये लपेटते समय वह काले रंग की रोटी का एक टुकड़ा कुतर रहा था। शायद यह वही जेल की रोटी थी जो वह भागते समय अपने साथ लाया था।
बाद में अधिकारियों द्वारा जांच किए जाने पर कमरे के फर्श पर मिले टुकड़ों से यह बात साबित हो गई।
दरवाजे पर दो बार दस्तक हुई।
“अंदर आ जाओ,” उसने कहा।
वह सिस्टर सिंपलिस थीं।
वह पीली पड़ गई थी; उसकी आँखें लाल थीं; उसके हाथ में पकड़ी मोमबत्ती काँप रही थी। नियति की क्रूरता की विशेषता यह है कि हम चाहे कितने भी संभले या शांत क्यों न हों, वह हमारे भीतर से मानवीय स्वभाव को निचोड़ लेती है और उसे सतह पर प्रकट होने के लिए मजबूर कर देती है। उस दिन की भावनाओं ने उस नन को एक बार फिर स्त्री बना दिया था। वह रोई थी और काँप रही थी।
जीन वाल्जेन ने कागज पर कुछ पंक्तियाँ लिखना अभी-अभी समाप्त किया था, जिसे उन्होंने नन को सौंपते हुए कहा, "बहन, आप इसे महाशय ले क्यूरे को दे देंगी।"
कागज़ मुड़ा हुआ नहीं था। उसने उस पर सरसरी नज़र डाली।
उन्होंने कहा, "आप इसे पढ़ सकते हैं।"
उसने पढ़ा:—
“मैं महाशय पादरी से निवेदन करता हूँ कि वे मेरी छोड़ी हुई संपत्ति पर ध्यान रखें। वे कृपा करके उसमें से मेरे मुकदमे और कल दिवंगत हुई महिला के अंतिम संस्कार का खर्च उठाएँगे। शेष राशि गरीबों के लिए है।”
बहन ने बोलने की कोशिश की, लेकिन वह केवल कुछ अस्पष्ट शब्द ही हकला पाई। फिर भी वह इतना कहने में सफल रही:—
"क्या महाशय उस बेचारी, दुखी महिला को आखिरी बार देखना नहीं चाहते?" “नहीं,” उसने कहा; “मेरा पीछा किया जा रहा है; इससे केवल यही होगा कि वे मुझे उसी कमरे में गिरफ्तार कर लेंगे, और इससे वह परेशान हो जाएगी।”

उनके बोलने के तुरंत बाद ही सीढ़ियों पर एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी। ऊपर चढ़ते कदमों की गड़गड़ाहट सुनाई दी, और बूढ़ी द्वारपाल अपनी सबसे ऊँची और तीखी आवाज़ में कह रही थी:
"मेरे भले आदमी, मैं ईश्वर की कसम खाकर कहता हूँ कि दिन भर और शाम भर इस घर में एक भी व्यक्ति नहीं आया है, और मैंने तो दरवाजा भी नहीं छोड़ा है।" एक व्यक्ति ने जवाब दिया:—
लेकिन फिर भी उस कमरे में रोशनी है।
उन्होंने जावर्ट की आवाज पहचान ली।
कमरा इस प्रकार व्यवस्थित था कि दरवाजा खुलने पर दाहिनी ओर की दीवार का कोना छिप जाता था। जीन वालजेन ने रोशनी बुझा दी और खुद को उस कोने में स्थापित कर लिया। सिस्टर सिंपलिस मेज के पास घुटनों के बल बैठ गईं।
दरवाजा खुल गया।
जावर्ट ने प्रवेश किया।
गलियारे में कई पुरुषों की फुसफुसाहट और द्वारपाल की आपत्तियां सुनाई दे रही थीं।
नन ने अपनी आँखें नहीं उठाईं। वह प्रार्थना कर रही थी।
मोमबत्ती चिमनी के ऊपर रखी थी, और उससे बहुत कम रोशनी मिल रही थी।
जैवरट की नजर उस नन पर पड़ी और वह विस्मय से वहीं रुक गया।
यह याद रखना चाहिए कि जावर्ट का मूल तत्व, उसका स्वभाव, उसकी साँसें, सर्वथा सर्वाधिकार के प्रति श्रद्धा थी। यह श्रद्धा अटल थी और इस पर न तो कोई आपत्ति की गुंजाइश थी और न ही कोई प्रतिबंध लगाया जा सकता था। उसकी दृष्टि में, चर्च का अधिकार सर्वोपरि था; वह धार्मिक था, इस मामले में भी उतना ही गंभीर और सही था जितना अन्य मामलों में। उसकी नज़र में, एक पुजारी वह बुद्धि था जो कभी गलती नहीं करता; एक नन वह प्राणी थी जो कभी पाप नहीं करती; वे इस संसार से अलग-थलग आत्माएँ थीं, जिनके लिए एक ही द्वार था जो सत्य को आने देने के अलावा कभी नहीं खुलता था।
बहन को देखते ही उसका पहला कदम पीछे हटना था।

लेकिन एक और कर्तव्य भी था जिसने उसे बांध रखा था और उसे पूरी तरह से विपरीत दिशा में जाने के लिए प्रेरित कर रहा था। उसका दूसरा कदम यहीं रुकना और कम से कम एक प्रश्न पर विचार करना था।
ये सिस्टर सिंपलिस थीं, जिन्होंने अपने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला था।
जावर्ट यह बात जानता था और इसी कारण वह उनका विशेष सम्मान करता था। “बहन,” उसने कहा, “क्या तुम इस कमरे में अकेली हो?”
इसके बाद एक भयावह क्षण आया, जिसके दौरान बेचारी द्वारपाल को ऐसा लगा जैसे वह बेहोश हो जाएगी।
बहन ने आंखें उठाकर उत्तर दिया:—
"हाँ।"
“तो,” जावर्ट ने बात जारी रखते हुए कहा, “अगर मैं अपनी बात पर अड़ा रहूँ तो मुझे माफ़ कर दीजिएगा; यह मेरा कर्तव्य है; क्या आपने आज शाम किसी खास व्यक्ति—एक आदमी—को नहीं देखा? वह भाग गया है; हम उसकी तलाश में हैं—वह जीन वालजेन; क्या आपने उसे नहीं देखा?”
बहन ने उत्तर दिया:—
"नहीं।"
उसने झूठ बोला। उसने लगातार दो बार झूठ बोला, एक के बाद एक, बिना किसी झिझक के, तुरंत, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति खुद को कुर्बान करते समय करता है। “मुझे क्षमा करें,” जावर्ट ने कहा और झुककर प्रणाम करते हुए विदा हो गया। हे पवित्र कन्या! तुम कई साल पहले इस दुनिया से चली गई थीं; तुम प्रकाश में अपनी बहनों, कुंवारी कन्याओं और अपने भाइयों, स्वर्गदूतों से मिल चुकी हो; स्वर्ग में यह झूठ तुम्हारे पुण्य में गिना जाए!
बहन की पुष्टि जैवर्ट के लिए इतनी निर्णायक थी कि उसने उस मोमबत्ती की विलक्षणता पर भी ध्यान नहीं दिया जो अभी-अभी बुझी थी और जो अभी भी मेज पर धुआं छोड़ रही थी।
एक घंटे बाद, पेड़ों और कोहरे के बीच से गुज़रता हुआ एक आदमी, मसुर म से पेरिस की ओर तेज़ी से निकल रहा था। वह आदमी जीन वालजेन था। उससे मिलने वाले

दो-तीन गाड़ीवानों की गवाही से यह साबित हो गया है कि वह एक गठरी लिए हुए था; और उसने एक ब्लाउज़ पहना हुआ था। उसे वह ब्लाउज़ कहाँ से मिला? यह आज तक किसी को पता नहीं चला। लेकिन कुछ दिन पहले कारखाने के अस्पताल में एक बूढ़े मज़दूर की मौत हो गई थी, और वह अपने पीछे सिर्फ़ अपना ब्लाउज़ छोड़ गया था। शायद वही ब्लाउज़ था।

फैंटाइन के बारे में एक आखिरी बात।

हम सबकी एक माँ है—धरती। फैंटाइन को उसी माँ को वापस सौंप दिया गया।

पादरी को लगा कि वह सही कर रहा है, और शायद वह सचमुच सही था, क्योंकि उसने जीन वालजेन की छोड़ी हुई संपत्ति में से गरीबों के लिए यथासंभव अधिक धन आरक्षित कर लिया था। आख़िरकार, किसे फ़िक्र थी? एक कैदी और शहर की एक महिला को। इसीलिए उसने फैंटाइन का अंतिम संस्कार बहुत ही सादगी से किया और उसे उस आवश्यक रूप में रखा जिसे गरीबों की कब्र के रूप में जाना जाता है।

तो फैंटाइन को कब्रिस्तान के उस कोने में दफनाया गया जो सबके लिए खुला था और जहाँ गरीब लोग गुम हो जाते थे। सौभाग्य से, ईश्वर ही जानता है कि आत्मा को कहाँ ढूँढना है। फैंटाइन को छाया में, सबसे पहले मिली हड्डियों के बीच रखा गया; उसे राख के ढेर में मिला दिया गया। उसे सार्वजनिक कब्र में फेंक दिया गया। उसकी कब्र उसके पलंग जैसी दिखती थी।

□□□ II. □□□□□

पुस्तक **I.** वाटरलू

I. निवेल्स से रास्ते में क्या-क्या मिलता है

पिछले वर्ष (1861), मई की एक खूबसूरत सुबह, एक यात्री, जो इस कहानी को सुना रहा है, निवेल्स से आ रहा था और ला हुल्पे की ओर जा रहा था। वह पैदल था। वह एक चौड़ी पक्की सड़क पर चल रहा था, जो पेड़ों की दो कतारों के बीच लहरदार थी, पहाड़ियों के ऊपर से गुजरती थी जो एक के बाद एक आती थीं, सड़क को ऊपर उठाती थीं और फिर नीचे गिराती थीं, जिससे विशाल लहरों जैसी आकृति बनती थी।

वह लिलोइस और बोइस-सीनियर-इसाक से आगे निकल चुका था। पश्चिम दिशा में उसे ब्रेन-ल'एलेउड का स्लेट की छत वाला टावर दिखाई दिया, जिसका आकार उल्टे फूलदान जैसा था। वह अभी-अभी एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित जंगल को पीछे छोड़ आया था; और चौराहे के कोने पर, एक प्रकार के फफूंदी लगे फांसी के तख्ते के पास, जिस पर 'प्राचीन अवरोध संख्या 4' लिखा था, एक सार्वजनिक शराबखाना था, जिसके सामने यह चिन्ह लगा था: "चारों हवाओं के पास" (Aux Quatre Vents)। "एशेबो, निजी कैफे।"

एक चौथाई मील आगे बढ़ने पर वह एक छोटी घाटी के निचले हिस्से में पहुँचा, जहाँ सड़क के तटबंध पर बने मेहराब के नीचे से पानी बहता है। सड़क के एक ओर घाटी में फैले विरल रूप से लगाए गए लेकिन हरे-भरे पेड़ों का समूह दूसरी ओर घास के मैदानों में फैला हुआ है, और ब्रेन-ल'एलेउड की दिशा में धीरे-धीरे और व्यवस्थित रूप से विलीन हो जाता है।

सड़क के पास दाईं ओर एक सराय थी, जिसके दरवाजे पर चार पहियों वाली गाड़ी खड़ी थी, हॉप के डंडों का एक बड़ा गट्ठा, एक हल, घनी झाड़ियों के पास सूखी लकड़ियों का ढेर, एक चौकोर गड्ढे में चूने से धुआँ निकल रहा था, और पुआल की दीवारों वाले एक पुराने ऊँचे कमरे में एक सीढ़ी लटकी हुई थी। एक युवती खेत में निराई कर रही थी, जहाँ एक विशाल पीला पोस्टर, शायद किसी बाहरी आयोजन, जैसे कि किसी स्थानीय उत्सव का, हवा में लहरा रहा था। सराय के एक कोने में, एक तालाब के किनारे, जिसमें बत्तखों का एक झुंड तैर रहा था, एक कच्चा रास्ता झाड़ियों में जा रहा था। राहगीर उसी रास्ते पर आ गया।

पंद्रहवीं शताब्दी की एक नुकीली दीवार के किनारे-किनारे सौ कदम चलने के बाद, जिस पर ईंटों का बेमेल संयोजन था, वह खुद को एक बड़े मेहराबदार पत्थर के दरवाजे के सामने पाया, जिस पर लुई XIV की गंभीर शैली में बना एक आयताकार चौखट था, जिसके दोनों ओर दो सपाट पदक लगे थे। इस दरवाजे के ऊपर एक भव्य अग्रभाग था; अग्रभाग के लंबवत एक दीवार लगभग दरवाजे को छू रही थी और उसके दोनों ओर एक सीधा समकोण बना रही थी। दरवाजे के सामने घास के मैदान में तीन हल पड़े थे, जिनमें मई के सभी फूल अव्यवस्थित रूप से उग रहे थे। दरवाजा बंद था। उसे बंद करने वाले दो जर्जर पल्ले एक पुराने जंग लगे नॉकर से सुशोभित थे।

सूरज की रोशनी मनमोहक थी; डालियों में मई की वो हल्की सी कंपकंपी थी, जो हवा से नहीं बल्कि घोंसलों से आती प्रतीत होती थी। एक बहादुर छोटा पक्षी, शायद किसी प्रेमी का, एक बड़े पेड़ पर बेसुध होकर चहचहा रहा था।

राहगीर ने झुककर दरवाजे के खंभे के निचले हिस्से में बाईं ओर स्थित पत्थर में एक बड़े गोलाकार गड्ढे का निरीक्षण किया, जो एक गोले के खोखले भाग जैसा दिखता था।

इसी क्षण दरवाजे के पल्ले खुले और एक किसान महिला बाहर निकली।

उसने राहगीर को देखा और समझ गई कि वह क्या देख रहा है।

“यह एक फ्रांसीसी तोप का गोला था जिसने ऐसा किया,” उसने उससे कहा। और उसने आगे कहा:—

“जो कुछ आप वहाँ दरवाजे के ऊपरी हिस्से में, एक कील के पास देख रहे हैं, वह अंडे के आकार की एक बड़ी लोहे की गोली का छेद है। गोली लकड़ी को भेद नहीं पाई।”

“इस जगह का नाम क्या है?” राहगीर ने पूछा।

“हौगोमोंट,” किसान महिला ने कहा।

यात्री सीधा खड़ा हुआ। वह कुछ कदम चला और झाड़ियों के ऊपर से देखने के लिए आगे बढ़ा। पेड़ों के बीच क्षितिज पर उसे एक छोटी सी ऊँचाई दिखाई दी, और उस ऊँचाई पर कुछ ऐसा दिखाई दिया जो उस दूरी से शेर जैसा लग रहा था।

वह वाटरलू के युद्धक्षेत्र में था।

II. हौगोमोंट

हौगोमोंट—यह एक शोक स्थल था, बाधा की शुरुआत, पहला प्रतिरोध, जिसका सामना यूरोप के उस महान लकड़हारे, जिसे नेपोलियन कहा जाता था, ने वाटरलू में किया था, उसकी कुल्हाड़ी के वार के नीचे पहली गांठ।

यह कभी एक महल हुआ करता था; अब यह केवल एक फार्महाउस है। पुरातत्वविदों के लिए, हाउगोमोंट का अर्थ है ह्यूगोमन्स। इस जागीर का निर्माण सोमरल के राजा ह्यूगो ने करवाया था, जिन्होंने विलियर्स एबे के छठे चैपल की स्थापना की थी।

यात्री ने दरवाजा धक्का देकर खोला, एक प्राचीन कलश को कोहनी से बरामदे के नीचे सरकाया और आंगन में प्रवेश किया।

इस मैदान में सबसे पहले जिस चीज़ ने उसका ध्यान खींचा, वह सोलहवीं शताब्दी का एक दरवाज़ा था, जो यहाँ एक मेहराब की तरह दिखता है, इसके चारों ओर सब कुछ ध्वस्त हो चुका है। किसी भव्य इमारत का जन्म अक्सर खंडहरों में ही होता है। मेहराब के पास की एक दीवार में हेनरी चतुर्थ के समय का एक और मेहराबदार दरवाज़ा खुलता है, जिससे एक बगीचे के पेड़ों की झलक मिलती है; इस दरवाज़े के बगल में, एक गोबर का गड्ढा, कुछ कुल्हाड़ियाँ, कुछ फावड़े, कुछ गाड़ियाँ, एक पुराना कुआँ, अपने पत्थर के तख्तों और लोहे की रील के साथ, एक मुर्गी उछलती हुई, और एक टर्की अपनी पूंछ फैलाए, एक छोटा घंटाघर वाला चैपल, चैपल की दीवार के सहारे फैला हुआ एक फलता-फूलता नाशपाती का पेड़—देखो, वह प्रांगण, जिस पर विजय पाना नेपोलियन के सपनों में से एक था। अगर वह इस ज़मीन के कोने पर कब्ज़ा कर लेता, तो शायद उसे भी दुनिया मिल जाती। मुर्गियाँ अपनी चोंच से इसकी धूल उड़ा रही हैं। एक गुर्राहट सुनाई देती है; यह एक विशालकाय कुत्ता है, जो अपने दांत दिखाता है और अंग्रेजों की जगह ले लेता है।

अंग्रेजों ने वहां सराहनीय प्रदर्शन किया। कुक की चार अंगरक्षक टुकड़ियों ने वहां सेना के भयंकर आक्रमण के खिलाफ सात घंटे तक डटकर मुकाबला किया।

मानचित्र पर, इमारतों और बाड़ों से युक्त एक ज्यामितीय योजना के रूप में देखने पर, होउगोमोंट एक अनियमित आयत के समान दिखता है, जिसका एक कोना कटा हुआ है। इसी कोने में दक्षिणी द्वार स्थित है, जो इस दीवार से सुरक्षित है और इस पर तोप की मारक क्षमता के बराबर ही नियंत्रण रखता है। होउगोमोंट में दो द्वार हैं—दक्षिणी द्वार, जो महल का है; और उत्तरी द्वार, जो खेत का है। नेपोलियन ने अपने भाई जेरोम को होउगोमोंट के विरुद्ध भेजा; फॉय, गुइलेमिनोट और बाचेलू की टुकड़ियों ने इस पर आक्रमण किया; रीले की लगभग पूरी सेना इस पर तैनात की गई, लेकिन असफल रही; केलरमैन के गोले दीवार के इस वीर खंड पर समाप्त हो गए। बौड्विन की ब्रिगेड उत्तर की ओर से होउगोमोंट को भेदने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं थी, और सोये की ब्रिगेड दक्षिण की ओर से केवल एक दरार की शुरुआत ही कर सकी, लेकिन उस पर कब्जा नहीं कर सकी।

दक्षिण दिशा में आंगन के चारों ओर फार्म की इमारतें हैं। फ्रांसीसियों द्वारा तोड़े गए उत्तरी दरवाजे का एक टुकड़ा दीवार पर लटका हुआ है। इसमें दो बीमों पर कीलों से ठोकी गई चार तख्तियां हैं, जिन पर हमले के निशान स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

उत्तरी द्वार, जिसे फ्रांसीसियों ने तोड़कर बनाया था और जिसकी दीवार पर लगे पैनल की जगह एक नया टुकड़ा लगाया गया है, बाड़े के निचले हिस्से में आधा खुला खड़ा है; यह दीवार में ठीक बीचोंबीच बना है, जिसका निचला हिस्सा पत्थर का और ऊपरी हिस्सा ईंटों का है, जो उत्तर की ओर आंगन से सटा हुआ है। यह बैलगाड़ियों के लिए बना एक साधारण द्वार है, जैसा कि सभी खेतों में होता है, जिसके दो बड़े पल्ले देहाती तख्तों से बने हैं: इसके आगे घास के मैदान फैले हुए हैं। इस प्रवेश द्वार को लेकर विवाद बहुत भयंकर था। लंबे समय तक, दरवाज़े के चौखटों पर खून से सने हाथों के निशान दिखाई देते रहे। यहीं पर बौड्विन की हत्या हुई थी।

इस प्रांगण में युद्ध का तूफान आज भी गूंज रहा है; उसकी भयावहता आज भी दिखाई देती है; युद्ध की अफरा-तफरी वहीं जम गई है; वह वहीं जीती है और वहीं मरती है; मानो कल ही की बात हो। दीवारें मृत्यु की पीड़ा में हैं, पत्थर गिर रहे हैं; दरारें चीख रही हैं; छेद घाव हैं; झुके हुए, कांपते पेड़ मानो भागने की कोशिश कर रहे हैं।

यह आंगन 1815 में आज की तुलना में अधिक विकसित था। उस समय जो इमारतें थीं, जिन्हें बाद में ध्वस्त कर दिया गया, वे रेडान और कोणों का निर्माण करती थीं।

अंग्रेजों ने वहां मोर्चाबंदी कर ली; फ्रांसीसी अंदर घुसने में कामयाब रहे, लेकिन टिक नहीं सके। चैपल के बगल में, हाउगोमोंट जागीर का एकमात्र बचा हुआ खंडहर, महल का एक हिस्सा, जर्जर अवस्था में खड़ा है—ऐसा कहा जा सकता है जैसे उसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया हो। महल को कालकोठरी के रूप में इस्तेमाल किया गया, और चैपल को अवरोधक कक्ष के रूप में। वहां लोगों ने एक-दूसरे को मार डाला। फ्रांसीसी सैनिकों पर हर तरफ से गोलियां चलाई गईं— दीवारों के पीछे से, अटारी की चोटियों से, तहखानों की गहराई से, सभी खिड़कियों से, सभी हवा के छेदों से, पत्थरों की हर दरार से—उन्होंने लकड़ियों के गट्ठे लाकर दीवारों और सैनिकों में आग लगा दी; गोलियों का जवाब भीषण आग से दिया गया।

खंडहर हो चुके हिस्से में, लोहे की सलाखों से सजी खिड़कियों से, ईंटों से बनी मुख्य इमारत के ध्वस्त कक्ष दिखाई देते हैं; इन कमरों में अंग्रेज़ पहरेदार घात लगाकर बैठे थे; सीढ़ी का घुमावदार रास्ता, जो भूतल से छत तक दरारों से भरा है, किसी टूटे हुए खोल के अंदरूनी हिस्से जैसा दिखता है। सीढ़ी दो मंज़िला है; अंग्रेज़ों ने सीढ़ी पर घेराबंदी कर रखी थी और ऊपरी पायदानों पर भारी संख्या में जमा होकर निचले पायदानों को काट दिया था। ये पायदान नीले पत्थर की बड़ी-बड़ी शिलाओं के बने थे, जो बिच्छू-बूटी के बीच ढेर के रूप में पड़े हैं। लगभग 20 सीढ़ियाँ अभी भी दीवार से चिपकी हुई हैं; पहली सीढ़ी पर त्रिशूल की आकृति खुदी हुई है। ये दुर्गम सीढ़ियाँ अपने आले में मज़बूती से टिकी हुई हैं। बाकी सब कुछ एक ऐसे जबड़े जैसा दिखता है जिसके दांत टूट गए हों। वहाँ दो पुराने पेड़ हैं: एक सूख चुका है; दूसरा जड़ से घायल है, और अप्रैल में हरियाली से भरा रहता है। 1815 से यह सीढ़ी के बीच से उगता आ रहा है।

चैपल में एक नरसंहार हुआ था। भीतरी भाग, जो अब शांत हो चुका है, अपने आप में अनोखा है। उस नरसंहार के बाद से वहाँ प्रार्थना सभा नहीं हुई है। फिर भी, वेदी वहीं रखी हुई है—बिना पॉलिश की हुई लकड़ी की वेदी, जो खुरदुरे पत्थरों की पृष्ठभूमि पर बनी है। चार सफेदी की हुई दीवारें, वेदी के सामने

एक दरवाजा, दो छोटी मेहराबदार खिड़कियाँ; दरवाजे के ऊपर एक बड़ा लकड़ी का क्रूस, क्रूस के नीचे एक चौकोर हवा का छेद जो भूसे के गट्ठे से बंद है; जमीन पर, एक कोने में, एक पुराना खिड़की का फ्रेम जिसका शीशा पूरी तरह टूट चुका है—यही है चैपल की हालत। वेदी के पास पंद्रहवीं शताब्दी की संत ऐनी की लकड़ी की एक मूर्ति कीलों से ठोंकी हुई है; शिशु यीशु का सिर एक बड़े गोले से उड़ा दिया गया है। फ्रांसीसियों ने, जो कुछ समय के लिए चैपल के स्वामी थे और फिर उन्हें वहाँ से हटा दिया गया, उसमें आग लगा दी थी। आग की लपटों ने पूरी इमारत को भर दिया; यह एक भयंकर भट्टी बन गई थी; दरवाजा जल गया, फर्श जल गया, लेकिन लकड़ी की यीशु की मूर्ति नहीं जली। आग ने उनके पैरों को भस्म कर दिया, जिनके अब केवल जले हुए ठूंठ ही दिखाई देते हैं; फिर आग थम गई—पड़ोस के लोगों के अनुसार, यह एक चमत्कार था। सिर कटी शिशु यीशु, ईसा मसीह की तुलना में कम भाग्यशाली थे।

दीवारें शिलालेखों से ढकी हुई हैं। ईसा मसीह के चरणों के पास यह नाम पढ़ा जा सकता है: हेनक्विनेज़। फिर ये अन्य नाम हैं: कोंडे डे रियो मैयोर, मार्केस और मार्केसा डे अल्माग्रो (हबाना)। कुछ फ्रांसीसी नामों के आगे विस्मयादिबोधक चिह्न लगे हैं—क्रोध का प्रतीक। दीवार पर 1849 में नई सफेदी की गई थी। यहाँ विभिन्न राष्ट्र एक-दूसरे का अपमान करते थे।

इसी चैपल के दरवाजे पर वह शव मिला जिसके हाथ में कुल्हाड़ी थी; यह शव सबलेफ्टिनेंट लेग्रोस का था।

चैपल से बाहर निकलते ही बाईं ओर एक कुआँ दिखाई देता है। इस आंगन में दो कुएँ हैं। एक व्यक्ति पूछता है, इसमें बाल्टी और खींचने वाली मशीन क्यों नहीं है? जवाब मिलता है कि यहाँ से पानी नहीं निकाला जाता। यहाँ से पानी क्यों नहीं निकाला जाता? क्योंकि यह कंकालों से भरा हुआ है।

कुएं से पानी निकालने वाले अंतिम व्यक्ति का नाम गुइलौम वैन काइलसोम था। वह हौगोमोंट में रहने वाला एक किसान था और वहां माली का काम करता था। 18 जून, 1815 को उसका परिवार भाग गया और जंगल में छिप गया।

विलियर्स मठ के चारों ओर फैले जंगल ने कई दिनों और रातों तक इधर-उधर भटकते इन दुर्भाग्यशाली लोगों को आश्रय दिया था। आज भी यहाँ कुछ पहचाने जाने योग्य निशान मौजूद हैं, जैसे जले हुए पेड़ों के पुराने तने, जो घने जंगलों

की गहराई में कांपते हुए इन गरीब लोगों के शिविरों के स्थान को दर्शाते हैं।

गुइलौम वैन काइल्सोम हौगोमोंट में "महल की रक्षा" के लिए रुका रहा और तहखाने में छिप गया। अंग्रेजों ने उसे वहीं खोज निकाला। उन्होंने उसे उसके छिपने की जगह से खींच निकाला और युद्ध करने वालों ने इस डरे हुए आदमी को अपनी तलवारों से वार करके अपनी सेवा करने के लिए मजबूर किया। वे प्यासे थे; गुइलौम उनके लिए पानी लाया। उसने इसी कुएँ से पानी भरा था। कई लोगों ने वहीं अपनी आखिरी साँस ली। जिस कुएँ में इतने सारे मृतकों ने पानी पिया था, उसका अंत भी निश्चित था।

सगाई के बाद, वे शवों को दफनाने में जल्दबाजी कर रहे थे। मृत्यु विजय का पीछा करती है, और वह विजय के बाद महामारी लाती है। टाइफस विजय का एक सहवर्ती रोग है। यह कुआँ गहरा था, और इसे समाधि में बदल दिया गया। इसमें तीन सौ शव डाले गए। शायद जल्दबाजी में। क्या वे सभी मर चुके थे? किंवदंती कहती है कि वे नहीं मरे थे। ऐसा लगता है कि दफनाने के बाद वाली रात को, कुएँ से कमजोर आवाजें सुनाई दीं।

यह कुआँ आँगन के बीचोंबीच स्थित है। तीन दीवारें, जो आंशिक रूप से पत्थर और आंशिक रूप से ईंटों से बनी हैं और एक छोटे, वर्गाकार मीनार का आभास देती हैं, और किसी पर्दे के पत्तों की तरह मुड़ी हुई हैं, इसे चारों ओर से घेरे हुए हैं। चौथी तरफ खुला है। यहीं से पानी निकाला जाता था। नीचे की दीवार में एक बेढंगा सा छेद है, संभवतः किसी शंख के कारण बना होगा। इस छोटी मीनार पर एक चबूतरा था, जिसके अब केवल बीम ही बचे हैं। दाईं ओर स्थित कुएँ के लोहे के खंभे एक क्रॉस का आकार बनाते हैं। झुककर देखने पर नज़र ईंटों के एक गहरे बेलनाकार ढांचे में खो जाती है जो घनी छायाओं से भरा हुआ है। कुएँ के चारों ओर की दीवारों का आधार बिच्छू-बूटी से ढका हुआ है।

इस कुएँ के सामने वह बड़ी नीली शिला नहीं है जो बेल्जियम के सभी कुओं के लिए एक चबूतरे का काम करती है। यहाँ शिला के स्थान पर एक चौखट लगी है, जिस पर गांठदार और पत्थर बन चुकी लकड़ी के पाँच-छह बेढंगे टुकड़े टिके हैं जो विशाल हड्डियों जैसे दिखते हैं। अब न तो बाल्टी है, न चेन, न ही पुली; लेकिन वह पत्थर का कुंड अभी भी है जो अतिरिक्त पानी के लिए इस्तेमाल होता था। बारिश का पानी वहाँ जमा होता है, और समय-समय पर आस-पास के जंगलों का कोई

पक्षी वहाँ पानी पीने आता है और फिर उड़ जाता है। इस खंडहर में एक घर, फार्महाउस, अभी भी आबाद है। इस घर का दरवाजा आंगन में खुलता है। इस दरवाजे पर, एक सुंदर गोथिक शैली की ताला-प्लेट के बगल में, तिरछी नक्काशी वाला एक लोहे का हैंडल लगा है। जिस क्षण हनोवरियन लेफ्टिनेंट विल्डा ने फार्म में शरण लेने के लिए इस हैंडल को पकड़ा, उसी क्षण एक फ्रांसीसी सैनिक ने कुल्हाड़ी से उसका हाथ काट दिया।

घर में रहने वाले परिवार के दादा गुइलौम वैन काइलसोम थे, जो एक पुराने माली थे और बहुत पहले ही उनका निधन हो चुका था। एक सफ़ेद बालों वाली महिला ने हमसे कहा: “मैं वहाँ थी। मैं तीन साल की थी। मेरी बड़ी बहन बहुत डर गई थी और रो रही थी। वे हमें जंगल में ले गए। मैं अपनी माँ की गोद में वहाँ गई। हम सुनने के लिए अपने कान ज़मीन से चिपकाए बैठे थे। मैंने तोप की आवाज़ की नकल की और बूम! बूम!” चिल्लाई।

हमें बताया गया कि आंगन से बाईं ओर खुलने वाला एक दरवाजा बगीचे की ओर जाता है। बगीचा बहुत ही खराब है।

यह तीन भागों में विभाजित है; इसे लगभग तीन खंडों में विभाजित कहा जा सकता है। पहला भाग एक बगीचा है, दूसरा एक फलों का बाग है, और तीसरा एक जंगल है। इन तीनों भागों की एक साझा सीमा है: प्रवेश द्वार के किनारे महल और फार्म की इमारतें; बाईं ओर एक बाड़; दाईं ओर एक दीवार; और अंत में एक दीवार। दाईं ओर की दीवार ईंटों की है, और नीचे की दीवार पत्थर की है। सबसे पहले बगीचे में प्रवेश किया जाता है। यह ढलानदार है, इसमें आंवले की झाड़ियाँ लगी हैं, जंगली वनस्पतियों से भरा हुआ है, और अंत में तराशे हुए पत्थरों से बना एक भव्य चबूतरा है, जिस पर दोहरे घुमावदार रेलिंग लगी है।

यह लेनोत्रे से पहले की फ्रांसीसी शैली में बना एक सामंती उद्यान था; आज यह खंडहर और झाड़ियों से भरा पड़ा है। स्तंभों के ऊपर पत्थर के गोले लगे हैं जो तोप के गोलों जैसे दिखते हैं। 43 बलस्टर अभी भी अपने स्थान पर खड़े हैं; बाकी घास में पड़े हैं। लगभग सभी पर गोलियों के निशान हैं। एक टूटा हुआ बलस्टर चबूतरे पर टूटी हुई टांग की तरह रखा है।

बाग से कुछ आगे इसी बगीचे में, प्रथम रेजिमेंट के छह पैदल सैनिकों ने वहाँ पहुँचकर, बचने का कोई रास्ता न होने पर, दो हनोवरियन कंपनियों से युद्ध

छेड़ दिया। हनोवरियन सैनिकों ने, जिनमें से एक कार्बाइन से लैस थी, बलि के तख्तों पर तैनात होकर ऊपर से गोलीबारी की। पैदल सैनिकों ने नीचे से जवाबी हमला किया, छह सैनिक दो सौ सैनिकों के विरुद्ध, निडर होकर और करौंदे की झाड़ियों के सिवा कोई आश्रय न होने के बावजूद, पंद्रह मिनट में ही अपनी जान गंवा दी।

कुछ सीढ़ियाँ चढ़ते ही, सही मायने में, बगीचे से निकलकर फलों के बाग में प्रवेश करते हैं। वहाँ, उन कुछ वर्ग फुट के दायरे में, पंद्रह सौ सैनिक एक घंटे से भी कम समय में मारे गए। दीवार युद्ध के लिए तैयार प्रतीत होती है। अंग्रेजों द्वारा अनियमित ऊँचाई पर बनाए गए अड़तीस छेद अभी भी मौजूद हैं। छठे छेद के सामने ग्रेनाइट से बने दो अंग्रेज़ों के मकबरे हैं। केवल दक्षिणी दीवार में ही छेद हैं, क्योंकि मुख्य हमला उसी तरफ से हुआ था। दीवार बाहर से एक ऊँची झाड़ी से ढकी हुई है; फ्रांसीसी यह सोचकर आए कि उन्हें केवल एक झाड़ी से निपटना है, वे उसे पार कर गए, और दीवार को एक बाधा और घात के रूप में पाया, जिसके पीछे अंग्रेज़ रक्षक थे, अड़तीस छेदों से एक साथ छर्रों और गोलियों की बौछार हुई, और सोये की ब्रिगेड इसके सामने बिखर गई। इस प्रकार वाटरलू की लड़ाई शुरू हुई।

फिर भी, बाग पर कब्ज़ा कर लिया गया। उनके पास सीढ़ियाँ नहीं थीं, इसलिए फ्रांसीसियों ने अपने नाखूनों के सहारे उस पर चढ़ाई की। उन्होंने पेड़ों के बीच आमने-सामने की लड़ाई लड़ी। यह सारी घास खून से लथपथ है। नासाऊ की सात सौ सैनिकों वाली एक बटालियन वहाँ पराजित हो गई। दीवार का बाहरी हिस्सा, जिस पर केलरमैन की दो तोपें तैनात थीं, छर्रों से छलनी हो गया है।

मई के महीने में यह बाग अन्य बागों की तरह ही जीवंत हो उठता है। इसमें बटरकप और डेज़ी के फूल खिले हैं; घास लंबी है; घोड़े चर रहे हैं; पेड़ों के बीच बालों के गुच्छे बिखरे पड़े हैं जिन पर कपड़े सूख रहे हैं, और राहगीर को सिर झुकाने पर मजबूर कर देते हैं; इस बंजर भूमि पर चलते हुए पैर छछूंदरों के बिलों में धंस जाते हैं। घास के बीचोंबीच एक उखड़ा हुआ पेड़ का तना दिखाई देता है जो हरा-भरा पड़ा है। मेजर ब्लैकमैन ने इसी से टेक लगाकर अंतिम सांस ली थी। पास के एक विशाल पेड़ के नीचे जर्मन जनरल डुप्लाट की मृत्यु हुई थी, जो एक फ्रांसीसी परिवार से थे जो नैनटेस के फरमान के निरस्त होने पर भाग गया था। एक बूढ़ा और गिरता हुआ सेब का पेड़ एक तरफ झुका

हुआ है, उसके घाव पर पुआल और चिकनी मिट्टी की पट्टी बंधी है। लगभग सभी सेब के पेड़ उम्र के साथ गिर रहे हैं। ऐसा कोई पेड़ नहीं है जिस पर गोली या बिस्केयन का वार न हुआ हो। इस बगीचे में मृत पेड़ों के कंकाल बहुतायत में हैं। कौवे उनकी शाखाओं से उड़ते हैं, और इसके अंत में वायलेट से भरा एक जंगल है।

बौड्विन मारा गया, फॉय घायल हुआ, भीषण आगजनी, नरसंहार, भीषण हिंसा, अंग्रेज़ों, फ्रांसीसियों और जर्मनों के खून से बनी एक छोटी नदी, लाशों से भरा एक कुआँ, नासाऊ और ब्रंसविक रेजिमेंट नष्ट, डुप्लाट मारा गया, ब्लैकमैन मारा गया, इंग्लिश गार्ड्स को क्षत-विक्षत कर दिया गया, रीले की कोर के चालीस सैनिकों के अलावा बीस फ्रांसीसी बटालियनें नष्ट हो गईं, अकेले होउगोमोंट की उस झोपड़ी में तीन हज़ार लोगों को काट डाला गया, टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया, गोली मार दी गई, जला दिया गया, उनके गले काट दिए गए—और यह सब इसलिए हुआ ताकि आज एक किसान किसी यात्री से कह सके: "महाशय, मुझे तीन फ्रैंक दीजिए, और अगर आप चाहें तो मैं आपको वाटरलू की घटना समझा दूँगा!"

III. अठारह जून, 1815

आइए हम पीछे मुड़ें—यह कहानीकार के अधिकारों में से एक है—और खुद को एक बार फिर 1815 में ले जाएं, और उस युग से थोड़ा पहले भी जब इस पुस्तक के पहले भाग में वर्णित घटनाएँ घटी थीं।

अगर 17 और 18 जून, 1815 की रात को बारिश न हुई होती, तो यूरोप का भाग्य कुछ और होता। कुछ बूँदों पानी ने ही नेपोलियन के पतन का फैसला कर दिया। वाटरलू की लड़ाई को ऑस्टरलिट्ज़ की लड़ाई में परिणत करने के लिए ईश्वर की कृपा से बस थोड़ी और बारिश की ज़रूरत थी, और बेमौसम आसमान में मंडराते एक बादल ने ही दुनिया को तबाह कर दिया।

वाटरलू की लड़ाई सुबह साढ़े ग्यारह बजे तक शुरू नहीं हो सकी, और इसी वजह से ब्लुचर को आगे आने का समय मिल गया। क्यों? क्योंकि ज़मीन गीली थी। तोपखाने को ज़मीन के थोड़ा सख्त होने तक इंतज़ार करना पड़ा, तभी वे आगे बढ़ सके।

नेपोलियन एक तोपखाना अधिकारी थे और उन्होंने इसका प्रभाव महसूस किया। इस अद्भुत सेनापति की नींव उस व्यक्ति पर टिकी थी, जिसने अबूकिर पर डायरेक्टोरेट को दी गई रिपोर्ट में कहा था: "हमारे एक गोले ने छह सैनिकों को मार डाला।" उनकी सभी युद्ध योजनाएँ तोप के गोलों के अनुरूप थीं। उनकी जीत की कुंजी तोपखाने को एक बिंदु पर केंद्रित करना था। उन्होंने शत्रु सेनापति की रणनीति को एक किले की तरह समझा और उसमें सेंध लगाई। उन्होंने कमजोर बिंदु पर छर्रों से हमला किया; उन्होंने तोपों से लड़ाइयों को शुरू और समाप्त किया। उनकी प्रतिभा में एक कुशल निशानेबाज की झलक थी। चौकों में प्रहार करना, रेजिमेंटों को चूर-चूर करना, मोर्चे तोड़ना, जनसमूहों को कुचलना और तितर-बितर करना—उनके लिए सब कुछ इसी में निहित था—लगातार प्रहार करना—और उन्होंने यह कार्य तोप के गोले को सौंपा। एक दुर्जेय रणनीति, और वह रणनीति जो प्रतिभा के साथ मिलकर, युद्ध की इस गंभीर कलाबाज को पंद्रह वर्षों तक अजेय बनाए रखा।

18 जून, 1815 को, उसने अपनी तोपखाने पर और भी अधिक भरोसा किया, क्योंकि संख्या बल उसके पक्ष में था। वेलिंगटन के पास केवल एक सौ उनसठ तोपखाने थे; नेपोलियन के पास दो सौ चालीस थे।

मान लीजिए कि मिट्टी सूखी होती और तोपखाना चलने में सक्षम होता, तो लड़ाई सुबह छह बजे शुरू होती। युद्ध दो बजे तक जीत लिया जाता और समाप्त हो जाता, यानी प्रशियाई सेना के पक्ष में भाग्य बदलने से तीन घंटे पहले। इस युद्ध में हार के लिए नेपोलियन कितना दोषी है? क्या जहाज़ का डूबना पायलट की गलती के कारण हुआ था?

क्या नेपोलियन की स्पष्ट शारीरिक गिरावट ने इस युग को आंतरिक शक्ति की कमी से और भी जटिल बना दिया था? क्या बीस वर्षों के युद्ध ने तलवार को म्यान की तरह ही घिस दिया था, आत्मा को भी शरीर के साथ-साथ? क्या एक अनुभवी नेता पर इसका विनाशकारी प्रभाव पड़ा था? संक्षेप में, क्या यह प्रतिभा, जैसा कि कई प्रतिष्ठित इतिहासकारों ने माना है, ग्रहण से पीड़ित थी? क्या उसने अपनी कमजोर शक्तियों को स्वयं से छिपाने के लिए उन्माद का सहारा लिया था? क्या वह रोमांच की एक झलक के भ्रम में डगमगाने लगा था? क्या वह—एक सेनापति के लिए यह एक गंभीर मामला है—खतरे के प्रति असंवेदनशील हो गया था? क्या इस श्रेणी के उन महान व्यक्तियों में, जिन्हें कर्म के दिग्गज कहा जा सकता है, कोई ऐसी उम्र होती है जब प्रतिभा दूरदृष्टिहीन हो जाती है? आदर्शों के धनी व्यक्तियों पर वृद्धावस्था का कोई प्रभाव नहीं होता; दांते और माइकलएंजेलो जैसे महान व्यक्तियों के लिए वृद्ध होना महानता में वृद्धि है; क्या हैनिबल और बोनापार्ट जैसे महान व्यक्तियों के लिए यह कम होना है? क्या नेपोलियन ने विजय का प्रत्यक्ष अनुभव खो दिया था? क्या वह उस मुकाम पर पहुँच गया था जहाँ वह चट्टान को पहचान नहीं पा रहा था, जाल को समझ नहीं पा रहा था, खाई के ढहते किनारे को देख नहीं पा रहा था? क्या उसने आपदाओं को भांपने की अपनी शक्ति खो दी थी? वह जो पहले विजय के सभी मार्ग जानता था, और जो अपने बिजली के रथ के शिखर से उन्हें एक प्रभुत्वशाली उंगली से दिखाता था, क्या अब वह उस भयावह विस्मय की स्थिति में पहुँच गया था जहाँ वह अपने उग्र सैनिकों को, जो उससे जुड़े थे, खाई की ओर ले जा सकता था? क्या छियालीस वर्ष की आयु में उसे घोर पागलपन ने जकड़ लिया था? क्या भाग्य का वह विशालकाय सारथी अब एक विशाल साहसी व्यक्ति से अधिक कुछ नहीं रह गया था?

■■ ■■■ ■■■■ ■■■■■■

■■■ ■■ ■■■■■■, ■■■■ ■■■■■ ■■■■■ ■■ ■■■■■■■■ ■■■■ ■■■ ■■■■■ ■■■■■ ■■ ■■■■ ■■ ■■■■■■ ■■ ■■■ ■■■■■■■■ ■■■■, ■■■■■■ ■■ ■■■ ■■■■■■ ■■■ ■■ ■■■■■■■ ■■■ ■■■■■■, ■■■■■■■ ■■■■ ■■ ■■■ ■■ ■■ ■■ ■■■■■■■■ ■■■■ ■■ ■■■■■■■■ ■■ ■■ ■■■■■■■, ■■■■■■■■ ■■ ■■■■■■ ■■ ■■ ■■■■■■■ ■■■■■■■ ■■■ ■■■■ ■■■■, ■■■■-■■■■-■■■ ■■ ■■■■■■ ■■■■, ■■■■■■■■ ■■ ■■■■■■ ■■■■, ■■■■■ ■■■■ ■■ ■■■■ ■■■ ■■■ ■■ ■■■■■■■ ■■■■ ■■ ■■■■■■ ■■■ ■■■■ ■■■■■ ■■■■■■■■ ■■ ■■■■■■, ■■ ■■ ■■ ■■■■■ ■■■ ■■■■■ ■■■ ■■■ ■■■ ■■■ ■■■ ■■■■■■■■

■■■■, ■■ ■■■■ ■■■■■■ ■■ ■■■■■ ■■ ■■■■■■ ■■■■■■■■ ■■■■ ■■ ■■■■ ■■■■ ■■■■; ■■■ ■■■■■ ■■ ■■ ■■■■■ ■■ ■■■ ■■■, ■■■■ ■■■■ ■■■■ ■■■■ ■■■■■■■ ■■■ ■■ ■■ ■■ ■■■■■ ■■ ■■■■■ ■■, ■■■■■ ■■ ■■■■■■ ■■■■■ ■■■■ ■■■■ ■■; ■■■■ ■■■■■, ■■ ■■■■■■ ■■ ■■■■■■■■ ■■ ■■ ■■■■■■■■■■ ■■ ■■ ■■ ■■■■ ■■■■■■■■■■■ ■■ ■■■■■ ■■■■■■■■■■ ■■ ■■■■■ ■■■■ ■■, ■■ ■■ ■■ ■■■■■■■■ ■■■ ■■■

■■ ■■■■■■■■■■■ ■■ ■■■■■ ■■■ ■■■■ ■■■■ ■■■; ■■ ■■ ■■ ■■ ■■■ ■■ ■■■■■■ ■■■, ■■■■■ ■■■ ■■■■■■ ■■■, ■■■■ ■■■■ ■■ ■■■ ■■ ■■■■■■ ■■ ■■■■ ■■■ ■■ ■■■■ ■■■, ■■ ■■■■ ■■■■■■ ■■ ■■ ■■■■■■■■■■ ■■■ ■■■■ ■■■; ■■■■ ■■■■■■■ ■■ ■■■ ■■ ■■ ■■■■■■ ■■ ■■■■■■ ■■ ■■■■■ ■■■■ ■■ ■■■ ■■■■■■ ■■■■ ■■ ■■■■■■ ■■■■■■■■■ ■■■■ ■■■■■■ ■■■; ■■■■■ ■■■ ■ ■■ ■■■ ■■■■■ ■■■■■ ■■ ■■ ■ ■■ ■■■ ■■■■■■■ ■■■■■■ ■■ ■■■■ ■■■■■■■ ■■ ■■■■■■■■ ■■ ■■■; ■■■■■ ■■■ ■■■, ■■■■■■ ■■■ ■■■■■ ■■■■■■ ■■ ■■■■■■■ ■■■■■■ ■■ ■■ ■■■■■■■■■ ■■■■ ■■; ■■ ■■ ■■■■■ ■■ ■■■■ ■■■■ ■■, ■■ ■■■■■■■ ■■■■■■ ■■, ■■ ■■ ■■ ■■■■ ■■■■■■■■■■, ■■■■ ■■ ■■■ ■■■■■■ ■■■■ ■■■■

IV. ए

वाटरलू की लड़ाई को स्पष्ट रूप से समझने के इच्छुक व्यक्तियों को बस अपने मन में एक बड़ा अक्षर 'A' बनाना है। 'A' का बायां हिस्सा निवेल्स जाने वाली सड़क है, दायां हिस्सा जेनैप जाने वाली सड़क है, और बीच का सिरा ब्रेन-ल'एलेउड से ओहेन जाने वाली खोखली सड़क है। 'A' का शीर्ष मोंट-सेंट-जीन है, जहां वेलिंगटन तैनात थे; बायां निचला सिरा होगोमोंट है, जहां रीले जेरोम बोनापार्ट के साथ तैनात थे; और दायां सिरा बेले-एलायंस है, जहां नेपोलियन थे। इस रेखा के केंद्र में वह सटीक बिंदु है जहां युद्ध का अंतिम निर्णय लिया गया था। यहीं पर शेर का प्रतीक चिन्ह स्थापित किया गया है, जो शाही रक्षक दल की सर्वोच्च वीरता का प्रतीक है।

त्रिभुज A के शीर्ष भाग में, दोनों भुजाओं और जोड़ के बीच स्थित त्रिभुज मोंट-सेंट-जीन का पठार है। इसी पठार पर विवाद पूरे युद्ध का आधार था। दोनों सेनाओं के पंख जेनापे और निवेल्स जाने वाली दो सड़कों के दाएं और बाएं ओर फैले हुए थे; डी'अर्लोन पिक्टन की ओर और रीले हिल की ओर।

ए के सिरे के पीछे, मोंट-सेंट-जीन के पठार के पीछे, सोइग्नेस का जंगल स्थित है।

मैदान की बात करें तो, पाठक स्वयं एक विशाल लहरदार भूभाग की कल्पना करें; प्रत्येक उभार अगले उभार को निर्देशित करता है, और सभी लहरें मोंट-सेंट-जीन की ओर बढ़ती हैं, और वहां जंगल में समाप्त होती हैं।

युद्ध के मैदान में दो विरोधी सैनिक दो पहलवानों की तरह होते हैं। यहाँ एक-दूसरे को कमर से पकड़ने का सवाल होता है। एक दूसरे को गिराने की कोशिश करता है। वे हर चीज़ को पकड़ लेते हैं: झाड़ी सहारा बन जाती है; दीवार का कोना कंधे टिकाने की जगह देता है; आश्रय लेने के लिए झोपड़ी न होने पर एक रेजिमेंट भी अपनी जगह छोड़ देती है; ज़मीन की असमानता, भूभाग का अचानक मोड़, सही समय पर मिला कोई चौराहा, कोई छोटा जंगल, कोई खाई, ये सब उस विशालकाय सेना को रोक सकते हैं और उसकी वापसी को रोक सकते हैं। जो मैदान छोड़ देता है, वह हार जाता है; इसीलिए ज़िम्मेदार नेता का यह कर्तव्य है कि

वह पेड़ों के छोटे से छोटे समूह की भी जाँच करे और ज़मीन की मामूली सी भी ऊँचाई-नीची बनावट का गहराई से अध्ययन करे।

दोनों जनरलों ने मोंट-सेंट-जीन के मैदान का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया था, जिसे अब वाटरलू का मैदान कहा जाता है। पिछले वर्ष, वेलिंगटन ने दूरदर्शिता से इस मैदान को एक बड़े युद्ध के संभावित स्थल के रूप में परखा था। इसी स्थान पर, और इसी द्वंद्वयुद्ध के लिए, 18 जून को वेलिंगटन को अच्छी स्थिति मिली थी, नेपोलियन को बुरी स्थिति। अंग्रेजी सेना ऊपर तैनात थी, फ्रांसीसी सेना नीचे।

18 जून, 1815 को भोर के समय, रोसॉम की पहाड़ियों पर घोड़े पर सवार, हाथ में गिलास लिए नेपोलियन के दृश्य का वर्णन करना लगभग अनावश्यक है। दुनिया ने उन्हें हमारे द्वारा दिखाए जाने से पहले ही देख लिया है। ब्रिएन स्कूल की छोटी तिहरी टोपी के नीचे उनका शांत चेहरा, हरी वर्दी, लीजन ऑफ ऑनर के स्टार को छुपाने वाली सफेद रिवर्स, उनके एपॉलेट्स को छिपाने वाला उनका बड़ा कोट, उनकी बनियान के नीचे से झांकता लाल रिबन का कोना, उनके चमड़े के पतलून, बैंगनी मखमल की काठी वाला सफेद घोड़ा जिसके कोनों पर मुकुट वाले N और चील बने हैं, रेशमी मोजों के ऊपर हेसियन बूट, चांदी के स्पर्स, मारेन्गो की तलवार—सीजर वंश के अंतिम शासक की वह पूरी छवि सभी की कल्पनाओं में मौजूद है, कुछ लोग जयजयकार करते हैं, तो कुछ लोग उन्हें गंभीरता से देखते हैं।

वह आकृति लंबे समय तक पूरी तरह प्रकाश में रही; यह अधिकांश नायकों द्वारा विकसित एक निश्चित पौराणिक धुंध से उत्पन्न हुई थी, जो हमेशा कम या ज्यादा समय के लिए सच्चाई को छुपाए रखती है; लेकिन आज इतिहास और दिन का उजाला हो गया है।

इतिहास नामक वह प्रकाश निर्मम है; उसमें यह विलक्षण और दिव्य गुण है कि, अपने शुद्ध प्रकाश स्वरूप के कारण, और ठीक इसी कारण कि वह पूर्णतः प्रकाश है, वह अक्सर उन स्थानों पर छाया डालता है जहाँ लोग अब तक किरणें देखते आए हैं; वह एक ही व्यक्ति से दो भिन्न-भिन्न आकृतियाँ बनाता है, और एक दूसरी पर प्रहार करके उस पर न्याय करता है, और निरंकुश की छाया नेता की चमक से प्रतिस्पर्धा करती है। अतः राष्ट्रों के अंतिम निर्णयों में अधिक सत्यता निहित होती है। बेबीलोन का वंचन सिकंदर को कमतर करता है, रोम का जंजीरों में जकड़ना सीज़र को कमतर करता है, यरूशलेम की हत्या टाइटस को कमतर करती

है, अत्याचारी का पीछा अत्याचार ही करता है। मनुष्य के लिए दुर्भाग्य है कि वह अपने स्वरूप को धारण करने वाली रात को पीछे छोड़ जाए।

V. युद्धों का अंधकारमय पक्ष

इस युद्ध के पहले चरण से हर कोई परिचित है; एक ऐसी शुरुआत जो परेशानी भरी, अनिश्चित, हिचकिचाती हुई और दोनों सेनाओं के लिए खतरनाक थी, लेकिन फ्रांसीसियों की तुलना में अंग्रेजों के लिए कहीं अधिक खतरनाक थी।

पूरी रात बारिश होती रही, मूसलाधार बारिश से ज़मीन धंस गई थी, मैदान की घाटियों में जगह-जगह पानी ऐसे जमा हो गया था मानो पीपों में भरा हो; कुछ जगहों पर तोपखाने की गाड़ियों का गियर धुरों तक कीचड़ में धंस गया था, घोड़ों के पिछले हिस्से से कीचड़ टपक रहा था। अगर मार्च कर रहे इन मालवाहक वाहनों के दल द्वारा रौंदे गए गेहूँ और राई ने गड्ढों को न भरा होता और पहियों के नीचे मिट्टी न बिछाई होती, तो पैपेलॉट की दिशा में, विशेष रूप से घाटियों में, कोई भी आवागमन असंभव होता।

यह घटना देर से शुरू हुई। जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, नेपोलियन को अपनी तोपों को पिस्तौल की तरह अपने नियंत्रण में रखने की आदत थी, कभी एक बिंदु पर तो कभी दूसरे बिंदु पर निशाना साधते हुए; और उसकी इच्छा थी कि घुड़सवार तोपें तब तक प्रतीक्षा करें जब तक वे स्वतंत्र रूप से आगे बढ़कर सरपट दौड़ न सकें। इसके लिए सूर्य का निकलना और मिट्टी का सूखना आवश्यक था। लेकिन सूर्य प्रकट नहीं हुआ। अब ऑस्टरलिट्ज़ का मिलन स्थल नहीं बचा था। जब पहली तोप दागी गई, तो अंग्रेज जनरल कोल्विल ने अपनी घड़ी देखी और पाया कि ग्यारह बजकर पैंतीस मिनट हो चुके थे।

होउगोमोंट पर तैनात फ्रांसीसी सेना के बाएं हिस्से ने भीषण आक्रामकता के साथ आक्रमण शुरू किया, शायद सम्राट की इच्छा से भी कहीं अधिक। उसी समय नेपोलियन ने ला हाई-सैंटे पर क्विओट की ब्रिगेड को भेजकर केंद्र पर हमला किया, और नेय ने पैपेलॉट पर तैनात अंग्रेजी सेना के बाएं हिस्से के विरुद्ध फ्रांसीसी सेना के दाहिने हिस्से को आगे बढ़ाया।

हौगोमोंट पर हमला एक तरह का छल था; योजना वेलिंगटन को वहाँ खींच लाना और उसे बाईं ओर मुड़ने के लिए मजबूर करना था। यह योजना सफल हो जाती अगर अंग्रेजी गार्ड की चार कंपनियों और पर्पोंचर डिवीजन के बहादुर बेल्जियम

सैनिकों ने उस स्थान को मजबूती से न संभाला होता, और वेलिंगटन अपनी सेना को वहाँ इकट्ठा करने के बजाय, केवल चार और गार्ड कंपनियों और ब्रंसविक से एक बटालियन को सुदृढीकरण के रूप में भेज सकता था।

दरअसल, पैपेलॉट पर फ्रांसीसी सेना के दक्षिणपंथी दल का हमला अंग्रेज़ों के वामपंथी दल को पराजित करने, ब्रुसेल्स जाने वाले मार्ग को अवरुद्ध करने, संभावित प्रशियाई सैनिकों के प्रवेश को रोकने, मोंट-सेंट-जीन पर कब्ज़ा करने, वेलिंगटन को हौगोमोंट की ओर, फिर ब्रेन-ल'एलेउड की ओर और फिर हाल की ओर वापस मोड़ने के लिए सुनियोजित था; इससे आसान कुछ नहीं हो सकता था। कुछ घटनाओं को छोड़कर, यह हमला सफल रहा। पैपेलॉट पर कब्ज़ा कर लिया गया; ला हाई-सेंट पर भी विजय प्राप्त कर ली गई।

एक उल्लेखनीय बात। अंग्रेज़ी पैदल सेना में, विशेषकर केम्प्ट की ब्रिगेड में, बहुत से अनुभवहीन सैनिक थे। ये युवा सैनिक हमारी दुर्जेय पैदल सेना के समक्ष वीरतापूर्ण थे; उनके अनुभवहीन होने के कारण वे निडरता से इस दुविधा से बाहर निकल आए; उन्होंने झड़प करने वाले सैनिकों के रूप में विशेष रूप से उत्कृष्ट सेवा प्रदान की: एक झड़प करने वाला सैनिक, जब कुछ हद तक अपने दम पर छोड़ दिया जाता है, तो मानो अपना स्वयं का सेनापति बन जाता है। इन सैनिकों ने फ्रांसीसी चतुराई और उग्रता का कुछ अंश प्रदर्शित किया। पैदल सेना के इस नौसिखिए दल में भी जोश था। इससे वेलिंगटन नाखुश थे।

ला हाई-सैंटे पर कब्जा करने के बाद युद्ध की स्थिति अस्थिर हो गई।

आज के दिन दोपहर से लेकर चार बजे तक का एक अस्पष्ट अंतराल है; इस युद्ध का मध्य भाग लगभग अस्पष्ट है, और आमने-सामने के संघर्ष की उदासी में डूबा हुआ है। इस पर गोधूलि का साया छाया हुआ है। हम उस कोहरे में विशाल उतार-चढ़ाव देखते हैं, एक चकाचौंध भरा मृगतृष्णा, युद्ध के लगभग अज्ञात साजो-सामान, लटकते हुए कॉलरबैक, तैरते हुए कृपाण-टैश, क्रॉस-बेल्ट, ग्रेनेड के लिए कारतूस-बॉक्स, हुसार डोलमैन, हजारों सिलवटों वाले लाल जूते, टॉर्सेड से सजे भारी शैको, ब्रंसविक की लगभग काली पैदल सेना इंग्लैंड की लाल पैदल सेना के साथ मिश्रित, अंग्रेजी सैनिक जिनके कंधों पर एपॉलेट के रूप में बड़े, सफेद गोलाकार पैड लगे हैं, हनोवरियन लाइट-हॉर्स अपने पीतल के हाथों और लाल घोड़े की पूंछ वाले चमड़े के आयताकार हेलमेट के साथ, स्कॉटिश अपने नंगे घुटनों और प्लेड के साथ, हमारे ग्रेनेडियरों के बड़े सफेद गैटर;

रणनीतिक रेखाओं के बजाय चित्र—यह साल्वाडोर रोजा की आवश्यकता है, न कि ग्रिबोवाल की जरूरतों के अनुरूप।

युद्ध में कुछ हद तक उथल-पुथल तो हमेशा ही होती है। अंधकार में भी अच्छाई। प्रत्येक इतिहासकार इस उथल-पुथल के बीच अपनी रुचि की किसी न किसी विशेषता को खोज निकालता है। सेनापतियों की रणनीति चाहे जो भी हो, सशस्त्र जनसमूह का प्रभाव असीमित होता है। युद्ध के दौरान दोनों नेताओं की योजनाएँ आपस में मिल जाती हैं और एक-दूसरे को उलट-पुलट कर देती हैं। युद्धक्षेत्र का एक हिस्सा दूसरे हिस्से की तुलना में अधिक सैनिकों को निगल जाता है, ठीक वैसे ही जैसे कम या ज्यादा नमी वाली मिट्टी उस पर डाले गए पानी को कम या ज्यादा तेजी से सोख लेती है। इच्छा से अधिक सैनिकों को भेजना आवश्यक हो जाता है; अप्रत्याशित खर्चों की एक श्रृंखला। युद्ध रेखा एक धागे की तरह लहराती और झुकती है, रक्त के निशान बेतरतीब ढंग से बहते हैं, सेनाओं के मोर्चे डगमगाते हैं, रेजिमेंटें प्रवेश करते और पीछे हटते समय टीले और खाड़ियाँ बनाती हैं; ये सभी चट्टानें लगातार एक-दूसरे के सामने गतिमान रहती हैं। जहां पैदल सेना खड़ी थी, वहां तोपखाना आ पहुंचा, जहां तोपखाना था वहां घुड़सवार सेना टूट पड़ी, बटालियनें धुएं की तरह गायब हो गईं। वहां कुछ था; उसे ढूंढो। वह गायब हो गया; खुले स्थान अपनी जगह बदलते हैं, अंधकारमय घेरे आगे बढ़ते और पीछे हटते हैं, समाधि से आती एक हवा आगे बढ़ती है, पीछे धकेलती है, फैलती है और इन दुखद भीड़ को तितर-बितर कर देती है। संघर्ष क्या है? एक दोलन? एक गणितीय योजना की स्थिरता एक मिनट को व्यक्त करती है, एक दिन को नहीं। युद्ध का चित्रण करने के लिए, उन शक्तिशाली चित्रकारों में से एक की आवश्यकता होती है जिनके ब्रश में अराजकता होती है। रेम्ब्रांट वेंडरम्यूलेन से बेहतर है; वेंडरम्यूलेन, दोपहर में सटीक, तीन बजे झूठ बोलता है। ज्यामिति भ्रामक है; केवल तूफान ही भरोसेमंद है। यही बात फोलार्ड को पॉलीबियस का खंडन करने का अधिकार देती है। आइए यह भी समझें कि एक ऐसा क्षण आता है जब युद्ध एक जटिल संघर्ष में बदल जाता है, विशिष्ट बन जाता है और अनगिनत विस्तृत कारनामों में विलीन हो जाता है, जो स्वयं नेपोलियन के शब्दों में कहें तो, "सेना के इतिहास से अधिक रेजिमेंटों की जीवनी से संबंधित हैं।" इस स्थिति में, इतिहासकार को संपूर्ण घटनाक्रम का सारांश प्रस्तुत करने का स्पष्ट अधिकार है। वह

संघर्ष की मुख्य रूपरेखाओं को ही पकड़ सकता है, और किसी भी कथाकार के लिए, चाहे वह कितना भी ईमानदार क्यों न हो, उस भयावह दृश्य का पूर्णतः वर्णन करना संभव नहीं है जिसे युद्ध कहा जाता है।

यह बात, जो सभी महान सशस्त्र संघर्षों के लिए सच है, विशेष रूप से वाटरलू के मामले में लागू होती है।

फिर भी, दोपहर के एक निश्चित समय पर लड़ाई निर्णायक मोड़ पर आ गई।

VI. दोपहर के चार बजे

शाम चार बजे के आसपास अंग्रेज़ सेना की हालत गंभीर हो गई थी। प्रिंस ऑफ ऑरेंज मध्य भाग की कमान संभाल रहे थे, हिल दाहिने विंग की और पिक्टन बाएं विंग की। हताश और निडर प्रिंस ऑफ ऑरेंज ने हॉलैंड-बेल्जियम सैनिकों से चिल्लाकर कहा: “नासाउ! ब्रंसविक! कभी पीछे मत हटो!” हिल कमज़ोर पड़ चुके थे और वेलिंगटन की सहायता के लिए आगे आ गए थे; पिक्टन की मृत्यु हो चुकी थी। जिस क्षण अंग्रेज़ों ने फ्रांसीसियों से पंक्ति की 105 वीं बटालियन का झंडा छीना, उसी समय फ्रांसीसियों ने अंग्रेज़ जनरल पिक्टन को सिर में गोली मारकर मार डाला। वेलिंगटन के लिए इस युद्ध में दो महत्वपूर्ण सैन्य ठिकाने थे: होउगोमोंट और ला हाई-सैंटे; होउगोमोंट अभी भी डटा हुआ था, लेकिन आग की चपेट में था; ला हाई-सैंटे पर कब्ज़ा कर लिया गया था। जर्मन बटालियन के केवल बयालीस सैनिक ही जीवित बचे; पाँच को छोड़कर सभी अधिकारी या तो मारे गए थे या बंदी बना लिए गए थे। उस किले में तीन हज़ार सैनिकों का नरसंहार हो गया था। इंग्लिश गार्ड्स का एक सार्जेंट, इंग्लैंड का सबसे बेहतरीन मुक्केबाज, जिसे उसके साथी अजेय मानते थे, वहाँ एक छोटे से फ्रांसीसी ड्रमर-लड़के के हाथों मारा गया था। बेरिंग को पद से हटा दिया गया था, एल्टन को तलवार से मार डाला गया था। कई झंडे खो गए थे, एक एल्टन की टुकड़ी का और एक लूननबर्ग बटालियन का, जिसे ड्यूक्स-पोंट्स परिवार के एक राजकुमार ने फहराया था। स्कॉच ग्रेज़ का अस्तित्व समाप्त हो गया था; पोंसनबी के महान ड्रैगूनों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए थे। वह वीर घुड़सवार सेना ब्रो के लांसर्स और ट्रैवर्स के क्यूरासियर्स के सामने झुक गई थी; बारह सौ घोड़ों में से केवल छह सौ ही बचे थे; तीन लेफ्टिनेंट-कर्नल में से दो जमीन पर पड़े थे—हैमिल्टन घायल, मेटर मारे गए। पोंसनबी सात भाले के वार से छलनी होकर गिर पड़ा था। गॉर्डन मर चुका था। मार्श मर चुका था। पाँचवीं और छठी, दो टुकड़ियाँ पूरी तरह नष्ट हो चुकी थीं।

हौगोमोंट घायल हो गए, ला हाई-सैंटे पर कब्जा कर लिया गया, अब केवल एक ही एकजुटता का केंद्र बचा था, केंद्र। वह केंद्र अभी भी मजबूत था। वेलिंगटन

ने उसे सुदृढ़ किया। उन्होंने मर्ले-ब्रेन में तैनात हिल को बुलाया; उन्होंने ब्रेन-ल'एलेउड में तैनात शैस को बुलाया।

अंग्रेजी सेना का केंद्र, जो कुछ हद तक अवतल, अत्यंत सघन और सुदृढ़ था, मजबूती से तैनात था। यह मॉन्ट-सेंट-जीन के पठार पर स्थित था, जिसके पीछे गाँव और सामने ढलान थी, जो उस समय काफी खड़ी थी। यह उस मजबूत पत्थर के मकान पर टिका था जो उस समय निवेल्स के राज्य का हिस्सा था और जो सड़कों के चौराहे को चिह्नित करता है—सोलहवीं शताब्दी का यह भवन इतना मजबूत था कि तोप के गोले इससे टकराकर वापस उछल जाते थे, लेकिन इसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाते थे। पठार के चारों ओर अंग्रेजों ने जगह-जगह झाड़ियाँ काट दी थीं, कंटीले पेड़ों में छेद बना दिए थे, दो शाखाओं के बीच तोप का मुँह फंसा दिया था और झाड़ियों को घेर लिया था। वहाँ झाड़ियों में तोपखाने घात लगाकर रखे गए थे। यह सैन्य अभियान, जिसे युद्ध के दौरान सुनियोजित रूप से अनुमति दी गई थी और जिसमें जाल बिछाने की भी अनुमति थी, इतनी कुशलता से अंजाम दिया गया था कि सम्राट द्वारा सुबह नौ बजे दुश्मन की तोपखानों की जासूसी के लिए भेजे गए हैक्सो को दुश्मन की तोपखानों का कुछ भी पता नहीं चला और वह लौटकर नेपोलियन को यह सूचना देने आया कि निवेल्स और जेनैप जाने वाली सड़कों पर दो बैरिकेड्स के अलावा कोई बाधा नहीं है। यह वह मौसम था जब अनाज की फसल लंबी होती है; पठार के किनारे पर, केम्प्ट ब्रिगेड की 95 वीं बटालियन, जो कार्बाइन से लैस थी, लंबी गेहूं की फसल में छिपी हुई थी।

इस प्रकार आश्वस्त और मजबूत होकर, एंग्लो-डच सेना का केंद्र अच्छी स्थिति में था। इस स्थिति का खतरा सोइग्नेस के जंगल में था, जो उस समय युद्धक्षेत्र से सटा हुआ था और ग्रोएनेंडेल और बोइट्सफोर्ट के तालाबों से घिरा हुआ था। कोई भी सेना वहाँ से पीछे हटे बिना बिखर नहीं सकती थी; रेजिमेंटें वहाँ तुरंत टूट जातीं। तोपखाना दलदल में खो जाता। कई जानकारों के अनुसार—हालाँकि कुछ अन्य लोग इससे असहमत हैं—पीछे हटना एक अव्यवस्थित पलायन होता।

इस केंद्र में, वेलिंगटन ने दाहिने विंग से ली गई शैस की एक ब्रिगेड और बाएं विंग से ली गई विंके की एक ब्रिगेड, साथ ही क्लिंटन के डिवीजन को शामिल किया। अपने अंग्रेज़ सैनिकों, हाल्केट की रेजिमेंटों, मिशेल की ब्रिगेडों और मैटलैंड के गार्डों को सुदृढ़ीकरण और सहायता के रूप में,

उन्होंने ब्रंसविक की पैदल सेना, नासाऊ की टुकड़ी, कीलमैनसेग के हनोवरियन और ओम्प्टेडा के जर्मन सैनिकों को दिया। इससे उनके अधीन छब्बीस बटालियन हो गईं। जैसा कि चर्रास कहते हैं, "दाहिने विंग को केंद्र की ओर पीछे धकेल दिया गया था।" एक विशाल तोपखाने को मिट्टी की बोरियों से उस स्थान पर छिपा दिया गया था जहाँ अब "वाटरलू संग्रहालय" कहलाता है। इसके अलावा, वेलिंगटन के पास एक ऊंचे स्थान के पीछे समरसेट के ड्रैगून गार्ड थे, जिनमें चौदह सौ घुड़सवार थे। यह प्रसिद्ध अंग्रेज़ी घुड़सवार सेना का शेष आधा हिस्सा था। पोंसनबी नष्ट हो गया, समरसेट शेष रहा।

यदि यह तोपखाना पूरा हो जाता, तो यह लगभग एक गढ़ के समान होता। इसे एक बहुत ही नीची बगीचे की दीवार के पीछे बनाया गया था, जिसके पीछे रेत की बोरियों की परत और मिट्टी का एक बड़ा ढलान था। यह काम अधूरा रह गया था; इसके लिए बाड़ बनाने का समय नहीं मिल पाया था।

वेलिंगटन बेचैन लेकिन भावहीन होकर घोड़े पर सवार थे और पूरे दिन उसी मुद्रा में, मोंट-सेंट-जीन की पुरानी मिल से कुछ आगे, एक एल्म के पेड़ के नीचे खड़े रहे। वह मिल आज भी मौजूद है, जिसे एक उत्साही अंग्रेज ने बाद में दो सौ फ्रैंक में खरीदा, काट डाला और अपने साथ ले गया। वेलिंगटन में एक अलग ही वीरता झलक रही थी। गोलियों की बौछार उन पर बरस रही थी। उनके सहायक गॉर्डन उनके बगल में गिर पड़े। लॉर्ड हिल ने फटे हुए गोले की ओर इशारा करते हुए उनसे पूछा, "महाराज, अगर आप मारे जाते हैं तो आपके क्या आदेश हैं?" वेलिंगटन ने उत्तर दिया, "मेरी तरह करना।" क्लिंटन से उन्होंने संक्षिप्त रूप से कहा, "आखिरी आदमी तक इस जगह पर डटे रहना।" दिन स्पष्ट रूप से प्रतिकूल होता जा रहा था। वेलिंगटन ने तलावेरा, विटोरिया और सलामांका के अपने पुराने साथियों को पुकारा, "दोस्तों, क्या पीछे हटने के बारे में सोचा जा सकता है? पुराने इंग्लैंड के बारे में सोचो!"

लगभग चार बजे, अंग्रेज़ सेना पीछे हट गई। अचानक पठार की चोटी पर तोपखाने और निशानेबाजों के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था; बाकी सब गायब हो गए थे: गोले और फ्रांसीसी गोलियों से विस्थापित रेजिमेंटें निचले हिस्से में पीछे हट गईं, जो अब मोंट-सेंट-जीन फार्म की पिछली सड़क से जुड़ा हुआ था; एक पीछे हटने की गति शुरू हुई, अंग्रेज़ सेना का मोर्चा छिप गया, वेलिंगटन पीछे हट गया। "पीछे हटने की शुरुआत!" नेपोलियन चिल्लाया।

VII. नेपोलियन अच्छे मूड में

स्थानीय उपद्रव के कारण बीमार और घोड़े पर सवार होने में असुविधा होने के बावजूद, सम्राट उस दिन बेहद प्रसन्न थे। सुबह से ही उनका शांत चेहरा मुस्कुरा रहा था। 18 जून को, संगमरमर से ढके उस गहरे व्यक्तित्व पर अपार प्रसन्नता छा गई। ऑस्टरलिट्ज़ में उदास रहने वाला वह व्यक्ति वाटरलू में प्रसन्न था। भाग्य के सबसे बड़े स्वामी भी गलतियाँ करते हैं। हमारी खुशियाँ अंधकार में सिमटी होती हैं। सर्वोच्च मुस्कान केवल ईश्वर की होती है।

फुलमिनाट्रिक्स लीजन के सैनिकों ने कहा, "रीडेट सीज़र, पोम्पेयस फ्लेबिट।" पोम्पेय उस अवसर पर रोने के लिए नहीं बने थे, लेकिन यह निश्चित है कि सीज़र हँसे थे। पिछली रात एक बजे, तूफ़ान और बारिश में, बर्ट्रेंड के साथ, रॉसोम के आसपास के कम्यूनों का घोड़े पर सवार होकर निरीक्षण करते समय, फ्रिशेमोंट से ब्रेन-ल'एलेउड तक पूरे क्षितिज को रोशन करने वाली अंग्रेज़ों की लंबी कतार को देखकर वे संतुष्ट हुए। उन्हें लगा कि भाग्य, जिसे उन्होंने वाटरलू के मैदान में एक दिन सौंपा था, अपने तय समय पर चल रहा है; उन्होंने अपना घोड़ा रोका और कुछ देर तक बिना हिले-डुले बिजली को निहारते और गरजते हुए सुनते रहे; और इस भाग्यवादी को अंधेरे में यह रहस्यमयी बात कहते हुए सुना गया, "हम सहमत हैं।" नेपोलियन गलत थे। वे अब सहमत नहीं थे।

उन्हें सोने का ज़रा भी समय नहीं मिला; उस रात का हर पल उनके लिए आनंदमय था। वे प्रमुख चौकियों की सीमा पर चलते रहे, जगह-जगह रुककर पहरेदारों से बातें करते रहे। ढाई बजे, हौगोमोंट के जंगल के पास, उन्होंने एक टुकड़ी के मार्च करने की आहट सुनी; उस क्षण उन्हें लगा कि वेलिंगटन पीछे हट रहे हैं। उन्होंने कहा: “यह अंग्रेजों का पिछला दस्ता है जो भागने के उद्देश्य से आगे बढ़ रहा है। मैं उन छह हज़ार अंग्रेजों को बंदी बना लूँगा जो अभी-अभी ओस्टेंड पहुँचे हैं।” वे खुलकर बातें करते रहे; उन्होंने वही जोश फिर से पा लिया जो उन्होंने 1 मार्च को उतरते समय दिखाया था, जब उन्होंने ग्रैंड-मार्शल को गल्फ जुआन के उत्साही किसान की ओर इशारा करते हुए कहा था, “वाह,

बर्ट्रेंड, यहाँ तो पहले से ही अतिरिक्त सैनिक आ गए हैं!” 17 से 18 जून की रात को उन्होंने वेलिंगटन का मनोबल बढ़ाया। “उस छोटे अंग्रेज को सबक सिखाने की ज़रूरत है,” नेपोलियन ने कहा। बारिश और तेज़ हो गई; सम्राट के बोलते समय ही गरज सुनाई दी।

सुबह साढ़े तीन बजे, उसका एक भ्रम टूट गया; टोही के लिए भेजे गए अधिकारियों ने उसे सूचना दी कि दुश्मन कोई हलचल नहीं कर रहा है। कुछ भी नहीं हिल रहा था; एक भी शिविर की आग नहीं बुझी थी; अंग्रेजी सेना सो रही थी। धरती पर गहरा सन्नाटा था; केवल आकाश में ही आवाज थी। चार बजे, जासूस एक किसान को उसके पास लाए; यह किसान अंग्रेजी घुड़सवार सेना की एक ब्रिगेड का मार्गदर्शक था, संभवतः विवियन की ब्रिगेड, जो सबसे बाईं ओर स्थित ओहेन गाँव में मोर्चा संभालने के लिए जा रही थी। पाँच बजे, दो बेल्जियम के भगोड़ों ने उसे सूचना दी कि उन्होंने अभी-अभी अपनी रेजिमेंट छोड़ी है, और अंग्रेजी सेना युद्ध के लिए तैयार है। नेपोलियन ने कहा, "और भी अच्छा!" "मैं उन्हें खदेड़ने के बजाय उन्हें हराना पसंद करूँगा।"

सुबह वह प्लांसेनोइट सड़क के साथ कोण बनाने वाली ढलान पर कीचड़ में घोड़े से उतरा, रोसोम के खेत से एक रसोई की मेज और एक किसान की कुर्सी मंगवाई, पुआल की गठरी को कालीन बनाकर बैठ गया और मेज पर युद्धक्षेत्र का नक्शा फैलाते हुए सोल्ट से कहा, "एक सुंदर शतरंज की बिसात।"

रात भर हुई बारिश के कारण, नरम सड़कों में धंसे रसद के वाहन सुबह तक नहीं पहुँच पाए थे; सैनिकों को नींद नहीं आई थी; वे भीगे हुए और भूखे थे। फिर भी नेपोलियन ने नेय से उत्साहपूर्वक कहा, "हमारे पास सौ में से नब्बे मौके हैं।" आठ बजे सम्राट के लिए नाश्ता लाया गया। उन्होंने कई जनरलों को आमंत्रित किया था। नाश्ते के दौरान यह बात फैली कि वेलिंगटन दो रात पहले ब्रुसेल्स में डचेस ऑफ रिचमंड के यहाँ एक भोज में गए थे; और साउल्ट, एक कठोर योद्धा, जिसका चेहरा किसी आर्कबिशप जैसा था, ने कहा, "दलाली आज ही है।" सम्राट ने नेय से मज़ाक किया, जिस पर नेय ने कहा, "वेलिंगटन इतने भोले नहीं होंगे कि महाराज का इंतज़ार करें।" हालाँकि, यही उनका स्वभाव था। फ्लेरी डी चाबुलॉन कहते हैं, "उन्हें मज़ाक करना बहुत पसंद था।" गौर्गाउड कहते हैं, "खुशमिजाज़ स्वभाव उनके चरित्र का मूल था।" “वह हंसी-मजाक में माहिर थे, जो हास्य से कहीं अधिक विचित्र थे,” बेंजामिन कॉन्स्टेंट कहते

हैं। एक दिग्गज के ये विनोदपूर्ण व्यवहार उल्लेखनीय हैं। उन्होंने ही अपने सैनिकों को “शिकायतकर्ता” कहा था; वे उनके कान खींचते थे; उनकी मूंछें नोचते थे। उनमें से एक ने कहा, “सम्राट हम पर शरारतों के सिवा कुछ नहीं करते थे।” 27 फरवरी को एल्बा द्वीप से फ्रांस की रहस्यमयी यात्रा के दौरान, खुले समुद्र में, फ्रांसीसी युद्धपोत ले ज़ेफिर का सामना उस युद्धपोत एल'इंकांस्टेंट से हुआ, जिस पर नेपोलियन छिपा हुआ था। एल'इंकांस्टेंट से नेपोलियन के बारे में पूछने पर, सम्राट, जिन्होंने अभी भी अपनी टोपी में मधुमक्खियों से सिला हुआ सफेद और गहरा हरा कॉकेड पहन रखा था, जिसे उन्होंने एल्बा द्वीप पर अपनाया था, हंसते हुए तुरही को पकड़ा और खुद जवाब दिया, “सम्राट ठीक हैं।” जो व्यक्ति इस तरह हंसता है, वह घटनाओं से भली-भांति परिचित होता है। वाटरलू में नाश्ते के दौरान नेपोलियन कई बार इस तरह हँसे। नाश्ते के बाद उन्होंने पंद्रह मिनट तक ध्यान किया; फिर दो सेनापति पुआल के गट्ठे पर बैठ गए, हाथ में कलम और घुटनों पर कागज रखे हुए, और सम्राट ने उन्हें युद्ध की रणनीति बताई।

ठीक नौ बजे, जब फ्रांसीसी सेना, पंक्तियों में व्यवस्थित होकर पाँच स्तंभों में आगे बढ़ रही थी—डिवीजन दो पंक्तियों में, तोपखाना ब्रिगेडों के बीच, और संगीत उनके आगे; ढोल की थाप और तुरहियों की गूंज के साथ मार्च करते हुए, विशाल, शक्तिशाली, आनंदमय, क्षितिज पर हेलमेट, तलवारों और संगीनों का एक सागर सा दिखाई दिया, सम्राट भावुक हो गए और दो बार बोले, "शानदार! शानदार!"

सुबह नौ बजे से साढ़े दस बजे के बीच, पूरी सेना ने, भले ही यह अविश्वसनीय लगे, अपनी स्थिति ग्रहण कर ली थी और छह पंक्तियों में व्यवस्थित हो गई थी, सम्राट के शब्दों में कहें तो, "छह वी" का आकार बना रही थी। युद्ध-पद्धति के गठन के कुछ क्षण बाद, उस गहन सन्नाटे के बीच, जो किसी तूफान की शुरुआत का संकेत देता है, जो युद्ध से पहले होता है, सम्राट ने हाक्सो के कंधे पर थपथपाया, जब उन्होंने बारह-पाउंडर तोपों की तीन तोपें देखीं, जिन्हें उनके आदेश पर एरलोन, रेइल और लोबाउ की टुकड़ियों से अलग किया गया था, और जिन्हें निवेल्स और जेनैप सड़कों के चौराहे पर स्थित मोंट-सेंट-जीन पर कब्जा करके कार्रवाई शुरू करने के लिए भेजा गया था, और उनसे कहा, "जनरल, चौबीस सुंदर युवतियाँ हैं।"

मामले को लेकर आश्वस्त होकर, उन्होंने मुस्कुराते हुए अपने सामने से गुजर रहे प्रथम कोर के सैनिकों के दल का हौसला बढ़ाया, जिन्हें उन्होंने गाँव पर कब्जा होते ही मोंट-सेंट-जीन की घेराबंदी करने के लिए नियुक्त किया था। उनकी इस शांति में बस एक शब्द की दंभी दया झलक रही थी; अपने बाईं ओर, उस स्थान पर जहाँ अब एक विशाल मकबरा है, उन प्रशंसनीय स्कॉटिश ग्रे सैनिकों को अपने शानदार घोड़ों के साथ इकट्ठा होते देख उन्होंने कहा, "यह बहुत दुख की बात है।"

फिर वह अपने घोड़े पर सवार होकर रोसोम से आगे बढ़ा और जेनैप से ब्रुसेल्स जाने वाली सड़क के दाहिनी ओर घास के एक संकरे टीले को अपने निरीक्षण के लिए चुना, जो युद्ध के दौरान उसका दूसरा स्टेशन था। तीसरा स्टेशन, जिसे शाम सात बजे ला बेले-एलायंस और ला हाई-सैंटे के बीच स्थापित किया गया था, बहुत ही कठिन था; यह एक ऊँची पहाड़ी थी, जो आज भी मौजूद है, और जिसके पीछे मैदान की ढलान पर पहरा जमा था। इस पहाड़ी के चारों ओर सड़क के फुटपाथ से गोले उछलकर नेपोलियन तक पहुँचते थे। ब्रिएन की तरह, उसके सिर के ऊपर गोलियों और भारी तोपखाने की चीख सुनाई दे रही थी। उसके घोड़े के पैरों के निशान वाली जगह पर फफूंदी लगे तोप के गोले, पुरानी तलवारों की धारें और जंग से गल चुके बेढंगे गोले मिले। कुछ साल पहले, साठ पाउंड का एक गोला, जो अभी भी भरा हुआ था और जिसका फ्यूज बम के बराबर टूटा हुआ था, खुदाई में मिला था। इसी आखिरी चौकी पर सम्राट ने अपने मार्गदर्शक लाकोस्टे से कहा, जो एक शत्रुतापूर्ण और भयभीत किसान था, एक घुड़सवार सैनिक की काठी से बंधा हुआ था, और जो हर गोले के दागे जाने पर पलटकर नेपोलियन के पीछे छिपने की कोशिश करता था: “मूर्ख, यह शर्मनाक है! तुम अपनी पीठ में गोली खाकर खुद को मरवा लोगे।” इन पंक्तियों को लिखने वाले ने स्वयं इस पहाड़ी की भुरभुरी मिट्टी में, रेत पलटने पर, छियालीस वर्षों के ऑक्सीकरण से विघटित हो चुके एक बम के गर्दन के अवशेष और लोहे के पुराने टुकड़े पाए हैं, जो उंगलियों के बीच एल्डर की टहनियों की तरह अलग हो जाते हैं।

सर्वविदित है कि नेपोलियन और वेलिंगटन के बीच युद्ध स्थल रहे मैदान की विभिन्न ढलानों वाली ऊबड़-खाबड़ भूमि अब वैसी नहीं रही जैसी 18 जून, 1815 को थी। इस दुखद मैदान से स्मारक बनाने के लिए सामग्री ले जाने से इसका वास्तविक स्वरूप ही नष्ट हो गया है, और इतिहास, विचलित होकर, अब वहां अपना

मार्ग नहीं खोज पाता। इसे महिमामंडित करने के नाम पर विकृत कर दिया गया है। वेलिंगटन ने दो साल बाद जब वाटरलू को फिर से देखा, तो कहा, "उन्होंने मेरे युद्धक्षेत्र को बदल दिया है!" जहां आज शेर की प्रतिमा वाला विशाल पृथ्वी का पिरामिड खड़ा है, वहां कभी एक छोटी पहाड़ी थी जो निवेल्स सड़क की ओर एक सहज ढलान में उतरती थी, लेकिन जेनैप जाने वाले राजमार्ग के किनारे लगभग एक खड़ी चट्टान जैसी थी। इस खड़ी चट्टान की ऊंचाई को आज भी जेनैप से ब्रुसेल्स जाने वाली सड़क को घेरने वाले दो विशाल मकबरों की दो छोटी पहाड़ियों की ऊंचाई से मापा जा सकता है: एक, अंग्रेजी मकबरा, बाईं ओर है; दूसरी ओर, जर्मन मकबरा दाहिनी ओर है। वहाँ कोई फ्रांसीसी मकबरा नहीं है। वह पूरा मैदान फ्रांस के लिए एक समाधि स्थल है। डेढ़ सौ फुट ऊँची और आधा मील परिधि वाली पहाड़ी पर हजारों-हजारों बैलगाड़ी मिट्टी डालने के कारण, मोंट-सेंट-जीन का पठार अब एक आसान ढलान से पहुँचा जा सकता है। युद्ध के दिन, विशेष रूप से ला हाई-सेंट की ओर, यह अचानक और दुर्गम था। वहाँ की ढलान इतनी खड़ी है कि अंग्रेजी तोपें घाटी के निचले हिस्से में स्थित उस फार्म को नहीं देख पाती थीं, जो युद्ध का केंद्र था। 18 जून, 1815 को, बारिश ने इस ढलान को और भी बढ़ा दिया था, कीचड़ ने चढ़ाई को और भी जटिल बना दिया था, और सैनिक न केवल फिसल कर पीछे हट गए, बल्कि कीचड़ में बुरी तरह फंस गए। पठार की चोटी पर एक प्रकार की खाई थी, जिसकी उपस्थिति का दूर से देखने वाले के लिए अनुमान लगाना असंभव था।

यह खाई क्या थी? आइए समझाते हैं। ब्रेन-ल'एलेउड एक बेल्जियम गाँव है; ओहेन एक और गाँव है। ये दोनों गाँव, जो भूभाग की घुमावदार रेखाओं में बसे हैं, लगभग डेढ़ मील लंबी एक सड़क से जुड़े हुए हैं, जो मैदान को उसके ऊबड़-खाबड़ तल पर पार करती है और अक्सर पहाड़ियों में एक नाली की तरह घुस जाती है, जिससे कुछ जगहों पर यह सड़क एक गहरी खाई बन जाती है। 1815 में, आज की तरह ही, यह सड़क जेनैप और निवेल्स से आने वाले दो राजमार्गों के बीच मोंट-सेंट-जीन के पठार की चोटी को काटती थी; बस, अब यह मैदान के बराबर समतल है; तब यह एक खोखली सड़क थी। इसकी दोनों ढलानों को एक विशाल पहाड़ी के लिए इस्तेमाल किया गया है। यह सड़क अपने अधिकांश भाग में एक खाई थी और आज भी है; एक खोखली खाई, जिसकी गहराई कभी-कभी बारह फीट तक होती है, और जिसके किनारे बहुत ढलान वाले होने के कारण, विशेष रूप से सर्दियों में, तेज बारिश के दौरान जगह-जगह

से टूट जाते थे। यहाँ दुर्घटनाएँ होती थीं। ब्रेन-ल'एलेउड प्रवेश द्वार पर सड़क इतनी संकरी थी कि एक राहगीर बैलगाड़ी के नीचे कुचल गया, जैसा कि कब्रिस्तान के पास स्थित एक पत्थर के क्रॉस से प्रमाणित होता है, जिस पर मृतक का नाम "महोदय बर्नार्ड डेब्री, ब्रुसेल्स के व्यापारी" और दुर्घटना की तिथि "फरवरी, 1637" अंकित है। मोंट-सेंट-जीन के पठार पर खाई इतनी गहरी थी कि 1783 में एक किसान, मैथ्यू निकाईस, ढलान से भूस्खलन के कारण वहाँ कुचल गया, जैसा कि एक अन्य पत्थर के क्रॉस पर अंकित है, जिसका ऊपरी भाग जमीन साफ करने की प्रक्रिया में गायब हो गया है, लेकिन जिसका उलटा हुआ आधार अभी भी ला हाई-सेंट और मोंट-सेंट-जीन के खेत के बीच राजमार्ग के बाईं ओर घास के ढलान पर दिखाई देता है।

युद्ध के दिन, यह खोखली सड़क, जिसका अस्तित्व किसी भी तरह से संकेतित नहीं था, मोंट-सेंट-जीन की चोटी से सटी हुई, ढलान के शिखर पर एक खाई, मिट्टी में छिपी एक दरार, अदृश्य थी; यानी, भयानक थी।

VIII. सम्राट ने गाइड लाकोस्ट से एक प्रश्न पूछा

इसलिए, वाटरलू की सुबह नेपोलियन संतुष्ट था।

वह सही था; जैसा कि हम देख चुके हैं, उसके द्वारा परिकल्पित युद्ध योजना वास्तव में प्रशंसनीय थी।

एक बार युद्ध शुरू हो जाने के बाद, इसके अनेक मोड़ आए—हौगोमोंट का प्रतिरोध; ला हाई-सैंटे का दृढ़ संकल्प; बौडुइन की हत्या; फॉय का अपंग हो जाना; वह अप्रत्याशित दीवार जिसके सामने सोये की ब्रिगेड चकनाचूर हो गई; गिलेमिनोट की घातक लापरवाही जब उसके पास न तो पटाखे थे और न ही बारूद की थैलियाँ; तोपखानों का कीचड़ में धंस जाना; पंद्रह बिना सुरक्षा वाली तोपों को उक्सब्रिज द्वारा खोखले तरीके से नष्ट कर दिया जाना; अंग्रेजी मोर्चों पर बम गिरने का मामूली प्रभाव, और बारिश से भीगी मिट्टी में धंस जाना, जिससे केवल कीचड़ के ज्वालामुखी बन गए और कनस्तर एक छींटे में बदल गया; ब्रेन-ल'एलेउड पर पिरे के प्रदर्शन की निरर्थकता; लगभग पूरी घुड़सवार सेना, पंद्रह स्क्वाड्रन, का सफाया; अंग्रेजों का दाहिना विंग बुरी तरह से चिंतित, बायां विंग बुरी तरह से क्षतिग्रस्त; नेय की प्रथम कोर के चार डिवीजनों को क्रमबद्ध करने के बजाय बड़े पैमाने पर इकट्ठा करने की अजीब गलती; सत्ताईस पंक्तियों में व्यवस्थित और दो सौ सैनिकों की अग्रिम पंक्ति के साथ, सैनिकों को छर्रों की बौछार का सामना करना पड़ा; तोप के गोलों से इन सैनिकों के समूह में भयानक छेद हो गए; हमलावर टुकड़ियाँ अस्त-व्यस्त हो गईं; पार्श्व तोपखाना अचानक उनके किनारे से उजागर हो गया; बुर्जुआ, डोनज़ेलॉट और दुरुट्टे घिर गए; क्विओट को खदेड़ दिया गया; लेफ्टिनेंट वियू, जो पॉलिटेक्निक स्कूल में हरक्यूलिस की तरह स्नातक थे, उस समय घायल हो गए जब वे जेनेप्पे से ब्रुसेल्स जाने वाली सड़क के कोने को अवरुद्ध करने वाले अंग्रेजी बैरिकेड की सीधी गोलीबारी के बीच ला हाई-सैंटे के दरवाजे को कुल्हाड़ी से तोड़ रहे थे; मार्कोनेट का प्रभाग पैदल सेना और घुड़सवार सेना के बीच फंस गया, बेस्ट और पैक द्वारा अनाज के बीच

तोपों के ठीक मुँह पर ही मार गिराया गया, पोंसनबी द्वारा तलवार से मार डाला गया; उसकी सात तोपों की तोपें बेकार हो गईं; सैक्स-वेइमर के राजकुमार ने कॉम्टे डी'अर्लोन के बावजूद फ्रिशेमोंट और स्मोहेन दोनों पर कब्जा जमाए रखा और उनकी रक्षा की। 105 वीं रेजिमेंट का झंडा छीन लिया गया, 45 वीं रेजिमेंट का झंडा पकड़ लिया गया; वेव्रे और प्लांसेनोइट के बीच टोही अभियान पर निकले तीन सौ हल्के घुड़सवारों के दल के धावकों द्वारा रोके गए उस काले प्रशियाई हसार को; कैदियों द्वारा कही गई भयावह बातें; ग्रौची की देरी; एक घंटे से भी कम समय में हौगोमोंट के बाग में पंद्रह सौ सैनिकों का सफाया; ला हाई-सैंटे के पास उससे भी कम समय में अठारह सौ सैनिकों का परास्त होना—ये सभी तूफानी घटनाएँ नेपोलियन के सामने युद्ध के बादलों की तरह गुजर गईं, लेकिन उनकी दृष्टि को शायद ही विचलित कर पाईं और उनके शाही आत्मविश्वास से भरे चेहरे पर कोई असर नहीं पड़ा। नेपोलियन युद्ध को स्थिर दृष्टि से देखने के आदी थे; उन्होंने कभी भी हृदयविदारक विवरणों को एक-एक करके नहीं जोड़ा; उनके लिए आंकड़ों का कोई महत्व नहीं था, बशर्ते कि वे कुल परिणाम—विजय—प्रदान करें; यदि शुरुआत में कुछ गड़बड़ हो जाती थी तो भी वे चिंतित नहीं होते थे, क्योंकि वे खुद को अंत में स्वामी और विजेता मानते थे। वह इंतजार करना जानता था, यह मानते हुए कि उसकी संभावना न के बराबर है, और वह भाग्य को अपने बराबर मानता था: मानो वह भाग्य से कह रहा हो, तू ऐसा करने की हिम्मत नहीं करेगा।

आधे प्रकाश और आधे अंधकार से बना नेपोलियन, अच्छे समय में स्वयं को सुरक्षित और बुरे समय में सहनशील समझता था। उसे लगता था कि घटनाओं का उसके पक्ष में ऐसा तालमेल था, या यूँ कहें कि ऐसी मिलीभगत थी, जो प्राचीन काल की अजेयता के बराबर थी।

फिर भी, जब किसी के पास बेरेसीना, लीपज़िग और फॉन्टेनब्लू जैसी उपलब्धियाँ हों, तो ऐसा लगता है मानो वाटरलू पर अविश्वास होने लगता है। आकाश की गहराइयों में एक रहस्यमयी शिकन दिखाई देने लगती है।

वेलिंगटन के पीछे हटने के क्षण ही नेपोलियन थर्रा उठा। उसने अचानक मोंट-सेंट-जीन के पठार को खाली देखा और अंग्रेजी सेना का अग्रभाग गायब हो गया। सेना फिर से संगठित हो रही थी, लेकिन खुद को छिपा रही थी। सम्राट अपने रकाबों में आधा उठ खड़ा हुआ। उसकी आँखों में विजय की चमक कौंध गई।

वेलिंगटन को सोइग्नेस के जंगल में घेरकर पराजित कर दिया गया—यही फ्रांस द्वारा इंग्लैंड पर निर्णायक विजय थी; यह क्रेसी, पोइटियर्स, मालप्लाक्वेट और रामिलीज़ का बदला था। मारेन्गो का वह व्यक्ति एगिनकोर्ट का सफाया कर रहा था।

इसलिए सम्राट, भाग्य के इस भयानक मोड़ पर चिंतन करते हुए, युद्धक्षेत्र के सभी बिंदुओं पर अंतिम बार अपनी दूरबीन घुमाई। उनके पीछे हथियारबंद होकर खड़े उनके अंगरक्षक, एक प्रकार की श्रद्धा के साथ नीचे से उन्हें देख रहे थे। वे विचार कर रहे थे; उन्होंने ढलानों का निरीक्षण किया, उतार-चढ़ावों पर ध्यान दिया, पेड़ों के झुंडों, राई के खेत, रास्ते का बारीकी से निरीक्षण किया; ऐसा लग रहा था मानो वे प्रत्येक झाड़ी को गिन रहे हों। उन्होंने दो राजमार्गों पर अंग्रेजी बैरिकेड्स को कुछ एकाग्रता से देखा— पेड़ों के दो विशाल आवरण, एक ला हाई-सैंटे के ऊपर जेनापे जाने वाली सड़क पर, दो तोपों से सुसज्जित, जो युद्धक्षेत्र के अंतिम छोर पर तैनात अंग्रेजी तोपखाने में से एकमात्र तोपें थीं, और दूसरा निवेल्स जाने वाली सड़क पर जहाँ शैस ब्रिगेड की डच संगीनें चमक रही थीं। इस बैरिकेड के पास उन्होंने सेंट निकोलस के पुराने सफेद रंग से रंगे चैपल को देखा, जो ब्रेन-ल'एलेउड के पास चौराहे के कोने पर स्थित है; वह नीचे झुका और गाइड लाकोस्ट से धीमी आवाज़ में बोला। गाइड ने सिर हिलाकर मना किया, जो शायद विश्वासघात का संकेत था।

सम्राट सीधे खड़े हुए और सोचने लगे।

वेलिंगटन पीछे हट गया था।

अब बस उसे कुचलकर इस पीछे हटने की प्रक्रिया को पूरा करना बाकी था।

नेपोलियन ने अचानक मुड़कर पूरी गति से एक संदेशवाहक को पेरिस भेजा ताकि यह घोषणा की जा सके कि युद्ध जीत लिया गया है।

नेपोलियन उन प्रतिभाशाली व्यक्तियों में से एक था जिनसे बिजली की तरह तेज आवाज निकलती थी।

उसे आखिरकार अपनी ताकत का स्रोत मिल गया था।

उसने मिल्हौड के घुड़सवार सैनिकों को मोंट -सेंट -जीन के पठार पर कब्जा करने का आदेश दिया।

IX. अप्रत्याशित

उनकी संख्या 3500 थी। उन्होंने एक चौथाई लीग की सीमा में एक मोर्चा बनाया हुआ था। वे विशालकाय पुरुष थे और विशाल घोड़ों पर सवार थे। उनकी 22 टुकड़ियाँ थीं; और उनके पीछे लेफेब्रे-डेस्नोएट्स की टुकड़ी उनका समर्थन कर रही थी—जिसमें 106 चयनित जेंडरमे, गार्ड की हल्की घुड़सवार सेना के 1197 सैनिक और गार्ड के 880 भालेधारी सैनिक शामिल थे। उन्होंने बिना पूंछ वाले हेलमेट और लोहे के कवच पहन रखे थे, उनकी कमर में घोड़े की पिस्तौलें थीं और उनके पास लंबी कृपाणें थीं। उस सुबह पूरी सेना ने उनकी प्रशंसा की थी, जब नौ बजे, तुरहियों की गूंज और "आइए हम साम्राज्य की सुरक्षा की रक्षा करें" के संगीत के साथ, वे एक ठोस स्तंभ में आए थे, उनकी एक तोपखाना उनके किनारे पर और दूसरा उनके केंद्र में था, और जेनैप और फ्रिशेमोंट जाने वाली सड़कों के बीच दो पंक्तियों में तैनात होकर, नेपोलियन द्वारा चतुराई से व्यवस्थित उस शक्तिशाली दूसरी पंक्ति में युद्ध के लिए अपनी स्थिति ग्रहण कर ली थी, जिसके सबसे बाईं ओर केलरमैन के कवचधारी और सबसे दाईं ओर मिल्हौड के कवचधारी थे, मानो लोहे के दो पंख हों।

सहायक बर्नार्ड सम्राट के आदेश लेकर उनके पास पहुंचा। नेय ने अपनी तलवार निकाली और सेना के मुखिया के रूप में खड़ा हो गया। विशाल सैन्य टुकड़ियां हरकत में आ गईं।

फिर एक अद्भुत दृश्य देखने को मिला।

उनकी पूरी घुड़सवार सेना, उठी हुई तलवारों, लहराते झंडों और तुरहियों के साथ, टुकड़ियों में व्यवस्थित होकर, एक साथ और एक ही व्यक्ति की तरह, एक ही सटीकता से, जैसे कोई पीतल का भारी हथौड़ा किसी दीवार को तोड़ रहा हो, ला बेले एलायंस की पहाड़ी पर उतरी। वे उस भयानक गहराई में जा गिरे जहाँ पहले ही कई सैनिक गिर चुके थे, और धुएँ में गायब हो गए। फिर उस छाया से निकलकर, वे घाटी के दूसरी ओर फिर से प्रकट हुए, अभी भी सघन और घनी पंक्तियों में, पूरी गति से दौड़ते हुए, उन पर बरस रही गोलियों की बौछार के बीच से, मोंट-सेंट-जीन के पठार की भयानक कीचड़ भरी ढलान पर चढ़ गए। वे गंभीर, धमकी भरे

और अविचलित होकर ऊपर चढ़े; बंदूकों और तोपखाने की गोलाबारी के बीच, उनके विशाल पदचिह्न सुनाई दे रहे थे। दो टुकड़ियाँ होने के कारण, उनकी दो टुकड़ियाँ थीं; वाथियर की टुकड़ी दाहिनी ओर थी, डेलोर्ट की टुकड़ी बाईं ओर थी। ऐसा लग रहा था मानो स्टील के दो विशालकाय सांप पठार की चोटी की ओर रेंग रहे हों। यह किसी विलक्षण प्रतिभा की तरह युद्धक्षेत्र को पार कर रहा था।

भारी घुड़सवार सेना द्वारा मुस्कोवा के विशाल किले पर कब्ज़ा करने के बाद से ऐसा नज़ारा पहले कभी नहीं देखा गया था; मूरत यहाँ मौजूद नहीं था, लेकिन नेय फिर से उपस्थित था। ऐसा लग रहा था मानो वह विशाल समूह एक राक्षस बन गया हो और उसमें केवल एक ही आत्मा हो। प्रत्येक स्तंभ एक परागकोष के छल्ले की तरह लहरा रहा था और फूल रहा था। उन्हें जगह-जगह से उठते धुएँ के एक विशाल बादल के बीच से देखा जा सकता था। हेलमेटों की भीड़, चीखें, तलवारें, तोपों और तुरहियों की गूंज के बीच घोड़ों के खुरों का तूफानी हिलना, एक भयानक और अनुशासित कोलाहल; इन सबके ऊपर, कवच हाइड्रा के तराजू की तरह लग रहे थे।

ये वर्णन किसी दूसरे युग के प्रतीत होते थे। इस दृष्टि के समानांतर कुछ प्राचीन ऑर्फीक महाकाव्यों में भी दिखाई देता था, जिनमें सेंटॉर, पुराने हिप्पैंथ्रोप्स, मानव सिर और घोड़े जैसी छाती वाले उन टाइटन्स का वर्णन था जो सरपट दौड़ते हुए ओलंपस पर चढ़ते थे, भयानक, अजेय, उदात्त—देवता और जानवर।

एक विचित्र संख्यात्मक संयोग—छब्बीस बटालियनें छब्बीस बटालियनों से मिलने के लिए आईं। पठार की चोटी के पीछे, छिपी हुई तोपखाने की छाया में, अंग्रेजी पैदल सेना, तेरह वर्गों में संगठित, प्रत्येक वर्ग में दो बटालियनें, दो पंक्तियों में, पहली पंक्ति में सात और दूसरी में छह, अपनी तोपों को कंधों पर टिकाए, जो कुछ प्रकट होने वाला था उस पर निशाना साधे, शांत, मौन, गतिहीन प्रतीक्षा कर रही थी। उन्होंने कवचधारियों को नहीं देखा, और कवचधारियों ने उन्हें नहीं देखा। उन्होंने पुरुषों के इस सैलाब के उदय को सुना। उन्होंने तीन हजार घोड़ों का बढ़ता शोर, पूरी रफ्तार से दौड़ते उनके खुरों की बारी-बारी से और सममित पदचाप, कवच की झनझनाहट, तलवारों की खनक और एक प्रकार की भव्य और क्रूर साँसें सुनीं। इसके बाद एक अत्यंत भयानक सन्नाटा छा गया; फिर अचानक, शिखर के ऊपर तलवारें लहराते हुए, ऊपर उठे हाथों की एक लंबी कतार दिखाई दी, और हेलमेट, तुरही और झंडे, और भूरी

मूंछों वाले तीन हजार सिर, "सम्राट की जय हो!" चिल्ला रहे थे। यह सारी घुड़सवार सेना पठार पर उतर आई, और ऐसा लगा जैसे भूकंप आ गया हो।

अचानक एक दुखद घटना घटी; अंग्रेज़ों के बाईं ओर, हमारे दाईं ओर, कवचधारी सैनिकों की टुकड़ी का अगला भाग भयानक शोर मचाते हुए ऊपर उठा। शिखर के सबसे ऊँचे बिंदु पर पहुँचते ही, अनियंत्रित, क्रोध में डूबे और सैनिकों व तोपों को नष्ट करने के अपने लक्ष्य पर तुले कवचधारी सैनिकों की नज़र एक खाई पर पड़ी—उनके और अंग्रेज़ों के बीच की खाई। यह ओहेन की खोखली सड़क थी।

वह एक भयानक क्षण था। खाई सामने थी, अप्रत्याशित, चौड़ी, घोड़ों के पैरों के ठीक नीचे, दो ढलानों के बीच दो फ़ैदम गहरी; दूसरी पंक्ति ने पहली को उसमें धकेल दिया, और तीसरी ने दूसरी को; घोड़े उछले और पीछे की ओर गिरे, अपने पिछले पैरों पर गिरे, नीचे फिसलते हुए, चारों पैर हवा में, सवारों को कुचलते और रौंदते हुए; और पीछे हटने का कोई रास्ता न होने के कारण—पूरी टुकड़ी अब एक प्रक्षेपास्त्र से अधिक कुछ नहीं थी—अंग्रेजों को कुचलने के लिए प्राप्त बल ने फ्रांसीसियों को कुचल दिया; अथाह खाई तभी खुल सकती थी जब वह भर जाए; घोड़े और सवार वहाँ बेतरतीब ढंग से लुढ़कते रहे, एक-दूसरे को पीसते हुए, इस खाई में मांस का एक ढेर बन गए: जब यह खाई जीवित पुरुषों से भर गई, तो बाकी लोग उनके ऊपर से गुजरे और आगे बढ़ गए। डुबोइस की ब्रिगेड का लगभग एक तिहाई हिस्सा उस खाई में गिर गया।

यहीं से युद्ध में हार की शुरुआत हुई।

एक स्थानीय परंपरा, जो स्पष्ट रूप से घटना को बढ़ा-चढ़ाकर बताती है, कहती है कि ओहेन की खोखली सड़क में दो हज़ार घोड़े और पंद्रह सौ आदमी दफ़न हो गए थे। संभवतः इस संख्या में वे सभी शव शामिल हैं जो युद्ध के अगले दिन इस खाई में फेंक दिए गए थे।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि डुबोइस की बुरी तरह से परीक्षण की गई ब्रिगेड ने ही, एक घंटे पहले, एक तरफ से हमला करते हुए, लूननबर्ग बटालियन का झंडा अपने कब्जे में ले लिया था।

नेपोलियन ने मिल्हौद के घुड़सवारों को इस हमले का आदेश देने से पहले ज़मीन का मुआयना किया था, लेकिन वह उस खोखली सड़क को नहीं देख पाया था, जो पठार की सतह पर एक लकीर के बराबर भी नहीं थी। फिर भी, निवेल्स राजमार्ग से जुड़ने

वाले मोड़ पर बने छोटे से सफेद चैपल से सचेत होकर, उसने शायद गाइड लाकोस्ट से किसी बाधा की संभावना के बारे में पूछा होगा। गाइड ने जवाब दिया था, नहीं। हम लगभग यह कह सकते हैं कि नेपोलियन की इस विपत्ति की शुरुआत किसान के सिर के उस चिन्ह से ही हुई थी।

अन्य मौतों का होना तय था।

क्या नेपोलियन उस युद्ध को जीत सकता था? हमारा जवाब है नहीं। क्यों? वेलिंगटन की वजह से? ब्लुचर की वजह से? नहीं। बल्कि ईश्वर की वजह से।

वाटरलू में बोनापार्ट की जीत; यह उन्नीसवीं सदी के कानून के दायरे में नहीं आता। घटनाओं की एक और श्रृंखला तैयार हो रही थी, जिसमें नेपोलियन के लिए कोई गुंजाइश नहीं बची थी। घटनाक्रम की बुरी नियति बहुत पहले ही प्रकट हो चुकी थी।

अब इस विशालकाय व्यक्ति के पतन का समय आ गया था।

मानव नियति में इस व्यक्ति के अत्यधिक भार ने संतुलन बिगाड़ दिया। यह अकेला व्यक्ति एक सार्वभौमिक समूह से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। मानव जीवन शक्ति का यह विशाल भंडार एक ही व्यक्ति के मस्तिष्क में समाहित था; संसार एक व्यक्ति के मस्तिष्क में सिमट गया था—यदि सभ्यता बनी रहती तो यह उसके लिए घातक सिद्ध होता। अब वह क्षण आ गया था जब अविनाशी और सर्वोच्च न्याय को अपनी योजना बदलनी पड़ी। संभवतः वे सिद्धांत और तत्व, जिन पर नैतिक और भौतिक जगत का नियमित गुरुत्वाकर्षण निर्भर करता है, शिकायत कर रहे थे। धधकता रक्त, भरे हुए कब्रिस्तान, आँसू बहाती माताएँ—ये शक्तिशाली दलीलें हैं। जब पृथ्वी पर अत्यधिक भार पड़ता है, तो प्रेतों की रहस्यमयी कराहें सुनाई देती हैं, जिन्हें अथाह गहराई भी सुनती है।

नेपोलियन की अनंत स्तर पर निंदा की जा चुकी थी और उसका पतन तय हो चुका था।

उसने भगवान को शर्मिंदा किया।

वाटरलू कोई युद्ध नहीं है; यह ब्रह्मांड की ओर से मोर्चे में बदलाव है।

X. मोंट-सेंट-जीन का पठार

खाई के साथ ही बैटरी का पर्दा भी उतर गया।

साठ तोपों और तेरह चौकों ने घुड़सवार सैनिकों पर बिजली की गति से सीधा हमला किया। निडर जनरल डेलोर्ट ने अंग्रेजी तोपखाने को सैन्य सलामी दी।

अंग्रेजों की पूरी तोपखाना टुकड़ी सरपट दौड़ते हुए चौकों में वापस आ गई थी। घुड़सवारों को रुकने का भी समय नहीं मिला था। खोखली सड़क पर हुई तबाही ने उन्हें तबाह कर दिया था, लेकिन उनका हौसला नहीं तोड़ा था। वे उस श्रेणी के योद्धा थे जो संख्या में कम होने पर भी और अधिक साहसी हो जाते हैं।

इस आपदा में केवल वाथियर के दल को ही नुकसान हुआ था; डेलोर्ट का दल, जिसे नेय ने घात लगाकर हमला होने की आशंका से बाईं ओर मोड़ दिया था, पूरी तरह से सुरक्षित पहुँच गया था।

घुड़सवार सैनिकों ने अंग्रेजों के चौकों पर धावा बोल दिया।

पूरी रफ्तार से, लगाम ढीली करके, दांतों में तलवारें दबाए, मुट्ठी में पिस्तौलें लिए—यही था हमला।

युद्ध में ऐसे क्षण आते हैं जब आत्मा मनुष्य को इतना कठोर बना देती है कि वह सैनिक मूर्ति में तब्दील हो जाता है, और उसका सारा शरीर पत्थर जैसा कठोर हो जाता है। लेकिन अंग्रेजी बटालियनें, जिन पर भीषण हमला हुआ था, टस से मस नहीं हुईं।

तब हालात बेहद खराब हो गए थे।

अंग्रेजी सैनिकों की सभी चौकियों पर एक साथ हमला हुआ। एक उन्मादी बवंडर ने उन्हें घेर लिया। वह निर्मम पैदल सेना अविचलित रही। पहली पंक्ति घुटने टेककर कवचधारियों की संगीनों का सामना करने के लिए तैयार हो गई, दूसरी पंक्तियों ने उन्हें मार गिराया; दूसरी पंक्ति के पीछे तोपची अपनी तोपों से आगे बढ़े, चौकियों का अग्रभाग फट गया, छर्रों की बौछार हुई और फिर बंद हो गया। कवचधारियों ने उन्हें कुचल कर जवाब दिया। उनके विशाल घोड़े उछले, पंक्तियों को पार करते हुए आगे बढ़े, संगीनों के ऊपर से छलांग लगाई और इन

चार जीवंत कुओं के बीच विशालकाय रूप से गिर पड़े। तोप के गोलों ने इन कवचधारियों के शरीर में गहरी लकीरें बना दीं; कवचधारियों ने चौकियों में सेंध लगा दी। सैनिकों की कतारें गायब हो गईं, घोड़ों के नीचे कुचलकर धूल में मिल गईं। संगीनें इन विशालकाय सैनिकों के पेट में धंस गईं; इसलिए घावों की ऐसी भयावहता देखी गई जो शायद कहीं और नहीं देखी गई होगी। इस पागल घुड़सवार सेना द्वारा तबाह की गई चौकियों ने बिना हिचकिचाए अपनी पंक्तियों को समेट लिया। गोलियों की अथाह बौछार करते हुए, उन्होंने अपने हमलावरों के बीच विस्फोट कर दिए। इस युद्ध का स्वरूप भयावह था। ये वर्ग अब बटालियन नहीं, बल्कि गड्ढे थे; वे कवचधारी अब घुड़सवार सेना नहीं, बल्कि एक तूफान थे। प्रत्येक वर्ग बादल से घिरे ज्वालामुखी जैसा था; लावा बिजली से लड़ रहा था।

सबसे दाहिनी ओर का चौक, जो हवा में होने के कारण सबसे अधिक खुला था, पहले ही झटके में लगभग पूरी तरह नष्ट हो गया। इसमें हाइलैंडर्स की 75 वीं रेजिमेंट के सैनिक थे। केंद्र में बैठा बैगपाइप वादक, जंगलों और झीलों के प्रतिबिंबों से भरी अपनी उदास आँखों को गहरी उदासीनता में झुकाए बैठा था, जबकि उसके चारों ओर लोग मारे जा रहे थे। वह एक ढोल पर बैठा था, अपनी पिब्रोच बगल में दबाए हुए, हाइलैंड की धुनें बजा रहा था। ये स्कॉटिश सैनिक बेन लोथियन को याद करते हुए मरे, जैसे यूनानी आर्गोस को याद करते हुए मरे थे। एक कवचधारी की तलवार ने बैगपाइप और उसे थामे हुए हाथ को काट डाला और गायक को मारकर गीत का अंत कर दिया।

संख्या में अपेक्षाकृत कम और खाई की तबाही से और भी कम हो चुके घुड़सवार सैनिकों के सामने लगभग पूरी अंग्रेजी सेना खड़ी थी, लेकिन उन्होंने अपनी संख्या इतनी बढ़ा ली कि उनका प्रत्येक सैनिक दस सैनिकों के बराबर था। फिर भी, हनोवरिया की कुछ बटालियनें पीछे हट गईं। वेलिंगटन ने इसे भांप लिया और अपनी घुड़सवार सेना के बारे में सोचा। अगर नेपोलियन ने उसी क्षण अपनी पैदल सेना के बारे में सोचा होता, तो वह युद्ध जीत जाता। यही भूल उसकी सबसे बड़ी और घातक गलती साबित हुई।

अचानक, हमलावर रहे घुड़सवार सैनिक खुद ही हमले की चपेट में आ गए। अंग्रेज़ घुड़सवार सेना उनके पीछे थी। उनके आगे दो चौकों की टुकड़ी थी, उनके पीछे समरसेट; समरसेट का मतलब था गार्ड के चौदह सौ ड्रैगून सैनिक। दाईं ओर,

समरसेट के साथ जर्मन हल्के घुड़सवारों के साथ डोर्नबर्ग था, और बाईं ओर, बेल्जियम के कैराबिनियरों के साथ ट्रिप; पैदल सेना और घुड़सवार सेना ने किनारे और सामने, आगे और पीछे से हमला किया, उन्हें हर तरफ से सामना करना पड़ा। उन्हें क्या फर्क पड़ता था? वे एक बवंडर की तरह थे। उनका शौर्य अवर्णनीय था।

इसके अलावा, उनके पीछे तोपखाना था, जो अभी भी गरज रहा था। ऐसा होना आवश्यक था, अन्यथा उन्हें कभी भी पीछे से चोट नहीं लग सकती थी। उनके कवच में से एक, जो बिस्केयन तोप के गोले से कंधे पर छेद कर दिया गया था, वाटरलू संग्रहालय के संग्रह में है।

ऐसे फ्रांसीसियों के लिए ऐसे ही अंग्रेजों की आवश्यकता थी। यह अब आमने- सामने का संघर्ष नहीं था; यह एक छाया, एक प्रचंडता, आत्माओं और साहस का एक मदहोश कर देने वाला प्रवाह, बिजली की तरह तेज़ तलवारों का एक बवंडर था। पल भर में चौदह सौ ड्रैगून गार्डों की संख्या घटकर केवल आठ सौ रह गई। उनके लेफ्टिनेंट-कर्नल फुलर मृत पड़े। नेय लांसर्स और लेफेब्रे-डेस्नोएट्स के हल्के घुड़सवारों के साथ आगे बढ़े। मोंट-सेंट-जीन का पठार कब्जा किया गया, फिर से कब्जा किया गया, फिर से कब्जा किया गया। क्यूरासियर्स घुड़सवार सेना छोड़कर पैदल सेना में लौट आए; या, अधिक सटीक रूप से कहें तो, उस भयानक भगदड़ में सभी सैनिकों ने एक-दूसरे को बिना छोड़े जकड़ लिया। स्क्वेयर अभी भी डटे रहे।

एक दर्जन हमले हुए। नेय के चार घोड़े मारे गए। आधे घुड़सवार पठार पर ही रह गए। यह संघर्ष दो घंटे तक चला।

अंग्रेज़ सेना बुरी तरह हिल गई थी। इसमें कोई शक नहीं कि अगर खोखली सड़क पर हुए हमले से लगी पहली ही चोट से वे कमज़ोर न पड़ गए होते, तो घुड़सवार सेना केंद्र पर हावी हो जाती और जीत पक्की कर लेती। इस असाधारण घुड़सवार सेना ने क्लिंटन को स्तब्ध कर दिया, जिन्होंने तलावेरा और बदाजोज़ में ऐसी असाधारण सेना देखी थी। लगभग तीन चौथाई पराजित हो चुके वेलिंगटन ने वीरतापूर्वक प्रशंसा की। उन्होंने दबी आवाज़ में कहा, "शानदार!"

घुड़सवार सैनिकों ने तेरह में से सात चौकों को पूरी तरह नष्ट कर दिया, साठ तोपों को जब्त कर लिया या उन्हें नष्ट कर दिया, और अंग्रेजी रेजिमेंटों से

छह झंडे छीन लिए, जिन्हें गार्ड के तीन घुड़सवार सैनिकों और तीन शैसर्स ने ला बेले एलायंस के फार्म के सामने सम्राट के पास पहुंचाया।

वेलिंगटन की स्थिति और भी बदतर हो गई थी। यह विचित्र लड़ाई दो उग्र, घायल पुरुषों के बीच द्वंद्वयुद्ध की तरह थी, जिनमें से प्रत्येक, अभी भी लड़ रहा था और प्रतिरोध कर रहा था, अपना सारा खून बहा रहा था।

इन दोनों में से सबसे पहले कौन गिरेगा?

पठार पर संघर्ष जारी रहा।

उन घुड़सवारों का क्या हुआ? कोई नहीं बता सकता था। एक बात निश्चित है कि युद्ध के अगले दिन, मॉन्ट-सेंट-जीन में वाहनों के तराजू के लकड़ी के ढांचे के बीच एक घुड़सवार और उसका घोड़ा मृत पाए गए, ठीक उसी जगह पर जहाँ निवेल्स, जेनैप, ला हुल्पे और ब्रुसेल्स से आने वाली चारों सड़कें मिलती और एक-दूसरे को काटती हैं। इस घुड़सवार ने अंग्रेज़ों की घेराबंदी तोड़ दी थी। शव उठाने वालों में से एक व्यक्ति आज भी मॉन्ट-सेंट-जीन में रहता है। उसका नाम देहेज़ है। उस समय वह अठारह वर्ष का था।

वेलिंगटन को लगा कि वह झुक रहा है। संकट सामने आ चुका था।

घुड़सवार सेना सफल नहीं हो पाई, क्योंकि केंद्र में सेंध नहीं लग पाई थी।
पठार पर सबका कब्ज़ा था, लेकिन किसी का भी उस पर पूर्ण नियंत्रण नहीं था, और वास्तव में वह काफी हद तक अंग्रेजों के पास ही रहा। वेलिंगटन के पास गाँव और ऊपरी मैदान था; नेय के पास केवल शिखर और ढलान थी। ऐसा लग रहा था मानो वे दोनों ओर उस घातक भूमि में जड़े जमा चुके हों।

लेकिन अंग्रेजों की कमजोरी अपूरणीय प्रतीत हो रही थी। उस सेना का खून-खराबा भयानक था। बाईं ओर तैनात केम्प्ट ने अतिरिक्त सैनिकों की मांग की। वेलिंगटन ने जवाब दिया, "कोई सैनिक नहीं हैं; उसे खुद को मरवा देना चाहिए!" लगभग उसी क्षण, एक विचित्र संयोग जिसने दोनों सेनाओं की थकावट को दर्शाया, नेय ने नेपोलियन से पैदल सेना की मांग की, और नेपोलियन ने कहा, "पैदल सेना! वह मुझसे यह कहां से लाने की उम्मीद करता है? क्या उसे लगता है कि मैं यह कर सकता हूँ?"

फिर भी, दोनों सेनाओं में से अंग्रेज़ी सेना की हालत बदतर थी। लोहे के कवच और फौलादी कवच से लैस उन विशाल टुकड़ियों के भयंकर आक्रमणों ने पैदल सेना को पूरी तरह से कुचल दिया था। एक झंडे के चारों ओर कुछ सैनिक ही किसी रेजिमेंट की चौकी का संकेत देते थे; फलां बटालियन की कमान केवल एक कप्तान या लेफ्टिनेंट के हाथ में थी; एल्टन की टुकड़ी, जिसे ला हाई-सैंटे में पहले ही बुरी तरह से हराया जा चुका था, लगभग नष्ट हो चुकी थी; वैन क्लुज़ ब्रिगेड के निडर बेल्जियम सैनिकों ने निवेल्स रोड के किनारे राई के खेतों को तहस-नहस कर दिया था; उन डच ग्रेनेडियरों का लगभग कुछ भी नहीं बचा था, जो 1811 में हमारी सेना में स्पेनियों के साथ मिलकर वेलिंगटन के खिलाफ लड़े थे; और जो 1815 में अंग्रेज़ी झंडे के नीचे एकजुट होकर नेपोलियन के खिलाफ लड़े थे। अधिकारियों का भी भारी नुकसान हुआ था। लॉर्ड अक्सब्रिज, जिनका पैर अगले दिन दफनाया गया था, उनका घुटना बुरी तरह से टूट गया था। यदि फ्रांसीसी पक्ष की ओर से, घुड़सवारों के उस संघर्ष में, डेलोर्ट, ल'हेरिटियर, कोलबर्ट, ड्नोप, ट्रैवर्स और ब्लैंकर्ड घायल हो गए, तो अंग्रेज़ पक्ष की ओर से एल्टन घायल, बार्न घायल, डेलेंसी मारे गए, वैन मीरेन मारे गए, ओम्पटेडा मारे गए, वेलिंगटन के पूरे स्टाफ का सफाया हो गया, और उस खूनी युद्ध में इंग्लैंड को भारी नुकसान उठाना पड़ा। पैदल सेना की दूसरी रेजिमेंट ने पाँच लेफ्टिनेंट-कर्नल, चार कप्तान और तीन पताकाधारी खो दिए; 30 वीं पैदल सेना की पहली बटालियन ने 24 अधिकारी और 1,200 सैनिक खो दिए; 79 वीं हाइलैंडर्स ने 24 अधिकारी घायल, 18 अधिकारी मारे गए और 450 सैनिक खो दिए। कर्नल हैक के नेतृत्व में, जिन्हें बाद में मुकदमे का सामना करना पड़ा और पदच्युत कर दिया गया, कंबरलैंड के हनोवरियन हसारों की पूरी रेजिमेंट ने युद्ध को भांपते हुए मोर्चा पलट दिया और सोइग्नेस के जंगल में भाग गए, जिससे ब्रुसेल्स तक के रास्ते में हार का सिलसिला जारी रहा। फ्रांसीसी सेना को जंगल की ओर बढ़ते और आगे बढ़ते देख, परिवहन वाहन, गोला- बारूद से लदे वाहन, सामान से लदे वाहन और घायलों से भरे वाहन तेजी से उस ओर दौड़ पड़े। फ्रांसीसी घुड़सवार सेना द्वारा बुरी तरह से कुचले जाने पर डचों ने "खतरे!" का नारा लगाया। वर्ट-कूकू से ग्रोएनेंडेल तक, ब्रुसेल्स की दिशा में लगभग दो लीग की दूरी तक, जीवित प्रत्यक्षदर्शियों की गवाही के अनुसार, सड़कें भगोड़ों से भरी हुई थीं। यह दहशत इतनी व्यापक थी कि इसने मेचलिन में प्रिंस डी कोंडे और घेंट में लुई XVIII को भी घेर लिया। मोंट-

सेंट-जीन के फार्म में स्थापित एम्बुलेंस के पीछे तैनात कमज़ोर आरक्षित टुकड़ी और विवियन और वंडेलूर की ब्रिगेडों को छोड़कर, जो बाएँ विंग के किनारे तैनात थीं, वेलिंगटन के पास कोई घुड़सवार सेना नहीं बची थी। कई तोपखाने बेकार पड़े थे। सिबोर्न ने इन तथ्यों की पुष्टि की है; और प्रिंगल ने इस आपदा को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हुए यहाँ तक कह दिया कि एंग्लो-डच सेना घटकर चौंतीस हज़ार सैनिकों की रह गई थी। लौह ड्यूक शांत रहे, लेकिन उनके होंठ पीले पड़ गए। ऑस्ट्रियाई आयुक्त विंसेंट और स्पेनिश आयुक्त अलावा, जो अंग्रेजी सेना के साथ युद्ध में उपस्थित थे, उन्हें लगा कि ड्यूक हार गए हैं। पाँच बजे वेलिंगटन ने अपनी घड़ी निकाली और उन्हें ये अशुभ शब्द बुदबुदाते हुए सुना गया, "ब्लुचर, या रात!"

लगभग उसी क्षण फ्रिशेमोंट की दिशा में पहाड़ियों पर संगीनों की एक दूर की पंक्ति चमकती हुई दिखाई दी।

इस विशाल नाटक में अब एक नया मोड़ आने वाला है।

XI. नेपोलियन के लिए एक खराब मार्गदर्शिका; बुलो के लिए एक अच्छी मार्गदर्शिका

नेपोलियन का दर्दनाक आश्चर्य सर्वविदित है। चिड़चिड़े की उम्मीद थी, लेकिन ब्लुचर आ गया। जीवन के बदले मृत्यु।

भाग्य के ऐसे ही मोड़ होते हैं; विश्व के सिंहासन की अपेक्षा थी; लेकिन अंत में संत हेलेना ही नजर आईं।

अगर बुलो, जो ब्लुचर के लेफ्टिनेंट थे, के मार्गदर्शक छोटे चरवाहे ने उन्हें प्लांसेनोइट के नीचे से निकलने के बजाय फ्रिशेमोंट के ऊपर वाले जंगल से निकलने की सलाह दी होती, तो शायद उन्नीसवीं सदी का स्वरूप कुछ और होता। नेपोलियन वाटरलू की लड़ाई जीत जाते। प्लांसेनोइट के नीचे वाले रास्ते के अलावा किसी और रास्ते से प्रशियाई सेना एक ऐसी खाई में पहुँच जाती जहाँ तोपखाना नहीं चल पाता, और बुलो वहाँ नहीं पहुँच पाते।

अब प्रशियाई जनरल मफलिंग ने घोषणा की कि अगर एक घंटे की भी देरी होती, तो ब्लुचर को वेलिंगटन अपने पैरों पर खड़ा नहीं मिलता। "लड़ाई हार ली गई थी।"

जैसा कि आगे देखा जाएगा, बुलो के आने का समय हो गया था। उन्हें बहुत देर हो चुकी थी। उन्होंने डियोन-ले-मोंट में डेरा डाला था और भोर होते ही निकल पड़े थे; लेकिन सड़कें दुर्गम थीं और उनकी टुकड़ियाँ कीचड़ में बुरी तरह फंस गईं। कीचड़ तोपों के हब तक गहरा था। इसके अलावा, उन्हें डाइल नदी को वेव्रे के संकरे पुल से पार करना पड़ा; पुल की ओर जाने वाली सड़क पर फ्रांसीसियों ने आग लगा दी थी, इसलिए तोपों और गोला-बारूद से भरी गाड़ियाँ जलते हुए घरों की दो कतारों के बीच से नहीं गुजर सकीं और आग बुझने तक उन्हें वहीं रुकना पड़ा। बुलो की अग्रिम टुकड़ी दोपहर तक चैपल-सेंट-लैम्बर्ट पहुँच पाई थी।

यदि कार्रवाई दो घंटे पहले शुरू हो जाती, तो यह चार बजे तक समाप्त हो जाती, और ब्लुचर नेपोलियन द्वारा जीती गई लड़ाई में हार जाता। ये इतने बड़े

जोखिम हैं जो एक ऐसी असीम संभावना के अनुपात में हैं जिसे हम समझ नहीं सकते।

दोपहर होते ही सम्राट ने सबसे पहले अपनी दूरबीन से दूर क्षितिज पर कुछ ऐसा देखा जिसने उनका ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा, "मुझे वहाँ एक बादल दिखाई दे रहा है, जो मुझे सैनिकों का समूह लग रहा है।" फिर उन्होंने ड्यूक डी डालमेटी से पूछा, "सुल्ट, चैपल-सेंट-लैम्बर्ट की दिशा में आपको क्या दिखाई दे रहा है?" मार्शल ने अपनी दूरबीन को सीधा करते हुए उत्तर दिया, "महाराज, चार-पाँच हज़ार सैनिक; स्पष्ट रूप से ग्रौची हैं।" लेकिन वह धुंध में स्थिर रहा। सभी कर्मचारियों ने सम्राट द्वारा इंगित "बादल" का अध्ययन किया। कुछ ने कहा: "ये पेड़ हैं।" सच्चाई यह है कि बादल हिला नहीं। सम्राट ने डोमोन की हल्की घुड़सवार सेना की टुकड़ी को उस दिशा में सर्वेक्षण करने के लिए भेजा।

दरअसल, बुलो ने अपनी जगह से हिलना भी बंद कर दिया था। उसकी अग्रिम टुकड़ी बेहद कमजोर थी और कुछ भी नहीं कर सकती थी। उसे सेना के मुख्य दल का इंतज़ार करना पड़ा और उसे पंक्तिबद्ध होने से पहले अपनी सेना को इकट्ठा करने का आदेश मिला था; लेकिन शाम पाँच बजे, वेलिंगटन के खतरे को भांपते हुए, ब्लुचर ने बुलो को हमला करने का आदेश दिया और ये उल्लेखनीय शब्द कहे: "हमें अंग्रेजी सेना को आगे बढ़ने का मौका देना होगा।"

कुछ देर बाद, लोबाऊ की कोर के सामने लॉस्थिन, हिलर, हैके और राइसेल की टुकड़ियाँ तैनात हो गईं, प्रशिया के राजकुमार विलियम की घुड़सवार सेना पेरिस के जंगल से निकली, प्लांसेनोइट आग की लपटों में घिर गया, और नेपोलियन के पीछे आरक्षित रक्षक दल की पंक्तियों पर भी प्रशियाई तोप के गोले बरसने लगे।

XII. गार्ड

बाकी सब तो सबको पता ही है—तीसरी सेना का अचानक आक्रमण; युद्ध का टुकड़े- टुकड़े हो जाना; एक साथ 86 आग के गोले बरसना; पिर्च का बुलो के साथ सबसे पहले आगे आना; ब्लुचर के नेतृत्व में ज़िएटेन की घुड़सवार सेना का फ्रांसीसी सेना को पीछे धकेलना; मार्कोनेट का ओहेन पठार से खदेड़ दिया जाना; दुरुट्टे का पापेलॉट से बेदखल हो जाना; डोनज़ेलॉट और क्विओट का पीछे हटना; लोबाउ का किनारे से घिर जाना; शाम ढलते ही हमारी बिखरी हुई रेजिमेंटों पर एक नया युद्ध छिड़ जाना; पूरी अंग्रेजी सेना का फिर से आक्रमण शुरू करना और आगे बढ़ना; फ्रांसीसी सेना में बना विशाल छेद; अंग्रेजी और प्रशियाई गोलों का एक-दूसरे की मदद करना; सर्वनाश; मोर्चे पर तबाही; किनारे पर तबाही; और इस भयानक उथल-पुथल के बीच गार्ड का मोर्चे में प्रवेश करना।

अपनी मृत्यु को भांपते हुए उन्होंने "विव ल'एम्पेरर!" के नारे लगाए। इतिहास में उस पीड़ा के जयघोष से अधिक मार्मिक कोई उदाहरण दर्ज नहीं है।

दिनभर आसमान बादलों से घिरा रहा। अचानक, ठीक उसी क्षण—शाम के आठ बजे— क्षितिज पर छाए बादल छंट गए, और डूबते सूरज की भव्य और रहस्यमयी रोशनी निवेल्स रोड पर लगे एल्म के पेड़ों के बीच से होकर गुज़रने लगी। उन्होंने इसे ऑस्टरलिट्ज़ में उगते हुए देखा था।

इस अंतिम युद्ध के लिए गार्ड की प्रत्येक बटालियन की कमान एक जनरल के हाथ में थी। फ्रिएंट, मिशेल, रोगेट, हार्लेट, मैलेट, पोरेट डी मोरवन, सभी जनरल वहाँ मौजूद थे। जब गार्ड के ग्रेनेडियरों की ऊँची टोपियाँ, जिन पर चील का चिन्ह बना हुआ था, समरूप, पंक्तिबद्ध और शांत अवस्था में उस युद्ध के बीच दिखाई दीं, तो शत्रु को फ्रांस के प्रति सम्मान का भाव जागा; उन्हें लगा मानो बीस विजयी सैनिक पंख फैलाए युद्ध के मैदान में प्रवेश कर रहे हों, और जो विजेता थे, वे स्वयं को पराजित समझकर पीछे हट गए; परन्तु वेलिंगटन ने पुकारा, “उठो, गार्ड्स, और सीधा निशाना लगाओ!” झाड़ियों के पीछे लेटी हुई अंग्रेजी गार्ड की लाल रेजिमेंट उछल पड़ी, छर्रों की बौछार ने तिरंगे झंडे

को छलनी कर दिया और हमारे चीलों के चारों ओर सीटी बजाती हुई निकल पड़ी; सभी आगे बढ़े, और अंतिम नरसंहार शुरू हो गया। अंधेरे में, शाही रक्षक दल ने अपने चारों ओर सेना को पिछड़ते हुए महसूस किया, और उस भीषण हार के सदमे में उसने "विव ल'एम्पेरर!" के नारे की जगह ले चुकी हताश भागने की आवाज़ सुनी। भागने की आवाज़ के साथ, वह आगे बढ़ता रहा, और अधिक कुचला हुआ, हर कदम पर अपने सैनिकों को खोता हुआ। वहाँ कोई भी नहीं रुका, कोई भी डरपोक नहीं था। उस टुकड़ी का हर सैनिक उतना ही वीर था जितना कि सेनापति। उस आत्मघाती हमले में एक भी सैनिक लापता नहीं था।

नेय, व्याकुल, मृत्यु को स्वीकार करने के सारे वैभव से परिपूर्ण, उस तूफ़ान में हर वार के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। उसका पाँचवाँ घोड़ा भी वहीं मारा गया। पसीने से तरबतर, आँखों में आग, मुँह से झाग, वर्दी के बटन खुले हुए, एक घुड़सवार रक्षक की तलवार के वार से उसका एक एपॉलेट आधा कटा हुआ, गोली से क्षतिग्रस्त उसकी पट्टिका जिस पर बड़ा चील बना था; खून बहता हुआ, कीचड़ में सना हुआ, भव्य, हाथ में टूटी तलवार लिए, उसने कहा, "आओ और देखो कि फ्रांस का एक मार्शल युद्ध के मैदान में कैसे मरता है!" लेकिन व्यर्थ; वह मरा नहीं। वह थका हुआ और क्रोधित था। ड्रोएट डी'अर्लोन में उसने यह प्रश्न पूछा, "क्या तुम स्वयं को मरवाने नहीं जा रहे हो?" मुट्ठी भर सैनिकों को कुचलने में लगी उस भारी तोपखाने के बीच, उसने चिल्लाकर कहा: "तो मेरे लिए कुछ नहीं बचा! ओह! काश ये सारी अंग्रेजी गोलियाँ मेरे पेट में घुस जातीं!" अभागे आदमी, तू फ्रांसीसी गोलियों के लिए आरक्षित था!

XIII. तबाही

गार्ड के पीछे की हार निराशाजनक थी।

होउगोमोंट, ला हाई-सैंटे, पैपेलॉट, प्लांसेनोइट - चारों ओर से सेना अचानक एक साथ आत्मसमर्पण कर गई। "विश्वासघात!" की चीख के बाद "जो बच सकते हैं, बच जाएं!" की चीख सुनाई दी। बिखरती हुई सेना पिघलती बर्फ की तरह होती है। सब कुछ बिखर जाता है, टूट जाता है, बह जाता है, लुढ़क जाता है, गिर जाता है, धक्का-मुक्की होती है, भाग जाता है, सब कुछ तेजी से बिखर जाता है। यह विघटन अभूतपूर्व है। नेय एक घोड़ा उधार लेता है, उस पर सवार होता है, और बिना टोपी, टाई या तलवार के, ब्रसेल्स की सड़क पर खड़ा हो जाता है, अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों दोनों को रोक देता है। वह सेना को रोकने की कोशिश करता है, उसे उसके कर्तव्य की याद दिलाता है, उसका अपमान करता है, और इस भगदड़ में डटा रहता है। वह हार जाता है। सैनिक उससे दूर भागते हुए चिल्लाते हैं, "मार्शल नेय की जय हो!" दुरुट्टे की दो रेजिमेंटें भयभीत होकर इधर-उधर भागती हैं, मानो उहलानों की तलवारों और केम्प्ट, बेस्ट, पैक और रायलैंड्ट की ब्रिगेडों की गोलियों की बौछार के बीच इधर-उधर फेंकी जा रही हों; आमने- सामने की लड़ाई में सबसे बुरी हार होती है; दोस्त एक-दूसरे को जान से मारने के लिए भागते हैं; स्क्वाड्रन और बटालियनें युद्ध के विशाल झाग की तरह एक-दूसरे पर टूटकर बिखर जाती हैं। एक छोर पर लोबाउ और दूसरे छोर पर रीले, दोनों ही इस लहर में खिंचे चले जाते हैं। नेपोलियन अपने बचे हुए रक्षकों से दीवारें खड़ी करने की व्यर्थ कोशिश करता है; अपने अंतिम प्रयास में अपने अंतिम उपयोगी स्क्वाड्रनों को व्यर्थ ही खर्च कर देता है। क्विओट विवियन के सामने, केलरमैन वंडेलूर के सामने, लोबाउ बुलो के सामने, मोरैंड पिर्च के सामने, डोमोन और सुबेर्विक प्रशिया के राजकुमार विलियम के सामने पीछे हट जाते हैं; सम्राट के स्क्वाड्रनों का नेतृत्व करने वाला गायोट अंग्रेजी ड्रैगूनों के पैरों तले गिर जाता है। नेपोलियन भाग रहे लोगों की कतार के पास से सरपट दौड़ता हुआ निकलता है, उन्हें संबोधित करता है, उकसाता है, धमकाता है, उनसे विनती करता है। सुबह "सम्राट अमर रहें!" के नारे लगाने वाले सभी मुख अब भी खुले हुए हैं; वे उसे मुश्किल से पहचान पा रहे हैं।

नवगठित प्रशियाई घुड़सवार सेना आगे बढ़ती है, दौड़ती है, काटती है, चीरती है, मारती है, सफाया करती है। घोड़े बेकाबू हो जाते हैं, तोपें भाग जाती हैं; तोपखाने के सैनिक तोपों के खोल खोलकर घोड़ों का इस्तेमाल करके भाग निकलते हैं; चारों पहिए हवा में उठे हुए पलटे हुए वाहन सड़क पर जाम लगा देते हैं और नरसंहार का कारण बनते हैं। लोग कुचले जाते हैं, रौंदे जाते हैं, दूसरे मृतकों और जीवितों के ऊपर से चलते हैं। हथियार खो जाते हैं। चालीस हजार सैनिकों के इस आक्रमण से सड़कों, पगडंडियों, पुलों, मैदानों, पहाड़ियों, घाटियों और जंगलों में एक बेकाबू भीड़ उमड़ पड़ती है। हताशा भरी चीखें, राई के खेतों में फेंके गए थैले और बंदूकें, तलवार की नोक पर जबरन निकाले गए रास्ते, अब कोई साथी नहीं, कोई अधिकारी नहीं, कोई सेनापति नहीं, एक अवर्णनीय आतंक। ज़ीटेन अपनी मर्ज़ी से फ्रांस को तलवार के हवाले कर रहा था। शेर बकरियों में बदल गए। यही थी पलायन की स्थिति।

जेनापे में, मोर्चा संभालने और पंक्तिबद्ध होने का प्रयास किया गया। लोबाउ ने तीन सौ सैनिकों को इकट्ठा किया। गाँव के प्रवेश द्वार पर बैरिकेड लगा दिए गए थे, लेकिन प्रशियाई गोलाबारी की पहली ही गोली से सभी सैनिक फिर से भागने लगे और लोबाउ को पकड़ लिया गया। उस गोलाबारी के निशान आज भी जेनापे में प्रवेश करने से कुछ मिनट पहले सड़क के दाहिनी ओर स्थित एक ईंट की इमारत के प्राचीन गैबल पर देखे जा सकते हैं। प्रशियाई सैनिकों ने जेनापे पर धावा बोल दिया, निस्संदेह इस बात से क्रोधित थे कि वे पूरी तरह से विजेता क्यों नहीं बन पाए। पीछा करना भीषण था। ब्लुचर ने सभी को मार गिराने का आदेश दिया। रोगेट ने किसी भी फ्रांसीसी ग्रेनेडियर को, जो उसके पास किसी प्रशियाई कैदी को लाए, मौत की धमकी देकर एक भयावह उदाहरण पेश किया था। ब्लुचर ने रोगेट को भी पीछे छोड़ दिया। यंग गार्ड के सेनापति दुहेस्मे, जेनापे के एक सराय के द्वार पर घिरे हुए थे, उन्होंने अपनी तलवार एक मृत्युदूत के हवाले कर दी, जिसने तलवार छीनकर कैदी की हत्या कर दी। पराजितों की हत्या से विजय पूर्ण हुई। चलो, हम भी दंड दें, क्योंकि हम इतिहास का हिस्सा हैं: बूढ़े ब्लुचर ने खुद को कलंकित किया। इस क्रूरता ने आपदा को अंतिम रूप दे दिया। हताश होकर भागने का रास्ता जेनापे, क्वात्रे- ब्रास, गोसेलिस, फ्रास्नेस, चार्लेरोई, थुइन से होते हुए सीमा पर जाकर रुका। हाय! और फिर, इस तरह कौन भाग रहा था? महान सेना।

यह चक्कर आना, यह आतंक, इतिहास को चकित कर देने वाली सर्वोच्च वीरता का यह विनाश—क्या यह सब निराधार है? नहीं। वाटरलू में एक विशाल अधिकार की छाया मंडरा रही है। यह नियति का दिन है। उस दिन मनुष्य से भी अधिक शक्तिशाली शक्ति ने अपना प्रभाव उत्पन्न किया। इसीलिए उन माथे पर भय की लकीरें थीं; इसीलिए उन सभी महान आत्माओं ने अपनी तलवारें त्याग दीं। यूरोप को जीतने वाले पृथ्वी पर गिर पड़े, उनके पास कहने और करने के लिए कुछ नहीं बचा था, वे एक भयानक उपस्थिति की छाया को महसूस कर रहे थे। होक एराट इन फेटिस (भाग्य में)। उस दिन मानव जाति के दृष्टिकोण में एक परिवर्तन आया। वाटरलू उन्नीसवीं सदी का निर्णायक मोड़ है। महान शताब्दी के आगमन के लिए महान व्यक्ति का लुप्त होना आवश्यक था। किसी ने, एक ऐसे व्यक्ति ने जिसे कोई जवाबदेह नहीं ठहरा सकता, जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। नायकों की घबराहट को समझाया जा सकता है। वाटरलू की लड़ाई में बादल से कहीं अधिक कुछ है, उल्कापिंड जैसा कुछ है। ईश्वर गुजर गया है।

सूर्यास्त के समय, जेनेप्पे के पास एक मैदान में, बर्नार्ड और बर्ट्रेंड ने एक थके-हारे, उदास, रहस्यमय और निराश व्यक्ति को उसकी कोट के किनारे से पकड़कर रोक लिया। वह व्यक्ति भगदड़ की लहर में बहता हुआ वहाँ पहुँचा था, अभी-अभी घोड़े से उतरा था, लगाम को अपनी बांह पर रखा था, और बेतहाशा आँखों से अकेला वाटरलू लौट रहा था। वह नेपोलियन था, इस टूटते हुए सपने का विशाल स्वप्नद्रष्टा, जो एक बार फिर आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा था।

XIV. अंतिम चौक

हार की इस लहर के बीच, गार्ड की कई टुकड़ियाँ बहते पानी में चट्टानों की तरह स्थिर खड़ी रहीं और रात तक डटी रहीं। रात हुई, मौत भी; वे उस दोहरी छाया की प्रतीक्षा कर रहे थे और अजेय होकर उसमें समा जाने के लिए तैयार हो गए। प्रत्येक रेजिमेंट, बाकी सेना से अलग-थलग पड़कर और सेना से कोई संबंध न होने के कारण, जो अब हर तरफ से बिखर चुकी थी, अकेले ही मर गई। उन्होंने इस अंतिम लड़ाई के लिए मोर्चा संभाला था, कुछ ने रॉसोम की ऊँचाइयों पर, कुछ ने मोंट-सेंट-जीन के मैदान पर। वहाँ, परित्यक्त, पराजित, भयावह, उन उदास टुकड़ियों ने अपनी मृत्यु की पीड़ा को दुर्जेय ढंग से सहा। उल्म, वाग्राम, जेना, फ्रीडलैंड, उनके साथ ही मर गए।

शाम ढलते ही, लगभग नौ बजे, उनमें से एक टुकड़ी मोंट-सेंट-जीन के पठार की तलहटी में रह गई। उस घातक घाटी में, उस ढलान की तलहटी में, जिस पर घुड़सवार सैनिक चढ़े थे, जो अब अंग्रेजों की भारी भीड़ से घिरी हुई थी, विजयी शत्रु घुड़सवार सेना की लगातार बरसती आग के बीच, प्रक्षेपास्त्रों की भयानक बौछार के बीच, यह टुकड़ी लड़ती रही। इसका नेतृत्व कैम्ब्रोन नाम का एक गुमनाम अधिकारी कर रहा था। हर गोले के साथ, टुकड़ी सिकुड़ती और जवाब देती। वह छर्रों का जवाब गोलियों की बौछार से देती, लगातार अपनी चारों दीवारों को सिकोड़ती रहती। दूर से भागते हुए सैनिक एक पल के लिए हांफते हुए, अंधेरे में उस भयानक और लगातार कम होती गड़गड़ाहट को सुनते रहे।

जब यह सेना मुट्ठी भर रह गई, जब उनके झंडे का केवल एक चिथड़ा ही बचा था, जब उनकी तोपों से सारी गोलियां निकल चुकी थीं और वे केवल लाठियां बनकर रह गई थीं, जब लाशों का ढेर बचे हुए लोगों की संख्या से कहीं अधिक था, तब विजयी सैनिकों के बीच, उन वीरगति को प्राप्त हुए सैनिकों के चारों ओर, एक प्रकार का पवित्र भय छा गया, और अंग्रेजी तोपखाना मानो थम सा गया। इससे उन्हें एक प्रकार की राहत मिली। इन योद्धाओं के चारों ओर प्रेतों का झुंड मंडरा रहा था, घुड़सवारों की परछाइयां, तोपों की काली आकृतियां, पहियों और तोप-गाड़ियों के बीच से दिखाई देने वाला सफेद आकाश, और वह विशाल मृत्यु-कोश, जिसे वीरों ने युद्ध की गहराई में धुएं के बीच से लगातार देखा, उनकी ओर

बढ़ता हुआ और उन्हें घूरता हुआ प्रतीत हो रहा था। गोधूलि के धुंधलके में वे तोपों के लोड होने की आवाज सुन सकते थे; जलती हुई माचिसें, रात में बाघों की आंखों की तरह, उनके सिर के चारों ओर एक घेरा बना रही थीं; अंग्रेजी तोपखाने की सभी टुकड़ियाँ तोपों के पास पहुँचीं, और फिर, भावुक होकर, उस सर्वोच्च क्षण को अपने ऊपर थामे हुए, एक अंग्रेज जनरल, जिसे कुछ लोग कोल्विल और कुछ लोग मैटलैंड कहते हैं, ने उनसे चिल्लाकर कहा, "आत्मसमर्पण करो, बहादुर फ्रांसीसियों!" कैम्ब्रोन ने जवाब दिया, "धत् तेरे की!"

XV. कैम्ब्रोन

यदि किसी फ्रांसीसी पाठक को अपनी भावनाओं को ठेस पहुँचने पर आपत्ति हो, तो हमें उनकी उपस्थिति में उस कथन को दोहराने से बचना चाहिए जो शायद किसी फ्रांसीसी द्वारा दिया गया अब तक का सबसे उत्कृष्ट उत्तर है। ऐसा करने से हम किसी महान कृति को इतिहास के पन्नों में दफ़न होने से बचा सकेंगे।

अपने जोखिम और खतरे पर ही सही, आइए इस निषेध का उल्लंघन करें।

तो फिर, उन दिग्गजों में एक दिग्गज था—कैम्ब्रोन।

ऐसा जवाब देना और फिर मर जाना, इससे बढ़कर और क्या हो सकता है? क्योंकि मरने की इच्छा रखना भी मरने के समान ही है; और अगर गोली लगने के बाद वह बच गया तो इसमें उस आदमी की कोई गलती नहीं थी।

वाटरलू की लड़ाई का विजेता नेपोलियन नहीं था, जिसे भागना पड़ा; न ही वेलिंगटन, जिसने चार बजे हार मान ली और पाँच बजे हताश हो गया; न ही ब्लुचर, जिसने युद्ध में भाग नहीं लिया। वाटरलू का विजेता कैम्ब्रोन था।

जिस बिजली की चमक से आपकी मृत्यु हो जाती है, उस पर इस तरह से करारा जवाब देना ही विजय है!

इस प्रकार, इस विपत्ति का उत्तर देने के लिए, भाग्य से बात करने के लिए, भविष्य के शेर को यह मंच देने के लिए, आधी रात के तूफान को, हौगोमोंट की कपटी दीवार को, ओहेन की धंसी हुई सड़क को, ग्रौची की देरी को, ब्लुचर के आगमन को ऐसी चुनौती देने के लिए, कब्र में स्वयं विडंबना बनने के लिए, गिरे हुए भी सीधे खड़े रहने के लिए कार्य करने के लिए, यूरोपीय गठबंधन को दो अक्षरों में डुबो देने के लिए, राजाओं को वे विशेषाधिकार प्रदान करने के लिए जो कभी सीजर के पास थे, फ्रांस की महिमा को शब्दों में पिरोकर सबसे तुच्छ शब्दों को सबसे ऊँचा बनाने के लिए, मार्डीग्रास के साथ वाटरलू को उद्दंडता से समाप्त करने के लिए, रैबेले के साथ लियोनिडास को समाप्त करने के लिए, एक ऐसे शब्द से इस विजय पर ताज पहनाने के लिए जिसे बोलना असंभव है,

मैदान हारकर भी इतिहास को संरक्षित करने के लिए, ऐसे नरसंहार के बाद भी हँसी अपने पक्ष में करने के लिए—यह बहुत बड़ा है!

यह एक ऐसा अपमान था मानो कोई भयंकर तूफान बरस रहा हो! यह एशिलस की कला की भव्यता तक पहुँच जाता है!

कैम्ब्रोन का जवाब एक हिंसक विच्छेद का प्रभाव पैदा करता है। यह तिरस्कार के बोझ तले टूटे हुए दिल जैसा है। यह पीड़ा का उफान है जो फूट पड़ा है। किसने जीत हासिल की? वेलिंगटन ने? नहीं! अगर ब्लुचर न होता, तो वह हार जाता। क्या यह ब्लुचर था? नहीं! अगर वेलिंगटन ने शुरुआत न की होती, तो ब्लुचर इसे खत्म न कर पाता। यह कैम्ब्रोन, यह आदमी जो अपना आखिरी घंटा बिता रहा है, यह अज्ञात सैनिक, युद्ध का यह नगण्य अंश, यह महसूस करता है कि यहाँ एक झूठ है, एक आपदा में झूठ, और इसलिए दुगनी पीड़ादायक; और जिस क्षण उसका क्रोध इसके कारण फूट रहा है, उसे यह उपहास—जीवन—पेश किया जाता है! वह खुद को कैसे रोक सकता था? वहाँ यूरोप के सभी राजा हैं, विजय से प्रज्वलित सेनापति, बृहस्पति के वज्रपात; उनके पास एक लाख विजयी सैनिक हैं, और उन एक लाख के पीछे दस लाख सैनिक हैं; उनकी तोपें मुंह खोले खड़ी हैं, माचिस जल उठी है; वे शाही रक्षकों और विशाल सेना को अपने पैरों तले रौंद रहे हैं; उन्होंने नेपोलियन को कुचल दिया है, और केवल कैम्ब्रोन बचा है—केवल यह केंचुआ ही विरोध करने के लिए बचा है। वह विरोध करेगा। फिर वह तलवार की तरह उचित शब्द की तलाश करता है। उसके मुंह से झाग निकलता है, और वही झाग शब्द है। इस तुच्छ और शक्तिशाली विजय के सामने, इस विजय के सामने जो किसी को भी विजयी नहीं मानती, यह हताश सिपाही सीधा खड़ा है। वह इसकी विशालता को स्वीकार करता है, लेकिन इसकी तुच्छता को भी स्थापित करता है; और वह इस पर थूकने से कहीं अधिक करता है। संख्या बल, श्रेष्ठ बल, क्रूर पदार्थ से दबकर, वह अपनी आत्मा में एक अभिव्यक्ति पाता है: "घिनौना!" हम इसे दोहराते हैं— उस शब्द का प्रयोग करना, ऐसा करना, ऐसी अभिव्यक्ति का आविष्कार करना ही विजेता होना है!

उस अशुभ क्षण में, महान दिनों की आत्मा उस अज्ञात व्यक्ति पर उतर आई। कैम्ब्रोन ने वाटरलू के लिए शब्द गढ़ा, ठीक वैसे ही जैसे रूज ने "मार्सेलेज़" की रचना की, मानो ऊपर से किसी प्रेरणा के प्रभाव में। दिव्य

बवंडर से एक प्रकाश फूट पड़ा और उन लोगों को अपनी चपेट में ले लिया, वे कांप उठे, उनमें से एक ने सर्वोच्च गीत गाया और दूसरे ने भयानक चीख मारी।

कैम्ब्रोन का यह घोर तिरस्कार भरा प्रहार न केवल साम्राज्य के नाम पर यूरोप पर होता है—यह तो तुच्छ बात होगी—बल्कि क्रांति के नाम पर अतीत पर भी होता है। यह प्रहार सुनाई देता है, और कैम्ब्रोन को टाइटन्स की प्राचीन आत्मा से ओतप्रोत माना जाता है। मानो डेंटन बोल रहे हों! मानो क्लेबर दहाड़ रहे हों!

कैम्ब्रोन से वह संदेश मिलते ही, अंग्रेज़ों की आवाज़ ने जवाब दिया, "फायर!" तोपखाने धधक उठे, पहाड़ी कांप उठी, उन सभी पीतल के तोपों से आखिरी भयानक गोले बरसने लगे; उगते चाँद की रोशनी में धुंधला सा सफेद धुएँ का एक विशाल गुबार उठ खड़ा हुआ, और जब धुआँ छटा, तो वहाँ कुछ भी नहीं बचा था। वह दुर्जेय अवशेष नष्ट हो चुका था; रक्षक दल मर चुका था। किले की चारों दीवारें धंसी पड़ी थीं, और कहीं-कहीं शरीरों में हल्की सी भी हलचल मुश्किल से दिखाई दे रही थी; इस प्रकार रोमन सेनाओं से भी बड़ी फ्रांसीसी सेनाएँ मोंट-सेंट-जीन पर, बारिश और खून से सींची हुई धरती पर, उदास अनाज के बीच, उसी स्थान पर समाप्त हो गईं, जहाँ आजकल निवेल्स से डाक गाड़ी चलाने वाला जोसेफ सुबह चार बजे सीटी बजाते हुए और खुशी-खुशी अपने घोड़े को चाबुक मारते हुए गुजरता है।

XVI. Quot Libras in Duce?

वाटरलू का युद्ध एक रहस्य है। यह उन लोगों के लिए भी उतना ही अस्पष्ट है जिन्होंने इसे जीता और जिन्होंने इसे हारा। नेपोलियन के लिए यह एक दहशत थी; ब्लुचर को इसमें आग के सिवा कुछ नहीं दिखता; वेलिंगटन को इसके बारे में कुछ समझ नहीं आता। रिपोर्टों को देखिए। बुलेटिन उलझे हुए हैं, टिप्पणियाँ जटिल हैं। कुछ हकलाते हैं, कुछ तुतलाते हैं। जोमिनी वाटरलू के युद्ध को चार क्षणों में विभाजित करते हैं; मफलिंग इसे तीन बदलावों में बांटते हैं; केवल चर्रास, हालांकि कुछ बिंदुओं पर हमारी राय उनसे भिन्न है, ने अपनी अभिमानी दृष्टि से उस तबाही की विशिष्ट रूपरेखा को पकड़ लिया, जिसमें मानवीय प्रतिभा और दैवीय संयोग के बीच संघर्ष हुआ था। अन्य सभी इतिहासकार कुछ हद तक चकाचौंध से ग्रस्त हैं, और इस चकाचौंध की स्थिति में वे लड़खड़ाते हैं। यह बिजली की चमक का दिन था; वास्तव में, सैन्य राजशाही का पतन, जिसने राजाओं को घोर आश्चर्यचकित करते हुए, सभी राज्यों को अपने पीछे खींच लिया—शक्ति का पतन, युद्ध की पराजय।

इस घटना में, जो असाधारण आवश्यकता से प्रेरित थी, पुरुषों की भूमिका का कोई महत्व नहीं है।

अगर हम वेलिंगटन और ब्लुचर से वाटरलू की लड़ाई छीन लें, तो क्या इससे इंग्लैंड और जर्मनी किसी चीज़ से वंचित हो जाते हैं? नहीं। न तो वह गौरवशाली इंग्लैंड और न ही वह महान जर्मनी वाटरलू की समस्या से जुड़ते हैं। ईश्वर का धन्यवाद, राष्ट्र तलवार की दुखद लड़ाइयों से स्वतंत्र होकर महान होते हैं। न तो इंग्लैंड, न जर्मनी और न ही फ्रांस म्यान में सिमटे हैं। इस युग में जब वाटरलू केवल तलवारों की टक्कर बनकर रह गया है, ब्लुचर से ऊपर जर्मनी के पास शिलर हैं; वेलिंगटन से ऊपर इंग्लैंड के पास बायरन हैं। विचारों का एक विशाल उदय हमारी सदी की विशेषता है, और उस प्रकाश में इंग्लैंड और जर्मनी एक शानदार चमक बिखेरते हैं। वे इसलिए महान हैं क्योंकि वे सोचते हैं। सभ्यता में उनका योगदान उनके स्वभाव से आता है; यह उनके भीतर से उत्पन्न होता है, न कि किसी आकस्मिक घटना से। उन्नीसवीं सदी में उन्होंने जो उन्नति लाई है, उसका स्रोत वाटरलू नहीं है। केवल बर्बर

राष्ट्र ही विजय के बाद तीव्र विकास करते हैं। यह तूफ़ान से उफनती धाराओं का क्षणिक घमंड है। सभ्य लोग, विशेषकर हमारे समय में, किसी कप्तान के अच्छे या बुरे भाग्य से न तो ऊंचे उठते हैं और न ही नीचे गिरते हैं। मानव जाति में उनका विशिष्ट महत्व किसी युद्ध से कहीं अधिक है। उनका सम्मान, ईश्वर का धन्यवाद! उनकी गरिमा, उनकी बुद्धिमत्ता, उनकी प्रतिभा, वे संख्याएँ नहीं हैं जिन्हें वे जुआरी, नायक और विजेता युद्धों की लॉटरी में डाल सकते हैं। अक्सर एक युद्ध हार जाता है और प्रगति की जीत होती है। कम गौरव और अधिक स्वतंत्रता होती है। ढोल शांत रहता है; तर्क ही निर्णायक होता है। यह एक ऐसा खेल है जिसमें हारने वाला जीतता है। इसलिए, आइए हम वाटरलू के बारे में दोनों पक्षों से निष्पक्ष रूप से बात करें। आइए हम संयोग को उसका हक दें, और ईश्वर को उसका हक दें। वाटरलू क्या है? एक जीत? नहीं। लॉटरी में जीतने वाला अंक।

यूरोप द्वारा जीती गई क्विन (क्वाइन) का भुगतान फ्रांस द्वारा किया गया।

वहां शेर रखना उचित नहीं था।

इसके अलावा, वाटरलू इतिहास की सबसे विचित्र मुठभेड़ है। नेपोलियन और वेलिंगटन। वे शत्रु नहीं हैं; वे एक-दूसरे के विपरीत हैं। ईश्वर, जो विरोधाभासों का शौकीन है, ने इससे अधिक प्रभावशाली विरोधाभास, इससे अधिक असाधारण तुलना कभी नहीं की। एक ओर, सटीकता, दूरदर्शिता, ज्यामिति, विवेक, सुनिश्चित वापसी, आरक्षित संसाधनों का उपयोग, हठपूर्ण शीतलता, अविचलित विधि, रणनीति जो ज़मीन का लाभ उठाती है, रणनीति जो बटालियनों का संतुलन बनाए रखती है, नियमों के अनुसार किया गया नरसंहार, विनियमित युद्ध, सतर्क रहना, स्वेच्छा से कुछ भी संयोग पर न छोड़ना, प्राचीन शास्त्रीय साहस, पूर्ण नियमितता; दूसरी ओर, अंतर्ज्ञान, भविष्यवाणी, सैन्य विलक्षणता, अलौकिक प्रवृत्ति, एक प्रचंड दृष्टि, एक अवर्णनीय तत्व जो चील की तरह तानता है और बिजली की तरह प्रहार करता है, तिरस्कारपूर्ण आवेग में एक अद्भुत कला, एक गहन आत्मा के सभी रहस्य, नियति से जुड़े हुए; नदी, मैदान, जंगल, पहाड़ी, सब कुछ पुकारा गया, और एक तरह से आज्ञा मानने के लिए विवश किया गया; निरंकुश शासक युद्ध के मैदान पर भी अत्याचार करने लगा; एक तारे में आस्था और रणनीतिक विज्ञान का मिश्रण उसे ऊंचा तो उठा रहा था, लेकिन साथ ही विचलित भी कर रहा था। वेलिंगटन युद्ध के बादशाह थे; नेपोलियन उसके

माइकलएंजेलो थे; और इस अवसर पर प्रतिभा गणना के आगे पराजित हो गई। दोनों तरफ किसी न किसी का इंतज़ार था। सफलता सटीक गणना करने वाले को मिली।
नेपोलियन चिड़चिड़े व्यक्ति का इंतज़ार कर रहे थे; वह नहीं आए। वेलिंगटन को ब्लुचर की उम्मीद थी; वह आ गए।

वेलिंगटन की लड़ाई, बदला लेने वाले युद्ध का एक क्लासिक उदाहरण है। बोनापार्ट ने अपने उदय के समय इटली में उसका सामना किया था और उसे बुरी तरह हराया था। बूढ़ा उल्लू जवान गिद्ध के सामने भाग गया था। पुरानी रणनीति न केवल बिजली की तरह नष्ट हो गई थी, बल्कि अपमानित भी हुई थी। वह छब्बीसवाँ कोर्सिकन कौन था? उस प्रतिभाशाली अज्ञानी का क्या महत्व था, जिसके विरुद्ध सब कुछ था, उसके पक्ष में कुछ भी नहीं था, बिना रसद, बिना गोला- बारूद, बिना तोप, बिना जूतों के, लगभग बिना सेना के, मुट्ठी भर सैनिकों के साथ विशाल जनसमूह के विरुद्ध, उसने संयुक्त यूरोप पर आक्रमण किया और असंभव में भी विजय प्राप्त की? वह उग्र अपराधी कहाँ से आया था, जिसने लगभग बिना साँस लिए, और उन्हीं सैनिकों के साथ, जर्मनी के सम्राट की पाँचों सेनाओं को एक के बाद एक परास्त कर दिया, बोलियू को एल्विनज़ी पर, वर्मसर को बोलियू पर, मेलस को वर्मसर पर, मैक को मेलस पर पछाड़ दिया? युद्ध में यह नौसिखिया कौन था, जिसमें किसी ज्ञानी व्यक्ति जैसा दुस्साहस था? अकादमिक सैन्य स्कूल ने उसे बहिष्कृत कर दिया, और जैसे-जैसे उसका आधार कमजोर होता गया, पुराने सीज़रवाद का नए सीज़रवाद के प्रति, नियमित तलवार का धधकती तलवार के प्रति, और राजकोष का प्रतिभा के प्रति अटूट द्वेष पनपने लगा। 18 जून, 1815 को, उस द्वेष ने अंतिम शब्द कहा, और लोदी, मोंटेबेलो, मोंटेनोट, मंटुआ, अर्कोला के नीचे लिखा गया: वाटरलू। साधारण लोगों की जीत जो बहुमत को मीठी लगती है। नियति ने इस विडंबना को स्वीकार कर लिया। अपने पतन के समय, नेपोलियन ने वर्मसर, जूनियर को, फिर से अपने सामने पाया।

दरअसल, वर्मसर को पाने के लिए वेलिंगटन के बालों को सफेद करना ही काफी था।

वाटरलू एक प्रथम श्रेणी का युद्ध था, जिसे द्वितीय श्रेणी के एक कप्तान ने जीता था।

वाटरलू की लड़ाई में जिस बात की प्रशंसा की जानी चाहिए, वह है इंग्लैंड; अंग्रेजों का दृढ़ संकल्प, अंग्रेजों का हौसला, अंग्रेजों का रक्त;

इंग्लैंड की सबसे उत्कृष्ट बात, बिना उसे अपमानित किए, वह स्वयं थी। यह उसका कप्तान नहीं था; यह उसकी सेना थी।

वेलिंगटन, अजीब तरह से कृतघ्न होकर, लॉर्ड बाथर्स्ट को लिखे एक पत्र में घोषणा करता है कि उसकी सेना, यानी वह सेना जिसने 18 जून, 1815 को युद्ध लड़ा था, एक "घृणित सेना" थी। वाटरलू की खाइयों के नीचे दबी हड्डियों के उस उदास ढेर का इस बारे में क्या विचार होगा?

इंग्लैंड ने वेलिंगटन के मामले में बहुत ही कमतर आंका है। वेलिंगटन को इतना महान बताना इंग्लैंड को कमतर आंकना है। वेलिंगटन कई अन्य नायकों की तरह ही एक साधारण नायक थे। वे स्कॉटिश ग्रेज़, वे हॉर्स गार्ड्स, मैटलैंड और मिशेल की रेजिमेंटें, पैक और केम्प्ट की पैदल सेना, पोंसनबी और समरसेट की घुड़सवार सेना, ग्रेपशॉट की बौछार में पिब्रोच बजाते हुए वे हाइलैंडर्स, रायलैंड की बटालियनें, वे बिल्कुल नए रंगरूट, जिन्हें मुश्किल से बंदूक चलाना आता था, एस्लिंग और रिवोली की पुरानी सेनाओं के सामने डटे रहे—यही तो उनकी महानता थी। वेलिंगटन दृढ़ निश्चयी थे; इसी में उनका गुण निहित था, और हम इसे कम नहीं आंक रहे हैं: लेकिन उनके पैदल सैनिकों और घुड़सवारों में से सबसे कमज़ोर सैनिक भी उनके जितना ही दृढ़ होता। लौह सैनिक उतना ही मूल्यवान है जितना लौह ड्यूक। जहाँ तक हमारी बात है, हमारा सारा गौरव अंग्रेज़ सैनिक, अंग्रेज़ सेना और अंग्रेज़ जनता को समर्पित है। यदि कोई पुरस्कार है, तो वह इंग्लैंड को ही मिलना चाहिए। वाटरलू का स्तंभ अधिक न्यायसंगत होता, यदि उस पर किसी मनुष्य की आकृति के स्थान पर एक राष्ट्र की प्रतिमा स्थापित होती।

लेकिन यह महान इंग्लैंड हमारी कही बातों से नाराज़ होगा। अपने 1688 और हमारे 1789 के बाद भी, वह सामंती भ्रम में जी रहा है। वह वंशानुक्रम और पदक्रम में विश्वास रखता है। यह राष्ट्र, जो शक्ति और गौरव में किसी से कम नहीं है, स्वयं को एक राष्ट्र मानता है, न कि एक जनसमूह। और एक जनसमूह के रूप में, वह स्वेच्छा से स्वयं को अधीन कर लेता है और एक स्वामी को अपना मुखिया मान लेता है। एक श्रमिक के रूप में, वह स्वयं को तिरस्कृत होने देता है; एक सैनिक के रूप में, वह स्वयं को कोड़े खाने देता है।

यह याद रखना होगा कि इंकर्मन की लड़ाई में एक सार्जेंट, जिसने जाहिरा तौर पर सेना को बचाया था, का उल्लेख लॉर्ड पैगलन द्वारा नहीं किया जा सका,

क्योंकि अंग्रेजी सैन्य पदानुक्रम किसी भी अधिकारी से नीचे के स्तर के नायक का उल्लेख रिपोर्टों में करने की अनुमति नहीं देता है।

वाटरलू जैसी भीषण लड़ाई में, जिस चीज़ की हम सबसे ज़्यादा प्रशंसा करते हैं, वह है संयोग की अद्भुत चतुराई। रात की बारिश, हौगोमोंट की दीवार, ओहेन की खोखली सड़क, तोपों की आवाज़ अनसुनी कर देने वाला ग्रौची, नेपोलियन के मार्गदर्शक द्वारा उसे धोखा देना, बुलो के मार्गदर्शक द्वारा उसे ज्ञान देना—यह संपूर्ण प्रलयकारी घटना अद्भुत ढंग से घटित हुई।

कुल मिलाकर, सीधे शब्दों में कहें तो, वाटरलू की लड़ाई से कहीं अधिक एक नरसंहार थी।

सभी युद्धों में, वाटरलू एकमात्र ऐसा युद्ध है जिसमें इतने कम सैनिकों के लिए सबसे छोटा मोर्चा था। नेपोलियन के पास तीन-चौथाई लीग का क्षेत्र था; वेलिंगटन के पास आधा लीग का क्षेत्र था; दोनों तरफ बहत्तर हजार सैनिक थे। इसी सघनता के कारण भीषण नरसंहार हुआ।

निम्नलिखित गणना की गई है और निम्नलिखित अनुपात स्थापित किया गया है: सैनिकों की हानि: ऑस्टरलिट्ज़ में, फ्रांसीसी चौदह प्रतिशत; रूसी तीस प्रतिशत; ऑस्ट्रियाई चौवालीस प्रतिशत। वैग्राम में, फ्रांसीसी तेरह प्रतिशत; ऑस्ट्रियाई चौदह प्रतिशत। मोस्कोवा में, फ्रांसीसी सैंतीस प्रतिशत; रूसी चौवालीस प्रतिशत। बॉटज़ेन में, फ्रांसीसी तेरह प्रतिशत; रूसी और प्रशियाई चौदह प्रतिशत। वाटरलू में, फ्रांसीसी छप्पन प्रतिशत; मित्र राष्ट्र इकतीस प्रतिशत। वाटरलू में कुल हानि इकतालीस प्रतिशत; एक लाख चौवालीस हजार लड़ाके; साठ हजार मृत।

आज वाटरलू के मैदान में वह शांति है जो धरती की होती है, मनुष्य का स्थिर समर्थन है, और यह सभी मैदानों जैसा दिखता है।

इसके अलावा, रात में इससे एक प्रकार का काल्पनिक कोहरा उठता है; और यदि कोई यात्री वहाँ टहलता है, यदि वह सुनता है, यदि वह देखता है, यदि वह फिलिप्पी के घातक मैदानों में वर्जिल की तरह सपने देखता है, तो तबाही का भ्रम उस पर हावी हो जाता है। भयानक 18 जून फिर से जीवित हो उठता है; झूठी स्मारकीय पहाड़ी गायब हो जाती है, शेर हवा में विलीन हो जाता है, युद्धक्षेत्र अपनी वास्तविकता में लौट आता है, पैदल सेना की पंक्तियाँ मैदान पर लहराती हैं,

उग्र घोड़े क्षितिज को पार करते हैं; भयभीत स्वप्नद्रष्टा तलवारों की चमक, संगीनों की झिलमिलाहट, बमों की लपटें, गड़गड़ाहट का भयानक आदान-प्रदान देखता है; वह मानो किसी कब्र की गहराई में मृत्यु की घरघराहट, युद्ध के प्रेत की अस्पष्ट गड़गड़ाहट सुनता है; वे परछाइयाँ ग्रेनेडियर हैं, वे प्रकाश कवचधारी हैं; वह कंकाल नेपोलियन है, वह दूसरा कंकाल वेलिंगटन है; यह सब अब मौजूद नहीं है, और फिर भी यह आपस में टकराता है और अभी भी लड़ता है; और घाटियाँ बैंगनी रंग से रंगी हुई हैं, और पेड़ काँप रहे हैं, और बादलों और छायाओं में भी क्रोध व्याप्त है; वे सभी भयानक ऊँचाइयाँ, हौगोमोंट, मोंट-सेंट-जीन, फ्रिशेमोंट, पैपेलॉट, प्लांसेनोइट, एक दूसरे को नष्ट करने में लगे प्रेतों के बवंडर से अव्यवस्थित रूप से घिरी हुई प्रतीत होती हैं।

सत्रह. क्या वाटरलू को अच्छा माना जाना

चाहिए?

एक बहुत ही सम्मानित उदारवादी विचारधारा है जो वाटरलू से घृणा नहीं करती। हम उस विचारधारा से संबंधित नहीं हैं। हमारे लिए, वाटरलू स्वतंत्रता की एक स्तब्ध कर देने वाली घटना मात्र है। ऐसे अंडे से ऐसे बाज का निकलना निश्चित रूप से अप्रत्याशित है।

यदि कोई इस प्रश्न के चरम बिंदु पर स्वयं को स्थापित करे, तो वाटरलू जानबूझकर एक प्रति-क्रांतिकारी विजय थी। यह यूरोप बनाम फ्रांस था; यह सेंट पीटर्सबर्ग, बर्लिन और वियना बनाम पेरिस था; यह यथास्थिति बनाम पहल थी; यह 14 जुलाई, 1789 का आक्रमण था, जो 20 मार्च, 1815 तक चला; यह अदम्य फ्रांसीसी दंगों के विरोध में राजशाही द्वारा किए गए संघर्ष का परिणाम था। छब्बीस वर्षों से उग्र जनसमूह का अंतिम विनाश—यही सपना था। ब्रंसविक, नासाउ, रोमानोफ, होहेनज़ोलर्न, हैब्सबर्ग और बॉर्बोन वंशों की एकजुटता। वाटरलू पर दैवीय अधिकार का धब्बा लगा हुआ है। यह सच है कि साम्राज्य निरंकुश होने के कारण, परिस्थितियों की स्वाभाविक प्रतिक्रिया स्वरूप राज्य उदारवादी बनने के लिए विवश हुआ, और वाटरलू का अनचाहा परिणाम संवैधानिक व्यवस्था थी, जिस पर विजेताओं को गहरा खेद था। क्रांति को सचमुच जीता नहीं जा सकता, और यह ईश्वरीय विधान और पूर्णतः घातक है, इसलिए यह हमेशा नए सिरे से उभरती रहती है: वाटरलू से पहले, बोनापार्ट द्वारा पुराने सिंहासनों को उखाड़ फेंकने में; वाटरलू के बाद, लुई XVIII द्वारा चार्टर को मंजूरी देने और उसका पालन करने में। बोनापार्ट ने नेपल्स के सिंहासन पर एक पोस्टिलियन और स्वीडन के सिंहासन पर एक सार्जेंट को बिठाया, असमानता का उपयोग समानता को प्रदर्शित करने के लिए किया; लुई XVIII ने सेंट-ओएन में मानवाधिकारों की घोषणा पर हस्ताक्षर किए। यदि आप क्रांति को समझना चाहते हैं, तो इसे प्रगति कहें; और यदि आप प्रगति की प्रकृति को समझना चाहते हैं, तो इसे कल कहें। कल अपना काम अदम्य रूप से पूरा करता है, और यह आज भी इसे पूरा कर रहा है। यह हमेशा अपने लक्ष्य तक विचित्र तरीके से पहुँचता है। यह

वेलिंगटन का उपयोग फॉय को, जो केवल एक सैनिक था, एक वक्ता बनाने के लिए करता है। फॉय होउगोमोंट में गिरता है और ट्रिब्यून में फिर से उठता है। इस प्रकार प्रगति आगे बढ़ती है। उस कारीगर के लिए कोई भी उपकरण बुरा नहीं होता। यह विचलित नहीं होता, बल्कि अपने दिव्य कार्य में आल्प्स पर्वतमाला पर विजय प्राप्त कर चुके व्यक्ति और फादर एलिसी के बूढ़े, लड़खड़ाते बीमार व्यक्ति को भी समाहित कर लेता है। यह गठिया से पीड़ित व्यक्ति के साथ-साथ विजेता का भी उपयोग करता है; बाहरी विजेता का, भीतरी गठिया से पीड़ित व्यक्ति का। वाटरलू की लड़ाई ने तलवार के बल पर यूरोपीय सिंहासनों के विध्वंस को रोककर क्रांतिकारी कार्य को एक नई दिशा में आगे बढ़ाने के अलावा और कोई प्रभाव नहीं डाला। तलवारबाजों का काम समाप्त हो गया; अब विचारकों की बारी थी। जिस सदी को वाटरलू की लड़ाई ने रोकने का इरादा किया था, वह अपनी यात्रा जारी रख चुकी है। उस भयावह विजय को स्वतंत्रता ने पराजित कर दिया।

संक्षेप में, और निर्विवाद रूप से, वाटरलू में जिसने विजय प्राप्त की; जिसने वेलिंगटन के पीछे मुस्कुराया; जिसने उसे यूरोप के सभी मार्शलों के कर्मचारियों को दिलाया, जिसमें कहा जाता है कि फ्रांस के एक मार्शल का स्टाफ भी शामिल था; जिसने शेर की पहाड़ी बनाने के लिए हड्डियों से भरे ठेलों को खुशी-खुशी खिसकाया; जिसने उस चबूतरे पर विजयपूर्वक "18 जून, 1815" की तारीख अंकित की; जिसने ब्लुचर को प्रोत्साहित किया, जब उसने भागती हुई सेना को तलवार के घाट उतार दिया; जिसने मोंट-सेंट-जीन के पठार की ऊंचाइयों से फ्रांस पर अपने शिकार की तरह मंडराया, वह प्रति-क्रांति थी। यह वही प्रति-क्रांति थी जिसने उस कुख्यात शब्द "विच्छेदन" का उच्चारण किया। पेरिस पहुँचने पर, उसने पास ही में गड्ढा देखा; उसने उन राख को महसूस किया जिसने उसके पैरों को झुलसा दिया, और उसने अपना इरादा बदल दिया; वह एक चार्टर के लड़खड़ाते हुए रूप में लौट आई।

वाटरलू में हमें केवल वही देखना है जो वाटरलू में है। जानबूझकर ली गई स्वतंत्रता का कोई नामोनिशान नहीं है। प्रति-क्रांति अनजाने में उदारवादी थी, ठीक उसी प्रकार जैसे एक समान घटना के कारण नेपोलियन अनजाने में क्रांतिकारी था। 18 जून, 1815 को घुड़सवार रोबेस्पियर अपनी काठी से गिर गया।

XVIII. दैवीय अधिकार का पुनरुत्थान

तानाशाही का अंत। पूरी यूरोपीय व्यवस्था ध्वस्त हो गई।

साम्राज्य एक ऐसे अंधकार में डूब गया जो रोमन साम्राज्य के पतन के समय के अंधकार जैसा था। एक बार फिर हम उसी अथाह गहराई को देख रहे हैं, जैसे बर्बरों के दिनों में था; केवल 1815 की बर्बरता, जिसे प्रति-क्रांति के नाम से पुकारा जाना चाहिए, अधिक समय तक नहीं टिकी, शीघ्र ही हांफने लगी और रुक गई। साम्राज्य शोक में डूबा—आइए इस तथ्य को स्वीकार करें—और वीर आँखों से शोक मनाया गया। यदि गौरव तलवार को राजदंड में परिवर्तित करने में निहित है, तो साम्राज्य स्वयं गौरव था। इसने पृथ्वी पर अत्याचार का सारा प्रकाश फैला दिया—एक अंधकारमय प्रकाश। हम और कहेंगे; एक धुंधला प्रकाश। वास्तविक दिन के उजाले की तुलना में, यह रात है। रात का यह लुप्त होना ग्रहण का प्रभाव उत्पन्न करता है।

लुई XVIII ने पेरिस में पुनः प्रवेश किया। 8 जुलाई के नृत्य उत्सवों ने 20 मार्च के उत्साह को फीका कर दिया। कोर्सिकन, बेर्नीज़ के बिल्कुल विपरीत हो गए। ट्यूलरीज़ के गुंबद पर लगा झंडा सफेद था। निर्वासन का बोलबाला था। हार्टवेल की चीड़ की मेज लुई XIV के फूलों से सजे सिंहासन के सामने स्थापित हो गई। बोविंस और फोंटेनोय का उल्लेख ऐसे किया गया मानो वे बीते दिन घटित हुए हों, ऑस्टरलिट्ज़ अप्रचलित हो चुका था। वेदी और सिंहासन भव्यता से एक-दूसरे के साथ जुड़ गए। उन्नीसवीं शताब्दी में समाज की स्वस्थता के सबसे निर्विवाद रूपों में से एक फ्रांस और पूरे महाद्वीप में स्थापित हो गया। यूरोप ने सफेद कॉकेड को अपनाया। ट्रेस्टेलॉन का उत्सव मनाया गया। क्वाइ डी'ओर्से पर बैरक के सामने सूर्य का प्रतिनिधित्व करने वाली पत्थर की किरणों पर 'नॉन प्लुरिबस इम्पर' का चिन्ह पुनः प्रकट हुआ। जहां कभी शाही रक्षक दस्ता हुआ करता था, वहां अब एक लाल रंग का मकान था। आर्क डू कैरोसेल, जो दुर्भाग्यपूर्ण विजयों से लदा हुआ था, इन नई इमारतों के बीच अपनी जगह से बेमेल लग रहा था। मारेन्गो और अर्कोला से शायद थोड़ा शर्मिंदा होकर, उसने ड्यूक डी'एंगौलेम की मूर्ति के साथ अपनी इस विकट स्थिति से खुद को उबार लिया। मेडेलीन का कब्रिस्तान, जो 1793 में एक दयनीय

गरीब की कब्र थी, अब जैस्पर और संगमरमर से ढका हुआ था, क्योंकि लुई सोलहवें और मैरी एंटोनेट की हड्डियां उसी धूल में दबी हुई थीं।

विन्सेनेस की खाई में धरती से एक समाधि स्तंभ निकला, जो इस तथ्य की याद दिलाता था कि ड्यूक डी'एनघिएन की मृत्यु उसी महीने हुई थी जब नेपोलियन का राज्याभिषेक हुआ था। पोप पायस सप्तम, जिन्होंने उनकी मृत्यु के ठीक पहले राज्याभिषेक किया था, ने इस पतन पर भी उसी शांति से अपना आशीर्वाद दिया, जैसे उन्होंने उत्थान पर दिया था। शॉनब्रून में चार साल का एक छोटा सा बच्चा था, जिसे रोम का राजा कहना राजद्रोह माना जाता था। और ये सब घटित हुआ, और राजाओं ने अपने सिंहासन पुनः ग्रहण कर लिए, और यूरोप के स्वामी को पिंजरे में डाल दिया गया, और पुरानी व्यवस्था नई व्यवस्था बन गई, और पृथ्वी की सभी परछाइयाँ और सभी प्रकाश अपना स्थान बदल चुके थे, क्योंकि एक गर्मी के दिन दोपहर में, जंगल में एक चरवाहे ने एक प्रशियाई से कहा, "इस रास्ते जाओ, उस रास्ते नहीं!"

यह 1815 एक तरह का उदासी भरा अप्रैल था। प्राचीन अस्वस्थ और विषैली वास्तविकताओं को नए आवरण में लपेटा गया। एक झूठ ने 1789 से शादी कर ली; दैवीय अधिकार को एक चार्टर के नीचे छिपा दिया गया; काल्पनिक बातें संवैधानिक बन गईं; पूर्वाग्रहों, अंधविश्वासों और मानसिक संशय को, अनुच्छेद 14 को केंद्र में रखते हुए, उदारवाद के आवरण में लपेट दिया गया। यह सर्प के केंचुली बदलने जैसा था।

नेपोलियन ने मनुष्य को महान और छोटा दोनों बना दिया था। इस वैभवशाली शासन में, आदर्श को विचारधारा का विचित्र नाम मिल गया था! किसी महान व्यक्ति के लिए भविष्य का उपहास करना घोर नासमझी है। लेकिन जनता, जो तोपों का ईंधन होती है और तोपची से इतनी मोहित होती है, उसे अपनी निगाहों से खोज रही थी। वह कहाँ है? वह क्या कर रहा है? "नेपोलियन मर गया है," एक राहगीर ने मारेन्गो और वाटरलू के एक अनुभवी सैनिक से कहा। "वह मर गया!" सैनिक चिल्लाया; "तुम उसे नहीं जानते।" सत्ता से हटाए जाने के बाद भी कल्पना को इस व्यक्ति पर भरोसा नहीं था। वाटरलू के बाद यूरोप की गहराई में अंधेरा छा गया था। नेपोलियन के गायब होने से एक विशाल खालीपन लंबे समय तक बना रहा।

राजाओं ने स्वयं को इस शून्य में स्थापित किया। प्राचीन यूरोप ने इससे लाभ उठाकर सुधार किए। एक पवित्र गठबंधन था; सुंदर गठबंधन, वाटरलू के घातक युद्ध ने पहले ही यह बात स्पष्ट कर दी थी।

पुनर्निर्मित प्राचीन यूरोप की उपस्थिति और उसके सामने, एक नए फ्रांस की रूपरेखा तैयार की गई। सम्राट द्वारा सँवारी गई भविष्य की नींव रखी गई। उसके माथे पर स्वतंत्रता का तारा अंकित था। सभी युवा पीढ़ियों की चमकती निगाहें उस पर टिकी थीं। यह एक विलक्षण तथ्य था! लोग एक ही समय में भविष्य (स्वतंत्रता) और अतीत (नेपोलियन) दोनों से प्रेम करते थे। पराजय ने पराजित को और भी महान बना दिया था। पराजित बोनापार्ट, खड़े नेपोलियन से कहीं अधिक महान प्रतीत होता था। विजयी लोग भयभीत थे। इंग्लैंड ने हडसन लो को उसकी सुरक्षा में तैनात किया था, और फ्रांस ने मोंटचेनू को उस पर नज़र रखने के लिए। उसकी मुड़ी हुई भुजाएँ राजगद्दी के लिए बेचैनी का कारण बन गईं। सिकंदर ने उसे "मेरी नींद हराम" कहा। यह भय उसके भीतर समाहित क्रांति की तीव्रता का परिणाम था। यही बोनापार्टवादी उदारवाद की व्याख्या और औचित्य साबित करता है। इस प्रेत ने पुरानी दुनिया को कंपकंपा दिया। राजा शासन करते रहे, लेकिन सेंट हेलेना की चट्टान क्षितिज पर मंडरा रही थी और वे सहज नहीं थे।

जब नेपोलियन लॉन्गवुड में मृत्यु-युद्ध से गुज़र रहा था, तब वाटरलू के मैदान में शहीद हुए साठ हज़ार सैनिक चुपचाप सड़ रहे थे, और उनकी शांति का कुछ अंश दुनिया भर में फैल गया था। वियना कांग्रेस ने 1815 में संधियाँ कीं, और यूरोप ने इसे पुनर्स्थापना कहा।

वाटरलू की लड़ाई यही थी।

लेकिन उस असीम सत्ता के लिए क्या मायने रखता है? वह सारा तूफान, वह सारा बादल, वह युद्ध, फिर वह शांति? उस विशाल नेत्र के प्रकाश को उस सारे अंधकार ने एक पल के लिए भी विचलित नहीं किया, जिसके सामने घास के एक तिनके से दूसरे तिनके पर फुदकने वाला कीड़ा, नोट्रे डेम की मीनारों पर एक घंटाघर से दूसरे घंटाघर तक उड़ने वाले चील के बराबर है।

XIX. रात्रि युद्धक्षेत्र

आइए उस घातक युद्धक्षेत्र की ओर लौटें—इस पुस्तक के लिए यह एक आवश्यकता है।

18 जून को पूर्णिमा थी। उसकी रोशनी ने ब्लुचर के भयंकर पीछा करने में मदद की, भगोड़ों के सुराग उजागर किए, उस विनाशकारी भीड़ को उत्सुक प्रशियाई घुड़सवार सेना के हवाले कर दिया और नरसंहार में सहायक साबित हुई। ऐसी त्रासदी के दौरान रात के ऐसे दुखद संयोग कभी-कभी देखने को मिलते हैं।

अंतिम तोप का गोला दागे जाने के बाद, मोंट-सेंट-जीन का मैदान वीरान हो गया।

अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों के शिविर पर कब्जा कर लिया; पराजितों के बिस्तरों पर सोना विजय का सामान्य प्रतीक है। उन्होंने रोसॉम के पार अपना पड़ाव स्थापित किया। पीछे हट रही सेना पर टूट पड़े प्रशियाई सैनिकों ने आगे बढ़कर हमला किया। वेलिंगटन लॉर्ड बाथर्स्ट को अपनी रिपोर्ट तैयार करने के लिए वाटरलू गाँव गए।

यदि कभी यह कहावत सही साबित हुई हो कि "जो तुम नहीं हो, वह तुम हो", तो निश्चित रूप से वाटरलू गाँव पर ही लागू होती है। वाटरलू ने युद्ध में कोई हिस्सा नहीं लिया और वह युद्ध स्थल से आधा मील दूर स्थित था। मोंट-सेंट-जीन पर तोपों से हमला किया गया, होगोमोंट को जला दिया गया, ला हाई-सेंटे पर आक्रमण करके कब्जा कर लिया गया, पैपेलॉट को जला दिया गया, प्लांसेनोइट को जला दिया गया, ला बेले-एलायंस ने दो विजेताओं के आलिंगन को देखा; ये नाम शायद ही किसी को ज्ञात हों, और वाटरलू, जिसने युद्ध में भाग नहीं लिया, सारा श्रेय भोग लेता है।

हम युद्ध की चापलूसी करने वालों में से नहीं हैं; जब अवसर आता है, तो हम युद्ध की सच्चाई बयां करते हैं। युद्ध में कुछ भयावह सुंदरताएं भी हैं जिन्हें हमने छिपाया नहीं है; हम यह भी स्वीकार करते हैं कि इसमें कुछ घिनौने पहलू भी हैं। इनमें से सबसे चौंकाने वाला है विजय के बाद मृतकों के शवों से तुरंत कपड़े उतार देना। युद्ध के बाद की सुबह हमेशा नग्न शवों पर ही निकलती है।

ऐसा कौन करता है? कौन इस विजय को कलंकित करता है? वह घिनौना, गुप्त हाथ कौन है जो जीत की जेब में हाथ डालता है? वे कौन से जेबकतरे हैं जो यश की आड़ में अपना धंधा चलाते हैं? कुछ दार्शनिक—जिनमें वोल्टेयर भी शामिल हैं—कहते हैं कि ये वही लोग हैं जिन्होंने यश अर्जित किया है। वे कहते हैं कि ये वही लोग हैं; कोई राहत दल नहीं है; जो खड़े हैं वे ही धरती पर गिरे लोगों को लूटते हैं। दिन का नायक रात का पिशाच होता है। आखिरकार, किसी शव को थोड़ा- बहुत लूटने का अधिकार तो अवश्य ही होता है, जब वह स्वयं उस शव का निर्माता हो। जहाँ तक हमारी बात है, हम ऐसा नहीं सोचते; हमें यह असंभव लगता है कि वही हाथ किसी मृत व्यक्ति से जीत की माला उतारे और उसके जूते चुराए।

एक बात तो निश्चित है कि आम तौर पर विजेताओं के पीछे चोर ही आते हैं। लेकिन आइए सैनिक, विशेषकर समकालीन सैनिक, को इस चर्चा से बाहर रखें।

हर सेना का एक पिछला दस्ता होता है, और उसी को दोषी ठहराया जाना चाहिए। चमगादड़ जैसे दिखने वाले जीव, आधे लुटेरे और चापलूस; युद्ध की धुंध में पैदा होने वाले हर तरह के शाम के समय के गुंडे; वर्दीधारी, जो लड़ाई में हिस्सा नहीं लेते; बीमार होने का बहाना करने वाले; भयानक लंगड़े; घुसपैठिए व्यापारी, छोटी गाड़ियों में सरपट दौड़ते हुए, कभी-कभी अपनी पत्नियों के साथ, और चोरी की चीजें जिन्हें वे फिर बेचते हैं; भिखारी जो अधिकारियों को मार्गदर्शक के रूप में खुद को पेश करते हैं; सैनिकों के नौकर; लुटेरे; बीते दिनों में मार्च करती सेनाएँ—हम वर्तमान की बात नहीं कर रहे हैं—इन सभी को अपने पीछे घसीटती थीं, इसलिए विशेष भाषा में उन्हें "पिछड़े" कहा जाता है। कोई सेना, कोई राष्ट्र, इन प्राणियों के लिए जिम्मेदार नहीं था; वे इतालवी बोलते थे और जर्मनों के पीछे चलते थे, फिर फ्रांसीसी बोलते थे और अंग्रेजों के पीछे चलते थे। इन्हीं दुष्टों में से एक, एक स्पेनिश भगोड़े, जो फ्रांसीसी बोलता था, के हाथों मार्क्विस ऑफ फरवाक्स, पिकार्ड की भाषा में बहककर और उसे अपना ही आदमी समझकर, सेरिसोल्स की विजय के बाद वाली रात को युद्ध के मैदान में ही विश्वासघात से मारा गया और उसका सारा सामान लूट लिया गया। इस लूटपाट से ही इस बदमाश का जन्म हुआ। घृणित कहावत, "दुश्मन पर निर्भर रहो!" ने इस कुष्ठ रोग को जन्म दिया, जिसे केवल कठोर अनुशासन ही ठीक कर सकता था। कुछ प्रतिष्ठाएँ भ्रामक होती हैं; यह हमेशा पता नहीं चलता कि अन्य क्षेत्रों में महान रहे कुछ सेनापति इतने लोकप्रिय क्यों रहे।

ट्यूरेन को उसके सैनिक पूजते थे क्योंकि वह लूटपाट को सहन करता था; बुराई को अनुमति देना अच्छाई का ही एक हिस्सा है। ट्यूरेन इतना अच्छा था कि उसने पैलेटिनेट को आग और खून के हवाले कर दिया। सेना के साथ चलने वाले लुटेरों की संख्या कम या ज्यादा होती थी, यह इस बात पर निर्भर करता था कि सेनापति कितना कठोर है। होशे और मार्सेउ के पास कोई भगोड़े नहीं थे; वेलिंगटन के पास ऐसे कुछ ही लोग थे, और हम उनका जिक्र करके उनके साथ न्याय कर रहे हैं।

फिर भी, 18 से 19 जून की रात को मृतकों के शव लूट लिए गए। वेलिंगटन सख्त थे; उन्होंने आदेश दिया कि जो भी इस कृत्य में पकड़ा जाए उसे गोली मार दी जाए; लेकिन लूटपाट की प्रवृत्ति बहुत जिद्दी होती है। लुटेरे युद्धक्षेत्र के एक कोने में चोरी कर रहे थे जबकि दूसरे कोने में अन्य लोगों को गोली मारी जा रही थी।

इस मैदान के ऊपर चंद्रमा का रंग अशुभ लग रहा था।

आधी रात के करीब, एक आदमी ओहेन की खोखली सड़क की ओर मंडरा रहा था, या यूँ कहें कि चढ़ रहा था। देखने में वह उन्हीं में से एक था जिनका हमने अभी वर्णन किया है—न अंग्रेज, न फ्रांसीसी, न किसान, न सैनिक, बल्कि एक ऐसा प्रेत जो लाशों की गंध से आकर्षित होकर वाटरलू को लूटने आया था। उसने एक ऐसा लबादा पहना था जो किसी बड़े कोट जैसा था; वह बेचैन और दुस्साहसी था; वह आगे बढ़ता और पीछे देखता रहता। यह आदमी कौन था? शायद रात उसे दिन से ज़्यादा जानती थी। उसके पास कोई थैला नहीं था, लेकिन ज़ाहिर है कि उसके कोट के नीचे बड़ी-बड़ी जेबें थीं। वह रुकता, अपने आस-पास के मैदान को ऐसे देखता जैसे कोई उसे देख रहा हो, अचानक झुकता, ज़मीन पर पड़ी किसी शांत और स्थिर चीज़ को हिलाता, फिर उठता और भाग जाता। उसकी सरकती चाल, उसके हाव-भाव, उसके रहस्यमय और तेज़ इशारे, उसे उन गोधूलि के लार्वा जैसा बनाते थे जो खंडहरों में भटकते हैं, और जिन्हें प्राचीन नॉर्मन किंवदंतियाँ 'एलर्स' कहती हैं।

कुछ रात्रिचर पक्षी दलदलों के बीच इस प्रकार की आकृतियाँ बनाते हैं।

घने कोहरे को भेदने में सक्षम एक नजर दूर से एक छोटी सी मालवाहक गाड़ी को देखती, जिस पर बुनी हुई बेंत की छत थी। उसमें एक भूखा-प्यासा घोड़ा जुता हुआ था, जो लगाम के पास की घास चर रहा था। गाड़ी निवेल्स जाने वाले राजमार्ग से सटी एक झोपड़ी के पीछे, मोंट-सेंट-जीन से ब्रेन ल'एलेउड जाने

वाली सड़क के मोड़ पर रुकी थी; और गाड़ी में एक महिला बक्सों और पैकेजों पर बैठी थी। शायद उस गाड़ी और उस संदिग्ध व्यक्ति के बीच कोई संबंध था।

अंधेरा शांत था। आसमान में एक भी बादल नहीं था। धरती लाल हो या न हो, क्या फर्क पड़ता है! चाँद तो सफेद ही रहता है; ये आसमान की उदासीनताएँ हैं। खेतों में, छर्रों से टूटी हुई पेड़ों की डालियाँ, जो गिरी नहीं थीं, अपनी छाल के सहारे रात की हल्की हवा में धीरे-धीरे हिल रही थीं। एक साँस, मानो साँस लेने जैसी, झाड़ियों को हिला रही थी। घास में ऐसी सिहरन दौड़ रही थी मानो आत्माओं के जाने का आभास हो रहा हो।

दूर से गश्ती दल के आने-जाने और अंग्रेजी शिविर के सामान्य चक्करों की आवाजें सुनाई दे रही थीं।

हौगोमोंट और ला हाई-सैंटे में आग जलती रही, पश्चिम में एक और पूर्व में दूसरी, दो विशाल ज्वालाओं का रूप धारण किए हुए, जो अंग्रेजों की शिविर की आग के घेरे से जुड़ गईं, मानो माणिक की माला हो जिसके सिरों पर दो माणिक हों, क्योंकि वे क्षितिज के साथ पहाड़ियों पर एक विशाल अर्धवृत्त में फैली हुई थीं।

हमने ओहेन की सड़क पर हुई त्रासदी का वर्णन किया है। यह सोचकर ही हृदय भयभीत हो जाता है कि इतने सारे बहादुर पुरुषों की मृत्यु कितनी दर्दनाक रही होगी।

यदि कुछ भयानक है, यदि कोई ऐसी वास्तविकता है जो सपनों से परे है, तो वह यह है: जीना, सूर्य को देखना; पौरुष शक्ति से परिपूर्ण होना; स्वास्थ्य और आनंद का अनुभव करना; खुलकर हंसना; अपने सामने चमकती हुई महिमा की ओर दौड़ना; अपने हृदय में सांस लेते फेफड़ों, धड़कते हृदय और तर्कशील इच्छाशक्ति को महसूस करना; बोलना, सोचना, आशा करना, प्रेम करना; माँ, पत्नी और बच्चे होना; प्रकाश का अनुभव करना—और अचानक, एक चीख के क्षण में, एक मिनट से भी कम समय में, एक अथाह खाई में डूब जाना; गिरना, लुढ़कना, कुचल जाना, कुचला जाना; गेहूँ की बालियाँ, फूल, पत्ते, शाखाएँ देखना; किसी भी चीज़ को पकड़ने में असमर्थ होना; अपनी तलवार को बेकार महसूस करना, पुरुषों को अपने नीचे, घोड़ों को अपने ऊपर महसूस करना; व्यर्थ संघर्ष करना, क्योंकि अंधेरे में किसी लात से हड्डियाँ टूट गई हों; एक ऐसी एड़ी का प्रहार महसूस

करना जिससे आँखें अपनी जगह से बाहर निकल आएं। क्रोध में घोड़ों के खुरों को दांतों से दबाना; दबाना, चिल्लाना, तड़पना; नीचे गिर जाना, और खुद से कहना, "लेकिन अभी कुछ ही देर पहले मैं एक जीवित इंसान था!"

वहाँ, जहाँ उस भयावह आपदा ने अपनी अंतिम साँस ली थी, अब सन्नाटा पसरा था। संकरी सड़क के किनारे घोड़ों और सवारों से इस तरह ढके हुए थे मानो उन्हें अलग करना असंभव हो। भयानक अव्यवस्था! अब वहाँ कोई ढलान नहीं थी, क्योंकि शवों ने सड़क को मैदान के बराबर कर दिया था और वह जौ से भरे गट्ठे की तरह ऊपर तक पहुँच गई थी। ऊपरी हिस्से में लाशों का ढेर, निचले हिस्से में खून की नदी—18 जून, 1815 की शाम को सड़क का यही हाल था। खून निवेल्स राजमार्ग तक बह गया था और वहाँ पेड़ों की बाड़ के सामने एक बड़े तालाब में जमा हो गया था, जो आज भी उस जगह को दर्शाता है।

यह याद रखना चाहिए कि जेनेप्पे सड़क की दिशा में, ठीक विपरीत दिशा में ही घुड़सवारों का विनाश हुआ था। शवों की परत की मोटाई खोखली सड़क की गहराई के अनुपात में थी। मध्य की ओर, जहाँ सड़क समतल हो जाती थी और जहाँ से डेलोर्ट की टुकड़ी गुज़री थी, वहाँ शवों की परत पतली थी।

जिस रात्रिचर तांगचालक को हमने अभी पाठक को दिखाया है, वह उसी दिशा में जा रहा था। वह उस विशाल मकबरे की खोज कर रहा था। उसने चारों ओर नज़र डाली। वह मृतकों के बीच से एक भयावह दृश्य को देखते हुए गुजरा। उसके पैर खून से सने हुए थे।

वह अचानक रुक गया।

उसके ठीक आगे, संकरी सड़क पर, जहाँ मृतकों का ढेर समाप्त होता था, वहाँ से कुछ कदम की दूरी पर, चंद्रमा की रोशनी से जगमगाता एक खुला हाथ, उन लाशों के ढेर के नीचे से निकला हुआ था। उस हाथ की उंगली में कुछ चमकता हुआ था, जो सोने की अंगूठी थी।

वह आदमी झुका, कुछ देर तक उसी मुद्रा में बैठा रहा, और जब वह उठा तो उसके हाथ में अंगूठी नहीं थी।

वह ठीक से उठा नहीं; वह झुकी हुई और भयभीत मुद्रा में ही रहा, उसकी पीठ मृतकों के ढेर की ओर थी, वह घुटनों के बल क्षितिज को देख रहा था, उसके शरीर का पूरा ऊपरी हिस्सा उसकी दो तर्जनी उंगलियों पर टिका था, जो जमीन पर टिकी

थीं, और उसका सिर खोखली सड़क के किनारे से झाँक रहा था। सियार के चारों पंजे कुछ खास क्रियाओं के लिए उपयुक्त होते हैं।

फिर निर्णय लेकर वह उठ खड़ा हुआ।

उसी क्षण, वह बुरी तरह चौंक गया। उसे महसूस हुआ कि किसी ने उसे पीछे से पकड़ लिया है।

वह घूम गया; यह वही खुला हाथ था जो बंद हो गया था और उसने उसके कोट के निचले हिस्से को पकड़ लिया था।

एक ईमानदार आदमी तो भयभीत हो जाता; लेकिन यह आदमी तो खिलखिलाकर हंस पड़ा।

“आइए,” उसने कहा, “यह तो बस एक लाश है। मुझे पुलिसवाले की बजाय जासूस ज्यादा पसंद है।”

लेकिन हाथ कमजोर पड़ गया और उसने उसे छोड़ दिया। कब्र में प्रयास जल्दी ही समाप्त हो जाता है।

“अच्छा, तो क्या वो मरा हुआ आदमी ज़िंदा है? चलो देखते हैं।” उस घुड़दौड़ करने वाले ने कहा।

वह फिर झुका, ढेर में टटोला, रास्ते में आने वाली हर चीज़ को हटाया, हाथ पकड़ा, बांह थामी, सिर छुड़ाया, शरीर को बाहर निकाला, और कुछ ही क्षणों में वह उस बेजान, या कम से कम बेहोश, आदमी को सुनसान सड़क के अंधेरे में घसीट रहा था। वह एक कवचधारी, एक अधिकारी, और काफी ऊंचे पद का अधिकारी था; कवच के नीचे से एक बड़ा सोने का एपॉलेट झाँक रहा था; इस अधिकारी के पास अब हेलमेट नहीं था। तलवार के एक भयंकर घाव ने उसके चेहरे पर निशान छोड़ दिए थे, जहाँ खून के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

हालांकि, उसके शरीर में कोई टूटी हुई हड्डी नहीं दिख रही थी, और संयोगवश (यदि यह शब्द यहाँ उचित हो), मृतकों को उसके ऊपर इस प्रकार रखा गया था कि वह कुचले जाने से बच गया। उसकी आँखें अभी भी बंद थीं।

उन्होंने अपने कवच पर लीजन ऑफ ऑनर का चांदी का क्रॉस धारण किया हुआ था।

उस लुटेरे ने उस क्रॉस को फाड़ दिया, जो उसके बड़े कोट के नीचे छिपी हुई खांचों में से एक में गायब हो गया।

फिर उसने अधिकारी की जेब में हाथ डाला, उसमें एक घड़ी मिली और उसे अपने कब्जे में ले लिया। इसके बाद उसने उसकी जैकेट की तलाशी ली, उसमें एक पर्स मिला और उसे अपनी जेब में रख लिया।
जब वह इस मरणासन्न व्यक्ति को सहायता प्रदान करने के इस चरण तक पहुंचा, तो अधिकारी ने अपनी आंखें खोलीं।
“धन्यवाद,” उसने कमजोर आवाज में कहा।
उसे नियंत्रित करने वाले व्यक्ति की गतिविधियों की अचानकता, रात की ताजगी और वह हवा जिसमें वह स्वतंत्र रूप से सांस ले सकता था, ने उसे उसकी सुस्ती से जगा दिया था।
उस संदिग्ध ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने अपना सिर उठाया। मैदान में कदमों की आहट सुनाई दी; संभवतः कोई गश्ती दल आ रहा था।
अधिकारी ने धीमी आवाज़ में कहा, क्योंकि उसकी आवाज़ में अभी भी मृत्यु की पीड़ा झलक रही थी:
“युद्ध किसने जीता?”
"अंग्रेज़," घुसपैठिए ने उत्तर दिया।
अधिकारी ने आगे कहा:—
“मेरी जेबों में देखो; तुम्हें एक घड़ी और एक पर्स मिलेगा। इन्हें ले लो।” यह पहले ही हो चुका था।
घुसपैठिए ने अपेक्षित छलावा किया और कहा:—
"यहां कुछ भी नहीं है।"
“मुझे लूट लिया गया है,” अधिकारी ने कहा; “मुझे इसका खेद है। आपको उन्हें अपने पास रखना चाहिए था।”
गश्ती दल के कदमों की आवाज धीरे-धीरे और स्पष्ट होती गई।
"कोई आ रहा है," उस संदिग्ध व्यक्ति ने जाने की मुद्रा में कहा। अधिकारी ने कमजोर ढंग से अपना हाथ उठाया और उसे हिरासत में ले लिया।
“आपने मेरी जान बचाई। आप कौन हैं?”

उस घुसपैठिए ने शीघ्रता से और धीमी आवाज़ में उत्तर दिया:—
“तुम्हारी तरह मैं भी फ्रांसीसी सेना में था। मुझे तुम्हें छोड़कर जाना होगा। अगर वे मुझे पकड़ लेते, तो वे मुझे गोली मार देते। मैंने तुम्हारी जान बचाई है। अब तुम खुद इस मुसीबत से निकल जाओ।”
आपका पद क्या है?
“सार्जेंट।”
"आपका क्या नाम है?"
“थेनार्डियर।”
“मैं वह नाम नहीं भूलूंगा,” अधिकारी ने कहा; “और क्या आप मेरा नाम याद रख सकते हैं? मेरा नाम पोंटमर्सी है।”

भाग **II.** जहाज ओरियन

I. संख्या 24,601 बदलकर संख्या 9,430 हो जाती है

जीन वालजेन को दोबारा पकड़ लिया गया था।

यदि हम दुखद विवरणों को संक्षेप में छोड़ दें तो पाठक हमारे प्रति आभारी होंगे। हम केवल उन दो अनुच्छेदों को ही उद्धृत करेंगे जो उस दिन के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए थे, जो M⸺ sur M⸺ में घटी आश्चर्यजनक घटनाओं के कुछ महीनों बाद प्रकाशित हुए थे।

ये लेख संक्षिप्त रूप में हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि उस समय गजट डेस ट्रिब्यूनॉक्स का अस्तित्व नहीं था।

हम पहला दस्तावेज़ ड्रेपॉ ब्लैंक से लेते हैं। इस पर 25 जुलाई, 1823 की तारीख अंकित है।

पास डे कैलाइस के एक इलाके में हाल ही में एक असाधारण घटना घटी है। एम. मेडेलीन नाम के एक व्यक्ति, जो उस इलाके में अजनबी थे, ने कुछ साल पहले नई तकनीकों की बदौलत एक प्राचीन स्थानीय उद्योग, जेट और काले कांच के आभूषणों के निर्माण को पुनर्जीवित किया था। उन्होंने इस व्यवसाय में खूब धन कमाया था, और हम यह स्वीकार करते हैं कि उस इलाके को भी खूब फायदा हुआ था। उनकी सेवाओं के सम्मान में उन्हें महापौर नियुक्त किया गया था। पुलिस ने पता लगाया कि एम. मेडेलीन कोई और नहीं बल्कि एक पूर्व अपराधी थे, जिन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया था। उन्हें 1796 में चोरी के आरोप में दोषी ठहराया गया था और उनका नाम जीन वालजेन था। जीन वालजेन को दोबारा जेल भेज दिया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि गिरफ्तारी से पहले वह एम. लाफिट के हाथों से पांच लाख से अधिक की रकम निकालने में सफल रहे थे, जो उन्होंने जेल में जमा कर रखी थी और जिसे उन्होंने अपने व्यवसाय में पूरी तरह से वैध तरीकों से अर्जित किया था। टूलॉन की जेल में वापस लौटने के बाद से कोई भी यह पता नहीं लगा पाया है कि जीन वालजेन ने इस पैसे को कहाँ छिपाया है।

दूसरा लेख, जिसमें थोड़ा और विस्तार से बताया गया है, उसी तिथि के जर्नल डे पेरिस से लिया गया एक अंश है।

जीन वालजेन नाम का एक पूर्व कैदी, जिसे रिहा कर दिया गया था, हाल ही में वार की अदालत के समक्ष पेश हुआ है, और उसकी परिस्थितियाँ ध्यान आकर्षित करने वाली हैं। यह बदमाश पुलिस की निगरानी से बच निकलने में कामयाब रहा, उसने अपना नाम बदल लिया और हमारे उत्तरी छोटे कस्बों में से एक का मेयर नियुक्त करवा लिया; इस कस्बे में उसने अच्छा-खासा व्यापार स्थापित कर लिया था। लोक अभियोजक की अथक लगन के कारण अंततः उसका भंडाफोड़ हुआ और उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उसकी रखैल उसी कस्बे की एक महिला थी, जिसकी गिरफ्तारी के समय सदमे से मृत्यु हो गई। इस दुष्ट, जो असाधारण शक्ति से संपन्न है, ने भागने का रास्ता खोज लिया; लेकिन भागने के तीन-चार दिन बाद पुलिस ने उसे एक बार फिर पेरिस में ही पकड़ लिया, ठीक उसी समय जब वह राजधानी और मोंटफर्मेइल (सीन-एट-ओइस) गाँव के बीच चलने वाली छोटी गाड़ियों में से एक में चढ़ रहा था। कहा जाता है कि उसने तीन-चार दिनों की इस छूट का फायदा उठाकर हमारे एक प्रमुख बैंकर के पास जमा की गई एक बड़ी रकम निकाल ली। इस रकम का अनुमान छह-सात लाख फ्रैंक लगाया गया है। अगर अभियोग पर भरोसा किया जाए, तो उसने इसे किसी ऐसी जगह छिपा दिया है जिसके बारे में सिर्फ उसे ही पता है, और इसे बरामद करना संभव नहीं हो पाया है। खैर, जीन वालजेन को अभी हाल ही में वार विभाग की अदालत में पेश किया गया है, जिस पर लगभग आठ साल पहले एक ईमानदार बच्चे के साथ हिंसक डकैती का आरोप है, जैसा कि फर्नी के कुलपति ने अमर कविता में कहा है,

“…हर साल सवॉय से आते हैं, और जो कोमल हाथों से उन लंबी नहरों को साफ करते हैं जो कालिख से भरी हुई हैं।”

इस डाकू ने अपना बचाव करने से इनकार कर दिया। लोक अभियोजक के कुशल और वाक्पटु प्रतिनिधि ने यह सिद्ध कर दिया कि चोरी अन्य लोगों की मिलीभगत से की गई थी, और जीन वालजेन दक्षिण में लुटेरों के एक गिरोह का सदस्य था। जीन वालजेन को दोषी ठहराया गया और परिणामस्वरूप उसे मृत्युदंड दिया गया। इस अपराधी ने अपील करने से इनकार कर दिया। राजा ने अपनी असीम दया दिखाते हुए उसकी सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया। जीन वालजेन को तुरंत टूलॉन की जेल में ले जाया गया।

*****

पाठक यह नहीं भूले हैं कि जीन वालजेन एम• सुर एम• में धार्मिक वस्त्र धारण करते थे। कुछ समाचार पत्रों, जिनमें कॉन्स्टिट्यूशनल भी शामिल है, ने इस सजा में कमी को पुरोहित वर्ग की जीत के रूप में प्रस्तुत किया।

जीन वालजेन ने जहाज़ों में अपना नंबर बदल लिया। उन्हें 9,430 कहा जाने लगा।

हालांकि, और हम इस बात का तुरंत उल्लेख करेंगे ताकि हमें इस विषय पर दोबारा चर्चा न करनी पड़े, एम⸺ सुर एम⸺ की समृद्धि एम. मेडेलीन के साथ ही समाप्त हो गई; बुखार और झिझक भरी रात में उन्होंने जो कुछ भी भविष्यवाणी की थी, वह सब सच हो गया; उनके बिना, वास्तव में "एक आत्मा का अभाव" था। इस पतन के बाद, एम⸺ सुर एम⸺ में महान हस्तियों का वह अहंकारी विभाजन हुआ, फलती-फूलती चीजों का वह घातक विखंडन हुआ जो मानव समाज में हर दिन, अस्पष्ट रूप से, घटित होता है, और जिसे इतिहास ने केवल एक बार दर्ज किया है, क्योंकि यह सिकंदर की मृत्यु के बाद हुआ था। लेफ्टिनेंट राजा बन गए; अधीक्षकों ने स्वयं को ही निर्माता बना लिया। ईर्ष्यापूर्ण प्रतिद्वंद्विताएँ उत्पन्न हुईं। एम. मेडेलीन की विशाल कार्यशालाएँ बंद हो गईं; उनकी इमारतें खंडहर में तब्दील हो गईं, उनके कारीगर तितर-बितर हो गए। उनमें से कुछ ने देश छोड़ दिया, अन्य ने व्यापार त्याग दिया। उसके बाद, सब कुछ बड़े पैमाने के बजाय छोटे पैमाने पर किया जाने लगा; जनहित की बजाय धन-दौलत के लिए काम किया जाने लगा। अब कोई केंद्र नहीं रह गया था; हर जगह प्रतिस्पर्धा और द्वेष का बोलबाला था। श्री मेडेलीन का ही शासन था और वे ही सब कुछ निर्देशित करते थे। उनके पतन के तुरंत बाद, हर कोई अपने-अपने हाथों में खींचने लगा; संगठन की भावना की जगह संघर्ष की भावना ने ले ली, सौहार्द की जगह कड़वाहट ने, संस्थापक की सबके प्रति दयालुता की जगह एक-दूसरे से घृणा ने; श्री मेडेलीन द्वारा स्थापित सूत्र उलझ गए और टूट गए, पद्धतियाँ दूषित हो गईं, उत्पाद घटिया हो गए, विश्वास टूट गया; ऑर्डर की कमी के कारण बाज़ार सिकुड़ गया; वेतन कम कर दिए गए, कार्यशालाएँ ठप हो गईं, दिवालियापन छा गया। और फिर गरीबों के लिए कुछ भी नहीं बचा। सब कुछ गायब हो गया।

राज्य को स्वयं यह आभास हुआ कि कहीं न कहीं किसी का हनन हुआ है। जीन वालजेन और एम. मेडेलीन की पहचान स्थापित करने वाले न्यायालय के फैसले के चार साल

से भी कम समय में, गैलीज़ के लाभ के लिए, एम• सुर एम• के क्षेत्र में कर संग्रह की लागत दोगुनी हो गई थी; और एम. डी विलेल ने फरवरी 1827 में मंच पर इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया।

II. जिसमें पाठक दो छंदों का अध्ययन करेंगे, जो संभवतः शैतान की रचना हैं।

आगे बढ़ने से पहले, मॉन्टफर्मेइल में लगभग उसी समय घटी एक विलक्षण घटना का विस्तार से वर्णन करना उचित होगा, जो अभियोग के कुछ अनुमानों के साथ काफी हद तक मेल खाती है।

मॉन्टफर्मेइल क्षेत्र में एक बहुत प्राचीन अंधविश्वास प्रचलित है, जो और भी अनोखा और अनमोल है, क्योंकि पेरिस के आसपास के इलाकों में प्रचलित अंधविश्वास साइबेरिया में दुर्लभ पौधे के समान है। हम उन लोगों में से हैं जो दुर्लभ पौधों जैसी हर चीज का सम्मान करते हैं। तो, यह है मॉन्टफर्मेइल का अंधविश्वास: ऐसा माना जाता है कि शैतान अनादिकाल से इस जंगल को अपने खजाने छिपाने की जगह के रूप में चुनता आया है। वैद्य कहती हैं कि सूर्यास्त के समय, जंगल के एकांत कोनों में, लकड़ी के जूते पहने, सूती पतलून और ब्लाउज में लिपटे, किसी गाड़ीवान या लकड़हारे जैसे दिखने वाले काले आदमी का दिखना कोई असामान्य बात नहीं है। उसकी पहचान इस तथ्य से होती है कि टोपी के बजाय उसके सिर पर दो विशाल सींग होते हैं। वास्तव में, इससे उसकी पहचान हो जानी चाहिए। यह आदमी अक्सर गड्ढा खोदने में लगा रहता है। इस तरह के दृश्य से लाभ उठाने के तीन तरीके हैं। पहला तरीका है उस आदमी के पास जाकर उससे बात करना। तब पता चलता है कि वह आदमी बस एक किसान है, रात होने के कारण उसका रंग काला दिखाई दे रहा है; वह कोई गड्ढा नहीं खोद रहा, बल्कि अपनी गायों के लिए घास काट रहा है, और जिसे सींग समझा जा रहा था, वह असल में गोबर उठाने वाला कांटा है जिसे वह अपनी पीठ पर लादे हुए है, और शाम के धुंधलके के कारण उसके दांत मानो उसके सिर से निकले हुए प्रतीत होते हैं। वह आदमी घर लौटता है और एक हफ्ते के अंदर मर जाता है। दूसरा तरीका है उसे देखना, उसके गड्ढा खोदने, उसे भरने और चले जाने तक इंतजार करना; फिर पूरी तेज़ी से खाई की ओर दौड़ना, उसे दोबारा खोलना और उस "खजाने" को छीन लेना जिसे उस काले आदमी ने जानबूझकर वहाँ छिपा रखा है। इस मामले में एक महीने के अंदर मौत हो जाती है। अंत में, आखिरी तरीका है उस काले आदमी से बात न करना,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इसके अलावा, अगर कोई ताश खेलता है, तो वह निश्चित रूप से अपनी सारी संपत्ति खो देगा! और जहां तक सींग में रखे बारूद की बात है, उसमें आपकी बंदूक को आपके चेहरे पर ही फोड़ने का गुण होता है।

अब, उस समय के कुछ ही समय बाद जब अभियोजन पक्ष के वकील को लगा कि रिहा हुआ कैदी जीन वालजेन कई दिनों तक भागने के दौरान मोंटफर्मेइल के आसपास घूम रहा था, उस गाँव में यह बात फैल गई कि बोलाट्रुएल नाम का एक बूढ़ा सड़क मजदूर जंगल में "अजीबोगरीब हरकतें" करता है। आसपास के लोगों को लगा कि वे जानते हैं कि यह बोलाट्रुएल जेल में रह चुका है। उस पर पुलिस की निगरानी रखी गई, और चूंकि उसे कहीं काम नहीं मिला, इसलिए प्रशासन ने उसे गैग्नी से लैग्नी जाने वाले चौराहे पर कम वेतन पर सड़क मरम्मत करने वाले के रूप में नियुक्त कर लिया।

यह बोलाट्रुएल उस इलाके के निवासियों के बीच नापसंद किया जाता था, क्योंकि वह बहुत ही सम्मानजनक, विनम्र, हर किसी के सामने टोपी उतारने में तत्पर और पुलिसकर्मियों की उपस्थिति में कांपता और मुस्कुराता रहता था। उनका मानना था कि वह शायद लुटेरों के गिरोहों से जुड़ा हुआ था; और शाम ढलते ही झाड़ियों के किनारे घात लगाकर बैठने का संदेह था। उसकी एकमात्र अच्छी बात यह थी कि वह शराबी था।

लोगों ने ये बातें देखीं:—

हाल ही में, बोलाट्रुएल ने पत्थर तोड़ने और सड़क की मरम्मत का काम बहुत जल्दी छोड़कर कुल्हाड़ी लेकर जंगल में जाना शुरू कर दिया था। वह शाम के समय सबसे सुनसान मैदानों और घने जंगलों में दिखाई देता था; ऐसा लगता था मानो वह कुछ खोज रहा हो, और कभी-कभी वह गड्ढे खोद रहा होता था। वहाँ से गुजरने वाली महिलाओं ने पहले तो उसे बेल्ज़ेबूब समझा; फिर उन्होंने बोलाट्रुएल को पहचान लिया, और उन्हें ज़रा भी तसल्ली नहीं हुई। ऐसा लगता था कि इन मुलाकातों से बोलाट्रुएल बहुत नाराज़ होता था। यह स्पष्ट था कि वह छिपने की कोशिश कर रहा था, और उसके इस काम में कोई रहस्य छिपा था।

गांव में कहा जाता था: “यह स्पष्ट है कि शैतान प्रकट हो गया है। बौलाट्रुएल ने उसे देखा है और उसकी तलाश में है। वास्तव में, वह इतना चालाक है कि लूसिफ़र का खजाना हड़प सकता है।”

वोल्टेयरवादियों ने आगे कहा, "क्या बोलाट्रूएल शैतान को पकड़ेगा, या शैतान बोलाट्रूएल को पकड़ेगा?" बूढ़ी महिलाओं ने क्रॉस के कई चिन्ह बनाए।

इसी बीच, जंगल में बोलाट्रुएल की गतिविधियां बंद हो गईं; और उसने सड़क की मरम्मत के अपने नियमित काम को फिर से शुरू कर दिया; और लोग किसी और बात पर गपशप करने लगे।

कुछ लोग अब भी उत्सुक थे, उनका अनुमान था कि शायद इस सब में किंवदंतियों का कोई काल्पनिक खजाना नहीं था, बल्कि शैतान के बैंक नोटों से कहीं अधिक गंभीर और वास्तविक प्रकार का कोई बड़ा लाभ था, और सड़क बनाने वाले ने आधा रहस्य उजागर कर दिया था। सबसे अधिक "हैरान" थे स्कूल मास्टर और सराय के मालिक थेनार्डियर, जो सबके मित्र थे और उन्होंने बोलाट्रुएल के साथ गठबंधन करने में कोई संकोच नहीं किया था।

“वह तो जलयान में रहा है,” थेनार्डियर ने कहा। “अरे! हे भगवान! किसी को नहीं पता कि वहाँ कौन रहा है या कौन होगा।”

एक शाम स्कूल मास्टर ने कहा कि पुराने समय में कानून के तहत यह जांच की जाती कि बौलाट्रुएल जंगल में क्या कर रहा था, और उसे बोलने के लिए मजबूर किया जाता, और जरूरत पड़ने पर उसे यातना भी दी जाती, और बौलाट्रुएल पानी की परीक्षा का विरोध नहीं करता। "चलो उसे शराब की परीक्षा में डालते हैं," थेनार्डियर ने कहा।

उन्होंने कोशिश की और बूढ़े सड़क-मरम्मत करने वाले को शराब पिला दी। बोलाट्रुएल ने बहुत ज़्यादा शराब पी, लेकिन बहुत कम बोला। उसने बड़ी चतुराई और कुशलता से एक पेटू की प्यास और एक न्यायाधीश के विवेक का मेल किया। फिर भी, आरोप पर लौटकर और उसके मुंह से निकले कुछ अस्पष्ट शब्दों की तुलना और उन्हें जोड़कर, थेनार्डियर और स्कूल मास्टर ने अनुमान लगाया कि उन्होंने यह समझा है:

एक सुबह, जब बोलाट्रुएल अपने काम पर जा रहा था, भोर होते ही, उसे जंगल के एक कोने में झाड़ियों के बीच एक फावड़ा और एक कुल्हाड़ी छिपी हुई दिखाई दी, जिसे देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया।

हालांकि, उसने शायद सोचा होगा कि वे पानी ढोने वाले फादर सिक्स-फोर्स के फावड़े और कुल्हाड़ी होंगे, और उसने इस बारे में और नहीं सोचा होगा। लेकिन,

उस दिन शाम को, उसने खुद को बिना किसी को दिखाए, एक बड़े पेड़ के पीछे छिपकर, "एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो उस इलाके का नहीं था, और जिसे वह, बोलाट्रुएल, अच्छी तरह जानता था," जो जंगल के सबसे घने हिस्से की ओर बढ़ रहा था। थेनार्डियर द्वारा अनुवाद: "जहाजों का एक साथी।" बोलाट्रुएल ने हठपूर्वक उसका नाम बताने से इनकार कर दिया। उस व्यक्ति के पास एक पैकेट था — कुछ चौकोर, एक बड़े बक्से या छोटे संदूक जैसा। बोलाट्रुएल को आश्चर्य हुआ। हालांकि, सात-आठ मिनट बीतने के बाद ही उसे उस "व्यक्ति" का पीछा करने का विचार आया। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी; वह व्यक्ति पहले ही झाड़ियों में जा चुका था, रात हो चुकी थी, और बोलाट्रुएल उसे पकड़ नहीं पाया था। फिर उसने जंगल के किनारे पर उसका इंतज़ार करने का रास्ता अपनाया। “चाँदनी रात थी।” दो-तीन घंटे बाद, बोलाट्रुएल ने उस व्यक्ति को झाड़ियों से निकलते देखा, जिसके हाथ में संदूक नहीं, बल्कि एक फावड़ा और कुल्हाड़ी थी। बोलाट्रुएल ने उस व्यक्ति को जाने दिया और उससे बात करने का सोचा भी नहीं, क्योंकि उसने मन ही मन सोचा कि वह व्यक्ति उससे तीन गुना ज़्यादा ताकतवर है और उसके पास कुल्हाड़ी है, और शायद पहचानते ही और यह महसूस करते ही कि उसे पहचान लिया गया है, वह उसके सिर पर वार कर देगा। दो पुराने साथियों के दोबारा मिलने पर भावुकता का ऐसा ही नज़ारा था। लेकिन फावड़ा और कुल्हाड़ी बोलाट्रुएल के लिए उम्मीद की किरण साबित हुए; वह सुबह जल्दी से झाड़ियों की ओर गया, लेकिन उसे न तो फावड़ा मिला और न ही कुल्हाड़ी। इससे उसने यह निष्कर्ष निकाला कि उस व्यक्ति ने जंगल में जाकर अपनी कुल्हाड़ी से एक गड्ढा खोदा होगा, संदूक को उसमें दबा दिया होगा और फिर फावड़े से गड्ढे को बंद कर दिया होगा। अब, संदूक इतना छोटा था कि उसमें शव नहीं समा सकता था; इसलिए उसमें पैसा था। यही कारण था कि उसने खोजबीन शुरू की। बोलाट्रुएल ने पूरे जंगल और झाड़ियों की छानबीन की, गहराई से जांच की, और जहाँ भी उसे लगा कि हाल ही में मिट्टी खोदी गई है, वहाँ खुदाई की। लेकिन व्यर्थ।

उसने कुछ भी पता नहीं लगाया था। मॉन्टफर्मेइल में किसी ने भी इस बारे में और नहीं सोचा। बस कुछ साहसी गपशप करने वाले बचे थे, जिन्होंने कहा, "आप यकीन मानिए कि गैग्नी रोड पर काम करने वाले उस मिस्त्री ने इतनी मेहनत व्यर्थ नहीं की थी; उसे पूरा यकीन था कि शैतान आया था।"

III. टखने की जंजीर को हथौड़े की चोट से तोड़ने से पहले उसमें कुछ पूर्व-निर्धारित

प्रक्रियाएं की गई होंगी।

उसी वर्ष, 1823 के अक्टूबर के अंत में, टूलॉन के निवासियों ने खराब मौसम के बाद अपने बंदरगाह में ओरियन नामक जहाज के प्रवेश को देखा, जो कुछ नुकसानों की मरम्मत के उद्देश्य से आया था। इस जहाज को बाद में ब्रेस्ट में एक स्कूली जहाज के रूप में इस्तेमाल किया गया था, और जो उस समय भूमध्यसागरीय स्क्वाड्रन का हिस्सा था।

समुद्र की मार से बुरी तरह क्षतिग्रस्त यह पोत जब तटबंधों में प्रवेश किया तो एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत किया। इस पर लगे झंडे के कारण इसे ग्यारह तोपों की सलामी दी गई, जिसका इसने भी समानुपात में जवाब दिया; कुल मिलाकर बाईस तोपों की सलामी। अनुमान है कि तोपों की सलामी, शाही और सैन्य शिष्टाचार, सौहार्दपूर्ण बातचीत, शिष्टाचार के संकेत, बंदरगाहों और गढ़ों की औपचारिकताएं, सूर्योदय और सूर्यास्त, सभी किलों और युद्धपोतों द्वारा प्रतिदिन दी जाने वाली सलामी, बंदरगाहों का खुलना और बंद होना आदि के कारण, सभ्य जगत ने चौबीस घंटों में पूरी पृथ्वी पर डेढ़ लाख बेकार तोपें दागीं। छह फ्रैंक प्रति तोप की दर से, यह प्रतिदिन नौ लाख फ्रैंक और प्रति वर्ष तीन करोड़ फ्रैंक हो जाता है, जो धुएं में गायब हो जाता है। यह तो बस एक छोटी सी बात है। इस पूरे समय गरीब लोग भूख से मर रहे थे।

वर्ष 1823 को पुनर्स्थापना काल के दौरान "स्पेनिश युद्ध का युग" कहा गया था।

इस युद्ध में अनेक घटनाएँ एक साथ घटित हुईं, और कई विलक्षणताएँ भी थीं। बॉर्बन परिवार के लिए एक भव्य पारिवारिक मामला; फ्रांस की शाखा द्वारा मैड्रिड की शाखा का समर्थन और संरक्षण, अर्थात् बड़े के कर्तव्य का निर्वहन; हमारी राष्ट्रीय परंपराओं की ओर एक स्पष्ट वापसी, जो दासता और उत्तरी मंत्रिमंडलों के अधीनता से जटिल हो गई; उदारवादी अखबारों द्वारा

"अंडुजार का नायक" उपनाम दिया गया एम. ले ड्यूक डी'एंगुलेम, अपने शांतिपूर्ण स्वभाव से कुछ हद तक विरोधाभासी विजयी मुद्रा में, उदारवादियों के काल्पनिक आतंक के विपरीत, होली ऑफिस के प्राचीन और अत्यंत शक्तिशाली आतंक को संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे थे; विधवाओं के भारी आतंक के बीच, डेस्कामिसाडोस के नाम से संस्कुलोट्स का पुनरुत्थान; अराजकता के रूप में वर्णित प्रगति में बाधा का विरोध करने वाली राजशाही; 89 के सिद्धांत लगभग जड़ से उखड़ गए; एक यूरोपीय ठहराव, जिसे फ्रांसीसी विचार के लिए बुलाया गया, जो विश्व भ्रमण कर रहा था। फ्रांस के पुत्र, प्रिंस डी कैरिगन, जो बाद में चार्ल्स अल्बर्ट बने, सेनापति के रूप में राजाओं के उस धर्मयुद्ध में एक स्वयंसेवक के रूप में शामिल हुए, लाल ऊनी ग्रेनेडियर एपॉलेट्स के साथ; साम्राज्य के सैनिक एक नए अभियान पर निकले, लेकिन आठ वर्षों के विश्राम के बाद वृद्ध और उदास, और सफेद कॉकेड के नीचे; कुछ वीर फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा तिरंगा ध्वज लहराया गया, जैसा कि तीस साल पहले कोब्लेंट्ज़ में सफेद ध्वज लहराया गया था; भिक्षु हमारी सेना में घुलमिल गए; स्वतंत्रता और नवीनता की भावना को संगीनों द्वारा होश में लाया गया; सिद्धांतों का तोपों से संहार किया गया; फ्रांस ने अपने हथियारों से वह नष्ट कर दिया जो उसने अपने दिमाग से किया था; इसके अलावा, शत्रु नेता बिक गए, सैनिक हिचकिचा रहे थे, लाखों लोगों द्वारा शहरों को घेर लिया गया; कोई सैन्य खतरा नहीं था, फिर भी हर उस खदान की तरह विस्फोट की संभावना थी जिस पर अचानक हमला किया जाता है; लेकिन थोड़ा रक्तपात हुआ, थोड़ा सम्मान अर्जित हुआ, कुछ के लिए शर्मिंदगी, किसी के लिए कोई गौरव नहीं। लुई 14 वें के वंशज राजकुमारों द्वारा छेड़ा गया और नेपोलियन के अधीन रहे सेनापतियों द्वारा संचालित यह युद्ध कुछ ऐसा ही था। इसका दुखद अंत यही हुआ कि न तो यह एक महान युद्ध था और न ही महान राजनीति।

कुछ वीरतापूर्ण कारनामे वाकई गंभीर थे; ट्रोकाडेरो पर कब्ज़ा करना, अन्य कार्रवाइयों के साथ, एक उत्कृष्ट सैन्य कार्रवाई थी; लेकिन अंततः, हम दोहराते हैं, इस युद्ध के बिगुल की ध्वनि फीकी पड़ गई, पूरा प्रभाव संदिग्ध था; इतिहास इस झूठी जीत को स्वीकार करने में फ्रांस की अनिच्छा को प्रमाणित करता है। यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि प्रतिरोध का जिम्मा संभालने वाले कुछ स्पेनिश अधिकारियों ने आसानी से आत्मसमर्पण कर दिया;

भ्रष्टाचार का आरोप इस जीत से जुड़ गया; ऐसा लगता है मानो युद्ध नहीं बल्कि सेनापति जीते गए हों, और विजयी सैनिक अपमानित होकर लौटा। संक्षेप में, एक अपमानजनक युद्ध, जिसमें बैंक ऑफ फ्रांस की छवि झंडे की तहों में देखी जा सकती थी।

1808 के युद्ध के सैनिक, जिन पर सारागोसा का भयानक पतन हुआ था, 1823 में गढ़ों के आसानी से आत्मसमर्पण पर नाराज़ हुए और पलाफॉक्स पर खेद व्यक्त करने लगे। फ्रांस का स्वभाव ही ऐसा है कि वह बैलेस्टेरोस की बजाय रोस्टोपचाइन को अपने सामने रखना पसंद करता है।

इससे भी अधिक गंभीर दृष्टिकोण से, और जिस पर यहाँ ज़ोर देना भी उचित है, यह युद्ध, जिसने फ्रांस के सैन्य मनोबल को चोट पहुँचाई, ने लोकतांत्रिक भावना को क्रोधित कर दिया। यह एक तरह का गुलामी का अभियान था। उस अभियान में, लोकतंत्र के पुत्र, फ्रांसीसी सैनिक का उद्देश्य दूसरों के लिए गुलामी का बंधन स्थापित करना था। एक घिनौना विरोधाभास। फ्रांस राष्ट्रों की आत्मा को जगाने के लिए बना है, न कि उसे दबाने के लिए। 1792 के बाद से यूरोप की सभी क्रांतियाँ फ्रांसीसी क्रांति हैं: स्वतंत्रता की किरणें फ्रांस से निकलती हैं। यह एक सर्वविदित सत्य है। जो देखना नहीं चाहता, वह अंधा है! यह बोनापार्ट ने कहा था।

सन् 1823 का युद्ध, उदार स्पेनिश राष्ट्र पर एक घोर अत्याचार था, और साथ ही साथ फ्रांसीसी क्रांति पर भी एक घोर अत्याचार था। यह फ्रांस ही था जिसने इस भयावह हिंसा को अंजाम दिया; घृणित साधनों का प्रयोग करके, क्योंकि मुक्ति युद्धों को छोड़कर, सेनाएँ जो कुछ भी करती हैं, वह घृणित साधनों से ही करती हैं। "निष्क्रिय आज्ञाकारिता" शब्द इसी बात को इंगित करते हैं। सेना एक विचित्र रचना है जहाँ बल का परिणाम अत्यधिक अक्षमता से होता है। इस प्रकार, मानवता द्वारा मानवता के विरुद्ध, मानवता के विरुद्ध किए गए युद्ध की व्याख्या की जा सकती है।

बोर्बोन वंश के लिए 1823 का युद्ध घातक साबित हुआ। उन्होंने इसे अपनी सफलता मान लिया। वे इस खतरे को नहीं समझ पाए कि किसी विचार को बलि का बकरा बनाया जा सकता है। अपनी नादानी में वे इस हद तक भटक गए कि उन्होंने अपराध की भारी कमजोरी को अपनी सत्ता का बल मान लिया। घात लगाकर हमला करने की प्रवृत्ति उनकी राजनीति में समा गई। 1830 की नींव 1823 में ही पड़ गई थी।

स्पेन का अभियान उनकी सलाह-मशविरे में बल प्रयोग और दैवीय अधिकार के बल पर साहसिक कारनामों का आधार बन गया। स्पेन में पूर्ण राजशाही को पुनः स्थापित करने के बाद, फ्रांस अपने देश में भी निरंकुश राजा को पुनः स्थापित कर सकता था। उन्होंने सैनिक की आज्ञाकारिता को राष्ट्र की सहमति मान लेने की भयावह गलती कर दी। ऐसा आत्मविश्वास सत्ता के पतन का कारण बनता है। न तो किसी मशीनी पेड़ की छाया में सोना उचित है और न ही सेना की आड़ में।

चलिए ओरियन जहाज पर वापस चलते हैं।

प्रिंस जनरलिसिमो के नेतृत्व वाली सेना के अभियानों के दौरान, एक स्क्वाड्रन भूमध्य सागर में गश्त कर रहा था। हमने अभी बताया है कि ओरियन इसी बेड़े का हिस्सा था, और समुद्री दुर्घटनाओं के कारण इसे टूलॉन बंदरगाह पर आना पड़ा था।

किसी बंदरगाह में युद्धपोत की उपस्थिति में कुछ ऐसा आकर्षण होता है जो भीड़ को अपनी ओर खींचता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह विशाल होता है, और भीड़ को विशाल चीजें पसंद आती हैं।

युद्धपोत, मानव की प्रतिभा और प्रकृति की शक्तियों के सबसे शानदार संयोजनों में से एक है।

एक युद्धपोत एक ही समय में सबसे भारी और सबसे हल्के पदार्थ से बना होता है, क्योंकि यह एक ही समय में तीन रूपों—ठोस, द्रव और तरल—से निपटता है और इसे तीनों से ही लड़ना पड़ता है। समुद्र तल पर ग्रेनाइट को पकड़ने के लिए इसमें लोहे के ग्यारह पंजे होते हैं, और बादलों में हवा पकड़ने के लिए पंख और एंटीना पंखों वाले कीड़ों से भी अधिक होते हैं। इसकी एक सौ बीस तोपों से निकलने वाली हवा विशाल तुरहियों की तरह गूंजती है और गरज का गर्व से जवाब देती है। समुद्र अपनी भयानक लहरों की एकरूपता में इसे भटकाने की कोशिश करता है, लेकिन पोत के पास उसकी आत्मा, उसका कंपास होता है, जो उसे सलाह देता है और हमेशा उसे उत्तर दिशा दिखाता है। घोर अंधेरी रातों में, इसके लालटेन तारों का स्थान लेते हैं। इस प्रकार, हवा के विरुद्ध, इसके पास रस्सियाँ और पाल हैं; पानी के विरुद्ध, लकड़ी; चट्टानों के विरुद्ध, इसका

लोहा, पीतल और सीसा; अंधकार के विरुद्ध, इसका प्रकाश; विशालता के विरुद्ध, एक सुई।

अगर कोई युद्धपोत के विशाल आकार का अंदाजा लगाना चाहे, तो उसे ब्रेस्ट या टूलॉन के बंदरगाहों में स्थित छह मंजिला ढके हुए गोदाम में जाकर देखना चाहिए। वहां निर्माणाधीन जहाज मानो दूरबीन की तरह दिखाई देते हैं। यह विशाल बीम यार्ड कहलाता है; और लकड़ी का वह बड़ा स्तंभ जो दूर-दूर तक फैला हुआ दिखाई देता है, वह मुख्य मस्तूल है। गोदाम में जड़े से लेकर बादलों में शिखर तक इसकी लंबाई साठ फैदम है और आधार पर इसका व्यास तीन फुट है। अंग्रेजी मुख्य मस्तूल जलस्तर से दो सौ सत्रह फुट की ऊंचाई तक उठता है। हमारे पूर्वजों की नौसेना केबल का इस्तेमाल करती थी, हमारी नौसेना जंजीरों का। सौ तोपों वाले जहाज पर जंजीरों का साधारण ढेर चार फुट ऊंचा, बीस फुट चौड़ा और आठ फुट गहरा होता है। और इस जहाज को बनाने में कितनी लकड़ी लगती है? तीन हजार घन मीटर। यह एक तैरता हुआ जंगल है।

और इसके अलावा, यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि यहाँ केवल चालीस वर्ष पूर्व के सैन्य पोत, यानी साधारण पाल वाले पोत की बात हो रही है; भाप से चलने वाले जहाज़, जो उस समय अपनी प्रारंभिक अवस्था में थे, ने तब से युद्धपोत कहलाने वाले इस अद्भुत उपकरण में नए चमत्कार जोड़ दिए हैं। उदाहरण के लिए, वर्तमान समय में, पेंच वाला मिश्रित पोत एक आश्चर्यजनक मशीन है, जो तीन हजार वर्ग मीटर के पाल और ढाई हजार हॉर्सपावर के इंजन द्वारा संचालित होता है।

इन नए चमत्कारों की बात तो छोड़ ही दीजिए, क्रिस्टोफर कोलंबस और डी रूयटर का प्राचीन जहाज मानव निर्मित उत्कृष्ट कृतियों में से एक है। इसकी शक्ति असीम है, जैसे अनंत तूफानों में; यह अपने पालों में हवा संचित करता है, लहरों की विशाल अस्पष्टता में भी सटीक है, यह तैरता है और अपना प्रभुत्व जमाता है।

फिर भी एक ऐसा क्षण आता है, जब आंधी उस साठ फुट के खंभे को तिनके की तरह तोड़ देती है, जब हवा उस चार सौ फुट ऊंचे मस्तूल को झुका देती है, जब वह लंगर, जिसका वजन हजारों किलोग्राम है, लहरों के जबड़ों में मछुआरे के कांटे की तरह उलझ जाता है, जब वे विशाल तोपें दुखभरी और व्यर्थ गर्जना करती

हैं, जिन्हें तूफान शून्य और अंधकार में ले जाता है, जब वह सारी शक्ति और वह सारी भव्यता एक ऐसी शक्ति और भव्यता में समा जाती है जो श्रेष्ठ है।

जब भी वह अपार शक्ति अंततः अपार दुर्बलता में परिणत होती है, तो यह मनुष्यों को चिंतन का विषय प्रदान करती है। इसीलिए बंदरगाहों में जिज्ञासु लोग युद्ध और नौवहन की इन अद्भुत मशीनों के चारों ओर उमड़ते रहते हैं, यद्यपि वे स्वयं को यह पूरी तरह से समझा नहीं पाते कि ऐसा क्यों है। इसी के अनुरूप, प्रतिदिन सुबह से शाम तक, टूलॉन बंदरगाह के घाट, जलद्वार और जेटी आलस्य और आवारागर्दी करने वालों की भीड़ से भरे रहते थे, जैसा कि पेरिस में कहा जाता है, जिनका काम ओरियन आकाश को निहारना होता था।

ओरियन एक ऐसा जहाज था जो लंबे समय से खस्ता हालत में था; अपनी पिछली यात्राओं के दौरान इसकी कील पर इतनी मोटी समुद्री शैवाल जम गई थी कि इसकी गति आधी हो गई थी; इससे एक साल पहले इसे कील साफ करवाने के लिए ड्राई डॉक में भेजा गया था, फिर यह दोबारा समुद्र में उतर गया था; लेकिन इस सफाई से कील के बोल्ट प्रभावित हो गए थे: बैलेरिक द्वीप समूह के पास इसकी साइडें खिंच गईं और खुल गईं; और, चूंकि उन दिनों की प्लेटिंग शीट आयरन की नहीं होती थी, इसलिए जहाज में रिसाव हो गया था। एक भयंकर तूफान आया, जिसने पहले बाईं ओर की एक जाली और एक पोर्टहोल को तोड़ दिया और फोरटॉप-गैलेंट-श्राउड्स को क्षतिग्रस्त कर दिया; इन नुकसानों के कारण, ओरियन टूलॉन वापस लौट आया था।

यह शस्त्रागार के पास लंगर डालकर रुका; यह पूरी तरह से सुसज्जित था, और मरम्मत का काम शुरू हो गया था। जहाज के दाहिने हिस्से में कोई क्षति नहीं हुई थी, लेकिन हवा के प्रवेश की अनुमति देने के लिए, प्रथा के अनुसार, कुछ तख्तों को इधर-उधर से कीलें निकालकर अलग कर दिया गया था।

एक सुबह उसे निहार रही भीड़ ने एक दुर्घटना को देखा।

चालक दल पालों को मोड़ने में व्यस्त था; शीर्ष पाल का ऊपरी कोना संभालने वाले प्रमुख व्यक्ति का संतुलन बिगड़ गया; वह लड़खड़ाता हुआ दिखाई दिया; आर्सेनल घाट पर उमड़ी भीड़ ने एक चीख मारी; उस व्यक्ति का सिर उसके शरीर से अलग हो गया; वह व्यक्ति यार्ड के चारों ओर गिर पड़ा, उसके हाथ खाई की ओर फैले हुए थे; गिरते समय उसने पैर की रस्सी को पहले एक हाथ से, फिर दूसरे हाथ

कैदी ने अपनी आँखें आसमान की ओर उठाईं और एक कदम आगे बढ़ाया: भीड़ ने गहरी साँस ली। उसे आँगन में दौड़ते हुए देखा गया: उस बिंदु पर पहुँचकर, उसने अपने साथ लाई रस्सी को बाँध दिया और दूसरे सिरे को नीचे लटकने दिया, फिर वह रस्सी के सहारे हाथों से नीचे उतरने लगा, और फिर—और वह पीड़ा अवर्णनीय थी — खाई के ऊपर लटके एक व्यक्ति की जगह दो व्यक्ति लटके हुए थे।

ऐसा लग रहा था मानो कोई मकड़ी किसी मक्खी को पकड़ने आई हो, लेकिन यहाँ मकड़ी जीवन लेकर आई थी, मृत्यु नहीं। दस हज़ार निगाहें इस समूह पर टिकी थीं; न कोई चीख, न कोई शब्द; हर किसी के माथे पर एक ही तरह की सिहरन थी; सभी के मुँह ने अपनी साँस रोक रखी थी, मानो वे उस हवा में ज़रा सा भी झोंका न डाल दें जो उन दो बदकिस्मत आदमियों को हिला रही थी।

इसी बीच, कैदी नाविक के पास पहुँचने में कामयाब हो गया था। अब बहुत देर हो चुकी थी; एक मिनट भी और, तो थका हुआ और हताश नाविक खाई में गिर जाता। कैदी ने उसे रस्सी से मज़बूती से बाँध दिया था, जिसे वह एक हाथ से पकड़े हुए था, जबकि दूसरे हाथ से वह काम कर रहा था। आखिरकार, उसे वापस यार्ड पर चढ़ते और नाविक को अपने साथ ऊपर खींचते हुए देखा गया; उसने उसे कुछ पल के लिए वहीं रोके रखा ताकि वह अपनी ताकत जुटा सके, फिर उसने उसे अपनी बाहों में उठाया और यार्ड पर चलते हुए कैप तक ले गया, और वहाँ से मेन-टॉप तक ले जाकर उसे अपने साथियों के हवाले कर दिया।

उसी क्षण भीड़ तालियों से गूंज उठी: उनमें से बूढ़े कैदी-सार्जेंट रो पड़े, और घाट पर महिलाएं एक-दूसरे को गले लगाने लगीं, और सभी की आवाजें एक तरह के कोमल आक्रोश के साथ सुनाई दीं, "उस आदमी को क्षमा कर दो!"

इसी बीच, वह तुरंत अपने दल में शामिल होने के लिए नीचे उतरने लगा। उन तक जल्दी पहुँचने के लिए, वह जहाज़ के रस्सियों में कूद गया और निचले यार्डों में से एक पर दौड़ने लगा; सभी की निगाहें उस पर टिकी थीं। एक क्षण में, उन्हें डर सताने लगा; चाहे वह थकावट के कारण हो या उसका सिर घूम गया हो, उन्हें लगा कि वह हिचकिचाया और लड़खड़ाया। अचानक भीड़ ने ज़ोर से चिल्लाया: कैदी समुद्र में गिर गया था।

यह घटना बेहद खतरनाक थी। फ्रिगेट अल्गेसिरास ओरियन के बगल में लंगर डाले खड़ा था, और बेचारा कैदी दोनों जहाजों के बीच गिर गया था: आशंका थी कि वह

उनमें से किसी एक के नीचे डूब जाएगा। चार लोग जल्दी से एक नाव में कूद पड़े; भीड़ ने उनका उत्साह बढ़ाया; चिंता फिर से सभी के मन में छा गई; वह आदमी सतह पर नहीं आया; वह बिना कोई हलचल छोड़े समुद्र में गायब हो गया, मानो वह तेल के किसी पीपे में गिर गया हो: उन्होंने गहराई में खोज की, गोता लगाया। व्यर्थ। खोज शाम तक जारी रही: उन्हें शव तक नहीं मिला।

अगले दिन टूलॉन के अखबार ने ये पंक्तियाँ छापीं:—

“17 नवंबर, 1823। कल, ओरियन जहाज पर तैनात एक टुकड़ी का एक कैदी, एक नाविक की सहायता करने के बाद लौटते समय समुद्र में गिर गया और डूब गया। शव अभी तक नहीं मिला है; ऐसा माना जाता है कि वह शस्त्रागार के खंभों के बीच फंसा हुआ है: इस व्यक्ति को 9,430 नंबर के तहत कैद किया गया था, और उसका नाम जीन वालजेन था।”

भाग III. मृत महिला से किए गए वादे की पूर्ति

I. मॉन्टफर्मेइल में जल का प्रश्न

मॉन्टफर्मेइल लिवरी और चेल्स के बीच, उस ऊंचे पठार के दक्षिणी किनारे पर स्थित है जो ओर्क नदी को मार्ने नदी से अलग करता है। आज यह एक ठीक-ठाक बड़ा शहर है, जो साल भर प्लास्टर से बने विलाओं से सजा रहता है, और रविवार को चमकते हुए बुर्जुआ लोगों से। 1823 में मॉन्टफर्मेइल में न तो इतने सारे सफेद घर थे और न ही इतने संतुष्ट नागरिक: यह जंगल में बसा एक छोटा सा गाँव मात्र था। पिछली सदी के कुछ मनोरंजन गृह वहाँ अवश्य देखने को मिलते थे, जो अपनी भव्यता, लोहे की मुड़ी हुई बालकनियों और लंबी खिड़कियों से पहचाने जाते थे, जिनके छोटे-छोटे शीशे बंद शटरों के सफेद रंग पर हरे रंग की कई अलग-अलग छटाएँ बिखेरते थे; लेकिन फिर भी मॉन्टफर्मेइल एक गाँव ही था। सेवानिवृत्त कपड़ा व्यापारी और ग्रामीण वकील अभी तक इसे खोज नहीं पाए थे; यह एक शांत और मनमोहक जगह थी, जो कहीं भी जाने वाली सड़क पर नहीं थी: वहां लोग रहते थे, और वह भी सस्ते में, वह देहाती जीवन जो इतना समृद्ध और इतना आसान होता है; बस, पठार की ऊंचाई के कारण वहां पानी दुर्लभ था।

इसे काफी दूर से लाना आवश्यक था; गैग्नी की ओर स्थित गाँव का हिस्सा वहाँ के जंगलों में मौजूद शानदार तालाबों से पानी प्राप्त करता था। दूसरा हिस्सा, जो गिरजाघर को घेरे हुए है और चेल्स की दिशा में स्थित है, वहाँ पीने का पानी केवल ढलान के मध्य में, चेल्स जाने वाली सड़क के पास स्थित एक छोटे से झरने से ही मिलता था, जो मोंटफर्मेइल से लगभग पंद्रह मिनट की दूरी पर था।

इस प्रकार प्रत्येक घर के लिए पानी की आपूर्ति बनाए रखना एक कठिन काम था। बड़े घर, कुलीन वर्ग के लोग, जिनमें थेनार्डियर सराय भी शामिल थी, एक ऐसे व्यक्ति को एक बाल्टी पानी के लिए आधा पैसा देते थे, जिसने इसे अपना व्यवसाय बना लिया था और जो मोंटफर्मेइल में पानी की आपूर्ति करके प्रतिदिन लगभग आठ सू कमाता था; लेकिन यह सज्जन व्यक्ति गर्मियों में शाम सात बजे तक और सर्दियों में पाँच बजे तक ही काम करता था; और रात होते ही और भूतल के शटर बंद होते ही, जिसके पास पीने का पानी नहीं होता था, वह स्वयं पानी लाने चला जाता था या बिना पानी के ही काम चलाता था।

यह उस बेचारी बच्ची के लिए दहशत का कारण था जिसे पाठक शायद भूले नहीं होंगे — छोटी कोसेट। याद होगा कि कोसेट थेनार्डियर परिवार के लिए दो तरह से उपयोगी थी: वे उसकी माँ से किराया वसूलते थे और बच्ची से अपना काम करवाते थे। इसलिए जब माँ ने किराया देना पूरी तरह बंद कर दिया, जिसका कारण हमने पिछले अध्यायों में पढ़ा है, तो थेनार्डियर परिवार ने कोसेट को अपने पास रख लिया। उसने उनके घर में नौकरानी का स्थान ले लिया। इसी भूमिका में वह जरूरत पड़ने पर पानी लाने जाती थी। इसलिए, रात में झरने पर जाने के विचार से ही बहुत डरने वाली बच्ची ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि घर में कभी पानी की कमी न हो।

सन् 1823 की क्रिसमस मॉन्टफर्मेइल में विशेष रूप से शानदार थी। सर्दियों की शुरुआत सुहावनी रही थी; उस समय तक न तो बर्फ गिरी थी और न ही पाला पड़ा था। पेरिस के कुछ बाजीगरों ने मेयर से गांव की मुख्य सड़क पर अपने स्टॉल लगाने की अनुमति प्राप्त कर ली थी, और उसी उदारता के संरक्षण में घुमंतू व्यापारियों के एक समूह ने चर्च स्क्वायर पर अपने स्टॉल लगा लिए थे और यहां तक कि उन्हें बोलेंजर गली तक भी फैला दिया था, जहां, जैसा कि पाठक को शायद याद होगा, थेनार्डियर का सराय स्थित था। इन लोगों ने सराय और शराबखानों को भर दिया और उस शांत छोटे से इलाके में एक शोरगुल भरा और आनंदमय माहौल बना दिया। एक विश्वसनीय इतिहासकार की भूमिका निभाने के लिए, हमें यह भी जोड़ना चाहिए कि चौक में प्रदर्शित विचित्र वस्तुओं में एक चिड़ियाघर भी था, जिसमें 1823 में मोंटफर्मेइल के किसानों को चिथड़े- चिट्ठों में लिपटे, अज्ञात रूप से कहाँ से आए भयानक विदूषकों ने ब्राज़ील के उन भयानक गिद्धों में से एक का प्रदर्शन किया, जो हमारे शाही संग्रहालय में 1845 तक नहीं थे और जिनकी एक आँख तिरंगे रंग की थी। मेरा मानना है कि प्रकृतिवादी इस पक्षी को काराकारा पॉलीबोरस कहते हैं; यह एपिसाइड्स वर्ग और गिद्ध परिवार से संबंधित है। कुछ पुराने बोनापार्टिस्ट सैनिक, जो गाँव में सेवानिवृत्त हो गए थे, इस प्राणी को बड़ी श्रद्धा से देखने गए। उन धूर्तों ने प्रचार किया कि तिरंगे रंग की यह आँख ईश्वर द्वारा विशेष रूप से उनके चिड़ियाघर के लिए बनाई गई एक अनूठी घटना है।

क्रिसमस की पूर्व संध्या पर, थेनार्डियर के सराय के सार्वजनिक कमरे में चार-पाँच मोमबत्तियों की रोशनी में कई पुरुष, गाड़ीवान और फेरीवाले मेज पर

बैठे शराब पी रहे थे और धूम्रपान कर रहे थे। यह कमरा आम शराबखानों के कमरों जैसा ही था—मेजें, पीतल के जग, बोतलें, शराब पीने वाले, धूम्रपान करने वाले; लेकिन रोशनी कम और शोरगुल बहुत था। फिर भी, वर्ष 1823 की तारीख दो ऐसी वस्तुओं से ज़ाहिर हो रही थी जो उस समय बुर्जुआ वर्ग में प्रचलित थीं: एक बहुरंगी शीशा और धारीदार टिन का एक दीपक। थेनार्डियर की पत्नी रात के खाने की तैयारी कर रही थी, जो खुली आग के सामने पक रहा था; उसका पति अपने ग्राहकों के साथ शराब पी रहा था और राजनीति पर चर्चा कर रहा था।

स्पेनिश युद्ध और एम. ले ड्यूक डी'एंगौलेम जैसे प्रमुख विषयों पर आधारित राजनीतिक चर्चाओं के अलावा, कोलाहल के बीच कुछ विशुद्ध स्थानीय बातें भी सुनाई दे रही थीं, जैसे कि निम्नलिखित:

“नान्टेरे और सुरेनेस के आसपास अंगूर की बेलें खूब फली-फूली हैं। जब दस अंगूर गिने गए तो बारह निकले। उनसे रस निकालने पर बहुत सारा रस निकला।” “लेकिन क्या अंगूर पके हैं?” “उन इलाकों में अंगूर पके नहीं होने चाहिए; बसंत आते ही शराब तैलीय हो जाती है।” “तो क्या यह बहुत पतली शराब है?” “इससे भी घटिया शराबें होती हैं। अंगूरों को हरा रहते ही तोड़ लेना चाहिए।” इत्यादि।

या फिर एक चक्कीवाला पुकारता:—

“क्या बोरियों में जो कुछ है, उसके लिए हम ज़िम्मेदार हैं? हमें उनमें बड़ी मात्रा में छोटे बीज मिलते हैं जिन्हें हम छान नहीं सकते और जिन्हें हमें चक्की में पीसना पड़ता है; उनमें जंगली घास, सौंफ, वेच, भांग के बीज, फॉक्सटेल और कई अन्य खरपतवार हैं, साथ ही कंकड़ भी हैं, जो कुछ खास तरह के गेहूं में, खासकर ब्रेटन गेहूं में बहुतायत में पाए जाते हैं। मुझे ब्रेटन गेहूं पीसना बिल्कुल पसंद नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे लंबे आरी चलाने वालों को कीलों से भरी लकड़ियों को काटना पसंद नहीं होता। आप पीसने में होने वाली धूल का अंदाजा लगा सकते हैं। और फिर लोग आटे की शिकायत करते हैं। वे गलत हैं। आटे में कोई खराबी हमारी नहीं है।”

दो खिड़कियों के बीच की जगह में, एक घास काटने वाला, जो एक जमींदार के साथ मेज पर बैठा था और वसंत ऋतु में किए जाने वाले कुछ घास के मैदान के काम के लिए कीमत तय कर रहा था, कह रहा था:—

“घास के गीले होने से कोई नुकसान नहीं होता। इससे कटाई बेहतर होती है। ओस अच्छी चीज है, महोदय। इस घास पर इसका कोई असर नहीं पड़ता। आपकी घास अभी छोटी है और काटने में बहुत मुश्किल है। यह बहुत ही नाजुक है। लोहे से काटने पर यह आसानी से टूट जाती है।” इत्यादि।

कोसेट अपनी हमेशा की जगह पर, चिमनी के पास रसोई की मेज के चौखट पर बैठी थी। उसके कपड़े फटे-पुराने थे; नंगे पैर लकड़ी के जूतों में थे, और आग की रोशनी में वह छोटे थेनार्डियर बच्चों के लिए ऊनी मोज़े बुन रही थी। एक नन्हा बिल्ली का बच्चा कुर्सियों के बीच खेल रहा था। बगल के कमरे में दो नन्हे बच्चों की हंसी और बातचीत सुनाई दे रही थी: ये एपोनाइन और अज़ेलमा थीं।

चिमनी के कोने में एक कील पर नौ पूंछों वाला चाबुक लटका हुआ था।

घर में कहीं से आती एक नन्हे बच्चे की रोने की आवाज़, बीच-बीच में, शराब की दुकान के शोर में गूंजती थी। यह एक छोटा लड़का था जो पिछली सर्दियों में से किसी एक में थेनार्डियर परिवार में पैदा हुआ था—"उसे नहीं पता क्यों," उसने कहा, "ठंड का नतीजा"—और जो तीन साल से थोड़ा बड़ा था। माँ ने उसे दूध पिलाया था, लेकिन उससे प्यार नहीं करती थी। जब उस नन्हे बच्चे का लगातार रोना असहनीय हो जाता, तो थेनार्डियर कहतीं, "तुम्हारा बेटा रो रहा है; जाकर देखो उसे क्या चाहिए।" "छी!" माँ जवाब देती, "वह मुझे परेशान कर रहा है।" और वह उपेक्षित बच्चा अंधेरे में चीखता रहता।

II. दो पूर्ण चित्र

इस पुस्तक में अब तक थेनार्डियर दंपति को केवल एक सीमित दायरे में ही देखा गया है; अब इस दंपति के जीवन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने और इसके सभी पहलुओं पर विचार करने का समय आ गया है।

थेनार्डियर ने अभी-अभी अपना पचासवां जन्मदिन मनाया था; मैडम थेनार्डियर चालीस की उम्र के करीब थीं, जो एक महिला के लिए पचास के बराबर है; इस प्रकार पति-पत्नी के बीच उम्र का संतुलन बना हुआ था।

हमारे पाठकों को शायद थेनार्डियर परिवार की इस महिला की कुछ यादें संजोई होंगी, जब से वह पहली बार दिखी थी—लंबी, सुनहरे बालों वाली, लाल, मोटी, कोणीय, चौकोर, विशाल और फुर्तीली; जैसा कि हमने कहा है, वह उन विशालकाय जंगली महिलाओं की श्रेणी में आती थी, जो मेलों में अपने बालों में पत्थर लटकाकर करतब दिखाती हैं। वह घर के सारे काम करती थी—बिस्तर लगाना, कपड़े धोना, खाना बनाना और बाकी सब कुछ। कोसेट उसकी इकलौती नौकरानी थी; एक हाथी की सेवा में चूहा। उसकी आवाज से सब कुछ कांप उठता था—खिड़कियों के शीशे, फर्नीचर और लोग। लाल धब्बों से भरा उसका बड़ा चेहरा किसी मछली पकड़ने वाली मछली जैसा दिखता था। उसकी दाढ़ी थी। वह महिलाओं के कपड़ों में एक आदर्श बाजार-कुली थी। वह बड़े ही शानदार तरीके से गालियां देती थी; वह अपनी मुट्ठी के एक ही वार से अखरोट तोड़ने का दावा करती थी। उन प्रेम कहानियों को छोड़कर, जिन्हें पढ़कर वह कभी-कभी एक अजीबोगरीब ढंग से उस संभ्रांत महिला के भीतर छिपी राक्षसी छवि को पहचान लेती थी, किसी के मन में यह ख्याल कभी नहीं आया होगा कि उसे देखकर कोई कहे, "यह एक औरत है।" यह थेनार्डियर महिला किसी मछली बेचने वाली औरत के नाजायज औलाद जैसी थी। जब कोई उसे बोलते सुनता, तो कहता, "यह एक पुलिसवाला है;" जब कोई उसे पीते देखता, तो कहता, "यह एक गाड़ीवान है;" जब कोई उसे कोसेट को संभालते देखता, तो कहता, "यह जल्लाद है।" जब उसका चेहरा शांत होता, तो उसका एक दांत बाहर निकला रहता था।

थेनार्डियर एक छोटा, पतला, पीला, कोणीय, हड्डियों का ढाँचा, दुर्बल व्यक्ति था, जो देखने में बीमार सा लगता था, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ था।

उसकी चालाकी यहीं से शुरू होती थी; वह एहतियात के तौर पर हमेशा मुस्कुराता रहता था और लगभग हर किसी के प्रति विनम्र था, यहाँ तक कि उस भिखारी के प्रति भी जिसे उसने आधा पैसा देने से इनकार कर दिया था। उसकी निगाहें नेवले जैसी थीं और उसका व्यवहार किसी विद्वान जैसा था। वह एब्बे डेलिल के चित्रों से बहुत मिलता-जुलता था। उसका नखरा गाड़ीवालों के साथ शराब पीने में था। आज तक कोई भी उसे नशे में धुत नहीं कर पाया था। वह एक बड़ा पाइप पीता था। वह एक ब्लाउज पहनता था और उसके नीचे एक पुराना काला कोट। वह साहित्य और भौतिकवाद का दिखावा करता था। कुछ नाम थे जिन्हें वह अक्सर अपनी बातों को पुष्ट करने के लिए बोलता था—वोल्टेयर, रेनल, पार्नी और, आश्चर्यजनक रूप से, संत ऑगस्टीन। वह कहता था कि उसके पास "एक प्रणाली" है। इसके अलावा, वह एक बड़ा ठग भी था। एक दार्शनिक, एक वैज्ञानिक चोर। ऐसी प्रजाति सचमुच मौजूद है। याद होगा कि उसने सेना में सेवा करने का दिखावा किया था; वह बड़े उत्साह से बताता था कि कैसे वाटरलू में, छठी या नौवीं रेजिमेंट में सार्जेंट रहते हुए, उसने अकेले ही, घातक हुसारों के एक दस्ते की मौजूदगी में, अपने शरीर को ढककर, गोलियों की बौछार के बीच, "एक जनरल को, जो बुरी तरह घायल हो गया था, मौत से बचाया था।" वहीं से उसकी दीवार पर चमकता हुआ चिन्ह और उसके सराय का नाम, जो आस-पड़ोस में प्रचलित था, "वाटरलू के सार्जेंट का कैबारे" पड़ गया। वह एक उदारवादी, एक क्लासिकवादी और एक बोनापार्टिस्ट था। उसने शैंप डी'एसिले के लिए चंदा दिया था। गाँव में कहा जाता था कि उसने पुरोहित बनने की पढ़ाई की थी।

हमारा मानना है कि उसने हॉलैंड में किसी सराय मालिक की पढ़ाई की थी। यह मिश्रित स्वभाव का बदमाश संभवतः फ़्लैंडर्स के लिले का कोई फ्लेमिश, पेरिस का फ्रांसीसी और ब्रुसेल्स का बेल्जियन रहा होगा, जो दोनों सीमाओं पर आराम से अपना दबदबा बनाए हुए था। वाटरलू में उसकी वीरता के बारे में पाठक पहले से ही जानते हैं। यह स्पष्ट होगा कि उसने इसे थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर बताया था। उतार-चढ़ाव, भटकना, रोमांच, उसके जीवन का सार था; एक टूटी हुई अंतरात्मा एक खंडित जीवन को जन्म देती है, और जाहिर तौर पर 18 जून, 1815 के तूफानी दौर में, थेनार्डियर उन लुटेरे व्यापारियों में से एक था जिनकी हमने बात की है, जो देश भर में घूमता था, किसी को बेचता था, किसी से चोरी करता था, और एक परिवार की तरह, पत्नी और बच्चों के साथ, एक जर्जर गाड़ी में,

मार्च कर रही सेना के पीछे-पीछे चलता था, और हमेशा विजयी सेना से जुड़ने की प्रवृत्ति रखता था। यह अभियान समाप्त हो गया, और जैसा कि उन्होंने कहा, "कुछ लाभ" होने के कारण, वे मोंटफर्मेइल आए और वहां एक सराय स्थापित कर ली।

पर्स और घड़ियों, सोने की अंगूठियों और चांदी के क्रॉस से बना यह संग्रह, जो फसल कटाई के समय लाशों से भरी क्यारियों में इकट्ठा किया गया था, कुल मिलाकर बहुत बड़ा नहीं था, और इस व्यापारी से भोजनालय के मालिक बने व्यक्ति को इससे ज्यादा दूर तक ले जाने में सक्षम नहीं था।

थेनार्डियर के हाव-भाव में एक विशेष प्रकार की सीधी रेखा जैसी विशेषता थी, जो शपथ के साथ बैरक की याद दिलाती थी, और क्रॉस के चिन्ह के साथ सेमिनरी की। वह एक कुशल वक्ता थे। उन्होंने यह धारणा बनने दी कि वह एक शिक्षित व्यक्ति थे। फिर भी, स्कूल मास्टर ने गौर किया था कि वह उच्चारण ठीक से नहीं करते थे।

उसने यात्रियों के किराए का कार्ड बड़ी कुशलता से तैयार किया था, लेकिन अनुभवी निगाहों से कभी-कभी उसमें वर्तनी की गलतियाँ नज़र आ जाती थीं। थेनार्डियर धूर्त, लालची, आलसी और होशियार था। वह अपने नौकरों का अनादर नहीं करता था, जिसके कारण उसकी पत्नी ने उन्हें निकाल दिया। यह विशालकाय स्त्री ईर्ष्यालु थी। उसे लगता था कि वह दुबला-पतला, पीला-सा छोटा आदमी सबकी नज़रों का पात्र होगा।

थेनार्डियर, जो सबसे बढ़कर एक चतुर और संतुलित व्यक्ति थे, एक संयमी किस्म के बदमाश थे। यह सबसे बुरी किस्म है; इसमें पाखंड भी शामिल होता है।

ऐसा नहीं था कि थेनार्डियर कभी-कभी अपनी पत्नी की तरह ही क्रोधित नहीं होते थे; लेकिन ऐसा बहुत कम होता था, और वह भी तब जब वे आम तौर पर मानव जाति से क्रोधित होते थे, क्योंकि उनके भीतर घृणा की गहरी भट्टी जल रही होती थी। और चूंकि वे उन लोगों में से थे जो लगातार अपने साथ हुए अन्याय का बदला लेते रहते हैं, जो अपने सामने आने वाली हर चीज को अपने साथ हुए हर बुरे काम का दोषी ठहराते हैं, और जो हमेशा अपने जीवन के धोखे, दिवालियापन और विपत्तियों का सार, जो भी पहला व्यक्ति हाथ लगे, उस पर जायज शिकायत के रूप में डालने को तैयार रहते हैं—जब यह सारा क्रोध उनके भीतर भड़क उठता और

उनके मुंह और आंखों से उबलकर बाहर आता, तो वे भयानक हो जाते थे। ऐसे समय में जो भी उनके क्रोध का शिकार होता, उसका बुरा हाल होता!

अन्य गुणों के अलावा, थेनार्डियर चौकस और गहरी दृष्टि वाले थे; परिस्थितियों के अनुसार वे कभी चुप तो कभी बातूनी होते थे, और हमेशा अत्यंत बुद्धिमान थे। उनकी शक्ल-सूरत नाविकों जैसी थी, जो समुद्री चश्मे से देखते हुए अपनी आँखें सिकोड़ लेते हैं। थेनार्डियर एक कुशल राजनेता थे।

सराय में आने वाला हर नया व्यक्ति मैडम थेनार्डियर को देखते ही कहता, "ये हैं घर की मालकिन।" यह एक गलतफहमी थी। वह मालकिन भी नहीं थीं। पति ही मालिक और मालकिन दोनों थे। वह काम करती थीं; वह सृजन करते थे। वह एक अदृश्य और निरंतर चुंबकीय शक्ति से सब कुछ नियंत्रित करते थे। उनके लिए एक शब्द ही काफी था, कभी-कभी एक इशारा; वह विशालकाय व्यक्ति आज्ञा का पालन करते थे। मैडम थेनार्डियर की नज़रों में थेनार्डियर एक विशेष और संप्रभु व्यक्ति थे, हालांकि उन्हें इसका पूरी तरह एहसास नहीं था। उनमें अपने ही जैसे गुण थे; अगर कभी "महाशय थेनार्डियर" से किसी बात पर उनकी असहमति हुई भी होती,— जो कि एक अस्वीकार्य परिकल्पना थी—तो वह किसी भी विषय पर सार्वजनिक रूप से अपने पति को दोष नहीं देतीं। वह अजनबियों के सामने वह गलती कभी नहीं करतीं जो अक्सर महिलाएं करती हैं, और जिसे संसदीय भाषा में "राजकब्जा उजागर करना" कहा जाता है। हालाँकि उनके इस सामंजस्य का परिणाम केवल बुराई ही था, फिर भी मैडम थेनार्डियर का अपने पति के प्रति समर्पण चिंतनशील था। शोर और शरीर का वह विशाल पर्वत उस दुर्बल तानाशाह की छोटी उंगली के नीचे डोलता था। इसके बौने और विचित्र रूप को देखते हुए, यह एक भव्य और सार्वभौमिक बात थी, मन की पदार्थ द्वारा आराधना; क्योंकि कुछ कुरूप विशेषताओं का कारण शाश्वत सुंदरता की गहराई में ही निहित होता है। थेनार्डियर में एक अज्ञात तत्व था; इसीलिए उस पुरुष का उस स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व था। कभी-कभी वह उसे जलती हुई मोमबत्ती की तरह देखती थी; तो कभी उसे पंजे की तरह महसूस करती थी।

यह स्त्री एक शक्तिशाली व्यक्तित्व थी, जो अपने बच्चों के सिवा किसी से प्रेम नहीं करती थी और अपने पति के सिवा किसी से नहीं डरती थी। वह माँ इसलिए थी क्योंकि वह एक स्तनधारी थी। लेकिन उसकी मातृत्व भावना केवल

बेटियों तक ही सीमित थी, और जैसा कि हम आगे देखेंगे, बेटों तक नहीं फैली।
उस पुरुष के मन में बस एक ही विचार था—स्वयं को समृद्ध कैसे किया जाए।

वह इसमें सफल नहीं हो सका। इस महान प्रतिभा के योग्य रंगमंच का अभाव था।
मोंटफर्मेइल में थेनार्डियर अपना ही नुकसान कर रहा था, मानो शून्य तक पहुंचना संभव हो; स्विट्जरलैंड या पाइरेनीज़ में यह कंगाल बदमाश करोड़पति बन जाता; लेकिन एक सराय मालिक को वहीं रहना पड़ता है जहां किस्मत ने उसे बांध रखा हो।

यह समझा जाएगा कि यहाँ "सराय मालिक" शब्द का प्रयोग सीमित अर्थ में किया गया है, और यह किसी संपूर्ण वर्ग पर लागू नहीं होता है।

इसी वर्ष, 1823 में, थेनार्डियर पर लगभग पंद्रह सौ फ़्रैंक के छोटे-मोटे कर्ज का बोझ था, और इससे वह चिंतित हो गया था।

इस मामले में नियति का चाहे जो भी अन्याय रहा हो, थेनार्डियर उन लोगों में से एक थे जो आतिथ्य सत्कार को सबसे अच्छी तरह, सबसे गहनता से और सबसे आधुनिक ढंग से समझते थे। यही वह गुण है जो असभ्य लोगों में एक सद्गुण है और सभ्य लोगों में व्यापार का साधन। इसके अलावा, वे एक प्रशंसनीय शिकारी थे और निशानेबाजी में अपनी कुशलता के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी एक विशिष्ट प्रकार की ठंडी और शांत हंसी थी, जो विशेष रूप से खतरनाक थी।

एक सराय मालिक के रूप में उनके सिद्धांत कभी-कभी बिजली की तरह कौंध जाते थे। उनके पास पेशेवर कहावतें थीं, जिन्हें वे अपनी पत्नी के दिमाग में बिठा देते थे। एक दिन उन्होंने अपनी पत्नी से उग्र स्वर में और धीमी आवाज़ में कहा, “सराय मालिक का कर्तव्य है कि वह पहले आने वाले को भोजन, आराम, रोशनी, आग, गंदी चादरें, नौकर, जूँ और मुस्कान बेचे; राहगीरों को रोके, छोटी पर्स खाली करे और ईमानदारी से भारी पर्स हल्की करे; यात्रा करने वाले परिवारों को सम्मानपूर्वक आश्रय दे; पुरुष की दाढ़ी बनाए, महिला के बाल काटे, बच्चे को साफ करे; खिड़की खुली हो या बंद, चिमनी का कोना, आरामकुर्सी, कुर्सी, ओटोमन, स्टूल, पंखों वाला बिस्तर, गद्दा और पुआल का गट्ठा, हर चीज़ का हिसाब रखे; यह जाने कि परछाई दर्पण का कितना हिस्सा इस्तेमाल करती है और उसकी कीमत लगाए; और, भगवान की कसम, यात्री से हर चीज़ का हिसाब ले, यहाँ तक कि उन मक्खियों का भी जो उसका कुत्ता खा जाता है!”

यह पुरुष और यह महिला छल और क्रोध का मिलाजुला रूप थे—एक घिनौनी और भयानक जोड़ी।

जब पति सोच-विचार कर विचार कर रहा था और हिसाब लगा रहा था, तब मैडम थेनार्डियर ने अनुपस्थित लेनदारों के बारे में नहीं सोचा, न ही कल की परवाह की और न ही आने वाले कल की, और एक ही पल में गुस्से में डूबी रहीं।

ये दोनों प्राणी ऐसे ही थे। कोसेट उनके बीच फंसी हुई थी, उनके दोहरे दबाव का शिकार, मानो कोई प्राणी चक्की में पिस रहा हो और चिमटे से नोच-नोच कर टुकड़े कर रहा हो। पुरुष और स्त्री दोनों के तरीके अलग-अलग थे: कोसेट पर लगातार प्रहार किए गए—यह स्त्री का काम था; वह सर्दियों में नंगे पैर चली — यह पुरुष का काम था।

कोसेट ऊपर-नीचे भागती रही, कपड़े धोती, झाड़ू लगाती, रगड़ती, धूल झाड़ती, दौड़ती, इधर-उधर फड़फड़ाती, हांफती, भारी सामान उठाती और अपनी कमजोरी के बावजूद सारा कठिन काम करती रही। उस पर ज़रा भी दया नहीं थी; एक क्रूर मालकिन और एक ज़हरीला मालिक। थेनार्डियर सराय मकड़ी के जाले जैसी थी, जिसमें कोसेट फंसी हुई थी और जहां वह कांपती पड़ी थी। इस भयावह घर में दमन का साक्षात रूप देखने को मिलता था। यह कुछ ऐसा था जैसे मक्खी मकड़ियों की सेवा कर रही हो।

बेचारी बच्ची चुपचाप बैठी रही।

जब ये आत्माएं ईश्वर को त्याग देती हैं और जीवन की शुरुआत में ही खुद को इस प्रकार बहुत छोटी और नग्न अवस्था में पाती हैं, तो उनके भीतर क्या होता है?

III. पुरुषों को शराब चाहिए और घोड़ों को पानी।

चार नए यात्री आ चुके थे।

कोसेट उदास मन से सोच रही थी; क्योंकि यद्यपि वह केवल आठ वर्ष की थी, उसने इतना कष्ट सहा था कि वह एक बूढ़ी औरत की तरह उदास भाव से सोच रही थी। मैडम थेनार्डियर के मुक्के के प्रहार से उसकी आँख काली पड़ गई थी, जिसके कारण मैडम थेनार्डियर समय-समय पर कहती थीं, "आँख पर मुक्के के प्रहार के साथ वह कितनी बदसूरत लग रही है!"

कोसेट सोच रही थी कि अंधेरा था, बहुत अंधेरा था, कि आने वाले यात्रियों के कमरों में रखे घड़े और पानी के पात्र भर गए होंगे और टंकी में अब पानी नहीं बचा होगा।

उन्हें कुछ राहत मिली क्योंकि थेनार्डियर के घर में कोई भी ज़्यादा पानी नहीं पीता था। वहाँ प्यासे लोगों की कभी कमी नहीं होती थी; लेकिन उनकी प्यास ऐसी होती थी जैसे जग भरकर पानी पीना हो, घड़े भरकर नहीं। शराब के इतने सारे गिलासों के बीच अगर कोई एक गिलास पानी भी माँग लेता, तो उन सभी आदमियों के सामने वह असभ्य ही लगता। लेकिन एक पल ऐसा आया जब बच्ची काँप उठी; मैडम थेनार्डियर ने चूल्हे पर उबलते हुए बर्तन का ढक्कन उठाया, फिर एक गिलास उठाया और तेज़ी से टंकी की ओर बढ़ीं। उन्होंने नल खोला; बच्ची ने अपना सिर उठा लिया था और वह महिला की हर हरकत को देख रही थी। नल से पानी की एक पतली धार निकली और गिलास आधा भर गया। “अच्छा,” उन्होंने कहा, “अब पानी नहीं है!” कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया। बच्ची ने साँस नहीं ली।

“वाह!” मैडम थेनार्डियर ने आधे भरे गिलास को देखते हुए कहा, “यह काफी होगा।”

कोसेट ने एक बार फिर अपने काम में खुद को लगा दिया, लेकिन पंद्रह मिनट तक उसे ऐसा लगा जैसे उसका दिल उसके सीने में एक बड़े बर्फ के टुकड़े की तरह उछल रहा हो।

वह इस तरह बीतते मिनटों को गिनती रही और चाहती थी कि काश अगली सुबह हो जाए। बीच-बीच में शराब पीने वालों में से कोई सड़क की ओर देखता और कहता, "यह तो भट्टी की तरह काला है!" या, "इस समय बिना लालटेन के सड़कों पर घूमने के लिए किसी को बिल्ली ही होना चाहिए!" और कोसेट कांप उठती।
तभी सराय में ठहरे फेरीवालों में से एक अंदर आया और कठोर स्वर में बोला:— मेरे घोड़े को पानी नहीं पिलाया गया है।
“हां, ऐसा हुआ है,” मैडम थेनार्डियर ने कहा।
“मैं तुमसे कहता हूँ कि ऐसा नहीं हुआ है,” फेरीवाले ने पलटकर जवाब दिया।
कोसेट मेज के नीचे से बाहर निकली थी।
“जी हां, श्रीमान!” उसने कहा, “घोड़े ने पानी पिया है; उसने एक बाल्टी से पानी पिया, पूरी बाल्टी भर के, और मैंने ही उसे पानी पिलाया था और उससे बात की थी।”
यह सच नहीं था; कोसेट ने झूठ बोला था।
“एक बदमाश है जो मेरी मुट्ठी जितना बड़ा है और घर जितने बड़े-बड़े झूठ बोलता है,” फेरीवाले ने कहा। “मैं तुम्हें बताता हूँ, उसे पानी नहीं पिलाया गया है, तुम छोटी सी भोली! पानी न मिलने पर वह फूंक मारने लगता है, यह बात मैं अच्छी तरह जानता हूँ।”
कोसेट ने अपनी बात जारी रखी और पीड़ा से कर्कश होती, लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ में कहा:
और उसने जी भरकर पिया।
फेरीवाले ने गुस्से में कहा, "आओ, यह बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा, मेरे घोड़े को पानी पिला दो, बस बात खत्म!"
कोसेट फिर से मेज के नीचे घुस गई।
“सच में, यह उचित है!” मैडम थेनार्डियर ने कहा, “अगर जानवर को पानी नहीं पिलाया गया है, तो उसे पानी पिलाना ही होगा।”
फिर चारों ओर नज़र घुमाते हुए:—

“अच्छा, अब! वह दूसरा जानवर कहाँ है?”
वह नीचे झुकी और उसने देखा कि कोसेट मेज के दूसरे छोर पर दुबकी हुई थी, लगभग पीने वालों के पैरों के नीचे।
“क्या तुम आ रहे हो?” मैडम थेनार्डियर चीख पड़ीं।
कोसेट उस छेद से बाहर निकली जिसमें वह छिपी हुई थी। थेनार्डियर ने आगे कहा:—
“मैडमोजेल डॉग-लैक-नेम, जाओ और उस घोड़े को पानी पिलाओ।”
“लेकिन, मैडम,” कोसेट ने कमजोर आवाज में कहा, “यहां पानी नहीं है।” थेनार्डियर ने सड़क का दरवाजा पूरी तरह खोल दिया:—
"तो फिर जाओ और कुछ ले आओ!"
कोसेट ने अपना सिर झुकाया और चिमनी के कोने के पास रखी एक खाली बाल्टी लेने के लिए आगे बढ़ी।
यह बाल्टी उससे बड़ी थी, और बच्ची उसमें आराम से बैठ सकती थी।
थेनार्डियर अपने चूल्हे के पास लौटी और लकड़ी के चम्मच से बर्तन में जो कुछ था उसे चखा, और साथ ही बड़बड़ाती रही:—
“बसंत ऋतु में तो बहुत कुछ होता है। ऐसा दुष्ट प्राणी पहले कभी नहीं देखा गया। मुझे लगता है कि मुझे प्याज छानने में और सावधानी बरतनी चाहिए थी।” फिर उसने एक दराज में तलाशी ली जिसमें सॉस, काली मिर्च और प्याज़ रखे थे। “देखो, मैमसेले टोड,” उसने आगे कहा, “वापस आते समय, तुम्हें बेकर से एक बड़ी रोटी मिलेगी। ये लो पंद्रह सू का सिक्का।”
कोसेट के एप्रन के एक तरफ एक छोटी सी जेब थी; उसने बिना कुछ कहे सिक्का निकाला और उसे उस जेब में रख दिया।
फिर वह बाल्टी हाथ में लिए, खुले दरवाजे के सामने, बिना हिले-डुले खड़ी रही। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी के आने और उसकी मदद करने का इंतज़ार कर रही हो।
“यहाँ से चले जाओ!” थेनार्डियर चिल्लाया।

कोसेट बाहर चली गई। उसके पीछे दरवाजा बंद हो गया।

IV. गुड़िया के दृश्य पर प्रवेश

जैसा कि पाठक को याद होगा, गिरजाघर से शुरू होने वाली खुली छतों की कतार थेनार्डियर्स के सराय तक फैली हुई थी। ये सभी छतें रोशन थीं, क्योंकि नागरिक जल्द ही आधी रात की प्रार्थना के लिए जाने वाले थे। कागज़ की चिमनियों में मोमबत्तियाँ जल रही थीं, जिन्हें देखकर थेनार्डियर्स के यहाँ मेज पर बैठे शिक्षक ने कहा, "जादुई प्रभाव" पैदा हो रहा था। इसके बदले में, आकाश में एक भी तारा दिखाई नहीं दे रहा था।

इन दुकानों में से आखिरी दुकान, जो ठीक थेनार्डियर्स के दरवाजे के सामने थी, एक खिलौनों की दुकान थी जो टिनसेल, कांच और टिन की शानदार वस्तुओं से जगमगा रही थी। पहली पंक्ति में, और काफी आगे, व्यापारी ने सफेद नैपकिन की पृष्ठभूमि पर लगभग दो फुट ऊंची एक विशाल गुड़िया रखी थी, जिसने गुलाबी क्रेप का वस्त्र पहना था, उसके सिर पर सोने के गेहूं के कान थे, जो असली बाल और एनामेल की आंखें थीं। उस पूरे दिन, यह अद्भुत गुड़िया दस साल से कम उम्र के सभी राहगीरों के आश्चर्य के लिए प्रदर्शित की गई थी, लेकिन मॉन्टफर्मेइल में कोई भी ऐसी माँ नहीं मिली जो इतनी अमीर या इतनी खर्चीली हो कि इसे अपने बच्चे को दे सके। एपोनिन और अज़ेलमा ने इसे निहारते हुए घंटों बिताए थे, और कोसेट ने भी चुपके से इस पर एक नज़र डाली थी।

जब कोसेट बाल्टी हाथ में लिए उदास और हताश होकर बाहर निकली, तो उसकी निगाहें उस अद्भुत गुड़िया पर टिक गईं, जिसे वह 'लेडी' कहती थी। बेचारी बच्ची अचंभित रह गई। उसने उस गुड़िया को इतनी करीब से पहले कभी नहीं देखा था। पूरी दुकान उसे महल जैसी लग रही थी: गुड़िया, गुड़िया नहीं, एक सपना थी। वह आनंद, वैभव, धन-दौलत, खुशी थी, जो उस दुखी नन्ही सी बच्ची के चारों ओर एक जादुई आभा की तरह प्रकट हुई, जो घोर उदासी और निराशा में डूबी हुई थी। बचपन की उदासी और मासूमियत भरी समझ से, कोसेट ने उस गुड़िया से अपनी दूरी का अंदाज़ा लगाया। उसने मन ही मन कहा कि ऐसी गुड़िया पाने के लिए किसी को रानी या कम से कम राजकुमारी होना चाहिए। उसने उस खूबसूरत गुलाबी पोशाक, उसके सुंदर मुलायम बालों को निहारा और सोचा, "वह गुड़िया कितनी खुश होगी!" वह उस अद्भुत स्टॉल से अपनी निगाहें नहीं हटा पा रही थी। जितना ज़्यादा वह

देखती, उतना ही ज़्यादा उसकी नज़रें उस गुड़िया पर टिकतीं। उसे लगा मानो वह स्वर्ग को निहार रही हो। बड़ी गुड़िया के पीछे और भी गुड़िया थीं, जो उसे परियों और जिन्नों जैसी लग रही थीं। दुकान के सामने इधर-उधर टहल रहा व्यापारी उसे मानो परमपिता जैसा प्रतीत हो रहा था।

इस श्रद्धा भाव में वह सब कुछ भूल गई, यहां तक कि वह कार्य भी भूल गई जो उसे सौंपा गया था।

अचानक थेनार्डियर की कर्कश आवाज ने उसे वास्तविकता में वापस ला दिया: "क्या, तुम मूर्ख लड़की! तुम अभी तक नहीं गई? रुको! मैं तुम्हें सबक सिखाऊंगा! मैं जानना चाहता हूं कि तुम वहां क्या कर रही हो! जाओ, छोटी शैतान!"

थेनार्डियर ने सड़क पर एक नजर डाली और कोसेट को परमानंद की स्थिति में देखा।

कोसेट अपनी बाल्टी घसीटते हुए भागी और अपनी पूरी ताकत से लंबे-लंबे कदम बढ़ाती हुई दौड़ी।

V. वह छोटा बच्चा बिल्कुल अकेला

चूंकि थेनार्डियर सराय गांव के उस हिस्से में थी जो चर्च के पास है, इसलिए कोसेट को पानी के लिए चेल्स की दिशा में जंगल में स्थित झरने तक जाना पड़ता था।

उसने किसी भी दूसरे व्यापारी के स्टॉल की ओर नज़र नहीं डाली। जब तक वह बोलेंजर लेन में और चर्च के आस-पास थी, रोशन स्टॉल सड़क को रोशन कर रहे थे; लेकिन जल्द ही आखिरी स्टॉल की आखिरी रोशनी भी गायब हो गई। बेचारी बच्ची ने खुद को अंधेरे में पाया। वह उसमें घुस गई। तभी, एक अजीब सी भावना उस पर हावी हो गई और चलते-चलते वह बाल्टी के हैंडल को जितना हो सके हिलाने लगी। इससे एक आवाज़ निकली जो उसे साथ दे रही थी।

जैसे-जैसे वह आगे बढ़ती गई, अंधेरा और घना होता गया। सड़कों पर कोई नहीं था। हालांकि, उसकी मुलाकात एक महिला से हुई, जो उसे देखकर मुड़ी और वहीं खड़ी रह गई, अपने दांतों के बीच बुदबुदाते हुए बोली: “यह बच्चा कहाँ जा रहा होगा? क्या यह भेड़िया का बच्चा है?” फिर उस महिला ने कोसेट को पहचान लिया। “अच्छा,” उसने कहा, “यह तो लार्क है!”

इस तरह कोसेट चेल्स नदी के किनारे बसे मोंटफर्मेइल गाँव की घुमावदार और सुनसान गलियों के भूलभुलैया को पार करती हुई आगे बढ़ी। जब तक उसके रास्ते के दोनों ओर घर या यहाँ तक कि दीवारें भी थीं, वह ठीक-ठाक हिम्मत से चलती रही। बीच-बीच में उसे किसी खिड़की के शटर की दरार से मोमबत्ती की हल्की रोशनी दिखाई देती थी—यह रोशनी और जीवन का संकेत था; वहाँ लोग थे, और इससे उसे तसल्ली मिलती थी। लेकिन जैसे-जैसे वह आगे बढ़ती गई, उसकी चाल अपने आप धीमी होती गई। आखिरी घर के कोने से आगे बढ़ते ही कोसेट रुक गई। आखिरी दुकान से आगे बढ़ना मुश्किल था; आखिरी घर से आगे बढ़ना नामुमकिन हो गया। उसने अपनी बाल्टी ज़मीन पर रख दी, अपना हाथ अपने बालों में डाला और धीरे-धीरे अपना सिर खुजलाने लगी—यह बच्चों की एक आम हरकत होती है जब वे डरे हुए होते हैं और तय नहीं कर पाते कि क्या करें। अब यह मोंटफर्मेइल नहीं था; यह खुले मैदान थे। उसके सामने काला और वीरान इलाका था। वह निराशा से उस अंधेरे को

निहार रही थी, जहाँ अब कोई नहीं था, जहाँ जानवर थे, जहाँ शायद प्रेत थे। उसने गौर से देखा, जानवरों को घास पर चलते सुना, और पेड़ों में प्रेतों को हिलते-डुलते साफ़ देखा। फिर उसने अपनी बाल्टी दोबारा उठाई; डर ने उसे हिम्मत दी थी। "अरे!" उसने कहा; "मैं उसे बताऊँगी कि पानी खत्म हो गया है!" और वह दृढ़ निश्चय के साथ मॉन्टफर्मेइल में फिर से प्रवेश कर गई।

सौ कदम भी मुश्किल से चली ही थी कि वह रुक गई और अपना सिर खुजलाने लगी। अब उसके सामने थेनार्डियर प्रकट हुई, अपने भयानक, लकड़बग्घे जैसे मुंह और आँखों में भयंकर क्रोध लिए। बच्ची ने उदास निगाहों से आगे-पीछे देखा। अब वह क्या करे? उसका क्या होगा? वह कहाँ जाए? उसके सामने थेनार्डियर का साया था; उसके पीछे रात और जंगल के सारे प्रेत मंडरा रहे थे। थेनार्डियर के सामने ही वह पीछे हट गई। उसने झरने की ओर अपना रास्ता फिर से शुरू किया और दौड़ने लगी। वह गाँव से निकली, दौड़ती हुई जंगल में घुस गई, अब वह किसी की ओर देख भी नहीं रही थी और न ही किसी की सुन रही थी। वह केवल तभी रुकी जब उसकी साँस फूलने लगी; लेकिन उसने अपना रास्ता नहीं छोड़ा। वह हताशा में सीधे आगे बढ़ती रही।

दौड़ते समय उसे रोने जैसा महसूस हो रहा था।

जंगल की रात्रिकालीन कंपकंपी ने उसे पूरी तरह से घेर लिया था।

वह अब सोच भी नहीं रही थी, देख भी नहीं रही थी। रात की विशालता इस नन्हे प्राणी के सामने खड़ी थी। एक ओर, पूरी तरह से परछाई; दूसरी ओर, एक अणु मात्र।

जंगल के किनारे से झरने तक पैदल चलने में केवल सात-आठ मिनट लगते थे। कोसेट को रास्ता अच्छी तरह से पता था, क्योंकि वह दिन के उजाले में कई बार उस रास्ते से गुज़र चुकी थी। हैरानी की बात है कि वह रास्ता नहीं भटकी। उसकी सहज प्रवृत्ति ने उसे अस्पष्ट रूप से रास्ता दिखाया। लेकिन उसने अपनी नज़रें न तो दाईं ओर घुमाईं और न ही बाईं ओर, क्योंकि उसे शाखाओं और झाड़ियों में कुछ दिखने का डर था। इस तरह वह झरने तक पहुँच गई।

यह एक संकरा, प्राकृतिक बेसिन था, जो चिकनी मिट्टी में पानी द्वारा खोखला किया गया था, लगभग दो फुट गहरा, काई और उन लंबी, घुंघराली घासों से घिरा हुआ

था जिन्हें हेनरी चतुर्थ की झालर कहा जाता है, और कई बड़े पत्थरों से बना हुआ था। इसमें से एक छोटी सी धारा बहती थी, जिसकी आवाज़ शांत और मधुर थी।

कोसेट ने सांस लेने तक का समय नहीं लिया। घना अंधेरा था, लेकिन उसे इस झरने पर आने की आदत थी। उसने अंधेरे में अपने बाएं हाथ से उस युवा ओक के पेड़ को टटोला जो झरने की ओर झुका हुआ था और जिसका सहारा वह अक्सर लेती थी। उसे उसकी एक शाखा मिली, उसने उसे पकड़ लिया, झुकी और बाल्टी को पानी में डुबो दिया। वह इतनी उत्तेजित थी कि उसकी ताकत तीन गुना बढ़ गई थी। इस तरह झुकी हुई हालत में उसने ध्यान नहीं दिया कि उसके एप्रन की जेब से सारा पानी झरने में गिर गया। पंद्रह सू का सिक्का पानी में गिर गया। कोसेट ने न तो उसे गिरते देखा और न ही सुना। उसने लगभग भरी हुई बाल्टी को बाहर निकाला और घास पर रख दिया।

यह सब करने के बाद, उसे एहसास हुआ कि वह बहुत थक चुकी है। वह तुरंत दोबारा चलना चाहती थी, लेकिन बाल्टी भरने में इतनी मेहनत लगी थी कि उसके लिए एक कदम भी चलना असंभव हो गया। उसे बैठना पड़ा। वह घास पर बैठ गई और वहीं बैठी रही।

उसने अपनी आँखें बंद कर लीं; फिर उसने उन्हें फिर से खोल दिया, बिना यह जाने कि क्यों, बस इसलिए कि वह और कुछ कर नहीं सकती थी। उसके बगल में रखी बाल्टी में उथल-पुथल मचाता पानी ऐसे वृत्त बना रहा था जो टिन के साँपों जैसे दिख रहे थे।

ऊपर आकाश विशाल काले बादलों से ढका हुआ था, जो धुएँ के गुच्छों की तरह लग रहे थे। मानो छाया का दुखद मुखौटा बच्चे पर अस्पष्ट रूप से झुका हुआ था।

बृहस्पति ग्रह आकाश की गहराई में अस्त हो रहा था।

बच्ची ने उस विशाल तारे को हैरानी भरी निगाहों से देखा, जिससे वह अपरिचित थी और जो उसे भयभीत कर रहा था। दरअसल, वह ग्रह क्षितिज के बहुत करीब था और घने कोहरे की एक परत से गुजर रहा था, जिसके कारण उसका रंग भयानक लाल दिख रहा था। धुंध, जो बैंगनी रंग से धुँधली लग रही थी, ने तारे को और भी बड़ा बना दिया था। ऐसा लग रहा था मानो वह कोई चमकीला घाव हो।

मैदान से ठंडी हवा बह रही थी। जंगल घना अंधेरा था, एक पत्ता भी नहीं हिल रहा था; ग्रीष्म ऋतु की धुंधली, ताज़ी चमक कहीं नहीं थी। विशाल शाखाएँ

भयावह ढंग से ऊपर उठी हुई थीं। पतली और बेढंगी झाड़ियाँ खुले मैदानों में सीटी बजा रही थीं। उत्तर की हवा में लंबी घासें ईलों की तरह लहरा रही थीं। बिच्छू बूटी मानो अपने पंजों से सुसज्जित लंबे हाथों को शिकार की तलाश में घुमा रही हो। सूखी हीथर की कुछ पत्तियाँ हवा के झोंके से तेज़ी से उड़ रही थीं, मानो किसी आने वाली चीज़ से डरकर भाग रही हों। चारों ओर उदासी छाई हुई थी।

अंधकार विस्मयकारी था। मनुष्य को प्रकाश की आवश्यकता होती है। जो कोई स्वयं को दिन के विपरीत अंधकार में डुबो लेता है, उसका हृदय सिकुड़ जाता है। जब आँख काला देखती है, तो हृदय में चिंता जाग उठती है। रात के ग्रहण में, धुएँ के घने अंधकार में, सबसे साहसी हृदय भी चिंतित हो जाता है। रात में जंगल में कोई भी अकेला बिना काँपे नहीं चल सकता। परछाइयाँ और वृक्ष— दो भयानक घनत्व। धुंधली गहराइयों में एक काल्पनिक वास्तविकता प्रकट होती है। अकल्पनीय, आपसे कुछ ही कदमों की दूरी पर एक प्रेत जैसी स्पष्टता के साथ रेखांकित होता है। कोई तैरती हुई वस्तु को देखता है, चाहे वह अंतरिक्ष में हो या अपने ही मस्तिष्क में, जिसे वह नहीं जानता कि वह क्या अस्पष्ट और अमूर्त वस्तु है, जैसे सोते हुए फूलों के सपने। क्षितिज पर भयंकर मुद्राएँ दिखाई देती हैं। कोई उस विशाल काले शून्य की दुर्गंध को साँस में लेता है। कोई पीछे देखने से डरता है, फिर भी ऐसा करने की इच्छा रखता है। रात के अंधेरे में, मुरझाई हुई चीज़ें, चुपचाप खड़े चेहरे जो आगे बढ़ने पर गायब हो जाते हैं, अस्पष्ट बिखराव, चिड़चिड़े गुच्छे, फीके रंग के तालाब, अंतिम संस्कार में झलकती उदासी, सन्नाटे की विशालता, अज्ञात लेकिन संभव प्राणी, रहस्यमयी शाखाओं का झुकाव, पेड़ों के भयावह तने, कांपते पौधों के लंबे गुच्छे—इन सबके सामने कोई सुरक्षा नहीं। ऐसा कोई साहस नहीं जो कांप न उठे और जो पीड़ा की निकटता को महसूस न करे। किसी भयानक चीज़ का एहसास होता है, मानो आत्मा अंधेरे में विलीन हो रही हो। बच्चों के मामले में परछाइयों का यह प्रवेश अवर्णनीय रूप से भयावह होता है।

जंगल प्रलय के समान हैं, और एक नन्ही सी आत्मा के पंखों की फड़फड़ाहट उनकी विशालकाय छत्रछाया के नीचे पीड़ा की ध्वनि उत्पन्न करती है।

अपनी भावनाओं को समझे बिना भी, कोसेट को यह एहसास था कि प्रकृति की उस काली भयावहता ने उसे जकड़ लिया है; अब केवल भय ही उसे अपने वश में नहीं कर रहा

था; यह भय से भी कहीं अधिक भयानक था; वह कांप उठी। उस कंपकंपी की विचित्रता को शब्दों में बयां करना असंभव है, जिसने उसके दिल की गहराई तक उसे कंपकंपा दिया; उसकी आंखें बेकाबू हो गईं; उसे लगा कि वह कल उसी समय वहां वापस जाने से खुद को रोक नहीं पाएगी।

फिर, एक सहज प्रवृत्ति से, वह ज़ोर-ज़ोर से गिनने लगी, एक, दो, तीन, चार, और इसी तरह दस तक, उस विचित्र अवस्था से बचने के लिए जिसे वह समझ नहीं पा रही थी, लेकिन जो उसे भयभीत कर रही थी। गिनने के बाद, उसने फिर से गिनना शुरू किया; इससे उसे अपने आसपास की चीजों का सही-सही एहसास हुआ। पानी भरते समय उसके हाथ गीले हो गए थे, और अब ठंडे पड़ गए थे; वह उठी; उसका डर, एक स्वाभाविक और अदम्य डर, लौट आया था: अब उसके मन में बस एक ही विचार था—पूरी गति से जंगल से होते हुए, खेतों को पार करते हुए घरों तक, खिड़कियों तक, जलती हुई मोमबत्तियों तक भाग जाना। उसकी नज़र सामने रखे पानी पर पड़ी; थेनार्डियर ने उसे इतना भयभीत कर दिया था कि वह पानी की बाल्टी के बिना भागने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी: उसने दोनों हाथों से बाल्टी का हैंडल पकड़ लिया; वह मुश्किल से बाल्टी उठा पा रही थी।

इस तरह वह बारह कदम आगे बढ़ी, लेकिन बाल्टी भर चुकी थी; वह भारी थी; उसे मजबूरन उसे ज़मीन पर रखना पड़ा। उसने एक पल के लिए साँस ली, फिर बाल्टी का हैंडल उठाया और आगे बढ़ने लगी, इस बार थोड़ा और आगे बढ़ी, लेकिन फिर उसे रुकना पड़ा। कुछ सेकंड आराम करने के बाद वह फिर चल पड़ी। वह आगे की ओर झुकी हुई, सिर झुकाए, किसी बूढ़ी औरत की तरह चल रही थी; बाल्टी के भार से उसकी पतली बाहें तन गई थीं। लोहे के हैंडल ने उसके गीले और छोटे हाथों को पूरी तरह सुन्न और जमा दिया था; उसे बार-बार रुकना पड़ता था, और हर बार रुकने पर बाल्टी से छलक कर छलक कर ठंडा पानी उसकी नंगी टांगों पर गिरता था। यह सब घने जंगल में, रात के समय, सर्दियों में, इंसानों की नज़रों से दूर, घट रहा था; वह आठ साल की बच्ची थी: उस दुखद दृश्य को उस समय केवल भगवान ने ही देखा था।

और उसकी माँ, निस्संदेह, अफसोस!

क्योंकि ऐसी चीजें भी होती हैं जो मुर्दों को उनकी कब्रों में आंखें खोलने पर मजबूर कर देती हैं।

वह दर्द भरी घरघराहट के साथ हांफ रही थी; सिसकियों से उसका गला सूख रहा था, लेकिन वह रोने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी, क्योंकि वह थेनार्डियर से इतनी डरी हुई थी, यहां तक कि दूर से भी: उसकी यह आदत थी कि वह थेनार्डियर को हमेशा मौजूद मानती थी।

हालांकि, इस तरह से वह ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाई और बहुत धीमी गति से चलने लगी। रुकने की दूरी कम करने और उनके बीच जितना संभव हो उतना चलने के बावजूद, वह इस बात से दुखी थी कि इस तरह से मोंटफर्मेइल लौटने में उसे एक घंटे से अधिक समय लग जाएगा और थेनार्डियर उसे हरा देगा। यह दुख रात में जंगल में अकेले होने के उसके डर के साथ मिला हुआ था; वह थकान से चूर थी और अभी तक जंगल से बाहर नहीं निकली थी। एक पुराने शाहबलूत के पेड़ के पास पहुँचकर, जिससे वह परिचित थी, उसने आराम करने के लिए बाकी जगहों से ज़्यादा देर तक एक आखिरी पड़ाव लिया; फिर उसने अपनी पूरी ताकत जुटाई, अपनी बाल्टी फिर से उठाई और साहसपूर्वक अपनी यात्रा फिर से शुरू की, लेकिन बेचारी हताश छोटी सी प्राणी "हे भगवान! हे भगवान!" चिल्लाने से खुद को रोक नहीं पाई।

उसी क्षण उसे अचानक एहसास हुआ कि उसकी बाल्टी का वज़न बिल्कुल खत्म हो गया है: एक विशाल सा हाथ बाल्टी का हैंडल पकड़कर उसे ज़ोर से उठा रहा था। उसने अपना सिर ऊपर उठाया। एक बड़ा, काला सा दिखने वाला व्यक्ति, सीधा और तनकर, अँधेरे में उसके बगल में चल रहा था; वह एक आदमी था जो उसके पीछे से आया था और जिसकी आहट उसने नहीं सुनी थी। उस आदमी ने बिना कुछ बोले, उसकी बाल्टी का हैंडल पकड़ लिया था।

जीवन के सभी अनुभवों के लिए सहज प्रवृत्ति मौजूद होती है।

बच्चा डरा नहीं था।

VI. जो संभवतः बौलाट्रुएल की बुद्धिमत्ता को सिद्ध करता है

उसी क्रिसमस दिवस, 1823 की दोपहर को, एक व्यक्ति पेरिस के बुलेवार्ड डी ल'हॉपिटल के सबसे सुनसान हिस्से में काफी देर तक चलता रहा। वह व्यक्ति आवास की तलाश में लग रहा था, और ऐसा प्रतीत होता था कि वह सेंट-मार्सेउ उपनगर की उस जर्जर सीमा पर स्थित सबसे साधारण घरों में रुकना पसंद करता था।

आगे चलकर हमें पता चलेगा कि वास्तव में उस व्यक्ति ने उस एकांत इलाके में एक कमरा किराए पर लिया था।

अपने पहनावे और पूरे व्यक्तित्व से यह व्यक्ति एक सभ्य भिक्षु का आदर्श उदाहरण था—अत्यधिक दीनता और अत्यधिक स्वच्छता का अनूठा मेल। यह एक दुर्लभ संयोजन है जो बुद्धिमान हृदयों में उस दोहरे सम्मान की भावना जगाता है जो एक अत्यंत गरीब और एक अत्यंत सम्मानित व्यक्ति के प्रति होती है। उसने एक बहुत पुरानी और अच्छी तरह से तराशी हुई गोल टोपी पहन रखी थी; एक मोटा, बिल्कुल घिसा-पिटा, गेरू पीले रंग का कोट, जो उस युग में बिल्कुल भी असामान्य रंग नहीं था; जेबों वाली एक बड़ी जैकेट; घुटनों तक धूसर हो चुकी काली पैंट, काले ऊनी मोजे; और तांबे के बकल वाले मोटे जूते। ऐसा लगता था मानो वह किसी अच्छे परिवार में गुरु रहा हो, जो विदेश से लौटा हो। उसके बिल्कुल सफेद बाल, झुर्रीदार माथे, पीले होंठ और चेहरे पर उदासी और जीवन की थकान साफ झलकती थी, जिससे वह साठ वर्ष से अधिक आयु का प्रतीत होता था। उनकी दृढ़ चाल और हर हरकत में झलकने वाली असाधारण ऊर्जा को देखकर, शायद ही कोई उन्हें पचास वर्ष का समझ पाता। उनके माथे की झुर्रियाँ सुस्पष्ट थीं और जो भी उन्हें ध्यान से देखता, वह उन पर मोहित हो जाता। उनके होंठ एक अजीब सी सिकुड़न से बंद थे, जो देखने में गंभीर और विनम्रतापूर्ण लगती थी। उनकी दृष्टि की गहराई में एक अवर्णनीय उदासी और शांति थी। उनके बाएँ हाथ में एक रूमाल में लिपटा एक छोटा सा बंडल था; दाएँ हाथ में वे किसी झाड़ी से काटी गई एक लाठी जैसी वस्तु पर टिके हुए थे। इस छड़ी को बड़े सलीके से तराशा गया

था और यह देखने में ज्यादा डरावनी नहीं लगती थी; इसकी गांठों का पूरा ध्यान रखा गया था और इस पर लाल मोम से बना मूंगे जैसा ऊपरी हिस्सा लगा था: यह एक लाठी थी, और देखने में बेंत जैसी लगती थी।

उस सड़क पर राहगीरों की संख्या बहुत कम है, खासकर सर्दियों में। वह व्यक्ति उनसे मिलने की बजाय उनसे बचने की कोशिश करता प्रतीत होता था, लेकिन इसमें कोई बनावटीपन नहीं था।

उस दौर में, राजा लुई XVIII लगभग हर दिन चॉइसी-ले-रोई जाया करते थे: यह उनकी पसंदीदा सैरों में से एक थी। दोपहर दो बजे के आसपास, लगभग हमेशा ही, शाही रथ और घुड़सवारों का काफिला बुलेवार्ड डी ल'हॉपिटल से पूरी गति से गुजरता हुआ देखा जाता था।

यह उस इलाके की गरीब महिलाओं के लिए घड़ी या टाइमपीस का काम करता था, जो कहती थीं, "दो बज गए हैं; वह ट्यूलरीज़ लौट रहा है।"

कुछ लोग आगे बढ़े, और कुछ कतार में खड़े हो गए, क्योंकि राजा के आने-जाने से हमेशा हलचल मच जाती थी; इसके अलावा, लुई XVIII का आना-जाना पेरिस की सड़कों पर एक अलग ही प्रभाव पैदा करता था। यह तीव्र था, फिर भी राजसी था। इस शक्तिहीन राजा को तेज़ दौड़ का शौक था; क्योंकि वह चल नहीं सकता था, इसलिए वह दौड़ना चाहता था: वह अपाहिज बिजली की गति से भी दौड़ना चाहता था। वह नंगी तलवारों के बीच से शांत और गंभीर भाव से गुजरा। उसका विशाल पलंग, जो पूरी तरह से सोने से मढ़ा हुआ था और जिस पर लिली की बड़ी-बड़ी शाखाएँ चित्रित थीं, शोर मचाते हुए आगे बढ़ा। उस पर एक नज़र डालने का भी समय नहीं था। दाहिनी ओर पीछे के कोण से देखने पर सफेद साटन के गद्दीदार कुशनों पर एक विशाल, दृढ़ और लालिमा लिए चेहरा दिखाई दे रहा था, माथे पर शाही अंदाज़ में ताज़ा पाउडर लगा हुआ था, एक गर्वित, कठोर और धूर्त आँख, एक शिक्षित व्यक्ति की मुस्कान, एक बुर्जुआ कोट के ऊपर लहराते हुए सोने की झालर वाले दो बड़े एपॉलेट्स, गोल्डन फ्लीस, सेंट लुई का क्रॉस, लीजन ऑफ ऑनर का क्रॉस, सेंट-एस्पिरिट की चांदी की पट्टिका, एक बड़ा तोंद और एक चौड़ा नीला रिबन: यह राजा था। पेरिस के बाहर, वह सफेद शुतुरमुर्ग के पंखों से सजी अपनी टोपी को ऊँचे अंग्रेजी गैटर में लिपटे अपने घुटनों पर रखता था; जब वह शहर में फिर से प्रवेश करता, तो वह अपनी टोपी पहन लेता और शायद ही कभी अभिवादन करता; वह लोगों को ठंडी निगाहों से देखता, और लोग भी उसे उसी तरह घूरते। जब वह पहली

बार सेंट-मार्सेउ इलाके में दिखाई दिया, तो उसकी सारी सफलता एक उपनगरीय निवासी द्वारा उसके साथी से की गई इस टिप्पणी में समाहित है, "वह बड़ा आदमी जो सामने खड़ा है, वही सरकार है।"

इसलिए, राजा का ठीक उसी समय इस तरह से गुजरना बुलेवार्ड डे ल'हॉपिटल की दैनिक घटना बन गई थी।

पीले कोट पहने वह राहगीर स्पष्ट रूप से उस इलाके का निवासी नहीं था, और शायद पेरिस का भी नहीं, क्योंकि उसे इस बात की जानकारी नहीं थी। जब दो बजे, चांदी की फीती से ढके अंगरक्षकों के एक दस्ते से घिरी शाही गाड़ी, साल्पेट्रिएर मोड़ लेने के बाद बुलेवार्ड पर उतरी, तो वह आश्चर्यचकित और लगभग भयभीत दिखाई दिया। उस चौराहे पर उसके सिवा कोई नहीं था। उसने जल्दी से एक बाड़े की दीवार के कोने के पीछे गाड़ी रोक दी, हालांकि इससे एम. ले ड्यूक डी हावरे उसे देखने से नहीं रोक पाए।

उस दिन ड्यूटी पर तैनात गार्ड के कप्तान एम. ले ड्यूक डी हावरे, राजा के सामने रथ में बैठे थे। उन्होंने महाराज से कहा, "वहाँ एक खतरनाक दिखने वाला आदमी है।" राजा के रास्ते की सुरक्षा कर रहे पुलिसकर्मियों ने भी उस पर ध्यान दिया: उनमें से एक को उसका पीछा करने का आदेश मिला। लेकिन वह आदमी उपनगरीय इलाके की सुनसान गलियों में घुस गया, और जैसे ही शाम ढलने लगी, पुलिसकर्मी उसका पता नहीं लगा पाए, जैसा कि उसी शाम राज्य मंत्री और पुलिस प्रमुख एम. ले कॉम्टे डी'एंगल्स को भेजी गई एक रिपोर्ट में बताया गया है।

जब पीले कोट वाले आदमी ने एजेंट को चकमा दे दिया, तो उसने अपनी चाल और तेज़ कर दी, हालांकि वह बार-बार पीछे मुड़कर यह सुनिश्चित कर रहा था कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। सवा चार बजे, यानी जब पूरी रात हो चुकी थी, वह पोर्ट सेंट-मार्टिन थिएटर के सामने से गुजरा, जहां उस दिन 'द टू कॉन्विक्ट्स' नाटक चल रहा था। थिएटर की लालटेन से जगमगाते इस पोस्टर ने उसका ध्यान खींचा; क्योंकि वह तेज़ी से चल रहा था, फिर भी वह रुककर उसे पढ़ने लगा। एक पल में वह ला प्लांशेट की संकरी गली में था, और उसने 'द प्यूटर प्लैटर' में प्रवेश किया, जहां लैग्नी के लिए कोच का कार्यालय स्थित था। यह कोच साढ़े चार बजे रवाना हुआ। घोड़ों को जोता गया, और कोचवान द्वारा बुलाए गए यात्री जल्दी से वाहन की ऊंची लोहे की सीढ़ी पर चढ़ने लगे।

उस व्यक्ति ने पूछा:—
"क्या आपके पास कोई जगह है?"
“केवल एक—मेरे बगल में डिब्बे पर,” कोचवान ने कहा।
"ये मै लूंगा।"
"ऊपर चढ़ना।"
फिर भी, रवाना होने से पहले, कोचवान ने यात्री के फटेहाल कपड़ों और उसके छोटे से बंडल पर एक नज़र डाली और उससे किराया वसूल लिया।
“क्या आप लाग्नी तक जा रहे हैं?” कोचवान ने पूछा।
“हां,” उस आदमी ने कहा।
यात्री ने लैग्नी को भुगतान किया।
वे चल पड़े। जब वे बैरियर पार कर गए, तो कोचवान ने बातचीत शुरू करने की कोशिश की, लेकिन यात्री ने केवल एक-एक शब्द में जवाब दिया। कोचवान ने सीटी बजाना और अपने घोड़ों को कोसना शुरू कर दिया।
कोचवान ने खुद को अपने लबादे में लपेट लिया। ठंड थी। लेकिन ऐसा लग रहा था मानो उसे इस बात का कोई ख्याल ही नहीं था। इस तरह वे गौर्ने और न्यूइली- सुर-मार्ने से गुज़र गए।
शाम छह बजे के करीब वे चेल्स पहुंचे। कोचवान ने अपने घोड़ों को आराम देने के लिए शाही मठ की प्राचीन इमारतों में बने गाड़ीवालों के सराय के सामने गाड़ी रोक दी।
“मैं यहाँ नीचे आता हूँ,” उस आदमी ने कहा।
उसने अपना गठ्ठा और लाठी ली और गाड़ी से नीचे कूद गया।
एक पल बाद ही वह गायब हो गया।
वह सराय में दाखिल नहीं हुआ।
कुछ मिनट बाद जब कोच लैग्नी के लिए रवाना हुआ, तो चेल्स की मुख्य सड़क पर उसकी मुलाकात उससे नहीं हुई।
कोचवान ने अंदर बैठे यात्रियों की ओर रुख किया।

“वहाँ,” उसने कहा, “एक आदमी है जो यहाँ का नहीं है, क्योंकि मैं उसे नहीं जानता। उसके पास एक पैसा भी नहीं है, लेकिन वह पैसे की परवाह नहीं करता; वह लैग्नी को पैसे देता है और केवल चेल्स तक ही जाता है। रात हो चुकी है; सभी घर बंद हैं; वह सराय में नहीं जाता और न ही उसका पता चलता है। इसलिए वह धरती में समा गया है।”

वह व्यक्ति धरती में नहीं धंसा था, बल्कि अंधेरे में बड़े-बड़े कदम बढ़ाते हुए चेल्स की मुख्य सड़क पर चला गया था, फिर चर्च पहुंचने से पहले दाहिनी ओर मुड़कर मोंटफर्मेइल की ओर जाने वाले चौराहे पर मुड़ गया, मानो वह उस इलाके से परिचित हो और पहले भी वहां जा चुका हो।

वह तेज़ी से इस सड़क पर चलने लगा। जहाँ यह सड़क गाग्नी से लाग्नी तक जाने वाली प्राचीन, पेड़ों से घिरी सड़क से मिलती है, वहाँ उसे लोगों के आने की आवाज़ सुनाई दी। उसने तुरंत एक खाई में छुपकर खुद को छिपा लिया और राहगीरों के दूर चले जाने तक वहीं इंतज़ार किया। हालाँकि, यह सावधानी लगभग बेकार ही थी; क्योंकि जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, वह दिसंबर की बहुत ही अंधेरी रात थी। आकाश में दो-तीन से ज़्यादा तारे दिखाई नहीं दे रहे थे।

यहीं से पहाड़ी की चढ़ाई शुरू होती है। वह व्यक्ति मोंटफर्मेइल जाने वाली सड़क पर वापस नहीं लौटा; वह दाईं ओर खेतों को पार करते हुए लंबे-लंबे कदमों से जंगल में प्रवेश कर गया।

जंगल में पहुँचकर उसने अपनी चाल धीमी कर दी और सभी पेड़ों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने लगा। वह कदम-दर-कदम आगे बढ़ता रहा, मानो किसी रहस्यमयी रास्ते की खोज कर रहा हो, जिसे केवल वही जानता हो। एक क्षण ऐसा आया जब उसे लगा कि वह रास्ता भटक गया है और वह असमंजस में रुक गया। अंततः, धीरे-धीरे रास्ता टटोलते हुए, वह एक खुले मैदान में पहुँचा जहाँ सफ़ेद पत्थरों का एक बड़ा ढेर था। वह तेज़ी से उन पत्थरों के पास गया और रात के धुंध में उनका ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने लगा, मानो उनका निरीक्षण कर रहा हो। पत्थरों के ढेर से कुछ ही कदम की दूरी पर एक विशाल वृक्ष खड़ा था, जो वनस्पति के मस्सों जैसे उभारों से ढका हुआ था। वह उस वृक्ष के पास गया और तने की छाल पर हाथ फेरने लगा, मानो सभी मस्सों को पहचानकर गिनने की कोशिश कर रहा हो।

इस राख के पेड़ के ठीक सामने एक शाहबलूत का पेड़ था, जिसकी छाल उतर रही थी और उस पर मरहम के तौर पर जस्ता की एक पट्टी ठोंक दी गई थी। उसने अपने पैर की उंगलियों के बल खड़े होकर जस्ता की उस पट्टी को छुआ।

फिर वह पेड़ और पत्थरों के ढेर के बीच की जगह में थोड़ी देर तक जमीन पर इधर-उधर घूमता रहा, मानो कोई व्यक्ति यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहा हो कि मिट्टी को हाल ही में छेड़ा तो नहीं गया है।

यह सब करने के बाद, उसने अपनी स्थिति का जायजा लिया और जंगल से होते हुए अपनी यात्रा फिर से शुरू कर दी।

यह वही आदमी था जो अभी-अभी कोसेट से मिला था।

जब वह मोंटफर्मेइल की ओर घनी झाड़ियों से गुज़र रहा था, तो उसने एक छोटी सी परछाई को कराहते हुए हिलते हुए देखा, जो ज़मीन पर कुछ बोझ रख रही थी, फिर उसे उठाकर आगे बढ़ रही थी। वह पास पहुँचा और देखा कि वह एक बहुत छोटा बच्चा था, जिसके पास पानी से भरी एक बड़ी बाल्टी थी। फिर वह बच्चे के पास गया और चुपचाप बाल्टी का हैंडल पकड़ लिया।

VII. कोसेट अगल-बगल, अंधेरे में अजनबी के साथ

जैसा कि हमने कहा है, कोसेट डरी नहीं थी।
उस आदमी ने उससे बात की। उसकी आवाज़ गंभीर और लगभग भारी थी।
“मेरे बच्चे, जो बोझ तुम उठा रहे हो वह तुम्हारे लिए बहुत भारी है।” कोसेट ने अपना सिर उठाया और उत्तर दिया:—
"जी श्रीमान।"
“मुझे दे दो,” उस आदमी ने कहा; “मैं इसे तुम्हारे लिए ले जाऊंगा।” कोसेट ने बाल्टी का हैंडल छोड़ दिया। वह आदमी उसके बगल में चलने लगा। “यह सचमुच बहुत भारी है,” उसने दांतों के बीच से बुदबुदाते हुए कहा। फिर उसने आगे कहा:—
“तुम्हारी उम्र कितनी है, नन्ही बच्ची?”
“आठ, महोदय।”
"क्या आप इतनी दूर से आए हैं?"
"जंगल में स्थित झरने से।"
क्या आप बहुत दूर जा रहे हैं?
"यहाँ से लगभग पंद्रह मिनट की पैदल दूरी पर।"
वह व्यक्ति कुछ क्षण तक चुप रहा; फिर अचानक बोला:—
तो तुम्हारी कोई माँ नहीं है।
“मुझे नहीं पता,” बच्चे ने उत्तर दिया।
उस आदमी के दोबारा बोलने से पहले ही उसने आगे कहा:—
मुझे ऐसा नहीं लगता। दूसरे लोगों की मां होती हैं। मेरी कोई मां नहीं है।
और कुछ देर की चुप्पी के बाद उसने आगे कहा:—

मुझे लगता है कि मेरे पास कभी कोई नहीं था।
वह आदमी रुक गया; उसने बाल्टी को जमीन पर रख दिया, नीचे झुका और दोनों हाथ बच्ची के कंधों पर रखकर अंधेरे में उसका चेहरा देखने की कोशिश करने लगा।
कोसेट का पतला और बीमार चेहरा आकाश की धुंधली रोशनी में अस्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।
“तुम्हारा नाम क्या है?” उस आदमी ने पूछा।
कोसेट।
ऐसा लग रहा था मानो उस आदमी को बिजली का झटका लगा हो। उसने एक बार फिर कोसेट की ओर देखा; फिर उसने कोसेट के कंधों से अपने हाथ हटाए, बाल्टी उठाई और दोबारा चल पड़ा।
कुछ क्षण बाद उसने पूछा:—
“तुम कहाँ रहती हो, नन्ही बच्ची?”
"मोंटफर्मेइल में, अगर आपको पता हो कि वह कहाँ है।"
“क्या हम वहीं जा रहे हैं?”
"जी श्रीमान।"
वह रुका; फिर दोबारा शुरू किया:—
“तुम्हें इस समय जंगल से पानी लाने के लिए किसने भेजा?”
“वह मैडम थेनार्डियर थीं।”
उस व्यक्ति ने अपनी बात फिर से शुरू की, उसकी आवाज में उदासीनता झलक रही थी, फिर भी उसमें एक अजीब सी कंपकंपी थी:
“आपकी मैडम थेनार्डियर क्या करती हैं?”
“वह मेरी मालकिन है,” बच्चे ने कहा। “वह सराय चलाती है।”
“सराय?” उस आदमी ने कहा। “मैं आज रात वहीं ठहरने वाला हूँ। मुझे रास्ता बताइए।”
बच्चे ने कहा, "हम रास्ते में हैं।"

वह आदमी काफी तेज़ चल रहा था। कोसेट बिना किसी कठिनाई के उसके पीछे-पीछे चल रही थी। उसे अब ज़रा भी थकान महसूस नहीं हो रही थी। समय-समय पर वह शांति और अवर्णनीय आत्मविश्वास के साथ उस आदमी की ओर देखती। उसे कभी ईश्वर की कृपा पर भरोसा करना और प्रार्थना करना नहीं सिखाया गया था; फिर भी, उसे अपने भीतर आशा और आनंद जैसी कोई अनुभूति हो रही थी, जो स्वर्ग की ओर बढ़ रही थी। कुछ मिनट बीत गए। उस व्यक्ति ने बोलना फिर शुरू किया:—
“क्या मैडम थेनार्डियर के घर में कोई नौकर नहीं है?”
"जी नहीं, महोदय।"
"तुम वहाँ अकेले हो?"
"जी श्रीमान।"
फिर कुछ देर का विराम हुआ। कोसेट ने ऊँची आवाज़ में कहा:—
यानी, दो छोटी लड़कियां हैं।
“कौन सी छोटी लड़कियाँ?”
“पोनीन और ज़ेल्मा।”
इस तरह बच्चे ने थेनार्डियर परिवार की महिलाओं को प्रिय रोमांटिक नामों को सरल बना दिया।
“पोनीन और ज़ेल्मा कौन हैं?”
"ये मैडम थेनार्डियर की युवतियां हैं; उनकी बेटियां, जैसा कि आप कहना चाहेंगे।"
और वो लड़कियां क्या करती हैं?
“ओह!” बच्चे ने कहा, “उनके पास सुंदर गुड़िया हैं; सोने से जड़ी हुई, ढेर सारी चीजों से भरी हुई। वे खेलती हैं; वे अपना मनोरंजन करती हैं।” "दिन भर?"
"जी श्रीमान।"
"और आप?"
मैं? मैं काम करता हूँ।

"दिन भर?"
बच्ची ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें उठाईं, जिनमें एक आँसू लटका हुआ था, जो अँधेरे के कारण दिखाई नहीं दे रहा था, और धीरे से उत्तर दिया:—
"जी श्रीमान।"
कुछ देर की चुप्पी के बाद उसने आगे कहा:—
"कभी-कभी, जब मेरा काम खत्म हो जाता है और वे मुझे अनुमति देते हैं, तो मैं अपना मनोरंजन भी करता हूँ।"
आप अपना मनोरंजन कैसे करते हैं?
“मैं अपनी पूरी कोशिश करता हूँ। वे मुझे अकेला छोड़ देते हैं; लेकिन मेरे पास खेलने के लिए ज़्यादा चीज़ें नहीं हैं। पोनीन और ज़ेल्मा मुझे अपनी गुड़ियों से खेलने नहीं देतीं। मेरे पास बस एक छोटी सी सीसे की तलवार है, उससे ज़्यादा लंबी नहीं।”
बच्ची ने अपनी छोटी उंगली ऊपर उठाई।
“और यह काटेगा नहीं?”
“जी हाँ, श्रीमान,” बच्चे ने कहा; “यह सलाद और मक्खियों के सिर दोनों को काटता है।”
वे गाँव पहुँचे। कोसेट ने अजनबी को गलियों से होते हुए रास्ता दिखाया। वे बेकरी के पास से गुज़रे, लेकिन कोसेट को उस रोटी का ख्याल नहीं आया जिसे लाने का आदेश उसे दिया गया था। उस आदमी ने उससे सवाल पूछना बंद कर दिया था और अब वह गहरी चुप्पी साधे बैठा था।
जब वे चर्च से बाहर निकल गए, तो उस आदमी ने खुले में लगे सभी स्टॉलों को देखकर कोसेट से पूछा:—
तो यहाँ मेला लगा हुआ है?
"नहीं, महोदय; आज क्रिसमस है।"
जैसे ही वे सराय के पास पहुँचे, कोसेट ने झिझकते हुए उसका हाथ छुआ:— "महोदय?"

“क्या, मेरे बच्चे?”
हम घर के काफी करीब हैं।
"कुंआ?"
"क्या अब आप मुझे मेरी बाल्टी ले जाने देंगे?"
"क्यों?"
"अगर मैडम को पता चल गया कि किसी ने इसे मेरे लिए उठाया है, तो वह मुझे पीटेगी।"
उस आदमी ने उसे बाल्टी थमा दी। पल भर में वे सराय के दरवाजे पर पहुँच गए।

VIII. किसी ऐसे गरीब व्यक्ति को अपने घर में शरण देने की अप्रियता जो वास्तव में एक अमीर

व्यक्ति हो सकता है

कोसेट खुद को रोक नहीं पाई और उसने खिलौने बेचने वाले की दुकान पर रखी बड़ी गुड़िया पर तिरछी नज़र डाली; फिर उसने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला। थेनार्डियर हाथ में मोमबत्ती लिए हुए सामने आई।

“अरे! तो तुम हो, छोटे बदमाश! हे भगवान, तुमने तो हद ही कर दी! वो बदचलन औरत तो अपना मनोरंजन कर रही थी!”

कोसेट कांपते हुए बोली, "मैडम, यहाँ एक सज्जन हैं जिन्हें रहने की जगह चाहिए।"

थेनार्डियर ने तुरंत अपने रूखेपन को एक सौम्य मुस्कान से बदल दिया, जो कि सराय मालिकों में आम बात है, और उत्सुकता से अपनी आंखों से नए आने वाले व्यक्ति को खोजने लगी।

“क्या ये वही सज्जन हैं?” उसने कहा।

“जी मैडम,” उस आदमी ने अपनी टोपी की ओर हाथ उठाते हुए उत्तर दिया।

धनी यात्री इतने विनम्र नहीं होते। इस हावभाव और अजनबी के पहनावे और सामान की जाँच, जिसे थेनार्डियर ने एक नज़र में ही देख लिया, के कारण उनका सौम्य चेहरा गायब हो गया और रूखापन फिर से उभर आया। उन्होंने रूखे स्वर में कहा:

—

"अंदर आइए, मेरे भले आदमी।"

वह “भला आदमी” अंदर आया। थेनार्डियर ने उस पर एक नज़र डाली, विशेष रूप से उसके फटे-पुराने फ्रॉक-कोट और थोड़ी जर्जर टोपी पर ध्यान दिया, और अपना सिर हिलाते हुए, नाक सिकोड़ते हुए और आँखें मटकाते हुए, उसने अपने पति से पूछा, जो अभी भी गाड़ीवानों के साथ शराब पी रहा था। पति ने तर्जनी उंगली के

उस सूक्ष्म इशारे से जवाब दिया, जो होंठों के फूलने के साथ मिलकर ऐसे मामलों में यह दर्शाता है: एक सच्चा भिखारी। इस पर थेनार्डियर ने कहा:—

“अरे! देखिए, मेरे भले आदमी; मुझे बहुत खेद है, लेकिन मेरे पास अब कोई जगह नहीं बची है।”

“मुझे जहाँ चाहो वहाँ रख दो,” उस आदमी ने कहा; “अटारी में, अस्तबल में। मैं ऐसे किराया दूँगा जैसे मैं किसी कमरे में रह रहा हूँ।”

चालीस सू।

“चालीस सू; सहमति हो गई।”

"तो फिर बहुत अच्छे!"

“चालीस सू!” एक गाड़ीवान ने धीमी आवाज़ में थेनार्डियर महिला से कहा; “अरे, शुल्क तो केवल बीस सू है!”

“उसके मामले में तो चालीस रुपये हैं,” थेनार्डियर ने उसी लहजे में जवाब दिया। “मैं गरीब लोगों को इससे कम में नहीं ठहराता।”

“यह सच है,” उसके पति ने नरमी से कहा; “ऐसे लोगों के घर में रहने से घर बर्बाद हो जाता है।”

इसी बीच, वह आदमी अपना गठ्ठा और लाठी एक बेंच पर रखकर मेज पर बैठ गया, जिस पर कोसेट ने जल्दी से शराब की बोतल और गिलास रख दिया। पानी की बाल्टी मांगने वाला व्यापारी उसे खुद अपने घोड़े के पास ले गया। कोसेट रसोई की मेज के नीचे अपनी जगह पर लौट गई और बुनाई करने लगी।

वह व्यक्ति, जिसने अपने लिए परोसी गई शराब से मुश्किल से अपने होंठ गीले किए थे, बच्चे को विशेष ध्यान से देख रहा था।

कोसेट बदसूरत थी। अगर वह खुश होती, तो शायद सुंदर होती। हमने उस उदास छोटी सी आकृति का संक्षिप्त वर्णन पहले ही कर दिया है। कोसेट दुबली-पतली और पीली थी; वह लगभग आठ साल की थी, लेकिन देखने में मुश्किल से छह साल की लगती थी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें, एक तरह के साये में धँसी हुई, रोने से लगभग बुझ गई थीं। उसके मुँह के कोनों पर वही दर्द भरी मुस्कान थी जो अक्सर मृत्युदंड पाए हुए लोगों और गंभीर रूप से बीमार लोगों में देखी जाती है। उसकी माँ के अनुमान के अनुसार, उसके हाथ "शीत ऋतु के छालों से खराब" हो

चुके थे। उस समय जो आग उसे रोशन कर रही थी, उसने उसकी हड्डियों के सभी कोणों को उभार दिया और उसके दुबलेपन को भयावह रूप से प्रकट कर दिया। क्योंकि वह हमेशा काँपती रहती थी, इसलिए उसने अपने घुटनों को एक-दूसरे से सटाकर रखने की आदत डाल ली थी। उसके सारे कपड़े चिथड़े जैसे थे, जो गर्मियों में दया जगाते और सर्दियों में भय पैदा करते। उसके पास केवल छेददार लिनेन था, ऊनी कपड़े का एक टुकड़ा भी नहीं। उसकी त्वचा जगह-जगह से दिखाई दे रही थी और हर जगह काले-नीले धब्बे नज़र आ रहे थे, जो उन जगहों को दर्शाते थे जहाँ थेनार्डियर नाम की स्त्री ने उसे छुआ था। उसकी नंगी टांगें पतली और लाल थीं। उसकी गर्दन के गड्ढे इतने गहरे थे कि देखकर रोना आ जाता था। इस बच्ची का पूरा व्यक्तित्व, उसका हावभाव, उसका व्यवहार, उसकी आवाज़, एक शब्द से दूसरे शब्द के बीच का अंतराल, उसकी नज़र, उसकी चुप्पी, उसका हर छोटा सा इशारा, एक ही बात को ज़ाहिर कर रहा था—डर।

भय उसके पूरे शरीर में समा गया था; मानो वह भय से ग्रसित थी; भय ने उसकी कोहनियों को उसके कूल्हों से सटा दिया, उसकी एड़ियों को उसके पेटीकोट के नीचे दबा दिया, उसे यथासंभव कम जगह घेरने पर मजबूर कर दिया, उसे केवल उतनी ही सांस लेने की अनुमति दी जितनी बिल्कुल आवश्यक थी, और यह उसके शरीर की एक आदत बन गई थी, जिसमें वृद्धि के अलावा कोई परिवर्तन संभव नहीं था। उसकी आँखों की गहराई में एक विस्मयकारी कोना था जहाँ आतंक छिपा हुआ था।

उसका डर इतना अधिक था कि भीगी हुई हालत में भी वहाँ पहुँचने पर कोसेट ने आग के पास जाकर खुद को सुखाने की हिम्मत नहीं की, बल्कि चुपचाप अपने काम पर वापस बैठ गई।

उस आठ वर्षीय बच्ची की निगाहों में हमेशा इतनी उदासी और कभी-कभी इतना दुखद भाव रहता था कि कुछ क्षणों के लिए ऐसा लगता था मानो वह मूर्ख या राक्षस बनने की कगार पर हो।

जैसा कि हमने बताया है, उसे प्रार्थना का मतलब कभी पता ही नहीं था; उसने कभी किसी चर्च में कदम नहीं रखा था। "क्या मेरे पास समय है?" थेनार्डियर ने कहा।

पीले कोट पहने उस आदमी ने कोसेट से अपनी निगाहें कभी नहीं हटाईं।

अचानक, थेनार्डियर ने कहा:—

“वैसे, वो रोटी कहाँ है?”
कोसेट, अपनी प्रथा के अनुसार, जब भी थेनार्डियर अपनी आवाज बुलंद करती थी, तो बड़ी तेजी से मेज के नीचे से बाहर निकल आती थी।
वह रोटी लाना पूरी तरह भूल गई थी। उसने उन बच्चों की चाल चली जो निरंतर भय के माहौल में जीते हैं। उसने झूठ बोला।
“मैडम, बेकरी की दुकान बंद थी।”
आपको दरवाजा खटखटाना चाहिए था।
“मैंने दरवाजा खटखटाया था, मैडम।”
"कुंआ?"
उन्होंने दरवाजा नहीं खोला।
“कल पता चल जाएगा कि यह सच है या नहीं,” थेनार्डियर ने कहा; “और अगर तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो, तो मैं तुम्हें एक शानदार नृत्य दिखाऊंगा। तब तक, मुझे मेरा पंद्रह सू का सिक्का वापस दे दो।”
कोसेट ने अपना हाथ अपने एप्रन की जेब में डाला और उसका चेहरा पीला पड़ गया। पंद्रह सू का सिक्का वहाँ नहीं था।
“अरे, अब बस करो,” मैडम थेनार्डियर ने कहा, “क्या तुमने मुझे सुना?”
कोसेट ने अपनी जेब उलटी करके देखी; उसमें कुछ नहीं था। आखिर उन पैसों का क्या हुआ? बेचारी छोटी बच्ची कुछ बोल नहीं पा रही थी। वह एकदम सन्न रह गई थी।
“क्या तुमने वह पंद्रह सू का सिक्का खो दिया है?” थेनार्डियर ने कर्कश स्वर में चिल्लाते हुए कहा, “या तुम उसे मुझसे छीनना चाहते हो?”
उसी समय, उसने चिमनी के कोने में एक कील पर लटके हुए नौ पूंछ वाले चाबुक की ओर अपना हाथ बढ़ाया।
इस शक्तिशाली हावभाव ने कोसेट को चीखने के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान की:—
“हे भगवान, दया कीजिए! मैं अब ऐसा नहीं करूँगा!”

थेनार्डियर ने चाबुक नीचे रख दिया।

इसी बीच, पीले कोट वाला आदमी अपनी जैकेट की जेब में कुछ टटोल रहा था, और किसी ने उसकी हरकतों पर ध्यान नहीं दिया। इसके अलावा, बाकी यात्री शराब पी रहे थे या ताश खेल रहे थे, और किसी का ध्यान इस ओर नहीं था।

कोसेट ने पीड़ा से चूर होकर चिमनी के कोने में खुद को एक गेंद की तरह समेट लिया, और अपने अधनंगे अंगों को समेटकर छिपाने की कोशिश की। थेनार्डियर ने अपना हाथ उठाया।

“माफ़ कीजिए, महोदया,” उस आदमी ने कहा, “लेकिन अभी-अभी मेरी नज़र इस नन्ही बच्ची के एप्रन की जेब से गिरी किसी चीज़ पर पड़ी जो लुढ़क कर एक तरफ़ चली गई। शायद यही वह चीज़ है।”

उसी समय वह नीचे झुका और कुछ देर तक फर्श पर कुछ ढूंढता हुआ प्रतीत हुआ।

“बिल्कुल सही; यह रहा,” उसने खुद को सीधा करते हुए कहा।

और उसने थेनार्डियर को एक चांदी का सिक्का दिया।

“हां, बस यही है,” उसने कहा।

यह वह सिक्का नहीं था, क्योंकि यह बीस सू का सिक्का था; लेकिन थेनार्डियर को इसमें फायदा नज़र आया। उसने सिक्का अपनी जेब में रख लिया और बच्चे को गुस्से से घूरते हुए बोली, "ऐसा दोबारा कभी मत होने देना!"

कोसेट उस जगह लौट आई जिसे थेनार्डियर "उसका केनेल" कहता था, और उसकी बड़ी- बड़ी आँखें, जो यात्री पर टिकी हुई थीं, एक ऐसा भाव धारण करने लगीं जो उन्होंने पहले कभी नहीं दिखाया था। अब तक तो यह केवल एक मासूम आश्चर्य था, लेकिन अब इसमें एक प्रकार का स्तब्ध आत्मविश्वास भी घुलमिल गया था।

“वैसे, क्या आप रात का खाना खाना चाहेंगे?” थेनार्डियर ने यात्री से पूछा।

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। वे गहन चिंतन में डूबे हुए प्रतीत हो रहे थे।

“ये कैसा आदमी है?” उसने दांत पीसते हुए बुदबुदाया। “ये तो बिल्कुल ही बेचारा है। इसके पास रात के खाने के लिए एक पैसा भी नहीं है। क्या ये मुझे

अपने रहने का किराया भी देगा? वैसे ये तो बड़ी अच्छी बात है कि इसे ज़मीन पर पड़े पैसे चुराने का ख्याल नहीं आया।”

इसी बीच एक दरवाजा खुला और एपोनिन और अज़ेलमा अंदर आ गईं।

वे दोनों बेहद प्यारी छोटी बच्चियाँ थीं, देखने में किसान से ज़्यादा संभ्रांत और बेहद आकर्षक; एक के सुनहरे भूरे बाल थे, दूसरी की पीठ पर लटकती लंबी काली चोटियाँ, दोनों ही चंचल, सलीकेदार, गोल-मटोल, गुलाबी और स्वस्थ, और आँखों को भाने वाली थीं। उन्होंने गर्म कपड़े पहने थे, लेकिन इतनी ममता से कि कपड़ों की मोटाई भी उनकी सुंदरता को कम नहीं कर रही थी। वसंत ऋतु पूरी तरह से खत्म नहीं हुई थी, फिर भी सर्दी की हल्की सी आहट थी। इन दोनों नन्ही बच्चियों से प्रकाश निकल रहा था। इसके अलावा, वे सिंहासन पर विराजमान थीं। उनके श्रृंगार में, उनकी उल्लास में, उनके शोर में, उनकी संप्रभुता झलक रही थी। जब वे अंदर आईं, तो थेनार्डियर ने उनसे बड़बड़ाते हुए, लेकिन श्रद्धा से भरे स्वर में कहा, "आह! तुम यहाँ हो, बच्चियाँ!"

फिर उन्हें एक-एक करके अपनी गोद में बिठाते हुए, उनके बालों को संवारते हुए, उनके रिबन को फिर से बांधते हुए, और फिर उन्हें उस कोमल अंदाज में छोड़ते हुए, जो माताओं की विशेषता होती है, वह बोली, "ये तो कितने डरावने हैं!"

वे चिमनी के कोने में जाकर बैठ गए। उनके पास एक गुड़िया थी, जिसे वे घुटनों पर रखकर तरह-तरह की बातें करते हुए पलटते रहते थे। बीच-बीच में कोसेट अपनी बुनाई से नज़रें उठाकर उदास भाव से उनका खेल देखती रहती थी।

एपोनाइन और अज़ेलमा ने कोसेट की ओर देखा तक नहीं। वह उनके लिए कुत्ते के समान थी। इन तीनों छोटी लड़कियों की उम्र अभी चौबीस वर्ष भी नहीं थी, फिर भी वे मानव समाज के सार को दर्शाती थीं; एक ओर ईर्ष्या, दूसरी ओर तिरस्कार।

थेनार्डियर बहनों की गुड़िया बहुत फीकी, बहुत पुरानी और काफी टूटी हुई थी; लेकिन फिर भी कोसेट को वह बहुत प्यारी लगी, जिसने अपने जीवन में कभी कोई गुड़िया नहीं देखी थी, एक असली गुड़िया, जैसा कि उस मुहावरे का प्रयोग किया जा सकता है जिसे सभी बच्चे समझ जाएंगे।

अचानक, कमरे में इधर-उधर घूम रहे थेनार्डियर ने महसूस किया कि कोसेट का ध्यान कहीं और था, और वह काम करने के बजाय, बच्चों के खेल पर ध्यान दे रही थी।
“अरे! मैंने तुम्हें रंगे हाथों पकड़ लिया!” वह चिल्लाई। “तो इस तरह काम करते हो! मैं तुम्हें कोड़े की धुन पर काम करवाऊंगी; मैं ऐसा करके ही रहूंगी।”
अजनबी अपनी कुर्सी से उठे बिना थेनार्डियर की ओर मुड़ा।
“अरे मैडम,” उसने लगभग संकोच भरे लहजे में कहा, “उसे खेलने दीजिए!”
एक यात्री द्वारा ऐसी इच्छा व्यक्त करना, जिसने रात के खाने के साथ मटन का एक टुकड़ा खाया था और दो बोतल शराब पी ली थी, और जो देखने में बिल्कुल भी गरीब नहीं लग रहा था, एक आदेश के समान होता। लेकिन एक ऐसे व्यक्ति का, जिसने ऐसी टोपी पहनी हो, ऐसी इच्छा रखना, और एक ऐसे व्यक्ति का, जिसने ऐसा कोट पहना हो, ऐसी इच्छा रखना, मैडम थेनार्डियर बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं। उन्होंने कटुता से जवाब दिया:—
“उसे काम करना ही होगा, क्योंकि उसी से उसे खाना मिलता है। मैं उसे सिर्फ खाली बैठने के लिए खाना नहीं खिलाता।”
"वह क्या बना रही है?" अजनबी ने कोमल स्वर में पूछा, जो उसके फटेहाल कपड़ों और कुली के कंधों के विपरीत अजीब तरह से सुनाई दे रहा था।
थेनार्डियर ने उत्तर देने की कृपा की:—
"मोज़े, कृपया। मेरी छोटी बच्चियों के लिए मोज़े, जिनके पास एक भी मोज़ा नहीं है, और जो इस समय बिल्कुल नंगे पैर हैं।"
उस आदमी ने कोसेट के बेचारे छोटे लाल पैरों को देखा और आगे बोला:—
"वो ये मोजे कब तक पूरे कर लेगी?"
“उस आलसी प्राणी को अभी भी उन पर कम से कम तीन या चार अच्छे दिनों का काम करना बाकी है!”
और जब वह उन मोजों को पूरा कर लेगी तो उनकी कीमत कितनी होगी? थेनार्डियर ने उस पर तिरस्कार भरी नजर डाली।

"कम से कम तीस सू।"
“क्या आप इन्हें पांच फ्रैंक में बेचेंगे?” उस आदमी ने आगे पूछा।
“हे भगवान!” एक गाड़ीवान जो सुन रहा था, जोर से हंसते हुए बोला; “पांच फ्रैंक! मुझे तो यही लगता है! पांच गेंदें!”
थेनार्डियर ने आक्रमण करने का सही समय समझा।
"जी जनाब; अगर आपकी यही इच्छा है, तो आपको मोजों का वह जोड़ा पाँच फ्रैंक में मिल जाएगा। हम यात्रियों को किसी भी चीज़ के लिए मना नहीं कर सकते।" "आपको मौके पर ही भुगतान करना होगा," थेनार्डियर ने अपने संक्षिप्त और आदेशात्मक लहजे में कहा।
“मैं मोजों की वह जोड़ी खरीदूंगा,” उस आदमी ने जवाब दिया, “और,” उसने अपनी जेब से पांच फ्रैंक का सिक्का निकालते हुए और उसे मेज पर रखते हुए कहा, “मैं इसके लिए भुगतान करूंगा।”
फिर उसने कोसेट की ओर रुख किया।
अब तुम्हारा काम मेरा है; खेलो, मेरे बच्चे।
गाड़ीवान पांच फ़्रैंक के सिक्के से इतना भावुक हो गया कि उसने अपना गिलास वहीं छोड़ दिया और जल्दी से ऊपर की ओर चल दिया।
“लेकिन यह सच है!” उसने चिल्लाते हुए उसकी जांच की। “असली पिछला पहिया! नकली नहीं!”
थेनार्डियर पास आया और चुपचाप सिक्के को अपनी जेब में रख लिया। थेनार्डियर के पास कोई जवाब नहीं था। उसने अपने होंठ काट लिए और उसके चेहरे पर घृणा का भाव आ गया।
इसी बीच कोसेट कांप रही थी। उसने हिम्मत करके पूछा:
“क्या यह सच है, महोदया? क्या मैं खेल सकता हूँ?”
“खेलना शुरू करो!” थेनार्डियर ने भयानक स्वर में कहा।
“धन्यवाद, मैडम,” कोसेट ने कहा।

[illegible]

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]," [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

“[illegible]”

[illegible]

इसी बीच, शराब पीने वाले लोग एक अश्लील गाना गाने लगे और उस पर इतना हंसने लगे कि छत हिलने लगी। थेनार्डियर ने उनका साथ दिया और उन्हें प्रोत्साहित किया।

जैसे पक्षी हर चीज़ से घोंसला बनाते हैं, वैसे ही बच्चे हाथ में आने वाली किसी भी चीज़ से गुड़िया बना लेते हैं। जब एपोनिन और अज़ेलमा बिल्ली को लपेट रही थीं, तब कोसेट करवट लेकर अपनी तलवार को सजा रही थी। यह करने के बाद, उसने उसे अपनी बाहों में रखा और उसे सुलाने के लिए धीरे-धीरे गाना गाया।

गुड़िया स्त्री के बचपन की सबसे अहम ज़रूरतों में से एक है और साथ ही सबसे मनमोहक सहज प्रवृत्ति भी। उसकी देखभाल करना, उसे कपड़े पहनाना, सजाना- संवारना, कपड़े उतारना, फिर से पहनाना, उसे सिखाना, थोड़ा डांटना, झुलाना, गोद में लेकर सुलाना, किसी चीज़ को किसी इंसान के रूप में कल्पना करना— इसी में एक स्त्री का संपूर्ण भविष्य निहित है। सपने देखते और बातें करते हुए, छोटे-छोटे कपड़े बनाते हुए, बच्चों के कपड़े बनाते हुए, छोटे गाउन, फूलों के गुच्छे और चोली सिलते हुए, बच्ची एक युवती में, युवती एक लड़की में और युवती एक स्त्री में विकसित होती है। पहला बच्चा आखिरी गुड़िया का ही विस्तार है।

गुड़िया के बिना एक छोटी बच्ची लगभग उतनी ही दुखी और उतनी ही असंभव होती है जितनी कि बच्चों के बिना एक महिला।

इसलिए कोसेट ने तलवार से अपनी एक गुड़िया बना ली थी।

मैडम थेनार्डियर पीले कपड़े पहने उस आदमी के पास गईं; उन्होंने सोचा, "मेरे पति सही कह रहे हैं; शायद यह एम. लाफिट हैं; ऐसे अजीबोगरीब अमीर आदमी भी होते हैं!"

वह आई और अपनी कोहनियों को मेज पर टिका दिया।

“महाशय,” उसने कहा। “महाशय” शब्द सुनते ही वह व्यक्ति मुड़ा; उस समय तक थेनार्डियर ने उसे केवल बहादुर पुरुष या सज्जन पुरुष कहकर ही संबोधित किया था।

“देखिए महोदय,” उसने मीठी-मीठी बातें करते हुए कहा, जो उसके उग्र चेहरे से भी कहीं अधिक अप्रिय थीं, “मैं चाहती हूँ कि बच्ची खेले; मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन अच्छा है कि एक बार तो खेले, क्योंकि आप उदार हैं। देखिए, उसके पास कुछ नहीं है; उसे काम की ज़रूरत है।”

“तो फिर यह बच्चा तुम्हारा नहीं है?” उस आदमी ने पूछा।

“अरे! हे भगवान! नहीं, जनाब! यह एक छोटी भिखारी है जिसे हमने दया भाव से अपने पास रखा है; थोड़ी मंदबुद्धि है। लगता है उसका दिमाग खराब है; जैसा कि आप देख रहे हैं, उसका सिर बड़ा है। हम उसकी देखभाल में जो कर सकते हैं, करते हैं, क्योंकि हम अमीर नहीं हैं; हमने उसके पैतृक स्थान पर व्यर्थ ही पत्र लिखे हैं, और पिछले छह महीनों से कोई जवाब नहीं मिला है। लगता है उसकी माँ मर चुकी है।”

“आह!” उस आदमी ने कहा और एक बार फिर अपनी तल्लीनता में डूब गया।

थेनार्डियर ने आगे कहा, "उसकी मां कुछ खास नहीं थी; उसने अपने बच्चे को त्याग दिया था।"

इस पूरी बातचीत के दौरान कोसेट ने, मानो किसी सहज ज्ञान से आगाह होकर कि उसके बारे में चर्चा हो रही है, थेनार्डियर के चेहरे से अपनी निगाहें नहीं हटाईं; उसने अस्पष्ट रूप से सुना; उसने इधर-उधर के कुछ शब्द सुने।

इसी बीच, शराबी, जो लगभग तीन-चौथाई नशे में थे, दुगने उत्साह के साथ अपना अश्लील गीत दोहरा रहे थे; यह एक बेहद उत्तेजक और कामुक गीत था, जिसमें कुंवारी मरियम और शिशु यीशु का ज़िक्र था। थेनार्डियर भी हँसी के ठहाकों में शामिल होने चला गया। कोसेट मेज के नीचे अपनी जगह से आग को टकटकी लगाए देख रही थी, जिसकी रोशनी उसकी स्थिर आँखों से प्रतिबिंबित हो रही थी। उसने अपने बनाए हुए खिलौने को झुलाना शुरू कर दिया था, और झुलाते हुए वह धीमी आवाज़ में गा रही थी, “मेरी माँ मर गई! मेरी माँ मर गई! मेरी माँ मर गई!”

मेज़बान द्वारा बार-बार आग्रह किए जाने पर, पीले रंग का वह व्यक्ति, जिसे "करोड़पति" कहा जाता था, अंततः रात का खाना खाने के लिए सहमत हो गया।

“महामहिम की क्या इच्छा है?”

“रोटी और पनीर,” उस आदमी ने कहा।

“निश्चित रूप से, वह एक भिखारी है,” मैडम थेनार्डियर ने सोचा।

शराब के नशे में धुत लोग अभी भी अपना गाना गा रहे थे, और मेज के नीचे बैठी बच्ची भी अपना गाना गा रही थी।

अचानक, कोसेट रुक गई; वह अभी-अभी मुड़ी थी और उसकी नज़र नन्हे थेनार्डियर्स की गुड़िया पर पड़ी, जिसे उन्होंने बिल्ली के लिए छोड़ दिया था और रसोई की मेज से कुछ कदम दूर फर्श पर छोड़ दिया था।

फिर उसने लिपटी हुई तलवार को नीचे गिरा दिया, जो उसकी ज़रूरतों को पूरी तरह से पूरा नहीं कर रही थी, और धीरे-धीरे कमरे में चारों ओर नज़र घुमाई। मैडम थेनार्डियर अपने पति से फुसफुसा रही थीं और कुछ पैसे गिन रही थीं; पोनीन और ज़ेल्मा बिल्ली के साथ खेल रही थीं; यात्री खा-पी रहे थे या गा रहे थे; किसी की नज़र उस पर नहीं पड़ी। उसके पास एक पल भी गंवाने का समय नहीं था; वह हाथों और घुटनों के बल मेज के नीचे से रेंगकर निकली, एक बार फिर यह सुनिश्चित किया कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है; फिर वह तेज़ी से गुड़िया के पास गई और उसे पकड़ लिया। एक पल बाद वह फिर से अपनी जगह पर थी, बिना हिले- डुले बैठी थी, और बस इतना मुड़ी कि उसकी बाहों में पकड़ी गुड़िया पर उसकी परछाई पड़ गई। गुड़िया के साथ खेलने का आनंद उसके लिए इतना दुर्लभ था कि उसमें कामुकता की सारी तीव्रता समाई हुई थी।

उस यात्री के अलावा किसी ने उसे नहीं देखा था, जो धीरे-धीरे अपना थोड़ा सा भोजन खा रहा था।

यह खुशी करीब पंद्रह मिनट तक चली।

लेकिन कोसेट ने तमाम सावधानियां बरती थीं, फिर भी उसे इस बात का एहसास नहीं हुआ कि गुड़िया का एक पैर बाहर निकला हुआ था और चूल्हे की आग से वह बहुत चमक रहा था। छाया से बाहर निकला हुआ वह गुलाबी और चमकीला पैर अचानक एज़ेलमा की नज़र में आ गया, जिसने एपोनिन से कहा, "देखो! बहन!"

दोनों छोटी लड़कियां अचंभित होकर रुक गईं; कोसेट ने उनकी गुड़िया लेने की हिम्मत कैसे की!

एपोनाइन उठी और बिल्ली को छोड़े बिना अपनी माँ की ओर दौड़ी और उनकी स्कर्ट खींचने लगी।

“मुझे अकेला छोड़ दो!” उसकी माँ ने कहा; “तुम क्या चाहती हो?”
“माँ,” बच्चे ने कहा, “वहाँ देखो!”
और उसने कोसेट की ओर इशारा किया।
कोसेट, आवेश के आनंद में डूबी हुई थी, उसे अब कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं दे रहा था।
मैडम थेनार्डियर के चेहरे पर वह विशिष्ट भाव उभर आया जो जीवन की छोटी-छोटी खुशियों के साथ-साथ भयावहता से भी युक्त होता है, और जिसके कारण इस प्रकार की महिला को मेगाएरास नाम दिया गया है।
इस अवसर पर, आहत स्वाभिमान ने उसके क्रोध को और भी भड़का दिया। कोसेट ने सारी हदें पार कर दी थीं; कोसेट ने "इन युवतियों" की गुड़िया पर हिंसक हाथ उठाए थे। एक महारानी जो किसी किसान को अपने शाही बेटे का नीला रिबन पहने हुए देखती, उसका चेहरा भावहीन हो जाता।
वह आक्रोश से कर्कश आवाज में चीखी:
“कोसेट!”
कोसेट ऐसे चौंक उठी मानो उसके पैरों तले धरती कांप उठी हो; वह पलट गई। “कोसेट!” थेनार्डियर ने दोहराया।
कोसेट ने गुड़िया उठाई और उसे श्रद्धा और निराशा के भाव से धीरे से ज़मीन पर रख दिया; फिर, उससे नज़रें हटाए बिना, उसने अपने हाथ जोड़े और, उस उम्र के बच्चे के लिए यह कहना भयानक है, उसने उन्हें मरोड़ दिया; फिर—दिन की कोई भी भावना, न जंगल की यात्रा, न पानी की बाल्टी का भार, न पैसे का खोना, न चाबुक का दिखना, और न ही मैडम थेनार्डियर के कहे दुख भरे शब्द—उसके भीतर से यह भावना निकाल पाए—वह रो पड़ी; वह फूट-फूटकर सिसकने लगी।
इसी बीच यात्री उठ खड़ा हुआ।
“क्या बात है?” उसने थेनार्डियर से कहा।
“क्या तुम नहीं देख रहे?” थेनार्डियर ने कोसेट के पैरों के पास पड़े अपराध के सबूत की ओर इशारा करते हुए कहा।
“तो फिर इसमें क्या है?” उस आदमी ने बात जारी रखी।

“उस भिखारी ने,” थेनार्डियर ने उत्तर दिया, “बच्चों की गुड़िया को छूने की अनुमति दे दी है!”

“इतना शोर-शराबा सिर्फ इसके लिए!” उस आदमी ने कहा; “अच्छा, अगर वह सच में उस गुड़िया से खेलती तो क्या होता?”

“उसने इसे अपने गंदे हाथों से छुआ!” थेनार्डियर ने आगे कहा, “अपने भयानक हाथों से!”

यहां कोसेट के सिसकने की आवाज और भी तेज हो गई।

“क्या तुम शोर मचाना बंद करोगे?” थेनार्डियर चिल्लाया।

वह आदमी सीधे गली के दरवाजे पर गया, उसे खोला और बाहर निकल गया।

उसके जाते ही, थेनार्डियर ने उसकी अनुपस्थिति का फायदा उठाते हुए कोसेट को मेज के नीचे एक जोरदार लात मारी, जिससे बच्ची जोर-जोर से रोने लगी।

दरवाजा फिर खुला, वह आदमी फिर प्रकट हुआ; उसने दोनों हाथों में वह अद्भुत गुड़िया पकड़ रखी थी जिसका हमने जिक्र किया था, और जिसे गांव के सभी बच्चे सुबह से ही घूर रहे थे, और उसने उसे कोसेट के सामने सीधा खड़ा करते हुए कहा:—

“ये लो; ये तुम्हारे लिए है।”

ऐसा माना जा सकता है कि वहां बिताए गए एक घंटे से अधिक समय के दौरान, उसने अपनी तल्लीनता में उस खिलौने की दुकान पर ध्यान दिया होगा, जो आग के बर्तनों और मोमबत्तियों से इतनी शानदार ढंग से रोशन थी कि वह शराब की दुकान की खिड़की से एक रोशनी की तरह दिखाई दे रही थी।

कोसेट ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं; वह उस गुड़िया के साथ उसकी ओर आ रहे आदमी को ऐसे घूर रही थी जैसे वह सूरज को घूर रही हो; उसने अप्रत्याशित शब्द सुने, "यह तुम्हारे लिए है;" उसने उसे देखा; उसने गुड़िया को देखा; फिर वह धीरे-धीरे पीछे हट गई, और दीवार के कोने में मेज के नीचे, बिल्कुल आखिरी छोर पर छिप गई।

वह अब रोती नहीं थी; वह अब सिसकती नहीं थी; ऐसा लगता था मानो वह सांस लेने की हिम्मत भी खो बैठी हो।

थेनार्डियर, एपोनिन और एज़ेलमा भी प्रतिमाओं की तरह स्थिर थे; यहाँ तक कि शराब पीने वाले भी रुक गए थे; पूरे कमरे में एक गंभीर सन्नाटा छाया हुआ था।

मैडम थेनार्डियर, भयभीत और मौन होकर, अपने अनुमानों को फिर से शुरू करने लगीं: "वह बूढ़ा आदमी कौन है? क्या वह गरीब है? क्या वह करोड़पति है? शायद वह दोनों है; यानी, एक चोर।"

पुरुष थेनार्डियर के चेहरे पर वह भावपूर्ण झुर्री थी जो किसी भी मानवीय चेहरे को तब और भी प्रभावशाली बना देती है जब उसमें प्रबल प्रवृत्ति अपने पूर्ण पशुवत रूप में प्रकट होती है। सराय का मालिक बारी-बारी से गुड़िया और यात्री को घूर रहा था; ऐसा लग रहा था मानो वह उस आदमी को सूंघ रहा हो, जैसे वह पैसों से भरे थैले को सूंघता है। यह क्षणिक रूप से ही चला। वह अपनी पत्नी के पास गया और धीमी आवाज़ में उससे बोला:—

“उस मशीन की कीमत कम से कम तीस फ्रैंक है। कोई बकवास नहीं। उस आदमी के सामने पेट के बल लेट जाओ!”

स्थूल स्वभाव और सरल स्वभाव में यह समानता है कि उनमें कोई संक्रमणकालीन अवस्था नहीं होती।

“अच्छा, कोसेट,” थेनार्डियर ने एक ऐसी आवाज़ में कहा जो मीठी होने की कोशिश कर रही थी, लेकिन उसमें द्वेषपूर्ण महिलाओं की कड़वी मिठास थी, “क्या तुम अपनी गुड़िया नहीं ले जाओगी?”

कोसेट ने अपने बिल से बाहर निकलने का साहस किया।

“उस सज्जन ने तुम्हें एक गुड़िया दी है, मेरी प्यारी कोसेट,” थेनार्डियर ने स्नेह भरे लहजे में कहा। “इसे ले लो; यह तुम्हारी है।”

कोसेट ने उस अद्भुत गुड़िया को एक तरह के भय से देखा। उसका चेहरा अभी भी आंसुओं से भीगा हुआ था, लेकिन उसकी आँखें भोर के आकाश की तरह, आनंद की अजीब किरणों से भर उठीं। उस क्षण उसे जो महसूस हुआ, वह कुछ-कुछ वैसा ही था जैसा उसे अचानक यह कहे जाने पर होता, "छोटी बच्ची, तुम फ्रांस की रानी हो।"

उसे ऐसा लग रहा था कि अगर वह उस गुड़िया को छुएगी तो उसमें से बिजली निकलेगी।

यह बात एक हद तक सच थी, क्योंकि उसने मन ही मन सोचा कि थेनार्डियर उसे डांटेगा और पीटेगा।
फिर भी, आकर्षण ही अंततः विजयी हुआ। अंत में वह पास आकर मैडम थेनार्डियर की ओर मुड़ते हुए दबी आवाज़ में बुदबुदाई:—
“क्या मैं कर सकता हूँ, महोदया?”
उस वातावरण को शब्दों में बयां करना असंभव है, जो एक साथ निराशाजनक, भयभीत और आनंदमय है।
“पार्डी!” थेनार्डियर चिल्लाया, “यह तुम्हारा है। उस सज्जन ने इसे तुम्हें दे दिया है।”
“सचमुच, श्रीमान?” कोसेट ने कहा। “क्या यह सच है? क्या वह ‘महिला’ मेरी है?” अजनबी की आँखें आँसुओं से भरी हुई लग रही थीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह भावनाओं के उस स्तर पर पहुँच गया है जहाँ एक व्यक्ति रोने के डर से बोल नहीं पाता। उसने कोसेट को सिर हिलाकर अभिवादन किया और उस "महिला" का हाथ उसके नन्हे हाथ में रख दिया।
कोसेट ने झट से अपना हाथ पीछे खींच लिया, मानो उस "महिला" के हाथ ने उसे जला दिया हो, और ज़मीन को घूरने लगी। यह भी कहना पड़ेगा कि उसी क्षण उसने अपनी जीभ बेकाबू होकर बाहर निकाल दी। अचानक ही वह घूमी और गुस्से में गुड़िया को पकड़ लिया।
“मैं उसका नाम कैथरीन रखूंगी,” उसने कहा।
यह एक अजीब क्षण था जब कोसेट के चिथड़े-चिथड़े गुड़िया के रिबन और ताजे गुलाबी मलमल से मिले और उन्हें जकड़ लिया।
“मैडम,” उसने फिर से कहा, “क्या मैं उसे कुर्सी पर बिठा सकती हूँ?”
“जी हां, मेरे बच्चे,” थेनार्डियर ने उत्तर दिया।
अब एपोनाइन और एज़ेलमा की बारी थी कि वे कोसेट को ईर्ष्या भरी निगाहों से देखें।
कोसेट ने कैथरीन को एक कुर्सी पर बिठाया, फिर खुद उसके सामने फर्श पर बैठ गई और बिना एक शब्द बोले, चिंतन की मुद्रा में स्थिर रही।

“खेलना, कोसेट,” अजनबी ने कहा।

“ओह! मैं खेल रहा हूँ,” बच्चे ने जवाब दिया।

यह अजनबी, यह अनजान व्यक्ति, जो मानो ईश्वर की कृपा से कोसेट के पास आया हो, उस समय थेनार्डियर को सबसे ज़्यादा नापसंद था। लेकिन खुद पर काबू रखना ज़रूरी था। अपने पति की हर हरकत की नकल करने की आदत होने के कारण, ये भावनाएँ उसके लिए असहनीय थीं। उसने जल्दी से अपनी बेटियों को सुलाया, फिर उस आदमी से कोसेट को भी भेजने की इजाज़त माँगी; "क्योंकि उसने दिन भर मेहनत की है," उसने ममता भरे लहजे में कहा। कोसेट कैथरीन को गोद में लिए बिस्तर पर चली गई।

समय-समय पर थेनार्डियर कमरे के दूसरे छोर पर जाती थीं जहाँ उनके पति थे, ताकि वे "अपने मन को हल्का कर सकें," जैसा कि वे कहती थीं। वे अपने पति से ऐसी बातें करती थीं जो और भी गुस्से से भरी होती थीं क्योंकि उन्हें ज़ोर से बोलने की हिम्मत नहीं होती थी।

“बुढ़ापा! इसके पेट में क्या चल रहा है कि यह आकर हमें इस तरह परेशान कर रहा है! उस नन्हे शैतान से खेलना चाहता है! उस औरत को चालीस फ़्रैंक की गुड़िया दे रहा है जिसे मैं चालीस सू में बेच देता! थोड़ा और खर्चा किया तो वह उसे 'महामहिम' कहेगा, मानो डचेस डी बेरी को कह रहा हो! क्या इसमें कोई समझदारी है? क्या वह रहस्यमय बूढ़ा पागल हो गया है?”

“अरे! ये तो बिल्कुल आसान है,” थेनार्डियर ने जवाब दिया, “अगर इससे उसे मज़ा आता है तो ठीक है! तुम्हें बच्ची को काम करते देखकर मज़ा आता है; उसे बच्ची को खेलते देखकर मज़ा आता है। वो ठीक है। एक यात्री अपनी मर्ज़ी से कुछ भी कर सकता है जब उसे इसके लिए पैसे मिलते हैं। अगर वो बूढ़ा आदमी परोपकारी है, तो इससे तुम्हें क्या लेना-देना? अगर वो मंदबुद्धि है, तो इससे तुम्हें कोई फ़र्क नहीं पड़ता। जब तक उसके पास पैसा है, तुम्हें किस बात की चिंता है?”

एक स्वामी की भाषा और एक सराय मालिक का तर्क, दोनों का ही कोई उत्तर संभव नहीं था।

उस आदमी ने अपनी कोहनियाँ मेज पर टिका दीं और फिर से सोच-विचार में डूब गया। बाकी सभी यात्री, चाहे फेरीवाले हों या गाड़ीवान, थोड़ा पीछे हट गए थे

और गाना बंद कर चुके थे। वे दूर से उसे एक तरह के आदर और भय के भाव से देख रहे थे। यह फटे-पुराने कपड़े पहने आदमी, जो बड़ी आसानी से अपनी जेब से "पिछली पहिए" निकाल लेता था और लकड़ी के जूतों में गंदे छोटे बच्चों पर बड़ी-बड़ी गुड़िया लुटाता था, यकीनन एक शानदार और डरने लायक शख्स था।

कई घंटे बीत गए। आधी रात की प्रार्थना समाप्त हो चुकी थी, घंटियाँ बजना बंद हो गई थीं, शराब पीने वाले जा चुके थे, शराबखाना बंद हो चुका था, सार्वजनिक कक्ष सुनसान था, आग बुझ चुकी थी, फिर भी वह अजनबी उसी जगह और उसी मुद्रा में बैठा रहा। वह बीच-बीच में अपनी कोहनी बदलता रहता था। बस इतना ही; लेकिन कोसेट के कमरे से जाने के बाद से उसने एक शब्द भी नहीं कहा था।

केवल थेनार्डियर परिवार ही शिष्टाचार और जिज्ञासावश कमरे में रुका रहा था।

“क्या वह रात इसी तरह गुजारने वाला है?” थेनार्डियर ने बड़बड़ाते हुए कहा। जब सुबह के दो बज गए, तो उसने हार मान ली और अपने पति से कहा, “मैं सोने जा रही हूँ। आप जो चाहें करें।” उसका पति कोने में एक मेज पर बैठ गया, मोमबत्ती जलाई और फ्रांसीसी अखबार पढ़ने लगा।

इस तरह एक घंटा बीत गया। उस भले-मानस सराय मालिक ने अखबार को कम से कम तीन बार पढ़ा, अंक की तारीख से लेकर छापने वाले के नाम तक। अजनबी टस से मस नहीं हुआ।

थेनार्डियर बेचैन हो गया, खांसा, थूका, नाक साफ की और कुर्सी को खड़खड़ाया। उस आदमी की ओर से कोई हरकत नहीं हुई। "क्या वह सो रहा है?" थेनार्डियर ने सोचा। वह आदमी सोया तो नहीं था, लेकिन उसे जगाने का कोई भी प्रयास कारगर नहीं था।

अंततः थेनार्डियर ने अपनी टोपी उतारी, धीरे से उसके पास गए और साहसपूर्वक कहा:—

"क्या महाशय विश्राम के लिए नहीं जा रहे हैं?"

उसे बिस्तर पर न जाना अतिशयोक्तिपूर्ण और सामान्य लगता। विश्राम करना विलासिता और सम्मान का प्रतीक था। इन शब्दों में अगले दिन बिल बढ़ाने का

रहस्यमय और प्रशंसनीय गुण निहित है। सोने के लिए बीस सू लगते हैं; विश्राम के लिए बीस फ्रैंक लगते हैं।
“अच्छा!” अजनबी ने कहा, “आप सही हैं। आपका अस्तबल कहाँ है?”
“महाराज!” थेनार्डियर ने मुस्कुराते हुए कहा, “मैं आपका संचालन करूंगा, महाराज।”
उसने मोमबत्ती ली; उस आदमी ने अपना गठ्ठा और लाठी उठाई, और थेनार्डियर उसे पहली मंजिल पर एक कमरे में ले गया, जो असाधारण वैभव वाला था, पूरी तरह से महोगनी से सुसज्जित था, जिसमें एक नीचा पलंग था, जिस पर लाल कैलिको के पर्दे लगे थे।
“यह क्या है?” यात्री ने कहा।
“यह वास्तव में हमारा विवाह कक्ष है,” सराय के मालिक ने कहा। “मैं और मेरी पत्नी दूसरे कमरे में रहते हैं। इसमें साल में केवल तीन या चार बार ही प्रवेश किया जाता है।”
“मुझे अस्तबल भी उतना ही पसंद आना चाहिए था,” उस आदमी ने अचानक कहा। थेनार्डियर ने इस अप्रिय टिप्पणी को अनसुना करने का नाटक किया।
उसने चिमनी पर रखी दो बिल्कुल नई मोमबत्तियाँ जलाईं। चूल्हे पर एक अच्छी- खासी आग सुलग रही थी।
चिमनी के ऊपर, कांच के गोले के नीचे, चांदी के तार और नारंगी फूलों से बना एक महिला का सिर का आभूषण रखा था।
“और यह क्या है?” अजनबी ने सवाल का जवाब देते हुए पूछा।
“महाराज,” थेनार्डियर ने कहा, “यह मेरी पत्नी की शादी की टोपी है।” यात्री ने उस वस्तु को एक ऐसी दृष्टि से देखा मानो कह रहा हो, "तो क्या सचमुच कभी ऐसा समय था जब वह राक्षसी एक युवती थी?"
हालांकि, थेनार्डियर ने झूठ बोला था। जब उसने इस मामूली इमारत को सराय में बदलने के उद्देश्य से किराए पर लिया था, तो उसे यह कमरा ठीक इसी तरह सजा हुआ मिला था, और उसने फर्नीचर और नारंगी फूल सेकंड हैंड खरीदे थे, इस विचार

से कि इससे "उसकी पत्नी" पर एक सुंदर छाया पड़ेगी, और इससे उसके घर को वह सम्मान मिलेगा जिसे अंग्रेज सम्मान कहते हैं।

जब यात्री ने मुड़कर देखा, तो मेज़बान गायब हो चुका था। थेनार्डियर चुपचाप वहाँ से चला गया, उसे शुभ रात्रि कहने का साहस भी नहीं किया, क्योंकि वह उस व्यक्ति के साथ अनादरपूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहता था जिसे वह अगली सुबह जमकर लूटने वाला था।

सराय मालिक अपने कमरे में चला गया। उसकी पत्नी बिस्तर पर थी, लेकिन सोई नहीं थी। जब उसने अपने पति के कदमों की आहट सुनी तो वह करवट बदलकर उससे बोली:—

"क्या आपको पता है, मैं कल कोसेट को घर से बाहर निकाल दूंगा।"

थेनार्डियर ने ठंडे लहजे में उत्तर दिया:—

आप तो कमाल कर देते हैं!

उन्होंने आगे कोई बात नहीं की, और कुछ क्षण बाद उनकी मोमबत्ती बुझ गई।

यात्री ने अपना डंडा और गठ्ठा एक कोने में रख दिया था। मकान मालिक के चले जाने के बाद, वह एक कुर्सी पर बैठ गया और कुछ देर तक सोच में डूबा रहा। फिर उसने अपने जूते उतारे, दो मोमबत्तियों में से एक उठाई, दूसरी बुझाई, दरवाजा खोला और कमरे से बाहर निकल गया, मानो किसी चीज़ की तलाश में हो। वह एक गलियारे से गुजरा और सीढ़ियों के पास पहुँचा। वहाँ उसे बच्चे की साँसों जैसी बहुत धीमी और कोमल आवाज़ सुनाई दी। उसने उस आवाज़ का पीछा किया और सीढ़ियों के नीचे बने एक त्रिकोणीय से गड्ढे में पहुँचा, या यूँ कहें कि सीढ़ियों से ही बने एक गड्ढे में। यह गड्ढा सीढ़ियों के नीचे की जगह के अलावा और कुछ नहीं था। वहाँ, तरह-तरह के पुराने कागजों और मिट्टी के बर्तनों के टुकड़ों के बीच, धूल और मकड़ी के जालों के बीच, एक पलंग था—अगर उसे पलंग कहा जा सकता है, तो वह पुआल से बना एक ऐसा गट्ठा था जिसमें इतने छेद थे कि पुआल दिखाई दे रहा था, और एक चादर इतनी फटी हुई थी कि गट्ठा भी दिख रहा था। चादरें नहीं थीं। यह फर्श पर रखा हुआ था।

कोसेट इसी बिस्तर पर सो रही थी।

वह आदमी पास आया और उसे नीचे की ओर देखने लगा।

कोसेट गहरी नींद में थी; उसने पूरे कपड़े पहने हुए थे। सर्दियों में वह कपड़े नहीं उतारती थी, ताकि उसे ठंड न लगे।

गुड़िया उसकी छाती से लगी हुई थी, जिसकी बड़ी-बड़ी आँखें अँधेरे में चमक रही थीं। वह बीच-बीच में गहरी आह भरती, मानो जागने ही वाली हो, और गुड़िया को अपनी बाहों में लगभग बेतहाशा खींचती। उसके बिस्तर के पास उसका केवल एक लकड़ी का जूता पड़ा था।

कोसेट की पलंग के पास खुला एक दरवाज़ा एक बड़े, अंधेरे कमरे का दृश्य दिखाता था। अजनबी उसमें दाखिल हुआ। कमरे के दूसरे छोर पर, एक कांच के दरवाजे से, उसने दो छोटे, सफ़ेद पलंग देखे। ये पलंग एपोनिन और अज़ेलमा के थे। इन पलंगों के पीछे, आधा छिपा हुआ, बिना पर्दे का एक बेंत का पालना रखा था, जिसमें वह छोटा लड़का सो रहा था जो पूरी शाम रोता रहा था।

अजनबी ने अनुमान लगाया कि यह कमरा थेनार्डियर दंपति के कमरे से जुड़ा हुआ था। वह पीछे हटने ही वाला था कि उसकी नज़र चिमनी पर पड़ी—उन विशाल सराय की चिमनियों में से एक, जिनमें अगर कभी आग जलती भी है तो बहुत कम और देखने में ठंडी लगती है। इस चिमनी में आग नहीं थी, राख भी नहीं थी; लेकिन फिर भी कुछ ऐसा था जिसने अजनबी का ध्यान खींचा। ये दो छोटे बच्चों के जूते थे, जो आकार में चंचल और आकार में असमान थे। यात्री को वह सुंदर और सदियों पुरानी परंपरा याद आ गई जिसके अनुसार बच्चे क्रिसमस की पूर्व संध्या पर अपने जूते चिमनी में रखते हैं, और अंधेरे में अपनी परी से किसी चमकते उपहार की प्रतीक्षा करते हैं। एपोनिन और अज़ेलमा ने भी इस परंपरा को नहीं भूला था, और दोनों ने अपना-अपना एक जूता चिमनी पर रख दिया था।

यात्री उनके ऊपर झुक गया।

परी, यानी उनकी माँ, पहले ही अपना दर्शन दे चुकी थी, और उसने उनमें से प्रत्येक में एक बिल्कुल नया और चमकदार दस सू का सिक्का देखा।

वह आदमी सीधा खड़ा हुआ और जाने ही वाला था कि चूल्हे के सबसे अंधेरे कोने में उसकी नज़र एक और चीज़ पर पड़ी। उसने गौर से देखा और पहचाना कि वह एक लकड़ी का जूता था, एक भयानक, भद्दा जूता, आधा टूटा हुआ और राख व सूखी मिट्टी से सना हुआ। यह कोसेट का जूता था। कोसेट ने बचपन के उस भोलेपन भरे भरोसे के

साथ, जो धोखा खा सकता है लेकिन कभी टूटता नहीं, अपना जूता भी चूल्हे पर रख दिया था।

जिस बच्चे ने निराशा के अलावा कभी कुछ नहीं जाना हो, उसके मन में आशा की किरण देखना एक प्यारी और मार्मिक बात है।

इस लकड़ी के जूते में कुछ भी नहीं था।

अजनबी ने अपनी जैकेट में हाथ डाला, झुका और कोसेट के जूते में एक लुई डी 'ओर सिक्का रख दिया।

फिर वह भेड़िये की तरह दबे पांव अपने कमरे में लौट आया।

9. थेनार्डियर और उनके दांव-पेच

अगली सुबह, भोर होने से कम से कम दो घंटे पहले, थेनार्डियर, सराय के सार्वजनिक कमरे में एक मोमबत्ती के पास बैठा, हाथ में कलम लिए, पीले कोट वाले यात्री के लिए बिल बना रहा था।
उनकी पत्नी उनके बगल में खड़ी थीं और आधी झुकी हुई थीं, वे अपनी निगाहों से उन्हें देख रही थीं। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। एक ओर वे गहन चिंतन में डूबी थीं, तो दूसरी ओर, मानव मन की किसी अद्भुत रचना के जन्म और विकास को देखने की धार्मिक श्रद्धा भी थी। घर में एक आवाज़ सुनाई दी; यह लार्क पक्षी की सीढ़ियों की चहचहाहट थी।
लगभग पंद्रह मिनट बीतने और कुछ मिटाने के बाद, थेनार्डियर ने निम्नलिखित उत्कृष्ट कृति तैयार की:—
नंबर 1 में रहने वाले सज्जन का बिल।
रात का खाना
3 फ्रैंक
कक्ष
10 फ्रैंक
मोमबत्ती
5 फ्रैंक
आग
4 फ्रैंक
सेवा
1 फ्रैंक
कुल
23 फ़्रैंक

Service को servisse लिखा गया था।
"तेईस फ्रैंक!" महिला ने उत्साह के साथ-साथ कुछ झिझक के साथ कहा।
सभी महान कलाकारों की तरह, थेनार्डियर भी असंतुष्ट थे।
“पेउह!” उसने कहा।
यह कैसलरेघ का लहजा था, जो वियना कांग्रेस में फ्रांस के विधेयक की समीक्षा कर रहे थे।
“महाशय थेनार्डियर, आप सही कह रहे हैं; उन्हें वह राशि अवश्य देनी चाहिए,” पत्नी ने धीरे से कहा, जो अपनी बेटियों की उपस्थिति में कोसेट को उपहार में दी गई गुड़िया के बारे में सोच रही थी। “यह उचित है, लेकिन यह बहुत अधिक है। वह इसे नहीं चुकाएंगे।”
थेनार्डियर हमेशा की तरह ठंडी हंसी हंसा और बोला:—
उसे भुगतान करना होगा।
यह हंसी निश्चितता और अधिकार का सर्वोच्च प्रमाण थी। जो बात इस तरह कही गई हो, वह निश्चित रूप से सच होगी। उनकी पत्नी ने इस पर जोर नहीं दिया।
वह मेज सजाने लगी; उसका पति कमरे में इधर-उधर टहल रहा था। थोड़ी देर बाद उसने कहा:—
मुझे पूरे पंद्रह सौ फ्रैंक देने हैं!
वह जाकर चिमनी के कोने में बैठ गया और अपने पैरों को गर्म राख के बीच रखकर ध्यान करने लगा।
“अरे! वैसे,” उसकी पत्नी ने बात जारी रखते हुए कहा, “क्या तुम भूल गए हो कि मैं आज कोसेट को घर से बाहर निकालने वाली हूँ? वह राक्षसी! वह अपनी उस गुड़िया से मेरा दिल तोड़ देती है! मैं उसे एक दिन भी घर में रखने के बजाय लुई XVIII से शादी करना पसंद करूँगी!”
थेनार्डियर ने अपनी पाइप जलाई और दो कश के बीच जवाब दिया:—
"आप वह बिल उस व्यक्ति को सौंप देंगे।"
फिर वह बाहर चला गया।

वह कमरे से बाहर निकला ही था कि यात्री अंदर आ गया।
थेनार्डियर तुरंत उसके पीछे प्रकट हुआ और आधे खुले दरवाजे में बिना हिले- डुले खड़ा रहा, जो केवल उसकी पत्नी को ही दिखाई दे रहा था।
पीले रंग का आदमी अपने हाथ में गठरी और लाठी लिए हुए था।
“इतनी जल्दी उठ गए?” मैडम थेनार्डियर ने कहा; “क्या महाशय हमें छोड़कर जा रहे हैं?”
जब वह इस तरह बोल रही थी, तो वह शर्मिंदगी भरे अंदाज़ में बिल को अपने हाथों में घुमा रही थी और नाखूनों से उसमें सिलवटें बना रही थी। उसके सख्त चेहरे पर एक अलग ही रंगत थी—डर और संकोच।
ऐसे व्यक्ति को ऐसा बिल पेश करना, जिसका हावभाव पूरी तरह से "एक बेचारे अभागे" जैसा था, उसे कठिन लग रहा था।
यात्री कुछ व्याकुल और अन्यमनस्क प्रतीत हो रहा था। उसने उत्तर दिया:— "जी मैडम, मैं जा रहा हूँ।"
"तो महाशय का मोंटफेरमील में कोई व्यवसाय नहीं है?"
“नहीं, मैं तो बस यहाँ से गुज़र रहा था। बस इतना ही। मैडम, मुझे आपका क्या देना है?” उन्होंने आगे कहा।
थेनार्डियर ने चुपचाप उसे मुड़ा हुआ बिल सौंप दिया।
उस व्यक्ति ने कागज़ खोला और उस पर एक नज़र डाली; लेकिन उसके विचार स्पष्ट रूप से कहीं और थे।
“मैडम,” उन्होंने बात फिर से शुरू करते हुए कहा, “क्या मोंटफर्मेइल में कारोबार अच्छा चल रहा है?”
“ठीक है, महाशय,” थेनार्डियर ने जवाब दिया, किसी अन्य प्रकार के विस्फोट को न देख पाने पर वह स्तब्ध रह गया था।
उसने उदास और दयनीय स्वर में आगे कहा:—
“ओह! महोदय, समय कितना कठिन है! और फिर, हमारे मोहल्ले में अमीर लोग तो बहुत कम हैं! आप देख रहे हैं, सब लोग गरीब हैं। अगर कभी-कभार महोदय जैसे कुछ धनी

और उदार यात्री न आते, तो हमारा गुजारा ही न हो पाता। हमारे खर्चे बहुत हैं। ज़रा देखिए, उस बच्चे पर तो हमारी आँखें तक खर्च हो गई हैं।”
“कौन सा बच्चा?”
“अरे वाह, छोटी बच्ची! कोसेट—यहाँ उसे लार्क कहते हैं!”
“आह!” उस आदमी ने कहा।
उसने आगे कहा:—
“ये किसान अपने उपनामों को लेकर कितने मूर्ख हैं! वह चिड़िया जैसी कम और चमगादड़ जैसी ज्यादा लगती है। देखिए, महोदय, हम भीख नहीं मांगते और न ही दे सकते हैं। हम कुछ कमाते नहीं हैं और हमें बहुत खर्च करना पड़ता है। लाइसेंस, कर, दरवाजे और खिड़की का कर, सौवां हिस्सा! महोदय जानते हैं कि सरकार बहुत ज्यादा पैसा मांगती है। और फिर, मेरी बेटियां हैं। मुझे दूसरों के बच्चों को पालने की कोई जरूरत नहीं है।”
उस व्यक्ति ने अपनी उस आवाज में बोलना फिर से शुरू किया, जिसे वह उदासीन दिखाने की कोशिश कर रहा था और जिसमें अभी भी एक कंपन बाकी थी:
"अगर कोई तुम्हें उससे छुटकारा दिला दे तो क्या होगा?"
“कौन? कोसेट?”
"हाँ।"
मकान मालकिन का लाल और हिंसक चेहरा भयावह रूप से चमक उठा।
“आह! महोदय, मेरे प्रिय महोदय, उसे ले जाइए, उसे अपने पास रखिए, उसे ले जाइए, उसे दूर ले जाइए, उसे चीनी से सजाइए, उसमें ट्रफल्स भरिए, उसे पीजिए, उसे खाइए, और पवित्र कुंवारी और स्वर्ग के सभी संतों का आशीर्वाद आप पर बना रहे!”
"मान गया।"
“सच में! आप उसे अपने साथ ले जाएंगे?”
मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगा।
"तुरंत?"

“तुरंत। बच्चे को बुलाओ।”
“कोसेट!” थेनार्डियर चिल्लाया।
“इस बीच,” उस व्यक्ति ने आगे कहा, “मैं आपको आपका बकाया चुका दूंगा। कितना बकाया है?”
उसने बिल पर एक नज़र डाली और आश्चर्य से चौंक गया:
“तेईस फ्रैंक!”
उसने मकान मालकिन की ओर देखा और दोहराया:—
“तेईस फ्रैंक?”
इन शब्दों के बार-बार उच्चारण में विस्मयादिबोधक और प्रश्नवाचक चिह्न के बीच का एक लहजा था।
थेनार्डियर को इस सदमे के लिए खुद को तैयार करने का समय मिल गया था। उसने आत्मविश्वास से जवाब दिया:—
"जी हाँ, महोदय, यह तेईस फ्रैंक है।"
अजनबी ने मेज पर पांच-पांच फ्रैंक के पांच सिक्के रख दिए।
“जाओ और बच्चे को ले आओ,” उसने कहा।
उसी क्षण थेनार्डियर कमरे के बीचोंबीच पहुंचा और बोला:—
“महाशय पर छब्बीस सू का बकाया है।”
“छब्बीस सू!” उसकी पत्नी ने हैरानी से कहा।
“कमरे के लिए बीस सू,” थेनार्डियर ने ठंडे स्वर में कहा, “और रात के खाने के लिए छह सू। बच्चे के बारे में मुझे थोड़ी बात करनी होगी। हमें अकेला छोड़ दो, पत्नी।”
मैडम थेनार्डियर प्रतिभा की अप्रत्याशित चमक से चकित रह गईं। उन्हें एहसास हुआ कि एक महान अभिनेता मंच पर प्रवेश कर रहा है, लेकिन उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा और कमरे से बाहर चली गईं।

जैसे ही वे अकेले हुए, थेनार्डियर ने यात्री को बैठने के लिए कुर्सी दी। यात्री बैठ गया; थेनार्डियर खड़ा रहा, और उसके चेहरे पर सौहार्द और सादगी का एक अनूठा भाव आ गया।

“महोदय,” उसने कहा, “मुझे आपसे बस इतना ही कहना है कि मैं उस बच्चे को बहुत प्यार करता हूँ।”

अजनबी ने उसे ध्यान से देखा।

“कौन सा बच्चा?”

थेनार्डियर ने आगे कहा:—

“यह कितनी अजीब बात है, इंसान को लगाव हो जाता है। ये क्या पैसा है? अपना सौ सू का सिक्का वापस ले लो। मुझे यह बच्चा बहुत प्यारा है।”

“आपका मतलब किससे है?” अजनबी ने पूछा।

अरे! हमारी प्यारी कोसेट! क्या आप उसे हमसे छीनना चाहते हैं? सच कहूँ तो, आप भले ही ईमानदार हों, लेकिन मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। मुझे उस बच्ची की बहुत याद आएगी। मैंने उसे पहली बार तब देखा था जब वह बिल्कुल छोटी थी। यह सच है कि उस पर हमारा पैसा खर्च होता है; यह सच है कि उसमें कुछ कमियाँ हैं; यह सच है कि हम अमीर नहीं हैं; यह सच है कि उसकी एक बीमारी के लिए ही मैंने दवाइयों पर चार सौ फ्रैंक से ज़्यादा खर्च कर दिए हैं! लेकिन भगवान के लिए कुछ तो करना ही पड़ता है। उसके न तो पिता हैं, न ही माता। मैंने उसे पाला- पोसा है। मेरे पास उसके और अपने लिए पर्याप्त रोटी है। सच में, मैं उस बच्ची को बहुत प्यार करता हूँ। आप समझते हैं ना, इंसान को किसी से लगाव हो जाता है; मैं एक अच्छा इंसान हूँ; मैं तर्क नहीं करता; मैं उस छोटी बच्ची से प्यार करता हूँ; मेरी पत्नी गुस्सैल है, लेकिन वह भी उससे प्यार करती है। देखिए, वह बिल्कुल हमारे अपने बच्चे जैसी है। मैं उसे घर में रखना चाहता हूँ ताकि वह घर में इधर-उधर घूमती रहे।

अजनबी ने अपनी निगाहें थेनार्डियर पर गड़ाए रखीं। थेनार्डियर ने आगे कहा:—

“माफ़ कीजिए, महोदय, लेकिन कोई भी राहगीर को अपना बच्चा यूँ ही नहीं सौंप देता। मैं सही कह रही हूँ, है ना? फिर भी, मैं यह नहीं कहूँगी—आप अमीर हैं;

आप एक बहुत अच्छे इंसान लगते हैं—कि अगर उसकी खुशी के लिए ऐसा करना पड़े तो। लेकिन यह तो पता लगाना ही होगा। आप समझते हैं: मान लीजिए कि मैं उसे जाने दूँ और खुद को कुर्बान कर दूँ, तो मैं जानना चाहूँगी कि उसका क्या हुआ; मैं उसे नज़रों से ओझल नहीं होने देना चाहूँगी; मैं जानना चाहूँगी कि वह किसके साथ रह रही है, ताकि मैं समय-समय पर उससे मिलने जा सकूँ; ताकि उसे पता चले कि उसका अच्छा पालक पिता जीवित है, कि वह उसकी देखभाल कर रहा है। संक्षेप में, कुछ बातें ऐसी हैं जो मुमकिन नहीं हैं। मुझे तो आपका नाम तक नहीं पता। अगर आप उसे ले जाएँ, तो मैं कहूँगी: ‘अरे वाह, उस बच्ची का क्या हुआ?’ कम से कम एक कागज़ का टुकड़ा तो देखना ही चाहिए, पासपोर्ट जैसी कोई मामूली सी चीज़ तो देखनी ही चाहिए, आप जानते हैं!”

अजनबी, अब भी उसे उस दृष्टि से निहारते हुए, जो कहावत के अनुसार, अंतरात्मा की गहराई तक भेद जाती है, गंभीर और दृढ़ स्वर में बोला:—

“महाशय थेनार्डियर, पेरिस से पाँच मील की यात्रा के लिए पासपोर्ट की आवश्यकता नहीं होती। यदि मैं कोसेट को ले जाऊँ, तो मैं उसे ले जाऊँगा, और बात यहीं समाप्त हो जाएगी। आप मेरा नाम नहीं जानेंगे, आप मेरा पता नहीं जानेंगे, आप यह नहीं जानेंगे कि वह कहाँ है; और मेरा इरादा है कि जब तक वह जीवित रहेगी, वह फिर कभी आपको न देख पाए। मैं उसके पैर में बंधा धागा तोड़ दूँगा, और वह चली जाएगी। क्या यह आपको ठीक लगता है? हाँ या ना?”

क्योंकि प्रतिभाशाली लोग, राक्षसों की तरह, कुछ संकेतों से सर्वोच्च ईश्वर की उपस्थिति को पहचान लेते हैं, इसलिए थेनार्डियर समझ गया कि उसे एक बहुत शक्तिशाली व्यक्ति से निपटना है। यह एक अंतर्ज्ञान की तरह था; उसने अपनी स्पष्ट और दूरदर्शी सूझबूझ से इसे समझ लिया। पिछली शाम गाड़ीवालों के साथ शराब पीते, सिगरेट पीते और भद्दे गाने गाते हुए, उसने अपना पूरा समय उस अजनबी को देखने में लगाया था, बिल्ली की तरह उस पर नज़र रखते हुए और गणितज्ञ की तरह उसका अध्ययन करते हुए। उसने उसे अपने निजी आनंद के लिए और सहज प्रवृत्ति से भी देखा था, और उस पर ऐसे नज़र रखी थी मानो उसे इसके लिए पैसे दिए गए हों। पीले ओवरकोट पहने उस आदमी की एक भी हरकत, एक भी इशारा, उसकी नज़र से नहीं बचा था। इससे पहले कि अजनबी कोसेट में अपनी रुचि इतनी स्पष्ट रूप से प्रकट करता, थेनार्डियर ने उसका इरादा भांप लिया था। उसने बूढ़े आदमी की गहरी निगाहें बार-बार बच्ची पर जाते हुए देखी थीं। यह आदमी

कौन था? यह दिलचस्पी क्यों? इतना पैसा होने के बावजूद यह भद्दा पहनावा क्यों? ऐसे सवाल जो उसने खुद से पूछे, लेकिन जिनका हल वह नहीं निकाल पाया, और जो उसे परेशान कर रहे थे। उसने पूरी रात इस बारे में सोचा। वह कोसेट का पिता तो नहीं हो सकता। क्या वह उसका दादा था? तो फिर उसने खुद को तुरंत क्यों नहीं बताया? जब किसी का कोई अधिकार होता है, तो उसे जताना चाहिए। इस आदमी का कोसेट पर स्पष्ट रूप से कोई अधिकार नहीं था। तो फिर क्या बात थी? थेनार्डियर अटकलों में खो गया। उसे हर चीज की झलक मिली, लेकिन उसे कुछ समझ नहीं आया। फिर भी, उस आदमी से बातचीत शुरू करते हुए, इस बात से आश्वस्त होकर कि मामले में कोई रहस्य है, कि उस आदमी का परदे के पीछे छिपे रहने में कोई स्वार्थ है, उसने खुद को मजबूत महसूस किया; जब उसने अजनबी के स्पष्ट और दृढ़ जवाब से समझा कि यह रहस्यमय व्यक्ति इतने सरल तरीके से रहस्यमय है, तो उसे अपनी कमजोरी का एहसास हुआ। उसने ऐसी किसी बात की उम्मीद नहीं की थी। उसकी सारी अटकलें धराशायी हो गईं। उसने अपने विचारों को समेटा। उसने एक पल में हर बात का विश्लेषण किया। थेनार्डियर उन लोगों में से एक था जो किसी भी स्थिति को एक नज़र में समझ लेते हैं। उन्होंने निर्णय लिया कि अब सीधे और तेज़ी से आगे बढ़ने का समय आ गया है। उन्होंने वही किया जो महान नेता निर्णायक क्षण में करते हैं, जिसे वे जानते हैं कि केवल वे ही पहचानते हैं; उन्होंने अचानक अपनी सारी शक्ति प्रकट कर दी।

“महोदय,” उसने कहा, “मुझे पंद्रह सौ फ्रैंक की आवश्यकता है।”

अजनबी ने अपनी बगल की जेब से काले चमड़े का एक पुराना पर्स निकाला, उसे खोला, उसमें से तीन नोट निकाले और मेज पर रख दिए। फिर उसने अपना बड़ा अंगूठा उन नोटों पर रखा और सराय मालिक से कहा:—

"जाओ और कोसेट को ले आओ।"

जब यह सब हो रहा था, कोसेट क्या कर रही थी?

जागते ही कोसेट अपना जूता लेने दौड़ी। उसमें उसे सोने का सिक्का मिला। यह नेपोलियन की मूर्ति नहीं थी; यह पुनर्स्थापना काल का एकदम नया बीस फ़्रैंक का सिक्का था, जिस पर लॉरेल की माला की जगह छोटी प्रशियाई चोटी बनी हुई थी। कोसेट चकित रह गई। उसका भाग्य उसे मदहोश करने लगा। वह नहीं जानती थी कि सोने का सिक्का क्या होता है; उसने कभी ऐसा सिक्का नहीं देखा था; उसने उसे

जल्दी से अपनी जेब में छिपा लिया, मानो उसने उसे चुरा लिया हो। फिर भी, उसे लगा कि यह सचमुच उसका है; उसने अंदाज़ा लगा लिया कि उसका उपहार कहाँ से आया है, लेकिन उसकी खुशी डर से भरी हुई थी। वह खुश थी; सबसे बढ़कर वह अचंभित थी। इतनी भव्य और सुंदर चीज़ें उसे अवास्तविक लग रही थीं। गुड़िया ने उसे डराया, सोने के सिक्के ने उसे डराया। इस भव्यता के सामने वह कांप उठी। केवल अजनबी ने ही उसे नहीं डराया। इसके विपरीत, उसने उसे आश्वस्त किया। पिछली शाम से ही, अपने आश्चर्य के बीच, यहाँ तक कि नींद में भी, वह अपने नन्हे से भोले मन से उस आदमी के बारे में सोच रही थी जो देखने में इतना गरीब और दुखी लगता था, लेकिन असल में इतना अमीर और दयालु था। जंगल में उस भले आदमी से मिलने के बाद से उसकी ज़िंदगी पूरी तरह बदल गई थी। कोसेट, जो आसमान की सबसे छोटी चिड़िया से भी कम खुश थी, उसने कभी माँ की छाँव और पंखों के नीचे पनाह लेना नहीं सीखा था। पिछले पाँच सालों से, यानी जहाँ तक उसकी याददाश्त जाती थी, वह बेचारी बच्ची काँपती और थरथराती रही थी। वह हमेशा विपत्ति की तेज़ हवा के सामने बिल्कुल अकेली पड़ी रहती थी; अब उसे ऐसा लगता था जैसे वह कपड़ों में लिपटी हुई है। पहले उसकी आत्मा ठंडी लगती थी, अब गर्म हो गई थी। कोसेट को अब थेनार्डियर से डर नहीं लगता था। वह अब अकेली नहीं थी; उसके साथ कोई था।

वह जल्दी से अपने रोज़ाना के सुबह के कामों में जुट गई। उसके पास जो लुई सिक्का था, ठीक उसी एप्रन की जेब में जहाँ से पिछली रात पंद्रह सू का सिक्का गिरा था, वह उसके विचारों में उथल-पुथल मचा रहा था। उसे छूने की हिम्मत तो नहीं हुई, लेकिन सच कहें तो वह पाँच मिनट तक उसे देखती रही, मानो उसकी जीभ बाहर लटक रही हो। सीढ़ियाँ साफ करते हुए वह रुक गई, वहीं खड़ी रही, झाड़ू और पूरे ब्रह्मांड को भूलकर, अपनी जेब के तल पर चमकते उस तारे को निहारने में मग्न।

चिंतन के इन्हीं क्षणों में से एक के दौरान थेनार्डियर उससे आकर मिलीं। वह अपने पति के आदेश पर कोसेट की खोज में गई थीं। जो बात बिलकुल अप्रत्याशित थी, वह यह थी कि उन्होंने न तो उसे मारा और न ही उसके प्रति कोई अपमानजनक शब्द कहा।

“कोसेट,” उसने लगभग कोमल स्वर में कहा, “तुरंत आओ।”

कुछ ही देर बाद कोसेट सार्वजनिक कक्ष में दाखिल हुई।

अजनबी ने अपने साथ लाया हुआ बंडल उठाया और उसे खोला। इस बंडल में एक छोटी ऊनी गाउन, एक एप्रन, एक फस्टियन चोली, एक रुमाल, एक पेटीकोट, ऊनी मोज़े और जूते थे—सात साल की बच्ची के लिए पूरा पहनावा। सब कुछ काला था।

“मेरे बच्चे,” उस आदमी ने कहा, “ये लो, और जल्दी से जाकर कपड़े पहन लो।”

जैसे ही सुबह होने लगी, मॉन्टफर्मेइल के जिन निवासियों ने अपने दरवाजे खोलने शुरू किए, उन्होंने देखा कि एक फटेहाल बूढ़ा आदमी शोक वस्त्र पहने एक छोटी बच्ची को गोद में गुलाबी गुड़िया लिए पेरिस की ओर जाने वाली सड़क पर ले जा रहा है। वे लिवरी की दिशा में जा रहे थे।

ये हमारे आदमी और कोसेट थे।

उस आदमी को कोई नहीं जानता था; कोसेट अब फटे-पुराने कपड़ों में नहीं थी, इसलिए बहुत से लोग उसे पहचान नहीं पाए। कोसेट जा रही थी। किसके साथ? उसे नहीं पता था। कहाँ? उसे नहीं पता था। वह बस इतना समझ पाई थी कि वह थेनार्डियर सराय को पीछे छोड़ रही है। किसी ने उसे विदाई देने के बारे में नहीं सोचा था, न ही उसने किसी से विदा लेने के बारे में सोचा था। वह उस नफरत भरे और नफरत करने वाले घर को छोड़ रही थी।

बेचारा, कोमल प्राणी, जिसका हृदय उस क्षण तक दमित था!

कोसेट गंभीर भाव से चलती रही, उसकी बड़ी-बड़ी आँखें खुली थीं और वह आकाश की ओर निहार रही थी। उसने अपना लुई अपने नए एप्रन की जेब में रखा हुआ था। वह बीच-बीच में झुककर उसे देखती; फिर उस भले आदमी की ओर देखती। उसे ऐसा महसूस हुआ मानो वह ईश्वर के साथ खड़ी हो।

X. जो व्यक्ति स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयास करता है, वह संभवतः अपनी स्थिति को

और खराब कर लेता है।

मैडम थेनार्डियर ने अपनी आदत के अनुसार अपने पति को मनमानी करने की छूट दे दी थी। उन्हें अच्छे परिणाम की उम्मीद थी। जब वह आदमी और कोसेट चले गए, तो थेनार्डियर ने पंद्रह मिनट का समय बीतने दिया; फिर वह उन्हें एक तरफ ले गए और उन्हें पंद्रह सौ फ़्रैंक दिखाए।

“बस इतना ही?” उसने कहा।

घर बसाने के बाद यह पहली बार था जब उसने मालिक के किसी काम की आलोचना करने की हिम्मत की थी।

उस प्रहार का असर हुआ।

“तुम सही कह रहे हो,” उसने कहा; “मैं मूर्ख हूँ। मुझे मेरी टोपी वापस दो।”

उसने तीनों नोटों को मोड़कर अपनी जेब में डाला और हड़बड़ी में बाहर भागा; लेकिन उससे एक गलती हो गई और वह पहले दाईं ओर मुड़ गया। उसने कुछ पड़ोसियों से पूछताछ की, जिन्होंने उसे सही रास्ते पर वापस ला दिया; लार्क और उस आदमी को लिवरी की दिशा में जाते देखा गया था। उसने इन संकेतों का अनुसरण किया, बड़े-बड़े कदम बढ़ाते हुए चलता रहा और साथ ही मन ही मन बातें करता रहा:—

“वह आदमी तो पीले वस्त्रों में लिपटा लाखों का धनी प्रतीत होता है, और मैं तो एक जानवर हूँ। पहले उसने बीस सू दिए, फिर पाँच फ्रैंक, फिर पचास फ्रैंक, फिर पंद्रह सौ फ्रैंक, सब कुछ उसने समान तत्परता से दिया। वह पंद्रह हजार फ्रैंक भी दे देता। लेकिन मैं उसे पकड़ लूँगा।”

और फिर, बच्चे के लिए पहले से तैयार कपड़ों का वह गट्ठा; वह सब कुछ अनोखा था; उसके नीचे कई रहस्य छिपे थे। एक बार रहस्य को जान लेने के बाद उसे जाने नहीं देना चाहिए। धनियों के रहस्य सोने के स्पंज की तरह होते हैं; उन्हें

दबाने का तरीका जानना जरूरी है। ये सारे विचार उसके दिमाग में घूम रहे थे।
"मैं एक जानवर हूँ," उसने कहा।

जब कोई मोंटफर्मेइल से निकलकर लिवरी की ओर जाने वाली सड़क के मोड़ पर पहुँचता है, तो पठार के उस पार दूर तक फैला हुआ वह दृश्य दिखाई देता है।
वहाँ पहुँचकर उसने अनुमान लगाया कि उसे बूढ़ा आदमी और बच्चा दिखना चाहिए।
उसने जहाँ तक उसकी दृष्टि जा सकती थी, देखा, पर कुछ भी नहीं दिखा। उसने दोबारा पूछताछ की, पर समय व्यर्थ ही बीता। कुछ राहगीरों ने उसे बताया कि जिस आदमी और बच्चे की वह तलाश कर रहा था, वे गग्नी की दिशा में जंगल की ओर चले गए हैं। वह उस दिशा में तेज़ी से चल पड़ा।

वे उससे काफी आगे निकल चुके थे; लेकिन एक बच्चा धीरे चलता है, और वह तेज चल रहा था; और फिर, वह उस इलाके से अच्छी तरह परिचित था।

अचानक वह रुका और उसने अपने माथे पर एक प्रहार किया, मानो वह कोई महत्वपूर्ण बात भूल गया हो और अपने कदम पीछे हटाने के लिए तैयार हो।

“मुझे अपनी बंदूक ले लेनी चाहिए थी,” उसने मन ही मन कहा।

थेनार्डियर उन दोहरे स्वभाव वाले व्यक्तियों में से एक था जो कभी-कभी हमारे बीच से बिना हमारी जानकारी के गुज़र जाते हैं और बिना हमारी खोज के गायब हो जाते हैं, क्योंकि नियति ने उनका केवल एक ही पहलू दिखाया होता है। कई लोगों का यही भाग्य होता है कि वे इस तरह आधा-अधूरा जीवन जीते हैं। शांत और स्थिर परिस्थितियों में, थेनार्डियर के पास वह सब कुछ था जो उसे एक ईमानदार व्यापारी, एक अच्छा बुर्जुआ बनाने के लिए आवश्यक होता है—हम यह नहीं कहेंगे कि वह वास्तव में ऐसा ही था। उसी समय, कुछ परिस्थितियाँ उत्पन्न होने पर, कुछ झटके लगने पर जो उसके छिपे हुए स्वभाव को सतह पर लाते हैं, उसमें एक बदमाश बनने के सभी गुण मौजूद थे। वह एक दुकानदार था जिसमें राक्षस का कुछ अंश छिपा हुआ था। शैतान कभी-कभी थेनार्डियर के घर के किसी कोने में दुबक कर बैठ जाता होगा और इस भयानक कृति को देखकर स्वप्न देखने लगता होगा।

क्षण भर की झिझक के बाद:—

“अरे!” उसने सोचा; “उनके पास भागने का समय होगा।”

और वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ता रहा, तेजी से सीधे आगे बढ़ता रहा, और लगभग निश्चितता के भाव से, जैसे कोई लोमड़ी तीतरों के झुंड की गंध सूंघ लेती है।

दरअसल, जब वह तालाबों को पार करके एवेन्यू डे बेलेव्यू के दाहिनी ओर स्थित विशाल खुले मैदान को तिरछी दिशा में पार करते हुए उस घास-फूस की गली में पहुँचा, जो लगभग पहाड़ी का चक्कर लगाती है और चेल्स एबे के प्राचीन जलसेतु के मेहराब को ढकती है, तो झाड़ियों के ऊपर से उसकी नज़र उस टोपी पर पड़ी, जिसके बारे में उसने पहले ही कई अटकलें लगाई थीं; वह उसी आदमी की टोपी थी। झाड़ियाँ ज़्यादा ऊँची नहीं थीं। थेनार्डियर ने पहचान लिया कि वह आदमी और कोसेट वहाँ बैठे थे। बच्ची अपने छोटे कद के कारण दिखाई नहीं दे रही थी, लेकिन उसकी गुड़िया का सिर दिख रहा था।

थेनार्डियर गलत नहीं था। वह आदमी वहीं बैठा था और कोसेट को थोड़ा आराम करने दे रहा था। सराय का मालिक झाड़ियों के चारों ओर घूमा और अचानक उन लोगों के सामने आ गया जिनकी वह तलाश कर रहा था।

“माफ़ कीजिए, महोदय,” उसने हाँफते हुए कहा, “लेकिन ये रहे आपके पंद्रह सौ फ्रैंक।”

इतना कहकर उसने अजनबी को तीन नोट सौंप दिए।

उस आदमी ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं।

"इस का अर्थ क्या है?"

थेनार्डियर ने आदरपूर्वक उत्तर दिया:—

"इसका मतलब है, महोदय, कि मैं कोसेट को वापस ले आऊँगी।"

कोसेट सिहर उठी और बूढ़े आदमी से लिपट गई।

उसने थेनार्डियर की आँखों की गहराई में देखते हुए और प्रत्येक अक्षर को स्पष्ट रूप से बोलते हुए उत्तर दिया:

"क्या तुम कोसेट को वापस लेने जा रहे हो?"

जी हाँ, महोदय, मैं हूँ। मैं आपको बताता हूँ; मैंने इस मामले पर विचार किया है। वास्तव में, मुझे उसे आपको सौंपने का अधिकार नहीं है। आप जानते हैं, मैं एक ईमानदार व्यक्ति हूँ; यह बच्ची मेरी नहीं है; यह उसकी माँ की है।

उसकी माँ ने ही उसे मेरे हवाले किया था; मैं उसे केवल उसकी माँ को ही सौंप सकता हूँ। आप मुझसे कहेंगे, 'लेकिन उसकी माँ तो मर चुकी है।' ठीक है; उस स्थिति में मैं बच्ची को केवल उसी व्यक्ति को सौंप सकता हूँ जो मुझे उसकी माँ द्वारा हस्ताक्षरित एक लिखित दस्तावेज लाकर दे, जिसमें यह लिखा हो कि मुझे बच्ची को उसमें उल्लिखित व्यक्ति को सौंपना है; यह स्पष्ट है।
उस आदमी ने बिना कोई जवाब दिए अपनी जेब में हाथ डाला, और थेनार्डियर ने देखा कि नोटों से भरी उसकी जेब एक बार फिर से दिखाई दी।
सराय का मालिक खुशी से कांप उठा।
“अच्छा!” उसने सोचा; “हमें डटे रहना चाहिए; वह मुझे रिश्वत देने वाला है!” पर्स खोलने से पहले यात्री ने चारों ओर एक नज़र डाली: वह जगह बिल्कुल सुनसान थी; न तो जंगल में और न ही घाटी में कोई इंसान था। उस व्यक्ति ने अपना पर्स एक बार फिर खोला और उसमें से नोटों का वह गुच्छा नहीं निकाला जिसकी थेनार्डियर को उम्मीद थी, बल्कि एक छोटा सा साधारण कागज़ निकाला, जिसे उसने खोलकर सराय के मालिक को पूरी तरह से देते हुए कहा:—
आप सही कह रहे हैं; पढ़िए!
थेनार्डियर ने कागज़ लिया और पढ़ा:—
“एम⸺ पर एम⸺,
25 मार्च, 1823.
श्री थेनार्डियर:
आप कोसेट को इस व्यक्ति तक पहुंचाएंगे। आपको सभी छोटे-मोटे कामों के लिए भुगतान किया जाएगा। मैं आपको आदरपूर्वक सलाम करता हूँ।
फैंटाइन।
“क्या आप उस हस्ताक्षर को जानते हैं?” उस व्यक्ति ने सवाल का जवाब देते हुए कहा।
यह निश्चित रूप से फैंटाइन की खास शैली थी; थेनार्डियर ने इसे पहचान लिया।

कोई जवाब नहीं दिया जा सका; उसे दो भयंकर परेशानियाँ झेलनी पड़ीं, एक तो उस रिश्वत को ठुकराने की परेशानी जिसकी उसे उम्मीद थी, और दूसरी पिटाई खाने की परेशानी; उस आदमी ने आगे कहा:—

आप इस कागज को अपनी रसीद के रूप में रख सकते हैं।

थेनार्डियर अपेक्षाकृत व्यवस्थित तरीके से पीछे हट गया।

“इस हस्ताक्षर की काफी अच्छी नकल की जा चुकी है,” उसने दांत पीसते हुए कहा; “लेकिन जाने दो!”

फिर उसने हताशा भरा प्रयास किया।

“कोई बात नहीं, महोदय,” उसने कहा, “क्योंकि आप ही वह व्यक्ति हैं, लेकिन मुझे उन सभी छोटी-छोटी चीजों का भुगतान मिलना चाहिए। मेरा बहुत सारा बकाया है।”

वह आदमी उठ खड़ा हुआ और अपनी फटी हुई आस्तीन से धूल झाड़ने लगा:

“महाशय थेनार्डियर, पिछले जनवरी में, माँ ने हिसाब लगाया कि उन्हें आपको एक सौ बीस फ़्रैंक देने थे। फ़रवरी में, आपने उन्हें पाँच सौ फ़्रैंक का बिल भेजा; आपको फ़रवरी के अंत में तीन सौ फ़्रैंक और मार्च की शुरुआत में तीन सौ फ़्रैंक मिले। तब से नौ महीने बीत चुके हैं, पंद्रह फ़्रैंक प्रति माह की दर से, जो कि तय की गई कीमत है, कुल एक सौ पैंतीस फ़्रैंक बनते हैं। आपको एक सौ फ़्रैंक ज़्यादा मिल गए थे; यानी आपको अभी भी पैंतीस फ़्रैंक देने हैं। मैंने अभी आपको पंद्रह सौ फ़्रैंक दिए हैं।”

थेनार्डियर की अनुभूति उस भेड़िये जैसी थी, जब उसे लगता है कि उसे जाल के लोहे के जबड़े ने जकड़ लिया है और जकड़ लिया है।

“यह शैतान जैसा आदमी कौन है?” उसने सोचा।

उसने वही किया जो भेड़िया करता है: उसने खुद को झकझोर दिया। दुस्साहस ने एक बार उसे सफलता दिलाई थी।

“महाशय, मैं आपका नाम नहीं जानता,” उसने दृढ़ता से कहा, और इस बार सभी सम्मानजनक औपचारिकताओं को दरकिनार करते हुए, “यदि आप मुझे एक हजार क्राउन नहीं देते हैं, तो मैं कोसेट को वापस ले लूंगा।”

अजनबी ने शांत भाव से कहा:—

"चलो, कोसेट।"

उसने कोसेट का बायां हाथ पकड़ा और अपने दाहिने हाथ से जमीन पर पड़ी अपनी लाठी उठाई।

थेनार्डियर ने लाठी के विशाल आकार और उस स्थान के एकांत पर ध्यान दिया।

वह आदमी बच्चे को लेकर जंगल में घुस गया, और सराय के मालिक को वहीं बेसुध और अवाक छोड़ गया।

जब वे वहां से जा रहे थे, तब थेनार्डियर ने उसके विशाल कंधों का बारीकी से निरीक्षण किया, जो थोड़े गोल थे, और उसकी बड़ी मुट्ठियों का भी।

फिर, अपनी नज़रें वापस अपने शरीर पर लाते हुए, उनकी नज़रें अपनी कमज़ोर भुजाओं और पतले हाथों पर पड़ीं। “शिकार पर जाते समय बंदूक न लाना मेरी बहुत बड़ी मूर्खता थी!”

हालांकि, सराय मालिक ने हार नहीं मानी।

“मैं जानना चाहता हूँ कि वह कहाँ जा रहा है,” उसने कहा और कुछ दूरी से उनका पीछा करने लगा। उसके हाथ में दो चीजें रह गईं, एक विडंबनापूर्ण कागज़ जिस पर “फैंटाइन” के हस्ताक्षर थे, और एक सांत्वना, पंद्रह सौ फ्रैंक।

वह आदमी कोसेट को लिवरी और बॉन्डी की दिशा में ले गया। वह धीरे-धीरे, सिर झुकाए, चिंतन और उदासी के भाव से चल रहा था। सर्दियों में जंगल कम घना हो गया था, इसलिए थेनार्डियर उन्हें नज़रों से ओझल नहीं होने दे रहा था, हालाँकि वह उनसे अच्छी-खासी दूरी बनाए हुए था। वह आदमी बीच-बीच में पीछे मुड़कर देखता रहता था कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा। अचानक उसकी नज़र थेनार्डियर पर पड़ी। वह कोसेट के साथ अचानक झाड़ियों में घुस गया, जहाँ वे दोनों छिप सकते थे। "धत् तेरे की!" थेनार्डियर ने कहा और अपनी चाल और तेज़ कर दी।

घनी झाड़ियों के कारण उसे उनके और करीब जाना पड़ा। जब वह आदमी झाड़ियों के सबसे घने हिस्से में पहुँचा, तो वह मुड़ गया। थेनार्डियर का शाखाओं में छिपने का प्रयास व्यर्थ था; वह उस आदमी को खुद को देखने से नहीं रोक सका।
उस आदमी ने उस पर एक बेचैन नज़र डाली, फिर अपना सिर उठाया और आगे बढ़ गया।

सराय का मालिक फिर से उसका पीछा करने लगा। इस तरह वे दो-तीन सौ कदम तक चलते रहे। अचानक वह आदमी एक बार फिर मुड़ा; उसने सराय के मालिक को देखा। इस बार उसने उसे इतने गंभीर भाव से देखा कि थेनार्डियर ने आगे बढ़ना "बेकार" समझा। थेनार्डियर वापस लौट गया।

XI. लॉटरी में 9,430 नंबर फिर से दिखाई दिया और कोसेट ने इसे जीत लिया।

जीन वाल्जेन मरा नहीं था।

जब वह समुद्र में गिरा, या यूँ कहें कि जब उसने खुद को उसमें झोंक दिया, तो जैसा कि हमने देखा है, वह लोहे के तख्तों से नहीं ढका। वह पानी के नीचे तैरता रहा जब तक कि वह लंगर डाले एक जहाज तक नहीं पहुँच गया, जिससे एक नाव बंधी हुई थी। उसने रात तक इस नाव में छिपने का साधन ढूँढा। रात में वह फिर से तैरकर निकल गया और केप ब्रून से कुछ दूरी पर तट पर पहुँच गया। वहाँ, उसके पास पैसों की कमी नहीं थी, इसलिए उसने कपड़े खरीदे। बालागुइर के पास एक छोटा सा देहाती घर उस समय भागे हुए कैदियों का ड्रेसिंग रूम हुआ करता था — एक आकर्षक धंधा। फिर जीन वालजेन, उन सभी बेचारे भगोड़ों की तरह जो कानून की निगरानी और सामाजिक नियति से बचने की कोशिश कर रहे थे, एक अस्पष्ट और घुमावदार रास्ते पर चल पड़ा। उसे अपना पहला आश्रय ब्यूसेट के पास प्राडेक्स में मिला। फिर उसने अपना रास्ता हाउट्स-आल्प्स में ब्रायनकॉन के पास ग्रैंड-विलार्ड की ओर मोड़ दिया। यह एक लड़खड़ाती और बेचैन उड़ान थी—एक तिल के पदचिह्न की तरह, जिसकी शाखाओं का पता लगाना असंभव है। बाद में, सिवरियू क्षेत्र में ऐन में उसके प्रवेश के कुछ सुराग मिले; पाइरेनीज़ में, एकॉन्स में; चावेल्स के बाज़ार के पास ग्रेंज-डी-डौमेक नामक स्थान पर, और पेरिग्यूक्स के आसपास के ब्रुनीज़ में, ला चैपल-गोनागुएट कैंटन में। वह पेरिस पहुँच गया। हमने उसे अभी-अभी मोंटफर्मेइल में देखा है।

पेरिस पहुँचने पर उनकी पहली प्राथमिकता सात-आठ साल की एक छोटी बच्ची के लिए शोक वस्त्र खरीदना थी; फिर रहने के लिए जगह का इंतजाम करना। यह सब करने के बाद वे मोंटफर्मेइल चले गए। याद रहे कि इससे पहले भी, अपने भागने के दौरान, उन्होंने वहाँ या उसके आस-पास कहीं एक रहस्यमय यात्रा की थी, जिसकी पुलिस को कुछ आशंका थी।

हालांकि, उन्हें मृत मान लिया गया था, और इससे उनके बारे में फैली अनिश्चितता और भी बढ़ गई। पेरिस में, इस घटना का विवरण देने वाली एक डायरी उनके हाथ लगी। उन्हें राहत और लगभग शांति का अनुभव हुआ, मानो वे सचमुच मर चुके हों।

जिस दिन जीन वालजेन ने कोसेट को थेनार्डियर्स के चंगुल से बचाया था, उसी शाम वह पेरिस लौट आया। सूर्यास्त के समय वह बच्ची के साथ बैरियर मोनसेओक्स होते हुए पेरिस में दाखिल हुआ। वहाँ उसने एक कैब्रियोलेट (छोटी कार) ली, जो उसे वेधशाला के मैदान तक ले गई। वहाँ वह कार से उतरा, कोचवान को किराया दिया, कोसेट का हाथ पकड़ा और साथ में वे अंधेरे में—ऑर्सीन और ग्लेसिएर नदियों से सटी सुनसान गलियों से होते हुए—बुलेवार्ड डी ल'हॉपिटल की ओर चल पड़े।

कोसेट के लिए वह दिन अजीब और भावनाओं से भरा हुआ था। उन्होंने झाड़ियों के पीछे छिपी सुनसान सराय से रोटी और पनीर खरीदा था; उन्होंने बार-बार गाड़ियाँ बदली थीं; और कुछ दूर पैदल भी चले थे। उसने कोई शिकायत नहीं की, लेकिन वह थकी हुई थी, और जीन वालजेन ने चलते-चलते उसके हाथ को और अधिक खींचते जाने के तरीके से यह महसूस किया। उसने उसे अपनी पीठ पर उठा लिया। कोसेट ने कैथरीन का हाथ छोड़े बिना अपना सिर जीन वालजेन के कंधे पर रख दिया और वहीं सो गई।

पुस्तक **IV.** गोरब्यू झोपड़ी

I. मास्टर गोरब्यू

चालीस साल पहले, एक घुमक्कड़ जो साल्पेट्रिएर के उस अनजान इलाके में निकल पड़ा था और बुलेवार्ड से होते हुए बैरियर डी'इटली तक पहुँच गया था, एक ऐसे मुकाम पर पहुँचा जहाँ कहा जा सकता है कि पेरिस गायब हो गया। अब वह सन्नाटा नहीं था, क्योंकि राहगीर थे; वह गाँव नहीं था, क्योंकि वहाँ घर और गलियाँ थीं; वह शहर नहीं था, क्योंकि गलियों में राजमार्गों जैसी दरारें थीं और उनमें घास उग रही थी; वह गाँव नहीं था, क्योंकि घर बहुत ऊँचे थे। तो फिर वह क्या था? वह एक ऐसी जगह थी जहाँ कोई नहीं था; वह एक वीरान जगह थी जहाँ कोई था; वह उस महान शहर का एक बुलेवार्ड था, पेरिस की एक गली; रात में जंगल से भी ज़्यादा जंगली, दिन में कब्रिस्तान से भी ज़्यादा उदास।

यह मार्शे-ऑक्स-शेवॉक्स का पुराना इलाका था।

यदि वह घुमक्कड़ इस जर्जर शेवो शहर की चार दीवारों के बाहर निकलने का जोखिम उठाता; यदि वह ऊँची दीवारों से घिरे एक बगीचे को पीछे छोड़ते हुए, रू डू पेटिट-बैंकियर से आगे बढ़ने की भी हिम्मत करता; फिर एक ऐसा खेत जहाँ विशाल बीवर की झोपड़ियों की तरह टैनबार्क मिलें खड़ी थीं; फिर लकड़ी से लदे एक बाड़े में ठूंठ, बुरादा और छिलके का ढेर था, जिस पर एक बड़ा कुत्ता भौंक रहा था; फिर एक लंबी, नीची, पूरी तरह से जर्जर दीवार थी, जिस पर शोक में डूबा एक छोटा काला दरवाजा था, जो काई से ढका हुआ था, जो वसंत ऋतु में फूलों से आच्छादित होती थी; फिर, सबसे सुनसान जगह पर, एक भयानक और जर्जर इमारत थी, जिस पर बड़े अक्षरों में लिखा था: डाक बिल नहीं—तो यह साहसी घुमक्कड़ रू डेस विग्नेस-सेंट-मार्सेल के कोने पर एक अनजानी जगह पर पहुँच जाता। वहाँ, एक कारखाने के पास और दो बगीचे की दीवारों के बीच, उस समय एक साधारण सी इमारत दिखाई देती थी, जो पहली नज़र में एक झोपड़ी जैसी लगती थी, लेकिन वास्तव में एक गिरजाघर जितनी बड़ी थी। इसका एक हिस्सा और सामने का भाग सड़क की ओर था; इसीलिए यह छोटी दिखती थी। घर का लगभग पूरा हिस्सा छिपा हुआ था। केवल दरवाजा और एक खिड़की ही दिखाई देती थी।

यह झोपड़ी मात्र एक मंजिला थी।

सबसे पहली बात जो देखने वाले का ध्यान खींचती है, वह यह है कि दरवाजा किसी झोपड़ी के दरवाजे के अलावा और कुछ नहीं हो सकता था, जबकि खिड़की, अगर खुरदुरे पत्थर के बजाय तराशे हुए पत्थर से बनी होती, तो किसी आलीशान हवेली की जालीदार खिड़की हो सकती थी।

दरवाजा कुछ और नहीं बल्कि दीमक लगे तख्तों का एक ढेर था, जिन्हें मोटे तौर पर तराशे गए लट्ठों जैसी दिखने वाली तिरछी बीमों से बांधा गया था। यह सीधे एक ऊँची, कीचड़ से सनी, चूने से सनी, प्लास्टर से रंगी, धूल भरी सीढ़ी पर खुलता था, जिसकी चौड़ाई दरवाजे के बराबर थी। यह सीढ़ी सड़क से दिखाई देती थी, जो सीढ़ी की तरह सीधी ऊपर जाती थी और दो दीवारों के बीच अंधेरे में गायब हो जाती थी। जिस बेढंगे खांचे में यह दरवाजा बंद होता था, उसका ऊपरी हिस्सा एक पतले तख्ते से ढका हुआ था, जिसके बीच में एक त्रिकोणीय छेद आरी से काटा गया था, जो दरवाजा बंद होने पर खिड़की और हवा आने-जाने के लिए छेद का काम करता था। दरवाजे के अंदर की तरफ स्याही में डूबी ब्रश से दो-तीन स्ट्रोक में 52 लिखा हुआ था, और उसी तख्ते के ऊपर उसी हाथ से 50 लिखा हुआ था, जिससे मन में शंका पैदा हो जाती थी। वह कहाँ था? दरवाजे के ऊपर लिखा था, "संख्या 50;" अंदर से जवाब मिला, "नहीं, संख्या 52।" किसी को नहीं पता कि धूल के रंग की कौन सी आकृतियाँ त्रिकोणीय खुले स्थान से पर्दों की तरह लटकी हुई थीं।

खिड़की बड़ी थी, पर्याप्त ऊंचाई पर स्थित थी, वेनेशियन ब्लाइंड्स से सजी थी और उसके फ्रेम में बड़े चौकोर शीशे लगे थे; लेकिन इन बड़े शीशों पर कई तरह के निशान थे, जिन्हें एक चालाकी से चिपकाए गए कागज़ के बैंडेज से छुपाया और उजागर किया गया था। और ब्लाइंड्स, जो अपनी जगह से हटे हुए और चिपके हुए नहीं थे, राहगीरों को डरा रहे थे, न कि अंदर बैठे लोगों को। क्षैतिज पट्टियाँ जगह-जगह से गायब थीं और उनकी जगह अनाड़ीपन से तख्ते लंबवत ठोंके गए थे; इस तरह जो ब्लाइंड के रूप में शुरू हुआ था, वह शटर बनकर रह गया था। एक ही घर में इस गंदे से दिखने वाले दरवाजे और एक साफ-सुथरी, हालांकि जर्जर सी दिखने वाली खिड़की को इस तरह देखने पर ऐसा लगता था मानो दो अधूरे भिखारी एक ही फटे-पुराने कपड़ों के नीचे अलग-अलग भावों के साथ-साथ चल रहे हों, एक हमेशा से भिखारी रहा हो और दूसरा कभी सज्जन रहा हो।

[illegible] [illegible] [illegible] [

दोनों ईमानदार साधक, उपहास से शर्मिंदा होकर और अपने पीछे आने वाली हंसी की आवाजों से अपने सिर को संभालने में बाधा महसूस करते हुए, अपने नाम मिटाने का फैसला किया और राजा से गुहार लगाने का उपाय सोचा।

उनकी याचिका लुई XV के समक्ष उसी दिन प्रस्तुत की गई, जब पोप के दूत और कार्डिनल डी ला रोश-आयमन, दोनों श्रद्धापूर्वक घुटने टेककर, महामहिम की उपस्थिति में, मैडम डू बैरी के नंगे पैरों में चप्पल पहना रहे थे, जो अभी- अभी बिस्तर से उठी थीं। राजा, जो हंस रहे थे, हंसते रहे, दो बिशपों से दो वकीलों की ओर प्रसन्नतापूर्वक बढ़े और कानून के इन अंगों को उनके पुराने नाम, या लगभग वही नाम, प्रदान किए। राजा के आदेश से, मैत्रे कोरब्यू को अपने नाम के पहले अक्षर में एक पूंछ जोड़ने और खुद को गोरब्यू कहने की अनुमति दी गई। मैत्रे रेनार्ड इतने भाग्यशाली नहीं थे; उन्हें केवल अपने नाम R के आगे एक P लगाने और खुद को प्रेनार्ड कहने की अनुमति मिली; जिससे दूसरा नाम पहले नाम से लगभग उतना ही मिलता-जुलता हो गया।

स्थानीय परंपरा के अनुसार, यह मैत्रे गोरब्यू, बुलेवार्ड डे ल'हॉपिटल पर स्थित भवन संख्या 50-52 के मालिक थे। यहाँ तक कि उन्होंने ही उस विशाल खिड़की का निर्माण भी करवाया था।

इसलिए इस इमारत का नाम गोरब्यू हाउस पड़ गया।

इस घर के ठीक सामने, बुलेवार्ड के पेड़ों के बीच, एक विशाल एल्म का पेड़ खड़ा था जो लगभग तीन-चौथाई सूख चुका था; लगभग ठीक उसके सामने रू डे ला बैरियर डेस गोबेलिन्स नाम की सड़क खुलती थी, जो उस समय बिना घरों वाली, कच्ची, अस्वस्थ पेड़ों से भरी हुई थी, जो मौसम के अनुसार हरी-भरी या कीचड़ भरी हो जाती थी, और जो सीधे पेरिस की बाहरी दीवार पर जाकर समाप्त होती थी। पास के कारखाने की छतों से कॉपरस की गंध हल्की-हल्की आ रही थी।

सुरक्षा घेरा बिल्कुल पास ही था। 1823 में शहर की दीवार अभी भी मौजूद थी।

यह बाधा स्वयं मन में निराशावादी कल्पनाएँ जगाती थी। यह बिसेत्रे जाने का मार्ग था। साम्राज्य और पुनर्स्थापना काल के दौरान, इसी मार्ग से मृत्युदंड पाए कैदी अपनी फाँसी के दिन पेरिस में पुनः प्रवेश करते थे। यहीं, लगभग 1829 में, वह रहस्यमय हत्या हुई थी, जिसे "फॉन्टेनब्लू बाधा की हत्या" कहा जाता है, जिसके दोषियों का पता न्याय आज तक नहीं लगा सका; एक

दुखद समस्या जिसका कभी समाधान नहीं हुआ, एक भयानक पहेली जिसका कभी हल नहीं निकला। कुछ कदम आगे बढ़ें, और आप उस घातक रुए क्रौलेबार्बे पर पहुँच जाएँगे, जहाँ उल्बाख ने इवरी की बकरी चराने वाली लड़की को गरजते हुए चाकू मारा था, ठीक वैसे ही जैसे मेलोड्रामा में होता है। कुछ कदम और आगे बढ़ने पर आप बैरियर सेंट-जैक्स के घिनौने छंटे हुए एल्म के पेड़ों तक पहुँच जाते हैं, जो परोपकारी लोगों द्वारा फांसी के तख्ते को छिपाने का एक उपाय है, दुकानदारी और बुर्जुआ समाज का वह दयनीय और शर्मनाक प्लेस डे ग्रेव, जो मृत्युदंड के सामने पीछे हट गया, न तो इसे भव्यता से समाप्त करने का साहस किया और न ही अधिकार के साथ इसका समर्थन किया।

प्लेस सेंट-जैक्स को छोड़ दें, जो मानो पूर्वनियोजित था और जो हमेशा से ही भयानक रहा है, उस दुखद बुलेवार्ड पर शायद सबसे दुखद स्थान, सैंतीस साल पहले, वह स्थान था जो आज भी इतना अनाकर्षक है, जहाँ भवन संख्या 50-52 स्थित थी।

वहाँ अमीरों के घर पच्चीस साल बाद ही बनने शुरू हुए। वह जगह अप्रिय थी। वहाँ मन में उठने वाले निराशाजनक विचारों के अलावा, ऐसा लगता था मानो कोई साल्पेट्रिएर (जिसके गुंबद की एक झलक दिखाई देती थी) और बिसेत्रे (जिसके बाहरी इलाके को छू रहा था) के बीच में हो; यानी, महिलाओं के पागलपन और पुरुषों के पागलपन के बीच। जहाँ तक नज़र जाती, कसाईखाने, शहर की दीवार और कुछ कारखानों के अग्रभागों के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता था, जो बैरकों या मठों जैसे लगते थे; चारों ओर झोपड़ियाँ, कूड़ा-करकट, कफ़न की तरह काली पड़ी पुरानी दीवारें, कफ़न की तरह नई सफेद दीवारें थीं; हर जगह पेड़ों की समानांतर कतारें, एक सीधी रेखा में बनी इमारतें, सपाट संरचनाएँ, लंबी, ठंडी कतारें और समकोण की उदासी छाई हुई थी। न ज़मीन की कोई असमानता, न वास्तुकला में कोई खामी, न कोई मोड़। पूरा दृश्य बर्फीला, एक जैसा और भयानक था। समरूपता से बढ़कर हृदय पर कोई और बोझ नहीं पड़ता। क्योंकि समरूपता ऊब है, और ऊब ही दुःख की जड़ है। निराशा गहरी साँसें ले रही है। एक ऐसे नरक से भी कहीं अधिक भयानक स्थिति की कल्पना की जा सकती है जहाँ व्यक्ति कष्ट भोगता है, और वह है ऊब का नरक। यदि ऐसा कोई नरक होता, तो बुलेवार्ड डी ल'हॉपिटल का वह हिस्सा शायद उसका प्रवेश द्वार होता।

फिर भी, सूर्यास्त के समय, जब दिन का उजाला ढल रहा होता है, विशेषकर सर्दियों में, जब गोधूलि की हवा एल्म के पेड़ों से उनके अंतिम भूरे पत्ते तोड़ रही होती है, जब अंधेरा गहरा और तारों से रहित होता है, या जब चंद्रमा और हवा बादलों में छेद करके छाया में विलीन हो जाते हैं, तब यह सड़क अचानक भयावह हो जाती है। काली रेखाएँ भीतर की ओर धंस जाती हैं और अनंत के टुकड़ों की तरह छाया में खो जाती हैं। राहगीर उस स्थान की अनगिनत परंपराओं को याद किए बिना नहीं रह सकता जो फांसी के तख्ते से जुड़ी हैं। इस स्थान का सन्नाटा, जहाँ इतने सारे अपराध हुए हैं, अपने आप में कुछ भयानक था। उस अंधेरे में फँसने का पूर्वाभास सा हो जाता था; अंधेरे के सभी उलझे हुए रूप संदिग्ध लगते थे, और लंबा, खोखला वर्ग, जिसकी झलक हर पेड़ के बीच से दिखाई देती थी, कब्रों जैसा लगता था: दिन में यह बदसूरत था; शाम को उदास; रात में अशुभ।

गर्मी के मौसम में, संध्याकाल के समय, इधर-उधर कुछ बूढ़ी औरतें बारिश से भीगी हुई बेंचों पर, एल्म के पेड़ की तलहटी में बैठी दिखाई देती थीं। ये भली बूढ़ी औरतें भीख मांगने की शौकीन थीं।

हालांकि, यह इलाका, जिसमें प्राचीनता की बजाय पुरानेपन का आभास था, उस समय भी परिवर्तन की ओर अग्रसर था। उस समय भी इसे देखने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति को जल्दी करनी पड़ती थी। हर दिन इसके समग्र स्वरूप का कुछ न कुछ अंश लुप्त होता जा रहा था। पिछले बीस वर्षों से ऑरलियन्स रेलवे स्टेशन पुराने उपनगर के बगल में स्थित है और उसे विचलित करता आ रहा है, जैसा कि आज भी है। राजधानी की सीमाओं पर जहाँ कहीं भी रेलवे स्टेशन स्थित होता है, वह उपनगर का अंत और शहर का जन्म होता है। ऐसा लगता है मानो, लोगों की आवाजाही के इन महान केंद्रों के चारों ओर, रोगाणुओं से भरी धरती कांपती और जम्हाई लेती है, ताकि मनुष्यों के प्राचीन घरों को निगल सके और इन शक्तिशाली मशीनों की खड़खड़ाहट से, सभ्यता के इन विशालकाय घोड़ों की साँस से, जो कोयला निगलते हैं और आग उगलते हैं, नए घरों को जन्म दे सके। पुराने घर ढह जाते हैं और नए खड़े हो जाते हैं।

जब से ऑरलियन्स रेलवे ने साल्पेट्रिएर क्षेत्र में प्रवेश किया है, सेंट-विक्टर खाई और जार्डिन डेस प्लांट्स से सटी प्राचीन, संकरी गलियाँ काँप उठती हैं, क्योंकि कोच फियाक्रे और ओमनीबस की उन धाराओं द्वारा दिन में

तीन या चार बार उन पर हिंसक रूप से आवागमन होता है, जो एक निश्चित समय में दाईं और बाईं ओर के घरों को पीछे धकेल देती हैं; क्योंकि कुछ बातें कहने में विचित्र लगती हैं, लेकिन वे बिल्कुल सटीक होती हैं; और जिस प्रकार यह कहना सत्य है कि बड़े शहरों में सूर्य घरों के दक्षिणी अग्रभागों को वनस्पतियों से भर देता है, उसी प्रकार यह निश्चित है कि वाहनों के निरंतर आवागमन से गलियाँ चौड़ी हो जाती हैं। एक नए जीवन के लक्षण स्पष्ट हैं। इस पुराने प्रांतीय क्षेत्र में, सबसे सुनसान कोनों में भी, फुटपाथ दिखाई देने लगता है, फुटपाथ रेंगने लगते हैं और लंबे होते जाते हैं, यहाँ तक कि जहाँ अभी तक कोई पैदल यात्री नहीं है। एक सुबह—जुलाई 1845 की एक यादगार सुबह—वहाँ बिटुमेन के काले बर्तनों से धुआँ निकलता देखा गया; उस दिन यह कहा जा सकता है कि सभ्यता रू डे ल'ऑर्सिन में आ गई थी, और पेरिस ने सेंट-मार्सेउ के उपनगर में प्रवेश कर लिया था।

II. उल्लू और वार्बलर के लिए घोंसला

जीन वालजेन इसी गोरब्यू हाउस के सामने आकर रुका। जंगली पक्षियों की तरह, उसने भी इस रेगिस्तानी जगह को अपना घोंसला बनाने के लिए चुना था।

उसने अपनी वेस्टकोट की जेब में हाथ डाला, एक तरह की पासकी निकाली, दरवाजा खोला, अंदर गया, उसे फिर से सावधानीपूर्वक बंद किया और कोसेट को गोद में लिए हुए सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया।

सीढ़ियों के ऊपर पहुँचकर उसने अपनी जेब से एक और चाबी निकाली और उससे एक और दरवाजा खोला। जिस कमरे में वह दाखिल हुआ और जिसे उसने तुरंत बंद कर दिया, वह एक मध्यम आकार का अटारीनुमा कमरा था, जिसमें फर्श पर एक गद्दा, एक मेज और कई कुर्सियाँ रखी थीं; एक कोने में एक चूल्हा था जिसमें आग जल रही थी और जिसके अंगारे दिखाई दे रहे थे। सड़क पर लगी एक लालटेन से इस छोटे से कमरे में हल्की रोशनी आ रही थी। कमरे के बिल्कुल आखिरी छोर पर एक ड्रेसिंग रूम था जिसमें एक तह करने वाला बिस्तर था; जीन वालजेन बच्ची को उस बिस्तर पर ले गया और उसे बिना जगाए लिटा दिया।

उसने माचिस जलाई और मोमबत्ती जलाई। ये सब पहले से ही मेज पर तैयार था, और पिछली शाम की तरह ही, उसने कोसेट के चेहरे को मोहक निगाहों से निहारना शुरू किया, जिसमें दया और कोमलता का भाव लगभग असामान्य सा लग रहा था। वह छोटी बच्ची, उस शांत आत्मविश्वास के साथ जो केवल अत्यधिक शक्ति और अत्यधिक कमजोरी में ही पाया जाता है, यह जाने बिना सो गई थी कि वह किसके साथ है, और यह जाने बिना सोती रही कि वह कहाँ है।

जीन वाल्जेन नीचे झुका और उस बच्चे के हाथ को चूमा।

नौ महीने पहले उसने उस मां के हाथ को चूमा था, जो उस समय सो गई थी।

उनके हृदय में भी वही दुखद, मर्मस्पर्शी और धार्मिक भावना भर गई थी।

वह कोसेट के बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठ गया।

दिन का उजाला था और बच्चा अभी भी सो रहा था। दिसंबर की धूप की एक हल्की किरण अटारी की खिड़की से अंदर आ रही थी और छत पर रोशनी और छाया की लंबी

लकीरों की तरह फैल रही थी। अचानक, सड़क से गुजर रही एक भारी माल ढोने वाली गाड़ी ने बिजली की कड़क की तरह उस नाजुक पलंग को हिला दिया और उसे ऊपर से नीचे तक थरथरा दिया।
“जी मैडम!” कोसेट चौंककर जागते हुए चिल्लाई, “मैं यहाँ हूँ! मैं यहाँ हूँ!” और वह बिस्तर से उछलकर उठी, उसकी आंखें अभी भी नींद के भारीपन से आधी बंद थीं, और उसने अपनी बाहें दीवार के कोने की ओर फैला दीं।
“अरे! हे भगवान, मेरी झाड़ू!” उसने कहा।
उसने अपनी आँखें चौड़ी करके खोलीं और जीन वालजेन का मुस्कुराता हुआ चेहरा देखा।
“अहा! तो यह सच है!” बच्चे ने कहा। “सुप्रभात, महोदय।”
बच्चे प्रसन्नता और आनंद को तुरंत और सहजता से स्वीकार करते हैं, क्योंकि वे स्वभाव से ही प्रसन्नता और आनंदित होते हैं।
कोसेट ने कैथरीन को अपने बिस्तर के पास देखा और उसे अपने पास बुला लिया। खेलते-खेलते उसने जीन वालजेन से सौ सवाल पूछे। वह कहाँ थी? क्या पेरिस बहुत बड़ा था? क्या मैडम थेनार्डियर बहुत दूर थीं? क्या उसे वापस जाना था? इत्यादि। अचानक ही वह बोली, "यहाँ कितना सुंदर है!"
वह एक भयानक गड्ढा था, लेकिन उसे वहां आजादी का एहसास हुआ।
"क्या मुझे झाड़ू लगाना ही होगा?" उसने अंततः पूछा।
“खेलें!” जीन वालजेन ने कहा।
दिन इस प्रकार बीत गया। कोसेट ने कुछ भी समझने की कोशिश किए बिना, उस गुड़िया और उस दयालु व्यक्ति के साथ बेहद खुशी महसूस की।

III. दो विपत्तियाँ मिलकर एक सौभाग्य का स्रोत बनती हैं

अगली सुबह, भोर होते ही, जीन वाल्जेन अभी भी कोसेट के बिस्तर के पास था; वह वहाँ बिना हिले-डुले बैठा रहा, उसके जागने का इंतजार करता रहा।

उसकी आत्मा में कुछ नया आ गया था।

जीन वालजेन ने कभी किसी से प्रेम नहीं किया था; पच्चीस वर्षों तक वह संसार में अकेला रहा था। वह कभी पिता, प्रेमी, पति, मित्र नहीं बना था। जेल में वह दुष्ट, उदास, पवित्र, अज्ञानी और शर्मीला था। उस पूर्व कैदी का हृदय पवित्रता से भरा हुआ था। उसकी बहन और उसके बच्चों की धुंधली सी याद ही उसके मन में रह गई थी, जो अंततः लगभग पूरी तरह से लुप्त हो गई थी; उसने उन्हें खोजने का हर संभव प्रयास किया, और उन्हें न पाकर वह उन्हें भूल गया था। मानव स्वभाव ऐसा ही होता है; उसकी जवानी की अन्य कोमल भावनाएँ, यदि कभी थीं भी, तो एक गहरे अंधकार में समा गई थीं।

जब उसने कोसेट को देखा, जब उसने उसे अपने कब्जे में ले लिया, उसे ले गया और उसे सौंप दिया, तो उसने महसूस किया कि उसका दिल उसके भीतर ही अंदर हिल रहा था।

उसके भीतर का सारा प्रेम और स्नेह जागृत हो उठा और उस बच्ची की ओर उमड़ पड़ा। वह उस पलंग के पास पहुँचा जहाँ वह सो रही थी और खुशी से काँप उठा। उसे एक माँ की सारी पीड़ा महसूस हुई, और वह नहीं जानता था कि इसका क्या अर्थ है; क्योंकि प्रेम से भर उठने वाला हृदय का वह महान और अनूठा भाव अत्यंत अस्पष्ट और अत्यंत मधुर होता है।

बेचारा बूढ़ा आदमी, जिसका दिल बिल्कुल नया है!

चूंकि वह पचपन वर्ष का था और कोसेट आठ वर्ष की थी, इसलिए उसके पूरे जीवन में जो कुछ भी प्रेम हो सकता था, वह एक प्रकार के अवर्णनीय प्रकाश में समाहित हो गया।

यह दूसरा श्वेत आभास था जिसका उसने सामना किया था। बिशप ने उसके क्षितिज पर सद्गुण का उदय किया था; कोसेट ने प्रेम का उदय किया।

शुरुआती दिन इसी चकाचौंध भरी अवस्था में बीते।

कोसेट, अपनी ओर से, अनजाने में ही, एक अलग ही इंसान बन गई थी, बेचारी! जब उसकी माँ उसे छोड़कर गई थी, तब वह इतनी छोटी थी कि उसे अपनी माँ की याद भी नहीं थी। सभी बच्चों की तरह, जो बेल की छोटी-छोटी कोंपलों की तरह हर चीज़ से चिपके रहते हैं, उसने भी प्यार करने की कोशिश की थी; लेकिन वह सफल नहीं हो पाई थी। सभी ने उसे ठुकरा दिया था—थेनार्डियर परिवार, उनके बच्चे, दूसरे बच्चे। उसने कुत्ते से प्यार किया था, और वह मर गया था, जिसके बाद किसी ने भी उससे कोई वास्ता नहीं रखा। यह कहना दुखद है, और हम पहले ही इसका संकेत दे चुके हैं, कि आठ साल की उम्र में उसका दिल ठंडा पड़ गया था। यह उसकी गलती नहीं थी; उसमें प्यार करने की क्षमता की कमी नहीं थी; अफसोस! कमी तो बस संभावना की ही थी। इस प्रकार, पहले ही दिन से, उसकी सारी चेतना और सोचने की शक्तियाँ इस दयालु व्यक्ति से प्यार करने लगीं। उसने वह महसूस किया जो उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था—विस्तार का अहसास।

अब वह व्यक्ति उसे बूढ़ा या गरीब नहीं लगता था; उसे जीन वाल्जेन सुंदर लगता था, ठीक वैसे ही जैसे उसे वह झोपड़ी सुंदर लगती थी।

ये भोर के, बचपन के, आनंद के प्रभाव हैं। धरती और जीवन की नवीनता यहाँ मायने रखती है। अटारी पर खुशी का रंगीन प्रतिबिंब जितना मनमोहक कुछ नहीं है। हम सभी के अतीत में एक सुखद अटारी रही है।

प्रकृति ने पचास वर्षों के अंतर से जीन वालजेन और कोसेट के बीच एक गहरी खाई खड़ी कर दी थी; नियति ने इस खाई को भर दिया। नियति ने अचानक अपनी अदम्य शक्ति से इन दो उखड़े हुए अस्तित्वों को, जो उम्र में भिन्न थे लेकिन दुख में समान थे, एक कर दिया। वास्तव में, एक ने दूसरे को पूरा किया। कोसेट की सहज प्रवृत्ति एक पिता की तलाश में थी, जैसे जीन वालजेन की सहज प्रवृत्ति एक बच्चे की तलाश में थी। मिलना एक-दूसरे को पाना था। उस रहस्यमय क्षण में जब उनके हाथ स्पर्श हुए, वे एक-दूसरे में समा गए। जब इन दोनों आत्माओं ने एक-दूसरे को महसूस किया, तो उन्होंने एक-दूसरे को एक-दूसरे के लिए आवश्यक समझा और एक-दूसरे को कसकर गले लगा लिया।

इन शब्दों को उनके सबसे व्यापक और पूर्ण अर्थ में लेते हुए, हम कह सकते हैं कि, मकबरे की दीवारों द्वारा सबसे अलग किए जाने के कारण, जीन वालजेन विधुर थे और कोसेट अनाथ थीं: इस स्थिति के कारण जीन वालजेन एक दिव्य तरीके से कोसेट के पिता बन गए।

और सच तो यह है कि चेल्स के घने जंगलों में अंधेरे में जीन वालजेन के हाथ का स्पर्श कोसेट पर पड़ा था, वह रहस्यमय प्रभाव कोई भ्रम नहीं, बल्कि वास्तविकता थी। उस व्यक्ति का उस बच्ची के भाग्य में प्रवेश करना ईश्वर का आगमन था।

इसके अलावा, जीन वाल्जेन ने अपना शरणस्थल अच्छी तरह से चुना था। वहाँ वह पूरी तरह से सुरक्षित प्रतीत होता था।

ड्रेसिंग रूम वाला वह कमरा, जिसमें वह कोसेट के साथ रहता था, उसकी खिड़की सड़क की ओर खुलती थी। घर में यही एक खिड़की होने के कारण, सामने या बगल से पड़ोसियों की निगाहों का कोई खतरा नहीं था।

50-52 नंबर की इमारत का भूतल, जो एक जर्जर इमारत जैसा था, बाज़ार में सामान बेचने वालों के लिए वैगन-हाउस के रूप में इस्तेमाल होता था और इसका पहली मंज़िल से कोई संपर्क नहीं था। यह फर्श से अलग था, जिसमें न तो सीढ़ियाँ थीं और न ही फव्वारे, और जो मानो इमारत का डायफ्राम (आभा मंडल) बना रहा था। जैसा कि हमने बताया, पहली मंज़िल में कई कमरे और कई अटारी थीं, जिनमें से केवल एक में वह बुज़ुर्ग महिला रहती थी जो जीन वालजेन के घर का कामकाज संभालती थी; बाकी सभी खाली थीं।

यह वही बूढ़ी औरत थी, जिसे "मुख्य किराएदार" के नाम से सजाया गया था, और वास्तव में उसे द्वारपाल का काम सौंपा गया था, जिसने क्रिसमस की पूर्व संध्या पर उसे कमरा किराए पर दिया था। उसने खुद को उसके सामने एक संपन्न सज्जन के रूप में प्रस्तुत किया था जो स्पेनिश ऋणों में दिवालिया हो गया था और अपनी छोटी बेटी के साथ वहां रहने आ रहा था। उसने उसे छह महीने का किराया अग्रिम दे दिया था और जैसा कि हम देख चुके हैं, उसने बूढ़ी औरत को कमरा और ड्रेसिंग रूम सजाने का काम सौंपा था। यह वही भली-भांति महिला थी जिसने चूल्हे में आग जलाई थी और उनके आगमन की शाम को सब कुछ तैयार किया था।

सप्ताह दर सप्ताह, ये दोनों प्राणी उस झोपड़ी में सुखमय जीवन व्यतीत करते रहे।

कोसेट सुबह से ही हंसती, चहचहाती और गाती रही। बच्चों का भी सुबह का अपना गीत होता है, जैसे पक्षियों का।

कभी-कभी जीन वालजेन उसका छोटा सा लाल हाथ, जो ठंड से हुए छालों से भरा हुआ था, पकड़कर चूम लेता था। बेचारी बच्ची, जिसे मार खाने की आदत थी, इस बात का मतलब नहीं समझती थी और घबराकर भाग जाती थी।

कभी-कभी वह गंभीर हो जाती और अपने छोटे काले गाउन को घूरने लगती। कोसेट अब फटे-पुराने कपड़ों में नहीं थी; वह शोक में थी। वह दुख से बाहर निकल चुकी थी और जीवन में प्रवेश कर रही थी।

जीन वाल्जेन ने उसे पढ़ना सिखाने का बीड़ा उठाया था। कभी-कभी, जब वह बच्ची से लिपि लिखवाता, तो उसे याद आता कि उसने जेल में बुराई करने के इरादे से ही पढ़ना सीखा था। और यही इरादा अंततः एक बच्ची को पढ़ना सिखाने में परिणत हुआ। फिर उस पूर्व कैदी ने स्वर्गदूतों जैसी भावपूर्ण मुस्कान बिखेरी।

उन्हें इसमें ऊपर से किसी पूर्व नियोजित योजना का आभास हुआ, किसी ऐसे व्यक्ति की इच्छा का आभास हुआ जो मनुष्य नहीं था, और वे चिंतन में लीन हो गए। अच्छे विचारों के भी अपने गहरे अंधकार होते हैं, जैसे बुरे विचारों के।

कोसेट को पढ़ना सिखाना और उसे खेलने देना, यही जीन वालजेन के जीवन का लगभग पूरा हिस्सा था। फिर वह उसकी माँ के बारे में बातें करता और उसे प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता।

वह उन्हें "पिताजी" कहकर पुकारती थी और उनके लिए कोई दूसरा नाम नहीं जानती थी।

वह घंटों उसे अपनी गुड़िया को कपड़े पहनाते और उतारते देखने और उसकी बकबक सुनने में बिताता था। अब से जीवन उसे रोचक लगने लगा; लोग उसे अच्छे और न्यायप्रिय लगने लगे; अब वह मन ही मन किसी की निंदा नहीं करता था; अब जब यह बच्ची उससे प्यार करती थी, तो उसे कोई कारण नहीं दिखता था कि वह बुढ़ापे तक क्यों न जिए। उसे अपने सामने एक पूरा भविष्य फैला हुआ दिखाई देता था, जो

कोसेट की रोशनी से जगमगा रहा था। हममें से अच्छे से अच्छे लोग भी स्वार्थी विचारों से मुक्त नहीं होते। कभी-कभी वह एक तरह की खुशी के साथ सोचता था कि काश वह बदसूरत होती।

यह केवल एक निजी राय है; लेकिन, अपने पूरे विचार को व्यक्त करने के लिए, जिस मोड़ पर जीन वालजेन कोसेट से प्रेम करने लगा था, उस समय यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि उसे अच्छे काम में लगे रहने के लिए इस प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं थी। उसने अभी-अभी पुरुषों की बुराई और समाज की पीड़ा को एक नए दृष्टिकोण से देखा था—अधूरे दृष्टिकोण, जो दुर्भाग्य से सत्य का केवल एक पक्ष ही प्रदर्शित करते थे, फैंटाइन में समाहित स्त्री का भाग्य और जावर्ट में साकार सार्वजनिक सत्ता। वह फिर से जेल लौट आया था, इस बार सही काम करने के लिए; उसने फिर से कड़वाहट का घूंट भरा था; घृणा और सुस्ती उस पर हावी हो रही थी; बिशप की स्मृति भी शायद कुछ समय के लिए धूमिल हो गई थी, हालांकि निश्चित रूप से बाद में उज्ज्वल और विजयी होकर फिर से प्रकट होगी; लेकिन, अंततः, वह पवित्र स्मृति धुंधली होती जा रही थी। कौन जानता है कि जीन वालजेन निराश होने और एक बार फिर गिरने की कगार पर तो नहीं था? उसने प्रेम किया और फिर से मजबूत हुआ। अफसोस! वह कोसेट की तरह ही असमंजस में चल रहा था। उसने उसकी रक्षा की, और उसने उसे शक्ति दी। उसकी बदौलत ही वह जीवन में आगे बढ़ सकी; उसकी बदौलत ही वह सद्गुणों के मार्ग पर चलता रहा। वह उस बच्ची का सहारा था, और वह उसकी आधारशिला। हे भाग्य के तराजू का अथाह और दिव्य रहस्य!

IV. मुख्य किरायेदार की टिप्पणियाँ

जीन वालजेन इतना समझदार था कि वह कभी दिन में बाहर नहीं निकलता था। हर शाम, गोधूलि बेला में, वह एक-दो घंटे टहलता था, कभी अकेला, अक्सर कोसेट के साथ, सड़क की सबसे सुनसान गलियों की तलाश में, और सूर्यास्त के समय चर्चों में प्रवेश करता था। उसे सेंट-मेडार्ड जाना पसंद था, जो सबसे नज़दीकी चर्च था। जब वह कोसेट को अपने साथ नहीं ले जाता था, तो वह बूढ़ी औरत के साथ रहती थी; लेकिन बच्ची को उस भले आदमी के साथ बाहर जाना सबसे ज़्यादा पसंद था। वह कैथरीन के साथ अपनी सारी प्रेम भरी मुलाकातों के बजाय उसके साथ एक घंटा बिताना ज़्यादा पसंद करती थी। चलते समय वह उसका हाथ थामे रहता था और उससे मीठी-मीठी बातें करता था।

पता चला कि कोसेट एक बहुत ही समलैंगिक छोटी बच्ची थी।

बुजुर्ग महिला ने घर के कामकाज और खाना पकाने का काम संभाला और बाजार चली गई।

वे सादगी से रहते थे, उनके पास हमेशा एक छोटी सी आग जलती रहती थी, लेकिन वे बहुत ही साधारण परिस्थितियों में रहने वाले लोगों की तरह थे। जीन वालजेन ने फर्नीचर में कोई बदलाव नहीं किया था, वह पहले दिन जैसा था वैसा ही था; उन्होंने केवल कोसेट के ड्रेसिंग रूम की ओर जाने वाले कांच के दरवाजे को एक ठोस दरवाजे से बदल दिया था।

वह अब भी अपना पीला कोट, काली पैंट और पुरानी टोपी पहने रहता था। गली में लोग उसे गरीब समझते थे। कभी-कभी दयालु महिलाएं मुड़कर उसे एक सू (सोआ) दे देती थीं। जीन वालजेन झुककर सूआ स्वीकार कर लेता था। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि उसे कोई गरीब भीख मांगता हुआ मिल जाता था; तब वह पीछे मुड़कर देखता था कि कोई उसे देख तो नहीं रहा, चुपके से उस बेचारे के पास जाता, उसके हाथ में एक सिक्का (अक्सर चांदी का सिक्का) रख देता और तेजी से चला जाता। इसके कुछ नुकसान भी थे। मोहल्ले में उसे "भीख मांगने वाला भिखारी" के नाम से जाना जाने लगा।

वह बूढ़ी "मुख्य किराएदार", जो देखने में चिड़चिड़ी सी लगती थी और पड़ोसियों की नज़र में ईर्ष्यालु लोगों की तरह ताक-झांक करने वाली थी, जीन वालजेन पर कड़ी नज़र रखती थी, और जीन को इसका ज़रा भी शक नहीं होता था। वह थोड़ी बहरी थी, जिसकी वजह से बहुत बातूनी थी। उसके अतीत के दो दांत—एक ऊपर, दूसरा नीचे—अभी भी बचे थे, जिन्हें वह लगातार आपस में टकराती रहती थी। उसने कोसेट से पूछताछ की थी, लेकिन कोसेट उसे कुछ भी नहीं बता पाई थी, क्योंकि कोसेट को खुद भी इतना ही पता था कि वह मोंटफर्मेइल से आई है। एक सुबह, इस जासूस ने जीन वालजेन को एक अजीब से हाव-भाव के साथ झोपड़ी के एक खाली कमरे में घुसते देखा। वह एक बूढ़ी बिल्ली की तरह दबे पांव उसके पीछे गई और उसके ठीक सामने वाले दरवाजे की दरार से उसे बिना देखे ही देखती रही। जीन वालजेन ने सुरक्षा के लिए, शायद इसी दरवाजे की तरफ पीठ कर रखी थी। बुढ़िया ने उसे अपनी जेब में हाथ डालते और उसमें से एक डिब्बा, कैंची और धागा निकालते देखा; फिर उसने अपने कोट के एक किनारे की अस्तर फाड़ना शुरू किया और उसमें से पीले रंग का एक कागज़ का टुकड़ा निकाला, जिसे उसने खोला। बुढ़िया ने भय से पहचान लिया कि यह एक हज़ार फ़्रैंक का बैंक नोट था। उसने अपने जीवनकाल में केवल दो या तीन बार ही ऐसा नोट देखा था। वह घबराकर भाग गई।

कुछ देर बाद, जीन वालजेन ने उससे बात की और उससे कहा कि वह उसके लिए यह हज़ार फ़्रैंक का नोट बदलवा दे, साथ ही यह भी बताया कि यह उसकी तिमाही आमदनी है, जो उसे कल ही मिली थी। "कहाँ?" बूढ़ी औरत ने सोचा। "वह शाम छह बजे तक बाहर नहीं जाता, और सरकारी बैंक उस समय तो खुला ही नहीं होता।" बूढ़ी औरत नोट बदलवाने गई और उसने अपने अंदाज़े बताए। उस हज़ार फ़्रैंक के नोट पर चर्चा और उसकी बढ़ती लोकप्रियता ने रू डेस विग्नेस सेंट-मार्सेल की गपशप करने वाली महिलाओं के बीच ज़बरदस्त अफरा-तफरी मचा दी।

कुछ दिनों बाद, संयोग से जीन वालजेन गलियारे में अपनी कमीज़ की आस्तीनों में लकड़ी काट रहा था। बुढ़िया कमरे में चीज़ें व्यवस्थित कर रही थी। वह अकेली थी। कोसेट लकड़ी को काटते हुए निहारने में मग्न थी। बुढ़िया की नज़र कील पर टंगे कोट पर पड़ी और उसने उसे गौर से देखा। उसकी अस्तर दोबारा सिली हुई थी। बुढ़िया ने उसे ध्यान से छुआ और उसे कोट के निचले और पीछे के

हिस्से में कागज़ की मोटी परतें दिखाई दीं। शायद हज़ार फ़्रैंक के और नोट होंगे!

उसने यह भी देखा कि जेबों में तरह-तरह की चीजें थीं। न केवल सुई, धागा और कैंची जो उसने देखी थीं, बल्कि एक बड़ा पर्स, एक बहुत बड़ा चाकू और—एक संदिग्ध बात—कई रंगों के विग भी थे। इस कोट की हर जेब को देखकर ऐसा लग रहा था मानो उसे किसी अप्रत्याशित दुर्घटना से बचाने के लिए बनाया गया हो।

इस प्रकार घर के निवासी शीत ऋतु के अंतिम दिनों में पहुँच गए।

V. पाँच फ़्रैंक का सिक्का ज़मीन पर गिरता है और हंगामा मच जाता है

सेंट-मेडार्ड चर्च के पास एक गरीब आदमी रहता था, जो एक खस्ताहाल सार्वजनिक कुएँ के किनारे बैठा रहता था। जीन वालजेन उस पर दिल खोलकर दान बरसाते थे। वे कभी भी उस आदमी को कुछ सू (एक तरह का सिक्का) दिए बिना नहीं गुजरते थे। कभी-कभी वे उससे बातें भी करते थे। जो लोग उस भिखारी से ईर्ष्या करते थे, वे कहते थे कि वह पुलिस में काम करता है। वह पचहत्तर साल का एक पूर्व पुलिस अधिकारी था, जो लगातार प्रार्थनाएँ गुनगुनाता रहता था।

एक शाम, जब जीन वालजेन वहाँ से गुज़र रहे थे और उनके साथ कोसेट नहीं थीं, तो उन्होंने उस भिखारी को हमेशा की तरह लालटेन के नीचे बैठे देखा, जो अभी-अभी जलाई गई थी। वह व्यक्ति अपनी आदत के अनुसार प्रार्थना में लीन प्रतीत हो रहा था और बहुत झुका हुआ था। जीन वालजेन उसके पास गए और हमेशा की तरह अपना दान उसके हाथ में रख दिया। भिखारी ने अचानक अपनी आँखें उठाईं, जीन वालजेन को घूरकर देखा, फिर तेज़ी से अपना सिर नीचे कर लिया। यह हरकत बिजली की चमक जैसी थी। जीन वालजेन कंपकंपा उठे। उन्हें लगा मानो उन्होंने गली की लालटेन की रोशनी में, उस बूढ़े भिखारी के शांत और मुस्कुराते चेहरे को नहीं, बल्कि किसी जाने-माने और चौंका देने वाले चेहरे को देखा हो। उन्हें ठीक वैसा ही अनुभव हुआ जैसा किसी को अचानक अंधेरे में किसी बाघ के सामने आ जाने पर होता है। वह भयभीत होकर पीछे हट गया, एकदम स्तब्ध, साँस लेने, बोलने, वहाँ खड़े रहने या भागने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहा था। वह उस भिखारी को घूर रहा था जिसने अपना सिर झुका लिया था, जो एक चिथड़े से लिपटा हुआ था, और ऐसा लग रहा था मानो उसे पता ही न हो कि वह वहाँ है। इस अजीब क्षण में, एक सहज प्रवृत्ति—शायद आत्मरक्षा की रहस्यमयी प्रवृत्ति—ने जीन वालजेन को एक शब्द भी बोलने से रोक दिया। भिखारी का शरीर, उसके कपड़े और उसका रूप हर दिन की तरह ही था। "अरे!" जीन वालजेन ने कहा, "मैं पागल हो गया हूँ! मैं सपना देख रहा हूँ! असंभव!" और वह बेहद परेशान होकर लौट गया।

उसे खुद से भी यह स्वीकार करने की हिम्मत नहीं हो रही थी कि उसने जो चेहरा देखा था वह जावर्ट का चेहरा था।

उस रात, इस मामले पर विचार करने के बाद, उसे इस बात का पछतावा हुआ कि उसने उस व्यक्ति से पूछताछ क्यों नहीं की, ताकि उसे दूसरी बार अपना सिर उठाने के लिए मजबूर किया जा सके।

अगले दिन, सूर्यास्त के समय, वह वापस गया। भिखारी अपनी जगह पर बैठा था। "शुभ दिन, मेरे सज्जन," जीन वालजेन ने दृढ़ता से कहा और उसे एक सू (सोआ) दिया। भिखारी ने अपना सिर उठाया और गिड़गिड़ाते हुए स्वर में उत्तर दिया, "धन्यवाद, मेरे सज्जन।" यह स्पष्ट रूप से पूर्व बीडल (पुलिस चौकीदार) था।

जीन वाल्जेन को पूरी तरह से तसल्ली मिली। वह हंसने लगा। "मैं कैसे सोच सकता था कि मैंने वहां जावर्ट को देखा था?" उसने सोचा। "क्या अब मेरी आंखों की रोशनी चली जाएगी?" और उसने इसके बारे में और नहीं सोचा।

कुछ दिनों बाद—शायद शाम के आठ बजे—वह अपने कमरे में था और कोसेट को ज़ोर से मंत्र पढ़ने के लिए कह रहा था, तभी उसने घर का दरवाज़ा खुलते और फिर बंद होते सुना। यह उसे अजीब लगा। वह बुढ़िया, जो उसके अलावा घर की इकलौती सदस्य थी, हमेशा सूर्यास्त के समय सो जाती थी, ताकि उसकी मोमबत्तियाँ बुझ न जाएँ। जीन वालजेन ने कोसेट को चुप रहने का इशारा किया। उसने किसी के सीढ़ियाँ चढ़ने की आवाज़ सुनी। शायद वह बुढ़िया हो, जो बीमार पड़ गई हो और दवा लेने गई हो। जीन वालजेन ने ध्यान से सुना।

कदम भारी था और किसी पुरुष के कदमों जैसा लग रहा था; लेकिन बुढ़िया ने मजबूत जूते पहने थे, और किसी पुरुष के कदमों की आवाज़ किसी बुढ़िया के कदमों की आवाज़ से इतनी मिलती-जुलती नहीं होती। फिर भी, जीन वालजेन ने अपनी मोमबत्ती बुझा दी।

उसने कोसेट को बिस्तर पर भेजते हुए धीमी आवाज में उससे कहा, "धीरे से बिस्तर पर लेट जाओ;" और जैसे ही उसने उसके माथे को चूमा, कदमों की आहट रुक गई।

जीन वाल्जेन चुपचाप, बिना हिले-डुले, दरवाजे की ओर पीठ करके, उसी कुर्सी पर बैठा रहा जिससे वह हिला तक नहीं था, और अंधेरे में अपनी सांस रोके रहा।

काफी देर बीतने के बाद, जब उसे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी, तो वह मुड़ा और अपने कमरे के दरवाजे की ओर देखते हुए उसने ताले के छेद से एक रोशनी देखी।
यह रोशनी दरवाजे और दीवार के अंधेरे में एक रहस्यमय तारे की तरह लग रही थी।
जाहिर है, वहाँ कोई था, जिसके हाथ में मोमबत्ती थी और वह सुन रहा था।

इस प्रकार कुछ मिनट बीत गए और रोशनी कम हो गई। लेकिन उसे कदमों की कोई आहट नहीं सुनाई दी, जिससे ऐसा प्रतीत होता था कि दरवाजे पर कान लगाकर सुन रहे व्यक्ति ने अपने जूते उतार दिए थे।

जीन वाल्जेन अपने पूरे वस्त्र पहने हुए ही अपने बिस्तर पर लेट गया और पूरी रात अपनी आँखें बंद नहीं कर सका।

भोर होते ही, थकान से ऊंघते हुए, गलियारे के अंत में स्थित किसी अटारी के दरवाजे की चरमराहट से उनकी नींद खुल गई। फिर उन्होंने वही मर्दाना कदमों की आहट सुनी जो पिछली शाम सीढ़ियों पर चढ़ी थी। कदम पास आ रहे थे। वे बिस्तर से उछल पड़े और चाबी के छेद से झाँका, जो काफी बड़ा था, इस उम्मीद में कि शायद उन्हें वह व्यक्ति दिख जाए जो रात में घर में घुस आया था और उनके दरवाजे पर कान लगाकर सुन रहा था। दरअसल, एक आदमी गुजरा, इस बार बिना रुके, जीन वालजेन के कमरे के सामने से। गलियारा इतना अंधेरा था कि उस व्यक्ति का चेहरा ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था; लेकिन जब वह आदमी सीढ़ियों तक पहुँचा, तो बाहर से आती रोशनी की एक किरण ने उसे एक परछाई की तरह उभार दिया, और जीन वालजेन को उसकी पीठ पूरी तरह से दिखाई दी। वह आदमी लंबा-चौड़ा था, एक लंबा फ्रॉक-कोट पहने हुए था, और बगल में एक लाठी थी। वह मजबूत गर्दन और कंधे जावर्ट के थे।

जीन वाल्जेन ने बुलेवार्ड की ओर खुलने वाली अपनी खिड़की से उसकी एक और झलक पाने की कोशिश की होगी, लेकिन इसके लिए उसे खिड़की खोलनी ही पड़ती: उसकी हिम्मत नहीं हुई।

यह स्पष्ट था कि वह व्यक्ति चाबी लेकर अंदर आया था, और बिल्कुल उसी की तरह। उसे वह चाबी किसने दी थी? इसका क्या अर्थ था?

जब वह बुढ़िया सुबह सात बजे काम करने आई, तो जीन वाल्जेन ने उस पर एक तीखी नज़र डाली, लेकिन उसने उससे कोई सवाल नहीं किया। वह भली महिला हमेशा की तरह ही दिखी।

झाड़ू लगाते हुए उसने उससे कहा:—
"शायद महाशय ने कल रात किसी के अंदर आने की आवाज सुनी हो?"
उस उम्र में और उस सड़क पर, शाम के आठ बजे का समय रात के सन्नाटे के समान होता था।
“वैसे, यह सच है,” उसने यथासंभव स्वाभाविक स्वर में उत्तर दिया। “वह कौन था?”
“घर में एक नया किराएदार आया है,” बूढ़ी औरत ने कहा।
“और उसका नाम क्या है?”
मुझे ठीक से नहीं पता; डुमोंट, या डाउमोंट, या इसी तरह का कोई नाम।
"और ये महाशय डुमोंट कौन हैं?"
बूढ़ी औरत ने अपनी छोटी-छोटी नेवला जैसी आँखों से उसे घूरते हुए उत्तर दिया:
"आप जैसे ही एक संपत्ति संपन्न सज्जन।"
शायद उसका कोई गुप्त इरादा नहीं था। जीन वाल्जेन को लगा कि उसे कोई गुप्त इरादा दिखाई दे रहा है।
जब बुढ़िया चली गई, तो उसने अलमारी में रखे सौ फ्रैंक का एक नोट मोड़कर अपनी जेब में रख लिया। हालाँकि उसने इस काम में चांदी के सिक्कों की खड़खड़ाहट से बचने के लिए हर संभव सावधानी बरती थी, फिर भी सौ फ्रैंक का एक सिक्का उसके हाथों से फिसलकर ज़मीन पर लुढ़क गया और ज़ोर से आवाज़ करने लगा।
अंधेरा होने पर वह नीचे उतरा और सड़क के दोनों किनारों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया। उसे कोई नहीं दिखा। सड़क बिल्कुल सुनसान लग रही थी। यह सच है कि कोई व्यक्ति पेड़ों के पीछे छिप सकता है।
वह फिर से ऊपर चला गया।
“आओ,” उसने कोसेट से कहा।
उसने उसका हाथ पकड़ा और वे दोनों बाहर चले गए।

पुस्तक V. एक काले शिकार के लिए, एक मूक झुंड

I. रणनीति के उतार-चढ़ाव

पाठक जिन पृष्ठों को पढ़ने वाले हैं और आगे जिन अन्य पृष्ठों का सामना करना पड़ेगा, उन्हें देखते हुए यहां एक टिप्पणी करना आवश्यक हो जाता है।

इस पुस्तक के लेखक, जिन्हें अपना ज़िक्र करने में खेद है, कई वर्षों से पेरिस से दूर रहे हैं। उनके जाने के बाद से पेरिस पूरी तरह बदल चुका है। एक नया शहर बस गया है, जो उनके लिए एक तरह से अनजान है। उन्हें यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि वे पेरिस से प्रेम करते हैं: पेरिस उनके मन का जन्मस्थान है। विध्वंस और पुनर्निर्माण के कारण, उनके बचपन का पेरिस, वह पेरिस जिसे वे श्रद्धापूर्वक अपनी स्मृति में संजोए रखते थे, अब बीते दिनों का पेरिस बनकर रह गया है। उन्हें उस पेरिस के बारे में इस तरह बात करने की अनुमति दी जानी चाहिए मानो वह आज भी अस्तित्व में हो। संभव है कि जब लेखक अपने पाठकों को किसी स्थान पर ले जाकर कहें, "इस गली में ऐसा-ऐसा घर है," तो उस इलाके में न तो वह गली और न ही वह घर अब मौजूद हो। पाठक चाहें तो तथ्यों की पुष्टि कर सकते हैं। जहाँ तक उनकी बात है, वे नए पेरिस से अपरिचित हैं, और वे अपने लिए अनमोल पुराने पेरिस के भ्रम में जी रहे हैं। उसे यह सपना देखकर आनंद मिलता है कि उसके अपने देश में रहते हुए उसने जो कुछ देखा था, उसका कुछ अंश अब भी उसके पीछे शेष है, और सब कुछ लुप्त नहीं हुआ है। जब तक आप अपने वतन आते-जाते रहते हैं, तब तक आपको लगता है कि वे सड़कें आपके लिए महत्वहीन हैं; वे खिड़कियाँ, वे छतें और वे दरवाजे आपके लिए कुछ भी नहीं हैं; वे दीवारें आपके लिए अजनबी हैं; वे पेड़ केवल पहली बार दिखाई देने वाले बेतरतीब पेड़ हैं; वे घर जिनमें आप प्रवेश नहीं करते, आपके लिए बेकार हैं; वे फुटपाथ जिन पर आप चलते हैं, वे केवल पत्थर हैं। बाद में, जब आप वहाँ नहीं होते, तब आपको एहसास होता है कि वे सड़कें आपको प्रिय हैं; आपको उन छतों, उन दरवाजों की याद आती है; और वे दीवारें आपके लिए आवश्यक हैं, वे पेड़ आपको बेहद प्यारे हैं; आप उन घरों में हर दिन प्रवेश करते हैं जिनमें आप कभी नहीं गए थे, और आपने अपने दिल का, अपने खून का, अपनी आत्मा का एक हिस्सा उन फुटपाथों में छोड़ दिया है। वे सभी स्थान जिन्हें अब आप नहीं देख पाते, जिन्हें शायद आप फिर कभी न देख पाएं, और जिनकी स्मृति को आपने संजो कर रखा है, एक उदास

आकर्षण धारण कर लेते हैं, किसी प्रेत की उदासी के साथ आपके मन में बार-बार आते हैं, पवित्र भूमि को आपके लिए दृश्यमान बनाते हैं, और एक तरह से वे फ्रांस का साक्षात रूप हैं, और आप उनसे प्रेम करते हैं; और आप उन्हें वैसे ही याद करते हैं जैसे वे हैं, जैसे वे थे, और आप इस पर अडिग रहते हैं, और आप किसी भी परिवर्तन को स्वीकार नहीं करेंगे: क्योंकि आप अपने वतन की छवि से वैसे ही जुड़े हुए हैं जैसे अपनी माता के चेहरे से।

तो क्या हमें वर्तमान में अतीत की बात करने की अनुमति मिल सकती है? इतना कहकर हम पाठक से अनुरोध करते हैं कि वे इस बात पर ध्यान दें, और हम आगे बढ़ते हैं।

जीन वाल्जेन ने तुरंत बुलेवार्ड छोड़ दिया और गलियों में घुस गया, जितना संभव हो सके उतने जटिल रास्ते अपनाते हुए, कभी-कभी यह सुनिश्चित करने के लिए अपने रास्ते पर वापस लौटता था कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है।

यह पैंतरा शिकार किए जा रहे हिरण की एक अनूठी विशेषता है। ऐसी मिट्टी पर जहां पदचिह्न छूट सकते हैं, यह पैंतरा अन्य लाभों के साथ-साथ शिकारियों और कुत्तों को गलत गंध की ओर भटकाकर उन्हें भ्रमित करने का भी काम करता है। शिकार की भाषा में इसे "झूठा पुनर्संरक्षण" कहा जाता है।

उस रात चाँद पूरा था। जीन वालजेन को इसका कोई अफसोस नहीं था। क्षितिज के बहुत करीब चाँद गलियों में प्रकाश और छाया का विशाल क्षेत्र बना रहा था। जीन वालजेन अंधेरे हिस्से में घरों के करीब से सरकते हुए भी उजाले वाले हिस्से पर नजर रख सकता था। शायद उसने इस बात पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया कि अंधेरा हिस्सा उसकी नजरों से ओझल था। फिर भी, रू पोलिवो के पास स्थित सुनसान गलियों में, उसे पूरा यकीन था कि कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है।

कोसेट बिना कोई सवाल पूछे आगे बढ़ती रही। जीवन के पहले छह वर्षों के कष्टों ने उसके स्वभाव में एक प्रकार की निष्क्रियता भर दी थी। इसके अलावा — और यह एक ऐसा बिंदु है जिस पर हमें बार-बार चर्चा करनी पड़ेगी—वह अनजाने में ही इस भले आदमी की विचित्रताओं और भाग्य के उतार-चढ़ावों की आदी हो चुकी थी। और फिर जब वह उसके साथ थी, तो उसने खुद को सुरक्षित महसूस किया।

जीन वालजेन को भी ठीक से पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है, ठीक वैसे ही जैसे कोसेट को नहीं। उसे ईश्वर पर भरोसा था, जैसे कोसेट को उस पर। ऐसा लग

रहा था मानो वह भी अपने से बड़ी किसी शक्ति का हाथ थामे हुए हो; उसे लगा जैसे कोई अदृश्य शक्ति उसका मार्गदर्शन कर रही हो। फिर भी, उसके पास कोई निश्चित विचार, कोई योजना, कोई योजना नहीं थी। उसे यह भी पक्का यकीन नहीं था कि वह जावर्ट ही है, और हो सकता है कि वह जावर्ट ही हो, भले ही जावर्ट को पता न हो कि वह जीन वालजेन है। क्या वह भेस बदले हुए था? क्या उसे मरा हुआ नहीं मान लिया गया था? फिर भी, कई दिनों से अजीबोगरीब घटनाएँ घट रही थीं। वह अब और ऐसी घटनाओं को नहीं झेलना चाहता था। उसने गोरब्यू के घर वापस न लौटने का पक्का इरादा कर लिया था। जैसे कोई जंगली जानवर अपने मांद से भगाया जाता है, वैसे ही वह एक ऐसी जगह की तलाश में था जहाँ वह तब तक छिप सके जब तक उसे रहने के लिए कोई स्थायी जगह न मिल जाए।

जीन वालजेन ने मौफेटार्ड इलाके की कई तरह की भूलभुलैयाओं का वर्णन किया, जो उस समय तक शांत हो चुका था, मानो मध्य युग का अनुशासन और कर्फ्यू का बंधन अब भी कायम हो। उन्होंने चतुराई से रू सेन्सियर, रू कोपेउ, रू डू बैटोइर-सेंट-विक्टर और रू डू पुइट्स ल'एर्मिटे को कई तरीकों से जोड़ा। इस इलाके में कई लॉजिंग हाउस थे, लेकिन उन्हें अपनी पसंद का कुछ नहीं मिला, इसलिए वे उनमें से किसी में भी नहीं गए। उन्हें पूरा यकीन था कि अगर कोई गलती से भी उनके पीछे पड़ जाता, तो वह उन्हें खो बैठता।

सेंट-एटियेन-डु-मोंट से ग्यारह बजते ही, वह पोंटोइस स्ट्रीट पर पुलिस कमिश्नर के कार्यालय के सामने से गुज़र रहा था, जो कि नंबर 14 पर स्थित था। कुछ ही क्षण बाद, ऊपर बताए गए अंतर्ज्ञान ने उसे पीछे मुड़ने के लिए प्रेरित किया। उसी क्षण उसने कमिश्नर की लालटेन की रोशनी में, जिससे उनकी पहचान उजागर हुई, तीन आदमियों को स्पष्ट रूप से देखा, जो उसका पीछा कर रहे थे। वे एक के बाद एक उस लालटेन की रोशनी में, गली के अंधेरे हिस्से से गुज़रे। उनमें से एक कमिश्नर के घर की ओर जाने वाली गली में घुस गया। उनके आगे चल रहा आदमी उसे बेहद संदिग्ध लगा।

“आओ, बच्ची,” उसने कोसेट से कहा; और वह जल्दी से रू पोंटोइस से निकल गया।

उसने एक चक्कर लगाया, पैसेज डेस पैट्रियार्क्स में मुड़ा, जो समय के कारण बंद था, रू डे ल'एपे-डे-बोइस और रू डे ल'अरबालेट के साथ-साथ चला और रू डेस पोस्टेस में जा घुसा।

उस समय सड़कों के चौराहे से एक चौक बनता था, जहाँ आज कॉलेज रोलिन स्थित है, और जहाँ से रू न्यूवे-सैंटे-जेनेवीव मुड़ती है।

यह सर्वविदित है कि रू न्यूवे-सैंटे-जेनेवीव एक पुरानी सड़क है, और रू डेस पोस्टेस से होकर दस साल में एक बार भी कोई डाक गाड़ी नहीं गुजरती। तेरहवीं शताब्दी में इस रू डेस पोस्टेस में कुम्हार रहते थे, और इसका असली नाम रू डेस पॉट्स था।

चाँद की तेज़ रोशनी इस खुले मैदान में फैल रही थी। जीन वालजेन एक दरवाजे में घात लगाकर बैठ गया, यह सोचकर कि अगर वे लोग अभी भी उसका पीछा कर रहे हैं, तो इस रोशन जगह से गुजरते हुए वह उन्हें अच्छी तरह से देख लेगा।

वास्तव में, तीन मिनट भी नहीं बीते थे कि वे लोग प्रकट हो गए। अब वे चार थे। सभी लंबे थे, लंबे भूरे कोट पहने हुए थे, गोल टोपी लगाए हुए थे और हाथों में बड़े-बड़े डंडे लिए हुए थे। उनका विशाल कद और उनकी बड़ी मुट्ठियाँ उन्हें उतना ही भयावह बना रही थीं जितना कि अंधेरे में उनकी डरावनी चाल। कोई उन्हें बुर्जुआ के वेश में चार प्रेत कह सकता था।

वे बीच में रुक गए और सलाह-मशविरा कर रहे लोगों की तरह एक समूह बना लिया। उनके चेहरे पर असमंजस का भाव था। जो उनका नेता लग रहा था, वह मुड़ा और जल्दी से अपने दाहिने हाथ से उस दिशा की ओर इशारा किया जिधर जीन वालजेन गया था; दूसरा व्यक्ति बड़ी हठता से विपरीत दिशा की ओर इशारा करता हुआ प्रतीत हुआ। जैसे ही पहले व्यक्ति ने मुड़कर देखा, चाँद की रोशनी उसके चेहरे पर पूरी तरह पड़ गई। जीन वालजेन ने जावर्ट को तुरंत पहचान लिया।

II. यह सौभाग्य की बात है कि पोंट डी 'ऑस्टरलिट्ज़ पर गाड़ियाँ चलती हैं।

जीन वालजेन के लिए अनिश्चितता का दौर समाप्त हो गया था: सौभाग्य से, सैनिकों के लिए अनिश्चितता अभी भी बनी हुई थी। उसने उनकी झिझक का फायदा उठाया। यह उनके लिए बीता हुआ समय था, लेकिन उसके लिए लाभ का समय। वह उस फाटक के नीचे से निकला जहाँ वह छिपा हुआ था, और रू डेस पोस्टेस से होते हुए जार्डिन डेस प्लांट्स की ओर चल पड़ा। कोसेट थकने लगी थी। उसने उसे अपनी बाहों में उठाया और उसे लेकर चलने लगा। वहाँ कोई राहगीर नहीं था, और चाँद होने के कारण सड़क की लालटेनें भी नहीं जल रही थीं।

उसने अपनी गति दोगुनी कर दी।

कुछ ही कदमों में वह गोब्लेट पॉटरी के कारखाने तक पहुँच गया, जिसके अग्रभाग पर चाँदनी की रोशनी में प्राचीन शिलालेख स्पष्ट रूप से पढ़ा जा सकता था :—

[illegible]

वह रू डे ला क्लेफ को पीछे छोड़ते हुए, फिर सेंट-विक्टर फव्वारे को पार करते हुए, निचली गलियों से होते हुए जार्डिन डेस प्लांट्स के किनारे से गुजरा और घाट पर पहुँच गया। वहाँ उसने पीछे मुड़कर देखा। घाट सुनसान था। गलियाँ सुनसान थीं। उसके पीछे कोई नहीं था। उसने एक गहरी साँस ली।

उन्होंने पोंट डी 'ऑस्टरलिट्ज़ पर कब्जा कर लिया।

उस दौर में भी वहां टोल वसूला जाता था।

वह टोल ऑफिस पर पहुंचा और एक सू (एक तरह का सिक्का) सौंप दिया।

पुल की रखवाली कर रहे बूढ़े सिपाही ने कहा, "दो सू लगेंगे। आप एक ऐसे बच्चे को साथ ले जा रहे हैं जो चल सकता है। दो सू का भुगतान कीजिए।"

उसने किराया चुकाया, इस बात से नाराज़ था कि उसके गुजरने पर लोगों ने ध्यान दिया। हर उड़ान एक अगोचर पलायन होनी चाहिए।

एक भारी बैलगाड़ी उसी समय सीन नदी पार कर रही थी, और उसकी ही तरह दाहिने किनारे की ओर जा रही थी। यह उसके लिए उपयोगी साबित हुआ। वह बैलगाड़ी की छाया में पुल पार कर सकता था।

पुल के बीचोंबीच पहुँचकर, कोसेट, जिसके पैर सुन्न हो गए थे, चलना चाहती थी। उसने उसे ज़मीन पर बिठाया और फिर से उसका हाथ पकड़ लिया।

पुल पार करते ही, उसे अपने दाहिनी ओर कुछ लकड़ी के गोदाम दिखाई दिए। उसने अपना रास्ता उस ओर मोड़ दिया। वहाँ पहुँचने के लिए, उसे एक काफी बड़े, खुले और अंधेरे स्थान में जोखिम उठाना पड़ा। उसने ज़रा भी संकोच नहीं किया। जो लोग उसका पीछा कर रहे थे, वे स्पष्ट रूप से उसकी गंध खो चुके थे, और जीन वालजेन को लगा कि अब वह खतरे से बाहर है। पीछा किया जा रहा था, हाँ; लेकिन कोई पीछा नहीं कर रहा था।

दो लकड़ी के गोदामों के बीच, जो दीवारों से घिरे हुए थे, रू डू चेमिन-वर्ट-सेंट-एंटोइन नाम की एक छोटी सी गली खुलती थी। यह गली अंधेरी और संकरी थी और मानो उसी के लिए बनी हो। इसमें प्रवेश करने से पहले उसने एक नज़र पीछे डाली।

जिस स्थान पर वह खड़ा था, वहां से उसे पोंट डी'ऑस्टरलिट्ज़ की पूरी लंबाई दिखाई दे रही थी।

चार परछाइयाँ पुल पर प्रवेश कर रही थीं।

ये परछाइयाँ जार्डिन डेस प्लांट्स की ओर पीठ करके खड़ी थीं और दाहिने किनारे की ओर जा रही थीं।

ये चार परछाइयाँ ही वे चार पुरुष थे।

जीन वाल्जेन उस जंगली जानवर की तरह कांप उठा जिसे दोबारा पकड़ लिया गया हो।

उसके मन में एक ही उम्मीद बची थी; वह यह थी कि शायद वे लोग पुल पर नहीं चढ़े थे और जब वह कोसेट का हाथ पकड़कर उस विशाल रोशन जगह को पार कर रहा था, तब उन्होंने उसे नहीं देखा था।

ऐसे में, अगर वह अपने सामने वाली छोटी सी गली में घुसकर बच सकता है, तो वह लकड़ी के गोदामों, दलदलों, बाज़ार के बगीचों, या उस निर्जन भूमि तक पहुँच सकता है जिस पर कोई निर्माण नहीं हुआ है।

उसे लगा कि वह उस शांत छोटी सी गली में ही अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। वह उसमें प्रवेश कर गया।

III. अर्थात्, 1727 में पेरिस की योजना

तीन सौ कदम आगे चलने पर वह एक ऐसे बिंदु पर पहुँचा जहाँ सड़क दो भागों में बँट जाती थी। यह दो सड़कों में विभाजित हो जाती थी, जो एक तिरछी रेखा में चलती थीं, एक दाईं ओर और दूसरी बाईं ओर।

जीन वालजेन के सामने Y की दो शाखाओं जैसी आकृतियाँ थीं। उन्हें कौन सी चुननी चाहिए? उन्होंने बिना किसी झिझक के दाहिनी ओर वाली शाखा को चुना।

क्यों?

क्योंकि बाईं ओर वाली सड़क उपनगर की ओर, यानी आबादी वाले क्षेत्रों की ओर जाती थी, और दाईं ओर वाली शाखा खुले मैदान की ओर, यानी निर्जन क्षेत्रों की ओर जाती थी।

हालांकि, अब वे पहले की तरह तेज़ नहीं चल रहे थे। कोसेट की धीमी चाल के कारण जीन वालजेन की चाल धीमी हो गई थी।

उसने उसे उठाया और फिर से गोद में लेकर चलने लगा। कोसेट ने अपना सिर उस भले आदमी के कंधे पर रख दिया और एक शब्द भी नहीं बोली।

वह बार-बार पीछे मुड़कर देखता था। वह हमेशा गली के अंधेरे हिस्से में चलने का ध्यान रखता था। गली उसके पीछे सीधी थी। पहली दो-तीन बार जब उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसे कुछ नहीं दिखा; सन्नाटा गहरा था, और वह कुछ हद तक आश्वस्त होकर आगे बढ़ता रहा। अचानक, पीछे मुड़कर देखने पर, उसे लगा कि गली के उस हिस्से में, जहाँ से वह अभी-अभी गुजरा था, दूर अंधेरे में कुछ हिल रहा है।

वह चलने के बजाय जल्दबाजी में आगे बढ़ा, इस उम्मीद में कि उसे कोई गली मिल जाए, जिससे वह भाग सके और इस तरह एक बार फिर अपने संशय को मिटा सके।

वह एक दीवार के पास पहुंचा।

हालांकि, इस दीवार ने आगे बढ़ने में पूरी तरह से बाधा नहीं डाली; यह एक ऐसी दीवार थी जो एक अनुप्रस्थ सड़क की सीमा पर स्थित थी, जिसमें वह सड़क समाप्त होती थी जिसे उसने लिया था।

यहां भी उसे एक निर्णय लेना पड़ा; उसे दाईं ओर जाना चाहिए या बाईं ओर।

उसने दाईं ओर देखा। खंडित गली इमारतों के बीच से होकर गुजरती थी, जो या तो शेड थीं या खलिहान, और फिर एक बंद गली में जाकर समाप्त हो जाती थी। उस बंद गली का अंतिम छोर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था—एक ऊंची सफेद दीवार।

उसने बाईं ओर देखा। उस तरफ गली खुली थी, और लगभग दो सौ कदम आगे जाकर वह एक ऐसी सड़क में जाकर मिलती थी जिसका वह हिस्सा समृद्ध था। उस तरफ सुरक्षा थी।

जिस क्षण जीन वाल्जेन गली के अंत में दिखाई देने वाली सड़क तक पहुंचने के प्रयास में बाईं ओर मुड़ने के बारे में सोच रहा था, उसी समय उसने गली और सड़क के कोने पर एक प्रकार की गतिहीन, काली मूर्ति देखी, जिस ओर वह अपने कदम बढ़ाने ही वाला था।

वह कोई व्यक्ति था, एक पुरुष, जिसे जाहिर तौर पर अभी-अभी वहां तैनात किया गया था, और जो मार्ग को रोककर इंतजार कर रहा था।

जीन वाल्जेन पीछे हट गया।

पेरिस का वह इलाका, जहाँ जीन वालजेन खुद को पाया था, फाउबर्ग सेंट-एंटोइन और ला रैपी के बीच स्थित है। हाल के सुधारों ने इस इलाके को पूरी तरह से बदल दिया है—कुछ लोगों के अनुसार यह कुरूप हो गया है, जबकि अन्य के अनुसार कायापलट। बाज़ार, लकड़ी के गोदाम और पुरानी इमारतें मिटा दी गई हैं। आज वहाँ बिल्कुल नई, चौड़ी सड़कें, अखाड़े, सर्कस, घुड़दौड़ के मैदान, रेलवे स्टेशन और माज़स नाम की एक जेल है; जैसा कि पाठक देख सकते हैं, यह प्रगति का ही दूसरा रूप है।

पचास साल पहले, उस आम बोलचाल की भाषा में, जो परंपराओं से मिलकर बनी है और जिसमें इंस्टीट्यूट को लेस क्वात्रे-नेशन्स और ओपेरा-कॉमिक को फेयडेउ कहा जाता है, जीन वालजेन जिस जगह पर पहुँचे थे, उसे ले पेटिट-पिकपस कहा जाता था। पोर्ट सेंट-जैक्स, पोर्ट पेरिस, बैरियर डेस सर्जेंट्स, पोर्चेरॉन्स, ला गैलियोट, लेस सेलेस्टिन्स, लेस कैपुसिन्स, ले मेल, ला बोर्बे, ल'आर्ब्रे डे क्राकोवी, ला पेटिट-पोलोन—ये पुराने पेरिस के वो नाम हैं जो नए पेरिस के बीच आज भी मौजूद हैं। जनता की स्मृति अतीत के इन अवशेषों पर टिकी हुई है।

ले पेटिट-पिकपस, जिसका अस्तित्व लगभग न के बराबर ही था और जो कभी एक चौथाई से अधिक बड़ा नहीं था, किसी स्पेनिश कस्बे की तरह दिखता था। सड़कें पक्की नहीं थीं; गलियाँ भी घनी आबादी वाली नहीं थीं। जिन दो-तीन गलियों की हम अभी चर्चा करेंगे, उन्हें छोड़कर वहाँ चारों ओर सन्नाटा पसरा था। न कोई दुकान, न कोई वाहन, खिड़कियों में इक्का-दुक्का जलती मोमबत्तियाँ; रात दस बजे के बाद सभी बत्तियाँ बुझ जाती थीं। बगीचे, मठ, लकड़ी के गोदाम, दलदल; कहीं- कहीं छोटे-छोटे मकान और घरों जितनी ऊँची विशाल दीवारें।

पिछली शताब्दी में यह इलाका कुछ ऐसा ही था। क्रांति ने इसे पूरी तरह से नकार दिया। गणतंत्र सरकार ने इसे ध्वस्त कर दिया और बीच से काटकर अलग कर दिया। यहाँ कूड़े के ढेर लगा दिए गए। तीस साल पहले, नए भवनों के निर्माण की प्रक्रिया में यह इलाका धीरे-धीरे लुप्त हो रहा था। आज, यह पूरी तरह से मिट चुका है। पेटिट-पिकपस, जिसका कोई भी मौजूदा नक्शा अब नहीं बचा है, 1727 के नक्शे में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है, जिसे पेरिस में डेनिस थिएरी द्वारा सेंट-जैक्स स्ट्रीट पर, डू प्लात्रे स्ट्रीट के सामने, और ल्योंस में जीन गिरिन द्वारा मर्सिएर स्ट्रीट पर, प्रूडेंस चिह्न के पास प्रकाशित किया गया था। जैसा कि हमने अभी बताया, पेटिट-पिकपस में सड़कों का एक Y आकार का जाल था, जो डू चेमिन-वर्ट-सेंट-एंटोइन स्ट्रीट से बनता था, जो दो शाखाओं में बँट जाता था, बाईं ओर की शाखा का नाम लिटिल पिकपस स्ट्रीट और दाईं ओर की शाखा का नाम पोलोनसेउ स्ट्रीट था। वाई के दोनों सिरे शीर्ष पर एक छड़ की तरह जुड़े हुए थे; इस छड़ को रुए ड्रोइट-मुर कहा जाता था। रुए पोलोनसेउ यहीं समाप्त होती थी; रुए पेटिट-पिकपस आगे बढ़ती थी और लेनॉयर बाजार की ओर ऊपर की ओर जाती थी। सीन नदी से आने वाला व्यक्ति रुए पोलोनसेउ के अंतिम छोर पर पहुँचता था, और उसके दाहिनी ओर रुए ड्रोइट-मुर होती थी, जो अचानक समकोण पर मुड़ जाती थी, उसके सामने उस सड़क की दीवार होती थी, और उसके दाहिनी ओर रुए ड्रोइट-मुर का एक छोटा विस्तार होता था, जिसका कोई निकास नहीं होता था और जिसे कल-डे-सैक जेनरोट कहा जाता था।

जीन वाल्जेन यहीं पर खड़ा था।

जैसा कि हमने अभी बताया, रू ड्रोइट-मुर और रू पेटिट-पिकपस के चौराहे पर पहरा देते हुए उस काली आकृति को देखते ही वह पीछे हट गया। इसमें कोई संदेह नहीं था। वह प्रेत उसका इंतजार कर रहा था।

वह सब करने की क्या आवश्यकता थी?

पीछे हटने का समय बीत चुका था। दूर अंधेरे में, एक पल पहले उसने जो हलचल देखी थी, वह निस्संदेह जावर्ट और उसका दस्ता था। जावर्ट शायद उस गली के आरंभ में पहुँच चुका था जिसके अंत में जीन वालजेन खड़ा था। जावर्ट, हर तरह से, इस छोटी सी भूलभुलैया से परिचित था और उसने एहतियात के तौर पर अपने एक आदमी को निकास द्वार की रक्षा के लिए भेजा था। ये अनुमान, जो प्रमाणों से इतने मिलते-जुलते थे, अचानक जीन वालजेन के शोकग्रस्त मस्तिष्क में धूल के एक गुच्छे की तरह घूमने लगे। उसने जेनरोट गली का निरीक्षण किया; वहाँ उसका रास्ता बंद हो गया। उसने पेटिट-पिकपस गली का निरीक्षण किया; वहाँ एक संतरी खड़ा था। उसने चाँद की रोशनी से जगमगाते सफेद फुटपाथ पर उस काले आकृति को स्पष्ट रूप से उभरते देखा; आगे बढ़ना उस आदमी के हाथों में गिरना था; पीछे हटना जावर्ट की बाहों में खुद को झोंक देना था। जीन वालजेन ने खुद को एक ऐसे जाल में फंसा हुआ महसूस किया जो धीरे-धीरे सिकुड़ रहा था; वह हताशा से आकाश की ओर देखने लगा।

IV. उड़ान के प्रयास

आगे की बात समझने के लिए, ड्रोइट-मुर गली का सटीक विवरण होना आवश्यक है, और विशेष रूप से, पोलोनसेउ स्ट्रीट से इस गली में प्रवेश करते समय बाईं ओर बनने वाले कोण का। ड्रोइट-मुर गली लगभग पूरी तरह से दाईं ओर, पेटिट-पिकपस स्ट्रीट तक, साधारण दिखने वाले मकानों से घिरी हुई थी; बाईं ओर एक अकेली इमारत थी जिसकी रूपरेखा कठोर थी, जो कई हिस्सों से बनी थी और पेटिट-पिकपस स्ट्रीट की ओर बढ़ते हुए धीरे-धीरे एक या दो मंजिल ऊंची होती जाती थी; इस प्रकार, पेटिट-पिकपस स्ट्रीट की ओर बहुत ऊंची यह इमारत पोलोनसेउ स्ट्रीट से सटी हुई तरफ अपेक्षाकृत नीची थी। वहां, जिस कोण की हमने बात की है, वहां यह इतनी नीचे उतर जाती थी कि यह केवल एक दीवार बनकर रह जाती थी। यह दीवार सीधे सड़क से नहीं सटी हुई थी; इसने एक गहरी एकांत जगह का निर्माण किया, जो अपने दो कोनों से दो संभावित पर्यवेक्षकों से छिपी हुई थी, जिनमें से एक रू पोलोनसेउ में और दूसरा रू ड्रोइट-मुर में मौजूद हो सकता था।

इस आले के कोनों से शुरू होकर, दीवार रू पोलोनसेउ के साथ-साथ 49 नंबर वाले घर तक और रू ड्रोइट-मुर के साथ-साथ, जहाँ यह हिस्सा काफी छोटा था, उस अंधकारमय इमारत तक फैली हुई थी जिसका हमने पहले उल्लेख किया है और जिसके गैबल को यह काटती हुई सड़क में एक और पीछे हटता हुआ कोना बनाती थी। यह गैबल देखने में गंभीर था; केवल एक खिड़की दिखाई दे रही थी, या अधिक सटीक रूप से कहें तो, जस्ता की चादर से ढके दो शटर जो हमेशा बंद रहते थे।

जिन स्थानों का हम यहां वर्णन कर रहे हैं, उनकी स्थिति अत्यंत सटीक है, और निश्चित रूप से इस क्षेत्र के पुराने निवासियों के मन में एक बहुत ही सटीक स्मृति को जागृत करेगी।

वह ताक पूरी तरह से एक ऐसी चीज़ से भरा हुआ था जो एक विशाल और जर्जर दरवाजे जैसी दिखती थी; यह लंबवत तख्तों का एक विशाल, बेढंगा समूह था, जिसमें ऊपर वाले तख्ते नीचे वालों से चौड़े थे, और लोहे की लंबी आड़ी पट्टियों से जुड़े हुए थे। एक तरफ सामान्य आकार का एक गाड़ी का गेट था, जिसे स्पष्ट रूप से पचास साल से अधिक पहले नहीं बनाया गया था।

आले के ऊपर एक लिंडन का पेड़ अपनी चोटी दिखा रहा था, और रू पोलोनसेउ के किनारे की दीवार आइवी से ढकी हुई थी।

जीन वाल्जेन जिस गंभीर खतरे में फंसा हुआ था, उसमें इस सुनसान इमारत की एकांत और निर्जनता ने उसे आकर्षित किया। उसने सरसरी नजर से इमारत को देखा; उसने मन ही मन सोचा कि अगर वह किसी तरह इसके अंदर घुस जाए, तो शायद खुद को बचा ले। पहले उसके मन में एक विचार आया, फिर एक उम्मीद जगी।

इस इमारत के सामने के मध्य भाग में, रू ड्रोइट-मुर की ओर, अलग-अलग मंजिलों की सभी खिड़कियों पर सीसे के प्राचीन कुंडों के पाइप लगे हुए थे। एक केंद्रीय पाइप से इन सभी छोटे-छोटे कुंडों तक जाने वाली पाइपों की विभिन्न शाखाएँ सामने की ओर एक पेड़ की आकृति बना रही थीं। सौ कोणों वाली पाइपों की ये शाखाएँ पुराने, पत्तों रहित बेलों के तनों की नकल करती थीं जो पुराने फार्महाउसों के सामने लिपटी रहती हैं।

सीसे और लोहे की शाखाओं वाला यह अजीब सा बेलनुमा ढांचा ही सबसे पहले जीन वालजेन की नज़र में आया। उसने कोसेट को एक पत्थर के खंभे से पीठ टिकाकर बिठाया और चुप रहने का हुक्म देते हुए उस जगह की ओर भागा जहाँ पाइप ज़मीन से छू रहा था। शायद पाइप के सहारे ऊपर चढ़कर घर में घुसने का कोई रास्ता हो। लेकिन पाइप जर्जर और बेकार हो चुका था, और मुश्किल से ही अपनी जगह पर टिका हुआ था। इसके अलावा, इस शांत घर की सभी खिड़कियाँ, यहाँ तक कि छत की अटारी की खिड़कियाँ भी, भारी लोहे की सलाखों से बंद थीं। और फिर, चाँद की पूरी रोशनी उस इमारत पर पड़ी, और गली के कोने पर खड़ा आदमी जीन वालजेन को चढ़ते हुए देख सकता था। और आखिर कोसेट का क्या किया जाए? उसे तीन मंज़िला घर की छत तक कैसे पहुँचाया जाए?

उसने नाली के रास्ते चढ़ने का विचार त्याग दिया और दीवार के सहारे रेंगते हुए वापस रू पोलोन्सेउ में पहुँच गया।

जब वह दीवार के उस ढलान पर पहुँचा जहाँ उसने कोसेट को छोड़ा था, तो उसने देखा कि वहाँ उसे कोई नहीं देख सकता था। जैसा कि हमने अभी बताया, वह हर तरफ से आ रही निगाहों से छिपा हुआ था; इसके अलावा, वह छाया में था। अंत में, वहाँ दो दरवाजे थे; शायद उन्हें जबरदस्ती खोला जा सकता था। जिस दीवार के ऊपर उसने लिंडन का पेड़ और आइवी देखी, वह स्पष्ट रूप से एक बगीचे से सटी

हुई थी जहाँ वह कम से कम खुद को छिपा सकता था, हालाँकि पेड़ों पर अभी तक पत्ते नहीं थे, और रात का शेष समय बिता सकता था।

समय बीत रहा था; उसे जल्दी कार्रवाई करनी होगी।

उसने गाड़ी के दरवाजे को टटोलकर देखा और तुरंत समझ गया कि यह बाहर और अंदर दोनों तरफ से अव्यवहारिक था।

वह दूसरे दरवाजे की ओर अधिक आशा के साथ बढ़ा; वह बेहद जर्जर था; उसकी विशालता ही उसे कमज़ोर बना रही थी; तख्ते सड़े हुए थे; लोहे की पट्टियाँ— केवल तीन ही थीं—जंग लगी हुई थीं। ऐसा लग रहा था मानो इस दीमक लगे अवरोध को भेदना संभव हो।

जांच करने पर उसने पाया कि वह दरवाजा नहीं था; उसमें न तो कब्ज़े थे, न चौखटें, न ताला, और न ही बीच में कोई दरार; लोहे की पट्टियाँ बिना रुके एक तरफ से दूसरी तरफ तक फैली हुई थीं। तख्तों की दरारों से उसे पत्थर के कुछ कच्चे टुकड़े और शिलाखंड दिखाई दिए, जिन्हें शायद राहगीरों ने दस साल पहले भी देखा होगा। वह व्याकुल होकर यह स्वीकार करने पर मजबूर हो गया कि यह दिखने में दरवाजा मात्र उस इमारत की लकड़ी की सजावट थी जिसके सामने इसे लगाया गया था। एक तख्ता तोड़ना आसान था; लेकिन फिर, सामने एक दीवार थी।

V. जो गैस लालटेन से असंभव होगा

उसी क्षण कुछ दूरी से एक भारी और सधी हुई आवाज़ सुनाई देने लगी। जीन वालजेन ने गली के कोने से झाँककर देखा। सात-आठ सैनिक एक पलटन में तैनात होकर रू पोलोनसेउ में उतरे थे। उसने उनकी संगीनों की चमक देखी। वे उसकी ओर बढ़ रहे थे; ये सैनिक, जिनके मुखिया के रूप में उसने जावर्ट की लंबी आकृति को पहचाना, धीरे-धीरे और सावधानी से आगे बढ़ रहे थे। वे बार-बार रुक रहे थे; यह स्पष्ट था कि वे दीवारों के हर कोने और दरवाजों और गलियों के हर छेद की तलाशी ले रहे थे।

यह कोई गश्ती दल ही था जिससे जावर्ट का सामना हुआ था—इस अनुमान में कोई गलती नहीं हो सकती—और जिसकी सहायता उसने मांगी थी।

जैवरट के दो शिष्य उनकी कतारों में आगे बढ़ रहे थे।

जिस गति से वे आगे बढ़ रहे थे और जहाँ-जहाँ वे रुक रहे थे, उसे देखते हुए, जीन वालजेन के स्थान तक पहुँचने में उन्हें लगभग पंद्रह मिनट लग जाते। यह एक भयानक क्षण था। जीन वालजेन उस भयानक खाई से बस कुछ ही मिनटों की दूरी पर थे जो तीसरी बार उनके सामने खड़ी थी। और अब 'जहाजें' का मतलब केवल जहाज ही नहीं, बल्कि कोसेट भी थी जो उनसे हमेशा के लिए बिछड़ गई थी; यानी एक ऐसा जीवन जो किसी मकबरे के भीतरी भाग जैसा था।

केवल एक ही बात संभव थी।

जीन वाल्जेन की एक विलक्षणता थी कि वह मानो दो भिखारी की थैलियाँ अपने साथ रखता था: एक में वह अपने नेक विचार रखता था; दूसरी में एक कैदी की असाधारण प्रतिभाएँ। वह परिस्थितियों के अनुसार कभी एक थैली तो कभी दूसरी थैली में से कुछ न कुछ निकाल लेता था।

टूलॉन की जेल से कई बार भाग निकलने के कारण, उनके पास अन्य संसाधनों के अलावा, जैसा कि याद होगा, बिना सीढ़ी या लोहे के सहारे के, केवल अपनी मांसपेशियों की ताकत से, गर्दन के पिछले हिस्से, कंधों, कूल्हों और घुटनों के बल झुककर, दीवार के समकोण पर बने पत्थरों के दुर्लभ उभारों का सहारा

xxxxx, xxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxxxx xxx xx xx xxxxxxx xx; xx xxx xxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxxxxxxx xx xxxxxx xx xx xxxxx xx xxxxx xxxxxxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxx xxxxx xx, xxxxxx xxx xxx xxxxx xxx xx xxx xxx xxxxxxxx xxx xxxxxx xxx

xxx xxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xx xxxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxxx xxx xxxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxx xx; xx xxxxx xxxxxx xxx xxxxx xxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxx xxxxx xx xxx xx xxx xx, xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxxxxxxxx xxxxxx xx xxx xx xxx xxx xx, xxxxx xxxxxxxxx xxxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xx xxxxxxxxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxxx xxx xxxxx xxxxxxxx xxx

xx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxx xxx xx; xx xxxxx xx xxxxx xx xxx xxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxxx xx, xxxxx xxxxxxx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xxx

xxxxxx xx xxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxxx xxx xxx xxx

xxxxxx xx xxxxx xxxxxxx xx, xxxxxxxx xxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxx xxx xxx xxxxx xxx xxx xxxxx xxxxx xxxxx xxxxxx? xxx xxxxxxx xx xx xxxxx xxx xxx xxxxx xxxxxx xxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxx xxx xxxxxxxx xxxxxxxxx xx xxxxxxxxxxxx xxxxx xxxxx xx xxx xx xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxxxxx xxxxx xxx xxx xx xx xxx xxxxx xxxxxxxxxxxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxxx

xx xxxxxx xx xxxxxxxxx xxxxx; xxx xxxxxxx xx xxx xxxxxx xxxxx xxx xxx xxx xx, xx xxxxxxxxx xxx, xxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxx? xxxxxxxx xxx xx, xxx xxx xxxxxxx xx xxx xxxxxx xxxxx, xx xx xx xxx xx xxxxxx xx xxx xxx xx xxxxxx

xxx xxx xxxxxxxxxxxxxx xxx xxxxxx xx xxx xxxxx xx xx xxx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xx, xxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxx

xxx xxxxxxxx xx xxxxxxx xxx xxx xxxxxxx xxxxx xxxxxx xxx xx xxxxxxxx xxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxx

xx xxx xxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxxxxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxx xx xxx xxxxxxxxx xxxxx xxxxx xxx; xxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxx-xxxxx xxxxx xxxxx xx, xx xxxxx xx xx xxx xx xxxxxx xxx

तक जाती थी और खंभे के खांचे में बंधी होती थी। जिस पुली पर यह रस्सी चलती थी, वह लालटेन के नीचे एक छोटे लोहे के डिब्बे में लगी होती थी, जिसकी चाबी लालटेन जलाने वाले के पास होती थी, और रस्सी को एक धातु के आवरण में सुरक्षित रखा जाता था।

जीन वाल्जेन ने एक अदम्य संघर्ष की ऊर्जा के साथ एक ही छलांग में सड़क पार की, संकरी गली में प्रवेश किया, अपनी चाकू की नोक से छोटी सी पेटी का ताला तोड़ा और पल भर में वह फिर से कोसेट के पास पहुँच गया। उसके पास एक रस्सी थी। नियति से लड़ते समय ये निराशावादी आविष्कारक तेजी से काम करते हैं।

हम पहले ही बता चुके हैं कि उस रात लालटेनें नहीं जलाई गई थीं। इसलिए, जेनरोट गली में लगी लालटेन, बाकी लालटेनों की तरह, स्वाभाविक रूप से बुझ गई थी; और कोई भी उसके नीचे से बिना ध्यान दिए गुजर सकता था कि वह अब अपनी जगह पर नहीं है।

फिर भी, समय, स्थान, अंधेरा, जीन वालजेन का तल्लीन रहना, उसके अनोखे हाव-भाव, उसका आना-जाना, इन सबने कोसेट को बेचैन कर दिया था। उसके अलावा कोई और बच्चा होता तो बहुत पहले ही ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगता। उसने जीन वालजेन के कोट का किनारा पकड़कर उसे खींचने में ही संतोष किया। उन्हें गश्ती दल के आने की आवाज़ और भी स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगी थी।

“पिताजी,” उसने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, “मुझे डर लग रहा है। उधर से कौन आ रहा है?”

“चुप रहो!” उस दुखी व्यक्ति ने उत्तर दिया; “यह मैडम थेनार्डियर हैं।”

कोसेट सिहर उठी। उसने आगे कहा:—

“कुछ मत बोलो। मेरे काम में दखल मत दो। अगर तुम चिल्लाईं, रोईं, तो समझ लो कि थेनार्डियर तुम्हारा इंतज़ार कर रही है। वह तुम्हें वापस ले जाने आ रही है।”

फिर, बिना किसी हड़बड़ी के, लेकिन बिना कोई व्यर्थ हरकत किए, दृढ़ता और सटीकता के साथ, उस क्षण में और भी उल्लेखनीय जब गश्ती दल और जावर्ट किसी भी क्षण उस पर आ सकते थे, उसने अपनी टाई खोली, उसे कोसेट के शरीर के चारों ओर बगलों के नीचे से इस तरह लपेटा कि बच्ची को चोट न लगे, इस टाई को रस्सी के

एक सिरे से उस गाँठ से बाँधा जिसे नाविक "स्वैलो नॉट" कहते हैं, रस्सी का दूसरा सिरा अपने दाँतों में पकड़ा, अपने जूते और मोज़े उतारे, जिन्हें उसने दीवार के ऊपर फेंक दिया, ईंटों के ढेर पर कदम रखा, और दीवार के कोने और गैबल पर खुद को इतनी दृढ़ता और निश्चितता के साथ ऊपर उठाने लगा मानो उसके पैरों और कोहनियों के नीचे सीढ़ी के डंडे हों। आधा मिनट भी नहीं बीता था कि वह दीवार पर घुटनों के बल टिका हुआ था।

कोसेट ने बिना कुछ बोले, मूर्खतापूर्ण आश्चर्य से उसे निहारती रही। जीन वाल्जेन के आदेश और मैडम थेनार्डियर के नाम ने उसके रक्त को जमा दिया था।

अचानक ही उसे जीन वालजेन की धीमी आवाज सुनाई दी, जो उसे पुकार रहा था, हालांकि स्वर बहुत धीमा था:

"अपनी पीठ दीवार से टिका लो।"

उसने आज्ञा का पालन किया।

"एक शब्द भी मत कहो, और घबराओ मत," जीन वालजेन ने आगे कहा।

और उसने महसूस किया कि उसे जमीन से ऊपर उठा लिया गया है।

खुद को संभालने का समय मिलने से पहले ही वह दीवार के ऊपर पहुंच चुकी थी।

जीन वालजेन ने उसे पकड़ा, अपनी पीठ पर लादा, उसके दोनों छोटे हाथों को अपने बड़े बाएं हाथ में लिया, पेट के बल लेट गया और दीवार के ऊपर रेंगते हुए ढलान तक पहुंचा। जैसा उसने अनुमान लगाया था, वहां एक इमारत खड़ी थी जिसकी छत लकड़ी की दीवार के ऊपर से शुरू होकर जमीन से कुछ ही दूरी पर उतरती थी, और उसकी हल्की ढलान लिंडन के पेड़ को छूती थी। यह सौभाग्य की बात थी, क्योंकि दीवार सड़क की तरफ से इस तरफ काफी ऊंची थी। जीन वालजेन को नीचे बहुत गहराई में केवल जमीन ही दिखाई दे रही थी।

वह अभी छत की ढलान पर ही पहुँचा था और दीवार की चोटी को पार भी नहीं किया था कि एक ज़ोरदार शोर ने गश्ती दल के आगमन की सूचना दी। जावर्ट की गरजती हुई आवाज़ सुनाई दी:—

“बंद गली में खोजो! रू ड्रोइट-मुर की सुरक्षा की जा रही है! रू पेटिट-पिकपस की भी। मैं इस बात की पुष्टि करता हूँ कि वह बंद गली में है।”

सैनिक तेजी से जेनरोट की गली में घुस गए।

जीन वाल्जेन ने कोसेट को कसकर पकड़े हुए छत से नीचे फिसलना शुरू किया, लिंडन के पेड़ तक पहुंचा और ज़मीन पर छलांग लगा दी। डर या साहस के कारण, कोसेट ने एक भी आवाज़ नहीं निकाली, हालांकि उसके हाथों पर थोड़ी खरोंच आ गई थी।

VI. एक रहस्य की शुरुआत

जीन वालजेन खुद को एक विशाल और अनोखे रूप वाले बगीचे में पाया; उन उदास बगीचों में से एक जो सर्दियों और रात के समय देखने के लिए बने प्रतीत होते हैं। यह बगीचा आयताकार था, जिसके एक छोर पर बड़े-बड़े चिनार के पेड़ों की एक कतार थी, कोनों में काफी ऊंचे जंगली पेड़ थे, और बीच में एक खुला स्थान था, जहाँ एक बहुत बड़ा, अकेला पेड़ दिखाई दे रहा था, फिर कई फलदार पेड़ थे, जो झाड़ियों की तरह टेढ़े-मेढ़े और कांटेदार थे, सब्जियों के क्यारियां थीं, खरबूजों का एक छोटा सा खेत था, जिसके कांच के फ्रेम चांदनी में चमक रहे थे, और एक पुराना कुआँ था। जगह-जगह पत्थर की बेंचें थीं जो काई से काली लग रही थीं। गलियों के किनारे उदास और सीधे खड़े छोटे-छोटे झाड़ियाँ थीं। घास ने उन्हें आधा ढक लिया था, और बाकी पर हरी काई जमी हुई थी।

जीन वाल्जेन के बगल में वह इमारत थी जिसकी छत ने उसे नीचे उतरने के साधन के रूप में काम किया था, लकड़ियों का ढेर था, और लकड़ियों के ढेर के पीछे, सीधे दीवार से सटा हुआ, एक पत्थर की मूर्ति थी, जिसका विकृत चेहरा अब एक आकारहीन मुखौटे से ज्यादा कुछ नहीं था जो अंधकार में धुंधला सा दिखाई दे रहा था।

वह इमारत एक प्रकार से खंडहर थी, जहां ध्वस्त कक्षों को पहचाना जा सकता था, जिनमें से एक, काफी भार से लदा हुआ, एक शेड के रूप में काम करता प्रतीत होता था।

रुए ड्रोइट-मुर की विशाल इमारत, जिसका एक हिस्सा रुए पेटिट-पिकपस की ओर भी था, के दो मुखौटे इस बगीचे की ओर समकोण पर मुड़े हुए थे। ये भीतरी मुखौटे बाहरी मुखौटे से भी कहीं अधिक दयनीय थे। सभी खिड़कियों पर जाली लगी हुई थी। उनमें से किसी से भी प्रकाश की एक किरण भी दिखाई नहीं देती थी। ऊपरी मंजिल में जेलों जैसे संकरे गलियारे थे। उन मुखौटों में से एक की छाया दूसरे पर पड़ती थी, जो बगीचे पर एक विशाल काले आवरण की तरह फैली हुई थी।

आस-पास कोई दूसरा घर दिखाई नहीं दे रहा था। बगीचे का निचला हिस्सा धुंध और अंधेरे में खो गया था। फिर भी, दीवारों को अस्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता

था, जो इस तरह एक-दूसरे को काटती थीं मानो उनके आगे और भी खेती योग्य भूमि हो, और रू पोलोनसेउ की नीची छतें दिखाई दे रही थीं।

इस बगीचे से अधिक जंगली और एकांत की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। इसमें कोई नहीं था, जो उस समय के हिसाब से बिल्कुल स्वाभाविक था; लेकिन ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि यह स्थान किसी के लिए भी दिन के उजाले में भी घूमने-फिरने के लिए बना हो।

जीन वालजेन की पहली प्राथमिकता अपने जूते ढूंढकर उन्हें दोबारा पहनना थी, फिर कोसेट के साथ शेड के नीचे जाना। भागता हुआ व्यक्ति कभी भी खुद को पूरी तरह छिपा हुआ नहीं समझता। बच्ची, जिसके विचार अभी भी थेनार्डियर पर केंद्रित थे, उसकी तरह ही यथासंभव नज़रों से ओझल होने की कोशिश कर रही थी।

कोसेट कांप उठी और उससे लिपट गई। उन्हें संकरी गलियों और सड़कों पर गश्त कर रहे गश्ती दल का शोर सुनाई दे रहा था; पत्थरों पर उनकी बंदूकों के बटों की आवाज; जावर्ट की अपने द्वारा तैनात पुलिस जासूसों से की गई अपीलें, और उसके अपशब्द जो अस्पष्ट शब्दों के साथ मिले हुए थे।

पंद्रह मिनट बीतने पर ऐसा लगा मानो वह भयंकर गर्जना दूर होती जा रही हो। जीन वाल्जेन ने अपनी सांस रोक ली।

उसने कोसेट के मुंह पर हल्के से हाथ रखा था।

लेकिन जिस एकांत में वह खड़ा था, वह इतना विचित्र रूप से शांत था कि यह भयानक शोरगुल, चाहे कितना भी करीब और उग्र क्यों न हो, उसे जरा भी विचलित नहीं कर पाया। ऐसा लग रहा था मानो वे दीवारें उन बहरे पत्थरों से बनी हों जिनका उल्लेख धर्मग्रंथों में किया गया है।

अचानक, इस गहन शांति के बीच, एक नई ध्वनि उठी; एक ऐसी ध्वनि जो दिव्य, दिव्य, अवर्णनीय और मनमोहक थी, ठीक वैसे ही जैसे पिछली ध्वनि भयावह थी। यह अंधकार से निकली एक स्तुति थी, रात के धुंधले और भयावह सन्नाटे में प्रार्थना और सामंजस्य का एक चकाचौंध भरा विस्फोट; स्त्रियों की आवाज़ें, लेकिन ऐसी आवाज़ें जो एक ही समय में कुंवारी कन्याओं के शुद्ध स्वरों और बच्चों के मासूम स्वरों से बनी थीं—ऐसी आवाज़ें जो इस धरती की नहीं थीं, और जो नवजात शिशु की आवाज़ों से मिलती-जुलती थीं, और जिन्हें मरणासन्न व्यक्ति भी सुनता है। यह गीत उस अंधकारमय इमारत से आ रहा था जो बगीचे के ऊपर खड़ी थी।

जिस क्षण राक्षसों का शोरगुल शांत हुआ, ऐसा लगा मानो स्वर्गदूतों का एक समूह अंधकार से होकर आ रहा हो।

कोसेट और जीन वालजेन घुटनों के बल गिर पड़े।

वे नहीं जानते थे कि यह क्या है, वे नहीं जानते थे कि वे कहाँ हैं; लेकिन वे दोनों, पुरुष और बच्चा, पश्चाताप करने वाला और निर्दोष, महसूस करते थे कि उन्हें घुटने टेकने होंगे।

इन आवाजों में एक विचित्र विशेषता थी कि वे इमारत के वीरान होने के आभास को रोक नहीं पा रही थीं। यह एक निर्जन घर में अलौकिक मंत्रोच्चार जैसा था।

जब ये आवाज़ें गा रही थीं, जीन वाल्जेन कुछ भी नहीं सोच रहा था। अब उसे रात नहीं दिख रही थी; उसे नीला आकाश दिखाई दे रहा था। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसके भीतर मौजूद पंख खुल रहे हों।

गीत धीरे-धीरे लुप्त हो गया। शायद यह काफी देर तक चला हो। जीन वालजेन यह नहीं बता सकते थे। आनंद के घंटे कभी क्षण भर से अधिक नहीं होते।

सब कुछ फिर से शांत हो गया। गली में अब कुछ नहीं था; बगीचे में भी कुछ नहीं था। जो उसे डरा रहा था, जो उसे दिलासा दे रहा था—सब गायब हो गया था। हवा के झोंके से दीवार के ऊपरी हिस्से पर कुछ सूखी घासें हिल रही थीं, और उनसे एक हल्की, मधुर, उदास ध्वनि निकल रही थी।

VII. पहेली का सिलसिला जारी है

रात की हवा तेज़ हो गई थी, जिससे अंदाज़ा लग रहा था कि सुबह के एक-दो बजे के बीच का समय होगा। बेचारी कोसेट ने कुछ नहीं कहा। जब वह उसके बगल में बैठी और अपना सिर उस पर टिकाए बैठी, तो जीन वालजेन को लगा कि वह सो रही है। वह झुका और उसे देखा। कोसेट की आँखें खुली हुई थीं, और उसकी सोच में डूबी हुई मुद्रा देखकर जीन वालजेन को दुख हुआ।
वह अब भी कांप रही थी।
“क्या तुम्हें नींद आ रही है?” जीन वाल्जेन ने कहा।
“मुझे बहुत ठंड लग रही है,” उसने जवाब दिया।
कुछ क्षण बाद उसने फिर से बोलना शुरू किया:—
क्या वह अभी भी वहीं है?
“कौन?” जीन वालजेन ने कहा।
“मैडम थेनार्डियर।”
जीन वाल्जेन कोसेट को चुप कराने के लिए इस्तेमाल किए गए तरीकों को पहले ही भूल चुका था।
“आह!” उसने कहा, “वह चली गई। अब तुम्हें किसी बात से डरने की जरूरत नहीं है।”
बच्ची ने आह भरी मानो उसके सीने से कोई बोझ उतर गया हो।
ज़मीन नम थी, शेड चारों तरफ से खुला था, हवा हर पल तेज़ होती जा रही थी। उस भले आदमी ने अपना कोट उतारकर कोसेट के चारों ओर लपेट दिया।
“अब तुम्हें ठंड कम लग रही है क्या?” उसने कहा।
“जी हां, पिताजी।”
“अच्छा, थोड़ी देर रुकिए। मैं जल्द ही वापस आऊंगा।”

वह खंडहर छोड़कर बड़ी इमारत की ओर रेंगता हुआ बेहतर आश्रय की तलाश में आगे बढ़ा। उसे दरवाजे तो दिखे, लेकिन वे बंद थे। भूतल की सभी खिड़कियों पर सलाखें लगी हुई थीं।

इमारत के भीतरी कोने में मुड़ते ही उसने देखा कि वह कुछ मेहराबदार खिड़कियों के पास आ रहा है, जहाँ उसे एक रोशनी दिखाई दी। वह पंजों के बल खड़ा हुआ और उनमें से एक खिड़की से झाँका। सभी खिड़कियाँ एक विशाल हॉल में खुलती थीं, जो बड़े-बड़े पत्थरों से बना था और मेहराबों और खंभों से सजा हुआ था, जहाँ केवल एक हल्की रोशनी और गहरी परछाइयाँ दिखाई दे रही थीं। रोशनी एक कोने में जल रही मोमबत्ती से आ रही थी। कमरा सुनसान था और उसमें कोई हलचल नहीं थी। फिर भी, ध्यान से देखने पर उसे ज़मीन पर कुछ दिखाई दिया जो कफ़न से ढका हुआ प्रतीत हो रहा था और एक मानव आकृति जैसा लग रहा था। यह आकृति ज़मीन पर औंधे मुँह पड़ी थी, भुजाएँ क्रॉस की मुद्रा में फैली हुई थीं, मानो मृत्यु की अवस्था में हो। ज़मीन पर रेंगते हुए एक साँप को देखकर ऐसा लग रहा था कि इस भयावह आकृति के गले में रस्सी बंधी हुई है।

पूरा कक्ष उस धुंध में डूबा हुआ था जो कम रोशनी वाले स्थानों में आम है, जिससे भयावहता और बढ़ जाती है।

जीन वाल्जेन अक्सर बाद में कहते थे कि यद्यपि जीवन में उन्होंने अनेक भयानक प्रेत देखे थे, फिर भी उस अंधकारमय स्थान पर रात के समय किसी अनसुलझे रहस्य को अंजाम देते उस रहस्यमय आकृति से अधिक रोंगटे खड़े कर देने वाली और डरावनी कोई चीज़ उन्होंने कभी नहीं देखी थी। यह सोचना ही भयावह था कि वह शायद मर चुकी थी; और उससे भी अधिक भयावह यह सोचना था कि वह शायद जीवित थी।

उसमें इतनी हिम्मत थी कि उसने अपना चेहरा शीशे से सटा लिया और देखने लगा कि वह चीज़ हिलती है या नहीं। हालाँकि वह बहुत देर तक ऐसे ही बैठा रहा, लेकिन फैली हुई आकृति में कोई हलचल नहीं हुई। अचानक उसे एक असहनीय भय का अनुभव हुआ और वह भाग गया। वह झोपड़ी की ओर दौड़ने लगा, पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत नहीं कर रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि अगर वह अपना सिर घुमाएगा, तो वह आकृति बड़े-बड़े कदमों से उसका पीछा करती हुई और बाहें हिलाती हुई दिखाई देगी।

वह हांफते-हांसते खंडहर तक पहुंचा। उसके घुटने जवाब दे रहे थे; पसीना बह रहा था।

वह कहाँ था? पेरिस के बीचोंबीच उस तरह की समाधि की कल्पना भला कौन कर सकता था! यह अजीबोगरीब घर क्या था? एक ऐसी इमारत जो रात के रहस्य से भरी थी, जो स्वर्गदूतों की आवाज़ से अँधेरे में आत्माओं को पुकारती थी, और जब वे आती थीं, तो अचानक उन्हें वह भयानक दृश्य दिखाती थी; स्वर्ग के उज्ज्वल द्वार खोलने का वादा करती थी, और फिर कब्र के भयानक द्वार खोल देती थी! और यह सचमुच एक इमारत थी, एक घर, जिसका सड़क पर एक नंबर था! यह कोई सपना नहीं था! उसे खुद को यकीन दिलाने के लिए पत्थरों को छूना पड़ा कि यह सच था।

ठंड, चिंता, बेचैनी, रात की भावनाओं ने उसे सचमुच बुखार दे दिया था, और ये सभी विचार उसके दिमाग में आपस में टकरा रहे थे।

वह कोसेट के पास गया। वह सो रही थी।

VIII. पहेली और भी रहस्यमय हो जाती है

बच्ची ने अपना सिर एक पत्थर पर रखा और सो गई।

वह उसके बगल में बैठ गया और सोचने लगा। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे वह उसे निहारता रहा, वह शांत होता गया और उसकी मानसिक स्वतंत्रता पुनः प्राप्त हो गई।

उसे यह सच्चाई स्पष्ट रूप से समझ आ गई थी, जो आगे चलकर उसके जीवन का आधार बनी, कि जब तक वह उसके साथ है, जब तक वह उसके पास है, उसे उसके सिवा किसी चीज की जरूरत नहीं होगी, उसे उसके सिवा किसी चीज से डर नहीं लगेगा। उसे इस बात का भी एहसास नहीं था कि उसे बहुत ठंड लग रही है, क्योंकि उसने अपना कोट उतारकर उसे ओढ़ा दिया था।

फिर भी, जिस तल्लीनता में वह डूबा हुआ था, उससे बाहर आकर उसे कुछ समय से एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दे रही थी। यह घंटी की झंकार जैसी थी। यह आवाज़ बगीचे से आ रही थी। यह स्पष्ट रूप से सुनाई दे रही थी, हालांकि धीमी थी। यह रात में चरागाहों में मवेशियों की घंटियों से निकलने वाली हल्की, अस्पष्ट ध्वनि जैसी थी।

इस आवाज को सुनकर वाल्जीन पीछे मुड़ गया।

उसने देखा कि बगीचे में कोई व्यक्ति मौजूद है।

एक आदमी जैसी आकृति तरबूज़ के क्यारियों के बीच गोल-गोल आकृतियों वाले क्षेत्र में चल रही थी; वह उठती, झुकती, रुकती हुई नियमित गति से चल रही थी, मानो वह ज़मीन पर कुछ घसीट रही हो या फैला रही हो। ऐसा लग रहा था कि वह व्यक्ति लंगड़ाकर चल रहा है।

जीन वाल्जेन दुखी लोगों की निरंतर कंपकंपी से कांप रहा था। उनके लिए सब कुछ शत्रुतापूर्ण और संदेहपूर्ण है। वे दिन पर अविश्वास करते हैं क्योंकि दिन में लोग उन्हें देख सकते हैं, और रात पर भी क्योंकि रात उन्हें चौंका सकती है। कुछ देर पहले वह इसलिए कांप रहा था क्योंकि बगीचा सुनसान था, और अब वह इसलिए कांप रहा था क्योंकि वहाँ कोई था।

वह काल्पनिक भय से वास्तविक भय की ओर लौट आया। उसने मन ही मन सोचा कि शायद जैवर्ट और जासूस अभी गए नहीं हैं; उन्होंने निश्चित रूप से गली में पहरा देने के लिए लोगों को छोड़ा होगा; और अगर यह आदमी उसे बगीचे में देख ले, तो वह चोरों के खिलाफ मदद के लिए चिल्लाएगा और उसे पकड़वा देगा। उसने सोई हुई कोसेट को धीरे से अपनी बाहों में उठाया और उसे शेड के सबसे दूर कोने में पड़े पुराने फर्नीचर के ढेर के पीछे ले गया। कोसेट हिली तक नहीं।

उस बिंदु से उसने खरबूजे के खेत में मौजूद उस प्राणी के रूप-रंग का गौर से अवलोकन किया। अजीब बात यह थी कि घंटी की आवाज़ उस आदमी की हर हरकत के साथ-साथ बजती थी। जब वह आदमी पास आता, तो आवाज़ भी पास आती; जब वह पीछे हटता, तो आवाज़ भी पीछे हट जाती; अगर वह कोई जल्दबाजी में हरकत करता, तो उस हरकत के साथ एक कंपन पैदा होती; जब वह रुकता, तो आवाज़ बंद हो जाती। यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि घंटी उस आदमी से बंधी हुई थी; लेकिन इसका क्या अर्थ हो सकता है? यह आदमी कौन था जिसके शरीर से मेढ़े या बैल की तरह घंटी लटकी हुई थी?

जब वह ये सवाल खुद से पूछ रहा था, तभी उसने कोसेट के हाथों को छुआ। वे बर्फ की तरह ठंडे थे।

“अरे! हे भगवान!” वह चिल्लाया।

उसने उससे धीमी आवाज़ में कहा:

“कोसेट!”

उसने अपनी आंखें नहीं खोलीं।

उसने उसे जोर से हिलाया।

वह नहीं जागी।

“क्या वह मर गई?” उसने खुद से कहा और सिर से पैर तक कांपते हुए उछलकर खड़ा हो गया।

उसके मन में भयानक विचार कौंध गए। कई बार भयानक आशंकाएं हम पर क्रोध की लहरों की तरह टूट पड़ती हैं और हमारे दिमाग की सीमाओं को तोड़ देती हैं। जब हमारे प्रियजनों का भविष्य दांव पर लगा होता है, तो हमारी समझदारी हर तरह

के पागलपन को जन्म देती है। उसे याद आया कि ठंडी रात में खुले में सोना जानलेवा हो सकता है।

कोसेट का चेहरा पीला पड़ गया था और वह बिना हिले-डुले उसके पैरों के पास जमीन पर पूरी तरह से गिर पड़ी थी।

उसने उसकी सांसों को सुना: वह अभी भी सांस ले रही थी, लेकिन उसकी सांसें उसे कमजोर और लगभग खत्म होने वाली लग रही थीं।

वह उसे फिर से जीवन में कैसे लौटाता? वह उसे कैसे जगाता? इस बात से जुड़ी हर बात उसके दिमाग से गायब हो गई। वह बेतहाशा उस खंडहर से भाग निकला।

यह बिल्कुल जरूरी था कि कोसेट एक घंटे के पंद्रह मिनट से भी कम समय में बिस्तर पर और आग के पास हो।

IX. घंटी वाला आदमी

वह सीधे उस आदमी के पास गया जिसे उसने बगीचे में देखा था। उसने अपने हाथ में चांदी का वह बंडल ले रखा था जो उसकी जैकेट की जेब में था।
उस आदमी का सिर झुका हुआ था और उसने उसे पास आते हुए नहीं देखा। कुछ ही कदमों में जीन वालजेन उसके बगल में खड़ा हो गया।
जीन वाल्जेन ने चिल्लाते हुए उससे कहा:—
“एक सौ फ्रैंक!”
वह आदमी चौंक गया और उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं।
जीन वालजेन ने आगे कहा, "अगर आप मुझे आज रात के लिए आश्रय देंगे तो आप सौ फ्रैंक कमा सकते हैं।"
जीन वाल्जेन के भयभीत चेहरे पर चंद्रमा की पूरी रोशनी पड़ रही थी। “क्या! तो आप हैं, फादर मेडेलिन!” उस आदमी ने कहा।
उस नाम का उच्चारण, उस अज्ञात समय में, उस अनजान जगह पर, उस अजनबी आदमी द्वारा किया गया, जिससे जीन वालजेन चौंक कर पीछे हट गया।
उन्हें इससे बिल्कुल अलग उम्मीद थी। उनसे बात करने वाला व्यक्ति एक झुका हुआ और लंगड़ा बूढ़ा था, जिसने लगभग किसान जैसे कपड़े पहने थे, और उसके बाएं घुटने पर चमड़े का एक टुकड़ा बंधा था, जिस पर एक मध्यम आकार की घंटी लटकी हुई थी। उसका चेहरा, जो छाया में था, स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था।
लेकिन उस भले आदमी ने अपनी टोपी उतार दी और कांपते हुए बोला:
“हे भगवान! फादर मेडेलिन, आप यहाँ कैसे आ गए? आप कहाँ से आए? हे भगवान! क्या आप स्वर्ग से गिरे हैं? इसमें कोई चिंता की बात नहीं है: अगर आप कभी गिरते भी हैं, तो वहीं से गिरेंगे। और आपकी यह क्या हालत है! आपके पास टाई नहीं है; टोपी नहीं है; कोट नहीं है! क्या आप जानते हैं, जो आपको नहीं जानता होगा,

उसे आप डरा देते? कोट नहीं है! हे भगवान! क्या आजकल संत पागल हो रहे हैं? लेकिन आप यहाँ कैसे आए?”
उसके शब्द आपस में उलझते जा रहे थे। वह सज्जन देहाती अंदाज़ में वाक्पटुता से बोल रहा था, जिसमें कुछ भी चिंताजनक नहीं था। यह सब उसने हैरानी और भोलेपन भरी दयालुता के मिश्रण के साथ कहा।
“तुम कौन हो? और यह कौन सा घर है?” जीन वाल्जेन ने पूछा।
“अरे! माफ कीजिए, ये तो हद हो गई!” बूढ़े आदमी ने हैरानी से कहा। “मैं वही व्यक्ति हूँ जिसके लिए आपने यहाँ जगह ली थी, और यह वही घर है जहाँ आपने मुझे रखा था। क्या! आप मुझे पहचानते नहीं?”
“नहीं,” जीन वालजेन ने कहा; “और ऐसा कैसे हुआ कि आप मुझे जानते हैं?” “आपने मेरी जान बचाई,” उस आदमी ने कहा।
वह मुड़ा। चांदनी की एक किरण ने उसके चेहरे की आकृति को रेखांकित किया, और जीन वालजेन ने बूढ़े फाउचेलेवेंट को पहचान लिया।
“आह!” जीन वाल्जेन ने कहा, “तो आप हैं? हाँ, मुझे आप याद हैं।”
“यह तो बहुत ही सौभाग्य की बात है,” बूढ़े व्यक्ति ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में कहा।
“और तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” जीन वाल्जेन ने सवाल का जवाब देते हुए पूछा। "अरे, मैं तो अपने स्तनों को ढक रही हूँ, बिलकुल!"
दरअसल, जिस समय जीन वालजेन ने उससे बात की, उस समय बूढ़े फॉशेलवेंट के हाथ में पुआल की चटाई का एक सिरा था जिसे वह खरबूजे के खेत पर बिछा रहा था। लगभग एक घंटे के दौरान वह बगीचे में कई चटाइयाँ बिछा चुका था। इसी काम के कारण जीन वालजेन ने शेड से फॉशेलवेंट की अजीब हरकतें देखी थीं।
उन्होंने आगे कहा:—
मैंने मन ही मन सोचा, ‘चाँद बहुत चमकीला है: ठंड पड़ने वाली है। अगर मैं अपने खरबूजों को उनके ओवरकोट में डाल दूं तो क्या होगा?’ और,” उन्होंने जीन वालजेन की ओर चौड़ी मुस्कान के साथ देखते हुए कहा—“माफ़ कीजिए! आपको भी ऐसा ही करना चाहिए था! लेकिन आप यहाँ आए कैसे?”

जीन वालजेन, जब यह जानकर कि वह व्यक्ति उसे कम से कम मेडेलीन नाम से जानता है, तो वह आगे बढ़ने में बहुत सावधानी बरतने लगा। उसने अपने प्रश्न बढ़ा दिए। आश्चर्य की बात यह थी कि उनकी भूमिकाएँ उलट गई थीं। अब वह, यानी घुसपैठिया, पूछताछ कर रहा था।
और यह घंटी क्या है जिसे तुम अपने घुटने पर पहनते हो?
“ऐसा इसलिए किया गया है ताकि लोग मुझसे बच सकें,” फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया।
“क्या! ताकि तुमसे बचा जा सके?”
बूढ़े फाउचेलेवेंट ने एक अवर्णनीय अंदाज में आँख मारी।
“अरे बाप रे! इस घर में तो सिर्फ औरतें ही हैं—कई जवान लड़कियाँ। लगता है मुझसे मिलना खतरनाक होगा। घंटी बजने से उन्हें चेतावनी मिल जाती है। मेरे आने पर वे चली जाती हैं।”
“यह कौन सा घर है?”
"आइए, आप अच्छी तरह जानते हैं।"
"लेकिन मुझे नहीं पता।"
"जब आपने मुझे यहाँ माली के रूप में जगह दिलवाई थी तब नहीं?"
"मुझे ऐसे उत्तर दो जैसे कि मुझे कुछ पता ही न हो।"
"तो फिर, यह पेटिट-पिकपस कॉन्वेंट है।"
जीन वालजेन को पुरानी यादें सताने लगीं। संयोगवश, यूं कहें कि ईश्वर की कृपा से, वह ठीक उसी सेंट-एंटोइन क्वार्टियर के मठ में पहुँच गया था, जहाँ दो साल पहले बैलगाड़ी से गिरने के कारण अपंग हुए बूढ़े फॉशेलवेंट को उसकी सिफारिश पर भर्ती कराया गया था। उसने मानो स्वयं से बात करते हुए दोहराया:

—

"पेटिट-पिकपस कॉन्वेंट।"
“बिल्कुल,” बूढ़े फाउचेलेवेंट ने जवाब दिया। “लेकिन मुद्दे की बात पर आते हैं, आप यहाँ अंदर कैसे आ गए, फादर मेडेलिन? चाहे आप संत ही क्यों न हों; आप भी एक इंसान हैं, और यहाँ किसी इंसान का प्रवेश नहीं होता।”

आप निश्चित रूप से यहाँ हैं।
मेरे सिवा कोई और नहीं है।
“फिर भी,” जीन वाल्जेन ने कहा, “मुझे यहीं रहना होगा।”
“हे भगवान!” फॉशेलवेंट चिल्लाया।
जीन वालजेन बूढ़े व्यक्ति के पास आया और गंभीर स्वर में उससे बोला:
"फादर फाउचेलेवेंट, मैंने आपकी जान बचाई।"
“मुझे सबसे पहले यह बात याद आई थी,” फाउचेलेवेंट ने जवाब दिया।
"ठीक है, जो काम मैंने पुराने समय में तुम्हारे लिए किया था, वही काम तुम आज मेरे लिए कर सकते हो।"
फॉशेलवेंट ने अपने वृद्ध, कांपते और झुर्रीदार हाथों से जीन वालजेन के दोनों मजबूत हाथों को थाम लिया और कई मिनट तक ऐसे खड़े रहे मानो बोलने में असमर्थ हों। अंत में उन्होंने कहा:—
“ओह! अगर मैं इसके बदले में आपको कुछ थोड़ा-बहुत दे सकूँ तो यह भगवान की कृपा होगी! अपनी जान बचाओ! महाशय, इस बूढ़े आदमी का काम तमाम कर दीजिए!” एक अद्भुत खुशी ने उस बूढ़े व्यक्ति का रूप बदल दिया था। उसका चेहरा मानो प्रकाश की किरण बिखेर रहा था।
“आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?” उसने फिर पूछा।
मैं आपको यह समझा दूंगा। क्या आपके पास कोई कमरा है?
“पुराने मठ के खंडहरों के पीछे, एक कोने में, जहाँ कोई कभी झाँकता नहीं है, मेरी एक अलग-थलग झोपड़ी है। उसमें तीन कमरे हैं।”
दरअसल, वह झोपड़ी खंडहरों के पीछे इतनी अच्छी तरह से छिपी हुई थी, और उसे इस तरह से चतुराई से बनाया गया था कि जीन वालजेन ने उसे देखा ही नहीं था। “अच्छा,” जीन वालजेन ने कहा। “अब मैं तुमसे दो बातें पूछने जा रहा हूँ।” “ये क्या हैं, मेयर साहब?”

पहली बात तो यह है कि आप मेरे बारे में जो कुछ भी जानते हैं, वह किसी को नहीं बताएंगे। दूसरी बात यह है कि आप मेरे बारे में और कुछ भी जानने की कोशिश नहीं करेंगे।

“जैसा आप चाहें। मैं जानता हूँ कि आप कोई भी बेईमानी भरा काम नहीं कर सकते, आप हमेशा से ईश्वर के भक्त रहे हैं। और तो और, आपने ही मुझे यहाँ नियुक्त किया है। यह आपका मामला है। मैं आपकी सेवा में तत्पर हूँ।”

“तो फिर बात पक्की हो गई। अब मेरे साथ आओ। हम जाकर बच्चे को ले आते हैं।”

“अरे!” फॉशेलवेंट ने कहा, “तो यहाँ एक बच्चा है?”

उसने एक शब्द भी आगे नहीं कहा और जीन वाल्जेन के पीछे-पीछे ऐसे चला जैसे कोई कुत्ता अपने मालिक के पीछे चलता है।

आधे घंटे से भी कम समय बाद, अच्छी आग की लौ के सामने फिर से गुलाबी हो चुकी कोसेट, बूढ़े माली के पलंग पर सो रही थी। जीन वालजेन ने अपनी टाई और कोट फिर से पहन लिया था; उसकी टोपी, जिसे उसने दीवार के ऊपर फेंक दिया था, मिल गई थी और उठा ली गई थी। जब जीन वालजेन अपना कोट पहन रहा था, तब फॉशेलवेंट ने घंटी और घुटने की टोपी उतार ली थी, जो अब दीवार पर सजी एक पुरानी टोकरी के बगल में एक कील पर टंगी हुई थी। दोनों आदमी मेज पर कोहनियाँ टिकाकर खुद को गर्म कर रहे थे, जिस पर फॉशेलवेंट ने थोड़ा पनीर, काली रोटी, शराब की एक बोतल और दो गिलास रखे थे, और बूढ़ा आदमी जीन वालजेन के घुटने पर हाथ रखते हुए कह रहा था: “अरे! फादर मेडेलीन! आपने मुझे तुरंत नहीं पहचाना; आप लोगों की जान बचाते हैं, और फिर उन्हें भूल जाते हैं! यह बुरा है! लेकिन वे आपको याद रखते हैं! आप कृतघ्न हैं!”

X. जिससे यह स्पष्ट होता है कि जावर्ट को गंध का पता कैसे चला।

जिन घटनाओं का हमने अभी-अभी दूसरा पहलू देखा है, वे अत्यंत सरल तरीके से घटित हुई थीं।

जिस दिन जावर्ट ने फैंटीन के मृत्युशय्या के पास जीन वालजेन को गिरफ्तार किया था, उसी शाम जब वह मसुर मसुर की जेल से भाग निकला, तो पुलिस ने सोचा कि वह पेरिस चला गया है। पेरिस एक ऐसा भंवर है जहाँ सब कुछ खो जाता है, और दुनिया के इस गर्भ में सब कुछ समुद्र की गहराई की तरह गायब हो जाता है। कोई जंगल किसी आदमी को उस भीड़ की तरह नहीं छुपाता। हर तरह के भगोड़े यह जानते हैं। वे पेरिस को एक अथाह खाई की तरह देखते हैं; वहाँ ऐसी खाइयाँ हैं जो उन्हें बचाती हैं। पुलिस भी यह जानती है, और पेरिस में ही वे उस चीज़ की तलाश करते हैं जो उन्होंने कहीं और खो दी है। उन्होंने मसुर मसुर के पूर्व मेयर की तलाश की। जावर्ट को उनकी जाँच में मदद के लिए पेरिस बुलाया गया। वास्तव में, जावर्ट ने जीन वालजेन को फिर से पकड़ने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की थी। उस अवसर पर जावर्ट के उत्साह और बुद्धिमत्ता की सराहना कॉम्टे एंगल्स के अधीन प्रीफेक्चर के सचिव एम. चाबौइलेट ने की थी। एम. चाबौइलेट, जो पहले से ही जावर्ट के संरक्षक थे, ने एम-सुर-एम के निरीक्षक को पेरिस पुलिस बल में नियुक्त करवाया। वहाँ जावर्ट ने विभिन्न प्रकार से उपयोगी कार्य किए और यद्यपि ऐसे कार्यों के लिए यह शब्द विचित्र लग सकता है, फिर भी सम्मानजनक तरीके से कार्य किया।

जीन वालजेन के बारे में उनका कोई ख्याल नहीं था—आज का भेड़िया शिकार पर मंडराते कुत्तों को बीते कल के भेड़िये को भुला देता है—जब दिसंबर 1823 में उन्होंने एक अखबार पढ़ा, जबकि वे वैसे तो कभी अखबार नहीं पढ़ते थे; लेकिन राजशाही समर्थक जावर्ट को प्रिंस जनरलिसिमो के बेयोन में विजयी प्रवेश की पूरी जानकारी जानने की तीव्र इच्छा थी। जैसे ही वे उस लेख को खत्म कर रहे थे जिसमें उनकी रुचि थी, एक नाम, जीन वालजेन का नाम, पृष्ठ के निचले भाग में उनकी नज़र में आया। अखबार ने घोषणा की कि दोषी जीन वालजेन की

मृत्यु हो गई है, और इस तथ्य को इतने औपचारिक शब्दों में प्रकाशित किया कि जावर्ट को इस पर कोई संदेह नहीं हुआ। उन्होंने बस इतना ही कहा, "यह तो अच्छी खबर है।" फिर उन्होंने अखबार को एक तरफ फेंक दिया और इसके बारे में और नहीं सोचा।

कुछ समय बाद, संयोगवश सीन-एट-ओइस प्रांत से पेरिस के पुलिस प्रांत को एक पुलिस रिपोर्ट भेजी गई, जिसमें मोंटफर्मेइल कम्यून में एक बच्ची के अपहरण की सूचना थी, जो कथित तौर पर असामान्य परिस्थितियों में हुआ था। रिपोर्ट में कहा गया था कि सात या आठ साल की एक छोटी बच्ची, जिसे उसकी माँ ने उस इलाके के एक सराय मालिक के पास छोड़ा था, को एक अजनबी ने चुरा लिया था; इस बच्ची का नाम कोसेट था और वह फैंटाइन नाम की एक लड़की की बेटी थी, जिसकी अस्पताल में मृत्यु हो गई थी, लेकिन यह ज्ञात नहीं था कि कहाँ और कब।

यह रिपोर्ट जावर्ट की नजर में आई और उसे सोचने पर मजबूर कर दिया।

फैंटाइन का नाम उसे अच्छी तरह से पता था। उसे याद था कि जीन वालजेन ने उससे, जेवर्ट से, तीन दिन की मोहलत मांगकर उसे खूब हंसाया था, ताकि वह उस स्त्री के बच्चे को लेने जा सके। उसे याद था कि जीन वालजेन को पेरिस में ठीक उसी समय गिरफ्तार किया गया था जब वह मोंटफर्मेइल जाने वाली गाड़ी में बैठ रहा था। कुछ संकेतों से उसे उस समय शक हुआ था कि वह दूसरी बार उस गाड़ी में बैठा है, और उसने पिछले दिन उस गांव के आसपास का इलाका भी देखा था, क्योंकि वह गांव में कहीं नहीं दिखाई दिया था। वह मोंटफर्मेइल के उस इलाके में क्या करने जा रहा था? इसका अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता था। जेवर्ट को अब समझ आ गया था। फैंटाइन की बेटी वहीं थी। जीन वालजेन उसकी तलाश में वहां जा रहा था। और अब इस बच्चे को एक अजनबी ने चुरा लिया था! वह अजनबी कौन हो सकता है? क्या वह जीन वालजेन हो सकता है? लेकिन जीन वालजेन तो मर चुका था। जावर्ट ने किसी से कुछ भी कहे बिना, प्यूटर प्लैटर, कुल-डे-सैक डे ला प्लांचेट से कोच लिया और मोंटफर्मेइल की यात्रा पर निकल गया।

उन्हें उम्मीद थी कि वहां इस विषय पर काफी जानकारी मिलेगी; लेकिन उन्हें वहां बहुत अस्पष्टता ही मिली।

पहले कुछ दिनों तक थेनार्डियर दंपति गुस्से में बड़बड़ाते रहे। लार्क के गायब होने से गाँव में सनसनी फैल गई थी। उन्होंने तुरंत कहानी के कई अलग-

अलग संस्करण जुटा लिए, जिनका अंत एक बच्चे के अपहरण में हुआ। इसीलिए पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। लेकिन उनकी पहली झुंझलाहट शांत होते ही, थेनार्डियर ने अपनी अद्भुत सूझबूझ से बहुत जल्दी समझ लिया कि क्राउन के अभियोजक को उकसाना कभी भी उचित नहीं होता, और कोसेट के अपहरण के संबंध में उनकी शिकायतों का पहला परिणाम यह होगा कि न्याय की चमकती निगाहें उन पर और उनके हाथ में मौजूद कई अन्य गंभीर मामलों पर टिक जाएँगी। उल्लू तो कभी नहीं चाहते कि उनके पास मोमबत्ती लाई जाए। और सबसे पहले, उन्हें मिले पंद्रह सौ फ्रैंक का क्या हिसाब होगा? जब उनसे चोरी हुए बच्चे का जिक्र किया गया, तो वह एकदम पलट गए, अपनी पत्नी के मुँह पर पट्टी बाँध दी और आश्चर्य का नाटक किया। उन्हें इसके बारे में कुछ भी समझ नहीं आया; निस्संदेह, उस प्यारे से नन्हे जीव को इतनी जल्दी "उनसे छीन लिए जाने" पर वह कुछ देर तक बड़बड़ाते रहे होंगे; स्नेहवश वह उसे दो-तीन दिन और अपने पास रखना चाहता था; लेकिन उसके "दादाजी" उसे सबसे स्वाभाविक तरीके से लेने आए थे। उसने "दादाजी" शब्द जोड़ा, जिससे अच्छा प्रभाव पड़ा। यही कहानी जावर्ट को मोंटफर्मेइल पहुँचने पर सूझी। दादाजी के कारण ही जीन वालजेन गायब हो गया था।

फिर भी, जावर्ट ने थेनार्डियर के इतिहास में कुछ सवाल ऐसे उछाले जैसे कोई झपट्टा मार रहा हो। “वह दादाजी कौन थे? और उनका नाम क्या था?” थेनार्डियर ने सरलता से उत्तर दिया: “वह एक धनी किसान थे। मैंने उनका पासपोर्ट देखा था। मुझे लगता है उनका नाम एम. गुइलौम लैम्बर्ट था।”

लैम्बर्ट एक सम्मानित और बेहद आश्वस्त करने वाला नाम है। इसके बाद जावर्ट पेरिस लौट गया।

उन्होंने कहा, "जीन वालजेन निश्चित रूप से मर चुका है, और मैं एक मूर्ख हूँ।"

वह इस इतिहास को फिर से भूलने ही लगा था कि मार्च 1824 में उसे सेंट-मेडार्ड के पल्ली में रहने वाले एक विलक्षण व्यक्ति के बारे में पता चला, जिसका उपनाम "भिक्षा देने वाला भिखारी" था। कहानी के अनुसार, यह व्यक्ति धनी था, जिसका नाम किसी को ठीक से नहीं पता था, और वह आठ साल की एक छोटी बच्ची के साथ अकेला रहता था, जिसे अपने बारे में कुछ भी नहीं पता था सिवाय इसके कि वह मोंटफर्मेइल से आई थी। मोंटफर्मेइल! यह नाम बार-बार सामने आ

रहा था, और इसने जावर्ट को सतर्क कर दिया। एक पुराने भिखारी पुलिस जासूस, एक पूर्व बीडल, जिसे इस व्यक्ति ने भिक्षा दी थी, ने कुछ और विवरण जोड़े। यह धनी सज्जन बहुत शर्मीला था—शाम को छोड़कर कभी बाहर नहीं निकलता था, किसी से बात नहीं करता था, सिवाय कभी-कभार गरीबों से, और कभी किसी को अपने पास नहीं आने देता था। वह एक भयंकर पुराना पीला फ्रॉक-कोट पहनता था, जिसकी कीमत करोड़ों में थी, क्योंकि वह बैंक नोटों से भरा हुआ था। इससे जैवर्ट की जिज्ञासा और भी बढ़ गई। इस विलक्षण सज्जन को बिना डराए करीब से देखने के लिए, उसने एक दिन के लिए बीडल का पहनावा उधार लिया, और उस जगह को भी, जहाँ वह बूढ़ा जासूस हर शाम दुबक कर, नाक से प्रार्थना करते हुए, और प्रार्थना की आड़ में जासूसी का खेल खेलता था।

“संदिग्ध व्यक्ति” वास्तव में भेस बदलकर जावर्ट के पास आया और उसे दान दिया। उसी क्षण जावर्ट ने अपना सिर उठाया, और जावर्ट को पहचानते ही जीन वालजेन को जो झटका लगा, वह उतना ही था जितना जावर्ट को तब लगा था जब उसने सोचा था कि उसने जीन वालजेन को पहचान लिया है।

हालांकि, अंधेरे ने शायद उसे गुमराह कर दिया हो; जीन वाल्जेन की मृत्यु आधिकारिक थी; जावर्ट को बहुत गंभीर संदेह थे; और जब संदेह होता था, तो नैतिकता का पालन करने वाला जावर्ट कभी किसी के कॉलर पर हाथ नहीं डालता था।

वह अपने आदमी के पीछे-पीछे गोरब्यू के घर गया और "बुढ़िया" से बात निकलवाने में कामयाब हो गया, जो कोई मुश्किल काम नहीं था। बुढ़िया ने लाखों के नोटों से जड़े कोट की बात की पुष्टि की और उसे हज़ार फ़्रैंक के नोट की पूरी कहानी सुनाई। उसने उसे देखा था! उसने उसे छुआ था! जावर्ट ने एक कमरा किराए पर लिया; उसी शाम वह उसमें ठहर गया। वह उस रहस्यमय किराएदार के दरवाजे पर आकर उसकी आवाज़ सुनने की कोशिश करने लगा, लेकिन जीन वालजेन ने ताले के छेद से उसकी मोमबत्ती देख ली और चुप रहकर जासूस को चकमा दे दिया।

अगले दिन जीन वालजेन भाग गया; लेकिन पांच फ़्रैंक के सिक्के के गिरने की आवाज़ उस बूढ़ी औरत ने सुन ली, जिसने सिक्कों की खनक सुनकर अंदाज़ा लगाया कि वह शायद जाने की तैयारी कर रहा है, और जल्दी से जावर्ट को चेतावनी देने के लिए भागी। रात को जब जीन वालजेन बाहर आया, तो जावर्ट दो आदमियों के साथ बुलेवार्ड के पेड़ों के पीछे उसका इंतज़ार कर रहा था।

जैवर ने प्रीफेक्चर से सहायता मांगी थी, लेकिन उसने उस व्यक्ति का नाम नहीं बताया था जिसे वह पकड़ना चाहता था; यह उसका रहस्य था, और उसने इसे तीन कारणों से गुप्त रखा था: पहला, क्योंकि ज़रा सी भी चूक जीन वालजेन को सतर्क कर सकती थी; दूसरा, क्योंकि एक ऐसे पूर्व-कैदी को पकड़ना जो भाग निकला था और जिसे मृत मान लिया गया था, एक ऐसे अपराधी को पकड़ना जिसे न्याय ने पहले हमेशा के लिए "सबसे खतरनाक किस्म के अपराधियों" में गिना था, एक शानदार सफलता थी जिसे पेरिस पुलिस के पुराने सदस्य निश्चित रूप से जैवर जैसे नए व्यक्ति के लिए नहीं छोड़ते, और उसे डर था कि कहीं वह अपने अपराधी से वंचित न हो जाए; और तीसरा, क्योंकि जैवर एक कलाकार होने के नाते, अप्रत्याशित चीजों में रुचि रखता था। उसे उन प्रचारित सफलताओं से नफरत थी जिनकी चर्चा बहुत पहले से हो जाती है और जिनका आकर्षण खत्म हो चुका होता है। वह अपनी उत्कृष्ट कृतियों को अंधेरे में गढ़ना और अंत में अचानक प्रकट करना पसंद करता था।

जैवरट ने जीन वालजेन का पेड़ से पेड़ तक, फिर गली के कोने-कोने तक पीछा किया था और एक पल के लिए भी उसे अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दिया था; यहाँ तक कि उन पलों में भी जब जीन वालजेन खुद को सबसे सुरक्षित समझ रहा था, जैवरट की नज़र उस पर बनी हुई थी। जैवरट ने जीन वालजेन को गिरफ्तार क्यों नहीं किया? क्योंकि वह अब भी दुविधा में था।

यह याद रखना आवश्यक है कि उस दौर में पुलिस की स्थिति सहज नहीं थी; स्वतंत्र प्रेस ने उसे असहज कर दिया था; अखबारों में छपी कई मनमानी गिरफ्तारियों की खबरें चैंबर्स तक पहुंच चुकी थीं और प्रीफेक्चर को डरा दिया था। व्यक्तिगत स्वतंत्रता में हस्तक्षेप एक गंभीर मामला था। पुलिस अधिकारी गलती करने से डरते थे; प्रीफेक्ट सारा दोष उन पर डाल देता था; गलती का मतलब बर्खास्तगी होता था। पाठक कल्पना कर सकते हैं कि बीस अखबारों में छपे इस संक्षिप्त अनुच्छेद का पेरिस में क्या प्रभाव पड़ा होगा: “कल, एक बूढ़े दादा, जिनके बाल सफेद थे, एक सम्मानित और संपन्न सज्जन, जो अपने आठ वर्षीय पोते के साथ टहल रहे थे, को एक भगोड़े अपराधी के रूप में गिरफ्तार कर प्रीफेक्चर की एजेंसी में ले जाया गया!”

इसके अतिरिक्त, हम यह भी दोहराना चाहेंगे कि जावर्ट के मन में भी कुछ शंकाएँ थीं; प्रीफेक्ट के निर्देशों के साथ-साथ उसकी अंतरात्मा की आवाज़ें भी थीं। वह वास्तव में दुविधा में था।

जीन वाल्जेन ने उसकी ओर पीठ फेर ली और अंधेरे में चला गया।

दुःख, बेचैनी, चिंता, अवसाद, रात में भागने की यह नई विपत्ति, कोसेट और खुद के लिए पेरिस में शरण लेने की कोशिश, बच्चे की चाल के अनुसार अपनी चाल को नियंत्रित करने की मजबूरी—इन सब बातों ने, अनजाने में ही, जीन वालजेन की चाल को बदल दिया था और उनके हाव-भाव में बुढ़ापे की ऐसी छाप छोड़ दी थी कि खुद पुलिस, जो जावर्ट के रूप में साक्षात आई थी, भी गलती कर बैठी, और वास्तव में कर भी दी। बहुत करीब न जा पाने की असमर्थता, एक प्रवासी-शिक्षक का उनका पहनावा, थेनार्डियर का वह बयान जिसने उन्हें दादा बना दिया, और अंत में, जेल में उनकी मृत्यु का विश्वास, जावर्ट के मन में गहरी होती अनिश्चितता को और भी बढ़ा दिया।

एक पल के लिए उसके मन में आया कि वह उससे उसके कागजात मांग ले; लेकिन अगर वह आदमी जीन वालजेन नहीं था, और अगर वह अपनी आमदनी पर गुजारा करने वाला एक नेक, ईमानदार बूढ़ा आदमी नहीं था, तो शायद वह पेरिस के कुकर्मों के जाल में गहराई से और चालाकी से फंसा हुआ कोई शातिर बदमाश था, किसी खतरनाक गिरोह का सरगना, जो अपनी दूसरी प्रतिभाओं को छिपाने के लिए भीख मांगता था, जो कि एक पुराना हथकंडा था। उसके भरोसेमंद साथी थे, आपात स्थिति में छिपने के लिए सहयोगी, जिनमें वह निस्संदेह शरण लेता। गलियों में उसके ये सारे चक्कर इस बात का संकेत दे रहे थे कि वह सीधा-सादा और ईमानदार आदमी नहीं था। उसे जल्दबाजी में गिरफ्तार करना "सोने के अंडे देने वाली मुर्गी को मारने" जैसा होगा। इंतजार करने में क्या हर्ज था? जावर्ट को पूरा यकीन था कि वह बच नहीं पाएगा।

इस प्रकार वह काफी उलझन भरी मनस्थिति में आगे बढ़ा, और इस रहस्यमय व्यक्ति के बारे में अपने आप से सौ सवाल पूछने लगा।

पोंटोइस स्ट्रीट पर काफी देर रात तक, एक शराब की दुकान से आ रही तेज रोशनी की बदौलत ही वह जीन वालजेन को पहचान पाया।

इस दुनिया में दो ऐसे प्राणी हैं जो जीवन में एक गहरा बदलाव लाते हैं—वह माँ जो अपने बच्चे को वापस पाती है और वह बाघ जो अपने शिकार को वापस पा लेता है। जावर्ट ने ऐसा ही एक गहरा बदलाव लाया।

जैसे ही उसने कुख्यात अपराधी जीन वालजेन को पहचान लिया, उसे पता चला कि वे केवल तीन ही हैं, और उसने रू डे पोंटोइस स्थित पुलिस स्टेशन में अतिरिक्त बल भेजने का अनुरोध किया। काँटेदार लाठी पकड़ने से पहले दस्ताने पहने जाते हैं।

इस देरी और कैरेफोर रोलिन में अपने एजेंटों से परामर्श करने के लिए रुकने के कारण वह लगभग अपना सुराग खोने ही वाला था। हालाँकि, उसने तुरंत समझ लिया कि जीन वालजेन अपने पीछा करने वालों और खुद के बीच नदी को रखना चाहेगा। उसने अपना सिर झुकाया और एक शिकारी कुत्ते की तरह सोचने लगा जो सही गंध का पता लगाने के लिए अपनी नाक जमीन पर रखता है। जावर्ट, अपनी प्रबल सहज बुद्धि के बल पर, सीधे ऑस्टरलिट्ज़ के पुल पर गया। टोल-कीपर से एक शब्द ने उसे आवश्यक जानकारी प्रदान की: "क्या आपने एक आदमी को एक छोटी लड़की के साथ देखा है?" टोल-कीपर ने उत्तर दिया, "मैंने उससे दो सू लिए।" जावर्ट समय पर पुल पर पहुँचा और उसने जीन वालजेन को कोसेट का हाथ पकड़कर पानी के दूसरी ओर छोटे से रोशन स्थान से गुजरते हुए देखा। उसने उसे रू डू चेमिन-वर्ट-सेंट-एंटोइन में प्रवेश करते देखा; उसे जेनरोट की वह संकरी गली याद आ गई जो एक जाल की तरह वहाँ बनाई गई थी, और रू ड्रोइट-मूर से रू पेटिट-पिकपस में निकलने का एकमात्र रास्ता भी। "उसने अपने सुरक्षित ठिकानों का पूरा ध्यान रखा," जैसा कि शिकारी कहते हैं; उसने जल्दी से अपने एक एजेंट को घुमावदार रास्ते से उस निकास की रखवाली के लिए भेज दिया। शस्त्रागार चौकी की ओर लौट रही एक गश्ती दल उसके पास से गुजरी, तो उसने उस पर नज़र रखी और उसे अपने साथ चलने के लिए कहा। ऐसे खेलों में सैनिक ही माहिर होते हैं। इसके अलावा, सिद्धांत यह है कि जंगली सूअर पर काबू पाने के लिए शिकार की कला और बड़ी संख्या में कुत्तों का इस्तेमाल करना आवश्यक है। इन संयोजनों को लागू करने के बाद, यह महसूस करते हुए कि जीन वालजेन दाईं ओर जेनरोट की संकरी गली, बाईं ओर अपने एजेंट और पीछे स्वयं, जावर्ट, के बीच फंस गया है, उसने थोड़ी सी नसवार ली।

फिर उसने खेल शुरू किया। उसने एक आनंदमय और भयावह क्षण का अनुभव किया; उसने अपने साथी को आगे जाने दिया, यह जानते हुए कि वह सुरक्षित है, लेकिन गिरफ्तारी के क्षण को यथासंभव टालने की इच्छा रखते हुए, इस विचार से प्रसन्न कि वह पकड़ा गया है और फिर भी उसे स्वतंत्र देखकर खुश, उस पर अपनी निगाहों से आनंदित, मकड़ी की उस कामुकता से जो मक्खी को फड़फड़ाने देती है और बिल्ली की जो चूहे को भागने देती है। पंजे और नाखून एक राक्षसी कामुकता रखते हैं—उनके चिमटों में कैद प्राणी की अस्पष्ट हरकतें। यह गला घोंटना कितना आनंददायक है!

जैवरट बड़े आनंद से मग्न था। उसके जाल के फंदे मज़बूती से बंधे हुए थे। उसे सफलता का पूरा भरोसा था; अब उसे बस अपना हाथ बंद करना था।

उसके साथ मौजूद लोगों को देखते हुए, प्रतिरोध का विचार ही असंभव था, चाहे जीन वालजेन कितना भी जोशीला, ऊर्जावान और हताश क्यों न हो।

जैवर्ट धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा, आवाज करता रहा, गली के हर कोने को चोरों के छोटे-छोटे गिरोहों की तरह छानबीन करता रहा।

जब वह जाले के केंद्र में पहुंचा तो उसने पाया कि मक्खी वहां नहीं थी।

उनकी झुंझलाहट का अंदाजा लगाया जा सकता है।

उसने रुएज़ ड्रोइट-मुर और पेटिट-पिकपस के अपने संतरी से पूछताछ की; वह एजेंट, जो अपनी चौकी पर अविचलित रूप से तैनात था, उसने उस आदमी को वहां से गुजरते हुए नहीं देखा था।

कभी-कभी ऐसा होता है कि हिरण का सिर और सींग गायब हो जाते हैं; यानी, वह अपने पीछे लगे झुंड के बावजूद भाग निकलता है, और तब सबसे अनुभवी शिकारी भी समझ नहीं पाते कि क्या कहें। डुविवियर, लिग्निविल और डेस्प्रेज़ एकदम रुक जाते हैं। इस तरह की परेशानी में आर्टोंगे चिल्लाता है, "यह हिरण नहीं, बल्कि जादूगर था।" जावर्ट भी यही कहना चाहता था।

उनकी निराशा क्षण भर के लिए हताशा और क्रोध में तब्दील हो गई।

यह निश्चित है कि नेपोलियन ने रूस के साथ युद्ध में गलतियाँ कीं, सिकंदर ने भारत युद्ध में भूलभुलैया की, सीज़र ने अफ्रीका युद्ध में गलतियाँ कीं, साइरस ने सिथिया युद्ध में गलती की, और जावर्ट ने जीन वालजेन के खिलाफ इस

अभियान में भूल की। शायद पूर्व कैदी को पहचानने में हिचकिचाने में वह गलत था। पहली नज़र ही काफी होनी चाहिए थी। पुराने भवन में उसे सीधे-सीधे गिरफ्तार न करने में वह गलत था; रू डे पोंटोइस में उसे स्पष्ट रूप से पहचानने पर गिरफ्तार न करने में वह गलत था। कैरेफोर रोलिन में चाँदनी रात में अपने सहायकों से सलाह लेने में वह गलत था। सलाह निश्चित रूप से उपयोगी होती है; भरोसेमंद लोगों को जानना और उनसे पूछताछ करना अच्छी बात है; लेकिन जब शिकारी भेड़िये और कैदी जैसे अशांत जानवरों का पीछा कर रहा हो तो उसे बहुत सावधान रहना चाहिए। जैवरट ने इस बात पर बहुत ज्यादा सोच-विचार किया कि अपने शिकारी कुत्तों को कैसे निशान पर लगाया जाए, और इसी चक्कर में उसने तीर की आहट से जानवर को डरा दिया, जिससे वह भाग गया। सबसे बड़ी गलती उसकी यह थी कि ऑस्टरलिट्ज़ पुल पर दोबारा गंध मिलने के बाद उसने उस खतरनाक और बचकाने खेल को खेला, जिसमें वह उस आदमी को जाल में फंसाए रखता था। उसने खुद को अपनी असलियत से कहीं ज्यादा ताकतवर समझा और यह मान लिया कि वह चूहे- शेर का खेल खेल सकता है। साथ ही, जब उसे मदद की ज़रूरत महसूस हुई, तो उसने खुद को बहुत कमजोर समझा। घातक सावधानी, कीमती समय की बर्बादी! जैवरट ने ये सारी गलतियाँ कीं, फिर भी वह अब तक के सबसे चतुर और सटीक जासूसों में से एक था। वह सचमुच में एक ऐसा जासूस था जिसे शिकार की दुनिया में "समझदार कुत्ता" कहा जाता है। लेकिन भला कौन सी चीज़ परिपूर्ण होती है?

महान रणनीतिकारों के भी पतन होते हैं।

सबसे बड़ी मूर्खताएँ अक्सर, सबसे बड़ी रस्सियों की तरह, अनेकों धागों से बनी होती हैं। रस्सी के हर धागे को अलग-अलग लें, उसके सभी छोटे-छोटे निर्णायक तत्वों को अलग-अलग करके देखें, और आप उन्हें एक-एक करके तोड़ सकते हैं, और आप कहेंगे, "बस इतना ही है!" उन्हें आपस में गूँथें, उन्हें आपस में मोड़ें; परिणाम विशाल होगा: यह अत्तिला का पूर्व में मार्शियन और पश्चिम में वैलेंटिनियन के बीच हिचकिचाना है; यह हैनिबल का कैपुआ में ठहरना है; यह डेंटन का आर्सीस-सुर-औबे में सो जाना है।

चाहे जो भी हो, जब जावर्ट ने देखा कि जीन वालजेन उससे बच निकला है, तब भी उसने अपना आपा नहीं खोया। उसे पूरा यकीन था कि जिस कैदी ने अपना फरमान तोड़ा है, वह ज़्यादा दूर नहीं होगा, इसलिए उसने पहरेदार तैनात किए, जाल बिछाए और घात लगाकर हमला करने की योजना बनाई, और पूरी रात मोहल्ले की

छानबीन की। सबसे पहले उसने गली के लालटेन में गड़बड़ी देखी, जिसकी रस्सी कटी हुई थी। यह एक महत्वपूर्ण संकेत था, लेकिन इसने उसे गुमराह कर दिया, क्योंकि इसी वजह से उसने अपनी सारी खोज जेनरोट की बंद गली की ओर मोड़ दी। इस संकरी गली में अपेक्षाकृत नीची दीवारें थीं, जो बगीचों से सटी हुई थीं, जिनकी सीमाएँ विशाल बंजर भूमि से लगती थीं। जीन वालजेन स्पष्ट रूप से उसी दिशा में भागा होगा। असल में, अगर वह जेनरोट की बंद गली में थोड़ा और आगे बढ़ जाता, तो शायद वह ऐसा कर लेता और खो जाता। जावर्ट ने इन बगीचों और बंजर भूमि की छानबीन ऐसे की जैसे वह सुई की तलाश कर रहा हो।

भोर होते ही उसने दो बुद्धिमान व्यक्तियों को निगरानी के लिए छोड़ दिया और पुलिस प्रेफेक्चर लौट आया, उतना ही शर्मिंदा जितना कि एक लुटेरे द्वारा पकड़े गए पुलिस जासूस को हो सकता है।

पुस्तक **VI.** लिटिल पिकपस

I. क्रमांक 62 रुए पेटिट-पिकपस

लगभग पचास साल पहले, 62 रुए पेटिट-पिकपस स्ट्रीट का गेट किसी भी अन्य गेट से इतना मिलता-जुलता नहीं था। यह प्रवेश द्वार, जो आमतौर पर बड़े ही आकर्षक ढंग से थोड़ा खुला रहता था, दो चीज़ों का नज़ारा पेश करता था, जिनमें से किसी में भी उदासी का कोई भाव नहीं था—बेलों से ढकी दीवारों से घिरा एक आंगन, और आराम करते हुए एक चौकीदार का चेहरा। दीवार के ऊपर, आंगन के निचले हिस्से में, ऊंचे पेड़ दिखाई देते थे। जब सूरज की एक किरण आंगन को रोशन करती, जब शराब का एक गिलास चौकीदार को खुश कर देता, तो 62 लिटिल पिकपस स्ट्रीट से गुज़रते समय मुस्कुराता हुआ सा भाव मन में आ जाता था। फिर भी, यह एक गंभीर जगह थी जिसकी एक झलक मिल चुकी थी।

दहलीज मुस्कुराई; घर ने प्रार्थना की और रोया।

अगर कोई चौकीदार को पार करने में कामयाब हो जाता, जो आसान नहीं था—बल्कि लगभग नामुमकिन था, क्योंकि वहाँ एक 'ओपन सेसम!' (खुला रास्ता) था जिसे जानना ज़रूरी था—अगर चौकीदार को पार करने के बाद, दाहिनी ओर एक छोटे से गलियारे में प्रवेश किया जाता, जहाँ दो दीवारों के बीच बंद एक सीढ़ी खुलती थी जो इतनी संकरी थी कि एक बार में केवल एक ही व्यक्ति उस पर चढ़ सकता था, अगर कोई इस सीढ़ी पर लगे कैनरी पीले रंग और चॉकलेट रंग के खांचे से भयभीत न होता, अगर कोई इस पर चढ़ने का साहस करता, तो वह पहले एक पायदान, फिर दूसरे पायदान को पार करके पहली मंजिल पर एक गलियारे में पहुँच जाता जहाँ पीला रंग और चॉकलेट रंग का चबूतरा शांतिपूर्वक आपका पीछा करते रहते थे। सीढ़ी और गलियारे में दो सुंदर खिड़कियाँ थीं। गलियारा मुड़कर अँधेरा हो जाता था। अगर कोई इस रास्ते को पार करता, तो कुछ कदम आगे चलकर एक ऐसे दरवाजे के सामने पहुँच जाता जो और भी रहस्यमय था क्योंकि वह बंद नहीं था। अगर कोई उसे खोलता, तो खुद को लगभग छह फुट चौकोर, टाइलों से सजे, साफ-सुथरे, ठंडे कमरे में पाता, जिस पर हरे फूलों वाले नानकिन पेपर लगे थे, जिनकी एक रोल की कीमत पंद्रह सू थी। बाईं ओर की बड़ी खिड़की से, जिसके छोटे-छोटे शीशे लगे थे और जो कमरे की पूरी चौड़ाई में फैली थी, एक हल्की सफेद रोशनी आ रही थी। चारों ओर नज़र घुमाई, पर कोई दिखाई नहीं दिया; कान लगाए, पर न किसी के कदमों की

आहट सुनाई दी, न किसी की फुसफुसाहट। दीवारें खाली थीं, कमरा बिना किसी सामान के था; यहाँ तक कि एक कुर्सी भी नहीं थी।

फिर से देखने पर दरवाजे के सामने वाली दीवार पर लगभग एक फुट चौकोर एक छेद दिखाई दिया, जिसमें लोहे की छड़ों की एक जाली लगी थी। ये छड़ें आपस में गुंथी हुई, काली, गांठदार और ठोस थीं, जिनसे डेढ़ इंच से भी कम विकर्ण लंबाई के वर्ग बने थे। नानकिन कागज के छोटे-छोटे हरे फूल उन लोहे की छड़ों पर शांत और व्यवस्थित ढंग से फैले हुए थे, उनके अंतिम संस्कार जैसे स्पर्श से न तो विचलित हुए और न ही अस्त-व्यस्त हुए। मान लीजिए कि कोई जीवित प्राणी इतना पतला होता कि उस चौकोर छेद से अंदर या बाहर जाने की कोशिश करता, तो यह जाली उसे रोक देती। यह शरीर को तो गुजरने नहीं देती थी, लेकिन आंखों को गुजरने देती थी; यानी मन को। ऐसा लगता है कि उन्हें यह बात समझ में आ गई थी, क्योंकि दीवार में थोड़ा पीछे की ओर टिन की एक चादर लगाकर इसे और मजबूत किया गया था, जिसमें छलनी के छेदों से भी छोटे हजारों छेद थे। इस प्लेट के निचले हिस्से में, लेटर बॉक्स के छेद के ठीक समान एक छिद्र बनाया गया था। जालीदार खुले हिस्से के दाईं ओर घंटी के तार से बंधी एक टेप लटकी हुई थी।

अगर टेप को खींचा जाता, तो एक घंटी बजती, और पास ही से एक आवाज सुनाई देती, जिससे व्यक्ति चौंक जाता।

“वहाँ कौन है?” आवाज ने पूछा।

यह एक महिला की आवाज थी, एक कोमल आवाज, इतनी कोमल कि वह शोकपूर्ण लग रही थी।

यहां भी एक जादुई शब्द था जिसे जानना आवश्यक था। यदि कोई इसे नहीं जानता था, तो आवाज बंद हो जाती, दीवार फिर से शांत हो जाती, मानो समाधि का भयानक अंधकार उसके दूसरी ओर हो।

अगर किसी को पासवर्ड पता होता, तो आवाज फिर से सुनाई देती, "दाईं ओर प्रवेश करें।"

फिर दाईं ओर, खिड़की के सामने, एक कांच का दरवाज़ा दिखाई दिया, जिसके ऊपर धूसर रंग से रंगा हुआ शीशे का फ्रेम लगा था। कुंडी उठाकर दहलीज पार करते ही, ठीक वैसा ही अनुभव हुआ जैसा थिएटर में जालीदार बाथटब में प्रवेश करते समय होता है, जाली नीचे करने और झूमर जलाने से पहले। दरअसल, हम एक संकरे,

संकरे थिएटर बॉक्स में थे, जिसमें दो पुरानी कुर्सियाँ और एक घिसी-पिटी पुआल की चटाई बिछी थी, और कांच के दरवाज़े से आती धुंधली रोशनी से जगमगा रहा था; एक साधारण बॉक्स, जिसका सामने का हिस्सा बस टेक लगाने लायक ऊँचाई का था, जिस पर काले रंग की लकड़ी की एक पट्टिका रखी थी। यह बॉक्स जालीदार था, लेकिन इसकी जाली ओपेरा की तरह सोने की परत चढ़ी लकड़ी की नहीं थी; यह लोहे की सलाखों का एक विशाल जाल था, जो भयंकर रूप से आपस में गुंथा हुआ था और मुट्ठी जैसे दिखने वाले बड़े-बड़े कीलों से दीवार पर जड़ा हुआ था।

पहले कुछ मिनट बीत गए; जब आँखों को तहखाने जैसी इस धुंधली रोशनी की आदत पड़ने लगी, तो व्यक्ति ने जाली पार करने की कोशिश की, लेकिन उससे छह इंच से आगे नहीं बढ़ पाया। वहाँ उसे काले शटरों की एक बाधा मिली, जो जिंजरब्रेड पीले रंग से रंगे लकड़ी के अनुप्रस्थ बीमों से मजबूत और सुदृढ़ किए गए थे। ये शटर लंबी, पतली पट्टियों में विभाजित थे, और इन्होंने जाली की पूरी लंबाई को ढक रखा था। ये हमेशा बंद रहते थे। कुछ क्षणों के बाद, इन शटरों के पीछे से एक आवाज सुनाई दी, जो कह रही थी:—

मैं यहाँ हूँ। तुम मुझसे क्या चाहते हो?

यह एक प्रिय, कभी-कभी पूजनीय, आवाज़ थी। कोई दिखाई नहीं दे रहा था। साँस लेने की आवाज़ भी मुश्किल से सुनाई दे रही थी। ऐसा लग रहा था मानो कोई आत्मा प्रकट हुई हो, जो मकबरे की दीवारों के पार से आपसे बात कर रही हो।

यदि कोई व्यक्ति कुछ निर्धारित और अत्यंत दुर्लभ परिस्थितियों में होता, तो सामने वाले शटर की एक पट्टी खुल जाती; आह्वानित आत्मा एक प्रेत के रूप में प्रकट होती। जाली के पीछे, शटर के पीछे, जहाँ तक जाली की दृष्टि से संभव था, एक सिर दिखाई देता, जिसका केवल मुँह और ठोड़ी ही दिखाई दे रही थी; बाकी हिस्सा काले घूंघट से ढका हुआ था। एक काले गिम्पे की झलक दिखाई देती, और एक अस्पष्ट आकृति, जो काले कफ़न से ढकी हुई थी। वह सिर आपसे बात करता, लेकिन आपकी ओर देखता नहीं और कभी मुस्कुराता भी नहीं।

आपके पीछे से आने वाली रोशनी को इस प्रकार समायोजित किया गया था कि आप उसे सफेद रंग में देख सकें और वह आपको काले रंग में देख सके। यह रोशनी प्रतीकात्मक थी।

फिर भी, आपकी आँखें उत्सुकता से उस छेद से झाँकती रहीं जो उस एकांत स्थान पर बना था। शोक में डूबी उस आकृति को एक गहरा अंधकार घेरे हुए था। आपकी आँखें उस अंधकार में खोजबीन कर रही थीं और उस प्रेत के परिवेश को समझने का प्रयास कर रही थीं। कुछ ही क्षणों में आपने पाया कि आपको कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। जो कुछ आपने देखा वह था रात, खालीपन, परछाइयाँ, कब्र से उठती भाप के साथ मिली हुई सर्द धुंध, एक प्रकार की भयानक शांति, एक ऐसा सन्नाटा जिसमें आप कुछ भी नहीं सुन पा रहे थे, यहाँ तक कि आहें भी नहीं, एक ऐसा अंधकार जिसमें आप कुछ भी नहीं पहचान पा रहे थे, यहाँ तक कि प्रेत भी नहीं।

आपने जो देखा वह एक मठ का आंतरिक भाग था।

यह उस गंभीर और अंधकारमय इमारत का भीतरी हिस्सा था जिसे शाश्वत आराधना के बर्नार्डिन मठ के नाम से जाना जाता था। जिस कमरे में आप खड़े थे, वह बैठक कक्ष था। आपसे बात करने वाली पहली आवाज़ द्वारपाल की थी, जो हमेशा दीवार के दूसरी ओर, चौकोर खुले स्थान के पास, लोहे की जाली और हज़ार छेदों वाली प्लेट से ढके हुए, मानो दोहरे नकाब से ढकी हो, बिना हिले-डुले चुपचाप बैठी रहती थी। जालीदार कमरे में छाए अंधेरे का कारण यह था कि बैठक कक्ष में, जिसकी एक ओर बाहरी दुनिया की ओर खिड़की थी, मठ की ओर कोई खिड़की नहीं थी। अपवित्र आँखों को उस पवित्र स्थान का कुछ भी नहीं दिखना चाहिए।

फिर भी, उस अंधकार के परे कुछ था; एक प्रकाश था; उस मृत्यु के बीच जीवन था। यद्यपि यह सभी मठों में सबसे कड़ाई से घिरा हुआ था, हम इसमें प्रवेश करने का प्रयास करेंगे, और पाठक को भी इसमें ले जाएंगे, और उचित सीमाओं का उल्लंघन किए बिना, उन चीजों का वर्णन करेंगे जिन्हें कहानीकारों ने कभी नहीं देखा है, और इसलिए कभी वर्णित नहीं किया है।

II. मार्टिन वेर्गा की आज्ञाकारिता

यह मठ, जो 1824 में रू पेटिट-पिकपस में कई वर्षों से मौजूद था, मार्टिन वेरगा के अधीन बर्नार्डिन समुदाय था।

इसलिए, ये बर्नार्डिन भिक्षु क्लेयरवॉक्स से नहीं, बल्कि बेनेडिक्टिन भिक्षुओं की तरह सिटॉक्स से जुड़े हुए थे। दूसरे शब्दों में, वे संत बर्नार्ड के नहीं, बल्कि संत बेनोइट के अधीन थे।

जिस किसी ने भी पुराने दस्तावेजों को थोड़ा बहुत भी देखा है, वह जानता है कि मार्टिन वेर्गा ने 1425 में बर्नार्डिन-बेनेडिक्टिन संप्रदाय की स्थापना की थी, जिसमें सलामांका को संप्रदाय का प्रमुख और अल्काला को शाखा प्रतिष्ठान के रूप में स्थापित किया गया था।

इस धार्मिक समुदाय ने यूरोप के सभी कैथोलिक देशों में अपनी शाखाएँ खोल रखी थीं।

लैटिन चर्च में एक संप्रदाय का दूसरे संप्रदाय से जुड़ाव कोई असामान्य बात नहीं है। उदाहरण के लिए, सेंट-बेनोइट के संप्रदाय का ही जिक्र करें, जिसकी चर्चा यहाँ हो रही है: मार्टिन वेर्गा के अनुयायियों को छोड़कर, इस संप्रदाय से चार मंडलियाँ जुड़ी हुई हैं—दो इटली में, मोंट-कैसिन और सेंट-जस्टिन ऑफ पडुआ; दो फ्रांस में, क्लूनी और सेंट-मौर; और नौ संप्रदाय— वल्लोम्ब्रोसा, ग्रैनमोंट, सेलेस्टिन्स, कैमाल्डुल्स, कार्थुसियन्स, ह्यूमिलिएस, ओलिवेटर्स, सिल्वेस्ट्रिन्स, और अंत में, सिटो; क्योंकि सिटो स्वयं, अन्य संप्रदायों का मूल स्रोत होने के बावजूद, सेंट-बेनोइट की ही एक शाखा है। सिटोक्स की उत्पत्ति 1098 में लैंग्रेस के धर्मप्रांत में संत रॉबर्ट, एब्बे डी मोल्समे से हुई थी। अब यह 529 में हुआ था कि शैतान, सुबियाको के रेगिस्तान में एकांतवास करने के बाद—वह बूढ़ा हो गया था— क्या वह संन्यासी बन गया था?—उसे सत्रह वर्षीय संत बेनोइट द्वारा अपोलो के प्राचीन मंदिर से, जहाँ वह निवास करता था, खदेड़ दिया गया था।

कार्मलाइट भिक्षुओं के नियमों के बाद, जो नंगे पैर चलते हैं, गले में विलो की पट्टी बांधते हैं और कभी बैठते नहीं हैं, सबसे कठोर नियम मार्टिन

वेर्गा के बर्नार्डिन-बेनेडिक्टिन भिक्षुओं का है। वे काले वस्त्र पहनते हैं, साथ में एक गिम्पे (बालकने का कपड़ा) भी होता है, जो संत बेनोइट के स्पष्ट आदेश के अनुसार ठुड्डी तक आता है। चौड़ी आस्तीनों वाला सर्ज का चोला, एक बड़ा ऊनी घूंघट, ठुड्डी तक आने वाला गिम्पे जो छाती पर चौकोर कटा होता है, और माथे से आँखों तक जाने वाली पट्टी—यही उनका पहनावा है। पट्टी को छोड़कर सब कुछ काला होता है, पट्टी सफेद होती है। नौसिखिए भिक्षुणियां भी यही वस्त्र पहनती हैं, लेकिन पूरी तरह सफेद। दीक्षा प्राप्त भिक्षुणियां अपनी कमर पर एक माला भी रखती हैं।

मार्टिन वेर्गा के बर्नार्डिन-बेनेडिक्टिन मठवासी, पवित्र संस्कार की देवियाँ कहलाने वाली बेनेडिक्टिन मठवासियों की तरह ही शाश्वत आराधना का अभ्यास करते हैं। इस शताब्दी की शुरुआत में, उनके पेरिस में दो मठ थे—एक टेम्पल में और दूसरा रू न्यूवे-सैंटे-जेनेवीव में। हालाँकि, पेटिट-पिकपस के बर्नार्डिन-बेनेडिक्टिन मठवासी, जिनकी हम चर्चा कर रहे हैं, रू न्यूवे- सैंटे-जेनेवीव और टेम्पल में स्थित पवित्र संस्कार की देवियों से बिल्कुल अलग थे। उनके नियमों में अनेक अंतर थे; उनकी वेशभूषा में भी कुछ अंतर थे। पेटिट-पिकपस की बर्नार्डिन-बेनेडिक्टिन ननें काला गिम्पे पहनती थीं, और होली सैक्रामेंट और रू न्यूवे-सैंटे-जेनेवीव की बेनेडिक्टिन ननें सफेद गिम्पे पहनती थीं। इसके अलावा, वे अपनी छाती पर लगभग तीन इंच लंबा, चांदी या तांबे से बना पवित्र संस्कार धारण करती थीं। पेटिट-पिकपस की ननें यह पवित्र संस्कार धारण नहीं करती थीं। पेटिट-पिकपस और टेंपल दोनों मठों में प्रचलित शाश्वत आराधना इन दोनों मठों को पूरी तरह से अलग करती है। इनमें एकमात्र समानता होली सैक्रामेंट की ननों और मार्टिन वेर्गा की बर्नार्डिन ननों की इस प्रथा में है, ठीक उसी तरह जैसे यीशु मसीह और कुंवारी मरियम के बचपन, जीवन और मृत्यु से संबंधित सभी रहस्यों के अध्ययन और महिमागान में इन दोनों मठों के बीच समानता थी, जो फिर भी एक दूसरे से बहुत अलग थे, और कभी-कभी तो एक दूसरे के विरोधी भी थे। फिलिप डी नेरी द्वारा फ्लोरेंस में स्थापित इटली का प्रार्थनागृह और पियरे डी बेरुल द्वारा स्थापित फ्रांस का प्रार्थनागृह। फ्रांस के प्रार्थनागृह ने प्राथमिकता का दावा किया, क्योंकि फिलिप डी नेरी केवल एक संत थे, जबकि बेरुल एक कार्डिनल थे।

आइए मार्टिन वेर्गा के क्रूर स्पेनिश शासन की ओर लौटें।

इस संप्रदाय की बर्नार्डिन-बेनेडिक्टिन ननें पूरे साल उपवास रखती हैं, मांस नहीं खातीं, लेंट के दौरान और उनके लिए निर्धारित कई अन्य दिनों में भी उपवास करती हैं, सुबह एक से तीन बजे के बीच अपनी पहली नींद से उठकर प्रार्थना पुस्तक पढ़ती हैं और सुबह की प्रार्थना करती हैं, हर मौसम में सर्ज की चादरों और पुआल पर सोती हैं, स्नान नहीं करतीं, कभी आग नहीं जलातीं, हर शुक्रवार को खुद को कोड़े मारती हैं, मौन के नियम का पालन करती हैं, आपस में केवल बहुत कम समय के लिए ही बात करती हैं, और साल में छह महीने, 14 सितंबर (पवित्र क्रूस का उत्थान दिवस) से लेकर ईस्टर तक, दुग्ध वस्त्र धारण करती हैं। ये छह महीने एक अपवाद हैं: नियम के अनुसार पूरे साल यह वस्त्र धारण करना चाहिए, लेकिन गर्मी में यह दुग्ध वस्त्र असहनीय होता था और इससे बुखार और तंत्रिका संबंधी ऐंठन हो जाती थी। इसलिए इसका उपयोग सीमित करना पड़ा। इस उपाय के बावजूद भी, जब ननें 14 सितंबर को यह वस्त्र धारण करती हैं, तो उन्हें तीन-चार दिन बुखार रहता है। आज्ञापालन, दरिद्रता, पवित्रता, एकांतवास में दृढ़ता—ये उनकी प्रतिज्ञाएँ हैं, जिन्हें यह नियम बहुत अधिक कठिन बना देता है।

मठाध्यक्षा का चुनाव तीन साल के लिए मठाध्यक्षों द्वारा किया जाता है, जिन्हें 'मेरेस वोकल्स' कहा जाता है क्योंकि उनकी सभा में राय मायने रखती है। मठाध्यक्षा को केवल दो बार ही पुनः चुना जा सकता है, जिससे मठाध्यक्षा का अधिकतम संभव कार्यकाल नौ वर्ष निर्धारित होता है।

वे कभी भी धार्मिक अनुष्ठान कराने वाले पादरी को नहीं देख पातीं, जो हमेशा नौ फुट ऊँचे सर्ज के पर्दे से छिपा रहता है। प्रवचन के दौरान, जब उपदेशक चैपल में होता है, तो वे अपने चेहरे पर घूंघट डाल लेती हैं। उन्हें हमेशा धीमी आवाज़ में बोलना होता है, नज़रें ज़मीन पर टिकाए और सिर झुकाए चलना होता है। मठ में केवल एक ही व्यक्ति को प्रवेश की अनुमति है—धर्मप्रांत का आर्कबिशप।

वास्तव में एक और व्यक्ति है—माली। लेकिन वह हमेशा एक बूढ़ा आदमी होता है, और ताकि वह बगीचे में हमेशा अकेला रहे, और ननों को उससे दूर रहने की चेतावनी मिल सके, उसके घुटने पर एक घंटी बंधी होती है।

प्राथमिकता के प्रति उनका समर्पण पूर्ण और निष्क्रिय है। यह अपने त्याग की पूरी ताकत में विहित अधीनता है। मसीह की आवाज़ के रूप में, उट वॉयस क्रिस्टी, एक इशारे पर, पहले संकेत पर, एड नटम, एड प्राइमम साइनम, तुरंत, प्रसन्नता के साथ, दृढ़ता के साथ, एक निश्चित अंध आज्ञाकारिता के साथ, शीघ्र, प्रफुल्लित करने वाला, दृढ़ रहने वाला और अधिक आज्ञाकारी, कार्यकर्ता के हाथ में फ़ाइल के रूप में, मैनिबस फैब्रिक में क्वासी लिमम, स्पष्ट अनुमति के बिना पढ़ने या लिखने की शक्ति के बिना, लेगेरे वेल स्क्रिबरे नॉन एडिसिरिट साइन एक्सप्रेस सुपीरियरिस लाइसेंसिया।

उनमें से प्रत्येक बारी-बारी से जिसे वे “प्रायश्चित” कहते हैं, वह करती हैं। प्रायश्चित पृथ्वी पर किए गए सभी पापों, सभी दोषों, सभी मतभेदों, सभी उल्लंघनों, सभी अधर्मों और सभी अपराधों के लिए प्रार्थना है। बारह घंटे तक, दोपहर चार बजे से सुबह चार बजे तक, या सुबह चार बजे से शाम चार बजे तक, प्रायश्चित करने वाली बहन पवित्र संस्कार के सामने पत्थर पर घुटनों के बल बैठी रहती हैं, हाथ जोड़े, गले में रस्सी। जब उनकी थकान असहनीय हो जाती है, तो वे अपने हाथों को क्रूस की आकृति में फैलाकर, अपना चेहरा ज़मीन पर सीधा करके लेट जाती हैं; यही उनका एकमात्र विश्राम है। इस मुद्रा में वे ब्रह्मांड के सभी दोषियों के लिए प्रार्थना करती हैं। यह परम उदात्तता का प्रतीक है।

चूंकि यह क्रिया एक ऐसे खंभे के सामने की जाती है जिस पर मोमबत्ती जल रही होती है, इसलिए इसे बिना किसी भेद के "प्रायश्चित करना" या "खंभे पर होना" कहा जाता है। ननें विनम्रता के कारण इस अंतिम अभिव्यक्ति को ही प्राथमिकता देती हैं, जिसमें यातना और अपमान का भाव निहित है।

प्रायश्चित करना एक ऐसा कार्य है जिसमें पूरी आत्मा लीन हो जाती है। ड्यूटी पर तैनात नन पीछे मुड़कर भी नहीं देखेगी, चाहे बिजली सीधे उसके पीछे ही क्यों न गिर जाए।

इसके अलावा, पवित्र संस्कार के सामने हमेशा एक बहन घुटने टेककर बैठी रहती है। यह अवस्था एक घंटे तक चलती है। वे बारी-बारी से पहरा दे रही सैनिकों की तरह बारी-बारी से यह कार्य करती हैं। यही शाश्वत आराधना है।

मठाध्यक्षाओं और धर्ममाताओं के नाम लगभग हमेशा ही विशेष गंभीरता से अंकित होते हैं, जो संतों और शहीदों की नहीं, बल्कि यीशु मसीह के जीवन के क्षणों की याद दिलाते हैं: जैसे जन्म माता, गर्भाधान माता, प्रस्तुति माता, पीड़ा माता। लेकिन संतों के नाम वर्जित नहीं हैं।

जब कोई उन्हें देखता है, तो उसे उनके मुंह के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता।

उनके सारे दांत पीले हैं। उस मठ में कभी कोई टूथब्रश नहीं गया। दांत साफ करना उस सीढ़ी का सबसे ऊपरी पायदान है जिसके सबसे निचले पायदान पर आत्मा का खो जाना लिखा है।

वे कभी “मेरा” नहीं कहते। उनके पास अपनी कोई चीज़ नहीं होती, और उन्हें किसी भी चीज़ से लगाव नहीं रखना चाहिए। वे हर चीज़ को “हमारा” कहते हैं; जैसे: हमारा घूंघट, हमारी माला; अगर वे अपनी कमीज़ की बात कर रहे हों, तो भी वे “हमारी कमीज़” कहेंगे। कभी-कभी वे किसी छोटी-मोटी चीज़ से लगाव महसूस करने लगते हैं—जैसे प्रार्थना की किताब, कोई पवित्र अवशेष, कोई आशीर्वादित पदक। जैसे ही उन्हें एहसास होता है कि उन्हें उस चीज़ से लगाव हो रहा है, उन्हें उसे त्याग देना चाहिए। वे संत थेरेसा के शब्दों को याद करते हैं, जिनसे एक महान महिला ने उनके मठ में प्रवेश करने से पहले कहा था, “हे माता, मुझे एक बाइबल मंगवाने की अनुमति दीजिए जिससे मुझे बहुत लगाव है।” “अरे, आपको किसी चीज़ से लगाव है! अगर ऐसा है, तो हमारे मठ में प्रवेश न कीजिए!”

हर किसी को अपने आप को अलग-थलग करने या "अपनी एक अलग जगह, एक कमरा" बनाने की मनाही है। वे अपने एकांतवास में ही जीते हैं। जब वे मिलते हैं, तो एक कहता है, "वेदी के सबसे पवित्र संस्कार की जय हो!" दूसरा जवाब देता है, "सदाबहार।" यही रस्म तब भी दोहराई जाती है जब एक दूसरे के दरवाजे पर दस्तक देता है। जैसे ही वह दरवाजे को छूती है, दूसरी तरफ से धीमी आवाज़ में जल्दी से सुनाई देती है, "सदाबहार!" सभी प्रथाओं की तरह, यह भी आदत के चलते यांत्रिक हो जाता है; और कभी-कभी एक "सदाबहार" कह देता है इससे पहले कि दूसरे को "वेदी के सबसे पवित्र संस्कार की जय हो" जैसा लंबा वाक्य कहने का समय मिले।

विज़िटैंडिन समुदाय में, प्रवेश करने वाला व्यक्ति "एवे मारिया" कहता है, और जिसकी कोठरी में प्रवेश किया जाता है वह "ग्रेटिया प्लेना" कहता है। यह उनका शुभ दिन कहने का तरीका है, जो वास्तव में कृपा से परिपूर्ण है।

दिन के प्रत्येक घंटे पर मठ की घंटी से तीन अतिरिक्त ध्वनियाँ सुनाई देती हैं। इस संकेत पर मठाध्यक्षा, वाक् प्रख्यात माताएँ, प्रतिज्ञाबद्ध ननें, गृहस्थ बहनें, नौसिखिए ननें और प्रशिक्षुएँ, जो कुछ भी कह रही हों, कर रही हों या सोच रही हों, उसे रोककर एक साथ बोलती हैं, उदाहरण के लिए, यदि पाँच बजे हों, तो "पाँच बजे और हर समय वेदी के सबसे पवित्र संस्कार की स्तुति और आराधना हो!" यदि आठ बजे हों, तो "आठ बजे और हर समय!" और इसी प्रकार, घंटे के अनुसार।

यह प्रथा, जिसका उद्देश्य विचारों की धारा को तोड़ना और उन्हें निरंतर ईश्वर की ओर वापस ले जाना है, अनेक समुदायों में प्रचलित है; केवल सूत्र भिन्न होता है। उदाहरण के लिए, शिशु यीशु की प्रार्थना के समय वे कहते हैं, “इस घड़ी और हर घड़ी यीशु का प्रेम मेरे हृदय को प्रज्वलित करे!” मार्टिन वर्गा के बर्नार्डिन-बेनेडिक्टिन, जो पचास वर्ष पूर्व पेटिट-पिकपस में मठ में बसे थे, गंभीर भजन-कीर्तन में, शुद्ध ग्रेगोरियन मंत्र में, और पूरी प्रार्थना के दौरान हमेशा पूरे स्वर में गाते हैं। प्रार्थना पुस्तक में जहाँ भी तारांकन चिह्न आता है, वे रुकते हैं और धीमी आवाज़ में कहते हैं, “यीशु-मैरी-जोसेफ”। मृतकों की प्रार्थना के लिए वे इतना धीमा स्वर अपनाते हैं कि महिलाओं की आवाज़ शायद ही इतनी गहराई तक जा सके। इसका प्रभाव मार्मिक और दुखद होता है।

पेटिट-पिकपस की ननों ने अपने समुदाय के अंतिम संस्कार के लिए अपनी मुख्य वेदी के नीचे एक तहखाना बनवाया था। उनका कहना है कि "सरकार" इस तहखाने में ताबूत रखने की अनुमति नहीं देती, इसलिए मरने पर ताबूत मठ से बाहर ले जाए जाते हैं। यह उनके लिए एक विपत्ति है और नियमों के उल्लंघन के कारण उन्हें बहुत चिंता होती है।

उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा एक मामूली सांत्वना ही मिली थी—प्राचीन वोगिरार्ड कब्रिस्तान में एक विशेष समय पर और एक विशेष कोने में दफनाए जाने की अनुमति, जो उस भूमि से बना था जो पहले उनके समुदाय की थी।

शुक्रवार को ननें रविवार की तरह ही उच्च प्रार्थना, संध्या प्रार्थना और सभी धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती हैं। वे उन सभी छोटे-छोटे त्योहारों का भी पूरी निष्ठा से पालन करती हैं जो आम लोगों को ज्ञात नहीं हैं, और जिन्हें पुराने समय में फ्रांस का चर्च बड़े उत्साह से मनाता था, और आज भी स्पेन और इटली में ऐसा ही है। चैपल में उनकी प्रार्थनाओं का समय अंतहीन होता है। उनकी प्रार्थनाओं की संख्या और अवधि के बारे में हम इससे बेहतर कोई अंदाजा नहीं लगा सकते कि उनमें से एक नन के सरल शब्दों में कहें तो: "नवदीक्षित ननों की प्रार्थनाएँ भयानक होती हैं, नौसिखियों की प्रार्थनाएँ उनसे भी बदतर होती हैं, और दीक्षा प्राप्त ननों की प्रार्थनाएँ तो और भी भयानक होती हैं।"

सप्ताह में एक बार, मठाधिपिका उपस्थित होती है: प्रमुख अध्यक्षता करती हैं; अन्य साध्वियाँ सहायक होती हैं। प्रत्येक साध्वी बारी-बारी से पत्थरों पर घुटने टेकती है और सबके सामने सप्ताह भर में किए गए अपने दोषों और पापों को ज़ोर से स्वीकार करती है। प्रत्येक स्वीकारोक्ति के बाद, अन्य साध्वियाँ आपस में परामर्श करती हैं और प्रायश्चित ज़ोर से सुनाती हैं।

ऊँची आवाज़ में किए जाने वाले इस पश्चाताप के अलावा, जिसके लिए सभी मामूली से मामूली गलतियाँ भी आरक्षित हैं, वे अपने छोटे-मोटे अपराधों के लिए एक प्रथा का पालन करते हैं जिसे वे 'युगल' कहते हैं। 'युगल' करने का अर्थ है प्रार्थना के दौरान मठाध्यक्षा के सामने मुँह के बल लेट जाना, जब तक कि मठाध्यक्षा, जिन्हें हमेशा "हमारी माँ" के अलावा किसी और नाम से नहीं पुकारा जाता, अपने आसन की लकड़ी पर पैर से हल्की सी थपथपाहट करके दोषी को उठने का संकेत न दे दें। 'युगल' या 'पेकावी' बहुत छोटी-छोटी बातों के लिए किया जाता है—टूटा हुआ गिलास, फटा हुआ घूंघट, प्रार्थना में कुछ सेकंड की अनैच्छिक देरी, चर्च में गलत स्वर आदि; इतना ही काफी है, और 'युगल' हो जाता है। 'युगल' पूरी तरह से स्वतःस्फूर्त होता है; दोषी व्यक्ति स्वयं (यहाँ शब्द की व्युत्पत्ति उचित है) स्वयं को दोषी ठहराता है और स्वयं पर यह दंड लगाता है। त्योहारों के दिनों और रविवार को चार मातृ उपासक चार सीटों वाली एक बड़ी पाठ-मेष के सामने प्रार्थना करते हैं। एक दिन एक मातृ प्रशिक्षक ने एक्के से शुरू होने वाला एक भजन गाया, और एक्के के बजाय उन्होंने ज़ोर से तीन स्वर 'दो सी सोल' बोल दिए; इस भूल के कारण उन्हें पूरे अनुष्ठान के

दौरान एक छोटा सा दंड मिला: और इस गलती को और भी बड़ा बनाने वाली बात यह थी कि उस मंडली ने उनका मज़ाक उड़ाया था।

जब किसी नन को बैठक कक्ष में बुलाया जाता है, चाहे वह स्वयं मठाध्यक्षा ही क्यों न हो, तो वह अपना घूंघट गिरा देती है, जैसा कि आपको याद होगा, ताकि केवल उसका मुंह ही दिखाई दे।

केवल मठाध्यक्षा ही अजनबियों से संवाद कर सकती हैं। अन्य मठाध्यक्षाएँ केवल अपने निकट परिवार से ही मिल सकती हैं, और वह भी बहुत कम। यदि संयोगवश कोई बाहरी व्यक्ति किसी मठाध्यक्षा से, या किसी ऐसे व्यक्ति से जिसे मठाध्यक्षा जानती और प्यार करती हो, मिलने आता है, तो औपचारिक बातचीत की आवश्यकता होती है। यदि वह महिला है, तो कभी-कभी अनुमति मिल जाती है; मठाध्यक्षा आती हैं, और वे खिड़कियों के पर्दों के माध्यम से उनसे बात करती हैं, जो केवल मठाध्यक्षा या बहन के लिए ही खोले जाते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि पुरुषों को अनुमति हमेशा अस्वीकार कर दी जाती है।

सेंट-बेनोइट का शासन कुछ ऐसा ही था, जिसे मार्टिन वेरगा ने और भी गंभीर बना दिया था।

ये ननें अन्य मठों की बेटियों की तरह हंसमुख, हंसमुख और जीवंत नहीं हैं। वे पीली और गंभीर हैं। 1825 और 1830 के बीच उनमें से तीन पागल हो गईं।

III. तपस्या

दीक्षा समारोह में कम से कम दो साल, अक्सर चार साल तक, प्रशिक्षु के रूप में बिताया जाता है; नौसिखिए के रूप में चार साल। तेईस या चौबीस साल की उम्र से पहले दीक्षा लेना दुर्लभ है। मार्टिन वेर्गा के बर्नार्डिन-बेनेडिक्टिन संप्रदाय विधवाओं को अपने संप्रदाय में शामिल नहीं करते हैं।

अपनी कोठरियों में, वे खुद को कई अज्ञात यातनाओं के हवाले कर देते हैं, जिनके बारे में उन्हें कभी भी बात नहीं करनी चाहिए।

जिस दिन एक नन दीक्षा लेती है, उस दिन उसे सबसे सुंदर वस्त्र पहनाए जाते हैं, सफेद गुलाबों का मुकुट पहनाया जाता है, उसके बालों को कंघी करके चमकाया जाता है और घुंघराले बनाया जाता है। फिर वह साष्टांग प्रणाम करती है; उस पर एक बड़ा काला घूंघट डाला जाता है, और मृतकों के लिए प्रार्थना की जाती है। फिर ननें दो कतारों में बंट जाती हैं; एक कतार उसके पास से गुजरती है और दुख भरे स्वर में कहती है, "हमारी बहन मर गई है;" और दूसरी कतार आनंदित स्वर में उत्तर देती है, "हमारी बहन यीशु मसीह में जीवित है!"

जिस समय यह कहानी घटित होती है, उस समय मठ से एक बोर्डिंग स्कूल जुड़ा हुआ था—यह बोर्डिंग स्कूल कुलीन और अधिकतर धनी परिवारों की युवतियों के लिए था, जिनमें मैडमोजेल डी सेंट-ऑलेयर और डी बेलिसन तथा टैलबोट नामक एक प्रसिद्ध कैथोलिक नाम वाली अंग्रेज़ लड़की उल्लेखनीय थीं। चार दीवारों के बीच इन ननों द्वारा पाली-पोसी गई ये युवतियाँ संसार और उस युग के प्रति भय से भली-भांति विमुख हो गईं। उनमें से एक ने एक दिन हमसे कहा, "सड़क के फुटपाथ को देखकर ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे।" वे नीले वस्त्र, सफेद टोपी और छाती पर चांदी या तांबे की बनी पवित्र आत्मा की प्रतिमा धारण करती थीं। कुछ विशेष त्योहारों के दिनों में, विशेषकर संत मार्था के दिन, उन्हें एक विशेष कृपा और परम सुख के रूप में ननों के वस्त्र धारण करने और पूरे दिन संत बेनोइट के अनुष्ठान और रीति-रिवाज निभाने की अनुमति दी जाती थी। आरंभिक दिनों में ननें उन्हें अपने काले वस्त्र उधार देने की प्रथा का

पालन करती थीं। यह अपवित्र प्रतीत हुआ, और मठाध्यक्षा ने इस पर रोक लगा दी। केवल नौसिखियों को ही उधार देने की अनुमति थी। यह उल्लेखनीय है कि ये प्रदर्शन, जिन्हें मठ में धर्म प्रचार की गुप्त भावना से और इन बच्चों को पवित्र वस्त्रों का पूर्वाभास देने के उद्देश्य से सहन और प्रोत्साहित किया जाता था, विद्यार्थियों के लिए वास्तविक आनंद और मनोरंजन का स्रोत थे। वे बस इसमें अपना मनोरंजन करते थे। "यह नया था; इससे उन्हें बदलाव मिला।" बचपन के सीधे-सादे कारण, जो हम सांसारिक लोगों को पवित्र जल छिड़कने वाले यंत्र को हाथ में पकड़ने और घंटों तक चार लोगों के बराबर ज़ोर से पढ़ने की मेज के सामने खड़े होकर गाने के आनंद को समझाने में सफल नहीं होते।

तपस्या को छोड़कर, विद्यार्थी मठ के सभी नियमों का पालन करते थे। एक युवती का जन्म हुआ, और विवाह के कई वर्षों बाद भी वह अपने दरवाजे पर किसी के भी दस्तक देने पर जल्दबाजी में "हमेशा के लिए!" कहने की आदत नहीं छोड़ पाई थी। ननों की तरह, विद्यार्थी भी अपने रिश्तेदारों से केवल बैठक कक्ष में ही मिलते थे। उनकी माताओं को भी उन्हें गले लगाने की अनुमति नहीं थी। निम्नलिखित उदाहरण इस बात की कठोरता को दर्शाता है। एक दिन एक छोटी बच्ची से उसकी माँ मिलने आई, जिसके साथ उसकी तीन साल की बहन भी थी। बच्ची रोने लगी, क्योंकि वह अपनी बहन को गले लगाना चाहती थी। यह असंभव था। उसने विनती की कि कम से कम बच्ची को सलाखों के बीच से अपना छोटा हाथ निकालकर उसे चूमने की अनुमति दी जाए। लगभग गुस्से से यह अनुरोध ठुकरा दिया गया।

IV. समलैंगिकता

फिर भी, इन युवतियों ने इस कब्रिस्तान को मनमोहक स्मृति चिन्हों से भर दिया।

कुछ खास पलों में उस एकांत में बचपन की चमक फैल जाती थी। मनोरंजन का समय होता था। एक दरवाजा अपने कब्ज़ों पर झूलता था। पक्षियों की चहचाहट सुनाई देती थी, “वाह! बच्चे आ गए!” एक कफ़न की तरह उस क्रॉस से घिरे बगीचे में जवानी का सैलाब उमड़ पड़ता था। दमकते चेहरे, सफेद माथे, मासूम आँखें, खुशियों से भरी, हर तरह की आभा इन छायाओं के बीच बिखरी हुई थीं। भजन, घंटियों, घंटियों और शोक की आवाज़ों के बाद, इन नन्ही बच्चियों की आवाज़ अचानक मधुमक्खियों की भनभनाहट से भी ज़्यादा मधुरता से फूट पड़ती थी। खुशियों का छत्ता खुल जाता था, और हर कोई अपना शहद लेकर आती थी। वे खेलती थीं, एक-दूसरे को पुकारती थीं, समूह बनाती थीं, इधर-उधर दौड़ती थीं; कोनों में उनके प्यारे-प्यारे सफेद दाँत बजते थे; परदे दूर से उनकी हँसी पर नज़र रखते थे, छायाएँ सूरज की किरणों पर नज़र रखती थीं, लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता था? फिर भी वे मुस्कुराती और हँसती रहती थीं। उन चार उदास दीवारों को भी एक पल के लिए चकाचौंध कर देने वाली चमक मिली। वे देख रहे थे, छत्तों की इस प्यारी चहलकदमी को देखकर उनके चेहरे पर अपार खुशी की झलक थी। ऐसा लग रहा था मानो शोक के इस घर में गुलाबों की बौछार हो रही हो। नन की निगाहों के नीचे नन्ही लड़कियाँ खेल रही थीं; उनकी निर्मल दृष्टि मासूमियत को शर्मिंदा नहीं करती। इन बच्चों की बदौलत, इतने कठोर घंटों के बीच, एक घंटा मासूमियत से भरा था। छोटे बच्चे उछल-कूद कर रहे थे; बड़े नाच रहे थे। इस मठ में खेल स्वर्ग के साथ घुलमिल गया था। इन सभी ताज़गी भरी, खिलती हुई युवा आत्माओं से बढ़कर आनंददायक और भव्य कुछ भी नहीं है। होमर भी पेरोल्ट के साथ हँसने के लिए वहाँ ज़रूर आते। और उस काले बगीचे में यौवन, स्वास्थ्य, शोर, चीखें, चक्कर आना, आनंद, खुशी इतनी पर्याप्त थी कि उनकी सभी पूर्वजों की झुर्रियों को दूर कर सके, चाहे वे महाकाव्य की हों या परीकथाओं की, चाहे वे सिंहासन की हों या हेकुबा से लेकर ला मेरे-ग्रैंड तक की छप्पर वाली झोपड़ी की।

उस घर में शायद ही कहीं और बच्चों की वो प्यारी-प्यारी बातें सुनने को मिलती हैं, जो मन में एक गहरी मुस्कान ला देती हैं। उन्हीं चार उदास दीवारों के बीच एक दिन पाँच साल के एक बच्चे ने कहा: “माँ! बड़ी लड़कियों में से एक ने मुझे बताया है कि मुझे यहाँ सिर्फ नौ साल और दस महीने ही रहना है। कितनी खुशी की बात है!”
यहीं पर यह यादगार संवाद भी हुआ था:—
एक मुखर माँ। "मेरे बच्चे, तुम क्यों रो रहे हो?"
छह साल की बच्ची ने कहा, “मैंने एलिक्स से कहा कि मुझे फ्रांसीसी इतिहास आता है। वह कहती है कि मुझे नहीं आता, लेकिन मुझे आता है।”
एलिक्स, बड़ी लड़की (उम्र नौ साल)। "नहीं; उसे यह बात नहीं पता।"
माँ। "कैसा लगा, मेरे बच्चे?"
एलिक्स ने कहा, "उसने मुझसे कहा कि मैं किताब को बेतरतीब ढंग से खोलूं और किताब में दिए गए किसी भी प्रश्न को उससे पूछूं, और वह उसका उत्तर देगी।" "कुंआ?"
उसने इसका जवाब नहीं दिया।
“देखते हैं। तुमने उससे क्या पूछा था?”
"मैंने उसकी इच्छा के अनुसार बेतरतीब ढंग से किताब खोली और जो पहला सवाल मेरे सामने आया, उसे लिख दिया।"
और सवाल क्या था?
सवाल यह था, ‘उसके बाद क्या हुआ?’
वहीं पर एक महिला किरायेदार के कुछ लालची तोते के बारे में वह गहरी टिप्पणी की गई थी:
“कितना बढ़िया! यह ब्रेड और मक्खन के टुकड़े का ऊपरी हिस्सा बिल्कुल इंसानों की तरह खाता है!”
इसी मठ के एक पत्थर पर एक बार सात साल की एक पापी लड़की का लिखा हुआ इकबालनामा मिला था, जिसे उसने पहले ही लिख लिया था ताकि वह उसे भूल न जाए:

“पिताजी, मैं अपने आप को लालची होने का दोषी मानता हूँ।”

“पिताजी, मैं अपने ऊपर व्यभिचारिणी होने का आरोप लगाती हूँ।”

"पिताजी, मैं अपने ऊपर यह दोष स्वीकार करता हूँ कि मैंने उन सज्जनों की ओर आँखें उठाईं।"

इसी बगीचे की घास-फूस से बनी बेंचों में से एक पर, छह साल की एक प्यारी सी बच्ची ने अचानक ही यह कहानी सुनाई, जिसे चार और पाँच साल के नीली आँखों वाले बच्चों ने ध्यान से सुना:—

“तीन छोटे मुर्गे एक ऐसे देश के मालिक थे जहाँ बहुत सारे फूल थे। उन्होंने फूल तोड़े और अपनी जेबों में रख लिए। फिर उन्होंने पत्तियाँ तोड़ी और अपने खिलौनों में रख लीं। उस देश में एक भेड़िया था; वहाँ बहुत घना जंगल था; और भेड़िया जंगल में था; और उसने उन छोटे मुर्गों को खा लिया।”

और यह दूसरी कविता:—

एक छड़ी से वार हुआ। यह वार पंचिनेलो ने बिल्ली पर किया था। यह उसके लिए अच्छा नहीं था; उसे चोट लगी। फिर एक महिला ने पंचिनेलो को जेल में डाल दिया।

वहीं पर एक नन्ही परित्यक्त बच्ची, जिसे मठ दान-पुण्य से पाल-पोस रहा था, ने यह मधुर और हृदयविदारक बात कही। उसने दूसरों को अपनी माताओं के बारे में बात करते सुना, और वह अपने कोने में धीरे से बोली:—

“जहां तक मेरी बात है, मेरे जन्म के समय मेरी मां वहां नहीं थीं!”

वहाँ एक हष्ट-पुष्ट दरबान थी जो चाबियों का गुच्छा लिए गलियारों में हमेशा जल्दी-जल्दी घूमती नज़र आती थी, और जिसका नाम सिस्टर अगाथा था। दस साल से अधिक उम्र की लड़कियाँ उसे अगाथोक्लेस कहकर पुकारती थीं।

भोजन कक्ष, जो एक आयताकार वर्गाकार बड़ा कमरा था और जिसमें बगीचे के स्तर पर बने गुंबददार गलियारे के अलावा कहीं से भी रोशनी नहीं आती थी, अंधेरा और नमी से भरा हुआ था, और जैसा कि बच्चे कहते हैं, जानवरों से भरा हुआ था।
आसपास के सभी स्थानों पर कीड़े-मकोड़ों की भरमार थी।

विद्यार्थियों की भाषा में, इसके चारों कोनों को एक विशेष और अर्थपूर्ण नाम दिया गया था। मकड़ी का कोना, इल्ली का कोना, काँच का कोना और झींगुर का कोना।

क्रिकेट कॉर्नर रसोई के पास था और बहुत ही प्रतिष्ठित था। वहाँ बाकी जगहों की तरह ठंड नहीं होती थी। भोजन कक्ष से नाम बोर्डिंग स्कूल में स्थानांतरित हो गए थे, और वहाँ पुराने कॉलेज मज़रीन की तरह चार राष्ट्रों को अलग करने के लिए उनका उपयोग किया जाता था। प्रत्येक छात्रा भोजन कक्ष के उस कोने के अनुसार इन चार राष्ट्रों में से एक से संबंधित होती थी जहाँ वह भोजन करती थी। एक दिन महाधर्माध्यक्ष अपने धार्मिक दौरे पर थे, तभी उन्होंने देखा कि सुनहरे बालों वाली एक प्यारी सी छोटी लड़की उस कक्षा में प्रवेश कर रही है जिससे वे गुजर रहे थे।

उन्होंने अपने पास खड़ी एक अन्य छात्रा से पूछा, जो गुलाबी गालों वाली एक आकर्षक सांवली लड़की थी:

"कोण है वोह?"

"वह एक मकड़ी है, महामहिम।"

“अरे! और वो उधर वाला?”

वह एक क्रिकेट खिलाड़ी है।

और वो वाला?

वह एक कैटरपिलर है।

“सच में! और आप?”

“मैं एक लकड़ी का कीड़ा हूँ, महामहिम।”

इस तरह के हर घर की अपनी कुछ खासियतें होती हैं। इस सदी की शुरुआत में, इकोएन उन सख्त और शालीन जगहों में से एक था जहाँ युवतियाँ लगभग राजसी साये में अपना बचपन बिताती थीं। इकोएन में, पवित्र संस्कार के जुलूस में अपनी जगह बनाने के लिए, कुंवारी कन्याओं और फूल बेचने वाली कन्याओं के बीच अंतर किया जाता था। वहाँ "मंच" और "धूपदानी" भी होते थे—पहले वाले मंच की डोरियाँ पकड़ते थे, और दूसरे पवित्र संस्कार के सामने धूप लेकर चलते थे। फूल स्वाभाविक रूप से फूल बेचने वाली कन्याओं के होते थे। चार "कुंवारी

कन्याएँ" आगे चलती थीं। उस महान दिन की सुबह, छात्रावास में यह सवाल सुनना आम बात थी, "कुंवारी कौन है?"

मैडम कैम्पन अक्सर सात साल की एक "छोटी बच्ची" द्वारा सोलह साल की एक "बड़ी लड़की" से कही गई इस बात को उद्धृत किया करती थीं, जो जुलूस के आगे चल रही थी, जबकि वह छोटी बच्ची पीछे रह गई थी, "तुम कुंवारी हो, लेकिन मैं नहीं।"

V. ध्यान भटकाने वाली चीजें

भोजन कक्ष के द्वार के ऊपर यह प्रार्थना, जिसे "श्वेत पैटरनोस्टर" कहा जाता था और जिसमें लोगों को सीधे स्वर्ग ले जाने का गुण था, बड़े काले अक्षरों में अंकित थी:—

“छोटा सफेद पैटरनोस्टर, जिसे ईश्वर ने बनाया, जिसे ईश्वर ने कहा, जिसे ईश्वर ने स्वर्ग में स्थापित किया। शाम को जब मैं सोने गया, तो मैंने अपने बिस्तर पर तीन स्वर्गदूतों को बैठे पाया, एक पैरों के पास, दो सिर के पास, बीच में पवित्र कुंवारी मरियम, जिन्होंने मुझे बिना किसी संकोच के लेट जाने को कहा। ईश्वर मेरे पिता हैं, पवित्र कुंवारी मेरी माता हैं, तीनों प्रेरित मेरे भाई हैं, तीनों कुंवारी मेरी बहनें हैं। जिस वस्त्र में ईश्वर का जन्म हुआ, वह मेरे शरीर को ढके हुए है; मेरे सीने पर संत मार्गरेट का क्रॉस अंकित है। कुंवारी मरियम घास के मैदानों में ईश्वर के लिए रोते हुए चल रही थीं, तभी उनकी मुलाकात संत जॉन से हुई। ‘महोदय संत जॉन, आप कहाँ से आए हैं?’ ‘मैं एवे सैलस से आया हूँ।’ ‘आपने ईश्वर को नहीं देखा; वह कहाँ हैं?’ ‘वह क्रूस के वृक्ष पर हैं, उनके पैर लटक रहे हैं, उनके हाथ कीलों से जड़े हैं, उनके सिर पर सफेद कांटों की एक छोटी टोपी है।’ जो कोई भी इसे शाम को तीन बार और सुबह तीन बार कहेगा, उसे अंत में स्वर्ग प्राप्त होगा।”

1827 में, पेंट की तीन परतों के नीचे दीवार से यह विशिष्ट प्रार्थना गायब हो गई थी। वर्तमान समय में, यह उन कई लोगों की यादों से धीरे-धीरे मिट रही है जो तब छोटी लड़कियां थीं और अब बूढ़ी महिलाएं हैं।

दीवार पर टंगी एक विशाल क्रूस की आकृति इस भोजन कक्ष की सजावट को पूरा करती थी, जिसका एकमात्र दरवाजा, जैसा कि हमने शायद पहले भी बताया है, बगीचे की ओर खुलता था। दो संकरी मेजें, जिनके दोनों ओर दो-दो लकड़ी की बेंचें थीं, भोजन कक्ष के एक छोर से दूसरे छोर तक दो लंबी समानांतर रेखाएँ बनाती थीं। दीवारें सफेद थीं, मेजें काली; ये दो शोक के रंग ही मठों में एकमात्र विविधता थे। भोजन सादा था, और बच्चों का भोजन भी बहुत कम था। मांस और सब्जियों का एक ही व्यंजन, या नमकीन मछली—यही उनका विलासितापूर्ण भोजन

[illegible]

[illegible] Nemo regulas, seu constitutiones nostras, externis communicabit.

[illegible]

या सेब को जितना हो सके छुपाता है। जब कोई रात के खाने से पहले बिस्तर पर पर्दा डालने के लिए ऊपर जाता है, तो उन्हें अपने तकिए के नीचे दबा लेता है और रात में उन्हें बिस्तर पर खाता है, और जब ऐसा नहीं कर सकता, तो उन्हें कोठरी में खाता है।” यह उनकी सबसे बड़ी विलासिताओं में से एक थी।

एक बार—यह उस समय की बात है जब आर्कबिशप कॉन्वेंट में आए थे—मोंटमोरेंसी परिवार से जुड़ी एक युवती, मैडमोजेल बुशार्ड ने शर्त लगाई कि वह एक दिन की छुट्टी मांगेगी—जो इतने कठोर समुदाय में एक बहुत बड़ी बात थी। शर्त मान ली गई, लेकिन शर्त लगाने वालों में से किसी को भी विश्वास नहीं था कि वह ऐसा करेगी। जब वह क्षण आया, जब आर्कबिशप विद्यार्थियों के सामने से गुजर रहे थे, मैडमोजेल बुशार्ड ने अपने साथियों के अवर्णनीय भय के बीच, पंक्तियों से बाहर कदम रखा और कहा, "महामहिम, एक दिन की छुट्टी।" मैडमोजेल बुशार्ड लंबी, खिलखिलाती हुई और दुनिया के सबसे सुंदर गुलाबी चेहरे वाली थीं। एम. डी क्वेलन मुस्कुराए और बोले, "क्या, मेरी प्यारी बच्ची, एक दिन की छुट्टी! अगर तुम चाहो तो तीन दिन। मैं तुम्हें तीन दिन की छुट्टी देता हूँ।" मठाध्यक्षा कुछ नहीं कर सकीं; आर्कबिशप बोल चुके थे। मठ में दहशत का माहौल था, लेकिन शिष्य को खुशी का अनुभव हुआ। इसका प्रभाव कल्पनायतः समझा जा सकता है।

हालांकि, यह कठोर मठ इतना अच्छी तरह से घिरा हुआ नहीं था कि बाहरी दुनिया की हलचल, नाटक और यहां तक कि रोमांस भी अंदर न आ सकें। इसे साबित करने के लिए, हम यहां एक वास्तविक और निर्विवाद तथ्य का उल्लेख करेंगे, जिसका हमारी कहानी से कोई सीधा संबंध नहीं है और न ही उससे कोई जुड़ाव है। हम इस तथ्य का उल्लेख पाठक के मन में मठ की पूरी छवि प्रस्तुत करने के लिए कर रहे हैं।

इसी समय मठ में एक रहस्यमयी महिला रहती थी, जो नन नहीं थी। उसका बहुत सम्मान किया जाता था और उसे मैडम अल्बर्टीन कहकर पुकारा जाता था। उसके बारे में इतना ही पता था कि वह पागल थी और दुनिया में उसे मृत मान लिया गया था। कहा जाता था कि इस इतिहास के पीछे एक भव्य विवाह के लिए आवश्यक भाग्य की व्यवस्था छिपी हुई थी।

यह स्त्री, जिसकी उम्र लगभग तीस वर्ष थी, सांवली और देखने में ठीक-ठाक थी, उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखों में एक अजीब सी चमक थी। क्या वह देख सकती थी? इस

बारे में कुछ संदेह था। वह चलने की बजाय सरकती हुई चलती थी, कभी बोलती नहीं थी; यह भी ठीक से पता नहीं था कि वह साँस ले रही थी या नहीं। उसकी नाक के नथुने पीले और सिकुड़े हुए थे, मानो आखिरी साँस छोड़ने के बाद मुरझाए हों। उसके हाथ को छूना बर्फ को छूने जैसा था। उसमें एक अजीब सी प्रेत जैसी सुंदरता थी। जहाँ भी वह जाती, लोग ठंड से काँप उठते। एक दिन एक बहन ने उसे जाते हुए देखकर दूसरी बहन से कहा, "वह तो मरी हुई औरत जैसी लगती है।" "शायद वह मरी हुई ही है," दूसरी ने जवाब दिया।

मैडम अल्बर्टीन के बारे में सौ किस्से प्रचलित थे। यह विद्यार्थियों की असीम जिज्ञासा के कारण था। चैपल में एक गैलरी थी जिसे 'लोइल डे बोउफ' कहा जाता था। इसी गैलरी में, जिसमें केवल एक गोलाकार खांचा था, मैडम अल्बर्टीन प्रार्थनाएं सुनती थीं। वह हमेशा इसमें अकेली ही बैठती थीं क्योंकि यह गैलरी पहली मंजिल पर होने के कारण, उपदेशक या पुजारी को देखा जा सकता था, जो ननों के लिए वर्जित था। एक दिन उपदेश मंच पर एक उच्च पदस्थ युवा पुजारी, एम. ले ड्यूक डे रोहन, जो फ्रांस के कुलीन थे, 1815 में प्रिंस डे लियोन रहते हुए रेड मस्कटियर्स के अधिकारी थे, और बाद में 1830 में कार्डिनल और बेसानकॉन के आर्कबिशप के रूप में उनका निधन हो गया, उपस्थित थे। यह पहली बार था जब एम. डे रोहन ने पेटिट-पिकपस कॉन्वेंट में उपदेश दिया था। मैडम अल्बर्टीन आमतौर पर उपदेशों और प्रार्थनाओं के दौरान पूर्ण शांति और स्थिरता बनाए रखती थीं। उस दिन, जैसे ही उनकी नज़र एम. डी रोहन पर पड़ी, वे आधी उठीं और चैपल की खामोशी के बीच ऊँची आवाज़ में बोलीं, “आह! ऑगस्टे!” पूरा समुदाय आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगा, उपदेशक ने भी अपनी आँखें उठाईं, लेकिन मैडम अल्बर्टीन फिर से अपनी गतिहीनता में लौट आईं। बाहरी दुनिया से एक साँस, जीवन की एक चमक, उस ठंडे और निर्जीव चेहरे पर एक पल के लिए गुजरी और फिर गायब हो गई, और वह पागल औरत फिर से एक लाश बन गई।

लेकिन उन दो शब्दों ने मठ में बोलने का सौभाग्य प्राप्त सभी लोगों को कानाफूसी करने पर मजबूर कर दिया। उस "आह! ऑगस्टे!" में कितनी बातें छिपी थीं! क्या-क्या रहस्य छिपे थे! एम. डी रोहन का नाम सचमुच ऑगस्टे था। यह स्पष्ट था कि मैडम अल्बर्टीन उच्च कोटि के समाज से थीं, क्योंकि वह एम. डी रोहन को जानती थीं, और उनका स्वयं का दर्जा भी उच्चतम था, क्योंकि वह इतने बड़े स्वामी के बारे में इतनी आत्मीयता से बात करती थीं, और उनके बीच किसी

प्रकार का संबंध था, शायद रिश्तेदारी का, लेकिन किसी भी मामले में बहुत घनिष्ठ संबंध था, क्योंकि वह उनका उपनाम जानती थीं।

दो बेहद सख्त मिजाज डचेस, श्रीमती डी चोइसुल और डी सेरेंट, अक्सर उस समुदाय में आती थीं, जहाँ वे निस्संदेह 'मैग्नेट्स मुलिएरेस' के विशेषाधिकार के बल पर प्रवेश करती थीं, और बोर्डिंग स्कूल में भारी दहशत पैदा करती थीं। जब ये दोनों बूढ़ी औरतें वहाँ से गुजरती थीं, तो सभी बेचारी लड़कियाँ काँप उठती थीं और अपनी निगाहें झुका लेती थीं।

इसके अलावा, एम. डी रोहन, जो स्वयं भी पूरी तरह अनजान थे, स्कूली छात्राओं के आकर्षण का केंद्र थे। उस समय वे बिशप पद की प्रतीक्षा करते हुए पेरिस के आर्कबिशप के विकर-जनरल नियुक्त हुए थे। पेटिट-पिकपस की ननों के चैपल में धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए वे अक्सर आते थे। सर्ज के पर्दे के कारण कोई भी युवती उन्हें देख नहीं पाती थी, लेकिन उनकी आवाज़ मधुर और कुछ तीखी थी, जिसे वे पहचानती और समझती थीं। वे एक मस्केटियर थे, और तब वे बहुत नखरेबाज़ थे, उनके सुंदर भूरे बाल सिर के चारों ओर एक सुंदर लच्छे में बंधे होते थे, वे शानदार मोइरे का एक चौड़ा कमरबंद पहनते थे, और उनका काला चोगा दुनिया में सबसे सुंदर ढंग से कटा हुआ था। सोलह वर्ष की इन सभी छात्राओं की कल्पनाओं में उनका एक विशेष स्थान था।

बाहर की कोई भी आवाज़ मठ के अंदर नहीं आती थी। लेकिन एक साल ऐसा भी आया जब बांसुरी की आवाज़ अंदर तक पहुँच गई। यह एक ऐतिहासिक घटना थी, और उस समय वहाँ पढ़ने वाली लड़कियाँ आज भी इसे याद करती हैं।

यह एक बांसुरी थी जो मोहल्ले में बजती थी। यह बांसुरी हमेशा एक ही धुन बजाती थी, एक ऐसी धुन जो आजकल बहुत दूर सुनाई देती है—"मेरी ज़ेटुल्बे, मेरी आत्मा पर राज करो,"—और यह दिन में दो-तीन बार सुनाई देती थी। युवतियाँ घंटों इसे सुनती रहती थीं, उनकी माताएँ इससे परेशान रहती थीं, उनके दिमाग में तरह-तरह के विचार आते रहते थे, और सजाओं की बौछार होती रहती थी। यह सिलसिला कई महीनों तक चला। सभी लड़कियाँ उस अनजान संगीतकार से कमोबेश प्यार करती थीं। हर लड़की सपना देखती थी कि वह ज़ेटुल्बे है। बांसुरी की आवाज़ रू ड्रोइट-मुर की दिशा से आती थी; और वे उस "युवक" को देखने के लिए, उसकी एक झलक पाने के लिए, भले ही एक पल के लिए ही सही, कुछ भी देने को तैयार थीं, जो इतनी मधुरता से बांसुरी बजाता था, और जो निस्संदेह

एक ही समय में इन सभी आत्माओं को झकझोर देता था। कुछ लोग पिछले दरवाजे से भाग निकले और रुए ड्रोइट-मुर की तरफ तीसरी मंजिल पर चढ़ गए, ताकि दरारों से झाँक सकें। नामुमकिन! एक ने तो यहाँ तक हिम्मत दिखाई कि उसने अपना हाथ जाली में से बाहर निकाला और अपना सफेद रुमाल लहराया। दो और भी साहसी थे। उन्होंने छत पर चढ़ने का रास्ता खोज निकाला और अपनी जान जोखिम में डालकर आखिरकार उस "युवक" को देख लिया। वह एक बूढ़ा प्रवासी सज्जन था, अंधा और कंगाल, जो समय बिताने के लिए अपनी अटारी में बांसुरी बजा रहा था।

VI. छोटा मठ

पेटिट-पिकपस के इस परिसर में तीन बिल्कुल अलग-अलग इमारतें थीं—बड़ी कॉन्वेंट, जहाँ नन रहती थीं; बोर्डिंग स्कूल, जहाँ छात्र रहते थे; और अंत में, जिसे छोटी कॉन्वेंट कहा जाता था। यह एक बगीचे वाली इमारत थी, जिसमें विभिन्न संप्रदायों की उम्रदराज ननें रहती थीं, जो क्रांति में नष्ट हुए मठों की अवशेष थीं; सभी समुदायों और सभी संभावित विविधताओं के काले, भूरे और सफेद रंग के मिश्रण का एक संगम; जिसे, यदि शब्दों का ऐसा संयोजन उचित हो, तो एक प्रकार की बहुरंगी कॉन्वेंट कहा जा सकता है।

जब साम्राज्य की स्थापना हुई, तो इन सभी गरीब, बूढ़ी, बिखरी हुई और निर्वासित महिलाओं को बर्नार्डिन-बेनेडिक्टिन भिक्षुओं की शरण में आने की अनुमति दी गई। सरकार उन्हें थोड़ी पेंशन देती थी और पेटिट-पिकपस की स्त्रियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। यह एक अनोखी अव्यवस्था थी। हर कोई अपने-अपने नियमों का पालन करता था। कभी-कभी बोर्डिंग स्कूल के विद्यार्थियों को मनोरंजन के तौर पर उनसे मिलने की अनुमति दी जाती थी; इसका परिणाम यह हुआ कि उन सभी युवा स्मृतियों में अन्य स्मृतियों के साथ-साथ मदर सेंट-बेज़ाइल, मदर सेंट-स्कोलास्टिक और मदर जैकब की स्मृति भी बसी हुई है।

इन शरणार्थियों में से एक को लगभग घर जैसा ही लगा। वह सैंटे-ऑरे की एक नन थीं, जो अपने संप्रदाय की एकमात्र जीवित सदस्य थीं। अठारहवीं शताब्दी की शुरुआत में, सैंटे-ऑरे की महिलाओं का प्राचीन मठ पेटिट-पिकपस के इसी घर में स्थित था, जो बाद में मार्टिन वेर्गा के बेनेडिक्टिन मठों का हो गया। यह पवित्र महिला, अपने संप्रदाय के भव्य वस्त्र, जो कि लाल रंग के स्कैपुलरी वाला सफेद चोला था, पहनने के लिए बहुत गरीब थीं, इसलिए उन्होंने श्रद्धापूर्वक उसे एक छोटी सी गुड़िया को पहना दिया, जिसे वह गर्व से प्रदर्शित करती थीं और जिसे उन्होंने अपनी मृत्यु के समय मठ को दान कर दिया। 1824 में, इस संप्रदाय की केवल एक नन बची थीं; आज, केवल एक गुड़िया ही बची है।

इन सम्मानित माताओं के अलावा, मैडम अल्बर्टीन जैसी कुछ वरिष्ठ सामाजिक महिलाओं ने मठाध्यक्षा से छोटे मठ में रहने की अनुमति प्राप्त कर ली थी। इनमें मैडम ब्यूफोर्ट डी'हॉटपोल और मार्क्विज़ डुफ्रेस्ने शामिल थीं। एक अन्य महिला मठ में केवल अपनी नाक साफ करते समय निकलने वाली तेज़ आवाज़ के कारण ही जानी जाती थीं। विद्यार्थी उन्हें मैडम वकारमिनी (शोरगुल) कहकर पुकारते थे।

लगभग सन् 1820 या 1821 में, मैडम डी जेनलिस, जो उस समय 'एल'इंट्रेपिडे' नामक एक छोटी पत्रिका का संपादन कर रही थीं, ने पेटिट-पिकपस कॉन्वेंट में लेडी रेजिडेंट के रूप में प्रवेश करने की अनुमति मांगी। ड्यूक डी'ऑरलियन्स ने उनकी सिफारिश की थी। मठ में हलचल मच गई; सभी ननें परेशान थीं; मैडम डी जेनलिस ने प्रेम कहानियां लिखी थीं। लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें प्रेम कहानियों से सबसे पहले घृणा थी, और तब तक वे भक्ति की चरम अवस्था में पहुँच चुकी थीं। ईश्वर और राजकुमार की कृपा से, उन्होंने प्रवेश कर लिया। छह या आठ महीने बाद, उन्होंने यह कहकर प्रस्थान किया कि बगीचे में छाया नहीं थी। ननें बहुत प्रसन्न हुईं। बहुत वृद्ध होने के बावजूद, वे अब भी वीणा बजाती थीं, और बहुत कुशलता से बजाती थीं।

जब वह चली गई तो उसने अपनी कोठरी में अपनी छाप छोड़ दी। मैडम डी जेनलिस अंधविश्वासी और लैटिन भाषा की जानकार थीं। ये दो शब्द उनके बारे में काफी हद तक सटीक जानकारी देते हैं। कुछ साल पहले तक, उनकी कोठरी में एक छोटी सी अलमारी के अंदर, जिसमें वह अपने चांदी के बर्तन और गहने बंद करके रखती थीं, पीले कागज पर लाल स्याही से लैटिन भाषा में उनकी खुद की लिखी ये पाँच पंक्तियाँ अभी भी देखी जा सकती थीं, जिनके बारे में उनका मानना था कि उनमें लुटेरों को डराने का गुण था:—

[illegible]: [illegible], [illegible]; [illegible], [illegible]; [illegible], [illegible]

छठी शताब्दी के लैटिन भाषा के इन छंदों से यह प्रश्न उठता है कि क्या कलवारी के दो चोरों के नाम, जैसा कि आम तौर पर माना जाता है, डिस्मास और गेस्टास थे, या डिस्मास और गेस्मास। वर्तनी की इस गलती ने विस्काउंट डी

गेस्टास द्वारा पिछली शताब्दी में दुष्ट चोर के वंशज होने के दावे को भ्रमित कर दिया होगा। हालांकि, इन छंदों से जुड़ा उपयोगी सद्गुण हॉस्पिटेलर्स संप्रदाय में आस्था का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

मठ का गिरजाघर, जिसे इस प्रकार बनाया गया था कि वह बड़े मठ को बोर्डिंग स्कूल से एक मजबूत किलेबंदी की तरह अलग करता था, निश्चित रूप से बोर्डिंग स्कूल, बड़े मठ और छोटे मठ के लिए साझा था। आम जनता के लिए सड़क पर एक प्रकार का गुप्त प्रवेश द्वार था। लेकिन व्यवस्था इस प्रकार की गई थी कि मठ के निवासी बाहर के किसी भी व्यक्ति का चेहरा नहीं देख सकते थे। कल्पना कीजिए एक ऐसे गिरजाघर की जिसका गायन कक्ष एक विशाल हाथ में जकड़ा हुआ है, और इस प्रकार मोड़ा गया है कि यह सामान्य गिरजाघरों की तरह वेदी के पीछे एक विस्तार नहीं, बल्कि पुजारी के दाहिनी ओर एक प्रकार का हॉल या एकांत तहखाना बनाता है; मान लीजिए कि यह हॉल सात फीट ऊंचे पर्दे से बंद है, जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं; उस पर्दे की छाया में, बाईं ओर गायक मंडली की ननों, दाईं ओर स्कूली छात्राओं, और सबसे नीचे की ओर आम बहनें और नौसिखिए ननों को लकड़ी की बेंचों पर एक के ऊपर एक बैठाएँ, और आपको पेटिट-पिकपस की ननों की धार्मिक सेवा में भाग लेने का कुछ अंदाजा हो जाएगा। वह गुफा, जिसे गायक मंडली कहा जाता था, एक गलियारे के माध्यम से मठ से जुड़ी हुई थी। चर्च में बगीचे से रोशनी आती थी। जब ननें उन सेवाओं में उपस्थित होती थीं जहाँ उनके नियम के अनुसार मौन रहना अनिवार्य था, तो जनता को उनकी उपस्थिति का पता केवल बेंचों की तह वाली सीटों के शोरगुल से ऊपर-नीचे होने से चलता था।

VII. इस अंधकार की कुछ परछाइयाँ

सन् 1819 से 1825 के बीच के छह वर्षों के दौरान, पेटिट-पिकपस की मठाध्यक्षा मैडमोजेल डी ब्लेम्यूर थीं, जिनका धार्मिक नाम मदर इनोसेंट था। वे सेंट-बेनोइट संप्रदाय के संतों के जीवन पर पुस्तक लिखने वाली मार्गुराइट डी ब्लेम्यूर के परिवार से थीं। उन्हें पुनः चुना गया था। लगभग साठ वर्ष की वे एक छोटी कद-काठी की, मोटी महिला थीं, जिनके बारे में पहले उद्धृत पत्र में लिखा है कि वे "टूटे हुए बर्तन की तरह गाती थीं"; इसके अलावा, वे एक उत्कृष्ट महिला थीं और पूरे मठ में एकमात्र हंसमुख महिला थीं, और इसी कारण से सब उन्हें पूजते थे। वे विद्वान, ज्ञानी, बुद्धिमान, सक्षम, इतिहास में असाधारण रूप से निपुण, लैटिन, ग्रीक और हिब्रू की पारंगत थीं, और एक नन की तुलना में एक नन की तरह अधिक थीं।

उप-प्रायरी एक वृद्ध स्पेनिश नन, मदर सिनेरेस थीं, जो लगभग अंधी थीं।

गायन करने वाली माताओं में सबसे सम्मानित थीं मदर सैंट-होनोरिन; कोषाध्यक्ष, मदर सैंट-गर्ट्रूड, नौसिखियों की मुख्य स्वामिनी; मदर-सेंट-एंज, सहायक स्वामिनी; मदर एनोनसिएशन, चर्च की देखभाल करने वाली; मदर सेंट-ऑगस्टिन, नर्स, जो मठ में एकमात्र द्वेषपूर्ण थीं; फिर मदर सैंट-मेचटिल्डे (मैडेमोइसेल गौवेन), बहुत युवा और सुरीली आवाज वाली; मदर डेस एंगेस (मैडेमोइसेल ड्रौएट), जो फिल्स-डियू के मठ में और गिसोर्स और मैग्नी के बीच स्थित डू ट्रेजर के मठ में रह चुकी थीं। मदर सेंट-जोसेफ (मैडेमोइसेल डी कोगोलुडो), मदर सेंट-एडेलेड (मैडेमोइसेल डी औवर्नी), मदर मिसरिकॉर्ड (मैडेमोइसेल डी सिफुएंटेस, जो तपस्या का विरोध नहीं कर सकीं), मदर कम्पैशन (मैडेमोइसेल डी ला मिल्टियर, जिन्होंने नियम की अवहेलना करते हुए साठ वर्ष की आयु में पद ग्रहण किया और बहुत धनी थीं); मदर प्रोविडेंस (मैडेमोइसेल डी लौडिनियर), मदर प्रेजेंटेशन (मैडेमोइसेल डी सिगुएंजा), जो 1847 में प्रायरस थीं; और अंत में, मदर सेंट-सेलिग्ने (मूर्तिकार सेराची की बहन), जो पागल हो गईं; मदर सेंट-चैंटल (मैडेमोइसेल डी सुजोन), जो पागल हो गईं।

उनमें से सबसे सुंदर लड़कियों में एक तेईस वर्षीय आकर्षक लड़की भी थी, जो आइल डी बॉर्बन की रहने वाली थी, शेवेलियर रोज की वंशज थी, जिसका नाम मैडमोजेल रोज था और जिसे मदर असम्प्शन कहा जाता था।

गायन और गायन मंडली की ज़िम्मेदारी संभालने वाली मदर सैंटे-मेक्टिल्डे को इस क्षेत्र की छात्राओं का उपयोग करना बहुत पसंद था। वह आमतौर पर सात छात्राओं को एक साथ लेती थीं, जिनकी उम्र दस से सोलह वर्ष के बीच होती थी, अलग-अलग आवाज़ों और कद-काठी की। वह उन्हें खड़े होकर, एक पंक्ति में, उम्र के अनुसार सबसे छोटी से सबसे बड़ी तक, अगल-बगल खड़ा करके गाने को कहती थीं। यह दृश्य देखने में युवा छात्राओं की एक बांसुरी जैसा लगता था, मानो देवदूतों से बनी एक जीवंत बांसुरी हो।

जिन ननों को विद्वान सबसे अधिक प्यार करते थे, उनमें सिस्टर यूफ्रेसी, सिस्टर सेंट-मार्गुराइट, वृद्धावस्था में चल रही सिस्टर सेंट-मार्था और सिस्टर सेंट-मिशेल शामिल थीं, जिनकी लंबी नाक उन्हें हंसाती थी।

ये सभी महिलाएं बच्चों के प्रति कोमल थीं। ननें केवल स्वयं के प्रति ही कठोर थीं। विद्यालय के अलावा कहीं भी आग नहीं जलाई जाती थी, और मठ के भोजन की तुलना में यहाँ का भोजन उत्तम था। इसके अलावा, वे अपने विद्यार्थियों का विशेष ध्यान रखती थीं। केवल एक ही बात थी, जब कोई बच्चा किसी नन के पास से गुजरता और उससे कुछ कहता, तो नन कभी उत्तर नहीं देती थी।

मौन के इस नियम का यह प्रभाव पड़ा था कि पूरे मठ में, मनुष्यों से वाणी छीन ली गई थी और निर्जीव वस्तुओं को दे दी गई थी। कभी चर्च की घंटी बोलती थी, कभी माली की घंटी। द्वारपाल के बगल में रखी एक बहुत ही मधुर घंटी, जिसकी अलग-अलग ध्वनियाँ पूरे घर में सुनाई देती थीं, एक प्रकार के ध्वनि-संदेश की तरह थीं, जो भौतिक जीवन की सभी क्रियाओं का संकेत देती थीं, और आवश्यकता पड़ने पर घर के किसी भी निवासी को बैठक में बुलाती थीं। प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वस्तु की अपनी ध्वनि थी। मठाध्यक्षा की एक और एक ध्वनि थी, उप-मठाध्यक्षा की एक और दो ध्वनि थी। 65 की ध्वनि पाठ शुरू होने की घोषणा करती थी, इसलिए विद्यार्थी कभी "पाठ के लिए जाओ" नहीं कहते थे, बल्कि "65 पर जाओ" कहते थे। 44 मैडम डी जेनलिस का संकेत था। यह अक्सर सुनाई देता था। "C’est le diable a quatre,"—यह बिल्कुल दो है—निर्दयी लोग कहते थे। उन्नीस झटकों ने एक महान घटना की घोषणा की। यह "एकांत के द्वार" का खुलना था, लोहे

की एक भयानक चादर जिस पर कई बोल्ट लगे थे और जो केवल आर्कबिशप की उपस्थिति में ही अपने कब्जों पर घूमती थी।

जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, आर्कबिशप और माली को छोड़कर कोई भी पुरुष कॉन्वेंट में प्रवेश नहीं करता था। स्कूली छात्राओं ने दो अन्य लोगों को देखा: एक, पादरी, अब्बे बनेस, जो बूढ़े और बदसूरत थे, जिन्हें वे गाना गाने की जगह पर एक जाली के माध्यम से देख सकती थीं; दूसरे, चित्रकार, एम. एंसिआक्स, जिन्हें उस पत्र में, जिसकी कुछ पंक्तियाँ हमने पढ़ी हैं, "एम. एंसिआट" कहा गया है और "एक भयानक बूढ़ा कुबड़ा" बताया गया है।

यह स्पष्ट हो जाएगा कि इन सभी व्यक्तियों का चयन सावधानीपूर्वक किया गया था।

यह घर कुछ ऐसा ही विचित्र था।

VIII. पत्थरों के दिलों के बाद

इसके नैतिक पहलू का वर्णन करने के बाद, संक्षेप में इसकी भौतिक संरचना का वर्णन करना उपयोगी होगा। पाठक को इसका कुछ अंदाजा तो पहले से ही है।

पेटिट-पिकपस-सैंटे-एंटोइन का कॉन्वेंट लगभग पूरे विशाल समलम्ब चतुर्भुज को घेरे हुए था, जो रू पोलोनसेउ, रू ड्रोइट-मुर, रू पेटिट-पिकपस और अप्रयुक्त गली (जिसे पुराने नक्शों में रू औमारैस कहा जाता था) के चौराहे से बना था। ये चारों सड़कें इस समलम्ब चतुर्भुज को खाई की तरह घेरे हुए थीं। कॉन्वेंट में कई इमारतें और एक बगीचा था। मुख्य इमारत, अपने संपूर्ण रूप में, संकर निर्माणों का एक संयोजन थी, जो ऊपर से देखने पर, जमीन पर बिछे एक फांसी के तख्ते की सटीक रूपरेखा प्रस्तुत करती थी। फांसी के तख्ते की मुख्य भुजा रू ड्रोइट-मुर के उस हिस्से को घेरे हुए थी जो रू पेटिट-पिकपस और रू पोलोनसेउ के बीच स्थित था; छोटी भुजा एक ऊँचा, धूसर, कठोर जालीदार मुखौटा था जो रू पेटिट-पिकपस की ओर था। गाड़ी प्रवेश द्वार संख्या 62 इसकी अंतिम सीमा को दर्शाता था। इस अग्रभाग के मध्य में एक नीचा, मेहराबदार दरवाजा था, जो धूल और राख से सफेद पड़ गया था, जहाँ मकड़ियाँ अपने जाले बुनती थीं, और जो केवल रविवार को एक या दो घंटे के लिए, और कभी-कभार ही खुलता था, जब किसी नन का ताबूत मठ से बाहर जाता था। यह गिरजाघर का सार्वजनिक प्रवेश द्वार था। फांसी के तख्ते के कोने में एक वर्गाकार हॉल था जिसका उपयोग नौकरों के हॉल के रूप में किया जाता था, और जिसे ननें "भोजन कक्ष" कहती थीं। मुख्य भुजा में माताओं, बहनों और नौसिखियों के कक्ष थे। छोटी भुजा में रसोईघर, भोजन कक्ष, और उसके पीछे गलियारा और गिरजाघर थे। द्वार संख्या 62 और बंद औमारैस लेन के कोने के बीच स्कूल था, जो बाहर से दिखाई नहीं देता था। समलंब चतुर्भुज का शेष भाग बगीचा बना हुआ था, जो रू पोलोनसेउ के स्तर से काफी नीचे था, जिसके कारण अंदर की दीवारें बाहर की तुलना में बहुत ऊंची थीं। थोड़ा मेहराबदार इस बगीचे के केंद्र में, एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर, एक नुकीला और शंकु के आकार का सुंदर देवदार का पेड़ था, जिससे ढाल के शिखर की तरह चार बड़ी गलियां निकलती थीं, और इन गलियों की शाखाओं के बीच दो-दो करके आठ छोटी गलियां थीं। इस प्रकार, यदि

घेरा गोलाकार होता, तो गलियों की ज्यामितीय योजना एक पहिये पर रखे क्रॉस के समान होती। चूंकि सभी गलियां बगीचे की अनियमित दीवारों में समाप्त होती थीं, इसलिए उनकी लंबाई असमान थी। उनके किनारों पर करौंदे की झाड़ियां लगी हुई थीं। नीचे, रू ड्रोइट-मुर के कोने पर स्थित पुराने मठ के खंडहरों से, औमारैस लेन के कोने पर स्थित छोटे मठ के घर तक, ऊंचे चिनार के पेड़ों की एक गली जाती थी। छोटे कॉन्वेंट के सामने एक छोटा सा बगीचा हुआ करता था। इसमें एक आंगन, अंदरूनी इमारतों द्वारा बने विभिन्न कोण, जेल की दीवारें, और रू पोलोनसेउ के दूसरी ओर फैली छतों की लंबी काली कतार को जोड़कर पाठक अपने लिए एक संपूर्ण छवि बना सकते हैं कि चालीस साल पहले पेटिट-पिकपस के बर्नार्डिन परिवार का घर कैसा था। यह पवित्र घर चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध टेनिस मैदान की सटीक जगह पर बनाया गया था, जिसे "ग्यारह हजार शैतानों का टेनिस मैदान" कहा जाता था।

इसके अलावा, ये सभी सड़कें पेरिस से भी अधिक प्राचीन थीं। ये नाम, ड्रोइट-मूर और औमारैस, बहुत प्राचीन हैं; इन नामों वाली सड़कें तो और भी कहीं अधिक प्राचीन हैं। औमारैस लेन को मौगौट लेन कहा जाता था; रू ड्रोइट-मूर को रू डेस एग्लांटियर्स कहा जाता था, क्योंकि ईश्वर ने पत्थर तराशने से पहले फूल खिलाए थे।

IX. एक सदी गिम्पे के अधीन

चूंकि हम इस बात का विवरण देने में लगे हैं कि पेटिट-पिकपस का मठ पूर्वकाल में कैसा था, और चूंकि हमने उस एकांत स्थान पर एक झलक दिखाने का साहस किया है, इसलिए पाठक हमें एक और छोटे से विषयांतर की अनुमति देंगे, जो इस पुस्तक से पूरी तरह से अलग है, लेकिन विशिष्ट और उपयोगी है, क्योंकि यह दर्शाता है कि मठ में अभी भी इसकी मूल आकृतियाँ मौजूद हैं।

छोटे से मठ में एक शत वर्षीय महिला रहती थी, जो फोंटेव्रॉल्ट के मठ से आई थी। क्रांति से पहले भी वह समाज में सक्रिय थी। वह लुई सोलहवें के शासनकाल में मुहरों के रक्षक रहे एम. डी मिरोमेस्निल और प्रेसिडेन्स डुप्लाट के बारे में बहुत बातें करती थी, जिनसे उसकी गहरी आत्मीयता थी। हर बहाने इन नामों का ज़िक्र करना उसे अच्छा लगता था और साथ ही साथ उसका अहंकार भी। वह फोंटेव्रॉल्ट के मठ के बारे में आश्चर्यजनक किस्से सुनाती थी—कि वह एक शहर जैसा था और मठ में सड़कें थीं।

वह पिकार्ड लहजे में बोलती थी, जिससे विद्यार्थी खुश हो जाते थे। हर साल, वह पूरी श्रद्धा से अपनी प्रतिज्ञाओं को दोहराती थी, और शपथ लेते समय वह पादरी से कहती थी, “मोंसिग्नोर सेंट-फ्रांकोइस ने इसे मोंसिग्नोर सेंट-जूलियन को दिया, मोंसिग्नोर सेंट-जूलियन ने इसे मोंसिग्नोर सेंट-यूसेबियस को दिया, मोंसिग्नोर सेंट-यूसेबियस ने इसे मोंसिग्नोर सेंट-प्रोकोपियस को दिया, इत्यादि; और इस प्रकार मैं इसे आपको देती हूँ, पिता जी।” और स्कूली छात्राएँ धीरे से हँसने लगतीं, अपनी भावनाओं को छिपाते हुए नहीं, बल्कि अपने घूंघट के नीचे; उनकी प्यारी सी दबी हुई हँसी, जिसे सुनकर उनकी मुखर माताएँ नाराज़ हो जातीं।

एक और अवसर पर, शतायु महिला कहानियां सुना रही थीं। उन्होंने कहा कि "जवानी में बर्नार्डिन भिक्षु मस्केटियरों से कम नहीं थे।" यह एक सदी थी जो उनके माध्यम से बोल रही थी, लेकिन यह अठारहवीं सदी थी। उन्होंने शैम्पेन और बरगंडी में क्रांति से पहले प्रचलित चार प्रकार की शराबों की प्रथा के बारे में बताया। जब कोई महान व्यक्ति, फ्रांस का कोई मार्शल, कोई

राजकुमार, कोई ड्यूक या कोई रईस बरगंडी या शैम्पेन के किसी शहर से गुजरता था, तो शहर के अधिकारी उनका अभिनंदन करने के लिए बाहर आते थे और उन्हें चांदी के चार गोंडोला भेंट करते थे जिनमें चार अलग-अलग प्रकार की शराब डाली जाती थी। पहले प्याले पर यह लिखा होता था, बंदर की शराब; दूसरे पर, शेर की शराब; तीसरे पर, भेड़ की शराब; चौथे पर, सूअर की शराब। ये चार किस्से शराबी के चार चरणों को दर्शाते हैं; पहला, नशा, जो स्फूर्ति देता है; दूसरा, जो चिड़चिड़ापन पैदा करता है; तीसरा, जो सुस्त कर देता है; और चौथा, जो क्रूरता पैदा करता है।

एक अलमारी में, ताला लगाकर, उसने एक रहस्यमयी वस्तु रखी हुई थी, जिसके बारे में वह बहुत सोचती थी। फोंटेव्रॉल्ट के नियम में इसकी कोई मनाही नहीं थी। वह इस वस्तु को किसी को नहीं दिखाती थी। वह खुद को कमरे में बंद कर लेती थी, जैसा कि उसके नियम में अनुमति थी, और जब भी वह उस वस्तु को देखना चाहती थी, तो खुद को छिपा लेती थी। अगर उसे गलियारे में किसी के कदमों की आहट सुनाई देती, तो वह अपने बूढ़े हाथों से जितनी जल्दी हो सके अलमारी को फिर से बंद कर लेती। जैसे ही कोई उससे उस वस्तु के बारे में पूछता, वह चुप हो जाती, जबकि उसे बात करना बहुत पसंद था। सबसे जिज्ञासु लोग उसकी चुप्पी से और सबसे दृढ़ निश्चयी लोग उसकी हठधर्मिता से चकित रह जाते थे। इस प्रकार, यह कॉन्वेंट में खाली बैठे या ऊब चुके सभी लोगों के लिए चर्चा का विषय बन गया। सौ साल की उस महिला का वह खजाना क्या हो सकता है, जो इतना कीमती और इतना गुप्त था? कोई पवित्र पुस्तक, शायद? कोई अनोखी माला? कोई प्रामाणिक अवशेष? वे अटकलों में खो गए। जब उस बेचारी बूढ़ी महिला की मृत्यु हुई, तो वे उसकी अलमारी की ओर शायद जरूरत से ज्यादा जल्दी दौड़े और उसे खोला। उन्हें वह वस्तु एक तिहरे लिनेन के कपड़े के नीचे मिली, मानो कोई पवित्र थाली हो। यह एक फाएंज़ा थाली थी जिस पर छोटे-छोटे प्रेम पात्रों को दर्शाया गया था, जिनका पीछा बड़े-बड़े सिरिंज लिए हुए दवा विक्रेता लड़के कर रहे थे। पीछा करने के दृश्य में चेहरे के भाव और हास्यपूर्ण मुद्राएँ भरपूर थीं। एक प्यारा सा छोटा प्रेम पात्र पहले ही बुरी तरह घायल हो चुका था। वह विरोध कर रहा था, अपने छोटे पंख फड़फड़ा रहा था और उड़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन नर्तक शैतानी अंदाज़ में हंस रहा था। नैतिक संदेश: प्रेम पर पेट दर्द का प्रकोप। यह थाली, जो बहुत ही अनोखी थी और संभवतः मोलियर को एक विचार देने

का श्रेय भी इसी था, सितंबर 1845 में भी मौजूद थी; यह बुलेवार्ड ब्यूमार्शाइस में एक कबाड़ व्यापारी के पास बिक्री के लिए थी।

इस भली-भांति बुजुर्ग महिला ने बाहर से किसी भी तरह की मुलाकात स्वीकार नहीं की क्योंकि, उसने कहा, "बैठक कक्ष बहुत अंधकारमय है।"

X. शाश्वत आराधना की उत्पत्ति

हालांकि, यह लगभग समाधि जैसा बैठक कक्ष, जिसका हमने एक आभास देने का प्रयास किया है, एक विशुद्ध स्थानीय विशेषता है जो अन्य मठों में इतनी ही गंभीरता से नहीं पाई जाती। विशेष रूप से, रू डू टेम्पल के मठ में, जो वास्तव में एक अन्य संप्रदाय से संबंधित था, काले शटरों को भूरे पर्दों से बदल दिया गया था, और बैठक कक्ष एक पॉलिश किए हुए लकड़ी के फर्श वाला एक भव्य हॉल था, जिसकी खिड़कियों पर सफेद मलमल के पर्दे लगे थे और जिसकी दीवारों पर तरह-तरह के फ्रेम लगे थे, जिनमें बिना नकाब वाली बेनेडिक्टिन नन का चित्र, चित्रित फूलों के गुलदस्ते और यहां तक कि एक तुर्क का सिर भी शामिल था।

टेंपल कॉन्वेंट के उसी बगीचे में वह प्रसिद्ध शाहबलूत का पेड़ खड़ा था, जो फ्रांस में सबसे बेहतरीन और सबसे बड़ा होने के लिए प्रसिद्ध था, और जिसने अठारहवीं शताब्दी के अच्छे लोगों के बीच "राज्य के सभी शाहबलूत के पेड़ों का जनक" होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।

जैसा कि हमने बताया है, टेंपल का यह कॉन्वेंट शाश्वत आराधना के बेनेडिक्टिन भिक्षुओं द्वारा बसाया गया था, जो कि सिटो पर निर्भर बेनेडिक्टिन भिक्षुओं से बिल्कुल भिन्न थे। शाश्वत आराधना का यह संप्रदाय बहुत प्राचीन नहीं है और इसकी स्थापना दो सौ वर्ष से अधिक पुरानी नहीं है। 1649 में, पेरिस के दो चर्चों, सेंट-सल्पिस और सेंट-जीन एन ग्रेव में, कुछ ही दिनों के अंतराल पर दो बार पवित्र संस्कार का अपमान किया गया। यह एक दुर्लभ और भयावह अपवित्रता थी जिसने पूरे शहर में हंगामा मचा दिया। सेंट-जर्मेन डेस प्रेज़ के प्रायर और विकर-जनरल ने अपने सभी पादरियों के एक भव्य जुलूस का आदेश दिया, जिसमें पोप के दूत ने भाग लिया। लेकिन यह प्रायश्चित दो संत महिलाओं, मैडम कोर्टिन, मार्क्विज़ डी बौक्स और कॉम्टेस डी शैतोविएक्स को संतुष्ट नहीं कर सका। वेदी के सबसे पवित्र संस्कार पर किया गया यह अत्याचार, यद्यपि अस्थायी था, इन पवित्र आत्माओं से दूर नहीं हुआ, और उन्हें लगा कि इसे केवल किसी महिला मठ में "शाश्वत आराधना" द्वारा ही कम किया जा सकता है। दोनों ने, एक ने 1652 में और दूसरे ने 1653 में, पवित्र संस्कार की नन, मदर कैथरीन डी बार को उल्लेखनीय राशि

दान की, ताकि इस धार्मिक उद्देश्य के लिए सेंट-बेनोइट के आदेश का एक मठ स्थापित किया जा सके; इस स्थापना के लिए पहली अनुमति मदर कैथरीन डी बार को सेंट-जर्मेन के एब्बे एम. डी मेट्ज़ द्वारा दी गई थी, "इस शर्त पर कि किसी भी महिला को तब तक प्रवेश नहीं दिया जाएगा जब तक कि वह मूलधन में तीन सौ लिवर आय, जो छह हजार लिवर के बराबर है, का योगदान न दे।" सेंट-जर्मेन के एब्बे के बाद, राजा ने पेटेंट पत्र जारी किए; और बाकी सभी चीजें, मठाधीश का चार्टर और शाही पत्र, 1654 में लेखा समिति और संसद द्वारा पुष्टि की गई थी।

पेरिस में पवित्र संस्कार की शाश्वत आराधना के बेनेडिक्टिन मठ की स्थापना की कानूनी मान्यता की उत्पत्ति इसी प्रकार हुई। उनका पहला मठ रू कैसेट में "एक नई इमारत" थी, जिसका निर्माण श्रीमती डी बौक्स और श्रीमती डी शैतोविएक्स के योगदान से हुआ था।

जैसा कि आगे देखा जाएगा, इस संप्रदाय को सिटो की बेनेडिक्टिन ननों के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। यह संप्रदाय सेंट-जर्मेन डेस प्रेज़ के एब्बे से जुड़ा हुआ था, ठीक उसी तरह जैसे सेक्रेड हार्ट की महिलाएं जेसुइट्स के जनरल से और सिस्टर्स ऑफ चैरिटी लाज़ारिस्ट्स के जनरल से जुड़ी हुई हैं।

यह पेटिट-पिकपस की बर्नार्डिन ननों से भी बिल्कुल अलग थी, जिनका आंतरिक भाग हमने अभी दिखाया है। 1657 में, पोप अलेक्जेंडर VII ने एक विशेष आदेश द्वारा, रू पेटिट-पिकपस की बर्नार्डिन ननों को पवित्र संस्कार की बेनेडिक्टिन ननों की तरह शाश्वत आराधना करने की अनुमति दी थी। लेकिन फिर भी दोनों संप्रदाय अलग-अलग रहे।

XI. पेटिट-पिकपस का अंत

पुनर्स्थापना काल की शुरुआत में, पेटिट-पिकपस का मठ जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था; यह इस धार्मिक संप्रदाय के व्यापक पतन का एक हिस्सा है, जो अठारहवीं शताब्दी के बाद अन्य सभी धार्मिक संप्रदायों की तरह लुप्त होता चला गया। ध्यान, प्रार्थना की तरह, मानवता की आवश्यकताओं में से एक है; लेकिन, क्रांति से प्रभावित हर चीज़ की तरह, यह भी रूपांतरित होगा, और सामाजिक प्रगति के विरोधी होने के बजाय, इसके समर्थक बन जाएगा।

पेटिट-पिकपस का घर तेज़ी से वीरान होता जा रहा था। 1840 में, छोटा कॉन्वेंट गायब हो गया था, स्कूल भी गायब हो गया था। वहाँ न तो कोई बूढ़ी औरतें थीं, न ही जवान लड़कियाँ; बूढ़ी औरतें मर चुकी थीं, जवान लड़कियाँ इस दुनिया से विदा हो चुकी थीं। वोलावेरुंट (अचानक गायब हो जाना)।

शाश्वत आराधना का नियम इतना कठोर है कि यह भय पैदा करता है, दीक्षा लेने से लोग पीछे हट जाते हैं, और मठ में कोई सदस्य भर्ती नहीं होता। 1845 में, यहाँ-वहाँ कुछ ननें तो थीं, लेकिन दीक्षा प्राप्त ननों की संख्या न के बराबर थी। चालीस वर्ष पूर्व, ननों की संख्या लगभग सौ थी; पंद्रह वर्ष पूर्व, उनकी संख्या अट्ठाईस से अधिक नहीं थी। आज उनकी संख्या कितनी है? 1847 में, मठाध्यक्षा युवा थीं, जो इस बात का संकेत था कि चयन का दायरा सीमित था। उनकी आयु चालीस वर्ष से कम थी। जैसे-जैसे संख्या घटती है, थकान बढ़ती जाती है, प्रत्येक की सेवा अधिक कष्टदायक होती जाती है; वह क्षण निकट आता दिखाई देने लगा जब संत-बेनोइट के भारी नियमों को संभालने के लिए केवल एक दर्जन झुके और दर्द से कराहते कंधे ही रह जाएँगे। यह बोझ असहनीय है, और यह अल्प लोगों और अधिक लोगों के लिए समान रहता है। यह भारी पड़ता है, यह कुचल देता है। इस प्रकार वे मर जाती हैं। जिस समय इस पुस्तक के लेखक पेरिस में रहते थे, उस समय दो ननों की मृत्यु हुई थी। एक की उम्र पच्चीस वर्ष थी, दूसरी की तेईस वर्ष। दूसरी जूलिया अल्पिनुला की तरह कह सकती है: “हिक जैसियो। विक्सी एनोस विगिन्टी एट ट्रेस।” इसी पतन के परिणामस्वरूप मठ ने लड़कियों की शिक्षा बंद कर दी।

इस असाधारण घर के सामने से गुज़रते समय, हम इसमें प्रवेश किए बिना और अपने साथ आए लोगों को, जो हमारी कहानी सुन रहे हैं, जीन वालजेन के दुखद इतिहास से अवगत कराए बिना नहीं रह सके। शायद कुछ लोगों को इससे कुछ लाभ हो। हम इस समुदाय में प्रवेश कर चुके हैं, जो उन पुरानी प्रथाओं से भरा है जो आज बिल्कुल नई लगती हैं। यह एक बंद बगीचा है, एक ऐसा बगीचा जो अंत में बंद हो जाता है। हमने इस अनोखी जगह के बारे में विस्तार से बात की है, लेकिन सम्मान के साथ, कम से कम जहाँ तक विस्तार और सम्मान संगत हैं। हम सब कुछ नहीं समझते, लेकिन हम किसी का अपमान नहीं करते। हम जोसेफ डी मैस्ट्रे की उस प्रशंसा से भी उतने ही दूर हैं, जिसने जल्लाद का अभिषेक करके अपनी बात समाप्त की, और वोल्टेयर के उस उपहास से भी, जो क्रूस का भी मज़ाक उड़ाता है।

वैसे, हम यह कह सकते हैं कि वोल्टेयर का यह कार्य तर्कहीन था; क्योंकि वोल्टेयर ने जीसस का बचाव उसी तरह किया होता जैसे उन्होंने कैलास का किया था; और जो लोग अलौकिक अवतारों को नकारते हैं, उनके लिए भी क्रूस का क्या अर्थ है? वह है हत्या किए गए ऋषि का।

उन्नीसवीं सदी में धार्मिक अवधारणा संकट के दौर से गुजर रही है। लोग कुछ बातों को भूल रहे हैं, और यह अच्छा ही है, बशर्ते कि भूलने की प्रक्रिया में वे यह बात भी सीख लें: मनुष्य के हृदय में कोई खालीपन नहीं होता। कुछ विध्वंस होते हैं, और यह अच्छा ही है, लेकिन इस शर्त पर कि उनके बाद पुनर्निर्माण भी हो।

इस बीच, आइए उन चीजों का अध्ययन करें जो अब नहीं हैं। उन्हें जानना आवश्यक है, कम से कम उनसे बचने के उद्देश्य से ही सही। अतीत की नकली चीजें झूठे नाम धारण कर लेती हैं और खुशी-खुशी खुद को भविष्य कहती हैं। यह भूत, यह अतीत, अपने ही पासपोर्ट को जाली बनाने में माहिर है। आइए हम इस जाल से सावधान रहें। आइए हम सतर्क रहें। अतीत का एक चेहरा है, अंधविश्वास, और एक मुखौटा है, पाखंड। आइए हम इस चेहरे का पर्दाफाश करें और इसके मुखौटे को उतार फेंकें।

जहां तक मठों का सवाल है, वे एक जटिल समस्या पेश करते हैं—सभ्यता का एक प्रश्न, जो उनकी निंदा करता है; स्वतंत्रता का एक प्रश्न, जो उनकी रक्षा करता है।

पुस्तक **VII.** कोष्ठक

I. एक अमूर्त विचार के रूप में कॉन्वेंट

यह पुस्तक एक नाटक है, जिसका मुख्य पात्र अनंत है।

मनुष्य दूसरे स्थान पर है।

ऐसी स्थिति में, और संयोगवश हमारे रास्ते में एक मठ होने के कारण, उसमें प्रवेश करना हमारा कर्तव्य बन गया। क्यों? क्योंकि यह मठ, जो पूर्व और पश्चिम, प्राचीन और आधुनिक काल, मूर्तिपूजा, बौद्ध धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म, सभी के लिए समान है, मनुष्य द्वारा अनंत को देखने के लिए उपयोग किए जाने वाले दृष्टि उपकरणों में से एक है।

कुछ विचारों पर अत्यधिक विस्तार से चर्चा करने का यह उचित स्थान नहीं है; फिर भी, अपनी सीमाओं, संयम और यहाँ तक कि अपनी नाराजगी को भी पूरी तरह से बनाए रखते हुए, हमें यह कहना होगा कि जब भी हम अनंत में मनुष्य से मिलते हैं, चाहे उसे अच्छी तरह से समझा गया हो या नहीं, हम सम्मान से भर उठते हैं। आराधनालय में, मस्जिद में, पैगोडा में, विगवाम में, एक ऐसा घिनौना पहलू है जिससे हम घृणा करते हैं, और एक ऐसा उदात्त पहलू है जिसकी हम पूजा करते हैं। ईश्वर की प्रतिध्वनि मानव शरीर पर कितनी गहरी चिंतनशीलता और कितना असीम चिंतन का स्रोत है!

II. एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में कॉन्वेंट

इतिहास, तर्क और सत्य की दृष्टि से मठवाद निंदनीय है। जब किसी राष्ट्र में मठों की संख्या अधिक हो जाती है, तो वे उसकी कार्यप्रणाली में बाधा उत्पन्न करते हैं, बोझिल प्रतिष्ठान बन जाते हैं, और जहाँ श्रम के केंद्र होने चाहिए वहाँ आलस्य के केंद्र बन जाते हैं। मठवासी समुदाय महान सामाजिक समुदाय के लिए वैसे ही हैं जैसे ओक के पेड़ के लिए कोसलटो, या मानव शरीर के लिए मस्सा। उनकी समृद्धि और उनका वैभव देश के लिए दरिद्रता का कारण बनता है। सभ्यता के आरंभ में, जब मठवासी व्यवस्था अच्छी थी और आध्यात्मिकता द्वारा क्रूरता को कम करने में उपयोगी थी, तब वह तब बुरी हो जाती है जब लोग वयस्क हो जाते हैं। इसके अलावा, जब यह शिथिल हो जाती है और अव्यवस्था के दौर में प्रवेश करती है, तो यह उन्हीं कारणों से बुरी हो जाती है जिनके कारण यह अपने शुद्धिकरण काल में लाभकारी थी, क्योंकि यह अभी भी उदाहरण प्रस्तुत करती रहती है।

मठवाद का युग अब समाप्त हो चुका है। आधुनिक सभ्यता की प्रारंभिक शिक्षा में उपयोगी मठों ने इसके विकास में बाधा डाली है और इसके विकास के लिए हानिकारक साबित हुए हैं। जहाँ तक संस्था और मानव-संबंधी शिक्षा की बात है, तो दसवीं शताब्दी में अच्छे माने जाने वाले, पंद्रहवीं शताब्दी में संदिग्ध माने जाने वाले और उन्नीसवीं शताब्दी में तो निंदनीय हैं। मठवाद के कुष्ठ रोग ने दो अद्भुत राष्ट्रों, इटली और स्पेन को लगभग कंकाल बना दिया है; एक सदियों तक यूरोप का प्रकाश था, दूसरा उसकी शान; और आज ये दोनों गौरवशाली राष्ट्र 1789 की स्वस्थ और सशक्त स्वच्छता के कारण ही धीरे-धीरे स्वस्थ होने की ओर अग्रसर हैं।

मठ—विशेष रूप से प्राचीन महिला मठ, जैसा कि यह इस सदी की शुरुआत में भी इटली, ऑस्ट्रिया और स्पेन में मौजूद है—मध्य युग की सबसे भयावह संरचनाओं में से एक है। मठ, वह मठ, भयावहता का मिलन बिंदु है। सही मायने में, कैथोलिक मठ पूरी तरह से मृत्यु की काली आभा से भरा हुआ है।

स्पेन का मठ सबसे अधिक शोकपूर्ण है। वहाँ अंधकार से भरे तहखानों के नीचे, धुंधली छायाओं वाले गुंबदों के नीचे, बाबेल की विशाल वेदियाँ खड़ी हैं, जो गिरजाघरों जितनी ऊँची हैं; वहाँ अँधेरे में जंजीरों से लटके विशाल सफेद क्रूस हैं; वहाँ आबनूस की सतह पर नग्न अवस्था में हाथीदांत से बनी विशाल ईसा मसीह की मूर्तियाँ हैं; खून से लथपथ—खून से लथपथ; भयंकर और भव्य, जिनकी कोहनियों से हड्डियाँ दिख रही हैं, घुटनों से त्वचा दिख रही है, घावों से मांस दिख रहा है, चाँदी के काँटों से ताज पहनाया गया है, सोने की कीलों से जड़ा हुआ है, माथे पर माणिक की खून की बूँदें हैं, और आँखों में हीरे जैसे आँसू हैं। हीरे और माणिक गीले प्रतीत होते हैं, और नीचे छाया में छिपे घूंघट वाले लोगों को रुला देते हैं, जिनके शरीर बालों की कमीज़ और लोहे की नोक वाले कोड़ों से घायल हैं, उनके स्तन बेंत की बाड़ से कुचले हुए हैं, उनके घुटने प्रार्थना से छिले हुए हैं; वे स्त्रियाँ जो खुद को पत्नियाँ समझती हैं, प्रेत जो खुद को देवदूत समझती हैं। क्या ये स्त्रियाँ सोचती हैं? नहीं। क्या उनमें कोई इच्छाशक्ति है? नहीं। क्या वे प्रेम करते हैं? नहीं। क्या वे जीते हैं? नहीं। उनकी नसें हड्डियों में तब्दील हो गई हैं; उनकी हड्डियाँ पत्थर बन गई हैं। उनका पर्दा बुनी हुई रात का है। उनके पर्दे के नीचे उनकी साँसें मृत्यु की अवर्णनीय दुखद साँसों जैसी हैं। मठाध्यक्षा, एक प्रेत की तरह, उन्हें पवित्र करती है और उन्हें भयभीत भी करती है। निष्कलंक देवी वहाँ मौजूद हैं, और अत्यंत क्रूर हैं। स्पेन के प्राचीन मठ ऐसे ही हैं। भयानक भक्ति के झूठे, कुंवारी कन्याओं की गुफाएँ, क्रूर स्थान।

कैथोलिक स्पेन स्वयं रोम से भी अधिक रोमन था। स्पेनिश मठ, अन्य सभी मठों से ऊपर, कैथोलिक मठ था। उसमें पूरब की झलक थी। आर्कबिशप, स्वर्ग के किस्लार-आगा, ईश्वर के लिए आरक्षित आत्माओं के इस हरम में बंद रहकर पहरा देते थे। नन ओडालिस्क (दादी) थी, पुजारी हिजड़ा (नपुंसक) था। उत्साही लोगों को स्वप्नों में चुना जाता था और वे मसीह को ग्रहण करते थे। रात में, सुंदर, नग्न युवक क्रूस से उतरता था और एकांतवासी के लिए परमानंद बन जाता था। ऊँची दीवारें रहस्यवादी सुल्ताना की रक्षा करती थीं, जिसने अपने सुल्तान के लिए क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह को पाया था, उसे हर तरह के सांसारिक विकर्षणों से बचाती थीं। बाहरी दुनिया पर एक नज़र डालना बेवफाई थी। शांति

ने चमड़े के थैले का स्थान ले लिया। जो पूर्व में समुद्र में फेंका जाता था, वही पश्चिम में जमीन में गाड़ दिया जाता था। दोनों दिशाओं में, महिलाएं अपने हाथ मलती थीं; पहले के लिए लहरें, आखिरी के लिए कब्र; यहाँ डूबे हुए, वहाँ दफन। भयानक समानता।

आज अतीत के समर्थक, इन बातों को नकारने में असमर्थ होकर, उन पर मुस्कुराने का सहारा ले रहे हैं। इतिहास के खुलासों को दबाने, दर्शनशास्त्र की टीकाओं को अमान्य करने, सभी शर्मनाक तथ्यों और सभी निराशाजनक प्रश्नों को नजरअंदाज करने का एक अजीब और आसान तरीका प्रचलन में आ गया है। "भाषणों का विषय है," चतुर कहते हैं। भाषण, मूर्ख दोहराते हैं। जीन-जैक्स एक भाषण देने वाला था; डिडेरोट एक भाषण देने वाला था; कैलास, लाबारे और सिरवेन पर वोल्टेयर के भाषण भाषण देने वाले थे। मुझे नहीं पता कि हाल ही में किसने यह खोजा है कि टैसिटस एक भाषण देने वाला था, नीरो एक पीड़ित था, और "उस बेचारे होलोफर्नेस" पर निश्चित रूप से दया दिखाई जानी चाहिए।

लेकिन तथ्य विचलित करने वाली चीज़ें नहीं होतीं, और वे हठी भी होती हैं। इस पुस्तक के लेखक ने अपनी आँखों से ब्रुसेल्स से आठ मील दूर मध्य युग के अवशेष देखे हैं, जो सभी के लिए सुलभ हैं—विलेर्स के मठ में, कालकोठरी का गड्ढा, जो पहले मठ का प्रांगण हुआ करता था, और थिल नदी के किनारे, चार पत्थर की कालकोठरियाँ, आधी ज़मीन के नीचे, आधी पानी के नीचे। ये कालकोठरियाँ एक ही स्थान पर बनी हुई थीं। इनमें से प्रत्येक कालकोठरी में एक लोहे के दरवाजे, एक तिजोरी और एक जालीदार द्वार के अवशेष हैं, जो बाहर से नदी के स्तर से दो फीट ऊपर और अंदर से ज़मीन के स्तर से छह फीट ऊपर है। बाहरी दीवार के साथ-साथ चार फीट नदी का पानी बहता है। ज़मीन हमेशा भीगी रहती है। कालकोठरी में रहने वाला व्यक्ति इसी गीली मिट्टी को अपने बिस्तर के रूप में इस्तेमाल करता था। इनमें से एक कालकोठरी में दीवार पर जड़ा हुआ लोहे के हार का एक टुकड़ा है; एक और दृश्य में, ग्रेनाइट की चार शिलाओं से बना एक चौकोर बक्सा दिखाई देता है, जो इतना छोटा है कि कोई व्यक्ति उसमें लेट नहीं सकता, इतना नीचा है कि वह सीधा खड़ा भी नहीं हो सकता। एक व्यक्ति को उसके अंदर रखा गया था, जिसके ऊपर पत्थर का ढक्कन लगा था। यह मौजूद है। इसे देखा जा सकता है। इसे छुआ जा सकता है। ये सब, ये कालकोठरियाँ, ये लोहे के कब्ज़े, ये हार, नदी की धारा के स्तर पर बना वह ऊँचा झाँकने का छेद, ग्रेनाइट के

ढक्कन से बंद पत्थर का वह बक्सा जो किसी मकबरे जैसा दिखता है, इस अंतर के साथ कि यहाँ मृत व्यक्ति एक जीवित प्राणी था, वह मिट्टी जो केवल कीचड़ है, वह तिजोरी का छेद, वे रिसती हुई दीवारें—क्या ही अद्भुत चीज़ें हैं!

III. किन परिस्थितियों में अतीत का सम्मान किया जा सकता है?

स्पेन में प्रचलित और तिब्बत में आज भी प्रचलित मठवाद, सभ्यता के लिए एक प्रकार का क्षय रोग है। यह जीवन को विराम देता है। यह जनसंख्या को शून्य कर देता है। यह एक प्रकार का दमन और नपुंसकता है। यह यूरोप के लिए एक अभिशाप रहा है। इसमें अंतरात्मा पर होने वाली हिंसा, जबरन दीक्षा, मठों द्वारा समर्थित सामंतवाद, परिवार की अतिरिक्त संपत्ति को मठवाद में लगाने का प्रथम पुत्र का अधिकार, जिन क्रूरताओं का हमने अभी जिक्र किया है, एकांतवास, बंद मुंह, अवरुद्ध मस्तिष्क, अनगिनत दुर्भाग्यशाली मनों को शाश्वत प्रतिज्ञाओं के कारागार में डालना, भिक्षु वस्त्र धारण करना, जीवित आत्माओं का दफन होना, इन सब को जोड़ दें। राष्ट्रीय अपमानों में व्यक्तिगत यातनाओं को भी जोड़ दें, तो आप चाहे जो भी हों, मानव निर्मित इन दो कफ़नों - भिक्षु वस्त्र और घूंघट - के सामने कांप उठेंगे। फिर भी, कुछ बिंदुओं और कुछ स्थानों पर, दर्शनशास्त्र और प्रगति के बावजूद, उन्नीसवीं सदी के मध्य में भी मठवासी जीवन की भावना बनी हुई है, और एक विलक्षण तपस्वी पुनरुत्थान इस समय सभ्य जगत को चकित कर रहा है। पुरातन संस्थाओं का अपने अस्तित्व को बनाए रखने का हठ उस दुर्गंधित इत्र के हठ के समान है जो हमारे बालों पर अपना अधिकार जताना चाहता है, उस सड़ी हुई मछली के दावे के समान है जो खाने पर अड़ी रहती है, उस बच्चे के वस्त्र के उत्पीड़न के समान है जो पुरुष को ओढ़ने पर अड़ा रहता है, और उस शव की कोमलता के समान है जो जीवितों को गले लगाने के लिए लौट आती है।

“अकृतज्ञों!” वस्त्र कहता है, “मैंने तुम्हें खराब मौसम में बचाया। तुम मुझसे कोई वास्ता क्यों नहीं रखना चाहते?” “मैं अभी गहरे समुद्र से आई हूँ,” मछली कहती है। “मैं एक गुलाब थी,” इत्र कहता है। “मैंने तुमसे प्रेम किया है,” शव कहता है। “मैंने तुम्हें सभ्य बनाया है,” मठ कहता है।

इसका केवल एक ही उत्तर है: "पुराने समय में।"

विलुप्त हो चुकी चीजों के अनिश्चित काल तक बने रहने का सपना देखना, शवों को संरक्षित करके मनुष्यों पर शासन करना, बिगड़ी हुई मान्यताओं को पुनर्जीवित करना, मंदिरों को फिर से चमकाना, मठों की मरम्मत करना, अवशेषों को फिर से पवित्र करना, अंधविश्वासों को नया रूप देना, कट्टरता को पुनर्जीवित करना, पवित्र जल के ब्रशों और सैन्यवाद को नया रूप देना, मठवाद और सैन्यवाद का पुनर्गठन करना, परजीवियों की संख्या बढ़ाकर समाज के उद्धार में विश्वास करना, अतीत को वर्तमान पर थोपना—यह सब अजीब लगता है। फिर भी, ऐसे सिद्धांतकार मौजूद हैं। ये सिद्धांतकार, जो अन्य मामलों में बुद्धिमान हैं, एक बहुत ही सरल प्रक्रिया अपनाते हैं; वे अतीत पर एक आवरण चढ़ाते हैं जिसे वे सामाजिक व्यवस्था, दैवीय अधिकार, नैतिकता, परिवार, बड़ों का सम्मान, प्राचीन अधिकार, पवित्र परंपरा, वैधता, धर्म कहते हैं; और वे चिल्लाते फिरते हैं, “देखो! इसे लो, ईमानदार लोगों।” यह तर्क प्राचीन लोगों को ज्ञात था। भविष्यवक्ता इसका अभ्यास करते हैं। उन्होंने एक काली बछिया पर चाक रगड़ा और कहा, "वह सफेद है, बोस क्रेटेटस।"

हम अतीत का कहीं-कहीं सम्मान करते हैं और उसे बख्शते भी नहीं, बशर्ते वह मर जाना चाहे। अगर वह जीवित रहने पर अड़ा रहता है, तो हम उस पर हमला करते हैं और उसे खत्म करने की कोशिश करते हैं।

अंधविश्वास, कट्टरता, बनावटी भक्ति, पूर्वाग्रह, ये सभी रूप, अपने स्वरूप में, जीवन के प्रति दृढ़ हैं; इनके धुएं में दांत और नाखून छिपे होते हैं, और इन्हें कसकर, शरीर से शरीर मिलाकर, युद्ध करना होगा, और वह भी बिना विराम के; क्योंकि प्रेतों के साथ शाश्वत संघर्ष में रहना मानवता की नियति है। अंधकार को गले से पकड़कर धरती पर पटकना कठिन है।

उन्नीसवीं सदी के उजाले में, फ्रांस का एक मठ, प्रकाश की ओर मुंह किए उल्लुओं के एक समूह जैसा लगता है। 1889, 1830 और 1848 के शहर के ठीक बीचोंबीच, पेरिस में खिलते रोम की तरह, तपस्या में डूबा एक मठ, कालभ्रम का प्रतीक है। सामान्य समय में, किसी कालभ्रम को मिटाने और उसे लुप्त करने के लिए, बस उससे तारीख लिखवाना ही काफी होता है। लेकिन हम सामान्य समय में नहीं हैं।

आइए लड़ें।

आइए हम संघर्ष करें, लेकिन एक अंतर स्पष्ट करें। सत्य का विशिष्ट गुण यह है कि वह कभी अतिशयोक्ति नहीं करता। उसे अतिशयोक्ति की क्या आवश्यकता है? कुछ ऐसा है जिसे नष्ट करना आवश्यक है, और कुछ ऐसा है जिसे स्पष्ट करना और परखना मात्र आवश्यक है। सौम्य और गंभीर परख में कितनी शक्ति होती है! हमें वहाँ आग नहीं लगानी चाहिए जहाँ केवल प्रकाश की आवश्यकता हो।

अतः, उन्नीसवीं शताब्दी को देखते हुए, हम आम तौर पर, और सभी जातियों में, एशिया और यूरोप में, भारत और तुर्की में, तपस्वी एकांतवास के विरुद्ध हैं। जो भी एकांतवास की बात करता है, वह दलदल की बात करता है। उनका सड़ना स्पष्ट है, उनका ठहराव अस्वास्थ्यकर है, उनका किण्वन लोगों को बुखार से संक्रमित करता है और उन्हें कमजोर बना देता है; उनकी वृद्धि मिस्र में महामारी का कारण बन जाती है। हम उन देशों के बारे में भयभीत हुए बिना नहीं रह सकते जहाँ फकीर, भिक्षु, संत, यूनानी भिक्षु, मारबोट, तालपोइन और दरवेश कीड़े- मकोड़ों के झुंड की तरह बढ़ते हैं।

फिर भी, धार्मिक प्रश्न बना रहता है। इस प्रश्न के कुछ रहस्यमय, लगभग विकट पहलू हैं; हमें इस पर निष्पक्ष रूप से विचार करने की अनुमति दी जाए।

IV. सिद्धांतों के दृष्टिकोण से कॉन्वेंट

मनुष्य आपस में जुड़कर समुदायों में निवास करते हैं। किस अधिकार के आधार पर? संगठन बनाने के अधिकार के आधार पर।

वे घर में ही बंद हो गए। किस अधिकार के आधार पर? उस अधिकार के आधार पर जो हर इंसान को अपना दरवाजा खोलने या बंद करने का होता है।

वे बाहर नहीं आते। किस अधिकार के आधार पर? आने-जाने के अधिकार के आधार पर, जिसका अर्थ है घर पर रहने का अधिकार।

वे घर पर क्या करते हैं?

वे धीमी आवाज़ में बोलते हैं; वे अपनी निगाहें झुका लेते हैं; वे परिश्रम करते हैं। वे संसार, नगर, इंद्रिय सुख, आनंद, व्यर्थता, अभिमान, स्वार्थ आदि का त्याग कर देते हैं। वे मोटे ऊनी या मोटे लिनेन के वस्त्र धारण करते हैं। उनमें से किसी के पास भी अपना कोई अधिकार नहीं होता। वहाँ प्रवेश करते ही, जो भी धनी था, वह स्वयं को गरीब बना लेता है। उसके पास जो कुछ भी होता है, वह सबको दे देता है। जो कभी कुलीन, सज्जन और स्वामी कहलाता था, वह भी किसान के समान हो जाता है। कोठरी सबके लिए एक समान है। सभी का मुंडन एक ही प्रकार का होता है, सभी एक ही प्रकार का वस्त्र पहनते हैं, एक ही प्रकार की काली रोटी खाते हैं, एक ही भूसे पर सोते हैं, और एक ही राख पर मरते हैं। उनकी पीठ पर एक ही प्रकार का बोरा होता है, उनकी कमर पर एक ही प्रकार की रस्सी बंधी होती है। यदि नंगे पैर चलने का निर्णय लिया गया है, तो सभी नंगे पैर चलते हैं। उनमें कोई राजकुमार हो सकता है; वह राजकुमार भी बाकियों की परछाई मात्र होता है। कोई उपाधि नहीं। यहाँ तक कि पारिवारिक नाम भी लुप्त हो गए हैं। वे केवल प्रथम नाम धारण करते हैं। सभी बपतिस्मा के नामों की समानता के आगे झुके हुए हैं। उन्होंने सांसारिक परिवार को भंग कर दिया है, और अपने समुदाय में एक आध्यात्मिक परिवार का निर्माण किया है। उनके एकमात्र रिश्तेदार मनुष्य ही हैं। वे गरीबों की सहायता करते हैं, बीमारों की देखभाल करते हैं। वे उन्हीं लोगों को चुनते हैं जिनकी वे आज्ञा मानते हैं। वे एक-दूसरे को "मेरा भाई" कहकर पुकारते हैं।

आप मुझे रोककर हैरानी से कहते हैं, "लेकिन यह तो आदर्श कॉन्वेंट है!"

यह पर्याप्त है कि यह एक संभावित मठ हो सकता है, और मुझे इस पर ध्यान देना चाहिए।

अतः, पिछली पुस्तक में मैंने मठ के बारे में आदरपूर्ण लहजे में बात की है। मध्य युग और एशिया को दरकिनार करते हुए, ऐतिहासिक और राजनीतिक प्रश्न को अलग रखते हुए, विशुद्ध दार्शनिक दृष्टिकोण से, उग्रवादी नीति की आवश्यकताओं से परे, इस शर्त पर कि मठ पूरी तरह से स्वैच्छिक हो और उसमें केवल सहमति देने वाले ही सदस्य हों, मैं एकांतवासी समुदाय को हमेशा एक निश्चित ध्यानपूर्वक और कुछ मामलों में सम्मानजनक गंभीरता से देखूंगा।

जहां समुदाय होता है, वहां कम्यून होता है; जहां कम्यून होता है, वहां न्याय होता है। मठ समानता और बंधुत्व के सूत्र का परिणाम है। ओह! स्वतंत्रता कितनी महान है! और यह कितना अद्भुत रूपांतरण है! स्वतंत्रता ही मठ को गणतंत्र में बदलने के लिए पर्याप्त है।

चलिए आगे बढ़ते हैं।

लेकिन ये पुरुष, या ये महिलाएं जो इन चार दीवारों के पीछे हैं। वे मोटे ऊनी कपड़े पहनते हैं, वे बराबर हैं, वे एक-दूसरे को भाई कहते हैं, यह अच्छी बात है; लेकिन वे कुछ और भी करते हैं?

हाँ।

क्या?

वे अंधेरे को निहारते हैं, घुटने टेकते हैं और हाथ जोड़ते हैं।

इसका क्या अर्थ है?

V. प्रार्थना

वे प्रार्थना करते हैं।

किसके लिए?

ईश्वर को।

ईश्वर से प्रार्थना करना—इन शब्दों का क्या अर्थ है?

क्या हमारे परे कोई अनंत अस्तित्व है? क्या वह अनंत वहाँ मौजूद है, अंतर्निहित, शाश्वत; अनिवार्य रूप से सारगर्भित, क्योंकि वह अनंत है; और क्योंकि यदि उसमें पदार्थ न होता तो वह सीमित होता; अनिवार्य रूप से बुद्धिमान, क्योंकि वह अनंत है; और क्योंकि यदि उसमें बुद्धि न होती तो वह वहीं समाप्त हो जाता? क्या यह अनंत हमारे भीतर सार का विचार जागृत करता है, जबकि हम स्वयं को केवल अस्तित्व का विचार ही दे सकते हैं? दूसरे शब्दों में, क्या यह वह निरपेक्ष नहीं है, जिसके हम केवल सापेक्ष हैं?

जिस प्रकार हमारे बाहर अनंत का अस्तित्व है, क्या उसी प्रकार हमारे भीतर भी अनंत का अस्तित्व नहीं है? क्या ये दोनों अनंत (कितना विचित्र बहुवचन!) एक दूसरे पर आरोपित नहीं हैं? क्या यह दूसरा अनंत, एक प्रकार से, पहले अनंत के नीचे स्थित नहीं है? क्या यह पहले अनंत का दर्पण, प्रतिबिंब, प्रतिध्वनि, एक ऐसा अथाह सागर नहीं है जो दूसरे अथाह सागर के साथ संकेंद्रित है? क्या यह दूसरा अनंत भी बुद्धिमान है? क्या यह सोचता है? क्या यह प्रेम करता है? क्या इसकी कोई इच्छा है? यदि ये दोनों अनंत बुद्धिमान हैं, तो उनमें से प्रत्येक का अपना एक इच्छा सिद्धांत है, और ऊपरी अनंत में भी एक 'मैं' है, जैसे निचले अनंत में है। नीचे वाला 'मैं' आत्मा है; ऊपर वाला 'मैं' ईश्वर है।

इस धरती पर मौजूद अनंतता को, विचार के माध्यम से, स्वर्ग में स्थित अनंतता से जोड़ना ही प्रार्थना कहलाता है।

हमें मानव मन से कुछ भी नहीं छीनना चाहिए; उसे दबाना गलत है। हमें सुधार और रूपांतरण करना होगा। मनुष्य की कुछ क्षमताएँ अज्ञात की ओर निर्देशित होती

हैं; जैसे विचार, चिंतन, प्रार्थना। अज्ञात एक सागर है। अंतरात्मा क्या है? यह अज्ञात का कंपास है। विचार, चिंतन, प्रार्थना—ये महान और रहस्यमयी किरणें हैं। हमें इनका सम्मान करना चाहिए। आत्मा की ये भव्य किरणें कहाँ जाती हैं? अंधकार में; यानी प्रकाश की ओर।

लोकतंत्र की महानता यही है कि वह किसी भी बात को नकारता नहीं और मानवता के किसी भी पहलू को अस्वीकार नहीं करता। मनुष्य के अधिकार के निकट, बल्कि उसके साथ-साथ, आत्मा का अधिकार भी विद्यमान है।

कट्टरता को कुचलना और अनंत का आदर करना, यही नियम है। हमें सृष्टि के वृक्ष के समक्ष नतमस्तक होने और तारों से भरी उसकी शाखाओं के चिंतन तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। हमारा कर्तव्य है कि हम मानव आत्मा पर परिश्रम करें, रहस्य को चमत्कार से बचाएँ, अकथनीय की आराधना करें और निरर्थक को अस्वीकार करें, केवल आवश्यक को ही अकथनीय तथ्य मानें, विश्वास को शुद्ध करें, धर्म से अंधविश्वासों को दूर करें; ईश्वर को अशुद्धियों से मुक्त करें।

VI. प्रार्थना की परम अच्छाई

प्रार्थना के सभी तरीके अच्छे हैं, बशर्ते वे सच्चे मन से किए जाएं। अपनी प्रार्थना पुस्तक को उल्टा करके अनंत में लीन हो जाएं।

जैसा कि हम जानते हैं, एक ऐसा दर्शन है जो अनंत को नकारता है। एक ऐसा दर्शन भी है, जिसे विकृत रूप से वर्गीकृत किया गया है, जो सूर्य को नकारता है; इस दर्शन को अंधापन कहा जाता है।

जिस भावना का हम अभाव महसूस करते हैं, उसे सत्य का स्रोत बना देना, एक कुशल अंधे व्यक्ति की आत्मनिर्भरता है।

विचित्र बात यह है कि यह पथभ्रष्ट दर्शन, ईश्वर को देखने वाले दर्शन के प्रति घमंडी, श्रेष्ठ और दयालु भाव धारण कर लेता है। ऐसा लगता है मानो कोई छछूंदर कह रहा हो, "मुझे उन पर दया आती है जो धूप में हैं!"

जैसा कि हम जानते हैं, शक्तिशाली और विख्यात नास्तिक भी होते हैं। अंततः, अपनी प्रबल शक्ति के बल पर सत्य की ओर लौटते हुए, वे पूरी तरह से आश्वस्त नहीं होते कि वे नास्तिक हैं; उनके लिए यह केवल परिभाषा का प्रश्न है, और किसी भी स्थिति में, यदि वे ईश्वर में विश्वास नहीं करते हैं, तो महान बुद्धि होने के नाते वे ईश्वर को सिद्ध करते हैं।

हम उन्हें दार्शनिकों के रूप में सलाम करते हैं, जबकि साथ ही साथ उनके दर्शन की निर्दयतापूर्वक निंदा भी करते हैं।

चलिए आगे बढ़ते हैं।

इसकी एक उल्लेखनीय विशेषता यह भी है कि वे शब्दों के माध्यम से अपनी बात को बखूबी साबित कर देते हैं। उत्तर का एक आध्यात्मिक मत, जो कुछ हद तक धुंध से घिरा हुआ है, यह मानता है कि उसने 'बल' शब्द को 'इच्छा' शब्द से प्रतिस्थापित करके मानवीय समझ में एक क्रांति ला दी है।

“पौधा बढ़ता है” कहने के बजाय “पौधे की इच्छा होती है” कहना, वास्तव में बहुत सार्थक होगा यदि हम इसमें “ब्रह्मांड की इच्छा होती है” भी जोड़ दें। क्यों? क्योंकि बात यहीं आकर समाप्त होती है: पौधे की इच्छा होती है, इसलिए

उसमें एक 'मैं' होता है; ब्रह्मांड की इच्छा होती है, इसलिए उसमें एक ईश्वर होता है।

हम, जो इस मत के विपरीत, किसी भी पूर्वधारणा को अस्वीकार नहीं करते, पौधे में निहित इच्छाशक्ति, जिसे इस मत ने स्वीकार किया है, हमें ब्रह्मांड में निहित इच्छाशक्ति की तुलना में स्वीकार करना अधिक कठिन प्रतीत होता है, जिसे इस मत ने अस्वीकार कर दिया है।

असीम की इच्छा, अर्थात् ईश्वर की इच्छा को नकारना, असीम के इनकार के अलावा किसी अन्य स्थिति में असंभव है। हमने इसे सिद्ध कर दिया है।

अनंत का निषेध सीधे शून्यवाद की ओर ले जाता है। सब कुछ "एक मानसिक अवधारणा" बन जाता है।

शून्यवाद के साथ कोई चर्चा संभव नहीं है; क्योंकि शून्यवाद का तर्क अपने वार्ताकार के अस्तित्व पर संदेह करता है, और उसे स्वयं के अस्तित्व के बारे में भी पूरी तरह से यकीन नहीं होता है।

इसके दृष्टिकोण से, यह संभव है कि यह स्वयं के लिए केवल "एक मानसिक अवधारणा" हो।

लेकिन, यह इस बात को नहीं समझता कि जिन सभी चीजों को इसने नकार दिया है, उन्हें यह मात्र 'मन' शब्द के उच्चारण मात्र से ही स्वीकार कर लेता है।

संक्षेप में कहें तो, उस दर्शन के लिए कोई रास्ता नहीं है जो हर बात को एक ही शब्द, 'नहीं', में समाप्त कर देता है।

'नहीं' का केवल एक ही उत्तर है, 'हाँ'।

शून्यवाद का कोई मतलब नहीं है।

शून्यता जैसी कोई चीज नहीं होती। शून्य का अस्तित्व नहीं है। हर चीज कुछ न कुछ है। कुछ नहीं, कुछ नहीं है।

मनुष्य रोटी से भी अधिक प्रशंसा से जीवित रहता है।

केवल देखना और दिखाना ही पर्याप्त नहीं है। दर्शन एक ऊर्जा होनी चाहिए; इसका उद्देश्य मनुष्य की स्थिति में सुधार लाना होना चाहिए। सुकरात को आदम में प्रवेश करके मार्कस ऑरेलियस को उत्पन्न करना चाहिए; दूसरे शब्दों

में, सुखी मनुष्य से ज्ञानी मनुष्य का जन्म होना चाहिए। ईडन को एक लाइसीयम में बदल देना चाहिए। विज्ञान एक औषधि होना चाहिए। आनंद लेना—कितना दुखद लक्ष्य और कितनी तुच्छ महत्वाकांक्षा! पशु आनंद लेता है। मनुष्य की प्यास बुझाने के लिए विचार प्रस्तुत करना, उन्हें ईश्वर की अवधारणा को अमृत के रूप में देना, उनमें विवेक और विज्ञान को एक कर देना, इस रहस्यमय टकराव से उन्हें न्यायप्रिय बनाना; यही वास्तविक दर्शन का कार्य है। नैतिकता सत्यों का विकास है। चिंतन कर्म की ओर ले जाता है। निरपेक्ष व्यावहारिक होना चाहिए। यह आवश्यक है कि आदर्श मानव मन के लिए सहज, ग्रहणशील और ग्रहणशील हो। आदर्श को ही यह कहने का अधिकार है: “लो, यह मेरा शरीर है, यह मेरा रक्त है।” ज्ञान एक पवित्र मिलन है। इसी स्थिति में यह विज्ञान के प्रति निरर्थक प्रेम होने से बच जाता है और मानव एकजुटता का एकमात्र और सर्वोपरि माध्यम बन जाता है, और दर्शनशास्त्र स्वयं धर्म के स्तर तक पहुँच जाता है।

दर्शनशास्त्र को रहस्य पर खड़ी की गई एक ऐसी दीवार नहीं होनी चाहिए जिस पर केवल जिज्ञासा को संतुष्ट करने के अलावा और कोई उद्देश्य न हो और उस पर आराम से नज़र डाली जा सके।

हम अपनी ओर से अपने विचार के विकास को किसी अन्य अवसर के लिए स्थगित करते हुए, केवल इतना ही कहेंगे कि हम मनुष्य को न तो आरंभिक बिंदु के रूप में समझते हैं और न ही प्रगति को अंतिम लक्ष्य के रूप में, उन दो शक्तियों के बिना जो उनके दो प्रेरक तत्व हैं: विश्वास और प्रेम।

प्रगति ही लक्ष्य है, आदर्श ही स्वरूप है।

यह आदर्श क्या है? यह ईश्वर है।

आदर्श, निरपेक्ष, परिपूर्णता, अनंत: ये सभी एक ही अर्थ वाले शब्द हैं।

VII. दोषारोपण में बरती जाने वाली सावधानियां

इतिहास और दर्शन के शाश्वत कर्तव्य हैं, जो साथ ही साथ सरल कर्तव्य भी हैं; महायाजक कैफास, विधि निर्माता ड्रेको, विधि निर्माता ट्रिमलसीयन, सम्राट टिबेरियस का मुकाबला करना; यह स्पष्ट, सीधा और निर्मल है, और इसमें कोई अस्पष्टता नहीं है।

लेकिन अलग रहने का अधिकार, भले ही उसमें असुविधाएँ और दुरुपयोग हों, फिर भी उसे व्यक्त किया जाना और ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। सामूहिक जीवन एक मानवीय समस्या है।

जब कोई मठों की बात करता है, जो त्रुटि के निवास स्थान हैं, लेकिन निर्दोषता के भी, विचलन के निवास स्थान हैं लेकिन सद्भावना के भी, अज्ञान के निवास स्थान हैं लेकिन भक्ति के भी, यातना के निवास स्थान हैं लेकिन शहादत के भी, तो हमेशा हाँ या ना कहना आवश्यक हो जाता है।

एक मठ विरोधाभासों से भरा है। इसका उद्देश्य मोक्ष है; और इसे प्राप्त करने का साधन त्याग है। मठ परम स्वार्थ का प्रतीक है, जिसका परिणाम परम त्याग होता है।

शासन करने के उद्देश्य से पदत्याग करना मठवाद की एक युक्ति प्रतीत होती है।

एकांतवास में, व्यक्ति आनंद पाने के लिए कष्ट सहता है। वह मृत्यु पर विनिमय पत्र तैयार करता है। सांसारिक अंधकार में वह दिव्य प्रकाश को महत्व नहीं देता। एकांतवास में, स्वर्ग के पश्चात मृत्युलेख के रूप में नरक को पहले से ही स्वीकार कर लिया जाता है।

घूंघट या वस्त्र उतारना एक प्रकार की आत्महत्या है जिसका प्रायश्चित अनंत काल से होता है।

हमें नहीं लगता कि ऐसे विषय पर उपहास करना उचित है। यह विषय पूरी तरह से गंभीर है, चाहे अच्छा हो या बुरा।

न्यायप्रिय व्यक्ति भौंहें चढ़ाता है, लेकिन कभी भी द्वेषपूर्ण मुस्कान नहीं बिखेरता। हम क्रोध को समझते हैं, लेकिन द्वेष को नहीं।

VIII. आस्था, कानून

कुछ और शब्द।
जब चर्च षड्यंत्रों से भरा होता है तो हम उसे दोषी ठहराते हैं, हम उस आध्यात्मिक चीज़ से घृणा करते हैं जो सांसारिक चीज़ों के प्रति कठोर होती है; लेकिन हम हर जगह विचारशील व्यक्ति का सम्मान करते हैं।
हम घुटने टेकने वाले व्यक्ति को सलाम करते हैं।
आस्था; यह मनुष्य के लिए अनिवार्य है। धिक्कार है उस पर जो आस्था नहीं रखता।
कोई व्यक्ति केवल इसलिए खाली नहीं होता क्योंकि वह उसमें लीन है।
प्रत्यक्ष श्रम भी होता है और अप्रत्यक्ष श्रम भी।
चिंतन करना श्रम है, सोचना कर्म है।
हाथ जोड़कर परिश्रम करना, हाथ जोड़कर काम करना। आकाश की ओर टकटकी लगाए देखना भी एक काम है।
थैल्स चार वर्षों तक एक ही स्थान पर स्थिर रहे। उन्होंने दर्शनशास्त्र की नींव रखी।
हमारी राय में, संन्यासी आलसी पुरुष नहीं होते और एकांतवासी आलसी नहीं होते।
अपने भीतर के अंधकार पर ध्यान लगाना एक गंभीर विषय है।
हमने अभी जो कुछ कहा है, उसे गलत साबित किए बिना, हमारा मानना है कि जीवित लोगों के लिए समाधि की शाश्वत स्मृति उचित है। इस बिंदु पर पुजारी और दार्शनिक सहमत हैं। "हमें मरना ही है।" एब्बे डे ला ट्रैप होरेस को उत्तर देते हैं।
अपने जीवन में समाधि की एक निश्चित उपस्थिति को समाहित करना—यह ऋषि का नियम है; और यही तपस्वी का नियम है। इस संदर्भ में तपस्वी और ऋषि एक समान

हैं। भौतिक विकास होता है; हम इसे स्वीकार करते हैं। नैतिक महानता होती है; हम उसे धारण करते हैं। विचारहीन और चंचल आत्माएँ कहती हैं:—

रहस्य की ओर खड़ी उन स्थिर आकृतियों का क्या लाभ है? वे किस उद्देश्य की पूर्ति करती हैं? वे क्या करती हैं?

हाय! हमारे चारों ओर फैले अंधकार और आने वाले अंधकार के बीच, और इस बात से अनभिज्ञता में कि इस विशाल विखंडन का क्या परिणाम होगा, हम कहते हैं: "शायद इन आत्माओं द्वारा किए गए कार्य से अधिक दिव्य कोई कार्य नहीं है।" और हम आगे कहते हैं: "शायद इससे अधिक उपयोगी कोई कार्य नहीं है।"

निश्चित रूप से कुछ ऐसे लोग भी होंगे जो उन लोगों के लिए निरंतर प्रार्थना करते होंगे जो कभी प्रार्थना नहीं करते।

हमारे विचार में, सारा प्रश्न प्रार्थना के साथ मिश्रित चिंतन की मात्रा में निहित है।

लाइबनिज़ की प्रार्थना महान है, वोल्टेयर की आराधना ठीक है। वोल्टेयर का निधन हो।

हम धर्म के पक्षधर हैं, धर्मों के विरोधी नहीं।

हम उन लोगों में से हैं जो प्रार्थनाओं की दयनीयता और प्रार्थना की उदात्तता में विश्वास करते हैं।

इसके अलावा, जिस क्षण से हम अभी गुजर रहे हैं—एक ऐसा क्षण जो सौभाग्य से उन्नीसवीं सदी पर अपनी छाप नहीं छोड़ेगा—इस घड़ी में, जब इतने सारे लोगों का मनोबल गिरा हुआ है और आत्माएं उदात्त नहीं हैं, इतने सारे नश्वर प्राणियों के बीच जिनकी नैतिकता भोग में निहित है, और जो भौतिक की क्षणभंगुर और विकृत चीजों में व्यस्त हैं, जो कोई भी स्वयं को निर्वासित करता है वह हमें आदर के योग्य प्रतीत होता है।

मठवासी जीवन एक त्याग है। गलत दिशा में किया गया बलिदान भी बलिदान ही होता है। किसी गंभीर गलती को कर्तव्य समझ लेने में भी एक अलग ही गरिमा होती है।

अपने आप में, और आदर्श रूप से, और सत्य की सभी पहलुओं से निष्पक्ष रूप से जांच करने के लिए, मठ, विशेष रूप से महिला मठ—क्योंकि हमारी सदी में सबसे अधिक पीड़ा स्त्री को ही सहनी पड़ती है, और मठ से निकाले जाने के इस

निर्वासन में एक प्रकार का विरोध निहित है—महिला मठ में निसंदेह एक निश्चित गरिमा है।

यह एकांत जीवन, जो इतना कठोर, इतना निराशाजनक है, जिसके कुछ पहलुओं का हमने अभी-अभी वर्णन किया है, जीवन नहीं है, क्योंकि यह स्वतंत्रता नहीं है; यह कब्र नहीं है, क्योंकि यह परिपूर्णता नहीं है; यह वह विचित्र स्थान है जहाँ से कोई ऊँचे पर्वत की चोटी से देखने के समान, एक ओर वह अथाह गहराई देखता है जहाँ हम हैं, और दूसरी ओर वह अथाह गहराई जहाँ हमें जाना है; यह दो दुनियाओं को अलग करने वाली संकीर्ण और धुंधली सीमा है, जो एक ही समय में दोनों से प्रकाशित और अस्पष्ट होती है, जहाँ जीवन की क्षीण किरण मृत्यु की अस्पष्ट किरण से मिश्रित होती है; यह कब्र का आधा अंधकार है।

हम, जो इन महिलाओं के विश्वासों में विश्वास नहीं करते, लेकिन जो उनकी तरह आस्था से जीते हैं—हम कभी भी एक प्रकार के कोमल और धार्मिक भय के बिना, एक प्रकार की दया के बिना, जो ईर्ष्या से भरी है, उन समर्पित, कांपते और विश्वास करने वाले प्राणियों के लिए, उन विनम्र और महान आत्माओं के लिए, जो रहस्य के बिल्कुल किनारे पर रहने का साहस करते हैं, बंद दुनिया और अभी तक न खुले स्वर्ग के बीच प्रतीक्षा करते हुए, उस प्रकाश की ओर उन्मुख जिसे देखा नहीं जा सकता, इस विचार के एकमात्र सुख का अनुभव करते हुए कि वे जानते हैं कि वह कहाँ है, खाई और अज्ञात की ओर आकांक्षा करते हुए, उनकी आँखें अंधेरे पर स्थिर हैं, घुटने टेकते हुए, स्तब्ध, स्तब्ध, कांपते हुए, कभी-कभी अनंत काल की गहरी साँसों से आधे उठे हुए।

पुस्तक **VIII.** कब्रिस्तान उन चीजों को अपने पास रख लेते हैं जो उन्हें सौंपी जाती हैं

अध्याय I. जिसमें मठ में प्रवेश करने की विधि का वर्णन है

जैसा कि फाउचेलेवेंट ने कहा था, जीन वालजेन इसी घर में "आसमान से गिरे" थे।

वह रू पोलोनसेउ के कोने पर बने बगीचे की दीवार फांदकर अंदर आ गया था। आधी रात को उसने जो स्वर्गदूतों का भजन सुना था, वह ननों द्वारा सुबह की प्रार्थना थी; अँधेरे में उसने जिस हॉल की झलक देखी थी, वह चैपल था। ज़मीन पर लेटी हुई जो आकृति उसने देखी थी, वह प्रायश्चित कर रही नन थी; वह घंटी जिसकी आवाज़ ने उसे अजीब तरह से चौंका दिया था, वह फादर फाउचेलेवेंट के घुटने से बंधी माली की घंटी थी।

कोसेट के सो जाने के बाद, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, जीन वालजेन और फाउचेलेवेंट ने एक अच्छी, चटकती हुई आग के सामने एक गिलास शराब और थोड़ा सा पनीर खाया; फिर, झोपड़ी में एकमात्र बिस्तर कोसेट के कब्जे में होने के कारण, दोनों ने खुद को पुआल के गट्ठे पर गिरा दिया।

आंखें बंद करने से पहले, जीन वाल्जेन ने कहा: "मुझे अब यहीं रहना होगा।" यह बात फाउचेलेवेंट के दिमाग में पूरी रात गूंजती रही।

सच कहें तो, उनमें से कोई भी नहीं सोया।

जीन वालजेन को जब यह एहसास हुआ कि उसका भेद खुल गया है और जावर्ट उसका पीछा कर रहा है, तो वह समझ गया कि पेरिस लौटने पर वह और कोसेट दोनों ही खो बैठेंगे। तभी अचानक आए एक नए तूफान ने उसे इस मठ में फंसा दिया। जीन वालजेन के मन में अब बस एक ही विचार था—वहीं रहना। अब, उसकी जैसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में, यह मठ सबसे सुरक्षित और सबसे खतरनाक दोनों ही जगह थी; सबसे खतरनाक इसलिए, क्योंकि वहां कोई भी पुरुष प्रवेश नहीं कर सकता था, और अगर उसका भेद खुल गया, तो यह एक घोर अपराध होगा, और जीन वालजेन को मठ और जेल के बीच बस एक कदम का फासला मिलेगा; सबसे सुरक्षित इसलिए, क्योंकि अगर वह वहां अपना नाम दर्ज करवा लेता और वहीं रह पाता, तो ऐसी जगह पर उसे कौन ढूंढेगा? एक असंभव जगह पर रहना ही सुरक्षा थी।

दूसरी ओर, फाउचेलवेंट अपने दिमाग पर ज़ोर डाल रहा था। उसने मन ही मन कहा कि उसे इस मामले की कोई समझ नहीं है। जब दीवारें इतनी मज़बूत थीं, तो एम. मेडेलीन वहाँ कैसे पहुँचे? मठ की दीवारों को फांदकर पार नहीं किया जा सकता। वह बच्चे के साथ वहाँ कैसे पहुँचे? कोई भी बच्चे को गोद में लेकर सीधी दीवार पर नहीं चढ़ सकता। वह बच्चा कौन था? वे दोनों कहाँ से आए थे? चूंकि फाउचेलवेंट मठ में रह चुका था, इसलिए उसने एम. सुर एम. के बारे में कुछ नहीं सुना था, और उसे वहाँ हुई घटनाओं के बारे में कुछ भी पता नहीं था। फादर मेडेलीन का व्यवहार ऐसा था कि वे सवाल पूछने से कतराते थे; और इसके अलावा, फाउचेलवेंट ने मन ही मन कहा: "संत से सवाल नहीं किया जाता।" फाउचेलवेंट की नज़र में एम. मेडेलीन ने अपनी सारी प्रतिष्ठा बरकरार रखी थी। केवल जीन वालजेन के कुछ शब्दों से, माली ने यह अनुमान लगाया कि एम. मेडेलीन शायद कठिन समय के कारण दिवालिया हो गए थे, और उनके लेनदार उनका पीछा कर रहे थे; या फिर यह कि वह किसी राजनीतिक मामले में फंस गया था और छिप गया था; यह आखिरी बात फाउचेलवेंट को बुरी नहीं लगी, जो उत्तर के कई किसानों की तरह बोनापार्टवाद के पुराने विचारों से प्रभावित था। छिपते समय, एम. मेडेलीन ने कॉन्वेंट को शरणस्थली के रूप में चुना था, और यह स्वाभाविक था कि वह वहीं रहना चाहता। लेकिन वह अनसुलझा सवाल, जिस पर फाउचेलवेंट लगातार सोचता रहता था और जिसके बारे में सोचकर उसका दिमाग थक जाता था, यह था कि एम. मेडेलीन वहां कैसे हो सकता है, और वह छोटी बच्ची उसके साथ कैसे हो सकती है। फाउचेलवेंट ने उन्हें देखा, उन्हें छुआ, उनसे बात की, और फिर भी उसे इस बात पर यकीन नहीं हुआ। समझ से परे की बात फाउचेलवेंट की झोपड़ी में दस्तक दे चुकी थी। फाउचेलवेंट अटकलों के बीच भटकता रहा, और उसे इस बात के सिवा कुछ भी स्पष्ट नहीं दिख रहा था: "एम. मेडेलीन ने मेरी जान बचाई।" यही निश्चितता उसके लिए काफी थी और इसी ने उसका फैसला कर दिया। उसने खुद से कहा: "अब मेरी बारी है।" उसने अपने अंतरात्मा में कहा: “जब मुझे बाहर निकालने के लिए खुद को गाड़ी के नीचे धकेलने की बात आई, तो श्रीमती मेडेलिन ने एक पल भी विचार नहीं किया।” उसने श्रीमती मेडेलिन को बचाने का निश्चय कर लिया।

फिर भी, उसने खुद से कई सवाल पूछे और अलग-अलग जवाब निकाले: "उसने मेरे लिए जो किया, उसके बाद अगर वह चोर होता तो क्या मैं उसे बचाता? बिल्कुल। अगर वह

हत्यारा होता, तो क्या मैं उसे बचाता? बिल्कुल। चूंकि वह संत है, तो क्या मुझे उसे बचाना चाहिए? बिल्कुल।"

लेकिन उन्हें मठ में बनाए रखना कितना बड़ा झंझट था! फाउचेलेवेंट इस लगभग अकल्पनीय चुनौती से पीछे नहीं हटे; पिकार्डी के इस गरीब किसान के पास आत्म-समर्पण, सद्भावना और थोड़ी सी देहाती चतुराई के अलावा कोई और सहारा नहीं था। इस अवसर पर उन्होंने एक उदार कार्य में अपना हाथ आजमाया, मठ की कठिनाइयों और सेंट-बेनोइट के नियमों की कठिन चुनौतियों का सामना करने का बीड़ा उठाया। फादर फाउचेलेवेंट एक बूढ़े व्यक्ति थे जो जीवन भर स्वार्थी रहे थे, और अपने जीवन के अंतिम दिनों में, जब वे लंगड़े, दुर्बल और संसार में कोई रुचि न रखते हुए, कृतज्ञता को सुखद पाते थे, और एक उदार कार्य को करने का अवसर देखकर, उस पर ऐसे टूट पड़े जैसे कोई व्यक्ति मरते समय अपने हाथ के पास एक गिलास बढ़िया शराब पा ले जिसका स्वाद उसने कभी नहीं चखा हो, और उसे बड़ी उत्सुकता से पी जाए। हम यह भी कह सकते हैं कि इस मठ में कई वर्षों तक उसने जो हवा में सांस ली थी, उसने उसके व्यक्तित्व को पूरी तरह से नष्ट कर दिया था, और अंततः उसके लिए किसी न किसी प्रकार का अच्छा कार्य करना नितांत आवश्यक हो गया था।

इसलिए उन्होंने यह संकल्प लिया कि वे अपना पूरा जीवन एम. मेडेलीन को समर्पित कर देंगे।

हमने अभी-अभी उन्हें "पिकार्डी का एक गरीब किसान" कहा है। यह वर्णन सटीक तो है, लेकिन अधूरा है। कहानी के जिस मोड़ पर हम अब पहुँचे हैं, वहाँ फादर फॉशेलवेंट के शारीरिक गुणों के बारे में थोड़ी जानकारी उपयोगी हो जाती है। वे एक किसान थे, लेकिन वे एक नोटरी भी रह चुके थे, जिसने उनकी चालाकी में धूर्तता और सरल स्वभाव में गहरी समझ जोड़ दी थी। कई कारणों से अपने व्यवसाय में असफल होने के बाद, उन्होंने गाड़ीवान और मजदूर का काम करना शुरू कर दिया था। लेकिन, घोड़ों को दी जाने वाली कसमों और कोड़ों की मार के बावजूद, नोटरी का कुछ अंश उनमें अभी भी बाकी था। उनमें स्वाभाविक बुद्धि थी; वे व्याकरण की अच्छी समझ रखते थे; वे बातचीत करते थे, जो गाँव में एक दुर्लभ बात है; और दूसरे किसान उनके बारे में कहते थे: "वे लगभग टोपी पहने हुए सज्जन की तरह बात करते हैं।" दरअसल, फाउचेलवेंट उसी वर्ग से थे, जिसे पिछली सदी की उद्दंड और सतही शब्दावली में अर्ध-बुर्जुआ, अर्ध-अशिष्ट कहा

जाता था, और जिसे महल से छप्पर वाली झोपड़ी पर बरसाए गए उपमाओं में आम आदमी की श्रेणी में रखा जाता था: "कुछ देहाती, कुछ शहरी; काली मिर्च और नमक का मिश्रण।" भाग्य की मार झेलने और कठोर व्यवहार के बावजूद, फाउचेलवेंट थके- हारे, एक तरह से गरीब, जर्जर बूढ़े व्यक्ति थे, फिर भी वे आवेगशील और अपने कार्यों में अत्यंत सहज थे; यह एक अनमोल गुण है जो किसी को कभी दुष्ट नहीं बनने देता। उनकी कमियाँ और दुर्गुण, जो उनमें थे, सब सतही थे; संक्षेप में, उनका चेहरा ऐसा था जो देखने वाले को आकर्षित करता है। उनके वृद्ध चेहरे पर माथे के ऊपरी हिस्से पर वे अप्रिय झुर्रियाँ नहीं थीं, जो दुर्भावना या मूर्खता का संकेत देती हैं।

भोर होते ही, फादर फॉशेलवेंट ने बहुत सोचने-विचारने के बाद अपनी आँखें खोलीं और देखा कि एम. मेडेलिन उनके पुआल के तंबू पर बैठी कोसेट की नींद को देख रही हैं। फॉशेलवेंट उठ बैठे और बोले:—

"अब जब तुम यहाँ आ ही गए हो, तो अंदर आने का जुगाड़ कैसे करोगे?"

इस टिप्पणी ने स्थिति का सार प्रस्तुत कर दिया और जीन वाल्जेन को उनकी तल्लीनता से जगा दिया।

दोनों व्यक्तियों ने आपस में परामर्श किया।

“सबसे पहले,” फाउचेलेवेंट ने कहा, “आप या बच्चा, इस कक्ष से बाहर कदम नहीं रखेंगे। बगीचे में एक कदम भी रखा तो हमारा काम तमाम हो जाएगा।”

“यह सच है।”

“महाशय मेडेलिन,” फॉशेलवेंट ने बात जारी रखते हुए कहा, “आप एक बहुत ही शुभ समय पर आए हैं, मेरा मतलब है कि एक बहुत ही अशुभ समय पर; एक महिला बहुत बीमार है। इस वजह से वे हमारी तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देंगी। ऐसा लगता है कि वह मर रही है। चालीस घंटे की प्रार्थनाएं हो रही हैं। पूरा समुदाय असमंजस में है। वे इसी में व्यस्त हैं। जो जाने वाली है, वह संत है। वास्तव में, हम सब यहाँ संत हैं; उनमें और मुझमें बस इतना ही अंतर है कि वे ‘हमारी कोठरी’ कहती हैं, और मैं ‘मेरी कुटिया’ कहता हूँ। मरने वालों के लिए प्रार्थनाएं की जानी हैं, और फिर मृतकों के लिए प्रार्थनाएं। आज हम यहाँ शांति से रहेंगे; लेकिन मैं कल के बारे में कुछ नहीं कहूँगा।”

"फिर भी," जीन वाल्जेन ने कहा, "यह कुटिया दीवार की आड़ में है, यह एक प्रकार के खंडहर से छिपी हुई है, यहाँ पेड़ हैं, यह मठ से दिखाई नहीं देती है।"
और मैं यह भी कहना चाहूंगा कि ननें कभी इसके पास नहीं आतीं।
“तो?” जीन वालजेन ने कहा।
“अच्छे” शब्द पर ज़ोर देने वाले प्रश्न चिह्न का अर्थ था: “मुझे लगता है कि यहाँ कोई छिप सकता है?” इसी प्रश्नवाचक बिंदु पर फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया:
“ये रही छोटी बच्चियां।”
“कौन सी छोटी लड़कियां?” जीन वाल्जेन ने पूछा।
जैसे ही फाउचेलेवेंट ने अपने कहे शब्दों को समझाने के लिए अपना मुंह खोला, एक घंटी बजी।
“नन की मृत्यु हो गई है,” उसने कहा। “यह मृत्यु की घंटी है।”
और उसने जीन वालजेन को इशारा किया कि वह ध्यान से सुने।
घंटी दूसरी बार बजी।
“यह शोक की घंटी है, महोदय मेडेलीन। जब तक शव को गिरजाघर से नहीं ले जाया जाता, तब तक यह घंटी चौबीस घंटे तक प्रति मिनट एक बार बजती रहेगी। —देखिए, ये लोग खेलते हैं। मनोरंजन के समय, बस एक गेंद को एक तरफ लुढ़का देना ही काफी होता है, और मनाही के बावजूद, ये सभी यहाँ आकर उसे ढूंढने और इधर-उधर खंगालने लगते हैं। ये देवदूत शैतान हैं।”
“कौन?” जीन वालजेन ने पूछा।
“छोटी बच्चियाँ। तुम बहुत जल्दी पकड़ी जाओगी। वो चीखेंगी: ‘अरे! एक आदमी!’ आज कोई खतरा नहीं है। कोई मनोरंजन का समय नहीं होगा। पूरा दिन प्रार्थना में व्यतीत होगा। तुम्हें घंटी की आवाज़ सुनाई दे रही है। जैसा मैंने तुम्हें बताया था, हर मिनट एक घंटी बजती है। ये मृत्यु की घंटी है।” “मैं समझता हूँ, फादर फाउचेलेवेंट। यहाँ विद्यार्थी हैं।”
और जीन वाल्जेन ने मन ही मन सोचा:—

"कोसेट की शिक्षा की व्यवस्था पहले ही हो चुकी है।"
फाउचेलवेंट ने कहा:—
“पार्डिन! यहाँ छोटी बच्चियाँ हैं! और वे तुम्हारे चारों ओर चिल्लाएँगी! और वे भाग जाएँगी! यहाँ मर्द होना मानो प्लेग का शिकार होना है। देखो, उन्होंने मेरे पंजे में घंटी बाँध दी है, मानो मैं कोई जंगली जानवर हूँ।” जीन वाल्जेन गहन चिंतन में डूबते चले गए।—उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, “यह मठ ही हमारी मुक्ति का मार्ग होगा।”
फिर उसने अपनी आवाज ऊंची की:—
"हां, मुश्किल तो यहीं टिके रहने में है।"
“नहीं,” फाउचेलेवेंट ने कहा, “मुश्किल तो बाहर निकलने में है।”
जीन वाल्जेन को लगा कि उसके दिल में खून का प्रवाह फिर से तेज हो गया है। "बाहर निकलने के लिए!"
"जी हां, महाशय मेडेलीन। यहां वापस आने के लिए पहले यहां से निकलना जरूरी है।"
और जब एक और घंटी बजी, तब फाउचेलवेंट ने आगे कहा:—
“तुम्हें इस हालत में यहाँ नहीं पाया जाना चाहिए। तुम कहाँ से आए हो? मेरे लिए तो तुम स्वर्ग से गिरे हो, क्योंकि मैं तुम्हें जानता हूँ; लेकिन ननें चाहती हैं कि प्रवेश द्वार से ही हो।”
अचानक उन्हें एक और घंटी से एक जटिल सी ध्वनि सुनाई दी।
“आह!” फॉशेलवेंट ने कहा, “वे मुखर माताओं को फोन कर रहे हैं। वे सभा में जा रहे हैं। किसी की मृत्यु होने पर वे हमेशा सभा करते हैं। उसकी मृत्यु भोर में हुई। आम तौर पर लोग भोर में ही मरते हैं। लेकिन क्या आप जिस रास्ते से अंदर आए थे, उसी रास्ते से बाहर नहीं निकल सकते? आइए, मैं आपसे पूछताछ करने के लिए नहीं पूछ रहा हूँ, लेकिन आप अंदर कैसे आए थे?”
जीन वालजेन का चेहरा पीला पड़ गया; उस भयानक गली में दोबारा उतरने के ख्याल मात्र से ही वह कांप उठा। आप बाघों से भरे जंगल से बाहर निकलें, और एक बार बाहर निकलने के बाद, कल्पना कीजिए कि कोई मित्रवत सलाहकार आपको वहीं वापस

जाने की सलाह दे! जीन वालजेन ने अपने मन में कल्पना की कि पूरी पुलिस अभी भी उस इलाके में तैनात है, एजेंट पहरा दे रहे हैं, हर जगह पहरेदार हैं, डरावनी मुट्ठियाँ उसकी ओर तनी हुई हैं, शायद जेवर्ट गली के चौराहे पर खड़ा है।

“असंभव!” उसने कहा। “फादर फाउचेलेवेंट, कहिए कि मैं आकाश से गिरा था।”

“पर मैं मानता हूँ, मैं मानता हूँ,” फॉशेलवेंट ने पलटकर जवाब दिया। “आपको मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है। भगवान ने आपको अपने हाथों में इसलिए लिया होगा ताकि आपको करीब से देख सकें, और फिर छोड़ दिया होगा। बस, उनका इरादा आपको किसी पुरुष के मठ में रखने का था; उनसे गलती हो गई। सुनो, एक और घंटी बजी, यानी चौकीदार को आदेश दिया गया है कि जाकर नगर पालिका को सूचित करे कि मृत व्यक्ति का डॉक्टर यहाँ आकर शव को देखने वाला है। यह सब मरने की रस्म है। इन महिलाओं को यह मुलाक़ात बिल्कुल पसंद नहीं है। डॉक्टर वह आदमी होता है जो किसी चीज़ में विश्वास नहीं करता। वह पर्दा उठाता है। कभी-कभी वह कुछ और भी उठाता है। इस बार तो उन्होंने डॉक्टर को कितनी जल्दी बुला लिया! क्या बात है? आपकी छोटी बच्ची अभी भी सो रही है। उसका नाम क्या है?”

कोसेट।

“क्या वह आपकी बेटी है? मतलब, आप उसके दादा हैं?”

"हाँ।"

“उसके लिए यहाँ से निकलना बहुत आसान होगा। मेरा एक सेवा द्वार है जो आँगन में खुलता है। मैं दस्तक देती हूँ। चौकीदार दरवाजा खोलता है; मेरी पीठ पर मेरी पुरानी टोकरी है, बच्चा उसमें है, मैं बाहर निकल जाती हूँ। फादर फॉशेलवेंट भी अपनी टोकरी लेकर बाहर जाते हैं—यह तो बिल्कुल स्वाभाविक है। आप बच्चे से कहेंगे कि वह बिल्कुल चुप रहे। वह छांव में रहेगी। मैं उसे अपने एक पुराने दोस्त, एक फल विक्रेता के पास छोड़ दूँगी, जिसे मैं रू शेमिन-वर्ट में जानती हूँ, जो बहरा है और जिसके पास एक छोटा सा पलंग है। मैं फल विक्रेता के कान में चिल्लाकर कहूँगी कि वह मेरी भतीजी है और उसे कल तक मेरे पास रखे। फिर वह छोटी बच्ची आपके साथ वापस आ जाएगी; क्योंकि मैं आपको वापस अंदर भेजने का इंतजाम कर दूँगी। यह करना ही होगा। लेकिन आप बाहर कैसे निकलेंगे?”

जीन वाल्जेन ने अपना सिर हिलाया।

“मुझे कोई नहीं देख सकता, सारा मकसद यही है, फादर फाउचेलेवेंट। मुझे किसी टोकरी में, छुपकर, कोसेट की तरह बाहर निकालने का कोई तरीका ढूंढिए।”

फाउचेलेवेंट ने अपनी बाईं हथेली की मध्यमा उंगली से अपने कान के निचले हिस्से को खुजलाया, जो गंभीर शर्मिंदगी का संकेत था।

तीसरी घंटी बजने से ध्यान भटक गया।

“ये तो मृत्यु-चिकित्सक की विदाई है,” फॉशेलवेंट ने कहा। “उन्होंने एक नज़र डाली और कहा: ‘ये मर चुकी है, अच्छा हुआ।’ जब चिकित्सक स्वर्ग के पासपोर्ट पर हस्ताक्षर कर देते हैं, तो अंतिम संस्कार कंपनी एक ताबूत भेजती है। अगर माँ होती है, तो माताएँ उसे लिटाती हैं; अगर बहन होती है, तो बहनें उसे लिटाती हैं। इसके बाद, मैं उसे कीलों से ठोक देता हूँ। ये मेरे माली के कर्तव्य का एक हिस्सा है। माली एक तरह से कब्र खोदने वाला होता है। उसे चर्च के निचले हॉल में रखा जाता है जो सड़क से जुड़ा होता है, और जिसमें मृत्यु-चिकित्सक के अलावा कोई भी व्यक्ति प्रवेश नहीं कर सकता। मैं अंतिम संस्कार कंपनी के आदमियों और खुद को आदमी नहीं मानता। उसी हॉल में मैं ताबूत को कीलों से ठोक देता हूँ। अंतिम संस्कार कंपनी के आदमी आते हैं और उसे ले जाते हैं, और कोड़े मारते हैं, कोचमैन! यही स्वर्ग जाने का रास्ता है। वे एक खाली बक्सा लाते हैं, और उसे कुछ भरकर वापस ले जाते हैं। अंतिम संस्कार ऐसा ही होता है। गहराई में।”

सूर्य की एक क्षैतिज किरण सोई हुई कोसेट के चेहरे को हल्के से छू रही थी, जो मुंह थोड़ा खुला रखे लेटी हुई थी और मानो किसी देवदूत की तरह प्रकाश को निहार रही हो। जीन वालजेन उसे निहारने लगा था। वह अब फॉशेलवेंट की बातें नहीं सुन रहा था।

किसी की बात न सुनना चुप रहने का कोई कारण नहीं है। भला-भाला माली शांति से अपनी बड़बड़ाहट जारी रखता रहा:—

“वौगिरार्ड कब्रिस्तान में कब्र खोदी जा रही है। वे घोषणा कर रहे हैं कि वे उस वौगिरार्ड कब्रिस्तान को बंद करने जा रहे हैं। यह एक प्राचीन कब्रिस्तान है जो नियमों से बाहर है, जिसका कोई मानक नहीं है, और जिसे बंद किया जा रहा है। यह शर्म की बात है, क्योंकि यह सुविधाजनक है। मेरा वहाँ एक

मित्र है, फादर मेस्टिएन, जो कब्र खोदने का काम करते हैं। यहाँ की ननों को एक विशेषाधिकार प्राप्त है, वह यह कि उन्हें सूर्यास्त के समय उस कब्रिस्तान में ले जाया जा सकता है। उनके लिए प्रीफेक्चर से विशेष अनुमति प्राप्त है। लेकिन कल से कितनी घटनाएँ घटित हुई हैं! मदर क्रूसिफ़िक्शन का निधन हो गया है, और फादर मेडेलीन—”

"उसे दफना दिया गया है," जीन वालजेन ने उदास मुस्कान के साथ कहा।

फाउचेलेवेंट ने यह बात सुन ली।

"हे भगवान! अगर तुम हमेशा के लिए यहाँ होते, तो यह सचमुच एक शानदार अंत्येष्टि होती।"

एक चौथी घंटी बजी। फाउचेलेवेंट ने जल्दी से घंटीनुमा घुटने की टोपी को उसके नाखून से अलग किया और उसे फिर से अपने घुटने पर बांध लिया।

“इस बार ये मेरे लिए है। मदर प्रायरस मुझे बुला रही हैं। अच्छा, अब मैं अपनी बकल की जीभ से चुभ रही हूँ। महाशय मेडेलीन, आप यहाँ से हिलना मत और मेरा इंतज़ार करना। कुछ नया काम आ गया है। अगर आपको भूख लगी है, तो यहाँ शराब, रोटी और पनीर है।”

और वह झोपड़ी से जल्दी से बाहर निकला और चिल्लाने लगा: “आ रहा हूँ! आ रहा हूँ!”

जीन वाल्जेन ने उसे बगीचे में जितनी तेज़ी से उसका टेढ़ा पैर अनुमति दे सकता था, उतनी तेज़ी से भागते हुए देखा, और रास्ते में उसने अपने तरबूज़ के खेत पर तिरछी नज़र डाली।

दस मिनट से भी कम समय बाद, फादर फाउचेलेवेंट, जिनकी घंटी बजने पर ननें भाग गईं, ने एक दरवाजे पर धीरे से दस्तक दी, और एक कोमल आवाज ने जवाब दिया: "हमेशा के लिए! हमेशा के लिए!" यानी: "अंदर आओ।"

यह दरवाजा उस बैठक कक्ष की ओर जाता था जो माली से व्यावसायिक मुलाकात के लिए आरक्षित था। यह बैठक कक्ष सभाघर से सटा हुआ था। बैठक कक्ष में एकमात्र कुर्सी पर बैठी मठाध्यक्षा फाउचेलेवेंट का इंतजार कर रही थीं।

II. किसी कठिनाई की उपस्थिति में फाउचेलेवेंट

कुछ व्यक्तियों और कुछ पेशों, विशेषकर पुजारियों और ननों की यह विशेषता होती है कि वे महत्वपूर्ण अवसरों पर गंभीर और चिंतित भाव धारण कर लेते हैं। जिस क्षण फॉशेलवेंट ने प्रवेश किया, उसी समय मठाध्यक्षा, जो बुद्धिमान और आकर्षक मैडमोजेल डी ब्लेमूर, मदर इनोसेंट थीं और आमतौर पर हंसमुख रहती थीं, उनके चेहरे पर चिंता का यह दोहरा भाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।
माली ने संकोचपूर्वक झुककर प्रणाम किया और कोठरी के द्वार पर ही खड़ा रहा। मठाध्यक्षा, जो माला जप रही थी, ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और बोली:—
“अरे! आप हैं, फादर फॉवेंट।”
इस संक्षिप्त रूप को मठ में अपनाया गया था।
फाउचेलवेंट ने फिर से झुककर अभिवादन किया।
"फादर फाउवेंट, मैंने आपको बुलवाया है।"
“मैं यहाँ हूँ, आदरणीय माताजी।”
मुझे आपसे कुछ कहना है।
“और मैंने भी,” फाउचेलवेंट ने ऐसे साहस के साथ कहा जिससे वह भीतर ही भीतर भयभीत हो गया, “मुझे परम आदरणीय माता से कुछ कहना है।”
मठाध्यक्षा ने उसे घूर कर देखा।
“अरे! आपको मुझसे कुछ कहना है।”
"एक अनुरोध।"
"बहुत अच्छा, बोलो।"
पूर्व नोटरी गुडमैन फॉशेलवेंट आत्मविश्वास से भरे किसानों की श्रेणी में आते थे। एक खास तरह की चतुर अज्ञानता एक ताकत होती है; आप उस पर अविश्वास

नहीं करते, फिर भी उसके जाल में फंस जाते हैं। मठ में बिताए दो वर्षों से कुछ अधिक समय में फॉशेलवेंट सफल रहे थे। हमेशा अकेले और बागवानी में व्यस्त रहने वाले फॉशेलवेंट के पास अपनी जिज्ञासा को शांत करने के अलावा और कोई काम नहीं था। चूंकि वे आने-जाने वाली उन सभी घूंघट वाली महिलाओं से दूर थे, इसलिए उन्हें अपने सामने केवल परछाइयों की हलचल दिखाई देती थी। अपनी एकाग्रता और पैनी नज़र से उन्होंने उन सभी प्रेतों को सजीव रूप दे दिया था, और वे शव उनके लिए जीवित हो उठे थे। वे एक बहरे व्यक्ति की तरह थे जिसकी दृष्टि तेज हो जाती है, और एक अंधे व्यक्ति की तरह जिसकी श्रवण शक्ति बढ़ जाती है। उन्होंने विभिन्न ध्वनियों के अर्थ को समझने का प्रयास किया था, और वे सफल भी हुए थे, इसलिए इस शांत और रहस्यमय मठ में उनके लिए कोई रहस्य नहीं रह गया था; मानो स्फिंक्स ने अपने सारे रहस्य उनके कानों में फुसफुसा दिए हों। फॉशेलवेंट सब कुछ जानता था और सब कुछ छुपाता था; यही उसकी कला थी। पूरा मठ उसे मूर्ख समझता था। धर्म में उसका बहुत बड़ा गुण था। मुखर माताएँ फॉशेलवेंट की बहुत प्रशंसा करती थीं। वह एक विलक्षण मूक व्यक्ति था। वह विश्वास जगाता था। इसके अलावा, वह नियमित था और बाग-बगीचे की स्पष्ट आवश्यकताओं के अलावा कभी बाहर नहीं जाता था। आचरण के इस विवेक ने उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया था। फिर भी, उसने दो लोगों को गपशप करने के लिए उकसाया था: मठ में चौकीदार, जो उनके बैठक कक्ष की विशिष्टताओं को जानता था, और कब्रिस्तान में कब्र खोदने वाला, जो उनकी समाधि की विशेषताओं से परिचित था; इस तरह, उसे इन ननों के विषय में दोहरी जानकारी प्राप्त थी, एक उनके जीवन के बारे में, दूसरी उनकी मृत्यु के बारे में। लेकिन उसने अपने ज्ञान का दुरुपयोग नहीं किया। मंडली उसे बहुत सम्मान देती थी। बूढ़ा, लंगड़ा, सब कुछ देखने में असमर्थ, शायद थोड़ा बहरा भी—क्या गुण थे! उनके स्थान पर किसी और को पाना मुश्किल होता।

उस भले आदमी ने, इस आत्मविश्वास के साथ कि उसकी सराहना की जा रही है, आदरणीय मठाध्यक्षा के सामने एक काफी विस्तृत और बहुत ही गहन देहाती भाषण देना शुरू कर दिया। उन्होंने अपनी उम्र, अपनी दुर्बलताओं, अब से उनके लिए दुगने गिने जाने वाले वर्षों के बोझ, अपने काम की बढ़ती मांगों, विशाल बगीचे और उन रातों के बारे में बहुत देर तक बात की, जो उन्हें गुजारनी पड़ती थीं, जैसे कि पिछली रात, जब उन्हें चाँदनी के कारण खरबूजे के

क्यारियों पर पुआल की चटाइयाँ बिछानी पड़ी थीं। अंत में उन्होंने इस प्रकार कहा: “उनका एक भाई है”—(मठ की प्रमुख ने इशारा किया)—“एक ऐसा भाई जो अब जवान नहीं है”—(मठ की प्रमुख ने दूसरा इशारा किया, लेकिन यह आश्वासन देने वाला था)—“कि यदि अनुमति दी जाए, तो यह भाई आकर उनके साथ रहेगा और उनकी मदद करेगा; कि वह एक उत्कृष्ट माली है; कि समुदाय को उससे अच्छी सेवा मिलेगी, जो उनकी अपनी सेवा से बेहतर होगी; कि अन्यथा, यदि उनके भाई को प्रवेश नहीं दिया गया, क्योंकि उन्हें, बड़े भाई को, लगता है कि उनका स्वास्थ्य खराब हो गया है और वे काम के लिए अपर्याप्त हैं, तो उन्हें बड़े दुख के साथ जाना पड़ेगा; और उनके भाई की एक छोटी बेटी है जिसे वे वह अपने साथ किसी ऐसे व्यक्ति को लाएगा, जिसे घर में ईश्वर के लिए पाला-पोसा जा सके, और जो शायद, कौन जाने, किसी दिन नन बन जाए।

जब उसने बोलना समाप्त कर लिया, तो मठाध्यक्षा ने अपनी उंगलियों के बीच अपनी माला को फिसलने से रोका और उससे कहा:—

"क्या आप आज शाम तक एक मजबूत लोहे की छड़ का इंतजाम कर सकते हैं?"

"किस कारण के लिए?"

"एक उत्तोलक के रूप में कार्य करना।"

“जी हां, आदरणीय माताजी,” फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया।

मठाध्यक्षा ने एक शब्द भी कहे बिना उठकर बगल वाले कमरे में प्रवेश किया, जो कि अध्याय का मुख्य कक्ष था और जहाँ संभवतः मुखर माताएँ एकत्रित थीं।
फाउचेलेवेंट वहाँ अकेली रह गईं।

III. माँ निर्दोष

लगभग पंद्रह मिनट बीत गए। मठाध्यक्षा लौटीं और एक बार फिर अपनी कुर्सी पर बैठ गईं।
दोनों वार्ताकार कुछ व्याकुल प्रतीत हो रहे थे। हम यथासंभव उस संवाद की लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे जो उसके बाद हुआ।
“फादर फॉवेंट!”
“रेवरेंड मदर!”
क्या आप उस चैपल को जानते हैं?
"मेरे पास वहाँ एक छोटा सा पिंजरा है, जहाँ मैं सामूहिक प्रार्थना और धार्मिक अनुष्ठान सुनता हूँ।"
“और आप अपने कर्तव्यों के निर्वहन में ही गायन मंडली में शामिल हुए हैं?” "दो या तीन बार।"
"एक पत्थर खड़ा किया जाना है।"
"भारी?"
"वेदी के बगल में स्थित फर्श की वह पटिया।"
“वह शिलाखंड जो तिजोरी को बंद करता है?”
"हाँ।"
"इसके लिए दो आदमियों का होना अच्छा रहेगा।"
"मदर एसेंशन, जो पुरुष के समान शक्तिशाली हैं, आपकी सहायता करेंगी।"
एक स्त्री कभी पुरुष नहीं हो सकती।
“आपकी सहायता के लिए यहाँ केवल एक महिला ही है। हर कोई अपनी क्षमता के अनुसार काम करता है। क्योंकि डोम मैबिलॉन ने संत बर्नार्ड के चार सौ सत्रह पत्र दिए हैं, जबकि मर्लोनस हॉर्स्टियस ने केवल तीन सौ सड़सठ ही दिए हैं, इसलिए मैं मर्लोनस हॉर्स्टियस को तुच्छ नहीं समझता।”

"न ही मैं।"
"योग्यता का अर्थ है अपनी क्षमता के अनुसार काम करना। मठ कोई मछलीघर नहीं है।"
और एक स्त्री पुरुष नहीं होती। लेकिन मेरा भाई तो बलवान है!
"और क्या आप एक लीवर ला सकते हैं?"
"उस तरह के दरवाजे के लिए सिर्फ उसी तरह की चाबी फिट बैठती है।"
"पत्थर में एक झंकार है।"
मैं लीवर को इसमें डालूंगा।
और पत्थर को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि वह एक धुरी पर घूमता है। “यह अच्छी बात है, आदरणीय माताजी। मैं तिजोरी खोल दूँगा।”
और चारों मदर प्रीसेंटर्स आपकी मदद करेंगी।
और जब तिजोरी खुली हो?
इसे दोबारा बंद करना होगा।
"क्या वह काफी होगा?"
"नहीं।"
"मुझे अपने आदेश दीजिए, परम आदरणीय माताजी।" “फौवेंट, हमें आप पर पूरा भरोसा है।”
मैं आपकी हर इच्छा पूरी करने के लिए यहाँ हूँ। और हर बात पर शांत रहो!
जी हां, पूज्य माताजी।
जब तिजोरी खुली हो—”
मैं इसे फिर से बंद कर दूंगा।
लेकिन उससे पहले—”
“क्या, आदरणीय माताजी?”

"इसमें कुछ नीचे उतारा जाना चाहिए।"
कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। मठाध्यक्षा ने संकोच के भाव से अपने निचले होंठ को सिकोड़कर सन्नाटा तोड़ा।
“फादर फॉवेंट!”
“रेवरेंड मदर!”
“क्या आपको पता है कि आज सुबह एक माँ का निधन हो गया?”
"नहीं।"
क्या तुमने घंटी नहीं सुनी?
बगीचे के निचले हिस्से में कुछ भी सुनाई नहीं देता।
"वास्तव में?"
मैं अपने ही सिग्नल को मुश्किल से पहचान पा रहा हूँ।
"उनकी मृत्यु सुबह होते ही हो गई।"
और फिर, आज सुबह हवा मेरी दिशा में नहीं बही।
“वह मदर क्रूसिफिकेशन थीं। एक धन्य महिला।”
मठाध्यक्षा थोड़ी देर रुकी, मानो मन ही मन प्रार्थना कर रही हो, अपने होंठ हिलाए और फिर बोलने लगी:—
"तीन साल पहले, जैनसेनिस्ट मैडम डी बेथ्यून, केवल मदर क्रूसिफिकेशन को प्रार्थना करते हुए देखने के कारण ऑर्थोडॉक्स धर्म में परिवर्तित हो गईं।"
“आह! हाँ, अब मुझे शोक की घंटी सुनाई दे रही है, आदरणीय माताजी।”
“माताओं ने उसे शव-कक्ष में ले जाया है, जो चर्च की ओर खुलता है।”
"मुझे पता है।"
“आपके अलावा कोई और उस कक्ष में प्रवेश नहीं कर सकता, और न ही उसे प्रवेश करना चाहिए। इस बात का ध्यान रखें। किसी व्यक्ति को मुर्दाघर में प्रवेश करते देखना एक अद्भुत दृश्य होगा!”

"बहुधा!"
"अरे?"
"बहुधा!"
"आप क्या कहते हैं?"
मैं अक्सर ऐसा कहता हूं।
“किससे ज्यादा बार?”
“रेवरेंड मदर, मैंने यह नहीं कहा कि मैंने कितनी बार कहा, मैंने यह कहा कि मैंने अधिक बार कहा।”
मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही। आप ऐसा बार-बार क्यों कहते हैं?
"आपकी तरह बोलने के लिए, आदरणीय माताजी।"
लेकिन मैंने ‘अधिक बार’ नहीं कहा।
ठीक उसी क्षण, नौ बज गए।
"सुबह नौ बजे और हर समय, वेदी के सबसे पवित्र संस्कार की स्तुति और आराधना हो," मठाध्यक्षा ने कहा।
"आमीन," फौचेलेवेंट ने कहा।
घड़ी ने ठीक समय पर दस्तक दी। इसने "अधिक बार" को संक्षिप्त कर दिया।
संभवतः, यदि ऐसा न होता, तो मठाध्यक्षा और फाउचेलेवेंट उस रहस्य को कभी सुलझा नहीं पाते।
फाउचेलेवेंट ने अपना माथा पोंछा।
मठाध्यक्षा ने मन ही मन एक और हल्की सी बड़बड़ाहट की, शायद मन ही मन कुछ पवित्र बात कही, फिर अपनी आवाज ऊंची की:—
"अपने जीवनकाल में, मदर क्रूसिफ़िक्शन ने लोगों को धर्मांतरित किया; अपनी मृत्यु के बाद, वह चमत्कार करेंगी।"
“वह करेगी!” फादर फाउचेलेवेंट ने कदम बढ़ाते हुए और फिर से पीछे न हटने की कोशिश करते हुए जवाब दिया।

“फादर फाउवेंट, मदर क्रूसिफ़िक्शन के रूप में समुदाय को सौभाग्य प्राप्त हुआ है। निस्संदेह, कार्डिनल डी बेरुल की तरह पवित्र मास के दौरान मृत्यु को प्राप्त होना और इन शब्दों का उच्चारण करते हुए अपनी आत्मा को ईश्वर को सौंप देना, ये नसीब हर किसी को नहीं होता: Hanc igitur oblationem (स्वर्गीय प्रार्थना)। लेकिन ऐसी खुशी प्राप्त किए बिना भी, मदर क्रूसिफ़िक्शन की मृत्यु अत्यंत अनमोल थी। वे अंतिम क्षण तक सचेत रहीं। उन्होंने हमसे बात की, फिर स्वर्गदूतों से बात की। उन्होंने हमें अपने अंतिम आदेश दिए। यदि आपमें थोड़ी और आस्था होती, और यदि आप उनकी कोठरी में होते, तो वे केवल आपके पैर को छूकर ही उसे ठीक कर देतीं। वे मुस्कुराईं। हमें ऐसा लगा जैसे वे ईश्वर में अपना जीवन पुनः प्राप्त कर रही हों। उस मृत्यु में स्वर्ग का अंश था।”

फाउचेलेवेंट ने सोचा कि वह एक प्रार्थना पूरी कर रही थी।

“आमीन,” उसने कहा।

"फादर फाउवेंट, मृतकों की इच्छा का पालन करना होगा।"

मठाध्यक्षा ने अपनी माला के कुछ मनके उतार दिए। फॉशेलवेंट चुप रहा।

उसने आगे कहा:—

"मैंने इस विषय पर प्रभु की सेवा में कार्यरत कई धर्मगुरुओं से परामर्श किया है, जो पुरोहित जीवन के कार्यों में लगे रहते हैं और अद्भुत फल देते हैं।"

"रेवरेंड मदर, आप बगीचे की तुलना में यहां शोक की ध्वनि कहीं बेहतर सुन सकते हैं।"

"इसके अलावा, वह सिर्फ एक मृत महिला नहीं है, वह एक संत है।"

"आपकी ही तरह, आदरणीय माताजी।"

“वह हमारे परम पावन पिता, पायस VII की स्पष्ट अनुमति से बीस वर्षों तक अपने ताबूत में सोई रही।”

“वह जिसने सम्राट का राज्याभिषेक किया—बोनापार्ट।”

फाउचेलेवेंट जैसे चतुर व्यक्ति के लिए यह संकेत थोड़ा अटपटा था। सौभाग्यवश, मठाध्यक्षा, जो पूरी तरह से अपने विचारों में डूबी हुई थी, ने इसे नहीं सुना। उसने आगे कहा:—
“फादर फाउवेंट?”
“रेवरेंड मदर?”
“कैपाडोसिया के आर्कबिशप संत डिडोरस चाहते थे कि उनकी समाधि पर केवल एक शब्द अंकित हो: अकारस, जिसका अर्थ है, धरती का कीड़ा; ऐसा ही किया गया। क्या यह सच है?”
जी हां, पूज्य माताजी।
“अक्विला के मठाधीश, परम पूज्य मेज़ोकेन, फांसी के तख्ते के नीचे दफन होना चाहते थे; ऐसा ही किया गया।”
“यह सच है।”
पोर्ट के बिशप संत टेरेंटियस, जहाँ टाइबर नदी का मुहाना समुद्र में गिरता है, ने अनुरोध किया कि उनकी समाधि पर वही चिन्ह अंकित किया जाए जो पितृहत्यारों की कब्रों पर लगाया जाता था, इस आशा में कि राहगीर उनकी समाधि पर थूकेंगे। ऐसा ही किया गया। मृतकों की आज्ञा का पालन करना चाहिए। "ऐसा ही होगा।"
“फ्रांस में रोश-एबेइल के पास जन्मे बर्नार्ड गाइडोनीस के पार्थिव शरीर को, उनके आदेशानुसार और कैस्टिले के राजा की इच्छा के विरुद्ध, लिमोज में डोमिनिकन चर्च ले जाया गया, हालांकि बर्नार्ड गाइडोनीस स्पेन के तुय के बिशप थे। क्या इससे विपरीत बात कही जा सकती है?”
“वैसे, नहीं, आदरणीय माताजी।”
"तथ्य प्लांटाविट डे ला फॉसे द्वारा प्रमाणित है।"
माला के कुछ मनकों को मौन में ही गिना गया। मठाध्यक्षा ने फिर बोलना शुरू किया:—
"फादर फाउवेंट, मदर क्रूसिफ़िक्शन को उसी ताबूत में दफनाया जाएगा जिसमें वह पिछले बीस वर्षों से सो रही हैं।"

“यह तो बिल्कुल सही है।”
"यह उसकी नींद का ही एक सिलसिला है।"
तो क्या मुझे उस ताबूत को कीलों से ठोकना पड़ेगा?
"हाँ।"
“और क्या हमें अंतिम संस्कार करने वाले के ताबूत को अस्वीकार करना चाहिए?” "एकदम सही।"
मैं परम आदरणीय समुदाय के आदेशानुसार कार्य कर रहा हूँ।
"चारों मदर प्रीसेंटर आपकी सहायता करेंगी।"
“ताबूत में कील ठोकने के लिए? मुझे उनकी जरूरत नहीं है।”
नहीं। ताबूत को नीचे उतारने में।
"कहाँ?"
"तिजोरी में।"
“कौन सा तिजोरी?”
वेदी के नीचे।
फाउचेलेवेंट ने शुरुआत की।
"वेदी के नीचे का तहखाना?"
वेदी के नीचे।
लेकिन—”
"तुम्हारे पास लोहे की छड़ होगी।"
“हां, लेकिन…”
"तुम अंगूठी की सहायता से छड़ के साथ पत्थर को उठाओगे।"
लेकिन—”
“मृतकों की आज्ञा का पालन करना चाहिए। उन्हें चैपल की वेदी के नीचे बने तहखाने में दफनाया जाए, अपवित्र धरती में न भेजा जाए; मृत्यु के बाद भी

वहीं रखा जाए जहाँ उन्होंने जीवित रहते हुए प्रार्थना की थी; यही मदर क्रूसिफ़िक्शन की अंतिम इच्छा थी। उन्होंने हमसे यही माँगा था; दूसरे शब्दों में, उन्होंने हमें यही आदेश दिया था।”
लेकिन यह निषिद्ध है।
“मनुष्यों द्वारा निषिद्ध, ईश्वर द्वारा अनिवार्य।”
"अगर यह बात सबको पता चल जाए तो क्या होगा?"
हमें आप पर पूरा भरोसा है।
“ओह! मैं तुम्हारी दीवारों में फंसा एक पत्थर हूँ।”
“चैप्टर इकट्ठा हुआ। मुखर माताओं, जिनसे मैंने अभी फिर से परामर्श किया है और जो अब विचार-विमर्श कर रही हैं, ने निर्णय लिया है कि मदर क्रूसिफ़िक्शन को उनकी इच्छा के अनुसार, हमारे वेदी के नीचे, उनके अपने ताबूत में दफनाया जाएगा। सोचिए, फादर फ़ॉवेंट, अगर वह यहाँ चमत्कार करतीं! समुदाय के लिए ईश्वर की कितनी महिमा होती! और चमत्कार कब्रों से निकलते हैं।”
लेकिन, आदरणीय माताजी, यदि स्वच्छता आयोग का प्रतिनिधि—”
"सेंट बेनोइट द्वितीय ने, कब्र के मामले में, कॉन्स्टेंटाइन पोगोनैटस का विरोध किया।"
लेकिन पुलिस का राशनखाना—”
"कॉन्स्टेंटियस के साम्राज्य के अधीन गॉल लोगों के बीच प्रवेश करने वाले सात जर्मन राजाओं में से एक, चोनोडेमेयर ने स्पष्ट रूप से ननों के धार्मिक रूप से, अर्थात् वेदी के नीचे दफनाए जाने के अधिकार को मान्यता दी।" लेकिन प्रीफेक्चर का इंस्पेक्टर—”
“क्रॉस की उपस्थिति में संसार कुछ भी नहीं है। कार्थुसियनों के ग्यारहवें सेनापति मार्टिन ने अपने संगठन को यह प्रतीक चिन्ह दिया: Stat crux dum volvitur orbis।”
"आमीन," फाउचेलवेंट ने कहा, जो लैटिन सुनते ही इस तरह से अविचलित होकर खुद को दुविधा से बाहर निकाल लेते थे।

जो व्यक्ति बहुत लंबे समय तक चुप रहा हो, उसके लिए कोई भी श्रोता पर्याप्त होता है। जिस दिन वक्ता जिम्नास्टोरस अपने शरीर में कई दुविधाओं और अनेक तर्कों को लिए हुए अपनी कैद से निकला, वह सामने आए पहले पेड़ के सामने रुका, उसे उपदेश दिया और उसे समझाने का भरसक प्रयास किया। मठाध्यक्षा, जो आमतौर पर मौन की दीवार के अधीन रहती थी और जिसका भंडार भरा हुआ था, उठी और टूटे हुए बांध की वाक्पटुता से बोली:

मेरे दाहिनी ओर बेनोइट और बाईं ओर बर्नार्ड हैं। बर्नार्ड कौन थे? क्लेयरवॉक्स के पहले मठाधीश। बरगंडी का फॉन्टेन्स एक ऐसा देश है जो उनके जन्म के कारण धन्य है। उनके पिता का नाम टेसेलिन और माता का नाम एलेथे था। उन्होंने सिटो से शुरुआत की और क्लेयरवॉक्स में अपना कार्यकाल समाप्त किया; उन्हें शैलोन-सुर-सोन के बिशप, गुइलौम डी शैम्पो द्वारा मठाधीश नियुक्त किया गया था; उनके सात सौ नौसिखिए थे और उन्होंने एक सौ साठ मठों की स्थापना की; उन्होंने 1140 में सेंस की परिषद में एबेलार्ड, पियरे डी ब्रुइस और उनके शिष्य हेनरी, और अन्य प्रकार के गुमराह लोगों को पराजित किया जिन्हें अपोस्टोलिक कहा जाता था; उन्होंने अर्नाउल्ड डी ब्रेशिया को भ्रमित किया, यहूदियों के हत्यारे भिक्षु राउल पर बिजली गिराई, 1148 में रैम्स की परिषद पर अपना प्रभुत्व जमाया, और गिल्बर्ट डी की निंदा करवाई। पोइटियर्स के बिशप पोरिया ने इयोन डे ल'एटॉइल की निंदा करवाई, राजकुमारों के विवादों को सुलझाया, राजा लुई द यंग को ज्ञान दिया, पोप यूजीन तृतीय को सलाह दी, मंदिर का नियमन किया, धर्मयुद्ध का प्रचार किया, अपने जीवनकाल में ढाई सौ चमत्कार किए और एक ही दिन में उनतीस चमत्कार किए। बेनोइट कौन थे? वे मोंट-कैसिन के कुलपति थे; वे सेंटेटे क्लॉस्ट्रेल के दूसरे संस्थापक थे, वे पश्चिम के बेसिल थे। उनके संप्रदाय ने चालीस पोप, दो सौ कार्डिनल, पचास कुलपति, सोलह सौ आर्कबिशप, चार हज़ार छह सौ बिशप, चार सम्राट, बारह महारानियाँ, छियालीस राजा, इकतालीस रानियाँ, तीन हज़ार छह सौ संत दिए हैं और यह चौदह सौ वर्षों से अस्तित्व में है। एक तरफ संत बर्नार्ड, दूसरी तरफ स्वच्छता विभाग के प्रतिनिधि! एक तरफ संत बेनोइट, दूसरी तरफ सार्वजनिक मार्गों के निरीक्षक! राज्य, सड़क आयुक्त, सार्वजनिक परिवहन अधिकारी, नियम, प्रशासन, इन सबके बारे में हम क्या जानते हैं? शायद ही कोई राहगीर ऐसा होगा जो हमारे साथ होने वाले बर्ताव को देखकर नाराज़ न हो। हमें तो

यीशु मसीह को अपनी राख अर्पित करने का भी अधिकार नहीं है! आपका स्वच्छता विभाग एक क्रांतिकारी आविष्कार है। भगवान पुलिस के अधीन हो गए हैं; यही है वो युग। चुप रहो, फॉवेंट!

फाउचेलवेंट इस शॉवर बाथ के नीचे बिल्कुल भी सहज महसूस नहीं कर रहा था। मठाध्यक्ष ने आगे कहा:—

“मठ में समाधि देने के अधिकार पर किसी को संदेह नहीं है। केवल कट्टरपंथी और गुमराह लोग ही इसका खंडन करते हैं। हम घोर भ्रम के दौर में जी रहे हैं। हम वह नहीं जानते जो जानना आवश्यक है, और हम वह जानते हैं जिसे हमें अनदेखा करना चाहिए। हम अज्ञानी और अधर्मी हैं। इस युग में ऐसे लोग मौजूद हैं जो महान संत बर्नार्ड और गरीब कैथोलिकों द्वारा संत कहे जाने वाले संत बर्नार्ड, तेरहवीं शताब्दी में रहने वाले एक अच्छे पादरी के बीच अंतर नहीं करते। कुछ लोग इतने ईशनिंदा करते हैं कि लुई सोलहवें के फांसी के तख्ते की तुलना यीशु मसीह के क्रूस से करते हैं। लुई सोलहवां तो केवल एक राजा था। आइए हम ईश्वर से सावधान रहें! अब न तो न्याय है और न ही अन्याय। वोल्टेयर का नाम तो जाना जाता है, लेकिन सीज़र डी बस का नाम नहीं। फिर भी, सीज़र डी बस एक धन्य स्मृति के व्यक्ति हैं, और वोल्टेयर एक अपवित्र स्मृति के। अंतिम आर्कबिशप, कार्डिनल डी पेरिगोर्ड, यह भी नहीं जानते थे कि चार्ल्स डी गोंड्रेन बेरुल के उत्तराधिकारी बने थे, और फ्रांस्वा बोर्गोइन से गोंड्रेन, जीन-फ्रांस्वा सेनाल्ट से बोर्गोइन, और फादर सेंट-मार्था से जीन-फ्रांस्वा सेनाल्ट। फादर कोटोन का नाम इसलिए जाना जाता है, क्योंकि वे उन तीन लोगों में से एक थे जिन्होंने ऑरेटोरिए की स्थापना का आग्रह किया था, बल्कि इसलिए कि उन्होंने ह्यूगनॉट राजा हेनरी चतुर्थ को शपथ के लिए सामग्री प्रदान की थी। दुनिया के लोगों को संत फ्रांस्वा डी सेल्स में जो बात पसंद आती है, वह यह है कि उन्होंने खेल में धोखा दिया। और फिर, धर्म पर हमला किया जाता है। क्यों? क्योंकि बुरे पादरी हुए हैं, क्योंकि गैप के बिशप सैगिटेयर, एम्ब्रुन के बिशप सलोन के भाई थे, और क्योंकि दोनों मोम्मोल के अनुयायी थे। इसका प्रश्न से क्या लेना-देना है? क्या इससे मार्टिन डी टूर्स को संत होने और अपने लबादे का आधा हिस्सा एक भिखारी को देने से रोका जा सकता है? वे संतों को सताते हैं। वे सच्चाई से आंखें मूंद लेते हैं। अंधकार ही नियम है। सबसे क्रूर जानवर वे जानवर होते हैं जो

अंधा। कोई नरक को वास्तविकता नहीं मानता। ओह! लोग कितने दुष्ट हैं! राजा के आदेश का अर्थ आज क्रांति के आदेश से है। अब किसी को नहीं पता कि जीवितों का क्या हक है और मृतकों का क्या। पवित्र मृत्यु निषिद्ध है। दफ़नाना एक नागरिक मामला है। यह भयानक है। संत लियो द्वितीय ने मृतकों से संबंधित मामलों में एक्सार्क के अधिकार और सम्राट की सर्वोच्चता का मुकाबला करने और उसे अस्वीकार करने के उद्देश्य से दो विशेष पत्र लिखे, एक पियरे नोटेयर को और दूसरा विसिगोथ के राजा को। शैलों के बिशप गौथियर ने इस मामले में बरगंडी के ड्यूक ओथो के खिलाफ अपनी बात रखी। प्राचीन न्यायपालिका उनसे सहमत थी। पुराने समय में, हमारे पास अध्याय में, यहां तक कि समसामयिक मामलों पर भी, अपनी राय रखने का अधिकार था। सिटो के मठाधीश, जो मठ के प्रमुख थे, जन्म से बरगंडी की संसद के पार्षद थे। हम अपने मृतकों के साथ जो चाहें करते हैं। क्या संत बेनोइट का शरीर स्वयं फ्रांस में, मठ में नहीं है? फ्लेरी, जिन्हें संत बेनोइट-सुर-लोइरे कहा जाता है, जबकि उनकी मृत्यु इटली के मोंट-कैसिन में शनिवार, 21 मार्च, 543 ईस्वी को हुई थी? यह सब निर्विवाद है। मैं भजन गाने वालों से घृणा करता हूँ, मैं मठाधीशों से नफरत करता हूँ, मैं विधर्मियों की निंदा करता हूँ, लेकिन मैं उससे भी अधिक घृणा करता हूँ जो इसके विपरीत कहता है। इसके लिए केवल अर्नौल वियोन, गैब्रियल बुसेलिन, ट्रिथेमस, मौरोलिक्स और डोम ल्यूक डी'अचेरी को पढ़ना ही काफी है।

मठाध्यक्षा ने गहरी सांस ली, फिर फाउचेलेवेंट की ओर मुड़ी।

"क्या यह तय हो गया है, फादर फाउवेंट?"

“यह तय हो चुका है, आदरणीय माताजी।”

“क्या हम आप पर निर्भर हो सकते हैं?”

"मैं आज्ञा का पालन करूँगा।"

“यह अच्छी बात है।”

मैं पूरी तरह से मठ के प्रति समर्पित हूं।

“यह समझ लिया गया है। आप ताबूत को बंद कर देंगे। बहनें उसे चैपल तक ले जाएंगी। फिर मृतकों के लिए प्रार्थना की जाएगी। उसके बाद हम मठ लौट आएंगे। रात ग्यारह बजे से आधी रात के बीच, आप अपनी लोहे की छड़ लेकर आएंगे। सब कुछ

अत्यंत गुप्त रूप से किया जाएगा। चैपल में केवल चार मदर प्रीसेंटर, मदर एसेंशन और आप ही उपस्थित रहेंगे।”
और पोस्ट पर तैनात बहन?
वह पीछे मुड़कर नहीं देखेगी।
लेकिन वह सुन लेगी।
“वह नहीं सुनेगी। इसके अलावा, मठ को जो पता होता है, दुनिया को वह पता नहीं होता।”
कुछ देर का विराम छा गया। मठाध्यक्षा ने आगे कहा:—
“आप अपनी घंटी हटा लें। यह आवश्यक नहीं है कि चौकी पर तैनात महिला को आपकी उपस्थिति का पता चले।”
“रेवरेंड मदर?”
“क्या, फादर फॉवेंट?”
क्या मृतकों के डॉक्टर ने दौरा किया है?
“वह आज शाम चार बजे इसका भुगतान करेगा। मृतकों के लिए डॉक्टर को बुलाने का आदेश देने वाली घंटी पहले ही बज चुकी है। लेकिन क्या आप इनमें से किसी भी घंटी का अर्थ नहीं समझते?”
मैं अपने सिवा किसी और पर ध्यान नहीं देता।
"यह अच्छी बात है, फादर फॉवेंट।"
"रेवरेंड मदर, कम से कम छह फीट लंबा लीवर आवश्यक होगा।"
“आप इसे कहाँ से प्राप्त करेंगे?”
“जहां जाली की कमी नहीं होती, वहां लोहे की छड़ों की भी कमी नहीं होती। मेरे बगीचे के निचले हिस्से में पुराने लोहे का ढेर लगा हुआ है।” "आधी रात से लगभग पौने घंटे पहले; भूलना मत।"
“रेवरेंड मदर?”
"क्या?"

“अगर आपको कभी इस तरह की कोई और नौकरी करनी पड़े, तो मेरा भाई ही आपके लिए सबसे उपयुक्त है। एकदम परफेक्ट तुर्क!”

आप इसे यथाशीघ्र करेंगे।

“मैं बहुत तेजी से काम नहीं कर सकता। मैं कमजोर हूँ; इसीलिए मुझे एक सहायक की आवश्यकता है। मैं लंगड़ाकर चलता हूँ।”

"लंगड़ाना कोई पाप नहीं है, बल्कि शायद एक आशीर्वाद है। सम्राट हेनरी द्वितीय, जिन्होंने विरोधी पोप ग्रेगरी का मुकाबला किया और बेनोइट अष्टम को पुनः स्थापित किया, उनके दो उपनाम हैं: संत और लंगड़ा।"

"दो ओवरकोट पहनना अच्छी बात है," फाउचेलेवेंट ने बुदबुदाते हुए कहा, जो वास्तव में थोड़ा बहरा था।

“अब जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, फादर फॉवेंट, तो चलिए इसके लिए पूरा एक घंटा देते हैं। यह ज़्यादा नहीं है। ग्यारह बजे मुख्य वेदी के पास, अपनी लोहे की छड़ के साथ, उपस्थित रहें। प्रार्थना आधी रात को शुरू होती है। इससे पहले सब कुछ कम से कम पंद्रह मिनट में पूरा हो जाना चाहिए।”

“समुदाय के प्रति अपनी निष्ठा साबित करने के लिए मैं कुछ भी करूँगा। ये मेरे आदेश हैं। मुझे ताबूत को कीलों से ठोकना है। ठीक ग्यारह बजे, मुझे चैपल में होना है। मदर प्रीसेंटर्स वहाँ होंगी। मदर एसेंशन भी वहाँ होंगी। दो आदमी होते तो बेहतर होता। खैर, कोई बात नहीं! मेरे पास मेरा लीवर होगा। हम तिजोरी खोलेंगे, ताबूत नीचे उतारेंगे और तिजोरी को फिर से बंद कर देंगे। इसके बाद, किसी भी चीज़ का कोई निशान नहीं बचेगा। सरकार को कोई संदेह नहीं होगा। इस प्रकार सब कुछ व्यवस्थित हो गया है, पूज्य माता?”

"नहीं!"

“और क्या बचा है?”

“खाली ताबूत वहीं पड़ा रहता है।”

इससे एक विराम आ गया। फॉशेलवेंट ने ध्यान किया। मठाध्यक्षा ने भी ध्यान किया।

"फादर फाउवेंट, उस ताबूत का क्या किया जाए?"

इसे धरती को दे दिया जाएगा।

"खाली?"

एक और सन्नाटा। फाउचेलेवेंट ने अपने बाएं हाथ से एक ऐसा इशारा किया, जिससे किसी मुश्किल विषय को टालने का संकेत मिलता है।

“आदरणीय माता, मैं ही वह व्यक्ति हूँ जो चर्च के तहखाने में ताबूत को कीलों से ठोककर रखूँगा, और मेरे अलावा कोई भी वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता, और मैं ही ताबूत को कफ़न से ढक दूँगा।”

"हां, लेकिन जब शव ले जाने वाले लोग इसे शव वाहन में रखेंगे और कब्र में नीचे उतारेंगे, तो उन्हें निश्चित रूप से यह महसूस होगा कि इसमें कुछ भी नहीं है।"

“आह! यह तो...!” फॉशेलवेंट ने हैरानी से कहा।

मठाध्यक्षा ने क्रॉस का चिन्ह बनाना शुरू किया और माली को घूरकर देखने लगी। उसके गले में शब्द अटक गया।

उसने शपथ भुलाने के लिए उसे मजबूर करने का कोई उपाय खोजने में जल्दबाजी की।

“मैं ताबूत में मिट्टी डालूंगा, आदरणीय माताजी। इससे शव जैसा प्रभाव उत्पन्न होगा।”

“आप सही कह रहे हैं। पृथ्वी, वह मनुष्य के समान ही है। तो क्या आप खाली ताबूत का प्रबंधन करेंगे?”

मैं इसे अपना विशेष व्यवसाय बनाऊंगा।

उस क्षण तक चिंता और उदासी से भरे चेहरे वाली मठाध्यक्षा का चेहरा एक बार फिर शांत हो गया। उन्होंने एक वरिष्ठ अधिकारी द्वारा अपने से कनिष्ठ अधिकारी को विदा करने का संकेत दिया। फॉशेलवेंट दरवाजे की ओर बढ़ा। जैसे ही वह बाहर निकलने ही वाला था, मठाध्यक्षा ने धीरे से अपनी आवाज उठाई:—

“मैं आपसे प्रसन्न हूँ, फादर फॉवेंट; कल अंतिम संस्कार के बाद अपने भाई को मेरे पास ले आइए और उससे कहिए कि वह अपनी बेटी को भी ले आए।”

IV. जिसमें जीन वालजेन ने ऑस्टिन कैस्टिलेजो को पढ़ा हुआ प्रतीत होता है।

लंगड़े आदमी के कदम एक आँख वाले आदमी की टकटकी भरी निगाहों की तरह होते हैं; वे अपने लक्ष्य तक जल्दी नहीं पहुँचते। इसके अलावा, फॉशेलवेंट दुविधा में था। उसे बगीचे में अपनी कुटिया तक लौटने में लगभग पंद्रह मिनट लग गए। कोसेट जाग चुकी थी। जीन वालजेन ने उसे आग के पास बिठा दिया था। जिस क्षण फॉशेलवेंट अंदर आया, जीन वालजेन दीवार पर टंगी शराब की टोकरी की ओर इशारा करते हुए उससे कह रहा था, “मेरी प्यारी कोसेट, मेरी बात ध्यान से सुनो। हमें इस घर से जाना होगा, लेकिन हम वापस लौटेंगे और यहाँ बहुत खुश रहेंगे। यहाँ रहने वाला भला आदमी तुम्हें उस टोकरी में अपनी पीठ पर बिठाकर ले जाएगा। तुम एक महिला के घर पर मेरा इंतज़ार करना। मैं तुम्हें लेने आऊँगा।
मेरी बात मानो और सबसे बढ़कर कुछ मत बोलना, वरना मैडम थेनार्डियर तुम्हें फिर से ले जाएँगी!”

कोसेट ने गंभीरता से सिर हिलाया।

फाउचेलेवेंट द्वारा दरवाजा खोलने की आवाज सुनकर जीन वालजेन मुड़ गया।

"कुंआ?"

“सब कुछ व्यवस्थित है, और कुछ भी नहीं,” फॉशेलवेंट ने कहा। “मुझे आपको अंदर लाने की अनुमति मिल गई है; लेकिन अंदर लाने से पहले आपको बाहर निकालना होगा। मुश्किल यहीं है। बच्चे के साथ तो यह काफी आसान है।”

"क्या तुम उसे बाहर ले जाओगे?"

और क्या वह चुप रहेगी?

मैं इसके लिए जवाबदेह हूं।

"लेकिन आप, फादर मेडेलीन?"

और, चिंता से भरी चुप्पी के बाद, फाउचेलेवेंट ने कहा:—

“अरे, जैसे आए थे वैसे ही चले जाओ!”

जीन वाल्जेन ने, जैसा कि पहली बार हुआ था, "असंभव" कहकर संतोष कर लिया।

फाउचेलवेंट ने जीन वालजेन से ज्यादा खुद से ही बड़बड़ाया:—

“एक और बात है जो मुझे परेशान करती है। मैंने कहा था कि मैं उसमें मिट्टी डालूंगा। जब मैं इस बारे में सोचता हूं, तो लाश की जगह मिट्टी असली चीज़ जैसी नहीं लगेगी, यह ठीक नहीं होगा, यह अपनी जगह से हट जाएगी, इधर-उधर खिसक जाएगी। लोग इसे उठाएंगे। आप समझते हैं ना, फादर मेडेलिन, सरकार को इसका पता चल जाएगा।”

जीन वाल्जेन ने उसकी आंखों में सीधे देखा और सोचा कि वह पागलों की तरह बातें कर रहा है।

फाउचेलवेंट ने आगे कहा:—

“तुम यहाँ से निकलोगे कैसे? यह सब कल सुबह तक हो जाना चाहिए। कल ही मुझे तुम्हें अंदर लाना है। मठाध्यक्षा तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं।”

फिर उसने जीन वालजेन को समझाया कि यह उस सेवा का प्रतिफल है जो उसे, फाउचेलेवेंट को, समुदाय के लिए करनी थी। यह उसका कर्तव्य था कि वह शवों के अंतिम संस्कार में भाग ले, ताबूतों को कीलों से ठोक दे और कब्रिस्तान में कब्र खोदने वाले की मदद करे। उस सुबह जिस नन का निधन हुआ था, उसने इच्छा व्यक्त की थी कि उसे उसी ताबूत में दफनाया जाए जो उसके बिस्तर का काम करता था, और उसे चैपल की वेदी के नीचे बने तहखाने में रखा जाए। पुलिस नियमों के अनुसार यह वर्जित था, लेकिन वह उन मृतकों में से एक थी जिन्हें किसी भी बात के लिए मना नहीं किया जाता। मठाध्यक्षा और अन्य माताएँ मृतक की इच्छा पूरी करने का इरादा रखती थीं। इससे सरकार को और भी बुरा लगा। फाउचेलेवेंट को कोठरी में ताबूत को कीलों से ठोकना था, चैपल में पत्थर लगाना था और शव को तहखाने में उतारना था। और धन्यवाद के रूप में, मठाध्यक्षा को उसके भाई को माली के रूप में और उसकी भतीजी को शिष्या के रूप में मठ में प्रवेश देना था। उसका भाई एम. मेडेलीन था और उसकी भतीजी कोसेट। मठाध्यक्ष ने उसे कब्रिस्तान में नकली दफ़नाने के बाद अगली शाम को अपने भाई को लाने के लिए कहा था। लेकिन अगर एम. मेडेलीन बाहर नहीं थी, तो वह उसे बाहर से अंदर नहीं ला सकता था। यही पहली समस्या थी। और फिर एक और समस्या थी: खाली ताबूत।

“वह खाली ताबूत क्या है?” जीन वाल्जेन ने पूछा।

फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया:—
"प्रशासन का ताबूत।"
“कौन सा ताबूत? कौन सा प्रशासन?”
“एक नन की मृत्यु हो जाती है। नगर निगम का डॉक्टर आता है और कहता है, ‘एक नन की मृत्यु हो गई है।’ सरकार एक ताबूत भेजती है। अगले दिन वह शव वाहन और अंतिम संस्कार करने वालों को ताबूत लाने और उसे कब्रिस्तान ले जाने के लिए भेजती है। अंतिम संस्कार करने वाले आएंगे और ताबूत उठाएंगे; उसमें कुछ भी नहीं होगा।”
"इसमें कुछ डाल दो।"
“लाश? मेरे पास तो कोई लाश नहीं है।”
"नहीं।"
"तो क्या?"
“एक जीवित व्यक्ति।”
“कौन सा व्यक्ति?”
“मैं!” जीन वालजेन ने कहा।
बैठे हुए फाउचेलवेंट ऐसे उछल पड़े मानो उनकी कुर्सी के नीचे बम फट गया हो। "आप!"
"क्यों नहीं?"
जीन वाल्जेन के चेहरे पर एक दुर्लभ मुस्कान आ गई, जिसने सर्दियों में स्वर्ग से आई बिजली की तरह उनके चेहरे को रोशन कर दिया।
“आप जानते हैं, फाउचेलेवेंट, आपने क्या कहा है: ‘मदर क्रूसिफ़िक्शन मर चुकी हैं।’ और मैं इसमें जोड़ता हूँ: ‘और फादर मेडेलीन को दफना दिया गया है।’” “अरे! अच्छा है, आप हंस सकते हैं, आप गंभीरता से बात नहीं कर रहे हैं।” "मुझे सच में इस जगह से निकलना होगा।"
"निश्चित रूप से।"

मैंने तुमसे कहा है कि मेरे लिए एक टोकरी और एक ढक्कन भी ढूंढो। "कुंआ?"
“टोकरी चीड़ की होगी और उसका आवरण काले कपड़े का होगा।”
"सबसे पहले तो, यह सफेद कपड़ा होगा। ननों को सफेद कपड़े में दफनाया जाता है।"
"तो फिर सफेद कपड़ा ही रहने दो।"
"आप अन्य पुरुषों की तरह नहीं हैं, फादर मेडेलिन।"
ऐसे उपकरणों को देखकर, जो गैली जहाजों के बर्बर और साहसी आविष्कारों के अलावा और कुछ नहीं हैं, जो उनके आसपास की शांतिपूर्ण चीजों से उत्पन्न होते हैं और जिसे उन्होंने "कॉन्वेंट में जीवन का तुच्छ क्रम" कहा, उसमें घुलमिल जाते हैं, फाउचेलवेंट को उतना ही आश्चर्य हुआ जितना कि सेंट-डेनिस स्ट्रीट की नाली में मछली पकड़ती हुई एक सीगल किसी राहगीर को प्रेरित करती है।
जीन वालजेन ने आगे कहा:—
“समस्या यह है कि बिना किसी की नज़र में आए यहाँ से कैसे निकला जाए। इससे मुझे एक रास्ता मिल जाता है। लेकिन पहले मुझे कुछ जानकारी दीजिए। इसका प्रबंधन कैसे किया जाता है? यह ताबूत कहाँ है?”
"खाली वाला?"
"हाँ।"
"नीचे, जिसे 'मृतकों का कमरा' कहा जाता है। यह दो तिपाई पर बना है, कफ़न के नीचे।"
“ताबूत कितना लंबा है?”
"छः फ़ुट।"
"यह मृत कक्ष क्या है?"

"यह भूतल पर स्थित एक कमरा है जिसमें बगीचे की ओर खुलने वाली एक जालीदार खिड़की है, जो बाहर से एक शटर से बंद है, और दो दरवाजे हैं; एक मठ में जाता है, दूसरा चर्च में।"
“कौन सा चर्च?”
"सड़क पर स्थित वह गिरजाघर, वह गिरजाघर जिसमें कोई भी प्रवेश कर सकता है।" "क्या आपके पास उन दोनों दरवाजों की चाबियां हैं?"
“नहीं; मेरे पास उस दरवाजे की चाबी है जो मठ से जुड़ता है; चौकीदार के पास उस दरवाजे की चाबी है जो चर्च से जुड़ता है।”
“पोर्टर वह दरवाजा कब खोलेगा?”
"केवल तभी दरवाजा खोला जाता है जब अंतिम संस्कार करने वाले लोग ताबूत लेने आते हैं। ताबूत बाहर ले जाने के बाद, दरवाजा फिर से बंद कर दिया जाता है।" “ताबूत में कीलें कौन ठोकता है?”
"मैं करता हूं।"
इस पर उदासी का साया कौन डालता है?
"मैं करता हूं।"
"अकेली हो?"
“पुलिस डॉक्टर के अलावा किसी और को शव-कक्ष में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है। यह बात दीवार पर भी लिखी हुई है।”
"क्या आप आज रात मुझे उस कमरे में छिपा सकते हैं जब सब सो रहे हों?" “नहीं। लेकिन मैं तुम्हें एक छोटे, अंधेरे कोने में छिपा सकता हूँ जो मुर्दाघर की ओर खुलता है, जहाँ मैं अंतिम संस्कार के लिए अपने औजार रखता हूँ, और जिसकी चाबी मेरे पास है।”
"कल शव वाहन ताबूत लेने किस समय आएगा?"
"लगभग दोपहर तीन बजे। अंतिम संस्कार वाउगिरार्ड कब्रिस्तान में सूर्यास्त से कुछ देर पहले होगा। यह बहुत पास नहीं है।"

मैं पूरी रात और पूरी सुबह तुम्हारे औजारों वाले कमरे में छिपा रहूंगा। और खाने का क्या? मुझे भूख लगेगी।

मैं तुम्हारे लिए कुछ लाऊंगा।

"तुम आकर मुझे दो बजे ताबूत में कीलों से ठोक सकते हो।"

फाउचेलेवेंट पीछे हट गए और उनकी उंगलियों के जोड़ चटक गए।

लेकिन यह तो असंभव है!

“अरे! क्या हथौड़ा लेकर तख्ते में कीलें ठोकना नामुमकिन है?”

जो बात फाउचेलेवेंट के लिए अभूतपूर्व प्रतीत होती थी, वही जीन वालजेन के लिए एक साधारण सी बात थी। जीन वालजेन इससे भी बदतर परिस्थितियों से गुज़र चुके थे। जो भी व्यक्ति कैदी रह चुका है, वह जानता है कि भागने के लिए खुद को कैसे समेटना पड़ता है। कैदी उसी प्रकार भागने के लिए विवश होता है जैसे बीमार व्यक्ति किसी संकट का सामना करता है जो उसे बचा भी सकता है और मार भी सकता है। भाग निकलना एक तरह का इलाज है। इलाज के लिए इंसान क्या-क्या नहीं सहता? खुद को एक बक्से में बंद कर लिया जाए और सामान के गट्ठे की तरह ले जाया जाए, लंबे समय तक एक बक्से में बंद रहना, जहाँ हवा न हो वहाँ हवा ढूँढ़ना, घंटों तक अपनी साँस बचाकर लेना, बिना मरे दम घुटना सीखना—यह जीन वालजेन की उन विलक्षण प्रतिभाओं में से एक थी।

इसके अलावा, एक जीवित प्राणी को ताबूत में रखना—उस अपराधी का उपाय—भी एक शाही उपाय है। यदि हम भिक्षु ऑस्टिन कैस्टिलेजो की बात मानें, तो चार्ल्स पंचम ने अपने पदत्याग के बाद प्लॉम्ब परिवार को अंतिम बार देखने की इच्छा से यही तरीका अपनाया था।

उसने उसे इसी प्रकार संत-युस्टे के मठ में लाया और फिर इसी प्रकार बाहर ले गया।

थोड़ा संभलकर खड़े हुए फाउचेलवेंट ने कहा:—

लेकिन आप सांस कैसे ले पाएंगे?

मैं सांस लूंगा।

“उस डिब्बे में! उसके बारे में सोचते ही मेरा दम घुटने लगता है।”

"तुम्हारे पास एक कील जरूर होनी चाहिए, तुम मेरे मुंह के आसपास जगह-जगह कुछ छेद करोगे, और ऊपर वाले तख्ते को ढीले ढंग से कील से ठोक दोगे।"

“अच्छा! और अगर आपको खांसी या छींक आ जाए तो क्या होगा?”

"भागते समय व्यक्ति न तो खांसता है और न ही छींकता है।"

और जीन वालजेन ने आगे कहा:—

"फादर फाउचेलेवेंट, हमें एक निर्णय पर पहुंचना होगा: या तो मुझे यहीं पकड़ा जाना होगा, या फिर शव वाहन के माध्यम से इस पलायन को स्वीकार करना होगा।"

सभी ने देखा है कि बिल्लियों को आधे बंद दरवाजे के दो पल्लों के बीच रुककर आराम करने का कितना शौक होता है। ऐसा कौन है जिसने किसी बिल्ली से यह न कहा हो, “अंदर आ जाओ!” कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो किसी घटना के अधखुले होने पर दो विकल्पों के बीच असमंजस में पड़ जाते हैं, और भाग्य द्वारा अचानक उस रोमांच के अंत के कारण कुचल दिए जाने का जोखिम उठाते हैं। अति-सतर्क, बिल्लियों की तरह, और क्योंकि वे बिल्लियाँ हैं, कभी-कभी साहसी लोगों से भी अधिक खतरे में पड़ जाते हैं। फॉशेलवेंट इसी झिझक वाले स्वभाव के थे। लेकिन जीन वालजेन की शीतलता उन पर हावी हो गई। उन्होंने बड़बड़ाते हुए कहा:—

"खैर, चूंकि कोई और विकल्प नहीं है।"

जीन वालजेन ने आगे कहा:—

"मुझे केवल इस बात की चिंता है कि कब्रिस्तान में क्या होगा।"

"यही तो वह बात है जो परेशानी वाली नहीं है," फाउचेलेवेंट ने कहा। “अगर आपको यकीन है कि आप ताबूत से सही सलामत बाहर आ जाएँगे, तो मुझे यकीन है कि मैं आपको कब्र से बाहर निकाल लूँगा। कब्र खोदने वाला शराबी है, और मेरा दोस्त है। वह फादर मेस्टिएन है। पुराने ज़माने का एक अनुभवी व्यक्ति। कब्र खोदने वाला लाशों को कब्र में डालता है, और मैं कब्र खोदने वाले को अपनी जेब में रखता हूँ। मैं आपको बताता हूँ कि क्या होगा। वे शाम होने से कुछ पहले, कब्रिस्तान के द्वार बंद होने से पौने घंटे पहले पहुँचेंगे। शव वाहन सीधे कब्र तक जाएगा। मैं पीछे-पीछे चलूँगा; यही मेरा काम है। मेरी जेब में एक हथौड़ा, एक छेनी और कुछ चिमटे होंगे। शव वाहन रुकेगा, अंतिम

संस्कार करने वाले आपके ताबूत के चारों ओर एक रस्सी बाँधेंगे और आपको नीचे उतारेंगे। पुजारी प्रार्थना करेगा, क्रॉस का चिन्ह बनाएगा, पवित्र जल छिड़केगा और चला जाएगा। मैं फादर मेस्टिएन के साथ अकेला रह जाऊँगा। मैं आपको बता दूँ, वह मेरा दोस्त है। दो में से एक बात होगी, या तो वह होश में होगा, या वह... वह होश में नहीं होगा। अगर वह नशे में नहीं है, तो मैं उससे कहूँगा: ‘आओ और जब तक बॉन कोइंग खुला है, एक गिलास पी लो।’ मैं उसे ले जाता हूँ, उसे शराब पिलाता हूँ—फादर मेस्टिएन को नशे में धुत होने में ज़्यादा समय नहीं लगता, वह हमेशा नशे की शुरुआत में ही होता है—मैं उसे मेज़ के नीचे लिटा देता हूँ, उसका कार्ड ले लेता हूँ, ताकि मैं फिर से कब्रिस्तान में जा सकूँ, और मैं उसके बिना लौट आता हूँ। फिर तुम्हारे पास मेरे सिवा किसी और से निपटने के लिए कोई नहीं बचता। अगर वह नशे में है, तो मैं उससे कहूँगा: ‘चले जाओ; मैं तुम्हारा काम कर दूँगा।’ वह चला जाता है, और मैं तुम्हें गड्ढे से बाहर निकाल लेता हूँ।

जीन वाल्जेन ने अपना हाथ बढ़ाया, और फाउचेलेवेंट ने एक किसान की भावुकतापूर्ण अभिव्यक्ति के साथ खुद को उस पर गिरा दिया।

“यह तय हो गया है, फादर फाउचेलेवेंट। सब ठीक हो जाएगा।”

“बशर्ते सब ठीक हो जाए,” फाउचेलेवेंट ने सोचा। “अगर सब कुछ ठीक रहा तो, यह बहुत भयानक होगा।”

V. अमर होने के लिए नशे में होना आवश्यक नहीं है

अगले दिन, जैसे-जैसे सूरज ढल रहा था, बुलेवार्ड डू मेन पर बहुत कम ही दिखने वाले राहगीरों ने खोपड़ियों, हड्डियों और आंसुओं से सजी एक पुरानी शैली की शवयात्रा को देखकर अपनी टोपियाँ उतारीं। इस शवयात्रा में एक ताबूत था जो सफेद कपड़े से ढका हुआ था, जिसके ऊपर एक बड़ा काला क्रॉस फैला हुआ था, मानो झुकी हुई भुजाओं वाला एक विशाल शव हो। एक शोक-गाड़ी, जिसमें एक पादरी अपने चोगे में और एक गायक अपनी लाल टोपी में दिखाई दे रहा था, शवयात्रा के पीछे चल रही थी। काले रंग की किनारी वाली धूसर वर्दी पहने दो अंतिम संस्कार करने वाले कर्मचारी शवयात्रा के दाएं और बाएं चल रहे थे। उसके पीछे एक बूढ़ा व्यक्ति मजदूर के वस्त्र पहने लंगड़ाता हुआ चल रहा था। जुलूस वोगिरार्ड कब्रिस्तान की दिशा में जा रहा था।

उस आदमी की जेब से हथौड़े का हैंडल, छेनी का ब्लेड और चिमटे के एंटीना बाहर निकले हुए दिखाई दे रहे थे।

पेरिस के अन्य कब्रिस्तानों में वोगिरार्ड कब्रिस्तान एक अपवाद था। इसकी अपनी विशिष्ट परंपराएँ थीं, ठीक वैसे ही जैसे इसका अपना घोड़ागाड़ी प्रवेश द्वार और घर का दरवाजा था, जिसे उस इलाके के बुजुर्ग लोग, जो प्राचीन शब्दों से दृढ़ता से जुड़े हुए थे, आज भी 'पोर्टे कैवेलियर' और 'पोर्टे पिएटोने' कहते थे। जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, रू पेटिट-पिकपस के बर्नार्डिन-बेनेडिक्टिन समुदाय को वहाँ एक अलग कोने में, और रात में दफनाए जाने की अनुमति प्राप्त थी, क्योंकि वह जमीन पहले उनके समुदाय की थी। इस प्रकार, कब्र खोदने वाले गर्मियों में शाम को और सर्दियों में रात में सेवा देने के लिए बाध्य थे, इसलिए इस कब्रिस्तान में उन्हें एक विशेष अनुशासन का पालन करना पड़ता था। उस समय पेरिस के कब्रिस्तानों के द्वार सूर्यास्त के समय बंद हो जाते थे, और यह नगरपालिका का नियम होने के कारण, वोगिरार्ड कब्रिस्तान भी अन्य कब्रिस्तानों की तरह इसका पालन करता था। गाड़ी का गेट और घर का दरवाज़ा दो सटे हुए जालीदार गेट थे, जो वास्तुकार

पेरोनेट द्वारा निर्मित एक मंडप से सटे हुए थे, और कब्रिस्तान के द्वारपाल का निवास स्थान थे। इसलिए, जैसे ही सूर्य इनवैलिड्स के गुंबद के पीछे छिपता था, ये गेट अपने कब्ज़ों पर अडिग हो जाते थे। यदि कोई कब्र खोदने वाला उस समय के बाद कब्रिस्तान में रुका रहता, तो उसके बाहर निकलने का केवल एक ही रास्ता था—सार्वजनिक अंत्येष्टि विभाग द्वारा जारी किया गया उसका कब्र खोदने वाले का कार्ड। चौकीदार की खिड़की में एक तरह का लेटर-बॉक्स बनाया गया था। कब्र खोदने वाला अपना कार्ड इस बॉक्स में डालता था, चौकीदार को गिरने की आवाज़ सुनाई देती थी, वह रस्सी खींचता था, और छोटा दरवाज़ा खुल जाता था। यदि व्यक्ति के पास उसका कार्ड नहीं होता, तो वह अपना नाम बताता था, चौकीदार, जो कभी-कभी बिस्तर पर सो रहा होता था, उठता, बाहर आता, व्यक्ति की पहचान करता और अपनी चाबी से गेट खोलता; कब्र खोदने वाला बाहर निकल जाता था, लेकिन उसे पंद्रह फ्रैंक का जुर्माना देना पड़ता था।

नियमों से हटकर अपनी विशिष्टताओं के कारण इस कब्रिस्तान ने प्रशासन की समरूपता को बिगाड़ दिया। इसे 1830 के कुछ समय बाद बंद कर दिया गया। मोंट-पार्नास का कब्रिस्तान, जिसे पूर्वी कब्रिस्तान कहा जाता था, इसका उत्तराधिकारी बना और उसे वोगिरार्ड कब्रिस्तान के बगल में स्थित वह प्रसिद्ध शराब की दुकान विरासत में मिली, जिसके ऊपर एक तख्ती पर क्विंस का चित्र बना हुआ था और जो एक कोण बनाती थी, एक तरफ शराब पीने वालों की मेजों पर और दूसरी तरफ कब्रों पर, जिस पर यह चिन्ह लिखा था: Au Bon Coing (शुभकामनाएं)।

वोगिरार्ड कब्रिस्तान एक जीर्ण-शीर्ण कब्रिस्तान जैसा था। इसका उपयोग कम होता जा रहा था। इसमें नमी बढ़ती जा रही थी, फूल मुरझाते जा रहे थे। बुर्जुआ वर्ग वोगिरार्ड में दफन होने को ज्यादा महत्व नहीं देता था; यह गरीबी का प्रतीक था। पेरे-लाचाइज़ को ही क्यों न कहा जाए! पेरे-लाचाइज़ में दफन होना महोगनी के फर्नीचर रखने के बराबर है। इसे सुरुचिपूर्ण माना जाता है। वोगिरार्ड कब्रिस्तान एक पूजनीय परिसर था, जिसे पुराने जमाने के फ्रांसीसी बगीचे की तरह सजाया गया था। सीधी गलियाँ, बॉक्सवुड, थूया के पेड़, होली, पुराने सरू के पेड़ों के नीचे प्राचीन कब्रें और बहुत लंबी घास। शाम के समय वहाँ का दृश्य दुखद होता था। वहाँ उदासी का माहौल छाया रहता था।

सूरज अभी डूबा भी नहीं था कि सफेद कफ़न और काले क्रॉस से ढकी शवयात्रा वोगिरार्ड कब्रिस्तान के रास्ते में प्रवेश कर गई। उसके पीछे चल रहा लंगड़ा आदमी कोई और नहीं बल्कि फाउचेलेवेंट था।

वेदी के नीचे बने तहखाने में मदर क्रूसिफ़िक्शन का दफ़नाना, कोसेट का बाहर निकलना, जीन वालजेन को मृतकों के कमरे में लाना—ये सभी कार्य बिना किसी कठिनाई के संपन्न हो गए थे और इसमें कोई बाधा नहीं आई थी।

संक्षेप में कहें तो, मठ के वेदी के नीचे मदर क्रूसिफ़िक्शन का दफ़न करना हमारी दृष्टि में एक अत्यंत निष्कलंक अपराध है। यह उन दोषों में से एक है जो कर्तव्य के समान प्रतीत होते हैं। ननों ने इसे न केवल सहजता से किया, बल्कि अपनी अंतरात्मा की स्वीकृति से भी किया। मठ में जिसे "शासन" कहा जाता है, वह केवल सत्ता में हस्तक्षेप है, एक ऐसा हस्तक्षेप जो हमेशा संदिग्ध होता है। सर्वप्रथम, नियम; संहिता की बात करें तो, आगे देखेंगे। हे मनुष्यों, जितने चाहें उतने नियम बना लो; परन्तु उनका पालन स्वयं करो। सीज़र को दिया जाने वाला कर ईश्वर को दिए जाने वाले कर का केवल अंश ही होता है। सिद्धांत के समक्ष राजकुमार कुछ भी नहीं।

फाउचेलवेंट बेहद संतुष्ट मन से शव वाहन के पीछे लंगड़ाते हुए चल रहा था। उसकी दोनों साजिशें - एक ननों के साथ, दूसरी मठ के लिए, और दूसरी उसके खिलाफ, तीसरी एम. मैडेलीन के साथ - स्पष्ट रूप से सफल हो चुकी थीं। जीन वालजेन का शांत स्वभाव संक्रामक शांति का प्रतीक था। फाउचेलवेंट को अब अपनी सफलता पर कोई संदेह नहीं था।

अब बस कुछ करना बाकी था, कुछ भी नहीं। पिछले दो सालों में उसने गोल-मटोल गालों वाले फादर मेस्टिएन को कम से कम दस बार शराब पिलाई थी। वह फादर मेस्टिएन के साथ खेलता था। वह उनके साथ जो चाहता था, करता था। वह उन्हें अपनी मर्जी से नचाता था। मेस्टिएन का दिमाग फॉशेलवेंट की मर्जी के मुताबिक ढल गया था। फॉशेलवेंट को उन पर पूरा भरोसा था।

जिस क्षण शवयात्रा कब्रिस्तान की ओर जाने वाले रास्ते पर पहुँची, फाउचेलेवेंट ने शव वाहन पर प्रसन्नतापूर्वक एक नज़र डाली और अपने बड़े हाथों को रगड़ते हुए लगभग धीमी आवाज़ में कहा:

“वाह, क्या शानदार प्रहसन है!”

अचानक शव वाहन रुक गया; वह द्वार पर पहुँच गया था। दफ़नाने की अनुमति दिखानी ज़रूरी थी। अंतिम संस्कार करने वाले व्यक्ति ने कब्रिस्तान के चौकीदार से बात की। इस बातचीत के दौरान, जिसमें हमेशा एक-दो मिनट का समय लग जाता है, एक अजनबी आया और फाउचेलेवेंट के बगल में शव वाहन के पीछे खड़ा हो गया। वह एक मज़दूर जैसा दिखने वाला व्यक्ति था, जिसने बड़ी जेबों वाली जैकेट पहनी हुई थी और बगल में कुल्हाड़ी दबाए हुए था।
फाउचेलवेंट ने इस अजनबी का सर्वेक्षण किया।
“तुम कौन हो?” उसने पूछा।
उस व्यक्ति ने उत्तर दिया:
“कब्र खोदने वाला।”
अगर कोई व्यक्ति सीने में तोप के गोले का सीधा वार सह लेता, तो उसका चेहरा भी वही होता जो फाउचेलवेंट का था।
“कब्र खोदने वाला?”
"हाँ।"
"आप?"
"मैं।"
"फादर मेस्टिएन कब्र खोदने वाले हैं।"
“वह था।”
“क्या! वह था?”
"वह मर चुका है।"
फॉशेलवेंट ने इसके विपरीत कुछ भी उम्मीद नहीं की थी, कि एक कब्र खोदने वाला मर सकता है। फिर भी, यह सच है कि कब्र खोदने वाले भी मर जाते हैं। दूसरों के लिए कब्र खोदते-खोदते, वे अपनी खुद की कब्र भी खोदते रहते हैं। फाउचेलेवेंट वहाँ मुँह खुला रखकर खड़ा था। उसमें हकलाने की भी ताकत नहीं थी:
लेकिन यह संभव नहीं है!

"यह तो काफी।"
लेकिन,” उसने कमजोर स्वर में कहा, “फादर मेस्टिएन ही कब्र खोदने वाले हैं।” "नेपोलियन के बाद, लुई XVIII। मेस्टिएन, ग्रिबियर के बाद। किसान, मेरा नाम ग्रिबियर है।"
फाउचेलेवेंट, जिसका चेहरा पीला पड़ गया था, ग्रिबियर को घूर रहा था।
वह लंबा, पतला, पीला पड़ा हुआ और पूरी तरह से शोकग्रस्त व्यक्ति था। उसका रूप-रंग किसी असफल डॉक्टर जैसा था जो कब्र खोदने वाला बन गया हो। फाउचेलवेंट जोर से हंस पड़ा।
“आह!” उसने कहा, “ये कैसी अजीब बातें होती हैं! फादर मेस्टिएन मर गए, लेकिन नन्हे फादर लेनॉयर की जय हो! क्या आप जानते हैं कि नन्हे फादर लेनॉयर कौन हैं? ये तो लाल शराब का एक घड़ा हैं। ये तो सूरेन का घड़ा है, मरबिगु! असली पेरिस सूरेन का? आह! तो बूढ़े मेस्टिएन मर गए! मुझे बहुत दुख है; वो तो बड़े हंसमुख इंसान थे। लेकिन आप भी तो बड़े हंसमुख इंसान हैं। हैं ना, साथी? चलिए अभी साथ में शराब पीते हैं।”
उस व्यक्ति ने उत्तर दिया:
मैं एक छात्र रहा हूँ। मैंने अपनी चौथी परीक्षा उत्तीर्ण की है। मैं कभी शराब नहीं पीता।
शव वाहन फिर से रवाना हो चुका था और कब्रिस्तान की भव्य गली में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था।
फाउचेलेवेंट ने अपनी चाल धीमी कर दी थी। वह कमजोरी से ज्यादा चिंता के कारण लंगड़ा रहे थे।
कब्र खोदने वाला उसके आगे-आगे चलता रहा।
फाउचेलेवेंट ने समीक्षा के दौरान अप्रत्याशित रूप से ग्रिबियर को एक बार फिर पछाड़ दिया।
वह उन पुरुषों में से एक था जो बहुत युवा होने के बावजूद उम्रदराज प्रतीत होते थे, और जो दुबले-पतले होने के बावजूद बेहद मजबूत थे।
"साथी!" फौचेलेवेंट चिल्लाया।

वह आदमी मुड़ गया।
मैं मठ का कब्र खोदने वाला हूँ।
“मेरा सहकर्मी,” उस व्यक्ति ने कहा।
फॉशेलवेंट, जो निरक्षर थे लेकिन बहुत बुद्धिमान थे, समझ गए थे कि उन्हें एक दुर्जेय किस्म के व्यक्ति से निपटना है, एक कुशल वक्ता से। उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा:
“तो फादर मेस्टिएन की मृत्यु हो गई है।”
उस व्यक्ति ने उत्तर दिया:
“बिल्कुल। ईश्वर ने अपनी उस नोटबुक को देखा जिसमें समय समाप्त होने का संकेत था। फादर मेस्टिएन की बारी थी। फादर मेस्टिएन का निधन हो गया।” फाउचेलेवेंट ने यंत्रवत दोहराया: "अच्छा भगवान—"
“परमेश्वर,” उस व्यक्ति ने अधिकारपूर्वक कहा। “दार्शनिकों के अनुसार, वह शाश्वत पिता हैं; जैकोबिनों के अनुसार, वह सर्वोच्च सत्ता हैं।”
“क्या हम एक-दूसरे से जान-पहचान न कर लें?” फॉशेलवेंट हकलाते हुए बोला। “यह बना हुआ है। तुम किसान हो, मैं पेरिसवासी हूँ।
“लोग एक-दूसरे को तब तक नहीं जानते जब तक वे साथ मिलकर शराब न पी लें। जो अपना गिलास खाली कर देता है, वह अपना दिल खाली कर देता है। तुम्हें मेरे साथ आकर एक घूंट पीना चाहिए। ऐसी बात को ठुकराया नहीं जा सकता।”
"व्यापार सर्वोपरि।"
फाउचेलेवेंट ने सोचा: "मैं खो गया हूँ।"
वे ननों के कोने की ओर जाने वाली छोटी सी गली से बस कुछ ही चक्कर की दूरी पर थे।
कब्र खोदने वाले ने फिर बोलना शुरू किया:—
“हे किसान, मेरे सात छोटे बच्चे हैं जिन्हें भोजन कराना आवश्यक है। क्योंकि उन्हें खाना तो खाना ही है, इसलिए मैं पी नहीं सकता।”

और उन्होंने एक गंभीर व्यक्ति की संतुष्टि के साथ कहा, जो शब्दों का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर रहा हो:

उनकी भूख मेरी प्यास की दुश्मन है।

शव वाहन सरू के पेड़ों के झुंड के किनारे से गुजरा, मुख्य मार्ग को छोड़कर एक संकरी गली में मुड़ा, बंजर भूमि में प्रवेश किया और घनी झाड़ियों में जा घुसा। इससे दफन स्थल की निकटता का संकेत मिला। फॉशेलवेंट ने अपनी गति धीमी कर दी, लेकिन वह शव वाहन को रोक नहीं सका। सौभाग्य से, सर्दियों की बारिश से गीली और हल्की मिट्टी ने पहियों को जाम कर दिया और उसकी गति को कम कर दिया।

वह कब्र खोदने वाले के पास पहुंचा।

"उनके पास अर्जेंटुइल की बहुत ही बढ़िया छोटी वाइन है," फाउचेलेवेंट ने धीरे से कहा।

“ग्रामीण,” उस व्यक्ति ने जवाब दिया, “मुझे कब्र खोदने वाला नहीं बनना चाहिए था। मेरे पिता प्रिटेनियम में कुली थे। उन्होंने मुझे साहित्य के लिए तैयार किया था। लेकिन उन्हें असफलताओं का सामना करना पड़ा। उन्हें धन की हानि हुई। मुझे लेखक का पेशा छोड़ना पड़ा। लेकिन मैं अब भी एक सार्वजनिक लेखक हूँ।”

"तो फिर तुम कब्र खोदने वाले नहीं हो?" फाउचेलेवेंट ने इस कमजोर शाखा को पकड़ते हुए जवाब दिया।

“एक दूसरे में बाधा नहीं डालता। मैं संचय करता हूँ।”

फाउचेलेवेंट को यह आखिरी शब्द समझ नहीं आया।

“आओ, एक ड्रिंक लो,” उसने कहा।

यहां एक टिप्पणी आवश्यक है। फाउचेलेवेंट, चाहे कितना भी दुखी क्यों न हो, उसने एक पेय की पेशकश की, लेकिन उसने एक बात स्पष्ट नहीं की; भुगतान कौन करेगा? आम तौर पर, फाउचेलेवेंट ने पेशकश की और फादर मेस्टिएन ने भुगतान किया। पेय की पेशकश नए कब्र खोदने वाले द्वारा उत्पन्न नई स्थिति का स्पष्ट परिणाम थी, और यह पेशकश करना आवश्यक था, लेकिन बूढ़े माली ने रैबेले के नाम पर रखे गए पंद्रह मिनट के समय को अनदेखा कर दिया, और यह जानबूझकर

किया गया था। जहाँ तक स्वयं की बात है, फाउचेलेवेंट, चाहे वह कितना भी परेशान क्यों न हो, भुगतान नहीं करना चाहता था।

कब्र खोदने वाले ने गर्व भरी मुस्कान के साथ आगे कहा:—

“खाना तो जरूरी है। मैंने फादर मेस्टिएन का पदभार स्वीकार कर लिया है। दार्शनिक बनने का रास्ता तब खुलता है जब कोई उनकी लगभग सारी पढ़ाई पूरी कर लेता है। हाथों के काम के साथ-साथ मैं बांहों का काम भी करता हूँ। रू डे सेवरेस के बाज़ार में मेरी लिखने की दुकान है। जानते हो ना? छाता बाज़ार। रेड क्रॉस के सारे रसोइये मुझसे संपर्क करते हैं। मैं कच्चे सैनिकों के लिए उनके प्रेम-प्रस्ताव लिखता हूँ। सुबह मैं प्रेम पत्र लिखता हूँ; शाम को कब्रें खोदता हूँ। यही है देहाती जीवन।”

शव वाहन अभी भी आगे बढ़ रहा था। फाउचेलेवेंट, अत्यंत बेचैन होकर, चारों ओर देख रहा था। उसके माथे से पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें टपक रही थीं।

“लेकिन,” कब्र खोदने वाले ने आगे कहा, “एक आदमी दो रखैलें नहीं रख सकता। मुझे कलम और कुदाल में से एक को चुनना होगा। कुदाल मेरे हाथ को खराब कर रही है।”

शव वाहन रुक गया।

शोकयात्रा वाली गाड़ी से गायक लड़का उतरा, फिर पुजारी उतरा।

शव वाहन के छोटे आगे के पहियों में से एक मिट्टी के ढेर पर थोड़ा सा चढ़ गया था, जिसके आगे एक खुली कब्र दिखाई दे रही थी।

“यह कैसा तमाशा है!” फॉशेलवेंट ने घबराहट में दोहराया।

VI. चार तख्तों के बीच

ताबूत में कौन था? पाठक को पता है। जीन वाल्जेन।

जीन वाल्जेन ने ऐसी व्यवस्था की थी कि वह वहां रह सके और लगभग सांस ले सके।

यह एक विचित्र बात है कि अंतरात्मा की शांति किस हद तक मन की शांति प्रदान करती है। जीन वाल्जेन द्वारा सोची-समझी हर योजना कल से ही प्रगति कर रही थी, और अनुकूल प्रगति कर रही थी। फाउचेलेवेंट की तरह, वह भी फादर मेस्टिएन पर भरोसा कर रहा था। उसे अंत के बारे में कोई संदेह नहीं था। ऐसी नाजुक स्थिति पहले कभी नहीं आई थी, और ऐसा पूर्ण संयम पहले कभी नहीं देखा गया था।

ताबूत के चारों तख्ते एक प्रकार की भयानक शांति का अनुभव कराते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो मृत आत्मा की शांति का अंश जीन वालजेन की शांति में समा गया हो।

उस ताबूत की गहराई से वह उस भयानक नाटक के सभी चरणों का अनुसरण करने में सक्षम था, और उसने किया भी था, जो वह मृत्यु के साथ खेल रहा था।

फाउचेलेवेंट द्वारा ऊपरी तख्ते को ठोकने के कुछ ही क्षण बाद, जीन वालजेन ने महसूस किया कि उसे बाहर ले जाया जा रहा है, फिर उसे धकेल दिया गया। झटकों में कमी आने से वह समझ गया कि वे फुटपाथ छोड़कर कच्ची सड़क पर आ गए हैं। एक धीमी सी आवाज़ से उसने अनुमान लगाया कि वे ऑस्टरलिट्ज़ पुल पार कर रहे हैं। पहले पड़ाव पर, वह समझ गया कि वे कब्रिस्तान में प्रवेश कर रहे हैं; दूसरे पड़ाव पर, उसने मन ही मन कहा:—

“यही कब्र है।”

अचानक, उसने महसूस किया कि किसी ने ताबूत को पकड़ लिया है, फिर तख्तों के टकराने की तेज़ आवाज़ आई; उसने मन ही मन सोचा कि यह रस्सी है जिसे ताबूत के चारों ओर बांधा जा रहा है ताकि उसे नीचे गुफा में उतारा जा सके।

फिर उसे चक्कर आने लगे।

अंतिम संस्कार करने वाले के आदमी और कब्र खोदने वाले ने शायद ताबूत का संतुलन बिगड़ने दिया था और पैर से पहले सिर को नीचे कर दिया था। जब उसने

खुद को ज़मीन पर लेटा हुआ और स्थिर महसूस किया, तब उसे पूरी तरह से होश आया। वह बस ज़मीन के तल को छू चुका था।
उसे ठंड का एहसास हो रहा था।
उसके ऊपर एक धीमी और गंभीर आवाज उठी। उसने लैटिन शब्द सुने, जिन्हें वह समझ नहीं पाया, वे शब्द इतनी धीमी गति से उसके ऊपर से गुजरे कि वह उन्हें एक-एक करके पकड़ सका:
“जो पृथ्वी की धूल में सो रहे हैं, वे जागेंगे, कुछ अनन्त जीवन के लिए, और कुछ लज्जा के लिए, ताकि वे अनंत काल तक देख सकें।”
एक बच्चे की आवाज सुनाई दी:—
"गहराइयों से।"
गंभीर आवाज फिर से शुरू हुई:—
“हे प्रभु, उसे शाश्वत शांति प्रदान करें।”
बच्चे की आवाज ने जवाब दिया:—
और उन पर शाश्वत प्रकाश चमके।
उसे अपने ऊपर बिछे तख्ते पर बारिश की कुछ बूंदों की हल्की-हल्की आवाज सुनाई दी। संभवतः वह पवित्र जल था।
उसने सोचा: “यह सब जल्द ही खत्म हो जाएगा। थोड़ी देर और सब्र रखो। पादरी जाएँगे। फॉशेलवेंट मेस्टिएन को शराब पिलाने ले जाएगा। मैं अकेला रह जाऊँगा। फिर फॉशेलवेंट अकेले लौटेंगे, और मैं निकल जाऊँगा। इसमें एक घंटे का समय लगेगा।”
गंभीर आवाज फिर से सुनाई दी:—
"भगवान उसकी आत्मा को शांति दें।"
और बच्चे की आवाज ने कहा:—
“आमीन।”
जीन वाल्जेन ने ध्यान से सुना और पीछे हटते कदमों जैसी कोई आवाज सुनी। “देखो, अब वे जा रहे हैं,” उसने सोचा। “मैं अकेला हूँ।”

अचानक, उसे अपने सिर के ऊपर एक ऐसी आवाज सुनाई दी जो उसे बिजली की कड़क जैसी लगी।
ताबूत पर मिट्टी का एक ढेर गिर रहा था।
एक और फावड़ा भरकर मिट्टी गिरी।
जिन छिद्रों से वह सांस लेता था, उनमें से एक को अभी-अभी बंद कर दिया गया था।
मिट्टी का तीसरा फावड़ा गिरा।
फिर चौथा।
कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो सबसे ताकतवर इंसान के लिए भी बहुत शक्तिशाली होती हैं। जीन वाल्जेन बेहोश हो गया।

VII. जिसमें इस कहावत का मूल मिलेगा: कार्ड मत खोना

जीन वाल्जेन के ताबूत के ऊपर यही सब हुआ था।
जब शव वाहन चला गया, जब पादरी और गायक लड़का फिर से गाड़ी में सवार होकर चले गए, तो फाउचेलेवेंट, जिसने कब्र खोदने वाले से अपनी निगाहें नहीं हटाई थीं, ने देखा कि बाद वाला झुककर अपने फावड़े को पकड़ लेता है, जो मिट्टी के ढेर में सीधा खड़ा था।
तब फाउचेलेवेंट ने एक दृढ़ संकल्प लिया।
वह कब्र और कब्र खोदने वाले के बीच खड़ा हो गया, अपनी बाहें मोड़ीं और बोला:—
मुझे ही भुगतान करना होगा!
कब्र खोदने वाले ने उसे अचंभित होकर देखा और उत्तर दिया:—
“ये क्या है, गंवार?”
फाउचेलेवेंट ने दोहराया:—
मैं ही भुगतान करने वाला हूँ!
"क्या?"
"शराब के लिए।"
“कौन सी शराब?”
“वह अर्जेंटुइल वाइन।”
“आर्जेंटुइल कहाँ है?”
“बॉन कोइंग में।”
“भाड़ में जाओ!” कब्र खोदने वाले ने कहा।
और उसने ताबूत पर एक फावड़ा भर मिट्टी डाल दी।

ताबूत से खोखली सी आवाज़ आई। फॉशेलवेंट को लगा जैसे वह लड़खड़ा रहा हो और खुद कब्र में गिरने ही वाला हो। उसने ऐसी आवाज़ में चिल्लाया जिसमें मृत्यु की घुरघुराहट की आवाज़ घुलमिल गई थी:
“साथी! इससे पहले कि बॉन कोइंग बंद हो जाए!”
कब्र खोदने वाले ने अपने फावड़े पर थोड़ी और मिट्टी ली। फाउचेलेवेंट ने अपना काम जारी रखा।
"मैं अदा करूंगा।"
और उसने उस आदमी की बांह पकड़ ली।
“मेरी बात सुनो, साथी। मैं मठ का कब्र खोदने वाला हूँ, मैं तुम्हारी मदद करने आया हूँ। यह एक ऐसा काम है जो रात में किया जा सकता है। तो चलिए, पहले एक ड्रिंक के लिए चलते हैं।”
और जैसे-जैसे वह बोलता गया और इस हताश आग्रह पर अड़ा रहा, उसके मन में यह निराशाजनक विचार आया: "और अगर वह शराब पीता है, तो क्या वह नशे में धुत हो जाएगा?"
“देहाती,” उस आदमी ने कहा, “अगर आप इस पर अड़े हैं, तो मैं मान जाता हूँ। हम शराब पिएंगे। काम के बाद, उससे पहले कभी नहीं।”
और उसने फुर्ती से अपना फावड़ा लहराया। फाउचेलेवेंट ने उसे रोक लिया। "यह आर्जेंटुइल वाइन है, छह बजे।"
“अरे, आओ,” कब्र खोदने वाले ने कहा, “तुम तो घंटी बजाने वाले हो। डिंग डोंग, डिंग डोंग, बस यही कहना जानते हो। जाओ खुद को फांसी लगा लो।”
और उसने एक और फावड़ा भरकर मिट्टी डाल दी।
फाउचेलवेंट एक ऐसे मुकाम पर पहुंच गए थे जहां उन्हें खुद भी नहीं पता था कि वे क्या कह रहे हैं।
“आओ और पियो,” वह चिल्लाया, “क्योंकि बिल तो मैं ही चुकाऊंगा।”
“जब हम बच्चे को सुला देंगे,” कब्र खोदने वाले ने कहा।
उसने एक और फावड़ा भरकर खाद डाल दी।

फिर उसने अपना फावड़ा ज़मीन में गाड़ दिया और कहा:—
"आज रात ठंड है, और अगर हम उसे बिना कंबल ओढ़े वहाँ रख दें तो वह चीख-चीख कर हमारे पीछे भागेगी।"
उसी क्षण, जब वह अपना फावड़ा लाद रहा था, कब्र खोदने वाला झुका और उसकी बनियान की जेब खुल गई। फॉशेलवेंट की बेतहाशा निगाह अनायास ही उस जेब पर पड़ी और वहीं ठहर गई।
सूरज अभी क्षितिज के पीछे नहीं छिपा था; अभी भी इतनी रोशनी थी कि वह उस खुले हुए जेब के तल पर कुछ सफेद चीज को देख सके।
पिकार्ड के एक किसान की आंख में समा सकने वाली बिजली की कुल मात्रा फाउचेलवेंट की पुतलियों से गुजरी। उनके मन में अभी-अभी एक विचार आया था।
उसने कब्र खोदने वाले की नजरों से बचकर, जो मिट्टी से भरे अपने फावड़े में पूरी तरह से डूबा हुआ था, पीछे से जेब में हाथ डाला और जेब के तल में पड़ी सफेद वस्तु को बाहर निकाल लिया।
उस आदमी ने एक और फावड़ा भरकर मिट्टी कब्र में फेंक दी।
जैसे ही वह पाँचवीं गेंद लेने के लिए मुड़ा, फाउचेलवेंट ने शांत भाव से उसकी ओर देखा और कहा:—
"वैसे, नए आदमी, क्या तुम्हारे पास तुम्हारा कार्ड है?"
कब्र खोदने वाला रुक गया।
“कौन सा कार्ड?”
सूर्य अस्त होने ही वाला है।
"यह अच्छी बात है, यह अपना अंतिम प्रदर्शन करने जा रहा है।" “कब्रिस्तान का द्वार तुरंत बंद कर दिया जाएगा।”
"तो फिर क्या?"
“क्या आपके पास आपका कार्ड है?”
“अरे! मेरा कार्ड?” कब्र खोदने वाले ने कहा।
और उसने अपनी जेब में हाथ डाला।

एक जेब तलाशने के बाद, उसने दूसरी जेब तलाशनी शुरू की। उसने अपनी जेबों की पट्टियाँ निकालीं, पहली जेब की तलाशी ली और फिर दूसरी जेब पर लौट आया।
“नहीं,” उसने कहा, “मेरे पास मेरा कार्ड नहीं है। मैं उसे भूल गया हूँगा।” "पंद्रह फ्रैंक जुर्माना," फाउचेलेवेंट ने कहा।
कब्र खोदने वाले का चेहरा पीला पड़ गया। पीलापन तो क्रोधित लोगों का रंग होता है।
“अरे! हे भगवान! मैं तो पूरी तरह दिवालिया हो गया!” उसने हैरानी से कहा।
“पंद्रह फ्रैंक का जुर्माना!”
"सौ सू के तीन टुकड़े," फाउचेलेवेंट ने कहा।
कब्र खोदने वाले ने अपना फावड़ा नीचे गिरा दिया।
अब फाउचेलेवेंट की बारी आ गई थी।
“अरे, अब बस करो, रंगरूट,” फॉशेलवेंट ने कहा, “निराश मत हो। आत्महत्या करके कब्र में जाने का कोई सवाल ही नहीं उठता। पंद्रह फ्रैंक पंद्रह फ्रैंक ही होते हैं, और वैसे भी, हो सकता है तुम इसे चुका न पाओ। मैं अनुभवी हूँ, तुम नए हो। मुझे सब पता है। मैं तुम्हें कुछ दोस्ताना सलाह देता हूँ। एक बात तो तय है, सूरज डूबने वाला है, वह गुंबद को छू रहा है, पाँच मिनट में कब्रिस्तान बंद हो जाएगा।”
“यह सच है,” उस आदमी ने जवाब दिया।
"पांच मिनट और, और तुम्हारे पास कब्र भरने का समय नहीं होगा, यह कब्र शैतान की तरह खोखली है, और समय रहते द्वार तक पहुंचना होगा ताकि इसे बंद होने से पहले पार कर सको।"
“यह सच है।”
“उस स्थिति में, पंद्रह फ्रैंक का जुर्माना।”
“पंद्रह फ्रैंक।”
लेकिन आपके पास समय है। आप कहाँ रहते हैं?

“बाधा से कुछ ही कदम दूर, यहाँ से पंद्रह मिनट की दूरी पर। पता: 87 रुए डे वोगिरार्ड।”
"तुम्हारे पास अपनी पूरी गति से भागकर बाहर निकलने के लिए बस थोड़ा ही समय है।"
“बिल्कुल यही बात है।”
“एक बार गेट के बाहर पहुँचते ही, आप तेज़ी से घर की ओर दौड़ेंगे, अपना कार्ड लेंगे, वापस लौटेंगे, कब्रिस्तान का चौकीदार आपको अंदर जाने देगा। आपके पास कार्ड होने के कारण आपको कुछ भी भुगतान नहीं करना होगा। और आप अपने शव को दफना देंगे। इस बीच मैं आपके शव की रखवाली करूँगा, ताकि वह भाग न जाए।” “मैं आपके जीवन के लिए आपका ऋणी हूँ, किसान।”
“भाग जाओ!” फाउचेलेवेंट ने कहा।
कृतज्ञता से अभिभूत होकर कब्र खोदने वाले ने उससे हाथ मिलाया और दौड़कर चला गया।
जब वह आदमी झाड़ियों में गायब हो गया, तो फाउचेलेवेंट तब तक सुनता रहा जब तक कि दूर से उसके कदमों की आहट धीमी नहीं हो गई, फिर वह कब्र पर झुक गया और धीमी आवाज़ में बोला:—
“फादर मैडलीन!”
कोई जवाब नहीं था।
फाउचेलवेंट कंपकंपी से कांप उठा। वह कब्र में चढ़ने के बजाय लुढ़क गया, ताबूत के सिरहाने पर गिर पड़ा और चिल्लाया:—
"क्या आप मौजूद हैं?"
ताबूत में सन्नाटा।
कांपते हुए, मुश्किल से सांस ले पा रहे फाउचेलेवेंट ने अपनी ठंडी छेनी और हथौड़ा उठाया और ताबूत का ढक्कन खोल दिया।
धुंधलके में जीन वाल्जेन का चेहरा दिखाई दिया; वह पीला पड़ गया था और उसकी आंखें बंद थीं।

फाउचेलेवेंट के सिर के बाल सीधे खड़े हो गए, वह उछलकर खड़ा हुआ, फिर कब्र के किनारे पर वापस गिर पड़ा, मानो ताबूत पर बेहोश होने वाला हो। उसने जीन वालजेन को घूर कर देखा।

जीन वाल्जेन वहां पीला और बेजान पड़ा था।

फाउचेलेवेंट ने आह के समान धीमी आवाज में बुदबुदाया:—

"वह मर चुका है!"

और, खुद को समेटते हुए, और अपनी बाहों को इतनी ज़ोर से मोड़ते हुए कि उसकी मुट्ठियाँ उसके कंधों से छू गईं, वह चिल्लाया:—

और इस तरह मैंने उसकी जान बचाई!

फिर बेचारा आदमी फूट-फूटकर रोने लगा। वह मन ही मन बड़बड़ा रहा था, क्योंकि यह मानना गलत है कि मन ही मन बड़बड़ाना स्वाभाविक नहीं है। तीव्र भावनाएँ अक्सर खुलकर प्रकट होती हैं।

“यह फादर मेस्टिएन की गलती है। वह मूर्ख क्यों मर गया? उसे ठीक उसी समय अपनी जान क्यों देनी थी जब किसी को इसकी उम्मीद नहीं थी? उसी ने एम. मेडेलीन को मारा है। फादर मेडेलीन! वह ताबूत में है। यह तो बहुत आसान है। सब खत्म। अब, क्या इन सब बातों में कोई मतलब है? हे भगवान! वह मर गया! अच्छा! और उसकी छोटी बच्ची, मैं उसका क्या करूँ? फल बेचने वाला क्या कहेगा? यह सोचकर ही रोना आता है कि उस जैसे आदमी की इस तरह मौत कैसे हो सकती है! जब मैं सोचती हूँ कि उसने खुद को उस गाड़ी के नीचे कैसे रखा! फादर मेडेलीन! फादर मेडेलीन! पार्डिन! उसका दम घुट गया, मैंने यही कहा था। उसने मेरी बात नहीं मानी। अच्छा! यह तो एक बढ़िया चाल है! वह मर गया, वह नेक आदमी, भगवान के सभी अच्छे लोगों में सबसे अच्छा आदमी! और उसकी छोटी बच्ची! आह! सबसे पहले तो, मैं खुद वहाँ वापस नहीं जाऊँगी। मैं यहीं रहूँगी। ऐसा करने के बाद!” दो बूढ़े आदमी होने का क्या फायदा, अगर हम दो बूढ़े मूर्ख ही हों! लेकिन, सबसे पहले, वह कॉन्वेंट में कैसे घुस गया? यहीं से सब शुरू हुआ। ऐसे काम नहीं करने चाहिए। फादर मेडेलीन! फादर मेडेलीन! फादर मेडेलीन! मेडेलीन! महाशय मेडेलीन! महाशय मेयर! वह मेरी बात नहीं सुन रहा है। अब अगर हो सके तो इस मुसीबत से निकल जाओ!

और उसने अपने बाल नोच लिए।
दूर पेड़ों के बीच से एक कर्कश आवाज सुनाई दी। यह कब्रिस्तान का द्वार बंद होने की आवाज थी।
फाउचेलवेंट जीन वाल्जेन की ओर झुका, और अचानक वह पीछे की ओर उछल पड़ा और इतनी दूर तक पीछे हट गया जितनी दूर तक एक कब्र की सीमा अनुमति देती है।
जीन वाल्जेन की आंखें खुली हुई थीं और वह उसे घूर रहा था।
किसी शव को देखना भयावह होता है, पुनरुत्थान को देखना लगभग उतना ही भयावह।
फॉशेलवेंट पत्थर की तरह पीला पड़ गया, मुरझाया हुआ, भावनाओं के इन अतिरेकों से अभिभूत, यह न जानते हुए कि वह किसी जीवित व्यक्ति को देख रहा है या मृत को, और जीन वालजेन को घूर रहा था, जो उसे निहार रहा था।
“मुझे नींद आ गई थी,” जीन वाल्जेन ने कहा।
और वह उठकर बैठ गया।
फाउचेलेवेंट घुटनों के बल गिर पड़ा।
“हे भगवान, प्यारी कुंवारी! तुमने मुझे कितना डरा दिया!”
फिर वह उछलकर खड़ा हो गया और चिल्लाया:—
"धन्यवाद, फादर मैडलीन!"
जीन वाल्जेन केवल बेहोश हो गया था। ताजी हवा ने उसे होश में ला दिया था। आनंद आतंक का उतार-चढ़ाव है। फाउचेलवेंट को खुद को संभालने में लगभग उतनी ही कठिनाई हुई जितनी जीन वालजेन को हुई थी।
“तो तुम मरे नहीं! ओह! तुम कितने समझदार हो! मैंने तुम्हें इतना पुकारा कि तुम वापस आ गए। जब मैंने तुम्हारी आँखें बंद देखीं, तो मैंने कहा: ‘अच्छा! देखो, वो रहा, दम घुटकर मर गया।’ मैं तो पागल हो जाती, इतना पागल कि मुझे पागलखाने में डाल देना चाहिए था। वे मुझे बिसेत्रे में डाल देते। अगर तुम मर गए होते तो मैं क्या करती? और तुम्हारी छोटी बच्ची? वह फल बेचने वाली— वह तो कभी समझ ही नहीं पाती! बच्ची को तुम्हारी गोद में थमा दिया जाता है, और फिर—दादाजी मर जाते हैं! क्या कहानी है! हे स्वर्ग के संतों, क्या कहानी है! आह! तुम ज़िंदा हो, यही तो सबसे अच्छी बात है!”

“मुझे ठंड लग रही है,” जीन वालजेन ने कहा।
इस टिप्पणी ने फाउचेलेवेंट को वास्तविकता से पूरी तरह अवगत करा दिया, और इसकी सख्त जरूरत थी। संभलने के बाद भी इन दोनों व्यक्तियों की आत्माएं व्याकुल थीं, हालांकि उन्हें इसका एहसास नहीं था, और उनके आसपास कुछ रहस्यमय सा था, जो उस स्थान से उत्पन्न भयावह भ्रम था।
“चलो यहाँ से जल्दी निकलें,” फाउचेलेवेंट ने कहा।
उसने अपनी जेब में हाथ डाला और एक लौकी निकाली जो उसने अपने साथ रखी थी।
“लेकिन पहले एक बूंद पी लो,” उसने कहा।
फ्लास्क ने उस प्रक्रिया को पूरा किया जो ताजी हवा ने शुरू की थी, जीन वाल्जेन ने ब्रांडी का एक घूंट पिया और अपनी पूरी चेतना वापस पा ली।
वह ताबूत से बाहर निकला और फाउचेलेवेंट को ढक्कन को दोबारा कील ठोकने में मदद की।
तीन मिनट बाद वे कब्र से बाहर आ गए।
इसके अलावा, फाउचेलवेंट पूरी तरह से शांत थे। उन्होंने अपना समय लिया।
कब्रिस्तान बंद था। कब्र खोदने वाले ग्रिबियर के आने की कोई आशंका नहीं थी। वह "सैनिक" अपने घर में अपना कार्ड ढूंढने में व्यस्त था, और उसे अपने कमरे में ढूंढने में उसे कुछ कठिनाई हो रही थी, क्योंकि कार्ड फाउचेलवेंट की जेब में था। कार्ड के बिना वह कब्रिस्तान में वापस नहीं जा सकता था। फाउचेलेवेंट ने फावड़ा लिया और जीन वालजेन ने कुल्हाड़ी, और साथ मिलकर उन्होंने खाली ताबूत को दफना दिया।
जब कब्र भर गई, तो फाउचेलेवेंट ने जीन वालजेन से कहा:—
“चलो चलते हैं। मैं फावड़ा रखूंगा; तुम कुदाल ले जाओ।”
रात होने वाली थी।
जीन वाल्जेन को चलने-फिरने में कुछ कठिनाई हो रही थी। ताबूत में उनका शरीर अकड़ गया था और वे एक लाश की तरह हो गए थे। मृत्यु की जकड़न ने उन्हें उन चार तख्तों के बीच जकड़ लिया था। मानो उन्हें कब्र से बाहर निकलने के लिए धीरे-धीरे पिघलना पड़ रहा था।

"तुम सुन्न हो गए हो," फाउचेलेवेंट ने कहा। "यह अफसोस की बात है कि मेरा एक पैर काम नहीं कर रहा है, वरना हम तेज़ी से बाहर निकल सकते थे।"

“वाह!” जीन वालजेन ने जवाब दिया, “चार कदम चलने से मेरे पैरों में फिर से जान आ जाएगी।”

वे उन गलियों से होकर चल पड़े जिनसे शव वाहन गुजरा था। बंद द्वार और चौकीदार के मंडप के सामने पहुँचकर, फाउचेलेवेंट, जिसके हाथ में कब्र खोदने वाले का कार्ड था, ने उसे बक्से में डाल दिया। चौकीदार ने रस्सी खींची, द्वार खुल गया और वे बाहर निकल गए।

“सब कुछ कितना बढ़िया चल रहा है!” फॉशेलवेंट ने कहा; “फादर मेडेलीन, आपका यह विचार कितना शानदार था!”

उन्होंने वोगिरार्ड की बाधा को दुनिया के सबसे सरल तरीके से पार कर लिया। कब्रिस्तान के आसपास के इलाके में, एक फावड़ा और एक कुल्हाड़ी दो पासपोर्ट के बराबर हैं।

रू वोगिरार्ड सुनसान था।

“फादर मैडलीन,” फाउचेलेवेंट ने आगे बढ़ते हुए कहा और घरों की ओर देखते हुए बोला, “आपकी नज़रें मेरी नज़रों से कहीं बेहतर हैं। मुझे 87 वां घर दिखाइए।”

“यह रहा,” जीन वालजेन ने कहा।

“सड़क पर कोई नहीं है,” फाउचेलेवेंट ने कहा। “मुझे अपना कुल्हाड़ा दो और कुछ मिनट मेरा इंतजार करो।”

फाउचेलवेंट ने नंबर 87 में प्रवेश किया, सबसे ऊपर तक चढ़ गया, उस सहज प्रवृत्ति से निर्देशित होकर जो हमेशा बेचारे आदमी को अटारी की ओर ले जाती है, और अंधेरे में, अटारी के दरवाजे पर दस्तक दी।

एक आवाज ने जवाब दिया: "अंदर आ जाओ।"

यह ग्रिबियर की आवाज थी।

फॉशेलवेंट ने दरवाजा खोला। कब्र खोदने वाले का घर, बाकी सभी दयनीय घरों की तरह, एक बिना साज-सज्जा वाला और अव्यवस्थित अटारी था। एक पैकिंग-बॉक्स—

शायद एक ताबूत—शौचालय का काम कर रहा था, मक्खन का बर्तन पीने के फव्वारे की तरह इस्तेमाल हो रहा था, पुआल का गद्दा बिस्तर का काम कर रहा था, और फर्श मेज-कुर्सियों की जगह इस्तेमाल हो रहा था। एक कोने में, एक पुराने कालीन के फटे-पुराने टुकड़े पर, एक दुबली-पतली औरत और कई बच्चे ढेर की तरह पड़े थे। इस पूरी गरीबी से त्रस्त आंतरिक भाग पर उलट-पुलट के निशान थे। कोई कह सकता था कि मानो यहाँ भूकंप आया हो। चादरें इधर-उधर बिखरी थीं, चिथड़े बिखरे पड़े थे, घड़ा टूटा हुआ था, माँ रो रही थी, बच्चों को शायद पीटा गया था; एक ज़ोरदार और गुस्सैल खोज के निशान मौजूद थे। यह स्पष्ट था कि कब्र खोदने वाले ने अपना कार्ड ढूंढने के लिए बेताब होकर खोजबीन की थी, और उसने अटारी में मौजूद हर किसी को, घड़े से लेकर अपनी पत्नी तक, उसके खोने के लिए जिम्मेदार ठहराया था। उसके चेहरे पर हताशा साफ झलक रही थी।

लेकिन फाउचेलवेंट इस साहसिक कार्य को समाप्त करने की इतनी जल्दी में थे कि उन्होंने अपनी सफलता के इस दुखद पहलू पर कोई ध्यान नहीं दिया।

वह अंदर आया और बोला:—

मैं तुम्हारा फावड़ा और कुल्हाड़ी वापस ले आया हूँ।

ग्रिबियर उसे अचंभित होकर देखता रहा।

"क्या तुम हो, किसान?"

और कल सुबह आपको आपका कार्ड कब्रिस्तान के चौकीदार के पास मिल जाएगा।

और उसने फावड़ा और कुदाल फर्श पर रख दी।

"इसका क्या मतलब है?" ग्रिबियर ने पूछा।

इसका मतलब यह है कि आपने अपना कार्ड जेब से गिरा दिया था, जो मुझे आपके जाने के बाद ज़मीन पर मिला, मैंने लाश को दफना दिया है, मैंने कब्र भर दी है, मैंने आपका काम कर दिया है, कुली आपका कार्ड आपको लौटा देगा, और आपको पंद्रह फ्रैंक नहीं देने पड़ेंगे। बस यही है, सैनिक।

“धन्यवाद, ग्रामवासी!” ग्रिबियर ने प्रसन्नता से कहा। “अगली बार मैं पेय पदार्थों का भुगतान करूँगा।”

VIII. एक सफल पूछताछ

एक घंटे बाद, रात के अंधेरे में, दो पुरुष और एक बच्चा 62 रुए पेटिट-पिकपस पर पहुंचे। उनमें से बड़े व्यक्ति ने दरवाज़े की कुंडी उठाई और खटखटाया।

वे फाउचेलेवेंट, जीन वालजेन और कोसेट थे।

दोनों बूढ़े आदमी कोसेट को रू डू शेमिन-वर्ट स्थित फल विक्रेता की दुकान से लेने गए थे, जहाँ फॉशेलवेंट ने उसे पिछले दिन छोड़ा था। कोसेट ने ये चौबीस घंटे चुपचाप कांपते हुए और कुछ भी न समझते हुए बिताए थे। वह इतनी कांप रही थी कि रोने लगी। उसने न कुछ खाया था और न सोई थी। उस भले फल विक्रेता ने उससे सौ सवाल पूछे, लेकिन उसे उदास और स्थिर निगाहों के अलावा कोई जवाब नहीं मिला। कोसेट ने पिछले दो दिनों में जो कुछ देखा और सुना था, उसका कुछ भी नहीं बताया था। उसे आभास हो गया था कि वे एक संकट से गुजर रहे हैं। वह गहराई से जानती थी कि "अच्छा व्यवहार करना" आवश्यक है। किसने उन दो शब्दों की असीम शक्ति का अनुभव नहीं किया है, जो एक भयभीत नन्हे बच्चे के कान में एक विशेष लहजे में कहे जाते हैं: "कुछ मत कहो!" डर मूक होता है। और तो और, कोई भी बच्चे की तरह अपने रहस्य को छुपाकर नहीं रखता।

लेकिन जब इन निराशाजनक चौबीस घंटों की समाप्ति पर उसने जीन वाल्जेन को फिर से देखा, तो उसने खुशी की ऐसी चीख निकाली कि उस चीख को सुनने वाला कोई भी विचारशील व्यक्ति अनुमान लगा लेता कि यह किसी अथाह गहराई से निकली है।

फाउचेलेवेंट मठ की सदस्य थी और उसे पासवर्ड पता थे। इसलिए सारे दरवाजे खुल गए।

इस प्रकार बाहर निकलने और अंदर आने की दोहरी और चिंताजनक समस्या का समाधान हो गया।

अपने निर्देश प्राप्त कर चुके चौकीदार ने नौकरों का वह छोटा सा दरवाजा खोला जो आंगन को बगीचे से जोड़ता था और जो बीस साल पहले भी सड़क से दिखाई देता था, आंगन के निचले हिस्से में दीवार में, जो गाड़ी के प्रवेश द्वार के सामने था।

द्वारपाल ने उन तीनों को इस दरवाजे से अंदर जाने दिया, और वहां से वे भीतरी, आरक्षित बैठक कक्ष में पहुंचे जहां फाउचेलेवेंट ने पिछले दिन मठाध्यक्षा से अपने आदेश प्राप्त किए थे।
मठाध्यक्षा, हाथ में माला लिए, उनका इंतजार कर रही थी। उनके बगल में एक मुखर माता, अपना घूंघट नीचे किए खड़ी थी।
एक धीमी सी मोमबत्ती जलाकर, मानो मानो आलंकारिक रूप से बैठक कक्ष को रोशन करने का दिखावा किया गया हो।
मठाध्यक्षा ने जीन वालजेन की समीक्षा की। झुकी हुई नज़र की तरह परखने वाला और कुछ नहीं होता।
फिर उसने उससे सवाल किया:—
“क्या तुम भाई हो?”
“जी हां, आदरणीय माताजी,” फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया।
"आपका क्या नाम है?"
फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया:—
“अल्टीमेट रीपरविंड।”
वास्तव में उनका एक भाई था जिसका नाम अल्टिम था और जिसकी मृत्यु हो चुकी थी।
"आप कहां से आए हैं?"
फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया:—
"एमियंस के पास पिक्विग्नी से।"
"तुम्हारी उम्र क्या है?"
फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया:— "पचास।"
"आपका पेशा क्या है?"
फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया:—

“माली।”
क्या आप एक अच्छे ईसाई हैं? फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया:— “परिवार में सभी लोग शामिल हैं।” "क्या यह आपकी छोटी बच्ची है?"
फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया:—
जी हां, पूज्य माताजी।
“क्या आप उसके पिता हैं?”
फाउचेलेवेंट ने उत्तर दिया:—
उसके दादाजी।
मुखर माता ने धीमी आवाज में मठाध्यक्षा से कहा,
वह अच्छे से जवाब देता है।
जीन वाल्जेन ने एक शब्द भी नहीं बोला था।
मठाध्यक्षा ने कोसेट की ओर ध्यान से देखा और मुखर माता से धीमी आवाज़ में कहा:—
वह बड़ी होकर बदसूरत हो जाएगी।
बैठक के कोने में दोनों माताएं कुछ क्षणों तक बहुत धीमी आवाज़ में सलाह-मशविरा करती रहीं, फिर मठाध्यक्षा मुड़ी और बोली:—
"फादर फॉवेंट, आपको घंटी के साथ एक और घुटने की हड्डी लानी होगी। अब दो की आवश्यकता होगी।"
अगले दिन, बगीचे में दो घंटियाँ सुनाई दीं, और ननें अपने घूंघट का कोना उठाने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सकीं। बगीचे के बिल्कुल आखिरी छोर पर, पेड़ों के नीचे, दो आदमी, फॉवेंट और एक अन्य व्यक्ति, साथ-साथ खुदाई करते हुए दिखाई दिए। एक बहुत बड़ी घटना। उनकी चुप्पी तब टूटी जब उन्होंने आपस में कहा: "वह एक सहायक माली है।"
मुखर माताओं ने आगे कहा: "वह फादर फाउवेंट के भाई हैं।"

दरअसल, जीन वालजेन को विधिवत रूप से पदस्थापित किया गया था; उनके घुटने की हड्डी में छेद कर दिया गया था; अब से वे आधिकारिक हो गए थे। उनका नाम अल्टिम फॉशेलवेंट था।

उनके प्रवेश का सबसे शक्तिशाली निर्णायक कारण मठाध्यक्षा की कोसेट के बारे में की गई यह टिप्पणी थी: "वह बड़ी होकर बदसूरत हो जाएगी।"

उस मठाध्यक्षा, जो एक प्रख्यात भविष्यवक्ता थीं, को कोसेट तुरंत पसंद आ गई और उन्होंने उसे दान के रूप में विद्यालय में दाखिला दे दिया।

इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो पूरी तरह से तार्किक न हो।

मठों से दर्पणों को हटाना व्यर्थ है, क्योंकि महिलाएं अपने चेहरे को लेकर सजग रहती हैं; अब, जो लड़कियां अपनी सुंदरता को लेकर सजग होती हैं, वे आसानी से भिक्षुणी नहीं बनतीं; क्योंकि भिक्षुणी बनने की इच्छा सुंदरता के विपरीत अनुपात में स्वैच्छिक होती है, इसलिए सुंदर की तुलना में बदसूरत से अधिक उम्मीद की जा सकती है। यही कारण है कि सादी-सी दिखने वाली लड़कियों के प्रति लोगों में काफी रुचि होती है।

इस पूरे घटनाक्रम ने भले-बुरे फॉशेलवेंट के महत्व को और बढ़ा दिया; उन्हें तिहरी सफलता मिली; एक ओर तो जीन वाल्जेन की नज़र में, जिन्हें उन्होंने बचाया और शरण दी; दूसरी ओर कब्र खोदने वाले ग्रिबियर की नज़र में, जिसने मन ही मन कहा: "उन्होंने मुझे उस जुर्माने से बचा लिया;" और तीसरी ओर उस मठ की नज़र में, जो उनकी बदौलत मदर क्रूसिफ़िक्शन के ताबूत को वेदी के नीचे रखने में सक्षम रहा, सीज़र से बच निकला और ईश्वर को प्रसन्न किया। पेटिट-पिकपस में एक शव वाला ताबूत था, और वोगिरार्ड कब्रिस्तान में बिना शव वाला ताबूत था। इससे सार्वजनिक व्यवस्था में निस्संदेह गंभीर गड़बड़ी हुई थी, लेकिन किसी को इसकी जानकारी नहीं थी।

मठ के लिए फॉशेलवेंट के प्रति कृतज्ञता का भाव अत्यंत प्रबल था। फॉशेलवेंट सर्वश्रेष्ठ सेवक और सबसे प्रिय माली बन गए। आर्कबिशप की अगली यात्रा के अवसर पर, मठाधिपिका ने उन्हें इस घटना का विवरण दिया, मानो एक प्रकार से स्वीकारोक्ति कर रही हो, और साथ ही अपने कार्य पर गर्व भी जता रही हो। मठ छोड़ते समय, आर्कबिशप ने इसकी प्रशंसा की और फुसफुसाते हुए एम. डी लैटिल, जो महाशय के धर्माध्यक्ष थे और बाद में रीम्स के आर्कबिशप और

कार्डिनल बने, से भी इसका उल्लेख किया। फॉशेलवेंट के प्रति यह प्रशंसा व्यापक रूप से फैल गई, क्योंकि यह रोम तक पहुँच गई। हमने तत्कालीन पोप लियो XII द्वारा अपने एक रिश्तेदार, पेरिस में नुनसियो के प्रतिष्ठान में एक महाशय, और स्वयं की तरह डेला गेंगा नाम के व्यक्ति को संबोधित एक पत्र देखा है; इसमें ये पंक्तियाँ थीं: "ऐसा प्रतीत होता है कि पेरिस के एक मठ में एक उत्कृष्ट माली है, जो एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति भी है, जिसका नाम फॉवेलवेंट है।" इस जीत की कोई खबर फाउचेलेवेंट की झोपड़ी तक नहीं पहुंची; वह अपनी प्रतिभा और गौरव पर जरा भी संदेह किए बिना, अपने तरबूज के क्यारियों में रोपण, निराई और आवरण करने में लगे रहे। उन्हें अपनी प्रसिद्धि का भी उतना ही आभास था, जितना कि डरहम या सरे के किसी बैल को होता है, जिसका चित्र लंदन इलस्ट्रेटेड न्यूज में इस शिलालेख के साथ प्रकाशित होता है: मवेशी मेले में पुरस्कार जीतने वाला बैल।

IX. एकांतवास

कोसेट ने कॉन्वेंट में भी चुप्पी साधे रखी।

कोसेट का खुद को जीन वालजेन की बेटी समझना स्वाभाविक था। इसके अलावा, चूंकि वह कुछ नहीं जानती थी, इसलिए वह कुछ कह भी नहीं सकती थी, और वैसे भी वह कुछ नहीं कहती। जैसा कि हमने अभी देखा है, दुख से बढ़कर बच्चों को चुप रहना सिखाने वाली कोई चीज नहीं होती। कोसेट ने इतना दुख सहा था कि उसे हर चीज से डर लगता था, यहां तक कि बोलने या सांस लेने से भी। एक शब्द भी अक्सर उस पर मुसीबतों का पहाड़ तोड़ देता था। जीन वालजेन के साथ रहने के बाद से उसने मुश्किल से अपना आत्मविश्वास वापस पाना शुरू किया था। वह जल्दी ही कॉन्वेंट में घुलमिल गई। उसे सिर्फ कैथरीन की कमी खलती थी, लेकिन वह यह कहने की हिम्मत नहीं कर पाती थी। हालांकि, एक बार उसने जीन वालजेन से कहा: "पिताजी, अगर मुझे पता होता, तो मैं उसे अपने साथ ले आती।"

कोसेट को मठ में विद्यार्थी बनने पर मठ के विद्यार्थियों के वस्त्र धारण करने पड़े थे। जीन वालजेन उन्हें कोसेट द्वारा त्यागे गए वस्त्र वापस दिलाने में सफल रहे। यह वही शोक वस्त्र था जो उन्होंने कोसेट को थेनार्डियर्स सराय छोड़ते समय पहनाया था। यह वस्त्र अब भी बहुत पुराना नहीं था। जीन वालजेन ने इन वस्त्रों, मोजों और जूतों को कपूर और मठों में प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले सभी सुगंधित पदार्थों के साथ एक छोटे से सूटकेस में बंद कर दिया, जिसका इंतजाम उन्होंने किसी तरह कर लिया था। उन्होंने इस सूटकेस को अपने बिस्तर के पास एक कुर्सी पर रख दिया और चाबी हमेशा अपने पास रखते थे। एक दिन कोसेट ने उनसे पूछा, "पिताजी, उस डिब्बे में ऐसा क्या है जिसकी इतनी अच्छी खुशबू आ रही है?"

फादर फाउचेलेवेंट को उनके इस नेक काम के लिए, अभी बताई गई प्रसिद्धि के अलावा, और भी कई पुरस्कार मिले, जिनके बारे में उन्हें ज़रा भी जानकारी नहीं थी; सबसे पहले तो इससे उन्हें खुशी मिली; दूसरे, काम बाँटने के कारण उनका काम बहुत कम हो गया। अंत में, क्योंकि उन्हें नसवार का बहुत शौक था, इसलिए उन्हें एम. मेडेलीन की उपस्थिति से लाभ हुआ, क्योंकि वे पहले की

तुलना में तीन गुना अधिक नसवार का उपयोग करने लगे, और वह भी कहीं अधिक विलासितापूर्ण तरीके से, क्योंकि एम. मेडेलीन इसका भुगतान करते थे।

ननों ने अल्टिम नाम नहीं अपनाया; उन्होंने जीन वालजेन को "दूसरा फाउवेंट" कहा।

यदि इन पवित्र महिलाओं में जावर्ट जैसी दृष्टि होती, तो वे अंततः यह देख लेतीं कि जब भी बगीचे के लिए बाहर कोई काम होता, तो हमेशा बूढ़ा, बीमार और लंगड़ा फाउचेलेवेंट ही जाता था, दूसरा कभी नहीं; लेकिन चाहे ईश्वर पर टकटकी लगाए रहने वाली आँखें जासूसी करना न जानती हों, या वे जानबूझकर एक-दूसरे पर नज़र रखने में व्यस्त हों, उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया।

इसके अलावा, जीन वाल्जेन के लिए यह अच्छा ही हुआ कि वह आसपास ही रहा और कहीं बाहर नहीं निकला। जावर्ट ने एक महीने से अधिक समय तक उस इलाके पर नजर रखी।

जीन वालजेन के लिए यह कॉन्वेंट खाड़ियों से घिरे एक द्वीप की तरह था। अब से, ये चार दीवारें ही उसकी दुनिया बन गईं। वहाँ से उसे इतना आकाश दिखाई देता था कि वह अपनी शांति बनाए रख सके, और कोसेट को देखकर वह खुश रह सके।

उनके लिए एक बेहद सुखद जीवन की शुरुआत हुई।

वह फाउचेलवेंट के साथ बगीचे के अंत में स्थित पुरानी झोपड़ी में रहता था। पुरानी टूटी-फूटी सामग्री से बनी यह झोपड़ी, जो 1845 में भी मौजूद थी, जैसा कि पाठक पहले से ही जानते हैं, तीन कमरों से बनी थी, जो पूरी तरह से खाली थे और दीवारों के बाहर कुछ भी नहीं था। मुख्य कमरा फादर फाउचेलवेंट द्वारा जीन वालजेन के व्यर्थ विरोध के बाद, जबरन एम. मेडेलीन को सौंप दिया गया था। इस कमरे की दीवारों पर, घुटने की टोपी और टोकरी टांगने के लिए दो कीलों के अलावा, चिमनी के ऊपर दीवार पर 1993 का एक राजशाही नोट भी सजावट के तौर पर लगा हुआ था, जिसकी हूबहू नकल निम्नलिखित है:

Armée Catholique
De par le Roi
Bon commerçable de dix LIVRES.
pour objets fournis à l'armée
remboursable à la paix.
Série 3.
N°. 10390.
Stofflet
et Royale.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मनोरंजन समाप्त होने के बाद, जब कोसेट वापस घर में चली गई, तो जीन वालजेन ने उसकी कक्षा की खिड़कियों को देखा, और रात में वह उसके छात्रावास की खिड़कियों को देखने के लिए उठा।

ईश्वर के अपने तरीके होते हैं; कोसेट की तरह ही, इस मठ ने भी जीन वालजेन में बिशप के कार्य को आगे बढ़ाने और पूरा करने में योगदान दिया। यह निश्चित है कि सद्गुण और अहंकार एक-दूसरे से सटे होते हैं। वहाँ शैतान द्वारा बनाया गया एक पुल मौजूद है। जीन वालजेन शायद अनजाने में ही उस पुल के काफी करीब थे, जब ईश्वर ने उन्हें पेटिट-पिकपस के मठ में भेजा; जब तक उन्होंने अपनी तुलना केवल बिशप से की थी, तब तक वे खुद को अयोग्य समझते थे और विनम्र बने रहे; लेकिन कुछ समय से वे अपनी तुलना आम लोगों से करने लगे थे, और अहंकार पनपने लगा था। कौन जाने? हो सकता है कि वे धीरे-धीरे घृणा की ओर लौट जाते।

उस मठ ने उसे पतन के उस मार्ग पर जाने से रोक दिया।

यह वह दूसरा बंदीगृह था जिसे उसने देखा था। अपनी जवानी में, जो उसके जीवन का आरंभ था, और बाद में, हाल ही में, उसने एक और बंदीगृह देखा था—एक भयानक जगह, एक डरावनी जगह, जिसकी क्रूरताएँ उसे हमेशा न्याय का उल्लंघन और कानून का अपराध लगती थीं। अब, गैली जहाजों के बाद, उसने मठ देखा; और जब उसने सोचा कि वह गैली जहाजों का हिस्सा था, और अब वह, एक तरह से, मठ का दर्शक है, तो उसने चिंता के साथ अपने मन में उन दोनों की तुलना की।

कभी-कभी वह अपनी बाहों को मोड़कर अपने फावड़े पर झुक जाता था और धीरे-धीरे कल्पनाओं के अंतहीन भंवर में उतर जाता था।

उसने अपने पुराने साथियों को याद किया: वे कितने दयनीय थे; वे भोर में उठते और रात तक काम करते; उन्हें मुश्किल से सोने दिया जाता था; वे शिविर के बिस्तरों पर सोते थे, जहाँ दो इंच मोटे गद्दों के अलावा कुछ भी बर्दाश्त नहीं किया जाता था, और कमरे केवल साल के सबसे कठोर महीनों में ही गर्म किए जाते थे; वे भयानक लाल रंग के कपड़े पहनते थे; उन्हें बड़ी कृपा से सबसे गर्म मौसम में सूती पतलून और बहुत ठंड में ऊनी कपड़े पहनने की अनुमति दी जाती थी; वे शराब नहीं पीते थे और मांस नहीं खाते थे, सिवाय तब जब वे "थकान भरी ड्यूटी" पर जाते थे। वे गुमनाम रहते थे, केवल संख्याओं द्वारा पहचाने

जाते थे, और एक तरह से स्वयं ही गुमनाम हो गए थे, झुकी हुई आँखों, दबी हुई आवाज़ों, मुंडे हुए सिर के साथ, लाठी के नीचे और अपमानित अवस्था में।

फिर उसका ध्यान उन प्राणियों की ओर लौट गया जो उसकी निगरानी में थे।

ये प्राणी भी मुंडे हुए सिर, झुकी हुई आँखों और धीमी आवाज़ में रहते थे; अपमानित होकर नहीं, बल्कि संसार के उपहास के बीच; लाठी से घायल पीठ के बजाय अनुशासन से छलनी कंधों के साथ। उनके नाम भी मनुष्यों के बीच से लुप्त हो चुके थे; वे अब केवल कठोर नामों से ही जाने जाते थे। वे कभी मांस नहीं खाते थे और कभी शराब नहीं पीते थे; वे अक्सर शाम तक बिना भोजन के रहते थे; वे लाल ब्लाउज के बजाय ऊनी काले कफ़न में लिपटे रहते थे, जो गर्मियों में भारी और सर्दियों में पतला होता था; उसमें कुछ भी कम या ज्यादा नहीं किया जा सकता था; यहाँ तक कि मौसम के अनुसार उनके पास सूती वस्त्र या ऊनी लबादा पहनने का भी विकल्प नहीं था; और साल के छह महीने वे सर्ज कमीज़ पहनते थे जिससे उन्हें बुखार हो जाता था। वे ऐसे कमरों में नहीं रहते थे जिन्हें केवल कड़ाके की ठंड के दौरान गर्म किया जाता था, बल्कि ऐसी कोठरियों में रहते थे जहाँ कभी आग नहीं जलाई जाती थी; वे दो इंच मोटे गद्दों पर नहीं, बल्कि पुआल पर सोते थे। और अंत में, उन्हें सोने तक की अनुमति नहीं थी; हर रात, दिनभर की मेहनत के बाद, अपनी पहली नींद की थकान में, जब वे गहरी नींद में सो रहे होते थे और शरीर को गर्मी महसूस होने लगती थी, तो उन्हें खुद को जगाना पड़ता था, उठना पड़ता था और बर्फीली ठंडी और अंधेरी चैपल में जाकर पत्थरों पर घुटने टेककर प्रार्थना करनी पड़ती थी।

कुछ निश्चित दिनों में इन प्राणियों में से प्रत्येक को बारी-बारी से बारह लगातार घंटों तक घुटने टेककर या साष्टांग प्रणाम करते हुए, चेहरा फुटपाथ पर रखकर और भुजाओं को क्रॉस के आकार में फैलाकर रहना पड़ता था।

बाकी सब पुरुष थे; ये महिलाएं थीं।

उन पुरुषों ने क्या किया था? उन्होंने चोरी की थी, बलात्कार किया था, लूटपाट की थी, हत्या की थी, कत्ल किए थे। वे डाकू, जालसाज, ज़हर देने वाले, आग लगाने वाले, हत्यारे और पितृहत्यारे थे। इन महिलाओं ने क्या किया था? उन्होंने कुछ भी नहीं किया था।

एक तरफ, राजमार्ग पर लूटपाट, धोखाधड़ी, छल, हिंसा, कामुकता, हत्या, हर तरह का अपवित्र कृत्य, हर प्रकार का अपराध; दूसरी तरफ, केवल एक ही चीज, निर्दोषता।

पूर्ण निर्दोषता, एक रहस्यमय धारणा में लगभग स्वर्ग में समाहित, सद्गुण के कारण पृथ्वी से जुड़ी हुई, पवित्रता के माध्यम से पहले से ही स्वर्ग का कुछ अंश धारण किए हुए।

एक ओर, अपराधों के बारे में दबी आवाज़ में बातें की जाती हैं; दूसरी ओर, खुलेआम किए गए गुनाहों का इक़रार। और कैसे-कैसे गुनाह! और कैसे-कैसे गुनाह!

एक ओर दुर्गंध; दूसरी ओर एक अवर्णनीय सुगंध। एक ओर नैतिक विपत्ति, जिसे नज़रों से छिपाकर तोपों की मार से बचाकर रखा गया है, और जो सचमुच अपने पीड़ित शिकारों को भस्म कर रही है; दूसरी ओर, एक ही चूल्हे पर सभी आत्माओं की पवित्र लौ। वहाँ अंधकार; यहाँ परछाई; परन्तु प्रकाश की किरणों से भरी परछाई, और प्रकाश से परिपूर्ण किरणों से भरी परछाई।

गुलामी के दो गढ़; लेकिन पहले में मुक्ति संभव है, एक कानूनी सीमा हमेशा नज़र में रहती है, और फिर, भाग निकलना संभव है। दूसरे में, अनंत काल; भविष्य के सुदूर छोर पर एकमात्र आशा, स्वतंत्रता की वह धुंधली रोशनी जिसे मनुष्य मृत्यु कहते हैं।

पहले में, मनुष्य केवल जंजीरों से बंधे होते हैं; दूसरे में, वे आस्था की जंजीरों से बंधे होते हैं।

पहले से क्या निकला? एक भयंकर अभिशाप, दांत पीसना, घृणा, हताश क्रूरता, मानव समाज के खिलाफ क्रोध की चीख, स्वर्ग के खिलाफ व्यंग्य।

दूसरे प्रयास से क्या परिणाम निकले? आशीर्वाद और प्रेम।

और इन दो स्थानों में, जो इतने समान होते हुए भी इतने भिन्न थे, प्राणियों की ये दो प्रजातियाँ जो एक-दूसरे से इतनी भिन्न थीं, एक ही कार्य, प्रायश्चित, से गुजर रही थीं।

जीन वाल्जेन पहले प्रकार के प्रायश्चित को भली-भांति समझते थे; वह व्यक्तिगत प्रायश्चित, स्वयं के लिए किया जाने वाला प्रायश्चित। परन्तु

वे अंतिम प्रकार के प्रायश्चित को नहीं समझ पाए, उन प्राणियों के प्रायश्चित को जो निर्दोष और बेदाग थे, और वे कांपते हुए स्वयं से पूछने लगे: किस प्रकार का प्रायश्चित? कैसा प्रायश्चित?

उनकी अंतरात्मा की आवाज ने जवाब दिया: "मानवीय उदारता का सबसे दिव्य रूप, दूसरों के लिए प्रायश्चित।"

यहां सभी व्यक्तिगत सिद्धांतों को दरकिनार कर दिया गया है; हम केवल कथावाचक हैं; हम स्वयं को जीन वाल्जेन के दृष्टिकोण पर रखते हैं, और हम उनकी धारणाओं का अनुवाद करते हैं।

उनकी आँखों के सामने त्याग का सर्वोच्च शिखर, सद्गुण की उच्चतम संभव ऊँचाई थी; वह निर्दोषता जो मनुष्यों के दोषों को क्षमा करती है और उनके बदले प्रायश्चित करती है; गुलामी को स्वीकार करना, यातना को सहना, उन आत्माओं द्वारा दंड स्वीकार करना जिन्होंने पाप नहीं किया है, ताकि पतित आत्माओं को इससे बचाया जा सके; मानवता का प्रेम ईश्वर के प्रेम में समाहित हो जाता है, लेकिन वहाँ भी अपना विशिष्ट और मध्यस्थ स्वरूप बनाए रखता है; कोमल और दुर्बल प्राणी जो दंडित लोगों के दुख और पुरस्कृत लोगों की मुस्कान को धारण करते हैं।

और उसे याद आया कि उसने बड़बड़ाने की हिम्मत की थी!

अक्सर, आधी रात को, वह उठकर उन निर्दोष प्राणियों के कृतज्ञतापूर्ण गीत को सुनता था जो कठोरताओं से दबे हुए थे, और यह सोचकर उसकी नसों में खून जम जाता था कि जिन्हें न्यायसंगत रूप से दंडित किया गया था, उन्होंने स्वर्ग की ओर केवल ईशनिंदा में अपनी आवाज उठाई थी, और वह, जो एक नीच व्यक्ति था, उसने ईश्वर के प्रति अपनी मुट्ठी तानी थी।

एक बात ऐसी थी जिसने उसे गहराई से सोचने पर मजबूर कर दिया, मानो स्वयं ईश्वर की ओर से एक चेतावनी भरी फुसफुसाहट हो: उस दीवार को फांदना, उन बाधाओं को पार करना, मृत्यु के जोखिम पर भी स्वीकार किया गया साहसिक कार्य, कष्टदायक और कठिन चढ़ाई, यहाँ तक कि वे सभी प्रयास जो उसने प्रायश्चित के उस दूसरे स्थान से बचने के लिए किए थे, जो उसने इस स्थान में प्रवेश पाने के लिए किए थे। क्या यह उसके भाग्य का प्रतीक था? यह घर भी एक जेल जैसा था

और उस दूसरे घर से दुखद रूप से मिलता-जुलता था जहाँ से वह भागा था, फिर भी उसने कभी ऐसी किसी बात की कल्पना भी नहीं की थी।

उसने फिर से जाली, बोल्ट, लोहे की सलाखें देखीं—किसकी रक्षा के लिए? स्वर्गदूतों की।

बाघों के चारों ओर उसने जो ऊँची दीवारें देखी थीं, अब उसने उन्हें एक बार फिर मेमनों के चारों ओर देखा।

यह प्रायश्चित का स्थान था, दंड का नहीं; फिर भी, यह दूसरे स्थान की तुलना में कहीं अधिक कठोर, अधिक अंधकारमय और अधिक निर्दयी था।

ये कुंवारी लड़कियाँ कैदियों से भी कहीं अधिक बोझ से दबी हुई थीं। एक ठंडी, कठोर हवा, वही हवा जिसने उसकी जवानी को कंपा दिया था, गिद्धों के पिंजरे की सलाखों और तालों से घिरी जाली से गुज़र रही थी; इन कबूतरों के पिंजरे में उससे भी कहीं अधिक कठोर और चुभने वाली हवा बह रही थी।

क्यों?

जब उसने इन बातों पर विचार किया, तो उसके भीतर का सारा सार इस उदात्त रहस्य के सामने विस्मय में खो गया।

इन चिंतनों में उनका अहंकार लुप्त हो गया। उन्होंने अपने हृदय का गहराई से विश्लेषण किया; उन्होंने अपनी तुच्छता को महसूस किया और कई बार रो पड़े। पिछले छह महीनों में उनके जीवन में जो कुछ भी घटित हुआ था, वह उन्हें बिशप के पवित्र उपदेशों की ओर वापस ले गया; प्रेम के माध्यम से कोसेट और विनम्रता के माध्यम से कॉन्वेंट।

कभी-कभी संध्याकाल में, धुंधलके में, जब बगीचा सुनसान होता था, तो उसे चैपल के चारों ओर बने रास्ते के बीचोंबीच, उस खिड़की के सामने घुटनों के बल बैठे देखा जा सकता था, जहाँ से उसने अपने आगमन की रात को झाँका था, और उस स्थान की ओर मुँह किए जहाँ, जैसा कि वह जानता था, सिस्टर प्रायश्चित कर रही थीं, प्रार्थना में झुकी हुई थीं। इस प्रकार वह सिस्टर के सामने घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करता था।

ऐसा प्रतीत होता था मानो वह सीधे भगवान के सामने घुटने टेकने का साहस नहीं रखता था।

उसके चारों ओर की हर चीज़, वह शांत बगीचा, वे सुगंधित फूल, आनंद से चिल्लाते बच्चे, वे गंभीर और सरल महिलाएं, वह शांत मठ, धीरे-धीरे उसमें समा गया, और धीरे-धीरे उसकी आत्मा मठ जैसी शांति, फूलों जैसी सुगंध, महिलाओं जैसी सरलता और बच्चों जैसी खुशी से भर गई। फिर उसने सोचा कि ये ईश्वर के दो घर थे जिन्होंने उसके जीवन के दो महत्वपूर्ण क्षणों में उसे शरण दी थी: पहला, जब सभी द्वार बंद थे और मानव समाज ने उसे ठुकरा दिया था; दूसरा, जब मानव समाज ने फिर से उसका पीछा करना शुरू कर दिया था और जहाज फिर से खाली हो रहे थे; और अगर पहला न होता, तो वह अपराध में फिर से डूब जाता, और अगर दूसरा न होता, तो वह पीड़ा में चला जाता।

कृतज्ञता से उसका पूरा हृदय पिघल गया, और उसका प्रेम और भी बढ़ता गया।

इस तरह कई साल बीत गए; कोसेट बड़ी हो रही थी।

□□□ III. □□□□□□

पुस्तक **I.** पेरिस ने अपने परमाणु में अध्ययन किया

मैं. बच्चा

पेरिस में एक बच्चा है, और जंगल में एक पक्षी है; पक्षी का नाम गौरैया है; बच्चे का नाम गैमिन है।

इन दो विचारों को आपस में मिलाइए, जिनमें से एक में भट्टी का संपूर्ण सार समाहित है और दूसरे में भोर का संपूर्ण प्रकाश; इन दो चिंगारियों को आपस में टकराइए, पेरिस, बचपन; इनसे एक नन्हा सा जीव जन्म लेता है। प्लॉटस इसे होमुनसियो कहते।

यह नन्हा प्राणी आनंदित है। उसे प्रतिदिन भोजन नहीं मिलता, और यदि उसका मन प्रसन्न हो तो वह हर शाम नाटक देखने जाता है। उसके शरीर पर कमीज़ नहीं है, पैरों में जूते नहीं हैं, सिर पर छत नहीं है; वह आकाश की मक्खियों के समान है, जिनके पास इनमें से कुछ भी नहीं है। उसकी आयु सात से तेरह वर्ष के बीच है, वह समूहों में रहता है, गलियों में घूमता है, खुले में रहता है, अपने पिता की पुरानी पतलून पहनता है जो उसकी एड़ियों से नीचे तक जाती है, किसी दूसरे पिता की पुरानी टोपी पहनता है जो उसके कानों से नीचे तक जाती है, और पीले रंग का एक ही सस्पेंडर पहनता है; वह दौड़ता है, घात लगाता है, इधर-उधर खोजता है, समय बर्बाद करता है, पाइपों को काला कर देता है, कैदी की तरह गालियाँ देता है, शराब की दुकान पर जाता है, चोरों को जानता है, समलैंगिक महिलाओं को "तू" कहकर पुकारता है, गंदी भाषा बोलता है, अश्लील गीत गाता है, और उसके हृदय में कोई बुराई नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसके हृदय में एक मोती है, मासूमियत; और मोती कीचड़ में नहीं घुलते। जब तक मनुष्य अपने बचपन में है, ईश्वर की इच्छा है कि वह मासूम रहे।

अगर कोई उस विशाल शहर से पूछे: "यह क्या है?" तो वह जवाब देगी: "यह मेरा छोटा सा बच्चा है।"

II. उनकी कुछ विशिष्ट विशेषताएं

पेरिस का गैमिन—सड़क का अरब—विशालकाय व्यक्ति का बौना है।

अतिशयोक्ति न करें, गली के इस देवदूत के पास कभी-कभी कमीज़ होती है, लेकिन उस स्थिति में उसके पास केवल एक ही होती है; उसके पास कभी-कभी जूते होते हैं, लेकिन तब उनमें तलवे नहीं होते; उसके पास कभी-कभी रहने के लिए जगह होती है, और वह उसे पसंद करता है, क्योंकि उसे वहाँ अपनी माँ मिलती है; लेकिन वह सड़क को ज़्यादा पसंद करता है, क्योंकि वहाँ उसे आज़ादी मिलती है। उसके अपने खेल हैं, उसकी अपनी शरारतें हैं, जिनकी बुनियाद पूंजीपति वर्ग के प्रति घृणा पर टिकी है; उसके अपने अनोखे उपमाएँ हैं: मरना "जड़ से डंडेलियन खाना" है; उसके अपने काम हैं, तांगा बुलाना, गाड़ी की सीढ़ियाँ नीचे करना, भारी बारिश में सड़क के दोनों किनारों के बीच आवागमन के साधन स्थापित करना, जिसे वह "कला का पुल बनाना" कहता है, फ्रांसीसी लोगों के पक्ष में अधिकारियों द्वारा दिए गए भाषणों को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना, फुटपाथ की दरारें साफ़ करना; उसके अपने सिक्के हैं, जो सार्वजनिक सड़कों पर पाए जाने वाले तांबे के छोटे-छोटे टुकड़ों से बने होते हैं। यह विचित्र मुद्रा, जिसे लोक्स—फटे-पुराने कपड़े—के नाम से जाना जाता है, बच्चों के इस छोटे से बोहेमिया में एक अपरिवर्तनीय और सुव्यवस्थित मुद्रा है।

अंत में, उसका अपना एक जीव-जंतु समूह है, जिसे वह कोनों में बड़े ध्यान से देखता है; लेडीबग, डेथ्स-हेड प्लांट-लाइस, डैडी-लॉन्ग-लेग्स, "शैतान", एक काला कीड़ा, जो दो सींगों से लैस अपनी पूंछ को घुमाकर डराता है। उसका एक काल्पनिक राक्षस है, जिसके पेट के नीचे शल्क हैं, लेकिन वह छिपकली नहीं है, जिसकी पीठ पर फुंसियां हैं, लेकिन वह मेंढक नहीं है, जो पुराने चूने के भट्ठों और सूखे कुओं के कोनों में रहता है, जो काला, बालों वाला, चिपचिपा है, जो कभी धीरे, कभी तेज़ी से रेंगता है, जिसकी कोई आवाज़ नहीं है, लेकिन जिसकी एक नज़र है, और इतना भयानक है कि उसे आज तक किसी ने नहीं देखा; वह इस राक्षस को "बहरा जीव" कहता है। पत्थरों के बीच इन "बहरे जीवों" की खोज एक अद्भुत आनंद है। एक और आनंद है अचानक किसी पत्थर को उखाड़कर वुड लाइस को देखना। पेरिस का हर क्षेत्र वहाँ पाए जाने वाले रोचक खजानों के लिए

प्रसिद्ध है। उर्सुलिन्स के लकड़ी के गोदामों में कानखजूरे हैं, पैंथियन में कनखजूरे हैं, और चैंप्स-डी-मार्स की खाइयों में मेंढक के बच्चे हैं।

कहावतों की बात करें तो, इस बच्चे के पास टैलीरैंड जितनी ही कहावतें हैं। वह कम व्यंग्यशील नहीं है, लेकिन अधिक ईमानदार है। उसमें एक अवर्णनीय, अप्रत्याशित प्रसन्नता है; वह अपनी बेतहाशा हंसी से दुकानदार की शांति भंग कर देता है। वह हास्य से लेकर प्रहसन तक, हर स्तर पर निडरता से बात करता है।

एक जनाज़ा गुजर रहा है। शव को ले जाने वालों में एक डॉक्टर भी है। तभी एक राहगीर अरब चिल्लाता है, "अरे! डॉक्टरों के लिए अपना काम घर ले जाना कब से रिवाज बन गया है?"

एक और व्यक्ति भीड़ में है। चश्मा और गहनों से सजे एक गंभीर व्यक्ति ने गुस्से से मुड़कर कहा, "अरे निकम्मे, तुमने मेरी पत्नी की कमर पकड़ ली है!"
- "मैं? पता नहीं!"

III. वह मिलनसार है

शाम को, कुछ सू (एक तरह का सिक्का) की बदौलत, जिसे वह हमेशा जुटाने का कोई न कोई तरीका ढूंढ लेता है, वह युवक एक थिएटर में प्रवेश करता है। उस जादुई दहलीज को पार करते ही उसका रूप बदल जाता है; वह गली का आम आदमी था, वह टिटी (एक तरह का अमीर आदमी) बन जाता है। थिएटर एक तरह से उल्टा पड़ा जहाज होता है जिसका कील हवा में होता है। उसी कील में टिटी (एक तरह का अमीर आदमी) इकट्ठा होते हैं। टिटी (एक तरह का अमीर आदमी) उस लड़के के लिए वैसा ही है जैसा पतंगा उसके लार्वा के लिए होता है; वही प्राणी जिसे पंख मिले हों और जो उड़ सके। उसके लिए बस इतना ही काफी है कि वह वहाँ मौजूद हो, अपनी खुशी की चमक के साथ, अपने उत्साह और आनंद की शक्ति के साथ, अपनी ताली के साथ, जो पंखों की फड़फड़ाहट जैसी लगती है, उस संकरे, अंधेरे, दुर्गंधयुक्त, गंदे, अस्वस्थ, बदसूरत, घिनौने कील को स्वर्ग का नाम दे दे।

किसी व्यक्ति को बेकार चीजें दे दो और उसे आवश्यक चीजों से वंचित कर दो, तो आपको एक आवारा बच्चा मिलेगा।

उस लड़के में साहित्यिक समझ की कमी नहीं है। उसकी प्रवृत्ति, और हम यह बात थोड़ी खेद के साथ कह रहे हैं, शास्त्रीय रुचि के अनुरूप नहीं है। वह स्वभाव से बहुत विद्वान नहीं है। उदाहरण के लिए, उन उग्र बच्चों के छोटे समूह में मैडमोजेल मार्स की लोकप्रियता में व्यंग्य का पुट था। उस लड़के ने उसे "मैडमोजेल मुचे—छिप जाओ" कहकर पुकारा।

यह प्राणी चिल्लाता है, उपहास करता है, मज़ाक उड़ाता है और लड़ता है; बच्चे की तरह चिथड़े-चिथड़े पहनता है और दार्शनिक की तरह तार-तार रहता है; सीवर में मछली पकड़ता है, गंदे नाले में शिकार करता है; गंदगी से हंसी निकालता है; अपनी बुद्धि से सीधे-सादे लोगों को उकसाता है; मुस्कुराता है और काटता है; सीटी बजाता है और गाता है; चिल्लाता है और चीखता है; अलेलुइया को मतंतुरलुरेट के साथ मिलाता है; डी प्रोफंडिस से लेकर जैक-पुडिंग तक हर लय का जाप करता है; बिना खोजे ही पा लेता है; जिस बात से अनजान है उसे भी जानता है; चोरी करने की हद तक स्पार्टन है; ज्ञान के लिए पागल है; गंदगी के लिए

गीतात्मक है; ओलंपस पर भी बैठ जाएगा; गोबर के ढेर में लोटपोट होता है और तारों से ढका हुआ बाहर निकलता है। पेरिस का यह आवारा लड़का इस युवक में रैबेले है।

जब तक उसकी पतलून में घड़ी रखने के लिए जेब न हो, वह उससे संतुष्ट नहीं होता।

वह आसानी से आश्चर्यचकित नहीं होता, और न ही आसानी से भयभीत होता है। वह अंधविश्वासों पर गीत बनाता है, अतिशयोक्तियों का पर्दाफाश करता है, रहस्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश करता है, भूतों पर व्यंग्य करता है, बनावटी बातों से काव्यात्मकता निकाल लेता है, और महाकाव्यों में व्यंग्य का समावेश करता है। ऐसा नहीं है कि वह नीरस है; बिलकुल नहीं; बल्कि वह गंभीर दृष्टि को हास्यास्पद कल्पनाओं से बदल देता है। अगर एडमस्टोर उसके सामने प्रकट हो जाए, तो गली का कोई भी अरब कहेगा: “नमस्ते! भूत!”

IV. वह उपयोगी हो सकता है

पेरिस की शुरुआत आलसी व्यक्ति से होती है और अंत सड़क पर घूमने वाले अरब व्यक्ति से, ये दो ऐसे व्यक्तित्व हैं जो किसी अन्य शहर में नहीं मिलते; एक है निष्क्रिय स्वीकृति, जो केवल निहारने में ही संतुष्ट रहती है, और दूसरा है अदम्य पहल; प्रुधोम और फौइलू। केवल पेरिस के प्राकृतिक इतिहास में ही ये विशेषताएँ निहित हैं। संपूर्ण राजतंत्र आलसी व्यक्ति में समाहित है; संपूर्ण अराजकता आवारा व्यक्ति में।

पेरिस के उपनगरीय इलाकों का यह पीला-सा बच्चा जीता है, विकसित होता है, संबंध बनाता है, सामाजिक वास्तविकताओं और मानवीय चीज़ों की उपस्थिति में, दुख में "लचीला" होता है, एक विचारशील साक्षी बनता है। वह खुद को बेपरवाह समझता है; पर वह ऐसा नहीं है। वह देखता है और हँसी के कगार पर है; वह किसी और चीज़ के भी कगार पर है। आप चाहे जो भी हों, यदि आपका नाम पूर्वाग्रह, दुर्व्यवहार, अज्ञानता, उत्पीड़न, अधर्म, तानाशाही, अन्याय, कट्टरता, अत्याचार है, तो इस खुले मुंह वाले बच्चे से सावधान रहें।

वह छोटा बच्चा बड़ा हो जाएगा।

वह किस मिट्टी से बना है? जो पहली मिट्टी हाथ लगती है, उसी से। मुट्ठी भर मिट्टी, एक साँस, और देखो आदम। ईश्वर का बस गुजर जाना ही काफी है। ईश्वर तो हमेशा से गली-मोहल्ले के अरब लोगों को भी अनदेखा करता आया है। भाग्य इस नन्हे प्राणी पर अपना खेल खेलता है। "भाग्य" शब्द से हमारा तात्पर्य कुछ हद तक संयोग से है। आम मिट्टी से गूंथा गया वह बौना, अज्ञानी, अनपढ़, चंचल, अशिष्ट, नीच। क्या वह आयोनियन बनेगा या बोएटियन? रुको, पेरिस की आत्मा, वह राक्षस जो संयोग के बच्चों और भाग्य के पुरुषों को बनाता है, लैटिन कुम्हार की प्रक्रिया को उलटते हुए, एक घड़े को एक एम्फोरा में बदल देता है।

वी. उसकी सीमाएँ

यह लड़का शहर से प्यार करता है, उसे एकांत भी पसंद है, क्योंकि उसमें ऋषि के कुछ गुण हैं। Urbis amator, like Fuscus; ruris amator, like Flaccus.

चिंतनशील होकर घूमना, यानी आराम करना, दार्शनिक की दृष्टि में समय का उत्तम उपयोग है; विशेष रूप से उस प्रकार के अनुचित भ्रमण में, जो कुछ हद तक भद्दा लेकिन विचित्र तथा दो प्रकृतियों से युक्त है और जो कुछ बड़े शहरों, विशेषकर पेरिस को घेरे हुए है। उपनगरों का अध्ययन करना उभयचर प्राणी का अध्ययन करने के समान है। वृक्षों का अंत, छतों का आरंभ; घास का अंत, फुटपाथों का आरंभ; क्यारियों का अंत, दुकानों का आरंभ, पहियों के निशानों का अंत, भावनाओं का आरंभ; दिव्य गुनगुनाहट का अंत, मानवीय कोलाहल का आरंभ; अतः इसमें असाधारण रुचि है।

इसलिए, इन कम आकर्षक स्थानों में, जिन्हें राहगीरों द्वारा "उदासी" विशेषण से अमिट रूप से अंकित कर दिया गया है, स्वप्नद्रष्टा की प्रतीतिक रूप से उद्देश्यहीन सैर दिखाई देती है।

इन पंक्तियों को लिखने वाला व्यक्ति लंबे समय से पेरिस की सीमाओं में घूमता रहा है, और यह उसके लिए गहन स्मृतियों का स्रोत है। वह साफ-सुथरी घास, वे कंकड़-पत्थर वाले रास्ते, वह चूना पत्थर, वे तालाब, बंजर और अनुपयोगी भूमि की वह कठोर एकरसता, किसी घाटी में अचानक दिखाई देने वाले पुराने बाज़ार-बाग के पौधे, जंगली और नागरिक का वह मिश्रण, वे विशाल रेगिस्तानी कोने जहाँ सैनिक ढोल शोर मचाते हुए अभ्यास करते हैं और युद्ध की एक तरह की कर्कश ध्वनि उत्पन्न करते हैं, दिन में साधु और रात में हत्यारे, हवा में घूमती वह भद्दी चक्की, खदानों के पहिए, कब्रिस्तानों के कोनों पर चाय के बागान; धूप से सराबोर और तितलियों से भरे विशाल, अस्पष्ट भूभागों को काटती हुई विशाल, गंभीर दीवारों का रहस्यमय आकर्षण—यह सब उसे आकर्षित करता था।

धरती पर शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो उन विलक्षण स्थानों से परिचित न हो: ग्लेसिएर, कुनेट, ग्रेनेल की गोलों से छलकती भयानक दीवार, मोंट-

पार्नास, फॉस-ऑक्स-लूप्स, मार्ने नदी के किनारे स्थित औबियर्स, मोंट-सोरिस, टॉम्बे-इसोइरे, पियरे-प्लेट डी चैटिलॉन, जहाँ एक पुरानी, बंजर खदान है जिसका अब मशरूम उगाने के अलावा कोई उपयोग नहीं है, और जो सड़ी हुई तख्तों के एक दरवाज़े से ज़मीन के स्तर पर बंद है। रोम का ग्रामीण इलाका एक विचार है, पेरिस का उपनगर दूसरा; देश के इतने बड़े विस्तार में केवल खेत, घर या पेड़ देखना सतही अनुभव है; हर पहलू ईश्वर के विचार हैं। वह स्थान जहाँ मैदान किसी शहर से मिलता है, हमेशा एक गहरी उदासी से भरा होता है। वहाँ प्रकृति और मानवता दोनों एक साथ आकर्षित करती हैं। वहाँ की स्थानीय मौलिकताएँ प्रकट होती हैं।

हम जैसे जो भी लोग हमारे उपनगरों से सटे इन सुनसान इलाकों में घूमे-फिरे हैं, जिन्हें पेरिस का एकांत इलाका कहा जा सकता है, उन्होंने यहाँ-वहाँ, सबसे सुनसान जगह पर, सबसे अप्रत्याशित क्षण में, एक छोटी सी झाड़ी के पीछे या किसी उदास दीवार के कोने में, बच्चों को शोर मचाते हुए, बदबूदार, कीचड़ से सने, धूल से लथपथ, फटे-पुराने कपड़ों में, बिखरे बालों के साथ, लुका-छिपी खेलते हुए और सिर पर कॉर्नफ्लावर के फूल लगाए देखा होगा। ये सभी छोटे बच्चे हैं जो गरीब परिवारों से भाग निकले हैं। बाहरी सड़क उनकी खुली हवा है; उपनगर उन्हीं के हैं। वहाँ वे हमेशा स्कूल से भागे रहते हैं। वहाँ वे मासूमियत से अपने गंदे गाने गाते हैं। वहाँ वे हैं, या यूँ कहें कि वे वहाँ विद्यमान हैं, सबकी निगाहों से दूर, मई या जून की मीठी रोशनी में, ज़मीन में बने एक गड्ढे के चारों ओर घुटने टेककर, अंगूठों से कंचे फोड़ते हुए, आधे पैसे के सिक्कों पर झगड़ते हुए, गैर-जिम्मेदार, चंचल, स्वतंत्र और खुश। और जैसे ही वे आपको देखते हैं, उन्हें याद आ जाता है कि उनका भी एक काम है और उन्हें अपनी रोजी-रोटी कमानी है, और वे आपको कॉकचाफर से भरा एक पुराना ऊनी मोजा या लिली के फूलों का गुच्छा बेचने की पेशकश करते हैं। अजनबी बच्चों के साथ ये मुलाक़ातें पेरिस के आसपास के इलाकों की मनमोहक और साथ ही मार्मिक खूबियों में से एक हैं।

कभी-कभी लड़कों की भीड़ में छोटी लड़कियाँ भी होती हैं—क्या वे उनकी बहनें हैं?—जो लगभग युवतियाँ जैसी दिखती हैं, दुबली-पतली, बुखार से पीड़ित, धूप से झुलसे हाथों वाली, झाइयों से ढकी, अफीम के फूलों और राई की बालियों से सजी, हंसमुख, थकी-हारी, नंगे पैर। उन्हें गेहूँ के खेतों के बीच

चेरी खाते हुए देखा जा सकता है। शाम को उनकी हँसी सुनाई देती है। दोपहर की तेज धूप में जगमगाते ये समूह, या गोधूलि बेला में धुंधले से दिखाई देने वाले, चिंतनशील व्यक्ति को बहुत देर तक आकर्षित करते हैं, और ये दृश्य उसके सपनों में घुलमिल जाते हैं।

पेरिस, केंद्र, उपनगर, परिधि; इन बच्चों के लिए यही सारी पृथ्वी है। वे कभी भी इससे आगे नहीं बढ़ते। वे पेरिस के वातावरण से उस तरह नहीं बच सकते जिस तरह मछलियाँ पानी से बच सकती हैं। उनके लिए, बाधाओं से परे दो लीगों में कुछ भी मौजूद नहीं है: आइवरी, जेंटिली, अर्क्यूइल, बेलेविले, ऑबर्विलियर्स, मेनिलमोंटेंट, चॉइसी-ले-रोई, बिलनकोर्ट, मीडॉन, इस्सी, वानवेस, सेवरेस, पुटेक्स, न्यूली, गेनेविलियर्स, कोलोम्बेस, रोमेनविले, चटौ, असनीरेस, बाउगिवल, नैनटेरे, एनघिएन, नॉइज़ी-ले-सेक, नोगेंट, गौर्ने, ड्रैंसी, गोनेसे; ब्रह्माण्ड वहीं समाप्त हो जाता है।

VI. थोड़ा सा इतिहास

जिस युग में इस पुस्तक की कहानी घटित होती है, जो लगभग समकालीन ही है, उस समय आज की तरह हर गली के कोने पर पुलिसकर्मी नहीं होते थे (जिसके बारे में यहाँ चर्चा करने का समय नहीं है); पेरिस में आवारा बच्चों की भरमार थी। आँकड़े बताते हैं कि उस दौर में पुलिस गश्ती दल औसतन प्रति वर्ष दो सौ साठ बेघर बच्चों को खुले मैदानों, निर्माणाधीन घरों और पुलों के नीचे से पकड़ते थे। इन्हीं में से एक जगह, जो काफी प्रसिद्ध हो गई है, ने "अरकोला पुल के अबाबील" को जन्म दिया। यह सामाजिक समस्याओं का सबसे भयावह उदाहरण है। मनुष्य के सभी अपराधों की शुरुआत बच्चों के बेघर होने से ही होती है।

फिर भी, आइए पेरिस के पक्ष में एक अपवाद बनाएं। तुलनात्मक रूप से, और उस स्मृति के बावजूद जिसका हमने अभी उल्लेख किया है, यह अपवाद उचित है। जबकि किसी भी अन्य बड़े शहर में आवारा बच्चा एक खोया हुआ इंसान होता है, जबकि लगभग हर जगह अकेला छोड़ा गया बच्चा किसी न किसी रूप में सार्वजनिक बुराइयों में डूबकर बलिदान हो जाता है, जो उसमें ईमानदारी और विवेक को नष्ट कर देती हैं, पेरिस का गली का लड़का, हम इस बात पर जोर देते हैं, चाहे वह सतह पर कितना भी विकृत और घायल क्यों न हो, अंदर से लगभग अक्षुण्ण है। यह एक शानदार बात है जिसे दर्ज किया जाना चाहिए, और जो हमारी लोकप्रिय क्रांतियों की शानदार ईमानदारी में चमकती है, कि पेरिस की हवा में एक निश्चित अविनाशिता व्याप्त है, जैसे समुद्र के पानी में नमक व्याप्त होता है। पेरिस की हवा में सांस लेना आत्मा को संरक्षित करता है।

हमने जो कुछ कहा है, उससे उस हृदय पीड़ा में कोई कमी नहीं आती जो हर उस व्यक्ति को होती है जो इन बच्चों में से किसी एक को देखकर महसूस करता है, जिनके बीच मानो एक टूटे हुए परिवार के धागे तैर रहे हों। आज की सभ्यता में, जो अभी भी अपूर्ण है, इन बिखरे हुए परिवारों को अंधेरे में भटकते देखना कोई असामान्य बात नहीं है, जिन्हें यह स्पष्ट रूप से पता नहीं होता कि उनके बच्चों का क्या हुआ है, और वे अपने ही अवशेषों को सार्वजनिक सड़क पर बिखेर देते हैं। इसीलिए ये अनिश्चित भाग्य हैं। इस दुखद घटना को ही एक मुहावरा

दिया गया है, और इसी कारण इसे "पेरिस के फुटपाथों पर फेंक दिया जाना" कहा जाता है।

वैसे यह भी कहना उचित होगा कि प्राचीन राजतंत्रों ने बच्चों को त्यागने की इस प्रथा को हतोत्साहित नहीं किया था। निचले क्षेत्रों में स्थित मिस्र और बोहेमिया का थोड़ा सा हिस्सा उच्च वर्गों के लिए उपयुक्त था और शक्तिशाली लोगों के उद्देश्यों को पूरा करता था। आम लोगों के बच्चों को शिक्षा से वंचित रखना एक कट्टर सिद्धांत था। “अधूरी जानकारी” का क्या लाभ? यही इसका प्रतिसंकेत था। अब, अज्ञानी बच्चे का ही परिणाम भटकता हुआ बच्चा होता है।

इसके अलावा, राजशाही को कभी-कभी बच्चों की आवश्यकता होती थी, और ऐसे में वह गलियों से बच्चों को चुनती थी।

लुई XIV के शासनकाल में, और पीछे न जाते हुए, राजा ने बेड़ा बनाने की इच्छा जताई, जो बिल्कुल सही थी। यह विचार अच्छा था। लेकिन आइए साधनों पर विचार करें। बेड़ा तभी संभव है, जब पाल वाली नावों के अलावा, जो हवाओं का खिलौना मानी जाती हैं और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें खींचने के लिए होती हैं, कोई ऐसी नाव न हो जो चप्पू या भाप से अपनी मर्जी से कहीं भी जा सके; उस समय गैली नौकाएँ समुद्री क्षेत्र के लिए वही थीं जो आज स्टीमर हैं। इसलिए, गैली नौकाएँ आवश्यक थीं; लेकिन गैली नौका केवल दासों द्वारा ही चलाई जाती थी; इसलिए, दासों की आवश्यकता थी। कोलबर्ट ने प्रांतों और संसदों के आयुक्तों को यथासंभव अधिक से अधिक कैदियों को बनाने का आदेश दिया। न्यायपालिका ने इस मामले में बहुत नरमी दिखाई। एक व्यक्ति जुलूस के दौरान अपनी टोपी पहने रहा—यह ह्यूगनॉट रवैया था; उसे गैली नौकाओं में भेज दिया गया। सड़कों पर एक बच्चा मिला; चूंकि वह पंद्रह वर्ष का था और उसे यह नहीं पता था कि उसे कहाँ सोना है, इसलिए उसे जहाजों में भेज दिया गया। महान शासनकाल; महान शताब्दी।

लुई XV के शासनकाल में पेरिस में बच्चे गायब हो जाते थे; पुलिस उन्हें अगवा कर लेती थी, किस रहस्यमय मकसद से, यह कोई नहीं जानता था। लोग राजा के बैंगनी रंग के स्नानघरों के बारे में डर के मारे कानाफूसी करते थे। बार्बियर इन बातों का सरल शब्दों में वर्णन करते हैं। कभी-कभी ऐसा होता था कि जब पहरेदारों के पास बच्चों की कमी हो जाती थी, तो वे उन बच्चों को ले

[illegible] [illegible] [illegible] [

VII. भारत के वर्गीकरण में गामिन का भी स्थान होना चाहिए।

पेरिस में सड़कों पर रहने वाले अरबों का समूह लगभग एक जाति का निर्माण करता है। हम लगभग यह कह सकते हैं: हर कोई जो इस जाति का हिस्सा बनना चाहता है, वह ऐसा नहीं कर सकता।

यह शब्द 'गामिन' पहली बार 1834 में छपा और साहित्यिक भाषा के माध्यम से आम बोलचाल में आया। यह शब्द 'क्लाउड ग्यूक्स' नामक एक छोटी सी रचना में दिखाई दिया। इसने लोगों में दहशत पैदा कर दी। यह शब्द प्रचलन में आ गया।

एक-दूसरे के प्रति आवारा लड़कों के सम्मान के कई कारण होते हैं। हम एक ऐसे लड़के को जानते हैं और उसके साथ रहे हैं जिसका बहुत सम्मान और प्रशंसा की जाती थी क्योंकि उसने नोट्रे-डेम के टावर की चोटी से एक आदमी को गिरते देखा था; दूसरे का इसलिए कि वह पीछे के आंगन में घुसने में कामयाब हो गया था जहाँ इनवैलिड्स के गुंबद की मूर्तियाँ अस्थायी रूप से रखी गई थीं, और उसने उनमें से कुछ सीसा चुरा लिया था; तीसरे का इसलिए कि उसने एक जहाज को पलटते देखा था; और एक और का इसलिए कि वह एक ऐसे सैनिक को "जानता" था जो एक नागरिक की आँख निकालने के करीब पहुँच गया था।

इससे पेरिस के एक आवारा लड़के की उस प्रसिद्ध उद्गार की व्याख्या होती है, जो एक गहरा अर्थपूर्ण उपसंहार है, जिस पर अशिष्ट लोग बिना समझे ही हंसते हैं—“हे भगवान! मेरा कितना दुर्भाग्य है! यह सोचकर कि मैंने आज तक किसी को पांचवीं मंजिल की खिड़की से गिरते हुए नहीं देखा!” (“आई हैव” का उच्चारण “आई’एव” और “फिफ्थ” का उच्चारण “फिफ्ट’” होता है।)

किसान का यह कथन वाकई बड़ा है: “अमुक पिता, आपकी पत्नी बीमारी से मर गई; आपने डॉक्टर को क्यों नहीं बुलाया?” “क्या चाहिए साहब, हम जैसे बेचारे तो खुद ही मर जाते हैं।” लेकिन अगर किसान की सारी निष्क्रियता इसी कथन में निहित है, तो उपनगरों के उस उद्दंड बच्चे की सारी स्वतंत्र सोच वाली अराजकता निश्चित रूप से इस दूसरे कथन में समाहित है। मौत की सजा पाए एक

व्यक्ति गाड़ी में अपने पादरी की बात सुन रहा है। पेरिस का वह बच्चा कहता है: “वह अपनी काली टोपी से बात कर रहा है! अरे, कितना चालाक है!”

धर्म के मामलों में कुछ हद तक दुस्साहस उस बदमाश को भड़का देता है। दृढ़ निश्चयी होना एक महत्वपूर्ण गुण है।

फांसी के समय उपस्थित रहना एक कर्तव्य है। वह गिलोटिन पर खुद को दिखाता है और हंसता है। वह उसे तरह-तरह के प्यारे नामों से पुकारता है: सूप का अंत, गुर्राने वाला, नीले आकाश में माँ, आखिरी निवाला, इत्यादि। इस घटना का कोई भी अंश न चूकने के लिए, वह दीवारों पर चढ़ता है, बालकनियों पर चढ़ता है, पेड़ों पर चढ़ता है, जाली से लटकता है, चिमनियों से मजबूती से चिपक जाता है। वह लड़का टाइल लगाने का काम भी उतना ही कुशलता से करता है जितना कि नाविक बनने का। छत से उसे उतना ही डर लगता है जितना कि मस्तूल से। प्लेस डे ग्रेव पर होने वाली फांसी से पहले कोई उत्सव नहीं मनाया जाता। सैमसन और अब्बे मोंटेस वास्तव में लोकप्रिय नाम हैं। वे पीड़ित को प्रोत्साहित करने के लिए हूटिंग करते हैं। कभी-कभी वे उसकी प्रशंसा भी करते हैं। लैसेनेयर, जब वह लड़का था, तो उसने भयानक दाउतिन को बहादुरी से मरते हुए देखकर ये शब्द कहे जिनमें भविष्य की झलक है: "मुझे उससे ईर्ष्या हुई।" बच्चों के भाईचारे में वोल्टेयर का नाम तो नहीं है, लेकिन पापावोइन का नाम ज़रूर है। एक ही किंवदंती में "राजनेताओं" को हत्यारों के साथ मिला दिया जाता है। उनके बीच हर किसी के अंतिम वस्त्र को लेकर एक परंपरा है। यह ज्ञात है कि टॉलेरॉन के पास अग्निशामक की टोपी थी, एव्रिल के पास ऊदबिलाव की टोपी, लोसवेल के पास गोल टोपी, बूढ़ा डेलापोर्ट गंजा और बिना टोपी के था, कास्टिंग बिल्कुल लाल-लाल और बहुत सुंदर था, बोरिस की एक छोटी सी रोमांटिक दाढ़ी थी, जीन मार्टिन अपने सस्पेंडर्स पहने रहता था, और लेकूफे और उसकी माँ में झगड़ा होता था। "अपनी टोकरी के लिए एक-दूसरे को दोष मत दो," एक बच्चे ने चिल्लाकर उनसे कहा। एक अन्य बच्चे ने डेबेकर को गुजरते हुए देखने के लिए, भीड़ में छोटा होने के कारण, घाट पर जल रही लालटेन को देखा और उस पर चढ़ गया। सामने तैनात एक पुलिसकर्मी ने भौंहें चढ़ाईं। "मुझे चढ़ने दो, महोदय पुलिसकर्मी," बच्चे ने कहा। और, अधिकारियों का दिल नरम करने के लिए उसने आगे कहा: "मैं नहीं झुकूंगा।" "मुझे परवाह नहीं कि तुम झुकते हो या नहीं," पुलिसकर्मी ने पलटवार किया।

लड़कों के भाईचारे में , एक यादगार दुर्घटना का बहुत महत्व होता है। अगर कोई खुद को बहुत गहराई से , "हड्डी तक " घायल कर लेता है , तो वह सम्मान की चरम सीमा पर पहुंच जाता है।

मुक्का मारना सम्मान का कोई मामूली प्रतीक नहीं है। लड़कों को अक्सर ये कहना बहुत पसंद होता है : “मैं ठीक और मजबूत हूँ , आओ अब!” बाएँ हाथ से लिखना बहुत ही ईर्ष्या का विषय होता है। तिरछी नज़र को बहुत सम्मान की नज़र से देखा जाता है।

VIII. जिसमें पाठक को अंतिम राजा का एक मनमोहक कथन मिलेगा

गर्मी के मौसम में, वह अपना रूप बदलकर मेंढक बन जाता है; और शाम को, जब रात ढलने लगती है, ऑस्टरलिट्ज़ और जेना के पुलों के सामने, कोयले से लदी गाड़ियों और धोबिनों की नावों के ऊपर से, वह सिर के बल सीन नदी में कूद जाता है, और इस तरह वह शालीनता और पुलिस के सभी नियमों का उल्लंघन करता है। फिर भी पुलिस उस पर नज़र रखती है, और इसका नतीजा एक बेहद नाटकीय स्थिति होती है, जिसने एक बार भाईचारे की और यादगार पुकार को जन्म दिया था; वह पुकार, जो लगभग 1830 में प्रसिद्ध हुई थी, एक लड़के से दूसरे लड़के को दी जाने वाली एक रणनीतिक चेतावनी है; यह होमर की किसी कविता की तरह लगती है, जिसमें पैनाथेना के इल्यूसियाक मंत्र की तरह अवर्णनीय भाव हैं, और इसमें प्राचीन इवोहे की झलक मिलती है। यह इस प्रकार है: “ओहे, टिटी, ओहेए! पुलिस आ रही है, पुलिस आ रही है, अपने कपड़े उठाओ और निकल जाओ, सीवर के रास्ते!”

कभी-कभी यह मक्खी—वह खुद को यही कहता है—पढ़ना जानती है; कभी-कभी लिखना जानती है; उसे रंगना हमेशा आता है। वह न जाने किस रहस्यमय आपसी शिक्षा से जनता के लिए उपयोगी सभी प्रतिभाओं को सीखने में संकोच नहीं करता; 1815 से 1830 तक, उसने टर्की की आवाज की नकल की; 1830 से 1848 तक, उसने दीवारों पर नाशपाती के चित्र बनाए। एक गर्मी की शाम, जब लुई फिलिप पैदल घर लौट रहे थे, तो उन्होंने एक छोटे से बच्चे को देखा, जो उनके घुटने से भी छोटा था, पसीना बहाते हुए और न्यूइली के द्वार के एक खंभे पर कोयले से एक विशाल नाशपाती का चित्र बनाते हुए चढ़ रहा था; राजा ने, हेनरी चतुर्थ से मिली अपनी दयालुता के साथ, उस बच्चे की मदद की, नाशपाती का चित्र पूरा किया, और बच्चे को एक लुई देते हुए कहा: "नाशपाती उस पर भी है।" वह बच्चा शोर-शराबा पसंद करता है। उसे एक प्रकार की हिंसा अच्छी लगती है। वह "पादरी" लोगों की कड़ी निंदा करता है। एक दिन, रुए डे ल'यूनिवर्सिटी में, इन्हीं शरारती लड़कों में से एक 69 नंबर की इमारत के गेट पर अपनी नाक पर अंगूठा रखे खड़ा था। एक राहगीर

ने पूछा, "गेट पर ऐसा क्यों कर रहे हो?" लड़के ने जवाब दिया, "वहाँ एक पादरी है।" दरअसल, वहीं पोप का प्रतिनिधि रहता था।

फिर भी, चाहे उस छोटे लड़के में वोल्टेयर जैसी प्रवृत्ति कितनी भी हो, अगर उसे गायक बनने का अवसर मिले, तो संभव है कि वह इसे स्वीकार कर ले, और उस स्थिति में वह विनम्रतापूर्वक समूह की सेवा करता है। दो चीजें हैं जिनके लिए वह टेंटलस की तरह प्रयास करता है, और जिन्हें वह हमेशा चाहता है लेकिन कभी प्राप्त नहीं कर पाता: सरकार को उखाड़ फेंकना और अपनी पतलून को फिर से सिलवाना।

अपने पूर्ण रूप में वह शरारती लड़का पेरिस के सभी पुलिसकर्मियों पर अपना अधिकार जमा लेता है और जिससे भी उसकी मुलाकात होती है, उसका नाम तुरंत पहचान लेता है। वह उन्हें उंगलियों के इशारे पर बता सकता है। वह उनकी आदतों का अध्ययन करता है और उनमें से प्रत्येक के बारे में उसके पास विशेष नोट्स होते हैं। वह पुलिसकर्मियों की आत्मा को खुली किताब की तरह पढ़ लेता है। वह आपको धाराप्रवाह और बिना झिझके बताएगा: “फलां गद्दार है; फलां बहुत ही दुष्ट है; फलां महान है; फलां हास्यास्पद है।” (ये सभी शब्द: गद्दार, दुष्ट, महान, हास्यास्पद, उसके मुंह से एक विशेष अर्थ रखते हैं।) एक सोचता है कि पोंट-नेउफ उसका मालिक है और वह लोगों को पैरापेट के बाहर कंगनी पर चलने से रोकता है; दूसरे को लोगों के कान खींचने का जुनून है; इत्यादि।

IX. गॉल की प्राचीन आत्मा

पोकेलिन के उस लड़के की कुछ झलक थी, जो मछली बाजार के मालिक का बेटा था; ब्यूमार्कैस में भी कुछ ऐसा ही था। चंचलता फ्रांसीसी भावना का एक अंश है। अच्छी समझ के साथ मिलकर, यह कभी-कभी उसे और भी मजबूत बना देती है, जैसे शराब शराब को। कभी-कभी यह एक दोष भी होता है। होमर अपने आप को बार-बार दोहराता है, यह तो तय है; कोई कह सकता है कि वोल्टेयर चंचलता का प्रदर्शन करता है। कैमिल्ले डेसमौलिन्स उपनगरीय इलाकों का मूल निवासी था। चैंपियनेट, जो चमत्कारों को क्रूरता से देखता था, पेरिस की सड़कों से उठा था; उसने बचपन में ही सेंट-जीन डी ब्यूवैस और सेंट-एटियेन डू मोंट के बरामदों को पानी से भर दिया था; उसने सेंट जेनेविएव के मंदिर को परिचित लहजे में संबोधित करते हुए सेंट जानुआरियस की शीशी को आदेश दिए थे।

पेरिस का यह शरारती लड़का आदरणीय, व्यंग्यात्मक और उद्दंड है। उसके दांत टेढ़े-मेढ़े हैं, क्योंकि उसे ठीक से भोजन नहीं मिलता और उसका पेट खराब रहता है, और उसकी आंखें सुंदर हैं, क्योंकि वह बुद्धिमान है। अगर यहोवा स्वयं वहां मौजूद होता, तो वह एक पैर पर कूदता हुआ स्वर्ग की सीढ़ियों पर चढ़ जाता। वह मुक्केबाजी में माहिर है। उसके लिए सभी मान्यताएं संभव हैं। वह गली में खेलता है और विद्रोह करके खुद को संभाल लेता है; उसकी धृष्टता छर्रों की मौजूदगी में भी बनी रहती है; वह एक शरारती लड़का था, वह एक नायक है; छोटे थेबन की तरह, वह शेर की खाल उतार देता है; ढोल बजाने वाला लड़का बारा पेरिस का एक शरारती लड़का था; वह चिल्लाता है: "आगे बढ़ो!" जैसे शास्त्रों का घोड़ा "वाह!" कहता है और पल भर में वह छोटे शरारती लड़के से विशालकाय बन जाता है।

पोखर की यह संतान आदर्श की भी संतान है। मोलियर से बारा तक फैले पंखों के उस फैलाव को मापिए।

संक्षेप में कहें तो, एक शब्द में, गमिन एक ऐसा प्राणी है जो अपना मनोरंजन करता है, क्योंकि वह दुखी है।

X. पेरिस को देखो, मनुष्य को देखो

संक्षेप में कहें तो, आज का पेरिस का युवा लड़का, बीते दिनों के रोम के युवा लड़के की तरह, एक ऐसा शिशु है जिसके माथे पर पुरानी दुनिया की झुर्रियां हैं।

यह शरारती लड़का राष्ट्र के लिए एक वरदान है, और साथ ही एक बीमारी भी; एक ऐसी बीमारी जिसका इलाज होना चाहिए, कैसे? प्रकाश द्वारा।

प्रकाश स्वास्थ्य प्रदान करता है।

प्रकाश प्रज्वलित करता है।

सभी उदार सामाजिक प्रकाश विज्ञान, साहित्य, कला और शिक्षा से उत्पन्न होते हैं। मनुष्य बनाओ, मनुष्य बनाओ। उन्हें प्रकाश दो ताकि वे तुम्हें ऊर्जा प्रदान कर सकें। देर-सवेर सार्वभौमिक शिक्षा का भव्य प्रश्न परम सत्य के अप्रतिरोध्य अधिकार के साथ प्रकट होगा; और तब, फ्रांसीसी विचारधारा के मार्गदर्शन में शासन करने वालों को यह चुनाव करना होगा; फ्रांस के बच्चे या पेरिस के आवारा बच्चे; प्रकाश की ज्वालाएँ या अंधकार में मृगतृष्णाएँ।

गैमिन पेरिस का प्रतिनिधित्व करता है, और पेरिस दुनिया का प्रतिनिधित्व करता है।

पेरिस एक संपूर्ण शहर है। पेरिस मानव जाति की पराकाष्ठा है। यह विशाल शहर मृत और जीवंत रीति-रिवाजों का एक संक्षिप्त रूप है। जो पेरिस को देखता है, उसे लगता है मानो वह इतिहास का सार देख रहा हो, जिसके बीच में स्वर्ग और नक्षत्र दिखाई देते हैं। पेरिस में एक राजधानी, टाउन हॉल, पार्थेनन, नोट्रे-डेम, माउंट एवेंटाइन, फाउबर्ग सेंट-एंटोइन, असिनारियम, सोरबोन संग्रहालय, पैंथियन, वाया सैकरा, बुलेवार्ड डेस इटालियंस, हवाओं का मंदिर, राय का मंदिर है; और यह जेमोनिया को उपहास से प्रतिस्थापित करता है। इसके मेजर को "फराउड" कहा जाता है, इसका ट्रांसटेवरिन फाउबर्ग का आदमी है, इसका हम्माल बाजार का कुली है, इसका लाज़ारोन पेग्रे है, इसका कॉकनी घेंट का मूल निवासी है। जो कुछ भी अन्यत्र मौजूद है, वह पेरिस में भी मौजूद है।

डुमरसेइस की मछली बेचने वाली महिला यूरिपिड्स के जड़ी-बूटी विक्रेता को जवाब दे सकती है, डिस्कोबोल वेजानस फोरियोसो में फिर से जीवित हो उठता है, रस्सी पर नाचने वाला। थेरापोंटीगोनस माइल्स ग्रेनेडियर वाडेबोनकोउर के साथ हाथ में हाथ डालकर चल सकता था, सेकंडहैंड डीलर दमासिपस कबाड़ व्यापारियों के बीच खुश होता, विन्सेनेस सुकरात को अपनी मुट्ठी में वैसे ही पकड़ सकता था जैसे अगोरा डिडेरोट को कैद कर सकता था, ग्रिमोड डे ला रेनियर ने चर्बी युक्त रोस्ट बीफ की खोज की, जैसे कर्टिलस ने रोस्ट हेजहॉग का आविष्कार किया, हम प्लॉटस में दिखाई देने वाले ट्रैपीज़ को आर्क ऑफ ल'एटॉइल के गुंबद के नीचे फिर से प्रकट होते देखते हैं, एपुलियस द्वारा सामना किया गया पोएसिलस का तलवार खाने वाला पोंट-नेउफ पर एक तलवार निगलने वाला है, रामेउ का भतीजा और परजीवी कर्कुलियो एक जोड़ी बनाते हैं, एर्गासिलस खुद को डी'एग्रेफ्यूइल द्वारा कैंबैकेरेस के सामने पेश करवा सकता था; रोम के चार शौकीन: एल्सेसिमार्चस, फोएड्रोमस, डायबोलस और अर्गिरिप्पस, लाबाटुट की घुड़सवार गाड़ी में कोर्टिल से उतरते हैं; औलस गेलियस कॉन्ग्रियो के सामने उतना ही नहीं रुकता जितना चार्ल्स नोडियर पंचिनेलो के सामने रुकता; मार्टो बाघिन नहीं है, लेकिन पार्डालिस्का अजगर नहीं थी; पैंटोलाबस कैफे एंग्लिस में तेज जिगर वाले नोमेंटनस का उपहास उड़ाता है, हर्मोजेनस चैंप्स-एलिसी में एक गायक है, और उसके चारों ओर, बोबेचे की तरह कपड़े पहने भिखारी थ्रेसियस चंदा इकट्ठा करता है; ट्यूलरीज़ में आपके कोट के बटन से आपको रोकने वाला उबाऊ व्यक्ति आपको दो हज़ार साल बाद थेस्प्रियन के संबोधन को दोहराने पर मजबूर करता है: Quis properantem me prehendit pallio? सुरेन की शराब अल्बा की शराब की एक पैरोडी है, डेसौगियर्स की लाल सीमा बलात्रो की भव्य कटाई के साथ संतुलन बनाती है, पेरे-लाचाइज़ रात्रि की बारिश के नीचे एस्क्विलिया के समान चमक बिखेरता है, और पांच साल के लिए खरीदी गई गरीब की कब्र निश्चित रूप से गुलाम के छत्ते के आकार के ताबूत के बराबर है।

कुछ ऐसा खोजें जो पेरिस में न हो। ट्रोफोनियस के पात्र में ऐसा कुछ भी नहीं है जो मेस्मर के पात्र में न हो; एर्गाफिलास कैग्लियोस्ट्रो में फिर से जीवित हो उठता है; ब्राह्मण वासफंता कॉम्टे डी सेंट-जर्मेन में अवतरित हो

उठते हैं; सेंट-मेडार्ड का कब्रिस्तान दमिश्क की औमौमी मस्जिद की तरह ही चमत्कार करता है।

पेरिस में एक एसोप-मेयूक्स है, और एक कैनिडिया, मैडमोजेल लेनोरमंड। यह डेल्फोस की तरह दृष्टि की ज्वलंत वास्तविकताओं से भयभीत है; यह डोडोना की तरह तिपाई उलट देता है। यह ग्रिसेट को सिंहासन पर बिठाता है, जैसे रोम ने दरबारी को बिठाया था; और कुल मिलाकर, यदि लुई XV क्लॉडियन से बुरा है, तो मैडम डुबरी मेसालिना से बेहतर है। पेरिस एक अभूतपूर्व शैली में, जो पहले से मौजूद है और जिसे हमने दबा दिया है, यूनानी नग्नता, हिब्रू अल्सर और गैस्कॉन व्यंग्य को समाहित करता है। यह डायोजेन्स, जॉब और जैक-पुडिंग को मिलाता है, एक प्रेत को संविधान के पुराने छंदों में सजाता है, और चोड्रुक डुक्लोस बनाता है।

हालाँकि प्लूटार्क कहते हैं: "तानाशाह कभी बूढ़ा नहीं होता," रोम ने, सिला और डोमिटियन दोनों के शासनकाल में, स्वयं को त्याग दिया और स्वेच्छा से अपनी शराब में पानी मिला लिया। यदि वारस विबिस्कस द्वारा टाइबर की सैद्धांतिक प्रशंसा को सच माना जाए तो टाइबर नदी एक लेथे नदी के समान थी: Contra Gracchos Tiberim habemus, Bibere Tiberim, id est seditionem oblivisci. पेरिस प्रतिदिन दस लाख लीटर पानी पीता है, लेकिन यह उसे कभी-कभी खतरे की घंटी बजाने से नहीं रोकता।

उस अपवाद को छोड़कर, पेरिस मिलनसार है। यह हर बात को शाही अंदाज़ में स्वीकार करता है; यह अपनी वीनस के बारे में ज़्यादा नखरे नहीं दिखाता; इसकी कैलिपीज हॉटेंटॉट जैसी है; बशर्ते इसे हँसाया जाए, यह माफ़ कर देता है; कुरूपता इसे प्रसन्न करती है, कुरूपता इसे हँसाती है, बुराई इसका मनोरंजन करती है; सनकी बनो और तुम सनकी कहला सकते हो; यहाँ तक कि पाखंड, जो चरम निंदक है, भी इसे घृणा नहीं दिलाता; यह इतना साहित्यिक है कि बेसिल के सामने नाक-भौं सिकोड़ता नहीं, और टार्टुफ़ की प्रार्थना से उतना ही अचंभित होता है जितना होरेस प्रियापस की "हिचकी" से विचलित हुआ था। पेरिस के चेहरे में सार्वभौमिक चेहरे की कोई भी विशेषता अधूरी नहीं है। बाल माबिल जैनिकुलम का बहुमृगतृष्णा नृत्य नहीं है, बल्कि वहाँ महिलाओं के वस्त्र बेचने वाली महिला लोरेट को अपनी आँखों से निहारती है, ठीक वैसे ही जैसे दलाल स्टैफिला कुंवारी प्लैनेसियम का इंतज़ार करती थी। बैरियर डू

कॉम्बैट कोलोसियम तो नहीं है, लेकिन वहाँ के लोग इतने उग्र हैं मानो सीज़र उन्हें देख रहा हो। सीरियाई मालकिन मदर सैगेट से भी अधिक शालीन है, लेकिन अगर वर्जिल रोमन शराबखानों में समय बिताते थे, तो डेविड डी'एंजर्स, बाल्ज़ाक और चार्लेट पेरिस के शराबखानों की मेज़ों पर बैठ चुके हैं। पेरिस का बोलबाला है। वहाँ प्रतिभाएं चमकती हैं, लाल पूंछ वाले लोग वहाँ फलते-फूलते हैं। एडोनाई अपने बारह पहियों वाले रथ पर सवार होकर वहाँ से गुज़रता है; साइलेनस अपने गधे पर सवार होकर वहाँ प्रवेश करता है। साइलेनस के लिए रैम्पोनो पढ़ें।

पेरिस ब्रह्मांड का पर्याय है, पेरिस एथेंस, सिबारिस, जेरूसलम, पैंटिन है। सभी सभ्यताएँ वहाँ संक्षिप्त रूप में समाहित हैं, और सभी बर्बरताएँ भी।
अगर पेरिस के पास गिलोटिन न होता तो उसे बहुत पछतावा होता।

प्लेस डे ग्रेव का थोड़ा सा हिस्सा होना अच्छी बात है। इस रंग के बिना वह शाश्वत उत्सव कैसा होगा? हमारे नियम बुद्धिमानी से बनाए गए हैं, और उन्हीं की बदौलत, यह रसद इस श्रोव मंगलवार को टपक रही है।

XI. उपहास करना, शासन करना

पेरिस की कोई सीमा नहीं है। ऐसा प्रभुत्व किसी और शहर में नहीं है जो कभी- कभी अपने अधीन लोगों का उपहास करता हो। "तुम्हें प्रसन्न करने के लिए, हे एथेंसवासियों!" सिकंदर ने कहा। "पेरिस कानून से भी बढ़कर फैशन बनाता है; पेरिस फैशन से भी बढ़कर दिनचर्या निर्धारित करता है। पेरिस मूर्ख भी हो सकता है, अगर वह उचित समझे; कभी-कभी वह खुद को यह विलासिता प्रदान करता है; तब ब्रह्मांड भी उसके साथ मूर्ख हो जाता है; तब पेरिस जागता है, अपनी आँखें मलता है, कहता है: "मैं कितना मूर्ख हूँ!" और मानव जाति के सामने खिलखिलाकर हँसता है। ऐसा शहर कितना अद्भुत है! यह अजीब बात है कि यह भव्यता और यह प्रहसन सौहार्दपूर्ण पड़ोसी हैं, कि यह सारी शान इस सारे उपहास से अस्त-व्यस्त नहीं होती, और वही मुख आज न्याय के दिन का बिगुल बजा सकता है, और कल बांसुरी! पेरिस में एक सर्वोच्च उल्लास है। इसकी उमंग गर्जना जैसी है और इसका प्रहसन राजदंड धारण करता है।"

इसका प्रचंड तूफान कभी-कभी एक विकृत चेहरे से उत्पन्न होता है। इसके विस्फोट, इसके दिन, इसकी उत्कृष्ट कृतियाँ, इसके चमत्कार, इसके महाकाव्य, ब्रह्मांड की सीमाओं तक पहुँचते हैं, और इसके मनगढ़ंत किस्से भी। इसकी हंसी एक ज्वालामुखी के मुख की तरह है जो पूरी पृथ्वी को झुलसा देती है। इसके मजाक चिंगारियों के समान हैं। यह लोगों पर अपने आदर्शों के साथ-साथ अपने व्यंग्यचित्र भी थोपता है; मानव सभ्यता के सर्वोच्च स्मारक इसके व्यंग्यों को स्वीकार करते हैं और इसकी शरारती हरकतों को अपनी अमरता प्रदान करते हैं। यह अद्भुत है; इसका एक असाधारण 14 जुलाई का दिन है, जो पूरी दुनिया को मुक्ति दिलाता है; यह सभी राष्ट्रों को टेनिस की शपथ लेने के लिए बाध्य करता है; इसकी 4 अगस्त की रात तीन घंटों में हज़ार वर्षों के सामंतवाद को नष्ट कर देती है; यह अपने तर्क को सर्वसम्मत इच्छाशक्ति का बल बनाता है; यह उदात्तता के सभी रूपों में स्वयं को गुणा करता है; यह अपने प्रकाश से वाशिंगटन, कोसियसको, बोलिवर, बोज़ारिस, रीगो, बेम, मैनिन, लोपेज़, जॉन ब्राउन, गैरीबाल्डी को भर देता है; यह हर जगह मौजूद है जहाँ भविष्य को रोशन किया जा रहा है, 1779 में बोस्टन में, 1820 में आइल डी

लियोन में, 1848 में पेस्ट में, 1860 में पालेर्मो में, यह शक्तिशाली प्रतीक 'स्वतंत्रता' फुसफुसाता है, हार्पर फेरी में नाव के चारों ओर एकत्रित अमेरिकी उन्मूलनवादियों के कानों में, और समुद्र तट पर गोज़ी सराय के सामने आर्ची में छाया में एकत्रित एनकोना के देशभक्तों के कानों में; यह कैनारिस का निर्माण करता है; यह क्विरोगा का निर्माण करता है; यह पिसाकेन का निर्माण करता है; यह पृथ्वी पर महान लोगों को प्रकाशित करता है; इसी की प्रेरणा से आगे बढ़ते हुए बायरन मिसोलोन्घी में और माज़ेट बार्सिलोना में शहीद हो गए। यह मिराबो के चरणों में स्थित मंच है, और रोबेस्पियर के चरणों में स्थित एक गड्ढा; इसकी पुस्तकें, इसका रंगमंच, इसकी कला, इसका विज्ञान, इसका साहित्य, इसका दर्शन, मानव जाति के लिए मार्गदर्शक ग्रंथ हैं; इसमें पास्कल, रेग्नियर, कॉर्नेल, डेसकार्टेस, जीन-जैक्स हैं: हर युग के लिए वोल्टेयर, हर सदी के लिए मोलियर; यह अपनी भाषा को सार्वभौमिक मुख से बुलवाता है, और वह भाषा शब्द बन जाती है; यह सभी के मन में प्रगति का विचार गढ़ता है, इसके द्वारा गढ़े गए मुक्तिदायक सिद्धांत पीढ़ियों के लिए विश्वसनीय मित्र हैं, और 1789 से लेकर अब तक सभी राष्ट्रों के सभी नायकों का निर्माण इसके विचारकों और कवियों की आत्मा से हुआ है; यह घुमंतूपन को नहीं रोकता, और वह विशाल प्रतिभा जिसे पेरिस कहा जाता है, अपने प्रकाश से दुनिया को रूपांतरित करते हुए, थिसियस के मंदिर की दीवार पर कोयले से बोगिनियर की नाक का रेखाचित्र बनाता है और पिरामिडों पर "क्रेडेविल चोर" लिखता है।

पेरिस हमेशा अपने दांत दिखाता रहता है; जब वह डांट नहीं रहा होता तो हंस रहा होता है।

पेरिस ऐसा ही है। इसकी छतों से उठता धुआँ ब्रह्मांड की कल्पनाओं को आकार देता है। इसे मिट्टी और पत्थरों का ढेर कह सकते हैं, लेकिन सबसे बढ़कर, यह एक नैतिक अस्तित्व है। यह महान से भी बढ़कर है, यह विशाल है। क्यों? क्योंकि यह साहसी है।

साहस दिखाना; यही प्रगति की कीमत है।

सभी महान विजयें कमोबेश साहस की ही देन होती हैं। क्रांति के घटित होने के लिए यह पर्याप्त नहीं है कि मोंटेस्क्यू ने इसकी भविष्यवाणी की हो, डिडेरोट ने इसका प्रचार किया हो, ब्यूमार्किस ने इसकी घोषणा की हो,

कोंडोरसेट ने इसकी गणना की हो, अरौएट ने इसकी तैयारी की हो या रूसो ने इसकी पूर्वकल्पना की हो; इसके लिए आवश्यक है कि डेंटन ने ऐसा करने का साहस दिखाया हो।

साहस का नारा एक शानदार उपलब्धि है। मानव जाति की प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि साहस के गौरवशाली पाठ हमेशा ऊंचाइयों पर अंकित रहें। साहसिक कारनामे इतिहास को चकाचौंध कर देते हैं और मनुष्य के प्रकाश के महान स्रोतों में से एक हैं। भोर जब उदय होती है तो साहस से भरी होती है। प्रयास करना, साहस दिखाना, दृढ़ रहना, लगन बनाए रखना, स्वयं के प्रति निष्ठावान रहना, भाग्य को शारीरिक रूप से थामना, आपदा के प्रति अपने थोड़े से भय से उसे चकित कर देना, अन्यायपूर्ण सत्ता को चुनौती देना, नशे में धुत विजय का अपमान करना, अपने स्थान पर डटे रहना, अपनी जगह पर डटे रहना; यही वह उदाहरण है जिसकी राष्ट्रों को आवश्यकता है, यही वह प्रकाश है जो उन्हें प्रज्वलित करता है। वही प्रचंड बिजली प्रोमेथियस की मशाल से कैम्ब्रोन की छोटी सी पाइप तक प्रवाहित होती है।

XII. जनता में निहित भविष्य

पेरिस की आम जनता की बात करें तो, चाहे वो कितना भी बड़ा हो जाए, वो हमेशा गली-मोहल्ले का आवारा ही लगता है; बच्चे का चित्र बनाना शहर का चित्र बनाना है; और इसी कारण हमने इस चंचल चिड़िया में छिपे इस चील का अध्ययन किया है। हमारा मानना है कि पेरिस की असली पहचान उपनगरों में ही दिखाई देती है; वहीं शुद्ध रक्त है; वहीं असली शारीरिक बनावट है; वहीं ये लोग मेहनत और कष्ट सहते हैं, और कष्ट और मेहनत ही मनुष्य के दो पहलू हैं। वहाँ असंख्य अज्ञात प्राणी रहते हैं, जिनमें सबसे विचित्र प्रकार के लोग भरे पड़े हैं, जैसे रैपी का कुली से लेकर मोंटफॉकन का कसाईखाना। सिसरो कहते हैं, "फेक्स अर्बिस"; बर्क गुस्से से कहते हैं, "भीड़"; भीड़, जनसमूह, आम जनता। ये शब्द जल्दी से बोले जाते हैं। लेकिन जो भी हो। क्या फर्क पड़ता है? अगर वे नंगे पैर चलते हैं तो मुझे क्या करना चाहिए! उन्हें पढ़ना नहीं आता; तो और भी बुरा। क्या तुम इसके लिए उन्हें त्याग दोगे? क्या तुम उनकी पीड़ा को अभिशाप में बदल दोगे? क्या प्रकाश इन जनसमूहों में प्रवेश नहीं कर सकता? चलो उस पुकार पर लौटें: प्रकाश! और दृढ़ता से उसमें लगे रहें! प्रकाश! प्रकाश! कौन जानता है कि ये अंधकार पारदर्शी नहीं हो जाएँगे? क्या क्रांतियाँ रूपांतरण नहीं हैं? आओ, दार्शनिकों, सिखाओ, ज्ञान दो, प्रकाश फैलाओ, खुलकर सोचो, खुलकर बोलो, महान सूर्य की ओर आनंदपूर्वक अग्रसर हो, सार्वजनिक स्थान से मेलजोल बढ़ाओ, खुशखबरी सुनाओ, अपने अक्षरों का भरपूर उपयोग करो, अधिकारों की घोषणा करो, मार्सिले के गीत गाओ, उत्साह बोओ, बलूत के वृक्षों से हरी डालियाँ तोड़ो। विचार का बवंडर बनाओ। इस भीड़ को उदात्त बनाया जा सकता है। चलो सीखें कि सिद्धांतों और सद्गुणों की उस विशाल ज्वाला का उपयोग कैसे करें, जो कुछ निश्चित समय पर चमकती है, फूट पड़ती है और कांपती है। ये नंगे पैर, ये नंगी भुजाएँ, ये चिथड़े, ये अज्ञानताएँ, ये दीनताएँ, ये अंधकार, आदर्श की विजय में प्रयुक्त हो सकते हैं। लोगों को दरकिनार करते हुए देखो, और तुम्हें सत्य का दर्शन होगा। उस घिनौनी रेत को, जिसे तुम पैरों तले रौंदते हो, भट्टी में डाल दो, उसे वहाँ पिघलने और उबलने

[illegible]

XIII. लिटिल गैवरोचे

इस कहानी के दूसरे भाग में वर्णित घटनाओं के आठ या नौ साल बाद, टेम्पल बुलेवार्ड और शैतो-डी'ओ के आसपास के इलाकों में लोगों ने ग्यारह या बारह साल के एक छोटे लड़के को देखा, जो ऊपर वर्णित शरारती बच्चे की छवि को काफी हद तक साकार कर लेता, अगर उसके होठों पर उसकी उम्र की हंसी होती और उसका दिल बिल्कुल उदास और खाली न होता। यह बच्चा एक आदमी की पतलून में अच्छी तरह लिपटा हुआ था, लेकिन वह उसे उसके पिता से नहीं मिली थी, और एक औरत की कमीज में, लेकिन वह उसे उसकी माँ से नहीं मिली थी। किसी न किसी ने दया करके उसे फटे-पुराने कपड़े पहना दिए थे। फिर भी, उसके माता-पिता थे। लेकिन उसके पिता को उसकी परवाह नहीं थी और उसकी माँ उससे प्यार नहीं करती थी।

वह उन बच्चों में से एक था जो सबसे अधिक दया के पात्र थे, उन बच्चों में से एक जिनके माता-पिता तो थे, लेकिन फिर भी वे अनाथ थे।

यह बच्चा सड़क पर होने पर सबसे ज्यादा खुश रहता था। फुटपाथ उसे अपनी माँ के दिल के दर्द से कहीं ज्यादा सुकून देते थे।

उसके माता-पिता ने उसे एक लात मारकर जीवन में धकेल दिया था।

वह बस उड़ गया।

वह एक चंचल, पीला-सा, फुर्तीला, चौकन्ना और ताना मारने वाला लड़का था, जिसमें एक जीवंत लेकिन बीमार-सी सी झलक थी। वह आता-जाता, गाता, हॉपस्कॉच खेलता, नालियाँ साफ करता, थोड़ी-बहुत चोरी करता, लेकिन बिल्लियों और गौरैयों की तरह, बदमाश कहे जाने पर खुशी से हँसता और चोर कहे जाने पर गुस्सा हो जाता। उसके पास न रहने के लिए छत थी, न रोटी, न आग, न प्यार; फिर भी वह खुश था क्योंकि वह आज़ाद था।

जब ये बेचारे जीव बड़े होकर पुरुष बनते हैं, तो सामाजिक व्यवस्था की चक्की उन्हें कुचल देती है, लेकिन जब तक वे बच्चे होते हैं, तब तक वे अपने छोटेपन के कारण बच जाते हैं। एक छोटा सा छेद भी उन्हें बचा लेता है।

फिर भी, इस बच्चे को छोड़ दिए जाने के बावजूद, कभी-कभी, हर दो-तीन महीने में, वह कहता, "चलो, मैं माँ से मिलने चलता हूँ!" तब वह बुलेवार्ड, सर्कस, पोर्ट सेंट-मार्टिन छोड़कर घाटों पर उतरता, पुल पार करता, उपनगरों में पहुँचता, साल्पेट्रिएर पहुँचता और कहाँ रुक जाता? ठीक उसी दोहरे नंबर 50-52 पर जिससे पाठक परिचित हैं—गोरब्यू की झोपड़ी में।

उस दौर में, 50-52 नंबर की झोपड़ी, जो आम तौर पर वीरान रहती थी और जिस पर हमेशा "किराए पर कमरा उपलब्ध" का बोर्ड लगा रहता था, एक दुर्लभ घटना थी। इसमें कई लोग रहते थे, लेकिन पेरिस में हमेशा की तरह, उनका आपस में कोई संबंध नहीं था। सभी उस गरीब वर्ग से थे जो तंगहाली में फंसा हुआ था और जो गरीबी से जूझते हुए समाज के सबसे निचले तबके तक पहुंचता था, जहां सभ्यता की सारी भौतिक चीजें खत्म हो जाती हैं - कीचड़ साफ करने वाला सफाईकर्मी और कबाड़ बीनने वाला।

जीन वालजेन के समय की "मुख्य किराएदार" की मृत्यु हो चुकी थी और उसकी जगह हूबहू एक और किराएदार आ गई थी। मुझे नहीं पता किस दार्शनिक ने कहा है: "बूढ़ी महिलाओं की कभी कमी नहीं होती।"

इस नई बूढ़ी महिला का नाम मैडम बोर्गन था, और उसके जीवन में तीन तोतों के एक वंश के अलावा कुछ भी उल्लेखनीय नहीं था, जिन्होंने बारी-बारी से उसकी आत्मा पर शासन किया था।

उस झोपड़ी में रहने वालों में सबसे दयनीय स्थिति में एक चार सदस्यीय परिवार था, जिसमें पिता, माता और दो वयस्क बेटियां शामिल थीं, और ये चारों एक ही अटारी में रहते थे, जो उन कोठरियों में से एक थी जिनका हमने पहले ही उल्लेख किया है।

पहली नज़र में, इस परिवार में उनकी घोर गरीबी के अलावा कोई खास बात नहीं थी; जब पिता ने कमरा किराए पर लिया था, तब उन्होंने अपना नाम जोंड्रेट बताया था। मुख्य किरायेदार के यादगार शब्दों में कहें तो, वह कमरा "बिल्कुल खाली" जैसा दिखता था। कुछ समय बाद, जोंड्रेट ने उस महिला से कहा, जो अपनी पूर्ववर्ती की तरह ही चौकीदार और सीढ़ियाँ साफ करने वाली थी: "माँ फलां-फलां, अगर कोई कभी किसी पोलिश या इतालवी, या यहाँ तक कि किसी स्पेनिश व्यक्ति के बारे में पूछने आए, तो शायद वह मैं ही हूँ।"

यह परिवार उस हंसमुख नंगे पैर वाले लड़के का था। वह वहाँ पहुँचा और उसे दुख मिला, और उससे भी अधिक दुखद बात यह थी कि वहाँ कोई मुस्कान नहीं थी; एक ठंडा चूल्हा और ठंडे दिल। जब वह अंदर आया, तो उससे पूछा गया: "तुम कहाँ से आए हो?" उसने उत्तर दिया: "गली से।" जब वह जाने लगा, तो उन्होंने उससे पूछा: "तुम कहाँ जा रहे हो?" उसने उत्तर दिया: "गली में।" उसकी माँ ने उससे कहा: "तुम यहाँ किसलिए आए हो?"

स्नेह के अभाव में, यह बच्चा तहखानों में उगने वाले मुरझाए पौधों की तरह जीवन व्यतीत करता था। इससे उसे कोई कष्ट नहीं होता था, और वह किसी को दोष भी नहीं देता था। उसे ठीक से यह भी नहीं पता था कि माता-पिता का वास्तविक रिश्ता कैसा होना चाहिए।

फिर भी, उसकी माँ उसकी बहनों से प्यार करती थी।

हम यह बताना भूल गए कि बुलेवार्ड डू टेम्पल में इस बच्चे को लिटिल गैवरोश कहा जाता था। उसे लिटिल गैवरोश क्यों कहा जाता था?

शायद इसलिए क्योंकि उनके पिता का नाम जोंड्रेट था।

कुछ अभागे परिवारों की प्रवृत्ति ही रिश्ते को तोड़ने की होती है।

गोरब्यू की झोपड़ी में जोंड्रेट्स जिस कमरे में रहते थे, वह गलियारे के अंत में आखिरी कमरा था। उसके बगल वाला कमरा एक बहुत गरीब युवक का था, जिसका नाम एम. मारियस था।

आइए हम आपको समझाते हैं कि यह एम. मारियस कौन थे।

भाग **II.** महान बुर्जुआ

1. नब्बे वर्ष और बत्तीस दांत

रू बूशेराट, रू डे नॉर्मंडी और रू डे सैंटोंगे में आज भी कुछ पुराने निवासी मौजूद हैं जिन्होंने एम. गिलनोर्मंड नामक एक सम्मानित व्यक्ति की स्मृति को संजोए रखा है और उनका ज़िक्र विनम्रता से करते हैं। यह भले आदमी तब बूढ़े थे जब वे जवान थे। यह छवि अभी तक पूरी तरह से गायब नहीं हुई है—उन लोगों के लिए जो अतीत नामक धुंधली छायाओं के झुंड को उदासी से देखते हैं— मंदिर के आसपास की गलियों के भूलभुलैया से, जहाँ लुई 14 वें शासनकाल में फ्रांस के सभी प्रांतों के नाम जोड़े गए थे, ठीक वैसे ही जैसे आज के समय में, नए टिवोली क्वार्टर की सड़कों को यूरोप की सभी राजधानियों के नाम दिए गए हैं; एक ऐसा विकास, जिसमें प्रगति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

एम. गिलनोर्मंड, जो सन् 1831 में यथासंभव जीवित थे, उन लोगों में से एक थे जो देखने लायक अजूबे बन गए थे, केवल इसलिए कि वे लंबे समय तक जीवित रहे थे, और इसलिए विचित्र थे क्योंकि वे पहले हर किसी से मिलते-जुलते थे, और अब किसी से नहीं मिलते थे। वे एक विलक्षण बूढ़े व्यक्ति थे, और वास्तव में, एक अलग युग के व्यक्ति थे, अठारहवीं सदी के सच्चे, पूर्ण और कुछ हद तक अभिमानी बुर्जुआ, जो अपने अच्छे, पुराने बुर्जुआपन को उसी शान से धारण करते थे जैसे मार्क्विस अपने मार्क्विस पद धारण करते हैं। उनकी उम्र नब्बे वर्ष से अधिक थी, उनकी चाल सीधी थी, वे ज़ोर से बोलते थे, उनकी नज़र साफ़ थी, वे बिना मिलावट के पीते थे, खाते थे, सोते थे और खर्राटे लेते थे। उनके सभी बत्तीस दांत थे। वे केवल पढ़ते समय चश्मा पहनते थे। उनका स्वभाव प्रेममय था, लेकिन उन्होंने घोषणा की कि पिछले दस वर्षों से उन्होंने महिलाओं का पूर्णतः त्याग कर दिया है। उन्होंने कहा कि वे अब किसी को खुश नहीं कर सकते; उन्होंने यह नहीं कहा: "मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ," बल्कि: "मैं बहुत गरीब हूँ।" उन्होंने कहा: “अगर मैं बर्बाद न हुआ होता—हे!” वास्तव में उनके पास लगभग पंद्रह हज़ार फ़्रैंक की आमदनी ही बची थी। उनका सपना था कि उन्हें विरासत में कुछ मिले और रखैल रखने के लिए एक लाख लिवर की आमदनी हो। जैसा कि पाठक समझेंगे, वे उन अस्सी साल के लोगों में से नहीं थे जो एम. डी वोल्टेयर की तरह जीवन भर मरते रहे; उनकी उम्र टूटे हुए बर्तन जैसी नहीं थी;

इस हंसमुख बूढ़े का स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहा था। वे सतही, जल्दबाज़ और आसानी से गुस्सा होने वाले थे। वे हर बात पर भड़क उठते थे, आमतौर पर तर्क के बिल्कुल विपरीत। जब कोई उनका विरोध करता, तो वे अपनी छड़ी उठा लेते; वे लोगों को वैसे ही पीटते जैसे महान युग में पीटते थे। उनकी पचास साल से अधिक उम्र की एक अविवाहित बेटी थी, जिसे वे गुस्से में अपनी ज़बान से बुरी तरह डांटते थे और जिसे वे कोड़े मारना चाहते थे। वह उन्हें आठ साल की लगती थी। वे अपने नौकरों के कान ज़ोर से खींचते और कहते: “आह! कैरोग्न!” उनकी एक कसम थी: "पैंटौफ्लोच की कसम!" उनमें शांति के अनोखे गुण थे; वे हर दिन एक पागल नाई से दाढ़ी बनवाते थे जो उनसे नफरत करता था, क्योंकि वह एम. गिलनोर्मंड की पत्नी, जो एक सुंदर और नखरीली नाई थी, के कारण उनसे ईर्ष्या करता था। एम. गिलनोर्मंड हर बात में उनकी समझदारी की प्रशंसा करते थे और कहते थे कि वे बेहद बुद्धिमान हैं; उनका एक कथन यह था: "सचमुच, मुझमें कुछ अंतर्दृष्टि है; मैं बता सकता हूँ कि जब कोई पिस्सू मुझे काटता है, तो वह किस औरत से आया है।"

जिन शब्दों का वह सबसे अधिक बार उच्चारण करता था, वे थे: "समझदार मनुष्य" और "प्रकृति"। उसने इस अंतिम शब्द को वह भव्य अर्थ नहीं दिया जो हमारे युग ने इसे दिया है, बल्कि उसने इसे अपने अनोखे अंदाज़ में अपनी छोटी-छोटी व्यंग्य रचनाओं में शामिल किया: "प्रकृति, ताकि सभ्यता में हर चीज़ का थोड़ा-थोड़ा अंश हो, उसे अपनी मनोरंजक बर्बरता के नमूने भी देती है। यूरोप में एशिया और अफ्रीका के छोटे-छोटे नमूने मौजूद हैं। बिल्ली ड्राइंग रूम का बाघ है, छिपकली जेब में रखने वाला मगरमच्छ है। ओपेरा में नृत्य करने वाली महिलाएं गुलाबी रंग की जंगली औरतें हैं। वे मनुष्यों को खाती नहीं, बल्कि उन्हें कुचलती हैं; या, जादूगरनी होने के नाते, वे उन्हें सीपियों में बदल देती हैं और निगल जाती हैं। कैरेबियाई लोग केवल हड्डियाँ छोड़ते हैं, केवल खोल छोड़ते हैं। यही हमारे नैतिक मूल्य हैं। हम निगलते नहीं, कुतरते हैं; हम नष्ट नहीं करते, बल्कि पंजे मारते हैं।"

II. जैसा मालिक, वैसा घर

वह माराईस में, रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर, नंबर 6 में रहते थे। वह उस घर के मालिक थे। यह घर बाद में ध्वस्त होकर दोबारा बनाया गया, और संभवतः पेरिस की सड़कों के क्रमांकन में होने वाले परिवर्तनों के कारण इसका नंबर बदल गया होगा। वह पहली मंजिल पर, सड़क और बगीचों के बीच स्थित एक प्राचीन और विशाल अपार्टमेंट में रहते थे, जो छत तक देहाती दृश्यों को दर्शाने वाली बड़ी- बड़ी गोबेलिन और बोवेस टेपेस्ट्री से सजा हुआ था; छतों और पैनलों के विषय छोटे रूप में आर्मचेयर पर भी दोहराए गए थे। उन्होंने अपने बिस्तर को कोरोमंडल लैकर के एक विशाल, नौ-पत्ती वाले पर्दे से ढक रखा था। खिड़कियों से लंबे, घने पर्दे लटके हुए थे, जो बड़े-बड़े, टूटे हुए तह बनाते थे, जो बेहद शानदार थे। उनकी खिड़कियों के ठीक नीचे स्थित बगीचा, कोने वाली खिड़की से बारह या पंद्रह सीढ़ियों की एक सीढ़ी से जुड़ा हुआ था, जिस पर वह बुजुर्ग सज्जन बड़ी फुर्ती से चढ़ते और उतरते थे। अपने कक्ष से सटे पुस्तकालय के अलावा, उनके पास एक भव्य और सुरुचिपूर्ण शयनकक्ष था, जिस पर वे विशेष स्नेह करते थे। यह एक आलीशान और सुरुचिपूर्ण विश्राम स्थल था, जिसमें पुआल के शानदार पर्दे लगे थे, जिन पर फूलों और लिली के फूलों की आकृतियाँ बनी थीं। ये पर्दे लुई XIV के काल के जहाजों पर बनाए गए थे और एम. डी विवोन ने अपनी प्रेमिका के लिए उनके कैदियों से बनवाए थे। एम. गिलनोर्मंड को यह परदादी से विरासत में मिला था, जिनकी मृत्यु सौ वर्ष की आयु में हुई थी। उनकी दो पत्नियाँ थीं। उनका व्यवहार दरबारी (जो वे कभी नहीं रहे) और वकील (जो वे बन सकते थे) के बीच का था। वे हंसमुख थे और जब उनका मन करता तो स्नेहपूर्ण भी होते थे। अपनी युवावस्था में वे उन पुरुषों में से थे जो हमेशा अपनी पत्नियों से धोखा खाते हैं, लेकिन अपनी प्रेमिकाओं से कभी नहीं, क्योंकि वे एक ही समय में सबसे चिड़चिड़े पति और सबसे आकर्षक प्रेमी होते हैं। वे चित्रकला के पारखी थे। उनके कमरे में एक अद्भुत चित्र था, जिसे किसी को नहीं पता कि किसने बनाया था। इसे जोर्डेन्स ने ब्रश के बड़े-बड़े स्ट्रोक से, लाखों बारीकियों के साथ, अव्यवस्थित और बेतरतीब ढंग से चित्रित किया था। एम. गिलनोर्मंड का पहनावा न तो लुई 14 का था और न ही

लुई 16 का; यह डायरेक्ट्री के इनक्रेबल्स का था। उस समय तक वे खुद को युवा समझते थे और फैशन का अनुसरण करते थे। उनका कोट हल्के कपड़े का था, जिसमें चौड़ा रिवर्स, लंबी स्वैलोटेल और बड़े स्टील के बटन लगे थे। इसके साथ वे घुटनों तक की पैंट और बकल वाले जूते पहनते थे। वे हमेशा अपने हाथ जेब की जेब में रखते थे। उन्होंने अधिकारपूर्वक कहा: "फ्रांसीसी क्रांति बदमाशों का ढेर है।"

III. ल्यूक-एस्पिरिट

सोलह वर्ष की आयु में, एक शाम ओपेरा में, उन्हें दो सुंदरियों द्वारा एक ही समय में ओपेरा-ग्लासेस के माध्यम से निहारने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था— वे दोनों ही उस समय परिपक्व और प्रसिद्ध सुंदरियाँ थीं, जिनके गीत वोल्टेयर, कैमरगो और सैले ने गाए थे। दो तरफा दुविधा में फँसे, उन्होंने एक छोटी नर्तकी, नाहेनरी नाम की एक युवती की ओर वीरतापूर्वक कदम बढ़ाया, जो उन्हीं की तरह सोलह वर्ष की थी, गुमनाम सी थी, और जिससे उन्हें प्रेम हो गया था। उनके मन में यादों का भंडार था। वे अक्सर कहते थे: “वह कितनी सुंदर थी—वह गुइमार्ड-गुइमार्डिनी-गुइमार्डिनेट, आखिरी बार जब मैंने उसे लॉन्गचैम्प्स में देखा था, उसके घुंघराले बाल, नीले रंग की आकर्षक आँखें, नवयुवतों के रंग का गाउन और उसका छोटा सा आकर्षक मफ!” उन्होंने अपनी युवावस्था में नैन-लॉन्ड्रिन की एक जैकेट पहनी थी, जिसके बारे में वे बड़े उत्साह से बातें करना पसंद करते थे। “मैं लेवांत के तुर्क की तरह कपड़े पहने हुए था,” उसने कहा। मैडम डी बौफ्लर्स ने उसे बीस साल की उम्र में संयोग से देखा था और उसे “एक आकर्षक मूर्ख” बताया था। राजनीति और सत्ता में देखे गए सभी नामों से वह भयभीत था, उन्हें वह अशिष्ट और बुर्जुआ मानता था। वह पत्रिकाएँ पढ़ता था, “अखबार, गजट,” जैसा कि उसने कहा, और साथ ही हँसी के ठहाकों को दबाता रहता था। “ओह!” उसने कहा, “ये कैसे लोग हैं! कॉर्बियर! हुमान! कासिमिर पेरिएर! एक मंत्री भी है! मैं कल्पना कर सकता हूँ कि किसी पत्रिका में यह लिखा हो: ‘श्री गिलेनोरमन, मंत्री!’ यह तो एक मज़ाक होगा। खैर! वे इतने मूर्ख हैं कि यह बात चल जाएगी;” वह हर चीज़ को, चाहे वह सभ्य हो या असभ्य, खुशी-खुशी उसके नाम से पुकारता था और महिलाओं के सामने ज़रा भी संकोच नहीं करता था। वह अभद्र भाषा, अश्लीलता और गंदी बातें एक खास तरह की शांति और आश्चर्य की कमी के साथ बोलता था, जो सुरुचिपूर्ण थी। यह उनके युग की अनौपचारिकता के अनुरूप था। यह ध्यान देने योग्य है कि कविता में उपमाओं का युग गद्य में अपरिष्कृतता का युग था। उनके धर्मपिता ने भविष्यवाणी की थी कि वे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति बनेंगे, और उन्हें ये दो महत्वपूर्ण नाम दिए थे: ल्यूक-एस्प्रिट।

IV. शताब्दी की आकांक्षा

अपने बचपन में उन्होंने मौलिन्स कॉलेज में कई पुरस्कार जीते थे, जहाँ उनका जन्म हुआ था, और उनका राज्याभिषेक ड्यूक डी निवेरनैस के हाथों हुआ था, जिन्हें वे ड्यूक डी नेवर्स कहते थे। न तो कन्वेंशन, न लुई सोलहवें की मृत्यु, न नेपोलियन, न बॉर्बन्स की वापसी, और न ही कोई और चीज़ इस राज्याभिषेक की स्मृति को मिटा सकी। उनकी नज़र में ड्यूक डी नेवर्स सदी की महान हस्ती थे। उन्होंने कहा, "कितने आकर्षक ग्रैंड सेग्नर थे, और नीले रिबन के साथ उनका अंदाज़ कितना शानदार था!"

एम. गिलनोर्मंड की दृष्टि में, कैथरीन द्वितीय ने पोलैंड के विभाजन के अपराध का प्रायश्चित बेस्टुचेफ से तीन हजार रूबल में स्वर्ण अमृत का रहस्य खरीदकर किया था। वे इस विषय पर बहुत उत्साहित थे: “स्वर्ण अमृत,” उन्होंने कहा, “बेस्टुचेफ का पीला रंग, अठारहवीं शताब्दी में जनरल लामोट की बूँदें—यह प्रेम की विपत्तियों का महान उपाय था, शुक्र ग्रह के विरुद्ध रामबाण, आधा औंस की शीशी एक लुई में। लुई XV ने इसकी दो सौ शीशियाँ पोप को भेजी थीं।” यदि किसी ने उन्हें बताया होता कि स्वर्ण अमृत कुछ और नहीं बल्कि लौह परक्लोराइड है, तो वे बहुत चिढ़ जाते और अपना संतुलन खो बैठते। एम. गिलनोर्मंड बॉर्बोन वंश के प्रशंसक थे और 1789 की घटना से उन्हें घोर घृणा थी। वह हमेशा आतंक के दौर में अपनी जान बचाने की कहानियाँ सुनाता रहता था और बताता रहता था कि कैसे उसे अपनी जान बचाने के लिए बहुत चतुराई और फुर्ती दिखानी पड़ी थी। अगर कोई नौजवान उसकी मौजूदगी में गणतंत्र की प्रशंसा में कुछ कहने की हिम्मत करता, तो वह गुस्से से लाल हो जाता और इतना क्रोधित हो जाता कि बेहोश होने की कगार पर पहुँच जाता। कभी- कभी वह अपने नब्बे वर्ष का जिक्र करते हुए कहता, "मुझे उम्मीद है कि मैं तिरानवे साल दोबारा नहीं देखूँगा।" ऐसे मौकों पर वह लोगों को यह संकेत देता था कि वह सौ साल तक जीना चाहता है।

वी. बास्क और निकोलेट

उनके पास सिद्धांत थे। यहां उनमें से एक उदाहरण है: “जब कोई पुरुष स्त्रियों के प्रति अत्यधिक आसक्त होता है, और जब उसकी पत्नी ऐसी होती है जिसकी वह जरा भी परवाह नहीं करता, जो साधारण, चिड़चिड़ी, वैध, अधिकारों से परिपूर्ण, नियमों का पालन करने वाली और जरूरत पड़ने पर ईर्ष्यालु होती है, तो इस दुविधा से निकलने और शांति प्राप्त करने का केवल एक ही उपाय है, और वह है अपनी पत्नी को धन-संपत्ति का नियंत्रण सौंप देना। यह त्याग उसे मुक्त कर देता है। फिर उसकी पत्नी व्यस्त हो जाती है, धन-संपत्ति के लेन-देन में अत्यधिक रुचि लेने लगती है, इस प्रक्रिया में उसकी उंगलियां कालिख से भर जाती हैं, आधे हिस्से वाले किरायेदारों की शिक्षा और किसानों के प्रशिक्षण का कार्य करती है, वकीलों को बुलाती है, नोटरियों की अध्यक्षता करती है, लेखकों को उपदेश देती है, कानून के विभिन्न विभागों का दौरा करती है, मुकदमों का अनुसरण करती है, पट्टे तैयार करती है, अनुबंध लिखवाती है, खुद को संप्रभु समझती है, बेचती है, खरीदती है, नियम बनाती है, वादे करती है और समझौते करती है, दृढ़ संकल्पित करती है और रद्द करती है, देती है, रियायत देती है और वापस लेती है, व्यवस्थित करती है, अव्यवस्थित करती है, जमाखोरी करती है, फिजूलखर्ची करती है; वह वह मूर्खताएं करती है, जो उसका परम और व्यक्तिगत आनंद है, और यही उसे सांत्वना देता है। जबकि उसका पति उसका तिरस्कार करता है, उसे अपने पति को बर्बाद करने की संतुष्टि मिलती है।” यह सिद्धांत स्वयं एम. गिलनोर्मंड ने अपनाया था, और यही उनका इतिहास बन गया था। उनकी दूसरी पत्नी ने उनकी संपत्ति का इस प्रकार प्रबंधन किया था कि एक दिन जब एम. गिलनोर्मंड विधवा हो गए, तो उनके पास केवल इतना ही बचा था जिससे वे अपना गुजारा कर सकें। उन्होंने अपनी लगभग पूरी संपत्ति पंद्रह हजार फ्रैंक की वार्षिक पेंशन में लगा दी थी, जिसका तीन-चौथाई हिस्सा उनके साथ समाप्त हो जाएगा। उन्होंने इस मामले में जरा भी संकोच नहीं किया, क्योंकि वे अपने पीछे कोई संपत्ति छोड़ना नहीं चाहते थे। इसके अलावा, उन्होंने देखा था कि पैतृक संपत्तियां अप्रत्याशित घटनाओं के अधीन होती हैं, और उदाहरण के लिए, "राष्ट्रीय संपत्ति" बन जाती हैं; उन्होंने

समेकित तीन प्रतिशत के विभिन्न रूपों को देखा था, और उन्हें सार्वजनिक ऋण की महान पुस्तक पर कोई विशेष विश्वास नहीं था। "यह सब तो क्विनकैम्पोइस गली का झूठ है!" उन्होंने कहा। जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर में स्थित उनका घर उन्हीं का था। उनके पास दो नौकर थे, "एक पुरुष और एक महिला।" जब कोई नौकर उनके यहाँ आता, तो एम. गिलनोर्मंड उसका पुनः बपतिस्मा करते। वे नौकरों को उनके प्रांत का नाम देते थे: निमोइस, कॉम्टोइस, पोइटेविन, पिकार्ड। उनका आखिरी नौकर पचपन वर्ष का एक बड़ा, हट्टा-कट्टा और हांफने वाला व्यक्ति था, जो बीस कदम भी नहीं दौड़ सकता था; लेकिन, चूंकि उसका जन्म बेयोन में हुआ था, इसलिए एम. गिलनोर्मंड उसे "बास्क" कहते थे। उनके घर की सभी महिला नौकरानियों का नाम निकोलेट था (यहाँ तक कि मैग्नन का भी, जिसके बारे में हम आगे और जानेंगे)। एक दिन, एक अभिमानी रसोइया, जो कॉर्डन ब्लू वर्दी में थी और उच्च वर्ग के कुली थी, आई। एम. गिलनोर्मंड ने पूछा, "तुम्हें महीने में कितना वेतन चाहिए?" उसने जवाब दिया, "तीस फ्रैंक।" "तुम्हारा नाम क्या है?" "ओलंपी।" "तुम्हें पचास फ्रैंक मिलेंगे, और तुम्हारा नाम निकोलेट रखा जाएगा।"

VI. जिसमें मैग्नन और उसके दो बच्चे दिखाई देते हैं

एम. गिलनोर्मंड के लिए, दुख क्रोध में बदल गया था; वे निराशा में डूबे होने के कारण बहुत गुस्से में थे। उनके मन में हर तरह के पूर्वाग्रह थे और वे हर तरह की मनमानी करते थे। उनकी बाहरी शांति और आंतरिक संतुष्टि का एक कारण, जैसा कि हमने अभी संकेत दिया है, यह था कि वे हमेशा ऊर्जावान और जोशीले बने रहे और इसी तरह का व्यवहार करते थे। इसे वे "शाही प्रसिद्धि" कहते थे। इस शाही प्रसिद्धि के कारण कभी-कभी उन्हें अप्रत्याशित लाभ भी प्राप्त होते थे। एक दिन, उनके पास एक टोकरी में, मानो सीपियों की टोकरी हो, एक हट्टा- कट्टा, नवजात शिशु लाया गया, जो ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था और उसे कपड़ों में लपेटा गया था। छह महीने पहले बर्खास्त की गई एक नौकरानी ने उस बच्चे को उसी का बच्चा बताया था। उस समय एम. गिलनोर्मंड चौरासी वर्ष के हो चुके थे। इस घटना से पूरे राजघराने में आक्रोश और हंगामा मच गया। और उस दुस्साहसी औरत को क्या लगता था कि वह किसे यह विश्वास दिला पाएगी? कितनी धृष्टता! यह कितनी घिनौनी बदनामी है! स्वयं एम. गिलनोर्मंड जरा भी क्रोधित नहीं हुए। उन्होंने उस बदमाश को एक भले आदमी की सौम्य मुस्कान के साथ देखा, जो बदनामी से खुश हो रहा हो, और धीरे से कहा: “अच्छा, अब क्या? क्या बात है? तुम बड़े हैरान हो गए हो, और सच में, तुम हद से ज़्यादा अज्ञानी हो। महामहिम चार्ल्स IX के नाजायज बेटे, एम. ले ड्यूक डी'एंगौलेम ने पचासी साल की उम्र में पंद्रह साल की एक नासमझ लड़की से शादी की थी; बोर्डो के आर्कबिशप, कार्डिनल डी सोर्डिस के भाई, एम. वर्जिनल, मार्क्विस डी'अलुये ने, मैडम ला प्रेसिडेंट जैक्विन की दासी से, तिरासी साल की उम्र में एक बेटे को जन्म दिया, जो प्रेम का सच्चा बच्चा था, और माल्टा का शेवेलियर और राज्य सलाहकार बना; इस सदी के महान पुरुषों में से एक, अब्बे तबारौद, अस्सी-सात साल के एक व्यक्ति के बेटे हैं। इन बातों में कुछ भी असामान्य नहीं है। और फिर, बाइबिल! उस पर मैं यह घोषणा करता हूँ कि “यह छोटा बच्चा मेरा नहीं है। इसकी देखभाल की जाए। इसमें उसकी कोई गलती नहीं है।” उनका यह व्यवहार सौम्य था।

मैग्नन नाम की उस महिला ने अगले वर्ष उन्हें एक और पार्सल भेजा। वह फिर से एक लड़का था। तब श्री गिलनोर्मंड मान गए। उन्होंने दोनों बच्चों को उनकी माँ के पास वापस भेज दिया और वादा किया कि वे उनके भरण-पोषण के लिए अस्सी फ्रैंक प्रति माह देंगे, इस शर्त पर कि माँ आगे ऐसा नहीं करेगी। उन्होंने आगे कहा: “मैं इस बात पर जोर देता हूँ कि माँ उनके साथ अच्छा व्यवहार करे। मैं समय-समय पर उनसे मिलने जाऊँगा।” और उन्होंने ऐसा किया भी। उनका एक भाई था जो पादरी था और पोइटियर्स अकादमी का तैंतीस वर्षों तक रेक्टर रहा था और उनहत्तर वर्ष की आयु में उसका निधन हो गया था। “मैंने उसे कम उम्र में ही खो दिया,” उन्होंने कहा। यह भाई, जिसके बारे में बहुत कम यादें बची हैं, एक शांतिप्रिय कंजूस था, जो पुजारी होने के नाते गरीबों को दान देने को अपना कर्तव्य समझता था, लेकिन वह उन्हें केवल खराब या विमुद्रीकृत धन ही देता था, इस प्रकार स्वर्ग के रास्ते नरक जाने का रास्ता खोज रहा था। जहाँ तक एम. गिलनोर्मंड बड़े की बात है, वह दान देने में कभी कंजूसी नहीं करता था, बल्कि खुशी-खुशी और उदारता से दान देता था। वह दयालु, स्पष्टवादी और उदार था, और यदि वह धनी होता, तो उसका स्वभाव और भी भव्य होता। वह चाहता था कि उससे संबंधित हर काम भव्य तरीके से हो, यहाँ तक कि उसकी शरारतें भी। एक दिन, एक व्यापारी द्वारा विरासत के मामले में खुलेआम और घोर धोखाधड़ी का शिकार होने पर, उन्होंने गंभीर स्वर में कहा: “यह तो घोर अन्याय हुआ! मुझे इस चोरी पर सचमुच शर्म आ रही है। इस सदी में सब कुछ पतित हो गया है, यहाँ तक कि बदमाश भी। हे भगवान! मेरे जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति को इस तरह लूटना उचित नहीं है। मुझे जंगल में लूटा गया है, लेकिन बुरी तरह से। Silvae sint consule dignae!” जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, उनकी दो पत्नियाँ थीं; पहली से उनकी एक बेटी थी, जो अविवाहित रही, और दूसरी से उनकी एक और बेटी थी, जिसकी लगभग तीस वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई थी। उसने प्रेम, संयोग या किसी अन्य कारण से एक ऐसे भाग्यशाली सैनिक से विवाह किया था, जिसने गणतंत्र और साम्राज्य की सेनाओं में सेवा की थी, जिसने ऑस्टरलिट्ज़ में वीरता प्राप्त की थी और वाटरलू में कर्नल बनाया गया था। “वह मेरे परिवार के लिए कलंक है,” उस बूढ़े बुर्जुआ ने कहा। वह अत्यधिक मात्रा में नसवार का सेवन करता था, और एक हाथ के पिछले हिस्से से अपनी लेस वाली झालर को बड़े ही सलीके से खींचता था। ईश्वर में उसका विश्वास बहुत कम था।

VII. नियम: शाम के समय के अलावा किसी से भी न मिलें

एम. ल्यूक-एस्प्रिट गिलनोर्मंड ऐसे ही थे, जिनके बाल झड़े नहीं थे—जो सफेद नहीं बल्कि भूरे थे—और जिन्हें वे हमेशा "कुत्ते के कान" की तरह संवार कर रखते थे। संक्षेप में कहें तो, इन सब के बावजूद वे आदरणीय थे।

उनमें अठारहवीं सदी की कुछ झलक थी; चंचल और महान।

सन् 1814 में और पुनर्स्थापना काल के शुरुआती वर्षों के दौरान, एम. गिलनोर्मंड, जो अभी भी युवा थे—वे केवल चौहत्तर वर्ष के थे—सेंट-सल्पिस के पास, रू सर्वंडोनी स्थित फाउबर्ग सेंट जर्मेन में रहते थे। अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त करने के बहुत समय बाद, उन्होंने समाज से विमुख होकर मारैस में निवास किया।

समाज से अलग होकर उसने खुद को अपनी आदतों में कैद कर लिया था। सबसे प्रमुख और अटल आदत यह थी कि वह दिन के समय अपना दरवाजा पूरी तरह बंद रखता था और शाम के अलावा किसी से भी नहीं मिलता था। वह शाम पांच बजे भोजन करता था और उसके बाद ही उसका दरवाजा खुलता था। यही उसके युग का चलन था और वह इससे विमुख नहीं होना चाहता था। उसने कहा, "दिन का समय नीरस है और केवल बंद दरवाजे के लायक है। फैशनेबल लोग तभी अपने दिमाग को रोशन करते हैं जब आसमान अपने तारों को चमकाता है।" और उसने खुद को हर किसी से, यहां तक कि राजा से भी, अलग कर लिया था। यही उसके समय की पुरानी शान थी।

VIII. दो मिलकर एक जोड़ी नहीं बनाते

हमने अभी-अभी एम. गिलनोर्मंड की दो बेटियों के बारे में बात की है। उनके जन्म में दस साल का अंतर था। जवानी में वे स्वभाव या चेहरे से एक-दूसरे से बहुत कम मिलती-जुलती थीं, और बहनों जैसी बिल्कुल नहीं थीं। छोटी बेटी की आत्मा मनमोहक थी, जो प्रकाश से जुड़ी हर चीज की ओर आकर्षित होती थी, फूलों, कविताओं और संगीत में मग्न रहती थी, जो उत्साह और दिव्यता से भरपूर होकर एक शानदार अंतरिक्ष में विलीन हो जाता था, और बचपन से ही एक अस्पष्ट और वीर व्यक्तित्व के प्रति आदर्श रूप से समर्पित थी। बड़ी बेटी का भी अपना एक भ्रम था; वह नीले आकाश में किसी बहुत धनी व्यापारी, ठेकेदार, एक बेहद मूर्ख पति, करोड़पति या यहाँ तक कि एक पुलिस अधिकारी को देखती थी; प्रीफेक्चर के स्वागत समारोह, गले में जंजीर लटकाए प्रतीक्षालय में खड़ा एक दरबारी, आधिकारिक भोज, नगर पालिका के भाषण, "मैडम ला प्रीफेट" बनने की ख्वाहिश—इन सबने उसकी कल्पना में एक बवंडर सा ला दिया था। इस प्रकार दोनों बहनें, अपनी-अपनी सपनों की दुनिया में, उस दौर में भटकती रहीं जब वे छोटी लड़कियाँ थीं। दोनों के पंख थे, एक के देवदूत जैसे, दूसरी के हंस जैसे।

इस धरती पर तो कोई भी महत्वाकांक्षा पूरी तरह साकार नहीं होती। हमारे समय में कोई भी स्वर्ग धरती पर साकार नहीं होता। छोटी बहन ने अपने सपनों के राजकुमार से शादी की, लेकिन उसकी मृत्यु हो गई। बड़ी बहन ने कभी शादी ही नहीं की।

जिस क्षण वह इस इतिहास में प्रवेश करती है, जिसका हम वर्णन कर रहे हैं, वह एक प्राचीन सद्गुण, एक अविचलित और संकोची महिला थी, जिसकी नाक बेहद तीखी और बुद्धि बेहद मंदबुद्धि थी। एक विशिष्ट विशेषता यह थी कि उसके करीबी परिवार के बाहर किसी को भी उसका पहला नाम नहीं पता था। उसे "मैडमोजेल गिलनोर्मंड, बड़ी" कहा जाता था।

शिष्टाचार के मामले में, मैडमोजेल गिलनोर्मंड किसी भी अंक से चूक सकती थीं। उनकी शालीनता घोर अंधकार की पराकाष्ठा पर थी। उन्हें अपने जीवन की एक भयावह याद सताती थी; एक दिन, एक आदमी ने उनकी गार्टर देख ली थी।

उम्र ने उसकी इस निर्मम शर्म को और भी बढ़ा दिया था। उसका गिम्पे कभी भी पूरी तरह अपारदर्शी नहीं होता था, और न ही कभी पूरी तरह ऊपर तक चढ़ता था। उसने ऐसी जगहों पर क्लिप और पिन लगा रखे थे जहाँ देखने की किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। शर्म की विशेषता यह है कि जैसे-जैसे किले पर खतरा कम होता जाता है, वैसे-वैसे पहरेदारों की संख्या भी बढ़ती जाती है।

फिर भी, जो कोई भी निर्दोषता के इन प्राचीन रहस्यों को समझा सकता है, उसने लांसर्स के एक अधिकारी, अपने पोते, थियोडुल को बिना किसी आपत्ति के उसे गले लगाने की अनुमति दी।

इस पसंदीदा लैंसर के बावजूद, "संकोची" का लेबल, जिसके तहत हमने उन्हें वर्गीकृत किया है, उन पर पूर्णतया उपयुक्त था। मैडमोजेल गिलनोर्मंड एक प्रकार की रहस्यमयी आत्मा थीं। संकोच होना एक तरह का आधा सद्गुण और आधा अवगुण है।

उसने रूढ़िवादिता में कट्टरता का भी समावेश कर दिया, मानो यह एक सुनियोजित आवरण हो। वह कुंवारी कन्याओं के समुदाय से संबंधित थी, कुछ विशेष त्योहारों पर सफेद घूंघट ओढ़ती थी, विशेष प्रार्थनाएं गुनगुनाती थी, "पवित्र रक्त" का आदर करती थी, "पवित्र हृदय" की पूजा करती थी, आम श्रद्धालुओं के लिए दुर्गम एक चैपल में रोकोको-जेसुइट वेदी के सामने घंटों ध्यान में लीन रहती थी, और वहां अपनी आत्मा को संगमरमर के छोटे-छोटे बादलों और सुनहरी लकड़ी की विशाल किरणों के बीच उड़ान भरने देती थी।

उसकी एक चैपल सहेली थी, मैडमोजेल वाउबोइस, जो उसी की तरह एक प्राचीन कुंवारी थी और बिल्कुल मूर्ख थी। मैडमोजेल गिलनोर्मंड को उसके साथ एक चील की तरह रहने का सुख मिलता था। एग्नस डेई और एवे मारिया के अलावा, मैडमोजेल वाउबोइस को अचार बनाने के विभिन्न तरीकों के अलावा किसी और चीज का ज्ञान नहीं था। अपने तौर-तरीकों में परिपूर्ण, मैडमोजेल वाउबोइस बुद्धि के एक अंश से भी रहित मूर्खता की परछाई थी।

सीधे शब्दों में कहें तो, मैडमोजेल गिलनोर्मंड उम्र के साथ-साथ लाभ ही प्राप्त कर रही थीं, हानि नहीं। शांत स्वभाव वालों के साथ ऐसा ही होता है। वह कभी द्वेषपूर्ण नहीं थीं, जो एक तरह से दयालुता ही है; और फिर, समय के साथ कठोरता कम हो जाती है, और समय के साथ आने वाली कोमलता उन पर भी छा गई

थी। वह एक अस्पष्ट उदासी से ग्रस्त थीं, जिसका रहस्य उन्हें स्वयं भी नहीं पता था। उनके पूरे व्यक्तित्व से एक ऐसे जीवन की सुस्ती झलकती थी जो समाप्त हो चुका था, और जिसकी कभी शुरुआत ही नहीं हुई थी।

वह अपने पिता के घर का काम संभालती थी। एम. गिलनोर्मंड की बेटी उनके पास रहती थी, जैसा कि हमने देखा है कि मोनसिग्नोर बिएनवेनु की बहन उनके साथ रहती थी। ऐसे परिवार जिनमें एक बूढ़ा आदमी और एक अविवाहित बूढ़ी औरत होती है, दुर्लभ नहीं हैं, और हमेशा दो कमजोरियों के एक-दूसरे का सहारा लेने का मार्मिक पहलू दर्शाते हैं।

इस घर में, इस बुजुर्ग अविवाहित महिला और इस बूढ़े व्यक्ति के बीच, एक बच्चा भी था, एक नन्हा लड़का, जो एम. गिलनोर्मंड की उपस्थिति में हमेशा कांपता और चुप रहता था। एम. गिलनोर्मंड उस बच्चे से कभी भी कठोर स्वर में ही बात करते थे, और कभी-कभी छड़ी उठाकर कहते थे: “यहाँ आइए, महोदय! बदमाश, नीच, इधर आइए!—मुझे जवाब दीजिए, बदमाश! मुझे देखने दीजिए, निकम्मे!” इत्यादि। वे उसे पूजते थे।

यह उनका पोता था। हम इस बच्चे से बाद में फिर मिलेंगे।

भाग **III.** दादा और पोता

I. एक प्राचीन सैलून

जब एम. गिलनोर्मंड रू सर्वंडोनी में रहते थे, तब वे कई बेहतरीन और कुलीन भोजों में जाया करते थे। यद्यपि वे एक बुर्जुआ परिवार से थे, फिर भी समाज में उनका सम्मान होता था। उनमें दोहरी प्रतिभा थी - एक तो जन्मजात और दूसरी उनकी प्रतिभा, जिसके कारण लोग उनसे मिलने आते थे और उन्हें बहुत महत्व देते थे। वे कहीं भी तभी जाते थे जब वे वहाँ के प्रमुख व्यक्ति होते थे। कुछ लोग किसी भी कीमत पर प्रभाव हासिल करना चाहते हैं और दूसरों को अपने ऊपर हावी होने के लिए कहते हैं; जब वे भविष्यवक्ता नहीं बन पाते, तो वे ताना मारने लगते हैं। एम. गिलनोर्मंड ऐसे व्यक्ति नहीं थे; जिन राजशाही भोजों में वे अक्सर जाते थे, उनमें उनका दबदबा उनके आत्मसम्मान को जरा भी ठेस नहीं पहुँचाता था। वे हर जगह एक भविष्यवक्ता थे। उन्होंने एम. डी बोनाल्ड और यहाँ तक कि एम. बेंगी-पुय-वैली के विरुद्ध भी अपनी बात रखी थी।

लगभग सन् 1817 में, वह नियमित रूप से सप्ताह में दो दोपहर अपने ही पड़ोस के एक घर में, रू फेरू में, मैडम ला बैरोन डी टी के साथ बिताते थे। मैडम एक प्रतिष्ठित और सम्मानित महिला थीं, जिनके पति लुई सोलहवें के शासनकाल में बर्लिन में फ्रांस के राजदूत रह चुके थे। बैरोन डी टी, जो अपने जीवनकाल में समाधि और चुंबकीय दर्शन के अत्यंत भावुक अनुभव में डूब जाते थे, विदेश प्रवास के दौरान दिवालिया होकर मर गए। उन्होंने अपनी एकमात्र संपत्ति के रूप में मेस्मर और उनके टब के बारे में कुछ अत्यंत रोचक संस्मरण छोड़े, जो दस हस्तलिखित खंडों में थे, लाल चमड़े में बंधे हुए और किनारों पर सोने की परत चढ़े हुए। मैडम डी टी ने स्वाभिमान के कारण इन संस्मरणों को प्रकाशित नहीं किया था और वे अपनी सीमित आमदनी पर गुजारा करती थीं, जो किसी को नहीं पता कि कैसे चल रही थी।

मैडम डी टी. राजमहल से दूर रहती थीं; जैसा कि उन्होंने कहा, "एक बहुत मिश्रित समाज," एक कुलीन एकांत में, गर्वित और गरीब। कुछ मित्र सप्ताह में दो बार उनके विधवा घर के आसपास इकट्ठा होते थे, और ये विशुद्ध रूप से राजभक्तों का एक समूह बनाते थे। वे वहाँ चाय की चुस्की लेते थे, और सदी, चार्टर, बोनापार्टवादियों, नीले रिबन के दुरुपयोग, या लुई XVIII के

जैकोबिनवाद पर शोकगीत या स्तुतिगान की दिशा में हवा के रुख के अनुसार आहें या भय की चीखें निकालते थे; और वे दबी आवाज़ में उन आशाओं के बारे में बात करते थे जो महाशय, बाद में चार्ल्स X द्वारा प्रस्तुत की गई थीं।

मछुआरिनों के गीत, जिनमें नेपोलियन को “निकोलस” कहा गया था, वहाँ अत्यंत आनंद के साथ सुने गए। विश्व की सबसे कोमल और आकर्षक रानियाँ, “संघीय सदस्यों” को संबोधित निम्नलिखित दोहों पर परमानंद में डूब गईं:

[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible]?

वहाँ वे भयंकर समझे जाने वाले व्यंग्यों, विषैले माने जाने वाले शब्दों के निर्दोष खेल, चौपाइयों और यहाँ तक कि दोहे जैसी पंक्तियों से अपना मनोरंजन करते थे; इस प्रकार, डेसॉल्स के शासनकाल में, जो एक उदार मंत्रिमंडल था और जिसके सदस्य एम.एम. डेकाज़ेस और डेसेरे थे:—

नींव तक हिल चुके सिंहासन को मजबूत करने के लिए, जमीन, ग्रीनहाउस और चौक को बदलना होगा।

या फिर उन्होंने "एक घृणित जैकोबिन चैंबर" कहे जाने वाले सहचरों की एक सूची तैयार की, और इस सूची से उन्होंने नामों के गठबंधनों को इस प्रकार संयोजित किया कि उदाहरण के लिए, निम्नलिखित जैसे वाक्यांश बन गए: "दमास। सब्रान। गौवियन-सेंट-साइर।"—यह सब उन्होंने मजे से किया। उस समाज में, उन्होंने क्रांति का उपहास किया। उन्होंने न जाने किन इच्छाओं का इस्तेमाल करके उसी क्रोध को विपरीत अर्थ में व्यक्त किया। उन्होंने अपना छोटा सा "सा इरा" गीत गाया:—

[illegible]! [illegible], [illegible], [illegible]!
[illegible]!

गाने गिलोटिन की तरह होते हैं; वे बेपरवाही से काटते हैं, आज यह सिर, कल वह। यह महज़ एक बदलाव है।

फ़ुआल्डेस कांड में, जो इसी युग (1816) से संबंधित है, उन्होंने बैस्टाइड और जौसियन का समर्थन किया, क्योंकि फ़ुआल्डेस "एक बुओनापार्टिस्ट" थे। उन्होंने उदारवादियों को "मित्र और भाई" बताया; यह सबसे घातक अपमान था।

कुछ गिरजाघरों की मीनारों की तरह, मैडम डी टी के सैलून में दो शान-ओ-शौकत थी। एक थे एम. गिलनोर्मंड, और दूसरे थे कॉम्टे डी लामोथे-वालोइस, जिनके बारे में एक तरह के सम्मान के साथ फुसफुसाहट होती थी: "क्या आप जानते हैं? ये वही लामोथे हैं जो हार कांड में शामिल थे।" इस तरह की अनोखी बातें अक्सर पार्टियों में देखने को मिलती हैं।

आइए इसमें निम्नलिखित बात जोड़ें: बुर्जुआ वर्ग में, अत्यधिक सहज संबंधों के कारण सम्मानित पद क्षीण हो जाते हैं; हमें सावधान रहना चाहिए कि हम किसे अपने यहाँ जगह देते हैं; जिस प्रकार ठंडे स्वभाव वाले लोगों के आसपास रहने से ऊर्जा की हानि होती है, उसी प्रकार तिरस्कृत व्यक्तियों के पास जाने से सम्मान में कमी आती है। उच्च वर्गों का प्राचीन समाज स्वयं को इस नियम से, और अन्य सभी नियमों से भी ऊपर मानता था। पोम्पाडोर के भाई मारिग्नी का प्रवेश एम. ले प्रिंस डी सोबिस के साथ हुआ था। इसके बावजूद? नहीं, बल्कि इसी कारण। वाउबर्नियर के संरक्षक डू बैरी का एम. ले मारेचल डी रिकेलियू के घर में हार्दिक स्वागत था। यह समाज ओलंपस है। मरकरी और प्रिंस डी गुएमेनी वहाँ सहज महसूस करते हैं। वहाँ एक चोर को भी प्रवेश दिया जाता है, बशर्ते वह देवता हो।

सन् 1815 में पचहत्तर वर्ष के वृद्ध कॉम्टे डी लामोथे में उनकी खामोश और गंभीर मुद्रा, ठंडा और नुकीला चेहरा, उनका उत्तम शिष्टाचार, उनकी टाई तक बटन लगा हुआ कोट और हमेशा लंबे, ढीले भूरे रंग के पतलून में क्रॉस किए हुए लंबे पैर के अलावा कुछ भी उल्लेखनीय नहीं था। उनका चेहरा भी उनके पतलून के रंग जैसा ही था।

एम. डी लामोथे को इस सैलून में उनकी "प्रसिद्धि" के कारण और, अजीब बात है, हालांकि यह सच है, उनके वालोइस नाम के कारण "विचाराधीन" रखा गया था।

एम. गिलनोर्मंड की बात करें तो, उनका विचार-विमर्श उत्कृष्ट था। उनकी चंचलता के बावजूद, और इससे उनकी गरिमा पर कोई आहत न होते हुए भी, उनका व्यवहार एक विशिष्ट प्रकार का था जो प्रभावशाली, गरिमामय, ईमानदार और उच्च कोटि का था, एक बुर्जुआ शैली में; और उनकी अधिक उम्र ने इसे और भी बढ़ा दिया। सौ साल बिना किसी दंड के नहीं बीतते। समय के साथ अंततः व्यक्ति के चेहरे पर एक आदरणीय बिखराव आ जाता है।

इसके अलावा, उन्होंने ऐसी बातें कहीं जिनमें पुराने चट्टानी अंदाज़ की सच्ची चमक थी। उदाहरण के लिए, जब प्रशिया के राजा ने लुई XVIII को सत्ता में बहाल करने के बाद, काउंट डी रुपिन के नाम से उनसे मिलने आए, तो लुई XIV के वंशज ने उनका स्वागत कुछ इस तरह किया मानो वे मार्क्विस डी ब्रैंडेबर्ग हों, और बड़ी ही नज़ाकत से। एम. गिलनोर्मंड ने इस बात पर सहमति जताते हुए कहा, "फ्रांस के राजा न होने वाले सभी राजा प्रांतीय राजा हैं।" एक दिन, उनसे यह सवाल पूछा गया और उनकी उपस्थिति में यह जवाब मिला: "कूरियर फ़्रांसे के संपादक को किस बात की सज़ा दी गई थी?" "निलंबित किए जाने की।" एम. गिलनोर्मंड ने टिप्पणी की, "निलंबित शब्द अनावश्यक है।" इस तरह की टिप्पणियों को एक उपयुक्त संदर्भ मिल गया।

बोर्बोन राजवंश की वापसी की वर्षगांठ पर आयोजित टे डेउम समारोह में, एम. डी टैलीरैंड को गुजरते हुए देखकर उन्होंने कहा: "देखो, महामहिम दुष्ट जा रहे हैं।"

एम. गिलनोर्मंड हमेशा अपनी बेटी, उस लंबी मैडमोजेल के साथ रहते थे, जो चालीस से अधिक उम्र की होने के बावजूद पचास की लगती थीं, और एक सुंदर सात वर्षीय नन्हा लड़का भी उनके साथ होता था। वह लड़का गोरा, गुलाबी, तरोताज़ा और खुशमिजाज आँखों वाला था, और जब भी वह उस सैलून में आता, तो उसके आसपास फुसफुसाहट सुनाई देती थी: “कितना सुंदर है! कितना अफ़सोस! बेचारा बच्चा!” यही वह बच्चा था जिसके बारे में हमने थोड़ी देर पहले बात की थी। उसे “बेचारा बच्चा” इसलिए कहा जाता था क्योंकि उसका पिता “लोइरे नदी का एक डाकू” था।

लोइरे नदी का यह डाकू एम. गिलनोर्मंड का दामाद था, जिसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है, और जिसे एम. गिलनोर्मंड "अपने परिवार के लिए कलंक" कहते थे।

II. उस युग के लाल प्रेतों में से एक

उस दौर में जो भी व्यक्ति संयोगवश वर्नोन नामक छोटे से कस्बे से गुजरा होता, और उस भव्य स्मारक पुल को पार किया होता (उम्मीद है कि जल्द ही उसकी जगह कोई भद्दा लोहे का केबल पुल बन जाएगा), तो वह पुल की चौखट से नीचे झांककर लगभग पचास वर्ष के एक व्यक्ति को देख पाता, जिसने चमड़े की टोपी, पतलून और मोटे भूरे कपड़े की बनियान पहनी हुई थी, जिस पर पीले रंग का कोई लाल रिबन सिला हुआ था, धूप में झुलसे लकड़ी के जूतों में, जिसका चेहरा लगभग काला और बाल लगभग सफेद थे, माथे पर एक बड़ा निशान था जो गाल तक फैला हुआ था, झुका हुआ, टेढ़ा, समय से पहले बूढ़ा, जो लगभग हर दिन हाथ में कुदाल और हंसिया लिए, पुल से सटे दीवारों से घिरे उन कमरों में से एक में चलता था, जो सीन नदी के बाएं किनारे को सीढ़ीदार श्रृंखला की तरह घेरे हुए थे, फूलों से भरे आकर्षक बाड़े, जिनके बारे में अगर वे बड़े होते तो कहा जा सकता था: "ये बगीचे हैं," और अगर वे थोड़े छोटे होते तो कहा जा सकता था: "ये गुलदस्ते हैं।" ये सभी बाड़े एक छोर पर नदी और दूसरे छोर पर एक घर से सटे हुए हैं। जिस व्यक्ति की हमने अभी बात की है, जिसने जैकेट और लकड़ी के जूते पहने हुए हैं, वह लगभग 1817 में इन्हीं बाड़ों में से सबसे छोटे और सबसे साधारण घर में रहता था। वह वहाँ अकेला, एकांत में, चुपचाप और गरीबी में रहता था, एक ऐसी महिला के साथ जो न तो जवान थी, न बूढ़ी, न सादी-सी, न सुंदर, न किसान थी, न अमीर, और जो उसकी सेवा करती थी। जिस ज़मीन के टुकड़े को वह अपना बगीचा कहता था, वह शहर में वहाँ उगाए गए फूलों की सुंदरता के लिए प्रसिद्ध था। ये फूल ही उसका पेशा थे।

परिश्रम, लगन, ध्यान और पानी की बाल्टियों के बल पर, वह सृष्टिकर्ता के समान रचना करने में सफल हुआ था, और उसने कुछ ऐसे ट्यूलिप और डहलिया की किस्में ईजाद की थीं जिन्हें प्रकृति ने मानो भुला दिया था। वह विलक्षण प्रतिभावान था; उसने अमेरिका और चीन से लाए गए दुर्लभ और बहुमूल्य झाड़ियों की खेती के लिए हीथ की मिट्टी के छोटे-छोटे ढेले बनाने में सोलेंज बोडिन से भी आगे बढ़कर काम किया था। वह गर्मियों में सुबह से ही अपनी गलियों में पौधे लगाता, काटता, निराई करता, पानी देता रहता था, अपने

फूलों के बीच दयालुता, उदासी और मधुरता के भाव से घूमता रहता था, कभी-कभी घंटों तक स्थिर और चिंतनशील खड़ा रहता, पेड़ों पर किसी पक्षी का गीत सुनता, घर में किसी बच्चे की तुतलाहट सुनता, या घास की नोक पर ओस की एक बूंद को टकटकी लगाए देखता, जिस पर सूरज की रोशनी माणिक्य की तरह चमक रही होती थी। उसका भोजन बहुत सादा होता था, और वह शराब से ज़्यादा दूध पीता था। एक बच्चा भी उसे मना लेता था, और उसका नौकर उसे डांटता था। वह इतना संकोची था कि शर्मीला लगता था, वह शायद ही कभी बाहर निकलता था, और वह अपने घर की खिड़की पर दस्तक देने वाले गरीब लोगों और अपने पादरी, एक भले-बुरे बुजुर्ग अब्बे माबेउफ के अलावा किसी से नहीं मिलता था। फिर भी, अगर कस्बे के निवासी, या अजनबी, या कोई भी राहगीर, उसके ट्यूलिप देखने के लिए उत्सुक होकर उसकी छोटी सी कुटिया पर दस्तक देता, तो वह मुस्कुराते हुए अपना दरवाजा खोल देता था। वह "लोइरे का डाकू" था।

जिस किसी ने भी उसी समय सैन्य संस्मरण, जीवनियाँ, मॉनिटर और ग्रैंड आर्मी के बुलेटिन पढ़े होंगे, वह जॉर्जेस पोंटमर्सी के नाम से अवश्य ही प्रभावित हुआ होगा, जो वहाँ अक्सर देखने को मिलता है। बहुत कम उम्र में ही जॉर्जेस पोंटमर्सी सैंटोंगे की रेजिमेंट में सैनिक थे। क्रांति छिड़ गई। सैंटोंगे की रेजिमेंट राइन की सेना का हिस्सा थी; क्योंकि राजशाही की पुरानी रेजिमेंटों ने राजशाही के पतन के बाद भी अपने प्रांतों के नाम बरकरार रखे थे, और उन्हें 1794 में ही ब्रिगेडों में विभाजित किया गया था। पोंटमर्सी ने स्पायर, वर्म्स, न्यूस्टाड्ट, तुर्कहाइम, अल्ज़ी और मेयेंस में लड़ाई लड़ी, जहाँ वे उन दो सौ सैनिकों में से एक थे जिन्होंने हौचार्ड के रियरगार्ड का गठन किया था। बारहवीं बटालियन ने हेस्से के राजकुमार की सेना के विरुद्ध एंडरनाच के पुराने प्राचीर के पीछे मोर्चा संभाले रखा और मुख्य सेना में तभी शामिल हुई जब दुश्मन की तोपों ने प्राचीर की रस्सी से लेकर ढलान के तल तक एक दरार पैदा कर दी थी। वह मार्चिएन्स और मोंट-पालिसेल की लड़ाई में क्लेबर के अधीन था, जहाँ एक बिस्केन तोप के गोले से उसकी बांह टूट गई थी। फिर वह इटली की सीमा पर चला गया और उन तीस ग्रेनेडियरों में से एक था जिन्होंने जौबर्ट के साथ कोल डे टेंड की रक्षा की। जौबर्ट को उसका एडजुटेंट-जनरल और पोंटमर्सी को सबलेफ्टिनेंट नियुक्त किया गया। लोदी में उस दिन हुई भीषण गोलाबारी के दौरान पोंटमर्सी बर्थियर के साथ था, जिसके

कारण बोनापार्ट ने कहा था: "बर्थियर तोपची, घुड़सवार और ग्रेनेडियर तीनों रहा है।" नोवी में अपने पुराने सेनापति जौबर्ट को गिरते हुए उन्होंने देखा, ठीक उसी समय जब जौबर्ट तलवार लहराते हुए चिल्ला रहे थे: “आगे बढ़ो!” अभियान की आपात स्थिति में अपनी टुकड़ी के साथ जेनोआ से तट के किसी अज्ञात बंदरगाह की ओर जा रही एक छोटी नाव पर सवार होकर वे सात-आठ अंग्रेज़ जहाजों के जाल में फंस गए। जेनोआ के कमांडर अपनी तोपों को समुद्र में दागकर सैनिकों को डेक के बीच छिपाना चाहते थे और एक व्यापारी जहाज की तरह अंधेरे में चुपके से निकल जाना चाहते थे। पोंटमर्सी ने झंडा सबसे ऊपर फहराया और ब्रिटिश फ्रिगेट की तोपों के नीचे से गर्व से निकल गए। बीस मील आगे जाकर, उनका साहस और बढ़ गया और उन्होंने अपनी छोटी नाव से हमला किया और एक बड़े अंग्रेज़ परिवहन जहाज पर कब्जा कर लिया, जो सिसिली में सैनिकों को ले जा रहा था और सैनिकों और घोड़ों से इतना लदा हुआ था कि जहाज समुद्र तल तक डूब गया। 1805 में वे उस माल्हेर डिवीजन में थे जिसने आर्चड्यूक फर्डिनेंड से गुंजबर्ग पर कब्जा किया था। वेल्टिंगेन में, गोलियों की बौछार के बीच, उन्होंने नौवीं ड्रैगून रेजिमेंट के प्रमुख कर्नल मौपेटिट को अपनी बाहों में लिया, जो बुरी तरह घायल हो गए थे। ऑस्टरलिट्ज़ में, उन्होंने शत्रु की गोलीबारी के बीच टुकड़ियों में किए गए उस सराहनीय मार्च में अपनी बहादुरी का परिचय दिया। जब इंपीरियल रूसी गार्ड की घुड़सवार सेना ने चौथी पंक्ति की एक बटालियन को कुचल दिया, तो पोंटमर्सी उन लोगों में से थे जिन्होंने बदला लिया और गार्ड को पराजित किया। सम्राट ने उन्हें क्रॉस से सम्मानित किया। पोंटमर्सी ने मंटुआ, मेलास और अलेक्जेंड्रिया में वर्मसर और उल्म में मैक को एक के बाद एक बंदी बनते देखा। वे मोर्टियर के नेतृत्व वाली महान सेना की आठवीं कोर का हिस्सा थे, जिसने हैम्बर्ग पर कब्जा कर लिया था। फिर उन्हें 55 वीं पंक्ति में स्थानांतरित कर दिया गया, जो फ़्लैंडर्स की पुरानी रेजिमेंट थी। एयलाउ में वे उस कब्रिस्तान में थे जहाँ इस पुस्तक के लेखक के चाचा, वीर कप्तान लुई ह्यूगो ने दो घंटे तक अकेले ही अपने 83 सैनिकों के दल के साथ शत्रु सेना के हर हमले का सामना किया था। पोंटमर्सी उन तीन लोगों में से एक थे जो उस कब्रिस्तान से जीवित बच निकले थे। वे फ्रीडलैंड में थे। फिर उन्होंने मॉस्को देखा। फिर ला बेरेसिना, फिर लुत्ज़ेन, बॉटज़ेन, ड्रेसडेन, वाचाऊ, लीपज़िग और गेलनहौसेन की घाटियाँ; फिर मोंटमिरेल, शैतो-थिएरी, क्रॉन, मार्ने नदी के किनारे, ऐस्ने नदी के

किनारे और लाओन की दुर्जेय स्थिति। अर्ने-ले-ड्यूक में, उस समय कप्तान रहते हुए, उन्होंने दस कोसैक सैनिकों को तलवार से मार गिराया और अपने सेनापति को नहीं, बल्कि अपने कॉर्पोरल को बचाया। इस दौरान वे बुरी तरह घायल हो गए थे और अकेले उनकी बाईं भुजा से 27 छर्रे निकाले गए थे। पेरिस के आत्मसमर्पण से आठ दिन पहले ही उन्होंने अपने एक साथी सैनिक से अदला-बदली कर घुड़सवार सेना में भर्ती हुए थे। पुराने शासन में उन्हें "दोहरा हाथ" कहा जाता था, यानी एक सैनिक के रूप में कृपाण या बंदूक चलाने में, और एक अधिकारी के रूप में स्क्वाड्रन या बटालियन का संचालन करने में, उनमें समान दक्षता थी। सैन्य शिक्षा द्वारा परिपूर्ण की गई इसी दक्षता से सेना की कुछ विशेष शाखाएँ उत्पन्न होती हैं, उदाहरण के लिए ड्रैगून, जो एक ही समय में घुड़सवार और पैदल सेना दोनों होते हैं। वे नेपोलियन के साथ एल्बा द्वीप गए थे। वाटरलू में, वे डुबोइस ब्रिगेड में क्यूरासियरों के एक स्क्वाड्रन के प्रमुख थे। उन्होंने ही लूननबर्ग बटालियन का झंडा अपने कब्जे में लिया था। वे आए और उन्होंने झंडा सम्राट के चरणों में डाल दिया। वे खून से लथपथ थे। झंडा फाड़ते समय उनके चेहरे पर तलवार का घाव हो गया था। सम्राट अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने चिल्लाकर उनसे कहा: "तुम कर्नल हो, तुम बैरन हो, तुम लीजन ऑफ ऑनर के अधिकारी हो!" पोंटमर्सी ने उत्तर दिया: “महाराज, मैं अपनी विधवा के लिए आपका आभारी हूँ।” एक घंटे बाद, वह ओहेन की घाटी में गिर पड़ा। अब, यह जॉर्जेस पोंटमर्सी कौन था? यह वही “लोइरे का डाकू” था।

हम उनके इतिहास का कुछ अंश पहले ही देख चुके हैं। वाटरलू की लड़ाई के बाद, पोंटमर्सी, जिसे ओहेन की सुनसान सड़क से निकाला गया था, जैसा कि याद होगा, सेना में भर्ती होने में सफल रहा था, और लॉयर के छावनियों तक एम्बुलेंस से एम्बुलेंस तक अपना सफर तय किया था।

पुनर्स्थापना के बाद उन्हें आधी तनख्वाह पर रखा गया और फिर वर्नोन में निगरानी में रखा गया। राजा लुई XVIII ने सौ दिनों के दौरान घटी सभी घटनाओं को अनदेखा कर दिया और उन्हें लीजन ऑफ ऑनर के अधिकारी, कर्नल पद या बैरन की उपाधि से वंचित रखा। उन्होंने स्वयं को "कर्नल बैरन पोंटमर्सी" के रूप में हस्ताक्षर करने का कोई अवसर नहीं छोड़ा। उनके पास केवल एक पुराना नीला कोट था और वे लीजन ऑफ ऑनर के अधिकारी के रूप में अपना रोसेट लगाए बिना कभी बाहर नहीं जाते थे। राजकवि के वकील ने उन्हें चेतावनी दी थी कि अधिकारी इस पदक

को "अवैध रूप से" पहनने के लिए उन पर मुकदमा चलाएंगे। जब यह सूचना एक मध्यस्थ के माध्यम से उन तक पहुंचाई गई, तो पोंटमर्सी ने कड़वी मुस्कान के साथ जवाब दिया: "मुझे नहीं पता कि मैं अब फ्रेंच नहीं समझता या आप इसे नहीं बोलते; लेकिन सच्चाई यह है कि मैं नहीं समझता।" फिर वे लगातार आठ दिनों तक अपना रोसेट पहने बाहर गए। किसी ने भी हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं की। दो-तीन बार युद्ध मंत्री और विभाग के कमानधारी जनरल ने उन्हें निम्नलिखित पते पर पत्र लिखे: “महाशय, कमांडर पोंटमर्सी।” उन्होंने पत्रों पर लगी मुहरों को बिना तोड़े वापस भेज दिया। उसी समय, सेंट हेलेना में नेपोलियन सर हडसन लोव द्वारा “जनरल बोनापार्ट” को संबोधित पत्रों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार कर रहे थे। पोंटमर्सी का अंत, क्षमा करें, अपने सम्राट के समान ही हुआ था।

इसी प्रकार, रोम में कार्थेज के कुछ कैदी थे जिन्होंने फ्लेमिनियस को सलाम करने से इनकार कर दिया था, और जिनमें हैनिबल की थोड़ी सी भावना थी।

एक दिन वर्नोन की एक गली में उसकी मुलाकात जिला अटॉर्नी से हुई, वह उनके पास गया और बोला: "श्रीमान क्राउन अटॉर्नी, क्या मुझे अपना निशान दिखाने की अनुमति है?"

स्क्वाड्रन प्रमुख के रूप में मिलने वाले मामूली आधे वेतन के अलावा उनके पास कुछ नहीं था। उन्होंने वर्नोन में सबसे छोटा घर किराए पर लिया था। जैसा कि हमने अभी देखा, वे वहाँ अकेले रहते थे। साम्राज्य के शासनकाल में, दो युद्धों के बीच, उन्होंने मैडमोजेल गिलनोर्मंड से विवाह करने का समय निकाल लिया था। पुराने बुर्जुआ, जो मन ही मन बेहद नाराज़ थे, ने आह भरते हुए अपनी सहमति दी और कहा: "बड़े से बड़े परिवार भी ऐसा करने पर मजबूर हो जाते हैं।" 1815 में, मैडम पोंटमर्सी, जो हर मायने में एक प्रशंसनीय महिला थीं, उच्च भावनाओं वाली और दुर्लभ, और अपने पति के योग्य थीं, का निधन हो गया और वे एक बच्चे को छोड़ गईं। यह बच्चा कर्नल के एकांत जीवन का आनंद था; लेकिन दादा ने अपने पोते पर अपना दावा जताते हुए कहा कि अगर बच्चे को उन्हें नहीं दिया गया तो वे उसे अपनी संपत्ति से बेदखल कर देंगे। पिता ने बच्चे के हित में हार मान ली और अपना प्यार फूलों में बदल दिया।

इसके अलावा, उन्होंने सब कुछ त्याग दिया था, और न तो कोई उपद्रव किया और न ही कोई षड्यंत्र रचा। वे अपने विचारों को उन निर्दोष कार्यों में बाँटते

रहे जो वे उस समय कर रहे थे और उन महान कार्यों में जो उन्होंने किए थे। वे अपना समय गुलाबी रंग की उम्मीद में या ऑस्टरलिट्ज़ को याद करने में बिताते थे।

एम. गिलनोर्मंड ने अपने दामाद से कोई संबंध नहीं रखा। कर्नल उनके लिए "एक डाकू" था। एम. गिलनोर्मंड ने कर्नल का कभी ज़िक्र नहीं किया, सिवाय कभी- कभार "उसके बैरनशिप" का मज़ाक उड़ाने के। यह स्पष्ट रूप से तय किया गया था कि पोंटमर्सी को कभी भी अपने बेटे से मिलने या उससे बात करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, अन्यथा उसे बेदखल और उत्तराधिकार से वंचित करके उसे उनके हवाले कर दिया जाएगा। गिलनोर्मंड परिवार के लिए, पोंटमर्सी एक ऐसे व्यक्ति के समान था जिसे कोई बीमारी हो गई हो। वे बच्चे का पालन-पोषण अपने तरीके से करना चाहते थे। शायद कर्नल का इन शर्तों को स्वीकार करना गलत था, लेकिन उसने इन्हें मान लिया, यह सोचकर कि वह सही कर रहा है और किसी और का नहीं, बल्कि केवल अपना ही बलिदान दे रहा है।

पिता गिलनोर्मंड की विरासत बहुत अधिक नहीं थी; लेकिन मैडमोजेल गिलनोर्मंड (बड़ी) की विरासत काफी बड़ी थी। यह चाची, जो अविवाहित रहीं, अपनी मां की तरफ से बहुत धनी थीं, और उनकी बहन का बेटा उनका स्वाभाविक उत्तराधिकारी था। मारियस नाम का वह लड़का जानता था कि उसका एक पिता है, लेकिन इससे अधिक कुछ नहीं। किसी ने भी उससे इस बारे में बात नहीं की। फिर भी, जिस समाज में उसके दादा ने उसे रखा था, उसमें फुसफुसाहट, इशारे और आंखों के संकेतों ने धीरे- धीरे उस छोटे लड़के के मन को रोशन कर दिया; उसे आखिरकार कुछ हद तक बात समझ में आ गई, और जैसे-जैसे वह स्वाभाविक रूप से उन विचारों और मतों को ग्रहण करता गया जो मानो उसकी सांसों में घुलमिल गए थे, एक तरह से धीरे-धीरे उनके मन में अपने पिता के लिए केवल शर्म और दिल में दर्द का भाव आने लगा।

इस तरह से बड़े होते हुए कर्नल हर दो-तीन महीने में चुपके से निकल जाते, किसी अपराधी की तरह छुपकर पेरिस आते और सेंट-सल्पिस में जाकर उस समय छिप जाते जब चाची गिलनोर्मंड मारियस को प्रार्थना के लिए ले जाती थीं। वहाँ, चाची के पलट जाने के डर से कांपते हुए, एक खंभे के पीछे छिपकर, बिना हिले- डुले, साँस लेने की भी हिम्मत न करते हुए, वे अपने बच्चे को निहारते रहते। घावों से भरा वह अनुभवी सैनिक उस बूढ़ी अविवाहित महिला से डरता था।

इसी से उनका वर्नोन के पादरी, एम. ल'एब्बे माबेउफ के साथ संबंध स्थापित हुआ था।

वह आदरणीय पादरी सेंट-सल्पिस के एक वार्डन का भाई था, जिसने अक्सर उस व्यक्ति को अपने बच्चे को निहारते हुए, उसके गाल पर पड़े निशान और उसकी आँखों में बहते आँसुओं को देखा था। वह व्यक्ति, जो देखने में तो मर्दाना लगता था, लेकिन फिर भी एक औरत की तरह रो रहा था, वार्डन को बहुत प्रभावित कर गया था। वह चेहरा उसके मन में बस गया था। एक दिन, अपने भाई से मिलने वर्नोन जाते समय, उसकी मुलाकात पुल पर कर्नल पोंटमर्सी से हुई और उसने सेंट-सल्पिस के उस व्यक्ति को पहचान लिया। वार्डन ने यह बात पादरी को बताई और दोनों किसी न किसी बहाने से कर्नल से मिलने गए। इस मुलाकात से कई और मुलाकातें हुईं। कर्नल, जो पहले बेहद संकोची थे, अंत में अपने दिल की बात कहने लगे और पादरी और वार्डन को आखिरकार पूरी कहानी पता चल गई कि कैसे पोंटमर्सी अपने बच्चे के भविष्य के लिए अपनी खुशियों का त्याग कर रहे थे। इससे पादरी के मन में उनके प्रति श्रद्धा और स्नेह का भाव जागा और कर्नल भी पादरी के प्रति स्नेह रखने लगे। और तो और, जब दोनों सच्चे और अच्छे होते हैं, तो एक-दूसरे में इतना घुलमिल जाना और एक-दूसरे को इतना प्रभावित करना किसी और में संभव नहीं होता, जितना एक बूढ़ा पुजारी और एक बूढ़ा सिपाही। मूलतः, दोनों एक ही हैं। एक ने अपना जीवन इस धरती पर अपने देश को समर्पित किया है, दूसरे ने अपने स्वर्ग देश को; यही एकमात्र अंतर है।

साल में दो बार, 1 जनवरी और सेंट जॉर्ज दिवस पर, मारियस अपने पिता को कर्तव्य-पत्र लिखता था, जो उसकी चाची द्वारा लिखवाए जाते थे और जिन्हें देखकर ऐसा लगता था मानो वे किसी तयशुदा तरीके से लिखे गए हों; एम. गिलनोर्मंड को बस इतना ही बर्दाश्त था; और पिता उन पत्रों का जवाब बहुत ही स्नेहपूर्ण तरीके से देते थे, जिन्हें दादाजी बिना पढ़े ही अपनी जेब में रख लेते थे।

III. उन्हें आराम करने दें।

मैडम डी टी का सैलून ही मारियस पोंटमर्सी के लिए दुनिया का एकमात्र ज्ञात रूप था। यही एकमात्र द्वार था जिसके माध्यम से उसे जीवन की एक झलक मिल सकती थी। यह द्वार अंधकारमय था, और गर्माहट से कहीं अधिक ठंडा, दिन से कहीं अधिक रात जैसा, इस रोशनदान से होकर उसके पास आता था। यह बच्चा, जो इस अजनबी दुनिया में प्रवेश करते समय आनंद और उल्लास से भरा हुआ था, जल्द ही उदास हो गया, और अपनी उम्र के बिल्कुल विपरीत, गंभीर हो गया। उन सभी विलक्षण और प्रभावशाली व्यक्तियों से घिरा हुआ, वह गंभीर आश्चर्य से अपने चारों ओर देखता रहा। हर चीज ने उसके इस आश्चर्य को और बढ़ा दिया। मैडम डी टी के सैलून में कुछ बहुत ही कुलीन महिलाएं थीं जिनके नाम थे मथन, नोए, लेविस (उच्चारण लेवी) और कैम्बिस (उच्चारण कैम्बिस)। ये प्राचीन चेहरे और बाइबिल के ये नाम बच्चे के मन में पुराने नियम के साथ घुलमिल गए, जिसे वह कंठस्थ कर रहा था, और जब वे सभी वहाँ एक बुझती हुई आग के चारों ओर एक घेरे में बैठे थे, जो हरे रंग के शेड वाले दीपक की हल्की रोशनी से जगमगा रही थी, उनके गंभीर चेहरे, उनके भूरे या सफेद बाल, उनके दूसरे युग के लंबे गाउन, जिनके उदास रंगों को पहचाना नहीं जा सकता था, कभी-कभार राजसी और गंभीर शब्द बोल रहे थे, नन्हा मारियस उन्हें भयभीत आँखों से घूर रहा था, इस विश्वास के साथ कि वह महिलाओं को नहीं, बल्कि कुलपतियों और ज्ञानी पुरुषों को देख रहा है, वास्तविक प्राणियों को नहीं, बल्कि प्रेतों को।

इन प्रेतों के साथ-साथ कभी-कभी पुजारी, इस प्राचीन सैलून के नियमित आगंतुक और कुछ सज्जन भी मौजूद होते थे; मैडम डी बेरी के निजी सचिव मार्क्विस डी सैसेने, विस्काउंट डी वैलोरी, जिन्होंने "चार्ल्स-एंटोइन" के छद्म नाम से एक-तुकांत कविताएँ प्रकाशित कीं, प्रिंस डी ब्यूफ्रेमोंट, जो बहुत युवा होते हुए भी सफेद बालों वाले थे और जिनकी पत्नी सुंदर और बुद्धिमान थीं, जिनके लाल मखमली और सुनहरे टॉर्सेड से बने बेहद कम गले वाले वस्त्रों ने इन साये को भयभीत कर दिया, मार्क्विस डी कोरियोलिस डी एस्पिनोस, पूरे फ्रांस में "संतुलित शिष्टाचार" को सबसे अच्छी तरह समझने वाले व्यक्ति, कॉम्टे डी अमेंड्रे, सौम्य ठुड्डी वाले दयालु व्यक्ति, और शेवेलियर डी

पोर्ट-डी-गाय, लूव्र पुस्तकालय के एक स्तंभ, जिन्हें राजा का मंत्रिमंडल कहा जाता था, एम. डी पोर्ट-डी-गाय, गंजे और बूढ़े से कहीं अधिक उम्रदराज, अक्सर यह बताया करते थे कि 1793 में, सोलह वर्ष की आयु में, उन्हें अवज्ञाकारी होने के कारण गैली में डाल दिया गया था। उन्हें अस्सी वर्षीय मिरेपोइक्स के बिशप के साथ जंजीरों में जकड़ा गया था, जो स्वयं भी विद्रोही थे, लेकिन एक पुजारी के रूप में, जबकि वे एक सैनिक के रूप में भी विद्रोही थे। यह घटना टूलॉन में घटी। उनका काम रात में जाकर फांसी के तख्ते पर दिन में गिलोटिन से मारे गए लोगों के सिर और शवों को इकट्ठा करना था; वे इन लहूलुहान लाशों को अपनी पीठ पर लादकर ले जाते थे, और उनकी लाल दास-दास की कमीजों के गर्दन के पिछले हिस्से पर खून का थक्का जमा होता था, जो सुबह सूखा और रात को गीला हो जाता था। मैडम डी टी के सैलून में ऐसी दुखद कहानियाँ खूब प्रचलित थीं, और मराट को कोसते हुए वे ट्रेस्टेलॉन की प्रशंसा करते थे। कुछ अज्ञात किस्म के प्रतिनिधि वहाँ व्हिस्ट खेल रहे थे; एम. थिबोर्ड डू चालार्ड, एम. लेमार्चेंट डी गोमिकोर्ट, और दक्षिणपंथी विचारधारा के प्रसिद्ध उपहासकर्ता, एम. कॉर्नेट-डिनकोर्ट। छोटी पैंट और पतले पैरों वाला बैलिफ़ डी फेरेट, कभी-कभी एम. डी टैलीरैंड के पास जाते समय इस सैलून से होकर गुजरता था। वह एम. ले कॉम्टे डी'आर्टोइस का साथी था और कैम्पेसपे के नीचे दुबके अरस्तू के विपरीत, उसने गुइमार्ड को घुटनों के बल रेंगने पर मजबूर कर दिया था, और इस तरह उसने युगों को एक ऐसे दार्शनिक का उदाहरण दिया था जिसका बदला एक बैलिफ़ ने लिया था। पुजारियों की बात करें तो, वहाँ अब्बे हाल्मा थे, वही जिनके बारे में एम. लारोज़, ला फौद्रे पर उनके सहयोगी ने कहा था: "अरे! पचास साल से कम उम्र का कौन है? शायद कुछ नौसिखिए?" अब्बे लेटूरनर, राजा के उपदेशक; अब्बे फ्रायसिनस, जो उस समय तक न तो काउंट थे, न बिशप, न मंत्री, न ही पीयर, और जो एक पुराना चोगा पहनते थे जिसके बटन गायब थे; अब्बे केरावेनेंट, सेंट-जर्मेन-डेस-प्रेज़ के क्यूरे; साथ ही पोप के नुनसियो, मॉन्सिग्नोर मैची, निसिबी के आर्कबिशप, बाद में कार्डिनल बने, जो अपनी लंबी, चिंतनशील नाक के लिए जाने जाते थे; और एक अन्य मॉन्सिग्नोर, जिन्हें इस प्रकार उपाधि दी गई थी: अब्बेट पामिएरी, घरेलू धर्माध्यक्ष, होली सी के सात भागीदार प्रोथोनोटरी में से एक, प्रतिष्ठित लिबेरियन बेसिलिका के कैनन, संतों के अधिवक्ता, पोस्टुलेटोर देई सैंटी, जो संत घोषित करने के मामलों को संदर्भित करता है, और लगभग स्वर्ग अनुभाग के

अनुरोधों के स्वामी को दर्शाता है। अंत में, दो कार्डिनल, एम. डे ला लुज़र्न और एम. डे क्लेरमोंट-टोनर्रे। लुज़र्न के कार्डिनल एक लेखक थे और कुछ वर्षों बाद उन्हें शैतोब्रिएंड के साथ कंज़र्वेटर के लेखों पर हस्ताक्षर करने का सम्मान प्राप्त हुआ; एम. डी क्लेरमोंट-टोनर्रे टूलूज़ के आर्कबिशप थे और अक्सर अपने भतीजे, मार्क्विस डी टोनर्रे से मिलने पेरिस जाते थे, जो नौसेना और युद्ध मंत्री थे। क्लेरमोंट-टोनर्रे के कार्डिनल एक हंसमुख छोटे कद के व्यक्ति थे, जो अपने कस्कॉक के नीचे अपनी लाल मोजे दिखाते थे; उनकी विशेषता विश्वकोश से घृणा और बिलियर्ड्स में उनका बेताब खेल था, और उस दौर में गर्मियों की शामों में रू मैडम से गुजरने वाले लोग, जहाँ होटल डी क्लेरमोंट-टोनर्रे स्थित था, गेंदों की गड़गड़ाहट और कार्डिनल की तीखी आवाज सुनने के लिए रुक जाते थे, जो अपने साथी, मोनसिग्नोर कोटिरेट, कैरिस्टे के बिशप इन पार्टिबस से चिल्ला रहे थे: "मार्क, एब्बे, मैं एक तोप बना रहा हूँ।" कार्डिनल डी क्लेरमोंट-टोनर्रे को उनके सबसे घनिष्ठ मित्र, एम. डी रोकेलाउर, सेनलिस के पूर्व बिशप और चालीस में से एक, मैडम डी टी के यहाँ लाए थे। एम. डी रोकेलाउर अपने ऊंचे कद और अकादमी में अपनी लगन के लिए जाने जाते थे; पुस्तकालय के बगल वाले हॉल के कांच के दरवाजे से, जहाँ उस समय फ्रांसीसी अकादमी की बैठकें होती थीं, जिज्ञासु लोग हर मंगलवार को सेनलिस के पूर्व बिशप को देख सकते थे। वे आमतौर पर सीधे खड़े होते थे, चेहरे पर पाउडर लगा होता था, बैंगनी रंग की पैंट पहने होते थे और उनकी पीठ दरवाजे की ओर होती थी, शायद इसलिए ताकि उनके छोटे कॉलर को बेहतर ढंग से देखा जा सके। ये सभी पादरी, हालांकि अधिकतर दरबारी और चर्च के सदस्य दोनों थे, टी. सैलून की गरिमा को बढ़ाते थे, जिसका सामंती स्वरूप फ्रांस के पाँच कुलीन व्यक्तियों - मार्क्विस डी विब्रे, मार्क्विस डी तालारू, मार्क्विस डी हर्बोविल, विस्काउंट डैम्ब्रे और ड्यूक डी वैलेंटिनोइस - द्वारा और भी अधिक स्पष्ट हो जाता था। ड्यूक डी वैलेंटिनोइस, हालांकि प्रिंस डी मोन⁺, यानी विदेश में शासन करने वाले राजकुमार थे, फ्रांस और उसके कुलीन वर्ग के प्रति इतना उच्च सम्मान रखते थे कि वे हर चीज को उनके नजरिए से ही देखते थे। उन्होंने ही कहा था: “कार्डिनल रोम के फ्रांस के समकक्ष हैं; लॉर्ड इंग्लैंड के फ्रांस के समकक्ष हैं।” इसके अलावा, जैसा कि इस सदी में क्रांति का हर जगह होना

अनिवार्य है, यह सामंती सैलून, जैसा कि हमने कहा है, बुर्जुआ वर्ग के प्रभुत्व में था। एम. गिलनोर्मंड का वहाँ दबदबा था।

पेरिस के श्वेत समाज का सार और मूल तत्व वहीं निहित था। वहाँ प्रतिष्ठा, यहाँ तक कि राजशाही समर्थक प्रतिष्ठा भी, एकांत में रखी जाती थी। प्रसिद्धि में हमेशा अराजकता का अंश होता है। यदि शैतोब्रिएंड वहाँ प्रवेश कर जाते, तो उनका प्रभाव पेरे डुचेन जैसा ही होता। फिर भी, कुछ उपहासित लोग किसी न किसी प्रकार वहाँ पहुँच ही गए। कॉम्टे ब्यूग्नोट को सुधार की शर्त पर वहाँ स्वीकार किया गया था।

आज के "कुलीन" सैलून अब उन पुराने सैलूनों जैसे नहीं रहे। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में आज भी घिनौनी राजनीति की बू आती है। आज के राजशाही समर्थक जनवादी हैं, यह बात उनके लिए सराहनीय है।

मैडम डी टी के यहाँ समाज उच्च कोटि का था, स्वाद उत्कृष्ट और अभिमानी था, जो दिखावटी विनम्रता के आवरण में छिपा था। वहाँ के शिष्टाचार में हर प्रकार की अनैच्छिक बारीकियां समाहित थीं, जो स्वयं पुरानी व्यवस्था का हिस्सा थीं, दबी हुई लेकिन फिर भी जीवित। इनमें से कुछ आदतें, विशेषकर भाषा के मामले में, विचित्र प्रतीत होती हैं। जो लोग इन आदतों से सतही तौर पर परिचित होते, वे इन्हें देहाती समझ लेते, जबकि ये केवल प्राचीन थीं। एक महिला को मैडम ला जेनेराले कहा जाता था। मैडम ला कोलोनेल नाम का प्रचलन पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ था। आकर्षक मैडम डी लियोन ने, संभवतः डचेस डी लोंग्यूविल और डी शेवरूज़ की स्मृति में, राजकुमारी की उपाधि के बजाय इस नाम को प्राथमिकता दी। मार्क्विज़ डी क्रेकी को भी मैडम ला कोलोनेल कहा जाता था।

यह छोटा सा उच्च समाज ही था जिसने ट्यूलरीज़ में राजा से निजी तौर पर "राजा" कहकर, तीसरे व्यक्ति के रूप में बात करने की परंपरा का आविष्कार किया, और कभी भी "महामहिम" नहीं कहा, क्योंकि "महामहिम" की उपाधि "हड़पने वाले द्वारा कलंकित" कर दी गई थी।

वहाँ लोगों और उनके कर्मों का न्याय हुआ। उन्होंने उस युग का उपहास किया जिसने उन्हें उसे समझने की आवश्यकता से मुक्त कर दिया था। वे आश्चर्य से एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते रहे। उन्होंने अपने ज्ञान का वह अंश एक-

दूसरे को बताया। मेथुसेला ने एपिमेनिडेस को जानकारी दी। बहरे व्यक्ति ने अंधे व्यक्ति को घटनाओं का क्रम समझाया। उन्होंने घोषणा की कि कोब्लेंट्ज़ के बाद से बीता समय अस्तित्व में ही नहीं था। जिस प्रकार ईश्वर की कृपा से लुई 18 वीं अपने शासनकाल के 22 वें वर्ष में थे, उसी प्रकार प्रवासी भी अपने किशोरावस्था के 22 वें वर्ष में थे।

सब कुछ सामंजस्यपूर्ण था; कोई अति जीवंतता नहीं थी; बातचीत नाममात्र की थी; समाचार पत्र, सैलूनों से सहमत होते हुए, कागज़ के पन्ने जैसे प्रतीत होते थे। कुछ युवा लोग थे, लेकिन वे मानो मृत समान थे। प्रवेश कक्ष में वर्दीधारी लोग पुराने जमाने के थे। इन बिल्कुल अप्रचलित व्यक्तियों की सेवा उन्हीं के जैसे नौकर-चाकर करते थे।

उन सभी में ऐसा भाव था मानो वे बहुत पुराने समय में जी चुके हों और मृत्यु को दृढ़तापूर्वक न्योछावर कर रहे हों। लगभग पूरी शब्दावली "संरक्षक, संरक्षण, संरक्षक; अच्छी गंध" से भरी हुई थी—यही मुख्य बात थी। वास्तव में, इन सम्मानित समूहों के विचारों में सुगंध समाई हुई थी और उनके विचारों में इसकी झलक थी। यह एक मृत समाज था। स्वामी तो संरक्षित थे, नौकर भूसे से भरे हुए थे।

एक सम्मानित वृद्ध मार्क्विज़, जो प्रवासी और बर्बाद हो चुकी थी, जिसके पास केवल एक अकेली नौकरानी थी, लगातार कहती रही: "मेरे लोग।"

मैडम डी टी के सैलून में उन्होंने क्या किया? वे बेहद ही जोशीले थे।

अतिवादी होना; यह शब्द, हालांकि इसका अर्थ शायद लुप्त नहीं हुआ है, लेकिन आज के समय में इसका कोई अर्थ नहीं रह गया है। आइए इसे समझाते हैं।

अतिवादी होना सीमा से परे जाना है। यह सिंहासन के नाम पर राजदंड पर और वेदी के नाम पर मुकुट पर आक्रमण करना है; यह उस वस्तु के साथ दुर्व्यवहार करना है जिसे आप घसीट रहे हैं, यह लगाम को उखाड़ फेंकना है; यह विधर्मियों द्वारा ग्रहण किए गए भोजन की मात्रा के आधार पर लकड़ी के गट्ठे पर नुक्ताचीनी करना है; यह मूर्ति को उसकी थोड़ी सी मूर्तिपूजा के लिए कोसना है; यह अत्यधिक सम्मान के माध्यम से अपमान करना है; यह पता लगाना है कि पोप पर्याप्त रूप से पापी नहीं हैं, राजा पर्याप्त रूप से राजसी नहीं हैं, और रात में बहुत अधिक प्रकाश है; यह सफेदी के नाम पर संगमरमर, बर्फ, हंस और

लिली से असंतुष्ट होना है; यह चीजों का इस हद तक पक्षधर होना है कि उनका शत्रु बन जाना है; यह इतना दृढ़ता से समर्थन करना है कि विरोध भी करना है।

पुनर्स्थापना के पहले चरण में अतिवादी भावना विशेष रूप से देखने को मिलती है।

इतिहास में सन् 1814 में शुरू होकर लगभग 1820 में समाप्त होने वाले उस पंद्रह मिनट के समय जैसा कुछ भी नहीं है, जब दक्षिणपंथी विचारधारा के व्यावहारिक नेता एम. डी विलेल का उदय हुआ। ये छह साल एक असाधारण क्षण थे; एक ही समय में उज्ज्वल और अंधकारमय, मुस्कुराते और गंभीर, भोर की रोशनी से जगमगाते हुए और साथ ही साथ उन महान आपदाओं की छाया से पूरी तरह ढके हुए, जो अभी भी क्षितिज को घेरे हुए थीं और धीरे-धीरे अतीत में विलीन हो रही थीं। उस प्रकाश और उस छाया में, एक संपूर्ण छोटी नई और पुरानी दुनिया विद्यमान थी, हास्यपूर्ण और दुखद, युवा और वृद्ध, जो अपनी आँखें मल रही थी; वापसी जैसी जागृति और कुछ नहीं होती; एक ऐसा समूह जो फ्रांस को दुर्भावना से देखता था, और जिसे फ्रांस व्यंग्य से देखता था; गलियों में लौटी हुई मार्क्विसों के पुराने उल्लू, और भूतों के वे समूह, जो हर चीज़ पर आश्चर्य से भरे थे, वे बहादुर और कुलीन सज्जन जो फ्रांस में होने पर मुस्कुराते थे लेकिन रोते भी थे, अपने देश को एक बार फिर देखकर प्रसन्न थे, लेकिन अपनी राजशाही न पाकर निराश भी थे; धर्मयुद्ध के कुलीन लोग साम्राज्य के कुलीनों, यानी तलवार के कुलीनों को तिरस्कार से देखते थे; ऐतिहासिक नस्लें जो इतिहास की समझ खो चुकी थीं; शारलेमेन के साथियों के पुत्र नेपोलियन के साथियों का तिरस्कार करते थे। जैसा कि हमने अभी कहा, तलवारों ने अपमान का बदला लिया; फोंटेनोय की तलवार हास्यास्पद थी और जंग लगे लोहे का एक टुकड़ा मात्र थी; मारेन्गो की तलवार घृणित थी और केवल एक कृपाण थी। बीते दिन बीते कल को नहीं पहचानते थे। लोगों में अब महानता का बोध नहीं रहा। कोई था जो बोनापार्ट को स्कैपिन कहता था। यह समाज अब अस्तित्व में नहीं है। हम दोहराते हैं, इसका कुछ भी आज अस्तित्व में नहीं है। जब हम इसमें से किसी एक आकृति को यादृच्छिक रूप से चुनते हैं और उसे विचारों में फिर से जीवंत करने का प्रयास करते हैं, तो वह हमें प्रलय से पहले की दुनिया जितनी ही विचित्र लगती है। दरअसल, वह भी एक प्रलय में समा चुकी है। वह दो क्रांतियों के नीचे दब गई है। विचार कितनी विशाल लहरें हैं! वे कितनी जल्दी उन सभी

चीजों को ढक लेती हैं जिन्हें नष्ट करना और दफनाना उनका उद्देश्य होता है, और कितनी शीघ्रता से वे भयानक खाईयाँ खड़ी कर देती हैं!

कुछ ऐसा ही उन सुदूर और स्पष्टवादी समयों के सैलूनों का स्वरूप था जब एम. मार्टिनविले के पास वोल्टेयर से कहीं अधिक हास्य-विनोद था।

इन गोष्ठियों का अपना एक अलग साहित्य और राजनीति थी। वे फीवी में विश्वास रखते थे। एम. एगियर उनमें नियम बनाते थे। वे क्वे मालाक्वेस के पुराने पुस्तक विक्रेता और प्रचारक एम. कोल्नेट की टिप्पणियों का अनुसरण करते थे। नेपोलियन उनके लिए पूरी तरह से कोर्सिकन राक्षस था। बाद में, राजा की सेनाओं के लेफ्टिनेंट-जनरल एम. ले मार्क्विस डी बोनापार्ट का इतिहास में समावेश उस युग की भावना के प्रति एक रियायत थी।

इन सभाघरों की पवित्रता अधिक समय तक बरकरार नहीं रही। 1818 से इनमें कट्टरपंथी पनपने लगे, जो एक चिंताजनक छाया की तरह थे। उनका तरीका राजशाही समर्थक होना और इसके लिए खुद को सही ठहराना था। जहाँ अतिवादी बहुत गर्वित थे, वहीं कट्टरपंथी कुछ हद तक शर्मिंदा थे। उनमें चतुराई थी; उनमें मौन था; उनका राजनीतिक सिद्धांत अहंकार से भरा हुआ था; उन्हें सफल होना चाहिए था। वे सफेद टाई और कसे हुए बटन वाले कोट के मामले में अतिवाद करते थे, और यह उपयोगी भी था। कट्टरपंथी दल की गलती या दुर्भाग्य यह थी कि उन्होंने उम्रदराज युवाओं को जन्म दिया। उन्होंने खुद को बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने निरंकुश और अतिवादी सिद्धांत पर एक संयमित सत्ता स्थापित करने का सपना देखा। उन्होंने विध्वंसकारी उदारवाद के विरुद्ध रूढ़िवादी उदारवाद का विरोध किया, और कभी-कभी असाधारण बुद्धिमत्ता के साथ। उन्हें यह कहते हुए सुना गया: “राजशाही के लिए धन्यवाद! इसने अनेक सेवाएँ प्रदान की हैं। इसने परंपरा, पूजा, धर्म और सम्मान को पुनर्जीवित किया है। यह निष्ठावान, साहसी, वीर, प्रेममय और समर्पित है। इसने खेद के साथ ही सही, राजशाही की धर्मनिरपेक्ष भव्यता को राष्ट्र की नई भव्यता के साथ मिला दिया है। इसकी गलती क्रांति, साम्राज्य, गौरव, स्वतंत्रता, युवा विचारों, युवा पीढ़ियों और युग को न समझने में है। लेकिन यह गलती जो यह हमारे प्रति करती है—क्या हम कभी-कभी उनके प्रति इस गलती के दोषी नहीं रहे हैं? क्रांति, जिसके हम उत्तराधिकारी हैं, को सभी मामलों में बुद्धिमान होना चाहिए। राजशाही पर हमला करना उदारवाद का गलत

अर्थ निकालना है। कितनी बड़ी गलती! और कितना बड़ा अंधापन! क्रांतिकारी फ्रांस ऐतिहासिक फ्रांस के प्रति, अर्थात् अपनी जननी के प्रति, अर्थात् स्वयं के प्रति सम्मान की कमी रखता है। 5 सितंबर के बाद, राजशाही के कुलीन वर्ग के साथ वैसा ही व्यवहार किया गया जैसा 5 जुलाई के बाद साम्राज्य के कुलीन वर्ग के साथ किया गया था। वे चील के प्रति अन्यायपूर्ण थे, हम अन्याय कर रहे हैं। लिस-फूल का प्रतीक। ऐसा लगता है कि हमें हमेशा किसी न किसी बात पर रोक लगानी ही है! क्या लुई 14 वें के मुकुट से सोना हटाना, हेनरी चतुर्थ के राजचिह्न को मिटाना किसी काम का है? हम एम. डी वाउब्लैंक का मज़ाक उड़ाते हैं क्योंकि उन्होंने जेना पुल से 'एन' अक्षर मिटा दिया! उन्होंने ऐसा किया क्या था? हम क्या कर रहे हैं? बूविंस और मारेन्गो दोनों ही हमारे हैं। लिस-फूल के प्रतीक भी हमारे हैं और 'एन' अक्षर भी। यह हमारी धरोहर है। हम इसे कम क्यों करें? हमें अपने देश को अतीत में भी उसी तरह नकारना नहीं चाहिए जैसे वर्तमान में। क्यों न हम पूरे इतिहास को स्वीकार करें? क्यों न हम पूरे फ्रांस से प्यार करें?

इस प्रकार सिद्धांतकारों ने राजशाही की आलोचना और संरक्षण किया, जो आलोचना से असंतुष्ट और संरक्षण से क्रोधित थी।

कट्टरपंथियों ने राजशाही के पहले युग की शुरुआत की, जबकि सभाओं ने दूसरे युग को परिभाषित किया। कौशल जोश का अनुसरण करता है। आइए हम यहाँ इस संक्षिप्त विवरण तक ही सीमित रहें।

इस वृत्तांत के दौरान, पुस्तक के लेखक का सामना समकालीन इतिहास के इस विचित्र क्षण से हुआ है; उन्हें इस पर सरसरी नज़र डालने और आज अज्ञात इस समाज की कुछ अनूठी विशेषताओं को एक बार फिर से खोजने के लिए विवश होना पड़ा है। लेकिन वे यह कार्य शीघ्रता से और बिना किसी कटु या उपहासपूर्ण विचार के करते हैं। उनकी माँ से जुड़ी स्मृतियाँ, जो सम्मान और स्नेह दोनों का भाव रखती हैं, उन्हें इस अतीत से जोड़ती हैं। इसके अलावा, यह भी ध्यान देने योग्य है कि इस छोटे से संसार की अपनी एक अलग ही भव्यता थी। कोई इस पर मुस्कुरा सकता है, लेकिन न तो इसका तिरस्कार कर सकता है और न ही इससे घृणा कर सकता है। यह पुराने समय का फ्रांस था।

मारियस पोंटमर्सी ने कुछ पढ़ाई की, जैसा कि सभी बच्चे करते हैं। जब वह आंटी गिलनोर्मंड के हाथों से निकला, तो उसके दादा ने उसे एक ऐसे योग्य प्रोफेसर

के हवाले कर दिया, जो अत्यंत सरल और सरल स्वभाव के थे। यह युवा आत्मा, जो विकसित हो रही थी, एक संशयवादी से एक अशिष्ट विद्वान में परिवर्तित हो गई।

मारियस ने कॉलेज की पढ़ाई पूरी की, फिर उन्होंने लॉ स्कूल में दाखिला लिया। वे राजशाही समर्थक, कट्टर और कठोर स्वभाव के थे। वे अपने दादा से ज्यादा प्यार नहीं करते थे, क्योंकि उनकी खुशमिजाजी और निराशावादी सोच उन्हें नापसंद थी, और अपने पिता के प्रति भी उनके भाव निराशाजनक थे।

कुल मिलाकर, वह एक शांत और उत्साही, नेक, उदार, गर्वित, धार्मिक, उत्साही लड़का था; कठोरता में गरिमा और शर्म में पवित्रता का प्रतीक।

IV. डाकू का अंत

मारियस की शास्त्रीय पढ़ाई पूरी होने के साथ ही एम. गिलनोर्मंड ने समाज से विदा ले ली। बूढ़े गिलनोर्मंड ने फाउबर्ग सेंट-जर्मेन और मैडम डी टी के सैलून को अलविदा कहा और माराइस में, रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर स्थित अपने घर में बस गए। वहाँ उनके नौकरों में चौकीदार के अलावा, वह नौकरानी निकोलेट भी थी, जो मैग्नन की उत्तराधिकारी बनी थी, और वह कमज़ोर साँस वाली और पतली काँपों वाली बास्क महिला भी थी, जिनका ज़िक्र ऊपर किया जा चुका है।

1827 में, मारियस अभी-अभी सत्रह वर्ष का हुआ था। एक शाम, घर लौटते समय, उसने अपने दादाजी को हाथ में एक पत्र पकड़े हुए देखा।

एम. गिलनोर्मंड ने कहा, "मारियस, तुम कल वर्नोन के लिए रवाना होगे।"

“क्यों?” मारियस ने कहा।

अपने पिता को देखने के लिए।

मारियस कांप उठा। उसने हर बात सोच ली थी, सिवाय इस बात के कि एक दिन उसे अपने पिता से मिलने का बुलावा आएगा। इससे ज़्यादा अप्रत्याशित, चौंकाने वाली और, मान लीजिए, अप्रिय बात और कुछ नहीं हो सकती थी। यह अलगाव को सुलह में बदलने जैसा था। यह कोई विपत्ति नहीं थी, बल्कि एक अप्रिय कर्तव्य था।

राजनीतिक घृणा के अलावा, मारियस को यह भी पक्का यकीन था कि उसके पिता, जिन्हें एम. गिलनोर्मंड ने उनके सौम्य दिनों में "काटने वाला" कहा था, उससे प्यार नहीं करते थे; यह बात स्पष्ट थी, क्योंकि उन्होंने उसे दूसरों के हवाले कर दिया था। यह महसूस करते हुए कि उसे प्यार नहीं किया जाता, उसने भी प्यार नहीं किया। "इससे सरल कुछ नहीं है," उसने मन ही मन कहा।

वह इतना चकित था कि उसने एम. गिलनोर्मंड से कोई प्रश्न नहीं किया। दादाजी ने आगे कहा:—

ऐसा प्रतीत होता है कि वह बीमार है। उसे आपकी उपस्थिति की आवश्यकता है।

और कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने आगे कहा:—

“कल सुबह निकल पड़ना। मुझे लगता है कि कोर्ट डेस फॉन्टेन्स से शाम छह बजे एक बस निकलती है और शाम को पहुँचती है। उसी बस में बैठ जाना। वह कहता है कि यहाँ जल्दी है।”
फिर उसने पत्र को हाथ में मसलकर अपनी जेब में डाल लिया। मारियस उसी शाम निकल सकता था और अगली सुबह अपने पिता के साथ हो सकता था। रू डू बोलोई से एक ट्रेन उस दिन रात में रूएन के लिए रवाना हुई और वर्नोन से गुजरी। न तो मारियस और न ही एम. गिलनोर्मंड ने इसके बारे में पूछताछ करने की सोची। अगले दिन, संध्याकाल में, मारियस वर्नोन पहुँच गया। लोग मोमबत्तियाँ जलाना शुरू ही कर रहे थे। उसने रास्ते में मिले पहले व्यक्ति से "एम. पोंटमर्सी के घर" के बारे में पूछा। क्योंकि वह अपने मन में पुनर्स्थापना का समर्थक था, और उसी की तरह, वह अपने पिता के कर्नल या बैरन की उपाधि के दावे को मान्यता नहीं देता था।
उसे वह घर दिखाया गया। उसने घंटी बजाई; हाथ में एक छोटा सा दीपक लिए एक महिला ने दरवाजा खोला।
“एम. पोंटमर्सी?” मारियस ने कहा।
महिला बेसुध पड़ी रही।
“क्या यह उसका घर है?” मारियस ने पूछा।
महिला ने सहमति में सिर हिलाया।
क्या मैं उनसे बात कर सकता हूँ?
महिला ने अपना सिर हिलाया।
“लेकिन मैं तो उनका बेटा हूँ!” मारियस ने ज़िद करते हुए कहा। “वे मेरा इंतज़ार कर रहे हैं।”
"उसे अब आपसे कोई उम्मीद नहीं है," महिला ने कहा।
तब उसने महसूस किया कि वह रो रही थी।
उसने भूतल पर स्थित एक कमरे के दरवाजे की ओर इशारा किया; वह अंदर चला गया।

उस कमरे में, जो चिमनी पर रखी मोमबत्ती की रोशनी से जगमगा रहा था, तीन आदमी थे - एक सीधा खड़ा था, दूसरा घुटनों के बल बैठा था और तीसरा अपनी कमीज में फर्श पर लेटा हुआ था। फर्श पर लेटा हुआ व्यक्ति कर्नल था।

अन्य दो लोग डॉक्टर और प्रार्थना में लीन पुजारी थे।

तीन दिन पहले कर्नल को मस्तिष्क ज्वर हो गया था। बीमारी की शुरुआत में ही उन्हें अपशगुन का आभास हो गया था, इसलिए उन्होंने एम. गिलनोर्मंड को पत्र लिखकर अपने बेटे को वापस लाने की मांग की थी। उनकी हालत और बिगड़ गई। मारियस के वर्नोन पहुंचने की शाम को ही कर्नल को प्रलाप का दौरा पड़ा; नौकर के रोकने के बावजूद वे बिस्तर से उठ खड़े हुए और चिल्लाए, “मेरा बेटा नहीं आ रहा! मैं उससे मिलने जाऊंगा!” फिर वे अपने कमरे से बाहर भागे और प्रतीक्षालय के फर्श पर गिर पड़े। उनकी मृत्यु हो गई।

डॉक्टर और पादरी दोनों को बुलाया गया था। डॉक्टर बहुत देर से पहुंचे। बेटा भी बहुत देर से पहुंचा।

मोमबत्ती की मंद रोशनी में, पीले और बेजान पड़े कर्नल के गाल पर एक बड़ा सा आंसू दिखाई दे रहा था, जो उनकी मृत आंख से रिस रहा था। आंख बुझ चुकी थी, लेकिन आंसू अभी सूखा नहीं था। वह आंसू उनके बेटे की मौत का प्रतीक था।

मारियस ने उस व्यक्ति को निहारा जिसे उसने पहली बार देखा था, उस आदरणीय और मर्दाना चेहरे को, उन खुली आँखों को जिनमें कुछ दिखाई नहीं देता था, उन सफेद बालों को, उन मजबूत अंगों को जिन पर जगह-जगह तलवार के वार के निशान भूरी लकीरों में और गोलियों के छेदों के लाल तारों जैसे निशान दिखाई दे रहे थे। उसने उस विशाल घाव पर विचार किया जिसने उस चेहरे पर वीरता की छाप छोड़ी थी जिस पर ईश्वर ने अच्छाई की छाप छोड़ी थी। उसने सोचा कि यह व्यक्ति उसका पिता है, और यह व्यक्ति मर चुका है, और उसके शरीर में एक सिहरन दौड़ गई।

उसे जो दुःख महसूस हो रहा था, वह वही दुःख था जो उसे किसी भी ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति में महसूस होता जिसे वह संयोगवश मृत्यु की अवस्था में पड़ा हुआ देखता।

उस कक्ष में गहरी पीड़ा छाई हुई थी। नौकरानी एक कोने में विलाप कर रही थी, पादरी प्रार्थना कर रहा था और उसकी सिसकियाँ सुनाई दे रही थीं, डॉक्टर अपनी आँखें पोंछ रहा था; स्वयं शव भी रो रहा था।

डॉक्टर, पुजारी और वह महिला अपनी पीड़ा के बीच मारियस को बिना कुछ बोले देखते रहे; वह वहाँ अजनबी था। मारियस, जो बहुत कम भावुक था, अपने इस रवैये पर शर्मिंदा और असहज महसूस कर रहा था; उसने अपनी टोपी हाथ में पकड़ी और उसे ज़मीन पर गिरा दिया, ताकि यह लगे कि दुःख ने उसे टोपी थामने की शक्ति से वंचित कर दिया है।

साथ ही, उसे पश्चाताप भी हुआ और उसने अपने इस व्यवहार पर खुद को कोसना शुरू कर दिया। लेकिन क्या यह उसकी गलती थी? क्या वह अपने पिता से प्यार नहीं करता था? भला क्यों करे!

कर्नल अपने पीछे कुछ भी नहीं छोड़ गए थे। बड़े फर्नीचर की बिक्री से उनके अंतिम संस्कार का खर्च भी मुश्किल से ही निकल पाया।

नौकरानी को कागज का एक टुकड़ा मिला, जिसे उसने मारियस को सौंप दिया। उस पर कर्नल की लिखावट में निम्नलिखित लिखा था:—

मेरे बेटे के लिए।

सम्राट ने मुझे वाटरलू के युद्धक्षेत्र में बैरन की उपाधि दी थी। चूंकि पुनर्स्थापना मेरे इस अधिकार पर विवाद कर रही है, जिसे मैंने अपने रक्त से अर्जित किया है, इसलिए मेरा पुत्र इसे ग्रहण करेगा और धारण करेगा। वह इसके योग्य होगा, यह तो निश्चित है।

नीचे कर्नल ने यह जोड़ा था:

वाटरलू की उसी लड़ाई में, एक सार्जेंट ने मेरी जान बचाई थी। उस आदमी का नाम थेनार्डियर था। मुझे लगता है कि वह आजकल पेरिस के पास के एक गाँव, चेल्स या मोंटफर्मेइल में एक छोटा सा सराय चला रहा है। अगर मेरा बेटा उससे मिलता है, तो वह थेनार्डियर की हर संभव मदद करेगा।

मारियस ने इस कागज को अपने पास रखा और इसे संभाल कर रखा, अपने पिता के प्रति कर्तव्य के कारण नहीं, बल्कि मृत्यु के प्रति उस अस्पष्ट सम्मान के कारण जो मनुष्य के हृदय में हमेशा प्रबल रहता है।

[illegible]

V. क्रांतिकारी बनने के लिए सामूहिक प्रार्थना में भाग लेने की उपयोगिता

मारियस ने अपने बचपन की धार्मिक आदतों को बरकरार रखा था। एक रविवार को, जब वह सेंट-सल्पिस में प्रार्थना सभा में शामिल होने गया, उसी वर्जिन मैरी के गिरजाघर में जहाँ उसकी चाची उसे बचपन में ले जाया करती थीं, तो वह एक खंभे के पीछे छिप गया। उस समय वह सामान्य से अधिक अन्यमनस्क और विचारशील था, और बिना किसी विशेष ध्यान दिए, उट्रेक्ट मखमल की एक कुर्सी पर घुटने टेककर बैठ गया, जिसके पीछे यह नाम खुदा हुआ था: "महाशय माबेउफ, वार्डन।" प्रार्थना सभा शुरू ही हुई थी कि एक बूढ़ा व्यक्ति आया और मारियस से बोला:—

"यह मेरी जगह है, महोदय।"

मारियस तुरंत एक तरफ हट गया, और बूढ़े व्यक्ति ने अपनी कुर्सी पर कब्जा कर लिया।

प्रार्थना समाप्त होने पर भी मारियस कुछ कदम दूर सोच-विचार करते हुए खड़ा रहा; बूढ़ा आदमी फिर उसके पास आया और बोला:—

"मुझे क्षमा करें महोदय, मैंने थोड़ी देर पहले आपको परेशान किया था, और इस समय भी आपको परेशान कर रहा हूँ; आपने मुझे दखलंदाज़ समझा होगा, और मैं अपनी बात स्पष्ट करूँगा।"

“इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, महोदय,” मारियस ने कहा।

"हाँ!" बूढ़े आदमी ने आगे कहा, “मैं नहीं चाहता कि आप मेरे बारे में बुरा सोचें। देखिए, मुझे इस जगह से लगाव है। मुझे लगता है कि यहाँ से प्रार्थना सुनना बेहतर है। क्यों? मैं आपको बताता हूँ। इसी जगह से मैंने एक गरीब, बहादुर पिता को पिछले दस सालों से हर दो-तीन महीने में नियमित रूप से आते देखा है, क्योंकि पारिवारिक मजबूरियों के कारण उनके पास अपने बच्चे को देखने का कोई और मौका या रास्ता नहीं था। वे उस समय आते थे जब उन्हें पता होता था कि उनके बेटे को प्रार्थना के लिए लाया जाएगा। उस छोटे बच्चे को

कभी शक नहीं हुआ कि उसका पिता वहाँ है। शायद उसे यह भी नहीं पता था कि उसका कोई पिता है, बेचारा भोला! पिता एक खंभे के पीछे खड़े रहते थे ताकि उन्हें कोई देख न सके। वे अपने बच्चे को निहारते और रोते थे। वे उस छोटे बच्चे से बहुत प्यार करते थे, बेचारा! मैं यह देख सकता था। यह जगह मेरी नज़र में पवित्र हो गई है, और मुझे यहाँ प्रार्थना सुनने की आदत हो गई है। मुझे यह जगह उस जगह से बेहतर लगती है जहाँ मुझे वार्डन होने के नाते बैठने का अधिकार है। मैं उस अभागे सज्जन को थोड़ा-बहुत जानता था।” उसके ससुर, एक धनी चाची, रिश्तेदार, न जाने कितने, सबने धमकी दी थी कि अगर पिता ने उसे देखा तो वे उसे जायदाद से बेदखल कर देंगे। उसने अपने बेटे के लिए खुद को कुर्बान कर दिया ताकि वह एक दिन अमीर और खुशहाल हो सके। राजनीतिक विचारों के कारण वह उससे अलग हो गया। बेशक, मैं राजनीतिक विचारों का समर्थन करता हूँ, लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें अपनी सीमाएँ पता नहीं होतीं। हे भगवान! कोई व्यक्ति इसलिए राक्षस नहीं हो जाता क्योंकि वह वाटरलू में था; कोई पिता इस कारण से अपने बच्चे से अलग नहीं होता। वह बोनापार्ट के कर्नलों में से एक था। मुझे लगता है कि वह मर चुका है। वह वर्नोन में रहता था, जहाँ मेरा एक भाई पादरी है, और उसका नाम पोंटमैरी या मोंटपर्सी जैसा कुछ था। कसम से, उसके चेहरे पर तलवार से बना एक शानदार निशान था।

"पोंटमर्सी," मारियस ने कहा, उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

“बिल्कुल सही, पोंटमर्सी। क्या आप उन्हें जानते थे?”

“महाराज,” मारियस ने कहा, “वह मेरे पिता थे।”

बूढ़े वार्डन ने अपने हाथ जोड़कर कहा:—

“अरे! तुम वही बच्चे हो! हाँ, बिल्कुल सही, अब तक तो वह आदमी बन चुका होगा। अच्छा! बेचारे बच्चे, तुम कह सकते हो कि तुम्हारा एक ऐसा पिता था जो तुमसे बहुत प्यार करता था!”

मारियस ने बूढ़े व्यक्ति को अपना हाथ दिया और उसे उसके कमरे तक पहुँचाया।

अगले दिन उन्होंने एम. गिलनोर्मंड से कहा:—

मैंने कुछ दोस्तों के साथ शिकार पर जाने का प्लान बनाया है। क्या आप मुझे तीन दिन के लिए अनुपस्थित रहने की अनुमति देंगे?

“चार !” उसके दादाजी ने जवाब दिया। “जाओ और अपना मनोरंजन करो।”

और उसने अपनी बेटी से धीमी आवाज़ में और आँख मारते हुए कहा, "क्या ही प्रेम प्रसंग था!"

VI. वार्डन से मिलने के परिणाम

मारियस कहाँ गया था, इसका खुलासा आगे चलकर किया जाएगा।

मारियस तीन दिनों तक अनुपस्थित रहा, फिर वह पेरिस लौटा, सीधे विधि विद्यालय के पुस्तकालय में गया और मॉनिटर की फाइलें मांगीं।

उन्होंने मोनिटर पढ़ा, गणतंत्र और साम्राज्य के सभी इतिहास पढ़े, मेमोरियल डे सैंट-हेलेन पढ़ा, सभी संस्मरण पढ़े, सभी समाचार पत्र पढ़े, बुलेटिन पढ़े, घोषणाएँ पढ़ीं; उन्होंने सब कुछ आत्मसात कर लिया। जब पहली बार उनकी नज़र ग्रैंड आर्मी के बुलेटिन में अपने पिता के नाम पर पड़ी, तो उन्हें एक सप्ताह तक बुखार रहा। वे उन जनरलों से मिलने गए जिनके अधीन जॉर्जेस पोंटमर्सी ने सेवा की थी, जिनमें कॉम्टे एच. चर्चवार्डन माबेउफ भी शामिल थे, जिनसे वे दोबारा मिलने गए और उन्होंने उन्हें वर्नोन के जीवन, कर्नल के विश्राम स्थल, उनके फूलों और उनके एकांत के बारे में बताया। मारियस को उस दुर्लभ, मधुर और उदात्त व्यक्ति, उस शेर-मेमने जैसे स्वभाव वाले अपने पिता के बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ।

इस बीच, वह अपने अध्ययन में इतना मग्न था कि उसके सारे पल और विचार उसी में डूबे रहते थे, और इसी वजह से वह गिलनोर्मंड परिवार से मुश्किल से ही मिल पाता था। वह खाने के समय आता था; फिर वे उसे ढूंढते थे, और वह कहीं नहीं मिलता था। फादर गिलनोर्मंड मुस्कुराते थे। “अरे! अरे! वह तो लड़कियों की उम्र का हो गया है!” कभी-कभी बूढ़ा आदमी कहता था, “अरे! मुझे लगा था कि यह तो सिर्फ़ शिष्टाचार का मामला है। लगता है यह तो प्रेम का मामला है!”

दरअसल, यह एक जुनून था। मारियस अपने पिता के प्रति स्नेह रखने के मार्ग पर अग्रसर था।

इसी दौरान, उनके विचारों में एक असाधारण परिवर्तन आया। इस परिवर्तन के कई चरण थे और वे क्रमिक रूप से आगे बढ़े। चूंकि यह हमारे समय के कई विचारकों का इतिहास है, इसलिए हमें लगता है कि इन चरणों का चरण दर चरण अनुसरण करना और उन सभी को दर्शाना उपयोगी सिद्ध होगा।

जिस इतिहास पर उसने अभी-अभी अपनी नजर डाली थी, उसने उसे भयभीत कर दिया था।

इसका पहला प्रभाव उसे चकित करना था।

उस समय तक, गणतंत्र, साम्राज्य, उसके लिए केवल भयानक शब्द थे। गणतंत्र, गोधूलि बेला में एक गिलोटिन; साम्राज्य, रात में एक तलवार। उसने अभी-अभी इस पर एक नज़र डाली थी, और जहाँ उसे केवल परछाइयों का एक अराजक दृश्य मिलने की उम्मीद थी, वहाँ उसने भय और आनंद से मिश्रित एक अभूतपूर्व आश्चर्य के साथ, टिमटिमाते सितारों को देखा - मिराबो, वर्जिनियाड, सेंट-जस्ट, रोबेस्पियर, कैमिल्ले, डेसमोलिन्स, डेंटन, और एक सूर्योदय, नेपोलियन। वह नहीं जानता था कि वह कहाँ खड़ा है। वह तेज रोशनी से चकाचौंध होकर पीछे हट गया। धीरे-धीरे, जब उसका आश्चर्य शांत हो गया, तो वह इस दीप्ति का अभ्यस्त हो गया, उसने बिना चक्कर आए इन कार्यों पर विचार किया, उसने बिना भय के इन व्यक्तियों का परीक्षण किया; क्रांति और साम्राज्य उसके मन की आँखों के सामने स्पष्ट रूप से, परिप्रेक्ष्य में, प्रकट हुए; उन्होंने इन सभी घटनाओं और व्यक्तियों के समूहों को दो महत्वपूर्ण तथ्यों में समाहित देखा: जनता को प्राप्त नागरिक अधिकारों की संप्रभुता में गणतंत्र, और यूरोप पर थोपी गई फ्रांसीसी विचारधारा की संप्रभुता में साम्राज्य; उन्होंने क्रांति से जनता की भव्य छवि को उभरते देखा, और साम्राज्य से फ्रांस की भव्य छवि को जन्म लेते देखा। उन्होंने अपने अंतरात्मा में यह दृढ़ विश्वास रखा कि यह सब अच्छा ही हुआ है। उनकी इस प्रारंभिक, अतिसंक्षिप्त समीक्षा में उनकी अचंभित अवस्था ने जिन बातों को नजरअंदाज किया, उन्हें यहाँ बताना आवश्यक नहीं है। हम एक प्रगतिशील मानसिकता की स्थिति का वर्णन कर रहे हैं। प्रगति एक ही चरण में नहीं होती। इस बात को एक बार स्पष्ट करते हुए, और इसके पहले और बाद में आने वाली बातों को ध्यान में रखते हुए, हम आगे बढ़ते हैं।

तब उन्हें एहसास हुआ कि उस क्षण तक वे अपने देश को उतना ही समझ पाए थे जितना अपने पिता को। वे न तो अपने देश को जानते थे और न ही अपने पिता को, और एक तरह के जानबूझकर छाए अंधेरे ने उनकी आँखों पर पर्दा डाल रखा था। अब उन्हें सब कुछ दिखाई दिया, और एक ओर तो वे प्रशंसा करने लगे, वहीं दूसरी ओर वे अपने पिता की पूजा करने लगे।

वह पश्चाताप और पश्चाताप से भर गया, और निराशा में सोचने लगा कि उसकी आत्मा में जो कुछ भी था, वह अब केवल कब्र को ही कहा जा सकता है। ओह! अगर उसके पिता जीवित होते, अगर वे उसके साथ होते, अगर ईश्वर ने अपनी करुणा और दया से उसे जीवित रहने दिया होता, तो वह कैसे दौड़ता, कैसे अपने आप को उनके सामने समर्पित कर देता, कैसे अपने पिता से कहता: “पिताजी! मैं यहाँ हूँ! मैं ही हूँ! मेरा हृदय आपके जैसा ही है! मैं आपका पुत्र हूँ!” वह कैसे उस सफेद सिर को गले लगाता, उसके बालों को आँसुओं से भिगोता, उसके घाव को निहारता, अपने हाथों से उसे दबाता, उसके वस्त्र को प्यार करता, उसके पैरों को चूमता! ओह! उसके पिता इतनी जल्दी, समय से पहले, न्याय से पहले, पुत्र के प्रेम के आने से पहले ही क्यों मर गए? मारियस के हृदय में निरंतर सिसकियाँ उठ रही थीं, जो हर क्षण उससे कह रही थीं: “हाय!” उसी समय, वह और भी गंभीर, और भी दृढ़, और अपने विचारों और विश्वास में और भी दृढ़ हो गया। हर पल, सत्य की झलकियाँ उसकी बुद्धि को पूर्ण करती हुई प्रतीत होती थीं। उसके भीतर एक आंतरिक विकास हो रहा था। वह एक प्रकार के स्वाभाविक विस्तार के प्रति सचेत था, जिसने उसे दो नई चीजें प्रदान कीं—उसके पिता और उसका देश।

जैसे चाबी मिलने पर सब कुछ खुल जाता है, वैसे ही उसने अपने आप को समझाया कि वह किससे घृणा करता था, उसने उस चीज़ को भेद दिया जिससे उसे नफरत थी; अब से वह उन महान चीज़ों के ईश्वरीय, दिव्य और मानवीय अर्थ को स्पष्ट रूप से समझ गया, जिनसे उसे घृणा करना सिखाया गया था, और उन महान पुरुषों को भी, जिन्हें उसे कोसना सिखाया गया था। जब उसने अपने पुराने विचारों पर विचार किया, जो कल के ही थे, फिर भी उसे बहुत पुराने प्रतीत होते थे, तो वह क्रोधित हुआ, फिर भी मुस्कुराया।

अपने पिता के पुनर्वास से प्रेरित होकर, उन्होंने स्वाभाविक रूप से नेपोलियन के पुनर्वास की ओर रुख किया।

लेकिन हम यह स्वीकार करते हैं कि यह कार्य बिना परिश्रम के पूरा नहीं हुआ।

बचपन से ही उन पर 1814 की पार्टी के बोनापार्ट के बारे में बने विचारों का गहरा प्रभाव था। अब, पुनर्स्थापना काल के सभी पूर्वाग्रह, उसके सभी हित, उसकी सभी प्रवृत्तियाँ नेपोलियन को विकृत करने की ओर अग्रसर थीं। वे उससे रोबेस्पियर से भी अधिक घृणा करते थे। उन्होंने राष्ट्र की थकान और माताओं की घृणा का बड़ी चतुराई से लाभ उठाया था। बोनापार्ट लगभग एक काल्पनिक

राक्षस बन गया था, और उसे जनता की कल्पना में चित्रित करने के लिए, जो कि जैसा कि हमने हाल ही में बताया, बच्चों की कल्पना के समान है, 1814 की पार्टी ने उसे एक के बाद एक कई भयानक मुखौटों में प्रस्तुत किया, भव्यता के साथ-साथ भयावह रूप से विकृत रूप तक, टिबेरियस से लेकर डरावने भूत तक। इस प्रकार, बोनापार्ट के बारे में बात करते समय, कोई भी रो सकता था या खिलखिलाकर हंस सकता था, बशर्ते कि उसके पीछे घृणा निहित हो। मारियस के मन में उस "आदमी" के बारे में, जैसा कि उसे कहा जाता था, कभी कोई और विचार नहीं आया था। ये विचार उसके स्वभाव में निहित दृढ़ता के साथ जुड़ गए थे। उसके भीतर एक जिद्दी छोटा आदमी था जो नेपोलियन से नफरत करता था।

इतिहास पढ़ने, नेपोलियन का अध्ययन करने, विशेषकर इतिहास के दस्तावेजों और सामग्रियों में उसका अध्ययन करने पर, मारियस की आँखों से नेपोलियन को छिपाने वाला पर्दा धीरे-धीरे हट गया। उसे किसी विशाल व्यक्तित्व की झलक मिली, और उसे संदेह हुआ कि बोनापार्ट के मामले में और लगभग सभी अन्य मामलों में, अब तक उसे धोखा दिया गया था; हर दिन उसकी दृष्टि और स्पष्ट होती गई; और वह धीरे-धीरे, कदम दर कदम, शुरुआत में लगभग खेद के साथ, फिर मदहोशी और मानो किसी अदम्य आकर्षण से प्रेरित होकर, पहले गंभीर कदमों पर, फिर धुंधले ढंग से प्रकाशित कदमों पर, और अंत में उत्साह के उज्ज्वल और शानदार कदमों पर चढ़ने लगा।

एक रात, वह छत के पास अपने छोटे से कमरे में अकेला था। उसकी मोमबत्ती जल रही थी; वह पढ़ रहा था, उसकी कोहनियाँ खुली खिड़की के पास मेज पर टिकी थीं। अंतरिक्ष से तरह-तरह के ख्याल उस पर आ रहे थे और उसके विचारों में घुलमिल रहे थे। रात का नजारा कितना अद्भुत होता है! मंद-मंद आवाजें सुनाई देती हैं, पता नहीं कहाँ से आ रही हैं; पृथ्वी से बारह सौ गुना बड़ा बृहस्पति ग्रह जलती हुई मशाल की तरह चमकता दिखाई देता है, नीला आसमान काला लगता है, तारे जगमगाते हैं; यह कितना भव्य है!

वह विशाल सेना के समाचारपत्र पढ़ रहा था, युद्ध के मैदान में लिखे गए उन वीरगाथाओं के लेखों को; बीच-बीच में उसे अपने पिता का नाम दिखाई देता, हमेशा सम्राट का नाम; वह विशाल साम्राज्य उसके सामने प्रकट हो उठता; उसके भीतर भावनाओं का सैलाब उमड़ता और उमड़ता हुआ सा महसूस होता; कभी-कभी उसे ऐसा लगता जैसे उसके पिता उसके पास से एक साँस की तरह गुज़रे हों और उसके

कान में कुछ फुसफुसाए हों; वह धीरे-धीरे एक विलक्षण अवस्था में चला गया; उसे ढोल, तोपें, तुरही, बटालियनों के कदमों की लयबद्ध आहट, घुड़सवार सेना की धीमी और दूर से आती सरपट दौड़ सुनाई देने लगी; समय-समय पर उसकी आँखें आकाश की ओर उठतीं और अंतरिक्ष की असीम गहराइयों में चमकते विशाल नक्षत्रों को निहारतीं, फिर उसकी नज़रें एक बार फिर उसकी किताब पर पड़तीं और वहाँ उसे अन्य विशाल वस्तुएँ अव्यवस्थित रूप से गतिमान दिखाई देतीं। उसका हृदय सिकुड़ गया। वह एक अजीब सी अवस्था में था, काँप रहा था, हाँफ रहा था। अचानक, अपने भीतर की अनुभूति और अपने आवेग को जाने बिना ही, वह उछलकर खड़ा हो गया, खिड़की से दोनों हाथ बाहर फैलाए, अंधकार, सन्नाटे, अनंत अंधेरे और असीम विशालता में गहरी निगाहें गड़ाए और बोला: "सम्राट अमर रहें!"

उस क्षण से सब कुछ समाप्त हो गया; कोर्सिका का राक्षस—हड़पने वाला— अत्याचारी—अपनी ही बहनों से प्रेम करने वाला दानव—ताल्मा से कला की शिक्षा लेने वाला अभिनेता—जाफ़ा का विषनाशक—बाघ—बोनापार्ट—ये सब गायब हो गए, और उसके मन में एक धुंधली और चमकदार रोशनी छा गई, जिसमें एक दुर्गम ऊंचाई पर सीज़र का पीला संगमरमर का प्रेत चमक रहा था। सम्राट उसके पिता के लिए केवल एक प्रिय सेनापति था, जिसकी प्रशंसा की जाती है, जिसके लिए स्वयं को बलिदान किया जाता है; मारियस के लिए वह कुछ और था। वह फ्रांसीसी समूह का पूर्वनियोजित निर्माता था, जो ब्रह्मांड पर प्रभुत्व स्थापित करने में रोमन समूह का उत्तराधिकारी था। वह विनाश का एक विलक्षण वास्तुकार था, शारलेमेन, लुई XI, हेनरी IV, रिकेल्यू, लुई XIV और सार्वजनिक सुरक्षा समिति का उत्तराधिकारी था, निस्संदेह उसमें भी खामियां, दोष और यहां तक कि अपराध भी थे, क्योंकि वह एक इंसान था; लेकिन अपने दोषों में भव्य, अपनी खामियों में प्रतिभाशाली और अपने अपराधों में शक्तिशाली।

वह नियति द्वारा चुने गए व्यक्ति थे, जिन्होंने सभी राष्ट्रों को यह कहने पर विवश कर दिया: “महान राष्ट्र!” वह इससे भी कहीं बढ़कर थे, वह साक्षात फ्रांस के अवतार थे, जिन्होंने अपनी तलवार से यूरोप को और अपने प्रकाश से विश्व को विजय प्राप्त की। मारियस ने बोनापार्ट में उस चकाचौंध कर देने वाले साये को देखा जो हमेशा सीमा पर उदय होगा और भविष्य की रक्षा करेगा। निरंकुश, पर तानाशाह; एक गणतंत्र से उत्पन्न निरंकुश और एक क्रांति का

सार। नेपोलियन उनके लिए वही मानव-जनता बन गए, जैसे यीशु मसीह मानव-ईश्वर हैं।

यह स्पष्ट है कि किसी भी नए धर्मान्तरित व्यक्ति की तरह, धर्म परिवर्तन ने उन्हें मदहोश कर दिया, वे पूरी तरह से धर्म में लीन हो गए और हद से आगे बढ़ गए। उनका स्वभाव ही ऐसा था कि एक बार पतन की ओर बढ़ने पर उनके लिए गति बनाए रखना लगभग असंभव हो जाता था। तलवार के प्रति कट्टरता ने उन्हें जकड़ लिया और उनके मन में इस विचार के प्रति उत्साह को जटिल बना दिया। उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि प्रतिभा और अफरा-तफरी के साथ-साथ वे बल को भी ग्रहण कर रहे थे, यानी वे अपनी मूर्तिपूजा के दो हिस्सों में, एक ओर दिव्य तत्व और दूसरी ओर क्रूरता को स्थापित कर रहे थे। कई मायनों में, उन्होंने स्वयं को धोखा देने का प्रयास किया था। उन्होंने सब कुछ स्वीकार कर लिया। सत्य की राह पर चलते हुए गलती का सामना करने का एक तरीका होता है। उनमें एक प्रकार का उग्र विश्वास था जो हर बात को बिना सोचे-समझे स्वीकार कर लेता था। जिस नए मार्ग पर वे चल पड़े थे, उसमें पुराने शासन की गलतियों का आकलन करते समय, नेपोलियन की महिमा का मूल्यांकन करते समय, उन्होंने परिस्थितियों को नजरअंदाज कर दिया।

बहरहाल, एक बहुत बड़ा कदम उठाया गया था। जहाँ उन्होंने पहले राजशाही का पतन देखा था, वहीं अब उन्होंने फ्रांस का उदय देखा। उनका दृष्टिकोण बदल गया था। जो उनका पूर्व था, वह पश्चिम बन गया था। उन्होंने पूरी तरह से अपना रुख बदल लिया था।

ये सभी परिवर्तन उसके भीतर ही घटित हुए, और उसके परिवार को इस मामले की जरा भी भनक नहीं लगी।

जब इस रहस्यमय श्रम के दौरान, उन्होंने अपने पुराने बॉर्बन और कट्टरपंथी स्वरूप को पूरी तरह से त्याग दिया, जब उन्होंने अभिजात वर्ग, जैकोबाइट और राजशाहीवादी की छवि को छोड़ दिया, जब वे पूरी तरह से एक क्रांतिकारी, गहरे लोकतांत्रिक और गणतंत्रवादी बन गए, तो वे क्वाई डेस ओरफेव्रेस पर एक उत्कीर्णक के पास गए और इस नाम से सौ कार्ड छपवाने का आदेश दिया: "ले बैरन मारियस पोंटमर्सी।"

यह उसके भीतर हुए परिवर्तन का विशुद्ध तार्किक परिणाम मात्र था, एक ऐसा परिवर्तन जिसमें सब कुछ उसके पिता के इर्द-गिर्द घूमता था।

चूंकि वह किसी को नहीं जानता था और किसी कुली को अपने कार्ड नहीं दिखा सकता था, इसलिए उसने उन्हें अपनी जेब में रख लिया।

एक स्वाभाविक परिणाम स्वरूप, जैसे-जैसे वह अपने पिता, उनकी स्मृति और उन बातों के करीब आता गया जिनके लिए कर्नल ने पच्चीस साल पहले संघर्ष किया था, वह अपने दादा से दूर होता गया। हमने बहुत पहले ही कहा है कि एम. गिलनोर्मंड का स्वभाव उसे पसंद नहीं था। उन दोनों के बीच गंभीर युवक और चंचल बूढ़े के सभी विरोधाभास मौजूद थे। गेरोंटे की खुशी वेर्थर की उदासी को झकझोर कर रख देती थी। जब तक दोनों के राजनीतिक विचार और धारणाएँ एक जैसी थीं, मारियस एम. गिलनोर्मंड से एक पुल पर मिलने जैसा था। जब पुल गिर गया, तो एक खाई बन गई। और फिर, इन सबसे ऊपर, मारियस के मन में विद्रोह की अकल्पनीय भावनाएँ जागृत हुईं, जब उसने सोचा कि एम. गिलनोर्मंड ने ही मूर्खतापूर्ण कारणों से उसे कर्नल से बेरहमी से अलग कर दिया था, इस प्रकार पिता को बच्चे से और बच्चे को पिता से वंचित कर दिया था।

अपने पिता के प्रति दया भाव के कारण, मारियस लगभग अपने दादा के प्रति घृणा की भावना विकसित कर चुका था।

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, बाहरी तौर पर ऐसा कुछ भी नहीं दिखता था। बस वह धीरे-धीरे ठंडा होता जा रहा था; खाने के समय कम बोलता था और घर में कम ही नज़र आता था। जब उसकी चाची उसे इसके लिए डांटती थीं, तो वह बहुत ही विनम्रता से अपनी पढ़ाई, व्याख्यान, परीक्षा आदि का बहाना बना देता था। उसके दादाजी अपने अचूक निदान पर कभी नहीं डिगे: "प्यार में! मैं इसके बारे में सब जानता हूँ।"

समय-समय पर मारियस अनुपस्थित रहता था।

“वह इस तरह क्यों भड़क उठता है?” उसकी चाची ने कहा।

अपनी ऐसी ही एक छोटी यात्रा के दौरान, वह अपने पिता के आदेश का पालन करने के लिए मोंटफर्मेइल गया और वाटरलू के पुराने सार्जेंट, सराय मालिक थेनार्डियर से मिलने गया। थेनार्डियर असफल रहा, सराय बंद हो चुकी थी और

किसी को नहीं पता था कि उसका क्या हुआ। मारियस इस खोज में चार दिन तक घर से दूर रहा।
“वह बहुत ज्यादा बिगड़ता जा रहा है,” उसके दादा ने कहा।
उन्हें लगा कि उन्होंने देखा था कि उसने अपनी कमीज के नीचे, अपनी छाती पर कुछ पहन रखा था, जो एक काले रिबन से उसकी गर्दन से जुड़ा हुआ था।

VII. कुछ पेटीकोट

हमने लांसर का जिक्र किया है।

वह पिता की ओर से एम. गिलनोर्मंड के परपोते थे, जिन्होंने परिवार से दूर, घरेलू जीवन से अलग, एक सैन्य चौकी में जीवन व्यतीत किया। लेफ्टिनेंट थियोडुल गिलनोर्मंड एक कुशल अधिकारी बनने के लिए आवश्यक सभी गुणों से परिपूर्ण थे। उनकी कमर पतली थी, तलवार लहराने का उनका अंदाज़ विजयी था और वे अपनी मूंछों को एक खास अंदाज़ में घुमाते थे। वे पेरिस बहुत कम आते थे, इतनी कम कि मारियस ने उन्हें कभी देखा ही नहीं था। चचेरे भाई एक-दूसरे को केवल नाम से जानते थे। हमें लगता है कि हमने यह बताया है कि थियोडुल, चाची गिलनोर्मंड के प्रिय थे, जो उन्हें इसलिए पसंद करती थीं क्योंकि वे उन्हें देख नहीं पाती थीं। लोगों को न देखने से उनमें हर संभव गुण आंका जा सकता है।

एक सुबह, मैडमोजेल गिलनोर्मंड (वरिष्ठ) अपने अपार्टमेंट में लौटीं, उनकी शांति की सीमा के भीतर वे काफी परेशान थीं। मारियस ने अभी-अभी अपने दादाजी से एक छोटी यात्रा पर जाने की अनुमति मांगी थी और बताया था कि वह उसी शाम निकलेंगे। उनके दादाजी ने जवाब दिया, "जाओ!" और मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "देखो, वह फिर रात बाहर बिताने जा रहे हैं।" मैडमोजेल गिलनोर्मंड बहुत उलझन में अपने कमरे में गईं और सीढ़ियों पर उन्होंने कहा, "यह तो हद से ज्यादा है!" और फिर पूछा, "लेकिन वह जाते कहां हैं?" उन्हें किसी गुप्त प्रेम प्रसंग का आभास हुआ, किसी महिला के साथ मुलाकात, किसी रहस्य का, और वह इस मामले में दखल देने से नहीं हिचकिचातीं। किसी रहस्य का स्वाद चखना किसी घोटाले का पहला अनुभव लेने जैसा होता है; पवित्र आत्माएं इससे घृणा नहीं करतीं। कट्टरता के गुप्त कोनों में छिपे घोटालों को लेकर कुछ जिज्ञासा तो है ही।

इसलिए वह इतिहास सीखने की एक अस्पष्ट इच्छा का शिकार हो गई।

अपनी उस जिज्ञासा को शांत करने के लिए, जो उसे सामान्य से कुछ अधिक ही बेचैन कर रही थी, उसने अपनी कला का सहारा लिया और सूती कपड़े की एक के बाद

एक परत चढ़ाते हुए, साम्राज्य और पुनर्स्थापना काल की उन कढ़ाईयों में से एक पर झालरदार कढ़ाई करने लगी, जिनमें अनेक पहिए बने होते थे। काम भद्दा था, कारीगर चिड़चिड़ी। वह कई घंटों से यही कर रही थी कि दरवाजा खुला। मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने अपनी नाक ऊपर उठाई। लेफ्टिनेंट थियोडुल उसके सामने खड़े थे और उन्होंने विधिवत सलामी दी। वह खुशी से चिल्ला उठी। कोई बूढ़ा हो, कोई संस्कारी हो, कोई धर्मनिष्ठ हो, कोई चाची हो, लेकिन किसी सैनिक को अपने कमरे में आते देखना हमेशा सुखद होता है।
“तुम यहाँ हो, थियोडुल!” उसने हैरानी से कहा।
मैं शहर से होकर जा रहा हूँ, चाची।
"मुझे गले लगा लो।"
“अब शुरू करते हैं!” थियोडुल ने कहा।
और उसने उसे चूमा। आंटी गिलनोर्मंड अपनी लेखन मेज पर गईं और उसे खोला। “आप कम से कम एक सप्ताह तक हमारे साथ रहेंगे?”
“मैं आज शाम ही जा रहा हूँ, चाची।”
"यह संभव नहीं है!"
“गणितीय रूप से!”
"हे मेरे प्यारे थियोडुल, मैं तुमसे विनती करता हूँ, यहीं रहो।"
“मेरा दिल तो ‘हाँ’ कहता है, लेकिन मेरे आदेश ‘ना’ कहते हैं। मामला सीधा-सादा है। वे हमारी चौकी बदल रहे हैं; हम मेलुन में थे, अब हमें गैलोन में स्थानांतरित किया जा रहा है। पुरानी चौकी से नई चौकी तक जाने के लिए पेरिस से होकर गुजरना आवश्यक है। मैंने कहा: ‘मैं अपनी चाची से मिलने जा रहा हूँ’।”
"तुम्हारी परेशानी के बदले ये लो।"
और उसने उसके हाथ में दस लुई रख दिए।
"मेरी खुशी के लिए, आप कहना चाहती हैं, मेरी प्यारी चाची।"

थियोडुल ने उसे फिर से चूमा, और उसने उसकी वर्दी पर बनी कढ़ाई से अपनी गर्दन की कुछ त्वचा के छिलने का आनंद अनुभव किया।
"क्या आप अपनी रेजिमेंट के साथ घोड़े पर सवार होकर यात्रा कर रहे हैं?" उसने उससे पूछा।
“नहीं, चाची। मैं आपसे मिलना चाहती थी। मुझे विशेष अनुमति मिली है। मेरा नौकर मेरा घोड़ा ले जा रहा है; मैं निजी तौर पर यात्रा कर रही हूँ। और हाँ, मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ।”
"यह क्या है?"
"क्या मेरा चचेरा भाई मारियस पोंटमर्सी भी इसी तरह यात्रा कर रहा है?" "तुम्हें यह कैसे पता चला?" उसकी चाची ने अचानक उत्सुकता से भरते हुए कहा। "मेरे पहुंचने पर, मैं कूपे में अपनी सीट बुक कराने के लिए काउंटर पर गया।" "कुंआ?"
“एक यात्री पहले ही शाही होटल में सीट बुक कराने आ चुका था। मैंने कार्ड पर उसका नाम देखा।”
"क्या नाम है?"
“मारियस पोंटमर्सी।”
“बेशर्म!” उसकी चाची चिल्लाई। “अरे! तुम्हारा चचेरा भाई तुम्हारी तरह सीधा-सादा नहीं है। सोचो उसे रात भर वेश्यालय में गुजारनी पड़ेगी!”
"ठीक वैसे ही जैसे मैं करने जा रहा हूँ।"
लेकिन यह आपका कर्तव्य है; उसके मामले में, यह मनमानी है।
“बकवास!” थियोडुल ने कहा।
यहां मैडमोजेल गिलनोर्मंड सीनियर के मन में एक घटना घटी—उनके मन में एक विचार आया। अगर वह पुरुष होतीं, तो शायद अपना माथा पीट लेतीं। उन्होंने थियोडुल को संबोधित करते हुए कहा:—
क्या आपको पता है कि आपका चचेरा भाई आपको जानता है या नहीं?

“नहीं। मैंने उसे देखा है; लेकिन उसने कभी मेरी ओर ध्यान देने की जहमत नहीं उठाई।”
तो आप दोनों साथ में यात्रा करने वाले हैं?
“वह इंपीरियल में, मैं कूपे में।”
“यह लगन कहाँ तक जाती है?”
“एंडेलिस को।”
तो क्या मारियस वहीं जा रहा है?
“जब तक कि वह मेरी तरह रास्ते में न रुक जाए। मैं वर्नोन में उतरता हूँ, ताकि गैलोन जाने वाली शाखा बस पकड़ सकूँ। मुझे मारियस की यात्रा योजना के बारे में कुछ नहीं पता।”
“मारियस! कितना भद्दा नाम है! किसने सोचा होगा कि उसका नाम मारियस रख दें? जबकि कम से कम तुम्हारा नाम तो थियोडुल है।”
“मैं अल्फ्रेड कहलाना पसंद करूंगा,” अधिकारी ने कहा।
"सुनो, थियोडुल।"
मैं सुन रही हूँ, चाची।
"ध्यान देना।"
मैं ध्यान दे रहा हूँ।
"आप समझते हैं?"
"हाँ।"
“खैर, मारियस अनुपस्थित है!” "अरे! हाँ!"
वह यात्रा करता है।
आह! आह!
वह रात बाहर बिताता है।
"ओ ओ!"

हम यह जानना चाहेंगे कि इन सबके पीछे क्या रहस्य है।

थियोडुल ने कांसे के पुरुष के समान संयम से उत्तर दिया:

"किसी न किसी तरह का पेटीकोट।"

और उस आंतरिक हंसी के साथ, जो निश्चितता को दर्शाती है, उन्होंने आगे कहा:—

एक लड़की।

“यह तो स्पष्ट है,” उसकी चाची ने कहा, जिन्हें लगा कि वे एम. गिलनोर्मंड को बोल रही हैं, और उस शब्द 'फिलेट' को सुनकर उनका विश्वास और भी प्रबल हो गया, जिसे उनके परदादा और परपोते ने लगभग उसी तरह से दोहराया था। उन्होंने आगे कहा:—

“हमारी एक मदद कीजिए। मारियस का थोड़ा पीछा कीजिए। वो आपको नहीं जानता, इसलिए आसानी होगी। चूंकि वहाँ एक लड़की है, तो उससे मिलने की कोशिश कीजिए। आपको हमें पूरी कहानी लिखनी होगी। इससे उसके दादाजी का मनोरंजन होगा।”

थियोडुल को इस तरह की जासूसी में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी; लेकिन दस लुई की रकम से वह बहुत प्रभावित हुआ और उसे लगा कि इसमें आगे भी ऐसा ही कुछ करने का मौका है। उसने यह काम स्वीकार कर लिया और कहा: "जैसा आप चाहें, चाची।"

और उसने मन ही मन में कहा, "मैं यहाँ एक गृहिणी हूँ।"

मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने उन्हें गले लगाया।

“थेओडुल, तुम ऐसे मज़ाक करने वाले आदमी नहीं हो। तुम अनुशासन का पालन करते हो, तुम आदेशों के गुलाम हो, तुम नैतिकता और कर्तव्य के पक्के आदमी हो, और तुम किसी प्राणी को देखने के लिए अपने परिवार को नहीं छोड़ोगे।”

जब भाला चलाने वाले सैनिक की ईमानदारी की प्रशंसा की गई, तो उसने कार्टूश की तरह संतुष्टि भरी मुस्कान बनाई।

इस बातचीत के बाद वाली शाम को मारियस ने बिना किसी आशंका के अपना काम शुरू कर दिया। जहाँ तक देखने वाले की बात है, उसने सबसे पहले यही किया कि वह सो गया। उसकी नींद गहरी और सुकून भरी थी। आर्गस पूरी रात खर्राटे लेता रहा।

भोर होते ही, ट्रेन के संचालक ने चिल्लाकर कहा: “वर्नन! वर्नन की रिले! वर्नन जाने वाले यात्री!” और लेफ्टिनेंट थियोडुल जाग गए।

“अच्छा,” वह अभी भी आधी नींद में गुर्राया, “यहीं से मैं निकलूंगा।”

फिर, जागने के प्रभाव से जैसे-जैसे उसकी याददाश्त धीरे-धीरे साफ होती गई, उसे अपनी चाची, दस लुई और मारियस के कार्यों और गतिविधियों का वह विवरण याद आया जिसे उसने लिखने का जिम्मा लिया था। यह सुनकर उसे हंसी आ गई।

“शायद वह अब कोच में नहीं है,” उसने अपनी वर्दी की जैकेट के बटन लगाते हुए सोचा। “हो सकता है वह पॉइसी में रुका हो; हो सकता है वह ट्रिएल में रुका हो; अगर वह मेउलान में नहीं उतरा, तो हो सकता है वह मैंटेस में उतरा हो, या फिर रोलेबोइस में उतरा हो, या अगर वह पेसी तक नहीं गया, तो उसके पास एवरेउस में बाईं ओर मुड़ने या लारोश-गुयोन में दाईं ओर मुड़ने का विकल्प था। उसके पीछे भागो, चाची। उस भले आदमी को मैं क्या लिखूँ?”

उसी क्षण, शाही कार से उतरती हुई एक काली पतलून कूपे की खिड़की पर दिखाई दी।

“क्या यह मारियस हो सकता है?” लेफ्टिनेंट ने कहा।

वह मारियस था।

एक छोटी सी किसान लड़की, जो गाड़ी के अंत में लगे घोड़ों और पोस्टिलियनों से पूरी तरह उलझी हुई थी, यात्रियों को फूल दे रही थी। "अपनी महिलाओं को फूल दो!" वह चिल्लाई।

मारियस उसके पास गया और उसकी टोकरी में रखे सबसे बेहतरीन फूल खरीद लिए।

“अरे वाह,” थियोडुल ने कुँवारी से कूदते हुए कहा, “मेरी जिज्ञासा बढ़ गई है। आखिर वो ये फूल किसके लिए ले जा रहा है? इतने सुंदर गुलदस्ते के लिए वो औरत ज़रूर बहुत खूबसूरत होगी। मैं उसे देखना चाहता हूँ।”

और अब आदेशों का पालन करने के बजाय, व्यक्तिगत जिज्ञासा से प्रेरित होकर, उन कुत्तों की तरह जो अपने दम पर शिकार करते हैं, वह मारियस का पीछा करने के लिए निकल पड़ा।

मारियस ने थियोडुल पर कोई ध्यान नहीं दिया। सुंदर महिलाएं दल से नीचे उतर रही थीं; उसने उनकी ओर देखा तक नहीं। ऐसा लग रहा था मानो उसे अपने आसपास कुछ दिखाई ही न दे रहा हो।

“वह सचमुच गहरे प्यार में है!” थियोडुल ने सोचा।

मारियस ने चर्च की ओर कदम बढ़ाए।

“राजधानी,” थियोडुल ने मन ही मन कहा। “थोड़ी सी भव्यता से सजी मुलाकातें सबसे अच्छी होती हैं। भगवान के सिर के ऊपर से गुजरने वाली निगाहों से ज्यादा खूबसूरत कुछ नहीं होता।”

गिरजाघर पहुँचने पर मारियस उसमें प्रवेश नहीं किया, बल्कि एप्स के किनारे से होते हुए एप्स के एक कोने के पीछे गायब हो गया।

“मिलने का समय बाहर तय है,” थियोडुल ने कहा। “चलो उस लड़की को देख लेते हैं।”

और वह अपने बूटों की नोक पर आगे बढ़ते हुए उस कोने की ओर बढ़ा जहाँ मारियस मुड़ा था।

वहां पहुंचकर वह आश्चर्यचकित होकर रुक गया।

मैरियस माथे पर हाथ रखे एक कब्र पर घास में घुटनों के बल बैठा था। उसने अपना गुलदस्ता वहीं बिखेर दिया था। कब्र के अंतिम छोर पर, सिर के आकार के एक छोटे से उभार पर, काले रंग की लकड़ी का एक क्रॉस बना था जिस पर सफेद अक्षरों में यह नाम लिखा था: कर्नल बैरन पोंटमर्सी। मैरियस के सिसकने की आवाज सुनाई दे रही थी।

वह "लड़की" एक कब्र थी।

VIII. ग्रेनाइट के मुकाबले संगमरमर

पेरिस से अनुपस्थित रहने के पहले अवसर पर मारियस यहीं आया था। जब भी एम. गिलनोर्मंड ने कहा था, "वह बाहर सो रहा है," तब भी वह यहीं आया था।

लेफ्टिनेंट थियोडुल इस अप्रत्याशित समाधि से बुरी तरह विचलित हो गए; उन्हें एक अजीब और अप्रिय अनुभूति हुई, जिसका वे विश्लेषण करने में असमर्थ थे, और जो समाधि के प्रति सम्मान और कर्नल के प्रति सम्मान का मिश्रण थी। वे मारियस को कब्रिस्तान में अकेला छोड़कर पीछे हट गए, और इस वापसी में एक अनुशासन था। मृत्यु उनके सामने बड़े-बड़े कवच के साथ प्रकट हुई, और उन्होंने लगभग उसे सैन्य सलामी दे दी। अपनी चाची को क्या लिखें, यह न जानते हुए, उन्होंने कुछ भी न लिखने का फैसला किया; और यह संभव है कि थियोडुल द्वारा मारियस के प्रेम प्रसंगों के बारे में की गई खोज का कोई परिणाम न निकलता, यदि संयोगवश होने वाली उन रहस्यमय घटनाओं में से एक के कारण, वर्नोन की घटना का पेरिस में लगभग तुरंत ही प्रतिध्वनित न हुआ होता।

मारियस तीसरे दिन सुबह के मध्य में वर्नोन से लौटा, अपने दादा के दरवाजे पर उतरा, और दो रातों की कड़ी मेहनत से थका हुआ और तैराकी स्कूल में एक घंटे की नींद की कमी को पूरा करने की आवश्यकता महसूस करते हुए, वह तेजी से अपने कमरे में गया, बस इतना ही समय लिया कि अपना यात्रा कोट और गले में पहनी हुई काली रिबन उतार दे, और स्नान करने चला गया।

एम. गिलनोर्मंड, जो सभी स्वस्थ बुजुर्गों की तरह समय से पहले उठ गए थे, ने उनके आने की आवाज सुनी और अपनी वृद्ध टांगों की अनुमति के अनुसार जितनी जल्दी हो सके, ऊपरी मंजिल की सीढ़ियाँ चढ़ गए जहाँ मारियस रहता था, ताकि उसे गले लगा सकें, उससे पूछताछ कर सकें और पता लगा सकें कि वह कहाँ था।

लेकिन युवक को नीचे उतरने में उतना समय नहीं लगा जितना बूढ़े व्यक्ति को ऊपर चढ़ने में लगा था, और जब फादर गिलनोर्मंड अटारी में दाखिल हुए, तो मारियस वहां नहीं था।

बिस्तर में कोई हलचल नहीं हुई थी, और बिस्तर पर ओवरकोट और काला रिबन फैले हुए थे, लेकिन अकड़कर नहीं।

“मुझे यह ज्यादा पसंद है,” एम. गिलनोर्मंड ने कहा।

और कुछ ही क्षणों बाद, उन्होंने सैलून में प्रवेश किया, जहाँ मैडमोजेल गिलनोर्मंड पहले से ही बैठी हुई थीं और व्यस्तता से अपने कार्टव्हील की कढ़ाई कर रही थीं।

प्रवेश एक शानदार विजयपूर्ण प्रवेश था।

एम. गिलनोर्मंड ने एक हाथ में ओवरकोट और दूसरे हाथ में गले का रिबन पकड़ा हुआ था और कहा:—

“जीत! हम रहस्य को सुलझाने ही वाले हैं! हम छोटी से छोटी बात का पता लगाने वाले हैं; हम अपने धूर्त मित्र के दुराचारों को उजागर करने वाले हैं! यहीं पर हमें वह प्रेम कहानी मिल गई है। मेरे पास उसका चित्र है!”

दरअसल, एक मेडलियन पोर्ट्रेट से मिलती-जुलती काले रंग की शग्रीन की एक पेटी रिबन से लटकी हुई थी।

उस बूढ़े व्यक्ति ने उस डिब्बे को उठाया और उसे खोले बिना कुछ देर तक उसे देखता रहा, ठीक उसी आनंद, उल्लास और क्रोध के भाव से, जैसे कोई गरीब भूखा व्यक्ति अपने सामने से गुजरते हुए एक शानदार भोजन को देखता है जो उसके लिए नहीं है।

“यह तो स्पष्ट रूप से एक चित्र है। मैं ऐसी चीजों के बारे में सब जानता हूँ। यह दिल को कोमल स्पर्श देता है। ये कितने मूर्खतापूर्ण हैं! शायद कोई भयानक डरावनी चीज होगी जो हमें कंपकंपा देगी! आजकल के नौजवानों का स्वाद कितना खराब है!”

“देखते हैं, पिताजी,” बूढ़ी अविवाहित महिला ने कहा।

स्प्रिंग के दबाव से डिब्बा खुल गया। उसमें उन्हें एक सावधानीपूर्वक मोड़ा हुआ कागज के अलावा कुछ नहीं मिला।

“एक ही चीज़ से दूसरी चीज़ तक,” एम. गिलनोर्मंड ने खिलखिलाते हुए कहा। “मैं जानता हूँ कि यह क्या है। एक प्रेम पत्र।”

“अरे! चलो इसे पढ़ते हैं!” चाची ने कहा।

और उसने अपना चश्मा पहन लिया। उसने कागज़ खोला और उसमें निम्नलिखित लिखा था:—
मेरे बेटे के लिए।
सम्राट ने मुझे वाटरलू के युद्धक्षेत्र में बैरन की उपाधि दी थी। चूंकि पुनर्स्थापना मेरे इस अधिकार पर विवाद कर रही है, जिसे मैंने अपने रक्त से अर्जित किया है, इसलिए मेरा पुत्र इसे ग्रहण करेगा और धारण करेगा। वह इसके योग्य होगा, यह तो निश्चित है।
पिता और पुत्री की भावनाओं का वर्णन नहीं किया जा सकता। वे मानो किसी मृत आत्मा की साँस से कंपकंपा उठे। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा।
एम. गिलनोर्मंड ने धीमी आवाज़ में और मानो स्वयं से बात करते हुए कहा:
"यह हत्यारे की लिखावट है।"
चाची ने कागज की जांच की, उसे हर दिशा में घुमाया और फिर उसे वापस उसके डिब्बे में रख दिया।
उसी क्षण, नीले कागज में लिपटा हुआ एक छोटा सा आयताकार पैकेट, ओवरकोट की एक जेब से गिर गया। मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने उसे उठाया और नीले कागज को खोला। उसमें मारियस के सौ कार्ड थे। उसने उनमें से एक कार्ड एम. गिलनोर्मंड को दिया, जिन्होंने पढ़ा: "ले बैरन मारियस पोंटमर्सी।"
बूढ़े आदमी ने घंटी बजाई। निकोलेट आई। एम. गिलनोर्मंड ने रिबन, केस और कोट उठाया, उन सबको कमरे के बीचोंबीच फर्श पर फेंक दिया और कहा:—
"इन बेकार चीजों को यहां से ले जाओ।"
एक पूरा घंटा घोर सन्नाटे में बीत गया। बूढ़ा आदमी और बूढ़ी अविवाहित महिला एक-दूसरे की ओर पीठ करके बैठे थे और संभवतः दोनों अपने-अपने मन में एक ही बात सोच रहे थे।
इस घंटे के समाप्त होने पर, आंटी गिलनोर्मंड ने कहा: —“यह तो बड़ी अजीब स्थिति है!”
कुछ क्षण बाद, मारियस प्रकट हुआ। वह अंदर आया। दहलीज पार करने से पहले ही उसने अपने दादाजी को अपने ही कार्डों में से एक हाथ में पकड़े हुए देखा, और

उसे देखते ही दादाजी ने अपने बुर्जुआ और घमंडी मुस्कान के साथ कहा, जो कुछ हद तक कुचलने वाला था:—

वाह! वाह! वाह! वाह! वाह! तो अब आप बैरन बन गए हैं। मैं आपको बधाई देता हूँ। इसका क्या मतलब है?

मारियस का चेहरा थोड़ा लाल हो गया और उसने उत्तर दिया:—

इसका मतलब है कि मैं अपने पिता का पुत्र हूँ।

एम. गिलनोर्मंड ने हंसना बंद कर दिया और कठोर स्वर में कहा:—

"मैं तुम्हारा बाप हूँ।"

"मेरे पिता," मारियस ने झुकी हुई निगाहों और गंभीर भाव से जवाब दिया, "एक विनम्र और वीर व्यक्ति थे, जिन्होंने गणतंत्र और फ्रांस की गौरवशाली सेवा की, जो मानव इतिहास के सबसे महान स्तंभों में से एक थे, जिन्होंने पच्चीस वर्षों तक छर्रों और गोलियों के बीच, दिन में बर्फ और कीचड़ में, रात में बारिश में डेरा डाला, जिन्होंने दो झंडे फहराए, जिन्हें बीस घाव लगे, जो गुमनाम और परित्यक्त होकर मरे, और जिन्होंने केवल एक ही गलती की, और वह थी दो कृतघ्नों, अपने देश और मुझसे अत्यधिक प्रेम करना।"

यह सब एम. गिलनोर्मंड के लिए असहनीय था। "गणतंत्र" शब्द सुनते ही वे उठ खड़े हुए, या यूँ कहें कि उछल पड़े। मारियस के हर शब्द ने उस बूढ़े राजभक्त के चेहरे पर ऐसा प्रभाव डाला जैसे भट्टी से निकलती हवा जलती हुई मशाल पर पड़ती है। उनका चेहरा पहले लाल, फिर बैंगनी और फिर आग की लपटों जैसा चमक उठा।

“मारियस!” वह चिल्लाया। “घिनौने बच्चे! मुझे नहीं पता कि तुम्हारा पिता कौन था! मैं जानना भी नहीं चाहता! मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता, और मैं उसे जानता भी नहीं! लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि उन सब में बदमाश ही बदमाश थे! वे सब धूर्त, हत्यारे, लुटेरे, चोर थे! मैं कहता हूँ सब! मैं कहता हूँ सब! मैं किसी को नहीं जानता! मैं कहता हूँ सब! क्या तुम मुझे सुन रहे हो, मारियस! देखो, तुम मेरे चप्पल से ज़्यादा बैरन नहीं हो! वे सब रोबेस्पियर की सेवा में डाकू थे! बोनापार्ट की सेवा करने वाले सभी लुटेरे थे! वे सब गद्दार थे जिन्होंने अपने जायज़ राजा को धोखा दिया, धोखा दिया, धोखा दिया!

वे सब कायर थे जो वाटरलू में प्रशियाई और अंग्रेज़ों के सामने भाग गए! यही मैं जानता हूँ! क्या तुम्हारा पिता भी उस श्रेणी में आता है, मुझे नहीं पता! मुझे इसके लिए खेद है, और भी बुरा, तुम्हारा विनम्र सेवक!”

मारियस उग्र था और एम. गिलनोर्मंड उसे शांत करने वाले थे। मारियस का शरीर थरथरा रहा था, उसे नहीं पता था कि आगे क्या होगा, उसका दिमाग आग की तरह जल रहा था। वह उस पुजारी की तरह था जो अपने सारे पवित्र प्रसाद को हवा में उड़ते हुए देखता है, उस फकीर की तरह जो राहगीर को अपनी मूर्ति पर थूकते हुए देखता है। ऐसा हो ही नहीं सकता था कि ये बातें उसकी मौजूदगी में कही गई हों। वह क्या करता? उसके पिता को उसकी मौजूदगी में पैरों तले रौंदा गया था, लेकिन किसने रौंदा था? उसके दादा ने। वह एक का बदला दूसरे को नाराज़ किए बिना कैसे लेता? उसके लिए अपने दादा का अपमान करना नामुमकिन था और अपने पिता का बदला लिए बिना रहना भी उतना ही नामुमकिन था। एक तरफ पवित्र कब्र थी, दूसरी तरफ सफेद बाल।

वह कुछ क्षणों तक वहीं खड़ा रहा, मानो नशे में धुत हो, उसके दिमाग में विचारों का बवंडर चल रहा था; फिर उसने अपनी आँखें उठाईं, अपने दादाजी को टकटकी लगाकर देखा और गरजती हुई आवाज में चिल्लाया:

“बोर्बोन वंश का नाश हो, और उस बड़े सूअर लुई XVIII का भी!”

लुई XVIII की मृत्यु को चार साल हो चुके थे; लेकिन उनके लिए यह सब एक जैसा ही था।

लाल रंग से लाल हो चुका वह बूढ़ा व्यक्ति अपने बालों से भी अधिक सफेद हो गया। वह चिमनी पर रखी एम. ले ड्यूक डी बेरी की प्रतिमा की ओर मुड़ा और एक विशेष गरिमा के साथ प्रणाम किया। फिर वह धीरे-धीरे और चुपचाप दो बार चिमनी से खिड़की तक और खिड़की से चिमनी तक चक्कर लगाता रहा, कमरे की पूरी लंबाई तय करता रहा, और पॉलिश किए हुए फर्श को इस तरह चरमराया जैसे कोई पत्थर की मूर्ति चल रही हो।

अपनी दूसरी बारी में, वह अपनी बेटी की ओर झुका, जो एक पुराने जमाने के भेड़िये की तरह अचंभित भाव से इस मुठभेड़ को देख रही थी, और लगभग शांत मुस्कान के साथ उससे कहा: "इस सज्जन जैसे बैरन और मेरे जैसे बुर्जुआ एक ही छत के नीचे नहीं रह सकते।"

और अचानक, पीला पड़ा हुआ, कांपता हुआ, भयानक रूप से खड़ा होकर, क्रोध की भयंकर चमक से उसका माथा और भी ऊंचा हो गया, उसने मारियस की ओर अपना हाथ बढ़ाया और उसे चिल्लाकर कहा:—

"बंद हो!"

मारियस घर से निकल गया।

अगले दिन, एम. गिलनोर्मंड ने अपनी बेटी से कहा:

"तुम उस खून पीने वाले को हर छह महीने में साठ पिस्तौल भेजोगे, और तुम उसका नाम मुझसे कभी नहीं लोगे।"

अपने अंदर उमड़ रहे अपार क्रोध को निकालने के लिए, और यह न जानते हुए कि इसका क्या किया जाए, उसने अगले तीन महीनों तक अपनी बेटी को "तू" के बजाय "तुम" कहकर संबोधित करना जारी रखा।

मारियस गुस्से से आग बबूला हो गया था। यह मानना पड़ेगा कि एक घटना ने उसके गुस्से को और भी भड़का दिया था। घरेलू झगड़ों में अक्सर ऐसी छोटी-मोटी घटनाएं शामिल होती हैं। ये घटनाएं शिकायतों को बढ़ा देती हैं, हालांकि असल में इनसे अन्याय नहीं बढ़ता। अपने दादाजी के आदेश पर मारियस के कपड़े जल्दी से उसके कमरे में ले जाते समय, निकोलेट ने अनजाने में, शायद अंधेरी अटारी की सीढ़ियों पर, कर्नल द्वारा लिखे गए कागज़ वाले काले शग्रीन के उस मेडल को गिरा दिया था। बाद में न तो कागज़ मिला और न ही मेडल। मारियस को पूरा यकीन था कि "मिस्टर गिलनोर्मंड"—उस दिन से उसने कभी भी उन्हें इसी नाम से नहीं पुकारा—ने "उसके पिता की वसीयत" को आग में फेंक दिया था। उसे कर्नल की लिखी कुछ पंक्तियाँ ज़बानी याद थीं, इसलिए कुछ भी खोया नहीं था। लेकिन वह कागज, वह लेख, वह पवित्र अवशेष—वह सब उसका हृदय था। उसका क्या हुआ था?

मारियस बिना बताए ही निकल पड़ा कि वह कहाँ जा रहा है, और बिना यह जाने कि वह कहाँ जा रहा है। उसके पास तीस फ्रैंक, उसकी घड़ी और कुछ कपड़े एक थैले में थे। वह एक तांगा में सवार हुआ, उसे घंटे के हिसाब से किराए पर लिया और बेतरतीब ढंग से लैटिन क्वार्टर की ओर चल पड़ा।

मारियस का क्या होगा?

पुस्तक **IV.** ए.बी .सी . के मित्र

I. एक ऐसा समूह जो ऐतिहासिक बनने से बाल-बाल चूक गया

उस दौर में, जो देखने में उदासीन लग रहा था, एक तरह की क्रांतिकारी हलचल अस्पष्ट रूप से व्याप्त थी। 1989 और 1993 की गहराइयों से निकली साँसें हवा में घुल रही थीं। युवावस्था, पाठक क्षमा करें, अपने स्वरूप परिवर्तन के कगार पर थी। लोग लगभग अनजाने में ही, युग के प्रवाह के साथ रूपांतरित हो रहे थे। कम्पास की सुई की तरह, आत्माओं में भी परिवर्तन होता है। प्रत्येक व्यक्ति वह कदम आगे बढ़ा रहा था जो उसे उठाना ही था। राजशाही समर्थक उदारवादी बन रहे थे, उदारवादी लोकतांत्रिक बन रहे थे। यह एक ऐसी लहर थी जिसमें हजारों उतार-चढ़ाव थे; उतार-चढ़ाव की विशेषता विभिन्न विचारों का मिश्रण है; इसीलिए अत्यंत विलक्षण विचारों का संगम था; लोग नेपोलियन और स्वतंत्रता दोनों की पूजा करते थे। हम यहाँ इतिहास रच रहे हैं। ये उस काल के भ्रम थे। मत विभिन्न चरणों से गुजरते हैं। वोल्टेयर का राजवाद, एक विचित्र किस्म, का एक उतना ही विलक्षण परिणाम था, बोनापार्टवादी उदारवाद।

कुछ अन्य विचारधाराएँ अधिक गंभीर थीं। उस दिशा में, उन्होंने सिद्धांतों का प्रचार किया, उन्होंने सही मार्ग को अपनाया। वे परम सत्य के प्रति उत्साही हो गए, उन्होंने अनंत अनुभूतियों की झलक पाई; परम सत्य, अपनी कठोरता से ही, आत्माओं को आकाश की ओर प्रेरित करता है और उन्हें असीम अंतरिक्ष में प्रवाहित होने का अवसर देता है। सपनों को साकार करने के लिए हठधर्मिता से बढ़कर कुछ नहीं है। और भविष्य को जन्म देने के लिए सपनों से बढ़कर कुछ नहीं है। आज का आदर्शलोक, कल की वास्तविकता।

इन उन्नत विचारों का दोहरा आधार था। एक रहस्यमय शुरुआत ने "स्थापित व्यवस्था" को चुनौती दी, जो संदेहपूर्ण और कपटपूर्ण थी। एक ऐसा संकेत जो उच्चतम स्तर की क्रांतिकारी थी। सत्ता के दूसरे विचार खदान में जनता के दूसरे विचारों से टकराते हैं। विद्रोहों का पनपना तख्तापलट की पूर्व नियोजित योजनाओं का जवाब देता है।

फ्रांस में अभी तक जर्मन तुगेंडबंड और इतालवी कार्बोनारिज्म जैसे विशाल अंतर्निहित संगठन मौजूद नहीं थे; लेकिन कहीं-कहीं कुछ गुप्त संगठन पनप रहे थे, जिनसे नए अंकुर फूट रहे थे। ऐक्स में कौगॉर्ड की रूपरेखा तैयार की जा रही थी; पेरिस में, इसी तरह के अन्य संगठनों के साथ-साथ, ए.बी.सी. के मित्रों का समाज भी मौजूद था।

ये एबीसी के मित्र कौन थे? एक ऐसा समाज जिसका उद्देश्य बच्चों को शिक्षित करना था, लेकिन वास्तव में मनुष्य का उत्थान करना था।

उन्होंने स्वयं को ए.बी.सी. के मित्र घोषित किया—यानी अबैसे—यानी पतित जनता। वे जनता का उत्थान करना चाहते थे। यह एक ऐसा व्यंग्य था जिस पर मुस्कुराना अनुचित होगा। राजनीति में व्यंग्य कभी-कभी गंभीर कारक होते हैं; उदाहरण के लिए, कैस्ट्रेटस एड कैस्ट्रा, जिसने नार्सिस की सेना को सेनापति बना दिया; उदाहरण के लिए: बारबारी एट बारबेरिनी; उदाहरण के लिए: तू एस पेट्रस एट सुपर हैनक पेट्रम, इत्यादि।

एबीसी के मित्रों की संख्या सीमित थी; यह एक प्रारंभिक अवस्था में स्थित गुप्त संगठन था, जिसे हम लगभग एक गुट कह सकते हैं, यदि गुट नायकों में परिणत होते। वे पेरिस में दो स्थानों पर एकत्रित होते थे: मछली बाजार के पास, कोरिनथे नामक एक शराब की दुकान में, जिसके बारे में आगे विस्तार से बताया जाएगा, और पैंथियन के पास, सेंट-मिशेल स्ट्रीट पर स्थित एक छोटे से कैफे में, जिसे अब ध्वस्त कर दिया गया है; इनमें से पहला बैठक स्थल श्रमिकों के करीब था, जबकि दूसरा छात्रों के।

फ्रेंड्स ऑफ द ए.बी.सी. की सभाएँ आमतौर पर कैफे मुसैन के एक पिछले कमरे में आयोजित की जाती थीं।

यह हॉल, जो कैफे से काफी दूर था और एक बहुत लंबे गलियारे से जुड़ा हुआ था, उसमें दो खिड़कियाँ थीं और एक छोटा सा निकास द्वार था जहाँ से छोटी सी गली 'रू डेस ग्रेस' की ओर एक निजी सीढ़ी जाती थी। वहाँ वे सिगरेट पीते, शराब पीते, जुआ खेलते और हँसते थे। वहाँ वे हर बात पर ऊँची आवाज़ में और कुछ बातों पर दबी आवाज़ में चर्चा करते थे। दीवार पर गणतंत्र काल के फ्रांस का एक पुराना नक्शा टंगा हुआ था—जो किसी पुलिस एजेंट के मन में संदेह पैदा करने के लिए काफी था।

एबीसी के मित्रों में से अधिकांश छात्र थे, जिनके श्रमिक वर्ग के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध थे। यहाँ प्रमुख लोगों के नाम दिए गए हैं। ये किसी न किसी रूप में इतिहास का हिस्सा हैं: एनजोलरास, कॉम्बेफेरे, जीन प्रोवेर, फ्यूली, कौरफेयरैक, बहोरेल, लेस्गल या लैगल, जोली, ग्रांटेयर।

इन युवकों ने मित्रता के बंधन से एक प्रकार का परिवार बना लिया था। लाइगल को छोड़कर बाकी सभी दक्षिण से थे।

यह एक असाधारण समूह था। यह हमारे पीछे छिपी अदृश्य गहराइयों में विलीन हो गया। इस नाटक के जिस मोड़ पर हम अब पहुँच चुके हैं, वहाँ पाठक के सामने इन युवाओं के दुखद अंत की छाया में डूबने से पहले, उन पर एक प्रकाश डालना शायद अनुचित नहीं होगा।

एनजोलरास, जिसका नाम हमने सबसे पहले लिया है—पाठक को बाद में पता चलेगा कि क्यों—एकमात्र पुत्र और धनी था।

एनजोलरास एक आकर्षक युवक था, जो भयानक रूप धारण करने में सक्षम था। वह देवदूत की तरह सुंदर था। वह एक क्रूर एंटिनस था। उसकी निगाहों में व्याप्त गहन चिंतन को देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानो वह अपने किसी पूर्व जन्म में क्रांतिकारी प्रलय से गुजर चुका हो। वह उस परंपरा को इस प्रकार धारण किए हुए था मानो वह उसका प्रत्यक्षदर्शी रहा हो। वह उस महान घटनाक्रम के हर छोटे से छोटे विवरण से भलीभांति परिचित था। एक पादरी जैसा और युद्धप्रिय स्वभाव, एक युवक में यह एक विलक्षण गुण था। वह एक अनुष्ठानिक पुजारी और एक योद्धा था; तात्कालिक दृष्टि से, लोकतंत्र का सिपाही; समकालीन आंदोलन से ऊपर, आदर्श का पुजारी। उसकी आँखें गहरी थीं, पलकें थोड़ी लाल थीं, उसका निचला होंठ मोटा था और आसानी से तिरस्कारपूर्ण हो जाता था, उसका माथा ऊँचा था। चेहरे पर ऊँचा माथा किसी दृश्य में विशाल क्षितिज के समान होता है। इस शताब्दी के आरंभ और पिछली शताब्दी के अंत के कुछ ऐसे युवकों की तरह, जो कम उम्र में ही प्रसिद्ध हो गए थे, वह भी अत्यधिक युवावस्था से संपन्न थे और एक युवती की तरह सुंदर थे, हालांकि कभी-कभी उनका चेहरा पीला पड़ जाता था। एक पुरुष होते हुए भी, वह एक बच्चे की तरह लगते थे। उनकी 22 वर्ष की आयु सत्रह वर्ष की ही प्रतीत होती थी; वह गंभीर थे, ऐसा प्रतीत नहीं होता था मानो उन्हें इस बात का ज्ञान ही न हो कि इस संसार में स्त्री नाम की कोई चीज भी है। उनकी एक ही प्रबल इच्छा थी—अधिकार; एक ही विचार—बाधा को दूर

करना। माउंट एवेंटाइन पर, वह ग्रैकस होते; सम्मेलन में, वह सेंट-जस्ट होते। उन्होंने गुलाबों को शायद ही देखा हो, उन्होंने वसंत ऋतु की उपेक्षा की, उन्होंने पक्षियों के चहचहाने को अनसुना कर दिया; एवडने का नग्न गला उन्हें उतना ही अविचलित करता जितना अरिस्टोजिटन को; वह, हारमोडियस की तरह, फूलों को तलवार छुपाने के अलावा किसी काम का नहीं समझते थे। वह अपने सुखों के प्रति संयमी थे। गणतंत्र के अलावा हर चीज के सामने वह पवित्रता से अपनी दृष्टि झुका लेते थे। वह स्वतंत्रता के सच्चे प्रेमी थे। उनका भाषण कठोर प्रेरणा से भरा था, और उसमें भजन जैसी उमंग थी। वे आत्मा के अप्रत्याशित विस्फोटों के अधीन थे। उनके साथ प्रेम संबंध बनाने की हिम्मत करने वाले का बुरा हाल होता! यदि प्लेस कैम्ब्रे या रू सेंट-जीन-डी-ब्यूवेस की कोई भी युवती, कॉलेज से भागे हुए उस युवक का चेहरा, उस सेवक का हावभाव, उसकी लंबी, सुनहरी पलकें, उसकी नीली आँखें, हवा में लहराते बाल, उसके गुलाबी गाल, उसके ताज़े होंठ, उसके सुंदर दाँत देखकर, उस संपूर्ण सौंदर्य के प्रति आकर्षित हो जाती, और एनजोलरास पर अपनी सुंदरता आज़माती, तो एक चौंका देने वाली और भयानक नज़र उसे तुरंत खाई में गिरा देती, और उसे सिखा देती कि यहेजकेल के शक्तिशाली देवदूत को ब्यूमार्कैस के वीर चेरुबिनो से भ्रमित न करे।

क्रांति के तर्क का प्रतिनिधित्व करने वाले एनजोलरास के साथ-साथ, कॉम्बेफेरे ने इसके दर्शन का प्रतिनिधित्व किया। क्रांति के तर्क और उसके दर्शन में यह अंतर निहित है कि इसका तर्क युद्ध में परिणत हो सकता है, जबकि इसका दर्शन केवल शांति में परिणत हो सकता है। कॉम्बेफेरे ने एनजोलरास के विचारों को पूरक और संशोधित किया। वे कम ऊंचे विचारों वाले थे, लेकिन व्यापक दृष्टिकोण वाले थे। वे सभी के मन में व्यापक विचारों के सिद्धांतों को समाहित करना चाहते थे: उन्होंने कहा: "क्रांति, लेकिन सभ्यता;" और पर्वत शिखर के चारों ओर उन्होंने नीले आकाश का एक विशाल दृश्य प्रस्तुत किया। क्रांति एनजोलरास की तुलना में कॉम्बेफेरे के साथ अधिक सहजता से आगे बढ़ सकती थी। एनजोलरास ने इसके दैवीय अधिकार को व्यक्त किया, और कॉम्बेफेरे ने इसके प्राकृतिक अधिकार को। पहले ने स्वयं को रोबेस्पियर से जोड़ा; दूसरे ने स्वयं को कोंडोरसेट तक सीमित रखा। कॉम्बेफेरे ने एनजोलरास की तुलना में अधिक विश्व के लोगों का जीवन जिया। यदि इन दोनों युवकों को इतिहास में स्थान प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त होता, तो एक

न्यायप्रिय और दूसरा बुद्धिमान व्यक्ति होता। एनजोलरास अधिक पौरुषी था, कॉम्बेफेरे अधिक मानवीय। होमो और वीर, यही उनके भिन्न-भिन्न रंगों का सटीक प्रभाव था। कॉम्बेफेरे उतना ही सौम्य था जितना एनजोलरास अपने स्वाभाविक श्वेत रंग के कारण कठोर था। उसे "नागरिक" शब्द पसंद था, लेकिन वह "मनुष्य" शब्द को अधिक पसंद करता था। वह खुशी-खुशी स्पेनिश लोगों की तरह "होम्ब्रे" कह सकता था। वह सब कुछ पढ़ता था, थिएटर जाता था, सार्वजनिक व्याख्यानों के पाठ्यक्रमों में भाग लेता था, अरागो से प्रकाश के ध्रुवीकरण के बारे में सीखा, और उस पाठ के प्रति उत्साहित हो गया जिसमें जियोफ्रॉय सेंट-हिलैरे ने बाहरी और आंतरिक कैरोटिड धमनी के दोहरे कार्य की व्याख्या की थी, एक जो चेहरे का निर्माण करती है और दूसरी जो मस्तिष्क का निर्माण करती है; वह वर्तमान घटनाओं से अवगत रहते थे, विज्ञान का चरण दर चरण अनुसरण करते थे, सेंट-साइमन की तुलना फोरियर से करते थे, चित्रलिपि को समझते थे, मिले हुए कंकड़ को तोड़कर भूविज्ञान पर तर्क करते थे, स्मृति से रेशम के कीड़े का चित्र बनाते थे, अकादमी के शब्दकोश में त्रुटिपूर्ण फ्रांसीसी शब्दों को इंगित करते थे, पुइसेगुर और डेलेउज़ का अध्ययन करते थे, किसी भी बात की पुष्टि नहीं करते थे, चमत्कारों की भी नहीं; किसी भी बात से इनकार नहीं करते थे, भूतों से भी नहीं; मॉनिटर की फाइलों को पलटते थे और चिंतन करते थे। उन्होंने घोषणा की कि भविष्य शिक्षक के हाथों में है और स्वयं को शैक्षिक प्रश्नों में व्यस्त रखा। उनकी इच्छा थी कि समाज नैतिक और बौद्धिक स्तर को ऊपर उठाने, विज्ञान को गढ़ने, विचारों को प्रसारित करने और युवाओं के मन को विकसित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। उन्हें भय था कि पद्धति की वर्तमान दरिद्रता, साहित्यिक दृष्टि से दो-तीन शताब्दियों तक सीमित क्लासिक साहित्य की तुच्छता, आधिकारिक विद्वानों का अत्याचारी हठधर्मिता, विद्वतापूर्ण पूर्वाग्रह और दिनचर्या कहीं हमारे कॉलेजों को कृत्रिम सीप के बिस्तरों में परिवर्तित न कर दें। वह विद्वान, शुद्धतावादी, सटीक, पॉलिटेक्निक के स्नातक, गहन अध्ययनशील और साथ ही साथ विचारशील थे, "यहाँ तक कि काल्पनिक अवधारणाओं" के बारे में भी, जैसा कि उनके मित्र कहते थे। वे सभी सपनों, रेलमार्गों, शल्य चिकित्सा में पीड़ा के दमन, अंधेरे कक्ष में छवियों को स्थिर करने, विद्युत टेलीग्राफ और गुब्बारों के संचालन में विश्वास करते थे। इसके अलावा, अंधविश्वास, निरंकुशता और पूर्वाग्रह द्वारा हर दिशा में मानव मन के विरुद्ध खड़ी की

गई दीवारों से वे अधिक चिंतित नहीं थे। वे उन लोगों में से थे जो मानते थे कि विज्ञान अंततः स्थिति को बदल देगा। एनजोलरास एक प्रमुख थे, कॉम्बेफेरे एक मार्गदर्शक थे। एक के नेतृत्व में लड़ना और दूसरे के पीछे चलना दोनों ही सुखद अनुभव होता। ऐसा नहीं था कि कॉम्बेफेरे लड़ने में सक्षम नहीं थे, उन्होंने किसी भी बाधा से आमने-सामने की लड़ाई लड़ने और उस पर पूरी ताकत से और विस्फोटक रूप से हमला करने से इनकार नहीं किया। लेकिन उन्हें यह अधिक उपयुक्त लगा कि वे शिक्षा, सिद्धांतों के प्रतिपादन और सकारात्मक कानूनों के प्रचार के माध्यम से मानव जाति को धीरे-धीरे उसके भाग्य के अनुरूप ढालें; और दो प्रकाशों के बीच, उनकी प्राथमिकता प्रज्वलन की अपेक्षा प्रकाश थी। प्रज्वलन से निस्संदेह एक आभा उत्पन्न हो सकती है, लेकिन भोर की प्रतीक्षा क्यों न की जाए? ज्वालामुखी प्रकाश उत्पन्न करता है, लेकिन सूर्योदय उससे भी बेहतर प्रकाश प्रदान करता है। संभवतः, कॉम्बेफेरे ने उदात्त की प्रज्वलन की अपेक्षा सुंदरता की सफेदी को अधिक पसंद किया। धुएँ से ग्रस्त प्रकाश, हिंसा की कीमत पर प्राप्त प्रगति, इस कोमल और गंभीर आत्मा को केवल आंशिक रूप से संतुष्ट कर पाई। किसी राष्ट्र का सत्य की ओर अंधाधुंध अग्रसर होना उन्हें भयभीत करता था; फिर भी, ठहराव उन्हें और भी अधिक घृणित लगता था, उसमें उन्हें सड़न और मृत्यु दिखाई देती थी; कुल मिलाकर, उन्होंने मैल को दुर्गंध से, और जलप्रपात को गंदे नाले से, और नियाग्रा जलप्रपात को मोंटफौकॉन झील से अधिक पसंद किया। संक्षेप में, वह न तो ठहराव चाहते थे और न ही जल्दबाजी। जबकि उनके उग्र मित्र, पूर्णता के प्रति आसक्त होकर, शानदार क्रांतिकारी कारनामों की पूजा और आह्वान करते थे, कॉम्बेफेरे प्रगति, अच्छी प्रगति को अपना मार्ग स्वयं तय करने देना चाहते थे; वे भले ही उदासीन रहे हों, लेकिन पवित्र थे; व्यवस्थित थे, लेकिन निर्दोष; शांत थे, लेकिन अविचलित। कॉम्बेफेरे भविष्य को उसकी संपूर्ण स्पष्टता के साथ आने देने के लिए घुटने टेककर हाथ जोड़ लेते, ताकि मानव जाति के विशाल और सदाचारी विकास में कोई बाधा न आए। "अच्छाई निर्दोष होनी चाहिए," वे बार-बार दोहराते थे। और वास्तव में, यदि क्रांति की महानता चकाचौंध भरे आदर्श को दृढ़ता से दृष्टि में रखने और अपने पंजों में आग और रक्त लिए बिजली की तरह उस ओर उड़ान भरने में निहित है, तो प्रगति की सुंदरता निष्कलंक होने में है; और वाशिंगटन, जो एक का प्रतिनिधित्व करता

है, और डेंटन, जो दूसरे का अवतार है, के बीच वह अंतर मौजूद है जो हंस को बाज के पंखों वाले देवदूत से अलग करता है।

जीन प्रूवेयर, कॉम्बेफ़ेरे से भी कहीं अधिक सौम्य स्वभाव के थे। उनका नाम जेहान था, उस क्षणिक तुच्छ सनक के कारण जो उस शक्तिशाली और गहन आंदोलन में समाहित थी जिससे मध्य युग के मूलभूत अध्ययन का जन्म हुआ। जीन प्रूवेयर प्रेम में डूबे हुए थे; वे फूलों का गमला लगाते थे, बांसुरी बजाते थे, कविताएँ लिखते थे, जनता से प्रेम करते थे, स्त्रियों पर दया करते थे, बच्चों के लिए रोते थे, ईश्वर और भविष्य को एक ही विश्वास में उलझाते थे, और क्रांति को आंद्रे शेनियर के शाही पतन का कारण मानते थे। उनकी आवाज़ आम तौर पर कोमल थी, लेकिन अचानक मर्दाना हो गई। वे विद्वत्ता की पराकाष्ठा पर थे, और लगभग एक प्राच्यविद् थे। सबसे बढ़कर, वे अच्छे थे; और, जो लोग जानते हैं कि अच्छाई किस प्रकार भव्यता के निकट होती है, उनके लिए यह बहुत सरल बात है, कविता के मामले में, वे विशालता को प्राथमिकता देते थे। वे इतालवी, लैटिन, ग्रीक और हिब्रू भाषाएँ जानते थे; और ये रचनाएँ उनके लिए केवल चार कवियों - दांते, जुवेनल, एशिलस और यशायाह - के अध्ययन के लिए ही उपयोगी थीं। फ्रेंच में, वे रेसीन की तुलना में कॉर्नेल को और कॉर्नेल की तुलना में एग्रीप्पा डी'ऑबाइन को अधिक पसंद करते थे। उन्हें जंगली जई और कॉर्नफ्लावर के खेतों में टहलना अच्छा लगता था, और वे घटनाओं के साथ-साथ बादलों का भी अध्ययन करते थे। उनके मन के दो दृष्टिकोण थे, एक मनुष्य की ओर, दूसरा ईश्वर की ओर; वे अध्ययन करते थे या चिंतन करते थे। दिन भर वे सामाजिक प्रश्नों, वेतन, पूंजी, ऋण, विवाह, धर्म, विचार की स्वतंत्रता, शिक्षा, कारावास, गरीबी, संगठन, संपत्ति, उत्पादन और बंटवारा, इस निम्न जगत के रहस्य में डूबे रहते थे, जो मानव के टीले को अंधकार से ढक देता है; और रात में वे ग्रहों, उन विशाल पिंडों को निहारते थे। एनजोलरास की तरह, वे धनी और इकलौते पुत्र थे। वह धीमी आवाज़ में बोलता था, सिर झुकाता था, नज़रें नीचे रखता था, शर्मिंदगी भरी मुस्कान देता था, बेढंगे कपड़े पहनता था, उसका व्यवहार अटपटा था, छोटी-छोटी बातों पर भी उसका चेहरा लाल हो जाता था और वह बहुत डरपोक था। फिर भी वह निडर था।

फ्यूली एक मेहनतकश मजदूर थे, पंखा बनाने वाले, जिनके माता-पिता दोनों ही नहीं थे। वे बड़ी मुश्किल से दिन के तीन फ्रैंक कमाते थे और उनका बस एक ही

सपना था, दुनिया को मुक्ति दिलाना। उनका एक और लक्ष्य था, खुद को शिक्षित करना; वे इसे भी खुद को मुक्ति दिलाना कहते थे। उन्होंने पढ़ना-लिखना खुद ही सीखा था; जो कुछ भी वे जानते थे, खुद ही सीखा था। फ्यूली का दिल बहुत बड़ा था। उनका स्नेह और स्नेह असीम था। इस अनाथ ने तो सभी लोगों को अपना लिया था। उनकी माँ उन्हें सहारा नहीं दे पाई थीं, इसलिए वे अपने देश के बारे में सोचते रहते थे। वे आम आदमी की गहरी समझ के साथ उस विचार पर चिंतन करते थे जिसे हम आज "राष्ट्रीयता का विचार" कहते हैं। उन्होंने इतिहास का अध्ययन इस उद्देश्य से किया था कि वे इस विषय की पूरी जानकारी के साथ उसका विश्लेषण कर सकें। युवा आदर्शवादियों के इस समूह में, जो मुख्य रूप से फ्रांस पर केंद्रित था, वे बाहरी दुनिया का प्रतिनिधित्व करते थे। ग्रीस, पोलैंड, हंगरी, रोमानिया और इटली उनकी विशेषज्ञता थे। वे इन नामों का बार-बार, सही और गलत दोनों ही तरह से, पूरी दृढ़ता के साथ उच्चारण करते थे। तुर्की द्वारा ग्रीस और थेसाली पर, रूस द्वारा वारसॉ पर, ऑस्ट्रिया द्वारा वेनिस पर किए गए अत्याचारों ने उन्हें क्रोधित कर दिया। सबसे बढ़कर, 1772 की भीषण हिंसा ने उन्हें झकझोर दिया। आक्रोश में डूबे सच्चे व्यक्ति की अभिव्यक्ति से बढ़कर कोई और वाक्पटुता नहीं होती; वे उस वाक्पटुता से भरे हुए थे। 1772 की उस कुख्यात तिथि पर, राजद्रोह द्वारा दमित उस महान और वीर जाति के विषय पर, उस त्रिपक्षीय अपराध पर, उस भयावह घात पर, जो उन सभी भयानक राज्य-दमनों का आदर्श और प्रतिरूप है, जिन्होंने तब से लेकर अब तक कई महान राष्ट्रों को प्रभावित किया है और उनके जन्म प्रमाण पत्र को निरस्त कर दिया है, वे अथक रूप से बोलते रहे। सभी समकालीन सामाजिक अपराधों की उत्पत्ति पोलैंड के विभाजन में निहित है। पोलैंड का विभाजन एक ऐसा सिद्धांत है जिसके सभी वर्तमान राजनीतिक अत्याचार परिणाम हैं। लगभग एक सदी पहले तक ऐसा कोई निरंकुश शासक या देशद्रोही नहीं हुआ जिसने पोलैंड के विभाजन पर हस्ताक्षर, अनुमोदन, प्रतिहस्ताक्षर और प्रतिलिपि न बनाई हो। आधुनिक राजद्रोहों के अभिलेखों की जाँच करने पर सबसे पहले यही बात सामने आई। वियना कांग्रेस ने अपने राजद्रोह को अंजाम देने से पहले इस अपराध पर विचार किया था। 1772 में इसकी शुरुआत हुई; 1815 में इसका अंत हो गया। यही फ्यूली का नियमित पाठ था। इस बेचारे मजदूर ने स्वयं को न्याय का शिक्षक बना लिया था, और न्याय ने उसे महान बनाकर पुरस्कृत किया। सच्चाई यह है कि न्याय शाश्वत है। वारसॉ न तो तातार हो सकता है और न ही वेनिस जर्मन। राजा

खुद को तातार बनाने के प्रयास में अपना परिश्रम और सम्मान खो देते हैं। देर-सवेर, डूबा हुआ भाग सतह पर आ जाता है और फिर से प्रकट हो जाता है। ग्रीस फिर से ग्रीस बन जाता है, इटली फिर से इटली बन जाता है। इस कृत्य के विरुद्ध न्याय का विरोध सदा बना रहता है। किसी राष्ट्र की चोरी को समय सीमा के तहत स्वीकार नहीं किया जा सकता। इन दुराचारपूर्ण कृत्यों का कोई भविष्य नहीं है। किसी राष्ट्र की पहचान को रुमाल की तरह नहीं निकाला जा सकता।

कौरफेयरैक के पिता का नाम एम. डी कौरफेयरैक था। पुनर्स्थापना काल के दौरान बुर्जुआ वर्ग की अभिजात वर्ग और कुलीनता के बारे में एक गलत धारणा यह थी कि वे उपाधि का विशेषण मानते थे। जैसा कि सर्वविदित है, उपाधि का कोई महत्व नहीं होता। लेकिन ला मिनर्व के युग के बुर्जुआ वर्ग ने उस साधारण 'डी' उपाधि को इतना महत्व दिया कि उन्होंने इसे त्यागना ही उचित समझा। एम. डी चौवेलिन ने स्वयं को एम. चौवेलिन कहा; एम. डी कौमार्टिन ने एम. कौमार्टिन; एम. डी कॉन्स्टेंट डी रोबेक ने बेंजामिन कॉन्स्टेंट; एम. डी लाफायेट ने एम. लाफायेट। कौरफेयरैक इन सबसे पीछे नहीं रहना चाहते थे, इसलिए उन्होंने स्वयं को केवल कौरफेयरैक कहा।

जहां तक कौरफेयरैक का सवाल है, हम लगभग यहीं रुक सकते हैं और जो बचा है उसके बारे में इतना ही कह सकते हैं: "कौरफेयरैक के लिए, थोलोमीज़ देखें।"

दरअसल, कौरफेयरैक में युवावस्था की वह जीवंतता थी जिसे मन की दिव्य सुंदरता कहा जा सकता है। बाद में, यह बिल्ली के बच्चे की चंचलता की तरह गायब हो जाती है, और यह सारी सुंदरता बुर्जुआ वर्ग के साथ दो पैरों पर और नर बिल्ली के साथ चार पंजों पर समाप्त हो जाती है।

इस तरह की बुद्धिमत्ता पीढ़ियों से स्कूलों में पढ़ने वाले युवाओं के बीच पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है, जो इसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक, लगभग एक ही स्तर पर पहुंचाते हैं; इसलिए, जैसा कि हमने अभी बताया, 1828 में कौरफेयरैक को सुनने वाले किसी भी व्यक्ति को लगता कि उसने 1817 में थोलोमीज़ को सुना है। फर्क सिर्फ इतना था कि कौरफेयरैक एक सम्मानित व्यक्ति थे। बाहरी तौर पर दिखने वाली समानताओं के बावजूद, उनमें और थोलोमीज़ में बहुत बड़ा अंतर था। दोनों में जो अंतर्निहित व्यक्तित्व था,

वह पहले वाले में दूसरे वाले से बिल्कुल अलग था। थोलोमीज़ में एक जिला वकील की झलक थी, और कौरफेयरैक में एक योद्धा की।

एनजोलरास मुखिया था, कॉम्बेफेरे मार्गदर्शक था, और कौरफेयरैक केंद्र था।
अन्य लोग अधिक प्रकाश प्रदान करते थे, वह अधिक गर्माहट बिखेरता था; वास्तव में, उसमें केंद्र के सभी गुण, परिपूर्णता और दीप्ति समाहित थी।

बहोरेल ने जून 1822 में युवा लल्लेमंड के अंतिम संस्कार के अवसर पर हुए रक्तपातपूर्ण दंगे में भाग लिया था।

बहोरेल एक नेक दिल इंसान था, जो बुरी संगत में रहता था, बहादुर, खर्चीला, फिजूलखर्ची करने वाला और हद से ज्यादा उदार था। वह बातूनी और कभी-कभी वाक्पटु भी था, और हद से ज्यादा बेशर्म था; वह हर तरह से बेहतरीन इंसान था; उसके पास रंगीन जैकेटें थीं और उसके विचार लाल रंग के थे; वह एक नंबर का शेखीबाज़ था, यानी उसे झगड़े से ज्यादा कुछ पसंद नहीं था, सिवाय विद्रोह के; और विद्रोह से उतना ही प्यार था, सिवाय क्रांति के; वह हमेशा खिड़की का शीशा तोड़ने, फिर फुटपाथ उखाड़ने, फिर सरकार गिराने के लिए तैयार रहता था, सिर्फ उसका असर देखने के लिए; वह ग्यारहवीं कक्षा का छात्र था। उसने कानून की पढ़ाई तो की थी, लेकिन उसका अभ्यास नहीं किया। उसने अपना चिन्ह बना लिया था: "कभी वकील नहीं बनूंगा," और अपने प्रतीक चिन्ह के रूप में एक नाइटस्टैंड को चुना था जिसमें एक चौकोर टोपी दिखाई देती थी। जब भी वह लॉ स्कूल से पास होता, जो कि बहुत कम होता था, वह अपना फ्रॉक-कोट कसकर बंद कर लेता—उस समय पैलेटोट का आविष्कार नहीं हुआ था—और स्वच्छता संबंधी सावधानियां बरतता। स्कूल के पोर्टर के बारे में वह कहता था: "कितना बढ़िया बूढ़ा आदमी है!" और डीन, एम. डेल्विनकोर्ट के बारे में: "क्या शानदार शख्सियत है!" अपने व्याख्यानों में वह गाथागीतों के विषय ढूंढ लेता था, और अपने प्रोफेसरों में व्यंग्यचित्र बनाने के अवसर। वह सालाना लगभग तीन हजार फ्रैंक का अच्छा-खासा भत्ता कुछ भी न करके बर्बाद कर देता था।

उनके माता-पिता किसान थे, जिनके मन में उन्होंने अपने बेटे के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने में कामयाबी हासिल की थी।

उन्होंने उनके बारे में कहा: "वे किसान हैं, पूंजीपति नहीं; यही कारण है कि वे बुद्धिमान हैं।"

बहोरेल, एक सनकी व्यक्ति, अनेक कैफे में जाता रहता था; दूसरों की अपनी आदतें थीं, उसकी कोई नहीं। वह इठलाता रहता था। भटकना मानवीय स्वभाव है।
इठलाना पेरिसवासियों की शान है। वास्तव में, उसका दिमाग बहुत तेज था और वह दिखने में जितना लगता था उससे कहीं अधिक विचारक था।

उन्होंने फ्रेंड्स ऑफ द ए.बी.सी. और अन्य असंगठित समूहों के बीच एक संपर्क कड़ी के रूप में काम किया, जो बाद में आकार लेने के लिए नियत थे।

युवा प्रतिभाओं के इस समूह में एक गंजा सदस्य भी था।

मार्क्विस डी'अवेरे, जिन्हें लुई XVIII ने उनके प्रवास के दिन उन्हें एक घोड़ागाड़ी में चढ़ने में सहायता करने के लिए ड्यूक की उपाधि दी थी, अक्सर यह बताया करते थे कि 1814 में, फ्रांस लौटने पर, जब राजा कैलिस में उतर रहे थे, तो एक व्यक्ति ने उन्हें एक याचिका सौंपी थी।

“तुम्हारी क्या विनती है?” राजा ने पूछा।

“महाराज, डाकघर।”

"आपका क्या नाम है?"

“द ईगल।”

राजा ने भौंहें चढ़ाईं, याचिका पर हस्ताक्षर देखे और पाया कि नाम इस प्रकार लिखा था: लेस्गल। बोनापार्ट की शैली से अलग इस वर्तनी ने राजा को प्रभावित किया और वे मुस्कुराने लगे। याचिका प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति ने आगे कहा, “महाराज, मेरे पूर्वज लेस्गल उपनाम वाले शिकारी कुत्तों के रखवाले थे। इसी उपनाम से मेरा नाम पड़ा। मुझे लेस्गल कहा जाता है, जो संक्षेप में लेस्गल और बिगड़ा हुआ रूप है।” यह सुनकर राजा और भी मुस्कुरा उठे। बाद में उन्होंने जानबूझकर या अनजाने में उस व्यक्ति को मेओक्स का डाकघर दे दिया।

समूह का गंजा सदस्य इसी लेस्गल या लेगले का पुत्र था, और वह अपने नाम के साथ लेगले (डी मेओक्स) लिखता था। संक्षेप में, उसके साथी उसे बॉसुएट कहते थे।

बॉसुएट हंसमुख स्वभाव का था, पर बदकिस्मत भी। उसकी खासियत यही थी कि वह किसी भी काम में सफल नहीं होता था। इसके विपरीत, वह हर बात पर हंसता था।

पच्चीस साल की उम्र में ही उसके बाल झड़ गए थे। उसके पिता के पास एक घर और एक खेत था; लेकिन उसने, बेटे होने के नाते, एक बुरे सौदे में वह घर और खेत दोनों गंवा दिए। उसके पास कुछ भी नहीं बचा था। वह ज्ञान और बुद्धि से परिपूर्ण था, पर उसका हर काम विफल रहा। हर चीज में उसे असफलता मिली और हर किसी ने उसे धोखा दिया; जो कुछ भी वह बना रहा होता, वह उस पर गिर पड़ता। अगर वह लकड़ी काट रहा होता, तो उसकी उंगली कट जाती। अगर उसकी कोई प्रेमिका होती, तो उसे जल्दी ही पता चल जाता कि उसकी एक दोस्त भी है। हर पल कोई न कोई विपत्ति उस पर आती रहती थी, इसीलिए वह इतना हंसमुख रहता था। वह कहता था: "मैं गिरती हुई टाइलों के नीचे रहता हूं।" वह आसानी से हैरान नहीं होता था, क्योंकि उसके लिए दुर्घटना वैसी ही होती थी जैसी उसने पहले से देख रखी होती थी, वह अपने दुर्भाग्य को शांति से स्वीकार करता था और भाग्य के चिढ़ाने पर ऐसे मुस्कुराता था जैसे कोई मीठी बातें सुन रहा हो। वह गरीब था, लेकिन उसका हास्यबोध कभी खत्म नहीं होता था। उसके पास जल्द ही आखिरी पैसा भी खत्म हो गया, लेकिन हंसी का आखिरी झोंका कभी नहीं। जब विपत्ति उसके दरवाजे पर दस्तक देती, तो वह इस पुराने परिचित को गर्मजोशी से सलाम करता, वह हर विपत्ति को पेट पर थपथपाता; वह भाग्य से इतना परिचित था कि उसे उसके उपनाम से पुकारता था: "शुभ दिन, गुइग्नन," वह उससे कहता था।

भाग्य के इन अत्याचारों ने उसे आविष्कारशील बना दिया था। वह संसाधनों से भरपूर था। उसके पास पैसा नहीं था, लेकिन जब भी उसे उचित लगता, वह "अत्यधिक खर्चीलेपन" में लिप्त होने का साधन ढूंढ लेता था। एक रात, वह एक युवती के साथ रात के खाने में "सौ फ्रैंक" तक खर्च कर बैठा, जिसने उसे उस अय्याशी के बीच यह यादगार टिप्पणी करने के लिए प्रेरित किया: "मेरे जूते उतारो, तुम पांच-लुई की कुतिया।"

बॉसुएट धीरे-धीरे वकील बनने की ओर कदम बढ़ा रहा था; वह बहोरेल की तरह ही कानून की पढ़ाई कर रहा था। बॉसुएट का कोई स्थायी निवास नहीं था, कभी-कभी तो बिलकुल भी नहीं। वह कभी किसी के साथ रहता था, कभी किसी के साथ, और अक्सर जोली के साथ। जोली चिकित्सा की पढ़ाई कर रहा था। वह बॉसुएट से दो साल छोटा था।

जोली एक युवा, कल्पनाशील बीमार व्यक्ति था। चिकित्सा में उसने जो हासिल किया था, वह एक डॉक्टर से ज़्यादा एक बीमार व्यक्ति बनना था। तेईस साल की

उम्र में वह खुद को एक बीमार व्यक्ति समझता था और अपना सारा समय आईने में अपनी जीभ निहारने में बिताता था। उसका मानना था कि मनुष्य सुई की तरह चुंबकीय हो जाता है, और अपने कमरे में उसने अपना पलंग इस तरह रखा था कि उसका सिर दक्षिण की ओर और पैर उत्तर की ओर थे, ताकि रात में पृथ्वी की तीव्र विद्युत धारा से उसके रक्त संचार में कोई बाधा न आए। तूफ़ान के दौरान वह अपनी नाड़ी महसूस करता था। इसके अलावा, वह उन सबमें सबसे खुशमिजाज था। ये सभी युवा, सनकी, छोटे, हंसमुख और असंगत लोग एक साथ सामंजस्य में रहते थे, और इसका परिणाम एक विलक्षण और मनभावन व्यक्ति था जिसे उसके साथी, जो पंखों वाले व्यंजनों के शौकीन थे, जॉली कहते थे। "तुम चार 'एल' पर उड़ सकते हो," जीन प्रूवेयर ने उससे कहा।

जोली की एक खास आदत थी कि वह अपनी छड़ी की नोक से अपनी नाक को छूता था, जो एक बुद्धिमान व्यक्ति होने का संकेत है।

इन सभी युवकों में इतना मतभेद था, और कुल मिलाकर, जिन पर गंभीरता से चर्चा की जा सकती है, उन सभी का एक ही धर्म था: प्रगति।

ये सभी फ्रांसीसी क्रांति के प्रत्यक्ष वंशज थे। उनमें से सबसे उत्साही भी उस तारीख, '89, का उच्चारण करते ही गंभीर हो गए। उनके पूर्वज राजशाही समर्थक या कट्टरपंथी थे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; उनसे पहले की यह उथल-पुथल, जो कि युवा थे, उन्हें बिल्कुल भी प्रभावित नहीं करती थी; उनके रगों में सिद्धांतों का शुद्ध रक्त बहता था। उन्होंने बिना किसी मध्यस्थता के, अटूट सत्य और परम कर्तव्य के प्रति निष्ठा स्थापित की।

संबद्ध और दीक्षित होकर, उन्होंने आदर्श भूमिगत जगत की रूपरेखा तैयार की।

इन सभी उत्साहित हृदयों और पूर्णतः आश्वस्त मनों के बीच एक संशयवादी भी था। वह वहाँ कैसे आया? संयोगवश। इस संशयवादी का नाम ग्रांटेयर था, और वह अपने हस्ताक्षर इस पहेली से करता था: आर. ग्रांटेयर एक ऐसा व्यक्ति था जो किसी भी चीज़ पर विश्वास न करने का पूरा ध्यान रखता था। इसके अलावा, वह पेरिस में अपने पाठ्यक्रम के दौरान सबसे अधिक सीखने वाले छात्रों में से एक था; वह जानता था कि सबसे अच्छी कॉफ़ी कैफ़े लेम्बलिन में मिलती है, और सबसे अच्छा बिलियर्ड्स कैफ़े वोल्टेयर में, अच्छे केक और लस्सी बुलेवार्ड डू मेन पर स्थित एरमिटेज में, स्पैचकॉक चिकन मदर सौगेट में, उत्कृष्ट

मैटेलॉट्स बैरियर डे ला कुनेट में, और एक खास तरह की पतली सफेद वाइन बैरियर डू कॉम्पैट में मिलती है। वह हर चीज़ के लिए सबसे अच्छी जगह जानता था; इसके अलावा, मुक्केबाजी, तलवारबाजी और कुछ नृत्यों के लिए भी; और वह एक कुशल सिंगलस्टिक खिलाड़ी था। वह बहुत ज़्यादा शराब भी पीता था। वह बेहद बदसूरत था: उस दौर की सबसे खूबसूरत बूट सिलने वाली, इरमा बोइसी, उसकी इस बदसूरती से क्रोधित होकर उस पर यह फैसला सुनाती है: "ग्रांटेयर नामुमकिन है;" लेकिन ग्रांटेयर की मूर्खता पर कोई असर नहीं पड़ा। वह सभी महिलाओं को प्यार भरी निगाहों से देखता, मानो उनसे कह रहा हो: "काश मैं चुन पाता!" और अपने साथियों को यह यकीन दिलाने की कोशिश कर रहा हो कि उसकी हर जगह मांग है।

ये सारे शब्द: जनता के अधिकार, मानव अधिकार, सामाजिक अनुबंध, फ्रांसीसी क्रांति, गणतंत्र, लोकतंत्र, मानवता, सभ्यता, धर्म, प्रगति - ग्रैन्टेयर के लिए लगभग निरर्थक थे। वह इन पर मुस्कुराता था। संशयवाद, जो बुद्धि को नष्ट कर देता है, ने उसके मन में एक भी पूर्ण विचार नहीं छोड़ा था। वह व्यंग्य के साथ जीता था। उसका सिद्धांत था: "एक ही बात निश्चित है, मेरा भरा हुआ गिलास।" वह सभी पक्षों की भक्ति का उपहास करता था, चाहे पिता हो या भाई, रोबेस्पियर जूनियर हो या लोइज़रोल्स। "वे मरने के लिए बहुत आगे बढ़ चुके हैं," उसने कहा। उसने क्रूस के बारे में कहा: "यह एक ऐसा फांसी का तख्ता है जो सफल रहा है।" एक घुमक्कड़, जुआरी, स्वच्छंद, अक्सर शराबी, वह इन युवा स्वप्नद्रष्टाओं को लगातार गुनगुनाकर नाराज़ करता था: "जे एमन्स लेस फिल्स, एट जे एमन्स ले बॉन विन।" धुन: विवे हेनरी चतुर्थ।

लेकिन इस संशयवादी के भीतर एक कट्टरता थी। यह कट्टरता न तो कोई सिद्धांत थी, न कोई विचार, न कोई कला, न कोई विज्ञान; यह एक व्यक्ति था: एनजोलरास। ग्रैन्टेयर एनजोलरास की प्रशंसा करते थे, उनसे प्रेम करते थे और उनका आदर करते थे। इस निरंकुश विचारक ने पूर्ण विचारों के इस समूह में खुद को किसके साथ जोड़ा? परम निरंकुश के साथ। एनजोलरास ने उन्हें किस प्रकार वश में किया था? अपने विचारों से? नहीं। अपने चरित्र से। एक ऐसी घटना जो अक्सर देखी जा सकती है। एक संशयवादी का आस्तिक के साथ रहना उतना ही सरल है जितना पूरक रंगों का नियम। जिस चीज की हमें कमी होती है, वही हमें आकर्षित करती है। अंधे व्यक्ति की तरह प्रकाश से कोई प्रेम नहीं करता। बौना ढोल बजाने

वाले की पूजा करता है। मेंढक की निगाहें हमेशा आकाश पर टिकी रहती हैं। क्यों? ताकि वह पक्षी को उड़ते हुए देख सके। ग्रैन्टेयर, जिनके भीतर संदेह उमड़ रहा था, एनजोलरास में आस्था को उड़ान भरते देखना पसंद करते थे। उन्हें एनजोलरास की आवश्यकता थी। उस पवित्र, स्वस्थ, दृढ़, ईमानदार, कठोर और स्पष्टवादी स्वभाव ने उसे मोहित कर लिया, भले ही उसे इसका स्पष्ट एहसास न हो और न ही उसे इसे स्वयं को समझाने का विचार आया हो। वह सहज रूप से अपने विपरीत स्वभाव वाले व्यक्ति की प्रशंसा करता था। उसके कोमल, लचीले, बिखरे हुए, अस्वस्थ और आकारहीन विचार एनजोलरास से रीढ़ की हड्डी की तरह जुड़ गए। उसकी नैतिक रीढ़ उस दृढ़ता पर टिकी थी। एनजोलरास की उपस्थिति में ग्रांटेयर एक बार फिर से कुछ बन जाता था। इसके अलावा, वह स्वयं दो तत्वों से बना था, जो देखने में एक-दूसरे के विपरीत थे। वह व्यंग्यात्मक और सौहार्दपूर्ण था। उसकी उदासीनता में प्रेम था। उसका मन विश्वास के बिना चल सकता था, लेकिन उसका हृदय मित्रता के बिना नहीं रह सकता था। एक गहरा विरोधाभास; क्योंकि स्नेह एक विश्वास है। उसका स्वभाव ऐसा ही था। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो विपरीत, विपरीत, गलत पक्ष बनने के लिए ही पैदा हुए प्रतीत होते हैं। वे हैं पोलक्स, पैट्रोक्लेस, निसस, यूडामिडास, एफ़ेस्टियन, पेचमेजा। उनका अस्तित्व केवल तभी संभव है जब उन्हें किसी दूसरे व्यक्ति का समर्थन प्राप्त हो; उनका नाम एक अनुक्रम है, और इसे केवल 'और' शब्द से पहले ही लिखा जाता है; और उनका अस्तित्व उनका अपना नहीं है; यह एक ऐसे अस्तित्व का दूसरा पहलू है जो उनका नहीं है। ग्रैन्टेयर इन्हीं लोगों में से एक था। वह एनजोलरास का ठीक विपरीत था।

लगभग यही कहा जा सकता है कि समानताएं वर्णमाला के अक्षरों से ही शुरू होती हैं। इस क्रम में O और P अविभाज्य हैं। आप चाहें तो O और P का उच्चारण कर सकते हैं, या फिर Orestes और Pylades का।

एनजोलरास का सच्चा साथी ग्रैन्टेयर, नौजवानों के इस समूह में रहता था; वह वहीं बसता था, उसे कहीं और आनंद नहीं मिलता था सिवाय वहीं के; वह हर जगह उनका पीछा करता था। शराब के धुएँ में इन लोगों को आते-जाते देखना ही उसकी खुशी थी। वे उसके अच्छे स्वभाव के कारण उसे बर्दाश्त करते थे।

आस्तिक एनजोलरास ने इस संशयवादी को तुच्छ समझा; और स्वयं एक संयमी व्यक्ति होने के नाते, उसने इस शराबी का उपहास किया। उसने उस पर थोड़ी सी दया

दिखाई। ग्रांटेयर एक अस्वीकृत पाइलाडेस था। एनजोलरास द्वारा हमेशा कठोर व्यवहार किया जाने वाला , बेरहमी से ठुकराया जाने वाला , अस्वीकृत होने के बावजूद हमेशा उसके पास लौटकर आने वाला ग्रांटेयर , एनजोलरास के बारे में कहता था : "क्या बढ़िया संगमरमर है !"

II. बॉसुएट द्वारा रचित ब्लोंडो का अंतिम संस्कार भाषण

एक दोपहर, जिसका, जैसा कि आगे बताया जाएगा, पहले बताई गई घटनाओं से कुछ संबंध था, लाइगल डी मेओक्स कैफे मुसैन के दरवाजे के चौखट से कामुक मुद्रा में टिके हुए दिखाई दिए। उनका रूप किसी अवकाश पर आई मूर्ति जैसा था; हालांकि, उनके मन में केवल उनकी कल्पना ही थी। वे प्लेस सेंट-मिशेल को घूर रहे थे। किसी वस्तु से पीठ टिकाना सीधे खड़े होकर लेटने के समान है, और यह मुद्रा विचारकों को बुरी नहीं लगती। लाइगल डी मेओक्स दो दिन पहले विधि विद्यालय में उनके साथ घटी एक छोटी सी दुर्घटना के बारे में बिना किसी उदासी के सोच रहे थे, जिसने भविष्य के लिए उनकी व्यक्तिगत योजनाओं को बदल दिया था, जो वैसे भी कुछ खास स्पष्ट नहीं थीं।

ख्यालों में खो जाने से न तो टैक्सी गुजरती है और न ही सपने देखने वाला उस टैक्सी पर ध्यान देने से रुकता है। लैगल डी मेओक्स, जिनकी आंखें एक तरह की धुंधली सी अवस्था में इधर-उधर भटक रही थीं, ने अपनी नींद में चलते हुए देखा कि एक दोपहिया वाहन उस जगह से धीरे-धीरे, मानो असमंजस में, गुजर रहा है। यह टैक्सी किसके लिए थी? यह इतनी धीमी गति से क्यों चल रही थी? लैगल ने गौर से देखा। उसमें, कोचवान के बगल में, एक युवक बैठा था, और उसके सामने एक बड़ा सा हैंडबैग रखा था। बैग पर कपड़े से सिले हुए एक कार्ड पर बड़े काले अक्षरों में लिखा हुआ नाम राहगीरों को दिखाई दे रहा था: मारियस पोंटमर्सी।

इस नाम ने लाइगल का रवैया बदल दिया। वह सीधा खड़ा हुआ और कैब्रियोलेट में बैठे युवक पर यह कटाक्ष किया:—

“महामहोदय मारियस पोंटमर्सी!”

इस तरह से निर्देशित कैब्रियोलेट कार रुक गई।

गहन चिंतन में डूबे प्रतीत हो रहे उस युवक ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं:

“हे?” उसने कहा।

“क्या आप एम. मारियस पोंटमर्सी हैं?”

"निश्चित रूप से।"

"मैं तुम्हें ही ढूंढ रहा था," लैगल डे मेओक्स ने अपनी बात जारी रखी।

“ऐसा कैसे?” मारियस ने पूछा; दरअसल, वह वही था: वह अभी-अभी अपने दादाजी के यहाँ से निकला था, और उसके सामने एक ऐसा चेहरा था जिसे वह पहली बार देख रहा था। “मैं तुम्हें नहीं जानता।”

"मैं भी आपको नहीं जानता," लैगल ने जवाब दिया।

मारियस को लगा कि उसका सामना एक शरारती व्यक्ति से हुआ है, खुलेआम सड़क पर किसी रहस्य की शुरुआत। वह उस समय अच्छे मूड में नहीं था। उसने भौंहें चढ़ाईं। लैगल डी मेओक्स ने अविचलित होकर बोलना जारी रखा:—

"परसों तुम स्कूल में नहीं थे।"

“यह संभव है।”

“यह तो निश्चित है।”

“तुम छात्र हो?” मारियस ने पूछा।

जी हाँ, महोदय। बिल्कुल आपकी तरह। परसों, मैं संयोग से स्कूल में दाखिल हो गया। आप जानते ही हैं, कभी-कभी ऐसे अजीबोगरीब लोग भी मिल जाते हैं। प्रोफेसर हाजिरी ले रहे थे। आप जानते ही होंगे कि ऐसे मौकों पर वे बहुत ही हास्यास्पद हो जाते हैं। तीसरी बार हाजिरी लेने पर भी अगर आपने जवाब नहीं दिया, तो आपका नाम सूची से मिटा दिया गया। खाड़ी देशों में साठ फ्रैंक।

मारियस सुनने लगा।

“फोन ब्लोंडो कर रहा था। आप ब्लोंडो को जानते ही हैं, उसकी नाक बहुत तीखी और बहुत ही धूर्त है, और उसे अनुपस्थित लोगों की गंध सूंघने में आनंद आता है। उसने चालाकी से 'पी' अक्षर से शुरुआत की। मैं सुन नहीं रहा था, उस अक्षर से प्रभावित नहीं हो रहा था। फोन ठीक चल रहा था। कोई मिटाव नहीं; सब कुछ मौजूद था। ब्लोंडो दुखी था। मैंने मन ही मन कहा: 'ब्लोंडो, मेरे प्रिय, आज तुम्हें किसी भी तरह की सजा नहीं मिलेगी।' अचानक ब्लोंडो ने पुकारा, 'मारियस पोंटमर्सी!' किसी ने जवाब नहीं दिया। आशा से भरा ब्लोंडो और जोर से

दोहराया: 'मारियस पोंटमर्सी!' और उसने कलम उठा ली। महोदय, मेरे अंदर दया आ गई। मैंने जल्दी से मन ही मन कहा: 'यह एक बहादुर आदमी है जिसे मिटाया जाने वाला है। ध्यान दें। यह एक सच्चा इंसान है जो सटीक नहीं है। यह एक अच्छा छात्र नहीं है। यह कोई मामूली छात्र नहीं है, एक ऐसा छात्र जो पढ़ाई करता है, एक नौसिखिया।' विद्वान, साहित्य, धर्मशास्त्र, विज्ञान और बुद्धि में निपुण, उन मंदबुद्धि लोगों में से एक जो संकीर्ण सोच से ग्रस्त हैं; पेशे से एक मामूली कारीगर। वह एक सम्मानित आलसी व्यक्ति है जो आराम करता है, ग्रामीण इलाकों में घूमता है, महिलाओं के साथ मेलजोल रखता है, और शायद इस समय मेरी प्रेमिका के साथ है। चलो उसे बचाते हैं। ब्लोंडो का नाश हो!’ उसी क्षण, ब्लोंडो ने अपनी कलम को स्याही में डुबोया, जो मिटाने के निशानों से पूरी तरह काली हो चुकी थी, अपनी पीली आँखों से पूरे श्रोता कक्ष को देखा और तीसरी बार दोहराया: ‘मारियस पोंटमर्सी!’ मैंने उत्तर दिया: ‘उपस्थित!’ इसीलिए तुम्हारा नाम सूची से नहीं हटाया गया।

"महाशय!-" मारियस ने कहा।

"और मैं ऐसा क्यों था," लैगल डी मेओक्स ने आगे कहा।

“मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही,” मारियस ने कहा।

लैगल ने आगे कहा:—

“इससे ज़्यादा सरल कुछ नहीं। मैं जवाब देने के लिए डेस्क के पास था, और भागने के लिए दरवाज़े के पास। प्रोफ़ेसर ने मुझे एक खास नज़र से देखा। अचानक, ब्लोन्डो, जो शायद बोइल्यू द्वारा वर्णित शरारती नाक वाला व्यक्ति था, अक्षर L पर पहुँच गया। L मेरा अक्षर है। मैं मेओक्स से हूँ, और मेरा नाम लेस्गल है।”

“लाइगल!” मारियस ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “कितना बढ़िया नाम है!”

“महाशय, ब्लोंडो ने यह बढ़िया नाम सुना और पुकारा: ‘लाइगल!’ मैंने जवाब दिया: ‘हाज़िर!’ तब ब्लोंडो ने मुझे बाघ जैसी कोमलता से देखा और मुझसे कहा: ‘अगर तुम पोंटमर्सी हो, तो तुम लाइगल नहीं हो।’ यह वाक्य तुम्हारे लिए थोड़ा अप्रिय लग सकता है, लेकिन मेरे लिए यह केवल निराशाजनक था। इतना कहकर उसने मेरा नाम काट दिया।”

मारियस ने विस्मय व्यक्त किया:—
“मैं बेहद शर्मिंदा हूँ, महोदय—”
“सबसे पहले,” लैगल ने बीच में कहा, “मैं ब्लोंडो को भावभीनी प्रशंसा के कुछ शब्दों में समाहित करने की अनुमति चाहता हूँ। मैं मान लेता हूँ कि वह मर चुका है। उसके दुबलेपन, उसके पीलेपन, उसकी शीतलता और उसकी गंध में कोई बड़ा बदलाव नहीं होगा। और मैं कहता हूँ: ‘Erudimini qui judicatis terram. यहाँ ब्लोंडो लेटा है, ब्लोंडो नाक, ब्लोंडो नासिका, अनुशासन का बैल, bos disciplinae, पासवर्ड का खोजी कुत्ता, हाजिरी का देवदूत, जो सीधा, खरा, सटीक, कठोर, ईमानदार और घिनौना था। ईश्वर ने उसे भी उसी तरह मिटा दिया जैसे मुझे मिटाया।’”
मारियस ने आगे कहा:—
मुझे बहुत खेद है—”
“युवक,” लैगल डी मेओक्स ने कहा, “इसे एक सबक समझो। भविष्य में, सटीक रहो।” मैं आपसे हजार बार क्षमा मांगता हूं।
अपने पड़ोसी को इस खतरे में न डालें कि उसका नाम फिर से मिटा दिया जाए। मुझे बेहद खेद है—”
लैगल जोर से हंस पड़ी।
“और मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मैं वकील बनने की कगार पर था। इस त्याग ने मुझे बचा लिया। मैं वकालत के सारे गौरव त्यागता हूँ। मैं न तो विधवा का बचाव करूँगा, न ही अनाथों पर हमला करूँगा। अब कोई चोगा नहीं, कोई मंच नहीं। मेरा त्याग यहाँ पूरी तरह से तैयार है। इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ, श्रीमान पोंटमर्सी। मैं आपको धन्यवाद देने के लिए एक विशेष भेंट करना चाहता हूँ। आप कहाँ रहते हैं?”
“इस टैक्सी में,” मारियस ने कहा।
“यह तो समृद्धि का प्रतीक है,” लैगल ने शांत भाव से जवाब दिया। “मैं आपको बधाई देता हूँ। आपका वार्षिक किराया नौ हजार फ्रैंक है।”
उसी क्षण, कौरफेयरैक कैफे से बाहर निकला।

मारियस ने उदास मुस्कान दी।
"मैंने पिछले दो घंटों से यह किराया चुकाया है, और मैं इससे छुटकारा पाना चाहता हूं; लेकिन इससे एक तरह का इतिहास जुड़ा हुआ है, और मुझे नहीं पता कि मुझे कहां जाना चाहिए।"
“मेरे घर आइए, महोदय,” कौरफेयरैक ने कहा।
लैगल ने कहा, "मेरी प्राथमिकता तो है, लेकिन मेरे पास रहने के लिए कोई घर नहीं है।"
“बॉसुएट, चुप रहो,” कौरफेयरैक ने कहा।
"बॉसुएट," मारियस ने कहा, "लेकिन मुझे लगा कि तुम्हारा नाम लैगल है।" “मेओक्स से,” लैगल ने उत्तर दिया; “रूपक के द्वारा, बॉसुएट से।” कौरफेयरैक टैक्सी में बैठ गया।
"कोचमैन," उन्होंने कहा, "होटल डे ला पोर्टे-सेंट-जैक्स।"
और उसी शाम, मारियस ने खुद को होटल डे ला पोर्ट-सेंट-जैक्स के एक कमरे में कौरफेयरैक के बगल में पाया।

III. मारियस के आश्चर्य

कुछ ही दिनों में मारियस, कौरफेयरैक का दोस्त बन गया। जवानी का मौसम रिश्तों को जल्दी जोड़ने और ज़ख्मों को तेज़ी से भरने का समय होता है। कौरफेयरैक की संगति में मारियस ने खुलकर सांस ली, जो उसके लिए बिल्कुल नया अनुभव था। कौरफेयरैक ने उससे कोई सवाल नहीं पूछा। उसने ऐसा सोचा भी नहीं। उस उम्र में, चेहरे सब कुछ बयां कर देते हैं। शब्दों की ज़रूरत नहीं होती। कुछ नौजवान ऐसे होते हैं जिनके चेहरे मानो बातें करते हैं। उन्हें देखते ही कोई उन्हें जान जाता है।

लेकिन एक सुबह, कौरफेयरैक ने अचानक उससे यह प्रश्न पूछा:

"वैसे, क्या आपकी कोई राजनीतिक राय है?"

“यह विचार!” मारियस ने लगभग सवाल से नाराज होकर कहा।

"आप क्या?"

"एक लोकतांत्रिक-बोनापार्टवादी।"

"एक आश्वस्त चूहे का भूरा रंग," कौरफेयरैक ने कहा।

अगले दिन, कौरफेयरैक ने मारियस का परिचय कैफे मुसैन में कराया। फिर मुस्कुराते हुए उसके कान में फुसफुसाया: "मुझे तुम्हें क्रांति में प्रवेश दिलाना होगा।" और वह उसे ए.बी.सी. के मित्रों के हॉल में ले गया। उसने उसे अन्य साथियों से मिलवाते हुए एक सरल शब्द कहा, जिसे मारियस समझ नहीं पाया: "एक छात्र।"

मारियस बुद्धि के भंवर में फंस गया था। हालांकि वह शांत और गंभीर था, फिर भी वह पंखों वाला और हथियारों से लैस था।

उस समय तक एकांतप्रिय और आत्मचिंतन तथा व्यंग्य करने के शौकीन मारियस, जो आदत और रुचि दोनों से ही ऐसा करते थे, अपने आस-पास के इन युवकों के समूह को देखकर थोड़ा विचलित हो गया। इन सभी तरह की पहलों ने एक साथ उसका ध्यान आकर्षित किया और उसे अपनी ओर खींच लिया। स्वतंत्र और सक्रिय इन दिमागों की उथल-पुथल भरी गतिविधियों ने उसके विचारों को भंवर में डाल दिया। कभी-कभी,

इस उलझन में, उसके विचार उससे इतने दूर चले जाते थे कि उसे उन्हें पुनः प्राप्त करने में कठिनाई होती थी। उसने उन्हें दर्शन, साहित्य, कला, इतिहास, धर्म के बारे में अप्रत्याशित ढंग से बात करते सुना। उसे कुछ विचित्र पहलुओं की झलक मिली; और चूंकि वह उन्हें सही परिप्रेक्ष्य में नहीं रख सका, इसलिए वह पूरी तरह से निश्चित नहीं था कि वह जो समझ रहा था वह अराजकता ही तो नहीं थी। अपने दादा के विचारों को छोड़कर अपने पिता के विचारों को अपनाने पर उसने खुद को स्थिर मान लिया था; अब उसे बेचैनी के साथ, और स्वयं से स्वीकार करने का साहस किए बिना, यह संदेह होने लगा कि वह स्थिर नहीं है। हर चीज को देखने का उसका नजरिया फिर से बदलने लगा। एक अजीब सी हलचल ने उसके दिमाग के सभी क्षितिज को गतिमान कर दिया। एक विचित्र आंतरिक बेचैनी। वह लगभग इससे पीड़ित हो गया था।

ऐसा प्रतीत होता था मानो उन युवकों के लिए कोई "पवित्र वस्तु" थी ही नहीं। मारियस ने हर विषय पर विलक्षण प्रस्ताव सुने, जिससे उसका अभी भी संकोची मन शर्मिंदा हो गया।

एक थिएटर का पोस्टर सामने आया, जिस पर क्लासिक नामक प्राचीन नाट्य संग्रह की एक त्रासदी का शीर्षक अंकित था: “बुर्जुआ वर्ग को प्रिय त्रासदी का नाश हो!” बहोरेल चिल्लाया। और मारियस ने कॉम्बेफेरे को जवाब देते सुना:—

“बहोरेल, तुम गलत हो। बुर्जुआ वर्ग त्रासदी को पसंद करता है, और इस मामले में बुर्जुआ वर्ग को शांत रहने देना चाहिए। विग वाली त्रासदी का अपना एक कारण है, और मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो एशिलस के आदेश पर इसके अस्तित्व के अधिकार पर सवाल उठाते हैं। प्रकृति में कुछ रूपरेखाएँ होती हैं; सृष्टि में तैयार-तैयार व्यंग्य होते हैं; एक चोंच जो चोंच नहीं है, पंख जो पंख नहीं हैं, गलफड़े जो गलफड़े नहीं हैं, पंजे जो पंजे नहीं हैं, दर्द की एक चीख जो हँसी की इच्छा जगाती है, बत्तख है। अब, चूंकि मुर्गी पालन पक्षी के साथ-साथ मौजूद है, तो मुझे समझ नहीं आता कि प्राचीन त्रासदी के सामने शास्त्रीय त्रासदी का अस्तित्व क्यों नहीं होना चाहिए।”

या फिर संयोगवश ही मारियस को एनजोलरास और कौरफेयरैक के बीच स्थित रू जीन-जैक्स रूसो से होकर गुजरना पड़ा।

कौरफेयरैक ने उसका हाथ पकड़ा:—

ध्यान से सुनो। यह रू प्लैट्रियर है, जिसे अब रू जीन-जैक्स रूसो कहा जाता है, क्योंकि साठ साल पहले यहाँ एक अनोखा परिवार रहता था। इस परिवार में जीन-जैक्स और थेरेसे थे। समय-समय पर यहाँ छोटे बच्चे जन्म लेते थे। थेरेसे उन्हें जन्म देती थीं और जीन-जैक्स उन्हें अनाथ बच्चों के रूप में पेश करते थे।

और एनजोलरास ने कौरफेयरैक को लगभग इस प्रकार संबोधित किया:—

“जीन-जैक्स की उपस्थिति में मौन! मैं उस व्यक्ति की प्रशंसा करता हूँ। हो सकता है कि उसने अपने बच्चों को त्याग दिया हो; लेकिन उसने जनता को अपना लिया।”

इन युवकों में से किसी ने भी "सम्राट" शब्द का स्पष्ट उच्चारण नहीं किया। केवल जीन प्रोवेर ही कभी-कभार नेपोलियन कहते थे; बाकी सभी बोनापार्ट कहते थे। एनजोलरास इसे "बुओनापार्ट" उच्चारित करते थे।

मारियस को हल्का सा आश्चर्य हुआ। ज्ञान की शुरुआत।

IV. कैफे मुसैन का पिछला कमरा

युवकों के बीच हुई एक बातचीत, जिसमें मारियस भी मौजूद था और जिसमें वह कभी- कभी शामिल भी हो जाता था, ने उसके मन को सचमुच झकझोर दिया।

यह घटना कैफे मुसैन के पिछले कमरे में घटी। ए.बी.सी. के लगभग सभी मित्र उस शाम एकत्रित हुए थे। आर्गंड का दीपक शांतिपूर्वक जलाया गया था। वे बिना किसी भावना के, शोरगुल भरे माहौल में इधर-उधर की बातें कर रहे थे। एनजोलरास और मारियस को छोड़कर, जो चुप रहे, बाकी सभी बेतरतीब ढंग से भाषण दे रहे थे। साथियों के बीच बातचीत में कभी-कभी इस तरह का शांतिपूर्ण शोरगुल आ जाता है। यह बातचीत के साथ-साथ एक खेल और शोरगुल भी था। वे एक-दूसरे पर शब्द उछाल रहे थे और बारी-बारी से उन्हें पकड़ रहे थे। चारों ओर कांटे की गड़गड़ाहट हो रही थी।

इस पिछले कमरे में किसी भी महिला को प्रवेश की अनुमति नहीं थी, सिवाय कैफे की बर्तन धोने वाली लुइसन के, जो समय-समय पर "शौचालय" में अपने कपड़े धोने के लिए वहां से गुजरती थी।

ग्रैन्टेयर, पूरी तरह नशे में धुत होकर, जिस कोने पर उसने कब्जा कर रखा था, उसे शोरगुल से भर रहा था, वह अपनी पूरी ताकत से तर्क दे रहा था और उसका खंडन कर रहा था, और चिल्ला रहा था:—

“मुझे प्यास लगी है। हे मनुष्यों, मैं सपना देख रहा हूँ: कि हाइडेलबर्ग के टनल को लकवा मार गया है, और मैं उन दर्जन भर जोंकों में से एक हूँ जिन्हें उस पर लगाया जाएगा। मुझे पानी चाहिए। मैं जीवन को भूल जाना चाहता हूँ। जीवन किसी अज्ञात व्यक्ति का एक घिनौना आविष्कार है। यह बिल्कुल भी स्थायी नहीं है, और इसका कोई मूल्य नहीं है। जीने के चक्कर में इंसान अपनी गर्दन तोड़ लेता है। जीवन एक रंगमंच है जिसमें कुछ ही व्यावहारिक प्रवेश द्वार हैं। खुशी एक प्राचीन अवशेष पात्र है जिस पर केवल एक तरफ ही चित्रकारी की गई है। उपदेशक कहता है: 'सब कुछ व्यर्थ है।' मैं उस भले आदमी से सहमत हूँ, जिसका शायद कभी अस्तित्व ही नहीं था। शून्य पूरी तरह नग्न नहीं होना चाहता था, इसलिए उसने खुद को व्यर्थता के आवरण में लपेट लिया। हे

व्यर्थता! हर चीज को बड़े-बड़े शब्दों से जोड़ना! रसोई एक प्रयोगशाला है, नर्तक एक प्रोफेसर है, कलाबाज एक जिम्नास्ट है, मुक्केबाज एक मुक्केबाज है, औषध विक्रेता एक रसायनज्ञ है, विग बनाने वाला एक कलाकार है, एक मजदूर एक... एक वास्तुकार, एक जॉकी एक खिलाड़ी है, एक वुड लाउस एक टेरिजिब्रांच है। घमंड का एक सही और एक गलत पक्ष होता है; सही पक्ष मूर्खता है, वह कांच के मोतियों वाला नीग्रो है; गलत पक्ष बेवकूफी है, वह फटे-पुराने कपड़ों वाला दार्शनिक है। मैं एक पर रोता हूँ और दूसरे पर हँसता हूँ। जिन्हें सम्मान और पदवी कहा जाता है, और यहाँ तक कि गरिमा और सम्मान भी, वे आम तौर पर तुच्छ होते हैं। राजा मानव अभिमान को खिलौना बना देते हैं। कैलिगुला ने एक घोड़े को कौंसुल बनाया; चार्ल्स द्वितीय ने एक साधारण मांस को शूरवीर बना दिया। तो अब अपने आप को कौंसुल इनसिटैटस और बैरोनेट रोस्टबीफ के बीच लपेट लो। जहाँ तक लोगों के आंतरिक मूल्य की बात है, वह अब जरा भी सम्मानजनक नहीं रह गया है। पड़ोसी द्वारा पड़ोसी की प्रशंसा सुनो। सफेद पर सफेद भयंकर होता है; अगर लिली बोल सकती, तो वह कबूतर को क्या करारा जवाब देती! एक कट्टर महिला द्वारा एक धर्मनिष्ठ महिला की निंदा करना सांप और कोबरा से भी अधिक विषैला होता है। यह अफ़सोस की बात है कि मैं अज्ञानी हूँ, वरना मैं आपको बहुत सी बातें बता देता; पर मुझे कुछ नहीं पता। उदाहरण के लिए, मैं हमेशा से ही बुद्धिमान रहा हूँ; जब मैं ग्रोस का शिष्य था, तो छोटी-छोटी घटिया तस्वीरें बनाने के बजाय, मैं सेब चुराने में अपना समय बिताता था; रैपिन, रैपिन का पुल्लिंग है। बस इतना ही, मेरे बारे में; बाकी आप लोगों की बात करें तो, आप मुझसे ज़्यादा कुछ नहीं हैं। मैं आपकी खूबियों, श्रेष्ठताओं और गुणों का उपहास करता हूँ। हर अच्छा गुण किसी न किसी दोष की ओर ले जाता है; मितव्ययिता लालच की सीमा पर होती है, उदार व्यक्ति फिजूलखर्ची करने वाले के बगल में रहता है, बहादुर व्यक्ति शेखीबाज़ के साथ कंधे से कंधा मिलाता है; जो बहुत धार्मिक होने का दावा करता है, वह थोड़ा कट्टर होता है; सद्गुणों में उतने ही दोष होते हैं जितने डायोजेन्स के लबादे में छेद होते हैं। आप किसकी प्रशंसा करते हैं, मारे गए व्यक्ति की या हत्यारे की, सीज़र की या ब्रूटस की? आम तौर पर लोग हत्यारे के पक्ष में होते हैं। ब्रूटस अमर रहे! उसने वध कर दिया! यहीं तो सद्गुण है। सद्गुण, ठीक है, लेकिन पागलपन भी। उन महान पुरुषों में कुछ विचित्र बातें भी हैं। सीज़र को मारने वाला ब्रूटस एक छोटे लड़के की मूर्ति से प्रेम करता था। यह

मूर्ति यूनानी मूर्तिकार स्ट्रॉन्गिलियन के हाथों बनी थी, जिसने यूक्नेमोस नामक सुंदर टांगों वाली अमेज़न की मूर्ति भी बनाई थी, जिसे नीरो अपनी यात्राओं में अपने साथ ले जाता था। इस स्ट्रॉन्गिलियन ने केवल दो मूर्तियाँ छोड़ीं जो नीरो और ब्रूटस को एकरूपता प्रदान करती हैं। ब्रूटस एक से प्रेम करता था, नीरो दूसरी से। सारा इतिहास उबाऊ पुनरावृत्ति के सिवा कुछ नहीं है। एक शताब्दी दूसरी शताब्दी की नकल है। मारेन्गो का युद्ध पिडना के युद्ध की नकल है; क्लोविस का टोल्बियाक और नेपोलियन का ऑस्टरलिट्ज़ एक दूसरे से पानी की दो बूंदों की तरह मिलते-जुलते हैं। मैं विजय को ज्यादा महत्व नहीं देता। जीतना इतना मूर्खतापूर्ण है कि इससे ज्यादा मूर्खतापूर्ण कुछ नहीं; सच्ची महिमा तो दूसरों को प्रभावित करने में है। लेकिन कुछ साबित करने की कोशिश करो! यदि आप सफलता से संतुष्ट हैं, तो यह कैसी साधारणता है, और विजय से, तो क्या दुर्भाग्य! हाय, हर जगह घमंड और कायरता ही है। सफलता ही सब कुछ है, यहाँ तक कि व्याकरण भी। होरेस कहते हैं, "जो चाहे करे।" इसलिए मैं मानव जाति से घृणा करता हूँ। क्या हमें इस चर्चा में शामिल होना चाहिए? क्या आप चाहते हैं कि मैं यहाँ के लोगों की प्रशंसा करना शुरू करूँ? कृपया बताइए, कौन से लोग? क्या यह ग्रीस होगा? एथेंसवासियों ने, पुराने ज़माने के उन पेरिसवासियों ने, फोसियन को मार डाला, जिसे हम कोलिग्नी भी कह सकते हैं, और तानाशाहों की इतनी चापलूसी की कि एनासेफोरस ने पिसिस्ट्राटस के बारे में कहा: "उसका मूत्र मधुमक्खियों को आकर्षित करता है।" पचास वर्षों तक ग्रीस में सबसे प्रमुख व्यक्ति व्याकरणविद् फिलेटस थे, जो इतने छोटे और पतले थे कि हवा से उड़ने से बचने के लिए उन्हें अपने जूतों में सीसा भरना पड़ता था। कोरिंथ के विशाल चौक पर सिलानियन द्वारा तराशी गई और प्लिनी द्वारा सूचीबद्ध एक मूर्ति थी; यह मूर्ति एपिस्थेट्स का प्रतिनिधित्व करती थी। एपिस्थेट्स ने क्या किया? उन्होंने एक यात्रा का आविष्कार किया। यही ग्रीस और उसके गौरव का सार है। चलिए अब कुछ और बातों पर चलते हैं। क्या मैं इंग्लैंड की प्रशंसा करूँ? क्या मैं फ्रांस की प्रशंसा करूँ? फ्रांस? क्यों? पेरिस की वजह से? मैंने अभी-अभी आपको एथेंस के बारे में अपनी राय बताई है। इंग्लैंड? क्यों? लंदन की वजह से? मुझे कार्थेज से नफरत है। और फिर, लंदन, विलासिता का महानगर, दुख का केंद्र है। अकेले चारिंग-क्रॉस के पल्ली में ही भूख से हर साल सौ मौतें होती हैं। यही है एल्बियन। मैं अंत में यह भी जोड़ना चाहूँगा कि मैंने एक

अंग्रेज महिला को गुलाबों की माला और नीले चश्मे पहनकर नाचते देखा है। तो फिर इंग्लैंड को भूल जाइए! अगर मैं जॉन बुल की प्रशंसा नहीं करता, तो क्या मैं किसी और की प्रशंसा करूँ? भाई जोनाथन? मुझे उस दास-मालिक भाई में ज़रा भी रुचि नहीं है। 'समय ही धन है' हटा दो, इंग्लैंड का क्या शेष बचेगा? 'कपास ही राजा है' हटा दो, अमेरिका का क्या शेष बचेगा? जर्मनी लसीका है, इटली पित्त है। क्या हम रूस की प्रशंसा में डूब जाएँ? वोल्टेयर ने इसकी प्रशंसा की थी। उन्होंने चीन की भी प्रशंसा की थी। मैं मानता हूँ कि रूस में भी कुछ खूबियाँ हैं, जिनमें से एक है एक मजबूत निरंकुशता; लेकिन मुझे उन निरंकुश शासकों पर दया आती है। उनका स्वास्थ्य नाज़ुक है। एक कटा हुआ सिर वाला एलेक्सिस, एक छुरा घोंपा हुआ पीटर, एक गला घोंटा हुआ पॉल, एक और पॉल को लातों से कुचलकर चपटा कर दिया गया, कई इवानों का गला घोंटकर, कई निकोलस और बेसिल को जहर देकर मार डाला गया, ये सब दर्शाता है कि रूस के सम्राटों का महल घोर अस्वस्थता की स्थिति में है। सभी सभ्य राष्ट्र इस विवरण को विचारक की प्रशंसा के लिए प्रस्तुत करते हैं; युद्ध; अब, युद्ध, सभ्य युद्ध, डकैती से लेकर हर प्रकार की गुंडागर्दी को समाप्त और सारांशित करता है। मोंट जैक्सा की घाटियों में ट्रैबुसेरोस से लेकर डाउटफुल पास में कोमांचे इंडियंस के उत्पात तक। ‘अरे!’ आप मुझसे कहेंगे, ‘लेकिन यूरोप तो एशिया से बेहतर है ही?’ मैं मानता हूँ कि एशिया एक मज़ाक है; लेकिन मुझे ठीक से समझ नहीं आता कि पश्चिम के लोगों, आपको ग्रैंड लामा में हँसी क्यों आती है, जिन्होंने अपने फैशन और शान-ओ-शौकत के साथ राजसी गंदगी को भी मिला दिया है, रानी इसाबेला की गंदी कमीज़ से लेकर राजकुमार की कुर्सी तक। हे मानव जाति के सज्जनों, मैं आपसे कहता हूँ, इसमें ज़रा भी नहीं! सबसे ज़्यादा बीयर ब्रसेल्स में पी जाती है, सबसे ज़्यादा ब्रांडी स्टॉकहोम में, सबसे ज़्यादा चॉकलेट मैड्रिड में, सबसे ज़्यादा जिन एम्स्टर्डम में, सबसे ज़्यादा शराब लंदन में, सबसे ज़्यादा कॉफ़ी कॉन्स्टेंटिनोपल में, सबसे ज़्यादा एब्सिन्थे पेरिस में; ये सभी उपयोगी धारणाएँ हैं। संक्षेप में, पेरिस ही जीतता है। पेरिस में तो कूड़ा बीनने वाले भी विलासी होते हैं; डायोजेन्स भी मुझे पिरियस में दार्शनिक होने से कहीं ज़्यादा प्लेस मौबर्ट का कबाड़ बीनने वाला बनना पसंद होता। इसके अलावा यह भी जान लो; कबाड़ बीनने वालों की शराब की दुकानों को 'बिबीन्स' कहते हैं; सबसे मशहूर हैं सॉसपैन और द स्लॉटरहाउस। इसलिए, चाय बागान, गोगेट्स, कैबुलॉट्स,

बौइबुइस, मास्ट्रोकेट्स, बैस्ट्रिंग्यूज, मानेजिंग्यूज, कबाड़ बीनने वालों की बिबीन्स, खलीफाओं के कारवां, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, मैं एक विलासी हूँ, मैं रिचर्ड के यहाँ चालीस सू प्रति व्यक्ति खाता हूँ, मुझे नग्न क्लियोपेट्रा को लपेटने के लिए फारसी कालीन चाहिए! क्लियोपेट्रा कहाँ है? आह! तो तुम हो, लुइसन। शुभ दिन।

इस प्रकार, नशे में धुत ग्रैन्टेयर, कैफे मुसैन के पिछले कमरे में अपने कोने से, रास्ते में बर्तन धोने वाली महिला को पकड़ते हुए, बोलने लगा।

बॉसुएट ने उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए उसे चुप कराने की कोशिश की, और ग्रांटेयर पहले से भी बदतर तरीके से फिर से बोलने लगा:—

“एगल डे मेओक्स, अपने पंजे नीचे रखो। हिप्पोक्रेट्स द्वारा आर्टाक्सर्क्स के सजावटी सामान को ठुकराने जैसी तुम्हारी इस हरकत का मुझ पर कोई असर नहीं होता। मुझे शांत करने की कोशिश मत करो। वैसे भी, मैं दुखी हूँ। तुम मुझसे क्या सुनना चाहती हो? मनुष्य बुरा है, मनुष्य कुरूप है; तितली सफल है, मनुष्य असफल। भगवान ने उस जानवर को बनाकर गलती की। भीड़ कुरूपता का चुनाव करने का मौका देती है। जो पहले आता है, वह अभागा होता है, औरत (फेम) शब्द बदनाम (इन्फेम) से मिलता-जुलता है। हाँ, मुझे उदासी, घर की याद और बीमारी का डर सता रहा है, और मैं चिढ़ गया हूँ, क्रोधित हूँ, उबासी ले रहा हूँ, ऊब गया हूँ, मरणासन्न हूँ, और मूर्ख हूँ! भगवान भाड़ में जाए!”

“तो चुप रहो, बड़े अक्षरों में R!” बॉसुएट ने अपनी बात फिर से शुरू की, जो पर्दे के पीछे कानून के एक मुद्दे पर चर्चा कर रहे थे, और जो न्यायिक बोलचाल की भाषा में बुरी तरह उलझ गए थे, जिसका निष्कर्ष यह है:—

“—और जहाँ तक मेरा सवाल है, हालाँकि मैं कोई विधिशास्त्री नहीं हूँ, और ज़्यादा से ज़्यादा एक शौकिया वकील हूँ, मैं यह मानता हूँ कि नॉर्मंडी के रीति-रिवाजों के अनुसार, सेंट-मिशेल में, और प्रत्येक वर्ष, जागीर के स्वामी के लाभ के लिए एक समतुल्य राशि का भुगतान किया जाना चाहिए, दूसरों के अधिकारों को सुरक्षित रखते हुए, और सभी द्वारा, मालिकों के साथ-साथ विरासत के हकदारों को भी, और यह कि सभी एम्फाइट्यूज़, लीज़, फ्रीहोल्ड, डोमेन अनुबंध, बंधक—”

"प्रतिध्वनि, वादी अप्सरा," ग्रांटायर ने गुनगुनाया।

ग्रैन्टेयर के पास, लगभग शांत पड़ी एक मेज, कागज की एक शीट, एक स्याही की बोतल और ब्रांडी के दो गिलासों के बीच रखी एक कलम यह संकेत दे रही थी कि एक वाडेविल का खाका तैयार किया जा रहा है।
इस महत्वपूर्ण मामले पर दबी आवाज़ में चर्चा हो रही थी, और काम पर मौजूद दोनों प्रमुखों ने एक-दूसरे को छूते हुए कहा: "चलिए, पहले नाम पता करते हैं। नाम मिल जाने पर, विषय भी पता चल जाता है।"
“यह सच है। बोलकर लिखवाओ। मैं लिख दूंगा।”
श्री डोरिमोन।
“एक स्वतंत्र सज्जन?”
"बिल्कुल।"
"उनकी बेटी, सेलेस्टाइन।"
“समय। अब आगे क्या?”
“कर्नल सैनवाल।”
“सैनवाल बासी हो गया है। मुझे वाल्सिन कहना चाहिए।”
वाडेविल में अभिनय करने की चाह रखने वालों के अलावा, एक और समूह, जो शोरगुल का फायदा उठाकर दबी आवाज़ में बातें कर रहा था, द्वंद्वयुद्ध पर चर्चा कर रहा था। तीस साल का एक बूढ़ा आदमी अठारह साल के एक युवक को सलाह दे रहा था और उसे समझा रहा था कि उसे किस तरह के प्रतिद्वंद्वी का सामना करना पड़ेगा।
“वाह! अपना ध्यान रखना। वह एक कुशल तलवारबाज है। उसका खेल शानदार है। उसके पास आक्रमण की शक्ति है, कोई व्यर्थ की चाल नहीं, कलाई की फुर्ती, तेज गति, बिजली की तरह फुर्ती, सटीक बचाव, गणितीय बचाव, बिगरे! और वह बाएं हाथ से खेलता है।”
ग्रैन्टेयर के ठीक सामने वाले कोने में, जोली और बहोरल डोमिनोज़ खेल रहे थे और प्यार के बारे में बातें कर रहे थे।
जोली कह रहा था, "तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि तुम्हारे पास एक ऐसी प्रेमिका है जो हमेशा हंसती रहती है।"

“यह उसकी गलती है,” बहोरेल ने जवाब दिया। “प्रेमिका का हंसना गलत है। इससे उसे धोखा देने की प्रेरणा मिलती है। उसे खुश देखकर पश्चाताप दूर हो जाता है; लेकिन उसे दुखी देखकर अंतरात्मा कचोटती है।”
“अकृतज्ञ! हँसने वाली स्त्री कितनी अच्छी बात है! और तुम कभी झगड़ा भी नहीं करते!”
“यह उस संधि के कारण है जो हमने की है। अपनी छोटी सी पवित्र संधि बनाते समय हमने अपने-अपने सीमा-क्षेत्र निर्धारित किए थे, जिन्हें हम कभी पार नहीं करते। शीत ऋतु की ओर स्थित क्षेत्र वाउड का है, और पवन की ओर स्थित क्षेत्र गेक्स का। इसीलिए शांति बनी हुई है।”
"शांति, सुख का आत्मसात होना है।"
और तुम, जोली, मैमसेल के साथ अपने इस उलझाव में तुम्हारी क्या स्थिति है— तुम जानते हो मैं किससे मतलब रख रही हूँ?
वह बड़ी बेरहमी से धैर्यपूर्वक मुझसे रूठ जाती है।
फिर भी तुम अपने निर्मल स्वभाव से हृदय को कोमल करने वाले प्रेमी हो। हाय!
"अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं उसे अकेला छोड़ देता।"
"यह कहना तो काफी आसान है।"
और करने के लिए। क्या उसका नाम मुशिशेट्टा नहीं है?
“हाँ। आह! मेरी प्यारी बहोरेल, वह एक अद्भुत लड़की है, बहुत पढ़ी-लिखी, छोटे-छोटे पैरों और हाथों वाली, अच्छे कपड़े पहनती है, गोरी है और उसके गालों पर डिंपल हैं, उसकी आँखें किसी ज्योतिषी जैसी हैं। मैं उस पर फिदा हूँ।”
“मेरे प्रिय मित्र, उसे प्रसन्न करने के लिए तुम्हें सुरुचिपूर्ण दिखना होगा और अपने घुटनों से प्रभाव उत्पन्न करना होगा। स्टाउब की दुकान से डबल-मिल्ड कपड़े की एक अच्छी पतलून खरीद लो। इससे मदद मिलेगी।”
“किस कीमत पर?” ग्रैन्टेयर चिल्लाया।

तीसरे कोने को एक काव्यात्मक चर्चा के लिए प्रस्तुत किया गया। मूर्तिपूजक पौराणिक कथाएँ ईसाई पौराणिक कथाओं से प्रतिस्पर्धा कर रही थीं। प्रश्न ओलंपस के बारे में था, जिसकी भूमिका जीन प्रूवेयर ने विशुद्ध रोमांटिकतावाद से निभाई।

जीन प्रोवैर केवल शांत अवस्था में ही संकोची होते थे। एक बार उत्तेजित होते ही वे खुलकर बोलने लगते थे, एक प्रकार की खुशी उनके उत्साह को और बढ़ा देती थी, और वे एक साथ हंसते और गीतात्मक दोनों होते थे।

“देवताओं का अपमान न करें,” उसने कहा। “देवताओं का निधन न हुआ हो तो ठीक है। बृहस्पति मुझे मृत प्रतीत नहीं होता। आप कहते हैं कि देवता स्वप्न हैं। खैर, आज की प्रकृति में भी, इन स्वप्नों के लुप्त होने के बाद भी, हमें वे सभी भव्य प्राचीन पौराणिक कथाएँ मिलती हैं। उदाहरण के लिए, विग्नेमाले जैसा कोई पर्वत, जिसका आकार किसी किले जैसा है, मुझे आज भी साइबेले का मुकुट लगता है; यह सिद्ध नहीं हुआ है कि पैन रात में विलो वृक्षों के खोखले तनों में साँस नहीं भरता और बारी-बारी से अपनी उंगलियों से छेदों को बंद नहीं करता, और मेरा हमेशा से मानना रहा है कि आयो का पिस्सेवाचे जलप्रपात से कुछ संबंध था।”

अंतिम कोने में वे राजनीति पर चर्चा कर रहे थे। स्वीकृत चार्टर के साथ दुर्व्यवहार हो रहा था। कॉम्बेफेरे उसका कमजोर समर्थन कर रहे थे, जबकि कौरफेयरैक पूरी ताकत से उसमें खामियां ढूंढ रहे थे। मेज पर प्रसिद्ध टौकेट चार्टर की एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रति पड़ी थी। कौरफेयरैक ने उसे पकड़ लिया था और उसे लहराते हुए, अपने तर्कों के साथ-साथ उस कागज के पन्ने की खड़खड़ाहट भी कर रहे थे।

“सबसे पहले तो, मुझे कोई राजा नहीं चाहिए; अगर सिर्फ़ आर्थिक दृष्टिकोण से भी देखें, तो भी मुझे कोई राजा नहीं चाहिए; राजा एक परजीवी होता है। राजा मुफ़्त में नहीं मिलते। ज़रा सुनो: राजाओं की महँगाई। फ़्रांस्वा प्रथम की मृत्यु के समय, फ़्रांस का राष्ट्रीय ऋण तीस हज़ार लिवर की आय के बराबर था; लुई 14 की मृत्यु के समय यह दो अरब, छह सौ मिलियन था, जो 28 लिवर प्रति मार्क के हिसाब से 1760 में डेस्मारेट्स के अनुसार चार अरब, पाँच सौ मिलियन के बराबर था, जो आज बारह अरब के बराबर होगा। दूसरे, और कॉम्बेफ़ेरे को कोई आपत्ति नहीं, एक स्वीकृत चार्टर सभ्यता का एक घटिया उपाय मात्र है।

संक्रमण को बचाने के लिए, मार्ग को आसान बनाने के लिए, सदमे को कम करने के लिए, संवैधानिक कल्पनाओं के अभ्यास द्वारा राष्ट्र को राजशाही से लोकतंत्र में धीरे-धीरे ले जाने के लिए—ये सभी कितने घृणित कारण हैं! नहीं! नहीं! हमें कभी भी जनता को इन बातों से अवगत नहीं कराना चाहिए। झूठा प्रकाश। आपके संवैधानिक तहखाने में सिद्धांत क्षीण और धुंधले पड़ गए हैं। कोई अवैधता नहीं, कोई समझौता नहीं, राजा द्वारा जनता को कोई अनुदान नहीं। ऐसे सभी अनुदानों में अनुच्छेद 14 निहित है। देने वाले हाथ के बगल में छीनने वाला पंजा भी होता है। मैं आपके चार्टर को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करता हूँ। चार्टर एक मुखौटा है; झूठ इसके नीचे छिपा है। जो जनता चार्टर स्वीकार करती है, वह अपने अधिकार का त्याग करती है। कानून तभी कानून होता है जब वह पूर्ण हो। नहीं! कोई चार्टर नहीं!

सर्दी का मौसम था; अंगीठी में लकड़ियों के कुछ गट्ठे चटक रहे थे। यह लुभावना था, और कौरफेयरैक खुद को रोक नहीं पाया। उसने बेचारे टौकेट चार्टर को मुट्ठी में मसलकर आग में फेंक दिया। कागज़ चटक गया। कॉम्बेफेरे ने लुई XVIII की उस उत्कृष्ट कृति को दार्शनिक भाव से जलते हुए देखा, और बस इतना कहकर संतुष्ट हो गया:—

"वह चार्टर ज्वाला में परिवर्तित हो गया।"

और व्यंग्य, ताने, मजाक, वह फ्रांसीसी शब्द जिसे एंट्रेन कहा जाता है, और वह अंग्रेजी शब्द जिसे हास्य कहा जाता है, अच्छा और बुरा स्वाद, अच्छे और बुरे तर्क, संवाद की सभी जंगली आतिशबाजी, एक साथ बढ़ती हुई और कमरे के सभी कोनों से गुजरती हुई, उनके सिर पर एक प्रकार की आनंदमय बमबारी पैदा कर रही थी।

V. क्षितिज का विस्तार

युवा मनों के बीच उत्पन्न होने वाले विचारों में यह अद्भुत गुण होता है कि न तो चिंगारी का पूर्वाभास किया जा सकता है और न ही बिजली की चमक का। अब आगे क्या फूट पड़ेगा? कोई नहीं जानता। हंसी का यह विस्फोट एक कोमल भावना से शुरू होता है।

हंसी-मजाक के क्षण में ही गंभीरता प्रवेश कर जाती है। आवेग पहले आकस्मिक शब्द पर निर्भर करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा सर्वोपरि है, हंसी- मजाक ही अप्रत्याशित के लिए मार्ग प्रशस्त करने के लिए पर्याप्त है। ये अचानक मोड़ लेने वाली बातचीत हैं, जिनमें दृष्टिकोण अचानक बदल जाता है। संयोग ही ऐसी बातचीत का सूत्रधार होता है।

शब्दों के टकराव से विचित्र रूप से शुरू हुआ एक गंभीर विचार, अचानक उन चुटकुलों के संघर्ष को पार कर गया जिसमें ग्रांटेयर, बहोरल, प्रूवेयर, बॉसुएट, कॉम्बफेरे और कौरफेयरैक भ्रमित रूप से तलवारबाजी कर रहे थे।

किसी संवाद में कोई वाक्यांश अचानक कैसे प्रकट होता है? यह कहाँ से आता है कि सुनने वालों का ध्यान अचानक अपनी ओर खींच लेता है? हमने अभी कहा है कि इसके बारे में कोई कुछ नहीं जानता। हंगामे के बीच, बॉसुएट ने अचानक कॉम्बेफेरे को संबोधित करते हुए एक संबोधन समाप्त किया, जिसमें यह तिथि लिखी थी:—

“18 जून, 1815, वाटरलू।”

वाटरलू का नाम सुनते ही, पानी के गिलास के बगल में मेज पर अपनी कोहनियों को टिकाए बैठे मारियस ने अपनी कलाई को अपनी ठोड़ी के नीचे से हटाया और दर्शकों को टकटकी लगाकर देखने लगा।

“पार्डियू!” कौरफेयरैक ने हैरानी से कहा (उस समय (“पार्बल्यू” शब्द का प्रयोग कम हो रहा था), “यह संख्या 18 अजीब है और मुझे चौंका देती है। यह बोनापार्ट की घातक संख्या है। लुई को आगे और ब्रुमेयर को पीछे रख दें, तो

आपको उस व्यक्ति का पूरा भाग्य मिल जाता है, इस खास विशेषता के साथ कि अंत शुरुआत के ठीक बाद आता है।”

एनजोलरास, जो उस समय तक मौन रहे थे, ने अपनी चुप्पी तोड़ी और कॉम्बेफेरे को संबोधित करते हुए यह टिप्पणी की:

"आपका मतलब अपराध और उसके प्रायश्चित से है।"

यह शब्द "अपराध" मारियस की स्वीकार्यता की सीमा से परे था, जो वाटरलू की अचानक याद आने से पहले ही बहुत परेशान था।

वह उठा, धीरे-धीरे दीवार पर फैले फ्रांस के नक्शे की ओर बढ़ा, जिसके निचले हिस्से में एक अलग खाने में एक द्वीप दिखाई दे रहा था, उसने उस खाने पर अपनी उंगली रखी और कहा:—

"कोर्सिका, एक छोटा सा द्वीप जिसने फ्रांस को बहुत महान बना दिया है।"

यह मानो बर्फीली हवा का झोंका था। सब चुप हो गए। उन्हें लगा कि कुछ घटित होने वाला है।

बहोरल, बॉसुएट को जवाब देते हुए, बस वही धड़ वाला रवैया अपना रहा था जिसका उसे आदी था। उसने सुनने के लिए उस रवैये को छोड़ दिया।

एनजोलरास, जिसकी नीली आँख किसी पर टिकी नहीं थी और जो मानो अंतरिक्ष में टकटकी लगाए हुए था, ने मारियस की ओर देखे बिना उत्तर दिया:—

“फ्रांस को महान बनने के लिए कोर्सिका की आवश्यकता नहीं है। फ्रांस महान है क्योंकि वह फ्रांस है। Quia nomina leo.”

मारियस को पीछे हटने की कोई इच्छा नहीं हुई; वह एनजोलरास की ओर मुड़ा, और उसकी आवाज उसके पूरे अस्तित्व की कंपकंपी से निकली एक कंपन के साथ फूट पड़ी:

“ईश्वर न करे कि मैं फ्रांस को कमतर आंकूं! लेकिन नेपोलियन को फ्रांस में मिलाना उसे कमतर नहीं आंकना है। आइए, इस प्रश्न पर चर्चा करें। मैं आप लोगों के बीच नया हूं, लेकिन मैं स्वीकार करता हूं कि आप मुझे आश्चर्यचकित करते हैं। हम कहां खड़े हैं? हम कौन हैं? आप कौन हैं? मैं कौन हूं? आइए, सम्राट के बारे में बात करते हैं। मैं सुनता हूं कि आप लोग 'बुओनापार्ट' कहते हैं, राजभक्तों की तरह 'उ' पर जोर देते हुए। मैं आपको चेतावनी देता हूं

कि मेरे दादाजी इससे भी बेहतर कहते हैं; वे 'बुओनापार्टे' कहते हैं। मुझे लगा था कि आप युवा हैं। तो फिर, आपका उत्साह कहां है? और आप इसका क्या कर रहे हैं? यदि आप सम्राट की प्रशंसा नहीं करते, तो आप किसकी प्रशंसा करते हैं? और आप और क्या चाहते हैं? यदि आप उस महान व्यक्ति को नहीं चाहते, तो आप किन महान व्यक्तियों को चाहेंगे? उनके पास सब कुछ था। वे पूर्ण थे। उनके मस्तिष्क में मानवीय क्षमताओं का सार था। उन्होंने जस्टिनियन की तरह नियम बनाए, उन्होंने सीज़र की तरह आदेश दिए, उनकी बातचीत पास्कल की बिजली की चमक और टैसिटस की गर्जना से मिश्रित थी, उन्होंने इतिहास रचा और उन्होंने लिखा। उनके बुलेटिन इलियड के समान थे, उन्होंने न्यूटन के कोड को मुहम्मद के रूपक के साथ जोड़ा, उन्होंने पूर्व में पिरामिड के समान महान शब्द छोड़े, टिलसिट में उन्होंने सम्राटों को शिक्षा दी, विज्ञान अकादमी में उन्होंने लाप्लास को जवाब दिया, राज्य परिषद में उन्होंने मर्लिन के विरुद्ध अपनी बात रखी, उन्होंने पहले की ज्यामिति और बाद वाले की चालाकी को आत्मा दी, वे वकीलों के साथ विधिक और खगोलविदों के साथ नक्षत्रशास्त्री थे; क्रॉमवेल की तरह दो मोमबत्तियों में से एक को बुझाते हुए, वे एक पर्दे के झालर के लिए सौदेबाजी करने मंदिर गए; उन्होंने सब कुछ देखा; वे सब कुछ जानते थे; जिसने उन्हें अपने छोटे बच्चे के पालने के पास खुले दिल से हंसने से नहीं रोका; और अचानक, भयभीत यूरोप ने उनकी बात सुनी, सेनाएं हरकत में आ गईं, तोपखाने के पार्क गर्जना करने लगे, नदियों पर नावें फैल गईं, तूफान में घुड़सवार सेना के बादल दौड़ पड़े, चीखें, तुरही, हर दिशा में सिंहासन कांपने लगे, मानचित्र पर राज्यों की सीमाएँ डगमगा रही थीं, एक अलौकिक तलवार की म्यान से निकाले जाने की ध्वनि सुनाई दी; उन्होंने उसे देखा, क्षितिज पर सीधा खड़ा हुआ, हाथ में धधकती मशाल और आँखों में चमक लिए, गरज के बीच अपने दो पंख फैलाते हुए, विशाल सेना और पुराने रक्षक, और वह युद्ध का महादूत था!

सभी चुप रहे, और एनजोलरास ने अपना सिर झुका लिया। मौन हमेशा कुछ हद तक सहमति का प्रभाव पैदा करता है, जैसे कि दुश्मन को दीवार तक धकेल दिया गया हो। मारियस ने और भी अधिक उत्साह के साथ, और लगभग बिना सांस लिए, बोलना जारी रखा:

“मेरे मित्रों, आइए हम न्यायपूर्ण बनें! किसी राष्ट्र के लिए कितना शानदार भाग्य है कि वह ऐसे सम्राट का साम्राज्य हो, जब वह राष्ट्र फ्रांस हो और वह अपनी प्रतिभा को उस व्यक्ति की प्रतिभा में जोड़ दे! प्रकट होना और शासन करना, आगे बढ़ना और विजय प्राप्त करना, सभी राजधानियों को पड़ाव बनाना, अपने सैनिकों को लेना और उन्हें राजा बनाना, राजवंशों के पतन का फरमान सुनाना और यूरोप को एक ही झटके में रूपांतरित कर देना; आपको यह एहसास दिलाना कि जब आप धमकी देते हैं तो आप ईश्वर की तलवार की मूठ पर हाथ रख रहे होते हैं; एक ही व्यक्ति में हैनिबल, सीज़र, शार्लेमेन का अनुसरण करना; ऐसे व्यक्ति की प्रजा होना जो आपकी सुबहों में जीती हुई लड़ाई की चौंकाने वाली घोषणा भर देता है, आपको सुबह जगाने के लिए इनवैलिड्स की तोपें हों, प्रकाश की गहराइयों में ऐसे अद्भुत शब्द फेंकना जो हमेशा के लिए प्रज्वलित रहें, मारेन्गो, अर्कोला, ऑस्टरलिट्ज़, जेना, वाग्राम! हर पल विजय के नक्षत्रों को चमकाना सदियों के शिखर से, फ्रांसीसी साम्राज्य को रोमन साम्राज्य के समान एक समान दर्जा देने के लिए, एक महान राष्ट्र बनने और एक भव्य सेना को जन्म देने के लिए, अपनी सेनाओं को पूरी पृथ्वी पर फैलाने के लिए, जैसे कोई पर्वत अपने चीलों को चारों ओर विजय प्राप्त करने, प्रभुत्व स्थापित करने, बिजली की तरह प्रहार करने के लिए भेजता है, यूरोप में गौरव से जगमगाते एक राष्ट्र के रूप में, सदियों तक टाइटन्स के बिगुल की गूंज फैलाने के लिए, विजय और चकाचौंध से दो बार दुनिया को जीतने के लिए, यही उदात्त है; और इससे बड़ी बात क्या हो सकती है?

कॉम्बेफेरे ने कहा, "आज़ाद होना।"

मारियस ने भी अपना सिर झुका लिया; वह ठंडा और सरल शब्द उसकी महाकाव्यमय अभिव्यक्ति को लोहे की तलवार की तरह चीर गया था, और उसे लगा जैसे वह उसके भीतर से गायब हो रहा है। जब उसने अपनी आँखें उठाईं, तो कॉम्बेफेरे वहाँ नहीं था। शायद देवत्व के जवाब से संतुष्ट होकर, वह अभी-अभी चला गया था, और एनजोलरास को छोड़कर सभी उसके पीछे चले गए थे। कमरा खाली हो गया था। एनजोलरास, मारियस के साथ अकेला रह गया था, गंभीरता से उसे देख रहा था। हालाँकि, मारियस ने अपने विचारों को कुछ हद तक संजो लिया था, और खुद को हारा हुआ नहीं मान रहा था; उसके भीतर एक आंतरिक उथल-पुथल का अंश बचा था, जो निस्संदेह एनजोलरास के खिलाफ तर्कों में तब्दील होने ही वाला था, तभी

अचानक, उन्होंने सीढ़ियों पर किसी के गाने की आवाज़ सुनी। यह कॉम्बेफेरे था , और वह यह गा रहा था :—

“अगर सीज़र ने मुझे यश और युद्ध दिया होता , और मुझे अपनी माँ का प्यार छोड़ना पड़ता , तो मैं महान सीज़र से कहता : अपना राजदंड और अपना रथ वापस ले लो , मैं अपनी माँ से ज़्यादा प्यार करता हूँ , ओह प्रिय ! मैं अपनी माँ से ज़्यादा प्यार करता हूँ !”

कॉम्बेफेरे के जोशीले और कोमल स्वरों ने इस दोहे को एक विचित्र भव्यता प्रदान की। मारियस ने सोच -विचार करते हुए , और अपनी निगाहें छत पर टिकाए हुए , लगभग यंत्रवत दोहराया : "मेरी माँ ?—"

उसी क्षण , उसने अपने कंधे पर एनजोलरास का हाथ महसूस किया।

“नागरिक ,” एनजोलरास ने उससे कहा , “मेरी माँ गणतंत्र है। ”

VI. रेस अंगुस्टा

उस शाम मारियस बुरी तरह से व्याकुल हो गया और उसके मन में उदासी की एक गहरी छाया छा गई। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे धरती को लोहे से चीरकर उसमें अनाज बोने के समय होता है; उसे केवल घाव का एहसास होता है; अंकुर की कंपकंपी और फल की खुशी तो बाद में ही आती है।

मारियस उदास था। उसने अभी-अभी आस्था अपनाई थी; क्या उसे अब इसे त्याग देना चाहिए? उसने स्वयं से कहा कि वह ऐसा नहीं करेगा। उसने स्वयं से कहा कि वह संदेह नहीं करेगा, फिर भी वह अनजाने में ही संदेह करने लगा। दो धर्मों के बीच खड़ा रहना, जिनमें से एक से आप अभी तक बाहर नहीं निकले हैं और दूसरे में अभी तक प्रवेश नहीं किया है, असहनीय है; और गोधूलि बेला केवल चमगादड़ जैसी आत्माओं को ही भाती है। मारियस स्पष्ट दृष्टि वाला था और उसे सच्चे प्रकाश की आवश्यकता थी। संदेह के धुंधलेपन ने उसे पीड़ा दी। चाहे उसकी इच्छा जहाँ वह था वहीं रहने की हो, वह वहाँ रुक नहीं सकता था, वह आगे बढ़ने, जाँचने, सोचने और और आगे बढ़ने के लिए विवश था। यह उसे कहाँ ले जाएगा? उसे डर था कि अपने पिता के इतने करीब आने के बाद, अब वह ऐसा कदम न उठा ले जो उसे अपने पिता से दूर कर दे। उसके मन में आने वाले सभी विचारों ने उसकी बेचैनी को और बढ़ा दिया। उसके चारों ओर एक खड़ी चट्टान दिखाई देने लगी। वह न तो अपने दादाजी से सहमत था और न ही अपने दोस्तों से; एक की नज़र में वह साहसी था, तो दूसरों की नज़र में पुराने ख्यालों का, और उसने इस बात को स्वीकार कर लिया था कि वह दोहरी तरह से अकेला पड़ गया है, एक तरफ उम्र का बोझ है और दूसरी तरफ जवानी का। उसने कैफे मुसैन जाना छोड़ दिया।

अंतरात्मा की अशांत अवस्था में, उसने जीवन के कुछ गंभीर पहलुओं के बारे में सोचना बंद कर दिया। जीवन की वास्तविकताएँ आसानी से भुलाई नहीं जा सकतीं। वे अचानक ही उसे झकझोर कर रख देती हैं।

एक सुबह, होटल का मालिक मारियस के कमरे में आया और उससे बोला:—

"महाशय कौरफेयरैक ने आपकी ओर से उत्तर दिया।"

"हाँ।"

लेकिन मुझे अपना पैसा चाहिए।
"कौरफेयरैक से अनुरोध करो कि वह आकर मुझसे बात करे," मारियस ने कहा।
कौरफेयरैक के प्रकट होने के बाद, मेज़बान उन्हें छोड़कर चला गया। तब मारियस ने उसे वह बात बताई जो उसने पहले कभी नहीं बताई थी, कि वह दुनिया में अकेला है और उसका कोई रिश्तेदार नहीं है।
“तुम्हारा क्या होगा?” कौरफेयरैक ने कहा।
“मुझे इस बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं है,” मारियस ने उत्तर दिया। "आप क्या करने जा रहे हैं?"
"मुझे नहीं पता।"
"क्या आपके पास पैसे हैं?"
“पंद्रह फ्रैंक।”
क्या आप मुझसे कुछ उधार लेना चाहेंगे?
"कभी नहीं।"
“क्या तुम्हारे पास कपड़े हैं?”
"यही सब कुछ मेरे पास है।"
"क्या आपके पास कोई गहने हैं?"
"एक घड़ी।"
"चाँदी?"
"सोना; यह रहा।"
"मैं एक कपड़े के व्यापारी को जानता हूँ जो आपका फ्रॉक-कोट और एक जोड़ी पतलून ले लेगा।"
"यह अच्छा है।"
“तब आपके पास केवल एक पतलून, एक जैकेट, एक टोपी और एक कोट ही बचेगा।” और मेरे जूते।
“क्या! तुम नंगे पैर नहीं चलोगे? वाह! क्या शान-शौकत है!”

इतना काफी होगा।
मैं एक ऐसे घड़ीसाज़ को जानता हूँ जो आपकी घड़ी खरीद लेगा। "यह अच्छा है।"
“नहीं; यह अच्छा नहीं है। उसके बाद तुम क्या करोगे?”
जो भी आवश्यक हो। यानी, ईमानदारी से किया गया कोई भी काम।" "क्या आप अंग्रेजी जानते हैं?"
"नहीं।"
"क्या आप जर्मन जानते हो?"
"नहीं।"
"यह और भी बुरा है।"
"क्यों?"
"क्योंकि मेरे एक मित्र, जो प्रकाशक हैं, एक प्रकार का विश्वकोश तैयार कर रहे हैं, जिसके लिए आपको अंग्रेजी या जर्मन लेखों का अनुवाद करना पड़ सकता है। यह कम वेतन वाला काम है, लेकिन इससे गुजारा किया जा सकता है।"
मैं अंग्रेजी और जर्मन सीखूंगा।
और इस बीच?
"इस बीच मैं अपने कपड़ों और अपनी घड़ी से ही गुजारा करूंगा।"
कपड़े बेचने वाले को बुलाया गया। उसने पुराने कपड़ों के लिए बीस फ्रैंक दिए। फिर उन्हें घड़ी बनाने वाले के पास ले जाया गया। उसने पैंतालीस फ्रैंक में घड़ी खरीदी।
होटल लौटते समय मारियस ने कौरफेयरैक से कहा, "यह बुरा नहीं है, मेरे पंद्रह फ्रैंक के साथ, यह अस्सी हो जाता है।"
“और होटल का बिल?” कौरफेयरैक ने पूछा।
“हेलो, मैं यह भूल ही गया था,” मारियस ने कहा।

मकान मालिक ने अपना बिल पेश किया, जिसका भुगतान मौके पर ही करना था। यह बिल सत्तर फ्रैंक का था।

“मेरे पास दस फ्रैंक बचे हैं,” मारियस ने कहा।

“अरे बाप रे! अंग्रेज़ी सीखते समय तुम पाँच फ़्रैंक खा जाओगे, और जर्मन सीखते समय भी पाँच फ़्रैंक। ये तो जीभ को बहुत तेज़ी से निगलने जैसा होगा, या सौ सू को बहुत धीरे-धीरे निगलने जैसा।”

इसी बीच, मुश्किलों में फंसी एक काफी नेक दिल इंसान, आंटी गिलनोर्मंड ने आखिरकार मारियस का ठिकाना ढूंढ निकाला।

एक सुबह, लॉ स्कूल से लौटने पर, मारियस को अपनी चाची का एक पत्र और एक सीलबंद डिब्बे में साठ पिस्तोल मिले, यानी छह सौ फ्रैंक सोने के सिक्के।

मारियस ने तीस लुई अपनी चाची को एक विनम्र पत्र के साथ वापस भेज दिए, जिसमें उसने कहा कि उसके पास जीवनयापन के पर्याप्त साधन हैं और वह आगे अपनी सभी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होगा। उस समय उसके पास केवल तीन फ्रैंक बचे थे।

उनकी चाची ने दादाजी को इस इनकार के बारे में नहीं बताया, क्योंकि उन्हें गुस्सा आने का डर था। वैसे भी, अगर उन्होंने यह न कहा होता: "मुझे उस खून पीने वाले का नाम फिर कभी न सुनना पड़े!"

मारियस ने होटल डे ला पोर्ट सेंट-जैक्स छोड़ दिया, क्योंकि वह वहां कर्ज में डूबना नहीं चाहता था।

[illegible]

आई. मारियस निर्धन

मारियस का जीवन कठिन हो गया। अपने कपड़े और घड़ी खाना उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। उसे उस भयानक, अवर्णनीय पीड़ा का सामना करना पड़ा जिसे 'दे ला वाचे एनरागे' (दुखद कष्ट) कहा जाता है; यानी, उसने घोर कठिनाइयों और अभावों को सहा। यह एक भयानक स्थिति थी, जिसमें रोटी के बिना दिन, नींद के बिना रातें, मोमबत्ती के बिना शामें, काम के बिना सप्ताह, आशाहीन भविष्य, कोहनी से फटा हुआ कोट, लड़कियों की हंसी का पात्र बनने वाली पुरानी टोपी, किराया न चुकाने के कारण रात में बंद पाया जाने वाला दरवाजा, चौकीदार और दुकानदार का अभद्र व्यवहार, पड़ोसियों के उपहास, अपमान, कुचली गई गरिमा, किसी भी प्रकार का काम स्वीकार करना, घृणा, कड़वाहट और निराशा शामिल थी। मारियस ने सीखा कि यह सब कैसे सहा जाता है, और कैसे अक्सर यही एकमात्र ऐसी चीजें होती हैं जिन्हें सहन करना पड़ता है। जीवन के उस मोड़ पर जब मनुष्य को अपने स्वाभिमान की आवश्यकता होती है, क्योंकि उसे प्रेम की आवश्यकता होती है, उसने महसूस किया कि उसके फटे-पुराने कपड़ों के कारण उसका उपहास किया जा रहा है, और उसकी गरीबी के कारण उसे हास्यास्पद समझा जा रहा है। उस उम्र में जब यौवन हृदय को शाही गर्व से भर देता है, उसने कई बार अपनी जर्जर जूतियों पर नज़र डाली, और उसने अन्यायपूर्ण शर्म और दयनीयता की पीड़ा को महसूस किया। यह एक प्रशंसनीय और भयानक परीक्षा है जिससे कमजोर लोग नीच बनकर निकलते हैं, और बलवान लोग महान बनकर निकलते हैं। यह एक ऐसी भट्टी है जिसमें भाग्य मनुष्य को तब डालता है जब उसे किसी दुष्ट या देवता की आवश्यकता होती है।

अनेक महान कर्म तुच्छ संघर्षों में ही संपन्न होते हैं। ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ वीरता को अनदेखा किया जाता है और वह दृढ़ निश्चयी रहती है, तथापि वह आवश्यकताओं और दुराचारों के उस घातक आक्रमण में कदम-दर-कदम स्वयं का बचाव करती है। ऐसे महान और रहस्यमय विजय जिन्हें कोई नहीं देख पाता, जिन्हें कोई प्रसिद्धि नहीं मिलती, जिनका कोई अभिनंदन नहीं होता। जीवन, दुर्भाग्य, एकांत, परित्याग, गरीबी, ये वे युद्धक्षेत्र हैं जिनके अपने नायक होते हैं; गुमनाम नायक, जो कभी-कभी प्रसिद्धि पाने वाले नायकों से भी महान होते हैं।

इस प्रकार दृढ़ और दुर्लभ स्वभावों का निर्माण होता है; दुख, जो लगभग हमेशा सौतेली माँ होता है, कभी-कभी माँ भी बन जाता है; दरिद्रता आत्मा और मन की शक्ति को जन्म देती है; कष्ट अहंकार की जननी है; दुख उदार लोगों के लिए अच्छा दूध है।

मारियस के जीवन में एक ऐसा क्षण आया, जब वह खुद अपने घर की सीढ़ियाँ साफ करता था, जब वह फलवाले से अपने सू (एक सौ) का ब्री पनीर खरीदता था, जब वह शाम ढलने का इंतज़ार करता था, फिर चुपके से बेकरी में घुसकर एक रोटी खरीदता था, जिसे वह चोरी-छिपे अपने अटारी में ले जाता था, मानो उसने उसे चुराया हो। कभी-कभी कोने पर स्थित कसाई की दुकान में, मज़ाक करते रसोइयों के बीच, जो उसे कोहनी मारते थे, एक अजीब सा नौजवान बड़ी-बड़ी किताबें बगल में दबाए हुए, दबे पांव घुसता दिखाई देता था। दुकान में घुसते ही वह अपने माथे से टोपी उतारता था, जिस पर पसीने की बूँदें थीं, कसाई की हैरान पत्नी को झुककर प्रणाम करता था, एक मटन कटलेट मांगता था, उसके लिए छह-सात सू (एक सौ) देता था, उसे कागज़ में लपेटकर दो किताबों के बीच बगल में रखता था और चला जाता था। यह मारियस था। इसी कटलेट को खाकर, जिसे उसने खुद अपने लिए पकाया था, वह तीन दिन तक जीवित रहा।

पहले दिन उसने मांस खाया, दूसरे दिन चर्बी खाई, तीसरे दिन हड्डी कुतर दी। चाची गिलनोर्मंड ने बार-बार कोशिश की और उसे कई बार साठ पिस्तौलें भेजीं।
मारियस ने हर बार उन्हें यह कहकर लौटा दिया कि उसे किसी चीज की जरूरत नहीं है।

जब वह अपने पिता के शोक में डूबा हुआ था, तभी उसके भीतर वह क्रांति आ पड़ी जिसका हमने अभी वर्णन किया है। तब से उसने अपने काले वस्त्र नहीं उतारे। लेकिन उसके वस्त्र उसका साथ छोड़ रहे थे। एक दिन ऐसा आया जब उसके पास कोट भी नहीं बचा। अब उसकी पैंट भी जाने वाली थी। अब क्या किया जाए? कौरफेयरैक, जिसके प्रति उसने कुछ भलाई का काम किया था, ने उसे एक पुराना कोट दिया। तीस सू में, मारियस ने किसी कुली से उसे फिर से चमकाया और वह नया कोट बन गया। लेकिन यह कोट हरा था। फिर मारियस रात होने तक बाहर नहीं निकला। इससे उसका कोट काला हो गया। चूंकि वह हमेशा शोक में दिखना चाहता था, इसलिए उसने खुद को रात के आवरण में लपेट लिया।

इन सब के बावजूद, उन्हें वकालत करने की अनुमति मिल गई। उन्हें कौरफेयरैक के कमरे में रहना था, जो कि ठीक-ठाक था और जहाँ कुछ विधि-पुस्तकों के साथ-साथ कई जीर्ण-शीर्ण प्रेम-पुस्तकों का संग्रह था, जिसे नियमों के अनुसार पुस्तकालय माना जाता था। वे अपने पत्र कौरफेयरैक के कमरे के पते पर भेजते थे।

जब मारियस वकील बन गया, तो उसने अपने दादाजी को एक पत्र लिखकर इस बात की सूचना दी। पत्र भले ही भावहीन था, लेकिन उसमें विनम्रता और आदर का भाव भरा हुआ था। एम. गिलनोर्मंड ने पत्र उठाया, उसे पढ़ा, चार टुकड़ों में फाड़ा और कूड़ेदान में फेंक दिया, जिससे वे कांप उठे। दो-तीन दिन बाद, मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने अपने पिता को, जो अपने कमरे में अकेले थे, ज़ोर-ज़ोर से बातें करते हुए सुना। जब भी वे बहुत परेशान होते थे, वे ऐसा ही करते थे। उन्होंने सुना और पाया कि बूढ़ा कह रहा था: "अगर तुम मूर्ख न होतीं, तो तुम्हें पता होता कि कोई एक ही समय में बैरन और वकील नहीं हो सकता।"

II. मारियस पूर

दुख का भी वही हाल है जो बाकी सब चीजों का होता है। अंत में यह सहनीय हो जाता है। आखिरकार यह एक रूप धारण कर लेता है और खुद को ढाल लेता है। व्यक्ति धीरे-धीरे, यानी एक सीमित रूप में विकसित होता है, जो जीवन के लिए पर्याप्त होता है। मारियस पोंटमर्सी का जीवन इसी प्रकार व्यवस्थित था।

वह सबसे कठिन दौर से गुज़र चुका था; उसके सामने संकरा रास्ता थोड़ा खुल रहा था। कड़ी मेहनत, लगन, साहस और दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर वह अपने काम से सालाना लगभग सात सौ फ़्रैंक कमा लेता था। उसने जर्मन और अंग्रेज़ी भाषाएँ सीख ली थीं; कौरफेयरैक की बदौलत, जिन्होंने उसे अपने मित्र प्रकाशक से मिलवाया था, मारियस ने प्रकाशन गृह के साहित्य विभाग में एक सहायक कर्मचारी का मामूली पद संभाला। वह प्रॉस्पेक्टस तैयार करता, अख़बारों का अनुवाद करता, संस्करणों पर टिप्पणियाँ लिखता, जीवनियाँ संकलित करता, आदि; इस तरह उसकी सालाना आय सात सौ फ़्रैंक रहती थी। वह इसी से अपना जीवन यापन करता था। कैसे? इतनी बुरी हालत में नहीं। हम आगे समझाएँगे।

मारियस गोरब्यू के घर में तीस फ्रैंक के वार्षिक किराए पर एक छोटा सा कमरा किराए पर लेता था, जिसमें चिमनी नहीं थी और जिसे वह अलमारी कहता था। उस कमरे में केवल बहुत ज़रूरी सामान ही रखा होता था। यह सारा सामान उसी का था। वह पुराने "मुख्य किराएदार" को हर महीने तीन फ्रैंक देता था ताकि वह आकर उसका कमरा साफ कर दे, और हर सुबह उसके लिए थोड़ा गर्म पानी, एक ताजा अंडा और एक पैसे का ब्रेड ला दे। वह नाश्ते में यही अंडा और ब्रेड खाता था। उसके नाश्ते की कीमत अंडों की कीमत के हिसाब से दो से चार सू तक बदलती रहती थी। शाम छह बजे वह सेंट-जैक्स गली से नीचे उतरकर रूसो के रेस्टोरेंट में खाना खाने जाता था, जो बैसेट के स्टाम्प डीलर के सामने, मैथुरिन गली के कोने पर स्थित था। वह सूप नहीं खाता था। वह छह सू की मांस की थाली, तीन सू की आधी सब्ज़ी और तीन सू की मिठाई लेता था। तीन सू में उसे जितनी चाहे उतनी रोटी मिल जाती थी। शराब की जगह वह पानी पीता था। जब उन्होंने उस काउंटर पर भुगतान किया जहाँ उस समय भी स्वस्थ और गुलाबी चेहरे वाली मैडम रूसो गरिमापूर्ण ढंग से विराजमान थीं, तो उन्होंने वेटर को एक सू दिया, और मैडम

रूसो ने उन्हें मुस्कुरा कर अभिवादन किया। फिर वे चले गए। सोलह सू के बदले उन्हें एक मुस्कान और भोजन मिला।

यह रेस्टोरेंट रूसो, जहाँ बहुत कम बोतलें और बहुत सारे पानी के जग खाली होते थे, एक रेस्टोरेंट से कहीं अधिक मन को शांति देने वाला स्थान था। अब यह रेस्टोरेंट अस्तित्व में नहीं है। इसके मालिक का एक बड़ा ही प्यारा उपनाम था: उन्हें "जलीय रूसो" कहा जाता था।

इस प्रकार, नाश्ता चार सू, दोपहर का भोजन सोलह सू; उसके भोजन पर प्रतिदिन बीस सू खर्च होते थे; जिससे उसका वार्षिक खर्च तीन सौ पैंसठ फ्रैंक हो जाता था। इसमें तीस फ्रैंक किराया, बुढ़िया को दिए जाने वाले छत्तीस फ्रैंक और कुछ छोटे-मोटे खर्चे जोड़ दें, तो मारियस का भोजन, आवास और सेवा-सफाई चार सौ पचास फ्रैंक में हो जाती थी। उसके कपड़ों पर सौ फ्रैंक, लिनेन पर पचास फ्रैंक और धुलाई पर पचास फ्रैंक खर्च होते थे; कुल खर्च छह सौ पचास फ्रैंक से अधिक नहीं होता था। वह धनी था। वह कभी-कभी अपने मित्र को दस फ्रैंक उधार दे देता था। कौरफेयरैक एक बार उससे साठ फ्रैंक उधार लेने में सफल रहा था। आग की व्यवस्था के लिए, मारियस के पास चूल्हा नहीं था, इसलिए उसने "मामले को सरल" बना लिया था।

मारियस के पास हमेशा कपड़ों के दो पूरे सेट होते थे, एक पुराना, "रोज़मर्रा के लिए"; दूसरा, एकदम नया, खास मौकों के लिए। दोनों काले रंग के थे। उसके पास केवल तीन कमीज़ें थीं, एक उसके पास, दूसरी कमोड में और तीसरी धोबिन के पास। जैसे ही वे पुरानी हो जातीं, वह उन्हें बदल देता था। वे हमेशा फटी- पुरानी रहती थीं, जिसके कारण वह अपने कोट के बटन ठुड्डी तक बंद रखता था।

मारियस को इस समृद्ध स्थिति तक पहुँचने में वर्षों लग गए थे। कठिन वर्ष; कुछ कठिन, कुछ पार करने में, कुछ पर चढ़ने में। मारियस ने एक भी दिन असफल नहीं हुआ था। उसने अभाव की हर स्थिति सहन की थी; उसने कर्ज लेने के अलावा सब कुछ किया था। उसने स्वयं को यह कहकर न्याय दिया कि उसने कभी किसी का एक पैसा भी नहीं लिया। उसके लिए कर्ज गुलामी की शुरुआत थी। उसने स्वयं से यह भी कहा कि एक लेनदार मालिक से भी बदतर होता है; क्योंकि मालिक केवल आपके शरीर का मालिक होता है, जबकि लेनदार आपकी गरिमा का मालिक होता है और उसे कान पर एक घूंसा मार सकता है। उधार लेने के बजाय, वह भूखा रहता था। उसने कई दिन उपवास में बिताए थे। यह जानते हुए कि सभी चरम सीमाएँ एक-दूसरे के करीब

होती हैं, और यदि कोई सतर्क न रहे, तो बिगड़ती किस्मत आत्मा के पतन की ओर ले जा सकती है, उसने अपने स्वाभिमान पर कड़ी नज़र रखी। कोई औपचारिकता या कार्य, जो किसी अन्य स्थिति में उसे केवल सम्मान प्रतीत होता, अब उसे नीरस लगता था, और उसने स्वयं को इसके विरुद्ध दृढ़ किया। उसके चेहरे पर एक प्रकार की गंभीर लालिमा छाई हुई थी। वह अभद्रता से भी डरता था।

इन सभी कठिनाइयों के दौरान, उसने अपने भीतर मौजूद एक गुप्त शक्ति से प्रोत्साहन और कभी-कभी उत्थान का अनुभव किया था। आत्मा शरीर की सहायता करती है, और कुछ क्षणों में उसे ऊपर उठाती है। यह एकमात्र पक्षी है जो अपने पिंजरे का भार स्वयं उठाता है।

अपने पिता के नाम के अलावा, मारियस के हृदय में एक और नाम अंकित था, थेनार्डियर का नाम। अपने गंभीर और उत्साही स्वभाव के साथ, मारियस उस व्यक्ति के प्रति एक विशेष श्रद्धा भाव रखता था, जिसके कारण उसके पिता का जीवन देहांत हुआ था—वह निडर सार्जेंट जिसने वाटरलू की लड़ाई में गोलियों और तोपों के बीच कर्नल की जान बचाई थी। उसने इस व्यक्ति की स्मृति को अपने पिता की स्मृति से कभी अलग नहीं किया और दोनों को अपने आदर में एक साथ रखा। यह एक प्रकार की दोहरी पूजा थी, जिसमें कर्नल के लिए एक भव्य वेदी और थेनार्डियर के लिए एक छोटी वेदी थी। थेनार्डियर के प्रति उसकी कृतज्ञता की कोमलता को और भी बढ़ा देता था, जब उसे पता चलता था कि थेनार्डियर किस विपत्ति में पड़ गया है और किस विपत्ति ने उसे जकड़ लिया है। मारियस को मोंटफर्मेइल में उस दुर्भाग्यशाली सराय मालिक की बर्बादी और दिवालियापन के बारे में पता चला था। तब से, उसने थेनार्डियर के बारे में सुराग ढूंढने और उस अंधकारमय दुख के गड्ढे में उस तक पहुंचने के लिए अभूतपूर्व प्रयास किए थे, जिसमें वह गायब हो गया था। मारियस ने पूरे देश में खोजबीन की; वह चेल्स, बोंडी, गौर्नी, नोजेंट और लैग्नी तक गया। उसने तीन साल तक लगातार खोजबीन की और अपनी सारी जमा पूंजी इन खोजों में खर्च कर दी। कोई भी उसे थेनार्डियर के बारे में कोई खबर नहीं दे पाया: माना जाता था कि वह विदेश चला गया है। उसके लेनदारों ने भी उसे ढूंढने की कोशिश की, मारियस की तुलना में कम लगन से, लेकिन उतनी ही मेहनत से, और उसे पकड़ नहीं पाए। मारियस ने खुद को दोषी ठहराया और अपनी खोजों में मिली असफलता पर लगभग खुद पर गुस्सा था। कर्नल द्वारा छोड़ा गया यही एकमात्र कर्ज था, और मारियस ने इसे चुकाना

अपना कर्तव्य समझा। “क्या,” उसने सोचा, “जब मेरे पिता युद्ध के मैदान में मरणासन्न अवस्था में थे, तब थेनार्डियर ने धुएं और गोलियों के बीच से उन्हें ढूंढ निकाला और अपने कंधों पर उठाकर ले गया, और फिर भी उसका कोई ऋणी नहीं था, और मैं, जो थेनार्डियर का इतना ऋणी हूँ, उसके पास इस अंधकार में नहीं जा सकता जहाँ वह मृत्यु की पीड़ा में पड़ा है, और बदले में उसे मृत्यु से जीवन में वापस नहीं ला सकता! ओह! मैं उसे ढूंढ निकालूंगा!” वास्तव में, थेनार्डियर को ढूंढने के लिए मारियस अपनी एक भुजा भी दे देता, उसे उसकी पीड़ा से बचाने के लिए वह अपना सारा खून बहा देता। थेनार्डियर को देखने के लिए, थेनार्डियर की कोई सेवा करने के लिए, उससे कहने के लिए: “तुम मुझे नहीं जानते; खैर, मैं तुम्हें जानता हूँ! मैं यहाँ हूँ। मेरा निपटारा करो!” यह मारियस का सबसे प्यारा और सबसे शानदार सपना था।

III. मारियस बड़ा हो गया

उस समय मारियस बीस वर्ष का था। उसे अपने दादा से अलग हुए तीन वर्ष हो चुके थे। दोनों पक्षों के बीच संबंध एक जैसे ही रहे, उन्होंने एक-दूसरे से मिलने की कोशिश नहीं की, न ही एक-दूसरे से मिलने का प्रयास किया। वैसे भी, मिलने का क्या फायदा था? मारियस पीतल का फूलदान था, जबकि फादर गिलनोर्मंड लोहे का घड़ा थे।

हम मानते हैं कि मारियस अपने दादा के दिल के बारे में गलत था। उसने सोचा था कि एम. गिलनोर्मंड ने उसे कभी प्यार नहीं किया, और वह रूखा, कठोर और मुस्कुराता हुआ बूढ़ा आदमी, जो गाली देता, चिल्लाता, गुस्सा करता और अपनी छड़ी लहराता था, उसके लिए ज़्यादा से ज़्यादा उतना ही स्नेह रखता था, जो हास्य कलाकारों के बुज़ुर्गों जैसा हल्का और कठोर होता है। मारियस की सोच गलत थी। ऐसे पिता होते हैं जो अपने बच्चों से प्यार नहीं करते; लेकिन ऐसा कोई दादा नहीं होता जो अपने पोते को प्यार न करता हो। असल में, जैसा कि हमने कहा है, एम. गिलनोर्मंड मारियस को पूजते थे। वे उसे अपने ही अंदाज़ में पूजते थे, चिड़चिड़ेपन और कान पर थप्पड़ों के साथ; लेकिन, जब वह बच्चा चला गया, तो उनके दिल में एक गहरा खालीपन छा गया; वे किसी को भी बच्चे का ज़िक्र नहीं करने देते थे, और मन ही मन इस बात का अफ़सोस करते थे कि उसकी बात इतनी आसानी से मानी जाती थी। पहले तो उन्हें उम्मीद थी कि यह बुओनापार्टिस्ट, यह जैकोबिन, यह आतंकवादी, यह सेप्टेम्ब्रिस्ट वापस लौटेगा। लेकिन सप्ताह बीतते गए, वर्ष बीतते गए; एम. गिलनोर्मंड की घोर निराशा के लिए, वह "खून पीने वाला" प्रकट नहीं हुआ। दादाजी ने मन ही मन कहा, "उसे बाहर निकालने के अलावा मेरे पास कोई चारा नहीं था," और उन्होंने खुद से पूछा: "अगर यह सब दोबारा हो, तो क्या मैं ऐसा करूँगा?" उनके स्वाभिमान ने तुरंत "हाँ" में जवाब दिया, लेकिन उनके बूढ़े सिर ने, जिसे उन्होंने चुपचाप हिलाया, उदास होकर "नहीं" कहा। उनके जीवन में उदासी के क्षण भी आते थे। उन्हें मारियस की बहुत याद आती थी। बूढ़े लोगों को स्नेह की उतनी ही आवश्यकता होती है जितनी धूप की। यह गर्माहट देती है। उनका स्वभाव कितना भी मजबूत क्यों न हो, मारियस की अनुपस्थिति ने उनमें कुछ बदलाव ला दिया था।

दुनिया में कोई भी चीज़ उन्हें "उस बदमाश" की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती थी; लेकिन वे पीड़ित थे। उन्होंने कभी उसके बारे में पूछताछ नहीं की, लेकिन वे लगातार उसके बारे में सोचते रहते थे। वे माराईस में अधिकाधिक एकांत जीवन जीने लगे; वह पहले की तरह ही हंसमुख और उग्र था, लेकिन उसकी खुशी में एक अजीब सी क्रूरता थी, और उसकी हिंसा हमेशा एक तरह की सौम्य और उदास निराशा में समाप्त होती थी। वह कभी-कभी कहता था: "ओह! अगर वह लौट आता, तो मैं उसे कान पर कितना अच्छा थप्पड़ मारता!"

जहां तक उसकी चाची की बात है, वह मारियस को इतना कम समझती थी कि उससे ज्यादा प्यार नहीं कर पाती थी; मारियस उसके लिए अब एक धुंधली काली आकृति से ज्यादा कुछ नहीं था; और आखिरकार वह उसके साथ उतना समय नहीं बिताती थी जितना कि अपनी बिल्ली या तोते के साथ, जो शायद उसके पास थे। फादर गिलनोर्मंड के गुप्त दुख को और भी बढ़ा देता था, क्योंकि वह इसे अपने भीतर ही दबाकर रखता था और किसी को भी इसके बारे में पता नहीं चलने देता था। उसका दुख उन नई भट्टियों जैसा था जो अपना धुआं खुद ही खा जाती हैं। कभी-कभी कुछ दखलंदाजी करने वाले लोग उससे मारियस के बारे में बात करते और पूछते: "आपका पोता क्या कर रहा है?" "उसका क्या हुआ?" बूढ़ा बुर्जुआ आह भरकर जवाब देता कि उसकी हालत खराब है, और अगर वह खुश दिखना चाहता तो अपनी कलाई को थोड़ा हिलाते हुए कहता: "महाशय बैरन डी पोंटमर्सी किसी कोने में छोटी-मोटी बातों में मशगूल हैं।"

जहां बूढ़ा व्यक्ति पछता रहा था, वहीं मारियस ने खुद की सराहना की। सभी नेक दिल लोगों की तरह, दुर्भाग्य ने उसकी कड़वाहट मिटा दी थी। वह एम. गिलनोर्मंड के बारे में केवल सौहार्दपूर्ण ढंग से सोचता था, लेकिन उसने ठान लिया था कि वह उस व्यक्ति से और कुछ नहीं लेगा जिसने "उसके पिता के प्रति निर्दयता दिखाई थी।" यह उसके पहले आक्रोश का नरम रूप था। इसके अलावा, वह कष्ट सहने और अभी भी सहने से प्रसन्न था। यह उसके पिता के लिए था। उसके जीवन की कठोरता ने उसे संतुष्ट और प्रसन्न किया। उसने एक प्रकार की खुशी के साथ खुद से कहा कि—"यह निश्चित रूप से वह सबसे कम था जो वह कर सकता था;" कि यह एक प्रायश्चित था;—कि, अगर ऐसा न होता, तो उसे अपने पिता के प्रति अपनी अधार्मिक उदासीनता के लिए किसी और तरीके से और बाद में दंडित किया जाता, और ऐसे पिता के प्रति! कि यह न्यायसंगत नहीं होता कि उसके पिता

को सारा कष्ट सहना पड़े और उसे कुछ भी नहीं। और वैसे भी, कर्नल के वीर जीवन के सामने उसकी कठिनाइयाँ और दरिद्रता क्या थीं? संक्षेप में, अपने पिता के समान बनने और उनके जैसा बनने का एकमात्र तरीका यही था कि वह दरिद्रता का सामना उसी प्रकार बहादुरी से करे, जैसे दूसरे ने शत्रु के समक्ष वीरता दिखाई थी; और निस्संदेह, कर्नल का यही तात्पर्य था जब उन्होंने कहा था: "वह इसके योग्य होगा।" ये शब्द मारियस के हृदय में बसे रहे, कर्नल के लिखे हुए शब्द मिट जाने के बाद भी, न कि सीने पर उकेरे हुए।

और फिर, जिस दिन उसके दादा ने उसे घर से निकाल दिया था, तब वह मात्र एक बच्चा था, अब वह एक आदमी बन चुका था। उसने इसे महसूस किया। हम दोहराते हैं, दुख उसके लिए अच्छा साबित हुआ था। जवानी में गरीबी, जब आती है, तो उसमें यह अद्भुत गुण होता है कि वह पूरी इच्छाशक्ति को प्रयास की ओर और पूरी आत्मा को आकांक्षा की ओर मोड़ देती है। गरीबी भौतिक जीवन को तुरंत नंगा कर देती है और उसे कुरूप बना देती है; इसीलिए आदर्श जीवन की ओर असीम आकर्षण पैदा होता है। धनी युवक के पास सौ तरह के भद्दे और आकर्षक मनोरंजन होते हैं, घुड़दौड़, शिकार, कुत्ते, तंबाकू, जुआ, बढ़िया भोजन, और भी बहुत कुछ; ये सब आत्मा के निम्न पक्ष के लिए होते हैं, जो आत्मा के उच्च और कोमल पक्षों की कीमत पर होते हैं। गरीब युवक बड़ी मुश्किल से रोटी कमाता है; वह खाता है; खाने के बाद उसके पास ध्यान के सिवा कुछ नहीं होता। वह उन दृश्यों को देखता है जो ईश्वर ने मुफ्त में दिए हैं; वह आकाश, अंतरिक्ष, तारों, फूलों, बच्चों, उस मानवता को निहारता है जिसके बीच वह कष्ट भोग रहा है, उस सृष्टि को निहारता है जिसके बीच वह प्रकाशमान है। वह मानवता पर इतना ध्यान लगाता है कि उसकी आत्मा को अनुभव करता है; वह सृष्टि पर इतना ध्यान लगाता है कि ईश्वर को दर्शन देता है। वह स्वप्न देखता है, स्वयं को महान महसूस करता है; स्वप्न देखते-देखते वह कोमल हो जाता है। व्यथित मनुष्य के अहंकार से वह ध्यानमग्न मनुष्य की करुणा की ओर अग्रसर होता है। उसके भीतर एक प्रशंसनीय भावना जागृत होती है, स्वयं का विस्मरण और समस्त के प्रति दया। जब वह प्रकृति द्वारा दिए गए असंख्य सुखों के बारे में सोचता है, जो खुली आत्माओं को प्रदान करती है और बंद आत्माओं को अस्वीकार करती है, तो वह करुणा से भर उठता है; वह मन का करोड़पति, धन का करोड़पति बन जाता है। उसके हृदय से घृणा उसी अनुपात में दूर हो जाती है, जिस अनुपात में प्रकाश उसकी

आत्मा में प्रवेश करता है। और क्या वह दुखी है? नहीं। एक युवक का दुख कभी दुखमय नहीं होता। चाहे कितना भी गरीब क्यों न हो, जो पहला युवक उसके हाथ लगता है, उसकी ताकत, उसका स्वास्थ्य, उसकी तेज चाल, उसकी चमकीली आंखें, उसका जोश से भरा खून, उसके काले बाल, उसके लाल होंठ, उसके सफेद दांत और उसकी शुद्ध सांस, एक बूढ़े सम्राट को भी ईर्ष्या दिला सकती है। और फिर, हर सुबह, वह अपनी रोटी कमाने के काम में नए सिरे से जुट जाता है; और जब उसके हाथ उसकी रोटी कमाते हैं, तो उसकी पीठ में गर्व की लहर दौड़ती है, उसका दिमाग विचारों से भर जाता है। अपना काम पूरा करके, वह असीम आनंद, चिंतन और खुशियों में लौट जाता है; वह अपने पैरों को कष्टों, बाधाओं, फुटपाथ पर, बिच्छू-बूटी में, कभी-कभी कीचड़ में टिका हुआ देखता है; उसका सिर प्रकाश में होता है। वह दृढ़, शांत, सौम्य, सौम्य, चौकस, गंभीर, थोड़े में संतुष्ट और दयालु होता है; और वह ईश्वर का धन्यवाद करता है कि उसने उसे धन के वे दो रूप प्रदान किए हैं जो कई धनी लोगों के पास नहीं होते: काम, जो उसे स्वतंत्र बनाता है; और विचार, जो उसे गरिमा प्रदान करता है।

मारियस के साथ यही हुआ था। सच कहें तो, वह चिंतन में कुछ ज़्यादा ही डूबा रहता था। जिस दिन से उसने कुछ हद तक निश्चित रूप से अपनी आजीविका कमाना शुरू किया, उसने गरीब रहना अच्छा समझकर काम से समय निकालकर चिंतन में लगाना शुरू कर दिया; दूसरे शब्दों में, वह कभी-कभी पूरा दिन ध्यान में बिता देता था, मानो किसी दिव्यदर्शी की तरह, मौन आनंद और आंतरिक प्रकाश में डूबा रहता था। उसने अपने जीवन का यही लक्ष्य बना लिया था: भौतिक श्रम में कम से कम मेहनत करना, ताकि उस श्रम में अधिक से अधिक मेहनत की जा सके जो प्रत्यक्ष नहीं है; दूसरे शब्दों में, वास्तविक जीवन को कुछ घंटे देना और बाकी समय अनंत पर छोड़ देना। चूंकि वह मानता था कि उसे किसी चीज की कमी नहीं है, इसलिए उसे यह एहसास नहीं हुआ कि इस तरह से समझा गया चिंतन अंततः आलस्य का ही एक रूप बन जाता है; कि वह जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करके ही संतुष्ट हो रहा था और अपने परिश्रम से बहुत जल्दी विश्राम कर रहा था।

यह स्पष्ट था कि इस ऊर्जावान और उत्साही स्वभाव के लिए, यह केवल एक क्षणिक अवस्था हो सकती है, और नियति की अपरिहार्य जटिलताओं के पहले झटके के साथ ही मारियस जाग उठेगा।

इस बीच, हालांकि वे एक वकील थे, और फादर गिलनोर्मंड इस मामले में चाहे जो भी सोचते हों, वे वकालत नहीं कर रहे थे, यहाँ तक कि छोटी-मोटी बहस में भी नहीं पड़ रहे थे। ध्यान ने उन्हें वकालत से विमुख कर दिया था। वकीलों के पीछे भागना, अदालतों का पीछा करना, मुकदमों की तलाश करना—कितना उबाऊ! वे ऐसा क्यों करते? उन्हें अपनी आजीविका कमाने का तरीका बदलने का कोई कारण नहीं दिखता था! गुमनाम और कम वेतन वाली प्रकाशन संस्था उनके लिए काम का एक निश्चित स्रोत बन गई थी, जिसमें ज्यादा मेहनत नहीं लगती थी, जैसा कि हमने बताया है, और जो उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त थी।

जिन प्रकाशकों के लिए वह काम करता था, उनमें से एक, शायद एम. मैगीमेल ने उसे अपने घर में रहने, अच्छी तरह से रहने की व्यवस्था करने, नियमित काम देने और पंद्रह सौ फ्रैंक सालाना देने का प्रस्ताव रखा। अच्छी तरह से रहने की व्यवस्था! पंद्रह सौ फ्रैंक! बेशक। लेकिन अपनी आज़ादी त्यागनी पड़ेगी! तय वेतन पर काम करना होगा! एक तरह का किराए का लेखक! मारियस के अनुसार, अगर वह यह प्रस्ताव स्वीकार कर लेता, तो उसकी स्थिति एक ही समय में बेहतर और बदतर दोनों हो जाती; उसे आराम तो मिल जाता, लेकिन उसकी गरिमा खो जाती; यह एक घिनौनी और हास्यास्पद यातना में बदल जाने वाली एक भयानक और हास्यास्पद स्थिति होती: कुछ-कुछ उस अंधे व्यक्ति की तरह जिसे एक आँख की रोशनी वापस मिल जाए। उसने इनकार कर दिया।

मारियस एकांत में रहता था। हर चीज़ से अलग रहने की उसकी आदत और अत्यधिक भयभीत रहने के कारण, वह एनजोलरास के नेतृत्व वाले समूह में पूरी तरह से शामिल नहीं हो पाया था। वे अच्छे मित्र बने रहे; वे हर संभव तरीके से एक-दूसरे की सहायता करने के लिए तत्पर थे; लेकिन इससे अधिक कुछ नहीं। मारियस के दो मित्र थे: एक युवा, कौरफेयरैक; और एक वृद्ध, एम. माबेउफ। वह वृद्ध व्यक्ति की ओर अधिक झुकाव रखता था। सबसे पहले, उसके भीतर जो क्रांति आई थी, उसका श्रेय उसी को जाता था; उसी के कारण वह अपने पिता को जानता और उनसे प्रेम करता था। "उन्होंने मेरी मोतियाबिंद की सर्जरी की थी," उसने कहा।

चर्चवार्डन ने निस्संदेह एक निर्णायक भूमिका निभाई थी।

हालांकि, इस संदर्भ में एम. माबेउफ ईश्वर की शांत और तटस्थ उपस्थिति के अलावा कुछ और नहीं थे। उन्होंने संयोगवश और अनजाने में ही मारियस को ज्ञान

दिया था, ठीक वैसे ही जैसे कोई मोमबत्ती जलाता है; वे स्वयं मोमबत्ती थे, न कि कोई व्यक्ति।

जहां तक मारियस की आंतरिक राजनीतिक क्रांति का सवाल है, एम. माबेउफ इसे समझने, इसकी इच्छा करने या इसे निर्देशित करने में पूरी तरह असमर्थ थे।

चूंकि हम बाद में एम. माबेउफ से फिर मिलेंगे, इसलिए कुछ शब्द कहना अनावश्यक नहीं होगा।

IV. एम. माबेउफ

जिस दिन एम. माबेउफ ने मारियस से कहा: "निश्चित रूप से मैं राजनीतिक विचारों का समर्थन करता हूँ," उस दिन उन्होंने अपने मन की वास्तविक स्थिति व्यक्त कर दी। उनके लिए सभी राजनीतिक विचार महत्वहीन थे, और वे बिना किसी भेदभाव के उन सभी का समर्थन करते थे, बशर्ते वे उन्हें शांति प्रदान करें, जैसा कि यूनानियों ने फ्यूरीज़ को "सुंदर, अच्छी, मनमोहक" या यूमेनिडेस कहा था। एम. माबेउफ का राजनीतिक विचार पौधों के प्रति और विशेष रूप से पुस्तकों के प्रति उनके अगाध प्रेम पर आधारित था। बाकी दुनिया की तरह, उनके नाम के अंत में "ist" लगा होता था, जिसके बिना उस समय कोई अस्तित्व में नहीं रह सकता था, लेकिन वे न तो राजशाही समर्थक थे, न बोनापार्ट समर्थक, न चार्टिस्ट, न ओरलियनिस्ट और न ही अराजकतावादी; वे एक पुस्तक प्रेमी थे, पुरानी पुस्तकों के संग्रहकर्ता। उन्हें समझ नहीं आता था कि लोग संविधान, लोकतंत्र, वैधता, राजतंत्र, गणतंत्र आदि जैसी तुच्छ बातों पर एक-दूसरे से नफरत करने में क्यों लगे रहते हैं, जबकि दुनिया में तरह-तरह के काई, घास और झाड़ियाँ मौजूद हैं जिन्हें वे देख सकते हैं, और ढेर सारी किताबें, यहाँ तक कि 32 महीने के अंक भी हैं जिन्हें वे पलट सकते हैं। उन्होंने खुद को निकम्मा न होने देने का पूरा ध्यान रखा; किताबें होने से उनका पढ़ना नहीं रुका, वनस्पति विज्ञानी होने से उनका बागवानी का शौक नहीं रुका। जब उनकी मुलाकात पोंटमर्सी से हुई, तब तक कर्नल और उनके बीच यह आत्मीयता पहले से ही मौजूद थी—कि कर्नल फूलों के लिए जो करते थे, वही वे फलों के लिए करते थे। एम. माबेउफ ने सेंट जर्मेन के नाशपाती के समान स्वादिष्ट नाशपाती के पौधे उगाने में सफलता प्राप्त की थी; ऐसा लगता है कि उन्हीं के एक प्रयोग से अक्टूबर मिराबेल नाशपाती की उत्पत्ति हुई है, जो अब प्रसिद्ध है और गर्मियों के मिराबेल नाशपाती से कम सुगंधित नहीं है। वह धार्मिकता से ज़्यादा कोमलता के कारण चर्च जाते थे, और इसलिए भी क्योंकि उन्हें पुरुषों के चेहरे तो प्यारे लगते थे, लेकिन उनका शोर उन्हें नापसंद था, इसलिए उन्हें वे सब केवल चर्च में ही शांत और एकांत में बैठे हुए मिलते थे। राज्य में कुछ बनने की चाहत में उन्होंने वार्डन का पेशा चुना था। हालाँकि, वे

किसी भी स्त्री से उतना प्रेम नहीं कर पाए जितना किसी ट्यूलिप के फूल से, और न ही किसी पुरुष से उतना जितना किसी एल्ज़ेविर से। उनकी उम्र साठ वर्ष से अधिक हो चुकी थी, जब एक दिन किसी ने उनसे पूछा: “क्या आपकी कभी शादी नहीं हुई?” उन्होंने कहा, “मैं भूल गया हूँ।” जब कभी-कभार उनके मन में यह बात आती थी—और किसके मन में नहीं आती?—कि “काश मैं अमीर होता!” तो यह किसी सुंदर लड़की को निहारते हुए नहीं होता था, जैसा कि फादर गिलनोर्मंड के साथ होता था, बल्कि किसी पुरानी किताब को पढ़ते हुए होता था। वे एक बूढ़ी गृहणी के साथ अकेले रहते थे। उन्हें गठिया की कुछ समस्या थी, और जब वे सोते थे, तो गठिया से अकड़ी हुई उनकी बूढ़ी उंगलियाँ चादर की तहों में टेढ़ी-मेढ़ी पड़ी रहती थीं। उन्होंने रंगीन चित्रों के साथ कौटेरेट्ज़ के आसपास के क्षेत्र की वनस्पतियों का संकलन और प्रकाशन किया था, जिसे काफी सराहना मिली और जो खूब बिकी। लोग इसे मांगने के लिए दिन में दो-तीन बार रू मेसिएरेस स्थित उनकी दुकान की घंटी बजाते थे। इससे उन्हें सालाना दो हजार फ्रैंक तक की कमाई होती थी; यही उनकी लगभग पूरी संपत्ति थी। गरीब होने के बावजूद, उन्होंने धैर्य, कठिनाइयों और समय के बल पर हर तरह की दुर्लभ प्रतियों का एक अनमोल संग्रह तैयार कर लिया था। वे कभी भी बिना किताब लिए बाहर नहीं जाते थे और अक्सर दो किताबें लेकर लौटते थे। भूतल पर स्थित उनके चार कमरों में केवल फ्रेम में लगे वनस्पति संग्रह और पुराने चित्रकारों की नक्काशी ही सजावट के तौर पर रखी थी। तलवार या तोप को देखकर उनका खून जम जाता था। उन्होंने अपने जीवन में कभी तोप के पास जाने की हिम्मत नहीं की, यहां तक कि इनवैलिड्स में भी नहीं। उसका पेट ठीक-ठाक था, उसका भाई पादरी था, उसके बाल एकदम सफेद थे, उसके मुंह या दिमाग में कोई दांत नहीं थे, उसका हर अंग कांपता रहता था, उसकी बोली में पिकार्ड जैसी बोली थी, उसकी हंसी बचकानी थी, उसका हावभाव किसी बूढ़े भेड़ जैसा था, और वह आसानी से डर जाता था। इसके अलावा, जीवित लोगों में उसका एकमात्र मित्र या परिचित पोर्ट-सेंट-जैक्स के एक बूढ़े पुस्तक विक्रेता रॉयल के अलावा कोई और नहीं था। उसका सपना फ्रांस में नील की खेती को प्राकृतिक बनाना था।

उसका नौकर भी कुछ हद तक भोला-भाला था। बेचारी भली-भांति बुढ़िया कुंवारी थी। सुल्तान, उसकी बिल्ली, जो सिक्सटीन चैपल में एलेग्री की मिज़ेरेरे की तरह म्याऊं करती होगी, ने उसके दिल को भर दिया था और उसके भीतर मौजूद

वासनाओं को संतुष्ट करने के लिए काफी थी। उसके सपने कभी भी पुरुष तक नहीं पहुंचे थे। वह कभी भी अपनी बिल्ली से आगे नहीं बढ़ पाई थी। उसकी तरह उसकी भी मूंछें थीं। उसकी शान उसकी टोपियों में थी, जो हमेशा सफेद होती थीं। रविवार को, प्रार्थना के बाद, वह अपना समय संदूक में रखे कपड़ों को गिनने और अपने बिस्तर पर उन कपड़ों को फैलाने में बिताती थी जिन्हें उसने खरीदा तो था लेकिन कभी सिलवाया नहीं था। वह पढ़ना जानती थी। एम. माबेउफ ने उसे मदर प्लूटार्क उपनाम दिया था।

एम. माबेउफ मारियस पर मोहित हो गए थे, क्योंकि मारियस युवा और सौम्य होने के कारण उनकी उम्र को बिना उनकी झिझक को ठेस पहुंचाए सहला देते थे। युवावस्था और सौम्यता का मेल वृद्धों पर ऐसा प्रभाव डालता है जैसे हवा के बिना सूर्य। जब मारियस सैन्य गौरव, बारूद, सैन्य अभियानों और उन सभी भीषण लड़ाइयों से परिपूर्ण हो गए जिनमें उनके पिता ने तलवार के इतने भयानक प्रहार किए और सहे थे, तब वे एम. माबेउफ से मिलने गए, और एम. माबेउफ ने उन्हें उनके नायक के बारे में फूलों के दृष्टिकोण से बताया।

उनके भाई, जो पादरी थे, का निधन लगभग 1830 में हो गया, और लगभग तुरंत ही, जैसे रात ढलने लगती है, श्री माबेउफ के लिए पूरा क्षितिज अंधकारमय हो गया। एक नोटरी की विफलता के कारण उन्हें दस हजार फ़्रैंक की राशि से वंचित होना पड़ा, जो उनके भाई और उनके स्वयं के अधिकार में उनके पास मौजूद एकमात्र संपत्ति थी। जुलाई की क्रांति ने प्रकाशन जगत में संकट ला दिया। इस संकट के दौर में, सबसे पहले जो चीज नहीं बिकती, वह है वनस्पतियों की पुस्तक। कौटेरेट्ज़ के आसपास की वनस्पतियों की पुस्तक अचानक बंद हो गई। कई सप्ताह बीत गए, लेकिन एक भी खरीदार नहीं मिला। कभी-कभी श्री माबेउफ घंटी की आवाज सुनकर चौंक जाते थे। "महाशय," माता प्लूटार्क ने उदास स्वर में कहा, "पानी लाने वाला है।" संक्षेप में, एक दिन, एम. माबेउफ ने रू मेसिएरेस छोड़ दिया, वार्डन के पद से इस्तीफा दे दिया, सेंट-सल्पिस को त्याग दिया, अपनी पुस्तकों का एक हिस्सा नहीं, बल्कि अपने प्रिंट बेचे—जिनसे उनका सबसे कम लगाव था—और रू मोंटपार्नास पर एक छोटे से घर में बस गए, जहाँ वे दो कारणों से केवल एक चौथाई ही रह पाए: पहला, भूतल और बगीचे का किराया तीन सौ फ़्रैंक था, और वे अपने किराए पर दो सौ फ़्रैंक से अधिक खर्च करने की हिम्मत नहीं

कर सकते थे; दूसरा, फ़ैटन की शूटिंग गैलरी के पास होने के कारण, उन्हें पिस्तौल की गोलियों की आवाज़ सुनाई देती थी; जो उनके लिए असहनीय थी।

वह अपनी वनस्पतियों की किताब, तांबे की प्लेटें, जड़ी-बूटी संग्रह, पोर्टफोलियो और किताबें लेकर साल्पेट्रिएर नदी के पास ऑस्टरलिट्ज़ गाँव की एक छोटी सी झोपड़ी में रहने लगा, जहाँ उसे पचास क्राउन सालाना के किराए पर तीन कमरे और एक बगीचा मिला, जो बाड़ से घिरा हुआ था और जिसमें एक कुआँ भी था। उसने इस अवसर का लाभ उठाकर अपना लगभग सारा फर्नीचर बेच दिया। नए घर में प्रवेश करने के दिन वह बहुत प्रसन्न था और उसने अपने हाथों से उन कीलों को ठोका जिन पर उसकी नक्काशी और जड़ी-बूटी संग्रह टांगे जाने थे। उसने दिनभर बगीचे में काम किया और रात में जब उसने देखा कि मदर प्लूटार्क उदास और विचारशील हैं, तो उसने उनके कंधे पर हाथ रखकर मुस्कुराते हुए कहा: "हमें नील मिल गया है!"

पोर्ट-सेंट-जैक्स के पुस्तक विक्रेता और मारियस सहित केवल दो आगंतुकों को ऑस्टरलिट्ज़ में स्थित फूस की झोपड़ी को देखने की अनुमति दी गई थी, जो एक कर्कश नाम था और सच कहें तो, मारियस को यह नाम बिल्कुल भी पसंद नहीं था।

हालांकि, जैसा कि हमने अभी बताया है, जो दिमाग किसी ज्ञान, मूर्खता, या अक्सर दोनों में एक साथ डूबे रहते हैं, वे वास्तविक जीवन की बातों से धीरे- धीरे ही जुड़ पाते हैं। उनका अपना भाग्य उनके लिए बहुत दूर की बात होती है। ऐसी एकाग्रता से एक ऐसी निष्क्रियता उत्पन्न होती है, जो अगर तर्क का परिणाम होती, तो दर्शनशास्त्र जैसी लगती। व्यक्ति पतन की ओर जाता है, नीचे उतरता है, धीरे-धीरे क्षीण होता जाता है, यहाँ तक कि बिखर भी जाता है, और फिर भी उसे इसका एहसास भी नहीं होता। यह सच है कि अंत में हमेशा एक जागृति आती है, लेकिन वह जागृति देर से आती है। इस बीच, ऐसा लगता है मानो हम अपने सुख और दुख के बीच चल रहे खेल में तटस्थ बने हुए हैं। हम दांव पर लगे हैं, और हम इस खेल को उदासीनता से देख रहे हैं।

इस प्रकार, जब उनके चारों ओर छाए बादलों के बीच उनकी सारी आशाएँ एक-एक करके समाप्त हो गईं, तब भी एम. माबेउफ कुछ बचकाने ढंग से, लेकिन गहरे शांत भाव से बने रहे। उनके मन की आदतें पेंडुलम की तरह नियमित रूप से झूलती थीं। एक बार किसी भ्रम में पड़ जाने पर, वे भ्रम के दूर हो जाने के बाद भी बहुत लंबे समय तक उसी में डूबे रहते थे। घड़ी चाबी खो जाने पर ठीक उसी क्षण नहीं रुकती।

एम. माबेउफ के अपने भोले-भाले सुख थे। ये सुख सस्ते और अप्रत्याशित थे; महज़ संयोग से मिल जाते थे। एक दिन, मदर प्लूटार्क कमरे के एक कोने में बैठकर एक प्रेम कहानी पढ़ रही थीं। वह ज़ोर से पढ़ रही थीं, और उन्हें लग रहा था कि इस तरह उन्हें बेहतर समझ आ रही है। ज़ोर से पढ़ने का मतलब है कि आप जो पढ़ रहे हैं, उस पर विश्वास करना। कुछ लोग बहुत ज़ोर से पढ़ते हैं, और ऐसा लगता है मानो वे जो पढ़ रहे हैं, उस पर पूरी तरह विश्वास कर रहे हों।

मदर प्लूटार्क इसी ऊर्जा के साथ अपने हाथ में मौजूद उपन्यास पढ़ रही थीं। एम. माबेउफ उनकी बात सुने बिना ही उन्हें सुन रहे थे।

अपनी पढ़ाई के दौरान, मदर प्लूटार्क को यह वाक्य मिला। यह एक ड्रैगून अधिकारी और एक सुंदरी का मामला था:—

“—सुंदर स्त्री ने मुंह बनाया, और दुम दबाने वाले योद्धा ने—”

यहां उसने अपने चश्मे को पोंछने के लिए अपनी गतिविधि को बीच में ही रोक दिया।

“बुद्ध और अजगर,” एम. माबेउफ ने धीमी आवाज़ में कहा। “हाँ, यह सच है कि एक अजगर था, जो अपनी गुफा की गहराई से अपने मुँह से आग उगलता था और आकाश को प्रज्वलित कर देता था। कई तारे इस राक्षस ने भस्म कर दिए थे, जिसके पंजे बाघ जैसे थे। बौद्ध उसकी गुफा में गए और अजगर को परिवर्तित करने में सफल हुए। आप जो किताब पढ़ रही हैं, वह बहुत अच्छी है, मदर प्लूटार्क। इससे सुंदर कथा और कोई नहीं है।”

और एम. माबेउफ एक मधुर कल्पना में लीन हो गए।

V. गरीबी दुख की अच्छी पड़ोसी है

मारियस को यह स्पष्टवादी बूढ़ा व्यक्ति पसंद आया, जो धीरे-धीरे खुद को गरीबी के चंगुल में फंसते हुए देख रहा था और धीरे-धीरे इस बात से आश्चर्यचकित होने लगा था, लेकिन इससे कभी उदास नहीं हुआ। मारियस, कौरफेयरैक से मिला और एम. माबेउफ से मिलने की कोशिश की। हालांकि, बहुत कम ही; महीने में ज़्यादा से ज़्यादा दो बार।

मारियस को बाहरी सड़कों पर, या चैंप्स-डी-मार्स में, या लक्ज़मबर्ग की सबसे सुनसान गलियों में अकेले लंबी सैर करने में आनंद आता था। वह अक्सर आधा दिन किसी बाज़ार के बगीचे, सलाद के क्यारियों, गोबर के ढेर पर बैठी मुर्गियों और पानी का पहिया घुमाते घोड़े को निहारने में बिताता था। राहगीर उसे आश्चर्य से देखते थे, और उनमें से कुछ को उसका पहनावा संदिग्ध और उसका हावभाव अशुभ लगता था। वह महज़ एक गरीब नौजवान था जो बिना किसी उद्देश्य के सपने देख रहा था।

अपनी सैर के दौरान ही उनकी नज़र गोरब्यू के घर पर पड़ी और उसकी एकांतता और कम लागत से आकर्षित होकर उन्होंने वहीं रहना शुरू कर दिया। वहाँ उन्हें केवल एम. मारियस के नाम से ही जाना जाता था।

जब उनके पिता के कुछ पुराने जनरलों या साथियों को उनके बारे में पता चला, तो उन्होंने उन्हें अपने यहाँ आने का निमंत्रण दिया। मारियस ने उनके निमंत्रण को अस्वीकार नहीं किया। इससे उन्हें अपने पिता के बारे में बात करने का मौका मिलता था। इस प्रकार, वह समय-समय पर कॉम्टे पजोल, जनरल बेलावेस्ने, जनरल फ्रिरियन और इनवैलिड्स के यहाँ जाते थे। वहाँ संगीत और नृत्य होता था। ऐसी शामों में मारियस अपना नया कोट पहनते थे। लेकिन वह इन शाम की पार्टियों या नृत्य-विलास में केवल कड़ाके की ठंड के दिनों में ही जाते थे, क्योंकि उनके पास गाड़ी का खर्च उठाने की क्षमता नहीं थी, और वह ऐसे जूते पहनकर नहीं पहुँचना चाहते थे जो शीशे की तरह चमकते हों।

उन्होंने कभी-कभी, लेकिन बिना किसी कड़वाहट के कहा: “पुरुष ऐसे बने होते हैं कि ड्राइंग रूम में आप अपने जूतों को छोड़कर हर जगह गंदे हो सकते हैं।

वहाँ अच्छा स्वागत सुनिश्चित करने के लिए, आपसे केवल एक ही निर्दोष चीज़ की अपेक्षा की जाती है; आपका विवेक? नहीं, आपके जूते।”

हृदय की भावनाओं को छोड़कर सभी भावनाएँ चिंतन से शांत हो जाती हैं। मारियस का राजनीतिक उन्माद इसी प्रकार समाप्त हो गया। 1830 की क्रांति ने उन्हें संतुष्ट और शांत करके इस प्रक्रिया में सहायता की। वे पहले जैसे ही रहे, क्रोध के दौरों को त्यागकर। उनके विचार अब भी वही थे। बस, उनमें कुछ नरमी आ गई थी। सच कहें तो, अब उनके कोई विचार नहीं थे, बल्कि सहानुभूति थी। वे किस दल से संबंधित थे? मानवता के दल से। मानवता में से उन्होंने फ्रांस को चुना; राष्ट्र में से उन्होंने जनता को चुना; जनता में से उन्होंने स्त्री को चुना। उनकी करुणा सबसे बढ़कर इसी बिंदु पर केंद्रित थी। अब वे कर्म की अपेक्षा विचार को, नायक की अपेक्षा कवि को अधिक महत्व देते थे, और मारेन्गो जैसी घटना की अपेक्षा अय्यूब जैसी पुस्तक की प्रशंसा करते थे। और फिर, जब ध्यान में बिताया एक दिन बीतने के बाद, वह शाम को सड़कों से होते हुए लौटा, और पेड़ों की शाखाओं के बीच से परे अथाह अंतरिक्ष की एक झलक देखी, तो अनाम चमक, खाई, छाया, रहस्य, वह सब कुछ जो केवल मानवीय है, उसे वास्तव में बहुत सुंदर लगा।

उसने सोचा कि वह जीवन और मानव दर्शन के सत्य तक पहुँच गया है, और वास्तव में वह पहुँच ही गया था, और अंत में वह केवल स्वर्ग को निहार रहा था, जो एकमात्र ऐसी चीज है जिसे सत्य अपने कुएँ की गहराई से देख सकता है।

इससे उन्हें अपनी योजनाओं, संयोजनों, ढाँचों और भविष्य की परियोजनाओं को बढ़ाने से नहीं रोका। इस तन्मयता में, अगर कोई आँख मारियस के अंतर्मन में झाँक पाती, तो उसकी आत्मा की पवित्रता से चकित हो जाती। वास्तव में, अगर हमें दूसरों के अंतरात्मा में झाँकने की शक्ति मिलती, तो हम किसी व्यक्ति को उसके विचारों से कहीं अधिक निश्चित रूप से उसके सपनों के आधार पर परख पाते। विचारों में इच्छाशक्ति होती है, सपनों में नहीं। तन्मयता, जो पूरी तरह से सहज होती है, विशाल और आदर्श रूप में भी हमारी आत्मा का रूप धारण कर लेती है और उसे बनाए रखती है। नियति की भव्यता के प्रति हमारी अनियोजित और असीम आकांक्षाओं से अधिक प्रत्यक्ष और ईमानदारी से हमारी आत्मा की गहराई से कुछ भी नहीं निकलता। इन आकांक्षाओं में, जानबूझकर, तर्कसंगत और समन्वित विचारों की तुलना में, मनुष्य का वास्तविक चरित्र पाया जाता है। हमारी

कल्पनाएँ ही वे चीजें हैं जो हमसे सबसे अधिक मिलती-जुलती हैं। हममें से प्रत्येक अपने स्वभाव के अनुसार अज्ञात और असंभव के सपने देखता है।
सन् 1831 के मध्य में, मारियस की सेवा करने वाली बूढ़ी औरत ने उसे बताया कि उसके पड़ोसी, बेचारे जोंड्रेट परिवार को घर से निकाल दिया गया है। मारियस, जो लगभग अपना पूरा जीवन घर से बाहर ही बिताता था, उसे शायद ही पता था कि उसके कोई पड़ोसी भी हैं।
उन्होंने पूछा, "उन्हें बाहर क्यों निकाला गया है?"
क्योंकि वे अपना किराया नहीं चुकाते; उन पर दो तिमाहियों का किराया बकाया है।
"यह कितने का है?"
“बीस फ्रैंक,” बूढ़ी औरत ने कहा।
मारियस ने दराज में तीस फ्रैंक बचाकर रखे थे।
“लो,” उसने बूढ़ी औरत से कहा, “ये पच्चीस फ्रैंक ले लो। गरीबों के लिए भुगतान कर दो और उन्हें पाँच फ्रैंक दे दो, और उन्हें यह मत बताना कि यह मैंने किया है।”

VI. प्रतिस्थापन

संयोगवश, लेफ्टिनेंट थियोडुल जिस रेजिमेंट में थे, वह पेरिस में निरोधक ड्यूटी पर तैनात थी। इससे आंटी गिलनोर्मंड को एक और विचार आया। पहले मौके पर उन्होंने थियोडुल के ज़रिए मारियस की जासूसी करवाने की योजना बनाई थी; अब उन्होंने थियोडुल को मारियस की जगह भेजने की योजना बनाई।

किसी भी हालत में, और अगर दादाजी को घर में किसी युवा चेहरे की हल्की- फुल्की ज़रूरत महसूस हो—भोर की ये किरणें कभी-कभी इतनी मीठी होती हैं कि सब कुछ बर्बाद कर देती हैं—तो एक और मारियस ढूंढना ही उचित था। “इसे एक साधारण त्रुटि समझ लो,” उसने सोचा, “जैसा कि किताबों में होता है। मारियस की जगह थियोडुल पढ़ लो।”

पोते के समान ही उसका पोता भी होता है; वकील न होने पर भाले की सहायता ली जाती है।

एक सुबह जब एम. गिलनोर्मंड क्वोटिडिएन में कुछ पढ़ने ही वाले थे, तभी उनकी बेटी अंदर आई और अपनी सबसे मधुर आवाज में उनसे बोली; क्योंकि सवाल उनके पसंदीदा विषय से संबंधित था:—

"पिताजी, थियोडुल आज सुबह आपको अपना सम्मान अर्पित करने आ रहे हैं।"

“थियोडुल कौन है?”

“आपका पोता।”

“आह!” दादाजी ने कहा।

फिर वह अपनी पढ़ाई में वापस लग गए, अपने परपोते के बारे में और नहीं सोचा, जो महज़ कोई थियोडुल था, और जल्द ही गुस्से से भड़क उठे, जो लगभग हमेशा ही उनके पढ़ने के दौरान होता था। उनके हाथ में जो "पत्र" था, वह बेशक राजशाही समर्थक था, लेकिन उसमें अगले दिन के लिए बिना किसी नरमी के, पेरिस में उस समय रोज़ होने वाली एक छोटी सी घटना की घोषणा थी: "कानून और चिकित्सा विद्यालयों के छात्रों को दोपहर में प्लेस डू पैंथियन में इकट्ठा होना है — विचार-विमर्श के लिए।" चर्चा उस समय के एक अहम मुद्दे, नेशनल गार्ड की

तोपों और युद्ध मंत्री तथा "नागरिकों की सेना" के बीच लूव्र के प्रांगण में खड़ी तोपों को लेकर हुए विवाद पर थी। छात्रों को इस पर "विचार-विमर्श" करना था। एम. गिलनोर्मंड का गुस्सा भड़कने के लिए बस इतना ही काफ़ी था। उसने मारियस के बारे में सोचा, जो एक छात्र था और जो शायद बाकी लोगों के साथ "दोपहर के समय प्लेस डू पैंथियन में विचार-विमर्श करने" जाएगा।
जब वह इस कष्टदायक सपने में डूबा हुआ था, तभी लेफ्टिनेंट थियोडुल एक बुर्जुआ के वेश में सादे कपड़ों में दाखिल हुआ, जो उसकी चतुराई थी, और मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने बड़ी सावधानी से उसका परिचय कराया। लांसर ने इस प्रकार तर्क दिया: “बूढ़े ड्र्यूड ने अपनी सारी संपत्ति जीवन भर की पेंशन में नहीं लगाई है। समय-समय पर आम नागरिक का वेश धारण करना अच्छा होता है।” मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने अपने पिता से ज़ोर से कहा:—
“थियोडुल, आपका पोता।”
और लेफ्टिनेंट से धीमी आवाज़ में:—
"हर बात को स्वीकार करो।"
और वह पीछे हट गई।
लेफ्टिनेंट, जो इस तरह की सम्मानजनक मुलाकातों के आदी नहीं थे, कुछ झिझक के साथ हकलाते हुए बोले: "शुभ दिन, अंकल," और उन्होंने एक ऐसा अभिवादन किया जो सैन्य अभिवादन की अनैच्छिक और यांत्रिक रूपरेखा से बना था, जिसे एक बुर्जुआ अभिवादन के रूप में समाप्त किया गया था।
“अरे! तो आप हैं; अच्छा हुआ, बैठ जाइए,” बूढ़े सज्जन ने कहा।
लेकिन, वह लांसर को पूरी तरह से भूल गया।
थियोडुल बैठ गए और एम. गिलनोर्मंड उठ खड़े हुए।
एम. गिलनोर्मंड अपने हाथों को जेब में डाले, जोर-जोर से बोलते हुए और अपनी चिड़चिड़ी बूढ़ी उंगलियों से अपनी दो घड़ियों को झटकते हुए इधर-उधर घूमने लगे, जिन्हें उन्होंने अपनी दो चेन में पहना हुआ था।
“बदमाशों का वो झुंड! वे प्लेस डू पैंथियन में इकट्ठा होते हैं! मेरी कसम! वो बच्चे जो कल तक अपनी नर्सों के साथ थे! अगर कोई उनकी नाक दबाए तो दूध फूट

निकलेगा। और वे कल दोपहर को विचार-विमर्श करेंगे। हम कहाँ जा रहे हैं? हम कहाँ जा रहे हैं? यह स्पष्ट है कि हम खाई की ओर बढ़ रहे हैं। यही वो जगह है जहाँ डेस्कामिसाडोस हमें ले आए हैं! नागरिक तोपखाने पर विचार-विमर्श करने के लिए! नेशनल गार्ड के ताने-बाने पर खुलेआम बकवास करने के लिए! और वहाँ वे किससे मिलेंगे? बस देखो जैकोबिनवाद कहाँ ले जाता है। मैं शर्त लगा सकता हूँ, दस लाख का दांव, कि वहाँ केवल लौटे हुए कैदी और रिहा किए गए दास ही होंगे। रिपब्लिकन और दास—वे एक ही नाक और एक ही रूमाल हैं। कार्नोट कहा करते थे: 'मुझे कहाँ भेजना चाहते हो, गद्दार?' फूशे ने जवाब दिया: 'जहाँ तुम चाहो, मूर्ख!' यही वो जगह है जहाँ रिपब्लिकन जाना चाहते हैं। की तरह।"

“यह सच है,” थियोडुल ने कहा।

एम. गिलनोर्मंड ने अपना सिर आधा घुमाया, थियोडुल को देखा और आगे बढ़े:—

“जब कोई सोचता है कि वह बदमाश इतना नीच था कि कार्बोनारो बन गया! तुमने मेरा घर क्यों छोड़ा? जाकर गणतंत्रवादी बनने के लिए! चुप रहो! पहली बात तो यह है कि जनता को तुम्हारी गणतंत्रता से कोई मतलब नहीं है, उनमें अक्ल है, वे अच्छी तरह जानते हैं कि राजा हमेशा से रहे हैं और हमेशा रहेंगे; वे अच्छी तरह जानते हैं कि जनता तो आखिर जनता ही है, वे तुम्हारी गणतंत्रता का मज़ाक उड़ाते हैं—समझ रहे हो, बेवकूफ? क्या यह एक भयानक सनक नहीं है? पेरे डुचेन से प्यार करना, गिलोटिन पर भेड़ की आंखें बनाना, प्रेम गीत गाना और 93 की बालकनी के नीचे गिटार बजाना—यह सब देखकर इन नौजवानों पर थूकने का मन करता है, कितने मूर्ख हैं ये! सब एक जैसे हैं। कोई नहीं बचता। उनके लिए गली में बहने वाली हवा में सांस लेना ही काफी है, वे अपनी सुध-बुध खो बैठते हैं। उन्नीसवीं सदी ज़हर है। जो पहला बदमाश मिलता है, वह अपनी दाढ़ी बढ़ा लेता है। एक बकरे की तरह, खुद को असली बदमाश समझता है और अपने पुराने रिश्तेदारों को छोड़ देता है। वो रिपब्लिकन है, वो रोमांटिक है। रोमांटिक का क्या मतलब है? मुझे बताओ इसका क्या अर्थ है। सारी मूर्खताएँ। एक साल पहले, वे हरनानी के पास भागे थे। अब, मैं बस तुमसे पूछता हूँ, हरनानी! विरोधाभास! ऐसी घिनौनी बातें जो फ्रेंच में भी नहीं लिखी जातीं! और फिर, उनके पास लूव्र के प्रांगण में तोपें हैं। इस युग की बदमाशियाँ ऐसी ही हैं!

“आप सही कह रहे हैं, चाचा,” थियोडुल ने कहा।

एम. गिलनोर्मंड ने आगे कहा:—

संग्रहालय के प्रांगण में तोपें! किसलिए? क्या आप अपोलो बेल्वेडेरे पर छर्रे दागना चाहते हैं? उन कारतूसों का वीनस डी मेडिसी से क्या लेना-देना है? ओह! आजकल के नौजवान सब बदमाश हैं! उनका बेंजामिन कॉन्स्टेंट कितना सुंदर प्राणी है! और जो बदमाश नहीं हैं, वे मूर्ख हैं! वे खुद को बदसूरत बनाने के लिए हर संभव कोशिश करते हैं, उनके कपड़े फटे-पुराने होते हैं, वे महिलाओं से डरते हैं, पेटीकोट के सामने उनका ऐसा व्यवहार होता है कि लड़कियां हंसने लगती हैं; मेरी कसम, कोई कह सकता है कि बेचारे प्रेम से भी शर्मिंदा हैं। वे कुरूप हैं, और मूर्खता से वे खुद को और भी बदसूरत बना लेते हैं; वे टियरसेलिन और पोटियर के चुटकुलों को दोहराते हैं, उनके पास बोरी के कोट, अस्तबल के कर्मचारियों की जैकेट, मोटे लिनेन की कमीजें, मोटे कपड़े की पतलून, मोटे चमड़े के जूते हैं, और उनका पहनावा उनके पंखों जैसा है। कोई उनकी भाषा का इस्तेमाल करके उनके पुराने जूतों में नए तलवे लगा सकता है। और इन सभी अनाड़ी बच्चों के राजनीतिक विचार हैं। अगर आप चाहें तो। राजनीतिक विचारों पर सख्त पाबंदी होनी चाहिए। वे व्यवस्थाएँ गढ़ते हैं, समाज को नया रूप देते हैं, राजशाही को ध्वस्त करते हैं, सारे कानूनों को तहखाने में फेंक देते हैं, तहखाने की जगह अटारी और राजा की जगह मेरे कुली को बिठा देते हैं, यूरोप को उलट-पुलट कर देते हैं, दुनिया का पुनर्निर्माण करते हैं, और उनके सारे प्रेम प्रसंग धोबी महिलाओं के टखनों को घूरने में ही सिमट जाते हैं जब वे अपनी गाड़ियों में चढ़ती हैं। आह! मारियस! आह! तुम बदमाश! सार्वजनिक स्थान पर जाकर शोर मचाना! चर्चा करना, बहस करना, उपाय करना! हे भगवान! अव्यवस्था खुद को छोटा कर लेती है और मूर्ख बन जाती है। मैंने अराजकता देखी है, अब मैं एक गड़बड़ देख रहा हूँ। छात्र राष्ट्रीय रक्षक पर विचार-विमर्श कर रहे हैं—ऐसी चीज़ ओगिबेवा या कैडोडाचे लोगों में भी नहीं देखी जा सकती! नंगे घूमने वाले जंगली, जिनके अंडकोष शटलकॉक की तरह सजे हैं, जिनके पंजों में लाठी है, वे कला स्नातकों से भी कम क्रूर हैं! चार पैसे वाले बंदर! और वे न्यायाधीशों के लिए व्यवस्था की गई है! वे प्राणी विचार-विमर्श और तर्क-वितर्क करते हैं! दुनिया का अंत आ गया है! यह स्पष्ट रूप से इस दयनीय पृथ्वी का अंत है! एक अंतिम बाधा आवश्यक थी, और फ्रांस ने उसे उत्पन्न कर दिया है। सोच-विचार

करो, मेरे बदमाशों! जब तक वे ओडियन के गलियारों के नीचे अखबार पढ़ते रहेंगे, तब तक ऐसी ही चीजें होती रहेंगी। इसमें उनका एक पैसा, उनकी समझ, उनकी बुद्धि, उनका दिल, उनकी आत्मा और उनकी बुद्धि सब कुछ खर्च हो जाता है। वे वहाँ से निकलते हैं और अपने परिवारों से अलग हो जाते हैं। सभी अखबार कीट हैं; सभी, यहाँ तक कि ड्रेपो ब्लैंक भी! असल में, मार्टिनविले एक जैकोबिन था। आह! हे भगवान! तुम अपने दादा को निराशा में धकेलने का दावा कर सकते हो, कर सकते हो!

“यह तो स्पष्ट है,” थियोडुल ने कहा।

और एम. गिलनोर्मंड के सांस लेने का फायदा उठाते हुए, भाला चलाने वाले ने एक अधिकारपूर्ण लहजे में कहा:—

"मॉनिटर के अलावा कोई दूसरा अखबार नहीं होना चाहिए, और एनुएयर मिलिटेयर के अलावा कोई दूसरी किताब नहीं होनी चाहिए।"

एम. गिलनोर्मंड ने आगे कहा:—

“ये तो उनके सियेस जैसा है! एक राजहत्या, जिसका अंत एक सीनेटर के रूप में होता है; क्योंकि उनका अंत हमेशा ऐसा ही होता है। वे नागरिकों के रूप में 'तू' कहकर संबोधित करते हुए अपने शरीर पर एक निशान छोड़ जाते हैं, ताकि अंततः उन्हें 'महाशय कॉम्टे' कहलाने का हक मिले। 'महाशय कॉम्टे', मेरी बांह जितना बड़ा, सितंबर के हत्यारे। दार्शनिक सियेस! मैं यह कहने में खुद को न्यायसंगत ठहराऊंगा कि उन सभी दार्शनिकों के दर्शन के बारे में मेरी राय टिवोली के उस चितकबरी शख्स के चश्मे से भी बेहतर कभी नहीं रही! एक दिन मैंने सीनेटरों को क्वाई मालप्लाक्वेट पार करते देखा, बैंगनी मखमल के लबादे पहने, जिन पर मधुमक्खियां बुनी हुई थीं, और हेनरी चतुर्थ जैसी टोपियां लगाए। वे भयंकर थे। कोई उन्हें बाघ के दरबार के बंदर कह सकता था। नागरिकों, मैं आपसे कहता हूं कि आपकी प्रगति पागलपन है, आपकी मानवता एक सपना है, आपकी क्रांति एक अपराध है, आपका गणतंत्र एक राक्षस है, आपका युवा और पवित्र फ्रांस वेश्यालय से आया है, और मैं इस बात पर कायम हूं। सभी के खिलाफ, चाहे आप कोई भी हों, पत्रकार हों, अर्थशास्त्री हों, विधिविद हों, या फिर आप स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मामले में गिलोटिन की छुरी से

भी बेहतर पारखी हों ! और मैं यह घोषणा आप सभी को करता हूँ , मेरे प्रिय साथियों !

“पार्बलू !” लेफ्टिनेंट चिल्लाया , “यह तो बिल्कुल सच है। ”

एम. गिलनोर्मंड ने अपनी शुरू की हुई मुद्रा को रोक दिया , घूमकर लांसर थियोडुल की आँखों में ध्यान से देखा और उनसे कहा :—

"तुम एक मूर्ख हो। "

पुस्तक **VI.** दो तारों का संयोजन

I. उपनाम: पारिवारिक नामों के निर्माण की विधि

उस दौर में मारियस एक आकर्षक युवक था, मध्यम कद का, घने और काले बालों वाला, ऊँचा और बुद्धिमान माथा, सुडौल और भावुक नथुने, शांत और ईमानदार भाव, और उसके पूरे चेहरे पर एक अवर्णनीय गर्व, विचारशीलता और मासूमियत झलकती थी। उसकी गोल आकृति, जिसमें दृढ़ता के बावजूद कोई कमी नहीं थी, में एक विशिष्ट जर्मनिक मिठास थी, जो अलसैस और लोरेन के रास्ते फ्रांसीसी चेहरे की विशेषताओं में समा गई है, और कोणों की वह पूर्ण अनुपस्थिति जिसने सिकाम्ब्रों को रोमनों के बीच आसानी से पहचाने जाने योग्य बना दिया, और जो सिंह-समान और बाज़-समान जाति को अलग करती है। वह जीवन के उस दौर में था जब विचारशील व्यक्तियों का मन लगभग समान रूप से गहनता और सरलता से बना होता है। एक गंभीर परिस्थिति दिए जाने पर, उसमें मूर्ख होने के लिए आवश्यक सभी गुण थे; चाबी का एक और घुमाव, और वह उदात्त हो सकता था। उनका व्यवहार संयमित, ठंडा, सलीकेदार और बहुत सौम्य नहीं था। उनका मुख आकर्षक था, उनके होंठ सबसे लाल और उनके दांत दुनिया में सबसे सफेद थे, और उनकी मुस्कान उनके चेहरे की गंभीरता को कम कर देती थी। कभी-कभी, उनका साफ माथा और उनकी मोहक मुस्कान एक अनोखा विरोधाभास प्रस्तुत करती थी। उनकी आंखें छोटी थीं, लेकिन उनकी निगाहें बहुत प्रभावशाली थीं।

अपनी सबसे दयनीय पीड़ा के समय, उसने देखा कि जब वह पास से गुजरता था तो युवतियाँ मुड़कर देखती थीं, और वह मन ही मन मृत्यु का भय लिए भाग जाता था या छिप जाता था। उसे लगता था कि वे उसके पुराने कपड़ों के कारण उसे घूर रही हैं और उस पर हंस रही हैं; वास्तव में, वे उसकी सुंदरता के कारण उसे घूरती थीं और उसके सपने देखती थीं।

उसके और सुंदर राहगीरों के बीच इस मौन गलतफहमी ने उसे शर्मीला बना दिया था। उसने उनमें से किसी को भी नहीं चुना, और इसका उत्कृष्ट कारण यह था कि वह उन सभी से भागता था। वह इस प्रकार अनिश्चित काल तक जीता रहा— मूर्खतापूर्ण ढंग से, जैसा कि कौरफेयरैक ने कहा था।

कॉर्फेयरैक ने उससे यह भी कहा: “सम्माननीय बनने की आकांक्षा मत रखो” [वे एक-दूसरे को “तू” कहकर पुकारते थे; युवावस्था की मित्रता में इस तरह से संबोधित करने की प्रवृत्ति होती है]। “मेरे प्रिय मित्र, मैं तुम्हें एक सलाह देता हूँ। इतनी किताबें मत पढ़ो, और लड़कियों को थोड़ा और देखो। मारियस, उन चंचल लड़कियों में भी कुछ खूबियाँ होती हैं! भागने और शरमाने के कारण तुम क्रूर बन जाओगे।”

अन्य अवसरों पर, कौरफेयरैक उनसे मिले और बोले: —“सुप्रभात, महाशय अब्बे!”

जब कौरफेयरैक ने उससे इस तरह की कोई टिप्पणी की, तो मारियस ने अगले एक सप्ताह तक जवान और बूढ़ी दोनों तरह की महिलाओं से पहले से कहीं ज्यादा दूरी बनाए रखी, और उसने कौरफेयरैक से भी दूरी बनाए रखी।

फिर भी, सृष्टि की विशालता में दो ऐसी स्त्रियाँ विद्यमान थीं जिनसे मारियस न तो भागा और न ही उन पर ज़रा भी ध्यान दिया। वास्तव में, यदि उसे पता चलता कि वे स्त्रियाँ हैं, तो वह अत्यंत आश्चर्यचकित होता। एक तो दाढ़ी वाली बूढ़ी औरत थी जो उसके कमरे की सफाई करती थी और जिसके कारण कौरफेयरैक ने कहा था: “अपनी नौकरानी को उसकी दाढ़ी पहने देखकर, मारियस अपनी दाढ़ी नहीं रखता।” दूसरी एक छोटी बच्ची जैसी थी जिसे वह अक्सर देखता था, लेकिन कभी उसकी ओर देखता भी नहीं था।

एक साल से भी ज़्यादा समय से मारियस लक्ज़मबर्ग की एक गली में, जो पेपिनियर की दीवार के किनारे से होकर गुज़रती है, एक आदमी और एक बहुत छोटी लड़की को देखता आ रहा था। वे लगभग हमेशा गली के सबसे सुनसान कोने में, रू डे ल'ओएस्ट की तरफ, एक ही बेंच पर साथ-साथ बैठे रहते थे। जब भी संयोगवश मारियस उस गली में पहुँचता—और ऐसा लगभग हर दिन होता था—तो उसे वहाँ यह जोड़ा मिल जाता था। वह आदमी लगभग साठ साल का लग रहा था; वह उदास और गंभीर दिखता था; उसका पूरा शरीर सेवानिवृत्त सैनिकों की तरह मज़बूत और थका हुआ सा लगता था। अगर उसके पास कोई पदक होता, तो मारियस कहता: "वह एक पूर्व अधिकारी है।" उसका व्यवहार दयालु लेकिन पहुँच से बाहर रहने वाला था, और वह कभी किसी की आँखों में नहीं ठहरता था। वह नीली पतलून, नीले रंग का फ्रॉक कोट और चौड़ी किनारी वाली टोपी पहनता था, जो हमेशा नई सी लगती थी, साथ ही काली टाई और एक चमकदार सफेद कमीज पहनता था, जो मोटे लिनेन की बनी होती थी। एक दिन उसके पास से

गुजर रही एक महिला ने कहा, "देखो, कितना साफ-सुथरा विधुर है।" उसके बाल एकदम सफेद थे।

पहली बार जब उनके साथ आई युवती आकर उस बेंच पर बैठी, जिसे उन्होंने अपना बना लिया था, तब वह तेरह-चौदह साल की बच्ची जैसी लग रही थी, इतनी दुबली-पतली कि लगभग साधारण, भद्दी, मामूली और आँखों में खूबसूरती की झलक थी। लेकिन, उसकी आँखें हमेशा एक अप्रिय आत्मविश्वास से भरी रहती थीं। उसका पहनावा पुराना और बचकाना दोनों था, जैसे किसी मठ में रहने वाली छात्राओं का होता है; यह काले रंग के मेरिनो ऊन के एक बेढंगे से कटे हुए गाउन का था। वे दोनों पिता-पुत्री जैसे लग रहे थे।

मारियस ने कुछ दिनों तक उस बूढ़े आदमी को, जो अभी बूढ़ा नहीं हुआ था, और उस नन्ही बच्ची को, जो अभी वयस्क भी नहीं हुई थी, गौर से देखा, और उसके बाद उन पर ध्यान देना बंद कर दिया। ऐसा प्रतीत होता था मानो वे दोनों उसे देख भी नहीं रहे हों। वे शांत और उदासीन भाव से आपस में बातचीत करते रहे। बच्ची लगातार और खुशी से बातें करती रही। बूढ़ा आदमी कम बोलता था, और कभी-कभी उसकी आँखों में एक अवर्णनीय पितृत्व भाव भर आता था।

मारियस को उस रास्ते पर टहलने की एक स्वाभाविक आदत पड़ गई थी। वह उन्हें हमेशा वहीं पाता था।

घटनाक्रम कुछ इस प्रकार रहा:—

मारियस को गली के उस छोर से आना पसंद था जो उनकी बेंच से सबसे दूर था; वह पूरी गली में चलता, उनके सामने से गुज़रता, फिर उसी छोर पर लौट आता जहाँ से आया था और फिर से चलना शुरू कर देता। वह अपनी सैर के दौरान ऐसा पाँच-छह बार करता था, और वह सैर सप्ताह में पाँच-छह बार करता था, लेकिन न तो उसे और न ही उन लोगों को कभी अभिवादन करने का ख्याल आया। हालाँकि वह व्यक्ति और वह युवती, हालाँकि वे सभी निगाहों से बचते हुए प्रतीत होते थे—और शायद इसी वजह से—पेपिनियर नदी के किनारे समय-समय पर टहलने वाले पाँच-छह छात्रों का ध्यान आकर्षित करते थे; अध्ययनशील छात्र अपने व्याख्यानों के बाद, और बाकी छात्र बिलियर्ड्स के खेल के बाद। कौरफेयरैक, जो उनमें से आखिरी था, ने उन्हें कई बार देखा था, लेकिन लड़की को साधारण समझकर, वह जल्दी और सावधानी से रास्ते से हट गया था। वह भाग निकला और उन पर एक उपनाम फेंक दिया, मानो

कोई पार्थियन तीर चला रहा हो। बच्ची के गाउन और बूढ़े आदमी के बालों से प्रभावित होकर, उसने बेटी को मैडमोजेल लानोइर और पिता को महाशय लेब्लांक नाम दे दिया, क्योंकि कोई भी उन्हें किसी और नाम से नहीं जानता था, इसलिए यह उपनाम ही नियम बन गया। छात्रों ने कहा: "अरे! महाशय लेब्लांक अपनी बेंच पर हैं।" और मारियस ने भी, बाकी लोगों की तरह, इस अनजान सज्जन को महाशय लेब्लांक कहना सुविधाजनक समझा।

हम उनके उदाहरण का अनुसरण करेंगे, और इस कहानी को सुगम बनाने के लिए हम एम. लेब्लांक का नाम लेंगे।

इसलिए मारियस ने पहले साल के दौरान लगभग हर दिन, एक ही समय पर, उन्हें देखा। उसे वह लड़का तो पसंद आया, लेकिन वह लड़की नीरस लगी।

II. प्रकाश बनाया गया था

दूसरे वर्ष के दौरान, ठीक उसी मोड़ पर जहाँ पाठक अब इस कहानी में पहुँचे हैं, संयोगवश लक्ज़मबर्ग की यह आदत टूट गई, जिसका कारण मारियस को स्वयं भी पूरी तरह से पता नहीं था, और लगभग छह महीने बीत गए, इस दौरान उसने उस गली में कदम नहीं रखा। अंततः एक दिन, वह वहाँ फिर से लौट आया; वह एक शांत गर्मी की सुबह थी, और मारियस प्रसन्न था, जैसा कि अच्छे मौसम में होता है। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसके हृदय में उन सभी पक्षियों के गीत गूंज रहे हों जिन्हें वह सुन रहा था, और नीले आकाश के वे सभी अंश भी जो उसे पेड़ों के पत्तों के बीच से झलक रहे थे।

वह सीधे अपनी गली में गया, और जब वह उसके अंत तक पहुँचा तो उसने उसी बेंच पर उस जाने-माने जोड़े को देखा। लेकिन जब वह पास पहुँचा, तो उसने पाया कि वह वही आदमी था; पर उसे लगा कि वह अब वही लड़की नहीं थी। अब उसके सामने एक लंबी और खूबसूरत महिला थी, जिसमें एक स्त्री के सारे मनमोहक गुण थे, ठीक उसी क्षण जब वे अभी भी एक बच्चे की मासूमियत से परिपूर्ण थे; एक शुद्ध और क्षणभंगुर पल, जिसे केवल इन दो शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है
— "पंद्रह वर्ष"। उसके सुनहरे बालों से सजे भूरे बाल थे, संगमरमर जैसे माथे, गुलाब की पत्तियों जैसे गाल, हल्की लाली, एक चंचल सफेदी, एक सुंदर होंठ, जिससे निकलती मुस्कान सूर्य की किरणों की तरह चमकती थी, और शब्द संगीत की तरह मधुर, उसका सिर ऐसा था जैसे राफेल मैरी को देते, और गर्दन ऐसी थी जैसे जीन गौजोन वीनस को देते। और, ताकि इस मनमोहक चेहरे में किसी भी चीज की कमी न रहे, उसकी नाक सुंदर नहीं थी—वह प्यारी थी; न सीधी, न घुमावदार, न इतालवी, न यूनानी; वह पेरिस की नाक थी, यानी आध्यात्मिक, नाजुक, अनियमित, शुद्ध—जो चित्रकारों को निराशा में डाल देती है और कवियों को मोहित कर लेती है।

जब मारियस उसके पास से गुजरा, तो वह उसकी आँखें नहीं देख सका, जो लगातार झुकी हुई थीं। उसने केवल उसकी लंबी भूरी पलकें देखीं, जो छाया और लज्जा से भरी हुई थीं।

लेकिन इससे उस खूबसूरत बच्ची को मुस्कुराने से नहीं रोका जा सका, क्योंकि वह सफेद बालों वाले बूढ़े व्यक्ति की बातें सुन रही थी, और उस ताजा मुस्कान के साथ-साथ उन झुकी हुई आंखों से ज्यादा आकर्षक कुछ भी नहीं हो सकता था।

एक पल के लिए मारियस को लगा कि वह उसी आदमी की दूसरी बेटी है, निस्संदेह उसकी बहन। लेकिन जब टहलने की अपनी आदत के चलते वह दूसरी बार उस बेंच के पास पहुँचा और उसने उसे ध्यान से देखा, तो उसने उसे पहचान लिया। छह महीने में वह छोटी बच्ची एक युवती बन गई थी; बस इतना ही। यह घटना अक्सर होती है। एक पल ऐसा आता है जब लड़कियाँ पलक झपकते ही खिल उठती हैं और गुलाब बन जाती हैं। कल तक तो वे बच्ची ही थीं; आज वे मन को बेचैन कर देती हैं।

यह बच्ची न केवल बड़ी हो गई थी, बल्कि आदर्श बन चुकी थी। जैसे अप्रैल के तीन दिन कुछ पेड़ों को फूलों से ढकने के लिए काफी होते हैं, वैसे ही छह महीने उसे सुंदरता से सराबोर करने के लिए काफी थे। उसका अप्रैल आ चुका था।

कभी-कभी हम ऐसे लोगों को देखते हैं, जो गरीब और साधारण होते हुए भी, अचानक गरीबी से विलासिता की ओर बढ़ जाते हैं, हर तरह के खर्चे करने लगते हैं और अचानक ही चकाचौंध भरे, खर्चीले और शानदार बन जाते हैं। यह सब आय मिलने का परिणाम होता है; कल ही उन्हें एक किश्त चुकानी थी। उस युवती को अपनी तिमाही आय प्राप्त हुई थी।

और फिर, वह अब वह स्कूली छात्रा नहीं रही, जो हमेशा फेल्ट की टोपी, मेरिनो गाउन, विद्वान के जूते और लाल हाथों के साथ सजती रहती थी; सुंदरता के साथ-साथ उसमें सलीके का भी आ गया था; वह एक सलीके से सजी-धजी महिला बन गई थी, जिसमें एक तरह की समृद्ध और सरल शालीनता झलकती थी, और वह दिखावे से रहित थी। उसने काले दमिश्क का गाउन, उसी कपड़े का केप और सफेद क्रेप की टोपी पहनी थी। उसके सफेद दस्तानों से उसके हाथों की कोमलता झलक रही थी, जो नक्काशीदार चीनी हाथीदांत से बने छाते के हैंडल को थामे हुए थे, और उसके रेशमी जूतों से उसके छोटे पैर की खूबसूरती और भी निखर रही थी। जब कोई उसके पास से गुजरता, तो उसकी पूरी वेशभूषा से एक युवा और मनमोहक खुशबू आती।

जहां तक उस आदमी की बात है, वह हमेशा की तरह ही था।

जब मारियस दूसरी बार उसके पास पहुँचा, तो उस युवती ने अपनी पलकें उठाईं; उसकी आँखें गहरे, दिव्य नीले रंग की थीं, लेकिन उस धुंधली नीली रोशनी में

अभी तक एक बच्चे की झलक के सिवा कुछ नहीं था। उसने मारियस को उदासीनता से देखा, मानो वह गूलर के पेड़ों के नीचे दौड़ रहे उस बच्चे को या बेंच पर छाया डाल रहे संगमरमर के फूलदान को घूर रही हो, और मारियस एक तरफ़ मुँह करके टहलता रहा और किसी और चीज़ के बारे में सोचने लगा।

वह उस बेंच के पास से पांच-छह बार गुजरा जहां वह युवती बैठी थी, लेकिन उसने उसकी ओर नजर तक नहीं डाली।

अगले दिनों, वह अपनी आदत के अनुसार लक्ज़मबर्ग लौट आया; हमेशा की तरह, उसे वहाँ "पिता और पुत्री" मिले; लेकिन उसने उन पर और ध्यान नहीं दिया। अब जब वह लड़की सुंदर हो गई थी, तब भी उसने उसके बारे में उतना ही सोचा जितना तब सोचा था जब वह साधारण दिखती थी। वह उस बेंच के बहुत पास से गुजरा जहाँ वह बैठी थी, क्योंकि यही उसकी आदत थी।

III. वसंत ऋतु का प्रभाव

एक दिन, हवा सुहावनी थी, लक्ज़मबर्ग प्रकाश और छाया से सराबोर था, आकाश इतना निर्मल था मानो उस सुबह स्वर्गदूतों ने उसे धो डाला हो, शाहबलूत के पेड़ों की गहराई में गौरैया चहचहा रही थीं। मारियस ने अपना पूरा मन प्रकृति के हवाले कर दिया था, वह किसी बात की चिंता नहीं कर रहा था, बस जी रहा था और सांस ले रहा था। वह बेंच के पास से गुजरा, युवती ने अपनी निगाहें उसकी ओर उठाईं, दोनों की निगाहें मिलीं।

उस मौके पर उस युवती की निगाहों में क्या था? मारियस इसका अंदाज़ा नहीं लगा सकता था। कुछ भी नहीं था और सब कुछ था। यह एक अजीब सी चमक थी।

उसने अपनी निगाहें झुका लीं और वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया।

उसने अभी जो देखा था, वह अब किसी बच्चे की भोली और सरल आंख नहीं थी; यह एक रहस्यमय खाई थी जो आधी खुली और फिर अचानक बंद हो गई।

एक दिन ऐसा आएगा जब वह युवती इस तरह देखेगी। भला उस दिन वहाँ मौजूद व्यक्ति का क्या होगा!

उस आत्मा की पहली दृष्टि, जो अभी तक स्वयं को नहीं जानती, आकाश में भोर के समान है। यह किसी उज्ज्वल और विचित्र चीज का जागरण है। उस अप्रत्याशित चमक के खतरनाक आकर्षण का कोई अंदाजा नहीं लगाया जा सकता, जो मनमोहक छायाओं से अचानक और अस्पष्ट रूप से निकलती है, और जिसमें वर्तमान की सारी मासूमियत और भविष्य का सारा जुनून समाहित होता है। यह एक प्रकार की अनिश्चित कोमलता है जो संयोग से प्रकट होती है और प्रतीक्षा करती है। यह एक ऐसा जाल है जिसे भोली-भाली युवती अनजाने में बिछाती है, और जिसमें वह बिना चाहे या जाने ही दिलों को जीत लेती है। यह एक कुंवारी है जो स्त्री जैसी दिखती है।

ऐसा बहुत कम ही होता है कि जिस भी दृष्टि का उस पर प्रभाव पड़े, उससे गहन चिंतन का जन्म न हो। उस दिव्य और घातक चमक में समस्त पवित्रता और निर्मलता समाहित होती है, जो किसी नखरीली स्त्री की सुनियोजित कोमल दृष्टियों से भी

कहीं अधिक, आत्मा की गहराइयों में उस गहरे, सुगंध और विष से लथपथ, प्रेम नामक फूल को अचानक खिला देने की जादुई शक्ति रखती है।

उस शाम, अपने अटारी में लौटते समय, मारियस ने अपने कपड़ों पर एक नज़र डाली और पहली बार महसूस किया कि वह कितना लापरवाह, अभद्र और अविश्वसनीय रूप से मूर्ख था कि लक्ज़मबर्ग में अपनी सैर के लिए अपने "रोज़मर्रा के कपड़ों" में चला गया, यानी एक ऐसी टोपी के साथ जिसका किनारा फटा हुआ था, खुरदुरे बूट, काले पतलून जो घुटनों पर सफेद दिख रहे थे, और एक काला कोट जो कोहनियों पर फीका पड़ गया था।

IV. एक बड़ी बीमारी की शुरुआत

अगले दिन, तय समय पर, मारियस ने अपनी अलमारी से अपना नया कोट, नई पतलून, नई टोपी और नए जूते निकाले; उसने खुद को इस पूरे वस्त्रों से सजाया, अपने दस्ताने पहने, जो उसके लिए एक बहुत बड़ी विलासिता थी, और लक्ज़मबर्ग के लिए रवाना हो गया।

रास्ते में उसकी मुलाकात कौरफेयरैक से हुई और उसने उसे अनदेखा करने का नाटक किया। घर लौटने पर कौरफेयरैक ने अपने दोस्तों से कहा:—

“मैंने अभी-अभी मारियस की नई टोपी और नया कोट देखा, और मारियस खुद उनके अंदर था। वह निश्चित रूप से परीक्षा पास करने वाला था। वह बिल्कुल बेवकूफ लग रहा था।”

लक्ज़मबर्ग पहुँचकर मारियस ने फव्वारे के चारों ओर चक्कर लगाया और हंसों को निहारने लगा; फिर वह एक मूर्ति के सामने काफी देर तक चिंतन में लीन रहा, जिसका सिर फफूंद से पूरी तरह काला हो चुका था और जिसकी एक कमर गायब थी। फव्वारे के पास ही एक चालीस वर्षीय बुर्जुआ व्यक्ति था, जिसका तोंद निकला हुआ था। वह पाँच साल के एक छोटे बच्चे का हाथ पकड़े खड़ा था और उससे कह रहा था: “मेरे बेटे, अति से दूर रहो, तानाशाही और अराजकता दोनों से बराबर दूरी बनाए रखो।” मारियस ने उस बुर्जुआ की बात सुनी। फिर उसने एक बार फिर फव्वारे का चक्कर लगाया। अंत में वह धीरे-धीरे, मानो पछतावे के साथ, अपनी गली की ओर चल पड़ा। ऐसा लग रहा था मानो उसे वहाँ जाने के लिए मजबूर भी किया गया हो और उसे ऐसा करने से रोका भी गया हो। उसे स्वयं इसका एहसास नहीं हुआ और उसने सोचा कि वह हमेशा की तरह वही कर रहा है।

पैदल मार्ग पर मुड़ते ही उसने दूसरे छोर पर एम. लेब्लांक और उस युवती को अपनी बेंच पर बैठे देखा। उसने अपने कोट के सारे बटन बंद कर लिए, उसे शरीर पर कसकर खींच लिया ताकि कोई सिलवट न रहे, फिर बड़ी सहजता से अपनी चमकदार पतलून को निहारा और बेंच की ओर चल पड़ा। उसका यह चलना आक्रमण का आभास देता था, और निश्चित रूप से विजय की तीव्र इच्छा को दर्शाता था। इसलिए मैं कहता हूँ कि वह बेंच की ओर चला, जैसे मैं कहूँ: “हैनीबल रोम की ओर बढ़ा।”

हालांकि, उसकी सारी हरकतें पूरी तरह से यांत्रिक थीं, और उसने अपने मन और काम की नियमित गतिविधियों में कोई बाधा नहीं डाली थी। उस समय वह सोच रहा था कि मैनुअल डू बैकालॉरिएट एक मूर्खतापूर्ण किताब है, और इसे शायद ही किसी मूर्ख ने लिखा होगा, तभी तो इसमें रेसीन की तीन त्रासदियों और मोलियर की केवल एक हास्य रचना को मानव मन की उत्कृष्ट कृतियों के रूप में विश्लेषित किया गया है। उसके कानों में एक तीखी सीटी बज रही थी। जैसे ही वह बेंच के पास पहुँचा, उसने अपने कोट की तहों को कसकर पकड़ लिया और उस युवती पर अपनी निगाहें गड़ा दीं। उसे ऐसा लगा मानो वह युवती गली के पूरे कोने को एक धुंधली नीली रोशनी से भर रही हो।

जैसे-जैसे वह पास आता गया, उसकी चाल धीमी होती गई। बेंच से थोड़ी दूरी पर पहुँचकर, और रास्ते के अंत तक पहुँचने से बहुत पहले ही, वह रुक गया, और खुद को समझा नहीं पाया कि वह वापस क्यों लौट आया। उसने खुद से यह भी नहीं कहा कि वह अंत तक नहीं जाएगा। बड़ी मुश्किल से उस युवती ने उसे दूर से देखा और उसके नए कपड़ों में उसके सुंदर रूप को पहचाना। फिर भी, वह एकदम सीधा खड़ा रहा, कहीं कोई उसे पीछे से न देख ले।

वह दूसरे छोर तक गया, फिर वापस आया, और इस बार वह बेंच के थोड़ा और करीब पहुंचा। वह पेड़ों से तीन कदम की दूरी तक पहुँच गया, लेकिन वहाँ उसे आगे बढ़ने में एक अवर्णनीय असंभवता का आभास हुआ और वह हिचकिचाया। उसे लगा कि उसने युवती का चेहरा अपनी ओर झुकते हुए देखा। लेकिन उसने मर्दाना और ज़ोरदार प्रयास किया, अपनी हिचकिचाहट को दबाया और सीधे आगे बढ़ गया। कुछ ही सेकंड बाद, वह बेंच के सामने सीधा और दृढ़ खड़ा हो गया, उसका चेहरा कान तक लाल हो गया था, उसने दाएं या बाएं देखने की हिम्मत भी नहीं की, उसका हाथ एक राजनेता की तरह उसके कोट में था। जिस क्षण वह वहाँ से गुजरा—तोपों की गड़गड़ाहट के नीचे—उसने अपने दिल की धड़कन को बेतहाशा तेज़ होते हुए महसूस किया। पिछले दिन की तरह, उसने अपना दमिश्क गाउन और क्रेप बोनट पहना हुआ था। उसने एक अवर्णनीय आवाज़ सुनी, जो निश्चित रूप से "उसकी आवाज़" रही होगी। वह शांत भाव से बात कर रही थी। वह बहुत सुंदर थी। उसने यह महसूस किया, हालाँकि उसने उसे देखने का कोई प्रयास नहीं किया। “लेकिन,” उसने सोचा, “वह मेरे प्रति सम्मान और आदर का भाव रखे बिना नहीं रह सकती थी, अगर उसे पता होता कि मैं मार्कोस ओब्रेगॉन डे ला रोंडे पर लिखे गए उस शोध

प्रबंध का असली लेखक हूँ, जिसे एम. फ़्रांस्वा डे न्यूफ़चेटो ने गिल ब्लास के अपने संस्करण के शीर्ष पर, मानो अपना ही लिखा हो, प्रकाशित किया था।” वह बेंच से आगे बढ़कर पैदल मार्ग के अंतिम छोर तक गया, जो बहुत नज़दीक था, फिर मुड़ा और उस सुंदर लड़की के सामने से एक बार फिर गुज़रा। इस बार उसका चेहरा पीला पड़ गया था। साथ ही, उसकी सारी भावनाएँ अप्रिय थीं। जैसे-जैसे वह बेंच और उस युवती से दूर होता गया, और उसकी पीठ उसकी ओर थी, उसे लगा कि वह उसे घूर रही है, और इसी वजह से वह लड़खड़ा गया।

उसने दोबारा बेंच के पास जाने की कोशिश नहीं की; वह रास्ते के बीच में ही रुक गया, और वहाँ, एक ऐसी चीज़ जो वह कभी नहीं करता था, वह बैठ गया, और अपने मन की सबसे गहरी और अस्पष्ट गहराइयों में सोचने लगा कि आखिरकार, यह कितना कठिन है कि जिन लोगों की सफेद टोपी और काले गाउन की वह प्रशंसा करता था, वे उसकी शानदार पतलून और उसके नए कोट के प्रति बिल्कुल उदासीन थे।

पंद्रह मिनट बीतने पर वह उठा, मानो उस बेंच की ओर फिर से बढ़ने ही वाला हो जिसके चारों ओर एक प्रभामंडल था। लेकिन वह वहीं खड़ा रहा, गतिहीन। पंद्रह महीनों में पहली बार उसने मन ही मन सोचा कि वह सज्जन जो हर दिन अपनी बेटी के साथ वहाँ बैठते थे, उन्होंने शायद उसे देखा होगा और उसकी लगन को असाधारण समझा होगा।

पहली बार, उन्हें इस बात का भी एहसास हुआ कि अपने गुप्त विचारों में भी उस अजनबी को एम. लेब्लांक के उपनाम से संबोधित करने में कुछ हद तक अनादर है।

वह कुछ मिनट तक सिर झुकाए इसी तरह खड़ा रहा, हाथ में पकड़ी हुई छड़ी से रेत पर आकृतियाँ बनाता रहा।

फिर वह अचानक बेंच के विपरीत दिशा में, एम. लेब्लांक और उनकी बेटी की ओर मुड़ा और घर चला गया।

उस दिन वह खाना खाना भूल गया। शाम आठ बजे उसे इस बात का एहसास हुआ, और चूंकि सेंट-जैक्स स्ट्रीट पर जाने में बहुत देर हो चुकी थी, उसने कहा: "कोई बात नहीं!" और रोटी का एक टुकड़ा खा लिया।

उसने अपने कोट को अच्छी तरह से झाड़कर और बड़ी सावधानी से तह करके रखने के बाद ही बिस्तर पर गया।

वी. मैडम बोगन पर गरज के कई झटके लगे

अगले दिन, मैडम बोगन, जैसा कि कौरफेयरैक ने गोरब्यू की झोपड़ी की पुरानी चौकीदार-मुख्य-किरायेदार, गृहस्वामी को नाम दिया था, मैडम बोगन, जिनका नाम वास्तव में मैडम बर्गोन था, जैसा कि हमें पता चला है, लेकिन इस परंपरा विरोधी, कौरफेयरैक को किसी बात का सम्मान नहीं था—मैम बोगन ने विस्मय के साथ देखा कि एम. मारियस अपने नए कोट में फिर से बाहर जा रहे थे।

वह फिर से लक्ज़मबर्ग गए, लेकिन गली के बीच में अपनी बेंच से आगे नहीं बढ़े। पिछले दिन की तरह ही वे वहीं बैठ गए, दूर से सब कुछ देखते हुए, उन्हें सफेद टोपी, काली पोशाक और सबसे बढ़कर वह नीली रोशनी साफ दिखाई दे रही थी। वे वहीं बैठे रहे और लक्ज़मबर्ग के गेट बंद होने पर ही घर गए। उन्होंने एम. लेब्लांक और उनकी बेटी को जाते हुए नहीं देखा। उन्होंने सोचा कि वे रू डे ल'ओएस्ट के गेट से बगीचे से निकल गए होंगे। कई हफ़्तों बाद, जब उन्होंने इस बारे में सोचा, तो उन्हें याद नहीं आया कि उन्होंने उस शाम कहाँ खाना खाया था।

अगले दिन, यानी तीसरे दिन, मैडम बोगन स्तब्ध रह गईं। मारियस अपना नया कोट पहनकर बाहर निकला। "लगातार तीन दिन!" वह चिल्लाईं।

उसने उसका पीछा करने की कोशिश की, लेकिन मारियस तेज़ी से और बड़े-बड़े कदमों से चल रहा था; मानो कोई दरियाई घोड़ा किसी हिरण का पीछा कर रहा हो। दो मिनट में ही वह उसकी नज़रों से ओझल हो गया और हाँफते हुए, अस्थमा से लगभग दम घुटते हुए और गुस्से से आग बबूला होकर लौटी। "अगर रोज़ाना अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनने और लोगों को इस तरह दौड़ाने में कोई समझदारी है तो!" वह गुर्राई।

मारियस लक्समबर्ग के लिए रवाना हो गया।

वह युवती एम. लेब्लांक के साथ वहाँ थी। मारियस जितना हो सके पास गया, किताब पढ़ने का नाटक करते हुए, लेकिन थोड़ी दूर जाकर रुक गया, फिर लौटकर अपनी बेंच पर बैठ गया, जहाँ उसने चार घंटे तक चबूतरे पर उछलती-कूदती गौरैयों को देखा, जिनसे उसे ऐसा लगा मानो वे उसका मज़ाक उड़ा रही हों।

इस तरह दो सप्ताह बीत गए। मारियस अब लक्ज़मबर्ग घूमने के लिए नहीं जाता था, बल्कि बिना कारण जाने एक ही जगह पर बैठने के लिए जाता था। वहाँ पहुँचकर वह हिलता-डुलता भी नहीं था। वह हर सुबह अपना नया कोट पहन लेता था ताकि किसी को दिखाई न दे, और अगले दिन फिर से वही प्रक्रिया दोहराता था।

वह निःसंदेह एक अद्भुत सुंदरी थी। एकमात्र ऐसी टिप्पणी जो आलोचना के करीब हो सकती थी, वह यह थी कि उसकी उदास निगाहों और हंसमुख मुस्कान के बीच का विरोधाभास उसके चेहरे को एक अजीब सा प्रभाव देता था, जिससे कभी-कभी उसका यह प्यारा चेहरा आकर्षक होने के बावजूद विचित्र सा लगने लगता था।

VI. बंदी बनाया गया

दूसरे सप्ताह के आखिरी दिनों में से एक दिन, मारियस हमेशा की तरह अपनी बेंच पर बैठा था, उसके हाथ में एक खुली किताब थी, जिसका उसने पिछले दो घंटों से एक भी पन्ना नहीं पलटा था। अचानक वह चौंक गया। गली के दूसरे छोर पर एक घटना घट रही थी। लेब्लैंक और उसकी बेटी अभी-अभी अपनी सीट से उठे थे, बेटी ने अपने पिता का हाथ पकड़ रखा था, और दोनों धीरे-धीरे उस गली के बीचोंबीच मारियस की ओर बढ़ रहे थे जहाँ वह बैठा था। मारियस ने अपनी किताब बंद की, फिर उसे दोबारा खोला, और फिर खुद को पढ़ने के लिए मजबूर किया; वह कांप रहा था; वह आभा सीधे उसकी ओर आ रही थी। “हे भगवान!” उसने सोचा, “मुझे कोई मुद्रा बनाने का समय नहीं मिलेगा।” फिर भी वह सफेद बालों वाला आदमी और लड़की आगे बढ़ते रहे। उसे लगा जैसे यह एक सदी तक चला हो, जबकि यह बस एक पल था। “वे इस दिशा में क्यों आ रहे हैं?” उसने खुद से पूछा। “क्या! वह यहाँ से गुजरेगी? उसके पैर इस रेत पर, इस रास्ते पर, मुझसे दो कदम दूर पड़ेंगे?” वह बेहद परेशान था, वह बहुत सुंदर होना चाहता था, वह उस क्रॉस का मालिक बनना चाहता था। उसने उनके पास आते कदमों की धीमी और सधी हुई आहट सुनी। उसने कल्पना की कि एम. लेब्लांक गुस्से भरी निगाहों से उसे घूर रहे हैं। "क्या वह सज्जन मुझसे बात करने वाले हैं?" उसने मन ही मन सोचा। उसने अपना सिर झुका लिया; जब उसने दोबारा सिर उठाया, तो वे उसके बहुत करीब आ चुके थे। वह युवती गुजरी, और गुजरते हुए उसने उसकी ओर देखा। वह उसे एकटक देखती रही, उसकी आँखों में एक गंभीर मिठास थी जिसने मारियस को सिर से पैर तक झकझोर दिया। उसे लगा मानो वह उसे इतना समय बीत जाने और उसके पास न आने के लिए फटकार रही हो, और उससे कह रही हो: "मैं खुद आ रही हूँ।" मारियस उन किरणों और गहराइयों से भरी आँखों से चकित रह गया।

उसका दिमाग मानो आग से जल रहा था। वह उसके पास आई थी, कितनी खुशी! और फिर, उसने उसे कैसे देखा! वह उसे पहले से कहीं अधिक सुंदर दिखाई दी। ऐसी सुंदरता जो पूरी तरह से स्त्रीत्व और देवदूत जैसी थी, ऐसी सुंदरता जिसे देखकर पेट्रार्क भी गीत गाते और दांते घुटने टेकते। उसे ऐसा लगा जैसे वह

नीले आकाश में स्वतंत्र रूप से तैर रहा हो। साथ ही, वह बुरी तरह परेशान था क्योंकि उसके जूतों पर धूल जमी थी।

उसे पूरा यकीन था कि उसने उसके जूते भी देखे होंगे।

वह तब तक उसे अपनी निगाहों से देखता रहा जब तक वह ओझल नहीं हो गई। फिर वह उठ खड़ा हुआ और लक्ज़मबर्ग के बगीचे में पागलों की तरह इधर-उधर घूमने लगा। संभव है कि कभी-कभी वह मन ही मन हंसता और ज़ोर-ज़ोर से बातें करता। जब वह बच्चों की देखभाल करने वाली नर्सों के पास आता तो इतना खोया हुआ होता कि उनमें से हर कोई उसे उससे प्यार करने वाला समझती।

उसने लक्ज़मबर्ग छोड़ दिया, इस उम्मीद में कि वह उसे सड़क पर फिर से पा लेगा।

ओडियन के मेहराबों के नीचे उनकी मुलाकात कौरफेयरैक से हुई और उन्होंने उनसे कहा, "आइए, मेरे साथ भोजन कीजिए।" वे रूसो के रेस्तरां में गए और छह फ्रैंक खर्च किए। मारियस ने बड़े पेट भरकर खाना खाया। उन्होंने वेटर को छह सू दिए। मिठाई के समय उन्होंने कौरफेयरैक से कहा, "क्या आपने अखबार पढ़ा? ऑड्री डी पुयरावेउ ने कितना बढ़िया भाषण दिया!"

वह बुरी तरह से प्यार में था।

रात के खाने के बाद, उन्होंने कौरफेयरैक से कहा: "मैं तुम्हें नाटक दिखाऊंगा।" वे पोर्ट-सैंटे-मार्टिन में 'ल'ऑबर्ज डेस एड्रेट्स' में फ्रेडरिक का नाटक देखने गए। मारियस को बहुत मज़ा आया।

उसी समय, उनमें शर्मिंदगी का दौरा और भी बढ़ गया। थिएटर से बाहर निकलते ही उन्होंने एक फैशन डिजाइनर के गार्टर की ओर देखने से इनकार कर दिया, जो नाली पार कर रही थी, और कौरफेयरैक ने जब कहा: "मैं उस महिला को अपने संग्रह में रखना चाहूंगा," तो वे लगभग भयभीत हो गए।

अगली सुबह कौरफेयरैक ने उन्हें कैफे वोल्टेयर में नाश्ते के लिए आमंत्रित किया। मारियस वहाँ गए और पिछली शाम से भी ज़्यादा खाया। वे बहुत विचारशील और बेहद खुश थे। ऐसा लग रहा था मानो वे ज़ोर-ज़ोर से हंसने का हर मौका ढूंढ रहे हों। प्रांतों से आए किसी न किसी व्यक्ति को, जिसे उनसे मिलवाया जाता, वे स्नेहपूर्वक गले लगा लेते। छात्रों का एक समूह मेज के चारों ओर इकट्ठा

हो गया और वे सोरबोन के मंच से राज्य द्वारा प्रायोजित बेतुकी बातों पर चर्चा करने लगे। फिर बातचीत गुइचेराट के शब्दकोशों और व्याकरणों में मौजूद त्रुटियों और कमियों पर आ गई। मारियस ने चर्चा को रोकते हुए कहा, "लेकिन फिर भी, क्रॉस का होना बहुत सुखद है!"

“यह तो अजीब है!” कौरफेयरैक ने जीन प्रोवेर से फुसफुसाते हुए कहा।

“नहीं,” प्रूवेयर ने जवाब दिया, “यह गंभीर मामला है।”

यह गंभीर था; वास्तव में, मारियस उस पहले हिंसक और आकर्षक क्षण तक पहुँच चुका था, जिससे महान जुनून की शुरुआत होती है।

एक नजर ने ही यह सब कर दिया था।

जब बारूदी सुरंग में आग लग जाती है, जब भयंकर विस्फोट होने वाला होता है, तब इससे सरल कुछ नहीं होता। एक नजर ही चिंगारी बन जाती है।

उसका सब कुछ खत्म हो चुका था। मारियस एक औरत से प्यार करता था। उसका भाग्य अब एक अनिश्चित राह पर चल पड़ा था।

स्त्रियों की निगाहें पहियों के एक विशेष संयोजन जैसी होती हैं, जो देखने में शांत लगती हैं लेकिन फिर भी भयावह होती हैं। आप हर दिन शांतिपूर्वक और निडरता से, बिना किसी संदेह के उनके पास से गुजरते हैं। एक क्षण आता है जब आप भूल जाते हैं कि वह दृष्टि वहाँ है। आप आते-जाते हैं, सपने देखते हैं, बोलते हैं, हंसते हैं। अचानक आप स्वयं को जकड़ा हुआ महसूस करते हैं; सब कुछ समाप्त हो जाता है। पहिए आपको जकड़ लेते हैं, निगाहों ने आपको फँसा लिया है। इसने आपको पकड़ लिया है, चाहे कहीं भी हो या कैसे भी, आपके विचारों के किसी उस हिस्से से जो बेकाबू होकर फड़फड़ा रहा था, किसी उस विकर्षण से जिसने आप पर आक्रमण किया था। आप खो गए हैं। आपका पूरा अस्तित्व उसमें समा जाता है। रहस्यमय शक्तियों की एक श्रृंखला आपको अपने वश में कर लेती है। आप व्यर्थ संघर्ष करते हैं; अब मानवीय सहायता संभव नहीं है। आप एक पहिए से दूसरे पहिए में, एक पीड़ा से दूसरी पीड़ा में, एक यातना से दूसरी यातना में गिरते चले जाते हैं; आप, आपका मन, आपका भाग्य, आपका भविष्य, आपकी आत्मा; और, चाहे आप किसी दुष्ट प्राणी के वश में हों या किसी नेक हृदय वाले व्यक्ति के, आप इस भयावह मशीन से शर्म से विकृत होकर या वासना से रूपांतरित होकर ही बच पाएंगे।

VII. अक्षर U के रोमांच, अनुमानों के हवाले कर दिए गए

एकांत, हर चीज़ से अलगाव, अभिमान, स्वतंत्रता, प्रकृति का आनंद, दैनिक और भौतिक गतिविधियों का अभाव, अपने भीतर का जीवन, पवित्रता के गुप्त संघर्ष, समस्त सृष्टि के प्रति एक परोपकारी परमानंद - इन सबने मारियस को उस आवेश के लिए तैयार किया जिसे वासना कहते हैं। अपने पिता की आराधना धीरे-धीरे एक धर्म बन गई थी, और सभी धर्मों की तरह, यह उसकी आत्मा की गहराइयों में समा गई थी। कुछ और भी आवश्यक था। प्रेम का आगमन हुआ।

पूरा एक महीना बीत गया, इस दौरान मारियस हर दिन लक्ज़मबर्ग गया। जब समय आया, तो उसे कोई रोक नहीं सका।—“वह ड्यूटी पर है,” कौरफेयरैक ने कहा। मारियस बेहद खुश था। यह निश्चित है कि उस युवती ने उसे देखा होगा।

अंततः उसमें हिम्मत आ गई और वह बेंच के पास पहुँचा। फिर भी, प्रेमियों में पाई जाने वाली झिझक और सावधानी की भावना के चलते वह उसके सामने से नहीं गुजरा। उसने पिता का ध्यान आकर्षित न करना ही बेहतर समझा। उसने पेड़ों और मूर्तियों के चबूतरे के पीछे छिपने का तरीका बड़ी चतुराई से अपनाया, ताकि वह युवती को जितना हो सके उतना दिखाई दे और बूढ़े सज्जन को जितना हो सके उतना कम। कभी-कभी वह लियोनिडास या स्पार्टाकस की छाया में आधे घंटे तक बिना हिले-डुले बैठा रहता, हाथ में किताब लिए, और उसकी आँखें धीरे से ऊपर उठकर उस सुंदर युवती को खोजतीं, और वह भी करवट लेकर, एक हल्की मुस्कान के साथ अपना आकर्षक चेहरा उसकी ओर घुमाती। सफेद बालों वाले उस व्यक्ति से दुनिया के सबसे सहज और शांत तरीके से बातचीत करते हुए, वह मारियस पर अपनी पवित्र और भावुक निगाहों से सारे सपने देखती रही। यह एक प्राचीन और सदियों पुरानी तरकीब है जिसे हव्वा ने दुनिया के पहले दिन से ही समझ लिया था, और जिसे हर महिला अपने जीवन के पहले दिन से ही समझ लेती है! उसके मुंह ने एक का जवाब दिया, और उसकी नज़र ने दूसरे का।

ऐसा माना जा सकता है कि एम. लेब्लांक ने आखिरकार कुछ तो देखा ही होगा, क्योंकि अक्सर जब मारियस आता, तो वह उठकर इधर-उधर घूमने लगता। उसने अपनी

जानी-पहचानी जगह छोड़ दी थी और रास्ते के दूसरे छोर पर, ग्लेडिएटर के पास वाली बेंच पर बैठ जाता था, मानो यह देखने के लिए कि क्या मारियस उसका पीछा करते हुए वहाँ आएगा। मारियस यह बात समझ नहीं पाया और उससे यह गलती हो गई। "पिता" का व्यवहार अनियमित होने लगा और वह अब "अपनी बेटी" को हर दिन नहीं लाता था। कभी-कभी वह अकेला आता था। तब मारियस नहीं रुकता था। एक और भूल।

मारियस ने इन लक्षणों पर कोई ध्यान नहीं दिया। झिझक के दौर से वह स्वाभाविक और घातक रूप से अंधापन के दौर में पहुँच गया था। उसका प्रेम बढ़ता ही गया। वह हर रात इसके सपने देखता था। और फिर, उसे एक अप्रत्याशित आनंद मिला, मानो आग में घी डालने जैसा, उसकी आँखों पर छाए काले सायों को और भी गहरा कर दिया हो। एक शाम, सूर्यास्त के समय, उसने उस बेंच पर, जहाँ से "एम. लेब्लांक और उनकी बेटी" अभी-अभी उठे थे, एक रूमाल पाया। एक बहुत ही साधारण रूमाल, बिना कढ़ाई वाला, लेकिन सफेद और महीन, जिससे उसे एक अवर्णनीय सुगंध आती हुई प्रतीत हुई। उसने उसे उत्साह से उठा लिया। इस रूमाल पर U. F. अक्षर अंकित थे। मारियस इस सुंदर बच्ची के बारे में कुछ नहीं जानता था—न उसका पारिवारिक नाम, न उसका ईसाई नाम, न उसका पता; ये दो अक्षर ही उसके बारे में पहली जानकारी थे, मनमोहक अक्षर, जिन पर उसने तुरंत अपनी कल्पनाओं की नींव रखनी शुरू कर दी। U स्पष्ट रूप से ईसाई नाम था। "उर्सुल!" उसने सोचा, "कितना प्यारा नाम है!" उसने रूमाल को चूमा, उसे अपने अंदर समा लिया, दिन में उसे अपने दिल पर, अपनी त्वचा पर रखा, और रात में उसे अपने होठों के नीचे रखा ताकि वह उस पर सो सके।

“मुझे ऐसा लगता है कि उसकी पूरी आत्मा इसी में समाई हुई है!” उसने कहा।

यह रूमाल उस बुजुर्ग सज्जन का था, जो गलती से उनकी जेब से गिर गया था।

इस खजाने के मिलने के बाद के दिनों में, वह केवल लक्ज़मबर्ग में रूमाल को चूमते और उसे अपने दिल पर रखते हुए ही दिखाई देता रहा। उस सुंदर बच्चे को यह सब कुछ समझ नहीं आया और उसने इशारों से उसे सब कुछ समझा दिया।

“ओह, विनम्रता!” मारियस ने कहा।

VIII. पूर्व सैनिक स्वयं भी खुश रह सकते हैं

चूंकि हमने विनम्रता शब्द का प्रयोग किया है, और चूंकि हम कुछ भी नहीं छिपा रहे हैं, इसलिए हमें यह कहना चाहिए कि एक बार, उनकी परमानंद की स्थिति के बावजूद, "उनकी उर्सुले" ने उन्हें बहुत दुख पहुंचाया था। यह उन दिनों की बात है जब उन्होंने एम. लेब्लांक को बेंच छोड़कर टहलने के लिए राजी किया था। मई की ठंडी हवा चल रही थी, जिससे केले के पेड़ों की चोटियाँ हिल रही थीं। पिता और पुत्री, हाथ में हाथ डाले, मारियस की बेंच के पास से गुजरे थे। मारियस उनके पीछे खड़े हो गए थे और अपनी आत्मा की निराशाजनक स्थिति के अनुरूप, अपनी आँखों से उनका पीछा कर रहे थे।

अचानक, हवा का एक झोंका, बाकी सब से कहीं अधिक प्रसन्नतापूर्ण, और शायद वसंत ऋतु के कार्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित, नर्सरी से नीचे आया, गली में जा टकराया, उस युवती को एक सुखद सिहरन में जकड़ लिया, जो वर्जिल की अप्सराओं और थियोक्रिटस के हिरणियों के योग्य थी, और उसके वस्त्र को, जो आइसिस के वस्त्र से भी अधिक पवित्र था, लगभग उसके गार्टर की ऊंचाई तक उठा दिया। एक सुंदर आकृति वाला पैर दिखाई दिया। मारियस ने इसे देखा। वह क्रोधित और क्रोधित हो गया।

उस युवती ने बड़ी बेचैनी से अपना वस्त्र नीचे सरका दिया था, फिर भी वह क्रोधित था। यह सच है कि वह गली में अकेला था। लेकिन वहाँ कोई हो सकता था। और अगर कोई होता तो क्या होता! क्या कोई ऐसी बात समझ सकता है? उसने जो किया वह भयानक था!—अफ़सोस, उस बेचारी बच्ची ने कुछ नहीं किया था; केवल एक ही दोषी था, हवा; लेकिन मारियस, जिसके भीतर चेरुबिन में विद्यमान बार्थोलो कांप रहा था, नाराज़ होने पर तुला हुआ था और अपनी ही परछाई से ईर्ष्या कर रहा था। वास्तव में, इसी तरह शरीर की कठोर और चंचल ईर्ष्या मनुष्य के हृदय में जागृत होती है और बिना किसी अधिकार के भी उस पर हावी हो जाती है। इसके अलावा, उस ईर्ष्या को भी एक तरफ रख दें, तो उस आकर्षक टांग को देखकर उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगा; संयोग से मिली पहली महिला की सफेद मोज़े उसे कहीं अधिक आनंद देती।

जब "उसकी उर्सुले" सैर के अंत तक पहुँचने के बाद एम. लेब्लांक के साथ वापस लौटी और उस बेंच के सामने से गुज़री जिस पर मारियस एक बार फिर बैठ गया था, तो मारियस ने उसे एक नाराज़ और क्रूर नज़र से देखा। युवती ने थोड़ा पीछे हटते हुए और पलकें उठाते हुए सीधा होने का हल्का सा इशारा किया, जिसका अर्थ था: "अच्छा, क्या बात है?"

यह उनकी पहली लड़ाई थी।

मारियस ने अभी अपनी आँखों से उसे घूरा ही था कि तभी कोई राह से गुज़रा। वह एक अनुभवी सैनिक था, बहुत झुका हुआ, बेहद झुर्रियों वाला और पीला पड़ा हुआ, लुई XV के ज़माने की वर्दी पहने हुए, उसकी छाती पर लाल कपड़े की एक छोटी अंडाकार पट्टिका थी, जिस पर तलवारें बनी थीं, सेंट-लुई का सैनिक क्रॉस था, और इसके अलावा, एक बिना बाजू वाली आस्तीन थी, उसकी ठुड्डी चांदी की थी और एक पैर लकड़ी का था। मारियस को लगा कि वह आदमी बेहद संतुष्ट दिख रहा है। उसे यह भी लगा कि बूढ़ा सनकी, जब उसके पास से लंगड़ाते हुए गुज़रा, तो उसने उसे बहुत ही दोस्ताना और हंसमुख अंदाज़ में आँख मारी, मानो किसी संयोग से उनके बीच कोई समझ बन गई हो, और मानो उन्होंने एक साथ कोई अच्छी किस्मत साझा की हो। मारियस के उस अवशेष का इतना संतुष्ट होने का क्या मतलब था? उस लकड़ी के पैर और दूसरे के बीच क्या हुआ था? मारियस ईर्ष्या से पागल हो गया।
— “शायद वह वहाँ था!” उसने मन ही मन कहा; "शायद उसने देख लिया होगा!"—और उसके मन में उस अनुभवी सैनिक को खत्म करने की तीव्र इच्छा जागृत हुई।

समय बीतने के साथ-साथ सभी बातें फीकी पड़ जाती हैं। मारियस का "उर्सुल" के प्रति क्रोध, जो कि उचित और जायज़ था, शांत हो गया। अंततः उसने उसे क्षमा कर दिया; लेकिन इसके लिए उसे बहुत प्रयास करना पड़ा; वह तीन दिन तक रूठता रहा।

फिर भी, इन सब के बावजूद और इन सब के कारण, उसका जुनून बढ़ता गया और पागलपन की हद तक पहुंच गया।

IX. ग्रहण

पाठक ने अभी-अभी देखा कि मारियस ने कैसे पता लगाया, या उसे लगा कि उसने पता लगा लिया है, कि उसका नाम उर्सुले था।

प्रेम से लालसा बढ़ती है। उसका नाम उर्सुले जानना उसके लिए बहुत बड़ी बात थी; पर बहुत छोटी भी नहीं। तीन-चार हफ़्तों में मारियस ने इस आनंद को पूरी तरह से भोग लिया था। उसे एक और आनंद चाहिए था। वह जानना चाहता था कि वह कहाँ रहती है।

उसने अपनी पहली गलती तब की जब वह ग्लेडिएटर द्वारा बेंच पर किए गए घात में फंस गया। उसने दूसरी गलती तब की जब एम. लेब्लांक अकेले लक्ज़मबर्ग पहुंचे और वह वहां नहीं रुका। अब उसने तीसरी और बहुत बड़ी गलती की। उसने "उर्सुल" का अनुसरण किया।

वह रू डे ल'ओएस्ट में, सबसे सुनसान जगह पर, एक नए, तीन मंजिला, साधारण दिखने वाले घर में रहती थी।

उस क्षण से, मारियस को लक्समबर्ग में उसे देखकर जो खुशी हुई थी, उसमें उसके घर तक उसका पीछा करने की खुशी भी जुड़ गई।

उसकी भूख बढ़ती जा रही थी। कम से कम वह उसका पहला नाम तो जानता ही था, एक प्यारा नाम, एक सच्ची महिला का नाम; वह जानता था कि वह कहाँ रहती है; वह जानना चाहता था कि वह कौन है।

एक शाम, जब वह उनका पीछा करते हुए उनके घर तक गया और उन्हें गाड़ी के फाटक से गायब होते हुए देखा, तो वह उनके काफिले में घुस गया और साहसपूर्वक कुली से बोला:—

"क्या ये वही सज्जन हैं जो पहली मंजिल पर रहते हैं और अभी-अभी अंदर आए हैं?"

“नहीं,” कुली ने उत्तर दिया। “वह तीसरे तल पर रहने वाले सज्जन हैं।”

एक और कदम आगे बढ़ा। इस सफलता ने मारियस का हौसला बढ़ाया।

“सामने की तरफ?” उसने पूछा।

“पारब्लू!” कुली ने कहा, “घर तो सड़क पर ही बना है।”
“और उस सज्जन का क्या काम है?” मारियस ने फिर से पूछना शुरू किया।
“वह एक धनी सज्जन हैं, महोदय। एक बहुत दयालु व्यक्ति जो दुर्भाग्यशाली लोगों की मदद करते हैं, हालांकि वे स्वयं धनी नहीं हैं।”
“उसका नाम क्या है?” मारियस ने सवाल फिर से पूछा।
कुली ने अपना सिर उठाया और कहा:—
"क्या आप पुलिस के जासूस हैं, महोदय?"
मारियस काफी शर्मिंदा होते हुए भी प्रसन्न होकर चला गया। वह अच्छा प्रदर्शन कर रहा था।
“अच्छा,” उसने सोचा, “मुझे पता है कि उसका नाम उर्सुले है, वह एक ऐसे सज्जन की बेटी है जो अपनी आमदनी पर गुजारा करता है, और वह वहीं, तीसरी मंजिल पर, रू डे ल'ओएस्ट में रहती है।”
अगले दिन, एम. लेब्लांक और उनकी बेटी लक्ज़मबर्ग में बहुत थोड़े समय के लिए ही रुके; वे उजाले में ही निकल गए। मारियस, जैसा कि उसकी आदत बन गई थी, उनके पीछे-पीछे रू डे ल'ओएस्ट तक गया। गाड़ी के प्रवेश द्वार पर पहुँचकर एम. लेब्लांक ने अपनी बेटी को पहले अंदर जाने दिया, फिर दहलीज पार करने से पहले रुके और मारियस को ध्यान से देखने लगे।
अगले दिन वे लक्ज़मबर्ग नहीं आए। मारियस ने पूरे दिन व्यर्थ ही उनका इंतजार किया।
शाम होते ही वह रू डे ल'ओएस्ट गया और उसने तीसरी मंजिल की खिड़कियों में एक रोशनी देखी।
वह रोशनी बुझने तक खिड़कियों के नीचे घूमता रहा।
अगले दिन लक्ज़मबर्ग में कोई नहीं था। मारियस पूरे दिन इंतज़ार करता रहा, फिर जाकर उनकी खिड़कियों के नीचे पहरा देने लगा। इस वजह से वह शाम दस बजे तक वहीं बैठा रहा।
उसके भोजन का प्रबंध अपने आप हो गया। बुखार बीमार को पोषण देता है, और प्रेम प्रेमी को।

उन्होंने इस तरह एक सप्ताह बिताया। एम. लेब्लांक फिर कभी लक्ज़मबर्ग में नज़र नहीं आए।
मारियस उदासी भरी अटकलों में डूबा रहता था; वह दिन में बरामदे की ओर देखने की हिम्मत नहीं करता था; वह रात में खिड़कियों की लाल रोशनी को निहारने में ही संतुष्ट रहता था। कभी-कभी उसे उन पर परछाइयाँ दौड़ती हुई दिखाई देती थीं, और उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगता था।
आठवें दिन जब वह खिड़कियों के नीचे पहुंचा, तो उनमें कोई रोशनी नहीं थी। “अरे!” उसने कहा, “दीपक अभी तक जला नहीं है। लेकिन अंधेरा है। क्या वे बाहर चले गए होंगे?” वह रात दस बजे तक, आधी रात तक, और सुबह एक बजे तक इंतज़ार करता रहा। तीसरी मंज़िल की खिड़कियों में कोई रोशनी नहीं दिखी, और कोई भी घर में दाखिल नहीं हुआ।
वह बेहद निराश मन से चला गया।
अगले दिन—क्योंकि उसका अस्तित्व कल से कल तक ही सीमित था, उसके लिए मानो आज जैसा कुछ था ही नहीं—अगले दिन उसे लक्ज़मबर्ग में कोई नहीं मिला; उसे इसकी उम्मीद थी। शाम ढलते ही वह घर गया।
खिड़कियों में कोई रोशनी नहीं थी; पर्दे लगे हुए थे; तीसरी मंजिल पूरी तरह से अंधेरी थी।
मारियस ने दरवाजे की चौखट खटखटाई, अंदर प्रवेश किया और द्वारपाल से कहा:— “तीसरी मंजिल पर रहने वाले सज्जन?”
“वह चला गया है,” कुली ने उत्तर दिया।
मारियस लड़खड़ा गया और कमजोर आवाज में बोला:—
"कितनी देर पहले?"
"कल।"
वह अब कहाँ रह रहा है?
मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता।
"तो क्या उसने अपना नया पता नहीं छोड़ा है?"

"नहीं। "

और चौकीदार ने आंखें उठाकर मारियस को पहचान लिया।

“आओ! तो तुम हो !” उसने कहा ; “लेकिन फिर तो तुम पक्के जासूस हो ?”

पुस्तक **VII.** संरक्षक मिनेट

I. खानें और खनिक

मानव समाजों में, नाट्य भाषा में कहें तो, एक "तीसरी निचली मंजिल" होती है। सामाजिक आधार हर जगह कमजोर होता है, कभी अच्छे के लिए, कभी बुरे के लिए। ये रचनाएँ एक दूसरे पर टिकी होती हैं। श्रेष्ठ खदानें भी होती हैं और निम्न स्तर की भी। इस अस्पष्ट उपमृदा में एक शीर्ष और एक तल होता है, जो कभी-कभी सभ्यता के नीचे धंस जाता है, और जिसे हमारी उदासीनता और लापरवाही पैरों तले रौंद देती है। पिछली शताब्दी में, विश्वकोश एक ऐसी खदान थी जो लगभग आकाश के लिए खुली थी। आदिम ईसाई धर्म के वे अंधकारमय स्रोत, केवल सीज़रों के शासनकाल में विस्फोट करने और मानव जाति को प्रकाश से भर देने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। क्योंकि पवित्र छायाओं में सुप्त प्रकाश छिपा होता है। ज्वालामुखी ऐसी छायाओं से भरे होते हैं जो चमकने में सक्षम होती हैं। प्रत्येक रूप की शुरुआत रात से होती है। वे तहखाने, जिनमें पहली प्रार्थना की गई थी, केवल रोम का तहखाना ही नहीं थे, वे संसार के तहखाने थे।

सामाजिक संरचना के नीचे, उस जटिल और अद्भुत ढांचे के भीतर, हर तरह की खुदाई चल रही है। धार्मिक खान है, दार्शनिक खान है, आर्थिक खान है, क्रांतिकारी खान है। एक कुल्हाड़ी विचारों से भरी है, दूसरी में गुप्त चिह्न हैं। दूसरी में क्रोध। लोग एक तहखाने से दूसरे तहखाने में एक-दूसरे को पुकारते और जवाब देते हैं। आदर्शलोक भूमिगत पाइपों में घूमते रहते हैं। वहां वे हर दिशा में फैल जाते हैं। कभी-कभी वे मिलते हैं और वहां भाईचारा स्थापित करते हैं। जीन-जैक्स अपनी कुल्हाड़ी डायोजेन्स को देता है, और डायोजेन्स उसे अपनी लालटेन देता है। कभी-कभी वे वहां आपस में लड़ते हैं। कैल्विन सोसिनियस के बाल पकड़ लेता है। लेकिन लक्ष्य की ओर इन सभी ऊर्जाओं के तनाव को कोई रोक नहीं सकता और न ही बाधित कर सकता है, और वह विशाल, एक साथ चलने वाली गतिविधि, जो इन अंधकारमय स्थानों में आती-जाती रहती है, ऊपर जाती है, नीचे उतरती है और फिर ऊपर उठती है, और वह विशाल अज्ञात ऊर्जा धीरे-धीरे ऊपर और नीचे, अंदर और बाहर को बदल देती है। समाज को इस खुदाई का शायद ही कोई आभास होता है जो उसकी सतह को बरकरार रखती है और उसके भीतरी हिस्से को बदल

देती है। जितने प्रकार के कार्य और खनन कार्य होते हैं, उतने ही प्रकार के भूमिगत चरण भी होते हैं। इन गहन उत्खननों से क्या निकलता है? भविष्य।

जैसे-जैसे गहराई बढ़ती है, कामगार और भी रहस्यमय होते जाते हैं। काम उस हद तक अच्छा है जिसे सामाजिक दर्शन स्वीकार कर सकते हैं; उस हद से आगे यह संदिग्ध और मिश्रित है; और नीचे जाने पर यह भयानक हो जाता है। एक निश्चित गहराई पर, खुदाई सभ्यता की भावना के लिए अभेद्य हो जाती है, मनुष्य के सांस लेने की सीमा पार हो जाती है; राक्षसों का उदय संभव है।

अवरोही क्रम विचित्र है; और इस सीढ़ी का प्रत्येक पायदान एक ऐसे चरण को दर्शाता है जहाँ दर्शन को आधार मिल सकता है, और जहाँ इन रचनाकारों में से किसी एक से मुलाकात होती है, कभी दिव्य, कभी विकृत। जॉन हस के नीचे लूथर हैं; लूथर के नीचे डेसकार्टेस हैं; डेसकार्टेस के नीचे वोल्टेयर हैं; वोल्टेयर के नीचे कोंडोरसेट हैं; कोंडोरसेट के नीचे रोबेस्पियर हैं; रोबेस्पियर के नीचे माराट हैं; माराट के नीचे बेबेउफ हैं। और यह सिलसिला चलता रहता है। और नीचे, अस्पष्टता से, उस सीमा पर जो धुंधली को अदृश्य से अलग करती है, अन्य अंधकारमय व्यक्तियों को देखा जा सकता है, जो शायद अभी अस्तित्व में नहीं हैं। बीते कल के लोग प्रेत हैं; आने वाले कल के लोग आकार हैं। आत्मा की आँख उन्हें अस्पष्ट रूप से ही पहचान पाती है। भविष्य का प्रारंभिक कार्य दर्शन के दर्शनों में से एक है।

एक अधर में लटकी दुनिया, भ्रूण अवस्था में, यह कैसा अनसुना सा दृश्य है!

पार्श्व दीर्घाओं में सेंट-साइमन, ओवेन, फोरियर भी मौजूद हैं।

निःसंदेह, यद्यपि एक दिव्य और अदृश्य बंधन, जो स्वयं को अज्ञात है, इन सभी भूमिगत अग्रदूतों को आपस में बांधे रखता है, जो लगभग हमेशा स्वयं को एकाकी समझते हैं, जबकि वास्तव में वे एकाकी नहीं हैं, फिर भी उनके कार्य अत्यंत भिन्न हैं, और कुछ का प्रकाश दूसरों की प्रज्वलन से विपरीत है। पहले स्वर्गिक हैं, अंतिम दुखद। फिर भी, चाहे कितना भी अंतर हो, इन सभी परिश्रमियों में, उच्चतम से लेकर सबसे रात्रिचर तक, सबसे बुद्धिमान से लेकर सबसे मूर्ख तक, एक समानता है, और वह यह है: निस्वार्थता। मराट यीशु की तरह स्वयं को भूल जाते हैं। वे स्वयं को एक तरफ फेंक देते हैं, वे स्वयं को त्याग देते हैं, वे अपने बारे में नहीं सोचते। उनकी एक दृष्टि होती है, और

वह दृष्टि परम सत्य की खोज करती है। पहले की आँखों में संपूर्ण आकाश समाया होता है; अंतिम, चाहे वह कितना भी रहस्यमय क्यों न हो, उसकी पलकों के नीचे अनंत की हल्की किरण होती है। उस व्यक्ति का आदर करो, चाहे वह कोई भी हो, जिसके पास यह चिन्ह हो—तारों भरी आँख।

आंख के नीचे छाया होना दूसरा लक्षण है।

इसी से बुराई का जन्म होता है। किसी ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति में संकोच और भय मानो जिसकी नज़रें तुम पर बिल्कुल न हों। सामाजिक व्यवस्था में भी काले खनिक मौजूद हैं।

एक ऐसा बिंदु होता है जहाँ गहराई दफन होने के समान हो जाती है, और जहाँ प्रकाश विलुप्त हो जाता है।

जिन खानों का हमने अभी ज़िक्र किया है, उन सभी के नीचे, उन सभी सुरंगों के नीचे, प्रगति और आदर्शवाद की इस विशाल, भूमिगत, नसों जैसी प्रणाली के नीचे, धरती में बहुत आगे, मराट से भी बहुत नीचे, बेबेउफ से भी नीचे, और ऊपरी स्तरों से कोई संबंध न रखते हुए, आखिरी खान स्थित है। एक भयानक जगह। इसे ही हमने 'ले ट्रोइज़िएम डेसस' नाम दिया है। यह परछाइयों की कब्र है। यह अंधों का तहखाना है। इन्फेरी।

यह अथाह गहराई से संवाद स्थापित करता है।

II. सबसे निचली गहराई

वहाँ उदासीनता गायब हो जाती है। राक्षस की रूपरेखा अस्पष्ट है; हर कोई अपने लिए है। आँखों में "मैं" चीखता है, खोजता है, टटोलता है और कुतरता है। सामाजिक उगोलिनो इसी खाई में है।

इस कब्र में भटकने वाले जंगली प्रेत, लगभग जानवर, लगभग भूत-प्रेत, सार्वभौमिक प्रगति से चिंतित नहीं हैं; वे विचार और शब्द दोनों से अनभिज्ञ हैं; वे अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति के अलावा किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोचते। वे लगभग अचेतन हैं, और उनके भीतर एक प्रकार का भयानक विलोपन व्याप्त है। उनकी दो माताएँ हैं, दोनों सौतेली माताएँ, अज्ञान और दुख। उनका एक मार्गदर्शक है, आवश्यकता; और सभी प्रकार की संतुष्टि के लिए, भूख। वे निर्दयी रूप से लालची हैं, अर्थात् क्रूर, अत्याचारी की तरह नहीं, बल्कि बाघ की तरह। ये प्रेत पीड़ा से अपराध की ओर बढ़ते हैं; घातक संबंध, चकरा देने वाली रचना, अंधकार का तर्क। सामाजिक निम्नतम स्तर पर रेंगने वाली चीज़ अब निरपेक्ष द्वारा दबाई गई शिकायत नहीं है; यह पदार्थ का विरोध है। वहाँ मनुष्य अजगर बन जाता है। भूखा होना, प्यासा होना—यही प्रस्थान बिंदु है; शैतान बनना—यही अंतिम बिंदु है। उस तहखाने से लैसेनेयर निकलता है।

हमने अभी-अभी चौथे भाग में, महान राजनीतिक, क्रांतिकारी और दार्शनिक उत्खनन की ऊपरी खदान के एक भाग को देखा है। जैसा कि हमने अभी कहा, वहाँ सब कुछ शुद्ध, महान, गरिमामय और ईमानदार है। वहाँ निश्चित रूप से कोई गुमराह हो सकता है; लेकिन वहाँ गलती भी सम्मान के योग्य है, क्योंकि उसमें वीरता निहित है। वहाँ किए गए संपूर्ण कार्य का एक नाम है: प्रगति।

अब वह समय आ गया है जब हमें अन्य गहराइयों, भयावह गहराइयों पर एक नजर डालनी होगी। हम इस बात पर जोर देते हैं कि समाज के नीचे बुराई की एक विशाल गुफा मौजूद है, और अज्ञानता के विदार होने तक वह गुफा बनी रहेगी।

यह गुफा सबसे नीचे है, और सबकी शत्रु है। यह बिना किसी अपवाद के घृणा है।
इस गुफा में कोई दार्शनिक नहीं है; इसके खंजर ने कभी कलम नहीं काटी। इसका

अंधकार स्याहीदान के उदात्त अंधकार से असंबद्ध है। इस घुटन भरी छत के नीचे सिकुड़ती रात की उंगलियों ने कभी किसी किताब के पन्ने नहीं पलटे और न ही कोई अखबार खोला। कार्टूश के लिए बेबेउफ एक सट्टेबाज है; शिंडरहैन्स के लिए माराट एक कुलीन है। इस गुफा का उद्देश्य सब कुछ नष्ट करना है।

हर चीज़ का। यहाँ तक कि उच्च कोटि की खानों का भी, जिन्हें यह घोर निंदित करता है। यह न केवल अपने भयावह प्रकोप से वास्तविक सामाजिक व्यवस्था को नष्ट करता है, बल्कि दर्शन, मानवीय चिंतन, सभ्यता, क्रांति और प्रगति को भी नष्ट करता है। इसका नाम मात्र चोरी, वेश्यावृत्ति, हत्या और कत्ल है। यह अंधकार है और अराजकता की चाह रखता है। इसका तहखाना अज्ञान से बना है।

अन्य सभी, जो इससे ऊपर हैं, उनका केवल एक ही उद्देश्य है—इसे दबाना। दर्शन और प्रगति, अपने सभी अंगों के साथ, यथार्थ के सुधार और परम सत्य के चिंतन के माध्यम से इसी लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हैं। अज्ञान की गुफा को नष्ट करो, और अपराध के अड्डे को नष्ट कर दो।

आइए, हमने अभी जो लिखा है, उसके एक अंश को संक्षेप में कहें तो, एकमात्र सामाजिक खतरा अंधकार है।

मानवता ही पहचान है। सभी मनुष्य एक ही मिट्टी से बने हैं। कम से कम इस धरती पर तो नियति में कोई अंतर नहीं है। सामने एक ही छाया, वर्तमान में एक ही शरीर, और अंत में एक ही राख। लेकिन अज्ञान, जो मानवीय संरचना में घुलमिल जाता है, उसे काला कर देता है। यह असाध्य अंधकार मनुष्य के भीतर घर कर लेता है और वहाँ बुराई में परिवर्तित हो जाता है।

तृतीय. बेबेट, ग्यूलेमर, क्लैक्वेसियस और

मोंटपर्नासे

क्लैकसस, गुएलेमर, बैबेट और मोंटपार्नास नामक चार बदमाशों के एक गिरोह ने 1830 से 1835 तक पेरिस की तीसरी निचली मंजिल पर अपना दबदबा बनाए रखा।

गुएलेमर एक ऐसा हरक्यूलिस था जिसकी कोई निश्चित स्थिति नहीं थी। उसने आर्चे-मैरियन के सीवर को अपना ठिकाना बना रखा था। वह छह फीट लंबा था, उसकी छाती संगमरमर की और बाइसेप्स पीतल की थीं, उसकी सांसें गुफा जैसी गहरी थीं, उसका धड़ किसी दैत्य जैसा और उसका सिर किसी पक्षी जैसा था। उसे देखकर ऐसा लगता था मानो कोई फार्नेस के हरक्यूलिस को बत्तख की पैंट और सूती मखमल की जैकेट पहने देख रहा हो। इस मूर्तिकला शैली में निर्मित गुएलेमर राक्षसों को भी वश में कर सकता था; लेकिन उसने खुद राक्षस बनना अधिक आसान समझा। नीचा माथा, चौड़ी कनपटी, चालीस वर्ष से कम आयु, लेकिन आंखों के नीचे झुर्रियां, छोटे और सख्त बाल, ब्रश जैसे गाल, जंगली सूअर जैसी दाढ़ी; पाठक अपने सामने उस व्यक्ति को देख सकता है। उसकी मांसपेशियां काम करने के लिए तरसती थीं, लेकिन उसकी मूर्खता उसे काम करने नहीं देती थी। वह एक महान, निष्क्रिय शक्ति था। वह अपनी निर्ममता से हत्यारा था। उसे एक क्रियोल माना जाता था। संभवतः उनका मार्शल ब्रून से कुछ संबंध था, क्योंकि वे 1815 में एविग्नन में कुली का काम करते थे। इस चरण के बाद, वे बदमाश बन गए थे।

बैबेट की पारदर्शिता, गुएलेमर की खुरदरी प्रकृति के बिल्कुल विपरीत थी। बैबेट दुबला-पतला और विद्वान था। वह पारदर्शी था, पर भेदना असंभव था। उसकी हड्डियों से दिन का प्रकाश आर-पार दिखता था, पर उसकी आँखों से कुछ नहीं। उसने खुद को रसायनज्ञ बताया। वह कई कामों में माहिर था। उसने सेंट-मिहिएल में वाडेविल में अभिनय किया था। वह दृढ़ निश्चयी, कुशल वक्ता था, जो अपनी मुस्कान को और भी प्रभावशाली बनाता था और अपने हाव-भाव को और भी निखारता था। उसका पेशा खुले में "राज्य प्रमुख" की प्लास्टर की मूर्तियाँ और चित्र बेचना था। इसके अलावा, वह दांत भी निकालता था। वह मेलों में अपनी कला का प्रदर्शन करता था, और उसका एक स्टॉल था जिस पर एक तुरही और यह पोस्टर लगा

था: “बाबेट, दंत चिकित्सक, अकादमियों का सदस्य, धातुओं और धातुयुक्त पदार्थों पर भौतिक प्रयोग करता है, दांत निकालता है, और अपने साथी चिकित्सकों द्वारा छोड़े गए ठूंठों का उपचार करता है। कीमत: एक दांत, एक फ्रैंक, पचास सेंटिम; दो दांत, दो फ्रैंक; तीन दांत, दो फ्रैंक, पचास। इस अवसर का लाभ उठाएं।” इस “इस अवसर का लाभ उठाएं” का अर्थ था: जितने हो सके उतने दांत निकलवा लें। उसकी शादी हो चुकी थी और बच्चे भी थे। उसे नहीं पता था कि उसकी पत्नी और बच्चों का क्या हुआ। उसने उन्हें ऐसे खो दिया था जैसे कोई अपना रुमाल खो देता है। बाबेट अखबार पढ़ता था, जो उस दुनिया में एक असाधारण अपवाद था जिससे वह संबंधित था। एक दिन, जब वह अपने परिवार के साथ अपनी चलती-फिरती गाड़ी में बैठा था, उसने अखबार में पढ़ा कि एक महिला ने अभी-अभी एक बच्चे को जन्म दिया है, जो स्वस्थ है और उसका थूथन बछड़े जैसा है। यह सुनकर वह चौंक गया: “वाह! मेरी पत्नी में इतनी अक्ल नहीं है कि वह मुझे ऐसा बच्चा दे!”

बाद में उन्होंने पेरिस की जिम्मेदारी लेने के लिए सब कुछ त्याग दिया। यही उनके शब्दों में था।

क्लैकसस कौन था? वह रात था। वह तब तक इंतज़ार करता रहा जब तक आसमान पूरी तरह से काला नहीं हो गया, फिर वह प्रकट हुआ। सूर्यास्त के समय वह उस छेद से निकलता था जहाँ वह उजाला होने से पहले लौट जाता था। यह छेद कहाँ था? कोई नहीं जानता था। वह अपने साथियों से केवल घोर अंधेरे में, और उनकी ओर पीठ करके ही बात करता था। क्या उसका नाम क्लैकसस था? बिलकुल नहीं। अगर कोई मोमबत्ती लाता, तो वह मुखौटा पहन लेता। वह एक कठपुतली कलाकार था। बैबेट ने कहा था: "क्लैकसस दो आवाज़ों के लिए एक रात्रिगीत है।" क्लैकसस अस्पष्ट, भयानक और घुमक्कड़ था। किसी को यकीन नहीं था कि उसका कोई नाम था, क्लैकसस तो बस एक उपनाम था; किसी को यकीन नहीं था कि उसकी कोई आवाज़ थी, क्योंकि उसकी आवाज़ से ज़्यादा उसका पेट बोलता था; किसी को यकीन नहीं था कि उसका कोई चेहरा था, क्योंकि उसे कभी भी बिना मुखौटे के नहीं देखा गया। वह ऐसे गायब हो जाता था मानो हवा में उड़ गया हो; जब वह प्रकट होता, तो ऐसा लगता था मानो धरती से निकल आया हो।

मोंटपार्नास एक उदास स्वभाव का व्यक्ति था। बीस वर्ष से भी कम आयु का वह बच्चा था, जिसका चेहरा सुंदर था, होंठ चेरी जैसे मुलायम थे, काले बाल

आकर्षक थे और उसकी आँखों में वसंत ऋतु की चमक थी; उसमें सभी बुराइयाँ थीं और वह सभी अपराधों की आकांक्षा रखता था।

बुराई के पाचन ने उसके भीतर और भी बदतर करने की लालसा जगा दी। वह गली का लड़का था जो जेबकतरा बन गया, और फिर जेबकतरा गला घोंटने वाला। वह सभ्य, स्त्री-समान, आकर्षक, बलवान, सुस्त और क्रूर था। 1829 की शैली में, उसकी टोपी का किनारा बाईं ओर मुड़ा हुआ था ताकि बालों के गुच्छे के लिए जगह बन सके। वह हिंसा के साथ लूटपाट करके अपना जीवन यापन करता था। उसका कोट बेहतरीन सिलाई का था, पर फटा हुआ था। मोंटपार्नास एक दुखी और हत्याओं का आदी फैशनपरस्त था। इस युवक के सभी अपराधों का कारण अच्छे कपड़े पहनने की इच्छा थी। जिस पहली लड़की ने उससे कहा था: "तुम सुंदर हो!" उसने उसके दिल में अंधकार का दाग लगा दिया था और इस हाबिल को केन बना दिया था। खुद को सुंदर पाकर, वह और भी सुरुचिपूर्ण बनना चाहता था: अब, सुरुचिपूर्णता की पराकाष्ठा आलस्य है; एक गरीब आदमी के लिए आलस्य का अर्थ अपराध है। मोंटपार्नास जैसा खौफनाक लुटेरा शायद ही कोई हो। अठारह साल की उम्र में ही वह कई लाशें काट चुका था। कई राहगीर इस दुष्ट के सामने बाहें फैलाए लेटे थे, जिसका चेहरा खून से लथपथ था। घुंघराले बाल, पोमेड लगा हुआ, कमरबंद, औरत जैसी कमर, प्रशियाई अधिकारी जैसी छाती, उसके चारों ओर खड़ी सड़क की युवतियों की प्रशंसा भरी फुसफुसाहट, जानबूझकर बंधी टाई, जेब में लाठी, बटनहोल में फूल; यही था इस खूंखार लुटेरे का रूप।

IV. मंडली की संरचना

ये चारों बदमाश एक प्रकार के प्रोटियस की तरह थे, पुलिस के बीच एक सर्प की तरह लिपटते हुए, और विडोक की अविवेकी निगाहों से बचने के लिए "विभिन्न रूपों, पेड़, लौ, फव्वारे" के नीचे छिपते हुए, एक दूसरे को अपने नाम और अपने जाल उधार देते हुए, अपनी ही छाया में छिपते हुए, गुप्त डिब्बों और एक दूसरे के लिए शरणस्थलों वाले बक्सों की तरह, अपने व्यक्तित्व को त्यागते हुए, जैसे कोई नकाबपोश नृत्य-नाव में अपनी नकली नाक उतार देता है, कभी-कभी मामलों को इस हद तक सरल बना देते हैं कि वे केवल एक व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं, कभी-कभी खुद को इस हद तक बढ़ा लेते हैं कि कोको-लाटूर खुद उन्हें एक पूरी भीड़ समझ बैठते थे।

ये चारों व्यक्ति चार व्यक्ति नहीं थे; वे चार सिरों वाले एक रहस्यमय लुटेरे थे, जो पेरिस में बड़े पैमाने पर अपराध कर रहे थे; वे बुराई के उस राक्षसी रूप थे, जो समाज के तहखाने में निवास करता है।

अपने व्यापक नेटवर्क और आपसी संबंधों के चलते, बैबेट, गुएलेमर, क्लैकसस और मोंटपार्नास को सीन क्षेत्र में घात लगाकर हमले करने की पूरी ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। इस तरह के विचार रखने वाले, रात में कल्पनाशील स्वभाव के लोग, अपने विचारों को साकार करने के लिए उनसे संपर्क करते थे। वे इन चारों बदमाशों को मंच मुहैया कराते थे और वे उसे सजाने का काम करते थे। वे हर उस अपराध के लिए पर्याप्त बल देने को तैयार रहते थे जिसमें शारीरिक बल की आवश्यकता होती थी और जो काफी लाभदायक होता था। जब किसी अपराध में हथियारों की ज़रूरत होती थी, तो वे अपने साथियों को काम पर लगा देते थे। वे हर तरह की गुप्त घटनाओं के लिए छाया में काम करने वाले अभिनेताओं की एक मंडली तैयार रखते थे।

वे सूर्यास्त के समय, यानी सुबह उठने के समय, साल्पेट्रिएर नदी से सटे मैदानों में इकट्ठा होते थे। वहीं वे अपनी बैठकें करते थे। उनके सामने बारह घंटे का लंबा समय होता था; वे उसी के अनुसार अपना काम तय करते थे।

पैट्रॉन-मिनेट—यह नाम गुप्त रूप से इन चार व्यक्तियों के समूह को दिया गया था। उस प्राचीन, काल्पनिक और लोकप्रिय भाषा में, जो धीरे-धीरे लुप्त हो रही है, पैट्रॉन-मिनेट का अर्थ सुबह होता है, ठीक वैसे ही जैसे 'एंट्रे चिएन एट लूप'—कुत्ते और भेड़िये के बीच—का अर्थ शाम होता है। यह नाम, पैट्रॉन-मिनेट, संभवतः उस समय से लिया गया था जब उनका काम समाप्त होता था, क्योंकि भोर प्रेतों के गायब होने और बदमाशों के अलग होने का क्षण होता है। ये चारों व्यक्ति इसी नाम से जाने जाते थे। जब न्यायालय के अध्यक्ष लैसेनेयर से उसकी जेल में मिलने गए और उससे एक अपराध के बारे में पूछताछ की, जिसे लैसेनेयर ने नकार दिया, तो अध्यक्ष ने पूछा, "यह किसने किया?" लैसेनेयर ने यह उत्तर दिया, जो मजिस्ट्रेट के लिए रहस्यमय था, लेकिन पुलिस के लिए स्पष्ट था: "शायद यह पैट्रॉन-मिनेट ने किया होगा।"

किसी रचना का अंदाजा कभी-कभी उसमें शामिल व्यक्तियों के नाम से ही लगाया जा सकता है; ठीक उसी तरह किसी गिरोह के सदस्यों की सूची से ही उसके गिरोह का अंदाजा लगाया जा सकता है। पैट्रॉन-मिनेट के प्रमुख सदस्यों के ये नाम विशेष दस्तावेजों में दर्ज हैं।

पंचौद, उर्फ प्रिंटानियर, उर्फ बिग्रेनेले।

ब्रुजोन। [ब्रुजोन राजवंश था; हम इस शब्द को शामिल करने से बच नहीं सकते।]

सड़क की मरम्मत करने वाली मशीन, बौलाट्रुएल, का परिचय पहले ही दिया जा चुका है।

विधवा।
Finistère.

होमर-होगु, एक नीग्रो।

मंगलवार शाम।

जल्दी करो।

फाउंटलेरॉय, उर्फ बुकेटियर (फूल बेचने वाली लड़की)।

शानदार, एक रिहा कैदी।

बैरेकारोसे (स्टॉप-कैरेज), जिसे मॉन्सियर डुपोंट कहा जाता था।

एस्प्लेनेड-डु-सुद।

पौसाग्रीव.

कारमैग्नोलेट।

बिज़ारो नाम की एक किराने की दुकान।

मैंगडेंटेल (लेस खाने वाला)

Les-pieds-en-l’Air. (पैर हवा में।)

आधा लियार्ड, जिसे दो अरब कहा जाता है।

आदि आदि।

हम इनमें से कुछ को छोड़ देते हैं, लेकिन सबसे बुरे को नहीं। इन नामों के साथ चेहरे जुड़े हुए हैं। ये केवल प्राणियों को ही नहीं, बल्कि प्रजातियों को दर्शाते हैं। इनमें से प्रत्येक नाम सभ्यता के निचले स्तर से निकले उन विकृत कवकों की एक किस्म से मेल खाता है।

वे लोग, जो अपने चेहरे पर ज्यादा भाव-भंगिमा नहीं दिखाते थे, सड़कों पर चलते-फिरते लोगों में शामिल नहीं थे। तूफानी रातों से थके-हारे वे दिन में सोने के लिए निकल पड़ते थे, कभी चूने के भट्ठों में, कभी मोंटमार्ट्रे या मोंटरूज की सुनसान खदानों में, कभी सीवरों में। वे धरती की ओर भागते थे।

इन लोगों का क्या हुआ? वे अब भी मौजूद हैं। वे हमेशा से मौजूद रहे हैं। होरेस उनके बारे में लिखते हैं: Ambubaiarum collegia, pharmacopolae, mendici, mimae; और जब तक समाज वैसा ही रहेगा जैसा वह है, वे भी वैसे ही रहेंगे। अपनी गुफा की धुंधली छत के नीचे, वे सामाजिक दलदल से लगातार पुनर्जन्म लेते रहते हैं। वे प्रेतों की तरह लौटते हैं, लेकिन हमेशा एक जैसे; बस, उनके नाम और रूप अलग-अलग होते हैं। व्यक्ति भले ही विलुप्त हो गए हों, लेकिन जनजाति जीवित रहती है।

उनकी क्षमताएँ हमेशा एक जैसी रहती हैं। आवारा से लेकर घुमक्कड़ तक, उनकी नस्ल अपनी शुद्धता बनाए रखती है। वे जेबों में रखे पर्स को पहचान लेते हैं, घड़ी की चेन में लगी घड़ियों की गंध सूंघ लेते हैं। सोने और चांदी की एक खास गंध होती है उनके लिए। कुछ भोले-भाले बुर्जुआ भी होते हैं, जिनके बारे में कहा जा सकता है कि वे "चोरी करने लायक" लगते हैं। ये लोग धैर्यपूर्वक

इन बुर्जुआओं का पीछा करते हैं। किसी अजनबी या देहाती आदमी के गुजरने पर वे मकड़ी की तरह कांप उठते हैं।

आधी रात के समय, किसी सुनसान सड़क पर, जब कोई इन लोगों से मिलता है या इनकी एक झलक देखता है, तो ये भयानक प्रतीत होते हैं। ये मनुष्य नहीं, बल्कि जीवित धुंध से बनी आकृतियाँ लगते हैं; ऐसा लगता है मानो ये परछाइयों के साथ एकरूप हो गए हों, उनसे किसी भी प्रकार से अलग न हों, अंधेरे के सिवा इनमें कोई आत्मा न हो, और ये क्षण भर के लिए ही, कुछ मिनटों के लिए एक विकराल जीवन जीने के उद्देश्य से, रात से अलग हुए हों।

इन विकरालताओं को मिटाने के लिए क्या आवश्यक है? प्रकाश। भरपूर प्रकाश। भोर के प्रकाश का कोई भी चमगादड़ विरोध नहीं कर सकता। समाज को नीचे से रोशन करो।

पुस्तक **VIII.** दुष्ट गरीब आदमी

आई. मारियस, एक बोनट पहने लड़की की तलाश करते

हुए, टोपी पहने एक आदमी से मिलता है।

ग्रीष्म ऋतु बीत गई, फिर पतझड़ आया; सर्दी आ गई। न तो एम. लेब्लांक और न ही वह युवती फिर कभी लक्ज़मबर्ग के बगीचे में कदम रख पाए। उसके बाद से मारियस के मन में बस एक ही विचार था—उस प्यारे और मनमोहक चेहरे को एक बार फिर निहारना। वह लगातार खोजता रहा, हर जगह खोजता रहा; उसे कुछ नहीं मिला। वह अब मारियस नहीं था, वह उत्साही स्वप्नद्रष्टा, वह दृढ़, संकल्पित, जोशीला व्यक्ति, भाग्य को चुनौती देने वाला साहसी, वह बुद्धि जो भविष्य की कल्पना करती थी, वह युवा आत्मा जो योजनाओं, परियोजनाओं, गर्व, विचारों और इच्छाओं से भरी रहती थी; वह एक खोया हुआ कुत्ता बन गया था। वह गहरे अंधकार में डूब गया। सब कुछ समाप्त हो गया था। काम से उसे घृणा होने लगी, चलना उसे थका देता था। विशाल प्रकृति, जो कभी रूपों, प्रकाशों, आवाजों, सलाहों, दृष्टिकोणों, क्षितिजों, शिक्षाओं से भरी रहती थी, अब उसके सामने खाली पड़ी थी। उसे ऐसा लगा जैसे सब कुछ गायब हो गया हो।

वह लगातार सोचता रहता था, क्योंकि उसके पास और कोई चारा नहीं था; लेकिन अब उसे अपने विचारों में आनंद नहीं मिलता था। जो भी विचार उसके मन में फुसफुसाते हुए आते, वह अंधकार में यही कहता: "इनका क्या लाभ?"

उसने खुद पर सौ तरह के दोष मढ़ दिए। “मैं उसके पीछे क्यों गया? उसे देखते ही मैं कितना खुश हो गया था! उसने मेरी तरफ देखा; क्या वह अद्भुत नहीं था? उसके चेहरे पर प्रेम का भाव था। क्या वही सब कुछ नहीं था? मैं क्या चाहता था? उसके बाद कुछ नहीं बचा। मैं मूर्ख था। यह मेरी अपनी गलती है,” इत्यादि। कौरफेयरैक, जिससे वह कुछ भी साझा नहीं करता था—यह उसका स्वभाव था—लेकिन जो हर बात का थोड़ा-बहुत अंदाजा लगा लेता था—यह उसका स्वभाव था—ने पहले तो उसे प्रेम में होने पर बधाई दी, हालांकि वह इस पर आश्चर्यचकित था; फिर, मारियस को इस उदासी में डूबा देखकर, उसने उससे कहा: “मैं देखता हूँ कि तुम बिल्कुल एक जानवर बन गए हो। यहाँ आओ, चौमियर में।”

एक बार, सितंबर की सुहावनी धूप में भरोसा रखते हुए, मारियस ने कौरफेयरैक, बॉसुएट और ग्रांटेयर के साथ सियोक्स में आयोजित बॉल पार्टी में जाने की अनुमति दे दी, इस उम्मीद में - कितना बड़ा सपना! - कि शायद वह उसे वहाँ पा ले। बेशक, उसे वह नहीं मिली जिसकी उसे तलाश थी। - "लेकिन यही वह जगह है जहाँ सभी खोई हुई औरतें मिल जाती हैं," ग्रांटेयर ने धीरे से बुदबुदाया। मारियस अपने दोस्तों को बॉल पार्टी में छोड़कर थका हुआ, बुखार से व्याकुल, उदास और परेशान आँखों से रात भर पैदल घर लौट आया। उसके पास से गुज़र रही गीत गाते लोगों से भरी खुशमिजाज गाड़ियों के शोर और धूल से वह स्तब्ध था। निराशा में डूबे हुए, उसने अपने दिमाग को तरोताज़ा करने के लिए सड़क के किनारे अखरोट के पेड़ों की तीखी गंध को साँस में लिया।

वह धीरे-धीरे एकाकी जीवन जीने लगा, पूरी तरह से व्याकुल, अपने आंतरिक व्यथा में डूबा हुआ, जाल में फंसे भेड़िये की तरह अपने दर्द में इधर-उधर भटकता रहा, हर जगह अनुपस्थित व्यक्ति की तलाश करता रहा, प्रेम से स्तब्ध।

एक और अवसर पर, उनका सामना एक ऐसी घटना से हुआ जिसका उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। बुलेवार्ड डेस इनवैलिड्स के पास की संकरी गलियों में उनकी मुलाकात एक मजदूर के वेश में एक व्यक्ति से हुई, जिसने एक लंबी टोपी पहन रखी थी, जिससे उसके बेहद सफेद बालों की लटें दिखाई दे रही थीं। मारियस उन सफेद बालों की सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो गए और उस व्यक्ति को गौर से देखने लगे, जो धीरे-धीरे चल रहा था और मानो किसी गहन चिंतन में डूबा हुआ हो। हैरानी की बात है, उन्हें लगा कि उन्होंने एम. लेब्लांक को पहचान लिया है। बाल बिल्कुल एक जैसे थे, चेहरा भी, जितना टोपी से दिखाई दे रहा था, एक जैसा था, बस थोड़ा उदास था। लेकिन ये मजदूर के कपड़े क्यों? इसका क्या अर्थ था? इस वेश का क्या मतलब था? मारियस बहुत हैरान थे। जब उन्होंने खुद को संभाला, तो उनकी पहली इच्छा उस व्यक्ति का पीछा करने की हुई; कौन जानता है कि कहीं अंत में वही सुराग उनके हाथ में न हो जिसकी उन्हें तलाश थी? किसी भी हालत में, उन्हें उस व्यक्ति को पास से देखना था और रहस्य को सुलझाना था। लेकिन यह विचार उनके मन में बहुत देर से आया, वह व्यक्ति वहां से जा चुका था। वह किसी छोटी सी गली में मुड़ गया था, और मारियस उसे ढूंढ नहीं पाया। यह मुलाकात तीन दिन तक उसके दिमाग में घूमती रही और फिर मिट गई। उसने मन ही मन कहा, "आखिरकार, शायद यह सिर्फ एक शक्ल-सूरत की समानता ही थी।"

II. खजाना

मारियस गोरब्यू के घर से बाहर नहीं निकला था। उसने वहां मौजूद किसी पर भी ध्यान नहीं दिया।

सच कहें तो, उस समय घर में उनके और उन जोंड्रेट्स के अलावा कोई और नहीं रहता था, जिनका किराया उन्होंने कभी चुकाया था, और इतना ही नहीं, उन्होंने कभी उनके पिता, माता या बेटियों से बात भी नहीं की थी। बाकी किराएदार या तो कहीं और चले गए थे, या उनकी मृत्यु हो गई थी, या किराया न चुका पाने के कारण उन्हें निकाल दिया गया था।

उस सर्दी के मौसम में एक दिन, दोपहर में सूरज थोड़ी देर के लिए निकला था, लेकिन वह 2 फरवरी का दिन था, वह प्राचीन कैंडलमास का दिन जिसकी कपटी धूप, छह सप्ताह की ठंड की शुरुआत का संकेत, ने मैथ्यू लैंसबर्ग को इन दो पंक्तियों के लिए प्रेरित किया, जो न्यायसंगत रूप से क्लासिक बनी हुई हैं:—

चाहे वह तेज रोशनी दे या मंद चमके, भालू अपनी गुफा में लौट आता है।

मारियस अभी-अभी अपने कमरे से निकला था: रात होने वाली थी। उसके खाने का समय हो गया था; क्योंकि उसे फिर से खाना खाने के लिए मजबूर होना पड़ा था, हाय! आदर्शवादी भावनाओं की ये कमजोरी!

वह अभी-अभी अपने घर की दहलीज पार कर ही रहा था, जहाँ उस समय मैडम बोगन झाड़ू लगा रही थीं, तभी उन्होंने यह यादगार एकालाप कहा:—

“आजकल क्या सस्ता है? सब कुछ महंगा है। दुनिया में मुसीबत के सिवा कुछ भी सस्ता नहीं है; दुनिया की मुसीबत तो मुफ्त में मिल जाती है!”

मारियस धीरे-धीरे बैरियर की ओर बढ़ते हुए बुलेवार्ड पर चढ़ने लगा, ताकि वह रू सेंट-जैक्स तक पहुँच सके। वह सिर झुकाए चल रहा था।

अचानक, शाम के धुंधलके में उसे किसी ने कोहनी मारी; वह मुड़ा और देखा कि दो युवतियाँ फटे-पुराने कपड़ों में थीं, एक लंबी और पतली, दूसरी उससे थोड़ी छोटी, जो तेजी से भाग रही थीं, हाँफ रही थीं, डरी हुई थीं और भागती हुई लग

रही थीं; वे उससे मिलने आ रही थीं, उसे देख नहीं पाईं और गुजरते हुए उसे धक्का दे दिया। धुंधलके में, मारियस उनके पीले पड़े चेहरे, उनके बिखरे हुए सिर, उनके उलझे हुए बाल, उनकी भद्दी टोपियाँ, उनकी फटी हुई पेटीकोट और उनके नंगे पैर देख सका। वे भागते हुए बातें कर रही थीं। लंबी वाली ने बहुत धीमी आवाज में कहा:—

“पुलिस वाले आ गए हैं। वे मुझे लगभग पकड़ ही रहे थे।” दूसरे ने जवाब दिया: “मैंने उन्हें देखा। मैं भागा, भागा, भागा!”

इस घृणित अपशब्दों के माध्यम से मारियस समझ गया कि जेंडरमेस या पुलिस इन दोनों बच्चों को पकड़ने के करीब आ गई थी, और बाद वाला भाग निकला था।

वे उसके पीछे बुलेवार्ड के पेड़ों के बीच जा गिरे, और वहां कुछ मिनटों के लिए, अंधेरे में, एक धुंधले सफेद धब्बे जैसा कुछ बना दिया, फिर गायब हो गए।

मारियस एक पल के लिए रुक गया था।

वह आगे बढ़ने ही वाला था कि तभी उसकी नज़र अपने पैरों के पास ज़मीन पर पड़े एक छोटे से भूरे रंग के पैकेट पर पड़ी। वह झुका और उसे उठा लिया। वह एक लिफाफा जैसा था जिसमें कागज़ात होने का आभास हो रहा था।

“अच्छा हुआ,” उसने मन ही मन कहा, “उन दुखी लड़कियों ने इसे छोड़ दिया।”

वह वापस लौटा, उसने आवाज़ लगाई, लेकिन वे नहीं मिले; उसने सोचा कि वे पहले ही बहुत दूर जा चुके होंगे, उसने पैकेट अपनी जेब में रखा और खाना खाने चला गया।

रास्ते में, उसने रू मुफेटार्ड की एक गली में, तीन कुर्सियों पर रखे काले कपड़े से ढके एक बच्चे के ताबूत को देखा, जो एक मोमबत्ती की रोशनी से जगमगा रहा था। उसे गोधूलि बेला में दिखाई देने वाली उन दो लड़कियों की याद आ गई।

“बेचारी माताएँ!” उसने सोचा। “अपने बच्चों को मरते हुए देखने से भी ज़्यादा दुखद बात यह है कि उन्हें एक दुष्ट जीवन जीते हुए देखना।”

फिर वे परछाइयाँ, जिन्होंने उसके दुख को कुछ समय के लिए कम कर दिया था, उसके विचारों से गायब हो गईं और वह एक बार फिर अपनी जानी-पहचानी चिंताओं में डूब गया। वह एक बार फिर लक्ज़मबर्ग के खूबसूरत पेड़ों के नीचे, खुली

[illegible]

“[illegible]!” [illegible] “[illegible]”

III. क्वाड्रिफ्रॉन्स

उस शाम, जब वह सोने से पहले कपड़े उतार रहा था, तो अचानक उसका हाथ कोट की जेब में उस पैकेट से टकरा गया जो उसने सड़क पर उठाया था। वह उसे भूल गया था। उसने सोचा कि इसे खोलना अच्छा रहेगा, क्योंकि हो सकता है कि इस पैकेट में उन युवतियों का पता हो, अगर वह सचमुच उन्हीं का हो, और कम से कम उस व्यक्ति को पैकेट लौटाने के लिए आवश्यक जानकारी तो मिल ही जाएगी जिसने उसे खोया था।

उसने लिफाफा खोला।

यह सीलबंद नहीं था और इसमें चार पत्र थे, जो भी सीलबंद नहीं थे।

उन पर पते लिखे हुए थे।

उन चारों से तंबाकू की भयानक गंध आ रही थी।

पहले मुद्दे का समाधान हो गया:

मैडम ला मार्क्विज़ डी ग्रुचेरे को, प्रतिनिधि सभा के सामने वाला स्थान, क्रमांक—

मारियस ने मन ही मन सोचा कि शायद उसे इसमें वह जानकारी मिल जाएगी जिसकी उसे तलाश है, और इसके अलावा, चूंकि पत्र खुला हुआ है, इसलिए संभवतः इसे बिना किसी अनुचितता के पढ़ा जा सकता है।

इसकी परिकल्पना इस प्रकार की गई थी:—

मैडम ला मार्क्विज़:

दया और धर्मपरायणता का गुण ही समाज को सबसे मज़बूती से जोड़ता है। अपनी ईसाई भावना को इस ओर मोड़ें और वैधता के पवित्र उद्देश्य के प्रति निष्ठा और समर्पण के इस दुर्भाग्यशाली स्पेनिश पीड़ित पर करुणा की दृष्टि डालें, जिसने अपना रक्त बहाया, अपनी संपत्ति, अपना सब कुछ उस उद्देश्य की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया, और आज वह घोर विपत्ति में है। उसे पूर्ण विश्वास है कि आप उसकी मदद करेंगे और इस अत्यंत पीड़ादायक जीवन को बचाएंगे, क्योंकि

वह शिक्षित और सम्मानित, घावों से भरा एक सैनिक है। वह आपमें व्याप्त मानवता और इस दुर्भाग्यपूर्ण राष्ट्र के प्रति मैडम ला मार्क्विज़ की सहानुभूति पर भरोसा करता है। उनकी प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाएगी, और उनकी कृतज्ञता एक सुखद स्मृति के रूप में उनके दिलों में बसी रहेगी।

मेरी हार्दिक संवेदनाएं, जिनके साथ मुझे महोदया होने का सम्मान प्राप्त है।

डॉन अल्वारेस, स्पेनिश घुड़सवार सेना के कप्तान, एक राजभक्त जिसने फ्रांस में शरण ली है, जो अपने देश के लिए यात्रा पर है, और उसके पास अपनी यात्रा जारी रखने के लिए संसाधनों की कमी है।

हस्ताक्षर के साथ कोई पता नहीं लिखा था। मारियस को उम्मीद थी कि उसे पता दूसरे पत्र में मिल जाएगा, जिसके शीर्षक में लिखा था:

महोदया को, महोदया काउंटेस ऑफ मोंटवर्नेट,
रुए कैसेट, नंबर 9.

मारियस ने उसमें यही पढ़ा:—

काउंटेस:

वह छह बच्चों के परिवार की एक दुखी माँ है, जिनमें से सबसे छोटा बच्चा केवल आठ महीने का है। मैं अपने पिछले प्रसव के बाद से बीमार हूँ, मेरे पति ने मुझे पाँच महीने पहले छोड़ दिया था, मेरे पास दुनिया में कोई सहारा नहीं है और मैं घोर गरीबी में जी रही हूँ। मैडम ला कोम्टेस की आशा में, उन्हें यह सम्मान प्राप्त है कि वे उन्हें अत्यंत आदर के साथ मैडम कहें।

मिस्ट्रेस बालिज़ार्ड।

मारियस ने तीसरे पत्र की ओर रुख किया, जो पिछले पत्र की तरह ही एक याचिका थी; उसने पढ़ा:—

श्री पाबोरजियोट, निर्वाचक,
थोक स्टॉक व्यापारी,
रू सेंट-डेनिस, रू औक्स फेर्स के कोने पर।

मैं आपको यह पत्र लिखकर आपसे निवेदन करता हूँ कि आप मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि डालें और उस साहित्यकार पर ध्यान दें जिसने अभी-अभी थिएटर-फ्रांसे

को एक नाटक भेजा है। विषय ऐतिहासिक है और कहानी ऑवर्न में साम्राज्य काल में घटित होती है; मुझे लगता है कि शैली स्वाभाविक, संक्षिप्त और कुछ हद तक सराहनीय है। इसमें चार स्थानों पर दोहे हैं जिन्हें गाया जाना है। हास्य, गंभीरता और अप्रत्याशित तत्व विभिन्न पात्रों में मिश्रित हैं, और रहस्यमय ढंग से आगे बढ़ने वाली साजिश में रोमांटिकता की एक हल्की सी झलक है, जो आश्चर्यजनक परिवर्तनों के बाद, कई शानदार दृश्यों के बीच समाप्त होती है।

मेरा मुख्य उद्देश्य उस इच्छा को संतुष्ट करना है जो हमारी सदी के मनुष्य को उत्तरोत्तर प्रेरित करती है, अर्थात् फैशन, वह मनमौजी और विचित्र मौसमसूचक यंत्र जो लगभग हर नई हवा के साथ बदलता रहता है।

इन गुणों के बावजूद, मुझे यह डर है कि विशेषाधिकार प्राप्त लेखकों की ईर्ष्या और अहंकार मुझे रंगमंच से बाहर कर सकते हैं, क्योंकि मैं उन अपमानजनक व्यवहारों से अनजान नहीं हूं जिनसे नवागंतुकों को गुज़ारा जाता है।

महामहिम पाबोरजियोट, गरीबों के संरक्षक के रूप में आपकी गौरवशाली प्रतिष्ठा मुझे अपनी पुत्री को आपके पास भेजने के लिए प्रेरित करती है, जो इस शीत ऋतु में रोटी और आग के अभाव में हमारी दयनीय स्थिति का आपको स्पष्टीकरण देगी। जब मैं आपसे अपने नाटक, जिसे मैं आपके लिए प्रस्तुत करना चाहता हूँ और भविष्य में प्रस्तुत होने वाले सभी नाटकों के लिए, आपको समर्पित करने का निवेदन करता हूँ, तो इसका अर्थ यह सिद्ध करना है कि आपकी शरण में रहने और अपनी रचनाओं को आपके नाम से सुशोभित करने की मेरी कितनी प्रबल इच्छा है। यदि आप मुझे यह विनम्र भेंट देकर सम्मानित करेंगे, तो मैं तुरंत आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एक कविता लिखने में जुट जाऊँगा। मैं इस कविता को यथासंभव परिपूर्ण बनाने का प्रयास करूँगा और इसे नाटक के प्रारंभ में शामिल किए जाने और मंच पर प्रस्तुत किए जाने से पहले आपको भेज दूँगा।

श्रीमान और श्रीमती पाबोरजियोट को मेरा हार्दिक प्रणाम।

जेनफ्लोट,
साहित्यकार।

पी.एस. भले ही यह सिर्फ चालीस सू ही क्यों न हो।
मुझे क्षमा करें कि मैंने अपनी बेटी को भेजा और स्वयं उपस्थित नहीं हुई, लेकिन शौचालय से संबंधित दुखद कारणों के कारण, अफसोस! मैं बाहर नहीं जा सकती।
अंततः, मारियस ने चौथा पत्र खोला। पता इस प्रकार था: सेंट-जैक्स-डु-हाउट-पास के चर्च के परोपकारी सज्जन को
इसमें निम्नलिखित पंक्तियाँ थीं:—
परोपकारी व्यक्ति:
यदि आप मेरी बेटी के साथ आने की कृपा करें, तो आप एक भयावह विपत्ति देखेंगे, और मैं आपको अपने प्रमाण पत्र दिखाऊंगा।
इन लेखों को पढ़कर आपकी उदार आत्मा स्पष्ट परोपकार की भावना से प्रेरित होगी, क्योंकि सच्चे दार्शनिक हमेशा जीवंत भावनाओं का अनुभव करते हैं। हे दयालु मनुष्य, यह स्वीकार करो कि अत्यंत कष्ट सहना आवश्यक है, और यह भी कि थोड़ी सी राहत पाने के लिए अधिकारियों से मान्यता प्राप्त करना अत्यंत पीड़ादायक है, मानो व्यक्ति को कष्ट सहने और अपनी पीड़ा दूर होने की प्रतीक्षा में भूख से मरने का अधिकार ही न हो। नियति कुछ लोगों के लिए अत्यंत घातक होती है, तो कुछ के लिए अत्यधिक उदार या अत्यधिक सुरक्षात्मक। मैं आपकी उपस्थिति या आपके द्वारा दी जाने वाली भेंट की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, यदि आप ऐसा करने की कृपा करें, और मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप उन आदरपूर्ण भावनाओं को स्वीकार करें जिनके साथ मुझे उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त है।
आप सचमुच उदार व्यक्ति हैं, आपके अत्यंत विनम्र और आज्ञाकारी सेवक।
पी. फैबंटू, नाट्य कलाकार।
इन चारों पत्रों को पढ़ने के बाद, मारियस ने खुद को पहले की तुलना में बहुत अधिक प्रगतिशील नहीं पाया।
पहली बात तो यह है कि हस्ताक्षरकर्ताओं में से किसी ने भी अपना पता नहीं दिया।

फिर, ऐसा प्रतीत हुआ कि ये पत्र चार अलग-अलग व्यक्तियों, डॉन अल्वारेस, मिस्ट्रेस बालिज़ार्ड, कवि जेनफ्लोट और नाटककार फैबंटू से आए थे; लेकिन इन पत्रों की अनूठी बात यह थी कि ये सभी चारों पत्र एक ही व्यक्ति द्वारा लिखे गए थे।

इससे क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता था, सिवाय इसके कि ये सभी एक ही व्यक्ति से आए हैं?

इसके अलावा, और इसी बात ने इस अनुमान को और भी अधिक संभावित बना दिया, कि चारों में मोटा और पीला कागज एक जैसा था, तंबाकू की गंध एक जैसी थी, और यद्यपि शैली में विविधता लाने का प्रयास किया गया था, फिर भी वर्तनी की वही त्रुटियाँ अत्यंत सहजता से दोहराई गई थीं, और साहित्यकार जेनफ्लोट भी स्पेनिश कप्तान की तरह ही इन त्रुटियों से मुक्त नहीं था।

इस मामूली रहस्य को सुलझाने की कोशिश करना व्यर्थ था। अगर यह संयोगवश न मिला होता, तो यह एक रहस्य ही बन जाता। मारियस इतना उदास था कि वह एक आकस्मिक हंसी-मजाक को भी आसानी से स्वीकार नहीं कर पाता था, और उस खेल में शामिल होने को भी तैयार नहीं था जो सड़क के किनारे के लोग उसके साथ खेलना चाहते थे। उसे ऐसा लग रहा था मानो वह चार अक्षरों के बीच अंधे आदमी की भूमिका निभा रहा हो, और वे लोग उसका मज़ाक उड़ा रहे हों।

हालांकि, ऐसा कुछ भी संकेत नहीं था जिससे पता चले कि ये पत्र उन दो युवतियों के थे जिनसे मारियस सड़क पर मिला था। आखिरकार, ये स्पष्ट रूप से महत्वहीन कागजात थे। मारियस ने उन्हें वापस लिफाफे में रखा, पूरे लिफाफे को एक कोने में फेंक दिया और सोने चला गया। सुबह लगभग सात बजे, वह उठा और नाश्ता कर चुका था, और काम पर बैठने की कोशिश कर रहा था, तभी उसके दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई।

उसके पास कुछ भी नहीं था, इसलिए वह कभी भी अपना दरवाजा बंद नहीं करता था, सिवाय कभी-कभार, हालांकि बहुत कम ही, जब वह किसी जरूरी काम में व्यस्त होता था। यहां तक कि घर से बाहर रहने पर भी वह चाबी ताले में ही छोड़ देता था। "तुम्हारा सामान चोरी हो जाएगा," मैडम बोगन ने कहा। "क्या?" मारियस ने पूछा। लेकिन सच्चाई यह थी कि एक दिन मैडम बोगन की बड़ी खुशी के बीच उसके पुराने जूते चोरी हो गए थे।

फिर दूसरी दस्तक हुई, जो पहली दस्तक जितनी ही हल्की थी।
“अंदर आओ,” मारियस ने कहा।
दरवाजा खुल गया।
"आप क्या चाहती हैं, मैडम बोगन?" मारियस ने अपनी मेज पर रखी किताबों और पांडुलिपियों से अपनी निगाहें उठाए बिना पूछा।
मैडम बोगन की आवाज के अलावा किसी और की आवाज ने जवाब दिया:—
“क्षमा कीजिए, महोदय—”
यह एक नीरस, टूटी हुई, कर्कश, घुटी हुई आवाज थी, एक बूढ़े आदमी की आवाज, जो ब्रांडी और शराब से खुरदरी हो गई थी।
मारियस ने झट से पीछे मुड़कर देखा और उसे एक युवती दिखाई दी।

IV. दुख में एक गुलाब

एक बहुत छोटी लड़की आधे खुले दरवाजे पर खड़ी थी। अटारी की खिड़की, जिससे रोशनी अंदर आ रही थी, ठीक दरवाजे के सामने थी और उस आकृति को धुंधली रोशनी से रोशन कर रही थी। वह एक कमजोर, दुबली-पतली, पतली सी लड़की थी; उस ठंडी और कांपती हुई नग्नता पर केवल एक कमीज और पेटीकोट था। उसकी कमरबंद एक डोरी थी, उसका सिर का रिबन भी एक डोरी था, उसके नुकीले कंधे उसकी कमीज से बाहर निकले हुए थे, सुनहरे और लसीकायुक्त रंग, मिट्टी के रंग की कॉलरबोन, लाल हाथ, आधा खुला और बिगड़ा हुआ मुंह, टूटे हुए दांत, सुस्त, तीक्ष्ण, नीच आंखें; उसका रूप एक ऐसी लड़की जैसा था जिसने अपनी जवानी खो दी हो, और उसकी शक्ल एक भ्रष्ट बूढ़ी औरत जैसी थी; पचास साल पंद्रह साल के साथ मिले हुए; उन प्राणियों में से एक जो कमजोर और भयानक दोनों होते हैं, और जो उन लोगों को कंपा देते हैं जिन्हें वे रुला नहीं सकते।

मारियस उठ खड़ा हुआ था और एक प्रकार के स्तब्धता भाव से उस प्राणी को घूर रहा था, जो लगभग उन छायाओं के रूपों जैसा था जो सपनों में विचरण करती हैं।

सबसे दुखद बात यह थी कि यह युवती जन्म से ही साधारण नहीं थी। अपने बचपन में वह निश्चित रूप से सुंदर रही होगी। उसकी उम्र की गरिमा अभी भी दुराचार और गरीबी की भयानक, असमय कमजोरी से जूझ रही थी। सोलह वर्ष की उस लड़की के चेहरे से सुंदरता के अंश मिटते जा रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे सर्दियों के दिन भोर में भयानक बादलों के नीचे फीकी धूप गायब हो जाती है।

मारियस के लिए वह चेहरा पूरी तरह से अनजान नहीं था। उसे लगा कि उसने उसे कहीं देखा है।

“आप क्या चाहती हैं, मैडमोजेल?” उसने पूछा।

उस युवती ने शराबी कैदी जैसी आवाज में उत्तर दिया:

"यह पत्र आपके लिए है, महाशय मारियस।"

उसने मारियस को उसके नाम से पुकारा; उसे इस बात में कोई संदेह नहीं हो सकता था कि वह वही व्यक्ति थी जिसे वह चाहती थी; लेकिन यह लड़की कौन थी? उसे उसका नाम कैसे पता चला?

उसके आगे बढ़ने के लिए कहने का इंतज़ार किए बिना ही वह अंदर चली गई। वह दृढ़ता से अंदर गई, पूरे कमरे और बिखरे हुए बिस्तर को एक ऐसी निश्चिंतता से घूर रही थी जिसे देखकर दिल कांप उठता था। उसके पैर नंगे थे। उसकी पेटीकोट में बड़े-बड़े छेद थे जिनसे उसकी लंबी टांगें और पतले घुटने दिखाई दे रहे थे। वह कांप रही थी।

उसके हाथ में एक पत्र था, जिसे उसने मारियस को सौंप दिया।

मारियस ने जब पत्र खोला तो देखा कि उसे सील करने वाली विशाल पतली सी परत अभी भी नम थी। संदेश दूर से नहीं आया होगा। उसने पढ़ा:—

मेरे प्यारे पड़ोसी, युवक:

मुझे आपकी उदारता के बारे में पता चला है, कि आपने छह महीने पहले मेरा किराया चुका दिया था। हे नौजवान, मैं आपका आभारी हूँ। मेरी बड़ी बेटी आपको बताएगी कि हम दो दिनों से भूखे हैं, चार लोग हैं और मेरी पत्नी बीमार है। यदि मेरा विचार गलत नहीं है, तो मुझे उम्मीद है कि यह सुनकर आपका उदार हृदय पिघल जाएगा और आप मुझ पर कृपा करके मुझ पर थोड़ी सी मदद करने का मन बना लेंगे।

मैं मानवता के परोपकारियों के प्रति उचित सम्मान के साथ उपस्थित हूँ।

जोंड्रेट।

पी.एस. मेरी सबसे बड़ी बेटी आपके आदेशों की प्रतीक्षा करेगी, प्रिय महाशय मारियस।

यह पत्र, ठीक उस रहस्यमय साहसिक यात्रा के बीच में आया, जिसने पिछली शाम से ही मारियस के विचारों को घेरे रखा था, मानो तहखाने में जलती मोमबत्ती की तरह था। सब कुछ अचानक रोशन हो गया।

यह पत्र भी उसी स्थान से आया था जहाँ से अन्य चार पत्र आए थे। लिखावट, शैली, वर्तनी, कागज और तंबाकू की गंध सब कुछ एक जैसा था।

पाँच पत्र थे, पाँच इतिहास थे, पाँच हस्ताक्षर थे, और हस्ताक्षरकर्ता केवल एक ही था। स्पेनिश कप्तान डॉन अल्वारेस, दुखी मालकिन बालिज़ार्ड, नाटकीय कवि जेनफ्लोट, बूढ़े हास्य कलाकार फैबंटू, इन चारों का नाम जोन्ड्रेट था, यदि वास्तव में जोन्ड्रेट का नाम जोन्ड्रेट ही था।

मारियस उस घर में काफी लंबे समय से रह रहा था, और जैसा कि हमने कहा है, उसे अपने बेहद नीच पड़ोसियों को देखने का, यहाँ तक कि उनकी एक झलक पाने का भी, बहुत कम मौका मिला था। उसका मन कहीं और था, और जहाँ मन होता है, वहीं आँखें भी होती हैं। उसे गलियारे या सीढ़ियों पर जोन्ड्रेट परिवार के पास से एक से अधिक बार गुजरना पड़ा था; लेकिन वे उसके लिए केवल आकृतियाँ थीं; उसने उन पर इतना कम ध्यान दिया था कि पिछली शाम को, बुलेवार्ड पर जोन्ड्रेट परिवार की लड़कियों से उसकी टक्कर हो गई थी, फिर भी वह उन्हें पहचान नहीं पाया था, क्योंकि स्पष्ट रूप से वे ही थीं, और बड़ी मुश्किल से उसके कमरे में दाखिल हुई लड़की ने घृणा और दया के बावजूद, उसे कहीं और मिलने की धुंधली सी याद दिलाई थी।

अब उसे सब कुछ स्पष्ट दिखाई देने लगा था। वह समझ गया था कि उसका पड़ोसी जोंड्रेट, अपनी विपत्ति में, परोपकारी व्यक्तियों से दान लेने का धंधा करता था, पते जुटाता था और धनी एवं दयालु समझे जाने वाले लोगों को फर्जी नामों से पत्र लिखता था। ये पत्र उसकी बेटियाँ अपनी जान जोखिम में डालकर पहुँचाती थीं, क्योंकि पिता की हालत इतनी खराब हो गई थी कि वह अपनी बेटियों को भी दांव पर लगा रहा था; वह भाग्य के साथ खेल रहा था और उन्हें दांव पर लगा रहा था। मारियस समझ गया था कि शायद, पिछली शाम उनके भागने, उनकी हांफती हुई हालत, उनके डर और सुनी हुई बोलचाल की भाषा से, ये अभागी लड़कियाँ कोई अकल्पनीय और दुखद धंधा कर रही थीं, और इन सबका परिणाम यह था कि आज के मानव समाज में, दो दयनीय प्राणी न तो लड़कियाँ थीं और न ही औरतें, बल्कि दुख से पैदा हुए अशुद्ध और निर्दोष राक्षसों की एक प्रजाति थीं।

दुखी प्राणी, जिनका कोई नाम, लिंग या आयु नहीं है, जिनके लिए न अच्छाई और न बुराई संभव है, और जो बचपन से बाहर निकलते ही इस दुनिया में कुछ भी नहीं रखते, न स्वतंत्रता, न सद्गुण, न उत्तरदायित्व। आत्माएँ जो कल खिली थीं और आज मुरझा गई हैं, उन फूलों की तरह जो सड़कों पर गिर जाते हैं, हर तरह की कीचड़ से सने हुए, किसी पहिए के कुचलने का इंतज़ार करते हुए। फिर भी, जब

मारियस दर्द और हैरानी भरी निगाहों से उसे देख रहा था, वह युवती किसी प्रेत की तरह बेखौफ होकर अटारी में इधर-उधर घूम रही थी। वह अपने नग्न शरीर की परवाह किए बिना लात मार रही थी। कभी-कभी उसकी फटी हुई और खुली हुई कमीज़ उसकी कमर तक गिर जाती थी। वह कुर्सियों को इधर-उधर करती, कमोड पर रखे शौचालय के सामान को अस्त-व्यस्त करती, मारियस के कपड़ों को छूती, कोनों में क्या है यह देखने के लिए इधर-उधर टटोलती।

“हैलो!” उसने कहा, “तुम्हारे पास दर्पण है!”

और वह वाडेविल के कुछ अंश गुनगुना रही थी, मानो वह अकेली हो, चंचल धुनें जिन्हें उसकी कर्कश और भारी आवाज ने उदास बना दिया था।

इस साहस के नीचे एक अवर्णनीय बंधन, थकावट और अपमान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। धृष्टता एक कलंक है।

उसे कमरे में खेलते-कूदते देखना और मानो किसी ऐसे पक्षी की तरह फुदकते हुए देखना, जो दिन के उजाले से डर गया हो या जिसका पंख टूट गया हो, इससे अधिक दुखद कुछ नहीं हो सकता था। ऐसा लगता था कि शिक्षा और भाग्य की परिस्थितियाँ भिन्न होतीं तो इस युवती का चंचल और अति-स्वतंत्र स्वभाव शायद मधुर और आकर्षक बन जाता। यहाँ तक कि जानवरों में भी, कबूतर के रूप में जन्मा प्राणी कभी बाज नहीं बनता। ऐसा केवल मनुष्यों में ही देखा जा सकता है।

मारियस ने विचार किया और उसे अपनी मर्जी करने दी।

वह मेज के पास पहुंची।

“आह!” उसने कहा, “किताबें!”

एक चमक ने उसकी काँच जैसी आँखों को भेद दिया। उसने बोलना फिर शुरू किया, और उसके लहजे में उस खुशी का भाव झलक रहा था जो उसे किसी ऐसी बात पर गर्व करने से महसूस हो रही थी, जिससे कोई भी इंसान अछूता नहीं रह सकता:

मुझे पढ़ना आता है, बिल्कुल आता है!

उसने उत्सुकता से मेज पर खुली पड़ी एक किताब उठाई और काफी धाराप्रवाह ढंग से पढ़ने लगी:

“जनरल बौड्विन को आदेश मिला कि वे अपनी ब्रिगेड की पांच बटालियनों के साथ वाटरलू के मैदान के मध्य में स्थित हौगोमोंट के महल पर कब्जा कर लें।”
वह रुक गई।
“आह! वाटरलू! मुझे इसके बारे में पता है। यह बहुत पहले की लड़ाई थी। मेरे पिताजी वहाँ थे। मेरे पिताजी सेनाओं में सेवा कर चुके हैं। हम अपने घर में पक्के बोनापार्ट समर्थक हैं! वाटरलू अंग्रेजों के खिलाफ लड़ा गया था।” उसने किताब नीचे रख दी, कलम उठाई और बोली:—
और मुझे लिखना भी आता है!
उसने अपनी कलम को स्याही में डुबोया और मारियस की ओर मुड़कर बोली:— “क्या आप देखना चाहते हैं? यहाँ देखिए, मैं आपको दिखाने के लिए एक शब्द लिखने जा रहा हूँ।”
और इससे पहले कि वह जवाब दे पाता, उसने मेज के बीच में पड़े एक सफेद कागज पर लिख दिया: "पुलिस वाले आ गए हैं।"
फिर कलम फेंकते हुए:—
“वर्तनी की कोई गलती नहीं है। आप देख सकते हैं। हम दोनों, मेरी बहन और मैं, शिक्षित हैं। हम हमेशा से ऐसे नहीं थे जैसे अब हैं। हमें ऐसे बनाया नहीं गया था—”
यहाँ वह रुकी, अपनी बेजान आँखों से मारियस को देखा और खिलखिलाकर हँस पड़ी, और एक ऐसी स्वर-शैली में बोली जिसमें हर प्रकार की पीड़ा समाई हुई थी, और हर प्रकार के व्यंग्य से दबी हुई थी:—
“वाह!”
और वह प्रसन्नता भरे स्वर में इन शब्दों को गुनगुनाने लगी:—
मुझे भूख लगी है, पिताजी। खाना नहीं है। मुझे ठंड लग रही है, माँ। बुनाई नहीं कर सकती। लोलॉट, ठंड से काँप रही है! जैकोट, रो रही है!
उसने अभी ये दोहा पूरा ही किया था कि वो विस्मय से बोली:—

“क्या आप कभी नाटक देखने जाते हैं, महाशय मारियस? मैं जाता हूँ। मेरा एक छोटा भाई है जो कलाकारों का दोस्त है और कभी-कभी मुझे टिकट दे देता है। लेकिन मुझे गैलरी में लगी बेंचें पसंद नहीं हैं। वहाँ बैठना बहुत तंग और असुविधाजनक होता है। कभी-कभी वहाँ बदतमीज़ लोग भी होते हैं; और कुछ लोग बदबूदार भी होते हैं।”

फिर उसने मारियस को गौर से देखा, एक विलक्षण भाव धारण किया और कहा:—

"क्या आप जानते हैं, श्री मारियस, कि आप बहुत ही आकर्षक व्यक्ति हैं?"

और ठीक उसी क्षण दोनों के मन में एक ही विचार आया, जिससे वह मुस्कुरा उठी और वह शरमा गया। वह उसके पास गई और उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोली, “आप मेरी बात पर ध्यान नहीं देते, लेकिन मैं आपको जानती हूँ, श्री मारियस। मैं आपसे यहाँ सीढ़ियों पर मिली थी, और फिर अक्सर आपको फादर माबेउफ के पास जाते हुए देखती हूँ, जो ऑस्टरलिट्ज़ की तरफ रहते हैं, कभी-कभी जब मैं उस इलाके में टहल रही होती हूँ। आपके बाल इस तरह बिखरे हुए आप पर बहुत अच्छे लग रहे हैं।”

उसने अपनी आवाज़ को नरम करने की कोशिश की, लेकिन वह उसे और भी गहरी बनाने में कामयाब रही। उसके कुछ शब्द स्वरयंत्र से होठों तक पहुँचने के दौरान खो गए, मानो पियानो पर कुछ सुर गायब हों।

मारियस धीरे से पीछे हट गया था।

“महोदया,” उसने अपनी शांत गंभीरता से कहा, “मेरे पास एक पैकेट है जो शायद आपका है। कृपया मुझे इसे आपको लौटाने की अनुमति दें।”

और उसने चारों पत्रों वाला लिफाफा आगे बढ़ाया।

उसने ताली बजाई और कहा:—

हम उसे हर जगह ढूंढ रहे थे!

फिर उसने उत्सुकता से पैकेट उठाया और लिफाफा खोलते हुए कहा:—

हे भगवान! मेरी बहन और मैंने उसे कितना ढूंढा! और उसे तुमने ही पाया! सड़क पर, है ना? सड़क पर ही तो रहा होगा? देखो, भागते-भागते हमसे वह गिर गया। मेरी उस बहन की बेवकूफी की वजह से ही ऐसा हुआ। घर आकर वह कहीं नहीं मिला। क्योंकि हम मार नहीं खाना चाहते थे, क्योंकि मार खाना बेकार था, बिलकुल

बेकार, इसलिए हमने कहा कि हमने चिट्ठियाँ सही लोगों तक पहुँचा दी थीं, और उन्होंने हमसे कहा: 'कुछ नहीं।' तो ये रही वो बेचारी चिट्ठियाँ! और तुम्हें कैसे पता चला कि ये मेरी हैं? हाँ! लिखावट से। तो कल रात जब हम वहाँ से गुज़रे तो तुमसे ही हमारी टक्कर हुई थी। हम देख नहीं पा रहे थे। मैंने अपनी बहन से पूछा: 'क्या कोई सज्जन हैं?' मेरी बहन ने मुझसे कहा: 'मुझे लगता है कोई सज्जन हैं।'

इसी बीच उसने "सेंट-जैक्स-डु-हाउट-पास के चर्च के परोपकारी सज्जन" को संबोधित याचिका खोल दी थी।

“ये लीजिए!” उसने कहा, “ये उस बूढ़े आदमी के लिए है जो चर्च जाता है। वैसे, यही उसका समय है। मैं जाकर इसे उसके पास ले जाती हूँ। शायद वो हमें नाश्ते के लिए कुछ दे दे।”

फिर वह दोबारा हंसने लगी और बोली:—

“क्या तुम जानते हो कि अगर हमें आज नाश्ता मिल जाए तो इसका क्या मतलब होगा? इसका मतलब होगा कि हमने परसों का नाश्ता, परसों का नाश्ता, आज का खाना, सब कुछ एक साथ, और वो भी आज सुबह ही खा लिया होगा। आओ! परब्लू! अगर तुम संतुष्ट नहीं हो, कुत्तों, तो फट जाओ!”

इससे मारियस को उस अभागी लड़की के अपने पास किए गए काम की याद आ गई। उसने अपनी जैकेट की जेब में हाथ डाला, लेकिन उसे वहाँ कुछ नहीं मिला।

वह युवती आगे बढ़ती रही और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसे मारियस की उपस्थिति का कोई आभास ही न हो।

मैं अक्सर शाम को निकल जाती हूँ। कभी-कभी मैं वापस घर नहीं आती। पिछली सर्दी में, यहाँ आने से पहले, हम पुलों के मेहराबों के नीचे रहते थे। ठंड से बचने के लिए हम एक-दूसरे से चिपक कर सोते थे। मेरी छोटी बहन रोती थी। पानी कितना उदास है! जब मैंने खुद को डुबोने के बारे में सोचा, तो मैंने खुद से कहा: 'नहीं, बहुत ठंड है।' मैं जब चाहे अकेले बाहर जाती हूँ, कभी-कभी नालियों में सो जाती हूँ। क्या आप जानते हैं, रात में, जब मैं बुलेवार्ड पर चलती हूँ, तो मुझे पेड़ शाखाओं की तरह दिखाई देते हैं, मुझे घर दिखाई देते हैं, सभी काले और नोट्रे डेम जितने बड़े, मुझे लगता है कि सफेद दीवारें नदी हैं, मैं खुद से कहती हूँ: 'अरे, वहाँ पानी है!' तारे रोशनी में जलते हुए

दीपों की तरह हैं, कोई कहेगा कि उनमें से धुआँ निकला और हवा ने उन्हें बुझा दिया, मैं हैरान हूँ, जैसे मेरे कानों में घोड़े साँस ले रहे हों; हालाँकि रात है, मुझे हैंड-ऑर्गन और कताई मशीनें सुनाई देती हैं, और न जाने क्या- क्या। मुझे लगता है कि लोग पत्थर फेंक रहे हैं। मैं तो बिना जाने ही भाग रहा हूँ, सब कुछ घूमता ही जा रहा है। जब आपने खाना नहीं खाया होता है तो आपको बहुत अजीब सा लगता है।

और फिर वह हैरानी भरे भाव से उसे घूरने लगी।

अपनी जेबें खंगालते-खंगालते मारियस ने आखिरकार पाँच फ्रैंक सोलह सू इकट्ठा कर लिए। फिलहाल उसके पास बस इतना ही था। उसने सोचा, "जो भी हो, आज का खाना तो मिल गया, कल देखते हैं।" उसने सोलह सू रख लिए और पाँच फ्रैंक उस युवती को दे दिए।

उसने सिक्का छीन लिया।

“वाह!” उसने कहा, “सूरज चमक रहा है!”

और, मानो सूर्य में उसके दिमाग में उमड़ रही अपशब्दों की बाढ़ को पिघलाने की शक्ति हो, वह आगे बोली:—

“पाँच फ्रैंक! वाह! एक सम्राट! इस गड्ढे में! ये कितना बढ़िया है! तुम तो बड़े ही शानदार चोर हो! मैं तुम्हारा विनम्र सेवक हूँ! अच्छे लोगों के लिए शाबाश! दो दिन की शराब! और मांस! और स्टू! हम एक शाही दावत करेंगे! और पेट भर खाएँगे!”

उसने अपनी कमीज़ को कंधों पर ऊपर खींचा, मारियस को झुककर प्रणाम किया, फिर हाथ से एक परिचित इशारा किया और दरवाजे की ओर बढ़ते हुए बोली:—

“शुभ प्रभात, महोदय। कोई बात नहीं। मैं जाकर अपने पिताजी को ढूंढ लेता हूँ।”

वहाँ से गुजरते हुए उसकी नज़र कमोड पर धूल के बीच सड़ रही रोटी के सूखे टुकड़े पर पड़ी; वह उस पर झपटी और उसे काटते हुए बुदबुदाई:—

“वाह, बढ़िया! ये तो बहुत मुश्किल है! इससे मेरे दांत टूट जाते हैं!”

फिर वह चली गई।

V. एक ईश्वरीय ताक-झांक

मारियस पाँच साल तक गरीबी, अभाव और यहाँ तक कि कष्ट में रहा था, लेकिन अब उसे एहसास हुआ कि उसने असली दुख को जाना ही नहीं था। सच्चे दुख का उसने बस एक झलक देखा था। वह उसका एक भूत सा था जो उसकी आँखों के सामने से गुजरा था। वास्तव में, जिसने केवल मनुष्य का दुख देखा है, उसने कुछ नहीं देखा; उसे स्त्री का दुख देखना ही चाहिए; जिसने केवल स्त्री का दुख देखा है, उसने कुछ नहीं देखा; उसे बच्चे का दुख भी देखना चाहिए।

जब मनुष्य अपनी अंतिम सीमा तक पहुँच जाता है, तो उसी समय उसके पास अपने अंतिम संसाधन भी समाप्त हो जाते हैं। उसके आसपास मौजूद असहाय प्राणियों पर विपत्ति आ जाती है! काम, मजदूरी, रोटी, आग, साहस, सद्भावना, सब एक साथ उसका साथ छोड़ देते हैं। दिन का प्रकाश बाहर बुझता हुआ प्रतीत होता है, भीतर का नैतिक प्रकाश भी; इन अंधकारों में मनुष्य स्त्री और बच्चे की दुर्बलता का सामना करता है, और उन्हें क्रूरतापूर्वक अपमानित करता है।

तब सभी भयावहताएँ संभव हो जाती हैं। निराशा नाजुक दीवारों से घिरी होती है, जो या तो बुराई या अपराध की ओर खुलती हैं।

स्वास्थ्य, यौवन, मान-सम्मान, युवा शरीर की सभी कोमल भावनाएँ, हृदय, कौमार्य, लज्जा, आत्मा की वह निर्मल त्वचा, उन सभी को उस कुटिलता द्वारा कुटिल ढंग से नियंत्रित किया जाता है जो संसाधनों की तलाश करती है, बदनामी का सामना करती है और उसमें ढल जाती है। पिता, माता, बच्चे, भाई, बहन, पुरुष, स्त्रियाँ, पुत्रियाँ, लगभग एक खनिज संरचना की तरह, लिंगों, रिश्तों, उम्रों, बदनामी और मासूमियत के उस धुंधले मिश्रण में समाहित हो जाते हैं। वे भाग्य की एक झोपड़ी में पीठ से पीठ मिलाकर दुबके बैठे हैं। वे एक-दूसरे को दुख भरी निगाहों से देखते हैं। ओह, अभागे! वे कितने पीले पड़ गए हैं! वे कितने ठंडे हैं! ऐसा लगता है मानो वे हमारे ग्रह से कहीं अधिक दूर किसी ग्रह पर रहते हों।

यह युवती मारियस के लिए अंधकारमय साये की दुनिया से आई एक दूत के समान थी।
उसने उसे रात के एक भयावह पहलू से परिचित कराया।

मारियस ने अपने पड़ोसियों पर नज़र डालने से पहले तक अपने ख्यालों और भावनाओं में डूबे रहने के लिए खुद को लगभग दोषी ठहराया। किराया चुकाना एक औपचारिकता थी, जिसे कोई भी मान लेता; लेकिन मारियस को इससे बेहतर करना चाहिए था। क्या! बस एक दीवार ही उसे उन परित्यक्त लोगों से अलग करती थी जो दुनिया से कटे हुए अंधेरे में भटकते रहते थे, वह उनके बिल्कुल करीब था, वह किसी न किसी तरह से मानव जाति की आखिरी कड़ी था जिससे वे जुड़े हुए थे, उसने उन्हें अपने बगल में मौत की पीड़ा में जीते-जीते, या यूँ कहें कि कराहते हुए सुना, और उसने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया! हर दिन, हर पल, उसने उन्हें दीवार के दूसरी तरफ चलते सुना, उसने उन्हें आते-जाते और बोलते सुना, और उसने उनकी ओर कान तक नहीं लगाया! और उन शब्दों में कराहें थीं, और उसने उन्हें भी नहीं सुना, उसके विचार कहीं और थे, सपनों में खोए हुए, असंभव चमक में, हवा में तैरते प्यार में, मूर्खताओं में; और इस पूरे समय, मनुष्य, यीशु मसीह में उनके भाई, जनता में उनके भाई, उनके बगल में व्यर्थ ही पीड़ा सह रहे थे! वे स्वयं भी उनकी बदकिस्मती का हिस्सा थे, और उसे और भी बढ़ा रहे थे। क्योंकि यदि उनका कोई ऐसा पड़ोसी होता जो कम कल्पनाशील और अधिक ध्यान देने वाला होता, कोई साधारण और दयालु व्यक्ति, तो स्पष्ट रूप से उनकी दरिद्रता पर ध्यान दिया जाता, उनकी पीड़ा के संकेतों को समझा जाता, और उन्हें सहारा देकर बचाया जाता! वे बहुत भ्रष्ट और बहुत पतित, निस्संदेह बहुत नीच, बहुत घृणित प्रतीत होते थे; लेकिन जो लोग पतित हुए बिना गिरते हैं वे दुर्लभ होते हैं; इसके अलावा, एक ऐसा बिंदु है जहाँ दुर्भाग्यशाली और बदनाम एक ही शब्द में मिल जाते हैं, एक घातक शब्द, "दुखी"; यह किसकी गलती है? और फिर क्या पतन जितना बड़ा होता है, उतना ही अधिक दान-पुण्य नहीं होना चाहिए?

यह नैतिक पाठ पढ़ते हुए, क्योंकि कई बार मारियस, सभी सच्चे ईमानदार लोगों की तरह, खुद ही अपना शिक्षक बन जाता था और अपनी गलती से ज़्यादा खुद को डांटता था, वह उस दीवार को घूर रहा था जो उसे जोन्ड्रेट परिवार से अलग करती थी, मानो वह अपनी दया से भरी निगाहों से उस दीवार को भेदकर इन दुखी लोगों को सहारा दे सके। दीवार पतली प्लास्टर की थी, जो पट्टियों और बीमों के सहारे टिकी थी, और जैसा कि पाठक ने अभी-अभी जाना था, उस पर से आवाज़ें और शब्द साफ़ सुनाई देते थे। मारियस जैसा स्वप्निल व्यक्ति ही इसे बहुत पहले

समझ नहीं पाया होगा। दीवार पर न तो जोन्ड्रेट परिवार की तरफ और न ही मारियस की तरफ कोई कागज़ चिपकाया गया था; खुरदरी बनावट साफ़ दिखाई दे रही थी। मारियस लगभग अचेतन रूप से दीवार का निरीक्षण कर रहा था; कभी-कभी कल्पना भी विचारों की तरह ही जाँच-पड़ताल करती है। अचानक वह उठ खड़ा हुआ; उसने अभी- अभी ऊपर की ओर, छत के पास, एक त्रिकोणीय छेद देखा, जो तीन पट्टियों के बीच की जगह से बना था। इस खाली जगह को भरने वाला प्लास्टर गायब था, और कमोड पर चढ़कर इस छेद से जोंड्रेट्स के अटारी में झाँका जा सकता था। सहानुभूति में जिज्ञासा होती है, और होनी भी चाहिए। यह छेद एक तरह का झाँकने का स्थान था। दुर्भाग्य को एक गद्दार की तरह देखना, ताकि उसकी मदद की जा सके, जायज़ है।

मारियस ने सोचा, "चलो इन लोगों के बारे में थोड़ा बहुत अंदाजा लगा लेते हैं कि वे कैसे हैं और उनकी हालत कैसी है।"

वह कमोड पर चढ़ गया, अपनी आंख दरार पर लगाई और देखा।

VI. अपनी मांद में जंगली आदमी

शहरों में, जंगलों की तरह, गुफाएँ होती हैं जिनमें सभी दुष्ट और भयानक जीव छिपे रहते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि शहरों में जो छिपते हैं वे क्रूर, अपवित्र और तुच्छ होते हैं, यानी बदसूरत; जंगलों में जो छिपते हैं वे क्रूर, जंगली और भव्य होते हैं, यानी सुंदर। दोनों की तुलना करें तो जानवर की गुफा इंसान की गुफा से बेहतर है। गुफाएँ झोपड़ियों से बेहतर होती हैं।

मारियस ने अब जो देखा वह एक झोपड़ी थी।

मारियस गरीब था, और उसका कमरा भी बेहद सादा था, लेकिन उसकी गरीबी भले ही गरिमामयी थी, इसलिए उसका कमरा साफ-सुथरा था। जिस कमरे पर उसकी नज़र पड़ी, वह बेहद गंदा, बदबूदार, कीटाणुओं से भरा, नीच और घिनौना था। वहाँ नाममात्र का फर्नीचर था, एक पुआल की कुर्सी, एक जर्जर मेज, कुछ पुराने बर्तन और दो कोनों में रखे दो अजीब से चबूतरे; सारी रोशनी मकड़ी के जालों से ढकी चार शीशों वाली एक छोटी सी खिड़की से आती थी। इस खिड़की से इतनी ही रोशनी अंदर आती थी कि किसी आदमी का चेहरा किसी प्रेत के चेहरे जैसा दिखाई देता था। दीवारें कुष्ठ रोग से ग्रसित लग रही थीं और उन पर दरारें और निशान थे, मानो किसी भयानक बीमारी से चेहरा बिगड़ गया हो; उनसे एक घिनौनी नमी निकल रही थी। उन पर कोयले से बनाए गए अश्लील चित्र साफ दिखाई दे रहे थे।

मारियस जिस कमरे में रहता था, उसका फर्श जर्जर ईंटों का बना था; यह कमरा न तो टाइलों का था और न ही तख्तों का; यहाँ रहने वाले लोग सीधे झोपड़ी के पुराने प्लास्टर पर पैर रखते थे, जो लंबे समय तक पैरों के दबाव से काला पड़ गया था। इस ऊबड़-खाबड़ फर्श पर, जहाँ गंदगी जमी हुई सी लगती थी और जिस पर केवल झाड़ू का ही निशान था, पुराने जूते, मोजे और घिनौने चिथड़े बेतरतीब ढंग से पड़े थे; हालाँकि, इस कमरे में एक चिमनी थी, इसलिए इसे चालीस फ्रैंक प्रति वर्ष के किराए पर दिया गया था। उस चिमनी में हर तरह की चीजें थीं, एक अंगीठी, एक बर्तन, टूटे हुए तख्ते, कीलों से लटके हुए चिथड़े, एक चिड़िया का पिंजरा, राख और यहाँ तक कि एक छोटी सी आग भी। वहाँ दो अंगारे उदास ढंग से सुलग रहे थे।

इस अटारी की भयावहता को और भी बढ़ाने वाली एक बात यह थी कि यह बहुत बड़ी थी। इसमें उभरे हुए हिस्से, कोण और काले छेद थे, छतों के निचले किनारे, खाड़ियाँ और उभरे हुए हिस्से। इस प्रकार, इसमें भयानक, अथाह कोने थे जहाँ ऐसा लगता था मानो मुट्ठी जितने बड़े मकड़े, पैर जितने बड़े दीमक और शायद— कौन जाने?—कुछ भयानक इंसान भी छिपे हों।

एक तख्ता दरवाजे के पास था, दूसरा खिड़की के पास। दोनों के एक-एक सिरे चिमनी से छूते हुए मारियस की ओर थे। जिस खिड़की से मारियस झाँक रहा था, उसके पास एक कोने में, काले फ्रेम में एक रंगीन नक्काशी दीवार पर एक कील से लटकी हुई थी, और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखा था: सपना। इसमें एक सोई हुई महिला और एक बच्चा दिखाया गया था, बच्चा महिला की गोद में था, बादल में एक चील थी, जिसकी चोंच में एक मुकुट था, और महिला बच्चे को जगाए बिना मुकुट को उसके सिर से हटा रही थी; पृष्ठभूमि में, नेपोलियन एक शानदार नीले स्तंभ पर झुका हुआ था, जिसके पीले शीर्ष पर यह शिलालेख अंकित था।

Maringo
Austerlits
Iena
Wagramme
Elot

इस फ्रेम के नीचे, लकड़ी का एक पैनल जैसा कुछ था, जो चौड़ाई से अधिक लंबा नहीं था, ज़मीन पर पड़ा हुआ था और दीवार के सहारे तिरछी मुद्रा में टिका हुआ था। यह देखने में किसी ऐसी तस्वीर जैसा लग रहा था जिसका मुख दीवार की ओर हो, मानो किसी फ्रेम के दूसरी तरफ कोई धब्बा दिखाई दे रहा हो, या दीवार से उखड़कर कहीं भुला दिया गया कोई कांच का टुकड़ा हो जिसे दोबारा टांगने का इंतज़ार हो रहा हो।

मेज के पास, जिस पर मारियस ने कलम, स्याही और कागज देखे, लगभग साठ वर्ष का एक व्यक्ति बैठा था, जो छोटा, पतला, पीला, थका हुआ और धूर्त, क्रूर और बेचैन भाव वाला था; एक घिनौना बदमाश।

यदि लावाटर ने इस चेहरे का अध्ययन किया होता, तो उसे वहाँ गिद्ध और वकील का मिश्रण दिखाई देता, शिकारी पक्षी और वकील एक दूसरे को परस्पर घृणित बनाते

हुए और एक दूसरे के पूरक होते हुए; वकील शिकारी पक्षी को नीच बना रहा था, शिकारी पक्षी वकील को भयानक बना रहा था।

इस आदमी की लंबी, भूरी दाढ़ी थी। उसने एक महिला की कमीज़ पहनी हुई थी, जिससे उसकी छाती पर बाल और भूरे बालों से भरी नंगी बाहें दिखाई दे रही थीं।
इस कमीज़ के नीचे से कीचड़ से सनी पतलून और जूते दिख रहे थे, जिनमें से उसकी उंगलियां बाहर निकली हुई थीं।

उसके मुंह में पाइप था और वह धूम्रपान कर रहा था। झोपड़ी में रोटी नहीं थी, लेकिन तंबाकू जरूर था।

वह शायद मारियस द्वारा पढ़े गए पत्रों की तरह कुछ और पत्र लिख रहा था।

मेज के कोने पर एक प्राचीन, जर्जर, लाल रंग की किताब पड़ी थी, और उसका आकार, जो कि वाचनालयों में इस्तेमाल होने वाले पुराने 12 मो आकार का था, एक रहस्यमयी कहानी बयां कर रहा था। पन्ने पर बड़े अक्षरों में निम्नलिखित शीर्षक छपा था:

ईश्वर; राजा; सम्मान और महिलाएं;
द्वारा
डुचरे डुमिनिल
1814.

जब वह व्यक्ति लिख रहा था, तो वह जोर से बोल रहा था, और मारियस ने उसके शब्द सुने:—

“यह सोच कितनी अजीब है कि मरने के बाद भी समानता नहीं रहती! पेरे-लाचाइज़ को ही देख लीजिए! बड़े लोग, अमीर लोग, ऊपर, बबूल की पक्की गलियों में रहते हैं। वे वहाँ गाड़ी से जा सकते हैं। और आम लोग, गरीब, दुखी, उनका क्या? उन्हें नीचे, घुटनों तक कीचड़ में, नमी वाली जगहों पर रखा जाता है। उन्हें वहाँ इसलिए रखा जाता है ताकि वे जल्दी सड़ जाएँ! आप उन्हें देखने के लिए ज़मीन में धंसे बिना नहीं जा सकते।”

वह रुका, मुट्ठी से मेज पर प्रहार किया और दांत पीसते हुए बोला:—

“ओह! मैं तो पूरी दुनिया खा सकता हूँ!”

एक भारी-भरकम महिला, जिसकी उम्र शायद चालीस या सौ वर्ष हो सकती है, अपनी नंगी एड़ियों पर चूल्हे के पास बैठी हुई थी।

वह भी केवल एक कमीज़ और पुराने कपड़ों के टुकड़ों से बुनी हुई पेटीकोट पहने हुए थी। मोटे लिनेन के एप्रन ने उसकी पेटीकोट का आधा हिस्सा ढका हुआ था। हालाँकि यह महिला कमर झुकाए बैठी थी, फिर भी उसकी ऊँचाई स्पष्ट थी। अपने पति के सामने वह किसी दानव जैसी लग रही थी। उसके बाल भद्दे थे, लाल-सुनहरे रंग के जो धीरे-धीरे भूरे हो रहे थे, और जिन्हें वह समय-समय पर अपने विशाल चमकदार हाथों से, जिनके नाखून चपटे थे, पीछे की ओर धकेलती रहती थी।

उसके बगल में, फर्श पर, खुली हुई, उसी तरह की एक किताब पड़ी थी, और संभवतः वह भी उसी प्रेम कहानी की एक किताब थी।

एक चबूतरे पर, मारियस ने एक लंबी, पीली सी दिखने वाली युवती की झलक देखी, जो वहां अधनंगी अवस्था में पैर लटकाए बैठी थी, और जो न तो सुन रही थी, न देख रही थी और न ही जीवित प्रतीत हो रही थी।

निस्संदेह वह उस व्यक्ति की छोटी बहन थी जो उसके कमरे में आया था।

वह देखने में ग्यारह या बारह साल की लग रही थी। गौर से देखने पर पता चला कि वह वास्तव में चौदह साल की थी। वही बच्ची थी जिसने पिछली शाम सड़क पर कहा था: "मैं भाग गई, भाग गई, भाग गई!"

वह उस तरह की कमज़ोर शख्सियत थी जो लंबे समय तक पिछड़ी रहती है, फिर अचानक तेज़ी से उठ खड़ी होती है। दरिद्रता ही इन उदास इंसानों को जन्म देती है। इन प्राणियों का न बचपन होता है, न जवानी। पंद्रह साल की उम्र में वे बारह साल के लगते हैं, सोलह साल की उम्र में बीस साल के। आज एक छोटी बच्ची, कल एक औरत। ऐसा कहा जा सकता है कि वे जीवन को जल्दी से जल्दी खत्म करने के लिए उसमें दौड़ते फिरते हैं।

इस समय, इस प्राणी में एक बच्चे जैसी मासूमियत झलक रही थी।

इसके अलावा, उस घर में काम का कोई निशान नहीं मिला; न कोई हस्तशिल्प, न चरखा, न कोई औजार। एक कोने में कुछ संदिग्ध दिखने वाला लोहे का सामान पड़ा था। यह निराशा के बाद आने वाली और मृत्यु की पीड़ा से पहले की उदासी और उदासीनता थी।

मारियस कुछ देर तक इस अंधकारमय भीतरी भाग को निहारता रहा, जो किसी मकबरे के भीतरी भाग से भी अधिक भयावह था, क्योंकि वहाँ मानवीय आत्मा की थरथराहट महसूस की जा सकती थी और जीवन की धड़कन महसूस हो रही थी। अटारी, तहखाना, वह नीची खाई जहाँ कुछ निर्धन लोग सामाजिक ढांचे के सबसे निचले पायदान पर रेंगते हैं, वह ठीक कब्र तो नहीं है, बल्कि उसका प्रवेश कक्ष मात्र है; परन्तु, जिस प्रकार धनी लोग अपने महलों के प्रवेश द्वार पर अपनी शान-शौकत का प्रदर्शन करते हैं, ऐसा लगता है कि मृत्यु, जो उनके ठीक बगल में खड़ी है, अपने सबसे बड़े कष्टों को उस प्रवेश कक्ष में रखती है।

वह आदमी चुप रहा, वह औरत एक शब्द भी नहीं बोली, और वह युवती मानो सांस भी नहीं ले रही थी। कागज पर कलम की आवाज सुनाई दे रही थी।

वह आदमी लिखते-लिखते बिना ही बड़बड़ाया, “कैनैले! कैनैले! सब लोग कैनैले हैं!”

सुलेमान के उद्गार में इस बदलाव को सुनकर महिला ने आह भरी।

“शांत हो जाओ, मेरे प्यारे दोस्त,” उसने कहा। “खुद को चोट मत पहुँचाओ, मेरे प्रिय। तुम इतने अच्छे हो कि उन सभी लोगों को पत्र नहीं लिख सकते, मेरे पति।”

दुःख और ठंड में शरीर एक-दूसरे से चिपक जाते हैं, पर दिल अलग हो जाते हैं। इस स्त्री ने अपने भीतर के प्रेम को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि वह इस पुरुष से प्रेम करती थी; लेकिन शायद पूरे समूह पर छाए भयानक कष्ट के दैनिक और परस्पर वाद-विवाद में यह प्रेम समाप्त हो गया था। उसके भीतर अपने पति के लिए स्नेह की राख के सिवा कुछ भी शेष नहीं था। फिर भी, जैसा कि अक्सर होता है, स्नेह भरे शब्द शेष थे। वह उसे "मेरे प्रिय, मेरे छोटे मित्र, मेरे अच्छे पुरुष," आदि कहकर पुकारती थी, जबकि उसका हृदय मौन था।

उस व्यक्ति ने अपना लेखन कार्य पुनः शुरू कर दिया।

VII. रणनीति और कार्यनीति

अपने सीने पर बोझ लादे हुए मारियस, अपने द्वारा बनाए गए अस्थायी वेधशाला से नीचे उतरने ही वाला था कि एक आवाज ने उसका ध्यान आकर्षित किया और उसे अपने स्थान पर ही रुकने के लिए मजबूर कर दिया।
अटारी का दरवाजा अचानक खुल गया। सबसे बड़ी लड़की दहलीज पर दिखाई दी। उसके पैरों में बड़े, खुरदुरे, पुरुषों के जूते थे, जो कीचड़ से सने हुए थे, यहाँ तक कि उसके लाल टखनों तक कीचड़ पहुँच गया था, और उसने एक पुराना, फटा हुआ लबादा ओढ़ा हुआ था। मारियस ने उसे एक घंटे पहले तक उस पर नहीं देखा था, लेकिन शायद उसने उसे उसके दरवाजे पर रख दिया था, ताकि उसे और अधिक दया मिले, और बाहर निकलते समय उसे फिर से उठा लिया था। वह अंदर गई, दरवाजा अपने पीछे धकेला, साँस लेने के लिए रुकी, क्योंकि उसकी साँस फूल रही थी, फिर जीत और खुशी के भाव से बोली:
"वो आ रहा है!"
पिता ने अपनी निगाहें उसकी ओर घुमाईं, महिला ने अपना सिर घुमाया, छोटी बहन टस से मस नहीं हुई।
“कौन?” उसके पिता ने पूछा।
“वह सज्जन व्यक्ति!”
“परोपकारी?”
"हाँ।"
“क्या यह सेंट-जैक्स के चर्च से है?” "हाँ।"
“वह बूढ़ा आदमी?”
"हाँ।"
“और वह आ रहा है?”

वह मेरा पीछा कर रहा है।

"आपको यकीन है?"

"मुझे यकीन है।"

"क्या वह सचमुच आ रहा है?"

वह एक भयानक गाड़ी में आ रहा है।

“एक भयानक स्थिति में। वह रॉथ्सचाइल्ड है।”

पिता उठ खड़े हुए।

“तुम्हें इतना यकीन कैसे है? अगर वो चुपके से आ रहा है, तो तुम उससे पहले कैसे पहुँच गई? तुमने उसे हमारा पता तो दिया था? क्या तुमने उसे बताया था कि गलियारे के आखिर में दाहिनी तरफ का आखिरी दरवाजा है? उम्मीद है कि वो कोई गलती न करे! तो तुमने उसे चर्च में पाया? क्या उसने मेरा पत्र पढ़ा? उसने तुमसे क्या कहा?”

“टा, टा, टा,” लड़की ने कहा, “आप तो बड़ी जल्दी में हैं, मेरे भले आदमी! देखिए: मैं चर्च में दाखिल हुई, वह अपनी हमेशा वाली जगह पर थे, मैंने उन्हें प्रणाम किया और उन्हें चिट्ठी सौंप दी; उन्होंने उसे पढ़ा और मुझसे कहा: ‘तुम कहाँ रहती हो, मेरी बच्ची?’ मैंने कहा: ‘महाशय, मैं आपको दिखाती हूँ।’ उन्होंने मुझसे कहा: ‘नहीं, मुझे अपना पता बताइए, मेरी बेटी को कुछ खरीदारी करनी है, मैं एक घोड़ागाड़ी लेकर आपके घर उसी समय पहुँचूँगा जब आप पहुँचेंगी।’ मैंने उन्हें पता दे दिया। जब मैंने घर का ज़िक्र किया, तो वह चौंक गए और एक पल के लिए हिचकिचाए, फिर उन्होंने कहा: ‘कोई बात नहीं, मैं आ जाऊँगा।’ जब प्रार्थना समाप्त हुई, तो मैंने उन्हें अपनी बेटी के साथ चर्च से निकलते देखा और उन्हें घोड़ागाड़ी में बैठते देखा। मैंने उन्हें गलियारे का आखिरी दरवाज़ा, दाहिनी ओर वाला, ज़रूर बताया था।”

और आपको ऐसा क्यों लगता है कि वह आएगा?

मैंने अभी-अभी फियाक्रे को रू पेटिट-बैंकियर में बदलते देखा है। इसी वजह से मैं भागा।

"आपको कैसे पता चला कि यह वही घटना थी?"

"क्योंकि मैंने उस संख्या पर ध्यान दिया, इसलिए!"
“वह संख्या क्या थी?”
“440.”
"शाबाश, तुम एक होशियार लड़की हो।"
लड़की ने अपने पिता को साहसपूर्वक घूरते हुए अपने पैरों में पहने हुए जूते दिखाए:
“शायद वह एक चतुर लड़की है; लेकिन मैं आपको बता दूं कि मैं ये जूते दोबारा नहीं पहनूंगी, और ऐसा मैं अपनी सेहत की खातिर और फिर स्वच्छता की खातिर नहीं करूंगी। मुझे ऐसे जूतों से ज्यादा परेशान करने वाली कोई चीज नहीं पता जो लगातार घिस-घिस कर आवाज़ करते रहते हैं। मुझे नंगे पैर चलना ज्यादा पसंद है।”
“तुम सही कह रही हो,” लड़की के अशिष्ट व्यवहार के विपरीत, उसके पिता ने मधुर स्वर में कहा, “लेकिन फिर, तुम्हें चर्च में प्रवेश करने की अनुमति नहीं होगी, क्योंकि गरीब लोगों को अंदर जाने के लिए जूते चाहिए होते हैं। कोई नंगे पैर भगवान के पास नहीं जा सकता,” उन्होंने कड़वाहट से कहा। फिर, जिस विषय में उनकी गहरी रुचि थी, उस पर लौटते हुए:—
तो आपको पूरा यकीन है कि वह आएगा?
उसने कहा, "वह मेरे पीछे-पीछे चल रहा है।"
वह आदमी अचानक उठ खड़ा हुआ। उसके चेहरे पर एक तरह की चमक आ गई।
“पत्नी!” उसने कहा, “सुनो! परोपकारी व्यक्ति आ गया है। आग बुझाओ।”
स्तब्ध मां हिली तक नहीं।
पिता ने एक कलाबाज की फुर्ती से चिमनी पर रखे टूटे मुंह वाले घड़े को उठाया और उसमें मौजूद पानी को जलते हुए अंगारों पर फेंक दिया।
फिर, अपनी सबसे बड़ी बेटी को संबोधित करते हुए:—
“ये लो! उस कुर्सी से तिनका खींच लो!”
उनकी बेटी को समझ नहीं आई।

उसने कुर्सी को पकड़ा और एक लात मारकर उसे बैठने की जगह से अलग कर दिया। उसका पैर कुर्सी के आर-पार चला गया।
अपना पैर पीछे खींचते हुए उसने अपनी बेटी से पूछा:—
"क्या यह ठंडा है?"
“बहुत ठंड है। बर्फ गिर रही है।”
पिता ने खिड़की के पास बिस्तर पर बैठी छोटी लड़की की ओर मुड़कर गरजती हुई आवाज में उससे कहा:
जल्दी! बिस्तर से उठो, आलसी! क्या तुम कभी कुछ नहीं करोगे? कांच तोड़ दो! छोटी बच्ची कांपते हुए बिस्तर से कूद गई।
“एक शीशा तोड़ दो!” उसने दोहराया।
बच्चा अचंभे से स्थिर खड़ा रहा।
“क्या तुम मुझे सुन रही हो?” उसके पिता ने दोहराया, “मैं तुमसे कहता हूँ कि एक शीशा तोड़ दो!”
बच्ची ने भयभीत होकर आज्ञाकारी भाव से अपने पंजों पर खड़े होकर मुट्ठी से एक शीशे पर प्रहार किया। शीशा टूटकर ज़ोरदार आवाज़ के साथ गिर गया। “अच्छा,” पिता ने कहा।
वह गंभीर और कठोर था। उसकी नज़र अटारी के हर कोने पर तेज़ी से घूम गई। ऐसा लग रहा था मानो वह कोई सेनापति हो जो युद्ध शुरू होने से ठीक पहले अंतिम तैयारी कर रहा हो।
अब तक एक शब्द भी न बोलने वाली माँ अचानक उठी और धीमी, सुस्त और थकी हुई आवाज़ में बोली, जिससे उसके शब्द मानो जमे हुए से निकले हों:
"तुम क्या करना चाहती हो, मेरी प्यारी?"
“बिस्तर पर जाओ,” उस आदमी ने जवाब दिया।
उनकी आवाज़ में किसी तरह की सोच-विचार का भाव नहीं था। माँ ने उनकी बात मानी और खुद को एक पलंग पर ज़ोर से गिरा दिया।
इसी बीच, एक कोने से सिसकने की आवाज सुनाई दी।

“यह क्या है?” पिता चिल्लाया।
छोटी बेटी ने अपनी खून से लथपथ मुट्ठी दिखाई, और जिस कोने में दुबकी हुई थी, वहीं दुबकी रही। खिड़की तोड़ते समय उसे चोट लग गई थी; वह अपनी माँ की पलंग के पास गई और चुपचाप रोने लगी।
अब मां की बारी थी बोलने और हैरानी जताने की:—
“देखो तो ज़रा! तुमने कितनी बड़ी गलती कर दी! उसने तुम्हारे लिए खिड़की का शीशा तोड़ते हुए खुद को घायल कर लिया!”
“यह तो और भी अच्छा है!” उस आदमी ने कहा। “मुझे इसका पहले से ही अंदाजा था।” “क्या? इससे और भी अच्छा हो गया?” उसकी पत्नी ने पलटकर जवाब दिया।
“शांति बनाए रखें!” पिता ने उत्तर दिया, “मैं प्रेस की स्वतंत्रता का दमन करता हूँ।”
फिर उसने अपने शरीर पर पहनी हुई महिला की कमीज को फाड़कर कपड़े की एक पट्टी बनाई और उससे जल्दी से छोटी बच्ची की खून बह रही कलाई को लपेट दिया।
यह सब हो जाने के बाद, उसकी नजर संतुष्टि भरे भाव से उसकी फटी हुई कमीज पर पड़ी।
“और कमीज भी,” उसने कहा, “यह देखने में अच्छी लग रही है।”
बर्फीली हवा खिड़की से सीटी बजाती हुई कमरे में दाखिल हुई। बाहर की धुंध अंदर तक पहुँच गई और अदृश्य उंगलियों द्वारा फैलाई गई सफ़ेद रुई की चादर की तरह फैल गई। टूटे हुए शीशे से बर्फ गिरती हुई दिखाई दे रही थी। पिछले दिन कैंडलमास के सूरज द्वारा वादा की गई बर्फ सचमुच गिर चुकी थी।
पिता ने चारों ओर एक नज़र डाली, मानो यह सुनिश्चित करना चाहते हों कि वे कुछ भूले तो नहीं हैं। उन्होंने एक पुराना फावड़ा उठाया और जलते हुए धब्बों पर इस तरह राख फैला दी कि वे पूरी तरह से छिप गए।
फिर खुद को समेटकर चिमनी के सहारे झुकते हुए:—
उन्होंने कहा, "अब हम परोपकारी व्यक्ति का स्वागत कर सकते हैं।"

VIII. झोपड़ी में प्रकाश की किरण

बड़ी लड़की पास आई और उसने अपना हाथ अपने पिता के हाथ में रख दिया। “देखो मुझे कितनी ठंड लग रही है,” उसने कहा।
“अरे!” पिता ने जवाब दिया, “मुझे उससे कहीं ज्यादा ठंड लग रही है।” मां ने उतावलेपन से कहा:—
"तुम्हारे पास हमेशा दूसरों से कुछ न कुछ बेहतर होता है, इसलिए तुम ऐसा करते हो! चाहे वो बुरी चीजें ही क्यों न हों।"
“तुम्हारा नाश हो!” उस आदमी ने कहा।
एक खास नजरों से घिरी हुई मां ने कुछ नहीं कहा।
झोपड़ी में एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। बड़ी लड़की लापरवाही से अपने लबादे के नीचे से कीचड़ साफ कर रही थी; उसकी छोटी बहन लगातार रो रही थी; माँ ने छोटी बहन का सिर अपने हाथों में ले रखा था और उसे चूमते हुए धीरे-धीरे उससे कह रही थी:
“मेरे प्यारे, मैं तुमसे विनती करता हूँ, यह कोई मायने नहीं रखता, रोना मत, इससे तुम्हारे पिता क्रोधित हो जाएँगे।”
“नहीं!” पिता ने हैरानी से कहा, “बिल्कुल इसके विपरीत! सिसकते हुए! सिसकते हुए! यह सही है।”
फिर बड़े व्यक्ति की ओर मुड़कर:—
“अरे वाह! वो तो आ ही नहीं रहा! अगर वो आया ही नहीं तो क्या होगा! मेरी सारी आग बुझ जाएगी, मेरी कुर्सी टूट जाएगी, मेरी कमीज़ फट जाएगी और मेरे घर का शीशा टूट जाएगा, सब कुछ व्यर्थ हो जाएगा।”
“और बच्चे को चोट पहुँचाई!” माँ ने धीरे से कहा।
“क्या तुम्हें पता है,” पिता ने आगे कहा, “कि इस शैतानी तहखाने में कितनी भयानक ठंड है! अगर वो आदमी न आया तो क्या होगा! अरे! देखो तो ज़रा! वो हमें

इंतज़ार करवा रहा है! वो मन ही मन कह रहा है: ‘अच्छा! ये लोग मेरा इंतज़ार करेंगे! इसीलिए तो यहाँ हैं।’ ओह! मुझे इनसे कितनी नफ़रत है, और मैं कितनी खुशी, उल्लास, उत्साह और संतुष्टि के साथ इन सभी अमीरों का गला घोंट सकता हूँ! इन सभी अमीरों का! ये लोग जो दानशील होने का दिखावा करते हैं, जो अकड़ दिखाते हैं, जो चर्च जाते हैं, जो पादरियों को भेंट चढ़ाते हैं, उपदेश देते हैं, टोपी पहने, और जो खुद को हमसे ऊपर समझते हैं, और जो हमें अपमानित करने और हमें ‘कपड़े’ देने आते हैं, जैसा कि वे कहते हैं! पुराने कपड़े जिनकी कीमत चार सूस भी नहीं है! और रोटी! मुझे ये नहीं चाहिए, बदमाशो का झुंड है ये, मुझे पैसा चाहिए! आह! पैसा! कभी नहीं! क्योंकि वे कहते हैं कि हम जाकर उसे पी जाएँगे, और हम शराबी और आलसी! और वे! आखिर वे हैं क्या, और अपने समय में क्या थे! चोर! वरना वे कभी अमीर नहीं बन सकते थे! ओह! समाज को कपड़े के चारों कोनों से पकड़कर हवा में उछाल देना चाहिए, पूरा का पूरा! सब कुछ चकनाचूर हो जाएगा, शायद, लेकिन कम से कम, किसी के पास कुछ नहीं बचेगा, और इतना तो लाभ होगा! लेकिन वह दयालु सज्जन का मूर्ख क्या कर रहा है? क्या वह आएगा? शायद वह जानवर पता भूल गया हो! मैं शर्त लगाता हूँ कि वह बूढ़ा जानवर

— ”

उसी क्षण दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई, वह आदमी दौड़कर दरवाजे की ओर गया और उसे खोलते हुए, श्रद्धापूर्वक झुकते हुए और मुस्कुराते हुए बोला:

“प्रवेश कीजिए, महोदय! कृपया प्रवेश करें, आदरणीय उपकारक, और आपकी प्यारी युवती भी।”

एक अधेड़ उम्र का आदमी और एक युवती अटारी की दहलीज पर प्रकट हुए।

मारियस ने अपना पद नहीं छोड़ा था। उस क्षण उसकी भावनाएँ मानवीय जुबान की शक्ति से परे थीं।

वह वही थी!

जिसने भी प्रेम किया है, वह उस शब्द के तीन अक्षरों में निहित सभी उज्ज्वल अर्थों को जानता है: वह (She)।

यह निश्चित रूप से वही थी। मारियस के सामने अचानक छाए चमकदार धुएं के कारण वह उसे मुश्किल से पहचान पा रहा था। यह वही मधुर, लुप्त हस्ती थी, वही तारा जो छह महीनों से उस पर चमक रहा था; वही आँखें, वही माथा, वही मुँह, वही

प्यारा लुप्त चेहरा जिसने अपने जाने से रात का सन्नाटा छा दिया था। वह दृश्य ग्रहण से मिट गया था, अब वह फिर से प्रकट हुआ।

वह उस अंधकार में, उस अटारी में, उस बदसूरत अटारी में, उस सारी भयावहता में फिर से प्रकट हुआ।

मारियस अचरज से कांप उठा। अरे! ये तो वो थी! उसके दिल की धड़कन इतनी तेज़ हो गई कि उसकी नज़र धुंधली हो गई। उसे लगा जैसे वो फूट-फूट कर रो पड़ेगा! अरे! इतने लंबे समय तक उसे ढूंढने के बाद आखिरकार उसने उसे फिर से देख लिया! उसे ऐसा लगा जैसे उसने अपनी आत्मा खो दी थी और अब उसे फिर से पा लिया हो।

वह पहले जैसी ही थी, बस थोड़ी पीली पड़ गई थी; उसका कोमल चेहरा बैंगनी मखमल की टोपी से ढका हुआ था, उसका शरीर काले साटन के आवरण में छिपा हुआ था। उसकी लंबी पोशाक के नीचे से रेशमी बूट में सजे उसके छोटे पैर की एक झलक दिखाई दे रही थी।

उनके साथ अभी भी एम. लेब्लांक थे।

वह कमरे में कुछ कदम चलकर अंदर आई और मेज पर एक काफी बड़ा पार्सल रख दिया।

जोंड्रेट परिवार की सबसे बड़ी बेटी दरवाजे के पीछे चली गई थी और उदास आँखों से उस मखमली टोपी, उस रेशमी लबादे और उस मनमोहक, खुश चेहरे को घूर रही थी।

IX. जोंड्रेट रोने के करीब आ जाती है

वह झोपड़ी इतनी अंधेरी थी कि बाहर से आने वाले लोगों को उसमें प्रवेश करते ही तहखाने में प्रवेश करने जैसा अनुभव होता था। इसलिए, दोनों नवागंतुक कुछ हिचकिचाहट के साथ आगे बढ़े, क्योंकि वे अपने चारों ओर धुंधली आकृतियों को मुश्किल से पहचान पा रहे थे, जबकि अटारी में रहने वाले लोग, जो इस धुंधलेपन के आदी थे, उन्हें स्पष्ट रूप से देख और परख सकते थे।
एम. लेब्लांक उदास लेकिन दयालु भाव से पास आए और जोन्ड्रेट के पिता से कहा:—
"महाशय, इस पैकेज में आपको कुछ नए कपड़े और कुछ ऊनी मोजे और कंबल मिलेंगे।" "हमारे दिव्य दैवीय संरक्षक ने हमें अभिभूत कर दिया है," जोंड्रेट ने धरती को प्रणाम करते हुए कहा।
फिर, जब दोनों आगंतुक इस दयनीय आंतरिक भाग का निरीक्षण करने में व्यस्त थे, तब वह अपनी सबसे बड़ी बेटी के कान के पास झुककर धीमी और तेज़ आवाज़ में बोले:—
“अरे? मैंने क्या कहा था? निकम्मे! पैसे नहीं! सब एक जैसे हैं! वैसे, उस बूढ़े मूर्ख को लिखे पत्र पर कैसे हस्ताक्षर किए गए थे?”
“फैबंटू,” लड़की ने जवाब दिया।
“नाटकीय कलाकार, बहुत बढ़िया!”
जोंड्रेट के लिए यह सौभाग्य की बात थी कि यह विचार उनके मन में आया, क्योंकि ठीक उसी क्षण, एम. लेब्लांक उनकी ओर मुड़े और एक ऐसे व्यक्ति के भाव से उनसे कहा जो किसी नाम को याद करने की कोशिश कर रहा हो:—
“मुझे लगता है कि आप बेहद दयनीय हैं, महाशय—”
“फैबंटू,” जोंड्रेट ने तुरंत जवाब दिया।
“महाशय फैबंटू, जी हाँ, यही है। मुझे याद है।”
“महाराज, आप एक नाट्य कलाकार हैं, और आपने कुछ हद तक सफलता भी हासिल की है।”

यहां जोन्ड्रेट ने स्पष्ट रूप से "परोपकारी" को पकड़ने के लिए उपयुक्त क्षण को समझा। उन्होंने एक ऐसे लहजे में कहा जो एक ही समय में मेलों में बैठे बाज़ीगर के घमंड और राजमार्ग पर भीख मांगने वाले की विनम्रता को दर्शाता था:
“तालमा का शिष्य! महोदय! मैं तालमा का शिष्य हूँ! पहले भाग्य मुझ पर मेहरबान था—अफ़सोस! अब दुर्भाग्य की बारी है। देखिए, मेरे उपकारी, न रोटी है, न आग। मेरे नन्हे-मुन्नों के लिए आग नहीं है! मेरी इकलौती कुर्सी पर बैठने की जगह नहीं है! खिड़की का शीशा टूटा हुआ है! और ऐसे मौसम में! मेरी पत्नी बिस्तर पर है! बीमार!”
“बेचारी औरत!” एम. लेब्लांक ने कहा।
“मेरा बच्चा घायल हो गया!” जोंड्रेट ने आगे कहा।
अजनबियों के आने से ध्यान भटकने के कारण बच्चा "युवती" के बारे में सोचने लगा था और उसने रोना बंद कर दिया था।
“रोओ! जोर-जोर से रोओ!” जोंड्रेट ने धीमी आवाज में उससे कहा।
उसी समय उसने उसके सूजे हुए हाथ को चुटकी से दबाया। यह सब उसने एक जादूगर की कुशलता से किया।
छोटी बच्ची जोर-जोर से चीखने लगी।
वह प्यारी सी युवती, जिसे मारियस अपने मन में "अपनी उर्सुले" कहता था, तेजी से उसके पास पहुंची।
“बेचारी, प्यारी बच्ची!” उसने कहा।
“देखो, मेरी प्यारी युवती,” जोंड्रेट ने आगे कहा, “उसकी खून से लथपथ कलाई! यह एक दुर्घटना में लगी जब वह दिन के छह सू कमाने के लिए मशीन पर काम कर रही थी। हो सकता है कि उसका हाथ काटना पड़े।”
“सचमुच?” बूढ़े सज्जन ने घबराकर कहा।
इस बात को गंभीरता से लेते हुए छोटी बच्ची पहले से भी ज्यादा जोर-जोर से रोने लगी।
“हाय! जी हाँ, मेरे उपकारी!” पिता ने उत्तर दिया।

कई मिनटों तक, जोन्ड्रेट "उपकारी" को एक अनोखे अंदाज़ में निहार रहा था। बोलते समय, वह दूसरे व्यक्ति को ध्यान से परख रहा था, मानो उसकी यादों को ताज़ा करने की कोशिश कर रहा हो। अचानक, जब नए लोग बच्ची से उसके घायल हाथ के बारे में उत्सुकता से सवाल कर रहे थे, तो उसने मौका देखकर अपनी पत्नी के पास से गुज़रा, जो अपने बिस्तर पर मूर्ख और उदास भाव से लेटी थी, और उससे तेज़ लेकिन बहुत धीमी आवाज़ में कहा:—

उस आदमी को देखो!

फिर, एम. लेब्लांक की ओर मुड़ते हुए, और अपने विलाप को जारी रखते हुए:—

“देखिए, महोदय! मेरे पास जो भी कपड़े हैं, वो मेरी पत्नी की कमीज़ है! और वो भी फटी हुई! कड़ाके की ठंड में! कोट न होने के कारण मैं बाहर नहीं जा सकता। अगर मेरे पास किसी भी तरह का कोट होता, तो मैं मैडमोजेल मार्स से मिलने जाता, जो मुझे जानती हैं और मुझसे बहुत प्यार करती हैं। क्या वो अभी भी रू डे ला टूर-डेस-डेम्स में नहीं रहतीं? क्या आपको पता है, महोदय? हम प्रांतों में साथ खेले थे। मैंने उनकी उपलब्धियों में हिस्सा लिया था। सेलिमेन मेरी मदद के लिए आतीं, महोदय! एल्मायर बेलिसेयर को दान देतीं! लेकिन नहीं, कुछ नहीं! और घर में एक पैसा भी नहीं! मेरी पत्नी बीमार है, और एक पैसा भी नहीं! मेरी बेटी गंभीर रूप से घायल है, एक पैसा भी नहीं! मेरी पत्नी को घुटन के दौरे पड़ते हैं। यह उनकी उम्र के कारण है, और इसके अलावा, उनका तंत्रिका तंत्र भी प्रभावित है। उन्हें और मेरी बेटी को भी सहायता मिलनी चाहिए! लेकिन डॉक्टर! लेकिन दवाखाना! मैं उन्हें कैसे भुगतान करूँ? मैं एक पैसे के आगे घुटने टेक दो, महोदय! कलाओं की यही हालत हो गई है। और क्या आप जानती हैं, मेरी प्यारी युवती, और आप, मेरे उदार संरक्षक, क्या आप जानते हैं, आप जो सद्गुण और अच्छाई का संचार करते हैं, और जो उस गिरजाघर को सुगंधित करते हैं जहाँ मेरी बेटी आपको हर दिन प्रार्थना करते हुए देखती है?—क्योंकि मैंने अपने बच्चों को धार्मिक रूप से पाला है, महोदय। मैं नहीं चाहती थी कि वे थिएटर में जाएँ। आह! ये बदचलन औरतें! अगर मैंने उन्हें ठोकर खाते हुए पकड़ लिया! मैं मजाक नहीं कर रही हूँ! मैंने उन्हें सम्मान, नैतिकता और सद्गुण के पाठ पढ़ाए हैं! उनसे पूछिए! उन्हें सीधा चलना है। वे आपके उन अभागे लोगों में से नहीं हैं जो बिना परिवार के शुरुआत करते हैं और अंत में जनता से शादी कर लेते हैं। एक मैम्सेल नोबडी होती है, और एक मैडम एवरीबॉडी

बन जाती है। धिक्कार है! फैबंटू परिवार में ऐसा कुछ नहीं! मेरा इरादा उन्हें सद्गुणों से पालना है, और वे ईमानदार, अच्छे और ईश्वर में विश्वास करने वाले होंगे, पवित्र नाम से! अच्छा, महोदय, मेरे आदरणीय महोदय, क्या आप क्या आप जानते हैं कि कल क्या होने वाला है? कल फरवरी का चौथा दिन है, मनहूस दिन, मेरे मकान मालिक द्वारा दी गई आखिरी मोहलत; अगर आज शाम तक मैंने किराया नहीं चुकाया, तो कल मेरी सबसे बड़ी बेटी, मेरी पत्नी (जो बुखार से पीड़ित है), मेरा बच्चा (जो घायल है)—हम चारों को यहाँ से निकाल दिया जाएगा और सड़क पर, बिना किसी आश्रय के, बारिश और बर्फ में फेंक दिया जाएगा। लीजिए, महोदय। मुझ पर चार तिमाहियों का किराया बकाया है—पूरे एक साल का! यानी साठ फ्रैंक।

जोंड्रेट ने झूठ बोला। चार तिमाहियों की कुल राशि केवल चालीस फ्रैंक होती, और वह चार तिमाहियों का कर्जदार नहीं हो सकता था, क्योंकि मारियस द्वारा दो तिमाहियों का भुगतान किए जाने के बाद से छह महीने नहीं बीते थे।

एम. लेब्लांक ने अपनी जेब से पांच फ्रैंक निकाले और उन्हें मेज पर फेंक दिया।

जोंड्रेट ने अपनी सबसे बड़ी बेटी के कान में कुछ बुदबुदाने का समय निकाल लिया:—

“वह बदमाश! उसे क्या लगता है कि मैं उसके पाँच फ्रैंक का क्या करूँगी? उससे तो मेरी कुर्सी और शीशे का खर्च भी पूरा नहीं होगा! खर्च करने का यही नतीजा होता है!”

इसी बीच, एम. लेब्लांक ने अपने नीले कोट के ऊपर पहना हुआ बड़ा भूरा ओवरकोट उतार दिया था और उसे कुर्सी की पीठ पर फेंक दिया था।

“महाशय फैबंटू,” उसने कहा, “मेरे पास बस ये पाँच फ्रैंक ही हैं, लेकिन अब मैं अपनी बेटी को घर ले जाऊंगा और आज शाम को लौट आऊंगा—आपको आज शाम को ही भुगतान करना होगा, है ना?”

जोंड्रेट के चेहरे पर एक अजीब सी चमक आ गई। उसने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया:

"जी हां, महोदय। मुझे आठ बजे अपने मकान मालिक के घर पर होना है।"

मैं छह बजे यहाँ आऊँगा और आपके लिए साठ फ्रैंक ले आऊँगा।

“मेरे उपकारक!” जॉन्ड्रेट ने भावुक होकर कहा। और उसने धीमी आवाज़ में कहा, “ज़रा उसे ध्यान से देखो, पत्नी!”
एम. लेब्लांक ने एक बार फिर उस युवती का हाथ पकड़ा और दरवाजे की ओर मुड़ गए।
“आज शाम तक के लिए अलविदा, मेरे दोस्तों!” उसने कहा।
“छह बजे?” जोंड्रेट ने कहा।
"ठीक छह बजे।"
उसी क्षण, कुर्सी पर पड़ा ओवरकोट बड़ी जोंड्रेट लड़की की नजर में आ गया।
“आप अपना कोट भूल रहे हैं, महोदय,” उसने कहा।
जोंड्रेट ने अपनी बेटी पर एक विनाशकारी नज़र डाली और साथ ही कंधों को एक दुर्जेय भाव से उचका दिया।
एम. लेब्लांक ने पीछे मुड़कर मुस्कुराते हुए कहा:—
मैं इसे भूला नहीं हूँ, मैं इसे छोड़ रहा हूँ।
“हे मेरे रक्षक!” जोन्ड्रेट ने कहा, “मेरे परम उपकारक, मैं आँसू बहा रही हूँ! मुझे आपके रथ तक आपके साथ चलने की अनुमति दीजिए।”
एम. लेब्लांक ने उत्तर दिया, “अगर आप बाहर निकलें, तो यह कोट पहन लें। सच में बहुत ठंड है।”
जोंड्रेट को दोबारा कहने की ज़रूरत नहीं पड़ी। उसने झटपट भूरे रंग का ओवरकोट पहन लिया। और तीनों बाहर निकल पड़े, जोंड्रेट उन दोनों अजनबियों से आगे चल रहा था।

X. लाइसेंस प्राप्त कैब का किराया: दो फ्रैंक प्रति घंटा

मारियस ने इस पूरे दृश्य में से कुछ भी नहीं खोया था, और वास्तव में, उसने कुछ देखा भी नहीं था। उसकी आँखें उस युवती पर टिकी हुई थीं, मानो उसका दिल उस अटारी में उसके पहले कदम से ही उसे अपने वश में कर चुका था। वहाँ उसके पूरे प्रवास के दौरान, उसने उस आनंदमय जीवन को जिया था जो भौतिक धारणाओं को निलंबित कर देता है और पूरी आत्मा को एक बिंदु पर केंद्रित कर देता है। वह उस युवती को नहीं, बल्कि उस प्रकाश को निहार रहा था जिसने रेशमी फर और मखमली टोपी पहन रखी थी। अगर सीरियस तारा भी कमरे में आ जाता, तो भी वह इतना चकित नहीं होता।

जब वह युवती पैकेज खोल रही थी, कपड़े और कंबल फैला रही थी, बीमार माँ से प्यार से और घायल छोटी बच्ची से कोमलता से सवाल कर रही थी, तब मारियस उसकी हर हरकत को देख रहा था, उसके शब्दों को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। वह उसकी आँखें, उसका माथा, उसकी सुंदरता, उसका रूप, उसकी चाल जानता था, लेकिन उसकी आवाज़ नहीं जानता था। उसे एक बार लगा था कि उसने लक्ज़मबर्ग में उसके कुछ शब्द सुने थे, लेकिन वह इस बात को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं था। वह उस संगीत को सुनने के लिए अपने जीवन के दस साल दे देता, ताकि वह अपनी आत्मा में उस संगीत का थोड़ा सा अंश संजो सके। लेकिन जोन्ड्रेट की विलाप भरी चीखों और तुरही जैसी आवाज़ों में सब कुछ डूब गया। इससे मारियस के आनंद में वास्तविक क्रोध का भाव भी जुड़ गया। उसने उसे अपनी आँखों से निहारा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उस भयानक गुफा में उन घिनौने प्राणियों के बीच वह सचमुच वही दिव्य प्राणी है जिसे वह देख रहा था। उसे ऐसा लगा जैसे वह मेंढकों के बीच एक हमिंगबर्ड को देख रहा हो।

जब वह चली गई, तो उसके मन में बस एक ही विचार था - उसका पीछा करना, उसके निशान का पीछा करते रहना, जब तक उसका पता न चल जाए तब तक उसका पीछा न छोड़ना, उसे फिर से न खोना, कम से कम इतनी चमत्कारिक रूप से उसे फिर से पाने के बाद तो बिल्कुल नहीं। वह कमोड से कूदा और अपनी टोपी पकड़ ली। जैसे ही

उसने दरवाजे के ताले पर हाथ रखा और उसे खोलने ही वाला था कि अचानक एक विचार ने उसे रोक दिया। गलियारा लंबा था, सीढ़ियाँ खड़ी थीं, जोंड्रेट बातूनी थी, एम. लेब्लांक निस्संदेह अभी तक अपनी गाड़ी पर नहीं चढ़ा था; अगर गलियारे में या सीढ़ियों पर मुड़ते ही उसकी नज़र उस घर में मारियस पर पड़ गई, तो ज़ाहिर है वह घबरा जाएगा और उससे फिर से भागने का रास्ता खोज लेगा, और इस बार यह आखिरी होगा। वह क्या करे? क्या उसे थोड़ा इंतज़ार करना चाहिए? लेकिन इंतज़ार करते-करते गाड़ी चल भी सकती थी। मारियस असमंजस में था। आखिरकार उसने जोखिम उठाया और अपने कमरे से बाहर निकल गया।

गलियारे में कोई नहीं था। वह सीढ़ियों की ओर भागा। सीढ़ियों पर भी कोई नहीं था। वह पूरी हड़बड़ी में नीचे उतरा और बुलेवार्ड पर पहुँचते ही उसने देखा कि एक छोटी सी गाड़ी (फियाक्रे) रू डू पेटिट-बैंकियर के कोने से मुड़कर पेरिस की ओर वापस जा रही थी।

मारियस तेज़ी से उसी दिशा में दौड़ा। बुलेवार्ड के कोने पर पहुँचते ही उसकी नज़र फिर से उस फालतू आदमी पर पड़ी, जो तेज़ी से रू मुफेटार्ड से नीचे उतर रहा था; गाड़ी बहुत दूर जा चुकी थी और उसे पकड़ने का कोई रास्ता नहीं था; क्या! उसका पीछा करें? नामुमकिन; और वैसे भी, गाड़ी में बैठे लोग ज़रूर किसी फालतू आदमी का पीछा करते हुए उसे देख लेते और पिता उसे पहचान लेता। उसी क्षण, अद्भुत और अप्रत्याशित सौभाग्य से, मारियस ने बुलेवार्ड पर एक खाली टैक्सी को गुजरते देखा। अब बस एक ही रास्ता बचा था, इस टैक्सी में कूदकर फालतू आदमी का पीछा करना। यह पक्का, कारगर और खतरे से मुक्त था।

मारियस ने ड्राइवर को रुकने का इशारा किया और उसे पुकारा:—

"समय के साथ?"

मारियस ने टाई नहीं पहनी थी, उसने अपना काम करने वाला कोट पहना हुआ था, जिसमें बटन नहीं थे, उसकी कमीज छाती पर लगी एक सिलवट के पास से फटी हुई थी।

ड्राइवर रुका, आँख मारी और मारियस की ओर अपना बायाँ हाथ बढ़ाया, अपनी तर्जनी उंगली को अपने अंगूठे से धीरे से रगड़ा।

“यह क्या है?” मारियस ने कहा।

“पहले से भुगतान कर दो,” कोचवान ने कहा।

मारियस को याद आया कि उसके पास केवल सोलह सू ही थे।

“कितने?” उसने पूछा।

चालीस सू।

मैं लौटने पर भुगतान कर दूंगा।

ड्राइवर की एकमात्र प्रतिक्रिया ला पालिस की धुन में सीटी बजाना और अपने घोड़े को चाबुक मारना थी।

मारियस ने विरह भरी निगाहों से दूर जाती हुई कैब्रियोलेट कार को देखा। चौबीस सू (लगभग 25 यूरो) के अभाव में वह अपना आनंद, अपनी खुशी, अपना प्यार खो रहा था! उसने देखा था, और वह फिर से अंधा हो रहा था। उसने कड़वाहट से, और यह स्वीकार करना होगा कि गहरे अफसोस के साथ, उन पाँच फ़्रैंकों पर विचार किया जो उसने उसी सुबह उस अभागी लड़की को दिए थे। अगर उसके पास वे पाँच फ़्रैंक होते, तो वह बच जाता, उसका पुनर्जन्म होता, वह अंधकार और अधर से बाहर निकल आता, वह अकेलेपन और उदासी से, अपनी विधवा अवस्था से मुक्ति पा लेता; वह अपने भाग्य के काले धागे को उस सुंदर सुनहरे धागे से फिर से जोड़ सकता था, जो अभी उसकी आँखों के सामने तैरा था और उसी क्षण एक बार फिर टूट गया था! वह निराशा में अपनी झोपड़ी में लौट आया।

उसने शायद खुद से कहा होगा कि एम. लेब्लांक ने शाम को लौटने का वादा किया था, और उसे बस इतना करना था कि वह इस मामले को और अधिक कुशलता से निपटाए, ताकि वह उस अवसर पर उसका अनुसरण कर सके; लेकिन, अपने चिंतन में, यह संदेह है कि उसने यह सुना भी था या नहीं।

जैसे ही वह सीढ़ियों पर चढ़ने ही वाला था, उसने बुलेवार्ड के दूसरी ओर, रू डे ला बैरियर-डेस-गोबेलिन्स के किनारे बनी सुनसान दीवार के पास, जोन्ड्रेट को "परोपकारी" के ओवरकोट में लिपटा हुआ देखा, जो उन संदिग्ध दिखने वाले लोगों में से एक के साथ बातचीत कर रहा था, जिन्हें आम सहमति से "बाधाओं के लुटेरे" कहा जाता है; ऐसे लोग जिनके चेहरे अस्पष्ट होते हैं, जो संदेह भरी बातें करते हैं, जिनके इरादे बुरे लगते हैं, और जो आम तौर पर दिन में सोते हैं, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे रात में काम करते हैं।

बर्फ के बवंडर की तरह गिरते हुए, वहाँ स्थिर खड़े होकर बातें करते हुए ये दोनों व्यक्ति एक ऐसा समूह बना रहे थे जिसे एक पुलिसकर्मी निश्चित रूप से देख लेता, लेकिन मारियस ने शायद ही उस पर ध्यान दिया।

फिर भी, अपनी गहरी उदासी के बावजूद, वह मन ही मन यह कहने से खुद को रोक नहीं पाया कि जिस व्यक्ति से जोन्ड्रेट बात कर रही थी, वह किसी पंचौद उर्फ़ प्रिंटानियर उर्फ़ बिग्रेनाइल जैसा दिखता था, जिसे कौरफेयरैक ने एक बार उसे एक बेहद खतरनाक रात्रिचर अपराधी बताया था। इस व्यक्ति का नाम पाठक पिछली पुस्तक में जान चुके हैं। यह पंचौद उर्फ़ प्रिंटानियर उर्फ़ बिग्रेनाइल बाद में कई आपराधिक मुकदमों में शामिल हुआ और एक कुख्यात बदमाश बन गया। उस समय वह केवल एक प्रसिद्ध बदमाश था। आज वह गुंडों और हत्यारों के बीच एक परंपरा बन चुका है। वह पिछले शासनकाल के अंत में एक गिरोह का मुखिया था। और शाम को, सूर्यास्त के समय, जब समूह बनते हैं और फुसफुसाते हुए बातें करते हैं, तो फॉसे-ऑक्स-लायंस के ला फोर्स में उसकी चर्चा होती थी। उस जेल में, ठीक उसी जगह पर जहाँ से 1843 में तीस कैदियों के अभूतपूर्व दिनदहाड़े भागने का जरिया बना सीवर पुलिया के नीचे से गुजरता है, कोई उसका नाम, पंचौड़, पढ़ सकता है, जो उसने भागने के अपने एक प्रयास के दौरान साहसपूर्वक सीवर की दीवार पर उकेरा था। 1832 में पुलिस की नज़र उस पर पहले से ही थी, लेकिन उसने अभी तक कोई गंभीर शुरुआत नहीं की थी।

XI. दुख से लेकर दयनीयता तक सेवा के प्रस्ताव

मारियस धीरे-धीरे झोपड़ी की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था; जैसे ही वह अपनी कोठरी में वापस जाने वाला था, उसकी नज़र बड़ी जोंड्रेट लड़की पर पड़ी जो गलियारे से उसका पीछा कर रही थी। उस लड़की को देखते ही उसे घिन आ गई; उसी ने उसके पाँच फ्रैंक ले रखे थे, अब उन्हें वापस माँगने का कोई फ़ायदा नहीं था, टैक्सी वहाँ नहीं थी, और फ़ियाक्रे बहुत दूर जा चुका था। इसके अलावा, वह उन्हें वापस भी नहीं देती। जहाँ तक उससे उन लोगों के पते के बारे में पूछने की बात थी जो अभी-अभी वहाँ आए थे, वह भी बेकार था; यह स्पष्ट था कि उसे पता नहीं था, क्योंकि फैबंटू के हस्ताक्षर वाला पत्र "सेंट-जैक्स-डु-हाउट-पास के चर्च के परोपकारी सज्जन" को संबोधित था।

मारियस अपने कमरे में दाखिल हुआ और उसके पीछे दरवाजा धकेल दिया।

वह बंद नहीं हुआ; उसने मुड़कर देखा तो उसे एक हाथ दिखाई दिया जिसने दरवाजे को आधा खुला रखा हुआ था।

“क्या बात है?” उसने पूछा, “वहाँ कौन है?”

वह जोंड्रेट नाम की लड़की थी।

"क्या तुम ही हो?" मारियस ने लगभग कठोर स्वर में पूछा, "अभी भी तुम ही हो! मुझसे क्या चाहते हो?"

वह सोच में डूबी हुई लग रही थी और उसने उसकी तरफ नहीं देखा। उसके चेहरे पर अब वह आत्मविश्वास नहीं था जो उस सुबह उसके चेहरे पर था। वह अंदर नहीं गई, बल्कि गलियारे के अंधेरे में रुकी रही, जहाँ मारियस उसे आधे खुले दरवाजे से देख सकता था।

“अब बताओ, क्या तुम जवाब दोगे?” मारियस चिल्लाया। “तुम मुझसे क्या चाहते हो?”

उसने अपनी बेजान आँखों को ऊपर उठाया, जिनमें एक हल्की सी चमक मंद-मंद सी झिलमिलाती हुई प्रतीत हो रही थी, और बोली:—

“महाशय मारियस, आप उदास लग रहे हैं। आपको क्या हुआ है?”

“मेरे साथ!” मारियस ने कहा।

"हां तुम।"

मुझे कोई बीमारी नहीं है।

"हाँ वहाँ है!"

"नहीं।"

मैं आपको बताता हूँ, ऐसा है!

"मुझे अकेला छोड़ दो!"

मारियस ने दरवाजे को एक और बार धक्का दिया, लेकिन उसने उसे मजबूती से पकड़े रखा।

“रुको,” उसने कहा, “तुम गलत हो। हालांकि तुम अमीर नहीं हो, फिर भी आज सुबह तुमने दयालुता दिखाई। अब भी वैसे ही रहो। तुमने मुझे कुछ खाने को दिया, अब बताओ तुम्हें क्या तकलीफ है। तुम दुखी हो, यह साफ है। मैं नहीं चाहती कि तुम दुखी रहो। इसके लिए क्या किया जा सकता है? क्या मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकती हूँ? मुझे काम पर लगाओ। मैं तुमसे तुम्हारे राज़ नहीं पूछ रही, तुम्हें मुझे बताने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन फिर भी मैं तुम्हारे काम आ सकती हूँ। मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ, क्योंकि मैं अपने पिता की मदद करती हूँ। जब चिट्ठियाँ पहुँचानी हों, घर-घर जाना हो, घर-घर जाकर पूछताछ करनी हो, पता पता करना हो, किसी का पीछा करना हो, मैं हमेशा तैयार रहती हूँ। ठीक है, तुम मुझे बेझिझक बताओ कि तुम्हें क्या हुआ है, और मैं जाकर उन लोगों से बात करूँगी; कभी-कभी किसी का लोगों से बात करना ही काफी होता है, इससे उन्हें बात समझ आ जाती है और सब ठीक हो जाता है। मेरी मदद लो।”

मारियस के मन में एक विचार कौंधा। जब किसी को लगता है कि वह गिर रहा है, तो वह किस शाखा को तुच्छ समझता है?

वह जोंड्रेट लड़की के पास पहुंचा।

“सुनो—” उसने उससे कहा।
उसकी आंखों में खुशी की चमक थी और उसने बीच में ही उसकी बात काट दी। "हाँ, मुझे 'तू' कहकर ही बुलाओ! मुझे यह ज्यादा अच्छा लगता है।"
“अच्छा,” उसने बात फिर से शुरू करते हुए कहा, “तुम उस बूढ़े सज्जन और उनकी बेटी को यहाँ ले आए हो!”
"हाँ।"
क्या तुम्हें उनका पता पता है?
"नहीं।"
"मेरे लिए इसे ढूंढो।"
जोंड्रेट की बेजान आँखों में पहले खुशी झलक रही थी, लेकिन अब वे उदास हो गईं।
“क्या तुम यही चाहते हो?” उसने पूछा।
"हाँ।"
"क्या आप उन्हें जानते हैं?"
"नहीं।"
"कहने का मतलब यह है," उसने जल्दी से बात दोहराई, "कि आप उसे नहीं जानते, लेकिन आप उसे जानना चाहते हैं।"
यह "वे" जो "वह" में बदल गए थे, उसमें कुछ अवर्णनीय रूप से महत्वपूर्ण और कड़वाहट भरी बात थी।
“अच्छा, क्या तुम यह कर सकते हो?” मारियस ने कहा।
आपको उस सुंदर महिला का पता मिल जाएगा।
“सुंदर महिला” शब्दों में अब भी एक अस्पष्टता थी जिसने मारियस को परेशान कर दिया। उसने फिर बोलना शुरू किया:—
“कोई बात नहीं, पिता और पुत्री के पते की। उनका पता तो वैसे भी!”
वह उसे टकटकी लगाकर देखती रही।

“तुम मुझे क्या दोगे?”

"आप की तरह कुछ भी।"

"क्या मुझे कुछ पसंद आएगा?"

"हाँ।"

आपको पता मिल जाएगा।

उसने अपना सिर झुका लिया; फिर, एक झटके से, वह दरवाजे की ओर बढ़ी, जो उसके पीछे बंद हो गया।

मारियस ने खुद को अकेला पाया।

वह कुर्सी पर सिर और दोनों कोहनियाँ बिस्तर पर टिकाकर बैठ गया, अनसुलझे विचारों में डूबा हुआ, मानो उसे चक्कर आ रहे हों। सुबह से जो कुछ भी घटित हुआ था, देवदूत का प्रकट होना, उसका गायब हो जाना, उस प्राणी ने उससे जो कहा था, घोर निराशा में तैरती आशा की एक किरण—यही सब उसके दिमाग में उलझन पैदा कर रहा था।

अचानक ही वह अपनी तन्मयता से हिंसक रूप से जाग उठा।

उसने जोंड्रेट की तीखी, कठोर आवाज में ये शब्द सुने, जिनमें उसके लिए एक अजीब सी दिलचस्पी थी:

मैं तुमसे कहता हूँ कि मुझे इस बात का पूरा यकीन है, और मैंने उसे पहचान लिया था।

जोंड्रेट किसके बारे में बात कर रहा था? उसने किसे पहचाना था? एम. लेब्लांक? "उसकी उर्सुले" के पिता? क्या! क्या जोंड्रेट उसे जानता था? क्या मारियस को इस अचानक और अप्रत्याशित तरीके से वह सारी जानकारी मिलने वाली थी जिसके बिना उसका जीवन इतना अंधकारमय था? क्या उसे आखिरकार पता चलने वाला था कि वह किससे प्यार करता था, वह युवती कौन थी? उसका पिता कौन था? क्या उन पर मंडरा रहा घना साया छंटने वाला था? क्या पर्दा हटने वाला था? हे भगवान!

वह अपने कमोड पर चढ़ने के बजाय उछल पड़ा और विभाजन दीवार में बने छोटे से छेद के पास अपनी जगह पर फिर से बैठ गया।

उसने एक बार फिर जोंड्रेट की झोपड़ी के अंदरूनी हिस्से को देखा।

XII. एम. लेब्लांक के पांच-फ्रैंक के सिक्के का उपयोग

परिवार के स्वरूप में कोई बदलाव नहीं आया, सिवाय इसके कि पत्नी और बेटियों ने भी सामान ले लिया था और ऊनी मोज़े और जैकेट पहन लिए थे। दोनों बिस्तरों पर दो नए कंबल बिछा दिए गए थे।

जोंड्रेट जाहिर तौर पर अभी-अभी लौटे थे। उनके चेहरे पर अभी भी बाहर रहने की वजह से सांस फूलने की समस्या थी। उनकी बेटियाँ अंगीठी के पास फर्श पर बैठी थीं, बड़ी बेटी छोटी बेटी के घायल हाथ पर पट्टी बाँध रही थी। उनकी पत्नी अंगीठी के पास बिस्तर पर लेटी हुई थीं, उनके चेहरे पर हैरानी के भाव थे। जोंड्रेट अटारी में बड़े-बड़े कदमों से चहलकदमी कर रहे थे। उनकी आँखें असाधारण थीं।

अपने पति की उपस्थिति में भयभीत और स्तब्ध प्रतीत होने वाली उस महिला ने मुड़कर कहा:—

“क्या, सचमुच? आपको पूरा यकीन है?”

“ज़रूर! आठ साल बीत गए! लेकिन मैं उसे पहचानता हूँ! आह! मैं उसे पहचानता हूँ। मैंने उसे देखते ही पहचान लिया! क्या! क्या यह बात अपने आप तुम पर हावी नहीं हुई?”

"नहीं।"

“लेकिन मैंने तुमसे कहा था: ‘ध्यान दो!’ अरे, ये तो उसका कद है, उसका चेहरा है, बस उम्रदराज लग रहा है—कुछ लोग तो बूढ़े नहीं होते, पता नहीं कैसे— उसकी आवाज़ ही अलग है। वो पहले से ज़्यादा अच्छे कपड़े पहने हुए है, बस! आह! तुम रहस्यमयी बूढ़े शैतान, मैंने तुम्हें पकड़ लिया, हाँ, मैंने!”

वह रुका और अपनी बेटियों से बोला:—

“यहाँ से निकल जाओ, तुम!—यह अजीब बात है कि तुम्हें यह बात समझ नहीं आई!”

वे आज्ञा मानने के लिए उठे।

मां हकलाते हुए बोली:—
"उसके घायल हाथ के साथ।"
जोंड्रेट ने कहा, "हवा से इसे फायदा होगा। चलो, यहाँ से चले जाओ।"
यह स्पष्ट था कि यह आदमी उस तरह का था जिसे कोई जवाब देने की हिम्मत नहीं करता था। दोनों लड़कियां चली गईं।
जैसे ही वे दरवाजे से बाहर निकलने वाले थे, पिता ने बड़ी बेटी का हाथ पकड़कर उसे एक अजीब लहजे में कहा:—
“तुम दोनों ठीक पाँच बजे यहाँ पहुँच जाओगे। मुझे तुम्हारी ज़रूरत पड़ेगी।”
मारियस ने अपना ध्यान दोगुना कर दिया।
अपनी पत्नी के साथ अकेले रह जाने पर, जोंड्रेट फिर से कमरे में इधर-उधर घूमने लगा और चुपचाप दो-तीन बार कमरे का चक्कर लगाया। फिर उसने कुछ मिनट तक अपनी पत्नी की कमीज़ के निचले हिस्से को, जिसे उसने पहन रखा था, अपनी पतलून में ठीक से दबा लिया।
अचानक ही, वह जोंड्रेट नाम की महिला की ओर मुड़ा, अपनी बाहें मोड़ीं और बोला:—
“और क्या आप मुझसे कुछ सुनना चाहेंगे? वह युवती—”
“तो फिर क्या?” उसकी पत्नी ने पलटकर पूछा, “वह युवती?”
मारियस को इस बात में कोई संदेह नहीं था कि वे सचमुच उसी के बारे में बात कर रहे थे। उसने बड़ी उत्सुकता से सुना। उसका पूरा जीवन उसके कानों में गूंज रहा था।
लेकिन जोंड्रेट झुक गया और अपनी पत्नी से फुसफुसाते हुए बोला। फिर वह सीधा हुआ और ज़ोर से बोला:—
“यह वही है!”
“वो वाला?” उसकी पत्नी ने कहा।
“बिल्कुल वही,” पति ने कहा।

माँ के शब्दों के महत्व को शब्दों में व्यक्त करना असंभव है। आश्चर्य, क्रोध, घृणा, रोष, सब कुछ एक भयानक स्वर में घुलमिल गया था। कुछ शब्दों का उच्चारण, और शायद वह नाम जो उसके पति ने उसके कान में फुसफुसाया था, इस विशाल, नींद में डूबी महिला को जगाने के लिए काफी था, और घृणित दिखने के बजाय वह भयानक हो उठी।

“यह मुमकिन नहीं!” वह चिल्लाई। “जब मैं सोचती हूँ कि मेरी बेटियाँ नंगे पैर चल रही हैं, और उनके पास पहनने के लिए गाउन भी नहीं है! क्या! साटन का कोट, मखमली टोपी, बूट, और सब कुछ; दो सौ फ्रैंक से भी ज़्यादा कीमत के कपड़े! ताकि कोई सोचे कि वह एक सभ्य महिला है! नहीं, आप गलत हैं! अरे, पहली बात तो यह है कि दूसरी बदसूरत थी, और यह इतनी बदसूरत नहीं है! वह सचमुच बदसूरत नहीं है! यह वह नहीं हो सकती!”

मैं तुमसे कहता हूँ कि वह वही है। तुम देख लोगे।

इस पुरज़ोर बयान पर, जोंड्रेट महिला ने अपना बड़ा, लाल, सुनहरे बालों वाला चेहरा ऊपर उठाया और भयानक भाव से छत को घूरने लगी। उस क्षण, वह मारियस को अपने पति से भी ज़्यादा खौफनाक लगने लगी। वह एक ऐसी सूअरनी थी जिसकी शक्ल शेरनी जैसी थी।

“क्या!” उसने फिर कहा, “वह भयानक, खूबसूरत युवती, जिसने मेरी बेटियों को दया भाव से देखा—वही तो भिखारी बच्ची है! ओह! मेरा मन कर रहा है कि मैं उसके पेट पर लात मार दूं!”

वह बिस्तर से उछलकर उठी और कुछ पल खड़ी रही, उसके बाल बिखरे हुए थे, नथुने फैले हुए थे, मुँह आधा खुला था, मुट्ठियाँ भींची हुई थीं और पीछे की ओर खिंची हुई थीं। फिर वह एक बार फिर बिस्तर पर गिर पड़ी। वह आदमी इधर-उधर टहलता रहा और उसने अपनी प्रेमिका पर कोई ध्यान नहीं दिया।

कई मिनटों की चुप्पी के बाद, वह जोंड्रेट नाम की महिला के पास पहुँचा और उसके सामने बाहें मोड़कर रुक गया, ठीक वैसे ही जैसे उसने कुछ क्षण पहले किया था:

और क्या मैं आपको एक और बात बताऊं?

“यह क्या है?” उसने पूछा।

उसने धीमी, संक्षिप्त आवाज़ में उत्तर दिया:

मेरी किस्मत बन गई है।

उस महिला ने उसे इस तरह घूरा जैसे उसका कहना हो: "क्या मुझसे बात करने वाला व्यक्ति पागल होने वाला है?"

उन्होंने आगे कहा:—

“हे भगवान! अभी कुछ ही दिन पहले की बात है जब मैं उस पल्ली का भक्त था जहाँ आग हो तो भूख से मरना, रोटी हो तो ठंड से मरना लिखा था! मैं इस दुख से तंग आ चुका हूँ! मेरा हिस्सा भी और दूसरों का हिस्सा भी! मैं अब मज़ाक नहीं कर रहा, मुझे अब इसमें कोई हास्य नहीं लगता, मैं इन शब्दों के खेल से तंग आ चुका हूँ, हे भगवान! अब और कोई तमाशा नहीं, हे परमपिता! मैं पेट भरकर खाना चाहता हूँ, जी भरकर पीना चाहता हूँ! जी भरकर खाना चाहता हूँ! सोना चाहता हूँ! कुछ नहीं करना चाहता! मैं भी अपनी बारी चाहता हूँ, तो आओ, अभी! मरने से पहले! मैं थोड़ा-बहुत करोड़पति बनना चाहता हूँ!”

उसने झोपड़ी का एक चक्कर लगाया और आगे कहा:—

"अन्य लोगों की तरह।"

“इसका क्या मतलब है?” महिला ने पूछा।

उसने अपना सिर हिलाया, आँख मारी, एक आँख सिकोड़ी और एक मेडिकल प्रोफेसर की तरह ऊँची आवाज़ में बोला, मानो वह कोई प्रदर्शन करने वाला हो:

“मेरा मतलब क्या है? सुनो!”

“चुप रहो!” महिला ने बुदबुदाते हुए कहा, “इतनी जोर से नहीं! ये ऐसी बातें हैं जिन्हें किसी को सुनना नहीं चाहिए।”

“अरे! कौन है यहाँ? हमारा पड़ोसी? मैंने उसे थोड़ी देर पहले बाहर जाते देखा था। वैसे भी, वह सुनता नहीं है, बड़ा बेवकूफ। और मैं आपको बता रहा हूँ कि मैंने उसे बाहर जाते देखा था।”

फिर भी, सहज प्रवृत्ति से प्रेरित होकर, जोन्ड्रेट ने अपनी आवाज़ धीमी कर ली, हालांकि इतनी भी नहीं कि मारियस को उसकी बातें सुनाई न दें। एक अनुकूल

परिस्थिति, जिसके कारण मारियस इस बातचीत का एक भी शब्द नहीं चूका, वह थी गिरती हुई बर्फ जिसने सड़क पर वाहनों की आवाज़ को दबा दिया था।

मारियस ने यही सुना:—

“ध्यान से सुनो। क्रोएसस पकड़ा गया है, या लगभग पकड़ा गया है! सब कुछ तय हो चुका है। सारी व्यवस्था हो चुकी है। मैंने कुछ लोगों से बात की है। वह आज शाम छह बजे यहाँ आएगा। साठ फ्रैंक लाने के लिए, बदमाश! क्या तुमने ध्यान दिया कि मैंने उसके साथ क्या खेल खेला, मेरे साठ फ्रैंक, मेरे मकान मालिक, मेरा चौथा फरवरी? मुझ पर तो एक चौथाई का भी कर्ज़ नहीं है! कितना मूर्ख है वो! तो वह छह बजे आएगा! यही वो समय है जब हमारा पड़ोसी खाना खाने जाता है। माँ बोगन शहर में बर्तन धोने गई हैं। घर में कोई नहीं है। पड़ोसी ग्यारह बजे तक घर नहीं आता। बच्चे पहरा देंगे। तुम हमारी मदद करोगे। वह मान जाएगा।”

“और अगर वह नहीं माना तो?” उसकी पत्नी ने पूछा।

जोंड्रेट ने एक भयावह इशारा किया और कहा:—

हम उसे ठीक कर देंगे।

और वह जोर से हंस पड़ा।

मारियस ने उसे पहली बार हंसते हुए देखा था। उसकी हंसी ठंडी और मधुर थी, और उसे सुनकर सिहरन सी दौड़ गई।

जोंड्रेट ने चिमनी के पास वाली अलमारी खोली और उसमें से एक पुरानी टोपी निकाली, जिसे उसने अपनी आस्तीन से झाड़कर अपने सिर पर रख लिया।

“अब,” उसने कहा, “मैं बाहर जा रहा हूँ। मुझे कुछ और लोगों से मिलना है। अच्छे लोग हैं। आप देखेंगे कि सब कुछ कितना बढ़िया चलेगा। मैं कम से कम समय के लिए ही बाहर रहूँगा, यह एक बढ़िया व्यापारिक योजना है, आप घर का ध्यान रखना।”

और दोनों मुट्ठियों को अपनी पतलून की जेबों में डालकर, वह एक पल के लिए सोच में डूबा रहा, फिर बोला:—

“जानते हो, ये तो बड़ी किस्मत की बात है कि उसने मुझे पहचाना नहीं! अगर उसने मुझे पहचान लिया होता, तो वो दोबारा वापस नहीं आता। वो हमारे हाथ से

फिसल जाता! मेरी दाढ़ी ने ही हमें बचाया! मेरी रोमांटिक दाढ़ी! मेरी प्यारी सी छोटी रोमांटिक दाढ़ी!”
और फिर वह जोर से हंस पड़ा।
वह खिड़की के पास गया। बर्फ अभी भी गिर रही थी और आसमान के धूसर रंग पर धारियाँ बना रही थी।
“कितना भयानक मौसम है!” उसने कहा।
फिर उसने अपना ओवरकोट अपनी छाती पर लपेट लिया:—
“यह छिलका मेरे लिए बहुत बड़ा है। कोई बात नहीं,” उसने आगे कहा, “उस बदमाश ने इसे मेरे लिए छोड़कर बड़ा ही अच्छा काम किया! अगर ऐसा न होता तो मैं बाहर नहीं जा पाता और सब कुछ गड़बड़ हो जाता! वैसे भी, छोटी-छोटी बातों पर ही तो सब कुछ टिका होता है!”
अपनी टोपी को आंखों पर खींचते हुए, वह कमरे से बाहर निकल गया।
दरवाजे से कुछ कदम चलने का भी उसे मुश्किल से ही समय मिला था कि दरवाजा फिर से खुल गया, और उसका क्रूर लेकिन बुद्धिमान चेहरा एक बार फिर उस खुले दरवाजे से दिखाई दिया।
“मैं लगभग भूल ही गया था,” उसने कहा। “तुम्हें कोयले से भरी अंगीठी तैयार रखनी है।”
और उसने अपनी पत्नी के एप्रन में पांच फ्रैंक का वह सिक्का फेंक दिया जो उस "परोपकारी" ने उसके पास छोड़ा था।
“कोयले की अंगीठी?” उसकी पत्नी ने पूछा।
"हाँ।"
“कितने बुशेल?”
“दो अच्छे।”
“इसका कुल बिल तीस सू होगा। बचे हुए पैसों से मैं रात के खाने के लिए कुछ खरीद लूंगा।”
बिलकुल नहीं।

"क्यों?"
"सौ सू का सिक्का खर्च करने मत जाओ।" "क्यों?"
क्योंकि मुझे भी कुछ खरीदना पड़ेगा।
"क्या?"
"कुछ।"
आपको कितने पैसे की आवश्यकता होगी?
"क्या आस-पास कहीं लोहे की दुकान है?"
“रू मौफेटार्ड।”
“अरे हाँ, गली के कोने पर; मुझे दुकान दिख रही है।”
"लेकिन मुझे बताओ कि तुम्हें जो चीजें खरीदनी हैं उनके लिए तुम्हें कितने पैसे की जरूरत होगी?"
“पचास सू—तीन फ्रैंक।”
रात के खाने के लिए ज्यादा कुछ नहीं बचेगा।
“आज खाने की बात नहीं है। इससे कहीं ज्यादा जरूरी काम है।”
"बस करो, मेरी जान।"
अपनी पत्नी के इस शब्द को सुनकर, जोंड्रेट ने फिर से दरवाजा बंद कर दिया, और इस बार, मारियस ने झोपड़ी के गलियारे में उसके कदमों की आवाज को धीरे- धीरे कम होते हुए सुना, और वह तेजी से सीढ़ियों से नीचे उतर गया।
ठीक उसी क्षण, सेंट-मेडार्ड के चर्च से एक बजने की आवाज आई।

XIII. अकेले में, एकांत स्थान पर, वे प्रार्थना करने के बारे में नहीं सोचेंगे।

जैसा कि हमने पहले भी कहा है, मारियस, जो एक स्वप्नद्रष्टा था, स्वभाव से दृढ़ और ऊर्जावान था। एकांत ध्यान की उसकी आदतों ने उसमें सहानुभूति और करुणा विकसित की थी, जिससे शायद चिड़चिड़ापन कम हो गया था, लेकिन क्रोध करने की शक्ति बरकरार थी; उसमें ब्राह्मण जैसी दयालुता और न्यायाधीश जैसी कठोरता थी; वह मेंढक पर दया करता था, लेकिन विषैले सांप को कुचल देता था। अब, उसकी दृष्टि विषैले सांपों के बिल पर पड़ी थी, उसकी आँखों के सामने राक्षसों का घोंसला था।

“इन दुष्टों को कुचल देना चाहिए,” उसने कहा।

जिन रहस्यों के सुलझने की उसे उम्मीद थी, उनमें से एक भी नहीं सुलझा; बल्कि, वे और भी जटिल हो गए थे; लक्ज़मबर्ग की सुंदर युवती और जिसे वह एम. लेब्लांक कहता था, उनके बारे में उसे इतना ही पता था कि जोन्ड्रेट उनसे परिचित थी। बोले गए रहस्यमय शब्दों के बीच, उसे केवल इतना ही स्पष्ट रूप से समझ आया कि एक घात लगाकर हमला करने की तैयारी चल रही थी, एक भयानक जाल बिछाया जा रहा था; कि दोनों ही बड़े खतरे में थे, वह शायद, और उसका पिता निश्चित रूप से; कि उन्हें बचाना होगा; कि जोन्ड्रेट परिवार की घिनौनी साजिशों को नाकाम करना होगा, और इन मकड़ियों के जाल को तोड़ना होगा।

उसने कुछ पल के लिए जोन्ड्रेट नाम की महिला को गौर से देखा। उसने एक कोने से लोहे की चादर से बना एक पुराना चूल्हा निकाला था और वह लोहे के पुराने ढेर में कुछ ढूंढ रही थी।

वह कमोड से यथासंभव धीरे से उतरा, इस बात का पूरा ध्यान रखते हुए कि ज़रा सी भी आवाज़ न हो। जो कुछ होने वाला था, उसके डर और जोंड्रेट्स द्वारा उत्पन्न भय के बीच, उसे इस विचार से एक प्रकार की खुशी भी महसूस हुई कि शायद उसे अपने प्रिय की सेवा करने का अवसर मिल सके।

लेकिन यह कैसे किया जाए? जिन लोगों को धमकी दी गई थी, उन्हें चेतावनी कैसे दी जाए? उसे उनका पता नहीं था। वे एक पल के लिए उसकी आँखों के सामने प्रकट हुए थे, और फिर पेरिस की विशाल गहराइयों में गायब हो गए थे। क्या उसे उस शाम छह बजे, एम. लेब्लांक के आने के समय, दरवाजे पर उनका इंतजार करना चाहिए और उन्हें जाल के बारे में चेतावनी देनी चाहिए? लेकिन जोंड्रेट और उसके आदमी उसे पहरा देते हुए देख लेंगे, वह जगह सुनसान थी, वे उससे ज़्यादा ताकतवर थे, वे उसे पकड़ने या भगाने का कोई न कोई तरीका निकाल लेंगे, और जिस आदमी को मारियस बचाना चाहता था, वह खो जाएगा। अभी एक बज चुका था, जाल छह बजे बिछाया जाना था। मारियस के पास पाँच घंटे थे।

अब बस एक ही रास्ता बचा था।

उसने अपना शालीन कोट पहना, गले में रेशमी रूमाल बांधा, अपनी टोपी ली और बाहर चला गया, मानो वह नंगे पैर काई पर चल रहा हो, उससे ज्यादा शोर किए बिना।

इसके अलावा, जोंड्रेट महिला अपने पुराने लोहे के सामान में खोजबीन करती रही।

घर से बाहर निकलते ही वह रू डू पेटिट-बैंकियर की ओर चल पड़ा।

वह लगभग गली के मध्य में पहुँच चुका था, एक बहुत नीची दीवार के पास, जिसे कुछ जगहों से आसानी से पार किया जा सकता था और जो एक खाली जगह से सटी हुई थी। वह अपनी व्यस्तता के कारण धीरे-धीरे चल रहा था और बर्फ़ के कारण उसके कदमों की आवाज़ धीमी हो गई थी; तभी अचानक उसे पास ही कुछ लोगों के बात करने की आवाज़ सुनाई दी। उसने अपना सिर घुमाया, गली सुनसान थी, वहाँ कोई नहीं था, दिन का उजाला था, फिर भी उसे आवाज़ें साफ़ सुनाई दे रही थीं।

उसे ख्याल आया कि वह जिस दीवार के किनारे चल रहा था, उस पर एक नजर डाल ले।

दरअसल, वहां दो आदमी बर्फ पर लेटे हुए थे, उनकी पीठ दीवार से लगी हुई थी और वे धीमी आवाज में आपस में बात कर रहे थे।

ये दोनों व्यक्ति उसके लिए अजनबी थे; एक दाढ़ी वाला व्यक्ति था जिसने ब्लाउज पहना हुआ था, और दूसरा लंबे बालों वाला व्यक्ति था जिसने फटे-

पुराने कपड़े पहने हुए थे। दाढ़ी वाले व्यक्ति ने टोपी पहन रखी थी, जबकि दूसरे का सिर खुला था और उसके बालों में बर्फ जमी हुई थी।
दीवार के ऊपर से अपना सिर निकालकर मारियस उनकी बातें सुन सकता था। बालदार व्यक्ति ने दूसरे आदमी की कोहनी को धक्का दिया और कहा:— “—संरक्षक मिनेट की सहायता से, यह असफल नहीं हो सकता।”
“क्या आपको ऐसा लगता है?” दाढ़ी वाले आदमी ने कहा।
और लंबे बालों वाले ने फिर बोलना शुरू किया:—
"यह प्रत्येक पांच सौ गेंदों के लिए वारंट के समान है, और सबसे बुरा जो हो सकता है वह पांच साल, छह साल, या अधिकतम दस साल की सजा है!"
दूसरे ने कुछ हिचकिचाहट के साथ और अपनी टोपी के नीचे कांपते हुए उत्तर दिया:—
“यह एक वास्तविक बात है। आप ऐसी चीजों के खिलाफ नहीं जा सकते।”
“मैं आपको बताता हूँ कि यह मामला कभी गलत नहीं हो सकता,” लंबे बालों वाले आदमी ने अपनी बात जारी रखी। “पिताजी, जिनका नाम मुझे याद नहीं आ रहा, उनकी टीम पहले से ही तैयार होगी।”
फिर उन्होंने उस मेलोड्रामा पर चर्चा शुरू की जिसे उन्होंने पिछली शाम गैटे थिएटर में देखा था।
मारियस अपने रास्ते चला गया।
उसे ऐसा लगा कि दीवार के पीछे अजीब तरह से छिपे और बर्फ में दुबके इन लोगों के रहस्यमय शब्द, जोन्ड्रेट की घिनौनी योजनाओं से अवश्य ही संबंधित होंगे। यही तो असली मामला होगा।
उसने अपना रास्ता सेंट-मार्सेउ उपनगर की ओर मोड़ा और रास्ते में मिलने वाली पहली दुकान पर पूछा कि उसे पुलिस का कार्यालय कहाँ मिल सकता है।
उन्हें रुए डे पोंटोइस, नंबर 14 की ओर निर्देशित किया गया।
मारियस वहां पहुंचा।

जब वह एक बेकरी की दुकान के पास से गुजरा, तो उसने दो पैसे का एक रोल खरीदा और उसे खा लिया, यह अनुमान लगाते हुए कि उसे रात का भोजन नहीं करना पड़ेगा।

रास्ते में, उसने ईश्वर के प्रति न्याय का भाव व्यक्त किया। उसने सोचा कि यदि उसने सुबह जोन्ड्रेट की बेटी को अपने पाँच फ्रैंक न दिए होते, तो वह एम. लेब्लांक के जाल में फँस जाता, और परिणामस्वरूप सब कुछ से अनजान रह जाता, और जोन्ड्रेटों के जाल में फँसने से बचने का कोई रास्ता नहीं होता और एम. लेब्लांक और उसकी बेटी, निस्संदेह, दोनों ही खो जाते।

XIV. जिसमें एक पुलिस एजेंट एक वकील पर मुट्ठी भर वार करता है

रुए डे पोंटोइस स्थित 14 वें मकान पर पहुँचकर वह पहली मंजिल पर गया और पुलिस स्टेशन के बारे में पूछताछ की।
“पुलिस का दफ्तर यहाँ नहीं है,” एक क्लर्क ने कहा; “लेकिन उनकी जगह एक इंस्पेक्टर मौजूद हैं। क्या आप उनसे बात करना चाहेंगे? क्या आपको जल्दी है?”
“हां,” मारियस ने कहा।
क्लर्क ने उसे राशनखाने के दफ्तर में ले गया। वहाँ एक लंबा आदमी एक जाली के पीछे, चूल्हे से टेक लगाकर खड़ा था और अपने तीन कॉलर वाले विशाल कोट के किनारों को दोनों हाथों से पकड़े हुए था। उसका चेहरा चौकोर था, पतले और दृढ़ होंठ, घनी, भूरी और बेहद खूंखार मूंछें थीं, और उसकी नज़र ऐसी थी कि जेबें उलट-पलट सकती थीं। उसकी उस नज़र के बारे में यह कहना उचित होगा कि वह भेदने वाली नहीं, बल्कि खोजबीन करने वाली थी।
इस आदमी का व्यवहार जोन्ड्रेट के व्यवहार से कम क्रूर या कम भयानक नहीं था; कभी-कभी कुत्ते का सामना करना भेड़िये से कम भयानक नहीं होता।
“आप क्या चाहते हैं?” उसने मारियस से कहा, बिना “महाशय” शब्द जोड़े। "क्या आप पुलिस आयुक्त हैं?"
“वह अनुपस्थित हैं। मैं उनकी जगह यहाँ हूँ।”
यह मामला बेहद निजी है।
“तो फिर बोलिए।”
और इसमें बहुत तेजी की आवश्यकता है।
तो जल्दी बोलो।

यह शांत, अचानक बोलने वाला व्यक्ति एक ही समय में भयावह और आश्वस्त करने वाला दोनों था। वह भय और विश्वास दोनों जगाता था। मारियस ने उसे उस घटना के बारे में बताया: कि एक व्यक्ति, जिसे वह केवल देखकर ही जानता था, को उसी शाम एक जाल में फंसाया जाना था; कि, चूंकि वह उस कमरे से सटे कमरे में रहता था, इसलिए मारियस पोंटमर्सी, जो एक वकील था, ने पर्दे के पार से पूरी साजिश सुन ली थी; कि जाल बिछाने वाला दुष्ट व्यक्ति जोंड्रेट था; कि उसके कुछ साथी भी होंगे, संभवतः कुछ चोर जो बाड़ के आसपास घूमते रहेंगे, जिनमें पंचौद उर्फ प्रिंटानियर उर्फ बिग्रेनाइल भी शामिल होगा; कि जोंड्रेट की बेटियाँ घात लगाकर बैठी होंगी; कि उस व्यक्ति को चेतावनी देने का कोई तरीका नहीं था, क्योंकि वह उसका नाम तक नहीं जानता था। और अंत में, यह सब उस शाम छह बजे, बुलेवार्ड डे ल'हॉपिटल के सबसे सुनसान स्थान पर, मकान संख्या 50-52 में किया जाना था।

यह संख्या सुनते ही निरीक्षक ने अपना सिर उठाया और ठंडे स्वर में कहा:—

"तो यह गलियारे के अंत में स्थित कमरे में है?"

“बिल्कुल सही,” मारियस ने उत्तर दिया और उसने आगे कहा: “क्या आप उस घर से परिचित हैं?”

निरीक्षक एक क्षण के लिए चुप रहा, फिर चूल्हे के दरवाजे पर अपने जूते की एड़ी सेंकते हुए बोला:

"जाहिरा तौर पर।"

वह दांतों के बीच से बुदबुदाते हुए बोलता रहा, और मारियस को संबोधित करने के बजाय अपनी टाई पर ध्यान केंद्रित कर रहा था:

"इसमें संरक्षक मिनेट का हाथ जरूर रहा होगा।"

यह बात मारियस को चुभ गई।

उन्होंने कहा, "पैट्रन-मिनेट, मैंने वास्तव में यह शब्द बोलते हुए सुना था।"

और उसने निरीक्षक को रू डू पेटिट-बैंकियर की दीवार के पीछे बर्फ में लंबे बालों वाले आदमी और दाढ़ी वाले आदमी के बीच हुई बातचीत को दोहराया।

निरीक्षक ने बुदबुदाते हुए कहा:—

"लंबे बालों वाला आदमी ब्रुजोन होना चाहिए, और दाढ़ी वाला डेमी-लियार्ड, उर्फ ड्यूक्स-मिलियार्ड्स।"
उसने अपनी पलकें फिर से झुका लीं और विचारों में लीन हो गया।
“जहाँ तक फादर व्हाट्स-हिज-नेम की बात है, मुझे लगता है मैं उन्हें पहचानता हूँ। लो, मेरा कोट जल गया। इन मनहूस चूल्हों में हमेशा बहुत ज़्यादा आग होती है। नंबर 50-52। गोरब्यू की पूर्व संपत्ति।”
फिर उसने मारियस की ओर देखा।
“क्या आपने सिर्फ उस दाढ़ी वाले और लंबे बालों वाले आदमी को ही देखा?”
और पंचौड़।
"क्या आपने परिसर में इधर-उधर घूमता हुआ कोई नन्हा सा नखरेबाज नहीं देखा?" "नहीं।"
"और न ही जार्डिन डेस प्लांट्स में हाथी जैसी दिखने वाली कोई बड़ी वस्तु?" "नहीं।"
"और न ही कोई बदमाश जो किसी बूढ़ी लाल पूंछ वाली कुतिया जैसा दिखता हो?" "नहीं।"
“चौथे की बात करें तो, उसे कोई नहीं देखता, यहां तक कि उसके सहायक, क्लर्क और कर्मचारी भी नहीं। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि आपने उसे नहीं देखा।”
“नहीं। ये सब कौन लोग हैं?” मारियस ने पूछा।
निरीक्षक ने उत्तर दिया:—
"इसके अलावा, यह उनके लिए सही समय नहीं है।"
वह फिर चुप हो गया, फिर बोला:—
“50-52. मैं उस बैरक को जानता हूँ। कलाकारों की नज़र में आए बिना उसके अंदर छिपना नामुमकिन है, और फिर वे वाडेविल का कार्यक्रम रद्द करके आसानी से बच निकलेंगे। वे कितने शर्मीले हैं! दर्शक उन्हें शर्मिंदा कर देते हैं। ऐसा

कुछ नहीं, ऐसा कुछ नहीं। मैं उन्हें गाते हुए सुनना चाहता हूँ और उन्हें नचाना चाहता हूँ।”
यह एकालाप समाप्त होने पर, वह मारियस की ओर मुड़ा और उसे ध्यानपूर्वक देखते हुए पूछा:—
"क्या आप डरते हैं?"
“किस बात का?” मारियस ने कहा।
“इन आदमियों में से?”
"तुमसे ज़्यादा नहीं!" मारियस ने अशिष्टता से जवाब दिया, जिसने यह महसूस करना शुरू कर दिया था कि इस पुलिस एजेंट ने अभी तक उसे "महाशय" नहीं कहा था।
निरीक्षक ने मारियस को और भी ध्यान से देखा और गंभीर स्वर में बोलना जारी रखा:—
“वाह, तुम तो एक बहादुर और ईमानदार आदमी की तरह बोल रहे हो। साहस अपराध से नहीं डरता और ईमानदारी अधिकार से नहीं डरती।”
मारियस ने उसे बीच में ही रोक दिया:—
“यह तो ठीक है, लेकिन आप आगे क्या करने का इरादा रखते हैं?”
निरीक्षक ने केवल यह टिप्पणी करके संतोष किया:—
"किराएदारों के पास रात में अंदर आने के लिए पासकी होती है। आपके पास भी एक होनी चाहिए।"
“हां,” मारियस ने कहा।
"क्या आपके पास यह है?"
"हाँ।"
"मुझे दे दो," इंस्पेक्टर ने कहा।
मारियस ने अपनी जैकेट की जेब से चाबी निकाली, निरीक्षक को सौंप दी और आगे कहा:—
"अगर आप मेरी सलाह मानेंगे तो आप पूरी ताकत के साथ आएंगे।"

इंस्पेक्टर ने मारियस पर ऐसी निगाह डाली जैसे वोल्टेयर किसी प्रांतीय विद्वान को कविता सुनाने पर डालते; एक ही झटके में उसने अपने विशालकाय हाथों को अपने कोट की दो बड़ी-बड़ी जेबों में डाला और दो छोटी स्टील की पिस्तौलें निकालीं, जिन्हें "नॉक-मी-डाउन" कहा जाता था। फिर उसने उन्हें मारियस को दिखाते हुए संक्षिप्त स्वर में तेजी से कहा:—

“इन्हें ले लो। घर जाओ। अपने कमरे में छिप जाओ, ताकि लोग यह जता सकें कि तुम बाहर गए हो। ये पिस्तौलें भरी हुई हैं। हर एक में दो गोलियां हैं। तुम पहरा दोगे; जैसा कि तुमने मुझे बताया है, दीवार में एक छेद है। ये लोग आएंगे। उन्हें कुछ देर के लिए उनके हाल पर छोड़ दो। जब तुम्हें लगे कि मामला गंभीर हो गया है और उन्हें रोकना ज़रूरी है, तो गोली चला देना। लेकिन जल्दी मत करना। बाकी सब मेरी ज़िम्मेदारी है। छत पर गोली चलाओ, हवा में, कहीं भी। सबसे ज़रूरी बात, जल्दी मत करना। तब तक इंतज़ार करो जब तक वे अपनी योजना को अंजाम देना शुरू न कर दें; तुम वकील हो; तुम्हें सही समय पता है।” मारियस ने पिस्तौलें लीं और उन्हें अपने कोट की जेब में रख लिया।

"इससे एक उभार बन जाएगा जो दिखाई देगा," इंस्पेक्टर ने कहा। "इन्हें अपनी पतलून की जेब में रख लो।"

मारियस ने पिस्तौलें अपनी पतलून की जेबों में छिपा लीं।

“अब,” इंस्पेक्टर ने आगे पूछा, “किसी के पास एक मिनट भी बर्बाद करने का समय नहीं है। समय क्या हुआ है? ढाई बज रहे हैं। सात बज रहे हैं?”

“छह बजे,” मारियस ने उत्तर दिया।

इंस्पेक्टर ने कहा, “मेरे पास काफी समय है, लेकिन जरूरत से ज्यादा नहीं। मैंने जो कुछ भी कहा है, उसे मत भूलना। बैंग। पिस्तौल की गोली चली।”

“चिंता मत करो,” मारियस ने कहा।

और जैसे ही मारियस ने बाहर जाते समय दरवाजे के हैंडल पर हाथ रखा, निरीक्षक ने उसे पुकारा:—

“वैसे, अगर आपको इस बीच मेरी सेवाओं की आवश्यकता हो, तो आप मुझसे मिलें या मुझे यहाँ भेज दें। आप इंस्पेक्टर जावर्ट से मिलने के लिए कहेंगे।”

XV. जोन्ड्रेट अपनी खरीदारी करता है

कुछ क्षण बाद, लगभग तीन बजे, कौरफेयरैक संयोगवश बॉसुएट के साथ रू मूफेटार्ड से गुजर रहे थे। बर्फबारी दुगनी हो गई थी और हवा में बर्फ जम गई थी। बॉसुएट कौरफेयरैक से यही कह रहे थे:—
“इन सभी बर्फ के टुकड़ों को गिरते देखकर कोई कहेगा कि मानो स्वर्ग में सफेद तितलियों की महामारी फैली हुई है।” अचानक, बॉसुएट की नज़र मारियस पर पड़ी जो एक अजीब से अंदाज़ में सड़क पर बैरियर की ओर आ रहा था।
“रुको!” बॉसुएट ने कहा। “वहाँ मारियस है।”
“मैंने उसे देखा,” कौरफेयरैक ने कहा। “हम उससे बात नहीं करेंगे।” "क्यों?"
वह व्यस्त है।
"साथ क्या?"
क्या तुम्हें उसका अंदाज़ नज़र नहीं आता?
“कौन सी हवा?”
"उसके हावभाव से ऐसा लगता है मानो वह किसी का पीछा कर रहा हो।"
“यह सच है,” बॉसुएट ने कहा।
“बस उसकी आँखों के हाव-भाव तो देखो!” कॉर्फेयरैक ने कहा।
लेकिन आखिर वो किसका पीछा कर रहा है?
“वाह, फूलों से सजी टोपी वाली कितनी सुंदर युवती है! वह उससे प्यार करता है।”
“लेकिन,” बॉसुएट ने कहा, “मुझे सड़क पर न तो कोई युवती दिखाई दे रही है और न ही कोई फूलों वाली टोपी। यहाँ आस-पास कोई महिला नहीं है।”
कौरफेयरैक ने एक सर्वेक्षण किया और कहा:—
वह एक आदमी का पीछा कर रहा है!

दरअसल, एक व्यक्ति, जिसने भूरे रंग की टोपी पहन रखी थी और जिसकी भूरे रंग की दाढ़ी को पहचाना जा सकता था, हालांकि उन्होंने केवल उसकी पीठ ही देखी थी, मारियस से लगभग बीस कदम आगे चल रहा था।

इस आदमी ने एक बिल्कुल नया लेकिन उसके लिए बहुत बड़ा ओवरकोट पहना हुआ था, और एक भयंकर पैंट पहनी हुई थी जो पूरी तरह से चिथड़े-चिथड़े लटक रही थी और कीचड़ से काली हो गई थी।

बॉसुएट जोर से हंस पड़ा।

"वह आदमी कौन है?"

“वह?” कौरफेयरैक ने पलटकर कहा, “वह एक कवि है। कवियों को खरगोश की खाल के व्यापारियों की पतलून और फ्रांस के रईसों के ओवरकोट पहनने का बहुत शौक होता है।”

“देखते हैं मारियस कहाँ जाएगा,” बॉसुएट ने कहा; “देखते हैं वो आदमी कहाँ जा रहा है, चलो उसका पीछा करते हैं, ठीक है?”

“बॉसुएट!” कौरफेयरैक ने कहा, “मेओक्स का चील! तुम तो बड़े ही क्रूर हो। सचमुच, एक आदमी का पीछा कर रहे हो जो दूसरे आदमी का पीछा कर रहा है!”

वे वापस लौट गए।

दरअसल, मारियस ने जोन्ड्रेट को रू मोफेटार्ड से गुजरते हुए देखा था और वह उसकी गतिविधियों पर नजर रख रहा था।

जोंड्रेट सीधे आगे बढ़ता रहा, उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि किसी की नजर उस पर पड़ चुकी है।

वह रू मौफेटार्ड से निकला और मारियस ने उसे रू ग्रेसियस की सबसे भयानक झोपड़ियों में से एक में घुसते देखा; वह वहाँ लगभग पंद्रह मिनट रुका, फिर रू मौफेटार्ड लौट आया। वह रू पियरे-लोम्बार्ड के कोने पर स्थित एक लोहे की दुकान पर रुका और कुछ मिनट बाद मारियस ने उसे दुकान से बाहर निकलते देखा, उसके हाथ में सफेद लकड़ी के हैंडल वाली एक बड़ी ठंडी छेनी थी, जिसे उसने अपने ओवरकोट के नीचे छिपा रखा था। रू पेटिट-जेंटिली के शीर्ष पर पहुँचकर वह बाईं ओर मुड़ा और तेजी से रू डू पेटिट-बैंकियर की ओर बढ़ गया। दिन ढल रहा था; बर्फबारी, जो एक पल के लिए रुकी थी, फिर से शुरू हो गई थी। मारियस ने

रू डू पेटिट-बैंकियर के ठीक कोने पर पहरा देना शुरू कर दिया, जो हमेशा की तरह सुनसान था, और वह जोन्ड्रेट के पीछे वहाँ नहीं गया। यह सौभाग्य की बात थी कि उसने ऐसा किया, क्योंकि जिस दीवार के पास मारियस ने लंबे बालों वाले आदमी और दाढ़ी वाले आदमी को बात करते सुना था, उसके पास पहुँचते ही जोंड्रेट ने पीछे मुड़कर देखा, यह सुनिश्चित किया कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है, उसे नहीं देखा, फिर दीवार के पार छलांग लगाई और गायब हो गया।

इस दीवार से घिरी बंजर भूमि एक बदनाम पूर्व अस्तबल मालिक के पिछवाड़े से जुड़ी हुई थी, जो असफल हो गया था और जिसने अभी भी अपने शेड के नीचे कुछ पुरानी सिंगल-सीट बर्लिन कारें रखी हुई थीं।

मारियस ने सोचा कि जोन्ड्रेट की अनुपस्थिति का फायदा उठाकर घर लौट जाना बुद्धिमानी होगी; इसके अलावा, काफी रात हो चुकी थी; हर शाम, मैडम बोगन जब शहर में बर्तन धोने के लिए निकलती थीं, तो उनकी आदत थी कि वे दरवाजा बंद कर देती थीं, जो शाम ढलते ही हमेशा बंद हो जाता था। मारियस ने अपनी चाबी पुलिस निरीक्षक को दे दी थी; इसलिए यह ज़रूरी था कि वह जल्दी करें।

शाम हो चुकी थी, रात लगभग छा चुकी थी; क्षितिज पर और अंतरिक्ष की विशालता में, सूर्य द्वारा प्रकाशित केवल एक ही स्थान बचा था, और वह था चंद्रमा।

यह साल्पेट्रिएर के निचले गुंबद के पीछे एक लालिमा लिए हुए चमक के साथ उदय हो रहा था।

मारियस बड़े-बड़े कदमों से कमरा संख्या 50-52 पर लौटा। उसके पहुँचने पर दरवाज़ा अभी भी खुला था। वह दबे पांव सीढ़ियों पर चढ़ा और गलियारे की दीवार के सहारे सरकते हुए अपने कमरे तक पहुँचा। जैसा कि पाठक को याद होगा, इस गलियारे के दोनों ओर अटारी थीं, जो उस समय खाली थीं और किराए पर दी जा रही थीं। मैडम बोगन की आदत थी कि वह सभी दरवाज़े खुले छोड़ देती थीं। जब वह एक अटारी से गुज़रा, तो मारियस को लगा कि उसने उस खाली कोठरी में चार आदमियों के बेजान सिर देखे, जो खिड़की से आती हुई दिन की रोशनी की हल्की-सी किरण से धुंधले से रोशन थे।

मारियस ने देखने की कोशिश नहीं की, क्योंकि वह खुद भी दिखना नहीं चाहता था। वह बिना किसी को दिखे और बिना कोई शोर किए अपने कमरे तक पहुँचने में सफल

रहा। अब समय आ गया था। कुछ देर बाद उसने मैडम बोगन को घर का दरवाजा बंद करते हुए जाते सुना।

16. जिसमें 1832 में प्रचलित एक अंग्रेजी धुन के बोल मिलेंगे।

मारियस अपने बिस्तर पर बैठ गया। लगभग साढ़े पाँच बज रहे थे। जो कुछ होने वाला था, उससे बस आधा घंटा ही बाकी था। उसे अपनी धमनियों की धड़कनें वैसी ही सुनाई दे रही थीं जैसे अंधेरे में घड़ी की टिक-टिक सुनाई देती है। उसने उस दोहरे संघर्ष के बारे में सोचा जो उस पल अंधेरे में चल रहा था—एक तरफ अपराध बढ़ रहा था, दूसरी तरफ न्याय आ रहा था। वह डरा हुआ नहीं था, लेकिन जो कुछ होने वाला था, उसके बारे में सोचकर वह कांप उठा। जैसा कि अचानक किसी अनचाहे हादसे का शिकार होने वाले सभी लोगों के साथ होता है, पूरा दिन उसके लिए एक सपने जैसा था, और खुद को यह यकीन दिलाने के लिए कि वह किसी बुरे सपने का शिकार नहीं है, उसे अपनी पतलून की जेबों में रखी स्टील की पिस्तौलों की ठंडी नालों को महसूस करना पड़ा।

अब बर्फबारी नहीं हो रही थी; चंद्रमा धुंध से और अधिक स्पष्ट रूप से बाहर निकलने लगा, और उसकी रोशनी, गिरी हुई बर्फ के सफेद प्रतिबिंब के साथ मिलकर, कमरे को एक प्रकार का गोधूलि बेला जैसा रूप प्रदान कर रही थी।

जोंड्रेट के अड्डे में रोशनी थी। मारियस ने दीवार में बने छेद को लाल रंग की चमक से जगमगाते देखा, जो उसे खूनी सी लग रही थी।

यह सच था कि वह रोशनी मोमबत्ती से पैदा नहीं की जा सकती थी। फिर भी, जोंड्रेट के कमरे में सन्नाटा पसरा हुआ था, कोई भी वहां हिल-डुल नहीं रहा था, कोई बोल नहीं रहा था, कोई सांस भी नहीं ले रहा था; सन्नाटा बर्फीला और गहरा था, और अगर वह रोशनी न होती, तो शायद उसे लगता कि वह किसी कब्र के बगल में ही है।

मारियस ने धीरे से अपने जूते उतारे और उन्हें अपने बिस्तर के नीचे धकेल दिया।

कुछ मिनट बीत गए। मारियस ने नीचे के दरवाजे को कब्ज़ों पर घूमते हुए सुना; एक भारी कदम सीढ़ियों पर चढ़ा और गलियारे में तेज़ी से आगे बढ़ा; झोपड़ी की कुंडी शोर के साथ उठी; जोन्ड्रेट लौट रही थी।
अचानक कई आवाजें उठने लगीं। पूरा परिवार अटारी में था। लेकिन, मालिक की अनुपस्थिति में वहाँ सन्नाटा पसरा हुआ था, ठीक वैसे ही जैसे भेड़िये के बच्चे भेड़िये की अनुपस्थिति में चुप हो जाते हैं।
“यह मैं हूँ,” उसने कहा।
“शुभ संध्या, पापा,” लड़कियों ने खुशी से चिल्लाकर कहा।
“तो?” माँ ने कहा।
“सब कुछ बढ़िया चल रहा है,” जोंड्रेट ने जवाब दिया, “लेकिन मेरे पैर बुरी तरह ठंडे हो रहे हैं। अच्छा! तुमने अच्छे कपड़े पहने हैं। तुमने बहुत अच्छा किया! तुममें आत्मविश्वास होना चाहिए।”
"बाहर जाने के लिए पूरी तरह तैयार।"
“मैंने तुम्हें जो बताया है उसे मत भूलना। तुम सब कुछ ठीक से करोगे, है ना?”
"शेष सहज।"
“क्योंकि—” जोंड्रेट ने कहा। और उसने वाक्य अधूरा छोड़ दिया।
मारियस ने उसे मेज पर कोई भारी चीज रखते हुए सुना, संभवतः वह छेनी थी जिसे उसने खरीदा था।
“वैसे,” जोंड्रेट ने कहा, “क्या आप यहाँ खाना खा रहे हैं?”
“हां,” मां ने कहा। “मैंने तीन बड़े आलू और थोड़ा नमक लिया। मैंने आग का फायदा उठाकर उन्हें पकाया।”
“अच्छा,” जोंड्रेट ने जवाब दिया। “कल मैं तुम्हें अपने साथ खाना खाने ले जाऊंगी। हम बत्तख और उसके साथ परोसी जाने वाली सब चीजें खाएंगे। तुम चार्ल्स द टेन्थ की तरह भोजन करोगे; सब ठीक चल रहा है!”
फिर उन्होंने आगे कहा:—

“चूहेदानी खुली है। बिल्लियाँ वहीं हैं।”
उन्होंने अपनी आवाज और भी धीमी कर दी और कहा:—
इसे आग में डाल दो।
मारियस ने चिमटे या किसी लोहे के औजार से कोयले को पीटने की आवाज सुनी, और जोंड्रेट ने आगे कहा:—
"क्या आपने दरवाजे के कब्जों पर ग्रीस लगा दिया है ताकि वे चरमराहट न करें?"
“हां,” मां ने जवाब दिया।
"ये वक़्त क्या है?"
“लगभग छह बज रहे हैं। सेंट-मेडार्ड से कुछ देर पहले आधे घंटे की घंटी बजी थी।”
“शैतान!” जोंड्रेट चिल्लाई; “बच्चों को जाकर देखना चाहिए। तुम भी सुनो।” इसके बाद कानाफूसी शुरू हो गई।
जोंड्रेट की आवाज फिर से सुनाई देने लगी:—
"क्या बूढ़ा बोगन चला गया है?"
“हां,” मां ने कहा।
"क्या आपको यकीन है कि हमारे पड़ोसी के कमरे में कोई नहीं है?"
"वह पूरे दिन से घर पर नहीं है, और आप अच्छी तरह जानते हैं कि यह उसके खाने का समय है।"
"आपको यकीन है?"
"ज़रूर।"
“फिर भी,” जोंड्रेट ने कहा, “यह देखने में कोई हर्ज नहीं है कि वह वहाँ है या नहीं। लो, मेरी बच्ची, मोमबत्ती लो और वहाँ जाओ।”
मारियस अपने हाथों और घुटनों के बल गिर पड़ा और चुपचाप अपने बिस्तर के नीचे रेंग गया।

जैसे ही उसने खुद को छिपाया, उसे अपने दरवाजे की दरार से रोशनी दिखाई दी।
“पापा,” एक आवाज ने पुकारा, “वह यहाँ नहीं है।”
उसने सबसे बड़ी बेटी की आवाज पहचान ली।
“क्या तुम अंदर गई थीं?” उसके पिता ने पूछा।
“नहीं,” लड़की ने जवाब दिया, “लेकिन चूंकि उसकी चाबी दरवाजे में है, इसलिए वह बाहर ही होगा।”
पिता ने विस्मय से कहा:—
"फिर भी अंदर जाओ।"
दरवाजा खुला और मारियस ने लंबी जोंड्रेट को हाथ में मोमबत्ती लिए अंदर आते देखा। वह सुबह जैसी ही थी, बस इस रोशनी में और भी अधिक घृणित लग रही थी।
वह सीधे बिस्तर की ओर चली गई। मारियस को असहनीय चिंता का एक क्षण सहना पड़ा; लेकिन बिस्तर के पास दीवार पर एक दर्पण लगा हुआ था, और वह उसी ओर बढ़ने लगी। उसने अपने पैर की उंगलियों के बल खड़े होकर उसमें खुद को देखा। बगल के कमरे में लोहे की वस्तुओं को इधर-उधर करने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
उसने अपनी हथेली से अपने बालों को संवारा और शीशे में देखकर मुस्कुराई, अपनी फटी हुई और गंभीर आवाज में गुनगुनाते हुए बोली:
हमारा प्यार पूरे एक हफ्ते तक चला, लेकिन खुशी के पल कितने क्षणभंगुर होते हैं! आठ दिनों तक एक-दूसरे को प्यार करने का क्या मतलब था! प्यार का समय तो हमेशा के लिए रहना चाहिए! हमेशा के लिए रहना चाहिए! हमेशा के लिए रहना चाहिए!
इसी बीच मारियस कांपने लगा। उसे यह असंभव लग रहा था कि वह उसकी सांसें न सुन पाए।
वह खिड़की के पास गई और अपने उसी आधे-मूर्खतापूर्ण अंदाज में बाहर देखने लगी।
“सफेद कमीज पहनने पर पेरिस कितना बदसूरत लगता है!” उसने कहा।

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

सत्रहवाँ. मारियस के पाँच-फ़्रैंक के

सिक्के का उपयोग

मारियस ने फैसला किया कि अब वह समय आ गया है जब उसे अपनी वेधशाला में अपना कार्यभार फिर से संभालना होगा। पलक झपकते ही, और अपनी उम्र की फुर्ती के साथ, वह विभाजन में बने छेद तक पहुँच गया।

उसने देखा।

जोंड्रेट के अपार्टमेंट का भीतरी भाग विचित्र प्रतीत होता था, और मारियस को उस अनोखी रोशनी का कारण समझ में आ गया जो उसने देखी थी। हरे रंग से ढकी मोमबत्ती स्टैंड में एक मोमबत्ती जल रही थी, लेकिन वास्तव में वह कमरे को रोशन करने वाली चीज़ नहीं थी। ऐसा लग रहा था मानो वह झोपड़ी पूरी तरह से चिमनी में रखे एक बड़े से लोहे के चूल्हे से परावर्तित हो रही रोशनी से जगमगा रही हो, जो जलते हुए कोयले से भरा था। इस चूल्हे को जोंड्रेट की पत्नी ने उसी सुबह तैयार किया था। कोयला धधक रहा था और चूल्हा लाल था; उस पर एक नीली लौ टिमटिमा रही थी, जिससे मारियस को पियरे-लोम्बार्ड गली से जोंड्रेट द्वारा खरीदी गई छेनी का आकार दिखाई दिया, जिसे गर्म करने के लिए चूल्हे में डाला गया था। एक कोने में, दरवाजे के पास, मानो किसी विशेष उपयोग के लिए तैयार किए गए हों, दो ढेर दिखाई दे रहे थे, जो देखने में पुराने लोहे के ढेर और रस्सियों के ढेर प्रतीत हो रहे थे। इन सब बातों से उस व्यक्ति का मन, जिसे इस बात की कोई जानकारी नहीं थी कि क्या तैयारी चल रही है, एक बेहद भयावह और एक बेहद सरल विचार के बीच डगमगा उठता। इस तरह रोशनी से जगमगाता वह अड्डा किसी भट्टी जैसा लग रहा था, नर्क के द्वार जैसा नहीं, लेकिन इस रोशनी में जोन्ड्रेट किसी लोहार से ज़्यादा किसी दानव जैसा प्रतीत हो रहा था।

अंगीठी की गर्मी इतनी तेज़ थी कि मेज पर रखी मोमबत्ती, गर्म रखने वाले बर्तन के बगल में, पिघल रही थी और झुक रही थी। चिमनी के ऊपर तांबे का एक पुराना, काला लालटेन रखा था, जो डायोजेन्स के कार्टूश के योग्य था।

चूल्हे के अंदर ही, लगभग बुझ चुकी लकड़ियों के बगल में रखी हुई अंगीठी से निकलने वाली भाप चिमनी से ऊपर की ओर जाती थी और उससे कोई गंध नहीं आती थी।

खिड़की के चारों शीशों से प्रवेश करती हुई चाँदनी ने अपनी सफेदी को लाल और धधकते हुए अटारी में बिखेर दिया; और मारियस की काव्यात्मक आत्मा के लिए, जो उस क्षण में भी स्वप्निल था, यह स्वर्ग के विचार के साथ पृथ्वी की विकृत कल्पनाओं के मिश्रण जैसा था।

खुली खिड़की से अंदर आई हवा के झोंके ने कोयले की गंध को दूर करने और अंगीठी की मौजूदगी को छिपाने में मदद की।

अगर पाठक को गोरब्यू इमारत के बारे में हमारी कही गई बातों की याद हो, तो जोन्ड्रेट का ठिकाना एक हिंसक और भयावह घटना को अंजाम देने और अपराध को छिपाने के लिए बड़ी चतुराई से चुना गया था। यह पेरिस के सबसे सुनसान इलाके में, सबसे अलग-थलग पड़े घर का सबसे एकांत कमरा था। अगर घात लगाकर हमला करने और जाल बिछाने की व्यवस्था पहले से मौजूद न होती, तो शायद वहीं इसका आविष्कार हो जाता।

एक घर की पूरी मोटाई और असंख्य निर्जन कमरों ने इस छोटे से कमरे को मुख्य सड़क से अलग कर रखा था, और एकमात्र खिड़की जो मौजूद थी, वह दीवारों और बाड़ों से घिरे बंजर भूमि की ओर खुलती थी।

जोंड्रेट ने अपनी पाइप जलाई, बिना सीट वाली कुर्सी पर बैठ गया और धूम्रपान करने लगा। उसकी पत्नी धीमी आवाज़ में उससे बात कर रही थी।

अगर मारियस, कौरफेयरैक होता, यानी उन लोगों में से एक जो हर मौके पर हंसते हैं, तो जॉन्ड्रेट नाम की महिला को देखते ही वह खिलखिलाकर हंस पड़ता। उसने काले रंग की टोपी पहन रखी थी, जिस पर पंख लगे थे, जो चार्ल्स दसवें राज्याभिषेक में शस्त्रपालों की टोपियों से मिलती-जुलती थी। बुनी हुई पेटीकोट के ऊपर उसने एक विशाल टार्टन शॉल ओढ़ा हुआ था और वही जूते पहने थे जिन्हें उसकी बेटी ने सुबह ठुकरा दिया था। इसी पहनावे को देखकर जॉन्ड्रेट ने कहा, “वाह! आप सज-धज कर आई हैं। बहुत बढ़िया! आपमें आत्मविश्वास झलक रहा होगा!”

जहां तक जोंड्रेट की बात है, उसने नया ओवरकोट नहीं उतारा था, जो उसके लिए बहुत बड़ा था और जो एम. लेब्लांक ने उसे दिया था, और उसकी पोशाक में कोट और

पतलून का वह विरोधाभास बना रहा जो कौरफेयरैक की नजरों में एक कवि का आदर्श था।
अचानक, जोंड्रेट ने अपनी आवाज बुलंद की:—
“वैसे! अब जब मुझे याद आया तो। इस मौसम में, वह एक गाड़ी में आएगा। लालटेन जलाओ, उसे लो और नीचे जाओ। तुम नीचे वाले दरवाजे के पीछे खड़े हो जाना। जैसे ही तुम्हें गाड़ी के रुकने की आवाज सुनाई दे, तुम तुरंत दरवाजा खोल देना, वह ऊपर आ जाएगा, तुम सीढ़ियों और गलियारे में रोशनी कर देना, और जैसे ही वह अंदर आए, तुम जितनी जल्दी हो सके वापस नीचे चले जाना, कोचवान को किराया देना और उस फाइक्रे को विदा कर देना।”
"और पैसे का क्या हुआ?" महिला ने पूछा।
जोंड्रेट ने अपनी पतलून की जेब में हाथ डाला और उसे पांच फ्रैंक दे दिए। “यह क्या है?” उसने हैरानी से कहा।
जोंड्रेट ने गरिमापूर्ण ढंग से उत्तर दिया:—
"यह वही सम्राट है जिसे हमारे पड़ोसी ने आज सुबह हमें दिया है।"
और उन्होंने आगे कहा:—
“क्या आप जानते हैं? यहाँ दो कुर्सियों की आवश्यकता होगी।”
“किसलिए?”
"पर बैठना।"
जोंड्रेट के इस नरम जवाब को सुनकर मारियस के शरीर में एक ठंडी सिहरन दौड़ गई।
“परड्यू! मैं जाकर अपने पड़ोसी के यहाँ से एक को ले आता हूँ।”
और उसने तेजी से कमरे का दरवाजा खोला और गलियारे में चली गई।
मारियस के पास कमोड से नीचे उतरने, अपने बिस्तर तक पहुंचने और उसके नीचे खुद को छिपाने का बिल्कुल भी समय नहीं था।
“मोमबत्ती ले लो,” जोंड्रेट चिल्लाई।

“नहीं,” उसने कहा, “इससे मुझे शर्म आएगी, मुझे दो कुर्सियाँ ले जानी हैं।
चाँदनी भी है।”

अंधेरे में मारियस ने मदर जोंड्रेट के भारी हाथ को अपने ताले पर टटोलते हुए सुना। दरवाजा खुला। वह सदमे और भय से वहीं जम गया।

जोंड्रेट ने प्रवेश किया।

डॉर्मर खिड़की से दो छाया क्षेत्रों के बीच से चांदनी की एक किरण अंदर आ रही थी। छाया के इन क्षेत्रों में से एक ने उस दीवार को पूरी तरह से ढक लिया था जिस पर मारियस टिका हुआ था, जिससे वह उसमें गायब सा हो गया था।

मदर जोंड्रेट ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं, मारियस को नहीं देखा, मारियस के पास मौजूद दो कुर्सियाँ उठाईं और दरवाजे को अपने पीछे भारी आवाज में बंद करते हुए चली गईं।

वह दोबारा मांद में दाखिल हुई।

“ये रही दो कुर्सियाँ।”

“और ये रही लालटेन। जितनी जल्दी हो सके नीचे जाओ।”

उसने तुरंत बात मान ली, और जोंड्रेट को अकेला छोड़ दिया गया।

उसने मेज के दोनों ओर कुर्सियाँ रखीं, अंगीठी में छेनी घुमाई, चूल्हे के सामने एक पुराना पर्दा लगाया जिससे गर्माहट करने वाला बर्तन छिप गया, फिर उस कोने में गया जहाँ रस्सियों का ढेर पड़ा था, और कुछ जाँचने के अंदाज़ में नीचे झुका। तब मारियस ने पहचान लिया कि जिसे वह एक बेढंगी वस्तु समझ रहा था, वह लकड़ी के डंडों और उसे जोड़ने के लिए दो हुकों वाली एक बहुत ही अच्छी तरह से बनी हुई रस्सी की सीढ़ी थी।

यह सीढ़ी और कुछ बड़े औजार, लोहे के विशाल ढेर, जो दरवाजे के पीछे जमा पुराने लोहे के साथ मिले हुए थे, सुबह के समय जोंड्रेट की झोपड़ी में नहीं थे, और जाहिर तौर पर मारियस की अनुपस्थिति के दौरान दोपहर में वहां लाए गए थे।

"ये तो धारदार औजार बनाने वाले के बर्तन हैं," मारियस ने सोचा।

यदि मारियस इस क्षेत्र में थोड़ा और जानकार होता, तो वह उन उपकरणों में, जिन्हें वह धारदार औजार बनाने वाले के उपकरण समझ रहा था, कुछ ऐसे उपकरण पहचान लेता जो ताला तोड़ सकते हैं या ताला खोल सकते हैं, और अन्य जो काट या चीर सकते हैं, ये दो प्रकार के उपकरण हैं जिन्हें चोर कैडेट और फॉचेंट कहते हैं।

चिमनी और दोनों कुर्सियाँ मारियस के ठीक सामने थीं। अंगीठी छिपी होने के कारण कमरे में रोशनी केवल मोमबत्ती से ही आ रही थी; मेज या चिमनी पर रखा छोटा सा बर्तन भी बड़ी छाया बना रहा था। इस कमरे में एक अजीब सी खामोशी, भयावहता और डर का माहौल था। ऐसा लग रहा था मानो इसमें किसी भयानक घटना की आशंका छिपी हो।

जोंड्रेट ने अपनी पाइप बुझा दी थी, जो उनकी गहरी चिंता का संकेत था, और वे फिर से बैठ गए थे। मोमबत्ती की रोशनी से उनके चेहरे की तीखी और बारीक रेखाएं उभर रही थीं। वे तेवर चढ़ा रहे थे और अचानक अपना दाहिना हाथ हिला रहे थे, मानो किसी गंभीर अंतर्मन की अंतिम सलाह का जवाब दे रहे हों। अपने आप से की जा रही ऐसी ही एक गहरी बातचीत के दौरान, उन्होंने मेज का दराज तेजी से अपनी ओर खींचा, उसमें छिपा हुआ एक लंबा रसोई का चाकू निकाला और उसकी धार को अपने नाखून पर आजमाया। इतना करने के बाद, उन्होंने चाकू को वापस दराज में रख दिया और उसे बंद कर दिया।

मारियस, जो एक तरफ लेटा हुआ था, ने अपनी दाहिनी जेब में रखी पिस्तौल को पकड़ा, उसे बाहर निकाला और लोड किया।

पिस्तौल को कॉक करते समय उसमें से एक तेज, स्पष्ट क्लिक की आवाज निकली।

जोंड्रेट चौंक गई, आधा उठी, एक पल सुनी, फिर हंसने लगी और बोली:—

मैं कितना मूर्ख हूँ! ये तो दीवार में दरार पड़ने की आवाज़ है!

मारियस ने पिस्तौल अपने हाथ में ही रखी।

XVIII. मारियस की दो कुर्सियाँ एक सादृश्य बनाती हैं

अचानक, दूर से आती घड़ी की उदास सी गूंज से खिड़कियों के शीशे हिल गए। सेंट-मेडार्ड से छह बजने की आवाज आ रही थी।
जोंड्रेट ने हर बार सिर हिलाकर मोमबत्ती जलाने का संकेत दिया। जब छठी बार मोमबत्ती जली, तो उसने अपनी उंगलियों से मोमबत्ती बुझा दी।
फिर वह कमरे में इधर-उधर टहलने लगा, गलियारे में कान लगाकर सुनने लगा, फिर आगे बढ़ गया, और फिर एक बार और कान लगाकर सुनने लगा।
“बस शर्त यही है कि वह आ जाए!” उसने बुदबुदाते हुए कहा, फिर वह अपनी कुर्सी पर लौट गया।
वह मुश्किल से अपनी जगह पर बैठा ही था कि दरवाजा खुल गया।
मदर जोंड्रेट ने उसे खोल दिया था, और अब गलियारे में एक भयानक, सौम्य सा चेहरा बनाए खड़ी थी, जिसे नीचे से अंधेरी लालटेन के एक छेद से रोशनी मिल रही थी।
“अंदर आइए, महोदय,” उसने कहा।
"अंदर आइए, मेरे उपकारक," जोंड्रेट ने जल्दी से उठते हुए दोहराया।
एम. लेब्लांक उपस्थित हुए।
उनके चेहरे पर एक ऐसी शांति और गंभीरता झलकती थी जो उन्हें असाधारण रूप से सम्माननीय बनाती थी।
उसने मेज पर चार लुई रख दिए।
“महाशय फैबंटू,” उसने कहा, “यह आपके किराए और आपकी सबसे ज़रूरी ज़रूरतों के लिए है। बाकी का इंतज़ाम हम बाद में कर लेंगे।”
“हे मेरे उदार दाता, ईश्वर आपको इसका प्रतिफल दे!” जोंड्रेट ने कहा।
और वह तेजी से अपनी पत्नी के पास पहुंचा:—

“गाड़ी को रद्द करो!”

जब उनके पति अभिवादन कर रहे थे और एम. लेब्लांक को कुर्सी दे रहे थे, तभी वह चुपके से निकल गईं। एक पल बाद वह लौटीं और उनके कान में फुसफुसाकर बोलीं:—

“हो गया।”

सुबह से लगातार गिर रही बर्फ इतनी गहरी थी कि फियाक्रे के आने की आवाज सुनाई नहीं दी थी, और अब भी उन्हें उसके जाने की आवाज सुनाई नहीं दी।

इसी बीच एम. लेब्लांक बैठ गए थे।

जोंड्रेट ने एम. लेब्लांक के सामने वाली दूसरी कुर्सी पर कब्जा कर लिया था।

अब, आगे आने वाले दृश्य का अंदाजा लगाने के लिए, पाठक अपने मन में एक ठंडी रात, बर्फ से ढके और चांदनी में कफ़न की तरह सफेद साल्पेट्रिएर के सुनसान इलाके, उन दुखद बुलेवार्ड्स पर इधर-उधर लाल रंग में चमकती स्ट्रीट लैंप की मोमबत्ती जैसी रोशनी, और काले एल्म के पेड़ों की लंबी कतारें, शायद एक चौथाई मील के दायरे में कोई राहगीर नहीं, और गोरब्यू की झोपड़ी, अपने चरम मौन, आतंक और अंधेरे में डूबी हुई, की कल्पना करें; उस इमारत में, उस सन्नाटे के बीच, उस अंधेरे के बीच, विशाल जोन्ड्रेट अटारी एक मोमबत्ती की रोशनी से जगमगा रही थी, और उस कमरे में दो आदमी एक मेज पर बैठे थे, एम. लेब्लांक शांत, जोन्ड्रेट मुस्कुराती हुई और खतरनाक लग रही थी, जोन्ड्रेट महिला, भेड़िया जैसी औरत, एक कोने में, और, विभाजन के पीछे, मारियस, अदृश्य, सीधा खड़ा, एक शब्द भी नहीं चूकता, एक भी हरकत नहीं छोड़ता, उसकी नज़र घड़ी पर थी, और हाथ में पिस्तौल थी।

हालांकि, मारियस को केवल भय का अनुभव हुआ, डर नहीं। उसने पिस्तौल की मूठ को मजबूती से पकड़ लिया और आश्वस्त महसूस किया। उसने सोचा, "मैं जब चाहूँ उस दुष्ट को मार गिरा सकूँगा।"

उसे ऐसा लगा कि पुलिस कहीं घात लगाकर बैठी है, तय किए गए संकेत का इंतजार कर रही है और अपनी बांह फैलाने के लिए तैयार है।

इसके अलावा, उन्हें उम्मीद थी कि जोन्ड्रेट और एम. लेब्लांक के बीच हुई इस हिंसक झड़प से उन सभी चीजों पर कुछ प्रकाश पड़ेगा जिन्हें जानने में उनकी रुचि थी।

XIX. गूढ़ गहराइयों में स्वयं को लीन रखना

एम. लेब्लांक के बैठते ही उनकी नजर खाली चबूतरों की ओर पड़ी।

“उस बेचारी घायल बच्ची की क्या हालत है?” उसने पूछा।

“बुरा हुआ,” जोन्ड्रेट ने टूटे हुए दिल और कृतज्ञता भरी मुस्कान के साथ उत्तर दिया, “बहुत बुरा हुआ, महाराज। उसकी बड़ी बहन उसे बोर्बे ले गई है ताकि उसके घावों पर पट्टी बांधी जा सके। आप उनसे थोड़ी देर में मिलेंगे; वे तुरंत वापस आ जाएँगे।”

"मुझे तो मैडम फैबंटू बेहतर लगती हैं," एम. लेब्लांक ने आगे कहा, और उनकी निगाहें जोंड्रेट महिला की विचित्र वेशभूषा पर टिक गईं, जो उनके और दरवाजे के बीच खड़ी थी, मानो पहले से ही निकास द्वार की रखवाली कर रही हो, और धमकी भरे और लगभग युद्ध भाव से उनकी ओर देख रही थी।

“वह मर रही है,” जोंड्रेट ने कहा। “लेकिन आप और क्या उम्मीद करते हैं, महोदय! उस औरत में कितना साहस है! वह औरत नहीं, बैल जैसी है!”

जोंड्रेट, उसकी प्रशंसा से प्रभावित होकर, एक चापलूसी करने वाले राक्षस की बनावटी अदाओं के साथ इसे नकार दिया।

"आप हमेशा मेरे प्रति बहुत दयालु रहते हैं, महाशय जोंड्रेट!"

“जोंड्रेट!” एम. लेब्लांक ने कहा, “मुझे लगा तुम्हारा नाम फैबंटू है?”

“फैबंटू, उर्फ जोंड्रेट!” पति ने जल्दी से जवाब दिया। “एक कलात्मक उपनाम!”

और अपनी पत्नी की ओर कंधे उचकाते हुए, जिसे एम. लेब्लांक समझ नहीं पाए, उन्होंने ज़ोरदार और स्नेहपूर्ण स्वर में बोलना जारी रखा:—

आह! हम दोनों ने कितना सुखमय जीवन बिताया है! अगर ऐसा न होता तो हमारे पास क्या बचता? हम कितने दुखी हैं, महोदय! हमारे पास हथियार तो हैं, पर काम नहीं! इच्छा तो है, पर काम नहीं! मुझे नहीं पता सरकार यह सब कैसे चलाती है, लेकिन मैं कसम खाकर कहता हूँ, महोदय, मैं जैकोबिन नहीं हूँ, महोदय, मैं बूसिंगोट नहीं हूँ। मैं उनका बुरा नहीं चाहता, लेकिन अगर मैं मंत्री होता,

तो मेरी पवित्र कसम, हालात अलग होते। उदाहरण के लिए, मैं अपनी बेटियों को कागज़ के डिब्बे बनाने का हुनर सिखाना चाहता था। आप कहेंगे: ‘क्या! एक हुनर?’ हाँ! एक हुनर! एक साधारण हुनर! घर चलाने का ज़रिया! कितना बुरा हाल है, मेरे उपकारक! कितना अपमान है, जब हम वो सब झेल चुके हों जो हमने झेला है! हाय! हमारे खुशहाली के दिनों की कोई निशानी नहीं बची! बस एक तस्वीर, जिसके बारे में मैं बहुत सोचता हूँ, लेकिन जिसे मैं देने को तैयार हूँ। मुझे इससे अलग होना पड़ेगा, क्योंकि मुझे जीना है! असल में, जीना तो जरूरी है!

जब जोन्ड्रेट इस तरह बोल रहा था, उसकी बातों में स्पष्ट रूप से कुछ अस्पष्टता थी, लेकिन इससे उसके चेहरे की गंभीर और समझदार अभिव्यक्ति पर कोई असर नहीं पड़ रहा था। तभी मारियस ने अपनी नज़रें ऊपर उठाईं और कमरे के दूसरे छोर पर एक ऐसे व्यक्ति को देखा जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। एक आदमी अभी-अभी अंदर आया था, इतनी धीमी आवाज़ में कि दरवाज़े के खुलने की आवाज़ भी सुनाई नहीं दी। उस आदमी ने बैंगनी रंग की बुनी हुई बनियान पहनी हुई थी, जो पुरानी, घिसी-पिटी, धब्बेदार, कटी-फटी और हर तह से फटी हुई थी। उसने सूती मखमल की चौड़ी पतलून, पैरों में लकड़ी के जूते पहने थे, कमीज़ नहीं पहनी थी, उसकी गर्दन नंगी थी, उसकी नंगी बाहों पर टैटू बने थे और उसका चेहरा काले रंग से सना हुआ था। वह चुपचाप पास के पलंग पर बैठ गया और चूंकि वह जोन्ड्रेट के पीछे था, इसलिए उसे धुंधला ही देखा जा सका।

दृष्टि को मोड़ देने वाली उस चुंबकीय प्रवृत्ति के कारण, एम. लेब्लांक लगभग उसी क्षण मुड़ गए जब मारियस मुड़ा था। वे आश्चर्य का भाव दिखाने से खुद को रोक नहीं पाए, जिसे जोन्ड्रेट ने देख लिया।

“अरे! अब समझ आया!” जोन्ड्रेट ने बड़े ही आत्मसंतुष्ट भाव से अपना कोट बंद करते हुए कहा, “आप अपना ओवरकोट देख रहे हैं? यह तो मुझे फिट आ रहा है! सच में, यह मुझे बिल्कुल फिट आ रहा है!”

“वह आदमी कौन है?” एम. लेब्लांक ने कहा।

“वो?” जोंड्रेट ने हैरानी से कहा, “वो मेरा पड़ोसी है। उस पर ध्यान मत दो।”

पड़ोसी एक विलक्षण व्यक्ति थे। हालाँकि, फाउबर्ग सेंट-मार्सेउ में रासायनिक उत्पादों के कारखाने बहुतायत में हैं। कई कामगारों के चेहरे

काले हो सकते हैं। इसके अलावा, श्री लेब्लांक का पूरा व्यक्तित्व स्पष्टवादिता और निडर आत्मविश्वास से भरा हुआ था।

उन्होंने आगे कहा:—

"क्षमा कीजिए; आप क्या कह रहे थे, श्री फैबंटू?"

“मैं आपसे कह रहा था, महोदय और प्रिय रक्षक,” जोन्ड्रेट ने अपनी कोहनियों को मेज पर टिकाते हुए और अजगर की आँखों से मिलती-जुलती स्थिर और कोमल आँखों से एम. लेब्लांक को निहारते हुए उत्तर दिया, “मैं आपसे कह रहा था कि मुझे एक तस्वीर बेचनी है।”

दरवाजे से हल्की सी आवाज आई। एक दूसरा आदमी अंदर आया और जोन्ड्रेट के पीछे बिस्तर पर बैठ गया।

पहले वाले की तरह, उसकी बाहें नंगी थीं, और उसने स्याही या कालिख से बना मुखौटा पहन रखा था।

हालांकि यह व्यक्ति सचमुच कमरे में रेंगता हुआ आया था, फिर भी वह एम. लेब्लांक को अपनी ओर आकर्षित होने से नहीं रोक सका था।

“उनकी परवाह मत कीजिए,” जोंड्रेट ने कहा, “वे घर के ही लोग हैं। मैं बस यही कह रही थी कि मेरे पास एक अनमोल तस्वीर है। लेकिन रुकिए, महोदय, इसे देख लीजिए।”

वह उठा, उस दीवार के पास गया जिसके नीचे वह पैनल लगा था जिसका हमने पहले ज़िक्र किया था, और उसे दीवार से टिकाए रखते हुए घुमा दिया। वह सचमुच एक चित्र जैसा लग रहा था, जिसे मोमबत्ती की रोशनी में थोड़ा-बहुत रोशन किया गया था। मारियस उसे कुछ समझ नहीं पाया, क्योंकि जोन्ड्रेट उसके और चित्र के बीच में खड़ी थी; उसे बस एक मोटा धब्बा और एक तरह का मुख्य पात्र दिखाई दिया, जिस पर विदेशी कैनवस और स्क्रीन पेंटिंग की तरह खुरदुरापन और बेढंगापन था।

“यह क्या है?” एम. लेब्लांक ने पूछा।

जोंड्रेट ने विस्मय से कहा:—

“एक महान कलाकार की कृति, एक अनमोल चित्र, मेरे उपकारक! मैं इससे उतना ही लगाव रखती हूँ जितना अपनी दोनों बेटियों से; यह मुझे कई यादें दिलाती है!

लेकिन मैंने आपको बताया है, और मैं इसे वापस नहीं ले सकती, कि मैं इतनी दुखी हूँ कि मुझे इसे छोड़ना ही पड़ेगा।”

संयोगवश या फिर इसलिए कि उन्हें बेचैनी महसूस होने लगी थी, एम. लेब्लांक की नजर तस्वीर को देखते हुए कमरे के निचले हिस्से की ओर लौट गई।

अब वहाँ चार आदमी थे, तीन पलंग पर बैठे थे, एक दरवाजे के पास खड़ा था, चारों के हाथ नंगे थे और वे हिल नहीं रहे थे, उनके चेहरे काले रंग से सने हुए थे। पलंग पर बैठे लोगों में से एक दीवार से टिका हुआ था, आँखें बंद किए हुए, और ऐसा लग रहा था जैसे वह सो रहा हो। वह बूढ़ा था; उसके सफेद बाल और काले रंग से सना चेहरा भयानक लग रहा था। बाकी दो जवान लग रहे थे; एक की दाढ़ी थी, दूसरे के बाल लंबे थे। उनमें से किसी ने भी जूते नहीं पहने थे; जिन्होंने मोजे नहीं पहने थे वे नंगे पैर थे।

जोंड्रेट ने गौर किया कि एम. लेब्लांक की निगाहें इन आदमियों पर टिकी हुई थीं।

“ये मेरे दोस्त हैं। ये मेरे पड़ोसी हैं,” उसने कहा। “इनके चेहरे काले हैं क्योंकि ये कोयले का काम करते हैं। ये चिमनी बनाने वाले हैं। हे मेरे उपकारी, इनके बारे में चिंता मत करो, बल्कि मेरी तस्वीर खरीद लो। मेरी तकलीफ पर तरस खाओ। मैं इसके लिए ज्यादा कुछ नहीं मांगूंगा। तुम्हें क्या लगता है इसकी कीमत कितनी होगी?”

“खैर,” एम. लेब्लांक ने जोन्ड्रेट की आँखों में आँखें डालकर, और एक सतर्क व्यक्ति के अंदाज़ में कहा, “यह किसी सराय का बोर्ड है, और इसकी कीमत लगभग तीन फ्रैंक है।”

जोंड्रेट ने मधुरता से उत्तर दिया:—

“क्या आपके पास आपका बटुआ है? मुझे एक हजार क्राउन से ही संतोष हो जाएगा।”

एम. लेब्लांक उछलकर खड़ा हुआ, दीवार से पीठ टिकाकर खड़ा हुआ और कमरे में चारों ओर एक सरसरी नज़र डाली। उसके बाईं ओर, खिड़की के पास वाली तरफ, जोन्ड्रेट थी, और दाईं ओर, दरवाजे के पास वाली तरफ, जोन्ड्रेट नाम की महिला और चार आदमी थे। चारों आदमी हिले-डुले नहीं और ऐसा लग रहा था मानो वे देख भी नहीं रहे हों।

जोंड्रेट ने एक बार फिर विलाप भरे स्वर में बोलना शुरू कर दिया था, उसकी आँखें इतनी अस्पष्ट थीं और स्वर इतना दयनीय था कि एम. लेब्लांक को लग सकता था कि उनके सामने एक ऐसा व्यक्ति है जो दुख से पागल हो गया है।

“अगर आप मेरी तस्वीर नहीं खरीदते, मेरे प्रिय उपकारक,” जोंड्रेट ने कहा, “मैं बेसहारा हो जाऊंगी; मेरे पास नदी में कूदने के अलावा कोई चारा नहीं बचेगा। सोचो, मैं अपनी दोनों बेटियों को नए साल के तोहफों के लिए डिब्बे बनाना सिखाना चाहती थी! अरे बाप रे! एक मेज चाहिए जिसके एक सिरे पर तख्ता हो ताकि गिलास गिर न जाएं, फिर एक खास चूल्हा चाहिए, एक बर्तन जिसमें पेस्ट की अलग-अलग मात्रा के लिए तीन खाने हों, इस हिसाब से कि वह लकड़ी, कागज या कपड़े के लिए इस्तेमाल किया जाए, गत्ते को काटने के लिए एक छोटा चाकू, उसे आकार देने के लिए एक सांचा, स्टील में कील ठोकने के लिए एक हथौड़ा, चिमटा, न जाने क्या-क्या? और यह सब सिर्फ चार सू (लगभग 100 ग्राम) कमाने के लिए! और आपको दिन में चौदह घंटे काम करना पड़ता है! और हर डिब्बा कारीगर के हाथों से तेरह बार गुजरता है! और कागज गीला नहीं होना चाहिए! और कुछ भी दाग नहीं लगना चाहिए! और पेस्ट को गर्म रखना पड़ता है। हे भगवान! एक दिन में सौ डॉलर! आपके विचार से मनुष्य को कैसे जीना चाहिए?

बोलते समय जोन्ड्रेट ने एम. लेब्लांक की ओर नहीं देखा, जो उसे देख रहे थे। एम. लेब्लांक की निगाहें जोन्ड्रेट पर टिकी थीं और जोन्ड्रेट की निगाहें दरवाजे पर। मारियस का ध्यान बार-बार एक से दूसरे पर जा रहा था। एम. लेब्लांक मानो मन ही मन सोच रहे थे: "क्या यह आदमी मूर्ख है?" जोन्ड्रेट ने दो-तीन बार अलग-अलग लहजों में गिड़गिड़ाते हुए कहा: "मेरे पास नदी में कूदने के अलावा कोई चारा नहीं बचा! मैं कुछ दिन पहले ऑस्टरलिट्ज़ पुल के किनारे से तीन सीढ़ियाँ नीचे इसी उद्देश्य से उतरा था।"

अचानक उसकी मंद आँखों में एक भयानक चमक उठी; वह छोटा आदमी सीधा खड़ा हो गया और भयानक रूप धारण कर लिया, एम. लेब्लांक की ओर एक कदम बढ़ाया और गरजती हुई आवाज में चिल्लाया: "इसका सवाल से कोई लेना-देना नहीं है! क्या आप मुझे जानते हैं?"

XX. जाल

अटारी का दरवाजा अचानक खुला और अंदर से नीले सूती कपड़े पहने तीन आदमी दिखाई दिए, जिनके चेहरे पर काले कागज के मुखौटे लगे थे। पहला आदमी दुबला- पतला था और उसके हाथ में लोहे की नोक वाली एक लंबी लाठी थी; दूसरा, जो एक विशालकाय व्यक्ति जैसा लग रहा था, उसने बीच से लाठी पकड़ रखी थी, जिसका ब्लेड नीचे की ओर था, और वह मवेशियों को काटने वाली एक कसाई की कुल्हाड़ी पकड़े हुए था। तीसरा आदमी, जिसके कंधे चौड़े थे और वह पहले वाले जितना दुबला नहीं था, उसके हाथ में किसी जेल के दरवाजे से चुराई गई एक विशाल चाबी थी।
ऐसा प्रतीत हुआ कि इन आदमियों का आना वही था जिसका जोन्ड्रेट इंतजार कर रहा था। उसके और लाठी लिए दुबले-पतले आदमी के बीच तेजी से बातचीत शुरू हो गई।
“क्या सब कुछ तैयार है?” जोंड्रेट ने कहा।
“हां,” उस दुबले-पतले आदमी ने जवाब दिया।
मोंटपार्नास कहाँ है?
"युवा मुख्य अभिनेता आपकी लड़की से बातचीत करने के लिए रुक गए।"
"कौन सा?"
“सबसे बड़ा।”
क्या दरवाजे पर कोई घोड़ागाड़ी खड़ी है?
"हाँ।"
"क्या टीम पूरी तरह से तैयार है?"
"हाँ।"
"दो अच्छे घोड़ों के साथ?"
"उत्कृष्ट।"

"क्या यह वहीं पर है जहां मैंने इसे ऑर्डर किया था?"

"हाँ।"

“अच्छा,” जोंड्रेट ने कहा।

एम. लेब्लांक का चेहरा पीला पड़ गया था। वह अपने कमरे में चारों ओर हर चीज़ को ऐसे गौर से देख रहे थे, मानो उन्हें समझ आ गया हो कि वे किस मुसीबत में फंस गए हैं। उनका सिर, चारों ओर बैठे लोगों के सिरों की ओर बारी-बारी से घूम रहा था, और वह हैरानी और सतर्कता से धीरे-धीरे गर्दन हिला रहे थे, लेकिन उनके हाव-भाव में डर का कोई निशान नहीं था। उन्होंने मेज से एक खाई बना ली थी; और जो व्यक्ति कुछ पल पहले तक एक भले-बुरे बूढ़े आदमी जैसा दिख रहा था, वह अचानक एक एथलीट जैसा बन गया था, और उसने अपनी मजबूत मुट्ठी को कुर्सी के पीछे एक डरावने और चौंकाने वाले अंदाज़ में रख दिया।

यह बूढ़ा आदमी, जो इतने बड़े खतरे के सामने भी इतना दृढ़ और साहसी था, ऐसा प्रतीत होता था मानो उसमें साहस और दयालुता दोनों ही सहज और सरल हों। जिस स्त्री से हम प्रेम करते हैं, उसका पिता हमारे लिए कभी अजनबी नहीं होता। मारियस को उस अनजान आदमी पर गर्व महसूस हुआ।

जोन्ड्रेट ने जिन तीन आदमियों के बारे में कहा था, "वे चिमनी बनाने वाले हैं," वे पुराने लोहे के ढेर से हथियार लेकर निकले थे - एक के हाथ में भारी कैंची, दूसरे के हाथ में तोलने का चिमटा और तीसरे के हाथ में हथौड़ा - और बिना कुछ बोले प्रवेश द्वार पर खड़े हो गए थे। बूढ़ा आदमी बिस्तर पर ही लेटा रहा और उसने बस अपनी आँखें खोलीं। जोन्ड्रेट की पत्नी उसके बगल में बैठ गई।

मारियस ने फैसला किया कि कुछ ही सेकंड में हस्तक्षेप का क्षण आ जाएगा, और उसने अपनी पिस्तौल चलाने की तैयारी में अपना दाहिना हाथ गलियारे की दिशा में, छत की ओर उठाया।

जोंड्रेट ने लाठी वाले आदमी से अपनी बातचीत समाप्त करने के बाद, एक बार फिर एम. लेब्लांक की ओर मुड़ा और अपना प्रश्न दोहराया, साथ ही साथ अपनी उस धीमी, दबी हुई और भयानक हंसी को भी दोहराया जो उसकी खासियत थी:—

"तो आप मुझे पहचानते नहीं हैं?"

एम. लेब्लांक ने उनकी आंखों में आंखें डालकर जवाब दिया:—

"नहीं।"

फिर जोंड्रेट मेज की ओर बढ़ा। वह मोमबत्ती के ऊपर झुक गया, अपनी भुजाएँ मोड़ लीं, अपने नुकीले और क्रूर जबड़े को एम. लेब्लांक के शांत चेहरे के करीब ले आया, और एम. लेब्लांक को पीछे हटने पर मजबूर किए बिना जितना संभव हो सके आगे बढ़ा, और काटने के लिए तैयार जंगली जानवर की इस मुद्रा में उसने कहा:—

“मेरा नाम फैबंटू नहीं है, मेरा नाम जोंड्रेट नहीं है, मेरा नाम थेनार्डियर है। मैं मोंटफर्मेइल का सराय मालिक हूँ! क्या तुम समझे? थेनार्डियर! अब तुम मुझे पहचान गए?”

एम. लेब्लांक के माथे पर लगभग न के बराबर लाली छा गई, और उन्होंने अपनी अभ्यस्त शांति के साथ, न तो कांपती हुई और न ही अपनी सामान्य स्तर से ऊपर उठती हुई आवाज में उत्तर दिया:

पहले से ज्यादा नहीं।

मारियस ने यह जवाब नहीं सुना। उस समय अँधेरे में उसे देखने वाला कोई भी व्यक्ति समझ जाता कि वह थका हुआ, स्तब्ध और अचंभित था। जिस क्षण जोन्ड्रेट ने कहा: "मेरा नाम थेनार्डियर है," मारियस का शरीर काँप उठा और वह दीवार से टिक गया, मानो उसके दिल में किसी लोहे की ठंडी धार चुभ रही हो। फिर उसका दाहिना हाथ, जो संकेत शॉट चलाने के लिए पूरी तरह तैयार था, धीरे-धीरे नीचे गिर गया, और जिस क्षण जोन्ड्रेट ने दोहराया, "थेनार्डियर, क्या तुम समझते हो?" मारियस की काँपती उंगलियाँ पिस्तौल को लगभग गिराने ही वाली थीं। जोन्ड्रेट ने अपनी पहचान बताकर एम. लेब्लांक को तो नहीं हिलाया, लेकिन मारियस को बुरी तरह परेशान कर दिया था। थेनार्डियर का वह नाम, जिससे एम. लेब्लांक परिचित नहीं लग रहे थे, मारियस अच्छी तरह जानता था। पाठक याद करें कि उस नाम का उसके लिए क्या अर्थ था! वह नाम जो उसने अपने दिल में बसा रखा था, जो उसके पिता की वसीयत में लिखा था! उसने इसे अपने मन की गहराइयों में, अपनी स्मृति की गहराइयों में, उस पवित्र आदेश में संजो रखा था: “एक थेनार्डियर ने मेरी जान बचाई थी। अगर मेरा बेटा उससे मिले, तो वह उसकी हर संभव मदद करेगा।” याद रहे, वह नाम उसकी आत्मा की पवित्रता में से एक था; वह

अपने पिता के नाम के साथ उस नाम को जोड़कर उसकी पूजा करता था। क्या! यह वही थेनार्डियर था, मोंटफर्मेइल का वह सराय मालिक जिसकी वह इतने लंबे समय से व्यर्थ खोज कर रहा था! आखिरकार उसे मिल गया, और कैसे? उसके पिता का रक्षक एक बदमाश निकला! वह आदमी, जिसकी सेवा में मारियस खुद को समर्पित करने के लिए बेताब था, एक राक्षस निकला! कर्नल पोंटमर्सी को बचाने वाला वह व्यक्ति एक ऐसा अपराध करने वाला था जिसका दायरा मारियस अभी तक पूरी तरह से समझ नहीं पाया था, लेकिन जो एक हत्या जैसा लग रहा था! और किसके खिलाफ, हे भगवान! यह कैसी विपत्ति है! भाग्य का कैसा घिनौना मजाक है! उसके पिता ने अपनी मृत्यु से पहले उसे आदेश दिया था कि वह थेनार्डियर के प्रति अपनी पूरी सामर्थ्य से जो भी भलाई कर सके, करे। चार वर्षों तक मारियस के मन में अपने पिता के इस ऋण को चुकाने के अलावा कोई और विचार नहीं था। और ठीक उसी क्षण जब वह एक डाकू को अपराध करते हुए रंगे हाथों पकड़ने ही वाला था, तभी नियति ने उससे कहा: “यही है थेनार्डियर!” वह अंततः इस व्यक्ति को अपने पिता के जीवन का बदला चुका सकता था, जो वाटरलू के वीर युद्धक्षेत्र में गोलियों की बौछार के बीच बचाए गए थे, और वह बदला उसे फांसी पर चढ़ाकर चुका सकता था! उसने स्वयं से प्रतिज्ञा की थी कि यदि उसे कभी वह थेनार्डियर मिल जाए, तो वह केवल उसके चरणों में गिरकर ही उसका अभिवादन करेगा; और अब वह वास्तव में उसे मिल गया था, लेकिन केवल उसे जल्लाद के हवाले करने के लिए! उसके पिता ने उससे कहा: “थेनार्डियर की सहायता करो!” और उसने उस पूजनीय और पवित्र वाणी का उत्तर थेनार्डियर को कुचलकर दिया! वह अपने पिता की कब्र में उस व्यक्ति का दृश्य प्रस्तुत करने ही वाला था, जिसने अपनी जान जोखिम में डालकर उसे मृत्यु से बचाया था, और जिसे उसके बेटे, मारियस के हाथों प्लेस सेंट-जैक्स पर मार डाला गया था, उसी मारियस को जिसे उसने अपनी वसीयत में उस व्यक्ति के हवाले किया था! और यह कितना बड़ा उपहास था कि अपने पिता के अंतिम आदेशों को, जो उसने खुद अपने हाथों से लिखे थे, इतने लंबे समय तक अपने हृदय में संजोए रखा, और फिर उसके बिल्कुल विपरीत कार्य किया! लेकिन, दूसरी ओर, अब उस जाल को देखकर भी उसे रोकने का प्रयास न करना! पीड़ित को दोषी ठहराना और हत्यारे को बख्श देना! क्या कोई ऐसे अभागे के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकता है? मारियस ने पिछले चार वर्षों से जो भी विचार संजोए थे, वे इस अप्रत्याशित आघात से मानो पूरी तरह चकनाचूर हो गए।

वह कांप उठा। सब कुछ उसी पर निर्भर था। अनजाने में ही, उसके हाथों में वे सभी प्राणी थे जो उसकी आँखों के सामने घूम रहे थे। अगर उसने पिस्तौल चलाई, तो एम. लेब्लैंक बच जाएगा और थेनार्डियर हार जाएगा; अगर उसने गोली नहीं चलाई, तो एम. लेब्लैंक की बलि चढ़ जाएगी, और कौन जाने? थेनार्डियर बच निकलेगा। क्या उसे एक को मार गिराना चाहिए या दूसरे को गिरने देना चाहिए? दोनों ही स्थिति में उसे पछतावा होना ही था।

वह क्या करे? उसे क्या चुनना चाहिए? क्या वह अपने सबसे महत्वपूर्ण स्मृतियों, अपने प्रति किए गए सभी गंभीर वादों, सबसे पवित्र कर्तव्य, सबसे पूजनीय ग्रंथ के प्रति विश्वासघात करे? क्या वह अपने पिता की वसीयत को अनदेखा करे, या किसी अपराध को होने दे! एक ओर, उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह अपनी "उर्सुल" को अपने पिता के लिए प्रार्थना करते हुए सुन रहा हो, और दूसरी ओर, कर्नल थेनार्डियर को उसकी देखरेख में सौंप रहा हो। उसे लगा जैसे वह पागल हो रहा है। उसके घुटने कांपने लगे। और उसके पास विचार करने का समय भी नहीं था, क्योंकि उसकी आँखों के सामने का दृश्य इतनी तेज़ी से विनाश की ओर बढ़ रहा था। यह एक बवंडर की तरह था जिसका वह स्वामी समझता था, और जो अब उसे बहा ले जा रहा था। वह बेहोश होने की कगार पर था।

इसी बीच, थेनार्डियर, जिसे हम अब से किसी और नाम से नहीं पुकारेंगे, मेज के सामने उन्माद और बेतहाशा विजय की भावना से इधर-उधर चक्कर लगा रहा था।

उसने मोमबत्ती को मुट्ठी में पकड़ा और उसे इतनी ज़ोर से चिमनी पर रख दिया कि बाती लगभग बुझ गई और मोमबत्ती की मोम दीवार पर छिटक गई।

फिर उसने एम. लेब्लांक की ओर भयानक नज़र से देखा और ये शब्द कहे:—

“तैयार! पूरी तरह से पका हुआ! भूनकर भूरा हो गया! पक गया! थूक से भूनकर तैयार!”

और फिर वह पूरे जोश में इधर-उधर मार्च करने लगा।

आह!” वह चिल्लाया, “तो आखिरकार मैंने तुम्हें फिर से पा लिया, श्रीमान परोपकारी! श्रीमान फटेहाल करोड़पति! श्रीमान गुड़िया दान करने वाले! तुम बूढ़े मूर्ख! आह! तो तुम मुझे पहचान नहीं रहे! नहीं, वह तुम नहीं थे जो आठ साल पहले, 1823 की क्रिसमस की पूर्व संध्या पर, मोंटफर्मेइल में, मेरे सराय में आए थे! वह तुम नहीं थे जो फैंटाइन के बच्चे को मुझसे ले गए थे! द

लार्क! वह तुम नहीं थे जिसने पीला ओवरकोट पहना था! नहीं! और न ही तुम्हारे हाथ में कपड़ों का पैकेट था, जैसा कि आज सुबह यहाँ था! सुनो, पत्नी, लगता है घरों में ऊनी मोजों के पैकेट ले जाना उसका जुनून बन गया है! बूढ़े दानवीर, निकल जाओ यहाँ से! क्या तुम मोजे बेचने वाले हो, श्रीमान करोड़पति? तुम अपना सारा सामान गरीबों को दे देते हो, हे पवित्र व्यक्ति! क्या बकवास है! खुशमिजाज एंड्रयू! आह! और तुम मुझे पहचान नहीं रहे? खैर, मैं तुम्हें पहचानता हूँ, बिल्कुल! मैंने तुम्हें उसी क्षण पहचान लिया जब तुमने अपनी नाक अंदर डाली थी अरे! तुम्हें जल्द ही पता चल जाएगा कि लोगों के घरों में इस तरह घुसना, उन्हें शराबखाना बताकर, फटे-पुराने कपड़े पहनकर, एक गरीब आदमी का रूप धारण करके, जिसे लोग एक पैसा भी दे दें, लोगों को धोखा देना, उदारता का दिखावा करना, उनकी रोजी-रोटी छीनना और जंगल में धमकियाँ देना, ये सब इतना आसान नहीं है। और तुम बाद में हिसाब बराबर नहीं कर पाओगे क्योंकि बाद में, जब लोग बर्बाद हो जाते हैं, तो तुम एक बड़ा कोट और दो घटिया अस्पताल के कंबल लेकर आते हो, तुम बूढ़े बदमाश, तुम बच्चे चुराने वाले!

वह रुका और एक पल के लिए मानो खुद से ही बात कर रहा हो। ऐसा लग रहा था मानो उसका क्रोध किसी गड्ढे में गिर गया हो, जैसे रोन नदी; फिर, मानो वह फुसफुसाते हुए खुद से कही गई बातों को ज़ोर से कह रहा हो, उसने मुट्ठी से मेज पर प्रहार किया और चिल्लाया:—

और अपने उस भोलेपन भरे अंदाज़ के साथ!

और, एम. लेब्लांक को संबोधित करते हुए:—

“पार्बलू! तुमने अतीत में मेरा मज़ाक उड़ाया! मेरी सारी बदकिस्मती का कारण तुम हो! पंद्रह सौ फ्रैंक में तुमने उस लड़की को ले लिया जो मेरे पास थी, और जो यकीनन अमीर लोगों की थी, और जिसने पहले ही बहुत पैसा कमा कर रखा था, और जिससे मैं जीवन भर गुज़ारा करने के लिए पर्याप्त कमा सकता था! एक लड़की जो उस घटिया रसोई में मेरे हर नुकसान की भरपाई कर सकती थी, जहाँ लगातार झगड़े के सिवा कुछ नहीं होता था, और जहाँ मैंने एक मूर्ख की तरह अपना आखिरी पैसा भी गंवा दिया! ओह! काश मेरे घर में जो शराब लोग पीते थे, वह पीने वालों के लिए ज़हर होती! खैर, छोड़ो! अब सुनो! जब तुम लार्क के साथ गए थे, तब तुमने मुझे कितना हास्यास्पद समझा होगा! जंगल में तुम्हारा डंडा था। तुम ज़्यादा ताकतवर थे। बदला। आज तो मैं ही बाज़ी मार रहा हूँ!

तुम्हारी हालत बहुत खराब है, मेरे दोस्त! ओह, लेकिन मैं हँस सकता हूँ! सचमुच, मैं हँस रहा हूँ! क्या वह जाल में नहीं फँसा! मैंने उससे कहा था कि मैं एक अभिनेता हूँ, कि मेरा नाम फैबंटू था, मैंने मैमसेल मार्स और मैमसेल मुचे के साथ कॉमेडी की थी, मेरे मकान मालिक ने कल यानी 4 फरवरी को किराया लेने पर अड़े रहने की ज़िद की, और उन्हें यह भी याद नहीं था कि तिमाही का किराया 4 फरवरी को नहीं बल्कि 8 जनवरी को खत्म होता है! बेवकूफ! और वो चार बेचारे फिलिप्स जो वो मेरे लिए लाए थे! बदमाश! उनमें सौ फ्रैंक तक देने की भी हिम्मत नहीं थी! और उन्होंने मेरी बातों को कैसे गँवा दिया! मुझे तो हंसी आ गई। मैंने मन ही मन कहा: ‘बेवकूफ! चलो, मैंने तुम्हें पकड़ लिया! आज सुबह तो मैं तुम्हारी चापलूसी कर रहा हूँ, लेकिन शाम को तुम्हारा दिल नोंच डालूँगा!’

थेनार्डियर रुक गया। उसकी सांस फूल रही थी। उसका छोटा, संकरा सीना भट्टी की धौंकनी की तरह हांफ रहा था। उसकी आँखों में एक कमज़ोर, क्रूर और कायर प्राणी की नीच खुशी झलक रही थी, जिसे अंततः यह एहसास हो रहा था कि वह जिससे डरता था उसे सता सकता है और जिसकी चापलूसी करता था उसे अपमानित कर सकता है; एक बौने की खुशी जो गोलियत के सिर पर अपना पैर रख सके; एक सियार की खुशी जो एक बीमार बैल को फाड़ना शुरू कर दे, जो लगभग मर चुका है और अपना बचाव नहीं कर सकता, लेकिन इतना जीवित है कि दर्द सह सके।

एम. लेब्लांक ने उन्हें बीच में नहीं टोका, बल्कि जब वे रुके तो उनसे कहा:—

“मुझे नहीं पता कि आप क्या कहना चाह रहे हैं। आप मुझे गलत समझ रहे हैं। मैं बहुत गरीब आदमी हूँ, करोड़पति तो बिल्कुल नहीं। मैं आपको नहीं जानता। आप मुझे किसी और के लिए गलत समझ रहे हैं।”

“आह!” थेनार्डियर कर्कश स्वर में दहाड़ा, “कितना प्यारा झूठ! तुम इसी मीठी- मीठी बातों पर अड़े रहो! तुम तो बिल्कुल ही भ्रमित हो, मेरे दोस्त! आह! तुम्हें याद नहीं! तुम्हें पता नहीं कि मैं कौन हूँ?”

“क्षमा कीजिए महोदय,” एम. लेब्लांक ने विनम्रता भरे लहजे में कहा, जो उस क्षण विशेष रूप से विचित्र और प्रभावशाली प्रतीत हो रहा था, “मैं देखता हूँ कि आप एक खलनायक हैं!”

किसने इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया है कि घृणित प्राणियों में भी अपनी एक संवेदनशीलता होती है, कि राक्षस भी गुदगुदी के प्रति संवेदनशील होते हैं! "दुष्ट" शब्द सुनते ही, महिला थेनार्डियर बिस्तर से उछल पड़ी, थेनार्डियर ने अपनी कुर्सी को ऐसे पकड़ लिया मानो वह उसे अपने हाथों में कुचलने वाला हो। "हिलो मत!" उसने अपनी पत्नी पर चिल्लाया; और एम. लेब्लांक की ओर मुड़कर:—

“खलनायक! हाँ, मुझे पता है कि आप अमीर लोग हमें यही कहते हैं! रुकिए! यह सच है कि मैं दिवालिया हो गया हूँ, मैं छिप रहा हूँ, मेरे पास रोटी नहीं है, मेरे पास एक पैसा भी नहीं है, मैं एक खलनायक हूँ! तीन दिन हो गए हैं मुझे कुछ खाने को नहीं मिला, इसलिए मैं खलनायक हूँ! आह! आप लोग अपने पैर गर्म रखते हैं, आपके पास साकोस्की बूट हैं, आपके पास आर्चबिशप की तरह गद्देदार ओवरकोट हैं, आप ऐसे घरों की पहली मंजिल पर रहते हैं जिनमें कुली होते हैं, आप ट्रफल खाते हैं, आप जनवरी के महीने में चालीस फ्रैंक प्रति गुच्छा शतावरी और हरी मटर खाते हैं, आप पेट भर खाते हैं, और जब आपको यह जानना होता है कि ठंड है या नहीं, तो आप अखबारों में देखते हैं कि इंजीनियर शेवेलियर का थर्मामीटर क्या कहता है। हम, हम ही थर्मामीटर हैं। हमें ठंड के डिग्री जानने के लिए टूर डे ल'होरोलोज के कोने पर घाट पर जाकर देखने की ज़रूरत नहीं है; हम अपने खून को महसूस करते हैं। हमारी रगों में डर जम रहा है, हमारे दिलों के चारों ओर बर्फ जम रही है, और हम कहते हैं: 'कोई भगवान नहीं है!' और तुम हमारी गुफाओं में आते हो, हाँ हमारी गुफाओं में, हमें खलनायक कहने के उद्देश्य से! लेकिन हम तुम्हें खा जाएंगे! लेकिन हम तुम्हें खा जाएंगे, बेचारे! ज़रा यहाँ देखो, श्रीमान करोड़पति: मैं एक नेक इंसान रहा हूँ, मेरे पास लाइसेंस रहा है, मैं मतदाता रहा हूँ, मैं एक बुर्जुआ हूँ, मैं हूँ! और यह बिल्कुल संभव है कि तुम न हो!

यहाँ थेनार्डियर दरवाजे के पास खड़े आदमियों की ओर एक कदम बढ़ा और कांपते हुए बोला:—

मुझे यह सोचकर दुख होता है कि उसने यहाँ आकर मुझसे एक मोची की तरह बात करने की हिम्मत की है!

फिर उन्माद के एक नए विस्फोट के साथ एम. लेब्लांक को संबोधित करते हुए:—

और ये भी सुनो, श्रीमान परोपकारी! मैं कोई संदिग्ध व्यक्ति नहीं हूँ, बिलकुल भी नहीं! मैं वो आदमी नहीं हूँ जिसका नाम कोई नहीं जानता, और जो घरों से बच्चों का अपहरण करता है! मैं एक पुराना फ्रांसीसी सैनिक हूँ, मुझे पदक मिलना चाहिए था! मैं वाटरलू की लड़ाई में था, जी हाँ! और उस लड़ाई में मैंने एक जनरल की जान बचाई, जिसका नाम मुझे नहीं पता क्या था। उसने मुझे अपना नाम बताया, लेकिन उसकी कर्कश आवाज इतनी कमजोर थी कि मैं सुन नहीं पाया। मैंने बस इतना सुना, "धन्यवाद।" मुझे उसके धन्यवाद से ज्यादा उसका नाम चाहिए था। इससे मुझे उसे दोबारा ढूंढने में मदद मिलती। जो तस्वीर आप यहाँ देख रहे हैं, जिसे डेविड ने ब्रुकेसेल्स में बनाया था—क्या आप जानते हैं कि यह क्या दर्शाती है? यह मुझे दर्शाती है। डेविड उस वीरतापूर्ण कार्य को अमर करना चाहते थे। मैंने उस जनरल को अपनी पीठ पर उठाया हुआ है, और मैं उसे गोलियों की बौछार के बीच से ले जा रहा हूँ। यही है इसका इतिहास! उस जनरल ने मेरे लिए कभी कुछ नहीं किया; वह कुछ भी नहीं था। बाकियों से बेहतर! लेकिन फिर भी, मैंने अपनी जान जोखिम में डालकर उसकी जान बचाई, और इसका प्रमाण पत्र मेरी जेब में है! मैं वाटरलू का सिपाही हूँ, सारी शक्तियों की कसम! और अब जब मैंने आपको यह सब बता दिया है, तो चलिए इसे यहीं खत्म करते हैं। मुझे पैसा चाहिए, मुझे बहुत सारा पैसा चाहिए, मुझे बहुत सारा पैसा चाहिए, वरना मैं तुम्हें खत्म कर दूंगा, ईश्वर की गर्जना की कसम!

मारियस ने अपने दुख पर कुछ हद तक काबू पा लिया था और अब वह सुन रहा था। संदेह की आखिरी गुंजाइश भी मिट गई थी। यह निश्चित रूप से वसीयत का थेनार्डियर ही था। मारियस अपने पिता पर लगाए गए कृतघ्नता के उस आरोप से कांप उठा, जिसे वह इतनी बुरी तरह से सही ठहराने ही वाला था। उसकी उलझन और बढ़ गई।

इसके अलावा, थेनार्डियर के इन सभी शब्दों में, उसके लहजे में, उसके हावभाव में, उसकी हर शब्द पर आग बरसाती निगाहों में, उस दुष्ट स्वभाव के विस्फोट में जो सब कुछ उजागर कर रहा था, उस शेखी और दीनता, उस अहंकार और तुच्छता, उस क्रोध और मूर्खता के मिश्रण में, उस वास्तविक दुःख और झूठी भावनाओं की अराजकता में, उस द्वेषी व्यक्ति की बेशर्मी में जो हिंसा के मादक सुखों का स्वाद चख रहा था, उस घृणित आत्मा की निर्लज्ज नग्नता में, उस सभी पीड़ाओं

और सभी घृणाओं के संयुक्त प्रज्वलन में, कुछ ऐसा था जो बुराई जितना ही घिनौना और सत्य जितना ही हृदय विदारक था।

गुरु की वह तस्वीर, डेविड द्वारा बनाई गई वह पेंटिंग जिसे उन्होंने एम. लेब्लांक को खरीदने का प्रस्ताव दिया था, पाठक के अनुमान के अनुसार, उनके सराय का चिन्ह मात्र थी, जिसे उन्होंने स्वयं चित्रित किया था, और यह एकमात्र अवशेष था जिसे उन्होंने मोंटफर्मेइल में अपने जहाज के डूबने से बचाकर रखा था।

चूंकि उसने मारियस की दृष्टि को रोकना बंद कर दिया था, मारियस इस चीज़ का निरीक्षण कर सका, और उस धब्बे में, उसने वास्तव में एक युद्ध, धुएं की पृष्ठभूमि और एक आदमी को दूसरे आदमी को ले जाते हुए पहचाना। यह पोंटमर्सी और थेनार्डियर का समूह था; सार्जेंट बचाने वाला था, कर्नल बचाया गया था। मारियस एक शराबी की तरह था; इस चित्र ने उसके पिता को किसी तरह से जीवनदान दिया था; यह अब मोंटफर्मेइल की शराब की दुकान का साइनबोर्ड नहीं था, यह एक पुनर्जन्म था; एक कब्र खुल गई थी, एक प्रेत प्रकट हुआ था। मारियस को अपने दिल की धड़कन सुनाई दे रही थी, उसके कानों में वाटरलू की तोपों की गूँज थी, उस भयावह पैनल पर धुंधली सी चित्रित उसके खून से लथपथ पिता ने उसे भयभीत कर दिया था, और उसे ऐसा लग रहा था कि वह विकृत प्रेत उसे घूर रहा है।

जब थेनार्डियर ने अपनी सांसें वापस पाईं, तो उसने अपनी लाल आंखों से एम. लेब्लांक को देखा और धीमी, संक्षिप्त आवाज में उससे कहा:—

"हथकड़ी लगाने से पहले आपको क्या कहना है?"

एम. लेब्लांक चुप रहे।

इस सन्नाटे के बीच, गलियारे से एक फटी हुई आवाज ने यह उदास व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी की:

"अगर कहीं लकड़ी काटने का काम हो, तो मैं तैयार हूँ!"

कुल्हाड़ी लिए हुए वह आदमी आनंदित हो रहा था।

उसी क्षण, दरवाजे पर एक विशाल, खुरदुरा और मिट्टी जैसा चेहरा प्रकट हुआ, जिसकी भयानक हंसी में दांत नहीं, बल्कि नुकीले दांत दिखाई दे रहे थे।

यह कसाई की कुल्हाड़ी लिए हुए आदमी का चेहरा था।

“तुमने अपना मुखौटा क्यों उतार दिया?” थेनार्डियर ने क्रोध में चिल्लाते हुए कहा।

“मज़े के लिए,” उस आदमी ने जवाब दिया।

पिछले कुछ मिनटों से एम. लेब्लांक थेनार्डियर की हर हरकत पर नजर रख रहा था, जो अपने ही गुस्से से अंधा और चकाचौंध होकर, इस पूरे विश्वास के साथ मांद में इधर-उधर घूम रहा था कि दरवाजे पर पहरा है, और एक निहत्थे आदमी को जकड़े हुए है, जबकि वह खुद हथियारबंद है, और नौ के मुकाबले एक है, यह मानते हुए कि महिला थेनार्डियर को केवल एक आदमी के बराबर गिना जा सकता है।

कुल्हाड़ी लिए हुए व्यक्ति को संबोधित करते समय, उन्होंने एम. लेब्लांक की ओर अपनी पीठ कर ली थी।

एम. लेब्लांक ने इस मौके का फायदा उठाया, अपने पैर से कुर्सी और मुट्ठी से मेज को पलट दिया, और एक ही छलांग में, अद्भुत फुर्ती के साथ, थेनार्डियर के मुड़ने से पहले ही, वह खिड़की तक पहुँच गया। उसे खोलना, फ्रेम पर चढ़ना, उस पर पैर रखना, बस एक पल का काम था। वह आधा बाहर ही निकला था कि छह मजबूत मुट्ठियों ने उसे पकड़ लिया और ज़ोर से खींचकर वापस झोपड़ी में ले गए। ये वही तीन "चिमनी बनाने वाले" थे, जिन्होंने उस पर हमला किया था। उसी समय थेनार्डियर की पत्नी ने अपने हाथ उसके बालों में फंसा लिए।

उसके बाद मची अफरा-तफरी के कारण, अन्य बदमाश गलियारे से दौड़कर आ गए। बिस्तर पर लेटा बूढ़ा व्यक्ति, जो शराब के नशे में लग रहा था, पलंग से नीचे उतरा और हाथ में पत्थर तोड़ने वाले का हथौड़ा लिए लड़खड़ाता हुआ उठा।

"चिमनी बनाने वालों" में से एक, जिसका मैला चेहरा मोमबत्ती की रोशनी से जगमगा रहा था, और जिसे मारियस ने उसके चेहरे पर लगे रंग के बावजूद पहचान लिया, पंचौड उर्फ प्रिंटानियर उर्फ बिग्रेनाइल, ने एम. लेब्लांक के सिर के ऊपर लोहे की छड़ के दोनों सिरों पर सीसे की दो गेंदों से बना एक प्रकार का डंडा उठा रखा था।

मारियस इस दृश्य को देखकर खुद को रोक नहीं पाया। उसने मन ही मन सोचा, "मेरे पिता, मुझे क्षमा कर दीजिए!"

और उसकी उंगली पिस्तौल के ट्रिगर की ओर बढ़ रही थी।

गोली चलने ही वाली थी कि थेनार्डियर की आवाज सुनाई दी:—

उसे नुकसान मत पहुँचाओ!

पीड़ित के इस हताश प्रयास ने थेनार्डियर को क्रोधित करने के बजाय शांत कर दिया था। उसके भीतर दो प्रकार के पुरुष मौजूद थे - एक क्रूर पुरुष और एक चतुर पुरुष। उस क्षण तक, अपने द्वारा गिराए गए और अविचलित शिकार के समक्ष विजय के अतिशय भाव में, क्रूर पुरुष हावी था; जब पीड़ित ने संघर्ष किया और विरोध करने का प्रयास किया, तो चतुर पुरुष फिर से प्रकट हुआ और उसने बाजी मार ली।

“उसे चोट मत पहुँचाओ!” उसने दोहराया, और अनजाने में ही, उसकी पहली सफलता पिस्तौल को चलने से रोकने और मारियस को लकवाग्रस्त करने में थी, जिसके विचार में मामले की तात्कालिकता समाप्त हो गई थी, और जो इस नए मोड़ का सामना करते हुए, कुछ और समय प्रतीक्षा करने में कोई असुविधा नहीं देखता था।

कौन जानता है कि शायद कोई ऐसा मौका न आ जाए जो उसे उर्सुले के पिता को मरने देने या कर्नल के रक्षक को नष्ट करने के भयानक विकल्प से बचा ले?

एक भयंकर संघर्ष शुरू हो चुका था। एम. लेब्लांक ने सीने पर एक जोरदार प्रहार से बूढ़े को कमरे के बीचोंबीच लुढ़का दिया, फिर अपने हाथ के दो झटकों से उसने दो और हमलावरों को गिरा दिया और उनमें से एक को अपने घुटनों के नीचे दबा लिया; इस दबाव के कारण वे दोनों गले से ऐसे कराहें भर रहे थे जैसे किसी ग्रेनाइट की चक्की के नीचे दबा दिए गए हों; लेकिन बाकी चार ने उस शक्तिशाली बूढ़े को दोनों बाहों और गर्दन के पीछे से पकड़ लिया और उसे फर्श पर पड़े उन दो "चिमनी बनाने वालों" के ऊपर झुकाकर पकड़े रखा था।

इस प्रकार, कुछ लोगों का स्वामी और बाकी लोगों द्वारा नियंत्रित, अपने से नीचे वालों को कुचलते हुए और अपने से ऊपर वालों के नीचे घुटते हुए, अपने ऊपर थोपे गए सभी प्रयासों को दूर करने का व्यर्थ प्रयास करते हुए, एम. लेब्लांक बदमाशों के उस भयानक समूह के नीचे इस प्रकार गायब हो गया जैसे जंगली सूअर भौंकते हुए कुत्तों और शिकारी कुत्तों के ढेर के नीचे गायब हो जाता है।

वे उसे खिड़की के सबसे पास वाले पलंग पर गिराने में सफल हो गए, और वहाँ उन्होंने उसे भय से जकड़ लिया। थेनार्डियर महिला ने उसके बालों पर अपनी पकड़ नहीं छोड़ी थी।
“इस मामले में खुद को मत उलझाओ,” थेनार्डियर ने कहा। “तुम्हारी शॉल फट जाएगी।”
थेनार्डियर ने गुर्राते हुए आज्ञा का पालन किया, ठीक वैसे ही जैसे मादा भेड़िया नर भेड़िये की आज्ञा का पालन करती है।
“अब,” थेनार्डियर ने कहा, “तुम सब लोग उसकी तलाशी लो!”
ऐसा प्रतीत होता है कि एम. लेब्लांक ने प्रतिरोध के विचार का त्याग कर दिया था।
उन्होंने उसकी तलाशी ली।
उसके पास चमड़े के एक पर्स के अलावा कुछ भी नहीं था जिसमें छह फ्रैंक थे और उसका रूमाल था।
थेनार्डियर ने रूमाल अपनी जेब में रख लिया।
“क्या! पर्स भी नहीं है?” उसने हैरानी से पूछा।
“नहीं, न ही घड़ी,” चिमनी बनाने वालों में से एक ने जवाब दिया।
“कोई बात नहीं,” बड़ी चाबी लिए हुए नकाबपोश आदमी ने एक कठपुतली कलाकार की आवाज में बुदबुदाते हुए कहा, “वह एक सख्त बूढ़ा आदमी है।”
थेनार्डियर दरवाजे के पास वाले कोने में गया, रस्सियों का एक बंडल उठाया और उन्हें उन आदमियों पर फेंक दिया।
“उसे पलंग के पैर से बांध दो,” उसने कहा।
और, एम. लेब्लांक की मुट्ठी के प्रहार से कमरे में इधर-उधर पड़े उस बूढ़े व्यक्ति को देखकर, जो हिल-डुल नहीं रहा था, उसने आगे कहा:—
“क्या बौलाट्रुएल मर गया है?”
“नहीं,” बिग्रेनाइल ने जवाब दिया, “वह नशे में है।”
"उसे एक कोने में धकेल दो," थेनार्डियर ने कहा।

दो "चिमनी बनाने वालों" ने शराब के नशे में धुत आदमी को अपने पैरों से धक्का देकर पुराने लोहे के ढेर के पास कोने में धकेल दिया।
“बेबेट,” थेनार्डियर ने लाठी लिए हुए आदमी से धीमी आवाज़ में कहा, “तुम इतने सारे क्यों लाए; इनकी ज़रूरत नहीं थी।”
“क्या कर सकते हो?” लाठी लिए हुए आदमी ने जवाब दिया, “वे सब इसमें शामिल होना चाहते थे। यह बुरा समय है। कोई कारोबार नहीं चल रहा है।”
जिस तख़्ते पर एम. लेब्लांक को फेंका गया था, वह एक प्रकार का अस्पताल का बिस्तर था, जो खुरदुरे ढंग से तराशे गए चार मोटे लकड़ी के पैरों पर टिका हुआ था।
एम. लेब्लांक ने उन्हें अपना रास्ता खुद चुनने दिया।
बदमाशों ने उसे बिस्तर के सिरहाने पर, खिड़की से सबसे दूर और चिमनी के सबसे नजदीक वाले हिस्से में, पैरों को जमीन पर टिकाकर, सीधे खड़े होने की मुद्रा में मजबूती से बांध दिया।
जब आखिरी गांठ भी बंध गई, तो थेनार्डियर ने एक कुर्सी ली और लगभग एम. लेब्लांक के सामने बैठ गए।
थेनार्डियर अब पहले जैसा नहीं दिख रहा था; कुछ ही क्षणों में उसके चेहरे का भाव बेलगाम हिंसा से शांत और धूर्त मधुरता में बदल गया था।
मारियस के लिए आधिकारिक जीवन में व्यस्त उस व्यक्ति की सधी हुई मुस्कान में उस लगभग पशुवत मुंह को पहचानना मुश्किल था जो कुछ ही क्षण पहले झाग से भरा हुआ था; उसने उस अद्भुत और भयावह रूपांतरण को विस्मय से देखा, और उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई व्यक्ति किसी बाघ को वकील में परिवर्तित होते हुए देख रहा हो।
“महाशय—” थेनार्डियर ने कहा।
और एम. लेब्लांक पर अभी भी हाथ रखे हुए बदमाशों को इशारे से हटाते हुए:— "थोड़ा दूर हट जाइए, मुझे उस सज्जन से बात करने दीजिए।"
सभी लोग दरवाजे की ओर चले गए।
उन्होंने आगे कहा:—

“महाशय, खिड़की से कूदने की कोशिश करके आपने गलती की। आपकी टांग टूट सकती थी। अब, यदि आप अनुमति दें, तो हम शांति से बात करेंगे। सबसे पहले, मुझे आपको एक बात बतानी है जो मैंने देखी है, और वह यह है कि आपने ज़रा सी भी चीख नहीं निकाली।”

थेनार्डियर सही था, यह विवरण बिल्कुल सटीक था, हालांकि मारियस घबराहट में इसे भूल गया था। एम. लेब्लांक ने मुश्किल से कुछ शब्द बोले थे, वो भी बिना आवाज उठाए, और खिड़की के पास छह बदमाशों से जूझते हुए भी उन्होंने अत्यंत गहन और विलक्षण मौन बनाए रखा था।

थेनार्डियर ने आगे कहा:—

“हे भगवान! आप चाहें तो ‘चोर पकड़ो’ चिल्ला सकते थे, और मुझे इसमें कोई बुराई नहीं लगती। ‘हत्या!’ यह भी कभी-कभार बोला जाता है, और जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे इसमें कोई बुराई नहीं लगती। यह बहुत स्वाभाविक है कि जब आप ऐसे लोगों के साथ हों जिन पर आपको पूरा भरोसा न हो, तो आप थोड़ा हंगामा करें। आप ऐसा कर सकते थे, और कोई आपको इसके लिए परेशान नहीं करता। आपको चुप भी नहीं कराया जाता। और मैं आपको इसका कारण बताता हूँ। यह कमरा बहुत ही एकांत में है। यही इसकी एकमात्र खासियत है, लेकिन यही इसकी खूबी है। आप चाहे तो मोर्टार दाग दें, पास के पुलिस स्टेशन में उसकी आवाज़ किसी शराबी के खर्राटों जितनी ही होगी। यहाँ तोप की आवाज़ तो बस एक बूम की होगी, और गरज की आवाज़ बस एक पफ की। यह एक सुविधाजनक कमरा है। लेकिन संक्षेप में, आपने चिल्लाया नहीं, और यही बेहतर है। मैं आपको अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ, और मैं आपको इस तथ्य से निकाला गया अपना निष्कर्ष बताता हूँ: मेरे प्रिय महोदय, जब कोई व्यक्ति चिल्लाता है, तो कौन कौन आएगा? पुलिस। और पुलिस के बाद? न्याय। अच्छा! आपने कोई विरोध नहीं किया; क्योंकि आप भी हमारी तरह पुलिस और अदालतों के दखल को नहीं चाहते। बल्कि—मुझे लंबे समय से शक था— आप कुछ छुपाना चाहते हैं। हमारी तरफ से भी यही स्वार्थ है। इसलिए हम एक-दूसरे को समझ सकते हैं।

जब वह इस तरह बोल रहा था, तो ऐसा लग रहा था मानो थेनार्डियर, जिसकी निगाहें एम. लेब्लांक पर टिकी हुई थीं, अपनी आँखों से निकल रही तीखी निगाहों को अपने कैदी के अंतरात्मा में चुभोने की कोशिश कर रहा हो। इसके अलावा, उसकी भाषा, जिसमें एक प्रकार की संयमित, दबी हुई और धूर्त धृष्टता झलक रही थी,

संयमित और लगभग चुनिंदा थी, और उस बदमाश में, जो कुछ समय पहले तक महज़ एक लुटेरा था, अब किसी को "पुजारी बनने की पढ़ाई करने वाला व्यक्ति" नज़र आ रहा था।

कैदी द्वारा बनाए रखा गया मौन, वह सावधानी जो अपने जीवन के लिए सभी चिंताओं को भुला देने की हद तक बरती गई थी, प्रकृति की पहली प्रवृत्ति, जो कि चीखना है, के विरुद्ध वह प्रतिरोध, यह सब, यह स्वीकार करना होगा, अब जब उसका ध्यान इस ओर दिलाया गया था, मारियस को परेशान कर रहा था और उसे पीड़ादायक आश्चर्य से भर रहा था।

थेनार्डियर के ठोस अवलोकन ने मारियस के लिए उस गंभीर और विलक्षण व्यक्ति के चारों ओर व्याप्त गहन रहस्य को और भी अस्पष्ट कर दिया, जिसे कौरफेयरैक ने महाशय लेब्लांक की उपनाम दिया था।

लेकिन वह जो भी था, रस्सियों से बंधा हुआ, जल्लादों से घिरा हुआ, मानो एक कब्र में आधा डूबा हुआ, जो हर गुजरते पल के साथ उस पर और भी करीब आती जा रही थी, थेनार्डियर के क्रोध और उसकी सौम्यता दोनों की उपस्थिति में भी, वह व्यक्ति भावहीन बना रहा; और मारियस ऐसे क्षण में उसके अत्यंत उदास चेहरे की प्रशंसा करने से खुद को रोक नहीं सका।

स्पष्टतः, यहाँ एक ऐसी आत्मा थी जिस पर भय का कोई प्रभाव नहीं था और जो निराशा का अर्थ नहीं जानती थी। यहाँ उन लोगों में से एक था जो विकट परिस्थितियों में भी विस्मयकारी दृष्टि रखते हैं। संकट कितना भी गंभीर हो, विपत्ति कितनी भी अपरिहार्य हो, यहाँ डूबते हुए व्यक्ति की उस पीड़ा का कोई अंश नहीं था, जो पानी के नीचे अपनी भयभीत आँखें खोलता है।

थेनार्डियर ने सादगी से उठकर चूल्हे के पास जाकर, पर्दे को एक तरफ धकेल दिया, जिसे उसने पास के चबूतरे से टिका दिया था, और इस तरह धधकते कोयलों से भरे अंगीठी को उजागर कर दिया, जिसमें कैदी स्पष्ट रूप से सफेद गर्म छेनी को देख सकता था, जिस पर जगह-जगह छोटे-छोटे लाल तारे जैसे निशान थे।

इसके बाद थेनार्डियर एम. लेब्लांक के बगल में अपनी सीट पर लौट आए।

“मैं अपनी बात जारी रखता हूँ,” उसने कहा। “हम समझौता कर सकते हैं। आइए इस मामले को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझा लें। अभी-अभी मैंने जो आपा खोया, वह गलत था। पता नहीं मैं क्या सोच रहा था, मैं हद से ज्यादा बोल गया, मैंने

बेतुकी बातें कह दीं। उदाहरण के लिए, क्योंकि आप करोड़पति हैं, मैंने आपसे कहा कि मैंने आपसे पैसे मांगे हैं, बहुत सारे पैसे, बहुत सारा पैसा। यह उचित नहीं होगा। हे भगवान, आपकी दौलत के बावजूद, आपके भी अपने खर्चे होते हैं—किसके नहीं होते? मैं आपको बर्बाद नहीं करना चाहता, आखिर मैं लालची तो नहीं हूँ। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो अपनी स्थिति का फायदा उठाकर खुद को हास्यास्पद बनाते हैं। मैं तो सोच-समझकर काम कर रहा हूँ और अपनी तरफ से त्याग कर रहा हूँ। मुझे सिर्फ दो लाख फ्रैंक चाहिए।”

एम. लेब्लांक ने एक शब्द भी नहीं कहा।

थेनार्डियर ने आगे कहा:—

“आप देख रहे हैं कि मैं अपनी शराब में ज़रा भी पानी नहीं मिलाता; मैं बहुत संयमी हूँ। मुझे आपकी आर्थिक स्थिति का तो पता नहीं, पर इतना ज़रूर पता है कि आप पैसे के पीछे नहीं भागते, और आप जैसे दयालु व्यक्ति किसी ज़रूरतमंद परिवार के मुखिया को दो लाख फ़्रैंक तो दे ही सकते हैं। आप समझदार भी हैं; आपने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि मैंने आज इतनी मेहनत की और आज शाम को यह सब इंतज़ाम किया, जो इन सज्जनों की राय में एक सार्थक प्रयास था, और अंत में आपसे इतना माँगूँ कि मैं जाकर पंद्रह सूस की रेड वाइन पी सकूँ और डेस्नोयर के यहाँ वील खा सकूँ। दो लाख फ़्रैंक—यह वाकई इसके लायक है। एक बार ये छोटी-मोटी रकम आपकी जेब से निकल गई, तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि बात यहीं खत्म हो जाएगी, और आपको आगे किसी और माँग का डर नहीं रहेगा। आप मुझसे कहेंगे: ‘लेकिन मेरे पास तो दो लाख फ़्रैंक नहीं हैं।’ अरे! मैं ज़बरदस्ती नहीं कर रहा। मैं ऐसी माँग नहीं करता। मैं बस एक ही चीज़ माँग रहा हूँ।” आपमें से। कृपया जो मैं आपको बताने वाला हूँ उसे लिख लें।

यहाँ थेनार्डियर रुका; फिर उसने अपने शब्दों पर ज़ोर देते हुए और अंगीठी की ओर मुस्कुराते हुए कहा:—

मैं आपको चेतावनी देता हूं कि मैं यह स्वीकार नहीं करूंगा कि आपको लिखना नहीं आता।

एक महान्यायविद भी उस मुस्कान से ईर्ष्या कर सकता था।

थेनार्डियर ने मेज को एम. लेब्लांक के पास धकेल दिया, और उस दराज से एक स्याही की बोतल, एक कलम और कागज का एक पन्ना निकाला जिसे उसने आधा खुला छोड़ दिया था, और जिसमें चाकू का लंबा ब्लेड चमक रहा था।
उन्होंने कागज का वह पन्ना एम. लेब्लांक के सामने रख दिया।
उन्होंने कहा, "लिखो।"
अंततः कैदी ने बोलना शुरू किया।
“आप मुझसे लिखने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? मैं बाध्य हूँ।”
“यह सच है, क्षमा कीजिए!” थेनार्डियर ने उत्साहपूर्वक कहा, “आप बिलकुल सही हैं।”
और बिग्रेनाइल की ओर मुड़ते हुए:—
“उस सज्जन की दाहिनी भुजा खोल दें।”
पंचौद, उर्फ प्रिंटानियर, उर्फ बिग्रेनेले ने थेनार्डियर के आदेश को क्रियान्वित किया।
जब कैदी का दाहिना हाथ मुक्त हो गया, तो थेनार्डियर ने कलम को स्याही में डुबोया और उसे कैदी को भेंट कर दिया।
“कृपया अच्छी तरह समझ लें, महोदय, कि आप हमारे अधिकार और विवेक के अधीन हैं, कोई भी मानवीय शक्ति आपको इससे मुक्त नहीं करा सकती, और यदि हमें अप्रिय कदम उठाने पड़े तो हमें बहुत खेद होगा। मैं न तो आपका नाम जानता हूँ, न ही आपका पता, लेकिन मैं आपको चेतावनी देता हूँ कि आप तब तक बंधे रहेंगे जब तक कि वह व्यक्ति जो आपके द्वारा लिखे जाने वाले पत्र को ले जाने के लिए नियुक्त किया गया है, वापस नहीं आ जाता। अब, कृपया पत्र लिखें।”
“क्या?” कैदी ने पूछा।
मैं लिखवाऊंगा।
एम. लेब्लांक ने कलम उठाई।
थेनार्डियर ने लिखवाना शुरू किया:—
“मेरी बेटी—”

कैदी सिहर उठा और उसने अपनी निगाहें थेनार्डियर की ओर उठाईं।
“‘मेरी प्यारी बेटी’ लिखो—” थेनार्डियर ने कहा।
एम. लेब्लांक ने आज्ञा का पालन किया।
थेनार्डियर ने आगे कहा:—
“तुरंत आओ—”
वह रुका:—
“तुम उसे ‘तू’ कहकर संबोधित करते हो, है ना?”
“कौन?” एम. लेब्लांक ने पूछा।
“पारब्लू!” थेनार्डियर चिल्लाया, “छोटा वाला, लार्क।”
एम. लेब्लांक ने बिना किसी स्पष्ट भावना के उत्तर दिया:—
"मुझे नहीं पता है कि आपका क्या मतलब है।"
“फिर भी, लिखते रहो,” थेनार्डियर ने उत्साह से कहा और फिर उसने लिखना जारी रखा:—
“तुरंत आओ, मुझे तुम्हारी सख्त जरूरत है। जो भी तुम्हें यह संदेश देगा, उसे निर्देश दिया गया है कि वह तुम्हें मेरे पास ले आए। मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ। विश्वास के साथ आओ।”
यह सब एम. लेब्लांक ने लिखा था।
थेनार्डियर ने आगे कहा:—
“अरे! ‘विश्वास के साथ आओ’ वाक्यांश हटा दो; इससे वह यह मान सकती है कि सब कुछ ठीक नहीं है और अविश्वास संभव है।”
एम. लेब्लांक ने तीनों शब्दों को मिटा दिया।
“अब,” थेनार्डियर ने आगे कहा, “इस पर हस्ताक्षर करो। तुम्हारा नाम क्या है?”
कैदी ने कलम नीचे रख दी और मांग की:—
यह पत्र किसके लिए है?

“तुम अच्छी तरह जानते हो,” थेनार्डियर ने पलटवार करते हुए कहा, “मैंने अभी- अभी तुम्हें यह बात उस छोटे बच्चे के लिए बताई थी।”

यह स्पष्ट था कि थेनार्डियर ने उस युवती का नाम लेने से परहेज किया। उसने "लार्क" कहा, "छोटी बच्ची" कहा, लेकिन उसका नाम नहीं लिया—यह एक चतुर व्यक्ति की सावधानी थी जो अपने रहस्य को अपने साथियों से छिपा रहा था। नाम का उल्लेख करना पूरे मामले को उनके हवाले करना था, और उन्हें उस बारे में ज़रूरत से ज़्यादा जानकारी देना था।

उन्होंने आगे कहा:—

“हस्ताक्षर करें। आपका नाम क्या है?”

“उर्बेन फैब्रे,” कैदी ने कहा।

थेनार्डियर ने बिल्ली की फुर्ती से अपना हाथ जेब में डाला और एम. लेब्लांक से जब्त किया गया रूमाल निकाला। उसने उस पर निशान ढूंढा और उसे मोमबत्ती के पास ले जाकर देखा।

“यू. एफ. बस इतना ही। अर्बेन फैब्रे। ठीक है, इस पर यू. एफ. के हस्ताक्षर कर दीजिए।”

कैदी ने हस्ताक्षर किए।

"चूंकि पत्र को मोड़ने के लिए दो हाथों की आवश्यकता होती है, इसलिए इसे मुझे दे दो, मैं इसे मोड़ दूंगा।"

यह हो जाने के बाद, थेनार्डियर ने फिर से बोलना शुरू किया:—

“इसे ‘मैडम फैब्रे’ के नाम से अपने घर के पते पर भेजें। मुझे पता है कि आप यहाँ से काफी दूर, सेंट-जैक्स-डु-हाउट-पास के पास रहती हैं, क्योंकि आप वहाँ हर दिन प्रार्थना के लिए जाती हैं, लेकिन मुझे यह नहीं पता कि आप किस गली में रहती हैं। मुझे लगता है कि आप अपनी स्थिति समझती हैं। चूंकि आपने अपने नाम के बारे में झूठ नहीं बोला है, इसलिए आप अपने पते के बारे में भी झूठ नहीं बोलेंगी। इसे स्वयं लिखें।”

कैदी एक पल के लिए सोच-विचार में डूबा, फिर उसने कलम उठाई और लिखा:—

"मैडेमोसेले फैबरे, एम. अर्बेन फैबरे में, रुए सेंट-डोमिनिक-डी'एनफर, नंबर 17।"
थेनार्डियर ने एक प्रकार के उन्मादपूर्ण आवेग के साथ पत्र को पकड़ लिया।
“पत्नी!” वह चिल्लाया।
थेनार्डियर महिला तेजी से उसके पास पहुंची।
“ये रहा पत्र। आपको पता है आपको क्या करना है। दरवाजे पर एक गाड़ी खड़ी है। तुरंत निकल पड़ें और वापस आ जाएं।”
और मांस काटने वाली कुल्हाड़ी वाले आदमी को संबोधित करते हुए:—
“चूंकि तुमने अपना नोज-स्क्रीन हटा दिया है, इसलिए मालकिन के साथ चलो। तुम फियाक्रे के पीछे जाओगे। तुम्हें पता है तुमने टीम को कहाँ छोड़ा था?” “हां,” उस आदमी ने कहा।
और अपनी कुल्हाड़ी एक कोने में रखकर, वह मैडम थेनार्डियर के पीछे चल दिया। जैसे ही वे रवाना हुए, थेनार्डियर ने आधे खुले दरवाजे से अपना सिर बाहर निकाला और गलियारे में चिल्लाया:—
सबसे महत्वपूर्ण बात, पत्र को खोना मत! याद रखना कि तुम्हारे पास दो लाख फ्रैंक हैं!
थेनार्डियर की कर्कश आवाज ने उत्तर दिया:—
“चिंता मत करो। मैंने इसे अपनी गोद में रखा हुआ है।”
एक मिनट भी नहीं बीता था कि कोड़े की आवाज सुनाई दी, जो तेजी से धीमी होकर गायब हो गई।
“शाबाश!” थेनार्डियर गुर्राया। “वे अच्छी गति से चल रहे हैं। इस तरह की रफ्तार से तो बुर्जुआ वर्ग पौने घंटे के भीतर वापस आ जाएगा।”
उसने अपनी कुर्सी को अंगीठी के पास खींच लिया, अपनी बाहों को मोड़ लिया और अपने कीचड़ से सने जूते अंगीठी के सामने कर दिए।
“मेरे पैर ठंडे हो गए हैं!” उसने कहा।
अब थेनार्डियर और कैदी के साथ केवल पांच बदमाश ही उस गुफा में बचे थे।

इन लोगों ने अपने चेहरे पर काले मुखौटे या लेप लगा रखे थे, जिनसे वे डर के मारे कोयला जलाने वाले, नीग्रो या राक्षस जैसे दिख रहे थे। उनका चेहरा मूर्खतापूर्ण और उदास लग रहा था, और ऐसा महसूस हो रहा था कि वे किसी अपराध को एक मामूली काम की तरह, शांति से, बिना क्रोध या दया के, एक प्रकार की ऊब के साथ अंजाम दे रहे हैं। वे जानवरों की तरह एक कोने में ठसाठस भरे हुए थे और चुप रहे।

थेनार्डियर ने अपने पैरों को गर्म किया।

कैदी फिर से अपनी खामोशी में लौट आया था। कुछ ही क्षण पहले अटारी में जो भयंकर कोलाहल था, उसकी जगह अब एक गंभीर सन्नाटा छा गया था।

जिस मोमबत्ती पर एक विशाल "अजनबी" आकृति बनी थी, वह उस विशाल झोपड़ी में केवल मंद रोशनी बिखेर रही थी, अंगीठी की रोशनी फीकी पड़ गई थी, और वे सभी राक्षसी सिर दीवारों और छत पर विकृत छाया डाल रहे थे।

उस बूढ़े शराबी की धीमी सांसों के अलावा कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थी, जो गहरी नींद में सो रहा था।

मारियस चिंता की स्थिति में इंतजार कर रहा था, जो हर छोटी-मोटी बात से बढ़ती जा रही थी। रहस्य पहले से कहीं अधिक सुलझने योग्य नहीं था।

यह "छोटी बच्ची" कौन थी जिसे थेनार्डियर ने 'लार्क' कहा था? क्या वह उसकी "उर्सुल" थी? कैदी पर "लार्क" शब्द का कोई असर नहीं हुआ था और उसने बिल्कुल स्वाभाविक ढंग से जवाब दिया था: "मुझे नहीं पता कि आपका क्या मतलब है।" दूसरी ओर, दो अक्षर U. F. का अर्थ स्पष्ट हो गया; उनका मतलब अर्बेन फैब्रे था; और उर्सुले का नाम अब उर्सुले नहीं था। यही बात मारियस को सबसे स्पष्ट रूप से समझ में आई।

एक भयानक आकर्षण ने उसे अपनी जगह पर जकड़ रखा था, जहाँ से वह इस पूरे दृश्य को देख और नियंत्रित कर रहा था। वह वहाँ लगभग गतिहीन या चिंतनहीन खड़ा था, मानो इतने करीब से देखे गए घिनौने दृश्यों ने उसे क्षत-विक्षत कर दिया हो। वह किसी घटना की आशा में प्रतीक्षा कर रहा था, चाहे वह कैसी भी हो, क्योंकि वह अपने विचारों को एकत्रित नहीं कर पा रहा था और यह नहीं जानता था कि उसे क्या निर्णय लेना चाहिए।

“चाहे कुछ भी हो जाए,” उसने कहा, “अगर वह लार्क है, तो मैं उसे देखूंगा, क्योंकि थेनार्डियर महिला उसे यहाँ लाएगी। यही अंत होगा, और फिर मैं ज़रूरत पड़ने पर अपनी जान और खून भी दे दूंगा, लेकिन मैं उसे बचाकर रखूंगा! मुझे कोई नहीं रोक सकता।”

लगभग आधा घंटा इसी तरह बीत गया। थेनार्डियर उदास विचारों में डूबा हुआ प्रतीत हो रहा था, कैदी टस से मस नहीं हुआ। फिर भी, मारियस को लगा कि बीच-बीच में, और आखिरी कुछ क्षणों में, उसने कैदी की दिशा से एक हल्की, धीमी सी आवाज सुनी थी।

अचानक, थेनार्डियर ने कैदी को संबोधित किया:

"वैसे, महाशय फैब्रे, मैं आपसे यह बात सीधे ही कह दूं तो बेहतर होगा।"

ये कुछ शब्द किसी स्पष्टीकरण की शुरुआत प्रतीत हुए। मारियस ने ध्यान से सुनना शुरू किया।

“मेरी पत्नी जल्द ही वापस आ जाएगी, अधीर मत होइए। मुझे लगता है कि लार्क सचमुच आपकी बेटी है, और मुझे लगता है कि उसे अपने पास रखना आपके लिए बिल्कुल स्वाभाविक है। बस, मेरी बात ध्यान से सुनिए। मेरी पत्नी आपका पत्र लेकर उसे ढूंढने जाएगी। मैंने अपनी पत्नी को इस तरह कपड़े पहनने को कहा था ताकि आपकी युवती को उसके पीछे आने में कोई कठिनाई न हो। वे दोनों मेरे साथी के साथ गाड़ी में बैठेंगी। बैरियर के बाहर कहीं दो अच्छे घोड़ों से बंधी एक गाड़ी है। आपकी युवती को उसमें ले जाया जाएगा। वह गाड़ी से उतरेगी। मेरा साथी उसके साथ दूसरी गाड़ी में बैठ जाएगा, और मेरी पत्नी हमें यह बताने के लिए वापस यहाँ आएगी: ‘काम हो गया।’ जहाँ तक युवती की बात है, उसे कोई नुकसान नहीं होगा; गाड़ी उसे ऐसी जगह ले जाएगी जहाँ वह शांत रहेगी, और जैसे ही आप मुझे वे दो लाख फ्रैंक सौंप देंगे, उसे आपको वापस कर दिया जाएगा। अगर आप मुझे गिरफ्तार करवाते हैं, तो मेरा साथी लार्क को इशारा कर देगा, बस।” सभी।"

कैदी ने एक शब्द भी नहीं बोला। कुछ देर रुकने के बाद, थेनार्डियर ने बोलना जारी रखा:—

“जैसा कि आप देख रहे हैं, यह बहुत सरल है। जब तक आप स्वयं नुकसान नहीं चाहते, तब तक कोई नुकसान नहीं होगा। मैं आपको स्थिति बता रहा हूँ। मैं आपको चेतावनी इसलिए दे रहा हूँ ताकि आप तैयार रहें।”

वह रुका: कैदी ने चुप्पी नहीं तोड़ी, और थेनार्डियर ने फिर से बोलना शुरू किया:—

“जैसे ही मेरी पत्नी लौटकर मुझसे कहेगी: ‘लार्क पक्षी आ रहा है,’ हम तुम्हें रिहा कर देंगे, और तुम निश्चिंत होकर घर जाकर सो सकते हो। तुम देख सकते हो कि हमारी मंशा बुरी नहीं है।”

मारियस के मन में भयानक दृश्य कौंध गए। क्या! जिस युवती का वे अपहरण कर रहे थे, उसे वापस नहीं लाया जाएगा? क्या उन राक्षसों में से कोई उसे अंधेरे में ले जाएगा? कहाँ? और अगर वह खुद ही होती तो!

यह स्पष्ट था कि वह वही थी। मारियस को लगा जैसे उसका दिल धड़कना बंद हो गया हो।

वह क्या करता? पिस्तौल चला देता? उन सभी बदमाशों को न्याय के हवाले कर देता? लेकिन कुल्हाड़ी लिए वह खूंखार आदमी फिर भी उस युवती की पहुँच से दूर रहेगा, और मारियस थेनार्डियर के शब्दों पर विचार करने लगा, जिनका उसने खूनी अर्थ समझा: "अगर तुम मुझे गिरफ्तार करवाओगे, तो मेरा साथी 'लार्क' को अंगूठा दिखा देगा।"

अब, यह केवल कर्नल की वसीयत के कारण ही नहीं था, बल्कि उनके अपने प्रेम के कारण, और उनके प्रिय व्यक्ति के खतरे के कारण भी था, जिसके कारण उन्होंने खुद को संयमित महसूस किया।

यह भयावह स्थिति, जो पहले ही आधे घंटे से अधिक समय से चल रही थी, हर पल अपना रूप बदल रही थी।

मारियस में इतनी मानसिक शक्ति थी कि वह एक के बाद एक सभी सबसे दिल दहला देने वाली अटकलों की समीक्षा कर सके, आशा की तलाश कर सके लेकिन उसे कोई आशा नहीं मिली।

उसके विचारों की उथल-पुथल उस कमरे की शोकपूर्ण शांति के बिल्कुल विपरीत थी।

इस सन्नाटे के बीच, सीढ़ियों के नीचे वाले दरवाजे के खुलने और फिर बंद होने की आवाज सुनाई दी।

कैदी ने अपनी बेड़ियों में थोड़ी हलचल की।

“ये रहे बुर्जुआ वर्ग,” थेनार्डियर ने कहा।

उसके शब्द अभी निकले ही थे कि थेनार्डियर महिला सचमुच लाल चेहरे, हांफती हुई, बेदम, जलती हुई आंखों के साथ कमरे में दौड़कर आई और चिल्लाते हुए अपने विशाल हाथों से अपनी जांघों पर एक साथ प्रहार करने लगी:

“गलत पता!”

उसके साथ गया बदमाश उसके पीछे प्रकट हुआ और उसने अपनी कुल्हाड़ी दोबारा उठा ली।

उसने आगे कहा:—

“वहाँ कोई नहीं है! सेंट-डोमिनिक स्ट्रीट, नंबर 17, वहाँ कोई श्रीमान अर्बेन फैब्रे नहीं हैं! उन्हें पता ही नहीं कि इसका क्या मतलब है!”

वह रुक गई, उसका गला भर आया, फिर उसने आगे कहा:—

“महाशय थेनार्डियर! उस बूढ़े ने आपको बेवकूफ बना दिया! आप तो बड़े ही अच्छे हैं! अगर मैं होता, तो सबसे पहले उस जानवर के चार टुकड़े कर देता! और अगर उसने बदतमीज़ी की होती, तो उसे ज़िंदा उबाल देता! उसे बोलना ही पड़ता, बताना पड़ता कि लड़की कहाँ है, और वह अपने दांत कहाँ रखता है! मैं तो ऐसे ही मामले को सुलझाता! लोग बिल्कुल सही कहते हैं कि मर्द औरतों से कहीं ज़्यादा बेवकूफ होते हैं! नंबर 17 पर कोई नहीं है। वह तो बस एक बड़ा सा घोड़ागाड़ी का गेट है! सेंट-डोमिनिक गली में कोई महाशय फैब्रे नहीं है! और इतनी सारी दौड़-भाग और कोचवान को दी जाने वाली फीस वगैरह के बाद भी! मैंने कुली और कुली, एक हष्ट-पुष्ट महिला से बात की, और वे उसके बारे में कुछ नहीं जानतीं!”

मारियस ने एक बार फिर खुलकर सांस ली।

वह, उर्सुले या लार्क, उसे अब पता नहीं था कि उसे क्या कहकर पुकारे, सुरक्षित थी।

जब उनकी क्रोधित पत्नी जोर-जोर से चिल्ला रही थी, तब थेनार्डियर मेज पर बैठ गए थे।

कई मिनट तक वह एक शब्द भी नहीं बोला, बल्कि अपने दाहिने पैर को नीचे लटकाए हुए हिलाता रहा और एक जंगली तन्मयता के भाव से अंगीठी को घूरता रहा।

अंत में, उसने कैदी से धीमी और असाधारण रूप से उग्र स्वर में कहा:

“गलत पता? इससे आपको क्या फायदा होने की उम्मीद थी?”

“समय पाने के लिए!” कैदी ने गरजती हुई आवाज में कहा, और उसी क्षण उसने अपने बंधन तोड़ दिए; वे कट गए थे। अब कैदी केवल एक पैर से बिस्तर से बंधा हुआ था।

इससे पहले कि सातों आदमी होश में आकर आगे बढ़ पाते, वह चूल्हे में झुक गया, अंगीठी की ओर हाथ बढ़ाया और फिर सीधा खड़ा हो गया। अब थेनार्डियर, महिला थेनार्डियर और बदमाश, झोपड़ी के कोने में अचंभित होकर उसे देख रहे थे, क्योंकि लगभग स्वतंत्र और एक दुर्जेय मुद्रा में, वह अपने सिर के ऊपर लाल-गर्म छेनी लहरा रहा था, जिससे एक भयावह चमक निकल रही थी।

गोरब्यू हाउस में हुए हमले के बाद हुई न्यायिक जांच से यह बात साबित हुई कि पुलिस के छापा मारने पर अटारी में एक बड़ा सू का सिक्का मिला, जिसे खास तरीके से तराशा और गढ़ा गया था। यह सू का सिक्का उन अद्भुत कलाकृतियों में से एक था, जो अंधेरे में काम करने वाले कारीगरों के धैर्य से पैदा होती हैं; ऐसी कलाकृतियां जो पलायन के साधन मात्र हैं। कला के ये भद्दे और नाजुक नमूने जौहरियों के काम के लिए वैसे ही हैं जैसे बोलचाल की भाषा के रूपक कविता के लिए। कारीगरों में बेनवेनुटो सेलिनिस जैसे लोग होते हैं, जैसे भाषा में विलोन जैसे लोग। मुक्ति की चाह रखने वाला अभागा व्यक्ति कभी बिना औजारों के, कभी साधारण लकड़ी के हैंडल वाले चाकू से सू के सिक्के को दो पतली प्लेटों में काटता है, इन प्लेटों को अंदर से खोखला करता है ताकि सिक्के की मुहर पर कोई असर न पड़े, और सू के किनारे पर इस तरह से खांचा बनाता है कि प्लेटें फिर से जुड़ जाएं। इसे इच्छानुसार खोला और जोड़ा जा सकता है; यह एक डिब्बा है। इस डिब्बे में वह एक घड़ी की स्प्रिंग छुपाता है, और इस स्प्रिंग को सही ढंग से इस्तेमाल करने पर लोहे की बड़ी-बड़ी जंजीरें और छड़ें काटी जा सकती हैं। दुर्भाग्यशाली कैदी के पास केवल एक सू (एक तरह का सिक्का) होने का दावा किया जाता है; बिलकुल नहीं, उसके पास तो

स्वतंत्रता है। पुलिस की तलाशी के दौरान खिड़की के पास बिस्तर के नीचे इसी तरह का एक बड़ा सू (एक तरह का सिक्का) मिला। उन्हें नीले स्टील की एक छोटी आरी भी मिली जो उस सू (एक तरह के सिक्के) के आकार की थी।

यह संभव है कि जब बदमाशों ने कैदी की तलाशी ली, उस समय उसके पास यह सिक्का था, उसने इसे अपने हाथ में छिपा लिया और बाद में, जब उसका दाहिना हाथ खाली हो गया, तो उसने इसे खोलकर आरी की तरह इस्तेमाल किया और उन रस्सियों को काट दिया जिनसे वह बंधा हुआ था। इससे मारियस द्वारा देखी गई हल्की आवाज और लगभग अगोचर हलचल की व्याख्या हो जाती है।

क्योंकि वह झुक नहीं पा रहा था, इसलिए खुद के पकड़े जाने के डर से उसने अपने बाएं पैर की जंजीरें नहीं काटीं।

बदमाश अपने पहले झटके से उबर चुके थे।

“शांत रहो,” बिग्रेनाइल ने थेनार्डियर से कहा। “उसने अभी भी एक पैर पकड़ रखा है, और वह भाग नहीं सकता। मैं इसकी जिम्मेदारी लेता हूँ। मैंने ही उसका पंजा बांधा था।”

इसी बीच कैदी बोलने लगा:

“तुम नीच हो, लेकिन मेरी जान बचाने लायक नहीं है। जब तुम सोचते हो कि तुम मुझे बुलवा सकते हो, कि तुम मुझे वो लिखवा सकते हो जो मैं नहीं लिखना चाहता, कि तुम मुझे वो कहलवा सकते हो जो मैं नहीं कहना चाहता—”

उसने अपनी बाईं आस्तीन उतारी और आगे कहा:—

“यहाँ देखो।”

उसी क्षण उसने अपना हाथ बढ़ाया और अपने बाएं हाथ में लकड़ी के हैंडल से पकड़ी हुई चमकती हुई छेनी को अपनी नंगी त्वचा पर रख दिया।

जलते हुए मांस के चटकने की आवाज सुनाई देने लगी और यातना कक्षों की विशिष्ट गंध झोपड़ी में भर गई।

मारियस घोर भय से कांप उठा, यहां तक कि बदमाश भी थरथरा उठे, बूढ़े व्यक्ति के चेहरे की शायद ही कोई मांसपेशी सिकुड़ी हो, और जब लाल-गर्म लोहा सुलगते हुए घाव में धंस गया, तो भावहीन और लगभग गरिमामय भाव से उसने थेनार्डियर पर

अपनी सुंदर दृष्टि टिका दी, जिसमें कोई घृणा नहीं थी, और जहां पीड़ा शांत भव्यता में विलीन हो गई थी।
महान और उदात्त स्वभाव वाले लोगों में, शारीरिक पीड़ा के अधीन होने पर शरीर और इंद्रियों के विद्रोह आत्मा को प्रकट होने का कारण बनते हैं, ठीक उसी तरह जैसे सैनिकों के बीच विद्रोह कप्तान को स्वयं को प्रकट करने के लिए मजबूर करता है।
“अभागे!” उसने कहा, “मुझसे उतना ही डरो जितना मैं तुमसे डरता हूँ!”
और, घाव से छेनी को खींचकर, उसने उसे खुली हुई खिड़की से बाहर फेंक दिया; वह भयानक, चमकता हुआ औजार रात के अंधेरे में गायब हो गया, उड़ते हुए घूमता हुआ गया, और दूर बर्फ पर जा गिरा।
कैदी ने बोलना फिर शुरू किया:—
“मेरे साथ जो चाहो करो।” वह निहत्था हो गया।
“उसे पकड़ो!” थेनार्डियर ने कहा।
दो बदमाशों ने उसके कंधे पर हाथ रखा, और कठपुतली की आवाज वाला नकाबपोश आदमी उसके सामने खड़ा हो गया, मानो जरा सी भी हरकत पर उसकी खोपड़ी फोड़ने के लिए तैयार हो।
उसी समय, मारियस ने अपने नीचे, दीवार के निचले हिस्से में, लेकिन इतनी नज़दीक कि वह देख नहीं पा रहा था कि कौन बोल रहा है, धीमी आवाज़ में यह बातचीत सुनी:
अब सिर्फ एक ही काम बचा है।
उसका गला काट दो।
"इतना ही।"
पति-पत्नी आपस में सलाह-मशविरा कर रहे थे।
थेनार्डियर धीरे-धीरे मेज की ओर बढ़ा, दराज खोला और चाकू निकाला। मारियस अपनी पिस्तौल के हैंडल को लेकर बेचैन था। अभूतपूर्व उलझन! पिछले एक घंटे से उसके अंतरात्मा में दो आवाजें गूंज रही थीं, एक उसे अपने पिता की वसीयत का सम्मान करने का आदेश दे रही थी, दूसरी उसे कैदी को छुड़ाने के लिए कह

रही थी। ये दोनों आवाजें लगातार उस संघर्ष को जारी रखे हुए थीं जिसने उसे पीड़ा से भर दिया था। उस क्षण तक उसने एक धुंधली सी आशा पाल रखी थी कि वह इन दोनों कर्तव्यों के बीच सामंजस्य बिठाने का कोई रास्ता निकाल लेगा, लेकिन संभावनाओं की सीमा के भीतर कुछ भी सामने नहीं आया था।

हालांकि, खतरा गंभीर था, देरी की कोई गुंजाइश नहीं बची थी; थेनार्डियर कैदी से कुछ कदम की दूरी पर सोच-विचार करते हुए खड़ा था।

मारियस ने हताशा के अंतिम उपाय के रूप में अपने चारों ओर एक बेतहाशा नज़र डाली। अचानक उसके शरीर में एक सिहरन दौड़ गई।

उसके पैरों के पास, मेज पर, पूर्णिमा के चंद्रमा की एक तेज किरण पड़ रही थी और मानो उसे एक कागज का टुकड़ा दिखा रही हो। उस कागज पर उसने थेनार्डियर परिवार की सबसे बड़ी बेटी द्वारा उसी सुबह बड़े अक्षरों में लिखी गई निम्नलिखित पंक्ति पढ़ी:

पुलिस वाले आ गए हैं।

मारियस के मन में एक विचार कौंधा; यही वह उपाय था जिसकी वह तलाश कर रहा था, उस भयावह समस्या का समाधान जो उसे सता रही थी, हत्यारे को बख्शने और पीड़ित को बचाने का उपाय।

वह अपने कमोड पर घुटने टेककर बैठ गया, अपना हाथ फैलाया, कागज का टुकड़ा पकड़ा, दीवार से प्लास्टर का एक टुकड़ा धीरे से अलग किया, कागज को उसके चारों ओर लपेटा और पूरे को दरार के माध्यम से कमरे के बीच में फेंक दिया।

अब समय आ गया था। थेनार्डियर ने अपने आखिरी डर या अपनी आखिरी संशय पर विजय प्राप्त कर ली थी, और वह कैदी की ओर बढ़ रहा था।

“कुछ गिर रहा है!” थेनार्डियर महिला चिल्लाई।

“क्या बात है?” उसके पति ने पूछा।

महिला तेजी से आगे बढ़ी और प्लास्टर का टुकड़ा उठाया। उसने वह अपने पति को दे दिया।

"यह कहाँ से आया?" थेनार्डियर ने पूछा।

“पार्डी!” उसकी पत्नी ने हैरानी से कहा, “तुम्हें क्या लगता है यह कहाँ से आया? खिड़की से, बिल्कुल।”
"मैंने इसे गुजरते हुए देखा," बिग्रेनाइल ने कहा।
थेनार्डियर ने तेजी से कागज को खोला और उसे मोमबत्ती के पास ले गया।
“ये तो एपोनाइन की लिखावट में है। धिक्कार है!”
उसने अपनी पत्नी को इशारा किया, जो जल्दी से पास आ गई, और उसे कागज पर लिखी हुई पंक्ति दिखाई, फिर उसने धीमी आवाज में कहा:—
“जल्दी करो! सीढ़ी लाओ! चलो बेकन को चूहेदानी में ही छोड़ दें और भाग निकलें!”
"उस आदमी का गला काटे बिना?" थेनार्डियर महिला ने पूछा।
हमारे पास समय नहीं है।
“किसके माध्यम से?” बिग्रेनाइल ने प्रश्न को आगे बढ़ाया।
“खिड़की के रास्ते,” थेनार्डियर ने उत्तर दिया। “चूंकि पोनीन ने खिड़की के रास्ते पत्थर फेंका है, इससे संकेत मिलता है कि उस तरफ से घर की निगरानी नहीं की जा रही है।”
वेंट्रिलोक्विस्ट की आवाज वाले मुखौटे ने अपनी विशाल चाबी फर्श पर रख दी, दोनों हाथ हवा में उठाए और बिना एक शब्द बोले तेजी से तीन बार अपनी मुट्ठियां खोलीं और बंद कीं।
यह एक तरह का संकेत था, जैसे जहाज पर कार्रवाई के लिए रास्ता साफ करने का संकेत।
कैदी को बंधक बनाए हुए बदमाशों ने उसे रिहा कर दिया; पलक झपकते ही रस्सी की सीढ़ी खिड़की के बाहर बिछा दी गई और लोहे के दो हुकों से मजबूती से चौखट पर बांध दी गई।
कैदी अपने आसपास हो रही घटनाओं पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह सपना देख रहा हो या प्रार्थना कर रहा हो।
सीढ़ी का इंतजाम होते ही थेनार्डियर चिल्लाया:

“आओ! पहले बुर्जुआ वर्ग!”
और वह खिड़की की ओर तेजी से दौड़ा।
लेकिन जैसे ही वह अपना पैर ऊपर उठाने वाला था, बिग्रेनाइल ने उसे कॉलर से पकड़कर जोर से जकड़ लिया।
“ज्यादा कुछ नहीं, चलो अब, बूढ़े कुत्ते, हमारे पीछे आओ!”
“हमारे पीछे आओ!” बदमाशों ने चिल्लाकर कहा।
थेनार्डियर ने कहा, "तुम बच्चे हो, हम समय गंवा रहे हैं। पुलिस हमारा पीछा कर रही है।"
“अच्छा,” बदमाशों ने कहा, “चलिए लॉटरी निकालते हैं और देखते हैं कि सबसे पहले कौन गिरेगा।”
थेनार्डियर ने विस्मय व्यक्त किया:—
“क्या तुम पागल हो! क्या तुम सनकी हो! बेवकूफों का झुंड! क्या तुम समय बर्बाद करना चाहते हो? क्या तुम लॉटरी निकालना चाहते हो? गीली उंगली से, छोटी पर्ची से! लिखे हुए नामों से! टोपी में डालकर!”
"क्या आप मेरी टोपी लेना चाहेंगे?" दहलीज पर खड़ी एक आवाज ने कहा।
सब कुछ घूम गया। वह जावर्ट था।
उसके हाथ में उसकी टोपी थी और वह मुस्कुराते हुए उसे उनकी ओर बढ़ा रहा था।

21. सबसे पहले पीड़ितों को गिरफ्तार करना चाहिए।

शाम होते ही, जावर्ट ने अपने आदमियों को तैनात कर दिया और खुद भी रुए डे ला बैरियर-डेस-गोबेलिन्स के पेड़ों के बीच घात लगाकर बैठ गया, जो गोरब्यू हाउस के सामने, बुलेवार्ड के दूसरी ओर स्थित था। उसने अपनी जेबें खोलकर और उनमें उन दो युवतियों को डालकर कार्रवाई शुरू की, जिन्हें अड्डे के रास्तों पर नज़र रखने का काम सौंपा गया था। लेकिन वह केवल अज़ेलमा को ही पकड़ पाया था। जहाँ तक एपोनिन की बात है, वह अपनी जगह पर नहीं थी, वह गायब हो गई थी, और वह उसे पकड़ नहीं पाया था। फिर जावर्ट ने ठान लिया और तय किए गए संकेत का इंतज़ार करने लगा। गिरोहों के आने-जाने से वह बहुत परेशान हो गया था। आखिरकार, वह अधीर हो गया, और "यह सोचकर कि वहाँ कोई अड्डा है," और "किस्मत" का भरोसा करके, अंदर आए कई बदमाशों को पहचानकर, उसने पिस्तौल की गोली का इंतज़ार किए बिना ही ऊपर जाने का फैसला कर लिया।

यह बात याद रखनी चाहिए कि उसके पास मारियस की पासकी थी।

वह बिलकुल सही समय पर पहुंचा था।

भयभीत बदमाशों ने भागते समय अपने छोड़े हुए हथियारों को चारों कोनों में पटक दिया। एक सेकंड से भी कम समय में, ये सातों भयानक दिखने वाले लोग रक्षात्मक मुद्रा में खड़े हो गए; एक के हाथ में कुल्हाड़ी, दूसरे के हाथ में चाबी, तीसरे के हाथ में लाठी, और बाकी के हाथ में कैंची, चिमटा और हथौड़े थे। थेनार्डियर की मुट्ठी में चाकू था। थेनार्डियर की पत्नी ने खिड़की के कोने में पड़े एक विशाल पत्थर को उठा लिया, जिसका इस्तेमाल उसकी बेटियाँ ओटोमन की तरह करती थीं।

जैवरट ने अपनी टोपी दोबारा पहनी और हाथ बांधे, एक हाथ के नीचे छड़ी दबाए और तलवार को म्यान में रखते हुए कमरे में कुछ कदम आगे बढ़ा।

“वहीं रुक जाओ,” उसने कहा। “तुम खिड़की से बाहर नहीं जाओगे, दरवाजे से बाहर जाओ। यह कम हानिकारक है। तुम सात हो, हम पंद्रह हैं। ऑवर्न के आदमियों की तरह एक-दूसरे को गले लगाने की कोशिश मत करो।”
बिग्रेनाइल ने अपनी कमीज़ के नीचे छिपाई हुई पिस्तौल निकाली और उसे थेनार्डियर के हाथ में थमाते हुए उसके कान में फुसफुसाया:—
“यह जैवर्ट है। मैं उस आदमी पर गोली चलाने की हिम्मत नहीं करता। क्या तुममें हिम्मत है?”
“पारब्लू!” थेनार्डियर ने उत्तर दिया।
"तो फिर, गोली चलाओ।"
थेनार्डियर ने पिस्तौल उठाई और जावर्ट पर निशाना साधा।
जैवर्ट, जो उससे महज तीन कदम की दूरी पर था, उसे ध्यान से देखता रहा और उसने इतना कहकर संतोष किया:—
“अब गोली मत चलाओ। गोली चलाने का निशाना चूक जाएगा।”
थेनार्डियर ने ट्रिगर दबाया। पिस्तौल से गोली नहीं चली।
“मैंने तुमसे कहा था ना!” जावर्ट ने तीखे स्वर में कहा।
बिग्रेनाइल ने अपना डंडा जावर्ट के पैरों पर फेंक दिया।
“तुम दुष्टों के सम्राट हो! मैं आत्मसमर्पण करता हूँ।”
“और तुम?” जावर्ट ने बाकी बदमाशों से पूछा।
उन्होंने उत्तर दिया:—
"तो हम करते हैं।"
जावर्ट ने शांत भाव से फिर बोलना शुरू किया:—
"हाँ, बिल्कुल सही, यह अच्छी बात है, मैंने ऐसा कहा था, आप लोग अच्छे हैं।" "मैं सिर्फ एक ही बात पूछता हूँ," बिग्रेनाइल ने कहा, "और वह यह है कि मुझे कैद के दौरान तंबाकू से वंचित न किया जाए।"
“ठीक है,” जावर्ट ने कहा।

और पीछे मुड़कर पुकारते हुए:—
“अभी अंदर आ जाओ!”
जैवर्ट के आदेश पर तलवार लिए पुलिसकर्मियों का एक दस्ता और लाठियों व डंडों से लैस एजेंट धावा बोल पड़े। उन्होंने बदमाशों को पकड़ लिया। मोमबत्ती की हल्की रोशनी से जगमगा रहे पुरुषों के इस समूह ने उस कमरे को अंधेरे से भर दिया।
“इन सबको हथकड़ी पहना दो!” जावर्ट चिल्लाया।
“चलो!” एक आवाज ने पुकारा, जो किसी पुरुष की आवाज नहीं थी, लेकिन जिसके बारे में कोई कभी नहीं कह सकता था: “यह एक महिला की आवाज है।”
थेनार्डियर महिला खिड़की के एक कोने में दुबक गई थी, और उसी ने अभी-अभी इस गर्जना को अंजाम दिया था।
पुलिसकर्मी और एजेंट पीछे हट गए।
उसने अपना शॉल उतार दिया था, लेकिन अपनी टोपी नहीं उतारी थी; उसका पति, जो उसके पीछे दुबका हुआ था, लगभग उतारे हुए शॉल के नीचे छिपा हुआ था, और वह अपने शरीर से उसे ढाल रही थी, जैसे ही उसने एक विशालकाय महिला के पत्थर फेंकने के इरादे से अपने सिर के ऊपर पत्थर उठाया।
“सावधान!” वह चिल्लाई।
सभी लोग गलियारे की ओर वापस जाने लगे। अटारी के बीचोंबीच एक बड़ा खुला स्थान बन गया।
थेनार्डियर महिला ने खुद को जकड़े जाने देने वाले बदमाशों पर एक नजर डाली और कर्कश और भारी स्वर में बुदबुदाई:—
“कहीं के कायर!”
जैवर्ट मुस्कुराई और उस खुले मैदान में आगे बढ़ी जिसे थेनार्डियर अपनी आंखों से निहार रही थी।
“मेरे पास मत आओ,” वह चिल्लाई, “वरना मैं तुम्हें कुचल दूंगी।”

“क्या गजब का ग्रेनेडियर है!” जावर्ट ने उत्साह से कहा; “माँ, तुम्हारी दाढ़ी तो मर्दों जैसी है, लेकिन मेरे पंजे औरतों जैसे हैं।”
और वह आगे बढ़ता रहा।
अस्त-व्यस्त और भयानक दिख रही थेनार्डियर ने अपने पैर दूर-दूर फैलाए, पीछे की ओर छलांग लगाई और पत्थर को जावर्ट के सिर पर फेंक दिया। जावर्ट झुक गया, पत्थर उसके ऊपर से निकल गया, पीछे की दीवार से टकराया, प्लास्टर का एक बड़ा टुकड़ा तोड़ दिया और झोपड़ी में, जो अब सौभाग्य से लगभग खाली थी, इधर-उधर उछलता हुआ जावर्ट के पैरों के पास जा गिरा।
उसी समय, जावर्ट थेनार्डियर दंपति के पास पहुंचा। उसका एक बड़ा हाथ महिला के कंधे पर और दूसरा पति के सिर पर जा गिरा।
“हथकड़ियाँ!” वह चिल्लाया।
पुलिसकर्मी भारी संख्या में अंदर घुस आए, और कुछ ही सेकंड में जावर्ट के आदेश का पालन कर लिया गया।
स्तब्ध थीनार्डियर महिला ने अपने बंधे हुए हाथों और फर्श पर गिरे अपने पति के हाथों को घूरते हुए रोते हुए कहा:
"मेरी बेटियां!"
“वे जग में हैं,” जावर्ट ने कहा।
इसी बीच, एजेंटों ने दरवाजे के पीछे सो रहे नशे में धुत व्यक्ति को देख लिया और उसे हिलाने लगे:
वह हकलाते हुए जागा:—
"क्या सब खत्म हो गया, जोंड्रेट?"
“हां,” जावर्ट ने उत्तर दिया।
छह बंधे हुए बदमाश खड़े थे, और अब भी उनका खौफनाक रूप बरकरार था; तीनों काले रंग से सने हुए थे, तीनों ने नकाब पहन रखे थे।
"अपने मास्क पहने रहें," जावर्ट ने कहा।

और पॉट्सडैम परेड में फ्रेडरिक द्वितीय की तरह एक नज़र डालते हुए, उन्होंने उन तीनों "चिमनी बनाने वालों" से कहा:—
“शुभ दिन, बिग्रेनाइल! शुभ दिन, ब्रुजोन! शुभ दिन, ड्यूक्समिलियर्ड्स!” फिर तीनों नकाबपोश आदमियों की ओर मुड़कर उसने मांस काटने वाली कुल्हाड़ी वाले आदमी से कहा:—
“शुभ दिन, गुएलेमर!”
और लाठी लिए हुए आदमी से:—
“शुभ दिन, बैबेट!”
और वेंट्रिलोक्विस्ट के लिए:—
"आपकी सेहत अच्छी रहे, क्लैकसस।"
उसी क्षण, उसकी नज़र बदमाशों के कैदी पर पड़ी, जिसने पुलिस के आने के बाद से एक शब्द भी नहीं बोला था और अपना सिर नीचे झुकाए रखा था।
“उस सज्जन को खोल दो!” जावर्ट ने कहा, “और किसी को भी बाहर न जाने दो!”
इतना कहकर, वह अत्यंत गरिमा के साथ मेज के सामने बैठ गया, जहाँ मोमबत्ती और लेखन सामग्री अभी भी मौजूद थी, अपनी जेब से एक मुहर लगी हुई कागज निकाली और अपनी रिपोर्ट तैयार करना शुरू कर दिया।
जब उन्होंने पहली पंक्तियाँ लिखीं, जो कि ऐसे सूत्र हैं जो कभी नहीं बदलते, तो उन्होंने अपनी आँखें ऊपर उठाईं:—
"जिन सज्जनों को इन व्यक्तियों ने बांधा है, वे आगे आएं।"
पुलिसकर्मियों ने चारों ओर नजर घुमाई।
“अच्छा,” जैवर्ट ने कहा, “वह कहाँ है?”
गुंडों का कैदी, एम. लेब्लांक, एम. अर्बेन फैब्रे, उर्सुले या लार्क के पिता, गायब हो गए थे।
दरवाजे पर पहरा था, लेकिन खिड़की पर नहीं। जैसे ही उसे बंधनों से मुक्त किया गया, और जब जैवर्ट अपनी रिपोर्ट तैयार कर रहा था, उसने भीड़, अफरा-

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

XXII. खंड दो में रोता हुआ छोटा बच्चा

बुलेवार्ड डे ल'हॉपिटल स्थित घर में इन घटनाओं के घटित होने के अगले दिन, एक बच्चा, जो ऑस्टरलिट्ज़ पुल की दिशा से आता हुआ प्रतीत हो रहा था, दाहिनी ओर की गली से होते हुए बैरियर डे फॉन्टेनब्लू की दिशा में ऊपर की ओर जा रहा था।

रात पूरी तरह से हो चुकी थी।

यह लड़का पीला, दुबला-पतला, फटे-पुराने कपड़ों में लिपटा हुआ था, फरवरी के महीने में भी उसने सूती पतलून पहनी हुई थी, और वह पूरी ताकत से गा रहा था।

रुए डू पेटिट-बैंकियर के कोने पर, एक झुकी हुई बूढ़ी औरत सड़क की लालटेन की रोशनी में कूड़े के ढेर में कुछ ढूंढ रही थी; बच्चा उसके पास से गुजरते हुए उससे टकरा गया, फिर पीछे हटते हुए चिल्लाया:—

"हेलो! और मैंने तो इसे बहुत बड़ा कुत्ता समझ लिया था!"

उसने "विशालकाय" शब्द को दूसरी बार व्यंग्यपूर्ण स्वर में उच्चारित किया, जिसे बड़े अक्षरों में लिखना काफी हद तक सही होगा: "एक विशालकाय, विशालकाय कुत्ता।"

वृद्ध महिला क्रोध से भर उठी और सीधी खड़ी हो गई।

“बदमाश बच्चे!” वह बड़बड़ाई। “अगर मैं झुकी हुई न होती, तो मुझे अच्छी तरह पता है कि मैं अपना पैर तुम्हारे ऊपर कहाँ रखती।”

लड़का पहले ही काफी दूर जा चुका था।

“चुंबन! चुंबन!” वह चिल्लाया। “उसके बाद, मुझे नहीं लगता कि मैं गलत था!”

आक्रोश से घुटती हुई बूढ़ी औरत अब पूरी तरह सीधी खड़ी हो गई, और लालटेन की लाल चमक ने उसके पीले पड़े चेहरे को पूरी तरह से रोशन कर दिया, जो कोणों और झुर्रियों में धंसा हुआ था, और उसके मुंह के कोनों पर कौवे के पैर जैसी झुर्रियां थीं।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

यहां कोई नहीं है।

“वाह !” लड़के ने पलटकर कहा, “मेरे पिता कहाँ हैं?”

और ला फोर्स।

“अरे, अब! और मेरी माँ?”

“सेंट-लाज़ारे में।”

“अच्छा! और मेरी बहनें?”

“मैडेलोनेट्स के यहाँ।”

लड़के ने अपने कान के पीछे सिर खुजाया, मैडम बोगन को घूरकर देखा और बोला:—

आह!”

फिर उसने एड़ी पर एक चक्कर लगाया; एक क्षण बाद, दरवाजे पर खड़ी बूढ़ी औरत ने उसे अपनी सुरीली, युवा आवाज में गाते हुए सुना, जब वह सर्द हवा में काले एल्म के पेड़ों के नीचे उतर गया:

[illegible]

खंड **IV.** रू प्लूमेट में रमणीय गीत और रू सेंट -डेनिस में महाकाव्य

भाग **I.** इतिहास के कुछ पन्ने

I. अच्छी तरह से काटा गया

जुलाई क्रांति से सीधे तौर पर जुड़े ये दो वर्ष, 1831 और 1832, इतिहास के सबसे विशिष्ट और प्रभावशाली क्षणों में से एक हैं। ये दो वर्ष अपने से पहले और बाद के वर्षों के बीच में स्थित दो पर्वतों की तरह हैं। इनमें एक क्रांतिकारी भव्यता है। इनमें स्पष्ट उतार-चढ़ाव दिखाई देते हैं। सामाजिक जनसमूह, सभ्यता के मूल सिद्धांत, परस्पर जुड़े हितों का ठोस समूह, प्राचीन फ्रांसीसी संरचना की सदियों पुरानी रूपरेखा, व्यवस्थाओं, भावनाओं और सिद्धांतों के तूफानी बादलों के बीच हर पल इनमें प्रकट और लुप्त होती रहती है। इन प्रकट और लुप्त होने को गति और प्रतिरोध कहा गया है। समय-समय पर, सत्य, मानव आत्मा का प्रकाश, इनमें चमकता हुआ देखा जा सकता है।

यह उल्लेखनीय युग निश्चित रूप से सीमित है और हमसे इतना दूर होता जा रहा है कि हम आज भी इसकी मुख्य बातों को समझ सकते हैं।

हम प्रयास करेंगे।

पुनर्स्थापना उन मध्यवर्ती चरणों में से एक थी, जिन्हें परिभाषित करना कठिन है, जिसमें थकान, हलचल, कानाफूसी, नींद, कोलाहल सब कुछ शामिल है, और जो एक महान राष्ट्र के एक पड़ाव पर पहुंचने के अलावा और कुछ नहीं है।

ये युग विचित्र हैं और उन राजनेताओं को गुमराह करते हैं जो इन्हें लाभ में बदलना चाहते हैं। आरंभ में, राष्ट्र को विश्राम के सिवा कुछ नहीं चाहिए; उसे केवल एक ही चीज़ की प्यास होती है, शांति; उसकी केवल एक ही महत्वाकांक्षा होती है, छोटा रहना। जिसका अर्थ है शांत रहना। महान घटनाओं, महान खतरों, महान रोमांचों, महान पुरुषों के बारे में, ईश्वर का धन्यवाद, हमने बहुत कुछ देख लिया है, ये सब हमारे सिर से भी ऊँचे ढेर में समा गए हैं। हम सीज़र को प्रूसियास से और नेपोलियन को यवेटोट के राजा से बदलना चाहेंगे। "वह कितना अच्छा छोटा राजा था!" हम सूर्योदय से ही चल रहे हैं, हम एक लंबे और थकाऊ दिन की शाम तक पहुँच गए हैं; हमने मिराबो के साथ पहला,

रोबेस्पियर के साथ दूसरा और बोनापार्ट के साथ तीसरा बदलाव किया है; हम थक चुके हैं। हर कोई बिस्तर मांग रहा है।

थकी हुई भक्ति, बूढ़ा हो चुका शौर्य, संतुष्ट हो चुकी महत्वाकांक्षाएँ, अर्जित धन-दौलत, क्या खोजते हैं, मांगते हैं, याचना करते हैं, निवेदन करते हैं? एक आश्रय। उन्हें मिल जाता है। वे शांति, सुकून और आराम को अपना लेते हैं; देखो, वे संतुष्ट हैं। लेकिन, उसी समय कुछ तथ्य सामने आते हैं, पहचान को बाध्य करते हैं, और अपनी बारी आने पर दरवाजा खटखटाते हैं। ये तथ्य क्रांतियों और युद्धों के परिणाम हैं, वे हैं, वे विद्यमान हैं, उन्हें समाज में स्वयं को स्थापित करने का अधिकार है, और वे स्वयं को उसमें स्थापित कर लेते हैं; और अधिकांश समय, तथ्य घर के रखवाले और ऐसे नौकर होते हैं जो सिद्धांतों के लिए आवास तैयार करने के अलावा कुछ नहीं करते।

तो दार्शनिक राजनीतिज्ञों को यही प्रतीत होता है:—

जिस प्रकार थके-हारे मनुष्य विश्राम की मांग करते हैं, उसी प्रकार सिद्ध तथ्यों को आश्वासन की आवश्यकता होती है। तथ्यों के लिए आश्वासन का वही महत्व है जो मनुष्यों के लिए विश्राम का।

प्रोटेक्टर के बाद इंग्लैंड ने स्टुअर्ट्स से यही मांग की थी; साम्राज्य के बाद फ्रांस ने बॉर्बन्स से यही मांग की थी।

ये गारंटी समय की आवश्यकता हैं। इन्हें प्रदान किया जाना चाहिए। राजकुमार इन्हें "प्रदान" करते हैं, लेकिन वास्तव में, यह परिस्थितियों की शक्ति है जो इन्हें प्रदान करती है। एक गहरा सत्य, और जिसे जानना उपयोगी है, जिसका स्टुअर्ट्स को 1662 में जरा भी अंदाजा नहीं था और बॉर्बन्स को 1814 में इसकी झलक भी नहीं मिली थी।

नेपोलियन के पतन के बाद फ्रांस लौटने वाले उस नियतिबद्ध परिवार में यह घातक भोलापन था कि वह मानता था कि उसने स्वयं ही सब कुछ दिया है और जो कुछ उसने दिया है उसे वापस भी ले सकता है; कि बॉर्बन वंश के पास ही दैवीय अधिकार है, फ्रांस के पास कुछ भी नहीं है, और लुई 18 वीं के चार्टर में दिया गया राजनीतिक अधिकार मात्र दैवीय अधिकार की एक शाखा है, जिसे बॉर्बन वंश ने अलग कर दिया था और जब तक राजा इसे पुनः ग्रहण न करना चाहे तब तक के लिए

जनता को उदारतापूर्वक सौंप दिया था। फिर भी, बॉर्बन वंश को इस उपहार से उत्पन्न असंतोष से यह महसूस होना चाहिए था कि यह उपहार उससे नहीं आया था।

यह घर उन्नीसवीं सदी के प्रति असभ्य था। इसने देश के हर घटनाक्रम को चिड़चिड़ेपन से देखा। एक सामान्य शब्द का प्रयोग करें, यानी एक लोकप्रिय और सटीक शब्द का, तो यह उदास दिखता था। जनता ने यह देखा।

उसने यह सोचा कि उसमें शक्ति है क्योंकि साम्राज्य उसके सामने एक नाटकीय मंच की तरह बह गया था। उसे यह एहसास नहीं था कि उसे भी उसी तरह लाया गया था। उसे यह एहसास नहीं था कि वह भी उसी हाथ में था जिसने नेपोलियन को सत्ता से हटाया था।

इसका मानना था कि इसकी जड़ें हैं, क्योंकि यह अतीत था। यह गलत था; यह अतीत का एक हिस्सा था, लेकिन पूरा अतीत ही फ्रांस था। फ्रांसीसी समाज की जड़ें बॉर्बोन वंश में नहीं, बल्कि राष्ट्रों में निहित थीं। ये अस्पष्ट और जीवंत जड़ें किसी परिवार का अधिकार नहीं, बल्कि एक राष्ट्र का इतिहास थीं। वे हर जगह मौजूद थीं, सिवाय राजशाही के।

फ्रांस के इतिहास में बॉर्बन वंश एक गौरवशाली और दुखद कड़ी था, लेकिन अब वह उसके भाग्य का मुख्य आधार और उसकी राजनीति का आवश्यक आधार नहीं रह गया था। फ्रांस बॉर्बन वंश के बिना भी चल सकता था; वह बाईस वर्षों तक उनके बिना ही रहा था; एक निरंतरता टूट गई थी; उन्हें इस बात का ज़रा भी आभास नहीं था। और उन्हें आगाह कैसे होता, वे लोग जो यह मानते थे कि लुई सत्रहवें ने 9 थर्मिडोर को शासन किया था और लुई अठारहवें ने मारेन्गो के युद्ध में शासन किया था? इतिहास की शुरुआत से लेकर आज तक, राजकुमार तथ्यों और उनमें निहित तथा तथ्यों द्वारा प्रचारित दैवीय सत्ता के प्रति इतने अंधे कभी नहीं रहे थे। इस दुनिया में राजाओं के अधिकार कहे जाने वाले इस दावे ने कभी भी स्वर्ग के अधिकार को इस हद तक नकारा नहीं था।

एक ऐसी घोर गलती जिसके कारण इस परिवार ने 1814 में "दी गई" गारंटियों, यानी उन रियायतों पर एक बार फिर अपना हाथ जमा लिया, जैसा कि उन्होंने उन्हें नाम दिया था। दुखद! बहुत दुखद बात! जिसे वे अपनी रियायतें कहते थे, वे हमारी जीत थीं; जिसे वे हमारा अतिक्रमण कहते थे, वे हमारे अधिकार थे।

जब समय आ गया, तो पुनर्स्थापनावादी शासन ने, बोनापार्ट पर विजय प्राप्त कर और देश में अपनी मजबूत पकड़ स्थापित कर, यानी खुद को बलवान और प्रभावशाली मानते हुए, अचानक अपनी कार्ययोजना तय कर ली और जोखिम भरा कदम उठाया। एक दिन सुबह, उसने फ्रांस के सामने मोर्चा संभाला और बुलंद आवाज में राष्ट्र की संप्रभुता और नागरिक की स्वतंत्रता के सामूहिक अधिकार को चुनौती दी। दूसरे शब्दों में, उसने राष्ट्र को वह चीज़ देने से इनकार कर दिया जो उसे राष्ट्र बनाती है, और नागरिक को वह चीज़ देने से इनकार कर दिया जो उसे नागरिक बनाती है।

यही उन प्रसिद्ध अधिनियमों की नींव है जिन्हें जुलाई के अध्यादेश कहा जाता है। पुनर्स्थापना का पतन हो गया।

इसका पतन उचित ही हुआ। लेकिन, हम यह स्वीकार करते हैं कि यह प्रगति के सभी रूपों के प्रति पूर्णतः शत्रुतापूर्ण नहीं था। इसके साथ-साथ महान उपलब्धियाँ भी हासिल की गई थीं।

पुनर्स्थापना काल में, राष्ट्र शांत चर्चाओं का आदी हो गया था, जो गणतंत्र के दौरान अभाव में थीं, और शांति के वैभव का, जो साम्राज्य के दौरान नहीं था। स्वतंत्र और सशक्त फ्रांस ने यूरोप के अन्य राष्ट्रों के लिए एक उत्साहवर्धक उदाहरण प्रस्तुत किया था। रोबेस्पियर के शासनकाल में क्रांति का बोलबाला था; बोनापार्ट के शासनकाल में तोपों का बोलबाला था; लुई 18 वीं और चार्ल्स 10 वीं के शासनकाल में बुद्धि का बोलबाला था। हवा थम गई, मशाल एक बार फिर प्रज्वलित हो गई। ऊँची चोटियों पर, मन का शुद्ध प्रकाश टिमटिमाता हुआ दिखाई दे रहा था। एक शानदार, उपयोगी और मनमोहक दृश्य। पंद्रह वर्षों तक, वे महान सिद्धांत जो विचारक के लिए इतने पुराने हैं, राजनेता के लिए इतने नए हैं, सार्वजनिक क्षेत्र में पूर्ण शांति के साथ कार्य करते हुए देखे जा सकते थे; कानून के समक्ष समानता, अंतरात्मा की स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता, सभी योग्यताओं की सभी कार्यों में उपलब्धता। इस प्रकार यह सिलसिला 1830 तक चलता रहा। बोर्बोन राजवंश सभ्यता का एक ऐसा साधन था जो ईश्वर की इच्छा के हाथों टूट गया।

बोर्बोन वंश का पतन भव्य था, उनकी ओर से नहीं, बल्कि राष्ट्र की ओर से। उन्होंने गरिमा के साथ सिंहासन छोड़ा, लेकिन अधिकारहीनता के साथ; उनका

अंधकारमय अंत उन गंभीर अंतों में से एक नहीं था जो इतिहास में उदासी की छाप छोड़ते हैं; यह न तो चार्ल्स प्रथम की रहस्यमयी शांति थी, न ही नेपोलियन की प्रचंड चीख। वे चले गए, बस इतना ही। उन्होंने ताज त्याग दिया, और कोई आभा नहीं रखी। वे योग्य थे, लेकिन महान नहीं थे। उनमें अपने दुर्भाग्य की भव्यता का कुछ अंश अभाव था। चेरबर्ग से यात्रा के दौरान, चार्ल्स दस ने एक गोल मेज को चौकोर मेज में बदलवाकर, ढहते राजतंत्र की तुलना में खतरे में पड़ी शिष्टाचार की चिंता अधिक दिखाई। इस गिरावट ने उन समर्पित लोगों को दुखी किया जो अपने व्यक्तित्व से प्रेम करते थे, और उन गंभीर लोगों को भी जो अपनी जाति का सम्मान करते थे। जनता प्रशंसनीय थी। एक सुबह हथियारों से लैस होकर, एक प्रकार के शाही विद्रोह द्वारा आक्रमण किए जाने पर, राष्ट्र ने स्वयं को इतनी शक्ति में पाया कि वह क्रोधित नहीं हुआ। उसने अपना बचाव किया, संयम बरता, चीजों को उनके स्थान पर बहाल किया, सरकार को कानून के अनुसार चलाया, बॉर्बोन वंश को निर्वासित किया, अफसोस! और फिर रुक गया! उसने बूढ़े राजा चार्ल्स X को उस मंच के नीचे से उतारा, जिसने लुई XIV को आश्रय दिया था, और उन्हें धीरे से जमीन पर रख दिया। उसने शाही व्यक्तियों को केवल दुख और सावधानी से छुआ। यह एक व्यक्ति नहीं था, यह कुछ व्यक्ति नहीं थे, यह फ्रांस था, संपूर्ण फ्रांस, विजयी और अपनी जीत के नशे में चूर फ्रांस, जो मानो होश में आ रहा था, और जिसने पूरी दुनिया के सामने, बैरिकेड्स के दिन के बाद गिलौम डू वैर के इन गंभीर शब्दों को व्यवहार में लाया:—

“जो लोग बड़ों की कृपा का लाभ उठाने और चिड़िया की तरह एक डाल से दूसरी डाल पर उछलते हुए विपत्ति से समृद्धि की ओर बढ़ने के आदी होते हैं, उनके लिए विपत्ति के समय अपने राजा के प्रति कठोर व्यवहार करना आसान होता है; लेकिन जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरे राजाओं का भाग्य, और विशेषकर मेरे पीड़ित राजाओं का भाग्य, मेरे लिए सदा आदरयोग्य रहेगा।”

बोर्बोन वंश अपने साथ सम्मान तो लेकर गया, लेकिन पश्चाताप नहीं। जैसा कि हमने अभी कहा, उनका दुर्भाग्य उनकी हैसियत से कहीं अधिक बड़ा था। वे क्षितिज में लुप्त हो गए।

जुलाई की क्रांति ने पूरी दुनिया में तुरंत दोस्त और दुश्मन बना लिए। पहले लोग खुशी और उत्साह से उसकी ओर दौड़े, तो दूसरे अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार उससे मुंह मोड़ लिया। शुरुआत में ही यूरोप के राजकुमार, इस सुबह के

उल्लू, घायल और स्तब्ध होकर अपनी आँखें बंद कर लीं और केवल धमकी देने के लिए ही खोलीं। एक ऐसा भय जिसे समझा जा सकता है, एक ऐसा क्रोध जिसे क्षमा किया जा सकता है। इस विचित्र क्रांति ने शायद ही कोई झटका दिया हो; इसने पराजित राजशाही को शत्रु मानकर उसका रक्तपात करने का सम्मान भी नहीं दिया। निरंकुश सरकारों की नज़र में, जो हमेशा स्वतंत्रता को कलंकित करने में रुचि रखती हैं, जुलाई की क्रांति ने दुर्जेय होने और सौम्य बने रहने का दोष किया। फिर भी, इसके विरुद्ध कोई प्रयास या षड्यंत्र नहीं रचा गया। सबसे असंतुष्ट, सबसे चिढ़े हुए, सबसे कांपते हुए लोगों ने भी इसका अभिवादन किया; हमारा अहंकार और हमारी कटुता चाहे जो भी हो, उन घटनाओं से एक रहस्यमय सम्मान उत्पन्न होता है जिनमें हम किसी ऐसे व्यक्ति के सहयोग को महसूस करते हैं जो मनुष्य से ऊपर काम कर रहा है।

जुलाई की क्रांति सत्य की विजय है जिसने वास्तविकता को परास्त कर दिया। यह एक ऐसी घटना है जो वैभव से परिपूर्ण है।

सही ने वास्तविकता को उलट दिया। इसीलिए 1830 की क्रांति इतनी शानदार थी, और इसीलिए इतनी सौम्य भी। विजयी सही को हिंसक होने की आवश्यकता नहीं होती।

सही वही है जो न्यायसंगत और सत्य हो।

सही का गुण है शाश्वत रूप से सुंदर और पवित्र बने रहना। तथ्य, चाहे वह देखने में कितना भी आवश्यक लगे, चाहे समकालीनों द्वारा कितना भी सर्वमान्य क्यों न हो, यदि वह केवल एक तथ्य के रूप में विद्यमान है, और यदि उसमें सही का अंश बहुत कम या बिल्कुल भी नहीं है, तो समय के साथ उसका विकृत, अपवित्र, शायद विकराल रूप धारण करना निश्चित है। यदि कोई एक ही झटके में यह जानना चाहता है कि सदियों के अंतराल से देखने पर तथ्य किस हद तक कुरूप हो सकता है, तो उसे मैकियावेली को देखना चाहिए। मैकियावेली न तो कोई दुष्ट प्रतिभा है, न ही कोई राक्षस, न ही कोई दयनीय और कायर लेखक; वह तो बस तथ्य है। और वह केवल इतालवी तथ्य ही नहीं है; वह यूरोपीय तथ्य है, सोलहवीं शताब्दी का तथ्य है। उन्नीसवीं शताब्दी के नैतिक विचार के समक्ष वह कुरूप प्रतीत होता है, और वास्तव में वह कुरूप है।

सही और तथ्य का यह संघर्ष समाज की उत्पत्ति से ही चला आ रहा है। इस द्वंद्व को समाप्त करना, शुद्ध विचार को मानवीय वास्तविकता से जोड़ना, सही को

शांतिपूर्वक तथ्य में और तथ्य को सही में समाहित करना , यही ऋषियों का कार्य है।

II. खराब सिलाई

लेकिन विद्वानों का काम एक बात है, चतुर पुरुषों का काम दूसरी बात। 1830 की क्रांति अचानक रुक गई।

जैसे ही कोई क्रांति तट तक पहुंचती है, कुशल लोग जहाज को डुबाने की तैयारी में तेजी लाते हैं।

हमारी सदी के कुशल लोगों ने स्वयं को राजनेता की उपाधि दे दी है; जिसके कारण "राजनेता" शब्द एक तरह से बोलचाल का शब्द बन गया है। वास्तव में, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जहाँ केवल कौशल होता है, वहाँ तुच्छता भी अनिवार्य रूप से मौजूद होती है। "कुशल" कहना "औसत दर्जे के" कहने के समान है।

इसी प्रकार, "राजनेता" कहना कभी-कभी "देशद्रोही" कहने के बराबर होता है। इसलिए, यदि हम कुशल विशेषज्ञों की मानें, तो जुलाई क्रांति जैसी क्रांतियाँ कटी हुई धमनियों के समान हैं; इन्हें तुरंत जोड़ना अत्यावश्यक है। अत्यधिक प्रचारित सत्य डगमगा उठता है। साथ ही, एक बार सत्य दृढ़ता से स्थापित हो जाने पर, राज्य को सुदृढ़ करना आवश्यक है। एक बार स्वतंत्रता सुनिश्चित हो जाने पर, ध्यान सत्ता पर केंद्रित करना चाहिए।

यहां विद्वान अभी तक कुशल लोगों से अलग नहीं हुए हैं, लेकिन उनमें संदेह पैदा होने लगा है। शक्ति, बहुत अच्छी बात है। लेकिन, पहली बात तो यह है कि शक्ति क्या है? दूसरी बात, यह आती कहां से है? कुशल लोग इस दबी हुई आपत्ति को अनसुना करते हुए प्रतीत होते हैं और अपनी चालें चलते रहते हैं।

राजनेताओं के अनुसार, जो लाभप्रद काल्पनिक बातों को आवश्यकता का मुखौटा पहनाने में माहिर हैं, किसी राजशाही महाद्वीप में क्रांति के बाद जनता की पहली आवश्यकता एक राजवंश की स्थापना करना है। वे कहते हैं कि इस तरह क्रांति के बाद शांति, यानी घावों पर मरहम लगाने और घर की मरम्मत करने का समय मिल सकता है। राजवंश तबाही के ढांचे को छुपाता है और एम्बुलेंस को ढक देता है। लेकिन, राजवंश की स्थापना हमेशा आसान नहीं होती।

यदि यह बिल्कुल आवश्यक हो, तो राजा बनाने के लिए जो भी प्रतिभावान या धनवान व्यक्ति हाथ लगे, वह पर्याप्त है। पहले मामले में, नेपोलियन है; दूसरे में, इटुरबिडे।

लेकिन जो पहला परिवार हाथ लगे, उससे राजवंश की स्थापना नहीं हो जाती। किसी भी वंश में कुछ हद तक प्राचीनता का होना आवश्यक है, और सदियों का अनुभव तात्कालिक रूप से नहीं आ सकता।

यदि हम स्वयं को "राजनेताओं" के दृष्टिकोण से देखें, तो क्रांति के बाद, सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, राजा के कौन से गुण उत्पन्न होते हैं? वह क्रांतिकारी हो सकता है और उसके लिए क्रांतिकारी होना उपयोगी भी है; अर्थात्, वह स्वयं उस क्रांति में भागीदार रहा हो, उसने उसमें अपना योगदान दिया हो, उसने उसमें समझौता किया हो या स्वयं को विशिष्ट साबित किया हो, उसने उसमें कुल्हाड़ी को छुआ हो या तलवार चलाई हो।

किसी राजवंश के क्या गुण होते हैं? वह राष्ट्रीय होना चाहिए; यानी दूरदर्शिता से क्रांतिकारी, न कि किए गए कार्यों से, बल्कि अपनाए गए विचारों के कारण। वह अतीत से समाहित और ऐतिहासिक होना चाहिए; भविष्य से समाहित और उसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए।

इन सब बातों से यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक क्रांतियों ने क्रॉमवेल या नेपोलियन जैसे किसी एक व्यक्ति को चुनकर ही संतोष क्यों कर लिया; और दूसरी क्रांति ने ब्रंसविक राजवंश या ऑरलियन्स राजवंश जैसे किसी एक परिवार को चुनने पर ही क्यों जोर दिया।

राजपरिवार उन भारतीय अंजीर के पेड़ों के समान हैं, जिनकी प्रत्येक शाखा धरती की ओर झुककर जड़ पकड़ लेती है और स्वयं एक अंजीर का पेड़ बन जाती है। प्रत्येक शाखा एक राजवंश बन सकती है, बशर्ते वह जनता के प्रति समर्पित हो।

कुशल व्यक्ति का सिद्धांत यही होता है।

तो यहाँ महान कला निहित है: सफलता को एक आपदा की ध्वनि में तब्दील करना ताकि उससे लाभ उठाने वाले भी उससे भयभीत हो जाएँ, उठाए गए हर कदम में भय का भाव भर देना, प्रगति को बाधित करने के बिंदु तक परिवर्तन के वक्र को बढ़ाना, उस आभा को मंद करना, उत्साह की कठोरता की निंदा और उसे कम करना, सभी कोणों और कीलों को काटना, विजय को समेटना, सच्चाई को दबा देना, विशाल

जनमानस को फलालैन में लपेटना और उसे शीघ्रता से सुला देना, उस अतिरिक्त स्वास्थ्य पर नियंत्रण रखना, एक स्वस्थ रोगी के उपचार पर हरक्यूलिस को लगाना, घटना को उपाय से कमतर करना, आदर्श के लिए प्यासे लोगों को औषधि से पतला किया हुआ अमृत प्रदान करना, अत्यधिक सफलता के विरुद्ध सावधानी बरतना, क्रांति को एक छाया से सजाना।

1830 में इस सिद्धांत का अभ्यास किया गया, जिसे 1688 तक इंग्लैंड में पहले ही लागू किया जा चुका था।

1830 एक ऐसी क्रांति थी जो बीच में ही रुक गई। प्रगति का आधा हिस्सा, अर्ध-दक्षिणपंथी विचारधारा। अब, तर्क "लगभग" को नहीं पहचानता, ठीक वैसे ही जैसे सूर्य मोमबत्ती को नहीं पहचानता।

क्रांति को बीच में ही कौन रोकता है? पूंजीपति वर्ग?

क्यों?

क्योंकि बुर्जुआ वर्ग स्वार्थ की उस अवस्था को दर्शाता है जो संतुष्टि की अवस्था में पहुँच चुकी है। कल यह भूख थी, आज यह परिपूर्णता है, और कल यह तृप्ति होगी।

नेपोलियन के बाद 1814 में जो घटना घटी, वही घटना चार्ल्स X के बाद 1830 में भी दोहराई गई।

बुर्जुआ वर्ग को एक वर्ग के रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया गया है, और यह प्रयास गलत है। बुर्जुआ वर्ग तो बस जनता का वह हिस्सा है जो संतुष्ट है। बुर्जुआ वह व्यक्ति है जिसके पास अब आराम करने का समय है। कुर्सी कोई जाति नहीं है।

लेकिन जल्दबाजी में बैठ जाने की इच्छा से मानव जाति की प्रगति ही रुक सकती है। यह अक्सर पूंजीपति वर्ग की गलती रही है।

किसी व्यक्ति को उसकी गलती के कारण किसी वर्ग का सदस्य नहीं बना दिया जाता। स्वार्थ सामाजिक व्यवस्था के विभाजनों में से एक नहीं है।

इसके अलावा, हमें स्वार्थ के प्रति न्यायसंगत होना चाहिए। 1830 के आघात के बाद राष्ट्र के उस हिस्से, जिसे बुर्जुआ कहा जाता है, ने जिस स्थिति की आकांक्षा की, वह उदासीनता और आलस्य से ग्रस्त निष्क्रियता नहीं थी, जिसमें

थोड़ी सी शर्म भी शामिल थी; यह वह सुस्ती नहीं थी जो सपनों में संभव क्षणिक विस्मृति की परिकल्पना करती है; यह तो ठहराव था।

'द हॉल्ट' एक ऐसा शब्द है जो एकवचन दोहरे और लगभग विरोधाभासी अर्थों से बना है: मार्च पर एक टुकड़ी, अर्थात् गति; एक ठहराव, अर्थात् विश्राम।

यह विराम सेनाओं की बहाली है; यह सशस्त्र और सतर्क अवस्था में विश्राम है; यह वह पूर्ण तथ्य है जो पहरेदारों को तैनात करता है और स्वयं को सतर्क रखता है।

यह विराम बीते दिन के संघर्ष और आने वाले दिन के संघर्ष दोनों की पूर्वधारणा रखता है।

यह 1830 और 1848 के बीच का विभाजन है।

जिसे हम यहाँ संघर्ष कहते हैं, उसे प्रगति भी कहा जा सकता है।

उस समय पूंजीपति वर्ग और राजनेताओं दोनों को एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो 'ठहरना' शब्द को व्यक्त कर सके। एक ऐसा व्यक्तित्व जो क्रांति और स्थिरता दोनों का प्रतीक हो, दूसरे शब्दों में, अतीत और भविष्य की स्पष्ट अनुकूलता के माध्यम से वर्तमान को सुदृढ़ कर सके।

इस व्यक्ति को "पहले ही ढूंढ लिया गया था"। उसका नाम लुई फिलिप डी'ऑरलियन्स था।

221 की जनगणना के अनुसार लुई फिलिप राजा बने। लाफायेट ने राज्याभिषेक का कार्य संपन्न किया।

उन्होंने इसे "सर्वश्रेष्ठ गणराज्य" कहा। पेरिस के टाउन हॉल ने रीम्स कैथेड्रल का स्थान ले लिया।

पूरे सिंहासन के स्थान पर आधे सिंहासन का यह प्रतिस्थापन "1830 का कार्य" था।

जब कुशल कारीगरों ने अपना काम पूरा कर लिया, तो उनके समाधान की घोर खामी स्पष्ट हो गई। यह सब पूर्ण अधिकार की सीमाओं से बाहर किया गया था। पूर्ण अधिकार ने पुकार लगाई: "मैं विरोध करता हूँ!" फिर, यह कहना भयावह है, वह अंधकार में विलीन हो गया।

III. लुई फिलिप

क्रांतियों में एक भयानक शक्ति और एक कुशल हाथ होता है; वे दृढ़ता से प्रहार करती हैं और सोच-समझकर चुनाव करती हैं। अपूर्ण होने पर भी, पतित और अपमानित होने पर भी, और 1830 की क्रांति जैसी एक छोटी क्रांति की स्थिति तक सिमट जाने पर भी, वे लगभग हमेशा ही पर्याप्त दैवीय स्पष्टता बनाए रखती हैं ताकि वे भटक न जाएं। उनका पतन कभी भी त्याग नहीं होता।

फिर भी, हमें बहुत ज्यादा शेखी नहीं मारनी चाहिए; क्रांतियां भी भ्रामक हो सकती हैं, और गंभीर गलतियां देखी गई हैं।

आइए 1830 में लौटते हैं। 1830, अपने विचलन में, सौभाग्यशाली रहा। क्रांति के अचानक समाप्त होने के बाद स्थापित व्यवस्था में, राजा का दर्जा राजशाही से कहीं अधिक था। लुई फिलिप एक असाधारण व्यक्ति थे।

एक ऐसे पिता का पुत्र, जिसे इतिहास कुछ हद तक कमतर आंकेगा, लेकिन साथ ही उतना ही सम्माननीय भी, जितना कि उस पिता को दोषी ठहराया गया था; सभी निजी सद्गुणों और अनेक सार्वजनिक सद्गुणों से युक्त; अपने स्वास्थ्य, अपनी संपत्ति, अपने व्यक्तित्व और अपने मामलों के प्रति सजग; एक मिनट का मूल्य जानता था, न कि हमेशा एक वर्ष का; संयमी, शांत, धैर्यवान; एक अच्छा आदमी और एक अच्छा राजकुमार; अपनी पत्नी के साथ सोता था, और उसके महल में नौकर थे जिन्हें बुर्जुआ वर्ग को वैवाहिक बिस्तर दिखाने का कर्तव्य सौंपा गया था, जो नियमित सोने के कमरे का एक दिखावा था जो बड़े भाई के पूर्व के नाजायज प्रदर्शनों के बाद उपयोगी हो गया था; यूरोप की सभी भाषाओं को जानता था, और इससे भी दुर्लभ बात यह है कि सभी प्रासंगिक भाषाओं को जानता था और उन्हें बोलता था; "मध्यम वर्ग" का एक प्रशंसनीय प्रतिनिधि, लेकिन उससे कहीं आगे और हर तरह से उससे श्रेष्ठ। उत्कृष्ट विवेक से युक्त, अपने वंश की सराहना करते हुए, अपने आंतरिक मूल्य को सर्वोपरि मानते हुए, और अपनी जाति के प्रश्न पर अत्यंत विशिष्ट, स्वयं को ऑरलियन्स का घोषित करते हुए, न कि बॉर्बन का; जब वे केवल एक राजसी राजकुमार थे, तब भी वे शाही वंश के पहले राजकुमार थे, लेकिन राजा बनने के दिन से ही एक स्पष्टवादी बुर्जुआ बन गए;

सार्वजनिक रूप से विपुल, निजी रूप से संक्षिप्त; कंजूस के रूप में ख्यातिप्राप्त, लेकिन सिद्ध नहीं; मूलतः, उन मितव्ययी लोगों में से एक जो अपनी इच्छा या कर्तव्य पर आसानी से खर्च कर देते हैं; पढ़े-लिखे, लेकिन साहित्य के प्रति बहुत संवेदनशील नहीं; एक सज्जन, लेकिन शूरवीर नहीं; सरल, शांत और मजबूत; अपने परिवार और गृहस्थों द्वारा पूजनीय। एक आकर्षक वक्ता, एक अचूक राजनेता, अंतर्मन में उदासीन, तात्कालिक हितों से प्रेरित, हमेशा सीमित दायरे में शासन करने वाला, द्वेष और कृतज्ञता से रहित, साधारणता पर श्रेष्ठता का निर्दय उपयोग करने वाला, संसदीय बहुमत प्राप्त करने में माहिर ताकि उन रहस्यमय सर्वसम्मतियों को गलत साबित किया जा सके जो सत्ता के नीचे दबी रहती हैं; निडर, कभी-कभी अपने निडरता में अविवेकी, लेकिन उस अविवेकीपन में भी अद्भुत कुशलता रखने वाला; युक्तियों, भावों और मुखौटों में निपुण; फ्रांस को यूरोप से और यूरोप को फ्रांस से भयभीत करने वाला! अपने देश से निर्विवाद रूप से प्रेम करने वाला, लेकिन अपने परिवार को सर्वोपरि मानने वाला; अधिकार से अधिक प्रभुत्व और गरिमा से अधिक अधिकार को मानने वाला, एक ऐसा स्वभाव जिसमें यह दुर्भाग्यपूर्ण गुण है कि जैसे ही यह सब कुछ सफलता में बदल देता है, यह छल को स्वीकार करता है और नीचता को पूरी तरह से अस्वीकार नहीं करता है, लेकिन इसका यह मूल्यवान पक्ष है कि यह राजनीति को हिंसक झटकों से, राज्य को विखंडन से और समाज को आपदाओं से बचाता है; सूक्ष्म, सटीक, सतर्क, चौकस, बुद्धिमान, अथक। कभी-कभी स्वयं का ही खंडन करते हुए और खुद को झूठा साबित करते हुए; एनकोना में ऑस्ट्रिया के विरुद्ध साहसी, स्पेन में इंग्लैंड के विरुद्ध हठपूर्वक, एंटवर्प पर बमबारी करते हुए और प्रिचर्ड को रिश्वत देते हुए; दृढ़ विश्वास के साथ मार्सेलेज़ गाते हुए, निराशा, सुस्ती, सौंदर्य और आदर्श के प्रति आकर्षण, साहसी उदारता, यूटोपिया, कल्पनाओं, क्रोध, अहंकार, भय से अछूते; व्यक्तिगत निडरता के सभी रूपों से युक्त; वाल्मी में एक सेनापति; जेमापेस में एक सैनिक; आठ बार राजहत्यारों द्वारा आक्रमण किया गया और हमेशा मुस्कुराते रहे। एक ग्रेनेडियर की तरह बहादुर, एक विचारक की तरह साहसी; केवल यूरोप में उथल-पुथल की संभावना से ही बेचैन, और महान राजनीतिक कारनामों के लिए अनुपयुक्त; हमेशा अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार, कभी अपने काम को नहीं; अपनी इच्छा को प्रभाव में छिपाते हुए, ताकि उनकी आज्ञा का पालन एक राजा के बजाय एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में किया जाए; अवलोकन से संपन्न,

भविष्यवाणी से नहीं। लोगों के दिमाग पर ज्यादा ध्यान नहीं देते थे, लेकिन उन्हें अच्छी तरह जानते थे, यानी परखने के लिए उन्हें देखना जरूरी था; उनकी सूझबूझ तेज और गहरी थी, वे व्यावहारिक ज्ञान रखते थे, उनकी वाणी सहज थी, और उनकी स्मृति अद्भुत थी; वे लगातार अपनी इस स्मृति का सहारा लेते थे, यही एक बात थी जो उन्हें सीज़र, सिकंदर और नेपोलियन से जोड़ती थी; वे कर्मों, तथ्यों, विवरणों, तिथियों, नामों को जानते थे, लेकिन प्रवृत्तियों, भावनाओं, भीड़ की विविध प्रतिभाओं, आंतरिक आकांक्षाओं, आत्माओं के छिपे और अस्पष्ट उद्गारों से अनभिज्ञ थे, संक्षेप में, वे उन सभी चीजों को जानते थे जिन्हें अंतरात्मा की अदृश्य धाराएँ कहा जा सकता है; वे ऊपरी तौर पर स्वीकार्य थे, लेकिन निचले स्तर पर फ्रांस से उनका तालमेल कम था; वे चतुराई से खुद को बचाते थे; वे बहुत ज्यादा शासन करते थे और बहुत कम; वे खुद अपने पहले मंत्री थे; वे वास्तविकता की तुच्छता से विचारों की विशालता में बाधा उत्पन्न करने में माहिर थे; उनमें सभ्यता, व्यवस्था और संगठन की एक वास्तविक रचनात्मक क्षमता, कार्यवाही और छल की एक अवर्णनीय भावना का मिश्रण था, वे एक राजवंश के संस्थापक और वकील थे; उनमें शार्लेमेन और एक वकील दोनों के गुण थे। संक्षेप में, लुई फिलिप एक महान और मौलिक व्यक्तित्व थे, एक ऐसे राजकुमार जिन्होंने फ्रांस की बेचैनी के बावजूद सत्ता स्थापित करना और यूरोप की ईर्ष्या के बावजूद शक्ति अर्जित करना बखूबी समझा। लुई फिलिप को अपने युग के प्रख्यात व्यक्तियों में गिना जाएगा और यदि उन्होंने यश की लालसा थोड़ी भी की होती और यदि उनमें महानता और उपयोगिता के बीच का अंतरात्मा समान रूप से निहित होता, तो उन्हें इतिहास के सबसे गौरवशाली शासकों में स्थान दिया जाता।

लुई फिलिप दिखने में आकर्षक थे और बुढ़ापे में भी उनकी गरिमा बरकरार रही; राष्ट्र ने उन्हें हमेशा स्वीकार नहीं किया, लेकिन जनता ने हमेशा उन्हें पसंद किया; वे लोगों को मोहित कर लेते थे। उनमें लोगों को आकर्षित करने की अद्भुत क्षमता थी। उनमें राजसी ठाठ-बाठ नहीं था; राजा होते हुए भी उन्होंने मुकुट नहीं पहना था और बूढ़े होते हुए भी उनके बाल सफेद नहीं थे; उनके तौर-तरीके पुरानी व्यवस्था के अनुरूप थे और आदतें नई व्यवस्था के; कुलीन और बुर्जुआ का ऐसा मिश्रण जो 1830 के दशक के अनुकूल था; लुई फिलिप एक परिवर्तनशील शासक थे; उन्होंने प्राचीन उच्चारण और वर्तनी को संरक्षित

रखा और आधुनिक विचारों के समर्थन में उसका उपयोग किया; उन्हें पोलैंड और हंगरी से प्रेम था, लेकिन वे 'लेस पोलोनोइस' लिखते थे और 'लेस होंग्राइस' उच्चारित करते थे। वे चार्ल्स X की तरह राष्ट्रीय रक्षक की वर्दी और नेपोलियन की तरह लीजन ऑफ ऑनर का रिबन पहनते थे।

वह चर्च में कभी-कभार ही जाते थे, शिकार पर बिल्कुल नहीं जाते थे, और ओपेरा तो कभी नहीं जाते थे। वे चर्च के सेवकों, कोड़े मारने वालों, और बैले नर्तकियों से अप्रभावित रहे; यही बात उनकी बुर्जुआ लोकप्रियता का एक हिस्सा थी। उनमें कोई दया नहीं थी। वे हमेशा छाता बगल में दबाकर निकलते थे, और यह छाता लंबे समय तक उनके व्यक्तित्व का हिस्सा बना रहा। वे थोड़े-बहुत राजमिस्त्री, थोड़े-बहुत माली और कुछ हद तक डॉक्टर भी थे; उन्होंने घोड़े से गिरे एक सैनिक का खून निकाला था; लुई फिलिप बिना चाकू के नहीं घूमते थे, ठीक वैसे ही जैसे हेनरी चतुर्थ बिना कटार के नहीं घूमते थे। राजभक्तों ने इस हास्यास्पद राजा का उपहास उड़ाया, जो इलाज के उद्देश्य से खून बहाने वाला पहला राजा था।

लुई फिलिप के विरुद्ध शिकायतों के लिए एक निष्कर्ष निकाला जा सकता है: एक वह जो राजशाही पर आरोप लगाता है, एक वह जो शासनकाल पर आरोप लगाता है, और एक वह जो राजा पर आरोप लगाता है; तीन स्तंभ जो सभी अलग-अलग परिणाम देते हैं। लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन, प्रगति का गौण महत्व, सड़कों पर हुए विरोध प्रदर्शनों का हिंसक दमन, विद्रोहों का सैन्य निष्पादन, विद्रोहों को हथियारों के बल पर कुचलना, रुए ट्रांसनोनाइन, युद्ध की सलाहें, वास्तविक देश का कानूनी देश में विलय, तीन लाख विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्तियों के साथ आधे हिस्से पर—ये राजशाही के कार्य हैं; बेल्जियम को अस्वीकार करना, अल्जीरिया पर अत्यधिक क्रूरता से विजय प्राप्त करना, और, जैसा कि अंग्रेजों द्वारा भारत के मामले में हुआ, सभ्यता से अधिक बर्बरता के साथ, विश्वासघात, अब्द-अल-कादर, ब्ले, ड्यूट्ज़ को खरीदा गया, प्रिचर्ड को भुगतान किया गया—ये शासनकाल के कार्य हैं; राष्ट्रीय से अधिक घरेलू नीति राजा की देन थी।

जैसा कि देखा जाएगा, उचित कटौती किए जाने के बाद, राजा का शुल्क कम हो जाता है।

यही उनकी सबसे बड़ी गलती थी; वे फ्रांस के नाम पर बहुत विनम्र थे।

यह दोष कहाँ से उत्पन्न होता है?

हम इसे बताएंगे।

लुई फिलिप एक हद तक पितृसत्तात्मक राजा थे; एक राजवंश की स्थापना के उद्देश्य से परिवार को पालने-पोसने वाला वह व्यक्ति हर चीज से डरता है और किसी भी तरह की गड़बड़ी पसंद नहीं करता; इसलिए उसमें अत्यधिक कायरता थी, जो जनता को नापसंद थी, क्योंकि उनकी नागरिक परंपरा में 14 जुलाई और सैन्य परंपरा में ऑस्टरलिट्ज़ का विशेष महत्व था।

इसके अलावा, यदि हम उन सार्वजनिक कर्तव्यों को हटा दें जिन्हें सर्वप्रथम पूरा करना आवश्यक है, तो लुई फिलिप का अपने परिवार के प्रति वह गहरा स्नेह परिवार के लिए बिल्कुल उचित था। वह पारिवारिक समूह प्रशंसा के योग्य था। वहाँ सद्गुण और प्रतिभाएँ साथ-साथ विद्यमान थीं। लुई फिलिप की एक पुत्री, मैरी डी'ऑरलियन्स ने अपने वंश का नाम कलाकारों में उसी प्रकार स्थापित किया, जैसे चार्ल्स डी'ऑरलियन्स ने कवियों में किया था। उन्होंने अपनी आत्मा से एक संगमरमर की प्रतिमा बनाई जिसका नाम उन्होंने जोन ऑफ आर्क रखा। लुई फिलिप की दो पुत्रियों के बारे में मेटर्निच ने यह प्रशंसा व्यक्त की: "वे ऐसी युवा महिलाएं हैं जो दुर्लभ हैं, और ऐसे राजकुमार हैं जो कभी नहीं देखे गए।"

बिना किसी लाग-लपेट और बिना किसी अतिशयोक्ति के, लुई फिलिप के बारे में यही सच्चाई है।

सर्वाधिकारवादी राजकुमार बनना, पुनर्स्थापना और क्रांति के विरोधाभास को अपने भीतर समाहित करना, क्रांतिकारी के उस अशांत पहलू को धारण करना जो सत्ता में आने पर आश्वस्त करने वाला बन जाता है, 1830 में लुई फिलिप का भाग्य इसी में निहित था; किसी व्यक्ति का किसी घटना के साथ इतना पूर्ण अनुकूलन पहले कभी नहीं देखा गया था; एक दूसरे में समाहित हो गया और साकार रूप धारण हो गया। लुई फिलिप 1830 में एक आदर्श व्यक्ति के रूप में उभरे। इसके अलावा, उनके पक्ष में सिंहासन के लिए एक बड़ा गुण था, निर्वासन। उन्हें बहिष्कृत किया गया था, वे एक घुमंतू, गरीब व्यक्ति थे। उन्होंने अपने श्रम से जीवन यापन किया था। स्विट्जरलैंड में, फ्रांस के सबसे समृद्ध रियासतों के इस उत्तराधिकारी ने रोटी जुटाने के लिए एक बूढ़ा घोड़ा बेच

दिया था। राइकेनाउ में, वे गणित पढ़ाते थे, जबकि उनकी बहन एडिलेड ऊन का काम और सिलाई करती थीं। एक राजा से जुड़ी ये स्मृतियाँ बुर्जुआ वर्ग को उत्साहित कर देती थीं। उन्होंने अपने हाथों से लुई XI द्वारा निर्मित और लुई XV द्वारा उपयोग किए गए मोंट-सेंट-मिशेल के लोहे के पिंजरे को ध्वस्त कर दिया था। वे डुमौरीज़ के साथी थे, वे लाफायेट के मित्र थे; वे जैकोबिन्स क्लब के सदस्य थे; मिराब्यू ने उनके कंधे पर थपथपाया था; डेंटन ने उनसे कहा था: "युवक!" 1993 में, चौबीस वर्ष की आयु में, जब वे एम. डी चार्ट्रेस थे, उन्होंने एक बक्से की गहराई से लुई XVI के मुकदमे को देखा था, जिन्हें "वह बेचारा अत्याचारी" कहना बिल्कुल सही था। क्रांति की अंधी दूरदर्शिता, जिसने राजा में राजत्व और राजत्व में राजा को विघ्न कर दिया, उसने लगभग उस व्यक्ति की परवाह किए बिना ही यह सब किया, जो विचार के भीषण कुचलने, विधानसभा-न्यायालय के विशाल तूफान, जनता के आक्रोश और पूछताछ के बीच फंसा हुआ था; कैपेट को समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दे, उस शाही मुखिया की उस गंभीर सांस के नीचे की भयावह, स्तब्ध कर देने वाली अस्थिरता, उस तबाही में सभी की सापेक्षिक निर्दोषता, निंदा करने वालों के साथ-साथ निंदा किए गए व्यक्ति की भी—उसने इन सब चीजों को देखा था, उसने उस भ्रम का अनुभव किया था; उसने विधानसभा-सम्मेलन की अदालत के सामने सदियों को प्रकट होते देखा था; उसने लुई सोलहवें के पीछे उस दुर्भाग्यपूर्ण राहगीर को देखा था जिसे जिम्मेदार ठहराया गया था, उस भयानक अपराधी, राजशाही को, अंधेरे से उभरते हुए देखा था; और उसकी आत्मा में जनता के इन विशाल न्याय के प्रति सम्मानजनक भय बना रहा, जो लगभग ईश्वर के न्याय के समान ही निष्पक्ष हैं।

क्रांति का उन पर गहरा प्रभाव था। उसकी स्मृति उन महान वर्षों की पल-पल की जीवंत छाप के समान थी। एक दिन, एक ऐसे गवाह की उपस्थिति में, जिस पर हमें संदेह करने की अनुमति नहीं है, उन्होंने संविधान सभा की वर्णानुक्रम सूची में अक्षर 'ए' को पूरी तरह से याद करके बता दिया।

लुई फिलिप खुलेआम शासन करने वाले शासक थे। उनके शासनकाल में प्रेस स्वतंत्र थी, न्यायधीश स्वतंत्र थे, अंतरात्मा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता थी। सितंबर के कानून सबके सामने हैं। विशेषाधिकारों पर प्रकाश के विनाशकारी प्रभाव से भलीभांति अवगत होते हुए भी उन्होंने अपने

सिंहासन को सबके सामने खुला छोड़ दिया। इतिहास उनकी इस निष्ठा के लिए उन्हें न्यायसंगत सम्मान देगा।

लुई फिलिप, उन सभी ऐतिहासिक हस्तियों की तरह जो इस दुनिया से चले गए हैं, आज मानवीय अंतरात्मा की कसौटी पर खरे उतर रहे हैं। उनका मामला अभी तक केवल निचली अदालत में ही विचाराधीन है।

इतिहास की स्वतंत्र और आदरणीय अभिव्यक्ति का समय अभी तक उनके लिए नहीं आया है; इस राजा पर कोई निश्चित निर्णय सुनाने का समय अभी नहीं आया है; गंभीर और प्रख्यात इतिहासकार लुई ब्लैंक ने स्वयं हाल ही में अपने पहले फैसले को नरम किया है; लुई फिलिप का चुनाव उन दो लगभग घटनाओं के आधार पर हुआ था जिन्हें 221 और 1830 कहा जाता है, यानी आधे संसद और आधी क्रांति द्वारा; और किसी भी मामले में, उस उच्चतर दृष्टिकोण से जहां दर्शन को स्वयं को स्थापित करना चाहिए, हम यहां उनका मूल्यांकन नहीं कर सकते, जैसा कि पाठक ने ऊपर देखा है, केवल पूर्ण लोकतांत्रिक सिद्धांत के नाम पर कुछ आपत्तियों के साथ; पूर्ण की दृष्टि में, इन दो अधिकारों के बाहर, पहले स्थान पर मनुष्य का अधिकार, दूसरे स्थान पर जनता का अधिकार, सब कुछ अतिक्रमण है; लेकिन इन बातों को ध्यान में रखते हुए भी, हम आज भी यह कह सकते हैं कि समग्र रूप से देखा जाए और चाहे उन्हें किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाए, लुई फिलिप, अपने आप में और मानवीय अच्छाई के दृष्टिकोण से, प्राचीन इतिहास की पुरानी भाषा में कहें तो, सिंहासन पर बैठने वाले सर्वश्रेष्ठ राजकुमारों में से एक रहेंगे।

उसके खिलाफ क्या है? वह सिंहासन। राजा लुई फिलिप को हटा दें, तो वह इंसान रह जाता है। और वह इंसान अच्छा है। कभी-कभी तो वह इतना अच्छा होता है कि प्रशंसा के काबिल हो जाता है। अक्सर, अपने सबसे गंभीर अनुभवों के बीच, महाद्वीप की पूरी कूटनीति से जूझने के बाद, वह रात को अपने कमरों में लौटता था, और वहाँ, थकान से चूर, नींद से व्याकुल, वह क्या करता था? वह एक मौत की सजा का मामला लेता और पूरी रात एक आपराधिक मुकदमे की समीक्षा में बिताता, इसे यूरोप के खिलाफ अपनी बात रखने का एक जरिया मानता था, लेकिन उसके लिए किसी व्यक्ति को जल्लाद से बचाना कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। वह अपने राजकोष के रखवाले के खिलाफ अपनी राय पर अडिग रहता था; वह क्राउन अटॉर्नी, जिन्हें वह "कानून के बकवास करने वाले" कहता था, के खिलाफ गिलोटिन के साथ

कदम-कदम पर लड़ता था। कभी-कभी फैसलों का ढेर उसकी मेज पर फैला होता था; वह उन सभी की जांच करता था; इन दयनीय, दोषी सिरों को छोड़ना उसके लिए पीड़ादायक होता था। एक दिन, उन्होंने उसी गवाह से कहा जिसका हमने हाल ही में ज़िक्र किया था: “मैंने कल रात सात जीत हासिल कीं।” उनके शासनकाल के शुरुआती वर्षों में, मृत्युदंड लगभग समाप्त कर दिया गया था, और फांसी का तख्ता खड़ा करना राजा के विरुद्ध एक अत्याचार माना जाता था। ग्रेव परिवार के बड़े सदस्यों के साथ गायब हो जाने के बाद, बैरियर-सेंट-जैक्स के नाम से एक बुर्जुआ फांसी स्थल स्थापित किया गया; “व्यावहारिक लोगों” ने एक तरह की वैध गिलोटिन की आवश्यकता महसूस की; और यह बुर्जुआ वर्ग के संकीर्ण पक्ष का प्रतिनिधित्व करने वाले कैसिमिर पेरिएर की, उदार पक्ष का प्रतिनिधित्व करने वाले लुई फिलिप पर, विजयों में से एक थी। लुई फिलिप ने बेकरिया पर अपने हाथ से टिप्पणी की। फिएस्की मशीन के बाद, उन्होंने कहा: “कितनी अफ़सोस की बात है कि मैं घायल नहीं हुआ! तब मैं क्षमा कर सकता था!” एक अन्य अवसर पर, अपने मंत्रालय द्वारा किए गए प्रतिरोध का उल्लेख करते हुए, उन्होंने एक राजनीतिक अपराधी के बारे में लिखा, जो हमारे समय के सबसे उदार व्यक्तियों में से एक हैं: "उनकी क्षमादान हो चुकी है; अब केवल मुझे ही क्षमादान प्राप्त करना बाकी है।" लुई फिलिप, लुई नौवें की तरह ही सौम्य और हेनरी चतुर्थ की तरह ही दयालु थे।

अब, हमारे विचार से, इतिहास में, जहाँ दयालुता सबसे दुर्लभ मोती है, दयालु व्यक्ति लगभग महान व्यक्ति से भी अधिक महत्व रखता है।

लुई फिलिप को कुछ लोगों ने कड़ी आलोचना की, और शायद दूसरों ने हद से ज़्यादा आलोचना की, इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि एक ऐसा व्यक्ति, जो आज के समय में एक गुमनाम शख्सियत है, जिसने उस राजा को जाना था, इतिहास के सामने आकर उसके पक्ष में गवाही दे; यह गवाही, चाहे कुछ भी हो, स्पष्ट रूप से और सबसे बढ़कर, पूरी तरह निस्वार्थ है; एक मृत व्यक्ति द्वारा लिखा गया समाधि लेख सच्चा होता है; एक आत्मा दूसरी आत्मा को सांत्वना दे सकती है; एक ही छाया में रहने से उसकी प्रशंसा करने का अधिकार मिलता है; इस बात से बहुत डरने की ज़रूरत नहीं है कि कभी निर्वासन में दो कब्रों के बारे में यह कहा जाएगा: "एक ने दूसरी की चापलूसी की।"

IV. नींव के नीचे दरारें

जिस क्षण हम जिस नाटक का वर्णन कर रहे हैं वह लुई फिलिप के शासनकाल की शुरुआत को घेरने वाले दुखद बादलों की गहराई में प्रवेश करने वाला है, उस समय यह आवश्यक था कि कोई अस्पष्टता न हो, और यह अनिवार्य हो गया कि यह पुस्तक इस राजा के संबंध में कुछ स्पष्टीकरण प्रदान करे।

लुई फिलिप ने बिना किसी हिंसा, बिना किसी प्रत्यक्ष कार्रवाई के, एक क्रांतिकारी परिवर्तन के माध्यम से अपनी शाही सत्ता ग्रहण की थी, जो स्पष्ट रूप से क्रांति के वास्तविक उद्देश्य से बिल्कुल भिन्न था, लेकिन जिसमें ड्यूक डी'ऑरलियन्स ने कोई व्यक्तिगत पहल नहीं की थी। उनका जन्म एक राजकुमार के रूप में हुआ था और वे स्वयं को निर्वाचित राजा मानते थे। उन्होंने स्वयं यह आदेश ग्रहण नहीं किया था; उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया था; यह उन्हें दिया गया था और उन्होंने इसे स्वीकार किया था; निश्चित रूप से गलत तरीके से, लेकिन फिर भी आश्वस्त थे कि यह प्रस्ताव सही था और इसे स्वीकार करना कर्तव्य था। इसलिए उनका सत्ता पर अधिकार सद्भावनापूर्ण था। अब, हम यह बात पूरी ईमानदारी से कहते हैं कि लुई फिलिप का सत्ता पर पूर्ण सद्भावनापूर्ण अधिकार था और लोकतंत्र का आक्रमण भी सद्भावनापूर्ण था, इसलिए सामाजिक संघर्षों से उत्पन्न आतंक का भार न तो राजा पर पड़ता है और न ही लोकतंत्र पर। सिद्धांतों का टकराव तत्वों के टकराव के समान है। सागर जल की रक्षा करता है, तूफान वायु की रक्षा करता है, राजा राजशाही की रक्षा करता है, लोकतंत्र जनता की रक्षा करता है; सापेक्षिक सत्ता, जो राजतंत्र है, निरपेक्ष सत्ता, जो गणतंत्र है, का विरोध करती है; इस संघर्ष में समाज को पीड़ा झेलनी पड़ती है, परन्तु जो आज उसकी पीड़ा का कारण है, वही आगे चलकर उसकी सुरक्षा का कारण बनेगा; और किसी भी सूरत में, लड़ने वालों को दोष नहीं दिया जा सकता; दोनों पक्षों में से एक स्पष्ट रूप से गलत है; सही पक्ष रोड्स के कोलोसस की तरह दो किनारों पर एक साथ खड़ा नहीं है, एक पैर गणतंत्र पर और दूसरा राजतंत्र पर; यह अविभाज्य है, और पूरी तरह एक ही पक्ष में है; परन्तु जो लोग गलती पर हैं, वे इतने गंभीर हैं; एक अंधा व्यक्ति उतना ही अपराधी है जितना कि वेंडियन एक बदमाश। तो आइए, इन भयंकर

टकरावों का कारण केवल परिस्थितियों की नियति को ही मानें। इन तूफानों का स्वरूप चाहे जो भी हो, इनमें मानवीय गैरजिम्मेदारी भी निहित है।

आइए इस व्याख्या को पूरा करें।

1840 की सरकार को तुरंत ही कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। कल ही जन्मी इस सरकार को आज ही संघर्ष करना पड़ा।

इसे स्थापित किए हुए अभी मुश्किल ही हुआ था कि जुलाई के उस तंत्र पर कर्षण की अस्पष्ट हलचलें हर जगह महसूस होने लगीं, जिसे अभी हाल ही में बिछाया गया था और जो ठोसता से रहित था।

प्रतिरोध अगले दिन पैदा हुआ; शायद पिछली शाम को ही पैदा हो गया था। महीने दर महीने शत्रुता बढ़ती गई, और जो पहले छिपी हुई थी, वह खुलकर सामने आ गई।

जैसा कि हमने कहा है, जुलाई की क्रांति, जिसे फ्रांस के बाहर राजाओं द्वारा बहुत कम स्वीकृति मिली, की फ्रांस में अलग-अलग व्याख्या की गई थी।

ईश्वर घटनाओं के माध्यम से मनुष्यों को अपनी प्रत्यक्ष इच्छा प्रकट करता है, एक रहस्यमय भाषा में लिखे अस्पष्ट पाठ के रूप में। मनुष्य तुरंत उसका अनुवाद करने लगते हैं; ये अनुवाद जल्दबाजी में किए गए, गलत, त्रुटियों से भरे, अपूर्ण और निरर्थक होते हैं। बहुत कम बुद्धि ही इस दिव्य भाषा को समझ पाती है। सबसे बुद्धिमान, सबसे शांत और सबसे गहन बुद्धि वाले लोग धीरे- धीरे इसका अर्थ निकालते हैं, और जब तक वे अपने मूल पाठ तक पहुँचते हैं, तब तक कार्य पूरा हो चुका होता है; बीस अनुवाद पहले से ही सार्वजनिक रूप से उपलब्ध होते हैं। प्रत्येक अनुवाद से एक गुट बनता है, और प्रत्येक गलत व्याख्या से एक धड़ाधड़; और प्रत्येक गुट सोचता है कि केवल उसी के पास सही पाठ है, और प्रत्येक धड़ाधड़ सोचता है कि उसी के पास ज्ञान का स्रोत है।

सत्ता स्वयं अक्सर एक गुटबाजी होती है।

क्रांतियों में ऐसे तैराक होते हैं जो धारा के विपरीत तैरते हैं; वे पुरानी पार्टियां होती हैं।

ईश्वर की कृपा से वंशानुगत सत्ता पर अड़े रहने वाले पुराने दलों का मानना है कि क्रांतियाँ विद्रोह के अधिकार से उत्पन्न होती हैं, इसलिए उनके विरुद्ध विद्रोह करने का भी अधिकार है। यह गलत है। क्योंकि इन क्रांतियों

में विद्रोह करने वाला जनता नहीं, बल्कि राजा होता है। क्रांति विद्रोह के ठीक विपरीत है। प्रत्येक क्रांति एक स्वाभाविक परिणाम होने के कारण, अपने आप में वैधता रखती है, जिसे झूठे क्रांतिकारी कभी-कभी अपमानित करते हैं, लेकिन वह वैधता कलंकित होने पर भी बनी रहती है, रक्त से सने होने पर भी कायम रहती है।

क्रांतियाँ संयोग से नहीं, बल्कि आवश्यकता से उत्पन्न होती हैं। क्रांति काल्पनिक से वास्तविक की ओर वापसी है। यह इसलिए होती है क्योंकि इसका होना अनिवार्य है।

फिर भी, पुराने वैधवादी दलों ने 1830 की क्रांति पर झूठे तर्कों से उपजी पूरी उग्रता के साथ हमला किया। गलतियाँ बेहतरीन हथियार साबित होती हैं। वे चतुराई से क्रांति की कमज़ोरी पर प्रहार करती हैं, उसके कवच के अभाव में, उसके तर्कहीन होने पर; उन्होंने इस क्रांति पर उसके राजशाही स्वरूप में हमला किया। उन्होंने क्रांति से चिल्लाकर पूछा: “क्रांति, यह राजा क्यों?” गुट अंधे लोगों की तरह होते हैं जो सही निशाना लगाते हैं।

रिपब्लिकनों ने भी यही बात दोहराई। लेकिन उनके मुंह से निकली यह बात तर्कसंगत थी। वैधतावादियों में जो अंधापन था, वही लोकतंत्रवादियों में स्पष्ट दृष्टि थी। 1830 ने जनता को कंगाल कर दिया था। क्रोधित लोकतंत्र ने इसके लिए जनता को फटकारा।

अतीत के आक्रमण और भविष्य के आक्रमण के बीच, जुलाई की सत्ता संघर्ष करती रही। यह एक ओर राजशाही शताब्दियों के साथ, तो दूसरी ओर शाश्वत अधिकार के साथ टकराव की स्थिति में थी।

इसके अतिरिक्त, और इन सब के अलावा, चूंकि अब क्रांति नहीं रही और राजतंत्र स्थापित हो चुका था, इसलिए 1830 को पूरे यूरोप पर प्राथमिकता देनी पड़ी। शांति बनाए रखना और भी जटिल हो गया। तर्क के विपरीत स्थापित सामंजस्य अक्सर युद्ध से भी अधिक कठिन होता है। इस गुप्त संघर्ष से, जो हमेशा दबा हुआ था, लेकिन हमेशा गरजता रहता था, सशस्त्र शांति का जन्म हुआ, सभ्यता का वह विनाशकारी उपाय जो यूरोपीय मंत्रिमंडलों के बंधन में स्वयं ही संदिग्ध है। जुलाई का राजतंत्र यूरोपीय मंत्रिमंडलों के बंधन में जकड़े होने के बावजूद उठ खड़ा हुआ। मेटर्निच इसे खुशी-खुशी लगाम में बांध देता। फ्रांस

में प्रगति से प्रेरित होकर, इसने यूरोप के उन सुस्त राजतंत्रों को चुनौती दी। घसीटे जाने के बाद, इसने दूसरों को घसीटने का बीड़ा उठाया।

इसी बीच, उसके भीतर, दरिद्रता, सर्वहारा वर्ग, वेतन, शिक्षा, दंडात्मक दासता, वेश्यावृत्ति, स्त्री का भाग्य, धन, दुख, उत्पादन, उपभोग, विभाजन, विनिमय, सिक्का, ऋण, पूंजी के अधिकार, श्रम के अधिकार—ये सभी प्रश्न समाज के ऊपर एक भयानक ढलान की तरह कई गुना बढ़ गए थे।

राजनीतिक दलों से परे, एक और आंदोलन उभर कर सामने आया। दार्शनिक हलचल ने लोकतांत्रिक हलचल को प्रतिक्रिया दी। निर्वाचित वर्ग और आम जनता दोनों ही परेशान थे; उनका तरीका अलग था, लेकिन हलचल उतनी ही गंभीर थी।

विचारक चिंतन में लीन थे, जबकि धरती, यानी जनता, क्रांतिकारी धाराओं से प्रभावित होकर, अवर्णनीय रूप से अस्पष्ट मिर्गी के झटकों से कांप रही थी। ये स्वप्नद्रष्टा, कुछ एकांत में, कुछ परिवारों में एकजुट और लगभग एकांत में, सामाजिक प्रश्नों पर शांत लेकिन गहन ढंग से विचार कर रहे थे; भावहीन खनिकों की तरह, जो शांतिपूर्वक अपनी सुरंगों को ज्वालामुखी की गहराई में धकेल रहे थे, आसपास के मंद शोर और भट्टियों की झलक से शायद ही विचलित हो रहे थे।

इस अशांत युग में यह शांति सबसे खूबसूरत दृश्यों में से एक थी।

इन लोगों ने अधिकारों का प्रश्न राजनीतिक दलों पर छोड़ दिया, और स्वयं को सुख के प्रश्न में व्यस्त रखा।

वे समाज से मानव कल्याण को हासिल करना चाहते थे।

उन्होंने भौतिक प्रश्न उठाए, कृषि, उद्योग, वाणिज्य से जुड़े प्रश्न उठाए, लगभग धर्म के समान महत्व प्राप्त कर लिया। सभ्यता में, जो आज तक विकसित हुई है, कुछ हद तक ईश्वर की कृपा से और काफी हद तक मनुष्य के प्रयासों से, हित आपस में जुड़ते, एकीकृत होते और समाहित होते हैं, मानो एक ठोस चट्टान का निर्माण कर रहे हों, एक गतिशील नियम के अनुसार, जिसका अध्ययन अर्थशास्त्रियों और राजनीति के भूगर्भशास्त्रियों ने धैर्यपूर्वक किया है। ये लोग, जिन्होंने स्वयं को विभिन्न नामों से पुकारा, लेकिन जिन्हें सामान्यतः समाजवादी कहा जा सकता है, उस चट्टान को भेदने और उसमें से मानवीय सुख के जीवंत जल को प्रवाहित करने का प्रयास करते रहे।

फांसी के मुद्दे से लेकर युद्ध के मुद्दे तक, उनके कार्यों में सब कुछ शामिल था। फ्रांसीसी क्रांति द्वारा घोषित मानव अधिकारों के साथ-साथ उन्होंने स्त्री अधिकार और बाल अधिकार भी जोड़ दिए।
पाठक को आश्चर्य नहीं होगा यदि विभिन्न कारणों से हम यहाँ समाजवाद द्वारा उठाए गए प्रश्नों का सैद्धांतिक दृष्टिकोण से विस्तारपूर्वक विवेचना न करें। हम केवल उनका संकेत देने तक ही सीमित रहेंगे।
समाजवादियों द्वारा स्वयं के समक्ष प्रस्तावित सभी समस्याओं को, ब्रह्मांडीय कल्पनाओं, दिवास्वप्नों और रहस्यवाद को एक तरफ रखते हुए, दो मुख्य समस्याओं में संक्षेपित किया जा सकता है।
पहली समस्या: धन का उत्पादन करना।
दूसरी समस्या: इसे साझा करना।
पहली समस्या में काम का प्रश्न शामिल है।
दूसरे भाग में वेतन का प्रश्न शामिल है।
पहले प्रश्न में बलों के उपयोग का प्रश्न है।
दूसरे में, आनंद का वितरण शामिल है।
बलों के उचित उपयोग से ही सार्वजनिक शक्ति का सृजन होता है।
सुख-सुविधाओं का उचित वितरण व्यक्तिगत सुख का परिणाम होता है।
अच्छे वितरण से तात्पर्य समान वितरण से नहीं, बल्कि न्यायसंगत वितरण से है।
इन दोनों चीजों के संयोजन से, बाहरी सार्वजनिक शक्ति और आंतरिक व्यक्तिगत सुख, सामाजिक समृद्धि का परिणाम होता है।
सामाजिक समृद्धि का अर्थ है मनुष्य का सुखी होना, नागरिक का स्वतंत्र होना और राष्ट्र का महान होना।
इंग्लैंड इन दो समस्याओं में से पहली का हल निकाल लेता है। वह धन का सृजन तो प्रशंसनीय ढंग से करता है, लेकिन उसका बंटवारा बुरी तरह से करता है। यह समाधान, जो केवल एक तरफ से पूर्ण है, उसे घातक रूप से दो चरम सीमाओं की ओर ले जाता है: विकराल समृद्धि, विकराल दरिद्रता। कुछ लोगों के लिए सभी सुख-

सुविधाएँ, शेष लोगों के लिए सभी अभाव, यानी जनता के लिए; विशेषाधिकार, अपवाद, एकाधिकार, सामंतवाद, स्वयं परिश्रम से उत्पन्न। एक झूठी और खतरनाक स्थिति, जो सार्वजनिक शक्ति या निजी दुख को संतुष्ट करती है, जो राज्य की जड़ें व्यक्ति के कष्टों में जमा देती है। एक विकृत भव्यता जिसमें सभी भौतिक तत्व समाहित हैं और जिसमें कोई नैतिक तत्व प्रवेश नहीं करता।

साम्यवाद और कृषि कानून सोचते हैं कि वे दूसरी समस्या का समाधान कर देंगे। वे गलत हैं। उनका विभाजन उत्पादन को नष्ट कर देता है। समान विभाजन प्रतिस्पर्धा को समाप्त कर देता है; और परिणामस्वरूप श्रम को भी। यह कसाई द्वारा किया गया विभाजन है, जो विभाजित की गई चीज़ को ही मार डालता है।
इसलिए इन कथित समाधानों पर विचार करना असंभव है। धन का नाश करना और उसे विभाजित करना एक ही बात नहीं है।

इन दोनों समस्याओं को एक साथ हल करना आवश्यक है, तभी इनका सही समाधान हो पाएगा। दोनों समस्याओं को मिलाकर एक ही समस्या बना देना चाहिए।

इन दो समस्याओं में से केवल पहली का समाधान कीजिए; आप वेनिस बन जाएँगे, आप इंग्लैंड बन जाएँगे। वेनिस की तरह आपके पास कृत्रिम शक्ति होगी, या इंग्लैंड की तरह भौतिक शक्ति; आप दुष्ट धनी व्यक्ति बन जाएँगे। आपकी मृत्यु हिंसा के कारण होगी, जैसे वेनिस की मृत्यु हुई, या दिवालियापन के कारण, जैसे इंग्लैंड का पतन होगा। और संसार स्वार्थ से भरी हर चीज़ को, जो मानव जाति के लिए न तो सद्गुण है और न ही विचार, नष्ट होने और गिरने देगा।

यहां यह बात स्पष्ट है कि वेनिस और इंग्लैंड शब्दों से हमारा तात्पर्य किसी राष्ट्र से नहीं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं से है; राष्ट्रों पर थोपी गई कुलीनतंत्र व्यवस्थाओं से, न कि स्वयं राष्ट्रों से। राष्ट्रों के प्रति हमारा सदा सम्मान और सहानुभूति है। वेनिस, एक राष्ट्र के रूप में, पुनर्जीवित होगा; इंग्लैंड, एक अभिजात वर्ग के रूप में, पतन होगा, परन्तु इंग्लैंड, एक राष्ट्र के रूप में, अमर है। इतना कहकर हम आगे बढ़ते हैं।

दो समस्याओं का समाधान करें: धनी लोगों को प्रोत्साहित करें और गरीबों की रक्षा करें; दुख को समाप्त करें; बलवानों द्वारा कमजोरों को बेदखल करने की अन्यायपूर्ण प्रथा को समाप्त करें; लक्ष्य प्राप्त कर चुके व्यक्ति के प्रति आगे बढ़ रहे व्यक्ति की अनुचित ईर्ष्या पर लगाम लगाएं; गणितीय और

भाईचारे के भाव से वेतन को श्रम के अनुरूप बनाएं; निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा को बचपन के विकास के साथ एकीकृत करें; विज्ञान को पुरुषत्व का आधार बनाएं; हथियारों को व्यस्त रखते हुए बुद्धि का विकास करें; एक ही समय में एक शक्तिशाली राष्ट्र और सुखी पुरुषों का परिवार बनें; संपत्ति को लोकतांत्रिक बनाएं, इसे समाप्त करके नहीं, बल्कि इसे सार्वभौमिक बनाकर, ताकि प्रत्येक नागरिक, बिना किसी अपवाद के, एक स्वामी हो सके; यह आम तौर पर जितना समझा जाता है उससे कहीं अधिक आसान है; संक्षेप में, धन का उत्पादन और वितरण करना सीखें, और आपको एक साथ नैतिक और भौतिक महानता प्राप्त होगी; और आप स्वयं को फ्रांस कहने के योग्य होंगे।

यही वह बात है जो समाजवाद ने कुछ भटके हुए संप्रदायों से परे और ऊपर रहकर कही; यही वह बात थी जिसकी उसने तथ्यों में तलाश की, यही वह बात थी जिसकी उसने लोगों के मन में रूपरेखा तैयार की।

प्रशंसनीय प्रयास! पवित्र प्रयास!

ये सिद्धांत, ये मत, ये प्रतिरोध, राजनेता के लिए दार्शनिकों को ध्यान में रखने की अप्रत्याशित आवश्यकता, जिसके कुछ अस्पष्ट प्रमाण हमें देखने को मिलते हैं, राजनीति की एक नई प्रणाली का निर्माण, जो नए क्रांतिकारी आदर्श के साथ बहुत अधिक असंगति के बिना पुरानी दुनिया के अनुरूप हो, एक ऐसी स्थिति जिसमें पोलिग्नैक का बचाव करने के लिए लाफायेट का उपयोग करना आवश्यक हो गया, विद्रोह के नीचे पारदर्शी प्रगति की अंतर्ज्ञान, कक्ष और सड़कें, उनके चारों ओर संतुलन में लाए जाने वाले प्रतिस्पर्धाएं, क्रांति में उनका विश्वास, शायद एक श्रेष्ठ निर्णायक अधिकार की अस्पष्ट स्वीकृति से उत्पन्न एक संभावित अनिर्दिष्ट त्याग, अपनी जाति से जुड़े रहने की उनकी इच्छा, उनकी घरेलू भावना, जनता के प्रति उनका सच्चा सम्मान, उनकी स्वयं की ईमानदारी, लुई फिलिप को लगभग पीड़ादायक रूप से व्यस्त रखती थी, और ऐसे क्षण भी थे जब मजबूत और साहसी होने के बावजूद, वे राजा होने की कठिनाइयों से अभिभूत हो जाते थे।

उन्हें अपने पैरों के नीचे एक जबरदस्त विघटन का एहसास हुआ, जो फिर भी धूल में मिल जाना नहीं था, क्योंकि फ्रांस पहले से कहीं अधिक फ्रांस बना हुआ था।

क्षितिज पर परछाइयों का ढेर छाया हुआ था। एक अजीब सी छाया, धीरे-धीरे पास आती हुई, मनुष्यों, वस्तुओं, विचारों पर धीरे-धीरे फैलती जा रही थी; एक ऐसी छाया जो क्रोध और व्यवस्थाओं से उपजी थी। जो कुछ भी जल्दबाजी में दबा दिया गया था, वह हिल रहा था और उबल रहा था। कभी-कभी ईमानदार व्यक्ति का विवेक फिर से जाग उठता था, क्योंकि उस वातावरण में कुतर्क सत्यों के साथ घुलमिल गए थे, जिससे बेचैनी इतनी बढ़ गई थी। सामाजिक चिंता में आत्माएं तूफान के आने पर पत्तों की तरह कांप रही थीं। विद्युतीय तनाव इतना तीव्र था कि कुछ क्षणों में, सबसे पहले आने वाला अजनबी प्रकाश लेकर आता था। फिर गोधूलि का अंधकार फिर से छा जाता था। बीच-बीच में, गहरी और धीमी बड़बड़ाहट से बादल में छिपी गड़गड़ाहट की मात्रा का अनुमान लगाया जा सकता था।

जुलाई की क्रांति के बीस महीने ही बीते थे कि वर्ष 1832 की शुरुआत किसी आसन्न और खतरनाक घटना के आभास के साथ हुई।

जनता की पीड़ा, रोटी के लिए बेहाल मजदूर, अंतिम प्रिंस डी कोंडे अंधकार में डूबे हुए, ब्रसेल्स द्वारा नासाऊ परिवार को उसी तरह निष्कासित करना जैसे पेरिस ने बॉर्बन्स को किया था, बेल्जियम का एक फ्रांसीसी राजकुमार को खुद को सौंपना और एक अंग्रेज राजकुमार को खुद को देना, निकोलस के प्रति रूस की घृणा, हमारे पीछे दक्षिण के राक्षस, स्पेन में फर्डिनेंड, पुर्तगाल में मिगुएल, इटली में धरती कांप रही थी, मेटर्निच ने बोलोग्ना पर अपना हाथ बढ़ाया, फ्रांस ने एनकोना में ऑस्ट्रिया के साथ कठोर व्यवहार किया, उत्तर में कोई नहीं जानता था कि पोलैंड को उसके ताबूत में कील ठोकने वाले हथौड़े की भयावह आवाज क्या होगी, पूरे यूरोप में फ्रांस पर नजरें गड़ाए हुए, इंग्लैंड, एक संदिग्ध सहयोगी, लड़खड़ाते हुए को धक्का देने और गिरने वाले पर खुद को झोंकने के लिए तैयार, बेकरिया के पीछे छिपकर कुलीन वर्ग ने कानून के चार सिरों को मानने से इनकार कर दिया, राजा के रथ से लिली के फूल मिटा दिए गए, नोट्रे डेम से क्रॉस फाड़ दिया गया, लाफायेट का महत्व कम हो गया, लाफिट बर्बाद हो गया, बेंजामिन कॉन्स्टेंट की मृत्यु हो गई। दरिद्रता, सत्ता के पतन के कारण कैसिमिर पेरिएर की मृत्यु; राज्य की दोनों राजधानियों में एक साथ राजनीतिक और सामाजिक कुप्रथाएँ फैल रही थीं, एक विचार के शहर में, दूसरी परिश्रम के शहर में; पेरिस में गृहयुद्ध, ल्योंस में दासतापूर्ण युद्ध; दोनों शहरों में भट्टी की एक ही चमक; लोगों के माथे

पर गड्ढों जैसा लालिमा; दक्षिण में कट्टरता, पश्चिम में अशांति, ला वेंडि में डचेस डी बेरी, षड्यंत्र, साजिशें, विद्रोह, हैजा, इन सबने विचारों की गंभीर गर्जना में घटनाओं की उथल-पुथल की गंभीर गर्जना को और बढ़ा दिया।

V. वे तथ्य जिनसे इतिहास का जन्म होता है और जिन्हें इतिहास अनदेखा करता है

अप्रैल के अंत तक हालात और बिगड़ गए थे। तनाव चरम पर पहुँच गया था। 1830 से ही यहाँ-वहाँ छोटे-मोटे विद्रोह होते रहे थे, जिन्हें तुरंत दबा दिया जाता था, लेकिन वे बार-बार नए सिरे से भड़क उठते थे, जो एक विशाल आंतरिक आग का संकेत था। कुछ भयानक होने वाला था। एक संभावित क्रांति की झलकियाँ अब अस्पष्ट और अपूर्ण रूप से दिखाई दे रही थीं। फ्रांस पेरिस पर नज़र रखे हुए था; पेरिस फाउबर्ग सेंट-एंटोइन पर नज़र रखे हुए था।

फाउबर्ग सेंट-एंटोइन, जो पहले मंद रोशनी में था, अब उबलने लगा था।

रू डे चारोन की शराब की दुकानें, हालांकि शराब की दुकानों पर लागू होने पर इन दोनों विशेषणों का संयोजन विलक्षण प्रतीत होता है, गंभीर और तूफानी थीं।

वहाँ सरकार पर सीधे-सीधे सवाल उठाए जा रहे थे। लोग खुलेआम "लड़ने या चुप रहने" के सवाल पर चर्चा कर रहे थे। कुछ गुप्त दुकानों में कामगारों से शपथ ली जा रही थी कि खतरे की पहली आहट सुनते ही वे सड़क पर उतर आएंगे और "दुश्मन की संख्या गिने बिना लड़ेंगे।" एक बार यह शपथ ले लेने के बाद, शराब की दुकान के कोने में बैठा एक आदमी "गंभीर स्वर में बोला, "समझे! तुमने शपथ ले ली है!"

कभी-कभी वे ऊपर, पहली मंजिल पर बने एक निजी कमरे में जाते थे, और वहाँ लगभग मेसोनिक अनुष्ठानों जैसे दृश्य प्रदर्शित किए जाते थे। वे दीक्षा प्राप्त करने वालों से शपथ लेते थे कि वे "स्वयं के साथ-साथ परिवार के मुखियाओं की भी सेवा करेंगे।" यही नियम था।

शराबखानों में “विद्रोही” पर्चे पढ़े जाते थे। उस समय की एक गुप्त रिपोर्ट में कहा गया है, “वे सरकार के प्रति तिरस्कार का भाव रखते थे।”

वहाँ निम्न प्रकार के शब्द सुनाई दे सकते थे:—

“मुझे नेताओं के नाम नहीं पता। हमें तो दो घंटे पहले तक दिन का पता भी नहीं चलेगा।” एक मजदूर ने कहा, “हम तीन सौ लोग हैं, हर कोई दस सू (लगभग 100 डॉलर) का योगदान दे, तो कुल एक सौ पचास फ्रैंक हो जाएंगे, जिनसे हम बारूद और गोलियां खरीदेंगे।”

एक और ने कहा: “मैं छह महीने नहीं माँगता, दो महीने भी नहीं। दो सप्ताह से भी कम समय में हम सरकार के बराबर हो जाएँगे। पच्चीस हज़ार सैनिकों के साथ हम उनका सामना कर सकते हैं।” एक और ने कहा: “मैं रात को सो नहीं पाता, क्योंकि मैं रात भर कारतूस बनाता रहता हूँ।” समय-समय पर, “बुर्जुआ दिखने वाले और अच्छे कोट पहने हुए” लोग आते और “अड़चन पैदा करते,” और “अधिकार” जताते हुए “सबसे महत्वपूर्ण” लोगों से हाथ मिलाते और फिर चले जाते। वे कभी दस मिनट से ज़्यादा नहीं रुकते थे। दबी आवाज़ में महत्वपूर्ण बातें होती थीं: “योजना तैयार है, मामला सुलझ गया है।” “वहाँ मौजूद सभी लोग यही फुसफुसा रहे थे,” जैसा कि वहाँ मौजूद एक व्यक्ति ने कहा। उत्साह इतना ज़्यादा था कि एक दिन, एक मज़दूर ने पूरी शराब की दुकान के सामने चिल्लाकर कहा: “हमारे पास हथियार नहीं हैं!” उसके एक साथी ने जवाब दिया: “सैनिकों के पास हैं!” इस प्रकार, अनजाने में ही, बोनापार्ट द्वारा इटली में सेना को दिए गए इस संदेश का उपहास किया गया: "जब उनके पास कोई अधिक गुप्त जानकारी होती थी," एक रिपोर्ट में आगे कहा गया है, "तो वे इसे आपस में साझा नहीं करते थे।" यह समझना आसान नहीं है कि उन्होंने जो कहा उसके बाद वे क्या छिपा सकते थे।

ये मिलन समारोह कभी-कभी नियमित रूप से होते थे। कुछ समारोहों में आठ या दस से अधिक लोग उपस्थित नहीं होते थे, और वे हमेशा वही लोग होते थे। अन्य समारोहों में, जो चाहे प्रवेश कर सकता था, और कमरा इतना भरा होता था कि लोगों को खड़े रहना पड़ता था। कुछ लोग उत्साह और जोश के कारण वहाँ जाते थे; अन्य इसलिए क्योंकि यह "उनके काम पर जाने के रास्ते में पड़ता था।" क्रांति के दौरान की तरह, इन शराब की दुकानों में कुछ देशभक्त महिलाएं भी थीं जो नए आने वालों का स्वागत करती थीं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य भी सामने आए।

एक आदमी दुकान में घुसता, शराब पीता और यह कहते हुए चला जाता: "शराब व्यापारी, क्रांति तुम्हें तुम्हारा हक चुका देगी।"

रू डे चारोन के सामने स्थित एक शराब की दुकान में क्रांतिकारी एजेंटों को नियुक्त किया गया था। मतदान उनकी टोपियों में ही किया गया था।

रुए डे कॉटे में तलवारबाजी सिखाने वाले एक शिक्षक के घर पर मजदूर इकट्ठा होते थे। वहाँ लकड़ी की चौड़ी तलवारों, छड़ियों, लाठियों और छल्लों से बनी एक प्रतीक चिन्ह था। एक दिन छल्लों से बटन निकाल लिए गए।

एक मजदूर ने कहा: "हम पच्चीस लोग हैं, लेकिन वे मुझ पर भरोसा नहीं करते, क्योंकि मुझे एक मशीन की तरह देखा जाता है।" बाद में, वही मशीन क्वेनिसेट बन गई।

धीरे-धीरे पनप रही अनिश्चित घटनाओं ने एक अजीब और अवर्णनीय बदनामी हासिल कर ली। अपने दरवाजे की सीढ़ियाँ साफ कर रही एक महिला ने दूसरी महिला से कहा, "काफी समय से एक मजबूत बल कारतूस बनाने में लगा हुआ है।" खुली सड़क पर विभागों में तैनात राष्ट्रीय रक्षकों को संबोधित घोषणापत्र दिखाई दे रहे थे। इनमें से एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर थे: "बर्टोट, शराब व्यापारी।"

एक दिन, दाढ़ी को गले के पट्टे की तरह संवारे हुए और इतालवी लहजे में बोलने वाला एक व्यक्ति मार्चे लेनॉयर में एक शराब विक्रेता के दरवाजे पर लगे पत्थर के खंभे पर चढ़ गया और एक विलक्षण दस्तावेज को जोर से पढ़ने लगा, जो किसी रहस्यमय शक्ति से निकला हुआ प्रतीत होता था। उसके चारों ओर समूह जमा हो गए और तालियाँ बजाने लगे।

जिन अंशों ने भीड़ को सबसे अधिक प्रभावित किया, उन्हें एकत्र करके लिख लिया गया। “हमारे सिद्धांतों को कुचला जा रहा है, हमारी घोषणाओं को फाड़ा जा रहा है, हमारे विज्ञापनदाताओं पर जासूसी की जा रही है और उन्हें जेल में डाला जा रहा है।” “कपास उद्योग में हाल ही में हुई गिरावट ने कई माध्यमों को हमारी ओर मोड़ दिया है।” “राष्ट्रों का भविष्य हमारी गुमनाम पंक्तियों में गढ़ा जा रहा है।” “यहाँ निश्चित शर्तें हैं: क्रिया या प्रतिक्रिया, क्रांति या प्रतिक्रांति। क्योंकि हमारे युग में, हम न तो जड़ता में विश्वास करते हैं और न ही गतिहीनता में। जनता के विरुद्ध जनता, यही प्रश्न है। इसके अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है।” “जिस दिन हम आपके लिए उपयुक्त न रहें, हमें तोड़ देना, लेकिन उस दिन तक, हमें आगे बढ़ने में मदद करना।” यह सब दिन दहाड़े हुआ।

कुछ अन्य, और भी अधिक दुस्साहसी कारनामे, अपनी दुस्साहस के कारण ही लोगों की नज़रों में संदेह पैदा कर रहे थे। 4 अप्रैल, 1832 को, एक राहगीर सेंट-मार्गुराइट स्ट्रीट के कोने पर स्थित खंभे पर चढ़ गया और चिल्लाया: "मैं एक बाबुविस्ट हूँ!" लेकिन बाबुफ के पीछे, लोगों को गिस्केट की झलक दिखाई दी।

अन्य बातों के अलावा, इस व्यक्ति ने कहा:—

“संपत्ति का नाश हो! वामपंथियों का विरोध कायर और विश्वासघाती है। जब वे दक्षिणपंथी बनना चाहते हैं, तो क्रांति का उपदेश देते हैं; हार से बचने के लिए लोकतांत्रिक होने का दिखावा करते हैं; और लड़ाई से बचने के लिए राजशाही समर्थक बन जाते हैं। गणतंत्रवादी तो पंख वाले जानवर हैं। मेहनतकश वर्ग के नागरिकों, गणतंत्रवादियों पर अविश्वास करो।”

“चुप रहो, नागरिक जासूस!” एक कारीगर चिल्लाया।

इस चीख ने बातचीत को समाप्त कर दिया।

रहस्यमय घटनाएं घटीं।

शाम ढलते ही, नहर के पास एक मजदूर की मुलाकात एक "अच्छे कपड़े पहने हुए आदमी" से हुई, जिसने उससे पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं, नागरिक?" मजदूर ने जवाब दिया, "महोदय, मैं आपसे परिचित नहीं हूँ।" उस आदमी ने कहा, "मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ।" फिर उसने आगे कहा, "घबराइए मत, मैं समिति का प्रतिनिधि हूँ। आप पर बेईमानी का शक है। आप जानते हैं कि अगर आपने कुछ भी बताया, तो आप पर कड़ी नज़र रखी जा रही है।" इसके बाद उसने मजदूर से हाथ मिलाया और यह कहते हुए चला गया, "हम जल्द ही फिर मिलेंगे।"

सतर्क पुलिस ने न केवल शराब की दुकानों में, बल्कि सड़कों पर भी हुई विशिष्ट बातचीत को संकलित किया।

“जल्द से जल्द अपना स्वागत करवा लो,” एक बुनकर ने एक फर्नीचर निर्माता से कहा।

"क्यों?"

"गोली चलानी पड़ेगी।"

दो फटेहाल राहगीरों ने एक दूसरे से ये उल्लेखनीय जवाब दिए, जो स्पष्ट रूप से चालाकी से भरे हुए थे:
"हम पर शासन कौन करता है?"
श्री फिलिप।
नहीं, यह बुर्जुआ वर्ग है।
यदि पाठक यह सोचता है कि हम जैक्वेरी शब्द को बुरे अर्थ में लेते हैं, तो वह गलत है। जैक्स का अर्थ गरीब लोग थे।
एक अन्य अवसर पर, दो व्यक्तियों को एक दूसरे के पास से गुजरते हुए यह कहते हुए सुना गया: "हमारे पास हमले की एक अच्छी योजना है।"
बैरियर डू ट्रोन के घेरे में एक खाई में दुबके हुए चार पुरुषों के बीच हुई निजी बातचीत का केवल निम्नलिखित अंश ही रिकॉर्ड किया जा सका:—
"उसे पेरिस में घूमने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा।"
वह कौन था? भयावह रहस्य।
जैसा कि उस इलाके में कहा जाता था, "प्रमुख नेता" खुद को अलग रखते थे। ऐसा माना जाता था कि वे सेंट-यूस्टाचे प्वाइंट के पास एक शराब की दुकान में परामर्श के लिए मिलते थे। रुए मोंडेतोर स्थित दर्ज़ियों के लिए सहायता समिति के प्रमुख, एक ऑगस्टे नाम के व्यक्ति की यह प्रतिष्ठा थी कि वह नेताओं और सेंट-एंटोइन इलाके के बीच एक केंद्रीय मध्यस्थ के रूप में कार्य करता था।
फिर भी, इन नेताओं के बारे में हमेशा बहुत रहस्य बना रहा, और कोई भी निश्चित तथ्य बाद में उच्च न्यायालय के समक्ष आरोपी व्यक्ति द्वारा दिए गए इस उत्तर के असाधारण अहंकार को अमान्य नहीं कर सकता:
“आपका नेता कौन था?”
मैं उनमें से किसी को नहीं जानता था और न ही उन्हें पहचानता था।
वहाँ शब्दों के सिवा कुछ नहीं था, पारदर्शी लेकिन अस्पष्ट; कभी-कभी निराधार खबरें, अफवाहें, सुनी-सुनाई बातें। अन्य संकेत भी सामने आए।

रुए डे रुइली में एक निर्माणाधीन मकान के चारों ओर बाड़ लगाने में व्यस्त एक बढ़ई को उस भूखंड पर एक पत्र का फटा हुआ टुकड़ा मिला, जिस पर निम्नलिखित पंक्तियाँ अभी भी स्पष्ट रूप से पढ़ी जा सकती थीं:
समिति को विभिन्न समितियों के लिए गठित विभागों में भर्ती रोकने के उपाय करने होंगे।
और, अंत में:—
हमें पता चला है कि रू डू फाउबर्ग-पोइसोनियर, नंबर 5 [bis] में, उस इलाके के एक बंदूक बनाने वाले के घर में पाँच या छह हज़ार बंदूकें हैं। इस अनुभाग के पास कोई हथियार नहीं है।
बढ़ई को जिस बात ने उत्साहित किया और जिसके कारण उसने यह चीज़ अपने पड़ोसियों को दिखाई, वह यह थी कि कुछ कदम आगे जाकर उसे एक और कागज़ मिला, जो पहले वाले की तरह फटा हुआ था, और उससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। इन विचित्र दस्तावेजों के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए, हम इसकी एक प्रतिकृति यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं:
क्यू
सी
डी
ई
इस सूची को अच्छी तरह याद कर लें। याद करने के बाद इसे फाड़ दें। भर्ती किए गए लोग भी आदेश मिलने के बाद ऐसा ही करेंगे।
स्वास्थ्य और भाईचारा,
एल
तुम और एक परी
बाद में ही इस खोज के रहस्य से अवगत लोगों को उन चार बड़े अक्षरों (क्विंटूरियन, सेंटूरियन, डेकुरियन, एक्लेयरर्स) का महत्व और 'उ और अ' फे' अक्षरों का अर्थ समझ में आया, जो एक तिथि थी और जिसका अर्थ 15 अप्रैल, 1832 था। प्रत्येक बड़े अक्षर के नीचे नाम और उसके बाद विशिष्ट टिप्पणियाँ

अंकित थीं। उदाहरण के लिए: क्यू. बैनरेल. 8 बंदूकें, 83 कारतूस. एक सुरक्षित व्यक्ति। -सी. बौबिएर. 1 पिस्तौल, 40 कारतूस। -डी. रोलेट. 1 पन्नी, 1 पिस्तौल, 1 पाउंड बारूद। -ई. टेसियर. 1 तलवार, 1 कारतूस पेटी. सटीक। -टेरर. 8 बंदूकें. बहादुर, इत्यादि।

अंततः, उस बढ़ई को उसी घेरे में एक तीसरा कागज मिला, जिस पर पेंसिल से, लेकिन बहुत स्पष्ट रूप से, इस प्रकार की रहस्यमय सूची लिखी हुई थी:—

इकाई: ब्लैंचर्ड: ट्री-ड्राई. 6.
बारा. सोइज़. हॉल-औ-काउंट.
कोसियसको. ऑब्रे द बुचर? जे. जे. आर.
कैयस ग्रैकस.
कॉपीराइट. डुफोंड. चार.
गिरोंडिस्टों का पतन. डर्बैक. बिल्डिंग.वाशिंगटन. पिंसन. 1 पिस्तौल, 86 कारतूस.मार्सेलेज़. मिशेल. क्विनकैम्पोइक्स. तलवार.
होचे.
मार्सेउ. पठार. ट्री-सेक.वारसॉ. टिली, पॉपुलर का उद्घोषक.

ईमानदार बुर्जुआ वर्ग, जिनके हाथों में यह सूची पड़ी, वे इसका महत्व जानते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सूची मानवाधिकार संगठन के चौथे क्षेत्र के सभी अनुभागों का पूरा विवरण थी, जिसमें अनुभाग प्रमुखों के नाम और निवास स्थान भी शामिल थे। आज, जब ये सभी अस्पष्ट तथ्य इतिहास मात्र रह गए हैं, तो हम इन्हें प्रकाशित कर सकते हैं। यह भी बताना आवश्यक है कि मानवाधिकार संगठन की स्थापना इस दस्तावेज़ के मिलने की तिथि के बाद हुई प्रतीत होती है। शायद यह केवल एक कच्चा मसौदा था।

फिर भी, सभी टिप्पणियों और शब्दों के अनुसार, लिखित नोट्स के अनुसार, ठोस तथ्य सामने आने लगते हैं।

पोपिनकोर्ट स्ट्रीट पर, कबाड़ के एक व्यापारी के घर से, भूरे रंग के कागज की सात शीटें जब्त की गईं, जो सभी एक समान रूप से लंबाई में और चार भागों में मोड़ी गई थीं; इन शीटों के भीतर इसी भूरे रंग के कागज के छब्बीस वर्ग कारतूस के आकार में मोड़े गए थे, और एक कार्ड था, जिस पर निम्नलिखित लिखा था:—

शोरा

12 औंस

गंधक

2 औंस

लकड़ी का कोयला

2½ औंस

पानी

2 औंस

जब्ती की रिपोर्ट में कहा गया है कि दराज से पाउडर की तेज गंध आ रही थी।

दिनभर का काम करके लौट रहा एक राजमिस्त्री ऑस्टरलिट्ज़ पुल के पास एक बेंच पर एक छोटा सा पैकेट छोड़ गया। इस पैकेट को पुलिस स्टेशन ले जाया गया। वहाँ इसे खोला गया और उसमें "लाहाउटियर" के हस्ताक्षर वाले दो मुद्रित संवाद, "श्रमिकों, एकजुट हो जाओ" शीर्षक वाला एक गीत और कारतूसों से भरा एक टिन का डिब्बा मिला।

एक कारीगर अपने साथी के साथ शराब पी रहा था, तभी उसके साथी ने उसे छूकर देखा कि वह कितना गर्म है; दूसरे व्यक्ति को अपनी जैकेट के नीचे एक पिस्तौल का एहसास हुआ।

पेरे-लाचाइज़ और बैरियर डू ट्रोन के बीच बुलेवार्ड पर एक खाई में, सबसे सुनसान जगह पर, कुछ बच्चों ने खेलते समय लकड़ी के बुरादे और कचरे के ढेर के नीचे एक थैला खोजा, जिसमें एक गोली का सांचा, कारतूस तैयार करने के लिए एक लकड़ी का पंच, एक लकड़ी का कटोरा, जिसमें शिकार के बारूद के दाने थे, और एक छोटा कच्चा लोहे का बर्तन था जिसके अंदर पिघले हुए सीसे के स्पष्ट निशान थे।

पुलिस एजेंट सुबह पांच बजे अचानक और अप्रत्याशित रूप से एक निश्चित पार्डन के घर में घुस गए, जो बाद में बैरिकेड-मेरी सेक्शन का सदस्य था और अप्रैल 1834 के विद्रोह में मारा गया था। उन्होंने उसे अपने बिस्तर के पास खड़ा पाया, और उसके हाथ में कुछ कारतूस थे जिन्हें वह तैयार कर रहा था।

कामगारों के आराम करने के समय के आसपास, दो आदमी बैरियर पिकपस और बैरियर चैरेंटन के बीच दो दीवारों के बीच एक छोटी सी गली में, एक शराब की दुकान के पास मिले, जिसके सामने एक जू डे सियाम (एक छोटा सा रेस्तरां) था। एक ने अपनी कमीज़ के नीचे से पिस्तौल निकाली और दूसरे को दे दी। पिस्तौल देते समय उसने देखा कि उसकी छाती के पसीने से बारूद गीला हो गया था। उसने पिस्तौल में बारूद भरा और पहले से मौजूद बारूद में और बारूद मिला दिया। फिर दोनों आदमी अलग हो गए।

गैलिस नाम के एक व्यक्ति, जो बाद में अप्रैल की घटना में रू ब्यूबोर्ग में मारा गया, ने अपने घर में सात सौ कारतूस और चौबीस चकमक पत्थर होने का दावा किया था।

एक दिन सरकार को सूचना मिली कि उपनगरीय इलाके में हथियार और दो लाख कारतूस बांटे गए हैं। अगले सप्ताह तीस हजार कारतूस बांटे गए। सबसे उल्लेखनीय बात यह थी कि पुलिस एक भी कारतूस जब्त नहीं कर पाई।

एक जब्त किए गए पत्र में लिखा था: "वह दिन दूर नहीं जब घड़ी के अनुसार चार घंटे के भीतर अस्सी हजार देशभक्त हथियारबंद होंगे।"

यह सारी हलचल सार्वजनिक थी, लगभग शांत माहौल में। आने वाला विद्रोह सरकार के सामने चुपचाप अपना तूफान खड़ा करने की तैयारी कर रहा था। इस दबे हुए संकट में कोई कमी नहीं थी, जो पहले से ही महसूस होने लगा था। पूंजीपति वर्ग ने मजदूर वर्ग से शांतिपूर्वक चल रही तैयारियों के बारे में बात की। उन्होंने उसी लहजे में पूछा, "विद्रोह कैसा चल रहा है?" जैसे वे पूछते, "आपकी पत्नी कैसी हैं?"

रुए मोरो के एक फर्नीचर व्यापारी ने पूछा: "अच्छा, आप हमला कब करने वाले हैं?"

एक अन्य दुकानदार ने कहा:—

"हमला जल्द ही किया जाएगा।"

“मुझे पता है। एक महीने पहले तुम पंद्रह हज़ार थे, अब पच्चीस हज़ार हो गए हो।” उसने अपनी बंदूक आगे बढ़ाई, और एक पड़ोसी ने एक छोटी पिस्तौल पेश की जिसे वह सात फ्रैंक में बेचने को तैयार था।

इसके अलावा, क्रांतिकारी उन्माद बढ़ता जा रहा था। पेरिस और फ्रांस का कोई भी कोना इससे अछूता नहीं था। हर जगह इसकी लहर दौड़ रही थी। जैसे शरीर में कुछ सूजन से झिल्ली बन जाती है, वैसे ही गुप्त समाजों का जाल पूरे देश में फैलने लगा। जन मित्रों के संगठन से, जो एक ही समय में सार्वजनिक और गुप्त दोनों था, मानवाधिकार समाज का जन्म हुआ, जिसकी स्थापना भी उसी समय के एक आदेश से हुई थी: "गणतंत्र युग का 40 वां वर्ष, प्लुवियोस"। यह समाज न्यायालय के विघटन के आदेश के बावजूद भी अस्तित्व में रहा और इसने अपने अनुभागों को निम्नलिखित जैसे महत्वपूर्ण नाम देने में संकोच नहीं किया:

पाइक.
टोक्सिन.
सिग्नल तोप.
फ्रिगियन टोपी.
21 जनवरी.
भिखारी.
आवारा.
आगे मार्च.
रोबेस्पियर.
स्तर.
Ça Ira.

मानवाधिकार समिति ने कर्मकांड समिति को जन्म दिया। ये अधीर लोग थे जो अलग होकर आगे बढ़ गए। अन्य संगठनों ने भी मूल संगठनों से सदस्य बनाने की कोशिश की। विभिन्न वर्गों के सदस्यों ने शिकायत की कि वे आपस में बिखर गए हैं। इसी प्रकार, गैलिक समिति और नगरपालिकाओं के संगठन की समिति का गठन हुआ। प्रेस की स्वतंत्रता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अप्रत्यक्ष करों के विरुद्ध जन जागरूकता के लिए गठित संगठनों का भी यही हाल था। फिर समतावादी श्रमिक समिति बनी, जो तीन गुटों में बँटी थी: समतावादी, साम्यवादी और सुधारवादी। फिर बैस्टिल सेना बनी, जो एक प्रकार की सैन्य टुकड़ी थी, जिसमें चार सैनिकों का नेतृत्व एक कॉर्पोरल, दस का सार्जेंट, बीस का सबलेफ्टिनेंट और चालीस का लेफ्टिनेंट करता था; पाँच से अधिक सैनिक एक-

दूसरे को नहीं जानते थे। यह एक ऐसी रचना थी जहाँ सावधानी और साहस का अद्भुत मेल था और जो वेनिस की प्रतिभा से ओतप्रोत प्रतीत होती थी।

शीर्ष पर मौजूद केंद्रीय समिति की दो शाखाएँ थीं: सोसाइटी ऑफ एक्शन और आर्मी ऑफ द बैस्टिल्स।

इन गणतंत्रवादी संगठनों के बीच, शेवेलियर्स ऑफ फिडेलिटी नामक एक वैधतावादी संगठन ने हलचल मचा दी। वहाँ इसकी निंदा और अस्वीकृति हुई।

पेरिस की संस्थाओं की शाखाएँ प्रमुख शहरों, ल्योंस, नैनटेस, लिले, मार्सिले में भी थीं, और प्रत्येक शहर में मानवाधिकार समिति, चारबोनियर और स्वतंत्र पुरुष समितियाँ थीं। इन सभी में एक क्रांतिकारी समिति थी जिसे कौगॉर्ड कहा जाता था। हम इस शब्द का उल्लेख पहले ही कर चुके हैं।

पेरिस में, फाउबर्ग सेंट-मार्सेउ, फाउबर्ग सेंट-एंटोइन के बराबर ही चहल-पहल से भरा रहता था, और स्कूल भी फाउबर्ग से कम प्रभावित नहीं थे। रू सेंट-हाइकिंथ में एक कैफे और रू डेस मैथुरिंस-सेंट-जैक्स पर सेवन बिलियर्ड्स की शराब की दुकान छात्रों के लिए मिलन स्थल के रूप में काम करती थी। एंगर्स के म्यूचुअलिस्ट्स और ऐक्स के कूगॉर्ड से संबद्ध ए.बी.सी. के मित्रों का समाज, जैसा कि हमने देखा है, कैफे मुसैन में मिलता था। ये ही युवा, जैसा कि हमने पहले ही बताया है, रू मोंडेटूर के एक रेस्तरां-शराब की दुकान में भी इकट्ठा होते थे, जिसका नाम कोरिनथे था। ये बैठकें गुप्त होती थीं। अन्य बैठकें यथासंभव सार्वजनिक होती थीं, और पाठक बाद के मुकदमों में से एक में पूछे गए एक प्रश्न के इन अंशों से उनकी निर्भीकता का अंदाजा लगा सकते हैं: "यह बैठक कहाँ आयोजित की गई थी?" “रू डे ला पैक्स में।” “किसके घर पर?” “गली में।” “वहाँ कौन-कौन से दल थे?” “सिर्फ़ एक।” “कौन सा?” “मैनुअल दल।” “उसका नेता कौन था?” “मैं।” “सरकार पर हमला करने का इतना साहसी निर्णय अकेले लेने के लिए तुम बहुत छोटे हो। तुम्हें निर्देश कहाँ से मिले?” “केंद्रीय समिति से।”

सेना को भी उसी समय बारूदी सुरंगों में डुबो दिया गया था जब जनसंख्या को डुबोया जा रहा था, जैसा कि बाद में बेफोर्ड, लुनेविले और एपिनार्ड के अभियानों से सिद्ध हुआ। उन्होंने बावनवीं, पाँचवीं, आठवीं, सैंतीसवीं और बीसवीं हल्की घुड़सवार सेना पर भरोसा किया। बरगंडी और दक्षिणी कस्बों में

उन्होंने स्वतंत्रता वृक्ष लगाया; अर्थात्, एक खंभा जिसके ऊपर लाल टोपी लगी थी।

स्थिति कुछ ऐसी ही थी।

जैसा कि हमने शुरुआत में कहा था, फाउबर्ग सेंट-एंटोइन ने, आबादी के किसी भी अन्य समूह की तुलना में, इस स्थिति को और भी स्पष्ट कर दिया और इसका एहसास कराया। यही सबसे संवेदनशील मुद्दा था। चींटियों के टीले की तरह घनी आबादी वाला यह पुराना फाउबर्ग, मेहनती, साहसी और मधुमक्खियों के छत्ते की तरह क्रोधित, उम्मीद और उथल-पुथल की इच्छा से कांप रहा था। वहाँ हर तरफ हलचल मची हुई थी, हालाँकि नियमित काम में कोई रुकावट नहीं आई थी। इस जीवंत लेकिन गंभीर स्वरूप का वर्णन करना असंभव है। इस फाउबर्ग में अटारी की छतों के नीचे गहरी पीड़ा छिपी हुई है; यहाँ कुछ दुर्लभ और उत्साही बुद्धि वाले लोग भी मौजूद हैं। विशेष रूप से पीड़ा और बुद्धिमत्ता के मामले में, अतिवाद का मिलन खतरनाक होता है।

फाउबर्ग सेंट-एंटोइन के पास कांपने के अन्य कारण भी थे; क्योंकि इसे वाणिज्यिक संकटों, विफलताओं, हड़तालों, मंदी के दौरों, जो कि बड़ी राजनीतिक उथल-पुथल के अंतर्निहित परिणाम थे, का प्रतिकार झेलना पड़ा। क्रांति के समय में दुख कारण और परिणाम दोनों होता है। क्रांति का प्रहार पलटकर उसी पर पड़ता है। यह आबादी, जो गौरवशाली सद्गुणों से भरी थी, जिसमें अपार आत्मसंतुष्टि थी, जो हमेशा हथियार उठाने को तैयार रहती थी, विस्फोट करने के लिए तत्पर, चिढ़ गई थी, गहरी पीड़ा से घिरी हुई थी, और कमजोर पड़ गई थी, मानो एक चिंगारी के गिरने का इंतजार कर रही थी। जब भी घटनाओं की हवा से प्रेरित होकर क्षितिज पर कुछ चिंगारियां तैरती हैं, तो फाउबर्ग सेंट-एंटोइन और उस भयावह संयोग के बारे में सोचना असंभव नहीं है जिसने पेरिस के द्वार पर ही दुख और विचारों के उस बारूदखाने को स्थापित कर दिया है।

फाउबर्ग सेंट-एंटोइन की शराब की दुकानें, जिनका ज़िक्र पाठक ने अभी-अभी पढ़े रेखाचित्रों में कई बार किया है, ऐतिहासिक रूप से ख्यातिप्राप्त हैं। मुश्किल समय में लोग वहाँ शराब से ज़्यादा बातों के नशे में चूर हो जाते हैं। वहाँ एक तरह की भविष्यसूचक भावना और भविष्य की प्रेरणा व्याप्त रहती है, जो दिलों को भर देती है और आत्माओं को विशाल बनाती है। फाउबर्ग सेंट-एंटोइन के बार मोंट एवेंटाइन के उन शराबखानों से मिलते-जुलते हैं जो

सिबिल की गुफा पर बने थे और जिनमें एक गहन और पवित्र अनुभूति होती थी; ऐसे शराबखाने जहाँ मेज़ें लगभग तिपाई की तरह होती थीं, और जहाँ वह शराब पी जाती थी जिसे एनियस "सिबिल की शराब" कहते हैं।

फाउबर्ग सेंट-एंटोइन जनसमूह का भंडार है। क्रांतिकारी आंदोलनों से वहाँ दरारें पैदा होती हैं, जिनसे होकर जनसत्ता का प्रवाह रिसता है। यह सत्ता बुराई भी कर सकती है; अन्य सत्ताओं की तरह इससे भी गलतियाँ हो सकती हैं; लेकिन, भटक जाने पर भी यह महान बनी रहती है। हम इसकी तुलना इंगेन्स के अंधे साइक्लोप्स (एक आँख वाले राक्षस) से कर सकते हैं।

1993 में, प्रचलित धारणा के अनुसार कि वह अच्छी थी या बुरी, इस बात के अनुसार कि वह कट्टरता का दिन था या उत्साह का, फाउबर्ग सेंट-एंटोइन से कभी बर्बर सेनाएँ तो कभी वीर टोलियाँ निकल पड़ीं।

बर्बर। आइए इस शब्द का अर्थ समझें। जब क्रांति की उथल-पुथल के शुरुआती दिनों में, फटेहाल, चीखते-चिल्लाते, उग्र शरीर वाले ये उग्र लोग, हाथ में लाठी और भाला लिए, प्राचीन पेरिस पर टूट पड़े, तो वे क्या चाहते थे? वे दमन का अंत, अत्याचार का अंत, तलवार का अंत, पुरुषों के लिए काम, बच्चों के लिए शिक्षा, महिलाओं के लिए सामाजिक सौहार्द, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, सबके लिए रोटी, सबके लिए आदर्श, दुनिया का स्वर्गीकरण चाहते थे। प्रगति; और वह पवित्र, मधुर और अच्छी चीज, प्रगति, उन्होंने भयानक ढंग से दावा किया, चरम सीमा पर पहुँच चुके थे, आधे नग्न, मुट्ठी में लाठी लिए, मुँह में गर्जना लिए। वे बर्बर थे, हाँ; लेकिन सभ्यता के बर्बर।

उन्होंने उग्रता से सत्य का प्रचार किया; वे भयभीत और कांपते हुए भी मानव जाति को स्वर्ग की ओर ले जाने के लिए उत्सुक थे। वे बर्बर प्रतीत होते थे, और वे मुक्तिदाता थे। उन्होंने अंधकार का मुखौटा पहनकर प्रकाश की मांग की।

इन क्रूर और भयानक लोगों के सामने, जो कि हमारी समझ से परे थे, लेकिन अच्छे उद्देश्यों के लिए क्रूर और भयानक थे, कुछ अन्य लोग भी थे, जो मुस्कुरा रहे थे, कढ़ाईदार, सोने से सजे, रिबन से बंधे, सितारों से जड़े, रेशमी मोजे पहने, सफेद पंख लगाए, पीले दस्ताने पहने, पॉलिश किए जूते पहने, संगमरमर की चिमनी के बगल में मखमली मेज पर कोहनी टिकाए, विनम्रता से शिष्टाचार और

अतीत, मध्य युग, दैवीय अधिकार, कट्टरता, निर्दोषता, गुलामी, मृत्युदंड और युद्ध के संरक्षण पर जोर दे रहे थे, और धीमी आवाज़ में और विनम्रता से तलवार, सूली और फांसी के तख्ते का महिमामंडन कर रहे थे। यदि हमें सभ्यता के बर्बरों और बर्बरता के सभ्य लोगों के बीच चुनाव करना पड़े, तो हम बर्बरों को चुनेंगे।

लेकिन, शुक्र है, एक और विकल्प मौजूद है। आगे या पीछे, किसी भी तरह से सीधी रेखा में गिरने की आवश्यकता नहीं है।

न तो तानाशाही, न ही आतंकवाद। हम धीमी गति से प्रगति चाहते हैं।

ईश्वर इसका ख्याल रखता है। ईश्वर की पूरी नीति ढलानों को कम खड़ी बनाने पर आधारित है।

VI. एनजोलरास और उसके लेफ्टिनेंट

लगभग इसी युग में, संभावित आपदा को देखते हुए, एनजोलरास ने एक प्रकार की रहस्यमय जनगणना की शुरुआत की।

सभी लोग कैफे मुसैन में एक गुप्त बैठक में मौजूद थे।

एनजोलरास ने अपने शब्दों में कुछ अर्ध-रहस्यमय लेकिन महत्वपूर्ण उपमाओं का प्रयोग करते हुए कहा:—

“यह उचित है कि हम जानें कि हम कहाँ खड़े हैं और हम किस पर भरोसा कर सकते हैं। यदि लड़ाकों की आवश्यकता हो, तो उन्हें उपलब्ध कराया जाना चाहिए। प्रहार करने के लिए कुछ होना कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता। राहगीरों के घायल होने की संभावना तब अधिक होती है जब सड़क पर सांड होते हैं, बजाय इसके कि जब सांड न हों। इसलिए, आइए झुंड पर थोड़ा ध्यान दें। हम कितने हैं? इस कार्य को कल तक टालने का कोई सवाल ही नहीं है। क्रांतिकारियों को हमेशा तत्पर रहना चाहिए; प्रगति के पास समय नहीं है। हमें अप्रत्याशित पर संदेह करना चाहिए। हमें अप्रस्तुत नहीं रहना चाहिए। हमें अपने द्वारा बनाए गए सभी जोड़ों की जाँच करनी चाहिए और देखना चाहिए कि वे मजबूत हैं या नहीं। यह काम आज ही पूरा हो जाना चाहिए। कौरफेयरैक, आप पॉलिटेक्निक के छात्रों को देखेंगे। आज उनका बाहर जाने का दिन है। आज बुधवार है। फ्यूली, आप ग्लेसिएर के लोगों को देखेंगे, है ना? कॉम्बेफेरे ने मुझसे पिकपस जाने का वादा किया है। वहाँ एक शानदार और उत्कृष्ट झुंड है। बहोरल वहाँ जाएगा...” एस्ट्रापाडे, प्रूवेयर, मेसन समुदाय में उत्साह कम हो रहा है; आप रू डे ग्रेनेल-सेंट-होनोरे स्थित लॉज से समाचार लाएँगे। जोली, डुप्यूट्रेन के क्लिनिकल लेक्चर में जाकर मेडिकल स्कूल की स्थिति का जायजा लेंगे। बॉसुएट, अदालत में कुछ समय बिताएंगे और युवा लॉ लाइसेंसधारियों से बात करेंगे। मैं खुद कौगॉर्ड की जिम्मेदारी संभालूंगा।

“इससे सब कुछ व्यवस्थित हो जाता है,” कौरफेयरैक ने कहा।

"नहीं।"

"अब क्या शेष है?"
"यह बहुत महत्वपूर्ण बात है।"
“यह क्या है?” कौरफेयरैक ने पूछा।
“द मेन बैरियर,” एनजोलरास ने उत्तर दिया।
एनजोलरास कुछ क्षण के लिए चिंतन में लीन प्रतीत हुए वहीं रुके रहे, फिर उन्होंने बोलना शुरू किया:
“बैरियर डू मेन में संगमरमर का काम करने वाले, चित्रकार और मूर्तिकारों के स्टूडियो में काम करने वाले कारीगर रहते हैं। वे उत्साही परिवार हैं, लेकिन कभी-कभी उनका उत्साह ठंडा पड़ जाता है। मुझे नहीं पता कि पिछले कुछ समय से उन्हें क्या हो गया है। वे किसी और ही चीज़ में मग्न हैं। वे धीरे- धीरे बुझते जा रहे हैं। वे अपना समय डोमिनोज़ खेलकर बिताते हैं। किसी को जाकर उनसे थोड़ी बात करने की सख्त ज़रूरत है, लेकिन दृढ़ता से। वे रिचेफ्यू के यहाँ मिलते हैं। वे वहाँ बारह बजे से एक बजे के बीच मिलते हैं। उनकी इस उदासी को फिर से जगाना होगा। इस काम के लिए मैंने उस गुमसुम मारियस पर भरोसा किया था, जो वैसे तो अच्छा इंसान है, लेकिन अब वह हमारे पास नहीं आता। मुझे बैरियर डू मेन के लिए किसी की ज़रूरत है। मेरे पास कोई नहीं है।” “मेरा क्या?” ग्रैन्टेयर ने कहा। “मैं यहाँ हूँ।”
"आप?"
"मैं।"
“आप रिपब्लिकनों का मतानुकूलन करते हैं! आप सिद्धांतों के नाम पर ठंडे पड़ चुके दिलों में फिर से जान डालते हैं!”
"क्यों नहीं?"
क्या तुम किसी काम के हो?
"मेरी उस दिशा में एक अस्पष्ट महत्वाकांक्षा है," ग्रैन्टेयर ने कहा।
आप हर चीज में विश्वास नहीं करते।
"मुझे तुम पर विश्वास है।"

"ग्रांटेयर, क्या आप मेरी एक मदद करेंगे?"

कुछ भी। मैं तुम्हारे जूते पॉलिश कर दूंगा।

"खैर, हमारे मामलों में दखल मत दो। अपनी एब्सिन्थे का नशा उतारकर सो जाओ।"

“तुम कृतघ्न हो, एनजोलरास।”

“तुम ही वो आदमी हो जो बैरियर डू मेन जा सकते हो! तुम इसके काबिल हो!”

मैं रू डे ग्रेस से नीचे उतरने, प्लेस सेंट-मिशेल को पार करने, रू मॉन्सियर-ले-प्रिंस से होते हुए ढलान पर चलने, रू डे वोगिरार्ड लेने, कार्मलाइट्स को पार करने, रू डी'असास में मुड़ने, रू डू चेर्चे-मिडी तक पहुँचने, काउंसिल डे गुएरे को पीछे छोड़ने, रू डेस विएइल्स-टुइलरीज पर चलने, बुलेवार्ड को पार करने, चौसी डू मेन का अनुसरण करने, बैरियर को पार करने और रिचेफ्यू के अंदर प्रवेश करने में सक्षम हूँ। मैं यह सब कर सकता हूँ। मेरे जूते यह सब करने में सक्षम हैं।

"क्या आप उन साथियों के बारे में कुछ जानते हैं जो रिचेफ्यू के यहाँ मिलते हैं?"

“ज्यादा कुछ नहीं। हम एक-दूसरे को सिर्फ ‘तू’ कहकर संबोधित करते हैं।”

आप उनसे क्या कहेंगे?

“मैं उनसे रोबेस्पियर के बारे में बात करूंगा, परदी! डेंटन के बारे में। सिद्धांतों के बारे में।”

"आप?"

“मैं। लेकिन मुझे न्याय नहीं मिलता। जब मैं न्याय पाने की कोशिश करता हूँ, तो मैं भयानक हो जाता हूँ। मैंने प्रुधोम को पढ़ा है, मुझे सामाजिक अनुबंध याद है, मुझे द्वितीय वर्ष का संविधान कंठस्थ है। ‘एक नागरिक की स्वतंत्रता वहीं समाप्त होती है जहाँ दूसरे नागरिक की स्वतंत्रता शुरू होती है।’ क्या आप मुझे एक जाहिल समझते हैं? मेरे दराज में गणतंत्र का एक पुराना नोट पड़ा है। मानवाधिकार, जनता की संप्रभुता, ज्ञान की बातें! मैं थोड़ा-बहुत हेबर्टिस्ट भी हूँ। मैं घड़ी हाथ में लेकर छह घंटे तक बेतुकी बातें कर सकता हूँ।”

“गंभीर बनो,” एनजोलरास ने कहा।

“मैं बेबाक हूँ,” ग्रैन्टेयर ने उत्तर दिया।

एनजोलरास ने कुछ क्षणों तक ध्यान किया और एक ऐसे व्यक्ति का हावभाव दिखाया जिसने कोई संकल्प ले लिया हो।

“ग्रांटेयर,” उन्होंने गंभीरता से कहा, “मैं तुम्हारा मुकदमा चलाने के लिए सहमत हूँ। तुम्हें बैरियर डू मेन भेजा जाएगा।”

ग्रैन्टेयर कैफे मुसैन के बहुत पास ही सुसज्जित कमरे में रहता था। वह बाहर गया और पाँच मिनट बाद लौट आया। वह रोबेस्पियर की जैकेट पहनने के लिए घर गया था।

“लाल,” उसने अंदर आते हुए कहा और एनजोलरास को ध्यान से देखा। फिर, उसने अपने ऊर्जावान हाथ की हथेली से जैकेट के दो लाल बिंदुओं को अपनी छाती पर रख दिया।

और एनजोलरास के पास जाकर उसने उसके कान में फुसफुसाया:—

"आसान होना।"

उसने दृढ़ता से अपनी टोपी पहनी और चला गया।

पंद्रह मिनट बाद, कैफे मुसैन का पिछला कमरा सुनसान हो गया था। ए.बी.सी. के सभी दोस्त जा चुके थे, हर कोई अपनी-अपनी दिशा में, अपने-अपने काम पर। एनजोलरास, जिसने ऐक्स का कुगुर्ड अपने लिए आरक्षित किया था, सबसे आखिर में निकला।

ऐक्स के कौगौर्ड के जो सदस्य उस समय पेरिस में थे, वे इस्सी के मैदान में, पेरिस के उस हिस्से में मौजूद कई परित्यक्त खदानों में से एक में मिले।

जैसे-जैसे एनजोलरास इस स्थान की ओर बढ़ रहा था, उसने मन ही मन पूरी स्थिति का जायजा लिया। घटनाओं की गंभीरता स्पष्ट थी। जब तथ्य, यानी छिपी हुई सामाजिक बीमारी के पूर्वसूचक लक्षण, गंभीर रूप से आगे बढ़ते हैं, तो जरा सी भी जटिलता उन्हें रोक देती है और उलझा देती है। एक ऐसी घटना जिससे विनाश और नया जन्म दोनों जन्म लेते हैं। एनजोलरास ने भविष्य के अंधकारमय आवरण के नीचे एक उज्ज्वल उत्थान देखा। कौन जानता है? शायद वह क्षण निकट आ गया था। जनता एक बार फिर अपने अधिकार का दावा कर रही थी, और यह कितना अद्भुत दृश्य

था! क्रांति एक बार फिर भव्यता से फ्रांस पर अधिकार कर रही थी और दुनिया से कह रही थी: "कल इसका परिणाम होगा!" एनजोलरास संतुष्ट था। भट्टी गर्म हो रही थी। उस समय पेरिस भर में फैले उसके मित्रों का एक मजबूत नेटवर्क उसके साथ था। उन्होंने अपने मन में, कॉम्बेफेरे की दार्शनिक और मर्मस्पर्शी वाक्पटुता, फ्यूली के विश्वव्यापी उत्साह, कौरफेयरैक की जीवंतता, बहोरल की मुस्कान, जीन प्रोवेर की उदासी, जोली के विज्ञान और बॉसुएट के व्यंग्यों को मिलाकर एक ऐसी चिंगारी का सृजन किया, जिसने लगभग हर जगह एक साथ आग लगा दी। सब लोग काम पर लग जाओ। निश्चित रूप से, परिणाम मेहनत के अनुरूप होगा। यह अच्छा था। इससे उन्हें ग्रैन्टेयर की याद आ गई।

“रुको,” उसने मन ही मन कहा, “मेन की सीमा मुझे ज्यादा दूर नहीं ले जाएगी। अगर मैं रिचेफ्यू तक चला जाऊं तो क्या होगा? चलो देखते हैं कि ग्रांटेयर क्या कर रहा है और उसका क्या हाल है।”

जब एनजोलरास रिचेफ्यू के धूम्रपान कक्ष में पहुंचा, तब वोगिरार्ड के चर्च के शिखर पर एक बज रहा था।

उसने दरवाजा धक्का देकर खोला, अंदर प्रवेश किया, अपनी बाहें मोड़ लीं, दरवाजे को अपने कंधों पर गिरने दिया और मेजों, पुरुषों और धुएं से भरे उस कमरे को घूरने लगा।

धुएं के गुबार से एक आवाज निकली, जिसे दूसरी आवाज ने बीच में ही रोक दिया। यह ग्रैन्टेयर की आवाज थी जो अपने किसी प्रतिद्वंदी से बातचीत कर रहा था।

ग्रैन्टेयर एक संगमरमर की सेंट-ऐनी मेज पर एक अन्य व्यक्ति के सामने बैठा था, जो चोकर के दानों से सजी थी और उस पर डोमिनोज़ बिखरे हुए थे। वह मुट्ठी से मेज पर प्रहार कर रहा था, और एनजोलरास ने यही सुना:—

“डबल-सिक्स।”

“चार।”

“सूअर! अब मेरे पास और नहीं है।”

“तुम मर चुके हो। नंबर दो।”

"छह।"

"तीन।"

"एक।"
अब मेरी बारी है।
“चार अंक।”
"ज्यादा नहीं।"
"यह आपकी बारी है।"
मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी है।
"आप अच्छी तरह से कर रहे हैं।"
"पंद्रह।"
“सात और।”
“तो मेरी उम्र बाईस हो गई।” [सोचते हुए, “बाईस!”]
“आपको उस डबल-सिक्स की उम्मीद नहीं थी। अगर मैंने उसे शुरुआत में रखा होता, तो पूरा खेल ही बदल जाता।”
“फिर से दो।”
"एक।"
“एक! अच्छा, पाँच।”
मेरे पास कोई नहीं है।
"मुझे लगता है कि यह आपका नाटक था?"
"हाँ।"
"खाली।"
“उसकी किस्मत कितनी अच्छी है! आह! तुम तो भाग्यशाली हो! [लंबी तल्लीनता।] दो।”
"एक।"
“न पाँच, न एक। यह आपके लिए हानिकारक है।”
“डोमिनो।”

"□□□□□□□□ □□□ □□ □□□!"

पुस्तक **II.** एपोनिन

I. लार्क का मैदान

मारियस ने उस घात का अप्रत्याशित अंत देखा था, जिसके पीछे उसने जावर्ट को भेजा था; लेकिन जावर्ट जैसे ही अपने कैदियों को तीन घोड़ों पर बिठाकर इमारत से निकला, मारियस भी चुपके से घर से बाहर निकल गया। शाम के केवल नौ बजे थे। मारियस कौरफेयरैक के पास गया। कौरफेयरैक अब लैटिन क्वार्टर का शांत निवासी नहीं था, वह "राजनीतिक कारणों" से रू डे ला वेररी में रहने चला गया था; यह वह इलाका था जहाँ उस समय विद्रोह पनपता था। मारियस ने कौरफेयरैक से कहा: "मैं तुम्हारे साथ सोने आया हूँ।" कौरफेयरैक ने अपने दो गद्दों वाले बिस्तर से एक गद्दा निकाला, उसे ज़मीन पर बिछाया और कहा: "लो।"

अगली सुबह सात बजे, मारियस झोपड़ी में लौटा, मैडम बोगन को बकाया किराया चुकाया, अपनी किताबें, बिस्तर, मेज, कमोड और दो कुर्सियाँ एक हाथगाड़ी पर लादवाईं और बिना अपना पता बताए चला गया। इसलिए जब जावर्ट सुबह मारियस से पिछली शाम की घटनाओं के बारे में पूछताछ करने के लिए लौटा, तो उसे केवल मैडम बोगन मिलीं, जिन्होंने उत्तर दिया: "मैं यहाँ से चली गई हूँ!"

मैडम बोगन को पूरा यकीन था कि मारियस पिछली रात पकड़े गए लुटेरों का कुछ हद तक साथी था। उन्होंने मोहल्ले की चौकीदारों से कहा, "कौन सोच सकता था, उस नौजवान के बारे में, जिसका हाव-भाव किसी लड़की जैसा था!"

मारियस के निवास स्थान में इस त्वरित परिवर्तन के दो कारण थे। पहला यह कि अब उसे उस घर से घृणा होने लगी थी, जहाँ उसने अपनी आँखों के इतने करीब से, और अपने सबसे घृणित और क्रूर रूप में, एक ऐसी सामाजिक विकृति देखी थी जो शायद दुष्ट धनी व्यक्ति और दुष्ट गरीब व्यक्ति से भी अधिक भयानक थी। दूसरा यह कि वह उस मुकदमे में शामिल नहीं होना चाहता था जो संभवतः होने वाला था, और थेनार्डियर के विरुद्ध गवाही देने के लिए उसे बुलाया जाना भी ठीक नहीं था।

जैवरट ने सोचा कि वह युवक, जिसका नाम वह भूल गया था, डर गया होगा और भाग गया होगा, या शायद, घात लगाकर किए गए हमले के समय तक घर भी नहीं लौटा होगा; उसने उसे खोजने के कुछ प्रयास किए, लेकिन सफलता नहीं मिली।

एक महीना बीत गया, फिर दूसरा। मारियस अब भी कौरफेयरैक के साथ था। उसे एक युवा लॉ प्रोफेसर से, जो अदालतों में अक्सर आता-जाता था, पता चला था कि थेनार्डियर को कड़ी निगरानी में रखा गया है। हर सोमवार को, मारियस थेनार्डियर के लिए ला फोर्स के क्लर्क के कार्यालय में पाँच फ्रैंक जमा करवाता था।

मारियस के पास अब पैसे नहीं बचे थे, इसलिए उसने कौरफेयरैक से पाँच फ्रैंक उधार लिए। यह उसके जीवन में पहली बार था जब उसने किसी से पैसे उधार लिए थे। समय-समय पर मिलने वाले ये पाँच फ्रैंक कौरफेयरैक (उधार देने वाला) और थेनार्डियर (लेने वाला) दोनों के लिए एक पहेली की तरह थे। कौरफेयरैक ने सोचा, "ये किसके पास जाएँगे?" थेनार्डियर ने खुद से पूछा, "ये मुझे कहाँ से मिले?"

इसके अलावा, मारियस का दिल टूट चुका था। सब कुछ एक बार फिर अंधेरे में डूब गया था। उसे अब अपने सामने कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था; उसका जीवन फिर से रहस्य में डूब गया था, जहाँ वह भटक रहा था। उस धुंधलेपन में, एक पल के लिए उसने अपनी प्रेमिका, उसके पिता जैसे दिखने वाले बूढ़े व्यक्ति, और उन अज्ञात लोगों को देखा, जो इस दुनिया में उसकी एकमात्र उम्मीद और एकमात्र रुचि थे; और ठीक उसी क्षण जब उसे लगा कि वह उन्हें समझने ही वाला है, एक तेज़ हवा का झोंका इन सभी धुंध को उड़ा ले गया। सबसे भयानक टकराव में भी निश्चितता और सच्चाई की एक चिंगारी भी नहीं निकली। कोई अनुमान लगाना संभव नहीं था। वह उस नाम को भी नहीं पहचान पा रहा था जिसे वह जानता था। वह निश्चित रूप से उर्सुले नहीं था। और लार्क तो एक उपनाम था। और वह उस बूढ़े व्यक्ति के बारे में क्या सोचे? क्या वह सचमुच पुलिस से छिपा हुआ था? इनवैलिड्स के पास मारियस की मुलाकात जिस सफेद बालों वाले मजदूर से हुई थी, वह उसके दिमाग में फिर से आ गया। अब यह संभव लग रहा था कि वह मजदूर और एम. लेब्लांक एक ही व्यक्ति थे। तो क्या उसने अपना वेश बदला था? उस व्यक्ति में वीरता और छलपूर्ण दोनों पहलू थे। उसने मदद के लिए क्यों नहीं पुकारा? वह क्यों भाग गया? क्या वह उस युवती का पिता था या नहीं? संक्षेप में, क्या वह वही व्यक्ति था जिसे थेनार्डियर ने पहचाना था? थेनार्डियर शायद गलत था। ये कई अनसुलझे सवाल थे। यह सच है कि इन सब बातों से लक्ज़मबर्ग की उस युवती के दिव्य आकर्षण में कोई कमी नहीं आई। हृदयविदारक पीड़ा; मारियस के

xxxx xxx xxxxx xxxx xxx xx, xx xxxx xxxxx xx xxxxx xxx xxx xxx xx xxx xxx xxx xx, xxxxx xxx xx xxx xx, xx xxx xx xxxx xx xxx xxx xxxxx xx xxxx xx xxx xxxx xx xxx xxx xxxxx xx xxx xxxxxxxxx xx xxxxx xxxxx xxxx xxxxx xx xxxx xxx xx xx xxx xxxxx xx, xx xx xx xxxx xxxxx xx, xxxx xxxxx xx xxxx xx xxxx xx, xx xxxx xxx xxxxxx xxxxxx xxxxxxx xxx xxxxx xxxxxx xx xxxxx xx xx xxx xxxxxx xx xx xxxx xxx xx xxx xxx xxxx xxx xxx xx xxxx xxx: “xxx xxx xxx xxx xxxx xx xxxx xxxx? xxx xxx xxx-xxxx xxxx xx xxxxx xxxx xx xxxx xxxx?” xxx xxxxx xx xx xx xxxxxxx xxxx xx xxxx xx, xx xxxxxx xxx xx xxxx x xxxx xx; xxxxxx xx xxxx xx xxxx xx xx xxxxx xxxx xxxx xx xxx xxx xxxx xxx xxx xxxxx xxxxxx xxxx xxxx xxxx xx xx xxxxxx xxx xxxx xxx xx; xxx xxxxx xxx xxxxx xxxxxxxxxxx xxx xx xxx xxx xxxxx; xx xx xx xxx xxxxx xx, xxxxx xx xxx xxxx xxx xxxxxx xxxx xxx

xx xx xx xx xx xx xxxx xxxxx xxx xxx xxx xxxx xxx, xxxx xxxxx xx, xx xxxxxxx xxx xx xxxx xxxxx xxxx xxxx xxxxxxx xx xxx, xx xxxx xxxx xxxx, xxxx xxxx xxx xxxx xxxx xx, xx xxx xxxxxx xxxx xxxxxx xxxx xx; xx xx xxx xxx xx xx xxxxx xx xxx xxxx xx, xxxxx xxx xxx xx xxxx xxxx xxxxxxx xxxx xxx

xxx xx xx xxxx xxxxx xxxxx xxxx xx, xxx xxxx xx xxxx xxxxxx xxxxxx xxx xxxx xx xxx xx xxxxx xx xx xxxxx xxxxxx xx xxxx xxxx xx, xx xxxxx xxx xx xxxx xx xxxxx xxx xxx xxxx xxxx xx xx xxxxx xxxxxxx xx xxxx xxxxxxx xx xxxxxxx xx, xxx-xxx xx xxxxxx xx xxxx xx, xxxxxxx xx xxx xxx xxxxxx xx xx xxxx xxxxx xx xxx xxxx xxx xxxxx xxxx xxxx xxxx xxxxx xx xx xxxx xxxx xxx xx xxxxxx xxxx xxxx xxxx xx xxxxxxx xx xx xxx xx xxxx xxx xx xxxxxxx xx xxx xxxxxxxxx xxx xx xxxx xxxx xx! xx xxxxx xx xx xx xxxx xx xxxxx xx xxxx xxx xxxx xx, xx xx xxx xx xxxx xx xx xxxx xxxxx xx xx xxx xxxx xx xxxx xxxx xx!

xxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx, xx xxxxxx xxxx xxxxxxxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxxxxx xxxx xxx xx xxxx xx xxxxxx xx xxxx xxx

xxxx xx xxxx xx xxx xxxx, xxxxxx xx xxx xxx xxxxxx xx xxx xxxxx xxxx xx xxx xx xx xxx xxxxxxx xxxxxxxx xxx xxxxxx xx xxx xxxx xx xxxx xxx xx

व्यक्ति सपने देखने के अलावा स्वयं से बाहर नहीं निकलता। व्यर्थ का काम। उथल-पुथल भरा और ठहरा हुआ अथाह सागर। और, जैसे-जैसे श्रम कम होता है, ज़रूरतें बढ़ती जाती हैं। यह एक नियम है। कल्पना की अवस्था में मनुष्य आम तौर पर फिजूलखर्ची और सुस्त होता है; तनावमुक्त मन जीवन को सीमित नहीं रख सकता।

उस जीवनशैली में अच्छाई और बुराई दोनों मिश्रित होती हैं, क्योंकि यदि दुर्बलता हानिकारक है, तो उदारता अच्छी और स्वास्थ्यवर्धक होती है। परन्तु वह गरीब व्यक्ति जो उदार और नेक है, और काम नहीं करता, वह बर्बाद हो जाता है। संसाधन समाप्त हो जाते हैं, आवश्यकताएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

यह एक घातक ढलान है जिस पर सबसे ईमानदार और दृढ़ व्यक्ति के साथ-साथ सबसे कमजोर और सबसे दुष्ट व्यक्ति भी खिंचे चले जाते हैं, और जिसका अंत दो रास्तों में से एक में होता है, आत्महत्या या अपराध।

बाहर जाकर सोचने-विचारने के कारण, एक दिन ऐसा आता है जब व्यक्ति खुद को पानी में झोंकने के लिए बाहर जाता है।

दिवास्वप्न की अति से एस्कौस और लेब्रास जैसे पुरुष पैदा होते हैं।

मारियस धीरे-धीरे इस ढलान से नीचे उतर रहा था, उसकी निगाहें उस लड़की पर टिकी थीं जिसे वह अब देख नहीं पा रहा था। जो हमने अभी लिखा है, वह अजीब लगता है, फिर भी सच है। एक बिछड़े हुए व्यक्ति की याद दिल के अंधेरे में चमक उठती है; जितना वह दूर होता जाता है, उतना ही वह चमकता है; उदास और निराश आत्मा को क्षितिज पर यह प्रकाश दिखाई देता है; भीतरी रात का तारा। वह—बस यही मारियस के मन में विचार था। वह और कुछ नहीं सोच रहा था; वह उलझन में था कि उसका पुराना कोट अब पहनने लायक नहीं रहा, उसका नया कोट भी पुराना हो रहा है, उसकी कमीज़ें घिस रही हैं, उसकी टोपी घिस रही है, उसके जूते खराब हो रहे हैं, और उसने मन ही मन कहा: "काश मैं मरने से पहले उसे एक बार फिर देख पाता!"

उसके मन में बस एक ही प्यारा सा ख्याल रह गया था कि वह उससे प्यार करती थी, उसकी एक नज़र ने उसे यही बताया था, वह उसका नाम तो नहीं जानती थी, पर उसकी आत्मा को जानती थी, और चाहे वह कहीं भी हो, चाहे वह जगह कितनी भी रहस्यमय क्यों न हो, शायद अब भी उससे प्यार करती हो। कौन जाने, क्या वह भी उसके बारे में सोच रही होगी, जैसे वह उसके बारे में सोच रहा होगा? कभी-कभी, उन

अवर्णनीय पलों में, जो हर प्रेम करने वाले दिल को महसूस होते हैं, भले ही उसके पास उदासी के सिवा कोई कारण न हो, फिर भी उसे एक अस्पष्ट सी खुशी का एहसास होता है, वह खुद से कहता है: "ये तो उसके विचार हैं जो मुझ तक पहुँच रहे हैं!" फिर वह जोड़ता है: "शायद मेरे विचार भी उस तक पहुँचते हैं।"

यह भ्रम, जिस पर उसने कुछ देर बाद सिर हिलाया, फिर भी उसकी आत्मा में आशा की किरणें जगाने के लिए काफी था। समय-समय पर, खासकर शाम के उस समय में जो स्वप्निल लोगों के लिए भी सबसे निराशाजनक होता है, वह अपने मस्तिष्क में उमड़ने वाले सबसे शुद्ध, सबसे निष्पक्ष और सबसे आदर्श विचारों को एक नोटबुक पर उतार देता था जिसमें और कुछ नहीं होता था। वह इसे "उसके लिए लेखन" कहता था।

यह नहीं माना जाना चाहिए कि उनकी बुद्धि विक्षिप्त थी। बल्कि इसके विपरीत। उन्होंने काम करने और किसी निश्चित लक्ष्य की ओर दृढ़ता से बढ़ने की क्षमता खो दी थी, लेकिन वे पहले से कहीं अधिक दूरदर्शी और सत्यनिष्ठ थे। मारियस एक शांत और वास्तविक, यद्यपि विशिष्ट दृष्टि से, अपनी आँखों के सामने घटित होने वाली हर चीज़ का अवलोकन करते थे, यहाँ तक कि सबसे साधारण कार्यों और व्यक्तियों का भी; वे एक प्रकार की सच्ची निराशा और निष्पक्षता के साथ हर चीज़ की न्यायसंगत आलोचना करते थे। उनका निर्णय, जो लगभग पूरी तरह से आशा से विरक्त था, तटस्थ रहता था और ऊँचाई पर पहुँचता था।

इस मनःस्थिति में उससे कुछ भी नहीं छिपा, कुछ भी उसे धोखा नहीं दे सका, और हर पल वह जीवन, मानवता और नियति के आधार को खोज रहा था। दुख के बीच भी वह धन्य है जिसे ईश्वर ने प्रेम और दुःख दोनों के योग्य आत्मा प्रदान की है! जिसने इस संसार की वस्तुओं और मनुष्य के हृदय को इस दोहरे प्रकाश में नहीं देखा है, उसने कुछ भी नहीं देखा और सत्य के बारे में कुछ भी नहीं जानता।

प्रेम करने और कष्ट सहने वाली आत्मा परमानंद की अवस्था में होती है।

लेकिन दिन बीतते गए, और कुछ भी नया सामने नहीं आया। उसे बस इतना ही प्रतीत हुआ कि उसके सामने बचा हुआ अंधकारमय क्षेत्र हर पल छोटा होता जा रहा है।
उसे लगा कि वह अथाह खाई के किनारे को स्पष्ट रूप से देख पा रहा है।

“क्या!” उसने मन ही मन दोहराया, “क्या मैं उससे पहले उसे दोबारा नहीं देख पाऊंगा!”

जब आप रू सेंट-जैक्स पर चढ़ते हैं, एक तरफ की बाधा को पार करते हैं और कुछ दूरी तक पुराने भीतरी बुलेवार्ड का अनुसरण करते हैं, तो आप रू डे ला सैंटे, फिर ग्लेसिएर पर पहुँचते हैं, और गोबेलिन्स की छोटी नदी पर पहुँचने से कुछ ही समय पहले, आप एक प्रकार के मैदान में पहुँचते हैं जो पेरिस के बुलेवार्ड की लंबी और नीरस श्रृंखला में एकमात्र ऐसा स्थान है, जहाँ रुयसडेल को बैठने का प्रलोभन हो सकता था।

वहाँ कुछ अवर्णनीय है जो अनुग्रह बिखेरता है, एक हरा मैदान जो कसकर खींची गई रेखाओं से घिरा है, जहाँ से हवा में सूखते हुए चिथड़े लहरा रहे हैं, और लुई XIII के समय में बना एक पुराना बाज़ार-बागवान का घर, जिसकी विशाल छत विचित्र रूप से डॉर्मर खिड़कियों से छिद्रित है, जर्जर बाड़, चिनार के पेड़ों के बीच थोड़ा सा पानी, महिलाएं, आवाजें, हंसी; क्षितिज पर पैंथियन, बधिर-मूक लोगों का केंद्र, वैल-डे-ग्रेस, काला, छोटा, शानदार, मनोरंजक, भव्य, और पृष्ठभूमि में, नोट्रे डेम के टावरों के कठोर वर्गाकार शिखर।

वह जगह देखने लायक तो है, लेकिन वहां कोई नहीं जाता। पंद्रह मिनट में मुश्किल से एक बैलगाड़ी वाला या ठेला चलाने वाला वहां से गुजरता है।

संयोगवश मारियस की एकांत सैर उसे पानी के पास स्थित इस जगह पर ले आई। उस दिन, सड़क पर एक दुर्लभ दृश्य था - एक राहगीर। उस जगह की लगभग जंगली सुंदरता से प्रभावित होकर मारियस ने उस राहगीर से पूछा: "इस जगह का नाम क्या है?"

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया: "यह लार्क का मैदान है।"

और उन्होंने आगे कहा: "यहीं पर उलबाक ने इवरी की चरवाहे की हत्या की थी।"

लेकिन "लार्क" शब्द के बाद मारियस को कुछ और सुनाई नहीं दिया। तल्लीनता की इस अवस्था में अचानक आने वाले ये ठहराव, जो एक शब्द से ही उत्पन्न हो जाते हैं, अक्सर होते हैं। पूरा विचार अचानक एक विचार के इर्द-गिर्द सिमट जाता है, और फिर वह किसी और चीज़ को समझने में असमर्थ हो जाता है।

मारियस की उदासी की गहराई में उर्सुले की जगह लार्क नाम ने ले लिया था। — “रुको,” उसने एक तरह की अतार्किक सुस्ती के साथ कहा, जो इन रहस्यमय बातों में विशिष्ट होती है, “यह उसका मैदान है। अब मुझे पता चल जाएगा कि वह कहाँ रहती है।”

यह बेतुका था , लेकिन अनूठा भी।

और वह हर दिन उस लार्क पक्षी के मैदान में लौटता था।

II. जेलों के गर्भकाल में अपराधों का प्रारंभिक निर्माण

गोरब्यू की झोपड़ी में जावर्ट की जीत पूरी तरह से सुनिश्चित लग रही थी, लेकिन ऐसा नहीं था।

सबसे पहले, और यही सबसे बड़ी चिंता थी, जावर्ट ने कैदी को बंदी नहीं बनाया था। हत्यारा जो भाग जाता है, वह हत्यारे से अधिक संदिग्ध होता है, और यह संभव है कि यह व्यक्ति, जो बदमाशों के लिए इतना कीमती था, अधिकारियों के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण इनाम साबित हो।

और फिर, मोंटपार्नास जावर्ट से बच निकला।

उस "शैतान के लंपट" को पकड़ने का एक और मौका मिलना बाकी था। दरअसल, मोंटपार्नास की मुलाकात एपोनाइन से तब हुई जब वह बुलेवार्ड के पेड़ों के नीचे पहरा दे रही थी, और वह उसे अपने साथ ले गया, क्योंकि वह पिता के साथ शाइंडरहैन्स की बजाय बेटी के साथ नेमोरिन जैसा व्यवहार करना चाहता था। उसने ऐसा करके अच्छा ही किया। वह आज़ाद हो गया। एपोनाइन की बात करें तो, जावर्ट ने उसे पकड़वा लिया था; यह एक मामूली तसल्ली थी। एपोनाइन लेस मैडेलोनेट्स में एज़ेलमा के साथ शामिल हो गई थी।

और अंत में, गोरब्यू हाउस से ला फोर्स जाते समय, मुख्य कैदियों में से एक, क्लैकसस, लापता हो गया। यह कैसे हुआ, यह पता नहीं चल पाया; पुलिस एजेंट और सार्जेंट "बिल्कुल समझ नहीं पा रहे थे"। वह भाप बनकर गायब हो गया, हथकड़ियों से फिसल गया, गाड़ी की दरारों से रिस गया, फियाक्रे (गाड़ी का ताला) टूट गया और वह भाग गया; वे बस इतना ही कह पाए कि जेल पहुँचने पर क्लैकसस वहाँ नहीं था। या तो परियों का हाथ था या पुलिस का। क्या क्लैकसस पानी में बर्फ के टुकड़े की तरह अंधेरे में गायब हो गया था? क्या पुलिस एजेंटों की इसमें गुप्त मिलीभगत थी? क्या यह व्यक्ति व्यवस्था और अव्यवस्था के दोहरे रहस्य का हिस्सा था? क्या वह अपराध और दमन का प्रतीक था? क्या इस रहस्यमयी शख्स के अगले पंजे अपराध में और पिछले पंजे सत्ता

में थे? जैवरट ने ऐसी दलीलें स्वीकार नहीं कीं और ऐसे समझौतों का कड़ा विरोध किया होता; लेकिन उनके दस्ते में उनके अलावा अन्य इंस्पेक्टर भी थे, जो शायद उनसे ज़्यादा जानकार थे, हालाँकि वे प्रीफेक्चर के रहस्यों में उनके अधीनस्थ थे, और क्लैकसस इतना शातिर था कि वह एक अच्छा एजेंट साबित हो सकता था। गुंडों के लिए यह एक बेहतरीन बात है और पुलिस के लिए रात के अंधेरे से इस तरह का घनिष्ठ संबंध होना प्रशंसनीय है। ऐसे दोधारी तलवारबाज़ सचमुच मौजूद हैं। खैर, क्लैकसस भटक गया था और फिर कभी नहीं मिला। इस पर जैवरट आश्चर्यचकित होने के बजाय ज़्यादा चिढ़ गया।

मारियस की बात करें तो, वह "बेवकूफ वकील" शायद डर गया था और जावर्ट उसका नाम भूल चुका था, जावर्ट उसे कोई खास अहमियत नहीं देता था। वैसे भी, एक वकील को कभी भी पकड़ा जा सकता है। लेकिन क्या वह सच में वकील था?

जांच शुरू हो चुकी थी।

मजिस्ट्रेट ने पैट्रन मिनेट के गिरोह के इन आदमियों में से किसी एक को कड़ी निगरानी में रखना उचित नहीं समझा, इस उम्मीद में कि वह भेद खोल देगा। यह आदमी ब्रुजोन था, जो रू डू पेटिट-बैंकियर का लंबे बालों वाला आदमी था। उसे शार्लेमेन के प्रांगण में खुला छोड़ दिया गया था, और पहरेदारों की निगाहें उस पर टिकी हुई थीं।

ब्रुजोन का यह नाम ला फोर्स की स्मृतियों में से एक है। उस भयानक आंगन में, जिसे बैटमेंट-न्यूफ़ (नई इमारत) का आंगन कहा जाता था, जिसे प्रशासन सेंट-बर्नार्ड का आंगन कहता था और जिसे लुटेरे फोसे-ऑक्स-लायंस (शेर की खाई) कहते थे, उस दीवार पर जो पपड़ी और कुष्ठ रोग से ढकी हुई थी, जो बाईं ओर छतों के स्तर तक उठी हुई थी, जंग लगे लोहे के एक पुराने दरवाजे के पास, जो ला फोर्स के ड्यूकल निवास के प्राचीन चैपल की ओर जाता था, जिसे बाद में बदमाशों के लिए एक शयनकक्ष में बदल दिया गया था, बारह साल पहले तक, पत्थर में कील से उकेरा गया एक प्रकार का किला देखा जा सकता था, और उसके नीचे यह हस्ताक्षर था:—

ब्रुजोन, 1811।

1811 के ब्रुजोन, 1832 के ब्रुजोन के जनक थे।

बाद वाला, जिसकी झलक पाठक को गोरब्यू हाउस में मिली थी, एक बेहद चालाक और कुशल नौजवान था, जिसके चेहरे पर एक उलझन और उदासी छाई रहती थी। इसी उदासी भरे भाव के कारण मजिस्ट्रेट ने उसे रिहा कर दिया था, क्योंकि उनका मानना था कि उसे एकांत कारावास में रखने की बजाय शार्लेमेन के प्रांगण में रखना अधिक उपयोगी होगा।

कानून के शिकंजे में आने पर भी लुटेरे अपना काम नहीं छोड़ते। वे ऐसी छोटी- मोटी बात से विचलित नहीं होते। एक अपराध के लिए जेल जाना किसी दूसरे अपराध को अंजाम न देने का बहाना नहीं होता। वे कलाकार होते हैं, जिनकी एक पेंटिंग प्रदर्शनी में लगी होती है, फिर भी वे अपने स्टूडियो में नए काम पर मेहनत करते रहते हैं।

ब्रुजोन जेल में सुन्न सा हो गया था। उसे अक्सर शार्लेमेन के प्रांगण में स्थित सामान की दुकान की खिड़की के सामने घंटों खड़े देखा जा सकता था, जहाँ वह "लहसुन, 62 सेंटाइम्स" से शुरू होकर "सिगार, 5 सेंटाइम्स" पर खत्म होने वाली कीमतों की घिनौनी सूची को एक मूर्ख की तरह घूरता रहता था। या फिर वह कांपते हुए, दांत किटकिटाते हुए, बुखार का बहाना बनाकर यह पूछता रहता था कि बुखार वार्ड में मौजूद 22 बिस्तरों में से कोई खाली है या नहीं।

अचानक, फरवरी 1832 के अंत में, यह पता चला कि उस सुस्त स्वभाव वाले ब्रुजोन ने अपने नाम से नहीं, बल्कि अपने तीन साथियों के नाम से, जेल के कर्मचारियों द्वारा तीन अलग-अलग काम करवाए थे; और इन कामों में उसे कुल पचास सू खर्च करने पड़े थे, जो एक अत्यधिक खर्च था और जिसने जेल के कॉर्पोरल का ध्यान आकर्षित किया।

जांच शुरू की गई और कैदी के कमरे में लगे कमीशन के विवरण को देखने पर पता चला कि पचास सू का हिसाब इस प्रकार है: तीन कमीशन; एक पैंथियन के लिए, दस सू; एक वैल-डे-ग्रेस के लिए, पंद्रह सू; और एक बैरियर डे ग्रेनेल के लिए, पच्चीस सू। इनमें से आखिरी कमीशन पूरे विवरण में सबसे महंगा था। पैंथियन, वैल-डे- ग्रेस और बैरियर डे ग्रेनेल में तीन कुख्यात लुटेरे रहते थे: क्रुइडेनियर्स उर्फ बिज़ारो, ग्लोरियस (एक पूर्व कैदी) और बैरे-कारोसे। इस घटना के कारण पुलिस का ध्यान इन पर गया। ऐसा माना जाता था कि ये लोग पैट्रॉन मिनेट गिरोह के सदस्य थे; इनमें से दो नेता, बैबेट और गुएलेमर, पकड़े जा चुके थे। ऐसा माना जा रहा था कि ये संदेश, जो घरों को नहीं बल्कि

सड़क पर इंतज़ार कर रहे लोगों को भेजे गए थे, उनमें किसी रची गई अपराध की योजना से संबंधित जानकारी ज़रूर होगी। उनके पास अन्य संकेत भी थे; उन्होंने तीनों लुटेरों को पकड़ लिया और अनुमान लगाया कि उन्होंने ब्रुजोन की किसी न किसी साज़िश को नाकाम कर दिया था।

इन उपायों के लागू होने के लगभग एक सप्ताह बाद, एक रात, जब चौकीदार, जो बैटमेंट-नेउफ के निचले छात्रावास का निरीक्षण कर रहा था, अपने शाहबलूत के बक्से में डालने ही वाला था—यह चौकीदारों द्वारा समय पर अपने कर्तव्यों का पालन सुनिश्चित करने का तरीका था; हर घंटे छात्रावासों के दरवाजों पर ठोके गए सभी बक्सों में एक शाहबलूत डाला जाता था—तभी एक चौकीदार ने छात्रावास के झाँक-छेद से झाँका और ब्रुजोन को हॉल के लैंप की रोशनी में अपने बिस्तर पर बैठे कुछ लिखते हुए देखा। गार्ड अंदर आया, ब्रुजोन को एक महीने के लिए एकांत कारावास में रखा गया, लेकिन वे उसके लिखे हुए को ज़ब्त नहीं कर सके। पुलिस को इसके बारे में और कोई जानकारी नहीं मिली।

यह निश्चित है कि अगली सुबह, शार्लेमेन के आंगन से एक "पोस्टिलियन" को शेरों की खाई में फेंका गया, जो दोनों आंगनों को अलग करने वाली पांच मंजिला इमारत के ऊपर से होकर गुजरता था।

कैदियों द्वारा “पोस्टिलियन” कही जाने वाली रोटी की एक कलात्मक रूप से तराशी हुई थाली होती है, जिसे “आयरलैंड भेजा जाता है”, यानी जेल की छतों के ऊपर से, एक आंगन से दूसरे आंगन तक। व्युत्पत्ति: इंग्लैंड के ऊपर से; एक देश से दूसरे देश तक; “आयरलैंड में”। यह छोटी सी रोटी आंगन में गिरती है। जो व्यक्ति इसे उठाता है, उसे खोलकर देखने पर उसमें उसी आंगन में बंद किसी कैदी के नाम एक पत्र मिलता है। यदि किसी कैदी को यह पत्र मिलता है, तो वह इसे उसके गंतव्य तक पहुंचा देता है; यदि यह किसी रखवाले को मिलता है, या उन कैदियों में से किसी एक को, जिन्हें गुप्त रूप से बेच दिया जाता है और जेलों में “भेड़” और कोठरियों में “लोमड़ी” कहा जाता है, तो पत्र को दफ्तर ले जाकर पुलिस को सौंप दिया जाता है।

इस अवसर पर, डाक अपने पते पर पहुँच गई, हालाँकि जिसे यह संबोधित थी वह उस समय एकांत कारावास में था। यह व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि पैट्रन मिनेट के चार प्रमुखों में से एक, बैबेट था।

पोस्टिलियन में कागज का एक रोल था जिस पर केवल ये दो पंक्तियाँ लिखी थीं:—

“बेबेट। रू प्लूमेट में एक मामला चल रहा है। एक बगीचे का द्वार।”

ब्रुजोन ने पिछली रात यही लिखा था।

पुरुष और महिला खोजकर्ताओं की कोशिशों के बावजूद, बैबेट किसी तरह ला फोर्स से साल्पेट्रिएर तक वह नोट पहुंचाने में कामयाब रहा, जहां उसकी एक "अच्छी दोस्त" थी, जो वहीं कैद थी। उस महिला ने वह नोट अपनी एक परिचित महिला, मैग्नन को दिया, जिस पर पुलिस को पूरा शक था, हालांकि उसे अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया था। मैग्नन, जिसका नाम पाठक पहले ही देख चुके हैं, के थेनार्डियर से संबंध थे, जिनका विस्तृत वर्णन आगे किया जाएगा, और वह एपोनिन से मिलने जाकर साल्पेट्रिएर और लेस मैडेलोनेट्स के बीच एक कड़ी का काम कर सकती थी।

ठीक उसी समय, जब थेनार्डियर के खिलाफ उनकी बेटियों के मामले में चल रही जांच में सबूतों की कमी थी, एपोनिन और एज़ेलमा को रिहा कर दिया गया। जब एपोनिन बाहर आई, तो मैडेलोनेट के घर के द्वार पर पहरा दे रहे मैग्नन ने उसे ब्रुजोन का बैबेट को लिखा पत्र सौंप दिया, जिसमें उसे मामले की जांच करने का निर्देश दिया गया था।

एपोनाइन रू प्लूमेट गई, उसने फाटक और बगीचे को पहचाना, घर का निरीक्षण किया, जासूसी की, घात लगाकर बैठी रही, और कुछ दिनों बाद मैग्नन के पास एक बिस्किट लेकर आई, जिसे मैग्नन ने रू क्लोचेपर्स में बाबेट की प्रेमिका को सौंप दिया। जेलों के अस्पष्ट प्रतीकवाद में, बिस्किट का अर्थ है: कुछ नहीं किया जा सकता।

इसलिए उस समय से एक सप्ताह से भी कम समय में, जब ब्रुजोन और बैबेट ला फोर्स के समूह में मिले, एक परीक्षा देने जा रहा था, दूसरा परीक्षा से लौट रहा था:—

ब्रुजोन ने पूछा, "तो फिर रू पी का क्या हुआ?"

“बिस्किट,” बैबेट ने उत्तर दिया। इस प्रकार ला फोर्स में ब्रुजोन द्वारा जन्म दिया गया अपराध का भ्रूण नष्ट हो गया।

हालांकि, इस गर्भपात के परिणाम ब्रुजोन की योजना से बिल्कुल अलग थे। पाठक आगे देखेंगे कि वे क्या थे।

अक्सर जब हम सोचते हैं कि हम एक धागे में गांठ लगा रहे हैं, तो असल में हम किसी और ही धागे में गांठ लगा रहे होते हैं।

III. फादर माबेउफ को दर्शन

मारियस अब किसी से मिलने नहीं जाता था, लेकिन कभी-कभी संयोगवश उसकी मुलाकात फादर माबेउफ से हो जाती थी।

जब मारियस धीरे-धीरे उन उदास सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था जिन्हें तहखाने की सीढ़ियाँ कहा जा सकता है, और जो ऐसी जगहों की ओर ले जाती हैं जहाँ रोशनी नहीं होती, जहाँ ऊपर से खुश लोगों के चलने की आवाज सुनाई देती है, तब एम. माबेउफ अपनी करवट से नीचे उतर रहा था।

कौटेरेट्ज़ की वनस्पतियों की बिक्री बिल्कुल बंद हो गई थी। ऑस्टरलिट्ज़ के छोटे से बगीचे में नील पर किए गए प्रयोग सफल नहीं हुए थे, क्योंकि वहाँ धूप अच्छी नहीं आती थी। श्री माबेउफ़ वहाँ केवल कुछ ही ऐसे पौधे उगा पाए जिन्हें छाया और नमी पसंद थी। फिर भी, उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने अपने खर्च पर नील पर प्रयोग करने के लिए जार्डिन डेस प्लांट्स में धूप से सुरक्षित एक कोना किराए पर ले लिया था। इसके लिए उन्होंने वनस्पतियों की अपनी तांबे की प्लेटें गिरवी रख दी थीं। उन्होंने नाश्ते में केवल दो अंडे खाना शुरू कर दिया था और उनमें से एक अंडा अपने बूढ़े नौकर के लिए छोड़ देते थे, जिसे उन्होंने पिछले पंद्रह महीनों से कोई वेतन नहीं दिया था। अक्सर उनका नाश्ता ही उनका एकमात्र भोजन होता था। अब उनके चेहरे पर बचपन वाली मुस्कान नहीं रहती थी, वे उदास हो गए थे और अब किसी से मिलने भी नहीं जाते थे। मारियस ने वहाँ जाने का सपना न देखकर अच्छा ही किया। कभी-कभी, जब श्री माबेउफ़ जार्डिन डेस प्लांट्स जा रहे होते थे, तो अस्पताल के बुलेवार्ड पर बूढ़े और जवान एक-दूसरे से मिलते थे। वे कुछ नहीं बोले, बस सिर हिलाकर उदासी का इशारा किया। यह कितना दुखद है कि एक पल ऐसा आता है जब दुख सारे बंधन तोड़ देता है! दो दोस्त, जो कभी मित्र थे, अब राहगीर बनकर रह जाते हैं।

पुस्तक विक्रेता रॉयोल की मृत्यु हो गई थी। श्री माबेउफ को अब अपनी पुस्तकों, अपने बगीचे या अपने नील के बारे में कुछ भी पता नहीं था: ये तीन रूप उनके लिए सुख, आनंद और आशा का प्रतीक थे। यही उनके जीवनयापन के लिए

पर्याप्त था। उन्होंने मन ही मन कहा: “जब मैं नील की गोलियां बना लूंगा, तब मैं अमीर हो जाऊंगा, मैं अपने तांबे के चित्र गिरवी से वापस ले लूंगा, मैं चालाकी, खूब सारा पैसा और अखबारों में विज्ञापन देकर अपनी पुस्तक 'फ्लोरा' को फिर से प्रचलन में लाऊंगा और मैं अच्छी तरह जानता हूं कि कहां से पियरे डी मेडिन की 'आर्ट डे नेविगुएर' की 1655 की वुडकट्स वाली प्रति खरीदूंगा।” इस बीच, वे दिन भर अपने नील के खेत में मेहनत करते रहे और रात को घर लौटकर अपने बगीचे में पानी देते और अपनी पुस्तकें पढ़ते। उस समय श्री माबेउफ लगभग अस्सी वर्ष के थे।

एक शाम उन्हें एक विलक्षण दृश्य दिखाई दिया।

वह उजाले में ही घर लौट आया था। माँ प्लूटार्क, जिनकी सेहत बिगड़ रही थी, बीमार थीं और बिस्तर पर लेटी हुई थीं। उसने रसोई की मेज पर मिली एक हड्डी (जिस पर थोड़ा सा मांस लगा हुआ था) और रोटी का एक टुकड़ा खाकर रात का भोजन किया और अपने बगीचे में एक उलटे हुए पत्थर के खंभे पर बैठ गया, जो बेंच की जगह पर रखा हुआ था।

इस बेंच के पास, बाग-बगीचों में बने ढाँचे की तरह, बीम और तख्तों से बना एक जर्जर सा संदूक खड़ा था। उसके भूतल पर खरगोशों का पिंजरा और पहली मंजिल पर फलों का कमरा था। पिंजरे में कुछ नहीं था, लेकिन फलों के कमरे में कुछ सेब रखे थे—सर्दियों के बचे हुए सेब।

एम. माबेउफ ने अपने चश्मे की सहायता से दो किताबें पलटकर पढ़ना शुरू कर दिया था, जिनसे उन्हें बेहद लगाव था और जिनमें उनकी उम्र के हिसाब से उनकी गहरी रुचि थी। उनकी स्वाभाविक झिझक के कारण वे कुछ हद तक अंधविश्वासों को मानने के लिए तैयार रहते थे। इनमें से पहली किताब राष्ट्रपति डेलैंकरे की प्रसिद्ध कृति, 'डी ल'इनकॉन्स्टेंस डेस डेमन्स' थी; दूसरी मुटोर डे ला रुबाउडीर की चार-भाग वाली रचना, 'सुर लेस डियाबल्स डे वाउवर्ट एट लेस गोबेलिन्स डे ला बिएव्रे' थी। इस दूसरी पुरानी किताब में उनकी रुचि और भी अधिक थी, क्योंकि उनका बगीचा पुराने समय में जिन्नों का अड्डा हुआ करता था। गोधूलि बेला ऊपर की ओर सफेद और नीचे की ओर काली होने लगी थी। जैसे-जैसे वे पढ़ रहे थे, हाथ में पकड़ी किताब के ऊपर से फादर माबेउफ अपने पौधों को देख रहे थे, और उनमें से एक शानदार रोडोडेंड्रोन भी था, जो उनके लिए सुकून का स्रोत था। चार दिन तक भीषण गर्मी, तेज हवा और धूप पड़ी रही, बारिश की एक

बूँद भी नहीं गिरी; पौधे झुक रहे थे, कलियाँ मुरझा रही थीं, पत्ते झड़ रहे थे; इन सबको पानी की ज़रूरत थी, रोडोडेंड्रोन तो विशेष रूप से उदास था। फादर माबेउफ उन लोगों में से थे जिनके लिए पौधों में आत्मा होती है। बूढ़े ने दिनभर अपने नील के खेत में मेहनत की थी, थकान से चूर हो चुके थे, लेकिन उठे, अपनी किताबें बेंच पर रखीं और झुके हुए, लड़खड़ाते कदमों से कुएँ की ओर चले, लेकिन जब उन्होंने जंजीर पकड़ी, तो उसे खोलने के लिए उसे खींच भी नहीं पाए। फिर वे मुड़े और तारों से जगमगाते आकाश की ओर पीड़ा भरी नज़र डाली।

शाम में वह शांति थी जो मनुष्य के कष्टों को एक अवर्णनीय शोकपूर्ण और शाश्वत आनंद में डुबो देती है। रात भी दिन की तरह ही नीरस होने का आभास दे रही थी।

“चारों ओर तारे ही तारे!” बूढ़े आदमी ने सोचा; “एक भी बादल नहीं! पानी की एक बूंद भी नहीं!”

और उसका सिर, जो एक क्षण के लिए ऊपर उठा था, वापस उसकी छाती पर गिर गया।

उसने उसे फिर उठाया और एक बार फिर आकाश की ओर देखते हुए बुदबुदाया:—

“ओस का एक आंसू! थोड़ी सी दया!”

उसने कुएं की जंजीर को खोलने की दोबारा कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हो सका।

उसी क्षण, उसने एक आवाज सुनी:—

"फादर माबेउफ, क्या आप चाहेंगे कि मैं आपके बगीचे में पानी डाल दूं?"

उसी समय, झाड़ियों में से किसी जंगली जानवर के गुजरने जैसी आवाज सुनाई दी, और उसने देखा कि झाड़ियों से एक लंबी, पतली लड़की निकली, जो उसके सामने आकर खड़ी हो गई और उसे निडरता से घूरने लगी। वह किसी इंसान से कम, बल्कि गोधूलि बेला से अभी-अभी खिली हुई किसी आकृति जैसी लग रही थी।

फादर माबेउफ, जो आसानी से डर जाते थे और जैसा कि हमने पहले बताया है, जल्दी घबरा जाते थे, एक शब्द भी बोल पाते, उससे पहले ही अंधेरे में अजीब सी फुर्ती से हरकत करने वाले इस प्राणी ने जंजीर खोल दी, बाल्टी पानी में डुबोई और उसे बाहर निकाल लिया, और पानी का बर्तन भर दिया। वरमैन ने इस

प्रेत को देखा, जिसके नंगे पैर थे और फटी हुई पेटीकोट थी, जो फूलों की क्यारियों में इधर-उधर दौड़ रही थी और उन्हें पानी दे रही थी। पत्तों पर पानी के बर्तन की आवाज ने फादर माबेउफ के मन को आनंद से भर दिया। उन्हें लगा मानो अब रोडोडेंड्रोन खुश है।
पहली बाल्टी खाली होते ही लड़की ने दूसरी बाल्टी भरी, फिर तीसरी। उसने पूरे बगीचे में पानी डाल दिया।
जब वह इस तरह पगडंडियों पर दौड़ रही थी, जहां उसकी आकृति पूरी तरह से काली दिखाई दे रही थी, वह अपनी कोणीय भुजाओं को लहरा रही थी, और उसका फिचू पूरी तरह से फटे कपड़ों में लिपटा हुआ था, तो उसमें कुछ ऐसा था जो चमगादड़ जैसा लग रहा था।
जब उसने अपनी बात समाप्त कर ली, तो फादर माबेउफ आँखों में आँसू लिए उसके पास आए और अपना हाथ उसके माथे पर रख दिया।
उन्होंने कहा, "भगवान आपको आशीर्वाद देंगे, आप एक देवदूत हैं क्योंकि आप फूलों की देखभाल करते हैं।"
“नहीं,” उसने जवाब दिया। “मैं शैतान हूँ, लेकिन इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।”
बूढ़े व्यक्ति ने उसकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा किए बिना या उसे सुने बिना ही कहा:
"कितनी अफसोस की बात है कि मैं इतना दुखी और इतना गरीब हूँ, और मैं आपके लिए कुछ भी नहीं कर सकता!"
“तुम कुछ कर सकते हो,” उसने कहा।
"क्या?"
मुझे बताइए कि श्री मारियस कहाँ रहते हैं।
बूढ़े व्यक्ति को समझ नहीं आया। "क्या श्रीमान मारियस?"
उसने अपनी बेजान आँखें ऊपर उठाईं और ऐसा लग रहा था मानो वह किसी ऐसी चीज को खोज रहा हो जो गायब हो गई हो।
"एक युवक जो यहाँ आया करता था।"

इसी बीच, एम. माबेउफ ने अपनी स्मृति में कुछ विचार खंगाले।

“आह! हाँ—” उसने कहा। “मैं समझ गया आप क्या कहना चाहते हैं। रुकिए! महाशय मारियस—बैरन मारियस पोंटमर्सी, ओह माय गॉड! वह जीवित हैं—या यूँ कहें कि अब जीवित नहीं हैं—खैर, मुझे नहीं पता।”

बोलते-बोलते वह झुककर रोडोडेंड्रोन की एक शाखा को सहारा देने लगे, और फिर उन्होंने आगे कहा:—

“रुको, अब मुझे पता चल गया है। वह अक्सर इस बुलेवार्ड से गुजरता है और ग्लेसिएर की ओर, रू क्रौलेबार्बे की तरफ जाता है। लार्क का मैदान। वहीं जाओ। उससे मिलना मुश्किल नहीं है।”

जब एम. माबेउफ ने खुद को सीधा किया, तो वहां कोई नहीं था; लड़की गायब हो चुकी थी।

वह बेहद डरा हुआ था।

“सचमुच,” उसने सोचा, “अगर मेरे बगीचे में पानी न डाला गया होता, तो मैं सोचता कि वह एक आत्मा है।”

एक घंटे बाद, जब वह बिस्तर पर था, तो उसे फिर से यह बात याद आई, और जब वह सो गया, उस उलझन भरे क्षण में जब विचार, उस अद्भुत पक्षी की तरह जो समुद्र पार करने के लिए मछली में बदल जाता है, धीरे-धीरे स्वप्न का रूप धारण करके नींद को पार करता है, उसने व्याकुलता से अपने आप से कहा:—

"सचमुच, यह रुबाउडियर द्वारा वर्णित जिन्नों से काफी मिलता-जुलता है। क्या यह कोई जिन्न हो सकता है?"

IV. मारियस को एक दर्शन

किसान माबेउफ के यहाँ एक "आत्मा" के आने के कुछ दिनों बाद, एक सुबह—यह सोमवार का दिन था, जिस दिन मारियस ने थेनार्डियर के लिए कौरफेयरैक से सौ सू का सिक्का उधार लिया था—मारियस ने वह सिक्का अपनी जेब में रख लिया और क्लर्क के कार्यालय में ले जाने से पहले, वह "थोड़ी देर टहलने" चला गया, इस उम्मीद में कि इससे उसे लौटने पर काम करने की प्रेरणा मिलेगी। लेकिन हमेशा ऐसा ही होता था। उठते ही वह एक किताब और कागज के सामने बैठ जाता और कुछ अनुवाद लिखने लगता; उस समय उसका काम जर्मनों के बीच एक प्रसिद्ध विवाद, गांस और सैविग्नी के विवाद को फ्रेंच में अनुवाद करना था; वह सैविग्नी और गांस की रचनाएँ पढ़ता, चार पंक्तियाँ पढ़ता, एक लिखने की कोशिश करता, लिख नहीं पाता, अपने और कागज के बीच एक तारा देखता और कुर्सी से उठकर कहता: "मैं बाहर चलता हूँ। इससे मुझे अच्छा महसूस होगा।"

और वह लार्क के घास के मैदान की ओर चल पड़ा।

वहाँ उसने तारे को पहले से कहीं अधिक और सैविग्नी और गैंस को पहले से कहीं कम देखा।

वह घर लौटा, फिर से काम शुरू करने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुआ; उसके दिमाग में टूटे हुए धागों को फिर से जोड़ने का कोई उपाय नहीं था; तब उसने मन ही मन कहा: “मैं कल बाहर नहीं जाऊंगा। इससे मेरा काम रुक जाता है।” और वह हर दिन बाहर जाता रहा।

वह कौरफेयरैक के आवास की तुलना में लार्क के घास के मैदान में अधिक समय बिताता था। उसका असली पता यही था: बुलेवार्ड डे ला सैंटे, रुए क्रौलेबार्बे से सातवें पेड़ के पास।

उस सुबह वह सातवें पेड़ से उतरकर गोबेलिन नदी के किनारे की प्राचीर पर बैठ गया था। खिलखिलाती धूप नए खिले और चमकदार पत्तों से छनकर आ रही थी।

वह "उसका" सपना देख रहा था। और उसका ध्यान आत्म-निंदा में बदल गया, और वह स्वयं पर ही लौट आया; उसने उदास होकर अपनी निष्क्रियता, अपनी आत्मा की

निष्क्रियता, जो उस पर हावी होती जा रही थी, और उस रात पर विचार किया जो हर पल उसके सामने और भी घनी होती जा रही थी, इस हद तक कि उसे अब सूरज भी दिखाई नहीं दे रहा था।

फिर भी, अस्पष्ट विचारों के इस पीड़ादायक संघर्ष के बीच, जो एकालाप भी नहीं था, उसकी क्रियाशीलता इतनी कमज़ोर हो गई थी कि उसमें निराशा की परवाह करने की भी शक्ति नहीं बची थी। इस उदासी भरे चिंतन के बीच, बाहरी संवेदनाएँ उस तक पहुँच रही थीं। उसने अपने पीछे, अपने नीचे, नदी के दोनों किनारों पर, गोबेलिन्स की धोबिनों को अपने कपड़े धोते हुए सुना, और अपने सिर के ऊपर, एल्म के पेड़ों में पक्षियों को चहकते और गाते हुए सुना। एक ओर, स्वतंत्रता की ध्वनि, पंख लगे अवकाश की लापरवाह खुशी; दूसरी ओर, परिश्रम की ध्वनि। दो आनंददायक ध्वनियों ने उसे गहन चिंतन और लगभग मनन करने पर मजबूर कर दिया।

अचानक, अपनी निराशा से भरी परमानंद की स्थिति के बीच, उसने एक परिचित आवाज सुनी:—

“आओ! वो यहाँ है!”

उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और उस अभागी बच्ची को पहचान लिया जो एक सुबह उसके पास आई थी, थेनार्डियर की बेटियों में सबसे बड़ी, एपोनिन; अब वह उसका नाम जानता था। हैरानी की बात है कि वह पहले से भी गरीब और सुंदर हो गई थी, दो ऐसे कदम जो उसके बस में नहीं थे। उसने दोहरी प्रगति की थी, प्रकाश की ओर और दुख की ओर। वह नंगे पैर और फटे-पुराने कपड़ों में थी, ठीक वैसे ही जैसे उस दिन थी जब वह इतने दृढ़ निश्चय के साथ उसके कमरे में आई थी, बस अब उसके कपड़े दो महीने पुराने हो गए थे, उनमें छेद बड़े हो गए थे, और तार-तार पहले से भी गंदे थे। वही कर्कश आवाज, वही माथे पर धूप से पड़ी झुर्रियाँ, वही बेपरवाह, उग्र और अस्थिर निगाहें। इसके अलावा, पहले से कहीं अधिक, उसके चेहरे पर वह अवर्णनीय भय और दयनीय भाव था जो जेल में रहने से दुख में और भी इजाफा कर देता है।

उसके बालों में भूसे और घास के टुकड़े फंसे हुए थे, ओफेलिया की तरह नहीं जो हैमलेट के पागलपन के संक्रमण से पागल हो गई थी, बल्कि इसलिए कि वह किसी अस्तबल के अटारी में सोई थी।

और इन सब के बावजूद, वह बेहद खूबसूरत थी। हे युवक, तुम तो एक सितारा हो!

इसी बीच, वह अपने पीले पड़े चेहरे पर थोड़ी सी खुशी और एक मुस्कान जैसी झलक लिए मारियस के सामने रुक गई।

वह कुछ क्षणों तक इस प्रकार खड़ी रही मानो बोलने में असमर्थ हो।

“आखिरकार तुमसे मिल ही गई!” उसने आखिरकार कहा। “फादर माबेउफ सही थे, इसी सड़क पर! मैंने तुम्हें कितना ढूंढा! काश तुम्हें पता होता! क्या तुम्हें पता है? मैं दो हफ्ते जेल में थी! उन्होंने मुझे रिहा कर दिया! क्योंकि मेरे खिलाफ कोई सबूत नहीं था, और तो और, मेरी समझदारी की उम्र भी अभी नहीं हुई थी। मुझे दो महीने की और समझदारी चाहिए। ओह! मैंने तुम्हें कितना ढूंढा! इन छह हफ्तों में! तो अब तुम वहां नहीं रहते?”

“नहीं,” मारियस ने कहा।

“आह! मैं समझ गया। उस मामले की वजह से। वो सब बातें बहुत बुरी लगती हैं। आप वहाँ से निकल गए। अरे! आप ऐसे पुराने कपड़े क्यों पहनते हैं! आप जैसे नौजवान को तो अच्छे कपड़े पहनने चाहिए। क्या आपको पता है, महाशय मारियस, फादर माबेउफ आपको बैरन मारियस कहते हैं, पता नहीं क्या। क्या सच में आप बैरन हैं? बैरन तो बूढ़े लोग होते हैं, वो लक्ज़मबर्ग जाते हैं, महल के सामने, जहाँ सबसे ज़्यादा धूप होती है, और वहाँ एक सू के लिए रोज़ाना अख़बार पढ़ते हैं। एक बार मैंने ऐसे ही एक बैरन को चिट्ठी पहुँचाई थी। वो सौ साल से भी ज़्यादा उम्र के थे। बताइए, अब आप कहाँ रहते हैं?”

मारियस ने कोई जवाब नहीं दिया।

“अरे!” वह आगे बोली, “तुम्हारी कमीज में छेद हो गया है। मुझे इसे तुम्हारे लिए सिलना पड़ेगा।”

उसने धीरे-धीरे उदास होते भावों के साथ बोलना शुरू किया:

"मुझे देखकर आप खुश नहीं लग रहे हैं।"

मारियस चुप रहा; वह भी कुछ पल चुप रही, फिर बोली:—

लेकिन अगर मैं चाहूं तो फिर भी मैं तुम्हें खुश दिखने के लिए मजबूर कर सकता हूं!

“क्या?” मारियस ने पूछा। “तुम्हारा क्या मतलब है?”
“अरे! तुम तो मुझे ‘तू’ कहकर बुलाते थे,” उसने पलटकर जवाब दिया।
"तो फिर तुम्हारा मतलब क्या है?"
उसने अपने होंठ दबाए; वह हिचकिचाती हुई प्रतीत हुई, मानो किसी आंतरिक संघर्ष से जूझ रही हो। अंततः उसने एक निर्णय ले लिया।
“अब तो और भी बुरा है, मुझे परवाह नहीं। तुम्हारे चेहरे पर उदासी छाई हुई है, मैं चाहती हूँ कि तुम खुश रहो। बस मुझसे वादा करो कि तुम मुस्कुराओगे। मैं तुम्हें मुस्कुराते हुए देखना चाहती हूँ और तुम्हें यह कहते हुए सुनना चाहती हूँ: ‘अहा, अच्छा है।’ बेचारे श्री मारियस! जानते हो? तुमने मुझसे वादा किया था कि तुम मुझे मेरी मनपसंद कोई भी चीज़ दे दोगे—” “हाँ! केवल बोलो!”
उसने मारियस की आँखों में आँखें डालकर कहा:—
मेरे पास पता है।
मारियस का चेहरा पीला पड़ गया। सारा खून वापस उसके दिल में चला गया। "पता क्या है?"
“वही पता जो आपने मुझे लाने को कहा था!”
उसने मानो प्रयास करते हुए कहा:—
“पता—आपको तो अच्छी तरह पता है!”
“हाँ!” मारियस हकलाते हुए बोला।
उस युवती के बारे में।
यह शब्द बोलते ही उसने गहरी आह भरी।
मारियस उस मुंडेर से उछल पड़ा जिस पर वह बैठा था और उसने बेसुध होकर उसका हाथ पकड़ लिया।
“ओह! अच्छा! मुझे वहाँ ले चलो! मुझे बताओ! मुझसे जो चाहो पूछो! यह कहाँ है?”

“मेरे साथ आइए,” उसने जवाब दिया। “मुझे गली और उसका नंबर ठीक से याद नहीं है; वह यहाँ से बिल्कुल दूसरी दिशा में है, लेकिन मैं घर को अच्छी तरह जानती हूँ, मैं आपको वहाँ ले जाऊँगी।”
उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया और आगे बोली, उसकी आवाज़ किसी भी श्रोता के दिल को चीर सकती थी, लेकिन नशे में धुत्त और आनंदित मारियस पर उसका कोई असर नहीं हुआ:
“ओह! आपको कितनी खुशी है!”
मारियस के माथे पर उदासी छा गई। उसने एपोनिन का हाथ पकड़ लिया:
“मुझसे एक बात की कसम खाओ!”
“कसम खाओ!” उसने कहा, “इसका क्या मतलब है? आओ! क्या तुम चाहते हो कि मैं कसम खाऊं?”
और वह हंस पड़ी।
“तुम्हारे पिता! मुझसे वादा करो, एपोनिन! मुझसे शपथ लो कि तुम यह पता अपने पिता को नहीं दोगी!”
वह अचंभित भाव से उसकी ओर मुड़ी।
“एपोनीन! तुम्हें कैसे पता चला कि मेरा नाम एपोनीन है?”
"जो मैं कहूँ, उसका वादा करो!"
लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने उसकी बात नहीं सुनी।
“वाह! आपने मुझे एपोनाइन कहकर बुलाया!”
मारियस ने एक ही झटके में उसकी दोनों भुजाओं को पकड़ लिया।
“परन्तु स्वर्ग के नाम पर मुझे उत्तर दो! मेरी बात ध्यान से सुनो, मुझसे शपथ लो कि तुम अपने पिता को यह पता नहीं बताओगे जो तुम्हें पता है!” “मेरे पिताजी!” उसने कहा। “अरे हाँ, मेरे पिताजी! चिंता मत करो। उन्हें कड़ी निगरानी में रखा गया है। वैसे भी, मुझे अपने पिताजी की क्या परवाह है!”
“लेकिन तुम मुझसे वादा नहीं करोगे!” मारियस ने हैरानी से कहा।

“मुझे छोड़ दो!” वो हंसते हुए बोली, “तुम मुझे कैसे हिला रहे हो! हाँ! हाँ! मैं वादा करती हूँ! मैं तुमसे कसम खाती हूँ! इससे मुझे क्या लेना-देना? मैं अपने पिता को पता नहीं बताऊँगी। लो! ठीक है? बस इतना ही?”
“और न ही किसी और को?” मारियस ने कहा।
“और न ही किसी और को।”
“अब,” मारियस ने बात जारी रखते हुए कहा, “मुझे वहाँ ले चलो।”
"तुरंत?"
"तुरंत।"
“चलो मेरे साथ। आह! वह कितना खुश है!” उसने कहा।
कुछ कदम चलने के बाद वह रुक गई।
“आप मेरा बहुत करीब से पीछा कर रहे हैं, महाशय मारियस। मुझे आगे जाने दीजिए, और आप भी मेरे पीछे-पीछे आइए, लेकिन ऐसा लगे नहीं कि आप ऐसा कर रहे हैं। आप जैसे भले नौजवान को मुझ जैसी महिला के साथ नहीं देखा जाना चाहिए।” उस बच्चे द्वारा जिस प्रकार उच्चारित किया गया वह शब्द, 'औरत', उसमें निहित सभी भावों को व्यक्त करने के लिए किसी भी जीभ का उपयोग पर्याप्त नहीं है। वह बारह कदम चली और फिर एक बार रुक गई; मारियस भी उसके पास आ गया। उसने उसकी ओर मुड़े बिना, बगल से उससे कहा:
“वैसे, आपको याद है आपने मुझसे कुछ वादा किया था?”
मारियस ने अपनी जेब में हाथ डाला। उसके पास दुनिया में केवल पाँच फ्रैंक ही थे, जो उसने पिता थेनार्डियर के लिए रखे थे। उसने उन्हें निकाला और एपोनिन के हाथ में रख दिया।
उसने अपनी उंगलियां खोलीं और सिक्के को जमीन पर गिरने दिया, और उदास भाव से उसकी ओर देखा।
उसने कहा, "मुझे तुम्हारे पैसे नहीं चाहिए।"

भाग **III.** रू प्लूमेट में स्थित घर

I. रहस्य से भरा घर

पिछली शताब्दी के मध्य के आसपास, पेरिस की संसद के एक मुख्य न्यायाधीश ने एक रखैल रखी हुई थी और इस तथ्य को छिपा रखा था, क्योंकि उस दौर में बड़े जमींदार अपनी रखैलों का प्रदर्शन करते थे और बुर्जुआ वर्ग उन्हें छुपाते थे। इसलिए उन्होंने फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में, सुनसान रू ब्लोमेट में, जिसे अब रू प्लूमेट कहा जाता है, उस स्थान से कुछ ही दूरी पर एक "छोटा सा घर" बनवाया था, जिसे उस समय कॉम्बैट डेस एनिमॉक्स के रूप में नामित किया गया था।

यह घर एक मंजिला मंडप से बना था; भूतल पर दो कमरे, पहली मंजिल पर दो कक्ष, नीचे रसोईघर, ऊपर एक शयनकक्ष, छत के नीचे एक अटारी, और इन सबके सामने एक बगीचा था जिसका एक बड़ा द्वार सड़क की ओर खुलता था। यह बगीचा लगभग डेढ़ एकड़ में फैला हुआ था। राहगीरों को बस इतना ही दिखाई देता था; लेकिन मंडप के पीछे एक संकरा आंगन था, और आंगन के अंत में दो कमरों और एक तहखाने वाली एक छोटी इमारत थी, जिसे जरूरत पड़ने पर बच्चे और दाई को छिपाने के लिए बनाया गया था। इस इमारत के पिछले हिस्से में एक गुप्त स्प्रिंग से खुलने वाला एक नकाबपोश दरवाजा था, जो एक लंबे, संकरे, पक्के घुमावदार गलियारे से जुड़ा हुआ था, जो खुले आसमान की ओर था और दो ऊंची दीवारों से घिरा हुआ था। ये दीवारें अद्भुत कलात्मकता से छिपी हुई थीं और मानो बगीचों और खेती योग्य भूमि के बीच खोई हुई सी लगती थीं, जिनके सभी कोणों और घुमावों का अनुसरण करते हुए, अंत में एक और दरवाजे पर जाकर समाप्त होती थीं, जिसमें एक गुप्त ताला लगा हुआ था और जो एक चौथाई लीग दूर, लगभग दूसरे छोर पर, रू डू बैबिलोन के एकांत छोर पर खुलता था।

मुख्य न्यायाधीश इसी रास्ते से प्रवेश करते थे, इसलिए जो लोग उन पर नज़र रख रहे थे और उनका पीछा कर रहे थे, वे भी बस इतना ही देख पाते थे कि न्यायाधीश हर दिन किसी रहस्यमय तरीके से कहीं चले जाते हैं, और उन्हें कभी शक नहीं होता कि रू डे बैबिलोन जाना रू ब्लोमेट जाने जैसा है। ज़मीन के चतुर खरीदारों की बदौलत, मजिस्ट्रेट अपनी ही ज़मीन पर एक गुप्त, नाले जैसा रास्ता बनाने में कामयाब रहे थे, और इस तरह बिना किसी दखल के आते-जाते रहे।

बाद में, उन्होंने गलियारे से सटी ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़ों को बाग-बगीचों और बाज़ार के बगीचों के लिए बेच दिया, और दोनों तरफ के इन भूखंडों के मालिकों को लगा कि उनके सामने एक साझा दीवार है, और उन्हें ज़रा भी शक नहीं हुआ कि उनके फूलों की क्यारियों और बागों के बीच दो दीवारों के बीच से एक लंबी, पक्की सड़क गुज़र रही है। इस विचित्रता को केवल पक्षियों ने ही देखा। संभव है कि पिछली सदी के लिनेट और टॉमटिट पक्षियों ने मुख्य न्यायाधीश के बारे में खूब गपशप की हो।

मैन्सर्ड शैली में पत्थर से निर्मित, वाटेउ शैली में लकड़ी की पैनलिंग और साज-सज्जा से सुसज्जित, अंदर से रोकाइल शैली में और बाहर से पुराने जमाने की शैली में बना यह मंडप, फूलों की तिहरी बाड़ से घिरा हुआ था, जिसमें कुछ विवेकपूर्ण, चंचल और गंभीर भाव था, जैसा कि प्रेम और राजशाही की सनक के लिए उपयुक्त है।

यह घर और गलियारा, जो अब गायब हो चुके हैं, पंद्रह साल पहले अस्तित्व में थे। 1893 में एक तांबे के कारीगर ने इसे गिराने के इरादे से घर खरीदा था, लेकिन वह कीमत चुकाने में असमर्थ रहा; देश ने उसे दिवालिया कर दिया। इस तरह, घर ने ही उस कारीगर को बर्बाद कर दिया। उसके बाद, घर खाली पड़ा रहा और धीरे-धीरे खंडहर में तब्दील हो गया, जैसा कि हर उस घर का हाल होता है जिसमें मनुष्य की उपस्थिति से जीवन का संचार नहीं होता। इसमें पुराना फर्नीचर लगा हुआ था, यह हमेशा बिक्री या किराए के लिए उपलब्ध रहता था, और 1819 से बगीचे की दीवार पर लटके पीले और अस्पष्ट अक्षरों में लिखे एक छोटे से लेख से रू प्लूमेट से गुजरने वाले दस-बारह लोगों को इस तथ्य की चेतावनी मिलती थी।

पुनर्स्थापना काल के अंत में, इन्हीं राहगीरों ने शायद गौर किया होगा कि बिल गायब हो गया था, और यहाँ तक कि पहली मंजिल के शटर भी खुले हुए थे। दरअसल, घर में कोई रहता था। खिड़कियों पर छोटे पर्दे लगे थे, जो इस बात का संकेत थे कि वहाँ कोई महिला मौजूद थी।

अक्टूबर 1829 में, एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने आकर उस घर को किराए पर ले लिया, जिसमें पीछे का भवन और रू डे बैबिलोन में समाप्त होने वाली गली भी शामिल थी। उसने इस मार्ग के दो दरवाजों के गुप्त द्वारों की मरम्मत करवा ली थी। जैसा कि हमने अभी बताया, घर अभी भी लगभग न्यायाधीश के पुराने साज-

सामान से सुसज्जित था; नए किराएदार ने कुछ मरम्मत करवाई थी, इधर-उधर की कमियों को पूरा करवाया था, आंगन के पत्थरों, फर्श की ईंटों, सीढ़ियों के पायदानों, जड़े हुए फर्श के टूटे हुए हिस्सों और जालीदार खिड़कियों के शीशों को बदलवाया था, और अंत में एक युवा लड़की और एक बुजुर्ग नौकरानी के साथ बिना किसी शोर-शराबे के वहाँ बस गया, मानो कोई चुपके से घर में प्रवेश कर रहा हो, न कि कोई अपने ही घर में। पड़ोसियों ने उसके बारे में कोई कानाफूसी नहीं की, क्योंकि वहाँ कोई पड़ोसी था ही नहीं।

यह साधारण सा दिखने वाला किरायेदार जीन वालजेन था, और वह युवती कोसेट थी। नौकरानी का नाम टूसेंट था, जिसे जीन वालजेन ने अस्पताल और बदहाली से बचाया था। वह बुजुर्ग, हकलाने वाली और ग्रामीण इलाके से आई हुई थी - इन्हीं तीन गुणों के कारण जीन वालजेन ने उसे अपने साथ ले जाने का फैसला किया था। उसने यह घर एम. फॉशेलवेंट, एक स्वतंत्र सज्जन के नाम से किराए पर लिया था। अब तक जो कुछ भी बताया गया है, उससे पाठक ने निस्संदेह थेनार्डियर की तरह ही जीन वालजेन को तुरंत पहचान लिया होगा।

जीन वालजेन ने पेटिट-पिकपस के मठ को क्यों छोड़ दिया था? आखिर क्या हुआ था?

कुछ भी नहीं हुआ था।

याद रहे कि जीन वालजेन मठ में बहुत खुश थे, इतने खुश कि अंततः उनकी अंतरात्मा को झकझोर दिया। वे कोसेट को हर दिन देखते थे, उनके भीतर पितृत्व की भावना बढ़ती जा रही थी, वे उस बच्ची की आत्मा के बारे में सोचते रहते थे, वे मन ही मन सोचते थे कि वह उनकी है, कोई उसे उनसे छीन नहीं सकता, यह खुशी हमेशा बनी रहेगी, वह निश्चित रूप से नन बनेगी, क्योंकि उसे हर दिन इसके लिए प्रेरित किया जा रहा था, इस प्रकार मठ अब से उसके लिए भी वही ब्रह्मांड था जो उनके लिए था, वे वहीं बूढ़े होंगे, वह वहीं बड़ी होगी, वह वहीं बूढ़ी होगी और उनकी मृत्यु भी वहीं होगी; संक्षेप में, इस सुखद आशा में, कोई अलगाव संभव नहीं था। इस पर विचार करते हुए वे दुविधा में पड़ गए। उन्होंने स्वयं से प्रश्न किया। उन्होंने स्वयं से पूछा कि क्या वह सारी खुशी वास्तव में उनकी थी, क्या वह किसी और की खुशी से, उस बच्ची की खुशी से नहीं बनी थी जिसे वे, एक बूढ़े व्यक्ति, छीन रहे थे और चुरा रहे थे; क्या यह चोरी नहीं थी? उसने मन ही मन कहा कि इस बच्ची को जीवन त्यागने से पहले उसे जानने का पूरा अधिकार है। उसे पहले से ही, और बिना उससे सलाह लिए, सभी सुखों से

वंचित करना, उसे सभी कष्टों से बचाने के बहाने, उसके अकेलेपन की अज्ञानता का फायदा उठाकर उसमें कृत्रिम धर्म की शिक्षा का बीज बोना, एक इंसान को उसके स्वभाव से वंचित करना और ईश्वर से झूठ बोलना है। और कौन जानता है कि जब कोसेट को एक दिन इन सब बातों का पता चलेगा और वह दुखी होकर नन बन जाएगी, तो क्या वह उससे नफरत नहीं करेगी? यह आखिरी विचार, लगभग स्वार्थी, बाकी विचारों से कम साहसी, लेकिन उसके लिए असहनीय था। उसने मठ छोड़ने का निश्चय कर लिया।

उन्होंने यही निश्चय किया; उन्होंने पीड़ा के साथ यह स्वीकार किया कि यह आवश्यक था। आपत्ति की कोई गुंजाइश नहीं थी। इन चार दीवारों के बीच पाँच वर्षों के प्रवास और गुमनामी ने भय के तत्वों को स्वाभाविक रूप से नष्ट या विलीन कर दिया था। वे शांतिपूर्वक लोगों के बीच लौट सकते थे। वे बूढ़े हो चुके थे, और सब कुछ बदल चुका था। अब उन्हें कौन पहचान पाएगा? और फिर, सबसे बुरी स्थिति का सामना करने के लिए, खतरा केवल उन्हीं के लिए था, और उन्हें कोसेट को मठ में भेजने का कोई अधिकार नहीं था, जिस कारण उन्हें स्वयं युद्ध के लिए भेजा गया था। इसके अलावा, अधिकार के सामने खतरा क्या है? अंततः, विवेकपूर्ण होने और एहतियात बरतने में उन्हें कोई बाधा नहीं थी।

कोसेट की शिक्षा लगभग पूरी हो चुकी थी।

एक बार दृढ़ निश्चय कर लेने के बाद, वह अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। अवसर जल्द ही सामने आ गया। बूढ़े फाउचेलेवेंट की मृत्यु हो गई।

जीन वालजेन ने आदरणीय मठाध्यक्षा से मिलने का अनुरोध किया और उन्हें बताया कि अपने भाई की मृत्यु के बाद उन्हें थोड़ी सी विरासत मिली है, जिससे वे अब बिना काम किए जीवन यापन कर सकते हैं। इसलिए वे मठ की सेवा छोड़कर अपनी बेटी को अपने साथ ले जाना चाहते हैं; लेकिन चूंकि कोसेट ने प्रतिज्ञा नहीं ली थी, इसलिए उसे मुफ्त शिक्षा प्राप्त करना उचित नहीं था, इसलिए उन्होंने आदरणीय मठाध्यक्षा से विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि वे कोसेट द्वारा वहां बिताए गए पांच वर्षों के मुआवजे के रूप में समुदाय को पांच हजार फ़्रैंक की राशि भेंट करने का निर्णय लें।

इस प्रकार जीन वाल्जेन ने शाश्वत आराधना के मठ को छोड़ दिया।

कॉन्वेंट से निकलते समय, उन्होंने अपने हाथों में वह छोटा सूटकेस उठा लिया जिसकी चाबी वे अब भी अपने पास रखते थे, और किसी भी दरबान को उसे छूने नहीं दिया। इससे कोसेट हैरान रह गई, क्योंकि उसमें से शव को संरक्षित करने की गंध आ रही थी।

हम सीधे-सीधे कह देते हैं कि यह संदूक कभी उससे अलग नहीं हुआ। यह हमेशा उसके कमरे में रहता था। जब भी वह कहीं जाता, तो अक्सर यही पहली और इकलौती चीज़ होती थी जिसे वह अपने साथ ले जाता था। कोसेट इस पर हंसती थी और इस संदूक को उसका "अविभाज्य" कहती थी, "मुझे इससे ईर्ष्या होती है।"

फिर भी, जीन वालजेन गहरी चिंता के बिना खुले आसमान के नीचे दोबारा प्रकट नहीं हुए।

उसने प्लूमेट गली में घर का पता लगाया और वहाँ छिप गया। इसके बाद से उसका नाम यह हो गया: - अल्टिम फाउचेलेवेंट।

उसी समय उन्होंने पेरिस में दो और अपार्टमेंट किराए पर लिए, ताकि वे एक ही इलाके में रहने की तुलना में कम ध्यान आकर्षित कर सकें, और ताकि जरूरत पड़ने पर थोड़ी सी भी परेशानी होने पर वे वहां से निकल सकें, और संक्षेप में कहें तो, ताकि वे फिर कभी उस रात की तरह असहाय न रह जाएं जब वे जावर्ट से चमत्कारिक रूप से बच निकले थे। ये दोनों अपार्टमेंट बहुत ही दयनीय और दिखने में साधारण थे, और एक-दूसरे से काफी दूर स्थित दो इलाकों में थे, एक रू डे ल'ओएस्ट में और दूसरा रू डे ल'होमे आर्मे में।

वह समय-समय पर, कभी रुए डे ल'होमे आर्मे, कभी रुए डे ल'ओएस्ट जाता था, और टौसेंट को साथ लिए बिना एक महीना या छह सप्ताह बिताता था। वह अपने लिए पोर्टर्स से सेवा लेता था और खुद को उपनगरों का एक सज्जन व्यक्ति बताता था, जो अपने पैसों से गुजारा करता था और शहर में उसका एक छोटा सा अस्थायी ठिकाना था। पुलिस से बचने के लिए इस उच्च सद्गुणी व्यक्ति के पेरिस में तीन ठिकाने थे।

II. जीन वालजेन एक राष्ट्रीय रक्षक के रूप में

हालांकि, सही मायने में, वह रू प्लूमेट में रहता था, और उसने वहां अपना जीवन निम्न प्रकार से व्यवस्थित किया था:—

कोसेट और नौकरानी ने मंडप पर कब्जा कर लिया था; उसके पास रंगीन कांच की खिड़कियों वाला बड़ा शयनकक्ष, सोने की परत चढ़ी चौखटों वाला शयनकक्ष, और पर्दों और विशाल आरामकुर्सियों से सुसज्जित न्यायाधीश का ड्राइंग रूम था; उसके पास बगीचा भी था। जीन वालजेन ने मदर गौचर की दुकान से रू डू फिगुइर-सेंट-पॉल में तीन रंगों का प्राचीन दमिश्क कपड़े का चंदवा वाला पलंग और एक सुंदर फ़ारसी कालीन खरीदा और उसे कोसेट के कमरे में रखवाया। इन शानदार पुरानी चीजों की भव्यता को कम करने के लिए, उसने इस साज-सज्जा में युवा लड़कियों के लिए उपयुक्त सभी आकर्षक और सुंदर छोटे फर्नीचर के टुकड़े मिला दिए, जैसे कि एक अलमारी, सोने की किनारी वाली किताबों से भरी एक बुककेस, एक स्याहीदानी, एक सोख्ता कागज, सीप से जड़ी एक मेज, चांदी की परत चढ़ी एक ड्रेसिंग केस, और जापानी चीनी मिट्टी के बर्तनों का एक टॉयलेट सेट। पहली मंजिल की खिड़कियों पर लाल रंग के तीन रंगों वाले लंबे दमिश्क पर्दे लगे थे, ठीक वैसे ही जैसे बिस्तर पर थे। भूतल पर टेपेस्ट्री के पर्दे थे। पूरी सर्दी भर कोसेट का छोटा सा घर ऊपर से नीचे तक गर्म रहता था। जीन वालजेन पिछवाड़े के आंगन के अंत में बने चौकीदार के छोटे से कमरे में रहते थे, जिसमें एक तहखाने पर गद्दा, एक सफेद लकड़ी की मेज, दो पुआल की कुर्सियाँ, मिट्टी का पानी का जग, एक शेल्फ पर कुछ पुरानी किताबें, एक कोने में उनका प्यारा सूटकेस था, और कभी आग नहीं जलती थी। वे कोसेट के साथ भोजन करते थे, और अपने लिए मेज पर एक काली रोटी रखते थे।

जब टूसेंट आया, तो उसने उससे कहा: "इस घर की मालकिन यह युवती है।" - "और आप, महाशय?" टूसेंट ने आश्चर्य से उत्तर दिया। - "मैं मालिक से कहीं बेहतर हूँ, मैं पिता हूँ।"

कोसेट को कॉन्वेंट में गृहस्थी का प्रशिक्षण दिया गया था, और वह अपने खर्चों का हिसाब रखती थी, जो बहुत ही संयमित थे। प्रतिदिन, जीन वालजेन कोसेट का हाथ पकड़कर उसे सैर पर ले जाते थे। वह उसे लक्ज़मबर्ग ले जाते, जो सबसे कम भीड़भाड़ वाला रास्ता था, और हर रविवार को उसे सेंट-जैक्स-डु-हाउट-पास में प्रार्थना सभा में ले जाते थे, क्योंकि वह काफ़ी दूर था। चूंकि वह इलाका बहुत गरीब था, इसलिए वह वहाँ बड़े पैमाने पर दान करते थे, और चर्च में गरीब लोग उनके चारों ओर जमा हो जाते थे, जिससे उन्हें थेनार्डियर का यह पत्र मिला था: "सेंट-जैक्स-डु-हाउट-पास के चर्च के परोपकारी सज्जन को।" उन्हें कोसेट को गरीबों और बीमारों से मिलवाने का बहुत शौक था। रू प्लूमेट स्थित उनके घर में कोई अजनबी कभी प्रवेश नहीं करता था। टूसेंट उनके लिए राशन लाते थे, और जीन वालजेन स्वयं पास के बुलेवार्ड पर स्थित एक फव्वारे से पानी लेने जाते थे। उनकी लकड़ी और शराब को चट्टानों से बनी एक अर्ध-भूमिगत गुफा में रखा गया था, जो रू डे बेबिलोन के पास स्थित थी और जो पहले मुख्य न्यायाधीश के लिए एक गुफा के रूप में काम करती थी; क्योंकि मूर्खताओं और "छोटे घरों" के युग में, कोई भी प्रेम गुफा के बिना नहीं होता था।

रुए डे बैबिलोन की ओर खुलने वाले दरवाजे में एक बक्सा था, जो पत्रों और कागजों को रखने के लिए बना था; लेकिन रुए प्लूमेट में बने मंडप के तीनों निवासियों को न तो कागज मिलते थे और न ही पत्र, इसलिए उस बक्से का पूरा उपयोग, जो पहले एक प्रेम प्रसंग का मध्यस्थ और एक प्रेम में डूबे वकील का विश्वासपात्र हुआ करता था, अब कर-संग्रहकर्ता के नोटिस और गार्ड के बुलावे तक ही सीमित रह गया था। स्वतंत्र सज्जन एम. फॉशेलवेंट राष्ट्रीय गार्ड के सदस्य थे; वे 1831 की जनगणना की पेचीदगियों से बच नहीं पाए थे। उस समय एकत्रित की गई नगरपालिका की जानकारी पेटिट-पिकपस के मठ तक भी पहुँच गई थी, जो एक प्रकार का अभेद्य और पवित्र बादल था, जहाँ से जीन वालजेन आदरणीय वेश में प्रकट हुए थे, और इसलिए नगर पालिका की दृष्टि में गार्ड की जिम्मेदारी संभालने के योग्य थे।

साल में तीन या चार बार, जीन वालजेन अपनी वर्दी पहनकर घुड़सवार गार्ड के रूप में तैनात होते थे; हालाँकि वे यह स्वेच्छा से करते थे; यह एक ऐसा सटीक वेश था जो उन्हें सबके बीच घुलमिल जाने के बावजूद एकांत का अनुभव कराता

था। जीन वालजेन अभी-अभी साठ वर्ष के हुए थे, जो कानूनी रूप से छूट की आयु थी; लेकिन वे पचास वर्ष से अधिक के नहीं लगते थे; इसके अलावा, उन्हें अपने सार्जेंट-मेजर से बचने या कॉम्टे डी लोबाउ से बहस करने की कोई इच्छा नहीं थी; उनके पास कोई नागरिक दर्जा नहीं था, वे अपना नाम, अपनी पहचान, अपनी उम्र, सब कुछ छिपा रहे थे; और जैसा कि हमने अभी कहा, उन्होंने स्वेच्छा से राष्ट्रीय गार्ड के रूप में अपना कर्तव्य निभाया; उनकी महत्वाकांक्षा का सार कर चुकाने वाले किसी भी अन्य व्यक्ति के समान दिखना था। इस व्यक्ति के भीतर आदर्श देवदूत था, और बाहर बुर्जुआ वर्ग।

लेकिन एक बात पर ध्यान दें; जब जीन वालजेन कोसेट के साथ बाहर जाते थे, तो वे वैसे ही कपड़े पहनते थे जैसा कि पाठक पहले ही देख चुके हैं, और उनका अंदाज़ किसी सेवानिवृत्त अधिकारी जैसा होता था। जब वे अकेले बाहर जाते थे, जो आमतौर पर रात में होता था, तो वे हमेशा मज़दूरों की पतलून और ब्लाउज़ पहनते थे, और एक टोपी लगाते थे जिससे उनका चेहरा ढका रहता था। क्या यह सावधानी थी या विनम्रता? दोनों। कोसेट अपने भाग्य के रहस्यमय पहलू से परिचित थीं, और उन्होंने अपने पिता की इन आदतों पर शायद ही ध्यान दिया। जहाँ तक टूसेंट की बात है, वे जीन वालजेन का बहुत सम्मान करती थीं, और उन्हें लगता था कि वे जो भी करते हैं वह सही है।

एक दिन, उसके कसाई ने, जिसने जीन वालजेन की एक झलक देख ली थी, उससे कहा: "वह तो एक अजीब आदमी है।" उसने जवाब दिया: "वह तो संत है।"

जीन वालजेन, कोसेट और टूसेंट कभी भी रू डे बैबिलोन के दरवाजे के अलावा किसी और दरवाजे से अंदर या बाहर नहीं आते थे। बगीचे के फाटक से देखे बिना यह अनुमान लगाना मुश्किल होता कि वे रू प्लूमेट में रहते थे। वह फाटक हमेशा बंद रहता था। जीन वालजेन ने बगीचे को बिना खेती के छोड़ दिया था, ताकि किसी का ध्यान आकर्षित न हो।

इसमें शायद उनसे गलती हुई।

III. पत्तियाँ और पत्तियाँ

इस प्रकार, लगभग आधी सदी तक उपेक्षित रहने के कारण, यह उद्यान असाधारण और मनमोहक बन गया था। चालीस वर्ष पूर्व राहगीर इसे निहारने के लिए रुक जाते थे, उन्हें इस बात का जरा भी आभास नहीं था कि इसकी हरी-भरी गहराई में कितने रहस्य छिपे हैं। उस युग के अनेक स्वप्नद्रष्टा अक्सर अपने विचारों और दृष्टि को उस प्राचीन, ताले लगे द्वार की सलाखों के बीच से झाँकने देते थे, जो मुड़ा हुआ, लड़खड़ाता हुआ, हरे और काई से ढके दो खंभों से जुड़ा हुआ था, और जिसके ऊपर एक विचित्र अरबी नक्काशीदार अग्रभाग बना हुआ था।

एक कोने में पत्थर की बेंच थी, एक-दो फफूंदी लगी मूर्तियाँ थीं, कई जालीदार तख्तियाँ थीं जिनके कील समय के साथ निकल गए थे और दीवार पर सड़ रही थीं, और न तो कोई पगडंडी थी और न ही घास; लेकिन हर जगह पर्याप्त घास थी। बागवानी का दौर खत्म हो चुका था और प्रकृति लौट आई थी। खरपतवार बहुतायत में थे, जो जमीन के उस बंजर कोने के लिए सौभाग्य की बात थी। गिलिफ्लावर का उत्सव भव्य था। इस बगीचे में किसी भी चीज ने जीवन की ओर चीजों के पवित्र प्रयास में बाधा नहीं डाली; उनके बीच आदरणीय विकास का राज था। पेड़ बिच्छू-बूटी की ओर झुक गए थे, पौधे ऊपर की ओर उग आए थे, शाखाएँ झुक गई थीं, जो धरती पर रेंगती हैं वे हवा में फैलने वाली चीजों की तलाश में चली गई थीं, जो हवा में तैरती हैं वे काई में रेंगने वाली चीजों की ओर झुक गई थीं; तने, शाखाएँ, पत्तियाँ, रेशे, गुच्छे, लताएँ, अंकुर, कांटे, एक दूसरे में मिल गए थे, एक दूसरे को पार कर गए थे, विवाह कर लिया था, एक दूसरे में विलीन हो गए थे; घनी और घनिष्ठ आलिंगन में लिपटी वनस्पति ने, सृष्टिकर्ता की कृपा दृष्टि के नीचे, उस तीन सौ वर्ग फुट के चौकोर घेरे में, मानव बंधुत्व के प्रतीक, भाईचारे के पवित्र रहस्य का उत्सव मनाया और उसे सिद्ध किया था। यह उद्यान अब उद्यान मात्र नहीं रहा, बल्कि एक विशाल झाड़ी बन गया था, अर्थात् एक जंगल की तरह अभेद्य, एक शहर की तरह आबाद, एक घोंसले की तरह कांपता हुआ, एक गिरजाघर की तरह गंभीर, एक गुलदस्ते की तरह सुगंधित, एक मकबरे की तरह एकांत, और एक भीड़ की तरह जीवंत।

फ्लोरियल में, यह विशाल झाड़ी, अपने द्वार के पीछे और अपनी चारदीवारी के भीतर स्वतंत्र रूप से, अंकुरण के गुप्त कार्य में लीन हो गई, उगते सूरज में कांप उठी, मानो कोई जानवर ब्रह्मांडीय प्रेम की सांसें पी रहा हो, अप्रैल के रस को अपनी नसों में उमड़ते और उबलते हुए महसूस कर रहा हो, और हवा में अपने विशाल, अद्भुत हरे बालों को लहरा रहा हो, जो नम धरती पर, विकृत मूर्तियों पर, मंडप की टूटती सीढ़ियों पर, और यहाँ तक कि सुनसान सड़क के फुटपाथ पर भी बिखरे हुए थे, तारों जैसे फूल, मोतियों जैसी ओस, उर्वरता, सुंदरता, जीवन, आनंद, सुगंध। दोपहर में, हजारों सफेद तितलियाँ वहाँ शरण लेती थीं, और छाया के बीच बर्फ के टुकड़ों को घूमते हुए देखना एक दिव्य दृश्य था। वहाँ, हरियाली की उन रंगीन छायाओं में, मासूम आवाजों का एक समूह आत्मा से मधुरता से बात करता था, और चहचहाहट जो कहना भूल गई, उसे गुनगुनाहट ने पूरा किया। शाम के समय, बगीचे से एक स्वप्निल धुंध उठी और उसे घेर लिया; कोहरे की एक चादर, एक शांत और दिव्य उदासी ने उसे ढक लिया; हनीसकल और कॉन्वोल्वुलस की मदहोश कर देने वाली सुगंध हर तरफ से ऐसे बह रही थी मानो कोई सूक्ष्म और सूक्ष्म विष हो; शाखाओं के बीच ऊंघते कठफोड़वा और वैगटेल की अंतिम पुकारें सुनाई दे रही थीं; पक्षियों और पेड़ों की पवित्र आत्मीयता का अनुभव हो रहा था; दिन में पंख पत्तियों को आनंदित करते हैं, रात में पत्तियां पंखों की रक्षा करती हैं।

सर्दियों में झाड़ियाँ काली, टपकती हुई, काँपती हुई, थरथराती हुई होती थीं और घर की हल्की सी झलक दिखाई देती थी। डालियों पर फूलों और फूलों में ओस की जगह, ठंडे, घने पीले पत्तों के कालीन पर घोंघों के लंबे चाँदी जैसे निशान दिखाई देते थे; लेकिन किसी भी रूप में, किसी भी दृष्टि से, हर मौसम में, बसंत, सर्दी, गर्मी, पतझड़, यह छोटा सा कोना उदासी, चिंतन, एकांत, स्वतंत्रता, मनुष्य की अनुपस्थिति और ईश्वर की उपस्थिति का एहसास कराता था; और जंग लगे पुराने द्वार में मानो यह कहने का भाव था: "यह बगीचा मेरा है।"

पेरिस के फुटपाथ चारों ओर फैले हुए थे, वारेनेस स्ट्रीट के क्लासिक और शानदार होटल कुछ ही कदमों की दूरी पर थे, इनवैलिड्स का गुंबद पास ही था, चैंबर ऑफ डेप्युटीज़ भी ज़्यादा दूर नहीं था; बरगंडी स्ट्रीट और सेंट-डोमिनिक स्ट्रीट की गाड़ियाँ आसपास व्यर्थ ही शान से गड़गड़ा रही थीं;

पीले, भूरे, सफेद और लाल रंग की बसें पड़ोसी चौराहों पर एक-दूसरे को पार करने की व्यर्थ कोशिश कर रही थीं; प्लूमेट स्ट्रीट वीरान थी; और पूर्व मालिकों की मृत्यु, यहाँ से गुज़री क्रांति, प्राचीन धन का पतन, अनुपस्थिति, विस्मृति, चालीस वर्षों का परित्याग और विधवापन, इस विशेष स्थान पर फर्न, मुलेन, हेमलॉक, यारो, लंबी घास, हल्के हरे रंग के बड़े पत्तों वाले बड़े घुंघराले पौधे, छिपकलियाँ, भृंग, बेचैन और तेज़ कीड़े- मकोड़े वापस लाने के लिए पर्याप्त थे; पृथ्वी की गहराइयों से फूटकर उन चार दीवारों के बीच एक अवर्णनीय और जंगली भव्यता का पुन: प्रकट होना; और प्रकृति, जो मनुष्य की छोटी-मोटी व्यवस्थाओं को अस्त-व्यस्त कर देती है, और जो चींटी से लेकर बाज तक, जहाँ भी फैलती है, अपने आप को पूरी तरह से बिखेर देती है, एक छोटे से पेरिसियन बगीचे में उतनी ही उग्र शक्ति और भव्यता के साथ खिल उठती है जितनी कि नई दुनिया के एक अछूते जंगल में।

वास्तव में कुछ भी छोटा नहीं है; प्रकृति के गहन और व्यापक प्रभाव से अवगत कोई भी व्यक्ति इसे जानता है। यद्यपि दर्शनशास्त्र को कारण या प्रभाव को परिभाषित करने में पूर्ण संतुष्टि नहीं मिलती, फिर भी चिंतनशील व्यक्ति बल के इन विघटनों से उत्पन्न असीम आनंद में लीन हो जाता है जो अंततः एकता में परिणत होते हैं। सब कुछ एक दूसरे के लिए परिश्रम करता है।

बादलों पर बीजगणित लागू होता है; तारे का विकिरण गुलाब को लाभ पहुँचाता है; कोई भी विचारक यह कहने का साहस नहीं करेगा कि नागफनी की सुगंध नक्षत्रों के लिए बेकार है। तो फिर, अणु की गति की गणना कौन कर सकता है? हम कैसे जानते हैं कि संसारों की रचना रेत के कणों के गिरने से निर्धारित नहीं होती? कौन जानता है असीम महान और असीम लघु के परस्पर उतार-चढ़ाव को, अस्तित्व की गहराइयों में कारणों की प्रतिध्वनियों को, और सृष्टि के हिमस्खलन को? सबसे छोटा कीड़ा भी महत्वपूर्ण है; महान लघु है, लघु महान है; सब कुछ आवश्यकता में संतुलित है; मन के लिए एक विस्मयकारी दृष्टि। प्राणियों और वस्तुओं के बीच अद्भुत संबंध हैं; उस अक्षय संपूर्ण में, सूर्य से लेकर लार्वा तक, कोई भी दूसरे को तुच्छ नहीं समझता; सभी को एक दूसरे की आवश्यकता है। प्रकाश पृथ्वी की सुगंधों को नीले आकाश की गहराइयों में अनजाने में नहीं ले जाता; रात सोए हुए फूलों को तारों का सार वितरित करती है। उड़ने वाले सभी पक्षियों के पैरों में अनंत का धागा लिपटा

रहता है। अंकुरण की प्रक्रिया उल्कापिंड के विस्फोट और अबाबील द्वारा अंडे को फोड़ने की चोंच मारने जैसी जटिल है, और यह केंचुए के जन्म और सुकरात के आगमन को एक ही स्तर पर लाती है। जहाँ दूरबीन समाप्त होती है, वहाँ सूक्ष्मदर्शी शुरू होता है। इन दोनों में से किसका दृष्टि क्षेत्र अधिक व्यापक है? चुनिए। थोड़ी सी मिट्टी फूलों का समूह है; एक नीहारिका तारों का चींटी-टीला है। बुद्धि की वस्तुओं और पदार्थ के तथ्यों के बीच भी यही विविधता, और उससे भी कहीं अधिक अभूतपूर्व, विद्यमान है। तत्व और सिद्धांत आपस में इस हद तक घुलमिल जाते हैं, जुड़ जाते हैं, विवाह करते हैं, गुणा करते हैं कि अंततः भौतिक और नैतिक जगत एक ही स्पष्टता तक पहुँच जाते हैं। यह घटना निरंतर स्वयं पर ही लौटती रहती है। विशाल ब्रह्मांडीय आदान-प्रदान में, सार्वभौमिक जीवन अज्ञात मात्राओं में आता-जाता रहता है, पूरी तरह से अदृश्य रहस्य में डूबा हुआ, हर चीज का उपयोग करते हुए, एक भी सपने या नींद को खोए बिना, यहाँ एक छोटा सा जीव बोता है, वहाँ एक ग्रह को चूर-चूर कर देता है, दोलन और घुमाव करते हुए, प्रकाश को एक शक्ति और विचार को एक तत्व बनाता है, फैला हुआ और अदृश्य, उस ज्यामितीय बिंदु, "मैं" को छोड़कर सब कुछ विलीन कर देता है; हर चीज को आत्मा-परमाणु में वापस लाता है; ईश्वर में हर चीज का विस्तार करता है, शिखर से आधार तक सभी गतिविधियों को एक चक्करदार तंत्र के अंधकार में उलझा देता है, एक कीट की उड़ान को पृथ्वी की गति से जोड़ता है, वश में करता है, कौन जानता है? क्या यह केवल नियम की समानता के कारण है, आकाश में धूमकेतु का विकास पानी की बूंद में इन्फ्यूसोरिया के घूमने के समान है। मन से बनी एक मशीन। विशाल गियरिंग, जिसका मुख्य इंजन मच्छर है, और जिसका अंतिम पहिया राशिचक्र है।

IV. द्वार परिवर्तन

ऐसा प्रतीत होता था कि यह उद्यान, जो पुराने समय में अनैतिक रहस्यों को छुपाने के लिए बनाया गया था, अब रूपांतरित होकर पवित्र रहस्यों को आश्रय देने के लिए उपयुक्त हो गया था। अब यहाँ न तो मंडप थे, न ही खेल के मैदान, न ही सुरंगें, न ही गुफाएँ; चारों ओर एक भव्य, अव्यवस्थित अंधकार छाया हुआ था, मानो एक पर्दा हो। पाफोस स्वर्ग में बदल गया था। यह कहना असंभव है कि पश्चाताप के किस तत्व ने इस एकांतवास को पवित्र बना दिया था। यह फूल बेचने वाली अब आत्मा को अपना फूल अर्पित कर रही थी। यह चंचल उद्यान, जो पहले निश्चित रूप से अनैतिक था, अब पवित्रता और शालीनता में लौट आया था। एक न्यायाधीश, एक माली, एक सज्जन व्यक्ति जो स्वयं को लैमोइग्नन का वंशज समझता था, और एक अन्य सज्जन व्यक्ति जो स्वयं को लेनोत्रे का वंशज समझता था, ने मिलकर इसे नया रूप दिया, काटा, संवारा, सजाया, और इसे भव्यता का रूप दिया; प्रकृति ने एक बार फिर इस पर अधिकार कर लिया था, इसे छाया से भर दिया था, और इसे प्रेम के लिए व्यवस्थित कर दिया था।

इस एकांत में एक ऐसा हृदय भी था जो पूरी तरह से तैयार था। प्रेम को केवल स्वयं को प्रकट करना था; यहाँ उसे हरियाली, घास, काई, पक्षियों के दृश्य, कोमल छायाएँ, हिलती हुई शाखाएँ और मधुरता, विश्वास, निष्ठा, आशा, आकांक्षा और कल्पना से बनी एक आत्मा का मंदिर प्राप्त था।

कोसेट ने कॉन्वेंट तब छोड़ दिया था जब वह लगभग बच्ची ही थी; वह चौदह साल से थोड़ी बड़ी थी, और वह "कृतघ्नता की उम्र" में थी; जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, उसकी आँखों को छोड़कर, वह सुंदर होने के बजाय सादी थी; उसके चेहरे पर कोई भद्दापन नहीं था, लेकिन वह अनाड़ी, पतली, डरपोक और साहसी एक साथ थी, संक्षेप में, एक बड़ी हो चुकी छोटी लड़की।

उसकी शिक्षा पूरी हो चुकी थी, यानी उसे धर्म की शिक्षा दी गई थी, और सबसे बढ़कर भक्ति की; फिर "इतिहास" की शिक्षा, यानी मठों में इतिहास के नाम से जानी जाने वाली सामग्री, भूगोल, व्याकरण, क्रियाविशेषण, फ्रांस के राजाओं का इतिहास, थोड़ा संगीत, थोड़ा चित्रकारी आदि; लेकिन अन्य सभी मामलों में

वह पूरी तरह अनभिज्ञ थी, जो एक बड़ा आकर्षण और एक बड़ा खतरा है। एक युवती की आत्मा को अंधेरे में नहीं छोड़ना चाहिए; बाद में, वहाँ एक अंधेरे कमरे की तरह, बहुत ही अचानक और जीवंत भ्रम पैदा हो जाते हैं। उसे कोमल और विवेकपूर्ण ढंग से प्रबुद्ध किया जाना चाहिए, वास्तविकताओं के कठोर और प्रत्यक्ष प्रकाश के बजाय उनके प्रतिबिंब से। एक उपयोगी और सौम्य रूप से संयमित अर्धप्रकाश जो बचकाने भय को दूर करता है और पतन को रोकता है। केवल मातृत्व की सहज प्रवृत्ति, कुंवारी की यादों और स्त्री के अनुभव से बनी वह अद्भुत अंतर्ज्ञान ही जानती है कि इस अर्धप्रकाश को कैसे उत्पन्न किया जाए और इसमें क्या शामिल होना चाहिए।

इस सहज प्रवृत्ति का कोई विकल्प नहीं है। दुनिया की सारी ननें भी एक युवा लड़की की आत्मा के निर्माण में एक माँ के बराबर महत्व नहीं रखतीं।

कोसेट की कोई माँ नहीं थी। उसकी कई माताएँ थीं, एक से अधिक संख्या में।

जीन वाल्जेन की बात करें तो, वह वास्तव में पूरी तरह से कोमल और चिंतित थे; लेकिन वह केवल एक बूढ़े व्यक्ति थे और उन्हें कुछ भी पता नहीं था।

अब, शिक्षा के इस कार्य में, एक महिला को जीवन के लिए तैयार करने के इस गंभीर मामले में, उस विशाल अज्ञानता से लड़ने के लिए किस विज्ञान की आवश्यकता है जिसे मासूमियत कहा जाता है!

किसी युवती को भावनाओं के लिए मठ से बेहतर कोई तैयारी नहीं करवा सकता। मठ विचारों को अज्ञात की ओर मोड़ देता है। इस प्रकार हृदय अपने आप में सिमट जाता है, क्योंकि वह उमड़ नहीं सकता, और गहरा होता जाता है, क्योंकि वह फैल नहीं सकता। इसीलिए कल्पनाएँ, अटकलें, अनुमान, प्रेम कहानियों की रूपरेखा, रोमांच की इच्छा, काल्पनिक रचनाएँ, मन के आंतरिक अंधकार में निर्मित इमारतें, गंभीर और गुप्त ठिकाने जहाँ भावनाएँ खुलते ही तुरंत अपना ठिकाना पा लेती हैं। मठ एक ऐसा संकुचन है जो मानव हृदय पर विजय पाने के लिए जीवन भर बना रहना चाहिए।

कॉन्वेंट छोड़ने के बाद, कोसेट को रू प्लूमेट स्थित उस घर से अधिक सुखद और खतरनाक कुछ और नहीं मिल सकता था। यह एकांत का विस्तार और स्वतंत्रता की शुरुआत थी; एक बंद बगीचा, लेकिन एक ऐसी प्रकृति जो तीखी, समृद्ध, कामुक और

सुगंधित थी; कॉन्वेंट जैसे ही सपने, लेकिन युवा पुरुषों की झलक के साथ; एक दरवाज़ा, लेकिन जो सड़क पर खुलता था।

फिर भी, जब वह वहाँ पहुँची, तो हम दोहराते हैं, वह मात्र एक बच्ची थी। जीन वालजेन ने यह उपेक्षित बगीचा उसे सौंप दिया। उन्होंने उससे कहा, "इसमें जो चाहो करो।" यह सुनकर कोसेट को आनंद आया; उसने सारे पेड़-पौधे और पत्थर पलट दिए, वह "जानवरों" की खोज करने लगी; वह उसमें खेलने लगी, उस समय की प्रतीक्षा करते हुए जब वह उसमें सपने देखेगी; वह इस बगीचे से उन कीड़ों के लिए प्यार करती थी जो उसे घास के बीच अपने पैरों के नीचे मिलते थे, और उस दिन की प्रतीक्षा करती थी जब वह इसे उन तारों के लिए प्यार करेगी जो वह अपने सिर के ऊपर पेड़ों की डालियों के बीच से देखेगी।

और फिर, वह अपने पिता, यानी जीन वालजेन से, पूरे दिल से प्यार करती थी, एक मासूम पुत्रवत प्रेम से जिसने उस भले आदमी को उसका प्रिय और आकर्षक साथी बना दिया था। यह याद किया जाएगा कि एम. मैडेलीन को बहुत पढ़ने की आदत थी। जीन वालजेन ने भी इस आदत को जारी रखा था; वह अच्छी तरह से बातचीत करने लगे थे; उनके पास एक सच्चे और विनम्र मन की छिपी हुई समृद्धि और वाक्पटुता थी जो सहज रूप से विकसित हुई थी। उन्होंने अपनी दयालुता को संतुलित करने के लिए पर्याप्त तीक्ष्णता बनाए रखी थी; उनका दिमाग कठोर था और उनका दिल कोमल। लक्ज़मबर्ग में उनकी बातचीत के दौरान, उन्होंने उसे हर बात की व्याख्या दी, जो उन्होंने पढ़ी थी और जो उन्होंने झेला था, उसके आधार पर। जब वह उन्हें सुन रही थी, कोसेट की आँखें इधर-उधर भटक रही थीं।

कोसेट के मन को शांत करने के लिए यह साधारण सा आदमी ही काफी था, ठीक वैसे ही जैसे उसकी आँखों को वह जंगली बगीचा सुकून देता था। तितलियों का पीछा करते- करते वह हाँफते हुए उसके पास आई और बोली: “आह! मैं कितनी दौड़ी!” उसने उसके माथे पर चुंबन किया।

कोसेट उस भले आदमी से बहुत प्यार करती थी। वह हमेशा उसके पीछे-पीछे रहती थी। जहाँ जीन वालजेन होता था, वहाँ सुख होता था। जीन वालजेन न तो आलीशान घर में रहता था और न ही बगीचे में; उसे फूलों से भरे बाड़े की बजाय पक्के आंगन में ज़्यादा आनंद आता था, और कालीन से सजे बड़े ड्राइंग रूम की बजाय, जिसमें गद्दीदार कुर्सियाँ लगी थीं, उसके भूसे से बनी कुर्सियों वाले

छोटे से कमरे में ज़्यादा आनंद आता था। जीन वालजेन कभी-कभी उससे मुस्कुराते हुए कहता था, "अपने कमरे में जाओ! मुझे थोड़ा अकेला छोड़ दो!" उसने उसे वो मनमोहक और कोमल डांट-फटकार दी जो एक बेटी द्वारा अपने पिता को दी जाने पर बेहद सुंदर लगती है।
“पिताजी, मुझे आपके कमरों में बहुत ठंड लग रही है; यहाँ कालीन और चूल्हा क्यों नहीं है?”
“प्यारे बच्चे, मुझसे बेहतर स्थिति में बहुत से लोग हैं जिनके पास रहने के लिए छत तक नहीं है।”
"तो फिर मेरे कमरों में आग क्यों लगी है, और बाकी सब कुछ क्यों मौजूद है जिसकी जरूरत है?"
क्योंकि तुम एक महिला और एक बच्ची हो।
“अरे! क्या पुरुषों को ठंड लगना और असहज महसूस करना ही जरूरी है?”
“कुछ खास लोग।”
"यह अच्छा है, मैं यहां इतनी बार आऊंगा कि आपको आग जलाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।"
और उसने फिर उससे कहा:—
“पिताजी, आप इस तरह की घटिया रोटी क्यों खाते हैं?”
"क्योंकि, मेरी बेटी।"
"ठीक है, अगर तुम इसे खाओगे तो मैं भी खा लूंगा।"
फिर, कोसेट को काली रोटी खाने से रोकने के लिए, जीन वालजेन ने सफेद रोटी खाई।
कोसेट को अपने बचपन की धुंधली सी यादें थीं। वह सुबह-शाम अपनी माँ के लिए प्रार्थना करती थी, जिसे उसने कभी देखा भी नहीं था। थेनार्डियर दंपति सपने में दो भयानक आकृतियों के रूप में उसके साथ रहते थे। उसे याद था कि वह एक दिन रात को जंगल से पानी लाने गई थी। उसे लगता था कि वह जगह पेरिस से बहुत दूर थी। उसे ऐसा लगता था जैसे वह किसी गहरे अंधकार में जी रही हो, और जीन वालजेन ने ही उसे उससे बाहर निकाला था। उसके बचपन ने उस समय का प्रभाव उस

पर डाला था जब उसके आसपास केवल कनखजूरे, मकड़ियां और सांप ही थे। जब वह शाम को सोने से पहले ध्यान करती थी, क्योंकि उसे यह स्पष्ट रूप से पता नहीं था कि वह जीन वालजेन की बेटी है और वह उसका पिता है, तो उसे ऐसा लगता था कि उसकी माँ की आत्मा उस भले आदमी में समा गई है और उसके पास रहने आई है।

जब वह बैठ गया, तो उसने अपना गाल उसके सफेद बालों पर टिका दिया और चुपचाप एक आंसू बहाते हुए खुद से कहा: "शायद यह आदमी मेरी मां है।"

कोसेट, हालांकि यह कहना थोड़ा अजीब लग सकता है, एक कॉन्वेंट में पली-बढ़ी लड़की की गहरी अज्ञानता में—क्योंकि मातृत्व भी कौमार्य के लिए पूरी तरह से समझ से परे था—इस भ्रम में पड़ गई थी कि उसकी माँ का उससे बहुत कम वास्ता रहा था। उसे अपनी माँ का नाम तक नहीं पता था। जब भी वह जीन वालजेन से पूछती, जीन वालजेन चुप रहते। अगर वह अपना सवाल दोहराती, तो वह मुस्कुरा कर जवाब देते। एक बार उसने ज़िद की; तो उनकी मुस्कान आँसू में बदल गई।

जीन वाल्जेन की इस चुप्पी ने फैंटीन को अंधकार में डुबो दिया।

क्या यह विवेक था? क्या यह सम्मान था? क्या यह डर था कि कहीं वह इस नाम को अपनी स्मृति के अलावा किसी और की स्मृति के खतरों में न डाल दे?

जब तक कोसेट छोटी थी, जीन वालजेन उससे उसकी माँ के बारे में बात करने को तैयार रहता था; लेकिन जब वह युवती बन गई, तो उसके लिए ऐसा करना असंभव हो गया। उसे लगा कि अब उसकी हिम्मत ही नहीं रही। क्या यह कोसेट की वजह से था? क्या यह फैंटाइन की वजह से था? कोसेट के मन में उस साये को आने देने और उनके भाग्य में किसी तीसरे को जगह देने पर उसे एक अजीब सी धार्मिक घबराहट महसूस हुई। यह साया उसके लिए जितना पवित्र होता जा रहा था, उतना ही उससे डर लगने लगा था। उसने फैंटाइन के बारे में सोचा और खुद को खामोशी से घिरा हुआ पाया।

अंधकार में, उसे धुंधला सा कुछ दिखाई दिया, मानो किसी ने अपनी उंगली अपने होठों पर रखी हो। क्या फैंटाइन में जो लज्जा थी, और जो उसके जीवनकाल में उससे छिन गई थी, वह उसकी मृत्यु के बाद फिर लौट आई थी, उस मृत स्त्री की शांति पर क्रोध से पहरा देने के लिए, और अपनी लज्जा में उसे उसकी कब्र में ही रखने के लिए? क्या जीन वालजेन अनजाने में इस दबाव के आगे झुक रहा था? हम, जो मृत्यु में विश्वास करते हैं, इस रहस्यमय व्याख्या को अस्वीकार करने वालों में से नहीं हैं।

इसलिए, कोसेट के लिए भी फैंटाइन का नाम लेना असंभव है।

एक दिन कोसेट ने उससे कहा:—

“पिताजी, मैंने कल रात सपने में अपनी माँ को देखा। उनके दो बड़े पंख थे।
मेरी माँ अपने जीवनकाल में लगभग एक संत रही होंगी।”

“शहादत के माध्यम से,” जीन वाल्जेन ने उत्तर दिया।

हालांकि, जीन वाल्जेन खुश था।

जब कोसेट उसके साथ बाहर गई, तो वह उसके हाथ पर सिर रखकर गर्व और प्रसन्नता से भर उठी, मानो उसका हृदय परिपूर्ण हो। जीन वालजेन का हृदय आनंद से पिघल उठा, उस अनूठी कोमलता की चिंगारियों को देखकर, जो केवल स्वयं से ही संतुष्ट थी। बेचारा व्यक्ति दिव्य आनंद से सराबोर होकर कांप उठा; उसने उत्साहपूर्वक मन ही मन कहा कि यह आनंद उनके जीवन भर बना रहेगा; उसने स्वयं से कहा कि उसने वास्तव में इतना कष्ट नहीं सहा है कि वह इस उज्ज्वल आनंद का पात्र हो, और उसने अपने हृदय की गहराइयों में ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने उसे, एक अभागे को, उस निर्दोष प्राणी द्वारा इस प्रकार प्रेम किए जाने का अवसर दिया।

V. गुलाब को एहसास होता है कि वह युद्ध का एक साधन है

एक दिन, कोसेट ने संयोगवश अपने दर्पण में खुद को देखा और मन ही मन कहा: “सचमुच!” उसे लगा मानो वह सचमुच सुंदर है। इससे वह बहुत परेशान हो गई। उस क्षण तक उसने कभी अपने चेहरे के बारे में नहीं सोचा था। उसने खुद को दर्पण में देखा, लेकिन खुद को ध्यान से नहीं देखा। और फिर, उसे अक्सर कहा जाता था कि वह सादी दिखती है; केवल जीन वालजेन ने ही कोमल स्वर में कहा था: “नहीं, बिलकुल नहीं! बिलकुल नहीं!” खैर, कोसेट हमेशा से खुद को सादा ही समझती थी और बचपन की सहज स्वीकृति के साथ इसी विश्वास में पली-बढ़ी थी। और यहाँ, अचानक, उसका दर्पण उससे वही कह रहा था जो जीन वालजेन ने कहा था: “नहीं, बिलकुल नहीं!” उस रात, उसे नींद नहीं आई। “अगर मैं सुंदर होती तो क्या होता!” उसने सोचा। “अगर मैं सुंदर होती तो कितना अजीब होता!” और उसे अपनी उन सहेलियों की याद आई जिनकी सुंदरता ने कॉन्वेंट में सनसनी मचा दी थी, और उसने मन ही मन कहा: “क्या! क्या मुझे मैडमोजेल फलां-फलां की तरह बनना है?”

अगली सुबह उसने फिर से खुद को देखा, इस बार जानबूझकर, और वह संदेह से घिर गई: "मुझे ऐसा ख्याल कहाँ से आया?" उसने कहा; "नहीं, मैं बदसूरत हूँ।" उसे अच्छी नींद नहीं आई थी, बस यही बात थी, उसकी आँखें धँसी हुई थीं और उसका चेहरा पीला पड़ गया था। पिछली शाम उसे इस बात की खुशी नहीं थी कि वह सुंदर थी, लेकिन अब इस बात पर विश्वास न कर पाने से वह बहुत दुखी थी। उसने फिर कभी खुद को नहीं देखा, और दो सप्ताह से अधिक समय तक उसने दर्पण की ओर पीठ करके अपने बालों को संवारने की कोशिश की।

शाम को, भोजन के बाद, वह आम तौर पर ड्राइंग रूम में ऊन की कढ़ाई करती या मठ के कुछ कढ़ाई-कढ़ाई के काम करती थी, और जीन वालजेन उसके बगल में बैठकर पढ़ता था। एक बार उसने अपने काम से नज़रें उठाईं, और अपने पिता के घूरने के तरीके से वह काफी असहज हो गई।

एक और मौके पर, वह सड़क से गुजर रही थी, और उसे लगा कि उसके पीछे किसी ने, जिसे वह देख नहीं पा रही थी, कहा: "एक खूबसूरत औरत! लेकिन कपड़े ठीक से नहीं

पहने हैं।" "अरे!" उसने सोचा, "वह मेरे बारे में तो नहीं कह रहा। मैं तो अच्छे कपड़े पहने हुए हूँ और बदसूरत हूँ।" उस समय उसने मखमली टोपी और अपना मेरिनो गाउन पहना हुआ था।

आखिरकार, एक दिन जब वह बगीचे में थी, तो उसने बेचारे बूढ़े टूसेंट को कहते सुना: “क्या आपने ध्यान दिया है कि कोसेट कितनी सुंदर होती जा रही है, श्रीमान?” कोसेट ने अपने पिता का जवाब नहीं सुना, लेकिन टूसेंट के शब्दों ने उसके भीतर एक हलचल पैदा कर दी। वह बगीचे से भागी, अपने कमरे में गई, शीशे के पास दौड़ी—तीन महीने हो गए थे जब उसने खुद को देखा था—और जोर से रो पड़ी। उसने खुद को चकाचौंध कर लिया था।

वह सुंदर और मनमोहक थी; वह टूसेंट और अपने दर्पण की बात से सहमत हुए बिना नहीं रह सकी। उसका शरीर सुडौल था, उसकी त्वचा सफेद हो गई थी, उसके बाल चमकदार थे, उसकी नीली आँखों में एक अनोखी चमक आ गई थी। उसकी सुंदरता का अहसास उसे पल भर में हो गया, जैसे अचानक दिन का उजाला हो जाता है; दूसरे लोगों ने भी इसे देखा था, टूसेंट ने ऐसा कहा था, यह स्पष्ट था कि राहगीर ने उसी के बारे में बात की थी, इसमें अब कोई संदेह नहीं रह गया था; वह फिर से बगीचे में उतरी, खुद को रानी समझ रही थी, कल्पना कर रही थी कि वह पक्षियों को गाते हुए सुन रही है, हालांकि सर्दी का मौसम था, आकाश को सुनहरा देख रही थी, पेड़ों के बीच सूरज, झाड़ियों में फूल, व्याकुल, बेतहाशा आनंदित।

जीन वाल्जेन ने स्वयं अपने हृदय में एक गहरे और अवर्णनीय उत्पीड़न का अनुभव किया।

दरअसल, वह कुछ समय से कोसेट के प्यारे चेहरे पर दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई उस सुंदरता को देखकर भयभीत था। सबके लिए मुस्कुराती हुई सुबह उसके लिए अंधकारमय थी।

कोसेट को अपनी सुंदरता का एहसास होने से काफी पहले से ही वह बेहद खूबसूरत थी। लेकिन, पहले ही दिन से, वह अप्रत्याशित प्रकाश जो धीरे-धीरे उभर रहा था और उस युवती के पूरे व्यक्तित्व को अपनी चपेट में ले रहा था, जीन वालजेन की उदास आँखों को चोट पहुँचा रहा था। उसे लगा कि यह एक खुशहाल जीवन में बदलाव है, एक ऐसा खुशहाल जीवन जिसमें कुछ गड़बड़ होने के डर से वह हिलने की हिम्मत भी नहीं कर पा रहा था। यह आदमी, जिसने हर तरह के कष्ट झेले थे, जो अब

भी भाग्य के घावों से लथपथ था, जो लगभग दुष्ट था और लगभग संत बन गया था, जो जहाजों की जंजीर घसीटने के बाद अब अनिश्चित दुख की अदृश्य लेकिन भारी जंजीर घसीट रहा था, यह आदमी जिसे कानून ने अपनी पकड़ से नहीं छोड़ा था और जिसे किसी भी क्षण पकड़ा जा सकता था और उसके सद्गुणों के अंधकार से निकालकर सार्वजनिक निंदा के उजाले में लाया जा सकता था, इस आदमी ने सब कुछ स्वीकार किया, सब कुछ माफ किया, सब कुछ क्षमा किया, और केवल ईश्वर से, मनुष्य से, कानून से, समाज से, प्रकृति से, दुनिया से एक ही बात मांगी, कि कोसेट उससे प्यार करे!

काश कोसेट उसे प्यार करती रहे! काश ईश्वर बच्चे के हृदय को उसके पास आने और उसके साथ बने रहने से न रोके! कोसेट के प्रिय होने पर, उसे लगा कि वह ठीक हो गया है, उसे आराम मिला है, उसे शांति मिली है, उसे ढेरों लाभ मिले हैं, उसे प्रतिफल मिला है, उसे ताज पहनाया गया है। कोसेट के प्रिय होने पर, उसका भला हुआ! उसे और कुछ नहीं चाहिए था! अगर कोई उससे पूछता: “क्या तुम इससे बेहतर कुछ चाहते हो?” तो वह कहता: “नहीं।” ईश्वर उससे कहता: “क्या तुम स्वर्ग चाहते हो?” और वह कहता: “मैं इससे वंचित रह जाऊँगा।”

इस स्थिति को प्रभावित करने वाली हर चीज़, भले ही सतही तौर पर ही सही, उसे किसी नई शुरुआत की तरह सिहरन पैदा कर देती थी। उसने स्वयं कभी स्पष्ट रूप से नहीं जाना था कि स्त्री की सुंदरता का क्या अर्थ होता है; लेकिन वह सहज रूप से समझता था कि यह कुछ भयानक है।

वह उस सुंदरता को भय से निहार रहा था, जो उसके बगल में, उसकी आँखों के सामने, उस बच्ची के मासूम और दुर्जेय माथे पर, उसकी सादगी की गहराई से, उसकी वृद्धावस्था से, उसके दुख से, उसकी निंदा से, और उसके अभिशाप से, लगातार अधिक विजयी और शानदार रूप से खिल रही थी।

उसने मन ही मन कहा: “वह कितनी सुंदर है! मेरा क्या होगा?”

इसके अलावा, यहीं पर उसकी कोमलता और एक माँ की कोमलता में अंतर निहित था। जिस बात को वह पीड़ा से देखता था, एक माँ उसे खुशी से देखती।

पहले लक्षण जल्द ही प्रकट होने लगे।

जिस दिन उसने मन ही मन कहा था: “मैं सचमुच खूबसूरत हूँ!” उसी दिन के अगले दिन कोसेट ने अपने श्रृंगार पर ध्यान देना शुरू कर दिया। उसे उस राहगीर की

टिप्पणी याद आई: “सुंदर तो हो, लेकिन कपड़े ठीक से नहीं पहने हैं,” एक भविष्यवाणी की वह साँस जो उसके पास से गुज़री और गायब हो गई, उसके दिल में दो बीजों में से एक बीज बोकर चली गई, जो आगे चलकर स्त्री के पूरे जीवन को भर देने वाले हैं - नज़ाकत। दूसरा बीज प्रेम है।

अपनी सुंदरता पर विश्वास के साथ, उसके भीतर संपूर्ण नारीत्व का विस्तार हुआ। उसे अपने मेरिनो ऊन से घृणा और अपने मखमली टोपी से शर्म महसूस होने लगी। उसके पिता ने उसे कभी किसी चीज़ के लिए मना नहीं किया था। उसने तुरंत ही बोनट, गाउन, मेंटल, बूट, कफ, फैशन में चल रहे कपड़े, आकर्षक रंग, उस सारी कला को सीख लिया जो पेरिस की महिला को इतना आकर्षक, इतना गहरा और इतना खतरनाक बनाती है। "सनकी महिला" शब्द पेरिस की महिलाओं के लिए ही गढ़े गए थे।

एक महीने से भी कम समय में, रू डे बैबिलोन की उस थेबैड में रहने वाली छोटी कोसेट न केवल पेरिस की सबसे खूबसूरत महिलाओं में से एक बन गई, बल्कि "सबसे अच्छे कपड़े पहनने वाली" महिलाओं में से एक बन गई, जिसका बहुत अधिक महत्व है।

वह अपने "राहगीर" से मिलना चाहती थी, यह देखना चाहती थी कि वह क्या कहेगा, और उसे "सबक सिखाना" चाहती थी! सच्चाई तो यह है कि वह हर तरह से बेहद खूबसूरत थी, और वह गेरार्ड और हरबाउट की टोपी के बीच के अंतर को बड़े ही अद्भुत तरीके से पहचानती थी।

जीन वाल्जेन ने इन विनाशकारी दृश्यों को चिंता से देखा। वह, जिसे लगता था कि वह केवल रेंग सकता है, या ज़्यादा से ज़्यादा चल सकता है, कोसेट पर पंख उगते हुए देख रहा था।

इसके अलावा, कोसेट के पहनावे को देखकर ही कोई भी महिला यह समझ जाती कि उसकी माँ नहीं थी। कोसेट कुछ छोटी-छोटी मर्यादाओं और विशेष परंपराओं का पालन नहीं करती थी। उदाहरण के लिए, एक माँ उसे बताती कि एक युवती को दमिश्क के कपड़े नहीं पहनने चाहिए।

जिस दिन कोसेट पहली बार अपने काले दमिश्क गाउन और लबादे तथा सफेद क्रेप बोनट में बाहर निकली, उसने जीन वालजेन का हाथ थाम लिया, प्रसन्न, तेजस्वी, गुलाबी, गर्वित और चकाचौंध से भरी हुई। उसने कहा, "पिताजी, आपको मैं इस रूप

में कैसी लग रही हूँ?" जीन वालजेन ने ईर्ष्यालु व्यक्ति की कड़वी आवाज में उत्तर दिया: "मनमोहक!" सैर के दौरान वह हमेशा की तरह ही थे। घर लौटने पर उन्होंने कोसेट से पूछा:—

"क्या तुम वो दूसरा गाउन और बोनट दोबारा नहीं पहनोगी—तुम जानती हो ना मैं किनकी बात कर रही हूँ?"

यह घटना कोसेट के कमरे में घटी। कोसेट अलमारी की ओर मुड़ी जहाँ उसके पुराने स्कूली कपड़े टंगे हुए थे।

“वो भेस!” उसने कहा। “पिताजी, आप मुझसे इसका क्या करवाना चाहते हैं? अरे नहीं, ये तो सोच भी मत! मैं फिर कभी वो भयानक रूप धारण नहीं करूंगी। उस मशीन को सिर पर लगाकर मैं पागल कुतिया जैसी लग रही हूँ।”

जीन वाल्जेन ने एक गहरी आह भरी।

उस क्षण से उसने देखा कि कोसेट, जो अब तक हमेशा घर पर रहने की गुजारिश करती थी और कहती थी: "पिताजी, मुझे आपके साथ यहाँ ज़्यादा अच्छा लगता है," अब हमेशा बाहर जाने की जिद करने लगी। आखिर, अगर कोई अपने खूबसूरत चेहरे और आकर्षक पोशाक को प्रदर्शित न करे तो उसका क्या फायदा?

उन्होंने यह भी देखा कि कोसेट को अब पिछवाड़े के बगीचे में पहले जैसी रुचि नहीं रही। अब वह बगीचे को ही पसंद करती थी और बाड़ के सामने इधर-उधर टहलने में उसे कोई आपत्ति नहीं थी। जीन वालजेन, जो शर्मीला था, कभी बगीचे में कदम नहीं रखता था। वह अपने पिछवाड़े में ही कुत्ते की तरह रहता था।

कोसेट को जब अपनी सुंदरता का ज्ञान हुआ, तो उसने इसे अनदेखा करने की अपनी सहजता खो दी। यह एक अद्भुत सहजता थी, क्योंकि सरलता से निखरने वाली सुंदरता अवर्णनीय होती है, और एक ऐसी नर्म और मासूम प्राणी से अधिक मनमोहक कुछ भी नहीं है जो स्वर्ग की कुंजी को अनजाने में अपने हाथों में लिए हुए चलती है। लेकिन जो सहजता उसने खोई, वह उसने गंभीर और चिंतनशील आकर्षण में पा ली। उसका संपूर्ण व्यक्तित्व, यौवन, मासूमियत और सुंदरता के आनंद से ओतप्रोत, एक शानदार उदासी बिखेरता था।

इसी दौरान, छह महीने के अंतराल के बाद, मारियस ने उसे एक बार फिर लक्ज़मबर्ग में देखा।

VI. युद्ध की शुरुआत

कोसेट, मारियस की तरह, उसकी परछाई में, आग में जलने के लिए पूरी तरह तैयार थी। नियति ने अपने रहस्यमय और घातक धैर्य के साथ धीरे-धीरे इन दोनों प्राणियों को एक साथ खींच लिया, जो जुनून की तूफानी बिजली से लदे और तड़पते हुए थे, ये दो आत्माएं प्रेम से इस प्रकार भरी हुई थीं जैसे दो बादल बिजली से भरे होते हैं, और जो आग की एक चमक में बादलों की तरह उमड़कर एक-दूसरे में विलीन होने के लिए बाध्य थीं।

प्रेम प्रसंगों में दृष्टि-दर्शन का इतना दुरुपयोग हुआ है कि अंततः इसकी प्रतिष्ठा धूमिल हो गई है। आजकल शायद ही कोई यह कहने की हिम्मत करता है कि दो लोग एक-दूसरे को देखकर प्यार में पड़ गए। फिर भी, प्यार में पड़ने का यही तरीका है, और यही एकमात्र तरीका है। बाकी सब कुछ महत्वहीन है, लेकिन बाकी सब तो बाद में आता है। उस चिंगारी के आदान-प्रदान से दो आत्माओं के बीच जो गहरा आघात होता है, उससे अधिक वास्तविक कुछ भी नहीं है।

जिस विशेष समय पर कोसेट ने अनजाने में वह नजर डाली जिससे मारियस परेशान हो गया, मारियस को जरा भी संदेह नहीं था कि उसने भी ऐसी ही नजर डाली थी जिससे कोसेट परेशान हो गई थी।

उसने उसके साथ वही भलाई और वही बुराई की।

वह उसे लंबे समय से देखती आ रही थी, और लड़कियों की तरह वह उसे परखती और निहारती थी, जबकि उसकी नज़रें कहीं और होती थीं। मारियस अब भी कोसेट को बदसूरत समझता था, जबकि कोसेट मारियस को सुंदर समझने लगी थी। लेकिन चूंकि मारियस उस पर ध्यान नहीं देता था, इसलिए वह युवक उसके लिए कुछ भी मायने नहीं रखता था।

फिर भी, वह मन ही मन यह कहने से खुद को रोक नहीं पाई कि उसके बाल सुंदर थे, आँखें खूबसूरत थीं, दाँत आकर्षक थे, अपने साथियों से बात करते समय उसकी आवाज़ में एक मोहक लहजा था, कि वह चलते समय थोड़ा अटपटा लगता था, लेकिन उसकी चाल में एक अनोखा आकर्षण था, कि वह बिल्कुल भी मूर्ख नहीं लगता था, कि

उसका पूरा व्यक्तित्व नेक, सौम्य, सरल, स्वाभिमानी था, और संक्षेप में, भले ही वह गरीब दिखता था, फिर भी उसका व्यवहार बहुत ही शानदार था।

जिस दिन उनकी नज़रें आखिरकार मिलीं और उन्होंने एक-दूसरे से वो पहली, अस्पष्ट और अवर्णनीय बातें कहीं जो निगाहों के बीच छिपी होती हैं, कोसेट तुरंत समझ नहीं पाई। वह सोच-विचार करते हुए रू डे ल'ओएस्ट स्थित घर लौट आई, जहाँ जीन वालजेन अपनी आदत के अनुसार छह सप्ताह बिताने आया था। अगली सुबह जागते ही उसने उस अजनबी युवक के बारे में सोचा, जो इतने लंबे समय तक उदासीन और ठंडा रहा था, लेकिन अब उसकी ओर ध्यान देता हुआ प्रतीत हो रहा था, और उसे यह ध्यान ज़रा भी अच्छा नहीं लगा। इसके विपरीत, वह इस सुंदर और घमंडी व्यक्ति पर कुछ हद तक क्रोधित थी। उसके भीतर युद्ध की भावना जागृत हुई। उसे यह विचार आया, और इस विचार ने उसे पूरी तरह से बचकाना आनंद दिया, कि वह आखिरकार अपना बदला लेने जा रही है।

अपनी सुंदरता को जानते हुए भी, वह इस बात से भलीभांति अवगत थी, यद्यपि अस्पष्ट रूप से, कि उसके पास एक हथियार है। स्त्रियाँ अपनी सुंदरता से वैसे ही खेलती हैं जैसे बच्चे चाकू से खेलते हैं। वे खुद को घायल कर लेती हैं।

पाठक को मारियस की झिझक, उसकी घबराहट और उसके डर याद होंगे। वह अपनी बेंच पर बैठा रहा और आगे नहीं बढ़ा। इससे कोसेट परेशान हो गई। एक दिन उसने जीन वालजेन से कहा: "पिताजी, चलिए उस दिशा में थोड़ी देर टहलते हैं।" जब उसने देखा कि मारियस उसके पास नहीं आया, तो वह उसके पास चली गई। ऐसे मामलों में, सभी महिलाएं मुहम्मद जैसी होती हैं। और फिर, अजीब बात यह है कि एक युवक में सच्चे प्यार का पहला लक्षण झिझक होता है; एक युवती में यह साहस होता है। यह आश्चर्यजनक है, और फिर भी इससे सरल कुछ नहीं है। यह दोनों लिंगों का एक-दूसरे के करीब आने और एक-दूसरे के गुणों को अपनाने की प्रवृत्ति है।

उस दिन, कोसेट की एक नज़र ने मारियस को बेकाबू कर दिया, और मारियस की एक नज़र ने कोसेट को थरथरा दिया। मारियस आत्मविश्वास से भर कर चला गया, और कोसेट बेचैन रह गई। उस दिन से, वे एक-दूसरे से बेहद प्यार करने लगे।

कोसेट को सबसे पहले एक गहरी और उलझी हुई उदासी महसूस हुई। उसे लगा मानो कल से उसकी आत्मा काली पड़ गई हो। वह उसे पहचान ही नहीं पा रही थी। युवा

लड़कियों की आत्मा की सफेदी, जो शीतलता और प्रसन्नता से बनी होती है, बर्फ के समान होती है। प्रेम में यह पिघल जाती है, जो उसका सूर्य है।

कोसेट को प्रेम का अर्थ नहीं पता था। उसने कभी इस शब्द को इसके सांसारिक अर्थ में नहीं सुना था। मठ में आने वाली सांसारिक संगीत की किताबों में, 'अमोर' की जगह 'टैम्बोर' या 'पंडूर' लिखा होता था। इससे कुछ ऐसी पहेलियाँ पैदा हो गईं जो "बड़ी लड़कियों" की कल्पनाओं को उड़ान देती थीं, जैसे: "आह, ढोल कितना मधुर है!" या, "दया कोई पंडूर नहीं है।" लेकिन कोसेट ने मठ बहुत जल्दी छोड़ दिया था, इसलिए वह "ढोल" में ज्यादा समय नहीं बिता पाई थी। इसलिए, वह नहीं जानती थी कि अब वह जो महसूस कर रही है उसे क्या नाम दे। क्या कोई इसलिए कम बीमार हो जाता है क्योंकि उसे अपनी बीमारी का नाम नहीं पता?

उसका प्रेम और भी अधिक तीव्र था क्योंकि वह अज्ञानता में प्रेम करती थी। उसे यह नहीं पता था कि यह अच्छी बात है या बुरी, उपयोगी है या खतरनाक, शाश्वत है या क्षणिक, जायज़ है या निषिद्ध; फिर भी वह प्रेम करती थी। यदि कोई उससे कहता, “तुम सोती नहीं? यह तो वर्जित है! तुम खाती नहीं? यह तो बहुत बुरा है! तुम्हें हृदय में जकड़न और धड़कन होती है? ऐसा नहीं होना चाहिए! जब कोई काले वस्त्रधारी प्राणी किसी हरे-भरे रास्ते के अंत में प्रकट होता है, तो तुम शर्म से लाल हो जाती हो और तुम्हारा चेहरा पीला पड़ जाता है? यह तो घृणित है!” तो वह समझ नहीं पाती और उत्तर देती, “जिस विषय में मेरा कोई अधिकार नहीं है और जिसके बारे में मुझे कुछ भी नहीं पता, उसमें मेरी क्या गलती है?”

पता चला कि जो प्रेम उसके सामने प्रकट हुआ, वह उसकी आत्मा की अवस्था के बिल्कुल अनुकूल था। यह एक प्रकार की दूर से की गई प्रशंसा थी, एक मौन चिंतन, एक अजनबी का देवत्वीकरण। यह यौवन का यौवन के लिए आभास था, रातों का वह सपना जो हकीकत बन गया था फिर भी सपना ही बना रहा, वह प्रतीक्षित प्रेत जो अंततः साकार हो गया, लेकिन जिसका अभी तक न कोई नाम था, न कोई दोष, न कोई दाग, न कोई आवश्यकता, न कोई कमी; संक्षेप में, वह दूर का प्रेमी जो आदर्श में मंडराता रहा, एक रूपहीन मायाजाल। इस प्रारंभिक चरण में, जब कोसेट अभी भी मठ के अतिरंजित कोहरे में आधी डूबी हुई थी, कोई भी निकट और अधिक प्रत्यक्ष मुलाकात उसे भयभीत कर देती। उसमें बच्चों के सभी भय और ननों के सभी भय मिश्रित थे। मठ की भावना, जिससे वह पाँच वर्षों तक ओतप्रोत रही थी,

अभी भी उसके व्यक्तित्व से धीरे-धीरे विलीन हो रही थी, और उसके आसपास की हर चीज को कंपकंपा रही थी। इस परिस्थिति में वह न तो प्रेमी था, न ही प्रशंसक, वह एक कल्पना मात्र था। उसने मारियस को एक आकर्षक, प्रकाशमान और असंभव सी चीज के रूप में पूजने का निश्चय किया।

अत्यंत मासूमियत और नखरे के बीच, उसने पूरी स्पष्टता के साथ उसकी ओर मुस्कुराया।

हर दिन, वह बेसब्री से उनके साथ सैर पर जाने के समय का इंतजार करती थी, जब वह मारियस को वहाँ पाती, तो वह असीम प्रसन्नता महसूस करती, और पूरी ईमानदारी से सोचती कि जब उसने जीन वालजेन से ये कहा, तो वह अपने पूरे विचार व्यक्त कर रही थी:

"लक्ज़मबर्ग कितना खूबसूरत बगीचा है!"

मारियस और कोसेट एक-दूसरे से अनभिज्ञ थे। वे एक-दूसरे से बात नहीं करते थे, एक-दूसरे को नमस्कार नहीं करते थे, एक-दूसरे को जानते भी नहीं थे; वे बस एक-दूसरे को देखते थे; और आकाश के तारों की तरह जो लाखों मील की दूरी पर अलग होते हैं, वे एक-दूसरे को निहारकर ही जीते थे।

इस प्रकार कोसेट धीरे-धीरे एक स्त्री बन गई और विकसित हुई, सुंदर और प्रेममयी, अपनी सुंदरता के प्रति सचेत, लेकिन अपने प्रेम से अनभिज्ञ। अपनी अनभिज्ञता के कारण वह एक चंचल और नखरीली भी थी।

VII. एक दुख के विपरीत डेढ़ दुख रखो

हर परिस्थिति की अपनी सहज प्रवृत्ति होती है। प्राचीन और शाश्वत प्रकृति माता ने जीन वालजेन को धुंधले ढंग से मारियस की उपस्थिति का आगाह किया। जीन वालजेन की आत्मा तक कांप उठी। जीन वालजेन ने कुछ नहीं देखा, कुछ नहीं जाना, फिर भी वह हठपूर्वक उस अंधेरे को देखता रहा जिसमें वह चल रहा था, मानो उसे अपने एक तरफ कुछ निर्माणाधीन और दूसरी तरफ कुछ ढहता हुआ महसूस हो रहा हो। मारियस को भी आगाह किया गया था, और उसी प्रकृति माता द्वारा ईश्वर के गहन नियम के अनुसार, उसने "पिता" की दृष्टि से दूर रहने के लिए हर संभव प्रयास किया। फिर भी, कभी-कभी जीन वालजेन उसे देख लेता था। मारियस का व्यवहार अब बिल्कुल भी स्वाभाविक नहीं था। वह अस्पष्ट विवेक और अटपटी हिम्मत दिखाता था। वह अब पहले की तरह उनके करीब नहीं आता था। वह दूर बैठ जाता और पढ़ने का नाटक करता; वह ऐसा नाटक क्यों करता था? पहले वह अपने पुराने कोट में आता था, अब वह हर दिन अपना नया कोट पहनता था; जीन वालजेन को इस बात का यकीन नहीं था कि उसके बाल घुंघराले नहीं थे, उसकी आंखें बहुत विचित्र थीं, उसने दस्ताने पहने हुए थे; संक्षेप में, जीन वालजेन इस युवक से दिल से नफरत करता था।

कोसेट ने किसी को भी कुछ भी पता लगाने की अनुमति नहीं दी। उसे ठीक-ठीक पता नहीं था कि उसके साथ क्या समस्या है, लेकिन उसे पूरा यकीन था कि इसमें कुछ तो गड़बड़ है, और इसे छिपाया जाना चाहिए।

कोसेट में हाल ही में विकसित हुई शौचालय संबंधी रुचि और उस अजनबी की नए कपड़े पहनने की आदत के बीच एक संयोग था, जो जीन वालजेन को बेहद नापसंद था। यह संयोग हो सकता था, इसमें कोई संदेह नहीं, निश्चित रूप से, लेकिन यह एक खतरनाक संयोग था।

उसने कभी कोसेट से उस अजनबी के बारे में कुछ नहीं कहा। लेकिन एक दिन, वह खुद को रोक नहीं पाया और उस अस्पष्ट निराशा के साथ, जो अचानक सीसे को घोर निराशा में डुबो देती है, उसने उससे कहा: "उस नौजवान का रवैया कितना पांडित्यपूर्ण है!"

कोसेट, जो एक साल पहले तक एक उदासीन बच्ची थी, शायद जवाब देती: "नहीं, वह तो आकर्षक है।" दस साल बाद, मारियस के प्यार से भरी हुई, वह शायद जवाब देती: "एक पाखंडी, और देखने में असहनीय! आप सही कह रही हैं!"—जीवन और हृदय की उस स्थिति में, जो उसने तब प्राप्त कर ली थी, वह अत्यंत शांति से जवाब देकर संतुष्ट हो जाती: "वह युवक!"

मानो वह उसे अपने जीवन में पहली बार देख रही हो।

“मैं कितना मूर्ख हूँ!” जीन वालजेन ने सोचा। “उसने उसे देखा ही नहीं था। मैंने ही उसे उसकी ओर इशारा किया है।”

ओह, बुजुर्गों की सादगी! ओह, बच्चों की गहराई!

जीवन के उन शुरुआती वर्षों में, जब दुख और परेशानियाँ चरम पर होती हैं, पहले प्यार और शुरुआती बाधाओं के बीच जो जीवंत संघर्ष होते हैं, यह एक नियम है कि युवती किसी भी जाल में नहीं फँसती, और युवक हर जाल में फँस जाता है। जीन वालजेन ने मारियस के विरुद्ध एक अघोषित युद्ध छेड़ रखा था, जिसे मारियस, अपने जुनून और उम्र की मूर्खता के कारण, समझ नहीं पाया। जीन वालजेन ने उसके लिए कई जाल बिछाए; उसने अपना समय बदल दिया, अपनी जगह बदल दी, अपना रूमाल भूल गया, लक्ज़मबर्ग में अकेला आया; मारियस इन सभी जालों में बेधड़क फँस गया; और जीन वालजेन द्वारा उसके रास्ते में लगाए गए सभी सवालों के जवाब उसने भोलेपन से "हाँ" में दे दिए। लेकिन कोसेट अपनी स्पष्ट उदासीनता और अविचलित शांति में डूबी रही, जिससे जीन वालजेन इस निष्कर्ष पर पहुँचा: "वह मूर्ख कोसेट के प्यार में पागल है, लेकिन कोसेट को यह भी नहीं पता कि वह मौजूद है।"

फिर भी उसके दिल में एक उदास सी बेचैनी थी। कोसेट के प्यार का पल कभी भी आ सकता था। क्या हर चीज़ की शुरुआत उदासीनता से ही नहीं होती?

केवल एक बार कोसेट से गलती हुई और उसने उसे चौंका दिया। तीन घंटे रुकने के बाद वह जाने के लिए अपनी सीट से उठा, और उसने कहा: "क्या, अभी से?"

जीन वालजेन ने लक्ज़मबर्ग की अपनी यात्राएँ बंद नहीं की थीं, क्योंकि वह कुछ भी असामान्य नहीं करना चाहता था, और सबसे बढ़कर, उसे कोसेट को उत्तेजित करने का डर था; लेकिन प्रेमियों के लिए जो पल इतने मधुर थे, जब कोसेट मदहोश मारियस को मुस्कुराती हुई देख रही थी, जिसे अब कुछ और दिखाई नहीं दे रहा

था, और जिसे अब पूरी दुनिया में एक पूजनीय और तेजस्वी चेहरे के सिवा कुछ नहीं दिख रहा था, जीन वालजेन मारियस को अपनी चमकती और भयानक आँखों से घूर रहा था। वह, जिसने अंततः खुद को द्वेषपूर्ण भावना से रहित मान लिया था, मारियस की उपस्थिति में ऐसे क्षणों का अनुभव करता था, जिनमें उसे लगता था कि वह एक बार फिर क्रूर और हिंसक हो रहा है, और उसने अपनी आत्मा की उन पुरानी गहराइयों को महसूस किया, जिनमें पहले इतना क्रोध भरा हुआ था, जो एक बार फिर खुल कर उस युवक के विरुद्ध उठ खड़ी हुई थीं। उसे लगभग ऐसा लग रहा था कि उसके हृदय में अज्ञात गड्ढे बन रहे हैं।

क्या! वो वहाँ था, वो प्राणी! वो वहाँ किसलिए था? वो रेंगता हुआ आया, सूंघता हुआ, जाँचता हुआ, कोशिश करता हुआ! वो आया और बोला: “अरे! क्यों नहीं?” वो जीन वालजेन के जीवन में मंडराने आया था! उसकी खुशियों में मंडराने आया था, उसे छीनकर ले जाने के इरादे से!

जीन वाल्जेन ने आगे कहा: “हाँ, बस यही! वह किसकी तलाश में है? एक रोमांच! वह क्या चाहता है? एक प्रेम प्रसंग! एक प्रेम प्रसंग! और मैं? क्या! मैं पहले सबसे दुखी और फिर सबसे अभागा रहा हूँ, और मैंने साठ साल घुटनों के बल बिताए हैं, मैंने वह सब सहा है जो एक इंसान सह सकता है, मैं जवानी के बिना बूढ़ा हो गया हूँ, मैं बिना परिवार, बिना रिश्तेदारों, बिना दोस्तों, बिना जीवन, बिना बच्चों के रहा हूँ, मैंने अपना खून हर पत्थर पर, हर झाड़ी पर, हर मील के पत्थर पर, हर दीवार पर बहाया है, मैं कोमल रहा हूँ, जबकि दूसरे मेरे प्रति कठोर रहे हैं, और दयालु रहा हूँ, जबकि दूसरे द्वेषपूर्ण रहे हैं, मैं हर चीज के बावजूद एक बार फिर ईमानदार आदमी बन गया हूँ, मैंने अपने किए हुए बुरे कामों का पश्चाताप किया है और मेरे साथ हुए बुरे कामों को माफ कर दिया है, और जिस क्षण मुझे मेरा प्रतिफल मिलेगा, जिस क्षण सब कुछ समाप्त हो जाएगा, जिस क्षण मैं लक्ष्य को छू रहा हूँ, जिस क्षण मुझे वह मिल जाएगा जो मैं चाहता हूँ, वह क्षण है...” खैर, यह अच्छा है, मैंने भुगतान कर दिया है, मैंने इसे कमाया है, यह सब उड़ जाएगा, यह सब गायब हो जाएगा, और मैं कोसेट को खो दूंगा, और मैं अपना जीवन, अपनी खुशी, अपनी आत्मा खो दूंगा, क्योंकि एक बड़े मूर्ख को लक्ज़मबर्ग में आकर आराम करना अच्छा लगा।

फिर उसकी आँखों में एक उदास और असाधारण चमक आ गई।

अब यह एक आदमी द्वारा दूसरे आदमी को घूरने का दृश्य नहीं था; अब यह एक दुश्मन द्वारा दुश्मन का जायजा लेने का दृश्य नहीं था। यह एक कुत्ते द्वारा चोर की तलाशी लेने का दृश्य था।

बाकी की कहानी तो पाठक को पता ही है। मारियस अपने निरर्थक रास्ते पर चलता रहा। एक दिन वह कोसेट के पीछे-पीछे रू डे ल'ओएस्ट तक गया। दूसरे दिन उसने चौकीदार से बात की। चौकीदार ने भी अपनी तरफ से कहा, "महाशय, वह जिज्ञासु युवक कौन है जो आपके बारे में पूछ रहा है?" अगले दिन जीन वालजीन ने मारियस को वह दृष्टि दी जिसे मारियस ने अंततः समझा। एक सप्ताह बाद, जीन वालजीन वहां से चला गया। उसने मन ही मन कसम खाई कि वह फिर कभी न तो लक्ज़मबर्ग में कदम रखेगा और न ही रू डे ल'ओएस्ट में। वह रू प्लूमेट लौट आया।

कोसेट ने कोई शिकायत नहीं की, कुछ नहीं कहा, कोई सवाल नहीं पूछा, उसके कारणों को जानने की कोशिश भी नहीं की; वह उस स्थिति में पहुँच चुकी थी जहाँ उसे अपने भेद खुलने और खुद को उजागर करने का डर सता रहा था। जीन वालजेन को इन विपत्तियों का कोई अनुभव नहीं था, ये एकमात्र ऐसी विपत्तियाँ थीं जो मनमोहक थीं और जिनसे वह अनभिज्ञ था; परिणामस्वरूप, वह कोसेट की चुप्पी के गंभीर अर्थ को नहीं समझ पाया।

उसने बस इतना देखा कि वह उदास हो गई है, और वह खुद भी उदास हो गया। दोनों तरफ से, अनुभवहीनता एक समस्या बन गई थी।

एक बार उसने एक प्रयोग किया। उसने कोसेट से पूछा:—

क्या आप लक्ज़मबर्ग आना चाहेंगे?

एक किरण ने कोसेट के पीले पड़े चेहरे को रोशन कर दिया।

“हां,” उसने कहा।

वे वहाँ गए। तीन महीने बीत चुके थे। मारियस अब वहाँ नहीं जाता था। मारियस वहाँ नहीं था।

अगले दिन, जीन वाल्जेन ने कोसेट से फिर पूछा:—

क्या आप लक्ज़मबर्ग आना चाहेंगे?

उसने उदास और कोमल स्वर में उत्तर दिया:—

"नहीं।"

जीन वाल्जेन इस दुख से आहत हुए और इस कोमलता को देखकर उनका हृदय टूट गया।

उस युवा मन में आखिर क्या चल रहा था, जो इतना रहस्यमय था? उसके भीतर क्या चल रहा था? कोसेट की आत्मा में क्या हलचल मची हुई थी? कभी-कभी, सोने के बजाय, जीन वालजेन अपने पलंग पर सिर हाथों में लिए बैठे रहते थे और पूरी रात खुद से पूछते रहते थे: "कोसेट के मन में क्या चल रहा है?" और उन बातों के बारे में सोचते रहते थे जिनके बारे में वह सोच रही होगी।

ओह! ऐसे क्षणों में, वह उस मठ, उस पवित्र शिखर, उस देवदूतों के निवास, उस दुर्गम पुण्य के हिमनद की ओर कितनी उदास निगाहें डालता होगा! वह उस मठ के बगीचे को, उपेक्षित फूलों और एकांतवास में रहने वाली कुंवारी कन्याओं से भरे उस बगीचे को, जहाँ सभी सुगंध और सभी आत्माएँ सीधे स्वर्ग की ओर बढ़ती हैं, निराशा और परमानंद से कैसे निहारता होगा! वह उस स्वर्ग को, जो उसके लिए हमेशा के लिए बंद था, जहाँ से वह स्वेच्छा से और उन्माद में निकला था, कैसे पूजता होगा! उसे अपने त्याग और कोसेट को वापस दुनिया में लाने की अपनी मूर्खता पर कितना पछतावा होगा, बलिदान की बेचारी नायिका, जिसे उसकी आत्म-समर्पण ने ही छीनकर धरती पर पटक दिया था! वह अपने आप से कैसे कहता होगा, "मैंने क्या कर दिया?"

हालांकि, कोसेट को इन सब बातों का ज़रा भी आभास नहीं हुआ। न कोई चिड़चिड़ापन, न कोई कठोरता। उनका चेहरा हमेशा शांत और सौम्य रहता था। जीन वालजेन का व्यवहार पहले से कहीं अधिक कोमल और पितृवत था। अगर किसी चीज़ से उनकी उदासी ज़ाहिर हो सकती थी, तो वह थी उनकी बढ़ती हुई विनम्रता।

दूसरी ओर, कोसेट उदास थी। मारियस की अनुपस्थिति से वह उतनी ही दुखी थी जितनी उसकी उपस्थिति में वह आनंदित होती थी, अजीब तरह से, बिना ठीक से सचेत हुए। जब जीन वालजेन ने उसे अपनी नियमित सैर पर ले जाना बंद कर दिया, तो उसके मन में एक स्त्री सहज बोध ने अस्पष्ट रूप से कहा कि उसे लक्ज़मबर्ग उद्यान को महत्व नहीं देना चाहिए, और यदि यह उसके लिए कोई मायने नहीं रखता, तो उसके पिता उसे वहाँ फिर से ले जाएँगे। लेकिन दिन, सप्ताह, महीने बीतते गए। जीन वालजेन ने चुपचाप कोसेट की मौन सहमति स्वीकार कर ली थी। उसे इसका पछतावा हुआ। बहुत देर हो चुकी थी। मारियस गायब हो चुका था; सब कुछ समाप्त

हो गया था। जिस दिन वह लक्ज़मबर्ग लौटी, मारियस वहाँ नहीं था। अब क्या किया जाए? क्या वह उसे कभी फिर से पा सकेगी? उसके हृदय में एक ऐसी पीड़ा थी, जो किसी भी चीज से कम नहीं हो रही थी, और जो हर दिन बढ़ती जा रही थी; उसे अब यह भी नहीं पता था कि सर्दी है या गर्मी, बारिश हो रही है या धूप, पक्षी गा रहे हैं या नहीं, डहलिया का मौसम है या डेज़ी का, लक्ज़मबर्ग ट्यूलरीज़ से ज़्यादा आकर्षक है या नहीं, धोबी जो कपड़े घर लाई थी उसमें ज़्यादा स्टार्च लगा था या कम, टूसेंट ने "अपनी खरीदारी" अच्छी तरह की थी या बुरी तरह; और वह उदास, मग्न, एक ही विचार में डूबी हुई, उसकी आँखें धुंधली और टकटकी लगाए हुए थीं, मानो कोई रात में किसी काले और अथाह स्थान को घूर रहा हो जहाँ कोई प्रेत गायब हो गया हो।

हालांकि, उसने जीन वाल्जेन को इस बात का कुछ भी पता नहीं चलने दिया, सिवाय उसके चेहरे की पीली पड़ चुकी शक्ल के।

वह अब भी उसके लिए अपना प्यारा सा चेहरा बनाए रखती थी।

यह पीलापन जीन वालजेन को परेशान करने के लिए काफी तो था, लेकिन कुछ ज्यादा ही था। कभी-कभी वह उससे पूछता था:—

"तुम्हारे साथ क्या बात है?"

उसने जवाब दिया: "मुझे कुछ भी नहीं हुआ है।"

और कुछ देर की चुप्पी के बाद, जब उसे यह एहसास हो जाता कि वह भी दुखी है, तो वह आगे कहती:—

“और आप, पिताजी—क्या आपको कोई परेशानी है?”

“मेरे साथ? कुछ नहीं,” उसने कहा।

ये दोनों प्राणी, जिन्होंने एक-दूसरे को इतने अनन्य रूप से और इतने भावपूर्ण स्नेह से प्यार किया था, और जो एक-दूसरे के लिए इतने लंबे समय तक जिए थे, अब एक-दूसरे के कारण कंधे से कंधा मिलाकर पीड़ा सह रहे थे; एक-दूसरे के प्रति बिना स्वीकार किए, बिना एक-दूसरे के प्रति क्रोध किए, और मुस्कुराते हुए।

VIII. जंजीर-कक्ष

जीन वाल्जेन दोनों में से अधिक दुखी था। जवानी, अपने दुखों में भी, हमेशा अपनी एक विशेष चमक रखती है।

कई बार जीन वालजेन इतना अधिक दुखी हो जाते थे कि उनका व्यवहार बचकाना हो जाता था। दुःख की यह विशेषता होती है कि वह मनुष्य के भीतर के बचकानेपन को फिर से प्रकट कर देता है। उन्हें यह अटूट विश्वास था कि कोसेट उनसे दूर जा रही है। वे उसे रोकना चाहते थे, उसे अपने पास रखना चाहते थे, किसी बाहरी और आकर्षक वस्तु से उसके उत्साह को जगाना चाहते थे। ये विचार, जैसा कि हमने अभी कहा, बचकाने और साथ ही बुढ़ापे के भी थे, और अपनी बचकानी प्रकृति के कारण ही उन्हें युवा लड़कियों की कल्पनाओं पर सोने की फीती के प्रभाव का एक काफी हद तक सही अंदाजा देते थे। एक बार संयोग से उन्होंने एक जनरल को घोड़े पर सवार होकर, पूरी वर्दी में, सड़क से गुजरते देखा, जो पेरिस के कमांडेंट कॉम्टे कौटार्ड थे। उन्हें उस सुनहरे वस्त्रधारी व्यक्ति से ईर्ष्या हुई; उन्होंने मन ही मन सोचा, कितनी खुशी की बात होगी अगर वे भी वह सूट पहन सकें जो एक निर्विवाद वस्तु थी; और अगर कोसेट उसे इस हालत में देख पाती, तो वह चकित रह जाती, और जब वह कोसेट का हाथ थामे ट्यूलरीज़ के द्वार से गुजरता, तो गार्ड उसे सलामी देता, और यह कोसेट के लिए काफी होता, और युवा पुरुषों को देखने का उसका विचार दूर हो जाता।

इन दुखद विचारों में एक अप्रत्याशित झटका भी जुड़ गया।

अपने एकांत जीवन में, और जब से वे रू प्लूमेट में रहने लगे थे, उन्होंने एक आदत अपना ली थी। वे कभी-कभी सूर्योदय देखने के लिए सैर पर निकल जाते थे, जो एक सौम्य प्रकार का आनंद था, जो जीवन में प्रवेश करने वालों और जीवन को छोड़ने वालों दोनों के लिए उपयुक्त था।

एकांत पसंद करने वालों के लिए, सुबह-सुबह की सैर रात की सैर के बराबर होती है, बस प्रकृति की उमंग और भी बढ़ जाती है। सड़कें सुनसान होती हैं और पक्षी चहचहाते हैं। कोसेट, जो खुद भी एक चिड़िया जैसी थी, सुबह जल्दी उठना पसंद करती थी। ये सुबह की सैर पिछली शाम को ही तय हो जाती थीं। उसने

प्रस्ताव रखा और वह मान गई। सब कुछ एक योजना की तरह तय होता था, वे सूर्योदय से पहले ही निकल पड़ते थे, और ये सैर कोसेट के लिए कई छोटी-छोटी खुशियाँ होती थीं। युवाओं को ये मासूम सी आदतें बहुत भाती हैं।

जैसा कि हम देख चुके हैं, जीन वालजेन का झुकाव कम भीड़-भाड़ वाली जगहों, सुनसान कोनों और भूली-बिसरी जगहों की ओर होता था। पेरिस की सीमा के पास एक तरह के बंजर मैदान थे, जो शहर से लगभग अलग-थलग थे। गर्मियों में वहाँ मुरझाए हुए अनाज उगते थे, और शरद ऋतु में फसल कटने के बाद वे ऐसे लगते थे मानो काटे नहीं गए हों, बल्कि छिले हुए हों। जीन वालजेन को इन खेतों में जाना बहुत पसंद था। कोसेट वहाँ ऊबती नहीं थी। वहाँ जीन वालजेन को एकांत मिलता था और कोसेट को आजादी। वहाँ वह फिर से एक छोटी बच्ची बन जाती थी; वह दौड़ सकती थी और लगभग खेल सकती थी; वह अपनी टोपी उतारकर जीन वालजेन की गोद में रख देती थी और फूलों के गुच्छे तोड़ती थी। वह फूलों पर बैठी तितलियों को निहारती थी, लेकिन उन्हें पकड़ती नहीं थी; कोमलता और स्नेह प्रेम से ही उत्पन्न होते हैं, और जिस बच्ची के हृदय में एक कांपता हुआ और नाजुक आदर्श होता है, वह तितली के पंख पर दया करती है। उसने अफीम के फूलों की मालाएं बुनीं, जिन्हें उसने अपने सिर पर रखा, और जो सूर्य की रोशनी से आपस में टकराकर और उनमें प्रवेश करके, तब तक चमकती रहीं जब तक कि वे ज्वाला में तब्दील नहीं हो गईं, जिससे उसके गुलाबी चेहरे पर जलते हुए अंगारों का मुकुट बन गया।

उनका जीवन दुखमय हो जाने के बावजूद भी उन्होंने सुबह की सैर की अपनी परंपरा को जारी रखा।

इसलिए, अक्टूबर की एक सुबह, 1831 की शरद ऋतु की शांत पूर्णता से प्रेरित होकर, वे निकल पड़े और स्वयं को बैरियर डू मेन के पास भोर के समय पाया। यह भोर नहीं थी, बल्कि दिन का उजाला था; एक सुखद और गंभीर क्षण। गहरे, हल्के नीले आकाश में इधर-उधर कुछ तारामंडल, धरती पूरी तरह काली, आकाश पूरी तरह सफेद, घास की पत्तियों के बीच हल्की सी सरसराहट, हर जगह गोधूलि की रहस्यमय ठंडक। एक लार्क, जो तारों में घुलमिल गया प्रतीत होता था, एक अद्भुत ऊँचाई पर चहचहा रहा था, और कोई कह सकता था कि वह सूक्ष्मता का गीत विशालता को शांत कर देता है। पूर्व में, वैल-डे-ग्रेस पर्वतमाला ने अपने गहरे विशालकाय रूप को स्पष्ट क्षितिज पर इस्पात की तीक्ष्णता के साथ

प्रक्षेपित किया; शुक्र ग्रह उस गुंबद के पीछे से चकाचौंध भरी चमक के साथ उदय हो रहा था और ऐसा लग रहा था मानो कोई आत्मा किसी अंधकारमय इमारत से निकलकर भाग रही हो।

चारों ओर शांति और सन्नाटा था; सड़क पर कोई नहीं था; कुछ छिटपुट मजदूर, जिनकी एक झलक ही उन्हें दिखाई दी, पगडंडियों से होते हुए अपने काम पर जा रहे थे।

जीन वालजेन एक लकड़ी के गोदाम के गेट पर रखे कुछ तख्तों पर बने क्रॉसिंग पर बैठे थे। उनका चेहरा राजमार्ग की ओर था, पीठ रोशनी की ओर; वे उगते सूरज को भूल चुके थे; वे एक ऐसी गहरी तल्लीनता में डूब गए थे जिसमें मन एकाग्र हो जाता है, जो आँखों को भी जकड़ लेती है, और जो चार दीवारों के समान होती है। कुछ ध्यान ऐसे होते हैं जिन्हें ऊर्ध्वगामी कहा जा सकता है; जब कोई उनमें सबसे नीचे पहुँच जाता है, तो धरती पर लौटने में समय लगता है। जीन वालजेन ऐसी ही एक तल्लीनता में डूब गए थे। वे कोसेट के बारे में सोच रहे थे, उस खुशी के बारे में जो संभव थी अगर उनके और उसके बीच कुछ भी न आए, उस प्रकाश के बारे में जिससे उसने उनके जीवन को भर दिया था, एक ऐसा प्रकाश जो उसकी आत्मा का ही प्रतिबिंब था। वे अपनी तल्लीनता में लगभग प्रसन्न थे। कोसेट, जो उनके बगल में खड़ी थी, गुलाबी होते बादलों को निहार रही थी।

अचानक कोसेट ने कहा, "पिताजी, मुझे लगता है कि कोई उधर से आ रहा है।" जीन वाल्जेन ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं।

कोसेट सही थी। जैसा कि पाठक जानते हैं, प्राचीन बैरियर डू मेन की ओर जाने वाला पुलिया, रू डे सेवरेस का ही विस्तार है और भीतरी बुलेवार्ड इसे समकोण पर काटता है। पुलिया और बुलेवार्ड के मोड़ पर, जहाँ से यह दो भागों में बँटता है, उन्हें एक ऐसी आवाज़ सुनाई दी जिसका उस समय कारण समझना कठिन था, और एक अजीब सी अव्यवस्थित आकृति दिखाई दी। बुलेवार्ड से आती हुई कोई आकारहीन वस्तु सड़क की ओर मुड़ रही थी।

यह आकार में बड़ा होता गया, यह व्यवस्थित ढंग से चलता हुआ प्रतीत हुआ, हालांकि यह कांप रहा था और हिल रहा था; यह एक वाहन प्रतीत हुआ, लेकिन इस पर लदा सामान स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था। घोड़े थे, पहिए थे, चीखें थीं; चाबुक चल रहे थे। धीरे-धीरे इसकी आकृति स्पष्ट हो गई, हालांकि यह छाया

में डूबी हुई थी। वास्तव में, यह एक वाहन था जो अभी-अभी बुलेवार्ड से राजमार्ग पर मुड़ा था, और जीन वालजेन के पास स्थित बैरियर की ओर बढ़ रहा था; उसी रूप का एक दूसरा वाहन उसके पीछे आया, फिर तीसरा, फिर चौथा; सात रथ एक के बाद एक दिखाई दिए, घोड़ों के सिर आगे वाले रथ के पिछले हिस्से को छू रहे थे। इन वाहनों पर आकृतियाँ चल रही थीं, धुंध में चमक दिखाई दे रही थी मानो वहाँ नंगी तलवारें हों, जंजीरों की खड़खड़ाहट जैसी आवाज सुनाई देने लगी, और जैसे-जैसे यह आगे बढ़ा, आवाजें तेज होती गईं, और यह एक भयानक चीज में बदल गया जो सपनों की गुफा से निकलती है।

जैसे-जैसे यह नज़दीक आता गया, इसने एक रूप धारण कर लिया, और पेड़ों के पीछे एक प्रेत की फीकी आभा से इसकी रूपरेखा उभर आई; यह समूह सफेद हो गया; धीरे- धीरे उगता हुआ दिन इस भीड़ भरे ढेर पर एक धुंधली रोशनी डाल रहा था जो एक साथ कब्र जैसा और सजीव दोनों था, आकृतियों के सिर लाशों के चेहरों में बदल गए, और यह वही निकला:—

सात गाड़ियाँ एक कतार में सड़क पर चल रही थीं। पहली छह गाड़ियाँ अनोखी बनावट की थीं। वे लकड़ी के लट्ठे बनाने वालों की गाड़ियों जैसी दिखती थीं; उनमें दो पहियों पर लंबी सीढ़ियाँ लगी थीं, जिनके पिछले सिरे ठेलानुमा आकार बनाते थे। प्रत्येक गाड़ी, या कहें कि प्रत्येक सीढ़ी, चार घोड़ों से जुड़ी थी जो एक के बाद एक जोते गए थे। इन सीढ़ियों पर आदमियों के अजीबोगरीब समूह सवार थे। धुंधली रोशनी में, इन आदमियों को देखा नहीं जा सकता था, बल्कि उनका अंदाज़ा लगाया जा सकता था। प्रत्येक गाड़ी पर चौबीस, एक तरफ बारह, पीठ से पीठ मिलाकर, राहगीरों की ओर मुंह किए, उनके पैर हवा में लटक रहे थे—इस तरह ये आदमी यात्रा कर रहे थे, और उनकी पीठ के पीछे कुछ खनक रहा था, जो एक जंजीर थी, और उनकी गर्दन पर कुछ चमक रहा था, जो एक लोहे का पट्टा था। हर आदमी का अपना पट्टा था, लेकिन जंजीर सभी के लिए थी; यदि इन चौबीस आदमियों को गाड़ी से उतरकर पैदल चलना पड़ता, तो उनमें एक अटूट एकता आ जाती और वे जंजीर को रीढ़ की हड्डी बनाकर, कनखजूरे की तरह ज़मीन पर रेंगने के लिए विवश हो जाते। प्रत्येक गाड़ी के आगे और पीछे, दो-दो आदमी बंदूकों से लैस खड़े थे, प्रत्येक ने जंजीर का एक सिरा अपने पैर के नीचे दबा रखा था। लोहे के हार चौकोर थे। सातवीं गाड़ी, एक विशाल रैकनुमा सामान ढोने वाली गाड़ी, बिना छत के, चार पहियों और छह घोड़ों वाली थी, और उस पर लोहे के

बॉयलर, ढलवां लोहे के बर्तन, अंगीठी और जंजीरों का एक गड़गड़ाता ढेर लदा था, जिनके बीच कई आदमी जकड़े हुए और पूरी लंबाई तक खिंचे हुए थे, और बीमार प्रतीत हो रहे थे। यह गाड़ी, पूरी तरह से जालीदार थी, और जर्जर बाड़ों से सजी थी जो शायद पहले सजा देने के लिए इस्तेमाल होती थीं। ये गाड़ियाँ सड़क के बीचोंबीच चलती थीं। दोनों ओर कुख्यात दिखने वाले पहरेदारों की दोहरी कतार चल रही थी, जो डायरेक्टरी के अधीन सैनिकों की तरह तीन कोनों वाली टोपियाँ पहने हुए थे, मैले-कुचैले, दाग-धब्बों से ढके हुए, अनुभवी सैनिकों की वर्दी और अंतिम संस्कार करने वालों के आदमियों की आधी धूसर, आधी नीली, लगभग चिथड़ों में लटकी हुई पतलून में लिपटे हुए थे, साथ में लाल कंधे के बैज, पीले कंधे के बेल्ट, छोटी तलवारें, बंदूकें और लाठियाँ थीं; वे एक प्रकार के गुंडे-सैनिक थे। ये गुंडे भिखारी की दीनता और जल्लाद के अधिकार का मिश्रण प्रतीत होते थे। जो उनका सरदार प्रतीत होता था, उसके हाथ में एक पोस्टिलियन का कोड़ा था। भोर के धुंधलेपन में ये सभी विवरण धुंधले दिखाई दे रहे थे, लेकिन जैसे-जैसे प्रकाश बढ़ता गया, वे और अधिक स्पष्ट होते गए। काफिले के आगे और पीछे गंभीर मुद्रा में, मुट्ठी में तलवार लिए घुड़सवार जेंडरमे (पुलिसकर्मी) सवार थे।

यह जुलूस इतना लंबा था कि जब पहला वाहन बैरियर तक पहुँचा, तब तक आखिरी वाहन मुश्किल से ही सड़क से निकल पाया था। पेरिस में अक्सर ऐसा ही होता है, पलक झपकते ही एक भीड़ उमड़ पड़ी, जो न जाने कहाँ से आई और सड़क के दोनों ओर से आगे बढ़कर देखने लगी। आस-पास की गलियों में लोगों के एक-दूसरे को पुकारने की आवाज़ें और बाज़ार में सामान बेचने वालों के लकड़ी के जूतों की आहट सुनाई दे रही थी, जो देखने के लिए जल्दी से आगे बढ़ रहे थे।

गाड़ी पर सवार सभी पुरुष चुपचाप झटके सहते हुए आगे बढ़ रहे थे। सुबह की ठंड से वे व्याकुल थे। सभी ने सूती पतलून पहनी हुई थी और नंगे पैर लकड़ी के जूतों में ठूंसे हुए थे। उनकी बाकी पोशाक दयनीयता का एक विकृत उदाहरण थी। उनका पहनावा बेहद बेमेल था; फटे-पुराने कपड़ों में लिपटे जोकर से ज्यादा दुखद कुछ नहीं हो सकता। फटी हुई फेल्ट की टोपियाँ, तिरपाल की टोपियाँ, भद्दी ऊनी नाइट कैप और एक छोटी सी ब्लाउज के साथ कोहनी से फटा हुआ काला कोट; कई लोगों ने महिलाओं के सिर पर पहनने वाले वस्त्र पहने थे, कुछ ने अपने सिर पर टोकरियाँ रखी हुई थीं; बालों वाले स्तन दिखाई दे रहे थे और

xxxxx xxxxxxx xxx xxx xxx xxxxxxxx xx xxxxx xx xxxxxxxx xxxxx xx xxxxx xx; xxxxxx xx xxxxxx, xxxxxx xxx, xxxxxxx; xxxxx xx xxxxxxxx xxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxx xxx xx-xxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxx xx xx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xxx xx, xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xx xxx xxxxx xxx xxx xxxxxx xx xx xx xx xxxxx xxx xxx xxx xxxxx xxx xx xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxx xx xx xxx xx xx xx xxxxxx xxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxx xx, xx xxxxx xx xxxxx xxx xx; xx xxxxx xx xxx xxx xxxxx xxxxxx xx xxx xx xx xxxxx, xxxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xx xxx xxx xxx xxxxxxxxx xx xxxxxxxx xx xxx xx, xxxxxxxx xxx xxxxxx xxx xxx xx xxxxx xx xxxxx xxx xxx xx; xxx-xxx xxx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxx xx xxx xx; xxxxxx xx xxx xxx xxxxxxx xx xxx xx; xxxxx xxxxxx xxxxxx xx; xxxxx xxx xxxxx xxx xx, xxxxx xxxxx xxx xxx xx, xxxxx xxx xxx xxx xxxxx xxx xx, xxxxx xxxxxxxxx xxx xxx xxx, xxxxx xxxxxx xxxxxxxx xx xxx xxx xxx, xxxxx xxxxxxxxxx xxxxxx xxx xxx xx xxxxxx xx xxxxxx xx xxx xxxxxxxxxx xxx xx xxxxx xxx xxx; xxxxxxx xx xxxxx xxxxxxx xx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxx xxx

xxxxxxx xx xx xxxxxxx, xxxxx xx xx xx, xxxxxxxxx xxx xx xxxxxxx xx xx xx, xx xxxxx xxx, xxxxxxxxx xxxxxx xx xxxxx xx, xxxxx xxx xx xx xxx xx xxxxxx xx xxxxx xx, xx xxxxx xxxxxx xxxxxxx xxx xxxxxxx, xx xxx xxxxxx xx xxx xx xxx xxx xx xxx xxxxx xxxxxxx, xx xxx xxx xxxxx xx xxx xx xxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxxx, xxxxx xxxxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxxxx xx xxxxx xxxxxx, xxxxx xxxxx xxxxxx xxx xx xxxxxx, xxxxxxx xx xxx xx xxxxx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxxx, xxxxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxx, xxxxx xxx xxxxxx xxxxxxx, xx xxx xxx xx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxxxxxxxx xx xxxxxx xxxxxxx xxxxxx xx, xx xxxxxx, xxxxx xx xxx xx xxx xxxxxxxxx xx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxxx xx xxx xxxxx xxx

xxxxx xx xx xxxxxx xxxxxx xx xx xxxxxxxx xx xxx xxxxx xxx xxx xxx xxxxx xxxxxx xx, xx xxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxx xx xxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xx, xx xxx xx xxx xx xxxxx xxxxxxx xxx xx xxx xxxxxx xx xxx xxxxx xxxxxx xxx xxx

xxxxxx xxxxxx xxxxxx xxx; xxxxx xx xxxxxx xxxxxxx xxx xxxxx, xx xxx xxx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxxx xxxxxxx xxx xx xxx xx xxx xxxxx xxxxxxxxx xxx xxx; xxxxx,

गालियों और गीतों की आग भड़क उठी। प्रकाश की चौड़ी क्षैतिज चादर ने कतार को दो भागों में बांट दिया, सिर और शरीर को रोशन कर दिया, जबकि पैर और पहिए अंधेरे में डूबे रहे। इन चेहरों पर विचार उभरने लगे; यह एक भयानक क्षण था; मुखौटे उतरे हुए राक्षस, निर्भीक आत्माएं। प्रकाश से जगमगाते हुए भी, यह जंगली भीड़ अंधकार में डूबी रही। कुछ खुशमिजाज लोगों के मुंह में कलम थी, जिनसे वे भीड़ पर कीड़े उड़ा रहे थे, खासकर महिलाओं को चुन-चुनकर; भोर की काली छाया ने इन दयनीय चेहरों को और भी भयावह बना दिया; इन प्राणियों में से कोई भी ऐसा नहीं था जो दयनीयता के कारण विकृत न हो; और पूरा दृश्य इतना भयावह था कि ऐसा लगा मानो सूर्य की चमक बिजली की चकाचौंध में बदल गई हो। सबसे आगे चल रही गाड़ी में लदे लोग एक गाना गाने लगे और थकी-हारी खुशी के साथ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, यह डेसौगियर्स की उस समय की मशहूर रचना "द वेस्टल" का मिश्रण था; पेड़ उदास होकर कांप रहे थे; गलियों में, बुर्जुआ लोगों के चेहरे इन भद्दे सुरों को सुनकर मूर्खतापूर्ण आनंद ले रहे थे।

इस जुलूस में हर तरह की पीड़ा एक अराजक स्थिति में समाई हुई थी; यहाँ हर प्रकार के जानवरों के चेहरे दिखाई दे रहे थे, बूढ़े, युवक, गंजे सिर, सफ़ेद दाढ़ी वाले, निंदक राक्षस, कड़वी निराशा, क्रूर मुस्कान, बेतुके हाव-भाव, टोपी से ढके थूथन, कनपटी पर घुंघराले बालों वाली युवतियों जैसे सिर, शिशुवत चेहरे, और इसी कारण से भयानक पतले कंकाल जैसे चेहरे, जिनमें मृत्यु की ही कमी थी। पहली गाड़ी पर एक नीग्रो था, जो संभवतः गुलाम रहा होगा, और जो अपनी जंजीरों की तुलना कर सकता था। नीचे से आने वाली भयानक शर्म, उसके माथे पर छा गई थी; अपमान की उस हद तक, सभी अपने चरम अंधकार में अंतिम परिवर्तनों से गुज़रे थे, और अज्ञानता, जो मंदबुद्धि में परिवर्तित हो गई थी, बुद्धि के निराशा में परिवर्तित होने के बराबर थी। इन लोगों के बीच कोई विकल्प नहीं था जो देखने में कीचड़ के फूल जैसे लग रहे थे। यह स्पष्ट था कि उस अपवित्र जुलूस का आदेश देने वाले व्यक्ति ने उन्हें वर्गीकृत नहीं किया था। इन प्राणियों को बेतरतीब ढंग से, शायद वर्णमाला क्रम में, जंजीरों में जकड़कर उन गाड़ियों पर लाद दिया गया था। फिर भी, जब भयावहता एक साथ एकत्रित होती है, तो उसका परिणाम हमेशा एक ही होता है; दुखी मनुष्यों का हर समूह एक योग बनाता है, हर जंजीर एक समान आत्मा को जन्म देती है, और हर गाड़ी के भार का अपना एक रूप होता है। जहाँ वे गा रहे थे, उसके बगल में एक और था जहाँ वे

विलाप कर रहे थे; एक में वे भीख मांग रहे थे; एक में वे अपने दांत पीस रहे थे; एक और भार दर्शकों को धमका रहा था, एक ईश्वर की निंदा कर रहा था; अंतिम कब्र की तरह शांत था। दांते ने सोचा होगा कि वह नरक के अपने सात चक्रों को आगे बढ़ते हुए देख रहा है। यातनाओं के लिए दंडित लोगों का जुलूस, भयावह तरीके से संपन्न हुआ, प्रलय के दुर्जेय और धधकते रथ पर नहीं, बल्कि उससे भी अधिक दुखद बात यह थी कि उन्हें फांसी के तख्ते पर ले जाया गया।

एक पहरेदार, जिसके डंडे के सिरे पर एक हुक लगा था, समय-समय पर इस गंदगी के ढेर को जानबूझकर हिलाने का नाटक करता था। भीड़ में बैठी एक बूढ़ी औरत ने अपने पाँच साल के छोटे बेटे को यह सब दिखाते हुए कहा, "बदमाश, यह तुम्हारे लिए एक चेतावनी है!"

जैसे-जैसे गीत और अपशब्द बढ़ते गए, जो व्यक्ति अंगरक्षक दल का कप्तान प्रतीत होता था, उसने अपना चाबुक चलाया, और उसी क्षण सात गाड़ियों पर भयानक, धीमी और अंधाधुंध पिटाई शुरू हो गई, जिससे ओलों जैसी आवाज उत्पन्न हुई; कई लोग चीखने लगे और उनके मुंह से झाग निकलने लगा; जिससे उन गली के बच्चों की खुशी दोगुनी हो गई जो जल्दी से ऊपर आ गए थे, और मक्खियों का झुंड उनके घावों पर मंडराने लगा।

जीन वाल्जेन की आँखों में एक भयानक भाव आ गया था। वे अब आँखें नहीं थीं; वे उन गहरी और बेजान वस्तुओं जैसी थीं जो कुछ दुखी लोगों की नज़र की जगह ले लेती हैं, जो वास्तविकता से बेखबर लगती हैं, और जिनमें भय और विपत्तियों का प्रतिबिंब चमकता है। वह किसी दृश्य को नहीं देख रहा था, वह एक अवास्तविक दृश्य देख रहा था। उसने उठने की, भागने की, बच निकलने की कोशिश की; वह अपने पैरों को हिला नहीं सका। कभी-कभी, जो चीजें आप देखते हैं वे आपको जकड़ लेती हैं और जकड़ कर रखती हैं। वह वहीं जम गया, पत्थर की तरह स्तब्ध, मूर्ख, अपने आप से, उलझन और अवर्णनीय पीड़ा के बीच, पूछ रहा था कि इस कब्रनुमा उत्पीड़न का क्या अर्थ है, और वह कोलाहल कहाँ से आया है जो उसका पीछा कर रहा है। अचानक, उसने अपना हाथ अपने माथे पर उठाया, एक ऐसा हावभाव जो उन लोगों में आम है जिनकी स्मृति अचानक लौट आती है; उसे याद आया कि वास्तव में यही सामान्य यात्रा कार्यक्रम था, फॉन्टेनब्लू जाने वाली सड़क पर राजघराने से सामना होने की किसी भी संभावना से बचने के लिए इस तरह का चक्कर लगाना प्रथागत था, और यह कि पैंतीस साल पहले वह खुद उस बाधा को पार कर चुका था।

कोसेट भी उतनी ही भयभीत थी, लेकिन एक अलग तरह से। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था; जो कुछ उसने देखा वह उसे असंभव लग रहा था; अंततः वह चिल्लाई:—

“पिताजी! उन गाड़ियों में वे आदमी कौन हैं?”

जीन वाल्जेन ने उत्तर दिया: "कैदी।"

वे कहाँ जा रहे हैं?

“जहाजों की ओर।”

उस क्षण, सौ हाथों से हो रही लाठियों की मार और भी तीव्र हो गई, तलवार के सपाट हिस्से से किए गए वार भी उसमें शामिल हो गए, यह कोड़ों और लाठियों का एक भयंकर तूफान था; कैदी इसके सामने झुक गए, यातना से एक भयानक आज्ञाकारिता उत्पन्न हुई, और सभी चुप रहे, जंजीरों में बंधे भेड़ियों की तरह इधर-उधर निगाहें गड़ाए रहे।

कोसेट के शरीर का हर अंग कांप रहा था; उसने फिर से बोलना शुरू किया:—

“पिताजी, क्या वे अब भी पुरुष हैं?”

“कभी-कभी,” दुखी व्यक्ति ने उत्तर दिया।

दरअसल, जंजीरों में जकड़े हुए कैदियों का समूह भोर होने से पहले बिसेत्रे से निकला था और राजा के निवास स्थान फॉन्टेनब्लू से बचने के लिए मैन्स की ओर मुड़ गया था। इस वजह से यह भयानक यात्रा तीन-चार दिन और लंबी खिंच गई; लेकिन राजा को यातना का दृश्य देखने से बचाने के उद्देश्य से यातना को जानबूझकर लंबा खींचा जा सकता है।

जीन वालजेन पूरी तरह से स्तब्ध होकर घर लौटा। ऐसे अनुभव सदमे जैसे होते हैं, और उनसे मिलने वाली यादें एक गहरे आघात के समान होती हैं।

फिर भी, जीन वाल्जेन ने ध्यान नहीं दिया कि कोसेट के साथ रू डे बैबिलोन लौटते समय, कोसेट उनसे उस विषय पर और भी सवाल पूछ रही थी जो उन्होंने अभी- अभी देखा था; शायद वह अपने ही दुख में इतना डूबा हुआ था कि उसने कोसेट की बातों पर ध्यान नहीं दिया और न ही उनका जवाब दिया। लेकिन जब शाम को कोसेट उसे छोड़कर सोने जा रही थी, तो उसने उसे धीमी आवाज़ में, मानो खुद से बात करते हुए, कहते सुना: "मुझे लगता है कि अगर मुझे उनमें से कोई आदमी मेरे रास्ते में मिल जाए, हे भगवान, मैं तो उसे पास से देखकर ही मर जाऊंगी।"

सौभाग्यवश, संयोग से उस दुखद दिन के अगले दिन, किसी न जाने किस बात को लेकर कोई औपचारिक समारोह था—पेरिस में उत्सव, चैंप डी मार्स में जुलूस, सीन नदी पर तलवारबाजी, चैंप्स-एलिसी में नाट्य प्रदर्शन, आर्क डी ल'एटॉइल में आतिशबाजी, हर जगह रोशनी। जीन वालजेन ने अपनी आदतों के विपरीत जाकर कोसेट को ये उत्सव दिखाने का फैसला किया, ताकि उसका ध्यान बीते दिन की याद से हट जाए और पेरिस के मुस्कुराते हुए कोलाहल में वह घिनौनी घटना मिट जाए जो उसके सामने घटी थी। उत्सव में शामिल जुलूस ने वर्दी की उपस्थिति को स्वाभाविक बना दिया; जीन वालजेन ने राष्ट्रीय रक्षक की वर्दी ऐसे पहनी जैसे वह किसी शरण में जा रहा हो। हालांकि, ऐसा लगा कि इस यात्रा ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है। कोसेट, जिसने अपने पिता को प्रसन्न करना अपना नियम बना लिया था और जिसके लिए सभी तमाशे एक नई बात थे, ने युवावस्था की सहजता और विनम्रता के साथ इस मनोरंजन को स्वीकार किया और सार्वजनिक उत्सव नामक उस आनंद की क्षणभंगुरता पर अधिक तिरस्कारपूर्ण ढंग से प्रतिक्रिया नहीं दी; इसलिए जीन वालजेन को विश्वास हो गया कि वह सफल हो गया है और उस भयावह दृश्य का कोई निशान नहीं बचा है।

कुछ दिनों बाद, एक सुबह, जब सूरज खूब चमक रहा था और वे दोनों बगीचे की सीढ़ियों पर थे - जीन वालजेन द्वारा स्वयं पर लगाए गए नियमों का एक और उल्लंघन, और उदासी के कारण कोसेट द्वारा अपने कमरे में रहने की आदत का भी उल्लंघन - कोसेट, एक लबादे में लिपटी हुई, सुबह के उस लापरवाह पहनावे में सीधी खड़ी थी जो युवा लड़कियों को एक मनमोहक ढंग से घेर लेता है और ऐसा प्रभाव पैदा करता है जैसे किसी तारे पर बादल छा गया हो; और, अच्छी नींद के बाद गुलाबी हुए, प्रकाश से नहाए हुए सिर के साथ, उस कोमल बूढ़े व्यक्ति की सौम्य निगाहों के सामने झुकते हुए, वह एक डेज़ी फूल को तोड़ रही थी। कोसेट को उस मनमोहक कहावत का पता नहीं था, "मैं थोड़ा प्यार करती हूँ, जुनून से, इत्यादि" - भला कौन उसे सिखा सकता था? वह सहज रूप से, मासूमियत से, फूल को छू रही थी, इस बात की जरा भी आशंका के बिना कि डेज़ी को तोड़ना दिल को तोड़ने जैसा है। अगर चौथी भी होती, और मुस्कुराती हुई ग्रेस जिसे उदासी कहा जाता, तो वह उसी ग्रेस की तरह दिखती। जीन वालजेन उस फूल पर उन नन्ही उंगलियों के ध्यान में मग्न था, और उस बच्ची की चमक में सब कुछ भूल गया था। एक तरफ झाड़ियों में एक लाल छाती वाला पक्षी चहचहा रहा था। सफेद बादल आसमान में

इतनी खूबसूरती से तैर रहे थे कि मानो उन्हें अभी-अभी आज़ादी मिली हो। कोसेट ध्यान से अपने फूल से पत्तियां तोड़ती रही; ऐसा लग रहा था जैसे वह कुछ सोच रही हो; लेकिन जो भी हो, वह ज़रूर कुछ मनमोहक होगा; अचानक उसने हंस की कोमल सुस्ती के साथ अपना सिर कंधे के ऊपर घुमाया और जीन वालजेन से कहा: "पिताजी, नावें कैसी हैं?"

पुस्तक **IV.** नीचे से मिलने वाली सहायता ऊपर से मिलने वाली सहायता साबित हो सकती है

I. बाहरी घाव, भीतर से उपचार

इस प्रकार उनका जीवन धीरे-धीरे अंधकारमय हो गया।

लेकिन एक काम, जो पहले उनके लिए खुशी का स्रोत हुआ करता था, अब भी उनके लिए उपलब्ध था - भूखों को रोटी और ठंड से बेहाल लोगों को कपड़े देना। कोसेट अक्सर जीन वालजेन के साथ गरीबों से मिलने जाती थी, जिससे उनके बीच पहले जैसी सहजता और मेलजोल की भावना कुछ हद तक फिर से जागृत हो जाती थी; और कभी- कभी, जब दिन अच्छा बीतता था और वे कई जरूरतमंदों की मदद कर चुके होते थे, और कई छोटे बच्चों को खुश कर चुके होते थे और उन्हें गर्माहट दे चुके होते थे, तो शाम कोसेट काफी खुश हो जाती थी। इसी दौरान वे जोंड्रेट के अड्डे पर गए।

उस मुलाकात के अगले दिन, जीन वालजेन सुबह मंडप में पहुंचे। वे हमेशा की तरह शांत थे, लेकिन उनकी बाईं बांह पर एक बड़ा घाव था जो बहुत सूजा हुआ और दर्दनाक था, जो जलने जैसा लग रहा था, और जिसका उन्होंने किसी न किसी तरह से स्पष्टीकरण दिया। इस घाव के कारण उन्हें बुखार के साथ एक महीने तक घर में ही रहना पड़ा। उन्होंने डॉक्टर को बुलाने से इनकार कर दिया। जब कोसेट ने उनसे आग्रह किया, "कुत्ते के डॉक्टर को बुलाओ," तो उन्होंने कहा।

कोसेट सुबह-शाम इतने दिव्य भाव और देवदूत जैसी खुशी के साथ घाव पर पट्टी बांधती थी कि जीन वालजेन को अपना सारा पुराना आनंद लौटता हुआ महसूस हुआ, उसके डर और चिंताएँ दूर हो गईं, और उसने कोसेट को देखते हुए कहा: “ओह! कितना दयालु घाव! ओह! कितनी अच्छी विपत्ति!”

अपने पिता की बीमारी का पता चलने पर कोसेट ने मंडप छोड़ दिया और फिर से उस छोटे से घर और पिछवाड़े के आंगन में रहने लगी। वह लगभग सारा समय जीन वालजेन के साथ बिताती और उन्हें उनकी मनपसंद किताबें पढ़कर सुनाती। आमतौर पर वे यात्रा वृत्तांत की किताबें होती थीं। जीन वालजेन का नया जीवन शुरू हो रहा था; उनकी खुशी इन अवर्णनीय किरणों में फिर से जीवंत हो रही थी; लक्ज़मबर्ग, वह अजनबी युवक, कोसेट की शीतलता—उनके मन पर छाए ये सारे बादल छंट रहे थे। वह उस मुकाम पर पहुँच गए थे जहाँ उन्होंने खुद से कहा: “मैंने यह सब कल्पना की थी। मैं एक बूढ़ा मूर्ख हूँ।”

उसकी खुशी इतनी प्रबल थी कि जोन्ड्रेट की झोपड़ी में थेनार्डियर परिवार की भयानक खोज, जो अप्रत्याशित थी, मानो उस पर किसी तरह से ध्यान ही न दे पाई हो। वह भागने में सफल हो गया था; उसका कोई सुराग नहीं बचा था—अब उसे और क्या परवाह थी! उसे बस उन बेचारे लोगों पर तरस आ रहा था। उसने सोचा, "ये लोग जेल में हैं, और अब से ये किसी को नुकसान नहीं पहुंचा पाएंगे, लेकिन ये कितना दयनीय परिवार है!"

बैरियर डू मेन के भयावह दृश्य के बारे में, कोसेट ने फिर कभी इसका जिक्र नहीं किया था।

सिस्टर सैंटे-मेचटिल्डे ने कोसेट को कॉन्वेंट में संगीत सिखाया था; कोसेट की आवाज एक मधुर चिड़िया जैसी थी, जिसमें एक आत्मा थी, और कभी-कभी, शाम को, घायल व्यक्ति के साधारण से घर में, वह उदास गीत गाती थी जो जीन वालजेन को प्रसन्न करते थे।

वसंत ऋतु आ गई; उस मौसम में बगीचा इतना मनमोहक होता था कि जीन वालजेन ने कोसेट से कहा:—

"तुम वहां कभी नहीं जाते; मैं चाहता हूं कि तुम वहां सैर करो।"

“जैसा आपको अच्छा लगे, पिताजी,” कोसेट ने कहा।

और अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए, उसने बगीचे में टहलना फिर से शुरू कर दिया, आमतौर पर अकेले, क्योंकि जैसा कि हमने उल्लेख किया है, जीन वाल्जेन, जो शायद बाड़ के माध्यम से देखे जाने से डरता था, शायद ही कभी वहां जाता था।

जीन वाल्जेन के घाव ने ध्यान भटकाने का काम किया था।

जब कोसेट ने देखा कि उसके पिता का कष्ट कम हो रहा है, वे स्वस्थ हो रहे हैं और खुश दिख रहे हैं, तो उसे एक ऐसी संतुष्टि का अनुभव हुआ जिसका उसे पहले कभी एहसास भी नहीं हुआ था, क्योंकि यह इतनी सहजता और स्वाभाविक रूप से आई थी। फिर मार्च का महीना आया, दिन लंबे होने लगे थे, सर्दी का मौसम बीत रहा था, सर्दी हमेशा हमारे दुख का एक हिस्सा अपने साथ ले जाती है; फिर अप्रैल आया, गर्मी की सुबह, भोर की तरह ताजगी से भरी, बचपन की तरह खुशमिजाज; कभी- कभी नवजात शिशु की तरह थोड़ा रोने को तैयार। उस महीने में, प्रकृति की

मनमोहक किरणें आकाश से, पेड़ों से, मैदानों से और फूलों से मनुष्य के हृदय में उतर जाती हैं।

कोसेट अभी इतनी छोटी थी कि अप्रैल की उस खुशी के गहरे प्रभाव से बच नहीं पाई, जो उससे बहुत मिलती-जुलती थी। अनजाने में, और उसे पता भी नहीं चला, उसके मन से उदासी छंट गई। बसंत में, उदास आत्माएं हल्की हो जाती हैं, जैसे दोपहर में तहखानों में रोशनी आती है। कोसेट अब उदास नहीं थी। हालांकि, ऐसा होने के बावजूद, उसने खुद को इसका कारण नहीं बताया। सुबह लगभग दस बजे, नाश्ते के बाद, जब वह अपने पिता को पंद्रह मिनट के लिए बगीचे में लाने में कामयाब हो गई थी, और जब वह सीढ़ियों के सामने धूप में इधर-उधर टहल रही थी, उनका बायां हाथ पकड़े हुए, उसे एहसास ही नहीं हुआ कि वह हर पल हंस रही थी और खुश थी।

जीन वाल्जेन, मदहोश होकर, उसे एक बार फिर से ताजा और गुलाबी होते हुए देख रहा था।

“ओह! कितना बढ़िया घाव है!” उसने फुसफुसाते हुए दोहराया।

और वह थेनार्डियरों के प्रति कृतज्ञ महसूस करता था।

जब उसका घाव ठीक हो गया, तो उसने फिर से अकेले ही शाम के समय टहलना शुरू कर दिया।

यह सोचना गलत है कि कोई व्यक्ति पेरिस के निर्जन क्षेत्रों में इस तरह अकेले घूम सकता है और उसे किसी न किसी रोमांच का सामना नहीं करना पड़ेगा।

II. मदर प्लूटार्क को एक घटना की व्याख्या करने में कोई कठिनाई नहीं होती है

एक शाम, छोटे गैवरोश को कुछ खाने को नहीं मिला था; उसे याद आया कि उसने पिछले दिन भी खाना नहीं खाया था; यह बात उसे बहुत परेशान कर रही थी। उसने रात का खाना जुटाने का निश्चय किया। वह साल्पेट्रिएर नदी के पार सुनसान इलाकों में घूमने निकल पड़ा; क्योंकि वहीं पर अप्रत्याशित लाभ मिलते हैं; जहाँ कोई नहीं होता, वहाँ हमेशा कुछ न कुछ मिल ही जाता है। वह एक बस्ती में पहुँचा जो उसे ऑस्टरलिट्ज़ गाँव जैसा लगा।

अपने पिछले विश्राम स्थलों में से एक में उसने वहाँ एक पुराना बगीचा देखा था, जिसमें एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ी औरत रहते थे, और उस बगीचे में एक ठीक-ठाक सेब का पेड़ था। सेब के पेड़ के पास एक छोटा सा फलों का घर था, जो ठीक से बंद नहीं था, और जहाँ से किसी तरह एक सेब निकाला जा सकता था। एक सेब ही रात का भोजन है; एक सेब ही जीवन है। जो आदम के विनाश का कारण बना, वही गैवरोश के उद्धार का कारण बन सकता था। बगीचा एक सुनसान, कच्ची गली से सटा हुआ था, जिसके किनारे झाड़ियाँ उगी हुई थीं और घरों के बनने का इंतज़ार किया जा रहा था; बगीचा उससे एक बाड़ से अलग था।

गैवरोश ने इस बगीचे की ओर कदम बढ़ाया; उसे रास्ता मिल गया, उसने सेब का पेड़ पहचान लिया, उसने फलों के गोदाम की जाँच की, उसने बाड़ का निरीक्षण किया; बाड़ का मतलब बस एक कदम था। दिन ढल रहा था, रास्ते में एक बिल्ली भी नहीं थी, समय अनुकूल था। गैवरोश ने बाड़ पर चढ़ने की कोशिश शुरू की, फिर अचानक रुक गया। बगीचे में कोई बात कर रहा था। गैवरोश ने बाड़ के एक छेद से झाँका।

कुछ कदम की दूरी पर, दूसरी ओर की झाड़ी के नीचे, ठीक उसी जगह पर जहाँ वह ध्यानमग्न व्यक्ति जिस खाली जगह पर ध्यान लगा रहा था, बनी होगी, वहाँ एक लेटा हुआ पत्थर था जो बेंच का काम करता था, और इस बेंच पर बगीचे का बूढ़ा आदमी बैठा था, जबकि बूढ़ी औरत उसके सामने खड़ी थी। बूढ़ी औरत बड़बड़ा रही थी। गैवरोश, जो बहुत सावधान नहीं था, सुन रहा था।

“महाशय माबेउफ!” बूढ़ी औरत ने कहा।
“मैबेउफ!” गैवरोश ने सोचा, “यह नाम तो एक संपूर्ण प्रहसन है।”
इस प्रकार संबोधित किए जाने पर भी वह बूढ़ा व्यक्ति टस से मस नहीं हुआ। बूढ़ी औरत ने दोहराया:—
श्रीमान माबेउफ!
बूढ़े व्यक्ति ने जमीन से अपनी निगाहें उठाए बिना ही उत्तर देने का निश्चय कर लिया:
“क्या बात है, मदर प्लूटार्क?”
“मदर प्लूटार्क!” गैवरोश ने सोचा, “एक और हास्यास्पद नाम।”
मदर प्लूटार्क ने फिर बोलना शुरू किया, और बूढ़े व्यक्ति को बातचीत स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा:—
मकान मालिक खुश नहीं है।
"क्यों?"
"हम पर तीन चौथाई किराया बकाया है।"
"तीन महीनों में, हम पर उसके चार तिमाहियों का बकाया हो जाएगा।"
वह कहता है कि वह तुम्हें सोने के लिए बाहर निकाल देगा।
मैं जाऊंगा।
“सब्जी बेचने वाली को पैसे चाहिए। वो अब लकड़ियों के गट्ठे नहीं छोड़ेगी। इस सर्दी में आप खुद को गर्म रखने के लिए क्या करेंगे? हमारे पास लकड़ी नहीं होगी।”
"वहाँ सूर्य है।"
“कसाई उधार देने से इनकार कर रहा है; वह हमें और मांस नहीं देगा।”
“यह बिल्कुल सही है। मुझे मांस पचाने में दिक्कत होती है। यह बहुत भारी होता है।”
“रात के खाने में क्या खाएंगे?”

"रोटी।"
“बेकर ने समझौता करने की मांग की और कहा, ‘पैसा नहीं तो रोटी नहीं’”
“यह अच्छी बात है।”
"आप क्या खाएंगे?"
"हमारे पास सेब के कमरे में सेब हैं।"
लेकिन, महाशय, हम बिना पैसे के इस तरह नहीं रह सकते।
मेरे पास कोई नहीं है।
बुढ़िया चली गई, बुढ़िया अकेला रह गया। वह सोचने लगा। गैवरोश भी सोच में पड़ गया। लगभग अंधेरा हो चुका था।
गैवरोश के ध्यान का पहला परिणाम यह हुआ कि झाड़ी पर चढ़ने के बजाय, वह उसके नीचे झुक गया। झाड़ी की शाखाएँ नीचे की ओर थोड़ी फैली हुई थीं।
“आओ,” गैवरोश ने मन ही मन कहा, “यहाँ एक छोटा सा कोना है!” और वह उसमें सिमटकर बैठ गया। उसकी पीठ लगभग फादर माबेउफ की बेंच से सटी हुई थी। वह अस्सी वर्षीय बुजुर्ग की साँसें सुन सकता था।
फिर, रात के खाने के दौरान, उसने सोने की कोशिश की।
वह झपकी ले रहा था, बस एक आँख खुली थी। जब वह सो रहा था, गैवरोश पहरा देता रहा।
आकाश की धुंधली छाया ने धरती को फीका कर दिया, और गली गहरे रंग की झाड़ियों की दो पंक्तियों के बीच एक पीली रेखा की तरह दिख रही थी।
अचानक, इस सफेद पट्टी में दो आकृतियाँ प्रकट हुईं। एक आगे थी, दूसरी कुछ दूरी पर पीछे।
“वहाँ दो जीव आ रहे हैं,” गैवरोश ने बुदबुदाते हुए कहा।
पहली आकृति किसी वृद्ध बुर्जुआ व्यक्ति की प्रतीत हुई, जो झुका हुआ और विचारशील था, उसने बेहद सादे कपड़े पहने हुए थे, और अपनी उम्र के कारण धीरे-धीरे चल रहा था, और शाम की खुली हवा में टहल रहा था।

दूसरा व्यक्ति सीधा, दृढ़ और पतला था। वह पहले व्यक्ति की चाल से अपनी गति को नियंत्रित कर रहा था; लेकिन उसकी धीमी चाल में लचीलापन और फुर्ती झलक रही थी। इस आकृति में कुछ उग्र और बेचैन कर देने वाला भाव भी था; उसका पूरा आकार उस समय के "शानदार व्यक्ति" जैसा था; टोपी सुसंगठित थी, कोट काला, सुगठित, संभवतः उत्तम कपड़े का और कमर पर अच्छी तरह से फिट था। सिर एक प्रकार की मजबूत गरिमा के साथ सीधा रखा हुआ था, और धुंधली रोशनी में टोपी के नीचे एक युवक का धुंधला चेहरा दिखाई दे रहा था। चेहरे के मुंह में एक गुलाब था। यह दूसरा रूप गैवरोश को अच्छी तरह से ज्ञात था; यह मोंटपार्नास था।

वह दूसरे व्यक्ति के बारे में कुछ भी नहीं बता सकता था, सिवाय इसके कि वह एक सम्मानित बूढ़ा व्यक्ति था।

गैवरोश ने तुरंत अवलोकन करना शुरू कर दिया।

इन दोनों राहगीरों में से एक का दूसरे से कोई संबंध था। गैवरोश घटनाक्रम को देखने के लिए अच्छी स्थिति में था। शयनकक्ष एक बेहद उपयुक्त समय पर छिपने की जगह बन गया था।

मोंटपार्नास का ऐसे समय, ऐसी जगह पर शिकार करना किसी खतरे का संकेत था। गैवरोश को लगा कि उसके प्यारे कुत्ते का दिल उस बूढ़े आदमी के लिए दया से भर गया है।

वह क्या करता? दखल देता? एक कमजोरी दूसरी कमजोरी की मदद कर रही थी! मोंटपार्नास के लिए तो यह महज़ हंसी का पात्र होता। गैवरोश इस बात से अनजान नहीं था कि बूढ़ा आदमी और बच्चा, दोनों मिलकर अठारह साल के उस कुख्यात बदमाश के लिए दो निवाले ही साबित होंगे।

जब गैवरोश सोच-विचार कर रहा था, तभी अचानक और भयानक हमला हो गया। जैसे बाघ जंगली गधे पर हमला करता है, जैसे मकड़ी मक्खी पर। मोंटपार्नास ने अचानक अपना गुलाब फेंक दिया, बूढ़े आदमी पर झपटा, उसका कॉलर पकड़ लिया, उसे जकड़ लिया और उससे लिपट गया, और गैवरोश ने बड़ी मुश्किल से अपनी चीख रोकी। एक पल बाद, दोनों में से एक दूसरे के नीचे था, कराह रहा था, छटपटा रहा था, और एक भारी घुटने से उसकी छाती को दबाया जा रहा था। लेकिन, यह वैसा नहीं था जैसा

गैवरोश ने सोचा था। ज़मीन पर पड़ा हुआ मोंटपार्नास था; ऊपर वाला बूढ़ा आदमी था। यह सब गैवरोश से कुछ ही कदमों की दूरी पर हुआ।
उस बूढ़े व्यक्ति को झटका लगा था, उसने भी वैसा ही झटका दिया था, और वह भी इतने भयानक तरीके से कि पलक झपकते ही हमलावर और पीड़ित की भूमिकाएँ बदल गईं।
"देखो, कितना जोशीला और अनुभवी योद्धा है!" गैवरोश ने सोचा।
वह ताली बजाने से खुद को रोक नहीं सका। लेकिन यह व्यर्थ की तालियाँ थीं। वे लड़ाकों तक नहीं पहुँचीं, जो एक-दूसरे में इतने मग्न और मग्न थे कि उनकी साँसें आपस में घुलमिल गई थीं।
सन्नाटा छा गया। मोंटपार्नास ने संघर्ष करना बंद कर दिया। गैवरोश ने धीरे से कहा: "क्या वह मर गया है!"
उस भले आदमी ने एक शब्द भी नहीं बोला, न ही कोई चीख निकाली। वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ, और गैवरोश ने उसे मोंटपार्नास से कहते सुना:—
"उठना।"
मोंटपार्नास उठा, लेकिन उस भले आदमी ने उसे कसकर पकड़ रखा था। मोंटपार्नास का रवैया उस भेड़िये के अपमानित और क्रोधित रवैये जैसा था जिसे एक भेड़ ने पकड़ लिया हो।
गैवरोश देखता और सुनता रहा, मानो अपनी आँखों के साथ-साथ कानों से भी सब कुछ सुन रहा हो। उसे बहुत आनंद आ रहा था।
एक दर्शक के रूप में अपनी कर्तव्यनिष्ठ चिंता के लिए उन्हें प्रतिफल मिला। वे एक ऐसे संवाद को पकड़ पाए जिसमें अंधकार से एक अवर्णनीय दुखद स्वर निकला हुआ था। भले आदमी ने सवाल किया, मोंटपार्नास ने जवाब दिया। "आपकी आयु कितनी है?"
"उन्नीस।"
“आप मजबूत और स्वस्थ हैं। आप काम क्यों नहीं करते?”
"बेमजा है।"
आपका पेशा क्या है?

“एक आलसी।”

“गंभीरता से बोलिए। क्या आपके लिए कुछ किया जा सकता है? आप क्या बनना चाहेंगे?”

"एक चोर।"

कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। बूढ़ा व्यक्ति गहन चिंतन में लीन प्रतीत हो रहा था। वह स्थिर खड़ा रहा और उसने मोंटपार्नास पर अपनी पकड़ ढीली नहीं की।

हर पल वह जोशीला और फुर्तीला युवक किसी फंदे में फंसे जंगली जानवर की तरह छटपटा रहा था। वह झटके से पैर पटकता, घुटने मोड़ने की कोशिश करता, अपने अंगों को बेताब होकर मरोड़ता और भागने का हर संभव प्रयास करता।

बूढ़े व्यक्ति ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया और पूर्ण बल की परम उदासीनता के साथ एक हाथ से अपनी दोनों भुजाओं को थामे रखा।

बूढ़े व्यक्ति की तल्लीनता कुछ समय तक बनी रही, फिर मोंटपार्नास को स्थिर दृष्टि से देखते हुए, उन्होंने उस अंधेरे के बीच, जहाँ वे खड़े थे, कोमल स्वर में एक गंभीर भाषण दिया, जिसका एक भी शब्द गैवरोश ने नहीं छोड़ा:

“मेरे बच्चे, तुम आलस्य के कारण सबसे कठिन जीवन में प्रवेश कर रहे हो। आह! तुम खुद को आलसी कहते हो! परिश्रम के लिए तैयार हो जाओ। एक भयानक मशीन है, क्या तुमने उसे देखा है? वह है रोलिंग-मिल। तुम्हें उससे सावधान रहना होगा, वह चालाक और क्रूर है; अगर वह तुम्हारे कोट के किनारे को पकड़ ले, तो तुम शरीर सहित अंदर खींच लिए जाओगे। वह मशीन आलस्य है। समय रहते रुक जाओ और खुद को बचा लो! अन्यथा, तुम्हारा सब कुछ खत्म हो जाएगा; थोड़े ही समय में तुम उसके गियर में फंस जाओगे। एक बार फंस गए, तो फिर कुछ भी उम्मीद मत रखना। परिश्रम करो, आलसी! अब तुम्हारे लिए कोई आराम नहीं है! अथक परिश्रम के लोहे के हाथ ने तुम्हें जकड़ लिया है। तुम अपनी जीविका कमाना नहीं चाहते, कोई काम नहीं करना चाहते, कोई कर्तव्य पूरा नहीं करना चाहते! क्या तुम्हें दूसरों की तरह रहना उबाऊ लगता है? अच्छा! तुम अलग बनोगे। श्रम ही नियम है; जो इसे अस्वीकार करता है, उसे ऊब ही अपना कष्ट सहना पड़ता है। तुम मजदूर नहीं बनना चाहते, तुम... गुलाम बनो। परिश्रम तुम्हें एक तरफ से छोड़ता है, फिर दूसरी तरफ से जकड़ लेता है। तुम इसके मित्र नहीं बनना

चाहते, तुम इसके नीग्रो गुलाम बनोगे। आह! तुम मनुष्यों की ईमानदार थकान नहीं चाहते, तुम नरक के लोगों का पसीना बहाओगे। जहाँ दूसरे गाते हैं, तुम अपने गले में खड़खड़ाहट करोगे। तुम दूर से, नीचे से, दूसरे लोगों को काम करते देखोगे; तुम्हें लगेगा कि वे आराम कर रहे हैं। मजदूर, फसल काटने वाला, नाविक, लोहार, तुम्हें स्वर्ग में धन्य आत्माओं की तरह महिमा में दिखाई देंगे। भट्टी के चारों ओर क्या चमक है! हल चलाना, गठ्ठों को बाँधना, आनंद है। हवा में आज़ाद नाव, क्या आनंद है! हे आलसी, खोदो, घसीटो, लुढ़काओ, मार्च करो! अपनी लगाम घसीटो। तुम नरक की टोली में एक बोझ ढोने वाला जानवर हो! आह! कुछ न करना ही तुम्हारा उद्देश्य है। खैर, एक हफ़्ता नहीं, एक दिन नहीं, एक घंटा भी तुम्हें उत्पीड़न से मुक्ति नहीं मिलेगी। तुम बिना कुछ उठाए कुछ भी नहीं उठा पाओगे। पीड़ा। हर गुजरता मिनट आपकी मांसपेशियों को चटकाता जाएगा। जो दूसरों के लिए पंख है, वह आपके लिए पत्थर होगा। सबसे सरल चीजें भी खड़ी चढ़ाई बन जाएंगी। आपके चारों ओर जीवन भयावह हो जाएगा। आना-जाना, सांस लेना, बस कई भयानक परिश्रम होंगे। आपके फेफड़े आप पर सौ पाउंड का भार डालेंगे। यहाँ चलना है या वहाँ, यह एक ऐसी समस्या बन जाएगी जिसका समाधान करना होगा। जो भी बाहर जाना चाहता है, वह बस अपने दरवाजे को धक्का देता है, और वह खुली हवा में होता है। अगर आप बाहर जाना चाहते हैं, तो आपको अपनी दीवार तोड़नी पड़ेगी। जो भी सड़क पर कदम रखना चाहता है, वह क्या करता है? वह नीचे जाता है; आप अपनी चादरें फाड़ेंगे, धीरे-धीरे उनसे एक रस्सी बनाएंगे, फिर आप अपनी खिड़की से बाहर निकलेंगे, और उस धागे से खुद को एक खाई के ऊपर लटका लेंगे, और रात होगी, तूफान, बारिश और आंधी के बीच, और अगर रस्सी छोटी पड़ जाए, तो नीचे उतरने का एक ही रास्ता बचेगा, गिरना। बेतरतीब ढंग से खाई में गिरना। एक खाई, एक अज्ञात ऊंचाई से, किस पर? नीचे क्या है, अज्ञात पर। या तो आप जलने के जोखिम पर चिमनी के रास्ते रेंगेंगे; या आप डूबने के जोखिम पर सीवर पाइप से रेंगेंगे; मैं उन छेदों की बात नहीं कर रहा जिन्हें आपको छुपाना होगा, उन पत्थरों की जिन्हें आपको दिन में बीस बार उठाना और बदलना होगा, उस प्लास्टर की जिसे आपको अपने पुआल के चबूतरे में छिपाना होगा। एक ताला सामने आता है; बुर्जुआ के पास अपनी जेब में एक ताला बनाने वाले की बनाई चाबी होती है। यदि आप बाहर निकलना चाहते हैं, तो आपको एक भयानक कलाकृति को अंजाम देना होगा; आप एक बड़ा सू लेंगे, आप उसे दो प्लेटों में काटेंगे; किन औजारों से? आपको उन्हें खुद बनाना होगा। यही

आपका काम है। फिर आप इन प्लेटों के अंदरूनी हिस्से को खोखला करेंगे, बाहरी हिस्से का बहुत ध्यान रखते हुए, और आप किनारों पर एक धागा बनाएंगे, ताकि उन्हें एक दूसरे के ऊपर एक डिब्बे और उसके ढक्कन की तरह समायोजित किया जा सके। इस प्रकार ऊपर और नीचे के हिस्से को एक साथ पेंच से कसने पर, किसी को संदेह नहीं होगा। निरीक्षकों के लिए यह केवल एक सू; तुम्हारे लिए यह एक बक्सा होगा। तुम इस बक्से में क्या रखोगे? स्टील का एक छोटा सा टुकड़ा। एक घड़ी की स्प्रिंग, जिसमें तुम दांत काटोगे, और जिससे एक आरी बनेगी। इस आरी से, जो एक सू में छिपी होगी और पिन जितनी लंबी होगी, तुम ताले का बोल्ट काटोगे, बोल्ट तोड़ोगे, अपनी जंजीर का ताला, अपनी खिड़की की सलाख और अपने पैर की बेड़ी। यह उत्कृष्ट कृति पूरी हुई, यह अद्भुत रचना संपन्न हुई, कला, कौशल, निपुणता और धैर्य के ये सभी चमत्कार पूरे हुए, अगर यह पता चल जाए कि तुम इसके रचयिता हो तो तुम्हारा क्या प्रतिफल होगा? कालकोठरी। यही तुम्हारा भविष्य है। आलस्य और सुख कितने गहरे गड्ढे हैं! क्या तुम जानते हो कि कुछ न करना एक निराशाजनक संकल्प है? समाज की संपत्ति पर आलस्य में जीना! बेकार होना, यानी हानिकारक होना! यह सीधे दुख की गहराई में ले जाता है। उस आदमी पर धिक्कार है जो परजीवी बनना चाहता है! वह कीड़ा बन जाएगा! आह! तो तुम्हें यह पसंद नहीं है कि... काम? आह! तुम्हारे मन में बस एक ही विचार है, अच्छा पीना, अच्छा खाना, अच्छी नींद लेना। तुम पानी पियोगे, काली रोटी खाओगे, एक तख्ते पर जंजीर से बंधे सोओगे, जिसका ठंडा स्पर्श तुम्हें रात भर अपने शरीर पर महसूस होगा, जो तुम्हारे अंगों से जकड़ी होगी। तुम उन जंजीरों को तोड़ोगे, भाग जाओगे। यह अच्छा है। तुम झाड़ियों में पेट के बल रेंगोगे, और जंगल के जानवरों की तरह घास खाओगे। और फिर तुम्हें पकड़ लिया जाएगा। और फिर तुम सालों तक एक कालकोठरी में, दीवार से जकड़े, पीने के लिए अपने घड़े को टटोलते रहोगे, अंधेरे की एक भयानक रोटी को कुतरते रहोगे जिसे कुत्ते भी नहीं छूते, उन फलियों को खाते रहोगे जिन्हें कीड़े तुमसे पहले खा चुके हैं। तुम तहखाने में एक दीमक बन जाओगे। आह! अपने आप पर दया करो, हे बेचारे बच्चे, जो बीस साल से भी कम समय पहले माँ का दूध पी रहे थे, और जिनकी माँ निस्संदेह अभी भी जीवित है! मैं तुमसे विनती करता हूँ, मेरी बात सुनो, मैं तुमसे आग्रह करता हूँ। तुम बढ़िया काले कपड़े चाहते हो, वार्निश किए हुए जूते पहनना, बालों को कर्ल करना और बालों में सुगंधित तेल लगाना, नीच स्त्रियों को प्रसन्न करना, सुंदर दिखना। दाढ़ी साफ रखना, लाल ब्लाउज और

लकड़ी के जूते पहनना। उंगलियों में अंगूठियां पहनना, गले में लोहे का हार पहनना। किसी स्त्री की ओर देखने पर भी मार खाना। बीस साल की उम्र में वहाँ प्रवेश करना और पचास साल की उम्र में बाहर आना! जवान, गुलाबी, तरोताजा, चमकीली आँखों, सफेद दाँतों और सुंदर, युवा बालों के साथ प्रवेश करना; टूटे- फूटे, झुके हुए, झुर्रियों वाले, बिना दाँतों वाले, भयानक, सफेद बालों के साथ बाहर आना! आह! मेरे बेचारे बच्चे, तुम गलत रास्ते पर हो; आलस्य तुम्हें बुरी सलाह दे रहा है; सबसे कठिन काम चोरी है। मेरा विश्वास करो, आलसी आदमी का वह कष्टदायक पेशा मत अपनाओ। बदमाश बनना आरामदायक नहीं है। ईमानदार आदमी बनना कम अप्रिय है। अब जाओ, और मैंने जो कहा है उस पर विचार करो। वैसे, तुम्हें मुझसे क्या चाहिए था? मेरा पर्स? ये लो। है।"

और बूढ़े व्यक्ति ने मोंटपार्नास को छोड़कर अपना पर्स उसके हाथ में रख दिया; मोंटपार्नास ने एक पल के लिए उसका वजन किया, जिसके बाद उसने उसे उसी यांत्रिक सावधानी से अपने कोट की पिछली जेब में सरका दिया जैसे कि उसने उसे चुराया हो।

यह सब कहने और करने के बाद, उस भले आदमी ने अपनी पीठ मोड़ी और शांतिपूर्वक अपनी सैर फिर से शुरू कर दी।

“बेवकूफ!” मोंटपार्नास ने बुदबुदाया।

यह सज्जन कौन थे? पाठक को निस्संदेह इसका अंदाजा हो गया होगा।

शाम के धुंधलके में गायब होते हुए मोंटपार्नास ने उसे विस्मय से देखा। यही चिंतन उसके लिए घातक साबित हुआ।

जब बूढ़ा आदमी जाने लगा, तो गैवरोश उसके पास आ गया।

गैवरोश ने तिरछी नज़र से यह सुनिश्चित कर लिया था कि फादर माबेउफ अभी भी अपनी बेंच पर बैठे हैं, शायद गहरी नींद में सो रहे हैं। तभी वह शरारती लड़का झाड़ियों से निकला और अंधेरे में मोंटपार्नास के पीछे रेंगने लगा, जबकि मोंटपार्नास वहीं बेसुध खड़ा था। इस तरह वह बिना किसी को दिखे या सुनाई दिए मोंटपार्नास के पास पहुँच गया, धीरे से अपना हाथ उस बढ़िया काले कपड़े के फ्रॉक-कोट की पिछली जेब में डाला, पर्स पकड़ा, हाथ निकाला और फिर से रेंगते हुए, किसी साँप की तरह अंधेरे में से निकल गया। मोंटपार्नास, जिसे सावधान रहने की कोई ज़रूरत नहीं थी और जो अपने जीवन में पहली बार सोच

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भाग **V.** जिसका अंत आरंभ से भिन्न है

I. एकांत और बैरक का संयोजन

कोसेट का दुख, जो चार-पाँच महीने पहले इतना गहरा और जीवंत था, अनजाने में ही कम होने लगा था। प्रकृति, बसंत, यौवन, पिता के प्रति प्रेम, पक्षियों और फूलों की चहचाहट, इन सबने मिलकर धीरे-धीरे, बूंद-बूंद करके, उस आत्मा में लगभग विस्मृति जैसी अनुभूति को प्रवेश करा दिया था, जो इतनी पवित्र और युवा थी। क्या वहाँ की आग पूरी तरह बुझ गई थी? या केवल राख की परतें जम गई थीं? सच तो यह है कि उसे अब उस दर्द भरे और जलन वाले स्थान का एहसास भी लगभग नहीं होता था।

एक दिन अचानक उसे मारियस की याद आई: "अरे!" उसने कहा, "अब मुझे उसकी याद नहीं आती।"

उसी सप्ताह, कोसेट ने देखा कि लांसर्स का एक बेहद आकर्षक अधिकारी, जिसकी कमर पतली थी, वर्दी बेहद खूबसूरत थी, गाल किसी युवती जैसे थे, बगल में तलवार थी, मोम से सँवारी हुई मूंछें थीं और सिर पर चमकीली टोपी थी, द्वार से गुजर रहा था। इसके अलावा, उसके बाल सुनहरे थे, नीली आँखें उभरी हुई थीं, चेहरा गोल था, वह घमंडी, अभिमानी और सुंदर था; मारियस से बिलकुल विपरीत। उसके मुँह में सिगार था। कोसेट ने सोचा कि यह अधिकारी निश्चित रूप से रुए डे बैबिलोन में स्थित बैरक में तैनात रेजिमेंट का ही होगा।

अगले दिन उसने उसे फिर से गुजरते देखा। उसने समय नोट कर लिया।

उस समय से, क्या यह संयोग था? वह उसे लगभग हर दिन गुजरते हुए देखती थी।

अधिकारी के साथियों ने गौर किया कि उस "बदसूरत" बगीचे में, उस कुटिल रोकोको बाड़ के पीछे, एक बहुत ही सुंदर प्राणी था, जो लगभग हमेशा वहीं मौजूद रहता था जब सुंदर लेफ्टिनेंट - जो पाठक के लिए अज्ञात नहीं है, और जिसका नाम थियोडुल गिलनोर्मंड था - वहां से गुजरता था।

उन्होंने उससे कहा, “देखो यहाँ, वहाँ एक छोटा सा जीव है जो तुम्हें आँख मार रहा है, देखो।”

“क्या मेरे पास इतना समय है कि मैं उन सभी लड़कियों को देख सकूँ जो मुझे देखती रहती हैं?” भाला चलाने वाले ने उत्तर दिया।

यह ठीक वही क्षण था जब मारियस पीड़ा की ओर तेज़ी से बढ़ रहा था और कह रहा था: "काश मैं मरने से पहले उसे देख पाता!" यदि उसकी यह इच्छा पूरी हो जाती, यदि वह उस क्षण कोसेट को भाले चलाने वाले को निहारते हुए देख लेता, तो वह एक शब्द भी नहीं बोल पाता और दुःख से दम तोड़ देता।

इसमें किसकी गलती थी? किसी की नहीं।

मारियस का स्वभाव ऐसा था कि वे दुख में डूब जाते हैं और वहीं बने रहते हैं; कोसेट उन लोगों में से एक थी जो दुख में डूब जाती है और फिर उससे बाहर निकल आती है।

इसके अलावा, कोसेट उस खतरनाक दौर से गुज़र रही थी, स्त्री की कल्पनाओं के उस घातक चरण से, जिसमें एक युवती का एकाकी हृदय उस लता के समान होता है जो संयोगवश संगमरमर के स्तंभ की चोटी या शराब की दुकान के खंभे से लिपट जाती है: एक तीव्र और निर्णायक क्षण, हर अनाथ के लिए महत्वपूर्ण, चाहे वह अमीर हो या गरीब, क्योंकि धन बुरे चुनाव को नहीं रोकता; उच्च वर्गों में भी गलत विवाह होते हैं, वास्तविक गलत विवाह आत्माओं का होता है; और जैसे कई अज्ञात युवक, बिना नाम, बिना जन्म, बिना भाग्य के, एक संगमरमर का स्तंभ होते हैं जो भव्य भावनाओं और भव्य विचारों के मंदिर को धारण करते हैं, वैसे ही ऐसा-वैसा संतुष्ट और धनी व्यक्ति, जिसके पास पॉलिश किए हुए जूते और पॉलिश किए हुए शब्द हैं, यदि बाहर से नहीं, बल्कि भीतर से देखा जाए, जो उसकी पत्नी के लिए आरक्षित है, तो हिंसक, अपवित्र और मादक वासनाओं से ग्रस्त एक अस्पष्ट ब्लॉक से अधिक कुछ नहीं है; एक शराब की दुकान का खंभा।

कोसेट की आत्मा में क्या समाया हुआ था? जुनून शांत हो गया था या सुप्त अवस्था में चला गया था; कुछ निर्मल, चमकीला, एक हद तक बेचैन और उससे भी नीचे उदास। उस सुंदर अधिकारी की छवि सतह पर प्रतिबिंबित हो रही थी। क्या कोई स्मृति गहराई में बसी हुई थी?—बिल्कुल तल पर?—संभवतः। कोसेट को नहीं पता था।

एक विलक्षण घटना घटित हुई।

II. कोसेट की आशंकाएँ

अप्रैल के पहले पखवाड़े में, जीन वालजेन ने एक यात्रा की। जैसा कि पाठक जानते हैं, यह यात्राएँ समय-समय पर, बहुत लंबे अंतरालों पर होती थीं। वे ज़्यादा से ज़्यादा एक या दो दिन ही अनुपस्थित रहते थे। वे कहाँ जाते थे? यह कोई नहीं जानता था, यहाँ तक कि कोसेट भी नहीं। केवल एक बार, ऐसी ही एक यात्रा के दौरान, वह उनके साथ एक छोटी सी संकरी गली तक गई थीं, जिसके कोने पर उन्होंने पढ़ा: "इम्पासे डे ला प्लांचेट"। वहाँ वे उतर गए, और गाड़ी कोसेट को वापस रू डे बैबिलोन ले आई। जीन वालजेन आमतौर पर घर में पैसों की कमी होने पर ही ये छोटी यात्राएँ करते थे।

तो जीन वाल्जेन अनुपस्थित थे। उन्होंने कहा था: "मैं तीन दिन में लौट आऊंगा।"

उस शाम कोसेट ड्राइंग रूम में अकेली थी। अपनी उदासी दूर करने के लिए उसने अपना पियानो-ऑर्गन खोला और खुद ही संगीत बजाते हुए यूरीएन्थे का कोरस "जंगल में भटके शिकारी!" गाने लगी, जो शायद संगीत की दुनिया में सबसे खूबसूरत रचना है। गाना खत्म करने के बाद वह सोच में डूबी रही।

अचानक उसे ऐसा लगा जैसे उसने बगीचे में कदमों की आहट सुनी हो।

यह उसके पिता नहीं हो सकते थे, वे अनुपस्थित थे; यह टूसेंट भी नहीं हो सकता था, वह बिस्तर पर थी, और रात के दस बज रहे थे।

वह ड्राइंग रूम के बंद शटर के पास गई और अपना कान उससे सटाकर रख दिया।

उसे ऐसा लगा जैसे किसी पुरुष के कदमों की आहट हो और वह बहुत धीरे-धीरे चल रहा हो।

वह तेजी से पहली मंजिल पर अपने कमरे में पहुंची, खिड़की के छोटे से छेद को खोला और बगीचे में झांका। चांद पूरा निकला हुआ था। सब कुछ दिन के उजाले की तरह साफ दिखाई दे रहा था।

वहाँ पर कोई नहीं था।

उसने खिड़की खोली। बगीचा एकदम शांत था, और जो दिखाई दे रहा था वह यह था कि सड़क हमेशा की तरह सुनसान थी।

कोसेट को लगा कि उससे भ्रम हुआ है। उसे लगा कि उसने कोई आवाज़ सुनी है। यह वेबर के उदास और भव्य संगीत से उत्पन्न एक मतिभ्रम था, जो मन के सामने भयभीत कर देने वाली गहराइयों को खोल देता है, जो दृष्टि के सामने एक चक्करदार जंगल की तरह कांपता है, और जिसमें गोधूलि बेला में झलकते शिकारियों के बेचैन कदमों के नीचे सूखी शाखाओं के चटकने की आवाज़ सुनाई देती है।

उसने इसके बारे में और नहीं सोचा।

इसके अलावा, कोसेट स्वभाव से बिल्कुल भी डरपोक नहीं थी। उसके खून में एक बेबाक और साहसी महिला का खून बहता था, जो नंगे पैर दौड़ती थी। यह याद रखना चाहिए कि वह एक शांत स्वभाव की चिड़िया से कहीं ज्यादा चंचल थी। उसके भीतर जंगलीपन और बहादुरी की गहरी नींव थी।

अगले दिन, सुबह जल्दी, सूर्यास्त के समय, वह बगीचे में टहल रही थी। उसके मन में चल रहे उलझे हुए विचारों के बीच, उसे एक पल के लिए वैसी ही आवाज़ सुनाई दी जैसी पिछली शाम को सुनाई दी थी, मानो कोई शाम के धुंधलके में पेड़ों के नीचे चल रहा हो, और उससे ज़्यादा दूर नहीं। लेकिन उसने खुद को समझाया कि घास पर कदमों की आहट से ज़्यादा मिलती-जुलती कोई आवाज़ नहीं होती, सिवाय दो शाखाओं के आपस में हिलने की रगड़ के, और उसने उस पर ध्यान नहीं दिया। इसके अलावा, उसे कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था।

वह झाड़ियों से बाहर निकली; उसे सीढ़ियों पर वापस जाने के लिए अभी भी एक छोटा सा लॉन पार करना था।

उसके पीछे से अभी-अभी निकले चंद्रमा ने कोसेट की छाया को उसके सामने इस लॉन पर डाला, जब वह झाड़ियों से बाहर निकली।

कोसेट घबराकर रुक गई।

उसकी परछाई के बगल में, चंद्रमा ने घास पर एक और परछाई को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया, जो विशेष रूप से चौंकाने वाली और भयानक थी, एक ऐसी परछाई जिसने गोल टोपी पहन रखी थी।

यह एक आदमी की परछाई थी, जो कोसेट के पीछे कुछ कदम की दूरी पर, झाड़ियों के झुंड की सीमा पर खड़ा रहा होगा।

वह एक पल के लिए बिना बोलने, रोने, पुकारने, हिलने-डुलने या अपना सिर घुमाने की शक्ति के खड़ी रही।

फिर उसने अपना सारा साहस जुटाया और दृढ़ता से पीछे मुड़ गई।

वहाँ पर कोई नहीं था।

उसने जमीन पर नजर डाली। वह आकृति गायब हो चुकी थी।

वह दोबारा झाड़ियों में दाखिल हुई, निडर होकर हर कोने की तलाशी ली, फाटक तक गई, लेकिन उसे कुछ नहीं मिला।

वह डर से कांप उठी। क्या यह फिर से मतिभ्रम था? क्या! लगातार दो दिन! एक मतिभ्रम तो शायद टल जाए, लेकिन दो मतिभ्रम? सबसे परेशान करने वाली बात यह थी कि वह परछाईं निश्चित रूप से कोई प्रेत नहीं थी। प्रेत गोल टोपी नहीं पहनते।

अगले दिन जीन वाल्जेन वापस आ गया। कोसेट ने उसे वह सब बताया जो उसने सुना और देखा था। वह तसल्ली पाना चाहती थी और यह देखना चाहती थी कि उसके पिता कंधे उचकाकर उससे कहें: "तुम तो बिल्कुल भोली हो।"

जीन वाल्जेन चिंतित हो गया।

उन्होंने कहा, "यह कुछ भी नहीं हो सकता।"

उसने किसी बहाने से उसे छोड़ दिया और बगीचे में चला गया, और उसने उसे बड़ी सावधानी से फाटक का निरीक्षण करते हुए देखा।

रात में उसकी नींद खुली; इस बार उसे यकीन था, और उसने साफ-साफ सुना कि कोई उसकी खिड़की के नीचे सीढ़ियों के पास चल रहा है। वह दौड़कर अपनी छोटी सी खिड़की के पास गई और उसे खोला। दरअसल, बगीचे में एक आदमी था, जिसके हाथ में एक बड़ा सा डंडा था। जैसे ही वह चीखने वाली थी, चाँद की रोशनी से उस आदमी का चेहरा दिखाई दिया। वह उसके पिता थे। वह वापस अपने बिस्तर पर लौट आई और मन ही मन बोली: "वह बहुत बेचैन हैं!"

जीन वाल्जेन ने वह रात और उसके बाद की दो रातें बगीचे में बिताईं। कोसेट ने उसे अपने घर की खिड़की के छेद से देखा।

तीसरी रात को, चंद्रमा घट रहा था और देर से उगने लगा था; संभवतः सुबह एक बजे, उसने ज़ोरदार हंसी की आवाज़ सुनी और अपने पिता की आवाज़ उसे पुकारती हुई सुनी:

“कोसेट!”

वह बिस्तर से कूदकर उठी, अपना ड्रेसिंग गाउन पहना और खिड़की खोल दी।

उसके पिता नीचे घास के मैदान पर खड़े थे।

“मैंने तुम्हें तसल्ली देने के उद्देश्य से जगाया है,” उसने कहा; “देखो, गोल टोपी पहने तुम्हारी परछाई वहाँ है।”

और उसने उसे घास पर चंद्रमा की परछाईं दिखाई, जो सचमुच गोल टोपी पहने एक आदमी के भूत जैसी लग रही थी। यह परछाईं लोहे की चादर से बनी एक चिमनी की थी, जिस पर एक छत लगी थी और जो पास की छत से ऊपर उठी हुई थी।

कोसेट भी उसकी हंसी में शामिल हो गई, उसकी सारी निराशावादी धारणाएं दूर हो गईं, और अगली सुबह, जब वह अपने पिता के साथ नाश्ता कर रही थी, तो उसने लोहे की चिमनियों की छायाओं से घिरे उस भयावह बगीचे में खूब आनंद मनाया।

जीन वाल्जेन एक बार फिर काफी शांत हो गया; जहाँ तक कोसेट की बात है, उसने इस सवाल पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया कि क्या चिमनी वास्तव में उस छाया की दिशा में थी जिसे उसने देखा था, या देखने का उसे भ्रम हुआ था, और क्या चंद्रमा आकाश में उसी स्थान पर था।

उसने अपने मन में उस चिमनी के अजीबोगरीब स्वभाव पर कोई सवाल नहीं उठाया जो रंगे हाथों पकड़े जाने से डरती है और किसी के उसकी परछाईं देखने पर छिप जाती है, क्योंकि कोसेट के मुड़ते ही परछाईं ने ही खतरे का संकेत दे दिया था और कोसेट को इस बात का पूरा यकीन था। कोसेट की शांति पूरी तरह से बहाल हो गई थी। उसे सबूत पुख्ता लग रहा था और उसके मन से यह ख्याल पूरी तरह गायब हो गया था कि शाम या रात के समय बगीचे में कोई घूम रहा होगा या नहीं।

हालांकि, कुछ दिनों बाद एक नई घटना घटित हुई।

III. टूसेंट की टीकाओं से समृद्ध

बगीचे में, सड़क की ओर लगी रेलिंग के पास, एक पत्थर की बेंच थी, जो एल्म के पेड़ों के बागान से जिज्ञासु लोगों की नजरों से छिपी हुई थी, लेकिन जरूरत पड़ने पर पेड़ों और गेट के पार, बाहर से हाथ बढ़ाकर उस तक पहुंचा जा सकता था।

अप्रैल के उसी महीने की एक शाम, जीन वालजेन बाहर गए हुए थे; सूर्यास्त के बाद कोसेट इस बेंच पर बैठ गई थीं। पेड़ों में हल्की-हल्की हवा चल रही थी, कोसेट ध्यान में बैठी थीं; एक निरर्थक उदासी धीरे-धीरे उन पर हावी हो रही थी, शाम के समय उत्पन्न होने वाली वह अभेद्य उदासी, जो शायद, कौन जाने, उस मकबरे के रहस्य से उपजती है जो उस समय थोड़ा खुला रहता है।

शायद फैंटाइन उसी साये में थी।

कोसेट उठी, धीरे-धीरे बगीचे का चक्कर लगाया, ओस से भीगी घास पर चलती रही और उदासी भरी नींद में डूबी हुई खुद से कहती रही: "सच में, इस समय बगीचे के लिए लकड़ी के जूतों की ज़रूरत है। ठंड लग जाती है।"

वह वापस बेंच पर बैठ गई।

जैसे ही वह वहां अपनी सीट पर वापस बैठने वाली थी, उसने उस जगह पर एक काफी बड़ा पत्थर देखा, जहां से वह उठी थी, जो स्पष्ट रूप से एक क्षण पहले वहां नहीं था।

कोसेट ने पत्थर को घूरते हुए खुद से पूछा कि इसका क्या मतलब है। अचानक उसके मन में यह विचार आया कि पत्थर अपने आप बेंच तक नहीं पहुँचा होगा, बल्कि किसी ने उसे वहाँ रखा होगा, कि किसी ने रेलिंग के बीच से हाथ डाला होगा, और इस विचार ने उसे भयभीत कर दिया। इस बार, डर वास्तविक था; पत्थर वहीं था। इसमें कोई संदेह नहीं था; उसने उसे छुआ नहीं, पीछे मुड़े बिना भाग गई, घर में शरण ली, और तुरंत सीढ़ियों की ओर खुलने वाली दरवाजे जैसी खिड़की को शटर, बोल्ट और सलाख से बंद कर दिया। उसने टूसेंट से पूछा:—

क्या मेरे पिता वापस आ गए हैं?

"अभी नहीं, मैडमोजेल।"

[हम पहले ही इस तथ्य को स्पष्ट रूप से बता चुके हैं कि टूसेंट हकलाते थे। कृपया भविष्य में इसे छोड़ दें। किसी बीमारी को संगीत के माध्यम से दर्शाना हमें स्वीकार्य नहीं है।]

जीन वाल्जेन, एक विचारशील व्यक्ति थे और उन्हें रात्रिकालीन सैर का शौक था, वे अक्सर देर रात घर लौटते थे।

कोसेट ने आगे कहा, "टूसेंट, क्या तुम शाम के समय बगीचे की ओर खुलने वाले शटरों को कम से कम सलाखों से अच्छी तरह से बंद करने और उन्हें बंद करने वाले छोटे छल्लों में लोहे की छोटी-छोटी चीजें लगाने का ध्यान रखते हो?"

"अरे! इस मामले में थोड़ी नरमी बरतें, महोदया।"

टौसेंट ने अपने कर्तव्य में कोई चूक नहीं की, और कोसेट इस तथ्य से भलीभांति परिचित थी, लेकिन वह यह कहने से खुद को रोक नहीं सकी:—

"यहां तो बिल्कुल एकांत है।"

“जहाँ तक उस बात का सवाल है,” टूसेंट ने कहा, “यह सच है। हमें कुछ कहने से पहले ही मार डाला जा सकता है! और महाशय तो घर में सोते भी नहीं हैं। लेकिन चिंता मत करो, महोदया, मैंने खिड़कियों के शटर ऐसे कसकर बंद कर रखे हैं जैसे जेल में होते हैं। अकेली औरतें! यह सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं, मेरा मानना है! ज़रा सोचो, अगर रात में कुछ आदमी तुम्हारे कमरे में घुसें और कहें: ‘चुप रहो!’ और तुम्हारा गला काटने लगें तो क्या होगा। मरने का डर इतना नहीं है; मरना तो तय है, और यह ठीक है; डर तो उन लोगों के छूने का भयानक एहसास है। और फिर, उनके चाकू! वे उनसे ठीक से काट भी नहीं सकते! हे भगवान!”

कोसेट ने कहा, "चुप रहो। सब कुछ अच्छी तरह से बांध लो।"

टूसेंट द्वारा रचे गए नाटकीय नाटक से भयभीत कोसेट, और संभवतः पिछले सप्ताह के प्रेत-दर्शनों की यादों से भी, जो बार-बार उसके मन में आ रहे थे, इतनी डरी हुई थी कि वह उससे यह कहने की भी हिम्मत नहीं कर पाई: "जाओ और उस पत्थर को देखो जो बेंच पर रखा है!" क्योंकि उसे डर था कि कहीं बगीचे का द्वार खुल न जाए और "वे आदमी" अंदर न आ जाएँ। उसने देखा कि सभी दरवाजे और खिड़कियाँ सावधानीपूर्वक बंद थीं, उसने टूसेंट को अटारी से तहखाने तक पूरे घर में

तलाशी लेने को कहा, खुद अपने कमरे में बंद हो गई, दरवाजा कुंडी से बंद कर लिया, अपने पलंग के नीचे देखा, बिस्तर पर गई और ठीक से सो नहीं पाई। पूरी रात उसे वह विशाल पत्थर दिखाई देता रहा, जो पहाड़ जितना बड़ा और गुफाओं से भरा हुआ था।

सूर्योदय के समय—उगते सूरज का गुण यह है कि वह हमें पिछली रात के सभी भयों पर हँसा देता है, और हमारी हँसी उस भय के सीधे अनुपात में होती है जो उन्होंने उत्पन्न किया है—सूर्योदय के समय, जब कोसेट जागी, तो उसने अपने डर को एक बुरे सपने के रूप में देखा और खुद से कहा: “मैं क्या सोच रही थी? यह उन कदमों की आहट की तरह है जो मैंने एक या दो हफ्ते पहले रात में बगीचे में सुनी थी! यह चिमनी के साये की तरह है! क्या मैं डरपोक बन रही हूँ?” सूरज, जो उसके शटर की दरारों से चमक रहा था और दमिश्क के पर्दों को लाल कर रहा था, ने उसे इस हद तक आश्वस्त किया कि उसके विचारों से सब कुछ गायब हो गया, यहाँ तक कि पत्थर भी।

"बेंच पर पत्थर का अस्तित्व उतना ही न के बराबर था जितना कि बगीचे में गोल टोपी पहने किसी आदमी का; मैंने उस पत्थर के बारे में सपना देखा, जैसा कि मैंने बाकी सभी चीजों के बारे में देखा था।"

उसने कपड़े पहने, बगीचे में उतरी, बेंच की ओर भागी और उसे ज़ोर का पसीना आने लगा। पत्थर वहीं था।

लेकिन यह क्षण भर के लिए ही था। जो रात में आतंक होता है, वही दिन में जिज्ञासा का कारण बन जाता है।

“वाह!” उसने कहा, “चलो देखते हैं यह क्या है।”

उसने पत्थर उठाया, जो काफी बड़ा था। उसके नीचे कुछ ऐसा था जो चिट्ठी जैसा लग रहा था। यह एक सफेद लिफाफा था। कोसेट ने उसे उठा लिया। एक तरफ पता नहीं था, दूसरी तरफ मुहर नहीं थी। फिर भी, लिफाफा खुला होने के बावजूद खाली नहीं था। अंदर कागज़ दिखाई दे रहे थे।

कोसेट ने इसका निरीक्षण किया। अब यह भय या जिज्ञासा नहीं थी; यह चिंता की शुरुआत थी।

कोसेट ने लिफाफे से उसकी सामग्री निकाली, जो कागज की एक छोटी सी नोटबुक थी, जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर क्रमांक अंकित थे और उस पर कुछ पंक्तियाँ बहुत ही सुंदर और आकर्षक लिखावट में लिखी हुई थीं, जैसा कि कोसेट को लगा।

कोसेट ने नाम खोजने की कोशिश की; कोई नाम नहीं था। यह किसके लिए था? शायद उसी के लिए, क्योंकि किसी ने पैकेट उसकी बेंच पर रख दिया था। यह किससे आया था? एक अनवरत जिज्ञासा उस पर हावी हो गई; उसने अपने हाथों में कांपते हुए पर्चों से नज़रें हटाने की कोशिश की, उसने आकाश, सड़क, प्रकाश में नहाए बबूल के पेड़ों, पास की छत पर फड़फड़ाते कबूतरों को देखा, और फिर अचानक उसकी नज़र पांडुलिपि पर पड़ी, और उसने मन ही मन कहा कि उसे जानना ही होगा कि इसमें क्या लिखा है।

उसने यही पढ़ा।

IV. एक पत्थर के नीचे एक दिल

ब्रह्मांड को एक ही सत्ता में समेट लेना, उस एक सत्ता का ईश्वर तक विस्तारित हो जाना, यही प्रेम है।

प्रेम स्वर्गदूतों द्वारा तारों को दी जाने वाली अभिवादन है।

प्रेम के कारण दुखी होने पर आत्मा कितनी उदास हो जाती है!

उस सत्ता के अभाव में कितना खालीपन है जो स्वयं ही संसार को परिपूर्ण करती है! ओह! यह कितना सत्य है कि प्रियतम सत्ता ही ईश्वर बन जाती है। यह समझा जा सकता था कि ईश्वर को इस बात से ईर्ष्या हो सकती थी, यदि समस्त सृष्टि के पिता परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से सृष्टि को आत्मा के लिए और आत्मा को प्रेम के लिए न बनाया होता।

सफेद क्रेप की टोपी और बैंगनी रंग के पर्दे के नीचे एक मुस्कान की झलक ही आत्मा को सपनों के महल में ले जाने के लिए पर्याप्त है।

ईश्वर हर चीज़ के पीछे है, लेकिन हर चीज़ ईश्वर को छुपाती है। वस्तुएँ काली हैं, प्राणी अपारदर्शी हैं। किसी प्राणी से प्रेम करना उसे पारदर्शी बना देना है।

कुछ विचार प्रार्थना के समान होते हैं। ऐसे क्षण भी आते हैं जब शरीर की स्थिति चाहे जैसी भी हो, आत्मा निःसंकोच होती है।

बिछड़े प्रेमी हजारों काल्पनिक तरीकों से एक-दूसरे से बिछड़ने का भ्रम दूर करते हैं, फिर भी उन सभी तरीकों की अपनी एक वास्तविकता होती है। वे एक-दूसरे को देख नहीं सकते, एक-दूसरे को पत्र नहीं लिख सकते; फिर भी वे संवाद स्थापित करने के अनेक रहस्यमय साधन खोज निकालते हैं। वे एक-दूसरे को पक्षियों का गीत, फूलों की सुगंध, बच्चों की मुस्कान, सूर्य का प्रकाश, हवा की सरसराहट, तारों की किरणें, समस्त सृष्टि भेजते हैं। और क्यों नहीं? ईश्वर की सभी रचनाएँ प्रेम की सेवा के लिए ही बनी हैं। प्रेम में इतनी शक्ति है कि वह समस्त प्रकृति को अपने संदेशों से भर देता है।

ओह वसंत! तुम वो पत्र हो जो मैं उसे लिखती हूँ।

भविष्य मस्तिष्क से कहीं अधिक हृदयों का है। प्रेम ही एकमात्र ऐसी चीज है जो अनंतकाल को समाहित और परिपूर्ण कर सकती है। अनंत में अक्षय तत्व आवश्यक है।

प्रेम आत्मा का ही अंश है। यह उसी के समान है। आत्मा की ही तरह यह दिव्य चिंगारी है; आत्मा की ही तरह यह अविनाशी, अविभाज्य और अमर है। यह हमारे भीतर विद्यमान अग्नि का एक बिंदु है, जो अमर और अनंत है, जिसे कोई भी सीमित नहीं कर सकता और न ही बुझा सकता है। हम इसे अपनी हड्डियों के भीतर तक जलते हुए महसूस करते हैं और इसे स्वर्ग की गहराइयों में भी चमकते हुए देखते हैं।

ओह प्रेम! आराधना! दो मनों की मोहकता जो एक दूसरे को समझते हैं, दो हृदय जो एक दूसरे से संवाद करते हैं, दो निगाहें जो एक दूसरे में समा जाती हैं! तुम मेरे पास आओगे ना, हे आनंद! एकांत में दो-दो की सैर! धन्य और प्रकाशमय दिन! मैंने कभी-कभी सपने में देखा है कि समय-समय पर घंटे स्वर्गदूतों के जीवन से अलग होकर यहाँ धरती पर मनुष्यों के भाग्य का मार्ग प्रशस्त करने आते हैं।

ईश्वर प्रेम करने वालों के सुख में अनंत काल तक बने रहने के अलावा और कुछ नहीं जोड़ सकता। प्रेममय जीवन के बाद, अनंत प्रेम वास्तव में एक वृद्धि ही है; परन्तु इस संसार में भी प्रेम आत्मा को जो असीम आनंद प्रदान करता है, उसकी तीव्रता को बढ़ाना ईश्वर के लिए भी असंभव है। ईश्वर स्वर्ग की परिपूर्णता है; प्रेम मनुष्य की परिपूर्णता है।

आप किसी तारे को दो कारणों से देखते हैं, क्योंकि वह प्रकाशमान होता है, और क्योंकि वह अभेद्य होता है। हे स्त्री, आपके पास एक और भी मधुर आभा और एक और भी गहरा रहस्य है।

हम सभी, चाहे हम कोई भी हों, सांस लेने योग्य शरीर रखते हैं। हवा न मिलने पर हमारा दम घुटता है। फिर हम मर जाते हैं। प्रेम की कमी से मरना भयानक होता है। आत्मा का घुटन।

जब प्रेम दो प्राणियों को एक पवित्र और दिव्य एकता में विलीन कर देता है, तब उनके लिए जीवन का रहस्य खुल जाता है; वे एक ही नियति की दो सीमाओं से

अधिक कुछ नहीं रह जाते; वे एक ही आत्मा के दो पंखों से अधिक कुछ नहीं रह जाते। प्रेम, उड़ान भरो।

जिस दिन कोई स्त्री चलते हुए आपके सामने से गुज़रती है और अपने आभास से प्रकाश बिखेरती है, उस दिन आप प्रेम में खो जाते हैं। लेकिन आपके लिए एक काम बाकी रह जाता है: उसके बारे में इतनी गहराई से सोचना कि वह भी आपके बारे में सोचने पर विवश हो जाए।

प्रेम से शुरू हुआ कार्य केवल ईश्वर ही पूरा कर सकता है।

सच्चा प्रेम निराशा में डूबा रहता है और खोए हुए दस्ताने या मिले हुए रूमाल पर मोहित हो जाता है, और उसकी भक्ति और आशाओं के लिए अनंतकाल की आवश्यकता होती है। यह असीम महानता और असीम लघुता दोनों से मिलकर बना होता है।

यदि तुम पत्थर हो, तो अडिग रहो; यदि तुम पौधा हो, तो संवेदनशील पौधा बनो; यदि तुम मनुष्य हो, तो प्रेममय बनो।

प्रेम के लिए कुछ भी पर्याप्त नहीं है। हमें सुख मिलता है, तो हम स्वर्ग की कामना करते हैं; हमें स्वर्ग प्राप्त होता है, तो हम जन्नत की कामना करते हैं।

हे एक दूसरे से प्रेम करने वालो, प्रेम में ही सब कुछ समाहित है। इसे प्रेम में खोजना सीखो। प्रेम में चिंतन के साथ-साथ स्वर्ग भी है, और स्वर्ग से भी बढ़कर, इसमें आनंदमयता है।

“क्या वह अब भी लक्ज़मबर्ग आती हैं?” “जी नहीं।” “यही वह चर्च है जहाँ वह प्रार्थना के लिए आती थीं?” “वह अब यहाँ नहीं आतीं।” “क्या वह अब भी इसी घर में रहती हैं?” “वह कहीं और चली गई हैं।” “वह कहाँ रहने गई हैं?”

उसने कुछ नहीं कहा।

अपनी आत्मा का पता न जानना कितना दुखद है!

प्रेम में बचपना होता है, अन्य भावनाओं में तुच्छता होती है। धिक्कार है उन भावनाओं पर जो मनुष्य को नीचा दिखाती हैं! और उस भावना को सलाम जो उसे बच्चा बना देती है!

एक अजीब बात है, क्या तुम जानते हो? मैं रात में रहता हूँ। एक ऐसी शक्ति है जो मेरे आकाश को अपने साथ ले गई जब वह चली गई।

काश! हम एक ही कब्र में अगल-बगल लेटे होते, हाथ में हाथ डाले, और समय-समय पर, अंधेरे में, एक दूसरे की उंगली को धीरे से सहलाते—यह मेरे अनंत काल के लिए पर्याप्त होता!

हे प्रेम के कारण कष्ट सहने वालों, और अधिक प्रेम करो। प्रेम में मरना, प्रेम में जीना है।

प्रेम। इस यातना में एक गंभीर और तारों भरी रूपांतरण की अनुभूति समाहित है। पीड़ा में भी परमानंद निहित है।

पक्षियों का आनंद देखिए! वे घोंसले बनाकर ही गाते हैं।

प्रेम स्वर्ग की वायु का एक दिव्य श्वसन है।

गहरे हृदय और ज्ञानवान व्यक्तियों, जीवन को ईश्वर द्वारा बनाए गए स्वरूप में स्वीकार करो; यह एक लंबी परीक्षा है, एक अज्ञात नियति की असीम तैयारी है। यह नियति, सच्ची नियति, मनुष्य के लिए कब्र में पहला कदम रखते ही शुरू हो जाती है। तब उसे कुछ प्रकट होता है, और वह सत्य को समझने लगता है। सत्य, उस शब्द का ध्यान करो। जीवित व्यक्ति अनंत को अनुभव करते हैं; सत्य केवल मृतकों को ही दिखाई देता है। इस बीच, प्रेम करो और कष्ट सहो, आशा रखो और चिंतन करो। हाय! उस पर जिसने केवल शरीर, रूप और दिखावे से प्रेम किया हो! मृत्यु उससे सब कुछ छीन लेगी। आत्माओं से प्रेम करने का प्रयास करो, तुम उन्हें फिर पाओगे।

मुझे सड़क पर एक बेहद गरीब युवक मिला जो प्रेम में डूबा हुआ था। उसकी टोपी पुरानी थी, उसका कोट फटा हुआ था, उसकी कोहनियों में छेद थे; उसके जूतों से पानी टपक रहा था, और उसकी आत्मा में तारे चमक रहे थे।

प्रेम पाना कितना महान अनुभव है! प्रेम करना उससे भी कहीं अधिक महान अनुभव है! जुनून के बल पर हृदय वीर बन जाता है। यह केवल शुद्ध भावों से ही बना रहता है; यह किसी भी ऐसी चीज पर निर्भर नहीं रहता जो उदात्त और महान न हो। इसमें कोई भी अयोग्य विचार वैसे ही अंकुरित नहीं हो सकता जैसे हिमनद पर बिच्छू बूटी। शांत और उदात्त आत्मा, जो सांसारिक भावनाओं और मनोभावों से

अछूती है , इस संसार के बादलों और अंधकार , इसकी मूर्खताओं , इसके झूठों , इसकी घृणाओं , इसके घमंडों , इसके दुखों पर प्रभुत्व जमाती है , और भाग्य के गहन और अंतर्देशीय झटकों के अलावा कुछ भी महसूस नहीं करती , जैसे पहाड़ों की चोटियाँ भूकंप के झटके महसूस करती हैं।

अगर कोई प्रेम करने वाला न होता , तो सूर्य विलुप्त हो जाता।

पत्र के बाद वी. कोसेट

जैसे-जैसे कोसेट पढ़ती गई, वह धीरे-धीरे विचारों में खो गई। ठीक उसी क्षण जब उसने नोटबुक की आखिरी पंक्ति से अपनी नज़रें उठाईं, वह सुंदर अधिकारी विजयी भाव से द्वार के सामने से गुजरा—यह उसका समय था; कोसेट उसे घिनौना समझती थी।

उसने फिर से किताब पर विचार करना शुरू कर दिया। कोसेट ने सोचा, यह कितनी सुंदर लिखावट में लिखी गई है; एक ही लिखावट में, लेकिन अलग-अलग स्याही से, कभी एकदम काली, कभी सफ़ेद, जैसे स्याही की दवात में अलग-अलग दिनों में डाली गई हो। तो, यह एक ऐसा मन था जो वहाँ आह-आह के साथ, अनियमित रूप से, बिना क्रम के, बिना चुनाव के, बिना उद्देश्य के, बेतरतीब ढंग से प्रकट हुआ था। कोसेट ने ऐसा पहले कभी नहीं पढ़ा था। इस पांडुलिपि में, जिसमें उसे पहले से ही अंधकार से अधिक प्रकाश दिखाई दे रहा था, उस पर एक आधे खुले पवित्र स्थान का प्रभाव उत्पन्न हुआ। इनमें से प्रत्येक रहस्यमयी पंक्ति उसकी आँखों के सामने चमक उठी और उसके हृदय को एक विचित्र चमक से भर दिया। उसे जो शिक्षा मिली थी, उसमें हमेशा आत्मा की बात होती थी, प्रेम की कभी नहीं, ठीक वैसे ही जैसे कोई जलती हुई लकड़ी की बात करे, लौ की नहीं। पंद्रह पृष्ठों की इस पांडुलिपि ने अचानक और मधुरता से उसके सामने प्रेम, दुःख, भाग्य, जीवन, अनंत काल, आरंभ और अंत, सब कुछ प्रकट कर दिया। ऐसा लगा मानो किसी ने हाथ खोलकर अचानक उस पर मुट्ठी भर प्रकाश की किरणें बिखेर दी हों। इन कुछ पंक्तियों में उसने एक भावुक, उत्साही, उदार, ईमानदार स्वभाव, एक पवित्र इच्छाशक्ति, एक अपार दुःख, एक गहरी निराशा, एक व्याकुल हृदय और एक पूर्ण रूप से विलीन परमानंद का अनुभव किया। यह पांडुलिपि क्या थी? एक पत्र। एक ऐसा पत्र जिस पर न नाम था, न पता, न तारीख, न हस्ताक्षर, एक मार्मिक और निस्वार्थ भाव, सत्यों से रचित एक रहस्य, प्रेम का एक संदेश जिसे किसी देवदूत द्वारा लाया जाना था और किसी कुंवारी द्वारा पढ़ा जाना था, पृथ्वी की सीमाओं से परे एक मुलाकात, एक प्रेत का किसी आत्मा को लिखा प्रेम पत्र। यह एक अनुपस्थित, शांत और उदास आत्मा का पत्र था, जो मृत्यु की शरण लेने के लिए तैयार प्रतीत होता था और जिसने अपनी अनुपस्थित प्रेमिका, अपनी

प्रियतमा को भाग्य का रहस्य, जीवन की कुंजी, प्रेम भेजा था। यह पत्र एक पैर कब्र में और एक उंगली स्वर्ग में रखकर लिखा गया था। कागज पर एक-एक करके गिरती ये पंक्तियाँ आत्मा की बूँदें कहलाती थीं।

अब ये पन्ने किसके पास से आए होंगे? इन्हें किसने लिखा होगा?

कोसेट ने एक पल भी संकोच नहीं किया। केवल एक ही पुरुष।

वह!

उसके मन में एक बार फिर दिन का उजाला हो गया था; सब कुछ फिर से प्रकट हो गया था। उसे अभूतपूर्व आनंद और गहरा दुख महसूस हो रहा था। यह वही था! वही जिसने लिखा था! वह वहीं था! वही जिसका हाथ उस रेलिंग से टकराया था! जब वह उसे भूल गई थी, तब वह उसे फिर से मिल गया था! लेकिन क्या वह उसे भूल गई थी? नहीं, कभी नहीं! एक पल के लिए भी ऐसा सोचना उसकी मूर्खता थी। उसने हमेशा उससे प्यार किया था, हमेशा उसकी पूजा की थी। आग कुछ समय के लिए बुझ गई थी और सुलगती रही थी, लेकिन अब उसे सब कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा था; यह बस थोड़ी सी आगे बढ़ी थी, और अब फिर से भड़क उठी थी, और उसके पूरे अस्तित्व को प्रज्वलित कर दिया था। यह नोटबुक उस दूसरी आत्मा से निकली एक चिंगारी की तरह थी जो उसकी आत्मा में आ गिरी थी। उसने महसूस किया कि आग एक बार फिर से भड़क उठी है।

उसने पांडुलिपि के हर शब्द को गहराई से आत्मसात किया: “ओह हाँ!” उसने कहा, “मैं इसे कितनी अच्छी तरह पहचानती हूँ! यही तो मैंने उसकी आँखों में पहले ही पढ़ लिया था।” जब वह तीसरी बार पांडुलिपि को पूरा कर रही थी, तभी लेफ्टिनेंट थियोडुल एक बार फिर द्वार से गुजरे और फुटपाथ पर अपने स्पर्स की खड़खड़ाहट की। कोसेट को अपनी आँखें ऊपर उठानी पड़ीं। उसने उन्हें नीरस, मूर्ख, बेवकूफ, निकम्मा, दिखावटी, अप्रिय, बदतमीज़ और बेहद बदसूरत समझा। अधिकारी ने उसे देखकर मुस्कुराना अपना कर्तव्य समझा।

वह शर्म और आक्रोश से मुंह फेर लिया। वह खुशी-खुशी उसके सिर पर कुछ फेंक देना चाहती थी।

वह भागी, घर में वापस आई और अपने कमरे में खुद को बंद कर लिया ताकि पांडुलिपि को एक बार फिर पढ़ सके, उसे कंठस्थ कर सके और सपने देख सके। जब उसने उसे पूरी तरह से याद कर लिया, तो उसने उसे चूमा और अपने सीने से लगा लिया।

सब कुछ समाप्त हो गया था, कोसेट एक बार फिर गहरे, दिव्य प्रेम में डूब गई थी। स्वर्ग का अथाह सागर एक बार फिर खुल गया था।

पूरे दिन कोसेट असमंजस में डूबी रही। वह मुश्किल से ही कुछ सोच पा रही थी, उसके विचार उसके दिमाग में उलझे हुए थे, वह कुछ भी अनुमान नहीं लगा पा रही थी, वह कांपते हुए उम्मीद कर रही थी, क्या? अस्पष्ट बातें। वह खुद से कोई वादा करने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी, और न ही वह खुद को किसी भी बात से मना करना चाहती थी। उसके चेहरे पर पीलापन छा जाता था, और उसके शरीर में सिहरन दौड़ जाती थी। उसे बीच-बीच में ऐसा लगता था जैसे वह भ्रम की दुनिया में प्रवेश कर रही हो; वह खुद से कहती थी: "क्या यही वास्तविकता है?" फिर उसने अपने गाउन के नीचे, सीने में रखे उस प्यारे कागज को महसूस किया, उसे अपने दिल से लगाया, उसकी धारियों को अपनी त्वचा पर महसूस किया; और अगर उस पल जीन वालजेन उसे देख लेता, तो उसकी पलकों के नीचे से छलक रही उस चमकदार और अनजानी खुशी को देखकर वह कांप उठता।—"ओह हाँ!" उसने सोचा, "यह निश्चित रूप से वही है! यह उसी ने भेजा है, और मेरे लिए है!"

और उसने खुद से कहा कि स्वर्गदूतों के हस्तक्षेप, एक दिव्य संयोग ने उसे वापस उसके पास पहुंचा दिया है।

ओह, प्रेम का रूपांतरण! ओह, सपने! वह दिव्य संयोग, स्वर्गदूतों का वह हस्तक्षेप, शार्लेमेन आंगन से लेकर लायन्स डिच तक, ला फोर्स की छतों के ऊपर, एक चोर द्वारा दूसरे चोर को उछाली गई रोटी की गोली के समान था।

VI. बुजुर्गों को उपयुक्त समय पर बाहर जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

शाम होते ही जीन वालजेन बाहर चला गया; कोसेट ने कपड़े पहने। उसने अपने बालों को बड़े ही सलीके से संवारा और एक ऐसी पोशाक पहनी जिसकी चोली कैंची से थोड़ी ज़्यादा कटी हुई थी, और उस ढलान से उसके गले का ऊपरी हिस्सा दिख रहा था, और जैसा कि युवा लड़कियाँ कहती हैं, "थोड़ी अभद्र" थी। यह बिल्कुल भी अभद्र नहीं थी, बल्कि हमेशा की तुलना में ज़्यादा सुंदर थी। उसने बिना यह जाने कि वह ऐसा क्यों कर रही है, इस तरह सज-धज कर अपना रूप बदला।
क्या वह बाहर जाना चाहती थी? नहीं।
क्या वह किसी मेहमान की उम्मीद कर रही थी? नहीं।
शाम ढलते ही वह बगीचे में चली गई। टूसेंट अपनी रसोई में व्यस्त थी, जो पीछे के आंगन में खुलती थी।
वह पेड़ों के नीचे टहलने लगी और समय-समय पर अपने हाथ से शाखाओं को हटाती रही, क्योंकि कुछ शाखाएँ बहुत नीचे लटकी हुई थीं।
इस तरह वह बेंच तक पहुंची।
वह पत्थर अभी भी वहीं था।
वह बैठ गई और धीरे से अपना सफेद हाथ उस पत्थर पर रख दिया, मानो वह उसे सहलाना और धन्यवाद देना चाहती हो।
अचानक, उसे वह अवर्णनीय अनुभूति हुई जो तब होती है जब कोई व्यक्ति उसके पीछे खड़ा होता है, भले ही वह उस व्यक्ति को न देख पाए।
उसने अपना सिर घुमाया और खड़ी हो गई।
वह वही था।
उसका सिर नंगा था। वह दुबला-पतला और पीला पड़ गया था। उसके काले कपड़े मुश्किल से दिखाई दे रहे थे। गोधूलि बेला की हल्की रोशनी उसके सुंदर माथे

पर पड़ रही थी और उसकी आँखों को छाया में ढक रही थी। अतुलनीय सौम्यता के आवरण के नीचे, उसके भीतर कुछ ऐसा था जो मृत्यु और रात का आभास कराता था।
उसका चेहरा ढलते दिन के प्रकाश और एक ऐसी आत्मा के विचार से जगमगा रहा था जो उड़ान भरने वाली है।

वह अभी तक भूत नहीं लग रहा था, और वह अब मनुष्य भी नहीं रहा था।

उसने अपनी टोपी झाड़ियों में फेंक दी थी, जो कुछ ही कदम दूर थीं।

कोसेट बेहोश होने ही वाली थी, पर उसने एक भी चीख नहीं निकाली। वह धीरे-धीरे पीछे हट गई, क्योंकि वह उसकी ओर आकर्षित हो रही थी। वह हिला तक नहीं। उसके चारों ओर छाई किसी अवर्णनीय और उदासी भरी भावना के कारण, उसने उसकी आँखों में वह भाव महसूस किया जिसे वह देख नहीं सकती थी।

पीछे हटते समय कोसेट को एक पेड़ मिला और वह उस पर झुक गई। अगर वह पेड़ न होता तो वह गिर जाती।

फिर उसने उसकी आवाज़ सुनी, वह आवाज़ जो उसने वास्तव में कभी नहीं सुनी थी, पत्तों की सरसराहट से मुश्किल से ऊपर उठती हुई, और बुदबुदाती हुई:—

माफ़ कीजिए, मैं यहाँ हूँ। मेरा दिल भरा हुआ है। मैं इस तरह से नहीं जी सकती थी, इसलिए मैं यहाँ आई हूँ। क्या आपने वह पढ़ा जो मैंने बेंच पर रखा था? क्या आप मुझे पहचानती हैं? मुझसे डरिए मत। बहुत समय हो गया है, आपको वह दिन याद होगा, जब आपने मुझे लक्ज़मबर्ग में, ग्लेडिएटर के पास देखा था। और वह दिन जब आप मेरे सामने से गुज़री थीं? वह 16 जून और 2 जुलाई का दिन था। लगभग एक साल हो गया है। मैंने आपको बहुत समय से नहीं देखा है। मैंने कुर्सियाँ किराए पर देने वाली महिला से पूछा, और उसने मुझे बताया कि उसने आपको अब नहीं देखा है। आप रू डे ल'ओएस्ट में, तीसरी मंज़िल पर, एक नए घर के सामने वाले अपार्टमेंट में रहती थीं—आप देख सकती हैं कि मैं जानती हूँ! मैंने आपका पीछा किया। मेरे पास और क्या चारा था? और फिर आप गायब हो गईं। मुझे लगा कि मैंने आपको एक बार ओडियन के आर्केड के नीचे अखबार पढ़ते हुए देखा था। मैं आपके पीछे भागी। लेकिन नहीं। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसके पास... तुम्हारे जैसी टोपी। रात में मैं यहाँ आया। डरो मत, मुझे कोई नहीं देख रहा। मैं तुम्हारी पास वाली खिड़कियों को निहारने आया हूँ। मैं बहुत धीरे चलता हूँ, ताकि तुम सुन न सको, वरना तुम घबरा जाओगी। पिछली शाम मैं

तुम्हारे पीछे था, तुम मुड़ीं, मैं भाग गया। एक बार मैंने तुम्हें गाते हुए सुना। मैं खुश हुआ। क्या तुम्हें बुरा लगा क्योंकि मैंने तुम्हें खिड़कियों के शटर के पीछे से गाते हुए सुना? इससे तुम्हें कोई नुकसान नहीं हो सकता। नहीं, ऐसा नहीं है? देखो, तुम मेरी परी हो! मुझे कभी-कभी आने दो; मुझे लगता है कि मैं मरने वाला हूँ। काश तुम जानती! मैं तुम्हें पूजता हूँ। मुझे माफ़ कर दो, मैं तुमसे बोल रहा हूँ, पर मुझे नहीं पता कि मैं क्या कह रहा हूँ; शायद मैंने तुम्हें नाराज़ किया हो; क्या मैंने तुम्हें नाराज़ किया है?

“ओह! मेरी माँ!” उसने कहा।

और वह ऐसे नीचे गिर पड़ी मानो मृत्यु के कगार पर हो।

उसने उसे पकड़ लिया, वह गिर पड़ी, उसने उसे अपनी बाहों में भर लिया, उसे अपने करीब खींच लिया, अनजाने में ही। वह खुद लड़खड़ा रहा था, फिर भी उसने उसे सहारा दिया। मानो उसका दिमाग धुएं से भरा हो; उसके होंठों से बिजली सी दौड़ रही थी; उसके सारे विचार गायब हो गए थे; उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई धार्मिक कार्य कर रहा हो, और साथ ही साथ अपवित्रता भी कर रहा हो। इसके अलावा, उस सुंदर स्त्री के लिए उसके मन में जरा भी प्रेम नहीं था, जिसका स्पर्श वह अपने सीने से महसूस कर रहा था। वह प्रेम में पागल हो गया था।

उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे अपने दिल पर रख दिया। उसने वहाँ कागज़ को महसूस किया, वह हकलाते हुए बोला:—

"तो क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?"

उसने इतनी धीमी आवाज़ में उत्तर दिया कि वह लगभग सुनाई न देने वाली साँस के अलावा और कुछ नहीं थी:

"चुप रहो! तुम जानते हो!"

और उसने अपना शर्म से लाल हुआ चेहरा उस शानदार और मदहोश युवक की छाती पर छिपा लिया।

वह बेंच पर गिर पड़ा, और वह उसके बगल में। उनके बीच कोई बातचीत नहीं हुई। तारे टिमटिमाने लगे थे। आखिर कैसे उनके होंठ मिल गए? कैसे पक्षी गाते हैं,

बर्फ पिघलती है, गुलाब खिलता है, मई का महीना आता है, और ठंडी पहाड़ियों की चोटियों पर काले पेड़ों के पीछे भोर सफेद हो जाती है?

एक चुंबन, बस इतना ही।

दोनों चौंक गए और चमकती आंखों से अंधेरे में टकटकी लगाए देखने लगे।

उन्हें न तो ठंडी रात का एहसास हुआ, न ठंडे पत्थर का, न नम मिट्टी का, न गीली घास का; वे एक-दूसरे को देखते रहे और उनके दिल विचारों से भरे हुए थे। उन्होंने अनजाने में ही एक-दूसरे का हाथ थाम लिया था।

उसने उससे न तो पूछा, न ही उसे इस बात का आश्चर्य हुआ कि वह वहाँ कैसे पहुँचा और बगीचे में कैसे आया। उसे तो यह सब इतना सरल लगा कि वह वहाँ हो सकता है!

समय-समय पर मारियस का घुटना कोसेट के घुटने से छू जाता था और दोनों कांप उठते थे।

बीच-बीच में कोसेट हकलाते हुए एक शब्द बोलती थी। उसकी आत्मा उसके होठों पर फूल पर ओस की बूंद की तरह मंडराती थी।

धीरे-धीरे वे एक-दूसरे से बातें करने लगे। मौन के बाद भावनाओं का सैलाब उमड़ आया, जो परिपूर्णता का प्रतीक था। रात शांत और आसमान में भव्य थी। आत्मा के समान शुद्ध इन दोनों प्राणियों ने एक-दूसरे को सब कुछ बताया - अपने सपने, अपने नशे, अपने परमानंद, अपने भ्रम, अपनी कमजोरियाँ, कैसे उन्होंने दूर से एक-दूसरे को प्यार किया था, कैसे एक-दूसरे के लिए तड़पा था, और जब वे एक-दूसरे को देख नहीं पाए थे तो उनका दुख। उन्होंने एक आदर्श आत्मीयता में एक-दूसरे से अपने सबसे गुप्त और रहस्यमय विचारों को साझा किया, जिसे कोई भी चीज़ बढ़ा नहीं सकती थी। उन्होंने अपने भ्रमों पर अटूट विश्वास के साथ एक-दूसरे को वह सारा प्यार, यौवन और बचपन की यादें बताईं जो अभी भी उनके मन में बसी हुई थीं। उनके दोनों हृदय एक-दूसरे में इस प्रकार विलीन हो गए कि पंद्रह मिनट बीतने पर, युवक के पास युवती की आत्मा थी, और युवती के पास युवक की आत्मा थी। वे एक दूसरे में समाहित हो गए, वे एक दूसरे से मोहित हो गए, उन्होंने एक दूसरे को चकाचौंध कर दिया।

जब उनकी बातचीत समाप्त हो गई, जब उन्होंने एक-दूसरे को सब कुछ बता दिया, तो उसने अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया और उससे पूछा:—

"आपका क्या नाम है?"

“मेरा नाम मारियस है,” उसने कहा। “और तुम्हारा?”

मेरा नाम कोसेट है।

पुस्तक **VI.** लिटिल गैवरोचे

I. हवा की शरारती चंचलता

1823 से, जब मोंटफर्मेइल का सराय पतन की ओर अग्रसर था और धीरे-धीरे दिवालियापन की खाई में नहीं, बल्कि छोटे-मोटे कर्जों के दलदल में डूबता जा रहा था, तब तक थेनार्डियर दंपति के दो और बच्चे हो चुके थे; दोनों लड़के। इस तरह उनके कुल पाँच बच्चे हो गए; दो लड़कियाँ और तीन लड़के।

मैडम थेनार्डियर ने आश्चर्यजनक भाग्य से आखिरी दो को तब छुटकारा दिला दिया था जब वे अभी भी बहुत छोटे और कम उम्र के थे।

“छुटकारा पा लिया” यही शब्द सही है। उस स्त्री में प्रकृति का बस एक अंश ही बचा था। वैसे, इस घटना के एक से अधिक उदाहरण मौजूद हैं। मारेचेल डे ला मोथे-हौडानकोर्ट की तरह, थेनार्डियर भी केवल अपनी बेटियों की माँ थी। उसकी मातृत्व यहीं समाप्त हो गया। मानव जाति के प्रति उसकी घृणा अपने ही बेटों से शुरू हुई। अपने बेटों के प्रति उसका क्रूर स्वभाव अटल था, और इस मामले में उसके हृदय में एक उदासी की दीवार खड़ी थी। जैसा कि पाठक देख चुके हैं, वह सबसे बड़े बेटे से घृणा करती थी; वह बाकी दो को कोसती थी। क्यों? क्योंकि। सबसे भयानक कारण, सबसे अनुत्तरित जवाब—क्योंकि। “मुझे रोते- बिलखते बच्चों के झुंड की कोई ज़रूरत नहीं है,” इस माँ ने कहा।

आइए हम समझाते हैं कि थेनार्डियर अपने अंतिम दो बच्चों से छुटकारा पाने में कैसे सफल हुए; और इस प्रक्रिया से लाभ भी कैसे उठाया।

कुछ पन्ने पहले जिस महिला मैग्नन का ज़िक्र हुआ था, वही वह महिला थी जिसने बूढ़े गिलनोर्मंड को अपने दो बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए मजबूर किया था। वह क्वाई डेस सेलेस्टिन्स में, पेटिट-मस्क की इस प्राचीन गली के कोने पर रहती थी, जहाँ उसे अपनी बदनामी को अच्छी छवि में बदलने का मौका मिला। पाठक को याद होगा कि पैंतीस साल पहले पेरिस में सीन नदी के किनारे बसे इलाकों में क्रुप की एक भयानक महामारी फैली थी, जिसका फायदा उठाकर विज्ञान ने फिटकरी के साँस लेने की प्रभावकारिता पर बड़े पैमाने पर प्रयोग किए थे, जिसे आजकल आयोडीन के बाहरी टिंचर से लाभकारी रूप से प्रतिस्थापित किया जा चुका है। इस महामारी के दौरान, मैग्नन ने अपने दोनों छोटे बेटों को खो

दिया, एक की मृत्यु उसी दिन सुबह और दूसरे की शाम को हुई। यह एक बड़ा सदमा था। ये बच्चे अपनी माँ के लिए अनमोल थे; उनसे हर महीने अस्सी फ्रैंक की आमदनी होती थी। ये अस्सी फ़्रैंक समय पर एम. गिलनोर्मंड के नाम पर, उनके किराए वसूलने वाले सेवानिवृत्त कर्मचारी एम. बार्ज द्वारा, रुए डू रोई-डे- सिसिली में जमा किए गए थे। बच्चे मर चुके थे, आमदनी बंद हो गई थी। मैग्नन परिवार ने कोई रास्ता निकालने की कोशिश की। बुराई के उस अंधकारमय संगठन में, जिसका वह हिस्सा थी, सब कुछ ज्ञात था, सारे राज़ रखे जाते थे, और सभी एक-दूसरे की मदद करते थे। मैग्नन को दो बच्चों की ज़रूरत थी; थेनार्डियर परिवार के दो बच्चे थे। एक ही लिंग और एक ही उम्र के। एक के लिए अच्छा इंतज़ाम, दूसरे के लिए अच्छा निवेश। छोटे थेनार्डियर बच्चे छोटे मैग्नन बन गए। मैग्नन ने क्वाई डेस सेलेस्टिन्स छोड़ दिया और रुए क्लोचेपर्स में रहने चली गई। पेरिस में, एक गली से दूसरी गली के बीच, व्यक्ति की पहचान टूट जाती है।

रजिस्ट्री कार्यालय को किसी भी प्रकार की सूचना नहीं दी गई थी, इसलिए उन्होंने कोई आपत्ति नहीं उठाई और बच्चों का प्रतिस्थापन अत्यंत सरल तरीके से संपन्न हो गया। केवल इतना ही कि थेनार्डियर ने बच्चों के इस ऋण के बदले दस फ्रैंक प्रति माह की मांग की, जिसे मैग्नन ने चुकाने का वादा किया और वास्तव में उसने चुका भी दिया। यह कहना अनावश्यक है कि एम. गिलनोर्मंड ने अपने वादे का पालन करना जारी रखा। वह हर छह महीने में बच्चों से मिलने आते थे। उन्हें बदलाव का पता ही नहीं चला। मैग्नन ने उनसे कहा, "महाशय, ये बच्चे कितने आपसे मिलते-जुलते हैं!"

थेनार्डियर, जिनके लिए अवतार लेना आसान था, ने इस अवसर का लाभ उठाकर जोन्ड्रेट का रूप धारण कर लिया। उनकी दो बेटियों और गैवरोश को अभी यह भी पता नहीं चला था कि उनके दो छोटे भाई हैं। जब दुख की एक सीमा आ जाती है, तो व्यक्ति एक प्रकार की प्रेत जैसी उदासीनता से भर जाता है, और वह मनुष्यों को प्रेत की तरह देखने लगता है। आपके सबसे करीबी रिश्तेदार अक्सर आपके लिए धुंधली छायानुमा आकृतियों से अधिक कुछ नहीं रह जाते, जो जीवन की अस्पष्ट पृष्ठभूमि में मुश्किल से दिखाई देते हैं और आसानी से अदृश्य के साथ फिर से भ्रमित हो जाते हैं।

जिस दिन थेनार्डियर ने अपने दोनों छोटे बच्चों को मैग्नन को सौंपते हुए, उन्हें हमेशा के लिए त्यागने का स्पष्ट इरादा किया था, उस शाम को उनके मन में एक दुविधा उत्पन्न हुई, या ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्हें दुविधा हो रही है। उन्होंने अपने पति से कहा, "लेकिन यह तो हमारे बच्चों को त्यागना है!" कुशल और शांत स्वभाव वाले थेनार्डियर ने इस दुविधा को यह कहकर शांत कर दिया, "जीन जैक्स रूसो ने तो इससे भी बेहतर किया था!" दुविधा से आगे बढ़ते हुए, माँ बेचैन हो गईं: "लेकिन अगर पुलिस हमें परेशान करने लगे तो क्या होगा? मुझे बताइए, श्रीमान थेनार्डियर, क्या हमने जो किया है वह जायज़ है?" थेनार्डियर ने उत्तर दिया, "सब कुछ जायज़ है। इसमें किसी को भी कुछ और नहीं दिखेगा। इसके अलावा, जिनके पास एक पैसा भी नहीं है, उनके बच्चों की देखभाल करने में किसी को कोई दिलचस्पी नहीं होती।"

मैग्नन अपराध जगत में एक तरह की फैशनेबल महिला थी। वह अपने पहनावे का बहुत ध्यान रखती थी। वह अपने कमरे में, जो बनावटी और दयनीय ढंग से सजा हुआ था, एक चालाक अंग्रेज चोर के साथ रहती थी। यह अंग्रेज महिला, जो अपने धनी रिश्तेदारों की सिफारिश पर पेरिस की नागरिक बन गई थी, लाइब्रेरी में रखे पदकों और मैडमोजेल मार के हीरों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थी, और बाद में न्यायिक मामलों में प्रसिद्ध हुई। उसे "मैमसेल मिस" के नाम से जाना जाता था।

मैग्नन के हाथों में आए उन दो नन्हे जीवों को अपनी किस्मत पर शिकायत करने का कोई कारण नहीं था। अस्सी फ्रैंक की सिफारिश पर, उनकी अच्छी देखभाल की जाती थी, जैसा कि लाभ कमाने वाली हर चीज़ की होती है; उन्हें न तो खराब कपड़े दिए जाते थे, न ही खराब खाना; उनके साथ लगभग "छोटे सज्जनों" जैसा व्यवहार किया जाता था—उनकी नकली माँ द्वारा उनकी असली माँ से भी बेहतर। मैग्नन एक सभ्य महिला की तरह व्यवहार करता था और उनके सामने चोरों की भाषा का प्रयोग नहीं करता था।

इस प्रकार कई वर्ष बीत गए। थेनार्डियर ने इस तथ्य से अच्छा संकेत पाया। एक दिन, जब मैग्नन उसे दस फ्रैंक का मासिक भत्ता दे रही थी, तो संयोगवश उसने उससे कहा: "पिता को उन्हें कुछ शिक्षा अवश्य देनी चाहिए।"

अचानक ही, ये दोनों बेचारे बच्चे, जो उस समय तक अपनी बुरी किस्मत के बावजूद काफी हद तक सुरक्षित थे, अचानक ही जीवन में धकेल दिए गए और उन्हें अपने दम पर जीवन की शुरुआत करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

जोन्ड्रेट की कोठरी जैसी घटना में अपराधियों की सामूहिक गिरफ्तारी, जिसमें जांच और उसके बाद कारावास जैसी जटिल प्रक्रियाएं शामिल होती हैं, उस भयावह और रहस्यमय गुप्त समाज के लिए एक बड़ी आपदा है जो सार्वजनिक समाज से नीचे रहकर अपना अस्तित्व बनाए रखता है; इस तरह का कोई भी कृत्य उस अंधकारमय संसार में हर तरह की विपत्तियां लाता है। थेनार्डियर की विपत्ति में मैग्नन की विपत्ति भी निहित थी।

एक दिन, मैग्नन द्वारा एपोनिन को रू प्लूमेट से संबंधित नोट सौंपने के कुछ ही समय बाद, रू क्लोचेपर्से में पुलिस ने अचानक छापा मारा; मैग्नन और मैम्सेल मिस दोनों को पकड़ लिया गया; और संदिग्ध चरित्र वाले उस घर के सभी निवासियों को भी हिरासत में ले लिया गया। जब यह सब चल रहा था, दोनों छोटे लड़के पिछवाड़े में खेल रहे थे और उन्होंने छापे के बारे में कुछ नहीं देखा। जब उन्होंने दोबारा घर में प्रवेश करने की कोशिश की, तो उन्होंने दरवाजा बंद और घर खाली पाया। सामने एक मोची ने उन्हें अपने पास बुलाया और उन्हें एक कागज दिया जो "उनकी माँ" ने उनके लिए छोड़ा था। इस कागज पर पता लिखा था: "एम. बार्ज, किराया संग्रहकर्ता, रू डू रोई-डे-सिसिली, नंबर 8।" दुकान के मालिक ने उनसे कहा: "तुम अब यहाँ नहीं रह सकते। वहाँ जाओ। वह पास ही है। बाईं ओर पहली गली। इस कागज से रास्ता पूछ लेना।"

बच्चे चल पड़े, बड़ा बच्चा छोटे का नेतृत्व कर रहा था और उसके हाथ में वह कागज़ था जो उन्हें राह दिखाने वाला था। ठंड थी और उसकी सुन्न छोटी उंगलियां ठीक से बंद नहीं हो पा रही थीं, और कागज़ पर उसकी पकड़ भी मज़बूत नहीं थी। रू क्लोचेपर्से के कोने पर हवा का एक झोंका आया और कागज़ उससे छिन गया, और रात होने के कारण बच्चा उसे दोबारा नहीं ढूंढ पाया।

वे सड़कों पर बेतरतीब ढंग से भटकने लगे।

II. जिसमें लिटिल गैवरोश नेपोलियन द ग्रेट से लाभ निकालता है

पेरिस में वसंत ऋतु अक्सर कठोर और चुभने वाली हवाओं से भरी होती है, जो ठंड तो नहीं पहुँचातीं, लेकिन जमा देती हैं। ये उत्तरी हवाएँ, जो सबसे खूबसूरत दिनों को भी उदास कर देती हैं, ठीक वैसे ही असर डालती हैं जैसे किसी गर्म कमरे में किसी खराब फिटिंग वाले दरवाजे या खिड़की की दरारों से ठंडी हवा के झोंके घुस आते हैं। ऐसा लगता है मानो सर्दियों का उदास दरवाजा थोड़ा खुला रह गया हो और हवा उसमें से बह रही हो। 1832 की वसंत ऋतु में, जब यूरोप में इस सदी की पहली बड़ी महामारी फैली, तब ये उत्तरी हवाएँ पहले से कहीं अधिक कठोर और चुभने वाली थीं। यह एक ऐसा दरवाजा था जो सर्दियों के दरवाजे से भी कहीं अधिक बर्फीला था। यह कब्र का दरवाजा था। इन हवाओं में हैजा की साँस महसूस होती थी।

मौसम विज्ञान की दृष्टि से, इन ठंडी हवाओं की यह विशेषता थी कि वे तीव्र विद्युत तनाव को बाधित नहीं करती थीं। इस दौरान अक्सर गरज और बिजली के साथ तूफान आते थे।

एक शाम, जब ये तेज़ हवाएँ इतनी ज़ोर से चल रही थीं कि ऐसा लग रहा था मानो जनवरी लौट आई हो और बुर्जुआ वर्ग ने अपने लबादे फिर से पहन लिए हों, छोटा गैवरोश, जो हमेशा अपने फटे-पुराने कपड़ों में खुशी से काँपता रहता था, ओर्मे-सेंट-गेरवाइस के पास एक विग बनाने वाले की दुकान के सामने मानो परमानंद में खड़ा था। उसने एक महिला का ऊनी शॉल ओढ़ा हुआ था, जिसे उसने न जाने कहाँ से उठाया था और जिसे उसने गले के कंबल में बदल दिया था। छोटा गैवरोश एक मोम की दुल्हन की गहन प्रशंसा में लीन प्रतीत हो रहा था, जिसने कम गले वाली पोशाक पहनी थी और नारंगी फूलों का मुकुट पहना हुआ था, जो खिड़की में घूम रही थी और राहगीरों को अपनी मुस्कान दिखा रही थी, दो आर्गंड लैंप के बीच; लेकिन असल में, वह दुकान का जायज़ा ले रहा था, ताकि पता लगा सके कि क्या वह दुकान के सामने से साबुन की एक टिकिया चुरा सकता है, जिसे वह बाद में उपनगरों में किसी "नाई" को एक सू (एक तरह का साबुन) में बेच

देगा। वह अक्सर ऐसे साबुन से नाश्ता कर लेता था। वह अपने इस काम को, जिसमें वह माहिर था, "दाढ़ी बनाने वाले नाई" कहता था।

दुल्हन को निहारते हुए और साबुन की टिकिया को देखते हुए, वह दांतों के बीच से बुदबुदाया: "मंगलवार। आज मंगलवार नहीं था। क्या आज मंगलवार था? शायद आज मंगलवार था। हाँ, आज मंगलवार था।"

आज तक किसी को भी यह पता नहीं चल पाया है कि इस एकालाप का संदर्भ क्या था।

जी हां, शायद इस एकालाप का संबंध उस आखिरी अवसर से था जब उन्होंने तीन दिन पहले भोजन किया था, क्योंकि अब शुक्रवार था।

अपनी दुकान में, जो एक अच्छे चूल्हे से गर्म थी, नाई एक ग्राहक की दाढ़ी बना रहा था और समय-समय पर दुश्मन की ओर देख रहा था, वह ठंडा और ढीठ गली का लड़का जिसके दोनों हाथ उसकी जेब में थे, लेकिन जिसका दिमाग स्पष्ट रूप से खुला हुआ था।

जब गैवरोश दुकान की खिड़की और विंडसर साबुन की टिकियों को ध्यान से देख रहा था, तभी असमान कद के दो बच्चे, बहुत साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए, उससे भी छोटे, जिनमें से एक की उम्र लगभग सात साल और दूसरे की पाँच साल लग रही थी, दबे स्वर में दरवाज़े का हैंडल घुमाकर दुकान में दाखिल हुए। वे किसी चीज़ की भीख माँग रहे थे, शायद भीख, उनकी आवाज़ प्रार्थना से ज़्यादा कराह जैसी लग रही थी। दोनों एक साथ बोले, और उनके शब्द समझ में नहीं आ रहे थे क्योंकि छोटे बच्चे की आवाज़ सिसकियों से कट रही थी, और बड़े बच्चे के दाँत ठंड से किटकिटा रहे थे। नाई गुस्से से मुड़ा, और बिना अपना रेज़र छोड़े, बड़े बच्चे को बाएँ हाथ से और छोटे बच्चे को घुटने से धक्का देकर दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया और बोला: "बिना किसी वजह के सबको ठंड में जमा देने का विचार ही बेकार है!"

दोनों बच्चे रोते हुए फिर से चलने लगे। इसी बीच, बादल छा गए; बारिश शुरू हो गई।

छोटा गैवरोश उनके पीछे दौड़ा और उनसे बात करने लगा:—

"क्या बात है तुम बच्चों को?"

“हमें नहीं पता कि हम कहाँ सोएंगे,” बुजुर्ग ने उत्तर दिया।

“बस इतना ही?” गैवरोश ने कहा। “सचमुच बड़ी बात है। इस बात पर इतना हंगामा करना। वे ज़रूर पर्यावरणवादी होंगे!”
और अपनी श्रेष्ठता के साथ-साथ, जो कुछ हद तक उपहासपूर्ण थी, उन्होंने कोमल अधिकार और सौम्य संरक्षण का लहजा भी अपना लिया:—
“मेरे साथ आओ, बच्चों!”
“जी जनाब,” बड़े ने कहा।
और वे दोनों बच्चे उनके पीछे-पीछे ऐसे चले जैसे किसी आर्कबिशप के पीछे चलते हों। उन्होंने रोना बंद कर दिया था।
गैवरोश उन्हें सेंट-एंटोइन स्ट्रीट से होते हुए बैस्टिल की दिशा में ले गया।
जैसे-जैसे गैवरोश आगे बढ़ता गया, उसने नाई की दुकान की ओर गुस्से भरी नजर से पीछे मुड़कर देखा।
“उस आदमी में दिल नहीं है, वो तो बिल्कुल ही निर्दयी है,” उसने बुदबुदाते हुए कहा। “वो अंग्रेज है।”
एक महिला ने जब गैवरोश के नेतृत्व में इन तीनों को कतार में चलते देखा, तो वह जोर से हंस पड़ी। हालांकि, उसकी हंसी में समूह के प्रति सम्मान का अभाव था।
"शुभ दिन, मैम्सेले ओम्निबस," गैवरोचे ने उससे कहा।
कुछ ही क्षण बाद, विग बनाने वाले का ख्याल उसके मन में फिर आया, और उसने आगे कहा:—
“मैं इस जानवर को पहचानने में गलती कर रहा हूँ; यह कोई मछली नहीं, बल्कि एक साँप है। नाई, मैं जाकर एक ताला बनाने वाले को बुला लाता हूँ, और मैं तुम्हारी पूंछ पर एक घंटी बाँध दूँगा।”
इस विग बनाने वाले ने उसे आक्रामक बना दिया था। एक नाले के ऊपर से गुजरते हुए, उसने दाढ़ी वाली एक महिला को संबोधित किया, जो ब्रोकेन नदी पर फाउस्ट से मिलने के योग्य थी और जिसके हाथ में झाड़ू थी।
“महोदया,” उसने कहा, “तो आप अपने घोड़े के साथ बाहर जा रही हैं?”

और इसके बाद उसने एक राहगीर के पॉलिश किए हुए जूतों पर छींटे मार दिए।
“तुम बदमाश!” क्रोधित राहगीर चिल्लाया।
गैवरोश ने अपनी नाक शॉल के ऊपर उठाई।
"क्या महोदय शिकायत कर रहे हैं?"
“तुम्हारे!” उस आदमी ने चीखते हुए कहा।
गैवरोचे ने कहा, "कार्यालय बंद है। मुझे अब कोई शिकायत नहीं मिल रही है।" इसी बीच, जब वह गली में आगे बढ़ा, तो उसने एक तेरह-चौदह साल की भिखारी लड़की को देखा, जिसने इतना छोटा गाउन पहना हुआ था कि उसके घुटने दिख रहे थे, और वह एक भिखारी के नीचे ठंड से कांप रही थी। छोटी लड़की अब ऐसी पोशाक पहनने के लिए बड़ी हो रही थी। उम्र के साथ ऐसे ही खेल खेलते हैं। पेटीकोट उस समय छोटा हो जाता है जब नग्नता अशोभनीय हो जाती है।
“बेचारी लड़की!” गैवरोश ने कहा। “उसके पास तो पैंट भी नहीं है। रुको, ये लो।”
और अपने गले में लिपटे हुए आरामदायक ऊनी कपड़े को खोलकर उसने उसे भिखारी लड़की के पतले और बैंगनी कंधों पर फेंक दिया, जहाँ वह दुपट्टा एक बार फिर शॉल बन गया।
बच्चा आश्चर्य से उसकी ओर देखता रहा और चुपचाप शॉल ग्रहण कर लिया। जब दुख की एक निश्चित सीमा तक पहुँच जाता है, तो गरीब व्यक्ति न तो बुराई पर विलाप करता है और न ही अच्छाई के लिए धन्यवाद देता है।
यह हो जाने पर: "ब्रर्र!" गैवरोश ने कहा, जो सेंट मार्टिन से भी ज्यादा कांप रहा था, क्योंकि सेंट मार्टिन ने अपने लबादे का आधा हिस्सा ही बचा रखा था। इस ब्रर! के साथ ही बारिश की बौछार दुगुनी होकर भयंकर रूप ले ली। निर्दयी आकाश अच्छे कर्मों को दंडित करता है।
“अरे, अब बस करो!” गैवरोश ने हैरानी से कहा, “इसका क्या मतलब है? फिर से बारिश हो रही है! हे भगवान, अगर ऐसे ही चलता रहा तो मैं अपनी सदस्यता बंद कर दूंगा।”
और वह एक बार फिर यात्रा पर निकल पड़ा।

“कोई बात नहीं,” उसने शॉल के नीचे सिमटी हुई भिखारी लड़की पर एक नज़र डालते हुए अपनी बात जारी रखी, “उसकी त्वचा बहुत मशहूर है।”
बादलों की ओर देखते हुए उसने कहा:—
"पकड़ा गया!"
दोनों बच्चे उसके पीछे-पीछे चल रहे थे।
जब वे एक बेकरी की दुकान की ओर इशारा करने वाली इन भारी जालीदार खिड़कियों में से एक के पास से गुजर रहे थे, जहाँ रोटी को सोने की तरह सलाखों के पीछे रखा जाता है, तो गैवरोश मुड़ा:—
"अरे हाँ, वैसे बच्चों, क्या हमने खाना खा लिया है?"
“महाशय,” बड़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, “हमने आज सुबह से कुछ नहीं खाया है।” "तो तुम्हारा न तो पिता है और न ही माता?" गैवरोश ने शान से पूछा।
"माफ़ कीजिए महोदय, हमारे पापा और मम्मी हैं, लेकिन हमें नहीं पता कि वे कहाँ हैं।"
"कभी-कभी यह जानना कि वे कहाँ हैं, इससे बेहतर होता है कि उन्हें पहले से ही पता हो," गैवरोचे ने कहा, जो एक विचारक थे।
“हम पिछले दो घंटों से इधर-उधर भटक रहे हैं,” बुजुर्ग ने आगे कहा, “हमने गलियों के कोनों पर चीजों की तलाश की है, लेकिन हमें कुछ नहीं मिला है।” “मुझे पता है,” गैवरोश ने उत्साह से कहा, “कुत्ते ही तो सब कुछ खा जाते हैं।”
कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने आगे कहा:—
“अरे! हमने अपने लेखकों को खो दिया। पता नहीं हमने उनके साथ क्या किया। ऐसा नहीं होना चाहिए, बच्चों। बूढ़े लोगों को इस तरह भटकने देना मूर्खता है। चलो अब! हमें थोड़ी देर झपकी तो लेनी ही है।”
लेकिन उन्होंने उनसे कोई सवाल नहीं पूछा। इससे ज्यादा सरल और क्या हो सकता था कि उनके पास रहने की कोई जगह ही न हो!

दोनों बच्चों में से बड़ा बच्चा, जिसने बचपन की सहज और बेपरवाह प्रवृत्ति को लगभग पूरी तरह से पुनः प्राप्त कर लिया था, ने यह उद्गार व्यक्त किया:— “यह अजीब तो है ही। माँ ने हमें बताया था कि वह हमें पाम संडे के दिन आशीर्वाद का स्प्रे करवाने ले जाएगी।”
“बकवास,” गैवरोचे ने कहा।
“मम्मा,” बड़े ने बात जारी रखते हुए कहा, “एक महिला हैं जो मैमसेल मिस के साथ रहती हैं।”
“टैनफ्लूट!” गैवरोश ने पलटवार किया।
इसी बीच वह रुक गया था, और पिछले दो मिनट से वह अपने चिथड़ों में मौजूद हर तरह के कोने-कोने में टटोल रहा था।
अंत में उसने अपना सिर इस तरह उछाला जैसे वह केवल संतुष्ट हो, लेकिन वास्तव में वह विजयी भाव दिखा रहा था।
“शांत रहो, बच्चों। ये तीन लोगों के लिए रात का खाना है।”
और उसने अपनी एक जेब से एक सू (एक तरह का सिक्का) निकाला।
उन दोनों बच्चों को आश्चर्यचकित होने का समय दिए बिना, उसने उन दोनों को अपने आगे धकेल कर बेकरी की दुकान में धकेल दिया और अपना सिक्का काउंटर पर फेंकते हुए चिल्लाया:—
अरे वाह! पाँच सेंटिम मूल्य की रोटी!
स्वयं दुकानदार, जो कि बेकर भी था, ने एक रोटी और एक चाकू उठाया।
"तीन टुकड़ों में, मेरे लड़के!" गैवरोश ने आगे कहा।
और उन्होंने गरिमा के साथ कहा:—
हम तीन लोग हैं।
और यह देखकर कि बेकर ने तीनों ग्राहकों की जांच करने के बाद एक काली रोटी निकाली थी, उसने अपनी उंगली नाक में बहुत अंदर तक डाली और इतनी ज़ोर से साँस ली मानो उसके अंगूठे के सिरे पर महान फ्रेडरिक का थोड़ा सा तंबाकू लगा हो, और बेकर के चेहरे पर गुस्से से यह शब्द फेंका:—

"Keksekça?"
हमारे जिन पाठकों को गैवरोश द्वारा बेकर से पूछे गए इस प्रश्न में रूसी या पोलिश शब्द, या योवे और बोटोकुडो जनजातियों द्वारा नदी के एक छोर से दूसरे छोर तक, सुनसान इलाकों में एक-दूसरे पर फेंकी जाने वाली उन क्रूर चीखों में से एक को खोजने का लालच हो सकता है, उन्हें चेतावनी दी जाती है कि यह एक ऐसा शब्द है जिसे हमारे पाठक हर दिन बोलते हैं, और जो "क्वेस-से क्यू सेस क्यू सेला?" वाक्यांश का स्थान लेता है। बेकर पूरी तरह समझ गया, और उसने उत्तर दिया:—
“वाह! यह रोटी है, और बहुत अच्छी, लेकिन दूसरी श्रेणी की रोटी है।” “तुम्हारा मतलब है लार्टन ब्रूटल!” गैवरोश ने शांत और ठंडे लहजे में तिरस्कारपूर्वक जवाब दिया। “सफेद ब्रेड, लड़के! सफेद ब्रेड! मैं दावत दे रहा हूँ।”
बेकर अपनी मुस्कान नहीं रोक सका, और जैसे ही उसने सफेद ब्रेड काटी, उसने उन्हें एक दयालु भाव से देखा जिसने गैवरोश को चौंका दिया।
“अरे, बेकर के लड़के!” उसने कहा, “तुम इस तरह हमारा नाप क्यों ले रहे हो?” इन तीनों को एक के बाद एक रखने पर भी शायद ही कोई माप बन पाता।
जब रोटी काट ली गई, तो बेकर ने सू (एक तरह का सिक्का) अपनी दराज में डाल दिया, और गैवरोश ने दोनों बच्चों से कहा:—
"खूब खाओ।"
छोटे लड़के आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगे।
गैवरोश हंसने लगा।
“अरे! हैलो, यह तो सच है! वे अभी तक नहीं समझते, वे बहुत छोटे हैं।”
और उन्होंने दोहराया:—
"अपरदन करना।"
उसी समय उसने उनमें से प्रत्येक को रोटी का एक टुकड़ा दिया।

और यह सोचकर कि बड़े व्यक्ति, जो उसे बातचीत के अधिक योग्य प्रतीत होते थे, विशेष प्रोत्साहन के पात्र थे और उन्हें अपनी भूख मिटाने में किसी भी प्रकार की झिझक से मुक्त किया जाना चाहिए, उन्होंने सबसे बड़ा हिस्सा उन्हें देते हुए कहा:—
"इसे अपने मुंह में ठूस लो।"
एक टुकड़ा बाकी टुकड़ों से छोटा था; उसने इसे अपने पास रख लिया।
गैवरोश समेत सभी गरीब बच्चे भूख से बेहाल थे। वे बड़े-बड़े निवालों में रोटी तोड़कर खा रहे थे और इस चक्कर में उन्होंने बेकर की दुकान को घेर लिया। अब जब बच्चों ने उन्हें पैसे दे दिए थे, तो बेकर गुस्से से उनकी तरफ देखने लगा।
"चलो फिर से सड़क पर चलते हैं," गैवरोचे ने कहा।
वे एक बार फिर बैस्टिल की दिशा में चल पड़े।
समय-समय पर, जब वे रोशन दुकानों की खिड़कियों के पास से गुजरते थे, तो सबसे छोटा बच्चा रुककर अपनी गर्दन से डोरी से लटकी हुई सीसे की घड़ी में समय देखता था।
"खैर, वह तो बहुत अनुभवहीन है," गैवरोचे ने कहा।
फिर, कुछ सोचते हुए, उसने दांतों के बीच से बुदबुदाते हुए कहा:—
फिर भी, अगर उन बच्चों की जिम्मेदारी मेरे हाथ में होती तो मैं उन्हें इससे बेहतर तरीके से बंद करके रखता।
जैसे ही वे रोटी का टुकड़ा समाप्त कर रहे थे और उस अंधकारमय रुए डेस बैलेट्स के कोने पर पहुँचे, जिसके दूसरे छोर पर ला फोर्स की नीची और भयावह इमारत दिखाई दे रही थी:—
“हेलो, क्या तुम हो, गैवरोश?” किसी ने कहा।
"हेलो, क्या तुम हो, मोंटपार्नास?" गैवरोश ने कहा।
एक आदमी ने अभी-अभी उस गली के बच्चे को रोका था, और वह आदमी कोई और नहीं बल्कि भेस बदला हुआ मोंटपार्नास था, जिसने नीले रंग का चश्मा पहना हुआ था, लेकिन गैवरोश उसे पहचान गया था।

“अरे बाप रे!” गैवरोश ने आगे कहा, “तुम्हारी चमड़ी अलसी के प्लास्टर जैसी पीली है, और तुमने डॉक्टर जैसे नीले चश्मे लगा रखे हैं। कसम से, तुम दिखावा कर रही हो!”
“चुप रहो!” मोंटपार्नास ने कहा, “इतनी जोर से नहीं।”
और उसने गैवरोश को जल्दी से रोशन दुकानों की पहुंच से बाहर निकाल लिया। दोनों छोटे बच्चे एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए, बिना किसी क्रिया के उनके पीछे-पीछे चलने लगे।
जब वे एक बरामदे के मेहराब के नीचे बारिश और सबकी निगाहों से सुरक्षित होकर बैठे थे:
"क्या आपको पता है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ?" मोंटपार्नास ने पूछा। “अफसोस के साथ आरोहण के मठ में,” गैवरोचे ने उत्तर दिया।
“जोकर!”
और मोंटपार्नास ने आगे कहा:—
मैं बैबेट को ढूंढने जा रहा हूँ।
“अहा!” गैवरोश ने हैरानी से कहा, “तो उसका नाम बैबेट है।” मोंटपार्नास ने अपनी आवाज़ धीमी कर ली:—
वह नहीं, वह लड़का है।
"आह! वो चीज़।"
“हां, बैबेट।”
मुझे लगा कि वह बुरी तरह से घायल हो गया है।
"उसने बकल खोल दिया है," मोंटपार्नास ने जवाब दिया।
और उसने झटपट उस लड़के को बताया कि उसी दिन सुबह, बेबेट को ला कॉन्सिएर्जरी में स्थानांतरित किए जाने के बाद, उसने "पुलिस कार्यालय" में दाईं ओर मुड़ने के बजाय बाईं ओर मुड़कर भागने में कामयाबी हासिल की थी।
गैवरोश ने इस कौशल के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त की।

“वाह, क्या शानदार दंत चिकित्सक है!” वह चिल्लाया।
मोंटपार्नास ने बैबेट की उड़ान के बारे में कुछ और विवरण जोड़े और अंत में लिखा:—
“ओह! बात यहीं खत्म नहीं होती।”
गैवरोश ने सुनते हुए, मोंटपार्नास के हाथ में पकड़ी हुई छड़ी को छीन लिया और यंत्रवत रूप से उसके ऊपरी हिस्से को खींचा, और एक खंजर का ब्लेड प्रकट हुआ।
“आह!” उसने जल्दबाजी में खंजर को पीछे धकेलते हुए कहा, “तुम अपने साथ एक बुर्जुआ के वेश में अपना पुलिसकर्मी भी ले आए हो।”
मोंटपार्नास ने आँख मारी।
“वाह!” गैवरोश ने फिर कहा, “तो क्या तुम पुलिस से भिड़ने जा रहे हो?”
“आप बता नहीं सकते,” मोंटपार्नास ने बेपरवाही से जवाब दिया। “किसी चीज़ के बारे में थोड़ा सा भी पता होना हमेशा अच्छी बात होती है।”
गैवरोश ने दृढ़ता दिखाई:—
"आज रात आप क्या कर रहे हैं?"
एक बार फिर मोंटपार्नास ने गंभीर स्वर अपनाया और हर अक्षर को स्पष्ट रूप से बोलते हुए कहा: "चीजें।"
और अचानक बातचीत का विषय बदलते हुए:—
"वैसे!"
"क्या?"
“पिछले दिन कुछ अजीब घटना घटी। सोचिए! मेरी मुलाकात एक संभ्रांत व्यक्ति से हुई। उसने मुझे एक प्रवचन और अपना पर्स उपहार में दिया। मैंने उसे अपनी जेब में रख लिया। एक मिनट बाद, मैंने अपनी जेब में हाथ डाला। वहाँ कुछ भी नहीं था।”
"उपदेश को छोड़कर," गैवरोचे ने कहा।
“लेकिन आप,” मोंटपार्नास ने आगे कहा, “अब आप कहाँ जा रहे हैं?”

गैवरोश ने अपने दो शिष्यों की ओर इशारा करते हुए कहा:— मैं इन शिशुओं को सुलाने जा रही हूँ।
“बिस्तर कहाँ है?”
मेरे घर पर।
आपका घर कहाँ है?
मेरे घर पर।
तो आपके पास रहने की जगह है?
"हाँ मेरे पास है।"
और आप कहाँ ठहरे हुए हैं?
"हाथी में," गैवरोचे ने कहा।
हालांकि मोंटपार्नास स्वभाव से आश्चर्यचकित होने के लिए प्रवृत्त नहीं थे, फिर भी वे अपनी हैरानी को रोक नहीं सके।
हाथी में!
“हाँ, हाथी में!” गैवरोश ने पलटकर जवाब दिया। “केक्चा?”
यह उस भाषा का एक और शब्द है जिसे कोई लिखता नहीं है, लेकिन जिसे हर कोई बोलता है।
केक्चा का अर्थ है: वह क्या है जिसमें है? 59
उस शरारती बच्चे की गहरी टिप्पणी ने मोंटपार्नास को शांति और समझदारी की याद दिला दी। ऐसा प्रतीत हुआ कि गैवरोश के आवास के संबंध में उसके विचार बेहतर हो गए हैं।
“बिल्कुल,” उसने कहा, “हाँ, हाथी। क्या वह वहाँ आराम से है?”
“बिल्कुल,” गैवरोश ने कहा। “वहाँ का मौसम वाकई शानदार है। पुलों के नीचे की तरह यहाँ ठंडी हवा नहीं चलती।”
“अंदर कैसे प्रवेश करें?”
"ओह, मुझे प्रवेश मिल गया।"

"तो क्या यहाँ कोई छेद है?" मोंटपार्नास ने पूछा।
“पारब्लू! मुझे तो यही कहना चाहिए। लेकिन तुम्हें बताना नहीं चाहिए। यह अगले पैरों के बीच में है। पुलिस ने इसे नहीं देखा है।”
“और आप ऊपर चढ़ते हैं? हाँ, मैं समझ गया।”
"हाथ घुमाते ही, चटक, चटक, और सब खत्म, वहां कोई नहीं।"
कुछ देर रुकने के बाद, गैवरोचे ने आगे कहा:—
मैं इन बच्चों के लिए एक सीढ़ी बनवाऊंगा।
मोंटपार्नास जोर से हंस पड़ा:—
"तुमने उन बच्चों को कहाँ से उठाया?"
गैवरोश ने अत्यंत सरलता से उत्तर दिया:—
"ये कुछ शरारती बच्चे हैं जिन्हें एक विग बनाने वाले ने मुझे उपहार में दिया है।"
इसी बीच, मोंटपार्नास सोचने लगा था:—
“तुमने मुझे बहुत आसानी से पहचान लिया,” उसने बुदबुदाते हुए कहा।
उसने अपनी जेब से दो छोटी वस्तुएँ निकालीं, जो रुई में लिपटी हुई दो कलम के बराबर थीं, और उनमें से एक-एक को अपनी दोनों नाक के नथुनों में डाल दिया। इससे उसकी नाक बिल्कुल अलग हो गई।
"इससे आपमें बदलाव आता है," गैवरोश ने टिप्पणी की, "आप पहले से कम साधारण दिखती हैं, इसलिए आपको इन्हें हर समय पहने रहना चाहिए।"
मोंटपार्नास एक आकर्षक व्यक्ति था, लेकिन गैवरोश एक चिढ़ाने वाली महिला थी।
"सच में," मोंटपार्नास ने पूछा, "तुम मुझे इतना पसंद क्यों करते हो?"
उसकी आवाज भी बदल गई थी। पलक झपकते ही मोंटपार्नास पूरी तरह से बदल गया था।
“ओह! हमारे लिए पोरीचिनेल जरूर बजाइए!” गैवरोश ने उत्साहपूर्वक कहा।

दोनों बच्चे, जो अब तक ध्यान नहीं दे रहे थे और अपनी उंगलियों को नाक में डालने में व्यस्त थे, इस नाम को सुनते ही पास आ गए और बढ़ती खुशी और प्रशंसा के साथ मोंटपार्नास को देखने लगे।

दुर्भाग्यवश, मोंटपार्नास संकट में था।

उसने गैवरोश के कंधे पर हाथ रखा और अपने शब्दों पर ज़ोर देते हुए उससे कहा: “मेरी बात ध्यान से सुनो, लड़के! अगर मैं अपने कुत्ते, चाकू और पत्नी के साथ चौक पर होता, और अगर तुम मुझ पर दस सू खर्च कर देते, तो मैं काम करने से इनकार नहीं करता, लेकिन यह श्रोव ट्यूजडे नहीं है।”

इस विचित्र वाक्यांश ने उस लड़के पर एक अनोखा प्रभाव डाला। वह झट से मुड़ा, अपनी छोटी-छोटी चमकीली आँखों से चारों ओर गहरी एकाग्रता से देखा, और कुछ कदम की दूरी पर पीठ करके खड़े एक पुलिस सार्जेंट को पाया। गैवरोश के मुँह से "आह! अच्छा!" निकल गया, लेकिन उसने तुरंत उसे दबा लिया, और मोंटपार्नास से हाथ मिलाते हुए कहा:—

“शुभ संध्या,” उसने कहा, “मैं अपने बच्चों के साथ अपने हाथी पर जा रहा हूँ। अगर कभी रात में आपको मेरी ज़रूरत पड़े, तो आप वहाँ आकर मुझे ढूँढ सकते हैं। मैं हाथी के बाड़े में रहता हूँ। वहाँ कोई कुली नहीं है। आप श्री गैवरोश से संपर्क कर लें।”

“बहुत बढ़िया,” मोंटपार्नास ने कहा।

और वे अलग हो गए, मोंटपार्नास ग्रेव की दिशा में और गैवरोश बैस्टिल की ओर चल पड़े। पाँच बच्चों में से छोटा, जिसे उसका भाई खींच रहा था और गैवरोश खींच रहा था, जाते समय कई बार पीछे मुड़कर "पोरिचिनेल" को देखता रहा।

मोंटपार्नास ने जिस अस्पष्ट वाक्यांश के माध्यम से गैवरोश को पुलिसकर्मी की उपस्थिति के बारे में चेतावनी दी थी, उसमें केवल "डिग" शब्द का ही विशेषण था, जिसे पाँच या छह बार अलग-अलग रूपों में दोहराया गया था। यह अक्षर, "डिग", चाहे अकेले बोला जाए या किसी वाक्यांश के शब्दों के साथ कलात्मक रूप से मिलाया जाए, इसका अर्थ है: "सावधान रहो, अब हम खुलकर बात नहीं कर सकते।" इसके अलावा, मोंटपार्नास के वाक्य में एक साहित्यिक सुंदरता भी थी जो गैवरोश को समझ नहीं आई, वह थी "मोन डोग्यू, मा डाग्यू एट मा डिग्यू", जो टेंपल की एक बोलचाल की अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ है मेरा

कुत्ता, मेरा चाकू और मेरी पत्नी, जो मोलियर के लेखन और कैलोट के चित्रकारी के दौर में विदूषकों और रेड-टेल्स के बीच बहुत प्रचलित थी।

बीस साल पहले, प्लेस डे ला बैस्टिल के दक्षिण-पश्चिम कोने में, नहर के बेसिन के पास, किले-कारागार की प्राचीन खाई में खोदा गया एक विलक्षण स्मारक अभी भी देखा जा सकता था, जो पेरिसवासियों की स्मृतियों से पहले ही मिट चुका है, और जो कुछ निशान छोड़ने का हकदार था, क्योंकि यह "इंस्टीट्यूट के एक सदस्य, मिस्र की सेना के जनरल-इन-चीफ" का विचार था।

हम इसे स्मारक कहते हैं, हालाँकि यह मात्र एक कच्चा मॉडल था। लेकिन यह मॉडल स्वयं, एक अद्भुत रेखाचित्र, नेपोलियन के एक विचार का भव्य ढाँचा, जिसे हवा के झोंकों ने बार-बार उड़ाकर हमसे और दूर फेंक दिया था, ऐतिहासिक बन चुका था और इसने एक निश्चितता प्राप्त कर ली थी जो इसके अस्थायी स्वरूप के विपरीत थी। यह चालीस फीट ऊँचा हाथी था, लकड़ी और पत्थर से निर्मित, जिसकी पीठ पर एक मीनार थी जो एक घर जैसी दिखती थी, जिसे पहले किसी चित्रकार ने हरे रंग से रंगा था, और अब आकाश, हवा और समय ने उसे काला कर दिया था। इस सुनसान और असुरक्षित कोने में, उस विशालकाय का चौड़ा माथा, उसकी सूंड, उसके दाँत, उसकी मीनार, उसका विशाल पिछला हिस्सा, उसके चारों पैर, स्तंभों की तरह, रात में, तारों भरे आकाश के नीचे, एक आश्चर्यजनक और भयानक रूप प्रस्तुत करते थे। यह जनशक्ति का एक प्रतीक था। यह गंभीर, रहस्यमय और विशाल था। यह कोई शक्तिशाली, प्रत्यक्ष प्रेत था, जिसे कोई नहीं जानता था, जो बैस्टिल के अदृश्य भूत के बगल में सीधा खड़ा था।

इस इमारत में बहुत कम अजनबी आते थे, राहगीरों में से कोई भी इसे देखता तक नहीं था। यह खंडहर में तब्दील हो रही थी; हर मौसम में इसकी दीवारों से उखड़ने वाला प्लास्टर इस पर भयंकर घाव बना देता था। "अदाइल्स," जैसा कि एक सुरुचिपूर्ण बोली में कहा जाता था, इसे 1814 के बाद से ही भूल चुके थे। यह अपने कोने में उदास, बीमार, जर्जर हालत में खड़ी थी, सड़ी हुई बाड़ से घिरी हुई, शराबी कोचवानों द्वारा लगातार गंदी की जाती थी; इसकी निचली सतह पर दरारें टेढ़ी-मेढ़ी थीं, इसकी पूंछ से एक पट्टी निकली हुई थी, इसके पैरों के बीच लंबी घास उग रही थी; और, चूंकि इसके चारों ओर का इलाका तीस वर्षों से धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था, उस धीमी और निरंतर गति से जो बड़े शहरों की मिट्टी को अनजाने में ऊपर उठा देती है, यह एक गड्ढे में खड़ी थी, और ऐसा लग

रहा था मानो जमीन इसके नीचे धंस रही हो। यह अस्वच्छ, तिरस्कृत, घृणित और शानदार थी, बुर्जुआ वर्ग की नजरों में बदसूरत, विचारक की नजरों में उदास। उसमें कुछ ऐसा था मानो धूल झाड़ने ही वाली हो, और कुछ ऐसा था मानो वैभव का सिर कलम होने ही वाला हो। जैसा कि हमने कहा, रात में उसका रूप बदल जाता था। रात ही हर अंधकार का मूल तत्व है। जैसे ही गोधूलि बेला हुई, बूढ़ा हाथी रूपांतरित हो गया; परछाइयों की भयानक शांति में वह शांत और दुर्जेय रूप धारण कर लेता था। अतीत का होने के कारण वह रात से संबंधित था; और अंधकार उसकी भव्यता के अनुरूप था।

यह खुरदुरा, छोटा, भारी, कठोर, गंभीर, लगभग बेढंगा, लेकिन निश्चित रूप से राजसी स्मारक, जिस पर एक प्रकार की भव्य और क्रूर गंभीरता की छाप थी, अब लुप्त हो चुका है, और उसकी जगह शांति से राज कर रहा है एक विशालकाय चूल्हा, अपनी पाइप से सुशोभित, जिसने नौ मीनारों वाले उस गंभीर किले की जगह ले ली है, ठीक उसी तरह जैसे पूंजीपति वर्ग सामंती वर्गों की जगह लेता है। यह स्वाभाविक ही है कि एक चूल्हा उस युग का प्रतीक हो जिसमें एक बर्तन में शक्ति समाहित होती है। यह युग बीत जाएगा, लोग पहले ही यह समझने लगे हैं कि यदि बॉयलर में बल हो सकता है, तो मस्तिष्क के अलावा किसी और में बल नहीं हो सकता; दूसरे शब्दों में, जो दुनिया को चलाता और आगे बढ़ाता है, वह इंजन नहीं, बल्कि विचार हैं। इंजनों को विचारों से जोड़ना—यह अच्छा है; लेकिन घोड़े को सवार समझने की गलती न करें।

बहरहाल, प्लेस डे ला बैस्टिल की बात पर लौटते हुए, इस हाथी के वास्तुकार ने प्लास्टर से एक भव्य वस्तु बनाने में सफलता प्राप्त की है; वहीं चूल्हे के वास्तुकार ने कांसे से एक सुंदर वस्तु बनाने में सफलता प्राप्त की है।

यह संकरी संरचना, जिसे एक मधुर नाम दिया गया है और जुलाई का स्तंभ कहा जाता है, एक असफल क्रांति का यह स्मारक, 1832 में भी लकड़ी के एक विशाल आवरण में लिपटा हुआ था, जिसके लिए हमें खेद है, और एक विशाल तख़्ते के घेरे में, जिसने हाथी को अलग-थलग करने का काम पूरा किया।

उस जगह के इसी कोने की ओर, जो दूर स्थित स्ट्रीट लैंप के प्रतिबिंब से मंद रूप से रोशन था, उस लड़के ने अपने दो "शरारती बच्चों" को ले जाकर निर्देशित किया।

पाठकों से निवेदन है कि हम यहाँ अपनी बात रोककर यह याद दिलाना चाहें कि हम एक साधारण वास्तविकता की बात कर रहे हैं, और बीस साल पहले, अदालतों को एक ऐसे बच्चे पर आवारागर्दी और सार्वजनिक स्मारक को विरूपित करने के आरोप में मुकदमा चलाना पड़ा था, जिसे बैस्टिल के इसी हाथी पर सोते हुए पकड़ा गया था। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, हम आगे बढ़ते हैं।

उस विशालकाय मूर्ति के निकट पहुँचकर, गैवरोश ने उस प्रभाव को समझा जो असीम रूप से विशाल वस्तु असीम रूप से लघु वस्तु पर उत्पन्न कर सकती है, और कहा:—

"डरिए मत, बच्चों।"

फिर वह बाड़ में बने एक छेद से हाथियों के बाड़े में घुस गया और छोटे हाथियों को उस छेद से बाहर निकलने में मदद की। दोनों बच्चे, कुछ डरे हुए, बिना कुछ बोले गैवरोश के पीछे-पीछे चले गए और खुद को उस नन्हे मददगार के भरोसे छोड़ दिया, जिसने उन्हें रोटी दी थी और आश्रय का वादा किया था।

वहाँ, बाड़ के सहारे, एक सीढ़ी पड़ी थी जिसका उपयोग दिन के समय पास के लकड़ी के गोदाम में काम करने वाले मजदूर करते थे। गैवरोश ने उसे असाधारण शक्ति से उठाया और हाथी के अगले पैरों में से एक के सहारे रख दिया। जहाँ सीढ़ी समाप्त होती थी, उसके पास ही विशालकाय हाथी के पेट में एक काला सा छेद दिखाई दे रहा था।

गैवरोश ने अपने मेहमानों को सीढ़ी और छेद की ओर इशारा करते हुए कहा:—

"ऊपर चढ़ो और अंदर जाओ।"

दोनों छोटे लड़कों ने भयभीत निगाहों से एक-दूसरे को देखा।

“तुम डरपोक बच्चे हो!” गैवरोश ने कहा।

और उन्होंने आगे कहा:—

तुम देखोगे!

उसने हाथी के खुरदुरे पैर को पकड़ लिया और पलक झपकते ही, सीढ़ी का सहारा लिए बिना, वह छेद तक पहुँच गया। वह उसमें ऐसे घुस गया जैसे कोई साँप किसी दरार से सरकता है, और अंदर गायब हो गया। एक पल बाद, दोनों बच्चों ने उसका पीला पड़ा हुआ सिर धुंधले से, छायादार छेद के किनारे पर, एक फीके और सफेद भूत की तरह दिखाई दिया।

“वाह!” उसने कहा, “ऊपर चढ़ो, बच्चों! तुम्हें पता चलेगा कि यहाँ कितना आरामदायक है! ऊपर आओ!” उसने बड़े से कहा, “मैं तुम्हारी मदद करूँगा।”

छोटे-छोटे बच्चे एक-दूसरे को धक्का दे रहे थे, वह शरारती जानवर उन्हें डरा भी रहा था और उनमें आत्मविश्वास भी जगा रहा था, और तभी ज़ोरदार बारिश होने लगी। बड़े भाई ने जोखिम उठाया। छोटा भाई अपने भाई को ऊपर चढ़ते देख और खुद को उस विशालकाय जानवर के पंजों के बीच अकेला छोड़कर चला गया, तो उसे रोने का बहुत मन हुआ, लेकिन उसने हिम्मत नहीं की।

बड़ा लड़का लड़खड़ाते कदमों से सीढ़ी के पायदानों पर चढ़ गया; इस बीच, गैवरोश उसे उसी तरह उत्साहवर्धक उद्गारों से प्रेरित कर रहा था जैसे कोई तलवारबाजी का उस्ताद अपने शिष्यों को या कोई खच्चर वाला अपने खच्चरों को प्रेरित करता है।

डरो मत! बस! चलो! अपने पैर वहाँ रखो! अपना हाथ यहाँ दो! हिम्मत से!

और जब बच्चा उसकी पहुँच में आया, तो उसने अचानक और ज़ोर से उसकी बांह पकड़ ली और उसे अपनी ओर खींच लिया।

“पकड़ा गया!” उसने कहा।

वह शरारती बच्चा दरार से निकल गया था।

“अब,” गैवरोश ने कहा, “मेरा इंतज़ार कीजिए। कृपया बैठ जाइए, महाशय।”

और जिस तरह वह गड्ढे में घुसा था, उसी तरह बाहर निकलते हुए, वह बंदर की फुर्ती से हाथी के पैर से नीचे फिसल गया, घास पर अपने पैरों पर उतरा, पाँच साल के बच्चे को शरीर से पकड़ लिया और उसे सीढ़ी के ठीक बीच में बिठा दिया, फिर वह उसके पीछे चढ़ने लगा और बड़े को चिल्लाकर कहने लगा:—

मैं उसे ऊपर उठाऊंगा, क्या तुम खींचोगे?

और पलक झपकते ही, उस छोटे लड़के को धक्का दिया गया, घसीटा गया, धकेला गया, गड्ढे में ठूंस दिया गया, इससे पहले कि वह खुद को संभाल पाता, और गैवरोश उसके पीछे से अंदर आया, और सीढ़ी को एक लात मारकर घास पर पटक दिया, और फिर ताली बजाते हुए चिल्लाने लगा:—

“हम यहाँ हैं! जनरल लाफायेट अमर रहें!”

यह विस्फोट समाप्त होने के बाद, उन्होंने आगे कहा:—

“अब, बच्चों, तुम मेरे घर में हो।”

दरअसल, गैवरोश अपने घर पर ही थे।

ओह, बेकार की चीज़ों का अप्रत्याशित उपयोग! महान वस्तुओं का परोपकार! दिग्गजों की अच्छाई! यह विशाल स्मारक, जो सम्राट के एक विचार का प्रतीक था, एक गली के बच्चे का घर बन गया था। उस नन्हे बच्चे को इस विशालकाय स्मारक ने अपना लिया था और आश्रय दिया था। रविवार को सजे-धजे अमीर लोग जब बैस्टिल के इस विशाल स्मारक के पास से गुज़रते थे, तो अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से उसे तिरस्कार भरी नज़रों से देखते हुए अक्सर कहते थे: "इसका क्या फायदा?" यह स्मारक उस नन्हे जीव को ठंड, पाले, ओलों और बारिश से बचाता था, सर्दियों की तेज़ हवाओं से आश्रय देता था, उसे कीचड़ में सो जाने से बचाता था जिससे बुखार होता है, और बर्फ में सो जाने से बचाता था जिससे मौत होती है। यह उस नन्हे जीव को आश्रय देता था जिसका न पिता था, न माता, न रोटी, न कपड़े, न कोई सहारा। यह उस निर्दोष को शरण देता था जिसे समाज ठुकरा देता था। यह सार्वजनिक अपराध को कम करने में सहायक था। यह उस व्यक्ति के लिए एक सुरक्षित ठिकाना था जिसके लिए सभी दरवाजे बंद थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह दयनीय बूढ़ा विशालकाय हाथी, जो कीड़े-मकोड़ों और विस्मृति से ग्रस्त था, मस्सों, फफूंद और घावों से ढका हुआ था, लड़खड़ाता हुआ, कीड़ों से खाया हुआ, त्यागा हुआ, शापित, एक प्रकार का भिखारी विशालकाय, चौराहे के बीच में दयालु दृष्टि से व्यर्थ ही भीख मांग रहा था, उसने उस दूसरे भिखारी, उस गरीब बौने पर दया कर ली हो, जो बिना जूतों के, बिना छत के, उंगलियों पर फूंक मारता हुआ, चिथड़ों में लिपटा हुआ, त्यागे हुए टुकड़ों पर पल रहा था। यही वह काम था जो बैस्टिल के हाथी के लिए अच्छा था। नेपोलियन का यह विचार, जिसे मनुष्यों ने तिरस्कृत किया था, ईश्वर ने वापस ले लिया था। जो केवल शानदार था, वह महान बन गया था। अपने विचार को साकार करने के लिए, सम्राट को पोरफिरी, पीतल, लोहा, सोना, संगमरमर की आवश्यकता थी; तख्तों, बीमों और प्लास्टर का पुराना संग्रह ईश्वर के लिए पर्याप्त था। सम्राट ने एक प्रतिभा का सपना देखा था; उस विशालकाय, सशस्त्र हाथी में, जिसकी सूंड उठी हुई थी, जो अपने शिखर को धारण किए हुए था और चारों ओर अपने आनंदमय और जीवंत जल बिखेर रहा था, उसने लोगों को साकार रूप देने की इच्छा व्यक्त की। ईश्वर

ने उसके साथ एक और भी महान कार्य किया था, उसने उसमें एक बच्चे को निवास कराया था।

जिस छेद से गैवरोश अंदर आया था, वह एक ऐसी दरार थी जो बाहर से मुश्किल से दिखाई देती थी, क्योंकि जैसा कि हमने बताया है, वह हाथी के पेट के नीचे छिपी हुई थी, और इतनी संकरी थी कि केवल बिल्लियाँ और बेघर बच्चे ही उससे गुजर सकते थे।

गैवरोश ने कहा, "चलिए, सबसे पहले पोर्टर को बता देते हैं कि हम घर पर नहीं हैं।"

और अपने कमरों से भलीभांति परिचित व्यक्ति के आत्मविश्वास के साथ अंधेरे में उतरते हुए, उसने एक तख्ता उठाया और उस छेद को बंद कर दिया।

एक बार फिर गैवरोश गुमनामी में डूब गया। बच्चों ने फॉस्फोरिक बोतल में माचिस की तीली घुसाने की चटकने की आवाज़ सुनी। रासायनिक माचिस का आविष्कार अभी नहीं हुआ था; उस युग में फ्यूमाडे स्टील ही प्रगति का प्रतीक था।

अचानक एक तेज रोशनी से उनकी आंखें झपकीं; गैवरोश ने राल में डूबी हुई रस्सी के एक टुकड़े में आग लगा दी थी, जिसे "तहखाने की आग" कहा जाता है। तहखाने की आग, जिससे रोशनी से ज्यादा धुआं निकला, ने हाथी के अंदरूनी हिस्से को धुंधला सा दिखाई देने लायक बना दिया।

गैवरोश के दोनों मेहमानों ने चारों ओर नज़र डाली और उन्हें ऐसा अहसास हुआ मानो वे हाइडेलबर्ग के विशाल टनल में बंद हों, या उससे भी बेहतर, जैसे योना ने बाइबिल में वर्णित व्हेल के पेट में महसूस किया होगा। मानो एक विशाल कंकाल उन्हें घेरे हुए हो। ऊपर, एक लंबी भूरी बीम थी, जहाँ से नियमित दूरी पर विशाल, धनुषाकार पसलियाँ निकली हुई थीं, जो रीढ़ की हड्डी को दर्शा रही थीं। प्लास्टर की पतली-पतली लकीरें आंतों की तरह उनसे लटक रही थीं, और मकड़ी के विशाल जाले इधर-उधर फैले हुए गंदे डायफ्राम बना रहे थे। जगह-जगह, कोनों में, बड़े-बड़े काले धब्बे दिखाई दे रहे थे जो सजीव प्रतीत हो रहे थे और अचानक और भयभीत गति से तेज़ी से अपनी जगह बदल रहे थे।

हाथी की पीठ से गिरे हुए टुकड़े उसके पेट में भर गए थे, जिससे उस गुहा में इस तरह से भर गया था कि उस पर फर्श की तरह चलना संभव था।

छोटा बच्चा अपने भाई से लिपट गया और उसके कान में फुसफुसाया:—

“यह काला है।”

इस टिप्पणी पर गैवरोश ने हैरानी जताई। दोनों शरारती बच्चों के भयभीत चेहरे को देखकर उन्हें थोड़ा झटका देना आवश्यक हो गया था।

“ये क्या बकवास कर रहे हो?” उसने हैरानी से कहा। “क्या तुम मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो? क्या तुम मुझे नीचा दिखा रहे हो? क्या तुम्हें ट्यूलरीज़ चाहिए? क्या तुम जाहिल हो? बोलो! मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि मैं मूर्खों की टोली में नहीं आता। अरे, क्या तुम पोप के दरबार के बिगड़े बच्चे हो?”

डर के समय थोड़ी सख्ती अच्छी होती है। इससे तसल्ली मिलती है। दोनों बच्चे गैवरोश के करीब आ गए।

इस भरोसे से पिता तुल्य भावुक होकर गैवरोश गंभीर से सौम्य हो गए और छोटे बच्चे से संबोधित करते हुए बोले:—

“बेवकूफ,” उसने अपमानजनक शब्द पर ज़ोर देते हुए, कोमल स्वर में कहा, “बाहर अंधेरा है। बाहर बारिश हो रही है, यहाँ बारिश नहीं हो रही; बाहर ठंड है, यहाँ हवा का एक कण भी नहीं है; बाहर लोगों की भीड़ है, यहाँ कोई नहीं है; बाहर चाँद भी नहीं है, यहाँ मेरी मोमबत्ती है, धिक्कार है!”

दोनों बच्चे अब उस कमरे को कम भयभीत होकर देखने लगे; लेकिन गैवरोश ने उन्हें और सोचने-विचारने का समय नहीं दिया।

“जल्दी,” उसने कहा।

और उन्होंने उन्हें उस ओर धकेल दिया जिसे हम कमरे का अंतिम छोर कह पाने में बहुत खुशी महसूस करते हैं।

वहां उसका बिस्तर रखा था।

गैवरोश का बिस्तर पूरा था; यानी उसमें एक गद्दा, एक कंबल और पर्दों वाला एक कोना था।

गद्दा पुआल की चटाई थी, कंबल भूरे ऊन की एक मोटी पट्टी थी, जो बहुत गर्म और लगभग नई थी। कोने में ये सब चीजें थीं:—

तीन लंबे खंभे, फर्श बनाने वाले कचरे में गाड़कर, यानी हाथी के पेट में, दो आगे और एक पीछे, मजबूती से ठोंके गए थे, और उनके शीर्षों को रस्सी से बांधकर पिरामिडनुमा ढांचा बनाया गया था। इस ढांचे पर पीतल के तार की जाली टिकी हुई थी, जिसे कलात्मक ढंग से लगाया गया था और लोहे के तार से बांधकर तीनों छेदों को ढक दिया गया था। भारी पत्थरों की एक पंक्ति ने इस जाल को ज़मीन पर टिकाए रखा था ताकि इसके नीचे से कुछ भी न गुजर सके। यह जाली असल में पीतल की उन पर्दों का एक टुकड़ा थी जिनसे चिड़ियाघरों को ढका जाता है। गैवरोश का पलंग इस जाल के पीछे एक पिंजरे की तरह रखा था। पूरा ढांचा एस्किमो तम्बू जैसा दिखता था।

इस जालीदार संरचना ने पर्दों का स्थान ले लिया।

गैवरोश ने सामने की ओर जाल को बांधने वाले पत्थरों को एक तरफ हटा दिया, और जाल की दो तहें जो एक दूसरे के ऊपर लिपटी हुई थीं, खुल गईं।

“चारों हाथ-पैर के बल नीचे बैठ जाओ, बच्चों!” गैवरोश ने कहा।

उसने अपने मेहमानों को बड़ी सावधानी से पिंजरे में प्रवेश कराया, फिर वह उनके पीछे रेंगकर अंदर गया, पत्थरों को एक साथ समेटा और पिंजरे के खुले हिस्से को फिर से पूरी तरह बंद कर दिया।

तीनों चटाई पर लेट गए थे। गैवरोश के हाथ में अभी भी तहखाने का चूहा था।

“अब,” उसने कहा, “सो जाओ! मैं मोमबत्तीदान को दबाने जा रहा हूँ।”

“महाशय,” भाइयों में से बड़े ने गैवरोश से जाली की ओर इशारा करते हुए पूछा, “यह किसलिए है?”

“वो तो चूहों के लिए है,” गैवरोश ने गंभीरता से उत्तर दिया। “जाओ सो जाओ!”

फिर भी, उन्होंने इन नन्हे प्राणियों के लाभ के लिए कुछ उपदेशात्मक शब्द जोड़ना अपना कर्तव्य समझा, और उन्होंने आगे कहा:—

“यह गार्डन ऑफ प्लांट्स से आया है। इसका इस्तेमाल खूंखार जानवरों के लिए किया जाता है। वहां इनकी पूरी एक दुकान है। आपको बस एक दीवार फांदनी है, खिड़की से रेंगकर अंदर जाना है और दरवाजे से गुजर जाना है। आप जितने चाहें उतने ले सकते हैं।”

बोलते-बोलते उसने छोटे बच्चे को कंबल में लपेट लिया, और नन्हा बच्चा धीरे से बोला:—
“ओह! यह कितना अच्छा है! यह गर्म है!”
गैवरोश ने कंबल पर प्रसन्न दृष्टि डाली।
“यह भी जार्डिन डेस प्लांट्स से है,” उन्होंने कहा। “मैंने इसे बंदरों से लिया था।”
और, सबसे बड़े बेटे को उस चटाई की ओर इशारा करते हुए, जिस पर वह लेटा हुआ था, जो बहुत मोटी और बेहतरीन ढंग से बनी हुई चटाई थी, उन्होंने आगे कहा:—
"वह जिराफ का था।"
कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने आगे कहा:—
“उन जानवरों के पास ये सब चीजें थीं। मैंने उन्हें उनसे छीन लिया। इससे उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई। मैंने उनसे कहा: ‘ये सब हाथी के लिए हैं।’” वह रुका, और फिर बोलने लगा:—
“तुम दीवारों पर चढ़कर भागते हो और तुम्हें सरकार की ज़रा भी परवाह नहीं है। बस अब हो गया!”
दोनों बच्चे इस साहसी और बुद्धिमान व्यक्ति को भयभीत और विस्मयकारी श्रद्धा से निहार रहे थे, जो उन्हीं की तरह एक घुमक्कड़ था, उन्हीं की तरह एकांत में रहने वाला, उन्हीं की तरह दुर्बल था, जिसमें कुछ प्रशंसनीय और सर्वशक्तिमान बात थी, जो उन्हें अलौकिक प्रतीत होता था, और जिसका चेहरा एक बूढ़े बाज़ीगर के सभी विकृत चेहरों से बना था, जो सबसे सरल और मनमोहक मुस्कानों के साथ मिश्रित थे।
“महाशय,” बुजुर्ग ने दबी आवाज में पूछा, “तो आप पुलिस से नहीं डरते?” गैवरोश ने बस इतना ही उत्तर देकर संतोष किया:—
“बदमाश! कोई ‘पुलिस’ नहीं कहता, वे ‘बॉबी’ कहते हैं।”
छोटे बच्चे की आँखें चौड़ी खुली थीं, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। वह चटाई के किनारे पर बैठा था और बड़ा बच्चा बीच में था, इसलिए गैवरोश ने उसे माँ की तरह कंबल ओढ़ा दिया और उसके सिर के नीचे पुराने चिथड़ों से चटाई को इस तरह

ऊँचा कर दिया कि बच्चे के लिए तकिया बन जाए। फिर वह बड़े बच्चे की ओर मुड़ा:—

“अरे! हम यहाँ बड़े आराम से हैं, है ना?”

“अहा, हाँ!” बुजुर्ग ने एक उद्धार पाए हुए देवदूत के भाव से गैवरोश की ओर देखते हुए उत्तर दिया।

पूरी तरह भीग चुके वे दोनों बेचारे छोटे बच्चे एक बार फिर गर्म होने लगे।

“अरे हाँ, वैसे,” गैवरोश ने आगे कहा, “तुम किस बात पर रो रहे थे?”

और उसने अपने भाई को उस छोटे बच्चे की ओर इशारा करते हुए कहा:—

“ऐसी छोटी-मोटी बात पर तो मुझे कुछ कहना नहीं है, लेकिन तुम्हारे जैसे बड़े-बड़े आदमी का रोना! ये तो बेवकूफी है; तुम तो बछड़े जैसे दिख रहे थे।”

“हे भगवान,” बच्चे ने उत्तर दिया, “हमारे पास रहने की कोई जगह नहीं है।”

“अरे!” गैवरोश ने पलटवार करते हुए कहा, “तुम ‘लॉजिंग’ नहीं कहते, तुम ‘क्रिब’ कहते हो।”

और फिर, हमें रात में इस तरह अकेले रहने से डर लगने लगा।

“आप ‘रात’ नहीं कहते, आप ‘अंधेरे आदमी’ कहते हैं।”

“धन्यवाद, महोदय,” बच्चे ने कहा।

“सुनो,” गैवरोश ने आगे कहा, “अब कभी किसी बात पर रोना मत। मैं तुम्हारा ख्याल रखूंगा। तुम देखोगे कि हम कितना मज़ा करेंगे। गर्मियों में, हम अपने एक दोस्त नावेट के साथ ग्लेशियर जाएंगे, हम गैरे नदी में नहाएंगे, हम ऑस्टरलिट्ज़ पुल पर राफ्टों के सामने नंगे होकर दौड़ेंगे—यह देखकर धोबिनें भड़क उठती हैं। वे चीखती हैं, पागल हो जाती हैं, और अगर तुम्हें पता होता कि वे कितनी हास्यास्पद हैं! हम जाकर मानव-कंकाल देखेंगे। और फिर मैं तुम्हें नाटक दिखाने ले जाऊंगा। मैं तुम्हें फ्रेडरिक लेमैत्रे का नाटक दिखाने ले जाऊंगा। मेरे पास टिकट हैं, मैं कुछ अभिनेताओं को जानता हूं, मैंने भी एक बार एक नाटक में अभिनय किया था। हम बहुत सारे लोग थे, और हम एक कपड़े के नीचे दौड़े थे, और उससे समुद्र बन गया था। मैं तुम्हें अपने थिएटर में एक शो बुक करवा दूंगा। हम जंगली लोगों को देखने जाएंगे। वे असली

नहीं हैं।” वो लोग तो बिल्कुल भी जंगली नहीं हैं। वो गुलाबी रंग की टाइट्स पहनते हैं जिन पर सिलवटें पड़ जाती हैं, और उनकी कोहनियों पर सफेद रंग से टाँके लगे हुए साफ दिखते हैं। फिर हम ओपेरा जाएँगे। हम किराए पर रखे गए ताली बजाने वालों के साथ घुस जाएँगे। ओपेरा के लोग बड़े ही सलीके से काम करते हैं। मैं तो सड़क पर बैठे लोगों के साथ रहना पसंद नहीं करूँगा। ओपेरा में तो बस कमाल है! उनमें से कुछ बीस सू देते हैं, पर वो बेवकूफ हैं। उन्हें तो निकम्मे कहते हैं। और फिर हम गिलोटिन का काम देखने जाएँगे। मैं तुम्हें जल्लाद से मिलवाऊँगा। वो रू डेस माराइस में रहता है। मिस्टर सैंसन। उसके दरवाजे पर एक लेटरबॉक्स है। आह! खूब मज़ा आएगा!

उसी क्षण गैवरोश की उंगली पर मोम की एक बूंद गिरी, और उसे जीवन की वास्तविकताओं की याद दिला दी।

“अरे बाप रे!” उसने कहा, “दीवार की बत्ती बुझ रही है। ध्यान दो! मैं रोशनी पर महीने में एक सू से ज़्यादा खर्च नहीं कर सकता। जब कोई सोने जाता है, तो उसे सोना ही होता है। हमारे पास एम. पॉल डी कॉक के उपन्यास पढ़ने का समय नहीं है। और वैसे भी, रोशनी दरवाजे की दरारों से बाहर जा सकती है, और पुलिस वालों को बस उसे देखना ही काफी है।”

“और फिर,” बुजुर्ग ने दबी आवाज में कहा—केवल वही गैवरोश से बात करने और उसे जवाब देने का साहस कर रहा था—“एक चिंगारी भूसे में गिर सकती है, और हमें सावधान रहना होगा ताकि घर में आग न लग जाए।”

“लोग ‘घर जला दो’ नहीं कहते,” गैवरोश ने टिप्पणी की, “वे कहते हैं ‘पालना जला दो’।”

तूफ़ान और भी तेज़ हो गया, और गरज के साथ मूसलाधार बारिश उस विशालकाय मूर्ति की पीठ पर बरसने लगी। "बारिश, तुम बेवकूफ़ हो!" गैवरोश ने कहा। "मुझे तो पानी के बर्तन से घर की चौखटों पर पानी टपकते देखना मज़ेदार लगता है। सर्दी बड़ी बेवकूफ़ है; यह अपना माल बर्बाद करती है, अपना श्रम खो देती है, हमें भिगो नहीं सकती, और इसी वजह से यह हंगामा मचाती है, मानो यह पुरानी पानी ढोने वाली हो।"

गरज के इस संकेत के बाद, जिसके सभी परिणामों को गैवरोश ने उन्नीसवीं सदी के दार्शनिक के रूप में स्वीकार किया, बिजली की एक तेज़ चमक दिखाई दी, जो इतनी

चकाचौंध भरी थी कि उसकी एक झलक दरार से हाथी के पेट में घुस गई। लगभग उसी क्षण, ज़ोरदार गड़गड़ाहट हुई। दोनों छोटे जीव चीख उठे और इतनी तेज़ी से उछल पड़े कि जाल लगभग हिलने ही वाला था, लेकिन गैवरोश ने अपना साहसी चेहरा उनकी ओर घुमाया और गरज की गड़गड़ाहट का फायदा उठाकर ज़ोर से हंस पड़ा।

“शांत हो जाओ बच्चों। इमारत को मत गिराओ। यह बहुत बढ़िया है, शानदार गड़गड़ाहट; ठीक है। यह बिजली की एक तेज़ लकीर है। भगवान की जय हो! बहुत बढ़िया! यह लगभग अंबिगु जितना ही अच्छा है।”

फिर उसने जाली को व्यवस्थित किया, दोनों बच्चों को धीरे से बिस्तर पर लिटाया, उनके घुटनों को दबाकर उन्हें पूरी लंबाई तक फैलाया और कहा:—

“चूंकि ईश्वर अपनी मोमबत्ती जला रहे हैं, तो मैं भी अपनी बुझा दूं। अब, मेरे प्यारे बच्चों, अपनी आँखें बंद कर लो। सोना बहुत बुरा है। इससे तुम छलनी निगल जाओगे, या जैसा कि आजकल के समाज में कहते हैं, गले से बदबू आने लगेगी। अपने आप को चमड़े में अच्छे से लपेट लो! मैं रोशनी बुझाने जा रहा हूँ। क्या तुम तैयार हो?”

“हां,” बुजुर्ग ने धीमी आवाज़ में कहा, “मैं ठीक हूँ। ऐसा लगता है जैसे मेरे सिर के नीचे पंख लगे हुए हैं।”

“लोग ‘सिर’ नहीं कहते,” गैवरोश चिल्लाया, “वे ‘अखरोट’ कहते हैं।”

दोनों बच्चे एक-दूसरे से सटकर बैठ गए, गैवरोश ने उन्हें चटाई पर ठीक से लिटाया, कंबल को उनके कानों तक खींचा, और फिर तीसरी बार, अपनी आज्ञा को धार्मिक भाषा में दोहराया:—

अपनी आँखें बंद करो!

और उसने अपनी छोटी सी रोशनी बुझा दी।

रोशनी बुझने के तुरंत बाद ही, जिस जाली के नीचे तीनों बच्चे लेटे थे, उसमें एक अजीब सी कंपन होने लगी।

इसमें असंख्य मंद खरोंचें थीं जिनसे धातु जैसी ध्वनि उत्पन्न हो रही थी, मानो पंजे और दांत तांबे के तार को कुतर रहे हों। इसके साथ ही तरह-तरह की तीखी चीखें भी सुनाई दे रही थीं।

ऊपर से आ रहे इस शोर को सुनकर पाँच साल का छोटा लड़का डर से काँप उठा और उसने अपने भाई की कोहनी पकड़ी; लेकिन बड़े भाई ने गैवरोश के आदेशानुसार अपनी आँखें बंद कर ली थीं। तब छोटा लड़का, जो अपने डर पर काबू नहीं रख सका, उसने गैवरोश से बहुत धीमी आवाज़ में और दबी हुई साँसों के साथ पूछा:— "महोदय?"
"हे?" गैवरोश ने कहा, जिसने अभी-अभी अपनी आँखें बंद की थीं।
"वह क्या है?"
"ये चूहे हैं," गैवरोश ने जवाब दिया।
और उसने अपना सिर फिर से चटाई पर रख दिया।
दरअसल, हाथी के शव में हजारों की संख्या में जमा हुए चूहे, जो कि जीवित काले धब्बे थे जिनका हमने पहले ही जिक्र किया है, मोमबत्ती की लौ से तब तक भयभीत थे जब तक वह जल रही थी; लेकिन जैसे ही गुफा, जो उनके शहर के समान थी, में अंधेरा छा गया, पेरोल्ट द्वारा वर्णित "ताजा मांस" की गंध पाकर, वे झुंड में गैवरोश के तम्बू पर टूट पड़े, उसके ऊपर चढ़ गए और जालों को कुतरने लगे मानो इस नए जाल को भेदने की कोशिश कर रहे हों।
फिर भी छोटा बच्चा सो नहीं सका।
“सर?” उसने दोबारा पूछना शुरू किया।
“हे?” गैवरोश ने कहा।
चूहे क्या होते हैं?
“वे चूहे हैं।”
इस स्पष्टीकरण से बच्चे को थोड़ी तसल्ली मिली। उसने अपने जीवन में कई सफेद चूहे देखे थे और वह उनसे डरता नहीं था। फिर भी, उसने एक बार फिर अपनी आवाज बुलंद की।
"महोदय?"
“हे?” गैवरोश ने फिर कहा।
आपके पास बिल्ली क्यों नहीं है?

“मेरे पास एक थी,” गैवरोश ने उत्तर दिया, “मैं एक यहाँ लाया था, लेकिन उन्होंने उसे खा लिया।”
इस दूसरी व्याख्या ने पहली व्याख्या के प्रभाव को उलट दिया, और वह छोटा बच्चा फिर से कांपने लगा।
उनके और गैवरोश के बीच संवाद चौथी बार फिर शुरू हुआ:
"महोदय?"
"अरे?"
“किसे खाया गया था?”
बिल्ली।
और बिल्ली को किसने खाया?
"चूहे।"
"चूहे?"
"हां, चूहे।"
बिल्ली खाने वाले चूहों के विचार से घबराकर बच्चा उसके पीछे भागा: “महोदय, क्या वे चूहे हमें खा जाएंगे?”
“क्या वे ऐसा नहीं करेंगे!” गैवरोश ने उत्साहपूर्वक कहा।
बच्चे का आतंक चरम पर पहुँच चुका था। लेकिन गैवरोश ने आगे कहा:—
“डरो मत। वे अंदर नहीं आ सकते। और वैसे भी, मैं यहाँ हूँ! लो, मेरा हाथ पकड़ो। चुप रहो और अपनी आँखें बंद करो!”
उसी समय गैवरोश ने अपने भाई के ऊपर से उस छोटे बच्चे का हाथ पकड़ लिया। बच्चे ने हाथ को अपने करीब दबाया और राहत महसूस की। साहस और शक्ति के अपने ही रहस्यमय तरीके होते हैं। चारों ओर एक बार फिर सन्नाटा छा गया, उनकी आवाज़ से चूहे डरकर भाग गए थे; कुछ मिनट बीतने के बाद वे फिर से गुस्से में वापस आए, लेकिन व्यर्थ, तीनों छोटे बच्चे गहरी नींद में सो रहे थे और उन्हें कुछ सुनाई नहीं दिया।

रात के घंटे बीतते चले गए। विशाल प्लेस डे ला बैस्टिल पर अंधेरा छा गया। बारिश के साथ मिली हुई बर्फीली हवा के झोंके चल रहे थे। गश्ती दल ने सभी दरवाजों, गलियों, बाड़ों और सुनसान कोनों की तलाशी ली, और रात के आवारा लोगों की खोज में वे चुपचाप हाथी के सामने से गुजरे; वह विशालकाय हाथी सीधा खड़ा, गतिहीन, खुली आँखों से अंधेरे में घूर रहा था, मानो अपने अच्छे काम पर खुशी से सपने देख रहा हो; और उसने सोते हुए तीन बेचारे बच्चों को आसमान और इंसानों से पनाह दी।

आगे जो कुछ होने वाला है उसे समझने के लिए पाठक को यह याद रखना चाहिए कि उस समय बैस्टिल का पहरेदार घर चौक के दूसरे छोर पर स्थित था, और हाथी के आसपास जो कुछ भी घटित हुआ उसे पहरेदार न तो देख सकता था और न ही सुन सकता था।

भोर होने से ठीक पहले के उस घंटे के अंत में, एक आदमी सेंट-एंटोइन स्ट्रीट से दौड़ता हुआ मुड़ा, जुलाई के स्तंभ के घेरे का चक्कर लगाया और बाड़ के बीच से फिसलते हुए हाथी के पेट के नीचे पहुँच गया। यदि उस आदमी पर कोई रोशनी पड़ती, तो उसके पूरी तरह भीगे होने से यह अनुमान लगाया जा सकता था कि उसने रात बारिश में बिताई थी। हाथी के नीचे पहुँचकर उसने एक अजीब सी चीख निकाली, जो किसी इंसान की ज़बान पर नहीं लगती थी और जिसकी नकल केवल एक तोता ही कर सकता था। उसने दो बार यह चीख दोहराई, जिसकी वर्तनी का अंदाजा नीचे दिए गए विवरण से मुश्किल से ही लगाया जा सकता है:

"क्रिकेट!"

दूसरी बार जब हाथी ने पुकारा, तो उसके पेट से एक स्पष्ट, युवा और हंसमुख आवाज सुनाई दी:

"हाँ!"

लगभग तुरंत ही, छेद को बंद करने वाला तख्ता हट गया, जिससे एक बच्चा हाथी के पैर से नीचे उतरा और तेज़ी से उस आदमी के पास जा गिरा। वह गैवरोश था। वह आदमी मोंटपार्नास था।

जहां तक उसके “किरिकिकिओउ” के पुकारने की बात है—निस्संदेह, बच्चे का यही मतलब था जब उसने कहा:—

"आप महाशय गैवरोश से मिलने के लिए कहेंगे।"

यह सुनकर वह चौंककर जाग गया, अपने "छिपे हुए कमरे" से बाहर रेंगकर निकला, जाल को थोड़ा सा अलग किया और फिर सावधानीपूर्वक उसे वापस समेट लिया, फिर उसने जाल खोला और नीचे उतर गया।

अंधकार के बीच उस आदमी और बच्चे ने चुपचाप एक-दूसरे को पहचान लिया: मोंटपार्नास ने बस इतना ही कहा:—

हमें आपकी ज़रूरत है। आइए, हमारी मदद कीजिए।

उस लड़के ने और अधिक जानकारी नहीं मांगी।

“मैं तुम्हारे साथ हूँ,” उसने कहा।

और दोनों सेंट-एंटोइन स्ट्रीट की ओर चल पड़े, जहाँ से मोंटपार्नास स्ट्रीट निकलती थी, और उस समय बाजारों की ओर उतरने वाली बागवानों की गाड़ियों की लंबी कतार के बीच से तेजी से गुजरने लगे।

बारिश से बचने के लिए मफलर से पूरी तरह ढके हुए, सलाद और सब्जियों के बीच अपनी गाड़ियों में आधे सोए हुए बाजार के बागवानों ने इन अजनबी राहगीरों की ओर एक नजर तक नहीं डाली।

III. उड़ान के उतार-चढ़ाव

उसी रात ला फोर्स में जो कुछ हुआ था, वह इस प्रकार है:

बैबेट, ब्रुजोन, गुएलेमर और थेनार्डियर ने भागने की योजना बनाई थी, हालांकि थेनार्डियर को कड़ी निगरानी में रखा गया था। बैबेट ने अपने फायदे के लिए उसी दिन यह सब किया था, जैसा कि पाठक ने मोंटपार्नास के गैवरोश को दिए गए विवरण से देखा है। मोंटपार्नास को बाहर से उनकी मदद करनी थी।

एक महीने तक सजा की कोठरी में रहने के बाद, ब्रुजोन को सबसे पहले रस्सी बुनने का और फिर एक योजना को अंतिम रूप देने का समय मिला था। पुराने समय में, वे कठोर स्थान जहाँ जेल का अनुशासन कैदी को उसके अपने हाथों में सौंप देता था, चार पत्थर की दीवारों, एक पत्थर की छत, एक पत्थर के फर्श, एक बिस्तर, एक जालीदार खिड़की और लोहे से जड़े दरवाजे से बने होते थे और उन्हें "कालकोठरी" कहा जाता था; लेकिन कालकोठरी शब्द को बहुत भयानक माना गया; आजकल वे एक लोहे के दरवाजे, एक जालीदार खिड़की, एक बिस्तर, एक पत्थर के फर्श, चार पत्थर की दीवारों और एक पत्थर की छत से बने होते हैं और उन्हें "सजा कक्ष" कहा जाता है। दोपहर के समय थोड़ी रोशनी अंदर आती है। इन कक्षों की असुविधाजनक बात, जो कि पाठक देख सकते हैं, कालकोठरी नहीं हैं, यह है कि वे उन लोगों को सोचने का मौका देते हैं जिन्हें काम पर होना चाहिए।

ब्रुजोन ने चिंतन किया और दंड कक्ष से रस्सी लेकर बाहर निकला। शार्लेमेन के दरबार में उसे बेहद खतरनाक माना जाता था, इसलिए उसे नई इमारत में रखा गया। नई इमारत में उसे सबसे पहले गुएलेमर मिला, और दूसरी चीज़ एक कील; गुएलेमर यानी अपराध; कील यानी आज़ादी। ब्रुजोन, जिसके बारे में पाठक को पूरी जानकारी होनी चाहिए, दिखने में नाज़ुक और जानबूझकर सुस्त दिखने वाला एक तराशा हुआ, बुद्धिमान चोर था, जिसकी नज़रें कोमल और मुस्कान भयानक थीं। उसकी नज़रें उसकी इच्छा से और मुस्कान उसके स्वभाव से उपजी थीं। कला में उसका पहला अध्ययन छतों पर केंद्रित था। उसने सीसा निकालने वाले, छतों को लूटने वाले और नालियों को गंदा करने वाले लोगों की कारीगरी में बहुत तरक्की की थी, जिसे "दोहरी लूट" कहा जाता है।

भागने के प्रयास के लिए अनुकूल परिस्थिति को अंतिम रूप देने वाली घटना यह थी कि उस समय जेल की छत पर काम करने वाले लोग स्लेटों को फिर से बिछा रहे थे और जोड़ रहे थे। सेंट-बर्नार्ड का आंगन अब शार्लेमेन और सेंट-लुई के आंगनों से पूरी तरह अलग-थलग नहीं था। ऊपर मचान और सीढ़ियाँ थीं; दूसरे शब्दों में, स्वतंत्रता की ओर जाने वाले पुल और सीढ़ियाँ थीं।

नई इमारत, जो दुनिया भर में देखी जाने वाली सबसे जर्जर और खस्ताहाल इमारत थी, जेल की सबसे कमज़ोर कड़ी थी। दीवारों पर इतना ज़्यादा नमक जम गया था कि अधिकारियों को शयनकक्षों की तहखानों में लकड़ी की परत चढ़ानी पड़ी थी, क्योंकि पत्थर अक्सर टूटकर कैदियों के बिस्तरों पर गिर जाते थे। इतनी पुरानी इमारत होने के बावजूद, अधिकारियों ने सबसे ज़्यादा परेशानी पैदा करने वाले कैदियों को नई इमारत में बंद करके गलती की, जिन्हें जेल की भाषा में "कठिन मामले" कहा जाता है।

नई इमारत में एक के ऊपर एक चार छात्रावास थे, और सबसे ऊपरी मंजिल को बेल-एयर (सुखद हवा) कहा जाता था। एक बड़ी चिमनी, जो संभवतः ड्यूक्स डे ला फोर्स के किसी प्राचीन रसोईघर से आई थी, भूतल से शुरू होकर चारों मंजिलों को पार करती हुई छात्रावासों को दो भागों में काटती थी, जहाँ यह एक चपटे स्तंभ के रूप में दिखाई देती थी, और अंत में छत को भेदती थी।

गुएलेमर और ब्रुजोन एक ही छात्रावास में थे। एहतियात के तौर पर उन्हें निचली मंजिल पर रखा गया था। संयोगवश, उनके बिस्तरों के सिरहाने चिमनी से सटे हुए थे।

थेनार्डियर ठीक उनके सिर के ऊपर, फाइन-एयर के नाम से जानी जाने वाली सबसे ऊपरी मंजिल पर स्थित था। फायरमैन बैरक से गुजरने के बाद, स्नानघर के बरामदे के सामने, रू कल्चर-सैंटे-कैथरीन पर रुकने वाला पैदल यात्री, लकड़ी के बक्सों में लगे फूलों और झाड़ियों से भरे एक आंगन को देखता है, जिसके अंत में दो पंखों वाला एक छोटा सा सफेद गोल गुंबद फैला हुआ है, जो हरे रंग के शटरों से जगमगा रहा है - जीन जैक्स का देहाती सपना।

दस साल से भी कम समय पहले, उस गोल गुंबद के ऊपर एक विशाल काली, भद्दी, नंगी दीवार खड़ी थी, जिसके सहारे वह इमारत खड़ी थी।

यह ला फोर्स की बाहरी दीवार थी।

उस गोल गुंबद के बगल वाली यह दीवार, मिल्टन द्वारा बर्कविन के माध्यम से देखी गई थी।

यह दीवार जितनी ऊँची थी, उसके ऊपर एक और भी काली छत दिखाई दे रही थी। यह नई इमारत की छत थी। वहाँ से सलाखों से घिरी चार छोटी खिड़कियाँ दिखाई दे रही थीं; ये खुली हवा के लिए बनी खिड़कियाँ थीं।

एक चिमनी छत को भेदती हुई निकली; यही वह चिमनी थी जो छात्रावासों के बीच से होकर गुजरती थी।

नई इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल, बेल-एयर, एक विशाल हॉल जैसी थी, जिसकी छत मैन्सर्ड शैली की थी और तिहरी जालीदार दीवारों और लोहे की चादर से बने दोहरे दरवाजों से सुरक्षित थी, जिन पर बड़े-बड़े बोल्ट जड़े हुए थे। उत्तर दिशा से प्रवेश करने पर बाईं ओर चार खिड़कियाँ थीं, और दाईं ओर, खिड़कियों के सामने, नियमित अंतराल पर, चार चौकोर, काफी बड़े पिंजरे थे, जो संकरे रास्तों से अलग किए गए थे। ये पिंजरे कोहनी की ऊंचाई तक चिनाई से बने थे, और बाकी, छत तक, लोहे की सलाखों से बने थे।

3 फरवरी की रात से थेनार्डियर को इन्हीं पिंजरों में से एक में एकांत कारावास में रखा गया था। कोई भी यह पता नहीं लगा सका कि कैसे और किस मिलीभगत से वह शराब की एक बोतल हासिल करने और उसे छिपाने में कामयाब हुआ, जिसका आविष्कार, कहा जाता है, डेसरूज़ ने किया था, जिसमें मादक पदार्थ मिलाया गया था, और जिसे एंडोर्मर्स या "नींद लाने वालों" के गिरोह ने प्रसिद्ध किया था।

कई जेलों में ऐसे कपटी कर्मचारी होते हैं, जो आधे जेलर और आधे चोर होते हैं, जो भागने में मदद करते हैं, जो पुलिस को बेईमानी से सेवा बेचते हैं, और जब भी मौका मिलता है एक-एक पैसा कमा लेते हैं।

उसी रात, जब लिटिल गैवरोश ने खोए हुए दो बच्चों, ब्रुजोन और गुएलेमर को उठाया, जो जानते थे कि बाबेट, जो उस सुबह भाग निकली थी, गली और मोंटपार्नास में उनका इंतज़ार कर रही थी, तो वह धीरे से उठा और ब्रुजोन को मिली कील से उस चिमनी को छेदने लगा जिसके सहारे उनके बिस्तर लगे थे। मलबा ब्रुजोन के बिस्तर पर गिरा, इसलिए किसी को सुनाई नहीं दिया। गरज के साथ बारिश की आवाज़ से दरवाजे अपने कब्ज़ों पर हिल गए और जेल में एक भयानक और मौके का फायदा

उठाकर कोलाहल मच गया। जो कैदी जाग गए, उन्होंने फिर से सोने का नाटक किया और गुएलेमर और ब्रुजोन को उनके हाल पर छोड़ दिया। ब्रुजोन चतुर था; गुएलेमर फुर्तीला था। इससे पहले कि कोई आवाज़ उस पहरेदार तक पहुँचती, जो शयनकक्ष में खुलने वाली जालीदार कोठरी में सो रहा था, दीवार में छेद कर दिया गया था, चिमनी पर चढ़ गए थे, चिमनी के ऊपरी छेद को बंद करने वाली लोहे की जाली को तोड़ दिया गया था, और दोनों कुख्यात बदमाश छत पर थे। हवा और बारिश तेज हो गई, छत फिसलन भरी हो गई थी।

ब्रुजोन ने कहा, "भागने के लिए कितनी बढ़िया रात है!"

छह फुट चौड़ी और अस्सी फुट गहरी खाई उन्हें चारों ओर की दीवार से अलग करती थी। इस खाई की तलहटी में, उन्हें एक संतरी की बंदूक अँधेरे में चमकती हुई दिखाई दी। उन्होंने ब्रुजोन द्वारा अपने तहखाने में बुनी गई रस्सी का एक सिरा लोहे की सलाखों के ठूंठों से बाँध दिया, जिन्हें उन्होंने अभी-अभी उखाड़ा था, दूसरा सिरा बाहरी दीवार के ऊपर फेंक दिया, एक ही छलांग में खाई पार कर ली, दीवार के किनारे को पकड़ लिया, उस पर चढ़ गए, एक-एक करके रस्सी के सहारे स्नानघर से सटी एक छोटी सी छत पर फिसल गए, अपनी रस्सी को अपने साथ खींचते हुए स्नानघर के आँगन में कूद गए, उसे पार किया, चौकीदार का छोटा सा दरवाज़ा खोला, जिसके पास उसकी रस्सी लटकी थी, उसे खींचा, दरवाज़ा खोला और खुद को सड़क पर पाया।

अंधेरे में बिस्तर से उठने के बाद से पौने घंटे भी नहीं बीते थे, उनके हाथ में कील थी और उनके दिमाग में उनका प्रोजेक्ट था।

कुछ ही क्षणों बाद वे बैबेट और मोंटपार्नास के साथ मिल गए, जो आस-पड़ोस में गश्त लगा रहे थे।

रस्सी को खींचते समय वे उसे तोड़ बैठे थे, और उसका एक छोटा सा हिस्सा छत पर लगी चिमनी से लटका रह गया था। हालांकि, उन्हें हाथों की लगभग पूरी त्वचा छिल जाने के अलावा कोई और चोट नहीं आई थी।

उस रात, थेनार्डियर को चेतावनी मिली, हालांकि कोई यह नहीं बता सका कि कैसे, और वह सो नहीं रहा था।

रात करीब एक बजे, जब रात बहुत गहरी थी, उसने बारिश और आंधी में, अपने पिंजरे के सामने वाली खिड़की के ठीक सामने से छत पर दो परछाइयाँ गुजरती देखीं। एक खिड़की पर रुकी, बस एक नज़र डालने के लिए। यह ब्रुजोन था।

थेनार्डियर ने उसे पहचान लिया और समझ गया। इतना ही काफी था।

चोर करार दिए गए थेनार्डियर को एहतियात के तौर पर रात्रिकालीन घात लगाकर हमला करने की साजिश रचने के आरोप में हिरासत में लिया गया था और उस पर कड़ी नजर रखी जाती थी। हर दो घंटे में बदले जाने वाला संतरी भरी हुई बंदूक लेकर उसकी कोठरी के सामने चक्कर लगाता रहता था। रोशनदान में रोशनदान से रोशनी आती थी। कैदी के पैरों में पचास पाउंड वजन की बेड़ियाँ थीं। प्रतिदिन दोपहर चार बजे, एक जेलर दो कुत्तों के साथ (उस समय यह प्रथा प्रचलित थी) उसकी कोठरी में प्रवेश करता, उसके बिस्तर के पास दो पाउंड वजन की काली रोटी, पानी का एक जग, पतले शोरबे से भरा एक कटोरा रखता, जिसमें कुछ मायागन सेम तैरती रहती थीं, उसकी बेड़ियों का निरीक्षण करता और सलाखों पर थपथपाता। यह आदमी और उसके कुत्ते रात में दो बार आते थे।

थेनार्डियर को एक लोहे का बोल्ट रखने की अनुमति मिल गई थी, जिसका इस्तेमाल वह अपनी रोटी को दीवार की दरार में ठूंसने के लिए करता था, जैसा कि उसने कहा था, "ताकि उसे चूहों से बचाया जा सके।" चूंकि थेनार्डियर पर नजर रखी जाती थी, इसलिए इस कील पर कोई आपत्ति नहीं जताई गई थी। फिर भी, बाद में याद आया कि जेलर में से एक ने कहा था: "उसे लकड़ी की कील ही रखने देना बेहतर होगा।"

सुबह दो बजे, संतरी, जो एक बूढ़ा सैनिक था, को ड्यूटी से हटा दिया गया और उसकी जगह एक नए रंगरूट को तैनात कर दिया गया। कुछ ही क्षण बाद, कुत्तों वाला आदमी वहाँ आया और बिना कुछ देखे चला गया, सिवाय शायद उस नए रंगरूट की कम उम्र और उसके देहाती अंदाज़ के। दो घंटे बाद, चार बजे, जब वे उस रंगरूट को बदलने आए, तो वह थेनार्डियर के पिंजरे के पास ज़मीन पर एक लकड़ी के लट्ठे की तरह सोता हुआ मिला। थेनार्डियर वहाँ नहीं था। उसके पिंजरे की छत में एक छेद था, और उसके ऊपर छत में एक और छेद था। उसके बिस्तर का एक तख्ता उखड़ गया था, और शायद वह उसे अपने साथ ले गया था, क्योंकि वह नहीं मिला। उन्होंने उसकी कोठरी से एक आधी खाली बोतल भी ज़ब्त की जिसमें उस मादक शराब का अवशेष था जिससे सैनिक को नशा कराया गया था। सैनिक की संगीन गायब थी।

जिस समय यह खोज हुई, उस समय यह माना जा रहा था कि थेनार्डियर अब पहुंच से बाहर है। सच्चाई यह है कि वह अब नई इमारत में नहीं था, लेकिन फिर भी वह गंभीर खतरे में था।

नए भवन की छत पर पहुँचने पर थेनार्डियर को चिमनी के ऊपरी हिस्से की सलाखों से लटकती हुई ब्रुजोन की रस्सी के अवशेष मिले, लेकिन चूंकि यह टूटा हुआ टुकड़ा बहुत छोटा था, इसलिए वह ब्रुजोन और गुएलेमर की तरह बाहरी दीवार से भाग नहीं सका।

जब कोई रू डेस बैलेट्स से रू डू रोई-डे-सिसिली की ओर मुड़ता है, तो लगभग तुरंत ही एक भयावह खंडहर दिखाई देता है। पिछली शताब्दी में उस स्थान पर एक मकान खड़ा था, जिसकी अब केवल पिछली दीवार ही बची है। यह ईंटों से बनी एक मजबूत दीवार है, जो आस-पास की इमारतों के बीच तीसरी मंजिल तक ऊंची है। इस खंडहर को दो बड़ी चौकोर खिड़कियों से पहचाना जा सकता है, जो अभी भी वहां दिखाई देती हैं; बीच वाली खिड़की, जो दाहिने गैबल के सबसे करीब है, एक दीमक लगी हुई बीम से बंद है, जिसे सहारे के रूप में लगाया गया है। इन खिड़कियों से पहले एक ऊंची और उदास दीवार दिखाई देती थी, जो ला फोर्स की बाहरी दीवार का एक हिस्सा थी।

ध्वस्त मकान के कारण सड़क पर जो खाली जगह बची है, उसे सड़ी हुई लकड़ियों की बाड़ से आधा भर दिया गया है, जिसे पाँच पत्थर के खंभों से सहारा दिया गया है। इस खाली जगह में एक छोटी सी झोपड़ी छिपी हुई है, जो इमारत के बचे हुए हिस्से से सटी हुई है। बाड़ में एक फाटक है, जो कुछ साल पहले तक केवल एक कुंडी से बंद होता था।

थेनार्डियर सुबह एक बजे के कुछ देर बाद इसी खंडहर की चोटी पर पहुंचने में सफल रहा था।

वह वहाँ कैसे पहुँचा होगा? यही वह बात है जिसे आज तक कोई भी समझा या समझ नहीं पाया है। बिजली ने एक ही समय में उसकी बाधा भी डाली होगी और उसकी मदद भी की होगी। क्या उसने छत से छत, बाड़े से बाड़े, कमरे से कमरे, शार्लेमेन दरबार की इमारतों, फिर सेंट-लुई दरबार की इमारतों, बाहरी दीवार और वहाँ से रू डू रोई-डे-सिसिली पर स्थित झोपड़ी तक पहुँचने के लिए स्लेटरों की सीढ़ियों और मचानों का इस्तेमाल किया होगा? लेकिन उस यात्रा में ऐसे

अवरोध थे जो इसे असंभव बनाते प्रतीत होते थे। क्या उसने अपने बिस्तर के तख्ते को फाइन-एयर की छत से बाहरी दीवार तक पुल की तरह रखा होगा और फिर जेल के चारों ओर झोपड़ी तक पहुँचने के लिए बाहरी दीवार के किनारे पर पेट के बल रेंगकर गया होगा? लेकिन ला फोर्स की बाहरी दीवार कंगूरेदार और असमान रेखा जैसी थी; यह ऊपर-नीचे होता रहा, दमकलकर्मियों की बैरक पर गिरा, स्नानागार की ओर बढ़ा, इमारतों ने इसे दो हिस्सों में बाँट दिया, होटल लैमोइग्नन पर इसकी ऊँचाई रुए पावी जितनी नहीं थी; हर जगह ढलान और समकोण थे; और फिर, पहरेदारों ने भगोड़े की धुंधली आकृति को अवश्य ही देख लिया होगा; इसलिए, थेनार्डियर द्वारा लिया गया मार्ग आज भी कुछ हद तक रहस्यमय बना हुआ है। दो मायनों में, भागना असंभव था। क्या स्वतंत्रता की उस प्यास से प्रेरित होकर, जो खाइयों को खाई में, लोहे की सलाखों को सरकंडे की टहनियों में, एक लंगड़े आदमी को एथलीट में, गठिया के रोगी को पक्षी में, मूर्खता को सहज ज्ञान में, सहज ज्ञान को बुद्धि में और बुद्धि को प्रतिभा में बदल देती है, थेनार्डियर ने कोई तीसरा तरीका ईजाद किया था? आज तक किसी को इसका पता नहीं चला है।

बच निकलने के चमत्कारों को हमेशा समझाया नहीं जा सकता। हम फिर कहते हैं कि जो व्यक्ति बच निकलता है, वह प्रेरित होता है; उड़ान की रहस्यमय चमक में तारे और बिजली का कुछ अंश होता है; मुक्ति की ओर किया गया प्रयास उदात्तता की ओर उड़ान भरने जितना ही आश्चर्यजनक होता है, और कोई उस भागे हुए चोर के बारे में पूछता है: "उसने उस दीवार को कैसे फांद लिया?" ठीक उसी तरह जैसे कोई कॉर्नेल के बारे में पूछता है: "उसे मरने का साधन कहाँ से मिला?"

किसी भी हालत में, पसीने से तरबतर, बारिश में भीगा हुआ, फटे-पुराने कपड़ों में, छिले हाथों में, खून बहती कोहनियों में, घुटनों में चोट के साथ, थेनार्डियर उस मुकाम पर पहुँच गया था जिसे बच्चे अपनी मुहावरेदार भाषा में खंडहर की दीवार का किनारा कहते हैं। वहाँ उसने अपने आप को पूरी तरह फैला लिया था, और वहीं उसकी ताकत जवाब दे गई थी। तीन मंजिला ऊँची एक खड़ी ढलान उसे सड़क के फुटपाथ से अलग कर रही थी।

उसके पास जो रस्सी थी वह बहुत छोटी थी।

वहाँ वह पीला पड़ा, थका हुआ, हताश, अपने द्वारा झेली गई सारी निराशा से व्याकुल, रात के अंधेरे में छिपा हुआ, लेकिन खुद को यह समझाता हुआ कि दिन

निकलने ही वाला है, इस विचार से भयभीत कि कुछ ही मिनटों में सेंट-पॉल की पड़ोसी घड़ी में चार बजने की आवाज सुनाई देगी, वह समय जब संतरी को छुट्टी मिल जाएगी और जब वह टूटी हुई छत के नीचे सोता हुआ पाया जाएगा, एक भयानक गहराई में भयभीत होकर घूरता हुआ, गली के लालटेन की रोशनी में, गीले, काले फुटपाथ पर, उस फुटपाथ पर जिसकी लालसा तो थी फिर भी वह डरावना था, जिसका अर्थ मृत्यु था, और जिसका अर्थ स्वतंत्रता भी था।

उसने खुद से पूछा कि क्या भागने में उसके तीनों साथी कामयाब हुए, क्या उन्होंने उसकी बात सुनी, और क्या वे उसकी मदद के लिए आएंगे। उसने ध्यान से सुना। गश्ती दल को छोड़कर, उसके वहाँ आने के बाद से कोई भी उस गली से नहीं गुजरा था। मोंट्रेइल, चारोन, विन्सेनेस और बर्सी से बाज़ार जाने वाले बागवानों का लगभग पूरा रास्ता सेंट-एंटोइन गली से होकर ही तय होता था।

चार बज चुके थे। थेनार्डियर कांप उठा। कुछ ही क्षणों बाद, जेल में वही खौफनाक और अफरा-तफरी मच गई जो किसी कैदी के भागने का पता चलने पर मच जाती है। दरवाजों के खुलने और बंद होने की आवाज, कब्ज़ों पर जालीदार खिड़कियों की चरमराहट, पहरेदारों का शोर, जेल के पहरेदारों की कर्कश चीखें, और आंगनों के फर्श पर बंदूकों के बटों की आवाज उसके कानों तक पहुंची। शयनकक्षों की जालीदार खिड़कियों से रोशनी ऊपर-नीचे आ-जा रही थी, नई इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल की छत पर एक मशाल की रोशनी पड़ रही थी, दाहिनी ओर स्थित बैरकों में तैनात दमकलकर्मियों को बुलाया जा चुका था। बारिश में मशाल की रोशनी से जगमगाते उनके हेलमेट छतों पर इधर-उधर उड़ रहे थे। उसी समय, थेनार्डियर ने बैस्टिल की दिशा में आकाश के किनारे को उदास ढंग से रोशन करती हुई एक धुंधली सफेद रोशनी देखी।

वह दस इंच चौड़ी दीवार के ऊपर, भारी बारिश में लेटा हुआ था, जिसके दाएं और बाएं दो गहरी खाई थीं। वह हिल भी नहीं पा रहा था, गिरने के डर से उसे चक्कर आ रहा था और पकड़े जाने का भी डर सता रहा था। उसके विचार घड़ी के पेंडुलम की तरह एक विचार से दूसरे विचार पर झूल रहे थे: "गिरने पर तो मर जाऊंगा, रुकने पर पकड़ा जाऊंगा।" इसी व्याकुलता के बीच, उसने अचानक देखा कि गली में अभी भी अंधेरा था, एक आदमी दीवार के सहारे सरकते हुए रू पावी से आ रहा था और उस जगह पर रुक गया जिसके ऊपर थेनार्डियर मानो लटका हुआ था। यहाँ उसके साथ एक दूसरा आदमी भी आ गया, जो उतनी ही सावधानी से चल रहा था, फिर एक तीसरा,

फिर एक चौथा। जब ये सभी आदमी फिर से मिल गए, तो उनमें से एक ने बाड़ के गेट की कुंडी उठाई और चारों उस घेरे में घुस गए जहाँ झोपड़ी थी। वे सीधे थेनार्डियर के नीचे रुक गए। ये लोग जाहिर तौर पर इस खाली जगह को इसलिए चुन रहे थे ताकि राहगीरों या कुछ ही कदम दूर ला फोर्स के विकेट की रखवाली करने वाले संतरी की नजरों से बचकर आपस में बातचीत कर सकें। यह भी जरूरी है कि बारिश के कारण संतरी अपनी जगह पर ही फंसा हुआ था। थेनार्डियर उनके चेहरों को पहचान न पाने के कारण, एक खोए हुए अजनबी की तरह बेताब होकर उनकी बातें सुन रहा था।

थेनार्डियर की आंखों के सामने आशा की एक किरण कौंधी—ये लोग बोलचाल की भाषा में बातचीत कर रहे थे।

पहले व्यक्ति ने धीमी लेकिन स्पष्ट आवाज में कहा:—

“चलिए, बात खत्म करते हैं। हम यहाँ क्या करने वाले हैं?”

दूसरे ने जवाब दिया, “इतनी तेज़ बारिश हो रही है कि शैतान की आग भी बुझ जाएगी। और पुलिस वाले तुरंत आ जाएँगे। वहाँ एक सिपाही पहरा दे रहा है। हम यहीं पकड़े जाएँगे।”

ये दो शब्द, icigo और icicaille, जिनका अर्थ 'ici' है, और जो कि बैरियर की बोलचाल की भाषा से संबंधित हैं, जबकि दूसरा टेंपल की बोलचाल की भाषा से, थेनार्डियर के लिए प्रकाश की एक चमक की तरह थे। icigo से उसने ब्रुजोन को पहचाना, जो बैरियर का एक घुसपैठिया था, और icicaille से उसने बैबेट को पहचाना, जो अपने अन्य व्यवसायों के अलावा, टेंपल में पुराने कपड़ों का दलाल था।

उस महान शताब्दी की प्राचीन बोलचाल की भाषा अब मंदिर के अलावा कहीं और नहीं बोली जाती, और बाबेट ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो इसे पूरी शुद्धता के साथ बोलता था। अगर इचिकाइल (बोलचाल की भाषा) न होती, तो थेनार्डियर उसे पहचान ही नहीं पाता, क्योंकि उसने अपनी आवाज़ पूरी तरह बदल ली थी।

इसी बीच, तीसरे व्यक्ति ने हस्तक्षेप कर दिया।

“अभी कोई जल्दी नहीं है, थोड़ा इंतजार करते हैं। हमें कैसे पता चलेगा कि उसे हमारी जरूरत नहीं है?”

इस शब्द से, जो पूरी तरह से फ्रेंच भाषा में था, थेनार्डियर ने मोंटपार्नास को पहचान लिया, जिसने अपनी शालीनता में सभी बोलचाल की भाषाओं को समझने और उनमें से किसी को भी न बोलने को प्राथमिकता दी थी।

चौथे व्यक्ति के बारे में, वह चुप रहा, लेकिन उसके विशाल कंधों ने उसकी पोल खोल दी। थेनार्डियर ने जरा भी संकोच नहीं किया। वह गुएलेमर था।

ब्रुजोन ने लगभग उतावलेपन से, लेकिन फिर भी धीमी आवाज़ में जवाब दिया:

“क्या बकवास कर रहे हो? सराय मालिक को कुछ समझ नहीं आया। वो शोर-शराबे में नहीं फँसता! कमीज़ फाड़ना, चादर काटकर रस्सी बनाना, दरवाज़ों में छेद करना, जाली कागज़ बनाना, जाली चाबियाँ बनाना, लोहे की इस्त्री घिसना, रस्सी लटकाना, खुद को छिपाना और भेष बदलना, ये सब करने के लिए तो बड़ा ही चालाक होना पड़ता है! बूढ़ा आदमी कुछ नहीं कर पाया, उसे धंधा चलाना नहीं आता।”

बैबेट ने उसी शास्त्रीय बोलचाल की भाषा में आगे कहा, जो पौलैलर और कार्टूश द्वारा बोली जाती थी, और जो ब्रुजोन द्वारा प्रयुक्त साहसी, नई, अत्यधिक रंगीन और जोखिम भरी बोलचाल की भाषा के लिए वैसी ही है जैसे रेसीन की भाषा आंद्रे शेनियर की भाषा के लिए है:—

“तुम्हारा शराबखाना चलाने वाला रंगे हाथों पकड़ा गया होगा। तुम्हें तो पता ही होगा। वो तो अभी नया है। ज़रूर किसी पुलिसवाले ने उसे बहकाया होगा, शायद किसी भेड़ ने भी, जिसने उसे अपना दोस्त बताकर फंसाया हो। सुनो, मोंटपार्नास, क्या तुम्हें जेल में वो चीखें सुनाई दे रही हैं? तुमने वो सारी बत्तियाँ देखी होंगी। उसे फिर से पकड़ लिया गया है! उसे बीस साल की सज़ा मिलेगी। मैं डरा हुआ नहीं हूँ, मैं कायर नहीं हूँ, लेकिन अब और कुछ किया नहीं जा सकता, वरना वे हमें नाचने पर मजबूर कर देते। गुस्सा मत करो, हमारे साथ आओ, चलो साथ में एक बोतल पुरानी शराब पीते हैं।”

"मुसीबत के समय कोई अपने दोस्तों को अकेला नहीं छोड़ता," मोंटपार्नास ने बुदबुदाते हुए कहा।

“मैं तुम्हें बता रहा हूँ, वो पकड़ा गया है!” ब्रुजोन ने पलटकर जवाब दिया। “इस समय, सराय मालिक किसी काम का नहीं है। हम उसके लिए कुछ नहीं कर सकते। चलो यहाँ से चलते हैं। हर पल मुझे लगता है कि कोई पुलिसवाला मुझे मुट्ठी में जकड़ लेगा।”

मोंटपार्नास ने अब नाममात्र का ही प्रतिरोध किया; दरअसल, ये चारों आदमी, उन बदमाशों की तरह जो कभी एक-दूसरे का साथ नहीं छोड़ते, पूरी रात ला फोर्स के आसपास घूमते रहे, चाहे खतरा कितना भी बड़ा क्यों न हो, इस उम्मीद में कि थेनार्डियर किसी दीवार के ऊपर दिखाई दे। लेकिन रात, जो वास्तव में बहुत ठंडी होती जा रही थी—क्योंकि मूसलाधार बारिश ने सभी गलियों को सुनसान कर दिया था—उन पर हावी होती ठंड, उनके भीगे हुए कपड़े, उनके फटे हुए जूते, जेल में अभी-अभी फूटा भयानक शोर, बीते हुए घंटे, जिस गश्ती दल से उनका सामना हुआ, और खत्म होती उम्मीद, इन सबने उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। मोंटपार्नास, जो शायद थेनार्डियर का दामाद ही था, आखिरकार मान गया। एक पल भी और, और वे गायब हो जाते। थेनार्डियर अपनी दीवार पर उसी तरह हांफ रहा था जैसे मेदुसे तूफान में फंसे पीड़ित अपनी नाव पर हांफ रहे थे जब उन्होंने उस जहाज को देखा जो कुछ देर पहले नजर आया था लेकिन क्षितिज पर गायब हो गया।

उसने उन्हें पुकारने की हिम्मत नहीं की; उसकी चीख सुनाई दे सकती थी और सब कुछ बर्बाद हो सकता था। तभी उसके मन में एक विचार आया, एक आखिरी विचार, एक प्रेरणा की चमक; उसने अपनी जेब से ब्रुजोन की रस्सी का सिरा निकाला, जिसे उसने नई इमारत की चिमनी से अलग किया था, और उसे बाड़ से घिरे स्थान में फेंक दिया।

यह रस्सी उनके पैरों के पास गिरी।

“एक विधवा,” बैबेट ने कहा।

“मेरा कछुआ!” ब्रुजोन ने कहा।

"सराय का मालिक वहीं है," मोंटपार्नास ने कहा।

उन्होंने अपनी आँखें ऊपर उठाईं। थेनार्डियर ने अपना सिर थोड़ा सा आगे बढ़ाया।

“जल्दी करो!” मोंटपार्नास ने कहा, “क्या तुम्हारे पास रस्सी का दूसरा सिरा है, ब्रुजोन?”

"हाँ।"

"दोनों टुकड़ों को एक साथ बांध दो, हम उसे रस्सी फेंक देंगे, वह इसे दीवार से बांध सकता है, और उसके पास नीचे उतरने के लिए पर्याप्त रस्सी होगी।"

थेनार्डियर ने जोखिम उठाया और बोला:—
मैं ठंड से लकवाग्रस्त हो गया हूँ।
हम आपको वार्म-अप करवा देंगे।
मैं टस से मस नहीं हो सकता।
"खुद को ढीला छोड़ दो, हम तुम्हें संभाल लेंगे।"
मेरे हाथ सुन्न हो गए हैं।
रस्सी को केवल दीवार से बांधें।
"मैं नहीं कर सकता।"
"तो फिर हममें से किसी एक को ऊपर चढ़ना होगा," मोंटपार्नास ने कहा।
“तीन मंजिलें!” ब्रुजोन ने उत्साह से कहा।
दीवार के साथ-साथ एक प्राचीन प्लास्टर की चिमनी बनी हुई थी, जिसका इस्तेमाल पहले झोपड़ी में चूल्हे के लिए किया जाता था। यह चिमनी लगभग उसी जगह तक जाती थी जहाँ से थेनार्डियर दिखाई देता था। यह चिमनी, जो उस समय काफी क्षतिग्रस्त और दरारों से भरी हुई थी, अब गिर चुकी है, लेकिन इसके निशान अभी भी दिखाई देते हैं।
यह बहुत संकरा था।
"उसकी मदद से शायद कोई उठ सके," मोंटपार्नास ने कहा।
“उस चिमनी से?” बैबेट ने हैरानी से कहा, “कोई बड़ों का अड्डा, कभी नहीं! उसके लिए तो एक शरारती बच्चा ही चाहिए होगा।”
ब्रुजोन ने आगे कहा, "एक शरारती बच्चा तो लाना ही होगा।"
"हमें एक युवा लड़का कहाँ से मिलेगा?" गुएलेमर ने कहा।
“रुको,” मोंटपार्नास ने कहा। “मेरे पास वही लेख है।”
उसने बाड़ का फाटक बहुत धीरे से खोला, यह सुनिश्चित किया कि सड़क पर कोई नहीं गुजर रहा है, सावधानी से बाहर निकला, अपने पीछे फाटक बंद किया और बैस्टिल की दिशा में दौड़ने लगा।

सात-आठ मिनट बीत गए, थेनार्डियर के लिए आठ हज़ार सदियाँ बीत गईं; बैबेट, ब्रुजोन और गुएलेमर चुप रहे; अंत में द्वार एक बार फिर खुला, और मोंटपार्नास हाँफते हुए प्रकट हुए, उनके पीछे गैवरोश भी थे। बारिश के कारण सड़क अभी भी पूरी तरह सुनसान थी।
छोटा गैवरोश बाड़े में दाखिल हुआ और शांत भाव से इन बदमाशों के चेहरों को निहारने लगा। उसके बालों से पानी टपक रहा था। गुएलेमर ने उससे कहा:— “क्या तुम मर्द हो, नौजवान?”
गैवरोश ने अपने कंधे उचकाए और जवाब दिया:—
"मुझ जैसा नौजवान भी मर्द है, और तुम्हारे जैसे मर्द तो बच्चे हैं।"
“उस बदमाश की जीभ तो खूब लटकी हुई है!” बैबेट ने हैरानी से कहा।
ब्रुजोन ने आगे कहा, "पेरिस का वह बिगड़ैल लड़का कमजोर नहीं है।" “तुम क्या चाहते हो?” गैवरोश ने पूछा।
मोंटपार्नास ने उत्तर दिया:—
"उस चिमनी से ऊपर चढ़ो।"
“इस रस्सी से,” बैबेट ने कहा।
“और इसे कसकर बांध दें,” ब्रुजोन ने आगे कहा।
“दीवार के शिखर तक,” बैबेट ने आगे कहा।
ब्रुजोन ने आगे कहा, "खिड़की के क्रॉसबार पर।"
“और फिर?” गैवरोश ने कहा।
“वहाँ!” गुएलेमर ने कहा।
उस लड़के ने रस्सी, चिमनी, दीवार और खिड़कियों का निरीक्षण किया और अपने होठों से वह अवर्णनीय और तिरस्कारपूर्ण आवाज निकाली जिसका अर्थ था: "बस इतना ही!"
"ऊपर एक आदमी है जिसे आपको बचाना है," मोंटपार्नास ने बात जारी रखी।
“क्या तुम करोगे?” ब्रुजोन ने फिर से पूछना शुरू किया।

“नौसिखिए!” लड़के ने जवाब दिया, मानो यह प्रश्न उसके लिए बिल्कुल अभूतपूर्व प्रतीत हो।

और उसने अपने जूते उतार दिए।

गुएलेमर ने गैवरोश को एक हाथ से पकड़ा, उसे झोपड़ी की छत पर बिठाया, जिसकी कीड़े लगी तख्तियाँ उस बच्चे के भार से झुक गईं, और उसे वह रस्सी थमा दी जिसे ब्रुजोन ने मोंटपार्नास की अनुपस्थिति में बाँधा था। उस लड़के ने चिमनी की ओर कदम बढ़ाया, जिसमें छत से लगी एक बड़ी दरार के कारण आसानी से प्रवेश किया जा सकता था। जैसे ही वह ऊपर चढ़ने वाला था, थेनार्डियर, जिसने जीवन और सुरक्षा को आते देखा, दीवार के किनारे झुक गया; भोर की पहली किरण उसके पसीने से तर माथे, उसकी पीली पड़ चुकी गाल की हड्डियों, उसकी तीखी और क्रूर नाक, उसकी घनी भूरी दाढ़ी पर सफेद पड़ी, और गैवरोश ने उसे पहचान लिया।

“हेलो! मैं मेरे पिताजी हूँ! ओह, इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।”

और रस्सी को अपने दांतों में दबाकर, उसने दृढ़ निश्चय के साथ चढ़ाई शुरू कर दी।

वह झोपड़ी के शिखर पर पहुंचा, पुरानी दीवार पर ऐसे चढ़ा जैसे वह कोई घोड़ा हो, और खिड़की के ऊपरी क्रॉसबार से रस्सी को मजबूती से बांध दिया।

कुछ ही क्षणों बाद, थेनार्डियर सड़क पर था।

जैसे ही उसने फुटपाथ पर कदम रखा, जैसे ही उसने खुद को खतरे से बाहर पाया, वह न तो थका हुआ था, न ही उसे ठंड लग रही थी और न ही वह कांप रहा था; जिन भयानक चीजों से वह बच निकला था, वे धुएं की तरह गायब हो गईं, उसका वह विचित्र और उग्र मन एक बार फिर जागृत हो गया, और सीधा और स्वतंत्र खड़ा हो गया, आगे बढ़ने के लिए तैयार।

ये उस आदमी के पहले शब्द थे:—

अब हम किसे खाएंगे?

इस बेहद स्पष्ट टिप्पणी का अर्थ समझाना व्यर्थ है, जिसका तात्पर्य हत्या करना, कत्ल करना और लूटपाट करना तीनों है। "खाना" का सही अर्थ है: "निगल जाना"।

ब्रुजोन ने कहा, "चलो एक कोने में जाकर बात खत्म करते हैं। तीन शब्दों में ही बात सुलझा लेते हैं और तुरंत अलग हो जाते हैं। रू प्लूमेट में एक प्रेम प्रसंग चल रहा था, जो सुहावना लग रहा था; एक सुनसान गली, एक अलग-थलग घर, बगीचे का एक पुराना सड़ा हुआ फाटक और अकेली औरतें।"
“अच्छा! क्यों नहीं?” थेनार्डियर ने पूछा।
“तुम्हारी बेटी, एपोनाइन, इस मामले की जानकारी लेने गई है,” बैबेट ने उत्तर दिया।
"और वह मैग्नन के लिए एक बिस्किट लेकर आई," गुएलेमर ने आगे कहा। "वहाँ कुछ भी बनाने लायक नहीं था।"
“यह लड़की मूर्ख नहीं है,” थेनार्डियर ने कहा। “फिर भी, इस पर ध्यान देना होगा।”
“हां, हां,” ब्रुजोन ने कहा, “इसे देखना होगा।”
इसी बीच, ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी भी व्यक्ति ने गैवरोश को नहीं देखा, जो इस बातचीत के दौरान बाड़ के एक खंभे पर बैठ गया था; उसने कुछ क्षण प्रतीक्षा की, यह सोचकर कि शायद उसके पिता उसकी ओर मुड़ेंगे, फिर उसने अपने जूते दोबारा पहने और कहा:—
बस इतना ही? और कुछ नहीं चाहिए मेरे आदमियों? अब तुम मुसीबत से निकल गए। मैं चलता हूँ। मुझे जाकर अपने बच्चों को बिस्तर से उठाना है।
और वह चला गया।
वे पांचों व्यक्ति एक-एक करके बाड़े से बाहर निकले।
जब गैवरोश रू डेस बैलेट्स के कोने पर गायब हो गया, तो बैबेट थेनार्डियर को एक तरफ ले गया।
“क्या तुमने उस नौजवान को ध्यान से देखा?” उसने पूछा।
“कौन सा बच्चा?”
"वही जिसने दीवार पर चढ़कर तुम्हें रस्सी से बांधा।"
"विशेष रूप से नही।"

"खैर, मुझे नहीं पता, लेकिन मुझे लगता है कि वह आपका बेटा था।" “वाह!” थेनार्डियर ने कहा, “क्या आपको ऐसा लगता है?”

पुस्तक **VII.** बोलचाल की भाषा

I. उत्पत्ति

आलस्य एक बहुत बुरा शब्द है।

यह एक संपूर्ण दुनिया, ला पेग्रे, को जन्म देता है, जिसके लिए "चोरी" पढ़ा जाता है, और एक नरक, ला पेग्रेन्ने, जिसके लिए "भूख" पढ़ा जाता है।

अतः, आलस्य ही जननी है।

उसका एक बेटा है, जो चोरी करता है, और एक बेटी है, जो भूखी है।

हम इस समय कहाँ हैं? बोलचाल की भाषा की दुनिया में।

बोलचाल की भाषा क्या है? यह एक ही समय में एक राष्ट्र और एक बोली है; यह दो प्रकार की चोरी है; लोग और भाषा।

जब चौंतीस साल पहले, इस गंभीर और उदास इतिहास के कथाकार ने इसी उद्देश्य से लिखी गई एक रचना में एक ऐसे चोर का परिचय कराया जो बोलचाल की भाषा बोलता था, तो आश्चर्य और हंगामा मच गया। —“क्या! कैसे! बोलचाल की भाषा! अरे, बोलचाल की भाषा तो भयानक है! यह जेलों, जहाजों, कैदियों, समाज में सबसे घृणित हर चीज की भाषा है!” इत्यादि।

हमें इस तरह की आपत्तियां कभी समझ में नहीं आईं।

तब से लेकर अब तक, दो शक्तिशाली उपन्यासकारों, जिनमें से एक मानवीय हृदय का गहन अवलोकनकर्ता और दूसरा जनता का निडर मित्र है, बाल्ज़ाक और यूजीन सू ने अपने उपन्यासों में खलनायकों को उनकी स्वाभाविक भाषा में चित्रित किया है, ठीक उसी तरह जैसे 1828 में 'द लास्ट डे ऑफ अ कंडेम्ड मैन' के लेखक ने किया था। इसी पर वही आपत्तियां उठाई गई हैं। लोग बार-बार कहते हैं: “लेखक उस घिनौनी बोली से क्या तात्पर्य रखते हैं? बोलचाल की भाषा घृणित है! बोलचाल की भाषा से रोंगटे खड़े हो जाते हैं!”

इस बात से कौन इनकार करता है? बेशक करता है।

जब किसी घाव, खाई या समाज की पड़ताल करने की बात आती है, तो हद से आगे बढ़ना, तह तक जाना कब से गलत माना जाने लगा है? हमने हमेशा यही सोचा है कि यह कभी-

कभी एक साहसी कार्य होता है, और कम से कम एक सरल और उपयोगी काम होता है, जो कर्तव्य के पालन और पूर्णता के योग्य है। आखिर क्यों न हर चीज की खोज की जाए, हर चीज का अध्ययन किया जाए? रास्ते में क्यों रुका जाए? रुकना तो खोजी रेखा पर निर्भर करता है, न कि राहगीर पर।

यह निःसंदेह न तो आकर्षक है और न ही आसान कार्य है सामाजिक व्यवस्था की सबसे निचली गहराइयों की पड़ताल करना, जहाँ ठोस ज़मीन समाप्त होती है और कीचड़ शुरू होता है; उन अस्पष्ट, धुंधली लहरों में छानबीन करना, उस घिनौनी बोली का पीछा करना, उसे पकड़ना और कांपते हुए ही ज़मीन पर फेंक देना, जो प्रकाश में आने पर गंदगी से लथपथ हो जाती है; उस मवाद भरे शब्दकोश का, जिसका हर शब्द कीचड़ और अंधेरे के किसी राक्षस की गंदी अंगूठी जैसा लगता है। इस प्रकार नग्न अवस्था में, विचार के व्यापक प्रकाश में, अपशब्दों के भयानक झुंड का चिंतन करने से अधिक दुखद कुछ भी नहीं है। वास्तव में, यह रात के लिए बने एक भयानक जानवर जैसा प्रतीत होता है जिसे अभी-अभी उसके गंदे नाले से फाड़कर निकाला गया है। ऐसा लगता है मानो कोई भयानक, जीवित और काँपती हुई झाड़ी को देख रहा हो जो काँपती है, सरसराती है, डगमगाती है, छाया में लौटती है, धमकी देती है और घूरती है। एक शब्द पंजे जैसा लगता है, दूसरा बुझी हुई और खून बहती आंख जैसा, फलां-फलां वाक्यांश केकड़े के पंजे की तरह हिलता हुआ प्रतीत होता है। यह सब अव्यवस्था से संगठित हुई चीजों की भयावह जीवंतता से भरा हुआ है।

भला, भय ने अध्ययन को कब तक नकारा है? बीमारी ने चिकित्सा को कब तक खदेड़ दिया है? क्या कोई कल्पना कर सकता है कि कोई प्रकृतिवादी सांप, चमगादड़, बिच्छू, कनखजूरा, मकड़ी का अध्ययन करने से इनकार कर दे, और उन्हें वापस उनके अंधेरे में धकेलते हुए कहे: “अरे! यह कितना बदसूरत है!” जो विचारक बोलचाल की भाषा से मुंह मोड़ ले, वह उस सर्जन के समान होगा जो अल्सर या मस्से से मुंह फेर ले। वह उस भाषाविज्ञानी के समान होगा जो भाषा में किसी तथ्य की जांच करने से इनकार कर दे, उस दार्शनिक के समान होगा जो मानवता में किसी तथ्य की जांच करने में संकोच करे। क्योंकि, जो लोग इस मामले से अनभिज्ञ हैं, उनके लिए यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि बोलचाल की भाषा एक साहित्यिक घटना होने के साथ-साथ एक सामाजिक परिणाम भी है। सही मायने में बोलचाल की भाषा क्या है? यह दुख की भाषा है।

हमें रोका जा सकता है; तथ्य को सामान्य शब्दों में हमारे सामने रखा जा सकता है, जो इसे कमतर आंकने का एक तरीका है; हमें बताया जा सकता है कि सभी व्यापार, पेशे, सामाजिक पदानुक्रम की सभी आकस्मिकताएं और बुद्धिमत्ता के सभी रूपों की अपनी-अपनी बोलचाल की भाषा होती है। वह व्यापारी जो कहता है: "मोंटपेलियर सक्रिय नहीं है, मार्सिले बढ़िया गुणवत्ता का है," वह दलाल जो कहता है: "चालू महीने के अंत में संपत्ति," वह जुआरी जो कहता है: "Tiers et tout, refait de pique," नॉर्मन द्वीप समूह का शेरिफ जो कहता है: "भूमि संपत्ति पर अधिकार प्राप्त करने वाला धारक गिरवीदार द्वारा अचल संपत्ति की वंशानुगत जब्ती के दौरान उस संपत्ति के फलों का दावा नहीं कर सकता," वह नाटककार जो कहता है: "नाटक पर हूटिंग हुई," वह हास्य कलाकार जो कहता है: "मैंने हिट कर दिया है," वह दार्शनिक जो कहता है: "अद्भुत त्रिगुणता," वह शिकारी जो कहता है: "Voileci allais, Voileci fuyant," वह मस्तिष्क विज्ञानी जो कहता है: "प्रेम, लड़ाकूपन, गोपनीयता," वह पैदल सैनिक जो कहता है: "मेरा शूटिंग-आयरन," वह घुड़सवार जो कहता है: "मेरा टर्की-कॉक," वह तलवारबाजी का उस्ताद जो कहता है: "Tierce, quarte, break," वह प्रिंटर जो कहता है: “मेरी शूटिंग-स्टिक और गैली,”—प्रिंटर, फेंसिंग-मास्टर, कैवेलरी ड्रैगून, इन्फैंट्रीमैन, फ़्रेनोलॉजिस्ट, हंट्समैन, फिलॉसफर, कॉमेडियन, प्लेराइटर, शेरिफ, गैम्बलर, स्टॉकब्रोकर और व्यापारी, सभी स्लैंग बोलते हैं। वह पेंटर जो कहता है: “मेरी ग्राइंडर,” वह नोटरी जो कहता है: “मेरी स्किप-द-गटर,” वह हेयरड्रेसर जो कहता है: “मेरी मीलीबैक,” वह मोची जो कहता है: “मेरा कब,” स्लैंग बोलता है। सख्ती से कहें तो, अगर कोई इस बात पर पूरी तरह से ज़ोर दे, तो दाएं और बाएं कहने के सभी अलग-अलग तरीके, नाविक का “पोर्ट” और “स्टारबोर्ड,” सीन-शिफ्टर का “कोर्ट-साइड” और “गार्डन-साइड,” बीडल का “गॉस्पेल-साइड” और “एपिसल-साइड,” स्लैंग हैं। दिखावटी महिला की स्लैंग भी होती है और सजी-धजी महिलाओं की भी। होटल रामबोइलेट, कोर्ट डेस मिराकल्स से लगभग सटा हुआ है। डचेसों की एक खास बोलचाल की भाषा होती है, उदाहरण के लिए पुनर्स्थापना काल की एक बहुत ही महान महिला और एक बेहद खूबसूरत महिला के प्रेम पत्र में लिखा गया यह वाक्य: "इस गपशप में आपको ऐसे कई कारण मिलेंगे कि मुझे क्यों स्वच्छंद जीवन जीना चाहिए।" राजनयिक संकेत बोलचाल की भाषा में ही इस्तेमाल होते हैं; पोप का कार्यालय रोम के लिए 26, प्रेषण के लिए grkztntgzyal और ड्यूक डी मोडेना के लिए abfxustgrnogrkzu tu XI का उपयोग

करके बोलचाल की भाषा बोलता है। मध्य युग के चिकित्सक , जो गाजर , मूली और शलजम के लिए "Opoponach, perfroschinum, reptitalmus, dracatholicum, angelorum, postmegorum" कहते थे , वे भी बोलचाल की भाषा में ही बात करते थे। चीनी बनाने वाला जो कहता है : “लोफ, क्लेरिफाइड , लम्प्स , बास्टर्ड , कॉमन, बर्न्ट ,”—यह ईमानदार निर्माता बोलचाल की भाषा का प्रयोग करता है। बीस साल पहले आलोचना की एक खास धारा , जो कहती थी : “शेक्सपियर की आधी रचनाएँ शब्दों के खेल और व्यंग्य से भरी हैं ,”—वह भी बोलचाल की भाषा का प्रयोग करती थी। वह कवि और कलाकार जो गहरी समझ के साथ एम . डी मोंटमोरेंसी को “बुर्जुआ ” कहते , अगर वे कविता और रचना के पारखी न होते , वे भी बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं। वह क्लासिक शिक्षाविद जो फूलों को “फ्लोरा ,” फलों को “पोमोना ,” समुद्र को “नेपच्यून ,” प्रेम को “आग,” सौंदर्य को “चार्म्स ,” घोड़े को “ए कर्सर ,” सफेद या तिरंगे कॉकेड को “बेलौना का गुलाब ,” तिकोने वाली टोपी को “मंगल का त्रिकोण ” कहता है —वह क्लासिक शिक्षाविद भी बोलचाल की भाषा का प्रयोग करता है। बीजगणित , चिकित्सा , वनस्पति विज्ञान , इन सभी की अपनी-अपनी बोलचाल की भाषा है। जहाज पर बोली जाने वाली भाषा , समुद्र की वह अद्भुत भाषा , जो इतनी संपूर्ण और इतनी चित्रमय है , जिसे जीन बार्ट , ड्यूक्वेन , सफ्रेन और डुपरे ने बोला था , जो रस्सियों की सीटी , तुरहियों की आवाज, लोहे के तख्तों की आवाज , समुद्र की लहरों , हवा , आंधी और तोपों की आवाज के साथ घुलमिल जाती है , वह पूरी तरह से एक वीर और चकाचौंध भरी बोलचाल की भाषा है , जो चोरों की क्रूर बोलचाल की भाषा के लिए वैसी ही है जैसे शेर सियार के लिए होता है।

इसमें कोई शक नहीं। लेकिन चाहे जो भी कहा जाए , "बोलचाल की भाषा " शब्द को समझने का यह तरीका एक ऐसा विस्तार है जिसे हर कोई स्वीकार नहीं करेगा। हम इस शब्द के प्राचीन और सटीक , सीमित और निर्धारित अर्थ को ही महत्व देते हैं , और बोलचाल की भाषा को बोलचाल की भाषा तक ही सीमित रखते हैं। वास्तविक बोलचाल की भाषा और वह बोलचाल की भाषा जो सर्वोत्कृष्ट बोलचाल की भाषा है , यदि इन दोनों शब्दों को इस प्रकार जोड़ा जा सकता है , तो वह अनादि काल की बोलचाल की भाषा जो एक साम्राज्य थी , और कुछ नहीं बल्कि , हम दोहराते हैं , दुख की वह सरल , बेचैन , धूर्त , कपटी , विषैली , क्रूर , अस्पष्ट , नीच , गहरी और घातक भाषा है। सभी अपमानों और दुर्भाग्य की चरम सीमा पर , एक अंतिम दुख

मौजूद होता है जो विद्रोह करता है और सौभाग्यशाली तथ्यों और प्रचलित अधिकारों के पूरे समूह के साथ संघर्ष करने का निश्चय कर लेता है; एक भयावह संघर्ष, जहाँ कभी धूर्तता से, कभी हिंसा से, अस्वस्थता से और कभी क्रूरता से, यह सामाजिक व्यवस्था पर बुराई के माध्यम से सुई चुभोकर और अपराध के माध्यम से लाठी के प्रहार से हमला करता है। इस संघर्ष की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, दुख ने लड़ाई की एक भाषा का आविष्कार किया है, जो बोलचाल की भाषा है।

किसी भाषा के अंश को, जिसे मनुष्य ने बोला हो और जो अन्यथा लुप्त हो जाती, बचाए रखना, विस्मृति से बचाना, खाई के ऊपर थामे रखना, यानी सभ्यता के अच्छे या बुरे तत्वों में से एक को, जिससे सभ्यता बनी है या जिससे यह जटिल है, सामाजिक अवलोकन के अभिलेखों को विस्तारित करना; स्वयं सभ्यता की सेवा करना है। प्लॉटस ने यह सेवा, सचेतन या अचेतन रूप से, दो कार्थेजियन सैनिकों को फोनीशियन भाषा बुलवाकर की; मोलियर ने यह सेवा अपने कई पात्रों को लेवेंटाइन और विभिन्न प्रकार की बोलियाँ बुलवाकर की। यहाँ फिर से आपत्तियाँ उठती हैं। फोनीशियन, बहुत अच्छा! लेवेंटाइन, बिल्कुल सही! यहाँ तक कि बोली भी, उसे छोड़ दें! ये वे भाषाएँ हैं जो राष्ट्रों या प्रांतों की रही हैं; लेकिन बोलचाल की भाषा! बोलचाल की भाषा को संरक्षित करने का क्या लाभ? बोलचाल की भाषा को "जीवित रखने" में सहायता करने का क्या लाभ?

इसका उत्तर हम केवल एक शब्द में दे सकते हैं। निःसंदेह, यदि किसी राष्ट्र या प्रांत द्वारा बोली जाने वाली भाषा रुचिकर है, तो दुखियों द्वारा बोली जाने वाली भाषा कहीं अधिक ध्यान और अध्ययन के योग्य है।

यह वह भाषा है जो उदाहरण के तौर पर फ्रांस में चार शताब्दियों से अधिक समय से न केवल एक प्रकार के दुख द्वारा, बल्कि हर संभव मानवीय दुख द्वारा बोली जाती रही है।

और फिर, हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सामाजिक विकृतियों और कमज़ोरियों का अध्ययन करना और उनका निवारण करने के उद्देश्य से उन्हें इंगित करना, ऐसा काम नहीं है जिसमें चुनाव की अनुमति हो। रीति-रिवाजों और विचारों के इतिहासकार का कार्य घटनाओं के इतिहासकार से कम कठिन नहीं है। बाद वाले के पास सभ्यता की सतह, राजमुकुटों के संघर्ष, राजकुमारों के जन्म, राजाओं के विवाह, युद्ध, सभाएँ, महान सार्वजनिक व्यक्ति, दिनदहाड़े क्रांतियाँ, सब

कुछ बाहरी रूप में ही होता है; दूसरे इतिहासकार के पास आंतरिक भाग, गहराई, परिश्रम करने वाले, पीड़ा सहने वाले, प्रतीक्षा करने वाले लोग, शोषित स्त्री, पीड़ा से तड़पता बच्चा, मनुष्य और मनुष्य के बीच गुप्त युद्ध, अस्पष्ट क्रूरताएँ, पूर्वाग्रह, सुनियोजित अन्याय, भूमिगत स्थान, भीड़ की अस्पष्ट कंपकंपी, भूख से मरना, कानून के पलटवार, आत्माओं का गुप्त विकास, नंगे पैर चलने वाले, नंगे हाथों वाले, वंचित, अनाथ, दुखी और बदनाम, वे सभी रूप हैं जो अंधकार में विचरण करते हैं। उसे अपने हृदय में करुणा और कठोरता से भरे हुए, एक भाई और एक न्यायाधीश के रूप में, उन दुर्गम तहखानों में उतरना होगा जहाँ खून बहाने वाले और प्रहार करने वाले, रोने वाले और शाप देने वाले, उपवास करने वाले और खाने वाले, बुराई सहने वाले और बुराई करने वाले रेंगते हैं, बेतरतीब ढंग से आगे बढ़ते हैं। क्या हृदय और आत्मा के इन इतिहासकारों का कर्तव्य बाहरी तथ्यों के इतिहासकारों से किसी भी तरह से कमतर है? क्या कोई सोचता है कि अलिघिएरी के पास मैकियावेली से कम बातें कहने को हैं? क्या सभ्यता का निचला पक्ष ऊपरी पक्ष से कम महत्वपूर्ण है, सिर्फ इसलिए कि वह गहरा और अधिक गंभीर है? क्या हम सचमुच पहाड़ को अच्छी तरह जान सकते हैं जब हम उसकी गुफा से परिचित नहीं हैं?

इसके अतिरिक्त, संक्षेप में कहें तो, उपरोक्त कुछ शब्दों से इतिहासकारों के दो वर्गों के बीच एक स्पष्ट विभाजन का अनुमान लगाया जा सकता है, जो हमारे विचार में मौजूद नहीं है। कोई भी व्यक्ति किसी राष्ट्र के प्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष, प्रभावशाली और सार्वजनिक जीवन का अच्छा इतिहासकार नहीं हो सकता, यदि वह साथ ही साथ उनके गहन और गुप्त जीवन का भी कुछ हद तक इतिहासकार न हो; और कोई भी व्यक्ति आंतरिक जीवन का अच्छा इतिहासकार नहीं हो सकता, जब तक कि वह आवश्यकता पड़ने पर बाहरी जीवन का इतिहासकार बनना न जानता हो। रीति-रिवाजों और विचारों का इतिहास घटनाओं के इतिहास में व्याप्त है, और यह परस्पर सत्य है। ये तथ्यों के दो भिन्न-भिन्न क्रम हैं जो एक दूसरे के अनुरूप हैं, जो हमेशा आपस में जुड़े रहते हैं, और जो अक्सर परिणाम उत्पन्न करते हैं। ईश्वर द्वारा किसी राष्ट्र की सतह पर खींची गई सभी रेखाओं के समानांतर, धुंधली लेकिन स्पष्ट रेखाएं, उसकी गहराई में मौजूद होती हैं, और गहराई की सभी हलचलें सतह पर उथल-पुथल पैदा करती हैं।

सच्चा इतिहास सभी चीजों का मिश्रण है, और सच्चा इतिहासकार हर चीज में समाहित होता है।

मनुष्य एक केंद्र वाला वृत्त नहीं है; वह दो केंद्रों वाला एक दीर्घवृत्त है। तथ्य इनमें से एक का निर्माण करते हैं, और विचार दूसरे का।

बोलचाल की भाषा एक ऐसा आवरण है जहाँ जीभ किसी बुरे काम को अंजाम देने के लिए अपना रूप बदल लेती है। वहाँ वह शब्दों के मुखौटे और रूपकों के चिथड़ों में लिपट जाती है। इस रूप में वह भयानक हो जाती है।

इसे पहचानना मुश्किल है। क्या यह सचमुच फ्रांसीसी भाषा है, महान मानवीय भाषा? देखो, यह मंच पर कदम रखने और अपराध पर प्रहार करने के लिए तैयार है, और बुराई के सभी रूपों के लिए तत्पर है। यह अब चलती नहीं, बल्कि लंगड़ाती है; यह चमत्कारों के दरबार की बैसाखी पर लंगड़ाती है, एक ऐसी बैसाखी जो लाठी में बदल सकती है; इसे आवारागर्दी कहा जाता है; हर तरह के प्रेत, इसके संग्राहकों ने इसका चेहरा रंगा है, यह रेंगती और उछलती है, सरीसृप की दोहरी चाल। अब से, यह हर भूमिका में निपुण है, जालसाज इसे संदिग्ध बना देता है, जालसाज इसे जंग लगा देता है, आग लगाने वाला इसे कालिख से काला कर देता है; और हत्यारा इस पर लाल रंग लगाता है।

जब कोई समाज के द्वार पर, ईमानदार लोगों के साथ बैठकर सुनता है, तो उसे बाहरी लोगों के संवाद सुनाई देते हैं। वह प्रश्नों और उत्तरों में अंतर कर पाता है। बिना समझे ही, उसे एक भयानक बड़बड़ाहट सुनाई देती है, जो लगभग मानवीय लहजे जैसी लगती है, लेकिन स्पष्ट शब्द से कहीं अधिक चीख जैसी लगती है। यह बोलचाल की भाषा है। शब्द विकृत हैं और उनमें एक अवर्णनीय और अकल्पनीय क्रूरता झलकती है। ऐसा लगता है मानो हाइड्रा बात कर रहे हों।

अंधेरे में यह समझ से परे है। यह दांत पीसता है और फुसफुसाता है, रहस्य से अंधकार को और गहरा कर देता है। दुर्भाग्य में यह काला है, अपराध में और भी काला; ये दोनों कालेपन मिलकर बोलचाल की भाषा बनाते हैं। वातावरण में अस्पष्टता, कार्यों में अस्पष्टता, आवाजों में अस्पष्टता। भयानक, मेंढक जैसी जीभ जो आती-जाती है, उछलती है, रेंगती है, लार टपकाती है और उस विशाल धूसर कोहरे में राक्षसी ढंग से हलचल मचाती है जो बारिश और रात, भूख, बुराई, झूठ, अन्याय, नग्नता, घुटन और सर्दी से बना है, दुखियों के चरम दोपहर में।

आइए, दंडित लोगों पर दया करें। हाय! हम स्वयं कौन हैं? मैं कौन हूँ जो अब आपसे बात कर रहा हूँ? आप कौन हैं जो मुझे सुन रहे हैं? और क्या आपको पूरा यकीन है कि हमने जन्म से पहले कुछ नहीं किया? पृथ्वी किसी जेल से कम नहीं है। कौन जानता है कि मनुष्य ईश्वरीय न्याय के विरुद्ध पुनः पकड़ा गया अपराधी तो नहीं है? जीवन को ध्यान से देखें। यह इस प्रकार बना है कि हर जगह हमें दंड का अहसास होता है।

क्या आप खुद को खुशहाल इंसान कहते हैं? खैर! आप तो हर दिन दुखी रहते हैं। हर दिन का अपना कोई बड़ा दुख या छोटी-मोटी चिंता होती है। कल आप किसी प्रिय स्वास्थ्य के लिए चिंतित थे, आज आप अपनी ही चिंता में डूबे हैं; कल पैसों की चिंता होगी, परसों किसी निंदक की खरी-खोटी, उसके परसों किसी मित्र की विपत्ति; फिर मौसम की चिंता, फिर कुछ टूट जाना या खो जाना, फिर कोई ऐसा सुख जिसके लिए आपका अंतरात्मा और रीढ़ की हड्डी आपको धिक्कारती है; फिर सार्वजनिक मामलों का सिलसिला। ये सब दिल के दर्द के बिना है। और यह सिलसिला चलता रहता है। एक दुख छंटता है, दूसरा छा जाता है। सौ दिनों में शायद ही कोई एक दिन पूरी तरह से खुशियों से भरा होता है। और आप उन गिने- चुने लोगों में से हैं जो खुश हैं! बाकी इंसानों पर तो अंधकार छाया रहता है।

समझदार लोग "भाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली" जैसे वाक्यांशों का बहुत कम उपयोग करते हैं। इस दुनिया में, जो स्पष्ट रूप से किसी दूसरी दुनिया का प्रवेश द्वार है, कोई भाग्यशाली नहीं है।

मानव जीवन का वास्तविक विभाजन यही है: प्रकाशमान और अंधकारमय। अंधकारमय की संख्या कम करना और प्रकाशमान की संख्या बढ़ाना ही उद्देश्य है। इसीलिए हम पुकारते हैं: शिक्षा! विज्ञान! पढ़ना सिखाना, मानो आग प्रज्वलित करना है; हर अक्षर चमकता है।

लेकिन, जो प्रकाश की बात करता है, वह ज़रूरी नहीं कि आनंद की भी बात करे। लोग प्रकाश में कष्ट भोगते हैं; अति हानिकारक होती है। ज्वाला पंख की शत्रु है। बिना रुके जलते हुए उड़ते रहना—इसी में प्रतिभा का चमत्कार निहित है।

जब तुम जानना और प्रेम करना सीख जाओगे, तब भी तुम्हें पीड़ा सहनी पड़ेगी।
दिन का जन्म आँसुओं से होता है। प्रकाशमान भी रोते हैं, भले ही अंधकार में डूबे लोगों के लिए ही सही।

II. जड़ें

बोलचाल की भाषा उन लोगों की भाषा है जो अंधेरे में बैठे रहते हैं।

विचार अपनी सबसे गंभीर गहराइयों में उतर जाते हैं, सामाजिक दर्शन को अपने सबसे मार्मिक चिंतन में विलीन कर दिया जाता है, उस रहस्यमय बोली की उपस्थिति में जो एक साथ इतनी क्षत-विक्षत और विद्रोही है। उसमें दंड प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होता है। हर अक्षर पर एक निशान सा होता है। अशिष्ट भाषा के शब्द उसमें झुर्रीदार और सिकुड़े हुए प्रतीत होते हैं, मानो जल्लाद के गर्म लोहे के नीचे पड़े हों। कुछ शब्द अभी भी सुलगते हुए प्रतीत होते हैं। फलां-फलां वाक्यांश ऐसा प्रभाव उत्पन्न करता है मानो किसी चोर के कंधे पर लिली के फूल का निशान लगा हो और वह अचानक नंगा हो गया हो। न्याय से भागे हुए इन शब्दों में विचार लगभग व्यक्त होने से इनकार कर देते हैं। रूपक कभी-कभी इतना निर्लज्ज होता है कि ऐसा लगता है मानो उसने लोहे की बेड़ी पहन रखी हो।

इसके अलावा, इन सब के बावजूद और इन्हीं सब के कारण, इस विचित्र बोली का उस विशाल निष्पक्ष वर्गीकरण में अपना एक विशेष स्थान है, जहाँ जंग लगे सिक्के से लेकर स्वर्ण पदक तक के लिए जगह है, और जिसे साहित्य कहा जाता है। बोलचाल की भाषा, चाहे जनता इस तथ्य को स्वीकार करे या न करे, उसकी अपनी वाक्य रचना और अपनी कविता होती है। यह एक भाषा है। हाँ, कुछ शब्दों की विकृति से हम यह पहचान लेते हैं कि इसे मंड्रिन भाषा में गढ़ा गया था, और कुछ अलंकारिक शब्दों की भव्यता से हम यह महसूस करते हैं कि इसे विलोन बोलते थे।

वह उत्कृष्ट और प्रशंसित कविता—

लेकिन बीते दिनों की बर्फ कहाँ है?

यह बोलचाल की भाषा का एक शब्द है। एंटन—ante annum—थ्यून्स की बोलचाल की भाषा का एक शब्द है, जिसका अर्थ है बीता हुआ वर्ष, और विस्तार से कहें तो, पहले का समय। पैंतीस वर्ष पहले, जब बड़ी संख्या में कैदियों को बंदी बनाकर भेजा गया था, बिसेत्रे की एक कोठरी में, थ्यून्स के एक राजा द्वारा दीवार पर कील से खुदा हुआ यह कथन पढ़ा जा सकता था, जिसे नौसैनिक जहाजों में

भेजा गया था: Les dabs d’antan trimaient siempre pour la pierre du Coësre. इसका अर्थ है, “पुराने समय में राजा हमेशा जाकर अपना राज्याभिषेक करवाते थे।” उस राजा के अनुसार, राज्याभिषेक का अर्थ नौसैनिक जहाज थे।

तेज़ गति से भारी वाहनों के प्रस्थान को व्यक्त करने वाला शब्द 'डेकाराडे' विलोन से संबंधित है, और यह उनके लिए उपयुक्त भी है। यह शब्द, जो अपने चारों पैरों से आग उगलता है, ला फॉन्टेन की प्रशंसनीय कविता को एक उत्कृष्ट ध्वनि-अनुकरण में समाहित करता है:

□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□

विशुद्ध साहित्यिक दृष्टिकोण से देखें तो, बोलचाल की भाषा का अध्ययन सबसे रोचक और उपयोगी सिद्ध होता है। यह एक भाषा के भीतर एक संपूर्ण भाषा है, एक प्रकार का अस्वस्थ उभार, एक अस्वस्थ जोड़ जिसने वनस्पति को जन्म दिया है, एक परजीवी जिसकी जड़ें पुरानी फ्रांसीसी भाषा में हैं और जिसकी भयावह पत्तियाँ भाषा के एक तरफ रेंगती हैं। इसे बोलचाल की भाषा का पहला, अशिष्ट पहलू कहा जा सकता है। लेकिन जो लोग भाषा का अध्ययन उस तरह करते हैं जैसे भूविज्ञानी पृथ्वी का अध्ययन करते हैं, उनके लिए बोलचाल की भाषा एक वास्तविक जलोढ़ निक्षेप की तरह प्रतीत होती है। जैसे-जैसे कोई इसमें अधिक या कम गहराई तक खुदाई करता है, उसे बोलचाल की भाषा में, पुरानी लोकप्रिय फ्रेंच, प्रोवेन्सल, स्पेनिश, इतालवी, लेवेंटाइन, भूमध्यसागरीय बंदरगाहों की भाषा, अंग्रेजी और जर्मन, रोमांस भाषा की तीन किस्में - फ्रेंच, इतालवी और रोमांस, लैटिन, और अंत में बास्क और सेल्टिक भाषाएँ मिलती हैं। एक गहन और अद्वितीय रचना। सभी दुखी लोगों द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित एक भूमिगत संरचना। प्रत्येक शापित जाति ने अपनी परत जमा की है, प्रत्येक पीड़ा ने अपना पत्थर वहाँ रखा है, प्रत्येक हृदय ने अपना कंकड़ वहाँ जोड़ा है। दुष्ट, नीच या क्रोधित आत्माओं का एक समूह, जिन्होंने जीवन व्यतीत किया है और अनंत काल में विलीन हो गए हैं, किसी भयानक शब्द के रूप में लगभग पूरी तरह से दृश्यमान होकर वहाँ विलीन हैं।

क्या आपको स्पैनिश चाहिए? इसमें पुरानी गॉथिक बोलचाल की भाषा का भरपूर उपयोग होता था। उदाहरण के लिए, बोफेटे (कान पर एक थप्पड़) है, जो बोफेटन (bofeton) से बना है; वैंटेन (vantane) है, जिसका अर्थ है खिड़की (बाद में वैंटेर्न), जो वैंटाना (vantana) से आया है; गैट (gat) है, जिसका अर्थ है

बिल्ली (gato) से आया है; एसीट (acite) है, जिसका अर्थ है तेल (aceyte) से आया है। क्या आपको इतालवी चाहिए? उदाहरण के लिए, स्पेड (spade) है, जिसका अर्थ है तलवार (spada) से आया है; कार्वेल (carvel) है, जिसका अर्थ है नाव (caravella) से आया है। क्या आपको अंग्रेज़ी चाहिए? उदाहरण के लिए, बिचोट (bichot) है, जो बिशप (bishop) से आया है; रैले (raille) है, जिसका अर्थ है जासूस (rascal) है, जिसका अर्थ है बदमाश (rascalion) से आया है; पिल्चे (pilche) है, जिसका अर्थ है म्यान (pilcher) से आया है। क्या आपको जर्मन चाहिए? उदाहरण के लिए, कैलर (the caleur) है, जिसका अर्थ है वेटर (kellner) है; हर्स (the hers) है, जिसका अर्थ है मालिक (herzog) (ड्यूक) है। क्या आपको लैटिन चाहिए? उदाहरण के लिए, फ्रैंगिर (frangir) है, जिसका अर्थ है तोड़ना (frangere) है; अफुरेर (affurer) है, जिसका अर्थ है चोरी करना (fur) है; कैडेन (cadene) है, जिसका अर्थ है जंजीर (catena)। एक शब्द ऐसा है जो महाद्वीप की हर भाषा में एक रहस्यमयी शक्ति और अधिकार के साथ प्रकट होता है। यह शब्द है मैग्नस; स्कॉटिश लोग इसे मैक कहते हैं, जो कबीले के मुखिया को दर्शाता है; मैक-फार्लेन, मैक-कैलुमोर, महान फार्लेन, महान कैलुमोर; बोलचाल की भाषा में यह मेक और बाद में ले मेग बन जाता है, जिसका अर्थ है ईश्वर। क्या आप बास्क भाषा जानना चाहेंगे? यहाँ है गाहिस्तो, शैतान, जो गाइज़्टोआ, बुराई से आया है; सोरगाबोन, शुभ रात्रि, जो गैबोन, शुभ संध्या से आया है। क्या आप सेल्टिक भाषा जानना चाहेंगे? यहाँ है ब्लाविन, रूमाल, जो ब्लावेट, बहते पानी से आया है; मेनेसे, एक महिला (बुरे अर्थ में), जो मीनेक, पत्थरों से भरी हुई से आया है; बरंत, नाला, जो बरंतोन, फव्वारा से आया है; गोफ़र, ताला बनाने वाला, जो गोफ़, लोहार से आया है; ग्यूडौज़, यानी मृत्यु, जो गुएन-डू, यानी काला-सफेद से आया है। अंत में, क्या आप इतिहास जानना चाहेंगे? बोलचाल की भाषा में क्राउन को लेस माल्टीज़ कहा जाता है, जो माल्टा के जहाजों पर प्रचलन में रहे सिक्के की स्मृति चिन्ह है।

ऊपर बताए गए भाषावैज्ञानिक मूलों के अलावा, बोलचाल की भाषा के अन्य और भी अधिक स्वाभाविक मूल होते हैं, जो एक तरह से मनुष्य के मन से ही उत्पन्न होते हैं।

सर्वप्रथम, शब्दों का प्रत्यक्ष सृजन। भाषाओं का रहस्य इसी में निहित है।
शब्दों से चित्र बनाना, जिसमें ऐसे चित्र समाहित होते हैं जिन्हें हम नहीं

जानते कि कैसे और क्यों, समस्त मानव भाषाओं का मूल आधार है, जिसे हम उनका ग्रेनाइट कह सकते हैं।

बोलचाल की भाषा में इस तरह के शब्द बहुतायत में मिलते हैं, तात्कालिक शब्द, ऐसे शब्द जो पल भर में बन जाते हैं, जिनके बारे में किसी को नहीं पता कि वे कहाँ और किसने बनाए, जिनका कोई व्युत्पत्ति नहीं है, कोई उपमा नहीं है, कोई व्युत्पन्न नहीं है, एकाकी, बर्बर, कभी-कभी भयंकर शब्द, जो कभी-कभी अभिव्यक्ति की विलक्षण शक्ति रखते हैं और जीवंत हो उठते हैं। जल्लाद, ले ताउले; जंगल, ले सबरी; भय, पलायन, ताफ; नौकर, ले लारबिन; खनिज, प्रीफेक्ट, मंत्री, फैरोस; शैतान, ले राबोइन। इन शब्दों से अधिक विचित्र कुछ भी नहीं है जो छिपाते भी हैं और प्रकट भी करते हैं। कुछ शब्द, उदाहरण के लिए, ले राबोइन, एक ही समय में विचित्र और भयानक होते हैं, और आप पर एक साइक्लोपियन जैसी भयावहता का प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

दूसरे स्थान पर, रूपक। एक ऐसी भाषा की विशेषता जो सब कुछ कहना चाहती है फिर भी सब कुछ छुपाए रखती है, यही है कि वह अलंकारों से भरपूर होती है। रूपक एक पहेली है, जिसमें चोरी की योजना बना रहा चोर और भागने की योजना बना रहा कैदी, दोनों शरण लेते हैं। बोलचाल की भाषा से अधिक अलंकारिक कोई मुहावरा नहीं है: dévisser le coco (नट खोलना), गर्दन मरोड़ना; tortiller (रेंगना), खाना; être gerbé, मुकदमा चलना; a rat, रोटी चोर; il lansquine, बारिश हो रही है, एक आकर्षक, प्राचीन अलंकार जो आंशिक रूप से अपनी प्राचीनता को दर्शाता है, जो बारिश की लंबी तिरछी रेखाओं को भाले चलाने वालों के घने और तिरछे भालों के साथ समाहित करता है, और जो एक ही शब्द में लोकप्रिय अभिव्यक्ति को समेट लेता है: भाले बरस रहे हैं। कभी-कभी, जैसे-जैसे बोलचाल की भाषा पहले युग से दूसरे युग में आगे बढ़ती है, वैसे-वैसे शब्द आदिम और बर्बर अर्थ से लाक्षणिक अर्थ की ओर बढ़ते जाते हैं। शैतान अब 'ले राबोइन' नहीं रह जाता, बल्कि 'ले बोलंगर' (रोटी बनाने वाला) बन जाता है, जो रोटी को ओवन में डालता है। यह अधिक हास्यपूर्ण है, लेकिन कम भव्य, कुछ-कुछ कॉर्निल के बाद रेसीन जैसा, एस्किल्स के बाद यूरिपाइड्स जैसा। कुछ बोलचाल के मुहावरे जो दोनों युगों में मौजूद रहते हैं और जिनमें बर्बर और लाक्षणिक दोनों ही गुण होते हैं, किसी प्रेत-भ्रम की तरह लगते हैं। 'लेस सोर्गुएर्स वोंट सॉलिसिटर डेस

गेल्स आ ला लून'—रात में चोर घोड़े चुराने जा रहे हैं—यह वाक्य मन के सामने प्रेतों के समूह की तरह उभरता है। पता नहीं क्या दिखता है।

तीसरे स्थान पर, व्यावहारिक तरीका। बोलचाल की भाषा भाषा में जीवित रहती है। यह अपनी इच्छा अनुसार इसका उपयोग करती है, इसमें बेतरतीब ढंग से गोता लगाती है, और अक्सर अवसर आने पर इसे मोटे तौर पर और संक्षिप्त रूप से बदल देती है। कभी-कभी, इस प्रकार विकृत और शुद्ध बोलचाल की भाषा के शब्दों से जटिल साधारण शब्दों से, आकर्षक वाक्यांश बनते हैं, जिनमें पिछले दो तत्वों, प्रत्यक्ष सृजन और रूपक, का मिश्रण महसूस किया जा सकता है: le cab jaspine, je marronne que la roulotte de Pantin trime dans le sabri, कुत्ता भौंक रहा है, मुझे संदेह है कि पेरिस के लिए परिश्रम जंगल से गुजर रहा है। Le dab est sinve, la dabuge est merloussière, la fée est bative, बुर्जुआ मूर्ख है, बुर्जुआ चालाक है, बेटी सुंदर है। आम तौर पर, श्रोताओं को भ्रमित करने के लिए, बोलचाल की भाषा में सभी शब्दों के अंत में बिना किसी भेदभाव के एक अभद्र अंत, जैसे कि aille, orgue, iergue या uche जोड़ दिया जाता है। उदाहरण के लिए: Vousiergue trouvaille bonorgue ce gigotmuche? क्या आपको लगता है कि मटन का वह टुकड़ा अच्छा है? यह वाक्य कार्टूश ने एक जेलर से यह जानने के लिए पूछा था कि क्या उसे भागने के बदले दी गई रकम उचित है।

mar शब्द का समापन हाल ही में जोड़ा गया है।

बोलचाल की भाषा, भ्रष्टाचार की बोली होने के कारण, जल्दी ही स्वयं भी भ्रष्ट हो जाती है। इसके अलावा, यह हमेशा छिपाव की तलाश में रहती है, और जैसे ही इसे लगता है कि इसे समझ लिया गया है, यह अपना रूप बदल लेती है। अन्य सभी वनस्पतियों के विपरीत, इस पर पड़ने वाली प्रकाश की प्रत्येक किरण इसे छूते ही नष्ट कर देती है। इस प्रकार बोलचाल की भाषा निरंतर विघटन और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में रहती है; एक अस्पष्ट और तीव्र प्रक्रिया जो कभी रुकती नहीं। यह दस वर्षों में उतना क्षेत्र तय कर लेती है जितना कोई भाषा दस शताब्दियों में भी नहीं कर पाती। इस प्रकार ले लार्टन (रोटी) ले लार्टिफ बन जाता है; ले गेल (घोड़ा) ले गे बन जाता है; ला फर्टांच (पुआल) ला फर्टिल बन जाता है; ले मोमिग्नार्ड (शरारती बच्चा) ले मोमैक बन जाता है; लेस फिक्स (कपड़े) फ्रुस्क बन जाते हैं; ला चिक (चर्च) ल'एग्रुगेओइर बन जाता है; ले कोलाब्रे (गर्दन) ले कोलास बन जाता है। शैतान पहले गाहिस्टो होता

है, फिर ले राबोइन, फिर बेकर। पुजारी को रैटिचॉन (पहले रैटिचॉन), फिर सूअर (ले सैंगलियर) कहा जाता है; खंजर को ले विंग्ट-ड्यूक्स (बाईस), फिर ले सुरिन (सुरिन), फिर ले लिंगरे (सुई का छल्ला) कहा जाता है; पुलिस को रेल्स (पुलिस), फिर रूसिन्स (रॉसिन्स), फिर रूसेस (जूते के फीते बेचने वाले), फिर कोक्वेर्स (नाखून के फीते बेचने वाले), फिर कॉग्नेस (कोखना) कहा जाता है; जल्लाद को ले टाउले (पुलिस), फिर चार्लोट (शार्लोट), ल'अतिगेउर (अतिगेउर), फिर ले बेक्विलार्ड (बेक्विलार्ड) कहा जाता है। सत्रहवीं शताब्दी में, लड़ने का अर्थ था "एक-दूसरे को तंबाकू देना"; उन्नीसवीं शताब्दी में इसका अर्थ है "एक-दूसरे का गला चबाना"। इन दो चरम सीमाओं के बीच बीस अलग-अलग मुहावरे रहे हैं। कार्टूश की भाषा लैसेनेयर के लिए हिब्रू भाषा जैसी रही होगी। इस भाषा के सभी शब्द उन लोगों की तरह निरंतर उड़ान भरते रहते हैं जो उन्हें बोलते हैं।

फिर भी, समय-समय पर, और इसी गति के परिणामस्वरूप, प्राचीन बोलचाल की भाषा फिर से उभर आती है और एक बार फिर नई हो जाती है। इसका मुख्यालय वहीं है जहाँ इसका दबदबा कायम रहता है। टेम्पल ने सत्रहवीं शताब्दी की बोलचाल की भाषा को संरक्षित रखा; बिसेत्रे, जब वह एक जेल था, ने थ्यून्स की बोलचाल की भाषा को संरक्षित रखा। वहाँ पुराने थ्यून्स के लोगों द्वारा बोले जाने वाले अंत में 'अंके' का प्रयोग सुना जा सकता था: बोयांचेस-तू (बोइस-तू), क्या तुम पीते हो? फिर भी, निरंतर गति ही इसका नियम है।

यदि दार्शनिक क्षण भर के लिए भी, अवलोकन के उद्देश्य से, इस भाषा को स्थिर करने में सफल हो जाता है जो निरंतर लुप्त होती जा रही है, तो वह गहन और सार्थक चिंतन में लीन हो जाता है। कोई भी अध्ययन इससे अधिक प्रभावी और ज्ञानवर्धक नहीं है। बोलचाल की भाषा में ऐसा कोई रूपक या उपमा नहीं है जिसमें कोई सीख न छिपी हो। इन लोगों में, 'पीटना' का अर्थ है दिखावा करना; एक व्यक्ति बीमारी को हराता है; छल-कपट ही उनकी शक्ति है।

उनके लिए, मनुष्य की अवधारणा अंधकार की अवधारणा से अलग नहीं है। रात को वे ला सोर्गुए कहते हैं; मनुष्य को ल'ओर्गुए। मनुष्य रात का ही व्युत्पन्न है।

उन्होंने समाज को एक ऐसे वातावरण के संदर्भ में देखने का तरीका अपना लिया है जो उन्हें मार डालता है, एक घातक शक्ति के संदर्भ में, और वे अपनी

स्वतंत्रता के बारे में इस तरह बात करते हैं जैसे कोई अपने स्वास्थ्य के बारे में बात करता है। गिरफ्तार व्यक्ति "बीमार व्यक्ति" होता है; जिसे दोषी ठहराया गया है वह "मृत व्यक्ति" होता है।

जिस चारदीवारी में कैदी को दफनाया गया है, उसके लिए सबसे भयानक चीज एक प्रकार की हिमनदी जैसी पवित्रता है, और वह कालकोठरी को 'कास्टस' कहता है। उस शोकस्थल में, बाहर का जीवन हमेशा अपने सबसे मुस्कुराते हुए रूप में दिखाई देता है। कैदी के पैरों में बेड़ियाँ हैं; शायद आप सोचते होंगे कि उसका विचार यह है कि पैरों से ही चला जाता है? नहीं; वह सोच रहा है कि पैरों से ही नृत्य किया जाता है; इसलिए, जब वह अपनी बेड़ियों को तोड़ने में सफल हो जाता है, तो उसका पहला विचार यह होता है कि अब वह नृत्य कर सकता है, और वह उस बेड़ी को 'बैस्ट्रिंग्यू' (सार्वजनिक भोज) कहता है।—नाम एक केंद्र है; गहन आत्मसात।—बदमाश के दो सिर होते हैं, जिनमें से एक उसके कार्यों का कारण बनता है और उसे जीवन भर मार्गदर्शन करता है, और दूसरा वह है जो उसकी मृत्यु के दिन उसके कंधों पर होता है; वह अपराध में सलाह देने वाले सिर को 'ला सोरबोन' और उसका प्रायश्चित कराने वाले सिर को 'ला ट्रॉंचे' कहता है। जब किसी व्यक्ति के शरीर पर चिथड़े और हृदय में बुराइयाँ ही रह जाती हैं, जब वह उस दोहरे नैतिक और भौतिक पतन की स्थिति में पहुँच जाता है जिसे 'बदमाश' शब्द अपने दो अर्थों में दर्शाता है, तब वह अपराध के लिए तैयार हो जाता है; वह एक तेज धार वाले चाकू की तरह होता है; उसके दो धारदार किनारे होते हैं, उसका दुख और उसकी दुर्भावना; इसलिए बोलचाल की भाषा में उसे 'बदमाश' नहीं, बल्कि 'अन रेगुइसे' कहा जाता है। जेलें क्या हैं? शाप का भट्टी, नरक। कैदी खुद को 'फैगोट' कहता है। और अंत में, अपराधी अपनी जेल को क्या नाम देते हैं? 'कॉलेज'। इस शब्द से एक पूरी कारागार प्रणाली विकसित की जा सकती है।

क्या पाठक यह जानना चाहेंगे कि गैली के अधिकांश गीत, जिन्हें विशेष शब्दावली में लिरलॉनफा कहा जाता है, कहाँ से उत्पन्न हुए हैं?

उसे आगे की बात सुनने दो:—

पेरिस के शैटेलेट में एक विशाल और लंबा तहखाना था। यह तहखाना सीन नदी के तल से आठ फीट नीचे था। इसमें न तो खिड़कियाँ थीं और न ही हवा आने-जाने के लिए छेद; इसका एकमात्र खुला स्थान दरवाजा था; मनुष्य तो अंदर जा सकते थे, लेकिन हवा नहीं। इस तहखाने की छत पत्थर की थी और फर्श दस इंच मिट्टी का। फर्श पर

पत्थर बिछे थे, लेकिन पानी के रिसाव के कारण वे सड़कर फट गए थे। फर्श से आठ फीट ऊपर, एक लंबा और भारी बीम इस भूमिगत गड्ढे को एक छोर से दूसरे छोर तक पार करता था; इस बीम से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर तीन फीट लंबी जंजीरें लटकी थीं, और इन जंजीरों के अंत में गर्दन के लिए छल्ले थे। इस तहखाने में उन लोगों को कैद रखा जाता था जिन्हें जहाजों पर काम करने की सजा सुनाई गई थी, जब तक कि टूलॉन के लिए उनके प्रस्थान का दिन नहीं आ जाता। उन्हें इस बीम के नीचे धकेल दिया जाता था, जहाँ अंधेरे में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बेड़ियाँ झूलती हुई मिलती थीं, जो उनका इंतजार कर रही होती थीं।

जंजीरें, लटकती भुजाएँ, हार, खुले हाथ, उन अभागे लोगों का गला जकड़ लिया। उन्हें जकड़ कर वहीं छोड़ दिया गया। जंजीर छोटी होने के कारण वे लेट नहीं सकते थे। उस गुफा में, उस रात, उस शहतीर के नीचे, वे लगभग लटकते हुए, बेसुध पड़े रहे, रोटी, घड़ा या ऊपर बने अपने गुंबद तक पहुँचने के लिए अकल्पनीय प्रयास करने को मजबूर थे। कीचड़ उनके पैरों के बीच तक था, गंदगी उनकी पिंडलियों तक बह रही थी, थकान से चूर-चूर, जांघें और घुटने जवाब दे रहे थे, आराम पाने के लिए वे जंजीर को हाथों से कसकर पकड़े हुए थे, सीधे खड़े होने के अलावा सो नहीं सकते थे, और हर पल गले में फँसे गले के फूँक से जाग जाते थे; कुछ तो फिर कभी नहीं जागे। खाने के लिए, वे कीचड़ में फेंकी गई रोटी को अपनी एड़ी से पैर के सहारे तब तक धकेलते रहे जब तक वह उनके हाथ तक नहीं पहुँच गई।

वे इस स्थिति में कितने समय तक रहे? एक महीना, दो महीने, कभी-कभी छह महीने; एक व्यक्ति तो पूरे साल तक वहीं रहा। यह गैली जहाजों का प्रवेश कक्ष था। राजा से खरगोश चुराने के जुर्म में लोगों को वहाँ रखा जाता था। इस कब्र-नरक में वे क्या करते थे? जो मनुष्य कब्र में कर सकता है, वे मृत्यु की पीड़ा सहते थे, और जो मनुष्य नरक में कर सकता है, वे गीत गाते थे; क्योंकि जहाँ कोई आशा नहीं रहती, वहाँ गीत गूंजता रहता है। माल्टा के जलक्षेत्र में, जब कोई गैली जहाज पास आता था, तो चप्पू की आवाज़ से पहले ही गीत सुनाई देता था। बेचारा सुरविंसेंट, शिकारी, जो शैटेलेट के तहखाने से होकर गुजरा था, बोला: "कविताएँ ही थीं जिन्होंने मुझे जगाए रखा।" कविता की निरर्थकता। तुकबंदी का क्या लाभ?

लगभग सभी बोलचाल के गीतों का जन्म इसी तहखाने में हुआ था। पेरिस के ग्रैंड-शैटलेट के तहखाने से ही मोंटगोमरी गैली का उदास मुखड़ा निकला है: "तिमालौमिसैन, तिमालौमिसन।" इनमें से अधिकांश गीत उदास हैं; कुछ हंसमुख हैं; एक गीत कोमल है:—

इकिकाईले छोटे डार्टर का रंगमंच है।

आप जो चाहें करें, आप मनुष्य के हृदय में बसे उस शाश्वत अवशेष, प्रेम को नष्ट नहीं कर सकते।

इस घिनौने कर्मों से भरी दुनिया में लोग अपने राज़ छुपाते हैं। राज़ ही सबसे अहम चीज़ है। इन दुष्टों की नज़र में राज़ ही एकता है, जो संघ का आधार है। राज़ खोलना इस क्रूर समुदाय के हर सदस्य से उसकी अपनी शख्सियत का कुछ हिस्सा छीन लेना है। मुखबिरी करने को, जोशीली बोलचाल की भाषा में, "कांटा खा जाना" कहते हैं। मानो मुखबिर हर किसी के सार का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा अपने अंदर समेट लेता है और हर किसी के मांस के एक टुकड़े से अपना पोषण करता है।

कान पर एक घूंसा पड़ने का क्या अर्थ है? आम बोलचाल की भाषा में इसका उत्तर है: "इसका अर्थ है छत्तीस मोमबत्तियाँ देखना।" यहाँ बोलचाल की भाषा हस्तक्षेप करती है और इसे आगे बढ़ाती है: मोमबत्ती, छलावरण। इसके बाद, आम बोलचाल में छलावरण को सूफ्लेट का पर्यायवाची बना दिया जाता है। इस प्रकार, एक प्रकार से नीचे से ऊपर की ओर घुसपैठ करते हुए, रूपक की सहायता से, वह अथाह, प्रक्षेपी बोलचाल की भाषा गुफा से अकादमी तक पहुँच जाती है; और पौलैलर के यह कहने पर कि: "मैं अपना छलावरण जलाता हूँ," वोल्टेयर लिखते हैं: "लैंगलेविएल ला ब्यूमेल सौ छलावरणों के योग्य है।"

बोलचाल की भाषा पर शोध करने से हर कदम पर नई खोजें होती हैं। इस विचित्र मुहावरे के अध्ययन और पड़ताल से सामान्य समाज और शापित समाज के रहस्यमय प्रतिच्छेदन बिंदु का पता चलता है।

चोर के पास तोप के लिए भोजन भी होता है, चुराने योग्य वस्तुएँ, आप, मैं, जो भी वहाँ से गुज़रता है; ले पैंट्रे। (हर कोई।)

बोलचाल की भाषा अपराधियों की भाषा में तब्दील हो चुकी है।

मनुष्य के चिंतन के सिद्धांत को इतना नीचे धकेल दिया जाए कि उसे भाग्य की अस्पष्ट तानाशाही द्वारा वहाँ घसीटा और जकड़ा जा सके, कि उसे उस खाई में न जाने किन बेड़ियों से बांधा जा सके, यह बात स्तब्धता पैदा करने के लिए पर्याप्त है।

ओह, उन बेचारे अभागों के बारे में सोचकर ही दुख होता है!

हाय! क्या उस अंधकार में मानव आत्मा की सहायता के लिए कोई नहीं आएगा? क्या उसका भाग्य यही है कि वह वहाँ सदा के लिए उस मन, उस मुक्तिदाता, उस विशाल पेगासी और हिप्पोग्रिफ़ के सवार, उस भोर के नायकों के योद्धा, जो दो पंखों के बीच नीले आकाश से उतरेगा, उस भविष्य के तेजस्वी योद्धा की प्रतीक्षा करे? क्या वह आदर्श के प्रकाश के भाले को सहायता के लिए सदा व्यर्थ ही पुकारती रहेगी? क्या वह खाई की सघनता से बुराई के भयानक आगमन को सुनने और उस भयंकर जल के नीचे, झाग से लथपथ उस अजगर के सिर, उस झागदार मुँह और उसके पंजों, सूजन और छल्लों की मरोड़ती लहरों की झलकियाँ देखने के लिए अभिशप्त है? क्या उसे वहाँ बिना किसी प्रकाश की किरण, बिना किसी आशा के, उस भयानक आगमन के हवाले, उस राक्षस द्वारा अस्पष्ट रूप से सूंघे जाने वाले, कांपते हुए, बिखरे बालों वाले, अपनी बाहों को मरोड़ते हुए, सदा के लिए रात की चट्टान से जंजीरों में जकड़े हुए, छायाओं के बीच एक उदास, सफेद और नग्न एंड्रोमेडा की तरह रहना होगा!

III. रोने वाली बोलचाल की भाषा और हंसने वाली बोलचाल की भाषा

जैसा कि पाठक समझ सकते हैं, चार सौ साल पहले की बोलचाल की भाषा, आज की बोलचाल की भाषा की तरह, उस गंभीर, प्रतीकात्मक भावना से ओतप्रोत है जो सभी शब्दों को कभी उदास तो कभी भयावह रूप देती है। इसमें उन घुमंतू लोगों की प्राचीन और बेतहाशा उदासी झलकती है जो अपने ताश के पत्तों से खेलते थे, जिनमें से कुछ आज भी हमारे पास मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, क्लब का आठ पत्ता एक विशाल वृक्ष को दर्शाता था जिस पर आठ बड़े तिपतिया पत्ते लगे थे, मानो जंगल का एक काल्पनिक मानवीकरण हो। इस वृक्ष के नीचे आग जल रही थी, जिस पर तीन खरगोश एक शिकारी को सीख पर भून रहे थे, और उसके पीछे, दूसरी आग पर, एक उबलता हुआ बर्तन लटका था, जिसमें से एक कुत्ते का सिर निकला। तस्करों को भूनने के लिए खंभों और नकली नोट बनाने वालों को उबालने के लिए कड़ाही की उपस्थिति में, ताश के पत्तों द्वारा चित्रकारी में इन प्रतिशोधों से अधिक उदास कुछ भी नहीं हो सकता। बोलचाल की भाषा, गीत, उपहास और धमकी के क्षेत्र में विचार के विविध रूप, सभी इस शक्तिहीन और निराश चरित्र से प्रभावित थे। सभी गीत, जिनमें से कुछ की धुनें संकलित की गई हैं, इतने विनम्र और विलापपूर्ण थे कि आँसू आ जाते थे। वह बेचारा हमेशा एक गरीब ही रहता है, और वह हमेशा छिपा हुआ खरगोश, भागता हुआ चूहा, उड़ता हुआ पक्षी होता है। वह शायद ही कभी शिकायत करता है, वह आहें भरकर ही संतुष्ट हो जाता है; उसकी एक विलाप आज तक हम तक पहुँची है: "मैं यह नहीं समझ पाता कि ईश्वर, मनुष्यों का पिता, अपने बच्चों और पोते-पोतियों को कैसे यातना दे सकता है और उनकी चीखें सुन सकता है, जबकि वह स्वयं यातना नहीं सहता।" जब भी उसे सोचने का समय मिलता है, वह नीचों के सामने खुद को छोटा और समाज के सामने कमजोर बना लेता है; वह मुंह के बल लेट जाता है, विनती करता है, करुणा की अपील करता है; हमें लगता है कि वह अपने अपराध के प्रति सचेत है।

पिछली शताब्दी के मध्य में एक परिवर्तन आया, कारागार के गीतों और चोरों के गीतों ने, एक तरह से, उद्दंड और हंसमुख रूप धारण कर लिया। शोकपूर्ण मालुरे

की जगह लारीफ्ला ने ले ली। अठारहवीं शताब्दी में, गैली और कारागारों के लगभग सभी गीतों में, हमें एक शैतानी और रहस्यमय उल्लास मिलता है। हम इस कर्कश और मधुर मुखड़े को सुनते हैं, जिसे मानो किसी फास्फोरसेंट चमक से रोशन किया गया हो, और ऐसा लगता है मानो किसी विल-ओ'-द-विस्प ने बांसुरी बजाते हुए इसे जंगल में फेंक दिया हो:—

□□□□□□□□ □□□□□□□□□□
□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□
□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□
□□□□□□□□ □□□□□□□□□□

यह गीत तहखाने में या जंगल के किसी कोने में किसी आदमी का गला काटते समय गाया जाता था।

एक गंभीर लक्षण। अठारहवीं शताब्दी में, निराश वर्गों का प्राचीन दुख लुप्त हो गया। वे हंसने लगे। उन्होंने भव्य उत्सव और भव्य नृत्य का आयोजन किया। लुई XV को देखते हुए, उन्होंने फ्रांस के राजा को "ले मार्क्विस डी पैंटिन" कहा। और देखो, वे लगभग प्रसन्न हो गए। इन दयनीय लोगों से एक प्रकार की चमक निकली, मानो उनका अंतरात्मा का बोझ अब हल्का हो गया हो। अंधकार के इन दयनीय समूहों में अब केवल कार्यों की हताश दुस्साहस ही नहीं थी, बल्कि मन की लापरवाह दुस्साहस भी थी। यह एक संकेत था कि वे अपने अपराध बोध को खो रहे थे, और वे विचारकों और स्वप्नद्रष्टाओं के बीच भी किसी ऐसे अवर्णनीय समर्थन को महसूस कर रहे थे, जिसके बारे में स्वयं वे स्वयं भी नहीं जानते थे। यह एक संकेत था कि चोरी और लूटपाट सिद्धांतों और कुतर्कों में इस प्रकार प्रवेश करने लगी थी कि उनकी कुरूपता कुछ हद तक कम हो रही थी, जबकि उसका अधिकांश भाग कुतर्कों और सिद्धांतों में समाहित हो रहा था। संक्षेप में, यह किसी भयंकर और निकट भविष्य के प्रकोप का संकेत था, जब तक कि कोई उपाय न मिल जाए।

आइए एक क्षण रुकें। हम यहाँ किस पर आरोप लगा रहे हैं? क्या यह अठारहवीं शताब्दी है? क्या यह दर्शनशास्त्र है? बिल्कुल नहीं। अठारहवीं शताब्दी का कार्य स्वस्थ, अच्छा और स्वास्थ्यवर्धक है। ज्ञानकोशकार, जिनमें डिडेरोट अग्रणी थे; फिजियोक्रेट्स, जिनमें टर्गोट अग्रणी थे; दार्शनिक, जिनमें वोल्टेयर अग्रणी थे; यूटोपियाई विचारक, जिनमें रूसो अग्रणी थे—ये

चार पवित्र सेनाएँ हैं। मानवता की प्रकाश की ओर विशाल प्रगति इन्हीं के कारण है। ये मानव जाति के चार अग्रदूत हैं, जो प्रगति के चार प्रमुख बिंदुओं की ओर अग्रसर हैं। डिडेरोट सौंदर्य की ओर, टर्गोट उपयोगिता की ओर, वोल्टेयर सत्य की ओर, रूसो न्याय की ओर। लेकिन दार्शनिकों के साथ और उनसे ऊपर, सोफिस्ट भी थे, जो स्वस्थ विकास के साथ मिश्रित विषैली वनस्पति की तरह थे, जैसे कुंवारे जंगल में हेमलॉक। जब जल्लाद अदालत भवन की भव्य सीढ़ियों पर सदी के मुक्तिदाताओं की महान पुस्तकों को जला रहा था, तब अब भुला दिए गए लेखक, राजा की अनुमति से, न जाने क्या-क्या विचित्र और अव्यवस्थित रचनाएँ प्रकाशित कर रहे थे, जिन्हें दुर्भाग्यशाली लोग बड़ी उत्सुकता से पढ़ते थे। इनमें से कुछ प्रकाशन, जिन्हें एक राजकुमार का संरक्षण प्राप्त था, गुप्त पुस्तकालय में पाए जाते हैं। ये तथ्य, महत्वपूर्ण होते हुए भी अज्ञात, सतह पर अदृश्य थे। कभी-कभी, किसी तथ्य की अस्पष्टता में ही उसका खतरा छिपा होता है। यह अस्पष्ट इसलिए है क्योंकि यह कपटपूर्ण है। इन सभी लेखकों में से, संभवतः उस समय जनता के बीच सबसे अस्वस्थ गैलरी खोदने वाला लेखक रेस्टिफ डी ला ब्रेटोन था।

यह प्रथा, जो पूरे यूरोप में व्याप्त थी, जर्मनी में अन्यत्र की तुलना में कहीं अधिक विनाशकारी साबित हुई। जर्मनी में, एक निश्चित अवधि के दौरान, जिसका वर्णन शिलर ने अपने प्रसिद्ध नाटक 'द रॉबर्स' में किया है, संपत्ति और श्रम के विरुद्ध विरोध के रूप में चोरी और लूटपाट का बोलबाला हो गया। इसने कुछ भ्रामक और झूठे बुनियादी विचारों को आत्मसात कर लिया, जो देखने में तो न्यायसंगत प्रतीत होते थे, लेकिन वास्तविकता में बेतुके थे। ये विचार इन विचारों में समाहित हो गए, एक तरह से उनमें विलीन हो गए, एक अमूर्त नाम धारण कर लिया, सिद्धांत का रूप ले लिया और उस रूप में मेहनती, पीड़ित और ईमानदार जनता के बीच फैल गए। यहाँ तक कि इस मिश्रण को तैयार करने वाले अविवेकी रसायनज्ञों को भी इसकी जानकारी नहीं थी, और न ही उन जनता को जिन्होंने इसे स्वीकार किया। जब भी इस प्रकार की कोई घटना घटित होती है, मामला गंभीर हो जाता है। पीड़ा क्रोध को जन्म देती है; और जब समृद्ध वर्ग स्वयं को अंधा कर लेते हैं या सो जाते हैं, जो कि आँखें बंद करने के समान है, तब दुर्भाग्यशाली वर्गों की घृणा किसी कोने में सपने देख रहे किसी

पीड़ित या कुटिल आत्मा पर अपनी मशाल जलाती है और समाज की निगरानी में जुट जाती है। नफरत की गहन जांच-पड़ताल एक भयानक बात है।

अत: यदि समय की बदकिस्मती ऐसा चाहे, तो वे भयानक उपद्रव, जिन्हें पहले नाजायज बगावत कहा जाता था, जिनके सामने विशुद्ध राजनीतिक आंदोलन तो बच्चों का खेल मात्र हैं, जो अब उत्पीड़ित और उत्पीड़क का संघर्ष नहीं, बल्कि आराम के विरुद्ध असुविधा का विद्रोह बन जाते हैं। तब सब कुछ बिखर जाता है।

जैक्वेरी जनमानस के भूकंप होते हैं।

अठारहवीं शताब्दी के अंत तक संभवतः मंडरा रहे इस खतरे को फ्रांसीसी क्रांति ने, जो कि सत्यनिष्ठा का एक विशाल कार्य था, समय रहते ही टल दिया।

फ्रांसीसी क्रांति, जो तलवार से लैस एक विचार के अलावा और कुछ नहीं है, सीधी खड़ी हुई और उसी अचानक गति से बुराई का द्वार बंद कर दिया और अच्छाई का द्वार खोल दिया।

इसने यातनाओं पर रोक लगाई, सत्य का प्रचार किया, अशुद्धियों को दूर किया, सदी को स्वस्थ बनाया और जनता को गौरवान्वित किया।

इसके बारे में यह कहा जा सकता है कि इसने मनुष्य को दूसरी आत्मा, दूसरा अधिकार देकर, उसे दूसरी बार सृजित किया।

उन्नीसवीं सदी ने इसके कार्यों को विरासत में प्राप्त किया है और उनसे लाभ उठाया है, और आज, जिस सामाजिक तबाही का हमने हाल ही में जिक्र किया था, वह सरासर असंभव है। जो इसकी घोषणा करता है वह अंधा है! जो इससे डरता है वह मूर्ख है! क्रांति जैक्वेरी का टीका है।

क्रांति की बदौलत सामाजिक परिस्थितियाँ बदल गई हैं। सामंती और राजशाही बुराइयाँ अब हमारे खून में नहीं हैं। हमारे संविधान में अब मध्य युग का कोई अंश नहीं है। हम अब उस दौर में नहीं जी रहे हैं जब भीतर भयानक झुंड फूट पड़ते थे, जब पैरों के नीचे एक धीमी गड़गड़ाहट सुनाई देती थी, जब तिल जैसे सुरंगों से अवर्णनीय उभार सभ्यता की सतह पर प्रकट होते थे, जहाँ मिट्टी फट जाती थी, जहाँ गुफाओं की छतें खुल जाती थीं, और जहाँ अचानक धरती से विशालकाय सिर निकलते दिखाई देते थे।

क्रांतिकारी भावना एक नैतिक भावना है। एक बार सही का बोध विकसित हो जाने पर, कर्तव्य का बोध भी विकसित हो जाता है। सभी का नियम स्वतंत्रता है, जो रोबेस्पियर की प्रशंसनीय परिभाषा के अनुसार, जहाँ दूसरों की स्वतंत्रता शुरू होती है, वहीं समाप्त होती है। 1989 से, संपूर्ण जनता एक उदात्त व्यक्ति में विलीन हो रही है; ऐसा कोई गरीब नहीं है, जिसके पास अपना अधिकार होते हुए भी सूर्य की किरण न हो; भूख से मर रहा व्यक्ति भी अपने भीतर फ्रांस की ईमानदारी को महसूस करता है; नागरिक की गरिमा एक आंतरिक कवच है; जो स्वतंत्र है वह ईमानदार है; जो मतदान करता है वही शासन करता है। इसीलिए भ्रष्टाचार से मुक्ति; इसीलिए अस्वस्थ वासनाओं का नाश; इसीलिए प्रलोभनों के समक्ष वीरतापूर्वक झुकी हुई आँखें। क्रांतिकारी पूर्णता ऐसी है कि मुक्ति के दिन, 14 जुलाई या 10 अगस्त को, कोई जनसमूह नहीं रह जाता। प्रबुद्ध और बढ़ती हुई भीड़ का पहला नारा होता है: चोरों का नाश हो! प्रगति एक ईमानदार व्यक्ति है; आदर्श और परम सत्य रुमाल नहीं चुराते। 1848 में ट्यूलरीज़ के धन से लदे रथों की सुरक्षा किसने की थी? फाउबर्ग सेंट-एंटोइन के कबाड़ बीनने वालों ने। फटे-पुराने कपड़ों ने खजाने की रक्षा की। सद्गुण ने इन फटेहालों को तेजस्वी बना दिया। उन रथों में, लगभग बंद, और कुछ तो आधे खुले संदूकों में, सौ चमकदार संदूकों के बीच, फ्रांस का वह प्राचीन मुकुट था, जो हीरों से जड़ा था, और जिसके ऊपर राजसी प्रतीक, रीजेंट हीरा जड़ा था, जिसकी कीमत तीस मिलियन थी। नंगे पैर, उन्होंने उस मुकुट की रक्षा की।

अतः, अब जैक्वेरी का दौर नहीं चलेगा। कुशल लोगों के हित में मुझे इसका खेद है। उस क्षेत्र में पुराने भय का अंतिम प्रभाव पड़ चुका है; और अब से इसे राजनीति में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। लाल साये का मूल स्रोत टूट चुका है। अब हर कोई यह जानता है। पुतला अब डराता नहीं है। पक्षी पुतले के साथ मनमानी करते हैं, गंदे जीव उस पर बैठते हैं, और पूंजीपति वर्ग उस पर हंसता है।

IV. दो कर्तव्य: निगरानी रखना और आशा रखना

इस स्थिति में, क्या सभी सामाजिक खतरे टल गए हैं? बिलकुल नहीं। जैक्वेरी जैसी कोई स्थिति नहीं है; समाज इस बात पर निश्चिंत हो सकता है; अब उसके सिर में खून का उबाल नहीं आएगा। लेकिन समाज को अपनी सांस लेने के तरीके पर ध्यान देना चाहिए। लकवा का डर अब नहीं है, लेकिन तपेदिक का खतरा बना हुआ है। सामाजिक तपेदिक को ही दुख कहते हैं।

जमीन धंसने से भी मौत हो सकती है और बिजली गिरने से भी।

हमें इस बात को बार-बार दोहराने से नहीं थकना चाहिए, और सहानुभूति रखने वाले लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि यह भाईचारे के दायित्वों में सबसे पहला है, और स्वार्थी हृदयों को यह समझना चाहिए कि राजनीतिक आवश्यकताओं में सबसे पहला है वंचितों और दुखी लोगों के बारे में सर्वोपरि सोचना, उन्हें सांत्वना देना, उनका मार्गदर्शन करना, उन्हें ज्ञान देना, उनसे प्रेम करना, उनके क्षितिज को व्यापक बनाना, उन्हें हर प्रकार की शिक्षा प्रदान करना, उन्हें परिश्रम का उदाहरण देना, आलस्य का उदाहरण कभी नहीं देना, सार्वभौमिक लक्ष्य की अवधारणा को व्यापक बनाकर व्यक्तिगत बोझ को कम करना, धन की सीमा निर्धारित किए बिना गरीबी की सीमा निर्धारित करना, सार्वजनिक और जन गतिविधियों के विशाल क्षेत्र सृजित करना, ब्रियारियस की तरह, उत्पीड़ितों और कमजोरों की सहायता के लिए सौ हाथ फैलाना, सभी हथियारों के लिए कार्यशालाएँ, सभी प्रतिभाओं के लिए विद्यालय और सभी स्तरों की बुद्धि के लिए प्रयोगशालाएँ खोलने के महान कर्तव्य के लिए सामूहिक शक्ति का उपयोग करना, वेतन बढ़ाना, कष्ट कम करना, जो होना चाहिए और जो है उसमें संतुलन बनाना, अर्थात् आनंद को प्रयास के अनुपात में रखना। आवश्यकता से अधिक पूर्ति करना; दूसरे शब्दों में, सामाजिक तंत्र के विकास के माध्यम से अधिक प्रकाश और अधिक आराम प्रदान करना, ताकि पीड़ित और अज्ञानी लोगों को लाभ मिल सके।

और, सच कहें तो, यह सब तो बस शुरुआत है। असली सवाल यह है: श्रम एक अधिकार हुए बिना कानून नहीं हो सकता।

हम इस मुद्दे पर जोर नहीं देंगे; यह इसके लिए उपयुक्त स्थान नहीं है।

यदि प्रकृति स्वयं को ईश्वरीय विधान कहती है, तो समाज को स्वयं को दूरदर्शिता कहना चाहिए।

बौद्धिक और नैतिक विकास भौतिक उन्नति से कम आवश्यक नहीं है। ज्ञान एक संस्कार है, चिंतन सर्वोपरि आवश्यकता है, सत्य पोषण के साथ-साथ अनाज भी है। विज्ञान और ज्ञान से वंचित बुद्धि कमजोर हो जाती है। आइए हम उन तृप्ति और मन के विरुद्ध समान रूप से शिकायत करें जो तृप्ति नहीं पाते। यदि रोटी के अभाव में शरीर के नष्ट होने से अधिक हृदयविदारक कुछ है, तो वह आत्मा का प्रकाश के लिए तरसते हुए मरना है।

सारी प्रगति समाधान की दिशा में अग्रसर है। एक दिन हम आश्चर्यचकित रह जाएंगे। जैसे-जैसे मानव जाति का उत्थान होता है, दुख के गहरे स्तर स्वतः ही उभर आते हैं। दुख का नाश केवल जीवन स्तर में सुधार से ही संभव हो जाएगा।

इस सुखद परिणति पर संदेह करना हमारे लिए गलती होगी।

यह सच है कि अतीत वर्तमान में बहुत शक्तिशाली है। यह निंदा करता है। एक शव का यह पुनर्जन्म आश्चर्यजनक है। देखो, यह चल रहा है और आगे बढ़ रहा है। यह एक विजेता प्रतीत होता है; यह मृत शरीर एक विजेता है। वह अपनी सेनाओं, अंधविश्वासों, अपनी तलवार, निरंकुशता, अपने ध्वज, अज्ञानता के साथ आता है; कुछ समय पहले, उसने दस युद्ध जीते थे। वह आगे बढ़ता है, वह धमकी देता है, वह हंसता है, वह हमारे दरवाज़े पर है। हमें अपनी तरफ से निराश नहीं होना चाहिए। आइए हम उस ज़मीन को बेच दें जिस पर हैनिबल ने डेरा डाला हुआ है।

हम विश्वासियों को किस बात का भय है?

जिस प्रकार विचारों का प्रतिप्रवाह जैसी कोई चीज नहीं होती, ठीक उसी प्रकार जैसे नदी का अपने मार्ग पर वापस लौटना संभव नहीं है।

लेकिन जो लोग भविष्य की इच्छा नहीं रखते, उन्हें इस विषय पर विचार करना चाहिए। जब वे प्रगति को नकारते हैं, तो वे भविष्य को नहीं, बल्कि स्वयं को ही दोषी ठहरा रहे होते हैं। वे अपने आप को एक दुखद बीमारी दे रहे हैं; वे अपने आप को अतीत से जकड़ रहे हैं। कल को नकारने का केवल एक ही तरीका है, और वह है मृत्यु।

अब, मृत्यु न हो, शरीर की मृत्यु यथासंभव देर से हो, आत्मा की मृत्यु कभी न हो—यही हमारी इच्छा है।

हाँ, रहस्य अपना शब्द कहेगा, स्फिंक्स बोलेगा, समस्या हल हो जाएगी।

हाँ, अठारहवीं शताब्दी में जिन लोगों की रूपरेखा तैयार की गई थी, वे उन्नीसवीं शताब्दी तक पूरी तरह से विकसित हो जाएँगे। जो इस बात पर संदेह करता है, वह मूर्ख है! भविष्य का विकास, सार्वभौमिक कल्याण का निकट भविष्य, एक दैवीय रूप से घातक घटना है।

विशाल संयुक्त प्रेरणाएँ मानवीय कार्यों को निर्देशित करती हैं और उन्हें एक निश्चित समय के भीतर तार्किक स्थिति तक, अर्थात् संतुलन की स्थिति तक, अर्थात् न्याय की स्थिति तक पहुँचाती हैं। पृथ्वी और आकाश से निर्मित एक शक्ति मानवता से उत्पन्न होती है और उसे नियंत्रित करती है; यह शक्ति चमत्कारों की सूत्रधार है; इसके लिए अद्भुत परिणाम असाधारण उतार-चढ़ावों से अधिक कठिन नहीं हैं। एक व्यक्ति द्वारा प्रदत्त विज्ञान और दूसरे व्यक्ति द्वारा प्रदत्त घटनाओं की सहायता से, यह समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण में उन विरोधाभासों से अधिक विचलित नहीं होती, जो आम लोगों को असंभव प्रतीत होते हैं। यह विचारों के सामंजस्य से समाधान निकालने में उतनी ही कुशल है जितनी तथ्यों के सामंजस्य से सबक सिखाने में, और हम प्रगति की उस रहस्यमय शक्ति से कुछ भी अपेक्षा कर सकते हैं, जिसने एक दिन पूर्व और पश्चिम को एक समाधि की गहराई में आमने-सामने ला दिया और इमामों को महान पिरामिड के भीतर बोनापार्ट से बातचीत करने का अवसर दिया।

इस बीच, बौद्धिक विकास की इस भव्य यात्रा में कोई ठहराव, कोई झिझक या कोई विराम न हो। सामाजिक दर्शन मूलतः विज्ञान और शांति पर आधारित है। इसका उद्देश्य और इसका परिणाम, दोनों ही, विरोधों के अध्ययन द्वारा क्रोध को शांत करना है। यह विश्लेषण करता है, गहराई से छानबीन करता है, और फिर सभी घृणाओं को त्यागते हुए, संक्षेपण के माध्यम से पुनः संयोजित करता है।

अनेक बार ऐसा देखा गया है कि एक समाज मानव जाति पर आने वाली भीषण आंधी के सामने ढह जाता है; इतिहास राष्ट्रों और साम्राज्यों के विनाश से भरा पड़ा है; रीति-रिवाज, प्रथाएँ, कानून, धर्म—और एक दिन वह अज्ञात शक्ति, वह तूफान, आता है और सब कुछ अपने साथ बहा ले जाता है। भारत, चालडिया, फारस,

सीरिया, मिस्र की सभ्यताएँ एक के बाद एक लुप्त हो गईं। क्यों? हम नहीं जानते। इन आपदाओं के क्या कारण हैं? हम नहीं जानते। क्या इन समाजों को बचाया जा सकता था? क्या यह उनकी गलती थी? क्या वे उस घातक बुराई में लगे रहे जिसने उन्हें नष्ट कर दिया? एक राष्ट्र और एक जाति की इन भयानक मौतों में आत्महत्या की कितनी भूमिका है? ऐसे प्रश्न जिनका कोई उत्तर नहीं है। अंधकार निंदित सभ्यताओं को घेर लेता है। उनमें एक दरार आई, फिर वे डूब गईं। हमारे पास कहने के लिए और कुछ नहीं है; और एक प्रकार के भय से हम अतीत नामक उस सागर की गहराई में, उन विशाल लहरों के पीछे, उन विशाल जहाजों के मलबे को देखते हैं - बेबीलोन, नीनवे, टार्सस, थेब्स, रोम - उन भयानक हवाओं के झोंकों के नीचे जो अंधकार के सभी द्वारों से निकलती हैं। लेकिन अंधकार वहाँ है, और प्रकाश यहाँ है। हम इन प्राचीन सभ्यताओं की बीमारियों से परिचित नहीं हैं, हम अपनी ही कमियों को नहीं जानते। इस पर हर जगह हमें प्रकाश का अधिकार है, हम इसकी सुंदरता का चिंतन करते हैं, हम इसके दोषों को उजागर करते हैं। जहाँ यह बीमार है, हम उसकी जाँच करते हैं; और एक बार बीमारी का निदान हो जाने पर, कारण का अध्ययन उपचार की खोज की ओर ले जाता है। हमारी सभ्यता, बीस शताब्दियों का कार्य, इसका नियम और इसका चमत्कार है; इसे बचाना सार्थक है। इसे बचाया जाएगा। इसे सांत्वना देना ही बहुत बड़ी उपलब्धि है; इसका ज्ञानोदय एक और महत्वपूर्ण पड़ाव है। आधुनिक सामाजिक दर्शन के सभी प्रयास इसी बिंदु की ओर केंद्रित होने चाहिए। आज के विचारक का एक बड़ा कर्तव्य है — सभ्यता का श्रवण करना।

हम दोहराते हैं कि यह श्रवण परीक्षण प्रोत्साहन देता है; इसी निरंतर प्रोत्साहन के साथ हम इन पृष्ठों का समापन करना चाहते हैं, जो एक दुखद नाटक में एक गंभीर विराम है। सामाजिक नश्वरता के भीतर, हम मानव की अमरता को महसूस करते हैं। पृथ्वी नष्ट नहीं होती, न तो इन घावों, गड्ढों, विस्फोटों, गंधक के गड्ढों के कारण, न ही किसी ज्वालामुखी के कारण जो अपना मवाद उगलता है। लोगों के रोग मनुष्य को नहीं मारते।

फिर भी, सामाजिक क्लीनिकों के कामकाज पर नजर रखने वाला कोई भी व्यक्ति कभी- कभी अपना सिर हिला देता है। सबसे मजबूत, सबसे कोमल और सबसे तार्किक लोगों में भी कमजोरी के क्षण आते हैं।

क्या भविष्य आएगा? ऐसा लगता है मानो हम यही सवाल पूछ रहे हों, जब हम इतना भयानक अंधकार देखते हैं। स्वार्थी और दुखी लोगों का दुखद आमना-सामना। स्वार्थी लोगों में पूर्वाग्रह, महंगी शिक्षा की छाया, नशे से बढ़ती लालसा, समृद्धि का मदहोश कर देने वाला नशा, पीड़ा का भय जो कुछ लोगों में पीड़ा के प्रति घृणा तक पहुँच जाता है, एक अटूट संतुष्टि, इतना फूला हुआ 'मैं' जो आत्मा को अवरुद्ध कर देता है; दुखी लोगों में लोभ, ईर्ष्या, दूसरों को सुख भोगते देखकर घृणा, अपनी इच्छाओं को शांत करने की ओर मानव के गहरे आवेग, धुंध, उदासी, आवश्यकता, नियतिवाद, अपवित्र और सरल अज्ञान से भरे हृदय।

क्या हमें आकाश की ओर देखना जारी रखना चाहिए? क्या वह प्रकाशमान बिंदु जिसे हम वहाँ देखते हैं, उन बिंदुओं में से एक है जो लुप्त हो जाते हैं? आदर्श को देखना भयावह है, इस प्रकार गहराई में खोया हुआ, छोटा, एकांत, अगोचर, चमकीला, लेकिन उन विशाल, काले खतरों से घिरा हुआ, जो इसके चारों ओर विकराल रूप से ढेर लगे हुए हैं; फिर भी बादलों के बीच फंसे तारे से अधिक खतरे में नहीं है।

पुस्तक **VIII.** जादू और विनाश

I. पूर्ण प्रकाश

पाठक शायद समझ गए होंगे कि एपोनिन ने द्वार से ही उस गली प्लूमेट के निवासी को पहचान लिया था जहाँ मैग्नन ने उसे भेजा था। उसने पहले बदमाशों को गली प्लूमेट से दूर रखा और फिर मारियस को वहाँ ले गई। उस द्वार के सामने कई दिन प्रेम-प्रसंग में बिताने के बाद, मारियस उस शक्ति से खिंचा चला आया जो लोहे को चुंबक की ओर और प्रेमी को उस पत्थर की ओर खींचती है जिस पर उसकी प्रेमिका का घर बना होता है। अंत में वह कोसेट के बगीचे में उसी तरह प्रवेश कर गया जैसे रोमियो जूलियट के बगीचे में प्रवेश करता है। यह उसके लिए रोमियो से भी आसान साबित हुआ; रोमियो को दीवार फांदनी पड़ी, जबकि मारियस को केवल उस जर्जर द्वार की एक सलाख पर थोड़ा सा बल लगाना पड़ा जो अपनी जंग लगी जगह में बूढ़े लोगों के दांतों की तरह हिल रही थी। मारियस दुबला-पतला था और आसानी से अंदर चला गया।

चूंकि गली में कभी कोई नहीं होता था, और मारियस रात के अलावा कभी बगीचे में प्रवेश नहीं करता था, इसलिए उसके देखे जाने का कोई खतरा नहीं था।

उस पवित्र और पावन क्षण से, जब एक चुंबन ने इन दो आत्माओं को एक कर दिया, मारियस हर शाम वहाँ मौजूद रहता था। यदि उस समय कोसेट किसी भी बेईमान या भ्रष्ट पुरुष से प्रेम कर बैठती, तो वह खो जाती; क्योंकि कुछ उदार स्वभाव के लोग होते हैं जो स्वयं को समर्पित कर देते हैं, और कोसेट उनमें से एक थी। स्त्री का एक गुण समर्पण है। प्रेम, जब पूर्ण होता है, तो उसमें लज्जा की एक अवर्णनीय दिव्य अंधता समा जाती है। हे महान आत्माओं, तुम कितने खतरों का सामना करते हो! अक्सर तुम हृदय देते हो, और हम शरीर ले लेते हैं। तुम्हारा हृदय तुम्हारे साथ रहता है, तुम अंधकार में कांपते हुए उसे देखते हो। प्रेम का कोई मध्य मार्ग नहीं होता; यह या तो विनाश करता है या उद्धार। समस्त मानव नियति इसी दुविधा में निहित है। यह दुविधा, विनाश या सुरक्षा, प्रेम से अधिक किसी भी नियति द्वारा स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं होती। प्रेम ही जीवन है, यदि वह मृत्यु नहीं है। पालना; और ताबूत भी। मनुष्य के हृदय में भी यही भावना “हाँ” और “ना” कहती है। ईश्वर की बनाई हुई सभी वस्तुओं

में से, मनुष्य का हृदय ही वह है जो सबसे अधिक प्रकाश बिखेरता है, और साथ ही सबसे अधिक अंधकार भी।

ईश्वर की यही इच्छा थी कि कोसेट का प्रेम उद्धार करने वाले प्रेमों में से एक से मिले।

सन् 1832 के मई महीने के पूरे महीने भर, हर रात उस गरीब, उपेक्षित बगीचे में, उस घनी झाड़ी के नीचे जो दिन-प्रतिदिन और अधिक घनी और सुगंधित होती जा रही थी, दो ऐसे प्राणी मौजूद थे जो पूर्ण पवित्रता, पूर्ण मासूमियत से परिपूर्ण थे, स्वर्ग के सुख से लबालब भरे हुए थे, मनुष्य जाति से भी अधिक देवदूतों के निकट थे, शुद्ध, ईमानदार, मदहोश, तेजस्वी, जो अंधकार में भी एक-दूसरे के लिए चमकते थे। कोसेट को ऐसा लगता था मानो मारियस के सिर पर मुकुट हो, और मारियस को ऐसा लगता था मानो कोसेट के सिर के चारों ओर आभा हो। वे एक-दूसरे को छूते, एक-दूसरे को निहारते, एक-दूसरे का हाथ थामते, एक-दूसरे के करीब आते; लेकिन उनके बीच एक दूरी थी जिसे वे पार नहीं कर पाए। ऐसा नहीं था कि वे उसका सम्मान करते थे; बल्कि वे उसके अस्तित्व से अनभिज्ञ थे। मारियस को एक अवरोध का एहसास था, कोसेट की मासूमियत का; और कोसेट को एक सहारा, मारियस की वफादारी का। पहला चुंबन ही आखिरी भी था। तब से मारियस ने कोसेट के हाथ, उसके रुमाल या उसके बालों की लट को होठों से छूने से आगे कुछ नहीं किया था। उसके लिए कोसेट एक इत्र थी, स्त्री नहीं। वह उसे महसूस करता था। कोसेट ने कुछ भी मना नहीं किया, और मारियस ने कुछ नहीं माँगा। कोसेट खुश थी, और मारियस संतुष्ट था। वे एक ऐसे आनंदमय अवस्था में जी रहे थे जिसे एक आत्मा द्वारा दूसरी आत्मा के सम्मोहित होने के रूप में वर्णित किया जा सकता है। यह आदर्श रूप में दो कुंवारी आत्माओं का पहला अवर्णनीय आलिंगन था। मानो दो हंस जुंगफ्राउ नदी पर मिल रहे हों।

प्रेम के उस क्षण में, जब कामुकता परमानंद की सर्वशक्तिमत्ता के आगे बिल्कुल शांत हो जाती है, पवित्र और दिव्य मारियस, कोसेट के वस्त्र को उसके टखने तक उठाने की बजाय शहर की किसी स्त्री के पास जाना अधिक उचित समझता। एक बार, चांदनी रात में, कोसेट ज़मीन पर पड़ी कोई चीज़ उठाने के लिए झुकी, तो उसकी चोली खुल गई और उसके गले की झलक दिखाई दी। मारियस ने अपनी नज़रें फेर लीं।

इन दोनों के बीच क्या हुआ? कुछ नहीं। वे एक-दूसरे से बेहद प्यार करते थे।

रात में, जब वे वहाँ थे, वह बगीचा एक जीवंत और पवित्र स्थान प्रतीत होता था। सभी फूल उनके चारों ओर खिल उठे और उन्हें सुगंध बिखेरने लगे; और उन्होंने अपने दिल की बात उन फूलों पर बिखेर दी। उन दोनों भोले-भाले लोगों के चारों ओर की जीवंत और उमंग भरी वनस्पति शक्ति और मदहोशी से कांप उठी, और उन्होंने प्रेम के ऐसे शब्द कहे जिससे वृक्ष थरथरा उठे।

ये कैसे शब्द थे? साँसें। बस इतना ही। ये साँसें आस-पास की सारी प्रकृति को झकझोरने और छूने के लिए काफी थीं। एक जादुई शक्ति जिसे समझना हमारे लिए मुश्किल होगा अगर हम इन बातों को किसी किताब में पढ़ें, जो पत्तों के नीचे हवा के झोंके से धुएँ के छल्ले की तरह उड़कर बिखर जाती हैं। दो प्रेमियों की उन फुसफुसाहटों से आत्मा से निकलने वाली उस मधुरता को निकाल लें जो वीणा की तरह उनका साथ देती है, तो बस एक धुंधली सी छाया रह जाती है; आप कहेंगे: “क्या! बस इतना ही!” अरे! हाँ, बचकानी बकवास, दोहराव, बेमतलब की हँसी, निरर्थक बातें, दुनिया की हर वो चीज़ जो सबसे गहरी और सबसे उदात्त है! बस वही चीज़ें जो कहने और सुनने लायक हैं!

जिस व्यक्ति ने कभी ये बेतुकी बातें, ये तुच्छ टिप्पणियाँ नहीं सुनीं, वह मूर्ख और द्वेषपूर्ण व्यक्ति है। कोसेट ने मारियस से कहा:—

क्या तुम जानते हो?—”

इन सब के बीच और इस दिव्य कुंवारीपन के बावजूद, और दोनों में से कोई भी यह नहीं बता पा रहा था कि यह सब कैसे हुआ, वे एक दूसरे को "तू" कहकर पुकारने लगे थे।

क्या तुम जानते हो? मेरा नाम यूफ्रेसी है।

“यूफ्रेसी? नहीं, तुम्हारा नाम कोसेट है।”

“ओह! कोसेट तो बहुत ही भद्दा नाम है जो मुझे बचपन में दिया गया था। लेकिन मेरा असली नाम यूफ्रेसी है। क्या तुम्हें यह नाम पसंद है—यूफ्रेसी?”

“हां। लेकिन कोसेट बदसूरत नहीं है।”

"क्या आपको यह यूफ्रेसी से बेहतर लगता है?"

"क्यों हाँ।"

“तो मुझे भी यह ज्यादा अच्छा लगता है। सचमुच, यह बहुत सुंदर है, कोसेट। मुझे कोसेट कहो।”

और उसकी मुस्कान ने इस संवाद को स्वर्ग में स्थित किसी सुंदर उद्यान के योग्य बना दिया। एक अन्य अवसर पर उसने उसे ध्यान से देखा और कहा:—

“महाशय, आप सुंदर हैं, आप आकर्षक हैं, आप बुद्धिमान हैं, आप बिल्कुल भी मूर्ख नहीं हैं, आप मुझसे कहीं अधिक विद्वान हैं, लेकिन मैं आपको इस शब्द से चुनौती देती हूँ: मैं आपसे प्यार करती हूँ!”

और मारियस ने आकाश में ही एक तारे द्वारा गाए गए गीत की धुन सुनी।

या फिर उसने खांसने पर उसे हल्के से थपथपाया और उससे कहा:—

“खांसी मत कीजिए, महोदय; मेरी अनुमति के बिना मेरे क्षेत्र में किसी को खांसने की अनुमति नहीं है। खांसना और मुझे परेशान करना बहुत ही शरारतपूर्ण है। मैं चाहता हूं कि आप स्वस्थ रहें, क्योंकि सबसे पहले तो, अगर आप अस्वस्थ रहे, तो मैं बहुत दुखी हो जाऊंगा। फिर मैं क्या करूंगा?”

और यह सचमुच दिव्य था।

एक बार मारियस ने कोसेट से कहा:—

"ज़रा सोचिए, एक समय मुझे लगा था कि आपका नाम उर्सुले है।"

इस बात से वे दोनों पूरी शाम हंसते रहे।

एक और बातचीत के बीच में, उन्होंने अचानक कहा:—

“ओह! एक दिन, लक्ज़मबर्ग में, मेरा मन हुआ कि किसी अनुभवी योद्धा को पूरी तरह से तोड़ दूं!” लेकिन वह रुक गया और आगे नहीं बोला। उसे कोसेट से उसके गार्टर के बारे में बात करनी पड़ती, और यह असंभव था। यह एक अजीब विषय था, शरीर, जिसके सामने वह विशाल और मासूम प्यार एक तरह के पवित्र भय से पीछे हट गया।

मारियस ने कोसेट के साथ अपने जीवन की कल्पना इस प्रकार की, बस इतना ही; हर शाम रू प्लूमेट आना, मुख्य न्यायाधीश के द्वार की पुरानी और आरामदायक चौखट को हटाकर, उस बेंच पर कंधे से कंधा मिलाकर बैठना, पेड़ों के बीच से आती रात की जगमगाहट को निहारना, अपनी पतलून के घुटने की तह को कोसेट के गाउन के

ढीलेपन में फिट करना, उसके अंगूठे के नाखून को सहलाना, उसे "तू" कहकर पुकारना, एक ही फूल की खुशबू को बार-बार, हमेशा के लिए, अनिश्चित काल तक महसूस करना। इस दौरान, उनके सिर के ऊपर बादल छाए रहे। हर बार जब हवा चलती है, तो वह अपने साथ आकाश के बादलों से कहीं अधिक मनुष्यों के सपने लेकर आती है।

यह पवित्र, लगभग शर्मीला प्रेम किसी भी तरह से शिष्टाचार से रहित नहीं था। किसी पुरुष के प्रेम में उसकी प्रशंसा करना स्नेह जताने का पहला तरीका है, और जो ऐसा करने का प्रयास करता है वह आधा दुस्साहसी होता है। प्रशंसा एक घूंघट के पीछे से चुंबन के समान होती है। कामुकता अपने मीठे छोटे से बिंदु के साथ उसमें घुलमिल जाती है, जबकि वह स्वयं को छिपा लेती है। हृदय कामुकता के सामने पीछे हट जाता है, केवल और अधिक प्रेम करने के लिए। मारियस के सभी प्रेम-प्रलोभन, कल्पना से ओतप्रोत, मानो नीले रंग के थे। जब पक्षी स्वर्गदूतों की दिशा में ऊपर उड़ते हैं, तो उन्हें ऐसे शब्द अवश्य सुनने पड़ते होंगे। फिर भी, उनमें जीवन, मानवता, मारियस की सभी सकारात्मकता समाहित थी। यह वह बात थी जो कुटिया में कही जाती है, जो कक्ष में कही जाने वाली बातों की प्रस्तावना होती है; एक गीतात्मक अभिव्यक्ति, छंद और सॉनेट का अंतर्मिश्रण, मधुर अतिशयोक्ति से भरे स्नेह के सभी अलंकरण, एक गुलदस्ते में सजे आराधना के सभी परिष्कार और एक दिव्य सुगंध बिखेरते हुए, दिल से दिल की एक अवर्णनीय चहचहाहट।

“ओह!” मारियस ने धीरे से कहा, “तुम कितनी सुंदर हो! मैं तुम्हें देखने की हिम्मत नहीं कर पा रहा। जब मैं तुम्हें देखता हूँ, तो मेरा सब कुछ थम जाता है। तुम एक अजूबा हो। मुझे नहीं पता कि मुझे क्या हो गया है। तुम्हारे गाउन का किनारा, जब तुम्हारे जूते की नोक नीचे से झाँकती है, तो मुझे बेचैन कर देता है। और फिर, जब तुम ज़रा सी भी बात करती हो, तो तुम्हारी आँखों में एक जादुई चमक आ जाती है! तुम कमाल की समझदारी भरी बातें करती हो। कभी-कभी तो मुझे लगता है कि तुम एक सपना हो। बोलो, मैं सुनता हूँ, मैं तुम्हारी तारीफ़ करता हूँ। ओह कोसेट! यह कितना अजीब और कितना मनमोहक है! मैं सचमुच पागल हो गया हूँ। तुम बहुत प्यारी हो, मैडमोजेल। मैं तुम्हारे पैरों को सूक्ष्मदर्शी से और तुम्हारी आत्मा को दूरबीन से देखता हूँ।”

और कोसेट ने उत्तर दिया:—

"आज सुबह से लेकर अब तक जितना समय बीत चुका है, मेरा प्यार हर बार थोड़ा और बढ़ता जा रहा है।"

इस संवाद में प्रश्न और उत्तर अपने आप ही होते चले गए, जो हमेशा आपसी सहमति से प्रेम पर आधारित होता था, जैसे छोटी-छोटी आकृतियाँ हमेशा अपने खूंटे पर घूमती रहती हैं।

कोसेट का संपूर्ण व्यक्तित्व सरलता, रचनात्मकता, पारदर्शिता, पवित्रता, स्पष्टवादिता और प्रकाश से परिपूर्ण था। कोसेट के बारे में यह कहा जा सकता था कि वह निर्मल थीं। उन्हें देखने वालों को अप्रैल और भोर का आभास होता था। उनकी आँखों में ओस की बूंदें थीं। कोसेट मानो एक स्त्री के रूप में प्रभामंडल के प्रकाश का सार थीं।

यह स्वाभाविक था कि मारियस उसकी प्रशंसा करे, क्योंकि वह उससे प्रेम करता था। लेकिन सच्चाई यह है कि मठ से निकली यह नन्ही स्कूली छात्रा अत्यंत गहरी समझ के साथ बातें करती थी और कभी-कभी तो हर तरह की सच्ची और कोमल बातें कह देती थी। उसकी वाक्पटुता ही बातचीत थी। वह कभी किसी बात में गलती नहीं करती थी और चीजों को निष्पक्ष रूप से देखती थी। वह स्त्री हृदय की कोमल भावना से महसूस करती और बोलती है, जो कभी त्रुटिहीन नहीं होती।

एक स्त्री से बेहतर कोई नहीं समझ सकता कि मधुर और गहन दोनों तरह की बातें कैसे कही जाती हैं। मधुरता और गहनता, यही स्त्री का संपूर्ण स्वरूप है; उन्हीं में स्वर्ग समाहित है।

इस परम आनंद में भी, हर पल उनकी आँखों में आँसू भर आते थे। एक कुचली हुई लेडीबग, घोंसले से गिरा एक पंख, काँटे की टूटी हुई शाखा, सब कुछ उनके मन में दया जगा देता था, और उदासी से मधुरता से मिश्रित उनका परमानंद मानो रोने के अलावा और कुछ नहीं माँगता था। प्रेम का सबसे प्रमुख लक्षण वह कोमलता है जो कभी-कभी लगभग असहनीय हो जाती है।

और इसके अलावा—ये सभी विरोधाभास प्रेम का बिजली की तरह चमकता खेल हैं—वे हंसने के शौकीन थे, वे सहजता से और एक आनंददायक स्वतंत्रता के साथ हंसते थे, और इतनी सहजता से कि कभी-कभी वे दो लड़कों की तरह लगते थे।

फिर भी, भले ही पवित्रता से सराबोर हृदयों को इसका पता न हो, प्रकृति हमेशा मौजूद रहती है और उसे भुलाया नहीं जा सकता। वह अपने क्रूर और उदात्त

उद्देश्य के साथ विद्यमान है; और आत्माओं की मासूमियत चाहे कितनी भी महान क्यों न हो, सबसे विनम्र निजी मुलाकात में भी, प्रेमियों के जोड़े को मित्रों के जोड़े से अलग करने वाली मनमोहक और रहस्यमय छाया महसूस होती है।

वे एक दूसरे को आदर्श मानते थे।

जो स्थायी और अपरिवर्तनीय है, वह निरंतर बना रहता है। लोग जीते हैं, मुस्कुराते हैं, हंसते हैं, होठों की नोक से हल्के-फुल्के चेहरे बनाते हैं, उंगलियों को आपस में फंसाते हैं, एक-दूसरे को "तू" कहकर पुकारते हैं, और यह सब शाश्वतता को नहीं रोकता।

दो प्रेमी शाम के अंधेरे में, गोधूलि बेला में, अदृश्य में, पक्षियों के बीच, गुलाबों के बीच छिप जाते हैं; वे अंधेरे में एक-दूसरे को अपने दिलों से मोहित कर लेते हैं जिन्हें वे अपनी आँखों में उड़ेल देते हैं, वे गुनगुनाते हैं, वे फुसफुसाते हैं, और इसी बीच, ग्रहों की विशाल तरंगें अनंत ब्रह्मांड को भर देती हैं।

II. पूर्ण सुख की उलझन

उनकी जिंदगी धुंधली सी थी, वे अपनी खुशी से डरे हुए थे। उन्हें उस हैजा का पता ही नहीं चला जिसने ठीक उसी महीने पेरिस को तबाह कर दिया था। उन्होंने एक-दूसरे से जितना हो सके उतना ही भरोसा किया था, लेकिन यह सिर्फ उनके नामों तक ही सीमित था। मारियस ने कोसेट को बताया था कि वह अनाथ है, उसका नाम मारियस पोंटमर्सी है, वह वकील है, प्रकाशकों के लिए लिखकर अपना गुजारा करता है, उसके पिता कर्नल थे, एक वीर थे, और उसके अमीर दादा से उसके संबंध अच्छे नहीं थे। उसने बैरन होने का भी संकेत दिया था, लेकिन इसका कोसेट पर कोई असर नहीं हुआ। वह इस शब्द का अर्थ नहीं जानती थी। मारियस तो मारियस ही था। अपनी ओर से, उसने उसे बताया था कि उसका पालन-पोषण पेटिट-पिकपस कॉन्वेंट में हुआ था, कि उसकी माँ, उसकी अपनी माँ की तरह, मर चुकी थी, कि उसके पिता का नाम एम. फॉशेलवेंट था, कि वह बहुत अच्छे थे, कि वह गरीबों को बहुत दान देते थे, लेकिन वह स्वयं गरीब थे, और कि उन्होंने स्वयं को सब कुछ त्याग दिया था, हालांकि उन्होंने उसे किसी भी चीज से वंचित नहीं किया था।

अजीब बात है, मारियस कोसेट से मिलने की आदत पड़ने के बाद से जिस तरह के संगीत में जी रहा था, उसमें अतीत, यहाँ तक कि हाल का अतीत भी, उसके लिए इतना उलझा हुआ और दूर हो गया था कि कोसेट की कही हर बात उसे पूरी तरह संतुष्ट कर देती थी। उसे झोपड़ी में हुए रात्रि प्रसंग, थेनार्डियर, जलप्रपात और उसके पिता के अजीब रवैये और अचानक भाग जाने के बारे में बताने का ख्याल तक नहीं आया। मारियस क्षण भर के लिए यह सब भूल गया था; शाम को उसे यह भी याद नहीं रहता था कि सुबह भी हुई थी, उसने क्या किया था, कहाँ नाश्ता किया था, और किसने उससे बात की थी; उसके कानों में ऐसे गीत गूंज रहे थे कि वह बाकी सभी विचारों से बेखबर था; वह केवल उन्हीं पलों में जीता था जब वह कोसेट को देखता था। तब, जैसे वह स्वर्ग में होता था, यह स्वाभाविक था कि वह धरती को भूल जाए। दोनों ही अमूर्त सुखों के अवर्णनीय बोझ को सुस्ती से ढो रहे थे। इस तरह ये नींद में चलने वाले लोग, जिन्हें प्रेमी कहा जाता है, जीते थे।

हाय! ऐसा कौन है जिसने इन सब बातों को महसूस न किया हो? आखिर एक ऐसा क्षण क्यों आता है जब व्यक्ति इस नीले आकाश से बाहर निकलता है, और उसके बाद भी जीवन क्यों चलता रहता है?

प्रेम लगभग सोच-विचार की जगह ले लेता है। प्रेम बाकी सब कुछ भुला देने की तीव्र इच्छा है। फिर, अगर आप चाहें तो जुनून के तर्क पर सवाल उठाएँ। मानव हृदय में तार्किक क्रम उतना ही अटल है जितना आकाशीय तंत्र में कोई पूर्ण ज्यामितीय आकृति। कोसेट और मारियस के लिए मारियस और कोसेट के सिवा कुछ भी अस्तित्व में नहीं था। उनके चारों ओर का ब्रह्मांड एक गड्ढे में समा गया था। वे एक सुनहरे पल में जी रहे थे। उनके आगे कुछ नहीं था, उनके पीछे कुछ नहीं था। मारियस को शायद ही कभी यह ख्याल आया हो कि कोसेट का कोई पिता भी था। उसका दिमाग चकाचौंध और सन्नाटे में डूब गया था। ये प्रेमी किस बारे में बातें कर रहे थे? हमने देखा है, फूलों के बारे में, अबाबीलों के बारे में, डूबते सूरज और उगते चाँद के बारे में, और तमाम महत्वपूर्ण चीजों के बारे में। उन्होंने एक-दूसरे को सब कुछ बताया था, सिवाय सब कुछ के। प्रेमियों का सब कुछ कुछ भी नहीं होता। लेकिन पिता, वास्तविकताएँ, वह अड्डा, बदमाश, वह रोमांच, किस उद्देश्य से? और क्या वह पूरी तरह आश्वस्त था कि यह दुःस्वप्न वास्तव में हुआ था? वे दो थे, और वे एक-दूसरे से प्रेम करते थे, और इसके अलावा कुछ भी नहीं था। और कुछ भी अस्तित्व में नहीं था। संभवतः हमारे पीछे नरक का लुप्त होना स्वर्ग के आगमन का एक अभिन्न अंग है। क्या हमने राक्षसों को देखा है? क्या वे मौजूद हैं? क्या हम भयभीत हुए हैं? क्या हमने कष्ट सहा है? अब हम नहीं जानते। इस पर एक सुनहरा बादल छाया हुआ है।

तो ये दोनों प्राणी इस प्रकार रहते थे, ऊँचे आकाश में, प्रकृति की उस सारी असंभावना के साथ; न तो निम्नतम बिंदु पर, न ही उच्चतम बिंदु पर, मनुष्य और देवदूतों के बीच, कीचड़ के ऊपर, आकाश के नीचे, बादलों में; लगभग मांस और रक्त से रहित, आत्मा और परमानंद से भरे हुए; पृथ्वी पर चलने के लिए पहले से ही बहुत उदात्त, फिर भी मानवता से इतने भरे हुए कि नीले आकाश में विलीन नहीं हो सकते, अवक्षेपित होने की प्रतीक्षा कर रहे परमाणुओं की तरह निलंबित; स्पष्ट रूप से नियति की सीमाओं से परे; उस मार्ग से अनभिज्ञ; कल, आज, कल; विस्मित, आनंदित, तैरते हुए, उड़ते हुए; कभी-कभी इतने हल्के कि वे

अनंत में उड़ान भर सकते थे; लगभग शाश्वतता में उड़ने के लिए तैयार। वे इस प्रकार मीठी लोरी में डूबे हुए, पूरी तरह जागते हुए सोते थे। ओह! आदर्श से अभिभूत वास्तविकता की शानदार सुस्ती!

कभी-कभी, कोसेट कितनी भी खूबसूरत क्यों न हो, मारियस उसकी मौजूदगी में अपनी आँखें बंद कर लेता था। आत्मा को देखने का सबसे अच्छा तरीका बंद आँखों से ही होता है।

मारियस और कोसेट ने कभी खुद से यह नहीं पूछा कि यह उन्हें कहाँ ले जाएगा। उन्होंने मान लिया कि वे पहले ही मंजिल पर पहुँच चुके हैं। प्रेम से किसी परिणाम की कामना करना मनुष्य की ओर से एक अजीब दावा है।

III. छाया का आरंभ

जीन वाल्जेन को जरा भी संदेह नहीं हुआ।

कोसेट, जो मारियस की तुलना में कम स्वप्निल थी, खुशमिजाज थी, और यही जीन वालजेन की खुशी के लिए काफी था। कोसेट के मन में बसे विचार, उसकी कोमल भावनाएँ, उसके हृदय में बसी मारियस की छवि, उसके सुंदर, पवित्र और मुस्कुराते माथे की अतुलनीय पवित्रता को जरा भी कम नहीं करती थी। वह उस उम्र में थी जब कुंवारी कन्या अपने प्रेम को उसी प्रकार धारण करती है जैसे देवदूत अपने लिली को। इसलिए जीन वालजेन निश्चिंत थे। और फिर, जब दो प्रेमी एक-दूसरे को समझ लेते हैं, तो सब कुछ हमेशा अच्छा ही होता है; उनके प्रेम में बाधा डालने वाले तीसरे व्यक्ति को कुछ सीमित सावधानियों द्वारा पूरी तरह से अनदेखा कर दिया जाता है, जो सभी प्रेमियों के मामले में हमेशा एक जैसी होती हैं। इस प्रकार, कोसेट ने जीन वालजेन के किसी भी प्रस्ताव पर कभी आपत्ति नहीं जताई। क्या वह टहलने जाना चाहती थी? "हाँ, प्यारे छोटे पिता।" क्या वह घर पर रहना चाहती थी? बहुत अच्छा। क्या वह कोसेट के साथ शाम बिताना चाहते थे? वह बहुत खुश हुई। चूंकि मारियस हमेशा रात दस बजे सो जाता था, इसलिए ऐसे मौकों पर वह उस समय के बाद ही बगीचे में आता था। तभी सड़क से उसे कोसेट के बरामदे का लंबा कांच का दरवाजा खोलने की आवाज़ सुनाई देती थी। ज़ाहिर है, दिन के समय मारियस से कोई नहीं मिलता था। जीन वालजेन को तो यह ख्याल भी नहीं आता था कि मारियस कभी अस्तित्व में भी है। बस एक बार, एक सुबह, उसने गलती से कोसेट से कहा: "अरे, तुम्हारी पीठ पर तो सफेदी लगी है!" पिछली शाम, मारियस ने गुस्से में आकर कोसेट को दीवार से धक्का दे दिया था।

जल्दी सोने वाली बूढ़ी टूसेंट को अपनी नींद के अलावा और कुछ नहीं सूझता था, और वह इस पूरे मामले से उतनी ही अनभिज्ञ थी जितनी कि जीन वालजेन।

मारियस कभी घर में कदम नहीं रखता था। जब वह कोसेट के साथ होता, तो वे सीढ़ियों के पास एक कोने में छिप जाते, ताकि गली से उन्हें कोई देख या सुन न सके। वे वहीं बैठे रहते और पेड़ों की शाखाओं को निहारते हुए अक्सर एक-दूसरे का हाथ बीस बार छूकर ही बातचीत करते रहते। ऐसे समय में, अगर बिजली भी

उनसे तीस कदम दूर गिरती, तो भी उन्हें पता नहीं चलता, क्योंकि वे अपने विचारों में इतने मग्न रहते थे कि एक दूसरे के विचारों में खो जाता था।

निर्मल पवित्रता। पल पूरी तरह सफेद; लगभग सभी एक जैसे। इस प्रकार का प्रेम कमल की पंखुड़ियों और कबूतर के पंखों की याद दिलाता है।

उनके और सड़क के बीच पूरा बगीचा फैला हुआ था। मारियस जब भी अंदर आता-जाता, वह गेट की कुंडी को इस तरह सावधानीपूर्वक समायोजित करता था कि उसमें कोई बदलाव दिखाई न दे।

वह आम तौर पर आधी रात के आसपास चला जाता था और कौरफेयरैक के कमरे में लौट आता था। कौरफेयरैक ने बहोरल से कहा:—

“क्या आप विश्वास करेंगे? मारियस आजकल सुबह एक बजे घर आता है।”

बहोरेल ने उत्तर दिया:—

“आप और क्या उम्मीद करते हैं? सेमिनरी के साथियों में हमेशा कोई न कोई कमी रह ही जाती है।”

कभी-कभी, कौरफेयरैक अपनी बाहें मोड़ लेता, गंभीर मुद्रा अपना लेता और मारियस से कहता:—

“तुम्हारी आदतें अनियमित होती जा रही हैं, नौजवान।”

कॉर्फेयरैक एक व्यावहारिक व्यक्ति होने के नाते, मारियस द्वारा एक अदृश्य स्वर्ग की इस कल्पना को सहज रूप से स्वीकार नहीं करते थे; उन्हें अपनी भावनाओं को छुपाने की आदत नहीं थी; इससे वे अधीर हो जाते थे, और समय-समय पर मारियस से वास्तविकता में लौटने का आग्रह करते थे।

एक सुबह उसने उसे यह चेतावनी दी:—

“मेरे प्यारे दोस्त, तुम मुझ पर ऐसा प्रभाव डालते हो मानो मैं चाँद पर, सपनों के लोक में, भ्रमों के प्रांत में, पूंजी में, साबुन के बुलबुले में स्थित हूँ। आओ, अच्छे बच्चे बनो, उसका नाम क्या है?”

लेकिन मारियस को बोलने के लिए कोई भी बात उसे मना नहीं सकती थी। उस अवर्णनीय नाम, कोसेट, के दो पवित्र अक्षरों में से एक को भी बोलने से पहले वे उसके नाखून नोच सकते थे। सच्चा प्यार भोर की तरह प्रकाशमान और कब्र की

तरह शांत होता है। लेकिन, कौरफेयरैक ने मारियस में यह बदलाव देखा कि उसकी चुप्पी एक चमकती हुई सी थी।

मई के इस मधुर महीने के दौरान, मारियस और कोसेट ने इन असीम आनंदों को जानना सीखा। बहस करना और "तू" के स्थान पर "तुम" कहना, ताकि वे बाद में "तू" को बेहतर ढंग से कह सकें। उन लोगों के बारे में बहुत छोटी-छोटी बातों पर विस्तार से चर्चा करना जिनमें उन्हें दुनिया में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी; यह एक और प्रमाण है कि प्रेम नामक उस मनमोहक ओपेरा में, गीत की रचना का लगभग कोई महत्व नहीं होता;

मारियस के लिए, कोसेट को गहनों के बारे में चर्चा करते हुए सुनना;

कोसेट के लिए, मारियस को राजनीति पर बात करते हुए सुनना;

घुटने से घुटना सटाकर, रू डे बैबिलोन पर चलती गाड़ियों की आवाज़ सुनना;

अंतरिक्ष में एक ही ग्रह को निहारना, या घास में चमकते हुए एक ही जुगनू को निहारना;

आपस में चुप रहना; बातचीत से भी कहीं अधिक आनंददायक;

आदि आदि।

इसी बीच, कई जटिलताएं सामने आने लगीं।

एक शाम, मारियस बुलेवार्ड डेस इनवैलिड्स से होते हुए अपनी मुलाकात की जगह जा रहा था। वह हमेशा की तरह सिर झुकाए चलता था। जैसे ही वह रू प्लूमेट के कोने पर मुड़ने वाला था, उसने अपने काफी करीब किसी को कहते सुना:—

"शुभ संध्या, महाशय मारियस।"

उसने अपना सिर उठाया और एपोनिन को पहचान लिया।

इसका उस पर एक अनूठा प्रभाव पड़ा। जिस दिन वह उसे र्यू प्लूमेट ले गई थी, उस दिन के बाद से उसने उस लड़की के बारे में एक बार भी नहीं सोचा था, उसने उसे दोबारा नहीं देखा था, और वह उसके मन से पूरी तरह निकल चुकी थी। उसके मन में उसके प्रति कृतज्ञता के सिवा कोई कारण नहीं था, उसकी खुशी उसी की देन थी, फिर भी, उससे मिलना उसके लिए शर्मिंदगी भरा था।

यह सोचना गलत है कि जब जुनून शुद्ध और आनंदमय होता है, तो वह मनुष्य को पूर्णता की अवस्था तक ले जाता है; जैसा कि हमने देखा है, यह उसे केवल विस्मृति की अवस्था में ले जाता है। इस स्थिति में, मनुष्य बुराई करना भूल जाता है, लेकिन वह अच्छाई करना भी भूल जाता है। कृतज्ञता, कर्तव्य, याद रखने योग्य आवश्यक और महत्वपूर्ण बातें, सब लुप्त हो जाती हैं। किसी और समय में, मारियस का व्यवहार एपोनाइन से बिल्कुल अलग होता। कोसेट में लीन, उसने यह भी स्पष्ट रूप से नहीं सोचा था कि इस एपोनाइन का नाम एपोनाइन थेनार्डियर है, और उसका नाम उसके पिता की वसीयत में लिखा है, वह नाम जिसके लिए कुछ ही महीने पहले वह इतनी शिद्दत से खुद को कुर्बान कर देता। हम मारियस को उसके वास्तविक स्वरूप में दिखाते हैं। उसके प्रेम की चमक में उसके पिता स्वयं भी कुछ हद तक उसकी आत्मा से मिटते जा रहे थे।

उन्होंने कुछ शर्मिंदगी के साथ उत्तर दिया:—

“अरे! तो तुम हो, एपोनाइन?”

“तुम मुझे ‘तुम’ क्यों कहते हो? क्या मैंने तुम्हारा कुछ बिगाड़ा है?”

“नहीं,” उसने उत्तर दिया।

निश्चित रूप से, उसके मन में उसके प्रति कोई द्वेष नहीं था। बिलकुल भी नहीं। बस, उसे लगा कि अब जब उसने कोसेट के लिए "तू" शब्द का प्रयोग कर लिया है, तो उसके पास एपोनिन के लिए "तुम" कहने के अलावा कोई चारा नहीं है।

जब वह चुप रहा, तो उसने हैरानी से कहा:—

“कहिए—”

फिर वह रुक गई। ऐसा लगा मानो शब्द उस प्राणी का साथ छोड़ रहे हों जो पहले इतनी बेपरवाह और साहसी थी। उसने मुस्कुराने की कोशिश की लेकिन मुस्कुरा नहीं पाई। फिर उसने बोलना शुरू किया:—

"कुंआ?"

फिर वह दोबारा रुक गई और नजरें नीचे झुकाए खड़ी रही।

“शुभ संध्या, श्री मारियस,” उसने अचानक और कठोर स्वर में कहा; और वह चली गई।

IV. एक टैक्सी अंग्रेज़ी में चलती है और बोलचाल की भाषा में भौंकती है।

अगले दिन, 3 जून, 1832 था। इस तारीख का उल्लेख करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि उस समय पेरिस के क्षितिज पर बिजली कड़कते बादलों की तरह गंभीर घटनाएँ मंडरा रही थीं। सूर्यास्त के समय मारियस पिछली शाम की तरह उसी रास्ते पर उसी खुशी के भाव के साथ चल रहा था, तभी उसकी नज़र बुलेवार्ड के पेड़ों के बीच से आती हुई एपोनिन पर पड़ी। लगातार दो दिन—यह बहुत ज़्यादा था। वह झट से एक तरफ मुड़ा, बुलेवार्ड छोड़कर अपना रास्ता बदला और रू मॉन्सियर से होते हुए रू प्लूमेट की ओर चल पड़ा।

इस वजह से एपोनिन ने उसका पीछा करते हुए रू प्लूमेट तक गई, जो उसने पहले कभी नहीं किया था। उस समय तक, वह उससे मिलने की कोशिश किए बिना, बुलेवार्ड पर उसके आने-जाने को देखकर ही संतुष्ट रहती थी। उसने उससे बात करने का प्रयास केवल पिछली शाम को ही किया था।

इसलिए एपोनिन ने बिना उसे शक हुए उसका पीछा किया। उसने उसे बार को हटाकर बगीचे में जाते हुए देखा।

वह रेलिंग के पास पहुंची, एक-एक करके सलाखों को महसूस किया और तुरंत उस सलाख को पहचान लिया जिसे मारियस ने हटाया था।

उसने धीमी और उदास स्वर में कहा:

“ऐसा बिल्कुल नहीं, लिसेट!”

वह बार के ठीक बगल में, रेलिंग के सहारे पर बैठ गई, मानो उसकी रखवाली कर रही हो। ठीक उसी जगह पर जहाँ रेलिंग बगल वाली दीवार से मिलती थी। वहाँ एक धुंधला सा कोना था, जिसमें एपोनिन पूरी तरह छिपी हुई थी।

वह एक घंटे से अधिक समय तक इसी प्रकार बिना हिले-डुले, बिना सांस लिए, अपने विचारों की वश में पड़ी रही।

शाम के लगभग दस बजे, रू प्लूमेट से गुज़र रहे दो-तीन लोगों में से एक, एक बूढ़ा, अधेड़ उम्र का बुर्जुआ जो इस बदनाम सुनसान जगह से जल्दी से भाग रहा था, जैसे ही वह बगीचे की रेलिंग के किनारे से होते हुए दीवार के कोने पर पहुँचा, उसने एक धीमी और धमकी भरी आवाज़ सुनी:—
मुझे अब इस बात पर आश्चर्य नहीं होता कि वह हर शाम यहां आता है।
राहगीर ने चारों ओर नज़र घुमाई, कोई नहीं दिखा, अंधेरे कोने में झाँकने की हिम्मत नहीं की और बहुत घबरा गया। उसने अपनी चाल और तेज़ कर दी।
इस राहगीर के पास जल्दी करने का कारण था, क्योंकि कुछ ही क्षणों बाद, छह आदमी, जो दीवार के साथ-साथ अलग-अलग और एक दूसरे से कुछ दूरी पर मार्च कर रहे थे, और जिन्हें देखकर ऐसा लग रहा था कि वे पुलिस की गश्ती दल हैं, रू प्लूमेट में प्रवेश कर गए।
बगीचे की रेलिंग पर सबसे पहले पहुंचने वाला व्यक्ति रुक गया और बाकी लोगों का इंतजार करने लगा; एक सेकंड बाद, सभी छह लोग फिर से मिल गए।
ये लोग धीमी आवाज में बात करने लगे।
उनमें से एक ने कहा, "यही वह जगह है।"
“क्या बगीचे में कोई कैब है?” दूसरे ने पूछा।
मुझे नहीं पता। खैर, मैं एक गेंद ले आया हूँ जिसे हम उसे खिलाएंगे।
"क्या आपके पास शीशा तोड़ने के लिए कुछ पुट्टी है?"
"हाँ।"
"रेलिंग पुरानी है," पांचवें व्यक्ति ने बीच में कहा, जिसकी आवाज कठपुतली कलाकार जैसी थी।
“तो और भी अच्छा,” दूसरे वक्ता ने कहा। “यह आरी के नीचे चीखेगा नहीं, और इसे काटना भी मुश्किल नहीं होगा।”
छठा व्यक्ति, जिसने अभी तक अपने होंठ नहीं खोले थे, अब द्वार का निरीक्षण करने लगा, जैसा कि एक घंटे पहले एपोनाइन ने किया था, एक-एक करके प्रत्येक छड़ को पकड़कर और उन्हें सावधानीपूर्वक हिलाकर।

इस प्रकार वह उस छड़ तक पहुँचा जिसे मारियस ने ढीला कर दिया था। जैसे ही वह उस छड़ को पकड़ने ही वाला था, अचानक अंधेरे से एक हाथ निकला और उसकी बांह पर पड़ा; उसने महसूस किया कि उसकी छाती के बीचोंबीच ज़ोर से धक्का दिया गया है, और एक कर्कश आवाज़ ने उससे कहा, लेकिन ज़ोर से नहीं:—

"वहाँ एक कुत्ता है।"

उसी क्षण, उसने अपने सामने एक पीली पड़ी हुई लड़की को खड़े देखा।

उस व्यक्ति को वही सदमा लगा जो अप्रत्याशित घटना से हमेशा लगता है। वह भयानक ढंग से अकड़ गया; बेचैन और हिंसक जानवरों को देखना इतना भयावह होता है कि उनके चेहरे पर डर का भाव आ जाता है।

वह पीछे हट गया और हकलाते हुए बोला:—

“यह कौन सा जेड पत्थर है?”

"अपनी बेटी।"

दरअसल, एपोनिन ने ही थेनार्डियर को संबोधित किया था।

एपोनाइन के प्रकट होने पर, अन्य पांच, अर्थात् क्लैकसस, गुएलेमर, बैबेट, ब्रुजोन और मोंटपार्नास, बिना किसी शोर के, बिना जल्दबाजी किए, बिना एक शब्द बोले, रात के इन लोगों की विशिष्ट भयावह धीमी गति के साथ पास आ गए थे।

उनके हाथों में कुछ अवर्णनीय लेकिन भयानक औजार दिखाई दे रहे थे। गुएलेमर के हाथ में घुमावदार चिमटों का एक जोड़ा था जिसे घुसपैठिए फैंचोन कहते हैं।

“अरे, देखो यहाँ, तुम वहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हें हमसे क्या चाहिए? क्या तुम पागल हो गए हो?” थेनार्डियर ने जितना जोर से चिल्लाया जा सकता था, उतना जोर से चिल्लाते हुए कहा, “तुम यहाँ हमारे काम में बाधा डालने क्यों आए हो?”

एपोनाइन जोर से हंस पड़ी और उसकी गर्दन पर गिर पड़ी।

“मैं यहाँ हूँ, नन्हे पिता, क्योंकि मैं यहाँ हूँ। क्या आजकल पत्थरों पर बैठना मना है? तुम्हें यहाँ नहीं होना चाहिए। तुम यहाँ किसलिए आए हो, क्योंकि ये तो बस एक बिस्किट है? मैंने मैग्नन को बताया था। यहाँ कुछ नहीं

किया जा सकता। लेकिन मुझे गले लगा लो , मेरे प्यारे नन्हे पिता ! तुम्हें देखे हुए बहुत समय हो गया ! तो तुम बाहर हो ?”

थेनार्डियर ने एपोनाइन की बाहों से खुद को छुड़ाने की कोशिश की और बड़बड़ाया :—

“अच्छा है। तुमने मुझे स्वीकार कर लिया। हाँ , मैं बाहर हूँ। मैं अंदर नहीं हूँ। अब तुम यहाँ से चले जाओ। ”

लेकिन एपोनाइन ने अपनी पकड़ नहीं छोड़ी और अपने स्पर्श को और भी तेज कर दिया।

“लेकिन तुमने ये कैसे किया , नन्हे पापा ? तुम उस मुसीबत से निकलने में बहुत होशियार रहे होगे। मुझे बताओ ! और मेरी माँ ? माँ कहाँ है ? मुझे माँ के बारे में बताओ। ”

थेनार्डियर ने उत्तर दिया :—

“वह ठीक है। मुझे नहीं पता , मुझे अकेला छोड़ दो और तुम जाओ , मैं तुमसे कहता हूँ। ”

"मैं नहीं जाऊंगी , तो अब बस करो ," एपोनिन ने एक बिगड़े हुए बच्चे की तरह मुंह बनाते हुए कहा ; "तुम मुझे विदा कर रहे हो , और तुम्हें देखे हुए चार महीने हो गए हैं , और मुझे तुम्हें चूमने का भी मुश्किल से समय मिला है। "

और उसने एक बार फिर अपने पिता की गर्दन पकड़ ली।

“अरे , ये तो बेवकूफी है !” बैबेट ने कहा।

“जल्दी करो !” गुएलेमर ने कहा , “पुलिस यहाँ से गुजर सकती है। ”

कठपुतली कलाकार की आवाज ने अपने दोहे को दोहराया :—

□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□, □□□□□-□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□

एपोनाइन ने उन पांच बदमाशों की ओर रुख किया।

“अरे , मैं तो श्रीमान ब्रुजोन हूँ। नमस्कार श्रीमान बैबेट। नमस्कार श्रीमान क्लैकसस। क्या आप मुझे नहीं जानते , श्रीमान गुएलेमर ? मोंटपार्नास में क्या हालचाल है ?”

“हाँ, वे तुम्हें जानते हैं!” थेनार्डियर ने कहा। “लेकिन शुभ दिन, शुभ संध्या, यहाँ से चले जाओ! हमें अकेला छोड़ दो!”
"यह लोमड़ियों का समय है, मुर्गियों का नहीं," मोंटपार्नास ने कहा।
"आप देख सकते हैं कि हमारे सामने क्या काम है," बैबेट ने आगे कहा।
एपोनाइन ने मोंटपार्नास का हाथ पकड़ लिया।
“सावधान रहना,” उसने कहा, “तुम्हें चोट लग सकती है, मेरे पास चाकू खुला है।” “मेरी प्यारी मोंटपार्नास,” एपोनिन ने बड़ी नरमी से जवाब दिया, “आपको लोगों पर भरोसा रखना चाहिए। शायद मैं अपने पिता की बेटी हूँ। श्रीमान बैबेट, श्रीमान गुएलेमर, मुझे ही इस मामले की जांच करने का जिम्मा सौंपा गया है।”
यह उल्लेखनीय है कि एपोनाइन बोलचाल की भाषा नहीं बोलती थी। मारियस से मिलने के बाद से वह भयानक भाषा उसके लिए बोलना असंभव हो गया था।
उसने अपने छोटे, पतले और कंकाल जैसे कमजोर हाथ से गुएलेमर की विशाल, खुरदरी उंगलियों को दबाया और आगे कहा:—
“आप भली-भांति जानते हैं कि मैं मूर्ख नहीं हूँ। आमतौर पर लोग मेरी बात पर विश्वास करते हैं। मैंने कई मौकों पर आपकी सेवा की है। मैंने छानबीन की है; आप लोग व्यर्थ ही ऐसा करेंगे। मैं आपको शपथ दिलाता हूँ कि इस घर में कुछ भी नहीं है।”
"वहाँ अकेली महिलाएं हैं," गुएलेमर ने कहा।
“नहीं, वे लोग चले गए हैं।”
“मोमबत्तियाँ तो नहीं जली हैं!” बैबेट ने हैरानी से कहा।
और उसने पेड़ों की चोटियों के पार, एपोनिन को मंडप की मेहराबदार छत में घूमती हुई एक रोशनी की ओर इशारा किया। वह टूसेंट था, जो कुछ कपड़े सुखाने के लिए रात भर जागा हुआ था।
एपोनाइन ने अंतिम प्रयास किया।
“खैर,” उसने कहा, “वे बहुत गरीब लोग हैं, और यह एक झोपड़ी है जहाँ एक पैसा भी नहीं है।”

“भाड़ में जाओ!” थेनार्डियर चिल्लाया। “जब हम घर को उलट-पुलट कर देंगे और तहखाने को ऊपर और अटारी को नीचे कर देंगे, तब हम तुम्हें बताएंगे कि अंदर क्या है, और चाहे वह फ्रैंक हो, सू हो या आधा फ़ार्थिंग।”
और उसने अंदर जाने के इरादे से उसे एक तरफ धकेल दिया।
“मेरे प्रिय मित्र, श्री मोंटपार्नास,” एपोनिन ने कहा, “मैं आपसे विनती करती हूँ, आप एक अच्छे इंसान हैं, कृपया अंदर न जाएँ।”
"सावधान रहो, कहीं तुम्हें चोट न लग जाए," मोंटपार्नास ने जवाब दिया। थेनार्डियर ने अपने दृढ़ स्वर में बोलना जारी रखा:—
"चली जाओ, मेरी बच्ची, और पुरुषों को उनके हाल पर छोड़ दो!"
एपोनाइन ने मोंटपार्नास का हाथ, जिसे उसने फिर से पकड़ लिया था, छोड़ दिया और कहा:—
तो आपका इरादा इस घर में प्रवेश करने का है?
“बिल्कुल!” वेंट्रिलोक्विस्ट ने मुस्कुराते हुए कहा।
फिर उसने द्वार से पीठ टिकाई, हथियारों से लैस उन छह बदमाशों का सामना किया, जिन्हें रात ने राक्षसों का रूप दे दिया था, और दृढ़, धीमी आवाज में कहा:—
"ठीक है, मेरा मतलब यह नहीं है कि आपको ऐसा करना चाहिए।"
वे अचंभे से रुक गए। हालाँकि, वेंट्रिलोक्विस्ट ने अपनी मुस्कान बरकरार रखी। वह आगे बोली:—
“दोस्तों! ध्यान से सुनो। यह वह नहीं है जो तुम चाहते हो। अब मैं बोल रहा हूँ। पहली बात तो यह है कि अगर तुम इस बगीचे में दाखिल हुए, अगर तुमने इस गेट को छुआ, तो मैं चिल्लाऊंगा, मैं दरवाजा पीटूंगा, मैं सबको जगा दूंगा, मैं तुम छहों को पकड़वा दूंगा, मैं पुलिस को बुलाऊंगा।”
"वह भी ऐसा ही करती," थेनार्डियर ने धीमी आवाज़ में ब्रुजोन और वेंट्रिलोक्विस्ट से कहा।
उसने सिर हिलाया और आगे कहा:—

“मेरे पिता से शुरू करते हुए!”
थेनार्डियर और करीब आ गया।
“इतने करीब मत आओ, मेरे भले आदमी!” उसने कहा।
वह दांत पीसते हुए पीछे हट गया:
"अरे, उसे क्या हुआ है?"
और उन्होंने आगे कहा:—
“कुतिया!”
वह भयानक ढंग से हंसने लगी:
“जैसी मर्ज़ी, लेकिन तुम यहाँ प्रवेश नहीं करोगे। मैं कुत्ते की बेटी नहीं हूँ, क्योंकि मैं भेड़िये की बेटी हूँ। तुम छह हो, इससे मुझे क्या फर्क पड़ता है? तुम मर्द हो। खैर, मैं औरत हूँ। तुम मुझे डरा नहीं सकते। मैं तुमसे कहती हूँ कि तुम इस घर में प्रवेश नहीं करोगे, क्योंकि यह मुझे पसंद नहीं है। अगर तुम पास आए, तो मैं भौंकूँगी। मैंने तुमसे कहा था, मैं कुतिया हूँ, और मुझे तुम्हारी ज़रा भी परवाह नहीं है। जाओ, मुझे बोर करते हो! जहाँ चाहो जाओ, लेकिन यहाँ मत आना, मैं मना करती हूँ! तुम अपने चाकू इस्तेमाल कर सकते हो। मैं लातों का इस्तेमाल करूँगी; मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, आओ!” वह बदमाशों के और करीब एक कदम आगे बढ़ी, वह भयानक थी, वह फूट-फूट कर हंस पड़ी:—
“पार्डिन! मुझे डर नहीं लगता। इस गर्मी में मुझे भूख लगेगी और इस सर्दी में मुझे ठंड लगेगी। ये मूर्ख पुरुष कितने हास्यास्पद हैं, जो सोचते हैं कि वे एक लड़की को डरा सकते हैं! क्या! डराना? अरे हाँ, बहुत! क्योंकि तुम्हारे पास ऐसी नखरेबाज़ रखैलें हैं जो तुम्हारे ऊँची आवाज़ में बोलने पर बिस्तर के नीचे छिप जाती हैं! मुझे किसी चीज़ से डर नहीं लगता, बिल्कुल नहीं!” उसने थेनार्डियर पर अपनी पैनी निगाहें टिका दीं और कहा:—
“पिताजी, आपसे भी नहीं!”
फिर उसने अपनी रक्तरंजित, प्रेत जैसी आँखों से बारी-बारी से उन बदमाशों को देखते हुए आगे कहा:

मुझे क्या फर्क पड़ता है अगर कल सुबह मुझे रू प्लूमेट के फुटपाथ पर मेरे पिता के डंडे के वार से मरा हुआ पाया जाए, या एक साल बाद सेंट-क्लाउड या आइल ऑफ स्वान्स में सड़े हुए पुराने कॉर्क और डूबे हुए कुत्तों के बीच जाल में फंसा हुआ पाया जाए?
उसे रुकने के लिए मजबूर होना पड़ा; उसे सूखी खांसी का दौरा पड़ा, उसकी कमजोर और संकरी छाती से सांसें मौत की घुरघुराहट की तरह निकल रही थीं। उसने आगे कहा:—
मुझे बस चिल्लाना है, और लोग आ जाएंगे, और फिर थप्पड़, धमाका! तुम छह लोग हो; मैं पूरी दुनिया का प्रतिनिधित्व करता हूँ।
थेनार्डियर उसकी ओर बढ़ा।
“पास मत आओ!” वह चिल्लाई।
वह रुका और धीरे से बोला:—
“अच्छा, नहीं; मैं पास नहीं आऊँगी, लेकिन इतनी ज़ोर से मत बोलो। तो क्या तुम हमारे काम में बाधा डालना चाहती हो, मेरी बेटी? लेकिन हमें अपनी रोजी-रोटी तो कमानी ही है। क्या तुम्हारे मन में अपने पिता के लिए अब कोई दया भाव नहीं बचा है?”
“तुम मुझे परेशान करते हो,” एपोनिन ने कहा।
लेकिन हमें जीना है, हमें खाना है—”
"फोड़ना!"
इतना कहकर वह बाड़ के आधार पर बैठ गई और गुनगुनाने लगी:—
मेरी मोटी बांह, मेरी सुडौल टांग, और बर्बाद हुआ समय।
उसने अपनी कोहनी घुटने पर और ठुड्डी हाथ में टिका रखी थी, और बेपरवाही से अपना पैर हिला रही थी। उसके फटे हुए गाउन से उसकी पतली कंधे की हड्डियाँ दिखाई दे रही थीं। पास की स्ट्रीट लैंप की रोशनी उसके चेहरे और हावभाव पर पड़ रही थी। इससे अधिक दृढ़ और आश्चर्यजनक कुछ भी नहीं देखा जा सकता था।

एक लड़की द्वारा रोके जाने पर अवाक और उदास छह बदमाश लालटेन की छाया के नीचे चले गए, और गुस्से और अपमान से भरे कंधों को उचकाते हुए आपस में सलाह मशवरा करने लगे।

इसी बीच वह गंभीर लेकिन शांत भाव से उन्हें देखती रही।

“उसमें कुछ गड़बड़ है,” बैबेट ने कहा। “कोई वजह तो होगी। क्या उसे कुत्ते से प्यार हो गया है? खैर, इसे गंवाना तो दुख की बात होगी। दो औरतें, एक बूढ़ा आदमी जो पिछवाड़े में रहता है, और खिड़कियों पर लगे पर्दे जो कुछ खास बुरे नहीं हैं। वह बूढ़ा आदमी ज़रूर यहूदी होगा। मुझे लगता है कि नौकरी बढ़िया है।”

“ठीक है, तो फिर तुम सब अंदर जाओ,” मोंटपार्नास ने कहा। “अपना काम करो। मैं इस लड़की के साथ यहीं रहूंगा, और अगर वह हमें धोखा देती है—”

उसने लालटेन की रोशनी में अपने हाथ में पकड़ी हुई खुली हुई चाकू को चमकाया।

थेनार्डियर ने एक शब्द भी नहीं कहा, और ऐसा लग रहा था कि वह बाकी लोगों की इच्छा के अनुसार कुछ भी स्वीकार करने के लिए तैयार था।

ब्रुजोन, जो एक तरह से भविष्यवक्ता थे और जिन्होंने, जैसा कि पाठक जानते हैं, "यह काम सौंपा था", अभी तक कुछ नहीं बोले थे। वे विचारशील प्रतीत हो रहे थे। उनकी यह प्रतिष्ठा थी कि वे किसी भी काम पर टिकते नहीं थे, और यह ज्ञात था कि उन्होंने केवल साहस दिखाने के लिए एक पुलिस चौकी को लूट लिया था। इसके अलावा, वे कविताएँ और गीत रचते थे, जिससे उन्हें काफी प्रभाव प्राप्त होता था।

बैबेट ने उससे पूछताछ की:—

“तुम कुछ नहीं कहते, ब्रुजोन?”

ब्रुजोन एक पल के लिए चुप रहा, फिर उसने अलग-अलग तरह से अपना सिर हिलाया, और अंत में बोलना समाप्त किया:—

“देखो यहाँ; आज सुबह मैंने दो गौरैयों को लड़ते देखा, आज शाम मैंने एक झगड़ा कर रही महिला को धक्का दिया। ये सब बुरा है। चलो इसे बंद करते हैं।”

वे चले गए।

जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, मोंटपार्नास बुदबुदाया :—

"छोड़ो कोई बात नहीं! अगर वे चाहते तो मैं उसका गला काट देता।"

बैबेट ने जवाब दिया :—

“मैं ऐसा नहीं करूंगा। मैं किसी महिला पर हाथ नहीं उठाता।”

गली के कोने पर वे रुके और धीमी आवाज़ में रहस्यमय ढंग से आपस में बातचीत करने लगे :—

आज रात हम कहाँ सोएंगे?

“अंडर पैंटिन।”[73]

"क्या आपके पास द्वार की चाबी है, थेनार्डियर?"

"बत्तख।"

एपोनिन, जिसने अपनी निगाहें उन पर से नहीं हटाईं, ने उन्हें उसी रास्ते से लौटते देखा जिससे वे आए थे। वह उठी और दीवारों और घरों के सहारे रेंगते हुए उनके पीछे चलने लगी। वह इस तरह उनका पीछा करते हुए बुलेवार्ड तक पहुँच गई।

वहाँ वे अलग हो गए, और उसने उन छह आदमियों को अंधकार में डूबते हुए देखा, जहाँ वे मानो गायब हो गए।

V. रात की चीज़ें

बदमाशों के चले जाने के बाद, रू प्लूमेट ने अपना शांत, रात्रिकालीन रूप फिर से धारण कर लिया। इस गली में जो कुछ हुआ था, वह किसी जंगल को भी आश्चर्यचकित नहीं करता। ऊँचे-ऊँचे पेड़, झाड़ियाँ, बंजर ज़मीनें, आपस में उलझी शाखाएँ, लंबी घास, सब एक उदास माहौल में मौजूद हैं; वहाँ मंडराते जंगली जीव अदृश्य के अचानक दर्शन पाते हैं; जो मनुष्य से नीचे है, वह धुंध के बीच से मनुष्य से परे की चीज़ों को पहचानता है; और जिन चीज़ों से हम सजीव प्राणी अनभिज्ञ हैं, वे वहाँ रात में आमने-सामने आती हैं। प्रकृति, उग्र और जंगली, कुछ ऐसी चीज़ों से डर जाती है जिनमें उसे लगता है कि वह अलौकिक शक्ति का अनुभव कर रही है। अंधकार की शक्तियाँ एक-दूसरे को जानती हैं, और अजीब तरह से एक-दूसरे को संतुलित करती हैं। दाँत और पंजे उससे डरते हैं जिसे वे पकड़ नहीं सकते। रक्त-पीड़नशील क्रूरता, प्रचंड भूख, शिकार की तलाश में तड़पती भूख, नाखूनों और जबड़ों की सशस्त्र प्रवृत्तियाँ जिनका स्रोत और लक्ष्य पेट है, कफन के नीचे भटकती हुई निर्जीव प्रेत जैसी आकृतियों को बेचैनी से घूरती और सूंघती हैं, जो अपने अस्पष्ट और कांपते हुए आवरण में खड़ी हैं और उन्हें एक मृत और भयानक जीवन जीती हुई प्रतीत होती हैं। ये क्रूरताएँ, जो केवल पदार्थ हैं, एक अज्ञात प्राणी में समाहित विशाल अंधकार से निपटने के एक भ्रमित भय को समेटे हुए हैं। मार्ग में खड़ी एक काली आकृति जंगली जानवर को रोक देती है। कब्रिस्तान से निकलने वाली चीज गुफा से निकलने वाली चीज को डराती और विचलित करती है; क्रूर भयावह से डरते हैं; भेड़िये भूत को देखकर पीछे हट जाते हैं।

VI. मारियस एक बार फिर व्यावहारिक हो जाता है और कोसेट को अपना पता दे देता है।

जब मानव चेहरे वाला यह कुत्ता द्वार की रखवाली कर रहा था, और जब छह बदमाश एक लड़की के सामने आत्मसमर्पण कर रहे थे, तब मारियस कोसेट के साथ था।

आकाश कभी इतना तारों से जगमगाता और इतना मनमोहक नहीं था, पेड़ इतने कांपते नहीं थे, घास की सुगंध इतनी मर्मस्पर्शी नहीं थी; पक्षी कभी पत्तियों के बीच इतनी मधुर ध्वनि के साथ नहीं सोए थे; सार्वभौमिक शांति के सभी सामंजस्य कभी प्रेम के आंतरिक संगीत के प्रति इतने पूर्णतः प्रतिसाद नहीं देते थे; मारियस कभी इतना मोहित, इतना खुश, इतना आनंदित नहीं हुआ था।

लेकिन उसने कोसेट को उदास पाया; कोसेट रो रही थी। उसकी आँखें लाल थीं।

यह उस अद्भुत सपने का पहला बादल था।

मारियस का पहला शब्द था: "क्या बात है?"

और उसने जवाब दिया: "यह।"

फिर वह सीढ़ियों के पास वाली बेंच पर बैठ गई, और जब वह कांपते हुए उसके बगल में बैठा, तो उसने आगे कहा:—

"आज सुबह मेरे पिता ने मुझसे कहा कि मैं तैयार रहूँ, क्योंकि उन्हें कुछ काम है और हो सकता है कि हमें यहाँ से जाना पड़े।"

मारियस सिर से पैर तक कांप रहा था।

जब कोई अपने जीवन के अंत में होता है, तो मरने का अर्थ है चले जाना; जब कोई अपने जीवन की शुरुआत में होता है, तो चले जाना ही मृत्यु है।

पिछले छह हफ्तों से, मारियस धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके, हर दिन कोसेट पर अपना अधिकार जमाता जा रहा था। जैसा कि हम पहले ही समझा चुके हैं, पहले प्यार में, शरीर से पहले आत्मा पर अधिकार हो जाता है; बाद में, शरीर पर आत्मा से पहले अधिकार हो जाता है; कभी-कभी आत्मा पर बिल्कुल भी अधिकार नहीं हो पाता; फाउब्ला और प्रुधोम कहते हैं: "क्योंकि कोई आत्मा है ही

नहीं;" लेकिन यह व्यंग्य, सौभाग्य से, ईश्वर की निंदा है। इसलिए मारियस ने कोसेट पर इस तरह अधिकार जमा लिया जैसे आत्माएं करती हैं, लेकिन उसने उसे अपनी पूरी आत्मा से घेर लिया और अविश्वसनीय दृढ़ विश्वास के साथ ईर्ष्या से उसे अपने वश में कर लिया। उसने उसकी मुस्कान, उसकी सांस, उसकी खुशबू, उसकी नीली आँखों की गहरी चमक, उसके हाथ को छूने पर उसकी त्वचा की मिठास, उसकी गर्दन पर बने आकर्षक निशान, उसके सभी विचारों पर अधिकार जमा लिया था। इसलिए, उसने कोसेट के सभी सपनों पर अधिकार जमा लिया था।

वह लगातार उसकी गर्दन के पिछले हिस्से पर उगे छोटे-छोटे बालों को निहारता रहा, और कभी-कभी अपनी साँसों से उन्हें हल्के से छू भी लेता था। वह मन ही मन कहता था कि उसके उन छोटे बालों में से एक भी बाल ऐसा नहीं है जो उसका, मारियस का न हो। वह उसके पहने हुए हर कपड़े, उसके रिबन की गांठ, उसके दस्ताने, उसकी आस्तीनें, उसके जूते, उसकी कलाई, को पवित्र वस्तुएँ समझकर उनकी पूजा करता था, मानो वह उनका स्वामी हो। वह सपने में देखता था कि वह उसके बालों में लगी उन सुंदर शंखों की कंघियों का स्वामी है, और यहाँ तक कि कामुकता से भरी अस्पष्ट और दबी हुई आवाज़ में वह मन ही मन कहता था कि उसके गाउन का एक भी रिबन, उसकी मोज़ों का एक भी जाल, उसकी चोली का एक भी तह, सब कुछ उसका है। कोसेट के पास वह खुद को अपनी ही संपत्ति, अपनी ही वस्तु, अपने ही तानाशाह और अपने ही गुलाम के पास पाता था। ऐसा लग रहा था मानो उनकी आत्माएँ इतनी आपस में घुलमिल गई थीं कि अगर वे उन्हें वापस लेना भी चाहें तो उन्हें अलग करना नामुमकिन हो जाएगा।—“यह मेरा है।” “नहीं, यह मेरा है।” “मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आप गलत हैं। यह मेरी संपत्ति है।” “जिसे आप अपना समझ रहे हैं, वह मैं ही हूँ।”—मारियस कुछ ऐसा था जिसने कोसेट का एक हिस्सा बना दिया था, और कोसेट कुछ ऐसी थी जिसने मारियस का एक हिस्सा बना दिया था। मारियस कोसेट को अपने भीतर महसूस करता था। कोसेट को पाना, कोसेट पर अधिकार करना, उसके लिए साँस लेने से अलग नहीं था। इसी आस्था, इसी मदहोशी, इसी अभूतपूर्व और पूर्ण पवित्र अधिकार, इसी प्रभुत्व के बीच ये शब्द: “हम जा रहे हैं,” अचानक एक झटके में उसके मुँह से निकले, और वास्तविकता की कठोर आवाज़ ने उससे कहा: “कोसेट तुम्हारी नहीं है!”

मारियस जाग उठा। जैसा कि हमने कहा है, छह सप्ताह से मारियस जीवन से बाहर जी रहा था; "जा रहा हूँ!" इन शब्दों ने उसे कठोर रूप से जीवन में वापस ला दिया।

उसके पास कहने के लिए एक शब्द भी नहीं था। कोसेट को बस इतना महसूस हुआ कि उसका हाथ बहुत ठंडा था। उसने भी उससे पूछा, "क्या बात है?"
उसने इतनी धीमी आवाज़ में जवाब दिया कि कोसेट को मुश्किल से ही सुनाई दिया: "आपने क्या कहा वह मेरी समझ में नहीं आया।"
उसने फिर से शुरू किया:—
"आज सुबह मेरे पिता ने मुझसे कहा कि मैं अपने सभी छोटे-मोटे काम निपटा लूँ और तैयार रहूँ, कि वे मुझे अपने कपड़े एक संदूक में रखने के लिए देंगे, कि उन्हें यात्रा पर जाना है, कि हमें निकलना है, कि मेरे लिए एक बड़ा संदूक और उनके लिए एक छोटा संदूक होना आवश्यक है, और यह कि एक सप्ताह में सब कुछ तैयार हो जाना चाहिए, और फिर हम इंग्लैंड जा सकेंगे।"
“लेकिन यह तो सरासर अन्याय है!” मारियस ने हैरानी से कहा।
यह निश्चित है कि उस समय, सत्ता का कोई दुरुपयोग, कोई हिंसा, सबसे बुरे तानाशाहों की कोई भी घिनौनी हरकत, बुसिरिस, टिबेरियस या हेनरी अष्टम का कोई भी कार्य, मारियस की राय में, इस क्रूरता के बराबर नहीं हो सकता था; एम. फॉशेलवेंट अपनी बेटी को इंग्लैंड ले गए क्योंकि उन्हें वहाँ कुछ काम था। उसने कमजोर आवाज में पूछा:—
और आप कब से शुरू करेंगे?
उन्होंने यह नहीं बताया कि कब।
और तुम कब लौटोगे?
उन्होंने यह नहीं बताया कि कब।
मारियस उठा और ठंडे स्वर में बोला:—
"कोसेट, क्या तुम चलोगी?"
कोसेट ने अपनी सुंदर आँखों से, जो पीड़ा से भरी थीं, उसकी ओर देखा और एक प्रकार की हैरानी के साथ उत्तर दिया:
"कहाँ?"
“इंग्लैंड। क्या तुम जाओगे?”

"तुम मुझे 'तुम' क्यों कहते हो?"
मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या आप जाएँगे?
“आप मुझसे क्या करने की उम्मीद करते हैं?” उसने हाथ जोड़ते हुए कहा। तो, आप जाएंगे?
अगर मेरे पिता चले गए तो।
तो, आप जाएंगे?
कोसेट ने मारियस का हाथ पकड़ा और बिना कुछ कहे उसे दबाए रखा।
“ठीक है,” मारियस ने कहा, “तो मैं कहीं और चला जाऊंगा।”
कोसेट ने इन शब्दों का अर्थ समझने की बजाय महसूस किया। उसका चेहरा इतना पीला पड़ गया कि अँधेरे में भी सफेद चमक रहा था। वह हकलाते हुए बोली:— "आपका क्या मतलब है?"
मारियस ने उसकी ओर देखा, फिर अपनी निगाहें आकाश की ओर उठाईं और उत्तर दिया: "कुछ नहीं।"
जब उसकी नजर दोबारा पड़ी, तो उसने कोसेट को अपनी ओर मुस्कुराते हुए देखा। जिस स्त्री से प्रेम किया जाता है, उसकी मुस्कान में एक अलग ही चमक होती है, यहां तक कि रात के अंधेरे में भी।
“हम कितने मूर्ख हैं! मारियस, मेरे पास एक विचार है।”
"यह क्या है?"
“अगर हम चले जाएं, तो तुम भी चलना! मैं तुम्हें बताऊंगी कहाँ! जहाँ भी मैं रहूँ, आकर मुझसे मिल लेना।”
मारियस अब पूरी तरह से जागृत हो चुका था। वह वास्तविकता में लौट आया था। उसने कोसेट से पुकार कर कहा:—
“चले जाओ यहाँ से! क्या तुम पागल हो? अरे, मुझे पैसे चाहिए, और मेरे पास तो हैं ही नहीं! इंग्लैंड जाऊँ? लेकिन मैं कर्ज़ में डूबा हुआ हूँ, पता नहीं कितने, दस लुई से भी ज़्यादा, मेरे एक दोस्त कौरफेयरैक का, जिसे तुम जानती भी नहीं! मेरे पास एक पुरानी टोपी है जिसकी कीमत तीन फ्रैंक भी नहीं है,

मेरे पास एक कोट है जिसके आगे बटन नहीं हैं, मेरी कमीज़ फटी हुई है, मेरी कोहनियाँ फटी हैं, मेरे जूतों में पानी घुस जाता है; पिछले छह हफ़्तों से मैंने इसके बारे में सोचा तक नहीं, और तुम्हें बताया भी नहीं। तुम मुझे सिर्फ़ रात में देखती हो, और मुझे अपना प्यार देती हो; अगर तुम मुझे दिन में देखती, तो मुझे एक सू देती! इंग्लैंड जा जाओ! अरे! मेरे पास पासपोर्ट के लिए भी पैसे नहीं हैं!”

वह पास ही खड़े एक पेड़ से लिपट गया, सीधा खड़ा हो गया, उसका माथा पेड़ की छाल से सटा हुआ था, उसे न तो लकड़ी की चुभन महसूस हो रही थी जो उसकी त्वचा को छील रही थी, न ही उसके कनपटी में धड़कते बुखार का एहसास हो रहा था, और वह वहीं गतिहीन खड़ा रहा, गिरने की कगार पर, निराशा की मूर्ति की तरह।

वह काफी देर तक इसी स्थिति में रहा। ऐसी गहरी खाई में कोई अनंत काल तक रह सकता था। अंत में वह मुड़ा। उसने अपने पीछे एक धीमी, दबी हुई आवाज सुनी, जो मधुर होते हुए भी उदास थी।

कोसेट सिसक रही थी।

वह मारियस के बगल में दो घंटे से अधिक समय से रो रही थी, जब वह ध्यान कर रहा था।

वह उसके पास आया, उसके घुटनों पर गिर पड़ा, और धीरे-धीरे खुद को उसके सामने झुकाकर, उसके वस्त्र के नीचे से झांक रहे उसके पैर के अंगूठे को पकड़ा और उसे चूमा।

उसने चुपचाप उसे अपनी मनमर्जी करने दी। ऐसे क्षण भी आते हैं जब एक स्त्री, एक गंभीर और शांत देवी की तरह, प्रेम के धर्म को स्वीकार कर लेती है।

उन्होंने कहा, "रोओ मत।"

उसने धीरे से कहा:—

"ऐसा तब नहीं होगा जब मैं कहीं जा रहा हूँ और तुम नहीं आ सकते!"

उन्होंने आगे कहा:—

"क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?"

उसने सिसकते हुए स्वर्ग के उस शब्द से उत्तर दिया, जो आंसुओं के बीच सबसे अधिक मनमोहक लगता है:
"मैं तुम्हें बहुत पसंद करता हूं!"
उन्होंने एक अवर्णनीय स्नेहपूर्ण स्वर में बोलना जारी रखा:
“रोओ मत। मुझे बताओ, क्या तुम मेरे लिए ऐसा करोगे और रोना बंद कर दोगे?” “क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?” उसने कहा।
उसने उसका हाथ पकड़ लिया।
“कोसेट, मैंने आज तक किसी को भी वचन नहीं दिया है, क्योंकि वचन से मुझे बहुत डर लगता है। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे पिता मेरे साथ हैं। खैर, मैं तुम्हें अपना सबसे पवित्र वचन देता हूँ कि अगर तुम चली जाओगी तो मैं मर जाऊँगा।” जिस स्वर में उसने ये शब्द कहे, उसमें एक ऐसी उदासी और शांति थी कि कोसेट कांप उठी। उसे वह सिहरन महसूस हुई जो किसी सच्ची और भयावह घटना के गुजरने पर होती है। इस सदमे से उसका रोना बंद हो गया।
“अब सुनो,” उसने कहा, “कल मुझसे मिलने की उम्मीद मत रखना।”
"क्यों?"
"परसों तक मुझसे मिलने की उम्मीद मत रखना।"
"ओह क्यों?"
"आप देखेंगे।"
“एक दिन भी तुम्हें देखे बिना! लेकिन यह तो नामुमकिन है!”
"आइए हम अपना पूरा जीवन पाने के लिए एक दिन का बलिदान दें।"
और मारियस ने धीमी आवाज़ में और एक तरफ़ इशारा करते हुए कहा:—
वह एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी आदतें कभी नहीं बदलता, और उसने शाम के अलावा कभी किसी से मुलाकात नहीं की है।
“आप किस आदमी की बात कर रहे हैं?” कोसेट ने पूछा।
“मैं? मैंने कुछ नहीं कहा।”

तो फिर आप क्या उम्मीद करते हैं?
"परसों तक प्रतीक्षा करें।"
"क्या तुम ऐसा चाहते हो?"
“हां, कोसेट।”
उसने दोनों हाथों से उसका सिर थाम लिया, उसके बराबर आने के लिए अपने पंजों पर खड़ी हो गई और उसकी आंखों में उसकी उम्मीद को पढ़ने की कोशिश की। मारियस ने आगे कहा:—
"अब जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो आपको मेरा पता पता होना चाहिए: कुछ भी हो सकता है, कौन नहीं जानता; मैं कौरफेयरैक नाम के उस दोस्त के साथ रहता हूँ, रुए डे ला वेररी, नंबर 16।"
उसने अपनी जेब में तलाशा, अपनी कलम निकाली और उसकी धार से दीवार के प्लास्टर पर लिखा:—
16 रुए डे ला वेररी।
इसी बीच, कोसेट ने एक बार फिर उसकी आंखों में देखना शुरू कर दिया था। “मुझे अपने विचार बताओ, मारियस; तुम्हारे मन में कुछ विचार तो होगा। मुझे बताओ। ओह! मुझे बताओ, ताकि मेरी रात सुखद बीते।”
“मेरा यही मानना है कि ईश्वर का हमें अलग करने का इरादा होना असंभव है। प्रतीक्षा करो; परसों मुझसे मिलने की उम्मीद करो।”
“तब तक मैं क्या करूँगी?” कोसेट ने कहा। “तुम बाहर हो, जाओ और वापस आओ! कितने खुशकिस्मत हो तुम! मैं बिल्कुल अकेली रहूँगी! ओह! मैं कितनी उदास हो जाऊँगी! कल शाम तुम क्या करने वाली हो? मुझे बताओ।”
मैं कुछ नया करने की कोशिश करने जा रहा हूँ।
“तो मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगी और यहाँ आपके बारे में सोचूँगी, ताकि आप सफल हों। मैं आपसे और कोई प्रश्न नहीं पूछूँगी, क्योंकि आप ऐसा नहीं चाहते। आप मेरे स्वामी हैं। कल शाम मैं यूरिएन्थे के उस संगीत को गाते हुए बिताऊँगी जो आपको प्रिय है, और जिसे सुनने के लिए आप एक शाम मेरे घर के बाहर आए थे। लेकिन परसों आप जल्दी आएँगे। मैं सूर्यास्त के समय, ठीक नौ

बजे, आपका इंतज़ार करूँगी, मैं आपको सूचित करती हूँ। हे भगवान! कितना दुख की बात है कि दिन इतने लंबे होते हैं! ठीक नौ बजे, समझे? मैं बगीचे में रहूँगी।”

और मैं भी।

और बिना कुछ कहे, उसी विचार से प्रेरित होकर, उन विद्युत धाराओं से प्रेरित होकर जो प्रेमियों को निरंतर संवाद में बांधे रखती हैं, दोनों अपने दुःख में भी आनंद से मदहोश होकर, एक-दूसरे की बाहों में गिर पड़े, इस बात से अनभिज्ञ कि उनके होंठ मिल गए जबकि उनकी ऊपर उठी आंखें, आनंद से भरी और आंसुओं से लबालब, तारों को निहार रही थीं।

जब मारियस बाहर निकला, तो सड़क सुनसान थी। यही वह क्षण था जब एपोनिन बदमाशों का पीछा करते हुए बुलेवार्ड की ओर जा रही थी।

जब मारियस पेड़ से सिर टिकाकर सपने देख रहा था, तभी उसके मन में एक विचार आया; अफसोस! एक ऐसा विचार जिसे उसने स्वयं ही निरर्थक और असंभव समझा। उसने एक हताशा भरा फैसला ले लिया था।

VII. एक दूसरे की उपस्थिति में वृद्ध हृदय और युवा हृदय

उस समय फादर गिलनोर्मंड 91 वर्ष से अधिक आयु के थे। वे अब भी मैडमोजेल गिलनोर्मंड के साथ रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर, नंबर 6 में अपने पुराने घर में रहते थे। जैसा कि पाठक को याद होगा, वे उन पुराने और प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक थे जो मृत्यु का सामना पूरी दृढ़ता से करते हैं, जिन पर उम्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और जिन्हें दुख भी विचलित नहीं कर सकता।

फिर भी, उनकी बेटी कुछ समय से कह रही थी: "मेरे पिता डूब रहे हैं।" अब वे नौकरानियों के कान नहीं खींचते थे; जब बास्क दरवाजा खोलने में देर करता था, तो वे अब अपनी छड़ी से सीढ़ियों पर उतनी ज़ोर से नहीं मारते थे। जुलाई की क्रांति ने उन्हें मुश्किल से छह महीने तक परेशान किया था। उन्होंने लगभग शांति से मॉनिटर में उन शब्दों को देखा था: एम. हम्ब्लोट-कॉन्टे, फ्रांस के कुलीन। असल में, बूढ़ा आदमी बहुत निराश था। वह झुका नहीं, उसने हार नहीं मानी; यह न केवल उनके शारीरिक बल्कि नैतिक स्वभाव की भी विशेषता थी, लेकिन वह अंदर से खुद को टूटता हुआ महसूस कर रहा था। चार साल से वह मारियस का इंतज़ार कर रहा था, इस विश्वास के साथ कि वह निकम्मा नौजवान किसी न किसी दिन उसके दरवाजे की घंटी बजाएगा; अब वह उस मुकाम पर पहुँच गया था, जहाँ कुछ उदास पलों में वह खुद से कहता था कि अगर मारियस ने उसे और ज़्यादा इंतज़ार करवाया तो—यह मौत नहीं थी जो उसके लिए असहनीय थी; बल्कि यह विचार था कि शायद वह मारियस को फिर कभी न देख पाए। मारियस को फिर कभी न देखने का विचार उस दिन तक उसके मन में कभी नहीं आया था; अब यह विचार बार-बार उसके मन में आने लगा और उसे कंपकंपा देता था। जैसा कि हमेशा सच्चे और स्वाभाविक भावों में होता है, अनुपस्थिति ने दादाजी के उस कृतघ्न बच्चे के प्रति प्रेम को और बढ़ा दिया था, जो पल भर में चला गया था। दिसंबर की रातों में, जब कड़ाके की ठंड पड़ती है, तब सबसे ज़्यादा बेटे की याद आती है।

एम. गिलनोर्मंड, या यूँ कहें कि वे स्वयं को, अपने पोते की ओर एक कदम भी बढ़ाने में असमर्थ समझते थे; वे—दादाजी—अपने पोते की ओर एक कदम भी नहीं

बढ़ा पा रहे थे। उन्होंने मन ही मन कहा, “इससे बेहतर तो मैं मर जाऊँगा।” वे स्वयं को ज़रा भी दोषी नहीं मानते थे; परन्तु वे मारियस के बारे में केवल गहरी कोमलता और एक ऐसे वृद्ध, दयालु व्यक्ति की मौन निराशा के साथ सोचते थे जो अंधकार में विलीन होने वाला हो।
उसके दांत गिरने लगे, जिससे उसका दुख और बढ़ गया।
एम. गिलनोर्मंड ने, हालांकि स्वयं इस बात को स्वीकार नहीं किया था, क्योंकि ऐसा करने से वह क्रोधित और शर्मिंदा हो जाते, कभी किसी प्रेमिका से उतना प्यार नहीं किया था जितना उन्होंने मारियस से किया था।
उन्होंने अपने कमरे में, पलंग के सिरहाने के ठीक सामने, अपनी दूसरी बेटी, मैडम पोंटमर्सी का एक पुराना चित्र रखवा रखा था, जो अब इस दुनिया में नहीं थी। यह चित्र तब लिया गया था जब वह अठारह वर्ष की थीं। वे लगातार उस चित्र को निहारते रहते थे। एक दिन, चित्र को निहारते हुए उन्होंने कहा:—
मुझे लगता है कि समानता काफी प्रबल है।
“मेरी बहन को?” मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने पूछा। “हाँ, बिल्कुल।”
बूढ़े व्यक्ति ने आगे कहा:—
और उसे भी।
एक बार जब वह घुटने सटाकर, आँखें लगभग बंद करके, हताश मुद्रा में बैठे थे, तब उनकी बेटी ने उनसे कहने का साहस किया:
“पिताजी, क्या आप उससे पहले की तरह ही नाराज हैं?”
वह रुक गई, आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी।
“किसके साथ?” उसने पूछा।
"उस बेचारे मारियस के साथ।"
उसने अपना बूढ़ा सिर उठाया, अपनी मुरझाई और कमजोर मुट्ठी मेज पर पटकी और अपनी सबसे चिड़चिड़ी और कांपती हुई आवाज में कहा:—
"बेचारे मारियस की बात कर रहे हो! वो सज्जन तो धूर्त, नीच बदमाश, अभिमानी और कृतघ्न, निर्दयी, आत्माहीन, घमंडी और दुष्ट व्यक्ति हैं!"

और उसने मुंह फेर लिया ताकि उसकी बेटी उसकी आंखों में आए आंसू को न देख सके।

तीन दिन बाद उन्होंने चार घंटे की चुप्पी तोड़ते हुए अपनी बेटी से सीधे- सीधे कहा:

मुझे मैडमोजेल गिलनोर्मंड से यह अनुरोध करने का सम्मान प्राप्त हुआ कि वह मेरे सामने उनका जिक्र कभी न करें।

आंटी गिलनोर्मंड ने हर संभव प्रयास त्याग दिया और यह स्पष्ट निदान सुनाया: "मेरी बहन की नादानी के बाद मेरे पिता ने उसकी परवाह करना छोड़ दिया। यह स्पष्ट है कि वह मारियस से घृणा करते हैं।"

“उसकी मूर्खता के बाद” का अर्थ था: “कर्नल से शादी करने के बाद।”

हालांकि, जैसा कि पाठक अनुमान लगा सकते हैं, मैडमोजेल गिलनोर्मंड मारियस के स्थान पर अपने पसंदीदा, लांसर्स के अधिकारी को नियुक्त करने के अपने प्रयास में असफल रहीं। थियोडुल, जो उनकी जगह नियुक्त किया गया था, सफल नहीं रहा। एम. गिलनोर्मंड ने इस सौदे को स्वीकार नहीं किया। हृदय में खालीपन किसी अस्थायी समाधान से नहीं भरता। थियोडुल, हालांकि उसे विरासत की झलक दिख रही थी, लेकिन उसे खुश करने के काम से घृणा थी। भले आदमी ने लांसर को ऊबा दिया; और लांसर ने भले आदमी को चौंका दिया। लेफ्टिनेंट थियोडुल निस्संदेह खुशमिजाज था, लेकिन बातूनी, तुच्छ, लेकिन अशिष्ट; ऐशो-आराम पसंद, लेकिन बुरी संगत में रहने वाला; यह सच है कि उसकी रखैलें थीं, और यह भी सच है कि वह उनके बारे में बहुत कुछ कहता था; लेकिन उसकी बातें अच्छी नहीं थीं। उसके सभी अच्छे गुणों में कोई न कोई कमी थी। एम. गिलनोर्मंड, रुए डे बैबिलोन स्थित बैरक के आसपास के इलाकों में उसके प्रेम प्रसंगों की कहानियाँ सुनकर थक चुके थे। और फिर, लेफ्टिनेंट गिलनोर्मंड कभी-कभी तिरंगे बैज वाली वर्दी में आते थे। इससे उनका व्यवहार बिल्कुल असहनीय हो जाता था। अंत में, फादर गिलनोर्मंड ने अपनी बेटी से कहा: “मैं उस थियोडुल से तंग आ चुका हूँ। शांति के समय में मुझे योद्धाओं में कोई रुचि नहीं है। अगर तुम चाहो तो उसे स्वीकार कर लो। मुझे नहीं पता, लेकिन मुझे तलवार घसीटने वालों की बजाय तलवारबाज ज्यादा पसंद हैं। आखिर, युद्ध में तलवारों की खड़खड़ाहट सड़क पर म्यान की खनक से कहीं ज्यादा भयावह होती है। और फिर,

गुंडे की तरह सीना फुलाकर और लड़की की तरह कवच के नीचे कमरबंद बांधकर खुद को सजाना तो और भी हास्यास्पद है। सच्चा मर्द दिखावे और बनावटीपन से दूर रहता है। वह न तो शेखी बघारता है और न ही नखरेबाज। अपने थियोडुल को अपने पास ही रखो।”

उनकी बेटी का उनसे यह कहना व्यर्थ था: "लेकिन फिर भी वह आपका पोता है," - अंततः पता चला कि एम. गिलनोर्मंड, जो नाम के साथ-साथ दादा भी थे, वास्तव में उनके परदादा नहीं थे।

दरअसल, जैसा कि उनमें अच्छी समझ थी, और जैसा कि उन्होंने दोनों की तुलना की थी, थियोडुल ने केवल मारियस के प्रति उनके पछतावे को और भी बढ़ा दिया था।

एक शाम—24 जून का दिन था, हालाँकि फादर गिलनोर्मंड ने चूल्हे पर आग जलाकर खूब मजे किए—उन्होंने अपनी बेटी को, जो पास के कमरे में सिलाई कर रही थी, छुट्टी दे दी थी। वे अपने कमरे में अकेले थे, चारों ओर देहाती नज़ारों के बीच, पैर चूल्हे पर रखे हुए, अपने नौ पत्तों वाले विशाल कोरोमंडल लैकर पर्दे में आधे लिपटे हुए, कोहनी एक मेज पर टिकी हुई, जिस पर हरे रंग की छत के नीचे दो मोमबत्तियाँ जल रही थीं, अपनी टेपेस्ट्री वाली कुर्सी पर बैठे हुए, और हाथ में एक किताब लिए हुए जिसे वे पढ़ नहीं रहे थे। वे अपनी आदत के अनुसार एक अनूठे व्यक्ति की तरह सजे हुए थे, और गैरेट की किसी प्राचीन पेंटिंग जैसे दिख रहे थे। अगर उनकी बेटी उन्हें बाहर जाते समय एक विशाल बिशप के गद्देदार लबादे से न ढकती, तो लोग सड़क पर उनके पीछे दौड़ पड़ते। घर पर, वे कभी भी ड्रेसिंग गाउन नहीं पहनते थे, सिवाय उठने और सोने के समय के। उन्होंने कहा, "इससे उम्र का आभास होता है।"

फादर गिलनोर्मंड मारियस के बारे में प्यार और कड़वाहट से सोच रहे थे; और हमेशा की तरह, कड़वाहट हावी थी। उनकी कोमलता एक बार खट्टी हो जाए तो हमेशा गुस्से में बदल जाती थी। वे उस मुकाम पर पहुँच गए थे जहाँ एक आदमी अपना मन बना लेता है और उस बात को स्वीकार कर लेता है जो उसके दिल को चीर देती है। वे खुद को समझा रहे थे कि अब मारियस के लौटने का कोई कारण नहीं है, अगर वह लौटना चाहता तो बहुत पहले लौट आया होता, उन्हें यह विचार त्याग देना चाहिए। वे इस विचार को स्वीकार करने की कोशिश कर रहे थे कि सब कुछ खत्म हो गया है, और उन्हें उस सज्जन को फिर से देखे बिना ही मर जाना चाहिए। लेकिन उनका पूरा स्वभाव विद्रोह कर रहा था; उनका वृद्ध पितृत्व इसे स्वीकार नहीं

कर पा रहा था। "अच्छा!" वे बोले—यह उनकी दुख भरी रट थी—"वह नहीं लौटेगा!" उनका गंजा सिर उनकी छाती पर गिर गया था, और उन्होंने अपनी चूल्हे पर पड़ी राख पर उदास और चिड़चिड़ी निगाहें गड़ा दीं।

जब वह गहरी सोच में डूबा हुआ था, तभी उसका बूढ़ा नौकर बास्क अंदर आया और पूछा:—

“क्या महाशय श्री मारियस से मिल सकते हैं?”

बूढ़ा आदमी सीधा बैठ गया, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, मानो वह किसी बिजली के झटके से उठ खड़ा हुआ हो। उसका सारा खून उसके दिल में समा गया था। वह हकलाते हुए बोला:

“श्री मारियस, क्या?”

“मुझे नहीं पता,” बास्क ने अपने स्वामी के हावभाव से भयभीत और शर्मिंदा होकर उत्तर दिया; “मैंने उसे नहीं देखा है। निकोलेट अंदर आई और मुझसे बोली: ‘यहाँ एक युवक है; कहो कि वह एम. मारियस है।’”

फादर गिलनोर्मंड ने धीमी आवाज में हकलाते हुए कहा:

उसे अंदर आने दो।

और वह उसी मुद्रा में सिर हिलाते हुए, दरवाजे पर निगाहें गड़ाए बैठा रहा। दरवाजा एक बार फिर खुला। एक युवक अंदर आया। वह मारियस था।

मारियस दरवाजे पर रुक गया, मानो अंदर आने के लिए बुलावे का इंतजार कर रहा हो।

घने कोहरे के कारण उसके लगभग मैले-कुचले कपड़े दिखाई नहीं दे रहे थे। उसके शांत, गंभीर, लेकिन अजीब तरह से उदास चेहरे के अलावा कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था।

कई मिनट बीतने तक फादर गिलनोर्मंड, आश्चर्य और आनंद से इतने स्तब्ध थे कि उन्हें एक ऐसी चमक के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दिया, मानो वे किसी अलौकिक घटना के साक्षी हों। वे लगभग बेहोश होने वाले थे; उन्होंने एक चकाचौंध भरी रोशनी के बीच मारियस को देखा। यह निश्चित रूप से वही थे, निश्चित रूप से मारियस ही थे।

आखिरकार! चार साल बीत जाने के बाद! उसने एक ही नज़र में उसे पूरी तरह से समझ लिया। उसने उसे नेक, सुंदर, प्रतिष्ठित, सुगठित, एक संपूर्ण पुरुष पाया, जिसका व्यवहार उपयुक्त और आभासपूर्ण था। उसके मन में उसे बाहें फैलाने, उसे गले लगाने, खुद को आगे बढ़ाने की तीव्र इच्छा हुई; उसका हृदय आनंद से भर उठा, स्नेह भरे शब्द उसके सीने से उमड़ पड़े; अंततः उसकी सारी कोमलता प्रकट हुई और उसके होठों तक पहुँची, और उसके स्वभाव की मूल विशेषता, यानी एक विरोधाभास, के कारण जो निकला वह कठोरता थी। उसने अचानक कहा:—

आप यहां किसलिए आए हैं?

मारियस ने शर्मिंदा होकर उत्तर दिया:—

“महामहिम—”

एम. गिलनोर्मंड चाहते थे कि मारियस उनकी बाहों में समा जाए। वे मारियस से और खुद से भी नाराज़ थे। उन्हें एहसास था कि उनका व्यवहार रूखा है और मारियस का व्यवहार ठंडा है। भीतर से इतना कोमल और अकेला महसूस करना और बाहर से कठोर दिखना उस भले आदमी के लिए असहनीय और परेशान करने वाली चिंता का कारण बन रहा था। कड़वाहट लौट आई। उन्होंने चिड़चिड़े स्वर में मारियस की बात काटते हुए कहा:—

तो फिर आप क्यों आए?

उस "तब" का अर्थ था: "यदि तुम मुझे गले लगाने नहीं आओगे।" मारियस ने अपने दादाजी की ओर देखा, जिनका पीलापन उन्हें संगमरमर जैसा चेहरा दे रहा था।

“महामहिम—”

“क्या तुम मुझसे क्षमा मांगने आए हो? क्या तुम अपनी गलतियों को स्वीकार करते हो?”

उसे लगा कि वह मारियस को सही रास्ते पर ला रहा है, और "बच्चा" मान जाएगा। मारियस कांप उठा; उससे अपने पिता की बात न मानने की अपेक्षा की जा रही थी; उसने अपनी नज़रें झुका लीं और उत्तर दिया:—

"जी नहीं, महोदय।"

“तो फिर,” बूढ़े व्यक्ति ने तीव्र शोक और क्रोध से भरे स्वर में कहा, “तुम मुझसे क्या चाहते हो?”

मारियस ने अपने हाथ जोड़े, एक कदम आगे बढ़ा और कमजोर और कांपती हुई आवाज में कहा:

“महोदय, मुझ पर दया कीजिए।”

ये शब्द एम. गिलनोर्मंड के दिल को छू गए; अगर ये शब्द थोड़ा पहले कहे गए होते, तो शायद उनका दिल नरम हो जाता, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। दादाजी उठे; उन्होंने दोनों हाथों से अपनी छड़ी का सहारा लिया; उनके होंठ पीले पड़ गए थे, उनकी भौंहें तन गई थीं, लेकिन जब उन्होंने झुककर अभिवादन किया तो उनका विशाल शरीर मारियस से कहीं अधिक ऊंचा दिखाई दिया।

“आप पर तरस आता है, महोदय! जवानी तो 91 साल के बूढ़े से तरस मांग रही है! आप जीवन में कदम रख रहे हैं, मैं इसे छोड़ रहा हूँ; आप नाटक देखने जाते हैं, पार्टियों में जाते हैं, कैफे जाते हैं, बिलियर्ड हॉल जाते हैं; आप बुद्धिमान हैं, महिलाओं को आकर्षित करते हैं, आप सुंदर हैं; और मैं, गर्मी के मौसम में भी अपनी जलती हुई लकड़ियों पर थूकता हूँ; आप उन सभी चीज़ों से समृद्ध हैं जो वास्तव में धनी हैं, मेरे पास बुढ़ापे की सारी गरीबी है; कमजोरी, अकेलापन! आपके बत्तीस दांत हैं, अच्छी पाचन शक्ति है, चमकीली आँखें हैं, ताकत है, भूख है, स्वास्थ्य है, प्रसन्नता है, काले बालों का घना जंगल है; मेरे तो अब सफेद बाल भी नहीं बचे हैं, मेरे दांत गिर गए हैं, मेरे पैर कमजोर हो रहे हैं, मेरी याददाश्त कमजोर हो रही है; तीन सड़कों के नाम हैं जिन्हें मैं लगातार भूल जाता हूँ, रू चार्लोट, रू डू चौम और रू सेंट-क्लाउड, यही मेरी हालत है; आपके सामने पूरा भविष्य है, धूप से भरा हुआ, और मेरी दृष्टि कमजोर होने लगी है, मैं इतना कमजोर हो गया हूँ मैं रात के अंधेरे में आगे बढ़ रहा हूँ; तुम प्रेम में हो, यह तो स्वाभाविक है, दुनिया में कोई भी मुझसे प्रेम नहीं करता; और तुम मुझसे दया की भीख मांगते हो! पेरब्लू! मोलियर तो यह भूल ही गए थे। अगर आप लोग अदालत में इसी तरह मजाक करते हैं, महोदय वकीलों, तो मैं आपको दिल से बधाई देता हूँ। आप लोग वाकई मजाकिया हैं।

और अस्सी वर्षीय बुजुर्ग ने गंभीर और क्रोधित स्वर में बोलना जारी रखा:—

"अब बताओ, तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

“महोदय,” मारियस ने कहा, “मैं जानता हूँ कि मेरी उपस्थिति आपको अप्रिय लग रही है, लेकिन मैं आपसे केवल एक बात पूछने आया हूँ, और फिर मैं तुरंत चला जाऊँगा।”

“तुम मूर्ख हो!” बूढ़े आदमी ने कहा। “किसने कहा कि तुम्हें चले जाना है?”

ये उसके दिल की गहराइयों में बसे कोमल शब्दों का अनुवाद था:

"माफी मांगो! मेरे गले लग जाओ!"

एम. गिलनोर्मंड को लगा कि मारियस कुछ ही पलों में उसे छोड़कर चला जाएगा, कि उसके कठोर व्यवहार ने लड़के को उससे दूर कर दिया है, कि उसकी सख्ती उसे उससे दूर भगा रही है; उसने ये सब बातें मन ही मन कहीं, और इससे उसका दुख और बढ़ गया; और जैसे ही उसका दुख क्रोध में परिवर्तित हुआ, उसकी कठोरता और बढ़ गई। वह चाहता था कि मारियस उसकी बात समझे, लेकिन मारियस नहीं समझा, जिससे वह भला-बुरा हो गया।

उन्होंने फिर से शुरू किया:—

“क्या! तुमने मुझे, अपने दादाजी को छोड़ दिया, मेरा घर छोड़कर न जाने कहाँ चले गए, तुमने अपनी चाची को हताश कर दिया, तुम चले गए, यह आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है, कुंवारे जीवन जीने के लिए; यह अधिक सुविधाजनक है, दिखावटी बनकर रहना, हर समय घर में रहना, अपना मनोरंजन करना; तुमने मुझे जीवन का कोई संकेत नहीं दिया, तुमने मुझे बिना बताए कर्ज ले लिया, तुम खिड़कियाँ तोड़ने वाले और शेखी बघारने वाले बन गए, और चार साल बाद, तुम मेरे पास आते हो, और बस इतना ही कहना है तुम्हें!”

पोते को प्यार जताने के लिए इस हिंसक तरीके से मनाने पर मारियस की ओर से केवल चुप्पी ही छाई रही। एम. गिलनोर्मंड ने अपनी बाहें मोड़ लीं; यह हावभाव उनके लिए विशेष रूप से दबंग था, और उन्होंने मारियस को कड़वी फटकार लगाई:

चलिए इसे यहीं समाप्त करते हैं। आप मुझसे कुछ पूछने आए हैं, है ना? अच्छा, क्या? क्या बात है? बोलिए!

“महोदय,” मारियस ने ऐसे चेहरे के साथ कहा जैसे वह किसी खाई में गिरने वाला हो, “मैं आपसे विवाह करने की अनुमति मांगने आया हूँ।”

एम. गिलनोर्मंड ने घंटी बजाई। बास्क ने दरवाजा आधा खोला।

मेरी बेटी को फोन करो।

एक क्षण बाद, दरवाजा फिर से खुला, मैडमोजेल गिलनोर्मंड अंदर नहीं आईं, लेकिन उन्होंने स्वयं को प्रकट किया; मारियस चुपचाप, लटके हुए हाथों और एक अपराधी के चेहरे के साथ खड़ा था; एम. गिलनोर्मंड कमरे में इधर-उधर टहल रहे थे। उन्होंने अपनी बेटी की ओर मुड़कर उससे कहा:—

“कुछ नहीं। ये महाशय मारियस हैं। उन्हें नमस्कार कहिएगा। महाशय विवाह करना चाहते हैं। बस इतना ही। आप जाइए।”

बूढ़े आदमी की कर्कश और तीखी आवाज में एक अजीब तरह की उत्तेजना झलक रही थी। चाची ने डरी हुई निगाहों से मारियस को देखा, मानो उसे पहचान ही न पा रही हो, एक शब्द भी नहीं बोला और अपने पिता की सांस के साथ ही आंधी के सामने तिनके की तरह गायब हो गई।

इसी बीच, फादर गिलनोर्मंड वापस आ गए थे और एक बार फिर चिमनी के सहारे अपनी पीठ टिका ली थी।

“आप शादी कर रहे हैं! इक्कीस साल की उम्र में! आपने यह सब तय कर लिया है! आपको बस पूछने की अनुमति चाहिए! एक औपचारिकता। बैठ जाइए, महोदय। खैर, जब से मुझे आपसे आखिरी बार मिलने का सौभाग्य मिला था, तब से आपके यहाँ एक क्रांति हो चुकी है। जैकोबिन विजयी हुए। आप अवश्य प्रसन्न हुए होंगे। क्या आप बैरन होने के कारण गणतंत्रवादी नहीं हैं? आप इसे स्वीकार करवा सकते हैं। गणतंत्र बैरोनी के लिए एक बढ़िया विकल्प है। क्या आप उन लोगों में से हैं जिन्हें जुलाई में सम्मानित किया जाता है? क्या आपने लूव्र संग्रहालय देखा है, महोदय? यहीं पास में, सेंट-एंटोइन स्ट्रीट में, नोनामडिएरेस स्ट्रीट के सामने, एक घर की तीसरी मंजिल की दीवार में एक तोप का गोला जड़ा हुआ है जिस पर यह लिखा है: 28 जुलाई, 1830। जाकर उसे देखिए। यह बहुत प्रभावशाली है। आह! आपके वे दोस्त बड़े-बड़े काम करते हैं। वैसे, क्या वे एम. ले ड्यूक डी बेरी के स्मारक की जगह एक फव्वारा नहीं बनवा रहे हैं? तो आप शादी करना चाहते हैं? किससे? क्या बिना पूछे पूछा जा सकता है? अविवेक?

वह रुका, और मारियस के जवाब देने से पहले ही उसने उग्र स्वर में कहा:—

"अब बताओ, तुम्हारा कोई पेशा है? तुमने दौलत कमाई है? वकील के तौर पर तुम कितना कमाते हो?"

"कुछ नहीं," मारियस ने लगभग उग्रतापूर्ण दृढ़ता और संकल्प के साथ कहा। “कुछ नहीं? तो फिर तुम्हारे पास गुजारा करने के लिए सिर्फ बारह सौ लिवर ही हैं जो मैं तुम्हें देता हूँ?”
मारियस ने कोई जवाब नहीं दिया। एम. गिलनोर्मंड ने आगे कहा:—
"तो मुझे समझ में आया कि लड़की अमीर है?"
"जितना अमीर मैं हूँ।"
“क्या! दहेज नहीं?”
"नहीं।"
"अपेक्षाएं?"
मुझे नहीं लगता।
“बिल्कुल नंगा! बाप कौन है?” "मुझें नहीं पता।"
और उसका नाम क्या है?
"मैडमोसेले फौचेलेवेंट।"
“फौश क्या?”
“फौचेलेवेंट।”
“पट्ट!” बूढ़े सज्जन ने चीख मारी।
“सर!” मारियस ने हैरानी से कहा।
एम. गिलनोर्मंड ने स्वयं से बात करने वाले व्यक्ति के लहजे में उन्हें बीच में ही रोक दिया:
"बिल्कुल सही, इक्कीस वर्ष की आयु, कोई पेशा नहीं, बारह सौ लिवर प्रति वर्ष, मैडम ला बैरोनेस डी पोंटमर्सी फल विक्रेता से कुछ सू मूल्य की अजमोद खरीदने जाएंगी।"
"महोदय," मारियस ने अपनी आखिरी उम्मीद के भी खत्म होते देख हताशा में दोहराया, "मैं आपसे विनती करता हूँ! मैं स्वर्ग के नाम पर, हाथ जोड़कर आपसे

प्रार्थना करता हूँ, महोदय, मैं आपके चरणों में गिरता हूँ, मुझे उससे विवाह करने की अनुमति दीजिए!"

बूढ़ा आदमी कर्कश और शोकपूर्ण हंसी के साथ जोर से चिल्ला उठा, साथ ही साथ खांसता और हंसता भी रहा।

आह! आह! आह! तुमने मन ही मन कहा होगा: ‘अरे वाह! मैं उस बूढ़े मूर्ख, उस बेवकूफ को ढूंढ निकालूँगी! कितना अफसोस है कि मैं पच्चीस साल की नहीं हूँ! मैं उसे कितना सम्मानपूर्वक बुलाती! मैं उसके बिना कितना आराम से रह लेती! मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं उससे कहती: “तुम मुझे देखकर बहुत खुश हो, बूढ़े बेवकूफ! मैं शादी करना चाहती हूँ, मैं मैमसेल नो-मैटर-हूम से शादी करना चाहती हूँ, जो मिस्टर नो-मैटर-व्हाट की बेटी है। मेरे पास जूते नहीं हैं, उसके पास कमीज नहीं है, ये ठीक है; मैं अपना करियर, अपना भविष्य, अपनी जवानी, अपना जीवन बर्बाद करना चाहती हूँ; मैं एक औरत के साथ बदहाली में डूब जाना चाहती हूँ, ये एक विचार है, और तुम्हें इसे स्वीकार करना होगा!’” और वह बूढ़ा आदमी मान जाएगा।’ जाओ, मेरे लड़के, जो चाहो करो, अपना पत्थर लगाओ, अपनी पौसेलेवेंट से शादी करो, अपनी कूपेलेवेंट से—कभी नहीं, महोदय, कभी नहीं!”

“पिताजी—”

"कभी नहीं!"

जिस लहजे में वह "कभी नहीं" कहा गया, मारियस ने सारी उम्मीद खो दी। वह धीरे- धीरे कदमों से, सिर झुकाए, लड़खड़ाते हुए कमरे में घूमा, मानो वह मरने वाला हो, न कि कोई साधारण व्यक्ति। एम. गिलनोर्मंड ने उसे अपनी निगाहों से देखा, और जैसे ही दरवाजा खुला और मारियस बाहर जाने ही वाला था, वह चार कदम आगे बढ़ा, उतावले और बिगड़े हुए बूढ़े सज्जनों की बुढ़ापे वाली जीवंतता के साथ, मारियस को कॉलर से पकड़कर, उसे ज़ोर से कमरे में वापस लाया, उसे एक कुर्सी पर पटक दिया और उससे कहा:—

"मुझे इसके बारे में सब कुछ बताएं!"

यह एक अकेला शब्द "पिता" ही था जिसने इस क्रांति को अंजाम दिया।

मारियस ने हैरानी से उसकी ओर देखा। एम. गिलनोर्मंड के भावहीन चेहरे पर अब केवल रूखे और अवर्णनीय सौम्य स्वभाव के भाव ही दिखाई दे रहे थे। दादाजी, दादाजी के सामने झुक गए थे।

“आओ, देखो यहाँ, बोलो, मुझे अपने प्रेम प्रसंगों के बारे में बताओ, बकवास करो, मुझे सब कुछ बताओ! सप्रिस्टी! युवा लोग कितने मूर्ख होते हैं!”

“पिताजी—” मारियस ने दोहराया।

उस बूढ़े व्यक्ति का पूरा चेहरा अवर्णनीय चमक से जगमगा उठा।

“हाँ, बिल्कुल सही, मुझे पिता कहो, और तुम देख लोगे!”

अब उस रूखेपन में कुछ ऐसा दयालु, कोमल, उदार और पितृवत भाव था कि निराशा से आशा की ओर अचानक हुए इस बदलाव में मारियस मानो स्तब्ध और मदहोश हो गया था।
वह मेज के पास बैठा था, मोमबत्तियों की रोशनी में उसके जर्जर वस्त्र और भी ज़्यादा दिखाई दे रहे थे, जिन्हें देखकर फादर गिलनोर्मंड आश्चर्यचकित रह गए।

“खैर, पिताजी—” मारियस ने कहा।

“अरे हाँ, वैसे,” एम. गिलनोर्मंड ने बीच में टोकते हुए कहा, “क्या सच में आपके पास एक पैसा भी नहीं है? आप जेबकतरे की तरह कपड़े पहने हुए हैं?”

उसने दराज में हाथ डाला, एक पर्स निकाला और उसे मेज पर रख दिया: "ये लो सौ लुई, अपने लिए एक टोपी खरीद लो।"

“पिताजी,” मारियस ने आगे कहा, “मेरे प्यारे पिताजी, काश आप जानते! मैं उससे प्यार करता हूँ। आप कल्पना भी नहीं कर सकते; पहली बार मैंने उसे लक्ज़मबर्ग में देखा था, वह वहाँ आई थी; शुरू में मैंने उस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, और फिर, पता नहीं कैसे, मुझे उससे प्यार हो गया। ओह! इसने मुझे कितना दुखी कर दिया! अब, आखिरकार, मैं उसे हर रोज़ उसके घर पर देखता हूँ, उसके पिता को पता नहीं है, बस कल्पना कीजिए, वे कहीं जा रहे हैं, शाम को बगीचे में हमारी मुलाकात होती है, उसके पिता उसे इंग्लैंड ले जाना चाहते हैं, तब मैंने खुद से कहा: ‘मैं अपने दादाजी के पास जाकर उन्हें सब कुछ बता दूँगा। पहले तो मैं पागल हो जाऊँगा, मर जाऊँगा, बीमार पड़ जाऊँगा, खुद को पानी में फेंक दूँगा। मुझे उससे शादी करनी ही होगी, क्योंकि वरना मैं पागल

हो जाऊँगा।’ यही पूरी सच्चाई है, और मुझे नहीं लगता कि मैंने कुछ भी छुपाया है। वह रू प्लूमेट में लोहे की बाड़ वाले एक बगीचे में रहती है। यह पड़ोस में है। इनवैलिड्स।"

फादर गिलनोर्मंड मुस्कुराते हुए मारियस के बगल में बैठ गए। मारियस उनकी बातें सुन रहे थे और उनकी आवाज़ का आनंद ले रहे थे, साथ ही साथ वे नसवार का एक लंबा टुकड़ा भी पी रहे थे। "रू प्लूमेट" शब्द सुनते ही उन्होंने नसवार लेना बंद कर दिया और बची हुई नसवार को अपने घुटनों पर गिरा दिया।

“रू प्लूमेट, रू प्लूमेट, क्या तुमने यही कहा?—देखते हैं!—क्या उस इलाके में बैरक नहीं हैं?—हाँ, बिल्कुल। तुम्हारे चचेरे भाई थियोडुल ने मुझे इसके बारे में बताया था। वह लांसर, वह अधिकारी। एक चुलबुली लड़की, मेरे प्यारे दोस्त, एक चुलबुली लड़की!—पार्डियू, हाँ, रू प्लूमेट। इसे पहले रू ब्लोमेट कहा जाता था।—अब मुझे सब याद आ गया। मैंने रू प्लूमेट में लोहे की रेलिंग वाली उस छोटी लड़की के बारे में सुना है। एक बगीचे में, पामेला। तुम्हारा स्वाद बुरा नहीं है। कहते हैं वो बहुत साफ-सुथरी है। हम दोनों के बीच, मुझे लगता है कि वो सीधा-सादा लांसर उसे थोड़ा बहुत पटाने की कोशिश कर रहा है। मुझे नहीं पता उसने कहाँ किया। खैर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वैसे भी, उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। वो शेखी बघारता है, मारियस! मुझे लगता है कि तुम्हारे जैसे नौजवान के लिए ये बिल्कुल सही है कि तुम्हें प्यार करना चाहिए। तुम्हारी उम्र में यही सही है। मुझे तुम एक प्रेमी के रूप में ज्यादा अच्छे लगते हो, जैकोबिन के रूप में नहीं। मुझे तुम एक पेटीकोट से प्यार करते हुए ज्यादा अच्छे लगते हो, सप्रिस्टी! बीस पेटीकोट से, एम. डी रोबेस्पियर से प्यार करने के बजाय। जहाँ तक मेरी बात है, मैं यह कहने में खुद को न्यायसंगत ठहराऊँगा कि सैंस-कुलॉट्स की श्रेणी में, मैंने कभी किसी और से नहीं, केवल महिलाओं से प्यार किया है। सुंदर लड़कियाँ सुंदर लड़कियाँ होती हैं, यार! इसमें कोई आपत्ति नहीं है। जहाँ तक उस छोटी बच्ची की बात है, वह तुम्हें अपने पिता की जानकारी के बिना स्वीकार करती है। यह नियमों के अनुसार होता है। मैंने भी इसी तरह के अनुभव किए हैं। एक से अधिक। क्या तुम जानते हो कि तब क्या किया जाता है? कोई इस मामले को उग्रता से नहीं लेता; कोई खुद को दुखद स्थिति में नहीं डालता; कोई शादी करने और एम. ले मेयर के साथ उसके स्कार्फ के बारे में नहीं सोचता। कोई

बस एक आध्यात्मिक साथी की तरह व्यवहार करता है। कोई समझदारी दिखाता है। आगे बढ़ो, मनुष्यों; शादी मत करो। तुम आओ और अपने दादाजी से मिलो, जो हैं... एक नेक दिल इंसान, जिसके पुराने दराज में हमेशा लुई की कुछ पुड़िया रखी रहती हैं; आप उससे कहते हैं: ‘देखिए दादाजी।’ और दादाजी कहते हैं: ‘यह तो बहुत आसान है। जवानी को मजे करने चाहिए, और बुढ़ापा तो बीत ही जाएगा। मैं जवान हो चुका हूँ, तुम बूढ़े हो जाओगे। आओ, मेरे बेटे, तुम इसे अपने पोते को सौंप दोगे। ये लो दो सौ पिस्तौलें। मजे करो, ले लो!’ इससे बेहतर और क्या! इस मामले को इसी तरह सुलझाना चाहिए। आप शादी मत कीजिए, लेकिन इससे कोई नुकसान नहीं है। समझे?

मारियस भयभीत होकर एक शब्द भी बोलने में असमर्थ हो गया और उसने अपने सिर से इशारा किया कि वह कुछ नहीं जानता।

बूढ़ा आदमी जोर से हँस पड़ा, अपनी बूढ़ी आँख मारी, उसके घुटने पर एक थप्पड़ मारा, रहस्यमयी और चमकती हुई अदा से उसकी आँखों में आँखें डालकर देखा और कंधे उचकाते हुए बड़ी कोमलता से उससे कहा:

“बूबी! उसे अपनी रखैल बना लो।”

मारियस का चेहरा पीला पड़ गया। उसके दादाजी ने अभी जो कुछ कहा था, उसे कुछ भी समझ नहीं आया था। रू ब्लोमेट, पामेला, बैरक और लांसर के बारे में ये सब बातें मारियस के सामने धुंधली सी हो गईं। इनमें से किसी भी बात का कोसेट से कोई लेना-देना नहीं था, जो एक नन्ही सी कुदरती थी। दादाजी अपने विचारों में खो गए थे। लेकिन ये विचार कुछ ऐसे शब्दों में आकर रुके जिन्हें मारियस समझ गया, और जो कोसेट के लिए एक घोर अपमान थे। "उसे अपनी रखैल बना लो" ये शब्द उस सख्त मिजाज नौजवान के दिल में तलवार की तरह चुभ गए।

वह उठा, ज़मीन पर पड़ी अपनी टोपी उठाई और दृढ़, आत्मविश्वास से भरे कदमों से दरवाजे की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर वह मुड़ा, अपने दादाजी को प्रणाम किया, अपना सिर सीधा किया और बोला:—

“पांच साल पहले आपने मेरे पिता का अपमान किया था; आज आपने मेरी पत्नी का अपमान किया है। महोदय, मुझे आपसे और कुछ नहीं चाहिए। अलविदा।”

फादर गिलनोर्मंड पूरी तरह से स्तब्ध रह गए, उन्होंने अपना मुंह खोला, अपनी बाहें फैलाईं, उठने की कोशिश की, और इससे पहले कि वे एक शब्द भी बोल पाते, दरवाजा एक बार फिर बंद हो गया, और मारियस गायब हो गया।

बूढ़ा व्यक्ति कई मिनट तक गतिहीन पड़ा रहा, मानो उसे बिजली का झटका लगा हो, बोलने या सांस लेने की शक्ति खो बैठा हो, मानो किसी ने उसकी गर्दन को जकड़ लिया हो। अंत में वह अपनी कुर्सी से उठा, जितनी दूर 91 वर्ष का व्यक्ति दौड़ सकता है, उतनी दूर दरवाजे तक भागा, उसे खोला और चिल्लाया:

"बचाओ बचाओ!"

उसकी बेटी आई, फिर नौकर-चाकर। वह फिर से दयनीय स्वर में बड़बड़ाने लगा: “उसके पीछे भागो! उसे वापस लाओ! मैंने उसके साथ क्या किया है? वह पागल हो गया है! वह जा रहा है! हे भगवान! हे भगवान! इस बार तो वह वापस नहीं आएगा!”

वह सड़क की ओर खुलने वाली खिड़की के पास गया, अपने बूढ़े और लकवाग्रस्त हाथों से उसे खोला, आधे से ज़्यादा बाहर झुक गया, जबकि बास्क और निकोलेट ने उसे पीछे से पकड़ रखा था, और चिल्लाया:—

"मारियस! मारियस! मारियस! मारियस!"

लेकिन मारियस अब उसे सुन नहीं पा रहा था, क्योंकि उसी क्षण वह सेंट-लुई स्ट्रीट के मोड़ पर मुड़ रहा था।

अस्सी वर्षीय व्यक्ति ने पीड़ा के भाव से दो-तीन बार अपने हाथों को अपनी कनपटी पर रखा, लड़खड़ाते हुए पीछे हट गया और एक कुर्सी पर वापस गिर पड़ा, उसकी धड़कनें थम गई थीं, आवाज रुक गई थी, आंसू नहीं बह रहे थे, उसका सिर कांप रहा था और होंठ मूर्खतापूर्ण ढंग से हिल रहे थे, उसकी आंखों में कुछ भी नहीं था और उसके दिल में अब कुछ भी नहीं बचा था सिवाय एक उदास और गहन भावना के जो रात जैसी थी।

भाग **9.** वे किधर जा रहे हैं **?**

I. जीन वालजेन

उसी दिन, दोपहर करीब चार बजे, जीन वालजेन शैंप-डे-मार्स की सबसे सुनसान ढलानों में से एक के पिछले हिस्से में अकेले बैठे थे। शायद सावधानी के कारण, या ध्यान लगाने की इच्छा से, या फिर उन सूक्ष्म आदतों में से एक के कारण जो धीरे-धीरे हर किसी के जीवन में आ जाती हैं, वे अब कोसेट के साथ शायद ही कभी बाहर जाते थे। उन्होंने अपनी मजदूर की जैकेट और धूसर लिनेन की पतलून पहनी हुई थी; और उनकी लंबी टोपी ने उनके चेहरे को छुपा रखा था।

कोसेट के साथ वह अब शांत और प्रसन्न था; जो बात उसे कुछ समय के लिए चिंतित और परेशान कर रही थी, वह दूर हो गई थी; लेकिन पिछले एक-दो सप्ताह से, एक अलग तरह की चिंताएँ उत्पन्न हो गई थीं। एक दिन, सड़क पर चलते हुए, उसकी नज़र थेनार्डियर पर पड़ी; अपने भेष के कारण, थेनार्डियर उसे पहचान नहीं पाया था; लेकिन उस दिन के बाद से, जीन वालजेन ने उसे बार-बार देखा था, और अब उसे यकीन हो गया था कि थेनार्डियर उनके पड़ोस में ही घूम रहा है।

यह उसके लिए निर्णय लेने के लिए पर्याप्त था।

इसके अलावा, पेरिस में शांति नहीं थी: राजनीतिक उथल-पुथल ने उन सभी लोगों के लिए एक असुविधाजनक स्थिति पैदा कर दी थी, जिनके जीवन में कुछ भी छुपाना था, कि पुलिस बहुत सतर्क और संदिग्ध हो गई थी, और पेपिन या मोरे जैसे व्यक्ति को खोजने की कोशिश करते समय, वे जीन वालजेन जैसे व्यक्ति को आसानी से खोज सकते थे।

जीन वालजेन ने पेरिस और यहां तक कि फ्रांस को छोड़कर इंग्लैंड जाने का मन बना लिया था।

उसने कोसेट को चेतावनी दे दी थी। वह सप्ताह के अंत से पहले रवाना होना चाहता था।

वह चैंप-डे-मार्स की ढलान पर बैठ गया था और अपने मन में तरह-तरह के विचारों को दोहरा रहा था—थेनार्डियर, पुलिस, यात्रा और पासपोर्ट प्राप्त करने की कठिनाई।

वह इन सभी दृष्टिकोणों से परेशान था।
अंत में, एक अस्पष्ट परिस्थिति जिसने अभी-अभी उसका ध्यान आकर्षित किया था, और जिससे वह अभी तक उबर नहीं पाया था, ने उसकी घबराहट की स्थिति को और बढ़ा दिया था।
उसी दिन सुबह, जब घर में केवल वही जाग रहा था, कोसेट के खिड़की के शटर खुलने से पहले बगीचे में टहलते हुए, उसने अचानक दीवार पर निम्नलिखित पंक्ति देखी, जो संभवतः एक कील से उकेरी गई थी:—
16 रुए डे ला वेररी
यह बिल्कुल ताजा था, प्राचीन काले गारे में बनी दरारें सफेद थीं, दीवार के निचले हिस्से में बिछुआ का एक गुच्छा ताजे, महीन प्लास्टर से ढका हुआ था। यह संभवतः पिछली रात को लिखा गया था।
यह क्या था? दूसरों के लिए एक संकेत? या खुद के लिए एक चेतावनी?
बहरहाल, यह स्पष्ट था कि बगीचे का उल्लंघन किया गया था और अजनबी लोग उसमें घुस आए थे।
उन्होंने उन विचित्र घटनाओं को याद किया जिनसे घरवाले पहले ही चिंतित हो चुके थे।
अब उनका दिमाग इस कैनवास को भर रहा था।
उसने कोसेट को डराने के डर से दीवार पर लिखी पंक्ति के बारे में उससे बात न करने का पूरा ध्यान रखा।
अपनी चिंताओं के बीच, उसने सूर्य द्वारा डाली गई एक छाया से देखा कि कोई व्यक्ति उसके ठीक पीछे ढलान की चोटी पर रुक गया है।
वह मुड़ने ही वाला था कि तभी चार हिस्सों में मुड़ा हुआ एक कागज उसके घुटनों पर ऐसे गिरा जैसे किसी ने उसे उसके सिर के ऊपर से गिरा दिया हो। उसने कागज़ उठाया, उसे खोला और पेंसिल से बड़े अक्षरों में लिखे ये शब्द पढ़े:
"अपने घर से दूर चले जाओ।"

जीन वाल्जेन झट से अपने पैरों पर खड़ा हो गया ; ढलान पर कोई नहीं था ; उसने अपने चारों ओर देखा और एक प्राणी को देखा जो बच्चे से बड़ा था , लेकिन आदमी जितना बड़ा नहीं था , जिसने धूल के रंग के सूती मखमल की धूसर ब्लाउज और पतलून पहन रखी थी , जो पैरापेट के ऊपर से कूद रहा था और चैंप -डे -मार्स की खाई में फिसल गया।

जीन वाल्जेन तुरंत घर लौट आया , वह बहुत ही विचारशील मनोदशा में था।

II. मारियस

मारियस ने एम. गिलनोर्मंड को निराशा में छोड़ दिया था। वह बहुत कम उम्मीद के साथ घर में दाखिल हुआ था और अत्यधिक निराशा के साथ वहां से निकला।

लेकिन, और जिन्होंने मानव हृदय की गहराई को समझा है, वे यह बात समझेंगे, अधिकारी, भालाधारी, मूर्ख, चचेरा भाई थियोडुल, का उसके मन में कोई निशान नहीं था। जरा सा भी नहीं। नाटककार को शायद दादा द्वारा पोते को सीधे-सीधे बताई गई इस बात से कुछ उलझनें पैदा होने की उम्मीद हो सकती है। लेकिन इससे नाटक को जो लाभ होता, सत्य को उतना ही नुकसान होता। मारियस उस उम्र में था जब बुराई के बारे में किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता; बाद में वह उम्र आती है जब हर बात पर विश्वास किया जाने लगता है। संदेह झुर्रियों के अलावा कुछ नहीं होते। युवावस्था में झुर्रियां नहीं होतीं। जो बात ओथेलो को परेशान कर गई, वह कैंडाइड पर आसानी से असर नहीं करती। कोसेट पर शक करो! ऐसे अनगिनत अपराध हैं जो मारियस उससे पहले कर सकता था।

वह गलियों में भटकने लगा, जो दुखियों का सहारा होती हैं। जहाँ तक उसे बाद में याद रहा, उसके मन में कुछ भी नहीं था। सुबह दो बजे वह कौरफेयरैक के कमरे में लौटा और बिना कपड़े उतारे ही अपने गद्दे पर लेट गया। सूरज तेज चमक रहा था जब वह उस भयानक गहरी नींद में डूब गया जिसमें दिमाग में विचार आते- जाते रहते हैं। जब वह जागा, तो उसने कौरफेयरैक, एनजोलरास, फ्यूली और कॉम्बफेरे को कमरे में टोपी पहने हुए बाहर जाने के लिए तैयार खड़े देखा।

कौरफेयरैक ने उससे कहा:—

क्या आप जनरल लामार्क के अंतिम संस्कार में आ रहे हैं?

उन्हें ऐसा लगा कि कौरफेयरैक चीनी भाषा बोल रहा था।

वह उनके कुछ समय बाद निकला। उसने अपनी जेब में वे पिस्तौलें रख लीं जो जावर्ट ने उसे 3 फरवरी के उस साहसिक कार्य के दौरान दी थीं और जो उसके हाथों में ही रह गई थीं। ये पिस्तौलें अभी भी भरी हुई थीं। यह कहना मुश्किल है कि उन्हें अपने साथ ले जाते समय उसके मन में क्या अस्पष्ट विचार थे।

सारा दिन वह इधर-उधर भटकता रहा, उसे पता ही नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है; कभी-कभी बारिश होती थी, उसे पता भी नहीं चलता था; रात के खाने के लिए उसने एक बेकरी से एक पैसे का रोल खरीदा, उसे अपनी जेब में रखा और भूल गया। ऐसा लगता है कि उसने अनजाने में सीन नदी में स्नान कर लिया था। ऐसे क्षण होते हैं जब मनुष्य के दिमाग में भट्टी सी जल रही होती है। मारियस ऐसे ही एक क्षण से गुजर रहा था। उसे अब किसी चीज की उम्मीद नहीं थी; यह कदम उसने पिछली शाम से ही उठा लिया था। वह बेचैनी से रात का इंतजार कर रहा था, उसके मन में बस एक ही विचार स्पष्ट था;—वह यह कि नौ बजे उसे कोसेट मिल जाए। यही आखिरी खुशी अब उसका पूरा भविष्य थी; इसके बाद, अंधकार ही अंधकार। बीच-बीच में, जब वह सबसे सुनसान सड़कों पर घूम रहा था, तो उसे ऐसा लगा जैसे पेरिस में अजीब आवाजें सुनाई दे रही हों। उसने अपने ख्यालों से बाहर सिर निकाला और कहा: "क्या यहाँ लड़ाई हो रही है?"

शाम ढलते ही, ठीक नौ बजे, जैसा कि उसने कोसेट से वादा किया था, वह रू प्लूमेट में था। जब वह खिड़की के पास पहुँचा तो सब कुछ भूल गया। कोसेट को देखे हुए अड़तालीस घंटे बीत चुके थे; वह उसे एक बार फिर देखने वाला था; बाकी सारे विचार मिट गए थे, और उसे बस एक गहरा और अभूतपूर्व आनंद महसूस हो रहा था। वे पल जिनमें हम सदियाँ जी लेते हैं, उनमें हमेशा यह विलक्षण और अद्भुत गुण होता है कि जब वे बीत रहे होते हैं तो हृदय को पूर्णतः भर देते हैं।

मारियस ने बार को हटाया और तेज़ी से बगीचे में घुस गया। कोसेट उस जगह पर नहीं थी जहाँ वह आमतौर पर उसका इंतज़ार करती थी। वह झाड़ियों को पार करते हुए सीढ़ियों के पास वाले कोने में पहुँचा: "वह वहाँ मेरा इंतज़ार कर रही है," उसने कहा। कोसेट वहाँ नहीं थी। उसने ऊपर देखा और पाया कि घर के शटर बंद थे। उसने बगीचे का चक्कर लगाया, बगीचा सुनसान था। फिर वह घर लौटा और प्रेम में व्याकुल, मदहोश, भयभीत, दुःख और बेचैनी से व्याकुल, जैसे कोई मालिक बुरे समय में घर लौटता है, उसने शटर पर दस्तक दी। उसने बार-बार दस्तक दी, इस जोखिम के साथ कि कहीं खिड़की खुल न जाए और उसके पिता का उदास चेहरा दिखाई दे और पूछे: "तुम्हें क्या चाहिए?" यह उस दृश्य के मुकाबले कुछ भी नहीं था जिसकी उसे धुंधली सी झलक मिली थी। जब उसने दस्तक देना बंद कर दिया, तो उसने ऊँची आवाज़ में कोसेट को पुकारा। - "कोसेट!" वह चिल्लाया; “कोसेट!” उसने

दबंगई से दोहराया। कोई जवाब नहीं आया। सब कुछ खत्म हो चुका था। बगीचे में कोई नहीं था; घर में कोई नहीं था।

मारियस ने अपनी निराशा भरी निगाहें उस वीरान घर पर टिका दीं, जो किसी मकबरे की तरह काला और खामोश था, और उससे भी कहीं ज़्यादा खाली था। उसने उस पत्थर की चौकी को निहारा जिस पर उसने कोसेट के साथ कई प्यारे पल बिताए थे। फिर वह सीढ़ियों पर बैठ गया, उसका दिल मिठास और दृढ़ संकल्प से भर गया, उसने मन ही मन अपनी प्रेमिका को आशीर्वाद दिया और खुद से कहा कि कोसेट के चले जाने के बाद अब उसके लिए मरने के अलावा और कुछ नहीं बचा है।

अचानक उसे एक आवाज सुनाई दी जो गली से आती हुई प्रतीत हो रही थी और पेड़ों के बीच से उसे पुकार रही थी:

श्री मारियस!

वह उठने लगा।

“हे?” उसने कहा।

“श्री मारियस, क्या आप वहां हैं?”

"हाँ।"

“श्री मारियस,” आवाज जारी रही, “आपके दोस्त रू डे ला चानव्रेरी के बैरिकेड पर आपका इंतजार कर रहे हैं।”

यह आवाज़ उसके लिए पूरी तरह अपरिचित नहीं थी। यह एपोनाइन की कर्कश, खुरदरी आवाज़ से मिलती-जुलती थी। मारियस जल्दी से द्वार की ओर बढ़ा, हिलने वाली कुंडी को हटाया, अपना सिर छेद से अंदर डाला और एक युवक को अंधेरे में दौड़ते हुए गायब होते देखा।

III. एम. माबेउफ

जीन वालजेन का पर्स श्री माबेउफ के किसी काम का नहीं था। श्री माबेउफ ने अपनी आदरणीय, बचकानी सादगी में सितारों के उपहार को स्वीकार नहीं किया था; उन्होंने यह नहीं माना था कि एक तारा स्वयं को लुई डी'ओर में बदल सकता है। उन्हें यह समझ नहीं आया था कि जो स्वर्ग से गिरा था वह गैवरोश से आया था। उन्होंने पर्स को मोहल्ले के पुलिस कमिश्नर के पास एक खोई हुई वस्तु के रूप में रख दिया था, जिसे खोजने वाले ने दावेदारों के लिए रखा था। पर्स वास्तव में खो गया था। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि किसी ने भी उस पर दावा नहीं किया और इससे श्री माबेउफ को कोई सहायता नहीं मिली।

इसके अलावा, एम. माबेउफ का पतन जारी रहा।

ऑस्टरलिट्ज़ स्थित अपने बगीचे की तरह ही, गार्डन डेस प्लांट्स में भी नील पर किए गए उनके प्रयोग असफल रहे थे। पिछले वर्ष उन पर गृहस्वामी का वेतन बकाया था; अब, जैसा कि हम देख चुके हैं, उन पर अपने किराए का तीन-चौथाई बकाया था। तेरह महीने बीत जाने के बाद गिरवी की दुकान ने उनकी फ्लोरा की प्लेटें बेच दीं। किसी तांबे के कारीगर ने उनसे बर्तन बना दिए थे। तांबे की प्लेटें खो जाने और अपने पास मौजूद फ्लोरा की अधूरी प्रतियों को भी पूरा न कर पाने के कारण, उन्होंने उस पुस्तक को एक पुराने किताबों के विक्रेता को बहुत कम कीमत पर कबाड़ समझकर बेच दिया। अब उनके जीवन भर के काम का कुछ भी शेष नहीं बचा था। उन्होंने इन प्रतियों के लिए जुटाए गए पैसे को खर्च करने में जुट गए। जब उन्होंने देखा कि यह दयनीय संसाधन भी समाप्त हो रहा है, तो उन्होंने अपना बगीचा छोड़ दिया और उसे बर्बाद होने दिया। इससे पहले, बहुत समय पहले, उन्होंने अपने दो अंडे और गोमांस का एक टुकड़ा भी छोड़ दिया था, जिसे वे कभी-कभार खाते थे। वे रोटी और आलू खाकर गुजारा करते थे। उन्होंने अपना सारा फर्नीचर बेच दिया, फिर अपने बिस्तर, कपड़े और कंबल की सभी प्रतियां, फिर अपने जड़ी-बूटी संग्रह और प्रिंट; लेकिन उन्होंने अपनी सबसे कीमती किताबें अपने पास रखीं, जिनमें से कई अत्यंत दुर्लभ थीं, जैसे कि लेस क्वाड्रिन्स हिस्टोरिक्स डे ला बाइबल, 1560 का संस्करण; ला कॉनकॉर्डेंस डेस बाइबल्स, पियरे डे बेसे द्वारा; लेस मार्गुराइट्स डे ला

मार्गुराइट, जीन डे ला हाये द्वारा, नवारे की रानी को समर्पित; सिएर डे विलियर्स हॉटमैन द्वारा पुस्तक ई ला चार्ज एट डिग्निट डे ल'एंबेसेडर; 1644 का फ्लोरिलेजियम रब्बिनिकम; 1567 का टिबुलस, जिस पर यह शानदार शिलालेख है: वेनेटिस, इन एडिबस मनुतियानिस; और अंत में, डायोजेन्स लेर्टियस की एक पांडुलिपि, जो 1644 में ल्योंस में छपी थी, जिसमें वेटिकन की तेरहवीं शताब्दी की प्रसिद्ध पांडुलिपि संख्या 411 का संस्करण, और वेनिस की दो पांडुलिपियों संख्या 393 और 394 के संस्करण शामिल थे, जिनका हेनरी एस्टिएन ने अत्यंत उपयोगी अध्ययन किया था, और डोरिक बोली के वे सभी अंश भी शामिल थे जो केवल नेपल्स पुस्तकालय की बारहवीं शताब्दी की प्रसिद्ध पांडुलिपि में ही मिलते हैं। एम. माबेउफ ने अपने कमरे में कभी आग नहीं जलाई और मोमबत्ती न जलाने के लिए सूर्यास्त के समय ही सो जाते थे। ऐसा लगता था मानो उनके आसपास कोई पड़ोसी ही न हो: लोग उनके बाहर जाने पर उनसे बचते थे; उन्हें इस बात का एहसास था। एक बच्चे की दयनीयता एक माँ को चिंतित करती है, एक युवक की दयनीयता एक युवती को चिंतित करती है, एक बूढ़े व्यक्ति की दयनीयता किसी को चिंतित नहीं करती। यह सभी कष्टों में सबसे निर्मम होता है। फिर भी, फादर माबेउफ ने अपनी बचकानी शांति पूरी तरह से नहीं खोई थी। जब उनकी नज़रें अपनी किताबों पर पड़ीं तो उनकी आँखों में एक अलग ही चमक आ गई, और जब उन्होंने डायोजेन्स लेर्टियस की अनूठी प्रति को देखा तो उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई। कांच के दरवाजों वाली उनकी किताबों की अलमारी ही एकमात्र ऐसी चीज़ थी जिसे उन्होंने अनिवार्य वस्तुओं के अलावा अपने पास रखा था।

एक दिन, मदर प्लूटार्क ने उनसे कहा:—

मेरे पास खाना खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं।

वह जिसे रात का खाना कहती थी, उसमें एक रोटी और चार या पांच आलू होते थे।

"उधार पर?" एम. माबेउफ ने सुझाव दिया।

"आप अच्छी तरह जानते हैं कि लोग मुझे अस्वीकार कर देते हैं।"

एम. माबेउफ ने अपनी किताबों की अलमारी खोली, एक-एक करके अपनी सभी किताबों को ध्यान से देखा, ठीक वैसे ही जैसे कोई पिता अपने बच्चों को नष्ट करने से पहले चुनाव करने से पहले उन्हें देखता है, फिर जल्दी से एक किताब उठाई, उसे

अपनी बगल में दबाया और बाहर चले गए। दो घंटे बाद वे बिना कुछ लिए लौटे, मेज पर तीस सू रखे और बोले:—

आपको रात के खाने के लिए कुछ न कुछ मिल जाएगा।

उस क्षण से, मदर प्लूटार्क ने एक उदास पर्दा देखा, जो फिर कभी नहीं उठा, और वह पर्दा उस बूढ़े व्यक्ति के स्पष्टवादी चेहरे पर छा गया।

अगले दिन, उसके अगले दिन और उसके अगले दिन भी, यही प्रक्रिया दोबारा करनी पड़ी।

एम. माबेउफ एक किताब लेकर निकले और एक सिक्का लेकर लौटे। जब पुराने सामान बेचने वालों ने देखा कि उन्हें मजबूरी में किताबें बेचनी पड़ रही हैं, तो उन्होंने उनसे बीस सू में वह किताब खरीद ली जिसके लिए उन्होंने बीस फ्रैंक दिए थे, कभी-कभी तो उन्हीं दुकानों पर। एक-एक करके पूरी लाइब्रेरी की किताबें इसी तरह बिकती चली गईं। वे कभी-कभी कहते थे, "लेकिन मैं अस्सी साल का हो गया हूँ;" मानो उन्हें यह गुप्त आशा हो कि वे अपनी किताबों को पढ़ने से पहले ही अपने जीवन के अंत तक पहुँच जाएँ। उनका उदास मन और गहराता चला गया। हालाँकि, एक बार उन्हें खुशी मिली। वे रॉबर्ट एस्टिएन की एक किताब लेकर गए थे, जिसे उन्होंने क्वाई मालाक्वेस के नीचे पैंतीस सू में बेच दिया था, और वे एल्डस की एक किताब लेकर लौटे, जिसे उन्होंने रू डेस ग्रेस में चालीस सू में खरीदा था।—"मुझे पाँच सू देने हैं," उन्होंने मदर प्लूटार्क की ओर मुस्कुराते हुए कहा। उस दिन उन्होंने रात का खाना नहीं खाया।

वह बागवानी समिति के सदस्य थे। उनकी दरिद्रता का पता वहीं चला। समिति के अध्यक्ष उनसे मिलने आए, कृषि एवं वाणिज्य मंत्री से उनके बारे में बात करने का वादा किया और ऐसा किया भी। मंत्री ने आश्चर्य से कहा, “अरे वाह! मुझे तो यही लगता है! एक बुजुर्ग विद्वान! एक वनस्पति विज्ञानी! एक नेक इंसान! उनके लिए कुछ तो करना ही होगा!” अगले दिन, एम. माबेउफ को मंत्री के साथ रात्रिभोज का निमंत्रण मिला। खुशी से कांपते हुए उन्होंने वह पत्र मदर प्लूटार्क को दिखाया। उन्होंने कहा, “हम बच गए!” तय दिन पर वे मंत्री के घर गए। उन्होंने देखा कि उनकी फटी हुई टाई, उनका लंबा, चौकोर कोट और उनके पॉलिश किए हुए जूते देखकर दरबारी चकित रह गए। किसी ने उनसे बात नहीं

की, मंत्री ने भी नहीं। शाम लगभग दस बजे, जब वे अभी भी किसी के जवाब का इंतजार कर रहे थे, तभी उन्होंने मंत्री की पत्नी को सुना, जो एक खूबसूरत महिला थीं और गले से नीचे तक गाउन पहने थीं, जिनसे वे बात करने की हिम्मत नहीं कर पाए थे, उन्होंने पूछा: “वह बुजुर्ग कौन हैं?” वह आधी रात को मूसलाधार बारिश में पैदल घर लौटा। उसने वहाँ जाने के लिए एक गाड़ी का किराया चुकाने के लिए एक एल्ज़ेविर (एक प्रकार का घोड़ागाड़ी) बेच दी थी।

उन्हें सोने से पहले हर रात डायोजेन्स लेर्टियस की कुछ पंक्तियाँ पढ़ने की आदत पड़ गई थी। उन्हें इतनी ग्रीक आती थी कि वे अपने पास मौजूद ग्रंथ की बारीकियों का आनंद ले सकें। अब उनके पास आनंद का कोई और स्रोत नहीं था। कई सप्ताह बीत गए। अचानक, मदर प्लूटार्क बीमार पड़ गईं। बेकरी से रोटी खरीदने के लिए पैसे न होना जितना दुखद होता है, उससे भी ज़्यादा दुखद होता है दवा की दुकान से दवा खरीदने के लिए पैसे न होना। एक शाम, डॉक्टर ने एक बहुत महंगी दवा लिख दी। और उनकी हालत बिगड़ती जा रही थी; एक नर्स की ज़रूरत पड़ी। एम. माबेउफ ने अपनी किताबों की अलमारी खोली; वहाँ कुछ नहीं था। आखिरी किताब भी गायब हो गई थी। उनके पास अब सिर्फ डायोजेन्स लेर्टियस ही बची थी। उन्होंने इस अनोखी प्रति को अपनी बगल में दबाया और बाहर चले गए। यह 4 जून, 1832 का दिन था; वे पोर्ट सेंट-जैक्स में रॉयल के उत्तराधिकारी के पास गए और सौ फ्रैंक लेकर लौटे। उसने पांच-पांच फ्रैंक के सिक्कों का ढेर बूढ़ी नौकरानी की नाइटस्टैंड पर रख दिया और बिना कुछ कहे अपने कमरे में लौट गया।

अगली सुबह, भोर होते ही, वह अपने बगीचे में उखड़े हुए खंभे पर बैठ गया, और पूरी सुबह झाड़ियों के ऊपर से उसे देखा जा सकता था। वह सिर झुकाए, बिना हिले-डुले, मुरझाए फूलों की क्यारियों पर टकटकी लगाए बैठा रहा। रुक-रुक कर बारिश होती रही; बूढ़े व्यक्ति को इसका एहसास ही नहीं हुआ।

दोपहर में पेरिस में असाधारण शोर मच उठा। यह गोलियों की आवाज और भीड़ के कोलाहल जैसा लग रहा था।

फादर माबेउफ ने अपना सिर उठाया। उन्होंने एक माली को गुजरते देखा और पूछा:—

"यह क्या है?"

माली ने पीठ पर फावड़ा रखे हुए अत्यंत उदासीन स्वर में उत्तर दिया:

“ये दंगे हैं।”
“कौन से दंगे?”
"हां, वे लड़ रहे हैं।"
वे क्यों लड़ रहे हैं?
“अरे, हे भगवान!” माली ने हैरानी से कहा।
“किस दिशा में?” एम. माबेउफ ने आगे पूछा।
"आर्सेनल के पड़ोस में।"
फादर माबेउफ अपने कमरे में गए, अपनी टोपी उठाई, यंत्रवत रूप से अपनी बगल में रखने के लिए एक किताब खोजने लगे, लेकिन कोई किताब नहीं मिली, फिर बोले: "अरे! सचमुच!" और स्तब्ध भाव से चले गए।

□□□□□□ X. 5 □□□, 1832

I. प्रश्न की सतह

विद्रोह किससे बना है? शून्य से और सब कुछ से। धीरे-धीरे क्षीण होती बिजली से, अचानक भड़क उठती लौ से, भटकती शक्ति से, गुजरती सांस से। यह सांस बोलने वाले सिरों, सपने देखने वाले दिमागों, पीड़ा सहने वाली आत्माओं, जलती हुई भावनाओं, चीखती हुई पीड़ा से टकराती है और उन्हें अपने साथ बहा ले जाती है।

किधर?

बेतरतीब ढंग से। राज्य के विरुद्ध, कानूनों के विरुद्ध, समृद्धि के विरुद्ध और दूसरों के दुस्साहस के विरुद्ध।

उत्तेजित दृढ़ विश्वास, कड़वे उत्साह, उग्र आक्रोश, दमित युद्ध की प्रवृत्ति, उत्कर्षित युवावस्था का साहस, उदार अंधापन; जिज्ञासा, परिवर्तन की चाह, अप्रत्याशित की प्यास, वह भावना जो नए नाटक के पोस्टर पढ़ने में आनंद देती है, और रंगमंच पर प्रॉम्प्टर की सीटी से प्रेम करती है; अस्पष्ट घृणा, द्वेष, निराशाएँ, हर वह घमंड जो सोचता है कि नियति ने उसे कंगाल कर दिया है; बेचैनी, खोखले सपने, घिरी हुई महत्वाकांक्षाएँ, जो भी पतन, किसी परिणाम की आशा करता है, संक्षेप में, सबसे निचले स्तर पर, भीड़, वह कीचड़ जो आग पकड़ लेता है—ये सभी विद्रोह के तत्व हैं। जो सबसे महान है और जो सबसे नीच है; वे प्राणी जो हर सीमा से परे भटकते हैं, किसी अवसर की प्रतीक्षा करते हैं, वे बेपरवाह, आवारा, चौराहों के भटकते हुए, वे जो रात में ऐसे वीरान घरों में सोते हैं जिनकी छत आसमान के ठंडे बादलों के सिवा कोई और नहीं होती, वे जो हर दिन अपनी रोटी परिश्रम से नहीं बल्कि संयोग से मांगते हैं, वे जो गरीबी और शून्यता के अज्ञात में जी रहे हैं, नंगे हाथों वाले, नंगे पैरों वाले, विद्रोह से जुड़े हैं। जो कोई भी अपने मन में राज्य, जीवन या भाग्य के किसी भी कृत्य के विरुद्ध गुप्त विद्रोह पालता है, वह विद्रोह के लिए तैयार है, और जैसे ही यह विद्रोह प्रकट होता है, वह कांपने लगता है और खुद को बवंडर में बहता हुआ महसूस करता है।

विद्रोह सामाजिक वातावरण में उठने वाली एक प्रकार की बवंडर है जो कुछ विशेष परिस्थितियों में अचानक उत्पन्न होती है, और जो घूमते-घूमते ऊपर

उठती है, नीचे उतरती है, गरजती है, चीरती है, ध्वस्त करती है, कुचलती है, तोड़ती है, जड़ से उखाड़ देती है, और अपने साथ महान और छोटे, बलवान और दुर्बल, वृक्ष के तने और तिनके के डंठल को बहा ले जाती है। जिसका यह भंडाफोड़ करती है, उसका भी वही हाल होता है जो इसे बहा ले जाती है! यह एक को दूसरे से टकराकर चकनाचूर कर देती है।

यह अपने वश में आने वालों को एक अवर्णनीय और असाधारण शक्ति प्रदान करता है। यह पहले आने वाले को घटनाओं के बल से भर देता है; यह हर चीज को प्रक्षेप्य में बदल देता है। यह एक खुरदुरे पत्थर को तोप का गोला बना देता है, और एक कुली को सेनापति।

अगर हम कुछ चालाक राजनीतिक विचारों वाले भविष्यवक्ताओं की मानें तो सत्ता के नज़रिए से थोड़ा-बहुत विद्रोह वांछनीय है। व्यवस्था: विद्रोह उन सरकारों को मज़बूत करता है जिन्हें वह उखाड़ फेंकता नहीं है। यह सेना की परीक्षा लेता है; यह पूंजीपति वर्ग को पुष्ट करता है; यह पुलिस की ताकत को उजागर करता है; यह सामाजिक ढांचे की शक्ति को दर्शाता है। यह एक तरह का व्यायाम है; यह लगभग स्वच्छता है। विद्रोह के बाद सत्ता बेहतर स्थिति में होती है, जैसे अच्छी तरह मालिश करवाने के बाद इंसान।

तीस साल पहले, विद्रोह को बिल्कुल अलग दृष्टिकोण से देखा जाता था।

हर बात का एक सिद्धांत है, जो खुद को "समझदारी" बताता है; फिलिंटस बनाम एल्सेस्टिस; झूठ और सच के बीच मध्यस्थता का प्रस्ताव; स्पष्टीकरण, नसीहत, बल्कि घमंडी बचाव जो दोषारोपण और बहाने से भरा होने के कारण खुद को ज्ञान समझता है, और अक्सर केवल पांडित्य ही होता है। इसी का परिणाम "स्वर्ण मध्य मार्ग" नामक एक संपूर्ण राजनीतिक विचारधारा है। ठंडे पानी और गर्म पानी के बीच, यह गुनगुने पानी की तरह है। यह विचारधारा, अपनी झूठी गहराई और सतहीपन के साथ, मूल कारणों तक जाए बिना प्रभावों का विश्लेषण करती है, और अपने अर्ध-विज्ञान के शिखर से सार्वजनिक क्षेत्र में मचे हंगामे की आलोचना करती है।

यदि हम इस मत को मानें, तो “1830 के घटनाक्रम को जटिल बनाने वाले दंगों ने उस महान घटना की पवित्रता का एक अंश छीन लिया। जुलाई की क्रांति एक शानदार जन-उत्तेजना थी, जिसके बाद अचानक आसमान साफ हो गया। दंगों ने फिर से बादलों

से भरे आसमान को प्रकट कर दिया। उन्होंने उस क्रांति को, जो शुरू में अपनी सर्वसम्मति के लिए उल्लेखनीय थी, एक झगड़े में बदल दिया। जुलाई की क्रांति में, जैसा कि हर उस प्रगति में होता है जो रुक-रुक कर होती है, कुछ गुप्त दरारें थीं; इन दंगों ने उन्हें स्पष्ट कर दिया। ऐसा कहा जा सकता था: ‘अरे! यह टूट गया।’ जुलाई की क्रांति के बाद, केवल मुक्ति का अहसास हुआ; दंगों के बाद, एक तबाही का एहसास हुआ।”

“हर विद्रोह दुकानों को बंद कर देता है, धन की कमी कर देता है, विनिमय को अस्त-व्यस्त कर देता है, व्यापार को रोक देता है, कारोबार को ठप कर देता है, विफलताओं को बढ़ावा देता है; धन की कमी हो जाती है, निजी संपत्ति अनिश्चित हो जाती है, सार्वजनिक साख डगमगा जाती है, उद्योग अस्त-व्यस्त हो जाता है, पूंजी वापस ले ली जाती है, काम कम दाम पर मिलता है, हर जगह भय का माहौल छा जाता है; हर शहर में प्रतिकार के झटके लगते हैं। इसी से खामियां पैदा होती हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि किसी दंगे के पहले दिन फ्रांस को बीस मिलियन का नुकसान होता है, दूसरे दिन चालीस का, तीसरे दिन साठ का, तीन दिन के विद्रोह में एक सौ बीस मिलियन का नुकसान होता है, यानी, यदि केवल वित्तीय परिणाम को ही ध्यान में रखा जाए, तो यह एक आपदा, एक जहाज के डूबने या एक हारी हुई लड़ाई के बराबर है, जो साठ युद्धपोतों के बेड़े को नष्ट कर सकती है।

“निस्संदेह, ऐतिहासिक रूप से, विद्रोहों की अपनी एक अलग ही सुंदरता होती है; फुटपाथों का युद्ध, झाड़ियों के युद्ध से कम भव्य और कम मार्मिक नहीं है: एक में जंगलों की आत्मा है, दूसरे में शहरों का हृदय; एक में जीन चौआन हैं, दूसरे में जीन। विद्रोहों ने पेरिस के चरित्र के सभी सबसे मौलिक बिंदुओं को लाल चमक से रोशन कर दिया है - उदारता, भक्ति, तूफानी उल्लास, छात्रों का यह सिद्ध करना कि बहादुरी बुद्धिमत्ता का हिस्सा है, अजेय राष्ट्रीय रक्षक, दुकानदारों के डेरे, गली के बच्चों के किले, राहगीरों द्वारा मृत्यु के प्रति अवमानना। स्कूल और सेनाएँ आपस में भिड़ गईं। आखिरकार, लड़ने वालों के बीच केवल उम्र का अंतर था; नस्ल एक ही है; ये वही धैर्यवान पुरुष हैं जो बीस वर्ष की आयु में अपने विचारों के लिए, चालीस वर्ष की आयु में अपने परिवारों के लिए शहीद हो गए। सेना, जो गृहयुद्धों में हमेशा एक दुखद पहलू रही है, ने विवेक को दुस्साहस के विरुद्ध खड़ा किया।

विद्रोहों ने, लोगों की निडरता को सिद्ध करते हुए, इसने बुर्जुआ वर्ग के साहस को भी शिक्षित किया।

“यह सब ठीक है। लेकिन क्या यह सब खून-खराबे के लायक है? और इस खून-खराबे में भविष्य का अंधकार, प्रगति में बाधा, सर्वोत्कृष्ट लोगों में बेचैनी, ईमानदार उदारवादियों की निराशा, क्रांति को अपने ही हाथों से दिए गए घावों पर खुश होता विदेशी निरंकुश शासन, और 1830 के पराजितों का विजयी होकर यह कहना कि ‘हमने तो पहले ही कहा था!’ भी जोड़ लीजिए। पेरिस का विस्तार शायद हो गया है, लेकिन फ्रांस निश्चित रूप से सिकुड़ गया है। और, जैसा कि सबको बताना आवश्यक है, उन नरसंहारों को भी जोड़ लीजिए जिन्होंने बेलगाम स्वतंत्रता पर क्रूर व्यवस्था की जीत को अक्सर कलंकित किया है। संक्षेप में, विद्रोह विनाशकारी साबित हुए हैं।”

इस प्रकार, ज्ञान के उस सन्निकटन को व्यक्त किया जा सकता है जिससे बुर्जुआ वर्ग, जनता के उस सन्निकटन को, बड़ी आसानी से संतुष्ट कर लेता है।

हम “विद्रोह” शब्द को बहुत बड़ा और इसलिए बहुत सुविधाजनक मानते हुए अस्वीकार करते हैं। हम एक जन आंदोलन और दूसरे जन आंदोलन में अंतर करते हैं। हम यह नहीं पूछते कि क्या किसी विद्रोह की लागत किसी युद्ध के बराबर होती है। आख़िर युद्ध की बात ही क्या है? यहाँ युद्ध का प्रश्न उठता है। क्या युद्ध किसी विद्रोह की तुलना में कम विपत्ति है? और फिर, क्या सभी विद्रोह विपत्तियाँ हैं? और यदि जुलाई के विद्रोह में एक सौ बीस मिलियन की लागत आई हो तो क्या होगा? स्पेन में फिलिप पंचम की सत्ता स्थापित करने में फ्रांस को दो अरब की लागत आई। समान लागत पर भी, हम 14 जुलाई को प्राथमिकता देंगे। हालाँकि, हम इन आँकड़ों को अस्वीकार करते हैं, जो तर्क प्रतीत होते हैं लेकिन मात्र शब्द हैं। विद्रोह की जानकारी होने पर, हम उसका स्वयं विश्लेषण करते हैं। ऊपर प्रस्तुत सैद्धांतिक आपत्ति में जो कुछ भी कहा गया है, उसमें प्रभाव के अलावा किसी और चीज़ का प्रश्न नहीं है; हम कारण की खोज करते हैं।

हम स्पष्ट रूप से बताएंगे।

II. मामले की जड़

विद्रोह और बगावत में फर्क होता है; ये क्रोध के दो अलग-अलग रूप हैं; एक गलत है, दूसरा सही। लोकतांत्रिक राज्यों में, जो न्याय पर आधारित हैं, कभी-कभी ऐसा होता है कि एक गुट सत्ता हथिया लेता है; तब पूरा समाज उठ खड़ा होता है और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए हथियार उठाने तक की नौबत आ जाती है। सामूहिक संप्रभुता से उत्पन्न होने वाले सभी मामलों में, गुट के विरुद्ध पूरे समाज का युद्ध विद्रोह है; गुट का पूरे समाज पर हमला बगावत है; जिस प्रकार ट्यूलरीज़ में राजा हो या कन्वेंशन, उन पर हमला न्यायसंगत या अन्यायपूर्ण होता है। जनता पर चलाई गई वही तोप 10 अगस्त को गलत होती है, और 14 वेंडमियर को सही। दिखने में एक जैसे, लेकिन वास्तविकता में बिल्कुल अलग; स्विस लोग झूठ का बचाव करते हैं, बोनापार्ट सच का। सार्वभौमिक मताधिकार ने अपनी स्वतंत्रता और संप्रभुता में जो बदलाव किए हैं, उन्हें सड़कों पर होने वाले विरोध प्रदर्शनों से खत्म नहीं किया जा सकता। सभ्यता से जुड़ी बातों में भी यही बात लागू होती है; जनता की सहज प्रवृत्ति, जो आज दूरदर्शी है, कल विचलित हो सकती है। वही आक्रोश टेरे के विरुद्ध जायज़ है और टर्गोट के विरुद्ध बेतुका। मशीनों का विनाश, गोदामों की लूट, रेल की पटरियों का टूटना, बंदरगाहों का विध्वंस, भीड़ द्वारा गलत रास्ते अपनाना, न्याय को नकार कर प्रगति को रोकना, छात्रों द्वारा रामस की हत्या, रूसो को स्विट्जरलैंड से निष्कासित कर पत्थर मारना—यह सब विद्रोह है। मूसा के विरुद्ध इस्राएल, फोसियन के विरुद्ध एथेंस, सिसरो के विरुद्ध रोम—यह एक विद्रोह है; बैस्टिल के विरुद्ध पेरिस—यह बगावत है। सिकंदर के विरुद्ध सैनिक, क्रिस्टोफर कोलंबस के विरुद्ध नाविक—यह वही विद्रोह है; अधर्मी विद्रोह; क्यों? क्योंकि सिकंदर तलवार से एशिया के लिए वही कर रहा है जो क्रिस्टोफर कोलंबस कंपास से अमेरिका के लिए कर रहा है; सिकंदर, कोलंबस की तरह, एक नई दुनिया की खोज कर रहा है। सभ्यता को इस नई दुनिया का उपहार प्रकाश की ऐसी वृद्धि है कि ऐसे में किसी भी प्रकार का प्रतिरोध निंदनीय है। कभी-कभी जनता स्वयं के प्रति झूठी निष्ठा का ढोंग करती है। जनसमूह जनता के गद्दार होते हैं। उदाहरण के लिए, क्या अवैध नमक व्यापारियों के उस

लंबे और खूनी विरोध से अधिक विचित्र कुछ हो सकता है? एक वैध, निरंतर विद्रोह, जो निर्णायक क्षण में, मुक्ति के दिन, जनता की विजय के ठीक क्षण में, सिंहासन को अपना लेता है, एक नाजायज विद्रोह में बदल जाता है, और एक विद्रोह से एक विद्रोह बन जाता है - अज्ञानता की भयावह कृतियाँ! अवैध नमक व्यापारी शाही फांसी से बच निकलता है, और गले में रस्सी का एक सिरा डालकर सफेद ताज पहन लेता है। "नमक शुल्क का नाश हो," के साथ ही "राजा अमर रहे!" की आवाज़ गूंजती है। सेंट-बार्थेलेमी के हत्यारे, सितंबर के लुटेरे, एविग्नन के नरसंहार करने वाले, कोलिग्नी के हत्यारे, मैडम लैम्बेल के हत्यारे, ब्रून के हत्यारे, मिक्वेलेट्स, वर्डेट्स, कैडेनेट्स, जेहू के साथी, ब्रासार्ड के शूरवीर—देखो एक विद्रोह। ला वेंडि एक भव्य, सर्वव्यापी विद्रोह है। आंदोलन में सही की आवाज़ पहचानी जा सकती है, यह हमेशा उत्तेजित जनसमूह के कांपने से नहीं निकलती; इसमें उन्मादी क्रोध हैं, टूटी हुई घंटियाँ हैं, सभी खतरे की घंटियाँ पीतल की आवाज़ नहीं देतीं। जुनून और अज्ञानता का संघर्ष प्रगति के झटके से बिल्कुल अलग है। मुझे दिखाओ कि तुम किस दिशा में जा रहे हो। उठो, अगर तुम चाहो, लेकिन ऐसा करो कि तुम महान बन सको। कोई भी विद्रोह आगे बढ़ने की दिशा के बिना नहीं होता। किसी भी अन्य प्रकार का विद्रोह बुरा है; पीछे की ओर उठाया गया हर हिंसक कदम एक विद्रोह है; पीछे हटना मानव जाति के विरुद्ध हिंसा का कृत्य करना है। विद्रोह सत्य की ओर से उमड़ता हुआ क्रोध है; विद्रोह से उत्पन्न होने वाली राहें सत्य की चिंगारी को जन्म देती हैं। ये राहें विद्रोह को केवल अपनी कीचड़ ही विरासत में देती हैं। लुई XIV के विरुद्ध डेंटन का विद्रोह है; डेंटन के विरुद्ध हेबर्ट का विद्रोह है।

इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि कुछ मामलों में विद्रोह करना, जैसा कि लाफायेट कहते हैं, सबसे पवित्र कर्तव्य हो सकता है, तो एक विद्रोह सबसे घातक अपराध भी हो सकता है।

गर्मी की तीव्रता में भी अंतर होता है; विद्रोह अक्सर ज्वालामुखी की तरह होता है, जबकि क्रांति अक्सर तिनकों की आग की तरह होती है।

जैसा कि हमने कहा है, विद्रोह कभी-कभी सत्ता में बैठे लोगों के बीच भी पाया जाता है। पोलिग्नैक एक दंगाई था; कैमिल्ले डेसमोलिन्स सत्ता में बैठे लोगों में से एक था।

विद्रोह कभी-कभी पुनरुत्थान होता है।

सार्वभौमिक मताधिकार द्वारा हर समस्या का समाधान एक पूर्णतः आधुनिक तथ्य है, और इससे पहले का सारा इतिहास, चार हज़ार वर्षों तक, अधिकारों के हनन और जनमानस की पीड़ा से भरा रहा है। इतिहास का प्रत्येक युग अपने साथ वह विरोध लेकर आता है जो उसमें निहित है। सीज़र के शासनकाल में कोई विद्रोह नहीं हुआ, लेकिन जुवेनल का विद्रोह हुआ।

आक्रोश ने ग्रैची का स्थान ले लिया है।

सीज़र के शासनकाल में सियेन में निर्वासन हुआ; एनल्स का लेखक भी है। हम पटमोस के भीषण निर्वासन की बात नहीं कर रहे हैं, जिसने आदर्श जगत के नाम पर वास्तविक जगत को चुनौती दी, जिसने अपने दृष्टिकोण को एक विशाल व्यंग्य में बदल दिया और रोम-नीनवे, रोम-बेबिलोन और रोम-सोडोम पर सर्वनाश की ज्वलंत झलक प्रस्तुत की। जॉन अपनी चट्टान पर, अपने आसन पर स्फिंक्स के समान है; हम उसे समझ सकते हैं, वह यहूदी है और यह हिब्रू भाषा में लिखा गया है; लेकिन एनल्स लिखने वाला व्यक्ति लैटिन मूल का है, बल्कि कहें तो वह एक रोमन है।

नीरो जैसे शासकों का शासन अंधकारमय था, इसलिए उन्हें भी उसी रंग में रंगना चाहिए। केवल नक्काशी का काम फीका पड़ जाएगा; इसके लिए एक ऐसी प्रभावशाली गद्य शैली की आवश्यकता है जो चुभती हो।

दार्शनिकों के लिए निरंकुश शासकों का भी महत्व है। जंजीरों में जकड़ा हुआ शब्द भयानक हो जाता है। जब किसी राष्ट्र पर उसके शासक द्वारा मौन थोपा जाता है, तो लेखक अपनी शैली को दुगुना-तिगुना कर देता है। इस मौन से एक रहस्यमय परिपूर्णता उत्पन्न होती है जो विचारों में समाहित होकर काँच के समान जम जाती है। इतिहास का संक्षेपण इतिहासकार में संक्षिप्तता उत्पन्न करता है। किसी प्रसिद्ध गद्य की शिलाखंडी दृढ़ता निरंकुश शासक द्वारा किए गए संचय का ही परिणाम है।

तानाशाही लेखक को सीमित दायरे में बांध देती है, जो असल में शक्ति का ही विस्तार है। सिसरो का काल, जो वेर्रेस के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त था, कैलिगुला के मामले में फीका पड़ जाता। वाक्य में जितना कम विस्तार होगा, प्रहार उतना ही तीव्र होगा। टैसिटस पूरी शक्ति से सोचता है।

न्याय और सत्य में समाहित एक महान हृदय की ईमानदारी, बिजली की तरह चौंका देती है।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि टैकिटस को ऐतिहासिक रूप से सीज़र के स्थान पर नहीं रखा जा सकता। टिबेरी का इतिहास सीज़र के लिए आरक्षित था। सीज़र और टैकिटस दो क्रमिक घटनाएँ हैं, जिनके बीच टकराव को ईश्वर ने रहस्यमय ढंग से टाल दिया है, क्योंकि जब वह सदियों का मंचन करता है, तो प्रवेश और निकास को नियंत्रित करता है। सीज़र महान है, टैकिटस महान है; ईश्वर इन दोनों महानताओं को आपस में टकराने से रोककर उनकी रक्षा करता है। न्याय का रक्षक, सीज़र पर प्रहार करके शायद बहुत कठोर प्रहार कर सकता है और अन्याय कर सकता है। ईश्वर ऐसा नहीं चाहता। अफ्रीका और स्पेन के महान युद्ध, सिसिली के समुद्री डाकुओं का विनाश, गॉल, ब्रिटनी और जर्मनी में सभ्यता का आगमन—यह सारी महिमा रूबिकॉन नदी को ढकती है। यहाँ ईश्वरीय न्याय की एक विशेष कोमलता है, जो प्रख्यात सत्ता हथियाने वाले पर उस दुर्जेय इतिहासकार को न छोड़ने में संकोच करता है, सीज़र को टैकिटस से बचाता है, और प्रतिभा को उचित सम्मान देता है।

निःसंदेह, निरंकुशता, निरंकुशता ही रहती है, चाहे शासक कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो। सभी प्रख्यात तानाशाहों के शासन में भ्रष्टाचार होता है, लेकिन कुख्यात तानाशाहों के शासन में यह नैतिक अभिशाप और भी भयावह होता है। ऐसे शासन में, शर्म को छुपाने वाला कुछ भी नहीं होता; और जो लोग उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जैसे कि टैसिटस और जुवेनल, वे इस कलंक को समस्त मानवता के समक्ष करारा प्रहार करते हैं।

विटेलियस के शासनकाल में रोम की गंध सिला के शासनकाल से भी बदतर थी। क्लॉडियस और डोमिटियन के शासनकाल में, अत्याचारी की घृणास्पदता के अनुरूप ही नीचता की विकृति व्याप्त थी। दासों की दुष्टता निरंकुश शासक का प्रत्यक्ष परिणाम थी; इन दबी हुई अंतरात्माओं से एक दुर्गंध निकलती थी जिसमें स्वामी की झलक दिखाई देती थी; सार्वजनिक सत्ताएँ अपवित्र थीं; हृदय छोटे थे; अंतरात्माएँ सुस्त थीं, आत्माएँ कीड़े-मकोड़ों जैसी थीं; कैराकाला के शासनकाल में भी यही स्थिति थी, कॉमोडस के शासनकाल में भी यही स्थिति थी, हेलियोगैबलस के शासनकाल में भी यही स्थिति थी, जबकि सीज़र के

शासनकाल में रोमन सीनेट से केवल चीलों के घोंसलों की विशिष्ट गंदगी की दुर्गंध ही आती थी।

अतः टैसिटस और जुवेनल का आगमन, जो स्पष्ट रूप से विलंबित था; प्रमाण के समय ही प्रवर्तक का आगमन होता है।

लेकिन जुवेनल और टैसिटस, बाइबिल के समय में यशायाह की तरह, मध्य युग में दांते की तरह, मनुष्य हैं; दंगा और विद्रोह भीड़ है, जो कभी सही होती है और कभी गलत।

अधिकांश मामलों में, दंगा किसी भौतिक तथ्य से उत्पन्न होता है; विद्रोह हमेशा एक नैतिक घटना होती है। दंगा मसानेलो का उदाहरण है; विद्रोह स्पार्टाकस का। विद्रोह मन से जुड़ा होता है, दंगा पेट से; गैस्टर चिढ़ जाता है; लेकिन गैस्टर निश्चित रूप से हमेशा गलत नहीं होता। अकाल और दंगे के मामलों में, उदाहरण के लिए, बुज़ांसाइस एक सच्चा, मार्मिक और न्यायसंगत दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। फिर भी, यह एक दंगा ही रहता है। क्यों? क्योंकि मूल रूप से, इसका स्वरूप ही गलत था। सही होते हुए भी संकोची, शक्तिशाली होते हुए भी हिंसक, यह अंधाधुंध हमला करता था; यह एक अंधे हाथी की तरह चलता था; यह अपने पीछे बूढ़े पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के शव छोड़ जाता था; यह बिना कारण जाने निर्दोष और बेगुनाह लोगों का खून चाहता था। जनता का पोषण एक अच्छा उद्देश्य है; उनका नरसंहार करना एक बुरा साधन है।

सभी सशस्त्र विरोध प्रदर्शन, चाहे वे कितने ही जायज़ क्यों न हों, चाहे 10 अगस्त का हो या 14 जुलाई का, एक ही तरह की समस्याओं से शुरू होते हैं। सही विचारधारा के मुक्त होने से पहले, उथल-पुथल और उपद्रव मचता है। शुरुआत में, विद्रोह एक दंगा होता है, ठीक वैसे ही जैसे नदी एक तेज धारा होती है। आमतौर पर यह उस सागर में समा जाता है: क्रांति। लेकिन कभी-कभी, नैतिक क्षितिज पर हावी रहने वाले उन ऊंचे पहाड़ों से, न्याय, ज्ञान, तर्क, सही, आदर्श की शुद्ध बर्फ से बने हुए, चट्टान से चट्टान तक लंबी गिरावट के बाद, अपनी पारदर्शिता में आकाश को प्रतिबिंबित करने के बाद और विजय के राजसी रूप में सौ धाराओं से बढ़ने के बाद, विद्रोह अचानक किसी दलदल में खो जाता है, जैसे राइन नदी दलदल में खो जाती है।

ये सब अतीत की बात है, भविष्य कुछ और ही है। सार्वभौमिक मताधिकार का यह अद्भुत गुण है कि यह दंगों को आरंभ में ही समाप्त कर देता है, और विद्रोह को मतदान का अधिकार देकर उसे हथियारों से वंचित कर देता है। गलियों में होने वाले युद्धों के साथ-साथ सीमावर्ती युद्धों का भी अंत होना अपरिहार्य है। आज चाहे जो भी हो, कल शांति होगी।

लेकिन विद्रोह, दंगा और पूर्व और बाद के बीच मतभेदों के बारे में, सही मायने में, बुर्जुआ वर्ग को कुछ भी पता नहीं होता। उसके मन में, सब कुछ राजद्रोह है, सीधा-सादा विद्रोह है, मालिक के विरुद्ध कुत्ते का विद्रोह है, काटने का प्रयास है जिसे जंजीर और पिंजरे में बंद करके दंडित किया जाना चाहिए, भौंकना, झपटना, जब तक कि एक दिन अचानक कुत्ते का सिर बड़ा होकर, अंधेरे में शेर के सामने धुंधला सा दिखाई न दे।

तब पूंजीपति वर्ग चिल्लाता है: "जनता जिंदाबाद!"

इस व्याख्या को देखते हुए, इतिहास की दृष्टि से जून 1832 का आंदोलन क्या दर्शाता है? क्या यह एक विद्रोह था? क्या यह एक बगावत थी?

इस भयावह घटना को मंच पर प्रस्तुत करते समय, हमसे कभी-कभार विद्रोह शब्द का प्रयोग हो सकता है, लेकिन केवल सतही तथ्यों को अलग करने के लिए, और हमेशा विद्रोह (रूप) और बगावत (आधार) के बीच अंतर को बनाए रखने के लिए।

1832 के इस आंदोलन में, इसके तीव्र उद्भव और दुखद अंत में, इतनी भव्यता थी कि जो लोग इसे मात्र एक विद्रोह मानते हैं, वे भी इसका उल्लेख आदरपूर्वक ही करते हैं। उनके लिए, यह 1830 के एक अवशेष के समान है। वे कहते हैं कि उत्तेजित कल्पनाएँ एक दिन में शांत नहीं होतीं। क्रांति को अचानक समाप्त नहीं किया जा सकता। इसे शांत होने से पहले कुछ उतार-चढ़ाव से गुजरना ही पड़ता है, जैसे कोई पर्वत मैदान में समा जाता है। जुरा पर्वत श्रृंखला के बिना आल्प्स पर्वतमाला नहीं है, न ही अस्तुरिया पर्वत श्रृंखला के बिना पाइरेनीज़ पर्वतमाला है।

समकालीन इतिहास का यह दयनीय संकट, जिसे पेरिसवासियों की स्मृति में "दंगों का युग" कहा जाता है, निश्चित रूप से इस सदी के तूफानी दौर का एक विशिष्ट क्षण है। पाठ शुरू करने से पहले, एक अंतिम शब्द।

जिन तथ्यों का हम वर्णन करने जा रहे हैं, वे उस नाटकीय और जीवंत वास्तविकता से संबंधित हैं, जिसे इतिहासकार समय और स्थान की कमी के कारण कभी-कभी नज़रअंदाज़ कर देता है। फिर भी, हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि वहाँ जीवन, धड़कन और मानवीय कंपन मौजूद है। जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं, छोटी-छोटी बातें बड़ी घटनाओं की पृष्ठभूमि होती हैं और इतिहास की दूरी में खो जाती हैं। "दंगों का युग" कहलाने वाला यह काल इस प्रकार के विवरणों से भरा पड़ा है। न्यायिक जाँचों ने शायद इतिहास के अलावा किसी और कारण से भी गहराई तक जाकर सच्चाई का पता नहीं लगाया है। इसलिए, हम ज्ञात और प्रकाशित विशिष्टताओं के बीच उन बातों को उजागर करेंगे जो अब तक अज्ञात थीं, उन तथ्यों के बारे में जिन्हें कुछ लोग भूल चुके हैं और कुछ की मृत्यु हो चुकी है। इन विशाल घटनाओं के अधिकांश पात्र गायब हो चुके हैं; अगले ही दिन से वे चुप हो गए; लेकिन जो हम वर्णन करेंगे, उसके बारे में हम कह सकेंगे: "हमने यह देखा है।" हम कुछ नामों में बदलाव करेंगे, क्योंकि इतिहास घटनाओं का वर्णन करता है, उनका खंडन नहीं करता, लेकिन जो घटना हम प्रस्तुत करेंगे वह वास्तविक होगी। जिस पुस्तक को हम अभी लिख रहे हैं, उसकी शर्तों के अनुसार, हम 5 और 6 जून, 1832 के दो दिनों की केवल एक ही घटना और एक ही पक्ष को दिखाएंगे, और निश्चित रूप से, वह भी सबसे कम ज्ञात घटना है। लेकिन हम इसे इस प्रकार प्रस्तुत करेंगे कि पाठक उस अंधकारमय पर्दे के पीछे, जिसे हम हटाने वाले हैं, इस भयावह सार्वजनिक घटना के वास्तविक स्वरूप की एक झलक पा सके।

III. एक अंत्येष्टि; पुनर्जन्म का एक अवसर

1832 की वसंत ऋतु में, यद्यपि पिछले तीन महीनों से हैजा ने सभी के मन में भय का माहौल बना रखा था और उनकी बेचैनी पर एक अवर्णनीय और निराशाजनक सन्नाटा छा गया था, पेरिस में उथल-पुथल मचने की पूरी संभावना थी। जैसा कि हमने कहा है, यह विशाल शहर एक तोप के समान है; जब इसमें गोला भर दिया जाता है, तो एक चिंगारी ही काफी होती है और गोली चल जाती है। जून 1832 में, वह चिंगारी जनरल लामार्क की मृत्यु थी।

लामार्क एक प्रख्यात और कर्मठ व्यक्ति थे। उन्होंने साम्राज्य और पुनर्स्थापना काल में, दोनों युगों के लिए आवश्यक वीरता का प्रदर्शन किया था - युद्धक्षेत्र की वीरता और मंच की वीरता। वे जितने वीर थे, उतने ही वाक्पटु भी थे; उनके भाषण में तलवार की झलक स्पष्ट थी। अपने पूर्ववर्ती, फॉय की तरह, उन्होंने कमान संभालने के बाद स्वतंत्रता का समर्थन किया; वे वामपंथी और अति वामपंथी के बीच में थे, जनता के प्रिय थे क्योंकि उन्होंने भविष्य की संभावनाओं को स्वीकार किया था, और जनता के प्रिय थे क्योंकि उन्होंने सम्राट की अच्छी सेवा की थी; वे कॉम्टेस गेरार्ड और ड्रोएट के साथ नेपोलियन के प्रमुख मार्शलों में से एक थे। 1815 की संधियों ने उन्हें व्यक्तिगत अपराध मानकर पद से हटा दिया। वे वेलिंगटन से घोर घृणा करते थे, जो जनता को प्रसन्न करती थी; और सत्रह वर्षों तक, उन्होंने वाटरलू की त्रासदी को गरिमापूर्ण ढंग से संजोए रखा, बीच की घटनाओं पर शायद ही कोई ध्यान दिया। अपनी मृत्यु की पीड़ा में, अंतिम क्षण में, उन्होंने उस तलवार को अपने सीने से लगा रखा था जो उन्हें सौ दिनों के सैन्य अभियानों के अधिकारियों द्वारा भेंट की गई थी। नेपोलियन ने "सेना" शब्द का उच्चारण करते हुए प्राण त्यागे, जबकि लामार्क ने "देश" शब्द का उच्चारण करते हुए प्राण त्यागे।

उनकी मृत्यु, जिसकी पहले से ही उम्मीद थी, जनता के लिए एक बड़ी क्षति थी और सरकार के लिए एक अवसर के रूप में। यह मृत्यु एक पीड़ा थी। कड़वी हर चीज की तरह, पीड़ा भी विद्रोह का रूप ले सकती है। और यही हुआ।

पिछली शाम और 5 जून की सुबह, जिस दिन लामार्क का अंतिम संस्कार होना था, फाउबर्ग सेंट-एंटोइन, जहाँ से जुलूस को गुज़रना था, का माहौल बेहद भयावह था। गलियों का यह शोरगुल भरा जाल अफवाहों से भरा हुआ था। लोगों ने अपनी- अपनी क्षमता के अनुसार हथियार उठा लिए थे। बढ़ई अपने कारखाने से दरवाज़े तोड़ने के लिए भारी वज़न उठा ले गए थे। उनमें से एक ने मोज़ा बुनने वाले के हुक को तोड़कर और ठूंठ को तेज़ करके एक खंजर बना लिया था। एक अन्य, जिसे "हमला करने" का बुखार था, तीन दिनों तक बिना कपड़ों के सोया रहा। लोम्बियर नाम के एक बढ़ई की मुलाकात अपने एक साथी से हुई, जिसने उससे पूछा: "तुम कहाँ जा रहे हो?" "अरे! मेरे पास तो कोई हथियार नहीं है।" "तो फिर क्या?" "मैं अपने लकड़ी के गोदाम से अपने कम्पास लेने जा रहा हूँ।" "किसलिए?" "मुझे नहीं पता," लोम्बियर ने कहा। जैक्लिन नाम के एक फुर्तीले आदमी ने कुछ राहगीर कारीगरों को रोककर कहा, “इधर आओ!” उसने उन्हें दस सूस की शराब पिलाई और पूछा, “क्या तुम्हारे पास काम है?” “नहीं।” “फिल्सपियर के पास जाओ, जो बैरियर चारोन और बैरियर मोंट्रेइल के बीच में है, वहाँ तुम्हें काम मिल जाएगा।” फिल्सपियर के यहाँ उन्हें कारतूस और हथियार मिले। कुछ जाने-माने नेता अपने आदमियों को इकट्ठा करने के लिए एक घर से दूसरे घर जा रहे थे। बैरियर डू ट्रोन के पास बार्थेलेमी के यहाँ और पेटिट-चैप्यू के पास कैपेल के यहाँ, शराब पीने वाले लोग गंभीर स्वर में एक-दूसरे से बात कर रहे थे। उन्हें कहते सुना गया, “क्या तुम्हारे पास पिस्तौल है?” “मेरी ब्लाउज के नीचे।” “और तुम्हारे पास?” “मेरी कमीज के नीचे।” रू ट्रैवर्सियर में, ब्लैंड वर्कशॉप के सामने, और मैसन-ब्रूली के प्रांगण में, औजार निर्माता बर्नियर के सामने, समूह आपस में फुसफुसा रहे थे। उनमें से एक मावोट नाम का व्यक्ति भी था, जो किसी भी दुकान में एक सप्ताह से अधिक नहीं टिकता था, क्योंकि कारीगर उसे हमेशा निकाल देते थे "क्योंकि उन्हें हर दिन उससे बहस करनी पड़ती थी।" मावोट अगले दिन रू मेनिलमोंटेंट के बैरिकेड पर मारा गया। प्रेटोट, जो संघर्ष में शहीद होने वाला था, मावोट का समर्थन कर रहा था, और जब उससे पूछा गया: "तुम्हारा उद्देश्य क्या है?" तो उसने उत्तर दिया: "विद्रोह।" मजदूर रू डे बर्सी के कोने पर इकट्ठा हुए, और फाउबर्ग सेंट-मार्सेउ के क्रांतिकारी एजेंट लेमारिन का इंतजार कर रहे थे। नारे लगभग सार्वजनिक रूप से लगाए जा रहे थे।

5 जून के दिन, जब बारिश और धूप दोनों मिली-जुली थीं, जनरल लामार्क की अंतिम यात्रा औपचारिक सैन्य धूमधाम के साथ पेरिस से गुजरी, एहतियात के तौर पर इसमें कुछ और शान-शौकत जोड़ी गई थी। दो बटालियन, ढोल और हथियार लहराते हुए, दस हजार नेशनल गार्ड, अपनी तलवारें कमर पर रखे हुए, ताबूत के साथ चल रहे थे। शव वाहन को नौजवान खींच रहे थे। इनवैलिड्स के अधिकारी लॉरेल की शाखाएँ लिए तुरंत उसके पीछे चल रहे थे। फिर असंख्य, विचित्र, उत्तेजित भीड़ उमड़ी, जिसमें 'फ्रेंड्स ऑफ द पीपल' के सदस्य, लॉ स्कूल, मेडिकल स्कूल के छात्र, सभी राष्ट्रीयताओं के शरणार्थी, स्पेनिश, इतालवी, जर्मन और पोलिश झंडे, तिरंगे क्षैतिज बैनर, हर संभव प्रकार के बैनर, हरे पत्ते लहराते बच्चे, उस समय हड़ताल पर बैठे पत्थर काटने वाले और बढ़ई, कागज की टोपियों से पहचाने जाने वाले प्रिंटर, दो-दो, तीन-तीन के समूह में मार्च करते हुए, नारे लगाते हुए, लगभग सभी लाठियाँ लहराते हुए, कुछ तलवारें लहराते हुए, अव्यवस्थित और फिर भी एक ही भावना से भरे हुए, कभी एक उग्र भीड़, कभी एक कतार। टुकड़ियों ने खुद को नेता चुना; एक व्यक्ति दो पिस्तौलों से लैस होकर सबके सामने से परेड करता हुआ प्रतीत हुआ, और उसके सामने कतारें अलग हो गईं। बुलेवार्ड की गलियों में, पेड़ों की शाखाओं में, बालकनियों पर, खिड़कियों में, छतों पर, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के सिर उमड़ पड़े; सबकी निगाहें चिंता से भरी हुई थीं। हथियारों से लैस लोगों का एक समूह गुजर रहा था, और भयभीत लोगों का एक समूह उन्हें देख रहा था।

सरकार अपनी ओर से स्थिति का जायजा ले रही थी। वह तलवार पर हाथ रखे स्थिति का अवलोकन कर रही थी। प्लेस लुई XV में चार बटालियनें घोड़ों पर सवार, तुरही सिर पर लिए, कारतूसों से भरी पेटियाँ और लदी हुई बंदूकें लिए मार्च के लिए तैयार दिखाई दे रही थीं; लैटिन ग्रामीण क्षेत्र और जार्डिन डेस प्लांट्स में, नगर रक्षक एक गली से दूसरी गली में तैनात थे; हाले-ऑक्स-विंस में ड्रैगूनों की एक बटालियन; ग्रेव में 12 वीं लाइट इन्फैंट्री का आधा हिस्सा, और बाकी आधा बैस्टिल में; सेलेस्टिन्स में 6 वीं ड्रैगून; और लूव्र का प्रांगण तोपखाने से भरा हुआ था। शेष सैनिक अपनी बैरकों में बंद थे, पेरिस के आसपास के रेजिमेंटों को छोड़कर। सत्ता अस्थिर थी, और शहर में 24,000 और उपनगरों में 30,000 सैनिकों की इस खतरनाक भीड़ पर नियंत्रण बनाए रखा गया था।

जुलूस में तरह-तरह की खबरें चल रही थीं। सत्तावादी चालों के संकेत मिल रहे थे; ड्यूक डी रीचस्टैड की बात हो रही थी, जिसे ईश्वर ने ठीक उसी समय मृत्यु के लिए चुन लिया था जब जनता उसे साम्राज्य का शासक चुन रही थी। एक व्यक्ति, जिसका नाम अज्ञात ही रहा, ने घोषणा की कि एक निश्चित समय पर दो अधिकारी, जिन्हें अपने पक्ष में कर लिया गया था, हथियारों के कारखाने के दरवाजे जनता के लिए खोल देंगे। उपस्थित अधिकांश लोगों के माथे पर उत्साह और निराशा का मिलाजुला भाव साफ झलक रहा था। उस भीड़ में, जो ऐसी उग्र लेकिन नेक भावनाओं में डूबी हुई थी, कहीं-कहीं अपराधियों के असली चेहरे और नीच मुख दिखाई दे रहे थे जो कह रहे थे: "चलो लूटपाट करें!" कुछ ऐसी हलचलें होती हैं जो दलदलों की गहराई में हलचल मचा देती हैं और पानी में कीचड़ के बादल उठा देती हैं। यह एक ऐसी घटना है जिससे "अच्छी तरह प्रशिक्षित" पुलिसकर्मी अनजान नहीं हैं।

मृतक के घर से जुलूस बड़ी धीमी गति से बुलेवार्ड्स होते हुए बैस्टिल तक पहुंचा। रुक-रुक कर बारिश हो रही थी; लेकिन उस भीड़ पर बारिश का कोई असर नहीं पड़ा। कई घटनाएं घटीं - ताबूत को वेंडोम स्तंभ के चारों ओर घुमाया गया, ड्यूक डी फिट्ज़-जेम्स पर पत्थर फेंके गए, जिन्हें अपनी टोपी सिर पर रखे बालकनी पर देखा गया, एक लोकप्रिय झंडे से फ्रांसीसी मुर्गे को फाड़कर कीचड़ में घसीटा गया, पोर्ट सेंट-मार्टिन में एक पुलिसकर्मी तलवार के वार से घायल हो गया, 12 वीं लाइट इन्फैंट्री के एक अधिकारी ने जोर से कहा: "मैं एक रिपब्लिकन हूं", पॉलिटेक्निक स्कूल के सदस्यों ने घर पर रहने के आदेशों के बावजूद अचानक आकर हंगामा मचा दिया, और "पॉलिटेक्निक जिंदाबाद! गणतंत्र जिंदाबाद!" के नारे अंतिम संस्कार जुलूस के गुजरने के दौरान गूंजते रहे। बैस्टिल में, फाउबर्ग सेंट-एंटोइन से उतरने वाले जिज्ञासु और प्रभावशाली लोगों की लंबी कतारें जुलूस में शामिल हो गईं, और भीड़ में एक भयानक उग्रता पैदा होने लगी।

एक व्यक्ति दूसरे से कहता सुनाई दिया: "क्या तुम उस लाल दाढ़ी वाले आदमी को देख रहे हो? वही गोली चलाने का आदेश देगा।" ऐसा प्रतीत होता है कि यह लाल दाढ़ी वाला व्यक्ति एक अन्य दंगे, क्वेनिसेट कांड में भी मौजूद था, जिसे यही कार्य सौंपा गया था।

शवयात्रा बैस्टिल के पास से गुजरी, छोटे पुल को पार किया और ऑस्टरलिट्ज़ पुल के खुले मैदान पर पहुँची। वहाँ वह रुक गई। उस क्षण भीड़ को ऊपर से देखने पर ऐसा लग रहा था मानो कोई धूमकेतु हो जिसका सिर खुले मैदान पर हो और पूंछ क्वाई बॉर्डन पर फैली हो, बैस्टिल को ढके हुए हो और बुलेवार्ड पर पोर्ट सेंट-मार्टिन तक फैली हो। शवयात्रा के चारों ओर एक घेरा बना लिया गया। विशाल जनसमूह शांत खड़ा रहा। लाफायेट ने भाषण दिया और लामार्क को विदाई दी। यह एक मार्मिक और गरिमामय क्षण था, सभी के सिर झुके हुए थे, सभी के दिल खुशी से धड़क रहे थे।

अचानक, काले वस्त्र पहने एक घुड़सवार व्यक्ति लाल झंडा लिए, और कुछ लोगों का कहना है कि लाल स्वतंत्रता-टोपी से सुशोभित भाला लिए हुए, समूह के बीचोंबीच प्रकट हुआ। लाफायेट ने अपना सिर दूसरी ओर घुमा लिया। एक्सेलमैन्स जुलूस से अलग हो गए।

इस लाल झंडे ने एक तूफान खड़ा कर दिया और उसी के बीच गायब हो गया। बुलेवार्ड बॉर्डन से ऑस्टरलिट्ज़ पुल तक, एक ऐसा शोरगुल मच गया जो लहरों की तरह उमड़ रहा था और भीड़ को हिलाकर रख दिया। दो ज़ोरदार नारे गूंजे: “लामार्क को पैंथियन ले जाओ! लाफायेट को टाउन हॉल ले जाओ!” भीड़ के शोरगुल के बीच, कुछ युवकों ने खुद को तैयार किया और लामार्क को शव वाहन में ऑस्टरलिट्ज़ पुल के पार और लाफायेट को एक तांगे में क्वाई मोरलैंड के साथ घसीटना शुरू कर दिया।

लाफायेट को घेरकर जयकारे लगा रही भीड़ में, यह देखा गया कि लुडविग स्नाइडर नाम का एक जर्मन व्यक्ति सामने आया, जिसकी बाद में शतायुता के साथ मृत्यु हो गई, जो 1776 के युद्ध में भी शामिल था, और जिसने वाशिंगटन के नेतृत्व में ट्रेंटन में और लाफायेट के नेतृत्व में ब्रांडीवाइन में लड़ाई लड़ी थी।

इसी बीच, बाएं किनारे पर नगरपालिका की घुड़सवार सेना हरकत में आ गई और पुल को घेर लिया। दाएं किनारे पर, सेलेस्टिन्स से ड्रैगून सैनिक निकले और क्वाई मोरलैंड के किनारे तैनात हो गए। लाफायेट को घसीट रहे सैनिकों ने अचानक घाट के कोने पर उन्हें देख लिया और चिल्लाए: "ड्रैगून सैनिक!" ड्रैगून सैनिक चुपचाप, धीरे-धीरे आगे बढ़े, उनकी पिस्तौलें कमरबंद में

थीं, तलवारें म्यान में थीं, बंदूकें चमड़े के सॉकेट में लटकी हुई थीं, और उनके चेहरे पर उदासी भरी उम्मीद का भाव था।

वे छोटे पुल से दो सौ कदम दूर रुक गए। जिस गाड़ी में लाफायेट बैठे थे, वह उनकी ओर बढ़ी, उनकी कतारें खुल गईं और गाड़ी को आगे बढ़ने दिया, फिर उसके पीछे बंद हो गईं। उसी क्षण ड्रैगून सैनिक और भीड़ आमने-सामने आ गए। औरतें दहशत में भाग गईं। उस घातक क्षण में क्या हुआ? कोई नहीं कह सकता। यह वह अंधकारमय क्षण है जब दो बादल एक साथ मिलते हैं। कुछ का कहना है कि शस्त्रागार की दिशा में हमले की घोषणा करते हुए तुरही की आवाज़ सुनाई दी, जबकि अन्य का कहना है कि एक बच्चे ने एक ड्रैगून सैनिक पर खंजर से वार किया। असलियत यह है कि अचानक तीन गोलियां चलीं: पहली गोली से स्क्वाड्रन के प्रमुख चोलेट की मौत हो गई, दूसरी गोली से एक बूढ़ी बहरी औरत की मौत हो गई जो अपनी खिड़की बंद कर रही थी, तीसरी गोली से एक अधिकारी का कंधा झुलस गया; एक औरत चीखी: "वे बहुत जल्दी शुरू कर रहे हैं!" और अचानक, ड्रैगून सैनिकों का एक दस्ता, जो अब तक बैरक में ही रहा था, तेज रफ्तार से नंगी तलवारें लिए, रू बासोम्पियर और बुलेवार्ड बॉर्डन से होते हुए, अपने सामने आने वाली हर चीज को बहा ले जाता हुआ दिखाई दिया।

फिर सब कुछ कहा जा चुका है, आंधी थम सी गई है, पत्थर बरसने लगे हैं, गोलियों की बौछार होने लगी है, अनेक लोग नदी के किनारे पर गिर पड़े हैं और अब पानी से भरी सीन नदी की छोटी सी धारा को पार कर रहे हैं, आइल लूवियर्स के लकड़ी के गोदाम, वह विशाल किला जो तैयार खड़ा है, लड़ाकों से खूंटे गूँज रहे हैं, पिस्तौल की गोलियां चल रही हैं, बैरिकेडिंग शुरू हो गई है, पीछे धकेले गए युवक शव वाहन के साथ दौड़ते हुए ऑस्टरलिट्ज़ पुल पार कर रहे हैं, नगर निगम के रक्षक, कारबिनियर दौड़ पड़े हैं, ड्रैगून अपनी तलवारें चला रहे हैं, भीड़ चारों दिशाओं में बिखर गई है, युद्ध की अफवाह पेरिस के चारों कोनों में फैल गई है, लोग चिल्ला रहे हैं: "हथियार उठाओ!" वे दौड़ते हैं, गिरते हैं, भागते हैं, विरोध करते हैं। क्रोध चारों ओर दंगा फैलाता है जैसे हवा आग फैलाती है।

IV. पूर्व के दिनों की उथल-पुथल

किसी दंगे का पहला भड़कना सबसे असाधारण होता है। हर जगह सब कुछ एक साथ फूट पड़ता है। क्या इसकी पहले से भविष्यवाणी की गई थी? हाँ। क्या इसकी तैयारी की गई थी? नहीं। यह कहाँ से आता है? फुटपाथों से। यह कहाँ से आता है? बादलों से। यहाँ विद्रोह एक साजिश का रूप ले लेता है; वहाँ एक तात्कालिक घटना का। सबसे पहले आने वाला व्यक्ति भीड़ की धारा को पकड़ लेता है और उसे जहाँ चाहे ले जाता है। एक ऐसी शुरुआत जो आतंक से भरी होती है, जिसमें एक प्रकार का भयानक उल्लास भी मिला होता है। पहले शोरगुल होता है, दुकानें बंद हो जाती हैं, व्यापारियों के सामान गायब हो जाते हैं; फिर छिटपुट गोलियाँ चलती हैं; लोग भागने लगते हैं; बंदूकों की बटों की आवाज़ें दरवाज़ों पर पड़ती हैं, घरों के आंगनों में नौकरों के हंसने और यह कहने की आवाज़ सुनाई देती है: "अब तो हंगामा होने वाला है!"

पंद्रह मिनट भी नहीं बीते थे कि पेरिस में एक साथ बीस अलग-अलग स्थानों पर यही सब हो रहा था।

रू सैंट-क्रॉइक्स-डे-ला-ब्रेटोनरी में, दाढ़ी वाले और लंबे बालों वाले बीस युवक एक शराब की दुकान में दाखिल हुए और कुछ ही देर बाद बाहर निकले, उनके हाथ में क्रेप से ढका हुआ एक क्षैतिज तिरंगा झंडा था, और उनके आगे तीन सशस्त्र व्यक्ति थे, जिनमें से एक के पास तलवार, एक के पास बंदूक और तीसरे के पास भाला था।

रू डेस नोनाइंडियर्स में, एक बहुत ही अच्छे कपड़े पहने हुए बुर्जुआ व्यक्ति, जिसका पेट उभरा हुआ था, आवाज दमदार थी, सिर गंजा था, माथा ऊंचा था, काली दाढ़ी थी, और एक ऐसी सख्त मूंछ थी जो सीधी नहीं हो रही थी, राहगीरों को सार्वजनिक रूप से कारतूस पेश कर रहा था।

सेंट-पियरे-मोंटमार्ट्रे गली में, नंगे हाथों वाले लोग एक काला झंडा लिए घूम रहे थे, जिस पर सफेद अक्षरों में यह लिखा था: गणतंत्र या मृत्यु! रू डेस ज्यूनर्स, रू डू कैड्रन, रू मोंटोरगुइल और रू मंदार में, समूह झंडे लहराते हुए दिखाई दिए, जिन पर सुनहरे अक्षरों में "सेक्शन" शब्द और एक संख्या लिखी

थी। इनमें से एक झंडा लाल और नीला था, जिसके बीच में लगभग न दिखने वाली सफेद पट्टी थी।

उन्होंने बुलेवार्ड सेंट-मार्टिन पर स्थित एक हथियार कारखाने और तीन हथियार बनाने वाली दुकानों को लूट लिया। पहली दुकान रू ब्यूबोर्ग में, दूसरी रू मिशेल-ले-कॉम्ते में और तीसरी रू डू टेम्पल में थी। कुछ ही मिनटों में, भीड़ के हज़ारों लोगों ने दो सौ तीस बंदूकें (लगभग सभी दो बैरल वाली), चौंसठ तलवारें और तिरासी पिस्तौलें छीन लीं और ले गए। और हथियार जुटाने के लिए, एक आदमी ने बंदूक उठाई और दूसरे ने संगीन।

क्वाई डे ला ग्रेव के सामने, बंदूकों से लैस कुछ युवकों ने गोलीबारी के इरादे से कुछ महिलाओं के घरों में डेरा डाल लिया। उनमें से एक के पास फ्लिंटलॉक बंदूक थी। उन्होंने घंटी बजाई, घर में प्रवेश किया और कारतूस बनाने में जुट गए। इन महिलाओं में से एक बताती है: "मुझे पता ही नहीं था कि कारतूस क्या होते हैं; मेरे पति ने ही मुझे बताया।"

एक समूह ने रू डेस विएइल्स-हौड्रिएट्स में एक अनोखी चीजों की दुकान में धावा बोला और यतागन और तुर्की हथियार जब्त कर लिए।

रू डे ला पर्ले में गोली लगने से मारे गए एक राजमिस्त्री का शव पड़ा था।

और फिर दाहिने किनारे पर, बाएं किनारे पर, घाटों पर, चौड़ी सड़कों पर, लैटिन ग्रामीण इलाकों में, हॉल्स के मोहल्ले में, हांफते हुए पुरुष, कारीगर, छात्र, समूहों के सदस्य घोषणाएँ पढ़ते और चिल्लाते थे: "हथियार उठाओ!" उन्होंने सड़क की लालटेनें तोड़ दीं, गाड़ियों को खोल दिया, सड़कों को उजाड़ दिया, घरों के दरवाजे तोड़ दिए, पेड़ उखाड़ दिए, तहखानों की तलाशी ली, शराब की बोतलों को बाहर निकाल दिया, पक्के पत्थरों, खुरदरी पट्टियों, फर्नीचर और तख्तों का ढेर लगा दिया और बैरिकेड बना दिए।

उन्होंने पूंजीपतियों को इस काम में उनकी सहायता करने के लिए मजबूर किया। वे महिलाओं के घरों में घुस गए, उन्हें अपने अनुपस्थित पतियों की तलवारें और बंदूकें सौंपने के लिए मजबूर किया, और उन्होंने सफेदी से दरवाजे पर लिखा: "हथियार सौंप दिए गए हैं।" कुछ ने बंदूकों और तलवारों की रसीदों पर "अपने नाम" लिखकर कहा: "कल मेयर के कार्यालय से इन्हें मंगवा लें।" उन्होंने टाउनहॉल जाते समय सड़कों पर अकेले खड़े संतरियों और नेशनल गार्ड

के जवानों को निहत्था कर दिया। उन्होंने अधिकारियों के कंधे पर लगे बैज फाड़ दिए। रुए डू सिमिटियर-सेंट-निकोलस में, लाठियों और तलवारों से लैस भीड़ द्वारा पीछा किए जाने पर, नेशनल गार्ड के एक अधिकारी ने बड़ी मुश्किल से एक घर में शरण ली, जहाँ से वह रात होने पर ही भेस बदलकर बाहर निकल सका।

क्वार्टियर सेंट-जैक्स में, छात्र अपने होटलों से निकलकर सेंट-हाइकिंथ स्ट्रीट से होते हुए कैफे डू प्रोग्रेस तक गए, या फिर मैथुरिन्स स्ट्रीट पर स्थित कैफे डेस सेप्ट-बिलार्ड्स की ओर उतरे। वहाँ, दरवाजे के सामने, पत्थर के कोने वाले खंभों पर चढ़े युवकों ने हथियार बाँटे। उन्होंने बैरिकेड बनाने के लिए सामग्री प्राप्त करने हेतु ट्रांसनोनाइन स्ट्रीट पर स्थित लकड़ी के गोदाम को लूटा। केवल एक जगह, सेंट-एवोये स्ट्रीट और साइमन-ले-फ्रांक स्ट्रीट के कोने पर, निवासियों ने प्रतिरोध किया, जहाँ उन्होंने बैरिकेड को अपने हाथों से तोड़ दिया। केवल एक जगह विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण किया; उन्होंने नेशनल गार्ड की एक टुकड़ी पर गोलीबारी करने के बाद टेम्पल स्ट्रीट में बनाए गए बैरिकेड को छोड़ दिया और कॉर्डेरी स्ट्रीट से भाग गए। बैरिकेड में तैनात टुकड़ी को एक लाल झंडा, कारतूसों का एक पैकेट और तीन सौ पिस्तौल की गोलियां मिलीं। नेशनल गार्ड्समैन ने झंडे को फाड़ दिया और उसके टुकड़े-टुकड़े करके अपनी संगीनों की नोकों पर उठाकर ले गए।

हम यहाँ जिस सबका वर्णन कर रहे हैं, वह सब एक विशाल कोलाहल के बीच, शहर के हर कोने में धीरे-धीरे और क्रमिक रूप से एक साथ घटित हुआ, मानो बिजली की लपटों का एक समूह एक ही झटके में टूट पड़ा हो। एक घंटे से भी कम समय में, अकेले हॉल्स इलाके में ही सत्ताईस बैरिकेड ज़मीन से उखड़ गए। केंद्र में वह प्रसिद्ध मकान संख्या 50 था, जो जीन और उसके छह सौ साथियों का किला था, और जो एक तरफ सेंट-मेरी के बैरिकेड और दूसरी तरफ रू माउबुई के बैरिकेड से घिरा हुआ था, और इसके सामने स्थित तीन सड़कें थीं: रू डेस आर्सिस, रू सेंट-मार्टिन और रू ऑब्री-ले-बुशर। समकोण पर बने बैरिकेड पीछे हट गए, रू मोंटोरगुइल का बैरिकेड ग्रांडे-ट्रुआंडेरी पर और रू जियोफ्रॉय-लैंगेविन का बैरिकेड रू सैंट-एवोये पर। पेरिस के अन्य बीस इलाकों में, माराइस में, मोंट-सैंटे-जेनेवीव में अनगिनत बैरिकेड्स को तो गिना ही नहीं जा सकता; एक बैरिकेड रू मेनिलमोंटेंट में था, जहाँ एक पोर्ट-कोचेयर अपने कब्जों से

उखड़ा हुआ दिखाई दे रहा था; एक और बैरिकेड होटल-डियू के छोटे पुल के पास था, जो एक "इकोसैस" से बना था, जिसे खोलकर उलट दिया गया था, पुलिस प्रेफेक्चर से तीन सौ कदम की दूरी पर।

रू डेस मेनेट्रियर्स के बैरिकेड पर, एक सलीके से कपड़े पहने व्यक्ति ने मजदूरों को पैसे बांटे। रू ग्रेनेटैट के बैरिकेड पर, एक घुड़सवार प्रकट हुआ और उसने बैरिकेड के कमांडर जैसे दिखने वाले व्यक्ति को चांदी के नोटों का एक बंडल जैसा कुछ दिया। उसने कहा, "यह लीजिए, खर्च, शराब आदि के लिए।" एक हल्के बालों वाला युवक, बिना टाई के, बैरिकेड से बैरिकेड तक पासवर्ड लेकर घूम रहा था। एक अन्य व्यक्ति, जिसके पास नंगी तलवार थी और सिर पर नीली पुलिस टोपी थी, ने पहरेदार तैनात किए। बैरिकेड के बाहर, अंदरूनी इलाकों में, शराब की दुकानें और कुलियों के लॉज को पहरेदारों के घरों में बदल दिया गया था। अन्यथा, दंगा पूरी तरह से वैज्ञानिक सैन्य रणनीति के अनुसार संचालित किया गया था। संकरी, ऊबड़-खाबड़, घुमावदार गलियाँ, जो कोणों और मोड़ों से भरी थीं, बड़ी कुशलता से चुनी गई थीं; विशेष रूप से हाल्स का इलाका, गलियों का एक ऐसा जाल जो जंगल से भी अधिक जटिल था। ऐसा कहा जाता था कि सोसाइटी ऑफ द फ्रेंड्स ऑफ द पीपल ने क्वार्टियर सैंट-एवोये में विद्रोह का नेतृत्व करने का जिम्मा उठाया था। रू डू पोंसो में मारे गए एक व्यक्ति की तलाशी ली गई, जिसके पास पेरिस का नक्शा मिला।

वास्तव में विद्रोह की दिशा तय करने वाली चीज़ वातावरण में व्याप्त एक प्रकार की विचित्र उग्रता थी। विद्रोहियों ने एक ओर से अचानक बैरिकेड्स बना लिए और दूसरी ओर से गैरीसन की लगभग सभी चौकियों पर कब्ज़ा कर लिया। तीन घंटे से भी कम समय में, जैसे बारूद की एक गाड़ी आग पकड़ लेती है, विद्रोहियों ने दाहिने किनारे पर शस्त्रागार, प्लेस रॉयल के मेयर कार्यालय, पूरे माराइस, पोपिनकोर्ट हथियार कारखाने, ला गैलियोट, शैतो-डी'ओ और हाल्स के पास की सभी सड़कों पर आक्रमण कर कब्जा कर लिया; बाएं किनारे पर, वेटरन्स की बैरक, सैंट-पेलागी, प्लेस मौबर्ट, ड्यूक्स-मौलिन्स का बारूद भंडार और सभी बैरियरों पर कब्जा कर लिया। शाम पांच बजे तक, वे बैस्टिल, लिंगरी और ब्लैंक्स-मंटेओक्स के स्वामी बन चुके थे; उनके जासूस प्लेस डेस विक्टोयर्स तक पहुँच चुके थे और उन्होंने बैंक, पेटिट्स-पेरेस

बैरक और डाकघर को धमकाया। पेरिस का एक तिहाई हिस्सा दंगाइयों के कब्जे में था।

यह संघर्ष हर जगह बड़े पैमाने पर शुरू हो गया था; और, घरों में जबरन निशस्त्रीकरण के लिए की गई छापेमारी और हथियारों की दुकानों पर जल्दबाजी में किए गए आक्रमण के परिणामस्वरूप, पत्थरों को फेंकने से शुरू हुआ युद्ध गोलियों की बौछार में बदल गया।

शाम के लगभग छह बजे, पैसेज डू सौमन युद्धक्षेत्र बन गया। एक तरफ विद्रोह था, दूसरी तरफ सैनिक। वे एक द्वार से दूसरे द्वार तक गोलियाँ चला रहे थे। एक प्रेक्षक, एक स्वप्नद्रष्टा, इस पुस्तक का लेखक, जो इस ज्वालामुखी को करीब से देखने गया था, खुद को दोनों तरफ की आग के बीच के मार्ग में पाया। गोलियों से बचने के लिए उसके पास दुकानों को अलग करने वाले दो अर्ध-स्तंभों का सहारा था; वह लगभग आधे घंटे तक इस नाजुक स्थिति में फंसा रहा।

इसी बीच, युद्ध का आह्वान किया गया, नेशनल गार्ड ने जल्दबाजी में हथियार उठा लिए, सेनाएं मेयर के कार्यालयों से निकलीं और रेजिमेंटें अपनी बैरकों से बाहर आईं। पैसेज डे ल'एनक्रे के सामने एक ढोल वादक पर खंजर से हमला किया गया। रुए डू सिग्न में एक अन्य ढोल वादक पर तीस युवकों ने हमला किया, जिन्होंने उसका वाद्य यंत्र तोड़ दिया और उसकी तलवार छीन ली। रुए ग्रेनियर-सेंट-लाज़ारे में एक अन्य ढोल वादक मारा गया। रुए मिशेल-ले- कॉम्ते में तीन अधिकारी एक के बाद एक मारे गए। रुए डेस लोम्बार्ड्स में कई नगर रक्षक घायल होकर पीछे हट गए।

कौर-बटावे के सामने, नेशनल गार्ड्स की एक टुकड़ी को एक लाल झंडा मिला जिस पर निम्नलिखित शिलालेख अंकित था: गणतंत्रात्मक क्रांति, संख्या 127। क्या यह वास्तव में एक क्रांति थी?

इस विद्रोह ने पेरिस के केंद्र को एक प्रकार का अविभाज्य, घुमावदार और विशाल गढ़ बना दिया था।

वहाँ चूल्हा था; जाहिर तौर पर, वहीं सवाल था। बाकी सब महज़ झड़पें थीं। इस बात का सबूत कि सब कुछ वहीं तय होगा, इस तथ्य में निहित था कि अभी तक वहाँ कोई लड़ाई नहीं चल रही थी।

कुछ रेजिमेंटों में सैनिक अनिश्चित थे, जिससे संकट की भयावह अनिश्चितता और बढ़ गई। उन्हें जुलाई 1830 में 53 वीं रेजिमेंट की तटस्थता पर मिली जनता की जोरदार सराहना याद आ रही थी। दो साहसी, महान युद्धों में सिद्ध हो चुके, मार्शल लोबाउ और जनरल बुगेउड कमान संभाल रहे थे, बुगेउड लोबाउ के अधीन थे। 53 वीं रेजिमेंट की बटालियनों से बनी विशाल गश्तें, जिनमें नेशनल गार्ड की पूरी कंपनियां शामिल थीं, और जिनके आगे एक पुलिस अधिकारी अपने आधिकारिक स्कार्फ पहने चल रहा था, विद्रोह से प्रभावित सड़कों की रेकी करने निकलीं। विद्रोहियों ने अपनी ओर से सभी खुले स्थानों के कोनों पर चौकियां लगा रखी थीं और दुस्साहसपूर्वक अपनी गश्तें बैरिकेड्स के बाहर भेज दी थीं। दोनों पक्ष एक-दूसरे पर नजर रख रहे थे। सरकार, जिसके पास सेना थी, हिचकिचा रही थी; रात लगभग छा चुकी थी और सेंट-मेरी की चेतावनी सुनाई देने लगी थी। उस समय के युद्ध मंत्री, मार्शल सोल्ट, जिन्होंने ऑस्टरलिट्ज़ को देखा था, ने इसे निराशावादी भाव से देखा।

ये अनुभवी नाविक, जो सही युद्धाभ्यास के आदी हैं और जिनके पास एकमात्र संसाधन और मार्गदर्शक के रूप में युद्ध की रणनीति ही है, जनता के उस विशाल प्रकोप के सामने पूरी तरह से विचलित हो जाते हैं जिसे जन आक्रोश कहा जाता है।

उपनगरों के नेशनल गार्ड्स जल्दबाजी और अव्यवस्था में आगे बढ़े। 12 वीं लाइट बटालियन सेंट-डेनिस से दौड़ती हुई आई, 14 वीं लाइन बटालियन कौरबेवोई से पहुंची, मिलिट्री स्कूल की तोपें कैरोसेल पर तैनात हो चुकी थीं; विन्सेनेस से तोपें आ रही थीं।

टुइलरी पर्वतमाला के आसपास एकांत का माहौल बना हुआ था। लुई फिलिप अत्यंत शांत स्वभाव के थे।

V. पेरिस की मौलिकता

जैसा कि हमने कहा है, पिछले दो वर्षों में पेरिस ने एक से अधिक विद्रोह देखे हैं। आम तौर पर, विद्रोही क्षेत्रों की सीमाओं से परे किसी विद्रोह के दौरान पेरिस का माहौल जितना शांत होता है, उतना शांत और कुछ नहीं होता। पेरिस बहुत जल्दी किसी भी चीज़ के लिए अभ्यस्त हो जाता है—यह तो बस एक दंगा है—और पेरिस के पास इतने सारे काम होते हैं कि वह इतने छोटे से मामले पर ध्यान नहीं देता। केवल ये विशाल शहर ही ऐसे दृश्य प्रस्तुत कर सकते हैं। केवल ये विशाल क्षेत्र ही एक ही समय में गृहयुद्ध और एक विचित्र और अवर्णनीय शांति को समाहित कर सकते हैं। आमतौर पर, जब कोई विद्रोह शुरू होता है, जब दुकानदार ढोल की आवाज़, हथियारों का आह्वान, आम चेतावनी सुनता है, तो वह बस इतना कहकर संतुष्ट हो जाता है:—

"ऐसा प्रतीत होता है कि रू सेंट-मार्टिन में कोई झगड़ा चल रहा है।"

या:—

"फौबर्ग सेंट-एंटोइन में।"

अक्सर वह लापरवाही से ये जोड़ देता है:—

या फिर उसी दिशा में कहीं।

बाद में, जब तोपों की गोलीबारी और गोलाबारी की हृदयविदारक और शोकपूर्ण गूँज सुनाई देने लगती है, तो दुकानदार कहता है:—

“गर्मी बढ़ रही है! हेलो, गर्मी बढ़ रही है!”

कुछ ही क्षणों बाद, दंगा भड़क उठता है और अपनी तीव्रता बढ़ाता है, वह जल्दबाजी में अपनी दुकान बंद कर देता है, जल्दी से अपनी वर्दी पहन लेता है, यानी वह अपने माल को सुरक्षित स्थान पर रख देता है और अपनी जान जोखिम में डाल देता है।

लोग चौक में, गलियारे में, संकरी गलियों में गोलियां चलाते हैं; वे बैरिकेड पर कब्जा करते हैं और फिर उसे तोड़ देते हैं; खून बहता है, छर्रों से घरों के अग्रभाग छलनी हो जाते हैं, गोलियां लोगों को उनके बिस्तरों में मार

देती हैं, लाशें सड़कों पर बिखरी पड़ी हैं। कुछ गलियों की दूरी पर, कैफे में बिलियर्ड गेंदों की आवाज सुनाई देती है।

थिएटर खुल जाते हैं और वाडेविल शो दिखाए जाते हैं; उत्सुक लोग युद्ध से भरी इन सड़कों से कुछ ही कदम दूर हंसते-हंसते बातें करते हैं। तांगा गाड़ियां अपने-अपने रास्ते जाती हैं; राहगीर शहर में कहीं डिनर के लिए जा रहे होते हैं। कभी-कभी तो उसी इलाके में जहां लड़ाई चल रही होती है।

1831 में, एक शादी के जुलूस को गुजरने देने के लिए गोलीबारी रोक दी गई थी।

1839 के विद्रोह के समय, रू सेंट-मार्टिन में एक छोटा, कमजोर बूढ़ा व्यक्ति, तिरंगे कपड़े से ढकी एक हाथगाड़ी को धकेलते हुए, जिसमें उसने किसी प्रकार के तरल पदार्थ से भरे जग रखे थे, बैरिकेड से सैनिकों के पास और सैनिकों से बैरिकेड के पास आता-जाता रहा, निष्पक्ष रूप से अपने कोको के गिलास पेश करता रहा—कभी सरकार को, कभी अराजकता को।

इससे अधिक विचित्र कुछ नहीं हो सकता; और यही पेरिस में होने वाले विद्रोहों की अनूठी विशेषता है, जो किसी अन्य राजधानी में नहीं पाई जाती। इसके लिए दो चीजें आवश्यक हैं: पेरिस का आकार और उसका जीवंत वातावरण।
वोल्टेयर और नेपोलियन का शहर होना अनिवार्य है।

लेकिन इस अवसर पर, 25 जून, 1832 को हथियारों के इस्तेमाल के दौरान, उस महान शहर ने कुछ ऐसा महसूस किया जो शायद उसकी अपनी शक्ति से भी अधिक शक्तिशाली था। वह भयभीत था।

दूर-दराज और एकांत इलाकों में भी हर जगह बंद दरवाजे, खिड़कियां और शटर दिखाई दे रहे थे। साहसी लोग हथियार लेकर निकल पड़े, कायर छिप गए। व्यस्त और बेपरवाह राहगीर गायब हो गए। सुबह चार बजे कई सड़कें सुनसान थीं।

खतरनाक जानकारियाँ फैलाई गईं, घातक खबरें प्रसारित की गईं—कि वे बैंक के मालिक थे;—कि अकेले सेंट-मेरी के मठ में ही उनमें से छह सौ लोग थे, जो चर्च में मोर्चाबंदी करके युद्ध की तैयारी में थे; कि उनकी रक्षा पंक्ति पर भरोसा नहीं किया जा सकता था; कि आर्मंड कैरेल मार्शल क्लॉज़ल से मिलने गए थे और मार्शल ने कहा था: "पहले एक रेजिमेंट तैयार करो;" कि लाफायेट बीमार थे, लेकिन फिर भी उन्होंने उनसे कहा था: "मैं तुम्हारे साथ हूँ। जहाँ भी बैठने की जगह होगी, मैं तुम्हारा पीछा करूँगा;" कि हर समय सतर्क रहना

चाहिए; कि रात में पेरिस के सुनसान कोनों में अलग-थलग घरों को लूटा जाएगा (यहाँ पुलिस की यह कल्पना स्पष्ट थी कि ऐनी रेडक्लिफ सरकार के साथ मिलीभगत कर रही थी); कि रू ऑबरी ले बूचर में एक बैटरी स्थापित की गई थी। लोबाउ और बुगेउड आपस में मिलकर योजना बना रहे थे कि आधी रात को, या ज़्यादा से ज़्यादा सुबह होते ही, चार टुकड़ियाँ एक साथ विद्रोह के केंद्र की ओर मार्च करेंगी, पहली बैस्टिल से, दूसरी पोर्ट सेंट-मार्टिन से, तीसरी ग्रेव से और चौथी हाल्स से; यह भी संभव था कि सेना पेरिस खाली करके शैंप-डे-मार्स की ओर पीछे हट जाए; किसी को नहीं पता था कि क्या होगा, लेकिन इस बार मामला निश्चित रूप से गंभीर था।

लोग मार्शल सोल्ट की हिचकिचाहट पर चर्चा करने में व्यस्त थे। उन्होंने तुरंत हमला क्यों नहीं किया? यह निश्चित था कि वे गहरी सोच में डूबे हुए थे। उस अंधकार में बूढ़े शेर को मानो किसी अज्ञात राक्षस की गंध आ रही थी।

शाम हो गई, थिएटर नहीं खुले; गश्ती दल चिड़चिड़ेपन के भाव से इधर-उधर घूम रहे थे; राहगीरों की तलाशी ली जा रही थी; संदिग्ध व्यक्तियों को गिरफ्तार किया जा रहा था। रात नौ बजे तक आठ सौ से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका था, पुलिस मुख्यालय, कॉन्सिएर्जरी और पुलिस बल इन गिरफ्तारियों से बुरी तरह प्रभावित थे।

खास तौर पर कॉन्सिएर्जरी में, पेरिस स्ट्रीट के नाम से जाने जाने वाले लंबे तहखाने में पुआल के गट्ठे बिखरे पड़े थे, जिन पर कैदियों का ढेर लगा हुआ था। ल्योंस के रहने वाले लाग्रेंज ने उन्हें बड़े जोश से संबोधित किया। उन सभी लोगों के बीच से सरसराते हुए पुआल से भारी बारिश जैसी आवाज़ आ रही थी। दूसरी जगहों पर कैदी खुले मैदानों में एक-दूसरे के ऊपर ढेर होकर सो रहे थे।

हर जगह चिंता का माहौल था, और एक अजीब सी कंपकंपी थी जो पेरिस में आमतौर पर नहीं देखी जाती थी।

लोग अपने घरों में दुबके हुए थे; पत्नियां और माताएं बेचैन थीं; चारों ओर बस यही आवाज सुनाई दे रही थी: “हे भगवान! वह घर नहीं आया!” दूर से किसी वाहन की हल्की सी आहट भी मुश्किल से सुनाई दे रही थी।

लोग अपने घरों की दहलीज पर खड़े होकर अफवाहों, चीख-पुकार, कोलाहल, अस्पष्ट और धुंधली आवाज़ों को सुन रहे थे, उन बातों को सुन रहे थे जो कही जा रही थीं: "यह घुड़सवार सेना है," या: "वे तोपें सरपट दौड़ रही हैं," तुरहियों, ढोलों, गोलाबारी को, और सबसे बढ़कर, सेंट-मेरी से आने वाली उस दुखद चेतावनी की गूंज को सुन रहे थे।

वे पहली तोप की आवाज़ का इंतज़ार कर रहे थे। गलियों के कोनों पर लोग उछलकर खड़े हो गए और "घर जाओ!" चिल्लाते हुए गायब हो गए। लोग जल्दी से अपने दरवाज़े बंद करने लगे। वे कहने लगे: "इसका अंत कैसे होगा?" पल-पल, जैसे-जैसे अंधेरा गहराता गया, पेरिस विद्रोह की भयंकर ज्वाला से और भी उदास रंग में रंगता हुआ प्रतीत होने लगा।

पुस्तक XI. परमाणु तूफान से दोस्ती करता है

I. गैवरोचे की कविता की उत्पत्ति के संबंध में कुछ स्पष्टीकरण

जिस क्षण शस्त्रागार के सामने जनता और सेना के सदमे से उपजे विद्रोह ने शवयात्रा के पीछे चल रही भीड़ में आगे-पीछे हलचल मचा दी, और जो पूरे बुलेवार्ड पर जुलूस के आगे-आगे चल रही थी, मानो जुलूस का भार ढो रही हो, उसी क्षण एक भयानक उथल-पुथल मच गई। भगदड़ मच गई, उनकी कतारें टूट गईं, सभी भागने लगे, कुछ हमले के नारे लगाते हुए, तो कुछ भागने के डर से कांपते हुए। बुलेवार्ड को ढकने वाली विशाल नदी पलक झपकते ही दो भागों में बंट गई, दाएं-बाएं बहने लगी और एक उफनते नाले की गर्जना के साथ एक साथ दो सौ गलियों में उफान मारती चली गई।

उसी क्षण, रू मेनिलमोंटेंट से नीचे आ रहा एक फटेहाल बच्चा, जिसके हाथ में खिले हुए लेबर्नम की एक शाखा थी जिसे उसने अभी-अभी बेलेविले की ऊंचाइयों से तोड़ा था, एक कबाड़ व्यापारी की दुकान की खिड़की में एक पुरानी होल्स्टर-पिस्तौल पर नजर पड़ी।

“माँ, आपका नाम क्या था?, मैं आपकी मशीन उधार लेने जा रहा हूँ।”

और वह पिस्तौल लेकर भाग गया।

दो मिनट बाद, रुए अमेलोट और रुए बासे से भाग रहे भयभीत बुर्जुआ लोगों की भीड़ ने पिस्तौल लहराते और गाते हुए उस लड़के को देखा:—

□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□, □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□, □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□, □□□□, □□□□□□ □□□□!

यह छोटा गैवरोश था जो युद्धों में भाग लेने जा रहा था।

सड़क पर चलते हुए उसने देखा कि पिस्तौल में ट्रिगर नहीं था।

उस दोहे का रचयिता कौन था जो उनके मार्च के दौरान विराम चिह्न का काम करता था, और उन सभी गीतों का भी जो वे अक्सर गाया करते थे? हम नहीं जानते। कौन

जानता है? शायद स्वयं वे। हालांकि, गैवरोश प्रचलित सभी लोकप्रिय धुनों से भली-भांति परिचित थे, और वे उनमें अपनी खुद की चहचहाहट मिलाते थे। एक जिज्ञासु और शरारती बच्चे की तरह, उन्होंने प्रकृति की आवाज़ों और पेरिस की आवाज़ों का मिश्रण तैयार किया। उन्होंने पक्षियों के संगीत को कार्यशालाओं के संगीत के साथ मिला दिया। वे चोरों से परिचित थे, जो उनके अपने ही समुदाय के थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने तीन महीने तक एक प्रिंटर के यहाँ प्रशिक्षु के रूप में काम किया था। एक दिन उन्होंने चालीस में से एक, एम. बाउर-लॉर्मियन के लिए एक काम पूरा किया था। गैवरोश एक प्रतिभाशाली विद्वान थे।

इसके अलावा, गैवरोश को इस बात का ज़रा भी आशय नहीं था कि उस भयानक बरसात वाली रात में जब उसने दो शरारती बच्चों को अपने हाथी की शरण दी थी, तब वह अपने ही भाइयों के लिए ईश्वर की भूमिका निभा रहा था। शाम को उसके भाई, सुबह उसके पिता; उसकी रात कुछ ऐसी ही गुज़री थी। भोर होते ही रू डेस बैलेट्स से निकलते ही वह जल्दी से हाथी के पास लौटा, बड़ी चतुराई से उन दोनों शरारती बच्चों को हाथी से उतारा, उनके साथ अपने बनाए हुए नाश्ते को साझा किया और फिर चला गया, उन्हें उस भली माँ, यानी गली के लोगों के हवाले करके, जिन्होंने लगभग पूरी तरह से उसका पालन-पोषण किया था। उन्हें छोड़ते समय, उसने शाम को उसी स्थान पर उनसे मिलने का वादा किया था, और विदाई के तौर पर यह कहा था: “मैं अपनी छड़ी तोड़ता हूँ, दूसरे शब्दों में, मैं अपनी लाठी काटता हूँ, या जैसा कि दरबार में कहते हैं, मैं निकल जाता हूँ। अगर तुम्हें पापा और मम्मी न मिलें, बच्चों, तो आज शाम यहीं वापस आ जाना। मैं तुम्हारे लिए कुछ खाना बना दूँगा, और तुम्हें थोड़ा परेशान करूँगा।” दोनों बच्चे, या तो किसी पुलिसवाले ने उठा लिए और शरणस्थल में रख दिए, या किसी धूर्त ने चुरा लिए, या फिर पेरिस के उस विशाल चीनी पहेली जैसे शहर में कहीं भटक गए, वापस नहीं लौटे। आज के सामाजिक जगत की सबसे निचली गहराइयाँ ऐसे खोए हुए निशानों से भरी पड़ी हैं। गैवरोश ने उन्हें फिर कभी नहीं देखा। उस रात के बाद दस-बारह सप्ताह बीत चुके थे। कई बार उसने अपने सिर के पीछे खुजली करते हुए कहा: “मेरे दोनों बच्चे आखिर कहाँ हैं?”

इसी बीच, वह पिस्तौल हाथ में लिए रू डू पोंट-ऑक्स-चोक्स में पहुँच गया। उसने देखा कि उस गली में केवल एक ही दुकान खुली थी, और हैरानी की बात यह थी

कि वह एक पेस्ट्री बनाने वाले की दुकान थी। अनजान जगह में प्रवेश करने से पहले एक और एप्पल-टर्नओवर खाने का यह एक सुनहरा मौका था। गैवरोश रुका, अपनी जेब में टटोला, जेब को उलट-पलट कर देखा, कुछ नहीं मिला, एक सू भी नहीं, और चिल्लाने लगा: "मदद करो!"

आखिरी केक को नज़रअंदाज़ करना मुश्किल है।

फिर भी, गैवरोश अपने रास्ते पर चलता रहा।

दो मिनट बाद वह सेंट-लुई स्ट्रीट पर था। पार्क-रॉयल स्ट्रीट से गुजरते हुए, उसे सेब के टर्नओवर के उस नुकसान की भरपाई करने की तीव्र इच्छा हुई जो अब तक असंभव था, और उसने दिन दहाड़े थिएटर के पोस्टर फाड़ने के अपार आनंद में खुद को लीन कर लिया।

थोड़ी दूर आगे जाकर, जब उसकी नज़र आरामदेह मुद्रा में दिख रहे कुछ लोगों के समूह पर पड़ी, जो ज़मींदार प्रतीत हो रहे थे, तो उसने अपने कंधे उचकाए और उनके गुज़रते समय बेतरतीब ढंग से अपने सामने दार्शनिक विचारों का यह घूंट भर दिया:

“ये धनवान लोग कितने मोटे हैं! ये तो नशे में चूर हैं! ये तो बस बढ़िया दावतों में मजे करते हैं। उनसे पूछो कि वे अपने पैसे का क्या करते हैं। उन्हें पता नहीं। वे बस खाते हैं, यही करते हैं! जितना उनका पेट भर सके।”

II. गैवरोश का मार्च

खुली सड़क पर बिना ट्रिगर वाली पिस्तौल को हाथ में लहराना इतना सार्वजनिक अनुष्ठान है कि गैवरोश का जोश हर पल बढ़ता जा रहा था। मार्सिलेज़ के कुछ अंश गाते हुए, उसने चिल्लाकर कहा:—

सब ठीक चल रहा है। मेरे बाएं पंजे में बहुत दर्द है, गठिया से बुरी तरह टूटा हुआ है, लेकिन मैं संतुष्ट हूँ, नागरिकों। बुर्जुआ वर्ग को बस इतना करना है कि वे संयम बरतें, मैं उन्हें विध्वंसक दोहे सुना दूँगा। पुलिस के जासूस क्या हैं? कुत्ते। और मैं उनमें से एक को अपनी पिस्तौल की नोक पर रखना चाहता हूँ। मैं अभी बुलेवार्ड से आया हूँ, मेरे दोस्तों। वहाँ गर्मी बढ़ रही है, माहौल थोड़ा गर्म हो रहा है, उबल रहा है। अब बर्तन से झाग निकालने का समय है। आगे बढ़ो, जवानों! खेतों में अशुद्ध खून बहने दो! मैं अपने दिन अपने देश को समर्पित करता हूँ, मैं अपनी रखैल नीनी को फिर कभी नहीं देख पाऊँगा, खत्म, हाँ, नीनी? लेकिन कोई बात नहीं! खुशियाँ अमर रहें! चलो लड़ें, क्रेब्लू! मैं तानाशाही से तंग आ चुका हूँ।

उसी क्षण, नेशनल गार्ड के एक सैनिक का घोड़ा गिर गया, गैवरोश ने अपनी पिस्तौल फुटपाथ पर रख दी और उस सैनिक को उठाकर घोड़े को उठाने में मदद की। इसके बाद उसने अपनी पिस्तौल उठाई और अपने रास्ते पर चल पड़ा। रू डे थोरिग्नी में चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। माराईस की यह विशिष्ट शांति, आसपास के विशाल कोलाहल से बिलकुल अलग थी। एक दरवाजे पर चार महिलाएं बातें कर रही थीं।

स्कॉटलैंड में चुड़ैलों की तिकड़ी है, पेरिस में चुगली करने वाली बूढ़ी चुड़ैलों के चौकड़े हैं; और "तू राजा बनेगा" का नारा कैरेफोर बौडोयर में बोनापार्ट पर उतनी ही दुख भरी आवाज में उछाला जा सकता था जितनी आर्मुयर के मैदान में मैकबेथ पर। आवाज लगभग एक जैसी ही होगी।

रू डे थोरिग्नी की गपशप करने वाली महिलाएं केवल अपनी ही बातों में मशगूल थीं। उनमें से तीन द्वारपाल थीं, और चौथी एक कूड़ा बीनने वाली थी जो अपनी टोकरी पीठ पर लादे रहती थी।

वे चारों मानो वृद्धावस्था के चार कोनों पर खड़े थे, जो कि दुर्बलता, क्षय, विनाश और उदासी हैं।
कूड़ा बीनने वाला विनम्र था। इस खुले समाज में कूड़ा बीनने वाला ही अभिवादन करता है और चौकीदार ही उस पर कृपा बरसाती है। इसका कारण कूड़े का वह कोना है, जो चौकीदारों की इच्छा और कूड़ा इकट्ठा करने वाले की पसंद के अनुसार मोटा या पतला होता है। शायद झाड़ू में भी दयालुता हो।
यह कूड़ा बीनने वाली लड़की बड़ी कृतज्ञ थी, और उसने तीनों द्वारपालों को देखकर बड़ी प्यारी मुस्कान दी! कुछ इस तरह की बातें कही गईं:—
"अरे हाँ, वैसे क्या तुम्हारी बिल्ली अभी भी नाराज़ है?"
"अरे वाह, बिल्लियाँ तो स्वाभाविक रूप से कुत्तों की दुश्मन होती हैं, तुम्हें पता ही है। शिकायत तो कुत्ते ही करते हैं।"
और लोग भी।
लेकिन बिल्ली के पिस्सू इंसानों पर हमला नहीं करते।
“मुसीबत ये नहीं है, कुत्ते खतरनाक होते हैं। मुझे याद है एक साल इतने कुत्ते हो गए थे कि अखबारों में खबर छापनी पड़ी थी। उस समय ट्यूलरीज़ में बड़ी-बड़ी भेड़ें थीं जो रोम के राजा की छोटी सी गाड़ी खींचती थीं। क्या आपको रोम के राजा याद हैं?”
मुझे ड्यूक डी बोर्डो ज्यादा पसंद आया।
मैं लुई XVIII को जानता था। मुझे लुई XVIII ही पसंद है।
"मांस बहुत महंगा है, है ना, मदर पेटागॉन?"
“अरे! रहने दो, कसाई की दुकान तो भयानक है। एक भयानक डरावनी जगह—आजकल वहाँ घटिया टुकड़ों के अलावा कुछ और खरीदना मुमकिन नहीं है।”
यहाँ कूड़ा बीनने वाले ने हस्तक्षेप किया:—
"महिलाओं, कारोबार मंदा है। कूड़े के ढेर बदहाल हैं। अब कोई कुछ भी नहीं फेंकता। सब खा जाते हैं।"
"तुमसे भी गरीब लोग हैं, ला वर्गुलेम।"

“अहा, यह सच है,” कूड़ा बीनने वाले ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, “मेरा एक पेशा है।”
कुछ देर का विराम आया, और कूड़ा बीनने वाले ने, मनुष्य के भीतर अंतर्निहित शेखी बघारने की आवश्यकता के आगे झुकते हुए, आगे कहा:—
“सुबह घर लौटते ही मैं अपनी टोकरी में रखी चीज़ों को छाँटता हूँ, उन्हें अलग-अलग करता हूँ। इससे मेरे कमरे में ढेर लग जाते हैं। मैं चिथड़ों को टोकरी में, गुठलियों और डंठलों को बाल्टी में, लिनेन को अलमारी में, ऊनी कपड़ों को कमोड में, पुराने कागज़ों को खिड़की के कोने में, खाने लायक चीज़ों को कटोरे में, कांच के टुकड़ों को चिमनी में, पुराने जूतों को दरवाजे के पीछे और हड्डियों को बिस्तर के नीचे रखता हूँ।”
गैवरोश उसके पीछे रुक गया था और सुन रहा था।
उन्होंने कहा, "बुजुर्ग महिलाओं, राजनीति की बात करने से आपका क्या मतलब है?"
उस पर चौगुनी चीखों से युक्त एक जोरदार हमला किया गया।
"देखो, एक और बदमाश आ गया।"
“उसके पैडल में क्या है? पिस्तौल?”
"अच्छा, मैं जानना चाहूंगा कि यह किस तरह का भिखारी का बच्चा है?"
"इस तरह के व्यक्ति से निपटना कभी आसान नहीं होता, जब तक कि वह अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई न कर रहा हो।"
गैवरोश ने प्रतिशोध के रूप में तिरस्कारपूर्वक अपने अंगूठे से अपनी नाक की नोक को ऊपर उठाया और अपनी हथेली को चौड़ा खोल दिया।
कूड़ा बीनने वाला रोते हुए बोला:—
"तुम दुष्ट, नंगे पैर वाले छोटे बदमाश!"
पैटागॉन नाम की महिला ने भय से अपने हाथ एक साथ ताली बजाई।
“बुराई तो ज़रूर होगी। पड़ोस में जो नौकर आता है, उसकी छोटी-छोटी नुकीली दाढ़ी है। मैंने उसे रोज़ एक गुलाबी टोपी पहने युवक के साथ देखा है; आज मैंने उसे देखा, और उसके हाथ में बंदूक थी। मेम बाचेक्स कहती हैं कि पिछले

हफ्ते पोंटोइस में क्रांति हुई थी—वहाँ—बछड़ा कहाँ है!—और फिर, देखो, वह भयानक बदमाश, अपनी पिस्तौल के साथ! लगता है सेलेस्टिन पिस्तौलों से भरे पड़े हैं। सरकार इन निकम्मों का क्या करेगी, जिन्हें दुनिया में उथल-पुथल मचाने के अलावा कुछ नहीं आता, जबकि इतनी सारी मुसीबतों के बाद अभी थोड़ी शांति आई ही थी, हे भगवान! उस बेचारी रानी के साथ क्या हुआ, जिसे मैंने गाड़ी में जाते देखा! और इन सब से तंबाकू और महंगा हो जाएगा। यह शर्मनाक है! और मैं उससे मिलने ज़रूर जाऊँगा। हे दुष्ट! गिलोटिन पर उसका सिर कलम कर दिया जाए!

“बुढ़िया, तुम्हें जुकाम हो गया है,” गैवरोश ने कहा। “जल्दी से निकल जाओ।”

और उनका देहांत हो गया। जब वे रुए पावी में थे, तो उनके मन में कबाड़ बीनने वाले का ख्याल आया, और वे इस एकालाप में मग्न हो गए:—

“तुम क्रांतिकारियों का अपमान करके गलत कर रही हो, हे कूड़े के ढेर वाली माँ। यह पिस्तौल तुम्हारे हित में है। ताकि तुम्हारी टोकरी में खाने के लिए और भी अच्छी चीजें हों।”

अचानक, उसने अपने पीछे एक चीख सुनी; यह द्वारपाल पेटागॉन थी जो उसके पीछे आई थी, और जो दूर से उस पर मुट्ठी हिला रही थी और रो रही थी:—

तुम एक नंबर के हरामखोर हो।

“अरे! रहने दो,” गैवरोश ने कहा, “मुझे इसकी रत्ती भर भी परवाह नहीं है!”

कुछ देर बाद, वह होटल लैमोइग्नन के पास से गुजरा। वहाँ उसने यह अपील की:—

“युद्ध के लिए आगे बढ़ो!”

और वह उदासी के दौरे से घिर गया। उसने अपनी पिस्तौल को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा, मानो वह उदासी को शांत करने का प्रयास कर रहा हो:

“मैं जा रहा हूँ,” उसने कहा, “लेकिन तुम नहीं जाओगे!”

एक कुत्ता दूसरे कुत्ते से ध्यान भटका सकता है। उसी समय एक बहुत दुबला- पतला पूडल वहाँ आया। गैवरोश को उस पर दया आ गई।

“मेरे बेचारे कुत्ते,” उसने कहा, “तुमने तो लगता है कोई पीपा निगल लिया है, क्योंकि सारे घेरे तो दिखाई दे रहे हैं।”

फिर उन्होंने अपना मार्ग ल 'ओर्म -सेंट -गेरवाइस की ओर मोड़ दिया।

III. एक हेयरड्रेसर का उचित आक्रोश

वह सम्मानित नाई, जिसने अपनी दुकान से उन दो छोटे बच्चों को भगा दिया था, जिनके लिए गैवरोश ने हाथी के भीतरी पितृत्व का द्वार खोल दिया था, उस समय अपनी दुकान में साम्राज्य के अधीन सेवा कर चुके एक पुराने सैनिक की दाढ़ी बना रहा था। वे बातें कर रहे थे। नाई ने स्वाभाविक रूप से दंगे के अनुभवी सैनिक से बात की, फिर जनरल लामार्क से, और लामार्क से बात सम्राट तक पहुँच गई। वहीं से नाई और सैनिक के बीच एक बातचीत शुरू हुई, जिसे प्रुधोम, यदि वह वहाँ मौजूद होता, तो और अधिक अलंकरणों से समृद्ध करता और जिसका शीर्षक देता: "रेज़र और तलवार के बीच संवाद।"

“महाराज किस तरह सवारी करते थे, महोदय?” नाई ने पूछा।

“बुरी तरह से। उसे गिरना नहीं आता था—इसलिए वह कभी गिरा ही नहीं।”

“क्या उसके पास शानदार घोड़े थे? उसके पास ज़रूर शानदार घोड़े रहे होंगे!”

“जिस दिन उसने मुझे मेरा बोझ सौंपा, उसी दिन मैंने उसके जानवर को देखा। वह एक रेसिंग घोड़ी थी, बिलकुल सफेद। उसके कान बहुत दूर-दूर थे, उसकी काठी गहरी थी, उसका सिर सुंदर था जिस पर एक काला तारा अंकित था, उसकी गर्दन बहुत लंबी थी, उसके घुटने मज़बूती से जुड़े हुए थे, पसलियाँ उभरी हुई थीं, कंधे तिरछे थे और उसका पिछला हिस्सा शक्तिशाली था। उसकी ऊँचाई पंद्रह हाथ से थोड़ी अधिक थी।”

“वाह, कितना सुंदर घोड़ा है,” नाई ने टिप्पणी की।

"यह महामहिम का पशु था।"

हेयरड्रेसर को लगा कि इस टिप्पणी के बाद थोड़ी देर चुप रहना उचित होगा, इसलिए उसने ऐसा ही किया और फिर आगे बोला:—

“क्या सम्राट को कभी एक ही बार चोट लगी थी, महोदय?”

उस बूढ़े सिपाही ने शांत और गरिमामय स्वर में उत्तर दिया, मानो वह उस स्थिति से गुजर चुका हो:

“हील में। रेटिसबोन में। मैंने उसे उस दिन जितना अच्छे कपड़े पहने देखा था, उतना अच्छे कपड़े पहने हुए मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वह एकदम साफ-सुथरा था, जैसे कोई नया सिक्का हो।”

और आप, श्रीमान वयोवृद्ध, आप तो अक्सर घायल होते रहे होंगे?

“मैं?” सिपाही बोला, “अरे! कुछ भी नहीं। मारेन्गो में मेरी गर्दन के पीछे दो तलवार के वार हुए, ऑस्टरलिट्ज़ में दाहिनी बांह में गोली लगी, जेना में बाएं कूल्हे में गोली लगी। फ्रीडलैंड में संगीन से वार हुआ, वहाँ— मोस्कोवा में सात-आठ भाले के वार हुए, चाहे कहीं भी हों, लुत्ज़ेन में एक गोले के टुकड़े से मेरी एक उंगली कुचल गई। अरे! और फिर वाटरलू में बिस्केन तोप का एक गोला जांघ में लगा, बस इतना ही।”

“कितना बढ़िया है!” नाई ने पिंडारिक लहजे में कहा, “युद्ध के मैदान में मरना! कसम से, बीमारी से बिस्तर पर धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके, दवाओं, कफ, सिरिंजों और औषधियों के सहारे मरने के बजाय, मैं तोप का गोला अपने पेट में खाना पसंद करूँगा!”

“तुम बहुत ज्यादा नखरेबाज़ नहीं हो,” सिपाही ने कहा।

उसके बोलने के तुरंत बाद ही एक भयानक धमाके से दुकान हिल गई। शो-विंडो अचानक टूट गई थी।

विग बनाने वाले का चेहरा पीला पड़ गया।

“अरे, हे भगवान!” उसने हैरानी से कहा, “यह उनमें से एक है!”

"क्या?"

“तोप का गोला।”

“यह रहा,” सैनिक ने कहा।

और उसने फर्श पर लुढ़कती हुई कोई चीज उठाई। वह एक छोटा पत्थर था।

हेयरड्रेसर टूटी हुई खिड़की की ओर दौड़ा और उसने देखा कि गैवरोश पूरी रफ्तार से सेंट-जीन बाजार की ओर भाग रहा है। हेयरड्रेसर की दुकान के पास से गुजरते हुए गैवरोश, जिसके मन में अभी भी उन दो शरारती बच्चों का ख्याल था,

उसे नमस्कार करने की इच्छा को रोक नहीं पाया और उसने खिड़की के शीशे पर एक पत्थर फेंक दिया।

“देखो!” सफेद से नीले रंग में बदल चुके नाई ने चीखते हुए कहा, “वह लड़का लौटकर आता है और सिर्फ़ मजे के लिए शरारत करता है। उस आवारा का किसी ने क्या बिगाड़ा है?”

IV. बच्चा बूढ़े आदमी को देखकर चकित हो जाता है

इसी बीच, मार्शे सेंट-जीन में, जहाँ चौकी को पहले ही निरस्त्र कर दिया गया था, गैवरोश ने एनजोलरास, कौरफेयरैक, कॉम्बेफेरे और फ्यूली के नेतृत्व वाले एक समूह के साथ "मिलन स्थापित" कर लिया था। वे किसी न किसी रूप में हथियारों से लैस थे। बहोरल और जीन प्रोवैरे ने उन्हें ढूँढ़ लिया था और समूह में शामिल हो गए थे। एनजोलरास के पास दो बैरल वाली शिकार बंदूक थी, कॉम्बेफेरे के पास नेशनल गार्ड की बंदूक थी जिस पर उसकी सेना का नंबर अंकित था, और उसकी बेल्ट में दो पिस्तौलें थीं जो उसके खुले कोट से दिखाई दे रही थीं, जीन प्रोवैरे के पास एक पुरानी घुड़सवार सेना की मस्कट थी, बहोरल के पास एक राइफल थी; कौरफेयरैक एक बिना म्यान वाली तलवार-छड़ी लहरा रहा था। फ्यूली, हाथ में नंगी तलवार लिए, उनके आगे-आगे चल रहा था और चिल्ला रहा था: "पोलैंड ज़िंदाबाद!"

वे क्वाई मोरलैंड पहुँच गए। टाई-फ्री, टोपी-फ्री, हाँफते हुए, बारिश में भीगे हुए, आँखों में बिजली सी चमक लिए। गैवरोश ने शांत भाव से उनसे कहा:—

"हम कहाँ जा रहे हैं?"

“चलो मेरे साथ,” कौरफेयरैक ने कहा।

फ्यूली के पीछे बहोरल चल रहा था, या यूँ कहें कि उछल-कूद कर रहा था, जो दंगे में पानी में मछली की तरह था। उसने लाल रंग की जैकेट पहन रखी थी और ऐसे शब्दों का प्रयोग कर रहा था जो सब कुछ तहस-नहस कर देते थे। उसकी जैकेट देखकर एक राहगीर चकित रह गया और हैरानी से चिल्ला उठा:—

“ये रहे लाल रंग वाले!”

“लाल रंग, लाल रंग!” बहोरेल ने ताना मारा। “यह एक अजीब तरह का डर है, बुर्जुआ। मैं तो अफीम के फूल से भी नहीं डरता, छोटी लाल टोपी से तो मुझे कोई भय नहीं होता। मेरी सलाह मानो, बुर्जुआ, लाल रंग का डर सींग वाले मवेशियों पर ही छोड़ दो।”

उसकी नज़र दीवार के एक कोने पर पड़ी जिस पर दुनिया का सबसे शांतिपूर्ण कागज़ का टुकड़ा चिपका हुआ था, अंडे खाने की अनुमति देने वाला एक संदेश, जो पेरिस के आर्कबिशप द्वारा अपने "अनुयायियों" को संबोधित एक उपवासकालीन उपदेश था।

बहोरल ने विस्मय से कहा:—

“‘झुंड’; हंसों को कहने का एक विनम्र तरीका।”

और उसने कील से आवेश को फाड़ दिया। इससे गैवरोश बहुत प्रभावित हुआ। उसी क्षण से गैवरोश ने बहोरल का अध्ययन करना शुरू कर दिया।

“बहोरेल,” एनजोलरास ने कहा, “तुम गलत हो। तुम्हें उस आरोप को छोड़ देना चाहिए था, वह वह व्यक्ति नहीं है जिससे हमें निपटना है, तुम अपना क्रोध व्यर्थ ही बर्बाद कर रहे हो। अपनी आपूर्ति का ध्यान रखो। जिस प्रकार कोई बंदूक से गोली नहीं चलाता, उसी प्रकार आत्मा से भी नहीं।”

“हर कोई अपने-अपने अंदाज़ में, एनजोलरास,” बहोरल ने जवाब दिया। “इस बिशप की लेखन शैली मुझे चौंका रही है; मेरा मन कर रहा है कि मैं बिना इजाज़त के अंडे खा लूँ। तुम्हारी शैली तो कभी गर्म तो कभी ठंडी है; मैं तो बस मजे ले रहा हूँ। और वैसे भी, मैं अपना समय बर्बाद नहीं कर रहा, बल्कि शुरुआत कर रहा हूँ; और अगर मैंने वह आरोप फाड़ दिया, हर्कले! तो वह तो बस अपनी भूख मिटाने के लिए था।”

हेर्कल शब्द सुनकर गैवरोश चौंक गया। वह सीखने के हर अवसर की तलाश में रहता था, और पोस्टर फाड़ने वाले उस व्यक्ति के प्रति उसके मन में आदर था। उसने उससे पूछा:

"हर्कल का क्या मतलब है?"

बहोरेल ने उत्तर दिया:—

"लैटिन भाषा में इसका अर्थ है कुत्ते का शापित नाम।"

यहाँ बहोरल ने खिड़की पर एक पीले रंग के, काली दाढ़ी वाले युवक को देखा जो उनके गुजरते समय उन्हें देख रहा था, संभवतः वह ए.बी.सी. का मित्र था। उसने उसे पुकारा:—

“जल्दी करो, कारतूस निकालो, युद्ध के लिए।”

“एक शानदार आदमी! यह सच है,” गैवरोश ने कहा, जो अब लैटिन भाषा समझता था। उनके साथ एक शोरगुल भरा दल था—छात्र, कलाकार, ऐक्स के कौगौर्ड से जुड़े युवा, कारीगर, बंदरगाह पर काम करने वाले मजदूर, जो लाठियों और संगीनों से लैस थे; कुछ, जैसे कॉम्बेफेरे, ने अपनी पतलून में पिस्तौलें छिपा रखी थीं।
एक बुजुर्ग व्यक्ति, जो बेहद वृद्ध प्रतीत हो रहा था, उस समूह में चल रहा था।
उसके पास हाथ नहीं थे, और वह बहुत जल्दी में था ताकि वह पीछे न छूट जाए, हालांकि उसके चेहरे पर विचारशील भाव थे।
गैवरोश ने उसे देखा:—
“केक्सेकचा?” उसने कौरफेयरैक से कहा।
वह एक बूढ़ा बेवकूफ है।
वह एम. माबेउफ थे।

V. बूढ़ा आदमी

आइए, जो कुछ हुआ था उसका विवरण दें।

एनजोलरास और उसके दोस्त बॉर्डन बुलेवार्ड पर, सार्वजनिक गोदामों के पास, उस समय मौजूद थे जब ड्रैगून सैनिकों ने हमला किया था। एनजोलरास, कौरफेयरैक और कॉम्बेफेरे उन लोगों में शामिल थे जो "बैरिकेड्स की ओर!" चिल्लाते हुए रू बासोम्पियर की ओर भागे थे। रू लेस्डिगुइरेस में उनकी मुलाकात एक बूढ़े व्यक्ति से हुई जो टहल रहा था। जिस बात ने उनका ध्यान खींचा वह यह थी कि वह बुजुर्ग व्यक्ति टेढ़े-मेढ़े तरीके से चल रहा था, मानो नशे में हो। इसके अलावा, सुबह से बारिश हो रही थी और उस समय भी तेज बारिश हो रही थी, फिर भी उसकी टोपी उसके हाथ में थी। कौरफेयरैक ने फादर माबेउफ को पहचान लिया था। वह उन्हें इसलिए जानता था क्योंकि वह कई बार मारियस के साथ उसके दरवाजे तक गया था। चूंकि वह बूढ़े बीडल-पुस्तक संग्राहक के शांत और बेहद डरपोक स्वभाव से परिचित था, और उस कोलाहल के बीच, घुड़सवार सेना के हमलों से कुछ ही कदम दूर, लगभग गोलियों की बौछार के बीच, बारिश में बिना टोपी के, गोलियों के बीच टहलते हुए देखकर चकित था, इसलिए उसने उससे बात की, और गोलीबारी करने वाले उस व्यक्ति और अस्सी वर्षीय बुजुर्ग के बीच निम्नलिखित संवाद हुआ:—

“श्री माबेउफ, अपने घर जाइए।”

"क्यों?"

"झगड़ा होने वाला है।"

"यह सही है।"

"तलवार से वार और गोलीबारी, एम. माबेउफ।"

“यह अच्छी बात है।”

"तोप से गोला दागना।"

“यह तो अच्छी बात है। बाकी लोग कहाँ जा रहे हैं?”

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

“[illegible]!” [illegible]

[illegible]

He sang:

“[illegible]
[illegible]?
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

“[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

"[illegible]" [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

उन्होंने अपना मार्ग सेंट -मेरी की ओर मोड़ दिया।

VI. रंगरूट

बैंड हर पल को और भी जोशीला बना रहा था। रुए डेस बिल्लेट्स के पास, एक लंबा- चौड़ा आदमी, जिसके बाल सफ़ेद हो रहे थे और जिसका साहसी और निडर स्वभाव कौरफेयरैक, एनजोलरास और कॉम्बेफेरे ने देखा था, लेकिन जिसे उनमें से कोई नहीं जानता था, उनके साथ शामिल हो गया। गैवरोश, जो गाने, सीटी बजाने, गुनगुनाने, आगे दौड़ने और अपनी बिना ट्रिगर वाली पिस्तौल के बट से दुकानों के शटर पीटने में व्यस्त था, ने उस आदमी पर कोई ध्यान नहीं दिया।
संयोगवश, रू डे ला वेररी में वे कौरफेयरैक के दरवाजे के सामने से गुजरे। "यह बिल्कुल सही समय पर हुआ है," कॉर्फेयरैक ने कहा, "मैं अपना पर्स भूल गया हूँ, और मेरी टोपी खो गई है।"
वह भीड़ से निकलकर पूरी रफ्तार से अपने कमरे की ओर भागा। उसने एक पुरानी टोपी और अपना पर्स उठाया।
उसने एक बड़ा चौकोर संदूक भी जब्त कर लिया, जिसका आकार एक बड़े सूटकेस के बराबर था और जो उसके गंदे कपड़ों के नीचे छिपा हुआ था।
जैसे ही वह दौड़ते हुए वापस नीचे उतरा, द्वारपाल ने उसे पुकारा:— “महाशय डी कौरफेयरैक!”
"आपका नाम क्या है, द्वारपाल?"
द्वारपाल स्तब्ध खड़ी थी।
"क्यों, आप अच्छी तरह जानते हैं, मैं ही तो कंसीयर्ज हूँ; मेरा नाम मदर वेउवेन है।"
“अच्छा, अगर तुमने मुझे फिर से महाशय डी कौरफेयरैक कहकर पुकारा, तो मैं तुम्हें मदर डी वेउवेन कहूँगा। अब बोलो, क्या बात है? तुम्हें क्या चाहिए?”
कोई है जो आपसे बात करना चाहता है।
"कौन है भाई?"

"मुझें नहीं पता।"
"कहाँ है वह?"
“मेरे लॉज में।”
“शैतान!” कॉर्फेयरैक ने चीखते हुए कहा।
"लेकिन वह व्यक्ति एक घंटे से अधिक समय से आपके लौटने का इंतजार कर रहा है," चौकीदार ने कहा।
उसी समय, एक दुबली-पतली, छोटी, झाइयों वाली और युवा कारीगर, जिसने फटी हुई ब्लाउज और मखमली पैंट पहन रखी थी, और जो देखने में किसी पुरुष से ज़्यादा किसी लड़की जैसी लग रही थी, झोपड़ी से बाहर निकली और कौरफेयरैक से ऐसी आवाज़ में बोली जो ज़रा भी स्त्री की आवाज़ जैसी नहीं थी:
"महाशय मारियस, यदि आप चाहें तो।"
"वह यहां नहीं है।"
क्या वह आज शाम को लौट आएगा?
"मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता।"
और कौरफेयरैक ने आगे कहा:—
मैं अपनी ओर से वापस नहीं लौटूंगा।
युवक ने उसे टकटकी लगाकर देखा और कहा:— "क्यों नहीं?"
"क्योंकि।"
तो फिर आप कहाँ जा रहे हैं?
“इससे आपका क्या लेना-देना है?”
"क्या आप चाहेंगे कि मैं आपका संदूक उठा लूँ?" मैं बैरिकेड्स की ओर जा रहा हूँ।
"क्या आप चाहेंगे कि मैं आपके साथ चलूँ?"

“अगर आपको पसंद है!” कौरफेयरैक ने जवाब दिया। “सड़क तो खुली है, फुटपाथ तो सबके हैं।”

और वह दौड़कर अपने दोस्तों के पास पहुँच गया। जब वह उनसे मिला, तो उसने संदूक उनमें से एक को उठाने के लिए दे दिया। इसके पंद्रह मिनट बाद ही उसने उस युवक को देखा, जो वास्तव में उनके पीछे आया था।

भीड़ हमेशा अपनी इच्छानुसार सही जगह नहीं जाती। हमने समझाया है कि हवा का एक झोंका उसे उड़ा ले जाता है। वे सेंट-मेरी से आगे निकल गए और अनजाने में ही सेंट-डेनिस गली में पहुँच गए।

पुस्तक **XII.** कोरिंथ

I. कोरिंथे का इतिहास (इसकी स्थापना से)

आजकल पेरिसवासी जब हॉल्स के पास रू रामबुटो में प्रवेश करते हैं, तो उन्हें दाईं ओर, रू मोंडेतोर के सामने, एक टोकरी बनाने वाले की दुकान दिखाई देती है, जिसका चिन्ह नेपोलियन द ग्रेट के रूप में एक टोकरी है और उस पर यह लिखा हुआ है:—

नेपोलियन पूरी तरह से विलो की लकड़ी से बना है।

मुझे उन भयानक दृश्यों का जरा भी अंदाजा नहीं है जो इस जगह ने लगभग तीस साल पहले देखे थे।

वहीं पर रू डे ला चानवररी स्थित थी, जिसे प्राचीन दस्तावेजों में चानवररी लिखा गया है, और वहीं पर कोरिनथे नामक प्रसिद्ध पब भी था।

पाठक को याद होगा कि इस बिंदु पर लगाए गए अवरोध के बारे में क्या-क्या कहा गया है, जो संयोगवश सेंट-मेरी अवरोध के कारण दब गया था। रुए डे ला चानवरेरी के इसी प्रसिद्ध अवरोध पर, जो अब घोर गुमनामी में खो गया है, हम कुछ प्रकाश डालने जा रहे हैं।

स्पष्टता के लिए, क्या हमें वाटरलू के मामले में पहले से इस्तेमाल किए गए सरल तरीके को दोहराने की अनुमति दी जा सकती है? जो लोग उस युग में प्वाइंट सेंट-यूस्टाचे के पास, पेरिस हॉल्स के उत्तर-पूर्वी कोने पर स्थित घरों की संरचना को काफी सटीक रूप से समझना चाहते हैं, जहाँ आज रुम्बुटो सड़क का प्रवेश द्वार है, उन्हें केवल एक 'N' की कल्पना करनी होगी जो सेंट-डेनिस सड़क के शीर्ष और हॉल्स को आधार से स्पर्श करता है, और जिसकी दो ऊर्ध्वाधर पट्टियाँ क्रमशः ग्रांडे-ट्रुआंडेरी सड़क और चानवरेरी सड़क बनाती हैं, और जिसकी अनुप्रस्थ पट्टी पेटिट-ट्रुआंडेरी सड़क बनाती है। पुरानी रु मोंडेटूर सड़क 'N' की तीनों पट्टियों को सबसे टेढ़े कोणों पर काटती थी। इस प्रकार, इन चार गलियों की भूलभुलैया जैसी अव्यवस्था ने तीन फैदम वर्ग के एक स्थान पर, एक ओर हालेस और रू सेंट-डेनिस के बीच, और दूसरी ओर रू डू सिग्न और रू डेस प्रीचेर्स के बीच, घरों के सात द्वीप बना दिए, जो अजीब तरह से कटे हुए, अलग-अलग आकार के, आड़े-तिरछे और बेतरतीब ढंग से रखे गए थे, और एक गोदी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हालात अच्छे थे, और वहां सराय मालिक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के उत्तराधिकारी बनते रहे, पिता से पुत्र को यह जिम्मेदारी मिलती रही।

मैथुरिन रेग्नियर के समय में, इस कैबरे को पोट-ऑक्स-रोज़ेज़ कहा जाता था, और उस समय पहेलियाँ प्रचलित होने के कारण, इसके साइनबोर्ड के रूप में एक गुलाबी रंग का खंभा (पोट्यू) लगा हुआ था। पिछली शताब्दी में, प्रतिष्ठित नैटोयर, जो आजकल रूढ़िवादी कला जगत द्वारा तिरस्कृत किए जाने वाले विलक्षण कलाकारों में से एक थे, ने इस शराबखाने में कई बार उसी मेज पर बैठकर शराब पी थी जहाँ रेग्नियर ने जी भरकर शराब पी थी। कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में, उन्होंने गुलाबी खंभे पर कोरिंथ अंगूरों का एक गुच्छा चित्रित किया। कैबरे के मालिक ने खुशी में आकर अपना डिज़ाइन बदल दिया और गुच्छे के नीचे सुनहरे अक्षरों में ये शब्द लिखवा दिए: "औ रेज़िन डे कोरिंथे।" इस प्रकार इसका नाम कोरिंथे पड़ा। नशे में धुत लोगों के लिए एलिप्सिस (अस्पष्ट वाक्य) से अधिक स्वाभाविक कुछ भी नहीं है। एलिप्सिस वाक्यांश का ज़िगज़ैग होता है। कोरिंथे ने धीरे-धीरे पोट-ऑक्स-रोज़ेज़ को पीछे छोड़ दिया। इस वंश के अंतिम स्वामी, फादर हुचेलूप, जो अब परंपरा से भी परिचित नहीं थे, ने खंभे को नीले रंग से रंगवा दिया।

भूतल पर एक कमरा था, जहाँ बार स्थित था, पहली मंजिल पर एक कमरा था जिसमें बिलियर्ड टेबल, छत को भेदती हुई लकड़ी की घुमावदार सीढ़ी, मेजों पर शराब, दीवारों पर धुआँ, दिन के उजाले में मोमबत्तियाँ - यही उस कैबरे की शैली थी। निचले कमरे में एक गुप्त दरवाज़े वाली सीढ़ी तहखाने की ओर जाती थी। दूसरी मंजिल पर हुचेलूप परिवार के रहने के कमरे थे। वहाँ तक पहुँचने के लिए एक सीढ़ी थी जो सीढ़ी की जगह सीढ़ीनुमा संरचना थी, और उनके प्रवेश के लिए पहली मंजिल के बड़े कमरे में केवल एक निजी दरवाज़ा था। छत के नीचे, दो अटारी में, नौकरों के लिए छोटे-छोटे कमरे थे। रसोईघर और बार दोनों भूतल पर ही थे।

फादर हुचेलूप का जन्म संभवतः रसायनज्ञ के रूप में हुआ था, लेकिन सच्चाई यह है कि वे एक रसोइया थे; लोग उनकी शराब की दुकान में केवल शराब पीने तक ही सीमित नहीं रहते थे, बल्कि वहाँ खाना भी खाते थे। हुचेलूप ने एक अद्भुत व्यंजन का आविष्कार किया था जिसे केवल उनके घर में ही खाया जा सकता था, भरवां कार्प मछली, जिसे वे कार्पेस औ ग्रास कहते थे। इन्हें मोमबत्ती या लुई सोलहवें युग के दीपक की रोशनी में, मेज़पोश के स्थान पर मोम लगे कपड़ों

पर कीलों से ठोकी गई मेज़ों पर खाया जाता था। लोग दूर-दूर से वहाँ आते थे। एक सुहावनी सुबह, हुचेलूप ने राहगीरों को इस "विशेष व्यंजन" के बारे में सूचित करना उचित समझा; उन्होंने एक ब्रश को काले रंग के डिब्बे में डुबोया, और चूंकि वे स्वयं एक कुशल वर्तनी विशेषज्ञ होने के साथ-साथ अपने तरीके से एक रसोइया भी थे, इसलिए उन्होंने अपनी दीवार पर यह उल्लेखनीय शिलालेख उकेरा:—

कार्पेस हो ग्रास

एक सर्दी के मौसम में, बारिश और बौछारों ने पहले शब्द के अंत में आने वाले 'S' और तीसरे शब्द के आरंभ में आने वाले 'G' को मिटाने का मन बना लिया; यही शेष बचा:—

Carpe ho ras

समय और बारिश की मदद से, एक साधारण सी भोजन संबंधी घोषणा एक गहन सलाह में बदल गई।

इस तरह यह हुआ कि यद्यपि फादर हुचेलूप को फ्रेंच नहीं आती थी, फिर भी वे लैटिन समझते थे; उन्होंने अपनी रसोई से ही दर्शनशास्त्र को जगा दिया; और केवल उपवास के दिनों को मिटाने की इच्छा से ही वे होरेस के समान बन गए। और सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि इसका अर्थ यह भी था: "मेरी शराब की दुकान में प्रवेश करें।"

अब इनमें से कुछ भी अस्तित्व में नहीं है। मोंडेतोर भूलभुलैया को 1847 में ध्वस्त कर दिया गया था और संभवतः अब वह मौजूद नहीं है। रू डे ला चानवरेरी और कोरिनथे सड़कें रू रामबुटो के फुटपाथ के नीचे दब गई हैं।

जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, कोरिंथे, कौरफेयरैक और उसके दोस्तों का मिलन स्थल था, भले ही यह उनका मुख्य जमावड़ा न हो। कोरिंथे की खोज ग्रांटेयर ने ही की थी। वह कार्पे होरास के कारण वहाँ गया था और कार्पे औ ग्रास के कारण फिर वहाँ लौट आया था। वहाँ वे पीते, खाते, शोर मचाते थे; वे ज़्यादा पैसे नहीं देते थे, कभी कम देते थे, कभी बिल्कुल नहीं देते थे, लेकिन उनका हमेशा स्वागत होता था। फादर हुचेलूप एक हंसमुख मेज़बान थे।

हुचेलूप, वह मिलनसार आदमी, जैसा कि अभी बताया गया, मूंछों वाला एक शराबखाना चलाता था; एक अनोखी किस्म की मूंछें। उसका स्वभाव हमेशा चिड़चिड़ा रहता था, मानो वह अपने ग्राहकों को डराना चाहता हो, अपनी दुकान में आने वाले लोगों पर बड़बड़ाता था, और उन्हें सूप परोसने के बजाय उनसे झगड़ा करने का भाव रखता था। फिर भी, हम इस शब्द पर ज़ोर देते हैं, वहाँ लोगों का हमेशा स्वागत होता था। इस विचित्रता ने ग्राहकों को उसकी दुकान की ओर आकर्षित किया था, और उसके पास ऐसे नौजवान आते थे जो आपस में कहते थे: "आओ, फादर हुचेलूप की गुर्राहट सुनो।" वह तलवारबाज़ी का उस्ताद रह चुका था। अचानक, वह ज़ोर से हंसने लगता था। भारी आवाज़, अच्छा आदमी। उसके गंभीर बाहरी रूप के नीचे हास्य छिपा था, उसे आपको डराने से ज़्यादा कुछ नहीं चाहिए था, ठीक उन पिस्तौल के आकार की स्नफ़बॉक्स की तरह। धमाके से छींक आती है।

उनकी पत्नी, मदर हुचेलूप, दाढ़ी वाली और बेहद साधारण दिखने वाली महिला थीं।

लगभग सन् 1830 में फादर हुचेलूप का निधन हो गया। उनके साथ ही भरवां कार्प मछली बनाने का रहस्य भी लुप्त हो गया। उनकी व्याकुल विधवा ने शराब की दुकान संभाले रखी। लेकिन खाना पकाने की गुणवत्ता बिगड़ती गई और बेहद खराब हो गई; शराब, जो हमेशा से ही खराब थी, और भी बुरी हो गई। फिर भी, कॉर्फेयरैक और उनके दोस्त कोरिनथे जाते रहे—जैसा कि बॉसुएट ने कहा, दयावश।

विधवा हुचेलूप हांफती हुई, दुबली-पतली और देहाती यादों में खोई रहती थी। वह अपने उच्चारण से उन यादों की नीरसता को दूर कर देती थी। उसकी बातें कहने का अपना एक अनूठा अंदाज़ था, जो गाँव और अपने वसंत ऋतु की यादों में रंग भर देता था। उसने बताया कि पहले उसे नागफनी के पेड़ों में लाल छाती वाले पक्षियों को गाते हुए सुनना बहुत अच्छा लगता था।

पहली मंजिल पर स्थित हॉल, जहाँ "रेस्तरां" था, एक बड़ा और लंबा कमरा था जो स्टूल, कुर्सियों, बेंचों और मेजों से भरा हुआ था, और उस पर एक जर्जर, पुराना बिलियर्ड टेबल रखा हुआ था। वहाँ तक पहुँचने के लिए एक घुमावदार सीढ़ी थी जो कमरे के कोने में एक चौकोर छेद पर जाकर समाप्त होती थी, जो किसी जहाज के हैचवे जैसा दिखता था।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

II. प्रारंभिक उत्सव

जैसा कि पाठक जानते हैं, लैगल डी मेओक्स का ज़्यादातर समय जोली के साथ ही बीतता था। उनका एक स्थायी ठिकाना था, जैसे किसी पक्षी का डाल पर ठिकाना होता है। दोनों मित्र साथ रहते, साथ खाते, साथ सोते थे। उनमें सब कुछ समान था, यहाँ तक कि कुछ हद तक मुशिशेट्टा भी। वे भिक्षुओं के साथ रहने वाले अधीनस्थ भिक्षुओं की तरह थे, जिन्हें बिनी कहा जाता है। 5 जून की सुबह वे नाश्ते के लिए कोरिनथे गए। जोली को जुकाम था और लैगल को भी धीरे-धीरे जुकाम होने लगा था। लैगल का कोट फटा हुआ था, लेकिन जोली ने अच्छे कपड़े पहने थे।
सुबह करीब नौ बजे थे, जब उन्होंने कोरिनथे का दरवाजा खोला।
वे पहली मंजिल पर चढ़ गए।
मैटेलोटे और गिबेलोटे ने उन्हें प्राप्त किया।
"सीप, पनीर और हैम," लैगल ने कहा।
और वे एक मेज पर बैठ गए।
शराब की दुकान खाली थी; वहां उनके अलावा कोई नहीं था।
जोली और लैगल को जानने के कारण, गिबेलोटे ने मेज पर शराब की एक बोतल रख दी।
जब वे अपने पहले सीपों का आनंद ले रहे थे, तभी सीढ़ियों के द्वार पर एक सिर दिखाई दिया और एक आवाज आई:—
“मैं यहाँ से गुज़र रहा था। मुझे सड़क से ही ब्री चीज़ की स्वादिष्ट खुशबू आ रही थी। मैं अंदर चला गया।” यह ग्रैन्टेयर था।
ग्रैन्टेयर ने एक स्टूल लिया और मेज के पास जाकर बैठ गया।
ग्रैन्टेयर को देखते ही गिबेलोत्ते ने मेज पर शराब की दो बोतलें रख दीं।
इस तरह तीन हो गए।
"क्या तुम वो दो बोतलें पीने वाले हो?" लैगल ने ग्रांटेयर से पूछा।
ग्रैन्टेयर ने उत्तर दिया:—

“सभी बुद्धिमान हैं, केवल तुम ही बुद्धिमान हो। दो बोतलों ने आज तक किसी को आश्चर्यचकित नहीं किया है।”
बाकी लोगों ने खाना शुरू किया, ग्रैन्टेयर ने पीना शुरू किया। आधी बोतल झटपट गटक ली गई।
"तो आपके पेट में छेद है?" लैगल ने फिर से पूछना शुरू किया।
“तुम्हारी कोहनी में एक है,” ग्रैन्टेयर ने कहा।
और अपना गिलास खाली करने के बाद, उन्होंने आगे कहा:—
"अरे हाँ, वैसे तो अंतिम संस्कार के भाषण देने वाले लैगल, आपका कोट पुराना है।"
“मुझे उम्मीद है ऐसा ही होगा,” लैगल ने जवाब दिया। “इसीलिए तो हम दोनों की आपस में अच्छी बनती है, मेरे कोट की। इसने मेरी सारी सिलवटें अपना ली हैं, यह मुझे कहीं बांधता नहीं, यह मेरी विकृतियों पर ढल गया है, यह मेरी हर हरकत के साथ चलता है, मुझे इसका एहसास सिर्फ इसलिए होता है क्योंकि यह मुझे गर्म रखता है। पुराने कोट पुराने दोस्तों की तरह होते हैं।”
“यह सच है,” जोली ने संवाद में हस्तक्षेप करते हुए कहा, “एक बूढ़ा बकरा एक बूढ़ा अबी होता है।”
"खासकर उस आदमी के मुंह से जिसका दिमाग भरा हुआ हो," ग्रैन्टेयर ने कहा। लैगल ने पूछा, "ग्रांटेयर, क्या तुम अभी-अभी बुलेवार्ड से आए हो?"
"नहीं।"
"जोली और मैंने अभी-अभी जुलूस के सबसे आगे वाले हिस्से को गुजरते हुए देखा है।"
जोली ने कहा, "यह एक अद्भुत दृश्य है।"
“यह गली कितनी शांत है!” लैगल ने हैरानी से कहा। “कौन सोच सकता है कि पेरिस पूरी तरह बदल गया था? यह कितनी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि पुराने समय में यहाँ केवल मठ ही थे! इस मोहल्ले में! डू ब्रूल और सौवल ने उनकी सूची दी है, और एब्बे लेबेउफ ने भी। वे सब यहीं आसपास थे, मानो झुंड में थे, बूट पहने और नंगे पैर, मुंडे हुए, दाढ़ी वाले, बूढ़े, काले, गोरे, फ्रांसिस्कन,

मिनिम, कैपुचिन, कार्मलाइट, छोटे ऑगस्टाइन, बड़े ऑगस्टाइन, बूढ़े ऑगस्टाइन — उनकी कोई कमी नहीं थी।”

"भिक्षुओं की बात मत करो," ग्रैन्टेयर ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "इससे तो खुद को खुजलाने का मन करता है।"

फिर उसने कहा:—

उफ़! मैंने अभी-अभी एक खराब सीप निगल ली है। अब मुझे फिर से बीमारी का डर सताने लगा है। सीपें खराब हैं, नौकर बदसूरत हैं। मुझे इंसानियत से नफरत है। मैं अभी-अभी रुए रिचेल्यू से गुज़रा, बड़ी सार्वजनिक पुस्तकालय के सामने से। सीपों के छिलकों का वह ढेर जिसे पुस्तकालय कहा जाता है, उसके बारे में सोचना भी घिनौना है। कैसा कागज़! कैसी स्याही! कैसी लिखावट! और क्या-क्या लिखा है! वह कौन बदमाश था जिसने कहा था कि इंसान पंखहीन दो पैरों वाला प्राणी है? और फिर, मेरी मुलाकात मेरी एक परिचित सुंदर लड़की से हुई, जो वसंत ऋतु की तरह खूबसूरत है, जिसे फ्लोरियल कहा जा सकता है, और जो स्वर्गदूतों की तरह प्रसन्न, आनंदित, खुश है, क्योंकि कल एक नीच, चेचक से ग्रसित एक भयानक बैंकर ने उस पर मोहित होने की कृपा की! हाय! औरतें प्रेमी के साथ-साथ रक्षक की भी तलाश में रहती हैं; बिल्लियाँ चूहों का पीछा करती हैं, जैसे पक्षियों का। दो महीने पहले एक युवती अटारी में सदाचारी स्वभाव की थी, वह कोर्सेट के छेदों में पीतल की छोटी-छोटी अंगूठियाँ लगाती थी, इसे क्या कहते हैं? वह सिलाई करती थी, उसके पास एक आरामदायक पलंग था, वह फूलों के गमले के पास रहती थी, वह संतुष्ट थी। अब वह एक बैंकर है। यह परिवर्तन कल रात हुआ। आज सुबह मैं उससे मिली, वह बहुत खुश थी। सबसे घिनौनी बात यह है कि वह आज भी उतनी ही सुंदर है जितनी कल थी। उसके फाइनेंसर का उसके चेहरे पर कोई असर नहीं दिखा। गुलाबों को महिलाओं पर यह लाभ या हानि है कि उन पर इल्लियों के निशान दिखाई देते हैं। आह! धरती पर नैतिकता नाम की कोई चीज नहीं है। मैं प्रेम के प्रतीक मर्टल, हवा के प्रतीक लॉरेल, शांति के प्रतीक जैतून, उस मूर्ख सेब के पेड़ को, जिसने आदम को अपने बीजों से चिढ़ाने की कोशिश की थी, और पेटीकोट के जनक अंजीर के पेड़ को गवाह बनाती हूँ। जहाँ तक न्याय की बात है, क्या आप जानते हैं कि न्याय क्या है? गॉल लोग रोम के क्लूसियम पर लालच करते हैं। क्लूसियम की रक्षा करते हुए, ब्रेनस पूछता है कि क्लूसियम ने उनके साथ क्या गलत किया है। ब्रेनस जवाब देता है: “अल्बा ने

तुम्हारे साथ जो गलत किया, फिडेनाई ने तुम्हारे साथ जो गलत किया, इक्वेस, वोल्स्की और सबाइन्स ने तुम्हारे साथ जो गलत किया। वे तुम्हारे पड़ोसी थे। क्लूसियन हमारे हैं। हम पड़ोस का उतना ही महत्व समझते हैं जितना तुम समझते हो। तुमने अल्बा को चुराया है, हम क्लूसियम को छीन लेंगे।” रोम ने कहा: “तुम क्लूसियम को नहीं छीन सकते।” ब्रेनस ने रोम पर कब्जा कर लिया। फिर वह चिल्लाया: “वे विक्टिस!” यही न्याय है। आह! इस दुनिया में कैसे-कैसे शिकारी जानवर हैं! कैसे-कैसे बाज! ये देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।”

उसने अपना गिलास जोली की ओर बढ़ाया, जिसने उसे भर दिया, फिर उसने पिया और आगे बढ़ता रहा, इस शराब के गिलास से उसका ध्यान लगभग भंग ही हुआ, जिस पर किसी ने, यहाँ तक कि उसने खुद भी, कोई ध्यान नहीं दिया था:—

“रोम पर कब्ज़ा करने वाला ब्रेन्नस एक चील है; ग्रिसेट पर कब्ज़ा करने वाला बैंकर भी एक चील है। दोनों में ज़रा भी विनम्रता नहीं है। इसलिए हम किसी चीज़ में विश्वास नहीं करते। बस एक ही वास्तविकता है: शराब। चाहे आपकी राय दुबले मुर्गे के पक्ष में हो, जैसे उरी का कैंटन, या मोटे मुर्गे के पक्ष में, जैसे ग्लारिस का कैंटन, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, शराब पियो। आप मुझसे बुलेवार्ड की बात करते हैं, उस जुलूस की बात करते हैं, इत्यादि, इत्यादि। अब बताओ, क्या कोई और क्रांति होने वाली है? अच्छे ईश्वर की यह संसाधनों की कमी मुझे चकित कर देती है। उन्हें हर पल घटनाओं की राह को सुचारू रखना पड़ता है। कोई अड़चन आती है, काम नहीं चलता। जल्दी, क्रांति! अच्छे ईश्वर के हाथ उस चिकनाई से हमेशा काले रहते हैं। अगर मैं उनकी जगह होता, तो मैं इस बारे में बिल्कुल सरल होता, मैं हर मिनट अपनी मशीन को चालू नहीं करता, मैं मानव जाति का नेतृत्व सीधे-सादे तरीके से करता।” मैं धागे को तोड़े बिना, एक-एक करके बुनता, मैं कोई अस्थायी व्यवस्था नहीं करता, मेरे पास कोई असाधारण प्रदर्शन नहीं होता। जिसे आप सब प्रगति कहते हैं, वह दो प्रेरकों, मनुष्य और घटनाओं के माध्यम से आगे बढ़ती है। लेकिन, दुख की बात है, समय-समय पर असाधारण आवश्यक हो जाता है। साधारण मंडली न तो घटना के लिए पर्याप्त है और न ही मनुष्य के लिए: मनुष्यों में प्रतिभाओं की आवश्यकता होती है, घटनाओं में क्रांतियों की। महान दुर्घटनाएँ नियम हैं; चीजों की व्यवस्था उनके बिना नहीं चल सकती; और, धूमकेतुओं के प्रकट होने को देखते हुए, कोई यह सोचने को प्रेरित होगा कि स्वर्ग स्वयं अपने प्रदर्शन

के लिए आवश्यक अभिनेताओं को खोजता है। जिस क्षण कोई इसकी सबसे कम अपेक्षा करता है, ईश्वर आकाश की दीवार पर एक उल्कापिंड का चिन्ह लगाता है। कोई विचित्र तारा प्रकट होता है, जिसकी एक विशाल पूंछ होती है। और यही सीज़र की मृत्यु का कारण बनता है। ब्रूटस उसे चाकू से मारता है, और ईश्वर धूमकेतु से। क्रैक, और देखो एक ऑरोरा बोरेलिस, देखो एक क्रांति, देखो एक महान व्यक्ति; '93 बड़े अक्षरों में। नेपोलियन पहरा दे रहा है, पोस्टर के शीर्ष पर 1811 का धूमकेतु। आह! कितना सुंदर नीला रंगमंच है, जो अप्रत्याशित चमक से जगमगा रहा है! बूम! बूम! असाधारण शो! अपनी आँखें ऊपर उठाओ, मूर्खों। सब कुछ अव्यवस्थित है, सितारा भी और नाटक भी। हे भगवान, यह बहुत अधिक भी है और अपर्याप्त भी। अपवादों से एकत्रित ये संसाधन भव्यता और दरिद्रता दोनों प्रतीत होते हैं। मेरे मित्रों, ईश्वर ने मजबूरी में काम चलाया है। क्रांति क्या सिद्ध करती है? कि ईश्वर दुविधा में है। वह तख्तापलट करता है क्योंकि वह, ईश्वर, दोनों सिरों को नहीं भर पा रहा है। वास्तव में, यह यहोवा के भाग्य के बारे में मेरे अनुमानों की पुष्टि करता है; और जब मैं स्वर्ग और पृथ्वी पर इतनी विपत्ति देखता हूँ, उस पक्षी से जिसके पास बाजरे का एक दाना भी नहीं है, से लेकर मुझ तक, जिसके पास एक लाख लिवर की आय नहीं है, जब मैं मानवीय भाग्य को देखता हूँ, जो बुरी तरह से घिसा-पिटा है, और यहाँ तक कि शाही भाग्य को भी, जो जर्जर हो चुका है, प्रिंस डी कोंडे को फांसी दिए जाने का साक्षी, जब मैं सर्दियों को देखता हूँ, जो एक दरार के अलावा कुछ नहीं है जब मैं उस शिखर पर पहुँचता हूँ जहाँ से हवा बहती है, जब मैं पहाड़ियों की चोटियों पर सुबह के एकदम नए बैंगनी रंग में भी इतने चिथड़े देखता हूँ, जब मैं ओस की बूँदें देखता हूँ, वे नकली मोती जैसी लगती हैं, जब मैं पाला देखता हूँ, वह चिपचिपा सा जम जाता है, जब मैं मानवता को बिखरा हुआ और घटनाओं को जोड़-तोड़कर पेश किया हुआ देखता हूँ, और सूरज पर इतने धब्बे और चाँद में इतने छेद देखता हूँ, जब मैं हर जगह इतनी पीड़ा देखता हूँ, तो मुझे संदेह होता है कि ईश्वर धनी नहीं है। यह सच है कि ईश्वर धनी दिखता है, लेकिन मुझे लगता है कि वह तंगी में है। वह क्रांति ऐसे देता है जैसे कोई व्यापारी जिसका खजाना खाली हो, गेंद देता है। ईश्वर को उसके बाहरी रूप से नहीं आंकना चाहिए। आकाश के सुनहरे आवरण के नीचे मुझे एक दरिद्र ब्रह्मांड दिखाई देता है। सृष्टि दिवालिया है। इसीलिए मैं असंतुष्ट हूँ। आज 4 जून है, लगभग रात हो चुकी है; आज सुबह से मैं दिन के

उजाले का इंतजार कर रहा हूँ; यह नहीं आया है, और मुझे यकीन है कि यह पूरे दिन नहीं आएगा। यह एक कम वेतन पाने वाले क्लर्क की अनिश्चितता है। हाँ, सब कुछ बेतरतीब ढंग से व्यवस्थित है, कुछ भी किसी दूसरे से मेल नहीं खाता, यह पुरानी दुनिया पूरी तरह से विकृत है, मैं विरोध में खड़ा हूँ, सब कुछ गड़बड़ है; ब्रह्मांड एक चिढ़ाने वाला है। यह बच्चों की तरह है, जो उन्हें चाहते हैं उनके पास नहीं होते, और जो उन्हें नहीं चाहते उनके पास होते हैं। कुल मिलाकर: मैं परेशान हूँ। इसके अलावा, लैगल डी मेओक्स, वह गंजा, मेरी आँखों को चुभता है। यह सोचकर मुझे शर्म आती है कि मैं उस गंजे के बराबर उम्र का हूँ। हालाँकि, मैं आलोचना करता हूँ, लेकिन अपमान नहीं करता। ब्रह्मांड जैसा है वैसा ही है। मैं यहाँ बिना किसी बुरे इरादे के और अपने अंतरात्मा को शांत करने के लिए बोल रहा हूँ। हे शाश्वत पिता, मेरे विशिष्ट विचार का आश्वासन स्वीकार करें। आह! ओलंपस के सभी संतों और स्वर्ग के सभी देवताओं की कसम, मुझे पेरिसवासी बनने के लिए नहीं बनाया गया था, यानी दो बाज़ों के बीच शटलकॉक की तरह, हमेशा आवारागर्दी करने वालों के समूह से अय्याशी करने वालों के समूह में उछलते रहने के लिए नहीं। मुझे एक तुर्क बनने के लिए बनाया गया था, जो दिन भर पूर्वी अप्सराओं को देखता रहे। उन खूबसूरत मिस्री नृत्यों का प्रदर्शन करते हुए, जो किसी पवित्र पुरुष, या ब्यूसेरॉन के किसान, या महिलाओं से घिरे वेनिस के सज्जन, या जर्मन संघ को आधा पैदल सैनिक मुहैया कराने वाले और अपने खाली समय में अपनी सीमा पर अपनी पैंट सुखाने वाले एक छोटे जर्मन राजकुमार के सपने जितने कामुक हैं। ये वे पद हैं जिनके लिए मेरा जन्म हुआ है! हाँ, मैंने तुर्क कहा है, और मैं पीछे नहीं हटूँगा। मुझे समझ नहीं आता कि लोग तुर्कों को इतनी बुरी नज़र से कैसे देख सकते हैं; मोहम्मद में भी अच्छी बातें थीं; हूरों से भरे हरम और ओडालिस्क से भरे स्वर्ग के आविष्कारक के लिए सम्मान! आइए हम इस्लाम का अपमान न करें, एकमात्र धर्म जो मुर्गीघर से सुशोभित है! अब, मैं एक पेय चाहता हूँ। पृथ्वी मूर्खता का एक बड़ा नमूना है। और ऐसा लगता है कि वे सभी मूर्ख आपस में लड़ने वाले हैं, एक-दूसरे के चेहरे फोड़ने वाले हैं और गर्मियों के मौसम में, महीने में एक-दूसरे का नरसंहार करने वाले हैं। जून का महीना, जब वे किसी जीव को अपनी बांहों में लेकर, मैदानों में ताज़ी कटी घास के विशाल ढेरों में सांस लेने के लिए निकल पड़ते थे! सचमुच, लोग बहुत सारी मूर्खताएँ करते हैं। एक पुरानी टूटी लालटेन जो मैंने अभी-अभी एक

कबाड़ बेचने वाले की दुकान पर देखी, मेरे मन में एक विचार जगाती है; अब मानव जाति को ज्ञान देने का समय आ गया है। हाँ, देखो मैं फिर से उदास हो गया हूँ। यही होता है जब हम सीप और क्रांति को गलत तरीके से अपना लेते हैं! मैं एक बार फिर उदास हो रहा हूँ। ओह! भयानक पुरानी दुनिया। लोग संघर्ष करते हैं, एक-दूसरे को बाहर निकालते हैं, खुद को वेश्यावृत्ति में धकेलते हैं, एक-दूसरे को मारते हैं, और इसकी आदत डाल लेते हैं!

और ग्रैन्टेयर को अपनी इस वाक्पटुता के बाद खांसी का दौरा पड़ा, जो बिल्कुल जायज था।

जोली ने कहा, "क्रांति के संदर्भ में, यह निश्चित रूप से असामान्य है कि बैरियस प्रेम में है।"

"क्या किसी को पता है कि किसके साथ?" लैगल ने पूछा।

"करना।"

"नहीं?"

“करो! मैं तुमसे कहता हूँ।”

“मारियस के प्रेम प्रसंग!” ग्रैन्टेयर ने विस्मय से कहा। “मैं कल्पना कर सकता हूँ। मारियस एक कोहरा है, और उसे ज़रूर कोई वाष्प मिल गई होगी। मारियस कवियों के वंश का है। जो उसे कवि कहता है, वह मूर्ख, पागल, अपोलो टिम्ब्रेअस कहता है। मारियस और उसकी मैरी, या उसकी मैरियन, या उसकी मारिया, या उसकी मैरिएट। वे प्रेमियों की एक विचित्र जोड़ी होंगे। मैं जानता हूँ कि यह कैसा होता होगा। ऐसे परमानंद जिनमें वे चुंबन करना भूल जाते हैं। धरती पर पवित्र, लेकिन स्वर्ग में एक साथ। वे इंद्रियों से परिपूर्ण आत्माएँ हैं। वे तारों के बीच विद्यमान हैं।”

ग्रैन्टेयर अपनी दूसरी बोतल और संभवतः अपना दूसरा भाषण खत्म करने ही वाला था कि सीढ़ियों के चौकोर छेद से एक नया व्यक्ति प्रकट हुआ। वह दस वर्ष से कम आयु का एक लड़का था, फटे-पुराने कपड़ों में, बहुत छोटा, पीला, एक अजीब से चेहरे वाला, एक चंचल आँख वाला, बारिश से भीगे हुए घने बालों वाला और संतुष्ट भाव लिए हुए।

बच्चे ने बिना किसी झिझक के तीनों में से अपना चुनाव किया और लैगल डे मेओक्स को संबोधित किया।
"क्या आप महाशय बोसुएट हैं?"
“यह मेरा उपनाम है,” लैगल ने उत्तर दिया। “आप मुझसे क्या चाहते हैं?” “यही हुआ। सड़क पर एक लंबे, गोरे आदमी ने मुझसे पूछा: ‘क्या आप मदर हुचेलूप को जानते हैं?’ मैंने कहा: ‘हाँ, रू चानवरेरी, उस बूढ़े आदमी की विधवा को;’ उसने मुझसे कहा: ‘वहाँ जाओ। वहाँ तुम्हें एम. बॉसुएट मिलेंगे। मेरी तरफ से उन्हें कहना: “ए.बी.सी.”’ ये तो एक मज़ाक है, है ना। उसने मुझे दस सू दिए।” “जॉली, मुझे दस सू उधार दो,” लैगल ने कहा; और ग्रांटेयर की ओर मुड़कर बोला: “ग्रांटेयर, मुझे दस सू उधार दो।”
इससे बीस सू बने, जो लैगल ने लड़के को दे दिए।
“धन्यवाद, महोदय,” उस बच्चे ने कहा।
“आपका नाम क्या है?” लैगल ने पूछा।
“नवेट, गैवरोचे का दोस्त।”
"हमारे साथ रहिए," लैगल ने कहा।
“हमारे साथ नाश्ता कीजिए,” ग्रैन्टेयर ने कहा।
बच्चे ने उत्तर दिया:—
मैं नहीं कर सकता, मैं जुलूस का हिस्सा हूं, मैं ही वह व्यक्ति हूं जो 'पोलिग्नैक मुर्दाबाद!' के नारे लगाएगा।
और अपने पैर को पीछे की ओर लंबे समय तक रगड़ते हुए, जो कि सभी संभव अभिवादनों में सबसे सम्मानजनक अभिवादन है, उन्होंने प्रस्थान किया। बच्चे के चले जाने पर, ग्रैन्टेयर ने यह खबर सुनी:—
“यह शुद्ध नस्ल का गमिन है। गमिन प्रजाति की कई किस्में होती हैं। नोटरी के गमिन को स्किप-द-गटर, रसोइए के गमिन को स्कलियन, बेकर के गमिन को मिट्रॉन, नौकर के गमिन को ग्रूम, समुद्री गमिन को केबिन-बॉय, सैनिक के गमिन को ड्रमर-बॉय, चित्रकार के गमिन को पेंट-ग्राइंडर, व्यापारी के गमिन को

एरंड-बॉय, वेश्या के गमिन को मिनियन, शाही गमिन को डॉफिन और देवता गमिन को बम्बिनो कहा जाता है।”

इसी बीच, लैगल चिंतन में लीन थे; उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा:—

"ए.बी.सी., यानी: लामार्क का दफ़न।"

ग्रैन्टेयर ने टिप्पणी करते हुए कहा, "वह लंबा गोरा व्यक्ति एनजोलरास है, जो आपको चेतावनी भेज रहा है।"

“क्या हम चलें?” बॉसुएट ने हैरानी से पूछा।

“यह लूटपाट है,” जोली ने कहा। “मैंने आग से गुजरने की कसम खाई है, लेकिन पानी से नहीं। मुझे सोना नहीं चाहिए।”

“मैं यहीं रुकूंगा,” ग्रैन्टेयर ने कहा। “मुझे शव वाहन की बजाय नाश्ता करना ज्यादा पसंद है।”

“निष्कर्ष: हम यहीं रहेंगे,” लैगल ने कहा। “अच्छा, तो चलो पीते हैं। वैसे भी, हम अंतिम संस्कार में तो नहीं जा पाएंगे, लेकिन दंगे में ज़रूर शामिल हो जाएंगे।”

“आह! दंगा, मैं तुम्हारे साथ हूँ!” जोली चिल्लाया।

लैगल ने अपने हाथ मले।

"अब हम 1830 की क्रांति पर थोड़ा और गौर करेंगे। दरअसल, इससे जनता को काफी तकलीफ होती है।"

“मुझे आपकी क्रांति में कोई खास बात नहीं दिखती,” ग्रैन्टेयर ने कहा। “मैं इस सरकार की निंदा नहीं करता। यह सूती टोपी से ढका हुआ ताज है। यह एक राजदंड है जिसके सिरे पर छाता लगा है। वास्तव में, मुझे लगता है कि आज के मौसम में, लुई फिलिप अपनी राजशाही का दो तरह से इस्तेमाल कर सकते थे: वे राजदंड का सिरा जनता के विरुद्ध और छाते का सिरा आकाश के विरुद्ध खोल सकते थे।”

कमरा अंधेरा था, बड़े-बड़े बादलों ने अभी-अभी दिन का उजाला मिटाया था। शराब की दुकान में या सड़क पर कोई नहीं था, सब लोग "घटना देखने" चले गए थे।

“दोपहर हो गई है या आधी रात?” बॉसुएट चिल्लाया। “तुम्हारे चेहरे के सामने तुम्हारा हाथ भी नहीं दिख रहा। गिबेलोटी, माचिस लाओ।”

ग्रैन्टेयर उदास भाव से शराब पी रहा था।

“एनजोलरास मुझे तुच्छ समझता है,” उसने बुदबुदाते हुए कहा। “एनजोलरास ने कहा: ‘जॉली बीमार है, ग्रांटेयर नशे में है।’ उसने नावेट को बॉसुएट के पास भेजा था। अगर वह मेरे लिए आया होता, तो मैं उसके पीछे-पीछे चला जाता। एनजोलरास के लिए तो और भी बुरा हुआ! मैं उसके अंतिम संस्कार में नहीं जाऊंगा।”

एक बार यह निर्णय हो जाने के बाद, बॉसुएट, जोली और ग्रांटेयर शराब की दुकान से हिले तक नहीं। दोपहर दो बजे तक, जिस मेज पर वे बैठे थे, वह खाली बोतलों से ढकी हुई थी। उस पर दो मोमबत्तियाँ जल रही थीं, एक हरे रंग के सपाट तांबे के मोमबत्ती स्टैंड में, और दूसरी एक टूटे हुए जग के गले में। ग्रांटेयर ने जोली और बॉसुएट को शराब के लिए बहकाया था; बॉसुएट और जोली ने ग्रांटेयर को फिर से प्रसन्नता की ओर लौटा दिया था।

ग्रैन्टेयर की बात करें तो, दोपहर से ही वह शराब से परे, जो सपनों को प्रेरित करने वाला मात्र एक मामूली पेय है, नशे में डूब चुका था। शराब केवल गंभीर शराबियों के बीच ही प्रचलित है। वास्तव में, नशे की स्थिति में सफेद जादू और काला जादू दोनों होते हैं; शराब तो केवल सफेद जादू है। ग्रैन्टेयर सपनों का एक साहसी शराबी था। उसके सामने फैले भयानक नशे के कालेपन ने उसे रोकने के बजाय आकर्षित किया। उसने शराब की बोतल छोड़ दी और बीयर का गिलास थाम लिया। बीयर का गिलास एक अथाह खाई है। उसके पास न तो अफीम थी और न ही हशीश, और अपने दिमाग को धुंधलेपन से भरने की इच्छा से, उसने ब्रांडी, स्टाउट और एब्सिन्थे के उस भयानक मिश्रण का सहारा लिया, जो सबसे भयानक सुस्ती पैदा करता है। इन्हीं तीन वाष्पों, बीयर, ब्रांडी और एब्सिन्थे से आत्मा का सीसा बनता है। ये तीन पालक हैं; आकाशीय तितली इनमें डूब जाती है; और वहाँ एक झिल्लीदार धुएँ में, चमगादड़ के पंख में अस्पष्ट रूप से संघनित होकर, तीन मूक क्रोधी देवियाँ, दुःस्वप्न, रात्रि और मृत्यु, प्रकट होती हैं, जो सोई हुई आत्मा के चारों ओर मंडराती रहती हैं।

ग्रैन्टेयर अभी उस दयनीय अवस्था में नहीं पहुँचा था; बिलकुल भी नहीं। वह बेहद खुशमिजाज था, और बॉसुएट और जोली ने भी इसका जवाब दिया। उन्होंने गिलास टकराए। ग्रैन्टेयर ने शब्दों और विचारों के विलक्षण उच्चारण में हाव-भाव की एक विलक्षणता जोड़ दी; उसने गरिमा के साथ अपनी बाईं मुट्ठी अपने घुटने पर टिका दी, उसकी बांह समकोण बना रही थी, और टाई खोले हुए, एक स्टूल पर बैठा, अपने दाहिने हाथ में भरा हुआ गिलास लिए, उसने बड़ी नौकरानी मैटेलॉट पर गंभीर शब्दों की बौछार कर दी:

“महल के द्वार खोल दिए जाएं! हर कोई फ्रांसीसी अकादमी का सदस्य बने और मैडम हुचेलूप को गले लगाने का अधिकार पाए। चलो, मिलकर पीते हैं।”

और मैडम हुचेलूप की ओर मुड़ते हुए उन्होंने आगे कहा:—

“हे प्राचीन और उपयोग से पवित्र हुई स्त्री, मेरे निकट आओ ताकि मैं तुम्हारा चिंतन कर सकूँ!”

और जोली ने कहा:—

“मैटेलोटे और गिबेलोटे, ग्रांटेयर को पीने के लिए कुछ और मत दो। इस बोर्डिंग के बाद से वह पहले ही बेतहाशा फिजूलखर्ची में दो फ्रैंक और पचानवे सेंटिब्स उड़ा चुका है।”

और ग्रैन्टेयर ने फिर से शुरुआत की:—

"मेरी अनुमति के बिना सितारों को कौन निकाल रहा है और उन्हें मोमबत्तियों के वेश में मेज पर रख रहा है?"

बॉसुएट, अत्यधिक नशे में होने के बावजूद, अपना संयम बनाए रखने में सफल रहा।

वह खुली खिड़की की चौखट पर बैठा था, गिरती बारिश में उसकी पीठ भीग रही थी, और वह अपने दोनों दोस्तों को देख रहा था।

अचानक, उसने अपने पीछे शोरगुल, तेज़ कदमों की आहट और "हथियार उठाओ!" के नारे सुने। वह मुड़ा और सेंट-डेनिस गली में, ला चानवरेरी गली के अंत में, एनजोलरास को हाथ में बंदूक लिए हुए, गैवरोश को पिस्तौल के साथ, फ्यूली को तलवार के साथ, कौरफेयरैक को तलवार के साथ, जीन प्रोवैर को ब्लंडरबस के साथ, कॉम्बेफेरे को बंदूक के साथ, बहोरल को बंदूक के साथ और उनके पीछे आ रही पूरी सशस्त्र और उग्र भीड़ को देखा।

रुए डे ला चानवरेरी की दूरी एक गोली की गोली की दूरी से अधिक नहीं थी। बॉसुएट ने अपने मुंह के चारों ओर रखे दोनों हाथों से एक तुरही जैसा यंत्र बनाया और चिल्लाया:—
“कौरफेयरैक! कौरफेयरैक! होही!”
कौरफेयरैक ने चीख सुनी, बॉसुएट को देखा और रू डे ला चानवरेरी में कुछ कदम आगे बढ़कर चिल्लाया: "तुम क्या चाहते हो?" जिसके जवाब में "तुम कहाँ जा रहे हो?"
“एक बैरिकेड बनाने के लिए,” कौरफेयरैक ने उत्तर दिया।
“अच्छा, यहाँ! यह अच्छी जगह है! यहीं आ जाओ!”
“यह सच है, एगल,” कौरफेयरैक ने कहा।
और कौरफेयरैक के इशारे पर, भीड़ ने खुद को रू डे ला चानव्रेरी में झोंक दिया।

III. ग्रांटेयर पर रात छाने लगती है

दरअसल, वह जगह बड़ी कुशलता से तैयार की गई थी; गली का प्रवेश द्वार चौड़ा कर दिया गया था, जबकि दूसरा सिरा संकरा होकर एक ऐसी जगह बन गया था जहाँ से निकलना नामुमकिन था। कोरिंथ ने एक बाधा खड़ी कर दी थी; रुए मोंडेतोर को दाईं और बाईं ओर से आसानी से बंद कर दिया गया था; रुए सेंट-डेनिस के अलावा कहीं से भी हमला संभव नहीं था, यानी सामने से, और पूरी तरह से नज़र में। बॉसुएट की नज़र किसी भूखे हैनिबल जैसी पैनी थी।

भीड़ के अचानक भड़कने से पूरी गली में दहशत फैल गई थी। कोई भी राहगीर ऐसा नहीं बचा जो नज़रों से ओझल न हो गया हो। पलक झपकते ही, पीछे, दाएं और बाएं, दुकानें, अस्तबल, दरवाज़े, खिड़कियां, पर्दे, अटारी की रोशनदान, हर तरह के शटर, भूतल से छत तक, बंद हो गए। एक डरी हुई बूढ़ी औरत ने गोलियों की आवाज़ को कम करने के लिए अपनी खिड़की के सामने कपड़े सुखाने वाले दो डंडों पर एक गद्दा टिका दिया। केवल शराब की दुकान खुली रही; और वह भी एक ठोस कारण से, क्योंकि भीड़ उसमें घुस गई थी। —“हे भगवान! हे भगवान!” मामे हुचेलूप ने आह भरी।

बॉसुएट, कौरफेयरैक से मिलने नीचे गया था।

खिड़की पर खड़े जोली ने कहा:—

“कौरफेयरैक, तुम्हें छाता लाना चाहिए था। तुम्हें सोना मिलेगा।”

इसी बीच, कुछ ही मिनटों में, शराब की दुकान के जालीदार अग्रभाग से बीस लोहे की छड़ें उखाड़ दी गईं, सड़क का दस फ़ैदम हिस्सा कच्चा कर दिया गया; गैवरोश और बहोरल ने रास्ते में ही चूना व्यापारी एंसेउ की गाड़ी को ज़ब्त कर पलट दिया; इस गाड़ी में चूने के तीन बैरल थे, जिन्हें उन्होंने पत्थरों के ढेर के नीचे रख दिया: एनजोलरास ने तहखाने का ढक्कन उठा दिया, और विधवा हुचेलूप के सभी खाली पीपों का इस्तेमाल चूने के बैरलों के दोनों ओर कर दिया गया; पंखों की नाजुक छड़ियों को रंगने में माहिर फ़्यूली ने खुरदुरे पत्थरों के दो विशाल ढेरों से बैरलों और गाड़ी को सहारा दिया। ये ब्लॉक भी बाकी ब्लॉकों की तरह ही कामचलाऊ थे और पता नहीं कहाँ से लाए गए थे। सहारे के लिए

इस्तेमाल की गई बीमें पड़ोसी घरों के अग्रभागों से तोड़कर पीपों पर रख दी गईं। जब बॉसुएट और कौरफेयरैक मुड़े, तो आधी सड़क पहले से ही एक आदमी से भी ऊँची दीवार से घिरी हुई थी। विध्वंस करके हर चीज़ बनाने में जनता के हाथ जैसा कुछ नहीं होता।

मैटेलोटे और गिबेलोटे मजदूरों के बीच घुलमिल गई थीं। गिबेलोटे कचरा लादकर आती-जाती रही। उसकी सुस्ती ने बैरिकेड पर काम में मदद की। वह बैरिकेड पर ऐसे काम कर रही थी जैसे शराब परोसती हो, नींद भरी अदा के साथ।

सफेद घोड़ों वाली एक बस सड़क के अंत से गुजरी।

बॉसुएट पक्की सड़क पर कदम रखते हुए आगे बढ़ा, उसकी ओर दौड़ा, ड्राइवर को रोका, यात्रियों को नीचे उतारा, "महिलाओं" को अपना हाथ बढ़ाया, कंडक्टर को विदा किया और वापस लौट आया, गाड़ी और घोड़ों को लगाम से पकड़कर ले जा रहा था।

उन्होंने कहा, “सभी बसें कोरिंथ से होकर नहीं गुजरतीं। सभी को कोरिंथ जाने की अनुमति नहीं है।”

एक पल बाद, घोड़ों को खोल दिया गया और वे अपनी मर्जी से रुए मोंडेतोर से होते हुए चले गए, और एक तरफ पलटी हुई बस ने सड़क के उस पार स्थित बार को पूरा कर दिया।

मामे हुचेलूप, काफी परेशान होकर, पहली मंजिल पर शरण लेने चली गई थी।

उसकी आँखें धुंधली थीं, और वह बिना कुछ देखे घूर रही थी, और वह धीमी आवाज़ में रो रही थी। उसके गले से डर के मारे चीखें निकलने की हिम्मत नहीं कर पा रही थीं।

“दुनिया का अंत आ गया है,” उसने बुदबुदाते हुए कहा।

जोली ने मामे हुचेलूप की मोटी, लाल, झुर्रीदार गर्दन पर एक चुंबन दिया और ग्रांटेयर से कहा: "मेरे प्यारे दोस्त, मैंने हमेशा एक महिला की गर्दन को एक अत्यंत नाजुक चीज माना है।"

लेकिन ग्रैन्टेयर आनंद की चरम सीमा पर पहुँच गया। मैटेलोटे एक बार फिर पहली मंजिल पर चढ़ गई, ग्रैन्टेयर ने उसकी कमर पकड़ ली और खिड़की की ओर देखकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा।

“माटेलोटे घर जैसा है!” वह चिल्लाया: “मैटेलोटे कुरूपता के सपने से निकली है! मैटेलोटे एक मायावी जीव है। उसके जन्म का रहस्य यह है: एक गोथिक पिग्मेलियन, जो गिरजाघरों के लिए गार्गोयल बना रहा था, एक सुबह उनमें से सबसे भयानक गार्गोयल से प्यार कर बैठा। उसने प्रेम से उसे जीवन देने की प्रार्थना की, और इस तरह मैटेलोटे का जन्म हुआ। उसे देखो, नागरिकों! उसके बाल सीसे के रंग के हैं, टिटियन की प्रेमिका की तरह, और वह एक अच्छी लड़की है। मैं गारंटी देता हूँ कि वह अच्छी तरह लड़ेगी। हर अच्छी लड़की में एक नायक छिपा होता है। जहाँ तक माँ हुचेलूप की बात है, वह एक पुरानी योद्धा है। उसकी मूंछें देखो! उसे ये अपने पति से विरासत में मिली हैं। सचमुच एक हुसार! वह भी लड़ेगी। ये दोनों अकेले ही उपनगर के दिलों में दहशत पैदा कर देंगी। साथियों, हम सरकार को उखाड़ फेंकेंगे, ठीक वैसे ही जैसे मार्गरिक एसिड और फॉर्मिक एसिड के बीच पंद्रह मध्यवर्ती एसिड होते हैं; हालाँकि, यह मेरे लिए पूरी तरह से उदासीनता का विषय है। सज्जनों, मेरे पिता मुझसे हमेशा नफरत करते थे क्योंकि मुझे गणित समझ नहीं आती थी। मुझे तो सिर्फ प्यार और आजादी समझ आती है। मैं ग्रैन्टेयर हूँ, एक नेक इंसान। मेरे पास कभी पैसा नहीं था, इसलिए मुझे कभी पैसे की आदत नहीं पड़ी, और नतीजा यह है कि मुझे कभी पैसों की कमी नहीं हुई; लेकिन, अगर मैं अमीर होता, तो कोई गरीब नहीं बचता! तुम देखते! काश, दयालु लोगों के पास खूब पैसा होता, तो हालात कितने बेहतर होते! मैं खुद को रॉथ्सचाइल्ड की दौलत के साथ यीशु मसीह के रूप में देखता हूँ! वह कितना भला करते! मैटेलॉट, मुझे गले लगाओ! तुम कामुक और शर्मीली हो! तुम्हारे गाल बहन के चुंबन के लिए तरसते हैं, और होंठ प्रेमी के चुंबन के लिए।

“अपनी ज़बान बंद रखो, तुम बेवकूफ!” कौरफेयरैक ने कहा।

ग्रैन्टेयर ने पलटवार किया:—

मैं ही कैपिटौल हूँ और पुष्प खेलों का स्वामी हूँ!

बैरिकेड के शिखर पर बंदूक हाथ में लिए खड़ा एनजोलरास ने अपना सुंदर, गंभीर चेहरा ऊपर उठाया। जैसा कि पाठक जानते हैं, एनजोलरास के व्यक्तित्व में स्पार्टन और प्यूरिटन दोनों के कुछ अंश थे। वह लियोनिडास के साथ थर्मोपाइले में शहीद हो जाता और क्रॉमवेल के साथ ड्रोगेडा में जलकर मर जाता।

“ग्रांटेयर ,” वह चिल्लाया , “अपनी शराब की बदबू कहीं और निकालो। यह उत्साह का स्थान है , नशे का नहीं। बैरिकेड को बदनाम मत करो !”

इस क्रोधित भाषण का ग्रैन्टेयर पर एक अनोखा प्रभाव पड़ा। ऐसा लगा मानो किसी ने उनके चेहरे पर ठंडा पानी फेंक दिया हो। वे अचानक होश में आ गए हों।

वह बैठ गया , खिड़की के पास एक मेज पर अपनी कोहनियाँ टिका दीं , अनजोलरास को अवर्णनीय कोमलता से देखा और उससे कहा :—

मुझे यहीं सोने दो।

“जाओ और कहीं सो जाओ ,” एनजोलरास चिल्लाया।

लेकिन ग्रैन्टेयर ने अपनी कोमल और व्याकुल निगाहें उस पर टिकाए रखते हुए उत्तर दिया :—

मुझे यहीं सोने दो —जब तक मैं मर न जाऊं।

एनजोलरास ने उसे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा :

"ग्रांटेयर , तुम विश्वास करने , सोचने , इच्छा करने , जीने और मरने में असमर्थ हो। "

ग्रैन्टेयर ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया :—

"आप देखेंगे। "

उसने कुछ और अस्पष्ट शब्द हकलाते हुए कहे , फिर उसका सिर मेज पर जोर से गिर पड़ा , और नशे की दूसरी अवस्था के सामान्य प्रभाव के रूप में , जिसमें एनजोलरास ने उसे जबरदस्ती और अचानक धकेल दिया था , एक पल बाद ही वह सो गया।

IV. विधवा हुचेलूप को सांत्वना देने का एक प्रयास

बैरिकेड के ऊपर से बहोरल ने उत्साह में चिल्लाते हुए कहा:—

“ये रही सड़क, अपने कम गले वाले परिधान में! कितनी खूबसूरत लग रही है!”

कौरफेयरैक ने शराब की दुकान को कुछ हद तक ध्वस्त करते हुए विधवा मालकिन को सांत्वना देने की कोशिश की।

"मदर हुचेलूप, क्या आप उस दिन शिकायत नहीं कर रही थीं क्योंकि आपको कानून का उल्लंघन करने के लिए नोटिस दिया गया था, क्योंकि गिबेलोटे ने आपकी खिड़की से एक चादर बाहर फेंक दी थी?"

जी हाँ, मेरे प्रिय महोदय कौरफेयरैक। अरे! हे भगवान! क्या आप मेरी उस मेज को भी अपनी इस भयानक सूची में शामिल करने जा रहे हैं? और यह चादर और फूलों का एक गमला जो अटारी की खिड़की से सड़क पर गिर गया था, उसी के लिए सरकार ने सौ फ्रैंक का जुर्माना वसूला था। अगर यह घिनौना काम नहीं है, तो और क्या है!

"खैर, मदर हुचेलूप, हम आपका बदला लेंगे।"

मदर हुचेलूप को शायद यह ठीक से समझ नहीं आया कि उनके खिलाफ की गई इन कार्रवाइयों से उन्हें क्या लाभ मिलने वाला है। वह उस अरब महिला की तरह संतुष्ट हो गईं, जिसे उसके पति ने कान पर एक थप्पड़ मारा था। वह अपने पिता के पास शिकायत लेकर गई और बदला लेने की गुहार लगाते हुए बोली, “पिताजी, आपने मेरे पति को मेरे अपमान का बदला चुकाया है।” पिता ने पूछा, “तुम्हें किस गाल पर थप्पड़ पड़ा?” “बाएँ गाल पर।” पिता ने उसके दाहिने गाल पर एक थप्पड़ मारा और कहा, “अब तुम संतुष्ट हो गई हो। जाओ अपने पति से कहो कि उसने मेरी बेटी के कान पर थप्पड़ मारा था, और मैंने उसी के अनुसार उसकी पत्नी के कान पर थप्पड़ मारा है।”

बारिश रुक गई थी। रंगरूट आ चुके थे। कामगार अपनी कमीज़ों के नीचे बारूद का एक बैरल, तेजाब की बोतलों से भरी एक टोकरी, दो-तीन कार्निवल मशालें और आग के बर्तनों से भरी एक टोकरी लाए थे, जो "राजा के उत्सव से बची हुई" थीं। यह उत्सव हाल ही में, 1 मई को हुआ था। कहा जाता है कि ये गोला-बारूद फाउबर्ग सेंट-एंटोइन के पेपिन नामक एक दुकानदार से लाए गए थे। उन्होंने रू डे ला चानवरेरी में एकमात्र स्ट्रीट लैंप, रू सेंट-डेनिस में लगे लैंप के समान लैंप और आसपास की सभी सड़कों - डे मोंडेटूर, डू सिग्न, डेस प्रीचेर्स, डे ला ग्रांडे और डे ला पेटिट-ट्रुआंडेरी - के लैंपों को तोड़ दिया।

एनजोलरास, कॉम्बेफेरे और कौरफेयरैक ही सब कुछ निर्देशित कर रहे थे। दो बैरिकेड एक साथ बनाए जा रहे थे, दोनों ही कोरिंथ हाउस पर टिके हुए थे और समकोण बना रहे थे; बड़ा बैरिकेड रू डे ला चानवरेरी को बंद कर रहा था, जबकि दूसरा रू डे सिग्न की तरफ रू मोंडेटूर को बंद कर रहा था। यह आखिरी बैरिकेड, जो बहुत संकरा था, केवल पीपों और पत्थरों से बना था। इस पर लगभग पचास मजदूर काम कर रहे थे; तीस बंदूकों से लैस थे; क्योंकि रास्ते में उन्होंने एक हथियार बनाने वाले की दुकान से थोक में कर्ज लिया था।

इस टुकड़ी से ज़्यादा विचित्र और साथ ही साथ इतना विविध कुछ और नहीं हो सकता था। एक ने गोल जैकेट, घुड़सवार सेना की तलवार और दो पिस्तौलें पहन रखी थीं; दूसरा अपनी कमीज़ की आस्तीनों में था, सिर पर गोल टोपी और कमर पर बारूद का डिब्बा लटकाए हुए था; तीसरे ने भूरे कागज़ की नौ शीटों का कवच पहन रखा था और उसके हाथ में एक सुई थी। एक चिल्ला रहा था: "चलो हम उन्हें आख़िरी आदमी तक मार डालें और अपनी संगीन की नोक पर मर जाएँ।" इस आदमी के पास संगीन नहीं थी। एक अन्य ने अपने कोट पर नेशनल गार्ड्समैन की कमरबंद और कारतूस पेटी फैला रखी थी, कारतूस पेटी के ढक्कन पर लाल ऊनी कपड़े से यह लिखा था: सार्वजनिक व्यवस्था। वहाँ बहुत सी तोपें थीं जिन पर सेना की टुकड़ियों के नंबर लिखे थे, कुछ ही लोगों ने टोपियाँ पहन रखी थीं, किसी ने टाई नहीं बाँधी थी, कई लोगों के हथियार खाली थे, कुछ के पास भाले थे। इसके अलावा, हर उम्र के लोग, हर तरह के चेहरे, छोटे, पीले-से नौजवान और तगड़े मज़दूर भी थे। सभी जल्दी में थे; और एक-दूसरे की मदद करते हुए वे संभावित संभावनाओं पर चर्चा कर रहे थे। उन्हें यकीन था कि सुबह करीब तीन बजे उन्हें मदद मिलेगी — उन्हें एक रेजिमेंट का पूरा भरोसा था, पेरिस विद्रोह करेगा। ये भयानक

बातें एक तरह की सौहार्दपूर्ण हंसी के साथ मिली हुई थीं। कोई उन्हें भाई कह सकता था, लेकिन वे एक-दूसरे का नाम नहीं जानते थे। बड़े खतरों की यही खूबी होती है कि वे अजनबियों के बीच भाईचारे को उजागर कर देते हैं। रसोई में आग जलाई गई थी, और वे वहाँ पीतल के मग, चम्मच, कांटे और प्रतिष्ठान के सभी पीतल के बर्तनों को गोलियों में ढालने में लगे हुए थे। इन सबके बीच वे शराब पी रहे थे। मेजों पर शराब के गिलासों के साथ टोपियाँ और छर्रे बेतरतीब ढंग से बिखरे पड़े थे। बिलियर्ड हॉल में, मामे हुचेलूप, मैटेलोटे और गिबेलोटे, आतंक से अलग-अलग रूप में परिवर्तित होकर, एक को स्तब्ध कर देने, दूसरे को बेदम कर देने और तीसरे को जगा देने में लगी हुई थीं, पुराने डिशक्लॉथ फाड़कर रुई बना रही थीं; तीन विद्रोही उनकी सहायता कर रहे थे, तीन घने बालों वाले, हंसमुख दाढ़ी और मूंछों वाले लोग, जो दर्ज़ियों की उंगलियों से लिनेन को खींच रहे थे और उन्हें कांपने पर मजबूर कर रहे थे।

ऊँचे कद का वह आदमी, जिसे कौरफेयरैक, कॉम्बेफेरे और एनजोलरास ने रुए डेस बिल्लेट्स के कोने पर भीड़ में शामिल होते हुए देखा था, छोटी बैरिकेड पर काम कर रहा था और वहाँ अपना योगदान दे रहा था। गैवरोश बड़ी बैरिकेड पर काम कर रहा था। जहाँ तक उस युवक की बात है जो कौरफेयरैक के कमरे में उसका इंतज़ार कर रहा था और जिसने एम. मारियस के बारे में पूछताछ की थी, वह लगभग उसी समय गायब हो गया था जब बस पलट गई थी।

पूरी तरह से भावविभोर और प्रज्वलित गैवरोश ने सब कुछ तैयार करने का जिम्मा उठा लिया था। वह आता, जाता, चढ़ता, उतरता, फिर चढ़ता, सीटी बजाता और चमकता रहता। ऐसा लगता था मानो वह सबका उत्साह बढ़ाने के लिए ही वहाँ मौजूद हो। क्या उसका कोई प्रोत्साहन था? हाँ, निश्चित रूप से, उसकी गरीबी; क्या उसके पंख थे? हाँ, निश्चित रूप से, उसका आनंद। गैवरोश एक बवंडर था। वह निरंतर दृश्यमान था, निरंतर श्रव्य था। वह हवा में व्याप्त था, मानो एक ही समय में हर जगह मौजूद हो। वह एक प्रकार की लगभग चिढ़ाने वाली सर्वव्यापकता था; उसके साथ रुकना संभव नहीं था। विशाल बैरिकेड भी उसे अपने पिछले पैरों पर महसूस कर रहा था। वह आलसियों को परेशान करता, आलसी लोगों को उत्तेजित करता, थके हुए लोगों में नई जान डालता, विचारशील लोगों पर अधीर हो जाता, कुछ में उल्लास भरता, दूसरों में साँस, दूसरों में क्रोध, सभी में हलचल पैदा करता, कभी किसी छात्र को चुभता, कभी किसी कारीगर को काटता; वह उतरा, थोड़ी देर

रुका, फिर उड़ गया, शोरगुल और हलचल के ऊपर मंडराता रहा, एक दल से दूसरे दल में उछलता-कूदता रहा, बुदबुदाता और गुनगुनाता रहा और पूरे समूह को परेशान करता रहा; विशाल क्रांतिकारी रथ पर बैठी एक मक्खी की तरह।

उसकी नन्ही भुजाओं में निरंतर गति थी और उसके नन्हे फेफड़ों में निरंतर शोर था।

“हिम्मत रखो! और पत्थर लाओ! और पीपे लाओ! और मशीनें लाओ! तुम अब कहाँ हो? मुझे इस छेद को भरने के लिए प्लास्टर का एक ढेर लाओ! तुम्हारा बैरिकेड बहुत छोटा है। इसे ऊपर ले जाना होगा। सब कुछ इस पर रखो, सब कुछ वहाँ फेंक दो, सब कुछ इसमें ठूंस दो। घर तोड़ दो। बैरिकेड मदर गिबू की चाय है। हैलो, ये रहा कांच का दरवाजा।”

इस पर श्रमिकों ने हैरानी जताई।

"कांच का दरवाजा? तुम हमसे कांच के दरवाजे का क्या करने की उम्मीद करते हो, बेवकूफ?"

“खुद को हरक्यूलिस समझो!” गैवरोश ने पलटवार किया। “दीवारबंदी में कांच का दरवाजा बहुत बढ़िया होता है। यह हमले को तो नहीं रोकता, लेकिन दुश्मन को उस पर कब्जा करने से रोकता है। तो क्या तुमने कभी टूटी बोतलों वाली दीवार के ऊपर से सेब नहीं टांगे? कांच का दरवाजा नेशनल गार्ड के सैनिकों के पैर की उंगलियों को काट देता है जब वे चौकी पर चढ़ने की कोशिश करते हैं। अरे यार! कांच तो बहुत खतरनाक चीज है। खैर, साथियों, तुम्हारी कल्पना शक्ति कुछ खास नहीं है।”

हालांकि, वह अपनी ट्रिगरलेस पिस्तौल को लेकर बेहद गुस्से में था। वह एक-एक करके सबके पास जाकर चिल्लाने लगा: “मुझे बंदूक चाहिए! मुझे बंदूक क्यों नहीं देते?”

"मैं तुम्हें बंदूक दूंगा!" कॉम्बेफेरे ने कहा।

“अरे वाह!” गैवरोश ने कहा, “क्यों नहीं? 1830 में जब हमारा चार्ल्स X के साथ विवाद हुआ था, तब मेरे पास ऐसा ही एक मामला था।”

एनजोलरास ने अपने कंधे उचका दिए।

"जब पुरुषों के लिए पर्याप्त हो जाएगा, तो हम कुछ बच्चों को भी दे देंगे।"

गैवरोश ने घमंडी अंदाज़ में घूमकर उत्तर दिया:—
"अगर तुम मेरे सामने मारे गए, तो मैं तुम्हारे शव ले लूंगा।"
“गामिन!” एनजोलरास ने कहा।
“नौसिखिए!” गैवरोश ने कहा।
एक शौकीन मिजाज व्यक्ति जो रास्ता भटक गया था और गली के अंत तक इधर-उधर भटक रहा था, उसने ध्यान भटका दिया! गैवरोश ने उसे चिल्लाकर कहा:—
“हमारे साथ आओ, नौजवान! अच्छा, क्या हम अपने इस पुराने देश के लिए कुछ नहीं करते?”
वह शौकीन आदमी भाग गया।

V. तैयारियाँ

उस समय के समाचार पत्रों में छपी खबरें, जिनमें कहा गया था कि रुए डे ला चानवरेरी की वह "लगभग अभेद्य संरचना", जिसे वे बैरिकेड कहते थे, पहली मंजिल तक पहुँचती थी, गलत थीं। असलियत यह है कि उसकी औसत ऊँचाई छह या सात फीट से अधिक नहीं थी। उसे इस तरह बनाया गया था कि लड़ाके अपनी इच्छा से या तो उसके पीछे छिप सकते थे या बैरिकेड पर हावी होकर, अंदर की ओर सीढ़ियों की तरह एक के ऊपर एक रखे गए पत्थरों की चौगुनी पंक्ति की मदद से उसकी चोटी पर चढ़ सकते थे। बाहर से देखने पर, बैरिकेड का अगला हिस्सा, जो पत्थरों और पीपों के ढेर से बना था और बीम व तख्तों से बंधा हुआ था, जो एंसो की गाड़ी और पलटी हुई बस के पहियों में उलझा हुआ था, देखने में उबड़-खाबड़ और उलझा हुआ सा लगता था।

घरों की दीवार और शराब की दुकान से सबसे दूर स्थित बैरिकेड के अंतिम छोर के बीच एक ऐसा छेद बनाया गया था जिससे एक आदमी आसानी से गुजर सके, ताकि इस बिंदु से बाहर निकला जा सके। बस का खंभा सीधा खड़ा करके रस्सियों से बांध दिया गया था, और इस खंभे से बंधा एक लाल झंडा बैरिकेड के ऊपर लहरा रहा था।

शराब की दुकान की इमारत के पीछे छिपा हुआ छोटा मोंडेटूर बैरिकेड दिखाई नहीं दे रहा था। दोनों बैरिकेड मिलकर एक मजबूत किलेबंदी का रूप ले लेते थे। एनजोलरास और कौरफेयरैक ने रुए मोंडेटूर के दूसरे हिस्से को बैरिकेड करना उचित नहीं समझा, जो रुए डेस प्रेचर्स से होते हुए हालेस की ओर खुलता है। वे शायद बाहर से संपर्क बनाए रखना चाहते थे और रुए डेस प्रेचर्स की खतरनाक और मुश्किल सड़क से हमले का उन्हें ज्यादा डर नहीं था।

इस हिस्से को छोड़कर, जिसे खुला छोड़ दिया गया था और जिसे फोलार्ड अपनी रणनीतिक शैली में एक शाखा कहते, और रू डे ला चानवरेरी पर बने संकरे रास्ते को ध्यान में रखते हुए, बैरिकेड का भीतरी भाग, जहाँ शराब की दुकान एक प्रमुख कोण बनाती थी, एक अनियमित वर्गाकार आकृति प्रस्तुत करता था, जो चारों ओर से बंद था। मुख्य बैरिकेड और सड़क की पृष्ठभूमि में स्थित ऊँचे

मकानों के बीच बीस कदम का फासला था, जिससे यह कहा जा सकता है कि बैरिकेड इन आबाद मकानों पर टिका हुआ था, जो ऊपर से नीचे तक बंद थे।

यह सारा काम बिना किसी रुकावट के, एक घंटे से भी कम समय में पूरा हो गया, और इन मुट्ठी भर साहसी लोगों ने एक भी भालू की खाल की टोपी या संगीन को अपनी ओर आते नहीं देखा। यहाँ तक कि जो बुर्जुआ लोग दंगे के इस दौर में भी सेंट-डेनिस गली में प्रवेश करने का साहस कर रहे थे, उन्होंने चानवरेरी गली की ओर एक नज़र डाली, बैरिकेड को देखा और अपनी गति दोगुनी कर दी।

दोनों बैरिकेड्स बनकर तैयार हो जाने और झंडा फहरा दिए जाने के बाद, शराब की दुकान से एक मेज खींचकर लाई गई और कौरफेयरैक उस मेज पर चढ़ गया। एनजोलरास एक चौकोर संदूक लेकर आया और कौरफेयरैक ने उसे खोला। यह संदूक कारतूसों से भरा हुआ था। जब भीड़ ने कारतूस देखे, तो सबसे बहादुर लोग भी कांप उठे और क्षण भर के लिए सन्नाटा छा गया।

कौरफेयरैक ने उन्हें मुस्कुराते हुए बांटा।

प्रत्येक को तीस कारतूस मिले। कई लोगों के पास बारूद था, और उन्होंने बचे हुए कारतूसों से नए कारतूस बनाने शुरू कर दिए। बारूद की पेटी दरवाजे के पास एक तरफ मेज पर रखी थी, जिसे आरक्षित रखा गया था।

पेरिस भर में गूंजती हुई अलार्म की ध्वनि थम नहीं रही थी, लेकिन अंततः यह एक नीरस शोर बनकर रह गई थी जिस पर अब लोग कोई ध्यान नहीं देते थे। यह शोर कभी दूर चला जाता था, और फिर उदासी भरी लहरों के साथ पास आ जाता था।

उन्होंने बिना किसी हड़बड़ी के, पूरी गंभीरता से एक साथ तोपों और कार्बाइनों को लोड किया। एनजोलरास ने जाकर बैरिकेड के बाहर तीन संतरी तैनात किए, एक रुए डे ला चानवरेरी में, दूसरा रुए डेस प्रीचेर्स में और तीसरा रुए डे ला पेटिट ट्रुआंडेरी के कोने पर।

फिर, बैरिकेड्स बन जाने, चौकियाँ निर्धारित हो जाने, तोपें लोड हो जाने और पहरेदार तैनात हो जाने के बाद, वे उन दुर्गम गलियों में अकेले प्रतीक्षा करने लगे, जहाँ से अब कोई नहीं गुजरता था, उन निर्जन घरों से घिरे हुए, जिनमें कोई मानवीय हलचल नहीं सुनाई देती थी, गोधूलि की गहरी छाया में डूबे हुए, उस सन्नाटे के बीच, जिसमें किसी चीज के आगे बढ़ने का आभास हो सकता था, और जिसमें कुछ दुखद और भयावह सा था, एकांत में, सशस्त्र, दृढ़ और शांत।

VI. प्रतीक्षा

प्रतीक्षा के उन घंटों के दौरान उन्होंने क्या किया?

हमें बताना ही होगा, क्योंकि यह इतिहास का मामला है।

जब पुरुष गोलियां बना रहे थे और महिलाएं रुई साफ कर रही थीं, जब पीतल और सीसे से भरा एक बड़ा बर्तन, जिसे गोली के सांचे में डाला जाना था, धधकते अंगीठी पर धुआं उगल रहा था, जब पहरेदार हथियार हाथ में लिए बैरिकेड पर पहरा दे रहे थे, जब एनजोलरास, जिसे विचलित करना असंभव था, पहरेदारों पर नजर रखे हुए था, तब कॉम्बेफेरे, कौरफेयरैक, जीन प्रोवेर, फ्यूली, बॉसुएट, जोली, बहोरल और कुछ अन्य लोग एक-दूसरे को ढूंढ रहे थे और अपने छात्र जीवन के सबसे शांतिपूर्ण दिनों की बातचीत की तरह एकजुट हो गए, और उस शराब की दुकान के एक कोने में, जिसे एक खिड़की में बदल दिया गया था, उनके द्वारा बनाए गए किले से कुछ कदम की दूरी पर, अपनी भरी हुई और तैयार कार्बाइन को अपनी कुर्सियों की पीठ पर टिकाए हुए, ये प्रतिभाशाली युवक, एक शानदार पल के इतने करीब, प्रेम कविताएं सुनाने लगे।

कौन से श्लोक? ये :—

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [85]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

VII. रुए डेस बिल्लेट्स में भर्ती किया गया व्यक्ति

रात पूरी तरह से छा चुकी थी, कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। उन्हें केवल अस्पष्ट शोर सुनाई दे रहा था, और रुक-रुक कर गोलियों की बौछारें; लेकिन ये बौछारें कम, धीमी और दूर-दूर से आ रही थीं। इस तरह लंबे समय तक चलने वाली शांति इस बात का संकेत थी कि सरकार समय ले रही थी और अपनी सेना जुटा रही थी। ये पचास सैनिक साठ हज़ार सैनिकों की प्रतीक्षा कर रहे थे।

एनजोलरास पर वही बेचैनी हावी हो गई जो किसी बड़ी घटना के दहलीज पर खड़े मजबूत इरादों वाले लोगों को भी जकड़ लेती है। वह गैवरोश की तलाश में निकल पड़ा, जो बार में कारतूस बना रहा था। काउंटर पर एहतियात के तौर पर रखी गई दो मोमबत्तियों की धुंधली रोशनी में, मेजों पर बिखरे बारूद के कारण, वह गैवरोश को ढूंढ रहा था। इन दोनों मोमबत्तियों से बाहर कोई रोशनी नहीं फैल रही थी। विद्रोहियों ने ऊपरी मंजिलों में भी रोशनी न होने का पूरा ध्यान रखा था।

उस समय गैवरोश गहरी सोच में डूबा हुआ था, लेकिन ठीक अपने कारतूसों को लेकर नहीं। रुए डेस बिल्लेट्स का वह आदमी अभी-अभी शराबखाने में दाखिल हुआ था और सबसे कम रोशनी वाली मेज पर बैठ गया था। उसके हिस्से में एक बड़ी बंदूक आ गिरी थी, जिसे उसने अपने पैरों के बीच दबा रखा था। गैवरोश, जो उस पल तक सौ "मनोरंजक" बातों में उलझा हुआ था, उसने उस आदमी को देखा तक नहीं था।

जब वह अंदर आया, तो गैवरोश ने यंत्रवत अपनी आँखों से उसका पीछा किया, उसकी बंदूक की प्रशंसा करते हुए; फिर, जैसे ही वह आदमी बैठा, गली का वह लड़का उछलकर खड़ा हो गया। उस क्षण तक उस आदमी पर नज़र रखने वाला कोई भी व्यक्ति देख सकता था कि वह बैरिकेड और विद्रोहियों के समूह में हर चीज़ को असाधारण ध्यान से देख रहा था; लेकिन, इस कमरे में प्रवेश करते ही, वह एक तरह के गहन चिंतन में डूब गया था, और ऐसा लग रहा था जैसे उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा हो। वह लड़का उस गंभीर व्यक्ति के पास पहुँचा, और उसके चारों ओर दबे पांव चलने लगा, जैसे कोई उस व्यक्ति के पास चलता है जिसे जगाने से डर लगता है।

उसी समय, उसके बचकाने चेहरे पर, जो एक साथ इतना ढीठ और इतना गंभीर, इतना चंचल और इतना गहरा, इतना हंसमुख और इतना दिल दहला देने वाला था, एक बूढ़े आदमी के सारे भाव उभर आए जो दर्शाते हैं: अरे! असंभव! मेरी नज़र कमज़ोर है! मैं सपना देख रहा हूँ! क्या यह हो सकता है? नहीं, ऐसा नहीं है! लेकिन हाँ! अरे नहीं! इत्यादि। गैवरोश अपनी एड़ियों पर संतुलन बनाए हुए था, दोनों मुट्ठियाँ जेब में भींच रहा था, अपनी गर्दन को पक्षी की तरह घुमा रहा था, और अपने निचले होंठ की सारी समझदारी को एक विशाल पाउट में समेटे हुए था। वह चकित, अनिश्चित, अविश्वासी, आश्वस्त, चकाचौंध था। उसका हावभाव किसी दास बाज़ार में हिजड़ों के सरदार जैसा था, जो भद्दी महिलाओं के बीच वीनस को खोज रहा हो, और एक नौसिखिए की तरह, जो ढेर सारी पेंटिंग्स में राफेल की कृति को पहचान रहा हो। उसका पूरा अस्तित्व सक्रिय था, सूंघने की सहज प्रवृत्ति और उन्हें संयोजित करने की बुद्धि। यह स्पष्ट था कि गैवरोश के जीवन में एक बड़ी घटना घटित हुई थी।

जब वह इस चिंता में सबसे अधिक डूबा हुआ था, तभी एनजोलरास ने उससे संपर्क किया।

“तुम छोटे हो,” एनजोलरास ने कहा, “तुम्हें कोई देख नहीं पाएगा। बैरिकेड से बाहर जाओ, घरों के पास से चुपके से निकल जाओ, गलियों में थोड़ी-बहुत झड़प करो, और वापस आकर मुझे बताओ कि क्या हो रहा है।”

गैवरोश अपने घुटनों के बल उठ खड़ा हुआ।

“तो छोटे लोग भी किसी काम के हैं! ये तो बहुत अच्छी बात है! मैं चलता हूँ! तब तक, छोटे लोगों पर भरोसा रखो और बड़ों पर शक करो।” और गैवरोश ने अपना सिर ऊपर उठाते हुए और अपनी आवाज़ धीमी करते हुए, रुए डेस बिल्लेट्स के उस आदमी की ओर इशारा करते हुए कहा: “क्या तुम उस बड़े आदमी को वहाँ देख रहे हो?”

"कुंआ?"

वह पुलिस का जासूस है।

क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है?

"अभी दो हफ्ते भी नहीं बीते हैं जब उसने मुझे पोर्ट रॉयल के किनारे से, जहां मैं ताजी हवा ले रहा था, मेरे कान पकड़कर नीचे खींच लिया था।"

एनजोलरास ने जल्दी से उस बच्चे को छोड़ा और पास ही मौजूद शराब की दुकानों के एक मजदूर से बहुत धीमी आवाज़ में कुछ शब्द बुदबुदाए। वह आदमी कमरे से बाहर गया और लगभग तुरंत ही तीन अन्य लोगों के साथ वापस आ गया। चौड़े कंधों वाले वे चारों कुली, बिना किसी तरह से उसका ध्यान आकर्षित किए, उस मेज के पीछे जाकर बैठ गए जिस पर रू डेस बिल्लेट्स का वह आदमी कोहनियों के बल टिका हुआ था। वे स्पष्ट रूप से उस पर हमला करने के लिए तैयार थे।

तब एनजोलरास उस आदमी के पास गया और उससे पूछा:—

"आप कौन हैं?"

इस अचानक पूछे गए प्रश्न पर वह व्यक्ति चौंक गया। उसने अपनी निगाहें एनजोलरास की निर्मल आँखों में गहराई से डालीं और मानो उसका अर्थ समझ गया हो। उसने ऐसी मुस्कान दी जो दुनिया में इससे अधिक तिरस्कारपूर्ण, ऊर्जावान और दृढ़ निश्चयी नहीं हो सकती थी, और अभिमानी गंभीरता से उत्तर दिया:—

मुझे समझ आ गया। हाँ, बिल्कुल!

“क्या तुम पुलिस के जासूस हो?”

मैं अधिकारियों का एजेंट हूं।

और आपका नाम?

जावर्ट।

एनजोलरास ने चारों आदमियों को इशारा किया। पलक झपकते ही, जैवर्ट के मुड़ने से पहले ही, उसे पकड़ लिया गया, नीचे गिरा दिया गया, जकड़ लिया गया और उसकी तलाशी ली गई।

उन्हें उसके पास कांच के दो टुकड़ों के बीच चिपका हुआ एक छोटा गोल कार्ड मिला, जिसके एक तरफ फ्रांस का प्रतीक चिन्ह उत्कीर्ण था और उस पर यह आदर्श वाक्य लिखा था: "निगरानी और सतर्कता," और दूसरी तरफ यह नोट था: "जैवर्टी, पुलिस निरीक्षक, आयु बावन वर्ष," और उस दिन के पुलिस प्रमुख एम. गिस्केट के हस्ताक्षर थे।

इसके अलावा, उसके पास उसकी घड़ी और उसका पर्स था, जिसमें सोने के कई सिक्के थे। उन्होंने उसका पर्स और घड़ी वहीं छोड़ दी। घड़ी के नीचे, उसकी जेब के

निचले हिस्से में, उन्हें एक लिफाफे में रखा एक कागज मिला, जिसे एनजोलरास ने खोला और उस पर पुलिस प्रमुख की लिखावट में लिखी ये पाँच पंक्तियाँ पढ़ीं:—
जैसे ही उनका राजनीतिक मिशन पूरा हो जाएगा, इंस्पेक्टर जावर्ट विशेष निगरानी के माध्यम से यह सुनिश्चित करेंगे कि क्या यह सच है कि अपराधियों ने जेना पुल के पास सीन नदी के दाहिने किनारे पर साजिशें रची हैं।
तलाशी समाप्त होने पर, उन्होंने जावर्ट को उसके पैरों पर खड़ा किया, उसकी बाहों को उसकी पीठ के पीछे बांध दिया, और उसे कमरे के बीच में स्थित उस प्रसिद्ध खंभे से बांध दिया, जिसके नाम पर पहले शराब की दुकान का नाम रखा गया था।
गैवरोश, जो इस पूरे दृश्य को देख रहा था और चुपचाप सिर हिलाकर सब कुछ स्वीकार कर चुका था, जावर्ट के पास गया और उससे बोला:—
"चूहे ने ही बिल्ली को पकड़ लिया है।"
यह सब इतनी तेजी से हुआ कि जब शराब की दुकान के आसपास मौजूद लोगों ने इसे देखा तब तक सब कुछ खत्म हो चुका था।
जैवरट ने एक भी चीख नहीं निकाली थी।
जैवरट को खंभे से बंधा हुआ देखकर, कौरफेयरैक, बॉसुएट, जोली, कॉम्बफेरे और दोनों बैरिकेड्स पर बिखरे हुए लोग दौड़ते हुए आ गए।
जावर्ट, जिसकी पीठ पोस्ट की ओर थी और जो रस्सियों से इस तरह घिरा हुआ था कि वह हिल भी नहीं सकता था, ने उस व्यक्ति की निडर शांति के साथ अपना सिर उठाया जिसने कभी झूठ नहीं बोला।
“वह पुलिस का जासूस है,” एनजोलरास ने कहा।
और जावर्ट की ओर मुड़ते हुए उसने कहा: "बैरिकेड पर कब्जा करने से दस मिनट पहले तुम्हें गोली मार दी जाएगी।"
जावर्ट ने अपने सबसे दबंग लहजे में जवाब दिया:—
“तुरंत क्यों नहीं?”
हम अपना पाउडर बचा रहे हैं।

फिर चाकू से वार करके काम खत्म कर दो।
“जासूस,” सुंदर एनजोलरास ने कहा, “हम न्यायाधीश हैं, हत्यारे नहीं।”
फिर उसने गैवरोश को बुलाया:—
“लो! तुम अपना काम करो! मैंने जो कहा है वही करो!”
“मैं जा रहा हूँ!” गैवरोश चिल्लाया।
और जब वह चलने ही वाला था, तभी रुक गया:—
“वैसे, तुम मुझे उसकी बंदूक दोगे!” और उसने आगे कहा: “मैं तुम्हें संगीतकार तो दे रहा हूँ, लेकिन मुझे शहनाई चाहिए।”
उस लड़के ने सैन्य सलामी दी और बड़ी बैरिकेड में बने छेद से खुशी-खुशी निकल गया।

VIII. ले कैबुक नामक एक व्यक्ति के संबंध में अनेक प्रश्न

हमने जिस दुखद चित्र का वर्णन किया है, वह अधूरा रहेगा, पाठक क्रांतिकारी जन्म के उन भव्य सामाजिक जन्म-पीड़ा के क्षणों को, जिनमें प्रयास के साथ-साथ उथल-पुथल भी शामिल है, उनके सटीक और वास्तविक रूप में नहीं देख पाएगा, यदि हम यहां उल्लिखित रेखाचित्र में गैवरोश के जाने के तुरंत बाद घटी एक महाकाव्य और बर्बर भयावह घटना को छोड़ दें।

जैसा कि पाठक जानते हैं, भीड़ बर्फ के गोले की तरह होती है और लुढ़कते हुए उग्र लोगों का एक बड़ा समूह इकट्ठा कर लेती है। ये लोग आपस में नहीं पूछते कि वे कहाँ से आए हैं। एनजोलरास, कॉम्बेफेरे और कौरफेयरैक के नेतृत्व में उमड़ी भीड़ में शामिल राहगीरों में एक व्यक्ति था जिसने कंधे से फटी हुई, सड़क किनारे काम करने वाले कुली की जैकेट पहन रखी थी। वह व्यक्ति इशारे कर रहा था, चिल्ला रहा था और उसका चेहरा किसी शराबी जंगली जैसा लग रहा था। इस व्यक्ति का नाम या उपनाम 'ले कैबुक' था, और जो उसे जानने का दिखावा करने वालों के लिए वह बिल्कुल अजनबी था। वह बहुत नशे में था, या नशे में होने का नाटक कर रहा था, और शराब की दुकान के बाहर खींची गई एक मेज पर कई अन्य लोगों के साथ बैठा था। यह कैबुक, अपने साथ शराब पीने वालों को नशे में धुत करते हुए, बैरिकेड के आखिरी छोर पर बने उस बड़े घर को बड़े ध्यान से देख रहा था, जिसकी पाँचों मंजिलें पूरी सड़क पर नज़र रखती थीं और जो सेंट-डेनिस गली के सामने था। अचानक ही वह चिल्ला उठा:—

“साथियों, क्या आप जानते हैं कि हमें उस सामने वाले घर से ही गोली चलानी होगी। जब हम खिड़कियों पर होंगे, तो अगर कोई भी गली में आगे बढ़ने में कामयाब हुआ तो उसकी खैर नहीं!”

“हां, लेकिन घर बंद है,” शराब पीने वालों में से एक ने कहा।

“चलिए दरवाजा खटखटाते हैं!”

वे नहीं खुलेंगे।

"चलो दरवाजा तोड़कर अंदर घुसते हैं!"
ले कैबुक दौड़कर दरवाजे तक जाता है, जिस पर एक बहुत बड़ा दरवाज़ा खटखटाने वाला लगा था, और उसे खटखटाता है। दरवाजा नहीं खुलता। वह दूसरी बार खटखटाता है। कोई जवाब नहीं देता। तीसरी बार खटखटाता है। वही सन्नाटा।
“क्या यहाँ कोई है?” कैबुक चिल्लाता है।
कुछ भी नहीं हिलता।
फिर वह एक बंदूक उठाता है और उसके बट से दरवाजे पर प्रहार करने लगता है।
यह एक प्राचीन गली का दरवाज़ा था, नीचा, मेहराबदार, संकरा, ठोस, पूरी तरह से ओक की लकड़ी का बना हुआ, जिसके अंदर लोहे की चादर और लोहे के सहारे लगे हुए थे, बिल्कुल एक जेल के पिछले दरवाज़े जैसा। बंदूक के पिछले हिस्से से पड़ने वाली चोटों से घर कांप उठा, लेकिन दरवाज़ा नहीं हिला।
फिर भी, यह संभव है कि निवासी विचलित हो गए हों, क्योंकि अंततः तीसरी मंजिल पर एक छोटी, चौकोर खिड़की खुलती हुई दिखाई दी, और इस खिड़की से एक बूढ़े, सफ़ेद बालों वाले व्यक्ति का आदरणीय और भयभीत चेहरा प्रकट हुआ, जो चौकीदार था और जिसके हाथ में एक मोमबत्ती थी।
दरवाजा खटखटा रहा व्यक्ति रुक गया।
“सज्जनों,” कुली ने कहा, “आप क्या चाहते हैं?”
“खोलो!” कैबुक ने कहा।
“ऐसा नहीं हो सकता, सज्जनों।”
"फिर भी खुला रहेगा।"
"असंभव, सज्जनों।"
ले कैबुक ने अपनी बंदूक निकाली और कुली पर निशाना साधा; लेकिन चूंकि वह नीचे था और बहुत अंधेरा था, इसलिए कुली ने उसे नहीं देखा।
"क्या आप खोलेंगे, हाँ या ना?"
नहीं, सज्जनों।
“क्या आप ना कहेंगे?”

मैं कहता हूँ नहीं, मेरे दोस्त...
कुली अपना काम पूरा नहीं कर पाया। गोली चल गई; गोली उसकी ठोड़ी के नीचे से अंदर घुसी और गर्दन की नस को पार करते हुए गर्दन के पिछले हिस्से से बाहर निकल गई।
बूढ़ा आदमी बिना आह भरे पीछे गिर पड़ा। मोमबत्ती गिरकर बुझ गई, और छोटी खिड़की की चौखट पर पड़े एक बेजान सिर और छत की ओर उड़ते हुए थोड़े से सफेद धुएं के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
"लो!" ले कैबुक ने अपनी बंदूक का पिछला हिस्सा फुटपाथ पर गिराते हुए कहा। उसने अभी ये शब्द कहा ही था कि उसे अपने कंधे पर चील के पंजे के वजन के बराबर भारी हाथ का आलिंगन महसूस हुआ और उसे एक आवाज सुनाई दी जो उससे कह रही थी:—
"घुटनों के बल बैठ जाओ।"
हत्यारा पीछे मुड़ा और उसने अपने सामने एनजोलरास का ठंडा, सफेद चेहरा देखा।
एनजोलरास के हाथ में पिस्तौल थी।
गोली चलने की आवाज सुनकर वह तेजी से वहां पहुंचा था।
उसने अपने बाएं हाथ से कैबुक का कॉलर, ब्लाउज, शर्ट और सस्पेंडर पकड़ लिया था।
“घुटनों के बल बैठ जाओ!” उसने दोहराया।
और, एक दबंग हरकत के साथ, बीस साल के उस दुबले-पतले युवक ने तगड़े और मजबूत कुली को एक सरकंडे की तरह झुका दिया, और उसे कीचड़ में घुटनों के बल गिरा दिया।
ले कैबुक ने विरोध करने की कोशिश की, लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसे किसी अलौकिक शक्ति ने पकड़ लिया हो।
पीला पड़ा हुआ, गर्दन पर बाल नहीं थे, बाल बिखरे हुए थे और स्त्री जैसे चेहरे वाला एनजोलरास उस क्षण प्राचीन थेमिस की झलक लिए खड़ा था। उसकी फैली हुई नाकें और झुकी हुई आँखें, उसके कठोर यूनानी चेहरे को क्रोध और

पवित्रता का वो भाव प्रदान कर रही थीं, जो प्राचीन विश्व की दृष्टि से न्याय के लिए उपयुक्त था।

पूरी घेराबंदी करने वाले लोग तेजी से आगे बढ़े, फिर सभी कुछ दूरी पर एक घेरे में खड़े हो गए, यह महसूस करते हुए कि जिस चीज को वे देखने वाले थे, उसके सामने एक शब्द भी बोलना असंभव था।

पराजित ले कैबुक ने संघर्ष करने की कोशिश भी नहीं की और उसका हर अंग कांप रहा था।

एनजोलरास ने उसे छोड़ दिया और अपनी घड़ी निकाल ली।

उन्होंने कहा, “खुद को संभालो। सोचो या प्रार्थना करो। तुम्हारे पास सिर्फ एक मिनट है।”

"दया करो!" हत्यारे ने बुदबुदाया; फिर उसने अपना सिर नीचे झुकाया और लड़खड़ाते हुए कुछ अस्पष्ट अपशब्द कहे।

एनजोलरास ने उससे अपनी निगाहें नहीं हटाईं: उसने एक मिनट बीतने दिया, फिर अपनी घड़ी जेब में रख ली। इतना करने के बाद, उसने ले कैबुक के बाल पकड़ लिए, जो घुटनों के बल सिकुड़कर चीखने लगा, और पिस्तौल की नली उसके कान पर रख दी। उन साहसी लोगों में से कई, जो इतनी शांति से इस सबसे भयानक साहसिक कार्य में लगे थे, अपना सिर दूसरी ओर घुमा लिया।

एक धमाके की आवाज सुनाई दी, हत्यारा मुंह के बल फुटपाथ पर गिर पड़ा।

एनजोलरास सीधा खड़ा हुआ और उसने अपने चारों ओर एक दृढ़ और गंभीर नज़र डाली। फिर उसने अपने पैर से लाश को लात मारी और कहा:—

"इसे बाहर फेंक दो।"

तीन आदमियों ने उस अभागे व्यक्ति के शरीर को उठाया, जो अभी भी अपनी जान गंवाने के अंतिम यांत्रिक झटकों से व्याकुल था, और उसे छोटी सी बैरिकेड के ऊपर से रू मोंडेतोर में फेंक दिया।

एनजोलरास सोच में डूबा हुआ था। यह कहना असंभव है कि किस प्रकार की भयावह छाया धीरे-धीरे उसकी अटूट शांति पर छा रही थी। अचानक ही उसने अपनी आवाज ऊंची कर दी।

उन पर सन्नाटा छा गया।

“नागरिकों,” एनजोलरास ने कहा, “उस व्यक्ति ने जो किया वह भयानक है, मैंने जो किया वह भी घिनौना है। उसने हत्या की, इसलिए मैंने भी उसे मार डाला। मुझे ऐसा करना पड़ा, क्योंकि विद्रोह का अपना अनुशासन होना चाहिए। हत्या करना यहाँ अन्यत्र की तुलना में कहीं अधिक गंभीर अपराध है; हम क्रांति की निगरानी में हैं, हम गणतंत्र के पुजारी हैं, हम कर्तव्य के बलिदाता हैं, और हमारे संघर्ष पर कलंक लगाना संभव नहीं होना चाहिए। इसलिए मैंने उस व्यक्ति पर मुकदमा चलाया और उसे मृत्युदंड दिया। जहाँ तक मेरा सवाल है, हालाँकि मुझे यह सब करने के लिए विवश होना पड़ा, फिर भी मुझे इससे घृणा है, मैंने स्वयं का भी मूल्यांकन किया है, और आप जल्द ही देखेंगे कि मैंने स्वयं को किस बात का दंड दिया है।”

जो लोग उसकी बातें सुन रहे थे, वे सिहर उठे।

"हम भी तुम्हारे ही भाग्य का सामना करेंगे," कॉम्बेफेरे चिल्लाया।

“ऐसा ही हो,” एनजोलरास ने उत्तर दिया। “एक शब्द और। इस आदमी को मृत्युदंड देकर मैंने मजबूरी का पालन किया है; लेकिन मजबूरी पुराने जमाने का एक राक्षस है, मजबूरी का नाम है नियति। अब, प्रगति का नियम यह है कि राक्षस स्वर्गदूतों के सामने गायब हो जाएंगे, और नियति भाईचारे के सामने लुप्त हो जाएगी। प्रेम शब्द का उच्चारण करने का यह सही समय नहीं है। फिर भी, मैं इसका उच्चारण करता हूँ। और मैं इसकी महिमा करता हूँ। प्रेम, भविष्य तेरा है। मृत्यु, मैं तेरा उपयोग करता हूँ, लेकिन मैं तुझसे घृणा करता हूँ। नागरिकों, भविष्य में न तो अंधकार होगा, न ही बिजली; न ही भयंकर अज्ञानता, न ही रक्तपात। जैसे शैतान नहीं रहेगा, वैसे ही माइकल भी नहीं रहेगा। भविष्य में कोई किसी को नहीं मारेगा, धरती प्रकाश से जगमगाएगी, मानव जाति प्रेम करेगी। वह दिन आएगा, नागरिकों, जब सब कुछ सामंजस्य, सद्भाव, प्रकाश, आनंद और जीवन से भरा होगा; वह आएगा, और हम उसी के आने के लिए मरने वाले हैं।”

एनजोलरास स्तब्ध रह गया। उसके निर्मल होंठ बंद हो गए; और वह कुछ देर तक उसी स्थान पर संगमरमर की तरह स्थिर खड़ा रहा जहाँ उसने रक्त बहाया था। उसकी टकटकी भरी आँखों ने उसके आसपास के लोगों को दबी आवाज़ में बोलने पर मजबूर कर दिया।

जीन प्रोवेर और कॉम्बेफेरे ने चुपचाप एक-दूसरे का हाथ थाम लिया, और बैरिकेड के एक कोने में एक-दूसरे से टिककर, उन्होंने उस गंभीर युवक को प्रशंसा और करुणा से देखा, जो जल्लाद और पुजारी दोनों था, जो क्रिस्टल की तरह प्रकाश और चट्टान दोनों से बना था।

यह बात स्पष्ट कर दें कि बाद में, कार्रवाई के बाद, जब शवों को मुर्दाघर ले जाकर तलाशी ली गई, तो ले कैबुक में एक पुलिस एजेंट का कार्ड मिला। इस पुस्तक के लेखक के पास 1848 में, इस विषय पर 1832 में पुलिस प्रमुख को प्रस्तुत की गई विशेष रिपोर्ट मौजूद थी।

हम यह भी कहना चाहेंगे कि यदि हम पुलिस की एक प्रचलित मान्यता पर विश्वास करें, जो विचित्र तो है लेकिन संभवतः सही है, तो ले कैबुक ही क्लैकसस था। वास्तव में, ले कैबुक की मृत्यु के बाद क्लैकसस का कोई नामोनिशान नहीं रह गया था। क्लैकसस ने अपने गायब होने का कोई सुराग नहीं छोड़ा था; ऐसा लगता है मानो वह अदृश्य में विलीन हो गया हो। उसका जीवन अंधकारमय था, और उसका अंत अंधकारमय था।

विद्रोही समूह अभी भी उस दुखद मामले की भावना से प्रभावित था, जिसका इतनी जल्दी निपटारा हो गया था और इतनी जल्दी समाप्त हो गया था, तभी कौरफेयरैक ने बैरिकेड पर फिर से उस छोटे युवक को देखा जिसने उस सुबह उससे मारियस के बारे में पूछताछ की थी।

यह लड़का, जिसका स्वभाव साहसी और लापरवाह था, रात के समय विद्रोहियों से जुड़ने आया था।

पुस्तक **XIII.** मारियस छाया में प्रवेश करता है

I. रुए प्लूमेट से क्वार्टियर सेंट-डेनिस तक

वह आवाज़ जिसने मारियस को गोधूलि बेला में रू डे ला चानवरेरी की चौखट तक बुलाया था, उस पर नियति की आवाज़ का प्रभाव पड़ा था। वह मरना चाहता था; अवसर उसके सामने आ गया; उसने मकबरे के दरवाजे पर दस्तक दी, अंधेरे में एक हाथ ने उसे चाबी थमा दी। निराशा से पहले अंधकार में होने वाले ये दुखद दृश्य लुभावने होते हैं। मारियस ने उस अवरोध को हटा दिया जिसने उसे अक्सर आगे बढ़ने दिया था, बगीचे से बाहर निकला और बोला: "मैं जाऊंगा।"

दुःख से पागल, उसके दिमाग में अब कुछ भी स्थिर या ठोस नहीं रह गया था, जवानी और प्यार के नशे में बीते उन दो महीनों के बाद भाग्य की किसी भी बात को स्वीकार करने में असमर्थ, निराशा के सभी भ्रमों से एक साथ घिरकर, उसकी केवल एक ही इच्छा शेष थी, सब कुछ जल्द से जल्द खत्म कर देना।

वह तेज़ी से निकल पड़ा। उसके पास जैवर्ट की पिस्तौलें थीं, जिससे वह बेहद भाग्यशाली स्थिति में था।

जिस युवक की एक झलक उसने देखी थी, वह सड़क पर उसकी नजरों से ओझल हो गया था।

मारियस, जो बुलेवार्ड से होते हुए रू प्लूमेट से निकला था, एस्प्लेनेड और इनवैलिड्स के पुल, चैंप्स-एलिसी, प्लेस लुई XV को पार करते हुए रू डे रिवोली पहुंचा। वहां दुकानें खुली थीं, मेहराबों के नीचे गैस जल रही थी, महिलाएं स्टॉलों में खरीदारी कर रही थीं, लोग कैफे लैटर में आइसक्रीम खा रहे थे और अंग्रेजी पेस्ट्री की दुकान पर छोटे-छोटे केक का आनंद ले रहे थे। होटल डेस प्रिंसेस और होटल म्यूरिस से कुछ ही पोस्टिंग-चेज़ (घोड़े) सरपट दौड़ते हुए निकल रहे थे।

मारियस डेलोर्मे मार्ग से होते हुए सेंट-होनोरे सड़क पर दाखिल हुआ। वहाँ दुकानें बंद थीं, व्यापारी अपने आधे खुले दरवाजों के सामने बातें कर रहे थे, लोग इधर-उधर घूम रहे थे, सड़क की लालटेनें जल रही थीं, पहली मंजिल से शुरू होकर सभी खिड़कियाँ हमेशा की तरह रोशन थीं। प्लेस डू पैलेस-रॉयल पर घुड़सवार सेना मौजूद थी।

मारियस सेंट-होनोरे स्ट्रीट पर आगे बढ़ा। जैसे-जैसे वह रॉयल पैलेस को पीछे छोड़ता गया, रोशन खिड़कियाँ कम होती गईं, दुकानें बंद होती गईं, दरवाज़ों पर कोई बातचीत नहीं कर रहा था, सड़क पर सन्नाटा छा गया और भीड़ बढ़ती गई। राहगीर अब एक भीड़ जैसे लग रहे थे। इस भीड़ में कोई बोलता हुआ नहीं दिख रहा था, फिर भी इसमें से एक धीमी, गहरी फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी।

आर्ब्रे-सेक के फव्वारे के पास, "समूह" थे, गतिहीन और उदास समूह जो आने- जाने वालों के लिए बहते पानी के बीच पत्थरों की तरह थे।

रुए डेस प्रूवेयर्स के प्रवेश द्वार पर, भीड़ अब चल नहीं रही थी। यह लोगों का एक विशाल, ठोस, सघन, लगभग अभेद्य समूह बन गया था, जो एक साथ huddled होकर धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे। अब शायद ही कोई काले कोट या गोल टोपी पहने नज़र आ रहा था, बल्कि फ्रॉक, ब्लाउज़, कैप और खुरदुरे और कंकाल जैसे सिर दिखाई दे रहे थे। यह भीड़ रात के अंधेरे में अव्यवस्थित रूप से लहरा रही थी। उनकी फुसफुसाहट में कंपन की कर्कश ध्वनि थी। हालाँकि उनमें से कोई भी चल नहीं रहा था, फिर भी कीचड़ में एक धीमी पदचाप सुनाई दे रही थी। भीड़ के इस घने हिस्से से परे, रुए डू रूले, रुए डेस प्रूवेयर्स और रुए सेंट-होनोरे के विस्तार में, अब एक भी खिड़की ऐसी नहीं थी जिसमें मोमबत्ती जल रही हो। केवल लालटेन की अकेली और घटती हुई पंक्तियाँ ही दूर सड़क में गायब होती दिखाई दे रही थीं। उस समय की लालटेनें रस्सियों से लटके बड़े-बड़े लाल तारों जैसी दिखती थीं और फुटपाथ पर एक विशाल मकड़ी जैसी छाया डालती थीं। ये सड़कें सुनसान नहीं थीं। यहाँ तोपों के ढेर, चलती हुई संगीनें और डेरा डाले सैनिक दिखाई देते थे। कोई भी जिज्ञासु व्यक्ति उस सीमा को पार नहीं करता था। वहाँ आवागमन बंद हो जाता था। वहाँ भीड़-भाड़ खत्म होती थी और सेना शुरू हो जाती थी।

मारियस ने उस दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ने का फैसला किया, मानो उसे अब कोई उम्मीद न बची हो। उसे बुलाया गया था, उसे जाना ही था। उसने भीड़ को पार करने और सैनिकों के शिविर से निकलने का रास्ता खोज निकाला, उसने गश्ती दल और पहरेदारों से बचते हुए आगे बढ़ने का प्रयास किया। उसने चक्कर लगाया, रू डे बेथिसी पहुंचा और हॉल्स की ओर चल पड़ा। रू डेस बॉर्डोनाइस के कोने पर अब कोई लालटेन नहीं थी।

भीड़ के घेरे को पार करने के बाद, वह सैनिकों की सीमा से बाहर निकल चुका था; उसने खुद को एक चौंकाने वाली स्थिति में पाया। अब वहाँ न कोई राहगीर था, न कोई सैनिक, न कोई रोशनी, कोई नहीं था; सन्नाटा, सन्नाटा, रात, न जाने कैसी ठंड ने उसे जकड़ लिया था। किसी गली में प्रवेश करना किसी तहखाने में प्रवेश करने जैसा था।

वह लगातार आगे बढ़ता रहा।

उसने कुछ कदम बढ़ाए। तभी कोई दौड़ता हुआ उसके पास से गुजरा। क्या वह पुरुष था? या महिला? क्या उनमें से कई थे? वह बता नहीं सकता था। वह गुजर गया और गायब हो गया।

एक चक्कर से दूसरे चक्कर लगाते हुए, वह एक गली में पहुँचा जिसे उसने रू डे ला पोटेरी समझा; इस गली के लगभग बीच में, उसका सामना एक बाधा से हुआ। उसने अपने हाथ बढ़ाए। यह एक पलटी हुई गाड़ी थी; उसके पैरों ने पानी के गड्ढे, नालियाँ और बिखरे और ढेर लगे पत्थरों को पहचाना। वहाँ एक बैरिकेड शुरू किया गया था और फिर छोड़ दिया गया था। वह पत्थरों पर चढ़कर बैरिकेड के दूसरी तरफ पहुँच गया। वह सड़क के खंभों के बहुत करीब चला और घरों की दीवारों के सहारे आगे बढ़ा। बैरिकेड से थोड़ा आगे, उसे लगा कि उसके सामने कुछ सफेद है। वह पास गया, तो उसका रूप स्पष्ट हो गया। वे दो सफेद घोड़े थे; सुबह बॉसुएट द्वारा जोती गई बस के घोड़े, जो दिन भर इधर-उधर भटकते रहे थे और अंत में वहाँ रुक गए थे, उन जानवरों की थकी हुई धैर्य के साथ जो मनुष्यों के कार्यों को उतना ही नहीं समझते जितना मनुष्य ईश्वर की कृपा को नहीं समझते।

मारियस घोड़ों को पीछे छोड़कर आगे बढ़ रहा था। तभी उसे एक गली की ओर जाने का आभास हुआ, जो उसे रुए डू कॉन्ट्रैट-सोशल लग रही थी। तभी एक गोली, जो अज्ञात दिशा से आती हुई अंधेरे में बेतरतीब ढंग से चल रही थी, उसके पास से सीटी बजाते हुए गुजरी और एक नाई की दुकान के ऊपर लटकी पीतल की शेविंग प्लेट को भेद गई। यह भेदी हुई शेविंग प्लेट 1848 में भी रुए डू कॉन्ट्रैट-सोशल में, बाजार के खंभों के कोने पर देखी जा सकती थी।

इस तस्वीर में अभी भी जीवन की झलक थी। उस क्षण के बाद उसे और कुछ नहीं मिला।

[illegible]

II. पेरिस का उल्लू का नज़रिया

जो प्राणी उस रात चमगादड़ या उल्लू के पंख से पेरिस के ऊपर मंडरा रहा होता, उसकी आंखों के नीचे एक निराशाजनक दृश्य होता।

हॉल्स का वह पुराना इलाका, जो मानो शहर के भीतर एक शहर है, जहाँ से सेंट-डेनिस और सेंट-मार्टिन सड़कें गुजरती हैं, जहाँ हजारों गलियाँ एक-दूसरे को काटती हैं, और जहाँ विद्रोहियों ने अपना गढ़ और किला बना रखा था, उसे पेरिस के केंद्र में खोदी गई एक गहरी और विशाल गुफा की तरह प्रतीत होता। वहाँ उसकी नजर एक अथाह खाई में जा गिरी। टूटी हुई लालटेनों और बंद खिड़कियों के कारण, वहाँ सारी रोशनी, सारा जीवन, सारी आवाज, सारी हलचल थम गई थी। विद्रोहियों की अदृश्य पुलिस हर जगह पहरा दे रही थी और व्यवस्था बनाए हुए थी, यानी सन्नाटा छाया हुआ था। विद्रोह की आवश्यक रणनीति यह है कि कम संख्या में लोगों को घने अंधकार में डुबो दिया जाए, और उस अंधकार में छिपी संभावनाओं के अनुसार हर लड़ाके की संख्या बढ़ा दी जाए। शाम ढलते ही, जिस भी खिड़की पर मोमबत्ती जल रही होती, उस पर गोली चलाई जाती। रोशनी बुझ जाती, कभी-कभी निवासी मारा भी जाता। इसलिए कुछ भी हलचल नहीं थी। घरों में भय, मातम और सन्नाटे के सिवा कुछ नहीं था; और गलियों में एक तरह का पवित्र भय छाया हुआ था। खिड़कियों और दुकानों की लंबी कतारें, चिमनियों के खांचे, छतें और गीले व कीचड़ भरे फुटपाथों से पड़ने वाले धुंधले प्रतिबिंब भी दिखाई नहीं दे रहे थे। उस घने अंधेरे पर ऊपर की ओर उठी नज़र से शायद कहीं- कहीं धुंधली चमक दिखाई देती, जो टूटी-फूटी और विलक्षण रेखाओं और अनोखी इमारतों की आकृतियाँ उभारती, मानो खंडहरों में आती-जाती रोशनी हो; इन्हीं जगहों पर बैरिकेड्स लगाए गए थे। बाकी सब धुंध का एक विशाल सागर था, कोहरा छाया हुआ, भारी और मातम जैसा, जिसके ऊपर स्थिर और उदास आकृतियों में सेंट-जैक्स का टावर, सेंट-मेरी का चर्च और दो-तीन और भव्य इमारतें खड़ी थीं, जिन्हें इंसान विशालकाय बना देता है और रात उन्हें प्रेत बना देती है।

इस सुनसान और अशांत भूलभुलैया के चारों ओर, उन इलाकों में जहाँ पेरिस का चहल-पहल पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ था, और जहाँ कुछ स्ट्रीट लैंप अभी भी जल रहे थे, हवाई पर्यवेक्षक तलवारों और संगीनों की धातुई चमक, तोपखाने की

xxxx xxxxxxxxxx, xx xxx xxxxxxxxxx xx xxxx xx xxx xxxx xx xxxxx xxxxxx xxxx-xx-xxxx xxxxx xx xxx xx; xx xxxxxxx xxxx xx xxxx-xxxx xxxxxxx xx xxx xxx xxx

xx xxxxx xx xx xxxxx xxxx xx xxxxxx xxx xxxx xx xxx xx; xxxx xx xxx xxxx xxx xx xxxxxx xxxxxx xxxx xx, xx xxxx xx xxxx xxx xxxx xx, xxx xx xxx xxxx xxx xxxxxxx, xxxx xxxxxx xx xxxx xxx xxxx xxxxx xxx

xx xxxxx xxxxxx, xxxxx xx xxx, xxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxx, xxxxxx xxxxxx xxxx xxxxxx xx xx xxxx xxxxx, xxxx xxxxxx xxxx xxxx xxxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxxx xx, xxxx xxxxxxxxxx xxxx xxxx xxx xxxxx xx xxxxxx xxx xxx xx xx xxxx xx xxxxxx xxxxxx xxxxxxxxxx xxx xxx xx; xxx xx xxx xxxxxx xxx xxxx xxxx xx xxxx xx xxx xxxxxx xx xxxx xxx xx xxx xxxx xxxxxx xx xxx xxxx xx, xxxxx xxxxx xx xxxxx xx, xxxxxx xx xxxxx xx xxxxx xxxx xx xxxxx xxx xx xxxxxxx xxxxx xxxx? xxxx? xx? xxx xxxx xxxxx xx, xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxxxx xxx xxxxxx xx xxx xxxxxxxxxx xx xxxxx xx, xxxxx xx xxxxxxx, xxxxxxxxxx xxxxx xx xx xxxx, xxxxxxx xx xxxxxxxxx, xxxx xxxxxx xxxxxx xxx, xx xxxxx xx xxxxxx xxx xxx xxxx xxx xxxxx xx xxx xxxxxxxx xx xx xxx xx xxx xxxxxxx xxxx xxxxxx xx xx xxxx xxxx xx xxxxxx xxxx xxxxxx xxx xx xxx xxx xxxxxxx, xx xxx xxx xxxxxxx, xx xxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxx xx xx xxx, xx xxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxx xx xx xxx xxxxx xxxxx xxx xx xxxxx xx xx xxx xxxx xx xxxx xxxxx xx xx xxx xxxx xx xxxx xxxxx xxx xxxxxx xx xxxx xx xx xxxxx xx xx xxx xxxx xx xxxx xxxxx xxx xxxxxxx xx xxxx xxxxx xx xx xxx xxxx xx xxxx xxxxx xx; xxxxxx xxxx xx xxx xxxx xxx xxxx xxxxxx xx xxxx xx xx xxxxx xx xx xxx xxxx xx xxxx xxxxx xxx xxxxxxx xx xxx xxxxx xx xxx xxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxx xxxxxx xxx xx xxxx xxxxx xx xxx xxxxx xxx xx xxxx xx xxx xx xxxx xxxx xx; xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxx xx xx xxxx xx xx xxxxx xxxxx xxxxx xxxx xxx xxxx xxxx xx xx xxxxx xxxxx xx xxx xx, xx xxx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxxx xxxxx

हृदयविदारक, किसी अभिशाप जितनी भयावह, सेंट-मेरी की घंटी जैसी। उस भयानक और हताश घंटी की गड़गड़ाहट से ज़्यादा रोंगटे खड़े कर देने वाली कोई चीज़ नहीं हो सकती थी, जो अँधेरे में विलाप कर रही थी।

जैसा कि अक्सर होता है, ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रकृति ने मनुष्य के कार्यों के अनुरूप ढलने का निश्चय कर लिया था। संपूर्ण वातावरण की सामंजस्यता में किसी भी चीज ने खलल नहीं डाला। तारे गायब हो चुके थे, घने बादलों ने क्षितिज को अपनी उदासी भरी परतों से ढक लिया था। इन निर्जन सड़कों पर एक काला आकाश छाया हुआ था, मानो किसी विशाल मकबरे पर एक विशाल कफ़न फैलाया जा रहा हो।

जिस इलाके में पहले ही कई क्रांतिकारी घटनाएँ घट चुकी थीं, वहीं एक ऐसी लड़ाई की तैयारी चल रही थी जो पूरी तरह से राजनीतिक थी; जहाँ युवा, गुप्त संगठन, स्कूल, सिद्धांतों के नाम पर और मध्यम वर्ग, हितों के नाम पर, आपस में भिड़ने, एक-दूसरे को जकड़ने और पटकने की तैयारी में लगे थे; जहाँ हर कोई संकट के अंतिम और निर्णायक क्षण को आमंत्रित कर रहा था; वहीं इस घातक क्षेत्र से बहुत दूर, उस दयनीय पुराने पेरिस की अथाह गहराइयों में, जो खुशहाल और समृद्ध पेरिस की शान में गायब हो जाता है, जनता की उदास आवाज एक धीमी गर्जना में तब्दील होती सुनाई दे रही थी।

एक भयानक और पवित्र आवाज जो क्रूर दहाड़ और ईश्वर के वचन से बनी है, जो कमजोरों को डराती है और बुद्धिमानों को चेतावनी देती है, जो शेर की आवाज की तरह नीचे से और गरज की आवाज की तरह ऊपर से आती है।

III. चरम सीमा

मारियस हॉल्स पहुँच चुका था।

वहाँ सब कुछ आस-पास की गलियों की तुलना में कहीं अधिक शांत, अस्पष्ट और स्थिर था। ऐसा लगता था मानो समाधि की हिमनदी जैसी शांति धरती से निकली हो और आकाश में फैल गई हो।

फिर भी, इस काले बैकग्राउंड के बीच एक लाल चमक ने सेंट-यूस्टाचे की तरफ रू डे ला चानवरेरी को घेरने वाले घरों की ऊंची छतों को उभार दिया। यह कोरिनथे बैरिकेड में जल रही मशाल का प्रतिबिंब था। मारियस ने अपने कदम उस लाल रोशनी की ओर बढ़ाए। यह उसे मार्चे-ऑक्स-पोइरीज़ की ओर खींच लाई थी, और उसने रू डेस प्रीचेर्स के अंधेरे मुहाने की एक झलक देखी। वह उसमें प्रवेश कर गया। विद्रोहियों का संतरी, जो दूसरे छोर पर पहरा दे रहा था, उसे देख नहीं पाया। उसे लगा कि वह जिसकी तलाश में आया था, उसके बहुत करीब है, और वह दबे पांव चलने लगा। इस तरह वह रू मोंडेतोर के उस छोटे से हिस्से के कोने तक पहुंचा, जो, जैसा कि पाठक को याद होगा, एनजोलरास का बाहरी दुनिया से एकमात्र संपर्क था। अपने बाईं ओर के आखिरी घर के कोने पर, उसने अपना सिर आगे बढ़ाया और रू मोंडेतोर के उस छोटे से हिस्से में झांका।

गली के मोड़ और रू डे ला चानवरेरी के उस कोने से थोड़ा आगे, जहाँ परछाई का घना पर्दा छाया हुआ था और जिसमें वह खुद घिरा हुआ था, उसे फुटपाथ पर कुछ रोशनी दिखाई दी, शराब की दुकान का थोड़ा सा हिस्सा, और उससे आगे, एक बेढंगी सी दीवार के भीतर एक टिमटिमाता हुआ दीपक, और घुटनों के बल बंदूकें लिए बैठे हुए कुछ आदमी। यह सब उससे दस फैदम की दूरी पर था। यह बैरिकेड का भीतरी हिस्सा था।

गली के दाहिनी ओर स्थित घरों ने शराब की दुकान के शेष भाग, बड़े अवरोध और झंडे को उससे छिपा रखा था।

मारियस को बस एक कदम और आगे बढ़ना था।

फिर वह दुखी युवक एक खंभे पर बैठ गया, अपनी बाहें मोड़ लीं और अपने पिता के बारे में सोचने लगा।

उसने उस वीर कर्नल पोंटमर्सी के बारे में सोचा, जो एक अत्यंत गौरवशाली सैनिक थे, जिन्होंने गणतंत्र के अधीन फ्रांस की सीमा की रक्षा की थी और नेपोलियन के अधीन एशिया की सीमा तक गए थे, जिन्होंने जेनोआ, अलेक्जेंड्रिया, मिलान, ट्यूरिन, मैड्रिड, वियना, ड्रेसडेन, बर्लिन, मॉस्को को देखा था, जिन्होंने यूरोप के सभी विजयी युद्धक्षेत्रों में उसी रक्त की बूँदें छोड़ी थीं, जो मारियस के रक्त में बहता था, जो अनुशासन और कमान में समय से पहले ही बूढ़े हो गए थे, जो अपनी तलवार की कमरबंद बांधे, अपने सीने पर लटके हुए एपॉलेट्स के साथ, बारूद से काले पड़े अपने कॉकेड के साथ, अपने हेलमेट से माथे पर पड़ी लकीरों के साथ, बैरकों में, शिविरों में, पड़ावों में, एम्बुलेंस में रहे थे, और जो बीस वर्षों की समाप्ति पर, महान युद्धों से एक घायल गाल, एक मुस्कुराता हुआ चेहरा, शांत, प्रशंसनीय, एक बच्चे के समान पवित्र होकर लौटे थे, जिन्होंने फ्रांस के लिए सब कुछ किया और उसके खिलाफ कुछ नहीं किया।

उसने मन ही मन कहा कि अब उसका दिन भी आ गया है, उसकी घड़ी आ गई है, अपने पिता के नक्शेकदम पर चलते हुए वह भी बहादुरी, निर्भीकता और साहस दिखाने वाला है, गोलियों का सामना करने के लिए दौड़ने वाला है, संगीनों के सामने अपनी छाती पेश करने वाला है, अपना खून बहाने वाला है, दुश्मन को ढूंढने वाला है, मौत को गले लगाने वाला है, वह भी अपनी बारी में युद्ध छेड़ने वाला है और युद्ध के मैदान में उतरने वाला है, और जिस युद्ध के मैदान में उसे उतरना है वह गली है, और जिस युद्ध में वह शामिल होने वाला है वह गृहयुद्ध है!

उसके सामने गृहयुद्ध एक खाई की तरह फैला हुआ था, और वह उसमें गिरने ही वाला था। तभी वह कांप उठा।

उसने अपने पिता की तलवार के बारे में सोचा, जिसे उसके दादा ने एक पुराने सामान बेचने वाले को बेच दिया था और जिसका उसे बहुत अफ़सोस था। उसने मन ही मन कहा कि उस पवित्र और वीर तलवार ने उससे बचकर, क्रोध में अंधकार में विलीन होकर अच्छा ही किया; अगर वह इस तरह भागी, तो इसलिए कि वह बुद्धिमान थी और उसने भविष्य देख लिया था; कि उसे इस विद्रोह, गलियों के युद्ध, फुटपाथों के युद्ध, तहखानों की खिड़कियों से होने वाली गोलीबारी, पीछे से

दिए और खाए गए वारों का पूर्वाभास हो गया था; क्योंकि मारेन्गो और फ्रीडलैंड से आने के कारण वह रू डे ला चानवरेरी नहीं जाना चाहती थी; क्योंकि पिता के साथ जो उसने किया था, उसके बाद वह बेटे के साथ ऐसा नहीं करना चाहती थी! उसने मन ही मन सोचा कि अगर वह तलवार वहाँ होती, अगर अपने पिता के तकिये से उसे उठाकर, वह उसे लेकर सड़कों पर फ्रांसीसियों के बीच चल रही इस अंधकारमय लड़ाई में शामिल होने की हिम्मत करता, तो वह निश्चित रूप से उसके हाथों को झुलसा देती और उसकी आँखों के सामने देवदूत की तलवार की तरह आग की लपटों में घिर जाती! उसने मन ही मन सोचा कि यह सौभाग्य की बात है कि वह वहाँ नहीं थी और गायब हो गई थी, यह अच्छा ही हुआ, यह न्यायसंगत था, उसके दादाजी ही उसके पिता के गौरव के सच्चे संरक्षक थे, और यह कहीं बेहतर है कि कर्नल की तलवार नीलामी में बिक जाए, पुराने कपड़ों वाले को बेच दी जाए, पुराने कबाड़ में फेंक दी जाए, बजाय इसके कि आज वह उसके देश को घायल करे।

और फिर वह फूट-फूटकर रोने लगा।

यह बहुत भयानक था। लेकिन वह क्या करता? कोसेट के बिना जीना उसके लिए असंभव था। चूंकि वह चली गई थी, इसलिए उसे मरना ही था। क्या उसने कोसेट को वचन नहीं दिया था कि वह मर जाएगा? कोसेट यह जानते हुए गई थी; इसका मतलब था कि मारियस की मृत्यु से उसे खुशी थी। और फिर, यह स्पष्ट था कि वह अब उससे प्यार नहीं करती थी, क्योंकि वह बिना किसी चेतावनी के, बिना एक शब्द कहे, बिना एक पत्र लिखे चली गई थी, जबकि उसे उसका पता पता था! जीने का क्या फायदा, और अब उसे क्यों जीना चाहिए? और फिर, क्या! क्या उसे इतनी दूर आने के बाद पीछे हट जाना चाहिए? क्या उसे खतरे के पास आने के बाद भाग जाना चाहिए? क्या उसे बैरिकेड में झाँकने के बाद चुपके से निकल जाना चाहिए? कांपते हुए चुपके से निकल जाना चाहिए, यह कहते हुए: "आखिरकार, मैं इससे तंग आ चुका हूँ। मैंने देख लिया है, बस इतना ही काफी है, यह गृहयुद्ध है, और मैं अब चलता हूँ!" क्या उसे अपने उन दोस्तों को छोड़ देना चाहिए जो उसका इंतजार कर रहे थे? जिन्हें शायद उसकी जरूरत थी! जो एक सेना के सामने मुट्ठी भर थे! क्या उसे अपने प्रेम, अपने देश और अपने वचन से एक साथ विश्वासघात करना चाहिए? क्या उसे अपनी कायरता को देशभक्ति का बहाना देना चाहिए? लेकिन यह असंभव था, और यदि उसके पिता का साया अंधकार में कहीं प्रकट होता और उसे पीछे हटते

देखता, तो वह अपनी तलवार से उसकी कमर पर प्रहार करता और चिल्लाकर कहता: "आगे बढ़ो, कायर!"

इस प्रकार, अपने विचारों की परस्पर विरोधी हलचल का शिकार होकर, उसने अपना सिर झुका लिया।

अचानक ही उसने अपना सिर उठाया। उसके मन में मानो एक अद्भुत बदलाव आया था। मृत्यु के निकट होने पर विचारों का दायरा बढ़ जाता है; मृत्यु निकट होने का एहसास स्पष्ट हो जाता है। जिस घटना में वह शायद प्रवेश करने ही वाला था, उसका दृश्य अब उसे दुखद नहीं, बल्कि अद्भुत लगने लगा। गली का संघर्ष अचानक ही उसकी आत्मा की किसी अथाह आंतरिक क्रिया से, उसके विचारों के सामने, रूपांतरित हो गया। चिंतन के सारे उथल-पुथल भरे प्रश्न उसके मन में उमड़ पड़े, लेकिन उसे विचलित किए बिना। उसने किसी भी प्रश्न का उत्तर दिए बिना नहीं छोड़ा।

आइए देखें, उसके पिता को क्रोधित क्यों होना चाहिए? क्या ऐसे मामले नहीं हैं जहाँ विद्रोह कर्तव्य की गरिमा तक पहुँच जाता है? कर्नल पोंटमर्सी के पुत्र के लिए उस युद्ध में क्या अपमानजनक था जो शुरू होने वाला था? यह अब मोंटमिरेल या चैंपॉबर्ट नहीं है; यह कुछ बिल्कुल अलग है। प्रश्न अब पवित्र क्षेत्र का नहीं है—बल्कि एक पवित्र विचार का है। देश विलाप कर रहा है, यह संभव है, लेकिन मानवता सराहना कर रही है। लेकिन क्या यह सच है कि देश विलाप कर रहा है? फ्रांस लहूलुहान है, लेकिन स्वतंत्रता मुस्कुरा रही है; और स्वतंत्रता की मुस्कान की उपस्थिति में, फ्रांस अपने घाव को भूल जाता है। और फिर यदि हम चीजों को और भी ऊंचे दृष्टिकोण से देखें, तो हम गृहयुद्ध की बात क्यों करते हैं?

गृहयुद्ध—इसका क्या अर्थ है? क्या कोई विदेशी युद्ध होता है? क्या मनुष्यों के बीच होने वाला हर युद्ध, भाइयों के बीच का युद्ध नहीं होता? युद्ध का निर्धारण केवल उसके उद्देश्य से होता है। विदेशी या गृहयुद्ध जैसी कोई चीज नहीं होती; केवल न्यायसंगत और अन्यायसंगत युद्ध होते हैं। जब तक महान मानवीय समझौता संपन्न नहीं हो जाता, तब तक युद्ध, जो कम से कम भविष्य का प्रयास है, जो अतीत के विरुद्ध तेजी से आगे बढ़ रहा है, जो पीछे छूट रहा है, आवश्यक हो सकता है। हम उस युद्ध की निंदा क्यों करें? युद्ध कलंक नहीं बनता, तलवार कलंक नहीं बनती, सिवाय तब जब उसका प्रयोग न्याय,

प्रगति, तर्क, सभ्यता, सत्य की हत्या के लिए किया जाए। तब युद्ध, चाहे विदेशी हो या गृहयुद्ध, अन्यायपूर्ण होता है; उसे अपराध कहा जाता है। उस पवित्र चीज, न्याय की सीमा से बाहर, किस अधिकार से मनुष्य का एक रूप दूसरे को तुच्छ समझे? किस अधिकार से वाशिंगटन की तलवार कैमिल्ले डेसमौलिन्स के भाले को अस्वीकार करे? अजनबी के विरुद्ध लियोनिडास, अत्याचारी के विरुद्ध तिमोलियन, इनमें से कौन महान है? एक रक्षक है, दूसरा मुक्तिदाता। क्या हम किसी शहर की सीमा के भीतर हथियारों के लिए की गई हर अपील को बिना उद्देश्य पर विचार किए ही खारिज कर देंगे? फिर ब्रूटस, मार्सेल, अर्नोल्ड वॉन ब्लैंकेनहाइम, कोलिग्नी, हेजरो के युद्ध की कुख्याति पर गौर कीजिए? गलियों का युद्ध? क्यों नहीं? वह तो एम्बियोरिक्स, आर्टेवेल्डे, मार्निक्स और पेलागियस का युद्ध था। लेकिन एम्बियोरिक्स ने रोम के विरुद्ध, आर्टेवेल्डे ने फ्रांस के विरुद्ध, मार्निक्स ने स्पेन के विरुद्ध और पेलागियस ने मूरों के विरुद्ध युद्ध लड़ा; सभी ने विदेशियों के विरुद्ध। खैर, राजशाही एक विदेशी है; अत्याचार एक अजनबी है; दैवीय अधिकार एक अजनबी है। निरंकुशता नैतिक सीमा का उल्लंघन करती है, आक्रमण भौगोलिक सीमा का उल्लंघन करता है। अत्याचारी को भगाना हो या अंग्रेजों को भगाना, दोनों ही मामलों में, अपने क्षेत्र पर पुनः अधिकार प्राप्त करना है। एक समय ऐसा आता है जब केवल विरोध करना पर्याप्त नहीं होता; दर्शन के बाद, कार्रवाई की आवश्यकता होती है; वास्तविक बल उस विचार को पूरा करता है जिसकी रूपरेखा तैयार की गई है; प्रोमेथियस जंजीरों में जकड़ा हुआ शुरू होता है, एरोस्टोजिटन समाप्त होता है; विश्वकोश आत्माओं को ज्ञान प्रदान करता है, 10 अगस्त उन्हें विद्युतित करता है। एशिलस के बाद, थ्रेसिबुलस; डिडेरोट के बाद, डेंटन। भीड़ में स्वामी को स्वीकार करने की प्रवृत्ति होती है। उनकी सामूहिक उपस्थिति उदासीनता की गवाही देती है। भीड़ को आसानी से आज्ञापालन के लिए प्रेरित किया जा सकता है। मनुष्यों को जगाना होगा, आगे बढ़ाना होगा, उनकी मुक्ति के लाभ से ही उनके साथ कठोर व्यवहार करना होगा, उनकी आँखों को सत्य से आहत करना होगा, उन पर भयानक रूप से प्रकाश डालना होगा। उन्हें अपने ही कल्याण पर थोड़ा सा स्तब्ध होना होगा; यह चकाचौंध उन्हें जगाती है। इसलिए चेतावनी और युद्धों की आवश्यकता है। महान योद्धाओं को उठना होगा, राष्ट्रों को साहस से प्रबुद्ध करना होगा, और उस उदास मानवता को झकझोर देना होगा जो ईश्वरीय अधिकार, सीज़रियन महिमा, बल,

कट्टरता, गैर-जिम्मेदार शक्ति और निरंकुश वैभव से अंधकार में डूबी हुई है; भीड़ अपनी धुंधली चमक में मूर्खतापूर्वक रात की इन गंभीर विजयों के चिंतन में लीन है। अत्याचारी का नाश हो! आप किसके बारे में बात कर रहे हैं? क्या आप लुई फिलिप को अत्याचारी कहते हैं? नहीं; लुई सोलहवें से ज़्यादा नहीं। इतिहास में दोनों को ही अच्छे राजा कहा जाता है; लेकिन सिद्धांतों को अलग-अलग नहीं किया जा सकता, सत्य का तर्क सीधा होता है, सत्य की विशेषता यह है कि उसमें नरमी नहीं होती; इसलिए कोई रियायत नहीं; मनुष्य पर होने वाले सभी अतिक्रमणों को दबा देना चाहिए। लुई सोलहवें में दैवीय अधिकार है, लुई फिलिप में बॉर्बन का प्रभाव है; दोनों एक हद तक अधिकार के हनन का प्रतिनिधित्व करते हैं, और सार्वभौमिक विद्रोह को दूर करने के लिए, उनसे लड़ना होगा; यह करना ही होगा, और इसकी शुरुआत हमेशा फ्रांस से ही होनी चाहिए। जब फ्रांस में स्वामी का पतन होता है, तो वह हर जगह गिरता है। संक्षेप में, इससे अधिक न्यायसंगत कारण और परिणामस्वरूप, इससे महान युद्ध क्या हो सकता है जो सामाजिक सत्य को पुनः स्थापित करे, स्वतंत्रता को उसका सिंहासन लौटाए, जनता को जनता के हाथों में सौंपे, मनुष्य को संप्रभुता लौटाए, फ्रांस के सिर पर राजसी वस्त्र फिर से स्थापित करे, समानता और तर्क को उनकी पूर्णता में बहाल करे, प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के हाथों में सौंपकर शत्रुता के हर बीज को कुचल दे, राजशाही द्वारा संपूर्ण विशाल सार्वभौमिक सद्भाव में उत्पन्न बाधा को नष्ट कर दे, और मानव जाति को एक बार फिर सही के बराबर खड़ा करे? ये युद्ध शांति का निर्माण करते हैं। पूर्वाग्रहों, विशेषाधिकारों, अंधविश्वासों, झूठ, अत्याचारों, दुर्व्यवहारों, हिंसाओं, अन्यायों और अंधकार का एक विशाल किला आज भी इस संसार में घृणा के अपने बुर्जों के साथ खड़ा है। इसे गिराना होगा। इस राक्षसी संरचना को चकनाचूर करना होगा। ऑस्टरलिट्ज़ में विजय प्राप्त करना महान है; बैस्टिल पर कब्जा करना विशाल है।

ऐसा कोई नहीं जिसने इसे स्वयं अपने मामले में न देखा हो—आत्मा में—और इसी में इसकी सर्वव्यापकता से जटिल एकता का चमत्कार निहित है। आत्मा में सबसे तीव्र परिस्थितियों में भी लगभग निर्ममता से तर्क करने की विलक्षण क्षमता होती है, और अक्सर ऐसा होता है कि हृदयविहीन जुनून और गहन निराशा अपने सबसे अंधकारमय एकालापों की पीड़ा में विषयों पर चर्चा और सिद्धांतों

पर विचार-विमर्श करते हैं। तर्क-वितर्क उथल-पुथल से मिश्रित होता है, और न्यायवाक्य का धागा बिना टूटे, विचारों के शोकपूर्ण तूफान में तैरता रहता है। मारियस के मन की यही स्थिति थी।

जब वह इस प्रकार चिंतन कर रहा था, उदास लेकिन दृढ़ निश्चयी, हर दिशा में हिचकिचाता हुआ, और संक्षेप में, जो वह करने वाला था उससे कांपता हुआ, उसकी नज़र बैरिकेड के अंदर की ओर गई। विद्रोही वहाँ धीमी आवाज़ में, बिना हिले- डुले, बातचीत कर रहे थे, और वहाँ वह सन्नाटा छाया हुआ था जो प्रतीक्षा के अंतिम चरण का प्रतीक है। ऊपर, तीसरी मंजिल की छोटी खिड़की से मारियस ने एक ऐसे दर्शक को देखा जो उसे असाधारण रूप से चौकस प्रतीत हुआ। यह वही कुली था जिसे ले कैबुक ने मार डाला था। नीचे, पक्के पत्थरों के बीच फंसी मशाल की रोशनी में, इस सिर को धुंधला सा देखा जा सकता था। उस धुंधली और अनिश्चित चमक में, उस पीले, गतिहीन, आश्चर्यचकित चेहरे से ज़्यादा अजीब कुछ नहीं हो सकता था, जिसके बाल बिखरे हुए थे, आँखें टकटकी लगाए घूर रही थीं, और मुँह खुला हुआ था, जो जिज्ञासा की मुद्रा में सड़क की ओर झुका हुआ था। ऐसा लगता था मानो मृत व्यक्ति मरने वालों का जायजा ले रहा हो। उस सिर से बहकर आई खून की एक लंबी धारा खिड़की से पहली मंजिल तक लाल धागों की तरह बहती हुई नीचे जा गिरी और वहीं रुक गई।

[illegible] 14. [illegible] [illegible]

I. ध्वज : पहले कार्य करें

अभी तक कुछ भी पता नहीं चला था। सेंट-मेरी से दस बजने की आवाज़ सुनाई दी। एनजोलरास और कॉम्बेफेरे, कार्बाइन हाथों में लिए, बड़ी बैरिकेड के निकास द्वार के पास जाकर बैठ गए। वे अब एक-दूसरे से बात नहीं कर रहे थे, बल्कि सुनने की कोशिश कर रहे थे, ताकि मार्च की सबसे धीमी और दूर से आती हुई आवाज़ भी पकड़ सकें।

अचानक, उस उदास सन्नाटे के बीच, एक स्पष्ट, हंसमुख, युवा आवाज उठी, जो सेंट-डेनिस गली से आती हुई प्रतीत हुई, और पुराने लोकप्रिय गीत "चांद की रोशनी में" की धुन पर स्पष्ट रूप से गाने लगी, कविता का यह अंश, जो मुर्गे की बांग जैसी आवाज के साथ समाप्त हुआ:—

□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□, □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□, □□□□□ □□□□□ □□□□□□□, □□□□□□ □ □□□ □□□! □□□□□□□□□□□□!

उन्होंने एक दूसरे का हाथ थाम लिया।

“वह गैवरोचे है,” एनजोलरास ने कहा।

कॉम्बेफेरे ने कहा, "वह हमें चेतावनी दे रहा है।"

सुनसान सड़क पर अफरा-तफरी मच गई; उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो विदूषक से भी अधिक फुर्तीला था, बस के ऊपर चढ़ गया, और गैवरोश हांफते हुए बैरिकेड में कूद पड़ा और बोला:—

“मेरी बंदूक! ये रहे वो!”

पूरे बैरिकेड में बिजली की एक लहर दौड़ गई, और अपनी बंदूकें ढूंढने वाले हाथों की आवाज सुनाई देने लगी।

“क्या तुम मेरी कार्बाइन लेना चाहोगे?” एनजोलरास ने उस लड़के से कहा।

“मुझे एक बड़ी बंदूक चाहिए,” गैवरोश ने जवाब दिया।

और उसने जावर्ट की बंदूक छीन ली।

दो संतरी पीछे हट गए थे और लगभग उसी समय गैवरोश के आने पर वापस आ गए थे। वे गली के आखिरी छोर के संतरी और रुए डे ला पेटिट-ट्रुआंडेरी के पहरेदार थे। लेन डेस प्रीचेर्स का पहरेदार अपनी जगह पर ही बना रहा, जिससे संकेत मिलता था कि पुलों और हॉलों की दिशा से कुछ भी नहीं आ रहा था।

रू डे ला चानवरेरी, जिसकी कुछ ही पक्की पत्थर की पटियाएं झंडे पर पड़ने वाली रोशनी के प्रतिबिंब में धुंधली सी दिखाई दे रही थीं, विद्रोहियों को धुएं में अस्पष्ट रूप से खुले एक विशाल काले दरवाजे का आभास करा रही थी।

प्रत्येक व्यक्ति ने संघर्ष के लिए अपनी-अपनी जगह ले ली थी।

एनजोलरास, कॉम्बेफेरे, कौरफेयरैक, बॉसुएट, जोली, बहोरल और गैवरोचे समेत तैंतालीस विद्रोही विशाल बैरिकेड के अंदर घुटनों के बल बैठे थे, उनके सिर बैरिकेड की चोटी के स्तर पर थे, उनकी बंदूकों और कार्बाइनों की नालें पत्थरों पर इस तरह तनी हुई थीं मानो वे छेदों की ओर निशाना साध रहे हों, वे चौकस, मौन और गोली चलाने के लिए तैयार थे। फ्यूली के नेतृत्व में छह विद्रोही कोरिंथ की दो मंजिलों की खिड़कियों पर तैनात थे, उनकी बंदूकें उनके कंधों पर तनी हुई थीं।

कई मिनट बीत गए, फिर सेंट-ल्यू की दिशा से कदमों की एक लयबद्ध, भारी और असंख्य आवाज़ स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगी। यह आवाज़, पहले धीमी, फिर स्पष्ट, फिर भारी और गूंजती हुई, धीरे-धीरे बिना रुके, बिना किसी अंतराल के, एक शांत और भयावह निरंतरता के साथ पास आती गई। इसके सिवा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। यह कमांडर की मूर्ति की मिली-जुली खामोशी और आवाज़ थी, लेकिन इस पथरीले कदम में कुछ अवर्णनीय विशालता और अनेकता थी जिसने भीड़ का और साथ ही किसी प्रेत का आभास जगा दिया। ऐसा लगा जैसे कोई भयानक मूर्तिनुमा सेना को आगे बढ़ते हुए सुन रहा हो। यह आहट पास आई; और पास आई, और रुक गई। ऐसा लगा मानो गली के अंत में कई लोगों की साँसें सुनाई दे रही हों। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन उस घने अंधकार की गहराई में अनगिनत धातु के धागे दिखाई दे रहे थे, जो सुई जितने पतले और लगभग अदृश्य थे। वे उन अवर्णनीय फास्फोरसी जालों की तरह हिल रहे थे जो नींद के पहले धुंध में, पलकें बंद होने पर दिखाई देते हैं। ये संगीनें और तोप की नालें थीं जो टॉर्च की दूर से आती रोशनी में अस्पष्ट रूप से प्रकाशित हो रही थीं।

कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया, मानो दोनों पक्ष प्रतीक्षा कर रहे हों। अचानक, इस अंधकार की गहराई से एक आवाज़ आई, जो और भी भयावह थी क्योंकि कोई दिखाई नहीं दे रहा था, और ऐसा लग रहा था मानो स्वयं अंधकार ही बोल रहा हो:— "वहां कौन जाएगा?"
उसी समय, तोपों को उनकी स्थिति में नीचे उतारे जाने की क्लिक की आवाज सुनाई दी।
एनजोलरास ने अभिमानपूर्ण और जोशीले स्वर में उत्तर दिया:—
“फ्रांसीसी क्रांति!”
“आग!” आवाज ने चिल्लाकर कहा।
एक तेज रोशनी से सड़क पर मौजूद सभी इमारतों के अग्रभाग बैंगनी रंग के हो गए, मानो किसी भट्टी का दरवाजा जोर से खोला गया हो और फिर जल्दबाजी में बंद कर दिया गया हो।
बैरिकेड पर एक भयानक धमाका हुआ। लाल झंडा गिर गया। विस्फोट इतना ज़ोरदार और सघन था कि उसने बैरिकेड के डंडे को काट दिया, यानी बस के खंभे के बिल्कुल सिरे को।
घरों की छतों से टकराकर वापस उछली गोलियां बैरिकेड को भेदते हुए अंदर घुस गईं और कई लोगों को घायल कर दिया।
इस पहली गोलीबारी का प्रभाव बेहद भयावह था। हमला बेहद क्रूर था और इतना ज़बरदस्त था कि बड़े से बड़े साहसी भी सोचने पर मजबूर हो जाते। यह स्पष्ट था कि उन्हें कम से कम एक पूरी रेजिमेंट का सामना करना था।
“साथियों!” कौरफेयरैक चिल्लाया, “हमें अपना बारूद बर्बाद नहीं करना चाहिए। जवाब देने से पहले हमें उनके सड़क पर आने का इंतजार करना चाहिए।” और सबसे बढ़कर, एनजोलरास ने कहा, "आइए हम फिर से झंडा फहराएं।"
उसने झंडा उठाया, जो ठीक उसके पैरों के पास गिरा था।
बाहर, तोपों में लगे कारतूसों की खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी; सैनिक अपने हथियारों को फिर से भर रहे थे।
एनजोलरास ने आगे कहा:—

“यहाँ कौन है जिसका दिल इतना साहसी है? कौन फिर से बैरिकेड पर झंडा फहराएगा?”

किसी ने जवाब नहीं दिया। ठीक उसी क्षण बैरिकेड पर चढ़ना, जब निस्संदेह वही उनका निशाना था, सीधे मौत के बराबर था। सबसे बहादुर भी अपनी निंदा करने से हिचकिचा रहा था। एनजोलरास को खुद रोमांच महसूस हुआ। उसने दोहराया:—

क्या कोई स्वेच्छा से आगे नहीं आता?

II. ध्वज: दूसरा भाग

कोरिंथ पहुंचने और बैरिकेड बनाने का काम शुरू करने के बाद से फादर माबेउफ पर किसी ने ध्यान नहीं दिया था। हालांकि, एम. माबेउफ ने भीड़ का साथ नहीं छोड़ा था; वे शराब की दुकान के भूतल में घुस गए थे और काउंटर के पीछे बैठ गए थे। वहां वे मानो अपने आप में सिमट गए थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे देख भी नहीं रहे हों या सोच भी नहीं रहे हों। कौरफेयरैक और अन्य लोगों ने दो-तीन बार उनसे संपर्क किया, उन्हें खतरे से आगाह किया, उनसे पीछे हटने की विनती की, लेकिन उन्होंने उनकी बात नहीं सुनी। जब वे उनसे बात नहीं कर रहे होते थे, तो उनका मुंह ऐसे हिलता था मानो वे किसी को जवाब दे रहे हों, और जैसे ही कोई उनसे बात करता, उनके होंठ स्थिर हो जाते और उनकी आंखों में मानो कोई जान ही नहीं रहती।

बैरिकेड पर हमले से कई घंटे पहले, उसने एक ऐसी मुद्रा अपना ली थी जिसे उसने बाद में भी नहीं छोड़ा, दोनों मुट्ठियाँ घुटनों पर टिकाए और सिर आगे की ओर झुकाए, मानो वह किसी खाई के किनारे देख रहा हो। कोई भी चीज़ उसे इस मुद्रा से हिला नहीं पाई थी; ऐसा नहीं लग रहा था कि उसका ध्यान बैरिकेड पर था। जब सभी लोग लड़ाई के लिए अपनी-अपनी जगह लेने चले गए, तो उस शराबखाने में जहाँ जावर्ट खंभे से बंधा हुआ था, केवल एक विद्रोही नंगी तलवार लिए जावर्ट और खुद माबेउफ पर नज़र रख रहा था। हमले के समय, विस्फोट के समय, शारीरिक आघात उस तक पहुँच गया था और मानो उसे जगा दिया था; वह अचानक उठ खड़ा हुआ, कमरे को पार किया, और ठीक उसी क्षण जब एनजोलरास ने अपनी अपील दोहराई: "क्या कोई स्वयंसेवक नहीं है?" बूढ़ा आदमी शराब की दुकान की दहलीज पर प्रकट हुआ। उसकी उपस्थिति से विभिन्न समूहों में हलचल मच गई। एक चीख उठी:—

“वोटर है! कन्वेंशन का सदस्य है! जनता का प्रतिनिधि है!”

संभवतः उसने उन्हें नहीं सुना होगा।

वह सीधे एनजोलरास की ओर बढ़ा, विद्रोही उसके सामने धार्मिक भय से पीछे हट गए; उसने एनजोलरास से झंडा छीन लिया, जो आश्चर्य से पीछे हट गया और फिर, चूंकि किसी ने उसे रोकने या उसकी सहायता करने का साहस नहीं किया, अस्सी

वर्ष का यह बूढ़ा व्यक्ति, कांपते सिर लेकिन दृढ़ कदमों से, धीरे-धीरे बैरिकेड में लगी पत्थरों की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। यह इतना उदास और इतना भव्य था कि उसके चारों ओर मौजूद सभी लोग चिल्ला उठे: "अपनी टोपियाँ उतारो!" हर कदम पर वह एक भयानक दृश्य प्रस्तुत करता था; उसके सफेद बाल, उसका जर्जर चेहरा, उसका ऊंचा, गंजा और झुर्रीदार माथा, उसका आश्चर्यचकित और खुला मुंह, लाल झंडा थामे उसका बूढ़ा हाथ, अंधकार में उभरते हुए मशाल की लाल रोशनी में और भी बड़े दिखाई दिए, और आसपास खड़े लोगों को लगा कि वे 93 के उस भूत को धरती से निकलते हुए देख रहे हैं, जिसके हाथ में आतंक का झंडा है।

जब वह अंतिम पायदान पर पहुँच गया, जब यह कांपता हुआ और भयानक प्रेत, बारह सौ अदृश्य तोपों की उपस्थिति में कूड़े के उस ढेर पर सीधा खड़ा होकर, मृत्यु का सामना करते हुए और मानो उससे भी अधिक शक्तिशाली होकर खड़ा हो गया, तो अंधेरे के बीच पूरी बैरिकेड ने एक अलौकिक और विशाल रूप धारण कर लिया।

वहाँ एक ऐसा सन्नाटा छा गया जो केवल विलक्षण प्रतिभाओं की उपस्थिति में ही होता है। इस सन्नाटे के बीच, बूढ़े व्यक्ति ने लाल झंडा लहराया और चिल्लाया:—

क्रांति जिंदाबाद! गणतंत्र जिंदाबाद! बंधुत्व! समानता! और मृत्यु!

बैरिकेड में खड़े लोगों ने एक धीमी और तेज़ फुसफुसाहट सुनी, जैसे कोई पुजारी जल्दी में प्रार्थना कर रहा हो। संभवतः यह पुलिस का अधिकारी था जो गली के दूसरे छोर पर कानूनी समन जारी कर रहा था।

फिर वही तीखी आवाज, जिसने पहले चिल्लाकर पूछा था: “वहाँ कौन है?”, फिर चिल्लाई:—

“सेवानिवृत्त हो जाओ!”

एम. माबेउफ, पीला पड़ा हुआ, थका हुआ, उसकी आँखों में विपथपना की शोकपूर्ण ज्वाला जल रही थी, उसने अपने सिर के ऊपर झंडा उठाया और दोहराया:—

गणतंत्र अमर रहे!

“आग!” आवाज ने कहा।

पहली बौछार के समान ही दूसरी बौछार बैरिकेड पर बरसाई गई।

बूढ़ा आदमी घुटनों के बल गिर पड़ा, फिर उठा, झंडा गिरा दिया और एक लकड़ी के लट्ठे की तरह, पूरी लंबाई में, बाहें फैलाए हुए, फुटपाथ पर पीछे की ओर गिर पड़ा।

उसके नीचे खून की धाराएँ बह रही थीं। उसका बूढ़ा, पीला और उदास सिर मानो आकाश की ओर देख रहा हो।

उन भावनाओं में से एक, जो मनुष्य से श्रेष्ठ होती हैं और उसे आत्मरक्षा करना भी भुला देती हैं, ने विद्रोहियों को जकड़ लिया और वे आदर और भय के साथ शव के पास पहुँचे।

“ये राजहत्यारे कैसे आदमी थे!” एनजोलरास ने कहा।

कौरफेयरैक एनजोलरास के कान के पास झुक गया:—

“यह सिर्फ आपके लिए है, मैं आपका उत्साह कम नहीं करना चाहता। लेकिन यह आदमी किसी भी तरह से राजहत्यारा नहीं था। मैं उसे जानता था। उसका नाम फादर माबेउफ था। मुझे नहीं पता कि आज उसे क्या हुआ था। लेकिन वह एक बहादुर मूर्ख था। ज़रा उसका सिर तो देख लो।”

“एक मूर्ख का सिर और ब्रूटस का दिल,” एनजोलरास ने उत्तर दिया।

फिर उसने अपनी आवाज ऊंची की:—

“नागरिकों! यही वह उदाहरण है जो वृद्ध युवाओं को देते हैं। हम हिचकिचाए, वह आगे बढ़ा! हम पीछे हट रहे थे, वह आगे बढ़ा! यही वह सीख है जो वृद्धावस्था से कांपते हुए लोग भय से कांपते हुए लोगों को देते हैं! यह वृद्धजन अपने देश की दृष्टि में महान है। उसने लंबा जीवन जिया और एक शानदार मृत्यु प्राप्त की! अब, आइए हम शव को सुरक्षित स्थान पर रखें, ताकि हममें से प्रत्येक इस मृत वृद्धजन की रक्षा उसी प्रकार करे जैसे वह अपने जीवित पिता की करता, और हमारे बीच उसकी उपस्थिति हमारे किले को अभेद्य बना दे!”

इन शब्दों के बाद उदास और जोशीली सहमति की एक धीमी सी आवाज सुनाई दी।

एनजोलरास नीचे झुका, बूढ़े आदमी का सिर उठाया, और अपने उग्र स्वभाव के अनुसार, उसने उसके माथे पर चुंबन किया, फिर अपनी बाहें फैलाकर, उस मृत व्यक्ति को कोमल सावधानी से संभालते हुए, मानो उसे चोट पहुँचाने से डर रहा हो, उसने उसका कोट उतारा, उसमें खून से सने छेद सबको दिखाए, और कहा:—

“□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□”

III. गैवरोश के लिए एनजोलरास की कार्बाइन स्वीकार करना बेहतर होता।

उन्होंने विधवा हुचेलूप की लंबी काली शॉल फादर माबेउफ के ऊपर डाल दी। छह आदमियों ने अपनी तोपों से एक पालकी बनाई; उस पर उन्होंने शव रखा और सिर झुकाए, गंभीर धीमी गति से उसे शराबखाने की बड़ी मेज तक ले गए।

ये लोग, जिस गंभीर और पवित्र कार्य में वे लगे हुए थे, उसमें पूरी तरह से लीन थे और उन्होंने उस खतरनाक स्थिति के बारे में और कुछ नहीं सोचा जिसमें वे खड़े थे।

जब शव जावर्ट के पास से गुजरा, जो अभी भी भावहीन था, तो एनजोलरास ने जासूस से कहा:—

अब आपकी बारी आएगी!

इस पूरे समय के दौरान, लिटिल गैवरोश, जो अकेला ऐसा व्यक्ति था जिसने अपनी चौकी नहीं छोड़ी थी और पहरा दे रहा था, ने सोचा कि उसने कुछ लोगों को चुपके से बैरिकेड की ओर आते देखा है। अचानक वह चिल्लाया:—

"बाहर देखो!"

कौरफेयरैक, एनजोलरास, जीन प्रोवेर, कॉम्बेफेरे, जोली, बहोरेल, बॉसुएट और बाकी सभी लोग शराब की दुकान से अफरा-तफरी मचाते हुए भाग निकले। लगभग बहुत देर हो चुकी थी। उन्होंने बैरिकेड के ऊपर लहराती हुई संगीनों की एक चमकती हुई कतार देखी। ऊंचे कद के नगर निगम के गार्ड अंदर आ रहे थे, कुछ बस के ऊपर से, कुछ संकरे रास्ते से, अपने आगे उस बच्चे को धकेलते हुए, जो पीछे हट गया, लेकिन भागा नहीं।

वह क्षण बेहद नाजुक था। बाढ़ का वह पहला, दुर्जेय क्षण, जब नदी का जलस्तर तटबंध के स्तर तक बढ़ जाता है और पानी बांध की दरारों से रिसना शुरू हो जाता है। एक पल भी और बीत जाता तो बैरिकेड टूट जाता।

बहोरल ने अंदर आ रहे पहले नगर रक्षक पर झपट्टा मारा और अपनी तोप से उसे मौके पर ही मार डाला; दूसरे रक्षक ने अपनी संगीन से बहोरल को मार गिराया। एक अन्य रक्षक ने पहले ही कौरफेयरैक को गिरा दिया था, जो चिल्ला रहा था: "मेरे पीछे आओ!" सबसे विशालकाय, एक दैत्य की तरह दिखने वाला, अपनी संगीन को कसकर गैवरोश की ओर बढ़ा। उस बच्चे ने जावर्ट की विशाल तोप को अपनी बाहों में उठाया, उसे दृढ़ता से उस दैत्य की ओर ताना और गोली चलाई। लेकिन कोई गोली नहीं चली। जावर्ट की तोप में गोली नहीं भरी थी। नगर रक्षक जोर से हँस पड़ा और उसने बच्चे पर अपनी संगीन तान दी।

इससे पहले कि संगीन गैवरोश को छू पाती, सैनिक के हाथ से बंदूक फिसल गई, एक गोली नगर निगम के गार्ड के माथे के बीचोंबीच लगी और वह पीठ के बल गिर पड़ा।
दूसरी गोली दूसरे गार्ड को लगी, जिसने कौरफेयरैक पर हमला किया था, और वह फुटपाथ पर गिर पड़ा।

यह मारियस का काम था, जो अभी-अभी बैरिकेड में दाखिल हुआ था।

IV. बारूद का बैरल

मारियस, जो अभी भी रुए मोंडेतोर के मोड़ पर छिपा हुआ था, कांपते और असमंजस में डूबे हुए, युद्ध के पहले चरण का साक्षी बना था। लेकिन वह उस रहस्यमय और प्रबल भय का लंबे समय तक विरोध नहीं कर सका, जिसे खाई की पुकार कहा जा सकता है। आसन्न खतरे की उपस्थिति में, एम. माबेउफ की मृत्यु की उपस्थिति में, उस दुखद पहेली की उपस्थिति में, मारे गए बहोरेल की उपस्थिति में, और कौरफेयरैक के "मेरे पीछे आओ!" चिल्लाने की उपस्थिति में, उस बच्चे की उपस्थिति में जिसे धमकी दी गई थी, उसके दोस्तों की उपस्थिति में जो उसकी मदद करने या बदला लेने के लिए आए थे, उसका सारा संकोच गायब हो गया, और उसने अपने दोनों पिस्तौल हाथों में लेकर खुद को संघर्ष में झोंक दिया। अपने पहले ही शॉट से उसने गैवरोश को बचा लिया, और दूसरे शॉट से कौरफेयरैक को मार गिराया।

गोलियों की आवाज के बीच, हमला किए गए गार्डों की चीखों के बीच, हमलावर खाई पर चढ़ गए थे, जिसके शिखर पर अब नगर पालिका गार्ड, मोर्चे के सैनिक और उपनगरों से राष्ट्रीय गार्ड, हाथों में बंदूकें लिए, अपने शरीर की आधी ऊंचाई से अधिक तक खड़े दिखाई दे रहे थे।

वे पहले ही बाड़े के दो-तिहाई से अधिक हिस्से को पार कर चुके थे, लेकिन वे बाड़े में कूदे नहीं, मानो किसी जाल के डर से कांप रहे हों। वे अंधेरी बाड़ को ऐसे घूर रहे थे जैसे कोई शेर की मांद को घूरता हो। मशाल की रोशनी से केवल उनकी संगीनें, उनकी भालू की खाल की टोपियाँ और उनके बेचैन और गुस्से से भरे चेहरों का ऊपरी हिस्सा ही रोशन हो रहा था।

मारियस के पास अब कोई हथियार नहीं थे; उसने अपनी खाली पिस्तौलें चलाने के बाद फेंक दी थीं; लेकिन उसने दरवाजे के पास, शराबखाने में बारूद की नली देख ली थी।

जैसे ही वह आधा मुड़ा और उस दिशा में देखने लगा, एक सिपाही ने उस पर निशाना साधा। जिस क्षण सिपाही मारियस को देख रहा था, उसी क्षण किसी ने बंदूक की नली पर हाथ रख दिया और उसे रोक दिया। यह काम किसी ऐसे व्यक्ति ने किया जो

तेजी से आगे बढ़ा था—मखमली पतलून पहने वह युवक मजदूर। गोली तेजी से चली, हाथ को पार कर गई और संभवतः मजदूर को भी, क्योंकि वह गिर गया, लेकिन गोली मारियस को नहीं लगी। यह सब, जो धुएं के बीच से देखने के बजाय महसूस किया जा सकता था, मारियस, जो शराबखाने में प्रवेश कर रहा था, ने शायद ही ध्यान दिया हो। फिर भी, उसने भ्रमित अवस्था में ही सही, उस बंदूक की नली को अपनी ओर निशाना साधते हुए, उसे रोकने वाले हाथ को और गोली चलने की आवाज को महसूस किया था। लेकिन ऐसे क्षणों में, जो कुछ हम देखते हैं वह अस्थिर और तेजी से बीत जाता है, और हम किसी भी चीज के लिए नहीं रुकते। हम अस्पष्ट रूप से और भी अंधेरे की ओर खिंचे चले जाते हैं, और सब कुछ धुंधला सा लगता है।

विद्रोही, आश्चर्यचकित तो थे लेकिन भयभीत नहीं थे, और उन्होंने एकजुट होकर मोर्चा संभाला। एनजोलरास चिल्लाया: “रुको! अंधाधुंध गोलीबारी मत करो!” शुरुआती अफरा-तफरी में, वे वास्तव में एक-दूसरे को घायल कर सकते थे। उनमें से अधिकांश पहली मंजिल की खिड़की और अटारी की खिड़कियों पर चढ़ गए थे, जहाँ से वे हमलावरों को आदेश दे रहे थे।

एनजोलरास, कौरफेयरैक, जीन प्रोवेर और कॉम्बेफेरे सहित सबसे दृढ़ निश्चयी लोगों ने गर्व से खुद को पीछे के घरों की ओर पीठ करके, बिना किसी आश्रय के, सैनिकों और गार्डों की पंक्तियों का सामना करते हुए खड़ा कर लिया था, जिन्होंने बैरिकेड के शीर्ष पर मोर्चा संभाला हुआ था।

यह सब बिना किसी हड़बड़ी के, उस विचित्र और भयावह गंभीरता के साथ संपन्न हुआ जो युद्ध से पहले होती है। उन्होंने दोनों ओर से तीक्ष्ण निशाना साधा: वे इतने करीब थे कि बिना आवाज उठाए आपस में बात कर सकते थे।

जब वे उस बिंदु पर पहुँच गए जहाँ चिंगारी भड़कने ही वाली थी, तभी एक कवचधारी अधिकारी ने अपनी तलवार आगे बढ़ाते हुए कहा:—

अपने हथियार डाल दो!

“आग!” एनजोलरास ने जवाब दिया।

दोनों विस्फोट एक ही क्षण में हुए और सब कुछ धुएं में गायब हो गया।

एक तीखा और दम घोंटने वाला धुआँ, जिसमें मरते-घायल कमजोर, मंद कराहते हुए पड़े थे। धुआँ छंटने पर, दोनों तरफ के लड़ाके कम संख्या में दिखाई दिए,

लेकिन फिर भी अपनी-अपनी जगहों पर चुपचाप गोला-बारूद भर रहे थे। अचानक, एक गरजती हुई आवाज सुनाई दी, जो चिल्ला रही थी:—

"यहाँ से चले जाओ, वरना मैं बैरिकेड उड़ा दूंगा!"

सभी उस दिशा में मुड़ गए जहाँ से आवाज आ रही थी।

मारियस शराबखाने में दाखिल हुआ और बारूद का बैरल उठा लिया। फिर उसने धुएँ और उस धुंध का फ़ायदा उठाया जो किलेबंदी वाले घेरे में फैली हुई थी, और बैरिकेड के सहारे सरकते हुए उस पत्थरों के ढेर तक पहुँचा जहाँ मशाल रखी थी। मशाल से उसे अलग करना, उसकी जगह बारूद का बैरल रखना, और पत्थरों के ढेर को बैरल के नीचे धकेलना, जिससे बैरल तुरंत एक भयानक आज्ञाकारिता के साथ दब गया—इन सबमें मारियस को बस झुकने और उठने जितना ही समय लगा; और अब सभी— राष्ट्रीय रक्षक, नगर रक्षक, अधिकारी, सैनिक, बैरिकेड के दूसरे छोर पर जमा होकर, उसे मूर्खता से घूर रहे थे, जब वह पत्थरों पर पैर रखे, हाथ में मशाल लिए, अपने अभिमानी चेहरे के साथ एक घातक दृढ़ संकल्प से जगमगाता हुआ, मशाल की लौ को उस दुर्जेय ढेर की ओर झुकाए जहाँ वे टूटे हुए बारूद के बैरल को देख सकते थे, और उस चौंकाने वाली चीख को निकाल रहा था:—

"यहाँ से चले जाओ, वरना मैं बैरिकेड उड़ा दूंगा!"

अस्सी वर्षीय व्यक्ति के बाद उस बैरिकेड पर खड़ा मारियस, बूढ़े व्यक्ति के दर्शन के बाद युवा क्रांति की एक झलक था।

“बैरिकेड को उड़ा दो!” एक सार्जेंट ने कहा, “और खुद को भी उसके साथ उड़ा दो!”

मारियस ने पलटवार करते हुए कहा, "और मैं भी।"

और उसने मशाल को बारूद के बैरल की ओर गिरा दिया।

लेकिन बैरियर पर अब कोई नहीं था। हमलावर अपने मृतकों और घायलों को छोड़कर, अव्यवस्थित ढंग से सड़क के अंतिम छोर की ओर भागे और वहाँ फिर से अंधेरे में गुम हो गए। यह एक बेतहाशा पलायन था।

बैरिकेड खाली था।

वी. जीन प्राउवायर के छंदों का अंत

सभी लोग मारियस के चारों ओर जमा हो गए। कौरफेयरैक ने खुद को उसकी गर्दन पर फेंक दिया।

"और ये हो गया!"

“कितनी अच्छी किस्मत है!” कॉम्बेफेरे ने कहा।

“तुम बिल्कुल सही समय पर आए!” बॉसुएट ने उत्साह से कहा।

“अगर तुम न होते तो मैं मर चुका होता!” कौरफेयरैक ने फिर से कहना शुरू किया।

"अगर तुम न होते तो मुझे निगल लिया जाता!" गैवरोश ने आगे कहा।

मारियस ने पूछा:—

“मुखिया कहाँ है?”

“तुम ही हो वो!” एनजोलरास ने कहा।

दिनभर मारियस के दिमाग में उथल-पुथल मची हुई थी; अब तो मानो बवंडर सा आ गया था। उसके भीतर का यह बवंडर उसे ऐसा महसूस करा रहा था मानो वह उसके बाहर हो और उसे अपने साथ बहा ले जा रहा हो। उसे ऐसा लग रहा था मानो वह जीवन से बहुत दूर निकल चुका हो। उसके आनंद और प्रेम के दो सुनहरे महीने उस भयानक मोड़ पर अचानक समाप्त हो गए, कोसेट उससे बिछड़ गई, वह घेराबंदी, एम. माबेउफ का गणतंत्र के लिए शहीद हो जाना, विद्रोहियों का नेता बनना—ये सब बातें उसे किसी भयानक बुरे सपने की तरह लग रही थीं। उसे यह याद दिलाने के लिए मानसिक बल लगाना पड़ा कि उसके आसपास जो कुछ भी है वह सब वास्तविक है। मारियस ने जीवन में इतना कुछ देख लिया था कि वह जानता था कि असंभव से ज्यादा निकट कुछ नहीं होता, और जो हमेशा अप्रत्याशित होता है, उसका अनुमान लगाना ही आवश्यक होता है। उसने अपने जीवन के इस नाटक को एक ऐसी रचना के रूप में देखा जिसे कोई समझ नहीं पाता।

उसके विचारों को घेरने वाले कोहरे में, वह जावर्ट को पहचान नहीं पाया, जो अपनी चौकी पर बंधा हुआ था और बैरिकेड पर हुए पूरे हमले के दौरान उसने अपना सिर तक नहीं हिलाया था, और जो अपने चारों ओर सुलग रहे विद्रोह को एक शहीद के धैर्य और एक न्यायाधीश की गरिमा के साथ देख रहा था। मारियस ने उसे देखा तक नहीं था।

इस बीच, हमलावर टस से मस नहीं हुए; गली के अंत में उनके मार्च करने और भीड़ में आगे बढ़ने की आवाजें सुनाई दे रही थीं, लेकिन वे अंदर नहीं गए, शायद इसलिए कि वे आदेशों की प्रतीक्षा कर रहे थे या फिर इस अभेद्य किले पर दोबारा हमला करने से पहले अतिरिक्त सैनिकों के आने का इंतजार कर रहे थे। विद्रोहियों ने पहरेदार तैनात कर रखे थे, और उनमें से कुछ, जो मेडिकल के छात्र थे, घायलों की देखभाल करने में जुट गए।

शराब की दुकान से सारी मेजें बाहर फेंक दी गई थीं, सिवाय उन दो मेजों के जो रुई और कारतूसों के लिए रखी थीं, और उस एक मेज के जिस पर फादर माबेउफ लेटे थे। उन्होंने उन मेजों को बैरिकेड में जोड़ दिया था और शराबखाने में विधवा हुचेलूप और उसके नौकरों के बिस्तर से गद्दे बिछा दिए थे। इन्हीं गद्दों पर उन्होंने घायलों को लिटाया था। कोरिंथ में रहने वाले उन तीन बेचारे लोगों का क्या हुआ, यह किसी को नहीं पता था। लेकिन आखिरकार वे तहखाने में छिपे हुए मिले।

अवरोध हटने से मिली खुशी पर एक मार्मिक भावना छा गई।

हाजिरी ली गई। विद्रोहियों में से एक लापता था। और वह कौन था? सबसे प्रिय लोगों में से एक। सबसे बहादुर लोगों में से एक। जीन प्रोवेर। उसे घायलों के बीच ढूंढा गया, वह वहां नहीं मिला। उसे मृतकों के बीच ढूंढा गया, वह वहां भी नहीं मिला। जाहिर है वह कैदी था। कॉम्बेफेरे ने एनजोलरास से कहा:—

“उन्होंने हमारे दोस्त को पकड़ लिया है; हमने उनके एजेंट को पकड़ लिया है। क्या आप उस जासूस की मौत पर अड़े हुए हैं?”

“हां,” एनजोलरास ने उत्तर दिया; “लेकिन जीन प्रोवेर के जीवन की तुलना में कम।”

यह घटना जावर्ट की चौकी के पास स्थित बार में हुई।

“ठीक है,” कॉम्बेफेरे ने बात जारी रखते हुए कहा, “मैं अपना रूमाल अपनी छड़ी से बांधकर, शांति के झंडे के रूप में जाऊंगा, और अपने आदमी के बदले उनके आदमी को देने का प्रस्ताव रखूंगा।”
“सुनो,” एनजोलरास ने कॉम्बेफेरे की बांह पर हाथ रखते हुए कहा।
गली के अंत में हथियारों की एक बड़ी झड़प हुई।
उन्होंने एक मर्दाना आवाज को चिल्लाते हुए सुना:—
“फ्रांस जिंदाबाद! भविष्य जिंदाबाद!”
उन्होंने प्राउवेयर की आवाज पहचान ली।
एक पल में बिजली चमकी और धमाके की आवाज सुनाई दी।
फिर सन्नाटा छा गया।
“उन्होंने उसे मार डाला,” कॉम्बेफेरे ने हैरानी से कहा।
एनजोलरास ने जावर्ट की ओर देखा और उससे कहा:— "तुम्हारे दोस्तों ने तुम्हें गोली मार दी है।"

VI. जीवन की पीड़ा के बाद मृत्यु की पीड़ा

इस प्रकार के युद्ध की एक विशेषता यह है कि बैरिकेड पर हमला लगभग हमेशा सामने से ही किया जाता है, और हमलावर आमतौर पर स्थिति को पलटने से बचते हैं, या तो घात लगाकर हमला किए जाने के डर से, या फिर घुमावदार गलियों में उलझने के डर से। इसलिए विद्रोहियों का पूरा ध्यान मुख्य बैरिकेड पर केंद्रित था, जो स्पष्ट रूप से हमेशा खतरे का स्थान था, और जहाँ संघर्ष निश्चित रूप से फिर से शुरू होता। लेकिन मारियस को छोटे बैरिकेड का ख्याल आया और वह वहाँ चला गया। वह सुनसान था और केवल पत्थरों के बीच कांपते हुए आग के बर्तन से ही उसकी रखवाली हो रही थी। इसके अलावा, मोंडेटूर गली, और रुए डे ला पेटिट ट्रुआंडेरी और रुए डू सिग्न की शाखाएँ पूरी तरह शांत थीं।

जब मारियस अपना निरीक्षण समाप्त करने के बाद पीछे हट रहा था, तो उसने अंधेरे में अपना नाम धीमी आवाज में सुना।

श्री मारियस!

वह चौंक गया, क्योंकि उसने उस आवाज को पहचान लिया था जिसने दो घंटे पहले रू प्लूमेट के गेट से उसे पुकारा था।

लेकिन अब वह आवाज एक सांस से ज्यादा कुछ नहीं लग रही थी।

उसने चारों ओर देखा, लेकिन उसे कोई दिखाई नहीं दिया।

मारियस को लगा कि उससे गलती हुई है, कि यह उसके मन का भ्रम था, उन असाधारण वास्तविकताओं के बीच जो उसके चारों ओर टकरा रही थीं। वह एक कदम आगे बढ़ा, ताकि उस दूरदराज के कोने से बाहर निकल सके जहाँ बैरिकेड लगा हुआ था।

“महाशय मारियस!” आवाज दोहराई गई।

इस बार उसे इस बात पर कोई संदेह नहीं था कि उसने इसे स्पष्ट रूप से सुना था; उसने देखा और उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

“आपके चरणों में,” आवाज ने कहा।

वह नीचे झुका और अंधेरे में एक आकृति को अपनी ओर घिसटते हुए देखा।

वह फुटपाथ पर रेंग रहा था। यही वह चीज थी जिसने उससे बात की थी।
आग के बर्तन की रोशनी में उसे एक ब्लाउज, मोटे मखमल की फटी हुई पतलून, नंगे पैर और खून के एक पोखर जैसी कोई चीज दिखाई दी। मारियस को धुंधला सा एक पीला सिर दिखाई दिया जो उसकी ओर उठा हुआ था और उससे कह रहा था:—
“क्या आप मुझे पहचानते नहीं हैं?”
"नहीं।"
“एपोनिन।”
मारियस जल्दी से नीचे झुका। दरअसल, वह वही अभागी बच्ची थी। उसने पुरुषों के कपड़े पहने हुए थे।
“तुम यहाँ कैसे आए? यहाँ क्या कर रहे हो?”
“मैं मर रही हूँ,” उसने कहा।
कुछ शब्द और घटनाएँ ऐसी होती हैं जो निराश व्यक्तियों में जोश भर देती हैं। मारियस चौंककर चिल्लाया:
“तुम घायल हो! रुको, मैं तुम्हें कमरे में ले चलता हूँ! वहाँ तुम्हारा इलाज होगा। क्या चोट गंभीर है? तुम्हें चोट न लगे इसलिए मैं तुम्हें कैसे पकड़ूँ? तुम्हें कहाँ दर्द हो रहा है? मदद करो! हे भगवान! लेकिन तुम यहाँ क्यों आए?”
और उसने उसे उठाने के लिए अपना हाथ उसके नीचे से निकालने की कोशिश की। उसने धीमी सी चीख मारी।
“क्या मैंने तुम्हें चोट पहुंचाई है?” मारियस ने पूछा।
"थोड़ा।"
लेकिन मैंने तो सिर्फ आपका हाथ छुआ था।
उसने मारियस की ओर हाथ बढ़ाया, और उस हाथ के बीचोंबीच मारियस को एक काला छेद दिखाई दिया।
“तुम्हारे हाथ को क्या हुआ है?” उसने कहा।
इसमें छेद किया गया है।

"छेदा हुआ?"
"हाँ।"
“किसके साथ?”
"एक गोली।"
"कैसे?"
क्या आपने अपनी ओर बंदूक ताने हुए देखा?
"हां, और एक हाथ इसे रोक रहा है।"
"यह मेरा था।"
मारियस को कंपकंपी महसूस हुई।
“ये कैसी पागलपन वाली बात है! बेचारा बच्चा! लेकिन अगर बस इतना ही है, तो कोई बड़ी बात नहीं है, चलो मैं तुम्हें बिस्तर पर ले चलता हूँ। वे तुम्हारे घाव पर पट्टी बाँध देंगे; हाथ में छेद होने से कोई नहीं मरता।”
उसने धीरे से कहा:—
“गोली मेरे हाथ को भेदते हुए मेरी पीठ से निकल गई। मुझे यहाँ से हटाना बेकार है। मैं आपको बताता हूँ कि आप मेरी देखभाल किसी भी सर्जन से बेहतर कैसे कर सकते हैं। इस पत्थर पर मेरे पास बैठ जाइए।”
उसने आज्ञा का पालन किया; उसने अपना सिर मारियस की गोद में रख दिया, और उसकी ओर देखे बिना उसने कहा:—
“ओह! यह कितना अच्छा है! यह कितना आरामदायक है! बस; अब मुझे कोई कष्ट नहीं है।”
वह एक पल के लिए चुप रही, फिर उसने बड़ी मुश्किल से अपना चेहरा घुमाया और मारियस की ओर देखा।
“क्या आप जानते हैं, महाशय मारियस? मुझे इस बात पर हैरानी हुई कि आप उस बगीचे में चले गए; यह मूर्खतापूर्ण था, क्योंकि मैंने ही आपको वह घर दिखाया था; और तब, मुझे खुद से कहना चाहिए था कि आप जैसे नौजवान—”

वह रुकी, और अपने मन में मौजूद गंभीर विचारों को दरकिनार करते हुए, उसने दिल को छू लेने वाली मुस्कान के साथ बोलना शुरू किया:

"तुम मुझे बदसूरत समझते थे, है ना?"

उसने आगे कहा:—

“देखो, तुम खो गए हो! अब कोई भी बैरिकेड से बाहर नहीं निकल सकता। वैसे, मैं ही तुम्हें यहाँ लेकर आई थी! मुझे पूरा यकीन है कि तुम मरने वाले हो। फिर भी, जब मैंने उन्हें तुम पर निशाना साधते देखा, तो मैंने बंदूक की नली पर हाथ रख दिया। कितनी अजीब बात है! लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि मैं तुमसे पहले मरना चाहती थी। जब मुझे गोली लगी, तो मैं खुद को घसीटते हुए यहाँ आई, किसी ने मुझे नहीं देखा, किसी ने मुझे नहीं उठाया, मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी, मैंने कहा: ‘तो वो नहीं आ रहा!’ ओह, काश तुम जानते। मैंने अपनी कमीज़ को दांतों से दबा लिया, मैं बहुत दर्द में थी! अब मैं ठीक हूँ। क्या तुम्हें वो दिन याद है जब मैं तुम्हारे कमरे में आई थी और जब मैंने तुम्हारे आईने में खुद को देखा था, और वो दिन जब मैं धोबिनों के पास वाले बुलेवार्ड पर तुम्हारे पास आई थी? पक्षी कैसे गा रहे थे! बहुत समय हो गया। तुमने मुझे सौ सू दिए, और मैंने तुमसे कहा: ‘मुझे तुम्हारे पैसे नहीं चाहिए।’ मुझे उम्मीद है कि तुमने अपना सिक्का उठा लिया होगा? तुम अमीर नहीं हो। मैंने तुम्हें इसे उठाने के लिए कहना ज़रूरी नहीं समझा। ऊपर। सूरज खूब चमक रहा था और ठंड नहीं थी। क्या आपको याद है, महाशय मारियस? ओह! मैं कितनी खुश हूँ! सब लोग मरने वाले हैं।

उसके चेहरे पर एक पागलपन, गंभीरता और दिल दहला देने वाला भाव था। उसकी फटी हुई ब्लाउज से उसका नंगा गला दिखाई दे रहा था।

बात करते-करते उसने अपने छेदे हुए हाथ को अपनी छाती पर दबाया, जहाँ एक और छेद था, और जहाँ से पल-पल खून की एक धारा बह रही थी, जैसे किसी खुले गुदाद्वार से शराब की धार निकल रही हो।

मारियस ने इस दुर्भाग्यशाली प्राणी को गहरी करुणा से देखा।

“ओह!” उसने फिर कहा, “यह फिर से आ रहा है, मेरा दम घुट रहा है!”

उसने अपनी ब्लाउज को ऊपर उठाया और उसे दांतों से काट लिया, और उसके अंग फुटपाथ पर अकड़ गए।

उसी क्षण नन्हे गैवरोश द्वारा निकाली गई मुर्गे की बांग बैरिकेड के पार गूंज उठी।

बच्चा अपनी बंदूक में गोलियां भरने के लिए मेज पर चढ़ गया था और उस समय के लोकप्रिय गीत को खुशी-खुशी गा रहा था :—

□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ः — □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□! □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□! □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□!

एपोनाइन उठी और सुनने लगी; फिर उसने धीरे से कहा :—

“यह वही है।”

और मारियस की ओर मुड़ते हुए :—

“मेरा भाई यहाँ है। उसे मुझे नहीं देखना चाहिए। वह मुझे डांटेगा।”

"तुम्हारा भाई?" मारियस ने पूछा, जो अपने दिल की सबसे कड़वी और दुख भरी गहराइयों में अपने पिता द्वारा उसे सौंपी गई थेनार्डियरों के प्रति जिम्मेदारियों पर विचार कर रहा था; "तुम्हारा भाई कौन है?"

वह छोटा सा लड़का।

“गायन करने वाला कौन है?”

"हाँ।"

मारियस ने एक हरकत की।

“ओह! कहीं मत जाओ,” उसने कहा, “अब ज्यादा देर नहीं लगेगी।”

वह लगभग सीधी बैठी थी, लेकिन उसकी आवाज बहुत धीमी थी और हिचकियों के कारण टूट रही थी।

बीच-बीच में, उसकी अंतिम आहट उसे स्तब्ध कर देती थी। वह अपना चेहरा मारियस के जितना हो सके करीब ले जाती थी। उसने एक अजीब से भाव के साथ कहा :—

सुनो, मैं तुम्हें धोखा नहीं देना चाहता। मेरी जेब में तुम्हारे लिए एक पत्र है। मुझे इसे डाक में डालने के लिए कहा गया था। मैंने इसे अपने पास ही

रखा। मैं नहीं चाहता था कि यह तुम तक पहुंचे। लेकिन शायद जब हम थोड़ी देर में फिर मिलेंगे तो तुम मुझसे नाराज़ होगे? अपना पत्र ले लो।
उसने अपने घायल हाथ से मारियस का हाथ कसकर पकड़ लिया, लेकिन अब उसे अपने कष्टों का एहसास नहीं हो रहा था। उसने मारियस का हाथ अपनी ब्लाउज की जेब में डाल दिया। वहाँ, वास्तव में, मारियस को एक कागज का टुकड़ा महसूस हुआ।
“इसे ले लो,” उसने कहा।
मारियस ने पत्र ले लिया।
उसने संतोष और संतुष्टि का भाव प्रकट किया।
अब, मेरी परेशानी के बदले में, मुझसे वादा करो—”
और वह रुक गई।
“क्या?” मारियस ने पूछा।
"मुझसे वादा करें!"
"मैं वादा करता हूँ।"
"वादा करो कि मरने के बाद मेरे माथे पर एक चुंबन दोगे। मुझे इसका एहसास होगा।"
उसने अपना सिर फिर से मारियस की गोद में रख दिया और उसकी पलकें बंद हो गईं। मारियस को लगा कि बेचारी आत्मा देह त्याग चुकी है। एपोनाइन गतिहीन पड़ी रही। अचानक, ठीक उसी क्षण जब मारियस को लगा कि वह हमेशा के लिए सो गई है, उसने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं जिनमें मृत्यु की गहरी उदासी झलक रही थी, और उससे एक ऐसी मधुर ध्वनि में कहा जो मानो किसी दूसरी दुनिया से आ रही हो: और हाँ, महाशय मारियस, मुझे लगता है कि मुझे आपसे थोड़ा-बहुत प्यार था। उसने एक बार फिर मुस्कुराने की कोशिश की और उसकी मृत्यु हो गई।

VII. गैवरोश एक गहन दूरी गणनाकर्ता के रूप में

मारियस ने अपना वादा निभाया। उसने उस लालिमा से लाल माथे पर एक चुंबन दिया, जहाँ बर्फीले पसीने की बूँदें जमी हुई थीं।
यह कोसेट के प्रति कोई बेवफाई नहीं थी; यह एक दुखी आत्मा को एक सौम्य और विचारशील विदाई थी।
एपोनिन द्वारा दिए गए पत्र को लेते समय वह कांप रहा था। उसे तुरंत ही एहसास हो गया था कि यह एक महत्वपूर्ण घटना है। वह इसे पढ़ने के लिए बेचैन था।
मनुष्य का हृदय ऐसा ही होता है कि उस अभागी बच्ची ने अभी अपनी आँखें बंद ही की थीं कि मारियस ने उस पत्र को खोलने के बारे में सोचना शुरू कर दिया। उसने उसे धीरे से ज़मीन पर लिटाया और चला गया। उसके मन में कहीं यह बात थी कि वह उस शव की उपस्थिति में उस पत्र को नहीं पढ़ सकता था।
वह शराबखाने में जल रही मोमबत्ती के पास गया। वहाँ एक छोटा सा नोट था, जिसे एक महिला ने बड़ी ही सलीके से मोड़कर सील किया था। पता भी उसी महिला की लिखावट में था और उसमें लिखा था:—
महाशय को, महाशय मारियस पोंटमर्सी,
एम. कौरफेयरैक, रुए डे ला वेरेरी, नंबर 16 पर।"
उसने सील तोड़ी और पढ़ा:—
मेरी प्रियतम, अफसोस! मेरे पिताजी तुरंत रवाना होने पर जोर दे रहे हैं। हम आज शाम रुए डे ल'होमे आर्मे, नंबर 7 में होंगे। एक हफ्ते में हम इंग्लैंड में होंगे।
कोसेट
4 जून

उनके प्रेम में इतनी मासूमियत थी कि मारियस को कोसेट की लिखावट की भी जानकारी नहीं थी।

जो कुछ हुआ था, उसे संक्षेप में बताया जा सकता है। हर चीज़ की जड़ एपोनिन थी। 3 जून की शाम के बाद, उसके मन में दो विचार थे: अपने पिता और प्लूमेट गली के घर पर हमला करने वाले बदमाशों की योजनाओं को नाकाम करना और मारियस और कोसेट को अलग करना। उसने रास्ते में मिले पहले ही बदमाश लड़के से अपने कपड़े बदल लिए, जिसे औरत का वेश धारण करना मज़ेदार लग रहा था, जबकि एपोनिन ने खुद को मर्द के वेश में रखा था। उसी ने चैंप डे मार्स में जीन वालजेन को यह चेतावनी दी थी: "अपना घर छोड़ दो।" दरअसल, जीन वालजेन घर लौट आया था और उसने कोसेट से कहा था: "हम आज शाम को निकलेंगे और टूसेंट के साथ आर्मे गली जाएँगे। अगले हफ्ते हम लंदन में होंगे।" इस अप्रत्याशित झटके से पूरी तरह टूट चुकी कोसेट ने जल्दी से मारियस को कुछ पंक्तियाँ लिखीं। लेकिन वह उस पत्र को डाक से कैसे भेजती? वह कभी अकेले बाहर नहीं जाती थी, और टूसेंट, इस तरह के काम से हैरान होकर, निश्चित रूप से वह पत्र एम. फॉशेलवेंट को दिखाएगा। इसी दुविधा में, कोसेट ने बाड़ के पार से एपोनिन को पुरुष के कपड़ों में देखा, जो अब बगीचे में लगातार घूम रही थी। कोसेट ने "इस युवक" को पुकारा और उसे पाँच फ्रैंक और पत्र देते हुए कहा: "इस पत्र को तुरंत इसके पते पर पहुँचा दो।" एपोनिन ने पत्र अपनी जेब में रख लिया। अगले दिन, 5 जून को, वह मारियस के बारे में पूछताछ करने के लिए कौरफेयरैक के कमरे में गई, पत्र देने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि—एक ऐसी बात जिसे हर ईर्ष्यालु और प्रेम करने वाली आत्मा समझेगी—"देखने" के लिए। वहाँ वह मारियस का, या कम से कम कौरफेयरैक का, "देखने" के उद्देश्य से ही इंतज़ार करती रही। जब कौरफेयरैक ने उससे कहा, "हम बैरिकेड्स पर जा रहे हैं," तो उसके मन में एक विचार कौंधा - खुद को उस मौत के हवाले कर देना, जैसे वह किसी और मौत को गले लगा लेती, और मारियस को भी उसी राह पर धकेल देना। वह कौरफेयरैक के पीछे- पीछे गई, बैरिकेड के निर्माण स्थल की जगह का पता लगाया; और, चूंकि मारियस को कोई चेतावनी नहीं मिली थी और उसने पत्र को बीच में ही रोक लिया था, उसे पूरा यकीन था कि वह हर शाम सूर्यास्त के समय अपने मिलने के स्थान पर जाएगा, इसलिए वह रू प्लूमेट गई, वहां मारियस का इंतजार किया और उसके दोस्तों के नाम से उसे वह संदेश भेजा, जिससे, उसे लगा, वह बैरिकेड तक पहुंच जाएगा।

उसने मारियस की निराशा का अनुमान लगाया था जब वह कोसेट को नहीं ढूंढ पाएगा; उसका अनुमान गलत नहीं था। वह खुद रू डे ला चानव्रेरी लौट आई। उसने वहां क्या किया, यह पाठक अभी देख चुके हैं। वह ईर्ष्यालु हृदयों के उस दुखद आनंद के साथ मरी, जो अपने प्रिय को अपनी मृत्यु में घसीटते हैं और कहते हैं: "उसे कोई नहीं पा सकेगा!"

मारियस ने कोसेट के पत्र को चूम-चूमकर ढक दिया। तो वह उससे प्यार करती थी! एक पल के लिए उसके मन में यह ख्याल आया कि उसे अभी नहीं मरना चाहिए। फिर उसने मन ही मन कहा: “वह जा रही है। उसके पिता उसे इंग्लैंड ले जा रहे हैं, और मेरे दादाजी ने शादी के लिए अपनी सहमति नहीं दी है। हमारे भाग्य में कुछ भी नहीं बदला है।” मारियस जैसे स्वप्नद्रष्टा घोर निराशा के शिकार होते हैं, और अंततः हताशा भरे फैसले लेते हैं। जीने की थकान असहनीय है; मृत्यु जल्द ही आ जाएगी। फिर उसने सोचा कि उसे अभी भी दो कर्तव्य पूरे करने हैं: कोसेट को अपनी मृत्यु की सूचना देना और उसे अंतिम विदाई देना, और उस गरीब बच्चे, एपोनिन के भाई और थेनार्डियर के बेटे को आने वाली विपत्ति से बचाना।

उसके पास एक पर्स था; वही पर्स जिसमें वह नोटबुक थी जिसमें उसने कोसेट के लिए अपने प्यार के कई विचार लिखे थे। उसने उसमें से एक पन्ना फाड़ा और उस पर पेंसिल से कुछ पंक्तियाँ लिखीं:—

हमारा विवाह असंभव था। मैंने अपने दादाजी से पूछा, उन्होंने मना कर दिया; मेरे पास न तो धन-दौलत है और न ही तुम्हारे पास। मैं तुम्हारे पास दौड़ा, तुम वहाँ नहीं थी। तुम जानती हो मैंने तुमसे जो वादा किया था, मैं उसे निभाऊंगा। मैं मर रहा हूँ। मैं तुमसे प्यार करता हूँ। जब तुम इसे पढ़ोगी, मेरी आत्मा तुम्हारे पास होगी और तुम मुस्कुराओगी।

इस पत्र को सील करने के लिए उसके पास कुछ भी न होने के कारण, उसने कागज को चार भागों में मोड़कर ही संतोष कर लिया और उस पर पता लिख दिया:—

मैडेमोसेले कोसेट फौचेलेवेंट के लिए,

एम. फौचेलेवेंट्स, रुए डे ल'होमे आर्मे, नंबर 7 पर।

पत्र को मोड़कर वह एक क्षण के लिए सोच में डूबा रहा, फिर उसने अपना पर्स निकाला, उसे खोला और उसी पेंसिल से पहले पृष्ठ पर ये चार पंक्तियाँ लिखीं:

—

मेरा नाम मारियस पोंटमर्सी है। कृपया मेरे पार्थिव शरीर को मेरे दादा, एम. गिलनोर्मंड, रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर, नंबर 6, माराइस में ले जाएं।
उसने अपना पर्स वापस अपनी जेब में रखा, फिर उसने गैवरोश को फोन किया। मारियस की आवाज सुनकर वह लड़का हंसमुख और भक्तिपूर्ण भाव से दौड़कर उसके पास आ गया।
क्या तुम मेरे लिए कुछ करोगे?
“कुछ भी,” गैवरोश ने कहा। “हे भगवान! अगर तुम न होते तो मेरा तो काम तमाम हो जाता।”
क्या आपको यह पत्र दिखाई दे रहा है?
"हाँ।"
“इसे ले लो। तुरंत बैरिकेड छोड़ दो” (गैवरोश बेचैनी से अपना कान खुजलाने लगा) “और कल सुबह, इसे मैडमोजेल कोसेट के पते पर, एम. फॉशेलवेंट के घर, रुए डे ल'होमे आर्मे, नंबर 7 पर पहुंचा देना।”
उस वीर बालक ने उत्तर दिया:—
"अच्छा, लेकिन! इस बीच बैरिकेड पर कब्जा कर लिया जाएगा, और मैं वहां नहीं रहूंगा।"
"ऐसा प्रतीत होता है कि भोर होने तक बैरिकेड पर हमला नहीं किया जाएगा, और कल दोपहर से पहले उस पर कब्जा नहीं किया जा सकेगा।"
हमलावरों द्वारा बैरिकेड को दी गई थोड़ी सी राहत वास्तव में लंबी खिंच गई थी। यह उन क्षणिक विरामों में से एक था जो अक्सर रात्रिकालीन लड़ाइयों में होते हैं और जिनके बाद हमेशा क्रोध में वृद्धि होती है।
“अच्छा,” गैवरोश ने कहा, “अगर मैं कल जाकर तुम्हारा पत्र पहुंचा दूं तो कैसा रहेगा?”
“तब तक बहुत देर हो जाएगी। संभवतः बैरिकेड लगा दिया जाएगा, सभी सड़कों पर पहरा होगा, और आप बाहर नहीं निकल पाएंगे। तुरंत निकल जाओ।”
गैवरोश को इसका कोई जवाब सूझा नहीं और वह असमंजस में वहीं खड़ा रहा, उदास होकर अपना कान खुजलाता रहा।

अचानक, उसने अपनी उन चिड़िया जैसी फुर्तीली हरकतों में से एक के साथ पत्र उठा लिया, जो उसके लिए आम बात थी।
“ठीक है,” उसने कहा।
और उसने मोंडेटूर लेन से दौड़ते हुए अपनी यात्रा शुरू की।
गैवरोश के मन में एक विचार आया था जिसने उसे एक निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया, लेकिन उसने इसका जिक्र नहीं किया क्योंकि उसे डर था कि मारियस इस पर कोई आपत्ति उठा सकता है।
यह विचार था:—
“अभी आधी रात भी नहीं हुई है, रू डे ल'होमे आर्मे ज्यादा दूर नहीं है; मैं तुरंत जाकर पत्र पहुंचा दूंगा और समय पर वापस आ जाऊंगा।”

पुस्तक **XV.** सशस्त्र व्यक्ति की गली

I. शराबी बकबक करता है

किसी शहर की उथल-पुथल आत्मा के विद्रोह के सामने क्या है? मनुष्य, जनता से भी कहीं अधिक गहरा है। ठीक उसी क्षण, जीन वालजेन एक भयानक उथल-पुथल का शिकार था। उसके भीतर हर तरह की खाई फिर से खुल गई थी। वह भी पेरिस की तरह, एक अस्पष्ट और भयावह क्रांति के कगार पर कांप रहा था। कुछ ही घंटों में यह सब हो गया था। उसका भाग्य और उसकी अंतरात्मा अचानक अंधकार में डूब गई थी। उसके बारे में, और पेरिस के बारे में भी, यह कहा जा सकता था: “दो सिद्धांत आमने-सामने हैं। सफेद देवदूत और काला देवदूत खाई के पुल पर एक-दूसरे को पकड़ने वाले हैं। दोनों में से कौन दूसरे को खाई में धकेल देगा? कौन विजयी होगा?”

इसी 5 जून की शाम से ठीक पहले, जीन वालजेन, कोसेट और टूसेंट के साथ, रुए डे ल'होमे आर्मे में ठहर गए थे। वहाँ उनका एक नया जीवन इंतजार कर रहा था।

कोसेट ने रू प्लूमेट को छोड़े बिना विरोध का प्रयास नहीं किया था। जब से वे साथ-साथ रह रहे थे, तब से पहली बार कोसेट और जीन वालजेन की इच्छाएँ स्पष्ट रूप से अलग-अलग थीं, और कम से कम एक-दूसरे के विपरीत थीं, भले ही उनमें टकराव न हुआ हो। एक तरफ आपत्तियाँ थीं तो दूसरी तरफ हठधर्मिता। एक अजनबी द्वारा जीन वालजेन को दी गई अचानक सलाह: "अपना घर छोड़ दो," ने उन्हें इतना भयभीत कर दिया कि वे आक्रामक हो गए। उन्हें लगा कि उनका पीछा किया जा रहा है। कोसेट को हार माननी पड़ी।

दोनों बिना कुछ बोले और बिना एक शब्द बोले रू डे ल'होमे आर्मे में पहुँच गए थे, दोनों अपनी-अपनी निजी चिंताओं में डूबे हुए थे; जीन वाल्जेन इतना बेचैन था कि उसने कोसेट की उदासी पर ध्यान नहीं दिया, और कोसेट इतनी उदास थी कि उसने जीन वाल्जेन की बेचैनी पर ध्यान नहीं दिया।

जीन वालजेन टूसेंट को अपने साथ ले गया था, जो उसने अपनी पिछली यात्राओं में कभी नहीं किया था। उसे लग रहा था कि वह रू प्लूमेट वापस नहीं लौट पाएगा, और वह न तो टूसेंट को पीछे छोड़ सकता था और न ही अपना रहस्य उसे बता सकता था। इसके अलावा, उसे लगता था कि वह वफादार और भरोसेमंद है। मालिक और नौकर के

बीच विश्वासघात जिज्ञासा से शुरू होता है। अब टूसेंट, मानो जीन वालजेन की नौकरानी बनने के लिए ही पैदा हुई थी, जिज्ञासु नहीं थी। उसने बार्नविले की अपनी देहाती बोली में हकलाते हुए कहा: "मैं ऐसी ही बनी हूँ; मैं अपना काम करती हूँ; बाकी मेरा कोई लेना-देना नहीं है।"

प्लूमेट गली से निकलते समय, जो लगभग एक पलायन जैसा था, जीन वालजेन अपने साथ केवल वह छोटा सा संरक्षित सूटकेस ले गया था, जिसे कोसेट ने "अविभाज्य" नाम दिया था। भरे हुए बक्सों के लिए कुलियों की आवश्यकता होती, और कुली गवाह होते हैं। बैबिलोन गली के दरवाजे पर एक सहायक को बुलाया गया था, और वे वहां से रवाना हो गए।

टौसेंट ने बड़ी मुश्किल से थोड़े से कपड़े, चादरें और कुछ शौच सामग्री पैक करने की अनुमति प्राप्त की थी। कोसेट ने अपने साथ केवल अपना पोर्टफोलियो और अपनी स्याही पोंछने वाली किताब ही ली थी।

जीन वाल्जेन ने इस प्रस्थान की एकांतता और रहस्य को बढ़ाने के उद्देश्य से, रुए प्लूमेट के मंडप से केवल सूर्यास्त के समय निकलने की व्यवस्था की थी, जिससे कोसेट को मारियस को अपना पत्र लिखने का समय मिल गया था। वे रात पूरी तरह से होने के बाद रुए डे ल'होमे आर्मे पहुंचे थे।

वे चुपचाप सो गए थे।

रुए डे ल'होमे आर्मे में स्थित आवास दूसरी मंजिल पर एक पिछले आंगन में बना था और इसमें दो शयनकक्ष, एक भोजन कक्ष और भोजन कक्ष से सटी एक रसोई थी, साथ ही एक अटारी भी थी जिसमें एक तहखाना था, जो टूसेंट के हिस्से में आता था। भोजन कक्ष एक प्रतीक्षा कक्ष के रूप में भी कार्य करता था और दोनों शयनकक्षों को अलग करता था। अपार्टमेंट में सभी आवश्यक बर्तन उपलब्ध थे।

लोग जितनी मूर्खता से आत्मविश्वास खोते हैं, उतनी ही मूर्खता से उसे फिर से हासिल कर लेते हैं; मानव स्वभाव ही ऐसा है। जीन वालजेन जैसे ही रुए डे ल'होमे आर्मे पहुँचे, उनकी चिंता धीरे-धीरे कम होने लगी और गायब हो गई। कुछ शांत स्थान होते हैं जो मन पर किसी न किसी तरह से स्वचालित रूप से प्रभाव डालते हैं। एक सुनसान गली, शांतिप्रिय निवासी। जीन वालजेन ने प्राचीन पेरिस की उस गली में एक अवर्णनीय शांति का अनुभव किया, जो इतनी संकरी है कि दो खंभों पर टिकी एक आड़ी बीम से गाड़ियों का प्रवेश वर्जित है, जो शोरगुल

भरे शहर के बीच में खामोश और बेसुध है, दोपहर में मंद रोशनी से जगमगाती है, और मानो सदियों पुराने दो ऊँचे मकानों की पंक्तियों के बीच भावनाओं से रहित है, जो अपनी प्राचीनता की तरह शांति बनाए रखते हैं। उस गली में ठहराव और विस्मृति का स्पर्श था। जीन वालजेन ने वहाँ एक बार फिर गहरी साँस ली। उन्हें वहाँ कैसे ढूँढा जा सकता था?

उनकी पहली प्राथमिकता "अविभाज्य" को अपने पास रखना था।

उन्हें अच्छी नींद आई। रात ज्ञान लाती है; हम यह भी कह सकते हैं कि रात मन को शांति देती है। अगली सुबह वे लगभग प्रसन्न मन से जागे। उन्हें भोजन कक्ष आकर्षक लगा, हालाँकि वह भद्दा था, जिसमें एक पुरानी गोल मेज, एक तिरछे दर्पण से सुसज्जित एक लंबी साइडबोर्ड, एक जर्जर कुर्सी और कई साधारण कुर्सियाँ थीं जिन पर टूसेंट के सामान लदे हुए थे। इन्हीं सामानों में से एक में एक छेद से जीन वालजेन की नेशनल गार्ड की वर्दी दिखाई दे रही थी।

कोसेट की बात करें तो, उसने टूसेंट से अपने कमरे में कुछ सूप भिजवाया था और वह शाम तक दिखाई नहीं दी।

लगभग पांच बजे, टूसेंट, जो लगातार आ-जा रही थी और उस छोटे से प्रतिष्ठान में व्यस्त थी, ने मेज पर एक ठंडा चिकन रखा, जिसे कोसेट ने अपने पिता के प्रति सम्मान के कारण एक नजर डालने की सहमति दी।

यह सब हो जाने के बाद, कोसेट ने सिरदर्द का बहाना बनाकर जीन वालजेन को शुभ रात्रि कहा और अपने कमरे में बंद हो गई। जीन वालजेन ने बड़े चाव से मुर्गे का एक पंख खाया और मेज पर कोहनी टिकाकर धीरे-धीरे शांत होते हुए अपनी सुरक्षा की भावना को पुनः प्राप्त कर लिया।

इस सादे भोज के बारे में चर्चा करते हुए, उन्होंने दो-तीन बार उलझन भरे अंदाज़ में टूसेंट के हकलाते हुए शब्दों पर ध्यान दिया, जब उसने उनसे कहा: "महाशय, कुछ गड़बड़ हो रही है, पेरिस में लड़ाई हो रही है।" लेकिन मन ही मन सोच-विचार में डूबे होने के कारण उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया। सच कहें तो, उन्होंने उसकी बात सुनी ही नहीं। वे उठे और दरवाज़े से खिड़की तक और खिड़की से दरवाज़े तक चक्कर लगाने लगे, और धीरे-धीरे अधिक शांत होते गए।

इस शांति के साथ, कोसेट, जो उसकी एकमात्र चिंता थी, उसके विचारों में फिर से लौट आई। ऐसा नहीं था कि वह इस सिरदर्द से परेशान था, एक मामूली घबराहट,

एक लड़की की रूठने की नौबत, क्षणिक उदासी, जो एक-दो दिन में गायब हो जाएगी; बल्कि वह भविष्य के बारे में सोच रहा था, और अपनी आदत के अनुसार, वह खुशी से उसके बारे में सोच रहा था। आखिरकार, उसे अपने सुखी जीवन के फिर से पटरी पर आने में कोई बाधा नहीं दिख रही थी। कभी-कभी सब कुछ असंभव लगता है, कभी-कभी सब कुछ आसान लगता है; जीन वालजेन ऐसे ही एक सुखद क्षण के बीच में था। अच्छे क्षण आमतौर पर बुरे क्षणों के बाद आते हैं, जैसे दिन के बाद रात आती है, प्रकृति के मूल में निहित उस क्रम और विरोधाभास के नियम के कारण, जिसे सतही दिमाग विरोधाभास कहते हैं। इस शांत गली में, जहाँ उसने शरण ली थी, जीन वालजेन उन सभी चीजों से छुटकारा पा गया था जो उसे कुछ समय से परेशान कर रही थीं। इस तथ्य ने कि उसने कई परछाइयाँ देखी थीं, उसे थोड़ा नीलापन महसूस होने लगा। बिना किसी परेशानी या घटना के रू प्लूमेट से निकल जाना ही एक अच्छा कदम था। शायद कुछ महीनों के लिए ही सही, विदेश जाना और लंदन के लिए रवाना होना बुद्धिमानी भरा कदम होता। खैर, वे जाएंगे। कोसेट के साथ होने पर उसे क्या फर्क पड़ता था कि वह फ्रांस में है या इंग्लैंड में? कोसेट ही उसका देश थी। कोसेट ही उसकी खुशी के लिए काफी थी; यह विचार कि शायद वह कोसेट की खुशी के लिए काफी नहीं है, वह विचार जो पहले उसके बुखार और नींद न आने का कारण था, अब उसके मन में आता ही नहीं था। वह अपने पिछले सभी कष्टों से टूट चुका था और पूरी तरह आशावादी था। कोसेट उसके साथ थी, वह उसकी ही लगती थी; एक ऐसा भ्रम जिसका अनुभव हर कोई करता है। उसने अपने मन में तरह-तरह के सुखद उपाय करके कोसेट के साथ इंग्लैंड जाने की योजना बनाई और अपनी कल्पना में जहाँ चाहे वहाँ अपनी खुशी को फिर से साकार होते देखा।

जब वह लंबे-लंबे कदम रखते हुए इधर-उधर टहल रहा था, तभी अचानक उसकी नजर किसी अजीब चीज पर पड़ी।

साइडबोर्ड के ऊपर लगे झुके हुए दर्पण में, जो उसके सामने था, उसने निम्नलिखित चार पंक्तियाँ देखीं:—

“मेरी प्यारी, अफसोस! मेरे पिताजी तुरंत निकलने पर जोर दे रहे हैं। हम आज शाम रू डे ल'होमे आर्मे, नंबर 7 में होंगे। एक हफ्ते में हम इंग्लैंड में होंगे। कोसेट। 4 जून।”

जीन वाल्जेन एकदम थका हुआ सा रुक गया।

कोसेट ने आते ही अपनी सोख्ता पर्ची शीशे के सामने वाले साइडबोर्ड पर रख दी थी, और अपने गहरे शोक में डूबी होने के कारण वह उसे वहीं छोड़ कर भूल गई थी।
उसने ध्यान ही नहीं दिया कि पर्ची खुली रह गई थी, ठीक उसी पन्ने पर जिस पर उसने अपनी लिखी चार पंक्तियाँ सूखने के लिए रखी थीं, और जिन्हें उसने रू प्लूमेट के युवा मजदूर को सौंप दिया था। लिखावट सोख्ता पर्ची पर छप गई थी।

दर्पण में लिखावट प्रतिबिंबित हो रही थी।

इसका परिणाम वह था जिसे ज्यामिति में "सममित छवि" कहा जाता है; इस प्रकार, ब्लॉटर पर उल्टा लिखा हुआ दर्पण में सीधा हो गया और अपना स्वाभाविक रूप प्रस्तुत किया; और जीन वालजेन की आंखों के नीचे कोसेट द्वारा पिछली शाम मारियस को लिखा गया पत्र था।

यह सरल और तीखा था।

जीन वाल्जेन दर्पण के सामने खड़ा हुआ। उसने चारों पंक्तियाँ फिर से पढ़ीं, लेकिन उसे उन पर विश्वास नहीं हुआ। ऐसा लगा जैसे वे पंक्तियाँ बिजली की एक चमक में प्रकट हुई हों। यह एक मतिभ्रम था, यह असंभव था। ऐसा नहीं था।

धीरे-धीरे उसकी समझ और स्पष्ट होती गई; उसने कोसेट की सोख्ता कागज़ देखी, और उसे वास्तविकता का आभास हो गया। उसने सोख्ता कागज़ उठाया और बोला: “यह यहीं से आया है।” उसने सोख्ता कागज़ पर छपी चार पंक्तियों को उत्सुकता से देखा, अक्षरों का उलटा क्रम एक अजीब सी लिखावट में बदल गया था, और उसे उसमें कोई अर्थ नहीं दिखा। फिर उसने मन ही मन कहा: “लेकिन इसका कोई अर्थ नहीं है; यहाँ कुछ भी नहीं लिखा है।” और उसने अवर्णनीय राहत के साथ एक लंबी साँस ली। भयानक क्षणों में उन मूर्खतापूर्ण खुशियों का अनुभव किसने नहीं किया है? आत्मा तब तक निराशा के आगे नहीं झुकती जब तक कि वह सभी भ्रमों को समाप्त न कर दे।

उसने सोख्ता कागज हाथ में पकड़ रखा था और मूर्खतापूर्ण आनंद से उसे निहार रहा था, मानो उस भ्रम पर हंसने ही वाला था जिसका वह शिकार हुआ था। अचानक उसकी नजर फिर से दर्पण पर पड़ी, और उसने फिर वही दृश्य देखा। चारों रेखाएं एकदम स्पष्ट रूप से उभरी हुई थीं। इस बार यह कोई मृगतृष्णा नहीं थी। किसी दृश्य का पुनरावर्तन एक वास्तविकता है; यह प्रत्यक्ष था, यह दर्पण में फिर से दिखाई देने वाला लेखन था। वह समझ गया।

जीन वाल्जेन लड़खड़ाते हुए उठा, ब्लॉटिंग पेपर गिरा दिया और बुफे के बगल में रखी पुरानी कुर्सी पर सिर झुकाए, आँखों में खालीपन लिए, घोर हैरानी में डूबा हुआ बैठ गया। उसने खुद से कहा कि यह स्पष्ट है कि दुनिया का प्रकाश हमेशा के लिए अस्त हो गया है, और कोसेट ने यह बात किसी को लिखी थी। तभी उसने अपनी आत्मा को, जो एक बार फिर भयानक हो गई थी, अंधकार में धीमी गर्जना करते हुए सुना। ज़रा सोचो, शेर से उसके पिंजरे में बंद कुत्ते को छीन लेने का क्या असर होता है!

यह कहना अजीब और दुखद है कि ठीक उसी क्षण, मारियस को कोसेट का पत्र नहीं मिला था; संयोगवश वह पत्र मारियस तक पहुँचने से पहले ही जीन वालजेन के पास पहुँच गया था। उस दिन तक, जीन वालजेन किसी भी परीक्षा से पराजित नहीं हुए थे। उन्हें भयानक परीक्षाओं का सामना करना पड़ा था; दुर्भाग्य की कोई भी मार उन्हें नहीं बख्शी थी; भाग्य की क्रूरता, पूरी प्रतिशोध और सामाजिक तिरस्कार से लैस होकर, उन्हें अपना शिकार बना चुकी थी और उन पर कहर बरपा रही थी। जब भी आवश्यक हुआ, उन्होंने हर चरम सीमा को स्वीकार किया; उन्होंने एक सुधरे हुए व्यक्ति के रूप में अपनी पवित्रता का त्याग किया, अपनी स्वतंत्रता को त्याग दिया, अपना सिर जोखिम में डाला, सब कुछ खो दिया, सब कुछ सहा, और वे इतने उदासीन और संयमी बने रहे कि उन्हें एक शहीद की तरह आत्म-वियोग में डूबा हुआ समझा जा सकता था। भाग्य के हर प्रहार को सहने के कारण, उनका विवेक हमेशा के लिए अभेद्य प्रतीत होता था। खैर, जिसने भी उनके आध्यात्मिक स्वरूप को देखा होगा, वह यह स्वीकार करने के लिए बाध्य होगा कि उस क्षण वह कमजोर पड़ गया था। क्योंकि नियति द्वारा तय की गई इस लंबी पूछताछ के दौरान उसने जितने भी कष्ट सहे थे, उनमें से यह सबसे भयानक था। इससे पहले उसे कभी ऐसे शिकंजे में नहीं जकड़ा गया था। उसने अपनी सभी छिपी हुई भावनाओं में एक रहस्यमय हलचल महसूस की। उसने एक अजीब तार के टूटने का आभास किया। हाय! सबसे बड़ी परीक्षा, बल्कि कहें तो एकमात्र परीक्षा, प्रियतम को खोना है।

बेचारे बूढ़े जीन वालजेन कोसेट से पिता के अलावा किसी और रूप में प्रेम नहीं करते थे; लेकिन जैसा कि हमने ऊपर उल्लेख किया है, उनके जीवन के विधवापन ने उनके पितृत्व में प्रेम के सभी रंग भर दिए थे; वे कोसेट को अपनी बेटी की तरह, अपनी माँ की तरह और अपनी बहन की तरह प्यार करते थे; और, चूंकि

उनके पास कभी प्रेम करने के लिए कोई स्त्री या पत्नी नहीं थी, और प्रकृति एक ऐसी लेनदार है जो किसी भी विरोध को स्वीकार नहीं करती, इसलिए वह भावना भी, जिसे खोना सबसे असंभव है, बाकी भावनाओं के साथ मिश्रित थी, अस्पष्ट, अज्ञानी, अंधता की पवित्रता से परिपूर्ण, अचेतन, दिव्य, देवदूत जैसी, दैवीय; एक भावना से कम एक सहज प्रवृत्ति की तरह, एक सहज प्रवृत्ति से कम एक अगोचर और अदृश्य लेकिन वास्तविक आकर्षण की तरह; और सही मायने में, कोसेट के प्रति उनकी अपार कोमलता में प्रेम पहाड़ में छिपे सोने के धागे की तरह था, छिपा हुआ और पवित्र।

पाठक उस हृदयीय स्थिति को याद करें जिसका हमने पहले ही उल्लेख किया है। उनके बीच विवाह संभव नहीं था; आत्माओं का भी नहीं; फिर भी, यह निश्चित है कि उनका भाग्य एक दूसरे से जुड़ा हुआ था। कोसेट को छोड़कर, यानी बचपन को छोड़कर, जीन वालजेन ने अपने पूरे लंबे जीवन में कभी भी प्रेम का अनुभव नहीं किया था। एक के बाद एक आने वाले जुनून और प्रेम ने उनमें वह निरंतर हरापन, कोमल हरा या गहरा हरा, उत्पन्न नहीं किया था जो सर्दियों से गुजरने वाले पत्तों में और पचास वर्ष से अधिक उम्र के पुरुषों में देखा जा सकता है। संक्षेप में, और हमने इस पर एक से अधिक बार जोर दिया है, यह सारा आंतरिक मिलन, यह सब कुछ, जिसका कुल योग एक उच्च सद्गुण था, अंततः जीन वालजेन को कोसेट का पिता बना दिया। एक विचित्र पिता, जो जीन वालजेन में विद्यमान दादा, पुत्र, भाई और पति से बना था; एक ऐसा पिता जिसमें एक माँ भी समाहित थी; एक पिता जो कोसेट से प्यार करता था और उसे बहुत चाहता था, और जो उस बच्ची को अपनी रोशनी, अपना घर, अपना परिवार, अपना देश, अपना स्वर्ग मानता था।

जब उसने देखा कि अंत बिल्कुल आ गया है, कि वह उससे दूर जा रही है, कि वह उसके हाथों से फिसल रही है, कि वह उससे दूर बह रही है, बादल की तरह, पानी की तरह, जब उसकी आँखों के सामने यह दिल दहला देने वाला सबूत था: “उसके दिल का लक्ष्य कोई और है, उसके जीवन की इच्छा कोई और है; कोई और है जो उसे सबसे प्यारी है, मैं अब उसका पिता मात्र हूँ, मेरा कोई अस्तित्व नहीं है;” जब उसे अब कोई संदेह नहीं रहा, जब उसने खुद से कहा: “वह मुझसे दूर जा रही है!” तो उसका दुख कल्पना की सीमाओं को पार कर गया। उसने जो कुछ भी किया, उसका अंत इस तरह होना! और कुछ भी न होने का विचार ही! फिर, जैसा कि हमने अभी कहा, विद्रोह की एक लहर उसके सिर से पैर तक दौड़ गई। उसने अपने बालों की जड़ों

तक में अहंकार का जबरदस्त पुनरुत्थान महसूस किया, और उस व्यक्ति के भीतर का “मैं” चीख उठा।

आंतरिक भावनाओं का अचानक टूट जाना भी एक स्थिति होती है। निराशा का यह भाव मनुष्य के भीतर तब तक प्रवेश नहीं करता जब तक वह उसके कुछ गहरे तत्वों को कुचलकर तोड़ न दे, जो कभी-कभी स्वयं मनुष्य ही होते हैं। जब दुःख इस रूप में प्रकट होता है, तो वह अंतरात्मा की सभी शक्तियों का अनियंत्रित पलायन होता है। ये घातक संकट होते हैं। हममें से कुछ ही लोग इनसे उबरकर अपने मूल स्वरूप में और कर्तव्यनिष्ठ बने रह पाते हैं। जब सहनशीलता की सीमा पार हो जाती है, तो सबसे शांत स्वभाव वाला सद्गुण भी विचलित हो जाता है। जीन वालजेन ने फिर से कागज उठाया और स्वयं को नए सिरे से आश्वस्त किया; वह उन चार निर्दोष पंक्तियों पर झुका हुआ, मानो पत्थर की तरह स्थिर और टकटकी लगाए बैठा रहा; और उसके भीतर ऐसा अंधकार छा गया कि मानो उसकी आत्मा का सब कुछ बिखर रहा हो।

उसने इस रहस्योद्घाटन का विश्लेषण, कल्पना की अतिशयोक्तियों से परे, एक स्पष्ट और भयावह शांति के साथ किया, क्योंकि यह एक भयावह बात है जब किसी व्यक्ति की शांति मूर्ति की शीतलता तक पहुँच जाती है।

उसने उस भयानक कदम को महसूस किया जो उसकी नियति ने बिना किसी आशंका के उठाया था; उसे पिछली गर्मियों के अपने डर याद आए, जो उसने मूर्खतापूर्ण ढंग से दूर कर दिए थे; उसने खाई को पहचान लिया, वह अभी भी वैसी ही थी; बस, जीन वालजेन अब कगार पर नहीं था, वह उसके तल पर था।

इस घटना की सबसे अभूतपूर्व और हृदयविदारक बात यह थी कि वह बिना अहसास किए ही गिर पड़ा था। उसके जीवन का सारा प्रकाश थम गया था, जबकि उसे अब भी ऐसा लग रहा था मानो वह सूर्य को देख रहा हो।

उसकी अंतरात्मा ने जरा भी संकोच नहीं किया। उसने कुछ खास परिस्थितियों, कुछ खास तारीखों, कोसेट के चेहरे पर आई शर्मिंदगी और चेहरे की कुछ खास पीलापन को एक साथ जोड़ा और खुद से कहा: "यह वही है।"

निराशा की भविष्यवाणी एक रहस्यमय धनुष की तरह है जो कभी अपना निशाना नहीं चूकता। उसने अपने पहले अनुमान से मारियस को चौंका दिया। वह नाम तो नहीं जानता था, लेकिन उसने उस आदमी को तुरंत पहचान लिया। अपनी यादों के अटूट जाल

के बीच, उसने लक्ज़मबर्ग के उस अज्ञात लुटेरे को स्पष्ट रूप से देखा, प्रेम-प्रसंगों का वह अभागा खोजी, रोमांस का वह आलसी, वह मूर्ख, वह कायर, क्योंकि उन युवा लड़कियों को घूरना कायरता है जिनके पास उनका प्यार करने वाला पिता मौजूद है।

जब उसने इस तथ्य की पूरी तरह से पुष्टि कर ली कि इस स्थिति की जड़ में यही युवक था, और सब कुछ उसी की ओर से उत्पन्न हुआ था, तो जीन वाल्जेन, जो एक पुनर्जीवित व्यक्ति था, जिसने अपनी आत्मा पर इतना परिश्रम किया था, जिसने जीवन के सभी दुखों, सभी पीड़ाओं और सभी कष्टों को प्रेम में परिवर्तित करने के लिए इतने प्रयास किए थे, उसने अपने भीतर झांका और वहाँ घृणा नामक एक प्रेत को देखा।

गहरे दुःखों में उदासी का भाव समाया होता है। वे जीवन से विमुख कर देते हैं। जिस व्यक्ति पर ये दुःख आते हैं, उसे लगता है कि उसके भीतर से कुछ छिन्न-भिन्न हो रहा है। जवानी में इनका आगमन दुखद होता है; बाद में ये भयावह हो जाते हैं। अफसोस, अगर निराशा तब भयानक होती है जब खून में गर्मी होती है, बाल काले हो चुके होते हैं, सिर शरीर पर मशाल की लौ की तरह सीधा होता है, जब भाग्य का चक्र अभी भी अपने चरम पर होता है, जब दिल, वांछित प्रेम से भरा हुआ, अभी भी धड़कने को तैयार होता है, जब सुधार के लिए समय होता है, जब सभी स्त्रियाँ, सभी मुस्कानें, सारा भविष्य और सारा क्षितिज सामने होता है, जब जीवन की शक्ति पूर्ण होती है, तो बुढ़ापे में क्या होता है, जब वर्ष तेजी से बीतते हैं, और धुंधले होते जाते हैं, उस गोधूलि बेला की ओर जब व्यक्ति कब्र के तारों को देखने लगता है?

जब वह ध्यान कर रहा था, तभी टूसेंट अंदर आई। जीन वालजेन उठा और उससे पूछा:—

“यह किस तिमाही में है? क्या आपको पता है?”

टौसेंट अवाक रह गया और केवल इतना ही उत्तर दे सका:—

“क्या बात है, महोदय?”

जीन वाल्जेन ने फिर से कहना शुरू किया: "क्या आपने मुझे अभी-अभी नहीं बताया कि यहाँ लड़ाई चल रही है?"

“अहा! जी हाँ, श्रीमान,” टूसेंट ने उत्तर दिया। “यह सेंट-मेरी की दिशा में है।”

हमारे विचारों की गहराई से, अचेतन रूप से, एक यांत्रिक गति उत्पन्न होती है। निस्संदेह, इसी प्रकार की किसी प्रेरणा से प्रेरित होकर, जिसके बारे में जीन वालजेन को शायद ही पता था, पाँच मिनट बाद वह खुद को सड़क पर पाया।

बिना सिर ढके, वह अपने घर के दरवाजे पर लगे पत्थर के खंभे पर बैठा था। ऐसा लग रहा था मानो वह कुछ सुन रहा हो।

रात हो चुकी थी।

II. गली का बच्चा प्रकाश का शत्रु

वह कब तक इसी अवस्था में रहा? इस दुखद चिंतन का उतार-चढ़ाव कैसा था? क्या वह सीधा खड़ा हुआ? क्या वह झुका ही रहा? क्या वह टूटने की कगार पर पहुँच गया था? क्या वह अब भी उठकर अपने अंतरात्मा में किसी ठोस आधार पर फिर से स्थिर हो सकता था? शायद वह खुद भी इसका जवाब नहीं दे पाता।

गली सुनसान थी। कुछ बेचैन बुर्जुआ, जो तेज़ी से घर लौट रहे थे, उन्होंने उसे मुश्किल से ही देखा। संकट के समय हर कोई अपनी जान बचाने में लगा रहता है। लैंप जलाने वाला हमेशा की तरह नंबर 7 के दरवाजे के ठीक सामने स्थित लालटेन जलाने आया और फिर चला गया। उस अंधेरे में जीन वालजेन को देखने वाला कोई भी व्यक्ति उसे जीवित व्यक्ति नहीं मानता। वह अपने दरवाजे के खंभे पर बर्फ की तरह स्थिर बैठा था। निराशा में एक तरह का जमाव होता है। खतरे की घंटियाँ और एक अस्पष्ट और तूफानी शोर सुनाई दे रहा था। विद्रोह के साथ मिली हुई घंटियों की इन सभी गड़गड़ाहट के बीच, सेंट-पॉल की घड़ी ने ग्यारह बजे, गंभीरता से और बिना किसी जल्दबाजी के; क्योंकि खतरे की घंटी मनुष्य है; घंटा ईश्वर है। घंटे के बीतने का जीन वालजेन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा; जीन वालजेन हिला तक नहीं। फिर भी, लगभग उसी क्षण, हॉल्स की दिशा में एक तेज धमाका हुआ, उसके बाद दूसरा और भी अधिक हिंसक धमाका हुआ; संभवतः यह वही हमला था जो रुए डे ला चानवरेरी में बैरिकेड पर हुआ था, जिसे मारियस ने अभी-अभी विफल किया था। इस दोहरे हमले से, जिसकी तीव्रता रात के सन्नाटे से और भी बढ़ गई थी, जीन वालजेन चौंक गया; वह उठा और उस दिशा की ओर मुड़ा जहाँ से शोर आ रहा था; फिर वह वापस खंभे पर गिर पड़ा, अपनी बाहें मोड़ लीं और धीरे-धीरे अपना सिर फिर से अपनी छाती पर रख लिया।

उसने फिर से अपने आप से निराशा भरी बातचीत शुरू कर दी।

अचानक उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं; कोई सड़क पर चल रहा था, उसे अपने पास कदमों की आहट सुनाई दी। उसने देखा, और लालटेन की रोशनी में, रू-ऑक्स-आर्काइव्स की ओर जाने वाली सड़क की दिशा में, उसे एक युवा, उग्र और चमकता हुआ चेहरा दिखाई दिया।

गैवरोचे अभी रुए डे ल'होमे आर्मे में पहुंचे थे।

गैवरोश हवा में टकटकी लगाए देख रहा था, मानो किसी चीज़ की तलाश कर रहा हो।
उसने जीन वालजेन को अच्छी तरह देखा, लेकिन उस पर ध्यान नहीं दिया।

गैवरोश ने हवा में घूरने के बाद नीचे देखा; वह अपने पंजों के बल खड़ा हुआ और भूतल के दरवाजों और खिड़कियों को टटोला; वे सभी बंद, कुंडी लगे और ताले से जकड़े हुए थे। इस तरह से पांच-छह बंद घरों के अग्रभागों की जाँच करने के बाद, उस लड़के ने अपने कंधे उचकाए और खुद को इन शब्दों में दोषी ठहराया:—

"बत्तख!"

फिर वह दोबारा हवा में घूरने लगा।

जीन वाल्जेन, जो कुछ क्षण पहले अपनी उस समय की मानसिक स्थिति में किसी से बात भी नहीं करते या किसी को जवाब भी नहीं देते, उस बच्चे से बात करने के लिए अनियंत्रित रूप से प्रेरित महसूस करने लगे।

“क्या बात है, मेरे नन्हे साथी?” उसने कहा।

“मेरी समस्या यह है कि मुझे भूख लगी है,” गैवरोश ने स्पष्टवादिता से उत्तर दिया। और उसने आगे कहा: “तुम्हें भी भूख लगी है।”

जीन वाल्जेन ने अपनी जेब में हाथ डाला और उसमें से पांच फ्रैंक का सिक्का निकाला।

लेकिन गैवरोश, जो वैगटेल प्रजाति का था और जो एक हावभाव से दूसरे हावभाव में फुर्ती से उछलता-कूदता रहता था, उसने अभी-अभी एक पत्थर उठाया था। उसकी नज़र लालटेन पर पड़ी थी।

“देखो यहाँ,” उसने कहा, “तुम्हारे पास अभी भी यहाँ लालटेनें हैं। मेरे दोस्त, तुम नियमों का उल्लंघन कर रहे हो। यह अव्यवस्था है। इसे मेरे लिए तोड़ दो।”

और उसने लालटेन पर पत्थर फेंका, जिसका टूटा हुआ शीशा इतनी ज़ोर से गिरा कि सामने वाले घर में अपने पर्दों के पीछे छिपे हुए बुर्जुआ चिल्ला उठे: "देखो, 'तिरानवे' फिर से आ गया है।"

लालटेन तेज़ी से हिलने लगी और बुझ गई। सड़क अचानक अंधेरी हो गई।

"हाँ, बिल्कुल सही, पुराने दोस्तों," गैवरोश ने उत्साह से कहा, "अपनी नाइट कैप पहन लो।"
और जीन वालजेन की ओर मुड़ते हुए:—
“सड़क के आखिर में जो विशालकाय स्मारक है, उसे आप क्या कहते हैं? वो अभिलेखागार है, है ना? मुझे उन बड़े-बड़े खंभों को थोड़ा तोड़कर उनसे एक बढ़िया बैरिकेड बनाना होगा।”
जीन वाल्जेन ने गैवरोश का कार्यभार संभाला।
“बेचारा प्राणी,” उसने धीमी आवाज़ में कहा और मन ही मन बोला, “वह भूखा है।” और उसने सौ सू का सिक्का उसके हाथ में रख दिया।
गैवरोश ने अपना चेहरा ऊपर उठाया, इस सू के आकार को देखकर वह अचंभित था; उसने अंधेरे में इसे घूर कर देखा, और बड़े सू की सफेदी ने उसकी आँखों को चकाचौंध कर दिया। वह पाँच फ़्रैंक के सिक्कों के बारे में सुनी-सुनाई बातों से जानता था; उनकी प्रतिष्ठा उसके लिए सुखद थी; पास में एक सिक्का देखकर वह प्रसन्न हुआ। उसने कहा:—
आइए बाघ पर विचार करें।
वह कुछ मिनटों तक उस सिक्के को भावविभोर होकर देखता रहा; फिर जीन वाल्जेन की ओर मुड़कर उसने सिक्का उसे देते हुए बड़े ही प्रभावशाली ढंग से कहा:— “बुर्जुआ, मुझे लालटेन तोड़ना ज़्यादा पसंद है। अपना वह खूंखार जानवर वापस ले जाओ। तुम मुझे रिश्वत नहीं दे सकते। उसके पाँच पंजे हैं; लेकिन वह मुझे खरोंच नहीं सकता।”
“क्या तुम्हारी माँ है?” जीन वाल्जेन ने पूछा।
गैवरोश ने उत्तर दिया:—
"शायद आपके पास जितना है उससे अधिक।"
“अच्छा,” जीन वाल्जेन ने जवाब दिया, “ये पैसे अपनी माँ के लिए रख लो!” गैवरोश भावुक हो गया। इसके अलावा, उसने अभी-अभी देखा था कि उससे बात करने वाले व्यक्ति ने टोपी नहीं पहनी हुई थी, और इससे उसे आत्मविश्वास मिला।

“सचमुच,” उसने कहा, “तो क्या यह मुझे लालटेन तोड़ने से रोकने के लिए नहीं था?”
"जो चाहो तोड़ दो।"
"आप एक बेहतरीन आदमी हैं," गैवरोश ने कहा।
और उसने पांच फ्रैंक का सिक्का अपनी एक जेब में रख लिया।
उनका आत्मविश्वास बढ़ने पर उन्होंने आगे कहा:—
क्या तुम इस गली में रहने लायक हो?
“हां, क्यों?”
"क्या आप मुझे बता सकते हैं कि नंबर 7 कहाँ है?"
"नंबर 7 से आपको क्या चाहिए?"
यहाँ बच्चा रुक गया, उसे डर था कि उसने कुछ ज्यादा ही बोल दिया है; उसने अपने नाखूनों को जोर से अपने बालों में गड़ाया और जवाब देकर संतुष्ट हो गया:—
“आह! यह रहा।”
जीन वाल्जेन के मन में एक विचार कौंधा। पीड़ा में भी ऐसी चमक होती है। उसने लड़के से कहा:—
"क्या आप वही व्यक्ति हैं जो वह पत्र ला रहे हैं जिसका मुझे इंतजार है?" “तुम?” गैवरोश ने कहा। “तुम औरत नहीं हो।”
"यह पत्र मैडमोजेल कोसेट के लिए है, है ना?"
“कोसेट,” गैवरोश ने बुदबुदाते हुए कहा। “हाँ, मुझे लगता है कि यही समलैंगिक नाम है।”
“ठीक है,” जीन वाल्जेन ने बात जारी रखते हुए कहा, “मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसे आपको यह पत्र देना है। इसे यहाँ दे दीजिए।”
"ऐसे में आपको यह पता होना चाहिए कि मुझे बैरिकेड से भेजा गया था।" “बिल्कुल,” जीन वालजेन ने कहा।

गैवरोश ने अपना हाथ अपनी दूसरी जेब में डाला और चार हिस्सों में मोड़ा हुआ एक कागज निकाला।
फिर उन्होंने सैन्य सलामी दी।
उन्होंने कहा, "संदेशों का सम्मान करना चाहिए। यह अंतरिम सरकार की ओर से आता है।"
“मुझे दे दो,” जीन वालजेन ने कहा।
गैवरोश ने कागज को अपने सिर के ऊपर उठा रखा था।
“इसे प्रेम पत्र समझने की गलती मत करो। यह एक महिला के लिए है, लेकिन यह आम लोगों के लिए है। हम पुरुष लड़ते हैं और महिलाओं का सम्मान करते हैं। हम उन सभ्य समाजों की तरह नहीं हैं, जहाँ शेर ऊँटों के पास मुर्गियाँ भेजते हैं।”
"इसे मुझे दे दो।"
"आखिरकार," गैवरोश ने आगे कहा, "आप एक ईमानदार आदमी की तरह दिखते हैं।" मुझे जल्दी दो।
इसे पकड़ लो।
और उसने वह कागज जीन वाल्जेन को सौंप दिया।
"और जल्दी कीजिए, महाशय, आपका नाम क्या है, क्योंकि मैमसेल कोसेट आपका इंतजार कर रही हैं।"
गैवरोश इस टिप्पणी को करने पर स्वयं से संतुष्ट थे।
जीन वालजेन ने फिर से शुरू किया:—
"क्या इसका उत्तर सेंट-मेरी को भेजा जाना है?"
“आप लोग यहाँ पर उन पेस्ट्री के टुकड़ों को बना रहे हैं जिन्हें भद्दे शब्दों में ब्रियोश कहा जाता है। यह पत्र रुए डे ला चानवरेरी के बैरिकेड से आया है, और मैं वहीं वापस जा रहा हूँ। शुभ संध्या, नागरिक।”
इतना कहकर गैवरोश वहां से चला गया, या यूं कहें कि किसी भागे हुए पक्षी की तरह उड़कर उसी दिशा में चला गया जहां से आया था। मानो उसने अंधेरे में छेद

कर दिया हो, किसी प्रक्षेप्य की तरह तेज़ी से; ल'होमे आर्मे की गली फिर से शांत और सुनसान हो गई; पलक झपकते ही, वह अजीब बच्चा, जिसमें परछाई और सपने का कुछ अंश था, काले मकानों की कतारों के कोहरे में गायब हो गया, और वहां धुएं की तरह अंधेरे में खो गया; और कोई सोच सकता था कि वह गायब हो गया है, अगर उसके गायब होने के कुछ मिनट बाद कांच के टूटने की एक ज़ोरदार आवाज़ न हुई होती, और फुटपाथ पर लालटेन के गिरने की ज़ोरदार आवाज़ ने एक बार फिर नाराज़ बुर्जुआ वर्ग को अचानक न जगा दिया होता। यह गैवरोश था जो रू डू चाउम से गुज़र रहा था।

III. जब कोसेट और टूसेंट सो रहे हों

जीन वाल्जेन मारियस का पत्र लेकर घर में दाखिल हुआ।

वह अंधेरे में शिकार को पकड़ते उल्लू की तरह तल्लीन होकर सीढ़ियों पर चढ़ गया, धीरे से दरवाजा खोला और बंद किया, यह देखने के लिए कान लगाए कि कोई आवाज़ तो नहीं आ रही—यह सुनिश्चित किया कि कोसेट और टूसेंट सो रहे हैं, और कांपते हाथों से चिंगारी निकलने से पहले ही उसने फ्यूमाडे लाइटर की बोतल में तीन-चार माचिस की तीलियाँ डाल दीं। उसने जो किया था, वह चोरी जैसा लग रहा था। आखिरकार मोमबत्ती जल उठी; उसने कोहनियों को मेज पर टिकाया, अखबार खोला और पढ़ने लगा।

तीव्र भावनाओं में, व्यक्ति पढ़ता नहीं है, मानो हाथ में पकड़े कागज को ज़मीन पर फेंक देता है, उसे किसी शिकार की तरह पकड़ता है, उसे कुचल देता है, उसमें अपने क्रोध या आनंद के नाखून गड़ा देता है; अंत की ओर जल्दी करता है, शुरुआत की ओर छलांग लगाता है; ध्यान तीव्र गति से चलता है; यह स्थूल रूप से, मानो, आवश्यक बिंदुओं को ग्रहण करता है; यह एक बिंदु पर अटक जाता है, और बाकी सब गायब हो जाता है। मारियस के कोसेट को लिखे पत्र में, जीन वालजेन ने केवल ये शब्द देखे:—

मैं मर रहा हूँ। जब तुम इसे पढ़ोगे, मेरी आत्मा तुम्हारे निकट होगी।

इन दो पंक्तियों को देखकर वह बुरी तरह चकित रह गया; वह एक पल के लिए वहीं रुक गया, मानो उसके भीतर हो रहे भावनात्मक परिवर्तन से वह चकनाचूर हो गया हो; उसने एक मदहोश विस्मय के साथ मारियस के नोट को देखा; उसकी आँखों के सामने वह भव्यता थी, एक घृणित व्यक्ति की मृत्यु।

उसने अंतर्मन की खुशी से एक भयानक चीख मारी। सब कुछ खत्म हो गया था। तबाही उसकी उम्मीद से कहीं पहले आ गई थी। जो उसकी किस्मत में रुकावट बन रहा था, वह गायब हो रहा था। वह आदमी अपनी मर्जी से, स्वतंत्र रूप से, स्वेच्छा से चला गया था। वह आदमी अपनी मौत की ओर बढ़ रहा था, और जीन वालजेन का इसमें कोई हाथ नहीं था, और यह उसकी गलती भी नहीं थी। शायद, वह पहले ही मर चुका है। यहाँ उसका बुखार उसके दिमाग में घूमने लगा। नहीं, वह अभी मरा नहीं है। यह

पत्र स्पष्ट रूप से कोसेट के लिए अगली सुबह पढ़ने के लिए था; ग्यारह बजे से आधी रात के बीच सुनी गई दो गोलियों की आवाज़ के बाद, और कुछ नहीं हुआ है; सुबह होने तक बैरिकेड पर कोई गंभीर हमला नहीं होगा; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, जिस क्षण से "वह आदमी" इस युद्ध में शामिल होता है, वह खो जाता है; वह जाल में फंस जाता है। जीन वालजेन ने खुद को मुक्त महसूस किया। तो वह एक बार फिर कोसेट के साथ अकेले होने वाला था। प्रतिद्वंद्विता समाप्त हो जाएगी; भविष्य फिर से शुरू हो रहा था। उसे बस यह नोट अपनी जेब में रखना था। कोसेट को कभी पता नहीं चलेगा कि उस आदमी का क्या हुआ। अब बस यही करना है कि जो होना है वो होने दो। यह आदमी बच नहीं सकता। अगर वह अभी तक मरा नहीं है, तो निश्चित है कि वह मरने ही वाला है। कितना अच्छा भाग्य!

ये सब बातें मन ही मन कहने के बाद वह उदास हो गया।

फिर वह नीचे गया और चौकीदार को जगाया।

लगभग एक घंटे बाद, जीन वालजेन नेशनल गार्ड की पूरी वर्दी में अपने हथियारों के साथ बाहर निकला। कुली ने आस-पास ही आसानी से उसका सारा सामान जुटा लिया था। उसके पास एक भरी हुई बंदूक और कारतूसों से भरी एक पेटी थी।

वह बाजारों की दिशा में तेजी से आगे बढ़ गया।

IV. गैवरोश का अति उत्साह

इसी बीच , गैवरोश एक रोमांचक यात्रा पर निकल पड़ा था।

गवरोश ने रू डू चाउम में लालटेन पर पत्थर फेंकने के बाद , रू डेस विएइल्स - हौड्रिएट्स में प्रवेश किया , और वहाँ "एक बिल्ली भी " न देखकर , उसने अपने सारे गाने गाने का अच्छा मौका समझा। उसके गाने से उसकी चाल धीमी होने के बजाय और तेज़ हो गई। वह सोए हुए या डरे हुए घरों के बीच ये भड़काऊ दोहे गाने लगा :—

[illegible], [illegible]?

[illegible], [illegible],
[illegible]
[illegible],
[illegible],
[illegible]

[illegible],
[illegible]
[illegible]
[illegible],
[illegible]

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]?

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]

[illegible], [illegible], [illegible]?

□□□, □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□! □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□?

शाम को , जब मैं घुड़सवारी से उतरता हूँ , तो मैं तारों की ओर स्टेला की तरफ इशारा करते हुए कहता हूँ : ‘उसे देखो। ’ खूबसूरत लड़कियाँ कहाँ जाती हैं ? वो रही।

गाते समय गैवरोश ने अपने हावभाव का भरपूर इस्तेमाल किया। उनके भाव -भंगिमा ही इस गीत की मुख्य विशेषता है। उनका चेहरा , जो अनगिनत मुखौटों का भंडार था , ऐसे विकृत चेहरे बना रहा था जो तेज़ आंधी में फटे कपड़े से भी ज़्यादा भयानक और अटपटे थे। दुर्भाग्यवश , चूंकि वे अकेले थे और रात का समय था , इसलिए यह न तो किसी ने देखा और न ही किसी को दिखाई दिया। ऐसी प्रतिभा का दुरुपयोग कभी -कभी हो जाता है।

अचानक ही वह रुक गया।

उन्होंने कहा , "चलिए इस रोमांस को रोकते हैं। "

उसकी बिल्ली जैसी पैनी नजर ने अभी -अभी एक गाड़ी के दरवाजे के खांचे में , चित्रकला में जिसे 'समन्वित ' कहा जाता है , उसे देखा था , अर्थात् एक व्यक्ति और एक वस्तु ; वस्तु एक हाथगाड़ी थी , और व्यक्ति औवरगेन का एक आदमी था जो उसमें सो रहा था।

गाड़ी के डंडे फुटपाथ पर टिके हुए थे , और औवेर्गनाट का सिर गाड़ी के आगे वाले हिस्से से टिका हुआ था। उसका शरीर इस झुकी हुई सतह पर कुंडली मारकर बैठा हुआ था और उसके पैर जमीन को छू रहे थे।

गैवरोश ने इस दुनिया के अनुभवों से एक शराबी आदमी को पहचान लिया। वह किसी कोने का दुकानदार था जिसने बहुत ज्यादा शराब पी ली थी और बहुत ज्यादा सो रहा था।

“अब ठीक है ,” गैवरोश ने सोचा , “गर्मियों की रातें इसी काम आती हैं। हम गणतंत्र के लिए गाड़ी ले जाएंगे और राजशाही के लिए औवेर्गनाट छोड़ देंगे। ”

उसके दिमाग में अभी -अभी प्रकाश की एक चमक से रोशनी जगमगा उठी थी :

"हमारी बैरिकेड पर वह ठेला कितना शानदार लगेगा !"

औवेर्गनाट खर्राटे ले रहा था।

गैवरोश ने धीरे से पीछे से गाड़ी को खींचा और आगे से औवेर्गनाट को, यानी उसके पैरों से, खींचा और एक और मिनट बीतने पर अविचलित औवेर्गनाट फुटपाथ पर सीधा लेट गया।

ठेला मुफ्त था।

गैवरोश, जो हर तरफ अप्रत्याशित परिस्थितियों का सामना करने का आदी था, पूरी तरह तैयार था। उसने अपनी एक जेब में हाथ डाला और उसमें से कागज का एक टुकड़ा और एक लाल पेंसिल निकाली, जो उसने किसी बढ़ई से चुराई थी।

उन्होंने लिखा:—

फ्रांसीसी गणराज्य।

तुम्हारी गाड़ी प्राप्त हुई

गैवरोचे.

यह सब करने के बाद, उसने कागज को अभी भी खर्राटे ले रहे औवेर्गनाट की मखमली बनियान की जेब में रख दिया, दोनों हाथों से गाड़ी के डंडे पकड़े और हॉल्स की दिशा में चल पड़ा, गाड़ी को अपने आगे एक शानदार और विजयी शोर के साथ तेज गति से धकेलते हुए।

यह खतरनाक था। रॉयल प्रिंटिंग एस्टैब्लिशमेंट में एक पद खाली था। गैवरोश ने इस बारे में सोचा ही नहीं था। यह पद उपनगरों के नेशनल गार्ड्स के कब्जे में था। दस्ता जागने लगा और कैंप बेड से सिर उठने लगे। एक के बाद एक दो स्ट्रीट लैंप टूट गए, और वो गीत पूरी ताकत से गाया जाने लगा। उन डरपोक गलियों के लिए यह बहुत बड़ी बात थी, जो सूर्यास्त के समय सोना चाहती हैं और इतनी जल्दी अपनी मोमबत्तियों को बुझा देती हैं। पिछले एक घंटे से, वह लड़का उस शांत इलाके में शोर मचा रहा था, मानो किसी बोतल में बंद मक्खी का शोर हो। उपनगर के सार्जेंट ने ध्यान से सुना। वह इंतजार करता रहा। वह एक समझदार आदमी था।

गाड़ियों की बेतहाशा खड़खड़ाहट सुनकर, जो प्रतीक्षा की सीमा से अधिक भरी हुई थीं, सार्जेंट ने एक टोही अभियान चलाने का फैसला किया।

“वहाँ तो उनका पूरा झुंड है!” उसने कहा, “चलो धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं।”

यह स्पष्ट था कि अराजकता का राक्षस अपने पिंजरे से बाहर निकल आया था और वह पूरे इलाके में आतंक मचा रहा था।
और सार्जेंट ने सतर्कता से कदम बढ़ाते हुए चौकी से बाहर कदम रखा।
अचानक, गैवरोश, जो अपनी गाड़ी को आगे धकेल रहा था, और ठीक उसी क्षण जब वह रू डेस विएइल्स-हौड्रिएट्स में मुड़ने वाला था, खुद को एक वर्दीधारी व्यक्ति, एक शको (टोपी), एक पंख और एक बंदूक के सामने पाया।
दूसरी बार भी वह अचानक रुक गया।
“हेलो,” उसने कहा, “मैं हूँ। शुभ दिन, सार्वजनिक व्यवस्था।”
गैवरोश का आश्चर्य हमेशा संक्षिप्त होता था और शीघ्र ही समाप्त हो जाता था।
“कहां जा रहे हो बदमाश?” सार्जेंट चिल्लाया।
गैवरोश ने पलटवार करते हुए कहा, "नागरिक, मैंने अभी तक तुम्हें 'बुर्जुआ' नहीं कहा है। तुम मेरा अपमान क्यों कर रहे हो?"
“तुम कहाँ जा रहे हो, बदमाश?”
"महाशय," गैवरोश ने पलटवार करते हुए कहा, "शायद कल आप एक बुद्धिमान व्यक्ति थे, लेकिन आज सुबह आप पतित हो गए हैं।"
“मैं तुमसे पूछता हूँ, तुम कहाँ जा रहे हो, दुष्ट?”
गैवरोश ने उत्तर दिया:—
“आप बहुत सुंदर बोलती हैं। सच में, कोई भी आपको आपकी उम्र का अंदाजा नहीं लगा सकता। आपको अपने सारे बाल सौ फ्रैंक प्रति बाल के हिसाब से बेच देने चाहिए। इससे आपको पाँच सौ फ्रैंक मिल जाएँगे।”
“तुम कहाँ जा रहे हो? तुम कहाँ जा रहे हो? तुम कहाँ जा रहे हो, डाकू?” गैवरोश ने फिर पलटवार किया:—
“कितने घिनौने शब्द हैं! जब वे तुम्हें पहली बार चूसने दें तो तुम्हें अपना मुंह अच्छे से साफ कर लेना चाहिए।”
सार्जेंट ने अपनी संगीन नीचे कर ली।

"क्या तुम मुझे बताओगे कि तुम कहाँ जा रहे हो, दुष्ट?"

गैवरोश ने कहा, "जनरल, मैं अपनी पत्नी के लिए डॉक्टर ढूंढने जा रहा हूं, जो प्रसव पीड़ा में है।"

“हथियार उठाओ!” सार्जेंट ने चिल्लाकर कहा।

शक्तिशाली पुरुषों की सबसे बड़ी खूबी यह होती है कि वे उन्हीं साधनों से खुद को बचाते हैं जिन्होंने उन्हें बर्बाद किया है; गैवरोश ने पूरी स्थिति को एक नज़र में समझ लिया। वही गाड़ी उसके खिलाफ़ खड़ी हुई थी, और वही गाड़ी उसकी रक्षा करने वाली थी।

जिस क्षण सार्जेंट गैवरोश पर हमला करने ही वाला था, उसी समय गाड़ी, जो एक प्रक्षेप्य में परिवर्तित होकर गैवरोश की पूरी ताकत से चलाई गई थी, उस पर उग्रता से लुढ़क गई, और सार्जेंट के पेट में जोरदार चोट लगी, जिससे वह पीछे की ओर नाले में गिर गया, जबकि उसकी बंदूक हवा में चल गई।

सार्जेंट की चीख सुनकर चौकी के जवान बेतहाशा बाहर भागे; गोली चलने की आवाज से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू हो गई, जिसके बाद उन्होंने अपने हथियार फिर से भर लिए और दोबारा शुरू कर दिया।

अंधाधुंध गोलीबारी का यह सिलसिला पंद्रह मिनट तक चला और इसमें कांच के कई शीशे टूट गए।

इसी बीच, गैवरोश, जो पूरी गति से अपने कदमों के निशान पर वापस लौट आया था, पांच या छह गलियों की दूरी पर रुक गया और हांफते हुए उस पत्थर के खंभे पर बैठ गया जो एनफैंट्स-रूज के कोने का निर्माण करता है।

उसने सुना।

कुछ मिनट तक हांफने के बाद, वह उस दिशा में मुड़ा जहां से गोलियों की बौछार हो रही थी, उसने अपना बायां हाथ अपनी नाक के स्तर तक उठाया और उसे तीन बार आगे की ओर धकेला, साथ ही अपने दाहिने हाथ से अपने सिर के पिछले हिस्से पर थप्पड़ मारा; यह एक दबंग हावभाव था जिसमें पेरिस के गली-मोहल्ले के बच्चों ने फ्रांसीसी व्यंग्य को समाहित कर लिया था, और जो स्पष्ट रूप से प्रभावी है, क्योंकि यह पहले ही आधी सदी तक कायम रह चुका है।

इस उल्लास में एक कड़वी याद ने खलल डाल दिया।

“हाँ,” उसने कहा, “मैं हँसी से लोटपोट हो रहा हूँ, मैं खुशी से झूम रहा हूँ, मैं आनंद से भरा हुआ हूँ, लेकिन मैं रास्ता भटक रहा हूँ, मुझे घूमकर जाना पड़ेगा। काश मैं समय रहते बैरिकेड तक पहुँच जाऊँ!”

इसके बाद वह फिर से दौड़ने के लिए निकल पड़ा।

और जैसे ही वह भागा:—

“अरे हाँ, वैसे मैं कहाँ था?” उसने कहा।

और जैसे ही वह तेजी से गलियों से गुजरा, उसने अपना गीत फिर से शुरू कर दिया, और यही वह गीत था जो अंधकार में गुम हो गया:—

[illegible],
[illegible]
[illegible],
[illegible]

[illegible]?
[illegible]
[illegible]
[illegible],
[illegible]

[illegible], [illegible],
[illegible]
[illegible]
[illegible],
[illegible]

[illegible], [illegible] X [illegible]
[illegible]?

पुलिस द्वारा हथियारों का सहारा लेना व्यर्थ नहीं गया। गाड़ी पर कब्ज़ा कर लिया गया, शराबी को बंदी बना लिया गया। पहले को जेल में डाल दिया गया, जबकि दूसरे को बाद में युद्ध परिषद के समक्ष एक सहयोगी के रूप में कुछ हद

तक परेशान किया गया। इस मामले में, तत्कालीन लोक प्रशासन ने समाज की रक्षा के प्रति अपनी अटूट तत्परता साबित कर दी।

गैवरोश का कारनामा, जो टेंपल के इलाकों में एक परंपरा के रूप में कायम है, माराइस के बुजुर्ग बुर्जुआ वर्ग की सबसे भयानक यादों में से एक है, और उनकी स्मृतियों में इसे "शाही मुद्रण प्रतिष्ठान के डाकघर द्वारा रात्रि हमला" के रूप में जाना जाता है।

खंड V. जीन वालजेन

[illegible] I. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

I. फाउबर्ग सेंट एंटोनी और स्काइला का चैरिबडिस

सामाजिक समस्याओं के पर्यवेक्षक द्वारा उल्लेखित दो सबसे यादगार अवरोध उस काल से संबंधित नहीं हैं जिसमें इस कृति की कहानी घटित होती है। ये दोनों अवरोध, जो दो अलग-अलग पहलुओं में एक दुर्जेय स्थिति के प्रतीक हैं, जून 1848 के घातक विद्रोह के समय अस्तित्व में आए, जो इतिहास में दर्ज सड़कों का सबसे बड़ा युद्ध था।

कभी-कभी ऐसा होता है कि, सिद्धांतों के विपरीत भी, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के विपरीत भी, सार्वभौमिक मताधिकार के विपरीत भी, यहाँ तक कि सभी के लिए सभी की सरकार के विपरीत भी, अपनी पीड़ा, निराशा और दरिद्रता, अपने बुखार, अपनी पीड़ाओं, अपने अंधकार, अपनी अज्ञानता और अपने अंधकार की गहराई से, वह विशाल और हताश जनसमूह, जनता, जनता के विरुद्ध विरोध करता है, और जनता जनता के विरुद्ध युद्ध छेड़ देती है।

भिखारी आम लोगों के अधिकारों पर हमला करते हैं; भीड़तंत्र आम जनता के खिलाफ उठ खड़ा होता है।

ये उदासी भरे दिन हैं; क्योंकि इस पागलपन में भी कुछ हद तक रात छाई रहती है, इस द्वंद्व में आत्महत्या भी शामिल है, और वे शब्द जो अपमान के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं—भिखारी, कुआं, भीड़तंत्र, जनता—अफ़सोस! पीड़ितों की गलती से ज़्यादा शासकों की गलती दर्शाते हैं; वंचितों की गलती से ज़्यादा विशेषाधिकार प्राप्त लोगों की गलती दर्शाते हैं।

हम स्वयं भी इन शब्दों को बिना पीड़ा और आदर के नहीं बोलते, क्योंकि जब दर्शनशास्त्र इन शब्दों से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण करता है, तो अक्सर इन विपत्तियों के साथ-साथ अनेक महान पहलू भी पाता है। एथेंस एक जनतंत्र था; भिखारियों ने हॉलैंड को समृद्ध बनाया; जनता ने रोम को एक से अधिक बार बचाया; और आम जनता ने यीशु मसीह का अनुसरण किया।

ऐसा कोई विचारक नहीं है जिसने कभी न कभी निम्न वर्गों की भव्यता पर विचार न किया हो।

संत जेरोम निस्संदेह इसी भीड़-भाड़ के बारे में सोच रहे थे, और इन्हीं सभी गरीब लोगों, इन सभी आवारा लोगों और इन सभी दुखी लोगों के बारे में सोच रहे थे जिनसे प्रेरित और शहीद निकले थे, जब उन्होंने यह रहस्यमय कथन कहा: "फेक्स अर्बिस, लेक्स ऑर्बिस," - शहर का मैल, पृथ्वी का नियम।

इस पीड़ित और लहूलुहान भीड़ का आक्रोश, इसकी तर्कहीन हिंसा, इसके जीवन के सिद्धांतों के विरुद्ध निर्देशित हिंसा, न्याय के विरुद्ध इसके क्रूर कृत्य, इसके जन-तख्तापलट हैं और इन्हें दबा देना चाहिए। सत्यनिष्ठ व्यक्ति स्वयं को बलिदान कर देता है, और इस भीड़ के प्रति अपने प्रेम के कारण ही वह इसका मुकाबला करता है। लेकिन इसके विरुद्ध डटे रहने के बावजूद वह कितना क्षमायोग्य महसूस करता है! इसका विरोध करते हुए भी वह इसका कितना सम्मान करता है! यह उन दुर्लभ क्षणों में से एक है जब, अपने कर्तव्य का पालन करते हुए, व्यक्ति कुछ ऐसा महसूस करता है जो उसे विचलित करता है और आगे बढ़ने से रोकता है; वह दृढ़ रहता है, यह आवश्यक है, लेकिन अंतरात्मा, संतुष्ट होने के बावजूद, दुखी होती है, और कर्तव्य की पूर्ति हृदय में पीड़ा के साथ जटिल हो जाती है।

जून 1848, यह कहना जल्दबाजी होगी कि इतिहास के दर्शन में एक असाधारण घटना थी, जिसे वर्गीकृत करना लगभग असंभव है। इस असाधारण विद्रोह के संदर्भ में, जिसमें परिश्रम की पवित्र बेचैनी अपने अधिकारों का दावा करती हुई महसूस होती है, हमने अभी जो भी शब्द कहे हैं, वे सब व्यर्थ हो जाते हैं। इसका मुकाबला करना आवश्यक था, और यह एक कर्तव्य था, क्योंकि इसने गणतंत्र पर प्रहार किया था। लेकिन जून 1848 वास्तव में क्या था? जनता का अपने ही विरुद्ध विद्रोह।

जहां विषय से ध्यान नहीं भटकता, वहां विषयांतर नहीं होता; तो क्या हमें पाठक का ध्यान कुछ क्षण के लिए उन दो बिल्कुल अनूठी बाधाओं की ओर आकर्षित करने की अनुमति दी जा सकती है जिनके बारे में हमने अभी बात की है और जो इस विद्रोह की विशेषता थीं।

एक ने फाउबर्ग सेंट एंटोइन के प्रवेश द्वार को अवरुद्ध कर दिया; दूसरे ने फाउबर्ग डू टेम्पल तक जाने वाले मार्ग की रक्षा की; जून के चमकीले नीले आकाश के नीचे गृहयुद्ध की इन दो भयानक कृतियों के सामने खड़े होने वाले लोग इन्हें कभी नहीं भूलेंगे।

सेंट-एंटोइन बैरिकेड बहुत विशाल था; यह तीन मंजिला ऊंचा और सात सौ फीट चौड़ा था। इसने उपनगरीय क्षेत्र के विशाल प्रवेश द्वार, यानी तीन गलियों को, एक छोर से दूसरे छोर तक अवरुद्ध कर रखा था; गहरी खाइयों, ऊबड़-खाबड़, कटी-फटी, विभाजित, कंगूरेदार, एक विशाल दरार से युक्त, ऐसे स्तंभों से समर्थित जो स्वयं में गढ़ थे और जगह-जगह उभरे हुए शिखरों की तरह दिखते थे, उपनगरीय क्षेत्र के दो विशाल घरों के टीलों द्वारा मजबूती से समर्थित, यह बैरिकेड 14 जुलाई की घटना को देखने वाले दुर्जेय स्थान के अंत में एक विशालकाय बांध की तरह खड़ा था। इस मुख्य बैरिकेड के पीछे की गलियों की गहराई में उन्नीस बैरिकेड एक के पीछे एक पंक्तिबद्ध थे। इसे देखते ही विशाल उपनगरीय क्षेत्र में व्याप्त पीड़ा का आभास होता था, जो उस चरम स्थिति में पहुंच चुका था जहां एक संकट तबाही का रूप ले सकता था। वह बैरिकेड किस चीज से बना था? कुछ लोगों का कहना था कि यह जानबूझकर ध्वस्त किए गए तीन छह मंजिला घरों के खंडहरों से बना था। दूसरों ने कहा, यह तो तमाम क्रोधों का अजूबा था। इसने घृणा और विनाश की तमाम रचनाओं का दयनीय रूप धारण कर लिया था। पूछा जा सकता है: इसे किसने बनाया? यह भी कहा जा सकता है: इसे किसने नष्ट किया? यह उबलते हुए क्रोध का तात्कालिक रूप था। रुको! इस दरवाजे को हटाओ! इस जाली को! इस छत को! इस चिमनी को! इस टूटे हुए अंगीठी को! इस टूटे हुए बर्तन को! सब कुछ दे दो! सब कुछ फेंक दो! इस लुढ़काने वाले को धकेलो, खोदो, तोड़ो, उलट दो, सब कुछ बर्बाद कर दो! यह फुटपाथ, पत्थर के टुकड़े, बीम, लोहे की छड़, चिथड़े, कबाड़, टूटे हुए शीशे, उखड़ी हुई कुर्सी, गोभी के डंठल, चिथड़े, चिथड़े और अभिशाप का मिला-जुला रूप था। यह भव्य भी था और तुच्छ भी। यह सार्वजनिक स्थान पर शोरगुल द्वारा उपहासित खाई थी। परमाणु के बगल में द्रव्यमान; टूटी हुई दीवार की पट्टी और टूटा हुआ कटोरा — हर तरह के कचरे के भाईचारे का खतरा। सिसिफस ने अपना पत्थर वहाँ फेंका था और जॉब ने अपना मिट्टी का टुकड़ा। संक्षेप में, भयानक। यह नंगे पैर चलने वालों का एक्रोपोलिस था। पलटी हुई गाड़ियाँ ढलान की एकरूपता को तोड़ रही

थीं; एक विशाल गाड़ी वहाँ आड़ी-तिरछी फैली हुई थी, उसका धुरा आकाश की ओर इशारा कर रहा था, और उस उथल-पुथल भरे मुखौटे पर एक निशान जैसा लग रहा था; एक बस को पूरी ताकत से ढेर के शिखर तक उठाया गया था, मानो इस बर्बरता के रचनाकारों ने अपने आतंक में गली के बच्चों के हास्य का पुट जोड़ना चाहा हो, और उसका बिना घोड़े वाला, बिना लगाम वाला खंभा न जाने किन हवा के घोड़ों के सामने था। विद्रोह का यह विशाल ढेर, सभी क्रांतियों के पेलियन पर ओस्सा की तरह लग रहा था; 1899 में 93, 10 अगस्त को थर्मिडोर का 9 वां दिन, 11 जनवरी को ब्रुमेयर का 18 वां दिन, प्रेरियल पर वेंडेमिएयर, 1830 में 1848। स्थिति परेशानी के लायक थी और यह बैरिकेड उस जगह पर मौजूद होने के योग्य था जहाँ से बैस्टिल गायब हो गया था। अगर सागर तटबंध बनाता, तो वह इसी तरह बनाता। बाढ़ का प्रकोप इस आकारहीन संरचना पर अंकित था। कैसी बाढ़? भीड़। ऐसा लगा मानो कोई कोलाहल को थम गया हो। ऐसा लगा मानो इस बैरिकेड के ऊपर भिनभिनाहट सुनाई दे रही हो, मानो उनके छत्ते के ऊपर विशाल, काली मधुमक्खियाँ हिंसक गति से आगे बढ़ रही हों। क्या यह कोई झाड़ी थी? क्या यह कोई उन्माद था? क्या यह कोई किला था? ऐसा लग रहा था मानो चक्कर ने इसे अपने पंखों के प्रहारों से बनाया हो। उस किले में कुछ गंदा नाला था और उस अव्यवस्था में कुछ भव्यता थी। वहाँ निराशा से भरे एक अव्यवस्थित दृश्य में, छतों के शहतीर, अटारी की खिड़कियों के टुकड़े जिन पर नक्काशीदार कागज लगे थे, खिड़कियों के शीशे जिनमें कांच लगे थे, खंडहरों में तोपों के हमले की प्रतीक्षा में गड़े हुए थे, चिमनियों, अलमारियों, मेजों, बेंचों के मलबे, चीखती-चिल्लाती अव्यवस्था, और वे हजारों दरिद्र वस्तुएँ, भिखारी का कूड़ा-करकट, जिनमें एक ही समय में क्रोध और शून्यता समाहित थी, दिखाई दे रहे थे। कोई कह सकता था कि यह एक राष्ट्र के चिथड़े-मटोल टुकड़े थे, लकड़ी, लोहे, कांसे, पत्थर के चिथड़े, और फाउबर्ग सेंट एंटोनी ने इसे उसके दरवाजे पर रख दिया था, मानो झाड़ू के एक विशाल प्रहार से उसकी पीड़ा को ही अपना अवरोधक बना दिया हो। जल्लाद के तख्तों जैसे ब्लॉक, उखड़ी हुई जंजीरें, फांसी के तख्तों जैसे ब्रैकेट वाले लकड़ी के टुकड़े, मलबे से निकले क्षैतिज पहिये, अराजकता की इस इमारत के साथ मिलकर जनता द्वारा झेली गई पुरानी यातनाओं की भयावह छवि प्रस्तुत करते थे। सेंट एंटोनी बैरिकेड ने हर चीज़ को हथियार में बदल दिया; गृहयुद्ध समाज के शीर्ष पर जो कुछ भी फेंक सकता था, वह सब यहीं से निकला; यह लड़ाई नहीं, बल्कि एक उन्माद था; इस किले

की रक्षा करने वाली कार्बाइनें, जिनमें कुछ ब्लंडरबस भी शामिल थीं, मिट्टी की हड्डियों के टुकड़े, कोट के बटन, यहाँ तक कि नाइट-स्टैंड के कैस्टर भी, पीतल के कारण खतरनाक प्रक्षेपास्त्रों में बदल देती थीं। यह बैरिकेड उग्र था; इसने बादलों तक एक अवर्णनीय शोर मचाया; कुछ क्षणों में, जब सेना को उकसाया जाता था, तो यह भीड़ और तूफान से घिर जाता था; जलते हुए सिरों की एक उग्र भीड़ इसे सुशोभित करती थी; एक झुंड इसे भर देता था; उस पर तोपों, तलवारों, लाठियों, कुल्हाड़ियों, भालों और संगीनों का काँटेदार घेरा था; एक विशाल लाल झंडा हवा में लहरा रहा था; आदेश की चीखें, आक्रमण के गीत, ढोलों की थाप, स्त्रियों के सिसकने और भूखों से त्रस्त लोगों की उदास हँसी की आवाज़ें वहाँ सुनाई दे रही थीं। वह विशाल और जीवंत था, और किसी बिजली के दानव की पीठ की तरह, उससे बिजली की छोटी-छोटी चमक निकल रही थी। क्रांति की भावना ने उस शिखर को अपने बादल से ढक रखा था जहाँ जनता की वह आवाज़ गूँज रही थी जो ईश्वर की आवाज़ जैसी थी; कूड़े के इस विशाल ढेर से एक विचित्र भव्यता निकल रही थी। वह गंदगी का ढेर था और वह सिनाई पर्वत था।

जैसा कि हमने पहले कहा है, इसने क्रांति के नाम पर हमला किया—किस क्रांति के नाम पर? क्रांति के नाम पर। वह—वह अवरोध, संयोग, खतरा, अव्यवस्था, आतंक, गलतफहमी, अज्ञात—जिसके सामने संविधान सभा, जनता की संप्रभुता, सार्वभौमिक मताधिकार, राष्ट्र, गणतंत्र था; और यह मार्सिलेज़ को चुनौती देता हुआ कार्मग्नोल था।

यह एक विशाल लेकिन वीरतापूर्ण प्रतिरोध है, क्योंकि पुराना उपनगर एक नायक है।

फ़ॉबूर्ग और उसका गढ़ एक-दूसरे का सहारा बने रहे। फ़ॉबूर्ग ने गढ़ का भार संभाला, और गढ़ ने फ़ॉबूर्ग की आड़ में मोर्चा संभाला। विशाल बैरिकेड एक चट्टान की तरह फैला हुआ था, जिस पर अफ़्रीकी जनरलों की रणनीति धराशायी हो गई। उसकी गुफाएँ, उसके उभार, उसके मस्से, उसकी उभरी हुई आकृतियाँ, मानो धुएँ के नीचे विकृत और मुस्कुराती हुई प्रतीत हो रही थीं। तोपें आकारहीन होकर गायब हो गईं; बम उसमें जा गिरे; गोलियाँ केवल उसमें छेद कर पाईं; तोपों से अराजकता फैलाने का क्या लाभ? और युद्ध के सबसे भयंकर दृश्यों के आदी रेजिमेंट, उस प्रकार के गढ़ को बेचैन निगाहों से देख रहे थे, जो अपने

सूअर जैसे घने बालों के कारण एक जंगली जानवर और अपने विशाल आकार के कारण एक पहाड़ जैसा लग रहा था।

टेम्पल स्ट्रीट के उस कोने से, जो शैतो-डी'ओ के पास वाले बुलेवार्ड पर खुलता है, एक चौथाई लीग की दूरी पर, अगर कोई डेलमैग्ने की दुकान के सामने से थोड़ा आगे सिर करके देखे, तो नहर के उस पार, बेलविले की ढलानों पर चढ़ती हुई सड़क के सबसे ऊँचे बिंदु पर, दूर एक अजीब सी दीवार दिखाई देती है जो घरों के अग्रभाग की दूसरी मंजिल तक पहुँचती है। यह दीवार दाईं और बाईं ओर के घरों के बीच एक तरह से हाइफ़न की तरह है, मानो सड़क अपनी सबसे ऊँची दीवार को मोड़कर अचानक बंद हो गई हो। यह दीवार पत्थरों से बनी थी। यह सीधी, सटीक, ठंडी, लंबवत, वर्ग के बराबर, नियम और रेखा के अनुसार बनाई गई थी। बेशक, इसमें सीमेंट का इस्तेमाल नहीं हुआ था, लेकिन कुछ रोमन दीवारों की तरह, इससे इसकी कठोर वास्तुकला में कोई बाधा नहीं आई। इसका आधार गणितीय रूप से समानांतर था। दूर-दूर तक, धूसर सतह पर लगभग अदृश्य छेद दिखाई दे रहे थे, जो काले धागों जैसे लग रहे थे। ये छेद एक-दूसरे से बराबर दूरी पर थे। गली दूर-दूर तक सुनसान थी। सभी खिड़कियाँ और दरवाजे बंद थे। पृष्ठभूमि में यह अवरोध खड़ा था, जिसने गली को एक बंद मार्ग बना दिया था, एक गतिहीन और शांत दीवार; कोई दिखाई नहीं दे रहा था, कुछ सुनाई नहीं दे रहा था; न कोई चीख, न कोई आवाज़, न कोई साँस। एक मकबरा।

जून की चकाचौंध भरी धूप ने इस भयानक चीज को प्रकाश से भर दिया।

यह टेम्पल के फाउबर्ग का बैरिकेड था।

जैसे ही कोई उस स्थान पर पहुँचता और उसे देखता, सबसे साहसी व्यक्ति के लिए भी इस रहस्यमय आकृति के सामने चिंतनशील हुए बिना रहना असंभव था। यह सुव्यवस्थित, जुड़ा हुआ, अतिव्यापी, सीधी रेखाओं वाला, सममित और शोकपूर्ण था। विज्ञान और अंधकार का वहाँ मिलन हुआ। ऐसा प्रतीत होता था मानो इस अवरोध का मुखिया कोई ज्यामितिज्ञ हो या कोई प्रेत। व्यक्ति उसे देखता और धीमी आवाज़ में बोलता।

कभी-कभार, अगर कोई सैनिक, अधिकारी या जन प्रतिनिधि उस सुनसान राजमार्ग से गुज़रता, तो एक हल्की, तीखी सीटी सुनाई देती, और राहगीर या तो मर जाता या घायल हो जाता, या अगर गोली से बच भी जाता, तो कभी-कभी एक बिस्केन तितली किसी

बंद शटर में, पत्थर के दो टुकड़ों के बीच की जगह में, या दीवार के प्लास्टर में छिपी हुई दिखाई देती। बैरिकेड में तैनात लोगों ने लोहे की दो लंबी गैस पाइपों से दो छोटी तोपें बना ली थीं, जिनका एक सिरा तिनके और मिट्टी से बंद था। बेकार बारूद की कोई बर्बादी नहीं हुई। लगभग हर गोली निशाने पर लगी। जगह-जगह लाशें पड़ी थीं, और फुटपाथ पर खून के धब्बे थे। मुझे एक सफेद तितली याद है जो गली में आती-जाती रहती थी। गर्मी का मौसम अभी खत्म नहीं हुआ है।

आस-पास के इलाकों में, कोच के दरवाजों के नीचे की जगहें घायलों से भरी हुई थीं।

ऐसा महसूस होता था मानो कोई अज्ञात व्यक्ति उन पर निशाना साध रहा हो, और यह समझ में आता था कि सड़क की पूरी लंबाई पर बंदूकें तनी हुई हैं।

फाउबर्ग डू टेम्पल के प्रवेश द्वार पर बने मेहराबदार नहर के ढलानदार टीले के पीछे एकत्रित होकर, आक्रमणकारी दल के सैनिक गंभीर और विचारशील भाव से इस भयावह किलेबंदी, इस स्थिरता, इस निष्क्रियता को देख रहे थे, जहाँ से मृत्यु का जन्म होता था। कुछ सैनिक पुल के घुमाव के शिखर तक मुंह के बल रेंगते हुए गए, इस बात का ध्यान रखते हुए कि उनकी टोपी पुल से बाहर न निकले।

वीर कर्नल मोंटेनार्ड ने इस बैरिकेड को देखकर कंपकंपी छोड़ दी। उन्होंने एक प्रतिनिधि से कहा, “यह कैसे बना है! एक भी पत्थर अपने पड़ोसी से बाहर नहीं निकला है। यह चीनी मिट्टी का बना है।” उसी क्षण, एक गोली ने उनकी छाती पर बने क्रॉस को तोड़ दिया और वे गिर पड़े।

“ये कायर!” लोग बोले। “इन्हें सामने आने दो। हमें इन्हें देखने दो! इनकी हिम्मत नहीं हो रही! ये छिप रहे हैं!”

फाउबर्ग डू टेम्पल की घेराबंदी, जिसकी रक्षा अस्सी सैनिकों ने की थी, पर दस हजार सैनिकों ने हमला किया और वह तीन दिनों तक डटी रही। चौथे दिन, उन्होंने वही किया जो ज़ाचा और कॉन्स्टेंटाइन में हुआ था, उन्होंने घरों को भेद दिया, छतों पर चढ़ गए और घेराबंदी पर कब्ज़ा कर लिया। उन अस्सी कायरों में से एक ने भी भागने की नहीं सोची, नेता बार्थेलेमी को छोड़कर सभी वहीं मारे गए, जिनके बारे में हम अभी बात करेंगे।

सेंट-एंटोइन की घेराबंदी गड़गड़ाहट जैसी थी; टेंपल की घेराबंदी खामोशी जैसी थी। इन दोनों गढ़ों के बीच का अंतर दुर्जेय और भयावहता का अंतर था। एक मुंह जैसा दिखता था; दूसरा मुखौटा जैसा।

यह स्वीकार करते हुए कि जून का विशाल और अंधकारमय विद्रोह क्रोध और रहस्य से बना था, जिसे पहले अवरोध में अजगर और दूसरे के पीछे स्फिंक्स के रूप में देखा जा सकता था।

इन दोनों किलों का निर्माण दो व्यक्तियों द्वारा किया गया था, जिनमें से एक का नाम कौरनेट और दूसरे का नाम बार्थेलेमी था। कौरनेट ने सेंट-एंटोइन की घेराबंदी की थी; बार्थेलेमी ने टेंपल की घेराबंदी की थी। प्रत्येक किला उसे बनाने वाले व्यक्ति की छवि प्रस्तुत करता था।

कौरनेट एक महान व्यक्तित्व के धनी थे; उनके चौड़े कंधे, लाल चेहरा, शक्तिशाली मुट्ठी, साहसी हृदय, निष्ठावान आत्मा और सच्ची तथा तीखी आँखें थीं। निडर, ऊर्जावान, चिड़चिड़े और उग्र स्वभाव के; वे सबसे मिलनसार व्यक्ति और सबसे दुर्जेय योद्धा थे। युद्ध, संघर्ष और टकराव उनके जीवन का अभिन्न अंग थे और यही उन्हें प्रसन्न रखते थे। वे नौसेना में अधिकारी रह चुके थे, और उनके हाव-भाव और आवाज से ऐसा प्रतीत होता था मानो वे सागर से निकले हों, तूफ़ान से आए हों; वे युद्ध में भी तूफ़ान की तरह ऊर्जा लिए रहते थे। प्रतिभा को छोड़कर, कौरनेट में डेंटन के कुछ गुण थे, ठीक वैसे ही जैसे देवत्व को छोड़कर, डेंटन में हरक्यूलिस के कुछ गुण थे।

दुबला-पतला, दुर्बल, पीला पड़ा हुआ और कम बोलने वाला बार्थेलेमी एक तरह का दुखद गली का बच्चा था, जिसे एक पुलिसकर्मी ने घूंसा मारा था। इसके बाद बार्थेलेमी ने घात लगाकर उसकी हत्या कर दी और सत्रह साल की उम्र में उसे युद्ध के लिए भेज दिया गया। वह वहां से निकला और उसने यह बैरिकेड बनाया।

बाद में, लंदन में, सभी द्वारा निषिद्ध परिस्थितियों में, बार्थेलेमी ने कूर्नेट की हत्या कर दी। यह एक दुखद द्वंद्वयुद्ध था। कुछ समय बाद, उन रहस्यमय कारनामों में से एक में फंसकर, जिनमें जुनून की भूमिका होती है, एक ऐसी त्रासदी जिसमें फ्रांसीसी न्याय व्यवस्था कुछ नरमी दिखाती है, जबकि अंग्रेजी न्याय व्यवस्था केवल मृत्युदंड देखती है, बार्थेलेमी को फांसी दे दी गई। समाज की भयावह संरचना इस प्रकार बनी है कि भौतिक अभाव और नैतिक

अंधकार के कारण, वह अभागा व्यक्ति, जिसके पास निश्चित रूप से दृढ़, संभवतः महान बुद्धि थी, फ्रांस में जहाजों से शुरू हुआ और इंग्लैंड में फांसी पर समाप्त हुआ। बार्थेलेमी ने कई बार केवल एक ही झंडा फहराया, काला झंडा।

II. यदि कोई संवाद न करे तो अथाह गहराई में क्या किया जाए?

विद्रोह की भूमिगत शिक्षा में सोलह वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, और जून 1848 को इसके बारे में जून 1832 की तुलना में कहीं अधिक जानकारी थी। इसलिए रू डे ला चानव्रेरी की बैरिकेड केवल एक रूपरेखा और एक भ्रूण मात्र थी, उन दो विशाल बैरिकेड्स की तुलना में जिनका हमने अभी-अभी वर्णन किया है; लेकिन उस युग के लिए यह दुर्जेय थी।

मारियस की देखरेख में, एनजोलरास की निगरानी में विद्रोहियों ने रात का भरपूर फायदा उठाया। बैरिकेड की मरम्मत तो हो ही गई थी, साथ ही उसे और मजबूत भी कर दिया गया था। उसे दो फुट ऊंचा कर दिया गया था। फुटपाथ में गड़ी लोहे की छड़ें आराम की मुद्रा में भाले जैसी लग रही थीं। चारों ओर से लाया और जोड़ा गया तरह-तरह का कचरा बाहरी अव्यवस्था को और भी जटिल बना रहा था। किले को चतुराई से इस तरह बदल दिया गया था कि अंदर से दीवार और बाहर से झाड़ियों का जाल बन गया था।

पत्थरों से बनी सीढ़ियों का पुनर्निर्माण किया गया था, जिन पर चढ़कर कोई व्यक्ति किसी किले की दीवार की तरह इस पर चढ़ सकता था।

बैरिकेड को व्यवस्थित कर दिया गया था, शराबखाने को खाली कर दिया गया था, रसोई को एम्बुलेंस के लिए आरक्षित कर दिया गया था, घायलों का उपचार पूरा हो चुका था, जमीन और मेजों पर बिखरा हुआ बारूद इकट्ठा कर लिया गया था, गोलियां तैयार कर ली गई थीं, कारतूस बना लिए गए थे, रुई साफ कर दी गई थी, गिरे हुए हथियारों को फिर से वितरित कर दिया गया था, किले के अंदरूनी हिस्से की सफाई कर दी गई थी, कूड़ा साफ कर दिया गया था और शवों को हटा दिया गया था।

उन्होंने शवों को मोंडेतोर लेन में ढेर कर दिया, जिस पर अब भी उनका ही अधिकार था। उस जगह का फुटपाथ काफी देर तक खून से सना रहा। मृतकों में उपनगरों के चार राष्ट्रीय रक्षक भी शामिल थे। एनजोलरास ने उनकी वर्दी एक तरफ रख दी थी।

एनजोलरास ने दो घंटे सोने की सलाह दी थी। एनजोलरास की सलाह एक आदेश के समान थी। फिर भी, केवल तीन या चार लोगों ने ही इसका पालन किया।

फ्यूली ने इन दो घंटों का उपयोग सराय के सामने वाली दीवार पर यह शिलालेख उकेरने में किया:—

जनता जिंदाबाद!

कील से खुरदुरे पत्थर पर उकेरे गए ये चार शब्द 1848 में भी दीवार पर पढ़े जा सकते थे।

रात के सन्नाटे का फायदा उठाकर तीनों महिलाएं हमेशा के लिए गायब हो गईं; जिससे विद्रोहियों को और अधिक राहत मिली।

उन्होंने किसी तरह पड़ोस के घर में शरण लेने का साधन ढूंढ लिया था।

अधिकांश घायल सैनिक लड़ने में सक्षम थे और लड़ना चाहते भी थे। रसोई को एम्बुलेंस में बदल दिया गया था और वहां गद्दों और पुआल के गट्ठों से बनी एक स्ट्रेचर पर पांच गंभीर रूप से घायल सैनिक थे, जिनमें से दो नगर निगम के गार्ड थे। नगर निगम के गार्डों का इलाज सबसे पहले किया गया।

शराबखाने में केवल माबेउफ अपने काले वस्त्र के नीचे और जावर्ट अपने खंभे से बंधा हुआ ही रह गया था।

“यह मृतकों का हॉल है,” एनजोलरास ने कहा।

इस हॉल के अंदरूनी हिस्से में, जो एक छोर पर जलती मोमबत्ती से मुश्किल से रोशन था, जहां शवगृह की मेज एक क्षैतिज पट्टी की तरह खंभे के पीछे थी, जावर्ट के सीधे खड़े होने और माबेउफ के लेटे होने से एक विशाल, अस्पष्ट क्रॉस जैसी आकृति बन गई थी।

हालांकि गोलाबारी से बस का खंभा टूट गया था, फिर भी वह इतना सीधा खड़ा था कि उस पर झंडा बांधा जा सके।

एनजोलरास, जिसमें एक नेता का वह गुण था कि वह हमेशा अपने कहे अनुसार कार्य करता था, ने उस बूढ़े व्यक्ति के गोलियों से छलनी और खून से लथपथ कोट को इस लाठी से बांध दिया।

भोजन का कोई अवसर नहीं था। न रोटी थी, न मांस। बैरिकेड में मौजूद पचास लोगों ने सोलह घंटे बिताने के दौरान शराब की दुकान का सीमित राशन जल्दी ही खत्म कर दिया था। एक समय ऐसा आता है जब हर बैरिकेड ला मेडुसे की नाव जैसा बन जाता है। उन्हें भूख से हार माननी पड़ी। 6 जून के उस कठिन दिन की सुबह के पहले घंटे आ चुके थे, जब सेंट-मेरी बैरिकेड में, जीन, रोटी की मांग कर रहे विद्रोहियों से घिरी हुई थी, तो उसने "कुछ खाने को दो!" चिल्ला रहे सभी लड़ाकों को जवाब दिया: "क्यों? तीन बज गए हैं; चार बजे तक हम मर चुके होंगे।"

चूंकि वे अब भोजन नहीं कर सकते थे, इसलिए एनजोलरास ने उन्हें पीने से मना कर दिया। उसने शराब पर प्रतिबंध लगा दिया और ब्रांडी की मात्रा सीमित कर दी।

तहखाने में उन्हें पंद्रह पूरी तरह सील बंद बोतलें मिलीं। एनजोलरास और कॉम्बेफेरे ने उनकी जांच की। कॉम्बेफेरे जब वापस ऊपर आया तो बोला: “यह फादर हुचेलूप का पुराना स्टॉक है, जिन्होंने किराने की दुकान से अपना कारोबार शुरू किया था।” “यह असली शराब होनी चाहिए,” बॉसुएट ने कहा। “अच्छा हुआ कि ग्रांटेयर सो रहा है। अगर वह जाग रहा होता, तो इन बोतलों को बचाना बहुत मुश्किल होता।” एनजोलरास ने तमाम विरोधों के बावजूद उन पंद्रह बोतलों पर अपना प्रतिबंध लगा दिया और ताकि कोई उन्हें छू न सके, उसने उन्हें उस मेज के नीचे रखवा दिया जिस पर फादर माबेउफ लेटे हुए थे।

सुबह करीब दो बजे उन्होंने अपनी संख्या गिनी। तब भी उनमें से सैंतीस लोग बचे थे।

दिन निकलने लगा था। फुटपाथ में बने गड्ढे में रखी मशाल अभी-अभी बुझी थी। बैरिकेड का भीतरी हिस्सा, जो सड़क से अलग करके बनाया गया एक छोटा सा आंगन जैसा था, अंधेरे में डूबा हुआ था और धुंधली, भयानक शाम के बीच किसी क्षतिग्रस्त जहाज के डेक जैसा लग रहा था। लड़ाके आते-जाते काले साये की तरह इधर-उधर घूम रहे थे। उस भयानक अंधकार के ऊपर मूक घरों की मंजिलें धुंधली सी दिखाई दे रही थीं; सबसे ऊपर चिमनियां फीकी सी खड़ी थीं। आकाश का रंग मनमोहक और अनिश्चित था, जो शायद सफेद था या नीला। पक्षी उसमें खुशी से चहक रहे थे। बैरिकेड के पीछे बना ऊंचा घर, जो पूरब की ओर मुड़ा हुआ था, उसकी

छत पर गुलाबी रंग की परछाई पड़ रही थी। सुबह की हवा तीसरी मंजिल की खिड़की पर बैठे मृत व्यक्ति के सिर के भूरे बालों को बिखेर रही थी।

“मुझे खुशी है कि मशाल बुझ गई है,” कौरफेयरैक ने फ्यूली से कहा। “हवा में टिमटिमाती वह मशाल मुझे परेशान कर रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह डरी हुई हो। मशालों की रोशनी कायरों की बुद्धिमत्ता जैसी होती है; यह कांपती हुई रोशनी देती है, जिससे अच्छा प्रकाश नहीं मिलता।”

भोर होते ही मन जागृत हो जाते हैं, जैसे पक्षी जाग उठते हैं; सभी बातें करने लगते हैं।

जोली ने एक नाली पर घूमती हुई बिल्ली को देखकर उससे दर्शनशास्त्र का निष्कर्ष निकाला।

“बिल्ली क्या है?” उसने हैरानी से कहा। “यह एक सुधार है। ईश्वर ने चूहा बनाने के बाद कहा: ‘अरे! मुझसे एक गलती हो गई है।’ और इसलिए उसने बिल्ली बनाई। बिल्ली चूहे की गलती को सुधारती है। चूहा और बिल्ली, दोनों मिलकर सृष्टि के संशोधित और सही किए जाने का प्रमाण हैं।”

छात्रों और कारीगरों से घिरे कॉम्बेफेरे मृतकों के बारे में, जीन प्रोवैरे, बहोरेल, माबेउफ और यहां तक कि कैबुक के बारे में, और एनजोलरास की दुखद कठोरता के बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने कहा:—

“हारमोडियस और एरिस्टोगिटन, ब्रूटस, चेरियस, स्टीफनस, क्रॉमवेल, शार्लोट कॉर्डे, सैंड, इन सभी के जीवन में ऐसे क्षण आए हैं जब बहुत देर हो चुकी थी और उन्हें पीड़ा झेलनी पड़ी। हमारा हृदय इतना व्याकुल है, और मानव जीवन इतना रहस्यमय है कि, नागरिक हत्या के मामले में भी, यहाँ तक कि मुक्ति के लिए की गई हत्या में भी, यदि ऐसी कोई हत्या होती है, तो किसी व्यक्ति को चोट पहुँचाने का पश्चाताप मानव जाति की सेवा करने के आनंद से कहीं अधिक होता है।”

और, बातचीत का सिलसिला कुछ इस तरह से आगे बढ़ा कि, कुछ ही क्षण बाद, जीन प्रूवेयर की कविताओं के माध्यम से आए एक बदलाव के कारण, कॉम्बेफेरे ने जॉर्जिक्स के अनुवादकों की तुलना रॉक्स और कौरनैंड, कौरनैंड और डेलिल के बीच की, मालफिलाट्रे द्वारा अनुवादित अंशों, विशेष रूप से सीज़र की मृत्यु

के चमत्कारों की ओर इशारा करते हुए की; और उस शब्द, सीज़र, पर बातचीत फिर से ब्रूटस की ओर मुड़ गई।

कॉम्बेफ़ेरे ने कहा, “सीज़र का पतन न्यायसंगत था। सिसरो सीज़र के प्रति कठोर था, और वह सही था। वह कठोरता कटु आलोचना नहीं थी। जब ज़ोइलस होमर का अपमान करता है, जब मेवियस वर्जिल का अपमान करता है, जब विसे मोलियर का अपमान करता है, जब पोप शेक्सपियर का अपमान करता है, जब फ्रेडरिक वोल्टेयर का अपमान करता है, तो यह ईर्ष्या और घृणा का एक पुराना नियम है जिसका पालन किया जा रहा है; प्रतिभा अपमान को आकर्षित करती है, महान पुरुषों पर हमेशा कमोबेश कटाक्ष किया जाता है। लेकिन ज़ोइलस और सिसरो दो अलग-अलग व्यक्ति हैं। सिसरो विचारों का निर्णायक है, ठीक वैसे ही जैसे ब्रूटस तलवार का निर्णायक है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं उस अंतिम न्याय, तलवार को दोषी मानता हूँ; लेकिन, प्राचीन काल ने इसे स्वीकार किया था। सीज़र, रूबिकॉन का उल्लंघन करने वाला, जनता से प्राप्त होने वाले सम्मानों को, मानो वे उससे आए हों, प्रदान करता था, सीनेट के प्रवेश द्वार पर नहीं उठता था, उसने एक राजा और लगभग एक अत्याचारी के कृत्य किए। अत्याचारी शासन। वह एक महान व्यक्ति थे; चाहे कितना भी बुरा हो, या कितना ही अच्छा; सबक और भी अधिक उत्कृष्ट हो जाता है। उनके तेईस घाव मुझे यीशु मसीह के चेहरे पर थूकने से कम प्रभावित करते हैं। सीज़र को सीनेटरों ने छुरा घोंपा; मसीह को चापलूसों ने घूंसे मारे। अधिक अत्याचार के माध्यम से ही ईश्वर का अनुभव होता है।

पत्थरों के ढेर के शिखर पर खड़े होकर वार्ताकारों से कहीं अधिक ऊँचाई पर खड़े बॉसुएट ने हाथ में राइफल लिए हुए कहा:

“हे सिडाथेनियम, हे मिरिनस, हे प्रोबालिन्थस, हे ऐन्टाइड्स की कृपा! हे! कौन मुझे होमर के छंदों का उच्चारण लॉरियम या एडाप्टियन के यूनानी की तरह करने की शक्ति देगा?”

III. प्रकाश और छाया

एनजोलरास रेकी करने गया था। वह मोंडेतोर लेन से होते हुए निकला और घरों के करीब से सरकते हुए आगे बढ़ा।

हम यह कहना चाहेंगे कि विद्रोही आशा से भरे हुए थे। पिछली रात के हमले को जिस तरह उन्होंने विफल किया था, उससे वे भोर के हमले को लगभग तुच्छ समझ रहे थे। वे मुस्कुराते हुए उसका इंतजार कर रहे थे। उन्हें अपनी सफलता पर उतना ही भरोसा था जितना अपने उद्देश्य पर। इसके अलावा, स्पष्ट रूप से उन्हें सहायता मिलने वाली थी। उन्हें इस पर पूरा विश्वास था। फ्रांसीसी योद्धाओं की ताकत का एक स्रोत मानी जाने वाली विजयी भविष्यवाणी की सहजता के साथ, उन्होंने आने वाले दिन को तीन अलग-अलग चरणों में विभाजित किया। सुबह छह बजे एक रेजिमेंट, जिस पर काफी मेहनत की गई थी, पलटवार करेगी; दोपहर में पूरे पेरिस में विद्रोह होगा; और सूर्यास्त के समय क्रांति होगी।

उन्होंने सेंट-मेरी की खतरे की घंटी सुनी, जो पिछली रात से एक पल के लिए भी शांत नहीं हुई थी; यह इस बात का प्रमाण था कि दूसरा अवरोध, यानी जीन का बड़ा अवरोध, अभी भी टिका हुआ था।

इन सभी आशाओं का आदान-प्रदान विभिन्न समूहों के बीच एक प्रकार की हंसमुख और प्रभावशाली फुसफुसाहट में हुआ, जो मधुमक्खियों के छत्ते की युद्धकालीन भिनभिनाहट से मिलती-जुलती थी।

एनजोलरास फिर प्रकट हुआ। वह अपनी गंभीर, चील जैसी उड़ान से लौटकर बाहरी अंधकार में चला गया। उसने कुछ क्षण तक बाहें मोड़े और एक हाथ मुँह पर रखे इस सारी खुशी को सुना। फिर, भोर की बढ़ती सफेदी में ताजगी और गुलाबी रंगत लिए हुए, उसने कहा:

“पेरिस की पूरी सेना हमला करने वाली है। सेना का एक तिहाई हिस्सा उन बैरिकेड्स की ओर बढ़ रहा है जहाँ आप अभी मौजूद हैं। इनके अलावा नेशनल गार्ड भी है। मैंने पाँचवीं पंक्ति के सैनिकों और छठी टुकड़ी के ध्वजवाहकों को चुन लिया है। एक घंटे में आप पर हमला होगा। जहाँ तक जनता की

बात है, कल तक वह उग्र थी, आज शांत है। कुछ भी उम्मीद नहीं है; न ही किसी उपनगरीय इलाके से, न ही किसी रेजिमेंट से। आपको छोड़ दिया गया है।”

ये शब्द पक्षियों के समूह की भिनभिनाहट पर पड़े और उन पर वैसा ही प्रभाव डाला जैसा तूफान की पहली बूँदें मधुमक्खियों के झुंड पर डालती हैं। एक पल के लिए अवर्णनीय सन्नाटा छा गया, जिसमें मानो मृत्यु की आहट सुनाई दे रही हो।

यह क्षण क्षणिक था।

समूह के सबसे अंधेरे कोने से एक आवाज ने एनजोलरास को पुकारा:

“ऐसा ही हो। आइए हम बीस फुट ऊँची दीवार खड़ी करें और हम सब उसमें बने रहें। नागरिकों, आइए हम लाशों की तरह विरोध प्रदर्शन करें। आइए हम यह दिखाएँ कि यदि जनता गणतंत्रवादियों का साथ छोड़ दे, तो गणतंत्रवादी जनता का साथ नहीं छोड़ेंगे।”

इन शब्दों ने सभी के मन को व्यक्तिगत चिंताओं के पीड़ादायक बादल से मुक्त कर दिया। इसका उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया।

उस व्यक्ति का नाम आज तक किसी को नहीं पता चला जिसने इस प्रकार बात की थी; वह कोई अज्ञात व्यक्ति था, एक अजनबी, एक भुला दिया गया इंसान, एक क्षणिक नायक, वह महान गुमनाम व्यक्ति, जो हमेशा मानवीय संकटों और सामाजिक उत्पत्ति में समाया रहता है, जो किसी विशेष क्षण में सर्वोच्च शैली में निर्णायक शब्द बोलता है, और जो एक मिनट के लिए, बिजली की चमक में, लोगों और ईश्वर का प्रतिनिधित्व करने के बाद अंधेरे में गायब हो जाता है।

6 जून, 1832 के उस दिन का वातावरण इस अटल संकल्प से इतना व्याप्त था कि लगभग उसी समय, सेंट-मेरी बैरिकेड पर विद्रोहियों ने वह नारा लगाया जो इतिहास का हिस्सा बन गया है और जो इस मामले के दस्तावेजों में दर्ज है: “इससे क्या फर्क पड़ता है कि वे हमारी सहायता के लिए आते हैं या नहीं? चलो हम यहीं अपनी जान दे देते हैं, आखिरी आदमी तक।”

जैसा कि पाठक देख सकते हैं, भौतिक रूप से अलग-थलग होने के बावजूद, दोनों अवरोध एक दूसरे के साथ संपर्क में थे।

IV. माइनस पाँच, प्लस एक

जिस व्यक्ति ने "लाशों के विरोध" का फरमान सुनाया था, उसके बोलने और उनकी साझा आत्मा का यह सूत्र देने के बाद, सभी मुखों से एक अजीब तरह से संतुष्ट और भयानक चीख निकली, जो भाव में शोकपूर्ण और स्वर में विजयी थी:
मृत्यु अमर रहे! हम सब यहीं रहें!
“क्यों सब?” एनजोलरास ने कहा।
“सब! सब!”
एनजोलरास ने पुनः शुरू किया:
“स्थिति अच्छी है; बैरिकेड ठीक है। तीस आदमी काफी हैं। चालीस की बलि क्यों दें?”
उन्होंने जवाब दिया:
क्योंकि उनमें से एक भी नहीं जाएगा।
“नागरिकों,” एनजोलरास लगभग चिढ़ भरी आवाज़ में चिल्लाया, “इस गणतंत्र में इतने लोग नहीं हैं कि उन्हें व्यर्थ खर्च किया जाए। व्यर्थ की शान-शौकत व्यर्थ है। यदि कुछ लोगों का कर्तव्य मृत्यु है, तो उस कर्तव्य को भी अन्य कर्तव्यों की तरह ही पूरा किया जाना चाहिए।”
एनजोलरास, जो स्वयं को सिद्धांत का प्रतीक मानते थे, अपने सहधर्मियों पर उस प्रकार की सर्वशक्तिमान शक्ति रखते थे जो परम सत्ता से उत्पन्न होती है। फिर भी, उनकी इस सर्वशक्तिमानता के बावजूद, एक असंतोष उत्पन्न हुआ। एक सर्वोत्कृष्ट नेता होने के नाते, एनजोलरास ने असंतोष को देखकर दृढ़ता दिखाई। उन्होंने अभिमानपूर्वक बोलना जारी रखा:
“जो लोग तीस से अधिक संख्या में न होने से डरते हैं, वे खुलकर ऐसा कह दें।” फुसफुसाहटें और तेज हो गईं।
“इसके अलावा,” एक समूह में से एक आवाज ने कहा, “जाने की बात करना काफी आसान है। बैरिकेड चारों तरफ से घिरा हुआ है।”

“हैल्स की तरफ नहीं,” एनजोलरास ने कहा। “रुए मोंडेतोर मुक्त है, और रुए डेस प्रीचेर्स के रास्ते मार्चे डेस इनोसेंट्स तक पहुंचा जा सकता है।”

“और वहाँ,” एक और आवाज़ आई, “तुम्हें पकड़ लिया जाएगा। तुम सीमा रेखा या उपनगरों के किसी बड़े पहरेदार के साथ मिल जाओगे; वे एक आदमी को कमीज़ और टोपी पहने हुए गुजरते देखेंगे। ‘तुम कहाँ से आए हो?’ ‘क्या तुम बैरिकेड पर तैनात नहीं हो?’ और वे तुम्हारे हाथों को देखेंगे। तुम्हारे हाथों से बारूद की गंध आ रही होगी। गोली लगी है।”

एनजोलरास ने बिना कोई जवाब दिए कॉम्बेफेरे के कंधे को छुआ और दोनों शराबखाने में चले गए।

कुछ देर बाद वे वहाँ से निकले। एनजोलरास ने अपने फैले हुए हाथों में वे चार वर्दी पकड़ी हुई थीं जिन्हें उसने अलग रख दिया था। कॉम्बेफेरे उसके पीछे- पीछे कंधे की बेल्ट और शको (टोपी) लिए हुए आया।

“इस वर्दी के साथ,” एनजोलरास ने कहा, “तुम सैनिकों के बीच घुलमिलकर भाग सकते हो; ये चार के लिए काफी हैं।” और उसने चारों वर्दी ज़मीन पर फेंक दीं, जहाँ से ज़मीन हट चुकी थी।

उनके शांत श्रोताओं में जरा भी शंका नहीं आई। कॉम्बेफेरे ने उनकी बात मान ली।

“आओ,” उसने कहा, “तुम्हें थोड़ी दया दिखानी चाहिए। क्या तुम जानते हो कि यहाँ सवाल क्या है? यह महिलाओं का सवाल है। देखो यहाँ। क्या यहाँ महिलाएं हैं या नहीं? क्या यहाँ बच्चे हैं या नहीं? क्या यहाँ माताएँ हैं, हाँ या ना, जो अपने पैर से पालना झुलाती हैं और जिनके चारों ओर बहुत सारे छोटे बच्चे हैं? तुममें से जिसने कभी किसी नर्स का स्तन नहीं देखा, वह अपना हाथ उठाए। आह! तुम खुद को मारना चाहते हो, मैं भी—मैं, जो तुमसे बात कर रहा हूँ; लेकिन मैं महिलाओं के प्रेतों को अपने चारों ओर बाँहों में जकड़े हुए महसूस नहीं करना चाहता। मर जाओ, अगर तुम मरना चाहते हो, लेकिन दूसरों को मत मारो। यहाँ जो आत्महत्या होने वाली है, वह उदात्त है; लेकिन आत्महत्या संकीर्ण है, और विस्तार की गुंजाइश नहीं छोड़ती; और जैसे ही यह तुम्हारे पड़ोसियों को छूती है, आत्महत्या हत्या बन जाती है। उन छोटे सुनहरे सिरों के बारे में सोचो; उन सफेद बालों के बारे में सोचो। सुनो, एनजोलरास ने अभी

मुझे बताया है कि उसने रू डू सिग्न के कोने पर एक पांचवीं मंजिल पर एक रोशन खिड़की, एक गरीब खिड़की में जलती मोमबत्ती, और शीशे पर एक बूढ़ी औरत के सिर की कांपती हुई परछाई, जो मानो रात भर जागती रही हो। शायद वह आप में से किसी की माँ हो। अच्छा, उस आदमी को जाने दो, और जल्दी करो, अपनी माँ से कहो: 'माँ, मैं यहाँ हूँ!' उसे निश्चिंत रहने दो, यहाँ काम तो वैसे ही हो जाएगा। जब कोई अपने परिश्रम से अपने रिश्तेदारों का भरण-पोषण करता है, तो उसे स्वयं को बलिदान करने का अधिकार नहीं है। यह अपने परिवार को त्यागना है। और जिनकी बेटियाँ हैं! आप क्या सोच रहे हैं? आप खुद को मार डालते हैं, आप मर जाते हैं, यह ठीक है। और कल? बिना रोटी के जवान लड़कियाँ—यह एक भयानक बात है। आदमी भीख मांगता है, औरत बेचती है। आह! वे मनमोहक और दयालु प्राणी, इतने दयालु और इतने प्यारे, जो फूलों की टोपियाँ पहनते हैं, जो घर को पवित्रता से भर देते हैं, जो गाते और बातें करते हैं, जो एक जीवित सुगंध की तरह हैं, जो स्वर्ग में देवदूतों के अस्तित्व को साबित करते हैं। धरती पर कुंवारी कन्याओं की पवित्रता, वो जीन, वो लिसे, वो मिमी, वो प्यारी और ईमानदार प्राणी जो आपके लिए आशीर्वाद और आपका गौरव हैं, आह! हे भगवान, उन्हें भूखा रहना पड़ेगा! मैं आपसे क्या कहूँ? मानव शरीर का बाज़ार है; और आप अपने कांपते हाथों से उन्हें उसमें प्रवेश करने से नहीं रोक सकते! सड़क के बारे में सोचो, राहगीरों से भरे फुटपाथ के बारे में सोचो, उन दुकानों के बारे में सोचो जिनके पास से औरतें नंगे गले लेकर कीचड़ में आती-जाती हैं। ये औरतें भी कभी पवित्र थीं। अपनी बहनों के बारे में सोचो, आपमें से जिनके पास हैं। दुख, वेश्यावृत्ति, पुलिस, सेंट-लाज़ारे—यही वो सुंदर, नाज़ुक लड़कियाँ, विनम्रता, कोमलता और सुंदरता के वो नाज़ुक चमत्कार, जो मई के महीने में लिली से भी अधिक ताज़े हैं, का अंत होगा। आह! आपने खुद को मरवा लिया! अब आप मौजूद नहीं हैं! अच्छा ही हुआ; आपने लोगों को राजशाही से मुक्त करने की इच्छा की थी, और आप अपनी बेटियों को सौंप देते हैं। पुलिस। मित्रों, सावधान रहें, दया करें। स्त्रियाँ, अभागी स्त्रियाँ, हम उन पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। हम मानते हैं कि स्त्रियों को पुरुषों जैसी शिक्षा नहीं मिली है, हम उन्हें पढ़ने से रोकते हैं, हम उन्हें सोचने से रोकते हैं, हम उन्हें राजनीति में शामिल होने से रोकते हैं; क्या आप उन्हें आज शाम मुर्दाघर जाने और आपके शवों को पहचानने से रोकेंगे? देखते हैं, जिनके परिवार हैं उन्हें विनम्र होना चाहिए, हमसे हाथ मिलाना चाहिए और चले

जाना चाहिए, और हमें इस मामले को संभालने के लिए यहाँ अकेला छोड़ देना चाहिए। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि जाने के लिए साहस चाहिए, यह कठिन है; लेकिन जितना कठिन होगा, उतना ही पुण्य का काम होगा। आप कहते हैं: 'मेरे पास बंदूक है, मैं बैरिकेड पर हूँ; तो और भी बुरा, मैं वहीं रहूँगा।' तो और भी बुरा कहना आसान है। मेरे मित्रों, कल है; आप कल यहाँ नहीं होंगे, लेकिन आपके परिवार होंगे; और क्या कष्ट होंगे! देखिए, यहाँ एक सुंदर, स्वस्थ बच्चा है, जिसके गाल सेब जैसे हैं, जो बड़बड़ाता है, बातें करता है, हँसता है, जिसकी खुशबू आती है। तुम्हारे चुंबन के नीचे मीठा—और क्या तुम जानते हो कि जब उसे छोड़ दिया जाता है तो उसका क्या होता है? मैंने एक को देखा है, एक बहुत छोटा सा जीव, उससे भी छोटा। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। गरीब लोगों ने उसे दया करके अपने पास रख लिया था, लेकिन उनके पास केवल अपने लिए ही रोटी थी। बच्चा हमेशा भूखा रहता था। सर्दी का मौसम था। वह रोया नहीं। आप उसे चूल्हे के पास जाते हुए देख सकते थे, जिसमें कभी आग नहीं जलती थी, और जिसका पाइप, जैसा कि आप जानते हैं, मिट्टी और पीली मिट्टी का बना होता था। उसकी साँसें कर्कश थीं, चेहरा पीला पड़ गया था, हाथ-पैर ढीले पड़ गए थे, पेट फूला हुआ था। उसने कुछ नहीं कहा। अगर आप उससे बात करते, तो वह जवाब नहीं देता। वह मर चुका है। उसे नेकर अस्पताल ले जाया गया, जहाँ मैंने उसे देखा। मैं उस अस्पताल में हाउस-सर्जन था। अब, अगर आप में से कोई पिता हैं, ऐसे पिता जिनकी खुशी रविवार को अपने बच्चे का नन्हा हाथ अपने मजबूत हाथ में थामे टहलने में होती है, तो उनमें से हर पिता कल्पना करे कि यह बच्चा उनका अपना है। वह बेचारा बच्चा, मुझे याद है, और मुझे लगता है कि मैं उसे अभी भी देख रहा हूँ, जब वह नग्न अवस्था में लेटा हुआ था। चीर-फाड़ की मेज पर, उसकी पसलियाँ उसकी त्वचा पर ऐसे उभरी हुई थीं जैसे कब्रिस्तान में घास के नीचे कब्रें हों। उसके पेट में एक तरह की मिट्टी मिली। उसके दाँतों में राख थी। आओ, हम स्वयं का विवेकपूर्वक आत्मनिरीक्षण करें और अपने हृदय से परामर्श लें। आँकड़े बताते हैं कि परित्यक्त बच्चों में मृत्यु दर पचपन प्रतिशत है। मैं दोहराती हूँ, यह महिलाओं का प्रश्न है, यह माताओं से संबंधित है, यह युवा लड़कियों से संबंधित है, यह नन्हे बच्चों से संबंधित है। कौन तुमसे तुम्हारे बारे में बात कर रहा है? हम भली-भांति जानते हैं कि तुम क्या हो; हम भली-भांति जानते हैं कि तुम सब बहादुर हो, हे प्रभु! हम भली- भांति जानते हैं कि तुम सबकी आत्मा में महान उद्देश्य के लिए अपना जीवन

देने का आनंद और गौरव है; हम भली-भांति जानते हैं कि तुम स्वयं को उपयोगी और शानदार ढंग से मरने के लिए चुना हुआ महसूस करते हो, और तुममें से प्रत्येक विजय में अपने हिस्से से जुड़ा हुआ है। बहुत खूब। लेकिन तुम इस दुनिया में अकेले नहीं हो। अन्य प्राणी भी हैं जिनके बारे में तुम्हें सोचना चाहिए। तुम्हें अहंकारी नहीं होना चाहिए।

सभी ने उदास भाव से अपने सिर झुका लिए।

मानव हृदय के सबसे उदात्त क्षणों में विचित्र विरोधाभास। कॉम्बेफेरे, जिसने इस प्रकार बात की, अनाथ नहीं था। उसे अन्य पुरुषों की माताएँ याद थीं, और वह अपनी माँ को भूल गया था। वह स्वयं को मरवाने के कगार पर था। वह "एक स्वार्थी" था।

मैरियस, उपवास करते हुए, बुखार से ग्रस्त, एक के बाद एक सारी उम्मीदें खोकर, शोक में डूबा हुआ, सबसे भयावह जहाज दुर्घटना की तरह, और तीव्र भावनाओं से ग्रस्त तथा यह जानते हुए कि अंत निकट है, उस मतिभ्रम की स्थिति में और भी गहराई तक डूब गया था जो स्वेच्छा से स्वीकार किए गए घातक क्षण से पहले हमेशा आती है।

एक शरीर क्रियाविज्ञानी उसमें उस तीव्र तल्लीनता के बढ़ते लक्षणों का अध्ययन कर सकता था, जिसे विज्ञान द्वारा जाना और वर्गीकृत किया गया है, और जो पीड़ा के लिए वही है जो सुख के लिए भोग-विलास है। निराशा में भी परमानंद होता है। मारियस इस स्थिति तक पहुँच चुका था। वह हर चीज़ को बाहर से देख रहा था; जैसा कि हमने कहा है, उसके सामने से गुज़रने वाली चीज़ें दूर प्रतीत होती थीं; वह समग्रता को समझ रहा था, लेकिन बारीकियों को नहीं देख पा रहा था। वह लोगों को आते-जाते देख रहा था जैसे किसी ज्वाला के बीच से गुज़र रहे हों। वह आवाज़ें सुन रहा था जैसे किसी अथाह गहराई से आ रही हों।

लेकिन इससे वह विचलित हो गया। इस दृश्य में एक ऐसा बिंदु था जिसने उसे भी झकझोर दिया और झकझोर दिया। अब उसके मन में केवल एक ही विचार था, मर जाना; और वह इससे पीछे हटना नहीं चाहता था, लेकिन अपनी अंधकारमय नींद में उसने सोचा कि स्वयं को नष्ट करते हुए भी, वह किसी और को बचाने से वंचित नहीं है।

उसने अपनी आवाज ऊंची कर दी।

“एनजोलरास और कॉम्बेफेरे सही हैं,” उसने कहा; “कोई अनावश्यक बलिदान नहीं। मैं उनके साथ हूँ, और आपको जल्दी करनी चाहिए। कॉम्बेफेरे ने आपको समझाने में कामयाबी हासिल कर ली है। आपमें से कुछ लोगों के परिवार हैं, माताएँ, बहनें, पत्नियाँ, बच्चे हैं। ऐसे लोगों को सेना छोड़ देनी चाहिए।”

कोई नहीं हिला।

“विवाहित पुरुष और परिवारों के समर्थक, कतारों से बाहर निकलें!” मारियस ने दोहराया।

उसका अधिकार बहुत अधिक था। एनजोलरास निश्चित रूप से मोर्चे का मुखिया था, लेकिन मारियस उसका रक्षक था।

“मैं इसका आदेश देता हूँ,” एनजोलरास चिल्लाया।

“मैं आपसे विनती करता हूँ,” मारियस ने कहा।

फिर, कॉम्बेफेरे के शब्दों से प्रभावित होकर, एनजोलरास के आदेश से विचलित होकर, मारियस की विनती से प्रभावित होकर, ये वीर पुरुष एक-दूसरे की निंदा करने लगे।—एक युवक ने एक वयस्क पुरुष से कहा, “यह सच है, आप एक परिवार के मुखिया हैं। जाइए।”—उस पुरुष ने उत्तर दिया, “यह आपका कर्तव्य है, आपकी दो बहनें हैं जिनका आप भरण-पोषण करते हैं।”—और एक अभूतपूर्व विवाद छिड़ गया। प्रत्येक इस बात को लेकर संघर्ष करने लगा कि किसे मकबरे के द्वार पर खड़ा नहीं होना चाहिए।

“जल्दी करो,” कौरफेयरैक ने कहा, “एक चौथाई घंटे में बहुत देर हो जाएगी।”

“नागरिकों,” एनजोलरास ने आगे कहा, “यह गणतंत्र है, और यहाँ सार्वभौमिक मताधिकार का शासन है। आप स्वयं उन लोगों को नामित करें जिन्हें जाना है।”

उन्होंने आज्ञा का पालन किया। कुछ मिनटों के बाद, सर्वसम्मति से पाँच लोगों को चुना गया और वे कतार से बाहर आ गए।

“वे पाँच हैं!” मारियस ने हैरानी से कहा।

वहाँ केवल चार ही वर्दी थीं।

“ठीक है,” उन पांचों ने कहना शुरू किया, “किसी एक को तो यहीं रुकना ही होगा।”

फिर इस बात को लेकर विवाद खड़ा हो गया कि किसे रहना चाहिए और किसे दूसरों को न रहने के लिए कारण ढूंढने चाहिए। उदारतापूर्ण झगड़ा फिर से शुरू हो गया।

“तुम्हारी एक पत्नी है जो तुमसे प्यार करती है।” — “तुम्हारी बूढ़ी माँ है।” — “तुम्हारे न तो पिता हैं और न ही माता, और तुम्हारे तीन छोटे भाइयों का क्या होगा?” — “तुम पाँच बच्चों के पिता हो।” — “तुम्हें जीने का अधिकार है, तुम्हारी उम्र केवल सत्रह वर्ष है, तुम्हारे लिए अभी मरना बहुत जल्दी है।”

ये महान क्रांतिकारी बैरिकेड्स वीरता के लिए एकत्रीकरण स्थल थे। वहाँ असंभव भी सरल था। ये लोग एक-दूसरे को आश्चर्यचकित नहीं करते थे।

“जल्दी करो,” कौरफेयरैक ने दोहराया।

समूहों में से पुरुषों ने मारियस को चिल्लाकर पुकारा:

"क्या आप यह तय करेंगे कि कौन-कौन पद पर बना रहेगा?"

“हां,” उन पांचों ने कहा, “चुनिए। हम आपकी बात मानेंगे।”

मारियस को विश्वास ही नहीं था कि वह किसी और भावना को महसूस कर सकता है। फिर भी, किसी व्यक्ति को मृत्यु के लिए चुनने के विचार मात्र से ही उसके दिल में खून का दौरा तेज हो गया। अगर उसके लिए और अधिक पीला पड़ना संभव होता, तो वह ज़रूर पीला पड़ जाता।

वह उन पांचों की ओर बढ़ा, जिन्होंने उस पर मुस्कुराते हुए उसका अभिवादन किया, और उनमें से प्रत्येक ने, अपनी आँखों में उस भव्य ज्वाला से भरी हुई, जो इतिहास की गहराइयों में थर्मोपाइले के ऊपर मंडराती हुई दिखाई देती है, उससे प्रार्थना की:

"मुझे मुझे मुझे!"

और मारियस ने मूर्खतापूर्वक उन्हें गिना; वे अभी भी पाँच ही थे! फिर उसकी नज़र चारों वर्दी पर पड़ी।

उसी क्षण, मानो स्वर्ग से एक पाँचवीं वर्दी गिर पड़ी, बाकी चार पर।

पांचवें व्यक्ति को बचा लिया गया।

मारियस ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और एम. फाउचेलेवेंट को पहचान लिया।
जीन वाल्जेन अभी-अभी बैरिकेड में दाखिल हुए थे।
वह मोंडेतोर लेन के रास्ते आया था, चाहे पूछताछ के जरिए, या सहज ज्ञान से, या संयोग से। नेशनल गार्ड्समैन की वर्दी की बदौलत उसे रास्ता तय करने में कोई कठिनाई नहीं हुई।
रू मोंडेतोर में विद्रोहियों द्वारा तैनात संतरी के पास एक भी राष्ट्रीय रक्षक के लिए अलार्म बजाने का कोई अवसर नहीं था, और उसने उसे सड़क पर उलझने दिया, मन ही मन सोचते हुए: "शायद कोई अतिरिक्त बल आया है, लेकिन जो भी हो, वह एक कैदी है।" परिस्थिति इतनी गंभीर थी कि संतरी के लिए अपने कर्तव्य और निगरानी पद को छोड़ना संभव नहीं था।
जिस क्षण जीन वालजेन किले में दाखिल हुए, किसी ने उन पर ध्यान नहीं दिया, सबकी निगाहें चुने हुए पाँच आदमियों और चार वर्दीधारियों पर टिकी थीं।
जीन वालजेन ने भी सब कुछ देखा और सुना था, और उन्होंने चुपचाप अपना कोट उतारकर बाकी कोटों के ढेर पर फेंक दिया।
उस समय जो भावना उत्पन्न हुई, उसका वर्णन करना असंभव था।
“यह आदमी कौन है?” बॉसुएट ने पूछा।
"वह एक ऐसा व्यक्ति है जो दूसरों को बचाता है," कॉम्बेफेरे ने उत्तर दिया।
मारियस ने गंभीर स्वर में कहा:
"उसे पहचानती हूँ।"
इस गारंटी से सभी संतुष्ट हो गए।
एनजोलरास ने जीन वालजेन की ओर रुख किया।
"आपका स्वागत है, नागरिक।"
और उन्होंने आगे कहा:
"तुम जानते हो कि हम मरने वाले हैं।"
जीन वाल्जेन ने बिना कुछ जवाब दिए, उस विद्रोही की मदद की जिसे वह बचा रहा था, ताकि वह अपनी वर्दी पहन सके।

V. बैरिकेड के शिखर से दिखाई देने वाला क्षितिज

उस भयावह घड़ी और उस निर्दयी स्थान पर सभी की स्थिति का परिणाम और चरम बिंदु एनजोलरास की परम उदासी थी।

एनजोलरास के भीतर क्रांति की परिपूर्णता समाहित थी; फिर भी, पूर्णता की दृष्टि से वे अपूर्ण थे; उनमें सेंट जस्ट का प्रभाव अधिक था और अनाचारसिस क्लूट्स का प्रभाव कम; फिर भी, ए.बी.सी. के मित्रों के समाज में उनका मन कॉम्बेफेरे के विचारों से कुछ हद तक अलग हो गया था; कुछ समय से वे धीरे- धीरे संकीर्ण विचारधारा से बाहर निकल रहे थे और प्रगति के व्यापक प्रभाव की ओर झुक रहे थे, और उन्होंने महान फ्रांसीसी गणराज्य के विशाल मानवीय गणराज्य में परिवर्तन को एक निश्चित और भव्य विकास के रूप में स्वीकार कर लिया था। जहाँ तक तात्कालिक साधनों का संबंध था, हिंसक स्थिति उत्पन्न होने पर वे हिंसक होना चाहते थे; इस मामले में वे कभी नहीं बदले; और वे उसी महान और प्रखर विचारधारा के अनुयायी बने रहे जिसे "83" शब्दों में संक्षेपित किया जा सकता है। एनजोलरास पत्थरों की सीढ़ी पर सीधे खड़े थे, उनकी एक कोहनी बंदूक के बट पर टिकी थी। वे चिंतन में लीन थे; वह कांप उठा, मानो भविष्यवाणी की सांसें चल रही हों; मृत्यु के स्थान तिपाई की तरह स्थिर होते हैं। उसकी आँखों से एक दबी हुई आग सी निकली, जो अंतर्मुखी भाव से भरी हुई थीं। अचानक उसने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया, उसके सुनहरे बाल तारों से बने गहरे रंग के रथ पर किसी देवदूत के बालों की तरह पीछे गिरे, वे किसी प्रभामंडल की चमक में चौंके हुए शेर की अयाल की तरह थे, और एनजोलरास चिल्लाया:

“नागरिकों, क्या आप अपने लिए भविष्य की कल्पना करते हैं? शहरों की सड़कें प्रकाश से जगमगा रही हों, दहलीजों पर हरी-भरी शाखाएँ हों, राष्ट्र बहनें हों, मनुष्य न्यायप्रिय हों, वृद्ध बच्चे को आशीर्वाद दे रहे हों, अतीत वर्तमान से प्रेम कर रहा हो, विचारक पूर्ण स्वतंत्रता में हों, विश्वासी पूर्ण समानता के साथ हों, धर्म स्वर्ग हो, ईश्वर प्रत्यक्ष पुजारी हो,

मानवीय अंतरात्मा वेदी बन जाए, कोई घृणा न रहे, कार्यशाला और विद्यालय में भाईचारा हो, एकमात्र दंड और प्रतिफल यश हो, सबके लिए काम हो, सबके लिए न्याय हो, सर्वोपरि शांति हो, कोई रक्तपात न हो, कोई युद्ध न हो, सुखी माताएँ हों! भौतिकता पर विजय प्राप्त करना पहला कदम है; आदर्श को साकार करना दूसरा कदम है। प्रगति ने अब तक जो हासिल किया है, उस पर विचार करें। पहले, पहली मानव जाति ने भय से अपने सामने से जल पर साँस लेते हुए हाइड्रा को गुजरते देखा, ज्वाला उगलने वाले अजगर को, हवा के राक्षस ग्रिफिन को, जो चील के पंखों और बाघ के पंजों से उड़ता था; भयानक जानवर जो मनुष्य से ऊपर थे। फिर भी, मनुष्य ने अपने जाल बिछाए, बुद्धि से प्रेरित होकर, हमने अंततः इन राक्षसों पर विजय प्राप्त की। हमने हाइड्रा को परास्त कर दिया है, और इसे लोकोमोटिव कहा जाता है; हम ग्रिफिन को परास्त करने के कगार पर हैं, हमने इसे पकड़ लिया है, और इसे गुब्बारा कहा जाता है। जिस दिन यह प्रोमेथियन कार्य पूरा होगा, और जब मनुष्य प्राचीन काल के त्रिविध काइमेरा, हाइड्रा, ड्रैगन और ग्रिफिन को अपनी इच्छा के अधीन कर लेगा, वह जल, अग्नि और वायु का स्वामी होगा, और वह शेष सजीव सृष्टि के लिए वही होगा जो प्राचीन देवता उसके लिए थे। साहस रखो, और आगे बढ़ो! नागरिकों, हम कहाँ जा रहे हैं? विज्ञान द्वारा निर्मित सरकार की ओर, चीजों की शक्ति को एकमात्र सार्वजनिक शक्ति बनाने की ओर, प्राकृतिक नियम की ओर, जिसमें स्वयं में ही उसका अनुमोदन और दंड निहित है और जो स्वयं को प्रमाणों द्वारा प्रचारित करता है, सत्य के ऐसे सवेरे की ओर जो दिन के सवेरे के अनुरूप हो। हम लोगों के संघ की ओर बढ़ रहे हैं; हम मनुष्य की एकता की ओर बढ़ रहे हैं। अब और कल्पनाएँ नहीं; अब और परजीवी नहीं। वास्तविकता का शासन। सत्य, वही लक्ष्य है। सभ्यता यूरोप के शिखर पर, और बाद में महाद्वीपों के केंद्र में, बुद्धिजीवियों की एक भव्य संसद में अपनी सभाएँ आयोजित करेगी। कुछ ऐसा ही पहले भी देखा जा चुका है। एम्फिक्टियन की साल में दो बैठकें होती थीं, एक देवताओं के निवास स्थान डेल्फ़ोस में, दूसरी नायकों के स्थान थर्मोपाइले में। यूरोप के अपने एम्फिक्टियन होंगे; पूरी दुनिया के अपने एम्फिक्टियन होंगे। फ्रांस इस महान भविष्य को अपने हृदय में धारण किए हुए है। यह उन्नीसवीं सदी की उत्पत्ति है। ग्रीस ने जिस रूपरेखा को प्रस्तुत किया है, उसे फ्रांस द्वारा पूर्ण किया जाना चाहिए। मेरी बात सुनो, फ्यूली, वीर शिल्पकार, जनमानस। मैं तुम्हारा आदर करता हूँ। हाँ, तुम भविष्य को स्पष्ट

रूप से देख रहे हो, हाँ, तुम सही हो। फ्यूली, तुम्हारा न तो पिता था और न ही माता; तुमने मानवता को अपनी माता और अधिकार को अपना पिता माना। तुम यहाँ मरने वाले हो, अर्थात् विजय प्राप्त करने वाले हो। नागरिकों, आज जो कुछ भी हो, हमारी हार और हमारी जीत, वह एक क्रांति है। जिसे हम रचने जा रहे हैं। जैसे भीषण आग पूरे शहर को रोशन कर देती है, वैसे ही क्रांतियाँ पूरी मानव जाति को प्रकाशित करती हैं। और वह क्रांति क्या है जिसे हम लाने वाले हैं? मैंने अभी आपको बताया, सत्य की क्रांति। राजनीतिक दृष्टिकोण से, केवल एक ही सिद्धांत है; स्वयं पर मनुष्य की संप्रभुता। स्वयं पर मेरी इस संप्रभुता को स्वतंत्रता कहते हैं। जहाँ इन संप्रभुताओं में से दो या तीन का संयोजन होता है, वहाँ राज्य की उत्पत्ति होती है। लेकिन उस संयोजन में कोई त्याग नहीं होता। प्रत्येक संप्रभुता सामान्य अधिकार के निर्माण के उद्देश्य से स्वयं का एक निश्चित अंश प्रदान करती है। यह अंश हम सभी के लिए समान है। प्रत्येक संप्रभुता द्वारा सभी को प्रदान की जाने वाली इस समान रियायत को समानता कहते हैं। सामान्य अधिकार और कुछ नहीं बल्कि प्रत्येक के अधिकार पर केंद्रित सभी की सुरक्षा है। प्रत्येक पर सभी की इस सुरक्षा को बंधुत्व कहते हैं। इन सभी एकत्रित संप्रभुताओं के प्रतिच्छेदन बिंदु को समाज कहते हैं। यह प्रतिच्छेदन एक जंक्शन होने के कारण, यह बिंदु एक गाँठ है। इसलिए इसे सामाजिक बंधन कहते हैं। कुछ लोग इसे सामाजिक अनुबंध कहते हैं; जो कि एक ही बात है, क्योंकि अनुबंध शब्द व्युत्पत्ति के अनुसार बंधन के विचार से बना है। आइए समानता को समझें; क्योंकि यदि स्वतंत्रता शिखर है, तो समानता आधार है। हे नागरिकों, समानता केवल सतही वनस्पति नहीं है, घास के बड़े-बड़े तिनकों और छोटे-छोटे ओक के पेड़ों का समाज नहीं है; ईर्ष्याओं की निकटता नहीं है जो एक दूसरे को निष्प्रभावी बना देती है; कानूनी रूप से, यह सभी योग्यताओं को समान अवसर प्रदान करना है; राजनीतिक रूप से, यह सभी वोटों को समान महत्व देना है; धार्मिक रूप से, यह सभी अंतरात्माओं को समान अधिकार देना है। समानता का एक अंग है: नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा। साक्षरता का अधिकार, यहीं से शुरुआत होनी चाहिए। सभी पर प्राथमिक विद्यालय अनिवार्य है, सभी को माध्यमिक विद्यालय उपलब्ध कराया जाता है, यही कानून है। एक समान विद्यालय से एक समान समाज का जन्म होगा। हाँ, शिक्षा! प्रकाश! प्रकाश! सब कुछ प्रकाश से आता है, और उसी में लौटता है। हे नागरिकों, उन्नीसवीं शताब्दी महान है, लेकिन बीसवीं शताब्दी सुखमय

होगी। तब, पुराने इतिहास जैसा कुछ भी नहीं होगा, हमें आज की तरह विजय, आक्रमण, सत्ता हथियाने आदि का भय नहीं रहेगा। राष्ट्रों की प्रतिद्वंद्विता, हाथों में हथियार, राजाओं के विवाह पर आधारित सभ्यता का व्यवधान, वंशानुगत अत्याचारों में जन्म पर आधारित सभ्यता का व्यवधान, एक कांग्रेस द्वारा जनता का विभाजन, एक राजवंश की विफलता के कारण विखंडन, अनंत के पुल पर दो धर्मों का आमने-सामने आना, जैसे अंधेरे में दो हिरण; हमें अब अकाल, ठेके पर खेती, संकट से उत्पन्न वेश्यावृत्ति, काम की विफलता से उत्पन्न दुख, फांसी और तलवार, और घटनाओं के जंगल में युद्ध और संयोग की गुंडागर्दी से डरने की आवश्यकता नहीं होगी। कोई लगभग कह सकता है: अब कोई घटनाएँ नहीं होंगी। हम सुखी होंगे। मानव जाति अपने नियम का पालन करेगी, जैसे पृथ्वी अपने नियम का पालन करती है; आत्मा और तारे के बीच सामंजस्य पुनः स्थापित होगा; आत्मा सत्य के चारों ओर वैसे ही आकर्षित होगी जैसे ग्रह प्रकाश के चारों ओर। मित्रों, जिस समय मैं आपसे बात कर रहा हूँ, वह एक अंधकारमय समय है; लेकिन ये भविष्य की भयानक खरीद हैं। क्रांति एक कीमत है। ओह! मानव जाति होगी उद्धार हुआ, उठा उठाया गया, सांत्वना मिली! हम इस दीवार पर इसकी पुष्टि करते हैं। प्रेम की यह पुकार बलिदान की ऊँचाइयों से ही तो निकलती है, पर कहाँ से? हे मेरे भाइयों, यह वह मिलन बिंदु है, जहाँ विचारक और पीड़ित मिलते हैं; यह दीवार न तो पत्थरों से बनी है, न ही शहतीरों से, न ही लोहे के टुकड़ों से; यह दो ढेरों से बनी है, एक विचारों का ढेर और एक दुखों का ढेर। यहाँ दुख आदर्श से मिलता है। दिन रात को गले लगाता है और उससे कहता है: 'मैं मरने वाला हूँ, और तू मेरे साथ पुनर्जन्म लेगा।' समस्त निराशाओं के आलिंगन से आस्था फूट पड़ती है। दुख यहाँ अपनी पीड़ा लाते हैं और विचार अपनी अमरता। यह पीड़ा और यह अमरता मिलकर हमारी मृत्यु का निर्माण करने वाले हैं। भाइयों, जो यहाँ मरता है वह भविष्य के प्रकाश में मरता है, और हम भोर की रोशनी से जगमगाते एक मकबरे में प्रवेश कर रहे हैं।

एनजोलरास चुप होने के बजाय कुछ देर रुका; उसके होंठ खामोशी से हिलते रहे, मानो वह खुद से बात कर रहा हो, जिससे सभी लोग ध्यान से उसकी ओर देखने लगे, ताकि और कुछ सुन सकें। कोई ताली नहीं बजी; लेकिन वे काफी देर तक आपस में फुसफुसाते रहे। वाणी एक सांस होती है, इसलिए बुद्धि की सरसराहट पत्तों की सरसराहट जैसी लगती है।

VI. मारियस हैगार्ड, जेवर्ट लैकोनिक

आइए जानते हैं कि मारियस के मन में क्या विचार चल रहे थे।

पाठक को उसकी आत्मा की अवस्था याद करने दीजिए। हमने अभी-अभी इसका जिक्र किया है, उसके लिए सब कुछ एक भ्रम जैसा था। उसका विवेक डगमगा गया था। मारियस, इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है, मृत्यु की पीड़ा में तड़प रहे लोगों पर छाए विशाल, काले साये में था। उसे ऐसा लगा जैसे वह कब्र में प्रवेश कर चुका हो, उसे ऐसा लगा जैसे वह दीवार के दूसरी तरफ पहुँच गया हो, और अब वह जीवितों के चेहरों को किसी मृत व्यक्ति की आँखों से ही देख पा रहा था।

एम. फॉशेलवेंट वहाँ कैसे पहुँचे? वे वहाँ क्यों थे? वे वहाँ क्या करने आए थे? मारियस ने ये सारे सवाल खुद से नहीं पूछे। इसके अलावा, चूंकि हमारी निराशा की यह विशेषता है कि यह हमें और दूसरों को भी अपनी चपेट में ले लेती है, इसलिए उन्हें यह तर्कसंगत लगा कि सारी दुनिया वहाँ मरने के लिए आए।

बस, कोसेट के बारे में सोचते ही उसके दिल में एक टीस उठती थी।

हालांकि, एम. फाउचेलेवेंट ने उनसे बात नहीं की, उनकी ओर देखा तक नहीं, और यहां तक कि ऐसा भी नहीं लगा कि उन्होंने उनकी बात सुनी हो, जब मारियस ने ऊंची आवाज में कहा: "मैं उसे जानता हूं।"

मारियस के लिए, एम. फॉशेलवेंट का यह रवैया सुकून देने वाला था, और अगर ऐसे भावों के लिए ऐसा शब्द इस्तेमाल किया जा सकता है, तो हम कहेंगे कि उसे यह पसंद आया। उसने हमेशा उस रहस्यमय व्यक्ति से बात करना बिल्कुल असंभव समझा था, जो उसकी नज़र में अस्पष्ट और प्रभावशाली दोनों था। इसके अलावा, उसे देखे हुए काफी समय हो गया था; और मारियस के डरपोक और संकोची स्वभाव के कारण यह असंभवता और भी बढ़ गई थी।

चुने गए पाँचों व्यक्ति मोंडेतोर लेन से बैरिकेड पार कर गए; वे राष्ट्रीय रक्षक दल के सदस्यों से हूबहू मिलते-जुलते थे। उनमें से एक विदा लेते समय रो पड़ा। रवाना होने से पहले उन्होंने बचे हुए लोगों को गले लगाया।

जब जीवनदान पाकर वापस लौटे पांचों लोग विदा हो गए, तो एनजोलरास ने उस व्यक्ति के बारे में सोचा जिसे मृत्युदंड दिया गया था।

वह शराबखाने में दाखिल हुआ। जावर्ट, जो अभी भी खंभे से बंधा हुआ था, ध्यान में लीन था।

“क्या तुम्हें कुछ चाहिए?” एनजोलरास ने उससे पूछा।

जैवर्ट ने जवाब दिया: "तुम मुझे कब मारोगे?"

“रुको। हमें इस समय अपने सभी कारतूसों की जरूरत है।”

"तो मुझे एक ड्रिंक दो," जावर्ट ने कहा।

एनजोलरास ने खुद उसे एक गिलास पानी दिया, और चूंकि जावर्ट जकड़ा हुआ था, इसलिए उसने उसे पानी पीने में मदद की।

“बस इतना ही?” एनजोलरास ने पूछा।

“मुझे इस खंभे पर खड़े होने में असहजता हो रही है,” जैवर्ट ने उत्तर दिया।
“तुमने मुझे यहाँ रात गुजारने के लिए छोड़कर दया नहीं दिखाई। मुझे जैसे चाहो बाँध लो, लेकिन तुम मुझे उस दूसरे आदमी की तरह मेज पर लिटा सकते थे।”

और सिर हिलाकर उसने एम. माबेउफ के शव की ओर इशारा किया।

जैसा कि पाठक को याद होगा, कमरे के अंत में एक लंबी, चौड़ी मेज थी, जिस पर वे गोलियां बना रहे थे और कारतूस तैयार कर रहे थे। सभी कारतूस बन जाने और सारा बारूद इस्तेमाल हो जाने के बाद, यह मेज खाली हो गई थी।

एनजोलरास के आदेश पर, चार विद्रोहियों ने जावर्ट को खंभे से मुक्त कर दिया। जब वे उसे छुड़ा रहे थे, तब पाँचवें ने उसकी छाती पर संगीन तान रखी थी।

उसके हाथों को पीछे की ओर बांधकर, उन्होंने उसके पैरों के पास एक पतली लेकिन मजबूत चाबुक की रस्सी बांध दी, जैसा कि फांसी के तख्ते पर चढ़ने वाले पुरुषों के साथ किया जाता है, जिससे वह लगभग पंद्रह इंच लंबे कदम उठा सका, और उसे कमरे के अंत में स्थित मेज तक चलने के लिए मजबूर किया, जहां उन्होंने उसे लिटा दिया, उसके शरीर के मध्य भाग को कसकर बांध दिया गया था।

अतिरिक्त सुरक्षा के तौर पर, और उसकी गर्दन से बंधी रस्सी के माध्यम से, उन्होंने उन बंधनों की प्रणाली में एक और बंधन जोड़ दिया, जिसने भागने के हर प्रयास को असंभव बना दिया, जिसे जेलों में मार्टिंगेल कहा जाता है, जो गर्दन से शुरू होकर पेट पर दो भागों में बंट जाता है, और पैरों के बीच से गुजरते हुए हाथों से मिलता है।

जब वे जावर्ट को बांध रहे थे, दहलीज पर खड़ा एक आदमी उसे बड़ी उत्सुकता से देख रहा था। उस आदमी की परछाई ने जावर्ट को अपना सिर घुमाने पर मजबूर कर दिया। उसने आँखें ऊपर उठाईं और जीन वाल्जेन को पहचान लिया। वह जरा भी चौंका नहीं, बल्कि गर्व से अपनी पलकें झुका लीं और बस इतना कहा: "यह तो बिलकुल आसान है।"

VII. स्थिति और भी गंभीर हो जाती है

दिन का उजाला तेज़ी से बढ़ रहा था। कोई खिड़की नहीं खुली थी, कोई दरवाज़ा थोड़ा सा भी खुला नहीं था; भोर तो हो रही थी, पर पूरी तरह जागना नहीं था। जैसा कि हमने बताया है, बैरिकेड के सामने, रू डे ला चानव्रेरी का आखिरी सिरा सैनिकों द्वारा खाली करा लिया गया था; वह इलाका खाली लग रहा था और राहगीरों को एक अजीब सी शांति का आभास दे रहा था। रू सेंट-डेनिस थेब्स के स्फिंक्स के रास्ते की तरह खामोश था। चौराहे पर कोई भी जीवित प्राणी नहीं था, जो सूरज की रोशनी में सफेद चमक रहा था। सुनसान सड़कों पर इस रोशनी से ज्यादा उदास कुछ नहीं होता। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, पर कुछ सुनाई दे रहा था। कुछ दूरी पर एक रहस्यमय हलचल हो रही थी। यह स्पष्ट था कि निर्णायक क्षण निकट आ रहा था। पिछली शाम की तरह, पहरेदार आ गए थे; लेकिन इस बार सभी लोग आए थे।

पहली बार हुए हमले के मुकाबले बैरिकेड पहले से कहीं ज्यादा मजबूत था। उन पांचों के चले जाने के बाद उन्होंने इसकी ऊंचाई और भी बढ़ा दी थी।

हाल्स क्षेत्र का निरीक्षण कर चुके संतरी की सलाह पर, एनजोलरास ने पीछे से अचानक हमले के डर से एक गंभीर निर्णय लिया। उन्होंने मोंडेतोर गली के उस संकरे हिस्से को, जो अब तक खुला था, बैरिकेड लगवा दिया। इसके लिए उन्होंने कई घरों की लंबाई तक फुटपाथ खोद डाला। इस तरह, तीन गलियों से घिरी यह बैरिकेड, सामने रू डे ला चानवरेरी, बाईं ओर रू डू सिग्न और डे ला पेटिट ट्रुआंडेरी, और दाईं ओर रू मोंडेतोर पर, लगभग अभेद्य हो गई; हालांकि, वे वहां बुरी तरह फंस गए थे। इसके तीन मोर्चे थे, लेकिन बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था।—"एक किला, लेकिन चूहे का बिल भी," कौरफेयरैक ने हंसते हुए कहा।

बॉसुएट ने बताया कि एनजोलरास में लगभग तीस पत्थर "अत्यधिक मात्रा में उखाड़ दिए गए थे" और शराब की दुकान के दरवाजे के पास ढेर लगा दिए गए थे।

जिस तरफ से हमला होना तय था, वहां अब इतनी गहरी खामोशी छा गई थी कि एनजोलरास ने प्रत्येक सैनिक को अपने-अपने युद्ध स्थल पर वापस जाने का आदेश दिया।

प्रत्येक को ब्रांडी की एक निश्चित मात्रा दी गई।

किसी हमले की तैयारी कर रहे बैरिकेड से ज़्यादा विचित्र कुछ नहीं होता। हर आदमी अपनी जगह ऐसे चुनता है मानो थिएटर में हो। वे एक-दूसरे को धक्का देते हैं, कोहनी मारते हैं और भीड़ में घुस जाते हैं। कुछ लोग पक्के पत्थरों से स्टॉल बना लेते हैं। दीवार का एक कोना रास्ते में आता है, तो उसे हटा दिया जाता है; अगर कोई तिरपाल सुरक्षा दे सकता है, तो उसके पीछे शरण ली जाती है। बाएं हाथ से लड़ने वाले लोग अनमोल होते हैं; वे ऐसी जगहें लेते हैं जो बाकियों के लिए असुविधाजनक होती हैं। कई लोग बैठकर लड़ने की व्यवस्था करते हैं। वे आराम से मारना चाहते हैं और आराम से मरना चाहते हैं। जून 1848 के दुखद युद्ध में, एक विद्रोही, जो एक कुशल निशानेबाज था और छत पर बने चबूतरे के ऊपर से गोलीबारी कर रहा था, उसने अपने लिए एक आरामकुर्सी मंगवाई थी; वहीं पर छर्रों के एक गोले ने उसे निशाना बनाया।

जैसे ही नेता कार्रवाई के लिए रास्ता साफ करने का आदेश देता है, सभी अव्यवस्थित गतिविधियाँ रुक जाती हैं; अब कोई खींचतान नहीं होती; कोई गुटबाजी नहीं होती; कोई परोक्ष चर्चा नहीं होती, कोई अलगाव नहीं होता; उनके मन में सब कुछ एकाग्र हो जाता है और हमलावरों की प्रतीक्षा में बदल जाता है। खतरे के आने से पहले की घेराबंदी अराजकता है; खतरे में, यह स्वयं अनुशासन है। संकट व्यवस्था को जन्म देता है।

जैसे ही एनजोलरास ने अपनी दोधारी राइफल उठाई और अपने लिए आरक्षित सुरक्षित स्थान पर खड़ा हुआ, बाकी सब चुप हो गए। पक्की सड़क की दीवार पर हल्की-हल्की, तीखी आवाज़ें गूंज उठीं। ये आवाज़ें थीं सैनिकों द्वारा अपनी बंदूकें तैयार करने की।

इसके अलावा, उनका रवैया पहले से कहीं अधिक गर्वपूर्ण और आत्मविश्वासी था; बलिदान की अधिकता उन्हें मजबूत बनाती है; अब उनमें कोई आशा नहीं बची थी, बल्कि निराशा छाई हुई थी—वह अंतिम हथियार जो कभी-कभी विजय दिलाता है; वर्जिल ने भी यही कहा है। सर्वोच्च शक्ति चरम संकल्पों से उत्पन्न होती

है। मृत्यु को गले लगाना कभी-कभी जहाज के डूबने से बचने का साधन होता है; और ताबूत का ढक्कन सुरक्षा का तख्ता बन जाता है।

पिछली शाम की तरह ही, सभी का ध्यान सड़क के उस छोर पर केंद्रित था, जो अब रोशन और दिखाई दे रहा था, और हम लगभग कह सकते हैं कि सबकी निगाहें उसी पर टिकी हुई थीं।

उन्हें ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा। सेंट-ल्यू इलाके में हलचल शुरू हो गई, लेकिन यह पहले हमले जैसी नहीं थी। जंजीरों की खड़खड़ाहट, भीड़ का बेचैन होकर हिलना-डुलना, फुटपाथ पर पीतल के खटकने की आवाज़, एक तरह का गंभीर शोरगुल, यह संकेत दे रहा था कि लोहे की कोई भयावह इमारत नज़दीक आ रही है। इन शांत पुरानी गलियों में एक सिहरन दौड़ गई, जो विचारों और रुचियों के आदान-प्रदान के लिए बनी थीं और युद्ध के पहियों की भयानक गड़गड़ाहट के लिए नहीं बनी थीं।

सड़क के अंतिम छोर पर मौजूद सभी लड़ाकों की निगाहें भयंकर रूप से स्थिर हो गईं।

एक तोप दिखाई दी।

तोपची उसे धकेल रहे थे; वह फायरिंग के लिए तैयार थी; उसका आगे का हिस्सा अलग कर दिया गया था; दो सैनिक तोप के पिछले हिस्से को पकड़े हुए थे, चार पहिए के पास थे; बाकी सैनिक तोप के डंडे के साथ पीछे-पीछे चल रहे थे।
उन्हें जलते हुए लिंट-स्टॉक का धुआँ दिखाई दे रहा था।

“आग!” एनजोलरास चिल्लाया।

पूरी बैरिकेड पर गोलीबारी हुई, धमाका भयानक था; धुएं के एक बवंडर ने तोपों और सैनिकों दोनों को ढक लिया और मिटा दिया; कुछ सेकंड बाद, बादल छंट गया, और तोपें और सैनिक फिर से दिखाई दिए; तोप चलाने वाले दल ने अभी-अभी तोप को धीरे-धीरे, सही ढंग से, बिना जल्दबाजी किए, बैरिकेड की ओर मुंह करके तैनात किया था। उनमें से किसी को भी गोली नहीं लगी थी। फिर तोप के कप्तान ने तोप के पिछले हिस्से पर दबाव डालकर उसका मुंह ऊपर उठाया और एक खगोलशास्त्री की तरह दूरबीन को सीधा करने की गंभीरता से तोप को निशाना बनाना शुरू किया।

“तोप चलाने वालों के लिए वाहवाही!” बॉसुएट चिल्लाया।

और पूरे बैरिकेड पर मौजूद लोगों ने तालियां बजाईं।

कुछ ही क्षणों में, सड़क के ठीक बीचोंबीच, नाली के ऊपर स्थापित, वह कलाकृति कार्रवाई के लिए तैयार थी। बैरिकेड पर विशालकाय जबड़े खुले हुए दिखाई दिए।

“आओ, अब मजे करो!” कॉर्फेयरैक ने जोश से कहा। “यही तो असली क्रूरता है। नाक पर चोट के बाद, मुक्के का वार। सेना अपना बड़ा पंजा हमारी ओर बढ़ा रही है। बैरिकेड बुरी तरह हिलने वाला है। गोलियों की बौछार होगी, तोपें वार करेंगी।”

कॉम्बेफेरे ने आगे कहा, “यह आठ भागों वाली, नए मॉडल की, पीतल की तोप है। ये तोपें तब फट सकती हैं जब पीतल के मुकाबले टिन का अनुपात दस भाग से अधिक हो जाए। टिन की अधिकता इन्हें बहुत नाजुक बना देती है। फिर तोप के छेद से देखने पर इनमें गुफाएँ और कक्ष दिखाई देते हैं। इस खतरे को टालने और गोला दागने के लिए, चौदहवीं शताब्दी की प्रक्रिया, यानी हुपिंग, पर वापस लौटना आवश्यक हो सकता है, और तोप को ब्रीच से ट्रनियन तक बाहर से बिना वेल्ड किए स्टील की पट्टियों की एक श्रृंखला से घेरना पड़ सकता है। फिलहाल, वे इस कमी को यथासंभव दूर करने का प्रयास कर रहे हैं; वे खोजक यंत्र की सहायता से तोप के वेंट में छेदों का पता लगाने में कामयाब हो जाते हैं। लेकिन ग्रिबोवाल के चल तारे वाली एक बेहतर विधि भी है।”

बॉसुएट ने टिप्पणी की, "सोलहवीं शताब्दी में वे तोपों का इस्तेमाल राइफल शैली में करते थे।"

“हाँ,” कॉम्बेफेरे ने उत्तर दिया, “इससे प्रक्षेप्य की शक्ति तो बढ़ जाती है, लेकिन निशाने की सटीकता कम हो जाती है। कम दूरी पर निशानेबाजी करते समय, प्रक्षेप पथ उतना स्थिर नहीं रहता जितना होना चाहिए, परवलय अतिशयोक्तिपूर्ण हो जाता है, प्रक्षेप्य की रेखा अब इतनी सीधी नहीं रह जाती कि वह बीच में आने वाली वस्तुओं को भेद सके, जो कि युद्ध की आवश्यकता है, और शत्रु की निकटता और हमले की तीव्रता के साथ इसका महत्व बढ़ जाता है। सोलहवीं शताब्दी की राइफल वाली तोपों में प्रक्षेप्य के वक्र में तनाव की यह कमी छोटे आवेश के कारण उत्पन्न हुई थी; इस प्रकार की तोपों के लिए छोटे आवेश बैलिस्टिक आवश्यकताओं के कारण अनिवार्य हैं, जैसे कि तोप-गाड़ी की

सुरक्षा। संक्षेप में, वह निरंकुश तोप, अपनी सारी इच्छाएँ पूरी नहीं कर सकती; बल उसकी एक बड़ी कमजोरी है। एक तोप का गोला केवल छह सौ मील प्रति घंटे की गति से चलता है; प्रकाश सत्तर हजार मील प्रति सेकंड की गति से चलता है। यही नेपोलियन पर यीशु मसीह की श्रेष्ठता है।”
“अपनी बंदूकें फिर से भर लो,” एनजोलरास ने कहा।
तोप के गोलों के वार से बैरिकेड का आवरण कैसा व्यवहार करेगा? क्या वे उसमें सेंध लगा पाएंगे? यही सवाल था। जब विद्रोही अपनी तोपों में गोला भर रहे थे, तब तोपची तोपों में गोला भर रहे थे।
किले में चिंता का माहौल गहरा था।
गोली चलने की आवाज के साथ ही रिपोर्ट तेजी से फैल गई।
“उपहार!” एक हर्षित आवाज ने चिल्लाकर कहा।
और जैसे ही गेंद बैरिकेड से टकराई, गैवरोश ने खुद को बैरिकेड में झोंक दिया।
वह रू डू सिग्न की दिशा से आया था, और उसने फुर्ती से उस सहायक बैरिकेड को पार कर लिया था जो रू डे ला पेटिट ट्रुआंडेरी की भूलभुलैया के सामने था।
गैवरोश ने बैरिकेड में तोप के गोले से भी अधिक सनसनी पैदा की।
गेंद कूड़े के ढेर में दब गई। ज़्यादा से ज़्यादा एक बस का पहिया टूटा हुआ था, और पुरानी एंसेउ गाड़ी चकनाचूर हो गई थी। यह देखकर बैरिकेड पर मौजूद लोग खिलखिलाकर हंस पड़े।
“आगे बढ़ो!” बोसुएट ने तोपखाने के सैनिकों से चिल्लाकर कहा।

VIII. तोपची लोगों को उन्हें गंभीरता से लेने के लिए मजबूर करते हैं

वे सब गैवरोश के चारों ओर जमा हो गए। लेकिन उसके पास कुछ भी कहने का समय नहीं था। मारियस ने कांपते हुए उसे एक तरफ खींच लिया।

"आप यहां पर क्या कर रहे हैं?"

“हेलो!” बच्चे ने कहा, “आप खुद यहाँ क्या कर रहे हैं?”

और उसने अपनी असीम धृष्टता के साथ मारियस को घूरकर देखा। उसकी आँखों में गर्व की चमक फैल गई और वे और भी चौड़ी हो गईं।

मारियस ने गंभीर लहजे में अपनी बात जारी रखी:

“आपको वापस आने के लिए किसने कहा? क्या आपने मेरा पत्र उस पते पर पहुँचा दिया?”

उस पत्र के मामले में गैवरोश को कुछ हद तक पछतावा था। बैरिकेड पर लौटने की हड़बड़ी में उसने पत्र को पहुँचाने के बजाय फेंक दिया था। उसे यह स्वीकार करना पड़ा कि उसने उस अजनबी को, जिसका चेहरा वह ठीक से देख नहीं पाया था, पत्र बड़ी आसानी से सौंप दिया था। यह सच है कि वह व्यक्ति सिर ढके हुए था, लेकिन यह पर्याप्त नहीं था। संक्षेप में, वह मन ही मन खुद को कोस रहा था और उसे मारियस की फटकार का डर था। इस दुविधा से निकलने के लिए उसने सबसे आसान रास्ता अपनाया; उसने घिनौना झूठ बोला।

“जनता, मैंने पत्र कुली को दे दिया है। महिला सो रही थी। जब वह जागेगी तो उसे पत्र मिल जाएगा।”

मारियस ने वह पत्र दो उद्देश्यों से भेजा था: कोसेट को विदाई देना और गैवरोश को बचाना। उसे अपनी आधी इच्छा पूरी होने पर ही संतोष करना पड़ा।

उनके पत्र का प्रेषण और बैरिकेड में एम. फॉशेलवेंट की उपस्थिति एक संयोग था जो उन्हें सूझा। उन्होंने गैवरोश को एम. फॉशेलवेंट की ओर इशारा किया।

"तुम उस आदमी को जानते हो?"

“नहीं,” गैवरोचे ने कहा।

जैसा कि हमने अभी बताया, गैवरोश ने वास्तव में जीन वालजेन को केवल रात में ही देखा था।

मारियस के मन में पनप रही परेशान करने वाली और अस्वस्थ धारणाएँ दूर हो गईं। क्या वह एम. फॉशेलवेंट के विचारों से अवगत था? शायद एम. फॉशेलवेंट एक गणतंत्रवादी थे। इसीलिए इस संघर्ष में उनकी उपस्थिति स्वाभाविक थी।

इसी बीच, बैरिकेड के दूसरे छोर पर गैवरोश चिल्ला रहा था: "मेरी बंदूक!"

कौरफेयरैक ने इसे वापस प्राप्त कर लिया।

गैवरोश ने अपने साथियों को, जैसा कि वह उन्हें कहते थे, चेतावनी दी कि बैरिकेड अवरुद्ध हो गया है। उन्हें वहाँ तक पहुँचने में बड़ी कठिनाई हुई थी। र्यू डे ला पेटिट ट्रुआंडेरी में हथियारों का ढेर लगाए एक बटालियन र्यू डू सिग्न की तरफ पहरा दे रही थी; दूसरी तरफ, नगर रक्षक र्यू डेस प्रीचेर्स पर तैनात थे। सेना का बड़ा हिस्सा उनके सामने था।

यह जानकारी दिए जाने पर, गैवरोचे ने आगे कहा:

मैं तुम्हें उन्हें जोरदार प्रहार करने का अधिकार देता हूँ।

इसी बीच, एनजोलरास कान लगाकर अपनी बंदूक की खिड़की से सब कुछ देख रहा था।

हमलावर, निस्संदेह, अपने शॉट से असंतुष्ट थे, इसलिए उन्होंने इसे दोहराया नहीं।

मोर्चे पर तैनात पैदल सेना की एक टुकड़ी आगे आई और तोपखाने के पीछे गली के आखिरी छोर पर कब्जा कर लिया। सैनिक फुटपाथ को खोद रहे थे और पत्थरों से एक छोटी, नीची दीवार बना रहे थे, जो अठारह इंच से अधिक ऊंची नहीं थी और बैरिकेड की ओर मुख किए हुए थी। इस दीवार के बाईं ओर के कोने में, सेंट-डेनिस गली में इकट्ठा हुए उपनगरों से आए एक बटालियन के स्तंभ का अगला भाग दिखाई दे रहा था।

निगरानी कर रहे एनजोलरास ने गोले निकालते समय उत्पन्न होने वाली विशिष्ट ध्वनि को पहचाना और तोप के कमांडर को तोप की दिशा बदलते और उसके मुख को थोड़ा बाईं ओर झुकाते हुए देखा। फिर तोपची तोप में गोले भरने लगे। मुख्य

तोपची ने स्वयं गोले रखने वाला पात्र पकड़ा और उसे तोप के मुख तक नीचे उतारा।

“अपने सिर नीचे करो, दीवार से चिपक जाओ!” एनजोलरास चिल्लाया, “और सभी लोग बैरिकेड के साथ घुटनों के बल बैठ जाओ!”

शराब की दुकान के सामने बिखरे हुए विद्रोही, जिन्होंने गैवरोश के आने पर अपनी मोर्चाबंदी छोड़ दी थी, बेतहाशा बैरिकेड की ओर दौड़े; लेकिन इससे पहले कि एनजोलरास का आदेश पूरा हो पाता, गोलियों की भयानक गड़गड़ाहट के साथ गोलीबारी हुई। असल में यही हुआ था।

यह हमला किले की दीवार में बने छेद पर किया गया था, लेकिन वहां दीवार से टकराकर वापस उछल गया; और इस भयानक उछाल के परिणामस्वरूप दो लोग मारे गए और तीन घायल हो गए।

अगर यही सिलसिला जारी रहता तो घेराबंदी कायम रखना नामुमकिन हो जाता।
छर्रे अंदर घुस जाते।

घबराहट की एक हल्की सी फुसफुसाहट सुनाई दी।

“आइए दूसरी घटना को रोकें,” एनजोलरास ने कहा।

और, अपनी राइफल को नीचे करके, उसने तोप के कप्तान पर निशाना साधा, जो उस समय अपनी तोप के ब्रीच पर दबाव डाल रहा था और उसके लक्ष्य को ठीक कर रहा था और निश्चित रूप से निर्धारित कर रहा था।

तोप का कप्तान एक सुंदर, युवा, गोरा, बेहद सौम्य चेहरे वाला तोपखाना सार्जेंट था, जिसमें उस पूर्वनियोजित और दुर्जेय हथियार की विशिष्ट बुद्धिमत्ता झलकती थी, जो भयावहता में खुद को परिपूर्ण करने के बल पर अंततः घातक युद्ध में परिणत होता है।

एनजोलरास के बगल में खड़े कॉम्बेफेरे ने इस युवक को गौर से देखा।

“कितनी अफ़सोस की बात है!” कॉम्बेफ़ेरे ने कहा। “ये कत्लेआम कितने भयानक हैं! जब राजा नहीं रहेंगे, तब युद्ध भी नहीं होंगे। एनजोलरास, तुम उस सार्जेंट पर निशाना साध रहे हो, उसकी तरफ देख नहीं रहे हो। सोचो, वह कितना आकर्षक नौजवान है; वह निडर है; यह स्पष्ट है कि वह विचारशील है; ये युवा तोपची बहुत पढ़े-लिखे हैं; उसके पिता, माता, परिवार है; वह शायद किसी से

प्यार करता है; उसकी उम्र ज़्यादा से ज़्यादा पच्चीस साल होगी; वह तुम्हारा भाई भी हो सकता है।”
“हाँ,” एनजोलरास ने कहा।
“हां,” कॉम्बेफेरे ने जवाब दिया, “वह मेरा भी है। चलो, उसे मारते नहीं हैं।” मुझे अकेला छोड़ दो। यह करना ही होगा।
और एनजोलरास के संगमरमरी गाल पर धीरे-धीरे एक आंसू बह निकला।
ठीक उसी क्षण, उसने अपनी राइफल का ट्रिगर दबा दिया। आग की लपटें फूट पड़ीं।
तोपची दो बार घूमा, उसकी बाहें आगे फैली हुई थीं, उसका सिर ऊपर उठा हुआ था, मानो साँस लेने के लिए, फिर वह तोप पर एक तरफ गिर पड़ा और वहीं बेसुध पड़ा रहा। उसकी पीठ दिखाई दे रही थी, जिसके बीचोंबीच से खून की एक धारा बह रही थी। गोली उसके सीने को आर-पार कर गई थी। वह मर चुका था।
उन्हें उठाकर ले जाना पड़ा और उनकी जगह दूसरे को लाया गया। इस तरह वास्तव में कई मिनट का समय बच गया।

IX. एक शिकारी की पुरानी प्रतिभाओं का उपयोग और वह अचूक निशानेबाजी जिसने 1796 के फैसले को प्रभावित किया

बैरिकेड में विचारों का आदान-प्रदान हुआ। तोपों से गोलीबारी फिर से शुरू होने वाली थी। उस छर्रों के सामने वे पंद्रह मिनट भी टिक नहीं सकते थे। हमलों को बेअसर करना बेहद ज़रूरी था।

एनजोलरास ने यह आदेश जारी किया:

हमें वहां एक गद्दा रखना होगा।

कॉम्बेफेरे ने कहा, "हमारे पास कोई नहीं है, घायल लोग उन पर लेटे हुए हैं।"

जीन वाल्जेन, जो सराय के कोने पर एक पत्थर के खंभे पर अलग बैठा था, अपनी बंदूक घुटनों के बीच रखे हुए, उस क्षण तक चल रही किसी भी घटना में शामिल नहीं हुआ था। ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि उसने अपने आसपास के लड़ाकों को यह कहते हुए सुना हो: "यह बंदूक कुछ नहीं कर रही है।"

एनजोलरास के आदेश पर वह उठ खड़ा हुआ।

याद होगा कि जब भीड़ रुए डे ला चानवरेरी में पहुंची, तो एक बूढ़ी औरत ने गोलियों की आहट भांपते हुए अपना गद्दा खिड़की के सामने रख दिया था। यह खिड़की अटारी में थी और बैरिकेड से थोड़ी दूर स्थित एक छह मंजिला इमारत की छत पर थी। गद्दा आड़ा रखा हुआ था, नीचे कपड़े सुखाने वाले दो खंभों पर टिका था और ऊपर दो रस्सियों से बंधा था, जो उस दूरी से देखने पर दो धागों जैसी लग रही थीं और खिड़की के फ्रेम में लगी दो कीलों से बंधी थीं। ये रस्सियां आसमान के बीच बालों की तरह साफ दिखाई दे रही थीं।

“क्या कोई मुझे दो बैरल वाली राइफल उधार दे सकता है?” जीन वालजेन ने कहा।

एनजोलरास, जिसने अभी-अभी अपनी पिस्तौल में कारतूस भरे थे, ने उसे पिस्तौल सौंप दी।

जीन वाल्जेन ने अटारी की खिड़की पर निशाना साधा और गोली चला दी।
गद्दे की एक रस्सी कटी हुई थी।
गद्दा अब सिर्फ एक धागे से लटका हुआ था।
जीन वालजेन ने दूसरा गोला दागा। दूसरी रस्सी अटारी की खिड़की के शीशों से जा टकराई। गद्दा दोनों खंभों के बीच से फिसलकर सड़क पर गिर गया।
बैरिकेड पर खड़े लोगों ने तालियाँ बजाईं।
सभी आवाजें चिल्लाईं:
“ये रहा गद्दा!”
“हां,” कॉम्बेफेरे ने कहा, “लेकिन इसे लाने कौन जाएगा?”
दरअसल, गद्दा बैरिकेड के बाहर, घेराबंदी करने वालों और घिरे हुए लोगों के बीच गिर गया था। तोपखाने के सार्जेंट की मौत से सैनिकों का मनोबल गिरा था, और वे कई मिनटों तक अपने द्वारा बनाई गई पत्थरों की कतार के पीछे पेट के बल लेटे रहे। तोपखाने की उस खामोशी को तोड़ने के लिए, जो पुनर्गठन के दौरान शांत थी, उन्होंने बैरिकेड पर गोलीबारी शुरू कर दी। विद्रोहियों ने गोला- बारूद बचाने के लिए इस गोलीबारी का जवाब नहीं दिया। गोलियों की बौछार बैरिकेड से टकराई; लेकिन जिस सड़क पर यह गोलीबारी हुई, वह भयानक थी।
जीन वाल्जेन खाई से बाहर निकला, सड़क पर आया, गोलियों की बौछार को पार करते हुए गद्दे तक पहुंचा, उसे अपनी पीठ पर लादा और बैरिकेड पर लौट आया।
उसने गद्दे को अपने हाथों से गड्ढे में रखा। उसने उसे दीवार के सहारे इस तरह से टिका दिया कि तोपखाने के सैनिक उसे देख न सकें।
यह हो जाने के बाद, वे अगली बार छर्रों की बौछार का इंतजार करने लगे।
इसमें देर नहीं लगी।
तोप ने गर्जना करते हुए छर्रों का जखीरा उगल दिया। लेकिन कोई छर्रा नहीं लौटा। जो परिणाम उन्होंने अनुमान लगाया था, वह प्राप्त हो गया। बैरिकेड बच गया।
“नागरिक,” एनजोलरास ने जीन वाल्जीन से कहा, “गणतंत्र आपका धन्यवाद करता है।”

बॉसुएट ने प्रशंसा की और हँसे। उन्होंने कहा:

“यह अनैतिक है कि एक गद्दे में इतनी शक्ति हो। जो झुकता है, उसकी विजय बिजली की तरह प्रहार करने वाले पर होती है। लेकिन कोई बात नहीं, उस गद्दे की जय हो जिसने तोप को भी निष्क्रिय कर दिया!”

एक्स. भोर

उसी क्षण कोसेट की नींद खुल गई।

उसका कमरा संकरा, साफ-सुथरा और सादा था, जिसमें एक लंबी खिड़की थी, जो घर के पीछे के आंगन की ओर पूर्व दिशा में खुलती थी।

कोसेट को पेरिस में क्या हो रहा था, इसकी कोई जानकारी नहीं थी। वह पिछली शाम वहां नहीं थी, और जब टूसेंट ने कहा था, तब वह पहले ही अपने कमरे में जा चुकी थी:

ऐसा प्रतीत होता है कि कोई विवाद चल रहा है।

कोसेट कुछ ही घंटे सोई थी, लेकिन गहरी नींद सोई। उसे मीठे सपने आए थे, शायद इसलिए क्योंकि उसका छोटा सा बिस्तर बिल्कुल सफेद था। रोशनी में उसे कोई दिखाई दिया, जो मारियस था। उसकी आँखें सूरज की किरणों से चमक उठीं, जो पहले तो उसे अपने सपने का ही सिलसिला लग रही थीं। सपने से जागते ही उसके मन में पहला विचार मुस्कुराहट का आया। कोसेट ने खुद को पूरी तरह आश्वस्त महसूस किया। जीन वालजेन की तरह, कुछ घंटे पहले ही वह आत्मा की उस प्रतिक्रिया से गुज़री थी जो दुख को बिल्कुल भी नहीं सुनना चाहती। वह बिना कारण जाने ही पूरी ताकत से आशा संजोने लगी। तभी उसके दिल में एक टीस उठी। मारियस को देखे हुए तीन दिन हो गए थे। लेकिन उसने खुद से कहा कि उसे उसका पत्र ज़रूर मिल गया होगा, उसे पता होगा कि वह कहाँ है, और वह इतना चतुर होगा कि उससे संपर्क करने का कोई न कोई तरीका ज़रूर ढूंढ लेगा।—और निश्चित रूप से आज ही, और शायद उसी सुबह।—दिन का उजाला था, लेकिन प्रकाश की किरणें बहुत क्षैतिज थीं; उसने सोचा कि अभी बहुत जल्दी है, लेकिन फिर भी उसे मारियस का स्वागत करने के लिए उठना ही होगा।

उसे लगा कि वह मारियस के बिना नहीं रह सकती, और इसलिए यही काफी था और मारियस आएगा ही। कोई आपत्ति जायज़ नहीं थी। यह सब निश्चित था। तीन दिन तक कष्ट सहना ही काफी भयानक था। मारियस का तीन दिन तक अनुपस्थित रहना, यह ईश्वर की ओर से घोर अन्याय था। अब ऊपर से यह क्रूर मज़ाक खत्म हो चुका था। मारियस आने ही वाला था, और वह खुशखबरी लेकर आएगा। जवानी ऐसी ही होती है; वह

जल्दी ही अपने आँसू पोंछ लेती है; उसे दुख बेकार लगता है और वह उसे स्वीकार नहीं करती। जवानी भविष्य की मुस्कान है, एक अज्ञात शक्ति की उपस्थिति में, जो स्वयं ही है। खुश रहना उसके लिए स्वाभाविक है। ऐसा लगता है मानो उसकी साँसें आशा से भरी हों।

इसके अलावा, कोसेट को याद नहीं आ रहा था कि मारियस ने उससे इस एक दिन की अनुपस्थिति के बारे में क्या कहा था और क्या स्पष्टीकरण दिया था। हर किसी ने देखा है कि ज़मीन पर गिरा सिक्का कितनी फुर्ती से लुढ़क कर गायब हो जाता है और कितनी चतुराई से खुद को छुपा लेता है। कुछ विचार भी हमारे साथ ऐसा ही करते हैं; वे हमारे दिमाग के एक कोने में घर कर लेते हैं; बस यहीं उनका अंत हो जाता है; वे खो जाते हैं; उन्हें याद करना नामुमकिन हो जाता है। कोसेट अपनी याददाश्त की इस बेकार कोशिश से थोड़ी परेशान थी। उसने खुद से कहा कि मारियस के कहे शब्दों को भूल जाना उसकी बहुत बड़ी नादानी और बहुत बड़ी गलती थी।

वह बिस्तर से उछलकर उठी और आत्मा और शरीर के दो आवश्यक अनुष्ठान, अपनी प्रार्थना और अपना श्रृंगार पूरा किया।

अति आवश्यक होने पर ही पाठक को वैवाहिक कक्ष में ले जाया जा सकता है, न कि कुंवारी कक्ष में। कविता तो ऐसा करने का साहस नहीं करेगी, गद्य को तो बिल्कुल नहीं।

यह एक अविकसित फूल का भीतरी भाग है, यह अँधेरे में सफेदी है, यह एक बंद लिली की निजी कोठरी है, जिस पर मनुष्य को तब तक नहीं देखना चाहिए जब तक सूर्य की किरणें उस पर न पड़ें। कली में स्त्री पवित्र है। वह मासूम कली जो खिलती है, वह मनमोहक अर्धनग्नता जो स्वयं से भयभीत है, वह सफेद पैर जो चप्पल में शरण लेता है, वह गला जो दर्पण के सामने ऐसे ढक लेता है मानो दर्पण आँख हो, वह कमीज़ जो किसी चरमराते फर्नीचर या गुजरते वाहन से बचने के लिए कंधे को ढकने के लिए जल्दी से ऊपर उठ जाती है, वे बंधी हुई डोरियाँ, वे कसे हुए हुक, वे खींचे हुए फीते, वे कंपकंपी, ठंड और लज्जा की वे सिहरन, हर हरकत में वह अद्भुत भय, वह लगभग पंखदार बेचैनी जहाँ चिंता का कोई कारण नहीं है, भोर के बादलों की तरह मनमोहक कपड़े पहनने के क्रमिक चरण—इन सबका वर्णन करना उचित नहीं है, और इस ओर ध्यान दिलाना भी अतिशयोक्ति है।

किसी युवती के उदय को देखकर मनुष्य की दृष्टि किसी तारे के उदय से भी अधिक श्रद्धामय हो जाती है। चोट पहुँचाने की संभावना से आदर और भी बढ़ जाता है। आड़ू पर रोएँ, बेर पर खिले फूल, बर्फ का चमकता हुआ क्रिस्टल, पंखों से ढका तितली का पंख, उस पवित्रता के सामने खुरदुरे हैं जो अपनी पवित्रता को भी नहीं जानती। युवती तो बस एक स्वप्न की झलक है, अभी तक मूर्ति नहीं बनी है। उसका शयनकक्ष आदर्श के अंधकारमय भाग में छिपा है। एक क्षणिक दृष्टि का स्पर्श इस धुंधले साये को निर्मम बना देता है। यहाँ चिंतन करना अपवित्रता है।

इसलिए, हम कोसेट के उठने की उस प्यारी सी हलचल का कुछ भी नहीं दिखाएंगे।

एक प्राच्य कथा के अनुसार, ईश्वर ने गुलाब को सफेद बनाया था, लेकिन आदम ने जब उसे खिलते हुए देखा तो वह लज्जित होकर लाल हो गया। हम भी उन्हीं में से हैं जो युवा लड़कियों और फूलों को देखकर अवाक रह जाते हैं, क्योंकि हम उन्हें आदर के योग्य समझते हैं।

कोसेट ने जल्दी से कपड़े पहने, अपने बालों में कंघी की और उन्हें संवारा, जो उन दिनों में बहुत आसान काम था, क्योंकि औरतें अपने बालों को तकियों और पफ से नहीं सजाती थीं और न ही उनमें क्रिनोलिन लगाती थीं। फिर उसने खिड़की खोली और चारों ओर नज़र घुमाई, इस उम्मीद में कि उसे गली का कोई हिस्सा, घर का कोई कोना, फुटपाथ का कोई किनारा दिख जाए, ताकि वह मारियस का इंतज़ार कर सके। लेकिन बाहर का कुछ भी दिखाई नहीं दिया। पिछला आंगन काफी ऊंची दीवारों से घिरा हुआ था, और सामने केवल कुछ बगीचे ही थे। कोसेट को ये बगीचे भद्दे लगे: पहली बार उसे फूल बदसूरत लगे। गली की नाली का छोटा सा टुकड़ा भी उसकी इच्छा पूरी कर देता। उसने आसमान की ओर देखने का फैसला किया, मानो उसे लगा हो कि मारियस शायद उसी तरफ से आ रहा हो।

अचानक ही वह फूट-फूटकर रोने लगी। यह उसकी चंचलता नहीं थी; बल्कि निराशा ने उसकी आशाओं को चकनाचूर कर दिया था। उसे किसी भयानक बात का भ्रम सा सता रहा था। वास्तव में, उसके मन में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे। उसने खुद से कहा कि उसे किसी बात का यकीन नहीं है, कि नज़रों से ओझल होना ही सब कुछ खो देना है; और मारियस के स्वर्ग से वापस आने का विचार अब उसे मनमोहक नहीं, बल्कि दुखद लगने लगा था।

फिर, इन बादलों की प्रकृति के अनुसार, उसके चेहरे पर शांति लौट आई, आशा और एक प्रकार की अचेतन मुस्कान, जो फिर भी ईश्वर में विश्वास को दर्शाती थी।

घर में सभी लोग सो रहे थे। चारों ओर देहाती सन्नाटा छाया हुआ था। एक भी खिड़की नहीं खुली थी। चौकीदार का कमरा बंद था। टूसेंट अभी तक नहीं उठा था, और कोसेट ने स्वाभाविक रूप से सोचा कि उसके पिता सो रहे हैं। उसने बहुत कष्ट सहा होगा, और अभी भी बहुत कष्ट सह रही होगी, क्योंकि उसने मन ही मन सोचा कि उसके पिता निर्दयी रहे हैं; लेकिन उसे मारियस पर भरोसा था। ऐसे प्रकाश का थम जाना बिल्कुल असंभव था। बीच-बीच में, उसे दूर से तेज धमाकों की आवाजें सुनाई देतीं, और वह कहती: "यह अजीब है कि लोग इतनी सुबह अपनी गाड़ियों के दरवाजे खोल और बंद कर रहे हैं।" ये तोपों के बैरिकेड पर हमले की आवाजें थीं।

कोसेट की खिड़की से कुछ ही फीट नीचे, दीवार के प्राचीन और बिल्कुल काले कंगनी में, एक मार्टिन का घोंसला था; इस घोंसले का घुमाव कंगनी से थोड़ा बाहर निकला हुआ था, जिससे ऊपर से इस छोटे से स्वर्ग में झाँका जा सकता था। माँ वहाँ थी, अपने बच्चों पर पंखे की तरह पंख फैलाए; पिता इधर-उधर फड़फड़ाता, उड़ जाता, फिर लौट आता, अपनी चोंच में भोजन और चुंबन लिए हुए। उगता सूरज इस सुखद दृश्य को सुनहरा कर रहा था, महान नियम, "बढ़ो," वहाँ मुस्कुराता हुआ और भव्य प्रतीत हो रहा था, और वह मीठा रहस्य सुबह की महिमा में प्रकट हो रहा था। कोसेट, अपने बालों को धूप में लहराते हुए, अपनी आत्मा को कल्पनाओं में लीन किए हुए, भीतर से प्रेम और बाहर से भोर की रोशनी से प्रकाशित, यंत्रवत झुक गई, और लगभग खुद से यह स्वीकार करने का साहस किए बिना कि वह उसी समय मारियस के बारे में सोच रही थी, इन पक्षियों को, इस परिवार को, उस नर और मादा को, उस माँ और उसके बच्चों को, उस गहरी बेचैनी के साथ निहारने लगी जो एक घोंसला एक कुंवारी लड़की के मन में पैदा करता है।

XI. वह गोली जो किसी को नहीं चूकती और किसी को नहीं मारती

हमलावरों की गोलीबारी जारी रही। राइफल और छर्रों की बौछारें बारी-बारी से हो रही थीं, लेकिन सच कहें तो इससे कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ। केवल कोरिंथे इमारत के ऊपरी हिस्से को ही नुकसान पहुंचा; पहली मंजिल की खिड़की और छत की अटारी की खिड़की छर्रों और बिस्केअन गोलियों से छलनी हो गई थीं और धीरे- धीरे अपनी आकृति खो रही थीं। वहां तैनात लड़ाकों को पीछे हटना पड़ा। हालांकि, यह घेराबंदी की रणनीति के अनुसार होता है; लंबे समय तक गोलीबारी करना, ताकि विद्रोहियों का गोला-बारूद खत्म हो जाए, अगर वे जवाबी कार्रवाई करने की गलती करते हैं। जब उनकी गोलीबारी धीमी होने से यह पता चलता है कि उनके पास बारूद और गोलियां खत्म हो गई हैं, तो हमला किया जाता है। एनजोलरास इस जाल में नहीं फंसा; घेराबंदी ने जवाबी कार्रवाई नहीं की।

प्लाटून द्वारा हर बार गोली चलाने पर, गैवरोश अपनी जीभ से अपना गाल फुला लेता था, जो घोर तिरस्कार का संकेत था।

“शाबाश,” उसने कहा, “कपड़ा फाड़ दो। हमें कुछ रेशे चाहिए।”

कॉर्फेयरैक ने कम प्रभाव उत्पन्न होने के कारण ग्रेपशॉट को बंद करने का आदेश दिया और तोपों से कहा:

"तुम बहुत ही भ्रामक बातें कर रहे हो, मेरे प्रिय मित्र।"

युद्ध में भी वैसे ही असमंजस की स्थिति आ जाती है जैसे किसी नृत्य-प्रदर्शन में। संभवतः किले की ओर से जारी इस चुप्पी ने घेराबंदी करने वालों को बेचैन कर दिया था, उन्हें किसी अप्रत्याशित घटना का डर सताने लगा था, और उन्हें पत्थरों के उस ढेर के पीछे का दृश्य स्पष्ट रूप से देखने और उस अभेद्य दीवार के पीछे क्या हो रहा है, यह जानने की आवश्यकता महसूस हुई होगी, जो वार सहने के बावजूद पलटवार नहीं करती थी। विद्रोहियों ने अचानक पास की एक छत पर धूप में चमकता हुआ एक हेलमेट देखा। एक अग्निशामक एक ऊँची

चिमनी से पीठ टिकाकर खड़ा था और मानो पहरेदार की भूमिका निभा रहा हो। उसकी नज़र सीधे किले की दीवार पर पड़ी।

"एक शर्मनाक दर्शक है," एनजोलरास ने कहा।

जीन वाल्जेन ने एनजोलरास की राइफल लौटा दी थी, लेकिन उसके पास अपनी खुद की बंदूक थी।

बिना कुछ कहे, उसने दमकलकर्मी पर निशाना साधा और एक पल बाद, गोली से चकनाचूर हुआ हेलमेट ज़ोर से खड़खड़ाते हुए सड़क पर जा गिरा। डरा हुआ सिपाही जल्दी से वहाँ से गायब हो गया। उसकी जगह एक दूसरा व्यक्ति आ गया। यह एक अधिकारी था। जीन वालजेन, जिसने अपनी बंदूक में गोलियां भर ली थीं, ने नए आए व्यक्ति पर निशाना साधा और अधिकारी के हेलमेट को सिपाही के हेलमेट से टकराने के लिए कहा। अधिकारी ने हिम्मत नहीं दिखाई और तेज़ी से पीछे हट गया। इस बार चेतावनी समझ ली गई थी। इसके बाद उस छत पर कोई नहीं आया; और बैरिकेड पर जासूसी करने का विचार छोड़ दिया गया।

“तुमने उस आदमी को क्यों नहीं मारा?” बॉसुएट ने जीन वाल्जेन से पूछा।

जीन वाल्जेन ने कोई जवाब नहीं दिया।

XII. अव्यवस्था व्यवस्था की समर्थक

बॉसुएट ने कॉम्बफेरे के कान में धीरे से कहा:

उन्होंने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।

कॉम्बेफेरे ने कहा, "वह एक ऐसा व्यक्ति है जो गोलियों के जरिए भलाई करता है।"

जो लोग इस बीते युग की कुछ यादें संजोए हुए हैं, वे जानते हैं कि उपनगरों की नेशनल गार्ड ने विद्रोहों के विरुद्ध बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी। जून 1832 के दिनों में तो वे विशेष रूप से जोशीले और निडर थे। पैंटिन डेस वर्टस या ला कुनेट के एक अच्छे शराबखाने के मालिक, जिनकी दुकान दंगों के कारण बंद हो गई थी, अपने वीरान पड़े शराबखाने को देखकर क्रोधित हो उठे और चाय बागान में व्यवस्था बनाए रखने के लिए उन्होंने अपनी जान दे दी। उस बुर्जुआ और वीर युग में, जहाँ विचारों के अपने योद्धा थे, वहाँ हितों के भी अपने रक्षक थे। प्रवर्तकों की सादगी ने आंदोलन की बहादुरी को कम नहीं किया। सिक्कों के ढेर के कम होने पर बैंकरों ने मार्सेलेज़ गीत गाए। उन्होंने लेखा-जोखा के लिए अपना खून बहाया; और उन्होंने उस दुकान की रक्षा की, जो मातृभूमि का एक विशाल प्रतीक थी, लैकेडेमोनियन उत्साह के साथ।

अंततः, हम देखेंगे कि इस सब में ऐसा कुछ भी नहीं था जो अत्यंत गंभीर न हो।
यह सामाजिक तत्वों का संघर्ष था, जो उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे जब उन्हें संतुलन स्थापित करना चाहिए था।

उस दौर की एक और विशेषता अराजकता और सरकारी शासन (सही पार्टी का बर्बर नाम) का मिश्रण थी। लोग अनुशासनहीनता के साथ-साथ व्यवस्था के पक्षधर थे।

राष्ट्रीय रक्षक दल के किसी कर्नल के आदेश पर ढोल अचानक बेतरतीब ढंग से बजने लगे; कोई कप्तान प्रेरणा से प्रेरित होकर कार्रवाई में उतर आया; कोई राष्ट्रीय रक्षक "एक विचार" के लिए और अपने दम पर लड़ा। नाजुक क्षणों में, उन "दिनों" में, वे अपने नेताओं की सलाह से ज़्यादा अपनी अंतरात्मा की

आवाज़ सुनते थे। अनुशासन की सेना में सच्चे गुरिल्ला योद्धा भी मौजूद थे, कुछ तलवारबाज़, जैसे फैनिकॉट, और कुछ कलमबाज़, जैसे हेनरी फॉनफ्रेड।

दुर्भाग्यवश, इस युग में सभ्यता, जो सिद्धांतों के समूह के बजाय हितों के एकत्रीकरण द्वारा अधिक प्रतिनिधित्व करती थी, स्वयं खतरे में थी या ऐसा मानती थी; इसने खतरे की घंटी बजाई; प्रत्येक व्यक्ति ने स्वयं को केंद्र मानकर इसका बचाव किया, इसे सहायता प्रदान की और अपने प्राणों की कीमत पर इसकी रक्षा की; और सबसे पहले आने वाले व्यक्ति ने समाज को बचाने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया।

कभी-कभी जोश इतना उग्र हो जाता था कि वह नरसंहार में तब्दील हो जाता था। नेशनल गार्ड की एक पलटन अपने अधिकार से एक निजी युद्ध परिषद गठित कर लेती थी और पकड़े गए विद्रोही को पाँच मिनट में ही सजा सुनाकर मार देती थी। इसी तरह की एक तात्कालिक कार्रवाई में जीन प्रोवैरे की हत्या हुई थी। यह एक क्रूर लिंच कानून था, जिस पर किसी भी पक्ष को दूसरे पक्ष को दोष देने का कोई अधिकार नहीं था, क्योंकि इसे अमेरिका में गणतंत्र द्वारा और यूरोप में राजशाही द्वारा भी लागू किया गया था। यह लिंच कानून गलतियों से भरा हुआ था। एक दिन दंगे के दौरान, पॉल ऐमे गार्नियर नामक एक युवा कवि का प्लेस रॉयल में कमर पर संगीन रखकर पीछा किया गया, और वह केवल नंबर 6 के बरामदे के नीचे शरण लेकर बच निकला। लोग चिल्ला रहे थे: "एक और सेंट-साइमनवादी!" और वे उसे मारना चाहते थे। उसके हाथ में ड्यूक डी सेंट-साइमन के संस्मरणों की एक पुस्तक थी। नेशनल गार्ड के एक जवान ने किताब पर लिखे "सेंट-साइमन" शब्द पढ़े और चिल्लाया: "मौत!"

6 जून, 1832 को, उपर्युक्त उल्लेखित कैप्टन फैनिकॉट के नेतृत्व में, उपनगरों से नेशनल गार्ड्स की एक कंपनी ने अपनी मनमानी और स्वेच्छा से रू डे ला चानव्रेरी में खुद को नष्ट कर लिया। यह घटना, भले ही विचित्र लगे, 1832 के विद्रोह के परिणामस्वरूप शुरू हुई न्यायिक जांच में सिद्ध हुई। कैप्टन फैनिकॉट, एक साहसी और अधीर बुर्जुआ, एक प्रकार का कॉन्डोटियर (पुलिसकर्मी) जैसा, जिसका हमने अभी वर्णन किया है, एक कट्टर और अड़ियल सरकारवादी, समय से पहले गोली चलाने के प्रलोभन और अकेले और बिना किसी सहायता के, यानी अपनी कंपनी के साथ, बैरिकेड पर कब्जा करने की महत्वाकांक्षा का विरोध नहीं कर सका। लाल झंडे और पुराने कोट को बार-बार

देखकर, जिसे वह काला झंडा समझ रहा था, वह व्याकुल हो गया और उसने सेनापतियों और प्रमुखों को जमकर दोषी ठहराया। ये सभी लोग आपस में परामर्श कर रहे थे और यह नहीं समझ रहे थे कि निर्णायक हमले का समय आ गया है। वह विद्रोह को "अपनी ही चर्बी में पकने" दे रहा था, जैसा कि उनमें से एक ने प्रसिद्ध रूप से कहा था। जहाँ तक उसकी बात है, उसे लगा कि मोर्चाबंदी पूरी तरह से तैयार है, और जो तैयार हो जाता है उसे गिरना ही चाहिए, इसलिए उसने हमला कर दिया।

वह अपने ही जैसे दृढ़ निश्चयी सैनिकों का नेतृत्व कर रहा था, जिन्हें एक गवाह ने "उग्र योद्धा" कहा था। उसकी कंपनी, वही कंपनी जिसने कवि जीन प्रूवेयर को गोली मारी थी, बटालियन की पहली टुकड़ी थी जिसे सड़क के कोने पर तैनात किया गया था। ठीक उसी क्षण जब उन्हें इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी, कप्तान ने अपने सैनिकों को बैरिकेड पर आक्रमण करने का आदेश दिया। रणनीति से अधिक सद्भावना से किए गए इस प्रयास की भारी कीमत फैनिकॉट कंपनी को चुकानी पड़ी। सड़क के दो तिहाई हिस्से को पार करने से पहले ही बैरिकेड से उन पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू हो गई। चार सबसे साहसी सैनिक, जो आगे दौड़ रहे थे, बैरिकेड के ठीक नीचे ही गोलियों से छलनी हो गए, और नेशनल गार्ड्स की यह साहसी टुकड़ी, जो बहुत बहादुर तो थी लेकिन सैन्य दृढ़ता में कमी थी, कुछ हिचकिचाहट के बाद पीछे हटने को मजबूर हो गई, और पंद्रह शव फुटपाथ पर छोड़ गई। इस क्षणिक हिचकिचाहट ने विद्रोहियों को अपने हथियार फिर से भरने का समय दे दिया, और इससे पहले कि कंपनी सड़क के कोने, अपने आश्रय स्थल पर वापस पहुँच पाती, दूसरी और बेहद विनाशकारी गोलीबारी ने उसे घेर लिया। एक पल और बीतने पर, यह दो तरफ से आ रही आग की चपेट में आ गया, और इसे उस तोपखाने की तोप से गोलियों की बौछार झेलनी पड़ी, जिसने आदेश न मिलने के कारण अपनी गोलीबारी बंद नहीं की थी।

साहसी और लापरवाह फैनिकॉट भी इस गोलाबारी में मारे गए लोगों में से एक थे। उन्हें तोप के गोले से मारा गया, यानी आदेश पर।

यह हमला, जो गंभीर से कहीं अधिक उग्र था, ने एनजोलरास को चिढ़ा दिया। उसने कहा, "ये मूर्ख! अपने ही आदमियों को मरवा रहे हैं और हमारे गोला-बारूद को व्यर्थ ही बर्बाद कर रहे हैं।"

एनजोलरास ने एक सच्चे विद्रोही सेनापति की तरह बात की। विद्रोह और दमन के पास बराबर के हथियार नहीं होते। विद्रोह, जो शीघ्र ही समाप्त हो जाता है, उसके पास दागने के लिए सीमित गोलियां और लड़ने वालों की सीमित संख्या होती है। खाली कारतूस या मरा हुआ आदमी, किसी से बदला नहीं जा सकता। दमन के पास सेना तो होती है, लेकिन वह अपने सैनिकों की गिनती नहीं करता, और विन्सेनेस जैसा शहर होने के कारण वह अपनी गोलियों की गिनती नहीं करता। दमन के पास उतने ही रेजिमेंट होते हैं जितने बैरिकेड में सैनिक होते हैं, और उतने ही शस्त्रागार होते हैं जितने बैरिकेड में कारतूस। इस प्रकार, ये एक बनाम सौ की लड़ाई होती है, जो हमेशा बैरिकेड को कुचलने में समाप्त होती है; जब तक कि क्रांति, अचानक विद्रोह, अपनी धधकती तलवार को मैदान में न उतार दे। ऐसा कभी-कभी होता है। तब सब कुछ हिल जाता है, फुटपाथ उबलने लगते हैं, जन-किलेबंदी की भरमार हो जाती है। पेरिस अत्यंत कंपकंपाता है, दिव्य शक्ति प्रकट होती है, हवा में 10 अगस्त की आहट है, हवा में 29 जुलाई की आहट है, एक अद्भुत प्रकाश प्रकट होता है, शक्ति का विशाल मुंह पीछे हटता है, और सेना, वह शेर, अपने सामने सीधा और शांत, उस पैगंबर, फ्रांस को देखता है।

XIII. गुज़रती हुई चमक

भावनाओं और जुनून के उस अराजक माहौल में, जो एक बैरिकेड की रक्षा करता है, सब कुछ थोड़ा-थोड़ा मौजूद होता है; उसमें बहादुरी होती है, यौवन होता है, सम्मान होता है, उत्साह होता है, आदर्श होता है, दृढ़ विश्वास होता है, जुआरी का क्रोध होता है, और सबसे बढ़कर, आशा की क्षणिक किरणें होती हैं।

आशा की इन अस्पष्ट तरंगों में से एक, अचानक उस क्षण में रू डे ला चानवरेरी की बैरिकेड को पार कर गई जब इसकी सबसे कम उम्मीद थी।

“सुनो,” अचानक एनजोलरास चिल्लाया, जो अभी भी पहरा दे रहा था, “मुझे लगता है कि पेरिस जाग रहा है।”

यह निश्चित है कि 6 जून की सुबह, एक-दो घंटे के लिए विद्रोह फिर से भड़क उठा। सेंट-मेरी की लगातार बजती चेतावनी ने कुछ लोगों को फिर से जोश में ला दिया। रू डू पोइरियर और रू डेस ग्रेविलियर्स में बैरिकेड्स लगाए जाने लगे। पोर्ट सेंट-मार्टिन के सामने, एक युवक ने राइफल से लैस होकर अकेले ही घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी पर हमला कर दिया। सबके सामने, खुले बुलेवार्ड पर, उसने एक घुटना जमीन पर रखा, अपनी बंदूक कंधे पर रखी, गोली चलाई, टुकड़ी के कमांडर को मार डाला और यह कहते हुए मुड़ गया: "एक और है जो हमें अब और नुकसान नहीं पहुंचाएगा।"

उन्हें तलवार से मार डाला गया। सेंट-डेनिस गली में, एक महिला ने झुके हुए पर्दे के पीछे से नेशनल गार्ड पर गोलियां चलाईं। हर गोली के साथ पर्दे की पट्टियां कांपती हुई दिखाई दे रही थीं। चौदह साल के एक बच्चे को कोसोनेरी गली में गिरफ्तार किया गया, जिसकी जेब कारतूसों से भरी हुई थी। कई चौकियों पर हमले हुए। बर्टिन-पोइरी गली के प्रवेश द्वार पर, मार्शल जनरल कैवैग्नाक डी बारागुए के नेतृत्व में चल रही एक घुड़सवार सेना की रेजिमेंट का जोरदार और पूरी तरह से अप्रत्याशित गोलीबारी से स्वागत किया गया। प्लांच-मिब्रे गली में, उन्होंने छतों से सैनिकों पर मिट्टी के पुराने बर्तन और घरेलू सामान फेंके; यह एक बुरा संकेत था; और जब यह मामला मार्शल सोल्ट को बताया गया, तो नेपोलियन के पुराने लेफ्टिनेंट गंभीर हो गए, क्योंकि उन्हें

सारागोसा में सुचेत की कही बात याद आ गई: "जब बूढ़ी औरतें अपने बर्तन हमारे सिर पर खाली कर देती हैं, तो हम हार जाते हैं।"

ये सामान्य लक्षण जो उस समय प्रकट हुए जब यह माना जा रहा था कि विद्रोह स्थानीय स्तर पर ही सीमित रह गया है, क्रोध का यह उग्र प्रकोप, पेरिस के उन ज्वलनशील क्षेत्रों में इधर-उधर उड़ती चिंगारियाँ—इन सबने मिलकर सैन्य प्रमुखों को व्याकुल कर दिया। उन्होंने इस भीषण आग को बुझाने के लिए तुरंत कार्रवाई की।

उन्होंने मौबुए, डे ला चानवरेरी और सेंट-मेरी के बैरिकेड्स पर हमले को तब तक के लिए टाल दिया जब तक कि ये चिंगारियां शांत नहीं हो गईं, ताकि उन्हें केवल बैरिकेड्स से निपटना पड़े और उन्हें एक ही झटके में खत्म किया जा सके। जहां अशांति थी, वहां सड़कों पर सैनिकों की टुकड़ियां भेजी गईं, बड़ी जगहों को रौंदते हुए, छोटी जगहों को तहस-नहस करते हुए, दाएं-बाएं, कभी धीरे- धीरे और सावधानी से, कभी पूरी रफ्तार से। सैनिकों ने उन घरों के दरवाजे तोड़ दिए जहां से गोलियां चलाई गई थीं; उसी समय, घुड़सवार सेना के पैंतरेबाजी ने बुलेवार्ड पर मौजूद समूहों को तितर-बितर कर दिया। यह दमन कुछ हलचल और सेना तथा जनता के बीच टकराव की विशिष्ट उग्रता के बिना नहीं हुआ। यही वह दृश्य था जिसे एनजोलरास ने तोपखाने और राइफलों की गोलाबारी के बीच सुना था। इसके अलावा, उन्होंने घायल लोगों को सड़क के अंत तक स्ट्रेचर पर जाते देखा था, और उन्होंने कौरफेयरैक से कहा: - "ये घायल हमारे नहीं हैं।"

उनकी आशा क्षणिक थी; चमक जल्द ही फीकी पड़ गई। आधे घंटे से भी कम समय में, जो कुछ हवा में था वह गायब हो गया, यह बिना गरज के बिजली की एक चमक थी, और विद्रोहियों ने महसूस किया कि जनता की उदासीनता का वह भारी आवरण, जो हठी और परित्यक्त लोगों पर पड़ता है, एक बार फिर उन पर गिर पड़ा है।

वह व्यापक आंदोलन, जिसने एक अस्पष्ट रूपरेखा ग्रहण कर ली थी, विफल हो गया था; और युद्ध मंत्री का ध्यान और जनरलों की रणनीति अब उन तीन या चार बैरिकेड्स पर केंद्रित की जा सकती थी जो अभी भी खड़े थे।

सूर्य क्षितिज के ऊपर चढ़ रहा था।

एक विद्रोही ने एनजोलरास की प्रशंसा की।

“हम यहाँ भूखे हैं। क्या हम सचमुच इसी तरह बिना कुछ खाए मर जाएंगे ?”

एनजोलरास , जो अभी भी अपनी कोहनी के बल अपने चबूतरे पर टिका हुआ था , ने अपने सिर से एक सकारात्मक संकेत दिया , लेकिन सड़क के अंत से अपनी निगाहें नहीं हटाईं।

XIV. जिसमें एनजोलरास की प्रेमिका का नाम आएगा

एनजोलरास के बगल में एक पत्थर पर बैठे कौरफेयरैक ने तोपों का अपमान करना जारी रखा, और हर बार जब गोले का वह भयावह बादल, जिसे ग्रेपशॉट कहा जाता है, अपनी भयानक ध्वनि के साथ ऊपर से गुजरता था, तो वह व्यंग्य की बौछार के साथ उस पर हमला करता था।

“बेचारे, निर्दयी, बूढ़े आदमी, तुम अपने फेफड़ों को घिस रहे हो, मुझे तकलीफ हो रही है, तुम अपनी ताकत बर्बाद कर रहे हो। यह बिजली नहीं, खांसी है।”

और वहां मौजूद लोग हंसने लगे।

कॉर्फेयरैक और बॉसुएट, जिनका साहसी हास्य खतरे के साथ बढ़ता गया, मैडम स्कारॉन की तरह, भोजन के स्थान पर हंसी-मजाक को प्राथमिकता दी, और चूंकि शराब की कमी थी, इसलिए उन्होंने सभी पर उल्लास की वर्षा की।

“मैं एनजोलरास की प्रशंसा करता हूँ,” बॉसुएट ने कहा। “उसकी भावहीन निडरता मुझे चकित कर देती है। वह अकेला रहता है, जिससे शायद वह थोड़ा उदास रहता है; एनजोलरास अपनी महानता की शिकायत करता है, जो उसे विधवापन से बांधे रखती है। हम बाकी लोगों की कमोबेश रखैलें होती हैं, जो हमें पागल बना देती हैं, यानी बहादुर बना देती हैं। जब कोई आदमी शेर की तरह प्यार में डूबा होता है, तो कम से कम वह शेर की तरह लड़ सकता है। यह हमारी प्रेमिकाओं द्वारा हम पर किए गए कारनामों का बदला लेने का एक तरीका है। रोलैंड एंजेलिक के लिए अपनी जान दे देता है; हमारी सारी वीरता हमारी महिलाओं से आती है। बिना स्त्री के पुरुष बिना ट्रिगर वाली पिस्तौल के समान है; स्त्री ही पुरुष को प्रेरित करती है। खैर, एनजोलरास के पास कोई स्त्री नहीं है। वह प्यार में नहीं है, फिर भी वह निडर है। यह एक अनसुनी बात है कि कोई पुरुष बर्फ की तरह ठंडा और आग की तरह साहसी हो।”

एनजोलरास सुनता हुआ प्रतीत नहीं हो रहा था, लेकिन अगर कोई उसके पास होता, तो वह उसे धीमी आवाज में बुदबुदाते हुए सुन लेता: "पैट्रिया।"

बॉसुएट अभी भी हंस ही रहा था कि कौरफेयरैक ने कहा:

"समाचार!"

और किसी घोषणा करने वाले कर्मचारी के लहजे में उन्होंने आगे कहा:

मेरा नाम एट-पाउंडर है।

दरअसल, एक नया व्यक्ति इस परिदृश्य में प्रवेश कर चुका था। यह तोपखाने का दूसरा टुकड़ा था।

तोपखाने के सैनिकों ने तेजी से और पूरी ताकत से अपने युद्धाभ्यास किए और इस दूसरे तोप को पहले तोप के साथ एक सीध में स्थापित कर दिया।

इसमें उस भयावह आपदा का संक्षिप्त विवरण दिया गया था।

कुछ ही मिनटों बाद, तेजी से दागी गई दोनों तोपों ने किले पर बेहद करीब से गोलीबारी शुरू कर दी; मोर्चे पर तैनात सैनिकों की पलटन और उपनगरों से आए सैनिकों ने तोपखाने को समर्थन दिया।

कुछ दूरी पर तोपों की एक और गड़गड़ाहट सुनाई दी। जिस समय दो तोपें रू डे ला चानवरेरी से किले पर ताबड़तोड़ हमला कर रही थीं, उसी समय दो अन्य तोपें, एक रू सेंट-डेनिस से और दूसरी रू ऑब्री-ले-बुशेर से, सेंट-मेरी बैरिकेड पर लगातार गोले बरसा रही थीं। चारों तोपों की गड़गड़ाहट एक उदास स्वर में गूंज रही थी।

युद्ध के इन गंभीर कुत्तों का भौंकना एक दूसरे को जवाब दे रहा था।

रुए डे ला चानवरेरी पर लगे बैरिकेड पर हमला कर रही दो तोपों में से एक ग्रेपशॉट दाग रही थी, जबकि दूसरी गोले दाग रही थी।

गोले दागने वाली तोप को थोड़ा ऊपर की ओर लक्षित किया गया था, और निशाना इस तरह लगाया गया था कि गोला बैरिकेड के ऊपरी शिखर के एकदम किनारे पर लगे, और पत्थरों को तोड़कर विद्रोहियों पर गिरा दे, साथ ही छर्रों की बौछार भी हो।

इस प्रकार की गोलीबारी का उद्देश्य विद्रोहियों को किले की चोटी से खदेड़ना और उन्हें भीतरी इलाके में इकट्ठा होने के लिए मजबूर करना था, दूसरे शब्दों में, यह हमले की घोषणा थी।

एक बार गोलियों से बैरिकेड की चोटी से और छर्रों से कैबरे की खिड़कियों से खदेड़े जाने के बाद, हमलावर टुकड़ियां बिना मारे गए, शायद बिना देखे भी, सड़क पर निकल सकती थीं, पिछली शाम की तरह तेज़ी से और अचानक किले पर चढ़ सकती थीं, और कौन जानता है? उसे अचानक घेर सकती थीं।

“उन तोपों से होने वाली असुविधा को कम करना बिल्कुल आवश्यक है,” एनजोलरास ने कहा और चिल्लाकर कहा: “तोपखाने वालों पर गोली चलाओ!”

सभी तैयार थे। लंबे समय से शांत पड़ी बैरिकेड से अचानक भीषण गोलाबारी शुरू हो गई; सात-आठ गोले दागे गए, मानो क्रोध और उल्लास का भाव हो; सड़क धुएं से भर गई, और कुछ ही मिनटों में, आग की लपटों से घिरी इस धुंध के बीच, दो-तिहाई तोपची तोपों के पहियों के नीचे दबे हुए दिखाई दिए। जो बचे थे, वे गंभीर शांति के साथ तोपों को चलाते रहे, लेकिन गोलाबारी धीमी हो गई थी।

“अब सब कुछ ठीक चल रहा है,” बॉसुएट ने एनजोलरास से कहा। “सफलता।”

एनजोलरास ने सिर हिलाकर जवाब दिया:

"अगर यह सफलता एक और पंद्रह मिनट तक जारी रही, तो बैरिकेड में एक भी कारतूस नहीं बचेगा।"

ऐसा प्रतीत होता है कि गैवरोश ने यह टिप्पणी सुन ली थी।

XV. गैवरोचे बाहरी

कौरफेयरैक की नजर अचानक बैरिकेड के निचले हिस्से में, सड़क पर, गोलियों की बौछार के बीच किसी पर पड़ी।
गैवरोश ने शराब की दुकान से बोतलों की टोकरी ली, उस संकरे रास्ते से बाहर निकला और चुपचाप किले की ढलान पर मारे गए नेशनल गार्ड्समैन के कारतूसों से भरे बक्सों को अपनी टोकरी में खाली करने में लगा हुआ था।
“तुम वहाँ क्या कर रहे हो?” कौरफेयरैक ने पूछा।
गैवरोश ने अपना चेहरा ऊपर उठाया:—
मैं अपनी टोकरी भर रहा हूँ, नागरिक जी।
क्या तुम्हें छर्रे नहीं दिख रहे?
गैवरोश ने उत्तर दिया:
“खैर, बारिश हो रही है। तो फिर क्या करें?”
कौरफेयरैक चिल्लाया: —“अंदर आओ!”
“तुरंत,” गैवरोचे ने कहा।
और एक ही छलांग में वह सड़क पर कूद पड़ा।
यह याद रखना चाहिए कि फैनिकॉट की कंपनी अपने पीछे लाशों का ढेर छोड़ गई थी।
बीस लाशें सड़क की पूरी लंबाई में इधर-उधर फुटपाथ पर बिखरी पड़ी थीं।
गैवरोश के लिए बीस कारतूसों का मतलब था बैरिकेड के लिए कारतूसों का जखीरा।
गली में धुआँ घने कोहरे जैसा था। जिसने भी दो ऊँची चोटियों के बीच किसी पहाड़ी घाटी में गिरते बादल को देखा हो, वह कल्पना कर सकता है कि दो ऊँची इमारतों की कतारों के कारण यह धुआँ कितना घना और मोटा हो गया होगा। यह धीरे-धीरे ऊपर उठा और लगातार फिर से बनता रहा; जिससे एक ऐसी धुंध छा गई जिसने दिन के उजाले को भी फीका कर दिया। गली इतनी छोटी थी कि लड़ने वाले एक छोर से दूसरे छोर तक एक-दूसरे को मुश्किल से देख पा रहे थे।

यह अस्पष्टता, जिसकी संभवतः बैरिकेड पर हमले का निर्देशन करने वाले कमांडरों द्वारा इच्छा की गई थी और जिसकी योजना बनाई गई थी, गैवरोश के लिए उपयोगी साबित हुई।

धुएं के इस आवरण के नीचे और अपने छोटे कद के कारण, वह बिना किसी की नजर में आए गली में काफी दूर तक आगे बढ़ सका। उसने बिना किसी खास खतरे के पहले सात-आठ कारतूस के डिब्बे खाली कर दिए।

वह पेट के बल रेंगता हुआ, चारों पैरों पर सरपट दौड़ता हुआ, अपने दांतों में टोकरी लिए हुए, मुड़ता हुआ, सरकता हुआ, लहराता हुआ, एक मृत शरीर से दूसरे मृत शरीर तक घूमता हुआ गया, और कारतूस पेटी या कारतूस को इस तरह खाली कर देता था जैसे कोई बंदर अखरोट खोलता है।

वे उसे पास ही बने बैरिकेड से वापस लौटने के लिए चिल्लाने की हिम्मत नहीं कर पाए, क्योंकि उन्हें डर था कि इससे सबका ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो जाएगा।

एक शव पर, जो एक कॉर्पोरल का था, उसे बारूद की एक बोतल मिली।

“प्यास बुझाने के लिए,” उसने कहा और उसे अपनी जेब में रख लिया।

आगे बढ़ते-बढ़ते वह एक ऐसे बिंदु पर पहुँच गया जहाँ गोलाबारी का कोहरा छंटने लगा। इस प्रकार, पक्की सड़क की दीवार के पीछे तैनात मोर्चे के निशानेबाजों और गली के कोने पर जमा उपनगर के निशानेबाजों ने अचानक एक-दूसरे को धुएँ में कुछ हिलता हुआ दिखाई दिया।

जिस समय गैवरोश एक पत्थर के दरवाजे के पास लेटे हुए सार्जेंट से कारतूस निकाल रहा था, उसी समय एक गोली उसके शरीर में जा लगी।

“फिचट्रे!” गैवरोश ने चीखते हुए कहा। “वे मेरे मरे हुए आदमियों को मेरे लिए मार रहे हैं।”

दूसरी गोली उसके बगल में फुटपाथ से निकली एक चिंगारी से टकराई। तीसरी गोली ने उसकी टोकरी पलट दी।

गैवरोश ने देखा कि यह संदेश उपनगर के लोगों की ओर से आया था।

वह उछलकर खड़ा हो गया, सीधा खड़ा रहा, उसके बाल हवा में लहरा रहे थे, उसके हाथ कमर पर थे, उसकी निगाहें गोलीबारी कर रहे नेशनल गार्ड्समैन पर टिकी थीं, और उसने गाना गाया:

[illegible], [illegible]; [illegible], [illegible]

फिर उसने अपनी टोकरी उठाई, उसमें से गिरे कारतूसों को बिना एक भी छोड़े वापस रख दिया, और गोलियों की बौछार की ओर बढ़ते हुए, एक और कारतूस पेटी लूटने लगा। वहाँ चौथी गोली फिर से उसे चूक गई। गैवरोश ने गाया:

[illegible],
[illegible];
[illegible],
[illegible] [93]

पांचवीं गोली भी उससे केवल तीसरा दोहा ही निकलवाने में सफल रही।

[illegible], [illegible]; [illegible], [illegible]

इस प्रकार यह सिलसिला कुछ समय तक चलता रहा।

यह एक मनमोहक और भयानक दृश्य था। गैवरोश, गोलियों की बौछार के बावजूद, मानो मजे ले रहा था। वह बेहद आनंदित लग रहा था। मानो कोई चिड़िया शिकारियों को चोंच मार रही हो। हर गोली के जवाब में वह दोहे गाता। वे लगातार उस पर निशाना साध रहे थे, लेकिन हर बार चूक जाते। नेशनल गार्ड्समैन और सैनिक उस पर निशाना साधते हुए हंस रहे थे। वह लेट जाता, उछलकर खड़ा हो जाता, दरवाजे के कोने में छिप जाता, फिर छलांग लगाता, गायब हो जाता, फिर प्रकट होता, भाग जाता, लौट आता, गोलियों के जवाब में अपनी नाक पर अंगूठा रख लेता, और इस दौरान कारतूसों को खाली करता, कारतूस के डिब्बे खाली करता और अपनी टोकरी भरता रहता। विद्रोही, चिंता से हांफते हुए, उसे अपनी निगाहों से देख रहे थे। बैरिकेड कांप रहा था; वह गा रहा था। वह न बच्चा था, न आदमी; वह एक अजीब सा चंचल परी था। उसे युद्ध का अजेय बौना कहा जा सकता था। गोलियां उसका पीछा कर रही थीं, लेकिन वह उनसे कहीं अधिक फुर्तीला था। वह मौत के साथ लुका-छिपी

का एक खौफनाक खेल खेल रहा था; हर बार जब चपटी नाक वाले उस प्रेत का चेहरा उसके करीब आता, तो वह बच्चा उसे एक जोरदार झटका देता।

लेकिन एक गोली, जो बाकियों की तुलना में कहीं बेहतर निशाने पर लगी थी या कहीं अधिक घात लगाकर चलाई गई थी, अंततः एक बच्चे के मायावी शरीर को जा लगी। गैवरोश लड़खड़ाया, फिर ज़मीन पर गिर पड़ा। पूरी चौकी में चीख-पुकार मच गई; लेकिन उस बौने में एंटियस का कुछ अंश था; क्योंकि एक बच्चे का ज़मीन को छूना, एक विशालकाय व्यक्ति के लिए धरती को छूने के समान था; गैवरोश गिरा तो था, लेकिन फिर उठ खड़ा हुआ; वह बैठने की मुद्रा में रहा, उसके चेहरे पर खून की एक लंबी लकीर थी, उसने दोनों हाथ हवा में उठाए, उस दिशा में देखा जहाँ से गोली आई थी, और गाना शुरू कर दिया:

मैं ज़मीन पर गिर पड़ा,
यह वोल्टेयर की गलती है;
मेरी नाक नाली में है,
यह…

95

वह अपनी लड़ाई पूरी नहीं कर सका। उसी निशानेबाज की दूसरी गोली ने उसे रोक दिया। इस बार वह मुंह के बल फुटपाथ पर गिर पड़ा और फिर हिलना-डुलना बंद कर दिया। इस महान आत्मा ने अपनी अंतिम सांस ले ली।

16. भाई से पिता कैसे बनते हैं

ठीक उसी क्षण, लक्ज़मबर्ग के बगीचे में—क्योंकि नाटक की निगाहें हर जगह मौजूद थीं—दो बच्चे एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए थे। एक की उम्र सात वर्ष और दूसरे की पाँच वर्ष रही होगी। बारिश में भीगने के बाद वे धूप वाली तरफ पगडंडियों पर चल रहे थे; बड़ा बच्चा छोटे का नेतृत्व कर रहा था; वे पीले और फटेहाल थे; वे जंगली पक्षियों जैसे लग रहे थे। उनमें से छोटे ने कहा: "मुझे बहुत भूख लगी है।"

बड़ा भाई, जो पहले से ही कुछ हद तक रक्षक की भूमिका निभा रहा था, अपने भाई को बाएं हाथ से पकड़े हुए था और अपने दाहिने हाथ में एक छोटी सी छड़ी लिए हुए था।

वे बगीचे में अकेले थे। बगीचा सुनसान था, विद्रोह के कारण पुलिस के आदेश पर फाटक बंद कर दिए गए थे। वहां डेरा डाले हुए सैनिक युद्ध की आवश्यकताओं के कारण वहां से चले गए थे।

वे बच्चे वहाँ कैसे पहुँचे? शायद वे किसी खुले हुए चौकी से भाग निकले हों; शायद आस-पास ही, बैरियर डी'एनफर में; या एस्प्लेनेड डी'ऑब्जर्वेटोयर पर, या पास के ही चौराहे पर, जिसके अग्रभाग पर लिखा था: Invenerunt parvulum pannis involutum, किसी बाजीगर का अड्डा रहा हो, जहाँ से वे भागे हों; शायद पिछली शाम को वे बाग के निरीक्षकों की नज़र से बच निकले हों, और रात किसी ऐसे चौकी में बिताई हो जहाँ लोग अखबार पढ़ते हैं? असल बात तो यह है कि वे भटके हुए मेमने थे और वे आज़ाद लग रहे थे। भटकना और आज़ाद लगना, खो जाना ही होता है। ये बेचारे छोटे जीव वास्तव में खो गए थे।

ये दोनों बच्चे वही थे जिनके कारण गैवरोश को कुछ परेशानी हुई थी, जैसा कि पाठक को याद होगा। थेनार्डियर परिवार के बच्चे, जिन्हें मैग्नन को पट्टे पर दिया गया था, जिनका श्रेय एम. गिलनोर्मंड को दिया जाता है, अब इन जड़विहीन शाखाओं से गिरे पत्तों की तरह हवा से जमीन पर बिखरे पड़े हैं। उनके कपड़े, जो मैग्नन के समय में साफ थे और जिनका उपयोग मैग्नन ने एम.

गिलनोर्मंड के साथ एक परिचय पत्र के रूप में किया था, अब चिथड़ों में तब्दील हो चुके थे।

अब से ये जीव "त्यागे गए बच्चों" के रूप में आंकड़ों में दर्ज हो गए, जिन्हें पुलिस नोट करती है, एकत्र करती है, खो देती है और फिर पेरिस के फुटपाथों पर फिर से ढूंढ लेती है।

उस दिन की गड़बड़ी ही इन बेचारे छोटे जीवों के उस बगीचे में होने का कारण हो सकती थी। अगर सुपरिंटेंडेंट ने उन्हें देख लिया होता, तो वे उन्हें तुरंत भगा देते। बेचारे छोटे जीव सार्वजनिक बगीचों में नहीं जाते; फिर भी, लोगों को यह सोचना चाहिए कि बच्चे होने के नाते, उन्हें फूलों का अधिकार है।

ये बच्चे वहाँ बंद दरवाजों की वजह से थे। वे नियमों का उल्लंघन करते हुए वहाँ थे। वे बगीचे में घुस गए थे और वहीं रह गए। बंद दरवाजे निरीक्षकों को छुट्टी नहीं देते, निगरानी जारी रहनी चाहिए, लेकिन यह ढीली पड़ जाती है और निष्क्रिय हो जाती है; और जनता की चिंता से विचलित होकर और अंदर की बजाय बाहर की स्थिति में अधिक व्यस्त होने के कारण, निरीक्षकों ने बगीचे की ओर देखना बंद कर दिया और उन दो शरारती बच्चों को नहीं देख पाए।

पिछली रात बारिश हुई थी, और सुबह भी थोड़ी-बहुत हुई। लेकिन जून में हल्की बारिश का कोई खास महत्व नहीं होता। तूफान के एक घंटे बाद, यह मुश्किल से ही पता चलता है कि खूबसूरत सुनहरे दिन ने आंसू बहाए हैं। गर्मी में धरती बच्चे के गाल की तरह जल्दी सूख जाती है। संक्रांति के उस समय, दोपहर की तेज धूप मानो दिल को छू लेने वाली होती है। वह सब कुछ सोख लेती है। वह धरती पर फैल जाती है, और एक तरह के खिंचाव के साथ खुद को ढक लेती है। ऐसा लगता है जैसे सूरज प्यासा हो। हल्की बारिश तो बस एक गिलास पानी के बराबर होती है; लेकिन बारिश पल भर में सब कुछ पी जाती है। सुबह सब कुछ टपक रहा था, दोपहर तक सब कुछ बर्फ से ढक गया था।

बारिश से भीगी और सूरज की किरणों से चमकती पत्तियां देखने में बेहद खूबसूरत लगती हैं; उनमें एक अलग ही ताजगी और गर्माहट होती है। बगीचों और घास के मैदानों की जड़ों में पानी और फूलों में धूप होती है, मानो वे अगरबत्ती की खुशबू से भर उठते हैं और एक साथ अपनी सारी सुगंध बिखेरते हैं।

हर चीज़ मुस्कुराती है, गाती है और खुद को पेश करती है। मन को एक हल्का सा नशा सा महसूस होता है। बसंत ऋतु एक क्षणिक स्वर्ग है, सूरज इंसान को धैर्य रखना सिखाता है।

कुछ ऐसे प्राणी हैं जिन्हें और कुछ नहीं चाहिए; ऐसे नश्वर प्राणी, जिनके पास आकाश का नीला रंग है, कहते हैं: “बस इतना ही काफी है!” अद्भुत में लीन स्वप्नद्रष्टा, प्रकृति की पूजा में डूबे हुए, भले-बुरे के प्रति उदासीन, ब्रह्मांड के चिंतनशील और मनुष्य को विस्मृत, जो यह नहीं समझते कि मनुष्य इन लोगों की भूख और उन लोगों की प्यास, सर्दियों में गरीबों के नग्न शरीर, छोटी रीढ़ की हड्डी के लसीका वक्रता, पलंग, अटारी, कालकोठरी और कांपती युवतियों के चिथड़ों में कैसे व्यस्त रह सकते हैं, जबकि वे पेड़ों के नीचे सपने देख सकते हैं; वे शांत और भयानक आत्माएं हैं, और निर्दयतापूर्वक संतुष्ट हैं। आश्चर्य की बात है, अनंत उनके लिए पर्याप्त है। मनुष्य की वह महान आवश्यकता, परिमित, जिसे आलिंगन में रखा जा सकता है, वे अनदेखा करते हैं। परिमित जो प्रगति और उदात्त परिश्रम को संभव बनाता है, वे उसके बारे में सोचते भी नहीं हैं। अनिश्चित, जो अनंत और परिमित के मानवीय और दिव्य संयोजन से उत्पन्न होता है, उनकी समझ से परे है। जब वे विशालता के आमने- सामने होते हैं, तो वे मुस्कुराते हैं। आनंद कभी नहीं, परमानंद हमेशा। उनका जीवन चिंतन में अपने व्यक्तित्व को समर्पित करने में निहित है। मानवता का इतिहास उनके लिए केवल एक विस्तृत योजना है। सब कुछ वहाँ नहीं है; सच्चा 'सब कुछ' बाहर ही रहता है; हे मनुष्य, उस विवरण में उलझने का क्या लाभ? मनुष्य दुख भोगता है, यह बिल्कुल संभव है; लेकिन देखो एल्डिबारन कैसे उदय हो रहा है! माँ के पास अब दूध नहीं है, नवजात शिशु मर रहा है। मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन चीड़ की लकड़ी की कोशिकाओं के एक टुकड़े को सूक्ष्मदर्शी के नीचे देखने पर बनने वाले इस अद्भुत गुलाब के फूल को देखो! अगर हो सके तो सबसे खूबसूरत मेचलिन लेस की तुलना इससे करो! ये विचारक प्रेम करना भूल जाते हैं। राशि चक्र उनमें इस हद तक हावी हो जाता है कि वे रोते हुए बच्चे को देख ही नहीं पाते। ईश्वर उनकी आत्माओं पर ग्रहण लगा देता है। यह ऐसे दिमागों का परिवार है जो एक ही समय में महान और तुच्छ दोनों हैं। होरेस उनमें से एक थे; गोएथे भी थे। शायद ला फॉन्टेन भी। असीम के भव्य अहंकारी, दुःख के शांत दर्शक, जो मौसम सुहावना होने पर नीरो को

नहीं देखते, जिनके लिए सूर्य चिता को छुपा लेता है, जो प्रकाश के प्रभाव की तलाश में गिलोटिन द्वारा होने वाली फांसी को भी देखते हैं, जो न तो चीख सुनते हैं, न सिसकते हैं, न ही मृत्यु की घुरघुराहट, न ही खतरे की घंटी, जिनके लिए सब कुछ ठीक है क्योंकि मई का महीना है, जो जब तक उनके सिर के ऊपर बैंगनी और सुनहरे बादल छाए रहते हैं, खुद को संतुष्ट घोषित करते हैं, और जो तारों की चमक और पक्षियों के गीत समाप्त होने तक खुश रहने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

ये अंधकारमय प्रकाश हैं। इन्हें इस बात का जरा भी आभास नहीं है कि इन पर दया की जानी चाहिए। निःसंदेह ये ऐसे ही हैं। जो रोता नहीं, वह देखता भी नहीं। ये प्रशंसा और दया दोनों के पात्र हैं, ठीक वैसे ही जैसे कोई ऐसे प्राणी पर दया और प्रशंसा दोनों करता है जो एक ही समय में रात और दिन हो, जिसकी पलकों के नीचे आंखें न हों, परन्तु उसके माथे पर एक तारा हो।

कुछ लोगों के अनुसार, इन विचारकों की उदासीनता एक श्रेष्ठ दर्शन है। ऐसा हो सकता है; लेकिन इस श्रेष्ठता में कुछ कमज़ोरी भी है। कोई अमर होते हुए भी नपुंसक हो सकता है: वल्कन इसका उदाहरण है। कोई मनुष्य से अधिक और मनुष्य से कम भी हो सकता है। प्रकृति में अपूर्ण विशालता है। कौन जानता है कि सूर्य अंधा तो नहीं है?

लेकिन फिर क्या? हम किस पर भरोसा कर सकते हैं? Solem quis dicere falsum audeat? कौन यह कहने की हिम्मत करेगा कि सूर्य झूठा है? क्या इस प्रकार कुछ प्रतिभाशाली लोग, कुछ परम उच्च कोटि के मनुष्य, मानव-सितारे, स्वयं गलत हो सकते हैं? जो शिखर पर, चोटी पर, शीर्ष पर है, जो पृथ्वी पर इतना प्रकाश भेजता है, वह कम देखता है, खराब देखता है, बिल्कुल नहीं देखता? क्या यह निराशाजनक स्थिति नहीं है? नहीं। लेकिन फिर सूर्य के ऊपर क्या है? ईश्वर।

6 जून, 1832 को, सुबह लगभग ग्यारह बजे, सुनसान और निर्जन लक्ज़मबर्ग बेहद आकर्षक लग रहा था। फूलों की क्यारियों और क्विंकंक्स (एक प्रकार का छोटा बगीचा) की झाड़ियाँ धूप में मधुर और मनमोहक सुंदरता बिखेर रही थीं। दोपहर की तेज रोशनी से जगमगाती शाखाएँ मानो एक-दूसरे को गले लगाने की कोशिश कर रही थीं। सिकोमोर के पेड़ों में चिड़ियों का शोर गूंज रहा था, गौरैया चहचहा रही थीं, कठफोड़वा शाहबलूत के पेड़ों पर चढ़कर उनकी छाल पर हल्के- हल्के चोंच मार रहे थे। फूलों की क्यारियों में लिली के फूल अपनी भव्यता

xx xxxxx xxxxx xx xxx xx; xxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xxx xxxxxxxxx xx xxxxx xxx xx xxxxxx xx xxx xxx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxx xxx xxxxx xx xxxxxxx, xxxxxxx, xxxxxxx xxx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xxx xxx xx, xx xxxxx xxxxxxx xx xx xxxxxxxx xxxxxx xx xxx xxx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxxxxxx xxxxxxxx xxx xxx, xx xxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxxxxxx xx xxx xxxxxxxx xx xxxxx xx, xxxxx xx xx xxx xxxxx xxxxxx xx; xx xxxxxx, xxxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxxxx xx xxx xxxxx xx, xxxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx; xxxxxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxx xx, xx xxx xx xxxxxx xx xxx xx; xxxxx xxxxx xx xxx xx; xxxxx xxxxxxxx xxxxxxxxx, xxxxxxx, xxxxxx, xxxxxxxx, xxxxxx xx xxx xx xxxxxx xxxxxx xxx xxx xxxxxxx xx xxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxxx xx xxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxx

xxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxxxxx xx xxxxx xx xxxxx xx xxxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxx xxx xxx xxx; xx xxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxx xxx; xxxxxxx xxxxxx xx xx xx xx xxx xxx xxxxx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xx xxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxx xxxxxx xxx xx xxx xx xxxxxx xxx-xxx xxx xx xxxxx-xxxxx xxxxxx xx xxx xxx xxxxxx xx xxx xxx xxx xxxx xxxxxx xxxxx-xxxxx xx-xxxxxx xx xxxxx xx xxx xx xx xxxxx xx-xxxxxx xx xxx xxxxxxxx xx xxx xxxxx

xxxxxxx xx xx xxxxxxxxx xxx xx xxxxxxxxx xxxxxx xxx xxxxx, xx, xxxxxx, xxxxxx xxxxx xxx xx; xxxxxxx xx xxxxx, xxxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xxx xx; xxxxxx xx xxxxxxxx xx xxx xxxxxxx xxx, xxxxxxxxxxxxxxx xx xxxxxxxxxxxx xx xx xxxxx-xxxxxxx xxx, xxxxxxx xx xx xxxxxxx xxxxxx xxx, xxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxxxx xxx, xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xx xxx xx; xx, xx xxxxx xx xxxxx, xxxxx xxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxx, xxxxxx xx xx xxx xxxxxx xx xxx xx, xx xxxxxx xx xxxxxxxxx xxx

xxx xx xxxxxx, xxxxxx xx xx xx xx xxxxx xx; xxxxxx xx xxxxxx, xxx xx xx xx xx xxxxx xxx xxxxxx xx xxxxxxx xxx-xxx xxxxx xxx xx; xxxxx xx xxxxxx xx xxx xxx xxxxx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx, xxxxx, xxxxx xx xxxxxxxx xx xxx xxxxx xxx xx xxxxxxx xxxxx xxx-xxxxxx xxx xxxxxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxx xxxxx xxxxxx xx

बगीचे को भर दिया था। एक दिव्य शांति जो हजारों प्रकार के संगीत, घोंसलों की गुटरगू, झुंडों की भिनभिनाहट और हवा के झोंकों के साथ मेल खाती है। ऋतु का सारा सामंजस्य एक सुंदर समग्रता में समाहित था; वसंत का आगमन और प्रस्थान उचित क्रम में हुआ; लिली के फूल खिलना समाप्त हो गए; चमेली के फूल खिलने लगे; कुछ फूल देर से खिले, कुछ कीड़े अपने समय से पहले ही खिल गए; जून की लाल तितलियों का अग्रिम दल मई की सफेद तितलियों के पिछले दल के साथ मिल गया। केले के पेड़ अपनी नई छाल उतार रहे थे। हवा ने शाहबलूत के पेड़ों की भव्य विशालता में लहरें बना दीं। यह शानदार था। पास की बैरक से एक अनुभवी सैनिक, जो बाड़ के पार से देख रहा था, बोला: "देखो, स्प्रिंग सेना सलामी दे रही है और पूरी वर्दी में है।"

सारी प्रकृति नाश्ता कर रही थी; सृष्टि मेज पर बैठी थी; यही उसका समय था; आकाश में विशाल नीला पर्दा बिछा था, और धरती पर विशाल हरा पर्दा; सूर्य ने उसे चमकीला बना दिया था। ईश्वर सर्वव्यापी भोज परोस रहा था। प्रत्येक प्राणी को अपना चारागाह या अपना भोजन मिल गया था। कबूतर को भांग के बीज मिले, चिड़िया को बाजरा, सुनहरी चिड़िया को चिकवीड, लाल स्तनधारी चिड़िया को कीड़े, हरी चिड़िया को मक्खियाँ, मक्खी को इन्फ्यूसोरिया, और मधुमक्खी को फूल। यह सच है कि उन्होंने एक-दूसरे को थोड़ा-थोड़ा खाया, जो अच्छाई के साथ बुराई के मिश्रण का दुखद रूप है; लेकिन उनमें से किसी भी प्राणी का पेट खाली नहीं था।

वे दो छोटे परित्यक्त जीव भव्य फव्वारे के पास पहुँच गए थे, और इस सारी रोशनी से कुछ हद तक चकित होकर, उन्होंने खुद को छिपाने की कोशिश की, जो निर्जीव भव्यता की उपस्थिति में भी गरीब और कमजोर की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है; और वे हंसों के पिंजरे के पीछे छिप गए।

बीच-बीच में, जब हवा चलती, तो चीखें, शोर, एक तरह की भयानक मौत की गड़गड़ाहट (जो कि गोलाबारी थी) और धीमी आवाज़ें (जो कि तोपों के गोले दागने की आवाज़ें थीं) कानों में एक साथ गूंजती थीं। हॉल्स की ओर छतों पर धुआं छाया हुआ था। दूर से एक घंटी की आवाज़ आ रही थी, जो किसी से विनती करने जैसी लग रही थी।

ऐसा प्रतीत होता था कि इन बच्चों ने इन आवाज़ों पर ध्यान नहीं दिया। छोटा बच्चा बार-बार दोहरा रहा था: "मुझे भूख लगी है।"

लगभग उसी क्षण जब बच्चे वहाँ पहुँचे, एक और दंपत्ति बड़े कुंड के पास आया। उनमें लगभग पचास वर्ष का एक सज्जन व्यक्ति था, जो छह वर्ष के एक छोटे बच्चे का हाथ पकड़े हुए था। निस्संदेह, वे पिता और पुत्र थे। छह वर्ष के उस छोटे बच्चे के मुँह में एक बड़ा सा ब्रियोश (एक प्रकार की रोटी) था।

उस दौर में, नदी के किनारे स्थित कुछ घरों (जैसे रू मैडम और डी'एनफर) के पास लक्ज़मबर्ग गार्डन की चाबियां होती थीं, जिनका उपयोग किराएदार गेट बंद होने पर कर सकते थे। यह विशेषाधिकार बाद में समाप्त कर दिया गया। यह पिता- पुत्र निस्संदेह इन्हीं घरों में से किसी एक के निवासी थे।

वे दोनों बेचारे छोटे जीव "उस सज्जन" को पास आते हुए देखते रहे और खुद को थोड़ा और अच्छी तरह से छिपा लिया।

वह एक बुर्जुआ था। शायद वही व्यक्ति, जिसे मारियस ने एक दिन प्रेम के आवेश में, उसी भव्य कुंड के पास, अपने बेटे को "अति करने से बचने" की सलाह देते हुए सुना था। उसका व्यवहार मिलनसार और अभिमानी था, और उसका मुँह हमेशा मुस्कुराता रहता था, क्योंकि वह कभी बंद नहीं होता था। जबड़े की अधिकता और त्वचा की कमी से बनी यह बनावटी मुस्कान, आत्मा की बजाय दांतों को दर्शाती थी। बच्चा, अपनी ब्रियोश (एक प्रकार की रोटी) को थोड़ा सा खाकर, संतुष्ट प्रतीत हो रहा था। विद्रोह के कारण बच्चा नेशनल गार्ड्समैन की वर्दी में था, और पिता ने सावधानी के कारण बुर्जुआ पोशाक ही पहनी हुई थी।

पिता और पुत्र उस फव्वारे के पास रुक गए जहाँ दो हंस खेल रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि इस संभ्रांत व्यक्ति को हंसों से विशेष लगाव था। वह इस मायने में हंसों से मिलता-जुलता था कि वह उन्हीं की तरह चलता था।

फिलहाल, हंस तैर रहे थे, जो उनकी प्रमुख प्रतिभा है, और वे इसमें शानदार थे।

अगर उन दोनों बेचारे नन्हे बच्चों ने ध्यान से सुना होता और अगर वे समझने लायक उम्र के होते, तो वे इस गंभीर व्यक्ति के शब्दों को समझ पाते। पिता अपने बेटे से कह रहे थे:

“ऋषि कम में ही संतुष्ट रहते हैं। मुझे देखो, मेरे पुत्र। मुझे आडंबर पसंद नहीं है। मैं कभी सोने की फीती और पत्थरों से सजे वस्त्रों में नहीं देखा जाता; मैं उस झूठी शान-शौकत को कुप्रबंधित आत्माओं के लिए छोड़ देता हूँ।”

यहां हॉल की दिशा से आने वाली गहरी चीखें घंटी और कोलाहल की नई ताकत के साथ फूट पड़ीं।
“यह क्या है?” बच्चे ने पूछा।
पिता ने उत्तर दिया:
“यह सैटर्नलिया है।”
अचानक ही उसकी नज़र हरे रंग के हंस के पिंजरे के पीछे दो छोटे-छोटे फटेहाल लड़कों पर पड़ी।
उन्होंने कहा, "यही शुरुआत है।"
और, कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने आगे कहा:
"इस बगीचे में अराजकता प्रवेश कर रही है।"
इसी बीच, उसके बेटे ने अपने ब्रियोश का एक टुकड़ा खाया, उसे थूक दिया और अचानक रोने लगा।
“तुम किसलिए रो रहे हो?” उसके पिता ने पूछा।
“मुझे अब भूख नहीं है,” बच्चे ने कहा।
पिता की मुस्कान और भी अधिक खिल उठी।
केक खाने के लिए भूखा होना जरूरी नहीं है।
“मेरा केक मुझे थका देता है। यह बासी हो गया है।”
"क्या आपको अब और नहीं चाहिए?"
"नहीं।"
पिता ने हंसों की ओर इशारा किया।
"इसे उन ताड़ के पेड़ों की ओर फेंक दो।"
बच्चा हिचकिचाया। किसी व्यक्ति को अपने केक का और हिस्सा नहीं चाहिए होता है; लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उसे केक किसी और को दे देना चाहिए। पिता ने आगे कहा:
“मानवीय बनो। तुम्हें जानवरों के प्रति दया भाव रखना चाहिए।”

और उसने अपने बेटे से केक लेकर उसे बर्तन में फेंक दिया।
केक बिल्कुल किनारे पर गिर गया।
हंस दूर तालाब के बीचोंबीच थे और किसी शिकार में व्यस्त थे। उन्होंने न तो बुर्जुआ को देखा था और न ही ब्रियोश को।
बुर्जुआ वर्ग को जब यह महसूस हुआ कि केक बर्बाद होने के कगार पर है, और इस बेकार जहाज़ के डूबने से दुखी होकर, उन्होंने एक टेलीग्राफिक आंदोलन शुरू किया, जिसने अंततः हंसों का ध्यान आकर्षित किया।
उन्होंने कुछ तैरता हुआ देखा, जहाजों की तरह किनारे की ओर बढ़े, और धीरे- धीरे सफेद प्राणियों के लिए उपयुक्त मूर्खतापूर्ण भव्यता के साथ अपना मार्ग ब्रियोश की ओर मोड़ा।
“हंस संकेतों को समझते हैं,” बुर्जुआ ने मजाक करते हुए खुशी से कहा।
उसी क्षण, शहर का दूर का शोर अचानक और बढ़ गया। इस बार यह भयावह था। हवा के कुछ झोंके दूसरों की तुलना में अधिक स्पष्ट होते हैं। उस समय जो हवा चल रही थी, उसमें ढोल की स्पष्ट थाप, शोरगुल, तोपों की गोलाबारी और खतरे की घंटी व तोपों की भयावह आवाजें सुनाई दे रही थीं। यह सब एक काले बादल के साथ हुआ जिसने अचानक सूर्य को ढक लिया।
हंस अभी तक ब्रियोश तक नहीं पहुंचे थे।
पिता ने कहा, "चलो घर लौट चलते हैं, वे टुइलरीज़ पर हमला कर रहे हैं।" उन्होंने अपने बेटे का हाथ फिर से पकड़ लिया। फिर उन्होंने आगे कहा: "टुइलरीज़ से लक्ज़मबर्ग तक, राजघराने और कुलीन वर्ग के बीच केवल उतनी ही दूरी है; जो ज़्यादा दूर नहीं है। जल्द ही गोलियों की बौछार होगी।"
उसने बादल की ओर एक नजर डाली।
“शायद बारिश ही बरसने वाली है; आसमान भी बरसने वाला है; छोटी शाखा का तो बुरा हाल होने वाला है। चलो जल्दी घर लौट चलें।”
बच्चे ने कहा, "मैं हंसों को ब्रियोश खाते हुए देखना चाहूंगा।"
पिता ने उत्तर दिया:

"ऐसा करना नासमझी होगी।"

और वह अपने छोटे से बुर्जुआ को अपने साथ ले गया।

हंसों को देखकर पछताते हुए बेटे ने अपना सिर वापस कुंड की ओर घुमाया, जब तक कि पंचकोणीय आकृतियों के एक कोने ने उसे उससे छिपा नहीं लिया।

इसी बीच, दोनों नन्हे-मुन्ने हंसों के साथ ही ब्रियोश केक के पास पहुँच गए।
वह पानी पर तैर रहा था। उनमें से छोटा वाला केक को घूर रहा था, जबकि बड़ा वाला जाते हुए अमीर आदमी को देख रहा था।

पिता और पुत्र उन रास्तों के भूलभुलैया में प्रवेश कर गए जो रू मैडम के किनारे पेड़ों के झुंड के पास बनी भव्य सीढ़ियों की ओर ले जाते हैं।

जैसे ही वे नज़र से ओझल हुए, बड़ा बच्चा जल्दी से कुंड के गोल किनारे पर पेट के बल लेट गया, और अपने बाएं हाथ से उसे कसकर पकड़ते हुए, पानी में गिरने ही वाला था कि उसने अपने दाहिने हाथ में छड़ी लेकर केक की ओर बढ़ा दिया। हंसों ने दुश्मन को भांपते हुए जल्दी की, और ऐसा करते हुए उन्होंने अपनी छाती को इस तरह हिलाया जिससे छोटे मछुआरे को मदद मिली; पानी हंसों के सामने से पीछे हट गया, और इन हल्की गोलाकार लहरों में से एक ने धीरे से ब्रियोश को बच्चे की छड़ी की ओर बहा दिया। जैसे ही हंस पास आए, छड़ी केक को छू गई। बच्चे ने छड़ी को ज़ोर से झटका दिया, ब्रियोश को अंदर खींच लिया, हंसों को डराकर भगा दिया, केक को पकड़ लिया और उछलकर खड़ा हो गया। केक गीला था; लेकिन वे भूखे-प्यासे थे। बड़े भाई ने केक को दो हिस्सों में तोड़ा, एक बड़ा और एक छोटा। उसने छोटा हिस्सा खुद रख लिया, बड़ा हिस्सा अपने भाई को दिया और उससे कहा:

"इसे अपने मुंह में ठूस लो।"

सत्रहवीं. एक मृत पिता अपने मरते हुए बेटे का इंतजार करता है

मारियस बैरिकेड से बाहर भागा, कॉम्बेफेरे उसके पीछे गया। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। गैवरोश मर चुका था। कॉम्बेफेरे कारतूसों की टोकरी वापस लाया; मारियस ने बच्चे को गोद में उठाया।
“हाय!” उसने सोचा, “पिता ने अपने पिता के लिए जो किया था, वही वह पुत्र को लौटा रहा था; फर्क सिर्फ इतना था कि थेनार्डियर अपने पिता को जीवित लौटा लाया था; वह बच्चे को मृत लौटा रहा था।”
जब मारियस गैवरोश को अपनी बाहों में लेकर किले में दोबारा दाखिल हुआ, तो उसका चेहरा, बच्चे की तरह, खून से लथपथ था।
जिस क्षण वह गैवरोश को उठाने के लिए झुका था, उसी समय एक गोली उसके सिर को छूकर निकल गई थी; उसे इसका पता भी नहीं चला था।
कौरफेयरैक ने अपनी टाई खोली और उससे मारियस के माथे पर पट्टी बांध दी।
उन्होंने गैवरोश को माबेउफ के साथ एक ही मेज पर लिटाया और दोनों शवों पर काला शॉल फैला दिया। वह शॉल बूढ़े और बच्चे दोनों के लिए पर्याप्त था।
कॉम्बेफेरे ने अपने द्वारा लाई गई टोकरी से कारतूस बांटे।
इससे प्रत्येक व्यक्ति को पंद्रह राउंड फायर करने का मौका मिला।
जीन वाल्जेन अभी भी उसी स्थान पर, अपने पत्थर के खंभे पर स्थिर खड़ा था। जब कॉम्बेफेरे ने उसे अपने पंद्रह कारतूस दिए, तो उसने अपना सिर हिला दिया।
कॉम्बेफेरे ने धीमी आवाज़ में एनजोलरास से कहा, "ये एक दुर्लभ सनकी व्यक्ति है। इसने इस घेराबंदी में लड़ाई न करने का रास्ता ढूंढ लिया है।" "इससे उन्हें इसका बचाव करने से रोका नहीं जा सकता," एनजोलरास ने जवाब दिया।

कॉम्बेफेरे ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "वीरता के अपने मूल रूप होते हैं।"

और कौरफेयरैक, जिसने ये सब सुन लिया था, ने आगे कहा:

"वह फादर माबेउफ से बिल्कुल अलग तरह का व्यक्ति है।"

एक बात जो ध्यान देने योग्य है, वह यह है कि बैरिकेड पर बरस रही आग ने अंदरूनी वातावरण को लगभग अशांत नहीं किया। इस तरह के युद्ध के बवंडर से कभी न गुज़रे लोग इन उथल-पुथल के बीच मौजूद शांति के अनूठे पलों का अंदाज़ा नहीं लगा सकते। लोग आते-जाते रहते हैं, बातें करते हैं, मज़ाक करते हैं, आराम करते हैं। हमारे एक परिचित ने गोलियों की बौछार के बीच एक योद्धा को उससे यह कहते सुना: "हम यहाँ ऐसे बैठे हैं जैसे किसी बैचलर पार्टी में नाश्ता कर रहे हों।" हम फिर दोहराते हैं कि रू डे ला चानवरेरी का किला अंदर से बेहद शांत प्रतीत हो रहा था। सभी परिवर्तन और सभी चरण समाप्त हो चुके थे, या समाप्त होने वाले थे। स्थिति नाजुक से भयावह हो गई थी, और भयावह से शायद हताश होने वाली थी। जैसे-जैसे स्थिति और गंभीर होती गई, वीरता की चमक बैरिकेड को और अधिक बैंगनी रंग से रंगती गई। गंभीर मुद्रा में खड़े एनजोलरास ने उस पर अपना प्रभुत्व जमाया हुआ था, मानो कोई युवा स्पार्टन अपनी नंगी तलवार को गंभीर प्रतिभा वाले एपिडोटस को समर्पित कर रहा हो।

कॉम्बेफेरे, एप्रन पहने हुए, घावों पर पट्टी बांध रहा था; बॉसुएट और फ्यूली, गैवरोश द्वारा मृत कॉर्पोरल से उठाए गए बारूद के डिब्बे से कारतूस बना रहे थे; बॉसुएट ने फ्यूली से कहा, "हम जल्द ही किसी दूसरे ग्रह पर जाने वाले हैं।" कूर्फेराक, एनजोलरास के पास अपने लिए आरक्षित कुछ पत्थरों पर, अपने पूरे शस्त्रागार को व्यवस्थित कर रहा था - अपनी तलवार-छड़ी, अपनी बंदूक, दो पिस्तौल और एक लाठी - ठीक उसी तरह जैसे कोई छोटी लड़की एक छोटे डंकर्क को व्यवस्थित कर रही हो। जीन वालजेन चुपचाप अपने सामने वाली दीवार को घूर रहा था। एक कारीगर, मदर हुचेलूप की बड़ी भूसे की टोपी को रस्सी से उसके सिर पर बांध रहा था, "धूप से बचने के लिए," जैसा कि उसने कहा। कूगौर्ड डी ऐक्स के युवक आपस में खुशी-खुशी बातें कर रहे थे, मानो आखिरी बार स्थानीय बोली बोलने के लिए उत्सुक हों। जोली, जिसने विधवा हुचेलूप का दर्पण दीवार से उतार लिया था, उसमें अपनी जीभ देख रहा था। कुछ लड़ाकों को

दराज में बासी रोटी के कुछ टुकड़े मिले, जिन्हें वे बड़े चाव से खा रहे थे।
मारियस इस बात से परेशान था कि उसके पिता उससे क्या कहने वाले हैं।

XVIII. गिद्ध शिकार बन जाता है

हमें बैरिकेड्स से जुड़ी एक मनोवैज्ञानिक विशेषता पर जोर देना चाहिए। सड़कों पर होने वाले उस अप्रत्याशित युद्ध की कोई भी विशेषता अनदेखी नहीं की जानी चाहिए।

हमने अभी जिस विलक्षण आंतरिक शांति का जिक्र किया है, चाहे वह कैसी भी रही हो, फिर भी, उसके अंदर मौजूद लोगों के लिए वह अवरोध एक कल्पना ही बना रहता है।

गृहयुद्ध में प्रलय का सा आभास होता है, अज्ञात के सारे धुंध भयंकर चमक के साथ मिल जाते हैं, क्रांतियां रहस्यमयी होती हैं, और जो कोई भी अवरोध को पार कर जाता है उसे लगता है कि उसने एक सपना पार कर लिया है।

इन स्थानों पर जिन भावनाओं का सामना करना पड़ता है, उनका जिक्र हमने मारियस के मामले में किया है, और हम इसके परिणाम देखेंगे; ये जीवन से कहीं अधिक और कहीं कम भी हैं। बैरिकेड से बाहर निकलते ही, व्यक्ति को याद नहीं रहता कि उसने वहाँ क्या देखा था। वह भयानक रहा है, पर उसे इसका एहसास नहीं है। वह परस्पर विरोधी विचारों से घिरा हुआ था जिनके मानवीय चेहरे थे; उसका सिर भविष्य के प्रकाश में था। वहाँ लाशें पड़ी थीं, और प्रेत सीधे खड़े थे। घंटे विशाल थे और अनंत काल के घंटे प्रतीत होते थे। व्यक्ति मृत्यु में जी रहा था। परछाइयाँ गुजर गईं। वे क्या थीं?

किसी ने खून से सने हाथ देखे; वहाँ एक भयानक भय का माहौल था; वहाँ एक खौफनाक सन्नाटा भी था; कुछ खुले मुँह चीख रहे थे, और कुछ चुप थे; ऐसा लग रहा था मानो वह धुएँ के बीच हो, शायद रात के अंधेरे में। ऐसा लगा जैसे उसने अज्ञात गहराइयों के किसी भयानक कीचड़ को छू लिया हो; कोई अपनी उंगलियों के नाखूनों पर कुछ लाल रंग का देख रहा है। अब उसे कुछ भी याद नहीं है।

चलिए वापस रुए डे ला चानवरेरी चलते हैं।

अचानक, दो धमाकों के बीच, दूर से घड़ी के घंटे बजने की आवाज सुनाई देने लगी।

कॉम्बेफेरे ने कहा, "दोपहर का समय है।"

बारह कोड़े अभी पूरे भी नहीं हुए थे कि एनजोलरास उछलकर खड़ा हो गया और बैरिकेड के शिखर से उसने गरजते हुए यह आवाज लगाई:

“पत्थर घरों के अंदर ले जाओ; खिड़कियों और छतों पर पत्थर बिछा दो। आधे आदमी अपनी तोपों की तरफ, बाकी आधे पत्थरों की तरफ। एक मिनट भी बर्बाद नहीं किया जा सकता।”

कुल्हाड़ी कंधे पर रखे हुए सैपर्स और माइनर्स का एक दस्ता अभी-अभी गली के अंत में युद्ध की मुद्रा में प्रकट हुआ था।

यह किसी टुकड़ी का ही अग्रभाग हो सकता है; और किस टुकड़ी का? जाहिर तौर पर हमलावर टुकड़ी का; बैरिकेड को ध्वस्त करने के लिए तैनात इंजीनियर हमेशा बैरिकेड पर चढ़ने वाले सैनिकों से आगे होते हैं।

वे स्पष्ट रूप से उस क्षण के कगार पर थे जिसे एम. क्लेरमोंट-टोनर्रे ने 1822 में "रस्साकशी" कहा था।

एनजोलरास के आदेश का पालन उसी तत्परता से किया गया जो जहाजों और बैरिकेड्स की विशेषता है, ये दोनों ही युद्ध के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ से भागना असंभव है। एक मिनट से भी कम समय में, एनजोलरास द्वारा कोरिंथ के द्वार पर जमा किए गए पत्थरों का दो-तिहाई हिस्सा पहली मंजिल और अटारी तक पहुँचा दिया गया था, और दूसरा मिनट बीतने से पहले ही, इन पत्थरों को कलात्मक रूप से एक के ऊपर एक रखकर पहली मंजिल की खिड़की और छत की खिड़कियों को उनकी आधी ऊँचाई तक बंद कर दिया गया था। मुख्य वास्तुकार फ्यूली द्वारा सावधानीपूर्वक बनाए गए कुछ छेदों से तोपों की नालें निकल रही थीं। चूंकि छर्रे दागना बंद हो गया था, इसलिए खिड़कियों को बंद करना और भी आसान हो गया था। अब दोनों तोपें बैरिकेड के केंद्र पर गोले दाग रही थीं ताकि वहाँ एक छेद बनाया जा सके, और यदि संभव हो तो हमले के लिए एक रास्ता बनाया जा सके।

जब अंतिम रक्षा के लिए निर्धारित पत्थर अपनी जगह पर रख दिए गए, तो एनजोलरास ने उन बोतलों को, जिन्हें उसने उस मेज के नीचे रखा था जहाँ माबेउफ लेटा हुआ था, पहली मंजिल पर ले जाने का आदेश दिया।

“इसे कौन पिएगा?” बॉसुएट ने उससे पूछा।

“वे,” एनजोलरास ने उत्तर दिया।
फिर उन्होंने नीचे की खिड़की को बंद कर दिया और लोहे की सलाखों को तैयार रखा, जिनका इस्तेमाल रात में शराब की दुकान के दरवाजे को सुरक्षित रखने के लिए किया जाता था।
किला बनकर तैयार था। बैरिकेड ही प्राचीर थी, शराब की दुकान ही तहखाना थी। बचे हुए पत्थरों से उन्होंने निकास द्वार बंद कर दिया।
किसी बैरिकेड के रक्षक हमेशा गोला-बारूद का सोच-समझकर इस्तेमाल करते हैं, और हमलावर भी यह बात जानते हैं। इसलिए वे अपनी तैयारियों में एक तरह की ढिलाई बरतते हैं, जानबूझकर समय से पहले ही गोलीबारी का सामना करते हैं, भले ही यह देखने में लगे, लेकिन असल में ऐसा नहीं होता। फिर वे आराम से हमला करते हैं।
इस विचार-विमर्श ने एनजोलरास को हर चीज़ की समीक्षा करने और उसे परिपूर्ण बनाने का अवसर दिया। उनका मानना था कि चूंकि ऐसे लोगों को मरना ही है, इसलिए उनकी मृत्यु एक उत्कृष्ट कृति होनी चाहिए।
उसने मारियस से कहा: “हम दोनों नेता हैं। अंतिम आदेश मैं अंदर दूंगा। तुम बाहर रहकर देखो।”
मारियस ने बैरिकेड के शिखर पर पहरा देने के लिए अपनी जगह बना ली।
जैसा कि पाठक को याद होगा, एनजोलरास ने रसोई के दरवाजे को, जो कि एम्बुलेंस का कमरा था, कीलों से बंद करवा दिया था।
उन्होंने कहा, "घायलों पर पानी नहीं डालना है।"
उन्होंने टैपरूम में संक्षिप्त लेकिन अत्यंत शांत स्वर में अपने अंतिम आदेश दिए; फ्यूली ने ध्यान से सुना और सभी की ओर से उत्तर दिया।
“पहली मंजिल पर, सीढ़ियाँ काटने के लिए अपनी कुल्हाड़ियाँ तैयार रखें। क्या आपके पास वे हैं?”
“हां,” फ्यूली ने कहा।
"कितने?"
“दो कुल्हाड़ियाँ और एक गदा।”

“यह अच्छी बात है। अब हमारे 26 पैदल लड़ाके हैं। हमारे पास कितनी बंदूकें हैं?”
चौंतीस।
“आठ बहुत ज़्यादा हैं। इन आठों तोपों को बाकी तोपों की तरह ही भरा हुआ और तैयार रखना। तलवारें और पिस्तौलें कमरबंद में रखना। बीस आदमी बैरिकेड पर तैनात। छह अटारी की खिड़कियों में घात लगाकर बैठें, और छह पहली मंज़िल की खिड़की पर तैनात रहें ताकि पत्थरों में बने छेदों से हमलावरों पर गोलियां चला सकें। यहां एक भी मज़दूर निष्क्रिय न रहे। जैसे ही हमले का बिगुल बजे, नीचे के बीस लोग बैरिकेड की ओर दौड़ पड़ें। जो सबसे पहले पहुंचेगा, उसे सबसे अच्छी जगह मिलेगी।”
ये व्यवस्थाएं हो जाने के बाद, उन्होंने जावर्ट की ओर मुड़कर कहा:
मैं तुम्हें नहीं भूल रहा हूँ।
और मेज पर पिस्तौल रखते हुए उसने आगे कहा:
"इस कमरे से निकलने वाला आखिरी आदमी इस जासूस की खोपड़ी फोड़ देगा।" “यहाँ?” एक आवाज ने पूछा।
“नहीं, हमें उनके शवों को अपने शवों के साथ नहीं मिलाना चाहिए। मोंडेतोर लेन की छोटी सी बैरिकेड को पार किया जा सकता है। यह केवल चार फीट ऊंची है। वह आदमी अच्छी तरह से जकड़ा हुआ है। उसे वहीं ले जाकर मौत के घाट उतार दिया जाएगा।”
उस समय एनजोलरास से भी अधिक भावहीन कोई और था, वह था जावर्ट। यहीं पर जीन वाल्जेन की उपस्थिति हुई।
वह विद्रोहियों के समूह में खो गया था। वह आगे बढ़ा और एनजोलरास से बोला: “क्या आप कमांडर हैं?”
"हाँ।"
आपने कुछ देर पहले मुझे धन्यवाद दिया था।
“गणतंत्र के नाम पर। इस घेराबंदी के दो रक्षक हैं, मारियस पोंटमर्सी और आप।”

"क्या आपको लगता है कि मैं मुआवजे का हकदार हूं?"
"निश्चित रूप से।"
"ठीक है, मैं एक का अनुरोध करता हूँ।"
"यह क्या है?"
"मैं उस आदमी का सिर उड़ा दूंगा।"
जावर्ट ने अपना सिर उठाया, जीन वालजेन को देखा, लगभग अदृश्य सी हरकत की और कहा:
“यह तो बिल्कुल सही है।”
एनजोलरास ने अपनी राइफल में गोलियां भरनी शुरू कर दी थीं; उसने चारों ओर नजरें घुमाईं:
कोई आपत्ति नहीं।
और उसने जीन वालजेन की ओर रुख किया:
"जासूस को ले जाओ।"
दरअसल, जीन वाल्जेन ने मेज के किनारे पर बैठकर जैवर्ट को अपने कब्जे में ले लिया। उसने पिस्तौल छीन ली, और एक हल्की सी क्लिक की आवाज से पता चला कि उसने उसे लोड कर दिया है।
लगभग उसी समय, तुरहियों की एक तेज आवाज सुनाई दी।
“अपना ख्याल रखना!” मारियस ने बैरिकेड के ऊपर से चिल्लाकर कहा।
जैवरट अपनी उस खामोश हंसी के साथ हंसने लगा जो उसकी खासियत थी, और विद्रोहियों को ध्यान से देखते हुए उसने उनसे कहा:
आपकी स्थिति मुझसे बेहतर नहीं है।
“पूरी ताकत से!” एनजोलरास चिल्लाया।
विद्रोही उग्र रूप से बाहर निकल आए, और जैसे ही वे आगे बढ़े, उन्हें पीछे से—यदि हमें यह कहने की अनुमति हो—जैवर्टी का यह हमला झेलना पड़ा:
हम जल्द ही फिर मिलेंगे!

XIX. जीन वालजेन ने अपना बदला लिया

जब जीन वाल्जेन जावर्ट के साथ अकेले रह गए, तो उन्होंने कैदी को शरीर के बीचोंबीच बांधने वाली रस्सी खोली, जिसकी गांठ मेज के नीचे थी। इसके बाद उन्होंने जावर्ट को उठने का इशारा किया।

जावर्ट ने उस अवर्णनीय मुस्कान के साथ आज्ञा का पालन किया जिसमें जंजीरों में जकड़ी सत्ता की सर्वोच्चता समाहित थी।

जीन वाल्जेन ने जावर्ट को मार्टिंगेल से वैसे ही पकड़ा जैसे कोई बोझ ढोने वाले जानवर को छाती की पट्टी से पकड़ता है, और उसे अपने पीछे घसीटते हुए धीरे-धीरे शराब की दुकान से बाहर निकला, क्योंकि जावर्ट अपने लंगड़े अंगों के कारण केवल छोटे-छोटे कदम ही उठा सकता था।

जीन वाल्जेन के हाथ में पिस्तौल थी।

इस तरह उन्होंने बैरिकेड के भीतरी समलंब चतुर्भुज को पार किया। आसन्न हमले के लिए पूरी तरह से तल्लीन विद्रोही इन दोनों की ओर पीठ करके खड़े थे।

बैरिकेड के बिल्कुल बाईं ओर, एक तरफ तैनात मारियस अकेला ही उन्हें गुजरते हुए देख रहा था। पीड़ित और जल्लाद का यह समूह उस समाधि के प्रकाश से प्रकाशित था जिसे वह अपनी आत्मा में धारण किए हुए था।

जीन वाल्जेन ने कुछ कठिनाई से, लेकिन एक पल के लिए भी अपनी पकड़ ढीली किए बिना, जावर्ट को, जो जकड़ा हुआ था, मोंडेटूर लेन में बनी छोटी खाई को पार करने के लिए मजबूर किया।

जब उन्होंने यह बाधा पार की, तो वे गली में अकेले रह गए। उन्हें किसी ने नहीं देखा। शवों के ढेर में से उन्हें एक पीला पड़ा चेहरा, बिखरे बाल, एक छेदा हुआ हाथ और एक महिला का आधा नग्न स्तन दिखाई दिया। यह एपोनाइन थी। घरों के कोने ने उन्हें विद्रोहियों से छिपा रखा था। बैरिकेड से ले जाए गए शवों का ढेर कुछ ही कदमों की दूरी पर एक भयानक ढेर के रूप में जमा था।

जैवरट ने उस शरीर को तिरछी निगाहों से देखा और अत्यंत शांत भाव से धीमी आवाज़ में कहा:

मुझे ऐसा लगता है कि मैं उस लड़की को जानती हूँ।
फिर वह जीन वाल्जेन की ओर मुड़ा।
जीन वाल्जेन ने पिस्तौल को अपनी बगल में दबा लिया और जावर्ट पर एक ऐसी निगाह डाली जिसे शब्दों की आवश्यकता नहीं थी: "जावर्ट, मैं हूँ।" जावर्ट ने जवाब दिया:
अपना बदला लो।
जीन वाल्जेन ने अपनी जेब से एक चाकू निकाला और उसे खोला।
“एक फोल्डिंग चाकू!” जैवर्ट ने कहा, “तुम सही हो। यह तुम पर ज्यादा जंचता है।”
जीन वाल्जेन ने जावर्ट के गले में बंधी मार्टिंगेल (एक प्रकार का पट्टा) काट दी, फिर उसकी कलाई पर बंधी रस्सियाँ काट दीं, फिर झुककर उसके पैरों की रस्सी काट दी; और सीधा खड़े होकर उसने उससे कहा:
"आप स्वतंत्र हैं।"
जैवरट आसानी से आश्चर्यचकित नहीं होता था। फिर भी, हालांकि वह आत्मसंतुष्ट था, वह चौंकने से खुद को रोक नहीं पाया। वह अवाक और स्थिर खड़ा रहा।
जीन वालजेन ने आगे कहा:
मुझे नहीं लगता कि मैं इस जगह से बच निकल पाऊंगा। लेकिन अगर संयोगवश मैं बच भी गया, तो मैं फाउचेलेवेंट नाम से रू डे ल'होमे आर्मे, नंबर 7 में रहता हूं।
जैवरट बाघ की तरह गुर्राया, जिससे उसका मुंह आधा खुल गया, और उसने दांतों के बीच से बुदबुदाया:
"सावधान रहें।"
“जाओ,” जीन वालजेन ने कहा।
जावर्ट ने फिर से बोलना शुरू किया:
"आपने फौचेलेवेंट, रुए डे ल'होमे आर्मे कहा?"

“नंबर 7।”
जैवरट ने धीमी आवाज में दोहराया: —“नंबर 7।”
उसने एक बार फिर अपना कोट बंद किया, अपने कंधों के बीच सैन्य मुद्रा में वापस आ गया, आधा मुड़ा, अपनी बाहें मोड़ीं और एक हाथ से अपनी ठोड़ी को सहारा देते हुए हॉल्स की दिशा में चल पड़ा। जीन वालजेन ने अपनी निगाहों से उसका पीछा किया:
कुछ मिनट बाद, जावर्ट मुड़ा और जीन वाल्जेन को चिल्लाकर बोला:
“तुम मुझे परेशान करते हो। इससे बेहतर है कि मुझे मार डालो।”
जावर्ट को खुद भी इस बात का एहसास नहीं हुआ कि वह अब जीन वाल्जेन को "तू" कहकर संबोधित नहीं कर रहा था।
"यहाँ से चले जाओ," जीन वालजेन ने कहा।
जावर्ट धीरे-धीरे पीछे हट गया। कुछ ही क्षण बाद वह रू डेस प्रीचेर्स के कोने पर मुड़ गया।
जब जावर्ट गायब हो गया, तो जीन वालजेन ने अपनी पिस्तौल हवा में चलाई।
फिर वह बैरिकेड पर लौट आया और बोला:
"यह किया जाता है।"
इसी बीच, ये सब घटित हुआ।
मारियस, जो आंतरिक भाग की तुलना में बाहरी भाग पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा था, ने उस समय तक शराबखाने के अंधेरे परिवेश में जकड़े हुए जासूस पर ठीक से ध्यान नहीं दिया था।
जब उसने उसे दिन दहाड़े बैरिकेड पार करके अपनी मौत की ओर बढ़ते देखा, तो उसने उसे पहचान लिया। अचानक उसके मन में कुछ कौंधा। उसे रू डे पोंटोइस का इंस्पेक्टर और वो दो पिस्तौलें याद आईं जो इंस्पेक्टर ने उसे दी थीं और जिनका इस्तेमाल मारियस ने इसी बैरिकेड पर किया था। उसे न सिर्फ उसका चेहरा याद आया, बल्कि उसका नाम भी याद आ गया।
हालांकि, यह स्मृति धुंधली और परेशान करने वाली थी, ठीक वैसे ही जैसे उनके सभी विचार थे।

यह कोई पुष्टि नहीं थी जो उन्होंने की, बल्कि एक प्रश्न था जो उन्होंने स्वयं से पूछा था:
"क्या यह वही पुलिस निरीक्षक नहीं है जिसने मुझे बताया था कि उसका नाम जावर्ट है?"
शायद उस आदमी की मदद के लिए हस्तक्षेप करने का अभी भी समय था। लेकिन सबसे पहले, उसे यह जानना होगा कि क्या यह जावर्ट था।
मारियस ने एनजोलरास को पुकारा, जो अभी-अभी बैरिकेड के दूसरे छोर पर तैनात हुआ था:
“एनजोलरास!”
"क्या?"
उस आदमी का नाम क्या है?
"क्या आदमी?"
“वो पुलिस एजेंट। क्या आप उसका नाम जानते हैं?” “बिल्कुल। उन्होंने हमें बताया था।”
"यह क्या है?"
जावर्ट।
मारियस झट से खड़ा हो गया।
उसी क्षण उन्हें पिस्तौल की आवाज सुनाई दी।
जीन वाल्जेन पुनः प्रकट हुआ और चिल्लाया: "यह हो गया है।" मारियस के दिल में एक उदास सी ठंडक दौड़ गई।

XX. मृत लोग सही हैं और जीवित लोग गलत नहीं हैं

बैरिकेड की मौत की पीड़ा अब शुरू होने ही वाली थी।

उस चरम क्षण में हर चीज़ ने इसकी दुखद भव्यता में योगदान दिया; हवा में हजारों रहस्यमय धमाके, सड़कों पर अदृश्य रूप से गतिमान सशस्त्र जनसमूह की साँसें, घुड़सवार सेना की रुक-रुक कर होने वाली सरपट दौड़, मार्च करते हुए तोपखाने का भारी प्रहार, टुकड़ियों द्वारा की गई गोलाबारी, और पेरिस की भूलभुलैया में एक-दूसरे को पार करती तोपों की आवाज़, छतों के ऊपर सुनहरे रंग में उठता युद्ध का धुआँ, अवर्णनीय और अस्पष्ट रूप से भयानक चीखें, हर जगह खतरे की बिजली, सेंट-मेरी का खतरे का अलार्म, जिसमें अब एक सिसकी का स्वर था, मौसम की सौम्यता, सूर्य और बादलों से भरे आकाश की भव्यता, दिन की सुंदरता, और घरों की भयावह चुप्पी।

क्योंकि, पिछली शाम से ही, रू डे ला चानवरेरी में घरों की दो पंक्तियाँ दो दीवारों में तब्दील हो गई थीं; भयंकर दीवारें, बंद दरवाजे, बंद खिड़कियाँ, बंद शटर।

उन दिनों में, जो आज के दिनों से बिल्कुल अलग थे, जब समय आ गया था, जब जनता एक लंबे समय से चली आ रही स्थिति का अंत करना चाहती थी, चाहे वह किसी स्वीकृत चार्टर से हो या किसी कानूनी देश से, जब वातावरण में सर्वव्यापी क्रोध व्याप्त था, जब शहर ने फुटपाथों को उखाड़ने की अनुमति दे दी थी, जब विद्रोह ने पूंजीपति वर्ग के कान में अपना संदेश फुसफुसाकर उन्हें मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया था, तब निवासी, जो विद्रोह में पूरी तरह से समाया हुआ था, मानो योद्धा का सहायक बन गया था, और घर उस पर टिकी अस्थायी किलेबंदी के साथ भाईचारा स्थापित कर चुका था। जब स्थिति अनुकूल नहीं थी, जब विद्रोह को स्पष्ट रूप से स्वीकार नहीं किया गया था, जब जनता ने आंदोलन को नकार दिया था, तब तक योद्धाओं का सब कुछ समाप्त हो चुका था, शहर विद्रोह के चारों ओर एक रेगिस्तान में बदल गया था, आत्माएं ठंडी पड़ गई थीं,

शरणस्थलों को कीलों से ठोक दिया गया था, और सेना को बैरिकेड पर कब्जा करने में मदद करने के लिए सड़कें एक संकरी घाटी में बदल गई थीं।

किसी भी राष्ट्र को अचानक किसी तरह से उसकी इच्छा से अधिक तेज़ी से चलने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। जो कोई भी उसे मजबूर करने का प्रयास करे, उसका नाश हो! कोई भी राष्ट्र अपनी मर्जी से नहीं चलता। ऐसा करने पर वह विद्रोह को अपने हाल पर छोड़ देता है। विद्रोही हानिकारक हो जाते हैं, जैसे महामारी से संक्रमित हो गए हों। घर एक खड़ी चट्टान है, दरवाजा एक अस्वीकृति है, मुखौटा एक दीवार है। यह दीवार सुनती है, देखती है और कुछ नहीं करती। यह खुल सकती है और आपको बचा सकती है। नहीं। यह दीवार एक न्यायाधीश है। यह आपको घूरती है और आपको दोषी ठहराती है। बंद घर कितनी भयानक चीजें हैं। वे मृत प्रतीत होते हैं, फिर भी जीवित हैं। जीवन, जो मानो वहाँ रुका हुआ है, वहाँ बना रहता है। चौबीस घंटों से कोई भी उनसे बाहर नहीं निकला है, लेकिन कोई भी उनसे गायब नहीं है। उस चट्टान के भीतर, लोग आते- जाते हैं, सोते हैं और उठते हैं; वे वहाँ एक परिवार की तरह हैं; वे वहाँ खाते-पीते हैं; वे भयभीत हैं, एक भयानक बात! भय इस भयानक आतिथ्यहीनता को उचित ठहराता है; आतंक इसमें मिला हुआ है, एक राहत देने वाला कारक। कभी-कभी, और ऐसा सचमुच देखा गया है, डर जुनून में बदल जाता है; भय क्रोध में परिवर्तित हो सकता है, जैसे विवेक रोष में बदल जाता है; इसीलिए यह कहावत है: "क्रोधित व्यक्ति संयमी हो जाता है।" कभी-कभी घोर आतंक का प्रकोप होता है, जिससे शोकपूर्ण धुएँ की तरह क्रोध फूट पड़ता है।—"ये लोग क्या चाहते हैं? वे वहाँ क्या करने आए हैं? उन्हें इस मुसीबत से निकलने दो। उनके लिए और भी बुरा होगा। यह उनकी गलती है। उन्हें वही मिल रहा है जिसके वे हकदार हैं। इससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है। हमारी यह गरीब गली गोलियों से छलनी हो गई है। ये बदमाशों का गिरोह हैं। सबसे बढ़कर, दरवाजा मत खोलो।"—और घर एक मकबरे जैसा लगने लगता है। विद्रोही उस घर के सामने मृत्यु-त्रुटि में है; वह देखता है कि गोलियाँ और नंगी तलवारें पास आ रही हैं; अगर वह चिल्लाता है, तो वह जानता है कि वे उसे सुन रहे हैं, और कोई नहीं आएगा; वहाँ दीवारें खड़ी हैं जो उसकी रक्षा कर सकती हैं, वहाँ लोग हैं जो उसे बचा सकते हैं; और इन दीवारों के कान मांस के हैं, और इन आदमियों की आंतें पत्थर की हैं।

वह किसे फटकारेगा?

कोई नहीं और हर कोई।

हम जिस अपूर्ण युग में जी रहे हैं।

यूटोपिया का क्रांति में परिवर्तित होना, दार्शनिक विरोध का सशस्त्र विरोध में बदलना और मिनर्वा से पल्लास में परिवर्तित होना हमेशा अपने जोखिम और खतरे पर ही होता है।

वह आदर्शलोक जो अधीर होकर विद्रोह का रूप ले लेता है, जानता है कि उसका क्या अंजाम होगा; यह लगभग हमेशा ही समय से पहले आ जाता है। फिर वह शांत हो जाता है और विजय के बदले विपत्ति को धैर्यपूर्वक स्वीकार कर लेता है। वह बिना किसी शिकायत के उन लोगों की सेवा करता है जो उसका विरोध करते हैं, यहाँ तक कि उन्हें क्षमा भी करता है और यहाँ तक कि उन्हें निर्दोष भी ठहराता है, और उसकी उदारता त्याग को स्वीकार करने में निहित है। वह बाधाओं के सामने अदम्य है और कृतघ्नता के प्रति कोमल है।

लेकिन क्या यह कृतघ्नता है?

जी हां, मानव जाति के दृष्टिकोण से।

नहीं, व्यक्तिगत दृष्टिकोण से।

प्रगति ही मनुष्य के जीवन का आधार है। मानव जाति के सामान्य जीवन को प्रगति कहा जाता है, मानव जाति के सामूहिक कदमों को प्रगति कहा जाता है। प्रगति निरंतर चलती रहती है; यह दिव्य और दिव्य की ओर महान मानवीय और सांसारिक यात्रा करती है; इसके पड़ाव ऐसे होते हैं जहाँ यह पिछड़ी हुई टोली को इकट्ठा करती है, इसके स्थल ऐसे होते हैं जहाँ यह ध्यान करती है, क्षितिज पर अचानक प्रकट हुए किसी भव्य कनान की उपस्थिति में, इसकी रातें ऐसी होती हैं जब यह सोती है; और विचारक की सबसे गहरी चिंताओं में से एक यह है कि वह मानव आत्मा पर छाए अंधकार को देखता है, और वह उस सोई हुई प्रगति को जगाने में असमर्थ होकर अंधेरे में भटकता रहता है।

"शायद ईश्वर मर चुका है," जेरार्ड डी नर्वल ने एक दिन इन पंक्तियों के लेखक से कहा, प्रगति को ईश्वर के साथ भ्रमित करते हुए, और गति के अवरोध को अस्तित्व की मृत्यु मान लिया।

निराशावादी ही गलत है। प्रगति अचूक रूप से जागृत होती है, और संक्षेप में कहें तो, यह सोते हुए भी निरंतर चलती रहती है, क्योंकि इसका आकार बढ़ता ही जाता है। जब हम इसे फिर से खड़ा देखते हैं, तो यह और भी ऊँचा हो जाता है। सदा शांति का अस्तित्व प्रगति पर उतना ही निर्भर करता है जितना कि नदी के प्रवाह पर; कोई अवरोध न बनाओ, कोई पत्थर न डालो; बाधाएँ पानी में झाग पैदा करती हैं और मानवता को क्रोधित करती हैं। इसी से विपत्तियाँ उत्पन्न होती हैं; परन्तु इन विपत्तियों के बाद हम यह तथ्य स्वीकार करते हैं कि हमने प्रगति कर ली है। जब तक व्यवस्था, जो कि सर्वव्यापी शांति के सिवा कुछ नहीं है, स्थापित नहीं हो जाती, जब तक सामंजस्य और एकता का शासन नहीं हो जाता, प्रगति के पड़ाव क्रांतियाँ ही होंगी।

तो फिर प्रगति क्या है? हमने अभी-अभी इसका वर्णन किया है; जनमानस का चिरस्थायी जीवन।

अब, कभी-कभी ऐसा होता है कि व्यक्तियों का क्षणिक जीवन मानव जाति के शाश्वत जीवन का प्रतिरोध करता है।

आइए बिना किसी द्वेष के यह स्वीकार करें कि प्रत्येक व्यक्ति के अपने विशिष्ट हित होते हैं, और वह बिना किसी हानि के अपने हितों की रक्षा कर सकता है; वर्तमान में स्वार्थ की कुछ मात्रा क्षमा योग्य है; क्षणिक जीवन के अपने अधिकार हैं, और वह भविष्य के लिए निरंतर स्वयं को बलिदान करने के लिए बाध्य नहीं है। पृथ्वी पर अपनी बारी का इंतजार कर रही पीढ़ी को आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे कम करने के लिए विवश नहीं किया जा सकता, जो अंततः अपने समान हैं और जिनकी बारी बाद में आएगी।—“मैं अस्तित्व में हूँ,” वह स्वर में कहता है जिसका नाम 'अल्लाह' है। “मैं युवा हूँ और प्रेम में हूँ, मैं बूढ़ा हूँ और विश्राम चाहता हूँ, मैं एक परिवार का पिता हूँ, मैं परिश्रम करता हूँ, मैं समृद्ध हूँ, मैं व्यापार में सफल हूँ, मेरे पास किराए पर देने के लिए मकान हैं, मेरे पास सरकारी कोष में धन है, मैं खुश हूँ, मेरे पास पत्नी और बच्चे हैं, मेरे पास यह सब है, मैं जीना चाहता हूँ, मुझे शांति से रहने दो।”—इसलिए, कुछ क्षणों में, मानव जाति के उदार अग्रदूतों पर एक गहरी उदासी छा जाती है।

इसके अलावा, हमें यह स्वीकार करना होगा कि यूटोपिया युद्ध करते समय अपने प्रकाशमान दायरे से बाहर निकल जाता है। यह, कल का सत्य, अपनी युद्ध शैली को

xxxx xx xx xxx xx xxxx xxxx xxx xx, xxxxxx, xxxx xx xxx xxxxxxx xxxx xxx xx, xxxxx xxxxx, xxxxx xx xx xxxxx xx xxxx xxx xx xxxx xxxxx xx xx xxxxx xx xxxx xxx xxxx xx xxxxx xxx xxx xxxxxxx xxxxxx xxxx xxxx xx; xx xxxxxxxx xx xxxxxxxxxxx xxxxx, xxxxxxxx xx xxxxxx, xxxxx xxx xxx xxxx xxx xxxx xxxx xxx xxxxxxxx, xxxxxxx, xxxx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxxxxx xx xxx xxxxx xx; xx xxxxxxx xx xxxx xxxxx xx, xx xxxxxxxxxxxx xx xxx xxxxx xx; xx xxxxx xxxxxxxxx xx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxxx xxxxxx xxx xxxx xxxx xxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxx xx, xx xx xxxxx xxxxx xxx xxx xxxx xx xxxx xxxxxxxx xx xx xxxx xxxxxxxxx xxxxxx, xxxx xxxx xx xxxxxxx xxxxx xx xxx xxxxxxx xxxx xx xxx xxx xx xxxxx xx xxxxxx xxxx xxx xx, xxx xx xxxxx xxx xxxx xxxxx xx xxx xx xx xxxxxx xxxx xxx; xx xx xx xxxx xxxx xx, xx xxxxx xx xxxx xx xxxx xxx

xx xxx xx xxxx xxxxxxx xx xxxx xx xxx, xxxxxx xx xx xxxxxxxx xxxxxxxx, xxxxxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxxxxxx xxx xxxx xxxx xxxxx xx, xxxx xx xxx xxx xx xxxxx xxxx xx xx xxxx xxxxxx xxx xx xx xxx xx xxxxx xxx; xx xxxx xxxxxx xxx xx xxxx xxxx xxxx xxxx xxxxx xxx xxxxxx xx xxxxxx xxxx xxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxxx xx; xxxxxx xxxxxxxxxx xxxxx xxxx xxxx xxxxxxxxx xx xxxxx xxxx xxx xx xxxx xx, xxxxx xxxxxxx xxxx xx xxxx xxx, xx xxxxx xx xxxx xxxxx xx xxxx xxxx xxxx xxx xxxxxx xxxxxxxx xx xxxx xxx, xx xxxxxxx xxxxxxxxxx xx xxxx xxxx

xx xxxxxxx xxx xx xxxxxx xx xx xxx xxxxxxxx xx xxxx xxx

xx xx xxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xxxx xxx xx xxxx xx xxxx xxx, xx xx xxxx xxx xxxxxx xxxx xxxx

xxxxxxxxxxxxxx xx xxxxxxx xxx xx xxxxxx xx xxxx xxxxx xxxx xxx xx xxxxxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxxx xxx xxxx xxxxxxxxxx xx xxxx xxxx xxxx xxx, xxxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxx xxxx xx, xxxx xxxxx xxxxxx xx xx xxxx xx, xxxx xxxxxxxxx xx xxxxx xxxx xxx xx xx xxxx xxxxx xxxx xx xx xx xxxxxx xxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx, xxxxxx, xxxxxxxx, xxxxxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxx xxx xxx xxx, xx xxxxxx xx xxxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxxx xxxxxxxxxx xx xxx xxx xx xxxx xxx xxx xxxx xxx xx xx

चिल्लाते हैं: “तुम नरक की पक्की सड़कें खोद रहे हो!” वे शायद जवाब दें: “ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारी मोर्चाबंदी नेक इरादों से बनी है।”

सबसे अच्छा उपाय निस्संदेह शांतिपूर्ण समाधान है। संक्षेप में, आइए हम इस बात पर सहमत हों कि जब हम फुटपाथ को देखते हैं, तो हमारे मन में भालू का ख्याल आता है, और यह सद्भावना ही है जो समाज को बेचैन करती है। लेकिन समाज को स्वयं को बचाना होगा, और हम उसकी सद्भावना से ही अपील करते हैं। किसी भी हिंसक उपाय की आवश्यकता नहीं है। बुराई का सौहार्दपूर्ण अध्ययन करना, उसके अस्तित्व को सिद्ध करना, और फिर उसका निवारण करना। यही वह तरीका है जिससे हम बुराई को आमंत्रित करते हैं।

चाहे जो भी हो, पतन के समय भी, विशेषकर पतन के समय भी, ये पुरुष, जो ब्रह्मांड के हर कोने में, फ्रांस पर निगाहें गड़ाए, आदर्श के अटल तर्क के साथ महान कार्य के लिए प्रयासरत हैं, महान हैं; वे प्रगति के लिए अपना जीवन निस्वार्थ अर्पित करते हैं; वे ईश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं; वे एक धार्मिक कार्य करते हैं। नियत समय पर, एक अभिनेता की तरह जो अपने इशारे पर अभिनय करता है, ईश्वर के निर्देशानुसार, वे समाधि में प्रवेश करते हैं। और इस निराशाजनक संघर्ष, इस धैर्यपूर्ण अंत को वे सर्वोच्च और सार्वभौमिक परिणामों को साकार करने के लिए स्वीकार करते हैं, उस भव्य और अदम्य मानवीय आंदोलन को जो 14 जुलाई, 1789 को शुरू हुआ था; ये सैनिक पुरोहित हैं। फ्रांसीसी क्रांति ईश्वर का कार्य है।

इसके अलावा, कुछ ऐसे भेद भी हैं, और यह उचित होगा कि इस भेद को उन भेदों में जोड़ा जाए जिन्हें पहले ही एक अन्य अध्याय में बताया जा चुका है—स्वीकृत क्रांतियाँ होती हैं, जिन्हें क्रांति कहा जाता है; और अस्वीकृत क्रांतियाँ होती हैं, जिन्हें दंगे कहा जाता है।

जो विद्रोह भड़कता है, वह एक ऐसा विचार है जो जनता के समक्ष अपनी परीक्षा से गुजर रहा होता है। यदि जनता उसे निष्फल घोषित कर दे, तो वह विचार सूखे फल के समान है; विद्रोह महज एक झड़प है।

हर आह्वान पर और हर बार जब आदर्शवादी समाज चाहे, युद्ध छेड़ना राष्ट्रों के लिए उचित नहीं है। राष्ट्रों में हर समय और हर क्षण नायकों और शहीदों जैसा स्वभाव नहीं होता।

वे सकारात्मक हैं। मूल रूप से, विद्रोह उन्हें नापसंद है, पहला कारण यह है कि यह अक्सर एक तबाही का कारण बनता है, दूसरा कारण यह है कि इसका आरंभिक बिंदु हमेशा एक अमूर्त अवधारणा होती है।

क्योंकि, और यह एक महान बात है, जो लोग स्वयं को बलिदान करते हैं, वे हमेशा आदर्श के लिए ही करते हैं, और केवल आदर्श के लिए ही। विद्रोह एक उत्साह है। उत्साह उग्र हो सकता है; इसीलिए हथियारों का सहारा लिया जाता है। लेकिन हर विद्रोह, जिसका लक्ष्य किसी सरकार या शासन व्यवस्था के विरुद्ध होता है, उसका उद्देश्य इससे कहीं अधिक होता है। उदाहरण के लिए, और हम इस पर ज़ोर देते हैं, 1832 के विद्रोह के प्रमुख, और विशेष रूप से रुए डे ला चानव्रेरी के युवा उत्साही, वास्तव में लुई फिलिप के विरुद्ध नहीं लड़ रहे थे। उनमें से अधिकांश, जब खुलकर बात करते थे, तो इस राजा के प्रति न्यायसंगत थे जो राजशाही और क्रांति के बीच में खड़ा था; कोई भी उससे नफरत नहीं करता था। लेकिन उन्होंने लुई फिलिप में दैवीय अधिकार की छोटी शाखा पर उसी तरह हमला किया जैसे उन्होंने चार्ल्स X में इसकी बड़ी शाखा पर हमला किया था; और फ्रांस में राजशाही को उखाड़ फेंकने के द्वारा वे जिस चीज को पलटना चाहते थे, वह, जैसा कि हमने समझाया है, मनुष्य द्वारा मनुष्य पर और पूरे ब्रह्मांड में अधिकार पर विशेषाधिकार के अतिक्रमण का था। पेरिस के राजा के बिना, दुनिया निरंकुश शासकों से मुक्त हो जाएगी। उनका तर्क यही था। उनका लक्ष्य निस्संदेह दूर का था, शायद अस्पष्ट भी था, और उनके प्रयासों के बावजूद वह पीछे हटता चला गया; लेकिन वह लक्ष्य महान था।

ऐसा ही है। और हम इन सपनों के लिए खुद को कुर्बान कर देते हैं, जो बलिदान किए गए व्यक्ति के लिए लगभग हमेशा भ्रम ही होते हैं, लेकिन अंततः, ये वही भ्रम हैं जिनसे संपूर्ण मानवीय निश्चितता जुड़ी हुई है। हम इन दुखद परिस्थितियों में खुद को झोंक देते हैं और जो करने वाले होते हैं, उसके प्रति मदहोश हो जाते हैं। कौन जानता है? शायद हम सफल हो जाएं। हम संख्या में कम हैं, हमारे विरुद्ध एक पूरी सेना खड़ी है; लेकिन हम न्याय, प्राकृतिक नियम, प्रत्येक व्यक्ति की स्वयं पर संप्रभुता, जिससे कोई त्याग संभव नहीं है, न्याय और सत्य की रक्षा कर रहे हैं, और आवश्यकता पड़ने पर, हम तीन सौ स्पार्टन सैनिकों की तरह मरेंगे। हम डॉन क्विक्सोट के बारे में नहीं, बल्कि लियोनिडास के बारे में सोचते हैं। और हम सीधे आगे बढ़ते

हैं, और एक बार प्रतिज्ञा कर लेने के बाद, हम पीछे नहीं हटते, और सिर झुकाए आगे बढ़ते हैं, एक अभूतपूर्व विजय, पूर्ण क्रांति, प्रगति की पुनः मुक्ति, मानव जाति का उत्थान, सार्वभौमिक उद्धार की आशा लिए; और सबसे बुरे हालात में, थर्मोपाइले की।

प्रगति के नाम पर किए गए ये सैन्य अभियान अक्सर विफल हो जाते हैं, और हमने अभी-अभी इसका कारण बताया है। योद्धाओं के आवेगों से भीड़ बेचैन हो जाती है। भारी जनसमूह, जो अपने भार के कारण ही नाजुक होते हैं, रोमांच से डरते हैं; और इस आदर्श में रोमांच का अंश निहित है।

इसके अलावा, और हमें यह नहीं भूलना चाहिए, ऐसे हित भी बाधा उत्पन्न करते हैं जो आदर्शों और भावनाओं के अनुकूल नहीं होते। कभी-कभी लालच दिल पर हावी हो जाता है।

फ्रांस की शान और खूबसूरती इसी में निहित है कि वह अन्य देशों की तुलना में कम संसाधनों का इस्तेमाल करता है; वह आसानी से अपने जीवन की रस्सी को कमरबंद में बांध लेता है। वह सबसे पहले जागता है और सबसे आखिर में सोता है। वह निरंतर आगे बढ़ता है। वह खोजी है।

इसका कारण यह है कि वह एक कलाकार हैं।

आदर्श तर्क का चरम बिंदु मात्र है, ठीक वैसे ही जैसे सुंदरता सत्य का शिखर है। कलात्मक राष्ट्र सुसंगत राष्ट्र भी होते हैं। सुंदरता से प्रेम करना प्रकाश को देखना है। इसीलिए यूरोप की मशाल, अर्थात् सभ्यता की मशाल, सबसे पहले ग्रीस ने उठाई, जिसने इसे इटली को सौंपा, और इटली ने इसे फ्रांस को सौंप दिया। दिव्य, प्रकाशमान, मार्गदर्शक राष्ट्र!

किसी राष्ट्र की प्रगति में उसकी काव्य प्रतिभा का महत्वपूर्ण योगदान होता है, यह प्रशंसनीय बात है। सभ्यता का स्तर उसकी कल्पनाशीलता से निर्धारित होता है। बस, एक सभ्य राष्ट्र को पुरुषोचित बने रहना चाहिए। कोरिंथ के मामले में ऐसा नहीं; सिबारिस के मामले में ऐसा नहीं। जो भी स्त्रैण हो जाता है, वह स्वयं को नाजायज बना लेता है। उसे न तो शौकिया होना चाहिए और न ही गुणी कलाकार: बल्कि उसे कलात्मक होना चाहिए। सभ्यता के मामले में, उसे परिष्करण नहीं, बल्कि उदात्तीकरण करना चाहिए। इसी शर्त पर मानव जाति को आदर्श का प्रतिरूप मिलता है।

आधुनिक आदर्श का स्वरूप कला में निहित है, और इसका साधन विज्ञान है। विज्ञान के माध्यम से ही यह कवियों की उस महान दृष्टि, सामाजिक सौंदर्य को साकार कर पाएगा। ए+बी के संयोजन से स्वर्ग का पुनर्निर्माण होगा। सभ्यता जिस मुकाम पर पहुँच चुकी है, वहाँ सटीकता भव्यता का एक आवश्यक तत्व है, और कलात्मक भावना को वैज्ञानिक अंग द्वारा न केवल समर्थन मिलता है, बल्कि पूर्णता भी प्राप्त होती है; सपनों का हिसाब-किताब करना आवश्यक है। कला, जो विजेता है, को विज्ञान का सहारा चाहिए, जो पथिक है; जिस प्राणी पर सवार हुआ जाता है, उसकी दृढ़ता महत्वपूर्ण है। आधुनिक भावना ग्रीस की प्रतिभा है, जिसका वाहन भारत की प्रतिभा है; हाथी पर सवार सिकंदर।

जो जातियाँ रूढ़ियों में जकड़ी हुई हैं या धन-दौलत से भ्रष्ट हो चुकी हैं, वे सभ्यता का मार्गदर्शन करने के योग्य नहीं हैं। मूर्ति या धन के आगे घुटने टेकने से चलने-फिरने की शक्ति और आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति दोनों ही नष्ट हो जाती हैं। धार्मिक या व्यापारिक तल्लीनता किसी राष्ट्र की चमक को कम कर देती है, उसके क्षितिज को नीचे गिरा देती है और उसे उस बुद्धि से वंचित कर देती है, जो मानवीय और दिव्य दोनों है और जो सार्वभौमिक लक्ष्य की ओर ले जाती है, और जो राष्ट्रों को धर्म प्रचारक बनाती है। बेबीलोन का कोई आदर्श नहीं है; कार्थेज का कोई आदर्श नहीं है। एथेंस और रोम ने सदियों के अंधकारमय काल में भी सभ्यता का प्रकाश बनाए रखा है।

फ्रांस, ग्रीस और इटली के समान ही नस्ल का देश है। सौंदर्य में वह एथेंस की तरह है और महानता में रोमन। इसके अलावा, वह नेक है। वह स्वयं को समर्पित करती है। अन्य देशों की तुलना में वह अक्सर आत्म-समर्पण और त्याग के भाव से परिपूर्ण होती है। लेकिन, यह भाव कभी उसे जकड़ लेता है, तो कभी उसे त्याग देता है। और यहीं उन लोगों के लिए बड़ा खतरा निहित है जो तब दौड़ते हैं जब वह केवल चलना चाहती है, या तब चलते रहते हैं जब वह रुकना चाहती है। फ्रांस भौतिकवाद में डूब जाती है, और कुछ क्षणों में, उस उदात्त मस्तिष्क को अवरुद्ध करने वाले विचार अब फ्रांसीसी महानता की याद दिलाने वाले नहीं रह जाते और मिसौरी या दक्षिण कैरोलिना जैसे छोटे-छोटे राज्यों जितने ही संकीर्ण हो जाते हैं। ऐसे में क्या किया जाए? विशालकाय फ्रांस बौना होने का नाटक करती है; विशाल फ्रांस कभी-कभी तुच्छता के अजीबोगरीब रूप धारण कर लेती है। बस इतना ही।

इस पर कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। मनुष्य, ग्रहों की तरह, ग्रहण का अनुभव करने का अधिकार रखते हैं। और सब ठीक है, बशर्ते प्रकाश लौट आए और ग्रहण रात में न बदल जाए। भोर और पुनर्जन्म एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। प्रकाश का पुन: प्रकट होना, 'मैं' की निरंतरता के समान है।

आइए इन तथ्यों को शांतिपूर्वक स्वीकार करें। घेराबंदी में मृत्यु हो या निर्वासन में समाधि, भक्ति का एक स्वीकार्य अवसर है। भक्ति का वास्तविक नाम निःसंकोच है। त्यागे हुए स्वयं को त्यागे जाने दें, निर्वासित स्वयं को निर्वासित होने दें, और जब महान राष्ट्र पीछे हटें, तो हमें केवल यही निवेदन करना चाहिए कि वे बहुत अधिक पीछे न हटें। तर्क की ओर लौटने के बहाने पतन की ओर बहुत अधिक नहीं बढ़ना चाहिए।

पदार्थ विद्यमान है, क्षण विद्यमान है, स्वार्थ विद्यमान है, भूख विद्यमान है; परन्तु भूख ही एकमात्र ज्ञान नहीं हो सकती। हम मानते हैं कि क्षणिक जीवन के अपने अधिकार हैं, परन्तु शाश्वत जीवन के भी अपने अधिकार हैं। अफसोस! शिखर पर पहुँचने का अर्थ पतन को नहीं टलता। इतिहास में यह बात अपेक्षा से अधिक बार देखने को मिलती है: कोई राष्ट्र महान होता है, आदर्श का स्वाद चखता है, फिर दलदल में फंस जाता है और उसे भी अच्छा पाता है; और यदि उससे पूछा जाए कि उसने सुकरात को छोड़कर फाल्सटाफ को क्यों चुना, तो वह उत्तर देता है: “क्योंकि मुझे राजनेता पसंद हैं।”

अपने विषय, यानी संघर्ष पर लौटने से पहले एक और बात।

जिस संघर्ष का हम वर्णन कर रहे हैं, वह आदर्श की ओर एक उथल-पुथल मात्र है। अवरुद्ध प्रगति अस्वस्थ होती है और इन दुखद दौरों का शिकार होती है। प्रगति की इसी बीमारी, गृहयुद्ध, से हमारा अपने सफर में सामना हुआ है। यह उस नाटक का एक घातक चरण है, जो सामाजिक निंदा पर आधारित है और जिसका वास्तविक नाम "प्रगति" है।

प्रगति!

जिस पुकार को हम अक्सर ज़ुबान देते हैं, वही हमारा संपूर्ण विचार है; और इस नाटक के जिस मोड़ पर हम अब पहुँच चुके हैं, वहाँ इस विचार को अभी एक से अधिक परीक्षाओं से गुज़रना है, इसलिए शायद हमें इस पर से पर्दा उठाने की अनुमति नहीं है, तो कम से कम इसके प्रकाश को चमकने देने की अनुमति है।

इस समय पाठक की दृष्टि में जो पुस्तक है, वह शुरू से अंत तक, संपूर्ण रूप से और विस्तार से, चाहे उसमें कितनी भी रुकावटें, अपवाद और कमियाँ हों, बुराई से अच्छाई की ओर, अन्याय से न्याय की ओर, रात से दिन की ओर, लालसा से विवेक की ओर, सड़न से जीवन की ओर, नरक से स्वर्ग की ओर, शून्यता से ईश्वर की ओर की यात्रा है। आरंभ बिंदु: पदार्थ; अंत बिंदु: आत्मा। शुरुआत में हाइड्रा, अंत में देवदूत।

XXI. नायक

अचानक, ढोल बज उठा और हमले का संकेत मिला।

यह हमला एक तूफान की तरह था। पिछली शाम, अंधेरे में, बैरिकेड की ओर चुपचाप बढ़ा गया था, मानो कोई सांप रेंग रहा हो। अब, दिन के उजाले में, उस चौड़ी होती सड़क पर, अचानक हमला करना बिल्कुल असंभव था, बल्कि क्रूर बल का मुखौटा उतर चुका था, तोपों की गर्जना शुरू हो चुकी थी, और सेना बैरिकेड पर टूट पड़ी थी। अब क्रोध कौशल में बदल गया था। पैदल सेना की एक शक्तिशाली टुकड़ी, जो नियमित अंतराल पर पैदल राष्ट्रीय रक्षक और नगर रक्षकों द्वारा विभाजित थी, और घनी भीड़ द्वारा समर्थित थी, जिसे देखा तो नहीं जा सकता था लेकिन सुना जा सकता था, ढोल बजाते, तुरही बजाते, संगीनें ताने, सबसे आगे सैपर्स (सैनिकों का हथियारबंद करने वाले सैनिक) के साथ दौड़ती हुई सड़क पर आ गई, और गोलेबारी के बावजूद अविचलित होकर, दीवार पर पीतल के बीम के भार के साथ सीधे बैरिकेड की ओर बढ़ गई।

दीवार मजबूती से टिकी रही।

विद्रोहियों ने अंधाधुंध गोलीबारी की। बैरिकेड को पार करते ही बिजली की चमक दिखाई दी। हमला इतना भयंकर था कि एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे बैरिकेड हमलावरों की बाढ़ आ गई हो; लेकिन बैरिकेड ने सैनिकों को ऐसे झटक दिया जैसे शेर कुत्तों को झटक देता है, और बैरिकेड से घिरे हमलावरों से ऐसे ढके हुए थे जैसे चट्टान झाग से ढकी हो, और फिर एक पल बाद काले, विशालकाय और दुर्जेय रूप में पुनः प्रकट हुए।

पीछे हटने पर विवश होकर, सेना की टुकड़ी सड़क पर ही इकट्ठी रही, असुरक्षित होते हुए भी भयंकर रूप से खड़ी रही, और किले पर गोलियों की भीषण बौछार से जवाब दिया। आतिशबाजी देखने वाले किसी भी व्यक्ति को बिजली की आपस में गुंथी हुई लपटों का गुच्छा याद होगा जिसे 'बुके' कहा जाता है। पाठक स्वयं इस बुके की कल्पना करें, जो अब ऊर्ध्वाधर नहीं बल्कि क्षैतिज है, जिसकी प्रत्येक लपट के सिरे पर एक गोली, छर्रा या बिस्केन है, और जो बिजली के

गुच्छों से एक के बाद एक मृतकों को चुन-चुनकर मार रहा है। बैरिकेड इसके नीचे था।

दोनों पक्षों का संकल्प बराबर था। वहाँ प्रदर्शित वीरता लगभग बर्बर थी और आत्मबलिदान से शुरू हुई एक प्रकार की वीर क्रूरता से विवश थी।

यह वो दौर था जब एक नेशनल गार्ड्समैन ज़ुआवे की तरह लड़ता था। टुकड़ी इस विद्रोह को खत्म करना चाहती थी, विद्रोह लड़ने के लिए बेताब था। जवानी की उमंग और सेहत के चरम पर मौत की पीड़ा को स्वीकार करने से साहस उन्माद में बदल जाता है। इस लड़ाई में, हर कोई मौत के बढ़ते खतरे का सामना कर रहा था। सड़कें लाशों से भरी पड़ी थीं।

बैरिकेड के एक छोर पर एनजोलरास और दूसरे छोर पर मारियस तैनात थे। एनजोलरास, जिसने पूरे बैरिकेड का भार अपने कंधों पर उठा रखा था, ने खुद को सुरक्षित रखा और बचाव किया; तीन सैनिक एक के बाद एक उसकी आड़ में गिर पड़े, उसे देखे बिना ही; मारियस निहत्थे लड़ रहा था। उसने खुद को निशाना बना लिया। उसका आधा से ज़्यादा शरीर बैरिकेड के ऊपर था। लालची व्यक्ति से ज़्यादा हिंसक और फिजूलखर्ची करने वाला कोई नहीं होता; सपने देखने वाले से ज़्यादा भयानक कोई नहीं होता। मारियस दुर्जेय और चिंतनशील था। युद्ध में वह मानो किसी सपने में थामे हुए था। उसे देखकर कोई भी उसे बंदूक चलाते हुए प्रेत कह सकता था।

विद्रोहियों के कारतूस खत्म हो रहे थे; लेकिन उनके व्यंग्य नहीं। जिस समाधि-स्तंभ में वे खड़े थे, उसके इस उथल-पुथल भरे वातावरण में भी वे हंस रहे थे।

कौरफेयरैक ने सिर पर टोपी नहीं पहनी थी।

“तुमने अपनी टोपी का क्या किया?” बॉसुएट ने उससे पूछा।

कौरफेयरैक ने उत्तर दिया:

"उन्होंने तोप के गोलों से आखिरकार इसे मुझसे छीन लिया।"

या फिर उन्होंने अभिमानपूर्ण टिप्पणियाँ कीं।

फ्यूली ने कड़वाहट से कहा, "क्या कोई समझ सकता है कि वे लोग—[और उसने नाम गिनाए, जाने-माने नाम, यहाँ तक कि प्रसिद्ध नाम भी, जिनमें से कुछ पुरानी

सेना से संबंधित थे]—जिन्होंने हमसे जुड़ने का वादा किया था, हमारी सहायता करने की शपथ ली थी, और इसके लिए अपनी प्रतिष्ठा दांव पर लगाई थी, और जो हमारे सेनापति हैं, और जो हमें छोड़कर चले गए!"

और कॉम्बेफेरे ने गंभीर मुस्कान के साथ ही जवाब देने तक खुद को सीमित रखा।

"कुछ लोग सम्मान के नियमों का पालन उसी प्रकार करते हैं जैसे कोई बहुत दूर से तारों को देखता है।"

बैरिकेड के अंदर फटे हुए कारतूस इतने बिखरे हुए थे कि ऐसा लग रहा था मानो वहां हिमपात हुआ हो।

हमलावरों की संख्या अधिक थी; विद्रोहियों का पलड़ा भारी था। वे एक दीवार के शिखर पर थे, और उन्होंने ढलान पर मृत और घायल सैनिकों पर ठोकर खाते और फंसे सैनिकों पर तीक्ष्ण प्रहार किया। यह बैरिकेड, जिस तरह से बनाया गया था और जिसकी मजबूती सराहनीय थी, वास्तव में उन स्थितियों में से एक थी जहाँ मुट्ठी भर सैनिक एक पूरी सेना को रोके रखते हैं। फिर भी, गोलियों की बौछार के बीच लगातार भर्ती और विस्तार करते हुए हमलावर टुकड़ी लगातार करीब आती गई, और अब, धीरे-धीरे, कदम-दर-कदम, लेकिन निश्चित रूप से, सेना बैरिकेड के चारों ओर इस तरह कसती चली गई जैसे कोई शिकंजे में शराब बनाने की मशीन फंस जाती है।

एक के बाद एक हमले होते रहे। स्थिति की भयावहता बढ़ती ही गई।

फिर, रू डे ला चानव्रेरी में, पत्थरों के उस ढेर पर, ट्रॉय की दीवार के बराबर एक युद्ध छिड़ गया। ये थके-हारे, फटेहाल, बेहाल सैनिक, जिन्होंने चौबीस घंटे से कुछ नहीं खाया था, जो सोए नहीं थे, जिनके पास बस कुछ ही राउंड फायर करने बचे थे, जिनकी जेबें कारतूसों से खाली हो चुकी थीं और जो उनमें से लगभग सभी घायल थे, जिनके सिर या हाथ पर काले और खून से सने कपड़े की पट्टियाँ बंधी थीं, जिनके कपड़ों में छेद थे जिनसे खून रिस रहा था, और जो मामूली बंदूकों और धारदार तलवारों से लैस थे, टाइटन बन गए। बैरिकेड पर दस बार हमला किया गया, हर बार उसके पास पहुँचा गया, उस पर आक्रमण किया गया, उसे पार किया गया, लेकिन कभी कब्जा नहीं किया जा सका।

इस संघर्ष को समझने के लिए, यह कल्पना करना आवश्यक है कि भयंकर साहस से भरे लोगों के समूह को आग में झोंक दिया गया है, और फिर उस प्रलय को निहारना है।

यह कोई लड़ाई नहीं थी, बल्कि भट्टी का भीतरी दृश्य था; वहाँ मुँह से आग निकल रही थी; वहाँ के चेहरे असाधारण थे। वहाँ मानव रूप असंभव सा लग रहा था, योद्धा वहाँ आग की लपटों से घिरे हुए थे, और उस लाल चमक में उन लपटों में घिरे योद्धाओं का आना-जाना भयावह था।

इस भीषण नरसंहार के क्रमिक और एक साथ घटित दृश्यों का वर्णन करने का हम हर संभव प्रयास अस्वीकार करते हैं। केवल महाकाव्य ही बारह हजार श्लोकों में इस युद्ध का वर्णन करने का हकदार है।

कोई इसे ब्राह्मणवाद का वह नरक घोषित कर सकता था, सत्रह खाईयों में सबसे दुर्जेय खाई, जिसे वेद तलवारों का जंगल कहते हैं।

उन्होंने आमने-सामने, पैर से पैर मिलाकर, पिस्तौल की गोलियों से, तलवार के वार से, मुक्कों से, दूर से, पास से, ऊपर से, नीचे से, हर तरफ से, घरों की छतों से, शराब की दुकान की खिड़कियों से, तहखाने की खिड़कियों से, जहाँ कुछ लोग रेंगकर पहुँच गए थे, लड़ाई लड़ी। वे एक के मुकाबले साठ थे।

कोरिंथ की आधी ध्वस्त इमारत का बाहरी हिस्सा भद्दा दिख रहा था। छर्रों से छलनी खिड़की का शीशा और फ्रेम दोनों गायब थे और अब वह पत्थरों से अव्यवस्थित रूप से भरी एक बेढंगी जगह मात्र रह गई थी।

बॉसुएट मारा गया; फ्यूली मारा गया; कौरफेयरैक मारा गया; कॉम्बेफेरे, एक घायल सैनिक को उठाते समय सीने में संगीन के तीन वार से क्षत-विक्षत हो गया, और मरने से पहले उसके पास स्वर्ग की ओर एक नज़र डालने का ही समय था।

मारियस, जो अभी भी लड़ रहा था, घावों से इतना छलनी हो चुका था, खासकर सिर पर, कि उसका चेहरा खून के नीचे छिप गया था, और ऐसा लग रहा था मानो उसका चेहरा लाल रुमाल से ढका हुआ हो।

केवल एनजोलरास ही नहीं बचा था। जब उसके पास कोई हथियार नहीं बचा, तो उसने अपने हाथ दाएं और बाएं फैलाए और किसी न किसी विद्रोही ने उसकी मुट्ठी में अपना हथियार घुसा दिया। उसके पास केवल चार तलवारों के ठूंठ बचे थे; मारिग्नन में फ्रांस्वा प्रथम से एक अधिक। होमर कहते हैं: “डायोमेडेस ने सुखी अरिस्बा में रहने वाले ट्यूथ्रानिस के पुत्र एक्सिलस का गला काट दिया; मेसिस्टेयस के पुत्र यूरियलस ने ड्रेसोस और ओफेल्टियोस, एसेपियस और उस पेडसस का वध कर दिया, जिसे जलपरी अबारबेरिया ने निर्दोष बुकोलियन से

जन्म दिया था; यूलिसिस ने परकोसियस के पिडाइट्स को पराजित किया; एंटिलोचस ने एबलरस को; पॉलीपेट्स ने एस्टियालस को; पॉलीडामस ने सिलीन के ओटोस को; और ट्यूसर ने एरेटॉन को। मेगांथियोस यूरिपिलस के भाले के प्रहार से मर गया। वीरों के राजा एगामेम्नन ने चट्टानी शहर में जन्मे एलाटोस को, जो तेज बहती सत्नोइस नदी से धुली हुई थी, धरती पर पटक दिया।” हमारी प्राचीन वीरगाथाओं में, एस्प्लंडियन विशालकाय मार्क्विस स्वान्टिबोर पर आग की लपटों से हमला करता है, और स्वान्टिबोर अपनी रक्षा में उन मीनारों से नायक पर पत्थर बरसाता है जिन्हें वह जड़ से उखाड़ देता है। हमारे प्राचीन भित्तिचित्रों में ब्रिटनी और बॉर्बन के दो ड्यूक, युद्ध के वेश में, हथियारों से लैस, अलंकृत और मुकुटों से सुसज्जित, घोड़ों पर सवार होकर एक-दूसरे की ओर बढ़ते हुए दिखाई देते हैं, उनके हाथों में युद्ध कुल्हाड़ी है, उनके चेहरे लोहे के हैं, उनके दस्ताने लोहे के हैं, उनके जूते लोहे के हैं, एक ने फर का वस्त्र पहना है, दूसरे ने नीले रंग का वस्त्र: ब्रिटनी के मुकुट के दो सींगों के बीच शेर है, बॉर्बन के हेलमेट पर एक विशालकाय लिली का प्रतीक चिन्ह है। लेकिन, उत्कृष्ट होने के लिए, यवोन की तरह ड्यूकल मोरियन पहनना, एस्प्लंडियन की तरह मुट्ठी में जलती हुई लौ रखना, या पॉलीडामास के पिता फाइल्स की तरह एफिरा से मनुष्यों के राजा यूफेट्स द्वारा उपहार स्वरूप दिया गया कवच लाना आवश्यक नहीं है; इसके लिए किसी दृढ़ विश्वास या निष्ठा के लिए अपना जीवन देना ही पर्याप्त है। यह भोला-भाला छोटा सिपाही, जो कल तक बौसे या लिमोजिन का किसान था, जो लक्ज़मबर्ग के बगीचे में बच्चों की नर्सों के आसपास अपनी कमर में चाकू लिए घूमता रहता है, यह पीला-सा युवा छात्र जो शरीर रचना विज्ञान के किसी लेख या किताब पर झुका हुआ है, एक गोरा युवक जो कैंची से अपनी दाढ़ी मुंडवाता है—इन दोनों को लीजिए, इनमें कर्तव्य की भावना भर दीजिए, इन्हें कैरेफोर बूचेराट या प्लांच-मिब्रे की संकरी गली में आमने-सामने रख दीजिए, और एक को अपने झंडे के लिए और दूसरे को अपने आदर्श के लिए लड़ने दीजिए, और दोनों को यह कल्पना करने दीजिए कि वे अपने देश के लिए लड़ रहे हैं; संघर्ष विशाल होगा; और मानवता के संघर्ष के उस भव्य मैदान में, जहाँ मानवता संघर्ष कर रही है, इस अनुभवहीन सैनिक और इस चिकित्सक की आपस में लड़ती छाया, लिसिया के राजा मेगारियन की छाया के बराबर होगी, जो बाघ की तरह शक्तिशाली था और देवताओं के समान विशाल शरीर वाले एजैक्स को अपनी बाहों में कुचल रहा था।

XXII. आमने-सामने

जब घेराबंदी के दोनों छोरों पर एनजोलरास और मारियस को छोड़कर कोई भी नेता जीवित नहीं बचा, तो वह केंद्र, जिसने इतने लंबे समय तक कौरफेयरैक, जोली, बॉसुएट, फ्यूली और कॉम्बफेरे को सहारा दिया था, ढह गया। तोपों ने यद्यपि कोई ठोस सेंध नहीं लगाई थी, फिर भी किले के मध्य में एक बड़ा गड्ढा बना दिया था; वहाँ, दीवार का शिखर गोलों के सामने गायब हो गया और ढह गया; और जो मलबा अंदर और बाहर गिरा था, वह जमा होकर घेराबंदी के दोनों किनारों पर ढलान के आकार के दो ढेर बना चुका था, एक अंदर की तरफ और दूसरा बाहर की तरफ। बाहरी ढलान हमले के लिए एक झुका हुआ तल प्रस्तुत करता था।

अंतिम आक्रमण का प्रयास किया गया, और यह आक्रमण सफल रहा। संगीनों से लैस सैनिकों का विशाल समूह दौड़ता हुआ आगे बढ़ा, और अदम्य शक्ति के साथ आक्रमणकारी टुकड़ी का सुव्यवस्थित मोर्चा किले की प्राचीरों पर धुएं के बीच से प्रकट हुआ। इस बार, यह निर्णायक था। केंद्र की रक्षा कर रहे विद्रोहियों का समूह अफरा-तफरी में पीछे हट गया।

फिर उनमें से कुछ में जीवन के प्रति उदास प्रेम एक बार फिर जागृत हो उठा। कई लोग, खुद को बंदूकों के इस जंगल के नीचे पाकर, मरना नहीं चाहते थे। यह वह क्षण था जब आत्मरक्षा की प्रवृत्ति चीखती है, जब मनुष्य के भीतर का जानवर फिर से प्रकट होता है। वे उस ऊंचे, छह मंजिला भवन से घिरे हुए थे जो उनके किले की पृष्ठभूमि बना हुआ था। यह भवन शायद उनकी मुक्ति का मार्ग सिद्ध हो। इमारत को ऊपर से नीचे तक मानो दीवारों से घेरकर बैरिकेड लगा दिए गए थे। मोर्चे की टुकड़ियों के किले के भीतर पहुंचने से पहले ही, एक दरवाजा खुलने और बंद होने का समय था, बिजली की एक चमक जितना समय इसके लिए पर्याप्त था, और उस घर का दरवाजा, जो अचानक थोड़ा सा खुला और तुरंत बंद हो गया, इन हताश सैनिकों के लिए जीवन का स्रोत था। इस घर के पीछे गलियां थीं, भागने का रास्ता था, जगह थी। वे अपनी बंदूकों के बटों से उस दरवाजे पर दस्तक देने लगे, लातों से मारते हुए, चिल्लाते हुए, पुकारते हुए, विनती करते हुए, हाथ मलते हुए। किसी ने दरवाजा नहीं खोला। तीसरी मंजिल पर स्थित छोटी सी खिड़की से, मृत व्यक्ति का सिर उन पर नीचे की ओर देख रहा था।

लेकिन एनजोलरास और मारियस, और उनके चारों ओर जमा हुए सात-आठ लोग, आगे बढ़े और उनकी रक्षा की। एनजोलरास ने सैनिकों से चिल्लाकर कहा था: "आगे मत बढ़ो!" और चूंकि एक अधिकारी ने आज्ञा का पालन नहीं किया, इसलिए एनजोलरास ने उस अधिकारी को मार डाला। वह अब किले के छोटे से भीतरी प्रांगण में था, उसकी पीठ कोरिनथे भवन से लगी हुई थी, एक हाथ में तलवार और दूसरे में राइफल थी, और उसने शराब की दुकान का दरवाजा खुला रखा था जिसे उसने हमलावरों से रोक रखा था। उसने हताश सैनिकों से चिल्लाकर कहा: "केवल एक ही दरवाजा खुला है; यही वाला।" और अपने शरीर से उनकी रक्षा करते हुए, और अकेले ही पूरी बटालियन का सामना करते हुए, उसने उन्हें अपने पीछे से अंदर जाने के लिए मजबूर किया। सभी वहाँ पहुँच गए। एनजोलरास ने अपनी राइफल से, जिसे वह अब छड़ी की तरह इस्तेमाल कर रहा था, अपने सिर के चारों ओर "ढका हुआ गुलाब" जैसा निशान बनाया, और अपने चारों ओर और सामने संगीनों को सीधा किया, और वह सबसे अंत में अंदर गया; फिर एक भयानक क्षण आया, जब सैनिकों ने अंदर जाने की कोशिश की और विद्रोहियों ने उन्हें रोकने का भरसक प्रयास किया। दरवाजा इतनी ज़ोर से बंद किया गया कि जब वह वापस अपने फ्रेम में गिरा, तो उसमें से उस सैनिक की पाँचों उंगलियाँ दिखाई दीं जो उससे चिपका हुआ था, कटी हुई और खंभे से चिपकी हुई थीं।

मारियस बाहर ही खड़ा रहा। गोली लगने से उसकी कॉलर बोन टूट गई थी, उसे लगा जैसे वह बेहोश होकर गिर रहा हो। उसी क्षण, आँखें बंद किए हुए, उसने एक ज़ोरदार हाथ के झटके को महसूस किया, और बेहोशी की हालत में उसके होश उड़ गए, जिससे उसे कोसेट की आखिरी याद के साथ ये विचार करने का भी समय नहीं मिला: —“मुझे बंदी बना लिया गया है। मुझे गोली मार दी जाएगी।”

शराब की दुकान में शरण लिए लोगों में मारियस को न देखकर एनजोलरास के मन में भी यही विचार आया। लेकिन अब वो ऐसा समय था जब किसी के पास अपनी मृत्यु के बारे में सोचने का समय नहीं था। एनजोलरास ने दरवाजे पर लोहे की छड़ ठोक दी, कुंडी लगा दी और चाबी व जंजीर से दोहरी ताला लगा दिया, जबकि बाहर से लोग उस पर ज़ोर-शोर से प्रहार कर रहे थे - सैनिक अपनी बंदूकों के बट से और सैनिक अपनी कुल्हाड़ियों से। हमलावर उस दरवाजे के चारों ओर जमा हो गए थे। शराब की दुकान की घेराबंदी अब शुरू हो रही थी।

हम देखेंगे कि सैनिक क्रोध से भरे हुए थे।

तोपखाने के सार्जेंट की मौत ने उन्हें क्रोधित कर दिया था, और फिर एक और भी दुखद घटना घटी। हमले से कुछ घंटे पहले उनके बीच यह अफवाह फैली थी कि विद्रोही अपने कैदियों के शवों को क्षत-विक्षत कर रहे हैं, और शराब की दुकान में एक सैनिक का सिर कटा हुआ शव पड़ा है। इस तरह की घातक अफवाहें गृहयुद्धों का आम हिस्सा होती हैं, और इसी तरह की एक झूठी खबर ने बाद में रुए ट्रांसनोनाइन की त्रासदी को जन्म दिया।

जब दरवाजे पर अवरोध लगा दिया गया, तो एनजोलरास ने दूसरों से कहा:

"आइए हम अपनी जान की कीमत चुका दें।"

फिर वह उस मेज के पास पहुँचा जिस पर माबेउफ और गैवरोश लेटे हुए थे। काले कपड़े के नीचे दो सीधी और कठोर आकृतियाँ दिखाई दे रही थीं, एक बड़ी, दूसरी छोटी, और कफ़न की ठंडी तहों के नीचे दोनों चेहरों की धुंधली रूपरेखा उभरी हुई थी। कफ़न के नीचे से एक हाथ बाहर निकला हुआ था और ज़मीन के पास लटका हुआ था। यह उस बूढ़े आदमी का हाथ था।

एनजोलरास नीचे झुका और उस पूजनीय हाथ को चूमा, ठीक वैसे ही जैसे उसने पिछली शाम को उसके माथे को चूमा था।

अपने जीवनकाल में उन्होंने केवल दो ही चुंबन दिए थे।

आइए कहानी को संक्षेप में कहें। बैरिकेड ने थेब्स के द्वार की तरह लड़ाई लड़ी; शराबखाने ने सारगोसा के घर की तरह संघर्ष किया। ये प्रतिरोध दृढ़ हैं। कोई दया नहीं। युद्धविराम का कोई संकेत नहीं। लोग मरने को तैयार हैं, बशर्ते उनका विरोधी उन्हें मार डाले।

जब सुचेत ने कहा: “आत्मसमर्पण करो,” तो पालाफॉक्स ने जवाब दिया: “तोपों से युद्ध के बाद, चाकुओं से युद्ध।” हुचेलूप की शराब की दुकान पर आक्रमण करके कब्जा करने में किसी चीज की कमी नहीं थी; न तो खिड़कियों और छत से हमलावरों पर पत्थर बरसाए गए और सैनिकों को बुरी तरह कुचलकर उन्हें और भी क्रोधित किया गया, न ही अटारी की खिड़कियों और तहखाने से गोलियां चलाई गईं, न ही हमले का प्रकोप, और न ही अंत में, जब दरवाजा टूटा, तो विनाश का उन्माद। हमलावर शराब की दुकान में घुस गए, उनके पैर दरवाजे के टूटे हुए और जमीन पर फेंके गए पैनलों में उलझ गए, और उन्हें वहां एक भी लड़ाकू नहीं मिला। कुल्हाड़ी से चीरकर अलग की गई घुमावदार सीढ़ी शराबखाने के बीचोंबीच पड़ी

थी, कुछ घायल लोग अपनी अंतिम साँसें ले रहे थे, जो लोग बच गए थे वे सभी पहली मंजिल पर थे, और वहाँ से, छत में बने छेद से, जो सीढ़ियों का प्रवेश द्वार था, एक भयानक आग भड़क उठी। यह उनके कारतूसों का आखिरी हिस्सा था। जब वे पूरी तरह थक गए, जब मौत के कगार पर खड़े इन बहादुर आदमियों के पास न तो बारूद बचा था और न ही गोलियाँ, तो हर एक ने अपने हाथों में एनजोलरास द्वारा आरक्षित की गई दो बोतलें पकड़ लीं, जिनके बारे में हम बात कर चुके हैं, और इन बेहद नाजुक लाठियों से चढ़ाई करने वाले दल को रोके रखा। ये एक्वाफोर्टिस की बोतलें थीं।

हम इन भयावह नरसंहार की घटनाओं का वर्णन उसी रूप में करते हैं जैसे वे घटित हुईं। घिरे हुए व्यक्ति ने, अफसोस! हर चीज़ को हथियार बना लिया। ग्रीक अग्नि ने आर्किमिडीज़ को शर्मिंदा नहीं किया, उबलती तारकोल ने बेयार्ड को शर्मिंदा नहीं किया। हर युद्ध आतंक का विषय है, और इसमें कोई विकल्प नहीं है। घेराबंदी करने वालों की बंदूकें, यद्यपि नीचे से ऊपर की ओर निर्देशित होने के कारण सीमित और बाधित थीं, फिर भी घातक थीं। छत में बने छेद का किनारा शीघ्र ही मारे गए लोगों के सिरों से घिर गया, जहाँ से खून की लंबी, लाल और धुआँदार धाराएँ बह रही थीं; शोर अवर्णनीय था; घना और जलता हुआ धुआँ लगभग इस युद्ध पर रात जैसा सन्नाटा छा गया था। जब भयावहता इस चरम पर पहुँच जाती है, तो उसे व्यक्त करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। इस संघर्ष में अब मनुष्य नहीं रह गए थे, जो अब नरक जैसा हो गया था। वे अब विशालकाय नहीं थे जो कोलोसी से लड़ रहे थे। यह होमर की बजाय मिल्टन और दांते जैसा लग रहा था। राक्षस आक्रमण कर रहे थे, प्रेत प्रतिरोध कर रहे थे।

यह वीरता का राक्षसी रूप था।

तेईसवें. ऑरेस्टेस उपवास और पाइलैड्स नशे

में

अंततः, एक-दूसरे की पीठ पर सवार होकर, सीढ़ियों के ढांचे का सहारा लेते हुए, दीवारों पर चढ़ते हुए, छत से चिपके हुए, गुप्त द्वार के ठीक किनारे पर वार करते हुए, आखिरी प्रतिरोध करने वाले को भी मार गिराते हुए, बीस हमलावर
- सैनिक, राष्ट्रीय रक्षक, नगर निगम के रक्षक - पूरी तरह से भ्रमित थे, जिनमें से अधिकांश उस कठिन चढ़ाई के दौरान चेहरे पर घावों से विकृत हो गए थे, खून से लथपथ, क्रोधित, बर्बर हो चुके थे, और पहली मंजिल के अपार्टमेंट में घुस गए। वहाँ उन्हें केवल एक ही व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा मिला, एनजोलरास। कारतूसों के बिना, तलवार के बिना, उसके हाथ में अब केवल उसकी बंदूक की नली थी जिसका बट उसने अंदर आने वालों के सिर पर तोड़ दिया था। उसने अपने और हमलावरों के बीच बिलियर्ड टेबल रख दी थी; वह कमरे के कोने में दुबक गया था, और वहाँ, घमंडी आँखों और ऊँचे सिर के साथ, हाथ में इस टूटे- फूटे हथियार को लिए हुए, वह इतना भयावह था कि उसके चारों ओर तुरंत एक खालीपन छा गया। एक चीख उठी:

“वही नेता है! उसी ने तोपची को मारा था। अच्छा हुआ कि वह वहाँ तैनात है। उसे वहीं रहने दो। चलो उसे वहीं गोली मार देते हैं।”

“मुझे गोली मार दो,” एनजोलरास ने कहा।

और उसने अपनी बंदूक की नली का टुकड़ा फेंक दिया, और अपनी बाहें मोड़कर अपना सीना आगे कर दिया।

एक शानदार मृत्यु का साहस हमेशा पुरुषों को प्रभावित करता है। जैसे ही एनजोलरास ने अपनी भुजाएँ मोड़ीं और अपनी मृत्यु को स्वीकार किया, कमरे में कलह का शोर थम गया, और यह अराजकता अचानक एक गंभीर समाधि जैसी शांति में बदल गई। निहत्थे और स्थिर एनजोलरास की भयावह भव्यता ने इस कोलाहल को दबा दिया, और यह युवक, अभिमानी, लहूलुहान और आकर्षक, जो अकेला ऐसा था जिसे कोई घाव नहीं लगा था, जो एक अजेय प्राणी की तरह उदासीन था, अपनी शांत दृष्टि के

अधिकार से इस दुष्ट भीड़ को सम्मानपूर्वक उसे मारने के लिए विवश करता प्रतीत हुआ। उस क्षण उसके गर्व से और भी अधिक सुंदर, वह चमक रहा था, और अभी- अभी बीते 24 घंटों के भयानक समय के बाद भी वह तरोताजा और गुलाबी दिख रहा था, मानो वह न तो थका हुआ हो और न ही घायल। संभवतः उसी के बारे में एक गवाह ने बाद में युद्ध परिषद के समक्ष कहा था: "एक विद्रोही था जिसका नाम मैंने अपोलो सुना था।" एनजोलरास पर निशाना साधने वाले एक नेशनल गार्ड्समैन ने अपनी बंदूक नीचे करते हुए कहा: "मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं एक फूल पर गोली चलाने वाला हूं।"
एनजोलरास के सामने वाले कोने में बारह आदमियों ने एक दस्ता बनाया और चुपचाप अपनी बंदूकें तैयार कर लीं।
तभी एक सार्जेंट चिल्लाया:
"निशाना साधो!"
एक अधिकारी ने हस्तक्षेप किया।
"इंतज़ार।"
और एनजोलरास को संबोधित करते हुए:
क्या आप अपनी आंखों पर पट्टी बंधवाना चाहते हैं?
"नहीं।"
"क्या तोपखाने के सार्जेंट की हत्या तुमने ही की थी?"
"हाँ।"
ग्रैन्टेयर कुछ क्षण पहले ही जाग गया था।
यह याद रखना होगा कि ग्रैन्टेयर पिछली शाम से ही शराब की दुकान के ऊपरी कमरे में एक कुर्सी पर बैठा और मेज पर टिका हुआ सो रहा था।
उसे "बेहोश" वाली पुरानी कहावत का पूरा अर्थ समझ आ गया था। एब्सिन्थे- पोर्टर और शराब के भयानक मिश्रण ने उसे सुस्ती में डुबो दिया था। उसकी मेज छोटी थी और बैरिकेड के लिए उपयुक्त नहीं थी, इसलिए उसे उसी पर बैठना पड़ा था। वह अभी भी उसी मुद्रा में था, सीना मेज पर झुकाए, सिर बांहों पर टिकाए, गिलासों, बीयर के जगों और बोतलों से घिरा हुआ। उसकी नींद किसी सुस्त भालू

या तृप्त जोंक जैसी गहरी थी। उस पर किसी चीज का कोई असर नहीं हुआ था, न तो गोलाबारी का, न तोप के गोलों का, न ही छर्रों का जो खिड़की से होते हुए उस कमरे में आ गए थे जहां वह था। न ही हमले के भयानक शोर का। वह केवल कभी-कभार खर्राटे लेकर तोपों की आवाज का जवाब दे रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी ऐसी गोली का इंतजार कर रहा हो जो उसे जागने की तकलीफ से मुक्ति दिला दे। उसके चारों ओर कई लाशें बिखरी पड़ी थीं; और पहली नजर में, उसे उन गहरी नींद में सो रहे मृतकों से अलग करना मुश्किल था।

शोर किसी नशे में धुत व्यक्ति को नहीं जगाता; खामोशी उसे जागृत करती है। उसके चारों ओर सब कुछ ढहने से ग्रांटेयर की उदासी और बढ़ गई; सब कुछ का बिखरना उसके लिए लोरी जैसा था। एनजोलरास की उपस्थिति में कोलाहल का अचानक रुक जाना उसकी गहरी नींद के लिए एक झटका था। यह ऐसा था जैसे पूरी रफ्तार से चल रही कोई गाड़ी अचानक रुक जाए। उसमें सो रहे लोग जाग उठे। ग्रांटेयर चौंककर उठा, अपनी बाहें फैलाईं, आंखें मलीं, घूरा, जम्हाई ली और समझ गया।

नशे का दौर जब खत्म होता है, तो ऐसा लगता है मानो कोई पर्दा अचानक हट गया हो। एक ही नज़र में सब कुछ साफ़-साफ़ दिख जाता है, जो पर्दे ने छिपा रखा था। सब कुछ अचानक याददाश्त में आ जाता है; और वह शराबी जिसे पिछले चौबीस घंटों में कुछ भी पता नहीं था, आँखें खोलते ही सब कुछ जान जाता है। विचार अचानक स्पष्टता से उसके दिमाग में लौट आते हैं; नशे का धुंधलापन, एक तरह की धुंध जो दिमाग को ढक रही थी, छंट जाती है और वास्तविकता की स्पष्ट और सटीक रूपरेखा सामने आ जाती है।

एक कोने में धकेल दिए जाने और बिलियर्ड टेबल के पीछे छिप जाने के कारण, एनजोलरास पर नजर गड़ाए सैनिकों ने ग्रांटेयर पर ध्यान तक नहीं दिया था, और सार्जेंट अपना आदेश दोहराने की तैयारी कर रहा था: "निशाना लगाओ!" तभी अचानक, उन्होंने अपने बगल में एक तेज आवाज सुनी:

“गणतंत्र जिंदाबाद! मैं भी उनमें से एक हूँ।”

ग्रैन्टेयर उठ खड़ा हुआ था। उस पूरे संघर्ष की विशाल चमक, जिसे उसने नहीं देखा था और जिसमें उसकी कोई भूमिका नहीं थी, उस रूपांतरित मादक व्यक्ति की चमकदार दृष्टि में प्रकट हुई।

उन्होंने दोहराया: "गणतंत्र अमर रहे!" और दृढ़ कदमों से कमरे को पार करते हुए एनजोलरास के बगल में तोपों के सामने खड़े हो गए।

“एक ही वार में हम दोनों को खत्म कर दो,” उसने कहा।

और धीरे से एनजोलरास की ओर मुड़कर उसने उससे कहा:

क्या आप इसकी अनुमति देते हैं?

एनजोलरास ने मुस्कुराते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

खबर की गूंज सुनाई देने पर भी यह मुस्कान गायब नहीं हुई।

आठ गोलियों से छलनी एनजोलरास दीवार से टिका रहा, मानो गोलियों ने उसे वहीं कील ठोक दी हो। बस, उसका सिर झुका हुआ था।

ग्रैन्टेयर उसके पैरों पर ऐसे गिर पड़ा मानो उस पर बिजली गिर पड़ी हो।

कुछ ही क्षणों में, सैनिकों ने घर की छत पर शरण लिए हुए अंतिम बचे विद्रोहियों को खदेड़ दिया। उन्होंने लकड़ी की जाली से अटारी में गोलियाँ चलाईं। वे छत के नीचे ही लड़ रहे थे। उन्होंने कुछ शवों को, जिनमें से कुछ अभी भी जीवित थे, खिड़कियों से बाहर फेंक दिया। दो पैदल सैनिकों ने, जिन्होंने टूटी हुई बस को उठाने की कोशिश की, अटारी से चलाई गई दो गोलियों से मारे गए। एक ब्लाउज पहने हुए व्यक्ति को पेट में संगीन का घाव लगा और वह नीचे गिर पड़ा, और जमीन पर ही उसकी मृत्यु हो गई। एक सैनिक और एक विद्रोही छत की ढलान वाली स्लेटों पर फिसल गए, और एक-दूसरे को न छोड़ते हुए, वे एक भयंकर आलिंगन में जकड़ कर गिर पड़े। तहखाने में भी ऐसा ही संघर्ष जारी रहा। चीखें, गोलियाँ, ज़ोरदार भगदड़। फिर सन्नाटा छा गया। बैरिकेड पर कब्ज़ा कर लिया गया।

सैनिकों ने आसपास के घरों की तलाशी शुरू कर दी और भगोड़ों का पीछा करना शुरू कर दिया।

XXIV. कैदी

दरअसल, मारियस एक कैदी था।

जिस हाथ ने उसे पीछे से पकड़ा था और जिसकी पकड़ उसने गिरने और बेहोश होने के क्षण में महसूस की थी, वह जीन वालजेन का हाथ था।

जीन वालजेन ने युद्ध में स्वयं को खतरे में डालने के अलावा कोई और भूमिका नहीं निभाई थी। अगर वह न होते, तो पीड़ा के उस चरम दौर में किसी ने भी घायलों के बारे में नहीं सोचा होता। उनकी बदौलत, जो उस भीषण नरसंहार में ईश्वर की कृपा से हर जगह मौजूद थे, गिरे हुए लोगों को उठाया गया, शराबखाने ले जाया गया और उनकी देखभाल की गई। बीच-बीच में वह बैरिकेड पर प्रकट होते रहे। लेकिन उनके हाथों से न तो कोई प्रहार हुआ, न हमला, और न ही आत्मरक्षा। उन्होंने शांति बनाए रखी और सहायता प्रदान की। इसके अलावा, उन्हें केवल कुछ मामूली खरोंचें आई थीं। गोलियों ने उन्हें भेदने की कोशिश नहीं की। यदि इस समाधि स्थल पर आने का उनका इरादा आत्महत्या करने का था, तो वे इसमें सफल नहीं हुए। लेकिन हमें संदेह है कि क्या उन्होंने आत्महत्या के बारे में सोचा था, जो एक अधार्मिक कार्य है।

युद्ध के घने कोहरे में, जीन वालजेन को मारियस दिखाई नहीं दिया; सच्चाई तो यह है कि उसने अपनी निगाहें मारियस से हटाई ही नहीं। जब एक गोली से मारियस गिर पड़ा, तो जीन वालजेन बाघ जैसी फुर्ती से आगे बढ़ा, उस पर अपने शिकार की तरह झपटा और उसे उठाकर ले गया।

उस समय हमले का बवंडर इतनी तीव्रता से एनजोलरास और शराब की दुकान के दरवाजे पर केंद्रित था कि किसी ने भी जीन वालजेन को बेहोश मारियस को अपनी बाहों में उठाए हुए, बैरिकेड के कच्चे मैदान को पार करते हुए और कोरिनथे इमारत के कोने के पीछे गायब होते हुए नहीं देखा।

पाठक को सड़क पर बने उस कोने की याद होगी, जो एक तरह से आवरण का काम करता था; यह गोलियों, छर्रों और सबकी निगाहों से बचाव करता था और कुछ वर्ग फुट की जगह प्रदान करता था। कभी-कभी भीषण आग के बीच भी कोई ऐसी जगह मिल जाती है जो जलती नहीं, और उग्र समुद्र के बीच, किसी चट्टान के पार या उथले पानी की

संकरी गली के अंत में, एक शांत कोना मिल जाता है। बैरिकेड के भीतरी समलंब चतुर्भुज के इसी कोने में एपोनिन ने अपनी अंतिम सांस ली थी।

वहाँ जीन वाल्जेन रुक गया, मारियस को जमीन पर गिरने दिया, अपनी पीठ दीवार से टिका ली और चारों ओर नजरें घुमाईं।

स्थिति चिंताजनक थी।

एक पल के लिए, शायद दो-तीन पलों के लिए, दीवार का यह छोटा सा हिस्सा उसके लिए आश्रय बन गया, लेकिन वह इस नरसंहार से कैसे बच सकता था? उसे आठ साल पहले रू पोलोनसेउ में झेली पीड़ा और जिस तरह से उसने वहां से निकलने का रास्ता निकाला था, वह याद आ गया; तब भी यह मुश्किल था, आज तो नामुमकिन था। उसके सामने वह छह मंजिला, बहरा और निर्दयी मकान था, जिसमें खिड़की से झांकता हुआ एक मृत व्यक्ति ही दिखाई दे रहा था; उसके दाहिनी ओर वह नीची सी बैरिकेड थी, जिसने रू डे ला पेटिट ट्रुआंडेरी को बंद कर रखा था; इस बाधा को पार करना आसान लग रहा था, लेकिन बैरिकेड के ऊपर संगीनों की एक कतार दिखाई दे रही थी। मोर्चे के सैनिक उस बैरिकेड के पीछे पहरा दे रहे थे। यह स्पष्ट था कि बैरिकेड को पार करना प्लाटून की गोलीबारी को न्योता देना था, और पत्थरों की उस दीवार के ऊपर सिर उठाने का जोखिम उठाने वाला कोई भी व्यक्ति साठ गोलियों का निशाना बन जाएगा। उसके बाईं ओर युद्ध का मैदान था। उस दीवार के कोने में मौत घात लगाए बैठी थी।

क्या किया जाना था?

इस विकट परिस्थिति से केवल एक पक्षी ही खुद को बचा सकता था।

और तुरंत फैसला करना, कोई उपाय निकालना, कोई निर्णय लेना आवश्यक था। कुछ ही कदमों की दूरी पर लड़ाई चल रही थी; सौभाग्य से, सभी लड़ाइयाँ एक ही जगह, शराब की दुकान के दरवाजे के आसपास हो रही थीं; लेकिन अगर किसी एक सैनिक को भी, किसी एक सैनिक को भी, घर के कोने से मुड़ने या उस पर बगल से हमला करने का विचार आ जाता, तो सब कुछ खत्म हो जाता।

जीन वाल्जेन ने अपने सामने वाले घर को देखा, उसने अपने एक तरफ लगे बैरिकेड को देखा, फिर उसने जमीन की ओर देखा, अंतिम क्षणिक पीड़ा के साथ, स्तब्ध होकर, और मानो वह अपनी आंखों से वहां छेद करना चाहता हो।

लगातार घूरते रहने से, उस पीड़ा में भी कुछ धुंधला सा आकर्षक उसके पैरों के पास आकार लेने लगा, मानो किसी दृष्टि की शक्ति ने ही उस वांछित वस्तु को प्रकट कर दिया हो। कुछ कदम दूर, उसने बाहरी हिस्से में बड़ी बेरहमी से पहरा दे रही छोटी सी बाड़ के नीचे, पत्थरों के अव्यवस्थित ढेर के नीचे, जो उसे आंशिक रूप से छिपा रहा था, एक लोहे की जाली देखी, जो ज़मीन के बराबर समतल रखी हुई थी। मोटे, आड़ी छड़ों से बनी यह जाली लगभग दो फुट चौकोर थी। इसे सहारा देने वाला पत्थरों का ढांचा उखड़ गया था, और यह मानो ढीली पड़ गई थी।

सलाखों के पार से एक अंधेरा छेद दिखाई दे रहा था, जो किसी चिमनी के धुएं के निकास या किसी टंकी के पाइप जैसा लग रहा था। जीन वालजेन तेजी से आगे बढ़ा। भागने की उसकी पुरानी कला उसके दिमाग में अचानक कौंध गई। पत्थरों को हटाना, जाली को ऊपर उठाना, मारियस को, जो एक मृत शरीर की तरह बेजान पड़ा था, अपने कंधों पर उठाना, इस बोझ को अपनी कमर पर लादे हुए, कोहनियों और घुटनों के सहारे उस कुएं में उतरना, जो सौभाग्य से ज्यादा गहरा नहीं था, और उस भारी जाल को, जिस पर ढीले हुए पत्थर फिर से लुढ़क रहे थे, अपने पीछे उसकी जगह पर गिरने देना, और सतह से तीन मीटर नीचे एक समतल सतह पर पैर जमाना—यह सब उसने सपने में होने वाली क्रिया की तरह, एक विशालकाय की ताकत और बाज की फुर्ती से किया; इसमें केवल कुछ ही मिनट लगे।

जीन वाल्जेन ने खुद को मारियस के साथ एक तरह के लंबे, भूमिगत गलियारे में पाया, जो अभी भी बेहोश था।

वहाँ गहन शांति, पूर्ण सन्नाटा और रात का सन्नाटा छाया हुआ था।

दीवार से गिरकर मठ में आने पर उसे जो अनुभूति हुई थी, वह फिर से उसके मन में लौट आई। लेकिन आज वह कोसेट को नहीं, मारियस को लिए हुए था। शराब की दुकान में मची भीषण हलचल, मानो ऊपर से आती एक अस्पष्ट फुसफुसाहट जैसी, उसे मुश्किल से सुनाई दे रही थी।

भाग **II.** लेविथान की आंत

I. समुद्र द्वारा निर्धन हुई भूमि

पेरिस हर साल पच्चीस लाख लोगों को पानी में बहा देता है। और यह बिना किसी उपमा के है। कैसे और किस तरीके से? दिन-रात। किस उद्देश्य से? बिना किसी उद्देश्य के। किस इरादे से? बिना किसी इरादे के। क्यों? बिना किसी कारण के। किस अंग के माध्यम से? अपनी आंत के माध्यम से। उसकी आंत क्या है? सीवर।

विशेष विज्ञान के मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा निर्धारित सबसे मध्यम अनुमानित आंकड़ा पच्चीस मिलियन है।

विज्ञान ने लंबे समय तक खोजबीन करने के बाद अब यह जान लिया है कि सबसे उपजाऊ और सबसे कारगर खाद मानव मल है। हमें यह स्वीकार करने में शर्म आती है कि चीनी लोग इसे हमसे पहले जानते थे। एकबर्ग के अनुसार, कोई भी चीनी किसान अपने बांस के डंडे के दोनों सिरों पर दो बाल्टी भरकर मल लाए बिना शहर नहीं जाता। मानव मल के कारण चीन की धरती आज भी अब्राहम के समय की तरह युवा है। चीनी गेहूं अपने बीज से सौ गुना अधिक उपज देता है। किसी भी राजधानी के मल-मूत्र की उर्वरता की तुलना किसी अन्य शहर के मल-मूत्र से नहीं की जा सकती। एक बड़ा शहर सबसे बड़ा मल-मूत्र उत्पादक होता है। शहर को मैदानों को खाद देने के प्रयोग में निश्चित सफलता मिलेगी। यदि हमारा सोना खाद है, तो दूसरी ओर, हमारी खाद भी सोना है।

इस सुनहरे गोबर का क्या किया जाता है? इसे खाई में बहा दिया जाता है।

दक्षिणी ध्रुव पर पेट्रेल और पेंगुइन के मल को इकट्ठा करने के लिए भारी खर्च पर जहाजों के बेड़े भेजे जाते हैं, और हमारे पास मौजूद अपार संसाधनों को हम समुद्र में बहा देते हैं। दुनिया भर में मानव और पशुओं द्वारा बर्बाद किया जाने वाला सारा मल-मूत्र, अगर पानी में फेंकने के बजाय धरती पर वापस डाल दिया जाए, तो पूरी दुनिया के पोषण के लिए पर्याप्त होगा।

द्वार के खंभों पर जमा गंदगी के ढेर, रात में गलियों में सरपट दौड़ती कीचड़ से भरी गाड़ियाँ, सड़क विभाग के भयानक पीपे, ज़मीन के नीचे रिसते कीचड़ के बदबूदार धब्बे, जिन्हें फुटपाथ आपसे छुपाए रखते हैं—क्या आप जानते हैं कि वे क्या हैं? वे फूलों से लदे मैदान हैं, हरी घास हैं, जंगली थाइम हैं,

थाइम और सेज हैं, वे शिकार हैं, वे मवेशी हैं, वे शाम को विशाल बैलों की संतुष्टि भरी गड़गड़ाहट हैं, वे सुगंधित घास हैं, वे सुनहरा गेहूँ हैं, वे आपकी मेज पर रखी रोटी हैं, वे आपकी नसों में बहता गर्म खून हैं, वे स्वास्थ्य हैं, वे आनंद हैं, वे जीवन हैं। यही उस रहस्यमय सृष्टि की इच्छा है जो पृथ्वी पर रूपांतरण और स्वर्ग में रूपांतरण है।

इसे फिर से उस महान भट्टी में डालो; तुम्हारी समृद्धि उसी से प्रवाहित होगी। मैदानों का पोषण मनुष्यों का पोषण करता है।

आप इस धन को खो सकते हैं, और साथ ही मुझे हास्यास्पद भी समझ सकते हैं। यही आपकी अज्ञानता की पराकाष्ठा होगी।

सांख्यिकीविदों ने गणना की है कि अकेले फ्रांस ही अपनी नदियों के मुहानों से अटलांटिक महासागर में प्रति वर्ष आधा अरब फ्रैंक जमा करता है। ध्यान दें: पाँच सौ मिलियन से हम अपने बजट का एक चौथाई खर्च वहन कर सकते हैं। मनुष्य की चतुराई ऐसी है कि वह इन पाँच सौ मिलियन को नाले में बहाना पसंद करता है। यह जनता का मूल तत्व है जो बहकर जा रहा है, यहाँ बूंद-बूंद, वहाँ लहर-दर-लहर, हमारे सीवरों का नदियों में बहने वाला घना पानी और हमारी नदियों का विशाल संग्रह महासागर में समा रहा है। हमारे सीवरों की हर छोटी- मोटी गड़बड़ी से हमें एक हजार फ्रैंक का नुकसान होता है। इससे दो परिणाम निकलते हैं: भूमि बंजर हो जाती है और जल दूषित हो जाता है। खेतों से भुखमरी और नदियों से बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं।

उदाहरण के लिए, यह सर्वविदित है कि इस समय टेम्स नदी लंदन को प्रदूषित कर रही है।

पेरिस के संदर्भ में, हाल ही में यह अपरिहार्य हो गया है कि सीवरों के मुहाने को अंतिम पुल के नीचे, नदी के बहाव की दिशा में स्थानांतरित किया जाए।

वाल्व और नालीदार पाइपों से सुसज्जित एक दोहरी नली वाली प्रणाली, जो पानी को सोखकर वापस भेजती है, एक सरल जल निकासी प्रणाली है, जो मनुष्य के फेफड़ों जितनी ही सरल है, और जो इंग्लैंड के कई समुदायों में पहले से ही पूरी तरह से काम कर रही है। यह प्रणाली खेतों के शुद्ध पानी को हमारे शहरों तक पहुंचाने और शहरों के उपजाऊ पानी को वापस खेतों में भेजने के लिए

पर्याप्त होगी। और यह सरल आदान-प्रदान, जो दुनिया में सबसे सरल है, उन पांच सौ मिलियन लोगों को हमारे बीच बचाए रखेगा जो अभी बर्बाद हो रहे हैं। लोग दूसरी चीजों के बारे में सोच रहे हैं।

वर्तमान में जो प्रक्रिया अपनाई जा रही है, वह भलाई के इरादे से बुराई करती है। इरादा तो अच्छा है, लेकिन परिणाम निराशाजनक है। शहर को शुद्ध करने के भ्रम में, जनसंख्या तहखानों में उगाए गए पौधों की तरह मुरझा जाती है। सीवर एक गलती है। जब हर जगह जल निकासी व्यवस्था, अपने दोहरे कार्य - यानी जो लेता है उसे लौटाने की क्षमता के साथ - सीवर की जगह ले लेगी, जो केवल एक निर्धन धुलाई है, तब आधुनिक सामाजिक अर्थव्यवस्था के आंकड़ों के साथ मिलकर, पृथ्वी का उत्पादन दस गुना बढ़ जाएगा और गरीबी की समस्या काफी हद तक कम हो जाएगी। परजीवीवाद के दमन को भी इसमें जोड़ दें, तो समस्या का समाधान हो जाएगा।

इसी बीच, सार्वजनिक धन नदी में बह जाता है, और रिसाव होने लगता है। रिसाव ही सही शब्द है। यूरोप इसी तरह से अपव्यय के कारण बर्बाद हो रहा है।

फ्रांस की बात करें तो, हमने अभी उसके आंकड़े बताए हैं। पेरिस में फ्रांस की कुल जनसंख्या का पच्चीसवां हिस्सा रहता है, और पेरिस का गोबर सबसे समृद्ध है। इसलिए, जब हम प्रतिवर्ष फ्रांस द्वारा अस्वीकृत किए जाने वाले आधे अरब गोबर में पेरिस के पच्चीस मिलियन के नुकसान का अनुमान लगाते हैं, तो हम सच्चाई को कम करके आंक रहे हैं। ये पच्चीस मिलियन, अगर सहायता और मनोरंजन में लगाए जाते, तो पेरिस की शान को दोगुना कर देते। शहर इन्हें सीवर में बहा देता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि पेरिस की अत्यधिक फिजूलखर्ची, उसके अद्भुत उत्सव, उसकी बोजॉन जैसी मूर्खता, उसका अय्याशी भरा जीवन, उसके भरे हाथों से बहता सोने का झंझट, उसकी शान-शौकत, उसका विलासिता, उसकी भव्यता, ये सब उसकी सीवर प्रणाली है।

खराब राजनीतिक अर्थव्यवस्था की अज्ञानता के कारण हम इसी तरह से सबका कल्याण खोते जा रहे हैं और उसे धारा के साथ बहकर खाई में लुप्त होने दे रहे हैं। जनता के हित के लिए सेंट क्लाउड में जाल बिछाए जाने चाहिए।

आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो इस मामले को इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है: पेरिस एक फिजूलखर्ची वाला शहर है। पेरिस, वह आदर्श शहर,

सुव्यवस्थित राजधानियों का वह संरक्षक, जिसकी नकल हर राष्ट्र पाना चाहता है, आदर्शों का वह महानगर, पहल, प्रेरणा और प्रयास का वह महान देश, बुद्धि का वह केंद्र और निवास स्थान, वह राष्ट्र-नगर, भविष्य का वह केंद्र, बेबीलोन और कोरिंथ का वह अद्भुत संयोजन, जिसे देखकर फोकिया का कोई किसान भी कंधे उचका देगा, जैसा कि हमने अभी बताया है।

पेरिस की नकल करोगे तो खुद को बर्बाद कर लोगे।

इसके अलावा, और विशेष रूप से इस प्राचीन और निरर्थक बर्बादी में, पेरिस स्वयं एक अनुकरणकर्ता है।

मूर्खता के ये चौंकाने वाले प्रदर्शन कोई नई बात नहीं हैं; ये कोई बचकाना नादानी नहीं है। प्राचीन लोग भी आधुनिक लोगों की तरह ही मूर्ख थे। लिबिग कहते हैं, "रोम के सीवरों ने रोमन किसान की सारी समृद्धि निगल ली है।" जब रोम का कैम्पाग्ना रोमन सीवर से बर्बाद हो गया, तो रोम ने इटली को निचोड़ लिया, और जब उसने इटली को अपने सीवर में डाल दिया, तो उसने सिसिली, फिर सार्डिनिया, फिर अफ्रीका को भी उसमें समा लिया। रोम के सीवर ने दुनिया को निगल लिया है। इस गंदे नाले ने शहर और ब्रह्मांड को अपने अंदर समा लेने की पेशकश की। उर्बी एट ऑर्बी। शाश्वत शहर, अथाह सीवर।

इन मामलों के साथ-साथ अन्य मामलों में भी रोम एक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

पेरिस बुद्धिमान शहरों की सभी विशिष्ट मूर्खताओं के साथ इस उदाहरण का अनुसरण करता है।

जिस विषय पर हमने अभी-अभी अपने विचार स्पष्ट किए हैं, उस कार्य की आवश्यकताओं के लिए, पेरिस के नीचे एक और पेरिस है; सीवरों का पेरिस; जिसमें उसकी सड़कें, उसके चौराहे, उसके चौक, उसकी संकरी गलियाँ, उसकी धमनियाँ और उसका संचलन है, जो कीचड़ से भरा है और उसमें मानवीय स्वरूप का अभाव है।

किसी भी चीज़ की चापलूसी नहीं करनी चाहिए, यहाँ तक कि एक महान राष्ट्र की भी नहीं; जहाँ सब कुछ है, वहाँ उदात्तता के साथ-साथ अपमान भी है; और यदि पेरिस में प्रकाश का शहर एथेंस, शक्ति का शहर टायर, सद्गुण का शहर स्पार्टा, चमत्कारों का शहर नीनवे समाहित है, तो उसमें कीचड़ का शहर लुटेतिया भी समाहित है।

हालांकि, इसकी शक्ति की छाप भी मौजूद है, और पेरिस का टाइटैनिक जैसा डूबना स्मारकों के बीच उस विचित्र आदर्श को साकार करता है जिसे मैकियावेली, बेकन और मिराब्यू जैसे कुछ लोगों ने मानवता में साकार किया था, यानी भव्य नीचता।

अगर पेरिस की सतह के भीतर तक नज़र जा सके, तो उसकी भूमिगत परत एक विशाल सुरंग जैसी प्रतीत होगी। एक स्पंज में भी उतने विभाजन और नलिकाएँ नहीं होतीं, जितने उस विशाल और प्राचीन शहर के चारों ओर फैले छह मील के घेरे में फैली मिट्टी के टीले में हैं। इसके तहखानों की बात ही छोड़ दें, जो एक अलग तहखाना हैं, गैस पाइपों के जटिल जाल की बात ही छोड़ दें, और ताज़े पानी के वितरण के विशाल पाइप तंत्र को भी न गिनें, जो स्तंभनुमा फव्वारों में जाकर समाप्त होता है, तो अकेले सीवर ही दोनों किनारों के नीचे एक विशाल, छायादार नेटवर्क बनाते हैं; एक भूलभुलैया जिसकी ढलान ही उसका मार्गदर्शक धागा है।

नम धुंध में एक चूहा दिखाई देता है, जो ऐसा लगता है मानो पेरिस की ही देन हो।

II. सीवर का प्राचीन इतिहास

पाठक कल्पना कीजिए कि पेरिस को एक आवरण की तरह हटा दिया गया है, और ऊपर से देखने पर भूमिगत सीवरों का जाल नदी के किनारों पर एक विशाल शाखा की आकृति बनाता है जिसे नदी पर रोपा गया हो। दाहिने किनारे पर, बेल्ट सीवर इस शाखा का तना बनाएगा, द्वितीयक नलिकाएँ शाखाएँ बनाएँगी, और बिना निकास वाली नलिकाएँ छोटी टहनियाँ होंगी।

यह आंकड़ा मात्र एक संक्षिप्त और लगभग डेढ़ गुना सटीक है, क्योंकि समकोण, जो कि इस प्रकार की भूमिगत शाखाओं का सामान्य कोण है, वनस्पति में बहुत दुर्लभ है।

इस विचित्र ज्यामितीय योजना की अधिक सटीक छवि इस कल्पना से बनाई जा सकती है कि कोई व्यक्ति किसी विलक्षण प्राच्य वर्णमाला को देख रहा है, जो घने जंगल की तरह जटिल है, और छाया की पृष्ठभूमि में है, तथा विकृत अक्षर एक दूसरे से स्पष्ट अव्यवस्था में और बेतरतीब ढंग से जुड़े हुए हैं, कभी उनके कोणों से, कभी उनके सिरों से।

मध्य युग में, निचले साम्राज्य में और प्राचीन पूर्वी देशों में, गटरों और नालियों का बहुत महत्व था। आम लोग सड़न के इन गड्ढों, मृत्यु के इन भयानक पालनों को लगभग धार्मिक भय से देखते थे। बनारस की गटर की खाई बेबीलोन की शेरों की खाई से कम डरावनी नहीं थी। रब्बी ग्रंथों के अनुसार, तेगलथ-फलासर ने नीनवे की गटर की कसम खाई थी। मुंस्टर की नाली से ही जॉन ऑफ लेडेन ने अपना नकली चाँद प्रकट किया था, और केक्शेब के गंदे नाले से ही पूर्वी मेनालचमे, खोरासान के नकाबपोश पैगंबर मोकन्ना ने अपना नकली सूरज प्रकट किया था।

मानव इतिहास सीवरों के इतिहास में झलकता है। जर्मोनियाई (जर्मन सभ्यता) ने रोम का वर्णन किया। पेरिस का सीवर एक प्राचीन और दुर्जेय संरचना रहा है। यह एक समाधि स्थल रहा है, इसने शरणस्थल का काम किया है। अपराध, बुद्धिमत्ता, सामाजिक विरोध, अंतरात्मा की स्वतंत्रता, विचार, चोरी, वह सब कुछ जिसे मानवीय कानून सताते हैं या सता चुके हैं, उस गड्ढे में छिपा है;

चौदहवीं शताब्दी में मैलोटिन, पंद्रहवीं शताब्दी में टायर-लेन, सोलहवीं शताब्दी में ह्यूगनोट्स, सत्रहवीं शताब्दी में मोरिन की सजी हुई किताबें, अठारहवीं शताब्दी में शॉफ़र्स (पुलिसकर्मी)। सौ साल पहले, रात में चाकू का वार वहीं से निकलता था, खतरे में पड़ा जेबकतरा वहीं छिप जाता था; जंगल की अपनी गुफा थी, पेरिस का अपना सीवर। वह फ्रांसीसी आवारागर्दी, सीवर को कोर्ट डेस मिराकल्स के सहायक अंग के रूप में स्वीकार करती थी, और शाम को, वह उग्र और चालाक होकर, मौबुई आउटलेट के माध्यम से, एक शयनकक्ष में लौट आती थी।

यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि जिन लोगों का दैनिक कार्य स्थल संकरी गलियों वाला वीडे-गौसेट या रू कूप-गॉर्ज था, वे रात में शेमिन-वर्ट की नाली या हुरेपोइक्स के जल संग्रहण बेसिन में आराम करते थे। इसीलिए स्मृति चिन्हों की भरमार थी। इन लंबे, एकांत गलियारों में तरह-तरह के प्रेत मंडराते हैं; हर जगह सड़न और दुर्गंध फैली है; कहीं-कहीं सांस लेने के लिए जगह है, जहां भीतर विलोन बाहर रैबेले से बातें करता है।

प्राचीन पेरिस का सीवर सभी थकावटों और सभी प्रयासों का मिलन स्थल है। राजनीतिक अर्थव्यवस्था उसमें अवशेषों को देखती है, सामाजिक दर्शन वहां एक अवशेष को निहारता है।

सीवर शहर की अंतरात्मा है। वहाँ सब कुछ आकर मिलता है और एक दूसरे का सामना करता है। उस भयावह जगह में परछाइयाँ हैं, लेकिन अब कोई रहस्य नहीं रह गया है। हर चीज़ अपना असली रूप, या कम से कम, अपना निश्चित रूप धारण कर लेती है। गंदगी के इस ढेर की यही खूबी है कि यह झूठा नहीं है। वहाँ भोलेपन ने शरण ली है। बेसिल का मुखौटा भी वहीं मिलता है, लेकिन उसके गत्ते, उसकी डोरियाँ, उसका अंदर और बाहर का हिस्सा, सब कुछ दिखाई देता है, और उस पर लगी असली मिट्टी उसे और भी आकर्षक बना देती है। स्कैपिन की नकली नाक उसका पड़ोसी है। सभ्यता की सारी गंदगी, एक बार अपना उपयोग खो देने के बाद, सत्य की इस खाई में गिर जाती है, जहाँ समाज का विशाल पतन समाप्त होता है। वे वहाँ समाहित हो जाते हैं, लेकिन वहाँ वे स्वयं को प्रकट करते हैं। यह मिश्रण एक स्वीकारोक्ति है। वहाँ, कोई बनावटी दिखावा नहीं, कोई पर्दा डालना संभव नहीं, गंदगी अपना आवरण उतार देती है, पूर्ण नग्नता सभी भ्रमों और मृगतृष्णाओं को परास्त कर देती है, वहाँ केवल वही है जो वास्तव में

विद्यमान है, जो अंत की ओर अग्रसर भयावह रूप प्रस्तुत करता है। वहाँ, बोतल का तल नशे का संकेत देता है, टोकरी का हैंडल घरेलू जीवन की कहानी कहता है; वहाँ सेब का वह भाग, जिस पर साहित्यिक मत लिखे गए थे, फिर से सेब का भाग बन जाता है; बड़े सू पर बनी प्रतिमा स्पष्ट रूप से हरे रंग से ढक जाती है, कैफास का थूक फाल्सटाफ की उल्टी से मिलता है, जुआघर से आया लुई डी'ओर उस कील से टकराता है जहाँ से आत्महत्या करने वाले की रस्सी का सिरा लटका हुआ है। एक पीला पड़ा भ्रूण लुढ़कता हुआ जा रहा है, उन चमकीले झिलमिलाते रंगों में लिपटा हुआ जो पिछले मंगलवार को ओपेरा में नाचे थे; एक टोपी, जिसने पुरुषों पर फैसला सुनाया है, उस सड़ी हुई चीज़ के ढेर के पास लोट रही है जो कभी मार्गोटन का पेटीकोट हुआ करती थी; यह महज़ भाईचारा नहीं, बल्कि एक-दूसरे को "तू" कहकर संबोधित करने के बराबर है। जो कुछ भी पहले लाल रंग से रंगा हुआ था, वह धुल कर साफ हो गया है। आखिरी पर्दा भी हट गया है। एक गटर एक सनकी है। यह सब कुछ बता देता है।

गंदगी की सच्चाई हमें प्रसन्न करती है और आत्मा को शांति प्रदान करती है। जब कोई पृथ्वी पर राज्य के तर्क, शपथ, राजनीतिक सूझबूझ, मानवीय न्याय, पेशेवर ईमानदारी, पद की कठोरता और बेदाग वस्त्रों के दिखावे को सहन करते हुए अपना समय बिता लेता है, तो उसे गटर में प्रवेश करना और उसमें व्याप्त कीचड़ को देखना सुकून देता है।

यह एक ही समय में शिक्षाप्रद भी है। हमने अभी कहा है कि इतिहास गटर से होकर गुजरता है। सेंट-बार्थेलेमी परिवार वहाँ से बूंद-बूंद करके, पत्थरों के बीच से रिसता है। बड़े-बड़े सार्वजनिक हत्याकांड, राजनीतिक और धार्मिक नरसंहार, सभ्यता के इस भूमिगत मार्ग से होकर गुजरते हैं और अपने शवों को वहाँ धकेल देते हैं। विचारक की दृष्टि से, सभी ऐतिहासिक हत्यारे उस भयानक अंधकार में, घुटनों के बल बैठे, कफ़न के एक टुकड़े को एप्रन बनाकर, अपने काम को निराशाजनक ढंग से साफ करते हुए पाए जाते हैं। लुई XI वहाँ ट्रिस्टन के साथ हैं, फ्रांस्वा I वहाँ डुप्रैट के साथ हैं, चार्ल्स IX वहाँ अपनी माँ के साथ हैं, रिचेल्यू वहाँ लुई XIII के साथ हैं, लूवॉइस वहाँ हैं, लेटेलियर वहाँ हैं, हेबर्ट और मैलार्ड वहाँ हैं, पत्थरों को खरोंचते हुए, और अपने कृत्यों के निशान मिटाने की कोशिश कर रहे हैं। इन तहखानों के नीचे प्रेतों की झाड़ू की आवाज सुनाई देती है। वहाँ सामाजिक आपदाओं की भयानक दुर्गंध का

अनुभव होता है। कोनों में लाल रंग की परछाइयाँ दिखाई देती हैं। वहाँ एक भयानक धारा बहती है, जिसमें खून से सने हाथ धोए गए हैं।

सामाजिक पर्यवेक्षक को इन अंधेरों में प्रवेश करना चाहिए। ये उसकी प्रयोगशाला का एक हिस्सा हैं। दर्शनशास्त्र विचार का सूक्ष्मदर्शी है। हर चीज़ इससे दूर भागना चाहती है, लेकिन कोई भी इससे बच नहीं सकता। टालमटोल करना व्यर्थ है। टालमटोल में व्यक्ति अपने किस पहलू को प्रदर्शित करता है? शर्मनाक पहलू को। दर्शनशास्त्र अपनी दृष्टि से पीछा करता है, बुराई की पड़ताल करता है और उसे शून्यता में विलीन नहीं होने देता। लुप्त होती वस्तुओं के विलोपन में, लुप्त होती वस्तुओं के अवलोकन में, यह सब कुछ पहचान लेता है। यह चिथड़े से बैंगनी रंग और स्त्री को उसके वस्त्र के टुकड़े से पुनर्निर्मित करता है। गंदे नाले से यह शहर का पुनर्निर्माण करता है; कीचड़ से यह रीति-रिवाजों का पुनर्निर्माण करता है; मिट्टी के बर्तन के टुकड़े से यह मदिरा या घड़ा का अनुमान लगाता है। चर्मपत्र के एक टुकड़े पर नाखून के निशान से, यह उस अंतर को पहचान लेता है जो यहूदी बस्ती के यहूदियों को यहूदी बस्ती के यहूदियों से अलग करता है। यह बचे हुए अंशों में उन सभी चीजों को पुनः खोजता है जो पहले थीं - अच्छाई, बुराई, सत्य, महल का रक्तधब्बा, गुफा का स्याही का धब्बा, वेश्यालय से पसीने की बूँद, झेली गई परीक्षाएँ, स्वीकारे गए प्रलोभन, आयोजित अय्याशी, पात्रों का पतन होने पर आया मोड़, उन आत्माओं में वेश्यावृत्ति का निशान जिसके लिए उनकी अशिष्टता ने उन्हें सक्षम बनाया, और रोम के द्वारपालों के वस्त्रों पर मेसालिना की धक्का-मुक्की का निशान।

III. ब्रुनेसेउ

मध्य युग में पेरिस का सीवर सिस्टम मशहूर था। सोलहवीं शताब्दी में, हेनरी द्वितीय ने एक बोरवेल बनवाने का प्रयास किया, जो असफल रहा। मर्सियर के अनुसार, सौ साल पहले तक उस सीवर को उसके हाल पर छोड़ दिया गया था, और वह जैसे-तैसे अपनी स्थिति में लौटता गया।

प्राचीन पेरिस ऐसा ही था, झगड़ों, अनिर्णय और भटकावों में डूबा हुआ। लंबे समय तक यह काफी हद तक मूर्ख बना रहा। बाद में, 1989 ने दिखाया कि शहरों में समझ कैसे आती है। लेकिन उन अच्छे पुराने दिनों में, राजधानी में ज्यादा बुद्धि नहीं थी। यह नैतिक और भौतिक रूप से अपने मामलों का प्रबंधन करना नहीं जानती थी, और न ही यह गंदगी को उसी तरह साफ कर सकती थी जैसे दुर्व्यवहारों को। हर चीज एक बाधा थी, हर चीज एक सवाल खड़ा करती थी। उदाहरण के लिए, सीवर हर रास्ते के लिए अड़ियल था। सीवर में कोई अपना रास्ता नहीं ढूंढ सकता था, ठीक वैसे ही जैसे शहर में कोई अपनी स्थिति नहीं समझ सकता था; समझ से परे के ऊपर, उलझे हुए के नीचे; भाषाओं के भ्रम के नीचे गुफाओं का भ्रम राज करता था; डेडेलस ने बाबेल का समर्थन किया।

कभी-कभी पेरिस का सीवर उफान पर आ जाता था, मानो यह गलत समझी गई नील नदी अचानक क्रोध से भर गई हो। ये घटनाएँ, बताने में शर्मनाक, सीवर में बाढ़ की तरह फैल जाती थीं। कभी-कभी, सभ्यता का वह पेट बुरी तरह पच जाता था, गंदा पानी शहर के गले में वापस बह जाता था, और पेरिस को अपनी ही गंदगी का स्वाद चखना पड़ता था। पश्चाताप से सीवर की ये समानताएँ कुछ हद तक सकारात्मक भी थीं; ये चेतावनियाँ थीं; हालाँकि, इन्हें बहुत बुरी तरह स्वीकार किया गया; शहर अपनी गंदगी की धृष्टता पर क्रोधित हो गया, और यह मानने को तैयार नहीं था कि गंदगी वापस आ सकती है। इसे बेहतर तरीके से बाहर निकालो।

1802 की बाढ़ अस्सी वर्ष की आयु के पेरिसवासियों की वास्तविक स्मृतियों में से एक है। कीचड़ प्लेस डेस विक्टोयर्स पर आड़ा-तिरछा फैल गया, जहाँ लुई XIV की प्रतिमा खड़ी है; यह शैंप्स-एलिसीज़ में सीवर के दो मुहानों से रू सेंट-होनोरे में, सेंट-फ्लोरेंटिन सीवर के माध्यम से रू सेंट-फ्लोरेंटिन

में, सोनरी सीवर के माध्यम से रू पियरे-ए-पोइसन में, चेमिन-वर्ट के सीवर के माध्यम से रू पोपिनकोर्ट में, रू डे ला रोक्वेट के सीवर के माध्यम से रू डे लैपे में प्रवेश कर गया; इसने रू डेस शैंप्स-एलिसीज़ की नाली को पैंतीस सेंटीमीटर की ऊँचाई तक ढक दिया। और दक्षिण की ओर, सीन नदी के मुहाने से होकर, विपरीत दिशा में अपना कार्य करते हुए, यह रुए मजारिन, रुए दे ल’एचौडे और रुए दे माराइस में प्रवेश करती हुई, एक सौ नौ मीटर की दूरी पर, उस घर से कुछ ही कदमों की दूरी पर रुक जाती है जिसमें रासीन रहते थे, सत्रहवीं शताब्दी में राजा की तुलना में कवि का अधिक सम्मान करते हुए। रुए सेंट-पियरे में इसकी अधिकतम गहराई थी, जहाँ यह जलप्रपात के पत्थरों से तीन फीट ऊपर तक उठती थी, और रुए सेंट-साबिन में इसकी अधिकतम लंबाई थी, जहाँ यह दो सौ अड़तीस मीटर की लंबाई में फैल जाती थी।

इस सदी की शुरुआत में, पेरिस का सीवर एक रहस्यमयी जगह थी। कीचड़ की कभी अच्छी छवि नहीं होती; लेकिन इस मामले में इसकी बदनामी भयावहता की हद तक पहुँच गई थी। पेरिस को एक अजीब से अंदाज़ में पता था कि उसके नीचे एक भयानक गुफा है। लोग इसकी तुलना थेब्स के उस विशालकाय सीवर से करते थे जिसमें पंद्रह फुट लंबे कनखजूरे भरे रहते थे और जो शायद बेहेमोथ के लिए बाथटब का काम करता। सीवर कर्मचारियों के बड़े-बड़े जूते कुछ खास जगहों से आगे नहीं जाते थे। हम उस दौर के बहुत करीब थे जब सफाई करने वालों की गाड़ियाँ, जिनके शिखर पर सैंटे-फोइक्स और मार्क्विस डी क्रेकी का मेलजोल था, अपना कचरा सीधे सीवर में उतारती थीं। सफाई का काम मूसलाधार बारिश पर छोड़ दिया गया था, जो उसे बहाकर ले जाने के बजाय और भी जमा कर देती थी। रोम ने अपने सीवर को कुछ कविताएँ लिखीं और उसे जेमोनिया नाम दिया; पेरिस ने अपने सीवर का अपमान किया और उसे पॉलीपस-होल नाम दिया। विज्ञान और अंधविश्वास एकमत थे, एक भयावह दृश्य में। पॉलीपस का गड्ढा स्वच्छता और लोककथाओं दोनों के लिए उतना ही घृणित था। भूत-प्रेत का जन्म मफेटार्ड सीवर की दुर्गंधयुक्त सतह के नीचे हुआ था; मार्मौसेट परिवार के शवों को सीवर डे ला बैरिलरी में फेंक दिया गया था; फैगन ने 1685 के भयंकर घातक बुखार का कारण माराइस सीवर के उस बड़े छेद को बताया, जो 1833 तक सेंट-लुई स्ट्रीट पर, गैलेंट मैसेंजर के ठीक सामने, खुला पड़ा रहा। रुए डे ला मोर्टेलरी के सीवर का मुँह वहाँ से निकलने वाली महामारियों के लिए प्रसिद्ध था; लोहे की जाली, दाँतों की पंक्ति जैसी

दिखने वाली नोकों के साथ, उस घातक गली में एक अजगर के मुँह की तरह था, जो मनुष्यों पर नरक बरसाता था। आम लोगों की कल्पना ने उस उदास पेरिसियन नाले को अनंत के किसी अवर्णनीय रूप से भयानक मिश्रण से भर दिया था। सीवर का कोई तल नहीं था। सीवर ही निम्न लोक था। इन कुष्ठग्रस्त क्षेत्रों की पड़ताल करने का विचार पुलिस के मन में आया ही नहीं था। उस अनजानी चीज़ को आज़माने की, उस अंधेरे में छलांग लगाने की, उस खाई में खोज यात्रा पर निकलने की हिम्मत कौन कर सकता था? यह भयावह था। फिर भी, कोई न कोई सामने आया। उस गंदगी के ढेर को उसका क्रिस्टोफर कोलंबस मिल गया।

सन् 1805 में एक दिन, पेरिस में सम्राट के दुर्लभ दर्शनों में से एक के दौरान, गृह मंत्री, जिनका नाम डिक्रैस या क्रेटेट था, सम्राट के निजी समारोह में आए। कैरोसेल में महान गणतंत्र और महान साम्राज्य के उन सभी असाधारण सैनिकों की तलवारों की खनक सुनाई दे रही थी; फिर नेपोलियन का दरवाजा नायकों से भर गया; राइन, एस्कॉट, एडिगे और नील नदी के सैनिक; जौबर्ट, डेसैक्स, मार्सेउ, होचे और क्लेबर के साथी; फ्लेरस के एयरोस्टियर, मेयेंस के ग्रेनेडियर, जेनोआ के पोंटून निर्माता, पिरामिडों से दयनीय दिखने वाले हुसार, जूनोट के तोप के गोले से कीचड़ में सने तोपची, और ज़ुइडरज़ी में लंगर डाले बेड़े पर हमला करने वाले क्यूरासियर। कुछ लोग लोदी के पुल पर बोनापार्ट के पीछे चले थे, कुछ मंटुआ की खाइयों में मूरत के साथ थे, कुछ मोंटेबेलो की संकरी सड़क पर लैनेस से आगे चल रहे थे। उस दिन की पूरी सेना वहाँ, ट्यूलरीज़ के प्रांगण में, एक स्क्वाड्रन या एक प्लाटून के रूप में मौजूद थी, और नेपोलियन की रक्षा कर रही थी; और वह शानदार युग था जब विशाल सेना के पीछे मारेन्गो और आगे ऑस्टरलिट्ज़ थे। —“महाराज,” गृह मंत्री ने नेपोलियन से कहा, “कल मैंने आपके साम्राज्य के सबसे साहसी व्यक्ति को देखा।” —“वह कौन है?” सम्राट ने रूखेपन से कहा, “और उसने क्या किया है?” — “महाराज, वह कुछ करना चाहता है।” —“क्या?” —“पेरिस के सीवरों का दौरा करना।”

यह व्यक्ति वास्तव में मौजूद था और उसका नाम ब्रुनेसो था।

चतुर्थ

यात्रा संपन्न हुई। यह एक कठिन अभियान था; महामारी और घुटन के खिलाफ एक रात्रिकालीन लड़ाई। साथ ही, यह एक खोज यात्रा भी थी। इस अभियान के बचे हुए लोगों में से एक, एक बुद्धिमान मजदूर, जो उस समय बहुत युवा था, ने कई साल पहले इसके बारे में कुछ रोचक विवरण दिए थे, जिन्हें ब्रुनेसो ने पुलिस प्रमुख को दी गई अपनी रिपोर्ट में आधिकारिक शैली के अनुरूप न मानते हुए छोड़ दिया था। उस युग में कीटाणुशोधन की प्रक्रियाएँ अत्यंत प्रारंभिक थीं। ब्रुनेसो ने जैसे ही उस भूमिगत जाल की पहली सुरंग पार की, बीस मजदूरों में से आठ ने आगे जाने से इनकार कर दिया। यह कार्य जटिल था; यात्रा के लिए सफाई आवश्यक थी; इसलिए सफाई करना और साथ ही आगे बढ़ना भी जरूरी था। पानी के प्रवेश द्वारों को चिह्नित करना, जाली और छिद्रों की गिनती करना, शाखाओं का विस्तृत विवरण देना, उनके विभाजक बिंदु पर धाराओं को इंगित करना, विभिन्न बेसिनों की संबंधित सीमाओं को परिभाषित करना, मुख्य सीवर से जुड़ी छोटी सीवरों की गहराई मापना, प्रत्येक नाली के कीस्टोन के नीचे की ऊंचाई और चौड़ाई को मापना, साथ ही मेहराब के आधार और तल पर भी मापना, ताकि प्रत्येक जल-प्रवेश द्वार के स्तर के संबंध में व्यवस्था निर्धारित की जा सके, चाहे वह मेहराब के तल पर हो या सड़क की मिट्टी पर। वे बड़ी मेहनत से आगे बढ़े। दूषित वातावरण में लालटेनें मंद पड़ गईं। समय-समय पर, बेहोश सीवर कर्मचारी को बाहर ले जाया जाता था। कुछ स्थानों पर गहरी खाइयाँ थीं। मिट्टी धंस गई थी, फुटपाथ टूट गया था, सीवर एक अथाह कुएँ में बदल गया था; उन्हें कुछ भी ठोस नहीं मिला; एक आदमी अचानक गायब हो गया; उसे वापस बाहर निकालने में उन्हें बड़ी कठिनाई हुई। फोरक्रॉय की सलाह पर, उन्होंने पर्याप्त रूप से कीटाणुरहित स्थानों पर समय-समय पर राल में भीगी हुई सूती सामग्री से भरे बड़े पिंजरों में रोशनी की। कुछ स्थानों पर, दीवार विकृत कवकों से ढकी हुई थी—जिन्हें ट्यूमर कहा जा सकता था; इस सांसहीन वातावरण में पत्थर भी रोगग्रस्त प्रतीत हो रहा था।

ब्रुनेसो ने अपनी खोज के दौरान पहाड़ी से नीचे की ओर प्रस्थान किया। ग्रैंड-हर्लेउर की दो जल-नालियों के विभाजक बिंदु पर, उन्होंने एक उभरे

हुए पत्थर पर 1550 की तिथि अंकित पाई; यह पत्थर उस सीमा को इंगित करता था जहाँ हेनरी द्वितीय द्वारा पेरिस की भूमिगत नालियों का निरीक्षण करने के लिए नियुक्त फिलिबर्ट डेलॉर्मे रुके थे। यह पत्थर सीवर पर सोलहवीं शताब्दी का चिह्न था; ब्रुनेसो को सत्रहवीं शताब्दी की कारीगरी एक बार फिर पुरानी रू विएले-डु-टेम्पल की पोंसेउ नाली में मिली, जिसका निर्माण 1600 और 1650 के बीच हुआ था। और संग्रहण नहर के पश्चिमी भाग में अठारहवीं शताब्दी की कारीगरी, जिसे 1740 में दीवारों और मेहराबों से सुसज्जित किया गया था। ये दोनों मेहराब, विशेष रूप से कम प्राचीन, 1740 का, बेल्ट सीवर की चिनाई की तुलना में अधिक दरारग्रस्त और जर्जर थे, जो 1412 से है, एक ऐसा युग जब मेनिलमोंटेंट की ताजे पानी की धारा को पेरिस के ग्रैंड सीवर का दर्जा दिया गया था, एक ऐसी उन्नति जो एक किसान के राजा के पहले नौकर बनने के समान थी; कुछ-कुछ ग्रोस-जीन के लेबेल में परिवर्तित होने जैसा।

इधर-उधर, खासकर कोर्टहाउस के नीचे, उन्हें प्राचीन कालकोठरियों के खोखले ढांचे दिखाई दिए, जो सीवर में ही खोदे गए थे। बेहद भयावह जगह। इनमें से एक कोठरी में लोहे का एक पट्टा लटका हुआ था। उन्होंने उन सभी को दीवारों से बंद कर दिया। उनकी कुछ खोजें अनोखी थीं; उनमें से एक ओरंगुटान का कंकाल था, जो 1800 में जार्डिन डेस प्लांट्स से गायब हो गया था। यह गायब होना संभवतः अठारहवीं शताब्दी के अंतिम वर्ष में रू डेस बर्नार्डिन्स में शैतान के प्रसिद्ध और निर्विवाद रूप से प्रकट होने से जुड़ा था। बेचारे ने अंत में सीवर में डूबकर आत्महत्या कर ली थी।

आर्चे-मैरियन पर समाप्त होने वाली इस लंबी, मेहराबदार नाली के नीचे, एक पूरी तरह से सुरक्षित कबाड़ बीनने वाले की टोकरी ने सभी कला पारखियों का ध्यान आकर्षित किया। चारों ओर, कीचड़, जिसे सफाईकर्मी निडरता से साफ करते थे, बहुमूल्य वस्तुओं, सोने-चांदी के गहनों, कीमती पत्थरों और सिक्कों से भरा पड़ा था। यदि किसी विशालकाय व्यक्ति ने इस गंदे नाले को छाना होता, तो उसके पास सदियों का खजाना होता। रू डू टेम्पल और रू सैंट-एवोये की दो शाखाओं के अलग होने के स्थान पर, उन्हें तांबे का एक अनूठा ह्यूगनॉट पदक मिला, जिसके एक तरफ कार्डिनल की टोपी पहने सूअर और दूसरी तरफ मुकुट पहने भेड़िया बना हुआ था।

सबसे चौंकाने वाली घटना ग्रैंड सीवर के प्रवेश द्वार पर हुई। यह प्रवेश द्वार पहले एक जाली से बंद था, जिसके केवल कब्ज़े ही बचे थे। इन्हीं कब्ज़ों में से एक से एक गंदा और बेढंगा कपड़ा लटका हुआ था, जो शायद अंधेरे में बहते हुए वहीं अटक गया था और फटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया था। ब्रुनेसो ने अपनी लालटेन उस कपड़े के पास लाकर उसकी जांच की। वह बहुत ही बढ़िया बैटिस्ट कपड़े का बना था, और उसके एक कोने में, जो बाकी हिस्सों की तुलना में कम फटा हुआ था, एक राजसी मुकुट बना हुआ था और उसके ऊपर सात अक्षर कढ़ाई किए हुए थे: LAVBESP। यह मुकुट एक मार्क्विस का था, और सात अक्षरों का अर्थ था "लाउबेस्पाइन"। उन्होंने पहचान लिया कि उनके सामने जो था वह मराट के कफ़न का एक टुकड़ा था। मराट ने अपनी जवानी में प्रेम प्रसंगों में लिप्त रहा था। यह तब की बात है जब वह कॉम्टे डी'आर्टोइस के घर में अस्तबल के चिकित्सक के रूप में कार्यरत था। ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित प्रेम प्रसंगों से, एक महान महिला के साथ, उन्होंने यह चादर संभाल कर रखी थी। मानो किसी स्मृति चिन्ह के रूप में। उनकी मृत्यु के बाद, चूंकि उनके घर में यही एकमात्र उत्तम चादर थी, इसलिए उन्हें इसी में दफनाया गया। कुछ बूढ़ी महिलाओं ने उन्हें उसी चादर में लपेटकर समाधि के लिए भेजा, जिसमें जनप्रिय मित्र ने सुख भोगा था। ब्रुनेसो का देहांत हो गया। उन्होंने उस चादर को वहीं लटका रहने दिया; उसे अंतिम रूप नहीं दिया। क्या यह तिरस्कार के कारण था या सम्मान के कारण? मराट दोनों के पात्र थे। और फिर, नियति ने इतना स्पष्ट रूप से अपना निर्णय ले लिया था कि वे उसे छूने से हिचकिचा रहे थे। इसके अलावा, समाधि की वस्तुएँ उसी स्थान पर छोड़ी जानी चाहिए जहाँ वे उन्हें चुनते हैं। संक्षेप में, यह अवशेष एक विचित्र वस्तु थी। एक मार्क्विज़ इसमें सोई थी; मराट इसमें सड़े थे; यह समाधि स्थल से होते हुए अंत में सीवर के चूहों के साथ जा गिरी थी। यह कक्ष का कपड़ा, जिसकी हर तह को वाटो पहले खुशी से चित्रित करते थे, अंततः दांते की टकटकी भरी निगाहों के योग्य बन गया था।

पेरिस की भूमिगत गंदगी की इस पूरी यात्रा में 1805 से 1812 तक सात साल लगे। इस दौरान ब्रुनेसो ने कई महत्वपूर्ण कार्यों की रूपरेखा तैयार की, उनका निर्देशन किया और उन्हें पूरा किया। 1808 में उन्होंने पोंसो के मेहराब को नीचा किया और हर जगह नई लाइनें बनाते हुए सीवर को 1809 में सेंट-

डेनिस स्ट्रीट के नीचे से इनोसेंट्स फाउंटेन तक, 1810 में फ्रॉइडमैंट्यू और साल्पेट्रिएर स्ट्रीट के नीचे, 1811 में न्यूवे-डेस-पेटिट्स-पेरेस स्ट्रीट, डू मेल स्ट्रीट, एचार्प स्ट्रीट और प्लेस रॉयल स्ट्रीट के नीचे, और 1812 में ला पैक्स स्ट्रीट और चौसी डी'एंटिन स्ट्रीट के नीचे तक धकेला। साथ ही, उन्होंने पूरे सीवर नेटवर्क को कीटाणुरहित और स्वास्थ्यकर बनाया। अपने कार्य के दूसरे वर्ष में, ब्रुनेसो ने अपने दामाद नरगौद की सहायता ली।

इस प्रकार, शताब्दी के आरंभ में, प्राचीन समाज ने अपने दोहरे आधार को साफ किया और अपने सीवर की सफाई की। कम से कम इतना तो साफ हो ही गया था।

टेढ़ा-मेढ़ा, दरारों से भरा, कच्चा, दरारों से लबालब, नालों से घिरा, विचित्र मोड़ों से ग्रस्त, अतार्किक रूप से ऊपर-नीचे जाता हुआ, दुर्गंधयुक्त, जंगली, क्रूर, अंधकार में डूबा हुआ, फुटपाथों पर निशान और दीवारों पर घाव, भयानक—ऐसा था, अतीत को देखते हुए, पेरिस का प्राचीन सीवर। हर दिशा में शाखाएँ, खाईयों के चौराहे, शाखाएँ, हंस के पैर, तारे, जैसे सैन्य खदानें, संकरी गलियाँ, बंद गलियाँ, नमक से सजी तिजोरियाँ, रोगजनक तालाब, दीवारों पर पपड़ीदार पसीना, छतों से टपकती बूँदें, अंधेरा; इस पुराने, वीरान तहखाने की भयावहता की कोई बराबरी नहीं कर सकता था, जो बेबीलोन के पाचन तंत्र जैसा था, एक गुफा, खाई, गड्ढा जो गलियों से घिरा हुआ था, एक विशालकाय तिल का बिल, जहाँ मन उस विशाल अंधे तिल, अतीत को, अंधकार में रेंगते हुए, उस गंदगी में देखता हुआ प्रतीत होता है जो कभी वैभव हुआ करती थी।

हम फिर से दोहराते हैं, यह अतीत का गटर था।

V. वर्तमान प्रगति

आज सीवर साफ, ठंडा, सीधा और सुव्यवस्थित है। यह लगभग उस आदर्श को साकार करता है जिसे इंग्लैंड में "सम्मानजनक" शब्द से समझा जाता है। यह शालीन और धूसर रंग का है; नियमों और रेखाओं के अनुसार बना हुआ; ऐसा लगता है मानो किसी बैंडबॉक्स से निकला हो। यह किसी ऐसे व्यापारी जैसा दिखता है जो राज्य का पार्षद बन गया हो। यहाँ सब कुछ स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वहाँ की गंदगी भी शालीनता से भरी है। पहली नज़र में, कोई इसे उन भूमिगत गलियारों में से एक समझ सकता है, जो पुराने समय में बहुत आम थे और राजाओं और राजकुमारों के भागने में बहुत उपयोगी थे, उन अच्छे पुराने दिनों में, "जब लोग अपने राजाओं से प्यार करते थे।" वर्तमान सीवर एक सुंदर सीवर है; वहाँ शुद्ध शैली का बोलबाला है; शास्त्रीय आयताकार एलेक्जेंड्राइन, जो कविता से बाहर निकलकर वास्तुकला में शरण ले चुका है, उस लंबे, गहरे और सफ़ेद गुंबद के सभी पत्थरों के साथ घुलमिल गया प्रतीत होता है; प्रत्येक निकास एक मेहराब है; रुए डे रिवोली सीवर में भी एक आदर्श के रूप में काम करता है। हालांकि, अगर ज्यामितीय रेखा कहीं भी लागू होती है, तो वह निश्चित रूप से किसी बड़े शहर की जल निकासी नाली में ही होती है। वहां, हर चीज़ को सबसे छोटे रास्ते के अधीन होना चाहिए। आजकल सीवर ने एक औपचारिक स्वरूप धारण कर लिया है। यहां तक कि पुलिस रिपोर्टें, जिनमें कभी-कभी यह विषय होता है, अब इसके प्रति सम्मान की कमी नहीं दिखातीं। प्रशासनिक भाषा में इसके लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द गंभीर और गरिमामय हैं। जिसे पहले नाली कहा जाता था, अब उसे गैलरी कहा जाता है; जिसे पहले छेद कहा जाता था, अब उसे सर्वेक्षण छिद्र कहा जाता है। विलोन को अब अपना पुराना अस्थायी ठिकाना नहीं मिलेगा। तहखानों के इस जाल में चूहों और आवारागर्दी करने वालों की सदियों पुरानी आबादी है, जो पहले से कहीं अधिक संख्या में उमड़ रही है; समय-समय पर, एक बूढ़ा और अनुभवी चूहा सीवर की खिड़की से अपना सिर निकालकर पेरिसवासियों का सर्वेक्षण करता है; लेकिन ये कीड़े भी पालतू हो गए हैं, क्योंकि वे अपने भूमिगत महल से संतुष्ट हैं। गटर में अब उसकी आदिम क्रूरता का कोई अंश नहीं बचा है। पहले जो बारिश सीवर को गंदा करती थी, अब वही उसे धो

देती है। फिर भी, इस पर पूरी तरह भरोसा न करें। इसमें अभी भी दुर्गंध मौजूद है। यह निर्दोष होने से कहीं अधिक कपटी है। पुलिस विभाग और स्वास्थ्य आयोग ने अपनी पूरी कोशिश की है। लेकिन, तमाम कीटाणुशोधन प्रक्रियाओं के बावजूद, इससे एक अस्पष्ट, संदिग्ध गंध आती है, जैसे किसी पाप स्वीकार करने के बाद टार्टुफ़ से आती है।

आइए यह स्वीकार करें कि कुल मिलाकर देखा जाए तो यह सफाई एक प्रकार का सम्मान है जो सीवर सभ्यता को देता है, और इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो टार्टुफ़ का विवेक ऑजियन अस्तबलों से आगे की प्रगति है, इसलिए यह निश्चित है कि पेरिस के सीवरों में सुधार हुआ है।

यह महज़ प्रगति नहीं, बल्कि रूपांतरण है। प्राचीन और वर्तमान सीवर के बीच एक क्रांति चल रही है। इस क्रांति का कारण क्या है?

वह व्यक्ति जिसे पूरी दुनिया भूल गई है, और जिसका हमने जिक्र किया है, ब्रुनेसो।

VI. भविष्य की प्रगति

पेरिस की सीवर लाइन की खुदाई कोई मामूली काम नहीं था। पिछले दस शताब्दियों से इस पर अथक परिश्रम किया जा रहा है, लेकिन इसे पूरा करने में असमर्थता बनी हुई है, ठीक वैसे ही जैसे पेरिस का निर्माण पूरा नहीं हो पाया है। वास्तव में, सीवर लाइन पेरिस के विकास के सभी झटकों को झेलती है। धरती की गोद में, यह एक रहस्यमय पॉलीप की तरह है जिसके हजारों एंटीना हैं, जो शहर के ऊपर विस्तार के साथ नीचे की ओर फैलता जाता है। हर बार जब शहर एक सड़क काटता है, तो सीवर लाइन एक भुजा फैला देती है। पुराने राजतंत्र ने केवल तेईस हजार तीन सौ मीटर सीवर लाइन का निर्माण किया था; 1 जनवरी, 1806 को पेरिस की स्थिति इस मामले में यही थी। इस युग से, जिसके बारे में हम जल्द ही बात करेंगे, काम को उपयोगी और ऊर्जावान तरीके से फिर से शुरू किया गया और आगे बढ़ाया गया; नेपोलियन ने - आंकड़े आश्चर्यजनक हैं - चार हजार आठ सौ चार मीटर का निर्माण किया; लुई 18 वीं ने पांच हजार सात सौ नौ मीटर; चार्ल्स 10 ने दस हजार आठ सौ छत्तीस मीटर; लुई-फिलिप ने नवासी हजार बीस मीटर का निर्माण किया। सन् 1848 का गणतंत्र, तेईस हज़ार तीन सौ इक्यासी; वर्तमान सरकार, सत्तर हज़ार पाँच सौ; कुल मिलाकर, वर्तमान समय में, दो लाख छब्बीस हज़ार छह सौ दस मीटर; साठ मील सीवर; पेरिस का विशाल आंतरिक भाग। एक अस्पष्ट शाखा जो निरंतर सक्रिय है; एक ऐसी संरचना जो विशाल है और उपेक्षित है।

जैसा कि पाठक देख सकते हैं, पेरिस का भूमिगत भूलभुलैया आज सदी की शुरुआत की तुलना में दस गुना से भी अधिक बड़ा है। इस गंदे नाले को आज की सापेक्ष पूर्णता तक लाने के लिए आवश्यक सभी दृढ़ता और प्रयासों का अंदाजा लगाना मुश्किल है। प्राचीन राजशाही प्रोवोस्टशिप और अठारहवीं सदी के अंतिम दस वर्षों के दौरान क्रांतिकारी मेयरशिप ने बड़ी मुश्किल से 1806 से पहले मौजूद पांच लीग सीवर को छेदने में सफलता प्राप्त की थी। इस कार्य में कई तरह की बाधाएं आईं, कुछ मिट्टी की वजह से, तो कुछ पेरिस की मेहनती आबादी के पूर्वाग्रहों में निहित थीं। पेरिस ऐसी मिट्टी पर बना है जो कुदाल, फावड़ा, बोरवेल और मानवीय हस्तक्षेप के प्रति अत्यंत प्रतिरोधी है। उस भूवैज्ञानिक संरचना को भेदना और उसमें प्रवेश करना सबसे कठिन है जिस पर

पेरिस नामक अद्भुत ऐतिहासिक संरचना टिकी हुई है; जैसे ही किसी भी रूप में कोई काम शुरू होता है और इस जलोढ़ भूमि पर आगे बढ़ता है, भूमिगत अवरोधों की भरमार हो जाती है। यहाँ तरल मिट्टी, झरने, कठोर चट्टानें और वे नरम और गहरे दलदल हैं जिन्हें विशेष विज्ञान 'माउटार्ड' कहता है। कुदाल बड़ी मेहनत से चूने की परतों से होकर आगे बढ़ती है, जो मिट्टी के बहुत पतले धागों और सीपियों से ढकी हुई शिस्ट की परतों के साथ बारी-बारी से आती हैं, जो आदम-पूर्व महासागरों के समकालीन हैं। कभी-कभी अचानक एक छोटी नदी उस गड्ढे से फूट पड़ती है जिसे खोदना शुरू किया गया होता है और मजदूरों को डुबो देती है; या मार्ल की एक परत खुल जाती है और झरने की तरह उग्र रूप से नीचे लुढ़कती है, सबसे मजबूत सहायक बीमों को भी कांच की तरह तोड़ देती है। हाल ही में, विलेट में, जब सेंट-मार्टिन नहर के नीचे से जल संग्रहण नाली को बिना जल निकासी बाधित किए या नहर को खाली किए बिना गुजारना आवश्यक हो गया, तो नहर के बेसिन में एक दरार दिखाई दी। भूमिगत सुरंग में अचानक पानी भर गया, जो पंपिंग इंजनों की क्षमता से परे था। संकरे प्रवेश द्वार पर बनी इस दरार की जांच के लिए एक गोताखोर को भेजना पड़ा, और बड़ी मुश्किल से इसे बंद किया गया। सीन नदी के आसपास और यहां तक कि नदी से काफी दूरी पर, जैसे कि बेलेविले, ग्रैंड-रू और लुमिएर पैसेज में, दलदली रेत मिलती है जिसमें व्यक्ति फंस जाता है और स्पष्ट रूप से डूब जाता है। इसके अलावा, दूषित हवा से दम घुटना, भूस्खलन से दब जाना और अचानक जमीन का धंस जाना जैसी समस्याएं भी हैं। साथ ही, टाइफस की बीमारी भी है, जिससे मजदूर धीरे-धीरे संक्रमित हो जाते हैं। हमारे समय में, क्लिची की गैलरी की खुदाई करने के बाद, जिसमें आवरक की मुख्य जल-नाली के लिए एक बेंच बनाई गई थी, यह काम दस मीटर गहरी खाई में किया गया था; भूस्खलन के बीच, और अक्सर सड़ी हुई खुदाई और सहारा देने की सहायता से, बुलेवार्ड डे ल'हॉपिटल से सीन तक बिएव्रे को गुंबददार बनाया गया था; पेरिस को मोंटमार्ट्रे की बाढ़ से बचाने और बैरियर डेस मार्टियर्स के पास स्थित नौ हेक्टेयर के उस नदी जैसे तालाब के लिए एक निकास प्रदान करने के लिए, और यह भी बता दें कि बैरियर ब्लैंच से औबर्विलियर्स की सड़क तक सीवर लाइन का निर्माण चार महीने में, दिन-रात काम करते हुए, ग्यारह मीटर की गहराई पर किया गया था; रू बैरे-डु-बेक में, बिना खाई खोदे, सतह से छह मीटर नीचे एक अभूतपूर्व भूमिगत सीवर बनाने के बाद, अधीक्षक मोनॉट की मृत्यु हो गई। रू ट्रैवर्सियर-सेंट-एंटोइन से रू डे ल'ऑर्सिन तक शहर के सभी कोनों में

तीन हजार मीटर सीवर बनाने के बाद, अर्बालेट की शाखा के माध्यम से कैरेफोर सेन्सियर-मौफेटार्ड को बारिश के पानी से मुक्त करने के बाद, तरल रेत में चट्टान और कंक्रीट पर सेंट-जॉर्जेस सीवर बनाने के बाद, नोट्रे-डेम-डे- नाज़ारेथ शाखा में वॉल्ट की लकड़ी के फर्श को जबरदस्ती नीचे उतारने का निर्देशन करने के बाद, इंजीनियर डुलेउ की मृत्यु हो गई। ऐसे वीरतापूर्ण कार्यों के लिए कोई बुलेटिन नहीं हैं, जो फिर भी युद्ध के मैदान में होने वाले क्रूर नरसंहार से कहीं अधिक उपयोगी हैं।

1832 में पेरिस की सीवर व्यवस्था आज जैसी बिल्कुल नहीं थी। ब्रुनेसो ने इसकी प्रेरणा दी थी, लेकिन बाद में हुए व्यापक पुनर्निर्माण के लिए हैजा जैसी महामारी की आवश्यकता पड़ी। उदाहरण के लिए, यह जानकर आश्चर्य होता है कि 1821 में, वेनिस की तरह ही, बेल्ट सीवर का एक हिस्सा, जिसे ग्रैंड कैनाल कहा जाता था, रू डेस गौर्ड्स में खुला पड़ा था और उसमें पानी जमा था। 1821 में ही पेरिस शहर को इस गंदगी के ढेर को ढकने के लिए आवश्यक दो लाख साठ हज़ार अस्सी फ्रैंक और छह सेंटिम मिले। कॉम्बैट, कुनेट और सेंट-मैंडे के तीन जल-अवशोषक कुएँ, उनके निकास द्वार, उपकरण, सेसपूल और शुद्धिकरण शाखाएँ, 1836 से ही अस्तित्व में हैं। पेरिस की आंतरिक सीवर व्यवस्था का पूरी तरह से पुनर्निर्माण किया गया है, और जैसा कि हमने बताया है, पिछली तिमाही सदी में इसका विस्तार दस गुना से भी अधिक हो गया है।

तीस साल पहले, 5 और 6 जून के विद्रोह के समय, कई इलाकों में आज भी लगभग वही पुरानी सीवर व्यवस्था थी। बहुत सी सड़कें जो अब उभरी हुई हैं, उस समय धँसी हुई पक्की सड़कें हुआ करती थीं। ढलान के अंत में, जहाँ किसी सड़क या चौराहे की सहायक सड़कें समाप्त होती थीं, अक्सर भारी सलाखों वाली बड़ी, चौकोर जाली दिखाई देती थीं, जिनका लोहा भीड़ के कदमों से घिसकर वाहनों के लिए खतरनाक और फिसलन भरा हो जाता था, और घोड़ों के गिरने का कारण बनता था। सड़क और पुल विभाग की आधिकारिक भाषा में इन जालियों को 'कैसिस' नाम दिया गया था।

1832 में, कई सड़कों पर - रुए डे ल'एटोइल, रुए सेंट-लुई, रुए डु टेम्पल, रुए विएले-डु-टेम्पल, रुए नोट्रे-डेम डी नाज़रेथ, रुए फोली-मेरिकॉर्ट, क्वाई ऑक्स फ्लेर्स, रुए डू पेटिट-मस्क, रुए डु नॉर्मंडी, रुए पोंट-औक्स-बिचेस, रुए डेस मरैस, फ़ॉबॉर्ग सेंट-मार्टिन, रुए नोट्रे डेम डेस-विक्टोयर्स, फ़ॉबॉर्ग मोंटमार्ट्रे, रुए ग्रेंज-बटेलियर, चैंप्स-एलिसीस, रुए जैकब और

रुए डे टूरनॉन-प्राचीन गॉथिक सीवर अभी भी खौफनाक ढंग से अपना चेहरा प्रदर्शित कर रहे हैं। इसमें पत्थर पकड़ने वाले घाटियों के विशाल रिक्त स्थान शामिल थे, जो कभी-कभी स्मारकीय भव्यता के साथ पत्थर के खंभों से घिरे होते थे।

सन् 1806 में पेरिस में सीवरों की संख्या लगभग उतनी ही थी जितनी 1663 में थी; पाँच हज़ार तीन सौ फ़ैदम। ब्रुनेसो के बाद, 1 जनवरी, 1832 को यह संख्या बढ़कर चालीस हज़ार तीन सौ मीटर हो गई। 1806 और 1831 के बीच औसतन प्रतिवर्ष सात सौ पचास मीटर सीवर बनाए गए, और उसके बाद सीमेंट की नींव पर पानी में जमने वाले हाइड्रोलिक मोर्टार से बनी आठ हज़ार और यहाँ तक कि दस हज़ार मीटर लंबी सुरंगें हर साल बनाई गईं। दो सौ फ़्रैंक प्रति मीटर की दर से, आज के पेरिस के साठ लीग लंबे सीवर लगभग अड़तालीस मिलियन लीग के बराबर हैं।

हमने शुरुआत में जिस आर्थिक प्रगति का जिक्र किया है, उसके अलावा सार्वजनिक स्वच्छता की गंभीर समस्याएं भी उस विशाल प्रश्न से जुड़ी हुई हैं: पेरिस की सीवर व्यवस्था।

पेरिस दो परतों का केंद्र है: एक जल की परत और एक वायु की परत। जल की परत, जो ज़मीन के काफी गहरे तल पर स्थित है, लेकिन जिसकी दो बोरवेल से गहराई मापी जा चुकी है, चाक और जुरासिक चूना पत्थर के बीच स्थित हरी मिट्टी की परत से पोषित होती है; इस परत को 22 मील परिधि वाली एक डिस्क के रूप में दर्शाया जा सकता है; यहाँ असंख्य नदियाँ और छोटी धाराएँ बहती हैं; ग्रेनेल के कुएँ से एक गिलास पानी में सीन, मार्ने, योन, ओइस, ऐस्ने, चेर, विएन और लॉयर नदियों का पानी पिया जा सकता है। जल की परत स्वास्थ्यवर्धक है, क्योंकि यह सबसे पहले आकाश से और फिर पृथ्वी से आती है; वायु की परत अस्वस्थ है, क्योंकि यह सीवर से आती है। सीवर की सारी अशुद्धियाँ शहर की हवा में मिल जाती हैं; इसीलिए यह दुर्गंध आती है। वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि गोबर के ढेर के ऊपर से ली गई हवा पेरिस के ऊपर से ली गई हवा से अधिक शुद्ध होती है। समय के साथ, प्रगति की सहायता से, तंत्र परिपूर्ण होते जाते हैं, और जैसे-जैसे प्रकाश बढ़ता है, जल का उपयोग वायु को शुद्ध करने के लिए किया जाएगा; दूसरे शब्दों में, गटर को साफ करने के लिए। पाठक जानते हैं कि "गटर को साफ करना" से हमारा तात्पर्य है: गंदगी को धरती में वापस लौटाना; गोबर को मिट्टी में और खाद को खेतों में वापस डालना। इस सरल कार्य से, संपूर्ण

सामाजिक समुदाय दुख में कमी और स्वास्थ्य में वृद्धि का अनुभव करेगा। वर्तमान में, पेरिस से रोगों का विकिरण लूव्र संग्रहालय के चारों ओर पचास मील तक फैला हुआ है, जिसे इस महामारी के चक्र का केंद्र माना जाता है।

हम कह सकते हैं कि दस शताब्दियों से पेरिस के लिए गटर एक बीमारी की तरह रहा है। गटर पेरिस के खून में बसा एक धब्बा है। आम लोगों की सोच इस मामले में कभी गलत साबित नहीं हुई। पहले गटर साफ करने वालों का काम लगभग उतना ही खतरनाक और लोगों के लिए उतना ही घृणित माना जाता था जितना कि कसाई का काम, जिसे लंबे समय तक खौफ की नजर से देखा जाता था और जल्लाद के हवाले कर दिया जाता था। किसी राजमिस्त्री को उस बदबूदार खदान में जाने के लिए ऊंची मजदूरी जरूरी थी; गटर साफ करने वाले की सीढ़ी उसमें उतरने से हिचकिचाती थी; कहावत के तौर पर कहा जाता था: "गटर में उतरना कब्र में उतरने जैसा है;" और जैसा कि हमने कहा, हर तरह की भयानक कहानियों ने इस विशाल गड्ढे को आतंक से ढक रखा था; एक खौफनाक गड्ढा जो पृथ्वी के घूर्णन और मनुष्य के घूर्णन दोनों के निशान समेटे हुए है, और जहां प्रलय के गोले से लेकर मराट के चिथड़े तक, सभी प्रलयकारी घटनाओं के अवशेष मिलते हैं।

[illegible]

I. सीवर और उसके आश्चर्य

जीन वालजेन खुद को पेरिस के सीवरों में पाया।

पेरिस और समुद्र के बीच एक और समानता। जैसे समुद्र में गोताखोर गायब हो सकता है, वैसे ही यहाँ भी।

यह परिवर्तन अभूतपूर्व था। शहर के ठीक बीचोंबीच, जीन वालजेन शहर से भाग निकला था, और पलक झपकते ही, आवरण हटाने और उसे वापस लगाने में लगने वाले समय में, वह उजाले से घोर अंधकार में, दोपहर से आधी रात में, कोलाहल से सन्नाटे में, गरजते बवंडर से मकबरे की स्थिरता में, और रू पोलोनसेउ की घटना से भी कहीं अधिक भयावह परिवर्तन से, सबसे बड़े खतरे से घोर गुमनामी में पहुँच गया था।

अचानक एक गुफा में गिर जाना; पेरिस के गुप्त दरवाज़े में गायब हो जाना; उस गली को छोड़ देना जहाँ हर तरफ मौत मंडरा रही थी, और उस कब्रनुमा जगह पर पहुँच जाना जहाँ जीवन था, एक अजीब सा पल था। वह कुछ सेकंड तक स्तब्ध सा खड़ा रहा; स्तब्ध होकर सुनता रहा। सुरक्षा का जाल अचानक उसके सामने खुल गया था। मानो दिव्य कृपा ने उसे धोखे से अपने वश में कर लिया था। ईश्वरीय विधान के अद्भुत जाल!

लेकिन घायल व्यक्ति टस से मस नहीं हुआ, और जीन वाल्जेन को यह नहीं पता था कि वह उस कब्र में जिसे ले जा रहा था वह जीवित प्राणी था या मृत शरीर।

उसकी पहली अनुभूति अंधापन की थी। अचानक, उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। उसे ऐसा लगा मानो एक ही पल में वह बहरा हो गया हो। उसे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। उसके सिर से कुछ ही फीट ऊपर उठ रहा हत्या का भयानक तूफान उस तक नहीं पहुंचा, क्योंकि उसके और उसके बीच ज़मीन की मोटी परत थी, जैसा कि हमने पहले कहा है, वह तूफान बस धुंधली और अस्पष्ट सी, गहराई में गड़गड़ाहट जैसी आवाज़ कर रहा था। उसे महसूस हुआ कि ज़मीन उसके पैरों के नीचे ठोस है; बस इतना ही; लेकिन इतना ही काफी था। उसने एक हाथ बढ़ाया और फिर दूसरा, दोनों तरफ की दीवारों को छुआ और पाया कि रास्ता संकरा है; वह फिसल गया और उसे पता चला कि फर्श गीला है। उसने सावधानी से एक पैर आगे बढ़ाया, उसे डर था कि

कहीं कोई गड्ढा, खाई या खाई न हो; उसने पाया कि फर्श अभी भी गीला है। दुर्गंध के एक झोंके ने उसे उस जगह का एहसास दिलाया जहां वह खड़ा था।

कुछ मिनटों के बाद, उसकी आँखों की रोशनी मिट गई। जिस मैनहोल से वह नीचे उतरा था, उससे थोड़ी रोशनी अंदर आ रही थी और उसकी आँखें उस गुफा जैसी जगह की आदी हो गईं। उसे कुछ-कुछ दिखाई देने लगा। जिस रास्ते से वह अंदर आया था — इस स्थिति को इससे बेहतर शब्दों में बयान करना मुश्किल है—वह उसके पीछे से दीवार से घिरा हुआ था। यह उन संकरी गलियों में से एक थी, जिन्हें खास भाषा में शाखाएँ कहते हैं। उसके सामने एक और दीवार थी, रात जैसी दीवार। जीन वालजेन जहाँ खड़ा था, वहाँ से दस-बारह कदम आगे जाकर उस छेद की रोशनी गायब हो गई और सीवर की नम दीवारों के कुछ मीटर पर बस हल्की सी धुंधली रोशनी पड़ रही थी। उसके आगे, घना कोहरा छाया हुआ था; वहाँ प्रवेश करना भयानक लग रहा था, उसमें घुसना मानो किसी समा जाने जैसा था। फिर भी, कोई उस कोहरे की दीवार में कूद सकता था और ऐसा करना ज़रूरी भी था। जल्दी करना तो और भी ज़रूरी था। जीन वाल्जेन को लगा कि पत्थरों के नीचे जो जाली उसने देखी थी, वह सैनिकों की नज़र में भी आ सकती है, और सब कुछ इसी मौके पर निर्भर था। वे भी उस कुएँ में उतरकर उसकी तलाशी ले सकते थे। एक मिनट भी गंवाने का समय नहीं था। उसने मारियस को ज़मीन पर उतारा, उसे फिर से उठाया—उसे फिर से अपने कंधों पर रखा—और चल पड़ा। वह दृढ़ता से अँधेरे में घुस गया।

सच तो यह था कि वे जीन वालजेन के अनुमान से कहीं कम सुरक्षित थे। संभवतः, उनके लिए एक अलग तरह का और उतना ही गंभीर खतरा इंतज़ार कर रहा था। युद्ध के बिजली की तरह तेज़ बवंडर के बाद, दुर्गंध और जालों से भरी गुफा; अराजकता के बाद, सीवर। जीन वालजेन एक नरक से दूसरे नरक में गिर चुका था।

पचास कदम चलने के बाद उसे रुकना पड़ा। एक समस्या सामने आ गई। रास्ता एक और संकरी घाटी में जाकर खत्म हुआ, जो उसके सामने ही थी। वहाँ दो रास्ते थे। उसे कौन सा रास्ता चुनना चाहिए? क्या उसे बाएँ मुड़ना चाहिए या दाएँ? उस अंधेरी भूलभुलैया में वह अपना रास्ता कैसे ढूँढे? इस भूलभुलैया की ओर, जिसका ज़िक्र हम पहले ही कर चुके हैं, एक सुराग है, और वह है इसकी ढलान।
ढलान पर चलने से नदी तक पहुँचा जा सकता है।

जीन वाल्जेन को यह बात तुरंत समझ आ गई।

उसने मन ही मन सोचा कि वह शायद हालेस के सीवर में है; अगर वह बाएँ रास्ते को चुनकर ढलान पर चलता रहे, तो पंद्रह मिनट से भी कम समय में वह पोंट-औ-चेंज और पोंट-नेउफ के बीच सीन नदी के किसी मुहाने पर पहुँच जाएगा, यानी वह पेरिस के सबसे घनी आबादी वाले इलाके में दिन दहाड़े प्रकट होगा। शायद वह गलियों के चौराहे पर किसी मैनहोल से बाहर निकलेगा। राहगीर दो खून से लथपथ आदमियों को अपने पैरों के पास ज़मीन से निकलते देखकर अचंभित हो जाएँगे। पुलिस आ जाएगी, पास के गार्डों को हथियार उठाने का आह्वान किया जाएगा। इस तरह उन्हें बाहर निकलने से पहले ही पकड़ लिया जाएगा। उस भूलभुलैया में उतरना, उस काले अंधकार में खुद को सौंप देना और परिणाम के लिए ईश्वर पर भरोसा करना बेहतर होगा।

वह ढलान पर चढ़ गया और दाईं ओर मुड़ गया।

जब उसने गैलरी का कोना मोड़ा, तो दूर से दिखाई देने वाला एक हवा का छिद्र गायब हो गया, अंधकार का पर्दा एक बार फिर उस पर छा गया और वह फिर से अंधा हो गया। फिर भी, वह यथासंभव तेज़ी से आगे बढ़ा। मारियस की दोनों भुजाएँ उसकी गर्दन के चारों ओर लिपटी हुई थीं और उसके पैर उसके पीछे घिसट रहे थे। उसने एक हाथ से दोनों भुजाओं को पकड़ रखा था और दूसरे हाथ से दीवार का सहारा ले रहा था। मारियस का गाल उसके गाल से छू रहा था और खून बह रहा था। उसने महसूस किया कि मारियस से एक गर्म धारा बहकर उस पर गिर रही है और उसके कपड़ों के नीचे जा रही है। लेकिन उसके कान के पास एक नम गर्माहट, जिसे घायल व्यक्ति का मुँह छू रहा था, साँस लेने का संकेत दे रही थी, और इस प्रकार, जीवन का। जिस रास्ते से जीन वालजेन अब आगे बढ़ रहा था, वह पहले वाले जितना संकरा नहीं था। जीन वालजेन ने बड़ी मुश्किल से उस रास्ते से गुज़रा। पिछले दिन की बारिश अभी पूरी तरह से नहीं रुकी थी और उसने नीचे के बीच में एक छोटी सी धारा बना दी थी, और उसे अपने पैरों को पानी में न डालने के लिए दीवार से सटकर चलना पड़ा।

इस प्रकार वह अंधकार में आगे बढ़ा। वह रात के उन प्राणियों के समान था जो अदृश्य में भटक रहे हों और धरती के नीचे छाया की नसों में खो गए हों।

फिर भी, धीरे-धीरे, चाहे दूर के हवा के छिद्रों से इस घने अंधकार में हल्की- सी टिमटिमाती रोशनी निकल रही हो, या उसकी आँखें इस धुंधलेपन की आदी हो गई हों, उसे कुछ धुंधली सी झलक वापस आने लगी, और उसे एक बार फिर से एक अस्पष्ट

विचार आने लगा, कभी उस दीवार का जिसे उसने छुआ था, कभी उस गुंबद का जिसके नीचे से वह गुजर रहा था। अँधेरे में पुतली फैल जाती है, और दुर्भाग्य में आत्मा फैल जाती है और अंत में वहीं ईश्वर को पा लेती है।

उनके मार्ग को निर्देशित करना आसान नहीं था।

सीवर की लाइन, मानो, उसके ऊपर बनी सड़कों की लाइन की प्रतिध्वनि करती है। उस समय पेरिस में 2200 सड़कें थीं। पाठक कल्पना कीजिए कि आप उस अंधेरी शाखाओं के जंगल के नीचे हैं जिसे सीवर कहा जाता है। उस युग में मौजूद सीवरों की व्यवस्था, अगर उन्हें एक के बाद एक रखा जाए, तो ग्यारह लीग की लंबाई होगी। हमने ऊपर बताया है कि पिछले तीस वर्षों की विशेष सक्रियता के कारण, वर्तमान नेटवर्क की लंबाई कम से कम साठ लीग है।

जीन वालजेन ने एक बड़ी गलती कर दी। उसने सोचा कि वह सेंट-डेनिस गली के नीचे है, और यह दुर्भाग्यपूर्ण था कि ऐसा नहीं था। सेंट-डेनिस गली के नीचे एक पुराना पत्थर का सीवर है जो लुई XIII के समय का है और सीधे मुख्य सीवर, जिसे ग्रैंड सीवर कहा जाता है, में जाता है। इसमें केवल एक मोड़ है, जो प्राचीन कोर्ट डेस मिराकल्स की ऊँचाई पर दाईं ओर है, और एक ही शाखा है, सेंट-मार्टिन सीवर, जिसकी चार भुजाएँ एक क्रॉस बनाती हैं। लेकिन पेटिट-ट्रुआंडेरी का मुख्य भाग, जिसका प्रवेश द्वार कोरिंथ वाइन-शॉप के पास था, सेंट-डेनिस गली के सीवर से कभी नहीं जुड़ा था; यह मोंटमार्ट्रे सीवर पर समाप्त होता था, और यहीं जीन वालजेन उलझ गया। वहाँ खो जाने की संभावनाएँ बहुत अधिक हैं। मोंटमार्ट्रे सीवर प्राचीन नेटवर्क के सबसे जटिल और भूलभुलैयानुमा सीवरों में से एक है। सौभाग्य से, जीन वालजेन अपने पीछे बाज़ारों की उस सीवरनुमा नाली को छोड़ आया था, जिसकी ज्यामितीय योजना एक दूसरे के ऊपर ढेर सारे तोतों के घोंसलों की तरह दिखती है; लेकिन उसके सामने एक से अधिक शर्मनाक मुठभेड़ें और एक से अधिक गली के कोने थे—क्योंकि वे गलियाँ ही थीं—जो अंधकार में एक पूछताछ बिंदु की तरह खुद को प्रस्तुत करते थे; सबसे पहले, उसके बाईं ओर, प्लैट्रिएर की विशाल सीवरनुमा नाली, एक प्रकार की चीनी पहेली, जो डाकघर और गेहूं बाजार के गोल गुंबद के नीचे से होते हुए सीन नदी तक अपने टी और जेड के अराजक जाल को उलझाती हुई आगे बढ़ती है, जहाँ यह एक वाई में समाप्त होती है; दूसरे, उसके दाईं ओर, रू डू कैड्रन का घुमावदार गलियारा, जिसके तीन दांत हैं, जो बंद आँगन भी हैं; तीसरे, उसके

बाईं ओर, मेल की शाखा, जो लगभग शुरुआत में ही एक प्रकार के मोड़ से जटिल हो जाती है, और टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होते हुए लूव्र के निकास के भव्य तहखाने में जाकर समाप्त होती है, जो हर दिशा में कटी-फटी और फैली हुई है; और अंत में, रू डेस ज्यूनर्स के एक संकरे रास्ते की तंग गली, जिसमें इधर-उधर छोटी-छोटी नालियाँ हैं, और अंत में बेल्ट सीवर तक पहुँचती है, जो अकेले उसे किसी सुरक्षित दूरी पर स्थित निकास तक ले जा सकती है।

यदि जीन वालजेन को इन सब बातों का जरा भी अंदाजा होता, तो वह दीवार को छूकर ही तुरंत समझ जाता कि वह सेंट-डेनिस गली की भूमिगत गैलरी में नहीं है। प्राचीन पत्थरों की जगह, गटर में भी भव्य और राजसी दिखने वाली पुरानी वास्तुकला की जगह, जिसमें ग्रेनाइट और मोर्टार से बने फर्श और तार की परतें आठ सौ लिवर प्रति फ़ैदम की कीमत की थीं, उसे अपने हाथों के नीचे समकालीन सस्तापन, किफायती उपाय, कंक्रीट की नींव पर मोर्टार से भरे छिद्रयुक्त पत्थर, जिसकी कीमत दो सौ फ्रैंक प्रति मीटर है, और बुर्जुआ चिनाई, जिसे 'छोटे-मोटे सामान' के नाम से जाना जाता है, का एहसास होता; लेकिन इन सब बातों से वह अनभिज्ञ था।

वह चिंता के साथ-साथ शांत भाव से आगे बढ़ा, कुछ भी देखे बिना, कुछ भी जाने बिना, संयोग में डूबा हुआ, यानी ईश्वरीय विधान में समाया हुआ।

धीरे-धीरे, हम मानते हैं, उस पर एक अजीब सा डर हावी हो गया। उस पर छाए अंधकार ने उसकी आत्मा को भेद दिया। वह एक रहस्य में फंसा हुआ था। सीवर का यह जाल बेहद भयानक था; यह एक अजीबोगरीब तरीके से उलझा हुआ था। पेरिस के इस अंधकारमय इलाके में फंस जाना एक दुखद अनुभव था। जीन वालजेन को बिना देखे ही अपना रास्ता खोजना और बनाना पड़ा। इस अनजानी राह में, उसका हर कदम आखिरी हो सकता था। वह बाहर कैसे निकलेगा? क्या उसे कोई रास्ता मिलेगा? क्या वह समय रहते रास्ता ढूंढ पाएगा? क्या पत्थरों से बने उस विशाल भूमिगत जाल को भेदा जा सकेगा? क्या उसे वहां अंधेरे में कोई अनपेक्षित गांठ मिलेगी? क्या वह उस दुर्गम और अनसुलझे रास्ते पर पहुंच जाएगा? क्या मारियस खून बहने से और वह भूख से मर जाएगा? क्या वे दोनों खो जाएंगे और उस रात के किसी कोने में दो कंकाल बनकर रह जाएंगे? उसे कुछ पता नहीं था। उसने ये सारे सवाल खुद से पूछे, लेकिन उनका कोई जवाब नहीं मिला। पेरिस की आंतें एक खाई का रूप ले लेती हैं। पैगंबर की तरह, वह भी राक्षस के पेट में था।

अचानक, उसे एक आश्चर्य हुआ। बिल्कुल अप्रत्याशित क्षण में, और सीधे चलते हुए भी, उसने महसूस किया कि वह अब ऊपर नहीं चढ़ रहा है; नाले का पानी उसके पैर की उंगलियों से टकराने के बजाय उसकी एड़ियों से टकरा रहा था। सीवर अब नीचे की ओर जा रहा था। क्यों? क्या वह अचानक सीन नदी तक पहुँचने वाला था? यह खतरा बड़ा था, लेकिन पीछे हटने का जोखिम उससे भी बड़ा था। वह आगे बढ़ता रहा।

वह सीन नदी की ओर नहीं बढ़ रहा था। पेरिस की मिट्टी से बनी दाहिनी ओर की पहाड़ी से एक जलधारा सीन नदी में और दूसरी ग्रैंड सीवर में गिरती है। जलधाराओं के विभाजन को निर्धारित करने वाली इस पहाड़ी की चोटी एक बहुत ही अनियमित रेखा बनाती है। धाराओं के विभाजक बिंदु, सेंट-एवोये सीवर में, रू मिशेल-ले-कॉम्ते के पार, लूव्र के सीवर में, बुलेवार्ड के पास, और मोंटमार्ट्रे सीवर में, हॉल्स के पास स्थित हैं। जीन वालजेन इसी बिंदु पर पहुँच गया था। वह बेल्ट सीवर की ओर बढ़ रहा था; वह सही रास्ते पर था। लेकिन उसे इसका पता नहीं था।

जब भी उसे कोई शाखा मिलती, वह उसके कोणों को महसूस करता, और यदि उसे लगता कि सामने खुलने वाला रास्ता उस मार्ग से छोटा है जिसमें वह है, तो वह उसमें प्रवेश नहीं करता बल्कि अपना मार्ग जारी रखता, क्योंकि वह सही अनुमान लगाता था कि हर संकरा रास्ता अंततः एक बंद गली में जाकर समाप्त होगा और उसे उसके लक्ष्य से, यानी निकास द्वार से, और दूर ले जाएगा। इस प्रकार उसने उन चार भूलभुलैयाओं द्वारा अंधेरे में बिछाए गए चौगुने जाल से खुद को बचा लिया, जिनका हमने अभी उल्लेख किया है।

एक क्षण में, उसे अहसास हुआ कि वह उस पेरिस से बाहर निकल रहा है जो विद्रोह से जम गया था, जहाँ बैरिकेड्स ने आवागमन रोक दिया था, और वह जीवंत और सामान्य पेरिस में प्रवेश कर रहा है। अचानक ऊपर से उसे गरज जैसी एक आवाज़ सुनाई दी, दूर से आती हुई लेकिन लगातार। यह वाहनों की गड़गड़ाहट थी।

वह लगभग आधे घंटे से चल रहा था, कम से कम अपने मन में लगाए गए अनुमान के अनुसार, और उसने अभी तक आराम करने के बारे में नहीं सोचा था; उसने केवल मारियस को पकड़े हुए हाथ को बदला था। अंधेरा पहले से कहीं अधिक घना था, लेकिन उसकी गहराई ही उसे सुकून दे रही थी।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

II. व्याख्या

6 जून के दिन, सीवरों की तलाशी का आदेश दिया गया था। आशंका थी कि पराजित लोग उनमें शरण ले सकते हैं, और प्रीफेक्ट गिस्केट को गुप्त पेरिस की तलाशी का जिम्मा सौंपा गया था, जबकि जनरल बुगेउड ने सार्वजनिक पेरिस की तलाशी ली; यह एक दोहरा और आपस में जुड़ा अभियान था, जिसके लिए सार्वजनिक बल (ऊपर सेना और नीचे पुलिस) की ओर से दोहरी रणनीति की आवश्यकता थी। एजेंटों और सीवरकर्मियों की तीन टुकड़ियों ने पेरिस की भूमिगत नालियों की छानबीन की, पहली दाहिनी ओर, दूसरी बाईं ओर और तीसरी शहर के भीतर। पुलिस एजेंट कैराबाइन, लाठी, तलवार और छेनी से लैस थे।

उस समय जीन वाल्जेन की ओर जो चीज लक्षित थी, वह दाहिने किनारे पर तैनात गश्ती दल की लालटेन थी।

यह गश्ती दल अभी-अभी घुमावदार गैलरी और रू डू कैड्रन के नीचे स्थित तीन संकरी गलियों का दौरा करके लौटा था। जब वे इन संकरी गलियों की गहराई में अपनी लालटेन घुमा रहे थे, तभी जीन वालजेन को रास्ते में गैलरी का प्रवेश द्वार दिखाई दिया। उसने पाया कि यह मुख्य मार्ग से संकरा था, इसलिए वह अंदर नहीं गया। वह आगे बढ़ गया। गैलरी डू कैड्रन से बाहर निकलते ही पुलिस को लगा कि उन्हें बेल्ट सीवर की दिशा में कदमों की आहट सुनाई दी है। दरअसल, वे जीन वालजेन के कदम थे। गश्ती दल के प्रभारी सार्जेंट ने अपनी लालटेन उठाई और दल ने उस दिशा में धुंध में देखना शुरू किया जहाँ से आवाज़ आ रही थी।

जीन वालजेन के लिए यह एक अवर्णनीय क्षण था।

सौभाग्य से, यदि उसने लालटेन को ठीक से देखा, तो लालटेन ने उसे ठीक से नहीं देखा। लालटेन प्रकाश थी और वह परछाई। वह बहुत दूर था और उस स्थान के अंधेरे में घुलमिल गया था। उसने दीवार का सहारा लिया और रुक गया। इसके अलावा, वह समझ नहीं पा रहा था कि उसके पीछे क्या चल रहा है। नींद और भोजन की कमी और उसकी भावनाओं के कारण वह एक दिव्य दृष्टि में चला गया था। उसने एक चमक देखी, और उस चमक के चारों ओर आकृतियाँ। वह क्या था? वह समझ नहीं पाया।

जीन वाल्जेन के रुकने के बाद, आवाज बंद हो गई।

गश्ती दल के जवान सुनते रहे, पर उन्हें कुछ सुनाई नहीं दिया; उन्होंने देखा, पर उन्हें कुछ नज़र नहीं आया। उन्होंने आपस में विचार-विमर्श किया।

उस युग में मोंटमार्ट्रे सीवर के इस बिंदु पर एक प्रकार का चौराहा हुआ करता था जिसे 'डी सर्विस' कहा जाता था, जिसे बाद में बंद कर दिया गया, क्योंकि वहाँ एक छोटी सी आंतरिक झील बन गई थी, जो भारी तूफानों में बारिश के पानी को सोख लेती थी। गश्ती दल इस खुले स्थान में एक समूह बना सकते थे। जीन वालजेन ने इन प्रेतों को एक प्रकार का घेरा बनाते देखा। इन बुलडॉग के सिर एक-दूसरे के करीब आए और आपस में फुसफुसाए।

पहरेदारों द्वारा आयोजित इस परिषद का निष्कर्ष यह निकला कि वे गलत थे, कोई शोर नहीं था, नाली में उलझना व्यर्थ था, इससे केवल समय की बर्बादी होगी, और उन्हें सेंट-मेरी की ओर जल्दी जाना चाहिए; कि अगर कुछ करने लायक था, और किसी "बुसिंगोट" का पता लगाना था, तो वह उसी क्षेत्र में था।

समय-समय पर पार्टियां अपने पुराने अपमानजनक शब्दों को नए सिरे से इस्तेमाल करती हैं। 1832 में, 'बूसिंगोट' शब्द 'जैकोबिन' (जो अब अप्रचलित हो चुका था) और 'डेमागॉग' (डेमागॉग) शब्द के बीच एक अंतरिम शब्द के रूप में इस्तेमाल किया जाता था, जिसने तब से बहुत ही उपयोगी भूमिका निभाई है।

सार्जेंट ने बाईं ओर, सीन नदी के जलविभाजक की ओर मुड़ने का आदेश दिया।

यदि उन्होंने दो टुकड़ियों में बंटकर दोनों दिशाओं में जाने का सोचा होता, तो जीन वालजेन पकड़ा जाता। सब कुछ इसी बात पर टिका था। संभवतः, संभावित लड़ाई और बड़ी संख्या में विद्रोहियों की मौजूदगी को देखते हुए, प्रीफेक्चर के निर्देशों ने गश्ती दल को अलग होने से मना किया था। गश्ती दल ने जीन वालजेन को पीछे छोड़कर अपना मार्च फिर से शुरू कर दिया। इस सारी हलचल में, जीन वालजेन को कुछ भी दिखाई नहीं दिया, सिवाय उस लालटेन के जो अचानक घूम गई।

जाने से पहले, सार्जेंट ने अपने पुलिस वाले के विवेक को शांत करने के लिए जीन वालजेन की दिशा में अपनी बंदूक से गोली चला दी। धमाके की गूंज तहखाने में दूर-दूर तक गूंजती रही, मानो किसी विशालकाय कंकाल की गड़गड़ाहट हो रही हो। प्लास्टर का एक टुकड़ा नदी में गिरा और जीन वालजेन से कुछ कदम दूर पानी

में छलक गया, जिससे उसे पता चला कि गोली उसके सिर के ऊपर बने मेहराब से टकराई है।

लकड़ी के ढांचे पर कुछ देर तक धीमी और सधी हुई कदमों की आवाज गूंजती रही, जो धीरे-धीरे दूर होते जाने पर मंद पड़ती गई; काले रंग की आकृतियों का समूह गायब हो गया, प्रकाश की एक हल्की सी चमक लहराती और तैरती हुई दिखाई दी, जिससे गुंबद में एक लालिमा सी फैल गई जो धीरे-धीरे मंद होती गई और फिर गायब हो गई; सन्नाटा एक बार फिर गहरा हो गया, अंधकार पूर्ण हो गया, अंधापन और बहरापन परछाइयों पर फिर से हावी हो गया; और जीन वालजेन, अभी तक हिलने की हिम्मत न करते हुए, काफी देर तक दीवार से पीठ टिकाकर, कान लगाकर और पुतलियों को फैलाकर, उस प्रेत गश्ती दल के गायब होने को देखता रहा।

III. "स्पिन" मैन

उस दौर की पुलिस को यह न्याय मिलना चाहिए कि सबसे गंभीर सार्वजनिक परिस्थितियों में भी उसने सीवर व्यवस्था और निगरानी से संबंधित अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाया। उसकी नज़र में विद्रोह कोई बहाना नहीं था कि अपराधियों को मनमानी करने दिया जाए और सरकार के खतरे में होने के कारण समाज की उपेक्षा की जाए। सामान्य सेवाएँ असाधारण सेवाओं के साथ-साथ सही ढंग से निभाई गईं और असाधारण सेवाओं से विचलित नहीं हुईं। एक अभूतपूर्व राजनीतिक घटनाक्रम के बीच, संभावित क्रांति के दबाव में, एक पुलिस अधिकारी ने विद्रोह और घेराबंदी से विचलित हुए बिना एक चोर को पकड़ लिया।

ठीक इसी तरह की एक घटना 6 जून की दोपहर को सीन नदी के किनारे, दाहिने तट की ढलान पर, पोंट डेस इनवैलिड्स से थोड़ा आगे घटी थी।

अब वहां कोई बैंक नहीं है। इलाके का स्वरूप पूरी तरह बदल गया है।

उस नदी के किनारे, कुछ दूरी पर खड़े दो आदमी एक-दूसरे को देखते हुए, एक-दूसरे से बचने की कोशिश कर रहे थे। आगे वाला आदमी भागने की कोशिश कर रहा था, जबकि पीछे वाला आदमी उसे पकड़ने की कोशिश कर रहा था।

यह मानो दूर से चुपचाप खेला जा रहा शतरंज का खेल हो। दोनों में से किसी को भी जल्दी नहीं थी और दोनों धीरे-धीरे चल रहे थे, मानो उन्हें डर हो कि जल्दबाजी करने से उनका साथी अपनी गति दोगुनी कर देगा।

ऐसा कहा जा सकता था कि यह भूख अपने शिकार का पीछा कर रही थी, और जानबूझकर ऐसा कर रही थी, लेकिन इसका आभास नहीं दे रही थी। शिकार चालाक और सतर्क था।

शिकार किए जा रहे नेवले और शिकारी कुत्ते के बीच उचित संबंध का अवलोकन किया गया। जो नेवला भागने की कोशिश कर रहा था, उसका हावभाव तुच्छ और देखने में प्रभावशाली नहीं था; जो नेवला उसे पकड़ने की कोशिश कर रहा था, वह देखने में असभ्य था, और उससे सामना करना निश्चित रूप से असभ्य रहा होगा।

पहला व्यक्ति, यह जानते हुए कि वह अधिक कमजोर है, दूसरे से बचता रहा; लेकिन उसने जिस तरह से उससे दूरी बनाई, वह अत्यंत क्रोधित था; जो कोई भी उसे देख पाता, वह उसकी आँखों में भागने की गंभीर शत्रुता और भय में निहित सभी खतरे को देख सकता था।

किनारा सुनसान था; कोई राहगीर नहीं था; इधर-उधर बंधी छोटी नावों में न तो कोई नाविक था और न ही कोई नाव चालक।

सामने वाले घाट के अलावा इन दोनों व्यक्तियों को देखना आसान नहीं था, और उस दूरी से उन्हें ध्यान से देखने वाले किसी भी व्यक्ति को आगे चल रहा व्यक्ति एक चिड़चिड़े, फटे-पुराने और संदिग्ध व्यक्ति की तरह दिखाई देता, जो एक फटी हुई कमीज के नीचे बेचैन और कांप रहा होता, और दूसरा व्यक्ति एक प्रतिष्ठित और आधिकारिक व्यक्ति की तरह दिखाई देता, जिसने अधिकार का प्रतीक फ्रॉक-कोट ठुड्डी तक बटन लगाकर पहना होता।

यदि पाठक इन दोनों व्यक्तियों को करीब से देखे तो शायद वह उन्हें पहचान ले।

दूसरे व्यक्ति का उद्देश्य क्या था?

शायद पहले वाले को अधिक गर्म कपड़े पहनाने में सफलता मिल सके।

जब राज्य द्वारा प्रदत्त वस्त्रधारी व्यक्ति फटेहाल व्यक्ति का पीछा करता है, तो उसका उद्देश्य उसे भी राज्य द्वारा प्रदत्त वस्त्रधारी व्यक्ति बना देना होता है। दरअसल, सारा सवाल रंग का है। नीले वस्त्र पहनना गौरवशाली होता है; लाल वस्त्र पहनना अप्रिय।

नीचे से बैंगनी रंग दिखाई देता है।

संभवतः यह कुछ अप्रियता और इसी प्रकार की कोई दिखावटी बात है जिससे पहला व्यक्ति बचना चाहता है।

यदि दूसरे व्यक्ति ने उसे आगे बढ़ने दिया और अभी तक उसे पकड़ा नहीं था, तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह उसे किसी महत्वपूर्ण सभा स्थल या किसी ऐसे समूह तक ले जाने की उम्मीद में ऐसा कर रहा था जिसे पकड़ना उपयोगी हो। इस जटिल प्रक्रिया को "स्पिनिंग" कहा जाता है।

इस अनुमान को पूरी तरह से संभावित बनाने वाली बात यह है कि सलीके से कपड़े पहने उस व्यक्ति ने किनारे से घाट पर खड़ी एक खाली गाड़ी को गुजरते हुए देखकर चालक को इशारा किया; चालक समझ गया, जाहिर तौर पर उस व्यक्ति को पहचान लिया जिससे उसे बात करनी थी, मुड़ा और घाट के शीर्ष पर खड़े उन दोनों व्यक्तियों के पीछे पैदल चलने लगा। आगे चल रहे सुस्त और फटेहाल व्यक्ति ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया।

चैंप्स-एलिसी के पेड़ों के बीच से एक घोड़ागाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। चालक की प्रतिमा, जिसके हाथ में चाबुक था, प्राचीर के ऊपर से गुजरती हुई दिखाई दे रही थी।

पुलिस अधिकारियों द्वारा अपने एजेंटों को दिए गए गुप्त निर्देशों में से एक में यह लेख शामिल है: "आपात स्थिति में उपयोग के लिए हमेशा एक घोड़ागाड़ी तैयार रखें।"

जब ये दोनों व्यक्ति अपनी-अपनी तरफ से त्रुटिहीन रणनीति के साथ आगे बढ़ रहे थे, तब वे घाट पर एक ढलान वाले स्थान के पास पहुँचे जो किनारे की ओर उतरता था और जहाँ से पासी से आने वाले टैक्सी चालक नदी तक आकर अपने घोड़ों को पानी पिला सकते थे। समरूपता के लिए बाद में इस ढलान वाले स्थान को हटा दिया गया; घोड़े प्यास से मर सकते हैं, लेकिन आँखों को सुकून मिलता है।

संभव है कि ब्लाउज पहने हुए व्यक्ति का इरादा इस ढलान वाले तल पर चढ़ने का रहा हो, ताकि वह चैंप्स-एलिसी में भाग सके, जो पेड़ों से सजा हुआ स्थान है, लेकिन बदले में, पुलिसकर्मियों से भरा हुआ है, और जहां दूसरा व्यक्ति आसानी से हिंसा का प्रयोग कर सकता है।

घाट पर स्थित यह स्थान उस घर से बहुत दूर नहीं है जिसे कर्नल ब्रैक 1824 में मोरेट से पेरिस लाए थे और जिसे "फ्रांकोइस प्रथम का घर" नाम दिया गया था। एक सुरक्षा चौकी पास ही स्थित है।

अपने पहरेदार के लिए यह अत्यंत आश्चर्य की बात थी कि जिस व्यक्ति का पीछा किया जा रहा था, वह पानी पीने के लिए ढलान वाली जगह पर नहीं चढ़ा। वह तट पर बने घाट के साथ-साथ आगे बढ़ता रहा।

उनकी स्थिति स्पष्ट रूप से गंभीर होती जा रही थी।

अगर वह खुद को सीन नदी में फेंकने का इरादा नहीं रखता था, तो वह और क्या करने वाला था?

अब घाट तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं था; कोई दूसरा ढलान वाला रास्ता नहीं था, कोई सीढ़ी नहीं थी; और वे उस जगह के पास थे, जहाँ सीन नदी पोंट डी जेना की ओर मुड़ती है, और जहाँ किनारा लगातार संकरा होता जाता है, एक पतली जीभ की तरह पतला होकर पानी में विलीन हो जाता है। वहाँ वह निश्चित रूप से अपने दाहिनी ओर खड़ी दीवार, बाईं ओर और सामने नदी, और पीछे लगे अधिकारियों के बीच फँस जाएगा।

यह सच है कि तट का यह छोर छह-सात फुट ऊँचे कूड़े के ढेर से छिपा हुआ था, जो किसी विध्वंस के कारण बना था। लेकिन क्या इस आदमी को उम्मीद थी कि वह उस कूड़े के ढेर के पीछे छिप जाएगा, जिसके किनारे से बस बचकर निकलना ही काफी था? यह उपाय बचकाना होता। वह निश्चित रूप से ऐसा सपना नहीं देख रहा था। चोरों की मासूमियत इतनी दूर तक नहीं जाती।

कूड़े का ढेर पानी के किनारे पर एक प्रकार का उभार बना रहा था, जो घाट की दीवार तक एक प्रायद्वीप के रूप में फैला हुआ था।

जिसका पीछा किया जा रहा था, वह व्यक्ति इस छोटे से टीले पर पहुंचा और उसके चारों ओर घूम गया, जिससे वह दूसरे व्यक्ति की नजरों से ओझल हो गया।

क्योंकि वह उसे देख नहीं पा रहा था, इसलिए उसे कोई देख भी नहीं सकता था; उसने इस बात का फायदा उठाते हुए छल-कपट का सारा त्याग कर बहुत तेज़ी से चलना शुरू कर दिया। कुछ ही क्षणों में वह कूड़े के ढेर तक पहुँच गया और उसके चारों ओर घूम गया। वहाँ पहुँचकर वह घोर आश्चर्य से रुक गया। जिस व्यक्ति का वह पीछा कर रहा था, वह वहाँ नहीं था।

ब्लाउज पहने हुए आदमी का पूर्ण ग्रहण।

कूड़े के ढेर से शुरू होने वाला किनारा लगभग तीस कदम लंबा था, फिर वह पानी में समा जाता था जो घाट की दीवार से टकराता था। भागने वाला व्यक्ति पीछा कर रहे व्यक्ति की नज़र में आए बिना सीन नदी में नहीं कूद सकता था। उसका क्या हुआ होगा?

बटन लगे कोट पहने वह आदमी किनारे के छोर तक गया और कुछ पल वहीं सोच में डूबा रहा, उसकी मुट्ठियाँ भींची हुई थीं और आँखें कुछ खोज रही थीं। अचानक उसने अपना माथा पीट लिया। उसने अभी-अभी देखा था कि जहाँ ज़मीन खत्म होती है और पानी शुरू होता है, वहाँ एक बड़ी लोहे की जाली थी, नीची, मेहराबदार, भारी ताले और तीन बड़े कब्ज़ों से सजी हुई। यह जाली, जो घाट के आधार पर बने एक दरवाज़े जैसी थी, नदी और किनारे दोनों तरफ खुलती थी। इसके नीचे से एक काली धारा बह रही थी। यह धारा सीन नदी में जाकर मिलती थी।

भारी, जंग लगी लोहे की सलाखों के पार, एक अंधेरा और गुंबदनुमा गलियारा दिखाई दे रहा था। उस आदमी ने अपनी बाहें मोड़ीं और तिरस्कार भरे भाव से जाली को घूरने लगा।

जब उसकी नज़रें काफ़ी नहीं थीं, तो उसने उसे हटाने की कोशिश की; उसने उसे हिलाया, लेकिन वह मजबूती से टल गई। संभव है कि वह अभी-अभी खुली हो, हालाँकि कोई आवाज़ नहीं आई थी, जो इतनी जंग लगी जाली के लिए एक अनोखी बात थी; लेकिन यह निश्चित है कि वह फिर से बंद हो गई थी। इससे संकेत मिलता है कि जिस व्यक्ति के सामने वह दरवाज़ा अभी खुला था, उसके पास हुक नहीं बल्कि चाबी थी।

यह साक्ष्य अचानक उस व्यक्ति के दिमाग में कौंध गया जो जाली को हिलाने की कोशिश कर रहा था, और इसके परिणामस्वरूप उसने आक्रोश से भरी यह बात कह दी:

“ये तो हद है! सरकारी चाबी!”

फिर, तुरंत ही खुद को संभालते हुए, उन्होंने व्यंग्यात्मक लहजे में बोले गए एक-एक शब्द के इस विस्फोट के माध्यम से अपने भीतर के विचारों की पूरी दुनिया को व्यक्त किया: "आओ! आओ! आओ! आओ!"

फिर भी, किसी न किसी उम्मीद में, चाहे वह उस आदमी को निकलते हुए देखे या अन्य लोगों को अंदर आते हुए, वह कूड़े के ढेर के पीछे धैर्यपूर्वक, एक पॉइंटर की तरह गुस्से से पहरा देने के लिए तैनात हो गया।

वह घोड़ागाड़ी, जो उसके इशारों पर चलती थी, उसके ठीक ऊपर घाट पर, मुंडेर के पास रुक गई। कोचवान को लंबे इंतजार का आभास हो गया था, इसलिए उसने अपने घोड़ों के थूथन गीले जई के थैले में डाल दिए, जो पेरिसवासियों के लिए बहुत आम था (और यह भी बता दें कि सरकार कभी-कभी उन्हें यह जई देती है)। पोंट डी

जेना पर से गुजरने वाले इक्का-दुक्का लोग आगे बढ़ने से पहले, इन दो स्थिर वस्तुओं - किनारे पर खड़े आदमी और घाट पर खड़ी घोड़ागाड़ी - पर एक पल के लिए नजर डालने के लिए मुड़े।

IV. वह अपना क्रूस भी उठाता है

जीन वाल्जेन ने अपना मार्च फिर से शुरू कर दिया था और दोबारा नहीं रुका था।

यह यात्रा दिन-ब-दिन कठिन होती जा रही थी। इन गुंबदों की ऊँचाई अलग-अलग थी; औसत ऊँचाई लगभग पाँच फुट छह इंच थी, और इसे एक पुरुष के कद के हिसाब से मापा गया था; जीन वालजेन को झुकना पड़ रहा था ताकि मारियस गुंबद से न टकरा जाए; हर कदम पर उसे झुकना, फिर उठना और लगातार दीवार को महसूस करना पड़ता था। पत्थरों की नमी और लकड़ी के ढांचे की चिपचिपी प्रकृति के कारण हाथ या पैर को पकड़ने के लिए सहारा बहुत कम था। वह शहर के उस भयानक गंदगी के ढेर में लड़खड़ाता हुआ चल रहा था। हवा के छिद्रों से आती हुई किरणें बहुत लंबे अंतराल पर ही दिखाई देती थीं, और इतनी धुंधली थीं कि पूरी धूप भी चाँद की रोशनी जैसी लगती थी; बाकी सब धुंध, गंदगी, अपारदर्शिता, अंधकार था। जीन वालजेन भूखा और प्यासा था; विशेष रूप से प्यासा; और यह, समुद्र की तरह, पानी से भरा एक ऐसा स्थान था जहाँ मनुष्य पी नहीं सकता था। जैसा कि पाठक जानते हैं, उनकी ताकत असाधारण थी और उनके पवित्र और संयमी जीवन के कारण उम्र के साथ उसमें कोई खास कमी नहीं आई थी, फिर भी वह कमजोर पड़ने लगी। थकान उन पर हावी होने लगी; और जैसे-जैसे उनकी ताकत कम होती गई, उनके बोझ का भार बढ़ता गया। मारियस, जो शायद मर चुका था, निर्जीव शरीरों की तरह उन पर भारी पड़ रहा था। जीन वालजेन ने उन्हें इस तरह पकड़ा हुआ था कि उनकी छाती पर दबाव न पड़े और सांस लेने में कोई परेशानी न हो। उनके पैरों के बीच चूहे तेजी से रेंग रहे थे। उनमें से एक इतना डर गया कि उसने उन्हें काट लिया। समय-समय पर सीवर के मुहाने पर बने छेदों से ताजी हवा उन तक पहुंचती और उन्हें फिर से तरोताजा कर देती।

जब वह बेल्ट-सीवर तक पहुंचा, तब दोपहर के तीन घंटे बीत चुके होंगे।

वह अचानक हुई इस चौड़ाई को देखकर पहले तो चकित रह गया। उसने खुद को एक ऐसी गैलरी में पाया जहाँ उसके फैले हुए हाथ दोनों दीवारों तक नहीं पहुँच पा रहे थे, और एक ऐसे गुंबद के नीचे जहाँ उसका सिर नहीं छू रहा था। वास्तव में, यह विशाल सीवर आठ फीट चौड़ा और सात फीट ऊँचा है।

मोंटमार्ट्रे सीवर और ग्रैंड सीवर के मिलन बिंदु पर, रू डे प्रोवेंस और बूचड़खाने की दो अन्य भूमिगत सुरंगें मिलकर एक वर्ग बनाती हैं। इन चार रास्तों में से, कम समझदार व्यक्ति शायद निर्णय नहीं ले पाता। जीन वालजेन ने सबसे चौड़ा रास्ता चुना, यानी बेल्ट-सीवर। लेकिन यहाँ फिर वही सवाल उठा — क्या उसे नीचे उतरना चाहिए या ऊपर चढ़ना चाहिए? उसने सोचा कि स्थिति में जल्दबाजी आवश्यक है, और उसे अब हर हाल में सीन नदी तक पहुँचना होगा। दूसरे शब्दों में, उसे नीचे उतरना ही होगा। वह बाईं ओर मुड़ा।

यह अच्छा ही हुआ कि उसने ऐसा किया, क्योंकि यह मानना गलत है कि बेल्ट-सीवर के दो निकास हैं, एक बर्सी की ओर और दूसरा पासी की ओर, और यह कि जैसा कि इसके नाम से पता चलता है, यह पेरिस नदी के दाहिने किनारे का भूमिगत घेरा है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि ग्रैंड सीवर, जो कि मेनिलमोंटेंट की पुरानी धारा के अलावा और कुछ नहीं है, यदि कोई इसके ऊपर की ओर जाता है, तो एक बंद नाले में समाप्त होता है, यानी अपने प्राचीन उद्गम बिंदु पर, जो इसका स्रोत था, मेनिलमोंटेंट की पहाड़ी की तलहटी में। क्वार्टियर पोपिनकोर्ट से शुरू होने वाले पेरिस के पानी को एकत्रित करने वाली शाखा से इसका कोई सीधा संपर्क नहीं है, जो प्राचीन आइल लूवियर्स के ऊपर एमेलॉट सीवर के माध्यम से सीन नदी में गिरती है। यह शाखा, जो संग्रहण सीवर को पूरा करती है, मेनिलमोंटेंट स्ट्रीट के नीचे ही एक खंभे द्वारा इससे अलग की गई है, जो ऊपर और नीचे की ओर बहने वाले पानी के विभाजन बिंदु को चिह्नित करता है। यदि जीन वाल्जेन गैलरी पर चढ़ जाता, तो वह हजारों प्रयासों के बाद पहुँचता और थकान से चूर होकर, मरणासन्न अवस्था में, अंधकार में, एक दीवार के पास गिर पड़ता। वह खो जाता।

आवश्यकता पड़ने पर, थोड़ा पीछे हटकर, फिल्स-डु-कैल्वेयर के रास्ते में प्रवेश करके, बशर्ते कि वह कैरेफोर बूचेराट के भूमिगत चौराहे पर न हिचकिचाए, और सेंट-लुई गलियारे से होते हुए, फिर बाईं ओर सेंट-गिल्स गट से होते हुए, फिर दाईं ओर मुड़कर और सेंट-सेबेस्टियन गैलरी से बचते हुए, वह एमेलॉट सीवर तक पहुँच सकता था, और वहाँ से, बशर्ते कि वह बैस्टिल के नीचे स्थित एफ-आकार के संकरे रास्ते में न भटक जाए, वह आर्सेनल के पास सीन नदी पर स्थित निकास तक पहुँच सकता था। लेकिन ऐसा करने के लिए, उसे सीवर के विशाल गड्ढों और सभी खुले स्थानों से भली-भांति परिचित होना आवश्यक था।

अब, हमें फिर से इस बात पर ज़ोर देना होगा कि वह उस भयानक नाले के बारे में कुछ भी नहीं जानता था जिससे वह गुज़र रहा था; और यदि किसी ने उससे पूछा होता कि वह क्या कर रहा है, तो वह उत्तर देता: "रात में।"

उसकी सूझबूझ कारगर साबित हुई। नीचे उतरना वास्तव में संभावित सुरक्षा थी।

वह अपने दाहिनी ओर दो संकरे रास्तों को छोड़कर चला गया जो रू लाफिट और रू सेंट-जॉर्जेस के नीचे एक पंजे के आकार में शाखाओं में बंट जाते हैं और चाउसी डी'एंटिन का लंबा, दो भागों में बंटा हुआ गलियारा भी वहीं था।

एक समृद्ध गली से थोड़ा आगे, जो शायद मैडेलीन शाखा थी, वह रुक गया। वह बेहद थका हुआ था। एक ठीक-ठाक बड़े छेद से, जो शायद रुए डी'अंजू का मैनहोल था, लगभग तेज रोशनी आ रही थी। जीन वालजेन ने, एक भाई के अपने घायल भाई के प्रति दिखाए जाने वाले कोमल भाव से, मारियस को सीवर के चबूतरे पर लिटा दिया। मारियस का खून से सना चेहरा उस छेद की धुंधली रोशनी में किसी कब्र की राख जैसा लग रहा था। उसकी आँखें बंद थीं, उसके बाल कनपटी पर ऐसे चिपके हुए थे जैसे किसी चित्रकार के ब्रश लाल रंग में सूख गए हों; उसके हाथ बेजान और शिथिल लटके हुए थे। उसकी टाई की गाँठ में खून का थक्का जम गया था; उसके अंग ठंडे थे, और मुँह के कोनों पर खून के थक्के जमे हुए थे; उसकी कमीज उसके घावों में धंस गई थी, उसके कोट का कपड़ा जीवित मांस में बने गहरे घावों को रगड़ रहा था। जीन वाल्जेन ने अपनी उंगलियों के सिरों से वस्त्रों को हटाते हुए मारियस की छाती पर हाथ रखा; उसका दिल अभी भी धड़क रहा था। जीन वाल्जेन ने अपनी कमीज फाड़ी, युवक के घावों पर यथासंभव पट्टी बांधी और बहते खून को रोका; फिर उस धुंधली रोशनी में, जो अभी भी बेहोश और लगभग बेजान पड़ा था, मारियस के ऊपर झुककर, उसने अवर्णनीय घृणा से उसे देखा।

मारियस के वस्त्रों को अस्त-व्यस्त करने पर उसे उसकी जेबों में दो चीजें मिलीं: पिछली शाम को वहीं छूट गया रोटी का टुकड़ा और मारियस का पर्स। उसने रोटी का टुकड़ा खा लिया और पर्स खोला। पहले पृष्ठ पर उसे मारियस द्वारा लिखी गई चार पंक्तियाँ मिलीं। पाठक को याद होगा:

“मेरा नाम मारियस पोंटमर्सी है। मेरे पार्थिव शरीर को मेरे दादा, एम. गिलनोर्मंड, रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर, नंबर 6, माराइस में ले जाइए।”

जीन वाल्जेन ने हवा के छिद्र की रोशनी में ये चार पंक्तियाँ पढ़ीं और कुछ पल के लिए जैसे किसी विचार में लीन होकर धीमी आवाज़ में दोहराया: “रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर, नंबर 6, श्रीमान गिलनोर्मंड।” उसने मारियस की जेब में पर्स रख दिया। उसने खाना खा लिया था, उसकी ताकत लौट आई थी; उसने मारियस को एक बार फिर अपनी पीठ पर उठाया, उसका सिर सावधानी से अपने दाहिने कंधे पर रखा और सीवर में नीचे उतरना जारी रखा।

मेनिलमोंटेंट घाटी के मार्ग के अनुसार निर्देशित ग्रैंड सीवर लगभग दो लीग लंबा है। इसका एक उल्लेखनीय हिस्सा पक्का है।

पेरिस की सड़कों के नामों की यह मशाल, जिससे हम पाठक के लिए जीन वालजेन की भूमिगत यात्रा को रोशन कर रहे हैं, जीन वालजेन के पास स्वयं नहीं थी। उसे कुछ भी नहीं बता सकता था कि वह शहर के किस क्षेत्र से गुजर रहा है, और न ही यह कि उसने कौन सा रास्ता चुना है। केवल समय-समय पर दिखाई देने वाली प्रकाश की धुंधली होती रोशनी से ही उसे संकेत मिला कि सूरज फुटपाथ से छिप रहा है, और दिन जल्द ही समाप्त होने वाला है; और ऊपर से गुजरने वाले वाहनों की आवाज, जो पहले निरंतर थी, अब रुक-रुक कर आ रही थी, और फिर लगभग बंद हो गई, उससे उसने निष्कर्ष निकाला कि वह अब मध्य पेरिस के नीचे नहीं है, और वह किसी सुनसान क्षेत्र की ओर बढ़ रहा है, बाहरी बुलेवार्ड या सबसे बाहरी घाटों के आसपास। जहाँ कम घर और सड़कें होती हैं, वहाँ सीवर में हवा के छेद भी कम होते हैं। जीन वालजेन के चारों ओर अंधेरा गहराता गया। फिर भी, वह अंधेरे में रास्ता टटोलते हुए आगे बढ़ता रहा।

अचानक यह अंधेरा भयानक हो गया।

V. रेत के मामले में, स्त्री के मामले की तरह, एक ऐसी सूक्ष्मता होती है जो कपटी होती

है।

उसे ऐसा महसूस हुआ कि वह पानी में प्रवेश कर रहा है, और उसके पैरों के नीचे अब कोई पक्की सतह नहीं बल्कि केवल कीचड़ है।

कभी-कभी ब्रिटनी या स्कॉटलैंड के कुछ तटों पर, कोई व्यक्ति, चाहे वह यात्री हो या मछुआरा, जब ज्वार के समय तट से दूर समुद्र तट पर चल रहा होता है, तो अचानक देखता है कि पिछले कुछ मिनटों से उसे चलने में कठिनाई हो रही है। पैरों के नीचे की ज़मीन तारकोल जैसी है; उसके तलवे उससे चिपक जाते हैं; वह अब रेत नहीं, बल्कि चिड़ियों की धूल है। किनारा बिल्कुल सूखा है, लेकिन जैसे ही वह कदम रखता है, पैर उठाते ही पैरों के निशान पानी से भर जाते हैं। हालांकि, आँखों को कोई बदलाव नज़र नहीं आता; विशाल समुद्र तट चिकना और शांत है, सारी रेत एक जैसी दिखती है, ठोस और ठोस मिट्टी में कोई अंतर नहीं दिखता; रेत के कीड़ों का छोटा-सा झुंड राहगीर के पैरों के नीचे उछलता-कूदता रहता है।

वह आदमी अपने रास्ते पर चलता रहता है, ज़मीन की ओर मुड़ता है, किनारे तक पहुँचने की कोशिश करता है। वह बेचैन नहीं है। किस बात की बेचैनी? उसे बस इतना एहसास है कि हर कदम के साथ उसके पैरों का भारीपन बढ़ता जा रहा है। अचानक वह रेत में धंस जाता है। दो-तीन इंच धंस जाता है। उसे पक्का यकीन है कि वह सही रास्ते पर नहीं है; वह रुककर अपनी स्थिति का जायजा लेता है। अचानक उसकी नज़र अपने पैरों पर पड़ती है; उसके पैर गायब हो गए हैं। रेत ने उन्हें ढक लिया है। वह अपने पैरों को रेत से बाहर निकालता है, वापस लौटने की कोशिश करता है, पीछे मुड़ता है, और पहले से भी ज़्यादा गहरे धंस जाता है। रेत उसके टखनों तक आ जाती है, वह खुद को रेत से छुड़ाता है और बाईं ओर छलांग लगाता है, रेत उसके पैरों के बीच तक पहुँच जाती है, वह दाईं ओर छलांग लगाता है, रेत उसके घुटनों तक आ जाती है। फिर, अवर्णनीय भय के साथ, उसे

एहसास होता है कि वह दलदल में फँस गया है, और उसके नीचे वह भयानक माध्यम है जिसमें न तो कोई इंसान चल सकता है और न ही कोई मछली तैर सकती है। वह अपना बोझ, यदि कोई हो तो, फेंक देता है; वह खुद को हल्का कर लेता है, जैसे कोई संकटग्रस्त जहाज; लेकिन बहुत देर हो चुकी होती है, रेत उसके घुटनों तक आ चुकी होती है।

वह चिल्लाता है, अपनी टोपी या रुमाल लहराता है, रेत लगातार उसका पीछा करती रहती है; अगर किनारा सुनसान हो, ज़मीन बहुत दूर हो, रेत का किनारा बदनाम हो, आस-पास कोई नायक न हो, तो सब कुछ खत्म हो जाता है, वह रेत में समा जाने के लिए अभिशप्त है। वह उस भयानक अंत्येष्टि के लिए अभिशप्त है, लंबी, अटल, निर्दयी, जिसे न तो धीमा किया जा सकता है और न ही तेज़ किया जा सकता है, जो घंटों तक चलती है, जिसका कोई अंत नहीं होता, जो आपको स्वस्थ अवस्था में सीधा, स्वतंत्र रूप से जकड़ लेती है, जो आपको पैरों से नीचे खींचती है, जो आपके हर प्रयास पर, आपके हर चीख पर, आपको थोड़ा और नीचे खींचती है, जो आपके प्रतिरोध के लिए दुगनी पकड़ से आपको दंडित करने का आभास देती है, जो मनुष्य को धीरे-धीरे धरती पर लौटने के लिए मजबूर करती है, जबकि उसे क्षितिज, पेड़ों, हरे-भरे देश, मैदान पर बसे गांवों के धुएं, समुद्र पर जहाजों के पाल, उड़ते और गाते पक्षियों, सूर्य और आकाश का अवलोकन करने का समय देती है। यह समाधि एक ज्वार की तरह है, जो धरती की गहराइयों से जीवित मनुष्य की ओर बढ़ती है। हर मिनट मृतकों की परतें धीरे-धीरे उतरती जाती हैं। बेचारा मनुष्य बैठने, लेटने, चढ़ने की कोशिश करता है; उसका हर प्रयास उसे और गहरे धंसा देता है; वह सीधा खड़ा होता है, डूबता चला जाता है; उसे लगता है जैसे वह निगला जा रहा है; वह चीखता है, गिड़गिड़ाता है, बादलों से गुहार लगाता है, हाथ मलता है, हताश हो जाता है। देखो, वह पेट तक रेत में धंसा है, रेत उसकी छाती तक पहुँच गई है, अब वह केवल एक खोखला शरीर है। वह हाथ उठाता है, कराहता है, समुद्र तट पर अपने नाखून भींचता है, उस राख से चिपके रहने की कोशिश करता है, उस नरम आवरण से उठने के लिए कोहनियों का सहारा लेता है, और बेतहाशा सिसकता है; रेत ऊपर चढ़ती जाती है। रेत उसके कंधों तक पहुँच गई है, रेत उसके गले तक; अब केवल उसका चेहरा दिखाई दे रहा है। उसका मुँह ज़ोर से रोता है, रेत उसे भर देती है; सन्नाटा। उसकी आँखें अभी भी निहार रही हैं, रेत उन्हें ढक लेती है, रात छा जाती है। फिर उसकी भौंहें सिकुड़ जाती हैं,

रेत के ऊपर एक छोटा सा बाल फड़फड़ाता है; एक हाथ आगे बढ़ता है, समुद्र तट की सतह को भेदता है, लहरें उठती हैं और गायब हो जाता है। एक मनुष्य का भयावह अंत।

कभी घुड़सवार अपने घोड़े के साथ डूब जाता है; कभी गाड़ीवाला अपनी गाड़ी के साथ निगल लिया जाता है; उस किनारे पर सब कुछ डूब जाता है। यह पानी के अलावा कहीं और होने वाला जहाज़ का मलबा है। यह धरती का मनुष्य को डुबोना है। सागर से ओतप्रोत धरती एक जाल बन जाती है। यह मैदान का रूप धारण करती है और लहर की तरह चौड़ी हो जाती है। अथाह गहराई इन छल-कपटों का शिकार है।

यह दुखद नियति, जो कुछ समुद्री तटों पर हमेशा संभव होती है, तीस साल पहले पेरिस के सीवरों में भी संभव थी।

1833 में शुरू किए गए महत्वपूर्ण कार्यों से पहले, पेरिस की भूमिगत जल निकासी व्यवस्था अचानक भूस्खलन का शिकार होती थी।

पानी कुछ खास निचली परतों में रिस गया, जो बेहद भुरभुरी थीं; पत्थरों से बना फुटपाथ, जो पुराने सीवरों की तरह था, या नई दीर्घाओं की तरह कंक्रीट पर सीमेंट से बना था, अब सहारा न होने के कारण ढह गया। इस तरह के फर्श में मोड़ का मतलब दरार होता है, यानी टूटना। ढांचा एक निश्चित लंबाई तक ढह गया। इस दरार को, कीचड़ की खाई के अंतराल को, स्थानीय बोली में 'फॉन्टिस' कहा जाता था। फॉन्टिस क्या है? यह समुद्र तट की दलदली रेत है जो अचानक धरती की सतह के नीचे मिल जाती है; यह सीवर में मोंट सेंट-मिशेल का समुद्र तट है। भीगी हुई मिट्टी मानो पिघल रही होती है; उसके सभी अणु नरम माध्यम में निलंबित होते हैं; यह न तो मिट्टी है और न ही पानी। गहराई कभी-कभी बहुत अधिक होती है। ऐसे सामना से ज्यादा भयावह कुछ नहीं हो सकता। अगर पानी हावी हो, तो मौत तुरंत होती है, इंसान उसमें समा जाता है; अगर मिट्टी हावी हो, तो मौत धीरे- धीरे होती है।

क्या कोई ऐसी मौत की कल्पना कर सकता है? अगर समुद्र तट पर धरती में समा जाना भयानक है, तो गंदे नाले में क्या ही भयानक होगा? खुली हवा, दिन का उजाला, साफ क्षितिज, वो विशाल ध्वनियाँ, वो मुक्त बादल जिनसे जीवन बरसता है, दूर से दिखाई देने वाली नावें, हर तरह के रूप में छिपी उम्मीद, राहगीरों की संभावना, आखिरी पल तक मिलने वाली मदद—इन सबके बजाय, बहरापन,

अंधापन, एक काला गड्ढा, पहले से तैयार कब्र का भीतरी हिस्सा, एक आवरण के नीचे कीचड़ में मौत! गंदगी से धीरे-धीरे दम घुटना, एक पत्थर का बक्सा जहाँ घुटन कीचड़ में अपना पंजा फैलाकर आपका गला जकड़ लेती है; मौत की घुरघुराहट में मिली दुर्गंध; समुद्र तट की जगह कीचड़, तूफान की जगह सल्फरयुक्त हाइड्रोजन, समुद्र की जगह गोबर! और चीखना, दांत पीसना, तड़पना, संघर्ष करना और पीड़ा सहना, जबकि वह विशाल शहर, जिसे इन सब बातों का कोई अंदाजा नहीं है, हमारे सिर के ऊपर मंडरा रहा हो!

इस प्रकार मरने का खौफ शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता! मृत्यु कभी-कभी अपनी क्रूरता को एक खास तरह की गरिमा से ढक लेती है। चिता पर, जहाज़ डूबने पर, कोई महान हो सकता है; आग की लपटों में, चाहे झाग में हो, एक शानदार मुद्रा संभव है; वहाँ मरते समय व्यक्ति का रूप बदल जाता है। लेकिन यहाँ नहीं। मृत्यु गंदी है। मरना अपमानजनक है। तैरते हुए सर्वोच्च दृश्य भी नीच हैं। कीचड़ शर्म का पर्याय है। यह तुच्छ, बदसूरत, बदनाम है। क्लेरेंस की तरह माल्वोइसी के गड्ढे में मरना जायज़ है; एस्कौबलू की तरह किसी सफाईकर्मी की खाई में मरना भयानक है। उसमें संघर्ष करना घिनौना है; मृत्यु की पीड़ा से गुज़रते हुए, व्यक्ति छटपटाता रहता है। नरक के लिए पर्याप्त परछाइयाँ हैं, और इतना कीचड़ है कि वह दलदल के सिवा कुछ नहीं रह जाता, और मरते हुए व्यक्ति को पता नहीं होता कि वह प्रेत बनने वाला है या मेंढक।

अन्य सभी जगहों पर समाधि भयावह होती है; यहाँ यह विकृत है।

मिट्टी की गुणवत्ता के अनुसार, गड्ढों की गहराई, लंबाई और घनत्व में भिन्नता होती थी। कभी-कभी एक गड्ढा तीन या चार फीट गहरा होता था, कभी आठ या दस फीट; कभी-कभी उसका तल अथाह होता था। कहीं कीचड़ लगभग ठोस था, कहीं लगभग तरल। लुनियरे के गड्ढे में एक आदमी को गायब होने में एक दिन लग जाता, जबकि फिलिपो के दलदल में वह पाँच मिनट में ही समा जाता। कीचड़ का घनत्व उसके भार के अनुसार कम या ज्यादा होता है। जहाँ एक आदमी मर जाएगा, वहाँ एक बच्चा बच सकता है। सुरक्षा का पहला नियम है हर तरह का बोझ हटा देना। हर सीवर कर्मचारी जिसे जमीन खिसकती हुई महसूस होती थी, वह सबसे पहले अपने औजारों का थैला, या अपनी टोकरी, या अपना फावड़ा फेंक देता था।

ये दरारें कई कारणों से बनी थीं: मिट्टी की भुरभुरी प्रकृति; मनुष्य की पहुँच से परे गहराई में भूस्खलन; गर्मियों की भीषण बारिश; सर्दियों की

लगातार बाढ़; और लंबे समय तक चलने वाली हल्की फुहारें। कभी-कभी रेतीली या चिकनी मिट्टी पर बने आस-पास के घरों के भार से भूमिगत दीर्घाओं की मेहराबें धंस जाती थीं और एक तरफ झुक जाती थीं, या कभी-कभी फर्श की मेहराब इस भारी दबाव के कारण फट जाती थी। इसी तरह, एक सदी पहले पार्थेनन के निर्माण के दौरान, सेंट-जेनेवीव पहाड़ी की मेहराबों का एक हिस्सा नष्ट हो गया था। जब घरों के दबाव से सीवर टूट जाता था, तो कभी-कभी ऊपर की सड़क पर पक्के पत्थरों के बीच आरी के दांतों जैसी एक दरार दिखाई देती थी; यह दरार टूटी हुई मेहराब की पूरी लंबाई में लहरदार रेखा में विकसित हो जाती थी, और फिर, समस्या दिखाई देने पर, तुरंत उपाय किया जा सकता था। अक्सर ऐसा भी होता था कि आंतरिक क्षति का कोई बाहरी निशान नहीं दिखता था, और ऐसे में सीवर कर्मचारियों का बुरा हाल हो जाता था। बिना सावधानी बरते सीवर में प्रवेश करने पर उनके मारे जाने का खतरा रहता था। प्राचीन अभिलेखों में कई ऐसे सफाईकर्मियों का उल्लेख है जो इसी तरह गड्ढों में दब गए थे। इनमें कई नाम दिए गए हैं; उनमें से एक नाम ब्लेज़ पौट्रेन का है, जो रू कैरेम-प्रेनेंट के मैनहोल के नीचे दलदल में दबकर मर गया था। यह ब्लेज़ पौट्रेन निकोलस पौट्रेन का भाई था, जो 1785 में, जब चार्नियर डेस इनोसेंट्स नामक कब्रिस्तान बंद हुआ, तब उसका अंतिम कब्र खोदने वाला था।

वहाँ युवा और आकर्षक विस्काउंट डी'एस्कौबले भी थे, जिनके बारे में हमने अभी बात की है, जो लेरिडा की घेराबंदी के नायकों में से एक थे, जहाँ उन्होंने रेशमी मोजे पहनकर और वायलिन बजाते हुए आक्रमण किया था। एक रात, डी'एस्कौबले अपनी चचेरी बहन, डचेस डी सोर्डिस के घर पर अचानक पकड़े गए और ब्यूट्रेलिस सीवर के दलदल में डूब गए, जहाँ उन्होंने ड्यूक से बचने के लिए शरण ली थी। मैडम डी सोर्डिस को जब उनकी मृत्यु की सूचना मिली, तो उन्होंने अपनी इत्र की बोतल माँगी और अपने नमक को सूंघते हुए रोने के बजाय सिसकियाँ लीं। ऐसे मामलों में, कोई भी प्रेम स्थायी नहीं रहता; सीवर उसे बुझा देता है। हीरो लिएंडर के शव को धोने से इनकार कर देता है। थिस्बे पिरामस की उपस्थिति में अपनी नाक बंद कर लेती है और कहती है: "उफ़!"

VI. फॉन्टिस

जीन वाल्जेन ने खुद को एक फोंटिस (चर्च के एक गुप्त स्थान) की उपस्थिति में पाया।

उस दौर में चैंप्स-एलिसीज़ की निचली ज़मीन में इस तरह का दलदल आम था, जिसे जलविद्युत कार्यों में संभालना मुश्किल था और इसकी अत्यधिक तरलता के कारण यह भूमिगत संरचनाओं के लिए अच्छा संरक्षक नहीं था। इसकी तरलता सेंट-जॉर्जेस क्वार्टियर की रेत की विषमता से भी कहीं अधिक थी, जिसे केवल कंक्रीट की नींव पर बने पत्थर के निर्माण से ही पार किया जा सकता था, और डेस मार्टियर्स क्वार्टियर की गैस से संक्रमित चिकनी मिट्टी की परतों से भी अधिक थी, जो इतनी तरल थी कि गैलरी डेस मार्टियर्स के नीचे से गुजरने का एकमात्र तरीका कच्चा लोहा पाइप था। सन् 1836 में जब फाउबर्ग सेंट-होनोरे के नीचे स्थित पुराने पत्थर के सीवर को, जिसमें अब हम जीन वालजेन को देखते हैं, पुनर्निर्माण के उद्देश्य से ध्वस्त किया गया, तो चैंप्स-एलिसी से लेकर सीन नदी तक फैली दलदली मिट्टी ने इतनी बड़ी बाधा उत्पन्न की कि यह कार्य लगभग छह महीने तक चला, जिससे नदी किनारे रहने वाले निवासियों, विशेषकर होटल और घोड़ागाड़ी मालिकों, ने भारी विरोध किया। यह काम न केवल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक था, बल्कि खतरनाक भी था। यह सच है कि साढ़े चार महीने तक लगातार बारिश हुई और सीन नदी में तीन बार बाढ़ आई।

जीन वालजेन को जिस गड्ढे का सामना करना पड़ा था, वह पिछले दिन की भारी बारिश के कारण बना था। नीचे की रेत से बुरी तरह क्षतिग्रस्त ज़मीन धंस गई थी और पानी का बहाव रुक गया था। पानी रिसने लगा और ज़मीन खिसक गई। ज़मीन का निचला हिस्सा कीचड़ में धंस गया था। कितना धंसा था? कहना असंभव है। वहाँ का अंधेरा अन्य जगहों से कहीं अधिक घना था। वह रात के अंधेरे में स्थित एक दलदली गड्ढा था।

जीन वालजेन को लगा जैसे उसके पैरों तले ज़मीन खिसक रही हो। वह इस कीचड़ में धंस गया। सतह पर पानी था, तल में कीचड़। उसे इसे पार करना ही था। पीछे हटना नामुमकिन था। मारियस मर रहा था, और जीन वालजेन पूरी तरह थक चुका था। इसके

xxxxxx, xx xxxxx xxxxx? xxx xxxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxx xxxxxx xx xx xxxxxx xxxxxxxx xxxxx xxxxx xx xxx xxx xxxxxx xxxxx-xxxxx xx xxx xxxxxx xxx, xxxxx xxx xx xxxxx xxxxxx xxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xx xx xxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxx x xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxx xxxxxx, xxxxxx xx xxx xxxxx xx xxx xxxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xx xx xxxxx xxxxx xxx xx xxxxxx xxx xxx xx xx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxx xx xxxxxx, xx xx xxxxx xx xxx xxxxx xxx xx, xxxxxxx xx xx xxxxxx xx xxx xxxxx xxx xxxxx xxx xxxxxxx xx xxx xxxxxxx xxxxxx xx xxx xx xxxxx xxxxxx xxxxx xxx xxx xxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xxx xxx xxxxxx xxx, xx xxxxx xx xxx xx xxxxx xxx

xxxxx xxxxx xxx xx x xxx xx; xxx xx xxx xx xx xx xxx xxx xx; xxx xxxxxx xx xxxxxx xxx xx xxxxxx xxx xx, xxxxxx xxxxx xxxxxxxx xx xx xx xxx xxx xx xxx xxx xxx xxxxxx xx xxx xxxxxx xxxxx xx, xxx xxxxx xxx xxxxx xx xx xx xxx xxxxx xxxxxxx xx xxx xxx xxx xx xx xxxxxxxxxx xx xxxxxx xx xxx xxxxx; xxxxxx xx xxxxxx xx xxx xxx xx xxxxx xxxxx xxx xxxxx xx xxx xx xx xxxxxx xxxxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xxxxxxxx xxx xx xxx xxxxx xxxxxx xx xxx xxxxxxx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxx

xx xx xx xxxxx xxxxx xxx xxx xxx; xxxxx xx xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xx xx xxxxx; xx xxxxxxx xxx xxx xxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxxxx xxxxxx xx xx xx xxx xxx xx xx xxxxxxxxx xxx xxxxxx xxx xxxxxxx xx; xxxxx xxxxx xxx xxxxxxx xx xxxxx xxx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xx xxxxxxx xxx xxxxx; xxxxx xxxxxx xxx xxxxx xxx xxx xxxxxxx; xxxxx xxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxxxx; xx xxxxxxx xx xxx x xxx xxx

xxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xx xx xxx xx xxxxxxx xx xxx xx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xxx xxxxxx xxx xxxxx xx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxx xxx xx xxx xxx

xx xxxxxxx, xxxxxx xxx xxx xxxxx xxx xxxxx xxxxxx, xxxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xx, xx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxx xxxxx xx, xx xxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xx xxx xx xx xxxxxxx xxx xxxxxx xxx xxx xxxxxx xxx xx xxx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxxx xx xxx xxxxx xxx xx xxx xxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xx xxxxxxx, xx xxxxxx xxx xx xxxxx xxx xx, xxxxxx xxx xx, xx xxxxxxxxx xxxxx xxxxx

तल था, और एक बार इस तल पर पहुँचने के बाद वह सुरक्षित था। जीन वालजेन इस ढलान वाले तल पर चढ़े और दलदल के दूसरी ओर पहुँच गए।

पानी से बाहर निकलते ही वह एक पत्थर से टकरा गया और घुटनों के बल गिर पड़ा। उसने सोचा कि यह तो होना ही था, और वह कुछ देर वहीं पड़ा रहा, उसका मन ईश्वर से की गई प्रार्थनाओं में लीन था।

वह कांपता हुआ, ठंड से ठिठुरता हुआ, दुर्गंधयुक्त शरीर लिए खड़ा हुआ, उस मरणासन्न व्यक्ति के नीचे झुका हुआ था जिसे वह अपने पीछे घसीट रहा था, उसका पूरा शरीर कीचड़ से लथपथ था, और उसकी आत्मा एक अजीब से प्रकाश से भरी हुई थी।

VII. कभी-कभी व्यक्ति तब फंस जाता है जब उसे लगता है कि वह उतर रहा है।

वह एक बार फिर अपने रास्ते पर चल पड़ा।

हालांकि उसने अपनी जान तो नहीं दी थी, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी सारी ताकत वहीं छोड़ आया हो। उस अथक प्रयास ने उसे पूरी तरह थका दिया था। उसकी कमजोरी इतनी बढ़ गई थी कि उसे हर तीन-चार कदम पर सांस लेने के लिए रुकना पड़ता था और दीवार का सहारा लेना पड़ता था। एक बार तो उसे मारियस की स्थिति बदलने के लिए बेंच पर बैठना पड़ा और उसे लगा कि उसे वहीं बैठे रहना पड़ेगा। लेकिन उसकी ताकत भले ही खत्म हो गई थी, पर ऊर्जा नहीं। वह फिर उठ खड़ा हुआ।

वह बेताब होकर, लगभग तेज़ी से चलता रहा, सौ कदम तक लगभग बिना साँस लिए चलता रहा, और अचानक दीवार से टकरा गया। वह सीवर के एक मोड़ पर पहुँच गया था, और सिर झुकाए हुए मोड़ पर पहुँचकर दीवार से जा टकराया। उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं, और अपने सामने दूर, बहुत दूर, सीवर के अंतिम छोर पर उसे एक रोशनी दिखाई दी। इस बार वह भयानक रोशनी नहीं थी; यह अच्छी, सफेद रोशनी थी। दिन का उजाला था। जीन वालजेन को निकास दिखाई दिया।

एक शापित आत्मा, जो भट्टी के बीचोंबीच अचानक नरक के द्वार को देख ले, वही अनुभव करेगी जो जीन वालजेन ने किया था। वह अपने जले हुए पंखों के ठूंठों के साथ उस तेजस्वी द्वार की ओर बेतहाशा दौड़ेगी। जीन वालजेन को अब थकान का एहसास नहीं था, उसे मारियस का भार भी महसूस नहीं हो रहा था, उसके पैर फिर से लोहे के हो गए थे, वह चलने के बजाय दौड़ रहा था। जैसे-जैसे वह पास पहुंचा, द्वार और भी स्पष्ट होता गया। यह एक नुकीला मेहराब था, जो गुंबद से नीचा था, जो धीरे-धीरे संकरा होता गया, और गैलरी से भी संकरा था, जो गुंबद के नीचे जाते ही बंद होती चली गई। सुरंग एक फ़नल के अंदरूनी हिस्से की तरह समाप्त होती थी; एक दोषपूर्ण निर्माण, जो जेलों के दरवाजों से नकल किया गया था, जेल में तार्किक, सीवर में अतार्किक, और जिसे बाद में सुधारा गया।

जीन वाल्जेन आउटलेट पर पहुंच गया।

वहाँ वह रुक गया।

यह निश्चित रूप से एक रास्ता था, लेकिन वह बाहर नहीं निकल सका।

मेहराब एक भारी जाली से बंद था, और वह जाली, जो देखने में जंग लगे कब्जों पर शायद ही कभी हिलती थी, एक मोटे ताले से पत्थर के चौखट पर जकड़ी हुई थी, जो जंग से लाल होकर एक विशाल ईंट जैसा दिखता था। चाबी का छेद और लोहे के खंभे में गहराई से धंसा हुआ मजबूत कुंडा दिखाई दे रहा था। दरवाजा स्पष्ट रूप से दोहरे ताले से बंद था। यह उन जेल के तालों में से एक था जिन्हें पुराने पेरिस में बड़े चाव से इस्तेमाल किया जाता था।

जाली के उस पार खुली हवा, नदी, दिन का उजाला, किनारा था, जो बहुत संकरा था लेकिन भागने के लिए पर्याप्त था। दूर के घाट, पेरिस, वह खाड़ी जिसमें कोई आसानी से छिप सकता है, विशाल क्षितिज, स्वतंत्रता। दाईं ओर, नदी के बहाव की दिशा में, जेना का पुल दिखाई दे रहा था, बाईं ओर, नदी के बहाव की दिशा में, इनवैलिड्स का पुल; यह जगह रात का इंतज़ार करने और भागने के लिए एक शुभ स्थान होती। यह पेरिस के सबसे एकांत स्थानों में से एक था; वह किनारा जो ग्रैंड-कैलो के सामने है। मक्खियाँ जाली की सलाखों से अंदर-बाहर आ-जा रही थीं।

शाम के साढ़े आठ बज रहे होंगे। दिन ढल रहा था।

जीन वालजेन ने मारियस को दीवार के सहारे, गुंबद के सूखे हिस्से पर लिटा दिया। फिर वह जाली के पास गया और दोनों मुट्ठियों से सलाखों को जकड़ लिया; उसने उसे इतनी ज़ोर से झटका दिया कि वह हिली नहीं। जाली टस से मस नहीं हुई। जीन वालजेन ने एक-एक करके सलाखों को पकड़ा, इस उम्मीद में कि शायद वह सबसे कमज़ोर सलाख को तोड़कर उससे एक लीवर बना ले जिससे दरवाज़ा उठाया जा सके या ताला तोड़ा जा सके। एक भी सलाख नहीं हिली। जैसे बाघ के दांत भी अपनी जगह पर इतने मज़बूती से नहीं जमे होते। कोई लीवर नहीं, कोई तोड़-फोड़ संभव नहीं। रुकावट अजेय थी। दरवाज़ा खोलने का कोई रास्ता नहीं था।

तो क्या उसे वहीं रुक जाना चाहिए था? वह क्या करता? उसका क्या होता? उसमें अपने कदम पीछे हटाने, अपनी यात्रा फिर से शुरू करने की ताकत नहीं थी। इसके अलावा, वह उस दलदल को कैसे पार करता जिससे वह किसी चमत्कार की तरह बच निकला

था? और उस दलदल के बाद, क्या वहाँ पुलिस गश्त नहीं थी, जिससे दोबारा बचना तो नामुमकिन था? और फिर, वह कहाँ जाता? उसे किस दिशा में जाना चाहिए? ढलान पर चलने से वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाता। अगर वह किसी दूसरे निकास तक पहुँचता, तो वह उसे किसी प्लग या जाली से बंद पाता। हर निकास निस्संदेह इसी तरह बंद था। संयोग से वह जाली खुल गई थी जिससे वह अंदर आया था, लेकिन यह स्पष्ट था कि बाकी सभी सीवर के मुहाने बंद थे। वह बस एक जेल में पहुँचने में कामयाब हुआ था।

सब कुछ खत्म हो गया था। जीन वालजेन ने जो कुछ भी किया था, वह सब व्यर्थ था। थकावट का अंत असफलता में हुआ था।

वे दोनों मृत्यु के विशाल और अंधकारमय जाल में फँस गए थे, और जीन वाल्जेन को ऐसा महसूस हो रहा था मानो कोई भयानक मकड़ी उन काले धागों पर रेंग रही हो और अँधेरे में काँप रही हो। उसने जाली की ओर पीठ फेर ली और फुटपाथ पर गिर पड़ा, बैठने की बजाय ज़मीन पर धँस गया, मारियस के पास, जो अभी भी बिना हिले- डुले, अपना सिर घुटनों के बीच झुकाए बैठा था। यही उसकी पीड़ा की आखिरी बूँद थी।

इस गहरे अवसाद के दौरान वह क्या सोच रहा था? न तो अपने बारे में, न ही मारियस के बारे में। वह कोसेट के बारे में सोच रहा था।

VIII. फटी हुई कोट की पूंछ

इस दंडवत प्रणाम के बीच, किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा और धीमी आवाज़ में उससे कहा:

"आधे हिस्से।"

उस अंधकार में कोई व्यक्ति? निराशा से बढ़कर सपने जैसा कुछ नहीं होता। जीन वाल्जेन को लगा कि वह सपना देख रहा है। उसे कोई पदचाप सुनाई नहीं दी थी। क्या यह संभव था? उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं।

एक आदमी उसके सामने खड़ा था।

यह आदमी एक ब्लाउज पहने हुए था; उसके पैर नंगे थे; उसने अपने जूते अपने बाएं हाथ में पकड़े हुए थे; जाहिर तौर पर उसने जीन वालजेन तक पहुंचने के लिए अपने जूते उतार दिए थे, ताकि उसके कदमों की आवाज सुनाई न दे।

जीन वाल्जेन ने एक पल भी संकोच नहीं किया। यह मुलाकात भले ही अप्रत्याशित थी, लेकिन वह इस व्यक्ति को जानता था। वह व्यक्ति थेनार्डियर था।

हालांकि जीन वाल्जेन अचानक चौंककर जाग गया, लेकिन खतरों से निपटने में माहिर और अप्रत्याशित झटकों का सामना करने के लिए दृढ़ निश्चयी होने के कारण उसने तुरंत अपनी चेतना पर नियंत्रण पा लिया। इसके अलावा, स्थिति और खराब नहीं हो सकती थी, थोड़ी सी परेशानी अब चरम पर नहीं पहुंच सकती थी, और थेनार्डियर खुद भी इस रात के अंधकार में कुछ नहीं जोड़ सकता था।

कुछ क्षणों का विराम छा गया।

थेनार्डियर ने अपना दाहिना हाथ माथे तक उठाकर उससे एक छाया बनाई, फिर अपनी पलकों को सिकोड़कर आँखें बंद कर लीं। यह हरकत, होंठों के हल्के संकुचन के साथ मिलकर, एक ऐसे व्यक्ति की पैनी नज़र को दर्शाती है जो दूसरे को पहचानने की कोशिश कर रहा हो। वह सफल नहीं हुआ। जैसा कि हमने अभी बताया, जीन वालजेन की पीठ रोशनी की ओर थी, और वह इतना विकृत, इतना सना हुआ और इतना खून बह रहा था कि दोपहर के उजाले में भी उसे पहचानना असंभव होता। इसके विपरीत, जाली से आती रोशनी से प्रकाशित होकर, जो कि तहखाने की रोशनी थी, हाँ, फीकी, फिर भी

अपनी फीकीपन में सटीक, थेनार्डियर, जैसा कि लोकप्रिय मुहावरे में कहा जाता है, तुरंत जीन वालजेन की आँखों में "उछल पड़ा"। परिस्थितियों की इस असमानता ने जीन वालजेन को उस रहस्यमय द्वंद्व में कुछ लाभ सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त था जो दो स्थितियों और दो व्यक्तियों के बीच शुरू होने वाला था। यह मुठभेड़ जीन वाल्जेन (घूंघट ओढ़े हुए) और थेनार्डियर (बिना नकाब के) के बीच हुई।
जीन वाल्जेन को तुरंत एहसास हो गया कि थेनार्डियर ने उसे पहचाना नहीं था। उस धुंधले अंधेरे में उन्होंने एक पल के लिए एक-दूसरे को निहारा, मानो एक-दूसरे को परख रहे हों। थेनार्डियर ने चुप्पी तोड़ी।
आप बाहर निकलने का प्रबंध कैसे करेंगे?
जीन वालजेन ने कोई जवाब नहीं दिया। थेनार्डियर ने आगे कहा:
“उस गेट का ताला तोड़ना नामुमकिन है। लेकिन फिर भी आपको इससे बाहर निकलना होगा।”
“यह सच है,” जीन वाल्जेन ने कहा।
"ठीक है, तो फिर आधे-आधे शेयर।"
"तुम्हारा इससे क्या मतलब है?"
“तुमने उस आदमी को मार डाला; कोई बात नहीं। चाबी मेरे पास है।” थेनार्डियर ने मारियस की ओर इशारा किया। उन्होंने आगे कहा:
मैं आपको नहीं जानता, लेकिन मैं आपकी मदद करना चाहता हूं। आप मेरे दोस्त जरूर होंगे।
जीन वाल्जेन को बात समझ में आने लगी। थेनार्डियर उसे हत्यारा समझ रहा था। थेनार्डियर ने आगे कहा:
“सुनो, साथी। तुमने उस आदमी को उसकी जेब में क्या है यह देखे बिना नहीं मारा। मुझे मेरा आधा हिस्सा दो। मैं तुम्हारे लिए दरवाजा खोल दूंगा।”
और अपनी फटी हुई ब्लाउज के नीचे से एक विशाल चाबी को आधा निकालते हुए, उसने आगे कहा:

“क्या आप देखना चाहते हैं कि स्वतंत्रता की कुंजी कैसे बनाई जाती है? यहाँ देखिए।”

जीन वाल्जेन "मूर्ख" रह गया—यह अभिव्यक्ति कॉर्नेल के बड़े भाई की है—इस हद तक कि उसे संदेह होने लगा कि वह जो देख रहा है वह वास्तविक है या नहीं। यह ईश्वर की कृपा थी जो भयानक रूप में प्रकट हुई थी, और उसका अच्छा दूत थेनार्डियर के रूप में धरती से प्रकट हुआ था।

थेनार्डियर ने अपनी मुट्ठी अपनी ब्लाउज के नीचे छिपी एक बड़ी जेब में डाली, एक रस्सी निकाली और उसे जीन वालजेन को दे दिया।

“रुको,” उसने कहा, “मैं तुम्हें रस्सी भी दूंगा।”

“यह रस्सी किसलिए है?”

“आपको एक पत्थर की भी जरूरत पड़ेगी, लेकिन वह आपको बाहर मिल जाएगा। वहां कूड़े का ढेर लगा हुआ है।”

मैं इस पत्थर का क्या करूँ?

"बेवकूफ, तुम उस लाश को नदी में फेंकना चाहोगे, इसके लिए तुम्हें एक पत्थर और एक रस्सी की जरूरत होगी, वरना वह पानी पर तैरने लगेगी।"

जीन वालजेन ने रस्सी ले ली। ऐसा कोई नहीं है जो कभी-कभी इस यांत्रिक तरीके को स्वीकार न करे।

थेनार्डियर ने उंगलियां चटकाईं मानो अचानक उनके दिमाग में कोई विचार आया हो।

“अरे, देखो तो सही, साथी, तुम उस दलदल से बाहर कैसे निकले? मैंने तो उसमें जाने की हिम्मत ही नहीं की। छी! तुम्हारी बदबू अच्छी नहीं आ रही है।”

कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने आगे कहा:

मैं तुमसे सवाल पूछ रहा हूँ, लेकिन तुम्हारा जवाब न देना बिलकुल सही है। यह उस मनहूस पंद्रह मिनट के समय के लिए एक तरह की परीक्षा है, जो पूछताछ करने वाले मजिस्ट्रेट के सामने होता है। और फिर, जब तुम बिल्कुल नहीं बोलोगे, तो ज़ोर से बोलने का भी कोई खतरा नहीं रहेगा। कोई बात नहीं, क्योंकि मैं तुम्हारा चेहरा नहीं देख सकता और तुम्हारा नाम भी नहीं जानता, इसलिए यह

सोचना गलत है कि मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो और क्या चाहते हो। मैं समझ गया। तुमने उस सज्जन को थोड़ा परेशान कर दिया है; अब तुम उसे कहीं छिपाना चाहते हो। नदी, जो मूर्खता को छुपाने वाली सबसे बड़ी जगह है, वही तुम्हारी इच्छा है। मैं तुम्हें इस मुसीबत से निकाल दूँगा। किसी भले आदमी की मदद करना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

जीन वालजेन की चुप्पी पर अपनी सहमति जताते हुए, उन्होंने उसे बोलने के लिए मजबूर करने का प्रयास किया। उन्होंने उसका चेहरा देखने के लिए उसके कंधे को धक्का दिया और बिना अपनी आवाज़ ऊँची किए कहा:

“उस दलदल की बात करें तो, आप तो बड़े ही साहसी हैं। आपने उस आदमी को उसमें क्यों नहीं फेंक दिया?”

जीन वाल्जेन ने चुप्पी बनाए रखी।

थेनार्डियर ने अपनी बात फिर से शुरू की, और अपने गले में पहनी हुई टाई के कपड़े को अपनी गर्दन के ऊपरी हिस्से तक धकेल दिया, यह हावभाव एक गंभीर व्यक्ति के सक्षम आभास को पूरा करता है:

आखिरकार, तुमने समझदारी से काम लिया। कल जब मजदूर उस गड्ढे को भरने आएंगे, तो उन्हें लाश वहीं पड़ी मिल जाती, और शायद धागे-धागे, तिनके-तिनके से गंध का पता लगाकर तुम तक पहुंचा जा सकता था। कोई सीवर से गुजरा है। कौन? वह कहां निकला? क्या उसे निकलते देखा गया? पुलिस बड़ी चालाक है। सीवर खतरनाक है और तुम्हारे बारे में कहानियां सुनाता है। ऐसी खोज दुर्लभ है, यह ध्यान खींचती है, बहुत कम लोग अपने कामों के लिए सीवर का इस्तेमाल करते हैं, जबकि नदी सबकी है। नदी ही असली कब्र है। एक महीने के अंत में सेंट-क्लाउड में जालों में तुम्हारे आदमी की लाश मिलेगी। भला इसकी परवाह कौन करता है? यह तो सड़ा हुआ मांस है! उस आदमी को किसने मारा? पेरिस ने। और न्याय कोई पूछताछ नहीं करता। तुमने अच्छा किया।

थेनार्डियर जितना अधिक वाचाल होता गया, जीन वालजेन उतना ही मौन होता गया।

थेनार्डियर ने फिर से उसे कंधे से हिलाया।

अब चलिए इस मामले को सुलझाते हैं। चलिए शेयर बाजार में उतरते हैं। आपने मेरी चाबी देख ली है, अब मुझे अपना पैसा दिखाइए।

थेनार्डियर थका हुआ, उग्र, शंकालु, कुछ हद तक खतरनाक, फिर भी मिलनसार था।

एक अनोखी बात थी; थेनार्डियर का व्यवहार सरल नहीं था; वह सहज नहीं लग रहा था; रहस्यमयी दिखने का दिखावा करते हुए वह धीमी आवाज़ में बोलता था; बीच-बीच में वह अपनी उंगली मुंह पर रखकर बुदबुदाता था, "चुप रहो!" यह समझना मुश्किल था कि ऐसा क्यों था। वहाँ उनके अलावा कोई नहीं था। जीन वालजेन को लगा कि शायद कुछ और बदमाश पास ही किसी कोने में छिपे हों और थेनार्डियर उनसे मिलना न चाहता हो।

थेनार्डियर ने आगे कहा:

“चलो हिसाब कर लेते हैं। उस मुर्दे के थैलों में कितने पैसे थे?”

जीन वाल्जेन ने अपनी जेबें तलाशीं।

जैसा कि पाठक को याद होगा, उसकी आदत थी कि वह हमेशा अपने पास कुछ पैसे रखता था। मजबूरी में गुज़ारा करने वाले उस दुख भरे जीवन ने इसे उसके लिए एक नियम बना दिया था। लेकिन इस बार वह तैयार नहीं था। पिछली शाम को नेशनल गार्ड्समैन की वर्दी पहनते समय, उदासी में डूबे होने के कारण वह अपना पर्स लेना भूल गया था। उसकी जेब में बस कुछ खुले पैसे थे। उसने अपनी जेब खाली की, जो पूरी तरह से कीचड़ से भीगी हुई थी, और तिजोरी के चबूतरे पर एक लुई डी'ओर, दो पाँच-फ़्रैंक के सिक्के और पाँच या छह बड़े सू फैला दिए।

थेनार्डियर ने गर्दन को काफी घुमाते हुए अपने निचले होंठ को बाहर की ओर धकेल दिया।

“तुमने उसे सस्ते में गिरा दिया,” उसने कहा।

उसने बड़ी आत्मीयता से जीन वालजेन और मारियस की जेबें टटोलना शुरू कर दिया। जीन वालजेन, जो मुख्य रूप से रोशनी से अपनी पीठ छिपाए रखने में लगा था, ने उसे ऐसा करने दिया।

मारियस का कोट संभालते समय, थेनार्डियर ने एक जेबकतरे की कुशलता से, और जीन वालजेन की नज़र में आए बिना, उसमें से एक पट्टी फाड़ ली जिसे उसने अपनी कमीज़ के नीचे छिपा लिया। शायद वह सोच रहा था कि कपड़े का यह टुकड़ा बाद में मारे गए व्यक्ति और हत्यारे की पहचान करने में काम आ सकता है। हालांकि, उसे तीस फ्रैंक के अलावा कुछ नहीं मिला।

“यह सच है,” उसने कहा, “आप दोनों के पास मिलाकर इससे ज्यादा कुछ नहीं है।”

और, अपने आदर्श वाक्य "आधा हिस्सा" को भूलकर, उसने सब कुछ ले लिया।

बड़े सॉस को लेकर वह थोड़ा हिचकिचाया। काफी सोच-विचार के बाद उसने उन्हें भी ले लिया और बुदबुदाया:

कोई बात नहीं! तुम तो लोगों का गला बहुत ही सस्ते में काट देते हो।

यह हो जाने के बाद, उसने एक बार फिर अपनी ब्लाउज के नीचे से बड़ी चाबी निकाली।

“अब, मेरे दोस्त, तुम्हें जाना होगा। यहाँ मेले जैसा माहौल है, जाते समय पैसे देने पड़ते हैं। तुमने पैसे दे दिए हैं, अब निकल जाओ।”

और वह हंसने लगा।

क्या उस अजनबी को अपनी चाबी देकर और खुद के अलावा किसी और को उस द्वार से बाहर निकालकर, उसका इरादा सिर्फ एक हत्यारे को बचाने का था? हमें इस पर संदेह करने की अनुमति दी जा सकती है।

थेनार्डियर ने जीन वालजेन को मारियस को अपने कंधों पर वापस रखने में मदद की, फिर वह पंजों के बल चलकर जाली के पास गया और नंगे पैर ही, जीन वालजेन को अपने पीछे आने का इशारा करते हुए, बाहर देखा, अपनी उंगली मुंह पर रखी और कुछ सेकंड के लिए वहीं रुका रहा, मानो किसी असमंजस में हो; निरीक्षण पूरा होने पर उसने चाबी ताले में डाली। कुंडी खुल गई और फाटक खुल गया। न तो कोई आवाज़ आई और न ही कोई चरमराहट। वह बहुत धीरे से खुला।

यह स्पष्ट था कि यह द्वार और इसके कब्ज़े, जिन पर सावधानीपूर्वक तेल लगाया जाता था, अपेक्षा से अधिक बार खुलते थे। यह धीमी गति संदेह पैदा करती थी; यह गुप्त आवाजाही, रात्रिचर पुरुषों के चुपचाप प्रवेश और निकास, और अपराध की भेड़िया जैसी चाल का संकेत देती थी।

यह सीवर स्पष्ट रूप से किसी रहस्यमय गिरोह का सहयोगी था। यह कम बोलने वाली जाली चोरी का माल प्राप्त करने वाली थी।

थेनार्डियर ने फाटक को थोड़ा सा खोला, जिससे जीन वालजेन को बाहर निकलने के लिए पर्याप्त जगह मिल गई, फिर जाली को बंद कर दिया, ताले में चाबी को दो बार

घुमाया और बिना कोई आवाज़ किए, बस एक साँस की आवाज़ करते हुए, वापस अंधेरे में चला गया। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी बाघ के मखमली पंजों पर चल रहा हो।
कुछ ही क्षणों बाद, वह भयावह घटना अदृश्यता में विलीन हो गई।
जीन वालजेन ने खुद को खुले आसमान के नीचे पाया।

IX. मारियस मामले के न्यायाधीश पर मृत्यु का प्रभाव उत्पन्न करता है।

उसने मारियस को किनारे पर फिसलने दिया।

वे खुले आसमान के नीचे थे !

धुंध , अंधकार और भय उसके पीछे छूट गए थे। शुद्ध , स्वास्थ्यवर्धक , जीवंत और आनंदमय हवा , जिसमें सांस लेना आसान था , उसे घेर रही थी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था , लेकिन वह मनमोहक सन्नाटा जब सूर्य नीले आसमान में अस्त हो जाता है। गोधूलि बेला छा गई थी ; रात आ रही थी , महान मुक्तिदाता , उन सभी का मित्र जिन्हें अंधकार के आवरण की आवश्यकता होती है ताकि वे किसी पीड़ा से बच सकें। आकाश चारों दिशाओं में एक विशाल शांति की तरह फैला हुआ था। नदी उसके पैरों तक एक चुंबन की ध्वनि के साथ बह रही थी। चैंप्स -एलिसी के एल्म वृक्षों में घोंसलों की एक -दूसरे को शुभ रात्रि कहते हुए हवाई संवाद सुनाई दे रहा था। कुछ तारे , नीले आकाश को भेदते हुए , और केवल कल्पना में ही दिखाई देते हुए , विशालता के बीच सूक्ष्म चमक बिखेर रहे थे। शाम जीन वालजेन के सिर पर अनंत की सारी मिठास बिखेर रही थी।

यह वह अद्भुत और अनिश्चित क्षण था जो न हाँ कहता है और न ना। रात इतनी आगे बढ़ चुकी थी कि थोड़ी दूरी पर किसी का ध्यान भटक सकता था , फिर भी इतनी रोशनी थी कि पास से देखने पर पहचान संभव हो सके।

कुछ क्षणों के लिए , जीन वालजेन उस भव्य और प्रेमपूर्ण शांति में पूरी तरह डूब गया ; विस्मृति के ऐसे क्षण मनुष्य के जीवन में आते हैं ; दुख उस अभागे को सताना छोड़ देता है ; सब कुछ विचारों में खो जाता है ; शांति स्वप्नद्रष्टा पर रात की तरह छा जाती है ; और, चमकती हुई गोधूलि की रोशनी में और प्रकाशित आकाश के समान , आत्मा तारों से जगमगा उठती है। जीन वालजेन अपने ऊपर छाई उस विशाल , निर्मल छाया का चिंतन करने से खुद को रोक नहीं सका ; वह गहन चिंतन में शाश्वत आकाश की राजसी शांति में परमानंद और प्रार्थना के सागर में डूब गया। फिर वह कर्तव्य की भावना जागृत होते ही मारियस की ओर

झुका और हथेली में पानी भरकर उसके चेहरे पर कुछ बूँदें छिड़क दीं। मारियस की पलकें नहीं खुलीं; परन्तु उसका आधा खुला मुँह अभी भी साँस ले रहा था।

जीन वाल्जेन एक बार फिर नदी में हाथ डालने ही वाला था कि अचानक उसे एक अवर्णनीय शर्मिंदगी का अनुभव हुआ, जैसा कि किसी व्यक्ति को तब होता है जब उसके पीछे कोई ऐसा व्यक्ति होता है जिसे वह देख नहीं पाता है।

हम पहले ही इस धारणा का जिक्र कर चुके हैं, जिससे हर कोई परिचित है।

वह मुड़ गया।

दरअसल, उसके पीछे कोई था, जैसा कि कुछ देर पहले भी था।

एक लंबा-चौड़ा आदमी, जिसने लंबा कोट पहना हुआ था, हाथ जोड़े हुए था और अपने दाहिने हाथ में एक लाठी पकड़े हुए था जिसका सीसे का सिरा दिखाई दे रहा था, उस जगह से कुछ कदम पीछे खड़ा था जहाँ जीन वालजेन मारियस के ऊपर झुका हुआ था।

अंधेरे की वजह से वह किसी प्रेत जैसा लग रहा था। एक साधारण व्यक्ति धुंध के कारण डर जाता, जबकि एक विचारशील व्यक्ति लाठी को देखकर घबरा जाता। जीन वालजेन ने जावर्ट को पहचान लिया।

पाठक ने निश्चित रूप से अनुमान लगा लिया होगा कि थेनार्डियर का पीछा करने वाला कोई और नहीं बल्कि जावर्ट था। बैरिकेड से अप्रत्याशित रूप से बच निकलने के बाद, जावर्ट पुलिस कार्यालय गया, वहां उसने पुलिस प्रमुख को संक्षिप्त मुलाकात में मौखिक रूप से अपना पूरा ब्योरा दिया और फिर तुरंत ड्यूटी पर लौट गया। इसका अर्थ यह था—जैसा कि पाठक को याद होगा, उसके पास से बरामद नोट में लिखा था—कि वह शैंप्स-एलिसी के पास सीन नदी के दाहिने किनारे पर निगरानी रख रहा था, जिस पर कुछ समय से पुलिस की नजर थी। वहीं उसने थेनार्डियर को देखा और उसका पीछा किया। बाकी की कहानी पाठक को ही पता है।

इसलिए यह आसानी से समझा जा सकता है कि जीन वालजेन के लिए इतनी आसानी से खोला गया वह दरवाज़ा थेनार्डियर की चतुराई का नतीजा था। थेनार्डियर को सहज रूप से महसूस हुआ कि जावर्ट अभी भी वहीं है; जिस व्यक्ति पर नज़र रखी जा रही हो, उसकी सूंघने की शक्ति उसे कभी धोखा नहीं देती; उस जासूस को कुछ

सुराग देना ज़रूरी था। एक हत्यारा, कितना वरदान! ऐसा मौका कभी हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। थेनार्डियर ने जीन वालजेन को अपनी जगह बाहर भेजकर पुलिस को एक शिकार मुहैया कराया, उन्हें जावर्ट का पता लगाने से रोका, उन्हें किसी बड़े अभियान में उसे भूलने पर मजबूर किया, जावर्ट को उसके इंतज़ार का इनाम दिया, जो एक जासूस को हमेशा खुश करता है, तीस फ्रैंक कमाए, और खुद को इस चाल की मदद से बच निकलने का पूरा भरोसा दिलाया।

जीन वाल्जेन एक खतरे से दूसरे खतरे में फंसता चला गया था।

ये दोनों मुठभेड़ें, थेनार्डियर से लेकर जावर्ट तक एक के बाद एक ये पतन, एक अप्रिय झटका था।

जैवर्ट ने जीन वाल्जेन को नहीं पहचाना, जो जैसा कि हमने बताया है, अब पहले जैसा नहीं दिख रहा था। उसने अपनी बाहें नहीं खोलीं, उसने एक सूक्ष्म हरकत से अपनी मुट्ठी में अपने डंडे को मजबूती से पकड़ लिया और संक्षिप्त, शांत स्वर में कहा:

"आप कौन हैं?"

"मैं।"

“‘मैं’ कौन हूँ?”

“जीन वालजेन।”

जैवरट ने अपना डंडा दांतों के बीच दबाया, घुटने मोड़े, शरीर को झुकाया, अपने दोनों शक्तिशाली हाथ जीन वालजेन के कंधों पर रखे, जो मानो दो शिकंजे में जकड़े हुए थे, उसे गौर से देखा और पहचान लिया। उनके चेहरे लगभग छू गए थे। जैवरट का चेहरा भयानक था।

जीन वाल्जेन, जेवर्ट की पकड़ में एक शेर की तरह निष्क्रिय पड़ा रहा, मानो वह किसी लिंक्स के पंजों के सामने आत्मसमर्पण कर रहा हो।

“इंस्पेक्टर जावर्ट,” उसने कहा, “आपने मुझे अपने कब्जे में ले लिया है। इसके अलावा, मैं आज सुबह से ही खुद को आपका कैदी मानता आया हूँ। मैंने आपको अपना पता भागने के इरादे से नहीं दिया था। मुझे ले जाइए। बस एक कृपा कीजिए।”

जैवरट ने मानो उसकी बात सुनी ही नहीं। उसकी निगाहें जीन वालजेन पर टिकी हुई थीं। उसकी ठुड्डी सिकुड़ी हुई थी, और उसके होंठ नाक की ओर ऊपर उठे हुए थे, जो किसी क्रूर चिंतन का संकेत था। अंत में उसने जीन वालजेन को छोड़ा, बिना झुके सीधे खड़े हुए, अपने डंडे को फिर से मजबूती से पकड़ा, और मानो सपने में हो, उसने यह प्रश्न बिना बोले बुदबुदाया:
“तुम यहाँ क्या कर रहे हो? और यह आदमी कौन है?”
उन्होंने अब भी जीन वाल्जेन को "तू" कहकर संबोधित करने से परहेज किया। जीन वाल्जेन ने उत्तर दिया, और उनकी आवाज सुनकर जावर्ट जागृत हो उठा:
“मैं उसी के बारे में आपसे बात करना चाहता हूँ। आप जैसा चाहें वैसा करें; लेकिन पहले मुझे उसे घर ले जाने में मदद करें। बस यही मेरी आपसे विनती है।” जब भी कोई यह सोचता कि जावर्ट समझौता करने में सक्षम है, तो हमेशा की तरह जावर्ट का चेहरा सिकुड़ जाता था। फिर भी, उसने "ना" नहीं कहा।
वह फिर झुका, अपनी जेब से एक रूमाल निकाला जिसे उसने पानी में भिगोया और फिर उससे मारियस के खून से सने माथे को पोंछा।
“यह आदमी बैरिकेड पर था,” उसने धीमी आवाज़ में और मानो खुद से बात करते हुए कहा। “यही वह आदमी है जिसे वे मारियस कहते थे।”
एक उच्च कोटि का जासूस, जिसने सब कुछ देखा, सब कुछ सुना और सब कुछ आत्मसात किया, यहाँ तक कि जब उसे लगा कि वह मरने वाला है; जिसने अपनी पीड़ा में भी जासूस की भूमिका निभाई और जिसने समाधि की पहली सीढ़ी पर अपनी कोहनियों को टिकाकर नोट्स लिए।
उसने मारियस का हाथ पकड़ा और उसकी नब्ज जांची।
जीन वाल्जेन ने कहा, "वह घायल है।"
"वह मर चुका है," जावर्ट ने कहा।
जीन वालजेन ने उत्तर दिया:
"अभी तक कोई नहीं।"
"तो तुम उसे बैरिकेड से यहाँ लाए हो?" जावर्ट ने टिप्पणी की।

उनकी चिंता वाकई बहुत गहरी रही होगी, तभी तो उन्होंने सीवर के रास्ते इस खतरनाक बचाव कार्य पर जोर नहीं दिया, और यहां तक कि उनके प्रश्न के बाद जीन वालजेन की चुप्पी पर भी ध्यान नहीं दिया।

जीन वालजेन के मन में मानो एक ही विचार था। उन्होंने आगे कहा:

“वह अपने दादा के साथ माराइस में, रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर में रहता है। मुझे उसका नाम याद नहीं है।”

जीन वाल्जेन ने मारियस के कोट में हाथ डाला, उसका पर्स निकाला, उसे उस पृष्ठ पर खोला जिस पर मारियस ने पेंसिल से निशान लगाया था, और उसे जावर्ट की ओर बढ़ा दिया।

अभी भी पढ़ने के लिए पर्याप्त रोशनी थी। इसके अलावा, जावर्ट की आँखों में रात के पक्षियों जैसी बिल्ली जैसी चमक थी। उसने मारियस द्वारा लिखी कुछ पंक्तियों को पढ़ा और बुदबुदाया: "गिलेनॉर्मंड, रुए डेस फिल्स-डु कैलवेयर, नंबर 6।"

फिर उसने कहा: “कोचमैन!”

पाठक को याद होगा कि जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल के लिए एक घोड़ागाड़ी (हैकनी-कोच) तैयार खड़ी थी।

जावर्ट ने मारियस का पर्स अपने पास रख लिया।

कुछ ही क्षणों में, जल-कुंड के ढलान से नीचे उतरती हुई गाड़ी किनारे पर पहुँच गई। मारियस को पिछली सीट पर लिटाया गया और जावर्ट, जीन वालजेन के बगल में अगली सीट पर बैठ गया।

दरवाजा जोर से बंद हुआ और गाड़ी तेजी से आगे बढ़ गई, बास्टिल की दिशा में घाटों पर चढ़ती हुई।

वे बंदरगाह छोड़कर सड़कों पर आ गए। कोचवान, जो अपनी गाड़ी के डिब्बे पर एक काले रंग का साया लिए बैठा था, ने अपने दुबले-पतले घोड़ों को चाबुक मारा। गाड़ी में सन्नाटा पसरा हुआ था। मारियस, जो कोने में बेसुध पड़ा था, उसका शरीर आराम कर रहा था, सिर छाती पर झुका हुआ था, बाहें लटकी हुई थीं, पैर अकड़े हुए थे, मानो वह केवल एक ताबूत की प्रतीक्षा कर रहा हो; जीन वालजेन मानो परछाई का बना हो, और जावर्ट पत्थर का, और उस अंधेरे से भरी गाड़ी में,

जिसका भीतरी भाग, हर बार जब वह किसी स्ट्रीट लैंप के सामने से गुजरता था, बिजली की रुक-रुक कर चमक से पीला पड़ जाता था, मानो संयोग से दुखद गतिहीनता के तीन रूप - शव, प्रेत और मूर्ति - एक साथ मिल गए हों और आमने-सामने आ गए हों।

X. उस पुत्र की वापसी जिसने अपना जीवन व्यर्थ ही व्यतीत किया

फुटपाथ पर हर झटके के साथ मारियस के बालों से खून की एक बूंद टपकती थी।

जब गाड़ी रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर स्थित नंबर 6 पर पहुंची तब तक पूरी तरह से रात हो चुकी थी।

जैवरट सबसे पहले उतरे; उन्होंने गाड़ी के गेट पर लिखे नंबर पर एक नज़र डाली और पुराने ज़माने की शैली में बने लोहे के भारी दरवाज़े के हैंडल को उठाया, जिस पर एक बकरा और एक सैटिर आमने-सामने बने थे, और ज़ोर से खटखटाया। गेट थोड़ा सा खुला और जैवरट ने उसे धक्का दिया। कुली जम्हाई लेते हुए, अधजाने से जागते हुए, हाथ में मोमबत्ती लिए हुए दिखाई दिए।

घर में सभी सो रहे थे। माराईस में लोग जल्दी सो जाते हैं, खासकर उन दिनों में जब कोई विद्रोह होता है। क्रांति से भयभीत यह शांत और पुराना इलाका नींद में पनाह लेता है, जैसे बच्चे, जब उन्हें किसी भयानक चीज़ की आहट सुनाई देती है, तो जल्दी से अपने सिर कंबल के नीचे छिपा लेते हैं।

इसी बीच जीन वालजेन और कोचवान ने मारियस को गाड़ी से बाहर निकाल लिया था, जीन वालजेन ने उसे बगल से सहारा दिया हुआ था और कोचवान ने उसके घुटनों से।

जब वे मारियस को ले जा रहे थे, तो जीन वाल्जेन ने अपना हाथ उसके फटे हुए कपड़ों के नीचे डाला, उसकी छाती को छुआ और यह सुनिश्चित किया कि उसका दिल अभी भी धड़क रहा है। बल्कि उसकी धड़कन पहले से थोड़ी धीमी हो गई थी, मानो गाड़ी की गति ने उसमें नई जान डाल दी हो।

जैवर्ट ने कुली से सरकार के अनुरूप लहजे में बात की, और कुली की उपस्थिति को एक गुटबाज व्यक्ति की उपस्थिति के रूप में दर्शाया।

“क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसका नाम गिलनोर्मंड है?”

“लो। तुम्हें इससे क्या चाहिए?”

"उसके बेटे को वापस लाया गया है।"

“उसका बेटा?” कुली ने मूर्खता से कहा।
"वह मर चुका है।"
जीन वाल्जेन, जो मैला-कुचैला और फटेहाल कपड़ों में जावर्ट के पीछे खड़ा था, और जिसे चौकीदार कुछ भय के साथ देख रहा था, ने अपने सिर से इशारा करके उसे बताया कि ऐसा नहीं था।
कुली को न तो जावर्ट के शब्द समझ आए और न ही जीन वालजेन का इशारा।
जावर्ट ने आगे कहा:
"वह बैरिकेड के पास गया, और वह यहाँ है।"
“क्या बैरिकेड की ओर?” कुली ने हैरानी से पूछा।
“उसने खुद को मरवा लिया है। जाओ उसके पिता को जगाओ।”
कुली टस से मस नहीं हुआ।
“मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ!” जावर्ट ने दोहराया।
और उन्होंने आगे कहा:
"कल यहां अंतिम संस्कार होगा।"
जैवरट के लिए, सार्वजनिक राजमार्ग की सामान्य घटनाओं को स्पष्ट रूप से वर्गीकृत किया गया था, जो दूरदर्शिता और निगरानी की शुरुआत थी, और प्रत्येक आकस्मिकता का अपना एक अलग खंड था; सभी संभावित तथ्यों को मानो दराजों में व्यवस्थित किया गया था, जहाँ से वे समय-समय पर, अलग-अलग मात्रा में, बाहर निकलते थे; सड़क पर, हंगामा, विद्रोह, उत्सव और अंत्येष्टि। कुली ने बास्क को जगाकर संतोष किया। बास्क ने निकोलेट को जगाया; निकोलेट ने अपनी परदादी गिलनोर्मंड को जगाया।
जहां तक दादाजी की बात है, उन्होंने उन्हें सोते रहने दिया, यह सोचकर कि उन्हें किसी भी हालत में इस मामले के बारे में जल्द ही पता चल जाएगा। मारियस को घर के बाकी हिस्सों में किसी को पता चले बिना पहली मंजिल पर ले जाया गया और एम. गिलनोर्मंड के प्रतीक्षालय में एक पुराने सोफे पर लिटा दिया गया। जब बास्क चिकित्सक की तलाश में गया और निकोलेट ने कपड़े धोने की

अलमारी खोली, तो जीन वालजेन ने महसूस किया कि जावर्ट ने उसके कंधे पर हाथ रखा है। वह समझ गया और सीढ़ियों से नीचे उतर गया, उसके पीछे जावर्ट के कदमों की आहट सुनाई दे रही थी जो उसका पीछा कर रहा था।
कुली ने उनके आगमन को देखने के समान ही भयभीत और नींद में डूबे हुए भाव से उनके प्रस्थान को देखा।
वे एक बार फिर गाड़ी में सवार हुए, और कोचवान अपने डिब्बे में बैठ गया।
जीन ने कहा, "इंस्पेक्टर जावर्ट, कृपया मेरी एक और मदद करें।"
“क्या बात है?” जावर्ट ने रूखेपन से पूछा।
मुझे एक पल के लिए घर जाने दो। फिर तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकते हो। जैवरट कुछ क्षणों के लिए चुप रहा, अपनी ठुड्डी को अपने ओवरकोट के कॉलर में पीछे की ओर टिकाए हुए, फिर उसने गिलास नीचे किया और सामने का हिस्सा भी नीचे रख दिया:
“ड्राइवर,” उसने कहा, “7 आर्म्ड मैन स्ट्रीट।”

XI. पूर्ण रूप से मस्तिष्क आघात

पूरी यात्रा के दौरान उन्होंने अपने होंठ दोबारा नहीं खोले।

जीन वालजेन क्या चाहता था? जो उसने शुरू किया था उसे पूरा करना; कोसेट को चेतावनी देना, उसे बताना कि मारियस कहाँ है, उसे संभवतः कुछ अन्य उपयोगी जानकारी देना, और यदि संभव हो तो कुछ अंतिम कदम उठाना। जहाँ तक उसका स्वयं का सवाल है, सब कुछ समाप्त हो चुका था; उसे जावर्ट ने पकड़ लिया था और उसने कोई विरोध नहीं किया था; उसके अलावा कोई और व्यक्ति ऐसी स्थिति में होता तो शायद उसके मन में थेनार्डियर द्वारा दी गई रस्सी और उस पहली कोठरी की सलाखों को लेकर कुछ अस्पष्ट विचार होते जिसमें उसे प्रवेश करना होता; लेकिन, बिशप के बाद, हम पाठक को यह बात ध्यान में दिलाना चाहते हैं कि जीन वालजेन के मन में किसी भी प्रकार की हिंसा के प्रति, यहाँ तक कि स्वयं के विरुद्ध निर्देशित होने पर भी, एक गहरी झिझक थी।

आत्महत्या, अज्ञात के विरुद्ध हिंसा का वह रहस्यमय कृत्य जिसमें एक हद तक आत्मा की मृत्यु समाहित हो सकती है, जीन वालजेन के लिए असंभव थी।

रुए डे ल'होमे आर्मे के प्रवेश द्वार पर गाड़ी रुक गई, क्योंकि रास्ता इतना संकरा था कि वाहनों का प्रवेश संभव नहीं था। जावर्ट और जीन वालजेन उतर गए।

कोचवान ने विनम्रतापूर्वक "महामहिम निरीक्षक" को बताया कि उसकी गाड़ी का उट्रेक्ट मखमली कपड़ा मारे गए व्यक्ति के खून और हत्यारे के कीचड़ से पूरी तरह सना हुआ था। उसने यही समझा था। उसने आगे कहा कि उसे हर्जाना मिलना चाहिए। साथ ही, अपनी जेब से प्रमाण पत्र निकालकर उसने निरीक्षक से विनती की कि वे उसे "एक प्रमाण पत्र" लिख दें।

जावर्ट ने कोचवान द्वारा उसे दी गई किताब को एक तरफ धकेल दिया और कहा:

"आप कितना पैसा चाहते हैं, जिसमें आपके इंतजार का समय और आने-जाने का खर्च भी शामिल है?"

“इसमें सवा सात घंटे लगे,” उस आदमी ने जवाब दिया, “और मेरा मखमल बिल्कुल नया था। अस्सी फ्रैंक, श्रीमान इंस्पेक्टर।”

जावर्ट ने अपनी जेब से चार नेपोलियन निकाले और गाड़ी को रवाना कर दिया।

जीन वाल्जेन को लगा कि जावर्ट का इरादा उसे पैदल ही ब्लैंक्स-मंटेओक्स के कार्यालय या अभिलेखागार कार्यालय तक ले जाने का था, जो दोनों ही पास में ही स्थित हैं।

वे गली में दाखिल हुए। हमेशा की तरह वह सुनसान थी। जावर्ट, जीन वालजेन के पीछे-पीछे चला। वे सातवीं मंजिल पर पहुँचे। जीन वालजेन ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुल गया।

“सब ठीक है,” जैवर्ट ने कहा। “ऊपर जाओ।”

उन्होंने एक अजीब से भाव के साथ और मानो इस तरह बोलने में प्रयास करते हुए कहा:

मैं यहीं तुम्हारा इंतजार करूंगा।

जीन वालजेन ने जावर्ट की ओर देखा। यह व्यवहार जावर्ट की आदतों से बिल्कुल मेल नहीं खाता था। हालांकि, उसे इस बात पर ज़्यादा आश्चर्य नहीं हुआ कि जावर्ट को अब उस पर एक प्रकार का घमंडी भरोसा हो गया था, ठीक वैसे ही जैसे बिल्ली चूहे को अपने पंजों की पूरी लंबाई तक आज़ादी दे देती है, क्योंकि जीन वालजेन ने आत्मसमर्पण करने और इस मामले को खत्म करने का निश्चय कर लिया था। उसने दरवाज़ा धक्का देकर खोला, घर में प्रवेश किया, बिस्तर पर लेटे हुए चौकीदार को आवाज़ दी, जिसने अपने पलंग से रस्सी खींच ली थी: "मैं हूँ!" और सीढ़ियाँ चढ़ गया।

पहली मंजिल पर पहुँचकर वह रुक गया। हर दुख भरी राह का अपना पड़ाव होता है। सीढ़ियों पर लगी खिड़की, जो एक चौखट वाली खिड़की थी, खुली हुई थी। कई पुराने घरों की तरह, सीढ़ियों पर बाहर से रोशनी आती थी और सड़क का नज़ारा दिखता था। ठीक सामने लगी स्ट्रीट लैंप की रोशनी सीढ़ियों पर पड़ रही थी, जिससे रोशनी में कुछ बचत हो रही थी।

जीन वालजेन ने शायद ताजी हवा लेने के लिए, या शायद मजबूरीवश, अपना सिर खिड़की से बाहर निकाला। वह सड़क की ओर झुक गया। सड़क छोटी थी और लालटेन की रोशनी से पूरी सड़क जगमगा रही थी। जीन वालजेन आश्चर्य से भर गया; वहाँ अब कोई नहीं था।

जावर्ट ने प्रस्थान कर दिया था।

XII. दादाजी

बास्क और कुली मारियस को ड्राइंग रूम में ले आए, जहाँ वह अभी भी सोफे पर बेसुध पड़ा था, जिस पर उसे आने पर लिटाया गया था। बुलाए गए डॉक्टर तुरंत वहाँ पहुँच गए थे। आंटी गिलनोर्मंड उठ चुकी थीं।

आंटी गिलनोर्मंड घबराकर बार-बार आती-जाती रहीं, अपने हाथ मलती रहीं और कुछ भी करने में असमर्थ थीं सिवाय यह कहने के: “हे भगवान! क्या यह संभव है?” कभी-कभी वह यह भी कहतीं: “सब कुछ खून से लथपथ हो जाएगा।” जब उनका पहला डर शांत हुआ, तो स्थिति के बारे में एक दार्शनिक विचार उनके मन में आया और उन्होंने कहा: “इसका अंत इसी तरह होना था!” उन्होंने “मैंने तो पहले ही कहा था!” जैसा कि ऐसे मौकों पर आम तौर पर कहा जाता है, वैसा नहीं किया। चिकित्सक के आदेश पर, सोफे के बगल में एक कैंप बेड तैयार किया गया था। डॉक्टर ने मारियस की जांच की और पाया कि उसकी नब्ज़ अभी भी चल रही है, उसके सीने पर कोई गहरा घाव नहीं है, और उसके होठों के कोनों पर लगा खून उसकी नाक से आ रहा है। इसके बाद उन्होंने उसे बिना तकिए के, सिर को शरीर के बराबर, बल्कि थोड़ा नीचे, और छाती को खुला रखकर बिस्तर पर सीधा लिटा दिया ताकि सांस लेने में आसानी हो। मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने जब देखा कि वे मारियस के कपड़े उतार रहे हैं, तो वह पीछे हट गईं। उन्होंने अपने कमरे में जाकर माला जपना शुरू कर दिया।

शरीर को कोई आंतरिक चोट नहीं आई थी; पर्स से टकराकर एक गोली मुड़ गई थी और पसलियों को चीरते हुए एक भयानक घाव बना दिया था, जो ज़्यादा गहरा नहीं था और इसलिए खतरनाक नहीं था। लंबी, भूमिगत यात्रा ने टूटी हुई कॉलरबोन को पूरी तरह से अलग कर दिया था और वहाँ की चोट गंभीर थी। भुजाओं पर तलवार से वार किए गए थे। चेहरे पर एक भी निशान नहीं था; लेकिन सिर पर कई घाव थे; सिर पर इन घावों का क्या परिणाम होगा? क्या वे त्वचा के ऊपरी भाग तक ही सीमित रहेंगे या मस्तिष्क पर हमला करेंगे? अभी तक इसका कोई निश्चित निष्कर्ष नहीं निकाला जा सका था। एक गंभीर लक्षण यह था कि इन घावों के कारण व्यक्ति बेहोश हो गया था, और लोग अक्सर ऐसी बेहोशी से जल्दी ठीक नहीं हो पाते। इसके

अलावा, घायल व्यक्ति रक्तस्राव से बुरी तरह कमजोर हो गया था। कमर से नीचे, बैरिकेड ने शरीर के निचले हिस्से को चोट से बचा लिया था।

बास्क और निकोलेट ने लिनेन फाड़ा और पट्टियाँ तैयार कीं; निकोलेट ने उन्हें सिला, बास्क ने उन्हें लपेटा। रुई की कमी के कारण, डॉक्टर ने फिलहाल रुई की परतों से खून बहना रोकने का काम किया। बिस्तर के बगल में, एक मेज पर तीन मोमबत्तियाँ जल रही थीं, जहाँ शल्य चिकित्सा उपकरणों का डिब्बा फैला हुआ था। डॉक्टर ने मारियस के चेहरे और बालों को ठंडे पानी से धोया। एक बाल्टी पल भर में लाल हो गई। कुली ने हाथ में मोमबत्ती लेकर उन्हें जलाया।

डॉक्टर उदास होकर सोच में डूबे हुए लग रहे थे। बीच-बीच में वे सिर हिलाकर नकारात्मक संकेत दे रहे थे, मानो मन ही मन खुद से पूछे गए किसी प्रश्न का उत्तर दे रहे हों।

बीमार व्यक्ति के लिए एक बुरा संकेत डॉक्टर द्वारा स्वयं से किए जा रहे ये रहस्यमय संवाद हैं।

जिस क्षण डॉक्टर मारियस का चेहरा पोंछ रहा था और अपनी उंगली से उसकी अभी भी बंद आंखों को हल्के से छू रहा था, उसी समय ड्राइंग रूम के अंत में एक दरवाजा खुला और एक लंबा, पीला सा दिखने वाला व्यक्ति प्रकट हुआ।

ये दादाजी थे।

पिछले दो दिनों से विद्रोह ने एम. गिलनोर्मंड के मन को बुरी तरह से व्याकुल, क्रोधित और व्याकुल कर रखा था। पिछली रात उन्हें नींद नहीं आई थी और दिन भर बुखार रहा था। शाम को वे बहुत जल्दी बिस्तर पर चले गए, घर में हर चीज को अच्छी तरह से बंद करने की सलाह दी, और अत्यधिक थकान के कारण उन्हें गहरी नींद आ गई।

बुजुर्ग लोग हल्की नींद सोते हैं; एम. गिलनोर्मंड का कमरा ड्राइंग रूम से सटा हुआ था, और तमाम सावधानियों के बावजूद शोर ने उन्हें जगा दिया था। अपने दरवाजे के नीचे से आती रोशनी की एक किरण देखकर वे आश्चर्यचकित रह गए और बिस्तर से उठकर कमरे की ओर बढ़ गए।

वह दहलीज पर अचंभित खड़ा था, आधा खुले दरवाजे के हैंडल पर एक हाथ रखे, सिर थोड़ा आगे झुका हुआ और कांप रहा था, शरीर एक सफेद ड्रेसिंग गाउन में लिपटा

हुआ था, जो सीधा और कफ़न की तरह सिलवटों से रहित था; और वह एक ऐसे प्रेत की तरह लग रहा था जो किसी मकबरे में झांक रहा हो।

उसने बिस्तर देखा, और गद्दे पर उस युवक को देखा, जो खून से लथपथ था, मोम जैसी सफेदी लिए हुए, आँखें बंद और मुँह खुला हुआ, और होंठ पीले पड़े हुए, कमर तक नग्न, पूरे शरीर पर गहरे लाल घावों से कटा हुआ, गतिहीन और तेज रोशनी से जगमगा रहा था।

दादाजी सिर से पैर तक इतनी ज़ोर से कांप रहे थे जितनी ज़ोर से कठोर शरीर वाले अंग कांप सकते हैं, उनकी आंखें, जिनकी पुतलियां उनकी वृद्धावस्था के कारण पीली पड़ गई थीं, एक प्रकार की कांच जैसी चमक से ढकी हुई थीं, उनका पूरा चेहरा पल भर में खोपड़ी के मिट्टी जैसे कोणों में तब्दील हो गया, उनकी बाहें लटक गईं, मानो कोई स्प्रिंग टूट गई हो, और उनके आश्चर्य का पता उनकी दोनों वृद्ध हथेलियों की फैली हुई उंगलियों से चला, जो पूरी तरह से कांप रही थीं, उनके घुटने सामने की ओर एक कोण बना रहे थे, जिससे उनके ड्रेसिंग-गाउन के छेद से उनके बेचारे नंगे पैर दिखाई दे रहे थे, जो सफेद बालों से भरे हुए थे, और वे बुदबुदाए:

“मारियस!”

“महोदय,” बास्क ने कहा, “महाशय को अभी-अभी वापस लाया गया है। वे बैरिकेड पर गए थे, और…”

“वह मर गया!” बूढ़े ने भयानक स्वर में कहा। “अरे! बदमाश!”

फिर एक प्रकार के समाधि संबंधी परिवर्तन ने इस शतायु व्यक्ति को एक युवक की तरह सीधा खड़ा कर दिया।

“महाराज,” उसने कहा, “आप डॉक्टर हैं। सबसे पहले मुझे एक बात बताइए। वह मर चुका है, है ना?”

अत्यधिक चिंता से ग्रस्त डॉक्टर चुप रहे।

एम. गिलनोर्मंड ने भयानक हंसी के साथ अपने हाथ मल दिए।

“वह मर गया! वह मर गया! वह मर गया! उसने बैरिकेड पर खुद को मार डाला! मुझसे नफरत के कारण! उसने मुझे नीचा दिखाने के लिए ऐसा किया! आह! हे खून पीने वाले! यही है उसका मेरे पास लौटना! मेरे जीवन का दुर्भाग्य, वह मर गया!”

वह खिड़की के पास गया, उसे पूरी तरह खोल दिया मानो उसका दम घुट रहा हो, और अंधेरे के सामने सीधा खड़ा होकर, वह सड़क पर, रात से बात करने लगा:

“छेदा गया, तलवार से भेदा गया, नष्ट किया गया, चीरा गया, टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया! ज़रा देखो तो ज़रा, उस दुष्ट को! उसे अच्छी तरह पता था कि मैं उसका इंतज़ार कर रही थी, और मैंने उसका कमरा सजा रखा था, और मैंने अपने बिस्तर के सिरहाने उसकी बचपन की तस्वीर रखी थी! उसे अच्छी तरह पता था कि उसे बस वापस आना था, और मैं सालों से उसे याद कर रही थी, और मैं अपनी आग के पास बैठी, घुटनों पर हाथ रखे, समझ नहीं पा रही थी कि क्या करूँ, और मैं इस बात से पागल हो रही थी! तुम्हें अच्छी तरह पता था कि तुम्हें बस वापस आकर कहना था: 'मैं हूँ,' और तुम घर के मालिक बन जाते, और मैं तुम्हारी बात मानती, और तुम अपने बूढ़े बेवकूफ दादाजी के साथ जो चाहो कर सकते थे! तुम्हें यह अच्छी तरह पता था, और तुमने कहा:

“नहीं, वह राजशाही समर्थक है, मैं नहीं जाऊँगी! और तुम बैरिकेड्स पर गई थीं, और तुमने द्वेषवश अपनी जान दे दी! मैंने तुमसे ड्यूक डी बेरी के बारे में जो कहा था, उसका बदला लेने के लिए। यह शर्मनाक है! तो जाओ और चैन से सो जाओ! वह मर चुका है, और यही मेरी जागृति है।”

डॉक्टर, जो दोनों तरफ से बेचैन होने लगा था, एक पल के लिए मारियस को छोड़कर एम. गिलनोर्मंड के पास गया और उसका हाथ पकड़ लिया। दादाजी मुड़े, बड़ी-बड़ी और लाल आँखों से उसे घूरते हुए शांत स्वर में बोले:

“धन्यवाद महोदय। मैं शांत हूँ, मैं एक पुरुष हूँ, मैंने लुई सोलहवें की मृत्यु देखी है, मैं घटनाओं को सहन करना जानता हूँ। एक बात भयानक है और वह यह सोचना कि यह सब गड़बड़ आपके अखबारों की वजह से हो रही है। आपके पास लेखक, गपशप करने वाले, वकील, वक्ता, मंच, चर्चाएँ, प्रगति, ज्ञान, मानवाधिकार, प्रेस की स्वतंत्रता होगी, और यही वह तरीका है जिससे आपके बच्चे आपके पास घर लाए जाएँगे। आह! मारियस! यह घिनौना है! मारा गया! मेरे सामने मरा! एक बैरिकेड! आह, बदमाश! डॉक्टर, मुझे लगता है आप इसी इलाके में रहते हैं? ओह! मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ। मैंने आपकी कैब्रियोलेट को अपनी खिड़की से गुजरते देखा है। मैं आपको बताने जा रहा हूँ। यह सोचना गलत है कि मैं क्रोधित हूँ। कोई मरे हुए आदमी पर क्रोधित नहीं होता। यह मूर्खता होगी। यह वह बच्चा है जिसे मैंने पाला है। जब वह बहुत छोटा था तब

मैं बूढ़ा हो चुका था। वह ट्यूलरीज़ के बगीचे में अपने छोटे से फावड़े और अपनी छोटी सी कुर्सी के साथ खेलता था, और ताकि निरीक्षक शायद शिकायत न करें, मैंने उसके फावड़े से ज़मीन में खोदे गए गड्ढों को अपनी छड़ी से भर दिया। एक दिन वह चिल्लाया: लुई XVIII मुर्दाबाद! और चला गया। इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। वह बिल्कुल गुलाबी और सुनहरे बालों वाला था। उसकी माँ मर चुकी है। क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि सभी छोटे बच्चे सुनहरे बालों वाले होते हैं? ऐसा क्यों है? वह लोइरे के उन डाकुओं में से एक का बेटा है, लेकिन बच्चे अपने पिता के अपराधों से निर्दोष होते हैं। मुझे याद है जब वह इससे छोटा ही था। वह 'डी' का उच्चारण भी ठीक से नहीं कर पाता था। उसके बोलने का तरीका इतना मीठा और अस्पष्ट था कि आपको लगता जैसे कोई पक्षी चहचहा रहा हो। मुझे याद है एक बार, हरक्यूलिस फार्नेस के सामने, लोग उसे निहारने और उसकी सुंदरता पर आश्चर्य करने के लिए एक घेरा बनाकर खड़े हो गए थे, वह बच्चा कितना सुंदर था! उसका सिर बिल्कुल वैसा ही था जैसा तस्वीरों में दिखता है। मैंने गहरी आवाज़ में बात की और उसे अपनी छड़ी से डराया, लेकिन वह अच्छी तरह जानता था कि यह सिर्फ उसे हंसाने के लिए था। सुबह जब वह मेरे कमरे में आया, तो मैंने बड़बड़ाया, लेकिन फिर भी वह मेरे लिए सूरज की रोशनी जैसा था। उन शरारती बच्चों से कोई अपना बचाव नहीं कर सकता। वे आपको पकड़ लेते हैं, कसकर पकड़ लेते हैं, फिर कभी जाने नहीं देते। सच तो यह है कि उस बच्चे जैसा प्यार का देवता कभी नहीं था। अब, आप अपने लाफायेट्स, बेंजामिन कॉन्स्टेंट्स और टिरेकुइर डी कोरसेल्स के बारे में क्या कहेंगे जिन्होंने उसे मार डाला? इसे इस तरह से जाने नहीं दिया जा सकता।

वह मारियस के पास पहुँचा, जो अभी भी पीला और बेजान पड़ा था, और जिसके पास चिकित्सक लौट आया था, और एक बार फिर अपने हाथ मलने लगा। बूढ़े आदमी के पीले होंठ मानो यंत्रवत हिल रहे थे, और उनसे मुश्किल से सुनाई देने वाले शब्द निकल रहे थे, जैसे मृत्यु की पीड़ा में साँसें।

"आह! हृदयहीन लड़का! आह! क्लबिस्ट! आह! दुष्ट! आह! सेप्टेम्ब्रिस्ट!"

पीड़ा से व्याकुल एक व्यक्ति की धीमी आवाज में एक शव को संबोधित निंदा।

धीरे-धीरे, जैसा कि आंतरिक उथल-पुथल का प्रकट होना हमेशा अपरिहार्य होता है, शब्दों का क्रम वापस आ गया, लेकिन दादाजी में अब उन्हें बोलने की शक्ति

नहीं बची थी, उनकी आवाज इतनी कमजोर और विलुप्त हो गई थी कि ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी खाई के दूसरी ओर से आ रही हो।

“मुझे तो कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं भी तो मरने वाली हूँ, बस यही बात है। और सोचो, पेरिस में ऐसी कोई औरत नहीं होगी जो इस अभागे को खुश करने में खुशी न महसूस करती! एक बदमाश जो मौज-मस्ती करने और ज़िंदगी का आनंद लेने के बजाय लड़ने चला गया और एक दरिंदे की तरह खुद को गोली मार ली! और किसके लिए? क्यों? गणतंत्र के लिए! चाउमियर में नाचने जाने के बजाय, जैसा कि नौजवानों का फर्ज होता है! बीस साल का होने का क्या फायदा? गणतंत्र, एक शापित सुंदर मूर्खता! बेचारी माँ, अच्छे लड़के पैदा करो! चलो, वह मर गया। एक ही गाड़ी के गेट के नीचे दो अंत्येष्टि होंगी। तो तुमने जनरल लामार्क की सुंदर आँखों के लिए खुद को इस तरह सजा लिया! उस जनरल लामार्क ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? एक हत्यारा! एक बकबक करने वाला! एक मरे हुए आदमी के लिए खुद को मरवा देना! अगर यह किसी को पागल करने के लिए काफी नहीं है! ज़रा सोचो! बीस साल की उम्र में! और बिना सिर घुमाए यह देखे कि क्या वह अपने पीछे कुछ नहीं छोड़ रहा था! आजकल बेचारे, भले-बुजुर्गों को इसी तरह अकेले मरने के लिए मजबूर किया जाता है। अपने कोने में ही मर जाओ, उल्लू! खैर, आखिरकार, यही तो अच्छा है, मैं यही तो उम्मीद कर रहा था, यह मुझे मौके पर ही मार देगा। मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ, मैं सौ साल का हूँ, मैं एक लाख साल का हूँ, मुझे तो बहुत पहले ही मर जाना चाहिए था। इस वार ने सब कुछ खत्म कर दिया। तो सब खत्म, कितनी खुशी! उसे अमोनिया और उन सभी दवाओं को सुंघाने का क्या फायदा? तुम अपनी मेहनत बर्बाद कर रहे हो, मूर्ख डॉक्टर! आओ, वह मर गया है, पूरी तरह से मर गया है। मैं सब जानता हूँ, मैं खुद भी मर चुका हूँ। उसने कोई काम अधूरा नहीं किया। हाँ, यह युग बदनाम है, बदनाम है और मैं तुम्हारे बारे में, तुम्हारे विचारों के बारे में, तुम्हारी प्रणालियों के बारे में, तुम्हारे गुरुओं के बारे में, तुम्हारे भविष्यवक्ताओं के बारे में, तुम्हारे डॉक्टरों के बारे में, तुम्हारे निकम्मे लेखकों के बारे में, तुम्हारे बदमाश दार्शनिकों के बारे में और उन सभी क्रांतियों के बारे में यही सोचता हूँ जो पिछले कुछ समय से चल रही हैं। साठ वर्षों से तुम टुइलरीज़ में कौवों के झुंड को डराते आ रहे हो! लेकिन तुमने इस तरह खुद को मरवा कर

निर्दयता दिखाई, मैं तुम्हारी मृत्यु पर शोक भी नहीं मनाऊँगा, समझे ना, हत्यारे?

उसी क्षण, मारियस ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं, और उसकी निगाह, जो अभी भी सुस्त आश्चर्य से धुंधली थी, एम. गिलनोर्मंड पर टिकी।

“मारियस!” बूढ़े ने पुकारा। “मारियस! मेरे प्यारे मारियस! मेरे बच्चे! मेरे प्रिय पुत्र! तुमने अपनी आँखें खोलीं, तुमने मुझे देखा, तुम जीवित हो, धन्यवाद!”

और वह बेहोश होकर गिर पड़ा।

पुस्तक **IV.** जावर्ट पटरी से उतरा

आई. जावर्ट धीरे-धीरे रुए डे ल'होमे आर्मे से नीचे की ओर बढ़े।

वह अपने जीवन में पहली बार सिर झुकाकर चला, और इसी तरह, अपने जीवन में पहली बार अपने हाथ पीठ के पीछे रखकर चला।

उस दिन तक, जेवर्ट ने नेपोलियन के हाव-भाव से केवल दृढ़ संकल्प को दर्शाने वाला हाव-भाव ही अपनाया था, जिसमें सीने पर बाहें बाँधी जाती थीं; अनिश्चितता को दर्शाने वाला हाव-भाव—पीठ के पीछे हाथ रखना—उसके लिए बिल्कुल अनजान था। अब, एक बदलाव आ चुका था; उसका पूरा व्यक्तित्व, धीमा और गंभीर, चिंता से भरा हुआ था।

वह सन्नाटे भरी गलियों में घुस गया।

फिर भी, उसने दिए गए एक निर्देश का पालन किया।

उसने सीन नदी तक पहुँचने के लिए सबसे छोटा रास्ता चुना, क्वाई डेस ओर्मेस पहुँचा, घाट के किनारे-किनारे चला, ग्रेव को पार किया और प्लेस डू शैटेलेट के खंभे से कुछ दूरी पर, पोंट नोट्रे-डेम के कोने पर रुक गया। वहाँ, एक तरफ नोट्रे-डेम और पोंट औ चेंज के बीच, और दूसरी तरफ क्वाई डे ला मेगिसेरी और क्वाई औक्स फ्लावर्स के बीच, सीन नदी एक वर्गाकार झील का रूप ले लेती है, जिसके बीच से एक तेज धारा बहती है।

सीन नदी का यह हिस्सा नाविकों के लिए बेहद खतरनाक है। उस समय यह तेज़ धारा चारों ओर से घिरी रहती थी और पुल पर मौजूद चक्की के खंभों (जो अब ध्वस्त हो चुके हैं) से और भी उग्र हो जाती थी। दोनों पुलों के इतने करीब होने से खतरा और भी बढ़ जाता है; पानी मेहराबों के बीच से भयंकर गति से बहता है। यह विशाल और भयानक लहरों के रूप में उमड़ता है; वहाँ जमा होकर ढेर लग जाता है; बाढ़ पुलों के खंभों पर ऐसे हमला करती है मानो उन्हें किसी बड़ी रस्स से उखाड़ फेंकना चाहती हो। जो लोग वहाँ गिर जाते हैं वे कभी वापस नहीं आते; यहाँ तक कि सबसे कुशल तैराक भी डूब जाते हैं।

जैवरट ने अपनी दोनों कोहनियों को दीवार की चौखट पर टिका दिया, अपनी ठुड्डी को दोनों हाथों में रखा, और जब उसके नाखून उसकी घनी मूंछों में यंत्रवत रूप से उलझे हुए थे, तब वह ध्यान में डूबा हुआ था।

उसके अस्तित्व की गहराई में एक नवीनता, एक क्रांति, एक आपदा घटित हुई थी; और उसके पास खुद का विश्लेषण करने के लिए कुछ था।

जावर्ट भयानक पीड़ा से गुजर रहा था।

कई घंटों तक जावर्ट का व्यवहार सहज नहीं रहा। वह परेशान था; उसका वह मस्तिष्क, जो अंधापन में इतना निर्मल था, अपनी स्पष्टता खो बैठा था; वह क्रिस्टल धुंधला हो गया था। जावर्ट को अपने अंतरात्मा में कर्तव्य का विभाजन महसूस हो रहा था, और वह इस तथ्य को स्वयं से छिपा नहीं सकता था। जब सीन नदी के किनारे उसकी जीन वालजेन से अप्रत्याशित मुलाकात हुई थी, तो उसके भीतर उस भेड़िये का अंश था जो अपने शिकार पर पुनः पकड़ बना लेता है, और उस कुत्ते का अंश था जो अपने स्वामी को फिर से पा लेता है।

उसके सामने दो सीधे रास्ते थे, लेकिन उसने दो रास्ते देखे; और यह देखकर वह भयभीत हो गया; वह, जिसने अपने पूरे जीवन में कभी एक सीधी रेखा से अधिक नहीं देखी थी। और सबसे गहरी पीड़ा इस बात में थी कि दोनों रास्ते एक दूसरे के विपरीत थे। एक सीधी रेखा दूसरी को काट रही थी। इन दोनों में से सच्चा रास्ता कौन सा था?

उनकी स्थिति का वर्णन करना असंभव था।

किसी अपराधी का ऋणी होना, उस ऋण को स्वीकार करना और उसे चुकाना; अनजाने में ही न्याय से भागे हुए अपराधी के समान होना और उसकी सेवा का बदला दूसरी सेवा से चुकाना; उसे "जाओ" कहे जाने देना और बदले में उसे "आज़ाद हो जाओ" कहना; व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिए कर्तव्य, उस सामान्य दायित्व का त्याग करना और उन व्यक्तिगत उद्देश्यों में किसी ऐसी चीज़ के प्रति सचेत रहना जो सामान्य भी हो, और शायद श्रेष्ठ भी हो, अपने विवेक के प्रति सच्चा रहने के लिए समाज को धोखा देना; इन सभी निरर्थक बातों का साकार होना और उन पर हावी होना—यही वह बात थी जिसने उन्हें व्याकुल कर दिया।

एक बात ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया था - यह कि जीन वाल्जेन ने उस पर एहसान किया था, और एक बात ने उसे भयभीत कर दिया था - कि उसने, जावर्ट ने, जीन वाल्जेन पर एहसान किया था।

वह कहाँ खड़ा था? उसने अपनी स्थिति को समझने की कोशिश की, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या हो रहा है।

अब वह क्या करता? जीन वालजेन को सौंपना भी गलत था; उसे आज़ाद छोड़ना भी गलत था। पहले मामले में, एक अधिकारी आम आदमी से भी नीचा गिरता, दूसरे में, एक अपराधी कानून से ऊपर उठकर उसे रौंदता। दोनों ही मामलों में, जेवर्ट के लिए अपमान ही था। वह जो भी फैसला लेता, उसमें शर्मिंदगी ही छिपी थी। नियति की कुछ ऐसी चरम सीमाएँ होती हैं जो असंभव से सीधे उठती हैं, और जिनके आगे जीवन एक खाई के सिवा कुछ नहीं रह जाता। जेवर्ट ऐसी ही एक चरम सीमा पर पहुँच गया था।

उनकी चिंताओं में से एक यह थी कि उन्हें सोचने के लिए विवश होना पड़ता था। इन सभी परस्पर विरोधी भावनाओं की तीव्रता ही उन्हें ऐसा करने के लिए विवश करती थी। सोचना एक ऐसी चीज थी जिससे वे अपरिचित थे, और जो विशेष रूप से कष्टदायक थी।

विचारों में हमेशा कुछ हद तक आंतरिक विद्रोह मौजूद रहता है; और यह बात उसे अपने भीतर होने से चिढ़ दिलाती थी।

अपने कार्यक्षेत्र से बाहर किसी भी विषय पर विचार करना उनके लिए व्यर्थ और थकाऊ होता; बीते हुए दिन के बारे में सोचना तो उनके लिए किसी यातना से कम नहीं था। फिर भी, ऐसे आघातों के बाद उनके लिए अपने अंतरात्मा की आवाज़ सुनना और स्वयं का मूल्यांकन करना अपरिहार्य था।

उसने जो किया था, उससे वह कांप उठा। उसने, जावर्ट ने, पुलिस के सभी नियमों, संपूर्ण सामाजिक और न्यायिक व्यवस्था, संपूर्ण संहिता के विरुद्ध जाकर, एक व्यक्ति को रिहा करने का निर्णय लिया था; यह उसके लिए उचित था; उसने सार्वजनिक मामलों के स्थान पर अपने निजी मामलों को प्राथमिकता दी थी; क्या यह अनुचित नहीं था? जब भी वह अपने द्वारा किए गए इस अनाम कृत्य का सामना करता, वह सिर से पैर तक कांप उठता। उसे क्या निर्णय लेना चाहिए था? उसके पास केवल एक ही उपाय बचा था; पूरी शीघ्रता से रुए डे ल'होमे आर्मे लौटकर जीन

वालजेन को जेल में डाल देना। यह स्पष्ट था कि उसे यही करना चाहिए था। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका।

उस दिशा में जाने के रास्ते में किसी चीज ने उसका रास्ता रोक दिया था।

कुछ? क्या? क्या दुनिया में न्यायाधिकरणों, फांसी की सजाओं, पुलिस और अधिकारियों के अलावा भी कुछ है? जावर्ट पूरी तरह से हैरान था।

एक पवित्र दास! एक अपराधी जिसे कानून छू भी नहीं सकता था! और यह सब जावर्ट का कारनामा था!

क्या यह भयावह बात नहीं थी कि जावर्ट और जीन वालजेन, एक वो व्यक्ति जिसे जोश से आगे बढ़ने के लिए मजबूर किया गया था, एक वो व्यक्ति जिसे अधीन रहने के लिए मजबूर किया गया था—ये दोनों व्यक्ति, जो कानून के अधीन थे, इस स्थिति में पहुँच गए कि दोनों ने खुद को कानून से ऊपर समझ लिया? फिर क्या हुआ! ऐसे अत्याचार होने थे और किसी को भी दंडित नहीं किया जाना था! जीन वालजेन, जो पूरे सामाजिक तंत्र से अधिक शक्तिशाली था, स्वतंत्र रहना था, और जावर्ट सरकार की रोटी खाता रहना था!

उसकी तल्लीनता धीरे-धीरे भयावह होती चली गई।

इस चिंतन में खोए हुए वह शायद उस विद्रोही के बारे में भी आत्म-निंदा कर सकते थे जिसे रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर ले जाया गया था; लेकिन उन्होंने इस बारे में कभी सोचा भी नहीं। छोटी गलती बड़ी गलती के आगे दब गई। इसके अलावा, वह विद्रोही स्पष्ट रूप से मर चुका था, और कानूनी तौर पर, मृत्यु के साथ ही पीछा करना समाप्त हो जाता है।

जीन वाल्जेन वह बोझ था जो उसकी आत्मा पर भारी पड़ रहा था।

जीन वालजेन ने उसे व्याकुल कर दिया। वे सभी सिद्धांत जो जीवन भर उसके लिए सहारा बने रहे थे, इस व्यक्ति की उपस्थिति में चकनाचूर हो गए। जीन वालजेन की उदारता ने, जेवर्ट को, चकनाचूर कर दिया। अन्य तथ्य जो उसे अब याद आ रहे थे, जिन्हें वह पहले झूठ और मूर्खता समझता था, अब उसे वास्तविकता के रूप में दिखाई देने लगे। जीन वालजेन के पीछे एम. मेडेलीन फिर से प्रकट हुईं, और दोनों आकृतियाँ इस प्रकार एक-दूसरे पर आ गईं कि अब वे एक ही आदरणीय छवि बन गईं। जेवर्ट ने महसूस किया कि कुछ भयानक उसकी आत्मा में प्रवेश कर रहा है

— एक कैदी के लिए प्रशंसा। एक दास के लिए सम्मान—क्या यह संभव है? वह इस पर कांप उठा, फिर भी इससे बच नहीं सका। व्यर्थ ही उसने संघर्ष किया, अंततः उसे अपने अंतर्मन में उस अभागे की महानता को स्वीकार करना पड़ा। यह घृणित था।

एक परोपकारी अपराधी, दयालु, सौम्य, मददगार, करुणामय, एक अपराधी, बुराई के बदले भलाई करने वाला, घृणा के बदले क्षमा देने वाला, प्रतिशोध की जगह दया को प्राथमिकता देने वाला, अपने शत्रु को नष्ट करने की बजाय स्वयं को नष्ट करना पसंद करने वाला, जिसने उसे चोट पहुंचाई थी उसे बचाने वाला, सद्गुणों के शिखर पर नतमस्तक, मनुष्य से अधिक देवदूत के समान। जावर्ट को यह स्वीकार करना पड़ा कि ऐसा राक्षस वास्तव में मौजूद था।

हालात इस तरह से नहीं चल सकते थे।

निश्चित रूप से, और हम इस बात पर ज़ोर देते हैं, उसने उस राक्षस, उस कुख्यात फ़रिश्ते, उस भयानक नायक के सामने बिना प्रतिरोध के आत्मसमर्पण नहीं किया था, जिसने उसे जितना विस्मित किया था, उतना ही क्रोधित भी किया था। बीस बार, जब वह उस रथ में जीन वालजेन के आमने-सामने बैठा था, उसके भीतर का कानूनी शेर दहाड़ उठा था। बीस बार उसे जीन वालजेन पर झपटने, उसे पकड़कर खा जाने, यानी उसे गिरफ्तार करने का प्रलोभन हुआ था। वास्तव में, इससे आसान क्या हो सकता था? पहले खंभे पर चिल्लाना: “यह न्याय से भागा हुआ अपराधी है, जिसने अपना प्रतिबंध तोड़ा है!” पुलिसकर्मियों को बुलाना और उनसे कहना: “यह आदमी तुम्हारा है!” फिर उस दोषी व्यक्ति को वहीं छोड़कर चले जाना, बाकी सब कुछ अनदेखा कर देना और मामले में आगे हस्तक्षेप न करना। यह आदमी हमेशा के लिए कानून का कैदी है; कानून उसके साथ जो चाहे कर सकता है। इससे अधिक न्यायसंगत क्या हो सकता है? जावर्ट ने यह सब अपने मन में कहा था; वह आगे बढ़ना चाहता था, कुछ करना चाहता था, उस आदमी को पकड़ना चाहता था, और तब भी, और अब भी, वह ऐसा नहीं कर पाया था; और हर बार जब उसका हाथ जीन वालजेन के कॉलर की ओर बेतहाशा उठा, तो उसका हाथ भारी बोझ के नीचे दबकर वापस गिर गया, और अपने विचारों की गहराई में उसने एक आवाज़ सुनी, एक अजीब आवाज़ जो उससे कह रही थी:—“सब ठीक है। अपने रक्षक को सौंप दो। फिर पोंटियस पिलाट का पात्र मंगवाओ और अपने पंजे धो लो।”

फिर उनके विचार स्वयं पर केंद्रित हो गए और जीन वाल्जेन के बगल में गौरवशाली रूप में देखे जाने पर उन्होंने स्वयं को, जावर्ट को, पतित अवस्था में पाया।

एक अपराधी ही उनका संरक्षक था!

लेकिन फिर उसने उस आदमी को उसे ज़िंदा छोड़ने की इजाज़त क्यों दी? उसे उस घेराबंदी में मारे जाने का पूरा अधिकार था। उसे अपने इस अधिकार का इस्तेमाल करना चाहिए था। जीन वालजेन के खिलाफ़ दूसरे विद्रोहियों को बुलाकर खुद को गोली मरवा लेना उसके लिए बेहतर होता।

उनकी सबसे बड़ी पीड़ा निश्चितता का खो जाना था। उन्हें लगा जैसे उन्हें जड़ से उखाड़ दिया गया हो। कानून अब उनके हाथ में एक ठूंठ मात्र रह गया था। उन्हें एक अज्ञात प्रकार के नैतिक संकोचों से जूझना पड़ा। उनके भीतर एक भावनात्मक रहस्योद्घाटन हुआ था जो अब तक उनके एकमात्र मापदंड रहे कानूनी कथन से बिल्कुल अलग था। अपनी पूर्व निष्ठा बनाए रखना पर्याप्त नहीं था। अप्रत्याशित तथ्यों का एक पूरा क्रम सामने आया और उन्हें वश में कर लिया। उनकी आत्मा पर एक बिल्कुल नई दुनिया का उदय हो रहा था: स्वीकार की गई और चुकाई गई दया, भक्ति, करुणा, उदारता, कठोरता पर दया द्वारा की गई हिंसा, व्यक्तियों के प्रति सम्मान, अब कोई निश्चित निंदा नहीं, अब कोई दृढ़ विश्वास नहीं, कानून की आँखों में आंसू आने की संभावना, कोई नहीं जानता कि ईश्वर के अनुसार न्याय क्या है, जो मनुष्यों के अनुसार न्याय के विपरीत है। उन्होंने अंधकार के बीच एक अज्ञात नैतिक सूर्य का भयानक उदय देखा; इसने उन्हें भयभीत और चकित कर दिया। एक उल्लू जो चील की निगाहों के सामने विवश हो गया हो।

उसने मन ही मन सोचा कि यह सच है कि अपवाद होते हैं, कि अधिकार को निष्प्रभावी किया जा सकता है, कि किसी तथ्य की उपस्थिति में नियम अपर्याप्त हो सकता है, कि हर चीज को संहिता के दायरे में नहीं रखा जा सकता, कि अप्रत्याशित घटना आज्ञापालन को बाध्य करती है, कि एक अपराधी का सद्गुण पदाधिकारी के सद्गुण के लिए जाल बिछा सकता है, कि भाग्य ऐसे ही घात लगाता है, और उसने निराशा के साथ विचार किया कि वह स्वयं भी किसी अप्रत्याशित घटना से सुरक्षित नहीं था।

उसे यह स्वीकार करने के लिए विवश होना पड़ा कि अच्छाई वास्तव में मौजूद है। यह कैदी अच्छा था। और वह स्वयं, अप्रत्याशित परिस्थितियों में, अच्छा बन गया था। इसलिए वह पतित होता जा रहा था।

उसे एहसास हुआ कि वह एक कायर है। उसे खुद से ही घृणा होने लगी।

जैवरट का आदर्श मानवीय होना, महान होना या उदात्त होना नहीं था; बल्कि निर्दोष होना था।

अब, वह इसमें असफल हो गया था।

आखिर उसकी यह हालत कैसे हो गई? यह सब कैसे हुआ? वह खुद भी नहीं बता सकता था।
उसने अपने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया, लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद भी वह खुद को इसका कारण नहीं समझा सका।

उसने हमेशा से ही जीन वाल्जेन को उस कानून के अधीन लाने का इरादा रखा था, जिसका वह कैदी था और जिसका वह, जावर्ट, गुलाम था। जब तक वह उसे अपनी गिरफ्त में रखे रहा, उसने एक पल के लिए भी अपने मन में उसे रिहा करने का विचार नहीं किया था। अनजाने में ही, उसकी चेतना के बिना, उसका हाथ ढीला पड़ गया और उसने उसे मुक्त कर दिया।

उसके सामने तरह-तरह के सवाल कौंध गए। उसने खुद से सवाल किए, खुद को जवाब दिए, और उसके जवाबों ने उसे डरा दिया। उसने खुद से पूछा: “उस कैदी ने, उस हताश आदमी ने, जिसका मैंने पीछा किया, यहाँ तक कि मुझे सताया भी, जिसने मुझे अपने पैरों तले रौंदा, जो बदला ले सकता था, और जिसने अपनी दुश्मनी और अपनी सुरक्षा दोनों के चलते मुझे ज़िंदा छोड़ दिया, मुझ पर दया दिखाई, ऐसा क्या किया? क्या यह उसका कर्तव्य था? नहीं। कुछ और था। और मैंने भी बदले में उस पर दया दिखाकर क्या किया? क्या यह मेरा कर्तव्य था? नहीं। कुछ और था। तो क्या कर्तव्य से परे भी कुछ है?” यहाँ वह भयभीत हो गया; उसका संतुलन बिगड़ गया; एक पलड़ा खाई में गिर गया, दूसरा आसमान की ओर उठ गया, और जावर्ट ऊपर वाले पलड़े से उतना ही भयभीत था जितना नीचे वाले पलड़े से। वह न तो वोल्टेयरवादी थे, न दार्शनिक, और न ही अविश्वासी। इसके विपरीत, वे सहज रूप से स्थापित चर्च के प्रति आदर रखते थे, और उसे केवल सामाजिक समग्रता का एक भव्य अंश मानते थे। व्यवस्था ही उनका सिद्धांत था, और उनके लिए पर्याप्त था। जब से उन्होंने वयस्कता प्राप्त की और एक पदाधिकारी का पद संभाला, तब

से उन्होंने अपना लगभग सारा धर्म पुलिस में ही केंद्रित कर लिया था। वे— और यहाँ हम शब्दों का प्रयोग बिना किसी व्यंग्य के और उनके सबसे गंभीर अर्थ में कर रहे हैं—जैसा कि हमने कहा है, एक जासूस थे, जैसे अन्य लोग पुजारी होते हैं। उनका एक वरिष्ठ अधिकारी था, एम. गिस्केट; उस दिन तक उन्होंने कभी उस दूसरे वरिष्ठ अधिकारी, ईश्वर के बारे में सोचा भी नहीं था।

उसे अचानक अपने इस नए मुखिया, ईश्वर, का एहसास हुआ और वह उससे शर्मिंदा महसूस करने लगा। इस अप्रत्याशित उपस्थिति ने उसे विचलित कर दिया; वह समझ नहीं पा रहा था कि इस वरिष्ठ अधिकारी के साथ क्या करे, जबकि वह इस तथ्य से भली-भांति परिचित था कि अधीनस्थ को हमेशा झुकना चाहिए, अवज्ञा नहीं करनी चाहिए, दोष नहीं निकालना चाहिए, बहस नहीं करनी चाहिए, और यह कि जब कोई वरिष्ठ अधिकारी उसे अत्यधिक आश्चर्यचकित कर दे, तो अधीनस्थ के पास त्यागपत्र देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता।

लेकिन वह ईश्वर को अपना त्यागपत्र सौंपने की प्रक्रिया कैसे शुरू करता?

हालात चाहे जैसे भी हों—और वह बार-बार इसी बात पर लौटता था—उसके लिए एक ही बात सर्वोपरि थी, और वह यह कि उसने अभी-अभी कानून का घोर उल्लंघन किया था। उसने अभी-अभी एक भागे हुए कैदी को नज़रअंदाज़ किया था जिसने अपना बंधन तोड़ा था। उसने अभी-अभी एक दास को आज़ाद कर दिया था। उसने अभी-अभी कानून से उस व्यक्ति को छीन लिया था जो कानून का हिस्सा था। यही उसने किया था। वह अब खुद को समझ नहीं पा रहा था। उसके इस कृत्य के पीछे के कारण भी उसकी समझ से परे थे; केवल उनका भ्रम ही उसके साथ रह गया था। उस क्षण तक वह उस अंधविश्वास के साथ जी रहा था जो निराशावादी ईमानदारी से पैदा होता है। यह विश्वास उसे छोड़ चुका था, यह ईमानदारी उसका साथ छोड़ चुकी थी। उसका सारा विश्वास पिघल गया था। जिन सच्चाइयों को वह पहचानना नहीं चाहता था, वे उसे लगातार घेर रही थीं। अब से उसे एक अलग इंसान बनना होगा। वह उस अंतरात्मा के अजीब दर्द से पीड़ित था जिसका मोतियाबिंद का ऑपरेशन अचानक हो गया हो। उसने वह देखा जिसे देखना उसके लिए घृणित था। उसे ऐसा महसूस हो रहा था मानो वह अंदर से खाली, बेकार, अपने अतीत से कटा हुआ, बहिष्कृत और विलीन हो गया हो। उसके भीतर सत्ता का अस्तित्व समाप्त हो चुका था। उसके पास जीने का कोई कारण नहीं बचा था।

बहुत ही भयावह स्थिति! दिल को छू लेने वाली।

पत्थर की तरह कठोर होकर भी संदेह करना! कानून के सांचे में ढली हुई दंड की मूर्ति की तरह अचानक इस बात का अहसास होना कि अपने कांसे के सीने के नीचे कुछ बेतुका और अवज्ञाकारी छिपाए हुए है जो लगभग हृदय जैसा दिखता है! अच्छाई के बदले अच्छाई करने की स्थिति में आ जाना, जबकि उस दिन तक आपने स्वयं से कहा हो कि वह अच्छाई बुराई है! पहरेदार होकर घुसपैठिए का हाथ चाटना! बर्फ होकर पिघल जाना! चिमटे होकर हाथ में बदल जाना! अचानक अपनी उंगलियों को खुलते हुए महसूस करना! अपनी पकड़ ढीली कर देना—कितनी भयानक बात है!

वह मानव-प्रक्षेपास्त्र अब अपने मार्ग से अपरिचित है और पीछे हट रहा है!

स्वयं से यह स्वीकार करने के लिए बाध्य होना: अचूकता अचूक नहीं है, सिद्धांत में त्रुटि हो सकती है, जब कोई संहिता बोलती है तो सब कुछ कहा नहीं जाता, समाज परिपूर्ण नहीं है, अधिकार अस्थिरता से जटिल है, अपरिवर्तनीय में दरार संभव है, न्यायाधीश भी मनुष्य ही हैं, कानून में त्रुटि हो सकती है, न्यायाधिकरण गलती कर सकते हैं! आकाश के विशाल नीले भाग में एक दरार देखना!

जैवरट में जो घट रहा था, वह एक सीधी रेखा में चलने वाली अंतरात्मा का पतन था, एक आत्मा का पटरी से उतरना था, उस सत्यनिष्ठा का चकनाचूर होना था जो अदम्य रूप से एक सीधी रेखा में आगे बढ़ रही थी और ईश्वर के विरुद्ध टूट रही थी। यह वास्तव में विलक्षण था कि व्यवस्था का रक्षक, सत्ता का अभियंता, कठोर मार्ग वाले अंधे लोहे के घोड़े पर सवार होकर, प्रकाश की एक चमक से बेदखल हो सकता था! कि अचल, प्रत्यक्ष, सही, ज्यामितीय, निष्क्रिय, परिपूर्ण, झुक सकता था! कि उस लोकोमोटिव के लिए दमिश्क का मार्ग मौजूद हो!

ईश्वर, जो हमेशा मनुष्य के भीतर विद्यमान है और अटल है, वह सच्चा विवेक है जो असत्य विवेक का विरोध करता है; चिंगारी को बुझने से रोकने वाला; किरण को सूर्य को याद रखने का आदेश देने वाला; आत्मा को काल्पनिक परम सत्य का सामना करने पर वास्तविक परम सत्य को पहचानने का निर्देश देने वाला; वह मानवता जो कभी नष्ट नहीं हो सकती; अविनाशी मानवीय हृदय; वह अद्भुत घटना, शायद हमारे सभी आंतरिक चमत्कारों में सबसे उत्तम, क्या जावर्ट इसे समझ पाया था? क्या

जावर्ट ने इसे भेद पाया था? क्या जावर्ट ने स्वयं को इसका कारण समझाया था? स्पष्ट रूप से नहीं। लेकिन उस निर्विवाद अबोधगम्यता के दबाव में उसे लगा जैसे उसका मस्तिष्क फट रहा हो।

वह रूपांतरित व्यक्ति से अधिक इस चमत्कार का शिकार था। इन सबमें उसे केवल जीवन की घोर कठिनाई ही दिखाई दे रही थी। उसे ऐसा लग रहा था मानो अब से उसकी साँसें हमेशा के लिए रुक गई हों। उसे अपने सिर पर किसी अज्ञात खतरे के मंडराते रहने की आदत नहीं थी।

अब तक, उसकी दृष्टि में ऊपर की हर चीज़ मात्र एक चिकनी, निर्मल और सरल सतह थी; कुछ भी समझ से परे नहीं था, कुछ भी अस्पष्ट नहीं था; कुछ भी ऐसा नहीं था जो परिभाषित, व्यवस्थित, जुड़ा हुआ, सटीक, परिसीमित, निश्चित, सीमित, बंद, पूर्ण रूप से व्यवस्थित न हो; सत्ता एक समतल सतह थी; उसमें कोई गिरावट नहीं थी, उसकी उपस्थिति में कोई चक्कर नहीं आता था। जावर्ट ने अज्ञात को केवल नीचे से ही देखा था। अनियमित, अप्रत्याशित, अराजकता का अव्यवस्थित द्वार, खाई में गिरने की संभावना—यह सब निम्न लोकों, विद्रोहियों, दुष्टों और अभागों का काम था। अब जावर्ट ने स्वयं को पीछे की ओर झुकाया, और वह अचानक इस अभूतपूर्व दृश्य से भयभीत हो गया: ऊपर एक खाई।

क्या! सब कुछ तहस-नहस हो गया! सब कुछ पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया! अब किस पर भरोसा किया जाए! जो समझौता हुआ था, वो टूट रहा था! क्या! समाज की सुरक्षा में आई खामी एक उदार दुष्ट के हाथों भी उजागर हो सकती है! क्या! कानून का एक ईमानदार सेवक अचानक दो अपराधों के बीच फंस सकता है—एक व्यक्ति को भागने देने का अपराध और उसे गिरफ्तार करने का अपराध! राज्य द्वारा अधिकारी को दिए गए आदेशों में सब कुछ तय नहीं था! कर्तव्य में भी कई अनसुलझे रास्ते हो सकते हैं! क्या—यह सब सच था! क्या यह सच था कि एक पूर्व बदमाश, अपने दोषों के बोझ तले दबकर, फिर से खड़ा हो सकता है और अंत में सही साबित हो सकता है? क्या यह विश्वसनीय था? क्या ऐसे मामले भी थे जिनमें कानून को बदले हुए अपराध के सामने झुकना पड़े और बहाने बनाने पड़ें?—हाँ, यही स्थिति थी! और जावर्ट ने इसे देखा था! और जावर्ट ने इसे महसूस किया था! और वह न केवल इसे नकार नहीं सकता था, बल्कि उसने इसमें हिस्सा भी लिया था। ये वास्तविकताएँ थीं। यह घृणित था कि वास्तविक तथ्य इस हद तक विकृत हो सकते थे। यदि तथ्य अपना कर्तव्य निभाते, तो वे केवल कानून के प्रमाण बनकर

रह जाते; तथ्य—उन्हें तो ईश्वर ही भेजता है। क्या अब अराजकता ऊपर से उतरने वाली थी?

इस प्रकार—पीड़ा की अतिशयोक्ति और घबराहट के भ्रम में, वह सब कुछ जो इस प्रभाव को सुधार और नियंत्रित कर सकता था, मिट गया, और समाज, मानव जाति और ब्रह्मांड, अब से, उसकी आँखों में एक सरल और भयानक रूप में समाहित हो गए— इस प्रकार दंडात्मक कानून, न्याय का विषय, विधान का बल, संप्रभु न्यायालयों के फरमान, न्यायपालिका, सरकार, रोकथाम, दमन, आधिकारिक क्रूरता, ज्ञान, कानूनी अचूकता, अधिकार का सिद्धांत, वे सभी सिद्धांत जिन पर राजनीतिक और नागरिक सुरक्षा, संप्रभुता, न्याय, सार्वजनिक सत्य आधारित हैं, यह सब कचरा, एक आकारहीन ढेर, अराजकता था; वह स्वयं, जावर्ट, व्यवस्था का जासूस, पुलिस की सेवा में निष्ठावान, समाज का रक्षक, पराजित होकर धरती पर पटक दिया गया; और, उस सारी तबाही के शिखर पर, सिर पर हरी टोपी और माथे पर प्रभामंडल वाला एक व्यक्ति खड़ा था; यह वह चौंकाने वाली उलझन थी जिसमें वह फंस गया था; यह वह भयावह दृश्य था जिसे वह अपनी आत्मा में संजोए हुए था।

क्या इसे सहन किया जा सकता था? नहीं।

अगर कभी ऐसी स्थिति रही हो, तो वह यही थी। इससे बचने के केवल दो ही रास्ते थे। एक तो दृढ़ निश्चय के साथ जीन वालजेन के पास जाना और उस कैदी को वापस उसकी कोठरी में पहुँचाना। दूसरा...

जावर्ट ने प्राचीर छोड़ दी और इस बार सिर ऊंचा करके, दृढ़ कदमों से उस थाने की ओर चल पड़ा, जिसे प्लेस डू चैटलेट के एक कोने पर लगी लालटेन से दर्शाया गया था।

वहाँ पहुँचते ही उसने खिड़की से एक पुलिस सार्जेंट को देखा और अंदर चला गया। पुलिसकर्मी थाने का दरवाजा खोलने के तरीके से ही एक-दूसरे को पहचान लेते हैं। जावर्ट ने अपना नाम बताया, सार्जेंट को अपना कार्ड दिखाया और उस मेज पर बैठ गया जिस पर एक मोमबत्ती जल रही थी। मेज पर एक कलम, सीसे की स्याही की बोतल और कागज रखे थे, जो रात के गश्ती दल की संभावित रिपोर्टों और आदेशों के लिए रखे गए थे। यह मेज, जिस पर अब भी पुआल की कुर्सी रखी है, एक संस्था है; यह सभी पुलिस थानों में मौजूद होती है; इस पर हमेशा लकड़ी के बुरादे से भरी तश्तरी और लाल बिस्कुट से भरा गत्ते का डिब्बा रखा रहता है,

और यह आधिकारिक शैली का सबसे निचला स्तर है। यहीं से राज्य साहित्य की शुरुआत होती है।

जैवरट ने एक कलम और कागज का एक पन्ना लिया और लिखना शुरू किया। उसने यह लिखा:

सेवा की बेहतरी के लिए कुछ टिप्पणियाँ

सर्वप्रथम: मैं महाशय प्रीफेक्ट से निवेदन करता हूँ कि वे इस पर अपनी दृष्टि डालें।

दूसरा कारण: कैदियों को जांच के बाद जेल पहुंचने पर अपने जूते उतारने पड़ते हैं और तलाशी के दौरान वे नंगे पैर पत्थरों पर खड़े रहते हैं। उनमें से कई जेल लौटने पर खांसते हैं। इससे अस्पताल का खर्च बढ़ जाता है।

तीसरा: दूर-दूर तक पुलिस एजेंटों की टुकड़ियों के माध्यम से किसी व्यक्ति पर नज़र रखने का तरीका अच्छा है, लेकिन महत्वपूर्ण अवसरों पर यह आवश्यक है कि कम से कम दो एजेंट कभी भी एक-दूसरे की नज़र से ओझल न हों, ताकि यदि किसी कारणवश एक एजेंट अपनी सेवा में कमजोर पड़ जाए, तो दूसरा उसकी निगरानी कर सके और उसका स्थान ले सके।

चौथी बात: यह समझ से परे है कि मैडेलोनेट की जेल का विशेष नियम कैदी को कुर्सी रखने से क्यों रोकता है, भले ही वह इसके लिए भुगतान करे।

पांचवीं बात: मैडेलोनेट में कैंटीन के लिए केवल दो सलाखें हैं, ताकि कैंटीन में काम करने वाली महिला कैदियों को अपने हाथ से छू सके।

छठवीं बात: कैदियों में से जिन्हें उद्घोषक कहा जाता है, जो अन्य कैदियों को बैठक कक्ष में बुलाते हैं, वे कैदी को उसका नाम स्पष्ट रूप से पुकारने के लिए दो सू (लगभग 100 ग्राम) देने के लिए मजबूर करते हैं। यह चोरी है।

सातवीं बात: बुनाई की दुकान में टूटे हुए धागे के लिए दस सू रोक लिए जाते हैं; यह ठेकेदार का शोषण है, क्योंकि इससे कपड़े को कोई नुकसान नहीं होता है।

आठवीं बात: ला फोर्स आने वाले आगंतुकों के लिए यह बात परेशान करने वाली है कि उन्हें सैंटे-मैरी-ल'इजिप्शिएन के बैठक कक्ष तक पहुंचने के लिए लड़कों के आंगन से होकर गुजरना पड़ता है।

नौवां: यह एक सच्चाई है कि किसी भी दिन पुलिस अधिकारियों को प्रीफेक्चर के प्रांगण में मजिस्ट्रेटों द्वारा कैदियों से की गई पूछताछ के बारे में बात करते हुए सुना जा सकता है। गोपनीयता की शपथ लेने वाले पुलिस अधिकारी के लिए जांच कक्ष में सुनी गई बातों को दोहराना एक गंभीर अपराध है।

दसवां: श्रीमती हेनरी एक ईमानदार महिला हैं; उनकी कैंटीन बहुत साफ-सुथरी है; लेकिन गुप्त कोठरियों के दरवाज़े की रखवाली किसी महिला का करना ठीक नहीं है। यह एक महान सभ्यता के दरबार के लिए अशोभनीय है।

जैवरट ने ये पंक्तियाँ अपनी सबसे शांत और सटीक लिखावट में लिखीं, एक भी अल्पविराम नहीं छोड़ा, और कलम से कागज़ को घिसटते हुए लिखा। आखिरी पंक्ति के नीचे उन्होंने हस्ताक्षर किए:

जावर्ट,

प्रथम श्रेणी का निरीक्षक।
प्लेस डू चैटलेट का डाकघर।
7 जून, 1832,
सुबह लगभग एक बजे।

जैवर ने कागज पर लगी ताजा स्याही को सुखाया, उसे पत्र की तरह मोड़ा, सील लगाई, पीछे लिखा: "प्रशासन के लिए नोट", उसे मेज पर रखा और दफ्तर से निकल गया। उसके पीछे शीशे और जालीदार दरवाजा गिर पड़ा।

फिर से वह प्लेस डू चैटलेट को तिरछे पार करते हुए घाट पर पहुंचा और स्वचालित सटीकता के साथ ठीक उसी बिंदु पर लौट आया जिसे उसने पंद्रह मिनट पहले छोड़ा था, अपनी कोहनियों पर सहारा लिया और खुद को फिर से उसी मुद्रा में, मुंडेर के उसी पत्थर पर पाया। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह हिला भी न हो।

चारों ओर घना अंधेरा छाया हुआ था। आधी रात के बाद का वह भयानक सन्नाटा पसरा हुआ था। बादलों की चादर ने तारों को ढक रखा था। शहर के घरों में एक भी बत्ती नहीं जल रही थी; कोई भी राहगीर नहीं था; दिखाई देने वाली सभी सड़कें और घाट सुनसान थे; नोट्रे-डेम और कोर्टहाउस की मीनारें मानो रात के सन्नाटे में डूबी हुई थीं। एक स्ट्रीट लैंप की लालटेन से घाट का किनारा लाल हो रहा था। पुलों की आकृतियाँ धुंध में एक के पीछे एक धुंधली सी पड़ी थीं। हाल ही में हुई बारिश से नदी में पानी बढ़ गया था।

यह याद रखना होगा कि जिस स्थान पर जावर्ट झुका हुआ था, वह ठीक सीन नदी की तीव्र धाराओं के ऊपर स्थित था, ठीक उस भयानक भंवर के ऊपर जो एक अंतहीन पेंच की तरह खुलता और फिर से उलझता है।

जैवरट ने अपना सिर झुकाया और टकटकी लगाई। सब कुछ काला था। कुछ भी स्पष्ट नहीं था। झाग की आवाज़ सुनाई दे रही थी; लेकिन नदी दिखाई नहीं दे रही थी। उस गहरी, चक्करदार गहराई में, कभी-कभी प्रकाश की एक किरण दिखाई देती थी, और धुंधली सी लहरें उठती थीं, मानो पानी में प्रकाश को सोखने की शक्ति हो, न जाने कहाँ से, और उसे एक साँप में बदल देने की। प्रकाश गायब हो जाता था, और सब कुछ फिर से धुंधला हो जाता था। ऐसा लगता था मानो वहाँ विशालता खुल गई हो। नीचे जो था वह पानी नहीं था, वह एक खाई थी। घाट की दीवार, अचानक, अव्यवस्थित, धुएँ में मिली हुई, पल भर में आँखों से ओझल हो जाती थी, जिससे अनंत की एक खड़ी चट्टान का आभास होता था। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, सिवाय पानी की ठंडी हवा और गीले पत्थरों की बासी गंध के। इस अथाह गहराई से एक भयंकर साँस उठ रही थी। नदी में आई बाढ़, जिसे महसूस करने के बजाय कल्पित किया गया था, लहरों की दुखद फुसफुसाहट, पुल के मेहराबों की उदास विशालता, उस अंधकारमय शून्य में गिरने की कल्पना, वह सब कुछ जो छाया से भरा हुआ था, आतंक से भरपूर था।

जैवरट कई मिनट तक स्थिर खड़ा रहा, परछाई के इस खुले हिस्से को घूरता रहा; वह अदृश्य को एक ऐसी एकाग्रता से देख रहा था मानो किसी का ध्यान उस पर केंद्रित हो। पानी गर्जना कर रहा था। अचानक उसने अपनी टोपी उतारकर घाट के किनारे रख दी। एक क्षण बाद, एक लंबा काला साया, जिसे दूर से गुजर रहे किसी राहगीर ने शायद भूत समझ लिया होता, घाट की मुंडेर पर सीधा खड़ा हुआ, सीन नदी की ओर झुका, फिर सीधा खड़ा हुआ और सीधे परछाई में गिर गया; एक धीमी छपछपाहट हुई; और पानी के नीचे गायब हो चुकी उस धुंधली आकृति की हलचल को केवल परछाई ही देख पा रही थी।

भाग **V.** पोता और दादा

I. जिसमें जस्ता प्लास्टर वाला पेड़ फिर से दिखाई देता है

जिन घटनाओं का हमने अभी-अभी वर्णन किया है, उनके कुछ समय बाद, सिएर बोलाट्रुएल ने एक तीव्र भावना का अनुभव किया।

सिएर बोलाट्रुएल मोंटफर्मेइल का वह सड़क मरम्मत करने वाला था जिसे पाठक इस पुस्तक के अंधकारमय हिस्सों में पहले ही देख चुका है।

जैसा कि पाठक को शायद याद होगा, बोलाट्रुएल एक ऐसा व्यक्ति था जो विविध और परेशानी भरे मामलों में लिप्त रहता था। वह पत्थर तोड़ता था और राजमार्ग पर यात्रियों को नुकसान पहुंचाता था।

सड़क बनाने वाला और चोर होने के बावजूद, उसका एक ही सपना था; उसे मोंटफर्मेइल के जंगल में दबे खजानों पर पूरा भरोसा था। उसे उम्मीद थी कि एक दिन वह पेड़ की तलहटी में दबे खजाने को खोज लेगा; तब तक वह राहगीरों की जेबें टटोलकर अपना गुजारा करता था।

फिर भी, एक पल के लिए वह सतर्क हो गया। वह बाल-बाल बच निकला था। जैसा कि पाठक जानते हैं, उसे जोन्ड्रेट के अटारी में अन्य बदमाशों के साथ पकड़ा गया था। एक बुरी आदत का फायदा: उसका नशा ही उसकी जान बचाने वाला साबित हुआ था। अधिकारी कभी यह पता नहीं लगा पाए कि वह वहाँ एक लुटेरे के रूप में था या एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसे लूटा गया था। घात लगाकर किए गए हमले की शाम को उसके नशे की हालत के पुख्ता सबूतों के आधार पर, मुकदमा वापस लेने के आदेश ने उसे रिहा कर दिया था। वह भाग निकला। वह गग्नी से लैग्नी जाने वाले अपने रास्ते पर लौट आया, जहाँ वह प्रशासनिक देखरेख में राज्य के हित में पत्थर तोड़ने का काम करता था। उसका चेहरा उदास था, वह बहुत सोच-विचार में डूबा हुआ था, चोरी करने की उसकी इच्छा कुछ हद तक कम हो गई थी; लेकिन फिर भी वह उस शराब का आदी था जिसने हाल ही में उसकी जान बचाई थी।

सड़क बनाने वाले की घास-फूस की झोपड़ी में लौटने के कुछ ही समय बाद उसने जिस जीवंत भावना का अनुभव किया, वह इस प्रकार है:

एक सुबह, बोलट्रुएल हमेशा की तरह अपने काम पर जा रहा था, और शायद अपने घात लगाने के लिए भी, भोर होने से कुछ पहले ही पेड़ों की शाखाओं के बीच से उसे एक आदमी दिखाई दिया। उसने केवल उसकी पीठ देखी, लेकिन उस दूरी से और धुंधले अंधेरे में उसके कंधों का आकार उसे पूरी तरह से अपरिचित नहीं लगा। बोलट्रुएल नशे में होने के बावजूद, उसकी याददाश्त अच्छी और स्पष्ट थी, जो कानूनी व्यवस्था के साथ किसी भी तरह के टकराव में आने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक अपरिहार्य बचाव का हथियार है।

“मैंने उस आदमी जैसा कोई कहाँ देखा है?” उसने मन ही मन कहा। लेकिन उसे कोई जवाब नहीं सूझा, सिवाय इसके कि वह आदमी किसी ऐसे व्यक्ति जैसा दिखता था जिसकी धुंधली सी छवि उसकी स्मृति में बसी हुई थी।

हालांकि, पहचान का पता न लगा पाने के बावजूद, बोलाट्रुएल ने स्थिति को समझा और अनुमान लगाया। यह आदमी ग्रामीण इलाके का नहीं था। वह अभी-अभी वहाँ पहुँचा था। ज़ाहिर है, पैदल। उस समय मॉन्टफर्मेइल से कोई सार्वजनिक परिवहन नहीं गुज़रता। वह पूरी रात पैदल चला होगा। वह कहाँ से आया था? बहुत दूर से नहीं; क्योंकि उसके पास न तो थैला था, न ही कोई गठरी। निस्संदेह पेरिस से। वह इन जंगलों में क्यों था? वह इस समय वहाँ क्यों था? वह वहाँ किसलिए आया था?

बौलाट्रुएल ने खजाने के बारे में सोचा। अपनी याददाश्त खंगालते हुए, उसे धुंधला सा याद आया कि कई साल पहले, उसे एक ऐसे व्यक्ति के बारे में इसी तरह का डर लगा था, जिसने उस पर यह प्रभाव डाला था कि वह शायद वही व्यक्ति हो सकता है।

“कसम से,” बोलाट्रुएल ने कहा, “मैं उसे फिर से ढूंढ लूंगा। मैं उस पल्लीवासी के पल्ली का पता लगा लूंगा। पैट्रन-मिनेट के इस घुसपैठिए के पास कोई वजह होगी, और मैं उसे जान लूंगा। अगर मेरा इसमें कोई हाथ नहीं है, तो मेरे इलाके में लोग राज़ नहीं रख सकते।”

उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई जो बहुत नुकीली थी।

“अब वहाँ कुछ ऐसा है जो धरती और मनुष्य की खोज करेगा,” उसने बड़बड़ाते हुए कहा।

और, जैसे कोई एक धागे को दूसरे धागे से बांधता है, वैसे ही उसने उस दिशा में अपनी पूरी गति से चलना शुरू किया, जिस दिशा में उस व्यक्ति को चलना था, और घनी झाड़ियों को पार करते हुए आगे बढ़ गया।

जब उसने सौ कदम पूरे कर लिए, तो दिन का उजाला, जो पहले से ही निकलने लगा था, उसकी मदद के लिए आगे आया। रेत में बने पदचिह्न, जगह-जगह कुचली हुई घास, कुचली हुई झाड़ियाँ, झाड़ियों में झुकी हुई युवा शाखाएँ जो जागने पर सुंदर स्त्री की बाहों की तरह धीरे-धीरे सीधी हो रही थीं, उसे एक तरह का रास्ता दिखा रही थीं। उसने उसका पीछा किया, फिर वह रास्ता खो गया। समय तेज़ी से बीत रहा था। वह जंगल में और अंदर चला गया और एक ऊँची जगह पर पहुँचा। दूर से एक रास्ते पर जा रहा एक शिकारी, जो गिलरी की धुन सीटी बजा रहा था, ने उसे पेड़ पर चढ़ने का सुझाव दिया। उम्र में भी वह फुर्तीला था। पास ही एक विशाल बीच का पेड़ खड़ा था, जो टिटिरस और बोलाट्रुएल के पेड़ों के बराबर था। बोलाट्रुएल उस पेड़ पर जितना ऊपर चढ़ सकता था, चढ़ गया।

यह विचार अच्छा था। घने जंगल से घिरे उस सुनसान इलाके का बारीकी से निरीक्षण करते हुए, बौलाट्रुएल को अचानक अपना आदमी दिखाई दिया।

जैसे ही उसकी नजर उस पर पड़ी, वह उसकी नजरों से ओझल हो गया।

वह आदमी एक खुले मैदान में दाखिल हुआ, या यूँ कहें कि धीरे-धीरे अंदर चला गया। यह मैदान काफी दूरी पर बड़े-बड़े पेड़ों से ढका हुआ था, लेकिन बौलाट्रुएल इससे पूरी तरह वाकिफ था, क्योंकि उसने छिद्रयुक्त पत्थरों के एक बड़े ढेर के पास एक बीमार शाहबलूत के पेड़ को देखा था, जिसकी छाल पर जस्ता की चादर ठोंक कर बांधी गई थी। यह वही मैदान था जिसे पहले ब्लारू-बॉटम कहा जाता था। पत्थरों का वह ढेर, जिसका क्या उपयोग होना था, जो तीस साल पहले वहाँ दिखाई देता था, निस्संदेह आज भी वहीं है। पत्थरों के ढेर की बराबरी कोई चीज नहीं कर सकती, सिवाय लकड़ी की बाड़ के। ये तो अस्थायी उपाय हैं। टिकाऊ होने का क्या ही कारण है!

खुशी के मारे बौलाट्रुएल पेड़ से नीचे उतरने के बजाय तेज़ी से नीचे गिर गया। उसकी मांद का पता चल गया था, अब सवाल था उस जानवर को पकड़ने का। उसके सपनों का वह प्रसिद्ध खजाना शायद वहीं था।

उस खुले मैदान तक पहुँचना आसान नहीं था। घुमावदार रास्तों से, जो हज़ारों टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होकर जाते थे, वहाँ पहुँचने में पंद्रह मिनट लग जाते थे। सीधे रास्ते से, घनी झाड़ियों के बीच से, जो उस इलाके में बेहद घनी, काँटेदार और आक्रामक होती हैं, तो पूरा आधा घंटा लग जाता था। बोलाट्रुएल ने इस बात को न समझकर गलती की। वह सीधी रेखा में चलने में विश्वास रखता था; एक ऐसा भ्रम जो कई लोगों को बर्बाद कर देता है। घनी झाड़ियों ने, जो काँटेदार थीं, उसे सबसे अच्छा रास्ता समझा।

उन्होंने कहा, "चलो भेड़ियों की 'रू डे रिवोली' की ओर चलते हैं।"

टेढ़े-मेढ़े रास्ते अपनाने के आदी बौलाट्रुएल इस बार सीधे रास्ते पर चलने की गलती के दोषी थे।

उसने दृढ़तापूर्वक अपने आप को झाड़ियों के घने जाल में झोंक दिया।

उन्हें हॉली की झाड़ियों, बिच्छू-बूटी, कांटेदार झाड़ियों, जंगली बेलों, थिसल और बेहद उग्र कंटीली झाड़ियों से निपटना पड़ा। उन्हें काफी चोटें आईं।

खाई के तल पर उसे पानी मिला जिसे पार करना उसके लिए अनिवार्य था।

चालीस मिनट बीतने के बाद आखिरकार वह पसीने से तरबतर, भीगा हुआ, हांफता हुआ, खरोंचों से भरा और उग्र अवस्था में ब्लारू के निचले हिस्से में पहुँच गया।

खुले मैदान में कोई नहीं था। बोलाट्रुएल पत्थरों के ढेर की ओर दौड़ा। वह अपनी जगह पर था। उसे कहीं ले जाया नहीं गया था।

वह आदमी जंगल में गायब हो गया था। वह भाग निकला था। कहाँ? किस दिशा में? किस झाड़ी में? अनुमान लगाना असंभव था।

और, यह कहना दिल दहला देने वाला है कि, पत्थरों के ढेर के पीछे, जस्ता की चादर वाले पेड़ के सामने, ताज़ी खोदी हुई मिट्टी, एक कुल्हाड़ी, जिसे छोड़ दिया गया था या भुला दिया गया था, और एक गड्ढा था।

वह गड्ढा खाली था।

“चोर!” बोलट्रुएल ने क्षितिज की ओर मुट्ठी हिलाते हुए चीख मारी।

II. गृहयुद्ध से उबरकर मारियस घरेलू युद्ध की तैयारी करता है।

काफी समय तक मारियस न तो जीवित था और न ही मृत। कई हफ्तों तक वह प्रलाप के साथ बुखार में पड़ा रहा, और उसे मस्तिष्क संबंधी गंभीर लक्षण भी थे, जो घावों के कारण नहीं बल्कि सिर पर लगे घावों के झटकों के कारण अधिक थे।

बुखार की उदासी भरी वाक्पटुता और पीड़ा की गंभीर हठधर्मिता के साथ वह पूरी रात कोसेट का नाम दोहराता रहता था। कुछ घावों का फैलाव गंभीर खतरा पैदा कर रहा था, क्योंकि बड़े घावों में मवाद बनने की संभावना हमेशा बनी रहती थी और कुछ खास मौसम की स्थितियों में यह मवाद रोगी की जान ले सकता था; मौसम में हर बदलाव, यहां तक कि हल्की सी आंधी में भी, चिकित्सक चिंतित हो जाता था।

“सबसे बढ़कर,” उन्होंने दोहराया, “घायल व्यक्ति पर किसी भी प्रकार की भावना न डाली जाए।” घावों की पट्टियाँ बाँधना जटिल और कठिन था, क्योंकि उस समय तक कफ़न से उपकरणों और पट्टियों को बाँधने की तकनीक का आविष्कार नहीं हुआ था। निकोलेट ने रुई के रेशों को निकालने के लिए “छत जितनी बड़ी” चादर का इस्तेमाल किया, जैसा कि उन्होंने खुद बताया। क्लोरोयूरेट युक्त लोशन और सिल्वर नाइट्रेट से गैंग्रीन को दूर करना आसान नहीं था। जब तक कोई खतरा मंडरा रहा था, एम. गिलनोर्मंड, अपने पोते के तकिये पर निराशा में बैठे हुए, मारियस की तरह, न तो जीवित थे और न ही मृत।

हर दिन, कभी-कभी दिन में दो बार, सफेद बालों वाला एक बहुत ही अच्छे कपड़े पहना हुआ सज्जन—पोर्टर द्वारा दिए गए विवरण के अनुसार—घायल व्यक्ति के बारे में पूछताछ करने आता था और पट्टियों के लिए रुई का एक बड़ा पैकेट छोड़ जाता था।

अंततः, 7 सितंबर को, उस दुखद रात के ठीक चार महीने बाद, जब मारियस को मरणासन्न अवस्था में उसके दादा के पास वापस लाया गया था, डॉक्टर ने घोषणा की कि वह मारियस का इलाज करेगा। स्वास्थ्य लाभ शुरू हुआ। लेकिन कॉलरबोन में फ्रैक्चर के कारण मारियस को दो महीने और एक लंबी कुर्सी पर लेटे रहना

पड़ा। हमेशा एक ऐसा घाव होता है जो भरता नहीं है और जिसकी वजह से पट्टियाँ अनिश्चित काल तक लगानी पड़ती हैं, जिससे बीमार व्यक्ति को बहुत कष्ट होता है।

हालांकि, इस लंबी बीमारी और लंबे स्वास्थ्य लाभ ने उन्हें हर तरह की कानूनी कार्रवाई से बचा लिया। फ्रांस में, सार्वजनिक स्तर पर भी, ऐसा कोई क्रोध नहीं है जिसे छह महीने में शांत न किया जा सके। समाज की वर्तमान स्थिति में, विद्रोहों के लिए हर कोई इतना जिम्मेदार है कि उनके बाद आंखें बंद करना एक तरह से अनिवार्य हो जाता है।

साथ ही, यह भी बता दें कि गिस्केट का वह अक्षम्य आदेश, जिसमें डॉक्टरों को घायल सैनिकों के खिलाफ सूचना दर्ज करने का निर्देश दिया गया था, जनता की राय को आहत कर चुका था, और केवल जनता ही नहीं, बल्कि सबसे पहले राजा को भी। इस आक्रोश ने घायल सैनिकों को संरक्षण प्रदान किया; और युद्ध के दौरान बंदी बनाए गए लोगों को छोड़कर, युद्ध परिषदों ने किसी को भी परेशान करने का साहस नहीं किया। इस प्रकार मारियस को शांति से रहने दिया गया।

एम. गिलनोर्मंड पहले हर तरह की पीड़ा से गुज़रे, फिर हर तरह के परमानंद से। हर रात घायल व्यक्ति के पास से गुज़रने से उन्हें रोकना मुश्किल था; उन्होंने अपनी बड़ी कुर्सी मारियस के बिस्तर के पास मंगवाई; उन्होंने अपनी बेटी से कहा कि वह पट्टी और कंप्रेस के लिए घर का सबसे बढ़िया लिनेन लाए। मैडमोजेल गिलनोर्मंड, एक बुद्धिमान और बुजुर्ग महिला की तरह, बढ़िया लिनेन को बचाकर रखती थीं, और दादाजी को यह सोचने देती थीं कि उनकी बात मान ली गई है। एम. गिलनोर्मंड किसी को भी यह समझाने नहीं देते थे कि रुई बनाने के लिए बैटिस्ट उतना अच्छा नहीं होता जितना मोटा लिनेन, और न ही नया लिनेन पुराने लिनेन जितना। वे घावों की हर पट्टी पर मौजूद रहते थे, जबकि मैडमोजेल गिलनोर्मंड विनम्रता से अनुपस्थित रहती थीं। जब मृत मांस को कैंची से काटा जाता था, तो वे कहते थे: “ऐ! ऐ!” उनकी कोमल, वृद्धावस्था की कमजोरी के बावजूद, घायल व्यक्ति को अपने ठंडे पेय का एक प्याला देते देखना अत्यंत मार्मिक था। उस व्यक्ति ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। डॉक्टर ने ध्यान नहीं दिया कि वह बार-बार वही प्रश्न पूछ रहा था।

जिस दिन डॉक्टर ने उन्हें बताया कि मारियस खतरे से बाहर है, उस दिन वह सज्जन बेहोशी की हालत में थे। उन्होंने अपने दरबान को तीन लुई भेंट किए।

उसी शाम , अपने कमरे में लौटकर , उन्होंने अपने अंगूठे और तर्जनी को कैस्टनेट की तरह इस्तेमाल करते हुए गैवोट नृत्य किया और निम्नलिखित गीत गाया :

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible];
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]

फिर वह एक कुर्सी पर घुटने टेककर बैठ गया , और बास्क , जो आधे खुले दरवाजे से उसे देख रहा था , ने यह सुनिश्चित किया कि वह प्रार्थना कर रहा है।

उस समय तक उन्हें ईश्वर पर विश्वास नहीं था।

जैसे -जैसे सुधार बढ़ता गया , दादाजी का उत्साह बढ़ता गया। वे खुशी से भरकर तरह -तरह की क्रियाएँ करते थे ; वे बिना कारण जाने सीढ़ियाँ चढ़ते -उतरते थे। एक सुबह एक सुंदर पड़ोसी को फूलों का बड़ा गुलदस्ता देखकर आश्चर्य हुआ ; यह गुलदस्ता एम . गिलनोर्मंड ने भेजा था। पति ने ईर्ष्या का नाटक किया। एम . गिलनोर्मंड ने निकोलेट को अपनी गोद में बिठाने की कोशिश की। उन्होंने मारियस को "एम. ले बैरन " कहकर पुकारा। उन्होंने चिल्लाकर कहा , "गणतंत्र अमर रहे !"

हर पल , वह डॉक्टर से पूछता रहता था : "क्या अब वह खतरे से बाहर है ?" वह एक दादी की निगाहों से मारियस को निहारता रहा। खाते समय भी वह उसके बारे में सोचता रहा। वह खुद को पहचान नहीं पा रहा था , वह खुद को समझा नहीं पा रहा था। मारियस घर का मुखिया था , उसकी खुशी में त्याग झलक रहा था , वह अपने पोते का पोता था।

उस समय वे जिस आनंदमय अवस्था में थे , उसमें वे सबसे प्यारे बच्चे लग रहे थे। कहीं वे स्वस्थ हो रहे रोगी को थका न दें या परेशान न कर दें , इस डर से

वे उनके पीछे खड़े होकर मुस्कुराए। वे संतुष्ट, प्रसन्न, आनंदित, आकर्षक और युवा थे। उनके सफेद बाल उनके चेहरे की चमक में एक सौम्य गरिमा जोड़ रहे थे। जब झुर्रियों के साथ सुंदरता का मेल होता है, तो वह मनमोहक लगता है। वृद्धावस्था की चमक में एक अवर्णनीय आभा होती है।

मारियस की बात करें तो, जब उसने उन्हें अपने घावों पर पट्टी बांधने और उसकी देखभाल करने की अनुमति दी, तो उसके मन में केवल एक ही विचार था: कोसेट।

बुखार और बेहोशी दूर होने के बाद, उसने फिर कभी उसका नाम नहीं लिया, और ऐसा माना जा सकता था कि अब वह उसके बारे में सोच भी नहीं रहा था। वह चुप रहा, ठीक इसलिए क्योंकि उसकी आत्मा वहीं थी।

उसे नहीं पता था कि कोसेट का क्या हुआ था; रू डे ला चानवरेरी की पूरी घटना उसकी यादों में धुंधली सी छाई हुई थी; लगभग अस्पष्ट परछाइयाँ उसके दिमाग में तैर रही थीं, एपोनिन, गैवरोश, माबेउफ, थेनार्डियर्स, उसके सभी दोस्त बैरिकेड के धुएँ में उदास रूप से घुलमिल गए थे; उस साहसिक घटना में एम. फॉशेलवेंट का अजीबोगरीब सफर उसके लिए एक आंधी में पहेली जैसा प्रभाव पैदा कर रहा था; उसे अपने जीवन से जुड़ी कोई बात समझ नहीं आ रही थी, उसे नहीं पता था कि उसे कैसे और किसने बचाया था, और उसके आसपास के किसी को भी यह पता नहीं था; वे उसे बस इतना ही बता पाए थे कि उसे रात में एक तांगा में रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर स्थित घर लाया गया था; अतीत, वर्तमान, भविष्य उसके लिए एक धुंधले विचार के अलावा कुछ नहीं थे; लेकिन उस धुंध में एक अटल बिंदु था, एक स्पष्ट और सटीक रूपरेखा, ग्रेनाइट से बनी कोई चीज, एक संकल्प, एक इच्छाशक्ति; कोसेट को एक बार फिर पाने के लिए। उसके लिए, जीवन का विचार कोसेट के विचार से अलग नहीं था। उसने अपने दिल में ठान लिया था कि वह एक के बिना दूसरे को स्वीकार नहीं करेगा, और वह इस बात पर अडिग था कि जो भी व्यक्ति उसे अपने दादा, भाग्य या नरक से जीने के लिए मजबूर करने की कोशिश करेगा, उससे वह अपने खोए हुए स्वर्ग को वापस दिलाएगा।

उन्होंने स्वयं से इस तथ्य को नहीं छिपाया कि बाधाएं मौजूद थीं।

यहां एक बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है: दादाजी की तमाम चिंता और स्नेह से वह प्रभावित नहीं हुआ और उसका दिल भी ज़रा सा नहीं पिघला। पहली बात तो यह कि उसे इस राज़ की जानकारी नहीं थी; फिर, एक बीमार व्यक्ति के रूप में उसके

ख्यालों में, जो शायद अभी भी बुखार से भरे थे, उसे यह स्नेह एक अजीब और अनोखी चीज़ लगी, जिसका मकसद उसे जीतना था। वह ठंडा ही रहा। दादाजी ने अपनी बेचारी बूढ़ी मुस्कान फिजूलखर्ची में ही बिता दी। मारियस ने मन ही मन सोचा कि जब तक वह, मारियस, कुछ नहीं बोलता और चीज़ों को अपने आप होने देता है, तब तक सब ठीक है; लेकिन जब कोसेट की बात आएगी, तो उसका चेहरा बदल जाएगा और दादाजी का असली रवैया बेनकाब हो जाएगा। तब एक अप्रिय दृश्य होगा; पारिवारिक सवालों का फिर से उठना, स्थितियों का टकराव, हर तरह के व्यंग्य और हर तरह की आपत्तियां एक साथ, फॉशेलवेंट, कूपेलवेंट, दौलत, गरीबी, गले में लटकता बोझ, भविष्य। ज़बरदस्त प्रतिरोध; नतीजा: इनकार। मारियस ने पहले से ही खुद को मज़बूत कर लिया।

और फिर, जैसे-जैसे उसकी सेहत सुधरती गई, उसकी यादों के पुराने घाव फिर से खिल उठे। वह अतीत पर फिर से सोचने लगा। कर्नल पोंटमर्सी एक बार फिर एम. गिलनोर्मंड और उसके बीच आ गए। मारियस ने मन ही मन सोचा कि जिस व्यक्ति ने उसके पिता के साथ इतना अन्याय और कठोरता बरती है, उससे उसे सच्ची दया की कोई उम्मीद नहीं है। और सेहत ठीक होने के साथ ही, उसके मन में अपने दादा के प्रति एक तरह की कठोरता लौट आई। इस बात से बूढ़े व्यक्ति को हल्का सा दुख हुआ। एम. गिलनोर्मंड ने, हालांकि इसे ज़ाहिर न होने देते हुए, गौर किया कि मारियस, जब से उसे होश आया था और वह वापस होश में आया था, तब से उसने उन्हें एक बार भी पिता नहीं कहा था। यह सच है कि उसने उन्हें "महाशय" नहीं कहा; लेकिन उसने अपने शब्दों को घुमा-फिराकर इस तरह से कहा कि वह ऐसा न कहे। ज़ाहिर है, एक संकट नज़दीक आ रहा था।

ऐसे मामलों में लगभग हमेशा की तरह, मारियस ने युद्ध से पहले अपनी क्षमता साबित करने के लिए झड़पें कीं। इसे "हालात का जायज़ा लेना" कहते हैं। एक सुबह, एम. गिलनोर्मंड ने अपने हाथ लगे एक अखबार के संदर्भ में कन्वेंशन की उपेक्षा करते हुए, डेंटन, सेंट-जस्ट और रोबेस्पियर पर राजशाही समर्थक भाषण दिया। मारियस ने गंभीरता से कहा, "1993 के लोग दिग्गज थे।" बूढ़ा व्यक्ति चुप रहा और उस दिन बाकी समय तक एक शब्द भी नहीं बोला।

मारियस, जिसके मन में हमेशा अपने बचपन के कठोर दादाजी की छवि बनी रहती थी, ने इस चुप्पी को क्रोध के गहन संकेंद्रण के रूप में समझा, इससे एक भयंकर

संघर्ष का अनुमान लगाया और अपने मन के अंतर्मन में उस लड़ाई के लिए अपनी तैयारियों को तेज कर दिया।
उसने निश्चय किया कि यदि इनकार हुआ तो वह अपनी पट्टियाँ फाड़ देगा, अपनी कॉलरबोन तोड़ देगा, अपने सारे घाव सबके सामने उजागर कर देगा और भोजन त्याग देगा। उसके घाव ही उसके युद्ध के हथियार थे। उसे कोसेट चाहिए या मरना।
वह बीमार व्यक्ति के धैर्य के साथ शुभ क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था।
वह क्षण आ गया।

III. मारियस ने हमला किया

एक दिन, जब एम. गिलनोर्मंड की बेटी कमोड के संगमरमर पर शीशियाँ और प्याले व्यवस्थित कर रही थी, तो वे मारियस के ऊपर झुके और अत्यंत कोमल स्वर में उससे बोले: “देखो, मेरे प्यारे मारियस, अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं मछली के बजाय मांस खाना पसंद करता। तली हुई सोल मछली स्वास्थ्य लाभ की शुरुआत के लिए उत्तम है, लेकिन एक बीमार व्यक्ति को ठीक करने के लिए एक अच्छे कटलेट की आवश्यकता होती है।”

मारियस, जिसने लगभग पूरी तरह से अपनी शक्ति वापस पा ली थी, उसने अपनी सारी शक्ति समेट ली, उठकर बैठ गया, अपनी दोनों मुट्ठियों को बिस्तर की चादर पर रखा, अपने दादाजी के चेहरे की ओर देखा, एक भयानक भाव धारण किया और कहा:

"इससे मुझे आपसे कुछ कहने की प्रेरणा मिलती है।"

"यह क्या है?"

मैं शादी करना चाहता/चाहती हूँ।

“सहमत,” उनके दादाजी ने कहा। और फिर वे जोर से हंस पड़े।

“कितनी सहमति बनी?”

“जी हां, सहमत हूं। आपको आपकी नन्ही बच्ची मिल जाएगी।”

चकाचौंध कर देने वाले इस झटके से स्तब्ध और अभिभूत मारियस के शरीर का हर अंग कांप रहा था।

एम. गिलनोर्मंड ने आगे कहा:

“हाँ, वह तुम्हें मिल जाएगी, तुम्हारी वह प्यारी सी छोटी बच्ची। वह हर दिन एक बूढ़े सज्जन के वेश में तुम्हारा हालचाल पूछने आती है। जब से तुम घायल हुए हो, वह रोती-बिलखती और रुई के रेशे बनाती रहती है। मैंने पता लगाया है। वह रुए डे ल'होमे आर्मे, नंबर 7 में रहती है। आह! मिल गया! आह! तो तुम उसे चाहते हो! ठीक है, वह तुम्हें मिल जाएगी। तुम पकड़े गए। तुमने अपनी छोटी सी योजना बनाई थी, तुमने खुद से कहा था:—‘मैं यह बात सीधे अपने दादाजी को

बताऊँगा, उस रीजेंसी और डायरेक्टरी के उस बूढ़े को, उस पुराने प्रेमी को, उस डोरेंटे से गेरोंटे बने व्यक्ति को; उन्होंने भी अपनी मौज-मस्ती की है, हाँ, उन्होंने भी, और उनके भी प्रेम प्रसंग रहे हैं, उनकी भी प्रेमिकाएँ और प्रेमिकाएँ रही हैं; उन्होंने भी अपनी शान-शौकत दिखाई है, उनके भी पंख रहे हैं, उन्होंने बसंत की रोटी खाई है; उन्हें यह ज़रूर याद होगा।’ आह! तुम कॉकचाफर को पकड़ लेते हो सींग। अच्छा है। मैं आपको कटलेट देता हूँ और आप जवाब देते हैं: 'वैसे, मैं शादी करना चाहता हूँ।' आपके लिए एक बदलाव! आह! आपने झगड़े की उम्मीद की थी! आपको नहीं पता कि मैं एक बूढ़ा कायर हूँ। इस पर आप क्या कहते हैं? आप नाराज़ हैं? आपको उम्मीद नहीं थी कि आपका दादा आपसे भी ज़्यादा मूर्ख होगा, आप वह बातचीत बर्बाद कर रहे हैं जो आप मुझे देना चाहते थे, श्रीमान वकील, और यह परेशान करने वाला है। खैर, तो और भी बुरा, गुस्सा करो। मैं आपकी हर इच्छा पूरी करूँगा, और यह आपको बीच में ही रोक देता है, मूर्ख! सुनो। मैंने अपनी जाँच-पड़ताल कर ली है, मैं भी चालाक हूँ; वह आकर्षक है, वह समझदार है, लांसर वाली बात सच नहीं है, उसने ढेर सारा रुई इकट्ठा किया है, वह एक रत्न है, वह आपसे प्यार करती है, अगर आप मर गए होते, तो हम तीन होते, उसका ताबूत मेरे साथ होता। मुझे एक विचार आया है, जब से आप हैं बेहतर होता कि उसे सीधे तुम्हारे बिस्तर के पास बिठा दिया जाता, लेकिन प्रेम कहानियों में ही ऐसा होता है कि जवान लड़कियाँ अपने आकर्षक, घायल और सुंदर पुरुषों के बिस्तर के पास लाई जाती हैं। ऐसा नहीं किया जाता। तुम्हारी चाची इस बारे में क्या कहतीं? मेरे प्यारे, तुम तो लगभग तीन-चौथाई समय नग्न ही थे। निकोलेट से पूछो, जिसने तुम्हें एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा, कि क्या यहाँ किसी महिला के होने की कोई संभावना थी। और फिर, डॉक्टर क्या कहते? एक सुंदर लड़की किसी आदमी का बुखार ठीक नहीं कर सकती। संक्षेप में, ठीक है, अब इसके बारे में और कुछ न कहें, सब कुछ कहा जा चुका है, सब कुछ हो चुका है, सब कुछ तय हो चुका है, उसे ले जाओ। मेरी क्रूरता ऐसी ही है। देखो, मुझे पता चल गया था कि तुम मुझसे प्यार नहीं करते। मैंने मन ही मन कहा: 'अब देखो, मेरी छोटी कोसेट मेरे हाथ में है, मैं उसे उसे दे दूँगी, तब वह मुझसे थोड़ा प्यार करने के लिए मजबूर होगा, या उसे कारण बताना होगा।' आह! तो तुमने सोचा था कि बूढ़ा आदमी भड़क उठेगा, ज़ोर से चिल्लाएगा, नहीं कहेगा, और अपना हाथ ऊपर उठाएगा। मुझे उस सारी चमक-दमक से कोई मतलब

नहीं है। कोसेट, ठीक है; प्यार, ठीक है; मुझे इससे बेहतर कुछ नहीं चाहिए।
कृपया शादी करने की जहमत उठाइए, महोदय। खुश रहिए, मेरे प्यारे बच्चे।
यह सुनकर बूढ़ा आदमी फूट-फूटकर रोने लगा।
और उसने मारियस का सिर पकड़कर दोनों हाथों से अपनी छाती से लगा लिया, और दोनों फूट-फूटकर रोने लगे। यही परम सुख का एक रूप है।
“पिताजी!” मारियस चिल्लाया।
“अरे, तो तुम मुझसे प्यार करते हो!” बूढ़े आदमी ने कहा।
एक अवर्णनीय क्षण उत्पन्न हुआ। वे दम घुटने से बेहाल थे और बोल नहीं पा रहे थे।
अंत में बूढ़ा व्यक्ति हकलाते हुए बोला:
“आखिरकार उसका मुंह खुल गया। उसने मुझसे कहा: ‘पिताजी’।”
मारियस ने अपना सिर अपने दादाजी की बाहों से छुड़ाया और धीरे से कहा: लेकिन पिताजी, अब जब मैं पूरी तरह से ठीक हो गया हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं उससे मिल सकता हूँ।
"फिर से सहमति हो गई, आप उसे कल देखेंगे।"
"पिता!"
"क्या?"
"आज क्यों नहीं?"
“अच्छा, तो आज ही। आज ही कर लेते हैं। तुमने मुझे तीन बार ‘पिता’ कहा है, और यह उचित है। मैं इस पर ध्यान दूंगा। उसे यहाँ लाया जाएगा। ठीक है, मैं तुमसे कहता हूँ। इसे पहले ही कविता में ढाला जा चुका है। यह आंद्रे शेनियर की ‘ज्यून मालाडे’ शोकगीत का अंत है, उसी आंद्रे शेनियर की, जिसका गला रास ने काट डाला था… 93 के दिग्गजों ने।”
एम. गिलनोर्मंड को लगा कि मारियस के चेहरे पर हल्की सी शिकन है, जो वास्तव में, जैसा कि हमें स्वीकार करना होगा, अब उनकी बात नहीं सुन रहा था और 1793 की तुलना में कोसेट के बारे में कहीं अधिक सोच रहा था।

आंद्रे शेनियर का इस अनुचित समय पर परिचय कराने के कारण कांपते हुए दादाजी ने जल्दबाजी में बोलना शुरू किया:

“उसका गला काटना शब्द काफी नहीं है। असल बात तो यह है कि महान क्रांतिकारी प्रतिभाओं ने, जो निःसंदेह द्वेषपूर्ण नहीं थे, जो नायक थे, उन्होंने पाया कि आंद्रे शेनियर उन्हें कुछ हद तक असहज कर रहा था, और इसलिए उन्होंने उसका गला घोंट दिया… यानी, 7 थर्मिडोर को उन महान पुरुषों ने जन सुरक्षा के हित में आंद्रे शेनियर से विनती की कि वे कृपया चले जाएं…”

एम. गिलनोर्मंड, अपने ही शब्दों के जाल में फँसकर, आगे नहीं बढ़ सके। न तो वे अपनी बात पूरी कर पाए और न ही उसे वापस ले पाए। जब उनकी बेटी मारियस के पीछे तकिया ठीक कर रही थी, जो भावनाओं के उफान पर था, तो बूढ़ा आदमी अपनी उम्र के अनुसार पूरी तेज़ी से शयनकक्ष से बाहर भागा, दरवाज़ा बंद किया और बैंगनी रंग से लाल, खाँसते हुए, मुँह से झाग निकालते हुए, आँखें फटी रह गईं, और खुद को सामने वाले कमरे में जूते पॉलिश कर रहे ईमानदार बास्क के सामने पाया। उन्होंने बास्क का कॉलर पकड़ा और क्रोध में उसके चेहरे पर चिल्लाए: “शैतान के एक लाख भाले की कसम, उन बदमाशों ने उसकी हत्या की है!”

"कौन, महोदय?"

“आंद्रे शेनियर!”

“जी सर,” बास्क ने घबराकर कहा।

IV. अंत में, मैडमोजेल गिलनोर्मंड को यह बात बुरी नहीं लगती कि एम. फॉशेलवेंट अपनी बांह

के नीचे कुछ लेकर अंदर आए थे।

कोसेट और मारियस ने एक बार फिर एक-दूसरे को देखा।

वह साक्षात्कार कैसा रहा, इस बारे में हम कुछ नहीं कहेंगे। कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिनका चित्रण करने का प्रयास नहीं करना चाहिए; सूर्य उनमें से एक है।

जब कोसेट ने मारियस के कमरे में प्रवेश किया, उस समय बास्क और निकोलेट सहित पूरा परिवार वहीं मौजूद था।

ठीक उसी क्षण, दादाजी अपनी नाक पोंछने ही वाले थे; वे अचानक रुक गए, अपने रूमाल से अपनी नाक को पकड़ लिया और उसके ऊपर से कोसेट की ओर देखने लगे।

वह दहलीज पर प्रकट हुई; उसे ऐसा लगा मानो वह किसी दिव्य प्रकाश से घिरी हुई हो।

“बहुत प्यारा!” उसने कहा।

फिर उसने जोर से नाक साफ की।

कोसेट मदहोश, प्रसन्न, भयभीत, स्वर्ग में थी। खुशी से वह उतनी ही घबराई हुई थी जितनी कोई भी हो सकता है। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, फिर भी वह हकला रही थी। वह मारियस की बाहों में गिरना चाहती थी, पर हिम्मत नहीं कर पा रही थी। इतने सारे लोगों के सामने प्रेम करने में उसे शर्म आ रही थी। लोग खुश प्रेमियों के प्रति निर्दयी होते हैं; वे तब भी साथ रहते हैं जब प्रेमी अकेले रहना चाहते हैं। प्रेमियों को किसी भी इंसान की ज़रूरत नहीं होती।

कोसेट के साथ, और उसके पीछे, एक सफेद बालों वाला आदमी आया, जो गंभीर होते हुए भी मुस्कुरा रहा था, हालांकि उसकी मुस्कान अस्पष्ट और दिल दहला देने वाली थी। वह "महाशय फॉशेलवेंट" थे; वह जीन वालजेन थे।

जैसा कि कुली ने कहा था, वह बहुत अच्छे से कपड़े पहने हुए था, पूरी तरह से काले रंग के, एकदम नए वस्त्रों में और सफेद टाई पहने हुए था।

कुली उस सभ्य बुर्जुआ, उस संभावित नोटरी में, उस भयानक शववाहक को पहचानने से हज़ार मील दूर था, जो 7 जून की रात को उसके दरवाजे पर अचानक प्रकट हुआ था, फटे-पुराने कपड़ों में, कीचड़ से सना हुआ, बदसूरत, थका हुआ, जिसका चेहरा खून और कीचड़ से ढका हुआ था, और जिसने बेहोश मारियस को अपनी बाहों में उठा रखा था; फिर भी, कुली की गंध जागृत हो गई। जब एम. फॉशेलवेंट कोसेट के साथ पहुंचे, तो कुली अपनी पत्नी से यह कहने से खुद को रोक नहीं पाया: "मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि मैंने यह चेहरा पहले भी देखा है।"

मारियस के कक्ष में, एम. फॉशेलवेंट दरवाजे के पास अलग खड़े रहे। उनकी बगल में एक पैकेट था जो कागज में लिपटे एक ऑक्टेव वॉल्यूम जैसा दिखता था। कागज का रंग हरा था और उस पर फफूंदी लगी हुई प्रतीत हो रही थी।

"क्या ये सज्जन हमेशा अपनी बगल में ऐसी किताबें रखते हैं?" मैडमोजेल गिलनोर्मंड, जिन्हें किताबें पसंद नहीं थीं, ने निकोलेट से धीमी आवाज में पूछा।

“अच्छा,” एम. गिलनोर्मंड ने, जिसने उसकी बात सुन ली थी, उसी लहजे में जवाब दिया, “वह एक विद्वान व्यक्ति है। तो फिर क्या? क्या यह उसकी गलती है? मेरे एक परिचित, महाशय बोलार्ड, भी कभी अपनी बगल में किताब लिए बिना बाहर नहीं निकलते थे, और वे हमेशा किसी पुरानी किताब को अपने दिल से लगाकर रखते थे।”

और झुककर उन्होंने जोर से कहा:

श्रीमान ट्रेंचलेवेंट…”

फादर गिलनोर्मंड ने जानबूझकर ऐसा नहीं किया था, लेकिन उचित नामों पर ध्यान न देना उनकी एक अभिजातीय आदत थी।

"महामहिम ट्रेंचलेवेंट, मुझे अपने पोते, बैरन मारियस पोंटमर्सी की ओर से, मैडमोजेल का हाथ मांगने का सौभाग्य प्राप्त है।"

महाशय ट्रेंचलेवेंट ने झुककर अभिवादन किया।

“बात पक्की हो गई,” दादाजी ने कहा।

और मारियस और कोसेट की ओर मुड़कर, आशीर्वाद देने के लिए दोनों हाथ फैलाकर, उसने कहा:

एक-दूसरे को प्यार करने की अनुमति!

उन्हें उससे इसे दोबारा दोहराने की ज़रूरत नहीं थी। और भी बुरा! चहचहाहट शुरू हो गई। वे धीमी आवाज़ में बात कर रहे थे। मारियस अपनी आरामकुर्सी पर कोहनी टिकाकर बैठा था, कोसेट उसके बगल में खड़ी थी। "हे भगवान!" कोसेट ने बुदबुदाते हुए कहा, “मैं तुम्हें फिर से देख रही हूँ! यह तुम हो! यह तुम हो! इस तरह जाकर लड़ने का विचार! लेकिन क्यों? यह भयानक है। मैं चार महीने से मृत थी। ओह! उस लड़ाई में जाना तुम्हारा कितना बुरा काम था! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? मैं तुम्हें माफ़ करती हूँ, लेकिन तुम फिर कभी ऐसा नहीं करोगे। थोड़ी देर पहले, जब वे हमें तुम्हारे पास आने के लिए कहने आए, तब भी मुझे लगा कि मैं मरने वाली हूँ, लेकिन यह खुशी के मारे था। मैं बहुत दुखी थी! मैंने खुद को तैयार करने का समय नहीं लिया, मुझे अपने रूप से लोगों को डराना होगा! तुम्हारे रिश्तेदार मुझे सिकुड़े हुए कॉलर में देखकर क्या कहेंगे? बोलो! मुझे ही बोलने दो। हम अभी भी रू डे ल'होमे आर्मी में हैं। लगता है तुम्हारा कंधा बहुत बुरी तरह घायल हो गया था। उन्होंने मुझे बताया कि तुम उसमें अपनी मुट्ठी डाल सकते थे। और फिर, लगता है उन्होंने कैंची से तुम्हारा मांस काट दिया। यह भयानक है। मैं तब तक रोई जब तक मेरी आँखें सूख नहीं गईं। यह अजीब है कि कोई व्यक्ति इस तरह से पीड़ित हो सकता है वह। आपके दादाजी का स्वभाव बहुत दयालु है। खुद को परेशान मत करो, कोहनी के बल मत उठो, चोट लग जाएगी। ओह! मैं कितनी खुश हूँ! तो हमारा दुख खत्म हो गया! मैं कितनी मूर्ख हूँ। मुझे आपसे कुछ कहना था, और अब मुझे बिल्कुल याद नहीं है कि वे क्या थे। क्या आप अब भी मुझसे प्यार करते हैं? हम रुए डे ल'होमे आर्मे में रहते हैं। यहाँ कोई बगीचा नहीं है। मैं हर समय रुई के रेशे बनाती रहती थी; रुकिए, महोदय, देखिए, यह आपकी गलती है, मेरी उंगलियों पर कड़ापन आ गया है।

“एंजल!” मारियस ने कहा।

"एंजल" ही भाषा का एकमात्र ऐसा शब्द है जो कभी घिसता नहीं। कोई और शब्द प्रेमियों द्वारा किए जाने वाले निर्मम उपयोग का सामना नहीं कर सकता।

फिर चूंकि वहां दर्शक मौजूद थे, इसलिए वे रुक गए और एक शब्द भी नहीं बोले, बस एक-दूसरे के हाथों को धीरे से छूकर संतुष्ट हो गए।

एम. गिलनोर्मंड कमरे में मौजूद लोगों की ओर मुड़े और रो पड़े:

"ज़ोर से बोलो, बाकी सब लोग। शोर मचाओ, पर्दे के पीछे वाले लोग। चलो, थोड़ा शोर मचाओ, ताकि बच्चे आराम से बातें कर सकें।"

और मारियस और कोसेट के पास पहुँचकर उसने बहुत धीमी आवाज़ में उनसे कहा:

“एक दूसरे को ‘तू’ कहकर संबोधित करो। औपचारिकता मत बरतो।”

आंटी गिलनोर्मंड अपने वृद्ध परिवार में अचानक आई इस रोशनी को देखकर विस्मय से भर उठीं। उनके विस्मय में कोई आक्रामकता नहीं थी; यह किसी उल्लू की दो कबूतरों को देखकर ईर्ष्या भरी निगाहों जैसा जरा भी नहीं था; यह तो एक बेचारे भोले-भाले 75 वर्षीय व्यक्ति की नादान आँखों का दृश्य था; एक असफल जीवन उस विजय, प्रेम को निहार रहा था।

“मैडम गिलनोर्मंड सीनियर,” उसके पिता ने उससे कहा, “मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हारे साथ यही होगा।”

वह कुछ देर चुप रहे, फिर बोले:

दूसरों की खुशी को देखो।

फिर उसने कोसेट की ओर रुख किया।

“वह कितनी सुंदर है! कितनी सुंदर है! वह एक ग्रूज़ है। तो अब वह पूरी तरह से तुम्हारी होगी, बदमाश! आह! मेरे बदमाश, तुम मेरे साथ खूब मजे कर रहे हो, खुश हो; अगर मैं पंद्रह साल बड़ा न होता, तो हम तलवारों से लड़ते कि वह हममें से किसकी होगी। चलो अब! मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मैडमोजेल। यह बिल्कुल सरल है। यह तुम्हारा अधिकार है। तुम सही हो। आह! यह कितनी प्यारी, मनमोहक छोटी सी शादी होगी! हमारा पैरिश सेंट-डेनिस डू सेंट सैक्रामेंट है, लेकिन मैं एक विशेष अनुमति प्राप्त करूँगा ताकि तुम्हारी शादी सेंट-पॉल में हो सके। चर्च बेहतर है। इसे जेसुइट्स ने बनवाया था। यह अधिक आकर्षक है। यह कार्डिनल डी बिराग्यू के फव्वारे के सामने है। जेसुइट वास्तुकला की उत्कृष्ट कृति नामुर में है। इसे सेंट-लूप कहा जाता है। शादी के बाद तुम्हें वहाँ जरूर जाना चाहिए। यात्रा सार्थक होगी। मैडमोजेल, मैं

तुम्हारी बात से पूरी तरह सहमत हूँ , मुझे लगता है कि लड़कियों को शादी करनी चाहिए ; वे इसी के लिए बनी हैं। एक संत कैथरीन हैं जिन्हें मैं हमेशा बिना संवारे देखना पसंद करूंगी। कुंवारी रहना एक अच्छी बात है , लेकिन यह ठंडा होता है। बाइबल कहती है : संतानोत्पत्ति करो। लोगों को बचाने के लिए जोन ऑफ आर्क की आवश्यकता है ; लेकिन लोगों को बनाने के लिए मदर गूज की आवश्यकता है। तो , शादी करो , मेरी सुंदरियों। मुझे सचमुच कुंवारी रहने का कोई फायदा नहीं दिखता ! मुझे पता है कि चर्च में उनका अपना अलग चैपल होता है , और वे वर्जिन सोसाइटी पर निर्भर रहती हैं ; लेकिन , सप्रिस्टी , एक सुंदर पति , एक अच्छा साथी , और एक साल बाद , एक बड़ा , गोरा बच्चा जो भरपूर दूध पीता है , जिसकी जांघों पर चर्बी की सुंदर परतें होती हैं , और जो अपने छोटे गुलाबी पंजों से आपकी छाती को मुट्ठी भर -भर कर सहलाता है , और सुबह की तरह हंसता है —यह शाम की प्रार्थना में मोमबत्ती पकड़ने और तुरिस का जाप करने से बेहतर है। इबर्निया !”

दादाजी ने अपनी अस्सी साल की एड़ियों पर एक चक्कर लगाया और फिर से ऐसे बोलने लगे जैसे कोई स्प्रिंग फिर से टूटकर खुल गई हो :

"□□, □□□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□, □□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□"

"वैसे !"

“क्या बात है , पिताजी ?”

क्या तुम्हारा कोई घनिष्ठ मित्र नहीं है ?

“हां , कौरफेयरैक। ”

उसका क्या हुआ ?

"वह मर चुका है। "

"यह अच्छा है। "

वह उनके पास बैठ गया , कोसेट को भी बिठाया और अपने बूढ़े और झुर्रीदार हाथों से उनके चारों हाथ थाम लिए।

“यह प्यारी बच्ची कितनी खूबसूरत है ! यह कोसेट एक उत्कृष्ट कृति है ! वह एक छोटी बच्ची है और एक महान महिला। वह केवल बैरोनेस बनेगी , जो उसके लिए एक

तरह से पदावनति है; वह मार्क्विज़ के रूप में पैदा हुई थी। उसकी पलकें कितनी सुंदर हैं! मेरे बच्चों, यह बात अच्छी तरह समझ लो कि तुम सही रास्ते पर हो। एक-दूसरे से प्यार करो। इसमें बेपरवाह रहो। प्यार इंसानों की नादानी और ईश्वर की बुद्धिमत्ता है। एक-दूसरे की पूजा करो। बस,” वह अचानक उदास होते हुए बोले, “कितना दुर्भाग्य है! अभी-अभी मुझे यह बात समझ में आई! मेरी आधी से ज़्यादा संपत्ति पेंशन में खर्च हो गई है; जब तक मैं जीवित हूँ, तब तक कोई फर्क नहीं पड़ेगा, लेकिन मेरी मृत्यु के बाद, बीस साल बाद, आह! मेरे बेचारे बच्चों, तुम्हारे पास एक पैसा भी नहीं बचेगा! मैडम ला बैरोन, तुम्हारे सुंदर सफेद हाथ शैतान को पूंछ से खींचने का सम्मान दिलाएंगे।”

इसी समय उन्हें एक गंभीर और शांत आवाज सुनाई दी:

"मिस यूफ्रेसी फौचेलेवेंट के पास छह लाख फ़्रैंक हैं।"

यह जीन वाल्जेन की आवाज थी।

अब तक उसने एक शब्द भी नहीं बोला था, किसी को भी इस बात का एहसास नहीं था कि वह वहां मौजूद है, और वह इन सभी खुश लोगों के पीछे सीधा और बिना हिले-डुले खड़ा रहा था।

“मैडम यूफ्रेसी का इस सवाल से क्या लेना-देना है?” चौंके हुए दादाजी ने पूछा।

“मैं ही वह हूँ,” कोसेट ने उत्तर दिया।

“छह लाख फ्रैंक?” एम. गिलनोर्मंड ने प्रश्नोत्तर किया।

"शायद चौदह या पंद्रह हजार फ्रैंक कम," जीन वालजेन ने कहा।

और उसने मेज पर वह पैकेट रख दिया जिसे मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने गलती से किताब समझ लिया था।

जीन वालजेन ने खुद पैकेज खोला; उसमें नोटों का एक बंडल था। उन्हें पलटकर गिना गया। उसमें एक हजार फ्रैंक के पांच सौ नोट थे, और पांच सौ फ्रैंक के एक सौ अड़सठ नोट थे। कुल मिलाकर पांच लाख चौरासी हजार फ्रैंक थे।

“यह एक बेहतरीन किताब है,” एम. गिलनोर्मंड ने कहा।

“पांच लाख चौरासी हजार फ्रैंक!” चाची ने धीरे से कहा।

“यह तो बढ़िया व्यवस्था है, है ना मैडमोजेल गिलनोर्मंड सीनियर?” दादाजी ने कहा। “उस शैतान मारियस ने अपने सपनों के वृक्ष में एक करोड़पति वेश्या का घोंसला ढूंढ निकाला है! अब नौजवानों के प्रेम प्रसंगों पर भरोसा कीजिए! छात्र छह लाख फ्रैंक वाली छात्राएं ढूंढ लेते हैं। चेरुबिनो, रॉथ्सचाइल्ड से भी बेहतर काम करता है।”

“पांच लाख चौरासी हजार फ्रैंक!” मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने धीमी आवाज में दोहराया। “पांच लाख चौरासी! छह लाख कहना भी उतना ही आसान होता!”

मारियस और कोसेट की बात करें तो, वे इस सब के दौरान एक-दूसरे को निहार रहे थे; उन्होंने इस बात पर शायद ही ध्यान दिया हो।

V. अपना पैसा नोटरी के पास जमा करने के बजाय जंगल में जमा करें।

पाठक बिना किसी लंबी व्याख्या के समझ ही गए होंगे कि शैंपमैथ्यू कांड के बाद, जीन वालजेन कुछ दिनों के लिए भागने में सफल रहे और लैफिट के चंगुल से समय रहते मोंट्रेइल-सुर-मेर में महाशय मेडेलीन के नाम से अर्जित धन निकाल लिया। उन्हें डर था कि कहीं उन्हें दोबारा पकड़ न लिया जाए—जो अंततः हुआ भी—इसलिए उन्होंने उस धन को मोंटफर्मेइल के जंगल में, ब्लारू-बॉटम नामक स्थान पर गाड़ दिया था। छह लाख तीस हजार फ्रैंक की यह राशि, जो पूरी तरह से बैंक नोटों में थी, बहुत भारी नहीं थी और एक बक्से में रखी थी; केवल, बक्से को नमी से बचाने के लिए, उन्होंने उसे शाहबलूत के छिलकों से भरे एक संदूक में रखा था। उसी संदूक में उन्होंने अपने अन्य खजाने, बिशप के मोमबत्ती स्टैंड भी रखे थे। याद रहे कि मॉन्ट्रेइल-सुर-मेर से भागते समय वह मोमबत्तियाँ अपने साथ ले गया था। एक शाम को बौलाट्रूएल ने जिसे पहली बार देखा था, वह जीन वालजीन था। बाद में, जब भी जीन वालजीन को पैसों की ज़रूरत होती, वह ब्लारू-बॉटम में जाकर पैसे लेता था। इसीलिए उसकी अनुपस्थिति का ज़िक्र हमने किया है। उसने झाड़ियों में कहीं एक कुल्हाड़ी छिपा रखी थी, जिसके बारे में सिर्फ़ उसे ही पता था। जब उसने मारियस को बीमार होते देखा, तो उसे लगा कि अब वह समय आ गया है जब वह पैसा काम आ सकता है, इसलिए वह उसे लेने चला गया; यह वही व्यक्ति था जिसे बौलाट्रूएल ने जंगल में देखा था, लेकिन इस बार शाम के बजाय सुबह। बौलाट्रूएल को उसकी कुल्हाड़ी विरासत में मिली।

वास्तविक राशि पाँच लाख चौरासी हज़ार पाँच सौ फ़्रैंक थी। जीन वालजेन ने अपने लिए पाँच सौ फ़्रैंक निकाल लिए।—“हम आगे देखेंगे,” उसने सोचा।

उस राशि और लाफिट से निकाली गई छह लाख तीस हजार फ़्रैंक के बीच का अंतर 1823 से 1833 तक दस वर्षों में उनके द्वारा किए गए खर्च को दर्शाता है। मठ में उनके पांच वर्षों के प्रवास पर केवल पांच हजार फ़्रैंक का खर्च आया था।

जीन वालजेन ने दोनों मोमबत्तियों को चिमनी के ऊपर रख दिया, जहां वे चमक रही थीं और टूसेंट ने उनकी बहुत प्रशंसा की।

इसके अलावा, जीन वालजेन जानता था कि उसे जावर्ट से छुटकारा मिल गया था। यह कहानी उसकी मौजूदगी में सुनाई गई थी, और उसने मोनिटर में इस तथ्य की पुष्टि की थी कि कैसे जावर्ट नाम का एक पुलिस इंस्पेक्टर पोंट-औ-चेंज और पोंट-नेउफ के बीच कुछ धोबिनों की नाव के नीचे डूबा हुआ पाया गया था, और इस व्यक्ति द्वारा छोड़े गए एक लेख में, जो अन्यथा निर्दोष और अपने वरिष्ठों द्वारा अत्यधिक सम्मानित था, मानसिक विक्षोभ और आत्महत्या की ओर इशारा किया गया था।—“वास्तव में,” जीन वालजेन ने सोचा, “चूंकि उसने मुझे अपने वश में करने के बाद आज़ाद छोड़ दिया, तो वह पहले से ही पागल हो गया होगा।”

VI. दोनों बूढ़े आदमी कोसेट को खुश करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, हर कोई अपने-

अपने तरीके से।

शादी की सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। डॉक्टर से सलाह लेने पर पता चला कि शादी फरवरी में हो सकती है। तब दिसंबर का महीना था। कुछ बेहद खुशनुमा हफ्ते बीत गए।

दादाजी उन सबमें जरा भी खुश नहीं थे। वे एक-एक करके पंद्रह मिनट तक कोसेट को निहारते रहे।

“वाह, कितनी प्यारी लड़की!” उसने कहा। “और उसका स्वभाव कितना मधुर और सौम्य है! वह निःसंदेह, मेरे जीवन में देखी गई सबसे आकर्षक लड़की है। आगे चलकर उसके गुण वायलेट की सुगंध से परिपूर्ण होंगे। कितनी सुंदर! ऐसी स्त्री के साथ जीवन व्यतीत करना स्वाभाविक है। मारियस, मेरे बेटे, तुम बैरन हो, तुम धनी हो, छोटी-छोटी बातों में समय बर्बाद मत करो, मैं तुमसे विनती करता हूँ।”

कोसेट और मारियस अचानक ही समाधि से स्वर्ग में चले गए थे। यह परिवर्तन सहज नहीं था, और यदि वे इससे चकित न होते तो वे स्तब्ध रह जाते।

"क्या तुम्हें इसके बारे में कुछ समझ आया?" मारियस ने कोसेट से कहा।

“नहीं,” कोसेट ने उत्तर दिया, “लेकिन मुझे लगता है कि दयालु ईश्वर हमारी देखभाल कर रहा है।”

जीन वाल्जेन ने सब कुछ किया, हर मुश्किल को दूर किया, सब कुछ व्यवस्थित किया, सब कुछ आसान बना दिया। वह कोसेट की खुशी की ओर उतनी ही लगन और उत्साह के साथ अग्रसर हुआ, जितनी कि स्वयं कोसेट।

मेयर रह चुके होने के नाते, वे उस नाजुक समस्या को सुलझाने का तरीका जानते थे, जिसका रहस्य केवल उन्हें ही पता था - कोसेट की वैवाहिक स्थिति। अगर वे उसके वंश का खुलासा सीधे-सीधे कर देते, तो शायद शादी रुक जाती, कौन जानता

है? उन्होंने कोसेट को हर मुश्किल से निकाला। उन्होंने उसके लिए मृत लोगों का एक काल्पनिक परिवार गढ़ दिया, जो किसी भी आपत्ति का सामना न करने का एक पक्का तरीका था। कोसेट एक विलुप्त परिवार की इकलौती संतान थी; कोसेट उनकी अपनी बेटी नहीं, बल्कि दूसरे फाउचेलेवेंट की बेटी थी। फाउचेलेवेंट परिवार के दो भाई पेटिट-पिकपस के मठ में माली थे। उस मठ में पूछताछ की गई; वहाँ से सबसे सटीक जानकारी और विश्वसनीय संदर्भ मिले; अच्छी ननें, जो पितृत्व के सवालों को समझने में बहुत सक्षम नहीं थीं और इस मामले को कोई महत्व नहीं देती थीं, कभी भी ठीक से यह नहीं समझ पाईं कि कोसेट उन दो फाउचेलेवेंट भाइयों में से किसकी बेटी थी। उन्होंने वही कहा जो कहना था और उन्होंने उसे पूरे उत्साह से कहा। एक नोटरी अधिनियम तैयार किया गया। कानून की नज़र में कोसेट मैडमोजेल यूफ्रेसी फॉशेलवेंट बन गईं। उन्हें अनाथ घोषित कर दिया गया, क्योंकि उनके माता-पिता दोनों की मृत्यु हो चुकी थी। जीन वालजेन ने इस प्रकार व्यवस्था की कि उन्हें फॉशेलवेंट के नाम से कोसेट का संरक्षक नियुक्त किया गया, और एम. गिलनोर्मंड को उनके ऊपर पर्यवेक्षक संरक्षक बनाया गया।

पांच लाख अस्सी हजार फ्रैंक की बात करें तो, यह एक मृत व्यक्ति द्वारा कोसेट को दी गई वसीयत थी, जो अपनी पहचान गुप्त रखना चाहता था। मूल वसीयत में पांच लाख चौरानवे हजार फ्रैंक थे; लेकिन दस हजार फ्रैंक मैडमोजेल यूफ्रेसी की शिक्षा पर खर्च हो गए थे, जिसमें से पांच हजार फ्रैंक कॉन्वेंट को दिए गए थे। यह वसीयत, जो एक तीसरे पक्ष के पास जमा थी, कोसेट के बालिग होने पर या उसकी शादी की तारीख पर उसे सौंप दी जानी थी। कुल मिलाकर, यह बहुत स्वीकार्य था, जैसा कि पाठक समझेंगे, खासकर जब देय राशि पांच लाख थी। यह सच है कि इसमें कुछ छोटी-मोटी कमियां थीं, लेकिन उन पर ध्यान नहीं दिया गया; एक पक्ष प्रेम में अंधा हो गया था, जबकि अन्य छह लाख फ्रैंक के लालच में।

कोसेट को पता चला कि वह उस बूढ़े व्यक्ति की बेटी नहीं थी जिसे वह इतने लंबे समय से पिता कहती आ रही थी। वह तो महज़ एक रिश्तेदार था; उसका असली पिता कोई और फॉशेलवेंट था। किसी और समय होता तो यह बात उसका दिल तोड़ देती। लेकिन उस अवर्णनीय क्षण में, जिससे वह गुज़र रही थी, इस बात का उस पर हल्का सा साया पड़ा, एक धुंधली सी उदासी छा गई, और वह इतनी खुश थी कि वह उदासी

ज़्यादा देर तक नहीं टिकी। उसे मारियस मिल गया था। नौजवान आ गया, बूढ़ा गायब हो गया; यही जीवन है।

और फिर, कोसेट को कई वर्षों से अपने आसपास रहस्य देखने की आदत हो गई थी; हर वह प्राणी जिसका बचपन रहस्यमय रहा हो, वह हमेशा कुछ त्याग के लिए तैयार रहता है।

फिर भी, वह जीन वाल्जेन को पिता कहकर पुकारती रही।

कोसेट अत्यंत प्रसन्न थी और फादर गिलनोर्मंड से बेहद प्रभावित थी। यह सच है कि उन्होंने कोसेट पर खूब प्रशंसा और उपहार बरसाए। जहाँ एक ओर जीन वालजेन कोसेट के लिए समाज में एक सामान्य स्थान और अटूट प्रतिष्ठा का निर्माण कर रहे थे, वहीं एम. गिलनोर्मंड शादी के उपहारों की टोकरी की देखरेख कर रहे थे। उन्हें भव्यता से बढ़कर और कुछ भी प्रसन्न नहीं करता था। उन्होंने कोसेट को बिंचे गिप्योर का एक गाउन उपहार में दिया था, जो उन्हें उनकी दादी से विरासत में मिला था।

उन्होंने कहा, "ये फैशन फिर से चलन में आ गए हैं, प्राचीन चीजें बहुत लोकप्रिय हो रही हैं, और मेरी उम्र की युवा महिलाएं मेरे बचपन की बूढ़ी महिलाओं की तरह कपड़े पहनती हैं।"

उसने कोरोमंडल लैकर से सजी अपनी उन संदूकियों को खंगाला, जिनके अग्रभाग फूले हुए थे और जो वर्षों से नहीं खोली गई थीं।—“चलो इन विधवाओं का कबूलनामा सुनते हैं,” उसने कहा, “चलो देखते हैं इनके पेट में क्या है।” उसने शोर मचाते हुए अपनी सभी पत्नियों, सभी रखेलों और सभी दादियों की फूली हुई संदूकियों को खंगाला। पेकिन, दमास्क, लैम्पा, पेंटेड मोइरे, शॉट ग्रोस डी टूर्स के वस्त्र, सोने की कढ़ाई वाले धोए जा सकने वाले भारतीय रूमाल, बिना किसी दाएं या बाएं तरफ के डॉफिन, जेनोआ और एलेनकॉन पॉइंट लेस, प्राचीन सुनार के काम से बने आभूषण, सूक्ष्म नक्काशी से सजे हाथीदांत के बोनबोन बॉक्स, छोटे-छोटे गहने और रिबन—उसने कोसेट पर सब कुछ लुटा दिया। कोसेट, आश्चर्यचकित, मारियस के प्रेम में डूबी हुई और एम. गिलनोर्मंड के प्रति कृतज्ञता से विरक्त, असीम सुख के स्वप्न में डूबी हुई थी, मानो वह रेशम और मखमल से सजी हो। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसकी शादी की टोकरी को देवदूत थामे

हुए हों। उसकी आत्मा मेचलिन लेस के पंखों के साथ नीले आकाश की गहराइयों में विचरण कर रही थी।

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, प्रेमियों का नशा केवल दादाजी के परमानंद के बराबर था। रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर में तुरहियों की गूंज सुनाई दे रही थी।

हर सुबह, दादाजी कोसेट को तरह-तरह की सजावटी चीजें भेंट करते थे। हर तरह की छोटी-छोटी सजावटी चीजें उसके चारों ओर चमकती रहती थीं।

एक दिन मारियस, जिसे अपने परमानंद के बीच भी गंभीर बातें करने का शौक था, ने पता नहीं किस घटना के संदर्भ में कहा:

"क्रांति के पुरुष इतने महान हैं कि उन्हें युगों-युगों तक प्रतिष्ठा प्राप्त है, जैसे कैटो और फोसियन को, और उनमें से प्रत्येक मुझे एक प्राचीन स्मृति के समान प्रतीत होता है।"

“और भी प्राचीन!” बूढ़े सज्जन ने कहा। “धन्यवाद, मारियस। मुझे ठीक यही चाहिए था।”

और अगले दिन, कोसेट के शादी के उपहारों में टी-रोज़ रंग की मोइरे एंटीक की एक शानदार पोशाक भी शामिल कर ली गई।

इन तुच्छ चीजों से दादाजी ने थोड़ी सी बुद्धिमत्ता प्राप्त कर ली।

प्रेम तो ठीक है; लेकिन इसके साथ कुछ और भी होना चाहिए। आनंद में निरर्थक का मिश्रण होना चाहिए। आनंद तो केवल आवश्यक है। मेरे लिए उसमें अतिरिक्त चीज़ों का भरपूर मिश्रण कर दो। एक महल और उसका दिल। उसका दिल और लूव्र संग्रहालय। उसका दिल और वर्साय की भव्य जल-कला। मुझे मेरी चरवाहा लड़की दे दो और उसे डचेस बनाने की कोशिश करो। मेरे लिए कॉर्नफ्लावर से सजी फिलिस को लाओ और एक लाख फ्रैंक की आमदनी जोड़ दो। मेरे लिए संगमरमर के स्तंभों के नीचे, जहाँ तक नज़र जाए, एक देहाती दृश्य खोल दो। मैं देहाती दृश्य और संगमरमर और सोने के जादुई तमाशे दोनों के लिए तैयार हूँ। सूखा आनंद सूखी रोटी जैसा होता है। कोई खाता तो है, लेकिन भोजन नहीं करता। मुझे अतिरिक्त, निरर्थक, फिजूलखर्ची, अतिरेक, वह सब चाहिए जिसका कोई उद्देश्य नहीं है। मुझे याद है कि मैंने स्ट्रासबर्ग कैथेड्रल में एक घड़ी देखी थी, जो तीन

मंजिला घर जितनी ऊँची थी, जो घंटे बताती थी, जो समय बताने की कृपा तो करती थी, लेकिन उसमें समय बताने के लिए बने होने का आभास नहीं था; और जो दोपहर या आधी रात को बजने के बाद—दोपहर, सूर्य का समय, या आधी रात, प्रेम का समय—या आपकी पसंद के किसी भी समय, आपको चंद्रमा और तारे, पृथ्वी और समुद्र, पक्षी और मछलियाँ, फोएबस और फोएबे, और एक ताक से निकलने वाली असंख्य वस्तुएँ, बारह प्रेरित, सम्राट चार्ल्स पंचम, एपोनिन, सबिनस, और छोटे-छोटे सुनहरे सज्जनों की भीड़ देता था, जो तुरही बजाते थे। बिना किसी को बताए, हर अवसर पर हवा में गूंजने वाली मधुर घंटियों की गिनती किए बिना। क्या एक साधारण, गंजी घड़ी, जो केवल समय बताती है, इसके बराबर है? जहाँ तक मेरी बात है, मैं स्ट्रासबर्ग की बड़ी घड़ी का समर्थक हूँ, और मैं इसे ब्लैक फॉरेस्ट की कोयल घड़ी से बेहतर मानता हूँ।

एम. गिलनोर्मंड ने शादी के संबंध में बेतुकी बातें कीं, और अठारहवीं सदी की सारी फिजूलखर्ची उनके उत्साहपूर्ण भाषणों के माध्यम से बेतरतीब ढंग से गुजर गई।

“तुम्हें त्योहारों की कला का ज्ञान नहीं है। तुम्हें इस युग में आनंदमय दिन का आयोजन करना नहीं आता,” उसने कहा। “आपकी उन्नीसवीं सदी कमज़ोर है। इसमें भव्यता की कमी है। यह अमीरों की उपेक्षा करती है, यह कुलीनों की उपेक्षा करती है। हर चीज़ में यह साफ़-सुथरी है। आपका तीसरा वर्ग नीरस, रंगहीन, गंधहीन और आकारहीन है। आपके बुर्जुआ वर्ग के सपने, जैसा कि वे कहते हैं: एक सुंदर, नए सिरे से सजाया हुआ, बैंगनी, आबनूस और कैलिको रंग का कमरा। रास्ता बनाओ! रास्ता बनाओ! सिएर कर्मजियोन मैडमोजेल क्लच-पेनी से शादी कर रहे हैं। भव्यता और वैभव। एक लुई डी'ओर मोमबत्ती से चिपका दिया गया है। यही है युग। मेरी मांग है कि मैं इससे सरमाटियनों के पार भाग जाऊं। आह! 1787 में, मैं भविष्यवाणी करता हूं कि सब कुछ खो गया था, उस दिन से जब मैंने ड्यूक डी रोहन, प्रिंस डी लियोन, ड्यूक डी चाबोट, ड्यूक डी मोंटबाज़ोन, मार्क्विस डी सोबिस, विस्काउंट डी थौअर्स, फ्रांस के पीयर को लॉन्गचैम्प्स जाते देखा। टेपेकु! इसका फल मिल चुका है। इस सदी में, लोग कारोबार में लगे रहते हैं, वे छुट्टे पर जुआ खेलते हैं, पैसे जीतते हैं, वे कंजूस हैं। लोग अपनी दिखावट का ख्याल रखते हैं और उसे चमकाते हैं; हर कोई ऐसे कपड़े पहने हुए है मानो अभी-अभी डिब्बे से निकला हो, नहाया-धोया, साबुन

लगाया, खुरचना, दाढ़ी बनाना, कंघी करना, धोना, चिकना करना, रगड़ना, ब्रश करना, बाहर से साफ-सुथरा, बेदाग, पत्थर की तरह चमकीला, विवेकशील, साफ-सुथरा, और साथ ही, हे भगवान, उनके अंतरात्मा की गहराई में गोबर के ढेर और गंदे नाले हैं जो एक चरवाहे को भी अपनी उंगलियों में नाक पोंछते हुए पीछे हटने पर मजबूर कर दें। मैं इस युग को यह युक्ति देता हूँ: 'गंदी स्वच्छता।' नाराज़ मत होइए, मारियस, मुझे बोलने की अनुमति दीजिए; जैसा कि आप देख रहे हैं, मैं लोगों की कोई बुराई नहीं कर रहा हूँ, मैं हमेशा आपके लोगों की आलोचना करता रहता हूँ, लेकिन कृपया पूंजीपति वर्ग को थोड़ा सा तमाचा मारने के मेरे प्रयास को सकारात्मक दृष्टि से देखें। मैं उसी वर्ग से हूँ। जो प्यार करता है अच्छी तरह से चाबुक मारना अच्छी तरह से होता है। इसलिए, मैं साफ-साफ कहता हूँ कि आजकल लोग शादी तो करते हैं, लेकिन उन्हें शादी करने का तरीका नहीं पता। आह! यह सच है, मुझे प्राचीन रीति-रिवाजों की गरिमा पर अफ़सोस है। मुझे उनके बारे में सब कुछ अफ़सोस है, उनकी शालीनता, उनका शौर्य, वे विनम्र और कोमल तरीके, वह आनंदमय विलासिता जो हर किसी के पास थी, शादी का हिस्सा बनने वाला संगीत, ऊपर के कमरे में सिम्फनी, नीचे के कमरे में ढोल की थाप, नृत्य, मेज के चारों ओर आनंदित चेहरे, बारीक ढंग से बुने हुए वीरतापूर्ण अभिवादन, गीत, आतिशबाजी, खुलकर हँसी, शैतान का अपना शोर, रिबन की बड़ी-बड़ी गांठें। मुझे दुल्हन के गार्टर पर अफ़सोस है। दुल्हन का गार्टर वीनस की कमरबंद का चचेरा भाई है। ट्रॉय का युद्ध किस पर टिका था? हेलेन के गार्टर पर, परब्लू! वे क्यों लड़े, क्यों दिव्य डायोमेड ने मेरियोनेस के सिर पर दस बिंदुओं वाला वह विशाल पीतल का हेलमेट तोड़ दिया? क्यों अकिलीज़ और हेक्टर ने अपने विशाल प्रहारों से एक-दूसरे को चीर डाला भाले? क्योंकि हेलेन ने पेरिस को अपना गार्टर लेने दिया था। कोसेट के गार्टर से होमर इलियड की रचना करते। वे अपनी कविता में मेरे जैसे एक बातूनी बूढ़े व्यक्ति को शामिल करते और उसे नेस्टर कहते। मेरे दोस्तों, बीते दिनों में, उन सुखद पुराने दिनों में, लोग समझदारी से शादी करते थे; उनका एक अच्छा अनुबंध होता था, और फिर वे खूब दावत करते थे। जैसे ही कुजास चले जाते, गमाचो आ जाते। लेकिन, सच में! पेट एक ऐसा स्वादिष्ट जानवर है जो अपना हक मांगता है, और जो अपनी शादी भी चाहता है। लोग अच्छा खाना खाते थे, और मेज पर एक खूबसूरत पड़ोसी होती थी जिसके गले को ढकने के लिए कोई कपड़ा नहीं होता था। ओह! बड़े-बड़े हंसते हुए मुंह, और हम उन दिनों कितने

खुशमिजाज थे! जवानी एक गुलदस्ता थी; हर युवक के साथ बकाइन की एक शाखा या गुलाब का गुच्छा होता था; चाहे वह चरवाहा हो या योद्धा; और अगर संयोग से कोई ड्रैगून का कप्तान होता, तो वह साधन ढूंढ लेता था। खुद को फ्लोरियन कहो। लोग अच्छे दिखने को बहुत महत्व देते थे। वे कढ़ाई करते और रंगते थे। एक बुर्जुआ फूल की तरह दिखता था, एक मार्क्विस कीमती पत्थर की तरह। लोगों के जूतों में पट्टियाँ नहीं होती थीं, उनके पास जूते होते ही नहीं थे। वे चुस्त-दुरुस्त, चमकदार, लहराते, दीप्तिमान, फड़फड़ाते, नाज़ुक, नखरेबाज़ थे, फिर भी वे अपनी कमर में तलवारें रखते थे। हमिंगबर्ड की चोंच और पंजे होते हैं। वह गैलैंड इंडीज का ज़माना था। उस सदी का एक पहलू नाज़ुक था, दूसरा भव्य; और हरी पत्तागोभी की कसम! लोग खूब मजे करते थे। आज लोग गंभीर हैं। बुर्जुआ लालची है, बुर्जुआ महिला रूढ़िवादी है; तुम्हारी सदी बदकिस्मत है। लोग ग्रेस को गर्दन नीची होने के कारण भगा देते थे। अफसोस! सुंदरता को कुरूपता की तरह छिपाया जाता है। क्रांति के बाद से, बैले नर्तकियों समेत हर चीज़ के पास पतलून है; एक बाज़ीगर नर्तकी को गंभीर होना चाहिए; तुम्हारे रिगाडून सिद्धांतवादी हैं। राजसी होना आवश्यक है। अगर वे अपनी ठुड्डी को अपनी टाई में न रखें तो लोग बहुत नाराज़ होंगे। बीस साल के लड़के का आदर्श, जब वह शादी करे, तो एम. रॉयर-कोल्लार्ड जैसा दिखना चाहिए। और क्या आप जानते हैं कि उस राजसीपन से क्या मिलता है? तुच्छता। यह सीखो: खुशी केवल आनंददायक नहीं होती; यह महान होती है। लेकिन फिर, खुलकर प्यार करो, क्या बकवास है! जब शादी करो, तो जोश, उत्साह, कोलाहल और खुशी के शोर के साथ शादी करो! चर्च में गंभीर रहो, ठीक है। लेकिन, जैसे ही प्रार्थना समाप्त हो जाए, सरपेजू! तुम्हें दुल्हन के चारों ओर एक सपना घुमाना होगा। शादी शाही और काल्पनिक होनी चाहिए; इसे रीम्स के गिरजाघर से चैंटेलूप के पैगोडा तक अपनी रस्मों का जुलूस निकालना चाहिए। मुझे तुच्छ शादी से घृणा है। वेंट्रेगुलेट! कम से कम उस एक दिन के लिए ओलंपस में रहो। उनमें से एक बनो। देवता! आह! लोग अप्सराएँ हो सकते हैं। खेल और हँसी, जैसे मकड़ी; वे मूर्ख हैं। मेरे दोस्तों, हर नवविवाहित दूल्हे को राजकुमार एल्डोब्रोन्दिनी होना चाहिए। जीवन के उस अनोखे पल का लाभ उठाओ और हंसों और चीलों के साथ आकाश में उड़ान भरो, भले ही कल तुम्हें मेंढकों के बुर्जुआ वर्ग में लौटना पड़े। शादी में कंजूसी मत करो, उसकी शान-शौकत कम मत करो; जिस दिन तुम चमकते हो, उस दिन कंजूसी मत करो। शादी घर का काम नहीं है। ओह!

[illegible]

[illegible]

—[illegible]

[illegible]

[illegible]

इसके अलावा, छह लाख फ्रैंक ने उस बुजुर्ग अविवाहित महिला की दुविधा दूर कर दी थी। उसके पिता को उसकी इतनी कम परवाह करने की आदत पड़ गई थी कि उन्होंने मारियस के विवाह के लिए उसकी सहमति के मामले में उससे सलाह नहीं ली थी। उन्होंने अपनी आदत के अनुसार जल्दबाजी में काम किया था, एक तानाशाह से गुलाम बने उनके मन में बस एक ही विचार था—मारियस को संतुष्ट करना। जहाँ तक चाची की बात है—उन्हें यह ख्याल भी नहीं आया था कि चाची भी हैं और उनकी अपनी राय हो सकती है, और भेड़ जैसी स्वभाव की होने के कारण यह बात उन्हें परेशान कर रही थी। मन ही मन कुछ नाराज़, लेकिन बाहर से भावहीन, उन्होंने मन ही मन कहा था: “मेरे पिता ने मुझसे पूछे बिना ही विवाह का फैसला कर लिया है; मैं भी उनसे सलाह लिए बिना ही विरासत का फैसला कर लूंगी।” वास्तव में, वह अमीर थीं और उनके पिता नहीं। उन्होंने इस मामले पर अपना फैसला सुरक्षित रखा था। संभव है कि अगर यह रिश्ता अच्छा न होता, तो वह उन्हें गरीब ही छोड़ जातीं। “मेरे भतीजे के लिए तो और भी बुरा हुआ! वो एक भिखारी से शादी कर रहा है, उसे खुद भिखारी ही रहने दो!” लेकिन कोसेट के पाँच लाख रुपये चाची को खुश कर गए और इस प्रेमी जोड़े के प्रति उनकी आंतरिक स्थिति में कुछ बदलाव आ गया। छह लाख फ्रैंक जैसी बड़ी रकम का कुछ तो महत्व होता ही है, और यह स्पष्ट था कि उनके पास अपनी सारी संपत्ति इन नौजवानों को देने के अलावा कोई चारा नहीं था, क्योंकि उन्हें इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी।

यह तय किया गया कि दंपति दादाजी के साथ रहेंगे—एम. गिलनोर्मंड ने घर का सबसे शानदार कमरा उन्हें देने पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "इससे मुझे फिर से जवानी का एहसास होगा। यह मेरी पुरानी योजना है। मैं हमेशा से अपने कमरे में शादी करने का सपना देखता रहा हूँ।"

उन्होंने इस कक्ष को अनेक सुरुचिपूर्ण छोटी-छोटी वस्तुओं से सजाया। उन्होंने छत और दीवारों पर एक असाधारण कपड़ा लगवाया, जो उनके पास पहले से ही मौजूद था और जिसके बारे में उनका मानना था कि यह उट्रेक्ट से आया था। यह कपड़ा बटरकप रंग के साटन जैसा था, जिस पर मखमली ऑरिकुला के फूल बने हुए थे। उन्होंने कहा, "इसी कपड़े से ला रोश-गुयोन में डचेस डी'एनविले का पलंग सजाया गया था।" चिमनी के ऊपर उन्होंने सैक्स पोर्सिलेन की एक छोटी सी मूर्ति स्थापित की, जो अपने नग्न पेट पर मफ पकड़े हुए थी।

एम. गिलनोर्मंड का पुस्तकालय वकील का अध्ययन कक्ष बन गया, जिसकी मारियस को आवश्यकता थी; यह याद रखना होगा कि संस्था की परिषद द्वारा एक अध्ययन कक्ष की आवश्यकता थी।

VII. सुख के साथ मिश्रित सपनों के प्रभाव

प्रेमी जोड़े हर दिन एक-दूसरे से मिलते थे। कोसेट, एम. फॉशेलवेंट के साथ आती थी। मैडमोजेल गिलनोर्मंड ने कहा, "यह तो बिल्कुल उल्टा हो रहा है, दुल्हन का घर आकर इस तरह से प्रेम-प्रसंग करना।" लेकिन मारियस के स्वास्थ्य लाभ के कारण यह आदत पक्की हो गई थी, और रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर की आरामकुर्सियाँ, जो रू डे ल'होमे आर्मे की भूसे की कुर्सियों की तुलना में मुलाकातों के लिए ज़्यादा उपयुक्त थीं, ने इस आदत को और मज़बूत कर दिया था। मारियस और एम. फॉशेलवेंट एक-दूसरे को देखते तो थे, लेकिन आपस में बात नहीं करते थे। ऐसा लगता था मानो यह पहले से तय था। हर लड़की को एक साथी की ज़रूरत होती है। कोसेट एम. फॉशेलवेंट के बिना नहीं आ सकती थी। मारियस की नज़र में, एम. फॉशेलवेंट कोसेट के साथ आने की एक शर्त थे। उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया था। सभी मनुष्यों के कल्याण के सामान्य सुधार के दृष्टिकोण से, अस्पष्ट और अनिश्चित रूप से राजनीतिक मामलों पर चर्चा करने के कारण, वे केवल "हाँ" और "ना" से कुछ अधिक कहने में सक्षम हो गए। एक बार शिक्षा के विषय पर, जिसे मारियस निःशुल्क और अनिवार्य बनाना चाहता था, और सभी रूपों में सभी पर भरपूर मात्रा में उपलब्ध कराना चाहता था, एक शब्द में कहें तो हवा और सूरज की तरह, पूरी आबादी के लिए सुलभ, वे एकमत थे और लगभग बातचीत करने लगे। श्री फॉशेलवेंट अच्छी तरह से बोलते थे, और यहाँ तक कि उनकी भाषा में एक निश्चित उदात्तता भी थी—फिर भी उनमें कुछ अवर्णनीय कमी थी। श्री फॉशेलवेंट में एक अनुभवी व्यक्ति की तुलना में कुछ कम और कुछ अधिक भी था।

मारियस, मन ही मन, अपने विचारों की गहराई में, श्री फाउचेलेवेंट को लेकर तरह-तरह के अनकहे सवालों से घिरा हुआ था, जो उसके लिए केवल दयालु और उदासीन व्यक्ति थे। कई बार उसे अपनी यादों पर संदेह होने लगा। उसकी स्मृति में एक खालीपन था, एक काला धब्बा, चार महीनों की पीड़ा से खोदी गई एक खाई।—उसमें बहुत कुछ खो गया था। वह इस हद तक पहुँच गया था कि उसने खुद से पूछा कि क्या यह सचमुच सच था कि उसने इतने गंभीर और शांत स्वभाव के श्री फाउचेलेवेंट को बैरिकेड में देखा था।

लेकिन अतीत के दर्शनों और लुप्तियों ने उसके मन में जो स्तब्धता छोड़ी थी, वह केवल यही नहीं थी। यह नहीं माना जा सकता कि वह स्मृति के उन सभी जुनूनों से मुक्त हो गया था जो हमें, खुश और संतुष्ट होने पर भी, उदास होकर पीछे मुड़कर देखने के लिए विवश करते हैं। जो सिर पीछे मुड़कर लुप्त हो चुके क्षितिजों की ओर नहीं देखता, उसमें न तो विचार होता है और न ही प्रेम। कभी- कभी मारियस अपना चेहरा हाथों में थाम लेता था, और धुंधला और उथल-पुथल भरा अतीत उसके मस्तिष्क में छाए धुंधलेपन में समा जाता था। फिर उसने माबेउफ को गिरते देखा, उसने गोलियों की बौछार के बीच गैवरोश को गाते सुना, उसने अपने होठों के नीचे एपोनिन की ठंडी भौंहों को महसूस किया; एनजोलरास, कौरफेयरैक, जीन प्रोवेर, कॉम्बफेरे, बॉसुएट, ग्रांटेयर, उसके सभी मित्र उसके सामने सीधे खड़े हुए, फिर हवा में गायब हो गए। क्या वे सभी प्यारे, दुखी, वीर, आकर्षक या त्रासदीपूर्ण प्राणी केवल सपने थे? क्या वे वास्तव में अस्तित्व में थे? विद्रोह ने सब कुछ अपने धुएं में लपेट लिया था। ये तीव्र बुखार बड़े-बड़े सपने पैदा करते हैं। उसने खुद से सवाल किए; उसने खुद को महसूस किया; ये सारी लुप्त वास्तविकताएँ उसे चक्कर दिला रही थीं। फिर वे सब कहाँ थे? क्या सच में सब मर चुके थे? परछाइयों में गिरने से उसके सिवा सब गायब हो गए थे। उसे ऐसा लग रहा था मानो सब कुछ किसी रंगमंच के पर्दे के पीछे गायब हो गया हो। जीवन में ऐसे ही पर्दे होते हैं जो गिर जाते हैं। ईश्वर अगले अध्याय की ओर बढ़ जाता है।

और वह स्वयं—क्या वह सचमुच वही व्यक्ति था? वह, जो कभी गरीब था, अब अमीर था; वह, जिसे त्याग दिया गया था, अब उसका परिवार था; वह, जो कभी निराश था, अब कोसेट से विवाह करने वाला था। उसे ऐसा लगा जैसे वह किसी कब्र से गुजरा हो, और उसमें काले रंग में प्रवेश करके सफेद रंग में बाहर निकला हो, और उस कब्र में बाकी लोग रह गए हों। कुछ क्षणों में, अतीत के ये सभी प्राणी, लौटकर आए और वर्तमान में, उसके चारों ओर एक घेरा बना लेते और उसे घेर लेते; तब उसे कोसेट की याद आती और उसकी शांति वापस आ जाती; लेकिन इस आनंद के अलावा और कुछ भी उस विपत्ति को मिटाने के लिए पर्याप्त नहीं था।

एम. फॉशेलवेंट लगभग इन लुप्त हो चुके लोगों में शुमार हो गए थे। मारियस को यह विश्वास करने में संकोच हो रहा था कि बैरिकेड पर बैठा फॉशेलवेंट वही व्यक्ति था जो कोसेट के बगल में इतनी गंभीरता से बैठा था। पहला दृश्य शायद

उनके प्रलाप के दौरान आने वाले बुरे सपनों में से एक था। हालांकि, दोनों व्यक्तियों का स्वभाव कठोर था, इसलिए मारियस के लिए एम. फॉशेलवेंट से कोई प्रश्न पूछना संभव नहीं था। ऐसा विचार उनके मन में आया ही नहीं था। हम इस विशिष्ट विवरण का पहले ही उल्लेख कर चुके हैं।

दो ऐसे पुरुष जिनके बीच एक साझा रहस्य हो, और जो एक प्रकार के मौन समझौते के तहत उस विषय पर एक शब्द भी न बोलते हों, आमतौर पर जितना माना जाता है, उससे कहीं कम दुर्लभ हैं।

केवल एक बार, मारियस ने यह प्रयास किया। उसने बातचीत में रू डे ला चानवरेरी का जिक्र किया और एम. फाउचेलेवेंट की ओर मुड़कर उनसे कहा:

"बेशक, आप उस गली से परिचित हैं?"

"कौन सी गली?"

"द हेम्प स्ट्रीट।"

"मुझे उस सड़क का नाम बिल्कुल नहीं पता," एम. फाउचेलेवेंट ने दुनिया के सबसे स्वाभाविक तरीके से जवाब दिया।

जिस प्रतिक्रिया का संबंध सड़क के नाम से था, न कि स्वयं सड़क से, वह मारियस को वास्तव में जितनी निर्णायक थी, उससे कहीं अधिक निर्णायक प्रतीत हुई।

“निश्चित रूप से,” उसने सोचा, “मैं सपना देख रहा था। मुझे मतिभ्रम हुआ था।
वह व्यक्ति बिल्कुल उसके जैसा दिख रहा था। एम. फॉशेलवेंट वहां नहीं थे।”

VIII. दो ऐसे व्यक्ति जिन्हें ढूंढना असंभव है

मारियस का आकर्षण, चाहे वह कितना भी प्रबल क्यों न हो, उसके मन से अन्य चिंताओं को मिटा नहीं सका।

शादी की तैयारियों के दौरान और तय की गई तारीख का इंतजार करते हुए, उन्होंने कठिन और सावधानीपूर्वक पूर्वव्यापी शोध करवाए।

उन्हें कई लोगों का आभार व्यक्त करना था; उन्हें अपने पिता का भी आभार व्यक्त करना था, और स्वयं का भी।

वहाँ थेनार्डियर था; वहाँ वह अज्ञात व्यक्ति था जो उसे, मारियस को, एम. गिलनोर्मंड के पास वापस लाया था।

मारियस ने इन दोनों पुरुषों को खोजने का प्रयास किया, उसका इरादा शादी करने का नहीं था, वह खुश रहना चाहता था और उन्हें भूल जाना चाहता था, और उसे डर था कि यदि कृतज्ञता के इन ऋणों को पूरा नहीं किया गया, तो वे उसके जीवन पर एक काला साया छोड़ देंगे, जो भविष्य के लिए बहुत उज्ज्वल होने का वादा करता था।

उसके लिए इन सभी कष्टों के बोझ को पीछे छोड़ना असंभव था, और वह भविष्य में खुशी-खुशी प्रवेश करने से पहले अतीत से मुक्ति पाना चाहता था।

थेनार्डियर एक खलनायक था, लेकिन इससे इस तथ्य पर कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसने कर्नल पोंटमर्सी की जान बचाई थी। मारियस को छोड़कर बाकी सभी की नजरों में थेनार्डियर एक बदमाश था।

और मारियस, वाटरलू के युद्धक्षेत्र के वास्तविक दृश्य से अनभिज्ञ होने के कारण, इस विचित्र विवरण से अनजान था कि उसके पिता, थेनार्डियर के संदर्भ में, एक अजीब स्थिति में थे, जहां वे अपने जीवन के लिए थेनार्डियर के ऋणी थे, लेकिन किसी भी प्रकार की कृतज्ञता के लिए उनके ऋणी नहीं थे।

मारियस द्वारा नियुक्त किए गए विभिन्न एजेंटों में से कोई भी थेनार्डियर का कोई सुराग नहीं ढूंढ पाया। ऐसा प्रतीत होता था कि उस क्षेत्र में सब कुछ पूरी तरह से नष्ट हो गया था। मैडम थेनार्डियर की मुकदमे की सुनवाई के दौरान जेल में ही मृत्यु हो गई थी। थेनार्डियर और उनकी बेटी अज़ेलमा, उस दुखद समूह के बचे हुए दो सदस्य, अंधकार में डूब गए थे। सामाजिक अज्ञात की खाई चुपचाप उन लोगों के ऊपर बंद हो गई थी। सतह पर उस कंपन, उस थरथराहट, उन धुंधले संकेंद्रित वृत्तों के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था जो यह संकेत देते हैं कि कुछ गड़बड़ हुई है और अब खाई गिरने वाली है।

मैडम थेनार्डियर की मृत्यु हो जाने, बोलट्रुएल को मामले से हटा दिए जाने, क्लैकसस के गायब हो जाने, मुख्य आरोपियों के जेल से भाग जाने के कारण, गोरब्यू हाउस में हुए हमले से संबंधित मुकदमा निष्फल हो गया।

वह मामला काफी हद तक अस्पष्ट ही रहा। न्यायालय को दो अधीनस्थों से ही संतोष करना पड़ा। पंचौद उर्फ़ प्रिंटानियर उर्फ़ बिग्रेनाइल और डेमी- लियार्ड उर्फ़ ड्यूक्स-मिलियार्ड्स, जिन्हें मामले के दोनों पक्षों की सुनवाई के बाद असंगत रूप से दस साल के कारावास की सजा सुनाई गई थी। फरार और अवज्ञाकारी सह-अपराधियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी।

प्रमुख और नेता थेनार्डियर को भी अवज्ञा के कारण मृत्युदंड दिया गया था।

यह वाक्य थेनार्डियर के बारे में बची हुई एकमात्र जानकारी थी, जो उस दफन नाम पर एक अर्थी के पास जलती मोमबत्ती की तरह अपनी भयावह रोशनी बिखेर रही थी।

इसके अलावा, पुनः पकड़े जाने के भय से थेनार्डियर को वापस सुदूरतम गहराई में धकेल कर, इस वाक्य ने उस व्यक्ति को घेरने वाले अंधकार के घनत्व को और बढ़ा दिया।

जहां तक दूसरे व्यक्ति, यानी उस अज्ञात व्यक्ति की बात है जिसने मारियस की जान बचाई थी, तो शुरुआती जांच में कुछ हद तक सफलता मिली, लेकिन फिर अचानक निष्कर्ष पर पहुंच गई। उन्हें वह गाड़ी मिल गई जो 6 जून की शाम को मारियस को रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर तक लेकर आई थी।

कोचवान ने बताया कि 6 जून को, एक पुलिस अधिकारी के आदेशों का पालन करते हुए, वह दोपहर तीन बजे से सूर्यास्त तक ग्रैंड सीवर के निकास द्वार के ऊपर,

क्वाई डेस चैंप्स-एलिसीज़ पर खड़ा रहा; कि शाम लगभग नौ बजे, नदी के किनारे से सटे सीवर का ढक्कन खुल गया; कि उसमें से एक आदमी निकला, जिसने अपने कंधों पर एक और आदमी को उठाया हुआ था, जो मृत प्रतीत हो रहा था; कि उस स्थान पर पहरा दे रहे अधिकारी ने जीवित व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया और मृत व्यक्ति को अपने कब्जे में ले लिया; कि पुलिस अधिकारी के आदेश पर, उसने, कोचवान ने, "उन सभी लोगों" को अपनी गाड़ी में बिठाया; कि वे पहले रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर गए; कि उन्होंने वहाँ मृत व्यक्ति को छोड़ दिया; कि मृत व्यक्ति श्री मारियस थे, और कोचवान ने उन्हें पूरी तरह से पहचान लिया, हालाँकि वह "इस बार" जीवित थे; उसके बाद, वे फिर से वाहन में सवार हो गए, उसने अपने घोड़ों को चाबुक मारा; अभिलेखागार के द्वार से कुछ कदम दूर, उन्होंने उसे रुकने के लिए कहा; वहाँ, सड़क पर, उन्होंने उसे पैसे दिए और उसे छोड़ दिया, और पुलिस एजेंट दूसरे आदमी को अपने साथ ले गया; उसे इससे ज्यादा कुछ नहीं पता था; और रात बहुत अंधेरी थी।

जैसा कि हमने बताया, मारियस को कुछ भी याद नहीं था। उसे बस इतना याद था कि जब वह पीछे की ओर बैरिकेड पर गिर रहा था, तभी किसी ने उसे पीछे से ज़ोरदार हाथ से पकड़ लिया था; उसके बाद, उसके लिए सब कुछ गायब हो गया।

उन्हें एम. गिलनोर्मंड के अस्पताल में ही होश आया था।

वह अटकलों में खो गया था।

उसे अपनी पहचान पर संदेह नहीं हो सकता था। फिर भी, यह कैसे हुआ कि रू डे ला चानवरेरी में गिरने के बाद, उसे सीन नदी के किनारे, पोंट डेस इनवैलिड्स के पास पुलिस एजेंट ने उठा लिया?

किसी ने उसे क्वार्टियर डेस हालेस से चैंप्स-एलिसी तक पहुँचाया था। और कैसे? सीवर के रास्ते। अभूतपूर्व समर्पण!

कोई है जो?

यही वह व्यक्ति था जिसकी तलाश मारियस कर रहा था।

उस व्यक्ति का, जो उसका उद्धारकर्ता था, कुछ भी नहीं; कोई निशान नहीं; जरा सा भी संकेत नहीं।

मारियस को इस मामले में काफी संयम बरतना पड़ा, फिर भी उसने पुलिस कार्यालय तक अपनी जांच-पड़ताल की। वहां भी, अन्य जगहों की तरह, प्राप्त जानकारी से कोई खास निष्कर्ष नहीं निकला।

प्रान्त को इस मामले की जानकारी तांगा चालक से भी कम थी। उन्हें इस बात की कोई जानकारी नहीं थी कि 6 जून को ग्रैंड सीवर के मुहाने पर कोई गिरफ्तारी हुई थी।

इस मामले में किसी भी एजेंट की कोई रिपोर्ट वहां प्राप्त नहीं हुई थी, जिसे प्रान्त में एक मनगढ़ंत कहानी माना गया। इस मनगढ़ंत कहानी का श्रेय कोचवान को दिया गया।

इनाम पाने की चाह रखने वाला कोचवान कुछ भी कर सकता है, यहाँ तक कि कल्पना भी कर सकता है। यह तथ्य निश्चित था, और मारियस को इस पर संदेह नहीं हो सकता था, सिवाय इसके कि उसे अपनी पहचान पर संदेह हो, जैसा कि हमने अभी कहा है।

इस विलक्षण रहस्य के बारे में सब कुछ समझ से परे था।

उस रहस्यमय व्यक्ति का क्या हुआ, जिसे कोचवान ने ग्रैंड सीवर की जाली से बेहोश मारियस को पीठ पर लादे हुए निकलते देखा था, और जिसे ड्यूटी पर तैनात पुलिस एजेंट ने एक विद्रोही को बचाते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया था? उस पुलिस एजेंट का क्या हुआ?

इस एजेंट ने चुप्पी क्यों साध रखी थी? क्या वह आदमी भागने में कामयाब हो गया था? क्या उसने एजेंट को रिश्वत दी थी? मारियस, जो उसका एहसानमंद था, उस आदमी ने उसे कोई आहत क्यों नहीं किया? उसकी निःस्वार्थता उसकी वफादारी से कम नहीं थी। वह आदमी दोबारा क्यों नहीं आया? शायद वह मुआवजे से परे था, लेकिन कृतज्ञता से कोई भी परे नहीं होता। क्या वह मर गया था? वह आदमी कौन था? उसका चेहरा कैसा था? कोई उसे ये नहीं बता सकता था।

कोचवान ने उत्तर दिया: "रात बहुत अंधेरी थी।" बास्क और निकोलेट, घबराए हुए, केवल अपने युवा स्वामी को देख रहे थे जो खून से लथपथ था।

जिस द्वारपाल की मोमबत्ती ने मारियस के दुखद आगमन को रोशन किया था, वही एकमात्र व्यक्ति था जिसने उस व्यक्ति पर ध्यान दिया था, और उसने जो विवरण दिया वह इस प्रकार है:

वह आदमी बहुत बुरा था।

मारियस ने अपने दादा के पास वापस लाए जाने के समय पहने हुए खून से सने कपड़ों को इस उम्मीद में सुरक्षित रख लिया था कि यह उसके शोध में उपयोगी साबित होगा।

कोट की जांच करने पर पता चला कि उसका एक स्कर्ट एक खास तरीके से फटा हुआ था। उसका एक टुकड़ा गायब था।

एक शाम, मारियस कोसेट और जीन वालजेन की उपस्थिति में उस पूरे अनोखे साहसिक कार्य, अपने द्वारा की गई अनगिनत पूछताछ और अपने प्रयासों की निरर्थकता के बारे में बात कर रहा था। "महाशय फॉशेलवेंट" का ठंडा चेहरा देखकर उसे गुस्सा आ गया।

उसने क्रोध से भरी जीवंतता के साथ कहा:

“जी हाँ, वह आदमी, चाहे जो भी रहा हो, महान था। क्या आप जानते हैं उसने क्या किया, महोदय? वह किसी देवदूत की तरह हस्तक्षेप करने आया था। उसने खुद को युद्ध के बीचोंबीच झोंक दिया होगा, मुझे वहाँ से निकाल लाया होगा, सीवर खोल दिया होगा, मुझे उसमें घसीटकर ले गया होगा और मुझे उसके पार ले गया होगा! उसने उन भयानक भूमिगत सुरंगों में डेढ़ मील से अधिक की दूरी तय की होगी, झुका हुआ, बोझ से दबा हुआ, अंधेरे में, गंदे नाले में—डेढ़ मील से अधिक, महोदय, अपनी पीठ पर एक लाश लिए हुए! और किस उद्देश्य से? केवल उस लाश को बचाने के उद्देश्य से। और वह लाश मैं ही था। उसने मन ही मन कहा: ‘शायद अभी भी जीवन की एक झलक बाकी हो; मैं उस दयनीय चिंगारी के लिए अपनी जान जोखिम में डालूँगा!’ और उसने अपनी जान एक बार नहीं बल्कि बीस बार जोखिम में डाली! और हर कदम खतरनाक था। इसका प्रमाण यह है कि सीवर से बाहर निकलते ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया। क्या आप जानते हैं, महोदय, कि उस आदमी ने यह सब किया? और उसे इसका कोई प्रतिफल नहीं मिला। उम्मीद। मैं क्या था? एक विद्रोही। मैं क्या था? पराजितों में से एक। ओह! अगर कोसेट के छह लाख फ्रैंक मेरे होते।

"ये तुम्हारे हैं," जीन वाल्जेन ने बीच में ही टोकते हुए कहा।

“खैर,” मारियस ने बात जारी रखते हुए कहा, “मैं उस आदमी को एक बार फिर ढूंढने के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दूंगा।”

जीन वाल्जेन चुप रहे।

पुस्तक **VI.** नींदहीन रात

I. 16 फरवरी, 1833

16 से 17 फरवरी, 1833 की रात एक शुभ रात थी। उस रात आसमान के द्वार खुल गए थे। यह मारियस और कोसेट की शादी की रात थी।

वह दिन बहुत ही प्यारा था।

यह दादाजी द्वारा परिकल्पित भव्य उत्सव नहीं था, एक जादुई तमाशा, जिसमें दूल्हा-दुल्हन के सिर के ऊपर देवदूतों और कामदेवों का जमावड़ा होता, एक ऐसा विवाह जो दरवाजे के ऊपर लगाने के लिए एक चित्र का विषय बनने योग्य होता; लेकिन यह मधुर और मुस्कुराता हुआ था।

सन् 1833 में विवाह का तरीका आज जैसा नहीं था। फ्रांस ने अभी तक इंग्लैंड से पत्नी को ले जाने, चर्च से बाहर आते ही भाग जाने, अपनी खुशी को शर्म से छुपाने और दिवालिया के तौर-तरीकों को गीत-संगीत के आनंद के साथ मिलाने की वह असाधारण शालीनता नहीं अपनाई थी। लोगों ने अभी तक एक साधारण सी गाड़ी में अपने स्वर्ग को झटकने, अपनी गोपनीयता को खट-खट की आवाज़ों से तोड़ने, किसी सराय के बिस्तर को वैवाहिक बिस्तर बनाने और एक साधारण से कमरे में, रात के किराए पर, जीवन की सबसे पवित्र यादों को, सराय के संचालक और नौकरानी की बातचीत के साथ बेतरतीब ढंग से मिलाकर पीछे छोड़ने की पवित्रता, सुंदरता और शालीनता को पूरी तरह से नहीं समझा था।

उन्नीसवीं सदी के इस उत्तरार्ध में, जिसमें हम अब जी रहे हैं, महापौर और उनका दुपट्टा, पादरी और उनका चोगा, कानून और ईश्वर अब पर्याप्त नहीं हैं; इनके साथ-साथ लोंजुमेउ का डाकिया भी होना चाहिए; लाल रंग से सजी नीली जैकेट, घंटीनुमा बटन, एक आकर्षक बैज, हरे चमड़े की घुटने तक की पैंट, पूंछ बांधे नॉर्मन घोड़ों के नाम शपथ, नकली गैलून, पॉलिश की हुई टोपी, लंबे पाउडर लगे बाल, एक विशाल चाबुक और ऊंचे जूते। फ्रांस में अभी तक अंग्रेजी कुलीनों की तरह शालीनता नहीं आई है, और दूल्हा-दुल्हन की गाड़ी पर घिसी हुई चप्पलों और फटे जूतों की ओलावृष्टि नहीं होती, चर्चिल (बाद में मार्लबोरो या मालब्रुक) की याद में, जिन पर शादी के दिन एक चाची का प्रकोप हुआ था, जिसने उनके लिए सौभाग्य लाया था। अभी तक हमारे वैवाहिक समारोहों में

पुराने जूते और चप्पलें शामिल नहीं हैं; लेकिन धैर्य रखें, जैसे-जैसे अच्छे संस्कारों का प्रसार होता रहेगा, हम भी उस ओर लौट आएंगे।

आज से सौ साल पहले, सन् 1833 में, विवाह समारोह इतने धूमधाम से नहीं होते थे।

यह कहना अजीब होगा कि उस युग में भी लोग यही मानते थे कि शादी एक निजी और सामाजिक उत्सव है, कि पितृसत्तात्मक भोज घरेलू समारोह की पवित्रता को भंग नहीं करता, कि अत्यधिक उल्लास, भले ही वह ईमानदार और शालीन हो, खुशी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता, और संक्षेप में, यह एक अच्छी और सम्मानजनक बात है कि इन दो नियतियों का मिलन, जिनसे एक परिवार का जन्म होता है, घर से शुरू हो, और तब से घर का विवाह कक्ष इसका साक्षी हो।

और लोग इतने निर्लज्ज थे कि वे अपने ही घरों में शादी कर लेते थे।

अतः विवाह, अब अप्रचलित हो चुकी इस परंपरा के अनुसार, एम. गिलनोर्मंड के घर पर संपन्न हुआ।

शादी का मामला स्वाभाविक और सामान्य होने के बावजूद, विवाह की घोषणा, कागजात तैयार करना, महापौर का कार्य और चर्च से संबंधित प्रक्रिया में कुछ जटिलताएँ आ जाती हैं। वे 16 फरवरी से पहले तैयार नहीं हो सके।

अब, हम इस बात पर ध्यान देते हैं, केवल सटीक होने की संतुष्टि के लिए, संयोगवश 16 तारीख़ को श्रोव मंगलवार का दिन पड़ा। झिझक, संकोच, विशेष रूप से आंटी गिलनोर्मंड की ओर से।

“श्रॉव ट्यूजडे!” दादाजी ने कहा, “कितना अच्छा है! एक कहावत है:

□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□

“चलिए आगे बढ़ते हैं। ये रहा 16 तारीख का प्रयास! क्या आप देरी करना चाहते हैं, मारियस?”

“नहीं, बिलकुल नहीं!” प्रेमी ने उत्तर दिया।

“तो चलो शादी कर लेते हैं,” दादाजी चिल्लाए।

इसी के अनुरूप, सार्वजनिक उत्सवों के बावजूद विवाह 16 तारीख को संपन्न हुआ। उस दिन बारिश हुई, लेकिन आकाश में हमेशा नीले रंग का एक छोटा सा

टुकड़ा सुख की सेवा में तत्पर रहता है, जिसे प्रेमी देख पाते हैं, भले ही बाकी सृष्टि छाते के नीचे छिपी हो।

पिछली शाम को, जीन वालजेन ने एम. गिलनोर्मंड की उपस्थिति में मारियस को पांच लाख चौरासी हजार फ़्रैंक सौंपे।

चूंकि विवाह सामुदायिक संपत्ति व्यवस्था के तहत हो रहा था, इसलिए कागजात सरल थे।

इसके बाद, टूसेंट जीन वालजेन के किसी काम की नहीं रही; कोसेट ने उसे विरासत में प्राप्त किया और उसे महिला की नौकरानी के पद पर पदोन्नत कर दिया।

जीन वाल्जेन के लिए गिलनोर्मंड हाउस में एक सुंदर कमरा विशेष रूप से तैयार किया गया था, और कोसेट ने उनसे इतने मोहक अंदाज में कहा था: "पिताजी, मैं आपसे विनती करती हूं," कि वह लगभग उन्हें यह वादा करने के लिए राजी करने में कामयाब हो गई थीं कि वह आकर उस कमरे में रहेंगे।

शादी के लिए तय तारीख से कुछ दिन पहले, जीन वाल्जेन के साथ एक दुर्घटना हो गई; उनके दाहिने हाथ का अंगूठा कुचल गया। यह कोई गंभीर बात नहीं थी; और उन्होंने किसी को भी इस बारे में परेशान होने, पट्टी बांधने या यहां तक कि अपनी चोट देखने की भी अनुमति नहीं दी थी, यहां तक कि कोसेट को भी नहीं। फिर भी, इस वजह से उन्हें अपने हाथ पर सूती पट्टी बांधनी पड़ी, हाथ में स्लिंग पहनना पड़ा और हस्ताक्षर करने में असमर्थ हो गए। कोसेट के अभिभावक के रूप में एम. गिलनोर्मंड ने उनकी जगह काम संभाला।

हम पाठक को न तो महापौर के कार्यालय ले जाएंगे और न ही चर्च। कोई भी प्रेमी जोड़े का इतना पीछा नहीं करता, और शादी की रस्म शुरू होते ही हम उससे मुंह मोड़ लेते हैं। हम केवल एक ऐसी घटना का उल्लेख करेंगे, जो शादी में आए लोगों की नजरों से ओझल रही, लेकिन जिसने रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर से सेंट-पॉल चर्च तक के सफर को यादगार बना दिया।

उस समय, सेंट-लुई स्ट्रीट का उत्तरी छोर मरम्मत के काम में लगा हुआ था। यह सड़क, पार्क-रॉयल स्ट्रीट से शुरू होकर, बंद थी। शादी की गाड़ियों का सीधे सेंट-पॉल जाना नामुमकिन था। उन्हें अपना रास्ता बदलना पड़ा, और सबसे आसान तरीका था बुलेवार्ड से होकर जाना। आमंत्रित मेहमानों में से एक ने कहा कि आज मंगलवार है, और गाड़ियों की भीड़ होगी। "क्यों?" एम. गिलनोर्मंड ने

पूछा। "नकाबपोशों की वजह से।" दादाजी ने कहा, "बिल्कुल सही, चलिए उसी रास्ते से चलते हैं। ये नौजवान शादी करने जा रहे हैं; ये जीवन के गंभीर पड़ाव में कदम रखने वाले हैं। इससे उन्हें नकाबपोश नृत्य देखने की थोड़ी तैयारी हो जाएगी।"

वे बुलेवार्ड से होकर गए। पहली शादी की गाड़ी में कोसेट और आंटी गिलनोर्मंड, एम. गिलनोर्मंड और जीन वालजेन सवार थे। मारियस, जो अभी भी रीति-रिवाज के अनुसार अपनी मंगेतर से अलग थे, दूसरी गाड़ी में आए। रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर से निकलते ही शादी का जुलूस गाड़ियों के एक लंबे काफिले में उलझ गया, जिसने मेडेलीन से बैस्टिल तक और बैस्टिल से मेडेलीन तक एक अंतहीन श्रृंखला बना ली थी। बुलेवार्ड पर मुखौटे पहने लोगों की भरमार थी। रुक-रुक कर बारिश होने के बावजूद, मैरी-एंड्रू, पैंटालून और क्लाउन का जलवा कायम रहा। 1833 की उस सर्दी के खुशनुमा माहौल में, पेरिस ने खुद को वेनिस के रूप में सजाया था। आजकल ऐसे श्रोव ट्यूजडे देखने को नहीं मिलते। आज जो कुछ भी मौजूद है, वह बिखरा हुआ कार्निवल है, अब कोई कार्निवल नहीं बचा है।

फुटपाथ पैदल चलने वालों से भरे हुए थे और खिड़कियाँ उत्सुक दर्शकों से। थिएटरों के चबूतरे दर्शकों से खचाखच भरे थे। मुखौटा पहने लोगों के अलावा, वे उस जुलूस को घूर रहे थे—जो श्रोव मंगलवार और लॉन्गचैम्प्स दोनों के लिए विशिष्ट था—हर प्रकार के वाहनों का जुलूस, सिटाडाइन, टैपिसियर, कैरियोल, कैब्रियोलेट, एक क्रमबद्ध तरीके से आगे बढ़ रहे थे, पुलिस नियमों द्वारा सख्ती से एक-दूसरे से जुड़े हुए, मानो पटरियों पर जकड़े हुए हों। इन वाहनों में बैठा हर व्यक्ति एक ही समय में दर्शक और तमाशा होता है। पुलिस सार्जेंट बुलेवार्ड के किनारों पर विपरीत दिशाओं में चलती हुई इन दो अंतहीन समानांतर कतारों को बनाए रखते थे और यह सुनिश्चित करते थे कि उस दोहरी धारा, उन दो धाराओं में कोई बाधा न आए, जो बह रही थीं, एक नीचे की ओर, दूसरी ऊपर की ओर, एक चौसी डी'एंटिन की ओर, दूसरी फाउबर्ग सेंट-एंटोइन की ओर। फ्रांस के रईसों और राजदूतों की गाड़ियाँ, जिन पर राजचिह्न अंकित थे, मार्ग के मध्य में बेरोकटोक चल रही थीं। कुछ भव्य और आनंदमय जुलूसों, विशेष रूप से बोउफ ग्रास के जुलूस को भी यही विशेषाधिकार प्राप्त था। पेरिस के इस उल्लास में, इंग्लैंड ने अपना दबदबा कायम किया; जनता द्वारा

चिढ़ाए गए उपनाम से ग्रस्त लॉर्ड सीमोर की डाक गाड़ी बड़े शोर के साथ गुजरी।

दो कतारों में, जिनके साथ नगर निगम के रक्षक भेड़-बकरियों की तरह सरपट दौड़ रहे थे, ईमानदार पारिवारिक गाड़ियाँ, जिनमें बड़ी चाचियाँ और दादी-नानी भरी हुई थीं, अपने दरवाजों पर वेश बदले हुए बच्चों के नए समूहों को प्रदर्शित कर रही थीं - सात साल के विदूषक, छह साल के कोलंबाइन, मनमोहक छोटे जीव, जो महसूस करते थे कि वे सार्वजनिक उल्लास का एक आधिकारिक हिस्सा हैं, जो अपने मसखरेपन की गरिमा से ओतप्रोत थे, और जिनमें अधिकारियों की गंभीरता थी।

बीच-बीच में वाहनों के काफिले में कहीं न कहीं कोई अड़चन आ जाती थी; जब तक वह अड़चन सुलझ नहीं जाती, दोनों कतारों में से कोई एक रुक जाती थी; एक गाड़ी की देरी भी पूरी कतार को ठप्प करने के लिए काफी थी। फिर वे दोबारा चलना शुरू कर देते थे।

शादी की गाड़ियाँ बैस्टिल की ओर बढ़ रही थीं और बुलेवार्ड के दाहिनी ओर से होकर जा रही थीं। पोंट-ऑक्स-चोक्स के शीर्ष पर वे रुक गईं। लगभग उसी समय, मेडेलीन की ओर बढ़ रही दूसरी गाड़ी भी रुक गई। उस कतार के उस हिस्से में नकाबपोशों से भरी एक गाड़ी थी।

ये गाड़ियाँ, या अधिक सटीक रूप से कहें तो, मुखौटा पहने लोगों से भरी ये वैगनें पेरिसवासियों के लिए बहुत परिचित हैं। यदि वे मंगलवार या मध्य-लेंट के दौरान गायब हो जाते, तो इसे एक बुरी बात माना जाता और लोग कहते: "इसके पीछे कुछ तो है। शायद सरकार में बदलाव होने वाला है।" कैसेंड्रा, हार्लेक्विन और कोलंबाइन का एक ढेर, राहगीरों के ऊपर से तेज़ी से हिलता हुआ, तुर्क से लेकर जंगली तक, मार्क्विसेस को सहारा देते हरक्यूलिस, ऐसी मछुआरिनें जो रैबेले को अपने कान बंद करने पर मजबूर कर देतीं जैसे मेनाड्स ने अरिस्टोफेन्स की आँखें झुका दी थीं, दो विग, गुलाबी टाइट्स, सजी-धजी टोपियाँ, एक चिड़चिड़े चेहरे वाले के चश्मे, तितली से सजी जानोट की तिकोने वाली टोपियाँ, राहगीरों पर निर्देशित चीखें, कमर पर मुट्ठियाँ, साहसी रवैया, नंगे कंधे, बेलगाम बेशर्मी; फूलों से सजे एक कोचवान द्वारा संचालित निर्लज्जता का एक अराजक माहौल; यही उस संस्था का स्वरूप था।

ग्रीस को थेस्पिस के रथ की आवश्यकता थी, फ्रांस को वाडे की घोड़ागाड़ी की आवश्यकता है।

हर चीज़ का मज़ाक उड़ाया जा सकता है, यहाँ तक कि मज़ाक का भी। प्राचीन सौंदर्य का वह विकृत रूप, सैटर्नलिया, अतिशयोक्तियों के बाद अतिशयोक्तियों के माध्यम से श्रोव मंगलवार में समाप्त होता है; और बैकेनल, जो पहले अंगूर की लताओं और लताओं की मालाओं से सजा होता था, धूप से सराबोर होता था, अपनी संगमरमरी छाती को दिव्य अर्धनग्नता में प्रदर्शित करता था, आज के समय में उत्तर के भीगे हुए चिथड़ों के नीचे अपना आकार खो चुका है, और अंततः उसे जैक-पुडिंग कहा जाने लगा है।

नकाबपोशों से भरी गाड़ियों की परंपरा राजशाही के सबसे प्राचीन काल से चली आ रही है। लुई XI के लेखा-जोखा में महल के अधिकारी को "चौराहे पर तीन नकाबपोश गाड़ियों के लिए बीस सू, टूरनोई" आवंटित किए गए हैं। आज के समय में, ये शोर मचाने वाले समूह किसी पुरानी कोयल वाली गाड़ी में सवार होते हैं, जिसे वे पूरी तरह से भर देते हैं, या फिर वे किराए की लैंडौ (घोड़ागाड़ी) को, जिसका ऊपरी हिस्सा खुला होता है, अपने शोरगुल भरे समूहों से भर देते हैं। छह लोगों के लिए बनी गाड़ी में बीस लोग सवार होते हैं। वे सीटों से, गड़गड़ाहट से, हुड के किनारों से, शाफ्ट से चिपके रहते हैं। वे गाड़ी की बत्तियों पर भी चढ़ जाते हैं। वे खड़े होते हैं, बैठते हैं, लेटते हैं, घुटने मोड़कर टांगें लटकाए रहते हैं। औरतें मर्दों की गोद में बैठती हैं। दूर, लोगों की भीड़ के ऊपर, उनका जंगली पिरामिड दिखाई देता है। ये गाड़ियों में सवार लोग भीड़ के बीच हंसी के पहाड़ बना देते हैं। कॉले, पैनार्ड और पिरोन की शैली बोलचाल की भाषा से समृद्ध होकर इससे निकलती है। माल से लदे इस विशालकाय रथ में विजय का भाव झलकता है। आगे शोरगुल है, पीछे कोलाहल। लोग चीखते-चिल्लाते, चिल्लाते, कराहते हैं; वे आनंद से झूम उठते हैं; उल्लास गूंजता है; व्यंग्य भड़क उठता है, हर्षोल्लास लाल झंडे की तरह लहराता है; दो धूर्त लोग एक खिले हुए प्रहसन को चरम सीमा तक ले जाते हैं; यह हंसी का विजय रथ है।

एक ऐसी हंसी जो इतनी व्यंग्यपूर्ण है कि खुलकर बोलने की हिम्मत नहीं होती। सच तो यह है कि यह हंसी संदेह से भरी है। इस हंसी का एक मकसद है। इसे पेरिसवासियों के सामने कार्निवल को साबित करने का दायित्व सौंपा गया है।

ये मछुआरे जैसी गाड़ियाँ, जिनमें अनभिज्ञ साये का आभास होता है, दार्शनिक को चिंतन के लिए प्रेरित करती हैं। इनमें शासन व्यवस्था निहित है। यहीं सार्वजनिक पुरुषों और महिलाओं के बीच एक रहस्यमय संबंध का आभास होता है।

यह वाकई दुखद है कि दुराचार का ढेर मिलकर उल्लास का रूप धारण कर लेता है, कि कलंक पर कलंक लगाकर लोगों को बहकाया जाता है, कि जासूसी और वेश्यावृत्ति के प्रतीक के रूप में काम करने की व्यवस्था आम जनता को तब मनोरंजन देती है जब वह उनके सामने आती है, कि भीड़ उस भयानक, चिथड़ों के ढेर को, जो आधा गोबर और आधा प्रकाश है, चार पहियों पर चीखते-चिल्लाते हुए गुजरते देखना पसंद करती है, कि वे इस शर्मनाक महिमा पर तालियाँ बजाते हैं, कि जनता के लिए कोई उत्सव नहीं होता, यदि पुलिस उनके बीच इस तरह के बीस सिर वाले आनंद के राक्षसों का जुलूस न निकालती। लेकिन इसके बारे में क्या किया जा सकता है? कीचड़ से लदे ये रिबन और फूलों से सजे वाहन जनता की हंसी से अपमानित और क्षमा किए जाते हैं। सबकी हंसी सार्वभौमिक पतन की सह-सहयोगी है। कुछ अस्वस्थ उत्सव जनता को अलग-अलग कर देते हैं और उन्हें आम जनता में बदल देते हैं। और जनता, तानाशाहों की तरह, मसखरों की तलाश में रहती है। राजा के पास रोकेलाउर है, जनता के पास मेरी-एंड्रू है। पेरिस एक महान, पागल शहर है, हर उस मौके पर जब वह एक महान उदात्त शहर होता है। वहाँ कार्निवल राजनीति का हिस्सा बन जाता है। पेरिस—आइए इसे स्वीकार करें—खुशी-खुशी बदनामी को हास्य का स्रोत बनने देता है। वह अपने स्वामियों से—जब उसके स्वामी होते हैं—केवल एक ही बात माँगती है: "मुझे कीचड़ में रंग दो।" रोम भी इसी सोच का था। वह नीरो से प्यार करता था। नीरो एक विशालकाय नाविक था।

संयोगवश, जैसा कि हमने अभी कहा, नकाबपोश पुरुषों और महिलाओं के इन बेढंगे समूहों में से एक, जिसे एक विशाल गाड़ी में घसीटा जा रहा था, सड़क के बाईं ओर आकर रुका, जबकि शादी का जुलूस दाईं ओर रुका। नकाबपोशों से भरी गाड़ी ने सड़क के दूसरी ओर अपने सामने दुल्हन के जुलूस को ले जा रही शादी की गाड़ी को देखा।

“हेलो!” एक नकाबपोश व्यक्ति ने कहा, “यहाँ एक शादी है।”

“ये तो दिखावटी शादी है,” दूसरे ने पलटवार किया। “असली शादी तो हमारी है।”

और, चूंकि वे शादी में शामिल लोगों से बहुत दूर थे और उनसे उलझना संभव नहीं था, साथ ही पुलिस की फटकार से भी डरते हुए, दोनों नकाबपोशों ने अपनी निगाहें कहीं और घुमा लीं।

एक और मिनट बीतने पर, नकाबपोशों से भरी गाड़ी के हाथ भर चुके थे, भीड़ शोर मचाने लगी, जो नकाबपोशों के प्रति भीड़ का स्नेहपूर्ण व्यवहार होता है; और जिन दो नकाबपोशों ने अभी-अभी बात की थी, उन्हें अपने साथियों के साथ भीड़ का सामना करना पड़ा, और मछली बाज़ारों में इस्तेमाल होने वाले शब्दों का पूरा भंडार भी जनता के ज़बरदस्त मौखिक हमलों का जवाब देने के लिए पर्याप्त नहीं था। नकाबपोशों और भीड़ के बीच रूपकों का एक भयानक आदान-प्रदान हुआ।

इसी बीच, उसी गाड़ी में बैठे दो अन्य नकाबपोशों ने भी शादी पर ध्यान दिया था, जिनमें एक विशाल नाक, बुजुर्ग भाव और बड़ी काली मूंछों वाला एक स्पेनिश व्यक्ति और एक दुबली-पतली मछली बेचने वाली महिला शामिल थी, जो काफी युवा लड़की लग रही थी और उसने एक लूप से अपना चेहरा ढका हुआ था। जब उनके साथी और राहगीर एक-दूसरे को गालियां दे रहे थे, तब वे धीमी आवाज में बातचीत कर रहे थे।

उनकी कहा-सुनी शोरगुल में दब गई और खो गई। बारिश की तेज बौछारों ने गाड़ी के खुले हुए अगले हिस्से को पूरी तरह भिगो दिया था; फरवरी की हवाएँ गर्म नहीं होतीं; गले में नीची पोशाक पहने मछली बेचने वाली महिला ने जब स्पेनिश व्यक्ति को जवाब दिया, तो वह कांपी, हंसी और खांसी।

उनके बीच हुई बातचीत इस प्रकार है:

"अब कहे।"

“क्या हुआ, पापा?”

"क्या आपको वह पुरानी खाड़ी दिखाई दे रही है?"

“कौन सी पुरानी खाड़ी?”

"वहाँ, हमारी तरफ, पहली शादी की गाड़ी में।"

"वही जिसने अपनी बांह पर काली टाई टांग रखी थी?"

"हाँ।"

"कुंआ?"
मुझे पूरा यकीन है कि मैं उसे जानता हूं।
आह!”
“मैं अपना गला कटवाने को तैयार हूँ, और मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि मैंने अपने जीवन में कभी भी ‘तुम’, ‘तुम्हें’ या ‘मैं’ जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया, अगर मैं उस पेरिसवासी को नहीं जानता।”
"आज पैंटिन में पेरिस।"
"क्या झुकने पर आपको दुल्हन दिखाई देगी?"
"नहीं।"
और दूल्हा?
उस जाल में कोई दूल्हा नहीं है।
“वाह!”
"जब तक कि वह बूढ़ा आदमी न हो।"
"बहुत नीचे झुककर दुल्हन की एक झलक पाने की कोशिश करें।"
"मैं नहीं कर सकता।"
"कोई बात नहीं, उस बूढ़े नाविक को जिसके पंजे में कुछ गड़बड़ है, मैं जानता हूँ, और मुझे इस बात का पूरा यकीन है।"
और उसे जानने से क्या फायदा है?
कोई नहीं बता सकता। कभी-कभी ऐसा होता है!
मुझे बूढ़े लोगों की कोई परवाह नहीं है, बिलकुल भी नहीं!
"उसे पहचानती हूँ।"
"अगर आप चाहें तो उसे जान लें।"
"आखिर वो शादी के मेहमानों में से एक कैसे बन गया?"
हम भी इसमें शामिल हैं।
“यह शादी कहां से आई है?”

मुझे कैसे पता चलेगा?
"सुनना।"
"अच्छी तरह से क्या?"
आपको एक काम जरूर करना चाहिए।
“यह क्या है?”
"हमारे जाल से बाहर निकलो और उस शादी को सफल बनाओ।"
“किसलिए?”
“यह पता लगाने के लिए कि यह कहाँ जाता है, और यह क्या है। जल्दी करो और नीचे कूद जाओ, दौड़ो, मेरी बच्ची, तुम्हारे पैर अभी जवान हैं।”
मैं वाहन नहीं छोड़ सकता।
"क्यों नहीं?"
मुझे नौकरी मिल गई है।
अरे, शैतान!
"मुझे मछली बेचने का जो दिन मिला, उसका श्रेय मैं इस प्रांत को देती हूं।" “यह सच है।”
“अगर मैं ठेला छोड़ दूं, तो जो भी इंस्पेक्टर मुझे देखेगा, वो मुझे गिरफ्तार कर लेगा। आप ये बात अच्छी तरह जानते हैं।”
"हा करता हु।"
"मुझे सरकार ने आज के लिए खरीद लिया है।"
फिर भी, वह बूढ़ा आदमी मुझे परेशान करता है।
“क्या बूढ़े लोग तुम्हें परेशान करते हैं? लेकिन तुम तो जवान लड़की नहीं हो।”
वह पहले डिब्बे में है।
"कुंआ?"
“दुल्हन के जाल में फंसा हुआ।”

"तो क्या?"
"तो वही पिता है।"
“इससे मेरा क्या लेना-देना है?”
मैं तुमसे कहता हूँ कि वही पिता है।
"जैसे कि वही इकलौता पिता हो।"
"सुनना।"
"क्या?"
“मैं मास्क लगाए बिना बाहर नहीं जा सकता। यहाँ मैं छिपा हुआ हूँ, किसी को पता नहीं कि मैं यहाँ हूँ। लेकिन कल, मास्क पहनने वालों को कोई नहीं देखेगा। कल ऐश वेडनेसडे है। मुझे पकड़े जाने का खतरा है। मुझे चुपके से अपने बिल में वापस जाना होगा। लेकिन तुम आज़ाद हो।”
"विशेष रूप से नही।"
"कम से कम मुझसे तो ज्यादा ही।"
"तो फिर इसका क्या हुआ?"
आपको यह पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि वह शादी का दल कहाँ गया।
“यह कहाँ गया?”
"हाँ।"
"मुझे पता है।"
"तो फिर यह कहाँ जा रहा है?"
“कैड्रन-ब्लू के लिए।”
"पहली बात तो यह है कि यह उस दिशा में नहीं है।"
“अच्छा! ला रैपी की ओर।”
या कहीं और।
“यह निःशुल्क है। शादी समारोह में शामिल होने वाले लोग स्वतंत्र हैं।”

“बात ये है ही नहीं। मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें मेरे लिए ये पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि वो शादी किस बारे में है, वो पुराना घर किसका है और वो जोड़ा कहाँ रहता है।”

मुझे ये पसंद आया! ये तो अजीब बात होगी। मंगलवार के दिन गली से गुज़रे किसी शादी के जोड़े के बारे में एक हफ़्ते बाद पता लगाना कितना आसान है। भूसे के ढेर में सुई ढूंढना! ये मुमकिन ही नहीं है!

“इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम्हें कोशिश करनी ही होगी। तुम मुझे समझती हो ना, अज़ेलमा।”

दोनों काफिले सड़क के दोनों ओर विपरीत दिशाओं में फिर से चलने लगे, और नकाबपोशों की गाड़ी दुल्हन के "जाल" से ओझल हो गई।

II. जीन वालजेन अब भी अपनी बांह में पट्टी बांधे हुए हैं।

अपने सपने को साकार करना। यह सौभाग्य किसे प्राप्त है? इसके लिए स्वर्ग में चुनाव अवश्य होते होंगे; हम सब उम्मीदवार हैं, स्वयं को भी नहीं जानते; स्वर्गदूत मतदान करते हैं। कोसेट और मारियस चुने गए थे।

मेयर के कार्यालय और चर्च दोनों जगह कोसेट बेहद आकर्षक और भावपूर्ण लग रही थीं। निकोलेट की सहायता से टूसेंट ने उन्हें कपड़े पहनाए थे।

कोसेट ने सफेद टैफेटा की पेटीकोट, बिंचे गिप्योर का गाउन, इंग्लिश पॉइंट का घूंघट, मोतियों का हार और नारंगी फूलों की माला पहनी हुई थी; सब कुछ सफेद था, और उस सफेदी के बीच से वह दमक रही थी। उसकी सादगी प्रकाश में फैलती और रूपांतरित होती जा रही थी। उसे देखकर कोई भी उसे देवी में परिवर्तित होने वाली कुंवारी कह सकता था।

मारियस के सुंदर बाल चमकदार और सुगंधित थे; घने घुंघराले बालों के नीचे जगह-जगह हल्की रेखाएं—बाड़बंदी के निशान—दिखाई दे रहे थे।

गर्व से सिर ऊंचा किए, बैरास युग की सारी शान-शौकत को अपने वस्त्रों और व्यवहार में पहले से कहीं अधिक समेटे हुए दादाजी कोसेट के साथ चले।
उन्होंने जीन वालजेन की जगह ली, जो अपने हाथ में पट्टी बंधे होने के कारण दुल्हन को अपना हाथ नहीं दे सके।

काले वस्त्र पहने जीन वाल्जेन मुस्कुराते हुए उनके पीछे-पीछे चले।

“महाशय फॉशेलवेंट,” दादाजी ने उनसे कहा, “आज का दिन बहुत अच्छा है। मैं दुखों और कष्टों के अंत के पक्ष में हूँ। अब से कहीं भी उदासी नहीं होनी चाहिए। परमानंद, मैं आनंद की घोषणा करता हूँ! बुराई का कोई अस्तित्व नहीं है। वास्तव में, किसी भी दुखी व्यक्ति का होना आकाश के नीले रंग के लिए कलंक है। बुराई मनुष्य से नहीं आती, जो मूल रूप से अच्छा है। सभी मानवीय दुखों का मूल और केंद्रीय कारण नरक है, जिसे शैतान का गढ़ भी कहा जाता है। अच्छा, मैं यहाँ लोकलुभावन बातें कर रहा हूँ! जहाँ तक मेरा सवाल है, अब

मेरे कोई राजनीतिक विचार नहीं हैं; सभी मनुष्य समृद्ध हों, यानी आनंदित हों, और मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ।”

जब सभी रस्मों के समापन पर, महापौर और पुजारी के समक्ष सभी संभव "हाँ" कहने के बाद, नगरपालिका और वेदी के रजिस्टरों पर हस्ताक्षर करने के बाद, अपनी अंगूठियों का आदान-प्रदान करने के बाद, धूपदान के धुएँ में सफेद मोइरे के आवरण के नीचे कंधे से कंधा मिलाकर घुटने टेकने के बाद, वे हाथ में हाथ डाले, सभी की प्रशंसा और ईर्ष्या के बीच, काले वस्त्र में मारियस और सफेद वस्त्र में, कर्नल के एपॉलेट्स से लैस स्विस सैनिक के आगे-आगे चलते हुए, अपने भाले से फुटपाथ को थपथपाते हुए, चर्च के द्वार पर पहुँचे, जिसके दोनों द्वार पूरी तरह से खुले हुए थे, अपनी गाड़ी में फिर से प्रवेश करने के लिए तैयार थे, और सब कुछ समाप्त हो जाने के बाद भी, कोसेट को विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सब सच है। उसने मारियस को देखा, उसने भीड़ को देखा, उसने आकाश को देखा: ऐसा लग रहा था मानो उसे डर हो कि वह अपने सपने से जाग जाएगी। उसके आश्चर्यचकित और बेचैन भाव ने उसकी सुंदरता में एक अवर्णनीय आकर्षण जोड़ दिया। वे घर लौटने के लिए एक ही गाड़ी में सवार हुए, मारियस कोसेट के बगल में बैठा; एम. गिलनोर्मंड और जीन वालजेन उनके सामने बैठे; चाची गिलनोर्मंड एक पायदान पीछे हट गईं और दूसरी गाड़ी में थीं।

दादाजी ने कहा, "मेरे बच्चों, ये लीजिए, महाशय बैरन और मैडम ला बैरोन, जिनकी आय तीस हजार लिवर है।"

और कोसेट, मारियस के करीब आकर, उसके कान में मधुर स्वर में फुसफुसाते हुए बोली: "तो यह सच है। मेरा नाम मारियस है। मैं मैडम दाऊ हूँ।"

ये दोनों बेहद खूबसूरत थे। वे उस अटल और अपूरणीय क्षण तक पहुँच चुके थे, जहाँ यौवन और आनंद का अद्भुत संगम था। उन्होंने जीन प्रूवेयर की कविता को साकार कर दिया था; दोनों की उम्र चालीस वर्ष थी। यह विवाह का उदात्त रूप था; ये दोनों बच्चे दो लिली के समान थे। वे एक-दूसरे को नहीं देख रहे थे, एक-दूसरे पर ध्यान भी नहीं दे रहे थे। कोसेट ने मारियस को एक दिव्य वैभव के बीच देखा; मारियस ने कोसेट को एक वेदी पर देखा। और उस वेदी पर, और उस वैभव में, दो देवत्वों का मिलन हुआ, पृष्ठभूमि में, न जाने कैसे, कोसेट के लिए एक बादल के पीछे, मारियस के लिए एक पल में, आदर्श वस्तु, वास्तविक वस्तु, चुंबन और सपने का मिलन, वैवाहिक तकिया मौजूद था। वे जिन कष्टों से गुज़रे

थे, वे सब मदहोशी में उनके सामने लौट आए। उन्हें ऐसा लगा मानो उनके दुख, उनकी रातों की नींद हराम, उनके आँसू, उनकी पीड़ा, उनका भय, उनकी निराशा, सब कुछ स्नेह और प्रकाश की किरणों में परिवर्तित होकर आने वाले उस सुखद क्षण को और भी मनमोहक बना रहा हो; और उनके दुःख मानो आनंद की शोभा बढ़ाने वाली दासियों के समान थे। कष्ट सहना कितना सुखद होता है! उनका दुख उनके सुख के चारों ओर एक आभा बन गया था। उनके प्रेम की लंबी पीड़ा एक उत्थान में परिणत हो रही थी।

दो आत्माओं में एक ही तरह का आकर्षण था, मारियस में कामुकता का भाव और कोसेट में विनम्रता का। उन्होंने धीमी आवाज़ में एक-दूसरे से कहा, "हम प्लूमेट गली में अपने छोटे से बगीचे को देखने वापस चलेंगे।" कोसेट के गाउन की सिलवटें मारियस के ऊपर फैली हुई थीं।

ऐसा दिन सपने और हकीकत का एक अनूठा मिश्रण होता है। एक व्यक्ति के पास होता है और एक कल्पना भी। उसके पास अभी भी भविष्य का अनुमान लगाने का समय होता है। उस दिन दोपहर के समय होने और आधी रात के सपने देखने का भाव अवर्णनीय होता है। इन दोनों हृदयों की प्रसन्नता भीड़ पर उमड़ पड़ी और राहगीरों को भी प्रसन्नता से भर दिया।

लोग सेंट-पॉल के सामने, रू सेंट-एंटोइन में रुक गए और गाड़ी की खिड़कियों से कोसेट के सिर पर कांपते हुए नारंगी फूलों को देखने लगे।

फिर वे रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर स्थित अपने घर लौट आए। मारियस, विजयी और तेजस्वी होकर, कोसेट के साथ-साथ उन सीढ़ियों पर चढ़ गया, जिन पर उसे मरणासन्न अवस्था में लाया गया था। दरवाज़े पर जमा हुए गरीबों ने, जिन्होंने अपने पर्स बाँट लिए, उन्हें आशीर्वाद दिया। चारों ओर फूल ही फूल थे। घर भी चर्च से कम सुगंधित नहीं था; धूप के बाद गुलाबों की खुशबू फैली हुई थी। उन्हें लगा जैसे वे अनंत में भजन गा रहे हों; उनके हृदय में ईश्वर का वास था; नियति उन्हें तारों की छत जैसी दिखाई दी; उनके सिर के ऊपर उन्होंने उगते सूरज का प्रकाश देखा। अचानक, घड़ी की बत्ती बजी। मारियस ने कोसेट की आकर्षक नंगी बांह पर और उसकी चोली के फीते से धुंधली सी झलक रही गुलाबी रंगत पर नज़र डाली, और कोसेट ने मारियस की नज़र को रोकते हुए शर्म से लाल हो गई।

गिलनोर्मंड परिवार के कई पुराने पारिवारिक मित्रों को आमंत्रित किया गया था; वे कोसेट के बारे में पूछताछ कर रहे थे। हर कोई उन्हें मैडम ला बैरोन कहकर संबोधित करने में होड़ कर रहा था।

अधिकारी थियोडुल गिलनोर्मंड, जो अब कप्तान थे, चार्ट्रेस से आए थे, जहाँ वे एक सैन्य चौकी में तैनात थे, ताकि वे अपनी चचेरी बहन पोंटमर्सी की शादी में शामिल हो सकें। कोसेट उन्हें पहचान नहीं पाईं।

वह, अपनी ओर से, महिलाओं द्वारा उसे सुंदर माने जाने का आदी होने के कारण, कोसेट की उतनी ही यादें रखता था जितनी किसी अन्य महिला की।

“उस भाले वाले की कहानी पर विश्वास न करके मैंने कितना सही किया!” फादर गिलनोर्मंड ने मन ही मन कहा।

कोसेट ने जीन वालजेन के प्रति पहले कभी इतना स्नेह नहीं दिखाया था। वह फादर गिलनोर्मंड के साथ एकरूप थी; जहाँ वे आनंद को सूक्तियों और सिद्धांतों में पिरोते थे, वहीं कोसेट अच्छाई को इत्र की तरह बिखेरती थी। खुशी की यही इच्छा होती है कि सारा संसार सुखी हो।

जीन वालजेन से बात करने के लिए, उसने अपने बचपन के दिनों की तरह अपनी आवाज़ में फिर से वही लहजा अपना लिया। उसने अपनी मुस्कान से उसे प्यार से सहलाया।

भोजन कक्ष में भोज का आयोजन किया गया था।

दिन के उजाले के समान उज्ज्वल प्रकाश ही परम आनंद का आवश्यक तत्व है। सुखी लोग धुंध और अंधकार को स्वीकार नहीं करते। वे अंधकार में रहना नहीं चाहते। रात, हाँ; परछाइयाँ, नहीं। यदि सूर्य नहीं है, तो उसे बनाना ही होगा।

भोजन कक्ष रंगीन चीज़ों से भरा हुआ था। बीच में, सफ़ेद और चमकदार मेज़ के ऊपर, एक वेनेशियन शैली का लस्टर था जिस पर सपाट प्लेटें रखी थीं, जिन पर नीले, बैंगनी, लाल और हरे रंग के कई पक्षी मोमबत्तियों के बीच बैठे थे; झूमर के चारों ओर गिरंडोल लगे थे, दीवारों पर तिहरी और पंचहरी शाखाओं वाले स्कॉन्स लगे थे; दर्पण, चांदी के बर्तन, कांच के बर्तन, प्लेटें, चीनी मिट्टी के बर्तन, फ़ाइन्स, मिट्टी के बर्तन, सोने और चांदी का काम, सब कुछ

चमकीला और रंगीन था। कैंडलस्टैंड के बीच की खाली जगहें फूलों के गुलदस्तों से भरी हुई थीं, मानो जहाँ रोशनी न हो, वहाँ फूल हो।
प्रवेश कक्ष में, तीन वायलिन और एक बांसुरी मधुरता से हेडन द्वारा रचित चौकड़ी बजा रहे थे।
जीन वाल्जेन ड्राइंग रूम में दरवाजे के पीछे एक कुर्सी पर बैठ गए थे, जिसका पल्ला इस तरह से पीछे की ओर मुड़ा हुआ था कि वे लगभग छिप गए थे। उनके भोजन के लिए बैठने से कुछ क्षण पहले, कोसेट अचानक किसी सनक से प्रेरित होकर आई और उन्होंने दोनों हाथों से अपने विवाह वस्त्र फैलाते हुए, गहरी विनम्रता से उनका अभिवादन किया और एक कोमल शरारती नज़र से उनसे पूछा:
“पिताजी, क्या आप संतुष्ट हैं?”
“हाँ,” जीन वालजेन ने कहा, “मैं संतुष्ट हूँ!”
"तो फिर, हंस लो।"
जीन वाल्जेन हंसने लगा।
कुछ देर बाद बास्क ने घोषणा की कि खाना परोसा जा चुका है।
अतिथि, जिनके आगे एम. गिलनोर्मंड कोसेट का हाथ थामे हुए थे, भोजन कक्ष में दाखिल हुए और मेज के चारों ओर उचित क्रम में बैठ गए।
दुल्हन के दाएं और बाएं दो बड़ी आरामकुर्सियां रखी थीं, पहली एम. गिलनोर्मंड के लिए और दूसरी जीन वालजेन के लिए। एम. गिलनोर्मंड बैठ गए।
दूसरी आरामकुर्सी खाली रही।
उन्होंने एम. फाउचेलेवेंट की तलाश की।
वह अब वहां नहीं था।
एम. गिलनोर्मंड ने बास्क भाषा से प्रश्न पूछे।
“क्या आपको पता है कि एम. फाउचेलेवेंट कहाँ हैं?”
“महोदय,” बास्क ने उत्तर दिया, “जी हाँ, बिल्कुल। श्रीमान फॉशेलवेंट ने मुझे आपसे यह कहने के लिए कहा था कि वे बीमार हैं, उनके घायल हाथ में थोड़ा दर्द हो रहा है, और वे महाशय बैरन और श्रीमती बैरोन के साथ भोजन नहीं कर

सकते। उन्होंने अनुपस्थिति की क्षमा मांगी है और कहा है कि वे कल आएंगे। वे अभी-अभी रवाना हुए हैं।”

उस खाली कुर्सी ने शादी की दावत की उमंग को कुछ पल के लिए ठंडा कर दिया। लेकिन, अगर एम. फॉशेलवेंट अनुपस्थित थे, तो एम. गिलनोर्मंड मौजूद थे, और दादाजी दो पल के लिए मुस्कुरा उठे। उन्होंने कहा कि अगर एम. फॉशेलवेंट को कोई तकलीफ थी, तो उनका जल्दी चले जाना अच्छा था, और यह तो बस मामूली सी तकलीफ थी। इतना कहना ही काफी था। वैसे भी, ऐसी खुशी में एक कोने का क्या महत्व है? कोसेट और मारियस उन आनंदमय और सुखद पलों में से एक से गुजर रहे थे, जब किसी व्यक्ति के पास खुशी को ग्रहण करने के अलावा कोई और शक्ति नहीं बचती। और तभी, एम. गिलनोर्मंड के मन में एक विचार आया। —“पार्डियू, यह कुर्सी खाली है। इधर आओ, मारियस। तुम्हारी चाची इसकी अनुमति देंगी, हालाँकि तुम पर उनका अधिकार है। यह कुर्सी तुम्हारे लिए है। यह उचित और आनंददायक है। फोर्टुनाटा के बगल में फोर्टुनाटस।” —पूरी मेज से तालियाँ बज उठीं। मारियस ने कोसेट के बगल में जीन वालजेन की जगह ले ली, और हालात ऐसे बने कि कोसेट, जो पहले जीन वालजेन की अनुपस्थिति से दुखी थी, अंत में इससे संतुष्ट हो गई। जिस क्षण मारियस ने उसकी जगह ली और उसका स्थान लिया, कोसेट को भगवान से भी कोई शिकायत नहीं होती। उसने अपना प्यारा सा छोटा पैर, सफेद साटन के जूते में, मारियस के पैर पर रख दिया।

आरामकुर्सी पर बैठे हुए एम. फाउचेलेवेंट का अस्तित्व पूरी तरह से मिट गया; और किसी चीज की कमी नहीं थी।

और, पांच मिनट बाद, मेज के एक छोर से दूसरे छोर तक सभी लोग विस्मृति की उमंग के साथ हंस रहे थे।

मिठाई के समय, एम. गिलनोर्मंड, अपने पैरों पर खड़े होते हुए, हाथ में शैंपेन का गिलास लिए हुए—जो केवल आधा भरा हुआ था ताकि उनके अस्सी वर्षों के कारण होने वाले लकवे से शैंपेन छलक न जाए—ने नवविवाहित जोड़े के स्वास्थ्य की कामना की।

“तुम दो उपदेशों से नहीं बच पाओगे,” उसने कहा। आज सुबह तुम्हें पादरी से एक मिला, आज शाम को तुम्हें अपने दादाजी से एक मिलेगा। मेरी बात सुनो; मैं तुम्हें एक सलाह देता हूँ: एक दूसरे से प्यार करो। मैं फालतू की बातें नहीं

करता, मैं सीधे मुद्दे पर आता हूँ, खुश रहो। सारी सृष्टि में, केवल कबूतर ही बुद्धिमान होते हैं। दार्शनिक कहते हैं: 'अपनी खुशियों को संयमित रखो।' मैं कहता हूँ: 'अपनी खुशियों को खुलकर जियो।' एक दूसरे के प्रति उतने ही मोहित रहो जितने शैतान। इसके लिए बेताब रहो। दार्शनिक बकवास करते हैं। मैं उनके दर्शन को उनके गले में फिर से ठूंसना चाहता हूँ। क्या बहुत ज़्यादा इत्र, बहुत ज़्यादा खिले गुलाब की कलियाँ, बहुत ज़्यादा बुलबुलों का गाना, बहुत ज़्यादा हरे पत्ते, जीवन में बहुत ज़्यादा रोशनी हो सकती है? क्या लोग एक दूसरे से बहुत ज़्यादा प्यार कर सकते हैं? क्या लोग एक दूसरे को बहुत ज़्यादा खुश कर सकते हैं? सावधान रहो, एस्टेले, तुम बहुत सुंदर हो! सावधान रहो, नेमोरिन, तुम बहुत आकर्षक हो! सच में, बड़ी मूर्खता है! क्या लोग एक दूसरे को बहुत ज़्यादा मोहित कर सकते हैं? क्या हम एक-दूसरे को बहुत ज्यादा खुशामद करते हैं, बहुत ज्यादा लुभाते हैं? क्या कोई हद से ज्यादा जीवंत, हद से ज्यादा खुश हो सकता है? अपनी खुशियों को संयमित करें। आह, सचमुच! दार्शनिकों का नाश हो! ज्ञान उल्लास में निहित है। मौज-मस्ती करो, चलो मौज-मस्ती करें। क्या हम खुश इसलिए हैं क्योंकि हम अच्छे हैं, या हम अच्छे इसलिए हैं क्योंकि हम खुश हैं? क्या सैंसी हीरे को सैंसी इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह हार्ले डी सैंसी का था, या इसलिए कि इसका वजन छह सौ कैरेट है? मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता, जीवन ऐसी समस्याओं से भरा है; महत्वपूर्ण बात सैंसी और खुशी को प्राप्त करना है। चलो बिना किसी बहस और झंझट के खुश रहें। चलो सूर्य का अंधाधुंध पालन करें। सूर्य क्या है? यह प्रेम है। जो प्रेम कहता है, वह स्त्री कहता है। आह! आह! सर्वशक्तिमत्ता को देखो—स्त्री। उस मारियस नाम के नेता से पूछो कि क्या वह उस छोटी तानाशाह कोसेट का गुलाम नहीं है। और अपनी मर्जी से भी, कायर! स्त्री! कोई रोबेस्पियर अपनी जगह पर कायम नहीं रह सकता, बल्कि स्त्री ही राज करती है। मैं अब राजशाही समर्थक नहीं हूँ, सिवाय उस राजशाही के। आदम क्या है? हव्वा का राज्य। हव्वा के लिए कोई '89 नहीं। एक शाही राजदंड था जिस पर लिली का फूल बना था, एक शाही राजदंड था जिस पर ग्लोब बना था, शार्लेमेन का राजदंड था जो लोहे का था, लुई महान का राजदंड था जो सोने का था—क्रांति ने उन्हें अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच कुचल दिया, जैसे आधे पैसे के तिनके; यह सब खत्म हो गया है, यह टूट गया है, यह धरती पर पड़ा है, अब कोई राजदंड नहीं है, लेकिन मुझे उस छोटे से कढ़ाई वाले रूमाल के खिलाफ क्रांति करके दिखाओ,

जिसमें पचौली की खुशबू आती है! मैं देखना चाहूँगा कि तुम यह कैसे करते हो। कोशिश करो। यह इतना ठोस क्यों है? क्योंकि यह एक छोटी सी चीज है। आह! तुम उन्नीसवीं सदी के हो? तो फिर क्या? और हम भी तुम्हारी तरह ही मूर्ख रहे हैं। यह मत सोचो कि तुमने ब्रह्मांड में बहुत बड़ा बदलाव किया है, क्योंकि तुम्हारा ट्रिप-गैलेंट को हैजा-रोग कहा जाता है, और क्योंकि आपकी पौरी को कचुका कहा जाता है। वास्तव में, महिलाओं को हमेशा प्यार किया जाना चाहिए। मैं आपको इससे बचने की चुनौती देता हूँ। ये दोस्त हमारे देवदूत हैं। हाँ, प्यार, स्त्री, चुंबन एक घेरा बनाता है जिससे मैं आपको बचने की चुनौती देता हूँ; और, जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं इसमें फिर से प्रवेश करने में बहुत खुश हूँगा। आप में से किसने शुक्र ग्रह को देखा है, अथाह गहराई की चंचल देवी, सागर की सेलिमेन, अनंत में उदय होते हुए, यहाँ नीचे सब कुछ शांत करते हुए? सागर एक उबड़-खाबड़ एल्सेस्टिस है। खैर, चाहे वह कितना भी बड़बड़ाए, जब शुक्र प्रकट होता है तो उसे मुस्कुराने के लिए मजबूर होना पड़ता है। वह क्रूर जानवर झुक जाता है। हम सब ऐसे ही बने हैं। क्रोध, आंधी, गरज, छत तक झाग। एक स्त्री दृश्य में प्रवेश करती है, एक ग्रह उदय होता है; मुंह के बल! मारियस छह महीने पहले लड़ रहा था; आज उसकी शादी हो गई है। यह अच्छा है। हाँ, मारियस, हाँ, कोसेट, तुम इसमें हो ठीक है। एक-दूसरे के लिए निडरता से जियो, हमें इस बात से क्रोधित करो कि हम ऐसा नहीं कर सकते, एक-दूसरे को आदर्श मानो, पृथ्वी पर मौजूद सुख की सभी छोटी-छोटी किरणों को अपनी चोंच में समेट लो और अपने लिए जीवन भर का घोंसला बना लो। परदी, प्रेम करना, प्रेम पाना, जवानी में कितना अद्भुत चमत्कार है! यह मत सोचो कि तुमने इसका आविष्कार किया है। मैंने भी सपने देखे हैं, मैंने भी ध्यान किया है, मैंने भी आहें भरी हैं; मेरी भी आत्मा चांदनी जैसी थी। प्रेम छह हज़ार साल पुराना बच्चा है। प्रेम को लंबी सफेद दाढ़ी रखने का अधिकार है। मेथुसलेम कामदेव के बगल में एक गली का अरब है। साठ शताब्दियों से पुरुष और स्त्रियाँ प्रेम करके अपनी कठिनाइयों से बाहर निकलते आए हैं। धूर्त शैतान ने मनुष्य से घृणा करना शुरू कर दिया; मनुष्य, जो उससे भी अधिक धूर्त है, ने स्त्री से प्रेम करना शुरू कर दिया। इस तरह वह शैतान द्वारा किए गए नुकसान से कहीं अधिक भलाई करता है। इस कला का आविष्कार धरती पर स्वर्ग के दिनों में हुआ था। यह आविष्कार पुराना है, मेरे दोस्तों, लेकिन यह एकदम नया। इसका लाभ उठाओ। फिलेमोन और बौसिस बनने की प्रतीक्षा करते हुए डैफनिस और क्लो बनो। ऐसा

प्रबंध करो कि जब तुम एक-दूसरे के साथ हो, तो तुम्हें किसी चीज की कमी न हो, और कोसेट मारियस के लिए सूर्य हो, और मारियस कोसेट के लिए ब्रह्मांड हो। कोसेट, तुम्हारा सुहावना मौसम तुम्हारे पति की मुस्कान हो; मारियस, तुम्हारी बारिश तुम्हारी पत्नी के आँसू हो। और तुम्हारे घर में कभी बारिश न हो। तुमने लॉटरी का विजयी नंबर चुरा लिया है; तुमने बड़ा इनाम जीत लिया है, इसकी अच्छी तरह रक्षा करो, इसे ताला लगाकर रखो, इसे बर्बाद मत करो, एक-दूसरे से प्यार करो और बाकी सब कुछ भूल जाओ। मेरी बात मानो। यह अच्छी समझ है। और अच्छी समझ झूठ नहीं बोल सकती। एक-दूसरे के लिए धर्म बनो। हर इंसान का ईश्वर की आराधना करने का अपना तरीका होता है। सैपरलॉट! ईश्वर की आराधना करने का सबसे अच्छा तरीका अपनी पत्नी से प्यार करना है। 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ!' यही मेरा उपदेश है। जो प्यार करता है वही सही है। हेनरी चतुर्थ पवित्रता को दावत और नशे के बीच कहीं रखते हैं। हे भगवान! मैं उस शपथ के धर्म को नहीं मानता। उसमें स्त्री को भुला दिया गया है। हेनरी चतुर्थ की यह सोच मुझे आश्चर्यचकित करती है। मेरे मित्रों, स्त्रियों की जय हो! वे कहते हैं कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ; यह आश्चर्यजनक है कि मैं कितना जवान महसूस करता हूँ। मैं जंगल में जाकर बैगपाइप सुनना चाहता हूँ। जो बच्चे सुंदर और संतुष्ट रहने का प्रयास करते हैं—वह मुझे मदहोश कर देता है। अगर कोई मुझसे शादी करना चाहे तो मैं बहुत शादी करना चाहूँगा। यह कल्पना करना असंभव है कि ईश्वर ने हमें इसके अलावा किसी और चीज़ के लिए बनाया होगा: पूजा करना, प्यार से दुलारना, खुद को संवारना, कबूतर जैसा होना, सुंदर होना, सुबह से शाम तक अपने प्यार का इज़हार करना, अपनी छोटी पत्नी में अपनी छवि देखना, गर्व करना, विजयी होना, खुद को संवारना; यही जीवन का उद्देश्य है। वहाँ, जो बात हमें अप्रिय लगती है, वह आपको अप्रिय न लगे। हम अपने ज़माने में, जब हम जवान थे, तब सोचते थे, आह! कितना सुंदर! उन दिनों कितनी खूबसूरत औरतें थीं, कितने प्यारे चेहरे और कितनी प्यारी लड़कियाँ! मैंने उनके बीच खूब मौज-मस्ती की। इसलिए एक-दूसरे से प्यार करो। अगर लोग एक-दूसरे से प्यार न करें, तो मुझे समझ नहीं आता कि बसंत ऋतु का क्या फायदा होगा; और मैं तो ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि वह हमें जो भी सुंदर चीज़ें दिखाते हैं, उन्हें हमसे छीन लें, और फूल, पक्षी और सुंदर युवतियों को हमसे वापस ले लें। मेरे बच्चों, एक बूढ़े आदमी का आशीर्वाद स्वीकार करो।

शाम खुशनुमा, जीवंत और आनंददायक थी। दादाजी के बेमिसाल हंसमुख स्वभाव ने पूरे समारोह को और भी खुशनुमा बना दिया, और हर व्यक्ति ने उनके लगभग सौ साल पुराने सौहार्दपूर्ण व्यवहार को बरकरार रखा। सबने थोड़ा नृत्य किया, खूब हँसे; यह एक सौहार्दपूर्ण शादी थी। पुराने जमाने के गुडमैन को भी इसमें आमंत्रित किया जा सकता था। हालांकि, वे फादर गिलनोर्मंड के रूप में उपस्थित थे।

पहले कोलाहल हुआ, फिर सन्नाटा छा गया।

विवाहित जोड़ा गायब हो गया।

आधी रात के कुछ ही समय बाद, गिलनोर्मंड का घर एक मंदिर में बदल गया।

यहां हम विराम लेते हैं। शादी की रात की दहलीज पर एक मुस्कुराता हुआ देवदूत अपने होठों पर उंगली रखे खड़ा है।

जिस पवित्र स्थान पर प्रेम का उत्सव मनाया जाता है, उसके समक्ष आत्मा ध्यानमग्न हो जाती है।

ऐसे घरों में प्रकाश की चमक होनी चाहिए। उनमें समाया आनंद दीवारों के पत्थरों से होकर चमकता हुआ बाहर निकलना चाहिए और अंधकार को हल्का सा रोशन करना चाहिए। यह पवित्र और घातक उत्सव अनंत को दिव्य प्रकाश से न भर दे, यह असंभव है। प्रेम वह उदात्त पात्र है जिसमें पुरुष और स्त्री का मिलन होता है; एकत्व, त्रित्व, अंतिम स्वरूप, मानव त्रिमूर्ति इसी से उत्पन्न होती है। दो आत्माओं का एक में जन्म अंधकार के लिए एक भाव होना चाहिए। प्रेमी पुजारी है; अपंग कुंवारी भयभीत है। उस आनंद का कुछ अंश ईश्वर तक पहुँचता है। जहाँ सच्चा विवाह होता है, अर्थात् जहाँ प्रेम होता है, वहाँ आदर्श प्रवेश करता है। विवाह-शय्या अंधकार के बीच भोर का एक कोना बना देती है। यदि सांसारिक दृष्टि को परलोक के भव्य और मनमोहक दृश्यों को निहारने का वरदान प्राप्त होता, तो संभवतः हम रात्रि के स्वरूपों, पंखों वाले अज्ञात प्राणियों, अदृश्य के नीले राहगीरों को, प्रकाशमान घर के चारों ओर झुके हुए, गंभीर चेहरों के समूह को, संतुष्ट होकर आशीर्वाद बरसाते हुए, एक-दूसरे को कोमल भय से भरी, मधुर रूप से भयभीत कुंवारी पत्नी की ओर इशारा करते हुए, और अपने दिव्य चेहरों पर मानवीय आनंद का प्रतिबिंब लिए हुए देखते। यदि उस परम क्षण में, प्रेम से व्याकुल और स्वयं को अकेला समझते हुए विवाहित

जोड़ा सुनता, तो उन्हें अपने कक्ष में पंखों की अस्पष्ट सरसराहट सुनाई देती। पूर्ण सुख का अर्थ है स्वर्गदूतों के साथ आपसी समझ। उस छोटे से अंधेरे कक्ष की छत स्वर्ग है। जब प्रेम से पवित्र हुए दो मुख सृजन के लिए निकट आते हैं, तो उस अवर्णनीय चुंबन के ऊपर, तारों के विशाल रहस्य में कंपन होना असंभव नहीं है।

ये आनंद ही सच्चे आनंद हैं। इन आनंदों के अतिरिक्त कोई आनंद नहीं है।
प्रेम ही एकमात्र परमानंद है। बाकी सब दुख है।

प्रेम करना, या प्रेम कर चुके होना—यही पर्याप्त है। इससे अधिक कुछ नहीं चाहिए। जीवन के अंधकारमय पहलुओं में इससे अधिक अनमोल कोई और रत्न नहीं है।
प्रेम करना ही पूर्णता है।

III. अविभाज्य

जीन वालजेन का क्या हुआ?

कोसेट के मधुर आदेश पर हँसने के तुरंत बाद, जब कोई उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहा था, जीन वालजेन उठ खड़ा हुआ और चुपके से प्रतीक्षालय में चला गया। यही वह कमरा था जिसमें आठ महीने पहले वह कीचड़, खून और बारूद से सना हुआ, पोते को दादा के पास वापस लाने के लिए दाखिल हुआ था। पुरानी दीवार पर पत्तों और फूलों की माला सजी हुई थी; संगीतकार उस सोफे पर बैठे थे जिस पर उन्होंने मारियस को लिटाया था। बास्क, काले कोट, घुटनों तक की पैंट, सफेद मोजे और सफेद दस्ताने पहने हुए, परोसे जाने वाले सभी व्यंजनों के चारों ओर गुलाब सजा रहा था। जीन वालजेन ने अपनी पट्टी में बंधे हाथ की ओर इशारा किया, बास्क को अपनी अनुपस्थिति का कारण बताने को कहा और चला गया।

भोजन कक्ष की लंबी खिड़कियाँ सड़क की ओर खुलती थीं। जीन वालजेन कुछ मिनटों तक अंधेरे में, उन चमकदार खिड़कियों के नीचे, सीधा और स्थिर खड़ा रहा। वह सुनता रहा। भोज की मिली-जुली आवाज़ें उसके कानों तक पहुँचीं। उसने दादाजी की ऊँची, प्रभावशाली आवाज़, वायलिन की धुन, थालियों की खड़खड़ाहट, ठहाकों की गूँज सुनी, और उस सारी उमंग के बीच उसने कोसेट की मधुर और आनंदमयी आवाज़ को पहचाना।

उन्होंने रुए डेस फ़िल्स-डु-कैल्वायर को छोड़ दिया, और रुए डे ल'होमे आर्मे में लौट आए।

वहाँ वापस लौटने के लिए, उसने सेंट-लुई स्ट्रीट, कल्चर-सैंटे-कैथरीन स्ट्रीट और ब्लैंक्स-मंटेओक्स स्ट्रीट का रास्ता लिया; यह थोड़ा लंबा रास्ता था, लेकिन यह वही सड़क थी जिससे वह पिछले तीन महीनों से हर दिन रू डे ल'होमे आर्मे से रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर स्ट्रीट तक जाने के लिए गुज़रता था, ताकि रू विएले-डु-टेम्पल स्ट्रीट में आने वाली रुकावटों और कीचड़ से बचा जा सके।

जिस सड़क से कोसेट गुजरी थी, उसने उसके लिए किसी भी अन्य यात्रा मार्ग की संभावना को पूरी तरह से खत्म कर दिया था।

जीन वालजेन अपने कमरे में दाखिल हुए। उन्होंने मोमबत्ती जलाई और सीढ़ियाँ चढ़े। कमरा खाली था। टूसेंट भी वहाँ नहीं थे। कमरे में जीन वालजेन के कदमों की आवाज़ सामान्य से ज़्यादा थी। सभी अलमारियाँ खुली थीं। वे कोसेट के शयनकक्ष में पहुँचे। बिस्तर पर चादर नहीं थी। तकिया, जो रुई से ढका था और उस पर कोई कवर या लेस नहीं थी, गद्दे के निचले हिस्से में तह करके रखे कंबलों पर पड़ा था। गद्दे का कवर दिखाई दे रहा था और उस पर अब कोई नहीं सोएगा। कोसेट से जुड़ी सभी छोटी-छोटी स्त्री-संबंधी वस्तुएँ गायब थीं; भारी फर्नीचर और चार दीवारों के अलावा कुछ भी नहीं बचा था। टूसेंट का बिस्तर भी इसी तरह उजाड़ था। केवल एक ही बिस्तर लगा हुआ था और ऐसा लग रहा था जैसे किसी का इंतज़ार कर रहा हो, और यह जीन वालजेन का बिस्तर था।

जीन वाल्जेन ने दीवारों की ओर देखा, कुछ अलमारियों के दरवाजे बंद किए और एक कमरे से दूसरे कमरे में आते-जाते रहे।

फिर वह एक बार फिर अपने कमरे में गया और अपनी मोमबत्ती को मेज पर रख दिया।

उसने अपनी बांह को स्लिंग से अलग कर लिया था, और उसने अपने दाहिने हाथ का इस्तेमाल ऐसे किया जैसे उसे कोई दर्द ही न हो।

वह अपने बिस्तर के पास पहुँचा, और उसकी नज़रें टिक गईं - क्या यह संयोग था? या जानबूझकर? उस "अविभाज्य" चीज़ पर, जिसके लिए कोसेट ईर्ष्या करती थी, उस छोटे से सूटकेस पर जो हमेशा उसका साथ छोड़ता था। 4 जून को रू डे ल'होमे आर्मे में पहुँचते ही उसने उसे अपने बिस्तर के सिरहाने के पास एक गोल मेज़ पर रख दिया था। वह बड़े उत्साह से उस मेज़ के पास गया, अपनी जेब से चाबी निकाली और सूटकेस खोला।

उसमें से उसने धीरे-धीरे वे वस्त्र निकाले जिन्हें पहनकर कोसेट ने दस साल पहले मोंटफर्मेइल छोड़ा था; पहले छोटा गाउन, फिर काला फिचू, फिर मोटे, खुरदुरे बच्चों के जूते जो कोसेट ने लगभग अभी भी पहने होंगे, उसके पैर इतने छोटे थे, फिर मोटा फस्टियन चोली, फिर बुना हुआ पेटीकोट, उसके बाद जेबों वाला एप्रन, फिर ऊनी मोज़े। ये मोज़े, जिनमें अभी भी एक नन्ही टांग की सुंदर आकृति बरकरार थी, जीन वालजेन के हाथ से भी छोटे थे। ये सभी काले रंग के थे। वही इन वस्त्रों को उसके लिए मोंटफर्मेइल लाया था। जैसे ही उसने उन्हें सूटकेस से निकाला, उसने उन्हें बिस्तर पर रख दिया। वह सोचने लगा।

उसने पुरानी यादें ताजा कीं। यह सर्दियों का मौसम था, दिसंबर का एक बहुत ठंडा महीना, वह कांप रही थी, अधनंगी, फटे-पुराने कपड़ों में, उसके बेचारे छोटे पैर लकड़ी के जूतों में लाल हो गए थे। जीन वालजेन ने ही उसे उन फटे- पुराने कपड़ों को त्यागकर ये शोक वस्त्र पहनाए थे। माँ को अपनी कब्र में भी प्रसन्नता हुई होगी, अपनी बेटी को अपने लिए शोक वस्त्र पहने देखकर, और सबसे बढ़कर, यह देखकर कि वह ठीक से कपड़े पहने है और उसे ठंड नहीं लग रही है। उसने मोंटफर्मेइल के उस जंगल के बारे में सोचा; कोसेट और वह दोनों साथ-साथ उस जंगल से गुज़रे थे; उसने मौसम के बारे में सोचा, पत्तों से रहित पेड़ों के बारे में, पक्षियों से रहित जंगल के बारे में, सूर्यविहीन आकाश के बारे में; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, वह कितना सुंदर था। उसने बिस्तर पर छोटे-छोटे वस्त्रों को करीने से रखा, पेटीकोट के बगल में फिचू, जूतों के बगल में मोज़े, और उसने एक-एक करके उन्हें देखा। वह उससे ज़्यादा लंबी नहीं थी, उसकी बाहों में उसकी बड़ी गुड़िया थी, उसने अपना लुई डी'ओर उस एप्रन की जेब में रखा था, वह हँसी थी, वे हाथ में हाथ डालकर चले थे, दुनिया में उसके सिवा उसका कोई नहीं था।

फिर उनका आदरणीय, सफेद सिर बिस्तर पर आगे की ओर झुक गया, उनका वह संयमी बूढ़ा दिल टूट गया, उनका चेहरा मानो कोसेट के वस्त्रों में लिपट गया, और अगर उस समय कोई सीढ़ियों से ऊपर से गुजरा होता, तो उसने भयानक सिसकियां सुनी होतीं।

IV. अमर जिगर

[प्रोमेथियस की कहानी के संदर्भ में।]

वह पुराना और भीषण संघर्ष, जिसके हम पहले ही कई चरण देख चुके हैं, एक बार फिर शुरू हो गया है।

याकूब ने केवल एक रात ही देवदूत से संघर्ष किया। अफसोस! हमने कितनी ही बार जीन वाल्जेन को अंधेरे में, अपने अंतरात्मा के वश में होते हुए और उससे बेताब होकर जूझते हुए देखा है!

अभूतपूर्व संघर्ष! कभी पैर फिसलते हैं, कभी ज़मीन पैरों तले धंस जाती है। भला कितनी बार उस अंतरात्मा ने, जो भलाई के लिए पागल थी, उसे जकड़कर गिराया था! कितनी बार सत्य ने उसके सीने पर अपना घुटना अड़ियलपन से रखा था! कितनी बार प्रकाश से धरती पर गिराकर उसने दया की भीख मांगी थी! कितनी बार उस निर्दयी चिंगारी ने, जो उसके भीतर प्रज्वलित हुई थी और बिशप द्वारा उस पर डाली गई थी, उसे तब भी बलपूर्वक चकाचौंध कर दिया था जब वह अंधा होना चाहता था! कितनी बार वह संघर्ष में अपने पैरों पर खड़ा हुआ, चट्टान को मजबूती से थामे, कुतर्क के सहारे टिका, धूल में घिसटा, कभी अपनी अंतरात्मा पर हावी हुआ, फिर उसी ने उसे गिरा दिया! कितनी बार, एक अस्पष्ट बात के बाद, अहंकार के दिखावटी और कपटपूर्ण तर्क के बाद, उसकी क्रोधित अंतरात्मा ने उसके कान में पुकारा था: “एक ठोकर! तुम नीच!” कितनी बार उसके विद्रोही विचार कर्तव्य के प्रमाण के तहत उसके गले में हिचकोले खाते रहे थे! ईश्वर का विरोध। अंतिम संस्कार के पसीने। वे कौन से गुप्त घाव थे जिनका रिसना केवल वही महसूस कर सकता था! उसके दयनीय जीवन में कितनी पीड़ाएँ थीं! कितनी बार वह लहूलुहान, घायल, टूटा हुआ, प्रबुद्ध, हृदय में निराशा और आत्मा में शांति लिए उठा था! और पराजित होकर भी उसने स्वयं को विजेता महसूस किया था। और, अपनी अंतरात्मा को धधकते चिमटों से चीर-फाड़ कर, तोड़-फोड़ कर, और चीर-फाड़ कर, जब वह उसके ऊपर विकराल, प्रचंड, प्रकाशमान और शांत खड़ी थी, तब उसने उससे कहा था: "अब शांति से जाओ!"

लेकिन इतने दुखद संघर्ष से निकलने के बाद, अफसोस, कितनी निराशाजनक शांति है!

फिर भी, उस रात जीन वाल्जेन को ऐसा लगा कि वह अपनी अंतिम लड़ाई लड़ रहा है।

एक हृदयविदारक प्रश्न सामने आया।

नियति हमेशा सीधी नहीं होती; वह नियतिबद्ध व्यक्ति के सामने एक सीधी राह के रूप में नहीं खुलती; उसमें संकरे रास्ते, दुर्गम गलियाँ, अस्पष्ट मोड़ और कई रास्तों का विकल्प देने वाले विचलित कर देने वाले चौराहे होते हैं।
जीन वालजेन उस क्षण इन्हीं सबसे खतरनाक चौराहों में से एक पर रुका था।

वह अच्छाई और बुराई के चरम चौराहे पर आ खड़ा हुआ था। उसकी आँखों के सामने वह अंधकारमय दृश्य था। इस बार भी, जैसा कि पहले भी कई दुखद घटनाओं में उसके साथ हो चुका था, उसके सामने दो रास्ते खुल गए थे - एक लुभावना, दूसरा भयावह।

उसे कौन सा विकल्प चुनना था?

उसे उस रहस्यमय तर्जनी उंगली के द्वारा चेतावनी दी गई थी जिसने उसे भयभीत कर दिया था, जिसे हम सभी अंधेरे पर नजर डालते समय महसूस करते हैं।

एक बार फिर, जीन वालजेन के सामने भयानक बंदरगाह और मुस्कुराते हुए घात लगाकर हमला करने के बीच चुनाव करने का विकल्प था।

तो क्या यह सच है? आत्मा तो ठीक हो सकती है; पर भाग्य नहीं। कितनी भयानक बात है! एक लाइलाज नियति!

उनके सामने यह समस्या आई:

कोसेट और मारियस की खुशी के प्रति जीन वालजेन को किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए था? यह वही था जिसने उस खुशी की कामना की थी, यह वही था जिसने उसे साकार किया था; उसने स्वयं उसे अपने अंतर्मन में समाहित कर लिया था, और उस क्षण, जब उसने इस पर विचार किया, तो उसे वैसी ही संतुष्टि का अनुभव हुआ, जैसी एक कवच निर्माता को अपने सीने से धुंए से धुंए हुए चाकू को निकालते समय, उस पर अपने कारखाने का निशान पहचानने पर होती है।

कोसेट के पास मारियस था, मारियस के पास कोसेट थी। उनके पास सब कुछ था, यहाँ तक कि धन-दौलत भी। और यह सब उसी की देन थी।

लेकिन जीन वालजेन इस खुशी का क्या करता, जो अब मौजूद थी? क्या उसे इस खुशी को जबरदस्ती अपनाना चाहिए? क्या उसे इसे अपना समझना चाहिए? बेशक, कोसेट किसी और की थी; लेकिन क्या जीन वालजेन कोसेट से वह सब कुछ अपने पास रखना चाहिए जो वह रख सकता था? क्या उसे उसी तरह का पिता बने रहना चाहिए, जो आधा दिखाई देता था लेकिन सम्मान पाता था, जैसा वह अब तक रहा था? क्या उसे बिना कुछ कहे अपने अतीत को उस भविष्य में ले जाना चाहिए? क्या उसे वहाँ ऐसे उपस्थित होना चाहिए जैसे उसका कोई अधिकार हो, और क्या उसे घूंघट ओढ़कर उस रोशन चूल्हे के पास बैठना चाहिए? क्या उसे मुस्कुराते हुए उन मासूम हाथों को अपने दुख भरे हाथों में लेना चाहिए? क्या उसे गिलनोर्मंड ड्राइंग रूम की शांत दीवार पर अपने उन पैरों को रखना चाहिए, जो अपने पीछे कानून की शर्मनाक छाया घसीट रहे थे? क्या उसे कोसेट और मारियस के अच्छे भाग्य में भागीदार बनना चाहिए? क्या उसे अपने माथे पर छाए अंधकार और उनके माथे पर छाए बादल को और भी घना कर देना चाहिए? क्या उसे अपनी विपत्ति को उनकी खुशियों में तीसरे साथी के रूप में रखना चाहिए? क्या उसे चुप रहना चाहिए? संक्षेप में, क्या उसे इन दो सुखी व्यक्तियों के साथ भाग्य का मूक खलनायक बनकर रहना चाहिए?

हमें नियति और उससे होने वाले टकरावों की आदत पड़ जानी चाहिए, तभी तो हम कुछ सवालों के भयावह रूप में सामने आने पर भी आंखें उठाने का साहस कर पाते हैं। इस गंभीर प्रश्न के पीछे अच्छाई या बुराई छिपी है। तुम क्या करोगे? स्फिंक्स पूछता है।

यह परीक्षण करने की आदत जीन वालजेन में भी थी। उसने स्फिंक्स को ध्यान से देखा।

उन्होंने इस निर्मम समस्या के सभी पहलुओं का विश्लेषण किया।

कोसेट, वह मनमोहक शख्सियत, इस डूबते जहाज की सहारा थी। अब उसे क्या करना चाहिए था? क्या उसे मजबूती से थामे रहना चाहिए, या फिर उसे छोड़ देना चाहिए?

यदि वह इससे जुड़ा रहता, तो वह आपदा से बाहर निकल आता, वह फिर से सूर्य के प्रकाश में आ जाता, वह अपने वस्त्रों और बालों से कड़वा पानी टपकने देता, वह बच जाता, वह जीवित रहता।

और अगर वह अपनी पकड़ छोड़ दे तो?

फिर अथाह खाई।

इस प्रकार उसने अपने विचारों से दुखी मनन किया। या, अधिक सटीक रूप से कहें तो, उसने संघर्ष किया; वह भीतर ही भीतर उग्र रूप से छटपटाता रहा, कभी अपनी इच्छा के विरुद्ध, कभी अपने विश्वास के विरुद्ध।

जीन वाल्जेन के लिए यह सुखद था कि वह रो सका। इससे उसे कुछ राहत मिली होगी। लेकिन शुरुआत भयानक थी। उसके भीतर एक ऐसा तूफान उमड़ पड़ा, जो उसे पहले अरास ले जाने वाले तूफान से भी कहीं अधिक भयंकर था। अतीत उसके सामने वर्तमान के साथ उमड़ पड़ा; उसने उनकी तुलना की और सिसकियाँ लीं। आँसुओं का सन्नाटा टूटते ही, हताश व्यक्ति छटपटाने लगा।

उन्हें लगा कि उन्हें अचानक रोक दिया गया है।

अफसोस! अहंकार और कर्तव्य के बीच इस जानलेवा संघर्ष में, जब हम अपने अटल आदर्श के सामने कदम-दर-कदम पीछे हटते हैं, व्याकुल, क्रोधित, हार मानने पर चिढ़ते हुए, जमीन के लिए संघर्ष करते हुए, भागने की उम्मीद में, बचने का रास्ता तलाशते हुए, दीवार की नींव हमारे पीछे कितना अचानक और भयावह प्रतिरोध पेश करती है!

उस पवित्र छाया को महसूस करना जो एक बाधा उत्पन्न करती है!

अदृश्य, अटल शक्ति, क्या जुनून है!

फिर, अंतरात्मा से कभी मुक्ति नहीं मिलती। अपना चुनाव करो, ब्रूटस; अपना चुनाव करो, कैटो। यह अथाह है, क्योंकि यह ईश्वर है। उस कुएँ में व्यक्ति अपने पूरे जीवन का श्रम, अपना भाग्य, अपनी दौलत, अपनी सफलता, अपनी स्वतंत्रता या मातृभूमि, अपना सुख, अपना विश्राम, अपना आनंद डालता है! और! और! और! कलश खाली करो! कलश को पलट दो! अंत में अपना हृदय उसमें डाल देना चाहिए।

प्राचीन नरकों के कोहरे में कहीं न कहीं, वैसा ही एक सुरंग मौजूद है।

अगर कोई अंत में इनकार कर दे तो क्या उसे क्षमा नहीं किया जा सकता? क्या अक्षय को कोई अधिकार हो सकता है? क्या अंतहीन जंजीरें मानवीय शक्ति से परे

नहीं हैं? सिसिफस और जीन वालजेन को यह कहने पर कौन दोषी ठहराएगा: "बस बहुत हो गया!"

पदार्थ की आज्ञाकारिता घर्षण द्वारा सीमित है; क्या आत्मा की आज्ञाकारिता की कोई सीमा नहीं है? यदि निरंतर गति असंभव है, तो क्या निरंतर आत्म-बलिदान की अपेक्षा की जा सकती है?

पहला कदम तो कुछ भी नहीं है, मुश्किल तो आखिरी कदम है। कोसेट की शादी और उससे जुड़े परिणामों की तुलना में चैम्पमैथ्यू कांड क्या था? शून्य में प्रवेश करने की तुलना में जहाजों के जखीरे में पुनः प्रवेश करना क्या है?

ओह, पहला कदम जो नीचे उतरना है, तुम कितने उदास हो! ओह, दूसरा कदम, तुम कितने काले हो!

इस बार वह अपना सिर दूसरी तरफ मोड़ने से खुद को कैसे रोक सकता था?

शहादत उदात्तीकरण है, एक संक्षारक उदात्तीकरण। यह एक ऐसी यातना है जो पवित्रता प्रदान करती है। पहले घंटे के लिए तो व्यक्ति इसे स्वीकार कर सकता है; वह धधकते लोहे के सिंहासन पर बैठता है, अपने सिर पर गर्म लोहे का मुकुट रखता है, लाल गर्म लोहे का गोला स्वीकार करता है, लाल गर्म लोहे का राजदंड ग्रहण करता है, लेकिन ज्वाला का आवरण अभी भी धारण करना बाकी है, और क्या कभी ऐसा क्षण नहीं आता जब नश्वर शरीर विद्रोह करता है और जब व्यक्ति पीड़ा से विमुख हो जाता है?

अंततः, जीन वालजेन थकावट की शांति में प्रवेश कर गया।

उसने विचार किया, चिंतन किया, विकल्पों पर गौर किया, प्रकाश और अंधकार के रहस्यमय संतुलन पर विचार किया।

क्या उसे उन दो मनमोहक बच्चों पर अपना अत्याचार करना चाहिए, या उसे स्वयं के अपरिहार्य पतन को अंतिम रूप देना चाहिए? एक तरफ कोसेट का बलिदान था, दूसरी तरफ स्वयं का।

उसे किस निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए? उसने क्या निर्णय लिया?

उसने क्या संकल्प लिया? नियति के अप्रतिरोध्य प्रश्न के प्रति उसकी आंतरिक प्रतिक्रिया क्या थी? उसने कौन सा द्वार खोलने का निर्णय लिया? उसने अपने जीवन के किस पहलू को बंद करने और निंदा करने का निश्चय किया?

उसके चारों ओर मौजूद अथाह खाईयों में से उसने क्या चुना? उसने किस चरम सीमा को स्वीकार किया? उसने किस खाई की ओर सिर झुकाया?

उसकी मदहोश कर देने वाली कल्पना पूरी रात चलती रही।

वह सुबह होने तक वहीं पड़ा रहा, उसी मुद्रा में, पलंग पर कमर झुकाए, भाग्य की क्रूरता के नीचे दबा हुआ, मानो कुचला हुआ हो, शायद, अफसोस! मुट्ठियाँ भींचे हुए, बाहें समकोण पर फैली हुई, जैसे कोई सूली पर चढ़ाया हुआ व्यक्ति जिसके कीलें निकाल दी गई हों और उसे औंधे मुँह धरती पर फेंक दिया गया हो। वह बारह घंटे तक वहीं पड़ा रहा, एक लंबी सर्दी की रात के बारह लंबे घंटे, बर्फ की तरह ठंडा, बिना एक बार भी सिर उठाए, बिना एक शब्द बोले। वह एक लाश की तरह गतिहीन था, जबकि उसके विचार धरती पर लोटते और उड़ते रहे, कभी हाइड्रा की तरह, कभी चील की तरह। उसे इस तरह गतिहीन देखकर कोई भी उसे मृत घोषित कर देता; अचानक वह कांप उठा, और उसका मुँह, कोसेट के वस्त्रों से चिपका हुआ, उन्हें चूमने लगा; तब पता चला कि वह जीवित है।

कौन देख सकता था? क्योंकि जीन वाल्जेन अकेला था, और वहाँ कोई नहीं था।

जो अंधकार में छिपा हुआ है।

पुस्तक **VII.** प्याले से अंतिम घूंट

I. सातवाँ वृत्त और आठवाँ स्वर्ग

शादी के बाद के दिन एकांत भरे होते हैं। लोग नवविवाहित जोड़े के चिंतन का सम्मान करते हैं। और कुछ हद तक उनकी देर से आने वाली नींद का भी। मुलाकातों और बधाइयों का शोरगुल तो बाद में शुरू होता है। 17 फरवरी की सुबह, दोपहर के कुछ ही समय बाद, बास्क, अपने कमरे को व्यवस्थित करने में व्यस्त था, तभी उसने रुमाल और झाड़ू बगल में दबाए हुए दरवाजे पर हल्की सी दस्तक सुनी। घंटी नहीं बजी थी, जो ऐसे दिन में विवेकपूर्ण होता है। बास्क ने दरवाजा खोला और सामने एम. फॉशेलवेंट खड़े थे। उसने उन्हें ड्राइंग रूम में बुलाया, जो अभी भी अस्त-व्यस्त था और पिछली शाम की खुशियों के बाद किसी युद्धक्षेत्र जैसा लग रहा था।

बास्क ने कहा, "महोदया, महोदय, हम सब देर से उठे।"

“क्या तुम्हारा मालिक जाग गया है?” जीन वाल्जेन ने पूछा।

“महाशय का हाथ कैसा है?” बास्क ने उत्तर दिया।

“बेहतर। क्या आपका मालिक जाग गया है?”

“कौन सा? पुराना वाला या नया वाला?”

श्री पोंटमर्सी।

"महाशय बैरन," बास्क ने खुद को सीधा करते हुए कहा।

एक व्यक्ति अपने सेवकों के लिए सबसे अधिक बैरन कहलाता है। सेवकों के बीच उसका कुछ महत्व होता है; वे एक दार्शनिक की भाषा में कहें तो, उपाधि से सजे- धजे होते हैं, और यह बात उन्हें गर्व महसूस कराती है। मारियस, जैसा कि उसने साबित किया था, एक जुझारू गणतंत्रवादी था, और अब वह अपनी इच्छा के विरुद्ध ही बैरन बन गया था। इस उपाधि को लेकर परिवार में एक छोटा सा बदलाव आ चुका था। अब एम. गिलनोर्मंड इस उपाधि से चिपके हुए थे, और मारियस इससे अलग हो गए थे। लेकिन कर्नल पोंटमर्सी ने लिखा था: "मेरा बेटा मेरी उपाधि धारण करेगा।" मारियस ने आज्ञा का पालन किया। और फिर, कोसेट, जिसमें स्त्रीत्व की झलक दिखाई देने लगी थी, बैरोनेस बनकर बहुत प्रसन्न हुई।

“महामहिम बैरन?” बास्क ने दोहराया। “मैं जाकर देखूंगा। मैं उन्हें बताऊंगा कि श्री फाउचेलेवेंट यहाँ हैं।”

“नहीं। उसे यह मत बताना कि यह मैं हूँ। उसे बताना कि कोई उससे अकेले में बात करना चाहता है, और किसी का नाम मत लेना।”

“आह!” बास्क ने विस्मय से कहा।

मैं उसे आश्चर्यचकित करना चाहता हूँ।

“आह!” बास्क ने एक बार फिर कहा, अपने पहले “आह!” की व्याख्या के रूप में अपना दूसरा “आह!” निकालते हुए।

और वह कमरे से बाहर चला गया।

जीन वाल्जेन अकेले रह गए।

जैसा कि हमने अभी बताया, ड्राइंग रूम पूरी तरह अस्त-व्यस्त था। ऐसा लग रहा था मानो कान लगाकर सुनने पर शादी की हल्की-हल्की आवाज़ अभी भी सुनाई दे रही हो। पॉलिश किए हुए फर्श पर तरह-तरह के फूल बिखरे पड़े थे जो मालाओं और सिर के गहनों से गिरे थे। जलकर सुलग चुकी मोमबत्तियाँ झूमरों की क्रिस्टल जैसी बूंदों में मोम के टुकड़े बिखेर रही थीं। फर्नीचर का एक भी टुकड़ा अपनी जगह पर नहीं था। कोनों में तीन-चार आरामकुर्सियाँ एक घेरे में सटी हुई थीं, मानो आपस में बातचीत कर रही हों। पूरा माहौल खुशनुमा था। एक फीके पड़ चुके उत्सव में भी एक खास तरह की गरिमा बनी रहती है। यह एक सुखद अनुभव रहा है। अस्त-व्यस्त कुर्सियों पर, उन मुरझाए फूलों के बीच, उन बुझी हुई रोशनी के नीचे, लोगों ने खुशी के बारे में सोचा है। सूरज झूमर की जगह ले चुका था और ड्राइंग रूम में खुशी-खुशी अपनी रोशनी बिखेर रहा था।

कुछ मिनट बीत गए। जीन वालजेन उसी जगह पर अविचलित खड़ा रहा जहाँ बास्क उसे छोड़कर गया था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसकी आँखें धँसी हुई थीं, और नींद की कमी के कारण इतनी धँसी हुई थीं कि मानो आँखों के घेरे में ही गायब हो गई हों। उसके काले कोट पर रात भर जागने के कारण पड़े थके हुए सिलवटों के निशान थे। कोहनियाँ कपड़े और लिनन के घर्षण से छूटे हुए रोएँ से सफेद हो गई थीं।

जीन वाल्जेन अपने पैरों के पास पॉलिश किए हुए फर्श पर सूरज की रोशनी से उभरी खिड़की को घूर रहा था।

दरवाजे पर एक आवाज आई और उसने अपनी आंखें ऊपर उठाईं।

मारियस ने प्रवेश किया, उसका सिर गर्व से फूला हुआ था, उसके होंठों पर मुस्कान थी, उसके चेहरे पर एक अवर्णनीय चमक थी, उसकी भौंहें फैली हुई थीं, उसकी आँखें विजय से चमक रही थीं। वह भी सोया नहीं था।

“आप हैं, पिताजी!” जीन वालजेन को देखते ही वह चौंक उठा; “उस बेवकूफ बास्क का अंदाज़ कितना रहस्यमय था! लेकिन आप बहुत जल्दी आ गए। अभी तो सिर्फ साढ़े बारह बजे हैं। कोसेट सो रही है।”

मारियस द्वारा एम. फॉशेलवेंट से कहे गए उस शब्द "पिता" का अर्थ था परम आनंद। जैसा कि पाठक जानते हैं, उनके बीच हमेशा से एक ऊंची दीवार, एक शीतलता और एक बंधन रहा था; एक ऐसी बर्फ जिसे तोड़ना या पिघलाना आवश्यक था। मारियस उस मदहोशी की अवस्था में पहुँच गया था जब वह दीवार गिर गई, जब बर्फ पिघल गई, और जब एम. फॉशेलवेंट उसके लिए, कोसेट की तरह, एक पिता बन गए।

उन्होंने आगे कहा: उनके शब्द ऐसे प्रवाहित होने लगे, जैसे दिव्य आनंद की तीव्र अनुभूति की विशेषता होती है।

“आपको देखकर कितनी खुशी हुई! काश आपको पता होता कि कल हमने आपको कितना याद किया! सुप्रभात पिताजी। आपका हाथ कैसा है? पहले से बेहतर है, है ना?”

और, अपने आप को मिले अनुकूल उत्तर से संतुष्ट होकर, उसने आगे बढ़ना जारी रखा:

“हम दोनों तुम्हारे बारे में बात कर रहे थे। कोसेट तुम्हें बहुत प्यार करती है! तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि यहाँ तुम्हारा एक कमरा है। अब हमारा रू डे ल'होमे आर्मे से कोई वास्ता नहीं है। हम इसे बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं करेंगे। तुम उस गली में कैसे रह सकते हो, जो बीमार, अप्रिय, बदसूरत है, जिसके एक छोर पर एक बाड़ है, जहाँ ठंड लगती है, और जिसमें कोई प्रवेश नहीं कर सकता? तुम्हें यहाँ आकर बस जाना है। और आज ही। वरना तुम्हें कोसेट से निपटना होगा। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि वह हम सबको अपनी उंगलियों पर नचाना चाहती है। यहाँ तुम्हारा अपना कमरा है, यह

हमारे कमरे के पास है, यह बगीचे की ओर खुलता है; घड़ी की समस्या ठीक कर दी गई है, बिस्तर लगा हुआ है, सब कुछ तैयार है, तुम्हें बस इस पर कब्ज़ा करना है। तुम्हारे बिस्तर के पास कोसेट ने उट्रेक्ट मखमल से ढकी एक बड़ी, पुरानी, आरामकुर्सी रखी है और उससे कहा है: 'अपनी बाहें उसकी ओर फैलाओ।' एक बुलबुल पक्षियों के झुंड के पास आती है... हर वसंत में, आपकी खिड़कियों के सामने बबूल के पेड़ होते हैं। दो महीने में, यह आपके पास होगा। इसका घोंसला आपके बाईं ओर होगा और हमारा दाईं ओर। रात में यह गाएगा और दिन में कोसेट चहकेगी। आपका कमरा दक्षिण की ओर है। कोसेट आपकी किताबें, कैप्टन कुक की यात्राएँ और दूसरी - वैंकूवर की यात्राएँ - आपके सभी काम संभाल कर रखेगी। मुझे लगता है कि आपके पास एक छोटा सा सूटकेस है जिससे आपको लगाव है, मैंने उसके लिए एक खास कोना चुन लिया है। आपने मेरे दादाजी का दिल जीत लिया है, आप उन्हें पसंद हैं। हम साथ रहेंगे। क्या आप व्हिस्ट खेलते हैं? अगर आप व्हिस्ट खेलेंगे तो मेरे दादाजी बहुत खुश होंगे। जब मैं दरबार में रहूंगा, तो आप ही कोसेट को सैर पर ले जाएंगे, आप ही उसे अपना हाथ देंगे, जैसे आप लक्ज़मबर्ग में दिया करते थे। हमने खुश रहने का पक्का इरादा कर लिया है। और आप भी हमारी खुशी में शामिल होंगे, सुन रहे हैं पिताजी? आइए, क्या आप आज हमारे साथ नाश्ता करेंगे?

“महोदय,” जीन वाल्जेन ने कहा, “मुझे आपसे कुछ कहना है। मैं एक पूर्व अपराधी हूँ।”

तीक्ष्ण ध्वनियों की सुनाई देने वाली सीमा को पार किया जा सकता है, चाहे मन के मामले में हो या कान के मामले में। एम. फाउचेलेवेंट के मुख से निकले ये शब्द: "मैं एक पूर्व-कैदी हूँ," मारियस के कान में पहुँचते ही असंभव सा लगने लगा। उसे लगा जैसे उससे कुछ कहा गया हो; पर वह नहीं जानता था कि क्या। वह मुँह खुला रखकर खड़ा रहा।

फिर उसने महसूस किया कि उससे बात कर रहा व्यक्ति भयानक था। अपनी ही चकाचौंध में डूबे होने के कारण, उसने उस क्षण तक दूसरे व्यक्ति के भयानक पीलेपन पर ध्यान नहीं दिया था।

जीन वाल्जेन ने अपने दाहिने हाथ को सहारा देने वाली काली टाई खोली, अपने हाथ के चारों ओर लिपटे लिनेन को हटाया, अपना अंगूठा नंगा किया और उसे मारियस को दिखाया।

उन्होंने कहा, "मेरे हाथ में कोई समस्या नहीं है।"
मारियस ने अंगूठे की ओर देखा।
“इसमें कोई खराबी नहीं है,” जीन वाल्जेन ने आगे कहा।
दरअसल, चोट का कोई निशान नहीं था।
जीन वालजेन ने आगे कहा:
“तुम्हारे विवाह में मेरी अनुपस्थिति उचित ही थी। मैंने यथासंभव अनुपस्थिति का नाटक किया। इसलिए मैंने यह चोट मनगढ़ंत कहानी बनाई ताकि मैं जालसाजी न करूँ, विवाह दस्तावेजों में कोई त्रुटि न डालूँ, और हस्ताक्षर करने से बच सकूँ।”
मारियस हकलाया।
"इस का अर्थ क्या है?"
जीन वाल्जेन ने उत्तर दिया, "इसका अर्थ यह है कि मैं जलयानों में रहा हूँ।" “तुम मुझे पागल कर रहे हो!” मारियस ने भयभीत होकर कहा।
“महाशय पोंटमर्सी,” जीन वालजेन ने कहा, “मैं चोरी के जुर्म में उन्नीस साल तक जेल में रहा। फिर, दूसरी बार चोरी करने पर मुझे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। इस समय, मैंने अपना प्रतिबंध तोड़ दिया है।”
मारियस ने वास्तविकता से मुंह मोड़ने, तथ्य को नकारने, सबूतों का विरोध करने की व्यर्थ कोशिश की; उसे हार माननी पड़ी। वह समझने लगा, और जैसा कि ऐसे मामलों में अक्सर होता है, वह ज़रूरत से ज़्यादा समझ गया। एक भयानक ज्ञान की लहर उसके भीतर दौड़ गई; एक ऐसा विचार उसके मन में कौंध गया जिससे वह कांप उठा। उसे भविष्य में अपने लिए एक दुखद नियति की झलक दिखाई दी। “सब कुछ बताओ, सब कुछ बताओ!” वह चिल्लाया। “तुम कोसेट के पिता हो!”
और वह अवर्णनीय भय के साथ कुछ कदम पीछे हट गया।
जीन वाल्जेन ने इतने वैभवपूर्ण ढंग से अपना सिर उठाया कि ऐसा लगा मानो वह छत तक पहुंच गया हो।

“यह आवश्यक है कि आप मुझ पर विश्वास करें, महोदय; भले ही दूसरों के प्रति हमारी शपथ कानून में मान्य न हो…”

यहाँ वह रुका, फिर एक प्रकार के संप्रभु और गंभीर अधिकार के साथ, उसने धीरे-धीरे बोलते हुए और अक्षरों पर जोर देते हुए कहा:

“…आप मेरी बात मानेंगे। मैं कोसेट का पिता! भगवान के सामने, नहीं। महाशय बैरन पोंटमर्सी, मैं फेवरोल्स का एक किसान हूँ। मैं पेड़ काटकर अपना जीवन यापन करता हूँ। मेरा नाम फाउचेलेवेंट नहीं, बल्कि जीन वालजेन है। मेरा कोसेट से कोई संबंध नहीं है। आप निश्चिंत हो जाइए।”

मारियस हकलाते हुए बोला:

"मुझे यह कौन साबित करके दिखाएगा?"

“मैं। क्योंकि मैंने तुम्हें ऐसा बताया है।”

मारियस ने उस आदमी को देखा। वह उदास था फिर भी शांत था। ऐसी शांति से झूठ बोलना असंभव था। जो बर्फीला होता है वही सच्चा होता है। मकबरे की उस ठंड में सच्चाई का एहसास किया जा सकता था।

“मुझे आप पर विश्वास है,” मारियस ने कहा।

जीन वाल्जेन ने इस बात पर ध्यान देते हुए अपना सिर झुकाया और आगे कहा:

“कोसेट के लिए मैं क्या हूँ? एक राहगीर। दस साल पहले, मुझे पता भी नहीं था कि उसका अस्तित्व है। मैं उससे प्यार करता हूँ, यह सच है। बूढ़ा होकर इंसान उस बच्चे से प्यार करता है जिसे उसने बचपन में देखा हो। बुढ़ापे में इंसान सभी छोटे बच्चों के लिए दादा जैसा महसूस करता है। मुझे लगता है, आप शायद यह मान लें कि मेरे अंदर भी कुछ है जो दिल जैसा है। वह अनाथ थी। उसके न पिता थे, न माता। उसे मेरी ज़रूरत थी। इसीलिए मैंने उससे प्यार करना शुरू किया। बच्चे इतने कमज़ोर होते हैं कि जो भी उनके पास आता है, यहाँ तक कि मुझ जैसा आदमी भी, उनका रक्षक बन सकता है। मैंने कोसेट के प्रति अपना यह कर्तव्य निभाया है। मुझे नहीं लगता कि इतनी छोटी सी बात को अच्छा काम कहा जा सकता है; लेकिन अगर यह अच्छा काम है, तो ठीक है, कहिए कि मैंने इसे किया है। इस बात को याद रखिए। आज, कोसेट मेरे जीवन से जा रही है; हमारे रास्ते अलग हो रहे हैं। अब से, मैं उसके लिए कुछ नहीं कर सकता। वह मैडम पोंटमर्सी है।

उसकी किस्मत बदल गई है। और कोसेट को इस बदलाव से फायदा हुआ है। सब ठीक है। जहाँ तक छह लाख की बात है फ्रैंक, आपने मुझे इसके बारे में नहीं बताया, लेकिन मैं आपके विचार को पहले ही बता देता हूँ, यह एक जमा राशि है। यह जमा राशि मेरे पास कैसे आई? इससे क्या फर्क पड़ता है? मैं जमा राशि लौटा देता हूँ। मुझसे और कुछ नहीं माँगा जा सकता। मैं अपना असली नाम बताकर क्षतिपूर्ति पूरी करता हूँ। यह मेरे लिए मायने रखता है। मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि मैं कौन हूँ, इसके पीछे एक कारण है।

और जीन वाल्जेन ने मारियस के चेहरे की ओर सीधे देखा।

मारियस ने जो कुछ भी अनुभव किया वह उथल-पुथल भरा और असंगत था। नियति के कुछ झोंके हमारी आत्मा में इस तरह की लहरें पैदा करते हैं।

हम सभी ने कभी न कभी ऐसे संकट के क्षणों का सामना किया है, जिनमें हमारे भीतर सब कुछ बिखर जाता है; हम वही कह देते हैं जो हमारे मन में सबसे पहले आता है, जो हमेशा वही नहीं होता जो कहा जाना चाहिए। कभी-कभी अचानक ऐसे खुलासे हो जाते हैं जिन्हें सहन करना मुश्किल होता है और जो मादक शराब की तरह मदहोश कर देते हैं। मारियस अपने सामने आई इस नई स्थिति से इतना स्तब्ध रह गया कि उसने उस व्यक्ति से लगभग इस तरह बात की जैसे वह उसके इस खुलासे से नाराज़ हो।

“लेकिन क्यों,” उसने हैरानी से कहा, “तुम मुझे ये सब क्यों बता रही हो? तुम्हें ऐसा करने के लिए किसने मजबूर किया? तुम अपना राज़ अपने तक ही रख सकती थी। न तो तुम्हारी शिकायत की गई है, न ही तुम्हारा पीछा किया जा रहा है, न ही तुम्हें कोई परेशान कर रहा है। इस तरह का खुलासा करने के पीछे तुम्हारा कोई कारण ज़रूर होगा। अपनी बात स्पष्ट करो। कुछ और भी है। तुम ये कबूलनामा किस संदर्भ में कर रही हो? तुम्हारा मकसद क्या है?”

“मेरा मकसद?” जीन वाल्जेन ने इतनी धीमी और नीरस आवाज में जवाब दिया कि ऐसा लग रहा था मानो वह मारियस से नहीं बल्कि खुद से बात कर रहा हो। “आखिर किस मकसद से इस कैदी ने अभी-अभी कहा है, ‘मैं एक कैदी हूँ’? खैर, हाँ! मकसद अजीब है। यह ईमानदारी से है। रुकिए, दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि मेरे दिल में एक धागा है, जो मुझे जकड़ कर रखता है। बुढ़ापे में यह धागा और भी मजबूत हो जाता है। चारों ओर जीवन बिखरने लगता है; इंसान विरोध करता है। अगर मैं उस

धागे को तोड़ पाता, उसे तोड़ पाता, उसकी गांठ खोल पाता या उसे काट पाता, दूर जा पाता, तो मैं सुरक्षित होता। मुझे बस दूर जाना था; रू बोलोय में कुछ दुकानें हैं; आप खुश हैं; मैं जा रहा हूँ। मैंने उस धागे को तोड़ने की कोशिश की, उसे झटका दिया, वह टूटा नहीं, मैंने उसके साथ अपना दिल भी तोड़ दिया। फिर मैंने कहा: ‘मैं यहाँ के अलावा कहीं और नहीं रह सकता।’ मुझे यहीं रहना होगा। खैर, हाँ, आप सही हैं, मैं मूर्ख हूँ, यहीं क्यों न रहूँ? आप मुझे इस घर में एक कमरा देते हैं, मैडम पोंटमर्सी मुझसे बहुत लगाव रखती हैं, उन्होंने कुर्सी से कहा: ‘अपनी बाहें फैलाओ’ “तुम्हारे दादाजी मुझसे बेहतर कुछ नहीं चाहते, मैं उन्हें पसंद हूँ, हम साथ रहेंगे, साथ खाना खाएंगे, मैं कोसेट को अपना हाथ दूँगा… मैडम पोंटमर्सी, माफ कीजिएगा, यह एक आदत है, हमारे लिए एक ही छत, एक ही मेज, एक ही चूल्हा होगा, सर्दियों में एक ही चिमनी का कोना, गर्मियों में एक ही सैरगाह, यही खुशी है, यही आनंद है, यही सब कुछ है। हम एक परिवार की तरह रहेंगे। एक परिवार!”

उस शब्द को सुनते ही जीन वाल्जेन बेकाबू हो गया। उसने अपनी बाहें मोड़ लीं, अपने पैरों के नीचे ज़मीन को ऐसे घूरने लगा मानो वह उसमें कोई खाई खोद डालेगा, और उसकी आवाज़ अचानक गरजते हुए स्वर में ऊंची हो गई:

“एक परिवार के रूप में! नहीं। मैं किसी परिवार से संबंधित नहीं हूँ। मैं आपके परिवार से संबंधित नहीं हूँ। मैं किसी भी पुरुष परिवार से संबंधित नहीं हूँ। जिन घरों में लोग आपस में होते हैं, वहाँ मैं फालतू हूँ। परिवार तो हैं, लेकिन मेरे लिए ऐसा कुछ नहीं है। मैं एक अभागी हूँ; मुझे बाहर छोड़ दिया गया है। क्या मेरे माता-पिता थे? मुझे लगभग संदेह है। जिस दिन मैंने उस बच्ची का विवाह किया, सब कुछ समाप्त हो गया। मैंने उसे खुश देखा, और वह एक ऐसे व्यक्ति के साथ है जिससे वह प्यार करती है, और यहाँ एक दयालु बूढ़ा व्यक्ति है, दो देवदूतों का परिवार है, और उस घर में सभी खुशियाँ हैं, और सब कुछ ठीक था, मैंने खुद से कहा: 'तुम अंदर मत जाओ।' मैं झूठ बोल सकता था, यह सच है, आप सभी को धोखा दे सकता था, और मिस्टर फॉशेलवेंट बना रह सकता था। जब तक यह उसके लिए था, मैं झूठ बोल सकता था; लेकिन अब यह मेरे लिए होगा, और मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। मेरे लिए चुप रहना ही काफी था, यह सच है, और सब कुछ चलता रहता। आप मुझसे पूछते हैं कि मुझे किसने मजबूर किया है बोलना? एक बहुत ही अजीब बात; मेरा अंतरात्मा। चुप रहना बहुत आसान था, हालांकि। मैंने

पूरी रात खुद को इसके लिए मनाने की कोशिश में बिताई; आपने मुझसे सवाल किया, और मैंने अभी जो आपसे कहा है वह इतना असाधारण है कि आपको ऐसा करने का अधिकार है; ठीक है, हाँ, मैंने पूरी रात खुद को कारण बताने में बिताई, और मैंने खुद को बहुत अच्छे कारण दिए, मैंने वह सब किया जो मैं कर सकता था। लेकिन दो चीजें हैं जिनमें मैं सफल नहीं हुआ; उस धागे को तोड़ने में जो मुझे दिल से यहाँ जकड़ कर रखता है, या उस व्यक्ति को चुप कराने में जो अकेले में मुझसे धीरे से बात करता है। इसीलिए मैं आज सुबह आपको सब कुछ बताने यहाँ आया हूँ। सब कुछ या लगभग सब कुछ। आपको वह बताना बेकार है जो केवल मुझसे संबंधित है; मैं उसे अपने तक ही रखता हूँ। आप मुख्य बातें जानते हैं। इसलिए मैंने अपना रहस्य आपके सामने रखा है। और मैंने आपके सामने अपना राज़ खोल दिया है। यह निर्णय लेना आसान नहीं था। मैंने पूरी रात संघर्ष किया। आह! आपको लगता है कि मैंने खुद से यह नहीं कहा कि यह कोई शैंपमैथ्यू मामला नहीं है, कि अपना नाम छुपाकर मैंने किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाई, फॉशेलवेंट नाम मुझे स्वयं फॉशेलवेंट ने ही दिया था, उनके प्रति की गई सेवा के लिए कृतज्ञता के रूप में, और मैं निश्चित रूप से इसे बनाए रख सकता था, और मैं उस कमरे में खुश रह सकता था जो आप मुझे दे रहे हैं, कि मैं किसी के रास्ते में नहीं आऊँगा, कि मैं अपने छोटे से कोने में रहूँगा, और यह कि, जबकि आप कोसेट को अपने पास रखना चाहते, मुझे यह एहसास होता कि मैं उसके साथ एक ही घर में हूँ। हममें से प्रत्येक को अपनी-अपनी खुशी मिलती। यदि मैं महाशय फॉशेलवेंट बना रहता, तो सब कुछ व्यवस्थित हो जाता। हाँ, मेरी आत्मा को छोड़कर। मेरी सतह पर हर जगह आनंद था, लेकिन मेरी आत्मा की गहराई काली ही रही। खुश रहना ही काफी नहीं है, संतुष्ट होना भी आवश्यक है। इस प्रकार मैं महाशय फॉशेलवेंट बना रहता, इस प्रकार मैं अपना असली चेहरा छुपाता, इस प्रकार, आपके विस्तार की उपस्थिति में, मैं एक रहस्य बना रहता, इस प्रकार, आपके पूर्ण दोपहर के बीच, मुझमें परछाइयाँ होतीं, इस प्रकार, बिना ‘सावधान’ चिल्लाए, मैं सीधे-सीधे आपके चूल्हे के पास रसोई ले आता, मैं इस सोच के साथ आपकी मेज पर बैठ जाता कि अगर आपको पता चल जाए कि मैं कौन हूँ, तो आप मुझे वहाँ से भगा देंगे, मैं नौकरों से अपनी सेवा करवा लेता, जो अगर जान जाते तो कहते: ‘कितना भयानक!’ मैं आपको अपनी कोहनी से छू लेता, जिसे नापसंद करने का आपको पूरा अधिकार है, मैं आपके हाथों की थालियों को चुरा लेता! आपके घर में आदरणीय सफेद बालों और दागदार सफेद बालों के बीच सम्मान का विभाजन होता;

आपके सबसे अंतरंग क्षणों में, जब सभी दिल खुद को एक-दूसरे के लिए पूरी तरह से खुला समझते, जब हम चारों साथ होते, आपके दादाजी, आप दोनों और मैं, तब भी एक अजनबी मौजूद होता! मैं आपके जीवन में आपके साथ-साथ होता, मेरी एकमात्र चिंता यही होती कि मैं अपने भयानक गड्ढे के ढक्कन को न खोलूँ। इस प्रकार, मैं, एक मृत व्यक्ति, खुद को आप पर थोप देता जो जीवित प्राणी हैं। मैं उसे हमेशा के लिए अपने लिए अभिशप्त कर देता। आप, कोसेट और मैं हम तीनों के सिर हरी टोपी में! क्या यह तुम्हें सिहरन नहीं देता? मैं तो बस सबसे कुचला हुआ इंसान हूँ; मुझे तो सबसे राक्षसी इंसान होना चाहिए था। और मुझे वह अपराध हर दिन करना चाहिए था! और मेरे चेहरे पर हर दिन रात का वह चेहरा होना चाहिए था! हर दिन! और मुझे हर दिन अपने कलंक का एक हिस्सा तुम्हें देना चाहिए था! हर दिन! तुम्हें, मेरे प्यारे, मेरे बच्चों, तुम्हें, मेरे निर्दोष प्राणियों! क्या चुप रहना कोई बड़ी बात नहीं है? क्या मौन रहना कोई आसान बात है? नहीं, यह आसान नहीं है। एक मौन होता है जो झूठ बोलता है। और मेरा झूठ, मेरा छल, मेरा अपमान, मेरी कायरता, मेरा राजद्रोह और मेरा अपराध, मुझे बूंद-बूंद करके पी जाना चाहिए था, मुझे उसे थूक देना चाहिए था, फिर उसे निगल जाना चाहिए था, मुझे आधी रात को खत्म करना चाहिए था और दोपहर में फिर से शुरू करना चाहिए था, और मेरा 'शुभ प्रभात' झूठ होता, और मेरा 'शुभ रात्रि' झूठ होता, और मुझे उस पर सोना चाहिए था, मुझे उसे खाना चाहिए था, अपने साथ रोटी, और मुझे कोसेट की आँखों में देखना चाहिए था, और मुझे देवदूत की मुस्कान का जवाब शापित आत्मा की मुस्कान से देना चाहिए था, और मुझे एक घिनौना खलनायक होना चाहिए था! मैं ऐसा क्यों करूँ? खुश रहने के लिए। खुश रहने के लिए। क्या मुझे खुश रहने का अधिकार है? मैं जीवन से बाहर खड़ा हूँ, महोदय।

जीन वालजेन रुका। मारियस सुनता रहा। विचारों और पीड़ाओं की ऐसी श्रृंखला को रोका नहीं जा सकता। जीन वालजेन ने अपनी आवाज़ एक बार फिर धीमी कर ली, लेकिन अब वह नीरस आवाज़ नहीं थी—वह एक भयावह आवाज़ थी।

“तुम पूछते हो कि मैं क्यों बोलता हूँ? तुम कहते हो कि न तो मेरी निंदा की गई है, न मेरा पीछा किया गया है, न ही मेरी खोज की गई है। जी हाँ! मेरी निंदा की गई है! जी हाँ! मेरी खोज की गई है! किसके द्वारा? स्वयं मेरे द्वारा। मैं ही अपने रास्ते में रुकावट डालता हूँ, मैं स्वयं को घसीटता हूँ, मैं स्वयं

को धकेलता हूँ, मैं स्वयं को गिरफ्तार करता हूँ, मैं स्वयं को मार डालता हूँ, और जब कोई स्वयं को पकड़ता है, तो वह मजबूती से बंधा रहता है।”

और, उसने अपनी गर्दन के पिछले हिस्से से अपने कोट का एक हिस्सा पकड़कर मारियस की ओर बढ़ाया:

“क्या तुम वो मुट्ठी देख रहे हो?” उसने आगे कहा। “क्या तुम्हें नहीं लगता कि वो उस कॉलर को इस तरह जकड़े हुए है कि उसे छोड़ ही नहीं सकती? खैर! अंतरात्मा भी एक अलग ही पकड़ है! अगर कोई खुश रहना चाहता है, महोदय, तो उसे कभी भी कर्तव्य को नहीं समझना चाहिए; क्योंकि जैसे ही कोई इसे समझ लेता है, यह निर्दयी हो जाता है। कोई कहेगा कि यह आपको इसे समझने के लिए दंडित करता है; लेकिन नहीं, यह आपको पुरस्कृत करता है; क्योंकि यह आपको एक ऐसे नरक में ले जाता है, जहाँ आप ईश्वर को अपने पास महसूस करते हैं। जैसे ही कोई अपनी आँतों को चीरता है, उसे अपने आप से शांति मिल जाती है।”

और, उन्होंने भावुक लहजे में कहा:

“महाशय पोंटमर्सी, यह सामान्य ज्ञान की बात नहीं है, मैं एक ईमानदार आदमी हूँ। आपकी नज़रों में खुद को नीचा दिखाकर ही मैं अपनी नज़रों में ऊँचा उठता हूँ। ऐसा मेरे साथ पहले भी एक बार हो चुका है, लेकिन तब इतना कष्ट नहीं हुआ था; वह तो बस मामूली बात थी। हाँ, एक ईमानदार आदमी। अगर मेरी गलती के कारण आप मुझे सम्मान देते रहते तो मैं ईमानदार नहीं होता; अब जब आप मुझे तुच्छ समझते हैं, तो मैं ईमानदार हूँ। मुझ पर यह दुर्भाग्य छाया हुआ है कि मुझे हमेशा चोरी-छिपे सम्मान के अलावा कुछ नहीं मिल सकता, वह सम्मान मुझे अपमानित करता है, मुझे अंदर से कुचल देता है, और आत्मसम्मान बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि मुझे तुच्छ समझा जाए। फिर मैं सीधा खड़ा हो जाता हूँ। मैं एक दास हूँ जो अपने अंतरात्मा की सुनता है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यह बहुत ही असंभव है। लेकिन आप मुझसे इसके बारे में क्या चाहते हैं? यह सच्चाई है। मैंने खुद से वादे किए हैं; मैं उन्हें निभाता हूँ। कुछ मुलाक़ातें हमें बाँध देती हैं, कुछ मौके हमें कर्तव्यों में बाँध देते हैं। देखिए, महाशय पोंटमर्सी, कई चीजें हुई हैं यह घटना मेरे जीवन के दौरान मेरे साथ घटी।"

जीन वाल्जेन फिर रुका, बड़ी मुश्किल से अपनी लार निगलते हुए, मानो उसके शब्दों का स्वाद कड़वा हो, और फिर वह आगे बोला:

जब किसी पर ऐसा भयानक भय मंडरा रहा हो, तो उसे दूसरों को बिना बताए उसमें शामिल करने का कोई अधिकार नहीं है, उन्हें बिना उनकी जानकारी के अपनी खाई में धकेलने का कोई अधिकार नहीं है, अपनी लाल कमीज़ को उन पर घसीटने का कोई अधिकार नहीं है, दूसरों की खुशियों को अपने दुख से गुदगुदी करने का कोई अधिकार नहीं है। स्वस्थ लोगों के पास जाकर, अंधेरे में उन्हें अपने अल्सर से छूना घिनौना है। भले ही फॉशेलवेंट ने मुझे अपना नाम दिया हो, मुझे इसका उपयोग करने का कोई अधिकार नहीं है; वह मुझे यह नाम दे सकते थे, लेकिन मैं इसे ले नहीं सकता था। नाम एक 'मैं' है। आप देख रहे हैं, महोदय, कि मैंने कुछ सोचा है, मैंने थोड़ा पढ़ा है, हालाँकि मैं एक किसान हूँ; और आप देख रहे हैं कि मैं खुद को सही ढंग से व्यक्त करता हूँ। मैं चीजों को समझता हूँ। मैंने शिक्षा प्राप्त की है। हाँ, किसी नाम को अपनाकर खुद को उसके नीचे रखना बेईमानी है। वर्णमाला के अक्षर चुराए जा सकते हैं, जैसे पर्स या घड़ी। झूठा हस्ताक्षर करना बेईमानी है। हाड़-मांस में, एक जीती-जागती झूठी चाबी बनकर, ईमानदार लोगों के घर में ताला तोड़कर घुसना, कभी सीधी नज़र न रखना, हमेशा तिरछी निगाहों से देखना, भीतर ही भीतर बदनाम होना, नहीं! नहीं! नहीं! नहीं! नहीं! इससे बेहतर है कि दुख सहें, खून बहाएँ, रोएँ, अपने नाखूनों से अपनी त्वचा नोच लें, रातें पीड़ा में तड़पते हुए गुजारें, तन-मन से खुद को खा जाएँ। इसीलिए मैंने तुम्हें ये सब बताया है। जैसा कि तुम कहते हो, जानबूझकर।

उसने दर्द भरी साँस ली और अंत में ये अंतिम शब्द कहे:

“बीते दिनों में, मैं जीने के लिए रोटी चुराता था; आज, जीने के लिए, मैं किसी का नाम नहीं चुराऊंगा।”

“जीने के लिए!” मारियस ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “क्या जीने के लिए उस नाम की ज़रूरत नहीं होती?”

“आह! मैं मामला समझ गया,” जीन वाल्जेन ने अपना सिर कई बार ऊपर-नीचे करते हुए कहा।

सन्नाटा छा गया। दोनों चुप रहे, विचारों के गहरे सागर में डूबे हुए। मारियस एक मेज के पास बैठा था और अपनी मुड़ी हुई उंगली पर अपने होंठों का कोना टिकाए हुए था। जीन वाल्जेन इधर-उधर टहल रहा था। वह एक दर्पण के सामने रुका और स्थिर हो गया। फिर, मानो किसी अंतर्मन की प्रेरणा से, उसने दर्पण को देखते हुए कहा, जिसे वह देख नहीं पा रहा था:

"फिलहाल, मुझे राहत मिली है।"

उसने फिर से चलना शुरू किया और ड्राइंग रूम के दूसरे छोर तक चला गया। जैसे ही वह मुड़ा, उसने देखा कि मारियस उसे देख रहा है। फिर उसने एक अवर्णनीय स्वर में कहा:

मैं अपना पैर थोड़ा घसीटता हूँ। अब आपको समझ आ गया होगा कि क्यों!

फिर वह पूरी तरह से मारियस की ओर मुड़ गया:

“और अब, महोदय, यह कल्पना कीजिए: मैंने कुछ नहीं कहा, मैं महाशय फॉशेलवेंट ही बना रहा, मैंने आपके घर में अपना स्थान ग्रहण कर लिया, मैं आप में से एक हूँ, मैं अपने कमरे में हूँ, मैं सुबह नाश्ते के लिए चप्पल पहनकर आता हूँ, शाम को हम तीनों नाटक देखने जाते हैं, मैं मैडम पोंटमर्सी के साथ ट्यूलरीज़ और प्लेस रॉयल जाता हूँ, हम साथ हैं, आप मुझे अपना बराबर समझते हैं; एक दिन आप वहाँ हैं, और मैं वहाँ हूँ, हम बातें कर रहे हैं, हम हँस रहे हैं; अचानक, आपको एक आवाज़ सुनाई देती है जो यह नाम चिल्ला रही है: ‘जीन वालजीन!’ और देखिए, वह भयानक हाथ, पुलिस, अंधेरे से झपट्टा मारता है, और अचानक मेरा मुखौटा फाड़ देता है!”

वह फिर रुका; मारियस कांपते हुए उछल पड़ा। जीन वाल्जेन ने फिर बोलना शुरू किया:

"उस बारे में आप क्या कहेंगे?"

मारियस की चुप्पी ने उसके लिए जवाब दे दिया।

जीन वालजेन ने आगे कहा:

“आप देख सकते हैं कि चुप न रहना मेरा सही निर्णय है। खुश रहिए, स्वर्ग में रहिए, देवदूतों के देवदूत बनिए, सूर्य के प्रकाश में रहिए, उसी में संतुष्ट रहिए, और उस बेचारे पापी के बारे में चिंता मत कीजिए जो अपने दिल की बात

कहने और अपने कर्तव्य को प्रकट करने के लिए तरीके अपनाता है; महोदय, आपके सामने एक पापी व्यक्ति है।”

मारियस धीरे-धीरे कमरे को पार करते हुए आगे बढ़ा, और जब वह जीन वाल्जेन के काफी करीब पहुंच गया, तो उसने बाद वाले को अपना हाथ बढ़ाया।

लेकिन मारियस को आगे बढ़कर वह हाथ थामना पड़ा जो उसने नहीं बढ़ाया था, जीन वाल्जेन ने उसे अपनी मनमानी करने दी, और मारियस को ऐसा लगा जैसे वह संगमरमर के हाथ को दबा रहा हो।

“मेरे दादाजी के दोस्त हैं,” मारियस ने कहा; “मैं आपकी क्षमा दिलवा दूंगा।”

“यह व्यर्थ है,” जीन वालजेन ने उत्तर दिया। “मुझे मृत मान लिया गया है, और यही पर्याप्त है। मृतकों पर निगरानी नहीं रखी जाती। उन्हें शांति से सड़ने दिया जाता है। मृत्यु क्षमा के समान है।”

और, मारियस के हाथ को छुड़ाते हुए, उन्होंने एक प्रकार की अटल गरिमा के साथ कहा:

"इसके अलावा, जिस मित्र की शरण मैं लेता हूँ, वह मेरा कर्तव्य है; और मुझे केवल एक ही क्षमा की आवश्यकता है, वह है मेरी अंतरात्मा की क्षमा।"

उसी क्षण, ड्राइंग रूम के दूसरे छोर पर स्थित एक दरवाजा धीरे से आधा खुला, और उस खुले दरवाजे से कोसेट का सिर दिखाई दिया। उन्होंने केवल उसका प्यारा चेहरा देखा, उसके बाल मनमोहक ढंग से बिखरे हुए थे, उसकी पलकें अभी भी नींद से भरी हुई थीं। उसने एक चिड़िया की तरह अपने घोंसले से सिर बाहर निकाला, पहले अपने पति की ओर देखा, फिर जीन वालजेन की ओर, और मुस्कुराते हुए उनसे कहा, मानो वे किसी गुलाब के दिल में खिली मुस्कान को देख रहे हों।

मैं शर्त लगाता हूँ कि तुम राजनीति की बातें कर रहे हो। मेरे साथ रहने के बजाय राजनीति की बातें करना कितना बेवकूफी भरा है!

जीन वाल्जेन सिहर उठा।

“कोसेट!…” मारियस हकलाते हुए बोला।

और वह रुक गया। कोई भी कह सकता था कि वे दोनों अपराधी थे।

कोसेट, जो बेहद खूबसूरत लग रही थी, उन दोनों को निहारती रही। उसकी आँखों में स्वर्ग की चमक जैसी कोई चीज थी।

“मैंने तुम्हें रंगे हाथों पकड़ लिया है,” कोसेट ने कहा। “अभी-अभी मैंने दरवाजे के पीछे से अपने पिता फॉशेलवेंट को यह कहते हुए सुना: ‘अंतरात्मा… अपना कर्तव्य निभा रही है…’ यही तो राजनीति है, बिल्कुल। मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगी। लोगों को अगले ही दिन राजनीति की बात नहीं करनी चाहिए। यह ठीक नहीं है।”

“तुम गलत समझ रही हो। कोसेट,” मारियस ने कहा, “हम व्यापार की बात कर रहे हैं। हम तुम्हारे छह लाख फ्रैंक के सर्वोत्तम निवेश पर चर्चा कर रहे हैं…”

“ऐसा बिल्कुल नहीं है,” कोसेट ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “मैं आ रही हूँ। क्या यहाँ किसी को मेरी ज़रूरत है?”

और दृढ़ता से दरवाजे से होते हुए वह ड्राइंग रूम में दाखिल हुई। उसने एक विशाल सफेद ड्रेसिंग गाउन पहना हुआ था, जिसमें हजारों तहें थीं और बड़ी- बड़ी आस्तीनें थीं जो गर्दन से शुरू होकर उसके पैरों तक लटक रही थीं। प्राचीन गोथिक चित्रों के सुनहरे आकाश में, ऐसे मनमोहक वस्त्र दिखाई देते हैं जो स्वर्गदूतों के वस्त्रों के लिए उपयुक्त हैं।

उसने एक लंबे दर्पण में खुद को सिर से पैर तक निहारा, फिर असीम आनंद से भर कर कहा:

“एक समय की बात है, एक राजा और एक रानी थे। ओह! मैं कितना खुश हूँ!”

इसके बावजूद, उसने मारियस और जीन वाल्जेन के सामने झुककर अभिवादन किया।

“लो,” उसने कहा, “मैं तुम्हारे पास ही एक आरामकुर्सी पर बैठ जाती हूँ, आधे घंटे में नाश्ता करेंगे, तुम जो चाहो कह सकते हो, मुझे अच्छी तरह पता है कि पुरुषों को बात करना जरूरी होता है, और मैं बहुत अच्छी तरह से बात करूंगी।”

मारियस ने उसका हाथ पकड़ा और प्यार से उससे कहा:

हम व्यापार की बात कर रहे हैं।

“वैसे,” कोसेट ने कहा, “मैंने अपनी खिड़की खोली है, बगीचे में पियरोट पक्षियों का एक झुंड आ गया है—पक्षी, नकाबपोश नहीं। आज ऐश वेडनेसडे है; लेकिन पक्षियों के लिए नहीं।”

“मैं तुमसे कहता हूँ कि हम व्यापार की बात कर रहे हैं, जाओ, मेरी प्यारी कोसेट, हमें थोड़ी देर के लिए अकेला छोड़ दो। हम आंकड़ों की बात कर रहे हैं। इससे तुम ऊब जाओगी।”

"आज सुबह आप पर बड़ी प्यारी टाई लगी है, मारियस। आप बहुत सजे-धजे लग रहे हैं, महाशय। नहीं, इससे मुझे बोरियत नहीं होगी।"

मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि यह आपको बोर कर देगा।

नहीं। क्योंकि तुम हो, मैं तुम्हें समझ तो नहीं पाऊँगी, पर सुनूँगी। जब कोई अपने प्रियजनों की आवाज़ सुनता है, तो उसे उनके शब्दों को समझने की ज़रूरत नहीं होती। हम यहाँ साथ हों—बस यही मेरी इच्छा है। मैं तुम्हारे साथ रहूँगी, वाह!

“तुम मेरी प्यारी कोसेट हो! असंभव।”

"असंभव!"

"हाँ।"

“बहुत बढ़िया,” कोसेट ने कहा। “मैं तुम्हें कुछ खबर सुनाने वाली थी। मैं तुम्हें बता सकती थी कि तुम्हारे दादाजी अभी भी सो रहे हैं, तुम्हारी चाची प्रार्थना में गई हैं, मेरे पिता फॉशेलवेंट के कमरे की चिमनी से धुआँ निकल रहा है, निकोलेट ने चिमनी साफ करने वाले को बुलाया है, टूसेंट और निकोलेट का पहले ही झगड़ा हो चुका है, और निकोलेट टूसेंट के हकलाने का मज़ाक उड़ाती है। खैर, तुम्हें कुछ पता नहीं चलेगा। आह! क्या यह असंभव है? आप देखेंगे, सज्जनों, कि मैं भी कह सकती हूँ: यह असंभव है। तो फिर कौन पकड़ा जाएगा? मैं तुमसे विनती करती हूँ, मेरे प्यारे मारियस, मुझे तुम दोनों के साथ यहीं रहने दो।”

मैं तुमसे शपथ लेता हूँ कि हमारा अकेले रहना अपरिहार्य है।

"तो क्या मैं कोई खास व्यक्ति हूँ?"

जीन वाल्जेन ने एक शब्द भी नहीं बोला था। कोसेट उसकी ओर मुड़ी:

“सबसे पहले तो, पिताजी, मैं चाहती हूँ कि आप आकर मुझे गले लगाएँ। मेरा पक्ष लेने के बजाय चुप रहकर आप क्या कहना चाहते हैं? मुझे ऐसा पिता किसने दिया? आपको समझना चाहिए कि मेरा पारिवारिक जीवन बहुत दुखी है। मेरे पति मुझे पीटते हैं। आइए, मुझे तुरंत गले लगाइए।”
जीन वाल्जेन पास आया।
कोसेट ने मारियस की ओर रुख किया।
"जहाँ तक तुम्हारी बात है, मैं तुम्हें मुँह बनाकर चिढ़ाऊँगा।"
फिर उसने अपना माथा जीन वालजेन के सामने प्रस्तुत किया।
जीन वाल्जेन उसकी ओर एक कदम आगे बढ़ा।
कोसेट पीछे हट गई।
“पिताजी, आपका चेहरा पीला पड़ गया है। क्या आपके हाथ में दर्द हो रहा है?” “सब ठीक है,” जीन वालजेन ने कहा।
क्या आपकी नींद खराब हुई?
"नहीं।"
"क्या आप दुखी हैं?"
"नहीं।"
"अगर तुम स्वस्थ हो, अच्छी नींद लेते हो, संतुष्ट हो, तो मुझे गले लगाओ, मैं तुम्हें डांटूंगा नहीं।"
और उसने फिर से उसे अपना माथा भेंट किया।
जीन वाल्जेन ने उस माथे पर एक चुंबन दिया जिस पर एक दिव्य चमक टिकी हुई थी।
"मुस्कान।"
जीन वाल्जेन ने आज्ञा का पालन किया। वह एक प्रेत की मुस्कान थी।
अब, मेरे पति के खिलाफ मेरी रक्षा करो।
“कोसेट!…” मारियस ने कहा।

“गुस्सा हो जाइए, पिताजी। कहिए कि मुझे यहीं रहना होगा। आप मुझसे पहले बोल सकते हैं। तो आप मुझे बहुत मूर्ख समझते हैं? आपकी बातें तो आश्चर्यजनक हैं! व्यापार, बैंक में पैसा जमा करना सचमुच एक बड़ी बात है। लोग छोटी-छोटी बातों को रहस्य बना देते हैं। मैं आज सुबह बहुत सुंदर लग रही हूँ। मुझे देखिए, मारियस।”
और कंधों को मनमोहक ढंग से उचकाते हुए और एक अवर्णनीय रूप से सुंदर पाउट बनाते हुए, उसने मारियस की ओर देखा।
“मैं तुमसे प्यार करता हूँ!” मारियस ने कहा।
“मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ!” कोसेट ने कहा।
और वे एक-दूसरे की बाहों में अनायास ही समा गए।
“अब,” कोसेट ने अपनी ड्रेसिंग गाउन की तह को ठीक करते हुए, एक विजयी भाव से थोड़ा मुंह बनाते हुए कहा, “मैं यहीं रुकूंगी।”
“नहीं, वो नहीं,” मारियस ने विनती भरे स्वर में कहा। “हमें कुछ तो खत्म करना ही होगा।”
"अभी तक कोई नहीं?"
मारियस ने गंभीर स्वर अपना लिया:
"मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, कोसेट, कि यह असंभव है।"
आह! आप मर्दों वाली आवाज़ में बात कर रहे हैं, महोदय। अच्छा है, मैं जा रही हूँ। पिताजी, आपने मेरा साथ नहीं दिया। मेरे पिता जी, मेरे पति जी, आप दोनों ज़ालिम हैं। मैं जाकर दादाजी को बता दूँगी। अगर आपको लगता है कि मैं लौटकर आपसे मीठी-मीठी बातें करूँगी, तो आप गलत हैं। मुझे गर्व है। मैं अब आपका इंतज़ार करूँगी। आप देखेंगे कि मेरे बिना आप ही ऊब जाएँगे। मैं जा रही हूँ, अच्छा है।
और वह कमरे से चली गई।
दो सेकंड बाद, दरवाजा एक बार फिर खुला, उसका ताजा और गुलाबी सिर फिर से दोनों पत्तों के बीच आ गया, और वह उनसे रोने लगी:
मुझे वाकई बहुत गुस्सा आ रहा है।

दरवाजा फिर से बंद हो गया, और अंधेरा एक बार फिर छा गया।

ऐसा लग रहा था मानो सूर्य की एक किरण अचानक रात के अंधेरे को पार कर गई हो, और उसे इसका एहसास भी न हो।

मारियस ने यह सुनिश्चित किया कि दरवाजा अच्छी तरह से बंद हो।

“बेचारी कोसेट!” उसने गुनगुनाते हुए कहा, “जब उसे पता चलेगा…”

उस शब्द को सुनते ही जीन वाल्जेन का पूरा शरीर कांप उठा। उसने मारियस को हैरानी भरी निगाहों से देखा।

“कोसेट! ओह हाँ, यह सच है, आप कोसेट को इसके बारे में बताने वाले हैं। बिल्कुल सही। रुकिए, मैंने इसके बारे में सोचा ही नहीं था। एक बात के लिए तो हिम्मत होती है, दूसरी के लिए नहीं। महोदय, मैं आपसे विनती करता हूँ, महोदय, मुझे अपना पवित्र वचन दीजिए कि आप उसे नहीं बताएंगे। क्या इतना काफी नहीं है कि आप इसे जानते हों? मैं इसे बिना किसी दबाव के खुद कह पाया हूँ, मैं इसे पूरी दुनिया को बता सकता था—मेरे लिए तो यह सब एक ही था। लेकिन वह, वह नहीं जानती कि यह क्या है, यह उसे डरा देगा। अरे, एक कैदी! हमें उसे समझाना पड़ेगा, उससे कहना पड़ेगा: ‘यह एक ऐसा आदमी है जो जेल में रह चुका है।’ उसने एक दिन जंजीरों में जकड़े कैदियों के समूह को गुजरते देखा। हे भगवान!”… वह एक कुर्सी पर बैठ गया और अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया।

उसका दुख सुनाई नहीं दे रहा था, लेकिन उसके कंधों के कांपने से स्पष्ट था कि वह रो रहा था। खामोश आंसू, भयानक आंसू।

उसकी सिसकियों में घुटन का भाव था। उसे एक तरह का दौरा पड़ा, उसने सांस लेने के लिए खुद को कुर्सी के पीछे पटक दिया, अपनी बाहों को नीचे गिरा दिया, जिससे मारियस को उसका आंसुओं से भीगा हुआ चेहरा दिखाई दिया, और मारियस ने उसे इतनी धीमी आवाज में बड़बड़ाते हुए सुना कि उसकी आवाज अथाह गहराई से आती हुई प्रतीत हुई।

“काश! मैं मर सकता!”

“आप निश्चिंत रहें,” मारियस ने कहा, “मैं आपका रहस्य केवल अपने पास ही रखूंगा।”

और, शायद जितना उन्हें प्रभावित होना चाहिए था, उससे कम प्रभावित होकर, लेकिन अंतिम समय में, खुद को एक ऐसी चीज से परिचित कराने के लिए मजबूर होकर जो जितनी अप्रत्याशित थी उतनी ही भयानक भी थी, धीरे-धीरे अपनी आंखों के सामने एम. फॉशेलवेंट के ऊपर कैदी को आरोपित होते हुए देखकर, उस दुखद वास्तविकता से धीरे-धीरे अभिभूत होकर, और स्थिति की स्वाभाविक प्रवृत्ति से प्रेरित होकर, उस व्यक्ति और खुद के बीच अभी-अभी स्थापित हुई दूरी को पहचानते हुए, मारियस ने आगे कहा:

“आपके द्वारा पूरी निष्ठा और ईमानदारी से जमा की गई राशि के बारे में आपसे बात न करना असंभव है। यह तो सत्यनिष्ठा का कार्य है। आपको कुछ प्रतिफल मिलना उचित है। राशि आप स्वयं तय कर लें, आपको उसका भुगतान कर दिया जाएगा। इसे अधिक रखने में संकोच न करें।”

“धन्यवाद, महोदय,” जीन वाल्जेन ने विनम्रता से उत्तर दिया।

वह एक पल के लिए सोच में डूबा रहा, यंत्रवत रूप से अपनी तर्जनी उंगली के सिरे को अपने अंगूठे के नाखून पर फेरता रहा, फिर उसने अपनी आवाज उठाई:

“सब कुछ लगभग समाप्त हो गया है। लेकिन मेरे लिए एक आखिरी काम बाकी है…”

"यह क्या है?"

जीन वाल्जेन अंतिम हिचकिचाहट से जूझ रहे थे, और बिना आवाज और बिना सांस के, वे बोलने के बजाय हकलाने लगे:

"अब जब आपको पता चल गया है, तो क्या आपको लगता है, महोदय, आप, जो स्वामी हैं, कि मुझे कोसेट से अब और नहीं मिलना चाहिए?"

"मुझे लगता है कि यह बेहतर होगा," मारियस ने ठंडे लहजे में जवाब दिया।

“मैं उसे अब कभी नहीं देख पाऊंगा,” जीन वालजेन ने धीरे से कहा। और वह दरवाजे की ओर बढ़ गया।

उसने दरवाज़े की कुंडी पर हाथ रखा, कुंडी खुली और दरवाज़ा खुल गया। जीन वाल्जेन ने उसे इतना खोला कि वह अंदर जा सके, एक पल के लिए स्तब्ध खड़ा रहा, फिर दरवाज़ा बंद कर दिया और मारियस की ओर मुड़ गया।

अब उसका चेहरा पीला नहीं था, बल्कि वह क्रोध से लाल था। उसकी आँखों में अब आँसू नहीं थे, बल्कि एक तरह की दुखभरी ज्वाला थी। उसकी आवाज़ में एक अजीब सी गंभीरता लौट आई थी।

“आप यहीं रुकिए, महोदय,” उन्होंने कहा। “अगर आप इजाज़त दें, तो मैं उससे मिलने आऊँगा। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि मेरी उससे मिलने की बहुत इच्छा है। अगर मुझे कोसेट से मिलने की इतनी चाह न होती, तो मैं आपसे ये बात न कहता, मैं चला जाता; लेकिन, क्योंकि मैं कोसेट के साथ रहना चाहता था और उससे मिलता रहना चाहता था, इसलिए मुझे आपको ईमानदारी से बताना पड़ा। आप मेरी बात समझ रहे हैं, है ना? ये तो आसानी से समझ में आने वाली बात है। देखिए, वो नौ साल से ज़्यादा समय से मेरे साथ है। हम पहले बुलेवार्ड पर उस झोपड़ी में रहे, फिर कॉन्वेंट में, फिर लक्ज़मबर्ग के पास। वहीं आपने उसे पहली बार देखा था। आपको उसकी नीली मखमली टोपी याद है। फिर हम क्वार्टियर डेस इनवैलिड्स गए, जहाँ एक बगीचे पर रेलिंग थी, रू प्लूमेट। मैं एक छोटे से पिछवाड़े वाले आँगन में रहता था, जहाँ से मैं उसका पियानो सुन सकता था। यही मेरी ज़िंदगी थी। हम कभी एक-दूसरे से अलग नहीं हुए। ये नौ साल और कुछ महीनों तक चला। मैं उसके लिए पिता समान था, और वो मेरी। बच्चे। मुझे नहीं पता कि आप समझते हैं या नहीं, महाशय पोंटमर्सी, लेकिन अब चले जाना, उसे फिर कभी न देख पाना, उससे फिर कभी बात न कर पाना, और कुछ भी न होना, बहुत मुश्किल होगा। अगर आपको कोई आपत्ति नहीं है, तो मैं कोसेट से समय-समय पर मिलने आऊँगा। मैं बार-बार नहीं आऊँगा। मैं ज़्यादा देर नहीं रुकूँगा। आप आदेश दे दीजिए कि मुझे छोटे से प्रतीक्षालय में, भूतल पर, स्वागत किया जाए। मैं पीछे के दरवाज़े से भी आसानी से आ सकता हूँ, लेकिन इससे शायद हैरानी हो सकती है, और मुझे लगता है कि मेरे लिए सामान्य दरवाज़े से आना बेहतर होगा। सचमुच, महोदय, मैं कोसेट को थोड़ा और देखना चाहता हूँ। जितनी बार आप चाहें। खुद को मेरी जगह रखकर देखिए, मेरे पास इसके अलावा कुछ नहीं बचा है। और फिर, हमें सावधान रहना होगा। अगर मैं बिल्कुल भी न आऊँ, तो इसका बुरा असर पड़ेगा, इसे अजीब माना जाएगा। वैसे, मैं दोपहर में आ सकता हूँ, जब रात होने लगती है।

“तुम हर शाम आना,” मारियस ने कहा, “और कोसेट तुम्हारा इंतजार कर रही होगी।”

“आप बहुत दयालु हैं, महोदय,” जीन वाल्जेन ने कहा।

मारियस ने जीन वाल्जेन को सलाम किया, खुशी ने निराशा को दरवाजे तक पहुँचा दिया, और ये दोनों व्यक्ति अलग हो गए।

II. रहस्योद्घाटन में निहित अस्पष्टताएँ

मारियस काफी परेशान था।

कोसेट के साथ जिस व्यक्ति को उसने देखा था, उसके प्रति उसके मन में जो अलगाव की भावना हमेशा से थी, अब उसे समझ आ गई। उस व्यक्ति में कुछ रहस्यमय था, जिसके बारे में उसकी अंतरात्मा ने उसे आगाह किया था।

यह रहस्य सबसे घिनौनी बदनामी थी, जहाजों का जखीरा। यह एम. फॉशेलवेंट ही कैदी जीन वालजेन था।

खुशी के बीच अचानक ऐसे रहस्य का पता चलना, कबूतरों के घोंसले में बिच्छू मिलने जैसा है।

क्या मारियस और कोसेट की खुशी हमेशा के लिए ऐसे ही पड़ोस तक सीमित हो गई थी? क्या यह एक तयशुदा बात थी? क्या उस आदमी को स्वीकार करना अब संपन्न हो चुके विवाह का एक हिस्सा था? क्या कुछ भी नहीं किया जा सकता था?

क्या मारियस ने भी उस अपराधी से शादी कर ली थी?

प्रकाश और आनंद से सुशोभित होना व्यर्थ है, जीवन के भव्य स्वर्णिम क्षण का स्वाद लेना व्यर्थ है, सुखी प्रेम का अनुभव करना व्यर्थ है, ऐसे झटके परमानंद में डूबे महादूत को भी, महिमा में डूबे देवता को भी कंपकंपा देंगे।

इस तरह के दृष्टिकोण में बदलाव के समय हमेशा की तरह, मारियस ने खुद से पूछा कि क्या उसके पास खुद को दोष देने के लिए कुछ भी नहीं है? क्या उसमें दूरदर्शिता की कमी थी? क्या उसमें विवेक की कमी थी? क्या उसने अनजाने में अपनी बुद्धि को कुंद कर दिया था? शायद थोड़ा-बहुत। क्या उसने कोसेट से विवाह के रूप में समाप्त हुए इस प्रेम संबंध में आसपास के माहौल को समझने के लिए पर्याप्त सावधानी बरते बिना प्रवेश किया था? उसने स्वीकार किया— यह इसी तरह है, स्वयं के बारे में लगातार स्वीकारोक्तियों के माध्यम से, जीवन हमें धीरे-धीरे सुधारता है—उसने अपने स्वभाव के काल्पनिक और स्वप्निल पक्ष को स्वीकार किया, एक प्रकार का आंतरिक बादल जो कई संगठनों

में पाया जाता है, और जो जुनून और दुख के आवेगों में, आत्मा के तापमान में परिवर्तन के साथ फैलता है, और पूरे व्यक्ति पर इस हद तक हावी हो जाता है कि वह धुंध में डूबी हुई अंतरात्मा से अधिक कुछ नहीं रह जाता। हमने मारियस के व्यक्तित्व के इस विशिष्ट तत्व का एक से अधिक बार उल्लेख किया है।

उन्हें याद आया कि प्रेम के नशे में चूर होकर, रू प्लूमेट में, उन छह-सात हफ़्तों के दौरान, जब प्रेम का उन्माद छाया हुआ था, उन्होंने कोसेट से गोरब्यू की झोपड़ी में घटी उस घटना का ज़िक्र तक नहीं किया था, जहाँ पीड़ित ने संघर्ष और उसके बाद भागने के दौरान सन्नाटा छाए रखा था। ऐसा कैसे हो गया कि उन्होंने कोसेट को इसके बारे में नहीं बताया? जबकि यह घटना इतनी नज़दीक और इतनी भयानक थी! ऐसा कैसे हुआ कि उन्होंने थेनार्डियर परिवार का नाम तक नहीं लिया, और विशेष रूप से उस दिन का जब उनकी मुलाकात एपोनिन से हुई थी? अब उन्हें उस समय की अपनी चुप्पी को समझाना लगभग मुश्किल लग रहा था। फिर भी, वे इसका कारण बता सकते थे। उसे अपनी सुन्न अवस्था, कोसेट के प्रति अपने मदहोशी भरे आकर्षण, प्रेम के सब कुछ समाहित कर लेने, एक-दूसरे में आदर्श रूप से विलीन हो जाने का वह क्षण याद आया, और शायद साथ ही, आत्मा की इस उग्र और मनमोहक अवस्था में मिश्रित तर्क की अगोचर मात्रा की तरह, एक अस्पष्ट, सुस्त प्रवृत्ति भी जो उसे उस दुर्जेय साहसिक कार्य को, जिसके संपर्क से वह भयभीत था, जिसमें वह कोई भूमिका नहीं निभाना चाहता था, अपनी उस भूमिका को जिसे उसने गुप्त रखा था, और जिसमें वह एक अभियोक्ता बने बिना न तो कथाकार हो सकता था और न ही गवाह, सब कुछ याद आया।

इसके अलावा, ये कुछ सप्ताह बिजली की एक चमक की तरह थे; प्यार के अलावा किसी और चीज के लिए समय ही नहीं था।

संक्षेप में, सब कुछ तौलने, हर बात पर विचार करने, हर चीज़ की जाँच करने के बाद, चाहे जो भी परिणाम होते अगर उसने कोसेट को गोरब्यू के हमले के बारे में बता दिया होता, यहाँ तक कि अगर उसे पता चल जाता कि जीन वालजेन एक अपराधी है, तो क्या इससे मारियस बदल जाता? क्या इससे कोसेट बदल जाती? क्या वह पीछे हट जाता? क्या उसका प्यार कोसेट के लिए कम हो जाता? क्या वह उससे शादी करने से हिचक जाता? नहीं। तब पछताने जैसा कुछ नहीं था, खुद को दोष देने जैसा कुछ नहीं था। सब ठीक था। उन मदहोश लोगों के लिए भी एक देवता है जिन्हें प्रेमी कहा जाता है। अंधा मारियस उस रास्ते पर चला था जिसे वह तब

चुनता जब उसकी दृष्टि पूरी तरह ठीक होती। प्रेम ने उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी थी, ताकि उसे कहाँ ले जाए? स्वर्ग में।

लेकिन अब इस स्वर्ग के साथ एक भयावह भयावहता भी जुड़ गई।

इस व्यक्ति के प्रति, उस फाउचेलेवेंट के प्रति, जो जीन वालजेन में बदल गया था, मारियस का प्राचीन अलगाव वर्तमान में भय के साथ मिश्रित था।

इस भयावह घटना में, हम यह कहना चाहेंगे कि कुछ दया और यहाँ तक कि एक निश्चित आश्चर्य भी था।

इस चोर ने, इस चोर ने दूसरी बार अपराध किया था, वह जमा राशि लौटा दी थी। और क्या जमा राशि थी! छह लाख फ्रैंक।

उस खजाने के रहस्य की जानकारी केवल उसी को थी। हो सकता है उसने वह सब कुछ अपने पास रखा हो, या उसने वह सब कुछ लौटा दिया हो।

इसके अलावा, उसने स्वयं अपनी स्थिति प्रकट की थी। उसे ऐसा करने के लिए किसी ने मजबूर नहीं किया था। यदि किसी को पता चला कि वह कौन है, तो वह स्वयं उसके द्वारा ही पता चला। इस स्वीकारोक्ति में अपमान को स्वीकार करने से कहीं अधिक कुछ था, इसमें खतरे को स्वीकार करना भी शामिल था। एक दोषी व्यक्ति के लिए, मुखौटा मुखौटा नहीं, बल्कि एक आश्रय होता है। एक झूठा नाम सुरक्षा है, और उसने उस झूठे नाम को अस्वीकार कर दिया था। वह, एक दास, एक ईमानदार परिवार में हमेशा के लिए छिप सकता था; उसने इस प्रलोभन का विरोध किया था। और किस कारण से? अंतरात्मा की आवाज़ से। उसने स्वयं इसे सत्य के अचूक स्वर में समझाया। संक्षेप में, यह जीन वालजेन जो भी हो, वह निस्संदेह एक जागृत अंतरात्मा था। कोई रहस्यमय पुनर्वास शुरू हो चुका था; और, सभी दृष्टियों से, अंतरात्मा की आवाज़ ने लंबे समय से इस व्यक्ति को नियंत्रित किया हुआ था। न्याय और अच्छाई के ऐसे आवेग सामान्य स्वभावों की विशेषता नहीं होते। अंतरात्मा का जागरण आत्मा की महानता है।

जीन वाल्जेन ईमानदार थे। उनकी यह ईमानदारी, जो प्रत्यक्ष, स्पष्ट और अकाट्य थी, और उनके द्वारा उत्पन्न दुःख से ही प्रकट होती थी, ने सभी पूछताछों को निरर्थक बना दिया और उस व्यक्ति द्वारा कही गई हर बात को प्रामाणिकता प्रदान की।

मारियस के लिए यहाँ परिस्थितियों का एक अजीब उलटफेर था। एम. फॉशेलवेंट से क्या झलक रहा था? अविश्वास। जीन वालजेन से क्या प्रेरणा मिल रही थी? विश्वास।

जीन वाल्जेन के उस रहस्यमय संतुलन में, जिसे चिंतनशील मारियस ने स्थापित किया था, उसने सक्रिय सिद्धांत को स्वीकार किया, उसने निष्क्रिय सिद्धांत को स्वीकार किया, और उसने संतुलन तक पहुंचने का प्रयास किया।

लेकिन यह सब एक तूफान की तरह चलता रहा। मारियस, इस व्यक्ति के बारे में स्पष्ट धारणा बनाने का प्रयास करते हुए, और जीन वाल्जेन का, मानो उसके विचारों की गहराई में, पीछा करते हुए, उसे खो बैठा और फिर एक घातक धुंध में उसे फिर से पाया।

ईमानदारी से लौटाई गई जमा राशि, कबूलनामे की सत्यनिष्ठा—ये अच्छी बातें थीं। इससे बादल छंट गए, फिर बादल दोबारा काले हो गए।

मारियस की यादें भले ही परेशान करने वाली थीं, लेकिन उनकी एक धुंधली सी झलक उसे वापस याद आ गई।

आखिर जोंड्रेट के अटारी में वह घटना हुई क्या थी? पुलिस के आने पर उस आदमी ने शिकायत दर्ज कराने के बजाय भागने की कोशिश क्यों की?

मारियस को यहीं जवाब मिल गया। क्योंकि वह व्यक्ति कानून से भागा हुआ अपराधी था, जिसने अपने ऊपर लगे प्रतिबंध का उल्लंघन किया था।

एक और सवाल: वह आदमी बैरिकेड पर क्यों आया था?

मारियस को अब एक बार फिर वह याद साफ-साफ दिखाई दी, जो गर्मी लगने पर सहानुभूति की स्याही की तरह उसकी भावनाओं में फिर से उभर आई थी। यह आदमी बैरिकेड में था। उसने वहाँ लड़ाई नहीं की थी। वह वहाँ किसलिए आया था? इस सवाल के सामने एक प्रेत प्रकट हुआ और जवाब दिया: "जैवर्टी।"

मारियस को अब भी वह भयावह दृश्य पूरी तरह याद था जब जीन वालजेन जंजीरों में जकड़े जावर्ट को बैरिकेड से बाहर घसीट रहा था, और उसे अभी भी छोटी सी गली रुए मोंडेतोर के कोने से उस भयानक पिस्तौल की गोली की आवाज सुनाई दे रही थी। जाहिर है, उस पुलिस जासूस और उस दास के बीच दुश्मनी थी। एक दूसरे के रास्ते में था। जीन वालजेन बदला लेने के इरादे से बैरिकेड पर गया था। वह

देर से पहुँचा था। शायद उसे पता था कि जावर्ट वहाँ कैदी है। कोर्सिका का प्रतिशोध कुछ निचले तबकों तक पहुँच चुका है और वहाँ का कानून बन गया है; यह इतना सरल है कि जो लोग अच्छे की ओर आधे ही मुड़े हैं, उन्हें यह आश्चर्यचकित नहीं करता; और उन लोगों के दिल ऐसे बने होते हैं कि पश्चाताप के मार्ग पर चल रहा अपराधी चोरी के मामले में ईमानदार और बदला लेने के मामले में बेईमान हो सकता है। जीन वालजेन ने जावर्ट को मार डाला था। कम से कम, ऐसा प्रतीत होता था।

यह निश्चित रूप से अंतिम प्रश्न था; लेकिन इसका कोई उत्तर नहीं था। यह प्रश्न मारियस को चिमटे की तरह चुभ रहा था। आखिर ऐसा कैसे हुआ कि जीन वालजेन का अस्तित्व इतने लंबे समय तक कोसेट के जीवन को प्रभावित करता रहा?

यह ईश्वर की कैसी दुखद विडंबना थी जिसने उस बच्चे को उस आदमी के संपर्क में ला दिया? क्या ऊपर से दो लोगों के लिए कोई बंधन बने हैं? और क्या ईश्वर एक देवदूत और एक शैतान का मिलन कराने में आनंद लेता है? क्या अपराध और निर्दोषता दुख के रहस्यमय गलियारों में सहयात्री हो सकते हैं? निंदित व्यक्तियों के उस अपवित्रीकरण में जिसे मानवीय नियति कहा जाता है, क्या दो माथे एक साथ चल सकते हैं, एक भोला, दूसरा दुर्जेय, एक भोर की दिव्य सफेदी में नहाया हुआ, दूसरा शाश्वत बिजली की चमक से हमेशा के लिए कलंकित? उस अकथनीय जोड़ी का प्रबंध किसने किया होगा? किस प्रकार, किस चमत्कार के परिणामस्वरूप, इस दिव्य नन्हे प्राणी और उस बूढ़े अपराधी के बीच जीवन का कोई संबंध स्थापित हुआ?

मेमने को भेड़िये से किसने बांधा होगा, और उससे भी अधिक समझ से परे, भेड़िये को मेमने से किसने जोड़ा होगा? क्योंकि भेड़िया मेमने से प्रेम करता था, क्योंकि वह क्रूर प्राणी उस कमजोर प्राणी की पूजा करता था, क्योंकि नौ वर्षों के दौरान, देवदूत को उस राक्षस का सहारा मिला था। कोसेट का बचपन और किशोरावस्था, दिन के उजाले में उसका आगमन, जीवन और प्रकाश की ओर उसका पवित्र विकास, उस भयानक भक्ति की छत्रछाया में बीता था। यहाँ प्रश्न मानो अनगिनत पहेलियों में तब्दील हो गए, अथाह खाईयों की गहराई में खाईयाँ खुलती गईं, और मारियस अब जीन वालजेन पर झुकने पर चक्कर खा जाता था। यह मनुष्य-विपदा क्या थी?

उत्पत्ति की पुरानी निशानियाँ शाश्वत हैं; मानव समाज में, जैसा कि वह आज मौजूद है, और जब तक एक व्यापक युग इसमें परिवर्तन नहीं लाता, तब तक हमेशा दो प्रकार के पुरुष रहेंगे, एक श्रेष्ठ, दूसरा निम्नतर; जो अच्छाई के अनुसार है वह हाबिल है; दूसरा जो बुराई के अनुसार है वह कैन है। यह कोमल कैन कौन था? यह दुष्ट कौन था जो धार्मिक रूप से एक कुंवारी की आराधना में लीन था, उसकी देखभाल करता था, उसका पालन-पोषण करता था, उसकी रक्षा करता था, उसे सम्मान देता था, और उसे, स्वयं अपवित्र होते हुए भी, पवित्रता से आच्छादित करता था?

वह कौन सा गंदा गड्ढा था जिसने उस मासूमियत को इस हद तक पूजनीय बना दिया था कि उस पर एक भी दाग नहीं छोड़ा? वह कौन सा जीन वाल्जेन था जो कोसेट को शिक्षित कर रहा था? वह परछाइयों की आकृति क्या थी जिसका एकमात्र उद्देश्य हर परछाई और हर बादल से एक तारे के उदय को संरक्षित करना था?

यह जीन वाल्जेन का रहस्य था; यह ईश्वर का भी रहस्य था।

इस दोहरे रहस्य के सामने मारियस सहम गया। एक रहस्य ने उसे किसी न किसी रूप में दूसरे रहस्य के बारे में आश्वस्त कर दिया। इस मामले में ईश्वर उतना ही प्रत्यक्ष था जितना कि जीन वालजेन। ईश्वर के अपने साधन हैं। वह अपनी इच्छा के अनुसार उपकरण का प्रयोग करता है। वह मनुष्यों के प्रति उत्तरदायी नहीं है। क्या हम जानते हैं कि ईश्वर अपना कार्य कैसे करता है? जीन वालजेन ने कोसेट पर परिश्रम किया था। उसने एक हद तक उस आत्मा का निर्माण किया था। यह निर्विवाद था। तो फिर क्या? कारीगर भयानक था; लेकिन काम प्रशंसनीय था। ईश्वर अपने चमत्कार अपनी इच्छा अनुसार करता है। उसने उस मनमोहक कोसेट का निर्माण किया था, और उसने जीन वालजेन को काम पर लगाया था। उसने अपने लिए इस विचित्र सहयोगी को चुनना पसंद किया था। हमें उससे क्या उत्तर मांगना चाहिए? क्या यह पहली बार है कि गोबर के ढेर ने वसंत को गुलाब बनाने में सहायता की है?

मारियस ने ये जवाब खुद को दिए और मन ही मन कहा कि ये ठीक हैं। उसने जीन वालजेन से उन सभी बातों पर सवाल करने की हिम्मत नहीं की थी जिनका हमने अभी ज़िक्र किया है, लेकिन उसने यह बात अपने मन में नहीं मानी। वह कोसेट से प्रेम करता था, कोसेट उसकी थी, कोसेट अत्यंत पवित्र थी। उसके लिए इतना ही काफी था। उसे किस ज्ञान की ज़रूरत थी? कोसेट एक प्रकाश थी। क्या प्रकाश को

ज्ञान की ज़रूरत होती है? उसके पास सब कुछ था; उसे और क्या चाहिए था? सब कुछ — क्या इतना काफी नहीं है? जीन वालजेन के निजी मामलों से उसे कोई मतलब नहीं था।

और उस व्यक्ति की घातक छाया पर झुकते हुए, वह उस अभागे के गंभीर कथन से कांपते हुए लिपटा रहा: "मैं कोसेट के लिए कुछ भी नहीं हूँ। दस साल पहले मुझे पता भी नहीं था कि उसका अस्तित्व है।"

जीन वाल्जेन एक राहगीर था। उसने खुद ऐसा कहा था। खैर, वह गुजर चुका था। वह जो भी था, उसका काम खत्म हो चुका था।

अब, कोसेट के प्रति ईश्वरीय विधान की भूमिका निभाने का दायित्व मारियस पर आ गया था। कोसेट ने अपने जैसे ही किसी व्यक्ति में, अपने प्रेमी में, अपने पति में, अपने दिव्य पुरुष में नीले रंग की तलाश की थी। कोसेट, जब पंखों से परिपूर्ण होकर रूपांतरित होकर उड़ान भरी, तो उसने पृथ्वी पर अपने कुरूप और खाली कोकून, जीन वालजेन को पीछे छोड़ दिया।

मारियस चाहे जिस भी विचार-मंथन में उलझा रहता, जीन वाल्जेन के प्रति उसके मन में एक विशेष प्रकार का भय बना रहता। शायद यह भय पवित्र भय था, क्योंकि जैसा कि हमने अभी बताया, उसे उस व्यक्ति में एक दिव्य तत्व दिखाई देता था। लेकिन चाहे वह कितनी भी दलीलें दे और चाहे कितनी भी कमियां निकाले, उसे अंततः यही कहना पड़ता था: वह व्यक्ति एक अपराधी था; यानी एक ऐसा प्राणी जिसका सामाजिक सीढ़ी पर कोई स्थान नहीं था, क्योंकि वह सबसे निचले पायदान से भी नीचे था। मनुष्य के अंत में अपराधी आता है। अपराधी, एक तरह से, जीवित व्यक्ति जैसा नहीं रह जाता। कानून ने उससे वह सारी मानवता छीन ली है जो वह किसी मनुष्य से छीन सकता है।

दंड संबंधी मामलों में मारियस अभी भी अटल व्यवस्था का समर्थन करते थे, यद्यपि वे एक लोकतांत्रिक व्यक्ति थे और कानून के दायरे में आने वाले लोगों के बारे में उनके सभी विचार थे। हम स्वीकार करते हैं कि उन्होंने अभी तक पूरी प्रगति नहीं की थी। वे अभी तक मनुष्य द्वारा लिखित और ईश्वर द्वारा लिखित, तथा कानून और अधिकार के बीच अंतर नहीं कर पाए थे। उन्होंने अपरिवर्तनीय और अपूरणीय मामलों के निपटारे के लिए मनुष्य द्वारा लिए गए अधिकार की जांच और मूल्यांकन नहीं किया था। वे 'विंडिक्टे' शब्द से विचलित

नहीं हुए। उन्हें यह बिल्कुल स्पष्ट था कि लिखित कानून के कुछ उल्लंघनों के परिणामस्वरूप शाश्वत पीड़ा होगी, और उन्होंने सामाजिक अभिशाप को सभ्यता की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया। वे अभी भी इसी बिंदु पर थे, यद्यपि उनका स्वभाव अच्छा था और मूलतः उनमें अंतर्निहित प्रगति पूर्ण थी, इसलिए वे आगे चलकर निश्चित रूप से प्रगति कर सकते थे।

अपने विचारों के इस चरण में, जीन वालजेन उन्हें घिनौना और घृणित प्रतीत हुआ। वह एक निंदित व्यक्ति था, वह एक अपराधी था। यह शब्द उनके लिए न्याय के दिन तुरही की ध्वनि के समान था; और जीन वालजेन पर लंबे समय तक विचार करने के बाद, उनका अंतिम संकेत अपना सिर दूसरी ओर मोड़ लेना था।

मारियस ने, यदि हमें इस तथ्य को स्वीकार करना ही है और इस पर जोर भी देना है, तो जीन वाल्जेन से इस हद तक पूछताछ करते हुए कि जीन वाल्जेन ने कहा: "आप मुझसे कबूलनामा करवा रहे हैं," फिर भी, उससे दो या तीन निर्णायक प्रश्न नहीं पूछे थे।

ऐसा नहीं था कि ये बातें उसके मन में नहीं आई थीं, बल्कि वह उनसे डरता था। जोन्ड्रेट की अटारी? बैरिकेड? जावर्ट? कौन जाने ये खुलासे कहाँ जाकर रुक जाते? जीन वालजेन पीछे हटने वाला आदमी नहीं लगता था, और कौन जाने मारियस, उसे उकसाने के बाद, खुद उसे रोकना न चाहता हो?

क्या हम सभी के साथ कभी न कभी ऐसा नहीं हुआ कि किसी विशेष परिस्थिति में प्रश्न पूछने के बाद उत्तर न सुनने के लिए हमने अपने कान बंद कर लिए हों? खासकर प्रेम के समय, हम कायरता के ऐसे प्रदर्शन करने लगते हैं। भयावह परिस्थितियों की गहराई तक छानबीन करना बुद्धिमानी नहीं है, विशेषकर तब जब हमारे जीवन का अभिन्न अंग उनसे घातक रूप से जुड़ा हो। जीन वालजेन के निराशा भरे स्पष्टीकरणों से कितना भयानक प्रकाश निकल सकता था, और कौन जानता है कि वह भयावह चमक कोसेट तक न पहुँच जाती? कौन जानता है कि उस देवदूत के माथे पर उसके पीछे एक प्रकार की नरकीय चमक न ठहर जाती? बिजली की चमक भी गरज की तरह होती है। नियति के ऐसे मोड़ होते हैं जहाँ रंग देने वाले प्रतिबिंबों के अंधकारमय नियम से निर्दोषता भी अपराध से कलंकित हो जाती है। सबसे पवित्र आकृतियाँ भी हमेशा के लिए एक भयानक जुड़ाव का प्रतिबिंब संजोए रख सकती हैं। सही हो या गलत, मारियस डरा हुआ था। वह पहले ही बहुत कुछ

जान चुका था। उसने और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की बजाय अपनी इंद्रियों को मंद करने का प्रयास किया।

हताशा में उसने कोसेट को अपनी बाहों में उठाया और जीन वालजेन से आँखें बंद कर लीं।

वह व्यक्ति स्वयं रात था, एक जीवंत और भयानक रात। भला वह इसके रहस्य को जानने की हिम्मत कैसे कर सकता था? परछाई से पूछताछ करना एक भयानक बात है।
कौन जाने उसका जवाब क्या होगा? भोर हमेशा के लिए उसके साये में सिमट सकती है।

इस मानसिक स्थिति में, यह सोचकर कि वह व्यक्ति अब से कोसेट के साथ किसी भी तरह का संपर्क करेगा, मारियस के लिए यह एक हृदयविदारक उलझन थी।

अब वह लगभग खुद को कोस रहा था कि उसने वे कठिन प्रश्न क्यों नहीं पूछे, जिनसे वह पीछे हट गया था, और जिनसे एक अटल और निर्णायक निर्णय निकल सकता था। उसे लगा कि वह बहुत अच्छा, बहुत कोमल, बहुत कमज़ोर था, अगर हमें यह कहना ही पड़े तो। इसी कमज़ोरी ने उसे एक नासमझी भरी रियायत देने पर मजबूर कर दिया था। उसने खुद को बहकने दिया था। वह गलत था। उसे जीन वालजेन को सीधे और स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर देना चाहिए था। जीन वालजेन ने आग की तरह व्यवहार किया, और उसे यही करना चाहिए था, और अपने घर को उस आदमी से मुक्त कर देना चाहिए था।

वह स्वयं से व्यथित था, वह भावनाओं के उस बवंडर से क्रोधित था जिसने उसे बहरा, अंधा और अपने साथ बहा ले गया था। वह स्वयं से असंतुष्ट था।

अब वह क्या करता? जीन वालजेन का आना-जाना उसे बेहद नापसंद था। उस आदमी को अपने घर में रखने का क्या फायदा? वह आदमी क्या चाहता था? यहाँ आकर वह घबरा गया, वह गहराई में नहीं जाना चाहता था, वह अपने आप को परखना नहीं चाहता था। उसने वादा किया था, उसने खुद को एक वादे में फँसने दिया था; जीन वालजेन ने अपना वादा निभाया; किसी को भी अपना वचन निभाना चाहिए, चाहे वह कैदी ही क्यों न हो, और सबसे बढ़कर एक कैदी के प्रति तो और भी ज्यादा। फिर भी, उसका पहला कर्तव्य कोसेट के प्रति था। संक्षेप में, वह उस घृणा से बह गया था जो उस पर हावी थी।

मारियस अपने मन में विचारों की इस सारी उलझन पर विचार करता रहा, एक विचार से दूसरे विचार पर जाता रहा और उन सभी विचारों से प्रभावित होता रहा। इसी से एक गंभीर समस्या उत्पन्न हुई।

कोसेट से इस परेशानी को छिपाना उसके लिए आसान नहीं था, लेकिन प्यार एक हुनर है, और मारियस इसमें कामयाब रहा।

लेकिन बिना किसी स्पष्ट उद्देश्य के, उसने कोसेट से पूछताछ की, जो कबूतर की तरह भोली और बेबाक थी और जिसे किसी बात का शक नहीं था; उसने उसके बचपन और जवानी के बारे में बात की, और उसे यकीन होता चला गया कि उस कैदी ने कोसेट के प्रति हर वो अच्छाई, पिता तुल्य स्नेह और सम्मान दिखाया था जो एक इंसान दिखा सकता है। मारियस ने जो कुछ भी देखा और अनुमान लगाया था, वो सब सच था। उस दुष्ट बिच्छू बूटी ने उस लिली से प्यार किया था और उसकी रक्षा की थी।

पुस्तक **VIII.** गोधूलि का लुप्त होना

I. निचला कक्ष

अगले दिन, सूर्यास्त के समय, जीन वालजेन ने गिलनोर्मंड घर के गाड़ी वाले द्वार पर दस्तक दी। बास्क ने उसका स्वागत किया। बास्क तय समय पर आँगन में मौजूद था, मानो उसे आदेश मिल गया हो। कभी-कभी नौकर से कहा जाता है: "जब श्रीमान फलां-फलां आएँ, तो आप उनका इंतज़ार करना।"

बास्क ने जीन वालजेन के पास आने का इंतजार किए बिना ही उनसे बात करना शुरू कर दिया:

“क्या महाशय बैरन ने मुझे यह पता लगाने का काम सौंपा है कि क्या महाशय ऊपर जाना चाहते हैं या नीचे ही रहना चाहते हैं?”

“मैं नीचे ही रहूंगा,” जीन वाल्जेन ने उत्तर दिया।

बास्क, जो अत्यंत विनम्र थे, ने प्रतीक्षालय का दरवाजा खोला और कहा:

मैं जाकर मैडम को सूचित कर दूंगा।

जिस कमरे में जीन वालजेन दाखिल हुआ, वह भूतल पर एक नम, गुंबददार कमरा था, जो कभी-कभी तहखाने के रूप में इस्तेमाल होता था, जो सड़क की ओर खुलता था, लाल चौकोर पत्थरों से बना था और जालीदार खिड़की से उसमें रोशनी बहुत कम आती थी।

यह कमरा उन कमरों में से नहीं था जिन्हें झाड़ू, झाड़ू और अन्य धूल झाड़ने वाले कपड़े से साफ किया जाता हो। यहाँ धूल शांति से जमी रहती थी। यहाँ मकड़ियों को सताने का कोई काम नहीं होता था। एक खिड़की के शीशे पर एक महीन जाला फैला हुआ था, जो बहुत काला था और मरी हुई मक्खियों से सजा हुआ था, और एक चक्र का आकार लिए हुए था। छोटा और कम छत वाला यह कमरा एक कोने में खाली बोतलों के ढेर से सजा हुआ था।

दीवार, जिस पर गेरू पीले रंग का लेप लगा हुआ था, बड़े-बड़े टुकड़ों में उखड़ रही थी। एक छोर पर काले रंग से रंगा हुआ एक चिमनीनुमा ढांचा था, जिस पर एक संकीर्ण शेल्फ बनी हुई थी। वहां आग जल रही थी; जिससे संकेत मिलता था कि जीन वालजेन का उत्तर: "मैं नीचे ही रहूंगा," पहले से ही अनुमानित था।

चिमनी के दोनों कोनों पर दो आर्मचेयर रखी हुई थीं। कुर्सियों के बीच एक पुरानी गलीचा बिछा हुआ था, जिसमें ऊन से ज़्यादा धागे दिखाई दे रहे थे, और उसे कालीन की तरह इस्तेमाल किया गया था।

कमरे में चूल्हे पर जलती आग और खिड़की से छनकर आती शाम की रोशनी से प्रकाश फैल रहा था।

जीन वाल्जेन थका हुआ था। कई दिनों से उसने न तो कुछ खाया था और न ही सोया था। उसने खुद को एक आरामकुर्सी पर पटक दिया।

बास्क वापस आया, चिमनी पर एक जलती हुई मोमबत्ती रखी और चला गया। जीन वालजेन, जिसका सिर झुका हुआ था और ठुड्डी छाती पर टिकी थी, ने न तो बास्क को देखा और न ही मोमबत्ती को।

अचानक, वह चौंककर उठ बैठा। कोसेट उसके बगल में खड़ी थी।

उसने उसे अंदर आते हुए नहीं देखा था, लेकिन उसे महसूस हुआ था कि वह वहाँ थी।

वह मुड़ा। उसने उसे निहारा। वह बेहद प्यारी थी। लेकिन उस गहरी नज़र से वह उसकी सुंदरता को नहीं, बल्कि उसकी आत्मा को निहार रहा था।

“वाह,” कोसेट ने हैरानी से कहा, “पिताजी, मुझे पता था कि आप थोड़े सनकी हैं, लेकिन मैंने इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नहीं की थी। क्या गजब का विचार है! मारियस ने मुझे बताया कि आप चाहते हैं कि मैं आपका यहाँ स्वागत करूँ।”

"जी हां, यही मेरी इच्छा है।"

मुझे इसी जवाब की उम्मीद थी। अच्छा। मैं तुम्हें पहले ही चेतावनी दे देता हूँ कि मैं तुम्हारे लिए हंगामा खड़ा करने वाला हूँ। चलो शुरुआत से शुरू करते हैं। मुझे गले लगाओ, पिताजी।

और उसने उसे अपना गाल आगे किया।

जीन वाल्जेन गतिहीन रहा।

“तुम हिलते-डुलते नहीं हो। मैं इसे देख रहा हूँ। अपराधबोध का भाव है।
लेकिन कोई बात नहीं, मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ। यीशु मसीह ने कहा था: दूसरा गाल आगे करो। ये लो।”

और उसने अपना दूसरा गाल आगे कर दिया।
जीन वाल्जेन टस से मस नहीं हुआ। ऐसा लग रहा था मानो उसके पैर फुटपाथ पर कीलों से जड़े हों।
“यह मामला गंभीर होता जा रहा है,” कोसेट ने कहा। “मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मैं सचमुच हैरान हूँ। तुम्हें मुझे हर्जाना देना होगा। तुम हमारे साथ भोजन करोगे।”
मैंने भोजन कर लिया है।
“यह सच नहीं है। मैं एम. गिलनोर्मंड से तुम्हारी डांट करवाऊंगा। दादाजी पिताओं को फटकारने के लिए ही बने होते हैं। चलो। मेरे साथ ऊपर ड्राइंग रूम में चलो। तुरंत।”
"असंभव।"
यहां कोसेट थोड़ी कमजोर पड़ गई। उसने आदेश देना बंद कर दिया और सवाल पूछने लगी।
लेकिन क्यों? और तुमने मुझे देखने के लिए घर का सबसे बदसूरत कमरा चुना है। यहाँ तो बहुत बुरा हाल है।
तुम जानते हो…
जीन वाल्जेन ने खुद को संभाला।
"आप जानती हैं, महोदया, कि मैं थोड़ा अजीब हूँ, मुझमें कुछ सनक है।"
कोसेट ने अपने छोटे-छोटे हाथों को आपस में टकराया।
“मैडम!… आपको पता है!… और भी नई-नई चीजें! इसका क्या मतलब है?”
जीन वाल्जेन ने उस पर वह हृदयविदारक मुस्कान बिखेरी जिसका सहारा वह कभी- कभार लेता था:
“आप मैडम बनना चाहती थीं। आप हैं भी।”
"आपके लिए नहीं, पिताजी।"
मुझे पिता मत कहो।
"क्या?"

"मुझे 'महाशय जीन' कहिए। अगर आप चाहें तो 'जीन' कह सकते हैं।"
“अब आप मेरे पिता नहीं रहे? अब मैं कोसेट नहीं रही? ‘महाशय जीन’? इसका क्या मतलब है? ये तो क्रांतियाँ हैं, है ना? आखिर हुआ क्या है? आओ, मेरी आँखों में देखो। और तुम हमारे साथ नहीं रहोगी! और तुम्हें मेरा कमरा नहीं मिलेगा! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? क्या कुछ हुआ है?”
"कुछ नहीं।"
"तो ठीक है?"
सब कुछ पहले की तरह ही है।
“आप अपना नाम क्यों बदलते हैं?”
"आपने तो अपना जरूर बदल लिया होगा।"
उन्होंने फिर से उसी मुस्कान के साथ मुस्कुराते हुए कहा:
"चूंकि आप मैडम पोंटमर्सी हैं, इसलिए मैं निश्चित रूप से मिस्टर जीन हो सकता हूं।"
मुझे इसके बारे में कुछ समझ नहीं आ रहा। ये सब बेवकूफी है। मैं अपने पति से आपको 'महाशय जीन' कहलाने की अनुमति मांगूंगी। मुझे उम्मीद है कि वो इसके लिए राजी नहीं होंगे। आप मुझे बहुत तकलीफ देते हैं। कभी-कभी लोग अजीब हरकतें करते हैं, लेकिन अपनी प्यारी कोसेट को दुख पहुंचाना गलत है। ये गलत है। आप, जो इतने अच्छे हैं, आपको दुष्ट होने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।
उसने जोश के साथ उसके हाथों को पकड़ लिया और उन्हें एक अप्रतिरोध्य गति से अपने चेहरे तक उठाकर, अपनी ठुड्डी के नीचे अपनी गर्दन पर दबा दिया, जो कि गहरी कोमलता का एक भाव है।
“ओह!” उसने उससे कहा, “अच्छे बच्चे बनो!”
और उसने आगे कहा:
"मैं इसे ही अच्छा होना कहता हूँ: अच्छा व्यवहार करना, यहाँ आकर रहना—यहाँ भी पक्षी हैं जैसे रू प्लूमेट में—हमारे साथ रहना, रू डे ल'होमे आर्मे के

उस गड्ढे को छोड़कर, हमें पहेलियाँ न देना, बाकी दुनिया की तरह होना, हमारे साथ भोजन करना, हमारे साथ नाश्ता करना, मेरे पिता की तरह होना।"

उसने उसके हाथ छोड़ दिए।

“अब तुम्हें पिता की जरूरत नहीं है, तुम्हारे पास पति है।”

कोसेट को गुस्सा आ गया।

“मुझे अब पिता की जरूरत नहीं है! ऐसी बातों का क्या जवाब दिया जाए, यह समझ में नहीं आता, क्योंकि ये बातें व्यावहारिक नहीं हैं!”

“अगर टूसेंट यहाँ होतीं,” जीन वालजेन ने एक ऐसे व्यक्ति की तरह बोलना शुरू किया जो आधिकारिक जानकारी हासिल करने के लिए बेताब है और हर संभव कोशिश कर रहा है, “तो वह सबसे पहले इस बात से सहमत होतीं कि यह सच है कि मेरे अपने तरीके हमेशा से रहे हैं। इसमें कुछ भी नया नहीं है। मुझे हमेशा से अपना एकांत पसंद रहा है।”

लेकिन यहाँ बहुत ठंड है। कुछ भी ठीक से दिखाई नहीं देता। श्रीमान जीन बनने की इच्छा रखना कितना घृणित है! मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे ‘तुम’ कहो।

“अभी-अभी जब मैं इधर आ रहा था,” जीन वालजेन ने उत्तर दिया, “मैंने सेंट लुई स्ट्रीट में एक फर्नीचर देखा। यह एक बढ़ई की दुकान पर था। अगर मैं एक खूबसूरत महिला होती, तो मैं खुद के लिए वह फर्नीचर खरीद लेती। उस समय की शैली में बना एक बहुत ही सुंदर टॉयलेट टेबल। मुझे लगता है कि इसे रोज़वुड कहते हैं। इस पर जड़ाऊ काम है। दर्पण काफी बड़ा है। इसमें दराजें हैं। यह बहुत सुंदर है।”

“अरे! दुष्ट भालू!” कोसेट ने जवाब दिया।

और अत्यंत शालीनता से, दांत भींचकर और होंठ पीछे खींचकर, उसने जीन वालजेन पर फूँक मारी। वह मानो किसी बिल्ली की नकल कर रही हो।

“मैं बहुत गुस्से में हूँ,” उसने अपनी बात जारी रखी। “कल से तुम सबने मुझे बहुत गुस्सा दिलाया है। मैं बहुत परेशान हूँ। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। तुम मारियस के खिलाफ मेरा बचाव नहीं कर रहे। मारियस तुम्हारे खिलाफ मेरा साथ नहीं देगा। मैं बिल्कुल अकेली हूँ। मैंने अपना कमरा अच्छे से सजाया है। अगर मैं भगवान को वहाँ रख पाती तो रख देती। मेरा कमरा मेरे हाल पर छोड़

दिया गया है। मेरे किराएदार ने मुझे कंगाल कर दिया है। मैंने निकोलेट के लिए एक बढ़िया सा डिनर मंगवाया है। मैडम, हम आपके डिनर से कोई लेना-देना नहीं रखेंगे। और मेरे पिता फॉशेलवेंट चाहते हैं कि मैं उन्हें 'मोंसिउर जीन' कहूँ और उनका स्वागत एक भयानक, पुराने, बदसूरत तहखाने में करूँ, जहाँ दीवारों पर दाढ़ी उगी है, जहाँ क्रिस्टल खाली बोतलों से बना है और पर्दे मकड़ी के जालों के हैं! मैं मानती हूँ कि तुम अजीब हो, यही तुम्हारा अंदाज़ है, लेकिन शादी करने वालों को कुछ समय की छूट मिल जाती है। तुम्हें तुरंत फिर से अजीबोगरीब हरकतें शुरू नहीं करनी चाहिए थीं। तो तुम अपनी उस घिनौनी गली में ही पूरी तरह संतुष्ट रहोगी।” आर्मे। मैं सचमुच बहुत हताश था। तुम्हें मुझसे क्या दुश्मनी है? तुम मुझे बहुत दुख पहुंचाते हो। फी!

और अचानक गंभीर होते हुए, उसने जीन वालजेन को ध्यान से देखा और आगे कहा:

"क्या तुम मुझसे इसलिए नाराज़ हो क्योंकि मैं खुश हूँ?"

कभी-कभी भोलापन अनजाने में ही गहरा प्रभाव डालता है। कोसेट के लिए यह सवाल सरल था, लेकिन जीन वालजेन के लिए यह बहुत गहरा था। कोसेट ने खरोंचने की कोशिश की थी, लेकिन उसने घाव कर दिया।

जीन वाल्जेन का चेहरा पीला पड़ गया।

वह कुछ क्षण तक बिना उत्तर दिए रहा, फिर एक अवर्णनीय स्वर में, और स्वयं से बात करते हुए, उसने बुदबुदाया:

“उसकी खुशी ही मेरे जीवन का उद्देश्य थी। अब ईश्वर ही मेरी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर दे। कोसेट, तुम खुश हो; मेरा समय समाप्त हो गया है।”

“अरे, तुमने मुझसे ‘तू’ कह दिया!” कोसेट ने हैरानी से कहा।

और वह उसकी गर्दन पर झपटी।

जीन वाल्जेन ने हैरानी से उसे बेतहाशा अपने सीने से लगा लिया। उसे लगभग ऐसा लगा जैसे वह उसे वापस ले रहा हो।

“धन्यवाद, पिताजी!” कोसेट ने कहा।

जीन वालजेन के लिए यह उत्साहपूर्ण आवेग मार्मिक होने ही वाला था। उसने धीरे से कोसेट की बाहों को हटाया और अपनी टोपी उठा ली।

“तो?” कोसेट ने कहा।
“मैं आपसे विदा लेता हूँ, महोदया, वे आपका इंतजार कर रहे हैं।”
और, दहलीज से ही उन्होंने आगे कहा:
मैंने तुम्हें ‘तू’ कहा है। अपने पति से कह देना कि ऐसा दोबारा न हो। मुझे क्षमा कर दो।
जीन वाल्जेन कमरे से बाहर निकल गया, जिससे कोसेट इस रहस्यमय विदाई से स्तब्ध रह गई।

II. एक और कदम पीछे

अगले दिन, ठीक उसी समय, जीन वालजेन आया।

कोसेट ने उनसे कोई सवाल नहीं पूछा, अब वह हैरान नहीं थी, अब उसने ठंड लगने की शिकायत नहीं की, अब उसने ड्राइंग रूम के बारे में बात नहीं की, उसने "पिताजी" या "महाशय जीन" कहना भी बंद कर दिया। उसने खुद को "आप" कहलाने दिया। उसने खुद को मैडम कहलाने दिया। बस, उसकी खुशी थोड़ी कम हो गई थी। अगर उसके लिए उदास होना संभव होता, तो वह उदास होती।

संभवतः मारियस के साथ उसकी ऐसी ही बातचीत हुई होगी, जिसमें प्रेमी अपनी मर्जी से कुछ भी कह देता है, कुछ भी स्पष्ट नहीं करता और प्रेमिका को संतुष्ट कर देता है। प्रेमियों की जिज्ञासा उनके अपने प्रेम से अधिक दूर तक नहीं जाती।

नीचे वाले कमरे में एक छोटा सा शौचालय बनाया गया था। बास्क ने बोतलों को दबा दिया था, और निकोलेट ने मकड़ियों को।

उसके बाद के सभी दिनों में जीन वालजेन एक ही समय पर आता था। वह हर दिन आता था, क्योंकि मारियस की बातों को अक्षरशः लेने के अलावा उसमें कोई और भाव नहीं था। मारियस ने इस तरह से व्यवस्था की कि जीन वालजेन के आने के समय वह घर पर न रहे। घरवाले एम. फॉशेलवेंट के अनोखे तौर-तरीकों के आदी हो गए। टूसेंट ने इसमें मदद की: "महाशय हमेशा से ऐसे ही रहे हैं," उसने दोहराया। दादाजी ने यह फरमान जारी किया: "वह तो बिल्कुल अनोखे हैं।" और बात यहीं खत्म हो गई। इसके अलावा, छियानवे साल की उम्र में, अब कोई बंधन संभव नहीं रह गया था, सब कुछ बस एक साथ रखा गया था; एक नया व्यक्ति रास्ते में रुकावट बन गया था। अब कोई जगह नहीं बची थी; सभी आदतें ढल चुकी थीं। एम. फॉशेलवेंट, एम. ट्रेंचेलवेंट, फादर गिलनोर्मंड को "उस सज्जन" से छुटकारा पाने के अलावा और कुछ नहीं चाहिए था। उन्होंने आगे कहा: “उन दिखावटी लोगों से ज़्यादा आम कुछ नहीं है। वे तरह-तरह के अजीबोगरीब काम करते हैं। उनके पास कोई तर्क नहीं होता। मार्क्विस डी कैनापल्स तो उससे भी बदतर थे। उन्होंने

एक महल खरीदा ताकि वे अटारी में रह सकें। ये दिखावटी बातें हैं जो लोग बनावटी तरीके से करते हैं।”

किसी को भी उस भयावह नींव का आभास नहीं हुआ। और भला ऐसी बात का अंदाज़ा कौन लगा सकता था? भारत में भी इस तरह के दलदल पाए जाते हैं। पानी असाधारण, रहस्यमय और बिना हवा के भी लहरों से भरा होता है, और जहाँ शांत होना चाहिए वहाँ उग्र होता है। कोई इन अकारण उबलते पानी की सतह को निहारता रहता है; उसे तल पर रेंगते राक्षस का पता ही नहीं चलता।

कई पुरुषों के भीतर इसी प्रकार का एक गुप्त राक्षस छिपा होता है, एक अजगर जो उन्हें कुतरता रहता है, एक निराशा जो उनकी रातों में बसी रहती है। ऐसा व्यक्ति अन्य पुरुषों जैसा ही होता है, वह आता-जाता रहता है। कोई नहीं जानता कि उसके भीतर हज़ारों दाँतों वाला एक भयानक परजीवी दर्द छिपा है, जो उस दुखी व्यक्ति के भीतर रहता है और जिससे वह मर रहा है। कोई नहीं जानता कि यह व्यक्ति एक खाई है। वह स्थिर है लेकिन गहरा है। समय-समय पर, उसकी सतह पर एक ऐसी परेशानी उभरती है जिसे देखने वाला समझ नहीं पाता। एक रहस्यमयी झुर्री बनती है, फिर गायब हो जाती है, फिर प्रकट होती है; एक हवा का बुलबुला उठता है और फूट जाता है। यह उस अज्ञात जानवर की साँस है।

कुछ विचित्र आदतें: उस समय पहुंचना जब अन्य लोग विदा ले रहे हों, दूसरों के प्रदर्शन के दौरान पृष्ठभूमि में रहना, हर अवसर पर एक तरह का आवरण बनाए रखना जिसे दीवार के रंग का आवरण कहा जा सकता है, एकांत में टहलना पसंद करना, सुनसान सड़क को प्राथमिकता देना, बातचीत में भाग लेने से बचना, भीड़ और त्योहारों से दूर रहना, सहज दिखना और सादगी से जीवन यापन करना, अपनी चाबी अपनी जेब में रखना और अपनी मोमबत्ती चौकीदार के कमरे में रखना, चाहे कोई कितना भी अमीर क्यों न हो, बगल के दरवाजे से प्रवेश करना, निजी सीढ़ियों से चढ़ना—ये सभी महत्वहीन विलक्षणताएं, सतह पर क्षणभंगुर परतें, अक्सर एक दुर्जेय नींव से उत्पन्न होती हैं।

इस तरह कई सप्ताह बीत गए। धीरे-धीरे कोसेट के जीवन में एक नया मोड़ आ गया: विवाह से बने रिश्ते, मुलाकातें, घर की देखभाल, सुख-सुविधाएँ, और जीवन के महत्वपूर्ण पहलू। कोसेट की खुशियाँ महँगी नहीं थीं, वे बस एक ही चीज़ में समाहित थीं: मारियस के साथ रहना। उसके जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य उसके साथ बाहर जाना, उसके साथ समय बिताना था। उनके लिए यह एक ऐसा आनंद था जो

हमेशा ताजा रहता था, एक-दूसरे का हाथ थामे, सूरज की रोशनी में, खुली सड़क पर, बिना खुद को छिपाए, पूरी दुनिया के सामने, दोनों बिल्कुल अकेले।

कोसेट को एक बात खटकती थी। टूसेंट और निकोलेट के बीच अनबन थी, दो बुजुर्ग नौकरानियों का साथ निभाना नामुमकिन था, और निकोलेट चली गई। दादाजी ठीक थे; मारियस कभी-कभार कोई केस लड़ता था; चाची गिलनोर्मंड नए घर के साथ शांतिपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रही थीं, जो उनके लिए पर्याप्त था। जीन वालजेन हर दिन आता था।

“तू” वाला संबोधन गायब हो गया, “तुम,” “महोदया,” “श्रीमान जीन” जैसे शब्दों ने कोसेट के लिए उसे एक अलग ही व्यक्ति बना दिया। उसे खुद से अलग करने के लिए उसने जो प्रयास किए थे, वे सफल हो रहे थे। वह पहले से कहीं अधिक खुशमिजाज और कम कोमल होती जा रही थी। फिर भी वह अब भी उससे सच्चे दिल से प्यार करती थी, और वह इसे महसूस करता था।

एक दिन उसने अचानक उससे कहा: “तुम मेरे पिता हुआ करते थे, अब तुम मेरे पिता नहीं हो, तुम मेरे चाचा थे, अब तुम मेरे चाचा नहीं हो, तुम मॉन्सियर फॉशेलवेंट थे, तुम जीन हो। तो फिर तुम कौन हो? मुझे ये सब पसंद नहीं है। अगर मुझे पता न होता कि तुम कितने अच्छे हो, तो मैं तुमसे डरती।”

वह अब भी रू डे ल'होमे आर्मे में ही रहता था, क्योंकि वह उस इलाके से दूर जाने का फैसला नहीं कर पा रहा था जहां कोसेट रहती थी।

पहले तो वह कोसेट के साथ कुछ ही मिनटों तक रहा और फिर चला गया।

धीरे-धीरे उसने अपनी यात्राओं की अवधि बढ़ाने की आदत विकसित कर ली। ऐसा लगता था मानो वह दिनों के लंबे होने का लाभ उठा रहा हो; वह जल्दी आता और देर से जाता था।

एक दिन कोसेट ने गलती से उन्हें "पिताजी" कह दिया। जीन वालजेन के उदास बूढ़े चेहरे पर खुशी की एक चमक आ गई। उन्होंने उसे रोका और पूछा, "जीन बोलो।" - "अरे! सच में," उसने खिलखिलाकर हंसते हुए जवाब दिया, "महाशय जीन।" - "बिल्कुल सही," उन्होंने कहा। और वह दूसरी तरफ मुड़ गए ताकि कोसेट उन्हें अपनी आंखें पोंछते हुए न देख सके।

III. वे रू प्लूमेट के बगीचे की याद दिलाते हैं

यह आखिरी बार था। उस आखिरी रोशनी के बाद, सब कुछ पूरी तरह से मिट गया। अब कोई अपनापन नहीं, कोई चुंबन के साथ सुप्रभात नहीं, वह मधुर शब्द फिर कभी नहीं: "मेरे पिता!" अपनी ही इच्छा और अपनी ही मिलीभगत से वह एक-एक करके अपनी सारी खुशियों से वंचित हो गया; और उसे यह दुख था कि एक ही दिन में कोसेट को पूरी तरह खोने के बाद, उसे बाद में उसे फिर से थोड़ा-थोड़ा करके खोना पड़ा।

धीरे-धीरे आंखें तहखाने की रोशनी की आदी हो जाती हैं। संक्षेप में, उसके लिए प्रतिदिन कोसेट का एक आभास होना ही काफी था। उसका पूरा जीवन उस एक घंटे में सिमट गया था।

वह उसके पास बैठ गया, वह चुपचाप उसे देखता रहा, या वह उससे बीते वर्षों की बातें करता रहा, उसके बचपन की, मठ की, उन बीते दिनों के उसके छोटे दोस्तों की।

एक दोपहर—अप्रैल के उन शुरुआती दिनों में से एक, जब मौसम गर्म और ताज़ा था, सूरज की उमंग अपने चरम पर थी, मारियस और कोसेट के घर की खिड़कियों के चारों ओर फैले बगीचे जागने का एहसास कर रहे थे, नागफनी के पेड़ कलियाँ खिलने ही वाले थे, प्राचीन दीवारों पर गिल्लीफ्लावर की एक सुंदर माला फैली हुई थी, पत्थरों की दरारों से स्नैपड्रैगन झाँक रहे थे, घास के बीच डेज़ी और बटरकप के प्यारे फूल खिलने लगे थे, साल की सफेद तितलियाँ पहली बार दिखाई दे रही थीं, हवा, जो शाश्वत विवाह की गायिका है, पेड़ों में उस भव्य, प्रभामंडलीय संगीत की पहली धुनें गुनगुना रही थी जिसे पुराने कवि वसंत ऋतु कहते थे—मारियस ने कोसेट से कहा:—“हमने कहा था कि हम रू प्लूमेट में अपने बगीचे को देखने वापस जाएँगे। चलो वहाँ चलते हैं। हमें कृतघ्न नहीं होना चाहिए।”—और वे दो वसंत ऋतु की ओर उड़ती चिड़ियाएँ। रू प्लूमेट का यह बगीचा उन पर भोर जैसा प्रभाव डाल रहा था। जीवन में उनके पीछे कुछ ऐसा था जो उनके प्रेम के वसंत जैसा था। रू प्लूमेट का घर पट्टे पर था, इसलिए वह अभी भी कोसेट का था। वे उस बगीचे और उस घर में गए। वहाँ उन्होंने खुद को फिर से

पाया, वहाँ वे खुद को भूल गए। उस शाम, हमेशा की तरह, जीन वालजेन रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर पर आया। बास्क ने उससे कहा, "मैडम, महाशय के साथ बाहर गई हैं और अभी तक नहीं लौटी हैं।" वह चुपचाप बैठ गया और एक घंटे तक इंतजार किया। कोसेट नहीं लौटी। वह उदास सिर करके चला गया।
कोसेट अपने "उनके बगीचे" की सैर से इतनी मुग्ध थी और "अपने अतीत में पूरा दिन जी लेने" की खुशी में इतनी डूबी हुई थी कि उसने अगले दिन इसके अलावा किसी और बात की ही नहीं। उसे इस बात का भी एहसास नहीं हुआ कि उसने जीन वालजेन को नहीं देखा था।
“तुम वहाँ किस रास्ते से गई थीं?” जीन वाल्जेन ने उससे पूछा।
पैदल।
और आप कैसे वापस लौटे?
"एक टैक्सी गाड़ी में।"
कुछ समय से जीन वालजेन युवाओं के मितव्ययी जीवन को देख रहे थे। वे इससे परेशान थे। मारियस की मितव्ययिता बेहद कठोर थी, और जीन वालजेन के लिए इस शब्द का पूर्ण अर्थ था। उन्होंने एक प्रश्न पूछने का साहस किया:
“आपके पास अपनी खुद की गाड़ी क्यों नहीं है? एक सुंदर कूपे कार तो आपको सिर्फ पांच सौ फ्रैंक प्रति माह में मिल जाएगी। आप तो अमीर हैं।”
“मुझे नहीं पता,” कोसेट ने उत्तर दिया।
“यह तो टूसेंट की तरह है,” जीन वालजेन ने बात जारी रखते हुए कहा। “वह चली गई हैं। आपने उनकी जगह किसी और को नहीं रखा। क्यों?”
"निकोलेट ही काफी है।"
लेकिन आपके पास एक नौकरानी होनी चाहिए।
"क्या मेरे पास मारियस नहीं है?"
“तुम्हारे पास अपना घर, अपने नौकर, एक गाड़ी, थिएटर में एक टिकट होना चाहिए। तुम्हारे लिए कुछ भी बहुत अच्छा नहीं है। अपनी दौलत का लाभ क्यों न उठाओ? धन से सुख बढ़ता है।”
कोसेट ने कोई जवाब नहीं दिया।

जीन वालजेन की यात्राएँ संक्षिप्त नहीं थीं। बिलकुल भी नहीं। जब दिल फिसल रहा हो, तो नीचे की ओर ढलान पर रुकना नहीं चाहिए।

जब जीन वालजेन अपनी यात्रा को लंबा खींचना चाहते थे और लोगों को समय का एहसास भुला देना चाहते थे, तो वे मारियस की प्रशंसा में गीत गाते थे; वे उन्हें सुंदर, नेक, साहसी, बुद्धिमान, वाक्पटु और अच्छा बताते थे। कोसेट ने तो उन्हें भी मात दे दी। जीन वालजेन ने फिर से बोलना शुरू किया। वे कभी नहीं थकते थे। मारियस—यह शब्द कभी खत्म नहीं होता था; उन छह पत्रों में कई पुस्तकें समाई हुई थीं। इस तरह जीन वालजेन ने लंबे समय तक वहाँ रहने का प्रबंध किया।

कोसेट को देखना कितना सुखद था, उसके साथ रहकर सब कुछ भूल जाना! इससे उसके घावों को राहत मिली। अक्सर ऐसा होता था कि बास्क दो बार आकर घोषणा करता था: "श्री गिलनोर्मंड ने मुझे मैडम ला बैरोन को याद दिलाने के लिए भेजा है कि भोजन परोसा जा चुका है।"

उन दिनों, जीन वालजेन घर लौटने पर बहुत सोच-विचार में डूबा रहता था।

तो क्या मारियस के मन में उभरे उस कोकून की तुलना में कोई सच्चाई थी? क्या जीन वाल्जेन सचमुच एक ऐसा कोकून था जो बना रहेगा और जो अपनी तितली से मिलने आएगा?

एक दिन वह सामान्य से अधिक समय तक स्थिर बैठा रहा। अगले दिन उसने देखा कि चूल्हे पर आग नहीं जल रही थी। —“अरे! आग नहीं जल रही!” —और उसने खुद ही इसका कारण ढूंढ लिया। —“यह तो बिल्कुल सरल है। अप्रैल का महीना है। सर्दी का मौसम खत्म हो गया है।”

"हे भगवान! यहाँ कितनी ठंड है!" कोसेट ने अंदर आते ही कहा।

“नहीं,” जीन वालजेन ने कहा।

"क्या आपने ही बास्क को आग न जलाने के लिए कहा था?"

"जी हां, क्योंकि अब मई का महीना चल रहा है।"

"लेकिन हमारे पास जून तक आग जलाने के लिए है। इस तहखाने में साल भर आग की जरूरत रहती है।"

मुझे लगा कि आग लगाना अनावश्यक था।

"यह तो बिलकुल तुम्हारे ही एक विचार जैसा है!" कोसेट ने पलटवार किया।

अगले दिन आग लग गई। लेकिन दोनों आरामकुर्सियाँ कमरे के दूसरे छोर पर दरवाजे के पास रखी थीं। “इसका क्या मतलब है?” जीन वालजेन ने सोचा।

वह आरामकुर्सियों के पास गया और उन्हें चूल्हे के पास उनकी सामान्य जगह पर वापस रख दिया।

इस आग ने उन्हें एक बार फिर प्रोत्साहित किया। उन्होंने बातचीत को उसकी सामान्य सीमा से भी आगे बढ़ा दिया। जब वे विदा लेने के लिए उठे, तो कोसेट ने उनसे कहा:

"कल मेरे पति ने मुझसे एक अजीब बात कही।"

"यह क्या था?"

“उन्होंने मुझसे कहा: ‘कोसेट, हमारी आमदनी तीस हजार लिवर है। सत्ताईस हजार तुम्हारे हैं, और तीन हजार मेरे दादाजी मुझे देते हैं।’ मैंने जवाब दिया: ‘कुल तीस हजार होते हैं।’ उन्होंने आगे पूछा: ‘क्या तुम तीन हजार में गुजारा करने की हिम्मत रखोगी?’ मैंने उत्तर दिया: ‘हाँ, बिना कुछ लिए भी। बशर्ते वो तुम्हारे साथ हो।’ और फिर मैंने पूछा: ‘तुम मुझसे ऐसा क्यों कह रहे हो?’ उन्होंने जवाब दिया: ‘मैं जानना चाहता था।’”

जीन वाल्जेन के पास जवाब देने के लिए एक शब्द भी नहीं था। कोसेट शायद उनसे कुछ स्पष्टीकरण की उम्मीद कर रही थी; वह उदास मौन में सुनता रहा। वह रू डे ल'होमे आर्मे वापस चला गया; वह इतना मग्न था कि उसने दरवाजा पहचानने में गलती कर दी और अपने घर में प्रवेश करने के बजाय, वह बगल वाले मकान में घुस गया। लगभग दो मंजिल ऊपर चढ़ने के बाद ही उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और वह वापस नीचे उतर गया।

उसके दिमाग में अटकलों का अंबार लगा हुआ था। यह स्पष्ट था कि मारियस को छह लाख फ़्रैंक के स्रोत पर संदेह था, उसे किसी संदिग्ध स्रोत का डर था, कौन जाने? शायद उसे यह भी पता चल गया था कि पैसा उसी से, जीन वालजेन से आया है, वह इस संदिग्ध संपत्ति के सामने हिचकिचा रहा था और इसे अपना मानने को तैयार नहीं था—वह यह पसंद कर रहा था कि वह और कोसेट दोनों गरीब ही रहें, बजाय इसके कि वे किसी अशुद्ध धन से समृद्ध हों।

इसके अलावा, जीन वाल्जेन को धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा कि उसे बाहर का रास्ता दिखाया जा रहा है।
अगले दिन, जब वह भूतल के कमरे में दाखिल हुआ तो उसे एक तरह का सदमा लगा।
आरामकुर्सियाँ गायब थीं। वहाँ किसी भी तरह की एक भी कुर्सी नहीं थी।
“अरे, ये क्या!” कोसेट ने अंदर आते ही हैरानी से कहा, “कुर्सियाँ तो हैं ही नहीं! आरामकुर्सियाँ कहाँ हैं?”
“वे अब यहाँ नहीं हैं,” जीन वाल्जेन ने उत्तर दिया।
"यह बहुत ज्यादा है!"
जीन वाल्जेन हकलाते हुए बोला:
"मैंने ही बास्क को उन्हें हटाने के लिए कहा था।"
और आपका कारण?
"आज मेरे पास रुकने के लिए केवल कुछ ही मिनट हैं।"
"थोड़े समय के लिए रुकना, वहां डटे रहने का कोई कारण नहीं है।"
मुझे लगता है कि बास्क लोगों को ड्राइंग रूम के लिए कुर्सियों की जरूरत थी।
"क्यों?"
"आज शाम आपके साथ कोई न कोई जरूर होगा।"
हमें किसी से कोई उम्मीद नहीं है।
जीन वाल्जेन के पास कहने के लिए एक शब्द भी नहीं बचा था।
कोसेट ने अपने कंधे उचका दिए।
“कुर्सियों को हटवाने के लिए! परसों तो तुमने आग बुझाई थी। तुम कितने अजीब हो!”
“अलविदा!” जीन वालजेन ने धीरे से कहा।
उन्होंने ये नहीं कहा: “अलविदा, कोसेट।” लेकिन उनमें ये कहने की हिम्मत भी नहीं थी: “अलविदा, मैडम।”

वह पूरी तरह से भावविभोर होकर चला गया।

इस बार वह समझ गया था।

अगले दिन वह नहीं आया। कोसेट ने इस बात को शाम को ही देखा।

“क्यों,” उसने कहा, “महाशय जीन आज यहाँ नहीं आए हैं।”

और उसे अपने दिल में हल्की सी झनझनाहट महसूस हुई, लेकिन उसे इसका एहसास भी नहीं हुआ, क्योंकि मारियस के चुंबन ने तुरंत उसका ध्यान भटका दिया।

अगले दिन वह नहीं आया।

कोसेट ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया, अपनी शाम आराम से बिताई और उस रात हमेशा की तरह चैन से सोई, और सुबह उठने पर ही उसे इस बात का ख्याल आया। वह कितनी खुश थी! उसने तुरंत निकोलेट को एम. जीन के घर भेजा यह पूछने के लिए कि क्या वह बीमार हैं और पिछली शाम क्यों नहीं आए। निकोलेट एम. जीन का जवाब लेकर आई कि वह बीमार नहीं हैं। वह व्यस्त थे। वह जल्द ही आ जाएँगे। जैसे ही उन्हें फुर्सत मिलेगी। इसके अलावा, वह एक छोटी यात्रा पर जाने वाले थे। मैडम को याद रखना चाहिए कि समय-समय पर यात्रा करना उनकी आदत थी। उन्हें उनके बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए। उन्हें उनके बारे में नहीं सोचना चाहिए।

निकोलेट ने एम. जीन के घर में प्रवेश करते ही अपनी मालकिन के शब्दों को दोहराया। उसने बताया कि मैडम ने उसे यह पता लगाने के लिए भेजा था कि एम. जीन पिछली शाम क्यों नहीं आए थे। — “मुझे वहां गए दो दिन हो गए हैं,” जीन वालजेन ने विनम्रता से कहा।

लेकिन निकोलेट ने इस टिप्पणी पर ध्यान नहीं दिया और कोसेट को इसकी सूचना नहीं दी।

IV. आकर्षण और विलुप्ति

1833 में वसंत के अंतिम महीनों और ग्रीष्म ऋतु के पहले महीनों के दौरान, माराइस में इक्का-दुक्का राहगीरों, छोटे दुकानदारों और दहलीज पर आवारागर्दी करने वालों ने काले रंग के साफ-सुथरे वस्त्र पहने एक बूढ़े व्यक्ति को देखा, जो हर दिन सूर्यास्त के समय एक ही समय पर, रू डे ल'होमे आर्मे से, रू सैंट-क्रॉइक्स-डे-ला-ब्रेटोनरी के किनारे से निकलता था, ब्लैंक्स मांटेओक्स के सामने से गुजरता था, रू कल्चर-सैंटे-कैथरीन में प्रवेश करता था, और रू डे ल'एशार्प पर पहुँचकर बाईं ओर मुड़ता था और रू सेंट-लुई में प्रवेश करता था।

वहाँ वह धीमी गति से चल रहा था, सिर झुकाए, कुछ देख नहीं रहा था, कुछ सुन नहीं रहा था, उसकी आँख एक बिंदु पर टिकी हुई थी जो उसे तारे जैसी लग रही थी, जो कभी नहीं बदलती थी, और जो कि रुए डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर का कोना था। जैसे-जैसे वह गली के कोने के पास पहुँचता गया, उसकी आँखें और चमक उठीं; एक प्रकार की खुशी ने उसकी पुतलियों को भीतरी प्रकाश की तरह रोशन कर दिया, उसके चेहरे पर एक मोहक और बनावटी भाव था, उसके होंठ अस्पष्ट हरकतें कर रहे थे, मानो वह किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहा हो जिसे वह देख नहीं रहा था, वह अस्पष्ट रूप से मुस्कुराया और जितना संभव हो सके धीरे-धीरे आगे बढ़ा। ऐसा लग रहा था मानो वह अपने गंतव्य तक पहुँचने की इच्छा तो रखता था, लेकिन साथ ही साथ उस पल से भी डरता था जब वह उसके बिल्कुल करीब होगा। जब उसके और उस गली के बीच कुछ ही घर बचे थे जो उसे आकर्षित कर रही थी, तो उसकी चाल इतनी धीमी हो गई कि कभी-कभी ऐसा लगता था मानो वह आगे बढ़ ही नहीं रहा हो। उसके सिर का डगमगाना और आँखों की पुतलियों की स्थिरता से ऐसा लग रहा था मानो कोई चुंबकीय सुई ध्रुव की ओर जा रही हो। चाहे उसे पहुँचने में कितना भी समय लगा हो, उसे आखिरकार पहुँचना ही था; वह रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर पर पहुँचा; फिर वह रुका, काँपा, उसने एक उदास झिझक के साथ आखिरी घर के कोने से अपना सिर घुमाया और उस गली में देखा, और उस दुख भरी नज़र में कुछ ऐसा था जो असंभव की चकाचौंध भरी रोशनी और उसके लिए बंद स्वर्ग के प्रतिबिंब जैसा था। फिर एक आँसू, जो धीरे-धीरे उसकी पलकों के कोने में जमा हो गया था और इतना बड़ा हो

गया था कि गिर सकता था, उसके गाल पर टपक गया और कभी-कभी उसके मुँह पर रुक गया। बूढ़े ने उसका कड़वा स्वाद चखा। इस प्रकार वह कई मिनट तक पत्थर का बना हुआ सा खड़ा रहा, फिर उसी रास्ते से उसी कदमों से वापस लौटा, और जैसे-जैसे वह पीछे हटता गया, उसकी नज़रें धुंधली होती गईं।

धीरे-धीरे, यह बूढ़ा आदमी रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर के कोने तक जाना बंद कर दिया; वह रू सेंट-लुईस में आधे रास्ते में ही रुक जाता था; कभी थोड़ा और आगे, कभी थोड़ा और पास।

एक दिन वह रू कल्चर-सैंटे-कैथरीन के कोने पर रुका और दूर से रू डेस फिल्स-डु-कैल्वेयर को देखा। फिर उसने धीरे-धीरे अपना सिर दाएं से बाएं हिलाया, मानो वह खुद को किसी बात से मना कर रहा हो, और वापस लौट गया।

जल्द ही वह सेंट-लुई स्ट्रीट तक नहीं पहुंचा। वह पावी स्ट्रीट तक पहुंचा, सिर हिलाया और वापस मुड़ गया; फिर वह ट्रोइस-पाविलन्स स्ट्रीट से आगे नहीं बढ़ा; फिर उसने ब्लैंक्स-मंटेओक्स स्ट्रीट को पार नहीं किया। ऐसा लग रहा था मानो वह एक पेंडुलम हो जिसे अब चाबी नहीं दी गई हो, और जिसके दोलन पूरी तरह रुकने से पहले छोटे होते जा रहे हों।

हर दिन वह एक ही समय पर घर से निकलता, वही यात्रा करता, लेकिन अब वह उसे पूरा नहीं करता था, और शायद अनजाने में ही, वह उसे छोटा करता जा रहा था। उसके पूरे चेहरे पर एक ही भाव झलक रहा था: इसका क्या लाभ?—उसकी आँखें बेजान थीं; उनमें कोई चमक नहीं थी। उसके आँसू भी सूख चुके थे; अब वे उसकी पलकों के कोने में नहीं रुकते थे; वह विचारशील आँख सूख चुकी थी। बूढ़े का सिर अब भी आगे की ओर झुका हुआ था; उसकी ठुड्डी कभी-कभी हिलती थी; उसकी दुबली गर्दन की सिलवटें देखना कष्टदायक था। कभी-कभी, जब मौसम खराब होता था, तो वह अपनी बगल में छाता रखता था, लेकिन उसे कभी खोलता नहीं था।

मोहल्ले की भली-भांति महिलाओं ने कहा: “वह तो निर्दोष है।” बच्चे उसके पीछे-पीछे हंसते हुए चले।

पुस्तक **9.** सर्वोच्च छाया , सर्वोच्च भोर

1. दुखी लोगों पर दया, लेकिन सुखी लोगों को उदारता प्रदान करना।

खुश रहना कितनी भयानक बात है! कितना संतोष मिलता है! कितना पूर्ण संतोष मिलता है! जीवन के झूठे लक्ष्य, सुख, को पाकर मनुष्य सच्चे लक्ष्य, कर्तव्य, को कैसे भूल जाता है!

लेकिन मान लीजिए कि यदि पाठक मारियस को दोषी ठहराता है तो वह गलत होगा।

जैसा कि हमने बताया है, मारियस ने शादी से पहले एम. फॉशेलवेंट से कोई सवाल नहीं पूछा था, और तब से वह जीन वालजेन से भी कोई सवाल पूछने से डरता था। उसे उस वादे पर पछतावा था जिसमें वह फंस गया था। वह अक्सर मन ही मन कहता था कि उसने निराशा के आगे झुककर गलती की है। उसने खुद को जीन वालजेन को धीरे-धीरे अपने घर से दूर करने और कोसेट के मन से उसे यथासंभव मिटाने तक ही सीमित रखा था। उसने एक तरह से हमेशा खुद को कोसेट और जीन वालजेन के बीच रखा था, इस विश्वास के साथ कि इस तरह कोसेट को जीन वालजेन का एहसास भी नहीं होगा और न ही वह उसके बारे में सोचेगी। यह सिर्फ मिटाना नहीं था, बल्कि एक तरह का ग्रहण था।

मारियस ने वही किया जो उसे आवश्यक और न्यायसंगत लगा। उसका मानना था कि जीन वाल्जेन से बिना कठोरता के, लेकिन बिना कमजोरी दिखाए, छुटकारा पाने के उसके पास गंभीर कारण थे, जिन्हें पाठक पहले ही देख चुके हैं, और अन्य कारण भी हैं जो आगे बताए जाएंगे।

संयोगवश, जिस मामले में उन्होंने पैरवी की थी, उसमें उनकी मुलाकात लाफिट प्रतिष्ठान के एक पूर्व कर्मचारी से हुई। इस तरह उन्हें अनजाने में ही कुछ रहस्यमयी जानकारी मिल गई, जिसे वे अपने द्वारा वादा किए गए रहस्य के प्रति सम्मान और जीन वालजेन की नाजुक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, पूरी तरह से जानने में असमर्थ रहे। उस क्षण उन्हें लगा कि उन पर एक गंभीर कर्तव्य है: छह लाख फ़्रैंक उस व्यक्ति को लौटाना, जिसकी वे पूरी सावधानी से तलाश कर रहे थे। इस बीच, उन्होंने उस धन को छूने से परहेज किया।

कोसेट की बात करें तो, उसे इन रहस्यों में से किसी के बारे में जानकारी नहीं थी; लेकिन उसे भी दोषी ठहराना अनुचित होगा।

मारियस और उसके बीच एक ऐसा शक्तिशाली आकर्षण था, जिसके कारण वह सहज रूप से और लगभग यंत्रवत रूप से वही करती थी जो मारियस चाहता था। वह "महाशय जीन" के प्रति मारियस की इच्छा से अवगत थी, और उसने उसका पालन किया। उसके पति को उससे कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं थी; वह उसके मौन इरादों के अस्पष्ट लेकिन स्पष्ट दबाव के आगे झुक गई और आँख बंद करके आज्ञा का पालन किया। इस मामले में उसकी आज्ञाकारिता मारियस की भूली हुई बातों को न याद रखने में निहित थी। उसे ऐसा करने के लिए कोई प्रयास करने की आवश्यकता नहीं थी। उसे स्वयं इसका कारण पता नहीं था, और न ही मारियस के पास उसे दोषी ठहराने का कोई कारण था, उसकी आत्मा पूरी तरह से अपने पति की हो गई थी, और जो मारियस के मन में अंधकार से घिरा था, वह उसके मन में भी छा गया।

लेकिन हमें अतिशयोक्ति नहीं करनी चाहिए; जीन वाल्जेन के संदर्भ में, यह विस्मृति और विस्मरण मात्र सतही थी। वह भूली हुई नहीं बल्कि असावधान थी। वास्तव में, वह उस व्यक्ति से दिल से जुड़ी हुई थी जिसे वह इतने लंबे समय से अपना पिता मानती थी; लेकिन वह अपने पति से कहीं अधिक प्रेम करती थी। यही वह बात थी जिसने उसके हृदय का संतुलन कुछ हद तक बिगाड़ दिया था, और उसका झुकाव एक ही ओर था।

कभी-कभी कोसेट, जीन वालजेन के बारे में बात करती और अपनी हैरानी ज़ाहिर करती। तब मारियस उसे शांत करते हुए कहते, “मुझे लगता है वह कहीं गए हुए हैं। क्या उन्होंने यह नहीं कहा था कि वह यात्रा पर जा रहे हैं?” — “हाँ, यह सच है,” कोसेट ने सोचा। “उनकी इस तरह गायब होने की आदत थी। लेकिन इतने लंबे समय के लिए नहीं।” दो-तीन बार उसने निकोलेट को रुए डे ल’होमे आर्मे में यह पता लगाने के लिए भेजा कि क्या श्रीमान जीन अपनी यात्रा से लौट आए हैं। जीन वालजेन ने जवाब में “नहीं” कहलवाया।

कोसेट ने इससे ज्यादा कुछ नहीं मांगा, क्योंकि धरती पर उसकी एकमात्र जरूरत मारियस थी।

यह भी बता दें कि कोसेट और मारियस भी अनुपस्थित थे। वे वर्नोन गए हुए थे।
मारियस कोसेट को अपने पिता की कब्र पर ले गया था।

मारियस ने धीरे-धीरे कोसेट को जीन वालजेन से दूर कर दिया। कोसेट ने इसकी अनुमति दे दी।

इसके अलावा, जिसे कुछ मामलों में बच्चों की कृतघ्नता कहा जाता है, वह हमेशा उतनी निंदा के योग्य नहीं होती जितनी समझी जाती है। यह प्रकृति की कृतघ्नता है। जैसा कि हमने पहले भी कहा है, प्रकृति "अपने आगे देखती है"। प्रकृति जीवित प्राणियों को दो भागों में बाँटती है: आने वाले और जाने वाले। जाने वाले छाया की ओर मुड़ते हैं, आने वाले प्रकाश की ओर। इस प्रकार एक खाई बन जाती है जो बूढ़ों के लिए घातक होती है, और युवाओं के लिए अनैच्छिक। यह दरार, जो पहले तो अगोचर होती है, शाखाओं के अलग होने की तरह धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। शाखाएँ तने से अलग हुए बिना उससे दूर बढ़ती जाती हैं। इसमें उनकी कोई गलती नहीं है। युवावस्था वहाँ जाती है जहाँ आनंद, त्यौहार, चमकीली रोशनी और प्रेम होता है। वृद्धावस्था अंत की ओर बढ़ती है। वे एक-दूसरे को दृष्टि से ओझल नहीं होने देते, लेकिन उनके बीच घनिष्ठ संबंध नहीं रह जाता। युवा जीवन की शीतलता को महसूस करते हैं; बूढ़े, कब्र की शीतलता को। आइए इन बेचारे बच्चों को दोष न दें।

II. बिना तेल के दीपक की अंतिम टिमटिमाहट

एक दिन, जीन वाल्जेन सीढ़ियों से नीचे उतरे, सड़क पर तीन कदम चले और एक खंभे पर बैठ गए, उसी पत्थर के खंभे पर जहाँ गैवरोश ने उन्हें 5 और 6 जून की रात के बीच ध्यान करते हुए पाया था; वे कुछ क्षण वहीं रहे, फिर वापस ऊपर चले गए। यह पेंडुलम का अंतिम दोलन था। अगले दिन वे अपने कमरे से बाहर नहीं निकले। उसके अगले दिन भी वे अपने बिस्तर से नहीं उठे।
उनकी दरबारी, जो उनके लिए थोड़ा-बहुत भोजन तैयार करती थी, जिसमें कुछ पत्तागोभी या आलू के साथ बेकन होता था, ने भूरे रंग की मिट्टी की थाली पर नजर डाली और विस्मय से कहा:
"लेकिन बेचारे, तुमने तो कल कुछ खाया ही नहीं!"
“बिल्कुल मैंने किया,” जीन वालजेन ने उत्तर दिया।
"प्लेट काफी भरी हुई है।"
“पानी के जग को देखो। यह खाली है।”
इससे यह साबित होता है कि आपने शराब पी है; इससे यह साबित नहीं होता कि आपने खाना खाया है।
“अच्छा,” जीन वाल्जेन ने कहा, “क्या होगा अगर मुझे सिर्फ पानी की भूख लगे?” "इसे प्यास कहते हैं, और जब कोई व्यक्ति उसी समय भोजन नहीं करता है, तो इसे बुखार कहते हैं।"
मैं कल खाना खाऊंगा।
“या फिर ट्रिनिटी डे पर। आज क्यों नहीं? क्या यह कहना सही है कि ‘मैं कल खाऊँगा’? बिना छुए ही अपनी थाली छोड़ देने का ख्याल ही कितना बुरा लगता है! मेरे लेडीफिंगर आलू बहुत स्वादिष्ट थे!”
जीन वाल्जेन ने बूढ़ी औरत का हाथ पकड़ा:
उन्होंने अपनी दयालु आवाज में कहा, "मैं आपसे वादा करता हूं कि मैं उन्हें खाऊंगा।"

“मैं तुमसे प्रसन्न नहीं हूँ,” द्वारपाल ने उत्तर दिया।

जीन वालजेन को इस नेक महिला के सिवा कोई और इंसान नज़र नहीं आया। पेरिस में कुछ ऐसी गलियाँ हैं जिनसे कोई नहीं गुज़रता, और कुछ ऐसे घर हैं जहाँ कोई नहीं जाता। वह उन्हीं गलियों और उन्हीं घरों में से एक में था।

जब वह बाहर जाना शुरू किया, तो उसने एक तांबे के कारीगर से कुछ सू (लगभग 100 यूरो) में तांबे का एक छोटा सा क्रूस खरीदा, जिसे उसने अपने बिस्तर के सामने एक कील पर लटका दिया था। वह सूली देखने में हमेशा अच्छी लगती है।

एक हफ़्ता बीत गया, और जीन वालजेन अपने कमरे में एक कदम भी नहीं रखा। वह अब भी बिस्तर पर ही पड़ा था। दरबारी ने उसके पति से कहा: “ऊपर वाले कमरे में जो भले आदमी हैं, वे उठते नहीं, खाते-पीते नहीं, उनकी उम्र ज़्यादा नहीं है। उस आदमी को बहुत दुख हैं। मेरे मन से यह बात नहीं निकल रही कि उसकी बेटी ने गलत शादी कर ली है।”

कुली ने वैवाहिक प्रभुत्व के लहजे में उत्तर दिया:

“अगर वह अमीर है, तो उसे डॉक्टर की सुविधा मिलनी चाहिए। अगर वह अमीर नहीं है, तो उसे बिना डॉक्टर के ही रहने दो। अगर उसके पास डॉक्टर नहीं होगा तो वह मर जाएगा।”

और अगर उसके पास एक है तो?

“वह मर जाएगा,” कुली ने कहा।

चौकीदार ने एक पुराने चाकू से उस जगह से घास खुरचनी शुरू कर दी जिसे वह अपना फुटपाथ कहती थी, और घास के तिनके उखाड़ते हुए वह बड़बड़ाने लगी:

“यह तो बहुत दुख की बात है। कितना साफ-सुथरा बूढ़ा आदमी था! वह तो मुर्गे की तरह सफेद हो गया है।”

जब वह गली के अंत से गुजर रहा था तो उसकी नजर मोहल्ले के डॉक्टर पर पड़ी; उसने स्वयं ही उससे ऊपर आने का अनुरोध करने का बीड़ा उठाया।

“यह दूसरी मंजिल पर है,” उसने कहा। “आपको बस अंदर जाना है। चूंकि वह सज्जन अब अपने बिस्तर से हिलते भी नहीं हैं, इसलिए दरवाजा हमेशा खुला रहता है।”

डॉक्टर ने जीन वालजेन को देखा और उनसे बात की।

जब वह वापस नीचे आया तो द्वारपाल ने उससे पूछताछ की:
तो, डॉक्टर साहब?
"आपका बीमार आदमी वास्तव में बहुत बीमार है।"
उसे क्या हुआ है?
“सब कुछ और कुछ भी नहीं। वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसने, देखने में तो ऐसा लगता है जैसे किसी प्रिय व्यक्ति को खो दिया हो। लोग इसी वजह से मर जाते हैं।” “उसने तुमसे क्या कहा?”
उन्होंने मुझे बताया कि उनका स्वास्थ्य अच्छा है।
"क्या आप दोबारा आएंगे, डॉक्टर?"
“जी हां,” डॉक्टर ने जवाब दिया। “लेकिन मेरे अलावा किसी और को भी आना होगा।”

III. फाउचेलेवेंट की गाड़ी उठाने वाले व्यक्ति के लिए कलम भारी है

एक शाम जीन वालजेन को कोहनी के बल उठने में कठिनाई हुई; उन्होंने अपनी कलाई पर हाथ फेरा लेकिन नब्ज़ नहीं मिली; उनकी साँसें छोटी और रुक-रुक कर चल रही थीं; उन्हें एहसास हुआ कि वे पहले से कहीं ज़्यादा कमज़ोर हो गए हैं। फिर, शायद किसी गहरी चिंता के दबाव में, उन्होंने हिम्मत जुटाई, खुद को बैठने की मुद्रा में लाया और कपड़े पहने। उन्होंने अपने पुराने मज़दूर वाले कपड़े पहने। चूंकि वे अब बाहर नहीं जाते थे, इसलिए उन्होंने वही कपड़े फिर से पहन लिए थे और उन्हें ही पसंद करते थे। कपड़े पहनते समय उन्हें कई बार रुकना पड़ा; केवल अपनी आस्तीनें जैकेट में डालने से ही उनके माथे से पसीना टपकने लगा।

चूंकि वह अकेला था, इसलिए उसने अपना बिस्तर प्रतीक्षालय में रख दिया था, ताकि उस सुनसान कमरे में कम से कम समय बिताया जा सके।

उसने सूटकेस खोला और उसमें से कोसेट के कपड़े निकाले।

उसने उसे अपने बिस्तर पर फैला दिया।

बिशप के मोमबत्ती स्टैंड चिमनी के ऊपर अपनी जगह पर रखे थे। उन्होंने दराज से दो मोमबत्तियाँ निकालीं और उन्हें स्टैंड में रख दिया। फिर, यद्यपि अभी भी दिन का उजाला था—गर्मियों का मौसम था—उन्होंने उन्हें जलाया। ठीक इसी प्रकार, जहाँ शव रखा होता है, वहाँ दिन के उजाले में भी मोमबत्तियाँ जलती हुई देखी जाती हैं।

एक फर्नीचर से दूसरे फर्नीचर तक जाने में उठाया गया हर कदम उसे थका देता था और उसे बैठना पड़ता था। यह साधारण थकान नहीं थी जो केवल शक्ति को समाप्त करके उसे पुनः प्राप्त करती है; यह उसकी सारी संभव गति का अवशेष था, यह जीवन का वह निचोड़ था जो अथक प्रयासों में बूंद-बूंद करके बह जाता है और जो कभी पुनः प्राप्त नहीं हो सकता।

जिस कुर्सी पर वह गिर पड़ा, वह उस दर्पण के सामने रखी थी, जो उसके लिए इतना घातक और मारियस के लिए इतना सौभाग्यशाली साबित हुआ था, जिसमें उसने सोख्ता कागज पर कोसेट की उल्टी लिखावट पढ़ी थी। उसने दर्पण में खुद को देखा और पहचान नहीं पाया। वह अस्सी वर्ष का था; मारियस के विवाह से पहले, वह मुश्किल से पचास वर्ष का होता; वह वर्ष तीस वर्ष के समान लग रहा था। उसके माथे पर अब उम्र की झुर्रियाँ नहीं थीं, बल्कि मृत्यु का रहस्यमय चिह्न था। उस निर्दयी नाखून का धंसाव वहाँ महसूस किया जा सकता था। उसके गाल लटके हुए थे; उसके चेहरे की त्वचा का रंग ऐसा था मानो उस पर मिट्टी जमी हो; उसके मुँह के कोने ऐसे झुके हुए थे जैसे प्राचीन काल में कब्रों पर उकेरे गए मुखौटों में होते हैं। वह तिरस्कार भरी निगाहों से अंतरिक्ष में घूर रहा था; कोई कह सकता था कि वह उन महान दुखद प्राणियों में से एक था जिनके पास किसी से शिकायत करने का कारण होता है।

वह उस अवस्था में था, निराशा के अंतिम चरण में, जिसमें दुःख का प्रवाह रुक जाता है; वह एक तरह से जम जाता है; आत्मा पर निराशा के थक्के जैसा कुछ होता है।

रात हो चुकी थी। उसने बड़ी मेहनत से एक मेज और पुरानी कुर्सी को चूल्हे के पास खींचा और मेज पर एक कलम, कुछ स्याही और कुछ कागज रख दिए।

यह सब करने के बाद, उसे बेहोशी का दौरा पड़ा। जब उसे होश आया, तो उसे प्यास लगी थी। चूंकि वह घड़ा उठा नहीं सकता था, इसलिए उसने उसे बड़ी तकलीफ से अपने मुंह की ओर झुकाया और एक घूंट पानी पी लिया।

कलम और स्याही दोनों का लंबे समय से इस्तेमाल नहीं हुआ था, इसलिए कलम की नोक मुड़ गई थी, स्याही सूख गई थी। उसे उठकर स्याही में कुछ बूँद पानी डालना पड़ा, जिसमें उसे दो-तीन बार रुकना और बैठना पड़ा, और उसे कलम के पिछले हिस्से से लिखना पड़ा। वह बीच-बीच में अपना माथा पोंछता रहा।

फिर वह बिस्तर की ओर मुड़ा और, खड़े होने में असमर्थ होने के कारण, अभी भी बैठा हुआ, उसने उस छोटी काली पोशाक और उन सभी प्रिय वस्तुओं को निहारना शुरू कर दिया।

ये चिंतन घंटों तक चले, जो मिनटों की तरह प्रतीत हुए।

अचानक ही वह कांप उठा, उसे लगा जैसे कोई बच्चा उस पर हावी हो रहा हो; उसने अपनी कोहनियों को मेज पर टिकाया, जो बिशप की मोमबत्तियों से रोशन थी, और कलम उठा ली। उसका हाथ कांप रहा था। उसने धीरे-धीरे निम्नलिखित कुछ पंक्तियाँ लिखीं:

“कोसेट, मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ। मैं तुम्हें समझाने जा रही हूँ। तुम्हारे पति ने मुझे यह समझाने में सही किया कि मुझे चले जाना चाहिए; लेकिन उनके विश्वास में थोड़ी सी गलती थी, हालाँकि वे सही थे। वे बहुत अच्छे हैं। मेरे मरने के बाद भी उनसे प्यार करना। श्रीमान पोंटमर्सी, मेरी प्यारी बच्ची से प्यार करना। कोसेट, यह कागज़ मिल जाएगा; मैं तुमसे यही कहना चाहती हूँ, तुम आंकड़े देखोगी, अगर मुझे याद रहे तो, ध्यान से सुनो, यह पैसा सचमुच तुम्हारा है। पूरी बात यह है: सफेद जेट नॉर्वे से आता है, काला जेट इंग्लैंड से आता है, काले कांच के गहने जर्मनी से आते हैं। जेट सबसे हल्का, सबसे कीमती और सबसे महंगा होता है। इसकी नकलें फ्रांस और जर्मनी दोनों जगह बनाई जा सकती हैं। इसके लिए दो इंच चौकोर एक छोटा निहाई और मोम को नरम करने के लिए शराब से जलने वाला एक दीपक चाहिए। मोम पहले राल और कालिख से बनाया जाता था और एक पाउंड के चार लिवर लगते थे। मैंने इसे गोंद से बनाने का एक तरीका ईजाद किया है। और तारपीन। इसकी कीमत तीस सू से अधिक नहीं होती, और यह कहीं बेहतर है। बकल बैंगनी रंग के कांच से बने होते हैं, जिसे इस मोम की मदद से काले लोहे के एक छोटे से फ्रेम पर मजबूती से चिपकाया जाता है। लोहे के आभूषणों के लिए कांच बैंगनी होना चाहिए, और सोने के आभूषणों के लिए काला। स्पेन इसका बहुत अधिक मात्रा में खरीदता है। यह जेट का देश है…”

यहां वह रुका, कलम उसकी उंगलियों से गिर गई, उसे एक सिसकी सी आ गई जो कभी- कभी उसके भीतरी गहराई से उमड़ आती थी; बेचारे ने अपने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया और सोचने लगा।

“ओह!” वह मन ही मन रोया [दुख भरी चीखें, जिन्हें केवल ईश्वर ही सुन सकता था], “सब कुछ समाप्त हो गया। मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊंगा। वह बस एक मुस्कान बनकर मेरे ऊपर से गुज़र गई। मैं उसे फिर देखे बिना ही रात के अंधेरे में डूबने वाला हूँ। ओह! एक पल, एक क्षण, उसकी आवाज़ सुनने के लिए, उसके वस्त्र को छूने के लिए, उसे निहारने के लिए, उस परी को! और फिर मर जाना! मरना तो कुछ

भी नहीं है, भयानक तो उसे देखे बिना मरना है। वह मुझ पर मुस्कुराती, मुझसे एक शब्द कहती, क्या इससे किसी को कोई हानि होती? नहीं, सब कुछ समाप्त हो गया, और हमेशा के लिए। मैं यहाँ बिल्कुल अकेला हूँ। हे भगवान! हे भगवान! मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊंगा!” उसी क्षण दरवाजे पर दस्तक हुई।

IV. स्याही की एक बोतल जो केवल सफेदी लाने में सफल रही।

उसी दिन, या अधिक सटीक रूप से कहें तो, उसी शाम, जब मारियस मेज से उठकर अपने अध्ययन कक्ष में जाने ही वाला था कि उसे एक मामले पर विचार करना था, तभी बास्क ने उसे एक पत्र देते हुए कहा: "पत्र लिखने वाला व्यक्ति प्रतीक्षालय में है।"

कोसेट ने दादाजी का हाथ पकड़ रखा था और वह बगीचे में टहल रही थी।

एक पत्र, किसी मनुष्य की तरह, देखने में अनाकर्षक लग सकता है। खुरदुरा कागज, बेतरतीब ढंग से तह किया हुआ—कुछ पत्रों को देखकर ही अरुचिकर लगता है।

बास्क द्वारा लाया गया पत्र इसी प्रकार का था।

मारियस ने उसे उठाया। उसमें तंबाकू की गंध आ रही थी। गंध की तरह कोई और चीज स्मृति को ताजा नहीं कर सकती। मारियस ने उस तंबाकू को पहचान लिया। उसने उस पर लिखे शब्द पढ़े: "महाशय, बैरन पोमेरसी को। उनके होटल में।" तंबाकू की गंध पहचानते ही उसने लिखावट भी पहचान ली। कहा जा सकता है कि आश्चर्य की भी अपनी एक अलग ही चमक होती है।

मारियस मानो इन्हीं चमकों में से एक से प्रकाशित हो गया था।

गंध की वह रहस्यमयी शक्ति, जो स्मृति को सहारा देती है, ने उसके भीतर एक पूरी नई दुनिया को पुनर्जीवित कर दिया था। यह निश्चित रूप से कागज़ था, मोड़ने का तरीका था, स्याही का हल्का रंग था; यह निश्चित रूप से जानी- पहचानी लिखावट थी, और विशेष रूप से क्या यह वही तंबाकू था?

उसके मन में जोंड्रेट का अटारी कक्ष उभर आया।

इस प्रकार, संयोग का एक विचित्र मोड़! जिन दो सुगंधों की वह इतनी लगन से तलाश कर रहा था, वह सुगंध जिसके संबंध में उसने हाल ही में फिर से इतने

प्रयास किए थे और जिसे वह हमेशा के लिए खोया हुआ मान रहा था, वह स्वयं प्रकट हो गई और उसके सामने आ गई।

उसने उत्सुकता से सील तोड़ी और पढ़ा:

बैरन:

यदि परमेश्वर ने मुझे ये प्रतिभाएँ दी होतीं, तो मैं संस्थान का सदस्य बैरन थेनार्ड होता, पर मैं नहीं हूँ। मैं केवल उन्हीं के समान हूँ, और यदि यह स्मृति मुझे आपकी कृपाओं के योग्य बनाती है, तो मैं प्रसन्न हूँ। आप मुझे जो सम्मान देंगे, वह प्रतिफल स्वरूप होगा। मेरे पास एक व्यक्ति से संबंधित एक रहस्य है। यह व्यक्ति आपसे संबंधित है। मैं यह रहस्य आपके लिए प्रस्तुत करता हूँ, ताकि आपको उपयोगी होने का सम्मान प्राप्त हो सके। मैं आपको उस व्यक्ति को आपके सम्मानित परिवार से निकालने का सरल उपाय बताऊँगा, जिसका वहाँ कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि मैडम ला बैरोन उच्च कुल की हैं।
सद्गुण का आश्रय अपराध के साथ तब तक नहीं रह सकता जब तक कि वह त्याग न दे।

मैं प्रवेश कक्ष में महाशय बैरन के आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा था।

सम्मान के साथ।

पत्र पर "थेनार्ड" के हस्ताक्षर थे।

यह हस्ताक्षर नकली नहीं था। यह केवल थोड़ा संक्षिप्त था।

इसके अलावा, सारी जटिल प्रक्रिया और वर्तनी ने रहस्योद्घाटन को पूरा कर दिया। उत्पत्ति का प्रमाण पत्र पूर्ण था।

मारियस की भावनाएँ गहरी थीं। हैरानी के बाद, उसे खुशी का एहसास हुआ। अगर अब उसे वह दूसरा आदमी मिल जाए जिसकी उसे तलाश थी, वह आदमी जिसने उसे बचाया था, मारियस, तो उसकी सारी इच्छाएँ मिट जाएँगी।

उसने अपने सेक्रेटरी का दराज खोला, उसमें से कुछ नोट निकाले, उन्हें अपनी जेब में रखा, सेक्रेटरी को फिर से बंद किया और घंटी बजाई। बास्क ने आधा दरवाजा खोला।

"उस आदमी को अंदर आने दो," मारियस ने कहा।

बास्क ने घोषणा की:

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

वेशभूषा, कहीं और एक साहित्यकार के वस्त्र, और उससे आगे एक राजनेता की पोशाक।

यह प्राणी पेरिस में होने वाले धूर्तता के विशाल नाटक का वेशभूषाकार था। उसका अड्डा वह हरा कमरा था जहाँ से चोरी की शुरुआत होती थी और जहाँ बदमाशी छिप जाती थी। एक फटेहाल बदमाश इस ड्रेसिंग रूम में आता, अपने तीस सू जमा करता और अपनी भूमिका के अनुसार अपने लिए उपयुक्त पोशाक चुनता, और सीढ़ियों से उतरते ही वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन जाता। अगले दिन, कपड़े ईमानदारी से लौटा दिए जाते, और वेशभूषाकार, जो चोरों पर पूरी तरह भरोसा करता था, कभी लूटा नहीं गया। इन कपड़ों में एक ही असुविधा थी, वे "फिट नहीं होते थे"; क्योंकि वे पहनने वालों के लिए नहीं बनाए गए थे, इसलिए वे किसी के लिए बहुत तंग, किसी के लिए बहुत ढीले होते थे और किसी पर भी ठीक से फिट नहीं होते थे। हर जेबकतरा, चाहे वह सामान्य से अधिक हो या कम, वेशभूषाकार की पोशाकों में असहज महसूस करता था। यह आवश्यक था कि कोई न तो बहुत मोटा हो और न ही बहुत दुबला। वेशभूषाकार ने केवल साधारण पुरुषों की कल्पना की थी। उसने सबसे पहले हाथ लगने वाले बदमाश से ही उस प्रजाति का माप-जोख कर लिया था, जो न तो मोटा था, न पतला, न लंबा, न छोटा। इसलिए, ऐसे अनुकूलन करने पड़ते थे जो कभी- कभी मुश्किल होते थे और जिनसे चेंजर के ग्राहक यथासंभव खुद को बचा लेते थे। अपवादों का तो और भी बुरा हाल था! उदाहरण के लिए, राजनेता का सूट, जो सिर से पैर तक काला होता है और इसलिए उचित भी होता है, पिट के लिए बहुत बड़ा और कैस्टेलसिकाला के लिए बहुत छोटा होता। चेंजर की सूची में राजनेता के पहनावे का विवरण इस प्रकार दिया गया था; हम इसे यहाँ लिख रहे हैं:

“काले कपड़े का कोट, काले ऊन की पतलून, रेशमी जैकेट, जूते और लिनन।” हाशिये पर लिखा था: “पूर्व राजदूत,” और एक टिप्पणी जिसे हम भी यहाँ लिख रहे हैं: “एक अलग डिब्बे में, करीने से घुंघराली विग, हरे रंग के चश्मे, मुहरें, और एक इंच लंबे दो छोटे पंख, सूती कपड़े में लिपटे हुए।” यह सब उस राजनेता, पूर्व राजदूत का था। यह पूरा पहनावा, अगर हम कहें तो, जर्जर था; सिलाई सफेद थी, एक कोहनी पर एक अस्पष्ट बटनहोल खुला हुआ था; इसके अलावा, कोट का एक बटन छाती पर गायब था; लेकिन यह मामूली बात थी; क्योंकि राजनेता का हाथ हमेशा कोट के अंदर और दिल पर रखा होता है, इसलिए उसका काम गायब बटन को छुपाना था।

यदि मारियस पेरिस के गुप्त संस्थानों से परिचित होता, तो वह बास्क द्वारा अभी-अभी दिखाए गए आगंतुक की पीठ पर, चेंजर की उस दुकान से उधार लिए गए राजनेता के सूट को तुरंत पहचान लेता।

मारियस को उस व्यक्ति के अलावा किसी और को देखकर निराशा हुई जिसे वह देखने की उम्मीद कर रहा था, और यही निराशा नवागंतुक के लिए नुकसानदायक साबित हुई।

उसने उस व्यक्ति को सिर से पैर तक देखा, जबकि वह व्यक्ति अतिशयोक्ति करते हुए झुक रहा था, और उसने संक्षिप्त स्वर में पूछा:

"आप क्या चाहते हैं?"

उस व्यक्ति ने एक सौम्य मुस्कान के साथ उत्तर दिया, जिसकी मगरमच्छ की स्नेहपूर्ण मुस्कान से कुछ झलक मिलती है:

"मुझे तो यह असंभव ही लगता है कि मुझे समाज में महाशय बैरन को देखने का सौभाग्य न मिला हो। मुझे लगता है कि वास्तव में मैं उनसे कई साल पहले मैडम ला प्रिंसेस बागेशन के घर और फ्रांस के लॉर्ड ऑफ द पीयर, विस्काउंट डैम्ब्रे के ड्राइंग रूम में व्यक्तिगत रूप से मिला था।"

किसी अनजान व्यक्ति को पहचानने का दिखावा करना धूर्तता की एक अच्छी तरकीब होती है।

मारियस ने उस आदमी के बोलने के तरीके पर ध्यान दिया। उसने उसके लहजे और हाव-भाव पर गौर किया, लेकिन उसकी निराशा बढ़ती गई; उच्चारण नाक से निकल रहा था और उस शुष्क, तीखे स्वर से बिल्कुल अलग था जिसकी उसे उम्मीद थी।

वह पूरी तरह से पराजित हो गया था।

उन्होंने कहा, “मैं न तो मैडम बागरेशन को जानता हूँ और न ही एम. डैम्ब्रे को। मैंने अपने जीवन में कभी भी उनमें से किसी के घर में कदम नहीं रखा है।”

जवाब अभद्र था। वह शख्सियत, किसी भी कीमत पर विनम्र बने रहने के लिए दृढ़ संकल्पित थी, और उसने ज़िद की।

“तो फिर मैंने महाशय को शैतोब्रिएंड के यहाँ ही देखा होगा! मैं शैतोब्रिएंड को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। वह बहुत मिलनसार हैं। वह कभी-

कभी मुझसे कहते हैं: ‘थेनार्ड, मेरे दोस्त… क्या तुम मेरे साथ एक गिलास शराब नहीं पियोगे?’”

मारियस की भौंहें और भी गंभीर होती गईं:

“मुझे कभी भी एम. डी. चेटोब्रिएंड द्वारा स्वागत किए जाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है। चलिए, बात को यहीं खत्म करते हैं। आप क्या चाहते हैं?”

उस कठोर आवाज को सुनकर वह व्यक्ति और झुक गया।

“महामहिम बैरन, कृपया मेरी बात सुनिए। अमेरिका में, पनामा के पास एक जिले में, ला जोया नाम का एक गाँव है। उस गाँव में केवल एक ही घर है, एक बड़ा, चौकोर तीन मंजिला घर, जो धूप में सुखाई गई ईंटों से बना है, वर्ग की प्रत्येक भुजा पाँच सौ फुट लंबी है, प्रत्येक मंजिल नीचे वाली मंजिल से बारह फुट पीछे हटती है, इस प्रकार कि सामने एक चबूतरा बनता है जो इमारत का चक्कर लगाता है, केंद्र में एक भीतरी आंगन है जहाँ रसद और गोला-बारूद रखा जाता है; कोई खिड़कियाँ नहीं, कोई छेद नहीं, कोई दरवाजे नहीं, सीढ़ियाँ नहीं, जमीन से पहले चबूतरे तक चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ, पहले से दूसरे तक और दूसरे से तीसरे तक, भीतरी आंगन में उतरने के लिए सीढ़ियाँ, कमरों के लिए कोई दरवाजे नहीं, कोई जाल वाले दरवाजे नहीं, कमरों तक जाने के लिए कोई सीढ़ियाँ नहीं, सीढ़ियाँ; शाम को जाल बंद कर दिए जाते हैं, सीढ़ियाँ हटा दी जाती हैं, छेदों से कार्बाइन और ब्लंडरबस तनी रहती हैं; प्रवेश का कोई साधन नहीं, दिन में एक घर, रात में एक किला, आठ सौ निवासी—यही वह गाँव है। इतनी सावधानियाँ क्यों? क्योंकि वह इलाका खतरनाक है; वहाँ नरभक्षी भरे पड़े हैं। तो फिर लोग वहाँ क्यों जाते हैं? क्योंकि वह इलाका अद्भुत है; वहाँ सोना पाया जाता है।

"तुम कहना क्या चाह रहे हो?" मारियस ने बीच में ही टोकते हुए कहा, जो निराशा से अधीर हो चुका था।

“इस पर, महाशय बैरन। मैं एक बूढ़ा और थका हुआ राजनयिक हूँ। प्राचीन सभ्यता ने मुझे अपने हाल पर छोड़ दिया है। मैं आदिवासियों से मुकाबला करना चाहता हूँ।”

"कुंआ?"

“महाशय बैरन, स्वार्थ ही संसार का नियम है। दिनभर मेहनत करने वाली किसान स्त्री, जब मेहनती लोग उसके पास से गुजरते हैं तो मुड़कर देखती है, लेकिन अपने खेतों में काम करने वाली किसान मालकिन मुड़कर नहीं देखती। गरीब का कुत्ता अमीर पर भौंकता है, अमीर का कुत्ता गरीब पर भौंकता है। हर कोई अपने लिए। स्वार्थ—यही मनुष्य का उद्देश्य है। सोना—यही आकर्षण का केंद्र है।”

“तो फिर क्या? खत्म।”

“मैं ला जोया जाकर बसना चाहता हूँ। हम तीन लोग हैं। मेरे साथ मेरी पत्नी और मेरी प्रेमिका है; एक बहुत ही खूबसूरत लड़की। यात्रा लंबी और खर्चीली है। मुझे थोड़े पैसे चाहिए।”

“इससे मेरा क्या लेना-देना?” मारियस ने पूछा।

अजनबी ने अपनी टाई से अपनी गर्दन बाहर निकाली, जो गिद्ध की एक विशिष्ट मुद्रा है, और एक बढ़ी हुई मुस्कान के साथ जवाब दिया।

"क्या महाशय बैरन ने मेरा पत्र नहीं पढ़ा है?"

इसमें कुछ सच्चाई थी। दरअसल, मारियस को पत्र की सामग्री याद नहीं थी। उसने पत्र पढ़ा नहीं था, बल्कि लिखावट देखी थी। उसे ठीक से याद नहीं आ रहा था। लेकिन कुछ क्षण पहले ही उसे याद आया। उसने वह बात नोट कर ली: "मेरी पत्नी और मेरी युवती।"

उसने अजनबी पर तीक्ष्ण निगाह डाली। एक न्यायाधीश भी इतनी सटीक निगाह नहीं डाल सकता था। मानो वह उसका इंतज़ार कर रहा हो।

उन्होंने केवल इतना ही उत्तर दिया:

"मामले को स्पष्ट रूप से बताएं।"

अजनबी ने अपने दोनों हाथों को अपनी दोनों जेबों में डाला, अपनी पीठ को सीधा किए बिना खुद को सीधा खड़ा किया, लेकिन अपनी हरी चश्मे की निगाहों से मारियस को ध्यान से देखने लगा।

"ठीक है, महाशय बैरन। मैं स्पष्ट-स्पष्ट बात करूँगा। मुझे आपको एक रहस्य बेचना है।"

“एक रहस्य?”
एक रहस्य।
“इससे मुझे क्या लेना-देना है?”
"कुछ हद तक।"
इसका रहस्य क्या है?
मारियस उस व्यक्ति की बातें सुनते हुए उसे और भी गौर से देखने लगा।
“मैं निःशुल्क शुरू करता हूँ,” अजनबी ने कहा। “आप देखेंगे कि मैं दिलचस्प हूँ।”
"बोलना।"
"महामहिम बैरन, आपके घर में एक चोर और एक हत्यारा मौजूद है।"
मारियस सिहर उठा।
“मेरे घर में? नहीं,” उसने कहा।
शांत स्वभाव वाले उस अजनबी ने अपनी टोपी को कोहनी से झाड़ा और आगे बढ़ गया: “एक हत्यारा और एक चोर। ध्यान दें, महाशय बैरन, कि मैं यहाँ पुराने कृत्यों की बात नहीं कर रहा हूँ, बीते समय के उन कृत्यों की बात नहीं कर रहा हूँ जिन्हें कानून के समक्ष समय सीमा और ईश्वर के समक्ष पश्चाताप से मिटाया जा सकता है। मैं हाल के कृत्यों की बात कर रहा हूँ, उन वास्तविक तथ्यों की बात कर रहा हूँ जो इस समय न्याय के लिए अभी भी अज्ञात हैं। मैं आगे कहता हूँ। इस व्यक्ति ने झूठे नाम से आपका विश्वास जीता है, और लगभग आपके परिवार में घुसपैठ कर ली है। मैं आपको उसका असली नाम बताने जा रहा हूँ। और वह भी मुफ्त में।”
"मैं सुन रहा हूँ।"
उनका नाम जीन वाल्जेन है।
"मुझे यह पता है।"
मैं आपको बिल्कुल मुफ्त में बताने जा रहा हूँ कि वह कौन है।
"बोलते रहो।"

वह एक पूर्व अपराधी है।
"मुझे यह पता है।"
"आप यह जानते हैं क्योंकि मुझे आपको यह बताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।" नहीं। मुझे पहले से ही पता था।
मारियस का ठंडा स्वर, उसका दोहरा जवाब "मुझे पता है", और उसकी संक्षिप्तता, जो संवाद के लिए अनुकूल नहीं थी, ने अजनबी के भीतर दबी हुई क्रोध की भावना को भड़का दिया। उसने चुपके से मारियस पर एक तीखी नज़र डाली, जो पल भर में शांत हो गई। हालांकि वह नज़र बहुत तेज़ थी, लेकिन ऐसी थी जिसे एक बार देखने के बाद इंसान पहचान लेता है; मारियस की नज़र से वह नहीं बच पाई। कुछ खास विचार केवल कुछ खास आत्माओं से ही निकलते हैं; आंखें, जो विचारों का मुखद्वार हैं, उनसे चमक उठती हैं; चश्मा कुछ नहीं छुपा सकता; नरक पर शीशा लगाकर देखो!
अजनबी ने मुस्कुराते हुए अपनी बात जारी रखी:
मैं महाशय बैरन का खंडन नहीं करूँगा। वैसे भी, आपको यह समझना चाहिए कि मुझे अच्छी जानकारी है। अब जो बात मुझे आपको बतानी है, वह केवल मुझे ही पता है। यह मैडम ला बैरोन की संपत्ति से संबंधित है। यह एक असाधारण रहस्य है। यह बिक्री के लिए है—मैं आपको इसका पहला प्रस्ताव देता हूँ। सस्ता। बीस हजार फ्रैंक।
"मैं भी उस रहस्य को उतना ही जानता हूँ जितना बाकी लोग," मारियस ने कहा।
उस व्यक्ति ने अपनी कीमत में थोड़ी कमी करना आवश्यक समझा।
"महामहिम बैरन, दस हजार फ्रैंक कहिए और मैं बोलूंगा।"
मैं आपसे फिर दोहराता हूँ कि आप मुझे कुछ नहीं बता सकते। मैं जानता हूँ कि आप मुझसे क्या कहना चाहते हैं।
उस आदमी की आँखों में एक नई चमक कौंधी। उसने कहा:
लेकिन मुझे आज भोजन करना ही होगा। यह एक असाधारण रहस्य है, मैं आपको बता दूं। महाशय बैरन, मैं बोलूंगा। मैं बोलता हूं। मुझे बीस फ्रैंक दीजिए। मारियस ने उसे ध्यान से देखा:

"मैं तुम्हारा असाधारण रहस्य जानता हूँ, ठीक वैसे ही जैसे मैं जीन वालजेन का नाम जानता था, ठीक वैसे ही जैसे मैं तुम्हारा नाम जानता हूँ।"
"मेरा नाम?"
"हाँ।"
“यह मुश्किल नहीं है, महाशय बैरन। मुझे आपको पत्र लिखने और यह बात बताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। थेनार्ड।”
“—डायर।”
"अरे?"
“थेनार्डियर।”
“वो कौन है?”
खतरे में साही के बाल खड़े हो जाते हैं, भृंग मरने का नाटक करता है, पुराने रक्षक एक वर्गाकार आकृति बनाते हैं; यह आदमी जोर से हंस पड़ा।
फिर उसने अपनी कोट की आस्तीन से धूल का एक कण झटके से झाड़ दिया।
मारियस ने आगे कहा:
"आप जोंड्रेटे नामक मजदूर, फैबंटू नामक हास्य कलाकार, जेनफ्लोट नामक कवि, डॉन अल्वारेस नामक स्पेनिश व्यक्ति और मिस्ट्रेस बालिजार्ड भी हैं।" “मालकिन क्या?”
और तुम मॉन्टफर्मेइल में एक शराबखाना चलाते थे।
“नशाखापड़खाना! बिलकुल नहीं।”
और मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम्हारा नाम थेनार्डियर है।
मैं इससे इनकार करता हूँ।
और तुम एक बदमाश हो। ये लो।
और मारियस ने अपनी जेब से एक नोट निकाला और उसके चेहरे पर फेंक दिया।
"धन्यवाद! मुझे क्षमा करें! पाँच सौ फ़्रैंक! महाशय ले बैरन!"
और वह व्यक्ति, भावविभोर होकर, झुक गया, नोट को उठाया और उसकी जांच की।

“पांच सौ फ्रैंक!” वह चौंककर फिर से कहने लगा। और उसने धीमी आवाज में हकलाते हुए कहा: “एक ईमानदार चोर।”

फिर अचानक:

“ठीक है, तो ऐसा ही हो!” उसने कहा। “चलो अब आराम से बैठ जाते हैं।”

और बंदर जैसी फुर्ती से, अपने बालों को पीछे झटकते हुए, अपने चश्मे को उतारते हुए, और अपनी नाक से उन दो कलमों को हाथ की सफाई से हटाते हुए, जिनका जिक्र हाल ही में किया गया था और जिन्हें पाठक इस पुस्तक के दूसरे पृष्ठ पर भी देख चुके हैं, उन्होंने अपना चेहरा ऐसे उतार दिया जैसे कोई आदमी अपनी टोपी उतारता है।

उसकी आंखें चमक उठीं; उसकी असमान भौंहें, जिनमें कहीं गड्ढे थे और कहीं उभार, ऊपर से भयंकर रूप से झुर्रीदार, स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगीं, उसकी नाक चोंच की तरह नुकीली हो गई; शिकारी आदमी का उग्र और चतुर चेहरा फिर से उभर आया।

“महाशय बैरन अचूक हैं,” उन्होंने स्पष्ट स्वर में कहा, जिसमें से नाक से निकलने वाली कर्कश ध्वनि पूरी तरह गायब हो गई थी, “मैं थेनार्डियर हूँ।”

और उसने अपनी झुकी हुई पीठ सीधी कर ली।

थेनार्डियर, दरअसल वही था, अजीब तरह से हैरान था; अगर वह ऐसा करने में सक्षम होता तो वह परेशान हो जाता। वह आश्चर्य लाने आया था, और वही आश्चर्य का शिकार हो गया। यह अपमान उसके लिए पाँच सौ फ़्रैंक के बराबर था, और सब कुछ मिलाकर उसने इसे स्वीकार कर लिया; फिर भी वह व्याकुल था।

उसने पहली बार बैरन पोंटमर्सी को देखा, और भेस बदले होने के बावजूद, बैरन पोंटमर्सी ने उसे पहचान लिया, और पूरी तरह से पहचान लिया। बैरन न केवल थेनार्डियर के बारे में पूरी तरह से जानकार था, बल्कि जीन वालजेन के बारे में भी अच्छी जानकारी रखता प्रतीत होता था। यह लगभग बिना दाढ़ी वाला युवक कौन था, जो इतना शांत और उदार था, जो लोगों के नाम जानता था, सबके नाम जानता था, और जो उनके लिए अपना पर्स खोल देता था, जो बदमाशों को न्यायाधीश की तरह धमकाता था, और उन्हें मूर्ख की तरह भुगतान करता था?

पाठक को याद होगा कि थेनार्डियर, हालांकि मारियस का पड़ोसी था, उसने उसे कभी नहीं देखा था, जो पेरिस में असामान्य नहीं था; उसने पहले अस्पष्ट रूप से उसकी बेटियों को घर में रहने वाले मारियस नाम के एक बहुत गरीब युवक के बारे में बात करते सुना था। उसने उसे जाने बिना ही वह पत्र लिखा था जिससे पाठक परिचित है।

उनके मन में मारियस और एम. ले बैरन पोंटमर्सी के बीच किसी भी प्रकार का संबंध संभव नहीं था।

जहां तक पोंटमर्सी नाम की बात है, यह याद किया जा सकता है कि वाटरलू के युद्धक्षेत्र में, उन्होंने केवल अंतिम दो अक्षर ही सुने थे, जिसके लिए उनके मन में हमेशा वह जायज तिरस्कार का भाव रहता था जो किसी को केवल धन्यवाद की अभिव्यक्ति के प्रति होना चाहिए।

हालांकि, अपनी बेटी अज़ेलमा के ज़रिए, जिसने 16 फरवरी को उस विवाहित जोड़े की तलाश शुरू की थी, और अपनी निजी खोजों के माध्यम से, वह कई बातें जानने में सफल रहा था, और अपने गहरे अंधकार से उसने एक से अधिक रहस्यमय सुरागों को समझने का प्रयास किया था। उसने परिश्रम के बल पर, या कम से कम अंतर्ज्ञान के बल पर, यह पता लगा लिया था कि वह व्यक्ति कौन था जिससे उसकी मुलाकात एक दिन ग्रैंड सीवर में हुई थी। उस व्यक्ति से उसे आसानी से नाम का पता चल गया था। वह जानता था कि मैडम ला बैरोन पोंटमर्सी ही कोसेट थी। लेकिन वह इस मामले में सावधानी बरतना चाहता था।

कोसेट कौन थी? वह खुद भी ठीक से नहीं जानता था। उसे कुछ हद तक उसकी नाजायज संतान होने का आभास जरूर हुआ था, फैंटाइन का इतिहास उसे हमेशा से ही अस्पष्ट लगता था; लेकिन इस बारे में बात करने का क्या फायदा? क्या चुप रहने के बदले उसे कुछ और भी चाहिए था? उसके पास इससे कहीं बेहतर चीज़ें थीं, या उसे लगता था कि उसके पास हैं। और, जैसा कि लगता था, अगर वह आकर बैरन पोंटमर्सी के सामने बिना सबूत के यह खुलासा कर दे—कि “आपकी पत्नी नाजायज संतान है,” तो इसका नतीजा यही होगा कि पति का गुस्सा उस खुलासे करने वाले पर ही निकल पड़ेगा।

थेनार्डियर के दृष्टिकोण से, मारियस के साथ बातचीत अभी शुरू ही नहीं हुई थी। उसे पीछे हट जाना चाहिए था, अपनी रणनीति बदल लेनी चाहिए थी, अपनी

स्थिति त्याग देनी चाहिए थी, अपना रुख बदल लेना चाहिए था; लेकिन अभी तक कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं हुआ था, और उसकी जेब में पाँच सौ फ़्रैंक थे। इसके अलावा, उसे कुछ निर्णायक कहना था, और इस बेहद जानकार और हथियारों से लैस बैरन पोंटमर्सी के सामने भी वह खुद को मजबूत महसूस कर रहा था। थेनार्डियर जैसे स्वभाव के लोगों के लिए, हर संवाद एक लड़ाई होती है। जिस लड़ाई में वह शामिल होने वाला था, उसमें उसकी क्या स्थिति थी? वह नहीं जानता था कि वह किससे बात कर रहा है, लेकिन वह जानता था कि वह क्या कह रहा है। उसने अपने भीतर की शक्ति का तेजी से जायजा लिया, और "मैं थेनार्डियर हूँ" कहने के बाद, वह प्रतीक्षा करने लगा।

मारियस चिंतनशील हो गया था। अंततः उसने थेनार्डियर को पकड़ लिया। जिस व्यक्ति को वह इतने लंबे समय से ढूंढने की कोशिश कर रहा था, वह उसके सामने था। वह कर्नल पोंटमर्सी की सिफारिश का पालन कर सकता था।

उसे इस बात का बहुत अपमान महसूस हुआ कि उस नायक को इस दुष्ट का कुछ भी ऋणी होना पड़ा, और उसके पिता द्वारा कब्र की गहराई से निकाला गया वह पत्र, मारियस, आज तक विरोध में था। थेनार्डियर के प्रति अपने जटिल मन-विचार में उसे यह भी प्रतीत हुआ कि कर्नल को ऐसे दुष्ट के हाथों बचाए जाने के दुर्भाग्य का बदला लेने का अवसर है। खैर, वह संतुष्ट था। वह अंततः कर्नल की आत्मा को इस अयोग्य लेनदार से मुक्त कराने वाला था, और उसे ऐसा लग रहा था कि वह अपने पिता की स्मृति को देनदारों के बंधन से मुक्त कराने के कगार पर है। इस कर्तव्य के साथ-साथ एक और कर्तव्य था—यदि संभव हो तो कोसेट की संपत्ति के स्रोत का पता लगाना। अवसर सामने आ गया। शायद थेनार्डियर कुछ जानता हो। इस आदमी की असलियत जानना उपयोगी साबित हो सकता है।

उन्होंने इसकी शुरुआत इसी से की।

थेनार्डियर ने "ईमानदार चोर" को अपनी जेब में गायब कर दिया था, और वह मारियस को लगभग कोमल भाव से देख रहा था।

मारियस ने चुप्पी तोड़ी।

“थेनार्डियर, मैंने तुम्हें तुम्हारा नाम बता दिया है। अब, क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें तुम्हारा रहस्य बताऊँ—वह रहस्य जिसे बताने के लिए तुम यहाँ आए हो? मेरे पास भी कुछ जानकारी है। तुम देखोगे कि मैं इसके बारे में

तुमसे ज़्यादा जानता हूँ। जैसा कि तुमने कहा, जीन वालजेन एक हत्यारा और चोर है। चोर इसलिए क्योंकि उसने एक धनी निर्माता को लूटा, जिसकी बर्बादी उसने की। हत्यारा इसलिए क्योंकि उसने पुलिस एजेंट जावर्ट की हत्या की।”

“मुझे समझ नहीं आया, महोदय,” थेनार्डियर ने कहा।

मैं अपनी बात स्पष्ट कर देता हूँ। 1822 में, पास डे कैलाइस के एक विशेष क्षेत्र में, एक व्यक्ति था जिसका न्याय से नाता टूट गया था, और जिसने एम. मेडेलीन के नाम से अपना रुतबा वापस पा लिया था और खुद को पुनर्स्थापित कर लिया था। यह व्यक्ति सही मायने में एक न्यायप्रिय व्यक्ति बन गया था। काले कांच के सामान के निर्माण के व्यापार में, उसने पूरे शहर को धनवान बना दिया। जहाँ तक उसकी निजी संपत्ति का सवाल है, वह भी उसने अर्जित की, लेकिन गौण रूप से, और एक तरह से संयोगवश। वह गरीबों का पालक पिता था। उसने अस्पताल स्थापित किए, स्कूल खोले, बीमारों से मिलने जाता था, युवा लड़कियों को दहेज देता था, विधवाओं का सहारा देता था और अनाथों को गोद लेता था; वह देश के संरक्षक देवदूत के समान था। उसने सूली पर चढ़ने से इनकार कर दिया, उसे मेयर नियुक्त किया गया। एक रिहा कैदी को इस व्यक्ति द्वारा अतीत में भुगती गई सजा का रहस्य पता था; उसने उसकी शिकायत की, उसे गिरफ्तार करवाया, और गिरफ्तारी का फायदा उठाकर पेरिस आया और बैंकर लाफिट को—मेरे पास कैशियर ने खुद बताया कि फर्जी हस्ताक्षर के जरिए एम. मेडेलीन के पांच लाख से अधिक की रकम उसे सौंप दी गई थी। एम. मेडेलीन को लूटने वाला यह अपराधी जीन वालजेन था। दूसरे तथ्य के बारे में भी आपके पास मुझे बताने के लिए कुछ नहीं है। जीन वालजेन ने एजेंट जावर्ट की हत्या कर दी; उसने उसे पिस्तौल से गोली मार दी। मैं, जो आपसे बात कर रहा हूं, वहां मौजूद था।

थेनार्डियर ने मारियस पर एक पराजित व्यक्ति की तरह प्रभुत्व भरी दृष्टि डाली, जिसने एक बार फिर विजय प्राप्त कर ली हो और एक ही पल में अपना खोया हुआ सारा धन वापस पा लिया हो। लेकिन मुस्कान तुरंत गायब हो गई। अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति की उपस्थिति में एक अधीनस्थ की विजय निराधार ही होती है।

थेनार्डियर ने मारियस से इतना कहकर संतोष कर लिया:

"महाशय बैरन, हम गलत रास्ते पर हैं।"

और उन्होंने अपने सीलों के झुंड को एक भावपूर्ण चक्कर लगाने के लिए कहकर इस वाक्यांश पर जोर दिया।
“क्या!” मारियस अचानक बोला, “क्या तुम इस बात से असहमत हो? ये तो तथ्य हैं।” “ये सब भ्रम हैं। महाशय बैरन ने मुझ पर जो भरोसा जताया है, उसके चलते यह मेरा कर्तव्य है कि मैं उन्हें यह बात बता दूं। सत्य और न्याय सर्वोपरि हैं। मुझे लोगों पर अन्यायपूर्ण आरोप लगते देखना पसंद नहीं है। महाशय बैरन, जीन वालजेन ने श्रीमती मेडेलीन को नहीं लूटा और न ही जावर्ट की हत्या की।”
“ये तो हद से ज्यादा है! ये कैसे हो सकता है?”
“दो कारणों से।”
“ये क्या हैं? बोलो।”
"यह पहली बात है: उसने एम. मेडेलीन को नहीं लूटा, क्योंकि जीन वालजेन स्वयं एम. मेडेलीन थे।"
“तुम मुझे कौन सी कहानी सुना रहे हो?”
और यह दूसरी बात है: उसने जावर्ट की हत्या नहीं की, क्योंकि जावर्ट को मारने वाला व्यक्ति जावर्ट खुद था।
आप क्या कहना चाह रहे हैं?
"जावर्ट ने आत्महत्या कर ली।"
“साबित करो! साबित करो!” मारियस गुस्से से आग बबूला होकर चिल्लाया। थेनार्डियर ने प्राचीन अलेक्जेंड्रियाई छंद की शैली में अपने वाक्य को संवारते हुए फिर से बोलना शुरू किया:
“पुलिस एजेंट जावर्ट पोंट-औ-चेंज की एक नाव के नीचे डूबे हुए पाए गए।” लेकिन इसे साबित करो!
थेनार्डियर ने अपनी जेब से भूरे रंग के कागज का एक बड़ा लिफाफा निकाला, जिसमें अलग-अलग आकार में मोड़े हुए पन्ने प्रतीत हो रहे थे।
“मेरे पास मेरे कागजात हैं,” उन्होंने शांत भाव से कहा।

और उन्होंने आगे कहा:

“महाशय बैरन, आपके हित में ही मैं जीन वालजेन को भली-भांति जानना चाहता था। मैं कहता हूँ कि जीन वालजेन और एम. मेडेलीन एक ही व्यक्ति हैं, और मैं कहता हूँ कि जावर्ट का हत्यारा जावर्ट के अलावा कोई और नहीं था। अगर मैं बोल रहा हूँ, तो मेरे पास सबूत हैं। हस्तलिखित सबूत नहीं—लिखाई संदिग्ध होती है, हस्तलेख सौम्य लगता है—बल्कि मुद्रित सबूत।”

बोलते-बोलते थेनार्डियर ने लिफाफे से दो अखबार निकाले, जो पीले, फीके और तंबाकू से बुरी तरह भीगे हुए थे। इन दोनों अखबारों में से एक, जो हर मोड़ से फटा हुआ था और चिथड़ों जैसा दिख रहा था, दूसरे से कहीं ज्यादा पुराना लग रहा था।

“दो तथ्य, दो प्रमाण,” थेनार्डियर ने कहा। और उन्होंने दोनों अखबारों को खोलकर मारियस को सौंप दिया।

पाठक इन दोनों दस्तावेजों से परिचित हैं। इनमें से एक, जो सबसे प्राचीन है, 25 जुलाई, 1823 के ड्रेपो ब्लैंक का एक अंक है, जिसका पाठ पहले खंड में देखा जा सकता है, जिसने एम. मेडेलीन और जीन वालजेन की पहचान स्थापित की।

दूसरी खबर, 15 जून, 1832 के एक मॉनिटर में, जावर्ट की आत्महत्या की घोषणा की गई, जिसमें यह भी कहा गया कि जावर्ट द्वारा प्रीफेक्ट को दी गई मौखिक रिपोर्ट से यह प्रतीत होता है कि रू डे ला चानवरेरी के बैरिकेड में बंदी बनाए जाने के बाद, एक विद्रोही की उदारता के कारण उसकी जान बच गई, जिसने उसे पिस्तौल के नीचे रखकर, उसके दिमाग को उड़ाने के बजाय हवा में गोली चला दी थी।

मारियस ने पढ़ा। उसके पास सबूत थे, एक निश्चित तारीख थी, अकाट्य प्रमाण थे; ये दोनों अखबार थेनार्डियर के बयानों का समर्थन करने के उद्देश्य से विशेष रूप से नहीं छापे गए थे; मॉनिटर में छपा नोट पुलिस प्रेफेक्चर का एक प्रशासनिक संदेश था। मारियस को कोई संदेह नहीं था।

कैशियर-क्लर्क द्वारा दी गई जानकारी झूठी थी, और वह स्वयं भी धोखे में आ गया था।

जीन वाल्जेन, जो अचानक भव्य हो गए थे, अपने बादल से बाहर निकले। मारियस खुशी से चिल्ला उठे।

“अच्छा, तो फिर यह अभागा व्यक्ति एक प्रशंसनीय इंसान है! वह सारी संपत्ति वास्तव में उसी की थी! वह मेडेलीन है, पूरे इलाके का रक्षक! वह जीन वालजेन है, जावर्ट का उद्धारकर्ता! वह एक नायक है! वह एक संत है!”

“वह न तो संत है और न ही नायक!” थेनार्डियर ने कहा। “वह एक हत्यारा और लुटेरा है।”

और उन्होंने उस लहजे में कहा, जैसे उन्हें लगने लगा हो कि उनके पास कुछ अधिकार आ गया है:

हमें शांत रहना चाहिए।

लुटेरा, हत्यारा—वे शब्द जो मारियस को लगा था कि गायब हो गए हैं और जो लौट आए, उस पर बर्फीले ठंडे पानी के बौछार की तरह गिरे।

“फिर से!” उसने कहा।

“हमेशा,” थेनार्डियर ने कहा। “जीन वालजीन ने मेडेलीन को नहीं लूटा, लेकिन वह चोर है। उसने जावर्ट को नहीं मारा, लेकिन वह हत्यारा है।”

"क्या आप चालीस साल पहले हुई उस घिनौनी चोरी के बारे में कुछ कहेंगे, जिसका प्रायश्चित, जैसा कि आपके अपने अखबारों से साबित होता है, पश्चाताप, आत्म-त्याग और सद्गुणों से भरे पूरे जीवन के द्वारा किया गया था?" मारियस ने पलटवार करते हुए कहा।

“मैं हत्या और चोरी की बात कर रहा हूँ, महाशय बैरन, और मैं दोहराता हूँ कि मैं वास्तविक तथ्यों की बात कर रहा हूँ। जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ वह बिल्कुल अज्ञात है। यह अप्रकाशित विषय है। और शायद आपको इसमें उस संपत्ति का स्रोत मिल जाए जिसे जीन वालजीन ने मैडम ला बैरोन को बड़ी कुशलता से भेंट किया था। मैं कुशलता से इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि इस तरह की प्रतिभा से किसी प्रतिष्ठित घर में प्रवेश करना, जहाँ सुख-सुविधाओं का आनंद लिया जा सके, और साथ ही अपने अपराध को छुपाना, अपनी चोरी का आनंद लेना, अपना नाम मिटाना और अपना परिवार बसाना कोई बड़ी अकुशलता नहीं होगी।”

"हो सकता है मैं इस समय आपको बीच में रोक दूं," मारियस ने कहा, "लेकिन आप बोलते रहिए।"

“महाशय बैरन, मैं आपको सब कुछ बता दूँगा, प्रतिफल आपकी उदारता पर छोड़ता हूँ। यह रहस्य अनमोल है। आप मुझसे कहेंगे: ‘आप जीन वालजेन से क्यों नहीं पूछते?’ इसका कारण बहुत सरल है; मैं जानता हूँ कि उसने आपके पक्ष में अपने सारे त्याग कर दिए हैं, और मुझे यह संयोजन बहुत ही चतुराई भरा लगता है; लेकिन अब उसका कोई बेटा नहीं है, वह मुझे अपने खाली हाथ दिखाएगा, और चूंकि मुझे ला जोया की यात्रा के लिए कुछ पैसों की ज़रूरत है, इसलिए मैं आपको, जिनके पास सब कुछ है, उस व्यक्ति से बेहतर मानता हूँ जिसके पास कुछ नहीं है। मैं थोड़ा थका हुआ हूँ, मुझे बैठने की अनुमति दें।”

मारियस बैठ गया और उसे भी बैठने का इशारा किया।

थेनार्डियर एक गद्देदार कुर्सी पर बैठ गया, अपने दो अखबार उठाए, उन्हें वापस लिफाफे में डाल दिया और अपने नाखून से ड्रेपो ब्लैंक को कुरेदते हुए बुदबुदाया: "इसे पाने में मुझे काफी मशक्कत करनी पड़ी।"

ऐसा करने के बाद उन्होंने अपने पैर मोड़े और कुर्सी की पीठ पर आराम से लेट गए, यह मुद्रा उन लोगों की विशेषता है जो अपनी बात को लेकर आश्वस्त होते हैं, फिर उन्होंने गंभीरता से अपने विषय पर बात शुरू की, अपने शब्दों पर जोर देते हुए:

"महामहिम बैरन, 6 जून, 1832 को, लगभग एक वर्ष पहले, विद्रोह के दिन, एक व्यक्ति पेरिस के ग्रैंड सीवर में, उस बिंदु पर था जहाँ सीवर सीन नदी में प्रवेश करता है, पोंट डेस इनवैलिड्स और पोंट डे जेना के बीच।"

मारियस ने अचानक अपनी कुर्सी थेनार्डियर की कुर्सी के करीब खींच ली। थेनार्डियर ने इस हरकत को देखा और एक ऐसे वक्ता की तरह विचारपूर्वक बोलना जारी रखा जो अपने वार्ताकार को बांधे रखता है और अपने शब्दों से अपने प्रतिद्वंद्वी की धड़कन को महसूस करता है।

“यह आदमी, जिसे खुद को छिपाने के लिए मजबूर होना पड़ा था, और इसके पीछे ऐसे कारण थे जिनका राजनीति से कोई लेना-देना नहीं था, उसने सीवर को अपना ठिकाना बना लिया था और उसकी चाबी उसके पास थी। मैं दोहराता हूँ, यह 6 जून की बात है; शाम के लगभग आठ बजे होंगे। उस आदमी को सीवर में एक आवाज़ सुनाई देती

है। बहुत घबराकर, वह खुद को छिपा लेता है और घात लगाकर बैठ जाता है। यह कदमों की आहट थी, कोई अंधेरे में चल रहा था और उसकी दिशा में आ रहा था। हैरानी की बात यह है कि सीवर में उसके अलावा एक और आदमी था। सीवर के निकास द्वार की जाली पास ही थी। उसमें से छनकर आ रही थोड़ी सी रोशनी से वह नए आने वाले को पहचान सका और देख सका कि वह आदमी अपनी पीठ पर कुछ ले जा रहा था। वह झुकी हुई मुद्रा में चल रहा था। झुकी हुई मुद्रा में चलने वाला वह आदमी एक पूर्व कैदी था, और जो वह अपने कंधों पर घसीट रहा था वह एक लाश थी। अगर कभी ऐसी कोई बात होती है, तो यह हत्या रंगे हाथों पकड़ी गई थी। जहाँ तक चोरी की बात है, वह तो समझ में आती है; कोई किसी को मुफ्त में नहीं मारता। यह कैदी अपनी पीठ पर था। शव को नदी में फेंकने का तरीका। एक बात ध्यान देने योग्य है कि निकास द्वार तक पहुँचने से पहले, सीवर में काफी दूरी तय कर चुके इस कैदी का सामना निश्चित रूप से एक भयानक दलदल से हुआ होगा, जहाँ ऐसा लगता है कि वह शव छोड़ सकता था, लेकिन सीवर कर्मचारियों ने अगले ही दिन दलदल साफ करते समय उस व्यक्ति को ढूंढ लिया होता, और यह हत्यारे की योजना के अनुरूप नहीं था। उसने अपने बोझ के साथ उस दलदल को पार करना बेहतर समझा, और उसके प्रयास बहुत भयानक रहे होंगे, क्योंकि इससे अधिक जानलेवा स्थिति और क्या हो सकती है; मुझे समझ नहीं आता कि वह वहाँ से कैसे जीवित निकल सकता था।

मारियस की कुर्सी और भी करीब आ गई। थेनार्डियर ने इसका फायदा उठाते हुए एक गहरी सांस ली। फिर उसने आगे कहा:

“महाशय बैरन, सीवर कोई शैंप डे मार्स नहीं है। वहाँ तो जगह तक नहीं होती। जब दो लोग वहाँ होते हैं, तो उन्हें मिलना ही पड़ता है। यही हुआ। वहाँ रहने वाले व्यक्ति और राहगीर को एक-दूसरे को अलविदा कहना पड़ा, जिससे दोनों को बहुत खेद हुआ। राहगीर ने निवासी से कहा:—‘देखो मेरी पीठ पर क्या है, मुझे बाहर निकलना है, तुम्हारे पास चाबी है, मुझे दे दो।’ वह कैदी बहुत ताकतवर था। मना करने का कोई रास्ता नहीं था। फिर भी, जिसके पास चाबी थी, उसने समय पाने के लिए बातचीत शुरू कर दी। उसने मृत व्यक्ति की जाँच की, लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया, सिवाय इसके कि वह जवान था, अच्छे कपड़े पहने हुए था, अमीर होने का आभास देता था, और खून से लथपथ था। बात करते-करते, उस व्यक्ति ने हत्यारे की नज़र से बचकर, मारे गए व्यक्ति के कोट का एक टुकड़ा फाड़ कर पीछे से निकाल लिया। दोषसिद्धि का एक दस्तावेज़, समझ रहे हो ना;

सबूत इकट्ठा करने और अपराधी को सज़ा दिलाने का एक ज़रिया। उसने इस दस्तावेज़ को रख दिया। अपनी जेब में दृढ़ विश्वास के लिए कुछ लेकर। इसके बाद उसने जाली खोली, उस आदमी को उसकी शर्मिंदगी के साथ पीठ पर लादकर बाहर भेजा, जाली बंद की और भाग गया, क्योंकि वह बाकी घटनाक्रम में शामिल नहीं होना चाहता था और सबसे बढ़कर, वह उस समय मौजूद नहीं रहना चाहता था जब हत्यारा मारे गए व्यक्ति को नदी में फेंक रहा था। अब आप समझ गए होंगे। लाश ले जाने वाला व्यक्ति जीन वालजेन था; जिसके पास चाबी थी वह इस समय आपसे बात कर रहा है; और कोट का टुकड़ा…”

थेनार्डियर ने अपनी बात पूरी करते हुए अपनी जेब से फटे हुए काले कपड़े की एक पट्टी निकाली, जो गहरे धब्बों से ढकी हुई थी, और उसे अपनी आंखों के स्तर पर अपने दोनों अंगूठों और दोनों तर्जनी उंगलियों के बीच दबाकर रखा।

मारियस पीला पड़ा हुआ, मुश्किल से सांस ले पा रहा था, अचानक अपने पैरों पर खड़ा हो गया, उसकी आंखें काले कपड़े के टुकड़े पर टिकी हुई थीं, और बिना एक शब्द बोले, उस टुकड़े से अपनी निगाहें हटाए बिना, वह दीवार की ओर पीछे हट गया और अपने दाहिने हाथ से दीवार पर टटोलते हुए चिमनी के पास एक अलमारी के ताले में लगी चाबी ढूंढने लगा।

उसने चाबी ढूंढी, अलमारी खोली, बिना देखे अपना हाथ उसमें डाल दिया, और उसकी भयभीत निगाहें उस कपड़े से हटी ही नहीं जो थेनार्डियर ने अभी भी फैला रखा था।

लेकिन थेनार्डियर ने आगे कहा:

"महाशय बैरन, मेरे पास यह मानने के सबसे मजबूत कारण हैं कि हत्या किया गया युवक एक धनी अजनबी था जिसे जीन वालजेन द्वारा जाल में फंसाया गया था, और वह भारी मात्रा में धन का वाहक था।"

“वह युवक मैं ही था, और यह रहा कोट!” मारियस चिल्लाया, और उसने खून से लथपथ एक पुराना काला कोट फर्श पर फेंक दिया।

फिर, थेनार्डियर के हाथों से वह टुकड़ा छीनकर, वह कोट के ऊपर झुक गया और फटे हुए टुकड़े को फटी हुई स्कर्ट पर रख दिया। फटा हुआ हिस्सा बिल्कुल फिट बैठ गया और पट्टी से कोट पूरा हो गया।

थेनार्डियर भयभीत हो गया था।

उसने यही सोचा: "मैं पूरी तरह से हैरान रह गया हूँ।"

मारियस कांपते हुए, निराश और फिर भी तेजस्वी भाव से अपने पैरों पर खड़ा हुआ।

उसने अपनी जेब में हाथ डाला और गुस्से में थेनार्डियर की ओर बढ़ा, उसके सामने पांच सौ और एक हजार फ्रैंक के नोटों से भरी अपनी मुट्ठी पेश की और लगभग उसके चेहरे पर ही मार दी।

“तुम एक कुख्यात नीच हो! तुम झूठे हो, निंदक हो, दुष्ट हो। तुम उस आदमी पर आरोप लगाने आए थे, तुमने उसे केवल सही ठहराया है; तुम उसे बर्बाद करना चाहते थे, तुमने उसे केवल महिमामंडित किया है। और चोर तुम ही हो! और हत्यारा तुम ही हो! मैंने तुम्हें, थेनार्डियर जोंड्रेट, रुए डे ल'हॉपिटल स्थित उस अड्डे में देखा था। मैं तुम्हारे बारे में इतना जानता हूँ कि तुम्हें जलरंजित जहाजों में भेज सकता हूँ और अगर चाहूँ तो इससे भी आगे जा सकता हूँ। लो, एक हजार फ्रैंक, बदमाश कहीं के!”

और उसने थेनार्डियर पर एक हजार फ्रैंक का नोट फेंक दिया।

“आह! जोन्ड्रेट थेनार्डियर, नीच बदमाश! इसे सबक समझो, पुराने रहस्यों के सौदागर, रहस्यों के व्यापारी, अंधेरे में भटकने वाले, नीच! ये पाँच सौ फ्रैंक लो और यहाँ से निकल जाओ! वाटरलू तुम्हारी रक्षा करे।”

"वाटरलू!" थेनार्डियर गुर्राया और हजार फ्रैंक के साथ-साथ पांच सौ फ्रैंक भी जेब में रख लिए।

“हाँ, हत्यारे! तुमने वहाँ एक कर्नल की जान बचाई…”

"एक जनरल का," थेनार्डियर ने अपना सिर उठाते हुए कहा।

“एक कर्नल!” मारियस ने क्रोध में दोहराया। “मैं एक जनरल के लिए आधा पैसा भी नहीं दूंगा। और तुम यहाँ घिनौने काम करने आए हो! मैं तुमसे कहता हूँ कि तुमने सारे अपराध किए हैं। जाओ! गायब हो जाओ! बस खुश रहो, यही मेरी इच्छा है। आह! राक्षस! ये लो तीन हज़ार फ्रैंक और। इन्हें ले लो। तुम कल अपनी बेटी के साथ अमेरिका के लिए रवाना हो जाओगे; क्योंकि तुम्हारी पत्नी मर चुकी है, तुम घिनौने झूठे। मैं तुम्हारे जाने पर नज़र रखूंगा, तुम बदमाश,

और उस पल मैं तुम्हें बीस हज़ार फ्रैंक गिन कर दूंगा। कहीं और जाकर खुद को फांसी पर लटका लो!”

“महामहिम बैरन!” थेनार्डियर ने धरती को प्रणाम करते हुए उत्तर दिया, “हम आपके सदा आभारी रहेंगे।” और थेनार्डियर कुछ भी न समझते हुए, कमरे से बाहर निकल गया; वह सोने के बोरों के नीचे कुचले जाने के इस मीठे अनुभव और उसके सिर पर नोटों की गड़गड़ाहट से चकित और प्रसन्न था।

उन पर बिजली गिरी, लेकिन वे संतुष्ट भी थे; और अगर उनके पास ऐसी बिजली को रोकने के लिए बिजली का रॉड होता तो वे बहुत क्रोधित होते।

आइए इस आदमी से तुरंत छुटकारा पाएं।

जिन घटनाओं का हम इस समय वर्णन कर रहे हैं, उनके दो दिन बाद, मारियस की कृपा से, वह अपनी बेटी अज़ेलमा के साथ एक झूठे नाम से अमेरिका के लिए रवाना हुआ, जिसके पास न्यूयॉर्क के लिए बीस हजार फ़्रैंक का ड्राफ्ट था।

अपने वास्तविक कर्तव्य को न पहचान पाने वाले बुर्जुआ थेनार्डियर की नैतिक दुर्दशा अपूरणीय थी। अमेरिका में भी उसकी वही हालत थी जो यूरोप में थी। एक दुष्ट व्यक्ति के संपर्क में आने से कभी-कभी अच्छा कार्य भी भ्रष्ट हो जाता है और उससे बुरे परिणाम निकलते हैं। मारियस के पैसों से थेनार्डियर ने दास-व्यापार का धंधा शुरू कर दिया।

जैसे ही थेनार्डियर घर से निकला, मारियस दौड़कर बगीचे में गया, जहाँ कोसेट अभी भी टहल रही थी।

“कोसेट! कोसेट!” वह चिल्लाया। “आओ! जल्दी आओ! चलो चलें। बास्क, एक गाड़ी! कोसेट, आओ। आह! हे भगवान! उसी ने मेरी जान बचाई! एक मिनट भी बर्बाद न करें! अपना शॉल ओढ़ लो।”

कोसेट ने उसे पागल समझा और उसकी बात मान ली।

वह सांस नहीं ले पा रहा था, उसने अपने दिल की धड़कन को रोकने के लिए उस पर हाथ रख लिया। वह बड़े-बड़े कदमों से इधर-उधर टहलने लगा, उसने कोसेट को गले लगा लिया।

“आह! कोसेट! मैं कितना अभागा हूँ!” उसने कहा।

मारियस स्तब्ध रह गया। उसे जीन वाल्जेन में एक अवर्णनीय उदात्त और उदास व्यक्तित्व की झलक दिखाई देने लगी। एक अनसुना सद्गुण, सर्वोच्च और मधुर, अपनी विशालता में विनम्र, उसके सामने प्रकट हुआ। वह कैदी मानो मसीह में रूपांतरित हो गया था।

मारियस इस अद्भुत दृश्य को देखकर चकित रह गया। उसे ठीक से पता नहीं था कि वह क्या देख रहा है, लेकिन वह भव्य था।

पलक झपकते ही दरवाजे के सामने एक घोड़ागाड़ी खड़ी हो गई।

मारियस ने कोसेट को अंदर आने में मदद की और खुद भी तेजी से अंदर चला गया।

“ड्राइवर,” उसने कहा, “7 आर्म्ड मैन स्ट्रीट।”

गाड़ी चल पड़ी।

“आह! कितनी खुशी की बात है!” कोसेट ने खुशी से कहा। “रू डे ल’होमे आर्मे, मैंने तुमसे इस बारे में बात करने की हिम्मत नहीं की। हम श्रीमान जीन से मिलने जा रहे हैं।”

“तेरे पिता! कोसेट, पहले से भी ज़्यादा तेरे पिता। कोसेट, मुझे लगता है। तुमने मुझे बताया था कि तुम्हें वो चिट्ठी नहीं मिली जो मैंने गैवरोश के ज़रिए भेजी थी। वो ज़रूर उसके हाथ लग गई होगी। कोसेट, वो मुझे बचाने के लिए बैरिकेड पर गया था। क्योंकि उसके लिए फ़रिश्ता होना ज़रूरी है, उसने दूसरों को भी बचाया; उसने जैवर्ट को बचाया। उसने मुझे उस खाई से निकालकर तुम्हें सौंपा। उसने मुझे अपनी पीठ पर लादकर उस भयानक सीवर से पार कराया। आह! मैं कृतघ्नता का राक्षस हूँ। कोसेट, तुम्हारा रक्षक बनने के बाद, वो मेरा रक्षक बन गया। ज़रा सोचो, वहाँ एक भयानक दलदल था जो किसी को सौ बार डुबो सकता था, कीचड़ में डुबो सकता था। कोसेट! उसने मुझे उससे पार कराया। मैं बेहोश थी; मैंने कुछ नहीं देखा, मैंने कुछ नहीं सुना, मुझे अपने इस साहसिक कार्य के बारे में कुछ भी पता नहीं था। हम उसे वापस लाएँगे, उसे अपने साथ ले जाएँगे, चाहे वो चाहे या न चाहे, वो हमें फिर कभी नहीं छोड़ेगा। काश वो घर पर हो! बशर्ते कि हम उसे ढूंढ सकें मैं अपना शेष जीवन उनकी आराधना में व्यतीत करूँगा। हाँ, यही सही है, समझी कोसेट? गैवरोश ने मेरा पत्र उन्हें पहुँचा दिया होगा। सब कुछ स्पष्ट हो गया है। तुम समझ गई हो।

कोसेट को एक भी शब्द समझ नहीं आया।
“आप सही कह रहे हैं,” उसने उससे कहा।
इसी बीच गाड़ी आगे बढ़ती रही।

V. एक रात जिसके पीछे दिन है

जीन वाल्जेन ने अपने दरवाजे पर दस्तक सुनकर पीछे मुड़कर देखा।
“अंदर आओ,” उसने कमजोर आवाज में कहा।
दरवाजा खुल गया।
कोसेट और मारियस वहां आ गए।
कोसेट दौड़कर कमरे में दाखिल हुई।
मारियस दहलीज पर ही खड़ा रहा, दरवाजे के चौखट से टिका हुआ था।
“कोसेट!” जीन वालजेन ने कहा।
और वह अपनी कुर्सी पर सीधा बैठा था, उसकी बाहें फैली हुई और कांप रही थीं, वह थका हुआ, पीला पड़ा हुआ, उदास था, उसकी आँखों में अपार खुशी थी।
भावनाओं से व्याकुल कोसेट, जीन वालजेन की छाती पर गिर पड़ी।
“पिताजी!” उसने कहा।
जीन वाल्जेन, अभिभूत होकर हकलाने लगा:
“कोसेट! वह! तुम! मैडम! तुम हो! ओह! हे भगवान!”
और कोसेट की बाहों में कसकर लिपटकर उसने कहा:
“तुम ही हो! तुम यहीं हो! तो क्या तुम मुझे क्षमा करोगे!”
मारियस ने अपनी पलकें झुका लीं ताकि उसके आंसू न बहें, फिर एक कदम आगे बढ़ाया और अपने होंठों को सिकोड़कर सिसकियों को दबाते हुए धीरे से बुदबुदाया:
“मेरे पिता!”
“और आप भी, मुझे क्षमा करें!” जीन वाल्जेन ने उससे कहा।
मारियस को कुछ शब्द नहीं सूझ रहे थे, और जीन वाल्जेन ने आगे कहा: "धन्यवाद।"

कोसेट ने अपना शॉल उतार फेंका और अपनी टोपी बिस्तर पर फेंक दी।

“मुझे इससे शर्म आती है,” उसने कहा।

और, बूढ़े आदमी की गोद में बैठते हुए, उसने एक मनमोहक अंदाज में उसके सफेद बालों को एक तरफ किया और उसके माथे को चूमा।

जीन वाल्जेन, अचंभित होकर, उसे अपनी मनमर्जी करने दी।

कोसेट, जिसे बहुत ही उलझन भरे ढंग से बात समझ में आई, ने अपने स्पर्श को और तेज कर दिया, मानो वह मारियस का कर्ज चुकाना चाहती हो।

जीन वाल्जेन हकलाते हुए बोला:

“लोग कितने मूर्ख होते हैं! मैंने सोचा था कि मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगा। कल्पना कीजिए, महाशय पोंटमर्सी, जिस क्षण आप अंदर आए, मैं मन ही मन कह रहा था: ‘सब कुछ खत्म हो गया। ये रही उसकी छोटी सी पोशाक, मैं कितना दुखी हूँ, मैं कोसेट को फिर कभी नहीं देख पाऊँगा,’ और मैं ये ठीक उसी क्षण कह रहा था जब आप सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। क्या मैं मूर्ख नहीं था? ज़रा देखिए कोई कितना मूर्ख हो सकता है! हम भले ही ईश्वर को न मानें। भले ईश्वर कहते हैं:

“ ‘तुम्हें लगता है कि तुम्हें छोड़ दिया जाएगा, मूर्ख! नहीं। नहीं, ऐसा नहीं होगा। आओ, वहाँ एक भला आदमी है जिसे एक फ़रिश्ते की ज़रूरत है।’ और फ़रिश्ता आता है, और फिर से अपनी कोसेट दिखती है! और फिर से अपनी नन्ही कोसेट दिखती है! आह! मैं बहुत दुखी था।”

एक पल के लिए वह बोल नहीं सका, फिर उसने बोलना शुरू किया:

“मुझे कोसेट से कभी-कभार मिलना बहुत ज़रूरी था। दिल को किसी चीज़ की कमी खलती है। लेकिन मुझे पूरी तरह से पता था कि मैं उनके रास्ते में रुकावट बन रहा हूँ। मैंने खुद को समझाया: ‘वे तुम्हें नहीं चाहते, अपने रास्ते पर चलती रहो, किसी को भी हमेशा के लिए चिपके रहने का अधिकार नहीं है।’ आह! ईश्वर का धन्यवाद, मैं उसे एक बार फिर देख पा रहा हूँ! क्या तुम जानती हो, कोसेट, तुम्हारा पति कितना सुंदर है? आह! तुमने कितना प्यारा कढ़ाई वाला कॉलर पहना है, किस्मत से। मुझे यह डिज़ाइन बहुत पसंद है। इसे तुम्हारे पति ने ही चुना था, है ना? और फिर, तुम्हारे पास कुछ कश्मीरी शॉल होने चाहिए।

मुझे उसे 'तुम' कहकर बुलाने दो, महाशय पोंटमर्सी। ज़्यादा देर नहीं लगेगी।”

और कोसेट ने फिर से बोलना शुरू किया:

“तुमने हमें इस तरह छोड़कर कितनी बड़ी गलती की! तुम कहाँ चले गए थे? इतने दिन दूर क्यों रहे? पहले तो तुम्हारी यात्राएँ तीन-चार दिन की ही होती थीं। मैंने निकोलेट को भेजा, जवाब हमेशा यही होता था: ‘वह अनुपस्थित हैं।’ तुम कब से वापस आए हो? हमें क्यों नहीं बताया? क्या तुम्हें पता है कि तुम कितने बदल गए हो? अरे! कितने बुरे पिता हो! वह बीमार थे, और हमें पता ही नहीं चला! रुको, मारियस, महसूस करो कि उनका हाथ कितना ठंडा है!”

“तो आप यहाँ हैं! महाशय पोंटमर्सी, मुझे क्षमा करें!” जीन वाल्जेन ने दोहराया।

जीन वाल्जेन द्वारा अभी-अभी कहे गए उस शब्द को सुनकर, मारियस के हृदय में उमड़ रही सारी भावनाएं बाहर निकल गईं।

वह अचानक भड़क उठा:

“कोसेट, क्या तुम सुन रही हो? वह वहाँ आ गया है! वह मुझसे क्षमा मांग रहा है! और क्या तुम जानती हो कि उसने मेरे लिए क्या किया है, कोसेट? उसने मेरी जान बचाई है। उसने इससे भी बढ़कर—तुम्हें मुझे सौंप दिया है। और मुझे बचाने के बाद, और तुम्हें मुझे सौंपने के बाद, कोसेट, उसने अपने साथ क्या किया है? उसने खुद को कुर्बान कर दिया है। उस आदमी को देखो। और वह मुझसे, जो कृतघ्न हूँ, जो भूलने वाली हूँ, जो निर्दयी हूँ, जो दोषी हूँ, कहता है: धन्यवाद! कोसेट, इस आदमी के चरणों में बिताया मेरा पूरा जीवन भी कम पड़ेगा। वह बैरिकेड, वह सीवर, वह भट्टी, वह गंदा नाला—वह सब कुछ जो उसने मेरे लिए, तुम्हारे लिए, कोसेट, पार किया! वह मुझे उन सभी मौतों से बचाकर ले गया जिन्हें उसने मेरे सामने से हटा दिया और खुद के लिए स्वीकार कर लिया। उसके पास हर साहस, हर सद्गुण, हर वीरता, हर पवित्रता है! कोसेट, वह आदमी एक फरिश्ता है!”

“चुप रहो! चुप रहो!” जीन वाल्जेन ने धीमी आवाज में कहा। “यह सब क्यों बता रहे हो?”

“लेकिन तुम!” मारियस ने श्रद्धा से भरे क्रोध के साथ कहा, “तुमने मुझे यह बात क्यों नहीं बताई? इसमें तुम्हारी भी गलती है। तुम लोगों की जान बचाते हो, और उनसे यह बात छुपाते हो! इससे भी बढ़कर, खुद को बेनकाब करने के बहाने, तुम खुद पर ही कलंक लगाते हो। यह बहुत ही घिनौना है।”

“मैंने सच कहा था,” जीन वाल्जेन ने उत्तर दिया।

“नहीं,” मारियस ने जवाब दिया, “सच तो पूरा सच होता है; और वह तुमने नहीं बताया। तुम महाशय मेडेलीन थे, तुमने ऐसा क्यों नहीं कहा? तुमने जैवर्ट की जान बचाई, तुमने ऐसा क्यों नहीं कहा? मैं तुम्हारा ऋणी हूँ, तुमने ऐसा क्यों नहीं कहा?”

क्योंकि मैं भी तुम्हारी ही तरह सोचती थी। मुझे लगता था कि तुम सही हो। मेरा वहाँ से चले जाना ज़रूरी था। अगर तुम्हें उस घटना के बारे में, उस नाले के बारे में पता होता, तो तुम मुझे अपने पास ही रोक लेते। इसलिए मुझे चुप रहना पड़ा। अगर मैं बोल देती, तो हर तरह से शर्मिंदगी होती।

“इससे किसे शर्मिंदगी होती? किसे शर्मिंदगी होती?” मारियस ने पलटकर कहा। “क्या तुम्हें लगता है कि तुम यहाँ रुकोगे? हम तुम्हें उठा ले जाएँगे। हे भगवान! जब मैं सोचता हूँ कि यह सब मुझे एक दुर्घटना से पता चला है। तुम हमारे ही एक हिस्से हो। तुम उसके पिता हो, और मेरे भी। तुम इस भयानक घर में एक दिन भी नहीं बिता पाओगे। यह मत सोचो कि तुम कल यहाँ रहोगे।”

जीन वाल्जेन ने कहा, "कल मैं यहां नहीं रहूंगा, लेकिन मैं तुम्हारे साथ भी नहीं रहूंगा।"

“तुम्हारा क्या मतलब है?” मारियस ने उत्तर दिया। “अरे! अब बस करो, हम तुम्हें और यात्रा करने की अनुमति नहीं देंगे। तुम हमें फिर कभी छोड़कर नहीं जाओगे। तुम हमारे हो। हम तुम्हें कभी नहीं छोड़ेंगे।”

“इस बार तो पक्का है,” कोसेट ने आगे कहा। “दरवाजे पर एक गाड़ी खड़ी है। मैं तुम्हारे साथ भाग जाऊंगी। अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं बल का प्रयोग भी करूंगी।”

और वह हंसते हुए बूढ़े आदमी को अपनी बाहों में उठाने के लिए आगे बढ़ी।

उन्होंने आगे कहा, "हमारे घर में आपका कमरा अभी भी तैयार है।" “अगर आपको पता होता कि बगीचा अब कितना सुंदर है! वहाँ अज़ेलिया के फूल बहुत अच्छे से खिल रहे हैं। पगडंडियों पर नदी की रेत बिछी है; वहाँ छोटे-छोटे बैंगनी रंग के फूल खिले हैं। आप मेरी स्ट्रॉबेरी खाएँगे। मैं उन्हें खुद पानी देती हूँ। और अब न ‘मैडम’, न ‘मिस्टर जीन’, हम एक गणतंत्र के अधीन रह रहे हैं, हर कोई ‘तू’ कहता है, है ना, मारियस? कार्यक्रम बदल गया है। अगर आपको पता होता, पिताजी, मुझे बहुत दुख हुआ है, एक रॉबिन रेडब्रेस्ट चिड़िया ने दीवार के एक छेद में अपना घोंसला बनाया था, और एक भयानक बिल्ली उसे खा गई। मेरी बेचारी, प्यारी, छोटी रॉबिन रेडब्रेस्ट जो अपनी खिड़की से अपना सिर बाहर निकालकर मुझे देखती थी! मैं उसके लिए बहुत रोई। मेरा मन किया कि उस बिल्ली को मार डालूँ। लेकिन अब कोई नहीं रोता। सब हँसते हैं, सब खुश हैं। आप हमारे साथ आएँगे। दादाजी कितने खुश होंगे! बगीचे में आपकी अपनी जगह होगी, आप उसमें खेती करेंगे, और हम देखेंगे कि आपकी स्ट्रॉबेरी मेरी स्ट्रॉबेरी जितनी अच्छी हैं या नहीं। और फिर, मैं वह सब करूँगी जो आप चाहते हैं।” इच्छा करो, और फिर तुम मेरी बात मानोगी।

जीन वाल्जेन ने बिना सुने ही उसकी बातें सुनीं। उसने उसके शब्दों के भाव के बजाय उसकी आवाज़ का संगीत सुना; उसकी आँखों में धीरे-धीरे एक बड़ा सा आँसू उमड़ आया, जो आत्मा के उदास मोतियों के समान होता है।

उसने धीरे से कहा:

“ईश्वर के अच्छे होने का प्रमाण यह है कि वह यहाँ है।”

“पिताजी!” कोसेट ने कहा।

जीन वालजेन ने आगे कहा:

“यह बिल्कुल सच है कि हमारा साथ रहना कितना सुखद होगा। उनके पेड़ पक्षियों से भरे हुए हैं। मैं कोसेट के साथ सैर करूंगा। ऐसे जीवंत लोगों के बीच रहना कितना अच्छा लगता है जो एक-दूसरे को 'शुभ दिन' कहते हैं, जो बगीचे में एक-दूसरे को पुकारते हैं। लोग सुबह से ही एक-दूसरे को देखते हैं। हम दोनों को अपना-अपना छोटा सा कोना संजोना चाहिए। वह मुझे अपनी स्ट्रॉबेरी खिलाएगी। मैं उसे अपने गुलाब तोड़ने के लिए कहूंगा। यह कितना प्यारा होगा। बस…”

वह रुका और धीरे से बोला:

"बड़े अफ़सोस की बात है।"
आंसू गिरा नहीं, बल्कि पीछे हट गया, और जीन वालजेन ने उसकी जगह एक मुस्कान ला दी।
कोसेट ने बूढ़े आदमी के दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिए।
“हे भगवान!” उसने कहा, “आपके हाथ पहले से भी ज्यादा ठंडे हैं। क्या आप बीमार हैं? क्या आपको तकलीफ हो रही है?”
“मैं? नहीं,” जीन वालजेन ने उत्तर दिया। “मैं बिल्कुल ठीक हूँ। बस…”
वह रुका।
"सिर्फ क्या?"
मैं अभी मरने वाला हूँ।
कोसेट और मारियस सिहर उठे।
“मरना!” मारियस ने चीखते हुए कहा।
“हां, लेकिन यह कुछ भी नहीं है,” जीन वाल्जेन ने कहा।
उसने गहरी सांस ली, मुस्कुराया और फिर बोलना शुरू किया:
“कोसेट, तुम मुझसे बात कर रही थी, बोलो, तो क्या तुम्हारा छोटा रॉबिन रेडब्रेस्ट पक्षी मर गया है? बोलो, ताकि मैं तुम्हारी आवाज़ सुन सकूँ।” मारियस ने उस बूढ़े व्यक्ति को विस्मय से देखा।
कोसेट ने दिल दहला देने वाली चीख मारी।
“पिताजी! मेरे पिताजी! आप जीवित रहेंगे। आप जीवित रहेंगे। मैं आपके जीवित रहने पर जोर देता हूँ, क्या आप सुनते हैं?”
जीन वाल्जेन ने श्रद्धापूर्वक उसकी ओर अपना सिर उठाया।
“ओह! हाँ, मुझे मरने से रोक दो। कौन जाने? शायद मैं तुम्हारी बात मान लूँ। जब तुम आए थे, तब मैं मरने ही वाला था। तुमने मुझे रोक दिया, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा पुनर्जन्म हुआ हो।”
“तुम शक्ति और जीवन से परिपूर्ण हो,” मारियस रोते हुए बोला। “क्या तुम कल्पना भी कर सकते हो कि कोई व्यक्ति इस तरह मर सकता है? तुमने दुख झेला है,

अब और नहीं झेलोगे। मैं तुमसे क्षमा मांगता हूँ, और घुटनों के बल बैठकर! तुम जीवित रहोगे, हमारे साथ रहोगे, और दीर्घायु होगे। हम तुम्हें फिर से अपना बना रहे हैं। हम दो लोग यहाँ हैं, जिनके मन में अब से तुम्हारी खुशी के अलावा और कोई विचार नहीं होगा।”

"देखो," कोसेट ने आंसुओं से लथपथ होकर फिर से कहा, "मारियस कहता है कि तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी।"

जीन वाल्जेन मुस्कुराता रहा।

“अगर आप मुझे अपना बना भी लें, महाशय पोंटमर्सी, तो क्या इससे मैं बदल जाऊँगी? नहीं, ईश्वर ने आप और मेरे जैसा ही सोचा है, और वह अपना मन नहीं बदलता; मेरा जाना ही बेहतर है। मृत्यु एक अच्छा विकल्प है। ईश्वर हमसे बेहतर जानता है कि हमें क्या चाहिए। आप सुखी रहें, महाशय पोंटमर्सी को कोसेट मिले, यौवन सुबह से विवाह करे, मेरे बच्चों, आपके चारों ओर लिली और बुलबुल हों; आपका जीवन एक सुंदर, धूप से भरा लॉन हो, स्वर्ग के सभी जादू आपकी आत्माओं को भर दें, और अब मुझे, जो किसी काम की नहीं, मरने दो; यह निश्चित है कि यह सब ठीक है। ज़रा सोचो, अब कुछ भी संभव नहीं है, मैं पूरी तरह से जानती हूँ कि सब कुछ समाप्त हो गया है। और फिर, कल रात, मैंने पानी का वह पूरा घड़ा पी लिया। कोसेट, तुम्हारा पति कितना अच्छा है! तुम मेरे साथ रहने की तुलना में उसके साथ कहीं बेहतर हो।”

दरवाजे पर एक आवाज सुनाई दी।

डॉक्टर अंदर आ रहे थे।

“शुभ दिन, और अलविदा, डॉक्टर,” जीन वालजेन ने कहा। “ये रहे मेरे बेचारे बच्चे।”

मारियस डॉक्टर के पास गया। उसने उनसे केवल एक ही शब्द कहा: "महाशय?…" लेकिन उसके उच्चारण के तरीके में एक पूरा प्रश्न छिपा था।

डॉक्टर ने एक भावपूर्ण नज़र से प्रश्न का उत्तर दिया।

जीन वाल्जेन ने कहा, "क्योंकि परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हैं, इसका यह मतलब नहीं है कि हम ईश्वर के प्रति अन्याय करें।"

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा।

सभी स्तनों को दबाया गया था।
जीन वाल्जेन ने कोसेट की ओर रुख किया। वह उसे इस तरह निहारने लगा मानो वह उसके चेहरे की विशेषताओं को हमेशा के लिए अपने पास रखना चाहता हो।
जिस अंधकार की गहराई में वह पहले ही डूब चुका था, उसमें भी कोसेट को निहारने पर उसे परमानंद का अनुभव हो सकता था। उस प्यारे चेहरे की परछाईं उसके पीले चेहरे को रोशन कर देती थी।
डॉक्टर ने उसकी नब्ज जांची।
“आह! वो तो तुम्हें ही चाहता था!” उसने कोसेट और मारियस की ओर देखते हुए धीरे से कहा।
और मारियस के कान के पास झुककर उसने बहुत धीमी आवाज़ में कहा:
"बहुत देर हो गई।"
जीन वाल्जेन ने डॉक्टर और मारियस को शांतिपूर्वक देखा, और लगभग लगातार कोसेट को घूरता रहा।
उसके मुख से अस्पष्ट-सा शब्द निकलते सुनाई दिए:
"मरना कोई बड़ी बात नहीं; जीना ही भयानक है।"
अचानक ही वह उठ खड़ा हुआ। शक्ति का यह आभास कभी-कभी मृत्यु की पीड़ा का संकेत होता है। वह दृढ़ कदमों से दीवार की ओर बढ़ा, मारियस और उसकी मदद करने की कोशिश कर रहे डॉक्टर को एक तरफ धकेलते हुए, दीवार पर लटकी हुई तांबे की छोटी सी सूली को दीवार से अलग किया, और पूर्ण स्वास्थ्य की स्वतंत्रता के साथ अपनी सीट पर लौट आया, और सूली को मेज पर रखते हुए ऊँची आवाज़ में बोला:
“देखो, यह महान शहीद।”
फिर उसकी छाती धंस गई, उसका सिर डगमगाने लगा, मानो मकबरे का नशा उस पर हावी हो रहा हो।
उसके हाथ, जो उसके घुटनों पर टिके हुए थे, उसकी पतलून के कपड़े में अपने नाखूनों को दबाने लगे।

कोसेट ने उसके कंधों को सहारा दिया, सिसकियाँ भरीं और उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन वह बोल नहीं सकी।

आंसुओं के साथ निकलने वाली उस शोकपूर्ण लार में घुले शब्दों के बीच, उन्होंने निम्नलिखित जैसे शब्दों को अलग किया:

“पिताजी, हमें छोड़कर मत जाइए। क्या ऐसा संभव है कि हमने आपको पाया है और फिर से खो देंगे?”

यह कहा जा सकता है कि पीड़ा छटपटाती है। यह आती है, जाती है, कब्र की ओर बढ़ती है और फिर जीवन की ओर लौट जाती है। मरने की प्रक्रिया में एक तरह की छटपटाहट होती है।

इस अर्ध-बेहोशी के बाद जीन वाल्जेन ने खुद को संभाला, अपनी भौंहों को ऐसे हिलाया मानो उन पर से परछाईं को हटाना चाहता हो और लगभग पूरी तरह से फिर से होश में आ गया।

उसने कोसेट की आस्तीन की एक तह पकड़ी और उसे चूमा।

“वह वापस आ रहा है! डॉक्टर, वह वापस आ रहा है,” मारियस चिल्लाया।

“तुम दोनों अच्छे हो,” जीन वालजेन ने कहा। “मैं तुम्हें वो बात बताने जा रहा हूँ जिससे मुझे तकलीफ हुई है। महाशय पोंटमर्सी, मुझे इस बात का दुख है कि तुम उस पैसे को छूने को तैयार नहीं हो। वो पैसा असल में तुम्हारी पत्नी का है। मैं तुम्हें समझाऊँगा, मेरे बच्चों, और इसी वजह से मुझे तुमसे मिलकर खुशी हुई है। काला जेट इंग्लैंड से आता है, सफेद जेट नॉर्वे से। ये सब इस कागज़ में लिखा है, जिसे तुम पढ़ोगे। कंगन बनाने के लिए, मैंने लोहे की चादरों को जोड़कर बनाने का एक तरीका ईजाद किया है। ये ज़्यादा सुंदर, बेहतर और सस्ता है। तुम समझ जाओगे कि इस तरह से कितना पैसा कमाया जा सकता है। इसलिए कोसेट की दौलत असल में उसकी है। मैं तुम्हें ये सारी बातें इसलिए बता रहा हूँ ताकि तुम्हारा मन शांत हो जाए।”

चौकीदार ऊपर आई और आधे खुले दरवाजे से अंदर झाँक रही थी। डॉक्टर ने उसे जाने का इशारा किया।

लेकिन वह इस उत्साही महिला को मरने से पहले उस व्यक्ति से यह कहने से नहीं रोक सका: "क्या आपको एक पादरी चाहिए?"

“मैंने एक खाया है,” जीन वालजेन ने उत्तर दिया।

और अपनी उंगली से उसने अपने सिर के ऊपर एक बिंदु की ओर इशारा किया, जहाँ से ऐसा प्रतीत होता था कि उसने किसी को देखा था।

वास्तव में, यह संभव है कि बिशप इस मृत्यु की पीड़ा के समय वहां मौजूद थे।

कोसेट ने धीरे से उसके कमर के नीचे एक तकिया रख दिया।

जीन वालजेन ने आगे कहा:

“चिंता मत कीजिए, श्रीमान पोंटमर्सी, मैं आपको शपथ दिलाता हूँ। ये छह लाख फ़्रैंक वास्तव में कोसेट के हैं। अगर आप इनका आनंद नहीं लेंगे तो मेरा जीवन व्यर्थ हो जाएगा! हमने इन काँच के सामानों से बहुत अच्छा मुनाफा कमाया। हमने बर्लिन के आभूषणों को टक्कर दी। हालाँकि, हम इंग्लैंड के काले काँच की बराबरी नहीं कर सके। एक ग्रॉस, जिसमें बारह सौ बेहतरीन ढंग से कटे हुए दाने होते हैं, उसकी कीमत केवल तीन फ़्रैंक है।”

जब कोई प्रिय व्यक्ति मृत्यु के कगार पर होता है, तो हम उसे ऐसी निगाहों से देखते हैं जो उससे इस कदर चिपकी रहती हैं और मानो उसे रोक लेना चाहती हों।

कोसेट ने मारियस को अपना हाथ दिया, और दोनों, पीड़ा से मौन होकर, मरते हुए व्यक्ति से क्या कहें, यह न जानते हुए, कांपते और निराश होकर उसके सामने खड़े रहे।

जीन वाल्जेन पल-पल डूबता जा रहा था। वह कमजोर होता जा रहा था; वह अंधकारमय क्षितिज के करीब पहुँच रहा था।

उनकी सांसें रुक-रुक कर चल रही थीं; बीच-बीच में हल्की घरघराहट सुनाई दे रही थी। उन्हें अपनी बांह हिलाने में कठिनाई हो रही थी, उनके पैर पूरी तरह से निष्क्रिय हो गए थे, और जैसे-जैसे उनके अंगों की दुर्बलता और शरीर की कमजोरी बढ़ती गई, वैसे-वैसे उनकी आत्मा की सारी भव्यता उनके माथे पर प्रकट और फैलती गई। उनकी आंखों में अज्ञात जगत का प्रकाश पहले से ही दिखाई दे रहा था।

उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह मुस्कुराया। जीवन अब वहां नहीं था, बल्कि कुछ और ही था।

उसकी सांसें थम गईं, उसकी निगाहें और भी भव्य हो गईं। वह एक ऐसा शव था जिस पर पंखों का स्पर्श महसूस किया जा सकता था।

उसने कोसेट को पास आने का इशारा किया, फिर मारियस को; जाहिर तौर पर, आखिरी घंटे का आखिरी मिनट आ चुका था।

वह उनसे इतनी कमजोर आवाज में बोलने लगा कि ऐसा लग रहा था मानो आवाज दूर से आ रही हो, और ऐसा लग रहा था मानो उनके और उसके बीच एक दीवार खड़ी हो गई हो।

“पास आओ, पास आओ, तुम दोनों। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। ओह! इस तरह मरना कितना अच्छा है! और तुम भी मुझसे प्यार करती हो, मेरी कोसेट। मुझे अच्छी तरह पता था कि तुम अब भी अपने बेचारे बूढ़े आदमी के प्रति मित्रता रखती हो। तुमने मेरी कमर के नीचे तकिया रखकर कितनी दयालुता दिखाई! तुम मेरे लिए थोड़ा रोओगी, है ना? ज्यादा नहीं। मैं नहीं चाहता कि तुम्हें कोई सच्चा दुख हो। मेरे बच्चों, तुम्हें खूब मजे करने चाहिए। मैं तुम्हें बताना भूल गया था कि बिना जीभ वाले बकल पर बाकी सब से ज्यादा मुनाफा होता था। एक दर्जन बकल का एक ग्रॉस दस फ्रैंक का होता था और साठ फ्रैंक में बिकता था। यह सचमुच अच्छा कारोबार था। इसलिए छह लाख फ्रैंक पर आश्चर्य की कोई बात नहीं है, महाशय पोंटमर्सी। यह ईमानदारी का पैसा है। तुम शांत मन से अमीर हो सकते हो। तुम्हारे पास एक गाड़ी होनी चाहिए, कभी-कभी थिएटर में एक बॉक्स और सुंदर बॉल ड्रेस, मेरी कोसेट, और फिर, तुम्हें अच्छा दान देना चाहिए। अपने दोस्तों को दावत दो और खूब खुश रहो। मैं कुछ देर पहले कोसेट को लिख रहा था। उसे मेरा पत्र मिल जाएगा। मैं चिमनी पर रखे दो मोमबत्ती स्टैंड उसे वसीयत में दे रहा हूँ। वे चांदी के हैं, पर मेरे लिए सोने के हैं, हीरे के हैं; उनमें रखी मोमबत्तियाँ जलती हुई मोमबत्तियों में बदल जाती हैं। मुझे नहीं पता कि जिसने मुझे ये दिए थे, वह स्वर्ग में मुझसे प्रसन्न है या नहीं। मैंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की है। मेरे बच्चों, तुम यह मत भूलना कि मैं एक गरीब आदमी हूँ, तुम मुझे जो भी पहली ज़मीन मिले, उसमें दफना देना, और उस जगह पर एक पत्थर रख देना। यही मेरी इच्छा है। पत्थर पर कोई नाम नहीं होना चाहिए। अगर कोसेट कभी-कभार थोड़ी देर के लिए आ जाए, तो मुझे खुशी होगी। और आपको भी, महाशय पोंटमर्सी। मुझे मानना पड़ेगा कि मैंने हमेशा आपसे प्यार नहीं किया। इसके लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। अब वह और आप मेरे लिए एक ही हैं। मैं आपका बहुत आभारी हूँ। मुझे यकीन है कि आप

कोसेट को खुश रखते हैं। काश, महाशय, आप जानते। पोंटमर्सी, उसके प्यारे गुलाबी गाल मुझे बहुत भाते थे; जब मैं उसे ज़रा भी पीला देखती, तो उदास हो जाती। दराजों में पाँच सौ फ़्रैंक का एक बैंक नोट है। मैंने उसे छुआ तक नहीं है। वह गरीबों के लिए है। कोसेट, क्या तुम बिस्तर पर अपनी छोटी सी गाउन देख रही हो? क्या तुम उसे पहचानती हो? हालाँकि, यह दस साल पहले की बात है। समय कितनी जल्दी बीत जाता है! हम बहुत खुश थे। सब कुछ बीत गया। रोओ मत, मेरे बच्चों, मैं ज़्यादा दूर नहीं जा रही हूँ, मैं तुम्हें वहीं से देखूँगी, तुम्हें बस रात में देखना होगा, और तुम मुझे मुस्कुराते हुए देखोगी। कोसेट, क्या तुम्हें मोंटफर्मेइल याद है? तुम जंगल में थी, तुम बहुत डरी हुई थी; क्या तुम्हें याद है कि मैंने पानी की बाल्टी का हैंडल कैसे पकड़ा था? वह पहली बार था जब मैंने तुम्हारा छोटा सा हाथ छुआ था। वह बहुत ठंडा था! आह! तुम्हारे हाथ तब लाल थे, मैडम, अब तो एकदम सफेद हैं। और बड़ा गुड़िया! क्या तुम्हें याद है? तुमने उसका नाम कैथरीन रखा था। तुम्हें इस बात का अफ़सोस था कि तुम उसे मठ नहीं ले गई! मेरी प्यारी परी, तुम मुझे कितनी हँसाती थी! जब बारिश होती थी, तो तुम नालियों पर भूसे के टुकड़े तैराती थी और उन्हें बहते हुए देखती थी। एक दिन मैंने तुम्हें विलो की लकड़ी का डंडा और पीले, नीले और हरे पंखों वाला शटलकॉक दिया था। तुम उसे भूल गई हो। तुम कितनी शरारती थी! तुम खेलती थी। तुम अपने कानों में चेरी डालती थी। ये सब बीते दिनों की बातें हैं। वे जंगल जिनमें हम अपने बच्चे के साथ घूमते थे, वे पेड़ जिनके नीचे हम टहलते थे, वे मठ जहाँ हम छिपते थे, वे खेल, बचपन की दिल खोलकर हँसी, सब धुंधली यादें हैं। मैंने सोचा था कि ये सब मेरा है। इसी में मेरी मूर्खता थी। वे थेनार्डियर दुष्ट थे। तुम्हें उन्हें माफ़ करना होगा। कोसेट, अब समय आ गया है कि मैं तुम्हें तुम्हारी माँ का नाम बताऊँ। उसका नाम फैंटाइन था। उस नाम को याद रखना—फैंटाइन। जब भी तुम उसका उच्चारण करो, घुटने टेक देना। उसने बहुत कष्ट सहे। वह तुमसे बहुत प्यार करती थी। उसने उतना ही दुख झेला जितना तुमने सुख पाया है। ईश्वर का यही नियम है। वह ऊपर है, वह हम सबको देखता है, और वह जानता है कि वह अपने महान सितारों के बीच क्या कर रहा है। मैं जाने वाला हूँ, मेरे बच्चों। एक-दूसरे से हमेशा प्यार करना। दुनिया में इसके सिवा कुछ नहीं है: एक-दूसरे के लिए प्यार। तुम कभी-कभी उस बेचारे बूढ़े आदमी के बारे में सोचोगे जो यहाँ मर गया। ओह मेरी कोसेट, यह मेरी गलती नहीं है कि मैं तुम्हें इतने

समय से नहीं देख पाया, इससे मेरा दिल टूट गया; मैं गली के कोने तक गया, मुझे देखकर लोगों पर अजीब सा असर हुआ होगा, मैं पागलों जैसा था, एक बार तो मैं बिना टोपी के ही बाहर निकल गया। अब मुझे ठीक से दिखाई नहीं देता, मेरे बच्चों, मुझे अभी और भी बातें कहनी थीं, लेकिन कोई बात नहीं। मेरे बारे में थोड़ा सोचना। फिर भी आना। और करीब। मैं खुशी से मरता हूँ। मुझे अपने प्रिय और प्यारे सिर दे दो, ताकि मैं उन्हें अपने हाथों में ले सकूँ।

कोसेट और मारियस निराशा में घुटने टेककर, आँसुओं से व्याकुल होकर, जीन वालजेन के हाथों के नीचे गिर पड़े। वे शक्तिशाली हाथ अब हिल नहीं रहे थे।

वह पीछे की ओर गिर गया था, मोमबत्तियों की रोशनी उस पर पड़ रही थी।

उसका सफेद चेहरा आसमान की ओर उठा हुआ था, उसने कोसेट और मारियस को अपने हाथों पर चुंबन करने की अनुमति दी।

वह मृत है।

रात तारों से रहित और घोर अंधेरी थी। निःसंदेह, उस अंधकार में कोई विशाल देवदूत पंख फैलाए सीधा खड़ा था, उस आत्मा की प्रतीक्षा कर रहा था।

VI. [illegible]

[illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

नोट्स

[←1]

मामला रोम के साथ उलझता जा रहा था।

[←2]

स्वागत।

[←3]

महारानी।

[←4]

भव्यता।

[←5]

फ्रांसीसी आल्प्स की स्थानीय बोली: chat de maraude, rascally marauder.

[←6]

गर्व।

[←7]

मछली बाजार।

[←8]

राजा के बगीचे से।

[←9]

आलू।

[←10]

बदाजोज़ मेरा घर है, और प्रेम मेरा नाम है; मेरी आँखों में ज्वाला है, मेरी आत्मा का सारा अंश वहीं समा जाता है; उचित शिक्षा के लिए मैं तेरे चरणों में आता हूँ।

[←11]

हमें हमारे पिता को घेंट से वापस लाओ, हमें हमारे पिता को वापस लाओ।

[←12]

मेरी शांति।

[←13]

लीज लीज पर एक मज़ाक है: एक कॉर्क-पेड़। पाउ, प्यू पर एक मज़ाक है: त्वचा।

[←14]

आइसक्रीम।

[←15]

आइसक्रीम या आइस।

[←16]

वह उस मंडली से ताल्लुक रखती थी जहाँ कोयल और रथ एक ही भाग्य साझा करते हैं; और स्वयं एक झोली-भाली स्त्री होने के नाते, वह झोली-भाली स्त्रियों की तरह, एक सुबह (या झोली) के समय के लिए ही जीती थी।

[←17]

एक पूर्व अपराधी।

[←18]

अंडे के आकार की गोली।

[←19]

वाल्टर स्कॉट, लैमार्टाइन, वौलाबेले, चार्रास, क्विनेट, थियर्स।

[←20]

यह शिलालेख है: डी.ओ.एम.सी. दुर्भाग्यवश एक गाड़ी के नीचे कुचल गया, मोनसियू बर्नार्ड डी ब्राय मार्चैंड ए ब्रुक्सेल ले [अस्पष्ट] फ़रवरी 1637।

[←21]

एक भारी राइफलबंद तोप।

[←22]

“युद्ध समाप्त हुआ, दिन का अंत हुआ, गलतियों को सुधारा गया, कल के लिए और भी बड़ी सफलताएँ सुनिश्चित की गईं—सब कुछ घबराहट और आतंक के एक क्षण में खो गया।” नेपोलियन, डिक्टेस डे सैंटे हेलने।

[←23]

लॉटरी के पांच विजयी नंबर

[←24]

दार्शनिक।

[←25]

शाब्दिक रूप से "कुइर्स बनाए"; यानी, शब्दों के अंत में जहां विपरीत अक्षर होना चाहिए वहां t या s का उच्चारण किया, या जहां दोनों में से कोई भी मौजूद नहीं है वहां उनमें से किसी एक का उपयोग किया।

[←26]

वकील कॉर्बो, एक फाइल पर बैठा हुआ, अपनी चोंच में निष्पादन का एक आदेश पकड़े हुए था; गंध से आकर्षित होकर वकील रेनार्ड ने उससे लगभग इस प्रकार कहा, इत्यादि।

[←27]

यह है गोब्लेट जूनियर की फैक्ट्री: आइए, अपने मनपसंद जग, मिट्टी के बर्तन, गमले, पाइप और ईंटें चुनिए। दिल यहाँ आने वाले हर ग्राहक को हीरे बेचता है।

[←28]

पेड़ की डालियों पर तीन असमान गुणों वाले शरीर लटके हैं: डिस्मास और गेस्मास, इनके बीच दिव्य शक्ति विराजमान है। डिस्मास ऊंचाइयों की ओर आकर्षित होता है, गेस्मास, दुखी मनुष्य, निम्नतम क्षेत्रों की ओर; सर्वोच्च शक्ति हमारी और हमारी संपत्ति की रक्षा करेगी। इस श्लोक को दोहराने से आपकी संपत्ति चोरी नहीं होगी।

[←29]

अच्छा क्विंस।

[←30]

porte coch’re और porte b’tarde के बजाय।

[←31]

टाउन हॉल।

[←32]

हे भगवान, चाँद के साथ नीचे!

[←33]

चिकन: मुर्गे-मुर्गियों को बुलाते समय निकलने वाली आवाज के लिए इस्तेमाल होने वाला एक बोलचाल का शब्द।

[←34]

उस दौर के हास्य चित्रों में लुई XVIII को नाशपाती के आकार के सिर वाले व्यक्ति के रूप में दर्शाया गया है।

[←35]

अपनी शर्ट का जो हिस्सा बाहर लटका हुआ है, उसे अपनी पतलून में डाल लो। ऐसा कभी न कहा जाए कि देशभक्तों ने सफेद झंडा फहरा दिया है।

[←36]

डगमगाए सिंहासन को उसके आधार पर मजबूती से पुनः स्थापित करने के लिए, मिट्टी (डेस सोल्स), ग्रीनहाउस और घर (डेकाज़ेस) को बदलना होगा।

[←37]

निलंबित : निलंबित। फांसी : फांसी पर लटकाया गया।

[←38]

एल’एले : पंख।

[←39]

चित्रकार के सहायक के लिए प्रयुक्त बोलचाल का शब्द।

[←40]

यदि सीज़र ने मुझे यश और युद्ध दिया होता, और मुझे अपनी माँ का प्यार छोड़ना पड़ता, तो मैं महान सीज़र से कहता, "अपना राजदंड और अपना रथ वापस ले लो; मैं अपनी माँ के प्यार को प्राथमिकता देता हूँ।"

[←41]

सूरज चाहे तेज चमक रहा हो या मंद, भालू अपनी गुफा में लौट आता है।

[←42]

मुझे भूख लगी है, पिताजी। मेरे पास खाना नहीं है। मुझे ठंड लग रही है, माँ। मेरे पास कपड़े नहीं हैं। लोलोटे, पानी बहाओ! जैकोट, सिसकियाँ लो!

[←43]

फ्रेंच में झाँकने वाले छेद को जूडास कहते हैं। इसीलिए यह आंशिक रूप से व्यंग्यात्मक संकेत है।

[←44]

हमारा प्यार पूरे एक हफ्ते तक चला, लेकिन खुशी के पल कितने क्षणभंगुर होते हैं! आठ दिन तक एक-दूसरे को प्यार करना व्यर्थ था! प्यार का समय तो हमेशा के लिए रहना चाहिए।

[←45]

आप मुझे छोड़कर स्वर्ग की ओर चले जाते हैं; मेरा दुखी हृदय आपका अनुसरण करेगा।

[←46]

एक लोकतांत्रिक व्यक्ति।

[←47]

धन्यवाद।

[←48]

राजा बूटकिक दो ऊंचे डंडों पर सवार होकर कौवों का शिकार करने निकला। जब कोई कौवा उसके नीचे से गुजरता, तो वह उसे दो सू देता।

[←49]

पुराने समय में, फोरियर वे अधिकारी होते थे जो दरबार से पहले चलते थे और आवास आवंटित करते थे।

[←50]

स्काउट्स।

[←51]

नाइनपिन्स का एक खेल, जिसमें गेंद का एक किनारा दूसरे किनारे से छोटा होता है, जिससे वह सीधी नहीं लुढ़कती बल्कि जमीन पर एक वक्र बनाती है।

[←52]

19 अप्रैल से 20 मई तक।

[←53]

प्यार।

[←54]

ढोल।

[←55]

मर्लान: हेयरड्रेसरों को दिया जाने वाला एक उपनाम, क्योंकि वे पाउडर से सफेद हो जाते हैं।

[←56]

काली रोटी।

[←57]

Larton savoné.

[←58]

मचान।

[←59]

इसमें क्या दिक्कत है?

[←60]

मंदिर की बोलचाल की भाषा।

[←61]

बाधाओं की बोलचाल की भाषा।

[←62]

एक दोषी व्यक्ति का अंतिम दिन।

[←63]

इन कहानियों में आपको मेरे अधिक स्वच्छंद बनने के अनेक कारण मिलेंगे।

[←64]

लेकिन बीते वर्षों की बर्फ कहाँ है?

[←65]

छह हट्टे-कट्टे घोड़े एक गाड़ी खींच रहे थे।

[←66]

हालांकि, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सेल्टिक भाषा में "मैक" का अर्थ "पुत्र" होता है।

[←67]

यह नन्हे धनुर्धर (कामदेव) का रंगमंच है।

[←68]

सोते हुए व्यक्ति के चेहरे पर धुएं का गुबार उठा।

[←69]

मुझे बस इतना समझ आता है कि मेक, जो एक ऑर्गन डैड है, अपने मीम्स और मॉमिग्नार्ड्स को कैसे पाल-पोस सकता है और उन्हें बिना खुद "अभिनय किए" लूट सकता है।

[←70]

कुत्ता।

[←71]

यह नव वर्ष का दिन नहीं है, जब हम माता-पिता पर उंगली उठाएं।

[←72]

मेरी बांह इतनी मोटी है, मेरा पैर सुडौल है, और समय व्यर्थ चला गया।

←73]

पेरिस।

[←74]

रात में कुछ दिखाई नहीं देता, दिन में सब कुछ बहुत अच्छी तरह दिखाई देता है; बुर्जुआ वर्ग एक मनगढ़ंत लेख पर घबरा जाता है, सद्गुणों का अभ्यास करो, टूटू पहनो, नुकीली टोपी पहनो!

[←75]

चिएन: कुत्ता, ट्रिगर।

[←76]

भोर हो रही है। हम जंगल कब जाएँगे? शार्लोट ने शार्लोट से पूछा। शार्लोट ने कहा, "तू, तू, तू, क्योंकि मेरा एक ही ईश्वर है, एक ही राजा है, एक ही सिक्का है और एक ही जूता है।" और ये दो बेचारे छोटे भेड़िये सुबह-सुबह ओस और थाइम पीकर चिड़ियों की तरह मदहोश थे। और ये दो बेचारे छोटे जीव अंगूर के बाग में चिड़ियों की तरह नशे में थे; एक बाघ अपनी गुफा में उन पर हँस रहा था। एक ने शाप दिया, दूसरे ने गाली दी। हम जंगल कब जाएँगे? शार्लोट ने शार्लोट से पूछा। शार्लोट ने कहा, "तू, तू, तू, क्योंकि मेरा एक ही ईश्वर है, एक ही राजा है, एक ही सिक्का है और एक ही जूता है।"

[←77]

वहाँ एक बेचारे प्रेमी का भयानक कंकाल झूल रहा है जिसने खुद को फांसी लगा ली थी।

[←78]

कोरिंथ के अंगूरों के गुच्छे पर।

[←79]

वह दस कदम की दूरी से ही चौंका देती है, दो कदम की दूरी से ही डरा देती है, उसकी खतरनाक नाक पर एक मस्सा है; आप हर पल कांपते रहते हैं कि कहीं वह अपनी नाक से आप पर फुफकार न दे, और कहीं किसी दिन उसकी नाक उसके मुंह में न गिर जाए।

[←80]

मैटेलोटे: विभिन्न प्रकार की मछलियों से बना एक व्यंजन। गिबेलोटे: खरगोश का स्टू।

[←81]

अगर आप कर सकते हैं तो दावत दें, और अगर आपमें हिम्मत है तो खाएं।

[←82]

अमी: मित्र।

[←83]

Bip’de sans plume: biped without feathers’pen.

[←84]

टूलूज़ के नगर पालिका अधिकारी।

[←85]

क्या तुम्हें हमारा वो प्यारा जीवन याद है, जब हम दोनों इतने जवान थे, और जब हमारे दिलों में सजने- संवरने और प्यार में डूबे रहने के सिवा कोई और ख्वाहिश नहीं थी? जब तुम्हारी उम्र और मेरी उम्र जोड़ने पर भी हमारे बीच चालीस साल का फासला नहीं होता था, और जब हमारे छोटे से साधारण से घर में, सर्दी में भी, हमारे लिए बसंत जैसा माहौल रहता था। कितने प्यारे दिन थे! मैनुअल गर्वित और बुद्धिमान था, पेरिस पवित्र भोजों में बैठता था, फॉय बिजली की तरह बिजली गिराता था, और तुम्हारे फूलों के गुच्छे में एक पिन थी जिससे मुझे चुभन हो जाती थी। सब तुम्हें निहारते थे। एक वकील होने के नाते, जब मैं तुम्हें प्राडो संग्रहालय में भोजन के लिए ले गया, तो तुम इतनी खूबसूरत थीं कि मुझे लगा जैसे गुलाब घूम रहे हों, और मैंने उन्हें कहते सुना: कितनी सुंदर है! कितनी अच्छी खुशबू है! कितने लहराते बाल हैं! अपने लबादे के नीचे उसने एक पंख छिपा रखा है। उसकी मनमोहक टोपी मुश्किल से खुली है। मैं तुम्हारे साथ घूमता रहा, तुम्हारी कोमल बांहों को थामे। राहगीरों को लगा जैसे प्रेम के जादू ने हमारे इस खुशहाल जोड़े में अप्रैल के शांत महीने को मई के खूबसूरत महीने से जोड़ दिया हो। हम छुपकर, संतुष्ट होकर, बंद दरवाजों के पीछे रहते थे, प्रेम को तृप्त करते हुए, उस मीठे वर्जित फल को। मेरे मुख से एक शब्द भी नहीं निकला था कि तुम्हारे हृदय ने उत्तर दे दिया था। सोरबोन वह रमणीय स्थान था जहाँ मैं शाम से सुबह तक तुम्हारी आराधना करता था। इस प्रकार एक प्रेममय आत्मा कोमल प्रेम के मार्ग को लैटिन देश पर लागू करती है। हे प्लेस मौबर्ट! हे प्लेस डौफिन! जब तुमने उस ताज़ी वसंत ऋतु जैसी झोपड़ी में अपनी कोमल टांग पर मोजा पहनाया, तो मैंने अटारी की गहराई में एक तारा देखा। मैंने प्लेटो को बहुत पढ़ा है, लेकिन उसका कुछ भी मुझे याद नहीं है; मालेब्रांच और फिर

लैमेनैस से भी बेहतर, तुमने मुझे उस फूल से दिव्य अच्छाई का प्रदर्शन किया जो तुमने मुझे दिया था, मैंने तुम्हारी आज्ञा मानी, तुमने मेरे सामने समर्पण किया; हे सुनहरी अटारी! तुम्हें सजाने के लिए! भोर में तुम्हें अपनी कमीज़ में आते-जाते देखना, तुम्हारे प्राचीन दर्पण में तुम्हारे युवा माथे को निहारना! भला भला भोर और आकाश के उन दिनों की यादों को कौन भुला सकता है, जब फूलों, जालीदार कपड़े और मोइरे की छटाओं से भरा प्यार एक मोहक गीत गाता था? हमारे बगीचों में ट्यूलिप का एक गमला था; तुम खिड़की को अपने पेटीकोट से ढक लेती थी; मैं मिट्टी का कटोरा लेता था और तुम्हें जापानी प्याला देता था। और वे बड़ी विपत्तियाँ जिन पर हम हँसते थे! तुम्हारी कलाई जल गई, तुम्हारा बोआ खो गया! और शेक्सपियर का वह प्यारा चित्र जिसे हमने एक शाम भोजन करने के लिए बेच दिया! मैं एक भिखारी था और तुम दयालु थीं। मैंने जल्दबाजी में तुम्हारी कोमल बाहों को चूमा। दांते की एक किताब हमारे लिए मेज का काम करती थी जिस पर हम खुशी-खुशी एक पैसे के शाहबलूत खाते थे। जब पहली बार, अपनी आनंदमयी दुनिया में, मैंने तुम्हारे जोशीले होठों से एक चुंबन छीना, जब तुम बिखरे बालों और शर्म से लाल होकर बाहर निकलीं, तो मैं एकदम पीला पड़ गया और मुझे ईश्वर पर विश्वास हो गया। क्या तुम्हें हमारी अनगिनत खुशियाँ और वे सारे पल याद हैं जो अब चिथड़ों में बदल गए हैं? ओह! हमारे उदासी से भरे दिलों से कितनी आहें निकलीं जो स्वर्ग की गहराइयों तक पहुँच गईं!

[←86]

मेरी नाक से आंसू बह रहे हैं, मेरे मित्र बुगेउड, मुझे अपने पुलिसकर्मी उधार दो ताकि मैं उनसे कुछ कह सकूँ। नीले रंग की टोपी और टोपी में एक मुर्गी लिए, ये है उपनगर, को-कोकोरिको।

[←87]

लाफायेट को देखते ही जेंडरम ने दोहराया:—चलो भागते हैं! चलो भागते हैं! चलो भागते हैं!

[←88]

युद्ध नहीं प्यार।

[←89]

गलतियाँ।

[←90]

“पक्षी एल्म के पेड़ों में निंदा करता है, और बहाना करता है कि कल अताला एक रूसी के साथ चली गई, जहाँ सुंदर युवतियाँ जाती हैं। लोन ला। मेरे मित्र पियरोट, तुम बकवास करते हो, क्योंकि मिला ने कुछ दिन पहले अपने शीशे पर दस्तक दी और मुझे बुलाया। जेड बहुत आकर्षक हैं, उनका जहर जिसने मुझे मोहित कर लिया, वह श्री ओरफिला को मदहोश कर देगा। मुझे प्रेम और उसके झगड़े पसंद हैं, मैं एग्नेस से प्यार करता हूँ, मैं पामेला से प्यार करता हूँ, लिसे ने मुझे आग लगाने में खुद को जला दिया। पुराने दिनों में जब मैंने सुज़ेट और ज़ेला के मंटिला देखे, तो मेरी आत्मा उनकी तहों में मिल गई। प्रेम, जब तुम अंधेरे में चमकते हो, तो तुम लोला को गुलाबों का ताज पहनाते हो, मैं इसके लिए अपनी आत्मा खो दूँगा। जीन, अपने दर्पण में खुद को सजाओ! एक दिन, मेरा दिल उड़ गया। मुझे लगता है कि यह जीन के पास है। रात में, जब मैं क्वाड्रिल्स से आता हूँ, तो मैं स्टेला को दिखाता हूँ... तारे, और मैं उनसे कहता हूँ: “उसे देखो।” जहाँ सुंदर युवतियाँ जाती हैं, लोन ला।

[←91]

लेकिन कुछ जेलें अभी भी बची हैं, और मैं इस तरह की सार्वजनिक व्यवस्था को खत्म करने जा रहा हूँ।
क्या कोई स्किटल खेलना चाहता है? जब बड़ी गेंद लुढ़की, तो सारा प्राचीन संसार खंडहर में तब्दील हो गया। भले लोगों, चलो हम अपनी बैसाखियों से उस लूव्र संग्रहालय को तोड़ दें जहाँ राजशाही ने शान-शौकत दिखाई थी। हमने उसके द्वार तोड़ दिए हैं। उस दिन, राजा चार्ल्स X. टिक नहीं पाए और बिखर गए।
जहाँ सुंदर युवतियाँ जाती हैं। लोन ला।

[←92]

नान्टेरे में पुरुष बदसूरत हैं, यह वोल्टेयर की गलती है; और पैलेसो में नीरस हैं, यह रूसो की गलती है।

[←93]

मैं कोई नोटरी नहीं हूँ, यह वोल्टेयर की गलती है; मैं एक छोटी चिड़िया हूँ, यह रूसो की गलती है।

[←94]

आनंद मेरा चरित्र है, यह वोल्टेयर की देन है; दुख मेरा दहेज है, यह रूसो की देन है।

[←95]

मैं धरती पर गिर पड़ा हूँ, ये वोल्टेयर की गलती है; मेरी नाक गटर में धंस गई है, ये…

[←96]

हंस।

[←97]

संकेत।

[←98]

एवेंटाइन पहाड़ी पर बनी सीढ़ियाँ, जो टाइबर नदी की ओर जाती थीं, जहाँ फाँसी दिए गए अपराधियों के शवों को हुकों से घसीटकर टाइबर में फेंक दिया जाता था।

[←99]

डाकुओं।

[←100]

खाली जेब।

[←101]

बेहद क्रूर।

[←102]

सरसों।

[←103]

कैसर से, तोड़ना: ब्रेक-नेक्स।

[←104]

जीन का जन्म फौग्रे में हुआ था, जो चरवाहों का एक सच्चा घर था; मैं उसकी पेटीकोट की पूजा करता हूँ, हे शरारती! प्रेम, तू उसमें बसता है; क्योंकि उसी की आँखों में तू अपना तरकश रखता है, हे धूर्त! जहाँ तक मेरी बात है, मैं उसका गुणगान करता हूँ और डायना से भी अधिक जीन और उसके सुडौल ब्रेटन स्तनों से प्रेम करता हूँ।

[←105]

यह अभिव्यक्ति "coiffer Sainte-Catherine" के संदर्भ में है, जिसका अर्थ है अविवाहित रहना।

[←106]

अत: हे अल्सीपस, तुम्हारे चिंतन के मार्ग को सीमित करते हुए, यह सत्य है कि तुम शीघ्र ही विवाह करोगे।

[←107]

किसी तरह से जीवन यापन करना : यानी बड़ी मुश्किल से गुजारा करना।

[←108]

ट्राइटन आगे-आगे चलता रहा और अपने शंख से इतनी मनमोहक ध्वनियाँ निकालता रहा कि उसने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया!

[←109]

श्रोव-ट्यूसडे विवाह
उसके कोई कृतघ्न बच्चे नहीं होंगे।

[←110]

एक छोटा मुखौटा।

[←111]

पैंटिनोइस।

[←112]

विज्ञान अकादमी।

[←113]

अन फाफियोट स'रीक्स। फाफियोट बैंक के नोटों के लिए इस्तेमाल होने वाला बोलचाल का शब्द है, जो उनकी सरसराहट की आवाज से लिया गया है।

[←114]

वह सो रहा है। हालाँकि उसका भाग्य बहुत विचित्र था, फिर भी वह जीवित रहा। उसकी मृत्यु तब हुई जब उसका देवदूत उसके साथ नहीं रहा। यह घटना स्वतः ही घटित हो गई, जैसे दिन ढलने पर रात आ जाती है।